

Hindi / English / Gujarati

શ્રી ગુરુ ગ્રંથ સાહિબ જી



મહાભારતી

੧੮ੰ सति ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ
 ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

॥ ਜਪੁ ॥

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥ ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ ॥੧॥

ਸੋਚੈ ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖ ਵਾਰ ॥ ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਲਾਡਿ ਰਹਾ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥ ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ
 ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ ॥ ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥ ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ
 ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂਝੈ ਤੁਟੈ ਪਾਲਿ ॥ ਹੁਕਮਿ ਰਯਾਈ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ॥੧॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ
 ਆਕਾਰ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਜੀਅ ਹੁਕਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਤਤਮੁ ਨੀਚੁ
 ਹੁਕਮਿ ਲਿਖਿ ਦੁਖ ਸੁਖ ਪਾਈਅਹਿ ॥ ਇਕਨਾ ਹੁਕਮੀ ਬਖਸੀਸ ਇਕਿ ਹੁਕਮੀ ਸਦਾ ਭਵਾਈਅਹਿ ॥ ਹੁਕਮੈ
 ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਹੁਕਮ ਨ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਜੇ ਬੁੜੈ ਤ ਹਤਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥੨॥ ਗਾਵੈ ਕੋ
 ਤਾਣੁ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਤਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਦਾਤਿ ਜਾਣੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਗੁਣ ਵਡਿਆਈਆ ਚਾਰ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ
 ਵਿਦਿਆ ਵਿਖਮੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਸਾਜਿ ਕਰੇ ਤਨੁ ਖੇਹ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਜੀਅ ਲੈ ਫਿਰਿ ਦੇਹ ॥ ਗਾਵੈ

को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी
 कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥
 नानक विगसै वेपरखाहु ॥ ३॥ साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि
 देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीअै जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीअै
 जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी
 मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीअै सभु आपे सचिआरु ॥ ४॥ थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥
 आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ नानक गावीअै गुणी निधानु ॥
 गावीअै सुणीअै मनि रखीअै भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं
 गुरमुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा
 नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि
 न जाई ॥ ५॥ तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा
 विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा
 इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ६॥ जे जुग चारे आरजा होर
 दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीअै नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि
 लैइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक
 निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥ ७॥ सुणिअै
 सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिअै धरति धवल आकास ॥ सुणिअै दीप लोअ पाताल ॥ सुणिअै पोहि न सकै
 कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिअै दूख पाप का नासु ॥ ८॥ सुणिअै ईसरु बरमा इंदु ॥
 सुणिअै मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिअै जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिअै सासत सिमृति वेद ॥ नानक भगता

सदा विगासु ॥ सुणिअै दूख पाप का नासु ॥६॥ सुणिअै सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिअै अठसठि का
 डिसनानु ॥ सुणिअै पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिअै लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु
 ॥ सुणिअै दूख पाप का नासु ॥१०॥ सुणिअै सरा गुणा के गाह ॥ सुणिअै सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिअै अंधे
 पावहि राहु ॥ सुणिअै हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिअै दूख पाप का नासु ॥११॥
 मन्ने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मन्ने का बहि
 करनि वीचारु ॥ औसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥ मन्नै सुरति होवै मनि बुधि ॥
 मन्नै सगल भवण की सुधि ॥ मन्नै मुहि चोटा ना खाइ ॥ मन्नै जम कै साथि न जाइ ॥ औसा नामु निरंजनु
 होइ ॥ जे को मनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥ मन्नै मारगि ठाक न पाइ ॥ मन्नै पति सिउ परगटु जाइ ॥
 मन्नै मगु न चलै पंथु ॥ मन्नै धरम सेती सनबंधु ॥ औसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मनि जाणै मनि कोइ ॥
 १४॥ मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥ मन्नै परखारै साधारु ॥ मन्नै तरै तारे गुरु सिख ॥ मन्नै नानक भवहि
 न भिख ॥ औसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥ पंच परखाण पंच परधानु ॥
 पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै
 वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दहिआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
 जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु
 ॥ जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ लेखा
 लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ एको
 कवाउ ॥ तिस ते होए लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥
 जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥ असंख जप असंख भाउ
 ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि

उदास ॥ असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असंख सती असंख दातार ॥ असंख सूर मुह भख सार ॥
 असंख मोनि लिव लाइ तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु
 भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १७ ॥ असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर
 ॥ असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख
 कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु
 कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥
 १८ ॥ असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ अखरी नामु
 अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु
 वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता
 नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु
 भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १९ ॥ भरीऔ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै
 उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऔ ओहु धोइ ॥ भरीऔ मति पापा कै संगि ॥
 ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुन्नी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे
 ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ २० ॥ तीरथु तपु दिआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु
 ॥ सुणिआ मनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
 विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु
 सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न
 पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना
 जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि आखा किव

सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इਕ दू इਕु सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी
 नाई कीता जा का होवै ॥ नानक जे को आਪौ जाणै अगै गਿਆ न सोहै ॥ २१ ॥ पाताला पाताल लख
 आगासा आगास ॥ ओङ्क ओङ्क भालि थके वेद कहनि इਕ वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा
 असुलू इਕु धातु ॥ लेखा होइ त लिखीਐ लेखै होइ विणासु ॥ नानक वडा आखीਐ आपे जाणै आਪु ॥
 २२ ॥ सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
 समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसगहि ॥ २३ ॥ अंतु
 न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै
 किआ मनि मंतु ॥ अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥
 ता के अंत न पाए जाहि ॥ एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीਐ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
 ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि
 आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥ २४ ॥ बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ
 ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु
 पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी
 भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे
 जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि कई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु
 ॥ २५ ॥ अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥
 अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु
 बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि
 रहे लिव लाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥

आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि
 देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
 एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि कई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा
 सोइ ॥ जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥ ता लिखीअै सिरि गावारा गावारु ॥२६॥ सो दरु केहा सो घरु केहा
 जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते राग परी सित कहीअनि
 केते गावणहारे ॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु
 लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि इंद
 इंदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि
 जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि
 मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पड़िआले ॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि
 जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो
 गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ
 वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
 रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी
 वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक
 रहणु रजाई ॥२७॥ मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ
 जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि
 अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥ भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि
 नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि

लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२६॥
 एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ जिव
 तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ आदेसु
 तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥ आसणु लोडि लोडि भंडार ॥
 जो किछु पाइआ सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु
 तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥ इक दू जीभै लख होहि लख
 होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगटीस ॥ एतु राहि पति पवडीआ चड़ीअै
 होडि इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी पाईअै कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥
 आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि
 मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ जिसु हथि जोरु करि
 वेखै सोडि ॥ नानक उतमु नीचु न कोडि ॥३३॥ राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥
 तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥ तिन के नाम अनेक अन्नत
 ॥ करमी करमी होडि वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि
 पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाडि ॥ नानक गडिआ जापै जाडि ॥३४॥ धरम खंड का एहो
 धरमु ॥ गिआन खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे
 घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद
 सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते
 रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक
 अंतु न अंतु ॥३५॥ गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड अन्नदु ॥

सरम खंड की बाणी रूपु ॥ तिथै घड़िति घड़िअै बहुतु अनूपु ॥ ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़िअै सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़िअै सुरा सिधा की सुधि ॥ ३६ ॥ करम खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ता के रूप न कथने जाहि ॥ ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अन्नदु सचा मनि सोइ ॥ सच खंडि वसै निरंकारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भाँडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥ घड़िअै सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥ ३८ ॥ सलोकु ॥ पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़े के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥ १ ॥

सो दरु रागु आसा महला १ १८८ सतिगुर प्रसादि ॥ सो दरु तेरा केहा सो घरु
केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे
राग परी सित कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा
धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावनि
तुधनो ईसरु ब्रह्मा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे
देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਜਤੀ ਸਤੀ ਸਂਤੋਖੀ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਕੀਰ ਕਰਾਰੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਪੰਡਿਤ ਪਡਨਿ ਰਖੀਸੁਰ
 ਜੁਗ ਜੁਗ ਵੇਦਾ ਨਾਲੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਮੋਹਣੀਆ ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਸੁਰਗੁ ਮਛੁ ਪਇਆਲੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ
 ਰਤਨ ਉਪਾਏ ਤੇਰੇ ਅਠਸਥਿ ਤੀਰਥ ਨਾਲੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸ੍ਰਵਾ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਖਾਣੀ ਚਾਰੇ ॥
 ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਖੇ ਤੇਰੇ ਧਾਰੇ ॥ ਸੇਈ ਤੁਧਨੋ ਗਾਵਨਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਨਿ ਰਤੇ
 ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਰਸਾਲੇ ॥ ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਤੁਧਨੋ ਗਾਵਨਿ ਸੇ ਮੈ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਨਿ ਨਾਨਕੁ ਕਿਆ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਸੋਈ ਸੋਈ
 ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ॥ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਜਾਇ ਨ ਜਾਸੀ ਰਚਨਾ ਜਿਨਿ ਰਚਾਈ ॥ ਰੰਗੀ ਰੰਗੀ ਭਾਤੀ
 ਕਰਿ ਕਰਿ ਜਿਨਸੀ ਮਾਇਆ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਜਿਤ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜੋ
 ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ਫਿਰਿ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥ ਸੋ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸਾਹਾ ਪਤਿਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਰਹਣੁ ਰਜਾਈ
 ॥੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੁਣਿ ਵਡਾ ਆਖੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਕੇਵਡੁ ਵਡਾ ਢੀਠਾ ਹੋਇ ॥ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ਨ ਕਹਿਆ
 ਜਾਇ ॥ ਕਹਣੈ ਵਾਲੇ ਤੇਰੇ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਵਡੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰਾ ॥ ਕੋਇ ਨ ਜਾਣੈ
 ਤੇਰਾ ਕੇਤਾ ਕੇਵਡੁ ਚੀਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭਿ ਸੁਰਤੀ ਮਿਲਿ ਸੁਰਤਿ ਕਮਾਈ ॥ ਸਭ ਕੀਮਤਿ ਮਿਲਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥
 ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਗੁਰ ਗੁਰਹਾਈ ॥ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਤੇਰੀ ਤਿਲੁ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਸਭਿ ਸਤ ਸਭਿ ਤਪ ਸਭਿ
 ਚੰਗਿਆਈਆ ॥ ਸਿਧਾ ਪੁਰਖਾ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ॥ ਤੁਧੁ ਵਿਣੁ ਸਿਧੀ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ॥ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਨਾਹੀ
 ਠਾਕਿ ਰਹਾਈਆ ॥੩॥ ਆਖਣ ਵਾਲਾ ਕਿਆ ਵੇਚਾਰਾ ॥ ਸਿਫਤੀ ਭਰੇ ਤੇਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰੂ ਦੇਹਿ ਤਿਸੈ ਕਿਆ
 ਚਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੪॥੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਖਾ ਜੀਵਾ ਵਿਸਰੈ ਮਰਿ ਜਾਤ ॥ ਆਖਣਿ
 ਅਤਖਾ ਸਾਚਾ ਨਾਤ ॥ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਲਾਗੈ ਭੂਖ ॥ ਤਤੁ ਭੂਖੈ ਖਾਇ ਚਲੀਅਹਿ ਟ੍ਰੂਖ ॥੧॥ ਸੋ ਕਿਤ ਵਿਸਰੈ ਮੇਰੀ
 ਮਾਇ ॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਤਿਲੁ ਵਡਿਆਈ ॥ ਆਖਿ ਥਕੇ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ
 ਪਾਈ ॥ ਜੇ ਸਭਿ ਮਿਲਿ ਕੈ ਆਖਣ ਪਾਹਿ ॥ ਵਡਾ ਨ ਹੋਵੈ ਘਾਟਿ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ ॥ ਦੇਦਾ
 ਰਹੈ ਨ ਚੂਕੈ ਭੋਗੁ ॥ ਗੁਣੁ ਏਹੋ ਹੋਰੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਨਾ ਕੋ ਹੋਆ ਨਾ ਕੋ ਹੋਇ ॥੩॥ ਜੇਵਡੁ ਆਪਿ ਤੇਵਡ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ॥

जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥ रागु
गूजरी महला ४ ॥ हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर
सरणाई करि दड़िआ नामु परगासि ॥१॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति
नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥२॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन
हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥
जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाड़िआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए
धिगु जीवे धिगु जीवासि ॥३॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मस्तकि लिखिआ लिखासि
॥ धनु धनु सतसंगति जितु हरि रसु पाड़िआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥ रागु गूजरी
महला ५ ॥ काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए
ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि
परम पटु पाड़िआ सूके कासट हरिआ ॥२॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोडि न किस की धरिआ
॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे
छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ सभि निधान दस असट
सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सट बलि जाईओ तेरा अंतु न पारावरिआ
॥४॥५॥

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

१८३ सतिगुर प्रसादि ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीआ तुमारे जी तूं जीआ का
दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी

ਕਿਆ ਨਾਨਕ ਜਾਂਤ ਵਿਚਾਰਾ ॥੧॥ ਤ੍ਰਿ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਜੀ ਹਰਿ ਏਕੋ ਪੁਰਖੁ ਸਮਾਣਾ ॥ ਇਕਿ
 ਦਾਤੇ ਇਕਿ ਭੇਖਾਰੀ ਜੀ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਾ ॥ ਤ੍ਰਿ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ਜੀ ਹਤ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ
 ਜਾਣਾ ॥ ਤ੍ਰਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਬੇਅੰਤੁ ਬੇਅੰਤੁ ਜੀ ਤੇਰੇ ਕਿਆ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣਾ ॥ ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਜਨੁ
 ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕੁਰਬਾਣਾ ॥੨॥ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹਿ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਸੇ ਜਨ ਜੁਗ ਮਹਿ ਸੁਖਵਾਸੀ ॥ ਸੇ ਮੁਕਤੁ
 ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਭਏ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜੀ ਤਿਨ ਤੂਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥ ਜਿਨ ਨਿਰਭਤ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਿਰਭਤ
 ਧਿਆਇਆ ਜੀ ਤਿਨ ਕਾ ਭਤ ਸਭੁ ਗਵਾਸੀ ॥ ਜਿਨ ਸੇਵਿਆ ਜਿਨ ਸੇਵਿਆ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਜੀ ਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਰੂਪਿ ਸਮਾਸੀ ॥ ਸੇ ਧਨੁ ਸੇ ਧਨੁ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜੀ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਬਲਿ ਜਾਸੀ ॥੩॥ ਤੇਰੀ
 ਭਗਤਿ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਖੰਡਾਰ ਜੀ ਭਰੇ ਬਿਅੰਤ ਬੇਅੰਤਾ ॥ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਸਲਾਹਨਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਹਰਿ
 ਅਨਿਕ ਅਨੇਕ ਅਨੱਤਾ ॥ ਤੇਰੀ ਅਨਿਕ ਤੇਰੀ ਅਨਿਕ ਕਰਹਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਸਾ ਜੀ ਤਪੁ ਤਾਪਹਿ ਜਪਹਿ ਬੇਅੰਤਾ ॥
 ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਪਡਹਿ ਬਹੁ ਸਿਮੂਤਿ ਸਾਸਤ ਜੀ ਕਰਿ ਕਿਰਿਆ ਖਟੁ ਕਰਮ ਕਰਂਤਾ ॥ ਸੇ ਭਗਤ ਸੇ
 ਭਗਤ ਭਲੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜੀ ਜੋ ਭਾਵਹਿ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਭਗਵਤਾ ॥੪॥ ਤ੍ਰਿ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਜੀ ਤੁਧੁ
 ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਤ੍ਰਿ ਜੁਗ ਜੁਗ ਏਕੋ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤ੍ਰਿ ਏਕੋ ਜੀ ਤ੍ਰਿ ਨਿਹਚਲੁ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਭਾਵੈ ਸੋਈ
 ਕਰਤੈ ਜੀ ਤ੍ਰਿ ਆਪੇ ਕਰਹਿ ਸੁ ਛੋਈ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸੂਸਟਿ ਸਭ ਉਪਾਈ ਜੀ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸਿਰਜਿ ਸਭ ਗੋਈ ॥ ਜਨੁ
 ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਕਰਤੇ ਕੇ ਜੀ ਜੋ ਸਭਸੈ ਕਾ ਜਾਣੋਈ ॥੫॥੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਤ੍ਰਿ ਕਰਤਾ ਸਚਿਆਲੁ ਮੈਡਾ
 ਸਾਈ ॥ ਜੋ ਤਤ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਥੀਸੀ ਜੋ ਤ੍ਰਿ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਹਤ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭ ਤੇਰੀ ਤ੍ਰਿ ਸਭਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥
 ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹਿ ਤਿਨਿ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਧਾ ਮਨਮੁਖਿ ਗਵਾਇਆ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪਿ
 ਵਿਛੁਡਿਆ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧॥ ਤ੍ਰਿ ਦਰੀਆਤ ਸਭ ਤੁੜ੍ਹ ਹੀ ਮਾਹਿ ॥ ਤੁੜ੍ਹ ਬਿਨੁ ਢ੍ਵਾ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥
 ਜੀਅ ਜਾਂਤ ਸਭਿ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ॥ ਵਿਜੋਗਿ ਮਿਲਿ ਵਿਛੁਡਿਆ ਸ਼ੰਜੋਗੀ ਮੇਲੁ ॥੨॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤ੍ਰਿ ਜਾਣਾਇਹਿ ਸੋਈ ਜਨੁ
 ਜਾਣੈ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਦ ਹੀ ਆਖਿ ਵਖਾਣੈ ॥ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਹਜੇ ਹੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ

ਸਮਾਇਆ ॥੩॥ ਤੂ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਹੋਇ ॥ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਤੂ ਕਰਿ ਕਰਿ
ਕੇਖਹਿ ਜਾਣਹਿ ਸੋਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਗਟੁ ਹੋਇ ॥੪॥੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਤਿਤੁ ਸਰਵਰਡੈ
ਭਈਲੇ ਨਿਵਾਸਾ ਪਾਣੀ ਪਾਵਕੁ ਤਿਨਹਿ ਕੀਆ ॥ ਪੰਕਜੁ ਮੋਹ ਪਗੁ ਨਹੀ ਚਾਲੈ ਹਮ ਦੇਖਾ ਤਹ ਝੂਬੀਅਲੇ ॥੧॥
ਮਨ ਏਕੁ ਨ ਚੇਤਸਿ ਮੂੜ ਮਨਾ ॥ ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਲਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾ ਹਤ ਜਤੀ ਸਤੀ ਨਹੀ
ਪਡਿਆ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧਾ ਜਨਮੁ ਭਇਆ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੀ ਸਰਣਾ ਜਿਨ ਤੂ ਨਾਹੀ ਕੀਸਰਿਆ ॥੨॥੩॥
ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭਈ ਪਰਾਪਤਿ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹੁਰੀਆ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਮਿਲਣ ਕੀ ਇਹ ਤੇਰੀ ਬਰੀਆ ॥ ਅਵਰਿ
ਕਾਜ ਤੈਰੈ ਕਿਤੈ ਨ ਕਾਮ ॥ ਮਿਲੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਭਜੁ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ॥੧॥ ਸਰਂਜਾਮਿ ਲਾਗੁ ਭਵਜਲ ਤਰਨ ਕੈ ॥
ਜਨਮੁ ਬੂਥਾ ਜਾਤ ਰੰਗ ਮਾਇਆ ਕੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਯਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਧਰਮੁ ਨ ਕਮਾਇਆ ॥ ਸੇਵਾ ਸਾਧ ਨ
ਜਾਨਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਮ ਨੀਚ ਕਰੰਮਾ ॥ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਕੀ ਰਾਖਹੁ ਸਰਮਾ ॥੨॥੪॥

ਸੋਹਿਲਾ ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਦੀਪਕੀ ਮਹਲਾ ੧

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜੈ ਘਰਿ ਕੀਰਤਿ ਆਖੀਐ ਕਰਤੇ ਕਾ ਹੋਇ ਬੀਚਾਰੋ ॥ ਤਿਤੁ

ਘਰਿ ਗਾਵਹੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਿਵਰਿਹੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥੧॥ ਤੁਮ ਗਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਨਿਰਭਤ ਕਾ ਸੋਹਿਲਾ ॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਜਿਤੁ
ਸੋਹਿਲੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਿਤ ਨਿਤ ਜੀਅਡੇ ਸਮਾਲੀਅਨਿ ਦੇਖੈਗਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥ ਤੇਰੇ ਦਾਨੈ
ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਤਿਸੁ ਦਾਤੇ ਕਵਣੁ ਸੁਮਾਰੁ ॥੨॥ ਸੰਬਤਿ ਸਾਹਾ ਲਿਖਿਆ ਮਿਲਿ ਕਰਿ ਪਾਵਹੁ ਤੇਲੁ ॥ ਦੇਹੁ
ਸਜਣ ਅਸੀਸਡੀਆ ਜਿਤ ਹੋਵੈ ਸਾਹਿਬ ਸਿਤ ਮੇਲੁ ॥੩॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਏਹੋ ਪਾਹੁਚਾ ਸਦਡੇ ਨਿਤ ਪਵੰਨਿ ॥
ਸਦਣਹਾਰਾ ਸਿਮਰੀਐ ਨਾਨਕ ਸੇ ਦਿਹ ਆਵੰਨਿ ॥੪॥੧॥ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਛਿਅ ਘਰ ਛਿਅ
ਗੁਰ ਛਿਅ ਉਪਦੇਸ ॥ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਏਕੋ ਵੇਸ ਅਨੇਕ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਜੈ ਘਰਿ ਕਰਤੇ ਕੀਰਤਿ ਹੋਇ ॥ ਸੋ ਘਰੁ ਰਾਖੁ
ਵਡਾਈ ਤੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਵਿਸੁਏ ਚਸਿਆ ਘੜੀਆ ਪਹਰਾ ਧਿਤੀ ਵਾਰੀ ਮਾਹੁ ਹੋਆ ॥ ਸੂਰਜੁ ਏਕੋ ਰੁਤਿ

अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥ रागु धनासरी महला १ ॥ गगन मै थालु रवि चंदु
 दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलम्त जोती
 ॥१॥ कैसी आरती होइ ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस
 तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तुही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध
 बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस दै चानणि सभ महि
 चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥ हरि चरण कवल
 मकरंद लोभित मनो अनदिनुो मोहि आही पिआसा ॥ कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते
 तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू
 खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ करि साधू अंजुली
 पुनु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि
 हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ हरि जन हरि
 हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड
 ब्रहमंडा हे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु
 टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ करउ बैन्ती सुणहु मेरे
 मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ अउध घटै दिनसु
 रैणारे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी
 ॥ जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर
 ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥ अंतरजामी पुरख
 बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧

॥ ਮੋਤੀ ਤ ਮੰਦਰ ਊਸਰਹਿ ਰਤਨੀ ਤ ਹੋਹਿ ਜੜਾਤ ॥ ਕਸਤੂਰਿ ਕੁਂਗੁ ਅਗਰਿ ਚੰਦਨਿ ਲੀਪਿ ਆਵੈ ਚਾਤ ॥ ਮਤੁ
ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਵੀਸਰੈ ਤੇਰਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾਤ ॥੧॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਜੀਤ ਜਲਿ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਮੈ ਆਪਣਾ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰਥਿ
ਦੇਖਿਆ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਥਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਰਤੀ ਤ ਹੀਰੇ ਲਾਲ ਜੜਤੀ ਪਲਧਿ ਲਾਲ ਜੜਾਤ ॥ ਮੋਹਣੀ
ਮੁਖਿ ਮਣੀ ਸੋਹੈ ਕਰੇ ਰੰਗਿ ਪਸਾਤ ॥ ਮਤੁ ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਵੀਸਰੈ ਤੇਰਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾਤ ॥੨॥ ਸਿਧੁ ਹੋਵਾ ਸਿਧਿ
ਲਾਈ ਰਿਧਿ ਆਖਾ ਆਤ ॥ ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ਬੈਸਾ ਲੋਕੁ ਰਾਖੈ ਭਾਤ ॥ ਮਤੁ ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਵੀਸਰੈ ਤੇਰਾ ਚਿਤਿ
ਨ ਆਵੈ ਨਾਤ ॥੩॥ ਸੁਲਤਾਨੁ ਹੋਵਾ ਮੇਲਿ ਲਸਕਰ ਤਖਤਿ ਰਾਖਾ ਪਾਤ ॥ ਹੁਕਮੁ ਹਾਸਲੁ ਕਰੀ ਬੈਠਾ
ਨਾਨਕਾ ਸਭ ਵਾਤ ॥ ਮਤੁ ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਵੀਸਰੈ ਤੇਰਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾਤ ॥੪॥੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
ਕੋਟਿ ਕੋਟੀ ਮੇਰੀ ਆਰਜਾ ਪਕਣੁ ਪੀਅਣੁ ਅਧਿਆਤ ॥ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਢੁਇ ਗੁਫੈ ਨ ਦੇਖਾ ਸੁਪਨੈ ਸਤਣ ਨ ਥਾਤ ॥
ਭੀ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਕੈ ਹਤ ਕੇਵਡੁ ਆਖਾ ਨਾਤ ॥੧॥ ਸਾਚਾ ਨਿਰਂਕਾਰੁ ਨਿਜ ਥਾਇ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਆਖਣੁ
ਆਖਣਾ ਜੇ ਭਾਵੈ ਕਰੇ ਤਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੁਸਾ ਕਟੀਆ ਵਾਰ ਵਾਰ ਪੀਸਣਿ ਪੀਸਾ ਪਾਇ ॥ ਅਗੀ ਸੇਤੀ
ਜਾਲੀਆ ਭਸਮ ਸੇਤੀ ਰਲਿ ਜਾਤ ॥ ਭੀ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਕੈ ਹਤ ਕੇਵਡੁ ਆਖਾ ਨਾਤ ॥੨॥ ਪੱਖੀ ਹੋਇ ਕੈ ਜੇ ਭਵਾ
ਸੈ ਅਸਮਾਨੀ ਜਾਤ ॥ ਨਦਰੀ ਕਿਸੈ ਨ ਆਵਤ ਨਾ ਕਿਛੁ ਪੀਆ ਨ ਖਾਤ ॥ ਭੀ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਕੈ ਹਤ ਕੇਵਡੁ

आखा नाउ ॥३॥ नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥ मसू तोटि न आवई लेखणि
 पउणु चलाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥ सिरीरागु महला ੧ ॥
 लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥ लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ॥ लेखै साह लवाईअहि
 पड़े कि पुछण जाउ ॥१॥ बाबा माइआ रचना धोहु ॥ अंधै नामु विसारिआ ना तिसु एह न ओहु ॥
 ॥१॥ रहाउ ॥ जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै कालि ॥ जिथै बहि समझाईअै तिथै कोइ न चलिओ
 नालि ॥ रोवण वाले जेतडे सभि बन्हि पंड परालि ॥२॥ सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै
 कोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ॥ साचा साहबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ ॥
 ॥३॥ नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥ नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ
 रीस ॥ जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥ सिरीरागु महला ੧ ॥ लबु
 कुता कूडु चूहडा ठंगि खाधा मुरदारु ॥ पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥ रस कस
 आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥१॥ बाबा बोलीअै पति होइ ॥ ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि
 नीच करम बहि रोइ ॥१॥ रहाउ ॥ रसु सुइना रसु रूपा कामणि रसु परमल की वासु ॥ रसु घोड़े
 रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥ एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥२॥ जितु बोलिअै
 पति पाईअै सो बोलिआ परवाणु ॥ फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥ जो तिसु भावहि
 से भले होरि कि कहण वखाण ॥३॥ तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ॥
 तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ॥ नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥
 ॥४॥४॥ सिरीरागु महला ੧ ॥ अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ॥ मती मरणु विसारिआ
 खुसी कीती दिन चारि ॥ सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवारु ॥१॥ नानक साचे कउ
 सचु जाणु ॥ जितु सेविअै सुखु पाईअै तेरी दरगह चलै माणु ॥१॥ रहाउ ॥ सचु सरा गुड़ बाहरा

ਜਿਸੁ ਵਿਚਿ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥ ਸੁਣਹਿ ਵਖਾਣਹਿ ਜੇਤਡੇ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥ ਤਾ ਮਨੁ ਖੀਵਾ ਜਾਣੀਐ ਜਾ
 ਮਹਲੀ ਪਾਏ ਥਾਉ ॥੨॥ ਨਾਉ ਨੀਝੁ ਚੰਗਿਆਈਆ ਸਤੁ ਪਰਮਲੁ ਤਨਿ ਵਾਸੁ ॥ ਤਾ ਮੁਖੁ ਹੋਵੈ ਉਜਲਾ ਲਖ
 ਦਾਤੀ ਇਕ ਟਾਤਿ ॥ ਦ੍ਰੂਖ ਤਿਸੈ ਪਹਿ ਆਖੀਅਹਿ ਸ੍ਰੂਖ ਜਿਸੈ ਹੀ ਪਾਸਿ ॥੩॥ ਸੋ ਕਿਤ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ਜਾ ਕੇ
 ਜੀਅ ਪਰਾਣ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਣੁ ਸਭੁ ਅਪਵਿਨੁ ਹੈ ਜੇਤਾ ਪੈਨਣੁ ਖਾਣੁ ॥ ਹੋਰਿ ਗਲਾਂ ਸਭਿ ਕੂਡੀਆ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ
 ਪਰਵਾਣੁ ॥੪॥੫॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲੁ ੧ ॥ ਜਾਲਿ ਮੋਹੁ ਘਸਿ ਮਸੁ ਕਰਿ ਮਤਿ ਕਾਗਦੁ ਕਰਿ ਸਾਰੁ ॥ ਭਾਉ ਕਲਮ
 ਕਰਿ ਚਿਤੁ ਲੇਖਾਰੀ ਗੁਰ ਪੁਛਿ ਲਿਖੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਲਿਖੁ ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹ ਲਿਖੁ ਲਿਖੁ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੧॥ ਬਾਬਾ
 ਏਹੁ ਲੇਖਾ ਲਿਖਿ ਜਾਣੁ ॥ ਜਿਥੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਤਿਥੈ ਹੋਇ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਥੈ ਮਿਲਹਿ
 ਕਵਿਆਈਆ ਸਦ ਖੁਸੀਆ ਸਦ ਚਾਉ ॥ ਤਿਨ ਸੁਖਿ ਟਿਕੇ ਨਿਕਲਹਿ ਜਿਨ ਮਨਿ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ
 ਤਾ ਪਾਈਐ ਨਾਹੀ ਗਲੀ ਵਾਤ ਦੁਆਉ ॥੨॥ ਇਕਿ ਆਵਹਿ ਇਕਿ ਜਾਹਿ ਤਠਿ ਰਖੀਅਹਿ ਨਾਵ ਸਲਾਰ ॥ ਇਕਿ
 ਤੁਪਾਏ ਮੰਗਤੇ ਇਕਨਾ ਕਡੇ ਦਰਵਾਰ ॥ ਅਗੈ ਗਇਆ ਜਾਣੀਐ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਵੇਕਾਰ ॥੩॥ ਭੈ ਤੈਰੈ ਢੁ ਅਗਲਾ
 ਖਪਿ ਖਪਿ ਛਿਜੈ ਦੇਹ ॥ ਨਾਵ ਜਿਨਾ ਸੁਲਤਾਨ ਖਾਨ ਹੋਦੇ ਡਿਠੇ ਖੇਹ ॥ ਨਾਨਕ ਤਠੀ ਚਲਿਆ ਸਭਿ ਕੂਡੇ ਤੁਟੇ
 ਨੇਹ ॥੪॥੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਭਿ ਰਸ ਮਿਠੇ ਮੰਨਿਐ ਸੁਣਿਐ ਸਾਲੋਣੇ ॥ ਖਟ ਤੁਰਸੀ ਸੁਖਿ ਬੋਲਣਾ
 ਮਾਰਣ ਨਾਦ ਕੀਏ ॥ ਛਤੀਹ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਾਉ ਏਕੁ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਹੋਰੁ ਖਾਣਾ ਖੁਸੀ
 ਖੁਆਰੁ ॥ ਜਿਤੁ ਖਾਈ ਤਨੁ ਪੀਡੀਐ ਮਨ ਮਹਿ ਚਲਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਰਤਾ ਪੈਨਣੁ ਮਨੁ ਰਤਾ ਸੁਪੇਦੀ
 ਸਤੁ ਦਾਨੁ ॥ ਨੀਲੀ ਸਿਆਹੀ ਕਦਾ ਕਰਣੀ ਪਹਿਰਣੁ ਪੈਰ ਧਿਆਨੁ ॥ ਕਮਰਬੰਦੁ ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਤੇਰਾ
 ਨਾਮੁ ॥੨॥ ਬਾਬਾ ਹੋਰੁ ਪੈਨਣੁ ਖੁਸੀ ਖੁਆਰੁ ॥ ਜਿਤੁ ਪੈਥੈ ਤਨੁ ਪੀਡੀਐ ਮਨ ਮਹਿ ਚਲਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਘੋੜੇ ਪਾਖਰ ਸੁਝਿਨੇ ਸਾਖਤਿ ਬ੍ਰੂਜ਼ਣੁ ਤੇਰੀ ਵਾਟ ॥ ਤਰਕਸ ਤੀਰ ਕਮਾਣ ਸਾਂਗ ਤੇਗਬੰਦ ਗੁਣ ਧਾਤੁ ॥ ਵਾਜਾ
 ਨੇਜਾ ਪਤਿ ਸਿਤ ਪਰਗਟੁ ਕਰਮੁ ਤੇਰਾ ਮੇਰੀ ਜਾਤਿ ॥੩॥ ਬਾਬਾ ਹੋਰੁ ਚਡਣਾ ਖੁਸੀ ਖੁਆਰੁ ॥ ਜਿਤੁ ਚਡਿਐ
 ਤਨੁ ਪੀਡੀਐ ਮਨ ਮਹਿ ਚਲਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਘਰ ਮੰਦਰ ਖੁਸੀ ਨਾਮ ਕੀ ਨਦਰਿ ਤੇਰੀ ਪਰਵਾਰੁ ॥

हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥ नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥४॥
 बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥ जितु सुतै तनु पीड़ीअै मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥४॥७॥
 सिरीरागु महला ੧ ॥ कुंगू की काँडिआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥ अठसठि तीरथ
 का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥ ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥१॥ बाबा होर मति
 होर होर ॥ जे सउ वेर कमाईअै कूड़ै कूड़ा जोरु ॥१॥ रहाउ ॥ पूज लगै पीरु आखीअै सभु मिलै संसारु ॥
 नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥ जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥२॥ जिन कउ सतिगुरि
 थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥ ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥ नाउ पूजीअै नाउ
 मन्नीअै अखंडु सदा सचु सोइ ॥३॥ खेहू खेह रलाईअै ता जीउ केहा होइ ॥ जलीआ सभि सिआणपा
 उठी चलिआ रोइ ॥ नानक नामि विसारिअै दरि गइआ किआ होइ ॥४॥८॥ सिरीरागु महला ੧ ॥
 गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीअै पिर कूरि ॥ ना
 बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईअै पिरु दूरि ॥१॥ मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥ गुरमुखि पूरा जे करे
 पाईअै साचु अतोलु ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥ मोती हीरा निरमला
 कंचन कोट रीसाल ॥ बिनु पउड़ी गड़ि किउ चडउ गुर हरि धिआन निहाल ॥२॥ गुरु पउड़ी बेड़ी
 गुरु गुरु तुलहा हरि नाउ ॥ गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥ जे तिसु भावै ऊजली
 सत सरि नावण जाउ ॥३॥ पूरो पूरो आखीअै पूरै तखति निवास ॥ पूरै थानि सुहावणै पूरै आस
 निरास ॥ नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥४॥६॥ सिरीरागु महला ੧ ॥ आवहु भैण
 गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥ मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ॥ साचे साहिब सभि
 गुण अउगण सभि असाह ॥१॥ करता सभु को तेरै जोरि ॥ एकु सबटु बीचारीअै जा तू ता किआ होरि ॥१॥
 रहाउ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ॥ सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥ पिरु

ਰੀਸਾਲ੍ਹ ਤਾ ਮਿਲੈ ਜਾ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸੁਣੀ ॥੨॥ ਕੇਤੀਆ ਤੇਰੀਆ ਕੁਦਰਤੀ ਕੇਵਡ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ॥ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ
 ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਿਫਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਰੂਪ ਰੰਗ ਕੇਤੇ ਜਾਤਿ ਅਜਾਤਿ ॥੩॥ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਊਪਜੈ
 ਸਚ ਮਹਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥ ਸੁਰਤਿ ਹੋਵੈ ਪਤਿ ਊਗਵੈ ਗੁਰਬਚਨੀ ਭਤ ਖਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਆਪੇ
 ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥੧੦॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਭਲੀ ਸਰੀ ਜਿ ਤਕਰੀ ਹਉਮੈ ਮੁੰਝ ਘਰਾਹੁ ॥ ਢੂਤ ਲਗੇ
 ਫਿਰਿ ਚਾਕਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਵੇਸਾਹੁ ॥ ਕਲਪ ਤਿਆਗੀ ਬਾਦਿ ਹੈ ਸਚਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਭਤ
 ਜਾਇ ॥ ਭੈ ਬਿਨੁ ਨਿਰਭਤ ਕਿਤ ਥੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੇਤਾ ਆਖਣੁ ਆਖੀਐ
 ਆਖਣਿ ਤੋਟਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਮੰਗਣ ਵਾਲੇ ਕੇਤੇਡੇ ਦਾਤਾ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥ ਜਿਸ ਕੇ ਜੀਅ ਪਰਾਣ ਹੈ ਮਨਿ ਵਸਿਐ ਸੁਖੁ
 ਹੋਇ ॥੨॥ ਯਗੁ ਸੁਧਨਾ ਬਾਜੀ ਬਨੀ ਖਿਨ ਮਹਿ ਖੇਲੁ ਖੇਲਾਇ ॥ ਸੰਜੋਗੀ ਮਿਲਿ ਏਕਸੇ ਵਿਜੋਗੀ ਤਠਿ ਜਾਇ ॥
 ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਸੋ ਥੀਐ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਸਤੁ ਵੇਸਾਹੀਐ ਸਚੁ ਵਖਰੁ ਸਚੁ ਰਾਸਿ ॥
 ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਵਣਿਜਿਆ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਵਸਤੁ ਪਛਾਣਸੀ ਸਚੁ ਸਤਦਾ ਜਿਸੁ ਪਾਸਿ ॥੪॥੧੧॥
 ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲੁ ੧ ॥ ਧਾਤੁ ਮਿਲੈ ਫੁਨਿ ਧਾਤੁ ਕਤ ਸਿਫਤੀ ਸਿਫਤਿ ਸਮਾਇ ॥ ਲਾਲੁ ਗੁਲਾਲੁ ਗਹਬਰਾ
 ਸਚਾ ਰੰਗੁ ਚੜਾਤ ॥ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਸੰਤੋਖੀਆ ਹਰਿ ਜਪਿ ਏਕੈ ਭਾਇ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਰੇਣੁ ॥ ਸੰਤ
 ਸਭਾ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਧੇਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਊਚਤ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਣਾ ਊਪਰਿ ਮਹਲੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥
 ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਦੇ ਪਾਈਐ ਦਰੁ ਘਰੁ ਮਹਲੁ ਪਿਆਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਸਮਯਾਈਐ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥੨॥
 ਤੂਬਿਧਿ ਕਰਮ ਕਮਾਈਅਹਿ ਆਸ ਅੰਦੇਸਾ ਹੋਇ ॥ ਕਿਤ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਤੂਕੁਟੀ ਛੁਟਸੀ ਸਹਜਿ ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ
 ਹੋਇ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਮਹਲੁ ਪਛਾਣੀਐ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮਲੁ ਧੋਇ ॥੩॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਕਿਤ ਘਰ
 ਵਾਸੁ ॥ ਏਕੋ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੀਐ ਅਵਰ ਤਿਆਗੈ ਆਸ ॥ ਨਾਨਕ ਦੇਖਿ ਦਿਖਾਈਐ ਹਤ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਸੁ ॥੪॥
 ੧੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਟੋਹਾਗਣੀ ਮੁਠੀ ਢੌਜੈ ਭਾਇ ॥ ਕਲਰ ਕੇਰੀ ਕਂਧ ਜਿਤ ਅਹਿਨਿਸਿ
 ਕਿਰਿ ਢਹਿ ਪਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸੁਖੁ ਨਾ ਥੀਐ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਢੂਖੁ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਸੁਧੇ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਕਿਆ ਸੀਗਾਰੁ ॥

ਦਰਿ ਘਰਿ ਡੋਈ ਨ ਲਹੈ ਦਰਗਹ ਝੂਠੁ ਖੁਆਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪਿ ਸੁਜਾਣੁ ਨ ਭੁਲੈਈ ਸਚਾ ਵਡ ਕਿਰਸਾਣੁ ॥
 ਪਹਿਲਾ ਧਰਤੀ ਸਾਧਿ ਕੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਦੇ ਦਾਣੁ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਤਥਾ ਨਾਮੁ ਏਕੁ ਕਰਮਿ ਪਵੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥ ਗੁਰ
 ਕਤ ਜਾਣਿ ਨ ਜਾਣਈ ਕਿਆ ਤਿਸੁ ਚਜੁ ਅਚਾਰੁ ॥ ਅੰਧੁਲੈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਆਵਣੁ
 ਜਾਣੁ ਨ ਚੁਕੈ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੩॥ ਚੰਦਨੁ ਮੋਲਿ ਅਣਾਇਆ ਕੁੰਗ ਮਾਂਗ ਸੰਧੂਰੁ ॥ ਚੋਆ ਚੰਦਨੁ
 ਬਹੁ ਧਣਾ ਪਾਨਾ ਨਾਲਿ ਕਪੂਰੁ ॥ ਜੇ ਧਨ ਕੰਤਿ ਨ ਭਾਵੈ ਤ ਸਭਿ ਅਡੰਬਰ ਕੂਡੁ ॥੪॥ ਸਭਿ ਰਸ ਭੋਗਣ ਬਾਦਿ
 ਹਹਿ ਸਭਿ ਸੀਗਾਰ ਵਿਕਾਰ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਸਬਦਿ ਨ ਭੇਟੀਐ ਕਿਤ ਸੋਹੈ ਗੁਰਦੁਆਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਧਨੁ ਸੁਹਾਗਣੀ
 ਜਿਨ ਸਹ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥੫॥੧੩॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੁੰਜੀ ਦੇਹ ਡਰਾਵਣੀ ਜਾ ਜੀਤ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
 ਭਾਹਿ ਬਲਮਦੀ ਵਿੜਕੀ ਧੂਤ ਨ ਨਿਕਸਿਐ ਕਾਇ ॥ ਪਂਚੇ ਰੁਨੇ ਦੁਖਿ ਭਰੇ ਬਿਨਸੇ ਦ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ॥੧॥ ਮੂਡੇ ਰਾਮੁ ਜਪਹੁ
 ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮੋਹਣੀ ਸਭ ਸੁਠੀ ਅਛਕਾਰਿ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਦ੍ਰੌਜੀ ਕਾਰੈ
 ਲਗਿ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਲਾਗੇ ਪਚਿ ਸੁਏ ਅੰਤਰਿ ਤ੍ਰਸਨਾ ਆਗਿ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਤਕਰੇ ਹੋਰਿ ਸੁਠੀ ਧੰਧੈ ਠਗਿ ॥੨॥
 ਸੁਈ ਪਰੀਤਿ ਪਿਆਰੁ ਗਇਆ ਸੁਆ ਕੈਰੁ ਵਿਰੋਧੁ ॥ ਧੰਧਾ ਥਕਾ ਹਤ ਸੁਈ ਮਮਤਾ ਮਾਇਆ ਕ੍ਰੋਧੁ ॥ ਕਰਮਿ
 ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਨਿਰੋਧੁ ॥੩॥ ਸਚੀ ਕਾਰੈ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਗੁਰਮਤਿ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥ ਸੋ ਨਰੁ ਜੰਮੈ ਨਾ
 ਮਰੈ ਨਾ ਆਵੈ ਨਾ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਪਰਧਾਨੁ ਸੋ ਦਰਗਹਿ ਪੈਧਾ ਜਾਇ ॥੪॥੧੪॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲ ੧ ॥
 ਤਨੁ ਜਲਿ ਬਲਿ ਮਾਟੀ ਭਇਆ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਮਨੂਰੁ ॥ ਅਤਗਣ ਫਿਰਿ ਲਾਗੂ ਭਏ ਕੂਰਿ ਵਜਾਵੈ ਤੂਰੁ ॥
 ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਭਰਮਾਈਐ ਦੁਬਿਧਾ ਡੋਬੇ ਪੂਰੁ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਸਬਦਿ ਤਰਹੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਨਾਮੁ ਨ ਕੁਝਿਆ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਨੁ ਸੂਚਾ ਸੋ ਆਖੀਐ ਜਿਸੁ ਮਹਿ ਸਾਚਾ
 ਨਾਤ ॥ ਭੈ ਸਚਿ ਰਾਤੀ ਦੇਹੁਰੀ ਜਿਹਵਾ ਸਚੁ ਸੁਆਤ ॥ ਸਚੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀਐ ਬਹੁਡਿ ਨ ਪਾਵੈ ਤਾਤ ॥
 ੨॥ ਸਾਚੇ ਤੇ ਪਕਨਾ ਭਇਆ ਪਕਨੈ ਤੇ ਜਲੁ ਹੋਇ ॥ ਜਲ ਤੇ ਤ੃ਭਵਣੁ ਸਾਜਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਸਮੋਇ ॥
 ਨਿਰਮਲੁ ਮੈਲਾ ਨਾ ਥੀਐ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥੩॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਾਚਿ ਸੰਤੋਖਿਆ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਮਾਹਿ ॥

ਪਂਚ ਭੂਤ ਸਚਿ ਐ ਰਤੇ ਜੋਤਿ ਸਚੀ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਅਤਗਣ ਵੀਸਰੇ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਪਤਿ ਤਾਹਿ ॥੪॥੧੫॥
 ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਬੇਡੀ ਸਚ ਕੀ ਤਰੀਐ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਇਕਿ ਆਵਹਿ ਇਕਿ ਜਾਵਹੀ ਪ੍ਰੂਰਿ
 ਭਰੇ ਅਛਕਾਰਿ ॥ ਮਨਹਠਿ ਮਤੀ ਬ੍ਰੂਡੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਸੁ ਤਾਰਿ ॥੧॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਤਰੀਐ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
 ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖੁ ਤੂ ਮੈ ਅਕਰੁ ਨ ਦ੍ਰੂਜਾ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਗੈ ਦੇਖਤ ਡਤ ਜਲੈ ਪਾਛੈ ਹਰਿਆਂ ਅੰਗੂਰੁ ॥
 ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਯੈ ਤਿਸ ਤੇ ਬਿਨਸੈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਚੁ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਹੀ ਸਾਚੈ ਮਹਲਿ ਹਫੂਰਿ ॥੨॥
 ਸਾਹਿ ਸਾਹਿ ਤੁੜ੍ਹੁ ਸੰਮਲਾ ਕਦੇ ਨ ਵਿਸਾਰੇਤ ॥ ਜਿਤ ਜਿਤ ਸਾਹਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੇਤ ॥ ਮਨੁ
 ਤਨੁ ਤੇਰਾ ਤੂ ਧਣੀ ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰਿ ਸਮੇਤ ॥੩॥ ਜਿਨਿ ਏਹੁ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਆ ਤ੃ਭਵਣੁ ਕਰਿ ਆਕਾਰੁ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਾਨਣੁ ਜਾਣੀਐ ਮਨਮੁਖਿ ਮੁਗਥੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਨਿਰਂਤਰੀ ਬ੍ਰੂੜੈ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਰੁ ॥੪॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਜਾਣਿਆ ਤਿਨ ਕੀਚੈ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਲਿ ਮਿਲੇ ਸਚੇ ਗੁਣ ਪਰਗਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ
 ਸਾਂਤੋਖੀਆ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਿ ॥੫॥੧੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਮਿਤ ਪਿਆਰਿਆ ਮਿਲੁ
 ਕੇਲਾ ਹੈ ਏਹ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਜੋਬਨਿ ਸਾਸੁ ਹੈ ਤਬ ਲਗੁ ਇਹੁ ਤਨੁ ਦੇਹ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੰਈ ਢਹਿ ਢੇਰੀ
 ਤਨੁ ਖੇਹ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਲੈ ਲਾਹਾ ਘਰਿ ਜਾਹਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੀਐ ਹਤਮੈ ਨਿਵਰੀ ਭਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਗੰਢਣੁ ਗੰਢੀਐ ਲਿਖਿ ਪਡਿ ਬੁੜਾਹਿ ਭਾਰੁ ॥ ਤ੃ਸਨਾ ਅਹਿਨਿਸਿ ਅਗਲੀ ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ ਵਿਕਾਰੁ ॥
 ਓਹੁ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਅਤੋਲਵਾ ਗੁਰਮਤਿ ਕੀਮਤਿ ਸਾਰੁ ॥੨॥ ਲਖ ਸਿਆਣਪ ਜੇ ਕਰੀ ਲਖ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਿਲਾਪੁ ॥
 ਬਿਨੁ ਸਾਂਗਤਿ ਸਾਧ ਨ ਧਾਪੀਆ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਦ੍ਰੂਖ ਸਾਂਤਾਪੁ ॥ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜੀਅਰੇ ਛੁਟੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚੀਨੈ
 ਆਪੁ ॥੩॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਗੁਰ ਪਹਿ ਕੇਚਿਆ ਮਨੁ ਦੀਆ ਸਿਰੁ ਨਾਲਿ ॥ ਤ੃ਭਵਣੁ ਖੋਜਿ ਢੰਡੋਲਿਆ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥ ਸਤਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਲਿ ॥੪॥੧੭॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਰਣੈ ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਨਹੀ ਜੀਵਣ ਕੀ ਨਹੀ ਆਸ ॥ ਤੂ ਸਰਬ ਜੀਆ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਹੀ ਲੇਖੈ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸ ॥
 ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੂ ਵਸਹਿ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥੧॥ ਜੀਅਰੇ ਰਾਮ ਜਪਤ ਮਨੁ ਮਾਨੁ ॥ ਅੰਤਰਿ

ਲਾਗੀ ਜਲਿ ਬੁਝੀ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਤਰ ਕੀ ਗਤਿ ਜਾਣੀਐ ਗੁਰ ਮਿਲੀਐ ਸੰਕ
 ਤਾਰਿ ॥ ਮੁਇਆ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਜਾਈਐ ਤਿਤੁ ਜੀਵਦਿਆ ਮਰੁ ਮਾਰਿ ॥ ਅਨਹਦ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣੇ ਪਾਈਐ
 ਗੁਰ ਕੀਚਾਰਿ ॥੨॥ ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ਪਾਈਐ ਤਹ ਹਤਮੈ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸੁ ॥ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਆਪਣਾ ਹਤ ਸਦ
 ਕੁਰਬਾਣੈ ਤਾਸੁ ॥ ਖੱਡਿ ਦਰਗਹ ਪੈਨਾਈਐ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੁ ॥੩॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਵਿ ਰਹੇ ਸਿਵ ਸਕਤੀ
 ਕਾ ਮੇਲੁ ॥ ਤੂਹੁ ਗੁਣ ਬੰਧੀ ਦੇਹੁਰੀ ਜੋ ਆਇਆ ਜਗਿ ਸੋ ਖੇਲੁ ॥ ਵਿਜੋਗੀ ਦੁਖਿ ਵਿਛੁਡੇ ਮਨਮੁਖਿ ਲਹਹਿ ਨ
 ਮੇਲੁ ॥੪॥ ਮਨੁ ਕੈਰਾਗੀ ਘਰਿ ਵਸੈ ਸਚ ਭੈ ਰਾਤਾ ਹੋਇ ॥ ਗਿਆਨ ਮਹਾਰਸੁ ਭੋਗਵੈ ਬਾਹੁਡਿ ਭੂਖ ਨ ਹੋਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਾਰਿ ਮਿਲੁ ਭੀ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਨ ਹੋਇ ॥੫॥੧੮॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਏਹੁ ਮਨੋ ਮੂਰਖੁ
 ਲੋਭੀਆ ਲੋਭੇ ਲਗ ਲੁਭਾਨੁ ॥ ਸਬਦਿ ਨ ਭੀਜੈ ਸਾਕਤਾ ਦੁਰਮਤਿ ਆਵਨੁ ਜਾਨੁ ॥ ਸਾਧੂ ਸਤਗੁਰੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤਾ
 ਪਾਈਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਹਤਮੈ ਛੋਡਿ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਸਰਵਰੁ ਸੇਵਿ ਤੂ ਪਾਵਹਿ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਾਨੁ ॥ ਸਭਿ ਸੁਖ ਹਰਿ ਰਸ ਭੋਗਣੇ ਸਤਿ ਸਭਾ
 ਮਿਲਿ ਗਿਆਨੁ ॥ ਨਿਤਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਿਆ ਸਤਗੁਰਿ ਟੀਆ ਨਾਮੁ ॥੨॥ ਕੂਕਰ ਕੂਡੂ ਕਮਾਈਐ
 ਗੁਰ ਨਿੰਦਾ ਪਚੈ ਪਚਾਨੁ ॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਦੁਖੁ ਘਣੋ ਜਮੁ ਮਾਰਿ ਕਰੈ ਖੁਲਹਾਨੁ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸੁਖੁ ਸੁਭਾਨੁ ॥੩॥ ਐਥੈ ਧਿੰਧੁ ਪਿਟਾਈਐ ਸਚੁ ਲਿਖਤੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਗੁਰੁ ਸੇਵਦਾ ਗੁਰ ਕਰਣੀ ਪਰਧਾਨੁ
 ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਕਰਮਿ ਸਚੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥੪॥੧੯॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਪਿਆਰਾ
 ਵੀਸਰੈ ਰੋਗੁ ਵਡਾ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਕਿਤ ਦਰਗਹ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ਜਾ ਹਰਿ ਨ ਵਸੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ
 ਪਾਈਐ ਅਗਨਿ ਮਰੈ ਗੁਣ ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥ ਜਿਨ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ
 ਤੇ ਜਨ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈਐ ਸੁਰਤੀ ਸੁਰਤਿ ਸੰਜੋਗੁ ॥ ਛਿਸਾ ਹਤਮੈ ਗਤੁ ਗਏ
 ਨਾਹੀ ਸਹਸਾ ਸੋਗੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਿਸੁ ਮੇਲੇ ਗੁਰੁ ਸੰਜੋਗੁ ॥੨॥ ਕਾਇਆ ਕਾਮਣਿ ਜੇ
 ਕਰੀ ਭੋਗੇ ਭੋਗਣਹਾਰੁ ॥ ਤਿਸੁ ਸਿਤ ਨੇਹੁ ਨ ਕੀਜਈ ਜੋ ਟੀਸੈ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਖਹਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਸੋ

ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਜ ਭਤਾਰੁ ॥੩॥ ਚਾਰੇ ਅਗਨਿ ਨਿਵਾਰਿ ਮਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਜਲੁ ਪਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਭਰਿਆ ਅਧਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਗੁਰੁ ਮੀਤੁ ਕਰਿ ਸਚੁ ਪਾਵਹਿ ਦਰਗਹ ਜਾਇ ॥੪॥੨੦॥
 ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਹੁ ਪਿਆਰਿਆ ਗੁਰਮਤਿ ਲੇ ਹਰਿ ਬੋਲਿ ॥ ਮਨੁ ਸਚ ਕਸਕਟੀ ਲਾਈਐ
 ਤੁਲੀਐ ਪ੍ਰੈ ਤੋਲਿ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਐ ਰਿਦ ਮਾਣਕ ਮੋਲਿ ਅਮੋਲਿ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਹਰਿ ਹੀਰਾ ਗੁਰ ਮਾਹਿ ॥
 ਸਤਸਙਗਤਿ ਸਤਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਅਹਿਨਿਸਿ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਚੁ ਵਖਰੁ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਲੈ ਪਾਈਐ
 ਗੁਰ ਪਰਗਾਸਿ ॥ ਜਿਤ ਅਗਨਿ ਮੈ ਜਲਿ ਪਾਇਐ ਤਿਤ ਤੂਸਨਾ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਿ ॥ ਜਮ ਜੰਦਾਰੁ ਨ ਲਗਈ ਝਿਉ
 ਭਉਜਲੁ ਤਰੈ ਤਰਾਸਿ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੂੰਡੁ ਨ ਭਾਵੈ ਸਚਿ ਰਤੇ ਸਚ ਭਾਇ ॥ ਸਾਕਤ ਸਚੁ ਨ ਭਾਵੈ ਕੂੰਡੈ
 ਕੂੰਡੀ ਪਾਂਇ ॥ ਸਚਿ ਰਤੇ ਗੁਰਿ ਮੇਲਿਐ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਮਨ ਮਹਿ ਮਾਣਕੁ ਲਾਲੁ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ
 ਪਦਾਰਥੁ ਹੀਰੁ ॥ ਸਚੁ ਵਖਰੁ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਦਿਇਆ
 ਕਰੇ ਹਰਿ ਹੀਰੁ ॥੪॥੨੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਭਰਮੇ ਭਾਹਿ ਨ ਵਿਝਵੈ ਜੇ ਭਵੈ ਦਿਸ਼ਤਰ ਦੇਸੁ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਧਿਗੁ ਵੇਸੁ ॥ ਛੋਰੁ ਕਿਤੈ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਉਪਦੇਸ ॥੧॥ ਮਨ
 ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਗਨਿ ਨਿਵਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਕਹਿਆ ਮਨਿ ਕਸੈ ਹਤਮੈ ਤੂਸਨਾ ਮਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨੁ ਮਾਣਕੁ
 ਨਿਰਮੋਲੁ ਹੈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਸਙਗਤਿ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਆਪੁ
 ਗਇਆ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿ ਸਲਲੈ ਸਲਲ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੁ ਅਤਗੁਣਿ
 ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਜਿਸੁ ਸਤਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨ ਭੇਟਿਓ ਸੁ ਭਉਜਲਿ ਪਚੈ ਪਚਾਇ ॥ ਝਿਹੁ ਮਾਣਕੁ ਜੀਤ ਨਿਰਮੋਲੁ ਹੈ
 ਝਿਉ ਕਤਡੀ ਬਦਲੈ ਜਾਇ ॥੩॥ ਜਿਨਾ ਸਤਗੁਰੁ ਰਸਿ ਮਿਲੈ ਸੇ ਪ੍ਰੈ ਪੁਰਖ ਸੁਜਾਣ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਭਉਜਲੁ
 ਲਘੀਐ ਦਰਗਹ ਪਤਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥੪॥੨੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਵਣਜੁ ਕਰਹੁ ਵਣਜਾਰਿਹੋ ਵਖਰੁ ਲੇਹੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਤੈਸੀ ਵਸਤੁ ਵਿਸਾਹੀਐ ਜੈਸੀ ਨਿਬਹੈ ਨਾਲਿ ॥
 ਅਗੈ ਸਾਹੁ ਸੁਜਾਣੁ ਹੈ ਲੈਸੀ ਵਸਤੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਰਾਮੁ ਕਹਹੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਵਖਰੁ ਲੈ ਚਲਹੁ

सहु देखै पतीआइ ॥੧॥ रहाउ ॥ जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥ खोटै वणजि वणंजिअै मनु
 तनु खोटा होइ ॥ फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥੨॥ खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर
 दरसु न होइ ॥ खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥ खोटे खोटु कमावणा आइ गडिआ पति खोइ
 ॥੩॥ नानक मनु समझाईअै गुर कै सबदि सालाह ॥ राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥
 हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥੪॥੨੩॥ सिरीरागु महला ੧ ਘਰੁ ੨ ॥ धਨु जोबनु
 अ鲁 फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥ पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुंमणहार ॥੧॥ रंगु माणि लै
 पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥ दिन थोड़डे थके भडिआ पुराणा चोला ॥੧॥ रहाउ ॥ सजण मेरे रंगुले
 जाइ सुते जीराणि ॥ ह्य भी वंजा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥੨॥ की न सुणेही गोरीए आपण कन्नी
 सोइ ॥ लगी आवहि साहुरै नित न पेर्ईआ होइ ॥੩॥ नानक सुती पेर्ईअै जाणु विरती संनि ॥
 गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥੪॥੨੪॥ सिरीरागु महला ੧ ਘਰੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ੨ ॥ आਪे
 रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥ आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥੧॥ रंगि रता मेरा साहिबु
 रवि रहिआ भरपूरि ॥੧॥ रहाउ ॥ आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥ आपे जाल मणकड़ा आपे
 अंदरि लालु ॥੨॥ आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥ नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु
 ॥੩॥ प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू ह्यसु ॥ कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥੪॥੨੫॥
 सिरीरागु महला ੧ ਘਰੁ ੩ ॥ इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ॥ मनु
 किरसाणु हरि रिटै जंमाइ लै इउ पावसि पटु निरबाणी ॥੧॥ काहे गरबसि मूड़े माइआ ॥ पित सुतो
 सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइआ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिकार दुसਟ किरखा करे इਨ तजि
 आतमै होइ धिआई ॥ जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगਸै मधु आਸ्रमाई ॥੨॥ बीस सपताहरो
 बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ॥ दਸ अठार मै अपरंपरो चीनै कहै नानकु इਵ एकु तारै ॥

੩॥੨੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩ ॥ ਅਮਲੁ ਕਰਿ ਧਰਤੀ ਬੀਜੁ ਸਬਦੋ ਕਰਿ ਸਚ ਕੀ ਆਬ ਨਿਤ ਦੇਹਿ
ਪਾਣੀ ॥ ਹੋਇ ਕਿਰਸਾਣੁ ਈਮਾਨੁ ਜੰਮਾਇ ਲੈ ਭਿਸਤੁ ਦੋਜਕੁ ਮੂੜੇ ਏਵ ਜਾਣੀ ॥੧॥ ਮਤੁ ਜਾਣ ਸਹਿ ਗਲੀ ਪਾਇਆ
॥ ਮਾਲ ਕੈ ਮਾਣੈ ਰੂਪ ਕੀ ਸੋਭਾ ਇਤੁ ਬਿਧੀ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਐਥੈ ਤਨਿ ਚਿਕੜ੍ਹੇ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮੀਡਕੋ
ਕਮਲ ਕੀ ਸਾਰ ਨਹੀ ਮੂਲਿ ਪਾਈ ॥ ਭਤੁ ਤਸਤਾਦੁ ਨਿਤ ਭਾਖਿਆ ਬੋਲੇ ਕਿਤ ਬ੍ਰੂੜੈ ਜਾ ਨਹ ਬੁੜਾਈ ॥੨॥
ਆਖਣੁ ਸੁਨਣਾ ਪਤਣ ਕੀ ਬਾਣੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਤਾ ਮਾਇਆ ॥ ਖਸਮ ਕੀ ਨਦਰਿ ਦਿਲਹਿ ਪਸਿੰਦੇ ਜਿਨੀ ਕਰਿ
ਏਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥੩॥ ਤੀਹ ਕਰਿ ਰਖੇ ਪੰਜ ਕਰਿ ਸਾਥੀ ਨਾਉ ਸੈਤਾਨੁ ਮਤੁ ਕਟਿ ਜਾਈ ॥ ਨਾਨਕੁ ਆਖੈ ਰਾਹਿ
ਪੈ ਚਲਣਾ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ਕਿਤ ਕ੍ਰਿ ਸੰਜਿਆਹੀ ॥੪॥੨੭॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥ ਸੋਈ ਮਤਲਾ ਜਿਨਿ
ਯਗੁ ਮਤਲਿਆ ਹਰਿਆ ਕੀਆ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਆਬ ਖਾਕੁ ਜਿਨਿ ਬੰਧਿ ਰਹਾਈ ਧਨੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥੧॥ ਮਰਣਾ
ਮੁਲਾ ਮਰਣਾ ॥ ਭੀ ਕਰਤਾਰਹੁ ਡਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਾ ਤੂ ਮੁਲਾ ਤਾ ਤੂ ਕਾਜੀ ਜਾਣਹਿ ਨਾਮੁ ਖੁਦਾਈ ॥ ਜੇ
ਬਹੁਤੇਰਾ ਪਡਿਆ ਹੋਵਹਿ ਕੋ ਰਹੈ ਨ ਭਰੀਐ ਪਾਈ ॥੨॥ ਸੋਈ ਕਾਜੀ ਜਿਨਿ ਆਪੁ ਤਜਿਆ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਕੀਆ
ਆਧਾਰੇ ॥ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਜਾਇ ਨ ਜਾਸੀ ਸਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥੩॥ ਪੰਜ ਕਖਤ ਨਿਵਾਜ ਗੁਜਾਰਹਿ ਪੜਹਿ ਕਤੇਬ
ਕੁਰਾਣਾ ॥ ਨਾਨਕੁ ਆਖੈ ਗੋਰ ਸਦੰਈ ਰਹਿਆਂ ਪੀਣਾ ਖਾਣਾ ॥੪॥੨੮॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥
ਏਕੁ ਸੁਆਨੁ ਢੁਇ ਸੁਆਨੀ ਨਾਲਿ ॥ ਭਲਕੇ ਭਤਕਹਿ ਸਦਾ ਬਿਇਆਲਿ ॥ ਕੂੜੁ ਛੁਰਾ ਮੁਠਾ ਮੁਰਦਾਰੁ ॥ ਧਾਣਕ
ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੧॥ ਮੈ ਪਤਿ ਕੀ ਪੰਦਿ ਨ ਕਰਣੀ ਕੀ ਕਾਰ ॥ ਹਤ ਬਿਗੜੈ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਬਿਕਰਾਲ ॥
ਤੇਰਾ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਤਾਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਮੈ ਏਹਾ ਆਸ ਏਹੋ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੁਖਿ ਨਿੰਦਾ ਆਖਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਪਰ
ਘਰੁ ਜੋਹੀ ਨੀਚ ਸਨਾਤਿ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਤਨਿ ਵਸਹਿ ਚੰਡਾਲ ॥ ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੨॥ ਫਾਹੀ ਸੁਰਤਿ
ਮਲੂਕੀ ਕੇਸੁ ॥ ਹਤ ਠਗਵਾੜਾ ਠਗੀ ਦੇਸੁ ॥ ਖਰਾ ਸਿਆਣਾ ਬਹੁਤਾ ਭਾਰੁ ॥ ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੩॥ ਮੈ
ਕੀਤਾ ਨ ਜਾਤਾ ਹਰਾਮਖੋਰੁ ॥ ਹਤ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸਾ ਢੁਸਟੁ ਚੋਰੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ
ਕਰਤਾਰ ॥੪॥੨੯॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥ ਏਕਾ ਸੁਰਤਿ ਜੇਤੇ ਹੈ ਜੀਅ ॥ ਸੁਰਤਿ ਵਿਝੂਣਾ ਕੋਇ ਨ ਕੀਅ ॥

ਜੇਹੀ ਸੁਰਤਿ ਤੇਹਾ ਤਿਨ ਰਾਹੁ ॥ ਲੇਖਾ ਇਕੋ ਆਵਹੁ ਜਾਹੁ ॥੧॥ ਕਾਹੇ ਜੀਅ ਕਰਹਿ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਲੇਵੈ ਦੇਵੈ ਫਿਲ ਨ
 ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੇਰੇ ਜੀਅ ਜੀਆ ਕਾ ਤੋਹਿ ॥ ਕਿਤ ਕਤ ਸਾਹਿਬ ਆਵਹਿ ਰੋਹਿ ॥ ਜੇ ਤੂ ਸਾਹਿਬ ਆਵਹਿ ਰੋਹਿ ॥
 ਤੂ ਓਨਾ ਕਾ ਤੇਰੇ ਓਹਿ ॥੨॥ ਅਸੀ ਬੋਲਵਿਗਾੜ ਵਿਗਾੜਹ ਬੋਲ ॥ ਤੂ ਨਦਰੀ ਅੰਦਰਿ ਤੋਲਹਿ ਤੋਲ ॥ ਜਹ
 ਕਰਣੀ ਤਹ ਪ੍ਰੀ ਮਤਿ ॥ ਕਰਣੀ ਬਾੜਹੁ ਘਟੇ ਘਟਿ ॥੩॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਗਿਆਨੀ ਕੈਸਾ ਹੋਇ ॥ ਆਪੁ
 ਪਛਾਣੈ ਬੂੜੈ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਸੋ ਗਿਆਨੀ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਣੁ ॥੪॥੩੦॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ
 ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥ ਤੂ ਦਰੀਆਤ ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਮੈ ਮਛੁਲੀ ਕੈਸੇ ਅੰਤੁ ਲਹਾ ॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਤਹ ਤੂ ਹੈ
 ਤੁੜ੍ਹ ਤੇ ਨਿਕਸੀ ਫੂਟਿ ਮਰਾ ॥੧॥ ਨ ਜਾਣਾ ਮੇਤ ਨ ਜਾਣਾ ਜਾਲੀ ॥ ਜਾ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਤਾ ਤੁੜ੍ਹੈ ਸਮਾਲੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਤੂ ਭਰਪੂਰਿ ਜਾਨਿਆ ਮੈ ਫੂਰਿ ॥ ਜੋ ਕਛੁ ਕਰੀ ਸੁ ਤੈਰੈ ਹਫੂਰਿ ॥ ਤੂ ਦੇਖਹਿ ਹਤ ਮੁਕਰਿ ਪਾਤ ॥ ਤੈਰੈ ਕੰਮਿ
 ਨ ਤੈਰੈ ਨਾਇ ॥੨॥ ਜੇਤਾ ਦੇਹਿ ਤੇਤਾ ਹਤ ਖਾਤ ॥ ਬਿਆ ਦਰੁ ਨਾਹੀ ਕੈ ਦਰਿ ਜਾਤ ॥ ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਹੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥
 ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੈਰੈ ਪਾਸਿ ॥੩॥ ਆਪੇ ਨੇੜੇ ਫੂਰਿ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪੇ ਮੰਝਿ ਮਿਆਨੁੰ ॥ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਸੁਣੇ ਆਪੇ ਹੀ
 ਕੁਦਰਤਿ ਕਰੇ ਜਹਾਨੁੰ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਹੁਕਮੁ ਸੋਈ ਪਰਵਾਨੁੰ ॥੪॥੩੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥
 ਕੀਤਾ ਕਹਾ ਕਰੇ ਮਨਿ ਮਾਨੁ ॥ ਦੇਵਣਹਾਰੇ ਕੈ ਹਥਿ ਦਾਨੁ ॥ ਭਾਵੈ ਦੇਇ ਨ ਦੇਈ ਸੋਇ ॥ ਕੀਤੇ ਕੈ ਕਹਿਐ ਕਿਆ
 ਹੋਇ ॥੧॥ ਆਪੇ ਸਚੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਸਚੁ ॥ ਅੰਧਾ ਕਚਾ ਕਚੁ ਨਿਕਚੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕੈ ਰੁਖ ਬਿਰਖ ਆਰਾਤ ॥
 ਜੇਹੀ ਧਾਤੁ ਤੇਹਾ ਤਿਨ ਨਾਤ ॥ ਫੁਲੁ ਭਾਤ ਫਲੁ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇ ॥ ਆਪਿ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਇ ॥੨॥ ਕਚੀ ਕੰਧ
 ਕਚਾ ਵਿਚਿ ਰਾਜੁ ॥ ਮਤਿ ਅਲੂਣੀ ਫਿਕਾ ਸਾਟੁ ॥ ਨਾਨਕ ਆਣੇ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਾਹੀ ਸਾਬਾਸਿ ॥
 ੩॥੩੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੫ ॥ ਅਛਲ ਛਲਾਈ ਨਹ ਛਲੈ ਨਹ ਘਾਤ ਕਟਾਰਾ ਕਰਿ ਸਕੈ ॥ ਜਿਤ
 ਸਾਹਿਬੁ ਰਾਖੈ ਤਿਤ ਰਹੈ ਇਸੁ ਲੋਭੀ ਕਾ ਜੀਤ ਟਲ ਪਲੈ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਤੇਲ ਦੀਵਾ ਕਿਤ ਜਲੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਪੋਥੀ ਪੁਰਾਣ ਕਮਾਈਐ ॥ ਭਤ ਕਟੀ ਇਤੁ ਤਨਿ ਪਾਈਐ ॥ ਸਚੁ ਬੂੜਾਣੁ ਆਣਿ ਜਲਾਈਐ ॥੨॥ ਇਹੁ ਤੇਲੁ
 ਦੀਵਾ ਇਤ ਜਲੈ ॥ ਕਰਿ ਚਾਨਣੁ ਸਾਹਿਬ ਤਤ ਮਿਲੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਤੁ ਤਨਿ ਲਾਗੈ ਬਾਣੀਆ ॥ ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ਸੇਵ

ਕਮਾਣੀਆ ॥ ਸਭ ਦੁਨੀਆ ਆਵਣ ਜਾਣੀਆ ॥੩॥ ਵਿਚਿ ਦੁਨੀਆ ਸੇਵ ਕਮਾਈਐ ॥ ਤਾ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣੁ
ਪਾਈਐ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬਾਹ ਲੁਡਾਈਐ ॥੪॥੩੩॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੀ ਆਪਣਾ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕ ਚਿਤਿ ਭਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ

ਮਨ ਕਾਮਨਾ ਤੀਰਥੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਵਰੁ ਪਾਵਣਾ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥ ਨਾਉ
ਧਿਆਈਐ ਨਾਉ ਮੰਗੀਐ ਨਾਮੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ਤਿਖ ਜਾਇ ॥ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਚਾਖਿਆ ਸਹਜੇ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨੀ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਅੰਤਰਿ
ਹਰਿ ਰਸੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਚੂਕਾ ਮਨਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਹਿਰਦੈ ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ਲਾਗਾ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥ ਮਨੁ
ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪਾਇਆ ਦਰਗਹਿ ਮਾਨੁ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਤੇ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥
ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮਾਰਿ ਕੈ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨਾ ਨਾਮੇ ਲਗਾ ਪਿਆਰੁ ॥
ਸੇਈ ਸੁਖੀਏ ਚਹੁ ਜੁਗੀ ਜਿਨਾ ਨਾਮੁ ਅਖੁਟੁ ਅਪਾਰੁ ॥੩॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਚੂਕੈ ਮੋਹ ਪਿਆਸ ॥ ਹਰਿ
ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਘਰ ਹੀ ਮਾਹਿ ਤਦਾਸੁ ॥ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਕਾ ਸਾਦੁ ਆਇਆ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਸੁ ॥
ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥੪॥੧॥੩੪॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਕਹੁ ਭੇਖ ਕਰਿ ਭਰਮਾਈਐ
ਮਨਿ ਹਿਰਦੈ ਕਪਟੁ ਕਮਾਇ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਰੰ ਮਰਿ ਵਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਗ੍ਰਹ ਹੀ
ਮਾਹਿ ਤਦਾਸੁ ॥ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਕਰਣੀ ਸੋ ਕਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਨੁ
ਜੀਤਿਆ ਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਘਰੈ ਮਹਿ ਪਾਇ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥ ਜੇ
ਲਖ ਇਸਤਰੀਆ ਭੋਗ ਕਰਹਿ ਨਵ ਖੰਡ ਰਾਜੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਰੰ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਹਿ
॥੩॥ ਹਰਿ ਹਾਰੁ ਕਂਠਿ ਜਿਨੀ ਪਹਿਰਿਆ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਤਿਨਾ ਪਿਛੈ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਫਿਰੈ ਓਨਾ
ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੪॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਜੀਵੈ ਨਾਮੁ ਲੈ ਹਰਿ ਦੇਵਹੁ

सहजि सुभाइ ॥५॥२॥३५॥ सिरीरागु महला ३ घरु ੧ ॥ जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ
 ॥ गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ॥ अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ॥ सचि मिले
 से न विछुड़हि तिन निज घरि वासा होइ ॥१॥ मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतगुरु सचु
 प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥१॥ रहाउ ॥ सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए
 मिलाइ ॥ दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥ सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ॥
 जिस नउ आपि दिआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥२॥ पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि
 बीचारु ॥ मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥ लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ
 खुआरु ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥ सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु
 गवाइ ॥ सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥ पारसि परसिअै पारसु होइ जोती जोति
 समाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥४॥ मन भुखा भुखा मत करहि मत
 तू करहि पूकार ॥ लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥ निरभउ सदा दिआलु है सभना
 करदा सार ॥ नानक गुरमुखि बुझीअै पाईअै मोख दुआरु ॥५॥३॥३६॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनि
 सुणि कै मनिआ तिना निज घरि वासु ॥ गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥ सबदि रते
 से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥ हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥१॥ मन मेरे
 हरि हरि निरमलु धिआइ ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ॥१॥
 रहाउ ॥ हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥ गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि
 सदा हदूरि ॥ जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥ मनमुख गुण तै बाहरे बिनु
 नावै मरदे झूरि ॥२॥ जिन सबदि गुरु सुणि मनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥ अनदिनु
 भगती रतिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ कूड़ा रंगु कसुंभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥ जिसु अंदरि नाम

प्रगासु है ओहु सदा सदा थिरु होइ ॥३॥ इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरि नामु न चेतै लिव लाइ ॥
 पगि खिसिअै रहणा नही आगै ठउरु न पाइ ॥ ओह वेला हथि न आवई अंति गडिआ पछुताइ ॥
 जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ॥४॥ देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ॥ जिन
 गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥ हरि गुण गावहि हरि नित पड़हि हरि गुण गाइ
 समाइ ॥ नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ॥५॥४॥३७॥ सिरीरागु महला ३
 ॥ जिनी इक मनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥
 ओइ अंमृतु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ॥१॥ भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ ॥ हरि
 हरि सदा धिआईअै मलु हउमै कढै धोइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति
 जाइ ॥ सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ ॥ विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि
 समाइ ॥२॥ तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ ॥ कुलु उधारहि आपणा धन्नु जणेदी
 माइ ॥ हरि हरि नामु धिआईअै जिस नउ किरपा करे रजाइ ॥३॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ
 विचहु आपु गवाइ ॥ ओइ अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ॥ नानक आए से परवाणु
 हहि जिन गुरमती हरि धिआइ ॥४॥५॥३८॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हरि भगता हरि धनु
 रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥ हरि नामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरि नामु अधारु ॥ गुरि
 पूरै हरि नामु दृड़ाइआ हरि भगता अतुटु भंडारु ॥१॥ भाई रे इसु मन कउ समझाइ ॥ ए मन
 आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि भगति हरि का पिआरु है जे
 गुरमुखि करे बीचारु ॥ पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥ सो जनु रलाइआ ना रलै
 जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥२॥ सो सेवकु हरि आखीअै जो हरि राखै उरि धारि ॥ मनु तनु सउपे आगै
 धरे हउमै विचहु मारि ॥ धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न आवै हारि ॥३॥ करमि मिलै ता

ਪਾਈਐ ਵਿਣੁ ਕਰਮੈ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਤਰਸਦੇ ਜਿਸੁ ਮੇਲੇ ਸੋ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਆਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੬॥੩੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥ ਅੰਦਰੁ ਰਚੈ ਹਰਿ
 ਸਚ ਸਿਤ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਜਗੁ ਦੁਖੀਆ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਸੁਖੁ ਲਹਹਿ
 ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਚੇ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੀਐ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਪ੍ਰਚੰਡੁ ਬਲਾਇਆ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਜਾਇ
 ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੇ ਮਲੁ ਭਰੇ ਹਉਮੈ ਤੂਸਨਾ ਵਿਕਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਮੈਲੁ ਨ ਤਤੈ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਹੋਇ
 ਖੁਆਰੁ ॥ ਧਾਤੁਰ ਬਾਜੀ ਪਲਚਿ ਰਹੇ ਨਾ ਤੁਰਵਾਰੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮੀ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ
 ਧਿਆਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ
 ਆਧਾਰੁ ॥੪॥੭॥੪੦॥ ਸ਼੍ਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪਿਆ ਬੈਰਾਗੁ ਤਦਾਸੀ ਨ ਹੋਇ ॥
 ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨੈ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਹਰਿ ਦਰਗਹਿ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥ ਹਉਮੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਈਐ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥
 ਮੇਰੇ ਮਨ ਅਹਿਨਿਸਿ ਪੂਰਿ ਰਹੀ ਨਿਤ ਆਸਾ ॥ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਮੋਹੁ ਪਰਜਲੈ ਘਰ ਹੀ ਮਾਹਿ ਤਦਾਸਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਬਿਗਸੈ ਹਰਿ ਬੈਰਾਗੁ ਅਨਨਦੁ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਉਮੈ
 ਮਾਰਿ ਨਿਚੰਦੁ ॥ ਕਡੈ ਭਾਗਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਹਜਿ ਅਨਨਦੁ ॥੨॥ ਸੋ ਸਾਧੂ ਬੈਰਾਗੀ ਸੋਈ
 ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲਾਗਿ ਨ ਤਾਮਸੁ ਮੂਲੇ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਤਗੁਰੁ
 ਦਿਖਾਲਿਆ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਆ ਅਘਾਏ ॥੩॥ ਜਿਨਿ ਕਿਨੈ ਪਾਇਆ ਸਾਧਸੰਗਤੀ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਬੈਰਾਗਿ ॥ ਮਨਮੁਖ
 ਫਿਰਹਿ ਨ ਜਾਣਹਿ ਸਤਗੁਰੁ ਹਉਮੈ ਅੰਦਰਿ ਲਾਗਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰੰਗਾਏ ਬਿਨੁ ਭੈ ਕੋਹੀ
 ਲਾਗਿ ॥੪॥੮॥੪੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਘਰ ਹੀ ਸਤਦਾ ਪਾਈਐ ਅੰਤਰਿ ਸਭ ਵਥੁ ਹੋਇ ॥ ਖਿਨੁ
 ਖਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਅਖੁਟੁ ਹੈ ਵਡਭਾਗਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ

ਮਨ ਤਜਿ ਨਿੰਦਾ ਹਉਮੈ ਅਛਕਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ਤੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕਕਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਾ
 ਕੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਂਦੇ ਜਪਿ ਜਪਿ ਰਿਦੈ ਸੁਰਾਰਿ ॥ ਘਰ ਹੀ ਵਿਚਿ
 ਮਹਲੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਬੀਚਾਰਿ ॥੨॥ ਸਤਗੁਰ ਤੇ ਜੋ ਸੁਹ ਫੇਰਹਿ ਸਥੇ ਤਿਨ ਕਾਲੇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਦੁਖ ਕਮਾਵਦੇ
 ਨਿਤ ਜੋਹੇ ਜਮ ਜਾਲੇ ॥ ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਦੇਖਨੀ ਬਹੁ ਚਿੰਤਾ ਪਰਯਾਲੇ ॥੩॥ ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਆਪੇ ਬਖਸ
 ਕਰੇਇ ॥ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਵੈ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਦੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਸੋਇ ॥੪
 ॥੬॥੪੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਕੀਐ ਸਚੁ ਵਡਿਆਈ ਦੇਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨਿ ਵਸੈ
 ਹਉਮੈ ਦ੍ਰਾਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਧਾਵਤੁ ਤਾ ਰਹੈ ਜਾ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਇ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਦ ਮਨਿ ਵਸੈ ਮਹਲੀ ਪਾਵੈ ਥਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅੰਧੁ ਹੈ ਤਿਸ
 ਨਤ ਠਤਰ ਨ ਠਾਤ ॥ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਭਤਦਾ ਫਿਰੈ ਜਿਤ ਸੁੰਬੈ ਘਰਿ ਕਾਤ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ
 ਹਰਿ ਨਾਤ ॥੨॥ ਤੈ ਗੁਣ ਬਿਖਿਆ ਅੰਧੁ ਹੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਗੁਬਾਰ ॥ ਲੋਭੀ ਅਨ ਕਤ ਸੇਵਦੇ ਪਡਿ ਵੇਦਾ ਕਰੈ
 ਪ੍ਰਕਾਰ ॥ ਬਿਖਿਆ ਅੰਦਰਿ ਪਚਿ ਸੁਏ ਨਾ ਤੁਰਵਾਰੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥੩॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਸਾਰਿਆ ਜਗਤ ਪਿਤਾ
 ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿ ॥ ਬਾਝਹੁ ਗੁਰੁ ਅਚੇਤੁ ਹੈ ਸਭ ਬਧੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਤਕਰੇ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੪॥
 ੧੦॥੪੩॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਤਥਾ ਪਦੁ ਪਾਇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ
 ਮੇਲਾਇਅਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਪੋਤੈ ਜਿਨ ਕੈ ਪੁਨ੍ਨੁ ਹੈ ਤਿਨ ਸਤਸ਼ਗਤਿ ਮੇਲਾਇ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ
 ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚਿ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਚੋ ਸਾਚੁ ਕਮਾਵਣਾ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣਿਆ
 ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਚਰਣੀ ਲਗ ਚਲਾ ਤਿਨ ਕੈ ਭਾਇ ॥ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਸਹਜੇ
 ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਨ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਐਸਾ ਸਤਗੁਰੁ ਲੋਡਿ ਲਹੁ ਜਿਦ੍ਵ
 ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥ ਅਸੁਰ ਸ਼ੰਧਾਰੈ ਸੁਖਿ ਵਸੈ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਹੋਇ ॥੩॥ ਜੇਹਾ ਸਤਗੁਰੁ ਕਰਿ ਜਾਣਿਆ ਤੇਹੋ
 ਜੇਹਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਏਹੁ ਸਹਸਾ ਮੂਲੇ ਨਾਹੀ ਭਾਤ ਲਾਏ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਏਕ ਜੋਤਿ ਦੁਇ ਮੂਰਤੀ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ

होइ ॥४॥११॥४४॥ सिरीरागु महला ੩ ॥ अंमूतु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥
 आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी ॥ मनमुख अंध न चेतही डूबि मुए बिनु
 पाणी ॥੧॥ मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ॥ गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥੧॥
 रहाउ ॥ इहु सरीरु माडिआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥ आवणु जाणा जंमणु मरणा मनमुखि
 पति गवाई ॥ सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥੨॥ सतगुर की सेवा अति सुखाली
 जो इछे सो फलु पाए ॥ जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मनि वसाए ॥ सदा अन्नदि रहै दिनु राती
 मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥੩॥ जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥ दरि सचै सची वडिआई
 सहजे सचि समाउ ॥ नानक नदरी पाईਐ गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥੪॥੧੨॥੪੫॥ सिरीरागु
 महला ੩ ॥ मनमुख करम कमावणे जित दोहागणि तनि सीगारु ॥ सेजै कंतु न आर्वई नित नित होइ
 खुआरु ॥ पिर का महलु न पार्वई ना दीसै घरु बारु ॥੧॥ भाई रे इक मनि नामु धिआइ ॥ संता
 संगति मिलि रहै जपि राम नामु सुखु पाइ ॥੧॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उर
 धारि ॥ मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ॥ सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥੨॥
 पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ॥ अंतरहु दुखु भ्रमु कटीਐ सुखु परापति होइ ॥ गुर कै
 भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइ ॥੩॥ गुर के भाणे विचि अंमूतु है सहजे पावै कोइ ॥ जिना परापति
 तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईਐ सचि मिलावा होइ ॥੪॥੧੩॥੪੬॥
 सिरीरागु महला ੩ ॥ जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइ ॥ सोहागणी करम कमावदीआ सई
 करम करेइ ॥ सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइ ॥੧॥ भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ॥ बिनु
 गुर भगति न पाईਐ जे लोचै सभु कोइ ॥੧॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह फेरु पडिआ कामणि टूजै भाइ ॥
 बिनु गुर नीद न आर्वई दुखी रैणि विहाइ ॥ बिनु सबदै पिरु न पाईਐ बिरथा जनमु गवाइ ॥

੨॥ ਹਤ ਹਤ ਕਰਤੀ ਜਗੁ ਫਿਰੀ ਨਾ ਧਨੁ ਸੰਪੈ ਨਾਲਿ ॥ ਅੰਧੀ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਈ ਸਭ ਬਾਧੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥ ਸਤਗੁਰਿ
 ਮਿਲਿਐ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਰਿਟੈ ਸਮਾਲਿ ॥੩॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
 ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਰੰਗ ਸਿਤ ਰਸਨਾ ਰਸਨ ਰਸਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਰੰਗੁ ਨ ਉਤਰੈ ਜੋ ਹਰਿ ਧੁਰਿ ਛੋਡਿਆ ਲਾਇ ॥
 ੪॥੧੪॥੪੭॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਭਗਤਿ ਕੀਜੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥
 ਆਪੈ ਆਪੁ ਮਿਲਾਏ ਬੂੜ੍ਹੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਈ ॥
 ੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਭਗਤਿਹੀਣੁ ਕਾਹੇ ਜਗਿ ਆਇਆ ॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੇ ਜਗਜੀਵਨੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਏ ਕਿਆ ਵੇਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕੋ ਆਖਿ
 ਸੁਣਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਦੇਇ ਵਡਾਈ ਆਪੇ ਸੇਵ ਕਰਾਏ ॥੨॥ ਦੇਖਿ ਕੁਟੰਬੁ ਮੌਹਿ ਲੋਭਾਣਾ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ
 ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਪਾਇਆ ਤਿਸ ਦੀ ਕੀਮ ਨ ਪਾਈ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਖਾ ਮੀਤੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਅੰਤੇ
 ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੩॥ ਆਪਣੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਆਪੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਦਾਤਾ ਭਗਤਿ
 ਵਛਲੁ ਹੈ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥
 ੧੫॥੪੮॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਧਨੁ ਜਨਨੀ ਜਿਨਿ ਜਾਇਆ ਧਨੁ ਪਿਤਾ ਪਰਥਾਨੁ ॥ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ
 ਪਾਇਆ ਵਿਚਹੁ ਗਇਆ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਦਰਿ ਸੇਵਨਿ ਸੰਤ ਜਨ ਖੱਡੇ ਪਾਇਨਿ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰ
 ਮੁਖਿ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਘਰਿ
 ਆਇਆ ਆਪੇ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਾਲਾਹੀਐ ਰੰਗੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਸਚੈ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ਮਿਲਿ
 ਰਹੈ ਨ ਵਿਛੁਡਿ ਜਾਇ ॥੨॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁਨ੍ਹੇ ਮੇਲਿਅਨੁ
 ਸਤਗੁਰ ਪਨੈ ਪਾਇ ॥ ਆਪੇ ਕਾਰ ਕਰਾਇਸੀ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥੩॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਰੰਗ ਸਿਤ ਹਤਮੈ
 ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਿਰਦੈ ਰਵਿ ਰਹੈ ਨਿਰਭਤ ਨਾਮੁ ਨਿਰਂਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਪ੍ਰੈ ਸਬਦਿ
 ਅਪਾਰ ॥੪॥੧੬॥੪੯॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੋਵਿਦੁ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਕਥਨੀ

ਬਦਨੀ ਨ ਪਾਈਐ ਹਤਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਦ ਭੈ ਰਚੈ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਭਾਈ
 ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਾਝੈ ਕੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰਾਝੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਖੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਨੀ ਚਾਖਿਆ ਤਿਨੀ
 ਸਾਟੁ ਪਾਇਆ ਬਿਨੁ ਚਾਖੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਹੈ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥ ਪੀਕਤ ਹੂ ਪਰਕਾਣੁ
 ਭਿਅਇਆ ਪ੍ਰੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਆਪੇ ਦੇਇ ਤ ਪਾਈਐ ਹੋਰੁ ਕਰਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥ ਦੇਵਣ ਵਾਲੇ ਕੈ ਹਥਿ
 ਦਾਤਿ ਹੈ ਗੁਰੁ ਦੁਆਰੈ ਪਾਇ ॥ ਜੇਹਾ ਕੀਤੋਨੁ ਤੇਹਾ ਹੋਆ ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥੩॥ ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਵਿਣੁ
 ਨਾਵੈ ਨਿਰਮਲੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਹੀ ਰੰਗਿ ਵਰਤਦਾ
 ਹਰਿ ਗੁਣ ਪਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੧੭॥੫੦॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਕਾਁਇਆ ਸਾਥੈ ਤਰਥ ਤਪੁ ਕਰੈ ਵਿਚਹੁ ਹਤਮੈ
 ਨ ਜਾਇ ॥ ਅਧਿਆਤਮ ਕਰਮ ਜੇ ਕਰੇ ਨਾਮੁ ਨ ਕਬ ਹੀ ਪਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਜੀਕਤੁ ਮਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸੈ
 ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਭਜੁ ਸਤਗੁਰ ਸਰਣਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਛੁਟੀਐ ਬਿਖੁ ਭਵਜਲੁ ਸਬਦਿ
 ਗੁਰ ਤਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੈ ਗੁਣ ਸਮਾ ਧਾਤੁ ਹੈ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ਭਾਤ ਵਿਕਾਰੁ ॥ ਪਾਂਡਿਤੁ ਪਢੈ ਬੰਧਨ ਮੋਹ ਬਾਧਾ ਨਹ
 ਬ੍ਰਾਝੈ ਬਿਖਿਆ ਪਿਆਰਿ ॥ ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਤ੍ਰਕੁਟੀ ਛੂਟੈ ਚਤਥੈ ਪਦਿ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰੁ ॥੨॥ ਗੁਰ ਤੇ ਮਾਰਗੁ
 ਪਾਈਐ ਚੂਕੈ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਾ ਤਥਰੈ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ
 ਕਰਤਾਰੁ ॥੩॥ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਅਤਿ ਸਬਲ ਹੈ ਛਡੇ ਨ ਕਿਤੈ ਉਪਾਇ ॥ ਦ੍ਰਾਜੈ ਭਾਇ ਦੁਖੁ ਲਾਇਦਾ ਬਹੁਤੀ ਦੇਇ
 ਸਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਲਗੇ ਸੇ ਤਕਰੇ ਹਤਮੈ ਸਬਦਿ ਗਵਾਇ ॥੪॥੧੮॥੫੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਦੇਇ ਦ੃ਢਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥
 ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ਭਾਤ ਚੁਕਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਤੈਰੈ ਹਰਿ ਵਸੈ
 ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਹੈ ਜਾ ਸਚਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ
 ਹਤਮੈ ਕ੍ਰਿਧੁ ਨਿਵਾਰਿ ॥ ਮਨਿ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਤਾ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੨॥ ਹਤਮੈ ਵਿਚਿ ਜਗੁ
 ਬਿਨਸਦਾ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਜਾਸਨਿ ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਨਾਉ ਪਾਈਐ

सचे रहै समाइ ॥३॥ सबदि मनिओ गुरु पाईਐ विचहु आपु गवाइ ॥ अनदिनु भगति करे सदा साचे
 की लिव लाइ ॥ नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥४॥१६॥५२॥ सिरीरागु महला ३
 ॥ जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ॥ घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे
 अद्विकारि ॥ सतगुरु किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥ सचा सबदु न सेविओ सभि काज सवारणहारु
 ॥१॥ मन मेरे सदा हरि वेखु हटूरि ॥ जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥
 सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥ सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥ सचा साहु वरतदा
 कोड़ि न मेटणहारु ॥ मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥२॥ हउमै करता जगु मुआ गुर
 बिनु घोर अंधारु ॥ माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥ सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि
 उर धारि ॥ किरपा ते हरि पाईਐ सचि सबदि वीचारि ॥३॥ सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि
 विकार ॥ आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥ धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥
 सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥४॥ सतगुरु पुरखु न मनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥
 इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥ हरि जीउ आपणी कृपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥
 नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥५॥२०॥५३॥ सिरीरागु महला ३ ॥ किसु हउ सेवी
 किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ॥ सतगुर का भाणा मनि लई विचहु आपु गवाइ ॥ एहा सेवा
 चाकरी नामु वसै मनि आइ ॥ नामै ही ते सुखु पाईਐ सचै सबदि सुहाइ ॥१॥ मन मेरे अनदिनु
 जागु हरि चेति ॥ आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ॥१॥ रहाउ ॥ मन कीआ इछा पूरीआ
 सबदि रहिआ भरपूरि ॥ भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हटूरि ॥ सचै सबदि
 सदा मनु राता भ्रमु गड़िआ सरीरहु दूरि ॥ निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥२॥ जो
 जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ॥ सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गड़िआ विहाइ ॥ सुंजे घर का पाहुणा

ਜਿਤ ਆਇਆ ਤਿਤ ਜਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਜਨਮੁ ਬਿਰਥਾ ਗਇਆ ਕਿਆ ਸੁਹੁ ਦੇਸੀ ਜਾਇ ॥੩॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਆਪੇ
 ਆਪਿ ਹੈ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਦੁਖੁ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਗਵਾਇ ॥ ਸਤਗੁਰ ਸੇਵਨਿ
 ਆਪਣਾ ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਤ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ਹਹਿ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥੪॥੨੧॥
 ੫੪॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੇ ਕੇਲਾ ਕਖਤੁ ਕੀਚਾਰੀਐ ਤਾ ਕਿਤੁ ਕੇਲਾ ਭਗਤਿ ਹੋਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ
 ਰਤਿਆ ਸਚੈ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਪਿਆਰਾ ਵਿਸਰੈ ਭਗਤਿ ਕਿਨੇਹੀ ਹੋਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਚ ਸਿਤ
 ਸਾਸੁ ਨ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥ ਸਾਚੀ ਭਗਤਿ ਤਾ ਥੀਐ ਜਾ ਹਰਿ ਕਾਂਸੈ ਮਨਿ
 ਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਹਜੇ ਖੇਤੀ ਰਾਹੀਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਬੀਜੁ ਪਾਇ ॥ ਖੇਤੀ ਜੰਮੀ ਅਗਲੀ ਮਨੂਆ ਰਾਂਝਾ ਸਹਜਿ
 ਸੁਭਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਪੀਤੈ ਤਿਖ ਜਾਇ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਾਚਾ ਸਚਿ ਰਤਾ ਸਚੈ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ
 ॥੨॥ ਆਖਣੁ ਕੇਖਣੁ ਬੋਲਣਾ ਸਬਦੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਬਾਣੀ ਕਜੀ ਚਹੁ ਜੁਗੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਸੁਣਾਇ ॥ ਹਉਮੈ
 ਮੇਰਾ ਰਹਿ ਗਇਆ ਸਚੈ ਲਿਇਆ ਮਿਲਾਇ ॥ ਤਿਨ ਕਤ ਮਹਲੁ ਹਟ੍ਟਾਰਿ ਹੈ ਜੋ ਸਚਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੩॥ ਨਦਰੀ
 ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਪੂਰੈ ਭਾਗੀ ਸਤਸੰਗਤਿ ਲਹੈ ਸਤਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਜਿਸੁ ਆਇ ॥
 ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਦੁਖੁ ਬਿਖਿਆ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵੜਾ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥
 ੨੨॥੫੫॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਆਪਣਾ ਭਤ ਤਿਨ ਪਾਇਆਨੁ ਜਿਨ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਸਤਸੰਗਤੀ
 ਸਦਾ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਈਅਨੁ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਚੁ
 ਮਨਿ ਸਚੈ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਭਰ ਨਾਲਿ ॥ ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਸੋਹਣਾ ਸਬਦਿ
 ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ
 ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥ ਜੋਤੀ ਹੂ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪਦਾ ਬਿਨੁ ਸਤਗੁਰ ਬੂੜਾ ਨ ਪਾਇ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰਭਿ ਲਿਖਿਆ ਸਤਗੁਰੁ
 ਭੇਟਿਆ ਤਿਨ ਆਇ ॥੨॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਤੁਮਣੀ ਟ੍ਰੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਘੜੀ ਨ ਜੀਕਦੀ ਦੁਖੀ
 ਰੈਣ ਵਿਹਾਇ ॥ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣਾ ਅੰਧੁਲਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਆਪੇ

ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੁਣਦਾ ਵੇਖਦਾ ਕਿਤ ਮੁਕਰਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਪਾਪੋ ਪਾਪੁ ਕਮਾਵਦੇ ਪਾਪੇ
 ਪਚਹਿ ਪਚਾਇ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੰਝੈ ਮਨਮੁਖਿ ਬੂੜਾ ਨ ਪਾਇ ॥ ਜਿਸੁ ਵੇਖਾਲੇ ਸੋਝੈ ਵੇਖੈ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਪਾਇ ॥੪॥੨੩॥੫੬॥ ਸੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਰੋਗੁ ਨ ਤੁਟੰਝੈ ਹਤਮੈ ਪੀਡੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ
 ਮਨਿ ਵਸੈ ਨਾਮੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਨਿਜ ਘਰਿ
 ਵਾਸਾ ਹੋਇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹਿ ਤੂ ਫਿਰਿ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਨ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਇਕੋ ਦਾਤਾ ਵਰਤਦਾ
 ਢੂਜਾ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਸਭ ਨਦਰੀ ਅੰਦਰਿ ਵੇਖਦਾ ਜੈ ਭਾਵੈ
 ਤੈ ਦੇਇ ॥੨॥ ਹਤਮੈ ਸਭਾ ਗਣਤ ਹੈ ਗਣਤੈ ਨਤ ਸੁਖੁ ਨਾਹਿ ॥ ਬਿਖੁ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਬਿਖੁ ਹੀ ਮਾਹਿ
 ਸਮਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਠਤਰੁ ਨ ਪਾਇਨੀ ਜਮਪੁਰਿ ਢੂਖ ਸਹਾਹਿ ॥੩॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਦਾ ਤਿਸੈ ਦਾ ਆਧਾਰੁ
 ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁੜੀਐ ਤਾ ਪਾਏ ਮੌਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂਂ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੪॥੨੪॥੫੭॥
 ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਤਿਨਾ ਅਨਨਦੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੈ ਜਿਨਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਢੂਖ
 ਨਿਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਆਪਣੀ ਦਿਤੋਨੁ
 ਭਗਤਿ ਖੰਡਾਰੁ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਚੀ ਭਗਤੀ ਮਨੁ ਲਾਲੁ ਥੀਆ ਰਤਾ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ਕਹਣਾ ਕਛੂ
 ਨ ਜਾਇ ॥ ਜਿਹਵਾ ਰਤੀ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵੈ ਰਸਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਹੁ ਰੰਗੁ ਪਾਈਐ ਜਿਸ ਨੋ
 ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਿਹਾਇ ॥੨॥ ਸੰਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਹੈ ਸੁਤਿਆ ਰੈਣ ਵਿਹਾਇ ॥ ਇਕਿ ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਕਢਿ ਲਿਓਨੁ
 ਆਪੇ ਲਿਓਨੁ ਮਿਲਾਇ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇ ॥ ਆਪਿ ਵਡਾਈ ਦਿਤੀਅਨੁ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਇ ਬੁੜਾਇ ॥੩॥ ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਭੁਲਿਆ ਲਏ ਸਮਝਾਇ ॥ ਇਕਿ ਆਪੇ ਆਪਿ ਖੁਆਇਅਨੁ
 ਢੂਜੈ ਛਡਿਅਨੁ ਲਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ
 ਸਮਾਇ ॥੪॥੨੫॥੫੮॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਣਕੰਤੀ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਤ੃ਸਨਾ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨੁ

ਰंगिआ ਰਸਨਾ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰਿ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਕਰਿ ਵੇਖਹੁ ਮਨਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੁ
 ਨ ਤਰੈ ਜਿਚੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਚਲੁ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਹਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਪੀਵਹਿ ਤਾ ਸੁਖ ਲਹਹਿ ਮਹਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਤਗੁਣਕਵਾਂਤੀ ਗੁਣੁ ਕੋ ਨਹੀ ਬਹਣਿ ਨ ਮਿਲੈ ਹਫ਼ੂਰਿ ॥ ਮਨਮੁਖਿ
 ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣਈ ਅਕਗਣਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਦੂਰਿ ॥ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸਚਿ ਰਤੇ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨੁ
 ਬੇਧਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਆਪਿ ਹਫ਼ੂਰਿ ॥੨॥ ਆਪੇ ਰੰਗਣਿ ਰੰਗਿਆਨੁ ਸਬਦੇ ਲਿਓਨੁ ਮਿਲਾਇ ॥ ਸਚਾ ਰੰਗੁ ਨ
 ਤਰੈ ਜੋ ਸਚਿ ਰਤੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਭਵਿ ਥਕੇ ਮਨਮੁਖ ਬੂੜਾ ਨ ਪਾਇ ॥ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਸੋ ਮਿਲੈ
 ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਮਿਤ ਘਣੇਰੇ ਕਰਿ ਥਕੀ ਮੇਰਾ ਦੁਖੁ ਕਾਟੈ ਕੋਇ ॥ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਦੁਖੁ ਕਟਿਆ ਸਬਦਿ
 ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥ ਸਚੁ ਖਟਣਾ ਸਚੁ ਰਾਸਿ ਹੈ ਸਚੇ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥ ਸਚਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ
 ॥੪॥੨੬॥੫੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਆਪੇ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੂਸਟਿ ਦੇਖੈ ਆਪਿ ਤਪਾਇ ॥ ਸਭ
 ਏਕੋ ਇਕੁ ਵਰਤਦਾ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਇ ॥ ਆਪੇ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਆਲੁ ਹੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ਬੁੜਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਸਦ
 ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਮੰਨਿ ਲੈ ਰਿਆਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਭੁ ਥੀਐ
 ਨਾਮੁ ਕਵੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਕਾਰਣੁ ਧਾਰਿਆ ਸੋਈ ਸਾਰ ਕਰੇਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਪਛਾਣੀਐ ਜਾ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਸੇ ਜਨ ਸਬਦੇ ਸੋਹਣੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰਤੇ
 ਆਪਿ ਮੇਲੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥੨॥ ਗੁਰਮਤੀ ਸਚੁ ਸਲਾਹਣਾ ਜਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਆਪੇ ਹੁਕਮਿ
 ਕਵਸੈ ਹੁਕਮੇ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਾਲਾਹੀਐ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਖੋਇ ॥ ਸਾ ਧਨ ਨਾਵੈ ਬਾਹਰੀ ਅਕਗਣਕਵਾਂਤੀ
 ਰੇਇ ॥੩॥ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀ ਸਚਿ ਲਗ ਸਚੈ ਨਾਇ ਤ੃ਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਗੁਣ ਵੀਚਾਰੀ ਗੁਣ ਸਾਂਗਹਾ ਅਕਗੁਣ ਕਢਾ
 ਧੋਇ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਦਾ ਫਿਰਿ ਕੇਛੋਡਾ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹੀ ਆਪਣਾ ਜਿਦੂ ਪਾਈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ
 ॥੪॥੨੭॥੬੦॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਕਾਮ ਗਹੇਲੀਏ ਕਿਆ ਚਲਹਿ ਬਾਹ ਲੁਡਾਇ ॥ ਆਪਣਾ
 ਪਿਲੁ ਨ ਪਛਾਣਹੀ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸਹਿ ਜਾਇ ॥ ਜਿਨੀ ਸਖੀਂ ਕੰਤੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਤ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਤ ਪਾਇ ॥ ਤਿਨ ਹੀ

जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥१॥ मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईअै
गुर बीचारि ॥२॥ रहाउ ॥ मनमुखि कंतु न पछाणई तिन किउ रैणि विहाइ ॥ गरबि अटीआ तृसना
जलहि दुखु पावहि दूजै भाइ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ ॥ सदा पिरु रावहि
आपणा तिना सुखे सुखि विहाइ ॥३॥ गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ॥
अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ ॥
पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ ॥४॥२८॥६१॥ सिरीरागु महला ३ ॥ इकि
पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ॥ सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥ सभु
उपाए आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥ जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे सदा हट्टरि ॥५॥ मुंधे तू
चलु गुर कै भाइ ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥६॥ रहाउ ॥ सबदि रतीआ
सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥ हरि वरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥ सेज सुहावी
हरि रंगि रखै भगति भरे भंडार ॥ सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देहि अधारु ॥७॥ पिरु सालाहनि
आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ मनु तनु अरपी सिरु देई तिन कै लागा पाइ ॥ जिनी
इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥ गुरमुखि नामु पछाणीअै नानक सचि समाइ ॥८॥२९॥६२॥
सिरीरागु महला ३ ॥ हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ॥ लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर
भेटे पीरै ॥ हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ॥ गुर परसादी सेव करी सचु गहिर गंभीरै ॥
९॥ मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥ गुरमती नामु सलाहीअै दूजा अवरु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ धरम राइ
नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥ दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥ अधिआतमी हरि

ਗੁਣ ਤਾਸੁ ਮਨਿ ਜਪਹਿ ਏਕੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਰੈ ਧਨੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਮਨ ਕੇ
 ਬਿਕਾਰ ਮਨਹਿ ਤਜੈ ਮਨਿ ਚੂਕੈ ਮੋਹੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਨੁ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ਮਨਮੁਖਿ ਫਿਰੈ ਦਿਵਾਨੁ ॥ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨੈ ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਕਰੇ ਬਿਖਿਆ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੁ ॥੩॥
 ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਹੈ ਦ੍ਰਿੜ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜਿਤ ਬੋਲਾਏ ਤਿਤ ਬੋਲੀਐ ਜਾ ਆਪਿ ਬੁਲਾਏ ਸੋਇ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮੁ ਹੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੪॥੩੦॥
 ੬੩॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜਗਿ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਢੂਜੈ ਭਾਇ ॥ ਮਲੁ ਹਉਮੈ ਧੋਤੀ
 ਕਿਵੈ ਨ ਉਤਰੈ ਜੇ ਸਤ ਤੀਰਥ ਨਾਇ ॥ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਟ੍ਰਣੀ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਆਇ ॥ ਪਾਇਐ ਮੈਲੁ ਨ
 ਉਤਰੈ ਪ੍ਰਛਹੁ ਗਿਆਨੀਆ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਸਰਣਿ ਆਵੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਕਰਿ ਥਕੇ ਮੈਲੁ ਨ ਸਕੀ ਧੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਿ ਮੈਲੈ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ
 ਮੈਲੇ ਮੈਲੇ ਸੁਏ ਜਾਸਨਿ ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨਿ ਕਥੈ ਮਲੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ਸਮਾਇ ॥ ਜਿਤ ਅਂਧੇਰੈ
 ਦੀਪਕੁ ਬਾਲੀਐ ਤਿਤ ਗੁਰ ਗਿਆਨਿ ਅਗਿਆਨੁ ਤਜਾਇ ॥੨॥ ਹਮ ਕੀਆ ਹਮ ਕਰਹਗੇ ਹਮ ਮੂਰਖ ਗਾਵਾਰ ॥
 ਕਰਣੈ ਵਾਲਾ ਵਿਸਰਿਆ ਢੂਜੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਮਾਇਆ ਜੇਵਡੁ ਦੁਖੁ ਨਹੀ ਸਭਿ ਭਵਿ ਥਕੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮਤੀ
 ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੩॥ ਜਿਸ ਨੋ ਮੇਲੇ ਸੋ ਮਿਲੈ ਹਤ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਏ ਮਨ ਭਗਤੀ ਰਤਿਆ
 ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਨਿਜ ਥਾਤ ॥ ਮਨਿ ਰਤੇ ਜਿਹਵਾ ਰਤੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਚੇ ਗਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਕੀਸਾਰੈ ਸਚੇ ਮਾਹਿ ਸਮਾਤ
 ॥੪॥੩੧॥੬੪॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ॥ ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਿਰਹੁ ਅਤਿ ਅਗਲਾ ਕਿਤ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਿਲੈ ਘਰਿ
 ਆਇ ॥ ਜਾ ਦੇਖਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਪ੍ਰਭਿ ਦੇਖਿਐ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਜਾਇ ਪੁਛਾ ਤਿਨ ਸਜਣਾ ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਿਲੈ
 ਮਿਲਾਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰਾ ਮੈ ਤੁੜ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਹਮ ਮੂਰਖ ਸੁਗਧ ਸਰਣਾਗਤੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲੇ ਹਰਿ
 ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵੈ ਸੋਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬੁਝਿਆ ਗੁਰ
 ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਹਤ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਫ਼ਹਿ ਪਵਾ ਕਰਿ ਦਿਇਆ ਮੇਲੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੨॥ ਮਨਹਠਿ ਕਿਨੈ ਨ

पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ॥ सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंग न होइ ॥ कूड़ि कपटि
 किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥३॥ सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥ प्रभ तुधहु खाली
 को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥ बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥४॥१॥६५॥
 सिरीरागु महला ४ ॥ नामु मिलै मनु तृपतीऔ बिनु नामै धिगु जीवासु ॥ कोई गुरमुखि सजणु जे
 मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥ हउ तिसु विटहु चउ खन्नीऔ मै नाम करे परगासु ॥१॥ मेरे प्रीतमा हउ
 जीवा नामु धिआइ ॥ बिनु नावै जीवणु ना थीऔ मेरे सतिगुर नामु दृड़ाइ ॥१॥ रहाउ ॥ नामु अमोलकु
 रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥ धन्नु वडभागी वड
 भागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥२॥ जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥ ओइ
 फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥ ओना पासि दुआसि न भिटीऔ जिन अंतरि
 क्रोधु चंडाल ॥३॥ सतिगुरु पुरखु अंमृत सरु वडभागी नावहि आइ ॥ उन जनम जनम की मैलु उतरै
 निरमल नामु दृड़ाइ ॥ जन नानक उतम पदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥४॥२॥६६॥
 सिरीरागु महला ४ ॥ गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥ गुरमुखि सजणु गुणकारीआ
 मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥ हीरै हीरू मिलि बेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥१॥ मेरे गोविंदा गुण गावा
 तृपति मनि होइ ॥ अंतरि पिआस हरि नाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनु रंगहु
 वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥ गुरु नामु दृड़ाए रंग सित हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥ बिनु सतिगुर
 हरि नामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥२॥ बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित
 पासि ॥ अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥ बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऔ
 मनमुखु लोहु बूडा बेडी पासि ॥३॥ सतिगुरु बोहिथु हरि नाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥ सतिगुर कै भाणै
 जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥ धन्नु धन्नु वडभागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥४॥३॥६७॥

सिरीरागु महला ४ ॥ हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥ जिनी मेरा पिआरा
 राविआ तिन पीछै लागि फिराउ ॥ करि मिन्नति करि जोदड़ी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥१॥ मेरे भाई
 जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥ हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ
 ॥२॥ रहाउ ॥ होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥ निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु
 करे साबासि ॥ हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥२॥ सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता
 जगतु सभु कोइ ॥ बिनु भागा दरसनु ना थीअै भागहीण बहि रोइ ॥ जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि
 लिखिआ न मेटै कोइ ॥३॥ आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥ आपि दइआ करि मेलसी
 गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥ सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥४॥४॥६८॥
 सिरीरागु महला ४ ॥ रसु अंमृतु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ॥ जाइ पुछहु
 सोहागणी तुसा किउ करि मिलिआ प्रभु आइ ॥ ओइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा
 तिन पाइ ॥१॥ भाई रे मिलि सजण हरि गुण सारि ॥ सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि
 ॥२॥ रहाउ ॥ गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ॥ सतिगुर वचनु रतन्नु है जो मन्ने
 सु हरि रसु खाइ ॥ से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरि रसु खाधा गुर भाइ ॥३॥ इहु हरि रसु वणि
 तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ॥ बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥ ओइ सतिगुर
 आगै ना निवहि ओना अंतरि क्रोधु बलाइ ॥४॥५॥६९॥ सिरीरागु महला ४ ॥ दिनसु चड़े फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥ आव घटै
 नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥ गुडु मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥
 ॥६॥ भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥ पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥७॥ रहाउ ॥ गुरमति

हरि लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥ ओनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥
 गुरमुखि दरगह मन्नीअहि हरि आपि लए गलि लाइ ॥२॥ गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक
 न कोई पाइ ॥ हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥ अनहद धुनी दरि वजटे दरि
 सचै सोभा पाइ ॥३॥ जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥ तिन की संगति देहि
 प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥ नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥४॥३३॥
 ३१॥६॥९०॥ सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥ रस भोगहि
 खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥ बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥ करता चिति न
 आवई मनमुख अंध गवार ॥१॥ मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ॥ गुर परसादी पाईਐ करमि परापति
 होइ ॥१॥ रहाउ ॥ कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रुपा खाकु ॥ हैवर गैवर बहु रंगे कीए रथ अथाक
 ॥ किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥ सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ॥२॥ लैदा
 बद दुआइ तूं माइआ करहि इकित ॥ जिस नो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥ अह्यकारु करहि
 अह्यकारीआ विआपिआ मन की मति ॥ तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥३॥
 सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ॥ हरि जन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥ जो
 हरि जन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ॥ नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ॥४॥१॥
 ७१॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मनि बिलासु बहु रंगु घणा दृसटि भूलि खुसीआ ॥ छत्रधार बादिसाहीआ
 विचि सहसे परीआ ॥१॥ भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ॥ लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु
 सहसा मिटि गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ जेते थान थन्नतरा तेते भवि आइआ ॥ धन पाती वड भूमीआ मेरी
 मेरी करि परिआ ॥२॥ हुकमु चलाए निसंग होइ वरतै अफरिआ ॥ सभु को वसगति करि लइओनु
 बिनु नावै खाकु रलिआ ॥३॥ कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ॥ गिरंबारी वड साहबी

ਸਭੁ ਨਾਨਕ ਸੁਪਨੁ ਥੀਆ ॥੪॥੨॥੭੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭਲਕੇ ਤਠਿ ਪਪੋਲੀਐ ਵਿਣੁ ਬੁੜੇ ਮੁਗਧ
 ਅਜਾਣਿ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਓ ਛੁਟੈਗੀ ਬੇਬਾਣਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਰੰਗੁ ਮਾਣਿ ॥
 ੧॥ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤੂਂ ਆਇਆ ਲਾਹਾ ਲੈਣਿ ॥ ਲਗਾ ਕਿਤੁ ਕੁਫਕਡੇ ਸਭ ਮੁਕਦੀ ਚਲੀ ਰੈਣਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੁਦਮ
 ਕਰੇ ਪਸੁ ਪੱਖੀਆ ਦਿਸੈ ਨਾਹੀ ਕਾਲੁ ॥ ਓਤੈ ਸਾਥਿ ਮਨੁਖੁ ਹੈ ਫਾਥਾ ਮਾਇਆ ਜਾਲਿ ॥ ਮੁਕਤੇ ਸੇਈ ਭਾਲੀਅਹਿ
 ਜਿ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੨॥ ਜੋ ਘਰੁ ਛਡਿ ਗਵਾਵਣਾ ਸੋ ਲਗਾ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਜਿਥੈ ਜਾਇ ਤੁਧੁ ਵਰਤਣਾ ਤਿਸ
 ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਨਾਹਿ ॥ ਫਾਥੇ ਸੇਈ ਨਿਕਲੇ ਜਿ ਗੁਰ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ॥੩॥ ਕੋਈ ਰਖਿ ਨ ਸਕੈਂ ਢੂਜਾ ਕੋ ਨ ਦਿਖਾਇ ॥
 ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਭਾਲਿ ਕੈ ਆਇ ਪਇਆ ਸਰਣਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੈ ਪਾਤਿਸਾਹਿ ਝੁਕਦਾ ਲਿਆ ਕਢਾਇ ॥੪॥੩॥
 ੭੩॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਘੜੀ ਮੁਹਤ ਕਾ ਪਾਹੁਣਾ ਕਾਜ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥ ਮਾਇਆ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪਿਆ
 ਸਮਝੈ ਨਾਹੀ ਗਾਵਾਰੁ ॥ ਤਠਿ ਚਲਿਆ ਪਛੁਤਾਇਆ ਪਰਿਆ ਵਸਿ ਜੰਦਾਰ ॥੧॥ ਅੰਧੇ ਤੂਂ ਬੈਠਾ ਕੰਧੀ ਪਾਹਿ ॥
 ਜੇ ਹੋਵੀ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਾ ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਕਮਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰੀ ਨਾਹੀ ਨਹ ਢੁਕੀ ਪਕੀ ਵਢਣਹਾਰ ॥
 ਲੈ ਲੈ ਦਾਤ ਪਹੁਤਿਆ ਲਾਵੇ ਕਰਿ ਤੰਝਾਰੁ ॥ ਜਾ ਹੋਆ ਹੁਕਮੁ ਕਿਰਸਾਣ ਦਾ ਤਾ ਲੁਣਿ ਮਿਣਿਆ ਖੇਤਾਰੁ ॥
 ੨॥ ਪਹਿਲਾ ਪਹਰੁ ਧੰਧੈ ਗਿਆ ਢੂਜੈ ਭਰਿ ਸੋਇਆ ॥ ਤੀਜੈ ਝਾਖ ਝਖਾਇਆ ਚਤੁਰੈ ਭੌਰੁ ਭਿਆ ॥ ਕਦ ਹੀ
 ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਓ ਜਿਨਿ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਦੀਆ ॥੩॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕਤ ਵਾਰਿਆ ਜੀਤ ਕੀਆ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥
 ਜਿਸ ਤੇ ਸੋਝੀ ਮਨਿ ਪਈ ਮਿਲਿਆ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਡਿਠਾ ਸਦਾ ਨਾਲਿ ਹਰਿ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਜਾਣੁ ॥੪॥
 ੪॥੭੪॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਭੇ ਗਲਾ ਵਿਸਰਨੁ ਇਕੋ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਤ ॥ ਧੰਧਾ ਸਭੁ ਜਲਾਇ ਕੈ ਗੁਰਿ
 ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਸਚੁ ਸੁਆਤ ॥ ਆਸਾ ਸਭੇ ਲਾਹਿ ਕੈ ਇਕਾ ਆਸ ਕਮਾਤ ॥ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨ ਅਗੈ
 ਮਿਲਿਆ ਥਾਤ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਕਰਤੇ ਨੋ ਸਾਲਾਹਿ ॥ ਸਭੇ ਛਡਿ ਸਿਆਣਪਾ ਗੁਰ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਢੁਖ ਭੁਖ ਨਹ ਵਿਆਪੈ ਜੇ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥ ਕਿਤ ਹੀ ਕੰਮਿ ਨ ਛਿਜੀਐ ਜਾ ਹਿਰਦੈ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਜਿਸੁ ਤੂਂ
 ਰਖਹਿ ਹਥ ਦੇ ਤਿਸੁ ਮਾਰਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਸਭਿ ਅਵਗਣ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥੨॥ ਸੇਵਾ ਮੰਗੈ ਸੇਵਕੋ

ਲਾਈਆਂ ਅਪੁਨੀ ਸੇਵ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਮਸਕਤੇ ਤੂਠੈ ਪਾਵਾ ਦੇਵ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਵਸਗਤਿ ਸਾਹਿਬੈ ਆਪੇ ਕਰਣ
 ਕਰੇਵ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਮਨਸਾ ਸਭ ਪ੍ਰੇਰਵ ॥੩॥ ਇਕੋ ਦਿਸੈ ਸਜਣੋ ਇਕੋ ਭਾਈ ਮੀਤੁ ॥ ਇਕਸੈ ਟੀ
 ਸਾਮਗਰੀ ਇਕਸੈ ਟੀ ਹੈ ਰੀਤਿ ॥ ਇਕਸ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਤਾ ਹੋਆ ਨਿਹਚਲੁ ਚੀਤੁ ॥ ਸਚੁ ਖਾਣਾ ਸਚੁ
 ਪੈਨਣਾ ਟੇਕ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕੀਤੁ ॥੪॥੫॥੭੫॥ ਸ਼੍ਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਭੇ ਥੋਕ ਪਰਾਪਤੇ ਜੇ ਆਵੈ ਇਕੁ
 ਹਥਿ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜੇ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਕਥਿ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਮਹਲੁ ਪਰਾਪਤੇ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਹੋਵੈ ਮਥਿ ॥
 ੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਏਕਸ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਏਕਸ ਬਿਨੁ ਸਭ ਧੰਧੁ ਹੈ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਮੌਹੁ ਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਲਖ ਖੁਸੀਆ ਪਾਤਿਸਾਹੀਆ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਦਰਿ ਕਰੋਇ ॥ ਨਿਮਖ ਏਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ
 ਹੋਇ ॥ ਜਿਸ ਕਤ ਪ੍ਰੂਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨ ਗਹੇ ॥੨॥ ਸਫਲ ਸੂਰਤੁ ਸਫਲਾ ਘੜੀ ਜਿਤੁ ਸਚੇ
 ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਢੂਖੁ ਸੰਤਾਪੁ ਨ ਲਗੈ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਬਾਹ ਪਕਿਡਿ ਗੁਰਿ ਕਾਫਿਆ ਸੋਈ
 ਤਤਰਿਆ ਪਾਰਿ ॥੩॥ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਪਵਿਤੁ ਹੈ ਜਿਥੈ ਸੰਤ ਸਭਾ ॥ ਫੌਈ ਤਿਸ ਹੀ ਨੋ ਮਿਲੈ ਜਿਨਿ ਪੂਰਾ ਗੁਰੂ ਲਭਾ ॥
 ਨਾਨਕ ਬਧਾ ਘਰੁ ਤਹਾਁ ਜਿਥੈ ਮਿਰਤੁ ਨ ਜਨਮੁ ਜਰਾ ॥੪॥੬॥੭੬॥ ਸ਼੍ਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੋਈ ਧਿਆਈਐ
 ਜੀਅਡੇ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾਂ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥ ਤਿਸ ਹੀ ਕੀ ਕਰਿ ਆਸ ਮਨ ਜਿਸ ਕਾ ਸਭਸੁ ਕੇਸਾਹੁ ॥ ਸਭਿ ਸਿਆਣਪਾ ਛਡਿ ਕੈ
 ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਪਾਹੁ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਜਧਿ ਨਾਤ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇ ਤੂਂ ਗੁਣ ਗੋਡਿੰਦ
 ਨਿਤ ਗਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰੁ ਮਨਾ ਜਿਸੁ ਜੇਵੜੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਘਣਾ
 ਢੁਖੁ ਦਰਦੁ ਨ ਮੂਲੇ ਹੋਇ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਕਰਿ ਚਾਕਰੀ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥੨॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹੋਇ ਨਿਰਮਲਾ
 ਕਟੀਐ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਭੈ ਭੰਜਨੋ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਕਰਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਮਿਹਰ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ਤਾਂ ਕਾਰਜੁ
 ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥੩॥ ਬਹੁਤੋ ਬਹੁਤੁ ਵਖਾਣੀਐ ਊਚੋ ਊਚਾ ਥਾਤ ॥ ਵਰਨਾ ਚਿਹਨਾ ਬਾਹਰਾ ਕੀਮਤਿ ਕਹਿ ਨ ਸਕਾਤ ॥
 ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਮਿਡਿਆ ਕਰਿ ਸਚੁ ਦੇਵਹੁ ਅਪੁਣਾ ਨਾਤ ॥੪॥੭॥੭੭॥ ਸ਼੍ਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਸੋ
 ਸੁਖੀ ਤਿਸੁ ਸੁਖੁ ਊਜਲੁ ਹੋਇ ॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਰਗਟੁ ਸਭਨੀ ਲੋਇ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਘਰਿ ਵਸੈ ਏਕੋ

सचा सोइ ॥१॥ मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥ नामु सहाई सदा संगि आगै लए छडाइ ॥२॥ रहाउ
 ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥ माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि
 ॥ जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥२॥ साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ॥ उपाव
 सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥ तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मस्तकि होवै भागु ॥३॥
 तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥ सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥ नानक
 कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ॥४॥८॥७॥८॥ सिरीरागु महला ५ ॥ इकु पछाणू जीअ का इको
 रखणहारु ॥ इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥ तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥
 १॥ मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥ गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥१॥ रहाउ ॥ इको
 भाई मितु इकु इको मात पिता ॥ इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥ सो प्रभु मनहु न विसरै
 जिनि सभु किछु वसि कीता ॥२॥ घरि इको बाहरि इको थान थन्नतरि आपि ॥ जीअ जंत सभि जिनि कीए
 आठ पहर तिसु जापि ॥ इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥३॥ पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही
 कोइ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥ गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ॥
 ४॥६॥७॥८॥ सिरीरागु महला ५ ॥ जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ॥ जिन कउ
 आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ॥ जिन कउ मस्तकि लिखिआ तिन पाइआ हरि
 नामु ॥१॥ मन मेरे एको नामु धिआइ ॥ सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैथा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
 जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ॥ साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥ जनम
 मरण की मलु कटीऔ गुर दरसनु देखि निहाल ॥२॥ थान थन्नतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु
 सोइ ॥ सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥ तिसु सरणाई छुटीऔ कीता लोड़े सु होइ ॥३॥ जिन मनि
 वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ॥ तिन की सोभा निरमली परगटु झई जहान ॥ जिनी मेरा प्रभु

ਧਿਆਇਆ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੁਰਬਾਨ ॥੪॥੧੦॥੮੦॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭੁ ਦੁਖੁ
 ਗਿਆ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਅਂਤਰਿ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਾਸੀਆ ਏਕਸੁ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ
 ਮੁਖੁ ਊਜਲਾ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇ ॥ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਨਿਤ ਗਾਵਣੇ ਨਿਰਮਲ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ
 ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰੂਰੇ ਕੀ ਚਾਕਰੀ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ਨ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨ ਕੀਆ ਇਛਾਂ ਪੂਰੀਆ
 ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਅਂਤਰਯਾਮੀ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੁਖੁ ਊਜਲਾ ਜਪਿ
 ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਬਿਨਸਿਆ ਤਜਿਆ ਸਭੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੨॥ ਪਾਇਆ ਲਾਹਾ ਲਾਭੁ ਨਾਮੁ
 ਪ੍ਰੰਨ ਹੋਏ ਕਾਮ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਲਿਆ ਦੀਆ ਅਪਣਾ ਨਾਮੁ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਰਹਿ ਗਿਆ ਆਪਿ
 ਹੋਆ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥ ਸਚੁ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਪਛਾਨੁ ॥੩॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਤ ਰਾਖਦਾ ਆਪਣੀ
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਮੁਖ ਊਜਲੇ ਸਾਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਸਾਰਦੇ ਰਤੇ ਰੰਗਿ ਅਪਾਰ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੁਖ ਸਾਗਰੇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥੪॥੧੧॥੮੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਜੇ ਮਿਲੈ ਪਾਈਐ ਸਬਦੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੀ ਜਪੀਐ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ
 ਕਾਟੀਐ ਲਾਗੈ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ਪਾਇ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਏਕੋ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈਐ ਸਾਗਰੁ ਗੁਣੀ ਅਥਾਹੁ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਮਿਲੁ ਸੰਗਤੀ ਸਚਾ
 ਸਬਦੁ ਵਿਸਾਹੁ ॥ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸੁਖ ਸਾਗਰੈ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥੨॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਕਾ ਆਸਰਾ ਦ੍ਰਿੜਾ ਨਾਹੀ
 ਠਾਤ ॥ ਮੈ ਧਰ ਤੇਰੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤੈਰੈ ਤਾਣਿ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਮਾਣਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਮਾਣੁ ਤ੍ਰੂ ਤੈਰੈ ਸੰਗਿ ਸਮਾਤ ॥੩॥ ਹਰਿ
 ਜਪੀਐ ਆਰਾਧੀਐ ਆਠ ਪਹਰ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਤਨੁ ਧਨੁ ਰਖੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖੀ ਜਿੰਦੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਗਲੇ ਦੋਖ ਉਤਾਰਿਅਨੁ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥੪॥੧੨॥੮੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ
 ਤਿਸੁ ਸਚ ਸਿਉ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਨਾ ਵੇਛੋਡਿਆ ਵਿਛੁੜੈ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਦੀਨ ਦਰਦ ਦੁਖ ਭੰਜਨਾ
 ਸੇਵਕ ਕੈ ਸਤ ਭਾਇ ॥ ਅਚਰਜ ਰੂਪੁ ਨਿਰੰਜਨੋ ਗੁਰਿ ਮੇਲਾਇਆ ਮਾਇ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਮੀਤੁ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਰੀਤਿ ਧਿਗੁ ਸੁਖੀ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦਾਨਾ ਦਾਤਾ ਸੀਲਵਂਤੁ ਨਿਰਮਲੁ ਰੂਪੁ
 ਅਪਾਰੁ ॥ ਸਖਾ ਸਹਾਈ ਅਤਿ ਵਡਾ ਊਚਾ ਵਡਾ ਅਪਾਰੁ ॥ ਬਾਲਕੁ ਬਿਰਥਿ ਨ ਜਾਣੀਐ ਨਿਹਚਲੁ ਤਿਸੁ
 ਦਰਖਾਰੁ ॥ ਜੋ ਮੰਗੀਐ ਸੋਈ ਪਾਈਐ ਨਿਧਾਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥੨॥ ਜਿਸੁ ਪੇਖਤ ਕਿਲਵਿਖ ਹਿਰਹਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹੋਵੈ
 ਸਾਁਤਿ ॥ ਇਕ ਮਨਿ ਏਕੁ ਧਿਆਈਐ ਮਨ ਕੀ ਲਾਹਿ ਭਰਾਂਤਿ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਨਵਤਨੁ ਸਦਾ ਪ੍ਰੰਨ ਜਾ ਕੀ
 ਦਾਤਿ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਆਰਾਧੀਐ ਦਿਨੁ ਵਿਸਰਹੁ ਨਹੀਂ ਰਾਤਿ ॥੩॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਕਾ ਸਖਾ
 ਗੋਵਿੰਦੁ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਅਗਪੀ ਸਭੋ ਸਗਲ ਵਾਰੀਐ ਇਹ ਜਿੰਦੁ ॥ ਦੇਖੈ ਸੁਣੈ ਹਫੂਰਿ ਸਦ ਘਟਿ ਘਟਿ ਬ੍ਰਹਮੁ
 ਰਵਿੰਦੁ ॥ ਅਕਿਰਤਘਣਾ ਨੋ ਪਾਲਦਾ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥੪॥੧੩॥੮੩॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨੁ
 ਤਨੁ ਧਨੁ ਜਿਨੁ ਪ੍ਰਭਿ ਦੀਆ ਰਖਿਆ ਸਹਜਿ ਸਕਾਰਿ ॥ ਸਰਬ ਕਲਾ ਕਰਿ ਥਾਪਿਆ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰੀਐ ਅੰਤਰਿ ਰਖੁ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ
 ਸਦਾ ਰਹੁ ਟ੍ਰਖੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਕੋਇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਮਾਣਕਾ ਸੁਝਿਨਾ ਰੂਪਾ ਖਾਕੁ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ
 ਬੰਧਪਾ ਕੂਝੇ ਸਭੇ ਸਾਕ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਤਾ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣੀ ਮਨਮੁਖ ਪਸੁ ਨਾਪਾਕ ॥੨॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਰਖਿਆ
 ਆਵਹਿ ਵੰਜਹਿ ਪੂਰ ॥੩॥ ਰਖਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਣਹਾਰ ਜੀਅ ਜੰਤ ਕਰਿ ਦਿੱਤਾ ॥ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰਭ ਕੋਇ ਨ
 ਰਖਨਹਾਰੁ ਮਹਾ ਬਿਕਟ ਜਮ ਭਿੱਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਕੀਸਰਤ ਕਰਿ ਅਪੁਨੀ ਹਰਿ ਮਿੱਤਾ ॥੪॥੧੪॥
 ੮੪॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰਾ ਤਨੁ ਅਲੁ ਧਨੁ ਮੇਰਾ ਰਾਜ ਰੂਪ ਮੈ ਦੇਸੁ ॥ ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਬਨਿਤਾ ਅਨੇਕ ਬਹੁਤੁ
 ਰੰਗ ਅਲੁ ਕੇਸ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਨ ਕਾਰਜਿ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖਿ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
 ਕਰਿ ਸੰਗਤਿ ਨਿਤ ਸਾਧ ਕੀ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਧਿਆਈਐ ਮਸਤਕਿ
 ਹੋਵੈ ਭਾਗੁ ॥ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਕਾਰੀਅਹਿ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਭ੍ਰਮੁ ਕਟੀਐ ਨਾ ਆਵੈ ਨਾ
 ਜਾਗੁ ॥੨॥ ਕਰਿ ਸੰਗਤਿ ਤੂ ਸਾਧ ਕੀ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਉ ॥ ਜੀਤ ਪ੍ਰਾਣ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰੇ ਸਾਚਾ ਏਹੁ

ਸੁਆਤ ॥ ਐਥੈ ਮਿਲਹਿ ਵਡਾਈਆ ਦਰਗਹਿ ਪਾਵਹਿ ਥਾਤ ॥੩॥ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਹੀ
ਹਾਥਿ ॥ ਮਾਰਿ ਆਪੇ ਜੀਵਾਲਦਾ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਾਥਿ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਸਰਬ ਘਟਾ ਕੇ ਨਾਥ ॥੪॥
੧੫॥੮੫॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਰਣ ਪਏ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਹੋਆ ਕਿਰਪਾਲੁ ॥ ਸਤਗੁਰ ਕੈ ਉਪਦੇਸਿਐ
ਬਿਨਸੇ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲ ॥ ਅੰਦਰੁ ਲਗਾ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੁ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਸਾਰੁ
॥ ਕਰੇ ਦਿੱਖਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਝਿਕ ਨਿਮਖ ਨ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਨਿਤ ਗਾਵੀਅਹਿ
ਅਵਗੁਣ ਕਟਣਹਾਰ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਕਰਿ ਡਿਠੇ ਬਿਸਥਾਰ ॥ ਸਹਜੇ ਸਿਫਤੀ ਰਤਿਆ ਭਵਜਲੁ
ਤਤਰੇ ਪਾਰਿ ॥੨॥ ਤੀਰਥ ਕਰਤ ਲਖ ਸੰਜਮਾ ਪਾਈਐ ਸਾਧੂ ਧੂਰਿ ॥ ਲੂਕਿ ਕਮਾਵੈ ਕਿਸ ਤੇ ਜਾ ਕੇਖੈ ਸਦਾ ਹਦੂਰਿ
॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਭਰਪੂਰਿ ॥੩॥ ਸਚੁ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਅਮਰੁ ਸਚੁ ਸਚੇ ਸਚਾ ਥਾਨੁ ॥ ਸਚੀ
ਕੁਦਰਤਿ ਧਾਰੀਅਨੁ ਸਚਿ ਸਿਰਜਿਓਨੁ ਜਹਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜਪੀਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਹਤ ਸਦਾ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੪॥
੧੬॥੮੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਦਮੁ ਕਰਿ ਹਰਿ ਜਾਪਣਾ ਵਡਭਾਗੀ ਧਨੁ ਖਾਟਿ ॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਹਰਿ
ਸਿਮਰਣਾ ਮਲੁ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਕਾਟਿ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਜਾਪੁ ॥ ਮਨ ਇਛੇ ਫਲ ਭੁੰਚਿ ਤੂ
ਸਭੁ ਚੂਕੈ ਸੋਗੁ ਸੰਤਾਪੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਤਨੁ ਧਾਰਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਡਿਠਾ ਨਾਲਿ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ
ਪੂਰਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੨॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇਆ ਲਾਗੀ ਸਾਚੁ ਪਰੀਤਿ ॥ ਚਰਣ
ਭਜੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਸਭਿ ਜਪ ਤਪ ਤਿਨ ਹੀ ਕੀਤਿ ॥੩॥ ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਮਾਣਿਕਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਤ ॥
ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਰਸ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥੪॥੧੭॥੮੭॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੋਈ
ਸਾਸਤੁ ਸਤਣੁ ਸੋਇ ਜਿਤੁ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਗੁਰਿ ਧਨੁ ਦੀਆ ਮਿਲਿਆ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਤ ॥
ਸਾਚੀ ਪ੍ਰੰਜੀ ਸਚੁ ਸੰਜਮੇ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭੁ ਭੇਟਿਆ ਮਰਣੁ ਨ ਆਵਣੁ ਜਾਤ ॥
੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਭਜੁ ਸਦਾ ਝਿਕ ਰੰਗਿ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਸੰਗਿ ॥
੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਖਾ ਕੀ ਮਿਤਿ ਕਿਆ ਗਣੀ ਜਾ ਸਿਮਰੀ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥ ਜਿਨ ਚਾਖਿਆ ਸੇ ਤ੍ਰਪਤਾਸਿਆ ਤਹ

ਰਸੁ ਜਾਣੈ ਜਿੰਦੁ ॥ ਸੰਤਾ ਸੰਗਤਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਸੋਈ ਰਾਜ
 ਨਰਿਦੁ ॥੨॥ ਅਤਸਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗੁਣ ਰਮਣ ਜਿਤੁ ਕੋਟਿ ਮਜਨ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਰਸਨਾ ਤਚਰੈ ਗੁਣਵਤੀ ਕੋਡਿ
 ਨ ਪੁਜੈ ਦਾਨੁ ॥ ਦੂਸਟਿ ਧਾਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਸੈ ਦਿੱਤਿਆਲ ਪੁਰਖੁ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਧਨੁ ਤਿਸ ਦਾ ਹਤ
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੩॥ ਮਿਲਿਆ ਕਦੇ ਨ ਵਿਛੁਡੈ ਜੋ ਮੇਲਿਆ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਦਾਸਾ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਟਿਆ ਸਾਚੈ
 ਸਿਰਜਣਹਾਰਿ ॥ ਭੂਲਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇਆਨੁ ਗੁਣ ਅਕਾਗੁਣ ਨ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਿ ਸਗਲ
 ਘਟਾ ਆਧਾਰੁ ॥੪॥੧੮॥੮੮॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਸਨਾ ਸਚਾ ਸਿਮਰੀਐ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
 ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸਾਕ ਅਗਲੇ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਡਿ ॥ ਮਿਹਰ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਚਸਾ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸੋਇ ॥੧॥
 ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਾਚਾ ਸੇਵਿ ਜਿਚਰੁ ਸਾਸੁ ॥ ਬਿਨੁ ਸਚੇ ਸਭ ਕੂਝ ਹੈ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ
 ਨਿਰਮਲਾ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭੁਖ ਅਤਿ ਅਗਲੀ ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮਾਇ ॥
 ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਭਾਲੀਆ ਸਹ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ਕਰਿ ਜੋ ਮੇਲੇ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਦਾਤਾ ਨਾਮ ਕਾ ਪੂਰਾ ਜਿਸੁ ਖੰਡਾਰੁ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੩॥ ਪਰਵਦਗਾਰੁ ਸਾਲਾਹੀਐ
 ਜਿਸ ਦੇ ਚਲਤ ਅਨੇਕ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਆਰਾਧੀਐ ਏਹਾ ਮਤਿ ਵਿਸੇਖ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮਿਠਾ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ
 ਨਾਨਕ ਲੇਖ ॥੪॥੧੯॥੮੯॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਮਿਲਿ ਭਾਈਹੋ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਤੋਸਾ
 ਬੰਧੁ ਜੀਅ ਕਾ ਐਥੈ ਓਥੈ ਨਾਲਿ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇਰੇ ਤੇ ਪਾਈਐ ਅਪਣੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਸੁ
 ਹੋਵੈ ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਇ ਦਿੱਤਿਆਲੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਡਿ ॥ ਦ੍ਰਿੜਾ ਥਾਤ ਨ ਕੋ ਸੁੜੈ ਗੁਰ ਮੇਲੇ
 ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਗਲ ਪਦਾਰਥ ਤਿਸੁ ਮਿਲੇ ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਡਿਠਾ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਜਿਨ ਮਨੁ
 ਲਗਾ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਮਾਇ ॥ ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਸਮਰਥੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਗੁਰੁ ਡੁਬਦਾ ਲਏ ਤਰਾਇ ॥੨॥ ਕਿਤੁ ਮੁਖਿ ਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹੀਐ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ॥ ਸੇ ਮਥੇ
 ਨਿਹਚਲ ਰਹੇ ਜਿਨ ਗੁਰਿ ਧਾਰਿਆ ਹਥੁ ॥ ਗੁਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਪੀਆਲਿਆ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਾ ਪਥੁ ॥ ਗੁਰੁ

ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਸੇਵਿਆ ਭੈ ਭੰਜਨੁ ਟੁਖ ਲਥੁ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗਹਿਰ ਗਭੀਰੁ ਹੈ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਅਘਖੰਡੁ ॥ ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ
 ਸੇਵਿਆ ਆਪਣਾ ਜਮਟੂਤ ਨ ਲਾਗੈ ਡੰਡੁ ॥ ਗੁਰ ਨਾਲਿ ਤੁਲਿ ਨ ਲਗਈ ਖੋਜਿ ਡਿਠਾ ਬ੍ਰਹਮੰਡੁ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਮਨ ਮਹਿ ਮੰਡੁ ॥੪॥੨੦॥੬੦॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਿਠਾ ਕਰਿ ਕੈ ਖਾਇਆ
 ਕਤੜਾ ਉਪਜਿਆ ਸਾਦੁ ॥ ਭਾਈ ਮੀਤ ਸੁਰਿਦ ਕੀਏ ਬਿਖਿਆ ਰਚਿਆ ਬਾਦੁ ॥ ਜਾਂਦੇ ਬਿਲਮ ਨ ਹੋਰਈ ਵਿਣੁ
 ਨਾਵੈ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਤਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਲਾਗੁ ॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਵਿਣਸਣਾ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਤਿਆਗੁ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਤ ਕੂਕੁਰੁ ਹਰਕਾਇਆ ਧਾਵੈ ਫਲ ਦਿਸ ਜਾਇ ॥ ਲੋਭੀ ਜੰਤੁ ਨ ਜਾਣਈ ਭਖੁ ਅਭਖੁ ਸਭ ਖਾਇ ॥
 ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਦਿ ਬਿਆਪਿਆ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਇ ॥੨॥ ਮਾਇਆ ਜਾਲੁ ਪਸਾਰਿਆ ਭੀਤਰਿ ਚੋਗ ਬਣਾਇ ॥
 ਤੂਸਨਾ ਪੱਖੀ ਫਾਸਿਆ ਨਿਕਸੁ ਨ ਪਾਏ ਮਾਇ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਤਾ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇ
 ॥੩॥ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰੀ ਮੋਹਿਆ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਝਿਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਰਖੈ ਸੋ ਰਹੈ ਸੰਮੂਥੁ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਹਰਿ
 ਜਨ ਹਰਿ ਲਿਵ ਤੁਧਰੇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੁ ॥੪॥੨੧॥੬੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ॥ ਗੋਇਲਿ
 ਆਇਆ ਗੋਇਲੀ ਕਿਆ ਤਿਸੁ ਡੰਫੁ ਪਸਾਰੁ ॥ ਮੁਹਲਤਿ ਪੁਨੀ ਚਲਣਾ ਤੂੰ ਸੰਮਲੁ ਘਰ ਬਾਰੁ ॥੧॥ ਹਰਿ ਗੁਣ
 ਗਾਤ ਮਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਕਿਆ ਥੋੜੜੀ ਬਾਤ ਗੁਮਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈਸੇ ਰੈਣ ਪਰਾਹੁਣੇ
 ਤਠਿ ਚਲਸਹਿ ਪਰਭਾਤਿ ॥ ਕਿਆ ਤੂੰ ਰਤਾ ਗਿਰਸਤ ਸਿਤ ਸਭ ਫੁਲਾ ਕੀ ਬਾਗਾਤਿ ॥੨॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਿਆ
 ਕਰਹਿ ਜਿਨਿ ਦੀਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਲੋਡਿ ॥ ਸਰਪਰ ਤਠੀ ਚਲਣਾ ਛਡਿ ਜਾਸੀ ਲਖ ਕਰੋਡਿ ॥੩॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ
 ਭ੍ਰਮਤਿਆ ਟੁਲਭ ਜਨਮੁ ਪਾਇਓਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂੰ ਸੋ ਦਿਨੁ ਨੇੜਾ ਆਇਓਇ ॥੪॥੨੨॥੬੨॥
 ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਿਚਰੁ ਵਸਹਿ ਸੁਹੇਲੜੀ ਜਿਚਰੁ ਸਾਥੀ ਨਾਲਿ ॥ ਜਾ ਸਾਥੀ ਤਠੀ ਚਲਿਆ ਤਾ ਧਨ ਖਾਕੂ
 ਰਾਲਿ ॥੧॥ ਮਨਿ ਬੈਰਾਗੁ ਭਿਆ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਣੈ ਕਾ ਚਾਤ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਤੇਰਾ ਥਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਚਰੁ ਵਸਿਆ
 ਕੰਤੁ ਘਰਿ ਜੀਤ ਜੀਤ ਸਭਿ ਕਹਾਤਿ ॥ ਜਾ ਤਠੀ ਚਲਸੀ ਕੰਤੜਾ ਤਾ ਕੋਇ ਨ ਪੁਛੈ ਤੇਰੀ ਬਾਤ ॥੨॥ ਪੇਈਐਡੈ ਸਹੁ
 ਸੇਵਿ ਤੂੰ ਸਾਹੁਰਡੈ ਸੁਖਿ ਵਸੁ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਚਜੁ ਅਚਾਰੁ ਸਿਖੁ ਤੁਧੁ ਕਦੇ ਨ ਲਗੈ ਟੁਖੁ ॥੩॥ ਸਭਨਾ ਸਾਹੁਰੈ ਵੰਝਣਾ

सभि मुकलावणहार ॥ नानक धनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥४॥२३॥६३॥
 सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥ करण कारण एकु ओही जिनि कीआ आकारु ॥ तिसहि धिआवहु मन मेरे
 सरब को आधारु ॥१॥ गुर के चरन मन महि धिआडि ॥ छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिव
 लाडि ॥१॥ रहाउ ॥ दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुर मंत्रु हिरदै होडि ॥ कोटि जतना करि रहे गुर बिनु
 तरिओ न कोडि ॥२॥ देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की
 पैरी पाहि ॥३॥ साधसंगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥ से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ
 ॥४॥२४॥६४॥ सिरीरागु महला ५ ॥ संचि हरि धनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥ जिनि तूं साजि
 सवारिआ हरि सिमरि होडि उथारु ॥१॥ जपि मन नामु एकु अपारु ॥ प्रान मनु तनु जिनहि दीआ
 रिदे का आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि अद्वाकारि माते विआपिआ संसारु ॥ पउ संत सरणी लागु
 चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥२॥ सतु संतोखु दइआ कमावै एह करणी सार ॥ आਪु छोडि सभ होडि रेणा
 जिसु देइ प्रभु निरंकारु ॥३॥ जो दीसै सो सगल तूंहै पसरिआ पासारु ॥ कहु नानक गुरि भरमु
 काटिआ सगल ब्रह्म बीचारु ॥४॥२५॥६५॥ सिरीरागु महला ५ ॥ दुकृत सुकृत मंथे संसारु
 सगलाणा ॥ दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥१॥ ठाकुरु सरबे समाणा ॥ किआ कहउ सुणउ
 सुआमी तूं वड पुरखु सुजाणा ॥१॥ रहाउ ॥ मान अभिमान मंथे सो सेवकु नाही ॥ तत समदरसी संतहु
 कोई कोटि मंधाही ॥२॥ कहन कहावन इहु कीरति करला ॥ कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला
 ॥३॥ गति अविगति कछु नदरि न आडिआ ॥ संतन की रेणु नानक दानु पाइआ ॥४॥२६॥६६॥
 सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥ तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥ भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ
 ॥१॥ सुहेला कहनु कहावनु ॥ तेरा बिखमु भावनु ॥१॥ रहाउ ॥ हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ
 जानउ आपा ॥ सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥२॥ पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन

ਜੁਗਤਾ ॥ ਬੰਧਨ ਮੁਕਤੁ ਸੰਤਹੁ ਮੇਰੀ ਰਾਖੈ ਮਮਤਾ ॥੩॥ ਭਏ ਕਿਰਪਾਲ ਠਾਕੁਰ ਰਹਿਓ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥ ਗੁਰ
ਮਿਲਿ ਨਾਨਕ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਾ ॥੪॥੨੭॥੬੭॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਭਾਈਆ
ਕਟਿਅੜਾ ਜਮਕਾਲੁ ॥ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ਹੋਆ ਖਸਮੁ ਦਿੱਇਆਲੁ ॥ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਬਿਨਸਿਆ
ਸਭੁ ਜੰਜਾਲੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰਾ ਹਤ ਤੁਥੁ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਖਾਣੁ ॥ ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਤੁਸਿ ਦਿਤਾ
ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ ਤ੍ਰੂ ਸੇਵਿਆ ਭਾਤ ਕਰਿ ਸੇਈ ਪੁਰਖ ਸੁਜਾਨ ॥ ਤਿਨਾ ਪਿਛੈ ਛੁਟੀਐ ਜਿਨ
ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਕੋ ਨਹੀ ਜਿਨਿ ਦਿਤਾ ਆਤਮ ਦਾਨੁ ॥੨॥ ਆਏ ਸੇ ਪਰਖਾਣੁ ਹਹਿ
ਜਿਨ ਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਸੁਭਾਇ ॥ ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣੁ ਜਾਇ ॥ ਕਰਤੇ ਹਥਿ ਵਡਿਆਈਆ ਪੂਰਬਿ
ਲਿਖਿਆ ਪਾਇ ॥੩॥ ਸਚੁ ਕਰਤਾ ਸਚੁ ਕਰਣਹਾਰੁ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਟੇਕ ॥ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਖਾਣੀਐ ਸਚੋ ਬੁਧਿ
ਬਿਬੇਕ ॥ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਜੀਕੈ ਏਕ ॥੪॥੨੮॥੬੮॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੁ
ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਪ੍ਰਜੀਐ ਮਨਿ ਤਨਿ ਲਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਜੀਅ ਕਾ ਸਭਸੈ ਦੇਇ ਅਧਾਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨ
ਕਮਾਵਣੇ ਸਚਾ ਏਹੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਰਤਿਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਛਾਰੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਾਜਨ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਪ੍ਰਨ ਹੋਕੈ ਘਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰੁ ਸਮਰਥੁ ਅਪਾਰੁ ਗੁਰੁ ਵਡਭਾਗੀ
ਦਰਸਨੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰੁ ਅਗੋਚਰੁ ਨਿਰਮਲਾ ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾ ਗੁਰੁ ਕਰਣਹਾਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਸਚੀ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਹੀ ਗੁਰੁ ਕੀਤਾ ਲੋਡੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਗੁਰੁ ਤੀਰਥੁ ਗੁਰੁ ਪਾਰਜਾਤੁ ਗੁਰੁ
ਮਨਸਾ ਪੂਰਣਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ਉਧਰੈ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਗੁਰੁ ਸਮਰਥੁ ਗੁਰੁ ਨਿਰਕਾਰੁ ਗੁਰੁ ਊਚਾ
ਅਗਮ ਅਪਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਅਗਮ ਹੈ ਕਿਆ ਕਥੇ ਕਥਨਹਾਰੁ ॥੩॥ ਜਿਤਡੇ ਫਲ ਮਨਿ ਬਾਛੀਅਹਿ ਤਿਤਡੇ
ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥ ਪੂਰਬ ਲਿਖੇ ਪਾਵਣੇ ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਦੇ ਰਾਸਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣੀ ਆਇਆਁ ਬਾਹੁਡਿ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸੁ
॥ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਕਦੇ ਨ ਵਿਸਰਤ ਏਹੁ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਤੇਰਾ ਸਾਸੁ ॥੪॥੨੯॥੬੯॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤ
ਜਨਹੁ ਸੁਣਿ ਭਾਈਹੋ ਛੂਟਨੁ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਸਰੇਵਣੇ ਤੀਰਥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਤ ॥ ਆਗੈ ਦਰਗਹਿ

ਮਨੀਅਹਿ ਮਿਲੈ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਉ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਸਾਚੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੁਠੈ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਾਨ ਅਲਖ
ਅਭੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਿ ਦਿਤਾ ਸਚੁ ਨਾਉ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੁ ਸਲਾਹਣਾ ਸਚੇ ਕੇ
ਗੁਣ ਗਾਉ ॥ ਸਚੁ ਖਾਣਾ ਸਚੁ ਪੈਨਣਾ ਸਚੇ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥੨॥ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸਫਲੁ ਮੂਰਤਿ ਗੁਰੂ
ਆਪਿ ॥ ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਅਕਰੁ ਨ ਦਿਸਈ ਆਠ ਪਹਰ ਤਿਸੁ ਜਾਪਿ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਣਤਾਸਿ
॥੩॥ ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਏਕੁ ਹੈ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸੇਈ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮੈਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੪॥੩੦॥੧੦੦॥

१८ सतिगुर प्रसादि ॥

आखि आखि मन् वावणा जिउ जिउ जापै वाङ्गि ॥

सिरीराग महला १ घरु १ अस्टपदीआ ॥

जिस नो वाइ सुणाई औ सो केवडु कितु थाइ ॥ आखण वाले जेतडे सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥
 बाबा अलहु अगम अपारु ॥ पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥२॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु न
 जापी केतडा लिखि न जाणै कोइ ॥ जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥ कीमति किनै न
 पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥३॥ पीर पैकामर सालक साटक सुहटे अउरु सहीद ॥ सेख
 मसाइक काजी मुला दरि दख्वेस रसीद ॥ बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥४॥ पुछि
 न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥ आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥ सभना वेखै
 नदरि करि जै भावै तै देइ ॥५॥ थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥ जिथै वसै मेरा
 पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥ अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥६॥ वरना वरन न
 भावनी जे किसै वडा करेइ ॥ वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ हुकमि सवारे आपणै चसा न
 ढिल करेइ ॥७॥ सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥ केवडु दाता आखीओ दे कै रहिआ
 सुमारि ॥ नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥८॥१॥ महला १ ॥ सभे कंत महेलीआ

सगलीआ करहि सीगारु ॥ गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥ पाखंडि प्रेमु न पाईਐ खोटा
 पाजु खुआरु ॥१॥ हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥ तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि
 ॥२॥ रहाउ ॥ गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥ दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै
 अरदासि ॥ लालि रती सच भै वसी भाड़ि रती रंगि रासि ॥३॥ पूर्व की चेरी काँढ़ीऐ लाली मानै
 नाउ ॥ साची प्रीति न तुर्टई साचे मेलि मिलाउ ॥ सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ
 ॥४॥ सा धन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाड़ि ॥ पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाड़ि ॥
 नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाड़ि ॥५॥ साचु धड़ी धन माड़ीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥ चंदनु
 चीति वसाड़िआ मंदरु दसवा दुआरु ॥ दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर हारु ॥६॥ नारी
 अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥ सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥ बिनु पिर पुरखु न
 जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥७॥ निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाड़ि ॥ अंकु
 जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलि बलि जाड़ि ॥ जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाड़ि
 ॥८॥ सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाड़ि ॥ हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाड़ि ॥ सतिगुरि
 मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाड़ि ॥९॥१॥ सिरीरागु महला १ ॥ आपे गुण आपे कथै आपे सुणि
 वीचारु ॥ आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥ साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥१॥
 हरि जीउ तूं करता करतारु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं हरि नामु मिलै आचारु ॥२॥ रहाउ ॥ आपे
 हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥ आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥ गुर कै सबदि सलाहणा
 घटि घटि डीठु अडीठु ॥३॥ आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥ साची वाट सुजाणु तूं
 सबदि लघावणहारु ॥ निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरु गुबारु ॥४॥ असथिरु करता देखीऐ
 होरु केती आवै जाड़ि ॥ आपे निरमलु एकु तूं होर बंधी धंधै पाड़ि ॥ गुरि राखे से उबरे साचे सिउ

ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੪॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਗੁਰ ਵਾਕਿ ॥ ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਮੈਲੁ ਨ ਲਗਈ ਸਚ ਘਰਿ
ਜਿਸੁ ਓਤਾਕੁ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਆ ਸਾਕੁ ॥੫॥ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸੇ ਸੁਖੀਏ
ਯੁਗ ਚਾਰਿ ॥ ਹਉਮੈ ਤੂਸਨਾ ਮਾਰਿ ਕੈ ਸਚੁ ਰਖਿਆ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਲਾਹਾ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰ
ਕੀਚਾਰਿ ॥੬॥ ਸਾਚਤ ਕਖੁ ਲਾਦੀਐ ਲਾਭੁ ਸਦਾ ਸਚੁ ਰਾਸਿ ॥ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਕੈਸੰਈ ਭਗਤਿ ਸਚੀ
ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਪਤਿ ਸਿਤ ਲੇਖਾ ਨਿਬੱਡੈ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥੭॥ ਊਚਾ ਊਚਤ ਆਖੀਐ ਕਹਤ ਨ ਦੇਖਿਆ
ਯਾਇ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਏਕੁ ਤ੍ਰੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਇ ॥ ਜੋਤਿ ਨਿਰਂਤਰਿ ਜਾਣੀਐ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ
ਸੁਭਾਇ ॥੮॥੩॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਛੁਲੀ ਜਾਲੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ਸਰੁ ਖਾਰਾ ਅਸਗਾਹੁ ॥ ਅਤਿ ਸਿਆਣੀ ਸੋਹਣੀ
ਕਿਤ ਕੀਤੋ ਵੇਸਾਹੁ ॥ ਕੀਤੇ ਕਾਰਣਿ ਪਾਕੜੀ ਕਾਲੁ ਨ ਟਲੈ ਸਿਰਾਹੁ ॥੯॥ ਭਾਈ ਰੇ ਇਤ ਸਿਰਿ ਜਾਣਾਹੁ ਕਾਲੁ ॥ ਜਿਤ
ਮਛੀ ਤਿਤ ਮਾਣਸਾ ਪਵੈ ਅਚਿੰਤਾ ਜਾਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਾਧੋ ਕਾਲ ਕੋ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਾਲੁ ਅਫਾਰੁ ॥ ਸਚਿ
ਰਤੇ ਸੇ ਤੁਕੇ ਦੁਵਿਧਾ ਛੋਡਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਹਤ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ॥੨॥ ਸੀਚਾਨੇ ਜਿਤ
ਪੰਖੀਆ ਜਾਲੀ ਬਧਿਕ ਹਾਥਿ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਤੁਕੇ ਹੋਰਿ ਫਾਥੇ ਚੌਗੈ ਸਾਥਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਚੁਣਿ ਸੁਟੀਅਹਿ ਕੋਇ
ਨ ਸੰਗੀ ਸਾਥਿ ॥੩॥ ਸਚੋ ਸਚਾ ਆਖੀਐ ਸਚੇ ਸਚਾ ਥਾਨੁ ॥ ਜਿਨੀ ਸਚਾ ਮੰਨਿਆ ਤਿਨ ਮਨਿ ਸਚੁ ਧਿਆਨੁ ॥ ਮਨਿ
ਮੁਖਿ ਸੂਚੇ ਜਾਣੀਅਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨਾ ਗਿਆਨੁ ॥੪॥ ਸਤਿਗੁਰ ਅਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ਕਰਿ ਸਾਜਨੁ ਦੇਇ ਮਿਲਾਇ ॥
ਸਾਜਨਿ ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜਮਦੂਤ ਸੁਏ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥ ਨਾਵੈ ਅੰਦਰਿ ਹਤ ਕਸਾਁ ਨਾਤ ਕਸੈ ਮਨਿ ਆਇ
॥੫॥ ਬਾਝੁ ਗੁਰੁ ਗੁਬਾਰੁ ਹੈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਬ੍ਰਾਝ ਨ ਪਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਪਰਗਾਸੁ ਹੋਇ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
ਤਿਥੈ ਕਾਲੁ ਨ ਸੰਚਰੈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥੬॥ ਤ੍ਰੁਹੈ ਸਾਜਨੁ ਤ੍ਰੁ ਸੁਜਾਣੁ ਤ੍ਰੁ ਆਪੇ ਮੇਲਣਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰ
ਸਬਦੀ ਸਾਲਾਹੀਐ ਅਨੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥ ਤਿਥੈ ਕਾਲੁ ਨ ਅਪੱਡੈ ਜਿਥੈ ਗੁਰ ਕਾ ਸਕਦੁ ਅਪਾਰੁ ॥੭॥ ਹੁਕਮੀ
ਸਭੇ ਊਪਜਹਿ ਹੁਕਮੀ ਕਾਰ ਕਮਾਹਿ ॥ ਹੁਕਮੀ ਕਾਲੈ ਵਸਿ ਹੈ ਹੁਕਮੀ ਸਾਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ
ਸੋ ਥੀਐ ਇਨਾ ਜੰਤਾ ਵਸਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥੮॥੪॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨਿ ਜੂਠੈ ਤਨਿ ਜੂਠਿ ਹੈ ਜਿਹਵਾ

ਜੂਠੀ ਹੋਇ ॥ ਮੁਖਿ ਝੂਠੈ ਝੂਠੁ ਬੋਲਣਾ ਕਿਤ ਕਰਿ ਸ੍ਰੂਚਾ ਹੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਅਮ ਸਬਦ ਨ ਮਾਂਜੀਐ ਸਾਚੇ ਤੇ ਸਚੁ ਹੋਇ
 ॥੧॥ ਮੁਂਧੇ ਗੁਣਹੀਣੀ ਸੁਖੁ ਕੇਹਿ ॥ ਪਿਰ ਰਲੀਆ ਰਸਿ ਮਾਣਸੀ ਸਾਚਿ ਸਬਦਿ ਸੁਖੁ ਨੇਹਿ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਿਰ
 ਪਰਦੇਸੀ ਜੇ ਥੀਐ ਧਨ ਵਾੱਢੀ ਝੂਰੇਇ ॥ ਜਿਤ ਜਲਿ ਥੋੜੈ ਮਛੁਲੀ ਕਰਣ ਪਲਾਵ ਕਰੇਇ ॥ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਸੁਖੁ
 ਪਾਈਐ ਜਾ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥ ਪਿਰ ਸਾਲਾਹੀ ਆਪਣਾ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਨਾਲਿ ॥ ਤਨਿ ਸੋਹੈ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ
 ਰਤੀ ਰੰਗਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀ ਸੋਹਣੀ ਪਿਰ ਰਾਵੇ ਗੁਣ ਨਾਲਿ ॥੩॥ ਕਾਮਣਿ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੰਡ ਖੋਟੀ
 ਅਵਗਣਿਆਰਿ ॥ ਨਾ ਸੁਖੁ ਪੇਈਐ ਸਾਹੁਰੈ ਝੂਠਿ ਜਲੀ ਵੇਕਾਰਿ ॥ ਆਵਣੁ ਵੰਜਣੁ ਡਾਖੜੋ ਛੋਡੀ ਕੰਤਿ ਵਿਸਾਰਿ
 ॥੪॥ ਪਿਰ ਕੀ ਨਾਰਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਸੁਤੀ ਸੋ ਕਿਤੁ ਸਾਦਿ ॥ ਪਿਰ ਕੈ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੰਡ ਬੋਲੇ ਫਾਦਿਲੁ ਬਾਦਿ ॥ ਦਰਿ
 ਘਰਿ ਫੌਈ ਨਾ ਲਹੈ ਛੂਟੀ ਟ੍ਰੈ ਸਾਦਿ ॥੫॥ ਪੰਡਿਤ ਵਾਚਹਿ ਪੋਥੀਆ ਨਾ ਬੂਜ਼ਾਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਅਨ ਕਤ ਮਤੀ ਫੇ
 ਚਲਹਿ ਮਾਇਆ ਕਾ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਕਥਨੀ ਝੂਠੀ ਜਗੁ ਭਵੈ ਰਹਣੀ ਸਬਦੁ ਸੁ ਸਾਰੁ ॥੬॥ ਕੇਤੇ ਪੰਡਿਤ ਜੋਤਕੀ ਬੇਦਾ
 ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਵਾਦਿ ਵਿਰੋਧਿ ਸਲਾਹਣੇ ਵਾਦੇ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਰਮ ਨ ਛੁਟਸੀ ਕਹਿ ਸੁਣਿ
 ਆਖਿ ਵਖਾਣੁ ॥੭॥ ਸਭਿ ਗੁਣਵੰਤੀ ਆਖੀਅਹਿ ਮੈ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਹਰਿ ਵਰੁ ਨਾਰਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਮੈ ਭਾਵੈ
 ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵੜਾ ਨਾ ਕੇਛੋਡਾ ਹੋਇ ॥੮॥੫॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ
 ਸਾਧੀਐ ਤੀਰਥਿ ਕੀਚੈ ਵਾਸੁ ॥ ਪੁਨੰ ਦਾਨ ਚੰਗਿਆਈਆ ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਕਿਆ ਤਾਸੁ ॥ ਜੇਹਾ ਰਾਧੇ ਤੇਹਾ ਲੁਣੈ ਬਿਨੁ
 ਗੁਣ ਜਨਮੁ ਵਿਣਾਸੁ ॥੧॥ ਮੁਂਧੇ ਗੁਣ ਦਾਸੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਅਵਗਣ ਤਿਆਗਿ ਸਮਾਈਐ ਗੁਰਮਤਿ ਪੂਰਾ ਸੋਇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਵਿਣੁ ਰਾਸੀ ਵਾਪਾਰੀਆ ਤਕੇ ਕੁੰਡਾ ਚਾਰਿ ॥ ਮੂਲੁ ਨ ਬੁੜੈ ਆਪਣਾ ਵਸਤੁ ਰਹੀ ਘਰ ਬਾਰਿ ॥ ਵਿਣੁ
 ਵਖਰ ਦੁਖੁ ਅਗਲਾ ਕੂਡਿ ਮੁਠੀ ਕੂਡਿਆਰਿ ॥੨॥ ਲਾਹਾ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਤਨਾ ਪਰਖੇ ਰਤਨੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਵਸਤੁ
 ਲਹੈ ਘਰਿ ਆਪਣੈ ਚਲੈ ਕਾਰਜੁ ਸਾਰਿ ॥ ਵਣਜਾਰਿਆ ਸਿਤ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥੩॥ ਸੰਤਾਂ
 ਸੰਗਤਿ ਪਾਈਐ ਜੇ ਮੇਲੇ ਮੇਲਣਹਾਰੁ ॥ ਮਿਲਿਆ ਹੋਇ ਨ ਵਿਛੁੜੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥ ਸਚੈ ਆਸਣਿ
 ਸਚਿ ਰਹੈ ਸਚੈ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰ ॥੪॥ ਜਿਨੀ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਘਰ ਮਹਿ ਮਹਲੁ ਸੁਥਾਇ ॥ ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਸਚੋ

ਪਲੈ ਪਾਇ ॥ ਤ੍ਰਭਵਣਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੀਐ ਸਾਚੋ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੫॥ ਸਾ ਧਨ ਖਰੀ ਸੁਹਾਵਣੀ ਜਿਨਿ ਪਿਝ ਜਾਤਾ
ਸੰਗਿ ॥ ਮਹਲੀ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਈਐ ਸੋ ਪਿਝ ਰਾਵੇ ਰੰਗਿ ॥ ਸਚਿ ਸੁਹਾਗਣਿ ਸਾ ਭਲੀ ਪਿਰਿ ਮੋਹੀ ਗੁਣ ਸੰਗਿ ॥੬॥
ਭੂਲੀ ਭੂਲੀ ਥਲਿ ਚੜਾ ਥਲਿ ਚੜਿ ਝੂਗਰਿ ਜਾਤ ॥ ਬਨ ਮਹਿ ਭੂਲੀ ਜੇ ਫਿਰਾ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕੂੜਾ ਨ ਪਾਤ ॥ ਨਾਵਹੁ
ਭੂਲੀ ਜੇ ਫਿਰਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਤ ਜਾਤ ॥੭॥ ਪੁਛਹੁ ਜਾਇ ਪਥਾਊਆ ਚਲੇ ਚਾਕਰ ਹੋਇ ॥ ਰਾਜਨੁ ਜਾਣਹਿ
ਆਪਣਾ ਦਰਿ ਘਰਿ ਠਾਕ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੮॥੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ
ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਨਿਰਮਲੁ ਜਾਣੀਐ ਨਿਰਮਲ ਟੇਹ ਸਰੀਰੁ ॥ ਨਿਰਮਲੁ ਸਾਚੋ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸੋ ਜਾਣੈ ਅਮ
ਪੀਰ ॥ ਸਹਜੈ ਤੇ ਸੁਖੁ ਅਗਲੋ ਨਾ ਲਾਗੈ ਜਮ ਤੀਰੁ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਮੈਲੁ ਨਾਹੀ ਨਿਰਮਲ ਜਲਿ ਨਾਇ ॥ ਨਿਰਮਲੁ
ਸਾਚਾ ਏਕੁ ਤੂ ਹੋਰੁ ਮੈਲੁ ਭਰੀ ਸਭ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਮੰਦਰੁ ਸੋਹਣਾ ਕੀਆ ਕਰਣੈਹਾਰਿ ॥ ਰਵਿ ਸਸਿ
ਦੀਪ ਅਨੂਪ ਜੋਤਿ ਤ੍ਰਭਵਣਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥ ਹਾਟ ਪਟਣ ਗੜ ਕੋਠੜੀ ਸਚੁ ਸਤਦਾ ਵਾਪਾਰ ॥੨॥ ਗਿਆਨ
ਅੰਜਨੁ ਭੈ ਭੰਜਨਾ ਦੇਖੁ ਨਿਰੰਜਨ ਭਾਇ ॥ ਗੁਪਤੁ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸਭ ਜਾਣੀਐ ਜੇ ਮਨੁ ਰਾਖੈ ਠਾਇ ॥ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੇ
ਮਿਲੈ ਤਾ ਸਹਜੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥ ਕਸਿ ਕਸਵਟੀ ਲਾਈਐ ਪਰਖੇ ਹਿਤੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਖੋਟੇ ਠਤਰ ਨ
ਪਾਇਨੀ ਖਰੇ ਖਜਾਨੈ ਪਾਇ ॥ ਆਸ ਅੰਦੇਸਾ ਟ੍ਰ੍ਯਰਿ ਕਰਿ ਇਤ ਮਲੁ ਜਾਇ ਸਮਾਇ ॥੪॥ ਸੁਖ ਕਤ ਮਾਗੈ ਸਮੁ
ਕੋ ਦੁਖੁ ਨ ਮਾਗੈ ਕੋਇ ॥ ਸੁਖੈ ਕਤ ਦੁਖੁ ਅਗਲਾ ਮਨਮੁਖਿ ਕੂੜਾ ਨ ਹੋਇ ॥ ਸੁਖ ਦੁਖ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੀਅਹਿ
ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੫॥ ਬੇਟੁ ਪੁਕਾਰੇ ਵਾਚੀਐ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮ ਬਿਆਸੁ ॥ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਵਕ ਸਾਧਿਕਾ ਨਾਮਿ ਰਤੇ
ਗੁਣਤਾਸੁ ॥ ਸਚਿ ਰਤੇ ਸੇ ਜਿਣਿ ਗਏ ਹਤ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਸੁ ॥੬॥ ਚਹੁ ਜੁਗਿ ਮੈਲੇ ਮਲੁ ਭਰੇ ਜਿਨ ਮੁਖਿ
ਨਾਮੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਭਗਤੀ ਭਾਇ ਵਿਹੂਣਿਆ ਮੁਹੁ ਕਾਲਾ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਅਵਗਣ ਮੁਠੀ
ਰੋਇ ॥੭॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਪਾਇਆ ਡਰੁ ਕਰਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਘਰਿ ਵਸੈ ਹਤਮੈ ਤੂਸਨਾ ਜਾਇ ॥
ਨਾਨਕ ਨਿਰਮਲ ਊਜਲੇ ਜੋ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੮॥੭॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਭੂਲੇ ਬਾਵਰੇ ਗੁਰ ਕੀ
ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥ ਹਰਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਜਮੁ ਡਰਪੈ ਦੁਖ ਭਾਗੁ ॥ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ਘਣੋ ਦੋਹਾਗਣੀ ਕਿਤ ਥਿਰੁ ਰਹੈ

सुहागु ॥१॥ भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥ मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥
 गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥
 मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥२॥ गुरु जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥ बिनु
 सतिगुर नाउ न पाईਐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥ आइ गडिआ पछुतावणा जितु सुंजै घरि काउ ॥३॥
 बिनु नावै दुखु देहुरी जितु कलर की भीति ॥ तब लगु महलु न पाईਐ जब लगु साचु न चीति ॥ सबदि
 रपै घरु पाईਐ निरबाणी पढु नीति ॥४॥ हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥ सबदि
 सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥ सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥५॥ सबदि रते से
 निरमले तजि काम क्रोधु अद्विकारु ॥ नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥ सो कितु मनहु
 विसारीਐ सभ जीआ का आधारु ॥६॥ सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥ सबदै ही ते
 पाईਐ हरि नामे लगै पिआरु ॥ बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥७॥ सभ सालाहै आप
 कउ वडहु वडेरी होइ ॥ गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥ नानक सबदि पछाणीऐ
 हउमै करै न कोइ ॥८॥८॥ सिरीरागु महला १ ॥ बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥
 ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥ दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥ मन रे
 राम जपहु सुखु होइ ॥ बिनु गुर प्रेमु न पाईਐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर सेवा सुखु
 पाईਐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥ सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥ गुरमुखि जाणि सिजाणीऐ
 गुरि मेली गुण चारु ॥२॥ सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥ मनु तनु साचि विगसिआ
 कीमति कहणु न जाइ ॥ हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥३॥ मन महि मनूआ जे मरै ता
 पिरु रावै नारि ॥ इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥ संत सभा सुखु ऊपजै गुरमुखि
 नाम अधारु ॥४॥ खिन महि ऊपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥ सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु

ਕਾਲੁ ਸਨਤਾਇ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਅਤੁਲੁ ਨ ਤੋਲੀਐ ਕਥਨਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥੫॥ ਵਾਪਾਰੀ ਵਣਜਾਰਿਆ ਆਏ
 ਕਵਜ਼ੁ ਲਿਖਾਇ ॥ ਕਾਰ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚ ਕੀ ਲਾਹਾ ਮਿਲੈ ਰਿਆਇ ॥ ਪ੍ਰੰਜੀ ਸਾਚੀ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਤਿਲੁ ਨ
 ਤਮਾਇ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੋਲਿ ਤੁਲਾਇਸੀ ਸਚੁ ਤਰਾਜੀ ਤੋਲੁ ॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਮੋਹਣੀ ਗੁਰਿ ਠਾਕੀ ਸਚੁ ਬੋਲੁ ॥
 ਆਪਿ ਤੁਲਾਏ ਤੋਲਸੀ ਪ੍ਰੇ ਪ੍ਰੂਧ ਤੋਲੁ ॥੭॥ ਕਥਨੈ ਕਹਣਿ ਨ ਛੁਟੀਐ ਨਾ ਪਡਿ ਪੁਸਤਕ ਭਾਰ ॥ ਕਾਇਆ
 ਸੋਚ ਨ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਪਿਆਰ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਮੇਲੇ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰ ॥੮॥੯॥
 ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰੂਧ ਜੇ ਮਿਲੈ ਪਾਈਐ ਰਤਨੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਮਨੁ ਦੀਜੈ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਪਾਈਐ
 ਸਰਬ ਪਿਆਰੁ ॥ ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਅਵਗਣ ਮੇਟਣਹਾਰੁ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਇ ॥
 ਪ੍ਰਚੁਹੁ ਬ੍ਰਹਮੇ ਨਾਰਦੈ ਕੇਦ ਬਿਆਸੈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਧੁਨਿ ਜਾਣੀਐ ਅਕਥੁ ਕਹਾਵੈ
 ਸੋਇ ॥ ਸਫਲਿਆਂ ਬਿਰਖੁ ਹਰੀਆਵਲਾ ਛਾਵ ਘਣੇਰੀ ਹੋਇ ॥ ਲਾਲ ਜਵੇਹਰ ਮਾਣਕੀ ਗੁਰ ਭੰਡਾਰੈ ਸੋਇ ॥੨॥
 ਗੁਰ ਭੰਡਾਰੈ ਪਾਈਐ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਾਚੋ ਕਖਰੁ ਸੰਚੀਐ ਪ੍ਰੈ ਕਰਮਿ ਅਪਾਰੁ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਦੁਖ
 ਮੇਟਣੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਸੁਰ ਸੰਘਾਰੁ ॥੩॥ ਭਵਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਡਰਾਵਣੋ ਨਾ ਕਂਧੀ ਨਾ ਪਾਰੁ ॥ ਨਾ ਬੇਡੀ ਨਾ ਤੁਲਹੜਾ ਨਾ
 ਤਿਸੁ ਕੱਝੁ ਮਲਾਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੈ ਕਾ ਬੋਹਿਥਾ ਨਦਰੀ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੁ ॥੪॥ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਪਿਆਰਾ ਵਿਸਰੈ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ
 ਸੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਜਿਹਵਾ ਜਲਤ ਜਲਾਵਣੀ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪੈ ਰਸਾਇ ॥ ਘਟੁ ਬਿਨਸੈ ਦੁਖੁ ਅਗਲੋ ਜਮੁ ਪਕੜੈ ਪਛੁਤਾਇ
 ॥੫॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਗਏ ਤਨੁ ਧਨੁ ਕਲਤੁ ਨ ਸਾਥਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧਨੁ ਬਾਦਿ ਹੈ ਭੂਲੋ ਮਾਰਗਿ ਆਥਿ ॥ ਸਾਚਤ
 ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥੋ ਕਾਥਿ ॥੬॥ ਆਵੈ ਜਾਇ ਭਵਾਈਐ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਇ ॥ ਪ੍ਰੂਬਿ
 ਲਿਖਿਆ ਕਿਤ ਮੇਟੀਐ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਰਿਆਇ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਛੁਟੀਐ ਗੁਰਮਤਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥੭॥
 ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਮੇਰਾ ਕੋ ਨਹੀ ਜਿਸ ਕਾ ਜੀਤ ਪਰਾਨੁ ॥ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਜਲਿ ਬਲਤ ਲੋਭੁ ਜਲਤ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੀਐ ਪਾਈਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੮॥੧੦॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ
 ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਜਲ ਕਮਲੇਹਿ ॥ ਲਹਰੀ ਨਾਲਿ ਪਛਾਈਐ ਭੀ ਵਿਗਸੈ ਅਸਨੇਹਿ ॥ ਜਲ ਮਹਿ

ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਕੈ ਬਿਨੁ ਜਲ ਮਰਣੁ ਤਿਨੇਹਿ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਕਿਤ ਛੂਟਹਿ ਬਿਨੁ ਪਿਆਰ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ
ਰਹਿਆ ਬਖਸੇ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਮਛੁਲੀ ਨੀਰ ॥ ਜਿਤ
ਅਧਿਕਤ ਤਿਤ ਸੁਖੁ ਘਣੋ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਾਁਤਿ ਸਰੀਰ ॥ ਬਿਨੁ ਜਲ ਘੜੀ ਨ ਜੀਵੰਈ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੈ ਅਭ ਪੀਰ ॥੨॥
ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਚਾਤੂਕ ਮੇਹ ॥ ਸਰ ਭਰਿ ਥਲ ਹਰੀਆਵਲੇ ਇਕ ਕੁੰਦ ਨ ਪਰਵੰਈ
ਕੇਹ ॥ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਸੋ ਪਾਈਐ ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਸਿਰਿ ਦੇਹ ॥੩॥ ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ
ਜਲ ਟੁਧ ਹੋਇ ॥ ਆਵਟਣੁ ਆਪੇ ਖਵੈ ਟੁਧ ਕਤ ਖਪਣਿ ਨ ਟੇਇ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਵਿਛੁਨਿਆ ਸਚਿ ਵਡਿਆਈ
ਟੇਇ ॥੪॥ ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਚਕਵੀ ਸੂਰ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਨੀਦ ਨ ਸੋਵੰਈ ਜਾਣੈ ਟ੍ਰਾਰਿ
ਹਜੂਰਿ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਸੋਝੀ ਨਾ ਪਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥੫॥ ਮਨਮੁਖਿ ਗਣਤ ਗਣਾਵਣੀ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ
ਹੋਇ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਹੋਇ ਤ ਪਾਈਐ ਸਚਿ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੬॥
ਸਚਾ ਨੇਹੁ ਨ ਤੁਟੰਈ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਸੋਇ ॥ ਗਿਆਨ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਤ੍ਰਭਵਣ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥ ਨਿਰਮਲੁ
ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਜੇ ਗੁਣ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਹੋਇ ॥੭॥ ਖੇਲਿ ਗਏ ਸੇ ਪੰਖਣੁ ਜੋ ਚੁਗਦੇ ਸਰ ਤਲਿ ॥ ਘੜੀ ਕਿ ਮੁਹਤਿ
ਕਿ ਚਲਣਾ ਖੇਲਣੁ ਅਜੁ ਕਿ ਕਲਿ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰੂ ਮੇਲਹਿ ਸੋ ਮਿਲੈ ਜਾਇ ਸਚਾ ਪਿੜੁ ਮਲਿ ॥੮॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਿ
ਨ ਊਪਜੈ ਹਤਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸੋਵਾ ਆਪੁ ਪਛਾਣੀਐ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਪਤੀਆਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣੀਐ
ਅਵਰ ਕਿ ਕਰੇ ਕਰਾਇ ॥੯॥ ਮਿਲਿਆ ਕਾ ਕਿਆ ਮੇਲੀਐ ਸਬਦਿ ਮਿਲੇ ਪਤੀਆਇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਸੋਝੀ ਨਾ ਪਵੈ
ਕੀਛੁਡਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰੁ ਘਰੁ ਏਕੁ ਹੈ ਅਵਰੁ ਨ ਟ੍ਰੌਜੀ ਜਾਇ ॥੧੦॥੧੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
ਮਨਮੁਖਿ ਭੁਲੈ ਭੁਲਾਈਐ ਭੂਲੀ ਠਤਰ ਨ ਕਾਇ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਕੋ ਨ ਦਿਖਾਰੰਈ ਅੰਧੀ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਗਿਆਨ
ਪਦਾਰਥੁ ਖੋਇਆ ਠਗਿਆ ਸੁਠਾ ਜਾਇ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਮਾਇਆ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥ ਭਰਮਿ ਭੂਲੀ ਡੋਹਾਗਣੀ ਨਾ ਪਿਰ
ਅੰਕਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭੂਲੀ ਫਿਰੈ ਦਿਸੰਤਰੀ ਭੂਲੀ ਗ੍ਰਹੁ ਤਜਿ ਜਾਇ ॥ ਭੂਲੀ ਝੁੰਗਰਿ ਥਲਿ ਚੱਡੈ ਭਰਮੈ
ਮਨੁ ਡੋਲਾਇ ॥ ਧੁਰਹੁ ਵਿਛੁਨੀ ਕਿਤ ਮਿਲੈ ਗਰਬਿ ਸੁਠੀ ਬਿਲਲਾਇ ॥੨॥ ਵਿਛੁਡਿਆ ਗੁਰੁ ਮੇਲਸੀ ਹਰਿ ਰਸਿ ਨਾਮ

ਪਿਆਰਿ ॥ ਸਾਚਿ ਸਹਜਿ ਸੋਭਾ ਘਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਨਾਮ ਅਧਾਰਿ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਖੁ ਤ੍ਰਂ ਮੈ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਕਵਨੁ
 ਭਤਾਰੁ ॥੩॥ ਅਖਰ ਪਡਿ ਪਡਿ ਭੁਲੀਐ ਭੇਖੀ ਬਹੁਤੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਤੀਰਥ ਨਾਤਾ ਕਿਆ ਕਰੇ ਮਨ ਮਹਿ ਮੈਲੁ
 ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਕਿਨਿ ਸਮਝਾਈਐ ਮਨੁ ਰਾਜਾ ਸੁਲਤਾਨੁ ॥੪॥ ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ
 ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਸਾ ਧਨ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਘਰ ਹੀ ਸੋ ਪਿਲੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰੁ
 ॥੫॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਖੋਇ
 ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ਲਾਭੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥੬॥ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਪਾਈਐ ਆਪਿ ਨ ਲਾਇਆ ਜਾਇ ॥
 ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਗਿ ਰਹੁ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਸਚੋ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੭॥ ਭੁਲਣ ਅੰਦਰਿ
 ਸਭੁ ਕੋ ਅਭੁਲੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੁ ਸਮਝਾਇਆ ਲਾਗਾ ਤਿਸੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਨ ਕੀਸਰੈ
 ਮੇਲੇ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰੁ ॥੮॥੧੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਘਰ ਨਾਰਿ ॥
 ਧਨਿ ਜੋਬਨਿ ਜਗੁ ਠਗਿਆ ਲਕਿ ਲੋਭਿ ਅਛਕਾਰਿ ॥ ਮੋਹ ਠਗਤਲੀ ਹਤ ਸੁਈ ਸਾ ਕਰਤੈ ਸੱਸਾਰਿ ॥੯॥ ਮੇਰੇ
 ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਮੈ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਮੈ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਭਾਵੈ ਤ੍ਰੂ ਭਾਵਹਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ
 ਸਾਲਾਹੀ ਰੰਗ ਸਿਤ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਾਂਤੋਖੁ ॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਚਲਸੀ ਕੂੜਾ ਮੋਹੁ ਨ ਕੇਖੁ ॥ ਵਾਟ ਵਟਾਊ ਆਇਆ ਨਿਤ
 ਚਲਦਾ ਸਾਥੁ ਦੇਖੁ ॥੨॥ ਆਖਣਿ ਆਖਹਿ ਕੇਤੇਡੇ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰੂ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਜੇ ਮਿਲੈ ਸਚਿ ਰੈਪੈ ਪਤਿ
 ਹੋਇ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਸੇ ਭਲੇ ਖੋਟਾ ਖਰਾ ਨ ਕੋਇ ॥੩॥ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਛੁਟੀਐ ਮਨਮੁਖ ਖੋਟੀ ਰਾਸਿ ॥ ਅਸਟ ਧਾਤੁ
 ਪਾਤਿਸਾਹ ਕੀ ਘੜੀਐ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸਿ ॥ ਆਪੇ ਪਰਖੇ ਪਾਰਖੂ ਪਕੈ ਖਜਾਨੈ ਰਾਸਿ ॥੪॥ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਕੈ
 ਸਭ ਡਿਠੀ ਠੋਕਿ ਵਜਾਇ ॥ ਕਹਣੈ ਹਾਥ ਨ ਲਭੈ ਸਚਿ ਟਿਕੈ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਤ੍ਰੂ ਸਾਲਾਹਣਾ ਹੋਰੁ ਕੀਮਤਿ
 ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥੫॥ ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਨ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਹਉਮੈ ਵਾਦੁ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਪਾਈਐ
 ਬਿਖਿਆ ਦ੍ਰਿਜਾ ਸਾਦੁ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਮਾਇਆ ਫੀਕਾ ਸਾਦੁ ॥੬॥ ਆਸਾ ਅੰਦਰਿ ਜੰਮਿਆ ਆਸਾ
 ਰਸ ਕਸ ਖਾਇ ॥ ਆਸਾ ਬੰਧਿ ਚਲਾਈਐ ਮੁਹੇ ਮੁਹਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥ ਅਵਗਣਿ ਬਧਾ ਮਾਰੀਐ ਛੂਟੈ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਇ

॥੭॥ ਸਰਬੇ ਥਾਈ ਏਕੁ ਤ੍ਰਿ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖੁ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚਾ ਮਨਿ ਵਸੈ ਨਾਮੁ ਭਲੋ ਪਤਿ ਸਾਖੁ ॥ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ
 ਗਵਾਈਐ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਸਚੁ ਭਾਖੁ ॥੮॥ ਆਕਾਸੀ ਪਾਤਾਲਿ ਤ੍ਰਿ ਤ੍ਰਿ ਭਵਣਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਆਪੇ ਭਗਤੀ ਭਾਉ
 ਤ੍ਰਿ ਆਪੇ ਮਿਲਹਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਰਜਾਇ ॥੯॥੧੩॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧
 ॥ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਅਵਰੁ ਕਿ ਕਰੀ ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਸਬਦ ਸੁਰਤਿ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤਤ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥ ਜਿਤ
 ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖੁ ਤ੍ਰਿ ਮੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਸਾਚੀ ਖਸਮ ਰਜਾਇ ॥ ਜਿਨਿ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਾਜਿ ਸੀਗਾਰਿਆ
 ਤਿਸੁ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਨੁ ਬੈਸ਼ਂਤਰਿ ਹੋਮੀਐ ਫਿਕ ਰਤੀ ਤੋਲਿ ਕਟਾਇ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਮਧਾ
 ਜੇ ਕਰੀ ਅਨਦਿਨੁ ਅਗਨਿ ਜਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਤੁਲਿ ਨ ਪੁਜੈ ਜੇ ਲਖ ਕੋਟੀ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥੨॥ ਅਰਧ
 ਸਰੀਰੁ ਕਟਾਈਐ ਸਿਰਿ ਕਰਵਤੁ ਧਰਾਇ ॥ ਤਨੁ ਹੈਮਚਲਿ ਗਾਲੀਐ ਭੀ ਮਨ ਤੇ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੈ
 ਤੁਲਿ ਨ ਪੁਜੈ ਸਭ ਡਿਠੀ ਠੋਕਿ ਵਜਾਇ ॥੩॥ ਕੰਚਨ ਕੇ ਕੋਟ ਦੁਤੁ ਕਰੀ ਬਹੁ ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਦਾਨੁ ॥ ਭੂਮਿ ਦਾਨੁ
 ਗੜਆ ਘਣੀ ਭੀ ਅੰਤਰਿ ਗਰਬੁ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਸਚੁ ਦਾਨੁ ॥੪॥ ਮਨਹਠ
 ਬੁਧੀ ਕੇਤੀਆ ਕੇਤੇ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰ ॥ ਕੇਤੇ ਬੰਧਨ ਜੀਅ ਕੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ॥ ਸਚਹੁ ਓਰੈ ਸਭੁ ਕੋ ਉਪਰਿ ਸਚੁ
 ਆਚਾਰੁ ॥੫॥ ਸਭੁ ਕੋ ਊਚਾ ਆਖੀਐ ਨੀਚੁ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਇ ॥ ਇਕਨੈ ਭਾਁਡੇ ਸਾਜਿਐ ਇਕੁ ਚਾਨਣੁ ਤਿਹੁ ਲੋਇ ॥
 ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਧੁਰਿ ਬਖਸ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਇ ॥੬॥ ਸਾਧੁ ਮਿਲੈ ਸਾਧੂ ਜਨੈ ਸੰਤੋਖੁ ਵਸੈ ਗੁਰ ਭਾਇ ॥
 ਅਕਥ ਕਥਾ ਕੀਚਾਰੀਐ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥ ਪੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੰਤੋਖਿਆ ਦਰਗਹਿ ਪੈਧਾ ਜਾਇ ॥੭॥ ਘਟਿ
 ਘਟਿ ਵਾਜੈ ਕਿਂਗੁਰੀ ਅਨਦਿਨੁ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਵਿਰਲੇ ਕਤ ਸੋਝੀ ਪੰਡੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਸਮਝਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਛੂਟੈ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ॥੮॥੧੪॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਚਿਤੇ ਦਿਸਹਿ ਧਤਲਹਰ ਕਗੇ ਬੰਕ
 ਦੁਆਰ ॥ ਕਰਿ ਮਨ ਖੁਸੀ ਤਸਾਰਿਆ ਢੂਜੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਅੰਦਰੁ ਖਾਲੀ ਪ੍ਰੇਮ ਬਿਨੁ ਫਹਿ ਫੇਰੀ ਤਨੁ ਛਾਰੁ ॥੧॥
 ਭਾਈ ਰੇ ਤਨੁ ਧਨੁ ਸਾਥਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਿਰਮਲੋ ਗੁਰੁ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ
 ਧਨੁ ਨਿਰਮਲੋ ਜੇ ਦੇਵੈ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥ ਆਗੈ ਪ੍ਰਥ ਨ ਹੋਰੈ ਜਿਸੁ ਬੇਲੀ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਆਪਿ ਛਡਾਏ ਛੁਟੀਐ

आपे बखसणहारु ॥२॥ मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥ नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु
 सु सोगु ॥ गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरि रसु भोगु ॥३॥ चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि
 डोलाइ ॥ बाहरि ढूँढि विगुचीअै घर महि वसतु सुथाइ ॥ मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै
 पाइ ॥४॥ साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥ रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि
 पिराणु ॥ पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥५॥ बहुता जीवणु मंगीअै मुआ न लोडै कोइ ॥
 सुख जीवणु तिसु आखीअै जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥ नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरि गुर दरसु न
 होइ ॥६॥ जित सुपनै निसि भुलीअै जब लगि निद्रा होइ ॥ इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि
 हउमै दोइ ॥ गुरमति होइ बीचारीअै सुपना इहु जगु लोइ ॥७॥ अगनि मरै जलु पाईअै जित
 बारिक दूधै माइ ॥ बिनु जल कमल सु ना थीअै बिनु जल मीनु मराइ ॥ नानक गुरमुखि हरि रसि
 मिलै जीवा हरि गुण गाइ ॥८॥१५॥ सिरीरागु महला ੧ ॥ डूँगरु देखि डरावणो पईअडै डरीआसु ॥
 ऊचउ परबतु गाखडो ना पउडी तितु तासु ॥ गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥९॥ भाई
 रे भवजलु बिखमु डराँत ॥ पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरि नात ॥१॥ रहाउ ॥ चला चला जे
 करी जाणा चलणहारु ॥ जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥ भी सच्चा सालाहणा सचै थानि
 पिआरु ॥२॥ दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥ हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ॥ किस ही
 नालि न चलिआ खपि खपि मुए असार ॥३॥ सुइना रूपा संचीअै मालु जालु जंजालु ॥ सभ जग महि
 दोही फेरीअै बिनु नावै सिरि कालु ॥ पिंडु पड़े जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥४॥ पुता देखि
 विगसीअै नारी सेज भतार ॥ चोआ चंदनु लाईअै कापडु रूपु सीगारु ॥ खेहू खेह रलाईअै छोडि चलै
 घर बारु ॥५॥ महर मलूक कहाईअै राजा राउ कि खानु ॥ चउधरी राउ सदाईअै जलि बलीअै
 अभिमान ॥ मनमुखि नामु विसारिआ जित डवि दधा कानु ॥६॥ हउमै करि करि जाइसी जो आइआ

जग माहि ॥ सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ॥ गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ॥७॥ नानक तरीअै सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ॥ मै हरि नामु न वीसरै हरि नामु रतनु वेसाहु ॥ मनमुख भउजलि पचि मुए गुरमुखि तरे अथाहु ॥८॥१६॥ सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥ मुकामु ता परु जाणीअै जा रहै निहचलु लोक ॥९॥ दुनीआ कैसि मुकामे ॥ करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥१॥ रहाउ ॥ जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥ पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देव सथानि ॥२॥ सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥ दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥३॥ सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥ घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥४॥ सबदाह माहि वखाणीअै विरला त बूझै कोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥५॥ अलाहु अलखु अगंमु कादरु करणहारु करीमु ॥ सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥६॥ मुकामु तिस नो आखीअै जिसु सिसि न होवी लेखु ॥ असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥७॥ दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥ मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥८॥१७॥ महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥

सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥ आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥ हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥१॥ भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥२॥ रहाउ ॥ आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ॥ जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ॥३॥ देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ

नालि न जाई ॥ सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥ प्रभु सखा हरि जीउ मेरा
 अंते होइ सखाई ॥३॥ पेईअडै जगजीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥ बिनु सतिगुर को मगु न
 जाणै अंधे ठउर न काई ॥ हरि सुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ॥४॥ पेईअडै
 जगजीवनु दाता गुरमति मनि वसाइआ ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ
 ॥ जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥५॥ आपे नदरि करे भाउ लाए गुर सबदी बीचारि ॥
 सतिगुरु सेविअै सहजु ऊपजै हउमै तृसना मारि ॥ हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उर धारि
 ॥६॥ प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥ नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु
 सभु जाइ ॥ सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥७॥ आपणै मनि चिति कहै कहाए
 बिनु गुर आपु न जाई ॥ हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मनि वसाई ॥ नानक सोभा
 सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥८॥९॥१८॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हउमै करम कमावदे
 जमडंडु लगै तिन आइ ॥ जि सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥१॥ मन रे गुरमुखि
 नामु धिआइ ॥ धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ॥२॥ रहाउ ॥ विणु सतिगुर
 परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥ सुपनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥३॥ जे हरि
 हरि कीचै बहुतु लोचीअै किरतु न मेटिआ जाइ ॥ हरि का भाणा भगती मनिआ से भगत पए दरि थाइ
 ॥४॥ गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ न जाइ ॥ जे सउ अंमूतु नीरीअै भी बिखु फलु
 लागै धाइ ॥५॥ से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥ सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु
 हउमै तजि विकारु ॥६॥ मनहठि कितै उपाइ न छूटीअै सिमृति सासत्र सोधहु जाइ ॥ मिलि संगति
 साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥७॥ हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ गुरमुखि सई
 सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥८॥ नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ॥ गुर परसादी पाईअै

ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੮॥੨॥੧੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਪੰਖੀ ਬਿਰਖਿ ਸੁਹਾਵਡਾ ਸਚੁ ਚੁਗੈ ਗੁਰ ਭਾਇ ॥
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਸਹਜਿ ਰਹੈ ਤਡੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
 ਮਨ ਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੇ ਚਲਹਿ ਤਾ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਚਹਿ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਪੰਖੀ ਬਿਰਖ ਸੁਹਾਵਡੇ ਊਡਹਿ ਚਹੁ ਦਿਸਿ ਜਾਹਿ ॥ ਜੇਤਾ ਊਡਹਿ ਦੁਖ ਘਣੇ ਨਿਤ ਦਾਝਹਿ ਤੈ ਬਿਲਲਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ
 ਗੁਰ ਮਹਲੁ ਨ ਜਾਪੈ ਨਾ ਅੰਮ੍ਰਤ ਫਲ ਪਾਹਿ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਹਰੀਆਵਲਾ ਸਾਚੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
 ਸਾਖਾ ਤੀਨਿ ਨਿਵਾਰੀਆ ਏਕ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਫਲੁ ਹਰਿ ਏਕੁ ਹੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ਖਵਾਇ ॥੩॥
 ਮਨਮੁਖ ਊਥੇ ਸੁਕਿ ਗਏ ਨਾ ਫਲੁ ਤਿਨਾ ਛਾਉ ॥ ਤਿਨਾ ਪਾਸਿ ਨ ਬੈਸੀਐ ਓਨਾ ਘਰੁ ਨ ਗਿਰਾਉ ॥ ਕਟੀਅਹਿ
 ਤੈ ਨਿਤ ਜਾਲੀਅਹਿ ਓਨਾ ਸਬਦੁ ਨ ਨਾਉ ॥੪॥ ਹੁਕਮੇ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਫਿਰਾਉ ॥ ਹੁਕਮੇ
 ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਣਾ ਜਹ ਭੇਜਹਿ ਤਹ ਜਾਉ ॥ ਹੁਕਮੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹੁਕਮੇ ਸਚਿ ਸਮਾਉ ॥੫॥ ਹੁਕਮੁ ਨ
 ਜਾਣਹਿ ਬਪੁਡੇ ਭੂਲੇ ਫਿਰਹਿ ਗਵਾਰ ॥ ਮਨਹਠਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਨਿਤ ਨਿਤ ਹੋਹਿ ਖੁਆਰੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਨ
 ਆਵੈ ਨਾ ਸਚਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖੀਆ ਮੁਹ ਸੋਹਣੇ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਸਚੀ ਭਗਤੀ ਸਚਿ
 ਰਤੇ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ॥ ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਸਭ ਕੁਲ ਕਾ ਕਰਹਿ ਤਥਾਰੁ ॥੭॥ ਸਭ ਨਦਰੀ ਕਰਮ
 ਕਮਾਵਦੇ ਨਦਰੀ ਬਾਹਰਿ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜੈਸੀ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਸਚਾ ਤੈਸਾ ਹੀ ਕੋ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਵਡਾਈਆ
 ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੮॥੩॥੨੦॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਮਨਮੁਖਿ ਕੂੜਾ ਨ ਪਾਇ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਮੁਖ ਊਜਲੇ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸਹਜੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਭਾਈ
 ਰੇ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਭਗਤਿ ਹੈ ਵਿਰਲਾ ਪਾਏ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗੁ ਸੁਹਾਗਣੀ
 ਜੇ ਚਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥ ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਪਾਈਐ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਬਦਿ ਮਿਲੀ ਨਾ ਕੀਛੁਡੈ
 ਪਿਰ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਅਤਿ ਊਜਲਾ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਪਾਠੁ ਪਡੈ ਨਾ ਕੂੜਾਈ
 ਭੇਖੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਸਦਾ ਪਾਇਆ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ

ਗੁਰਮਤੀ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਜਗੁ ਦੁਖੀਆ ਫਿਰੈ ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਗੰਡ ਖਾਇ ॥ ਸਬਦੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ
 ਸਬਦੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥ ਮਾਇਆ ਭੂਲੇ ਸਿਧ ਫਿਰਹਿ ਸਮਾਧਿ ਨ ਲਗੈ ਸੁਭਾਇ ॥ ਤੀਨੇ ਲੋਅ ਵਿਆਪਤ ਹੈ
 ਅਧਿਕ ਰਹੀ ਲਪਟਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ਨਾ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਇਆ ਜਾਇ ॥੫॥ ਮਾਇਆ ਕਿਸ ਨੋ
 ਆਖੀਐ ਕਿਆ ਮਾਇਆ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਦੁਖਿ ਸੁਖਿ ਏਹੁ ਜੀਤ ਬਧੁ ਹੈ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਬਿਨੁ
 ਸਬਦੈ ਭਰਮੁ ਨ ਚੂਕੰਡ ਨਾ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ॥੬॥ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤੀ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵੰਡ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਥਾਇ ਨ
 ਪਾਇ ॥ ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀਐ ਮਾਇਆ ਕਾ ਭਰਮੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
 ੭॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗੁਣ ਨ ਜਾਪਨੀ ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਹਜਿ
 ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਬਦੇ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੮॥੨੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ
 ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਮੇਰੈ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨਾ ਆਪੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਨਹੀਂ ਬੂੜਾਹਿ ਬਿਰਥਾ
 ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥ ਗੁਰਬਾਣੀ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਚਾਨਣੁ ਕਰਮਿ ਕਵੈ ਮਨਿ ਆਏ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਸੁਖੁ
 ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਭਰਮੁ ਗਿਆ ਭਤ ਭਾਗਿਆ ਹਰਿ
 ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਕਮਾਈਐ ਹਰਿ ਕਵੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਘਰਿ ਮਹਲਿ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ
 ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਸਕੈ ਖਾਇ ॥੨॥ ਨਾਮਾ ਛੀਬਾ ਕਬੀਰੁ ਜੋਲਾਹਾ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਕੇਤੇ ਸਬਦੁ
 ਪਛਾਣਹਿ ਹਉਮੈ ਜਾਤਿ ਗਵਾਈ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਤਿਨ ਕੀ ਬਾਣੀ ਗਾਵਹਿ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟੈ ਭਾਈ ॥੩॥ ਦੈਤ ਪੁਤੁ ਕਰਮ
 ਧਰਮ ਕਿਛੁ ਸੰਜਮ ਨ ਪਡੈ ਦ੍ਰੂਜਾ ਭਾਉ ਨ ਜਾਣੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਐ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥ ਏਕੋ
 ਪਡੈ ਏਕੋ ਨਾਉ ਬੂੜੈ ਦ੍ਰੂਜਾ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਣੈ ॥੪॥ ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਜੋਗੀ ਸੰਨਿਆਸੀ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਤਾ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਮੱਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਗੈ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ
 ਰਹਾਏ ॥੫॥ ਪਂਡਿਤ ਪਡਿ ਪਡਿ ਵਾਦੁ ਵਖਾਣਹਿ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਫੇਰੁ ਪਇਆ
 ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਏ ॥ ਜਾ ਨਾਉ ਚੇਤੈ ਤਾ ਗਤਿ ਪਾਏ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥੬॥ ਸਤਸਙਗਤਿ ਮਹਿ

ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਉਪਜੈ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਸੁਭਾਏ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪੀ ਆਪੁ ਗਰਵਾਈ ਚਲਾ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ॥ ਸਦ
 ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਵਿਟਹੁ ਜਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੭॥ ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਜੋ ਬਿੰਦੇ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰੰਗਿ
 ਰਤਾ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਸਭਨਾ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਜਾਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ
 ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥੮॥੫॥੨੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਹਜੈ ਨੋ ਸਾਭ ਲੋਚਦੀ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪਾਇਆ
 ਨ ਜਾਇ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਪੰਡਿਤ ਜੋਤਕੀ ਥਕੇ ਭੇਖੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਸਹਜੁ ਪਾਇਆ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ
 ਕਰੇ ਰਖਾਇ ॥੯॥ ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸਹਜੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਸਬਦੈ ਹੀ ਤੇ ਸਹਜੁ ਊਪਜੈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਸੋਇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਹਜੇ ਗਾਵਿਆ ਥਾਇ ਪਵੈ ਬਿਨੁ ਸਹਜੈ ਕਥਨੀ ਬਾਦਿ ॥ ਸਹਜੇ ਹੀ ਭਗਤਿ ਊਪਜੈ ਸਹਜਿ
 ਧਿਆਰਿ ਬੈਰਾਗਿ ॥ ਸਹਜੈ ਹੀ ਤੇ ਸੁਖ ਸਾਤਿ ਹੋਇ ਬਿਨੁ ਸਹਜੈ ਜੀਵਣੁ ਬਾਦਿ ॥੨॥ ਸਹਜਿ ਸਾਲਾਹੀ ਸਦਾ ਸਦਾ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਇ ॥ ਸਹਜੇ ਹੀ ਗੁਣ ਊਚਰੈ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਸਬਦੇ ਹੀ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਰਸਨਾ
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਖਾਇ ॥੩॥ ਸਹਜੇ ਕਾਲੁ ਵਿਡਾਰਿਆ ਸਚ ਸਰਣਾਈ ਪਾਇ ॥ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚੀ
 ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਸੇ ਕਡਭਾਗੀ ਜਿਨੀ ਪਾਇਆ ਸਹਜੇ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੪॥ ਮਾਇਆ ਵਿਚਿ ਸਹਜੁ ਨ ਊਪਜੈ ਮਾਇਆ
 ਢੂਜੈ ਭਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਹਤਮੈ ਜਲੈ ਜਲਾਇ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਚੂਕਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
 ੫॥ ਤੂਹੁ ਗੁਣਾ ਵਿਚਿ ਸਹਜੁ ਨ ਪਾਈਐ ਤੈ ਗੁਣ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥ ਪਡੀਐ ਗੁਣੀਐ ਕਿਆ ਕਥੀਐ ਜਾ ਮੁੰਢਹੁ
 ਧੁਥਾ ਜਾਇ ॥ ਚਤੁਰੇ ਪਦ ਮਹਿ ਸਹਜੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੬॥ ਨਿਰਗੁਣ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਸਹਜੇ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥
 ਗੁਣਵਂਤੀ ਸਾਲਾਹਿਆ ਸਚੇ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥ ਭੁਲਿਆ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਇਸੀ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੭॥ ਬਿਨੁ ਸਹਜੈ
 ਸਭੁ ਅੰਧੁ ਹੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੋਝੀ ਪੈਂ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰਿ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ
 ਪ੍ਰੈ ਗੁਰ ਕਰਤਾਰਿ ॥੮॥ ਸਹਜੇ ਅਦਿਸਟੁ ਪਛਾਣੀਐ ਨਿਰਭਤ ਜੋਤਿ ਨਿਰਕਾਰੁ ॥ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ
 ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰੁ ॥ ਪ੍ਰੈ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀਐ ਜਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੯॥ ਗਿਆਨੀਆ ਕਾ ਧਨੁ ਨਾਮੁ
 ਹੈ ਸਹਜਿ ਕਰਹਿ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੈਨਿ ਅਖੁਟ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੰਈ ਦੀਏ

देवणहारि ॥१०॥६॥२३॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि मिलिअै फेरु न पवै जनम मरण दुखु
 जाइ ॥ पूरै सबदि सभ सोझी होई हरि नामै रहै समाइ ॥१॥ मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥
 निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥२॥ रहाउ ॥ हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई
 जिउ राखहि तिउ रहणा ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ॥२॥ वडै भागि नाउ
 पाईअै गुरमति सबदि सुहाई ॥ आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ॥३॥ इकना
 मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ॥ लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु
 गवाइआ ॥४॥ भगता मनि आन्दु है सचै सबदि रंगि राते ॥ अनदिनु गुण गावहि सद निरमल
 सहजे नामि समाते ॥५॥ गुरमुखि अंमृत बाणी बोलहि सभ आतम रामु पछाणी ॥ एको सेवनि एकु
 अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥६॥ सचा साहिबु सेवीअै गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ सदा रंगि
 राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥७॥ आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ
 ॥ आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥८॥७॥२४॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि सेविअै
 मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥ मनि आन्दु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर गंभीरु ॥ सची
 संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥१॥ मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ॥ सतिगुरु सेविअै हरि मनि
 वसै लगै न मैलु पतंगु ॥२॥ रहाउ ॥ सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥ जिनी हउमै मारि
 पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥२॥ सचु
 खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ॥ सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ॥ सभु आतम रामु
 पछाणिआ गुरमती निज घरि वासु ॥३॥ सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ॥ सची साखी
 उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥ जिन्नी सचु विसारिआ से दुखीए चले रोइ ॥४॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ
 से कितु आए संसारि ॥ जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥ बिरथा जनमु गवाइआ मरि

जंमहि वारो वार ॥५॥ एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥ सतिगुरि सचु दिड़ाइआ
 सदा सचि संजमि रहणा ॥ सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥६॥ लख चउरासीह फिरदे
 रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई ॥ सतिगुरि
 सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥७॥ जो सचै लाए से सचि लगे नित सची कार करनि ॥
 तिना निज घरि वासा पाइआ सचै महलि रह्यनि ॥ नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचनि
 ॥८॥१७॥८॥२५॥ सिरीरागु महला ५ ॥ जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोडि न देइ ॥ लागू
 होए दुसमना साक भि भजि खले ॥ सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै
 न तती वाउ ॥१॥ साहिबु निताणिआ का ताणु ॥ आइ न जाई थिरु सदा गुर सबटी सचु जाणु ॥
 ॥२॥ रहाउ ॥ जे को होवै दुबला न्नग भुख की पीर ॥ दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥ सुआरथु
 सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ॥२॥ जा कउ
 चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥ गृसति कुटंबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥ गउणु करे
 चहु कुंट का घड़ी न बैसणु सोडि ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होडि ॥३॥ कामि करोधि
 मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥ चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु ॥ पोथी
 गीत कवित किछु कदे न करनि धरिआ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ॥
 ॥४॥ सासत सिंमृति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥ तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥ खटु करमा
 ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥ रंग न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ ॥५॥ राज मिलक
 सिकदारीआ रस भोगण बिसथार ॥ बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥ रंग तमासे बहु बिधी
 चाइ लगि रहिआ ॥ चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गड़िआ ॥६॥ बहुतु धनाढि
 अचारवंतु सोभा निरमल रीति ॥ मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ॥ लसकर तरकसबंद

ਬੰਦ ਜੀਤ ਜੀਤ ਸਗਲੀ ਕੀਤ ॥ ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਾ ਖਡਿ ਰਸਾਤਲਿ ਦੀਤ ॥੭॥ ਕਾਇਆ ਰੋਗੁ
ਨ ਛਿਦ੍ਰ ਕਿਛੁ ਨਾ ਕਿਛੁ ਕਾੜਾ ਸੋਗੁ ॥ ਮਿਰਤੁ ਨ ਆਵੀ ਚਿਤਿ ਤਿਸੁ ਅਹਿਨਿਸਿ ਭੋਗੈ ਭੋਗੁ ॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਕੀਤੋਨੁ
ਆਪਣਾ ਜੀਇ ਨ ਸੰਕ ਧਰਿਆ ॥ ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਮਕੰਕਰ ਵਸਿ ਪਰਿਆ ॥੮॥ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ
ਜਿਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹੋਵੈ ਸਾਥੂ ਸੰਗੁ ॥ ਜਿਤ ਜਿਤ ਓਹੁ ਵਧਾਈਐ ਤਿਤ ਤਿਤ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰੰਗੁ ॥ ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ ਕਾ
ਖਸਮੁ ਆਪਿ ਅਵਰੁ ਨ ਟ੍ਰੂਜਾ ਥਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੁਠੈ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਨਾਤ ॥੯॥੧॥੨੬॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ
ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੫ ॥ ਜਾਨਤ ਨਹੀ ਭਾਵੈ ਕਵਨ ਬਾਤਾ ॥ ਮਨ ਖੋਜਿ ਮਾਰਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਿਆਨੀ ਧਿਆਨੁ
ਲਾਵਹਿ ॥ ਗਿਆਨੀ ਗਿਆਨੁ ਕਮਾਵਹਿ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਨ ਹੀ ਜਾਤਾ ॥੨॥ ਭਗਤੀ ਰਹਤ ਜੁਗਤਾ ॥ ਜੋਗੀ ਕਹਤ
ਸੁਕਤਾ ॥ ਤਪਸੀ ਤਪਹਿ ਰਾਤਾ ॥੩॥ ਮੋਨੀ ਮੋਨਿਧਾਰੀ ॥ ਸਨਿਆਸੀ ਬ੍ਰਹਮਚਾਰੀ ॥ ਉਦਾਸੀ ਉਦਾਸਿ ਰਾਤਾ
॥੪॥ ਭਗਤਿ ਨਵੈ ਪਰਕਾਰਾ ॥ ਪੰਡਿਤੁ ਵੇਦੁ ਪੁਕਾਰਾ ॥ ਗਿਰਸਤੀ ਗਿਰਸਤਿ ਧਰਮਾਤਾ ॥੫॥ ਇਕ ਸਕਦੀ
ਕਹੁ ਰੂਪਿ ਅਵਧੂਤਾ ॥ ਕਾਪੜੀ ਕਤੇ ਜਾਗੂਤਾ ॥ ਇਕਿ ਤੀਰਥਿ ਨਾਤਾ ॥੬॥ ਨਿਰਹਾਰ ਵਰਤੀ ਆਪਰਸਾ ॥
ਇਕਿ ਲੂਕਿ ਨ ਦੇਵਹਿ ਦਰਸਾ ॥ ਇਕਿ ਮਨ ਹੀ ਗਿਆਤਾ ॥੭॥ ਘਾਟਿ ਨ ਕਿਨ ਹੀ ਕਹਾਇਆ ॥ ਸਭ ਕਹਤੇ ਹੈ
ਪਾਇਆ ॥ ਜਿਸੁ ਮੇਲੇ ਸੋ ਭਗਤਾ ॥੮॥ ਸਗਲ ਉਕਤਿ ਉਪਾਵਾ ॥ ਤਿਆਗੀ ਸਰਨਿ ਪਾਵਾ ॥ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ
ਚਰਣਿ ਪਰਾਤਾ ॥੯॥੨॥੨੭॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩ ॥ ਜੋਗੀ ਅੰਦਰਿ ਜੋਗੀਆ ॥ ਤੂੰ ਭੋਗੀ ਅੰਦਰਿ ਭੋਗੀਆ ॥ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ
ਪਾਇਆ ਸੁਰਗਿ ਮਛਿ ਪਇਆਲਿ ਜੀਤ ॥੧॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਹਤ ਵਾਰਣੈ ਕੁਰਬਾਣੁ ਤੇਰੇ ਨਾਵ ਨੋ ॥੨॥
ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਧੁ ਸੰਸਾਰੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਸਿਰੇ ਸਿਰਿ ਧੰਧੇ ਲਾਇਆ ॥ ਕੇਖਹਿ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਕਰਿ ਕੁਦਰਤਿ ਪਾਸਾ
ਢਾਲਿ ਜੀਤ ॥੨॥ ਪਰਗਟਿ ਪਾਹਾਰੈ ਜਾਪਦਾ ॥ ਸਭੁ ਨਾਵੈ ਨੋ ਪਰਤਾਪਦਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾੜ੍ਹੁ ਨ ਪਾਇਆ ਸਭ
ਮੋਹੀ ਮਾਇਆ ਜਾਲਿ ਜੀਤ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ॥ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈਐ ॥

सुरि नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥४॥ सतसंगति कैसी जाणीअै ॥ जिथै
 एको नामु वखाणीअै ॥ एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥५॥ इहु जगतु
 भरमि भुलाइआ ॥ आपहु तुधु खुआइआ ॥ परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥६॥
 दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥ मैले वेस तिना कामणी दुखी रैण
 विहाइ जीउ ॥७॥ सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥ पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥ नदरि करे कै
 आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥८॥ हुकमु जिना नो मनाइआ ॥ तिन अंतरि सबदु वसाइआ ॥
 सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥९॥ जिना भाणे का रसु आइआ ॥ तिन विचहु
 भरमु चुकाइआ ॥ नानक सतिगुरु ऐसा जाणीअै जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥१०॥ सतिगुरि
 मिलिअै फलु पाइआ ॥ जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥ दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा
 मसतकि आइ जीउ ॥११॥ अंमृतु तेरी बाणीआ ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥ सुख सेवा
 अंदरि रखिअै आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥१२॥ सतिगुरु मिलिआ जाणीअै ॥ जितु मिलिअै
 नामु वखाणीअै ॥ सतिगुर बाझु न पाइओ सभ थकी करम कमाइ जीउ ॥१३॥ हउ सतिगुर विटहु
 घुमाइआ ॥ जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥१४॥
 तूं सभना माहि समाइआ ॥ तिनि करतै आपु लुकाइआ ॥ नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ
 जोति धरी करतारि जीउ ॥१५॥ आपे खसमि निवाजिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ आपणे सेवक की
 पैज रखीआ दुड़ि कर मसतकि धारि जीउ ॥१६॥ सभि संजम रहे सिआणपा ॥ मेरा प्रभु सभु किछु
 जाणदा ॥ प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥१७॥ मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥
 प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥ कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥१८॥ मै मनि तनि
 प्रभू धिआइआ ॥ जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥ साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक

ਜੀਵੈ ਨਾਤ ਜੀਤ ॥੧੬॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਆਪੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਦ੍ਰਿੜ ਖੇਲੁ ਕਰਿ ਦਿਖਲਾਇਆ ॥ ਸਭੁ ਸਚੋ ਸਚੁ
 ਕਰਤਦਾ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੈ ਬੁਝਾਇ ਜੀਤ ॥੨੦॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ॥ ਤਿਥੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
 ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਆਪਣੀ ਆਪੇ ਲਏ ਸਮਾਇ ਜੀਤ ॥੨੧॥ ਗੋਪੀ ਨੈ ਗੋਆਲੀਆ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਗੋਡਿ ਉਠਾਲੀਆ ॥
 ਹੁਕਮੀ ਭਾੱਡੇ ਸਾਜਿਆ ਤੂੰ ਆਪੇ ਭੰਨਿ ਸਵਾਰਿ ਜੀਤ ॥੨੨॥ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਤਿਨੀ
 ਦ੍ਰਿੜ ਭਾਤ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਤਿਨ ਪ੍ਰਾਣੀਆ ਓਡਿ ਚਲੇ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਿ ਜੀਤ ॥੨੩॥ ਤੇਰੀਆ
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਚੰਗਿਆਈਆ ॥ ਮੈ ਰਾਤਿ ਫਿਝੈ ਵਡਿਆਈਆਂ ॥ ਅਣਮੰਗਿਆ ਢਾਨੁ ਟੇਕਣਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਚੁ
 ਸਮਾਲਿ ਜੀਤ ॥੨੪॥੧॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੈ ਪਾਇ ਮਨਾਈ ਸੋਝੀ ਜੀਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖਿ ਮਿਲਾਇਆ
 ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੋਸਾਈ ਮਿਛਾਡਾ ਇਠੜਾ ॥ ਅੰਮ ਅਬੇ ਥਾਵਹੁ ਮਿਠੜਾ ॥
 ਭੈਣ ਭਾਈ ਸਭਿ ਸਜਣਾ ਤੁਧੁ ਜੇਹਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ਜੀਤ ॥੧॥ ਤੇਰੈ ਹੁਕਮੇ ਸਾਵਣੁ ਆਇਆ ॥ ਮੈ ਸਤ ਕਾ ਹਲੁ
 ਜੋਆਇਆ ॥ ਨਾਤ ਬੀਜਣ ਲਗਾ ਆਸ ਕਰਿ ਹਰਿ ਬੋਹਲ ਬਖਸ ਜਮਾਇ ਜੀਤ ॥੨॥ ਹਤ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਇਕੁ
 ਪਛਾਣਦਾ ॥ ਦੁਧਾ ਕਾਗਲੁ ਚਿਤਿ ਨ ਜਾਣਦਾ ॥ ਹਰਿ ਇਕਤੈ ਕਾਰੈ ਲਾਇਓਨੁ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿੰਖੈ ਨਿਬਾਹਿ
 ਜੀਤ ॥੩॥ ਤੁਸੀ ਭੋਗਿਹੁ ਭੁੰਚਹੁ ਭਾਈਹੋ ॥ ਗੁਰਿ ਦੀਬਾਣਿ ਕਵਾਇ ਪੈਨਾਈਓ ॥ ਹਤ ਹੋਆ ਮਾਹਰੁ ਪਿੰਡ ਦਾ
 ਬੰਨਿ ਆਦੇ ਪੰਜਿ ਸਰੀਕ ਜੀਤ ॥੪॥ ਹਤ ਆਇਆ ਸਾਮੈ ਤਿਛਾਡੀਆ ॥ ਪੰਜਿ ਕਿਰਸਾਣ ਮੁਜੇਰੇ ਮਿਹਡਿਆ ॥
 ਕਨ੍ਨੁ ਕੋਈ ਕਠਿ ਨ ਛਾਈ ਨਾਨਕ ਕੁਠਾ ਘੁਘਿ ਗਿਰਾਤ ਜੀਤ ॥੫॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਘੁੰਮਾ ਜਾਵਦਾ ॥ ਇਕ ਸਾਹਾ
 ਤੁਧੁ ਧਿਆਇਦਾ ॥ ਤਜਡੁ ਥੇਹੁ ਵਸਾਇਓ ਹਤ ਤੁਧੁ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜੀਤ ॥੬॥ ਹਰਿ ਇਠੈ ਨਿਤ ਧਿਆਇਦਾ ॥
 ਮਨਿ ਚਿੰਦੀ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਦਾ ॥ ਸਭੇ ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਅਨੁ ਲਾਹੀਅਨੁ ਮਨ ਕੀ ਭੁਖ ਜੀਤ ॥੭॥ ਮੈ ਛਡਿਆ ਸਭੋ
 ਧੰਧੜਾ ॥ ਗੋਸਾਈ ਸੇਵੀ ਸਚੜਾ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਮੈ ਪਲੈ ਬਧਾ ਛਿਕਿ ਜੀਤ ॥੮॥ ਮੈ ਸੁਖੀ ਹੁੰ
 ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਵਸਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੁਰਖਿ ਵਿਖਾਲਿਆ ਮਸਤਕਿ ਧਰਿ ਕੈ ਹਥੁ ਜੀਤ
 ॥੯॥ ਮੈ ਬਧੀ ਸਚੁ ਧਰਮ ਸਾਲ ਹੈ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾ ਲਹਦਾ ਭਾਲਿ ਕੈ ॥ ਪੈਰ ਧੋਵਾ ਪਖਾ ਫੇਰਦਾ ਤਿਸੁ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ

ਲਗ ਪਾਇ ਜੀਤ ॥੧੦॥ ਸੁਣਿ ਗਲਾ ਗੁਰ ਪਹਿ ਆਇਆ ॥ ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਫਿਸਨਾਨੁ ਫਿਡਾਇਆ ॥ ਸਭੁ ਮੁਕਤੁ
ਹੋਆ ਸੈਸਾਰਡਾ ਨਾਨਕ ਸਚੀ ਬੇਡੀ ਚਾਡਿ ਜੀਤ ॥੧੧॥ ਸਭ ਸੂਸਟਿ ਸੇਵੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਜੀਤ ॥ ਦੇ ਕਨੁ ਸੁਣਹੁ
ਅਰਦਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਠੋਕਿ ਵਜਾਇ ਸਭ ਫਿਠੀਆ ਤੁਸਿ ਆਪੇ ਲਿਅਨੁ ਛਡਾਇ ਜੀਤ ॥੧੨॥ ਹੁਣਿ ਹੁਕਮੁ
ਹੋਆ ਮਿਹਰਵਾਣ ਦਾ ॥ ਪੈ ਕੋਡਿ ਨ ਕਿਸੈ ਰਖਾਣਦਾ ॥ ਸਭ ਸੁਖਾਲੀ ਕੁਠੀਆ ਫਿਹੁ ਹੋਆ ਹਲੇਮੀ ਰਾਜੁ ਜੀਤ ॥
੧੩॥ ਝਿੰਮਿ ਝਿੰਮਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਵਰਸਦਾ ॥ ਬੋਲਾਇਆ ਬੋਲੀ ਖਸਮ ਦਾ ॥ ਕਹੁ ਮਾਣੁ ਕੀਆ ਤੁਧੁ ਤਪਰੇ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ
ਪਾਇਹਿ ਥਾਇ ਜੀਤ ॥੧੪॥ ਤੇਰਿਆ ਭਗਤਾ ਭੁਖ ਸਦ ਤੇਰੀਆ ॥ ਹਰਿ ਲੋਚਾ ਪੂਰਨ ਮੇਰੀਆ ॥ ਫੇਹੁ ਦਰਸੁ
ਸੁਖਦਾਤਿਆ ਮੈ ਗਲ ਵਿਚਿ ਲੈਹੁ ਮਿਲਾਇ ਜੀਤ ॥੧੫॥ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਕਰੁ ਨ ਭਾਲਿਆ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਦੀਪ ਲੋਅ
ਪਾਇਆਲਿਆ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਥਾਨਿ ਥਨਤਰਿ ਰਖਿ ਰਹਿਆ ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਚੁ ਅਧਾਰੁ ਜੀਤ ॥੧੬॥ ਹਤ ਗੋਸਾਈ
ਦਾ ਪਹਿਲਵਾਨਡਾ ॥ ਮੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਤਚ ਦੁਮਾਲਡਾ ॥ ਸਭ ਹੋਈ ਛਿੰਝ ਫਿਕਠੀਆ ਦਯੁ ਬੈਠਾ ਕੇਖੈ ਆਪਿ ਜੀਤ
॥੧੭॥ ਵਾਤ ਕਜਨਿ ਟੰਮਕ ਭੇਰੀਆ ॥ ਮਲ ਲਥੇ ਲੈਦੇ ਫੇਰੀਆ ॥ ਨਿਹਤੇ ਪੰਜਿ ਜੁਆਨ ਮੈ ਗੁਰ ਥਾਪੀ ਦਿਤੀ
ਕੰਡਿ ਜੀਤ ॥੧੮॥ ਸਭ ਫਿਕਠੇ ਹੋਇ ਆਇਆ ॥ ਘਰਿ ਜਾਸਨਿ ਵਾਟ ਵਟਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਹਾ ਲੈ ਗਏ
ਮਨਮੁਖ ਚਲੇ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇ ਜੀਤ ॥੧੯॥ ਤ੍ਰਾਂ ਵਰਨਾ ਚਿਹਨਾ ਬਾਹਰਾ ॥ ਹਰਿ ਦਿਸਹਿ ਹਾਜਰੁ ਜਾਹਰਾ ॥ ਸੁਣਿ
ਸੁਣਿ ਤੁੜੈ ਧਿਆਇਦੇ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਰਤੇ ਗੁਣਤਾਸੁ ਜੀਤ ॥੨੦॥ ਮੈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਦਧੈ ਸੇਵਡੀ ॥ ਗੁਰਿ ਕਟੀ
ਮਿਡੀ ਜੇਵਡੀ ॥ ਹਤ ਬਾਹੁਡਿ ਛਿੰਝ ਨ ਨਚੜ ਨਾਨਕ ਅਤਸਰੁ ਲਧਾ ਭਾਲਿ ਜੀਤ ॥੨੧॥੨॥੨੬॥

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਪਹਰੇ ਘਰੁ ੧ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹੁਕਮਿ ਪਇਆ ਗਰਭਾਸਿ ॥ ਤੁਰਥ ਤਪੁ ਅੰਤਰਿ ਕਰੇ ਵਣਜਾਰਿਆ
ਮਿਤ੍ਰਾ ਖਸਮ ਸੇਤੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਖਸਮ ਸੇਤੀ ਅਰਦਾਸਿ ਕਖਾਣੈ ਤੁਰਥ ਧਿਆਨਿ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥ ਨਾ ਮਰਯਾਦੁ
ਆਇਆ ਕਲਿ ਭੀਤਰਿ ਬਾਹੁਡਿ ਜਾਸੀ ਨਾਗਾ ॥ ਜੈਸੀ ਕਲਮ ਕੁਡੀ ਹੈ ਮਸਤਕਿ ਤੈਸੀ ਜੀਅਡੇ ਪਾਸਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ

प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पड़िਆ गरभासि ॥१॥ दूजै पहरै रैण कै वणजारिआ मित्रा विसरि गड़िआ
 धिआनु ॥ हथो हथि नचाईअै वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥ हथो हथि नचाईअै प्राणी मात
 कहै सुतु मेरा ॥ चेति अचेत मूँड मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन
 भीतरि धरि गिआनु ॥ कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गड़िआ धिआनु ॥२॥ तीजै पहरै रैण कै
 वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥ हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥
 हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भड़िआ संगि माड़िआ ॥ धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु
 गवाड़िआ ॥ धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन
 जोबन सिउ चितु ॥३॥ चउथै पहरै रैण कै वणजारिआ मित्रा लावी आड़िआ खेतु ॥ जा जमि पकड़ि
 चलाड़िआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥ भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि
 चलाड़िआ ॥ झूठा रुदनु होआ दुओआलै खिन महि भड़िआ पराड़िआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु
 सिउ लाड़िआ हेतु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥ सिरीरागु महला १ ॥
 पहिलै पहरै रैण कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥ खीरु पीअै खेलाईअै वणजारिआ
 मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥ मात पिता सुत नेहु घनेरा माड़िआ मोहु सबाई ॥ संजोगी आड़िआ
 किरतु कमाड़िआ करणी कार कराई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥ कहु नानक
 प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥२॥ दूजै पहरै रैण कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति
 ॥ अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति ॥ राम नामु घट अंतरि
 नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ तीरथ वरत
 सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ नानक भाड़ि भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा
 ॥२॥ तीजै पहरै रैण कै वणजारिआ मित्रा सरि ह्वास उलथड़े आड़ि ॥ जोबनु घटै जरूआ जिणै

ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਆਵ ਘਟੈ ਦਿਨੁ ਜਾਇ ॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਪਛੁਤਾਸੀ ਅੰਧੁਲੇ ਜਾ ਜਮਿ ਪਕਡਿ ਚਲਾਇਆ ॥
 ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਾਖਿਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਡਿਆ ਪਰਾਇਆ ॥ ਬੁਧਿ ਵਿਸਰਜੀ ਗੱਈ ਸਿਆਣਪ
 ਕਰਿ ਅਕਗਣ ਪਛੁਤਾਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਚੇਤਹੁ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੩॥ ਚਤੁਰੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ
 ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਬਿਰਧਿ ਭਡਿਆ ਤਨੁ ਖੀਣੁ ॥ ਅਖੀ ਅੰਧੁ ਨ ਦੀਸਈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਕਨੀ ਸੁਣੈ
 ਨ ਵੈਣ ॥ ਅਖੀ ਅੰਧੁ ਜੀਭ ਰਸੁ ਨਾਹੀ ਰਹੇ ਪਰਾਕਤ ਤਾਣਾ ॥ ਗੁਣ ਅੰਤਰਿ ਨਾਹੀ ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਮਨਮੁਖ
 ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥ ਖੜ੍ਹੁ ਪਕੀ ਕੁਡਿ ਭਯੈ ਬਿਨਸੈ ਆਇ ਚਲੈ ਕਿਆ ਮਾਣੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਤੁਰੈ ਪਹਰੈ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੁ ॥੪॥ ਓਡਕੁ ਆਇਆ ਤਿਨ ਸਾਹਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਜ਼ਰੂ ਜਰਵਾਣਾ ਕਨਿ ॥ ਇਕ
 ਰਤੀ ਗੁਣ ਨ ਸਮਾਣਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਅਕਗਣ ਖੜ੍ਹਸਨਿ ਕਨਿ ॥ ਗੁਣ ਸੰਜਮਿ ਜਾਵੈ ਚੋਟ ਨ ਖਾਵੈ ਨਾ
 ਤਿਸੁ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ॥ ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਭੈ ਤਰਣਾ ॥ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਜਾਵੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ
 ਸਗਲੇ ਟ੍ਰੂਖ ਮਿਟਾਵੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੂਟੈ ਸਾਚੇ ਤੇ ਪਤਿ ਪਾਵੈ ॥੫॥੨॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਉਦਰ ਮੰਝਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਹਰਿ ਤਚਰੈ
 ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਆਰਾਥੇ ਵਿਚਿ ਅਗਨੀ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜੀਵਿਆ
 ॥ ਬਾਹਰਿ ਜਨਮੁ ਭਡਿਆ ਮੁਖਿ ਲਾਗਾ ਸਰਸੇ ਪਿਤਾ ਮਾਤ ਥੀਵਿਆ ॥ ਜਿਸ ਕੀ ਵਸਤੁ ਤਿਸੁ ਚੇਤਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਕਰਿ
 ਹਿਰਦੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੧॥ ਟ੍ਰੂਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ
 ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ॥ ਮੇਰਾ ਮੇਰਾ ਕਰਿ ਪਾਲੀਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਲੇ ਮਾਤ ਪਿਤਾ
 ਗਲਿ ਲਾਇ ॥ ਲਾਵੈ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸਦਾ ਗਲ ਸੇਤੀ ਮਨਿ ਜਾਣੈ ਖਟਿ ਖਵਾਏ ॥ ਜੋ ਦੇਵੈ ਤਿਸੈ ਨ ਜਾਣੈ ਮੂੜਾ ਦਿਤੇ
 ਨੋ ਲਪਟਾਏ ॥ ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਕਰੈ ਵੀਚਾਰੁ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਮਨਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਟ੍ਰੂਜੈ ਪਹਰੈ
 ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਸੁ ਕਾਲੁ ਨ ਕਬਹੂੰ ਖਾਇ ॥੨॥ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਮਨੁ ਲਗਾ ਆਲਿ ਜੰਜਾਲਿ ॥
 ਧਨੁ ਚਿਤਵੈ ਧਨੁ ਸੰਚਵੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਨ ਸਮਾਲਿ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਦੇ

ਨ ਸਮਾਲੈ ਜਿ ਹੋਵੈ ਅੰਤਿ ਸਖਾਰ੍ਡੀ ॥ ਇਹੁ ਧਨੁ ਸੰਪੈ ਮਾਇਆ ਝੂਠੀ ਅੰਤਿ ਛੋਡਿ ਚਲਿਆ ਪਛੁਤਾਈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ
 ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰੂ ਮੇਲੇ ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਸੇ ਜਾਇ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਨਾਲਿ
 ॥੩॥ ਚਤੁਰੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਚਲਣ ਕੇਲਾ ਆਦੀ ॥ ਕਰਿ ਸੇਵਹੁ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ
 ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਸਭ ਚਲੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਦੀ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵਹੁ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਢਿਲ ਮੂਲਿ ਨ ਕਰਿਹੁ ਜਿਤੁ ਅਸਥਿਰੁ
 ਜੁਗ ਜੁਗ ਹੋਵਹੁ ॥ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਸਦ ਮਾਣਹੁ ਰਲੀਆ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਖੋਵਹੁ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਆਮੀ ਭੇਦੁ ਨ
 ਜਾਣਹੁ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਖਾਂਦੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਤੁਰੈ ਪਹਰੈ ਸਫਲਿਐ ਰੈਣਿ ਭਗਤਾ ਦੀ ॥੪॥
 ੧॥੩॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਧਰਿ ਪਾਇਤਾ ਤਦਰੈ ਮਾਹਿ ॥
 ਦੱਸੀ ਮਾਸੀ ਮਾਨਸੁ ਕੀਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਕਰਿ ਮੁਹਲਤਿ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥ ਮੁਹਲਤਿ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਕਰਮ
 ਕਮਾਣੇ ਜੈਸਾ ਲਿਖਤੁ ਧੁਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਤਿਨ ਭੀਤਰਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸੰਜੋਇਆ ॥ ਕਰਮ
 ਸੁਕਰਮ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਇਸੁ ਜੰਤੈ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਧਰਿ ਪਾਇਤਾ ਤਦਰੈ
 ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਭਰਿ ਜੁਆਨੀ ਲਹਰੀ ਦੇਇ ॥ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਨ ਪਛਾਣ੍ਡੀ
 ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਮਨੁ ਮਤਾ ਅਛਮੇਇ ॥ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਨ ਪਛਾਣੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਆਗੈ ਪਥੁ ਕਰਾਰਾ ॥ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ
 ਕਬਹੂੰ ਨ ਸੇਵਿਆ ਸਿਰਿ ਠਾਢੇ ਜਮ ਜੰਦਾਰਾ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਜਬ ਪਕਰਸਿ ਕਵਰੇ ਤਬ ਕਿਆ ਜਬਾਬੁ ਕਰੋਇ ॥ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਟ੍ਰੌਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਭਰਿ ਜੋਬਨੁ ਲਹਰੀ ਦੇਇ ॥੨॥ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਬਿਖੁ ਸੰਚੈ
 ਅੰਧੁ ਅਗਿਆਨੁ ॥ ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਮੋਹਿ ਲਪਟਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਅੰਤਰਿ ਲਹਰਿ ਲੋਭਾਨੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲਹਰਿ
 ਲੋਭਾਨੁ ਪਰਾਨੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਿਤ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਆ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥
 ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੁਆਮੀ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ ਲਗੇ ਧਿਆਨੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਬਿਖੁ
 ਸੰਚੈ ਅੰਧੁ ਅਗਿਆਨੁ ॥੩॥ ਚਤੁਰੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਦਿਨੁ ਨੇਡੈ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂੰ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਤੇਰਾ ਦਰਗਹ ਬੇਲੀ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਪਰਾਣੀ ਅੰਤੇ

ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥ ਇਹੁ ਮੋਹੁ ਮਾਇਆ ਤੈ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਝੂਠੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ॥ ਸਗਲੀ ਰੈਣਿ ਗੁਦਰੀ
ਅੰਧਿਆਰੀ ਸੇਵਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਤੁਰੈ ਪਹਰੈ ਦਿਨੁ ਨੇਡੈ ਆਇਆ ਸੋਇ
॥੪॥ ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਕਾ ਤਠਿ ਚਲੇ ਕਮਾਣਾ ਸਾਥਿ ॥ ਇਕ ਰਤੀ ਬਿਲਮ ਨ
ਦੇਵਨੀ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਕਾ ਓਨੀ ਤਕਡੇ ਪਾਏ ਹਾਥ ॥ ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ਪਕਡਿ ਚਲਾਇਆ ਮਨਮੁਖ
ਸਦਾ ਦੁਹੇਲੇ ॥ ਜਿਨੀ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਸੇ ਦਰਗਹ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੇ ॥ ਕਰਮ ਧਰਤੀ ਸਰੀਰੁ ਜੁਗ ਅੰਤਰਿ
ਜੋ ਕੋਵੈ ਸੋ ਖਾਤਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਦਰਕਾਰੇ ਮਨਮੁਖ ਸਦਾ ਭਵਾਤਿ ॥੫॥੧॥੪॥

ਸਿਰੀਰਾਗ ਮਹਲਾ 4 ਘਰੁ 2 ਛਤ

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੁੰਧ ਇਆਣੀ ਪੇਈਐਡੈ ਕਿਤ ਕਰਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਪਿਖੈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਪਨੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਸਾਹੁਰਡੈ ਕੰਮ ਸਿਖੈ ॥ ਸਾਹੁਰਡੈ ਕੰਮ ਸਿਖੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਏ ॥ ਸਹੀਆ ਵਿਚਿ ਫਿਰੈ ਸੁਹੇਲੀ
ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਬਾਹ ਲੁਡਾਏ ॥ ਲੇਖਾ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੀ ਬਾਕੀ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਿਰਖੈ ॥ ਮੁੰਧ ਇਆਣੀ
ਪੇਈਐਡੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਦਿਖੈ ॥੧॥ ਵੀਆਹੁ ਹੋਆ ਮੇਰੇ ਬਾਬੁਲਾ ਗੁਰਮੁਖੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਅਗਿਆਨੁ
ਅੰਧੇਰਾ ਕਟਿਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਪ੍ਰਚੰਡੁ ਬਲਾਇਆ ॥ ਬਲਿਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਬਿਨਸਿਆ ਹਰਿ ਰਤਨੁ
ਪਦਾਰਥੁ ਲਾਧਾ ॥ ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ ਗਇਆ ਟੁਖੁ ਲਾਥਾ ਆਪੁ ਆਪੈ ਗੁਰਮਤਿ ਖਾਧਾ ॥ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਕਰੁ
ਪਾਇਆ ਅਭਿਨਾਸੀ ਨਾ ਕਦੇ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇਆ ॥ ਵੀਆਹੁ ਹੋਆ ਮੇਰੇ ਬਾਬੋਲਾ ਗੁਰਮੁਖੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ
॥੨॥ ਹਰਿ ਸਤਿ ਸਤੇ ਮੇਰੇ ਬਾਬੁਲਾ ਹਰਿ ਜਨ ਮਿਲਿ ਜੰਬ ਸੁਛਾਦੀ ॥ ਪੇਵਕਡੈ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸੁਹੇਲੀ ਵਿਚਿ ਸਾਹੁਰਡੈ
ਖਰੀ ਸੋਛਾਦੀ ॥ ਸਾਹੁਰਡੈ ਵਿਚਿ ਖਰੀ ਸੋਛਾਦੀ ਜਿਨਿ ਪੇਵਕਡੈ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿਆ ॥ ਸਭੁ ਸਫਲਿਆਂ ਜਨਮੁ ਤਿਨਾ
ਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨਾ ਮਨੁ ਜਿਣਿ ਪਾਸਾ ਢਾਲਿਆ ॥ ਹਰਿ ਸਾਂਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਕਾਰਜੁ ਸੋਹਿਆ ਕਰੁ ਪਾਇਆ ਪੁਰਖੁ
ਅਨਨਦੀ ॥ ਹਰਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਮੇਰੇ ਬਾਬੋਲਾ ਹਰਿ ਜਨ ਮਿਲਿ ਜੰਬ ਸੁਛਾਦੀ ॥੩॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰੇ ਬਾਬੁਲਾ ਹਰਿ ਦੇਵਹੁ

दानु मै दाजो ॥ हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥ हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि
सतिगुरि दानु दिवाइआ ॥ खंडि वरभंडि हरि सोभा होई डिहु दानु न रलै रलाइआ ॥ होरि मनमुख
दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अह्वकारु कचु पाजो ॥ हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो
॥४॥ हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥ हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद
पीड़ी गुरू चलम्दी ॥ जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ हरि पुरखु न
कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ नानक संत संत हरि एको जपि हरि हरि नामु सोह्वादी ॥
हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥५॥१॥

सिरीरागु महला ੫ ਛਠ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਤ ਮਿਤਾ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਨਿਬਹੈ ਤੈ ਨਾਲੇ ॥
ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ ਜਾਏ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦੇ ਸੇਈ ਫਲ ਪਾਵਹਿ ਚਰਣ ਕਮਲ ਚਿਤੁ
ਲਾਏ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਬਨਵਾਰੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਸਿਖ ਦੇਇ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ
ਸਾਧਸੰਗਿ ਭ੍ਰਮੁ ਜਾਲੇ ॥੧॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਝੂਠੁ ਪਸਾਰੇ ॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਤ
ਮਿਤਾ ਬਿਖੁ ਸਾਗਰੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਕਰਿ ਬੋਹਿਥੁ ਕਰਤੇ ਸਹਸਾ ਢੂਖੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟੈ
ਕਡਭਾਗੀ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੈ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਸੇਵਕ ਸੁਆਮੀ ਭਗਤਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਸਿਖ ਦੇਇ
ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਝੂਠ ਪਸਾਰੇ ॥੨॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਤ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਲਦੇ ਖੇਪ ਸਵਲੀ ॥ ਮਨ
ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਤ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਦੁ ਨਿਹਚਲੁ ਮਲੀ ॥ ਹਰਿ ਦੁ ਸੇਵੇ ਅਲਖ ਅਭੇਵੇ ਨਿਹਚਲੁ ਆਸਣੁ ਪਾਇਆ
॥ ਤਹ ਜਨਮ ਨ ਮਰਣੁ ਨ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਸੰਸਾ ਢੂਖੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥ ਚਿਤ ਗੁਪਤ ਕਾ ਕਾਗਦੁ ਫਾਰਿਆ ਜਮਦੂਤਾ
ਕਛੂ ਨ ਚਲੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਸਿਖ ਦੇਇ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਹਰਿ ਲਦੇ ਖੇਪ ਸਵਲੀ ॥੩॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਤ ਮਿਤਾ
ਕਰਿ ਸੰਤਾ ਸੰਗਿ ਨਿਵਾਸੋ ॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਤ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪਰਗਾਸੋ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ

ਸੁਖਹ ਗਮੀ ਇਛ ਸਗਲੀ ਪੁਨੀਆ ॥ ਪੁਰਕੇ ਕਮਾਏ ਸ੍ਰੀਰਾਂਗ ਪਾਏ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ॥ ਅੰਤਰਿ
ਬਾਹਰਿ ਸਰਬਤਿ ਰਵਿਆ ਮਨਿ ਉਪਜਿਆ ਬਿਸੁਆਸੋ ॥ ਨਾਨਕੁ ਸਿਖ ਦੇਇ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਰਿ ਸੰਤਾ ਸੰਗਿ
ਨਿਵਾਸੋ ॥੪॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਤ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਤ ਮਿਤਾ
ਹਰਿ ਜਲ ਮਿਲਿ ਜੀਵੇ ਮੀਨਾ ॥ ਹਰਿ ਪੀ ਆਧਾਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਨੇ ਸੁਭ ਸੁਖਾ ਮਨ ਕੁਠੇ ॥ ਸ੍ਰੀਧਰ ਪਾਏ ਮੰਗਲ
ਗਾਏ ਇਛ ਪੁਨੀ ਸਤਿਗੁਰ ਤੁਠੇ ॥ ਲਡਿ ਲੀਨੇ ਲਾਏ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ਨਾਤ ਸਰਬਸੁ ਠਾਕੁਰਿ ਟੀਨਾ ॥ ਨਾਨਕ
ਸਿਖ ਸੰਤ ਸਮਝਾਈ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥੫॥੧॥੨॥

ਸਿਰੀਰਾਗ ਕੇ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਡਖਣਾ ॥

ਹਠ ਮਝਾਹੂ ਮਾ ਪਿਰੀ ਪਥੇ ਕਿਤ ਦੀਦਾਰ ॥ ਸੰਤ

ਸਰਣਾਈ ਲਭਣੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰ ॥੧॥ ਛੰਤੁ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰੀਤਿ ਸੰਤਨ ਮਨਿ ਆਵਏ
ਜੀਤ ॥ ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਬਿਪਰੀਤਿ ਅਨੀਤਿ ਦਾਸਾ ਨਹ ਭਾਵਏ ਜੀਤ ॥ ਦਾਸਾ ਨਹ ਭਾਵਏ ਬਿਨੁ ਦਰਸਾਵਏ
ਛਿਕ ਖਿਨੁ ਧੀਰਜੁ ਕਿਤ ਕਰੈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਹੂਨਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹੀਨਾ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮਛੁਲੀ ਜਿਤ ਮਰੈ ॥ ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ
ਪਿਆਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੇ ਗੁਣ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਗਾਵਏ ॥ ਨਾਨਕ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਅੰਕਿ
ਸਮਾਵਏ ॥੨॥ ਡਖਣਾ ॥ ਸੋਵਾਦਡੋ ਹਭ ਠਾਇ ਕੋਇ ਨ ਦਿਸੈ ਝੂਜਡੋ ॥ ਖੁਲਡੇ ਕਪਾਟ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ
ਭੇਟਤੇ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਤੇਰੇ ਬਚਨ ਅਨੂਪ ਅਪਾਰ ਸੰਤਨ ਆਧਾਰ ਬਾਣੀ ਬੀਚਾਰੀਐ ਜੀਤ ॥ ਸਿਮਰਤ ਸਾਸ
ਗਿਰਾਸ ਪੂਰਨ ਬਿਸੁਆਸ ਕਿਤ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰੀਐ ਜੀਤ ॥ ਕਿਤ ਮਨਹੁ ਬੇਸਾਰੀਐ ਨਿਮਖ ਨਹੀ ਟਾਰੀਐ
ਗੁਣਕਂਤ ਪ੍ਰਾਨ ਹਮਾਰੇ ॥ ਮਨ ਬਾਂਘਤ ਫਲ ਦੇਤ ਹੈ ਸੁਆਮੀ ਜੀਅ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਸਾਰੇ ॥ ਅਨਾਥ ਕੇ ਨਾਥੇ ਸੁਭ
ਕੈ ਸਾਥੇ ਜਪਿ ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੀਐ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀ ਪ੍ਰਭ ਪਹਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਭਵਜਲੁ ਤਾਰੀਐ
॥੨॥ ਡਖਣਾ ॥ ਧੂਡੀ ਮਜਨੁ ਸਾਧ ਖੇ ਸਾਈ ਥੀਏ ਕ੃ਪਾਲ ॥ ਲਈ ਹਭੇ ਥੋਕਡੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਧਨੁ
ਮਾਲ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਸੁਨਦਰ ਸੁਆਮੀ ਧਾਮ ਭਗਤਹ ਬਿਸ਼ਾਮ ਆਸਾ ਲਗਿ ਜੀਵਤੇ ਜੀਤ ॥ ਮਨਿ ਤਨੇ

गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अंमृतु पीवते जीउ ॥ अंमृतु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै
बनु फीका जानिआ ॥ भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥ सरबसो सूख
आनन्द घन पिआरे हरि रतनु मन अंतरि सीवते ॥ इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि
नानक जीवते ॥३॥ डखणा ॥ जो तउ कीने आपणे तिना कूँ मिलिओहि ॥ आपे ही आपि मोहिओहु जसु
नानक आपि सुणिओहि ॥१॥ छंतु ॥ प्रेम ठगउरी पाइ रीझाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ॥ संतन
कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ॥ हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण
करि वसि भए ॥ मनि सरब सुख वुठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ॥ सखी मंगलो गाइआ
इछ पुजाइआ बहुड़ि न माइआ होहिआ ॥ करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही
पोहिआ ॥४॥ डखणा ॥ साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥ जिना भाग मथाहि से नानक हरि
रंग माणदो ॥१॥ छंतु ॥ कहते पवित्र सुणते सभि धनु लिखती कुलु तारिआ जीउ ॥ जिन कउ
साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रह्मु बीचारिआ जीउ ॥ ब्रह्मु बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन
किरपा प्रभि करी ॥ करु गहि लीने हरि जसो दीने जोनि ना धावै नह मरी ॥ सतिगुर दइआल
किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥ कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु
वारिआ ॥५॥१॥३॥

सिरीरागु महला ४ वणजारा

हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥ हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि
रमईआ सोइ ॥ सो हरि सदा धिआईअै तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे
से छोडि चले दुखु रोइ ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥१॥ मै हरि बिनु
अवरु न कोइ ॥ हरि गुर सरणाई पाईअै वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ ॥१॥ रहाउ ॥

੧੮੮ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਤ ਜਨਾ ਵਿਣੁ ਭਾਈਆ ਹਰਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਨਾਉ ॥ ਵਿਚਿ ਹਤਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਜਿਤ ਵੇਸੁਆ ਪੁਤੁ
 ਨਿਨਾਉ ॥ ਪਿਤਾ ਜਾਤਿ ਤਾ ਹੋਈਐ ਗੁਰੂ ਤੁਠਾ ਕਰੇ ਪਸਾਉ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੂ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਗਾ
 ਭਾਉ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਰਮ ਕਮਾਉ ॥੨॥ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਗਾ ਚਾਉ ॥
 ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਨਾਮੁ ਦ੃ਢਾਇਆ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਨਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਜੋਬਨਿ ਸਾਸੁ ਹੈ ਤਬ
 ਲਗੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਹਰਿ ਚਲਸੀ ਹਰਿ ਅੰਤੇ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਤ
 ਜਿਨ ਹਰਿ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ਆਇ ॥ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੇ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਇ ॥ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਲਿਖਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੩॥ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਇ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੂ
 ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਪਾਰਿ ਲਘਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਆਪੁ ਤਪਾਇਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਲੇਇ ॥
 ਹਰਿ ਆਪੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਹੀ ਮਤਿ ਦੇਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਾ ਮਨਿ ਪਰਗਾਸੁ ਹੈ ਸੇ ਵਿਰਲੇ
 ਕੇਈ ਕੋਇ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਤ ਜਿਨ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮਤੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਿਆ
 ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੁਠਡਾ ਹੈ ॥੪॥ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਕਰੇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਪਤ ਜਿੰਦ੍ਹ ਸਭ
 ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਪਰਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮੈਆ ਮਨਿ ਕਵੈ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਕਿਤੁ ਭਤਿ ॥ ਗੁਰੂ
 ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੀਐ ਹਰਿ ਆਇ ਕਵੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ॥ ਮੈ ਧਰ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਤੇ ਗਤਿ ਮਤਿ ॥ ਮੈ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਹੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਜਤਿ ਪਤਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਰੰਗ ਰਤਡਾ ਹਰਿ ਰੰਗ
 ਰਤਿ ॥੫॥ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਤਿ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣਿਆ ਸਭ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਤੇ ਤਤਪਤਿ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸੇ ਆਇ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥ ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਵਣਯਾਰਿਆ ਮਿਤਾ ਗੁਰੂ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਵਣਜੁ ਵਾਪਾਰੀਆ ਜਿਨ ਕਖਰੁ ਲਦਿਅਡਾ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਾ ਦਰਿ ਮੁਖ
 ਤਜਲੇ ਸੇ ਆਇ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਪਾਸਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰੂ ਤਿਨ ਪਾਇਆ ਜਿਨਾ ਆਪਿ ਤੁਠਾ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥੬॥ ਹਰਿ
 ਧਿਆਵਹੁ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ॥ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਤਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਿਨਾ ਰਹਰਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥੧॥

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਿਰੀਰਾਗ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ਸਲੋਕਾ ਨਾਲਿ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਰਾਗ ਵਿਚਿ ਸੀਰਾਗੁ ਹੈ ਜੇ ਸਚਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਦਾ ਹਰਿ ਸਚੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਨਿਹਚਲ ਮਤਿ
ਅਪਾਰੁ ॥ ਰਤਨੁ ਅਮੋਲਕੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਜਿਹਵਾ ਸਚੀ ਮਨੁ ਸਚਾ ਸਚਾ ਸਰੀਰ ਅਕਾਰੁ ॥
ਨਾਨਕ ਸਚੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਸਦਾ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਹੋਰੁ ਬਿਰਹਾ ਸਭ ਧਾਤੁ ਹੈ ਜਬ ਲਗੁ ਸਾਹਿਬ
ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਵੇਖਣੁ ਸੁਨਣੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਸਹ ਦੇਖੇ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਊਪਜੈ ਅੰਧਾ
ਕਿਆ ਕਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਅਖੀ ਲੀਤੀਆ ਸੋਈ ਸਚਾ ਦੇਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਇਕੋ ਕਰਤਾ ਇਕੁ ਇਕੋ
ਦੀਬਾਣੁ ਹਰਿ ॥ ਹਰਿ ਇਕਸੈ ਦਾ ਹੈ ਅਮਰੁ ਇਕੋ ਹਰਿ ਚਿਤਿ ਧਰਿ ॥ ਹਰਿ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ਡਰੁ ਭਰੁ ਭਤ
ਦੂਰਿ ਕਰਿ ॥ ਹਰਿ ਤਿਸੈ ਨੋ ਸਾਲਾਹਿ ਜਿ ਤੁਧੁ ਰਖੈ ਬਾਹਰਿ ਘਰਿ ॥ ਹਰਿ ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਇ ਦਿਇਆਲੁ ਸੋ ਹਰਿ ਜਪਿ ਭਤ
ਬਿਖਮੁ ਤਰਿ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਦਾਤੀ ਸਾਹਿਬ ਸੰਦੀਆ ਕਿਆ ਚਲੈ ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ॥ ਇਕ ਜਾਂਦੇ ਨਾ ਲਵਾਨਿ
ਇਕਨਾ ਸੁਤਿਆ ਦੇਇ ਉਠਾਲਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸਿਦਕੁ ਸਬੂਰੀ ਸਾਦਿਕਾ ਸਬਰੁ ਤੋਸਾ ਮਲਾਇਕਾਂ ॥ ਦੀਦਾਰੁ ਪੂਰੇ
ਪਾਇਸਾ ਥਾਤ ਨਾਹੀ ਖਾਇਕਾ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭ ਆਪੇ ਤੁਧੁ ਤਪਾਇ ਕੈ ਆਪਿ ਕਾਰੈ ਲਾਈ ॥ ਤ੍ਰੂ ਆਪੇ ਵੇਖਿ
ਵਿਗਸਦਾ ਆਪਣੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹਰਿ ਤੁਧਹੁ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਤ੍ਰੂ ਸਚਾ ਸਾਈ ॥ ਤ੍ਰੂ ਆਪੇ ਆਪਿ ਕਰਤਦਾ
ਸਭਨੀ ਹੀ ਥਾਈ ॥ ਹਰਿ ਤਿਸੈ ਧਿਆਵਹੁ ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਜੋ ਲਏ ਛਡਾਈ ॥੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਫਕੜ ਜਾਤੀ ਫਕੜੁ
ਨਾਤ ॥ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਇਕਾ ਛਾਤ ॥ ਆਪਹੁ ਜੇ ਕੋ ਭਲਾ ਕਹਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਪੈ ਜਾ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਪਾਏ ॥੧॥
ਮਃ ੨ ॥ ਜਿਸੁ ਪਿਆਰੇ ਸਿਤ ਨੇਹੁ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਮਰਿ ਚਲੀਐ ॥ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਸੰਸਾਰਿ ਤਾ ਕੈ ਪਾਛੈ ਜੀਵਣਾ ॥੨॥
ਪਤੜੀ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਧਰਤੀ ਸਾਜੀਐ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਦੁਇ ਦੀਕੇ ॥ ਦਸ ਚਾਰਿ ਹਟ ਤੁਧੁ ਸਾਜਿਆ ਵਾਪਾਰੁ ਕਰੀਕੇ ॥
ਇਕਨਾ ਨੋ ਹਰਿ ਲਾਮ੍ਹੁ ਦੇਇ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਥੀਕੇ ॥ ਤਿਨ ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਜਿਨ ਸਚੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਕੇ ॥ ਓਇ
ਆਪਿ ਛੁਟੇ ਪਰਖਾਰ ਸਿਤ ਤਿਨ ਪਿਛੈ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਛੁਟੀਕੇ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਿ ਕੈ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥

ਕਖਤੁ ਬੀਚਾਰੇ ਸੁ ਬੰਦਾ ਹੋਇ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਹੈ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਇ ॥ ਜਾ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ਤ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਰੈ
 ਸਰੀਅਤਿ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰਾਜੈ ਕੈਸੇ ਪਾਵਹਿ ਪਾਰੁ ॥ ਸਿਦਕੁ ਕਰਿ ਸਿਜਦਾ ਮਨੁ ਕਰਿ ਮਖਸੂਦੁ ॥ ਜਿਹ
 ਧਿਰਿ ਦੇਖਾ ਤਿਹ ਧਿਰਿ ਮਤਜੂਦੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰ ਸਭਾ ਏਵ ਨ ਪਾਈਐ ਨਾ ਨੇਡੈ ਨਾ ਟ੍ਰੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਤਾਂ ਮਿਲੈ ਜਾ ਮਨੁ ਰਹੈ ਹਫੂਰਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਪਤ ਦੀਪ ਸਪਤ ਸਾਗਰਾ ਨਵ ਖੰਡ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਦਸ ਅਸਟ
 ਪੁਰਾਣਾ ॥ ਹਰਿ ਸਭਨਾ ਵਿਚਿ ਤ੍ਰਾਂ ਵਰਤਦਾ ਹਰਿ ਸਭਨਾ ਭਾਣਾ ॥ ਸਭਿ ਤੁੜੈ ਧਿਆਵਹਿ ਜੀਅ ਜੰਤ ਹਰਿ ਸਾਰਾ
 ਪਾਣਾ ॥ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧਦੇ ਤਿਨ ਹਤ ਕੁਰਬਾਣਾ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਕਰਿ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਾ ॥
 ੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਕਲਤ ਮਸਾਜਨੀ ਕਿਆ ਸਦਾਈਐ ਹਿਰਦੈ ਹੀ ਲਿਖਿ ਲੇਹੁ ॥ ਸਦਾ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਰੰਗਿ
 ਰਹੈ ਕਬਹੂੰ ਨ ਤੂਟਸਿ ਨੇਹੁ ॥ ਕਲਤ ਮਸਾਜਨੀ ਜਾਇਸੀ ਲਿਖਿਆ ਭੀ ਨਾਲੇ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ
 ਜਾਇਸੀ ਜੋ ਧੁਰਿ ਛੋਡੀ ਸਚੈ ਪਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਨਦਰੀ ਆਵਦਾ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਈ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਵਿਤਪਾਇ ॥
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਚੁ ਦ੃ਢਾਇਆ ਸਚਿ ਰਹਹੁ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਹੈ ਕਰਮੀ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਹਰਿ ਅੰਦਰਿ ਬਾਹਰਿ ਇਕੁ ਤ੍ਰਾਂ ਤ੍ਰਾਂ ਜਾਣਹਿ ਭੇਤੁ ॥ ਜੋ ਕੀਚੈ ਸੋ ਹਰਿ ਜਾਣਦਾ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਚੇਤੁ ॥ ਸੋ ਝੈਰੈ ਜਿ
 ਧਾਪ ਕਮਾਵਦਾ ਧਰਮੀ ਵਿਗਸੇਤੁ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਸਚਾ ਆਪਿ ਨਿਆਤ ਸਚੁ ਤਾ ਡਰੀਐ ਕੇਤੁ ॥ ਜਿਨਾ ਨਾਨਕ ਸਚੁ
 ਪਛਾਣਿਆ ਸੇ ਸਚਿ ਰਲੇਤੁ ॥੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਕਲਮ ਜਲਤ ਸਣੁ ਮਸਵਾਣੀਐ ਕਾਗਦੁ ਭੀ ਜਲਿ ਜਾਤ ॥
 ਲਿਖਣ ਵਾਲਾ ਜਲਿ ਬਲਤ ਜਿਨਿ ਲਿਖਿਆ ਟ੍ਰੂਜਾ ਭਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਵਣਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ
 ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਹੋਰੁ ਕੂਡੁ ਪਡਣਾ ਕੂਡੁ ਬੋਲਣਾ ਮਾਇਆ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਥਿਰੁ
 ਨਹੀ ਪਡਿ ਪਡਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਹਰਿ ਕਾ ॥ ਹਰਿ
 ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਜਾ ਨਿਆਤ ਹੈ ਧਰਮ ਕਾ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਜਾ ਫਲੁ ਹੈ ਜੀਅ ਕਾ ॥ ਹਰਿ
 ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਜਾ ਨ ਸੁਣਈ ਕਹਿਆ ਚੁਗਲ ਕਾ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਅਪੁਛਿਆ ਦਾਨੁ
 ਦੇਵਕਾ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਹਤ ਹਤ ਕਰਤੀ ਸਭ ਮੁੜ ਸੰਪਤ ਕਿਸੈ ਨ ਨਾਲਿ ॥ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ਟ੍ਰੂਖੁ ਪਾਇਆ

सभ जोही जमकालि ॥ नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ॥१॥ मः १ ॥ गलंी असी चंगीआ
 आचारी बुरीआह ॥ मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥ रीसा करिह तिनाडीआ जो सेवहि दरु
 खडीआह ॥ नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥ होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह
 ॥ नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥२॥ पउड़ी ॥ तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही
 आपि जालु ॥ तूं आपे जालु वताइदा आपे विचि सेबालु ॥ तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि
 गुलालु ॥ तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥ हरि तुधु बाहरि किछु नही
 गुर सबदी वेखि निहालु ॥७॥ सलोक मः ३ ॥ हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥ अंदरि धोखा नीद न सोवै ॥ जे
 धन खसमै चलै रजाई ॥ दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥ नानक करमी इह मति पाई ॥ गुर परसादी
 सचि समाई ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसुंभा देखि न भुलु ॥ इस का रंगु दिन
 थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ॥ दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ॥ बिसटा अंदरि कीट से पड़ि पचहि
 वारो वार ॥ नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ
 ॥२॥ पउड़ी ॥ सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु संबाहिआ ॥ इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु
 कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ॥ तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कंमि ओइ लाइआ ॥ इकना सचु
 बुझाइओनु तिना अतुट भंडार देवाइआ ॥ हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ॥८॥
 सलोक मः ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥ दूजै भाइ हरि नामु विसारिआ
 मन मूरख मिलै सजाइ ॥ जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु संबाहि ॥ जम का
 फाहा गलहु न कटीऔ फिरि फिरि आवै जाइ ॥ मनमुखि किछु न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ
 ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखदाता नामु वसै मनि आइ ॥ सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि
 विहाइ ॥ नानक सो नाउ मनहु न विसारीऔ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुरु

ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਰਾਮ ਨਾਮ ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਸਚੋ ਸਚੁ
 ਕਮਾਵਣਾ ਵਡਿਆਈ ਵਡੇ ਪਾਸਿ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਸਿਫਤਿ ਕਰੇ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹਣਾ
 ਸੁਖੇ ਸੁਖਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਮਨੈ ਮਾਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧਿਗੁ ਜੀਵਾਸੁ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਉ ਪਾਈਐ ਮਨਮੁਖ
 ਮੋਹਿ ਵਿਣਾਸੁ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਖੁ ਤ੍ਰਨ ਨਾਨਕੁ ਤੇਰਾ ਦਾਸੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰਾ ਤ੍ਰਨ ਸਭਸੁ ਦਾ ਤ੍ਰਨ
 ਸਭਨਾ ਰਾਸਿ ॥ ਸਭਿ ਤੁਧੈ ਪਾਸਹੁ ਮੰਗਦੇ ਨਿਤ ਕਰਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਨ ਦੇਹਿ ਤਿਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮਿਲੈ ਇਕਨਾ
 ਫੂਰਿ ਹੈ ਪਾਸਿ ॥ ਤੁਧੁ ਬਾਝਹੁ ਥਾਉ ਕੋ ਨਾਹੀ ਜਿਸੁ ਪਾਸਹੁ ਮੰਗੀਐ ਮਨਿ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥ ਸਭਿ ਤੁਧੈ ਨੋ
 ਸਾਲਾਹਦੇ ਦਰਿ ਗੁਰਮੁਖਾ ਨੋ ਪਰਗਾਸਿ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਪਿੰਡਿਤੁ ਪਡਿ ਪਡਿ ਤੁਚਾ ਕੂਕਦਾ ਮਾਇਆ
 ਮੋਹਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਨ ਚੀਨਈ ਮਨਿ ਮੂਰਖੁ ਗਾਵਾਰੁ ॥ ਫ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਜਗਤੁ ਪਰਬੋਧਦਾ ਨਾ ਕੂੜੈ
 ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਮਰਿ ਜ਼ਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨੀ
 ਨਾਉ ਪਾਇਆ ਕੂੜੁਹੁ ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਸਦਾ ਸਾਂਤਿ ਸੁਖੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਚੂਕੈ ਕੂਕ ਪੁਕਾਰ ॥ ਆਪੈ ਨੋ ਆਪੁ ਖਾਇ ਮਨੁ
 ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਜੀਤ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਫਲ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਥਾਇ ॥ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
 ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਪਾਰਿ ਲਘਾਇ ॥ ਮਨਹਠਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਪੁਛਹੁ ਵੇਦਾ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਲਏ ਹਰਿ ਲਾਇ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੂਰਾ ਵਰੀਆਮੁ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ
 ਫੁਸਟੁ ਅਛਕਰਣੁ ਮਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹਿ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਆਪਿ ਛੋਆ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਸਭੁ ਕੁਲੁ
 ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥ ਸੋਹਨਿ ਸਚਿ ਫੁਆਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਿਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮਰਹਿ ਅਛਕਾਰਿ ਮਰਣੁ ਵਿਗਾਇਆ ॥
 ਸਭੋ ਵਰਤੈ ਹੁਕਮੁ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਵਿਚਾਰਿਆ ॥ ਆਪਹੁ ਫ੍ਰੌਜੈ ਲਗਿ ਖਸਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ
 ਸਭੁ ਫੁਖੁ ਸੁਖੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਤਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ
 ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਗਾਈ ਕਰਿ ਚਾਨਣੁ ਮਗੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਅੰਤਰਿ

ਨਾਮੁ ਵਸਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਸਾਚੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਕਰਤਾ ਜੋ
 ਭਾਵੈ ਸੋ ਨਾਇ ਲਾਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ਲਏ ਤਾ ਜੀਵੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਖਿਨੁ ਮਰਿ ਜਾਇਆ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥
 ਜੋ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਦੀਬਾਣ ਸਿਤ ਸੋ ਸਭਨੀ ਦੀਬਾਣੀ ਮਿਲਿਆ ॥ ਜਿਥੈ ਓਹੁ ਜਾਇ ਤਿਥੈ ਓਹੁ ਸੁਰਖਰੁ ਤਸ ਕੈ
 ਸੁਹਿ ਡਿਠੈ ਸਭ ਪਾਪੀ ਤਰਿਆ ॥ ਓਸੁ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਨਾਮੋ ਪਰਵਰਿਆ ॥ ਨਾਉ ਪ੍ਰਜੀਐ ਨਾਉ ਮਨੀਐ
 ਨਾਇ ਕਿਲਵਿਖ ਸਭ ਹਿਰਿਆ ॥ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕ ਚਿਤਿ ਸੇ ਅਸਥਿਰੁ ਜਗਿ ਰਹਿਆ
 ॥੧੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਆਤਮਾ ਦੇਤ ਪ੍ਰਜੀਐ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਆਤਮੇ ਨੋ ਆਤਮੇ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਤਿ ਹੋਇ
 ਤਾ ਘਰ ਹੀ ਪਰਚਾ ਪਾਇ ॥ ਆਤਮਾ ਅਡੋਲੁ ਨ ਡੋਲੰਈ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਸੁਭਾਇ ॥ ਗੁਰ ਵਿਣੁ ਸਹਜੁ ਨ ਆਵੰਈ
 ਲੋਭੁ ਮੈਲੁ ਨ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਕਥੈ ਸਭ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਇ ॥ ਸਚੇ ਮੈਲੁ ਨ
 ਲਗੰਈ ਮਲੁ ਲਾਗੈ ਫੂਜੈ ਭਾਇ ॥ ਧੋਤੀ ਮੂਲਿ ਨ ਉਤਰੈ ਜੇ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਰੇ
 ਅਛਕਾਰੀ ਸਭੁ ਫੁਖੋ ਫੁਖੁ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮੈਲਾ ਊਜਲੁ ਤਾ ਥੀਐ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਮਨਮੁਖੁ ਲੋਕੁ ਸਮਝਾਈਐ ਕਦਹੁ ਸਮਝਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਰਲਾਇਆ ਨਾ ਰਲੈ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਫਿਰਾਇ
 ॥ ਲਿਵ ਧਾਤੁ ਫੁਇ ਰਾਹ ਹੈ ਹੁਕਮੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਣਾ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਸਬਦਿ ਕਸਕਟੀ ਲਾਇ ॥
 ਮਨ ਹੀ ਨਾਲਿ ਝੁਗੜਾ ਮਨ ਹੀ ਨਾਲਿ ਸਥ ਮਨ ਹੀ ਮੰਝਿ ਸਮਾਇ ॥ ਮਨੁ ਜੋ ਇਛੇ ਸੋ ਲਹੈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ
 ਸੁਭਾਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਸਦ ਮੁੰਚੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਵਿਣੁ ਮਨੈ ਜਿ ਹੋਰੀ ਨਾਲਿ ਲੁਝਣਾ ਜਾਸੀ ਜਨਮੁ
 ਗਵਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖੀ ਮਨਹਠਿ ਹਾਰਿਆ ਕੂਝੂ ਕੁਸਤੁ ਕਮਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨੁ ਜਿਣੈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਮਨਮੁਖਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਸੁਣਹੁ ਜਨ ਭਾਈ ਹਰਿ
 ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਇਕ ਸਾਖੀ ॥ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਭਾਗੁ ਹੋਵੈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਤਿਨਿ ਜਨਿ ਲੈ ਹਿਰਦੈ ਰਾਖੀ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ
 ਕਥਾ ਸਰੇਸਟ ਊਤਮ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸਹਜੇ ਚਾਖੀ ॥ ਤਹ ਭਇਆ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਮਿਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ਜਿਤ ਸੂਰਜ
 ਰੈਣ ਕਿਰਾਖੀ ॥ ਅਦਿਸਟੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਲਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋ ਦੇਖਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖੀ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥

सतिगुरु सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ॥ विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ॥ सतिगुरु
 जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ
 ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनु वेकारी वेडिआ वेकारा करम कमाइ ॥ दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै
 सजाइ ॥ आतम देउ पूजीअै बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ॥ जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरु का करमी
 पलै पाइ ॥ नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु
 जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि
 किलविख पाप लहाती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥ हरि
 हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ॥ जितु मुखि भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु
 मुखि नामु जपाती ॥ ३ ॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ अंतरि
 गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ॥ लख चउरासीह फेरु पडिआ मरि जंमै होइ खुआरु ॥
 सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराए सोइ ॥ सतिगुर विचि नामु निधानु है करमि परापति
 होइ ॥ सचि रते गुर सबद सित तिन सची सदा लिव होइ ॥ नानक जिस नो मेले न विछुड़े सहजि
 समावै सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सो भगउती जु भगवंतै जाणै ॥ गुर परसादी आपु पछाणै ॥ धावतु राखै
 डिकतु घरि आणै ॥ जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ॥ औसा भगउती उतमु होइ ॥ नानक सचि समावै
 सोइ ॥ २ ॥ मः ३ ॥ अंतरि कपटु भगउती कहाए ॥ पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाए ॥ पर निंदा
 करे अंतरि मलु लाए ॥ बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए ॥ सतसंगति सित बादु रचाए ॥
 अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥ हरि नामु न चेतै बहु करम कमाए ॥ पूरब लिखिआ सु मेटणा
 न जाए ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे मोखु न पाए ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़ि
 न सवाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से तृपति अघाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन

ਜਮ ਡਰੁ ਨਾਹੀ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਹੋਆ ਕ੃ਪਾਲੁ ਹਰਿ ਸੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪੈਰੀ ਪਾਹੀ ॥ ਤਿਨ ਐਥੈ ਓਥੈ ਮੁਖ ਤਜਲੇ
 ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪੈਥੇ ਜਾਹੀ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥ ਜੋ ਸਿਰੁ ਸਾਁਝੀ ਨਾ ਨਿਵੈ ਸੋ ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਡਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ
 ਪਿੰਜਰ ਮਹਿ ਬਿਰਹਾ ਨਹੀ ਸੋ ਪਿੰਜਰੁ ਲੈ ਜਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸੁਨਢੁ ਭੁਲੀ ਨਾਨਕਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜਨਮਿ
 ਸੁਈਆਸੁ ॥ ਕਸਤੂਰੀ ਕੈ ਭੋਲਡੈ ਗੰਦੇ ਡੁੰਮਿ ਪੱਈਆਸੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਮਨ
 ਮੇਰੇ ਜੋ ਸਭਨਾ ਤੁਪਰਿ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ॥ ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜੋ ਅੰਤੀ ਅਤਸਰਿ ਲਏ
 ਛਡਾਏ ॥ ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜੁ ਮਨ ਕੀ ਤ੍ਰਸਨਾ ਸਭ ਮੁਖ ਗਵਾਏ ॥ ਸੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ
 ਜਪਿਆ ਵਡਭਾਗੀ ਤਿਨ ਨਿੰਦਕ ਦੁਸਟ ਸਭਿ ਪੈਰੀ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿ ਸਭਨਾ ਤੇ ਵਡਾ ਸਭਿ
 ਨਾਵੈ ਆਗੈ ਆਣਿ ਨਿਵਾਏ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਵੇਸ ਕਰੇ ਕੁਰੂਪਿ ਕੁਲਖਣੀ ਮਨਿ ਖੋਟੈ ਕ੍ਰਿਡਿਆਰਿ ॥
 ਪਿਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਨਾ ਚਲੈ ਹੁਕਮੁ ਕਰੇ ਗਾਵਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਸਭਿ ਦੁਖ ਨਿਵਾਰਣਹਾਰਿ ॥ ਲਿਖਿਆ
 ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੀਐ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਤਧੇ ਕੰਤ ਕਤ ਸਬਦੇ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਬਿਨੁ
 ਨਾਵੈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾ ਸੁਆਲਿਓ ਸੁਲਖਣੀ ਜਿ ਰਾਵੀ ਸਿਰਜਨਹਾਰਿ ॥
 ੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ਹੈ ਤਿਸ ਦਾ ਨ ਦਿਸੈ ਤਰਵਾਰੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਮਹਾ
 ਦੁਖੁ ਪਾਇਦੇ ਡੁਬੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ॥ ਭਲਕੇ ਤਠਿ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵਹਿ ਦ੍ਰਿਜੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸੇਵਹਿ ਆਪਣਾ ਭਤਜਲੁ ਤਤਰੇ ਪਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹਿ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ
 ॥ ਹਰਿ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਭਰਪੂਰਿ ਦ੍ਰਿਜਾ ਨਾਹਿ ਕੋਇ ॥ ਹਰਿ ਆਪਿ ਬਹਿ ਕਰੇ ਨਿਆਉ ਕ੍ਰਿਡਿਆਰ
 ਸਭ ਮਾਰਿ ਕਢੋਇ ॥ ਸਚਿਆਰਾ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਧਰਮ ਨਿਆਉ ਕੀਓਇ ॥ ਸਭ ਹਰਿ ਕੀ ਕਰਹੁ
 ਤਸਤਤਿ ਜਿਨਿ ਗਰੀਬ ਅਨਾਥ ਰਾਖਿ ਲੀਓਇ ॥ ਜੈਕਾਰੁ ਕੀਓ ਧਰਮੀਆ ਕਾ ਪਾਪੀ ਕਤ ਡੰਡੁ ਦੀਓਇ ॥
 ੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੀ ਕਾਮਣੀ ਕੁਲਖਣੀ ਕੁਨਾਰਿ ॥ ਪਿਰੁ ਛੋਡਿਆ ਘਰਿ ਆਪਣਾ ਪਰ ਪੁਰਖੈ
 ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਕਦੇ ਨ ਚੁਕੈ ਜਲਦੀ ਕਰੇ ਪ੍ਰਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੁਰੂਪਿ ਕੁਸੋਹਣੀ

परहरि छोड़ी भतारि ॥१॥ मঃ ३ ॥ सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥ सदा रवे पिरु
आपणा सचै प्रेमि पिआरि ॥ अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ॥ नानक नामि सोहागणी मेली
मेलणहारि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥ हरि तुधनो करहि
सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ॥ हरि निमाणिआ तूं माणु हरि डाढी हूं तूं डाढिआ ॥ हरि
अह्वाकारीआ मारि निवाए मनमुख मूँड साधिआ ॥ हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ॥
१७॥ सलोक मঃ ३ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ॥ हरि का नामु उतमु मनि
वसै मेटि न सकै कोइ ॥ किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ॥ नानक कारणु करते
वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ॥१॥ मঃ ३ ॥ नानक हरि नामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिव
तार ॥ माइआ बंदी खसम की तिन आगै कमावै कार ॥ पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार
॥ गुर परसादी जिनि बुझिआ तिनि पाइआ मोख दुआरु ॥ मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम
जंदारु ॥ गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥ सभि अउगण गुणी मिटाइआ
गुरु आपे बखसणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥
हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥ काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि
मारदा ॥ सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥ सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत
जन तारदा ॥१८॥ सलोक मঃ ३ ॥ आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥ सालाही
सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥ नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि
नारि ॥१॥ मঃ ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऔ जा कउ नदरि करेइ ॥ माणस ते देवते भए धिआइआ
नामु हरे ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥ नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी
कृपा करे ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥ आपणी आपि करे

ਪਰਤੀਤ ਆਪੇ ਸੇਵ ਘਾਲੀਅਨੁ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਨੋ ਦੇਇ ਅਨਨਦੁ ਥਿਰੁ ਘਰੀ ਬਹਾਲਿਅਨੁ ॥ ਪਾਪੀਆ ਨੋ ਨ
 ਦੇਈ ਥਿਰੁ ਰਹਣਿ ਚੁਣਿ ਨਰਕ ਘੋਰਿ ਚਾਲਿਅਨੁ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਨੋ ਦੇਇ ਪਿਆਰੁ ਕਰਿ ਅੰਗੁ ਨਿਸਤਾਰਿਅਨੁ
 ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਕੁਬੁਧਿ ਝੂਮਣੀ ਕੁਦਾਇਆ ਕਸਾਇਣਿ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਘਟ ਚੂਹੜੀ ਮੁਠੀ ਕ੍ਰਾਂਧਿ ਚੰਡਾਲਿ ॥
 ਕਾਰੀ ਕਢੀ ਕਿਆ ਥੀਐ ਜਾਂ ਚਾਰੇ ਬੈਠੀਆ ਨਾਲਿ ॥ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਕਰਣੀ ਕਾਰੁੰ ਨਾਵਣੁ ਨਾਉ ਜਪੇਹੀ ॥ ਨਾਨਕ
 ਅਗੈ ਊਤਮ ਸੇਈ ਜਿ ਪਾਪਾਂ ਪੰਦਿ ਨ ਦੇਹੀ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਕਿਆ ਛਾਸੁ ਕਿਆ ਬਗੁਲਾ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥
 ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਕਾਗਹੁ ਛਾਸੁ ਕਰੇਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕੀਤਾ ਲੋਡੀਐ ਕੰਮੁ ਸੁ ਹਰਿ ਪਹਿ ਆਖੀਐ ॥ ਕਾਰਜੁ
 ਦੇਇ ਸਵਾਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਚੁ ਸਾਖੀਐ ॥ ਸੰਤਾ ਸੰਗਿ ਨਿਧਾਨੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਚਾਖੀਐ ॥ ਭੈ ਭੰਜਨ ਮਿਹਰਵਾਨ ਦਾਸ ਕੀ
 ਰਾਖੀਐ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਅਲਖੁ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਖੀਐ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ
 ਸਭਸੈ ਦੇਇ ਅਧਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵੀਐ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਤ ਜਿਨਿ
 ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਨਿਰਂਕਾਰੁ ॥ ਓਨਾ ਕੇ ਸੁਖ ਸਦ ਤਜਲੇ ਓਨਾ ਨੋ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਕਰੇ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਤਲਟੀ ਭੰਡੀ ਨਵ ਨਿਧਿ ਖਰਚਿਤ ਖਾਤ ॥ ਅਠਾਰਹ ਸਿਧੀ ਪਿਛੈ ਲਗੀਆ ਫਿਰਨਿ ਨਿਜ
 ਘਰਿ ਕਥੈ ਨਿਜ ਥਾਇ ॥ ਅਨਹਦ ਧੁਨੀ ਸਦ ਵਜਦੇ ਤਨਮਨਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਤਿਨਾ
 ਕੈ ਮਨਿ ਕਥੈ ਜਿਨ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਤ ਢਾਢੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਖਸਮ ਕਾ ਹਰਿ ਕੈ
 ਦਰਿ ਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਅੰਦਰਿ ਸੁਣੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਢਾਢੀ ਮੁਖਿ ਲਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਪੁਛਿਆ ਢਾਢੀ ਸਦਿ ਕੈ ਕਿਤੁ ਅਰਥਿ
 ਤ੍ਰਾਂ ਆਇਆ ॥ ਨਿਤ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਦਿਆਲ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਦਾਤੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਇਆ
 ਨਾਨਕੁ ਪੈਨਾਇਆ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕਾ ॥ ਏਕੁ ਸੁਆਨੁ ਕੈ ਘਰਿ ਗਾਵਣਾ

ਜਨਨੀ ਜਾਨਤ ਸੁਤੁ ਬਡਾ ਹੋਤੁ ਹੈ ਇਤਨਾ ਕੁ ਨ ਜਾਨੈ ਜਿ ਦਿਨ ਦਿਨ ਅਵਧ ਘਟਤੁ ਹੈ ॥ ਮੋਰ ਮੋਰ ਕਰਿ ਅਧਿਕ

लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥ औसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥ कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥
 १॥ रहाउ ॥ कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥ रमईआ जपहु प्राणी अनत
 जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु तरणा ॥२॥ जाँ तिसु भावै ता लागै भाउ ॥ भरमु भुलावा विचहु
 जाइ ॥ उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥ गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥३॥ इतु संगति नाही मरणा
 ॥ हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥ सिरीरागु तृलोचन का ॥ माइआ मोहु मनि
 आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥ कुटंबु देखि बिगमहि कमला जिउ पर घरि जोहहि
 कपट नरा ॥२॥ दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥ तिन आगलडै मै रहणु न जाइ ॥ कोई कोई साजणु
 आइ कहै ॥ मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥ मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥
 अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भद्धिआ ॥ माइआ मूठा चेतसि नाही
 जनमु गवाइओ आलसीआ ॥२॥ बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥ माइआ
 मोहु तब बिसरि गइआ जाँ तजीअले संसारं ॥३॥ आजु मेरै मनि प्रगटु भद्धिआ है पेखीअले धरमराओ
 ॥ तह कर दल करनि महाबली तिन आगलडै मै रहणु न जाइ ॥४॥ जे को मूँ उपदेसु करतु है ता
 वणि तृणि रतड़ा नाराइणा ॥ औ जी तूँ आपे सभ किछु जाणदा बदति तृलोचनु रामईआ ॥५॥२॥
 सीरागु भगत कबीर जीउ का ॥ अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥ सुरि नर गण
 गंध्रब जिनि मोहे तृभवण मेखुली लाई ॥१॥ राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥ जा की दिसटि
 नाद लिव लागै ॥२॥ रहाउ ॥ भाठी गगनु सिंडिआ अरु चुंडिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥ तिसु
 महि धार चुअै अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ॥२॥ एक जु बात अनूप बनी है पवन
 पिआला साजिआ ॥ तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥३॥ औसे गिआन प्रगटिआ
 पुरखोत्तम कहु कबीर रंगि राता ॥ अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥४॥३॥

ਸੀਰਾਗ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਬੇਣੀ ਜੀਤ ਕੀ ॥ ਪਹਰਿਆ ਕੈ ਘਰਿ ਗਾਵਣਾ ॥

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰੇ ਨਰ ਗਰਭ ਕੁੰਡਲ ਜਬ ਆਛਤ ਉਰਥ ਧਿਆਨ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥ ਮਿਰਤਕ ਪਿੰਡਿ ਪਦ ਮਦ ਨਾ
ਅਹਿਨਿਸਿ ਏਕੁ ਅਗਿਆਨ ਸੁ ਨਾਗਾ ॥ ਤੇ ਦਿਨ ਸੰਮਲੁ ਕਸਟ ਮਹਾ ਦੁਖ ਅਥ ਚਿਤੁ ਅਧਿਕ ਪਸਾਰਿਆ ॥
ਗਰਭ ਛੋਡਿ ਮੂਤ ਮੰਡਲ ਆਇਆ ਤਤ ਨਰਹਰਿ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰਿਆ ॥੧॥ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਵਹਿਗਾ ਮੂਡਿਆ
ਤੁੰ ਕਵਨ ਕੁਮਤਿ ਭ੍ਰਮਿ ਲਾਗਾ ॥ ਚੇਤਿ ਰਾਮੁ ਨਾਹੀ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਹਿਗਾ ਜਨੁ ਬਿਚਰੈ ਅਨਰਾਧਾ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥
ਬਾਲ ਬਿਨੋਦ ਚਿੰਦ ਰਸ ਲਾਗਾ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਮੋਹਿ ਬਿਆਪੈ ॥ ਰਸੁ ਮਿਸੁ ਮੇਥੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਬਿਖੁ ਚਾਖੀ ਤਤ ਪੰਚ
ਪ੍ਰਗਟ ਸੰਤਾਪੈ ॥ ਯਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਛੋਡਿ ਸੁਕੂਤ ਮਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨ ਅਰਾਧਿਆ ॥ ਉਛਲਿਆ ਕਾਮੁ ਕਾਲ ਮਤਿ
ਲਾਗੀ ਤਤ ਆਨਿ ਸਕਤਿ ਗਲਿ ਬਾਂਧਿਆ ॥੨॥ ਤਰੁਣ ਤੇਜੁ ਪਰ ਤ੍ਰਤੁ ਮੁਖੁ ਜੋਹਹਿ ਸਰੁ ਅਪਸਰੁ ਨ
ਪਛਾਣਿਆ ॥ ਤਨਮਤ ਕਾਮਿ ਮਹਾ ਬਿਖੁ ਭੂਲੈ ਪਾਪੁ ਪੁਨ੍ਨੁ ਨ ਪਛਾਨਿਆ ॥ ਸੁਤ ਸੰਪਤਿ ਦੇਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ
ਗਰਬਿਆ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਤੇ ਖੋਇਆ ॥ ਅਵਰ ਮਰਤ ਮਾਇਆ ਮਨੁ ਤੋਲੇ ਤਤ ਭਗ ਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਵਿਗੋਇਆ ॥੩॥
ਪੁੰਡਰ ਕੇਸ ਕੁਸਮ ਤੇ ਧਤਲੇ ਸਪਤ ਪਾਤਾਲ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥ ਲੋਚਨ ਸੁਮਹਿ ਬੁਧਿ ਬਲ ਨਾਠੀ ਤਾ ਕਾਮੁ ਪਵਸਿ
ਮਾਧਾਣੀ ॥ ਤਾ ਤੇ ਬਿਖੈ ਭੰਝੈ ਮਤਿ ਪਾਵਸਿ ਕਾਇਆ ਕਮਲੁ ਕੁਮਲਾਣਾ ॥ ਅਵਗਤਿ ਬਾਣ ਛੋਡਿ ਮੂਤ ਮੰਡਲਿ
ਤਤ ਪਾਛੈ ਪਛੁਤਾਣਾ ॥੪॥ ਨਿਕੁਟੀ ਦੇਹ ਦੇਖਿ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਮਾਨ ਕਰਤ ਨਹੀ ਬੂੜੈ ॥ ਲਾਲਚੁ ਕਰੈ ਜੀਵਨ
ਪਦ ਕਾਰਨ ਲੋਚਨ ਕਛੂ ਨ ਸੂੜੈ ॥ ਥਾਕਾ ਤੇਜੁ ਤਡਿਆ ਮਨੁ ਪੰਖੀ ਘਰਿ ਆੱਗਨਿ ਨ ਸੁਖਾਈ ॥ ਬੇਣੀ
ਕਹੈ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਭਗਤਹੁ ਮਰਨ ਮੁਕਤਿ ਕਿਨਿ ਪਾਈ ॥੫॥ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ॥ ਤੋਹੀ ਮੋਹੀ ਮੋਹੀ ਤੋਹੀ ਅੰਤਰੁ
ਕੈਸਾ ॥ ਕਨਕ ਕਟਿਕ ਜਲ ਤਰੰਗ ਜੈਸਾ ॥੧॥ ਜਤ ਪੈ ਹਮ ਨ ਪਾਪ ਕਰਂਤਾ ਅਹੇ ਅਨਤਾ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ
ਨਾਮੁ ਕੈਸੇ ਹੁੰਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਸੁ ਜੁ ਨਾਇਕ ਆਛਹੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਜਨੁ ਜਾਨੀਜੈ
ਜਨ ਤੇ ਸੁਆਮੀ ॥੨॥ ਸਰੀਰੁ ਆਰਾਧੈ ਮੋ ਕਤ ਬੀਚਾਰੁ ਦੇਹੁ ॥ ਰਵਿਦਾਸ ਸਮ ਦਲ ਸਮਝਾਵੈ ਕੋਝ ॥੩॥

ਰਾਗੁ ਮਾੜਾ ਚਤਪਟੇ ਘਰੁ ੧ ਮਹਲਾ ੪

੧ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸਿਧਿ ਪਾਈ
ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਗੁਰਮਤਿ ਚਲੈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਖਰਚੁ ਲਾਇਆ ਬੰਨਿ ਪਲੈ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਾਣ ਸਖਾਈ ਸਦਾ ਨਾਲਿ
ਚਲੈ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਹਹਿ ਨਿਹਚਲੁ ਹਹਿ ਧਨੁ ਪਲੈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਹਹਿ ਹਹਿ ਸਜਣੁ ਮੇਰਾ
ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਰਾਇਆ ॥ ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਣ ਜੀਵਾਇਆ ॥ ਹਤ ਰਹਿ ਨ ਸਕਾ ਬਿਨੁ ਦੇਖੋ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਮੈ ਨੀਝੁ
ਵਹੇ ਵਹਿ ਚਲੈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਤੁ ਮੇਰਾ ਬਾਲ ਸਖਾਈ ॥ ਹਤ ਰਹਿ ਨ ਸਕਾ ਬਿਨੁ ਦੇਖੋ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥
ਹਹਿ ਜੀਤ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਹਿ ਧਨੁ ਪਲੈ ਜੀਤ ॥੪॥੧॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਧੁਸੂਦਨ
ਮੇਰੇ ਮਨ ਤਨ ਪ੍ਰਾਨਾ ॥ ਹਤ ਹਹਿ ਬਿਨੁ ਫੌਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਾ ॥ ਕੋਈ ਸਜਣੁ ਸੰਤੁ ਮਿਲੈ ਵਡਭਾਗੀ ਮੈ ਹਹਿ
ਪ੍ਰਭੁ ਪਿਆਰਾ ਦਸੈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਹਤ ਮਨੁ ਤਨੁ ਖੋਜੀ ਭਾਲਿ ਭਾਲਾਈ ॥ ਕਿਤ ਪਿਆਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਿਲੈ ਮੇਰੀ
ਮਾਈ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਖੋਜੁ ਦਸਾਈ ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ ਹਹਿ ਪ੍ਰਭੁ ਵਸੈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ
ਸਤਿਗੁਰੁ ਰਖਵਾਲਾ ॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਦੀਨ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥ ਮੇਰਾ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਗੁਰ
ਜਲ ਮਿਲਿ ਕਮਲੁ ਵਿਗਸੈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਮੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਦੇਖੋ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਤਨਿ ਵੇਦਨ ਗੁਰ
ਬਿਰਹੁ ਲਗਾਵੈ ॥ ਹਹਿ ਹਹਿ ਦਾਇਆ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਰਹਸੈ ਜੀਤ ॥੪॥੨॥

ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਪਡੀਐ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗੁਣੀਐ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਥਾ ਨਿਤ ਸੁਣੀਐ ॥ ਮਿਲਿ
 ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਜਗੁ ਭਤਜਲੁ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਐ ਜੀਤ ॥੧॥ ਆਤ ਸਖੀ ਹਰਿ ਮੇਲੁ ਕਰੇਹਾ ॥ ਮੇਰੇ
 ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਾ ਮੈ ਦੇਇ ਸਨੇਹਾ ॥ ਮੇਰਾ ਮਿਤੁ ਸਖਾ ਸੋ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਭਾਈ ਮੈ ਦੱਸੇ ਹਰਿ ਨਰਹਰੀਐ ਜੀਤ ॥੨॥ ਮੇਰੀ ਬੇਦਨ
 ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਜਾਣੈ ॥ ਹਤ ਰਹਿ ਨ ਸਕਾ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਕਖਾਣੇ ॥ ਮੈ ਅਤਖਥੁ ਮੰਨੁ ਦੀਜੈ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮਿ ਤਥਰੀਐ ਜੀਤ ॥੩॥ ਹਮ ਚਾਤ੍ਰਕ ਦੀਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕ੍ਰਿਦ ਮੁਖਿ ਪਾਈ ॥ ਹਰਿ
 ਜਲਨਿਧਿ ਹਮ ਜਲ ਕੇ ਮੀਨੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮਰੀਐ ਜੀਤ ॥੪॥੩॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਜਨ
 ਸੰਤ ਮਿਲਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਦਸਹੁ ਮੈ ਭੁਖ ਲਗਾਈ ॥ ਮੇਰੀ ਸਰਧਾ ਪ੍ਰਾਂ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤੇ ਮਿਲਿ
 ਹਰਿ ਦਰਸਨਿ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਮਿਲਿ ਸਤਸਾਂਗਿ ਬੋਲੀ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਜੈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਕਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਸਾਂਗਤਿ
 ਪਾਵਹਿ ॥ ਭਾਗਹੀਨ ਭਰਮਿ ਚੋਟਾ ਖਾਵਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਸਤਸਾਂਗੁ ਨ ਲਖੈ ਬਿਨੁ ਸਾਂਗਤਿ ਮੈਲੁ ਭਰੀਜੈ ਜੀਤ
 ॥੩॥ ਮੈ ਆਇ ਮਿਲਹੁ ਜਗਜੀਵਨ ਪਿਆਰੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੱਤਿਆ ਮਨਿ ਧਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ
 ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਜੀਤ ॥੪॥੪॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਹਰਿ ਰਸੁ
 ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੀ ਮਨੁ
 ਹਰਿ ਰਸਿ ਟੁਲਿ ਟੁਲਿ ਪਤਦਾ ਜੀਤ ॥੧॥ ਆਕਹੁ ਸੰਤ ਮੈ ਗਲਿ ਮੇਲਾਈਐ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕੀ ਮੈ ਕਥਾ
 ਸੁਣਾਈਐ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਮਿਲਹੁ ਮਨੁ ਦੇਵਾ ਜੋ ਗੁਰਬਾਣੀ ਮੁਖਿ ਚਤਦਾ ਜੀਤ ॥੨॥ ਕਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਸੰਤੁ
 ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥ ਭਾਗਹੀਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ਮਨਮੁਖੁ ਗਰਭ ਜੂਨੀ
 ਨਿਤਿ ਪਤਦਾ ਜੀਤ ॥੩॥ ਆਪਿ ਦਿੱਤਿਆਲਿ ਦਿੱਤਿਆ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ॥ ਮਲੁ ਹਤਮੈ ਬਿਖਿਆ ਸਭ ਨਿਵਾਰੀ ॥
 ਨਾਨਕ ਹਟ ਪਟਣ ਵਿਚਿ ਕਾਂਡਿਆ ਹਰਿ ਲੈਂਦੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਤਦਾ ਜੀਤ ॥੪॥੫॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਤ
 ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਂਗਤਿ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਈ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਸੁਆਮੀ

ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਰਸੁ ਕੀਚੈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਹਰਿ ਜਨ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥ ਜਾਇ ਪੁਛਾ ਜਨ
ਹਰਿ ਕੀ ਬਾਤਾ ॥ ਪਾਵ ਮਲੋਵਾ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਾ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਚੈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰ
ਦਾਤੈ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ॥ ਕਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਸਚੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬੋਲੀ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ
ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਲੀਚੈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਹਰਿ ਸਤਸਙਗਤਿ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਈਐ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਸਙਗਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
ਧਿਆਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣੀ ਸੁਖਿ ਬੋਲੀ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਪਰੀਚੈ ਜੀਤ ॥੪॥੬॥ ਮਾਝ
ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਆਵਹੁ ਭੈਣੇ ਤੁਸੀ ਮਿਲਹੁ ਪਿਆਰੀਆ ॥ ਜੋ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਦ੍ਰਿਸੇ ਤਿਸ ਕੈ ਹਉ ਵਾਰੀਆ ॥ ਮਿਲਿ
ਸਤਸਙਗਤਿ ਲਧਾ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਘੁਮਾਈਆ ਜੀਤ ॥੧॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਤਹ ਸੁਆਮੀ
॥ ਤੂ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਖਿਆ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਲਿ ਦਿਖਾਲਿਆ ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਸਦ
ਵਾਰਿਆ ਜੀਤ ॥੨॥ ਏਕੋ ਪਕਣੁ ਮਾਟੀ ਸਭ ਏਕਾ ਸਭ ਏਕਾ ਜੋਤਿ ਸਬਾਈਆ ॥ ਸਭ ਇਕਾ ਜੋਤਿ ਵਰਤੈ
ਭਿਨਿ ਭਿਨਿ ਨ ਰਲਈ ਕਿਸੈ ਫੀ ਰਲਾਈਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਇਕੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ
ਵਿਟਹੁ ਵਤਾਇਆ ਜੀਤ ॥੩॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਕੈ ਮਨਿ ਪਿਆਰੀ ਭਾਣੀ
॥ ਤਉਦੇਸੁ ਕਰੇ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਰਤਪਕਾਰੀਆ ਜੀਤ ॥੪॥੭॥ ਸਤ ਚਤੁਪਦੇ
ਮਹਲੇ ਚਤੁਰੇ ਕੇ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੧ ॥

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲੋਚੈ ਗੁਰ ਦਰਸਨ ਤਾਈ ॥ ਬਿਲਪ ਕਰੇ ਚਾਤੂਕ ਕੀ ਨਿਆਈ ॥ ਤੂਖਾ ਨ ਉਤਰੈ ਸਾਁਤਿ ਨ ਆਵੈ
ਬਿਨੁ ਦਰਸਨ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਜੀਤ ॥੧॥ ਹਉ ਘੋਲੀ ਜੀਤ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਗੁਰ ਦਰਸਨ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਜੀਤ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੇਰਾ ਮੁਖੁ ਸੁਹਾਵਾ ਜੀਤ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ॥ ਚਿਰੁ ਹੋਆ ਦੇਖੇ ਸਾਰਿਗਪਾਣੀ ॥
ਧਨੁ ਸੁ ਦੇਸੁ ਜਹਾ ਤ੍ਰਿੰ ਵਸਿਆ ਮੇਰੇ ਸਜਣ ਮੀਤ ਸੁਰਾਰੇ ਜੀਤ ॥੨॥ ਹਉ ਘੋਲੀ ਹਉ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਗੁਰ
ਸਜਣ ਮੀਤ ਸੁਰਾਰੇ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਕ ਘੜੀ ਨ ਮਿਲਤੇ ਤਾ ਕਲਿਜੁਗੁ ਹੋਤਾ ॥ ਹੁਣਿ ਕਦਿ

ਮਿਲੀਐ ਪ੍ਰਾਤੁ ਤੁਧੁ ਭਗਵਂਤਾ ॥ ਮੋਹਿ ਰੈਣ ਨ ਵਿਹਾਰੈ ਨੀਦ ਨ ਆਰੈ ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਗੁਰ ਦਰਬਾਰੇ ਜੀਤ ॥੩॥ ਹਉ
 ਘੋਲੀ ਜੀਤ ਘੋਲਿ ਬੁਮਾਈ ਤਿਸੁ ਸਚੇ ਗੁਰ ਦਰਬਾਰੇ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭਾਗੁ ਹੋਆ ਗੁਰਿ ਸਨ੍ਤੁ ਮਿਲਾਇਆ
 ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਕਿਨਾਸੀ ਘਰ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ॥ ਸੇਵ ਕਰੀ ਪਲੁ ਚਸਾ ਨ ਵਿਛੁੜਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀਤ ॥੪॥
 ਹਉ ਘੋਲੀ ਜੀਤ ਘੋਲਿ ਬੁਮਾਈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀਤ ॥ ਰਹਾਤ ॥੧॥੮॥ ਰਾਗੁ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾ
 ਰੁਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ਜਿਤੁ ਤੁਧੁ ਸਮਾਲੀ ॥ ਸੋ ਕੰਮੁ ਸੁਹੇਲਾ ਜੋ ਤੇਰੀ ਘਾਲੀ ॥ ਸੋ ਰਿਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਜਿਤੁ ਰਿਦੈ ਤ੍ਰਾਂ ਕੁਠਾ
 ਸਭਨਾ ਕੇ ਦਾਤਾਰਾ ਜੀਤ ॥੧॥ ਤ੍ਰਾਂ ਸਾੜਾ ਸਾਹਿਬੁ ਬਾਪੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਤੈਰੈ ਅਖੁਟ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਾਂ
 ਦੇਹਿ ਸੁ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਰੈ ਸੋਈ ਭਗਤੁ ਤੁਮਾਰਾ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸਭੁ ਕੋ ਆਸੈ ਤੇਰੀ ਕੈਠਾ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਤ੍ਰਾਂਹੈ
 ਕੁਠਾ ॥ ਸਭੇ ਸਾੜੀਵਾਲ ਸਦਾਇਨਿ ਤ੍ਰਾਂ ਕਿਸੈ ਨ ਦਿਸਹਿ ਬਾਹਰਾ ਜੀਤ ॥੩॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਕਤਿ ਕਰਾਇਹਿ
 ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਮਨਮੁਖਿ ਜਨਮਿ ਭਵਾਇਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੈਰੈ ਬਲਿਹਾਰੈ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ਦਸਾਹਰਾ ਜੀਤ ॥੪॥੨॥
 ੬॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਨਹਦੁ ਵਾਜੈ ਸਹਜਿ ਸੁਹੇਲਾ ॥ ਸਬਦਿ ਅਨੰਦ ਕਰੇ ਸਦ ਕੇਲਾ ॥ ਸਹਜ ਗੁਫਾ ਮਹਿ
 ਤਾਡੀ ਲਾਈ ਆਸਣੁ ਊਚ ਸਵਾਰਿਆ ਜੀਤ ॥੧॥ ਫਿਰਿ ਧਿਰਿ ਅਪੁਨੇ ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥ ਜੋ ਲੋਡੀਦਾ
 ਸੋਈ ਪਾਇਆ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਇ ਰਹਿਆ ਹੈ ਸੰਤਹੁ ਗੁਰਿ ਅਨਭਤ ਪੁਰਖੁ ਦਿਖਾਰਿਆ ਜੀਤ ॥੨॥ ਆਪੇ
 ਰਾਜਨੁ ਆਪੇ ਲੋਗਾ ॥ ਆਪਿ ਨਿਰਕਾਣੀ ਆਪੇ ਭੋਗਾ ॥ ਆਪੇ ਤਖਤਿ ਕਹੈ ਸਚੁ ਨਿਆਈ ਸਭ ਚੂਕੀ ਕੂਕ ਪੁਕਾਰਿਆ
 ਜੀਤ ॥੩॥ ਜੇਹਾ ਡਿਠਾ ਮੈ ਤੇਹੋ ਕਹਿਆ ॥ ਤਿਸੁ ਰਸੁ ਆਇਆ ਜਿਨਿ ਭੇਦੁ ਲਹਿਆ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੀ ਸੁਖੁ
 ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਪਸਾਰਿਆ ਜੀਤ ॥੪॥੩॥੧੦॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਪਿਰਿ ਸੋਹਾਗੁ
 ਬਣਾਇਆ ॥ ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਸਖੀਏ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਤਿਤੈ ਘਰਿ ਸੋਹਹਿ ਜੋ ਧਨ ਕੰਤਿ ਸਿਗਾਰੀ ਜੀਤ
 ॥੧॥ ਸਾ ਗੁਣਵਂਤੀ ਸਾ ਕਡਭਾਗਣਿ ॥ ਪੁਕਰਵਂਤੀ ਸੀਲਵਂਤਿ ਸੋਹਾਗਣਿ ॥ ਰੂਪਵਂਤਿ ਸਾ ਸੁਘਡਿ ਬਿਚਖਣਿ ਜੋ ਧਨ
 ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਅਚਾਰਵਂਤਿ ਸਾਈ ਪਰਥਾਨੇ ॥ ਸਭ ਸਿੰਗਾਰ ਬਣੇ ਤਿਸੁ ਗਿਆਨੇ ॥ ਸਾ ਕੁਲਵਂਤੀ ਸਾ
 ਸਭਰਾਈ ਜੋ ਪਿਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਸਵਾਰੀ ਜੀਤ ॥੩॥ ਮਹਿਮਾ ਤਿਸ ਕੀ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਏ ॥ ਜੋ ਪਿਰਿ ਮੇਲਿ ਲਈ ਅੰਗਿ

ਲਾਏ ॥ ਥਿਰੁ ਸੁਹਾਗੁ ਕਰੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੇਮ ਸਾਧਾਰੀ ਜੀਤ ॥੪॥੪॥੧੧॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਦਰਸਨ ਚਾਹੇ ॥ ਭਾਤਿ ਭਾਤਿ ਬਨ ਬਨ ਅਵਗਾਹੇ ॥ ਨਿਗੁਣੁ ਸਰਗੁਣੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਕੌਰੰ ਹੈ
 ਜੀਤ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਖਟੁ ਸਾਸਤ ਬਿਚਰਤ ਸੁਖਿ ਗਿਆਨਾ ॥ ਪ੍ਰਯਾ ਤਿਲਕੁ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨਾ ॥
 ਨਿਵਲੀ ਕਰਮ ਆਸਨ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਇਨ ਮਹਿ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਵੈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਅਨਿਕ ਬਰਖ ਕੀਏ ਜਪ ਤਾਪਾ ॥
 ਗਵਨੁ ਕੀਆ ਧਰਤੀ ਭਰਮਾਤਾ ॥ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਹਿਰਦੈ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਵੈ ਜੋਗੀ ਬਹੁਡਿ ਬਹੁਡਿ ਤਠਿ ਧਾਰੈ ਜੀਤ ॥੩॥
 ਕਹਿ ਕਿਰਪਾ ਸੋਹਿ ਸਾਧੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਧੀਰਜੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਬਸਿਆ ਘਟ
 ਭੀਤਰਿ ਹਰਿ ਮੰਗਲੁ ਨਾਨਕੁ ਗਾਰੈ ਜੀਤ ॥੪॥੫॥੧੨॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਾਰਖਵਹਮ ਅਪਰਾਂਪਰ ਦੇਵਾ ॥
 ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਤੀ ਜੀਤ
 ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੰਗੀ ਕ੃ਸਨ ਮੁਰਾਰੇ ॥ ਦਿਆਲ ਦਮੋਦਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ
 ਹੋਰਤੁ ਕਿਤੈ ਨ ਭਾਤੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਨਿਰਹਾਰੀ ਕੇਸਵ ਨਿਰਵੈਰਾ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਾ ਜਾ ਕੇ ਪ੍ਰਯਾਹਿ ਪੈਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਹਿਰਦੈ ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੋਈ ਭਗਤੁ ਇਕਾਤੀ ਜੀਤ ॥੩॥ ਅਮੋਘ ਦਰਸਨ ਬੇਅੰਤ ਅਪਾਰਾ ॥ ਕਡ ਸਮਰਥੁ
 ਸਦਾ ਦਾਤਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਤਿਤੁ ਤਰੀਐ ਗਤਿ ਨਾਨਕ ਵਿਰਲੀ ਜਾਤੀ ਜੀਤ ॥੪॥੬॥੧੩॥
 ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਹਿਆ ਕਰਣਾ ਦਿਤਾ ਲੈਣਾ ॥ ਗਰੀਬਾ ਅਨਾਥਾ ਤੇਰਾ ਮਾਣਾ ॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤ੍ਰੂਹੈ ਤ੍ਰੂਹੈ
 ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਭਾਣੈ ਤੱਝਡੁ ਭਾਣੈ ਰਾਹਾ ॥ ਭਾਣੈ ਹਰਿ ਗੁਣ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵਾਹਾ ॥ ਭਾਣੈ ਭਰਮਿ ਭਵੈ ਬਹੁ ਜੂਨੀ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤਿਸੈ ਰਾਈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਨਾ ਕੋ ਸੂਰਖੁ ਨਾ ਕੋ
 ਸਿਆਣਾ ॥ ਵਰਤੈ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਬੇਅੰਤ ਅਥਾਹਾ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ
 ਜੀਤ ॥੩॥ ਖਾਕੁ ਸੰਤਨ ਕੀ ਦੇਹੁ ਪਿਆਰੇ ॥ ਆਇ ਪਿਅਇਆ ਹਰਿ ਤੈਰੈ ਢੁਆਰੈ ॥ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਮਨੁ ਆਧਾਰੈ
 ਨਾਨਕ ਮਿਲਣੁ ਸੁਭਾਈ ਜੀਤ ॥੪॥੭॥੧੪॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਢੁਖੁ ਤਦੇ ਜਾ ਵਿਸਰਿ ਜਾਰੈ ॥ ਭੁਖ ਵਿਆਪੈ
 ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਧਾਰੈ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਜਿਸੁ ਦੇਵੈ ਦੀਨ ਦਿਆਲਾ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਕਡ

समरथा ॥ जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥ चिंता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला
 जीउ ॥२॥ बारिक वाँगी हउ सभ किछु मंगा ॥ देदे तोटि नाही प्रभ रंगा ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाई
 दीन दइआल गोपाला जीउ ॥३॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ जिनि बंधन काटे सगले मेरे ॥
 हिरदै नामु दे निरमल कीए नानक रंगि रसाला जीउ ॥४॥८॥१५॥ माझ महला ५ ॥ लाल गोपाल
 दइआल रंगीले ॥ गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे ॥ ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ
 जीवाँ जीउ ॥१॥ दुख भंजन निधान अमोले ॥ निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥ अकाल मूरति अजूनी
 संभौ मन सिमरत ठंडा थीवाँ जीउ ॥२॥ सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥ ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥ नामु
 रसाइणु मनु तृपताइणु गुरमुखि अंमृतु पीवाँ जीउ ॥३॥ दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥ एह
 सुमति गुरु ते पाई ॥ नानक की धर तूँहै ठाकुर हरि रंगि पारि परीवाँ जीउ ॥४॥६॥१६॥
 माझ महला ५ ॥ धन्नु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ ॥ सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥ धन्नु
 मूरत चसे पल घड़ीआ धंनि सु ओइ संजोगा जीउ ॥१॥ उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥ हरि मारगि
 चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥ नामु निधानु सतिगुरु सुणाइआ मिटि गए सगले रोगा जीउ ॥२॥
 अंतरि बाहरि तेरी बाणी ॥ तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥ गुरि कहिआ सभु एको एको अवरु
 न कोई होइगा जीउ ॥३॥ अंमृत रसु हरि गुर ते पीआ ॥ हरि पैनणु नामु भोजनु थीआ ॥ नामि
 रंग नामि चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥४॥१०॥१७॥ माझ महला ५ ॥ सगल संतन
 पहि वसतु इक माँगउ ॥ करउ बिन्ती मानु तिआगउ ॥ वारि वारि जाई लख वरीआ देहु संतन
 की धूरा जीउ ॥१॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते ॥ तुम समरथ सदा सुखदाते ॥ सभ को तुम ही
 ते वरसावै अउसरु करहु हमारा पूरा जीउ ॥२॥ दरसनि तैरै भवन पुनीता ॥ आतम गडु
 बिखमु तिना ही जीता ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरा जीउ ॥३॥

रेनु संतन की मेरै मुखि लागी ॥ दुरमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥ सच घरि बैसि रहे गुण गाए
 नानक बिनसे कूरा जीउ ॥४॥११॥१८॥ माझ महला ५ ॥ विसरु नाही एवड दाते ॥ करि किरपा
 भगतन संगि राते ॥ दिनसु रैणि जिउ तुधु धिआई एहु दानु मोहि करणा जीउ ॥१॥ माटी अंधी
 सुरति समाई ॥ सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥ अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥२॥
 जिस दा दिता सभु किछु लैणा ॥ छतीह अंमृत भोजनु खाणा ॥ सेज सुखाली सीतलु पवणा सहज केल
 रंग करणा जीउ ॥३॥ सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥ सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥ सास
 सास तेरे गुण गावा ओट नानक गुर चरणा जीउ ॥४॥१२॥१६॥ माझ महला ५ ॥ सिफति सालाहणु
 तेरा हुकमु रजाई ॥ सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥ सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना
 जीउ ॥१॥ अंमृतु नामु तेरा सोई गावै ॥ जो साहिब तेरै मनि भावै ॥ तूं संतन का संत तुमारे संत
 साहिब मनु माना जीउ ॥२॥ तूं संतन की करहि प्रतिपाला ॥ संत खेलहि तुम संगि गोपाला ॥ अपुने
 संत तुधु खरे पिआरे तूं संतन के प्राना जीउ ॥३॥ उन संतन कै मेरा मनु कुरबाने ॥ जिन तूं जाता
 जो तुधु मनि भाने ॥ तिन कै संगि सदा सुखु पाइआ हरि रस नानक तृपति अघाना जीउ ॥४॥१३॥
 २०॥ माझ महला ५ ॥ तूं जलनिधि हम मीन तुमारे ॥ तेरा नामु बूंद हम चातृक तिखहारे ॥ तुमरी
 आस पिआसा तुमरी तुम ही संगि मनु लीना जीउ ॥१॥ जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥ जिउ निरधनु
 धनु देखि सुखु पावै ॥ तृखावंत जलु पीवत ठंडा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥२॥ जिउ
 अंधिआरै दीपकु परगासा ॥ भरता चितवत पूरन आसा ॥ मिलि प्रीतम जिउ होत अन्दा तिउ हरि
 रंगि मनु रंगीना जीउ ॥३॥ संतन मो कउ हरि मारगि पाइआ ॥ साध कृपालि हरि संगि गिझाइआ
 ॥ हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरु सचु दीना जीउ ॥४॥१४॥२१॥ माझ महला ५ ॥
 अंमृत नामु सदा निरमलीआ ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥ अवरि साद चखि सगले देखे मन

हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥१॥ जो जो पीवै सो तृपतावै ॥ अमरु होवै जो नाम रसु पावै ॥ नाम निधान
 तिसहि परापति जिसु सबदु गुरु मनि वूठा जीउ ॥२॥ जिनि हरि रसु पाइਆ सो तृपति अधाना ॥
 जिनि हरि साटु पाइआ सो नाहि डुलाना ॥ तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मस्तकि भागीठा
 जीउ ॥३॥ हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे बहुतेरे ॥ तिसु लगि मुकतु भए घणेरे ॥ नामु निधाना
 गुरमुखि पाईਐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥४॥१५॥२२॥ माझ महला ੫ ॥ निधि सिधि रिधि
 हरि हरि हरि मेरै ॥ जनमु पदारथु गहिर गंभੀरै ॥ लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई
 जीउ ॥१॥ दरसनु पेखत भए पुनीता ॥ सगल उधारे भाई मीता ॥ अगम अगोचरु सुआਮੀ अਪੁनਾ
 गੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸਚੁ ਧਿਆਈ ਜੀਉ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਖੋਜਹਿ ਸਰਬ ਉਪਾਏ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਦਰਸਨੁ ਕੋ ਵਿਰਲਾ
 ਪਾਏ ॥ ਊਚ ਅਪਾਰ ਅਗੋਚਰ ਥਾਨਾ ਓਹੁ ਮਹਲੁ ਗੁਰੁ ਦੇਖਾਈ ਜੀਉ ॥੩॥ ਗਹਿਰ ਗੱਭੀਰ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ॥
 ਸੁਕਤਿ ਭਇਆ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਕਿਸੇਰਾ ॥ ਗੁਰਿ ਬੰਧਨ ਤਿਨ ਕੇ ਸਗਲੇ ਕਾਟੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ਜੀਉ
 ॥੪॥੧੬॥੨੩॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਵਤ ॥ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਆ ਤੇ ਮੰਗਲੁ
 ਗਾਵਤ ॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਵਤ ਜਾਗਤ ਹਰਿ ਧਿਆਈ ਸਗਲ ਅਵਰਦਾ ਜੀਉ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਅਤਖਥੁ ਮੌ ਕਤ
 ਸਾਧੂ ਦੀਆ ॥ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟੇ ਨਿਰਮਲੁ ਥੀਆ ॥ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਨਿਕਸੀ ਸਭ ਪੀਰਾ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੇ ਦਰਦਾ
 ਜੀਉ ॥੨॥ ਜਿਸ ਕਾ ਅੰਗੁ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ॥ ਸੋ ਮੁਕਤਾ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਸਤਿ ਕਰੇ ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਪਛਾਤਾ
 ਸੋ ਕਾਹੇ ਕਤ ਡਰਦਾ ਜੀਉ ॥੩॥ ਜਬ ਤੇ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਭੇਟਨ ਹਤ ਗੜ੍ਹ ਬਲਾਏ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ
 ਹਰਿ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰ ਢਾਕਿ ਲੀਆ ਮੇਰਾ ਪਡਦਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੭॥੨੪॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਓਤਿ
 ਪੋਤਿ ਸੇਵਕ ਸੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ਸੇਵਕ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਪਾਣੀ ਪਖਾ ਪੀਸਤ ਸੇਵਕ ਕੈ ਠਾਕੁਰ ਹੀ ਕਾ
 ਆਹਰੁ ਜੀਉ ॥੧॥ ਕਾਟਿ ਸਿਲਕ ਪ੍ਰਭਿ ਸੇਵਾ ਲਾਇਆ ॥ ਹੁਕਮੁ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਸੇਵਕ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਸੋਈ
 ਕਮਾਵੈ ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਭਾਵੈ ਸੇਵਕੁ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਮਾਹਰੁ ਜੀਉ ॥੨॥ ਤ੍ਰੁਂ ਦਾਨਾ ਠਾਕੁਰੁ ਸਭ ਬਿਧਿ ਜਾਨਹਿ ॥

ठाकुर के सेवक हरि रंग माणहि ॥ जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही संगि जाहरु जीउ
 ॥३॥ अपुनै ठाकुरि जो पहिराइआ ॥ बहुरि न लेखा पुछि बुलाइआ ॥ तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी
 सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ ॥४॥१८॥२५॥ माझ महला ५ ॥ सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥
 बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥
 १॥ झिमि झिमि वरसै अंमृत धारा ॥ मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ अनद बिनोद करे दिन राती
 सदा सदा हरि केला जीउ ॥२॥ जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ ॥ साध कृपा ते सूका हरिआ ॥
 सुमति पाए नामु धिआए गुरमुखि होए मेला जीउ ॥३॥ जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ ॥ तिउ जोती
 संगि जोति मिलाइआ ॥ कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईअै जउला जीउ ॥४॥१९॥२६॥
 माझ महला ५ ॥ तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिआ ॥ तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥ वारि वारि
 जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु आराधे जीउ ॥१॥ तिसु चरण पखाली जो तेरै मारगि चालै ॥ नैन
 निहाली तिसु पुरख दइआलै ॥ मनु देवा तिसु अपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ
 ॥२॥ से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥ सभ कै मधे अलिपत निरबाणे ॥ साध कै संगि उनि भउजलु
 तरिआ सगल दूत उनि साधे जीउ ॥३॥ तिन की सरणि परिआ मनु मेरा ॥ माणु ताणु तजि मोहु
 अंधेरा ॥ नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ अगम अगाधे जीउ ॥४॥२०॥२७॥ माझ महला ५
 ॥ तूं पेडु साख तेरी फूली ॥ तूं सूखमु होआ असथूली ॥ तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु
 न भालीअै जीउ ॥१॥ तूं सूतु मणीए भी तूंहै ॥ तूं गंठी मेरु सिरि तूंहै ॥ आदि मधि अंति
 प्रभु सोई अवरु न कोइ दिखालीअै जीउ ॥२॥ तूं निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥ तूं निरबाणु
 रसीआ रंगि राता ॥ अपणे करतब आपे जाणहि आपे तुधु समालीअै जीउ ॥३॥ तूं ठाकुरु सेवकु
 फुनि आपे ॥ तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ॥ नानक दासु सदा गुण गावै इक भोरी नदरि निहालीअै

ਜੀਤ ॥੪॥੨੧॥੨੮॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਫਲ ਸੁ ਬਾਣੀ ਜਿਤੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ
 ਜਾਣੀ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਗਾਵਤ ਸੁਨਣਾ ਆਏ ਤੇ ਪਰਵਾਨਾ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸੇ ਨੇਤਰ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਨੀ
 ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਾ ॥ ਸੇ ਕਰ ਭਲੇ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਜਸੁ ਲੇਖਾ ॥ ਸੇ ਚਰਣ ਸੁਹਾਵੇ ਜੋ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਚਲੇ ਹਤ ਬਲਿ ਤਿਨ
 ਸੰਗਿ ਪਛਾਣਾ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸੁਣਿ ਸਾਜਨ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਉਧਾਰੇ ॥ ਕਿਲਵਿਖ
 ਕਾਟਿ ਹੋਆ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮਿਟਿ ਗਏ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਜੀਤ ॥੩॥ ਦੁਇ ਕਰ ਜੋਡਿ ਇਕੁ ਬਿਨਤ ਕਰੀਐ ॥
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਝੁਬਦਾ ਪਥਰੁ ਲੀਐ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਭਾਏ ਕ੃ਪਾਲਾ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ਜੀਤ ॥੪॥੨੨
 ॥੨੬॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤੇਰੀ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਹੋਵੈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਮੇਰੀ ॥ ਜਲਨਿ
 ਕੁਝੀ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ਮਨੂਆ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਪਾਏ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸੂਖੁ ਭਇਆ ਦੁਖੁ ਦੂਰਿ ਪਰਾਨਾ ॥ ਸਨਤ
 ਰਸਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਨਾ ॥ ਜਲ ਥਲ ਨੀਰਿ ਭਰੇ ਸਰ ਸੁਭਰ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ ਜਾਏ ਜੀਤ ॥੨॥ ਦਇਆ ਧਾਰੀ
 ਤਿਨਿ ਸਿਰਜਨਹਾਰੇ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥ ਮਿਹਰਵਾਨ ਕਿਰਪਾਲ ਦਇਆਲਾ ਸਗਲੇ ਤ੃ਪਤਿ
 ਅਧਾਏ ਜੀਤ ॥੩॥ ਵਣੁ ਤ੍ਰਣੁ ਤ੍ਰਭਵਣੁ ਕੀਤੋਨੁ ਹਰਿਆ ॥ ਕਰਣਹਾਰਿ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਕਰਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਨਾਨਕ ਤਿਸੈ ਅਰਾਧੇ ਮਨ ਕੀ ਆਸ ਪੁਜਾਏ ਜੀਤ ॥੪॥੨੩॥੩੦॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੍ਰੂ ਮੇਰਾ ਪਿਤਾ
 ਤ੍ਰੂਹੈ ਮੇਰਾ ਮਾਤਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਮੇਰਾ ਬੰਧਪੁ ਤ੍ਰੂ ਮੇਰਾ ਭਾਤਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਮੇਰਾ ਰਾਖਾ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਤਾ ਭਤ ਕੇਹਾ ਕਾਡਾ ਜੀਤ
 ॥੧॥ ਤੁਮਰੀ ਕੁਪਾ ਤੇ ਤੁਧੁ ਪਛਾਣਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਮੇਰੀ ਓਟ ਤ੍ਰੂਹੈ ਮੇਰਾ ਮਾਣਾ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰੂਜਾ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ਸਭੁ
 ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ਅਖਾਡਾ ਜੀਤ ॥੨॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੁਧੁ ਉਪਾਏ ॥ ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਭਾਣਾ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਸਭ
 ਕਿਛੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਹੋਵੈ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਅਸਾਡਾ ਜੀਤ ॥੩॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ
 ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਸੀਤਲਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੌ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ਨਾਨਕ ਜਿਤਾ ਬਿਖਾਡਾ ਜੀਤ ॥੪॥੨੪॥੩੧॥
 ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਪ੍ਰਭ ਮਨਹਿ ਅਧਾਰਾ ॥ ਭਗਤ ਜੀਵਹਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਅਪਾਰਾ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ
 ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜੀਤ ॥੧॥ ਮਨਸਾ ਧਾਰਿ ਜੋ ਘਰ ਤੇ ਆਵੈ ॥

साधसंगि जनमु मरणु मिटावै ॥ आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥२॥ अगम
 अगोचर किछु मिति नही जानी ॥ साधिक सिध धिआवहि गिआनी ॥ खुटी मिटी चूका भोलावा गुरि मन
 ही महि प्रगटाइआ जीउ ॥३॥ अनद मंगल कलिआण निधाना ॥ सूख सहज हरि नामु वखाना ॥
 होइ कृपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ ॥४॥२५॥३२॥ माझ महला ५ ॥
 सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ तूं प्रीतमु ठाकुरु अति भारी ॥ तुमरे करतब तुम ही जाणहु तुमरी ओट
 गुणपाला जीउ ॥१॥ गुण गावत मनु हरिआ होवै ॥ कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥ भेटत संगि साध
 संतन कै सदा जपउ दइआला जीउ ॥२॥ प्रभु अपुना सासि सासि समारउ ॥ इह मति गुर प्रसादि
 मनि धारउ ॥ तुमरी कृपा ते होइ प्रगासा सरब मडिआ प्रतिपाला जीउ ॥३॥ सति सति सति प्रभु
 सोई ॥ सदा सदा सद आपे होई ॥ चलित तुमारे प्रगट पिआरे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥४॥
 २६॥३३॥ माझ महला ५ ॥ हुकमी वरमण लागे मेहा ॥ साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥ सीतल
 साँति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाई प्रभि आपे जीउ ॥१॥ सभु किछु बहुतो बहुतु उपाइआ ॥ करि
 किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥ दाति करहु मेरे दातारा जीअ जंत सभि ध्रापे जीउ ॥२॥ सचा साहिबु सची
 नाई ॥ गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥ जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥३॥ सासि
 सासि नानकु सालाहे ॥ सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥ पूरन आस करी खिन भीतरि हरि हरि गुण
 जापे जीउ ॥४॥२७॥३४॥ माझ महला ५ ॥ आउ साजन संत मीत पिआरे ॥ मिलि गावह गुण
 अगम अपारे ॥ गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिआईअै जिनि हम कीए जीउ ॥१॥ जनम जनम के
 किलबिख जावहि ॥ मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥ सिमरि साहिबु सो सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए
 जीउ ॥२॥ नामु जपत सरब सुखु पाईअै ॥ सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईअै ॥ जिनि सेविआ सो
 पारगिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥३॥ आइ पडिआ तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭੁ ਭਗਤੀ ਲਾਵਹੁ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਏ ਜੀਤ ॥੪॥੨੮॥੩੫॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਭਏ ਕੁਪਾਲ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਸਾਈ ॥ ਮੇਘੁ ਵਰਸੈ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਸਦਾ ਕਿਰਪਾਲਾ ਠਾਡਿ ਪਾਈ
 ਕਰਤਾਰੇ ਜੀਤ ॥੧॥ ਅਪੁਨੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਬਾਰਿਕ ਮਾਤਾ ਸੰਮਾਰੇ ॥ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਸੁਖ ਸਾਗਰ
 ਸੁਆਮੀ ਦੇਤ ਸਗਲ ਆਹਾਰੇ ਜੀਤ ॥੨॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਪ੍ਰਾਂ ਰਹਿਆ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ਜਾਈਐ
 ਕੁਰਬਾਨਾ ॥ ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਧਿਆਈ ਜਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਸਗਲ ਉਧਾਰੇ ਜੀਤ ॥੩॥ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਸਗਲੇ
 ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ॥ ਤਤਰਿ ਗਾਏ ਸਭ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪੇ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰੀਆਵਲੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਰੇ ਜੀਤ
 ॥੪॥੨੯॥੩੬॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਥੈ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸੇ ਅਸਥਲ ਸੋਝਿਨ ਚਤੁਬਾਰੇ ॥ ਜਿਥੈ
 ਨਾਮੁ ਨ ਜਪੀਐ ਮੇਰੇ ਗੋਝਿਦਾ ਸੇਈ ਨਗਰ ਤੁਝਾਡੀ ਜੀਤ ॥੧॥ ਹਰਿ ਰੁਖੀ ਰੋਟੀ ਖਾਇ ਸਮਾਲੇ ॥ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ
 ਬਾਹਰਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥ ਖਾਇ ਖਾਇ ਕਰੇ ਬਦਫੈਲੀ ਜਾਣੁ ਵਿਸੂ ਕੀ ਵਾਡੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸੰਤਾ ਸੇਤੀ ਰੁਂਗ ਨ
 ਲਾਏ ॥ ਸਾਕਤ ਸੰਗਿ ਵਿਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥ ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਖੋਈ ਅਗਿਆਨੀ ਜੱਡ ਅਪੁਣੀ ਆਪਿ ਤੁਧਾਡੀ ਜੀਤ ॥੩॥
 ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਮੇਰੇ ਦੀਨ ਦਿਆਲਾ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਰਾਖਹੁ
 ਸਰਮ ਅਸਾਡੀ ਜੀਤ ॥੪॥੩੦॥੩੭॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਣ ਠਕੁਰ ਕੇ ਰਿਦੈ ਸਮਾਣੇ ॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਸਭ
 ਦੂਰਿ ਪਇਆਣੇ ॥ ਸਾਁਤਿ ਸੂਖ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੀ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਨਿਵਾਸਾ ਜੀਤ ॥੧॥ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਤੂਟੈ ਮੂਲੇ ॥
 ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਾ ਜੀਤ ॥੨॥
 ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵਰਖੈ ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ॥ ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਸਾਁਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਤੁਪਤਿ ਅਧਾਇ ਰਹੇ ਜਨ ਤੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਕੀਆ ਦਿਲਾਸਾ ਜੀਤ ॥੩॥ ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਸ ਤੇ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
 ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਕਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ਜੀਤ ॥੪॥੩੧॥੩੮॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੀਹੁ
 ਪਇਆ ਪਰਮੇਸ਼ਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਸੁਖੀ ਵਸਾਇਆ ॥ ਗਇਆ ਕਲੇਸੁ ਭਇਆ ਸੁਖੁ ਸਾਚਾ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੀ ਜੀਤ ॥੧॥ ਜਿਸ ਕੇ ਸੇ ਤਿਨ ਹੀ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥ ਪਾਰਖਵਹਮ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਰਖਵਾਰੇ ॥ ਸੁਣੀ

ਬੇਨਤੀ ਠਾਕੁਰਿ ਮੈਰੈ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਘਾਲੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸਰਬ ਜੀਆ ਕਤ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਨਦਰਿ
 ਨਿਹਾਰਾ ॥ ਜਲ ਥਲ ਮਹੀਅਲ ਸਭਿ ਤ੃ਪਤਾਣੇ ਸਾਧੂ ਚਰਨ ਪਖਾਲੀ ਜੀਤ ॥੩॥ ਮਨ ਕੀ ਝਿਛ
 ਪੁਜਾਵਣਹਾਰਾ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਈ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਨੁ ਕੀਆ ਦੁਖ ਭੰਜਨਿ ਰਤੇ ਰੰਗਿ ਰਸਾਲੀ ਜੀਤ
 ॥੪॥੩੨॥੩੬॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਤੇਰਾ ਧਨੁ ਭੀ ਤੇਰਾ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਠਾਕੁਰੁ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥ ਜੀਤ
 ਧਿੰਡੁ ਸਭੁ ਰਾਸਿ ਤੁਮਾਰੀ ਤੇਰਾ ਜੋਰੁ ਗੋਪਾਲਾ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤ੍ਰਾਂਹੈ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਾ
 ਤੇਰੀ ਪਾਈ ॥ ਕਾਰ ਕਮਾਵਾ ਜੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵਾ ਜਾ ਤ੍ਰਾਂ ਦੇਹਿ ਦਿਅਲਾ ਜੀਤ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮ ਤੇ ਲਹਣਾ ਤ੍ਰਾਂ ਮੇਰਾ
 ਗਹਣਾ ॥ ਜੋ ਤ੍ਰਾਂ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਸਹਣਾ ॥ ਜਿਥੈ ਰਖਹਿ ਬੈਕੁਂਠੁ ਤਿਥਾਈ ਤ੍ਰਾਂ ਸਭਨਾ ਕੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ਜੀਤ ॥੩॥
 ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਦੇ ਨ
 ਹੋਇ ਦੁਖਾਲਾ ਜੀਤ ॥੪॥੩੩॥੪੦॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਘੁ ਪਠਾਇਆ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ
 ਮਹੀਅਲਿ ਦਹ ਦਿਸਿ ਵਰਸਾਇਆ ॥ ਸਾਂਤਿ ਭੰਡੁ ਬੁੜੀ ਸਭ ਤ੃ਸਨਾ ਅਨਦੁ ਭਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ਜੀਤ ॥੧॥
 ਸੁਖਦਾਤਾ ਦੁਖ ਭੰਜਨਹਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਕਰੇ ਜੀਅ ਸਾਰਾ ॥ ਅਪਨੇ ਕੀਤੇ ਨੋ ਆਪਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ਪਇ ਪੈਰੀ
 ਤਿਸਹਿ ਮਨਾਈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਜਾ ਕੀ ਸਰਣਿ ਪਇਆ ਗਤਿ ਪਾਈਐ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
 ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਹੋਰੁ ਨ ਢੂਜਾ ਠਾਕੁਰੁ ਸਭ ਤਿਸੈ ਕੀਆ ਜਾਈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਤੇਰਾ ਮਾਣੁ ਤਾਣੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਾ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਸਚਾ
 ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਣੀ ਗਹੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਆਠ ਪਹਰ ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ਜੀਤ ॥੪॥੩੪॥੪੧॥
 ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਭੇ ਸੁਖ ਭਏ ਪ੍ਰਭ ਤੁਠੇ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੇ ਚਰਣ ਮਨਿ ਕੁਠੇ ॥ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਲਗੀ ਲਿਵ ਅੰਤਰਿ
 ਸੋ ਰਸੁ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਵਰਤੈ ਨੇਰਾ ॥ ਸਦਾ ਅਲਿਪਤੁ
 ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾ ਕੋ ਕਿਰਲਾ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਾਣੈ ਕੀ ਏਹ ਨੀਸਾਣੀ ॥ ਮਨਿ ਇਕੋ ਸਚਾ ਹੁਕਮੁ
 ਪਛਾਣੀ ॥ ਸਹਜਿ ਸਾਂਤੋਖਿ ਸਦਾ ਤ੃ਪਤਾਸੇ ਅਨਦੁ ਖਸਮ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਹਥੀ ਦਿਤੀ ਪ੍ਰਭਿ ਦੇਵਣਹਾਰੈ ॥
 ਜਨਮ ਮਰਣ ਰੋਗ ਸਭਿ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਕੀਏ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੇ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ਜੀਤ ॥

੪॥੩੫॥੪੨॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੀਨੀ ਦਿੱਖਾ ਗੋਪਾਲ ਗੁਸਾਈ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਵਿਥੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
 ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਆ ਤਿਨਿ ਕਰਤੈ ਦੁਖ ਕਾ ਡੇਰਾ ਢਾਹਿਆ ਜੀਤ ॥੧॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥ ਬਿਖੜਾ
 ਥਾਨੁ ਨ ਦਿਸੈ ਕੋਈ ॥ ਦ੍ਰਵਤ ਦੁਸਮਣ ਸਭਿ ਸਜਣ ਹੋਏ ਏਕੋ ਸੁਆਮੀ ਆਹਿਆ ਜੀਤ ॥੨॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ
 ਆਪੇ ਆਪੈ ॥ ਬੁਧਿ ਸਿਆਣਪ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਪੈ ॥ ਆਪਣਿਆ ਸੰਤਾ ਨੋ ਆਪਿ ਸਹਾਈ ਪ੍ਰਭਿ ਭਰਮ ਭੁਲਾਵਾ
 ਲਾਹਿਆ ਜੀਤ ॥੩॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਜਨ ਕਾ ਆਧਾਰੇ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰੇ ॥ ਸਹਜ ਅਨਨਦ ਗਾਵਹਿ
 ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਸਰਬ ਸਮਾਹਿਆ ਜੀਤ ॥੪॥੩੬॥੪੩॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੋ ਸਚੁ ਮੰਦਰੁ ਜਿਤੁ ਸਚੁ
 ਧਿਆਈਐ ॥ ਸੋ ਰਿਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥ ਸਾ ਧਰਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ਜਿਤੁ ਵਸਹਿ ਹਰਿ ਜਨ ਸਚੇ ਨਾਮ
 ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੀ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸਚੁ ਵਡਾਈ ਕੀਮ ਨ ਪਾਈ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਮੁ ਨ ਕਹਣਾ ਜਾਈ ॥ ਧਿਆਇ
 ਧਿਆਇ ਜੀਵਹਿ ਜਨ ਤੇਰੇ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਮਾਣੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣੁ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥ ਰੰਗ ਰਤੇ ਤੈਰੈ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਨੀਸਾਣੀ ਜੀਤ ॥੩॥ ਸਚੇ ਅੰਤੁ ਨ
 ਜਾਣੈ ਕੋਈ ॥ ਥਾਨਿ ਥਨਤਰਿ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਈਐ ਸਦ ਹੀ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਜਾਣੀ ਜੀਤ ॥੪॥੩੭
 ॥੪੪॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੈਣਿ ਸੁਹਾਵਡੀ ਦਿਨਸੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥ ਜਪਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮੇਲਾ ॥ ਘੜੀ
 ਸੂਰਤ ਸਿਮਰਤ ਪਲ ਕੰਬਹਿ ਜੀਵਣੁ ਸਫਲੁ ਤਿਰਾਈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਦੋਖ ਸਭਿ ਲਾਥੇ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਬਾਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਥੇ ॥ ਭੈ ਭਤ ਭਰਮੁ ਖੋਇਆ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਦੇਖਾ ਸਭਨੀ ਜਾਈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭੁ ਸਮਰਥੁ ਵਡ
 ਊਚ ਅਪਾਰਾ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਮਧਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ਦ੍ਰਵਾ ਲਵੈ ਨ ਲਾਈ ਜੀਤ ॥੩॥
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰੇ ਦੀਨ ਦਿੱਖਾਲਾ ॥ ਜਾਚਿਕੁ ਜਾਚੈ ਸਾਥ ਰਵਾਲਾ ॥ ਦੇਹਿ ਦਾਨੁ ਨਾਨਕੁ ਜਨੁ ਮਾਗੈ ਸਦਾ ਸਦਾ
 ਹਰਿ ਧਿਆਈ ਜੀਤ ॥੪॥੩੮॥੪੫॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਐਥੈ ਤ੍ਰਹੈ ਆਗੈ ਆਪੇ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਥਾਪੇ ॥
 ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਕਰਤੇ ਮੈ ਧਰ ਓਟ ਤੁਮਾਰੀ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰਸਨਾ ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਸੁਆਮੀ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸੋ ਜਨਮੁ ਨ ਜ੍ਰਾਈ ਹਾਰੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਨਾਮੁ

अवखधु जिनि जन तेरै पाइआ ॥ जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥ हरि कीरतनु गावहु दिनु राती
 सफल एहा है कारी जीउ ॥३॥ दृस्टि धारि अपना दासु सवारिआ ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु
 नमसकारिआ ॥ इकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा नानक इह मति सारी जीउ ॥४॥३६॥४६॥
 माझ्या महला ५ ॥ मनु तनु रता राम पिआरे ॥ सरबसु दीजै अपना वारे ॥ आठ पहर गोविंद गुण
 गाईअै बिसरु न कोई सासा जीउ ॥१॥ सोई साजन मीतु पिआरा ॥ राम नामु साधसंगि बीचारा ॥
 साधू संगि तरीजै सागरु कटीअै जम की फासा जीउ ॥२॥ चारि पदारथ हरि की सेवा ॥ पारजातु जपि
 अलख अभेवा ॥ कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥३॥ पूरन भाग भए जिसु प्राणी
 ॥ साधसंगि मिले सारंगपाणी ॥ नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ
 ॥४॥४०॥४७॥ माझ्या महला ५ ॥ सिमरत नामु रिदै सुखु पाइआ ॥ करि किरपा भगती प्रगटाइआ ॥
 संतसंगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस रोगा जीउ ॥१॥ जा कै गृहि नव निधि हरि भाई ॥
 तिसु मिलिआ जिसु पुरब कर्माई ॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर प्रभु सभना गला जोगा जीउ
 ॥२॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ आपि इकंती आपि पसारा ॥ लेपु नही जगजीवन दाते
 दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥३॥ अंचलि लाइ सभ सिस्टि तराई ॥ आपणा नाउ आपि
 जपाई ॥ गुर बोहिथु पाइआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥४॥४१॥४८॥ माझ्या महला ५ ॥
 सोई करणा जि आपि कराए ॥ जिथै रखै सा भली जाए ॥ सोई सिआणा सो पतिवंता हुकमु लगै जिसु
 मीठा जीउ ॥१॥ सभ परोई इकतु धागै ॥ जिसु लाइ लए सो चरणी लागै ॥ ऊंध कवलु जिसु होइ
 प्रगासा तिनि सरब निरंजनु डीठा जीउ ॥२॥ तेरी महिमा तूंहै जाणहि ॥ अपणा आपु तूं
 आपि पछाणहि ॥ हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोधु लोभु पीठा जीउ ॥३॥ तूं निरवैरु
 संत तेरे निरमल ॥ जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥ नानक नामु धिआइ धिआइ जीवै

ਬਿਨਸਿਆ ਭਰਮੁ ਭਤ ਧੀਠਾ ਜੀਤ ॥੪॥੪੨॥੪੬॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਝੂਠਾ ਮੰਗਣੁ ਜੇ ਕੋਈ ਮਾਗੈ ॥ ਤਿਸ
ਕਤ ਮਰਤੇ ਘੜੀ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜੋ ਸਦ ਹੀ ਸੇਵੈ ਸੋ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਿਹਚਲੁ ਕਹਣਾ ॥੧॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ
ਜਿਸ ਕੈ ਮਨਿ ਲਾਗੀ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਅਨਦਿਨੁ ਨਿਤ ਜਾਗੀ ॥ ਬਾਹ ਪਕਡਿ ਤਿਸੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਲੈ ਜਿਸ ਕੈ ਮਸਤਕਿ
ਲਹਣਾ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਭਗਤਾਂ ਮਨਿ ਵੁਠੇ ॥ ਵਿਣੁ ਪਰਮੇਸਰ ਸਗਲੇ ਮੁਠੇ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾਂ ਕੀ ਧੂਡਿ ਨਿਤ
ਬਾਂਛਹਿ ਨਾਮੁ ਸਚੇ ਕਾ ਗਹਣਾ ॥੩॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਾਈਐ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਕਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਪਾਈਐ
॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਹੋਇ ਦਿਇਆਲਾ ਤੇਰਾ ਕੀਤਾ ਸਹਣਾ ॥੪॥੪੩॥੫੦॥

ਰਾਗੁ ਮਾਝਾ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਬਦਿ ਰੰਗਾਏ ਹੁਕਮਿ ਸਬਾਏ ॥ ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਏ ॥ ਸਚੇ ਦੀਨ
ਦਿਇਆਲ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਸਚੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥
ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰਮਤੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾ ਕੋ ਮੇਰਾ ਹਉ ਕਿਸੁ ਕੇਰਾ ॥
ਸਾਚਾ ਠਾਕੁਰੁ ਤ੃ਭਵਣਿ ਮੇਰਾ ॥ ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜਾਇ ਘਣੇਰੀ ਕਰਿ ਅਕਗਣ ਪਛੋਤਾਵਣਿਆ ॥੨॥
ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਸੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਕਖਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਨਾਮਿ ਨੀਸਾਣੈ ॥ ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਰਿ ਲੇਖਾ ਸਚੈ
ਛੂਟਸਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਮਨਮੁਖੁ ਭੂਲਾ ਠਤਰੁ ਨ ਪਾਏ ॥ ਜਮ ਦਰਿ ਬਧਾ ਚੋਟਾ ਖਾਏ ॥ ਬਿਨੁ
ਨਾਵੈ ਕੋ ਸੰਗਿ ਨ ਸਾਥੀ ਸੁਕਤੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੪॥ ਸਾਕਤ ਕੂੜੇ ਸਚੁ ਨ ਭਾਵੈ ॥ ਟੁਬਿਧਾ ਬਾਧਾ
ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਨ ਮੈਟੈ ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਪੇਈਅੜੈ ਪਿਲੁ ਜਾਤੇ
ਨਾਹੀ ॥ ਝੂਠਿ ਵਿਛੁਨ੍ਹੀ ਰੋਵੈ ਧਾਹੀ ॥ ਅਕਗਣਿ ਮੁਠੀ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਏ ਅਕਗਣ ਗੁਣ ਬਖਸਾਵਣਿਆ
॥੬॥ ਪੇਈਅੜੈ ਜਿਨਿ ਜਾਤਾ ਪਿਆਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜੈ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਠਾਕਿ
ਰਹਾਏ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜੈ ਅਕਥੁ ਕਹਾਵੈ ॥ ਸਚੇ ਠਾਕੁਰ ਸਾਚੋ ਭਾਵੈ ॥
ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ॥ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ

सतिगुरु मिलाए ॥ सेवा सुरति सबदि चितु लाए ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइਆ माइਆ मोहु
 चुकावणिआ ॥੧॥ हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ ॥ गुरमतੀ परगासु होआ जੀ
 अनਦਿਨੁ हਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਖੋਜੇ ਤਾ ਨਾਉ ਪਾਏ ॥ ਧਾਵਤੁ ਰਾਖੈ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥
 ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਅਨਦਿਨੁ ਗਾਵੈ ਸਹਜੇ ਭਗਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਇਸੁ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਵਸਤੁ ਅਸੰਖਾ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਮਿਲੈ ਤਾ ਕੇਖਾ ॥ ਨਤ ਦਰਵਾਜੇ ਦਸਵੈ ਮੁਕਤਾ ਅਨਹਦ ਸਬਦੁ ਵਜਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਸਚਾ
 ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੀ ਨਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਝੀ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਪਾਪ ਪੁਨਨ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥ ਦ੍ਰਿੜੈ ਲਾਗੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ॥ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧਾ ਮਗੁ ਨ
 ਜਾਣੈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਣ ਜਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਠਾਕਿ
 ਰਹਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਮਿਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ਖੁਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮੰਨਿ
 ਵਸਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਸਦਾ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੮॥ ਜੀਵਣੁ ਮਰਣਾ ਸਭੁ ਤੁਥੈ ਤਾਈ ॥ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ
 ਸਦਾ ਤ੍ਰਿੰ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਸਵਾਰਣਿਆ ॥੯॥੧॥੨॥ ਮਾੜ੍ਹ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰਮਲੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
 ਬਿਨੁ ਤਕਡੀ ਤੌਲੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ਕੂੜੈ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ
 ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਜੋ ਸਚਿ ਲਾਗੇ ਸੇ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੇ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥
 ੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਪਿ ਸੁਣੈ ਤੈ ਆਪੇ ਕੇਖੈ ॥ ਜਿਸ ਨੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਲੇਖੈ ॥ ਆਪੇ ਲਾਇ ਲਏ
 ਸੋ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਸੁ ਕਿਥੈ ਹਥੁ ਪਾਏ ॥ ਪ੍ਰਬਿ ਲਿਖਿਆ
 ਸੁ ਮੇਟਣਾ ਨ ਜਾਏ ॥ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਪ੍ਰੈ ਕਰਮਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਪੇਈਅਡੈ
 ਧਨ ਅਨਦਿਨੁ ਸੁਤੀ ॥ ਕੱਤਿ ਵਿਸਾਰੀ ਅਵਗਣਿ ਸੁਤੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਫਿਰੈ ਬਿਲਲਾਦੀ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਨੀਦ ਨ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਪੇਈਅਡੈ ਸੁਖਦਾਤਾ ਜਾਤਾ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥ ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਸਦਾ ਪਿਰੁ

ਰਾਵੇ ਸਚੁ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਲਖ ਚਤੁਰਸੀਹ ਜੀਅ ਉਪਾਏ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਗੁਰੂ
 ਮਿਲਾਏ ॥ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟਿ ਸਦਾ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਦਰਿ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਲੇਖਾ ਮਾਗੈ ਤਾ ਕਿਨਿ ਦੀਐ
 ॥ ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ਫੁਨਿ ਟ੍ਰੌਅ ਤੀਐ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪਿ ਕਰੇ
 ਤੈ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥ ਪ੍ਰੋ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥
 ੮॥੨॥੩॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਇਕੋ ਆਪਿ ਫਿਰੈ ਪਰਛਨਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਖਾ ਤਾ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭਿੰਨਾ ॥ ਤ੃ਸਨਾ ਤਜਿ
 ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਏਕੋ ਮਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਇਕਸੁ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥
 ਗੁਰਮਤੀ ਮਨੁ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਇਆ ਸਚੈ ਰੰਗੀ ਰੰਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਭੂਲਾ ਤੈ ਆਪਿ
 ਭੂਲਾਇਆ ॥ ਇਕੁ ਵਿਸਾਰਿ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲੋਭਾਇਆ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਫਿਰੈ ਭਰਮੀ ਭੂਲਾ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ
 ॥੨॥ ਜੋ ਰੰਗੀ ਰਾਤੇ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤੇ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਜਾਤੇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਕੈ
 ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਹਰਿ ਚੇਤੈ ਨਾਹੀ ॥ ਜਮਪੁਰਿ ਬਧਾ ਦੁਖ ਸਹਾਹੀ ॥ ਅੰਨਾ ਬੋਲਾ ਕਿਛੁ
 ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੈ ਮਨਮੁਖ ਪਾਪਿ ਪਚਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਇਕਿ ਰੰਗੀ ਰਾਤੇ ਜੋ ਤੁਥੁ ਆਪਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਭਾਇ ਭਗਤਿ
 ਤੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਨਿ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਭ ਇਛਾ ਆਪਿ ਪੁਜਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੇਰੀ
 ਸਦਾ ਸਰਣਾਈ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸਿਹਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਤਿਸੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੬॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਤੇ ਜੋ ਹਰਿ ਭਾਏ ॥ ਮੇਰੈ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਲੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਚੈ ਤੇਰੀ
 ਸਰਣਾਈ ਤ੍ਰੂਂ ਆਪੇ ਸਚੁ ਬੁੜਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਜਿਨ ਸਚੁ ਜਾਤਾ ਸੇ ਸਚਿ ਸਮਾਣੇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਚੁ ਵਖਾਣੇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਕੈਰਾਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਾਡੀ ਲਾਵਣਿਆ ॥੮॥੩॥੮॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਬਦਿ ਮੈਰੈ ਸੁ
 ਮੁਆ ਜਾਪੈ ॥ ਕਾਲੁ ਨ ਚਾਪੈ ਦੁਖੁ ਨ ਸੰਤਾਪੈ ॥ ਜੋਤੀ ਵਿਚਿ ਮਿਲਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਸੁਣਿ ਮਨ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ
 ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਸਚਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਗੁਰਮਤੀ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਇਆ ਕਚੀ ਕਚਾ ਚੀਰੁ ਛਾਢਾਏ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਾਗੀ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਏ ॥

ਅਨਦਿਨੁ ਜਲਦੀ ਫਿਰੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਬਹੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਦੇਹੀ ਜਾਤਿ ਨ ਆਗੈ ਜਾਏ ॥
 ਜਿਥੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਤਿਥੈ ਛੁਟੈ ਸਚੁ ਕਮਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸੇ ਧਨਕਵਂਤੇ ਐਥੈ ਓਥੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥
 ੩॥ ਭੈ ਭਾਇ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਪਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਖੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਮਜੀਠੈ
 ਰੰਗੁ ਬਣਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਸਭਨਾ ਪਿਰੁ ਵਸੈ ਸਦਾ ਨਾਲੇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੋ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਤਿ
 ਊਚੋ ਊਚਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਇਹੁ ਜਗੁ ਸੁਤਾ ॥ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਅੰਤਿ
 ਵਿਗੁਤਾ ॥ ਜਿਸ ਤੇ ਸੁਤਾ ਸੋ ਜਾਗਾਏ ਗੁਰਮਤਿ ਸੋਝੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਅਪਿਤ ਪੀਐ ਸੋ ਭਰਮੁ ਗਵਾਏ ॥ ਗੁਰ
 ਪਰਸਾਦਿ ਮੁਕਤਿ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥ ਭਗਤੀ ਰਤਾ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ਆਪੁ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪਿ ਤਪਾਏ
 ਧੰਧੈ ਲਾਏ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀ ਰਿਜਕੁ ਆਪਿ ਅਪੜਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ
 ਕਾਰ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੮॥੪॥੫॥ ਮਾਝਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਅੰਦਰਿ ਹੀਰਾ ਲਾਲੁ ਬਣਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਰਖਿ
 ਪਰਖਾਇਆ ॥ ਜਿਨ ਸਚੁ ਪਲੈ ਸਚੁ ਕਖਾਣਹਿ ਸਚੁ ਕਸਕਟੀ ਲਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਗੁਰ
 ਕੀ ਬਾਣੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਇਸੁ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਬਹੁਤੁ ਪਸਾਰਾ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਤਿ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ਪਾਏ
 ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਸਚੁ ਦ੃ਡਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਚਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਸਚੋ ਸਚੁ
 ਕਰਤੈ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਵੈਪਰਖਾਹੁ ਸਚੁ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ॥ ਕਿਲਵਿਖ ਅਵਗਣ
 ਕਾਟਣਹਾਰਾ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਭੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਦ੃ਡਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਸਚੀ ਜੇ
 ਸਚੇ ਭਾਵੈ ॥ ਆਪੇ ਦੇਇ ਨ ਪਛੋਤਾਵੈ ॥ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਏਕੋ ਦਾਤਾ ਸਬਦੇ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਹਰਿ
 ਤੁਧੁ ਬਾਝਹੁ ਮੈ ਕੋਈ ਨਾਹੀ ॥ ਹਰਿ ਤੁਧੈ ਸੇਕੀ ਤੈ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲੈਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਤੂੰ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਮੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ਤੁਧੈ ਜੇਹਾ ॥ ਤੇਰੀ ਨਦਰੀ ਸੀਝਸਿ ਦੇਹਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲਿ ਹਰਿ
 ਰਾਖਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਤੁਧੁ ਜੇਵੜੁ ਮੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸਿਰਜੀ ਆਪੇ ਗੋਈ ॥

ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਹੀ ਘੜਿ ਭੰਨਿ ਸਵਾਰਹਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੮॥੫॥੬॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਭ ਘਟ
 ਆਪੇ ਭੋਗਣਹਾਰਾ ॥ ਅਲਖੁ ਵਰਤੈ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ਸਹਜੇ ਸਚਿ
 ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਸਬਦੁ ਸ੍ਰੂੜੈ ਤਾ ਮਨ ਸਿਤ ਲ੍ਰੂੜੈ
 ਮਨਸਾ ਮਾਰਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪੰਚ ਢੂਤ ਮੁਹਹਿ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਸੁਧਿ ਨ ਸਾਰਾ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਅਪਣਾ ਘਰੁ ਰਾਖੈ ਪੰਚ ਢੂਤ ਸਬਦਿ ਪਚਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਇਕਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਚੈ ਰੰਗ ਰਾਤੇ
 ॥ ਸਹਜੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਮਾਤੇ ॥ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
 ਏਕਮ ਏਕੈ ਆਪੁ ਤਪਾਇਆ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਦ੍ਰਿਆ ਤ੃ਬਿਧਿ ਮਾਇਆ ॥ ਚਤੁਰੀ ਪਤੜੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਊਚੀ ਸਚੋ ਸਚੁ
 ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਸਭੁ ਹੈ ਸਚਾ ਜੇ ਸਚੇ ਭਾਵੈ ॥ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਜਾਤਾ ਸੋ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਣੀ ਸਚੇ
 ਸੇਵਹਿ ਸਾਚੇ ਜਾਇ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਸਚੇ ਬਾੜਾਹੁ ਕੋ ਅਵਰੁ ਨ ਢੂਆ ॥ ਢੂਜੈ ਲਾਗਿ ਜਗੁ ਖਪਿ ਖਪਿ ਮੂਆ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਏਕੋ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਸਰਣ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਆਪੇ ਧਰਿ
 ਦੇਖਹਿ ਕਚੀ ਪਕੀ ਸਾਰੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਆਪੇ ਕਾਰ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਮੇਲਹਿ
 ਵੇਖਹਿ ਹਫੂਰਿ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਆਪਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਆਪਿ ਕਰਤੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਝੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥
 ੮॥੬॥੭॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਗੁਰ ਕੀ ਮੀਠੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਚਖਿ ਡੀਠੀ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਪਰਗਾਸੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਬਦੁ ਵਜਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ
 ਲਾਵਣਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੁ ਸਾਚਾ ਮਨੁ ਨਾਵੈ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੇਰਾ ਸਚੇ ਕਿਨੈ
 ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹਿ ਨ ਰਜਾ ਕਬਹੂੰ ਸਚੇ ਨਾਵੈ ਕੀ
 ਭੁਖ ਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਏਕੋ ਵੇਖਾ ਅਵਰੁ ਨ ਬੀਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਤਿਖਾ
 ਨਿਵਾਰੀ ਸਹਜੇ ਸ੍ਰੂੜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਲਾਰਿ ਤਿਆਗੈ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਅੰਧਾ ਢੂਜੈ ਭਾਇ ਲਾਗੈ ॥
 ਜੋ ਬੀਜੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਏ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਅਪਨੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੋ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ

ਮਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਰਹੈ ਭੈ ਅੰਦਰਿ ਭੈ ਮਾਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ਸਦਾ
 ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਟੁ ਪਾਇਆ ॥ ਅੰਤਰੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਹਜੇ
 ਗਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਸਿਮੂਤਿ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਕਖਾਣੈ ॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਤਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਏ
 ਦੁਖੋ ਦੁਖੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੈ ਕੌਰੈ ॥ ਆਖਣਿ ਜਾਈਐ ਜੇ ਭੂਲਾ ਹੋਰੈ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ
 ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੮॥੭॥੮॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਆਪੇ ਰੰਗੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੈ
 ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਚੜਾਏ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਰਸਨਾ ਰੰਗੀ ਚਲੂਲੀ ਭੈ ਭਾਇ ਰੰਗੁ ਚੜਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਉ ਵਾਰੀ
 ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਨਿਰਭਤ ਮਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਨਿਰਭਤ ਧਿਆਇਆ ਬਿਖੁ ਭਤਜਲੁ ਸਬਦਿ
 ਤਰਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਕਰਹਿ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਨਾਤਾ ਧੋਤਾ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥ ਜੇਹਾ ਆਇਆ
 ਤੇਹਾ ਜਾਸੀ ਕਰਿ ਅਵਗਣ ਪਛੋਤਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਕਿਛੂ ਨ ਸ੍ਰੂੜੈ ॥ ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇ ਆਏ ਨਹੀਂ
 ਬ੍ਰੂੜੈ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਰੇ ਨਹੀਂ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਬਦੁ ਹੈ ਸਾਰੁ ॥
 ਪ੍ਰੈ ਗੁਰਿ ਪਾਈਐ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਸੁਣਾਏ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਰੰਗੀ ਰੰਗਾਵਣਿਆ ॥੪॥
 ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਾਤੀ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੋਹਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਸਹਜੇ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਿਆਰਾ ਪਾਇਆ
 ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਰੰਗੁ ਸੋਈ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਹਜੇ ਸੁਖਿ ਸਮਾਵੈ ॥
 ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਦਾ ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਸਚਾ ਸਚੋ ਸਚਿ ਪਤੀਜੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ
 ਅੰਦਰੁ ਭੀਜੈ ॥ ਬੈਸਿ ਸੁਥਾਨਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਆਪੇ ਕਰਿ ਸਤਿ ਮਨਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ
 ਸੋ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਉਮੈ ਜਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੮॥੬॥
 ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿਐ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹਰਿ ਜੀ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ
 ਸਫਲਿਓ ਬਿਰਖੁ ਹੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਜਿਨਿ ਪੀਤਾ ਤਿਸੁ ਤਿਖਾ ਲਹਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਸਚੁ ਸ਼ੰਗਤਿ
 ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥ ਹਰਿ ਸਤਸ਼ੰਗਤਿ ਆਪੇ ਮੇਲੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥ जिनि हरि का नामु मनि वसाइआ ॥ हरि निरमलु हउमै मैलु गवाए
 दरि सचै सोभा पावणिआ ॥२॥ बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥ सिध साधिक रहे बिललाइ ॥ बिनु
 गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥३॥ इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥ मोरचा न
 लागै जा हउमै सोखै ॥ अनहत बाणी निरमल सबदु वजाए गुर सबदी सचि समावणिआ ॥४॥ बिनु
 सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥ गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥ आपे आपि आपि मिलि
 रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥५॥ गुरमुखि होवै सु डिकसु सिउ लिव लाए ॥ दूजा भरमु गुर सबदि
 जलाए ॥ काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥६॥ गुरमुखि करणी हरि
 कीरति सारु ॥ गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ
 ॥७॥ सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ ॥ पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥ नानक नामु मिलै
 वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥८॥९॥१०॥ माझ महला ੩ ॥ आपु वंजाए ता सभ मिछु
 पाए ॥ गुर सबदी सची लिव लाए ॥ सचु वणंजहि सचु संघरहि सचु वापारु करावणिआ ॥१॥ हउ
 वारी जीउ वारी हरि गुण अनदिनु गावणिआ ॥ हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई देवणिआ
 ॥२॥ रहाउ ॥ वेला वखत सभि सुहाइआ ॥ जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥ सचे सेविअै सचु वडिआई
 गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥३॥ भाउ भोजनु सतिगुरि तुठै पाए ॥ अन रसु चूकै हरि रसु मनि
 वसाए ॥ सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥४॥ सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध
 गवारा ॥ फिरि ओइ किथहु पाइनि मोख दुआरा ॥ मरि मरि जंमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा
 खावणिआ ॥५॥ सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ॥ निरमल बाणी सबदि वखाणहि ॥ सचे सेवि
 सदा सुखु पाइनि नउ निधि नामु मनि वसावणिआ ॥६॥ सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥
 सतसंगति बहि हरि गुण गाइआ ॥ अनदिनु हरि सालाहहि साचा निरमल नादु वजावणिआ ॥

੬॥ ਮਨਮੁਖ ਖੋਟੀ ਰਸਿ ਖੋਟਾ ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਕੂਡੁ ਕਮਾਵਨਿ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਭਾਰਾ ॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲੇ ਫਿਰਨਿ ਦਿਨ ਰਾਤੀ
 ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮੈ ਅਤਿ ਪਿਆਰਾ ॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਧਾਰਾ ॥
 ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਨਣਿਆ ॥੮॥੧੦॥੧੧॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਤੇਰੀਆ ਖਾਣੀ ਤੇਰੀਆ ਬਾਣੀ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਬਿਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥ ਹਰਿ ਸਚਾ
 ਗੁਰ ਭਗਤੀ ਪਾਈਐ ਸਹਜੇ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਤਾ ਸਭ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ॥ ਜੇਹੀ
 ਮਨਸਾ ਕਰਿ ਲਾਗੈ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਦਾਤਾ ਸਭਨਾ ਵਥੁ ਕਾ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਇਹੁ
 ਮਨੁ ਮੈਲਾ ਇਕੁ ਨ ਧਿਆਏ ॥ ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਲਾਗੀ ਬਹੁ ਦ੍ਰਵੈ ਭਾਏ ॥ ਤਟਿ ਤੀਰਥਿ ਦਿਸ਼ਤਰਿ ਭਵੈ ਅਛਕਾਰੀ ਹੋਰੁ
 ਕਵਧੈਰੈ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਤਾ ਮਲੁ ਜਾਏ ॥ ਜੀਕਤੁ ਮਰੈ ਹਰਿ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਹਰਿ
 ਨਿਰਮਲੁ ਸਚੁ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਸਚਿ ਲਾਗੈ ਮੈਲੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਬਾੜ੍ਹੁ ਗੁਰੁ ਹੈ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰਾ ॥ ਅਗਿਆਨੀ
 ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਅੰਧਾਰਾ ॥ ਬਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀਡੇ ਬਿਸਟਾ ਕਮਾਵਹਿ ਫਿਰਿ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਪਚਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਮੁਕਤੇ
 ਸੇਵੇ ਮੁਕਤਾ ਹੋਵੈ ॥ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਸਬਦੇ ਖੋਵੈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਚਾ ਸੇਵੀ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥
 ੬॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ॥ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸਦਾ ਮਨੁ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸੇਵੇ ਦੁਖੁ
 ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ਦ੍ਰਵਿ ਨ ਜਾਣਹੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਪਛਾਣਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ
 ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੧॥੧੨॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਐਥੈ ਸਾਚੇ ਸੁ ਆਗੈ ਸਾਚੇ ॥
 ਮਨੁ ਸਚਾ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰਾਚੇ ॥ ਸਚਾ ਸੇਵਹਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ
 ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਸਚੇ ਸੇਵਹਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹਿ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਪਂਡਿਤ ਪੜਹਿ ਸਾਟੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ॥ ਦ੍ਰਵੈ ਭਾਇ ਮਾਇਆ ਮਨੁ ਭਰਮਾਵਹਿ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਸਭ ਸੁਧਿ
 ਗਵਾਈ ਕਰਿ ਅਵਗਣ ਪਛੋਤਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤਾ ਤਤੁ ਪਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ

ਕਸਾਏ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਮਨੁ ਮਾਰੈ ਅਪੁਨਾ ਸੁਕਤੀ ਕਾ ਦੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੈ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਗੁਰ
 ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਖੈ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਸਚਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਅੰਤਰਿ ਰਤਨੁ ਮਿਲੈ
 ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਤੂਬਿਧਿ ਮਨਸਾ ਤੂਬਿਧਿ ਮਾਇਆ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਪੰਡਿਤ ਮੋਨੀ ਥਕੇ ਚਤੁਥੇ ਪਦ ਕੀ ਸਾਰ ਨ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਆਪੇ ਰੰਗੇ ਰੰਗੁ ਚੜਾਏ ॥ ਸੇ ਜਨ ਰਤੇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਰੰਗਾਏ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਚੜਿਆ ਅਤਿ ਅਪਾਰਾ
 ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਸਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਸੌਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਨਾਮਿ
 ਸੁਕਤਿ ਛੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਥਾਪੇ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪੇ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਸਭੁ ਆਪੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੨॥੧੩॥
 ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਉਤਪਤਿ ਪਰਲਤ ਸਬਦੇ ਹੋਵੈ ॥ ਸਬਦੇ ਹੀ ਫਿਰਿ ਓਪਤਿ ਹੋਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਰਤੈ ਸਭੁ ਆਪੇ
 ਸਚਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੁਪਾਇ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮੰਨਿ ਕਸਾਵਣਿਆ ॥ ਗੁਰ ਤੇ
 ਸਾਤਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਰਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਪਾਣੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਵਣੁ ਬੈਸੰਤਰੁ ਖੇਲੈ ਵਿਡਾਣੀ ॥ ਸੋ ਨਿਗੁਰਾ ਜੋ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਨਿਗੁਰੇ ਆਵਣ ਜਾਵਣਿਆ
 ॥੨॥ ਤਿਨਿ ਕਰਤੈ ਝਿਕੁ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇਆ ॥ ਕਾਇਆ ਸਰੀਰੈ ਵਿਚਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਕੋਈ
 ਮਹਲੁ ਪਾਏ ਮਹਲੇ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਗੁਰ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰੇ ॥
 ਸਚੁ ਵਿਹਾਇਹਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਬਿਨੁ ਰਾਸੀ ਕੋ ਵਥੁ ਕਿਤ ਪਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖ ਭੂਲੇ
 ਲੋਕ ਸਬਾਏ ॥ ਬਿਨੁ ਰਾਸੀ ਸਭ ਖਾਲੀ ਚਲੇ ਖਾਲੀ ਜਾਇ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਝਿਕਿ ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਗੁਰ
 ਸਬਦਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਆਪਿ ਤਰਹਿ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੇ ॥ ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਏ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥
 ੬॥ ਅੰਤਰਿ ਕਸਤੁ ਮੂੜਾ ਬਾਹਰੁ ਭਾਲੇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਫਿਰਹਿ ਬੇਤਾਲੇ ॥ ਜਿਥੈ ਵਥੁ ਹੋਵੈ ਤਿਥਹੁ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵੈ
 ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਸਬਦਿ ਬੁਲਾਏ ॥ ਮਹਲੀ ਮਹਲਿ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਆਪੇ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੮॥੧੩॥੧੪॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ

साची सिख सुणाई ॥ हरि चेतहु अंति होइ सखाई ॥ हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै
 भाइ पावणिआ ॥੧॥ हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ॥ आपु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ
 सहजि समावणिआ ॥੨॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखिआ सु करमु कमाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ
 ॥ बिनु भाग गुरु पाईਐ नाही सबदै मेलि मिलावणिआ ॥੩॥ गुरमुखि अलिपतु रहै संसारे ॥ गुर कै
 तकीਐ नामि अधारे ॥ गुरमुखि जोरु करे किआ तिस नो आपे खपि दुखु पावणिआ ॥੪॥ मनमुखि अंधे
 सुधि न काई ॥ आतम धाती है जगत कसाई ॥ निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी भारु
 पहुचावणिआ ॥੫॥ इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥ सदा समाले को नाही खाली ॥ जेही वासना पाए
 तेही वरतै वासू वासु जणावणिआ ॥੬॥ मनमुखु रोगी है संसार ॥ सुखदाता विसरिआ अगम अपारा
 ॥ दुखीए निति फिरहि बिललादे बिनु गुर साँति न पावणिआ ॥੭॥ जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥
 आपि करे ता हुकमि पछाणै ॥ जेहा अंदरि पाए तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ ॥੮॥ तिसु बाझहु
 सचे मै होरु न कोई ॥ जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि जिसु देवै सो
 पावणिआ ॥੯॥੧੪॥੧੫॥ माझ महला ੩ ॥ अंमृत नामु मंनि वसाए ॥ हउमै मेरा सभु दुखु गवाए
 ॥ अंमृत बाणी सदा सलाहे अंमृति अंमृतु पावणिआ ॥੧॥ हउ वारी जीउ वारी अंमृत बाणी
 मंनि वसावणिआ ॥ अंमृत बाणी मंनि वसाए अंमृतु नामु धिआवणिआ ॥੨॥ रहाउ ॥ अंमृतु
 बोलै सदा मुखि वैणी ॥ अंमृतु वेखै परखै सदा नैणी ॥ अंमृत कथा कहै सदा दिनु राती अवरा आखि
 सुनावणिआ ॥੩॥ अंमृत रंगि रता लिव लाए ॥ अंमृतु गुर परसादी पाए ॥ अंमृतु रसना बोलै
 दिनु राती मनि तनि अंमृतु पीआवणिआ ॥੪॥ सो किछु करै जु चिति न होई ॥ तिस दा हुकमु मेटि
 न सकै कोई ॥ हुकमे वरतै अंमृत बाणी हुकमे अंमृतु पीआवणिआ ॥੫॥ अजब कंम करते हरि
 करे ॥ इहु मनु भूला जाँदा फेरे ॥ अंमृत बाणी सिउ चितु लाए अंमृत सबदि वजावणिआ ॥

੫॥ ਖੋਟੇ ਖਰੇ ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਤਪਾਏ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਪਰਖੇ ਲੋਕ ਸਬਾਏ ॥ ਖਰੇ ਪਰਖਿ ਖਜਾਨੈ ਪਾਇਹਿ ਖੋਟੇ
 ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਵੇਖਾ ਕਿਤ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ॥ ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ
 ਵਿਚਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਵਸੈ ਤੂੰ ਭਾਣੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆਵਣਿਆ ॥੭॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਸੇਵਿਐ ਰਿਦੈ ਸਮਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਪੀ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਭ ਭੁਖ ਲਹਿ ਜਾਵਣਿਆ ॥੮॥
 ੧੫॥੧੬॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਵਰਸੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਕੌਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਪੀ ਸਦਾ ਤ੃ਪਤਾਸੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤ੃ਸਨਾ ਬੁਝਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਪੀਆਵਣਿਆ ॥ ਰਸਨਾ ਰਸੁ ਚਾਖਿ ਸਦਾ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰ
 ਪਰਸਾਦੀ ਸਹਜੁ ਕੋ ਪਾਏ ॥ ਦੁਖਿਧਾ ਮਾਰੇ ਇਕਸੁ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਦਰੀ
 ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਸਭਨਾ ਤਥਾ ਨਦਰਿ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ॥ ਕਿਸੈ ਥੋੜੀ ਕਿਸੈ ਹੈ ਘਣੇਰੀ ॥ ਤੁੜਾ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ
 ਨ ਹੋਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋੜੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ ਹੈ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤਿ ਭਰੇ ਤੇਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸੇਵੇ ਕੌਈ ਨ ਪਾਵੈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਸੋ ਜਨੁ ਸੋਹੈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮਿ ਅੰਤਰੁ ਮਨੁ
 ਮੋਹੈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਬਾਣੀ ਰਤਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਹਜਿ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਮਨਮੁਖੁ ਭੂਲਾ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਏ ॥
 ਨਾਮੁ ਨ ਲੇਵੈ ਮੈਰੈ ਬਿਖੁ ਖਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਵਿਸਟਾ ਮਹਿ ਵਾਸਾ ਬਿਨੁ ਸੇਵਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੬॥
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵੈ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਪੀਆਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਹਜਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਆਪੇ
 ਗੁਰਮਤਿ ਨਦਰੀ ਆਵਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ॥ ਜਿਨਿ ਸਿਰਜੀ ਤਿਨਿ ਆਪੇ ਗੋਈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਸਦਾ ਤੂੰ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੬॥੧੭॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੇ ਸਚਿ ਲਾਗੇ ਜੋ ਤੁਧੁ
 ਭਾਏ ॥ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸੇਵਹਿ ਸਹਜ ਸੁਭਾਏ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਚਾ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੈ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਉ ਵਾਰੀ
 ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣਿਆ ॥ ਸਚੁ ਧਿਆਇਨਿ ਸੇ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਹ
 ਦੇਖਾ ਸਚੁ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥ ਤਨੁ ਸਚਾ ਰਸਨਾ ਸਚਿ ਰਾਤੀ ਸਚੁ ਸੁਣਿ ਆਖਿ

ਕਖਾਨਣਿਆ ॥੨॥ ਮਨਸਾ ਮਾਰਿ ਸਚਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਇਨ੍ਹਿਨ੍ਹਿ ਮਨਿ ਡੀਠੀ ਸਭ ਆਵਣ ਜਾਣੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵੇ
 ਸਦਾ ਮਨੁ ਨਿਹਚਲੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਿਟੈ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ
 ਸਬਦਿ ਜਲਾਇਆ ॥ ਸਚੋ ਸਚਾ ਕੇਖਿ ਸਾਲਾਹੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਜੋ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਤਿਨ ਸਚੀ
 ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਹਿ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਚੁ ਗੁਣ
 ਗਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਲੇਖਾ ਪਡੀਐ ਜੇ ਲੇਖੇ ਵਿਚਿ ਹੋਵੈ ॥ ਓਹੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਬਦਿ ਸੁਧਿ ਹੋਵੈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ
 ਸਚ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹੀ ਹੋਰੁ ਕੋਇ ਨ ਕੀਮਤਿ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਥਾਕੇ ਸਾਁਤਿ ਨ ਆਈ ॥ ਤੂਸਨਾ ਜਾਲੇ
 ਸੁਧਿ ਨ ਕਾਈ ॥ ਬਿਖੁ ਬਿਹਾਝਾਹਿ ਬਿਖੁ ਮੋਹ ਪਿਆਸੇ ਕੂਝੁ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ
 ਜਾਣਾ ॥ ਦੂਜਾ ਮਾਰਿ ਮਨੁ ਸਚਿ ਸਮਾਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਵਰਤੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥
 ੮॥੧੭॥੧੮॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਵਰਨ ਰੂਪ ਵਰਤਹਿ ਸਭ ਤੇਰੇ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜ਼ਮਹਿ ਫੇਰ ਪਵਹਿ ਘਣੇਰੇ ॥ ਤੂ
 ਏਕੋ ਨਿਹਚਲੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ਗੁਰਮਤੀ ਬ੍ਰਾਂਝ ਬੁਝਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ
 ਕਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਵਰਨੁ ਨ ਕੋਈ ਗੁਰਮਤੀ ਆਪਿ ਬੁਝਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਭ ਏਕਾ
 ਜੋਤਿ ਜਾਣੈ ਜੇ ਕੋਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਿਐ ਪਰਗਟੁ ਹੋਈ ॥ ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਥਾਈ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ
 ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਤਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਜਲੈ ਸੰਸਾਰ ॥ ਲੋਭੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਬਹੁਤੁ ਅਛਾਕਾਰ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਨਮੈ
 ਪਤਿ ਗਵਾਏ ਅਪਣੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਕਟੁ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਬ੍ਰਾਂਝੈ ॥ ਆਪੁ ਮਾਰੇ ਤਾ
 ਤ੍ਰਭਵਣੁ ਸ੍ਰੂੜੈ ॥ ਫਿਰਿ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਮਰਣਾ ਹੋਵੈ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਮਾਇਆ ਮਹਿ ਫਿਰਿ ਚਿਤੁ ਨ
 ਲਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਦ ਰਹੈ ਸਮਾਏ ॥ ਸਚੁ ਸਲਾਹੇ ਸਭ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਸਚੁ
 ਸਾਲਾਹੀ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਚੁ ਨਦਰੀ ਆਵੈ ਸਚੇ ਹੀ ਸੁਖੁ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਸਚੁ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਸਦਾ ਸਚੁ ਨਿਹਚਲੁ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਚੇ ਲਾਗੈ
 ਸੋ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਗੁਰਮਤੀ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹੀ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸਦਾ ਸੁਖੁ

होई ॥ नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥੮॥੧੮॥੧੬॥ माझ महला ३ ॥ निरमल
 सबदु निरमल है बाणी ॥ निरमल जोति सभ माहि समाणी ॥ निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि
 निरमलु मैलु गवावणिआ ॥੧॥ हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ ॥ हरि निरमलु
 गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥੨॥ रहाउ ॥ निरमल नामु वसिआ मनि आए ॥
 मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए ॥ निरमल गुण गावै नित साचे के निरमल नादु वजावणिआ
 ॥੨॥ निरमल अंमृतु गुर ते पाइआ ॥ विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइआ ॥ निरमल
 गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ ॥੩॥ जो निरमलु सेवे सु निरमलु
 होवै ॥ हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥ निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचै सोभा पावणिआ ॥੪॥
 निरमल ते सभ निरमल होवै ॥ निरमलु मनूआ हरि सबदि परोवै ॥ निरमल नामि लगे बडभागी
 निरमलु नामि सुहावणिआ ॥੫॥ सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥ निरमल नामि मनु तनु मोहै ॥ सचि नामि
 मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥੬॥ मनु मैला है दूजै भाइ ॥ मैला चउका मैलै थाइ ॥
 मैला खाइ फिरि मैलु वधाए मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥੭॥ मैले निरमल सभि हुकमि सबाए ॥
 से निरमल जो हरि साचे भाए ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥੮॥੧੬॥੨੦॥
 माझ महला ३ ॥ गोविंदु ऊजलु ऊजल छासा ॥ मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥ मनि ऊजल सदा मुख
 सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥੧॥ हउ वारी जीउ वारी गोबिंद गुण गावणिआ ॥ गोबिंदु
 गोबिंदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ ॥੧॥ रहाउ ॥ गोबिंदु गावहि सहजि सुभाए ॥
 गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाए ॥ सदा अन्नदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिद गुण
 गावणिआ ॥੨॥ मनूआ नाचै भगति दृढ़ाए ॥ गुर कै सबदि मनै मनु मिलाए ॥ सचा तालु पूरे
 माइआ मोहु चुकाए सबदे निरति करावणिआ ॥੩॥ ऊचा कूके तनहि पछाड़े ॥ माइआ मोहि

ਜੋਹਿਆ ਜਮਕਾਲੇ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਇਸੁ ਮਨਹਿ ਨਚਾਏ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ
 ਜਾ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਬਾਣੀ ਵਜੈ ਸਬਦਿ ਵਜਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਥਾਇ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਬਹੁ ਤਾਲ ਪ੍ਰੇ ਵਾਜੇ ਵਜਾਏ ॥ ਨਾ ਕੋ ਸੁਣੇ ਨ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਮਾਇਆ ਕਾਰਣਿ ਪਿੜ੍ਹ ਬੰਧਿ
 ਨਾਚੈ ਦ੍ਰੂਜੈ ਭਾਡਿ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੈ ਸੋ ਮੁਕਤਾ ॥ ਇੰਦ੍ਰੀ ਵਸਿ ਸਚ ਸੰਜਮਿ ਜੁਗਤਾ ॥
 ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਏ ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਭਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੋਈ ॥
 ਹੋਰਤੁ ਭਗਤਿ ਨ ਪਾਏ ਕੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਭਗਤੀ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੦॥
 ੨੧॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਚਾ ਸੇਵੀ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਸਚੈ ਨਾਇ ਦੁਖੁ ਕਬ ਹੀ ਨਾਹੀ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸੇਵਨਿ ਸੁਖੁ
 ਪਾਇਨਿ ਗੁਰਮਤਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਵਣਿਆ ॥
 ਜੋ ਹਰਿ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਸਦਾ ਸੋਹਹਿ ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰਾ ਭਗਤੁ ਕਹਾਏ ॥
 ਸੇਈ ਭਗਤ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥ ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਤੁਧੈ ਸਾਲਾਹਨਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਭਗਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਸਭੁ ਕੋ
 ਸਚੇ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੇਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਚੂਕੈ ਫੇਰਾ ॥ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਨਾਇ ਰਚਾਵਹਿ ਤ੍ਰੂ ਆਪੇ ਨਾਉ
 ਜਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥ ਹਰਖੁ ਸੋਗੁ ਸਭੁ ਮੋਹੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਇਕਸੁ ਸਿਤ
 ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਸਦ ਹੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਭਗਤ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਸਦਾ ਤੇਰੈ ਚਾਏ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ
 ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਏ ॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਸਬਦੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਤ੍ਰੂ ਦਿੱਤਾਲੁ ਸਦਾ
 ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਆਪੇ ਮੇਲਿਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਆਪੇ ਦੇਵਹਿ ਨਾਮੁ ਕਡਾਈ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਚੇ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਦ੍ਰੂਜਾ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥ ਏਕਸੁ ਸਿਤ ਮਨੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ਮਨਿ
 ਮੰਨਿਐ ਮਨਹਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਸਾਲਾਹੇ ॥ ਸਾਚੇ ਠਾਕੁਰ ਵੇਪਰਵਾਹੇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ
 ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਮੇਲਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੧॥੨੨॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਸਾਚੈ
 ਦਰਬਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦਿ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਵਣਿਆ

॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਚਾ ਊਚੋ ਊਚਾ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ
 ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕਿਸੈ ਮਿਲਾਈ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਮਿਲਹਿ ਸੇ ਵਿਛੁਡਹਿ ਨਾਹੀ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਤੁੜਨ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਛੂ ਨ ਹੋਇ ॥ ਤ੍ਰੂੰ ਕਰਿ ਕਰਿ
 ਕੇਖਹਿ ਜਾਣਹਿ ਸੋਇ ॥ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਗੁਰਮਤਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਕਾਮਣਿ ਗੁਣਵਂਤੀ
 ਹਰਿ ਪਾਏ ॥ ਭੈ ਭਾਇ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਚ ਉਪਦੇਸਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥
 ਸਬਦੁ ਵਿਸਾਰਨਿ ਤਿਨਾ ਠਤਰੁ ਨ ਠਾਤ ॥ ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਲੇ ਜਿਤ ਸੁੰਬੈ ਘਰਿ ਕਾਤ ॥ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਤਿਨੀ ਦੋਵੈ
 ਗਵਾਏ ਦੁਖੇ ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਲਿਖਦਿਆ ਲਿਖਦਿਆ ਕਾਗਦ ਮਸੁ ਖੋਈ ॥ ਦ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਸੁਖੁ ਪਾਏ
 ਨ ਕੋਈ ॥ ਕੂਝੁ ਲਿਖਹਿ ਤੈ ਕੂਝੁ ਕਮਾਵਹਿ ਜਲਿ ਜਾਵਹਿ ਕੂਝਿ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੋ ਸਚੁ
 ਲਿਖਹਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਸੇ ਜਨ ਸਚੇ ਪਾਵਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਸਚੁ ਕਾਗਦੁ ਕਲਮ ਮਸਵਾਣੀ ਸਚੁ ਲਿਖਿ ਸਚਿ
 ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਿ ਬੈਠਾ ਕੇਖੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਿਲੈ ਸੋਈ ਜਨੁ ਲੇਖੈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
 ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੨॥੨੩॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਆਤਮ ਰਾਮ ਪਰਗਾਸੁ
 ਗੁਰ ਤੇ ਹੋਵੈ ॥ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਲਾਗੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਖੋਵੈ ॥ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤੀ ਰਾਤਾ ਭਗਤਿ
 ਕਰੇ ਹਰਿ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਆਪਿ ਭਗਤਿ ਕਰਨਿ ਅਵਰਾ ਭਗਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥
 ਤਿਨਾ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਤ ਸਦ ਨਮਸਕਾਰੁ ਕੀਜੈ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਾਰਣੁ ਕਰਾਏ ॥ ਜਿਤੁ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਕਾਰੈ ਲਾਏ ॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਹੋਵੈ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ
 ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੀਵੈ ਤਾ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ
 ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਏ ॥ ਦੇਸ਼ਤੱਤੁ ਭਵੈ
 ਦ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਏ ॥ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਕਪਟੀ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਧਾਵਤੁ ਰਾਖੈ
 ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਰਮ ਪਟੁ ਪਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ

ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਇਕਿ ਕੂਡਿ ਲਾਗੇ ਕੂਡੇ ਫਲ ਪਾਏ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥ ਆਪਿ ਤੁਥੇ ਸਗਲੇ
 ਕੁਲ ਡੋਬੇ ਕੂਡੁ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਇਸੁ ਤਨ ਮਹਿ ਮਨੁ ਕੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਖੈ ॥ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਜਾ ਹਤਮੈ
 ਸੋਖੈ ॥ ਸਿਥ ਸਾਧਿਕ ਮੋਨਿਧਾਰੀ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ਤਿਨ ਭੀ ਤਨ ਮਹਿ ਮਨੁ ਨ ਦਿਖਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪਿ
 ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥ ਹੋਰੁ ਕਿ ਕਰੇ ਕੀਤੈ ਕਿਆ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਸੋ ਲੇਵੈ ਨਾਮੇ ਮੰਨਿ
 ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੩॥੨੪॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਇਸੁ ਗੁਫਾ ਮਹਿ ਅਖੁਟ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਵਸੈ ਹਰਿ
 ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਹੈ ਆਪੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਆਪੁ ਵੰਜਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਜੀਤ
 ਵਾਰੀ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਗੁਰਮਤੀ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆਵਣਿਆ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ਖੁਲਾਇਆ ॥ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ
 ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਏ ਕੋਈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਸਚੁ ਨੇਤੀ ਪਾਇਆ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਚਾਨਣੁ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
 ਸਰੀਰਹੁ ਭਾਲਣਿ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਜਾਏ ॥ ਨਾਮੁ ਨ ਲਹੈ ਬਹੁਤੁ ਕੇਗਾਰਿ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਸੂੜੈ ਨਾਹੀ ਫਿਰਿ
 ਧਿਰਿ ਆਇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਥੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਚਾ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਕੇਖੈ ਹਤਮੈ ਮੈਲੁ
 ਜਾਏ ॥ ਬੈਸਿ ਸੁਥਾਨਿ ਸਦ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਨਤ ਦਰ ਠਾਕੇ ਧਾਵਤੁ ਰਹਾਏ
 ॥ ਦਸਕੈ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਏ ॥ ਓਥੈ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਕਿਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮਤੀ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥
 ੬॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਅੰਤਰਿ ਆਨੇਰਾ ॥ ਨ ਕਸਤੁ ਲਹੈ ਨ ਚੂਕੈ ਫੇਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਹਥਿ ਕੁੰਜੀ ਹੋਰਤੁ ਦੁ ਖੁਲੈ
 ਨਾਹੀ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਤ੍ਰਿ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਿਲਿ ਸੋਝੀ
 ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਸਦਾ ਤ੍ਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੪॥੨੫॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਏ ਆਪੇ ॥ ਕਾਲੁ ਨ ਜੋਹੈ ਦੁਖੁ ਨ ਸੰਤਾਪੇ ॥ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ਬੰਧਨ ਸਭ ਤੋਡੈ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ

ਨਾਚੈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੀਵੈ ਮਰੈ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਆਰਜਾ ਨ ਛੀਜੈ ਸਬਦੁ
 ਪਛਾਣੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਰੈ ਨ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਏ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਕੁਲ ਸਗਲੇ ਤਾਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਣਿਆ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਢੁਖੁ ਕਦੇ ਨ ਲਗੈ ਸਰੀਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਉਮੈ ਚੂਕੈ ਪੀਰ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਫਿਰਿ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥ ਸਦਾ
 ਅਨਨਦਿ ਰਹੈ ਟਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਨਦਿਨੁ ਸਬਦੇ ਰਾਤਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੈ ਜਾਤਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲੁ ਸਬਦੇ ਭਗਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਹੈ
 ਅੰਧ ਅੰਧਾਰਾ ॥ ਜਮਕਾਲਿ ਗਰਠੇ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰੋਗੀ ਬਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀਡੇ ਬਿਸਟਾ ਮਹਿ ਢੁਖੁ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਵੁਠਾ ਆਪਿ ਆਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ
 ਵਡਿਆਈ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੫॥੨੬॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਏਕਾ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਹੈ ਸਰੀਰਾ ॥ ਸਬਦਿ
 ਦਿਖਾਏ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰਾ ॥ ਆਪੇ ਫਰਕੁ ਕੀਤੋਨੁ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਆਪੇ ਬਣਤ ਬਣਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ
 ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥ ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਕੋ ਸਹਜੁ ਨ ਪਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਸੋਹਹਿ ਆਪੇ ਜਗੁ ਮੋਹਹਿ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਨਦਰੀ ਜਗਤੁ ਪਰੋਵਹਿ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਢੁਖੁ ਸੁਖੁ ਦੇਵਹਿ
 ਕਰਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਦੇਖਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ॥ ਆਪੇ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਸਬਦੇ
 ਤਪਯੈ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ॥ ਬੰਧਨ ਤੋਡੇ ਸਦਾ ਹੈ
 ਮੁਕਤਾ ॥ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਆਪੇ ਹੈ ਸਚਾ ਆਪੇ ਅਲਖੁ ਲਖਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਆਪੇ ਮਾਇਆ ਆਪੇ ਛਾਇਆ ॥ ਆਪੇ
 ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਆ ॥ ਆਪੇ ਗੁਣਦਾਤਾ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਆਪੇ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਆਪੇ ਕਰੇ
 ਕਰਾਏ ਆਪੇ ॥ ਆਪੇ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪੇ ਆਪੇ ॥ ਤੁਝ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵੈ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਕਾਰੈ ਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥
 ਆਪੇ ਮਾਰੇ ਆਪਿ ਜੀਵਾਏ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ

समावणिआ ॥७॥ आपे ऊचा ऊचो होई ॥ जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई ॥ नानक नामु वसै घट
 अंतरि आपे वेखि विखालणिआ ॥८॥२८॥२७॥ माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई
 ॥ गुर परसादी घर ही महि पाई ॥ सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ ॥९॥
 हउ वारी जीउ वारी जगजीवनु मनि वसावणिआ ॥ हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि
 समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ घर महि धरती धउलु पाताला ॥ घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥
 सदा अन्नदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥२॥ काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥ जंमण
 मरणु न चूकै फेरा ॥ गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥३॥ काइआ अंदरि पापु
 पुन्नु दुइ भाई ॥ दुही मिलि कै सृसटि उपाई ॥ दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि
 समावणिआ ॥४॥ घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥ चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥ परगटु सबदु
 है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ ॥५॥ अंतरि जोति परगटु पासारा ॥ गुर साखी मिटिआ
 अंधिआरा ॥ कमलु बिगासि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥६॥ अंदरि महल रतनी
 भरे भंडारा ॥ गुरमुखि पाए नामु अपारा ॥ गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ
 ॥७॥ आपे वथु राखै आपे देइ ॥ गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥ नानक जिसु नदरि करे सो पाए
 करि किरपा मनि वसावणिआ ॥८॥२७॥२८॥ माझ महला ३ ॥ हरि आपे मेले सेव कराए ॥ गुर कै
 सबदि भाउ दूजा जाए ॥ हरि निरमलु सदा गुणदाता हरि गुण महि आपि समावणिआ ॥९॥
 हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ॥ सचा नामु सदा है निरमलु गुर सबदी मनि
 वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ आपे गुरु दाता करमि बिधाता ॥ सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता ॥ अंमृत
 नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरि रसु पावणिआ ॥२॥ इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥
 पूरे गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥ अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ ॥३॥

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਇਹੁ ਗੁਫਾ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅੰਤਰਿ ਵਸੈ ਮੁਰਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਏ
 ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਜਮੁ ਜਾਗਾਤੀ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਕਰੁ ਲਾਏ ॥ ਨਾਵਹੁ ਭੂਲੇ ਦੇਇ ਸਜਾਏ ॥ ਘੜੀ
 ਮੁਹਤ ਕਾ ਲੇਖਾ ਲੇਵੈ ਰਤੀਅਹੁ ਮਾਸਾ ਤੋਲ ਕਢਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਪੇਈਅਡੈ ਪਿਲੁ ਚੇਤੇ ਨਾਹੀ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਸੁਠੀ ਰੋਵੈ
 ਧਾਹੀ ॥ ਖਰੀ ਕੁਆਲਿਆ ਕੁਰੂਪਿ ਕੁਲਖਣੀ ਸੁਪਨੈ ਪਿਲੁ ਨਹੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਪੇਈਅਡੈ ਪਿਲੁ ਮੰਨਿ
 ਵਸਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰੌ ਗੁਰਿ ਹਦੂਰਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਕਾਮਣਿ ਪਿਲੁ ਰਾਖਿਆ ਕੱਠਿ ਲਾਇ ਸਬਦੇ ਪਿਲੁ ਰਾਵੈ ਸੇਜ
 ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪੇ ਟੇਵੈ ਸਦਿ ਬੁਲਾਏ ॥ ਆਪਣਾ ਨਾਤ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ
 ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੮॥੨੯॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਊਤਮ ਜਨਮੁ ਸੁਥਾਨਿ ਹੈ ਵਾਸਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸੇਵਹਿ ਘਰ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰਹਹਿ ਸਦਾ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਰਸਿ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ
 ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਪਡਿ ਬੁਝਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਡਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਹਿ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਲਖ ਅਭੇਤ ਹਰਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥ ਤੁਧਾਇ ਨ ਕਿਤੀ ਪਾਇਆ ਜਾਏ ॥ ਕਿਰਪਾ
 ਕਰੇ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਨਦਰੀ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਪਡੈ ਨਹੀ ਬ੍ਰੂਜੈ ॥ ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮਾਇਆ
 ਕਾਰਣ ਲ੍ਰੂਜੈ ॥ ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਬੰਧਨ ਤੂਟਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ
 ਵਸਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਲਾਗੈ ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵੈ ॥ ਬਿਖੁ ਕਾ ਕੀਡਾ ਬਿਖੁ ਮਹਿ ਰਾਤਾ ਬਿਖੁ ਹੀ ਮਾਹਿ ਪਚਾਵਣਿਆ
 ॥੪॥ ਹਉ ਹਉ ਕਰੇ ਤੈ ਆਪੁ ਜਣਾਏ ॥ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਰੈ ਕਿਛੁ ਥਾਇ ਨ ਪਾਏ ॥ ਤੁਝ ਤੈ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੂ ਨ ਹੋਵੈ
 ਬਖਸੇ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਤੁਪਯੈ ਪਚੈ ਹਰਿ ਬ੍ਰੂਜੈ ਨਾਹੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਫਿਰਾਹੀ ॥ ਮਨਮੁਖ ਜਨਮੁ
 ਗਿਆ ਹੈ ਬਿਰਥਾ ਅੰਤਿ ਗਿਆ ਪਛੁਤਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਪਿਲੁ ਪਰਦੇਸਿ ਸਿਗਾਰੁ ਬਣਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੁ ਐਸੇ
 ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥ ਹਲਤਿ ਨ ਸੋਭਾ ਪਲਤਿ ਨ ਢੀਈ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਕਿਨੈ
 ਵਿਰਲੈ ਜਾਤਾ ॥ ਪ੍ਰੌ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ
 ॥੮॥ ਸਭ ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਏਕੋ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਬ੍ਰੂਜੈ ਕੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਜਨ ਸੋਹਹਿ ਕਰਿ

ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥੨੬॥੩੦॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖ ਪੜਹਿ ਪੰਡਿਤ ਕਹਾਵਹਿ ॥ ਟ੍ਰੈਜੈ
 ਭਾਇ ਮਹਾ ਟੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥ ਬਿਖਿਆ ਮਾਤੇ ਕਿਛੁ ਸੂੜੈ ਨਾਹੀ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਆਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ
 ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਹਜਿ ਪੀਆਵਣਿਆ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਵੇਦੁ ਪੜਹਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨਹੀ ਆਇਆ ॥ ਵਾਦੁ ਕਖਾਣਹਿ ਮੋਹੇ ਮਾਇਆ ॥ ਅਗਿਆਨਮਤੀ ਸਦਾ
 ਅੰਧਿਆਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰੂੜਿ ਹਰਿ ਗਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਅਕਥੋ ਕਥੀਐ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਮਨਿ ਸਚੋ ਭਾਵੈ
 ॥ ਸਚੋ ਸਚੁ ਰਖਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਚਿ ਰੰਗਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਜੋ ਸਚਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਸਚੋ ਭਾਵੈ ॥ ਆਪੇ
 ਦੋਇ ਨ ਪਛੋਤਾਵੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਸਚੁ ਜਾਤਾ ਮਿਲਿ ਸਚੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਕੂਝੁ ਕੁਸਤੁ ਤਿਨਾ ਮੈਲੁ
 ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ॥ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥
 ੫॥ ਕੈ ਗੁਣ ਪੜਹਿ ਹਰਿ ਤਤੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ॥ ਮੂਲਹੁ ਭੁਲੇ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨ ਪਛਾਣਹਿ ॥ ਮੋਹ ਬਿਆਪੇ ਕਿਛੁ ਸੂੜੈ
 ਨਾਹੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਵੇਦੁ ਪੁਕਾਰੈ ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮਾਇਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਨ ਬ੍ਰੂੜਾਹਿ ਟ੍ਰੈਜੈ ਭਾਇਆ
 ॥ ਕੈ ਗੁਣ ਪੜਹਿ ਹਰਿ ਏਕੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰੂੜੇ ਟੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥
 ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਹਸਾ ਟ੍ਰੂੰਖੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਕੀ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਨਾਮੋ ਮੰਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੩੦॥
 ੩੧॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਿਰਗੁਣੁ ਸਰਗੁਣੁ ਆਪੇ ਸੋਈ ॥ ਤਤੁ ਪਛਾਣੈ ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਹੋਈ ॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ
 ਕੁਲ ਤਾਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਖਿ ਸਾਦੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥ ਹਰਿ
 ਰਸੁ ਚਾਖਹਿ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੋ ਨਿਹਕਰਮੀ ਜੋ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ
 ॥ ਅੰਤਰਿ ਤਤੁ ਗਿਆਨਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ਕੈ ਗੁਣ ਮੇਟਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਹਉਮੈ
 ਕਰੈ ਨਿਹਕਰਮੀ ਨ ਹੋਵੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਉਮੈ ਖੋਵੈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਿਕੇਕੁ ਸਦਾ ਆਪੁ ਕੀਚਾਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਗੁਣ
 ਗਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਹਰਿ ਸਰੁ ਸਾਗਰੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸੋਈ ॥ ਸੰਤ ਚੁਗਹਿ ਨਿਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਈ ॥ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰਹਿ
 ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਨਿਰਮਲ ਛਾਸਾ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰਿ ॥ ਹਰਿ ਸਾਰਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ

ਮਾਰਿ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਬਦਿ ਸਾਚੈ ਹਰਿ ਸਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਮਨਮੁਖੁ ਸਦਾ ਕਗੁ ਮੈਲਾ ਹਤਮੈ
 ਮਲੁ ਲਾਈ ॥ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰੈ ਪਰੁ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੈ ਹਤਮੈ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ
 ॥੬॥ ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਘਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਮਿਟਿਆ
 ਅੰਧਿਆਰਾ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਆਪੁ ਪਛਾਨਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਤੈ ਆਪੇ ਕੇਖੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਸੋ ਜਨੁ
 ਲੇਖੈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੩੧॥੩੨॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਗਤੁ ਸਬਾਇਆ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਦੀਸਹਿ ਮੋਹੇ ਮਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਕੂੜੈ ਚਤੁਰੈ ਪਦਿ
 ਲਿਵ ਲਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਬਦਿ ਜਲਾਵਣਿਆ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਲਾਏ
 ਸੋ ਹਰਿ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਹਰਿ ਦਰਿ ਮਹਲੀ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਮੂਲੁ ਹੈ ਮਾਇਆ ॥
 ਸਿੰਮੂਤਿ ਸਾਸਤ ਜਿੰਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਪਸਰਿਆ ਸੰਸਾਰੇ ਆਇ ਜਾਇ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਤਿਸੁ
 ਵਿਚਿ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਇਕੁ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਕਵਸਾਇਆ ॥ ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਗੁਰਿ
 ਪੂਰੈ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੩॥ ਪੇਈਅੜੈ ਧਨ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ॥ ਦ੍ਰਾਜੈ ਲਾਗੀ ਫਿਰਿ ਪਛੋਤਾਣੀ ॥ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ
 ਦੋਕੈ ਗਵਾਏ ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਪੇਈਅੜੈ ਧਨ ਕੰਤੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੇਖੈ ਨਾਲੇ ॥
 ਧਿਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਬਦਿ ਸਿੰਗਾਰੁ ਬਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ
 ॥ ਦ੍ਰਾਂ ਭਾਤ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇਆ ॥ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਹਾਰਿ ਗੁਣ
 ਗਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵੇ ਸੋ ਕਾਹੇ ਆਇਆ ॥ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਮਨਮੁਖਿ
 ਨਾਮੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਕੈ ਬਿਨੁ ਨਾਕੈ ਬਹੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਜਿਨਿ ਸਿਸਟਿ ਸਾਜੀ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲੈ
 ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲਿਆ ਤਿਨ ਜਨ ਕਤ ਜਿਨ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਵਣਿਆ
 ॥੮॥੧॥੩੨॥੩੩॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਆਪੇ ॥ ਆਪੇ ਥਾਪੇ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੇ ॥ ਸਭ
 ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਏਕੋ ਸੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੯॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਨਿਰਂਕਾਰੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ

॥ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਦੇਖਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਦਿਆਲੁ
 ਕਿਰਪਾਲੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਟ੍ਰੌਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰੁ ਪਰਸਾਦੁ ਕਰੇ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ
 ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਸਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥ ਭਗਤੀ ਭਰੇ ਤੇਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਮਨੁ
 ਭੀਜੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ॥ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮੇਰੇ ॥ ਤੁਧੁ
 ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਜਾਚਾ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤ੍ਰਾਂ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਮਿਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥ ਅਪਣੀ
 ਕ੃ਪਾ ਕਰਹਿ ਤ੍ਰਾਂ ਲੈਹਿ ਮਿਲਾਈ ॥ ਪ੍ਰੌਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਧਿਆਈਐ ਸਬਦੁ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਰਸਨਾ
 ਗੁਣਵਂਤੀ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੇ ਸਚੇ ਭਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਰਹੈ ਰੰਗ ਰਾਤੀ ਮਿਲਿ ਸਚੇ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ
 ॥੬॥ ਮਨਮੁਖੁ ਕਰਮ ਕਰੇ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਜ੍ਰਾਏ ਜਨਮੁ ਸਭ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਮਹਾ ਗੁਬਾਰਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ
 ਆਵਣ ਜਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਆਪਿ ਲਿਖਤੁ ਧੁਰਿ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
 ਮਿਲੈ ਭਉ ਭੰਜਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧॥੩੪॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ॥ ਅੰਤਰਿ ਅਲਖੁ
 ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ॥ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਲੈ ਗੁੜਾ ਰਖਿਆ ॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਲਖਾਵਣਿਆ
 ॥੧॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਕਲਿ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਸਚੈ ਧਾਰੇ ਵਡਭਾਗੀ ਦਰਸਨੁ
 ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਜਿਸੈ ਕਤ ਫਿਰਦੇ ॥ ਬ੍ਰਹਮੇ ਇੰਦ੍ਰ ਧਿਆਇਨਿ ਹਿਰਦੇ ॥ ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸਾ
 ਖੋਜਹਿ ਤਾ ਕਤ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਹਿਰਦੈ ਗਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਆਠ ਪਹਰ ਤੁਧੁ ਜਾਪੇ ਪਕਨਾ ॥ ਧਰਤੀ ਸੇਵਕ ਪਾਇਕ
 ਚਰਨਾ ॥ ਖਾਣੀ ਬਾਣੀ ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਸਭਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ॥
 ਪ੍ਰੌਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਿਜਾਪੈ ॥ ਜਿਨ ਪੀਆ ਸੇਈ ਤ੃ਪਤਾਸੇ ਸਚੇ ਸਚਿ ਅਘਾਵਣਿਆ ॥੪॥ ਤਿਸੁ ਘਰਿ ਸਹਜਾ
 ਸੋਈ ਸੁਹੇਲਾ ॥ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਕਰੇ ਸਦ ਕੇਲਾ ॥ ਸੋ ਧਨਵਂਤਾ ਸੋ ਵਡ ਸਾਹਾ ਜੋ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥
 ੫॥ ਪਹਿਲੋ ਦੇ ਤੈ ਰਿਜਕੁ ਸਮਾਹਾ ॥ ਪਿਛੋ ਦੇ ਤੈ ਜੰਤੁ ਉਪਾਹਾ ॥ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਸੁਆਮੀ ਲਵੈ ਨ ਕੋਈ
 ਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਾਂ ਤੁਠਾ ਸੋ ਤੁਧੁ ਧਿਆਏ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕਾ ਮੰਤੁ ਕਮਾਏ ॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੇ

ਤਿਸੁ ਦਰਗਹ ਠਾਕ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਤ੍ਰਾਂ ਵਡਾ ਤ੍ਰਾਂ ਊਚੋ ਊਚਾ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਬੇਅੰਤੁ ਅਤਿ ਸ੍ਰੂਚੋ ਸ੍ਰੂਚਾ ॥ ਹਤ ਕੁਰਬਾਣੀ
 ਤੈਰੈ ਵੰਜਾ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦੁਸਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧॥੩੫॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਤਣੁ ਸੁ ਸੁਕਤਾ ਕਤਣੁ ਸੁ ਜੁਗਤਾ ॥
 ਕਤਣੁ ਸੁ ਗਿਆਨੀ ਕਤਣੁ ਸੁ ਬਕਤਾ ॥ ਕਤਣੁ ਸੁ ਗਿਰਹੀ ਕਤਣੁ ਉਦਾਸੀ ਕਤਣੁ ਸੁ ਕੀਮਤਿ ਪਾਏ ਜੀਤ ॥੧॥
 ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਬਾਧਾ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਛੂਟਾ ॥ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਤ੍ਰੂਟਾ ॥ ਕਤਣ ਕਰਮ ਕਤਣ ਨਿਹਕਰਮਾ
 ਕਤਣੁ ਸੁ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ਜੀਤ ॥੨॥ ਕਤਣੁ ਸੁ ਸੁਖੀਆ ਕਤਣੁ ਸੁ ਦੁਖੀਆ ॥ ਕਤਣੁ ਸੁ ਸਨਮੁਖੁ ਕਤਣੁ ਵੇਮੁਖੀਆ
 ॥ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਮਿਲੀਐ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਬਿਛੁਰੈ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕਤਣੁ ਪ੍ਰਗਟਾਏ ਜੀਤ ॥੩॥ ਕਤਣੁ ਸੁ ਅਖਰੁ ਜਿਤੁ
 ਧਾਵਤੁ ਰਹਤਾ ॥ ਕਤਣੁ ਉਪਦੇਸੁ ਜਿਤੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮ ਸਹਤਾ ॥ ਕਤਣੁ ਸੁ ਚਾਲ ਜਿਤੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਧਿਆਏ ਕਿਨਿ
 ਬਿਧਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਏ ਜੀਤ ॥੪॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਕਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੁਗਤਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਕਤਾ ॥
 ਧਨੁ ਗਿਰਹੀ ਉਦਾਸੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਏ ਜੀਤ ॥੫॥ ਹਤਮੈ ਬਾਧਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੂਟਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਤ੍ਰੂਟਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਮ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਹਕਰਮਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰੇ ਸੁ ਸੁਭਾਏ ਜੀਤ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸੁਖੀਆ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੀਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਨਮੁਖੁ ਮਨਮੁਖਿ ਵੇਮੁਖੀਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੀਐ ਮਨਮੁਖਿ ਵਿਛੁਰੈ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਿਧਿ ਪ੍ਰਗਟਾਏ ਜੀਤ ॥੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਖਰੁ ਜਿਤੁ ਧਾਵਤੁ ਰਹਤਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਪਦੇਸੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ
 ਸਮ ਸਹਤਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਾਲ ਜਿਤੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਧਿਆਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਏ ਜੀਤ ॥੮॥ ਸਗਲੀ ਬਣਤ
 ਬਣਾਈ ਆਪੇ ॥ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਥਾਪੇ ॥ ਇਕਸੁ ਤੇ ਹੋਇਐ ਅਨ੍ਨਤਾ ਨਾਨਕ ਏਕਸੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਏ ਜੀਤ ॥
 ੬॥੨॥੩੬॥ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਤਾ ਕਿਆ ਕਾਡਾ ॥ ਹਰਿ ਭਗਵਂਤਾ ਤਾ ਜਨੁ ਖਰਾ ਸੁਖਾਲਾ
 ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮਾਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਤ੍ਰਾਂ ਕਰਹਿ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਹਤ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ਵਾਰੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨਿ
 ਤਨਿ ਭਾਵਣਿਆ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਮੇਰਾ ਪਰਕਤੁ ਤ੍ਰਾਂ ਮੇਰਾ ਓਲਾ ਤੁਮ ਸੰਗਿ ਲਵੈ ਨ ਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੇਰਾ ਕੀਤਾ
 ਜਿਸੁ ਲਾਗੈ ਸੀਠਾ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਿਨਿ ਜਨਿ ਡੀਠਾ ॥ ਥਾਨਿ ਥਨਤਰਿ ਤ੍ਰਾਂਹੈ ਤ੍ਰਾਂਹੈ ਇਕੋ ਇਕੁ
 ਵਰਤਾਵਣਿਆ ॥੨॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਤ੍ਰਾਂ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥ ਭਗਤੀ ਭਾਇ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਦਿੱਤਾ ਧਾਰਿ ਰਾਖੇ

ਤੁਥੁ ਸੇਈ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥ ਅਂਧ ਕੂਪ ਤੇ ਕੱਢੈ ਚਾੜੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦਾਸ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥
 ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਪੂਰਨ ਅਬਿਨਾਸੀ ਕਹਿ ਸੁਣਿ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਣਿਆ ॥੪॥ ਐਥੈ ਓਥੈ ਤੂਂਹੈ ਰਖਵਾਲਾ ॥ ਮਾਤ ਗਰਭ
 ਮਹਿ ਤੁਮ ਹੀ ਪਾਲਾ ॥ ਮਾਇਆ ਅਗਨਿ ਨ ਪੋਹੈ ਤਿਨ ਕਤ ਰੰਗ ਰਤੇ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੫॥ ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ
 ਆਖਿ ਸਮਾਲੀ ॥ ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਤੁਥੁ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀ ॥ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਮੀਤੁ ਸਾਜਨੁ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤੁਥੁ ਬਿਨੁ
 ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਣਿਆ ॥੬॥ ਜਿਸ ਕਤ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭ ਭਿਆ ਸਹਾਈ ॥ ਤਿਸੁ ਤਤੀ ਵਾਤ ਨ ਲਗੈ ਕਾਈ ॥ ਤੂੰ ਸਾਹਿਬੁ
 ਸਰਣਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਜਪਿ ਪ੍ਰਗਟਾਵਣਿਆ ॥੭॥ ਤੂੰ ਊਚ ਅਥਾਹੁ ਅਪਾਰੁ ਅਮੋਲਾ ॥ ਤੂੰ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ
 ਦਾਸੁ ਤੇਰਾ ਗੋਲਾ ॥ ਤੂੰ ਮੀਰਾ ਸਾਚੀ ਠਕੁਰਾਈ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਵਣਿਆ ॥੮॥੩॥੩੭॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫
 ਘਰੁ ੨ ॥ ਨਿਤ ਨਿਤ ਦਿਉ ਸਮਾਲੀਐ ॥ ਮੂਲਿ ਨ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਾ ਸਾਂਗਤਿ ਪਾਈਐ ॥ ਜਿਤੁ
 ਜਮ ਕੈ ਪਥਿ ਨ ਜਾਈਐ ॥ ਤੋਸਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਲੈ ਤੇਰੇ ਕੁਲਹਿ ਨ ਲਾਗੈ ਗਾਲਿ ਜੀਤ ॥੧॥ ਜੋ ਸਿਮਰਦੇ
 ਸਾਈਐ ॥ ਨਰਕਿ ਨ ਸੇਈ ਪਾਈਐ ॥ ਤਤੀ ਵਾਤ ਨ ਲਗੈ ਜਿਨ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ਆਇ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸੇਈ ਸੁੰਦਰ
 ਸੋਹਣੇ ॥ ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਜਿਨ ਬੈਹਣੇ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਿਨੀ ਸੰਜਿਆ ਸੇਈ ਗੰਭੀਰ ਅਪਾਰ ਜੀਤ ॥੩॥ ਹਰਿ ਅਮਿਤ
 ਰਸਾਇਣੁ ਪੀਕੀਐ ॥ ਮੁਹਿ ਡਿਠੈ ਜਨ ਕੈ ਜੀਕੀਐ ॥ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਕਾਰਿ ਲੈ ਨਿਤ ਪ੍ਰਯੁਹੁ ਗੁਰ ਕੇ ਪਾਵ ਜੀਤ
 ॥੪॥ ਜੋ ਹਰਿ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ॥ ਤਿਨਹਿ ਗੁਸਾਈ ਜਾਪਣਾ ॥ ਸੋ ਸੂਰਾ ਪਰਧਾਨੁ ਸੋ ਮਸਤਕਿ ਜਿਸ ਦੈ ਭਾਗੁ ਜੀਤ
 ॥੫॥ ਮਨ ਮੰਧੇ ਪ੍ਰਭੁ ਅਕਗਾਹੀਆ ॥ ਏਹਿ ਰਸ ਭੋਗਣ ਪਾਤਿਸਾਹੀਆ ॥ ਮੰਦਾ ਮੂਲਿ ਨ ਉਪਜਿਓ ਤੇਰੇ ਸਚੀ
 ਕਾਰੈ ਲਾਗਿ ਜੀਤ ॥੬॥ ਕਰਤਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥ ਜਨਮੈ ਕਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਮਨਿ ਭਾਵਦਾ ਕਂਤੁ ਹਰਿ ਤੇਰਾ
 ਥਿਰੁ ਛੋਆ ਸੋਹਾਗੁ ਜੀਤ ॥੭॥ ਅਟਲ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ॥ ਭੈ ਭੰਜਨ ਕੀ ਸਰਣਾਇਆ ॥ ਲਾਇ ਅੰਚਲਿ ਨਾਨਕ
 ਤਾਰਿਅਨੁ ਜਿਤਾ ਜਨਮੁ ਅਪਾਰ ਜੀਤ ॥੮॥੪॥੩੮॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ॥

ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਪੇ ਮਨੁ ਧੀਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਗੁਰਦੇਉ ਮਿਟਿ ਗਏ ਭੈ ਫੂਰੇ ॥੧॥ ਸਰਨਿ

आवै पारब्रह्म की ता फिरि काहे झूरे ॥२॥ चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥३॥
 घटि घटि एकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥४॥ पाप बिनासनु सेविआ पवित्र संतन की
 धूरे ॥५॥ सभ छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठर्ले ॥६॥ करतै कीआ तपावसो दुसट मुए
 होइ मूरे ॥७॥ नानक रता सचि नाइ हरि वेखै सदा हजूरे ॥८॥५॥३६॥१॥३२॥१॥५॥३६॥

बारह माहा माँझा महला ५ घरु ४

੧੬੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਿਰਤਿ ਕਰਮ ਕੇ ਕੀਛੁਡੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲਹੁ ਰਾਮ ॥ ਚਾਰਿ ਕੁਟ ਦਹ ਦਿਸ ਭਰਮੇ ਥਕਿ ਆਏ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਾਮ ॥
 ਧੇਨੁ ਦੁਧੈ ਤੇ ਬਾਹਰੀ ਕਿਤੈ ਨ ਆਵੈ ਕਾਮ ॥ ਜਲ ਬਿਨੁ ਸਾਖ ਕੁਮਲਾਵਤੀ ਉਪਜਹਿ ਨਾਹੀ ਦਾਮ ॥ ਹਰਿ ਨਾਹ
 ਨ ਮਿਲੀਐ ਸਾਜਨੈ ਕਤ ਪਾਈਐ ਬਿਸਰਾਮ ॥ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਹਰਿ ਕਨ੍ਤੁ ਨ ਪ੍ਰਗਟਈ ਭਠਿ ਨਗਰ ਸੇ ਗ੍ਰਾਮ ॥
 ਸ਼ਬ ਸੀਗਾਰ ਤੰਬੋਲ ਰਸ ਸਣੁ ਦੇਹੀ ਸਭ ਖਾਮ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਕਂਤ ਵਿਹੂਣੀਆ ਮੀਤ ਸਜਣ ਸਭਿ ਜਾਮ
 ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀਆ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਟੀਜੈ ਨਾਮੁ ॥ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸੁਆਮੀ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਜਿਸ ਕਾ ਨਿਹਚਲ
 ਧਾਮ ॥੧॥ ਚੇਤਿ ਗੋਵਿੰਦੁ ਅਰਾਧੀਐ ਹੋਵੈ ਅਨਨਦੁ ਘਣਾ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਪਾਈਐ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਭਣਾ ॥
 ਜਿਨਿ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਆਏ ਤਿਸਹਿ ਗਣਾ ॥ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਜੀਵਣਾ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ
 ਜਣਾ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿਆ ਰਵਿਆ ਵਿਚਿ ਵਣਾ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਰਈ ਕਿਤੜਾ ਦੁਖੁ
 ਗਣਾ ॥ ਜਿਨੀ ਰਾਵਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੂ ਤਿਨਾ ਭਾਗੁ ਮਣਾ ॥ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਕੰਤ ਮਨੁ ਲੋਚਦਾ ਨਾਨਕ ਪਿਆਸ
 ਮਨਾ ॥ ਚੇਤਿ ਮਿਲਾਏ ਸੋ ਪ੍ਰਭੂ ਤਿਸ ਕੈ ਪਾਇ ਲਗਾ ॥੨॥ ਵੈਸਾਖਿ ਧੀਰਨਿ ਕਿਤ ਵਾਢੀਆ ਜਿਨਾ ਪ੍ਰੇਮ ਬਿਛੋਹੁ
 ॥ ਹਰਿ ਸਾਜਨੁ ਪੁਰਖੁ ਵਿਸਾਰਿ ਕੈ ਲਗੀ ਮਾਇਆ ਧੋਹੁ ॥ ਪੁਤ ਕਲਤ ਨ ਸੰਗਿ ਧਨਾ ਹਰਿ ਅਵਿਨਾਸੀ
 ਓਹੁ ॥ ਪਲਚਿ ਪਲਚਿ ਸਗਲੀ ਸੁਈ ਝੂਠੈ ਧੰਧੈ ਮੋਹੁ ॥ ਇਕਸੁ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਅਗੈ ਲਈਅਹਿ ਖੋਹਿ ॥
 ਦਧੁ ਵਿਸਾਰਿ ਵਿਗੁਚਣਾ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਚਰਣੀ ਜੋ ਲਗੇ ਤਿਨ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥

ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਬੇਨਤੀ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਹੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਵੈਸਾਖੁ ਸੁਹਾਵਾ ਤਾਂ ਲਗੈ ਜਾ ਸਨ੍ਤੁ ਭੇਟੈ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥
 ੩॥ ਹਰਿ ਜੇਠਿ ਜੁੰਦਾ ਲੋਡੀਐ ਜਿਸੁ ਅਗੈ ਸਭਿ ਨਿਵੰਨਿ ॥ ਹਰਿ ਸਜਣ ਦਾਵਣਿ ਲਗਿਆ ਕਿਸੈ ਨ ਦੇਈ
 ਬੰਨਿ ॥ ਮਾਣਕ ਮੋਤੀ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਉਨ ਲਗੈ ਨਾਹੀ ਸੰਨਿ ॥ ਰੰਗ ਸਭੇ ਨਾਰਾਇਣੈ ਜੇਤੇ ਮਨਿ ਭਾਵੰਨਿ ॥ ਜੋ ਹਰਿ
 ਲੋਡੇ ਸੋ ਕਰੇ ਸੋਈ ਜੀਅ ਕਰਨਿ ॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਤੇ ਆਪਣੇ ਸੇਈ ਕਹੀਅਹਿ ਧੰਨਿ ॥ ਆਪਣ ਲੀਆ ਜੇ ਮਿਲੈ
 ਵਿਛੁਡਿ ਕਿਤ ਰੋਵੰਨਿ ॥ ਸਾਥੁ ਸੰਗੁ ਪਰਾਪਤੇ ਨਾਨਕ ਰੰਗ ਮਾਣਨਿ ॥ ਹਰਿ ਜੇਠੁ ਰੰਗੀਲਾ ਤਿਸੁ ਧਣੀ ਜਿਸ ਕੈ
 ਭਾਗੁ ਮਥੰਨਿ ॥੪॥ ਆਸਾਡੁ ਤਪਦਾ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਹਰਿ ਨਾਹੁ ਨ ਜਿਨਾ ਪਾਸਿ ॥ ਜਗਜੀਵਨ ਪੁਰਖੁ ਤਿਆਗੁ ਕੈ
 ਮਾਣਸ ਸੰਦੀ ਆਸ ॥ ਦੁਧੈ ਭਾਇ ਵਿਗੁਚੀਐ ਗਲਿ ਪੰਝੁ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸ ॥ ਜੇਹਾ ਬੀਜੈ ਸੋ ਲੁਣੈ ਮਥੈ ਜੋ
 ਲਿਖਿਆਸੁ ॥ ਰੈਣ ਵਿਹਾਣੀ ਪਛੁਤਾਣੀ ਤਠਿ ਚਲੀ ਗੰਡੀ ਨਿਰਾਸ ॥ ਜਿਨ ਕੌ ਸਾਥੁ ਭੇਟੀਐ ਸੋ ਦਰਗਹ ਹੋਇ
 ਖਲਾਸੁ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੀ ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਹੋਇ ਪਿਆਸ ॥ ਪ੍ਰਭ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰੂਜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਨਾਨਕ ਕੀ
 ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਆਸਾਡੁ ਸੁਝਦਾ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਹਰਿ ਚਰਣ ਨਿਵਾਸ ॥੫॥ ਸਾਵਣਿ ਸਰਸੀ ਕਾਮਣੀ
 ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਪਿਆਰੁ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਸਚ ਰੰਗਿ ਇਕੀ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਬਿਖਿਆ ਰੰਗ ਕੂੜਾਵਿਆ
 ਦਿਸਨਿ ਸਭੇ ਛਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬੂੰਦ ਸੁਹਾਵਣੀ ਮਿਲਿ ਸਾਥੁ ਪੀਵਣਹਾਰੁ ॥ ਕਣੁ ਤਿਣੁ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਮਤਲਿਆ
 ਸੰਮ੍ਰਥ ਪੁਰਖ ਅਪਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਮਿਲਣੈ ਨੋ ਮਨੁ ਲੋਚਦਾ ਕਰਮਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰੁ ॥ ਜਿਨੀ ਸਖੀਏ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ
 ਛਾਤ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜੀ ਮਇਆ ਕਰਿ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥ ਸਾਵਣੁ ਤਿਨਾ
 ਸੁਹਾਗਣੀ ਜਿਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਤਰਿ ਹਾਰੁ ॥੬॥ ਭਾਦੁਇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀਆ ਦ੍ਰੂਜੈ ਲਗਾ ਹੇਤੁ ॥ ਲਖ ਸੀਗਾਰ
 ਬਣਾਇਆ ਕਾਰਜਿ ਨਾਹੀ ਕੇਤੁ ॥ ਜਿਤੁ ਦਿਨਿ ਦੇਹ ਬਿਨਸਸੀ ਤਿਤੁ ਕੇਲੈ ਕਹਸਨਿ ਪੇਤੁ ॥ ਪਕਡਿ ਚਲਾਇਨਿ
 ਢੂਤ ਜਮ ਕਿਸੈ ਨ ਦੇਨੀ ਭੇਤੁ ॥ ਛਡਿ ਖੜੋਤੇ ਖਿਨੈ ਮਾਹਿ ਜਿਨ ਸਿਤ ਲਗਾ ਹੇਤੁ ॥ ਹਥ ਮਰੋਡੈ ਤਨੁ ਕਧੇ
 ਸਿਆਹਹੁ ਹੋਆ ਸੇਤੁ ॥ ਜੇਹਾ ਬੀਜੈ ਸੋ ਲੁਣੈ ਕਰਮਾ ਸੰਦੱਡਾ ਖੇਤੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਚਰਣ ਬੋਹਿਥ
 ਪ੍ਰਭ ਦੇਤੁ ॥ ਸੇ ਭਾਦੁਇ ਨਰਕਿ ਨ ਪਾਈਅਹਿ ਗੁਰੁ ਰਖਣ ਵਾਲਾ ਹੇਤੁ ॥੭॥ ਅਸੁਨਿ ਪ੍ਰੇਮ ਤਮਾਹੜਾ ਕਿਤ

ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਜਾਇ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪਿਆਸ ਦਰਸਨ ਘਣੀ ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮਾਇ ॥ ਸਨਤ ਸਹਾਈ ਪ੍ਰੇਮ ਕੇ
ਹਤ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਾ ਪਾਇ ॥ ਵਿਣੁ ਪ੍ਰਭ ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਟ੍ਰੌਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥ ਜਿਨ੍ਹੀ ਚਾਖਿਆ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਸੇ
ਤ੃ਪਤਿ ਰਹੇ ਆਘਾਇ ॥ ਆਪੁ ਤਿਆਗੁ ਬਿਨਤੀ ਕਰਹਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭੂ ਲਡਿ ਲਾਇ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਕਂਤਿ ਮਿਲਾਈਆ
ਸਿ ਵਿਛੁਡਿ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਵਿਣੁ ਦ੍ਰੂਜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਰਣਾਇ ॥ ਅਸੂ ਸੁਖੀ ਵਸਦੀਆ ਜਿਨਾ
ਮਇਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥੮॥ ਕਤਿਕਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਟ੍ਰੋਸੁ ਨ ਕਾਹੂ ਜੋਗੁ ॥ ਪਰਮੇਸਰ ਤੇ ਭੁਲਿਆਁ ਵਿਆਪਨਿ ਸਭੇ
ਰੋਗ ॥ ਵੇਮੁਖ ਹੋਏ ਰਾਮ ਤੇ ਲਗਨਿ ਜਨਮ ਵਿਜੋਗ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਤਡੇ ਹੋਇ ਗਏ ਜਿਤਡੇ ਮਾਇਆ ਭੋਗ ॥
ਵਿਚੁ ਨ ਕੋਈ ਕਰਿ ਸਕੈ ਕਿਸ ਥੈ ਰੋਵਹਿ ਰੋਜ ॥ ਕੀਤਾ ਕਿਛੁ ਨ ਹੋਵਈ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਸੰਜੋਗ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਮੇਰਾ
ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲੈ ਤਾਂ ਉਤਰਹਿ ਸਭਿ ਬਿਓਗ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹਿ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਬੰਦੀ ਸੋਚ ॥ ਕਤਿਕ ਹੋਵੈ
ਸਾਧਸੰਗੁ ਬਿਨਸਹਿ ਸਭੇ ਸੋਚ ॥੯॥ ਮਂਘਿਰਿ ਮਾਹਿ ਸੋਝਾਦੀਆ ਹਰਿ ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਬੈਠਡੀਆਹ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸੋਭਾ
ਕਿਆ ਗਣੀ ਜਿ ਸਾਹਿਬਿ ਮੇਲਡੀਆਹ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਮਤਲਿਆ ਰਾਮ ਸਿਤ ਸੰਗਿ ਸਾਧ ਸਹੇਲਡੀਆਹ ॥ ਸਾਧ
ਜਨਾ ਤੇ ਬਾਹਰੀ ਸੇ ਰਹਨਿ ਇਕੇਲਡੀਆਹ ॥ ਤਿਨ ਦੁਖੁ ਨ ਕਬਹੂ ਉਤਰੈ ਸੇ ਜਮ ਕੈ ਵਸਿ ਪਡੀਆਹ ॥ ਜਿਨੀ
ਰਾਵਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਸੇ ਦਿਸਨਿ ਨਿਤ ਖੜੀਆਹ ॥ ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਲਾਲ ਹਰਿ ਕਂਠਿ ਤਿਨਾ ਜੱਡੀਆਹ ॥
ਨਾਨਕ ਬਾਂਛੈ ਧੂਡਿ ਤਿਨ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣੀ ਦਰਿ ਪਡੀਆਹ ॥ ਮਂਘਿਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਰਾਧਣਾ ਬਹੁਡਿ ਨ ਜਨਮਡੀਆਹ
॥੧੦॥ ਪੋਖਿ ਤੁਖਾਰੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਕਂਠਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਨਾਹੁ ॥ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਚਰਨਾਰਬਿੰਦ ਦਰਸਨਿ
ਲਗੜਾ ਸਾਹੁ ॥ ਓਟ ਗੋਵਿੰਦ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ਸੇਵਾ ਸੁਆਮੀ ਲਾਹੁ ॥ ਬਿਖਿਆ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕੈ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ
ਗੁਣ ਗਾਹੁ ॥ ਜਹ ਤੇ ਉਪਜੀ ਤਹ ਮਿਲੀ ਸਚੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਮਾਹੁ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਬਹੁਡਿ ਨ
ਵਿਛੁਡੀਆਹੁ ॥ ਬਾਰਿ ਜਾਤ ਲਖ ਕੇਰੀਆ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਅਗਮ ਅਗਾਹੁ ॥ ਸਰਮ ਪੈ ਨਾਰਾਇਣੈ ਨਾਨਕ ਦਰਿ
ਪੈਈਆਹੁ ॥ ਪੋਖੁ ਸੋਝਦਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੧੧॥ ਮਾਧਿ ਮਜਨੁ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂਆ ਧੂਡੀ ਕਰਿ
ਡਿਸਨਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸੁਣਿ ਸਭਨਾ ਨੋ ਕਰਿ ਦਾਨੁ ॥ ਜਨਮ ਕਰਮ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਮਨ ਤੇ ਜਾਇ

ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਕਾਮਿ ਕਰੋਧਿ ਨ ਮੋਹੀਐ ਬਿਨਸੈ ਲੋਭੁ ਸੁਆਨੁ ॥ ਸਚੈ ਮਾਰਗਿ ਚਲਦਿਆ ਤਸਤਤਿ ਕਰੇ ਜਹਾਨੁ ॥
 ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਸਗਲ ਪੁਨ ਜੀਅ ਦਿੱਖਾ ਪਰਵਾਨੁ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਵੈ ਦਿੱਖਾ ਕਰਿ ਸੋਈ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਨੁ ॥
 ਜਿਨਾ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥ ਮਾਘਿ ਸੁਚੇ ਸੇ ਕਾਂਢੀਅਹਿ ਜਿਨ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ
 ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥੧੨॥ ਫਲਗੁਣਿ ਅਨੰਦ ਉਪਾਰਜਨਾ ਹਰਿ ਸਜਣ ਪ੍ਰਗਟੇ ਆਇ ॥ ਸਤਿ ਸਹਾਈ ਰਾਮ ਕੇ ਕਰਿ
 ਕਿਰਪਾ ਦੀਆ ਮਿਲਾਇ ॥ ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੁਣਿ ਦੁਖਾ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥ ਇਛ ਪੁਨੀ ਵਡਭਾਗਣੀ
 ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਮਿਲਿ ਸਹੀਆ ਮੰਗਲੁ ਗਾਵਹੀ ਗੀਤ ਗੋਵਿੰਦ ਅਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਜੇਹਾ ਅਵਰੁ
 ਨ ਦਿਸੈਈ ਕੋਈ ਦ੍ਰਿੜ ਲਵੈ ਨ ਲਾਇ ॥ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਵਾਰਿਓਨੁ ਨਿਹਚਲ ਦਿਤੀਅਨੁ ਜਾਇ ॥ ਸੰਸਾਰ
 ਸਾਗਰ ਤੇ ਰਖਿਅਨੁ ਬਹੁਡਿ ਨ ਜਨਮੈ ਧਾਇ ॥ ਜਿਹਵਾ ਏਕ ਅਨੇਕ ਗੁਣ ਤਰੇ ਨਾਨਕ ਚਰਣੀ ਪਾਇ ॥ ਫਲਗੁਣਿ
 ਨਿਤ ਸਲਾਹੀਐ ਜਿਸ ਨੋ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੧੩॥ ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਕੇ ਕਾਜ ਸਰੇ ॥
 ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਆਰਾਧਿਆ ਦਰਗਹ ਸਚਿ ਖਰੇ ॥ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਨਿਧਿ ਚਰਣ ਹਰਿ ਭਤਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਤਰੇ ॥
 ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਤਿਨ ਪਾਈਆ ਬਿਖਿਆ ਨਾਹਿ ਜਰੇ ॥ ਕੂੜ ਗਏ ਦੁਬਿਧਾ ਨਸੀ ਪ੍ਰੰਨ ਸਚਿ ਭਰੇ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ
 ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਦੇ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਏਕੁ ਧਰੇ ॥ ਮਾਹ ਦਿਵਸ ਮੂਰਤ ਭਲੇ ਜਿਸ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੇ
 ਦਰਸ ਦਾਨੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹੁ ਹਰੇ ॥੧੪॥੧॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ਦਿਨ ਰੈਣ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੇਵੀ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪਣਾ ਹਰਿ ਸਿਮਰੀ ਦਿਨ ਸਭਿ ਰੈਣ ॥ ਆਪੁ ਤਿਆਗਿ ਸਰਣੀ ਪਵਾਂ ਮੁਖਿ ਬੋਲੀ ਮਿਠੜੇ ਵੈਣ ॥
 ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਵਿਛੁਡਿਆ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸਜਣੁ ਸੈਣ ॥ ਜੋ ਜੀਅ ਹਰਿ ਤੇ ਵਿਛੁਡੇ ਸੇ ਸੁਖਿ ਨ ਵਸਨਿ ਭੈਣ ॥ ਹਰਿ
 ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਚੈਨੁ ਨ ਪਾਈਐ ਖੋਜਿ ਡਿਠੇ ਸਭਿ ਗੈਣ ॥ ਆਪ ਕਮਾਣੈ ਵਿਛੁਡੀ ਦੋਸੁ ਨ ਕਾਹੂ ਦੇਣ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ
 ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਹੋਰੁ ਨਾਹੀ ਕਰਣ ਕਰੇਣ ॥ ਹਰਿ ਤੁਧੁ ਵਿਣੁ ਖਾਕੂ ਰੁਲਣਾ ਕਹੀਐ ਕਿਥੈ ਵੈਣ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀਆ
 ਹਰਿ ਸੁਰਜਨੁ ਦੇਖਾ ਨੈਣ ॥੧॥ ਜੀਅ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਸੋ ਸੁਣੇ ਹਰਿ ਸ਼ਮ੍ਰਥ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਮਰਣਿ ਜੀਵਣਿ

आराधणा सभना का आधारु ॥ ससुरै पेर्हैअै तिसु कंत की वडा जिसु परवारु ॥ ऊचा अगम अगाधि
बोध किछु अंतु न पारावारु ॥ सेवा सा तिसु भावसी संता की होइ छारु ॥ दीना नाथ दैआल देव पतित
उधारणहारु ॥ आदि जुगादी रखदा सचु नामु करतारु ॥ कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥
मन तन अंतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥ दिनु रैणि जि प्रभ कंउ सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥२॥
संत अराधनि सद सदा सभना का बखसिंदु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु जिंदु ॥
गुर सबटी आराधीअै जपीअै निरमल मंतु ॥ कीमति कहणु न जाईअै परमेसुरु बेअंतु ॥ जिसु मनि वसै
नराइणो सो कहीअै भगवंतु ॥ जीअ की लोचा पूरीअै मिलै सुआमी कंतु ॥ नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे
ही ह्वातु ॥ दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ होवै जंतु ॥३॥ सरब कला प्रभ पूरणो मंजु निमाणी थाउ ॥
हरि ओट गही मन अंदरे जपि जपि जीवाँ नाउ ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जन धूड़ी संगि समाउ ॥
जिउ तूं राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥ उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू गुण गाउ ॥ टूजी
जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥ अगिआन बिनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥ मनु विछुड़िआ
हरि मेलीअै नानक एहु सुआउ ॥ सरब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुर के पाउ ॥४॥१॥

वार माझ की तथा सलोक महला १

मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥ १॥ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥

अमर पदारथु नानका मनि मानिअै सुखु होइ ॥१॥ मः १ ॥ पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ टूजै
माइ बाप की सुधि ॥ तीजै भया भाभी बेब ॥ चउथै पिआरि उपन्नी खेड ॥ पंजवै खाण पीआण की
धातु ॥ छिवै कामु न पुछै जाति ॥ सतवै संजि कीआ घर वासु ॥ अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥ नावै
धउले उभे साह ॥ दसवै दधा होआ सुआह ॥ गए सिगीत पुकारी धाह ॥ उडिआ ह्वासु दसाए राह ॥

ਆਇਆ ਗਿਆ ਸੁਇਆ ਨਾਤ ॥ ਪਿਛੈ ਪਤਲਿ ਸਦਿਹੁ ਕਾਵ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧੁ ਪਿਆਰੁ ॥ ਬਾੜ੍ਹੁ ਗੁਰੁ
 ਡੁਬਾ ਸੰਸਾਰੁ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਦਸ ਬਾਲਤਣਿ ਬੀਸ ਰਖਣਿ ਤੀਸਾ ਕਾ ਸੁੰਦਰੁ ਕਹਾਵੈ ॥ ਚਾਲੀਸੀ ਪੁਰੂ ਹੋਇ
 ਪਚਾਸੀ ਪਗੁ ਖਿਸੈ ਸਠੀ ਕੇ ਬੋਢੇਪਾ ਆਵੈ ॥ ਸਤਰਿ ਕਾ ਮਤਿਹੀਣੁ ਅਸੀਫਾਂ ਕਾ ਵਿਉਹਾਰੁ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਨਵੈ ਕਾ
 ਸਿਹਜਾਸਣੀ ਮੂਲਿ ਨ ਜਾਣੈ ਅਪ ਬਲੁ ॥ ਢੰਡੋਲਿਮੁ ਢੂਢਿਮੁ ਡਿਠੁ ਮੈ ਨਾਨਕ ਜਗੁ ਧ੍ਰਾਏ ਕਾ ਧਵਲਹਰੁ ॥੩॥
 ਪਤਡੀ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਆਪਿ ਸੂਸਟਿ ਉਪਾਤੀ ॥ ਰੰਗ ਪਰੰਗ ਉਪਾਰਜਨਾ ਬਹੁ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾਤੀ ॥
 ਤ੍ਰਾਂ ਜਾਣਹਿ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈਐ ਸਮੁ ਖੇਲੁ ਤੁਮਾਤੀ ॥ ਇਕਿ ਆਵਹਿ ਇਕਿ ਜਾਹਿ ਤਠਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਰਿ ਜਾਤੀ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲਿਆ ਰੰਗਿ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ॥ ਸੋ ਸੇਵਹੁ ਸਤਿ ਨਿਰੰਜਨੋ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤੀ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ
 ਆਪਿ ਸੁਜਾਣੁ ਹੈ ਕਡ ਪੁਰਖੁ ਕਡਾਤੀ ॥ ਜੋ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਤੁਧੁ ਧਿਆਇਦੇ ਮੇਰੇ ਸਚਿਆ ਬਲਿ ਬਲਿ ਹਤ ਤਿਨ
 ਜਾਤੀ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਜੀਤ ਪਾਇ ਤਨੁ ਸਾਜਿਆ ਰਖਿਆ ਬਣਤ ਬਣਾਇ ॥ ਅਖੀ ਦੇਖੈ ਜਿਹਵਾ ਬੋਲੈ
 ਕਨੀ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਇ ॥ ਪੈਰੀ ਚਲੈ ਹਥੀ ਕਰਣਾ ਦਿਤਾ ਪੈਨੈ ਖਾਇ ॥ ਜਿਨਿ ਰਚਿ ਰਚਿਆ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣੈ ਅੰਧਾ
 ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥ ਜਾ ਭਜੈ ਤਾ ਠੀਕਰੁ ਹੋਵੈ ਘਾੜਤ ਘੜੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਨਾਹਿ ਪਤਿ ਪਤਿ ਵਿਣੁ ਪਾਰਿ
 ਨ ਪਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਦੇਂਦੇ ਥਾਵਹੁ ਦਿਤਾ ਚੰਗਾ ਮਨਮੁਖਿ ਐਸਾ ਜਾਣੀਐ ॥ ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਚਤੁਰਾਈ ਤਾ ਕੀ
 ਕਿਆ ਕਰਿ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀਐ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਹਿ ਕੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਸੋ ਚਹੁ ਕੁੰਡੀ ਜਾਣੀਐ ॥ ਜੋ ਧਰਮੁ ਕਮਾਵੈ ਤਿਸੁ
 ਧਰਮ ਨਾਤ ਹੋਵੈ ਪਾਪਿ ਕਮਾਣੈ ਪਾਪੀ ਜਾਣੀਐ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਖੇਲ ਕਰਹਿ ਸਭਿ ਕਰਤੇ ਕਿਆ ਟ੍ਰੂਜਾ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀਐ
 ॥ ਜਿਚਰੁ ਤੇਰੀ ਜੋਤਿ ਤਿਚਰੁ ਜੋਤੀ ਵਿਚਿ ਤ੍ਰਾਂ ਬੋਲਹਿ ਵਿਣੁ ਜੋਤੀ ਕੋਈ ਕਿਛੁ ਕਰਿਹੁ ਦਿਖਾ ਸਿਆਣੀਐ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਹਰਿ ਇਕੋ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੀਐ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇ ਕੈ ਤੁਧੁ
 ਆਪੇ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ॥ ਮੋਹ ਠਗਤਲੀ ਪਾਇ ਕੈ ਤੁਧੁ ਆਪਹੁ ਜਗਤੁ ਖੁਆਇਆ ॥ ਤਿਸਨਾ ਅੰਦਰਿ ਅਗਨਿ ਹੈ
 ਨਹ ਤਿਪਤੈ ਭੁਖਾ ਤਿਹਾਇਆ ॥ ਸਹਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਹੈ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਆਇਆ ਜਾਇਆ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੋਹੁ
 ਨ ਤੁਟੰਈ ਸਭਿ ਥਕੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸੁਖਿ ਰਜਾ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਇਆ ॥ ਕੁਲੁ

ਉਧਾਰੇ ਆਪਣਾ ਧਨੁ ਜਣੋਦੀ ਮਾਇਆ ॥ ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥੨॥
 ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੨ ॥ ਅਖੀ ਬਾਝਹੁ ਵੇਖਣਾ ਵਿਣੁ ਕਨਾ ਸੁਨਣਾ ॥ ਪੈਰਾ ਬਾਝਹੁ ਚਲਣਾ ਵਿਣੁ ਹਥਾ ਕਰਣਾ ॥ ਜੀਭੈ
 ਬਾਝਹੁ ਬੋਲਣਾ ਫਿਤ ਜੀਵਤ ਮਰਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਿ ਕੈ ਤਤ ਖਸਮੈ ਮਿਲਣਾ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਦਿਸੈ
 ਸੁਣੀਐ ਜਾਣੀਐ ਸਾਤ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਰੂਹਲਾ ਟੁੰਡਾ ਅੰਧੁਲਾ ਕਿਤ ਗਲਿ ਲਗੈ ਧਾਇ ॥ ਭੈ ਕੇ ਚਰਣ ਕਰ
 ਭਾਵ ਕੇ ਲੋਇਣ ਸੁਰਤਿ ਕਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸਿਆਣੀਏ ਇਵ ਕਂਤ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਦਾ
 ਸਦਾ ਤ੍ਰੂਂ ਏਕੁ ਹੈ ਤੁਧੁ ਦ੍ਰੂਜਾ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇਆ ॥ ਹਤਮੈ ਗਰਬੁ ਤਪਾਇ ਕੈ ਲੋਭੁ ਅੰਤਰਿ ਜੰਤਾ ਪਾਇਆ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ
 ਤਿਤ ਰਖੁ ਤ੍ਰੂ ਸਭ ਕਰੇ ਤੇਰਾ ਕਰਾਇਆ ॥ ਇਕਨਾ ਬਖਸਹਿ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਗੁਰਮਤੀ ਤੁਧੈ ਲਾਇਆ ॥ ਇਕਿ ਖੱਡੇ
 ਕਰਹਿ ਤੇਰੀ ਚਾਕਰੀ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥ ਹੋਰੁ ਕਾਰ ਕੇਕਾਰ ਹੈ ਇਕਿ ਸਚੀ ਕਾਰੈ ਲਾਇਆ ॥ ਪੁਤੁ
 ਕਲਤੁ ਕੁਟੰਬੁ ਹੈ ਇਕਿ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹੇ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਇਆ ॥ ਓਹਿ ਅੰਦਰਹੁ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲੇ ਸਚੈ ਨਾਇ
 ਸਮਾਇਆ ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸੁਇਨੇ ਕੈ ਪਰਬਤਿ ਗੁਫਾ ਕਰੀ ਕੈ ਪਾਣੀ ਪਾਇਆਲਿ ॥ ਕੈ ਵਿਚਿ ਧਰਤੀ ਕੈ
 ਆਕਾਸੀ ਤੁਰਥਿ ਰਹਾ ਸਿਰਿ ਭਾਰਿ ॥ ਪੁਰੁ ਕਰਿ ਕਾਇਆ ਕਪਡੁ ਪਹਿਰਾ ਧੋਵਾ ਸਦਾ ਕਾਰਿ ॥ ਬਗਾ ਰਤਾ ਪੀਅਲਾ
 ਕਾਲਾ ਬੇਦਾ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ॥ ਹੋਇ ਕੁਚੀਲੁ ਰਹਾ ਮਲੁ ਧਾਰੀ ਦੁਰਮਤਿ ਮਤਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਨਾ ਹਤ ਨਾ ਮੈ ਨਾ ਹਤ
 ਹੋਵਾ ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਵਸਤ੍ਰ ਪਖਾਲਿ ਪਖਾਲੇ ਕਾਇਆ ਆਪੇ ਸੰਜਮਿ ਹੋਵੈ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਮੈਲੁ ਲਗੀ ਨਹੀ ਜਾਣੈ ਬਾਹਰਹੁ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵੈ ॥ ਅੰਧਾ ਭੂਲਿ ਪਾਇਆ ਜਮ ਜਾਲੇ ॥ ਵਸਤੁ ਪਰਾਈ ਅਪੁਨੀ
 ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਹਤਮੈ ਵਿਚਿ ਦੁਖੁ ਘਾਲੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਤਮੈ ਤੁਟੈ ਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪੇ
 ਨਾਮੋ ਆਰਾਧੇ ਨਾਮੇ ਸੁਖਿ ਸਮਾਵੈ ॥੨॥ ਪਵੜੀ ॥ ਕਾਇਆ ਛਾਸਿ ਸੰਜੋਗੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਤਿਨ ਹੀ ਕੀਆ
 ਵਿਜੋਗੁ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥ ਮੂਰਖੁ ਭੋਗੇ ਭੋਗੁ ਦੁਖ ਸਬਾਇਆ ॥ ਸੁਖਹੁ ਤਠੇ ਰੋਗ ਪਾਪ ਕਮਾਇਆ ॥ ਹਰਖਹੁ
 ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਉਪਾਇ ਖਪਾਇਆ ॥ ਮੂਰਖ ਗਣਤ ਗਣਾਇ ਝਾਗੜਾ ਪਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਹਥਿ ਨਿਬੇਡੁ ਝਾਗੜੁ
 ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਗੁ ਨ ਚਲੈ ਚਲਾਇਆ ॥੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਕੂਡੁ ਬੋਲਿ ਮੁਰਦਾਰੁ ਖਾਇ ॥

ਅਵਰੀ ਨੋ ਸਮਝਾਵਣਿ ਜਾਇ ॥ ਸੁਠਾ ਆਪਿ ਮੁਹਾਏ ਸਾਥੈ ॥ ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਆਗੂ ਜਾਪੈ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਜਿਸ ਦੈ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਹੈ ਸੋ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ ਸਚੁ ਅਲਾਏ ॥ ਓਹੁ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਆਪਿ ਚਲਦਾ ਹੋਰਨਾ ਨੋ ਹਰਿ
 ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥ ਜੇ ਅਗੈ ਤੀਰਥੁ ਹੋਇ ਤਾ ਮਲੁ ਲਹੈ ਛਪਿਡਿ ਨਾਤੈ ਸਗਵੀ ਮਲੁ ਲਾਏ ॥ ਤੀਰਥੁ ਪ੍ਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੋ
 ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਓਹੁ ਆਪਿ ਛੁਟਾ ਕੁਟੰਬ ਸਿਤ ਦੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਭ ਸੂਸਟਿ ਛਡਾਏ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜੋ ਆਪਿ ਜਪੈ ਅਵਰਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਏ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਕਿ ਕੰਦ ਮੂਲੁ ਚੁਣਿ ਖਾਹਿ
 ਵਣ ਖੰਡਿ ਵਾਸਾ ॥ ਇਕਿ ਭਗਵਾ ਵੇਸੁ ਕਰਿ ਫਿਰਹਿ ਜੋਗੀ ਸੰਨਿਆਸਾ ॥ ਅੰਦਰਿ ਤੂਸਨਾ ਬਹੁਤੁ ਛਾਦਨ ਭੋਜਨ
 ਕੀ ਆਸਾ ॥ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ਨ ਗਿਰਹੀ ਨ ਉਦਾਸਾ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਸਿਰਹੁ ਨ ਉਤਰੈ ਤੂਬਿਧਿ ਮਨਸਾ ॥
 ਗੁਰਮਤੀ ਕਾਲੁ ਨ ਆਵੈ ਨੇਡੈ ਜਾ ਹੋਵੈ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ॥ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਮਨਿ ਘਰ ਹੀ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਸੇ ਆਸਾ ਤੇ ਨਿਰਾਸਾ ॥੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਜੇ ਰਤੁ ਲਗੈ ਕਪਡੈ ਜਾਮਾ ਹੋਇ ਪਲੀਤੁ
 ॥ ਜੋ ਰਤੁ ਪੀਵਹਿ ਮਾਣਸਾ ਤਿਨ ਕਿਤ ਨਿਰਮਲੁ ਚੀਤੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਤ ਖੁਦਾਇ ਕਾ ਦਿਲਿ ਹਛੈ ਮੁਖਿ ਲੇਹੁ ॥
 ਅਵਰਿ ਦਿਵਾਜੇ ਦੁਨੀ ਕੇ ਝੂਠੇ ਅਮਲ ਕਰੇਹੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਜਾ ਹਤ ਨਾਹੀ ਤਾ ਕਿਆ ਆਖਾ ਕਿਹੁ ਨਾਹੀ ਕਿਆ
 ਹੋਵਾ ॥ ਕੀਤਾ ਕਰਣਾ ਕਹਿਆ ਕਥਨਾ ਭਰਿਆ ਭਰਿ ਭਰਿ ਧੋਵਾਂ ॥ ਆਪਿ ਨ ਬੁੜਾ ਲੋਕ ਬੁੜਾਈ ਐਸਾ ਆਗੂ
 ਹੋਵਾਂ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਧਾ ਹੋਇ ਕੈ ਦੱਸੇ ਰਹੈ ਸਭਸੁ ਮੁਹਾਏ ਸਾਥੈ ॥ ਅਗੈ ਗਇਆ ਮੁਹੇ ਮੁਹਿ ਪਾਹਿ ਸੁ ਐਸਾ ਆਗੂ
 ਜਾਪੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮਾਹਾ ਰੁਤੀ ਸਭ ਤ੍ਰਾਂ ਘੜੀ ਸੂਰਤ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਗਣਤੈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਐ ਸਚੇ ਅਲਖ
 ਅਪਾਰਾ ॥ ਪਡਿਆ ਸੂਰਖੁ ਆਖੀਐ ਜਿਸੁ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਅਛਕਾਰਾ ॥ ਨਾਤ ਪਡੀਐ ਨਾਤ ਬੁੜੀਐ ਗੁਰਮਤੀ
 ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਭਗਤੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿਆ ਦਰਿ ਸਚੈ
 ਸਚਿਆਰਾ ॥ ਜਿਸ ਦਾ ਜੀਤ ਪਰਾਣੁ ਹੈ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਇਕੁ ਤ੍ਰਾਂ ਹੋਰੁ ਜਗਤੁ
 ਵਣਯਾਰਾ ॥੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਮਿਹਰ ਮਸੀਤਿ ਸਿਦਕੁ ਸੁਸਲਾ ਹਕੁ ਹਲਾਲੁ ਕੁਰਾਣੁ ॥ ਸਰਮ
 ਸੁਨਨਿ ਸੀਲੁ ਰੋਜਾ ਹੋਹੁ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ॥ ਕਰਣੀ ਕਾਬਾ ਸਚੁ ਪੀਰੁ ਕਲਮਾ ਕਰਮ ਨਿਵਾਜ ॥ ਤਸਬੀ ਸਾ ਤਿਸੁ

ਭਾਵਸੀ ਨਾਨਕ ਰਖੈ ਲਾਜ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਹਕੁ ਪਰਾਇਆ ਨਾਨਕਾ ਤਸੁ ਸ੍ਰਾਰ ਤਸੁ ਗਾਇ ॥ ਗੁਰੂ ਪੀਰੁ
 ਹਾਮਾ ਤਾ ਭਰੇ ਜਾ ਸੁਰਦਾਰੁ ਨ ਖਾਇ ॥ ਗਲੀ ਭਿਸਤਿ ਨ ਜਾਈਐ ਛੁਟੈ ਸਚੁ ਕਮਾਇ ॥ ਮਾਰਣ ਪਾਹਿ ਹਰਾਮ
 ਮਹਿ ਹੋਇ ਹਲਾਲੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗਲੀ ਕੂੜੀਈ ਕੂੜੇ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਪੰਜਿ ਨਿਵਾਜਾ ਵਖਤ
 ਪੰਜਿ ਪੰਜਾ ਪੰਜੇ ਨਾਤ ॥ ਪਹਿਲਾ ਸਚੁ ਹਲਾਲ ਦੁਇ ਤੀਜਾ ਖੈਰ ਖੁਦਾਇ ॥ ਚਤੁਥੀ ਨੀਅਤਿ ਰਾਸਿ ਮਨੁ ਪੰਜਵੀ
 ਸਿਫਤਿ ਸਨਾਇ ॥ ਕਰਣੀ ਕਲਮਾ ਆਖਿ ਕੈ ਤਾ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਸਦਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜੇਤੇ ਕੂੜਿਆਰ ਕੂੜੈ ਕੂੜੀ ਪਾਇ
 ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਕਿ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਵਣਜਦੇ ਇਕਿ ਕਚੈ ਦੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਪਾਈਅਨਿ ਅੰਦਰਿ
 ਰਤਨ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਲਧਿਆ ਅੰਧੇ ਭਤਕਿ ਸੁਏ ਕੂੜਿਆਰਾ ॥ ਮਨਮੁਖ ਦ੍ਰਵੈ ਪਚਿ ਸੁਏ ਨਾ
 ਕੂੜਾਹਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਇਕਸੁ ਬਾੜਹੁ ਦ੍ਰਵਾ ਕੋ ਨਹੀ ਕਿਸੁ ਅਗੈ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰਾ ॥ ਇਕਿ ਨਿਰਧਨ ਸਦਾ ਭਤਕਦੇ
 ਇਕਨਾ ਭਰੇ ਤੁਜਾਰਾ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰੁ ਧਨੁ ਨਾਹੀ ਹੋਰੁ ਬਿਖਿਆ ਸਭੁ ਛਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ
 ਆਪਿ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੭॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਕਹਾਵਣੁ ਸੁਸਕਲੁ ਜਾ ਹੋਇ ਤਾ ਮੁਸਲਮਾਣੁ
 ਕਹਾਵੈ ॥ ਅਵਲਿ ਅਤਲਿ ਦੀਨੁ ਕਰਿ ਮਿਠਾ ਮਸਕਲ ਮਾਨਾ ਮਾਲੁ ਸੁਸਾਵੈ ॥ ਹੋਇ ਸੁਸਲਿਮੁ ਦੀਨ ਸੁਹਾਣੈ
 ਮਰਣ ਜੀਵਣ ਕਾ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥ ਰਥ ਕੀ ਰਜਾਇ ਮਨੇ ਸਿਰ ਉਪਰਿ ਕਰਤਾ ਮਨੇ ਆਪੁ ਗਵਾਵੈ ॥ ਤਤ ਨਾਨਕ
 ਸਰਬ ਜੀਆ ਮਿਹਰਮਤਿ ਹੋਇ ਤ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਕਹਾਵੈ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਪਰਹਰਿ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧੁ ਝੂਠੁ ਨਿੰਦਾ ਤਜਿ
 ਮਾਇਆ ਅਛਕਾਰੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥ ਤਜਿ ਕਾਮੁ ਕਾਮਿਨੀ ਮੋਹੁ ਤਜੈ ਤਾ ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਵੈ ॥ ਤਜਿ ਮਾਨੁ
 ਅਭਿਮਾਨੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਤਜਿ ਪਿਆਸ ਆਸ ਰਾਮ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਰਾਜੇ ਰਧਤਿ ਸਿਕਦਾਰ ਕੋਇ ਨ ਰਹਸੀਓ ॥ ਹਟ ਪਟਣ ਬਾਜਾਰ ਹੁਕਮੀ ਢਹਸੀਓ
 ॥ ਪਕੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰ ਮੂਰਖੁ ਜਾਣੈ ਆਪਣੇ ॥ ਦਰਬਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ਰੀਤੇ ਇਕਿ ਖਣੇ ॥ ਤਾਜੀ ਰਥ ਤੁਖਾਰ ਹਾਥੀ
 ਪਾਖਰੇ ॥ ਬਾਗ ਮਿਲਖ ਘਰ ਬਾਰ ਕਿਥੈ ਸਿ ਆਪਣੇ ॥ ਤੰਬੂ ਪਲਮਘ ਨਿਵਾਰ ਸਰਾਇਚੇ ਲਾਲਤੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚ
 ਦਾਤਾਰੁ ਸਿਨਾਖਤੁ ਕੁਦਰਤੀ ॥੮॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਨਦੀਆ ਹੋਵਹਿ ਧੇਣਵਾ ਸੁੰਮ ਹੋਵਹਿ ਦੁਧੁ ਧੀਤ ॥ ਸਗਲੀ

ਧਰਤੀ ਸਕਰ ਹੋਵੈ ਖੁਸੀ ਕਰੇ ਨਿਤ ਜੀਤ ॥ ਪਰਬਤੁ ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਹੋਵੈ ਹੀਰੇ ਲਾਲ ਜੱਡਾਤ ॥ ਭੀ ਤੂਂਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ
 ਆਖਣ ਲਹੈ ਨ ਚਾਤ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਭਾਰ ਅਠਾਰਹ ਮੇਵਾ ਹੋਵੈ ਗੁੜਾ ਹੋਇ ਸੁਆਤ ॥ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਟੁਇ ਫਿਰਦੇ
 ਰਖੀਅਹਿ ਨਿਹਚਲੁ ਹੋਵੈ ਥਾਤ ॥ ਭੀ ਤੂਂਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ ਆਖਣ ਲਹੈ ਨ ਚਾਤ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਜੇ ਦੇਹੈ ਟੁਖੁ ਲਾਈਐ
 ਪਾਪ ਗਰਹ ਟੁਇ ਰਾਹੁ ॥ ਰਤੁ ਪੀਣੇ ਰਾਜੇ ਸਿਰੈ ਉਪਰਿ ਰਖੀਅਹਿ ਏਕੈ ਜਾਪੈ ਭਾਤ ॥ ਭੀ ਤੂਂਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ
 ਆਖਣ ਲਹੈ ਨ ਚਾਤ ॥੩॥ ਮਃ ੧ ॥ ਅਗੀ ਪਾਲਾ ਕਪੜੁ ਹੋਵੈ ਖਾਣਾ ਹੋਵੈ ਵਾਤ ॥ ਸੁਰਗੈ ਦੀਆ ਮੋਹਣੀਆ
 ਇਸਤਰੀਆ ਹੋਵਨਿ ਨਾਨਕ ਸਭੋ ਜਾਤ ॥ ਭੀ ਤੂਂਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ ਆਖਣ ਲਹੈ ਨ ਚਾਤ ॥੪॥ ਪਵਡੀ ॥ ਬਟਫੈਲੀ
 ਗੈਬਾਨਾ ਖਸਮੁ ਨ ਜਾਣਈ ॥ ਸੋ ਕਹੀਐ ਦੇਵਾਨਾ ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਣਈ ॥ ਕਲਹਿ ਕੁਰੀ ਸੰਸਾਰਿ ਵਾਦੇ ਖਪੀਐ ॥
 ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਵੇਕਾਰਿ ਭਰਮੇ ਪਚੀਐ ॥ ਰਾਹ ਦੋਵੈ ਇਕੁ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ਸਿੜਸੀ ॥ ਕੁਫਰ ਗੋਅ ਕੁਫਰਾਣੈ ਪਇਆ
 ਫੜਸੀ ॥ ਸਭ ਦੁਨੀਆ ਸੁਕਾਨੁ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ॥ ਸਿੜੈ ਦਰਿ ਦੀਵਾਨਿ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ॥੬॥ ਮਃ ੧ ਸਲੋਕੁ ॥
 ਸੋ ਜੀਵਿਆ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਅਵਰੁ ਨ ਜੀਵੈ ਕੋਇ ॥ ਜੇ ਜੀਵੈ ਪਤਿ ਲਥੀ ਜਾਇ ॥ ਸਭੁ ਹਰਾਮੁ
 ਜੇਤਾ ਕਿਛੁ ਖਾਇ ॥ ਰਾਜਿ ਰੰਗੁ ਮਾਲਿ ਰੰਗੁ ॥ ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਨਚੈ ਨਨਗੁ ॥ ਨਾਨਕ ਠਗਿਆ ਮੁਠਾ ਜਾਇ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ
 ਪਤਿ ਗਇਆ ਗਵਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਕਿਆ ਖਾਧੈ ਕਿਆ ਪੈਧੈ ਹੋਇ ॥ ਜਾ ਮਨਿ ਨਾਹੀ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਕਿਆ ਮੇਵਾ
 ਕਿਆ ਘਿਤ ਗੁੜੁ ਮਿਠਾ ਕਿਆ ਮੈਦਾ ਕਿਆ ਮਾਸੁ ॥ ਕਿਆ ਕਪੜੁ ਕਿਆ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਕੀਜਹਿ ਭੋਗ ਬਿਲਾਸ ॥
 ਕਿਆ ਲਸਕਰ ਕਿਆ ਨੇਬ ਖਵਾਸੀ ਆਵੈ ਮਹਲੀ ਵਾਸੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਵਿਣੁ ਸਭੇ ਟੋਲ ਵਿਣਾਸੁ ॥੨॥
 ਪਵਡੀ ॥ ਜਾਤੀ ਦੈ ਕਿਆ ਹਥਿ ਸਚੁ ਪਰਖੀਐ ॥ ਮਹੂਰਾ ਹੋਵੈ ਹਥਿ ਮਰੀਐ ਚਖੀਐ ॥ ਸਚੇ ਕੀ ਸਿਰਕਾਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ
 ਜਾਣੀਐ ॥ ਹੁਕਮੁ ਮਨੇ ਸਿਰਦਾਰੁ ਦਰਿ ਦੀਵਾਣੀਐ ॥ ਫੁਰਮਾਨੀ ਹੈ ਕਾਰ ਖਸਮਿ ਪਠਾਇਆ ॥ ਤਬਲਬਾਜ ਬੀਚਾਰ
 ਸਬਦਿ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਇਕਿ ਹੋਏ ਅਸਵਾਰ ਇਕਨਾ ਸਾਖਤੀ ॥ ਇਕਨੀ ਬਧੇ ਭਾਰ ਇਕਨਾ ਤਾਖਤੀ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕੁ
 ਮਃ ੧ ॥ ਜਾ ਪਕਾ ਤਾ ਕਟਿਆ ਰਹੀ ਸੁ ਪਲਰਿ ਵਾਡਿ ॥ ਸਣੁ ਕੀਸਾਰਾ ਚਿਥਿਆ ਕਣੁ ਲਇਆ ਤਨੁ ਝਾਡਿ ॥ ਟੁਇ
 ਪੁੜ ਚਕੀ ਜੋਡਿ ਕੈ ਪੀਸਣ ਆਇ ਬਹਿਠੁ ॥ ਜੋ ਦਰਿ ਰਹੇ ਸੁ ਤਕਰੇ ਨਾਨਕ ਅਜਬੁ ਡਿਠੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਵੇਖੁ ਜਿ

ਮਿਠਾ ਕਟਿਆ ਕਟਿ ਕੁਟਿ ਬਧਾ ਪਾਇ ॥ ਖੁੰਢਾ ਅੰਦਰਿ ਰਖਿ ਕੈ ਦੇਨਿ ਸੁ ਮਲ ਸਜਾਇ ॥ ਰਸੁ ਕਸੁ ਟਟਰਿ ਪਾਈਐ
 ਤਪੈ ਤੈ ਵਿਲਲਾਇ ॥ ਭੀ ਸੋ ਫੋਗੁ ਸਮਾਲੀਐ ਦਿਚੈ ਅਗਿ ਜਾਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਿਠੈ ਪਤਰੀਐ ਵੇਖਹੁ ਲੋਕਾ ਆਇ
 ॥੨॥ ਪਵਡੀ ॥ ਇਕਨਾ ਮਰਣੁ ਨ ਚਿਤਿ ਆਸ ਘਣੇਰਿਆ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਂਮਹਿ ਨਿਤ ਕਿਸੈ ਨ ਕੇਰਿਆ ॥
 ਆਪਨਡੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਕਹਨਿ ਚੰਗੇਰਿਆ ॥ ਜਮਰਾਜੈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਮਨਮੁਖ ਹੇਰਿਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਲੂਣ ਹਾਰਾਮ ਕਿਆ
 ਨ ਜਾਣਿਆ ॥ ਬਧੇ ਕਰਨਿ ਸਲਾਮ ਖਸਮ ਨ ਭਾਣਿਆ ॥ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਾਹਿਬ ਭਾਵਸੀ ॥ ਕਰਸਨਿ
 ਤਖਤਿ ਸਲਾਮੁ ਲਿਖਿਆ ਪਾਵਸੀ ॥੧੧॥ ਮਃ ੧ ਸਲੋਕੁ ॥ ਮਛੀ ਤਾਰੁ ਕਿਆ ਕਰੇ ਪੱਖੀ ਕਿਆ ਆਕਾਸੁ ॥ ਪਥਰ
 ਪਾਲਾ ਕਿਆ ਕਰੇ ਖੁਸਰੇ ਕਿਆ ਘਰ ਵਾਸੁ ॥ ਕੁਤੇ ਚੰਦਨੁ ਲਾਈਐ ਭੀ ਸੋ ਕੁਤੀ ਧਾਤੁ ॥ ਬੋਲਾ ਜੇ ਸਮਝਾਈਐ
 ਪਡੀਅਹਿ ਸਿਮੂਤਿ ਪਾਠ ॥ ਅੰਧਾ ਚਾਨਣਿ ਰਖੀਐ ਦੀਵੇ ਬਲਹਿ ਪਚਾਸ ॥ ਚਤੁਣੇ ਸੁਇਨਾ ਪਾਈਐ ਚੁਣਿ ਚੁਣਿ
 ਖਾਵੈ ਘਾਸੁ ॥ ਲੋਹਾ ਮਾਰਣਿ ਪਾਈਐ ਫੈਨੈ ਨ ਹੋਇ ਕਪਾਸ ॥ ਨਾਨਕ ਮੂਰਖ ਏਹਿ ਗੁਣ ਬੋਲੇ ਸਦਾ ਵਿਣਾਸੁ ॥੧॥
 ਮਃ ੧ ॥ ਕੈਹਾ ਕੰਚਨੁ ਤੁਟੈ ਸਾਰੁ ॥ ਅਗਨੀ ਗੰਢੁ ਪਾਏ ਲੋਹਾਰੁ ॥ ਗੋਰੀ ਸੇਤੀ ਤੁਟੈ ਭਤਾਰੁ ॥ ਪੁਤੀ ਗੰਢੁ ਪਵੈ ਸੰਸਾਰਿ
 ॥ ਰਾਜਾ ਮੰਗੈ ਦਿਤੈ ਗੰਢੁ ਪਾਇ ॥ ਭੁਖਿਆ ਗੰਢੁ ਪਵੈ ਜਾ ਖਾਇ ॥ ਕਾਲਾ ਗੰਢੁ ਨਦੀਆ ਮੀਹ ਝੋਲ ॥ ਗੰਢੁ ਪਰੀਤੀ
 ਮਿਠੇ ਬੋਲ ॥ ਬੇਦਾ ਗੰਢੁ ਬੋਲੇ ਸਚੁ ਕੋਇ ॥ ਮੁਇਆ ਗੰਢੁ ਨੇਕੀ ਸਤੁ ਹੋਇ ॥ ਏਤੁ ਗੰਢਿ ਵਰਤੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਮੂਰਖ
 ਗੰਢੁ ਪਵੈ ਮੁਹਿ ਮਾਰ ॥ ਨਾਨਕੁ ਆਖੈ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਸਿਫਤੀ ਗੰਢੁ ਪਵੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਆਪੇ
 ਕੁਦਰਤਿ ਸਾਜਿ ਕੈ ਆਪੇ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਇਕਿ ਖੋਟੇ ਇਕਿ ਖਰੇ ਆਪੇ ਪਰਖਣਹਾਰੁ ॥ ਖਰੇ ਖਜਾਨੈ ਪਾਈਅਹਿ ਖੋਟੇ
 ਸਟੀਅਹਿ ਬਾਹਰ ਵਾਰਿ ॥ ਖੋਟੇ ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਸੁਟੀਅਹਿ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪਿਛੈ ਭਜਿ
 ਪਵਹਿ ਏਹਾ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਖੋਟਿਅਹੁ ਖਰੇ ਕਰੇ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥ ਸਚੀ ਦਰਗਹ
 ਮਨੀਅਨਿ ਗੁਰ ਕੈ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰਿ ॥ ਗਣਤ ਤਿਨਾ ਦੀ ਕੋ ਕਿਆ ਕਰੇ ਜੋ ਆਪਿ ਬਖਸੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥੧੨॥
 ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਹਮ ਜੇਰ ਜਿਮੀ ਟੁਨੀਆ ਪੀਰਾ ਮਸਾਇਕਾ ਰਾਇਆ ॥ ਮੇ ਖਵਦਿ ਬਾਦਿਸਾਹਾ ਅਫਜੂ ਖੁਦਾਇ
 ॥ ਏਕ ਤੂਹੀ ਏਕ ਤੁਹੀ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨ ਦੇਵ ਦਾਨਵਾ ਨਰਾ ॥ ਨ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕਾ ਧਰਾ ॥ ਅਸਤਿ ਏਕ

ਦਿਗਰਿ ਕੁਈ ॥ ਏਕ ਤੁਈ ਏਕ ਤੁਈ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨ ਦਾਦੇ ਦਿਵਾਦ ਆਦਮੀ ॥ ਨ ਸਪਤ ਜੇਰ ਜਿਮੀ ॥
 ਅਸਤਿ ਏਕ ਦਿਗਰਿ ਕੁਈ ॥ ਏਕ ਤੁਈ ਏਕ ਤੁਈ ॥੩॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨ ਸੂਰ ਸਸਿ ਮੰਡਲੋ ॥ ਨ ਸਪਤ ਟੀਪ ਨਹ
 ਜਲੋ ॥ ਅਨਨ ਪਤਣ ਥਿਰੁ ਨ ਕੁਈ ॥ ਏਕੁ ਤੁਈ ਏਕੁ ਤੁਈ ॥੪॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨ ਰਿਜਕੁ ਦਸਤ ਆ ਕਸੇ ॥ ਹਮਾ ਰਾ
 ਏਕੁ ਆਸ ਕਸੇ ॥ ਅਸਤਿ ਏਕੁ ਦਿਗਰ ਕੁਈ ॥ ਏਕ ਤੁਈ ਏਕੁ ਤੁਈ ॥੫॥ ਮਃ ੧ ॥ ਪਰਦਾਏ ਨ ਗਿਰਾਹ ਜਰ ॥
 ਦਰਖਤ ਆਬ ਆਸ ਕਰ ॥ ਦਿਵਾਦ ਸੁਈ ॥ ਏਕ ਤੁਈ ਏਕ ਤੁਈ ॥੬॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਲਿਲਾਰਿ ਲਿਖਿਆ
 ਸੋਇ ॥ ਮੇਟਿ ਨ ਸਾਕੈ ਕੋਇ ॥ ਕਲਾ ਧਰੈ ਹਿਰੈ ਸੁਈ ॥ ਏਕੁ ਤੁਈ ਏਕੁ ਤੁਈ ॥੭॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣਿਆ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥ ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਦਰਬਾਰੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣਿਆ ॥
 ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰਿ ਸਚਿ ਸਮਾਣਿਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਸਦਾ ਕ੍ਰਿਡਿਆਰ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣਿਆ ॥ ਵਿਸਟਾ ਅੰਦਰਿ
 ਵਾਸੁ ਸਾਦੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ਆਵਣ ਜਾਣਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਰਖੁ ਆਪਿ ਜਿਨਿ ਖੋਟਾ
 ਖਰਾ ਪਛਾਣਿਆ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸੀਹਾ ਬਾਜਾ ਚਰਗਾ ਕੁਹੀਆ ਏਨਾ ਖਵਾਲੇ ਘਾਹ ॥ ਘਾਹੁ ਖਾਨਿ
 ਤਿਨਾ ਮਾਸੁ ਖਵਾਲੇ ਏਹਿ ਚਲਾਏ ਰਾਹ ॥ ਨਦੀਆ ਵਿਚਿ ਟਿਬੇ ਦੇਖਾਲੇ ਥਲੀ ਕਰੇ ਅਸਗਾਹ ॥ ਕੀਡਾ ਥਾਪਿ
 ਦੇਇ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਲਸਕਰ ਕਰੇ ਸੁਆਹ ॥ ਜੇਤੇ ਜੀਅ ਜੀਵਹਿ ਲੈ ਸਾਹਾ ਜੀਵਾਲੇ ਤਾ ਕਿ ਅਸਾਹ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਤ
 ਜਿਤ ਸਚੇ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਤਿਤ ਦੇਇ ਗਿਰਾਹ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਇਕਿ ਮਾਸਹਾਰੀ ਇਕਿ ਤ੍ਰਣੁ ਖਾਹਿ ॥ ਇਕਨਾ ਛਤੀਹ
 ਅੰਮ੍ਰਤ ਪਾਹਿ ॥ ਇਕਿ ਮਿਟੀਆ ਮਹਿ ਮਿਟੀਆ ਖਾਹਿ ॥ ਇਕਿ ਪਤਣ ਸੁਮਾਰੀ ਪਤਣ ਸੁਮਾਰਿ ॥ ਇਕਿ
 ਨਿਰਂਕਾਰੀ ਨਾਮ ਆਧਾਰਿ ॥ ਜੀਵੈ ਦਾਤਾ ਮਰੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮੁਠੇ ਜਾਹਿ ਨਾਹੀ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਰਮਿ ਕਮਾਈਐ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥ ਦ੍ਰਿੜੀ ਕਾਰੈ ਲਗਿ ਜਨਮੁ
 ਗਵਾਈਐ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਵਿਸੁ ਪੈੜੈ ਖਾਈਐ ॥ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਸਾਲਾਹਿ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ॥ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸੇਵੇ ਨਾਹੀ ਸੁਖਿ ਨਿਵਾਸੁ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਈਐ ॥ ਦੁਨੀਆ ਖੋਟੀ ਰਾਸਿ ਕੂਡੂ ਕਮਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਖਰਾ
 ਸਾਲਾਹਿ ਪਤਿ ਸਿਤ ਜਾਈਐ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਵਾਵਹਿ ਗਾਵਹਿ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਜਲਿ ਨਾਵਹਿ ॥

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਤਾ ਕਰਹਿ ਬਿਭੂਤਾ ਸਿੰਡੀ ਨਾਦੁ ਵਜਾਵਹਿ ॥ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਪਡਹਿ ਕਤੇਬਾ ਮੁਲਾ ਸੇਖ
 ਕਹਾਵਹਿ ॥ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਹੋਵਹਿ ਰਾਜੇ ਰਸ ਕਸ ਬਹੁਤ ਕਮਾਵਹਿ ॥ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤੇਗ ਵਗਾਵਹਿ ਸਿਰ ਸੁੰਡੀ
 ਕਟਿ ਜਾਵਹਿ ॥ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਜਾਹਿ ਦਿਸਤਰਿ ਸੁਣਿ ਗਲਾ ਘਰਿ ਆਵਹਿ ॥ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਨਾਇ ਰਚਾਵਹਿ ਤੁਧੁ
 ਭਾਣੇ ਤ੍ਰਾਂ ਭਾਵਹਿ ॥ ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਹੋਰਿ ਸਗਲੇ ਕੂਡੁ ਕਮਾਵਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰਾਂ ਵੜਾ ਸਭਿ
 ਵਡਿਆਈਆ ਚੰਗੈ ਚੰਗਾ ਹੋਈ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰਾਂ ਸਚਾ ਤਾ ਸਮੁ ਕੋ ਸਚਾ ਕੂਡਾ ਕੋਇ ਨ ਕੋਈ ॥ ਆਖਣੁ ਵੇਖਣੁ ਬੋਲਣੁ
 ਚਲਣੁ ਜੀਵਣੁ ਮਰਣਾ ਧਾਤੁ ॥ ਹੁਕਮੁ ਸਾਜਿ ਹੁਕਮੈ ਵਿਚਿ ਰਖੈ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਆਪਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸੇਵਿ ਨਿਸਂਗੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਈਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਖੈ ਕਾਰ ਸੁ ਕਾਰ ਕਮਾਈਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਿਆਲੁ ਤ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਈਐ ॥ ਲਾਹਾ ਭਗਤਿ ਸੁ ਸਾਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਕੂਡੁ ਗੁਬਾਰੁ ਕੂਡੁ ਕਮਾਈਐ ॥ ਸਚੇ ਟੈ
 ਦਰਿ ਜਾਇ ਸਚੁ ਚਵਾਈਐ ॥ ਸਚੈ ਅੰਦਰਿ ਮਹਲਿ ਸਚਿ ਬੁਲਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਦਾ ਸਚਿਆਰੁ ਸਚਿ
 ਸਮਾਈਐ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਕਲਿ ਕਾਤੀ ਰਾਜੇ ਕਾਸਾਈ ਧਰਮੁ ਪਂਖ ਕਰਿ ਤਡ਼ਿਆ ॥ ਕੂਡੁ ਅਮਾਵਸ
 ਸਚੁ ਚੰਦ੍ਰਮਾ ਟੀਸੈ ਨਾਹੀ ਕਹ ਚਡ਼ਿਆ ॥ ਹਉ ਭਾਲਿ ਵਿਕੁਨ੍ਨੀ ਹੋਈ ॥ ਆਧੇਰੈ ਰਾਹੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਕਰਿ
 ਦੁਖੁ ਰੋਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਗਤਿ ਹੋਈ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕਲਿ ਕੀਰਤਿ ਪਰਗਟੁ ਚਾਨਣੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਈ ਤਤਰੈ ਪਾਰਿ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਟੇਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਤਨੁ ਸੋ ਲੇਵੈ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥
 ਭਗਤਾ ਤੈ ਸੈਸਾਰੀਆ ਜੋਡੁ ਕਦੇ ਨ ਆਇਆ ॥ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਅਭੁਲੁ ਹੈ ਨ ਭੁਲੈ ਕਿਸੈ ਦਾ ਭੁਲਾਇਆ ॥ ਭਗਤ
 ਆਪੇ ਮੇਲਿਅਨੁ ਜਿਨੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥ ਸੈਸਾਰੀ ਆਪਿ ਖੁਆਇਅਨੁ ਜਿਨੀ ਕੂਡੁ ਬੋਲਿ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ
 ਖਾਇਆ ॥ ਚਲਣ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ ਕਾਮੁ ਕਰੋਧੁ ਵਿਸੁ ਵਧਾਇਆ ॥ ਭਗਤ ਕਰਨਿ ਹਰਿ ਚਾਕਰੀ ਜਿਨੀ
 ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ ਹੋਇ ਕੈ ਜਿਨੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਓਨਾ ਖਸਮੈ ਕੈ ਦਰਿ
 ਸੁਖ ਤਜਲੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸਬਾਹੀ ਸਾਲਾਹ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ਇਕ ਮਨਿ ॥
 ਸੇਈ ਪੂਰੇ ਸਾਹ ਵਖਤੈ ਤਪਰਿ ਲਡਿ ਸੁਏ ॥ ਢੂਜੈ ਬਹੁਤੇ ਰਾਹ ਮਨ ਕੀਆ ਮਤੀ ਖਿੰਡੀਆ ॥ ਬਹੁਤੁ ਪਏ ਅਸਗਾਹ

ਗੋਤੇ ਖਾਹਿ ਨ ਨਿਕਲਹਿ ॥ ਤੀਜੈ ਮੁਹੀ ਗਿਰਾਹ ਭੁਖ ਤਿਖਾ ਦੁਇ ਭਤਕੀਆ ॥ ਖਾਧਾ ਹੋਇ ਸੁਆਹ ਭੀ ਖਾਣੇ ਸਿਉ
 ਦੋਸਤੀ ॥ ਚਤੁਰੈ ਆਈ ਊੰਬ ਅਖੀ ਮੀਟਿ ਪਵਾਰਿ ਗਇਆ ॥ ਭੀ ਤਠਿ ਰਚਿਓਨੁ ਵਾਦੁ ਸੈ ਵਰਿਆ ਕੀ ਪਿੜ
 ਬਧੀ ॥ ਸਭੇ ਕੇਲਾ ਕਖਤ ਸਭਿ ਜੇ ਅਠੀ ਭਤ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਕਵਸੈ ਸਚਾ ਨਾਵਣੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥
 ਸੇਈ ਪੂਰੇ ਸਾਹ ਜਿਨੀ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥ ਅਠੀ ਕੇਪਰਵਾਹ ਰਹਨਿ ਇਕਤੈ ਰੰਗ ॥ ਦਰਸਨਿ ਰੂਪਿ ਅਥਾਹ ਕਿਰਲੇ
 ਪਾਈਐਹਿ ॥ ਕਰਮਿ ਪੂਰੈ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਜਾ ਕਾ ਬੋਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰਾ ਜੇ ਕਰੇ ਘਟੈ ਨਾਹੀ ਤੋਲੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਾ
 ਤ੍ਰੁ ਤਾ ਕਿਆ ਹੋਰਿ ਮੈ ਸਚੁ ਸੁਣਾਈਐ ॥ ਮੁਠੀ ਧੰਧੈ ਚੋਰਿ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਏਨੈ ਚਿਤਿ ਕਠੋਰਿ ਸੇਵ ਗਵਾਈਐ
 ॥ ਜਿਤੁ ਘਟਿ ਸਚੁ ਨ ਪਾਇ ਸੁ ਭੰਨਿ ਘੜਾਈਐ ॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਪੂਰੈ ਵਟਿ ਤੋਲਿ ਤੁਲਾਈਐ ॥ ਕੋਇ ਨ ਆਖੈ ਘਟਿ
 ਹਤਮੈ ਜਾਈਐ ॥ ਲਈਅਨਿ ਖਰੇ ਪਰਖਿ ਦਰਿ ਬੀਨਾਈਐ ॥ ਸਤਦਾ ਇਕਤੁ ਹਟਿ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਪਾਈਐ ॥੧੭॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥ ਅਠੀ ਪਹਰੀ ਅਠ ਖੰਡ ਨਾਵਾ ਖੱਡੁ ਸਰੀਰੁ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਨਤ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਏਕੁ ਭਾਲਹਿ ਗੁਣੀ
 ਗਹੀਰੁ ॥ ਕਰਮਵਂਤੀ ਸਾਲਾਹਿਆ ਨਾਨਕ ਕਰਿ ਗੁਰੁ ਪੀਰੁ ॥ ਚਤੁਰੈ ਪਹਰਿ ਸਬਾਹ ਕੈ ਸੁਰਤਿਆ ਤੁਪਯੈ ਚਾਤ ॥
 ਤਿਨਾ ਦਰੀਆਵਾ ਸਿਉ ਦੋਸਤੀ ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਸਚਾ ਨਾਤ ॥ ਓਥੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਕੰਡੀਐ ਕਰਮੀ ਹੋਇ ਪਸਾਤ ॥ ਕੰਚਨ
 ਕਾਇਆ ਕਸੀਐ ਕਨੀ ਚੱਡੈ ਚੱਡਾਤ ॥ ਜੇ ਹੋਵੈ ਨਦਰਿ ਸਰਾਫ ਕੀ ਬਹੁਡਿ ਨ ਪਾਈ ਤਾਤ ॥ ਸਤੀ ਪਹਰੀ ਸਤੁ
 ਭਲਾ ਬਹੀਐ ਪਡਿਆ ਪਾਸਿ ॥ ਓਥੈ ਪਾਪੁ ਪੁਨੁ ਬੀਚਾਰੀਐ ਕੂੜੈ ਘਟੈ ਰਾਸਿ ॥ ਓਥੈ ਖੋਟੇ ਸਟੀਅਹਿ ਖਰੇ ਕੀਚਹਿ
 ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਬੋਲਣੁ ਫਾਦਲੁ ਨਾਨਕਾ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਖਸਮੈ ਪਾਸਿ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਪਤਣੁ ਗੁਰੁ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ
 ਧਰਤਿ ਮਹਤੁ ॥ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਦੁਇ ਦਾਈ ਦਾਇਆ ਖੇਲੈ ਸਗਲ ਜਗਤੁ ॥ ਚੰਗਿਆਈਆ ਬੁਰਿਆਈਆ
 ਵਾਚੇ ਧਰਮੁ ਹਫੂਰਿ ॥ ਕਰਮੀ ਆਪੋ ਆਪਣੀ ਕੇ ਨੇਡੈ ਕੇ ਦੂਰਿ ॥ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗਏ ਮਸਕਤਿ
 ਘਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਹੋਰ ਕੇਤੀ ਛੁਟੀ ਨਾਲਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਚਾ ਭੋਜਨੁ ਭਾਤ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਦਸਿਆ ॥ ਸਚੈ ਹੀ ਪਤੀਆਇ ਸਚਿ ਵਿਗਸਿਆ ॥ ਸਚੈ ਕੋਟਿ ਗਿਰਾਇ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਤੁਠੈ ਨਾਤ ਪ੍ਰੇਮਿ ਰਹਸਿਆ ॥ ਸਚੈ ਦੈ ਦੀਕਾਣਿ ਕੂਡਿ ਨ ਜਾਈਐ ॥ ਝੂਠੇ ਝੂਠੁ ਕਖਾਣਿ ਸੁ ਮਹਲੁ ਖੁਆਈਐ ॥

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਨੀਸਾਣਿ ਠਾਕ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਸਚੁ ਸੁਣਿ ਬੁਝਿ ਵਖਾਣਿ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਈਐ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
 ਪਹਿਰਾ ਅਗਨਿ ਹਿਵੈ ਘਰੁ ਬਾਧਾ ਭੋਜਨੁ ਸਾਰੁ ਕਰਾਈ ॥ ਸਗਲੇ ਟ੍ਰੂਖ ਪਾਣੀ ਕਰਿ ਪੀਵਾ ਧਰਤੀ ਹਾਕ ਚਲਾਈ ॥
 ਧਰਿ ਤਾਰਾਜੀ ਅੰਬਰੁ ਤੋਲੀ ਪਿਛੈ ਟਕੁ ਚੜਾਈ ॥ ਏਕਡੁ ਵਥਾ ਮਾਵਾ ਨਾਹੀ ਸਭਸੈ ਨਥਿ ਚਲਾਈ ॥ ਏਤਾ ਤਾਣੁ
 ਹੋਵੈ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਕਰੀ ਭਿ ਆਖਿ ਕਰਾਈ ॥ ਜੇਵਡੁ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇਵਡ ਦਾਤੀ ਦੇ ਦੇ ਕਰੇ ਰਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ
 ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਤਪਰਿ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਆਖਣੁ ਆਖਿ ਨ ਰਜਿਆ ਸੁਨਣਿ ਨ ਰਜੇ ਕਨਨ ॥ ਅਖੀ
 ਦੇਖਿ ਨ ਰਜੀਆ ਗੁਣ ਗਾਹਕ ਝਿਕ ਵਨਨ ॥ ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੈ ਗਲੀ ਭੁਖ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਭੁਖਾ ਤਾ ਰਜੈ ਜਾ
 ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਸਭੁ ਕੂਝੁ ਕੂਝੁ ਕਮਾਈਐ ॥ ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਕੂਡਿਆਰੁ ਬੰਨਿ
 ਚਲਾਈਐ ॥ ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਤਨੁ ਛਾਰੁ ਛਾਰੁ ਰਲਾਈਐ ॥ ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਸਭ ਭੁਖ ਜਿ ਪੈਂਝੈ ਖਾਈਐ ॥ ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਦਰਬਾਰੁ
 ਕੂਡਿ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਕੂਡੈ ਲਾਲਚਿ ਲਗਿ ਮਹਲੁ ਖੁਆਈਐ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਠਗਿਆ ਠਗਿ ਆਈਐ ਜਾਈਐ ॥ ਤਨ
 ਮਹਿ ਤੂਸਨਾ ਅਗਿ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਈਐ ॥੧੯॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਸ਼ਨੌਰੁ ਰੁਖੁ ਧਰਮੁ ਫੁਲੁ ਫਲ
 ਗਿਆਨੁ ॥ ਰਸਿ ਰਸਿਆ ਹਰਿਆ ਸਦਾ ਪਕੈ ਕਰਮਿ ਧਿਆਨਿ ॥ ਪਤਿ ਕੇ ਸਾਦ ਖਾਦਾ ਲਹੈ ਦਾਨਾ ਕੈ ਸਿਰਿ ਦਾਨੁ ॥
 ੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸੁਇਨੇ ਕਾ ਬਿਰਖੁ ਪਤ ਪਰਵਾਲਾ ਫੁਲ ਜਵੇਹਰ ਲਾਲ ॥ ਤਿਤੁ ਫਲ ਰਤਨ ਲਗਹਿ ਮੁਖਿ ਭਾਖਿਤ
 ਹਿਰਦੈ ਰਿਦੈ ਨਿਹਾਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਹੋਵੈ ਲੇਖੁ ॥ ਅਠਿਸਠਿ ਤੀਰਥ ਗੁਰ ਕੀ
 ਚਰਣੀ ਪ੍ਰੌਜੈ ਸਦਾ ਵਿਸੇਖੁ ॥ ਛਾਸੁ ਹੇਤੁ ਲੋਭੁ ਕੋਪੁ ਚਾਰੇ ਨਦੀਆ ਅਗਿ ॥ ਪਵਹਿ ਦੜਾਹਿ ਨਾਨਕਾ ਤਰੀਐ ਕਰਮੀ
 ਲਗਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੀਵਦਿਆ ਮਰੁ ਮਾਰਿ ਨ ਪਛੋਤਾਈਐ ॥ ਝੂਠਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਕਿਨਿ ਸਮਝਾਈਐ ॥ ਸਚਿ ਨ
 ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ਧੰਧੈ ਧਾਈਐ ॥ ਕਾਲੁ ਬੁਰਾ ਖੈ ਕਾਲੁ ਸਿਰਿ ਦੁਨੀਆਈਐ ॥ ਹੁਕਮੀ ਸਿਰਿ ਜੰਦਾਰੁ ਮਾਰੇ ਦਾਈਐ ॥
 ਆਪੇ ਦੇਇ ਪਿਆਰੁ ਮਨਿ ਵਸਾਈਐ ॥ ਸੁਹਤੁ ਨ ਚਸਾ ਵਿਲਮਮੁ ਭਰੀਐ ਪਾਈਐ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁਝਿ ਸਚਿ
 ਸਮਾਈਐ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਤੁਮੀ ਤੁਮਾ ਵਿਸੁ ਅਕੁ ਧਤੂਰਾ ਨਿਮੁ ਫਲੁ ॥ ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਵਸਹਿ ਤਿਸੁ ਜਿਸੁ
 ਤ੍ਰਂ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਹੀ ॥ ਨਾਨਕ ਕਹੀਐ ਕਿਸੁ ਛਾਫਨਿ ਕਰਮਾ ਬਾਹਰੇ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਮਤਿ ਪੱਖੇਰੁ ਕਿਰਤੁ ਸਾਥਿ

ਕਬ ਤਤਮ ਕਬ ਨੀਚ ॥ ਕਬ ਚੰਦਨਿ ਕਬ ਅਕਿ ਡਾਲਿ ਕਬ ਤਚੀ ਪਰੀਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਈਐ ਸਾਹਿਬ
 ਲਗੀ ਰੀਤਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕੇਤੇ ਕਹਹਿ ਵਖਾਣ ਕਹਿ ਕਹਿ ਜਾਵਣਾ ॥ ਵੇਦ ਕਹਹਿ ਵਖਿਆਣ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵਣਾ
 ॥ ਪਡਿਐ ਨਾਹੀ ਭੇਟੁ ਬੁਝਿਐ ਪਾਵਣਾ ॥ ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਕੈ ਭੇਖਿ ਕਿਸੈ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਾ ॥ ਸਚਾ ਪੁਰਖੁ ਅਲਖੁ
 ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣਾ ॥ ਮਨੇ ਨਾਉ ਬਿਸੰਖ ਦੁਰਗਹ ਪਾਵਣਾ ॥ ਖਾਲਕ ਕਤ ਆਦੇਸੁ ਢਾਢੀ ਗਾਵਣਾ ॥ ਨਾਨਕ
 ਜੁਗ ਜੁਗ ਏਕੁ ਮਨਿ ਵਸਾਵਣਾ ॥੨੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਮੰਤੀ ਹੋਇ ਅਠੂਹਿਆ ਨਾਗੀ ਲਗੈ ਜਾਇ ॥ ਆਪਣ
 ਹਥੀ ਆਪਣੈ ਦੇ ਕੂਚਾ ਆਪੇ ਲਾਇ ॥ ਹੁਕਮੁ ਪਡਿਆ ਧੁਰਿ ਖਸਮ ਕਾ ਅਤੀ ਹੂ ਧਕਾ ਖਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖ ਸਿਤ
 ਮਨਮੁਖੁ ਅੜੈ ਝੁਬੈ ਹਕਿ ਨਿਆਇ ॥ ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ ਆਪੇ ਖਸਮੁ ਕੇਖੈ ਕਰਿ ਵਿਤਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਏਕੈ ਜਾਣੀਐ
 ਸਭ ਕਿਛੁ ਤਿਸਹਿ ਰਜਾਇ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਨਾਨਕ ਪਰਖੇ ਆਪ ਕਤ ਤਾ ਪਾਰਖੁ ਜਾਣੁ ॥ ਰੋਗ ਦਾਰੁ ਦੋਵੈ
 ਬੁੜੈ ਤਾ ਵੈਦੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਵਾਟ ਨ ਕਰੈ ਮਾਮਲਾ ਜਾਣੈ ਮਿਹਮਾਣੁ ॥ ਮੂਲੁ ਜਾਣਿ ਗਲਾ ਕਰੇ ਹਾਣਿ ਲਾਏ ਹਾਣੁ ॥
 ਲਕਿ ਨ ਚਲੈ ਸਚਿ ਰਹੈ ਸੋ ਵਿਸਟੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਸਰੁ ਸੰਧੇ ਆਗਾਸ ਕਤ ਕਿਤ ਪਹੁੜੈ ਬਾਣੁ ॥ ਅਗੈ ਓਹੁ
 ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਵਾਹੇਦੜੁ ਜਾਣੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਰੀ ਪੁਰਖ ਪਿਆਰੁ ਪ੍ਰੇਮਿ ਸੀਗਾਰੀਆ ॥ ਕਰਨਿ ਭਗਤਿ ਦਿਨੁ
 ਰਾਤਿ ਨ ਰਹਨੀ ਵਾਰੀਆ ॥ ਮਹਲਾ ਮੰਝਿ ਨਿਵਾਸੁ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀਆ ॥ ਸਚੁ ਕਹਨਿ ਅਰਦਾਸਿ ਸੇ ਕੇਚਾਰੀਆ
 ॥ ਸੋਹਨਿ ਖਸਮੈ ਪਾਸਿ ਹੁਕਮਿ ਸਿਧਾਰੀਆ ॥ ਸਖੀ ਕਹਨਿ ਅਰਦਾਸਿ ਮਨਹੁ ਪਿਆਰੀਆ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧਿਗੁ
 ਵਾਸੁ ਫਿਟੁ ਸੁ ਜੀਵਿਆ ॥ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀਆਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵਿਆ ॥੨੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਮਾਰੁ ਸੀਹਿ ਨ
 ਤ੃ਪਤਿਆ ਅਗੀ ਲਹੈ ਨ ਭੁਖ ॥ ਰਾਜਾ ਰਾਜਿ ਨ ਤ੃ਪਤਿਆ ਸਾਇਰ ਭਰੇ ਕਿਸੁਕ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਕੀ
 ਕੇਤੀ ਪੁਛਾ ਪੁਛ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਨਿਹਫਲਾਂ ਤਸਿ ਜਨਮਸਿ ਜਾਵਤੁ ਬ੍ਰਹਮ ਨ ਬਿੰਦਤੇ ॥ ਸਾਗਰਾਂ ਸੰਸਾਰਸਿ
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤਰਹਿ ਕੇ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤੇ ਵਸਿ ਹੈ ਜਿਨਿ ਕਲ
 ਰਖੀ ਧਾਰਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਖਸਮੈ ਕੈ ਦਰਬਾਰਿ ਢਾਢੀ ਵਸਿਆ ॥ ਸਚਾ ਖਸਮੁ ਕਲਾਣਿ ਕਮਲੁ ਵਿਗਸਿਆ ॥
 ਖਸਮਹੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇ ਮਨਹੁ ਰਹਸਿਆ ॥ ਦੁਸਮਨ ਕਢੇ ਮਾਰਿ ਸਜਣ ਸਰਸਿਆ ॥ ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸਚਾ

ਮਾਰਗੁ ਦਸਿਆ ॥ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ਕਾਲੁ ਵਿਧਤਸਿਆ ॥ ਢਾਢੀ ਕਥੇ ਅਕਥੁ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਣ ਗਹਿ ਰਾਸਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰਿਆ ॥੨੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਖਤਿਅਹੁ ਜੰਮੇ ਖਤੇ ਕਰਨਿ ਤ ਖਤਿਆ
 ਵਿਚਿ ਪਾਹਿ ॥ ਧੋਤੇ ਮੂਲਿ ਨ ਉਤਰਹਿ ਜੇ ਸਤ ਧੋਵਣ ਪਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਬਖਸੇ ਬਖਸੀਅਹਿ ਨਾਹਿ ਤ ਪਾਹੀ ਪਾਹਿ
 ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਬੋਲਣੁ ਝਾਖਣਾ ਦੁਖ ਛਡਿ ਮੰਗੀਅਹਿ ਸੁਖ ॥ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਦੁਇ ਦਰਿ ਕਪਡੇ ਪਹਿਰਹਿ
 ਜਾਇ ਮਨੁਖ ॥ ਜਿਥੈ ਬੋਲਣਿ ਹਾਰੀਐ ਤਿਥੈ ਚੰਗੀ ਚੁਪ ॥੨॥ ਪਤੱਡੀ ॥ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਦੇਖਿ ਅੰਦਰੁ ਭਾਲਿਆ ॥
 ਸਚੈ ਪੁਰਖਿ ਅਲਖਿ ਸਿਰਜਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥ ਤੁੜਾਡਿ ਭੁਲੇ ਰਾਹ ਗੁਰਿ ਵੇਖਾਲਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਚੇ ਵਾਹੁ ਸਚੁ
 ਸਮਾਲਿਆ ॥ ਪਾਇਆ ਰਤਨੁ ਘਰਾਹੁ ਦੀਵਾ ਬਾਲਿਆ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹਿ ਸੁਖੀਏ ਸਚ ਵਾਲਿਆ ॥
 ਨਿਡਰਿਆ ਡੁ ਲਗਿ ਗਰਬਿ ਸਿ ਗਾਲਿਆ ॥ ਨਾਵਹੁ ਭੁਲਾ ਜਗੁ ਫਿਰੈ ਕੇਤਾਲਿਆ ॥੨੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
 ਭੈ ਵਿਚਿ ਜ਼ਮੈ ਭੈ ਮਰੈ ਭੀ ਭਤ ਮਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਭੈ ਵਿਚਿ ਜੇ ਮਰੈ ਸਹਿਲਾ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਭੈ ਵਿਣੁ ਜੀਵੈ ਬਹੁਤੁ ਬਹੁਤੁ ਖੁਸੀਆ ਖੁਸੀ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਭੈ ਵਿਣੁ ਜੇ ਮਰੈ ਮੁਹਿ ਕਾਲੈ ਤਠਿ ਜਾਇ ॥੨॥
 ਪਤੱਡੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਿਇਆਲੁ ਤ ਸਰਥਾ ਪੂਰੀਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਿਇਆਲੁ ਨ ਕਬਹੂੰ ਝੂਰੀਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਹੋਇ ਦਿਇਆਲੁ ਤਾ ਦੁਖੁ ਨ ਜਾਣੀਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਿਇਆਲੁ ਤਾ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ
 ਦਿਇਆਲੁ ਤਾ ਜਮ ਕਾ ਡੁ ਕੇਹਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਿਇਆਲੁ ਤਾ ਸਦ ਹੀ ਸੁਖੁ ਦੇਹਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ
 ਦਿਇਆਲੁ ਤਾ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਿਇਆਲੁ ਤ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ॥੨੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
 ਸਿਰੁ ਖੋਹਾਇ ਪੀਅਹਿ ਮਲਵਾਣੀ ਜੂਠਾ ਮੰਗੁ ਮੰਗੁ ਖਾਹੀ ॥ ਫੋਲਿ ਫਟੀਹਤਿ ਮੁਹਿ ਲੈਨਿ ਭੜਾਸਾ ਪਾਣੀ ਦੇਖਿ
 ਸਗਾਹੀ ॥ ਭੇਡਾ ਵਾਗੀ ਸਿਰੁ ਖੋਹਾਇਨਿ ਭਰੀਅਨਿ ਹਥ ਸੁਆਹੀ ॥ ਮਾਊ ਪੀਊ ਕਿਰਤੁ ਗਵਾਇਨਿ ਟਕਰ ਰੋਵਨਿ
 ਧਾਹੀ ॥ ਓਨਾ ਪਿੰਡੁ ਨ ਪਤਲਿ ਕਿਰਿਆ ਨ ਦੀਵਾ ਮੁਏ ਕਿਥਾਊ ਪਾਹੀ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਦੇਨਿ ਨ ਢੌਰੈ
 ਬ੍ਰਹਮਣ ਅਨੁ ਨ ਖਾਹੀ ॥ ਸਦਾ ਕੁਚੀਲ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਮਥੈ ਟਿਕੇ ਨਾਹੀ ॥ ਝੁੰਡੀ ਪਾਇ ਬਹਨਿ ਨਿਤ
 ਮਰਣੈ ਦੱਡਿ ਦੀਬਾਣਿ ਨ ਜਾਹੀ ॥ ਲਕੀ ਕਾਸੇ ਹਥੀ ਫੁੰਮਣ ਅਗੇ ਪਿਛੀ ਜਾਹੀ ॥ ਨਾ ਓਇ ਜੋਗੀ ਨਾ ਓਇ ਜੰਗਮ

ना ओइ काजी मुंला ॥ दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥ जीआ मारि जीवाले सोई अवरु न
 कोई रखै ॥ दानहु तै इसनानहु वंजे भसु पई सिरि खुथै ॥ पाणी विचहु रतन उपन्ने मेरु कीआ
 माधाणी ॥ अठसठि तीरथ देवी थापे पुरबी लगै बाणी ॥ नाडि निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी
 ॥ मुडिआ जीवदिआ गति होवै जाँ सिरि पाईअै पाणी ॥ नानक सिरखुथे सैतानी एना गल न भाणी ॥
 वुठै होडिअै होडि बिलावलु जीआ जुगति समाणी ॥ वुठै अन्नु कमादु कपाहा सभसै पड़दा होवै ॥ वुठै
 घाहु चरहि निति सुरही सा धन दही विलोवै ॥ तितु घिडि होम जग सद पूजा पडिअै कारजु सोहै ॥ गुरु
 समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥ नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई
 ॥ १ ॥ मः २ ॥ अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥ चंद अनेरा कि करे पउण पाणी किआ जाति ॥
 धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु किछु होडि ॥ नानक ता पति जाणीअै जा पति रखै सोडि ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणिआ ॥ तूं सचा दीबाणु होरि आवण जाणिआ ॥ सचु जि मंगहि दानु
 सि तुधै जेहिआ ॥ सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहिआ ॥ मनिअै गिआनु धिआनु तुधै ते पाडिआ ॥ करमि
 पवै नीसानु न चलै चलाडिआ ॥ तूं सचा दातारु नित देवहि चडहि सवाडिआ ॥ नानकु मंगै दानु जो
 तुधु भाडिआ ॥ २६ ॥ सलोकु मः २ ॥ दीखिआ आखि बुझाडिआ सिफती सचि समेत ॥ तिन कउ किआ
 उपदेसीअै जिन गुरु नानक देत ॥ १ ॥ मः १ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ जिसु आपि सुझाए तिसु सभु
 किछु सूझै ॥ कहि कहि कथना माडिआ लूझै ॥ हुकमी सगल करे आकार ॥ आपे जाणै सरब वीचार ॥
 अखर नानक अखिओ आपि ॥ लहै भराति होवै जिसु दाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी वेकारु कारै
 लाडिआ ॥ राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाडिआ ॥ ढाढी सचै महलि खसमि बुलाडिआ ॥ सची सिफति
 सालाह कपड़ा पाडिआ ॥ सचा अंमृत नामु भोजनु आडिआ ॥ गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाडिआ
 ॥ ढाढी करे पसाउ सबदु वजाडिआ ॥ नानक सचु सालाहि पूरा पाडिआ ॥ २७ ॥ सुधु

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ੧ ਚਤਪਦੇ ਟੁਪਦੇ

੧ਓਈ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਭਉ ਮੁਚੁ ਭਾਰਾ ਵਡਾ ਤੋਲੁ ॥ ਮਨ ਮਤਿ ਹਉਲੀ ਬੋਲੇ ਬੋਲੁ ॥ ਸਿਰਿ ਧਰਿ ਚਲੀਐ ਸਹੀਐ ਭਾਰੁ ॥ ਨਦਰੀ ਕਰਮੀ
ਗੁਰ ਬੀਚਾਰੁ ॥੧॥ ਭੈ ਬਿਨੁ ਕੋਇ ਨ ਲਮਘਸਿ ਪਾਰਿ ॥ ਭੈ ਭਉ ਰਾਖਿਆ ਭਾਇ ਸਵਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭੈ
ਤਨਿ ਅਗਨਿ ਭਖੈ ਭੈ ਨਾਲਿ ॥ ਭੈ ਭਉ ਘੜੀਐ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਿ ॥ ਭੈ ਬਿਨੁ ਘਾੜਤ ਕਚੁ ਨਿਕਚ ॥ ਅੰਧਾ ਸਚਾ
ਅੰਧੀ ਸਟ ॥੨॥ ਬੁਧੀ ਬਾਜੀ ਤੁਪਯੈ ਚਾਤ ॥ ਸਹਸ ਸਿਆਣਪ ਪਕੈ ਨ ਤਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਬੋਲਣੁ ਵਾਤ
॥ ਅੰਧਾ ਅਖਰੁ ਵਾਤ ਦੁਆਤ ॥੩॥੧॥ ਗਉਡੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਡਰਿ ਘਰੁ ਘਰਿ ਡਰੁ ਡਰੁ ਜਾਇ ॥ ਸੋ
ਡਰੁ ਕੇਹਾ ਜਿਤੁ ਡਰਿ ਡਰੁ ਪਾਇ ॥ ਤੁਥੁ ਬਿਨੁ ਢ੍ਵੰਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਤੈ ਸਭ ਤੇਰੀ ਰਾਇ ॥੧॥
ਡਰੀਐ ਜੇ ਡਰੁ ਹੋਵੈ ਹੋਰੁ ॥ ਡਰਿ ਡਰਿ ਡਰਣਾ ਮਨ ਕਾ ਸੋਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾ ਜੀਤ ਮਰੈ ਨ ਢੂਬੈ ਤਰੈ ॥
ਜਿਨਿ ਕਿਛੁ ਕੀਆ ਸੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ॥ ਹੁਕਮੇ ਆਵੈ ਹੁਕਮੇ ਜਾਇ ॥ ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਛਾਸੁ ਹੇਤੁ
ਆਸਾ ਅਸਮਾਨੁ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਭੂਖ ਬਹੁਤੁ ਨੈ ਸਾਨੁ ॥ ਭਉ ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਆਧਾਰੁ ॥ ਵਿਣੁ ਖਾਧੇ ਮਰਿ ਹੋਹਿ
ਗਵਾਰ ॥੩॥ ਜਿਸ ਕਾ ਕੋਇ ਕੋਈ ਕੋਇ ਕੋਇ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰਾ ਤ੍ਰੂ ਸਭਨਾ ਕਾ ਸੋਇ ॥ ਜਾ ਕੇ ਜੀਅ ਜੰਤ
ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਆਖਣੁ ਬਿਖਮੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥੪॥੨॥ ਗਉਡੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਾਤਾ ਮਤਿ ਪਿਤਾ
ਸੰਤੋਖੁ ॥ ਸਤੁ ਭਾਈ ਕਰਿ ਏਹੁ ਵਿਸੇਖੁ ॥੧॥ ਕਹਣਾ ਹੈ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਤਤ ਕੁਦਰਤਿ ਕੀਮਤਿ

ਨਹੀ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਰਮ ਸੁਰਤਿ ਦੁਇ ਸਸੁਰ ਭਏ ॥ ਕਰਣੀ ਕਾਮਣਿ ਕਰਿ ਮਨ ਲਏ ॥੨॥ ਸਾਹਾ
 ਸੰਜੋਗੁ ਵੀਆਹੁ ਵਿਜੋਗੁ ॥ ਸਚੁ ਸਂਤਤਿ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋਗੁ ॥੩॥੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਪਤਣੈ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ
 ਕਾ ਮੇਲੁ ॥ ਚੰਚਲ ਚਪਲ ਬੁਧਿ ਕਾ ਖੇਲੁ ॥ ਨਤ ਦਰਵਾਜੇ ਦਸਵਾ ਦੁਆਰੁ ॥ ਬੁੜ੍ਹੁ ਰੇ ਗਿਆਨੀ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
 ੧॥ ਕਥਤਾ ਬਕਤਾ ਸੁਨਤਾ ਸੋਈ ॥ ਆਪੁ ਬੀਚਾਰੇ ਸੁ ਗਿਆਨੀ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੇਹੀ ਮਾਟੀ ਬੋਲੈ ਪਤਣੁ
 ॥ ਬੁੜ੍ਹੁ ਰੇ ਗਿਆਨੀ ਮੂਆ ਹੈ ਕਤਣੁ ॥ ਮੂੰਈ ਸੁਰਤਿ ਬਾਦੁ ਅਛਕਾਰੁ ॥ ਓਹੁ ਨ ਮੂਆ ਜੋ ਦੇਖਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਜੈ
 ਕਾਰਣਿ ਤਟਿ ਤੀਰਥ ਜਾਹੀ ॥ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਘਟ ਹੀ ਮਾਹੀ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਪੰਡਿਤੁ ਬਾਦੁ ਕਖਾਣੈ ॥ ਭੀਤਰਿ
 ਹੋਦੀ ਕਸਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ॥੩॥ ਹਤ ਨ ਮੂਆ ਮੇਰੀ ਸੁਈ ਬਲਾਇ ॥ ਓਹੁ ਨ ਮੂਆ ਜੋ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਮਰਤਾ ਜਾਤਾ ਨਦਰਿ ਨ ਆਇਆ ॥੪॥੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧
 ਦੁਖਣੀ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਕੂੜੈ ਮਾਨੈ ਨਾਤ ॥ ਤਾ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਠਤਰ ਨ ਠਾਤ ॥ ਤੂ
 ਸਮਝਾਵਹਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਤ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਚਲੈ ਮੈ ਨਾਲਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਾਧੀ ਸਭ ਕਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਖੇਤੀ ਵਣਜੁ ਨਾਵੈ ਕੀ ਓਟ ॥ ਪਾਪੁ ਪੁਨੁ ਬੀਜ ਕੀ ਪੋਟ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜੀਅ ਮਹਿ ਚੋਟ ॥ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਚਲੇ
 ਮਨਿ ਖੋਟ ॥੨॥ ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਚੀ ਸੀਖ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਚੁ ਪਰੀਖ ॥ ਜਲ ਪੁਰਾਇਨਿ ਰਸ
 ਕਮਲ ਪਰੀਖ ॥ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੀਠੇ ਰਸ ਈਖ ॥੩॥ ਹੁਕਮਿ ਸੰਜੋਗੀ ਗਡਿ ਦਸ ਦੁਆਰ ॥ ਪੰਚ ਕਸਹਿ
 ਮਿਲਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥ ਆਪਿ ਤੁਲੈ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰ ॥੪॥੫॥
 ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਾਤੋ ਜਾਇ ਕਹਾ ਤੇ ਆਵੈ ॥ ਕਹ ਉਪਜੈ ਕਹ ਜਾਇ ਸਮਾਵੈ ॥ ਕਿਤ ਬਾਧਿਓ
 ਕਿਤ ਮੁਕਤੀ ਪਾਵੈ ॥ ਕਿਤ ਅਬਿਨਾਸੀ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ॥ ਨਰਹਰ
 ਨਾਮੁ ਨਰਹਰ ਨਿਹਕਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਹਜੇ ਆਵੈ ਸਹਜੇ ਜਾਇ ॥ ਮਨ ਤੇ ਉਪਜੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤੀ ਬੰਧੁ ਨ ਪਾਇ ॥ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ਛੁਟੈ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੨॥ ਤਰਵਰ ਪੰਖੀ ਕਹੁ ਨਿਸਿ
 ਬਾਸੁ ॥ ਸੁਖ ਦੁਖੀਆ ਮਨਿ ਮੋਹ ਵਿਣਾਸੁ ॥ ਸਾਝਾ ਬਿਹਾਗ ਤਕਹਿ ਆਗਾਸੁ ॥ ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵਹਿ ਕਰਮਿ

लिखिआसु ॥३॥ नाम संजोगी गोङ्गिलि थाटु ॥ काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥ बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥
 गुर मिलि खोले बजर कपाट ॥४॥ साधु मिलै पूरब संजोग ॥ सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥ मनु तनु दे
 लै सहजि सुभाइ ॥ नानक तिन कै लागउ पाइ ॥५॥६॥ गउड़ी महला ੧ ॥ कामु क्रोधु माइआ महि
 चीतु ॥ झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥ पूंजी पाप लोभ की कीतु ॥ तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥७॥ वाहु
 वाहु साचे मै तेरी टेक ॥ हउ पापी तूं निरमलु एक ॥८॥ रहाउ ॥ अगनि पाणी बोलै भड़वाउ ॥ जिहवा
 छिंद्री एकु सुआउ ॥ दिसटि विकारी नाही भउ भाउ ॥ आपु मारे ता पाए नाउ ॥९॥ सबदि मरै फिरि
 मरणु न होइ ॥ बिनु मूए किउ पूरा होइ ॥ परपंचि विआपि रहिआ मनु दोइ ॥ थिरु नाराइणु करे
 सु होइ ॥३॥ बोहिथि चड़उ जा आवै वारु ॥ ठाके बोहिथ दरगह मार ॥ सचु सालाही धन्नु गुरदुआरु ॥
 नानक दरि घरि एकंकारु ॥४॥७॥ गउड़ी महला ੧ ॥ उलटिओ कमलु ब्रहमु बीचारि ॥ अंमृत धार
 गगनि दस दुआरि ॥ तृभवणु बेधिआ आपि मुरारि ॥१॥ रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ मनि मानिऔ
 अंमृत रसु पीजै ॥२॥ रहाउ ॥ जनमु जीति मरणि मनु मानिआ ॥ आपि मूआ मनु मन ते जानिआ
 ॥ नजरि भई घरु घर ते जानिआ ॥२॥ जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥ अधिक बिथारु करउ किसु
 कामि ॥ नर नाराइण अंतरजामि ॥३॥ आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥ किसु जाचउ नाही को थाउ
 ॥ नानक गुरमति सहजि समाउ ॥४॥८॥ गउड़ी महला ੧ ॥ सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाए ॥
 मरण रहण रसु अंतरि भाए ॥ गरबु निवारि गगन पुरु पाए ॥१॥ मरणु लिखाइ आए नही रहणा
 ॥ हरि जपि जापि रहणु हरि सरणा ॥२॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ कमलु बिगासि
 मनु हरि प्रभ लागै ॥ जीवतु मरै महा रसु आगै ॥२॥ सतिगुरि मिलिऔ सच संजमि सूचा ॥
 गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥३॥ गुरि मिलिऔ मिलि अंकि
 समाइआ ॥ करि किरपा घरु महलु दिखाइआ ॥ नानक हउमै मारि मिलाइआ ॥४॥६॥

ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਿਰਤੁ ਪਿਇਆ ਨਹ ਮੈਟੈ ਕੋਇ ॥ ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਕਿਆ ਆਗੈ ਹੋਇ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ
 ਸੋਈ ਹੂਆ ॥ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣੈ ਵਾਲਾ ਟ੍ਰੂਆ ॥੧॥ ਨਾ ਜਾਣਾ ਕਰਮ ਕੇਵਡ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ॥ ਕਰਮੁ ਧਰਮੁ ਤੇਰੇ
 ਨਾਮ ਕੀ ਜਾਤਿ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤ੍ਰੂ ਏਵਡੁ ਦਾਤਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥ ਤੋਟਿ ਨਾਹੀ ਤੁਥੁ ਭਗਤਿ ਖੰਡਾਰ ॥ ਕੀਆ ਗਰਖੁ
 ਨ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੈਰੈ ਪਾਸਿ ॥੨॥ ਤ੍ਰੂ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਹਿ ਬਖ਼ਸਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੀ ਤਿਤ
 ਨਾਮੁ ਜਪਾਇ ॥ ਤ੍ਰੂ ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਸਾਚਾ ਸਿਰਿ ਮੈਰੈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਦੇਇ ਭਰੋਸੈ ਤੈਰੈ ॥੩॥ ਤਨ ਮਹਿ ਮੈਲੁ ਨਾਹੀ
 ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸਚੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥ ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ਨਾਮ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਰਹਣਾ ਭਗਤਿ
 ਸਰਣਾਈ ॥੪॥੧੦॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਿਨਿ ਅਕਥੁ ਕਹਾਇਆ ਅਪਿਓ ਪੀਆਇਆ ॥ ਅਨ ਭੈ ਵਿਸਰੇ
 ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧॥ ਕਿਆ ਡਰੀਐ ਡਰੁ ਡਰਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜਿਸੁ ਨਰ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ॥ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਮਿਲੇ ਸਾਬਾਸਿ ॥੨॥ ਜਾਹਿ ਸਵਾਰੈ ਸਾਝਾ ਬਿਆਲ ॥ ਇਤ
 ਤ ਮਨਮੁਖ ਬਾਧੇ ਕਾਲ ॥੩॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸੇ ਪ੍ਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਮਿਲੇ ਭਰਮ ਟ੍ਰੂਰੇ ॥੪॥੧੧॥ ਗਤੜੀ
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਕੈ ਗੁਣ ਹਿਨਕਾਰੁ ॥ ਚਾਰੇ ਬੇਦ ਕਥਹਿ ਆਕਾਰੁ ॥ ਤੀਨਿ ਅਵਸਥਾ ਕਹਹਿ ਵਖਿਆਨੁ
 ॥ ਤੁਰੀਆਵਸਥਾ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹਰਿ ਜਾਨੁ ॥੧॥ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤਰਣਾ ॥ ਬਾਹੁਡਿ ਜਨਮੁ ਨ ਹੋਇ ਹੈ
 ਮਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਸਾਸਤ ਪੰਡਿਤ ਮੁਖਿ ਸੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ
 ਅਰਥੁ ਬੀਚਾਰੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਸੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਸੋਈ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਈ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਸੁਕਤਿ ਆਨਨਦੁ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਏ ਪਰਮਾਨਨਦੁ ॥੩॥
 ਜਿਨਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਿ ਦੇਖਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਆਸਾ ਮਾਹਿ ਨਿਰਾਸੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥ ਦੀਨਾ ਨਾਥੁ ਸਰਕ ਸੁਖਦਾਤਾ
 ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥੪॥੧੨॥ ਗਤੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਕਾਇਆ ਰਹੈ ਸੁਖਾਲੀ
 ਬਾਜੀ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਸੁਚੁ ਕੂਡੁ ਕਮਾਵਹਿ ਬਹੁਤੁ ਤਠਾਵਹਿ ਭਾਰੇ ॥ ਤ੍ਰੂ ਕਾਇਆ ਮੈ ਰੁਲਦੀ
 ਦੇਖੀ ਜਿਤ ਧਰ ਉਪਰਿ ਛਾਰੇ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਸਿਖ ਹਮਾਰੀ ॥ ਸੁਕੂਤੁ ਕੀਤਾ ਰਹਸੀ ਮੇਰੇ ਜੀਅਡੇ

ਬਹੁਡਿ ਨ ਆਵੈ ਵਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਉ ਤੁਥੁ ਆਖਾ ਮੇਰੀ ਕਾਇਆ ਤ੍ਰਾਂ ਸੁਣਿ ਸਿਖ ਹਮਾਰੀ ॥ ਨਿੰਦਾ ਚਿੰਦਾ
 ਕਰਹਿ ਪਰਾਈ ਝੂਠੀ ਲਾਇਤਬਾਰੀ ॥ ਵੇਲਿ ਪਰਾਈ ਜੋਹਹਿ ਜੀਅਡੇ ਕਰਹਿ ਚੋਰੀ ਬੁਰਿਆਰੀ ॥ ਛਾਸੁ ਚਲਿਆ ਤ੍ਰਾਂ
 ਪਿਛੈ ਰਹੀਏਹਿ ਛੁਟਡਿ ਹੋਈਅਹਿ ਨਾਰੀ ॥੨॥ ਤ੍ਰਾਂ ਕਾਇਆ ਰਹੀਅਹਿ ਸੁਪਨਤਰਿ ਤੁਥੁ ਕਿਆ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ
 ॥ ਕਰਿ ਚੋਰੀ ਮੈ ਜਾ ਕਿਛੁ ਲੀਆ ਤਾ ਮਨਿ ਭਲਾ ਭਾਇਆ ॥ ਹਲਤਿ ਨ ਸੋਭਾ ਪਲਤਿ ਨ ਢੌਈ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ
 ਗਵਾਇਆ ॥੩॥ ਹਉ ਖਰੀ ਦੁਹੇਲੀ ਹੋਈ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਬਾਤ ਨ ਪੁਛੈ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਾਜੀ ਤੁਰਕੀ
 ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਕਪੜਾ ਕੇਰੇ ਭਾਰਾ ॥ ਕਿਸ ਹੀ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲੇ ਨਾਨਕ ਝੱਡਿ ਝੱਡਿ ਪਏ ਗਵਾਰਾ ॥ ਕੂਜਾ ਮੇਵਾ ਮੈ ਸਭ
 ਕਿਛੁ ਚਾਖਿਆ ਇਕੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥੪॥ ਦੇ ਦੇ ਨੀਵ ਦਿਵਾਲ ਤਸਾਰੀ ਭਸਮਦਰ ਕੀ ਫੇਰੀ ॥ ਸੰਚੇ
 ਸੰਚਿ ਨ ਫੇਰੀ ਕਿਸ ਹੀ ਅੰਧੁ ਜਾਣੈ ਸਭ ਮੇਰੀ ॥ ਸੋਇਨ ਲਮਕਾ ਸੋਇਨ ਮਾੜੀ ਸੰਪੈ ਕਿਸੈ ਨ ਕੇਰੀ ॥੫॥ ਸੁਣਿ ਮੂਰਖ
 ਮਨ ਅਜਾਣਾ ॥ ਹੋਗੁ ਤਿਸੈ ਕਾ ਭਾਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਭਾਰਾ ਹਮ ਤਿਸ ਕੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਜੀਤ
 ਪਿੰਡੁ ਸਭ ਰਾਸਿ ਤਿਸੈ ਕੀ ਮਾਰਿ ਆਪੇ ਜੀਵਾਲੇ ॥੬॥੧॥੧੩॥ ਗਤੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਅਵਰਿ ਪੰਚ ਹਮ ਏਕ
 ਜਨਾ ਕਿਤ ਰਾਖਤ ਘਰ ਬਾਰੁ ਮਨਾ ॥ ਮਾਰਹਿ ਲੂਟਹਿ ਨੀਤ ਨੀਤ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ਜਨਾ ॥੧॥ ਸੀ ਰਾਮ
 ਨਾਮਾ ਤਚਰੁ ਮਨਾ ॥ ਆਗੈ ਜਮ ਦਲੁ ਬਿਖਮੁ ਘਨਾ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਸਾਰਿ ਮਡੋਲੀ ਰਾਖੈ ਦੁਆਰਾ ਭੀਤਰਿ
 ਕੈਠੀ ਸਾ ਧਨਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਕੇਲ ਕਰੇ ਨਿਤ ਕਾਮਣਿ ਅਵਰਿ ਲੁਟੇਨਿ ਸੁ ਪੰਚ ਜਨਾ ॥੨॥ ਢਾਹਿ ਮਡੋਲੀ ਲੂਟਿਆ
 ਦੇਹੁਰਾ ਸਾ ਧਨ ਪਕੜੀ ਏਕ ਜਨਾ ॥ ਜਮ ਡੰਡਾ ਗਲਿ ਸੰਗਲੁ ਪਡਿਆ ਭਾਗਿ ਗਏ ਸੇ ਪੰਚ ਜਨਾ ॥੩॥ ਕਾਮਣਿ
 ਲੋਡੈ ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਮਿਤ ਲੁਡੇਨਿ ਸੁ ਖਾਧਾਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਪ ਕਰੇ ਤਿਨ ਕਾਰਣਿ ਜਾਸੀ ਜਮਪੁਰਿ ਬਾਧਾਤਾ ॥
 ੪॥੨॥੧੪॥ ਗਤੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮੁੰਦ੍ਰਾ ਤੇ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਮੁੰਦ੍ਰਾ ਕਾਁਇਆ ਕੀਜੈ ਖਿੰਥਾਤਾ ॥ ਪੰਚ ਚੇਲੇ ਵਸਿ
 ਕੀਜਹਿ ਰਾਵਲ ਇਹੁ ਮਨੁ ਕੀਜੈ ਡੰਡਾਤਾ ॥੧॥ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਇਵ ਪਾਵਸਿਤਾ ॥ ਏਕੁ ਸਬਦੁ ਦ੍ਰਿੜਾ ਹੋਰੁ ਨਾਸਤਿ
 ਕੰਦ ਮੂਲਿ ਮਨੁ ਲਾਵਸਿਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸ੍ਰੂਡਿ ਸੁੰਡਾਇਐ ਜੇ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਹਮ ਗੁਰੁ ਕੀਨੀ ਗੱਗਾਤਾ ॥
 ਤ੍ਰਾਂ ਭਵਣ ਤਾਰਣਹਾਰੁ ਸੁਆਮੀ ਏਕੁ ਨ ਚੇਤਸਿ ਅੰਧਾਤਾ ॥੨॥ ਕਰਿ ਪਟੰਬੁ ਗਲੀ ਮਨੁ ਲਾਵਸਿ ਸੰਸਾ ਮੂਲਿ ਨ

जावसिता ॥ एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥३॥ जपसि निरंजनु रचसि मना ॥
 काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥१॥ रहाउ ॥ काइआ कमली ह्यसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥
 प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥४॥३॥१५॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ अउखध
 मंत्र मूलु मन एकै जे करि दृढ़ु चितु कीजै रे ॥ जनम जनम के पाप करम के काटनहारा लीजै रे ॥१॥
 मन एको साहिबु भाई रे ॥ तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ॥१॥ रहाउ ॥
 सकर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ॥ राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा
 भाई रे ॥२॥ मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ॥ जो तिनि कीआ सोई होआ
 किरतु न मेटिआ जाई रे ॥३॥ सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ॥ तिन की पंक होवै जे
 नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ॥४॥४॥१६॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ कत की माई बापु कत केरा किदू
 थावहु हम आए ॥ अगनि बिंब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाए ॥१॥ मेरे साहिबा कउण जाणै गुण
 तेरे ॥ कहे न जानी अउगण मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥ केते नाग
 कुली महि आए केते पंख उडाए ॥२॥ हट पटण बिज मंदर भनै करि चोरी घरि आवै ॥ अगहु देखै
 पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥३॥ तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥ लै कै तकड़ी
 तोलणि लागा घट ही महि वणजारा ॥४॥ जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥
 दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥५॥ जीअड़ा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै
 काती ॥ प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥६॥५॥१७॥ गउड़ी बैरागणि महला १ ॥
 रैण गवाई सोइि कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥ हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥१॥ नामु न
 जानिआ राम का ॥ मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥१॥ रहाउ ॥ अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ
 जाइ ॥ अनत कउ चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥२॥ आपण लीआ जे मिलै ता सभु को

भागठु होइ ॥ करमा उपरि निबड़े जे लोचै सभु कोइ ॥३॥ नानक करणा जिनि कीआ सोई सार करेइ
॥ हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥४॥१॥१८॥ गउड़ी बैरागणि महला ੧ ॥ हरणी होवा
बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ॥ गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥१॥ मै
बनजारनि राम की ॥ तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥१॥ रहाउ ॥ कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद
बीचारु ॥ सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु ॥२॥ मछुली होवा जलि बसा जीआ जंत सभि
सारि ॥ उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥३॥ नागनि होवा धर वसा सबदु वसै
भउ जाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥४॥२॥१६॥

गउड़ी पूरबी दीपकी महला ੧

੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीअै करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥
੧॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जाउ जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु
सुमारु ॥२॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण आसीसड़ीआ जिउ होवै
साहिब सिउ मेलु ॥३॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पर्वनि ॥ सदणहारा सिमरीअै नानक
से दिह आवनि ॥४॥१॥२०॥

रागु गउड़ी गुआरेरी ॥ महला ੩ चउपदे ॥

੧੯ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरि मिलिअै हरि मेला होई ॥ आपे मेलि मिलावै सोई ॥ मेरा प्रभु सभ
बिधि आपे जाणै ॥ हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥१॥ सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥ भै राचै सच
रंगि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिअै हरि मनि वसै सुभाइ ॥ मेरा प्रभु भारा कीमति नही
पाइ ॥ सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ॥ मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥२॥ गुरि मिलिअै

ਸਭ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਹੋਇ ॥ ਮਨਿ ਨਿਰਮਲਿ ਕਸੈ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥ ਸਾਚਿ ਵਸਿਐ ਸਾਚੀ ਸਭ ਕਾਰ ॥ ਊਤਮ ਕਰਣੀ
 ਸਬਦ ਬੀਚਾਰ ॥੩॥ ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਚੀ ਸੇਵਾ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ ਕੋਇ ॥ ਜੀਵੈ ਦਾਤਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥੪॥੧॥੨੧॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਗਿਆਨੁ ਪਾਏ ਜਨੁ
 ਕੋਇ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਕੂੜੈ ਸੀੜੈ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਸਹਜੁ ਸਾਚੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਏ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰੁ ॥੧॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ
 ਮਿਲੈ ਗੁਰੁ ਆਇ ॥ ਸਾਚੈ ਸਹਜਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਤ੃ਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁੜਾਏ ॥ ਗੁਰ
 ਤੇ ਸਾਁਤਿ ਕਸੈ ਮਨਿ ਆਏ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਪਵਿਤ ਪਾਵਨ ਸੁਚਿ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੨॥ ਬਾੜ੍ਹੁ
 ਗੁਰੂ ਸਭ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਹੁਤਾ ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਦਰਸਨਿ ਸਚੈ
 ਸਚੀ ਪਤਿ ਹੋਈ ॥੩॥ ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਦਾਤਾ ਇਕੁ ਸੋਈ ॥ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਈ ॥ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ
 ਸਾਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵਾ ॥੪॥੨॥੨੨॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੁ ਥਾਤ ਸਚੁ
 ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥ ਸਚਿ ਨਿਵਾਸੁ ਕਰੇ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਜਾਪੈ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸਾਚਾ ਆਪੇ
 ਆਪੈ ॥੧॥ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਬੈਸਿ ਸੁ ਥਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਲਤ ਇਹ
 ਜਿਹਵਾ ਦ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨ ਚਾਖੈ ਫੀਕਾ ਆਲਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਕੂੜੈ ਤਨੁ ਮਨੁ ਫੀਕਾ ਹੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ
 ਦੁਖੀਆ ਚਲਿਆ ਰੋਇ ॥੨॥ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥
 ਸਾਚੇ ਰਾਤੀ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵੈ ਨਿਰਮਲ ਧਾਰ ॥੩॥ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ਜੋ ਭਾਡਾ ਹੋਇ ॥ ਊਂਧੈ
 ਭਾੱਡੈ ਟਿਕੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨਿ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਭਾੱਡਾ ਜਿਸੁ ਸਬਦ ਪਿਆਸ ॥
 ੪॥੩॥੨੩॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਇਕਿ ਗਾਵਤ ਰਹੇ ਮਨਿ ਸਾਦੁ ਨ ਪਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ
 ਗਾਵਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥ ਗਾਵਣਿ ਗਾਵਹਿ ਜਿਨ ਨਾਮ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸਬਦ ਬੀਚਾਰੁ ॥੧॥
 ਗਾਵਤ ਰਹੈ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਵੈ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਾਤਾ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਕਿ ਗਾਵਹਿ ਇਕਿ
 ਭਗਤਿ ਕਰੇਹਿ ॥ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਬਿਨੁ ਅਸਨੇਹ ॥ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਗੁਰ ਸਬਦ ਪਿਆਰਿ ॥ ਅਪਨਾ ਪਿਲੁ ਰਾਖਿਆ

ਸਦਾ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥੨॥ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਮੂਰਖ ਆਪੁ ਜਣਾਵਹਿ ॥ ਨਚਿ ਨਚਿ ਟਪਹਿ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥
 ਨਚਿਐ ਟਪਿਐ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਭਗਤਿ ਪਾਏ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥੩॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਭਗਤਿ ਕਰਾਏ
 ਸੋਇ ॥ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਖੋਇ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਸਭ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥ ਨਾਨਕ ਬਖਸੇ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ
 ॥੪॥੨੪॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨੁ ਮਾਰੇ ਧਾਤੁ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਮ੍ਰਾਏ ਕੈਥੇ ਹਰਿ ਪਾਇ ॥
 ਮਨੁ ਮਾਰੇ ਦਾਰੁ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥ ਮਨੁ ਸਬਦਿ ਮਾਰੈ ਬ੍ਰਾਝੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥ ਤਾ ਇਸੁ ਮਨ ਕੀ ਸੋਝੀ
 ਪਾਵੈ ॥ ਮਨੁ ਮੈ ਮਤੁ ਮੈਗਲ ਮਿਕਦਾਰਾ ॥ ਗੁਰੁ ਅੰਕਸੁ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਣਹਾਰਾ ॥੨॥ ਮਨੁ ਅਸਾਧੁ ਸਾਥੈ ਜਨੁ
 ਕੋਇ ॥ ਅਚਰੁ ਚੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਿਡਿਆ ਸਕਾਰਿ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਤਜੇ ਵਿਕਾਰ
 ॥੩॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਰਾਖਿਅਨੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਕਦੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥ ਆਪਣੀ ਕਲਾ ਆਪੇ ਹੀ
 ਜਾਣੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥੪॥੫॥੨੫॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸਭੁ ਜਗੁ
 ਬਤਰਾਨਾ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਾ ॥ ਬਹੁ ਚਿੰਤਾ ਚਿਤਕੈ ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਨਾ ॥ ਧੰਧਾ ਕਰਤਿਆ ਅਨਦਿਨੁ
 ਵਿਹਾਨਾ ॥੧॥ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਰਮਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਜਿਨਿ ਰਾਮੁ ਪਛਾਤਾ ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਸੇਵਿ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਜਾਤਾ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਪਛਾਤਾ ॥ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ॥੨॥ ਸੇ ਜਨ ਸਚੇ ਜੋ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਧਾਵਤ ਵਰਜੇ ਠਾਕਿ
 ਰਹਾਏ ॥ ਨਾਮੁ ਨਵ ਨਿਧਿ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਏ ॥੩॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਕਰਤਿਆ
 ਸੁਖੁ ਸਾਁਤਿ ਸਰੀਰ ॥ ਅੰਤਰਿ ਵਸੈ ਨ ਲਾਗੈ ਜਮ ਪੀਰ ॥ ਆਪੇ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪਿ ਵਜੀਰ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਵਿ ਸਦਾ
 ਹਰਿ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰ ॥੪॥੬॥੨੬॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਵਿਸਰੈ ਜਿਸ ਕੇ ਜੀਅ
 ਪਰਾਨਾ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਵਿਸਰੈ ਸਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਦਰਗਹ ਪਤਿ ਪਰਵਾਨਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ
 ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਤ੍ਰੁੰ ਵਿਸਰਹਿ ਤਦਿ ਹੀ ਮਰਿ ਜਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਿਨ ਤ੍ਰੁੰ ਵਿਸਰਹਿ ਜਿ ਤੁਧੁ

आपि भुलाए ॥ तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए ॥ मनमुख अगिआनी जोनी पाए ॥२॥ जिन इक मनि
 तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥ जिन इक मनि तुठा तिन हरि मनि वसाए ॥ गुरमती हरि नामि
 समाए ॥३॥ जिना पोतै पुन्नु से गिआन बीचारी ॥ जिना पोतै पुन्नु तिन हउमै मारी ॥ नानक जो नामि
 रते तिन कउ बलिहारी ॥४॥७॥२७॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥
 गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥ तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥१॥ जिस की बाणी तिसु
 माहि समाणी ॥ तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥२॥ रहाउ ॥ जह सतिगुरु तह सतसंगति
 बणाई ॥ जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ॥ जह सतिगुरु तहा हउमै सबदि जलाई ॥२॥ गुरमुखि
 सेवा महली थाउ पाए ॥ गुरमुखि अंतरि हरि नामु वसाए ॥ गुरमुखि भगति हरि नामि समाए ॥३॥
 आपे दाति करे दातारु ॥ पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥
 ४॥८॥२८॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ एकसु ते सभि रूप हहि रंगा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु सभि
 सहलंगा ॥ भिन्न भिन्न वेखै हरि प्रभु रंगा ॥१॥ एकु अचरजु एको है सोई ॥ गुरमुखि वीचारे विरला
 कोई ॥१॥ रहाउ ॥ सहजि भवै प्रभु सभनी थाई ॥ कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥ आपे
 सुतिआ देइ जगाई ॥२॥ तिस की कीमति किनै न होई ॥ कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ॥ गुर सबदि
 समावै बूझै हरि सोई ॥३॥ सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाए ॥ वडी वडिआई गुर सेवा ते पाए ॥
 नानक नामि रते हरि नामि समाए ॥४॥६॥२६॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनमुखि सूता
 माइआ मोहि पिआरि ॥ गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥ से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥
 १॥ सहजे जागै सवै न कोइ ॥ पूरे गुर ते बूझै जनु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ असंतु अनाड़ी कदे न बूझै
 ॥ कथनी करे तै माइआ नालि लूझै ॥ अंधु अगिआनी कदे न सीझै ॥२॥ इसु जुग महि राम
 नामि निसतारा ॥ विरला को पाए गुर सबदि वीचारा ॥ आपि तरै सगले कुल उधारा ॥३॥

ਇਸੁ ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਕਰਮ ਧਰਮੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਕਲੀ ਕਾ ਜਨਮੁ ਚੰਡਾਲ ਕੈ ਘਰਿ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੋ
 ਸੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੪॥੧੦॥੩੦॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ਗੁਆਰੇਰੀ ॥ ਸਚਾ ਅਮਰੁ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥ ਮਨਿ ਸਾਚੈ ਰਾਤੇ
 ਹਰਿ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥ ਸਚੈ ਮਹਲਿ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹੁ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਰਾਮ ਜਪਹੁ ਭਵਜਲੁ
 ਤਤਰਹੁ ਪਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭਰਮੇ ਆਵੈ ਭਰਮੇ ਜਾਇ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਜਨਮਿਆ ਦ੍ਰਵੈ ਭਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਨ ਚੇਤੈ
 ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੨॥ ਆਪਿ ਭੁਲਾ ਕਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥ ਇਹੁ ਜੀਤ ਵਿਡਾਣੀ ਚਾਕਰੀ ਲਾਇਆ ॥ ਮਹਾ
 ਦੁਖੁ ਖਟੇ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੩॥ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਾਏ ॥ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਚੇਤੇ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ
 ਚੁਕਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਨਾਉ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ॥੪॥੧੧॥੩੧॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜਿਨਾ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਪ੍ਰਭਤ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਇ ॥ ਸੇ ਧਨਵੰਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਮਾਇ ॥
 ਪ੍ਰੌ ਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਾ ਹਰਿ ਘਾਲ ਥਾਇ ਪਾਈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਹਰਿ ਪਾਵੈ ਸੋਇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਮਤਿ
 ਊਤਮ ਹੋਇ ॥ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੨॥ ਦ੍ਰਵੈ ਭਾਇ ਨ ਸੇਵਿਆ ਜਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਮਹਾ ਬਿਖੁ ਖਾਇ
 ॥ ਪੁਤਿ ਕੁਟੰਬਿ ਗ੍ਰਹਿ ਮੋਹਿਆ ਮਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧਾ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੩॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥
 ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਵਿਰਲਾ ਬੂੜੀ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੧੨॥
 ੩੨॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੋਈ ॥ ਪੂਰਾ ਜਨੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ਕੋਈ ॥ ਅਖੁਟੁ
 ਨਾਮ ਧਨੁ ਹਰਿ ਤੋਟਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਐਥੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਹੋਈ ॥੧॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰੇ ਭਰਮੁ ਨ ਕੀਜੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸੇਵਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਮਹਾਪੁਰਖ ਸੱਸਾਰੇ ॥ ਆਪਿ ਤਥਰੇ ਕੁਲ ਸਗਲ
 ਨਿਸਤਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਖਹਿ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਭਤਜਲ ਤਤਰਹਿ ਪਾਰੇ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਹਿ
 ਸਦਾ ਮਨਿ ਦਾਸਾ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਅਨਹਦੁ ਵਾਜੈ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਘਰ
 ਮਾਹਿ ਤਦਾਸਾ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਹਿ ਤਿਨ ਕੀ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ॥ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਭਗਤੀ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ

ਜਪਹਿ ਹਰਿ ਸਾਰਂਗਪਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਨਿਹਕੇਵਲ ਨਿਰਖਾਣੀ ॥੪॥੧੩॥੩੩॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ
 ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲੈ ਕਡਭਾਗਿ ਸੰਜੋਗ ॥ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਹਰਿ ਰਸ ਭੋਗ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ
 ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥ ਜਨਮੁ ਜੀਤਿ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਹੈ
 ਮੀਠਾ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਚਖਿ ਢੀਠਾ ॥੨॥ ਕਰਮ ਕਾੰਡ ਬਹੁ ਕਰਹਿ ਅਚਾਰ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧਿਗੁ
 ਧਿਗੁ ਅਛਕਾਰ ॥੩॥ ਬੰਧਨਿ ਬਾਧਿਓ ਮਾਇਆ ਫਾਸ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਛੂਟੈ ਗੁਰ ਪਰਗਾਸ ॥੪॥੧੪॥੩੪॥
 ਮਹਲਾ ੩ ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ॥ ਜੈਸੀ ਧਰਤੀ ਊਪਰਿਮੇਘੁਲਾ ਬਰਸਤੁ ਹੈ ਕਿਆ ਧਰਤੀ ਮਧੇ ਪਾਣੀ ਨਾਹੀ ॥ ਜੈਸੇ
 ਧਰਤੀ ਮਧੇ ਪਾਣੀ ਪਰਗਾਸਿਆ ਬਿਨੁ ਪਗਾ ਵਰਸਤ ਫਿਰਾਹੀ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਤੂੰ ਐਸੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਹੀ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ
 ਕਰਤੁ ਹੈ ਸੋਈ ਕੋਈ ਹੈ ਰੇ ਤੈਸੇ ਜਾਇ ਸਮਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਸਤਰੀ ਪੁਰਖ ਹੋਇ ਕੈ ਕਿਆ ਓਇ ਕਰਮ
 ਕਮਾਹੀ ॥ ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਸਦਾ ਹਹਿ ਤੇਰੇ ਤੁੜਾ ਹੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹੀ ॥੨॥ ਇਤਨੇ ਜਨਮ ਭੂਲਿ ਪਰੇ ਸੇ ਜਾ ਪਾਇਆ ਤਾ
 ਭੂਲੇ ਨਾਹੀ ॥ ਜਾ ਕਾ ਕਾਰਜੁ ਸੋਈ ਪੜੁ ਜਾਣੈ ਜੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹੀ ॥੩॥ ਤੇਰਾ ਸਬਦੁ ਤੂੰਹੈ ਹਹਿ ਆਪੇ ਭਰਮੁ
 ਕਹਾਹੀ ॥ ਨਾਨਕ ਤਤੁ ਤਤ ਸਿਉ ਮਿਲਿਆ ਪੁਨਰਧਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਹੀ ॥੪॥੧॥੧੫॥੩੫॥ ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ
 ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਕਾਲੈ ਵਸਿ ਹੈ ਬਾਧਾ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ॥ ਹਤਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਮਨਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥
 ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਲੈ ਦਰਗਹ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਲਖ
 ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਭਰਮਦੇ ਮਨਹਠਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨਿਓ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਇ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤੀ ਰਤਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਸੁਖਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥
 ਮਨੁ ਸਬਦਿ ਮੈ ਪਰਤੀਤਿ ਹੋਇ ਹਤਮੈ ਤਜੇ ਵਿਕਾਰ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਰਮੀ ਪਾਈਐਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ
 ॥੪॥੨॥੧੬॥੩੬॥ ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਪੇਈਐਡੈ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ਹੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥
 ਸੋਭਾਵਤੀ ਨਾਰਿ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥ ਪੇਵਕੜੈ ਗੁਣ ਸੰਮਲੈ ਸਾਹੁਰੈ ਵਾਸੁ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ
 ਸਮਾਣੀਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥੧॥ ਸਸੁਰੈ ਪੇਈਐ ਪਿਲੁ ਵਸੈ ਕਹੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਪਾਈਐ ॥ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ

अलखु है आपे मेलाईअै ॥१॥ रहाउ ॥ आपे ही प्रभु देहि मति हरि नामु धिआईअै ॥ वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अंमृतु पाईअै ॥ हउमै दुबिधा बिनसि जाइ सहजे सुखि समाईअै ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईअै ॥२॥ मनमुखि गरबि न पाइओ अगिआन इआणे ॥ सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥ गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥ मेरे करते एवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥३॥ मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥ हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ॥ मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बंधपु बीरा ॥ हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा ॥४॥३॥१७॥३७॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥ मति मलीण परगटु झई जपि नामु मुरारा ॥ सिवि सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा ॥१॥ हरि कितु बिधि पाईअै संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ॥ हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरि रसु पीवा ॥२॥ रहाउ ॥ हउ हरि गुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥ हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥ धनु धनु गुरु सत पुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ॥ जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥२॥ गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥ पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ॥ तूं गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥ हरि सरणागति राखि लेहु मूँड़ मुगध निसतारे ॥३॥ सहजु अन्नदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥ सजणु हरि प्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥ हरि दइआ धारि प्रभ बेनती हरि हरि चेताइआ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥४॥४॥१८॥३८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे

१८१ सतिगुर प्रसादि ॥

पंडितु सासत सिमृति पड़िआ ॥ जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥ मै मूरख हरि हरि जपु पड़िआ ॥१॥ ना जाना किआ गति राम हमारी ॥ हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू

ਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਨਿਆਸੀ ਬਿਭੂਤ ਲਾਇ ਦੇਹ ਸਵਾਰੀ ॥ ਪਰ ਤ੍ਰਾਅ ਤਿਆਗੁ ਕਰੀ ਬ੍ਰਹਮਚਾਰੀ ॥ ਮੈ
 ਮੂਰਖ ਹਰਿ ਆਸ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥ ਖਨੀ ਕਰਮ ਕਰੇ ਸੂਰਤਣੁ ਪਾਵੈ ॥ ਸ੍ਰੂਦੁ ਵੈਸੁ ਪਰ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਵੈ ॥ ਮੈ ਮੂਰਖ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਛਡਾਵੈ ॥੩॥ ਸਭ ਤੇਰੀ ਸੂਸਟਿ ਤ੍ਰੂ ਆਪਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਮੈ ਅਂਧੁਲੇ
 ਹਰਿ ਟੇਕ ਟਿਕਾਈ ॥੪॥੧॥੩੬॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਨਿਰਗੁਣ ਕਥਾ ਕਥਾ ਹੈ ਹਰਿ ਕੀ ॥ ਭਜੁ
 ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਜਨ ਕੀ ॥ ਤਰੁ ਭਤਜਲੁ ਅਕਥ ਕਥਾ ਸੁਨਿ ਹਰਿ ਕੀ ॥੧॥ ਗੋਬਿੰਦ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਾਇ ॥
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੋ ਜਨ ਧਿਆਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥ ਤਿਨ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ
 ਕਰਹੁ ਹਮ ਰਾਮਾ ॥ ਜਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਊਤਮ ਕਾਮਾ ॥੨॥ ਜੋ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਹਮਰੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ
 ਭਾਵੈ ॥ ਜਨ ਪਗ ਰੇਣੁ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਵੈ ॥੩॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਲਿਖਨੁ ਲਿਖਿਆ
 ਧੁਰਿ ਪਾਈ ॥ ਤੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ॥੪॥੨॥੪੦॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਾਤਾ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੇ
 ਪੁਤੁ ਖਾਇ ॥ ਮੀਨੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭਈ ਜਲਿ ਨਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰਸਿਖ ਮੁਖਿ ਪਾਇ ॥੧॥ ਤੇ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ
 ਮੇਲਹੁ ਹਮ ਪਿਆਰੇ ॥ ਜਿਨ ਮਿਲਿਆ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਤ ਮਿਲਿ ਬਛੇ ਗਤ ਪ੍ਰੀਤਿ
 ਲਗਾਵੈ ॥ ਕਾਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਾ ਪਿਲੁ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ॥੨॥ ਸਾਰਿੰਗ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਵੈ
 ਜਲ ਧਾਰਾ ॥ ਨਰਪਤਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਾਇਆ ਦੇਖਿ ਪਸਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਪੈ ਨਿਰਂਕਾਰਾ ॥੩॥ ਨਰ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪ੍ਰੀਤਿ
 ਮਾਇਆ ਧਨੁ ਖਾਟੇ ॥ ਗੁਰਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰੂ ਮਿਲੈ ਗਲਾਟੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਾਧ ਪਗ ਚਾਟੇ ॥੪॥੩॥੪੧॥
 ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਭੀਖਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭੀਖ ਪ੍ਰਭ ਪਾਇ ॥ ਭੂਖੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੋਵੈ ਅਨੁ ਖਾਇ ॥ ਗੁਰਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ
 ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਆਘਾਇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਦੇਹੁ ਹਰਿ ਆਸ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੋਚ ਪੂਰਿ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਚਕਵੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੂਰਜੁ ਮੁਖਿ ਲਾਗੈ ॥ ਮਿਲੈ ਪਿਆਰੇ ਸਭ ਦੁਖ ਤਿਆਗੈ ॥ ਗੁਰਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰੂ ਮੁਖਿ
 ਲਾਗੈ ॥੨॥ ਬਛੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਖੀਰੁ ਮੁਖਿ ਖਾਇ ॥ ਹਿਰਦੈ ਬਿਗਸੈ ਦੇਖੈ ਮਾਇ ॥ ਗੁਰਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰੂ ਮੁਖਿ
 ਲਾਇ ॥੩॥ ਛੋਰੁ ਸਭ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਕਾਚਾ ॥ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਕੂਰਾ ਕਚੁ ਪਾਚਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ

प्रीति तृपति गुरु साचा ॥४॥४॥४२॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥
 जितु मिलि हरि नामु धिआइआ हरि धणी ॥ जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी धणी ॥१॥ गुरसिख
 हरि बोलहु मेरे भाई ॥ हरि बोलत सभ पाप लहि जाई ॥२॥ रहाउ ॥ जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि
 आइआ ॥ धावत पंच रहे हरि धिआइआ ॥ अनदिनु नगरी हरि गुण गाइआ ॥२॥ सतिगुर पग
 धूरि जिना मुखि लाई ॥ तिन कूड़ तिआगे हरि लिव लाई ॥ ते हरि दरगह मुख ऊजल भाई ॥३॥ गुर
 सेवा आपि हरि भावै ॥ कृसनु बलभद्रु गुर पग लगि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि हरि आपि तरावै ॥
 ४॥५॥४३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥ हरि आपे रवि रहिआ
 बनवारी ॥ हरि आपे तपु तापै लाइ तारी ॥१॥ ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही
 हरि दूरि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥ हरि आपि
 जपाइ आपे हरि जापे ॥२॥ हरि आपे सारिंग अंमृतधारा ॥ हरि अंमृतु आपि पीआवणहारा ॥
 हरि आपि करे आपे निसतारा ॥३॥ हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥ हरि आपे गुरमती निसतारा ॥
 हरि आपे नानक पावै पारा ॥४॥६॥४४॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं
 रासि देहि तैसी हम लेहि ॥ हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दिइआलु होइ देहि ॥१॥ हम
 वणजारे राम के ॥ हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥२॥ रहाउ ॥ लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि
 सचे साह मनि भाइआ ॥ हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥२॥ होरु वणजु
 करहि वापारीए अन्नत तरंगी दुखु माइआ ॥ ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ
 ॥३॥ हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु कृपालु होइ प्रभु दर्दै ॥ जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि
 लेखा मूलि न लेई ॥४॥१॥७॥४५॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी गरभु पालती
 सुत की करि आसा ॥ वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥ तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा

दे आपि हथासा ॥१॥ मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुर्सईआ ॥ जन की उपमा तुझ्हाहि वडईआ ॥१॥
 रहाउ ॥ मंदरि घरि आन्दु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥
 हरि जनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥२॥ जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की
 वडिआई ॥ हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥ हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई
 ॥३॥ लाला हाटि विहाइज्जिआ किआ तिसु चतुराई ॥ जे राजि बहाले ता हरि गुलामु धासी कउ हरि
 नामु कढाई ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥४॥२॥८॥४॥ गउड़ी गुआरेगी
 महला ४ ॥ किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ तिउ
 हरि जनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥१॥ मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ गुर सतिगुर
 सेवा हरि लाइ हम काम ॥१॥ रहाउ ॥ लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ धनु खटै आसा करै
 माइआ मोहु वधावै ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥२॥ बिखु संचै हटवाणीआ
 बहि हाटि कमाइ ॥ मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ तिउ हरि जनि हरि धनु संचिआ हरि
 खरचु लै जाइ ॥३॥ इहु माइआ मोह कुटंबु है भाइ दूजै फास ॥ गुरमती सो जनु तरै जो दासनि दास ॥
 जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥४॥३॥६॥४॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ नित
 दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥ वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥ जो गुर की
 जनु सेवा करे सो घर कै कंमि हरि लाइआ ॥१॥ मेरे राम तोड़ि बंधन माइआ घर कै कंमि लाइ ॥
 नित हरि गुण गावह हरि नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ नसु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि
 सभ माइआ ॥ कै बंधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥ धन्नु धनु सेवा सफल सतिगुरु की जितु
 हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥२॥ नित सउदा सूटु कीचै बहु भाति करि माइआ कै ताई ॥
 जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥ जो गुण साझी गुर सित करे नित नित सुखु पाई ॥३॥

ਜਿਤਨੀ ਭੂਖ ਅਨ ਰਸ ਸਾਦ ਹੈ ਤਿਤਨੀ ਭੂਖ ਫਿਰਿ ਲਾਗੈ ॥ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਸੋ ਵੇਚੇ ਸਿਰੁ ਗੁਰ ਆਗੈ
 ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸਿ ਤ੃ਪਤਿਆ ਫਿਰਿ ਭੂਖ ਨ ਲਾਗੈ ॥੪॥੪॥੧੦॥੮੮॥ ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਹਮਰੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਹਰਿ ਆਸ ਨਿਤ ਕਿਤ ਦੇਖਾ ਹਰਿ ਦਰਸੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਸੋ ਜਾਣਤਾ ਹਮਰੈ
 ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਹਰਿ ਬਹੁਤੁ ਪਿਆਰਾ ॥ ਹਤ ਕੁਰਬਾਨੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਜਿਨਿ ਵਿਛੁਡਿਆ ਮੇਲਿਆ ਮੇਰਾ ਸਿਰਜਨਹਾਰਾ
 ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਹਮ ਪਾਪੀ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਹਰਿ ਟੁਆਰਿ ॥ ਮਤੁ ਨਿਰਗੁਣ ਹਮ ਮੇਲੈ ਕਬਹੂੰ ਅਪੁਨੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮਰੇ ਅਕਗੁਣ ਬਹੁਤੁ ਬਹੁਤੁ ਹੈ ਬਹੁ ਬਾਰ ਬਾਰ ਹਰਿ ਗਣਤ ਨ ਆਵੈ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਗੁਣਵਂਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਦਿੱਡਿਆਲੁ ਹਰਿ ਆਪੇ ਬਖ਼ਸਿ ਲੈਹਿ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ॥ ਹਮ ਅਪਰਾਧੀ ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਸੰਗਤੀ ਉਪਦੇਸੁ ਦੀਓ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਛਡਾਵੈ ॥੨॥ ਤੁਮਰੇ ਗੁਣ ਕਿਆ ਕਹਾ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਜਬ ਗੁਰੂ ਬੋਲਹ ਤਬ ਬਿਸਮੁ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥ ਹਮ ਜੈਸੇ
 ਅਪਰਾਧੀ ਅਕਰੁ ਕੋਈ ਰਾਖੈ ਜੈਸੇ ਹਮ ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਛਡਾਇ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਗੁਰੂ ਪਿਤਾ ਤ੍ਰਾਂਹੈ ਗੁਰੂ ਮਾਤਾ ਤ੍ਰਾਂ ਗੁਰੂ
 ਬੰਧਪੁ ਮੇਰਾ ਸਖਾ ਸਖਾਇ ॥੩॥ ਜੋ ਹਮਰੀ ਬਿਧਿ ਹੋਤੀ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾ ਬਿਧਿ ਤੁਮ ਹਰਿ ਜਾਣਹੁ ਆਪੇ ॥ ਹਮ
 ਰੁਲਤੇ ਫਿਰਤੇ ਕੋਈ ਬਾਤ ਨ ਪ੍ਰਚਤਾ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਿ ਕੀਰੇ ਹਮ ਥਾਪੇ ॥ ਧਨ੍ਨੁ ਧਨ੍ਨੁ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੇਰਾ
 ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਚੂਕੇ ਸਭਿ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪੇ ॥੪॥੫॥੧੧॥੮੬॥ ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਕੰਚਨ ਨਾਰੀ ਮਹਿ
 ਜੀਤ ਲੁਭਤੁ ਹੈ ਮੋਹੁ ਸੀਠਾ ਮਾਇਆ ॥ ਘਰ ਮੰਦਰ ਘੋੜੇ ਖੁਸੀ ਮਨੁ ਅਨ ਰਸਿ ਲਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ
 ਆਵੰਈ ਕਿਤ ਛੂਟਾ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਇਹ ਨੀਚ ਕਰਮ ਹਰਿ ਮੇਰੇ ॥ ਗੁਣਵਂਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਦਿੱਡਿਆਲੁ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਬਖ਼ਸਿ ਅਕਗਣ ਸਭਿ ਮੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਿਛੁ ਰੱਖੁ ਨਹੀ ਕਿਛੁ ਜਾਤਿ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ
 ਢੰਗੁ ਨ ਮੇਰਾ ॥ ਕਿਆ ਸੁਹੁ ਲੈ ਬੋਲਹ ਗੁਣ ਬਿਹੂਨ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਨ ਤੇਰਾ ॥ ਹਮ ਪਾਪੀ ਸੰਗਿ ਗੁਰ ਤਕਰੇ ਪੁਨ੍ਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਕੇਰਾ ॥੨॥ ਸਭੁ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸੁਖੁ ਨਕੁ ਦੀਆ ਵਰਤਣ ਕਤ ਪਾਣੀ ॥ ਅਨ੍ਨੁ ਖਾਣਾ ਕਪਡੁ ਪੈਨਣੁ ਦੀਆ
 ਰਸ ਅਨਿ ਭੋਗਾਣੀ ॥ ਜਿਨਿ ਦੀਏ ਸੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੰਈ ਪਸੂ ਹਤ ਕਰਿ ਜਾਣੀ ॥੩॥ ਸਭੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਵਰਤਦਾ ਤ੍ਰਾਂ
 ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਹਮ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕਰਹ ਸਭੁ ਖੇਲੁ ਤੁਮ ਸੁਆਮੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਹਾਟਿ ਵਿਹਾਇਆ ਹਰਿ

ਗੁਲਮ ਗੁਲਾਮੀ ॥੪॥੮॥੧੨॥੫੦॥ ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਤ ਜਨਨੀ ਸੁਤੁ ਜਣਿ ਪਾਲਤੀ ਰਾਖੈ
 ਨਦਰਿ ਮਝਾਰਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਮੁਖਿ ਦੇ ਗਿਰਾਸੁ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪੋਚਾਰਿ ॥ ਤਿਤ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰਸਿਖ ਰਾਖਤਾ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਹੈ ਇਆਣੇ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਪਾਥਾ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਦੇ ਕੀਏ ਸਿਆਣੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈਸੀ ਗਗਨਿ ਫਿਰਂਤੀ ਊਡਤੀ ਕਪਰੇ ਬਾਗੇ ਵਾਲੀ
 ॥ ਓਹ ਰਾਖੈ ਚੀਤੁ ਪੀਛੈ ਬਿਚਿ ਬਚੇ ਨਿਤ ਹਿਰਦੈ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੀ ॥ ਤਿਤ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੀ
 ਗੁਰੂ ਸਿਖ ਰਖੈ ਜੀਅ ਨਾਲੀ ॥੨॥ ਜੈਸੇ ਕਾਤੀ ਤੀਸ ਬਤੀਸ ਹੈ ਵਿਚਿ ਰਾਖੈ ਰਸਨਾ ਮਾਸ ਰਤੁ ਕੇਰੀ ॥ ਕੋਈ
 ਜਾਣਹੁ ਮਾਸ ਕਾਤੀ ਕੈ ਕਿਛੁ ਹਾਥਿ ਹੈ ਸਭ ਵਸਗਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ॥ ਤਿਤ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਨਰ ਨਿੰਦਾ ਕਰਹਿ ਹਰਿ ਰਾਖੈ
 ਪੈਜ ਜਨ ਕੇਰੀ ॥੩॥ ਭਾਈ ਮਤ ਕੋਈ ਜਾਣਹੁ ਕਿਸੀ ਕੈ ਕਿਛੁ ਹਾਥਿ ਹੈ ਸਭ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥ ਜਗ ਮਗ
 ਤਾਪੁ ਸਿਰਤਿ ਸਾਪੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਕੋਈ ਲਾਗਿ ਨ ਸਕੈ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਕਾ ਲਾਇਆ ॥ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ
 ਚਿਤਿ ਨਿਤ ਧਿਆਵਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜੋ ਅੰਤੀ ਅਤਸਰਿ ਲਏ ਛਡਾਇਆ ॥੪॥੭॥੧੩॥੫੧॥ ਗਤੜੀ
 ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਸੁ ਮਿਲਿਐ ਮਨਿ ਹੋਇ ਅਨਨਦੁ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਹੀਐ ॥ ਮਨ ਕੀ ਟੁਬਿਧਾ ਬਿਨਸਿ
 ਜਾਇ ਹਰਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਲਹੀਐ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਿਆਰਾ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਿਲੈ ॥ ਹਤ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਕਰੀ
 ਨਮਸਕਾਰੁ ਮੇਰਾ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਕਿਤ ਮਿਲੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਮੇਲਿਆ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥ ਇਛ
 ਪੁਨੰਨੀ ਜਨ ਕੇਰੀਆ ਲੇ ਸਤਿਗੁਰ ਧੂਰਾ ॥੨॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਦੂਢਾਕੈ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਣੈ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੀਐ ॥
 ਤੋਟਾ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵੰਈ ਹਰਿ ਲਾਭੁ ਨਿਤ ਦੂਢੀਐ ॥੩॥ ਜਿਸ ਕਤ ਰਿਦੈ ਵਿਗਾਸੁ ਹੈ ਭਾਉ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ॥ ਨਾਨਕ
 ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਤਥੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾਹੀ ॥੪॥੮॥੧੪॥੫੨॥ ਮਹਲਾ ੪ ਗਤੜੀ ਪੂਰਬੀ ॥ ਹਰਿ ਦਿਆਲਿ
 ਦਿਆਲਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੀ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਬੋਲੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗ ਭਿਆ ਅਤਿ ਗੂੜਾ ਹਰਿ ਰੰਗ ਭੀਨੀ
 ਮੇਰੀ ਚੋਲੀ ॥੧॥ ਅਪੁਨੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਹਤ ਗੋਲੀ ॥ ਜਬ ਹਮ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਕਰਿ ਦੀਨੋ ਜਗਤੁ ਸਭੁ
 ਗੋਲ ਅਮੋਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਹੁ ਬਿਕੇਕੁ ਸੰਤ ਜਨ ਭਾਈ ਖੋਜਿ ਹਿਰਦੈ ਦੇਖਿ ਢੰਢੀਲੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰੂਪੁ ਸਭ ਜੋਤਿ

ਸਬਾਈ ਹਰਿ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਕੋਲੀ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਸਭ ਜਗ ਕੈ ਅਪਰਂਪਰ ਪੁਰਖੁ ਅਤੋਲੀ ॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਗਟੁ ਕੀਓ ਗੁਰ੍ ਪ੍ਰੌ ਸਿਰ੍ ਵੇਚਿਆਂ ਗੁਰ ਪਹਿ ਮੋਲੀ ॥੩॥ ਹਰਿ ਜੀ ਅਂਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਤੁਮ ਸਰਣਾਗਤਿ
 ਤੁਮ ਵਡ ਪੁਰਖ ਵਡੋਲੀ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਗੁਰ ਵੇਚੋਲੀ ॥੪॥੧॥੧੫॥
 ੫੩॥ ਗਤਡੀ ਪੂਰਕੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਗਜੀਵਨ ਅਪਰਂਪਰ ਸੁਆਮੀ ਜਗਦੀਸੁਰ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ॥ ਜਿਤੁ ਮਾਰਗਿ
 ਤੁਮ ਪੇਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਤਿਤੁ ਮਾਰਗਿ ਹਮ ਜਾਤੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰਾਤੇ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਾਮ
 ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਾਮੈ ਨਾਮੈ ਸਮਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਗਿ ਅਵਖਥੁ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸਾਤੇ ॥ ਤਿਨ ਕੇ ਪਾਪ ਦੋਖ ਸਭਿ ਬਿਨਸੇ ਜੋ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਖਾਤੇ ॥੨॥ ਜਿਨ ਕਤ ਲਿਖਤੁ ਲਿਖੇ
 ਥੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਤੇ ਗੁਰ ਸੰਤੋਖ ਸਾਰਿ ਨਾਤੇ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਗੰਡ ਸਭ ਤਿਨ ਕੀ ਜੋ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ॥੩॥
 ਰਾਮ ਤੁਮ ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰ ਤੁਮ ਜੇਵਡ ਅਵਰੁ ਨ ਦਾਤੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ਲਏ ਤਾਂ ਜੀਵੈ ਹਰਿ
 ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ॥੪॥੨॥੧੬॥੫੪॥ ਗਤਡੀ ਪੂਰਕੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤੇ ਮੇਰਾ
 ਮਨੁ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰਾਚੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬਚਨੁ ਦੀਓ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲੁ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨੁ ਮਾਚੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਮੇਰਾ
 ਮਨੁ ਤਨੁ ਬੇਧਿ ਲੀਓ ਹਰਿ ਸਾਚੇ ॥ ਜਿਹ ਕਾਲ ਕੈ ਮੁਖਿ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਗ੍ਰਸਿਆ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਹਰਿ ਹਮ
 ਬਾਚੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਤੇ ਸਾਕਤ ਮੂੜ ਨਰ ਕਾਚੇ ॥ ਤਿਨ ਕਤ ਜਨਮੁ ਮਰਣੁ
 ਅਤਿ ਭਾਰੀ ਵਿਚਿ ਵਿਸਟਾ ਮਰਿ ਮਰਿ ਪਾਚੇ ॥੨॥ ਤੁਮ ਦਿੱਤਿਆਲ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਮੋ ਕਤ ਦੀਜੈ ਦਾਨੁ ਹਰਿ
 ਹਮ ਜਾਚੇ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਦਾਸ ਹਮ ਕੀਜੈ ਮਨੁ ਨਿਰਤਿ ਕਰੇ ਕਰਿ ਨਾਚੇ ॥੩॥ ਆਪੇ ਸਾਹ ਵਡੇ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ
 ਵਣਜਾਰੇ ਹਹਿ ਤਾ ਚੇ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜੀਤ ਰਾਸਿ ਸਭ ਤੇਰੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਸਾਹ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ॥੪॥੩॥੧੭॥੫੫
 ॥ ਗਤਡੀ ਪੂਰਕੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਤੁਮ ਦਿੱਤਿਆਲ ਸਰਬ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਇਕ ਬਿਨਤ ਸੁਨਹੁ ਦੇ ਕਾਨੇ ॥ ਜਿਸ ਤੇ ਤੁਮ
 ਹਰਿ ਜਾਨੇ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਾਨੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਹਮ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਰਿ ਮਾਨੇ ॥ ਹਮ
 ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਅਸੁਧ ਮਤਿ ਹੋਤੇ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਹਰਿ ਹਮ ਜਾਨੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਤਨੇ ਰਸ ਅਨ ਰਸ

हम देखे सभ तितने फीक फीकाने ॥ हरि का नामु अंमृत रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥२॥ जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूँड दिवाने ॥ तिन के करमहीन धुरि पाए देखि दीपकु मोहि पचाने ॥३॥ जिन कउ तुम दइआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥ जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥४॥४॥१८॥५६॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीअै ॥ हरि आपे बखसि लए प्रभु साचा हरि आपि छडाए छुटीअै ॥१॥ मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीअै ॥ सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे मना गुर सतिगुर पीछै छुटीअै ॥२॥ रहाउ ॥ मेरे मन सेवहु सो प्रभ सब सुखदाता जितु सेविअै निज घरि वसीअै ॥ गुरमुखि जाइ लहहु घरु अपना घसि चंदनु हरि जसु घसीअै ॥२॥ मेरे मन हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि मनि हसीअै ॥ हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अंमृतु हरि रसु चखीअै ॥३॥ मेरे मन नाम बिना जो ढूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीअै ॥ ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीअै ॥४॥ मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविअै लेखा छुटीअै ॥ जन नानक हरि प्रभि पूरे कीए खिनु मासा तोलु न घटीअै ॥५॥५॥१६॥५७॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥ दइआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरै मनि तनि लोच घणेरी ॥१॥ राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥ गुर कृपालि कृपा किंचत गुरि कीनी हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥२॥ रहाउ ॥ जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥ अनदिनु नामु जपी सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥२॥ गुरि सतिगुरि दातै पंथु बताइआ हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ अनदिनु अनदु भइआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥३॥ जगन्नाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ जन नानक सरणागति आए हरि राखहु पैज जन केरी ॥४॥६॥२०॥५८॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इहु

ਮਨੂਆ ਖਿਨੁ ਨ ਟਿਕੈ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਦਹ ਦਹ ਦਿਸਿ ਚਲਿ ਚਲਿ ਹਾਢੇ ॥ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਮੰਤ੍ਰ
 ਦੀਆ ਮਨੁ ਠਾਢੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਹਮ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਲੇ ਕਾੱਢੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮਰੈ ਮਸਤਕਿ ਦਾਗੁ ਦਗਾਨਾ ਹਮ ਕਰਜ
 ਗੁਰੂ ਬਹੁ ਸਾਢੇ ॥ ਪਰਤਪਕਾਰੁ ਪੁਨ੍ਨੁ ਬਹੁ ਕੀਆ ਭਤ ਦੁਤਰੁ ਤਾਰਿ ਪਰਾਢੇ ॥੨॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਿਟੈ ਹਰਿ
 ਨਾਹੀ ਤਿਨ ਕ੍ਰੋਏ ਗਾਫਨ ਗਾਢੇ ॥ ਜਿਤ ਪਾਣੀ ਕਾਗਦੁ ਬਿਨਸਿ ਜਾਤ ਹੈ ਤਿਤ ਮਨਮੁਖ ਗਰਭਿ ਗਲਾਢੇ ॥੩॥
 ਹਮ ਜਾਨਿਆ ਕਛੂ ਨ ਜਾਨਹ ਆਗੈ ਜਿਤ ਹਰਿ ਰਾਖੈ ਤਿਤ ਠਾਢੇ ॥ ਹਮ ਭੂਲ ਚੂਕ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਹੁ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਕੁਤਰੇ ਕਾਢੇ ॥੪॥੭॥੫੬॥ ਗਤਡੀ ਪ੍ਰੂਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਕਾਮਿ ਕਰੋਧਿ ਨਗਰੁ ਬਹੁ ਭਰਿਆ ਮਿਲਿ
 ਸਾਧੂ ਖੰਡਲ ਖੰਡਾ ਹੈ ॥ ਪ੍ਰੂਬਿ ਲਿਖਤ ਲਿਖੇ ਗੁਰੂ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਮੰਡਲ ਮੰਡਾ ਹੈ ॥੧॥ ਕਰਿ ਸਾਧੂ
 ਅੰਜੁਲੀ ਪੁਨ੍ਨੁ ਵਡਾ ਹੈ ॥ ਕਰਿ ਡੰਡਤ ਪੁਨੁ ਵਡਾ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਕਤ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਦੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ਤਿਨ
 ਅੰਤਰਿ ਹਤਮੈ ਕੰਡਾ ਹੈ ॥ ਜਿਤ ਜਿਤ ਚਲਹਿ ਚੁਭੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਜਮਕਾਲੁ ਸਹਹਿ ਸਿਰਿ ਡੰਡਾ ਹੈ ॥੨॥ ਹਰਿ ਜਨ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਦੁਖੁ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਵ ਖੰਡਾ ਹੈ ॥ ਅਵਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਪਾਇਆ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਬਹੁ ਸੋਭ ਖੰਡ
 ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਹੈ ॥੩॥ ਹਮ ਗਰੀਬ ਮਸਕੀਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਹਰਿ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਵਡ ਵਡਾ ਹੈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ
 ਟੇਕ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਮੰਡਾ ਹੈ ॥੪॥੮॥੨੨॥੬੦॥ ਗਤਡੀ ਪ੍ਰੂਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਇਸੁ ਗੜ ਮਹਿ ਹਰਿ
 ਰਾਮ ਰਾਇ ਹੈ ਕਿਛੁ ਸਾਦੁ ਨ ਪਾਵੈ ਥੀਠਾ ॥ ਹਰਿ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਕੀਆ ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਚਖਿ
 ਡੀਠਾ ॥੧॥ ਰਾਮ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗੁਰ ਲਿਵ ਮੀਠਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹੈ ਮਿਲਿ
 ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਗਿ ਬਸੀਠਾ ॥ ਜਿਨ ਗੁਰ ਬਚਨ ਸੁਖਾਨੇ ਹੀਅਰੈ ਤਿਨ ਆਗੈ ਆਣਿ ਪਰੀਠਾ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ ਹੀਅਰਾ
 ਅਤਿ ਕਠੋਰੁ ਹੈ ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਕਾਰ ਕਰੀਠਾ ॥ ਬਿਸੀਅਰ ਕਤ ਬਹੁ ਦ੍ਰਵੁ ਪੀਆਈਐ ਬਿਖੁ ਨਿਕਸੈ ਫੁਲੀਠਾ
 ॥੩॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਆਨਿ ਮਿਲਾਵਹੁ ਗੁਰੂ ਸਾਧੂ ਘਸਿ ਗਰੁੜੁ ਸਬਦੁ ਮੁਖਿ ਲੀਠਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕੇ ਲਾਲੇ ਗੋਲੇ
 ਲਾਗਿ ਸੰਗਤਿ ਕਰੁਆ ਮੀਠਾ ॥੪॥੯॥੨੩॥੬੧॥ ਗਤਡੀ ਪ੍ਰੂਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਰਥਿ ਸਰੀਰੁ ਹਮ
 ਬੇਚਿਆ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਆਗੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਦਾਤੈ ਨਾਮੁ ਦਿਇਆਇਆ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ਸਭਾਗੇ ॥੧॥ ਰਾਮ

ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮੰਝਾ ਰਮਤ ਰਾਮ ਰਾਝਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਗੁਰੂ ਲਿਵ ਲਾਗੇ
 ॥ ਹਉ ਮਨੁ ਤਨੁ ਦੇਵਤ ਕਾਟਿ ਗੁਰੂ ਕਤ ਮੇਰਾ ਭਰ੍ਮੁ ਭਤ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਭਾਗੇ ॥੨॥ ਅੰਧਿਆਰੈ ਦੀਪਕ ਆਨਿ
 ਜਲਾਏ ਗੁਰ ਗਿਆਨਿ ਗੁਰੂ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸਿਓ ਘਰਿ ਵਸਤੁ ਲਹੀ ਮਨ
 ਜਾਗੇ ॥੩॥ ਸਾਕਤ ਬਧਿਕ ਮਾਝਿਆਥਾਰੀ ਤਿਨ ਜਮ ਜੋਹਨਿ ਲਾਗੇ ॥ ਉਨ ਸਤਿਗੁਰ ਆਗੈ ਸੀਸੁ ਨ ਬੇਚਿਆ
 ਓਝਿ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ਅਭਾਗੇ ॥੪॥ ਹਮਰਾ ਬਿਨਤ ਸੁਨਹੁ ਪ੍ਰਭ ਠਾਕੁਰ ਹਮ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭੂ ਹਰਿ ਮਾਗੇ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਕੀ ਲਜ ਪਾਤਿ ਗੁਰੂ ਹੈ ਸਿਰੁ ਬੇਚਿਓ ਸਤਿਗੁਰ ਆਗੇ ॥੫॥੧੦॥੨੪॥੬੨॥ ਗਤੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪
 ॥ ਹਮ ਅਛਕਾਰੀ ਅਛਕਾਰ ਅਗਿਆਨ ਮਤਿ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਗਇਆ ਸੁਖੁ
 ਪਾਇਆ ਧਨੁ ਧਨ੍ਨੁ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥ ਰਾਮ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੇਰੈ ਹੀਅਰੈ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਾਮ ਰਾਇ ਕੀ ਗੁਰਿ ਮਾਰਗੁ ਪਥੁ ਬਤਾਇਆ ॥ ਮੇਰਾ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਸਤਿਗੁਰ ਆਗੈ ਜਿਨਿ ਵਿਛੁਡਿਆ
 ਹਰਿ ਗਲਿ ਲਾਇਆ ॥੨॥ ਮੇਰੈ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਦੇਖਨ ਕਤ ਗੁਰਿ ਹਿਰਦੇ ਨਾਲਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਸਹਜ
 ਅਨਨਦੁ ਭਇਆ ਮਨਿ ਮੌਰੈ ਗੁਰ ਆਗੈ ਆਪੁ ਵੇਚਾਇਆ ॥੩॥ ਹਮ ਅਪਰਾਧ ਪਾਪ ਬਹੁ ਕੀਨੇ ਕਰਿ ਦੁਸਟੀ
 ਚੋਰ ਚੁਰਾਇਆ ॥ ਅਬ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਗਤਿ ਆਏ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਲਾਜ ਹਰਿ ਭਾਇਆ ॥੪॥੧੧॥੨੫॥੬੩॥
 ਗਤੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਬਾਜੈ ਸਬਦੁ ਅਨਾਹਦੁ ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੂਆ ਗਾਵੈ ॥ ਕਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ
 ਪਾਇਆ ਧਨੁ ਧਨ੍ਨੁ ਗੁਰੂ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਪੂਰਾ ਮਨੁ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥ ਹਮ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਹ ਪਾਵ ਗੁਰੂ ਕੇ ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਨਾਵੈ ॥੨॥
 ਹਿਰਦੈ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਜਿਹਵਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਮਨ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਹਰਿ ਰਸਿ ਆਘਾਨੇ ਫਿਰਿ
 ਬਹੁਰਿ ਨ ਭੂਖ ਲਗਾਵੈ ॥੩॥ ਕੋਈ ਕਰੈ ਤਪਾਵ ਅਨੇਕ ਬਹੁਤੇਰੇ ਬਿਨੁ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ
 ਕਤ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਵ੃ਡਾਵੈ ॥੪॥੧੨॥੨੬॥੬੪॥ ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਮਾੜ
 ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿੰਦ੍ਹ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਕਰੰਮਾ ॥ ਮਤਿ ਮਾਤਾ ਮਤਿ ਜੀਤ ਨਾਮੁ ਸੁਖਿ ਰਾਮਾ ॥ ਸਂਤੋਖੁ ਪਿਤਾ

ਕਰਿ ਗੁਰੂ ਪੁਰਖੁ ਅਜਨਮਾ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਮਿਲੁ ਰਾਮਾ ॥੧॥ ਗੁਰੂ ਜੋਗੀ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਿਆ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀ ਜੀਤ ॥
 ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਤੜਾ ਸਦਾ ਨਿਰਬਾਣੀ ਜੀਤ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਮਿਲੁ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣੀ ਜੀਤ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿ
 ਰੰਗਿ ਭਿਨਨਾ ॥੨॥ ਆਵਹੁ ਸੰਤਹੁ ਮਿਲਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਹਾ ॥ ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਲੈ ਲਾਹਾ ਜੀਤ ॥ ਕਰਿ
 ਸੇਵਾ ਸੰਤਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੁਖਿ ਪਾਹਾ ਜੀਤ ॥ ਮਿਲੁ ਪ੍ਰੂਬਿ ਲਿਖਿਅਡੇ ਧੁਰਿ ਕਰਮਾ ॥੩॥ ਸਾਵਣਿ ਕਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ
 ਜਗੁ ਛਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਮਨੁ ਮੌਰੁ ਕੁਹਕਿਅਡਾ ਸਬਦੁ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਕੁਠੜਾ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ
 ਰਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੇਮਿ ਰਤਨਾ ॥੪॥੧॥੨੭॥੬੫॥ ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਆਤ ਸਖੀ ਗੁਣ
 ਕਾਮਣ ਕਰੀਹਾ ਜੀਤ ॥ ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਰੰਗੁ ਮਾਣਿਹ ਰਲੀਆ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਦੀਪਕੁ ਗਿਆਨੁ ਸਦਾ ਮਨਿ
 ਕਲੀਆ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਤੁਠੈ ਢੁਲਿ ਢੁਲਿ ਮਿਲੀਆ ਜੀਤ ॥੧॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਗਾ ਹਰਿ ਢੋਲੇ ਜੀਤ ॥
 ਮੈ ਮੇਲੇ ਮਿਤ੍ਰ ਸਤਿਗੁਰੁ ਵੇਚੋਲੇ ਜੀਤ ॥ ਮਨੁ ਦੇਵਾਂ ਸੰਤਾ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲੇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਵਿਟਡਿਅਹੁ ਸਦਾ ਘੋਲੇ
 ਜੀਤ ॥੨॥ ਕਿਸੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਕਿਸੁ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਹਰਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮਨਿ ਕਿਸੁ ਜੀਤ ॥ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਅਡਾ
 ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਵੇਖਿ ਵਿਗਸੁ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲਿਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਮਨਿ
 ਅਨਦਿਨੁ ਅਨਦੁ ਰਹਸੁ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਪਾਇਅਡਾ ਵਡਭਾਗੀਈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਨਿਤ ਲੈ ਲਾਹਾ ਮਨਿ ਹਸੁ ਜੀਤ
 ॥੩॥ ਹਰਿ ਆਪਿ ਤਥਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਕਾਰੈ ਲਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਇਕਿ ਖਾਵਹਿ ਕਖਸ ਤੋਟਿ ਨ
 ਆਵੈ ਇਕਨਾ ਫਕਾ ਪਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਇਕਿ ਰਾਜੇ ਤਖਤਿ ਬਹਹਿ ਨਿਤ ਸੁਖੀਏ ਇਕਨਾ ਭਿਖ ਮੰਗਾਇਆ ਜੀਤ
 ॥ ਸਭੁ ਇਕੋ ਸਬਦੁ ਕਰਤਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਜੀਤ ॥੪॥੨॥੨੮॥੬੬॥
 ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਨ ਮਾਹੀ ਮਨ ਮਾਹੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਮਨ ਮਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗੁ
 ਨਾਲਿ ਨ ਲਖੀਐ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਅਲਖੁ ਲਖਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ
 ਸਭ ਦਾਲਦ ਦੁਖ ਲਹਿ ਜਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਪਦੁ ਊਤਮੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹੀ
 ਜੀਤ ॥੧॥ ਨੈਣੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਨੈਣੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਕਿਨੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡਿਠੜਾ ਨੈਣੀ ਜੀਤ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ

ਤਨੁ ਬਹੁਤੁ ਕੈਰਾਗਿਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਬਾਝਾਹੁ ਧਨ ਕੁਮਲੈਣੀ ਜੀਤ ॥ ਸਂਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ
 ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਜਣੁ ਸੈਣੀ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਆਇ ਮਿਲਿਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਮੈ ਸੁਖਿ ਵਿਹਾਣੀ ਰੈਣੀ ਜੀਤ
 ॥੨॥ ਮੈ ਮੇਲਹੁ ਸੰਤ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਜਣੁ ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭੁਖ ਲਗਾਈਆ ਜੀਤ ॥ ਹਉ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਬਿਨੁ
 ਦੇਖੇ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮੈ ਅੰਤਰਿ ਬਿਰਹੁ ਹਰਿ ਲਾਈਆ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ਮੇਰਾ ਸਜਣੁ ਪਿਆਰਾ ਗੁਰੂ ਮੇਲੇ ਮੇਰਾ
 ਮਨੁ ਜੀਵਾਈਆ ਜੀਤ ॥ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਆਸਾ ਪੂਰੀਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਮਨਿ ਵਾਧਾਈਆ ਜੀਤ ॥
 ੩॥ ਵਾਰੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਵਾਰੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਹਉ ਤੁਧੁ ਕਿਟਡਿਅਹੁ ਸਦ ਵਾਰੀ ਜੀਤ ॥ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ
 ਪਿਰਿਮ ਕਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੰਜੀ ਰਾਖੁ ਹਮਾਰੀ ਜੀਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਸਟੁ ਮੇਲਿ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਕਰਿ
 ਰੈਬਾਰੀ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਾਇਆ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣ ਤੁਮਾਰੀ ਜੀਤ ॥੪॥੩॥
 ੨੬॥੬੭॥ ਗਤੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਚੋਜੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਚੋਜੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਚੋਜੀ ਜੀਤ ॥
 ਹਰਿ ਆਪੇ ਕਾਨੁ ਤਪਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਗੋਪੀ ਖੋਜੀ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਸਭ ਘਟ ਭੋਗਦਾ ਮੇਰੇ
 ਗੋਵਿੰਦਾ ਆਪੇ ਰਸੀਆ ਭੋਗੀ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਸੁਜਾਣੁ ਨ ਭੁਲਈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰ ਜੋਗੀ ਜੀਤ ॥
 ੧॥ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਖੇਲੈ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਜੀਤ ॥ ਇਕਨਾ ਭੋਗ ਭੋਗਾਇਦਾ ਮੇਰੇ
 ਗੋਵਿੰਦਾ ਇਕਿ ਨਗਨ ਫਿਰਹਿ ਨਨਗ ਨਨਗੀ ਜੀਤ ॥ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਦਾਨੁ ਦੇਵੈ ਸਭ
 ਮੰਗੀ ਜੀਤ ॥ ਭਗਤਾ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ਹੈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਕਥਾ ਮੰਗਹਿ ਹਰਿ ਚੰਗੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਹਰਿ ਆਪੇ
 ਭਗਤਿ ਕਰਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਲੋਚ ਮਨਿ ਪੂਰੀ ਜੀਤ ॥ ਆਪੇ ਜਲਿ ਥਲਿ ਕਰਤਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ
 ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਨਹੀ ਦੂਰੀ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਆਪਿ ਹੈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੀ
 ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਸਾਰਿਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਕੇਖੈ ਆਪਿ ਹਦੂਰੀ ਜੀਤ ॥੩॥ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਵਾਜਾ
 ਪਤਣੁ ਹੈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਵਜਾਏ ਤਿਉ ਵਾਜੈ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ
 ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਗਾਜੈ ਜੀਤ ॥ ਆਪੇ ਸਰਣ ਪਵਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਭਗਤ ਜਨਾ ਰਾਖੁ ਲਾਜੈ

ਜੀਤ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਮਿਲੁ ਸੰਗਤੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਸਿਧਿ ਕਾਜੈ ਜੀਤ ॥੪॥੪॥੩੦॥੬੮॥
 ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੈ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਬਿਰਹੁ ਲਗਾਈ ਜੀਤ ॥ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਤੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈ
 ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਟੇਖਿ ਜੀਵਾ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ਜੀਤ ॥ ਮੇਰਾ ਨਾਮੁ ਸਖਾ ਹਰਿ ਭਾਈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਸੰਤ
 ਜੀਤ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੇ ਜੀਤ ॥ ਜਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜੀਤ ਭਾਗ ਕਡੇਰੇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਤ
 ਪ੍ਰਾਨ ਹਰਿ ਮੇਰੇ ਜੀਤ ॥ ਫਿਰਿ ਬਹੁਡਿ ਨ ਭਵਜਲ ਫੇਰੇ ਜੀਤ ॥੨॥ ਕਿਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਵੇਖਾ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ
 ਚਾਤ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸੰਤ ਜੀਤ ਮਨਿ ਲਗਾ ਭਾਉ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਾਤ ਜੀਤ ॥
 ਵਡਭਾਗੀ ਜਪਿ ਨਾਉ ਜੀਤ ॥੩॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਡੜੀ ਗੋਵਿੰਦ ਪ੍ਰਭ ਆਸਾ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸੰਤ
 ਜੀਤ ਗੋਵਿਦ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਾ ਜੀਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਤਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਪਰਗਾਸਾ ਜੀਤ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪੂਰਿਆਡੀ ਮਨਿ
 ਆਸਾ ਜੀਤ ॥੪॥੫॥੩੧॥੬੯॥ ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰਾ ਬਿਰਹੀ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਾ ਜੀਵਾ ਜੀਤ ॥ ਮਨ
 ਅੰਦਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਲੀਵਾ ਜੀਤ ॥ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਤੜਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਦਾ ਪੀਵਾ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ
 ਪਾਇਆਡਾ ਮਨਿ ਜੀਵਾ ਜੀਤ ॥੧॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਗਾ ਹਰਿ ਬਾਣੁ ਜੀਤ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਿਨ੍ਨੁ ਹਰਿ
 ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਸੰਤ ਹਰਿ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੁ ਜੀਤ ॥ ਹਤ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜੀਤ ॥੨॥
 ਹਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਹਰਿ ਮੀਤੁ ਦਸਾਈ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਦਸਹੁ ਸੰਤਹੁ ਜੀ ਹਰਿ ਖੋਜੁ ਪਵਾਈ ਜੀਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਤੁਠੜਾ ਦੱਸੇ ਹਰਿ ਪਾਈ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਮੈ ਵੇਦਨ ਪ੍ਰੇਮੁ ਹਰਿ ਬਿਰਹੁ ਲਗਾਈ
 ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਸਰਧਾ ਪੂਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੁਖਿ ਪਾਈ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹੋਹੁ ਦਿਆਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਜੀਤ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਈ ਜੀਤ ॥੪॥੬॥੨੦॥੧੮॥੩੨॥੭੦॥

ਮਹਲਾ ੫ ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਚਤਪਦੇ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਕੁਸਲੁ ਹੋਤ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਰਾਮ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

ਕੁਸਲੁ ਨ ਗ੍ਰਹਿ ਮੇਰੀ ਸਭ ਮਾਇਆ ॥ ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਸੁੰਦਰ ਛਾਇਆ ॥ ਝੂਠੇ ਲਾਲਚਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥

੧॥ ਹਸਤੀ ਘੋੜੇ ਦੇਖਿ ਵਿਗਾਸਾ ॥ ਲਸਕਰ ਜੋੜੇ ਨੇਬ ਖਵਾਸਾ ॥ ਗਲਿ ਜੇਵੜੀ ਹਉਮੈ ਕੇ ਫਾਸਾ ॥੨॥ ਰਾਜੁ
 ਕਮਾਵੈ ਦਹ ਦਿਸ ਸਾਰੀ ॥ ਮਾਣੈ ਰੰਗ ਭੋਗ ਬਹੁ ਨਾਰੀ ॥ ਜਿਤ ਨਰਪਤਿ ਸੁਪਨੈ ਭੇਖਾਰੀ ॥੩॥ ਏਕੁ ਕੁਸਲੁ ਮੋ ਕਤ
 ਸਤਿਗੁਰੂ ਬਤਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਹਰਿ ਕਿਆ ਭਗਤਾ ਭਾਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ
 ਸਮਾਇਆ ॥੪॥ ਇਨ੍ਹਿਨਿ ਬਿਧਿ ਕੁਸਲ ਹੋਤ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਇਤ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਰਾਮ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ਦ੍ਰੂਜਾ ॥
 ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਿਤ ਭਰਮੀਐ ਭਰਮੁ ਕਿਸ ਕਾ ਹੋਈ ॥ ਜਾ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਵਿਆ ਸੋਈ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਕਰੇ ਮਨਮੁਖ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥੨॥ ਜਿਸੁ ਰਾਖੈ ਆਪਿ ਰਾਮੁ ਦਇਆਰਾ ॥ ਤਿਸੁ ਨਹੀਂ ਦ੍ਰੂਜਾ ਕੋ
 ਪਹੁੰਚਨਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਕਰਤੈ ਏਕੁ ਅੰਨਤਾ ॥ ਤਾ ਤ੍ਰਾਂ ਸੁਖਿ ਸੋਤ ਹੋਇ ਅਚਿੰਤਾ ॥ ਓਹੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ
 ਜਾਣੈ ਜੋ ਕਰਤੰਤਾ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ ਸੁਏ ਜਿਨ ਦ੍ਰੂਜੀ ਪਿਆਸਾ ॥ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਭਵਹਿ ਧੁਰਿ ਕਿਰਤਿ ਲਿਖਿਆਸਾ ॥
 ਜੈਸਾ ਬੀਜਹਿ ਤੈਸਾ ਖਾਸਾ ॥੩॥ ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਮਨਿ ਭਇਆ ਵਿਗਾਸਾ ॥ ਸਭੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਗਾਸਾ
 ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀ ਹਰਿ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥੪॥੨॥੭੧॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਈ ਜਨਮ ਭਏ ਕੀਟ
 ਪਤੰਗਾ ॥ ਕਈ ਜਨਮ ਗਜ ਮੀਨ ਕੁਰੰਗਾ ॥ ਕਈ ਜਨਮ ਪੰਖੀ ਸਰਪ ਹੋਇਆਂ ॥ ਕਈ ਜਨਮ ਹੈਵਰ ਬ੍ਰਖ ਜੋਇਆਂ ॥
 ੧॥ ਮਿਲੁ ਜਗਦੀਸ ਮਿਲਨ ਕੀ ਕਰੀਆ ॥ ਚਿੱਕਾਲ ਇਹ ਦੇਹ ਸੰਜਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਈ ਜਨਮ ਸੈਲ
 ਗਿਰਿ ਕਰਿਆ ॥ ਕਈ ਜਨਮ ਗਰਭ ਹਿਰਿ ਖਰਿਆ ॥ ਕਈ ਜਨਮ ਸਾਖ ਕਰਿ ਉਪਾਇਆ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ
 ਜੋਨਿ ਭਰਮਾਇਆ ॥੨॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਇਆਂ ਜਨਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ॥ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਭਜੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰਮਤਿ ॥ ਤਿਆਗਿ
 ਮਾਨੁ ਝੂਠੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਜੀਵਤ ਮਰਹਿ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨੁ ॥੩॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਆ ਸੁ ਤੁੜਾ ਤੇ ਹੋਗੁ ॥ ਅਕਰੁ ਨ ਦ੍ਰੂਜਾ
 ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥ ਤਾ ਮਿਲੀਐ ਜਾ ਲੈਹਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੪॥੩॥੭੨॥
 ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਮ ਭੂਮਿ ਮਹਿ ਬੋਅਹੁ ਨਾਮੁ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ਤੁਮਾਰਾ ਕਾਮੁ ॥ ਫਲ ਪਾਵਹਿ
 ਮਿਟੈ ਜਮ ਤਾਸ ॥ ਨਿਤ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਜਾਸ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਤਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥
 ਸੀਘਰ ਕਾਰਜੁ ਲੇਹੁ ਸਵਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਭ ਸਿਤ ਹੋਹੁ ਸਾਵਧਾਨੁ ॥ ਤਾ ਤ੍ਰਾਂ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ

मानु ॥ उकति सिआणप सगली तिआगु ॥ संत जना की चरणी लागु ॥२॥ सरब जीअ हहि जा कै हाथि
 ॥ कदे न विछुड़ै सभ कै साथि ॥ उपाव छोडि गहु तिस की ओट ॥ निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥३॥ सदा
 निकटि करि तिस नो जाणु ॥ प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥ गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥ हरि हरि
 नामु नानक जपि जापु ॥४॥४॥७३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥
 गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥ गुर का बचनु जीअ कै संगि ॥ गुर कै बचनि रचै राम कै रंगि ॥१॥
 जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥ संत का कीआ सति करि मानि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर का बचनु अटल
 अछेद ॥ गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥ गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥ गुर कै बचनि हरि के गुण
 गाइ ॥२॥ गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥ गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥ गुर कै बचनि नरकि न
 पवै ॥ गुर कै बचनि रसना अंमृतु रखै ॥३॥ गुर का बचनु परगटु संसारि ॥ गुर कै बचनि न आवै
 हारि ॥ जिसु जन होए आपि कृपाल ॥ नानक सतिगुर सदा दिइआल ॥४॥५॥७४॥ गउड़ी गुआरेरी
 महला ५ ॥ जिनि कीता माटी ते रतनु ॥ गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥ जिनि दीनी सोभा
 वडिआई ॥ तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥१॥ रमईआ रेनु साध जन पावउ ॥ गुर मिलि अपुना
 खसमु धिआवउ ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि कीता मूँड़ ते बकता ॥ जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥ जिसु
 परसादि नवै निधि पाई ॥ सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥२॥ जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥ जिनि
 दीआ निमाने कउ मानु ॥ जिनि कीनी सभ पूरन आसा ॥ सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥३॥ जिसु
 प्रसादि माइआ सिलक काटी ॥ गुर प्रसादि अंमृतु बिखु खाटी ॥ कहु नानक इस ते किछु नाही ॥
 राखनहारे कउ सालाही ॥४॥६॥७५॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तिस की सरणि नाही भउ
 सोगु ॥ उस ते बाहरि कछू न होगु ॥ तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥ दास अपने की राखनहार ॥
 १॥ जपि मन मेरे राम राम रंगि ॥ घरि बाहरि तेरै सद संगि ॥१॥ रहाउ ॥ तिस की टेक मनै महि

राखु ॥ गुर का सबदु अंमृत रसु चाखु ॥ अवरि जतन कहहु कउन काज ॥ करि किरपा राखै आपि
 लाज ॥२॥ किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥ झूठा माइਆ का सभु सोरु ॥ करण करावनहार सुआमी ॥
 सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥ सरब सुखा सुखु साचा एहु ॥ गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥ जा कउ राम
 नाम लिव लागी ॥ कहु नानक सो धनु वडभागी ॥४॥७॥७॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सुणि हरि
 कथा उतारी मैलु ॥ महा पुनीत भए सुख सैलु ॥ वडै भागि पाइआ साधसंग ॥ पारब्रह्म सित लागो
 रंग ॥१॥ हरि हरि नामु जपत जनु तारिओ ॥ अगनि सागरु गुरि पारि उतारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ करि
 कीरतनु मन सीतल भए ॥ जनम जनम के किलविख गए ॥ सरब निधान पेखे मन माहि ॥ अब ढूढन
 काहे कउ जाहि ॥२॥ प्रभ अपुने जब भए दइआल ॥ पूरन होई सेवक घाल ॥ बंधन काटि कीए
 अपने दास ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास ॥३॥ एको मनि एको सभ ठाइ ॥ पूरन पूरि रहिओ सभ
 जाइ ॥ गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइआ ॥ हरि सिमरत नानक सुखु पाइआ ॥४॥८॥७॥ गउड़ी
 गुआरेरी महला ५ ॥ अगले मुए सि पाछै परे ॥ जो उबरे से बंधि लकु खरे ॥ जिह धंधे महि ओइ
 लपटाए ॥ उन ते दुगुण दिड़ी उन माए ॥१॥ ओह बेला कछु चीति न आवै ॥ बिनसि जाइ ताहू
 लपटावै ॥१॥ रहाउ ॥ आसा बंधी मूरख देह ॥ काम क्रोध लपटिओ असनेह ॥ सिर ऊपरि ठाढो
 धरम राइ ॥ मीठी करि करि बिखिआ खाइ ॥२॥ हउ बंधउ हउ साधउ बैरु ॥ हमरी भूमि कउणु
 घालै पैरु ॥ हउ पंडितु हउ चतुरु सिआणा ॥ करणैहारु न बुझै बिगाना ॥३॥ अपुनी गति मिति
 आपे जानै ॥ किआ को कहै किआ आखि वखानै ॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ अपना भला सभ
 काहू मंगना ॥४॥ सभ किछु तेरा तूं करणैहारु ॥ अंतु नाही किछु पारावारु ॥ दास अपने कउ
 दीजै दानु ॥ कबहू न विसरै नानक नामु ॥५॥६॥७॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ अनिक जतन
 नही होत छुटारा ॥ बहुतु सिआणप आगल भारा ॥ हरि की सेवा निरमल हेत ॥ प्रभ की दरगह

सोभा सेत ॥੧॥ मन मेरे गहु हरि नाम का ओला ॥ तुझ्यै न लागै ताता झोला ॥੧॥ रहाउ ॥ जिउ
 बोहिथु भै सागर माहि ॥ अंधकार दीपक दीपाहि ॥ अगनि सीत का लाहसि दूख ॥ नामु जपत मनि
 होवत सूख ॥੨॥ उतरि जाइ तेरे मन की पिआस ॥ पूरन होवै सगली आस ॥ डोलै नाही तुमरा चीतु ॥
 अंमृत नामु जपि गुरमुखि मीत ॥੩॥ नामु अउखधु सोई जनु पावै ॥ करि किरपा जिसु आपि
 दिवावै ॥ हरि हरि नामु जा कै हिरदै वसै ॥ दूखु दरदु तिह नानक नसै ॥੪॥੧੦॥੭੬॥
 गउड़ी गुआरेरी महला ੫ ॥ बहुतु दरबु करि मनु न अघाना ॥ अनिक रूप देखि नह पतीआना ॥
 पुत्र कलत्र उरझिओ जानि मेरी ॥ ओह बिनसै ओइ भसमै ढेरी ॥੧॥ बिनु हरि भजन देखउ बिललाते ॥
 धिगु तनु धिगु धनु माइआ संगि राते ॥੧॥ रहाउ ॥ जिउ बिगारी कै सिरि दीजहि दाम ॥ ओइ
 खसमै कै गृहि उन दूख सहाम ॥ जिउ सुपनै होइ बैसत राजा ॥ नेत्र पसारै ता निरारथ काजा ॥੨॥
 जिउ राखा खेत ऊपरि पराए ॥ खेतु खसम का राखा उठि जाए ॥ उसु खेत कारणि राखा कड़ै ॥ तिस कै
 पालै कछू न पड़ै ॥੩॥ जिस का राजु तिसै का सुपना ॥ जिनि माइआ दीनी तिनि लाई तृसना ॥ आपि
 बिनाहे आपि करे रासि ॥ नानक प्रभ आगै अरदासि ॥੪॥੧੧॥੮੦॥ गउड़ी गुआरेरी महला ੫ ॥
 बहु रंग माइआ बहु बिधि पेखी ॥ कलम कागद सिआनप लेखी ॥ महर मलूक होइ देखिआ खान ॥
 ता ते नाही मनु तृपतान ॥੧॥ सो सुखु मो कउ संत बतावहु ॥ तृसना बूझै मनु तृपतावहु ॥੧॥ रहाउ ॥
 असु पवन हसति असवारी ॥ चोआ चंदनु सेज सुंदरि नारी ॥ नट नाटिक आखारे गाइआ ॥ ता महि
 मनि संतोखु न पाइआ ॥੨॥ तखतु सभा मंडन दोलीचे ॥ सगल मेवे सुंदर बागीचे ॥ आखेड़ बिरति
 राजन की लीला ॥ मनु न सुहेला परपंचु हीला ॥੩॥ करि किरपा संतन सचु कहिआ ॥ सरब सूख इहु
 आन्नदु लहिआ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईअै ॥ कहु नानक वडभागी पाईअै ॥੪॥ जा कै हरि धनु
 सोई सुहेला ॥ प्रभ किरपा ते साधसंगि मेला ॥੧॥ रहाउ दूजा ॥੧੨॥੮੧॥ गउड़ी गुआरेरी

ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਾਣੀ ਜਾਣੈ ਇਹੁ ਤਨੁ ਮੇਰਾ ॥ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਤਆਹੂ ਲਪਟੇਰਾ ॥ ਪੁਰ ਕਲਤ ਗਿਰਸਤ ਕਾ ਫਾਸਾ
 ॥ ਹੋਨੁ ਨ ਪਾਈਐ ਰਾਮ ਕੇ ਦਾਸਾ ॥੧॥ ਕਵਨ ਸੁ ਬਿਧਿ ਜਿਤੁ ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਕਵਨ ਸੁ ਮਤਿ ਜਿਤੁ ਤਰੈ
 ਇਹ ਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੋ ਭਲਾਈ ਸੋ ਬੁਰਾ ਜਾਨੈ ॥ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਸੋ ਬਿਖੈ ਸਮਾਨੈ ॥ ਜਾਣੈ ਨਾਹੀ ਜੀਤ ਅਥੁ
 ਹਾਰ ॥ ਇਹੁ ਕਲੇਵਾ ਸਾਕਤ ਸੰਸਾਰ ॥੨॥ ਜੋ ਹਲਾਹਲ ਸੋ ਪੀਵੈ ਬਤਰਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਜਾਨੈ ਕਰਿ ਕਤਰਾ ॥
 ਸਾਧਸੰਗ ਕੈ ਨਾਹੀ ਨੇਰਿ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਭ੍ਰਮਤਾ ਫੇਰਿ ॥੩॥ ਏਕੈ ਜਾਲਿ ਫਹਾਏ ਪੰਖੀ ॥ ਰਸਿ ਰਸਿ ਭੋਗ
 ਕਰਹਿ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਭਾਏ ਕ੃ਪਾਲ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੌਤ ਤਾ ਕੇ ਕਾਟੇ ਜਾਲ ॥੪॥੧੩॥੮੨॥ ਗਤੜੀ
 ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਤ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਾਰਗੁ ਪਾਈਐ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ
 ਤੇ ਬੰਧਨ ਛੁਟੈ ॥ ਤਤ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਤਮੈ ਤੁਟੈ ॥੧॥ ਤੁਮ ਲਾਵਹੁ ਤਤ ਲਾਗਹ ਸੇਵ ॥ ਹਮ ਤੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵੈ ਦੇਵ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਗਾਵਾ ਬਾਣੀ ॥ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਸਚੁ ਕਖਾਣੀ ॥ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਡਿਆ ॥
 ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਦਿਇਆ ॥੨॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਨਿਰਮਲ ਕਰਮਾ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਸਚੁ ਧਰਮਾ ॥ ਸਰਬ
 ਨਿਧਾਨ ਗੁਣ ਤੁਮ ਹੀ ਪਾਸਿ ॥ ਤ੍ਰਿ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵਕ ਅਰਦਾਸਿ ॥੩॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ਹਰਿ ਰੰਗ ॥ ਸਰਬ
 ਸੁਖਾ ਪਾਵਤ ਸਤਸੰਗਿ ॥ ਨਾਮਿ ਤੈਰੈ ਰਹੈ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਇਹੁ ਕਲਿਆਣੁ ਨਾਨਕ ਕਰਿ ਜਾਤਾ ॥੪॥੧੪॥੮੩॥
 ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਨ ਰਸਾ ਜੇਤੇ ਤੈ ਚਾਖੇ ॥ ਨਿਮਖ ਨ ਤ੍ਰਸਨਾ ਤੇਰੀ ਲਾਥੇ ॥ ਹਰਿ ਰਸ ਕਾ ਤ੍ਰਿ
 ਚਾਖਹਿ ਸਾਦੁ ॥ ਚਾਖਤ ਹੋਇ ਰਹਹਿ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥੧॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਸਨਾ ਪੀਤ ਪਿਆਰੀ ॥ ਇਹੁ ਰਸ ਰਾਤੀ ਹੋਇ
 ਤ੍ਰਪਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹੇ ਜਿਹਵੇ ਤ੍ਰਿ ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਤ ॥ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਉ ॥ ਆਨ
 ਨ ਸੁਨੀਐ ਕਤਹੁੰ ਜਾਈਐ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਆਠ ਪਹਰ ਜਿਹਵੇ ਆਰਾਧਿ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਠਕੁਰ ਆਗਾਧਿ ॥ ਈਹਾ ਊਹਾ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੀ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਰਸਨ ਅਮੋਲੀ ॥੩॥ ਬਨਸਪਤਿ
 ਮਤਲੀ ਫਲ ਫੁਲ ਪੇਡੇ ॥ ਇਹੁ ਰਸ ਰਾਤੀ ਬਹੁਰਿ ਨ ਛੋਡੇ ॥ ਆਨ ਨ ਰਸ ਕਸ ਲਵੈ ਨ ਲਾਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰ ਭਾਏ ਹੈ ਸਹਾਇ ॥੪॥੧੫॥੮੪॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨੁ ਮੰਦਰੁ ਤਨੁ ਸਾਜੀ ਬਾਰਿ ॥

इस ही मधे बसतु अपार ॥ इस ही भीतरि सुनीअत साहु ॥ कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥੧॥
 नाम रतन को को बिउहारी ॥ अंमृत भोजनु करे आहारी ॥੧॥ रहाउ ॥ मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥
 कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥ पाइ लगउ तजि मेरा तेरै ॥ कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥੨॥
 महलु साह का किन बिधि पावै ॥ कवन सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥ तूं वड साहु जा के कोटि
 वणजारे ॥ कवनु सु दाता ले संचारे ॥੩॥ खोजत खोजत निज घरु पाइआ ॥ अमोल रतनु साचु
 दिखलाइआ ॥ करि किरपा जब मेले साहि ॥ कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥੪॥੧੬॥੮॥
 गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥ रैण दिनसु रहै इक रंगा ॥ प्रभ कउ जाणै सद ही संगा ॥ ठाकुर नामु कीओ
 उनि वरतनि ॥ तृपति अघावनु हरि कै दरसनि ॥੧॥ हरि संगि राते मन तन हरे ॥ गुर पूरे की
 सरनी परे ॥੧॥ रहाउ ॥ चरण कमल आत्म आधार ॥ एकु निहारहि आगिआकार ॥ एको बनजु
 एको बिउहारी ॥ अवरु न जानहि बिनु निरंकारी ॥੨॥ हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥ सदा अलिपतु
 जोग अरु जुगते ॥ दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥ पारब्रह्म का ओइ धिआनु धरते ॥੩॥ संतन की
 महिमा कवन वखानउ ॥ अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥ पारब्रह्म मोहि किरपा कीजै ॥ धूरि
 संतन की नानक दीजै ॥੪॥੧੭॥੮॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥ तूं
 मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ तूं मेरी पति तूहै मेरा गहणा ॥ तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥੧॥ तूं
 मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥ तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥੧॥ रहाउ ॥ जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥
 जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ जह पेखउ तहा तुम बसना ॥ निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥੨॥ तूं
 मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥ रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥ तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥ तूं मेरी ओट तूं
 है मेरा तकीआ ॥੩॥ मन तन अंतरि तुही धिआइआ ॥ मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥ सतिगुर ते
 दृढ़िआ इकु एकै ॥ नानक दास हरि हरि टेकै ॥੪॥੧੮॥੮॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਬਿਆਪਤ ਹਰਖ ਸੋਗ ਬਿਸਥਾਰ ॥ ਬਿਆਪਤ ਸੁਰਗ ਨਰਕ ਅਵਤਾਰ ॥ ਬਿਆਪਤ ਧਨ ਨਿਰਧਨ ਪੇਖਿ ਸੋਭਾ ॥
 ਮੂਲੁ ਬਿਆਧੀ ਬਿਆਪਸਿ ਲੋਭਾ ॥੧॥ ਮਾਇਆ ਬਿਆਪਤ ਬਹੁ ਪਰਕਾਰੀ ॥ ਸਾਂਤ ਜੀਵਹਿ ਪ੍ਰਭ ਓਟ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧
 ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਆਪਤ ਅਛੱਬੁਧਿ ਕਾ ਮਾਤਾ ॥ ਬਿਆਪਤ ਪੁਤ ਕਲਤ ਸੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥ ਬਿਆਪਤ ਹਸਤਿ ਘੋੜੇ ਅਚੁ
 ਬਸਤਾ ॥ ਬਿਆਪਤ ਰੂਪ ਜੋਵਨ ਮਦ ਮਸਤਾ ॥੨॥ ਬਿਆਪਤ ਭੂਮਿ ਰੱਕ ਅਚੁ ਰੰਗਾ ॥ ਬਿਆਪਤ ਗੀਤ ਨਾਦ
 ਸੁਣਿ ਸੰਗਾ ॥ ਬਿਆਪਤ ਸੇਜ ਮਹਲ ਸੀਗਾਰ ॥ ਪੰਚ ਟੂਤ ਬਿਆਪਤ ਅੰਧਿਆਰ ॥੩॥ ਬਿਆਪਤ ਕਰਮ ਕਰੈ ਹਤ
 ਫਾਸਾ ॥ ਬਿਆਪਤਿ ਗਿਰਸਤ ਬਿਆਪਤ ਤਦਾਸਾ ॥ ਆਚਾਰ ਬਿਤਹਾਰ ਬਿਆਪਤ ਇਹ ਜਾਤਿ ॥ ਸਭ ਕਿਛੁ
 ਬਿਆਪਤ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰਾਤ ॥੪॥ ਸਾਂਤਨ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਤਾ ਕਤ ਕਹਾ ਬਿਆਪੈ ਮਾਇ ॥ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਧੂਰਿ ਸਾਂਤ ਪਾਈ ॥ ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਮਾਈ ॥੫॥੧੬॥੮੮॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਨੈਨਹੁ ਨੀਦ ਪਰ ਦੂਸਟਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਸ਼ਰਵਣ ਸੋਏ ਸੁਣਿ ਨਿੰਦ ਵੀਚਾਰ ॥ ਰਸਨਾ ਸੋਈ ਲੋਭਿ ਮੀਠੈ ਸਾਦਿ ॥ ਮਨੁ
 ਸੋਇਆ ਮਾਇਆ ਬਿਸਮਾਦਿ ॥੧॥ ਇਸੁ ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਕੋਈ ਜਾਗਤੁ ਰਹੈ ॥ ਸਾਬਤੁ ਵਸਤੁ ਓਹੁ ਅਪਨੀ ਲਹੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਸਗਲ ਸਹੇਲੀ ਅਪਨੈ ਰਸ ਮਾਤੀ ॥ ਗ੍ਰਹ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਖਕਾਰਿ ਨ ਜਾਤੀ ॥ ਮੁਸਨਹਾਰ ਪੰਚ ਬਟਵਾਰੇ ॥
 ਸੂਨੇ ਨਗਰਿ ਪਰੇ ਠਗਹਾਰੇ ॥੨॥ ਤਨ ਤੇ ਰਾਖੈ ਬਾਪੁ ਨ ਮਾਈ ॥ ਤਨ ਤੇ ਰਾਖੈ ਮੀਤੁ ਨ ਭਾਈ ॥ ਦਰਬਿ ਸਿਆਣਪ
 ਨਾ ਓਇ ਰਹਤੇ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਓਇ ਦੁਸਟ ਵਸਿ ਹੋਤੇ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਸਾਰਿੰਗਪਾਣਿ ॥ ਸਾਂਤਨ ਧੂਰਿ
 ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ॥ ਸਾਬਤੁ ਪ੍ਰੰਜੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਿ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਾਗੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੪॥ ਸੋ ਜਾਗੈ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ
 ਕਿਰਪਾਲੁ ॥ ਇਹ ਪ੍ਰੰਜੀ ਸਾਬਤੁ ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਟੂਜਾ ॥੨੦॥੮੯॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਜਾ ਕੈ ਵਸਿ ਖਾਨ ਸੁਲਤਾਨ ॥ ਜਾ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਸਗਲ ਜਹਾਨ ॥ ਜਾ ਕਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥ ਤਿਸ ਤੇ ਬਾਹਰਿ
 ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥੧॥ ਕਹੁ ਬੇਨਤੀ ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਹਿ ॥ ਕਾਜ ਤੁਮਾਰੇ ਦੇਇ ਨਿਬਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਭ ਤੇ
 ਊਚ ਜਾ ਕਾ ਦਰਬਾਰੁ ॥ ਸਗਲ ਭਗਤ ਜਾ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਸਰਬ ਬਿਆਪਿਤ ਪੂਰਨ ਧਨੀ ॥ ਜਾ ਕੀ ਸੋਭਾ
 ਘਟਿ ਘਟਿ ਬਨੀ ॥੨॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਟੁਖ ਡੇਰਾ ਫਹੈ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਜਮੁ ਕਿਛੁ ਨ ਕਹੈ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ

होत सूके हरे ॥ जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥३॥ संत सभा कउ सदा जैकारु ॥ हरि हरि नामु जन
 प्रान अधारु ॥ कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥४॥२१॥६०॥
 गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥
 सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥ अंमृत बाणी गुरमुखि बोलै ॥१॥ सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥
 सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥१॥ रहाउ ॥ संत प्रसादि जपै हरि नाउ ॥ संत प्रसादि हरि कीरतनु
 गाउ ॥ संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥२॥ संत कृपा ते मिटे मोह भरम ॥
 साध रेण मजन सभि धरम ॥ साध कृपाल दिइआल गोविंदु ॥ साधा महि इह हमरी जिंदु ॥३॥
 किरपा निधि किरपाल धिआवउ ॥ साधसंगि ता बैठणु पावउ ॥ मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दिइआ ॥
 साधसंगि नानक नामु लिइआ ॥४॥२२॥६१॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ साधसंगि जपिओ
 भगवंतु ॥ केवल नामु दीओ गुरि मंतु ॥ तजि अभिमान भए निरवैर ॥ आठ पहर पूजहु गुर पैर
 ॥१॥ अब मति बिनसी दुस्ट बिगानी ॥ जब ते सुणिआ हरि जसु कानी ॥१॥ रहाउ ॥ सहज
 सूख आन्द निधान ॥ राखनहार रखि लेइ निदान ॥ दूख दरद बिनसे भै भरम ॥ आवण जाण रखे
 करि करम ॥२॥ पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥ सदा संगि ता कउ मन जापि ॥ संत प्रसादि भइओ
 परगासु ॥ पूरि रहे एकै गुणतासु ॥३॥ कहत पवित्र सुणत पुनीत ॥ गुण गोविंद गावहि नित नीत ॥
 कहु नानक जा कउ होहु कृपाल ॥ तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥४॥२३॥६२॥ गउड़ी गुआरेरी
 महला ५ ॥ बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥ मन महि लागै साचु धिआनु ॥ मिटहि कलेस सुखी होइ रहीअै
 ॥ औसा दाता सतिगुरु कहीअै ॥१॥ सो सुखदाता जि नामु जपावै ॥ करि किरपा तिसु संगि मिलावै ॥
 ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु होइ दिइआलु तिसु आपि मिलावै ॥ सरब निधान गुरु ते पावै ॥ आपु तिआगि
 मिटै आवण जाणा ॥ साध कै संगि पारब्रहमु पछाणा ॥२॥ जन ऊपरि प्रभ भए दिइआल ॥

जन की टेक एक गोपाल ॥ एका लिव एको मनि भाउ ॥ सरब निधान जन कै हरि नाउ ॥३॥ पारब्रहम
 सिउ लागी प्रीति ॥ निरमल करणी साची रीति ॥ गुरि पूरै मेटिआ अंधिआरा ॥ नानक का प्रभु अपर
 अपारा ॥४॥२४॥६३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिसु मनि वसै तरै जनु सोइ ॥ जा कै करमि
 परापति होइ ॥ दूखु रेगु कछु भउ न बिआपै ॥ अंमृत नामु रिदै हरि जापै ॥१॥ पारब्रहमु परमेसुरु
 धिआईअै ॥ गुर पूरे ते इह मति पाईअै ॥२॥ रहाउ ॥ करण करावनहार दिआल ॥ जीअ जंत
 सगले प्रतिपाल ॥ अगम अगोचर सदा बेअंता ॥ सिमरि मना पूरे गुर मंता ॥२॥ जा की सेवा सरब
 निधानु ॥ प्रभ की पूजा पाईअै मानु ॥ जा की टहल न बिरथी जाइ ॥ सदा सदा हरि के गुण गाइ ॥
 ३॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी ॥ सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥
 नानक नामु मिलै वडिआई ॥४॥२५॥६४॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जीअ जुगति जा कै है हाथ
 ॥ सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥ प्रभ चिति आए सभु दुखु जाइ ॥ भै सभ बिनसहि हरि कै नाइ ॥१॥
 बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥ हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥२॥ रहाउ ॥ जिनि धारे बहु धरणि
 अगास ॥ जा की जोति जीअ परगास ॥ जा की बखस न मेटै कोइ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु निरभउ होइ
 ॥२॥ आठ पहर सिमरहु प्रभ नामु ॥ अनिक तीरथ मजनु इसनानु ॥ पारब्रहम की सरणी पाहि ॥
 कोटि कलम्क खिन महि मिटि जाहि ॥३॥ बेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥ गुरि
 पूरै राखे दे हाथ ॥ नानक पारब्रहम समराथ ॥४॥२६॥६५॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर
 परसादि नामि मनु लागा ॥ जनम जनम का सोइआ जागा ॥ अंमृत गुण उचरै प्रभ बाणी ॥
 पूरे गुर की सुमति पराणी ॥१॥ प्रभ सिमरत कुसल सभि पाए ॥ घरि बाहरि सुख सहज
 सबाए ॥२॥ रहाउ ॥ सोई पछाता जिनहि उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाइआ ॥
 बाह पकरि लीनो करि अपना ॥ हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥२॥ मंत्र तंत्र अउखधु पुनहचारु ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੁ ॥ ਸਾਚਾ ਧਨੁ ਪਾਇਆਂ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥ ਦੁਤਰੁ ਤਰੇ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥੩॥ ਸੁਖਿ
ਬੈਸਹੁ ਸੰਤ ਸਜਨ ਪਰਵਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਟਿਆਂ ਜਾ ਕਾ ਨਾਹਿ ਸੁਮਾਰੁ ॥ ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਸੁ ਗੁਰੁ ਦੇਇ ॥
ਨਾਨਕ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ ਹੇਇ ॥੪॥੨੭॥੬੬॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਸਤ ਪੁਨੀਤ ਹੋਹਿ ਤਤਕਾਲ
॥ ਬਿਨਸਿ ਜਾਹਿ ਮਾਇਆ ਜੰਜਾਲ ॥ ਰਸਨਾ ਰਮਹੁ ਰਾਮ ਗੁਣ ਨੀਤ ॥ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਮੀਤ ॥੧॥
ਲਿਖੁ ਲੇਖਣਿ ਕਾਗਦਿ ਮਸਵਾਣੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਹ ਕਾਰਜਿ ਤੇਰੇ ਜਾਹਿ
ਬਿਕਾਰ ॥ ਸਿਮਰਤ ਰਾਮ ਨਾਹੀ ਜਮ ਮਾਰ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੇ ਢੂਤ ਨ ਜੋਹੈ ॥ ਮਾਇਆ ਮਗਨ ਨ ਕਛੂਐ ਮੋਹੈ ॥੨॥
ਉਧਰਹਿ ਆਧਿ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਧਿ ਏਕਕਾਰੁ ॥ ਆਧਿ ਕਮਾਤ ਅਕਾਰਾ ਉਪਦੇਸ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਿਰਦੈ
ਪਰਵੇਸ ॥੩॥ ਜਾ ਕੈ ਮਾਥੈ ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਸੋਈ ਪੁਰਖੁ ਜਪੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਤ ਤਿਸੁ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥੪॥੨੮॥੬੭॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਟੁਪਦੇ

੧੮੬ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜੋ ਪਰਾਇਆ ਸੋਈ ਅਪਨਾ ॥ ਜੋ ਤਜਿ ਛੋਡਨ ਤਿਸੁ ਸਿਤ ਮਨੁ ਰਚਨਾ ॥੧॥ ਕਹਹੁ ਗੁਸਾਈ ਮਿਲੀਐ ਕੇਹ ॥
ਜੋ ਬਿਵਰਜਤ ਤਿਸ ਸਿਤ ਨੇਹ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਝੂਠੁ ਬਾਤ ਸਾ ਸਚੁ ਕਰਿ ਜਾਤੀ ॥ ਸਤਿ ਹੋਵਨੁ ਮਨਿ
ਲਗੈ ਨ ਰਾਤੀ ॥੨॥ ਬਾਵੈ ਮਾਰਗੁ ਟੇਢਾ ਚਲਨਾ ॥ ਸੀਧਾ ਛੋਡਿ ਅਪੂਰਾ ਬੁਨਨਾ ॥੩॥ ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ
ਕਾ ਖਸਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥ ਜਿਸੁ ਮੇਲੇ ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੁਕਤਾ ਹੋਈ ॥੪॥੨੯॥੬੮॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇ ਮਹਲਾ ੫
॥ ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਮਿਲਿ ਆਏ ਸੰਜੋਗ ॥ ਜਿਚੁ ਆਗਿਆ ਤਿਚੁ ਭੋਗਹਿ ਭੋਗ ॥੧॥ ਜਲੈ ਨ ਪਾਈਐ
ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ ॥ ਕਿਰਤਿ ਸੰਜੋਗਿ ਸਤੀ ਤਠਿ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੇਖਾ ਦੇਖੀ ਮਨਹਠਿ ਜਲਿ ਜਾਈਐ ॥
ਪ੃ਅ ਸੰਗੁ ਨ ਪਾਵੈ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭਵਾਈਐ ॥੨॥ ਸੀਲ ਸੰਜਮਿ ਪ੃ਅ ਆਗਿਆ ਮਾਨੈ ॥ ਤਿਸੁ ਨਾਰੀ ਕਤ ਦੁਖੁ
ਨ ਜਮਾਨੈ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਪ੃ਤ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥ ਧਨੁ ਸਤੀ ਦੁਗਹ ਪਰਵਾਨਿਆ
॥੪॥੩੦॥੬੯॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਮ ਧਨਵੰਤ ਭਾਗਠ ਸਚ ਨਾਇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹ

सहजि सुभाइ ॥੧॥ रहाउ ॥ पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥੧॥
 रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥ भेरे भंडार अखूट अतोल ॥੨॥ खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ तोटि
 न आवै वधदो जाई ॥੩॥ कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥ सु एतु खजानै लड़िआ रलाइ
 ॥੪॥੩੧॥੧੦੦॥ गउड़ी महला ੫ ॥ डरि डरि मरते जब जानीਐ दूरि ॥ डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥
 ੧॥ सतिगुर अपुने कउ बलिहारै ॥ छोडि न जाई सरपर तारै ॥੧॥ रहाउ ॥ दूखु रोगु सोगु बिसरै
 जब नामु ॥ सदा अन्नदु जा हरि गुण गामु ॥੨॥ बुरा भला कोई न कहीजै ॥ छोडि मानु हरि चरन
 गहीजै ॥੩॥ कहु नानक गुर मंतु चितारि ॥ सुखु पावहि साचै दरबारि ॥੪॥੩੨॥੧੦੧॥ गउड़ी
 महला ੫ ॥ जा का मीतु साजनु है समीआ ॥ तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥੧॥ जा की प्रीति गोबिंद
 सिउ लागी ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥੧॥ रहाउ ॥ जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥ सो अन रस
 नाही लपटाइओ ॥੨॥ जा का कहिआ दरगह चलै ॥ सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥੩॥ जा का सभु
 किछु ता का होइ ॥ नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥੪॥੩੩॥੧੦੨॥ गउड़ी महला ੫ ॥ जा कै दुखु सुखु
 सम करि जापै ॥ ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥੧॥ सहज अन्नद हरि साधू माहि ॥ आगिआकारी हरि
 हरि राइ ॥੧॥ रहाउ ॥ जा कै अचिंतु वसै मनि आइ ॥ ता कउ चिंता कतहूं नाहि ॥੨॥ जा कै बिनसिओ
 मन तै भरमा ॥ ता कै कछू नाही डरु जमा ॥੩॥ जा कै हिरदै दीओ गुरि नामा ॥ कहु नानक ता कै
 सगल निधाना ॥੪॥੩੪॥੧੦੩॥ गउड़ी महला ੫ ॥ अगम रूप का मन महि थाना ॥ गुर प्रसादि
 किनै विरलै जाना ॥੧॥ सहज कथा के अंमृत कुंटा ॥ जिसहि परापति तिसु लै भुंचा ॥੧॥ रहाउ ॥
 अनहत बाणी थानु निराला ॥ ता की धुनि मोहे गोपाला ॥੨॥ तह सहज अखारे अनेक अन्नता ॥
 पारब्रहम के संगी संता ॥੩॥ हरख अन्नत सोग नही बीआ ॥ सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥
 ੪॥੩੫॥੧੦੪॥ गउड़ी मः ੫ ॥ कवन रूपु तेरा आराधउ ॥ कवन जोग काइआ ले साधउ ॥੧॥

ਕਵਨ ਗੁਨੁ ਜੋ ਤੁੜ੍ਹੁ ਲੈ ਗਾਵਤ ॥ ਕਵਨ ਬੋਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਰੀਝਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਵਨ ਸੁ ਪ੍ਰਯਾ ਤੇਰੀ
 ਕਰਤ ॥ ਕਵਨ ਸੁ ਬਿਧਿ ਜਿਤੁ ਭਵਜਲ ਤਰਤ ॥੨॥ ਕਵਨ ਤਪੁ ਜਿਤੁ ਤਪੀਆ ਹੋਇ ॥ ਕਵਨੁ ਸੁ ਨਾਮੁ
 ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਖੋਇ ॥੩॥ ਗੁਣ ਪ੍ਰਯਾ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਨਾਨਕ ਸਗਲ ਘਾਲ ॥ ਜਿਸੁ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਮਿਲੈ ਦਿੱਡਿਆਲ ॥੪॥ ਤਿਸ ਹੀ ਗੁਨੁ ਤਿਨ ਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥ ਜਿਸ ਕੀ ਮਾਨਿ ਲੇਇ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ
 ਢੂਜਾ ॥੩੬॥੧੦੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਪਨ ਤਨੁ ਨਹੀ ਜਾ ਕੋ ਗਰਬਾ ॥ ਰਾਜ ਮਿਲਖ ਨਹੀ ਆਪਨ
 ਦਰਬਾ ॥੧॥ ਆਪਨ ਨਹੀ ਕਾ ਕਤ ਲਪਟਾਇਆ ॥ ਆਪਨ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਆਪਨ ਨਹੀ ਭਾਈ ॥ ਇਸਟ ਮੀਤ ਆਪ ਬਾਪੁ ਨ ਮਾਈ ॥੨॥ ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਫੁਨਿ ਨਹੀ ਦਾਮ ॥
 ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਆਪਨ ਨਹੀ ਕਾਮ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਗੁਰਿ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਤਿਸ ਕਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਿਸ ਕਾ
 ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੪॥੩੭॥੧੦੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਊਪਰਿ ਮੇਰੇ ਮਾਥੇ ॥ ਤਾ ਤੇ ਦੁਖ ਮੇਰੇ
 ਸਗਲੇ ਲਾਥੇ ॥੧॥ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਕਤ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥ ਆਤਮ ਚੀਨਿ ਪਰਮ ਰੰਗ ਮਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਚਰਣ ਰੇਣੁ ਗੁਰ ਕੀ ਮੁਖਿ ਲਾਗੀ ॥ ਅਛੁਕੁਧਿ ਤਿਨਿ ਸਗਲ ਤਿਆਗੀ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਲਗੇ ਮਨਿ ਮੀਠਾ
 ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਾ ਤੇ ਮੋਹਿ ਡੀਠਾ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਆਧਾਰੁ ॥
 ੪॥੩੮॥੧੦੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤ੍ਰੂਂ ਤਾ ਕਤ ਆਹਿ ॥ ਜਾ ਕੈ ਊਣਾ ਕਛੂ ਨਾਹਿ ॥੧॥ ਹਰਿ
 ਸਾ ਪ੍ਰੀਤਸੁ ਕਰਿ ਮਨ ਮੀਤ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੁ ਰਾਖਹੁ ਸਦ ਚੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤ੍ਰੂਂ ਤਾ ਕਤ ਸੇਵਿ ॥
 ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਅਪਰੰਪਰ ਦੇਵ ॥੨॥ ਤਿਸੁ ਊਪਰਿ ਮਨ ਕਰਿ ਤ੍ਰੂਂ ਆਸਾ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜਾ ਕਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥੩॥
 ਜਾ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਗਾਵੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਸੋਇ ॥੪॥੩੯॥੧੦੮॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮੀਤੁ ਕਰੈ ਸੋਈ ਹਮ ਮਾਨਾ ॥ ਮੀਤ ਕੇ ਕਰਤਬ ਕੁਸਲ ਸਮਾਨਾ ॥੧॥ ਏਕਾ ਟੇਕ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਚੀਤ ॥ ਜਿਸੁ
 ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਹਮਰਾ ਮੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੀਤੁ ਹਮਾਰਾ ਵੇਪਰਵਾਹਾ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮੋਹਿ
 ਅਸਨਾਹਾ ॥੨॥ ਮੀਤੁ ਹਮਾਰਾ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਸਮਰਥ ਪੁਰਖੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੁਆਮੀ ॥੩॥ ਹਮ ਦਾਸੇ ਤੁਮ

ਠਾਕੁਰ ਮੇਰੇ ॥ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਤੇਰੇ ॥੪॥੪੦॥੧੦੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕਤ ਤੁਮ ਭਏ
 ਸਮਰਥ ਅੰਗਾ ॥ ਤਾ ਕਤ ਕਛੁ ਨਾਹੀ ਕਾਲਾਂਗਾ ॥੧॥ ਮਾਧਉ ਜਾ ਕਤ ਹੈ ਆਸ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਤਾ ਕਤ ਕਛੁ ਨਾਹੀ
 ਸੰਸਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਠਾਕੁਰੁ ਹੋਇ ॥ ਤਾ ਕਤ ਸਹਸਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਤੁਮ ਦੀਨੀ
 ਪ੍ਰਭ ਧੀਰ ॥ ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਪੀਰ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਸੋ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ
 ਦੇਖਾਇਆ ॥੪॥੪੧॥੧੧੦॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਪਾਈ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪਹਿ ਤੇ
 ਆਤਮ ਘਾਤੀ ॥੧॥ ਮਰਿ ਨ ਜਾਹੀ ਜਿਨਾ ਬਿਸਰਤ ਰਾਮ ॥ ਨਾਮ ਬਿਛੂਨ ਜੀਵਨ ਕਤਨ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਖਾਤ ਪੀਤ ਖੇਲਤ ਹਸਤ ਬਿਸਥਾਰ ॥ ਕਵਨ ਅਰਥ ਮਿਰਤਕ ਸੀਗਾਰ ॥੨॥ ਜੋ ਨ ਸੁਨਹਿ ਜਸੁ ਪਰਮਾਨਦਾ ॥
 ਪਸੁ ਪੱਖੀ ਤ੍ਰਗਦ ਜੋਨਿ ਤੇ ਮੰਦਾ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਮੰਤੁ ਵੂਝਾਇਆ ॥ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਮਾਹਿ
 ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੪੨॥੧੧੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਾ ਕੀ ਮਾਈ ਕਾ ਕੋ ਬਾਪ ॥ ਨਾਮ ਧਾਰੀਕ ਝੂਠੇ ਸਭਿ ਸਾਕ
 ॥੧॥ ਕਾਹੇ ਕਤ ਮੂਰਖ ਭਖਲਾਇਆ ॥ ਮਿਲਿ ਸੰਜੋਗਿ ਹੁਕਮਿ ਤੁੰ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਏਕਾ ਮਾਟੀ
 ਏਕਾ ਜੋਤਿ ॥ ਏਕੋ ਪਵਨੁ ਕਹਾ ਕਤਨੁ ਰੋਤਿ ॥੨॥ ਮੇਰਾ ਮੇਰਾ ਕਰਿ ਬਿਲਲਾਹੀ ॥ ਮਰਣਹਾਰੁ ਇਹੁ ਜੀਅਰਾ
 ਨਾਹੀ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਖੋਲੇ ਕਪਾਟ ॥ ਸੁਕਤੁ ਭਏ ਬਿਨਸੇ ਭ੍ਰਮ ਥਾਟ ॥੪॥੪੩॥੧੧੨॥
 ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਵਡੇ ਵਡੇ ਜੋ ਦੀਸਹਿ ਲੋਗ ॥ ਤਿਨ ਕਤ ਬਿਆਪੈ ਚਿੰਤਾ ਰੋਗ ॥੧॥ ਕਤਨ ਵਡਾ ਮਾਇਆ
 ਵਡਿਆਈ ॥ ਸੋ ਵਡਾ ਜਿਨਿ ਰਾਮ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਭੂਮੀਆ ਭੂਮਿ ਊਪਰਿ ਨਿਤ ਲੁੜੈ ॥ ਛੋਡਿ ਚਲੈ
 ਤੂਸਨਾ ਨਹੀ ਬੁੜੈ ॥੨॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਨਾਹੀ ਛੁਟਕਾਰਾ ॥੩॥੪੪॥
 ੧੧੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੂਰਾ ਮਾਰਗੁ ਪੂਰਾ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪੂਰਾ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਪੂਰੀ ਰਹੀ
 ਜਾ ਪੂਰੈ ਰਾਖੀ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਸਰਣਿ ਜਨ ਤਾਕੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪੂਰਾ ਸੁਖੁ ਪੂਰਾ ਸਾਂਤੋਖੁ ॥ ਪੂਰਾ ਤਪੁ
 ਪੂਰਨ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕੈ ਮਾਰਗਿ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ॥ ਪੂਰੀ ਸੋਭਾ ਪੂਰਾ ਲੋਕੀਕ ॥੩॥ ਕਰਣਹਾਰੁ ਸਦ
 ਕਵਸੈ ਹਟੂਰਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥੪॥੪੫॥੧੧੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਂਤ ਕੀ ਧੂਰਿ

ਮਿਟੇ ਅਥ ਕੋਟ ॥ ਸਨਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਨਮ ਮਰਣ ਤੇ ਛੋਟ ॥੧॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦਰਸੁ ਪੂਰਨ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਸਨਤ ਕ੃ਪਾ ਤੇ
 ਜਪੀਐ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਨਤ ਕੈ ਸਂਗਿ ਮਿਟਿਆ ਅਵਕਾਰੁ ॥ ਵੂਸਟਿ ਆਵੈ ਸਭੁ ਏਕਕਾਰੁ ॥੨॥ ਸਨਤ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ
 ਆਏ ਵਸਿ ਪੰਚਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਲੈ ਸੰਚਾ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਾ ਪੂਰਾ ਕਰਮ ॥ ਤਿਸੁ ਭੇਟੇ ਸਾਧੂ ਕੇ
 ਚਰਨ ॥੪॥੪੬॥੧੧੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਜਪਤ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸੈ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਲਾਸ ਸਭ
 ਨਾਸੈ ॥੧॥ ਸਾ ਮਤਿ ਪੂਰੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਵੱਡੈ ਭਾਗਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ
 ਪਾਈਐ ਨਿਧਿ ਨਾਮਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪੂਰਨ ਸਭਿ ਕਾਮਾ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ
 ਤੇ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੁ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥ ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਵਸੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥੪॥੪੭॥੧੧੬॥ ਗਤੜੀ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਏਕਸੁ ਸਿਤ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਵਿਸਰੀ ਤਿਸੈ ਪਰਾਈ ਤਾਤਾ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਗੋਬਿੰਦ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਈ
 ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਹਿ ਕਮਾਵੈ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੈ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਇਤ ਉਤ ਕਤਹਿ
 ਨ ਢੋਲੈ ॥੨॥ ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੋ ਸਚ ਸਾਹੁ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕਰਿ ਦੀਨੋ ਵਿਸਾਹੁ ॥੩॥ ਜੀਵਨ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਿਆ
 ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੪੮॥੧੧੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਾਮੁ ਭਗਤ ਕੈ
 ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੁ ॥ ਨਾਮੋ ਧਨੁ ਨਾਮੋ ਬਿਤਹਾਰੁ ॥੧॥ ਨਾਮ ਵਡਾਈ ਜਨੁ ਸੋਭਾ ਪਾਏ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਿ
 ਦਿਵਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਭਗਤ ਕੈ ਸੁਖ ਅਸਥਾਨੁ ॥ ਨਾਮ ਰਤੁ ਸੋ ਭਗਤੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ
 ਜਨ ਕਤ ਧਾਰੈ ॥ ਸਾਂਝਿ ਸਾਂਝਿ ਜਨੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰੈ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਪੂਰਾ ਭਾਗੁ ॥ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਤਾ ਕਾ ਮਨੁ
 ਲਾਗੁ ॥੪॥੪੯॥੧੧੮॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਨਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਤਬ ਤੇ ਧਾਵਤੁ ਮਨੁ
 ਤ੍ਰੂਪਤਾਇਆ ॥੧॥ ਸੁਖ ਬਿਸਾਮੁ ਪਾਇਆ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਸੁਮੁ ਮਿਟਿਆ ਮੇਰੀ ਹਤੀ ਬਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਚਰਨ ਕਮਲ ਅਰਾਧਿ ਭਗਵਂਤਾ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਤੇ ਮਿਟੀ ਮੇਰੀ ਚਿੰਤਾ ॥੨॥ ਸਭ ਤਜਿ ਅਨਾਥੁ ਏਕ
 ਸਰਣਿ ਆਇਆਂਓ ॥ ਊਚ ਅਸਥਾਨੁ ਤਬ ਸਹਜੇ ਪਾਇਆਂਓ ॥੩॥ ਫੂਖੁ ਦਰਦੁ ਭਰਮੁ ਭਤ ਨਸਿਆ ॥ ਕਰਣਹਾਰੁ
 ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਬਸਿਆ ॥੪॥੫੦॥੧੧੯॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰ ਕਰਿ ਟਹਲ ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ॥

चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥੧॥ भलो समो सिमरन की बरीआ ॥ सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥੧॥ रहाउ ॥ नेत्र संतन का दरसनु पेखु ॥ प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥੨॥ सुणि कीरतनु साध
पहि जाइ ॥ जनम मरण की लास मिटाइ ॥੩॥ चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥ दुलभ देह नानक
निसतारि ॥੪॥੫੧॥੧੨੦॥ गउड़ी महला ੫ ॥ जा कउ अपनी किरपा धारै ॥ सो जनु रसना नामु
उचारै ॥੧॥ हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥ सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥੨॥ रहाउ ॥ हरि
कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥੨॥ हरि की टहल करत जनु सोहै
॥ ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥੩॥ मनि तनि मुखि हरि नामु दइआल ॥ नानक तजीअले अवरि
जंजाल ॥੪॥੫੨॥੧੨੧॥ गउड़ी महला ੫ ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ गुर पूरे की टेक टिकाई
॥੧॥ दुख बिनसे सुख हरि गुण गाइ ॥ गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥੧॥ रहाउ ॥ हरि का नामु
दीओ गुरि मंत्रु ॥ मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥੨॥ अनद भए गुर मिलत कृपाल ॥ करि किरपा काटे
जम जाल ॥੩॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥੪॥੫੩॥੧੨੨॥
गउड़ी महला ੫ ॥ राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥ मनमुख कउ लागो संतापु ॥੧॥ गुरु गुरु जपि मीत
हमारे ॥ मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥੧॥ रहाउ ॥ गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥ दुख दुसमन तेरी
हतै बलाइ ॥੨॥ गुर का सबदु तैरै संगि सहाई ॥ दइआल भए सगले जीअ भाई ॥੩॥ गुरि
पूरै जब किरपा करी ॥ भनति नानक मेरी पूरी परी ॥੪॥੫੪॥੧੨੩॥ गउड़ी महला ੫ ॥ अनिक
रसा खाए जैसे ढोर ॥ मोह की जेवरी बाधिओ चोर ॥੧॥ मिरतक देह साधसंग बिहूना ॥ आवत जात
जोनी दुख खीना ॥੧॥ रहाउ ॥ अनिक बसत्र सुंदर पहिराइआ ॥ जित डरना खेत माहि डराइआ
॥੨॥ सगल सरीर आवत सभ काम ॥ निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥੩॥ कहु नानक जा कउ
भए दइआला ॥ साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ॥੪॥੫੫॥੧੨੪॥ गउड़ी महला ੫ ॥

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਸੁਖ ਸਾਰੇ ॥੧॥ ਮੈ ਬਿਨਸੇ ਨਿਰਭਤ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ
 ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਰਨ ਕਵਲ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ ਗੁਰਿ
 ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੇ ॥੨॥ ਬੂਡਤ ਜਾਤ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਕਾਢੇ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਟੂਟੇ ਗਾਢੇ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗੁਰ
 ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਜਿਸੁ ਭੇਟਤ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥੪॥੫੬॥੧੨੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਾ ਕੀ
 ਸਰਨੀ ਪਰਹੁ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਪਨਾ ਆਗੈ ਧਰਹੁ ॥੧॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਪੀਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਭ
 ਤਪਤਿ ਬੁੜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਜਨਮ ਮਰਣੁ ਨਿਵਾਰਹੁ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਕੇ ਚਰਣ ਨਮਸਕਾਰਹੁ
 ॥੨॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਹਿ ਸਮਾਲੇ ॥ ਸੋ ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਜੋ ਚਾਲੈ ਨਾਲੇ ॥੩॥ ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਜਿਸੁ
 ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥੪॥੫੭॥੧੨੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੂਕੇ ਹਰੇ ਕੀਏ
 ਖਿਨ ਮਾਹੇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਦੂਸਟਿ ਸੰਚਿ ਜੀਵਾਏ ॥੧॥ ਕਾਟੇ ਕਸਟ ਪੂਰੇ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਸੇਵਕ ਕਤ ਦੀਨੀ ਅਪੁਨੀ ਸੇਵ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਿਟਿ ਗੰਡਿ ਚਿੰਤ ਪੁਨੀ ਮਨ ਆਸਾ ॥ ਕਰੀ ਦਿੱਥਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਗੁਣਤਾਸਾ ॥੨॥ ਦੁਖ ਨਾਠੇ ਸੁਖ
 ਆਇ ਸਮਾਏ ॥ ਢੀਲ ਨ ਪਰੀ ਜਾ ਗੁਰਿ ਫੁਰਮਾਏ ॥੩॥ ਇਛ ਪੁਨੀ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸੁਫਲ
 ਫਲੇ ॥੪॥੫੮॥੧੨੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾਪ ਗਏ ਪਾਈ ਪ੍ਰਭਿ ਸਾਂਤਿ ॥ ਸੀਤਲ ਭਏ ਕੀਨੀ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤਿ
 ॥੧॥ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਭਏ ਸੁਹੇਲੇ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਬਿਛੁਰੇ ਮੇਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਮਰਤ ਸਿਮਰਤ ਪ੍ਰਭ ਕਾ
 ਨਾਤ ॥ ਸਗਲ ਰੋਗ ਕਾ ਬਿਨਸਿਆ ਥਾਤ ॥੨॥ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਬੋਲੈ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ
 ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥੩॥ ਦ੍ਰਖੁ ਦਰਦੁ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥੪॥੫੯॥੧੨੮॥
 ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭਲੇ ਦਿਨਸ ਭਲੇ ਸੰਯੋਗ ॥ ਜਿਤੁ ਭੇਟੇ ਪਾਰਖ੍ਰਹਮ ਨਿਰਜੋਗ ॥੧॥ ਓਹ ਬੇਲਾ ਕਤ
 ਹਤ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਜਿਤੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਜਪੈ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਫਲ ਮੂਰਤੁ ਸਫਲ ਓਹ ਘਰੀ ॥ ਜਿਤੁ
 ਰਸਨਾ ਤਚਰੈ ਹਰਿ ਹਰੀ ॥੨॥ ਸਫਲੁ ਓਹੁ ਮਾਥਾ ਸੰਤ ਨਮਸਕਾਰਸਿ ॥ ਚਰਣ ਪੁਨੀਤ ਚਲਹਿ ਹਰਿ
 ਮਾਰਗਿ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਲਾ ਮੇਰਾ ਕਰਮ ॥ ਜਿਤੁ ਭੇਟੇ ਸਾਧੂ ਕੇ ਚਰਨ ॥੪॥੬੦॥੧੨੯॥

ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਾਖੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਿ ਚਿੰਤਾ ਸਭ ਜਾਹਿ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਭਗਵਂਤ
 ਨਾਹੀ ਅਨ ਕੋਇ ॥ ਮਾਰੈ ਰਾਖੈ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਰਿਟੈ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ
 ਜਪਿ ਉਤਰਹਿ ਪਾਰਿ ॥੨॥ ਗੁਰ ਮੂਰਤਿ ਸਿਤ ਲਾਇ ਧਿਆਨੁ ॥ ਈਹਾ ਊਹਾ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥੩॥ ਸਗਲ
 ਤਿਆਗਿ ਗੁਰ ਸਰਣੀ ਆਇਆ ॥ ਮਿਟੇ ਅੰਦੇਸੇ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੬੧॥੧੩੦॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦ੍ਰਖੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਜਪਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥
 ਸਾਧੂ ਜਨ ਰਾਮੁ ਰਸਨ ਵਖਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਕਸੁ ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਢੂਜਾ ਕੋਇ ॥ ਜਾ ਕੀ ਦੂਸਟਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ
 ਹੋਇ ॥੨॥ ਸਾਜਨੁ ਮੀਤੁ ਸਖਾ ਕਰਿ ਏਕੁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਖਰ ਮਨ ਮਹਿ ਲੇਖੁ ॥੩॥ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬਤ
 ਸੁਆਮੀ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥੪॥੬੨॥੧੩੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭੈ ਮਹਿ ਰਚਿਆ
 ਸਭੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਤਿਸੁ ਭਤ ਨਾਹੀ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਭਤ ਨ ਵਿਆਪੈ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ
 ਕਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੋਗ ਹਰਖ ਮਹਿ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਾ ॥੨॥ ਅਗਨਿ
 ਸਾਗਰੁ ਮਹਾ ਵਿਆਪੈ ਮਾਇਆ ॥ ਸੇ ਸੀਤਲ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥ ਰਾਖਿ ਲੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਖਨਹਾਰਾ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਆ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰਾ ॥੪॥੬੩॥੧੩੨॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਜਪੀਐ ਨਾਤ ॥
 ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਦਰਗਹ ਥਾਤ ॥੧॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਮ ਮਨਿ ਵਸੇ ਤਤ ਦ੍ਰਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਭ੍ਰਮੁ ਭਤ ਭਾਗੈ ॥੨॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਅਪਰੰਪਰ ਸੁਆਮੀ ॥ ਸਗਲ ਘਟਾ ਕੇ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥੩॥ ਕਰਤ ਅਰਦਾਸਿ ਅਪਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਰਾਸਿ ॥੪॥੬੪॥੧੩੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਣ ਬਿਨਾ ਜੈਸੇ ਥੋਥਰ ਤੁਖਾ ॥ ਨਾਮ
 ਬਿਛੂਨ ਸੂਨੇ ਸੇ ਮੁਖਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਨਿਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥ ਨਾਮ ਬਿਛੂਨ ਧਿਗੁ ਦੇਹ ਬਿਗਾਨੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ ਸੁਖਿ ਭਾਗੁ ॥ ਭਰਤ ਬਿਛੂਨ ਕਹਾ ਸੋਹਾਗੁ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਲਗੈ ਅਨ
 ਸੁਆਇ ॥ ਤਾ ਕੀ ਆਸ ਨ ਪ੍ਰਜੈ ਕਾਇ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੀ ਦਾਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪੈ

ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥੪॥੬੫॥੧੩੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਸਮਰਥੁ ਤ੍ਰਾਂਹੈ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁਮ ਤੇ ਤ੍ਰਾਂ
 ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥੧॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰੂਨ ਜਨ ਓਟ ॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਉਧਰਹਿ ਜਨ ਕੋਟਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੇਤੇ ਜੀਅ
 ਤੇਤੇ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਸ੍ਰੂਖ ਘਨੇਰੇ ॥੨॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ॥ ਹੁਕਮੁ ਬ੍ਰਾਝੈ ਸੋ ਸਚਿ
 ਸਮਾਣਾ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੀਜੈ ਪ੍ਰਭ ਦਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਿਮਰੈ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥੪॥੬੬॥੧੩੫॥ ਗਤੜੀ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾ ਕਾ ਦਰਸੁ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਜਾ ਕੀ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੧॥ ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਵਸਿਆ
 ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਤਾ ਕਤ ਦੁਖੁ ਸੁਪਨੈ ਭੀ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਰਾਖੇ ਜਨ ਮਾਹਿ ॥ ਤਾ ਕੈ ਸੰਗਿ
 ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥ ਜਨ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਥੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਨੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਕਰਿ
 ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨਤ ਸੁਨੀਜੈ ॥ ਦਾਸ ਕੀ ਧੂਰਿ ਨਾਨਕ ਕਤ ਦੀਜੈ ॥੪॥੬੭॥੧੩੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਤੇਰੀ ਜਾਇ ਬਲਾਇ ॥ ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਭਜੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਏਕੋ ਨਾਮ ॥
 ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਕੈ ਆਵੈ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰੈਣ ਦਿਨਸੁ ਗੁਣ ਗਾਤ ਅੰਨਤਾ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤਾ
 ॥੨॥ ਛੋਡਿ ਉਪਾਵ ਏਕ ਟੇਕ ਰਾਖੁ ॥ ਮਹਾ ਪਦਾਰਥੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ॥੩॥ ਬਿਖਮ ਸਾਗਰੁ ਤੇਈ ਜਨ ਤਰੇ ॥
 ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੪॥੬੮॥੧੩੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਿਰਦੈ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰੇ ॥
 ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਟੁਲਭ ਦੇਹ ਹੋਈ ਪਰਵਾਨੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ਨਾਮ ਨੀਸਾਨੁ ॥੨॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ
 ਪੂਰਨ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਭੈ ਭਰਮ ਮਿਟਾਇਆ ॥੩॥ ਜਤ ਕਤ ਦੇਖਤ ਤਤ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਾਇ ॥੪॥੬੯॥੧੩੮॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਜੀ ਕੇ ਦਰਸਨ ਕਤ ਬਲਿ
 ਜਾਤ ॥ ਜਧਿ ਜਧਿ ਜੀਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਤ ॥੧॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲਾਗਤ ਤੇਰੀ
 ਸੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਤਰ ਧਾਰੀ ॥ ਮਨ ਤਨ ਧਨ ਗੁਰ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੀ ॥੨॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ
 ਹੋਵੈ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਜਾਣੁ ॥੩॥ ਸੰਤ ਧੂਰਿ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ

भेटत हरि सिउ लिव लागी ॥४॥७०॥१३६॥ गउड़ी महला ५ ॥ करै दुहकरम दिखावै होरु ॥
 राम की दरगह बाधा चोरु ॥१॥ रामु रमै सोई रामाणा ॥ जलि थलि महीअलि एकु समाणा ॥१॥
 रहाउ ॥ अंतरि बिखु मुखि अंमृतु सुणावै ॥ जम पुरि बाधा चोटा खावै ॥२॥ अनिक पड़दे महि
 कमावै विकार ॥ खिन महि प्रगट होहि संसार ॥३॥ अंतरि साचि नामि रसि राता ॥ नानक तिसु
 किरपालु बिधाता ॥४॥७१॥१४०॥ गउड़ी महला ५ ॥ राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥ गुरु पूरा
 जिसु देइ बुझाइ ॥१॥ हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥ लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ रहाउ ॥
 संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥ ता का रंगु न उतरै जाइ ॥२॥ बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ
 ॥ आन रंग फीके सभ माइआ ॥३॥ गुरि रंगे से भए निहाल ॥ कहु नानक गुर भए है दइआल
 ॥४॥७२॥१४१॥ गउड़ी महला ५ ॥ सिमरत सुआमी किलबिख नासे ॥ सूख सहज आन्द
 निवासे ॥१॥ राम जना कउ राम भरोसा ॥ नामु जपत सभु मिटिओ अंदेसा ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि
 कछु भउ न भराती ॥ गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥२॥ करि किरपा प्रभ बंधन छोट ॥ चरण
 कमल की दीनी ओट ॥३॥ कहु नानक मनि भई परतीति ॥ निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥४॥७३॥
 १४२॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि चरणी जा का मनु लागा ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागा ॥१॥ हरि
 धन को वापारी पूरा ॥ जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥१॥ रहाउ ॥ जा कउ भए कृपाल गुसाई ॥ से जन
 लागे गुर की पाई ॥२॥ सूख सहज साँति आन्दा ॥ जपि जपि जीवे परमान्दा ॥३॥ नाम रासि साध
 संगि खाटी ॥ कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥४॥७४॥१४३॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत सभि
 मिटहि कलेस ॥ चरण कमल मन महि परवेस ॥१॥ उचरहु राम नामु लख बारी ॥ अंमृत रसु पीवहु
 प्रभ पिआरी ॥१॥ रहाउ ॥ सूख सहज रस महा अन्दा ॥ जपि जपि जीवे परमान्दा ॥२॥ काम क्रोध लोभ
 मद खोए ॥ साध कै संगि किलबिख सभ धोए ॥३॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानक दीजै

साध रवाला ॥४॥७५॥१४४॥ गउड़ी महला ५ ॥ जिस का दीआ पैनै खाइ ॥ तिसु सिउ आलसु
 किउ बनै माइ ॥१॥ खसमु बिसारि आन कंमि लागहि ॥ कउड़ी बदले रतनु तिआगहि ॥१॥ रहाउ
 ॥ प्रभू तिआगि लागत अन लोभा ॥ दासि सलामु करत कत सोभा ॥२॥ अंमृत रसु खावहि खान पान
 ॥ जिनि दीए तिसहि न जानहि सुआन ॥३॥ कहु नानक हम लूण हरामी ॥ बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी
 ॥४॥७६॥१४५॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ के चरन मन माहि धिआनु ॥ सगल तीरथ मजन
 डिसनानु ॥१॥ हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥ कोटि जनम की मलु लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥
 हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥ मन बाँछत सगले फल पाई ॥२॥ जीवन मरणु जनमु परवानु ॥
 जा कै रिदै वसै भगवानु ॥३॥ कहु नानक सई जन पूरे ॥ जिना परापति साधू धूरे ॥४॥७७॥१४६॥
 गउड़ी महला ५ ॥ खादा पैनदा मूकरि पाई ॥ तिस नो जोहहि दूत धरमराई ॥१॥ तिसु सिउ बेमुखु
 जिनि जीउ पिंडु दीना ॥ कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥१॥ रहाउ ॥ साकत की औसी है रीति ॥ जो
 किछु करै सगल बिपरीति ॥२॥ जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारिआ ॥ सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ
 ॥३॥ बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥ नानक उधरु कृपा सुख सागर ॥४॥ पारब्रह्म तेरी सरणाई ॥
 बंधन काटि तरै हरि नाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७८॥१४७॥ गउड़ी महला ५ ॥ अपने लोभ कउ
 कीनो मीतु ॥ सगल मनोरथ मुकति पढु दीतु ॥१॥ ऐसा मीतु करहु सभु कोइ ॥ जा ते बिरथा कोइ न
 होइ ॥१॥ रहाउ ॥ अपुनै सुआई रिदै लै धारिआ ॥ दूख दरद रोग सगल बिदारिआ ॥२॥
 रसना गीधी बोलत राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥३॥ अनिक बार नानक बलिहारा ॥ सफल
 दरसनु गोबिंदु हमारा ॥४॥७९॥१४८॥ गउड़ी महला ५ ॥ कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥
 हरि हरि कथा साधसंगि सुनाहि ॥१॥ पीवत राम रसु अंमृत गुण जासु ॥ जपि हरि चरण
 मिटी खुधि तासु ॥१॥ रहाउ ॥ सरब कलिआण सुख सहज निधान ॥ जा कै रिदै वसहि भगवान

॥੨॥ ਅਤਖਥ ਮੰਤ ਤੰਤ ਸਭਿ ਛਾਰੁ ॥ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਰਿਦੇ ਸਹਿ ਧਾਰੁ ॥੩॥ ਤਜਿ ਸਭਿ ਭਰਮ ਭਜਿਐ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਟਲ ਝਿਹੁ ਧਰਮੁ ॥੪॥੮੦॥੧੪੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ
 ਭੇਟੇ ਗੁਰ ਸੋਈ ॥ ਤਿਤੁ ਬਲਿ ਰੋਗੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਾਮ ਰਮਣ ਤਰਣ ਭੈ ਸਾਗਰ ॥ ਸਰਣ ਸੂਰ ਫਾਰੇ
 ਜਮ ਕਾਗਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੰਨ੍ਹ ਦੀਆਂ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥ ਝਿਹ ਆਸਰ ਪੂਰਨ ਭਏ ਕਾਮ ॥੨॥ ਜਪ ਤਪ
 ਸੰਜਮ ਪੂਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾਲ ਹਰਿ ਭਏ ਸਹਾਈ ॥੩॥ ਮਾਨ ਮੋਹ ਖੋਏ ਗੁਰਿ ਭਰਮ ॥ ਪੇਖੁ ਨਾਨਕ
 ਪਸਰੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥੪॥੮੧॥੧੫੦॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਿਖੈ ਰਾਜ ਤੇ ਅੰਧੁਲਾ ਭਾਰੀ ॥ ਢੁਖਿ ਲਾਗੈ ਰਾਮ
 ਨਾਮੁ ਚਿਤਾਰੀ ॥੧॥ ਤੇਰੇ ਦਾਸ ਕਤ ਤੁਹੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਮਾਇਆ ਮਗਨੁ ਨਰਕਿ ਲੈ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਰੋਗ ਗਿਰਸਤ ਚਿਤਾਰੇ ਨਾਤ ॥ ਬਿਖੁ ਮਾਤੇ ਕਾ ਠਤਰ ਨ ਠਾਤ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
 ਆਨ ਸੁਖਾ ਨਹੀਂ ਆਵਹਿ ਚੀਤਿ ॥੩॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਿਮਰਤ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ॥ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
 ੪॥੮੨॥੧੫੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਸੰਗੀ ਬਟਵਾਰੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਲਏ ਨਿਵਾਰੇ ॥
 ੧॥ ਐਸਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਰਸੁ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਸਰਬ ਕਲਾ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਹਾ ਤਪਤਿ ਸਾਗਰ
 ਸੰਸਾਰ ॥ ਪ੍ਰਭ ਖਿਨ ਸਹਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਣਹਾਰ ॥੨॥ ਅਨਿਕ ਬੰਧਨ ਤੋਰੇ ਨਹੀਂ ਜਾਹਿ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮ
 ਮੁਕਤਿ ਫਲ ਪਾਹਿ ॥੩॥ ਤਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਇਸ ਤੇ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਹਿ ॥
 ੪॥੮੩॥੧੫੨॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਥਾਤੀ ਪਾਈ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥ ਬਿਚੁ ਸੰਸਾਰ ਪੂਰਨ ਸਭਿ ਕਾਮ ॥
 ੧॥ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤ੍ਰੂ ਦੇਹਿ ਤ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ
 ਹਿਰਦੈ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਚਡਿ ਉਤਰਹਿ ਪਾਰਿ ॥੨॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਕਰਹੁ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਸਦਾ
 ਕਲਿਆਣ ਫਿਰਿ ਢੂਖੁ ਨ ਹੋਇ ॥੩॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਭਜੁ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਗਹ ਪਾਈਐ ਮਾਨੁ ॥
 ੪॥੮੪॥੧੫੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਨ ਹਰਿ ਸੀਤ ॥ ਭ੍ਰਮ ਬਿਨਸੇ ਗਾਏ ਗੁਣ
 ਨੀਤ ॥੧॥ ਊਠਤ ਸੋਵਤ ਹਰਿ ਸੰਗੀ ਪਹੱਥਾ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਜਮ ਨਹੀਂ ਝੁਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਰਣ

कमल प्रभ रिदै निवासु ॥ सगल दूख का होइआ नासु ॥२॥ आसा माणु ताणु धनु एक ॥ साचे साह की
 मन महि टेक ॥३॥ महा गरीब जन साध अनाथ ॥ नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥४॥੮॥੧੫੪॥
 गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥ कोटि ग्रहण पुन्न फल मूचे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि
 के चरण रिदे महि बसे ॥ जनम जनम के किलविख नसे ॥१॥ साधसंगि कीरतन फलु पाइआ ॥
 जम का मारगु दृसठि न आइआ ॥२॥ मन बच क्रम गोविंद अधारु ॥ ता ते छुटिओ बिखु संसारु ॥३॥
 करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥ नानक जापु जपे हरि जपना ॥४॥੮॥੧੫੫॥ गउड़ी महला ५ ॥
 पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥ मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥१॥ भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥
 डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै रिदै बसिओ हरि नाम ॥ सगल मनोरथ ता के
 पूर्न काम ॥२॥ जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥ सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥३॥ मीतु
 साजनु सखा प्रभु एक ॥ नामु सुआमी का नानक टेक ॥४॥੮॥੧੫੬॥ गउड़ी महला ५ ॥ बाहरि
 राखिओ रिदै समालि ॥ घरि आए गोविंदु लै नालि ॥१॥ हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥ मनु तनु
 राता राम कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सागरु तरिआ ॥ जनम जनम के किलविख सभि
 हिरिआ ॥२॥ सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥ पूरे गुर का निरमल मंतु ॥३॥ चरण कमल हिरदे महि
 जापु ॥ नानकु पेखि जीवै परतापु ॥४॥੮॥੧੫੭॥ गउड़ी महला ५ ॥ धनु झिहु थानु गोविंद गुण
 गाए ॥ कुसल खेम प्रभि आपि बसाए ॥१॥ रहाउ ॥ बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥ कोटि अन्नद
 जह हरि गुन गाही ॥१॥ हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥ प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥२॥ सो वडभागी
 निहचल थानु ॥ जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥३॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी ॥ नानक कउ
 मिलिआ अंतरजामी ॥४॥੮॥੧੫੮॥ गउड़ी महला ५ ॥ जो प्राणी गोविंदु धिआवै ॥ पड़िआ
 अणपड़िआ परम गति पावै ॥१॥ साधू संगि सिमरि गोपाल ॥ बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥१॥ रहाउ ॥

रूपवंतु सो चतुरु सिआणा ॥ जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥२॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥
 घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥३॥ कहु नानक जा के पूर्न भाग ॥ हरि चरणी ता का मनु लाग
 ॥४॥६०॥१५६॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि के दास सिउ साकत नही संगु ॥ ओहु बिखई ओसु राम को
 रंगु ॥१॥ रहाउ ॥ मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥ जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥१॥ बैल कउ
 नेत्रा पाइ दुहावै ॥ गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ॥२॥ गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥ सउदे कउ धावै
 बिनु पूजी ॥३॥ नानक राम नामु जपि चीत ॥ सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥४॥६१॥१६०॥ गउड़ी
 महला ५ ॥ सा मति निरमल कहीअत धीर ॥ राम रसाइणु पीवत बीर ॥१॥ हरि के चरण हिरदै
 करि ओट ॥ जनम मरण ते होवत छोट ॥१॥ रहाउ ॥ सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ राम रंगि
 निरमल परतापु ॥२॥ साधसंगि मिटि जात बिकार ॥ सभ ते ऊच एहो उपकार ॥३॥ प्रेम भगति
 राते गोपाल ॥ नानक जाचै साध रवाल ॥४॥६२॥१६१॥ गउड़ी महला ५ ॥ औसी प्रीति गोविंद
 सिउ लागी ॥ मेलि लए पूर्न वडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥ तिउ हरि
 जनु जीवै नामु चितारी ॥१॥ पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥ ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥२॥ लोभी
 अनदु करै पेखि धना ॥ जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥३॥ बिसरु नही इकु तिलु दातार ॥
 नानक के प्रभ प्रान अधार ॥४॥६३॥१६२॥ गउड़ी महला ५ ॥ राम रसाइणि जो जन गीधे ॥ चरन
 कमल प्रेम भगती बीधे ॥१॥ रहाउ ॥ आन रसा दीसहि सभि छारु ॥ नाम बिना निहफल संसार
 ॥१॥ अंध कूप ते काढे आपि ॥ गुण गोविंद अचरज परताप ॥२॥ वणि तृणि तृभवणि पूर्न
 गोपाल ॥ ब्रह्म पसारु जीअ संगि दिआल ॥३॥ कहु नानक सा कथनी सारु ॥ मानि लेतु
 जिसु मिरजनहारु ॥४॥६४॥१६३॥ गउड़ी महला ५ ॥ नितप्रति नावणु राम सरि कीजै ॥ झोलि
 महा रसु हरि अंमूतु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ निरमल उदकु गोविंद का नाम ॥ मजनु करत पूर्न

सभि काम ॥१॥ संतसंगि तह गोसटि होइ ॥ कोटि जनम के किलविख खोइ ॥२॥ सिमरहि साध करहि
 आन्नदु ॥ मनि तनि रविआ परमान्नदु ॥३॥ जिसहि परापति हरि चरण निधान ॥ नानक दास
 तिसहि कुरबान ॥४॥६५॥१६४॥ गउड़ी महला ५ ॥ सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥ हरि
 कीरतन महि एहु मनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ एको सिमरि न दूजा भाउ ॥ संतसंगि जपि केवल नाउ ॥
 ॥२॥ करम धरम नेम ब्रत पूजा ॥ पारब्रहम बिनु जानु न दूजा ॥२॥ ता की पूरन होई घाल ॥ जा की
 प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥३॥ सो बैसनो है अपर अपारु ॥ कहु नानक जिनि तजे बिकार ॥४॥६६॥१६५
 ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीवत छाडि जाहि देवाने ॥ मुइआ उन ते को वरसाँने ॥१॥ सिमरि गोबिंदु
 मनि तनि धुरि लिखिआ ॥ काहू काज न आवत बिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ बिखै ठगउरी जिनि जिनि खाई
 ॥ ता की तृसना कबहूं न जाई ॥२॥ दारन दुख दुतर संसारु ॥ राम नाम बिनु कैसे उतरसि पारि
 ॥३॥ साधसंगि मिलि दुइ कुल साधि ॥ राम नाम नानक आराधि ॥४॥६७॥१६६॥ गउड़ी महला ५
 ॥ गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥ पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥१॥ पूरा निआउ करे
 करतारु ॥ अपुने दास कउ राखनहारु ॥१॥ रहाउ ॥ आदि जुगादि प्रगटि परतापु ॥ निंदकु
 मुआ उपजि वड तापु ॥२॥ तिनि मारिआ जि रखै न कोइ ॥ आगै पाछै मंदी सोइ ॥३॥ अपुने दास
 राखै कंठि लाइ ॥ सरणि नानक हरि नामु धिआइ ॥४॥६८॥१६७॥ गउड़ी महला ५ ॥ महजरु
 झूठा कीतोनु आपि ॥ पापी कउ लागा संतापु ॥१॥ जिसहि सहाई गोबिंदु मेरा ॥ तिसु कउ जमु नही
 आवै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥ साची दरगह बोलै कूड़ ॥ सिरु हाथ पछोड़ै अंधा मूड़ ॥२॥ रोग बिआपे करदे
 पाप ॥ अदली होइ बैठा प्रभु आपि ॥३॥ अपन कमाइऔ आपे बाधे ॥ दरबु गइआ सभु जीअ
 कै साथै ॥४॥ नानक सरनि परे दरबारि ॥ राखी पैज मेरै करतारि ॥५॥६९॥१६८॥ गउड़ी
 महला ५ ॥ जन की धूरि मन मीठ खटानी ॥ पूरबि करमि लिखिआ धुरि प्रानी ॥१॥ रहाउ ॥

अह्मदुधि मन पूरि थिधाई ॥ साध धूरि करि सुध मंजाई ॥१॥ अनिक जला जे धोवै देही ॥ मैलु न
 उतरै सुधु न तेही ॥२॥ सतिगुरु भेटिओ सदा कृपाल ॥ हरि सिमरि सिमरि काटिआ भउ काल ॥३॥
 मुकति भुगति जुगति हरि नाउ ॥ प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥४॥१००॥१६६॥ गउड़ी महला ५
 ॥ जीवन पदवी हरि के दास ॥ जिन मिलिआ आतम परगासु ॥१॥ हरि का सिमरनु सुनि मन कानी ॥
 सुखु पावहि हरि दुआर परानी ॥२॥ रहाउ ॥ आठ पहर धिआईअै गोपालु ॥ नानक दरसनु देखि
 निहालु ॥२॥१०१॥१७०॥ गउड़ी महला ५ ॥ साँति भई गुर गोबिदि पाई ॥ ताप पाप बिनसे
 मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु नित रसन बखान ॥ बिनसे रोग भए कलिआन ॥१॥ पारब्रह्म
 गुण अगम बीचार ॥ साधू संगमि है निसतार ॥२॥ निरमल गुण गावहु नित नीत ॥ गई बिआधि
 उबरे जन मीत ॥३॥ मन बच क्रम प्रभु अपना धिआई ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥४॥१०२॥
 १७१॥ गउड़ी महला ५ ॥ नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव ॥ भरम गए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥
 सीतला ते रखिआ बिहारी ॥ पारब्रह्म प्रभ किरपा धारी ॥१॥ नानक नामु जपै सो जीवै ॥ साधसंगि
 हरि अंमृतु पीवै ॥२॥१०३॥१७२॥ गउड़ी महला ५ ॥ धनु ओहु मसतकु धनु तेरे नेत ॥ धनु
 ओइ भगत जिन तुम संगि हेत ॥१॥ नाम बिना कैसे सुखु लहीअै ॥ रसना राम नाम जसु कहीअै ॥
 १॥ रहाउ ॥ तिन ऊपरि जाईअै कुरबाणु ॥ नानक जिनि जपिआ निरबाणु ॥२॥१०४॥१७३॥
 गउड़ी महला ५ ॥ तूहै मसलति तूहै नालि ॥ तूहै राखहि सारि समालि ॥१॥ ऐसा रामु दीन
 दुनी सहाई ॥ दास की पैज रखै मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ आगे आपि इहु थानु वसि जा कै ॥
 आठ पहर मनु हरि कउ जापै ॥२॥ पति परवाणु सचु नीसाणु ॥ जा कउ आपि करहि फुरमानु
 ॥३॥ आपे दाता आपि प्रतिपालि ॥ नित नित नानक राम नामु समालि ॥४॥१०५॥१७४॥
 गउड़ी महला ५ ॥ सतिगुरु पूरा भइआ कृपालु ॥ हिरदै वसिआ सदा गुपालु ॥१॥ रामु रवत

सद ही सुखु पाइਆ ॥ मङ्गिआ करी पूरन हरि राइआ ॥੧॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरे
 भाग ॥ हरि हरि नामु असथिरु सोहागु ॥੨॥੧੦੬॥ गउड़ी महला ੫ ॥ धोती खोलि विछाए हेठि
 ॥ गरधप वाँगू लाहे पेटि ॥੩॥ बिनु करतूती मुकति न पाईਐ ॥ मुकति पदारथु नामु धिआईਐ
 ॥੪॥ रहाउ ॥ पूजा तिलक करत इसनानाँ ॥ छुरी काढि लेवै हथि दाना ॥੨॥ बेदु पड़े मुखि
 मीठी बाणी ॥ जीआँ कुहत न संगै पराणी ॥੩॥ कहु नानक जिसु किरपा धारै ॥ हिरदा सुधु ब्रहमु
 बीचारै ॥੪॥੧੦੭॥ गउड़ी महला ੫ ॥ थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे ॥ सतिगुरि तुमरे काज
 सवारे ॥੧॥ रहाउ ॥ दुसट दूत परमेसरि मारे ॥ जन की पैज रखी करतारे ॥੧॥ बादिसाह साह
 सभ वसि करि दीने ॥ अंमृत नाम महा रस पीने ॥੨॥ निरभउ होइ भजहु भगवान ॥ साधसंगति
 मिलि कीनो दानु ॥੩॥ सरणि परे प्रभ अंतरजामी ॥ नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी ॥੪॥੧੦੮॥
 गउड़ी महला ੫ ॥ हरि संगि राते भाहि न जलै ॥ हरि संगि राते माइआ नही छलै ॥ हरि संगि
 राते नही डूबै जला ॥ हरि संगि राते सुफल फला ॥੧॥ सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥ भेटत संगि
 हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥ हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥ हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता
 ॥ हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥ हरि संगि राते पूरन आस ॥੨॥ हरि संगि राते दूखु न लागै
 ॥ हरि संगि राता अनदिनु जागै ॥ हरि संगि राता सहज घरि वसै ॥ हरि संगि राते भ्रमु भउ नसै
 ॥੩॥ हरि संगि राते मति ऊतम होइ ॥ हरि संगि राते निरमल सोइ ॥ कहु नानक तिन कउ
 बलि जाई ॥ जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥੪॥੧੦੯॥ गउड़ी महला ੫ ॥ उदमु करत
 सीतल मन भए ॥ मारगि चलत सगल दुख गए ॥ नामु जपत मनि भए अन्नद ॥ रसि गाए
 गुन परमान्नद ॥੧॥ खेम भइआ कुसल घरि आए ॥ भेटत साधसंगि गई बलाए ॥ रहाउ ॥
 नेत्र पुनीत पेखत ही दरस ॥ धनि मसतक चरन कमल ही परस ॥ गोबिंद की टहल सफल इह

काँड़िआ ॥ संत प्रसादि परम पदु पाइआ ॥२॥ जन की कीनी आपि सहाइ ॥ सुखु पाइआ लगि
 दासह पाइ ॥ आपु गइआ ता आपहि भए ॥ कृपा निधान की सरनी पए ॥३॥ जो चाहत सोई जब
 पाइआ ॥ तब ढूँढन कहा को जाइआ ॥ असथिर भए बसे सुख आसन ॥ गुर प्रसादि नानक सुख
 बासन ॥४॥११०॥ गउड़ी महला ५ ॥ कोटि मजन कीनो इसनान ॥ लाख अरब खरब दीनो दानु ॥
 जा मनि वसिओ हरि को नामु ॥१॥ सगल पवित गुन गाइ गुपाल ॥ पाप मिटहि साधू सरनि
 दइआल ॥ रहाउ ॥ बहुतु उरध तप साधन साधे ॥ अनिक लाभ मनोरथ लाधे ॥ हरि हरि नाम
 रसन आराधे ॥२॥ सिंमृति सासत बेद बखाने ॥ जोग गिआन सिध सुख जाने ॥ नामु जपत प्रभ सितु
 मन माने ॥३॥ अगाधि बोधि हरि अगम अपारे ॥ नामु जपत नामु रिदे बीचारे ॥ नानक कउ प्रभ
 किरपा धारे ॥४॥१११॥ गउड़ी मः ५ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ ॥ चरन कमल गुर रिदै
 बसाइआ ॥१॥ गुर गोबिंदु पारब्रह्मु पूरा ॥ तिसहि अराधि मेरा मनु धीरा ॥ रहाउ ॥ अनदिनु
 जपउ गुरु गुर नाम ॥ ता ते सिधि भए सगल काँम ॥२॥ दरसन देखि सीतल मन भए ॥ जनम जनम
 के किलबिख गए ॥३॥ कहु नानक कहा भै भाई ॥ अपने सेवक की आपि पैज रखाई ॥४॥११२॥
 गउड़ी महला ५ ॥ अपने सेवक कउ आपि सहाई ॥ नित प्रतिपारै बाप जैसे माई ॥१॥ प्रभ की
 सरनि उबरै सभ कोइ ॥ करन करावन पूरन सचु सोइ ॥ रहाउ ॥ अब मनि बसिआ करनैहारा ॥ भै
 बिनसे आतम सुख सारा ॥२॥ करि किरपा अपने जन राखे ॥ जनम जनम के किलबिख लाथे ॥३॥
 कहनु न जाइ प्रभ की वडिआई ॥ नानक दास सदा सरनाई ॥४॥११३॥

रागु गउड़ी चेती महला ५ दुपदे

१७८ सतिगुर प्रसादि ॥

राम को बलु पूरन भाई ॥ ता ते बृथा न बिआपै काई ॥१॥ रहाउ ॥ जो जो चितवै दासु हरि
 माई ॥ सो सो करता आपि कराई ॥२॥ निंदक की प्रभि पति गवाई ॥ नानक हरि गुण निरभउ

गाई ॥२॥११४॥ गउड़ी महला ५ ॥ भुज बल बीर ब्रह्म सुख सागर गरत परत गहि लेहु
अंगुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥१॥
दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता महतरीआ ॥ चरन कवल हिरदै गहि नानक
भै सागर संत पारि उतरीआ ॥२॥२॥११५॥

रागु गउड़ी बैरागणि महला ५

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

दय गुसाई मीतुला तूं संगि हमारै बासु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ तुझ बिनु घरी न जीवना धिंगु रहणा
संसारि ॥ जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥१॥ हसत अलम्बनु देहु प्रभ गरतहु
उधरु गोपाल ॥ मोहि निरगुन मति थोरीआ तूं सद ही दीन दिँआल ॥२॥ किआ सुख तेरे संमला
कवन बिधी बीचार ॥ सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥३॥ सगल पदारथ असट सिधि
नाम महा रस माहि ॥ सुप्रसन्न भए केसवा से जन हरि गुण गाहि ॥४॥ मात पिता सुत बंधपो तूं मेरे
प्राण अधार ॥ साधसंगि नानकु भजै बिखु तरिआ संसारु ॥५॥१॥११६॥

गउड़ी बैरागणि रहोए के छंत के घरि मः ५

१८९ सतिगुर प्रसादि ॥

है कोई राम पिआरो गावै ॥ सरब कलिआण सूख सचु पावै ॥ रहाउ ॥ बनु बनु खोजत फिरत बैरागी
॥ बिरले काहू एक लिव लागी ॥ जिनि हरि पाइआ से वडभागी ॥१॥ ब्रह्मादिक सनकादिक चाहै
॥ जोगी जती सिध हरि आहै ॥ जिसहि परापति सो हरि गुण गाहै ॥२॥ ता की सरणि जिन
बिसरत नाही ॥ वडभागी हरि संत मिलाही ॥ जनम मरण तिह मूले नाही ॥३॥ करि किरपा मिलु
प्रीतम पिआरे ॥ बिनउ सुनहु प्रभ ऊच अपारे ॥ नानकु माँगतु नामु अधारे ॥४॥१॥११७॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५

१८३ सतिगुर प्रसादि ॥

कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते
आई ॥१॥ नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥२॥ खोजत खोजत भई बैरागनि
प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥३॥ दीन दिआल कृपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि
बुझाई ॥४॥१॥१८॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥ पाइ लगउ मोहि
करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बड़भागी ॥१॥ रहाउ ॥ मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि
सगल तिआगी ॥ जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥१॥ पूरब करम अंकुर
जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥
२॥२॥१९॥ गउड़ी महला ५ ॥ निकसु रे पंखी सिमरि हरि पाँख ॥ मिलि साधू सरणि गहु पूरन राम
रतनु हीअरे संगि राखु ॥१॥ रहाउ ॥ भ्रम की कूई तृसना रस पंकज अति तीख्यण मोह की फास ॥ काटनहार
जगत गुर गोबिद चरन कमल ता के करहु निवास ॥१॥ करि किरपा गोबिंद प्रभ प्रीतम दीना नाथ
सुनहु अरदासि ॥ करु गहि लेहु नानक के सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरी रासि ॥२॥३॥१२०॥ गउड़ी
महला ५ ॥ हरि पेखन कउ सिमरत मनु मेरा ॥ आस पिआसी चितवउ दिनु रैनी है कोई संतु मिलावै
नेरा ॥१॥ रहाउ ॥ सेवा करउ दास दासन की अनिक भाँति तिसु करउ निहोरा ॥ तुला धारि तोले सुख
सगले बिनु हरि दरस सभो ही थोरा ॥१॥ संत प्रसादि गाए गुन सागर जनम जनम को जात बहोरा ॥
आनद सूख भेटत हरि नानक जनमु कृतारथु सफलु सवेरा ॥२॥४॥१२१॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५

१८३ सतिगुर प्रसादि ॥

किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥ कोई ऐसा संतु सहज सुखदाता मोहि मारगु देइ बताई

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਂਤਰਿ ਅਲਖੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ਵਿਚਿ ਪਡਦਾ ਹਉਮੈ ਪਾਈ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਸਭੋ ਜੁਗੁ ਸੋਇਆ
 ਇਹੁ ਭਰਮੁ ਕਹਹੁ ਕਿਤ ਜਾਈ ॥੧॥ ਏਕ ਸੱਗਤਿ ਇਕਤੁ ਗ੍ਰਹਿ ਬਸਤੇ ਮਿਲਿ ਬਾਤ ਨ ਕਰਤੇ ਭਾਈ ॥ ਏਕ
 ਬਸਤੁ ਬਿਨੁ ਪੰਚ ਦੁਹੇਲੇ ਓਹ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਠਾਈ ॥੨॥ ਜਿਸ ਕਾ ਗ੍ਰਹੁ ਤਿਨਿ ਦੀਆ ਤਾਲਾ ਕੁੰਜੀ ਗੁਰ
 ਸਤਪਾਈ ॥ ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਕਰੇ ਨਹੀ ਪਾਵੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੩॥ ਜਿਨ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਸਤਿਗੁਰ ਤਿਨ
 ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਪੰਚ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਭੇਦੁ ਨ ਭਾਈ ॥੪॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਰਾਇ
 ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਿਲੈ ਗੁਸਾਈ ॥ ਸਹਜੁ ਭਇਆ ਭਰਮੁ ਖਿਨ ਮਹਿ ਨਾਠਾ ਮਿਲਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥੫॥ ਰਹਾਤ
 ਦ੍ਰਿਆ ॥੧॥੧੨੨॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਐਸੋ ਪਰਚਤ ਪਾਇਆਂ ॥ ਕਰੀ ਕ੃ਪਾ ਦਿਆਲ ਬੀਠੁਲੈ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸੁਜਾਹਿ ਬਤਾਇਆਂ ॥੬॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਤ ਕਤ ਦੇਖਤ ਤਤ ਤਤ ਤੁਮ ਹੀ ਮੋਹਿ ਇਹੁ ਬਿਸੁਆਸੁ ਹੋਇ ਆਇਆਂ ॥ ਕੈ
 ਪਹਿ ਕਰਤ ਅਰਦਾਸਿ ਬੇਨਤੀ ਜਤ ਸੁਨਤੋ ਹੈ ਰਘੁਰਾਇਆਂ ॥੭॥ ਲਹਿਆਂ ਸਹਸਾ ਬੰਧਨ ਗੁਰਿ ਤੋਰੇ ਤਾਂ ਸਦਾ
 ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆਂ ॥ ਹੋਣਾ ਸਾ ਸੋਈ ਫੁਨਿ ਹੋਸੀ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਕਹਾ ਦਿਖਾਇਆਂ ॥੮॥ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਕਾ ਏਕੋ ਠਾਣਾ
 ਗੁਰਿ ਪਰਦਾ ਖੋਲਿ ਦਿਖਾਇਆਂ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਇਕ ਠਾਈ ਤਤ ਬਾਹਰਿ ਕੈਠੈ ਜਾਇਆਂ ॥੯॥ ਏਕੈ
 ਕਨਿਕ ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ਸਾਜੀ ਬਹੁ ਪਰਕਾਰ ਰਚਾਇਆਂ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਰਮੁ ਗੁਰਿ ਖੋਈ ਹੈ ਇਵ ਤੈ ਤੁ
 ਮਿਲਾਇਆਂ ॥੧੦॥੨॥੧੨੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਤਥ ਘਟੈ ਦਿਨਸੁ ਰੈਨਾਰੇ ॥ ਮਨ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀ^੨ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ਸੰਤ ਟਹਲ ਕੀ ਬੇਲਾ ॥ ਈਹਾ ਖਾਟਿ ਚਲਹੁ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਆਗੈ
 ਬਸਨੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥੧॥ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਕਾਰੁ ਸਹਸੇ ਮਹਿ ਤਰਿਆਂ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ॥ ਜਿਸਹਿ ਜਗਾਇ ਪੀਆਏ
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਅਕਥ ਕਥਾ ਤਿਨਿ ਜਾਨੀ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਆਏ ਸੋਈ ਵਿਹਾਝਾਹੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਮਨਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ
 ਮਹਲੁ ਪਾਵਹੁ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਇਗੇ ਫੇਰਾ ॥੩॥ ਅਂਤਰਯਾਮੀ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਸਰਧਾ ਮਨ ਕੀ ਪੂਰੇ ॥
 ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਇਹੀ ਸੁਖੁ ਮਾਗੈ ਮੋ ਕਤ ਕਰਿ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰੇ ॥੪॥੩॥੧੨੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਖੁ ਪਿਤਾ
 ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਨੁ ਸਭ ਗੁਨ ਤੋਰੇ ॥੬॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੰਚ ਬਿਖਾਦੀ ਏਕੁ ਗਰੀਬਾ ਰਾਖਹੁ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥ ਖੇਤੁ

ਕਰਹਿ ਅਰੁ ਬਹੁਤੁ ਸੰਤਾਵਹਿ ਆਇਆ ਸਰਨਿ ਤੁਹਾਰੇ ॥੧॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਹਾਰਿਆ ਅਨਿਕ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ਛੋਡਹਿ ਕਤਹੂੰ
 ਨਾਹੀ ॥ ਏਕ ਬਾਤ ਸੁਨਿ ਤਾਕੀ ਓਟਾ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਟਿ ਜਾਹੀ ॥੨॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੰਤ ਮਿਲੇ ਮੋਹਿ ਤਿਨ ਤੇ ਧੀਰਜੁ
 ਪਾਇਆ ॥ ਸੰਤੀ ਮੰਤੁ ਦੀਆ ਮੋਹਿ ਨਿਰਭਤ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇਆ ॥੩॥ ਜੀਤਿ ਲਏ ਓਇ ਮਹਾ ਬਿਖਾਟੀ
 ਸਹਜ ਸੁਹੇਲੀ ਬਾਣੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਭਿਆ ਪਰਗਾਸਾ ਪਾਇਆ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੪॥੪॥੧੨੫॥
 ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਓਹੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਰਾਇਆ ॥ ਨਿਰਭਤ ਸੰਗਿ ਤੁਮਾਰੈ ਬਸਤੇ ਇਹੁ ਡਰਨੁ ਕਹਾ ਤੇ ਆਇਆ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਕ ਮਹਲਿ ਤ੍ਰਾਂ ਹੋਹਿ ਅਫਾਰੇ ਏਕ ਮਹਲਿ ਨਿਮਾਨੇ ॥ ਏਕ ਮਹਲਿ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਆਪੇ ਏਕ ਮਹਲਿ
 ਗਰੀਬਾਨੇ ॥੧॥ ਏਕ ਮਹਲਿ ਤ੍ਰਾਂ ਪੰਡਿਤੁ ਬਕਤਾ ਏਕ ਮਹਲਿ ਖਲੁ ਹੋਤਾ ॥ ਏਕ ਮਹਲਿ ਤ੍ਰਾਂ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਗ੍ਰਾਹਜੁ
 ਏਕ ਮਹਲਿ ਕਛੂ ਨ ਲੇਤਾ ॥੨॥ ਕਾਠ ਕੀ ਪੁਤਰੀ ਕਹਾ ਕਰੈ ਬਪੁਰੀ ਖਿਲਾਵਨਹਾਰੇ ਜਾਨੈ ॥ ਜੈਸਾ ਭੇਖੁ ਕਰਾਵੈ
 ਬਾਜੀਗਰੁ ਓਹੁ ਤੈਸੋ ਹੀ ਸਾਜੁ ਆਨੈ ॥੩॥ ਅਨਿਕ ਕੋਠਰੀ ਬਹੁਤੁ ਭਾਤਿ ਕਰੀਆ ਆਪਿ ਹੋਆ ਰਖਵਾਰਾ ॥
 ਜੈਸੇ ਮਹਲਿ ਰਾਖੈ ਤੈਸੈ ਰਹਨਾ ਕਿਆ ਇਹੁ ਕਰੈ ਬਿਚਾਰਾ ॥੪॥ ਜਿਨਿ ਕਿਛੁ ਕੀਆ ਸੋਈ ਜਾਨੈ ਜਿਨਿ ਇਹ ਸਭ
 ਬਿਧਿ ਸਾਜੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਪਰੰਪਰ ਸੁਆਮੀ ਕੀਮਤਿ ਅਪੁਨੇ ਕਾਜੀ ॥੫॥੫॥੧੨੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਛੋਡਿ ਛੋਡਿ ਰੇ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਰਸੂਆ ॥ ਤਰਝਿ ਰਹਿਆ ਰੇ ਬਾਵਰ ਗਾਵਰ ਜਿਤ ਕਿਰਖੈ ਹਰਿਆਇਆ ਪਸੂਆ ॥੧
 ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਜਾਨਹਿ ਤ੍ਰਾਂ ਅਪੁਨੇ ਕਾਜੈ ਸੋ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਤੈਰੈ ਤਸੂਆ ॥ ਨਾਗੋ ਆਇਆ ਨਾਗ ਸਿਧਾਸੀ ਫੇਰਿ
 ਫਿਰਿਆ ਅਰੁ ਕਾਲਿ ਗਰਸੂਆ ॥੧॥ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਰੇ ਕਸੁੰਭ ਕੀ ਲੀਲਾ ਰਾਚਿ ਮਾਚਿ ਤਿਨਹੂੰ ਲਤ ਹਸੂਆ ॥
 ਛੀਜਤ ਡੋਰਿ ਦਿਨਸੁ ਅਰੁ ਰੈਨੀ ਜੀਅ ਕੋ ਕਾਜੁ ਨ ਕੀਨੋ ਕਛੂਆ ॥੨॥ ਕਰਤ ਕਰਤ ਇਵ ਹੀ ਬਿਰਥਾਨੋ ਹਾਰਿਆ
 ਤਕਤੇ ਤਨੁ ਖੀਨਸੂਆ ॥ ਜਿਤ ਮੋਹਿਆ ਤਨਿ ਮੋਹਨੀ ਬਾਲਾ ਤਸ ਤੇ ਘਟੈ ਨਾਹੀ ਰੁਚ ਚਸੂਆ ॥੩॥ ਜਗੁ ਐਸਾ
 ਮੋਹਿ ਗੁਰਹਿ ਦਿਖਾਇਆ ਤਤ ਸਰਣਿ ਪਰਿਆ ਤਜਿ ਗਰਬਸੂਆ ॥ ਮਾਰਗੁ ਪ੍ਰਭ ਕੋ ਸੰਤਿ ਬਤਾਇਆ ਦੂਡੀ ਨਾਨਕ
 ਦਾਸ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਜਸੂਆ ॥੪॥੬॥੧੨੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਕਵਨੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ
 ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਤਰ ਕੀ ਬਿਧਿ ਤੁਮੁੰਹੀ ਜਾਨੀ ਤੁਮ ਹੀ ਸਜਨ ਸੁਹੇਲੇ ॥ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਮੈ ਤੁੜਾ ਤੇ ਪਾਏ

मेरे ठाकुर अगह अतोले ॥१॥ बरनि न साकउ तुमरे रंगा गुण निधान सुखदाते ॥ अगम अगोचर
 प्रभ अविनासी पूरे गुर ते जाते ॥२॥ भ्रमु भउ काटि कीए निहकेवल जब ते हउमै मारी ॥ जनम मरण
 को चूको सहसा साधसंगति दरसारी ॥३॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा बारि जाउ लख बरीआ ॥ जिह
 प्रसादि इहु भउजलु तरिआ जन नानक पृथि संगि मिरीआ ॥४॥७॥१२८॥ गउड़ी महला ५ ॥
 तुझ बिनु कवनु रीझावै तोही ॥ तेरो रूपु सगल देखि मोही ॥१॥ रहाउ ॥ सुरग पड़िआल मिरत भूआ
 मंडल सरब समानो एकै ओही ॥ सिव सिव करत सगल कर जोरहि सरब मड़िआ ठाकुर तेरी दोही
 ॥१॥ पतित पावन ठाकुर नामु तुमरा सुखदाई निरमल सीतलोही ॥ गिआन धिआन नानक
 वडिआई संत तेरे सिउ गाल गलोही ॥२॥८॥१२९॥ गउड़ी महला ५ ॥ मिलहु पिआरे जीआ ॥
 प्रभ कीआ तुमारा थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाड़िआ ॥
 तुमरी कृपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राड़िआ ॥१॥ सोई होआ जो तिसु भाणा अवरु न
 किन ही कीता ॥ तुमरै भाणै भरमि मोहिमा मोहिआ जागतु नाही सूता ॥२॥ बिनउ सुनहु तुम प्रानपति
 पिआरे किरपा निधि दड़िआला ॥ राखि लेहु पिता प्रभ मेरे अनाथह करि प्रतिपाला ॥३॥ जिस नो
 तुमहि दिखाड़िओ दरसनु साधसंगति कै पाछै ॥ करि किरपा धूरि देहु संतन की सुखु नानकु इहु
 बाछै ॥४॥६॥१३०॥ गउड़ी महला ५ ॥ हउ ता कै बलिहारी ॥ जा कै केवल नामु अधारी ॥१॥
 रहाउ ॥ महिमा ता की केतक गनीऔ जन पारब्रह्म रंगि राते ॥ सूख सहज आन्द तिना संगि उन
 समसरि अवर न दाते ॥१॥ जगत उधारण सई आए जो जन दरस पिआसा ॥ उन की सरणि परै
 सो तरिआ संतसंगि पूरन आसा ॥२॥ ता कै चरणि परउ ता जीवा जन कै संगि निहाला ॥
 भगतन की रेणु होइ मनु मेरा होहु प्रभू किरपाला ॥३॥ राजु जोबनु अवध जो दीसै सभु किछु जुग
 महि घाटिआ ॥ नामु निधानु सद नवतनु निरमलु इहु नानक हरि धनु खाटिआ ॥४॥१०॥१३१॥

ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਸੁਨਿ ਆਇਆ ਗੁਰ ਤੇ ॥ ਮੋ ਕਤ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ
 ॥ ਨਤ ਖੰਡ ਪ੍ਰਥਮੀ ਇਸੁ ਤਨ ਮਹਿ ਰਵਿਆ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਨਮਸਕਾਰਾ ॥ ਦੀਖਿਆ ਗੁਰ ਕੀ ਸੁੰਦਰ ਕਾਨੀ
 ਵੂਡਿਆਂ ਏਕੁ ਨਿਰਂਕਾਰਾ ॥੧॥ ਪੰਚ ਚੇਲੇ ਮਿਲਿ ਭਾਏ ਛਿਕਤਾ ਏਕਸੁ ਕੈ ਵਸਿ ਕੀਏ ॥ ਦਸ ਬੈਰਾਗਨਿ
 ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਤਬ ਨਿਰਮਲ ਜੋਗੀ ਥੀਏ ॥੨॥ ਭਰਮੁ ਜਰਾਇ ਚਰਾਈ ਬਿਭੂਤਾ ਪੰਥੁ ਏਕੁ ਕਰਿ ਪੇਖਿਆ ॥
 ਸਹਜ ਸੂਖ ਸੋ ਕੀਨੀ ਭੁਗਤਾ ਜੋ ਠਾਕੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖਿਆ ॥੩॥ ਜਹ ਭਤ ਨਾਹੀ ਤਹਾ ਆਸਨੁ ਬਾਧਿਆਂ
 ਸਿੰਗੀ ਅਨਹਤ ਬਾਨੀ ॥ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੁ ਢੰਡਾ ਕਰਿ ਰਾਖਿਆਂ ਜੁਗਤਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਨੀ ॥੪॥ ਐਸਾ ਜੋਗੀ
 ਕਵਡਭਾਗੀ ਭੇਟੈ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੈ ॥ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਯ ਕਰਤ ਤਿਸੁ ਸੂਰਤਿ ਕੀ ਨਾਨਕੁ ਤਿਸੁ ਪਗ ਚਾਟੈ ॥੫॥
 ੧੧॥੧੩੨॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਨੂਪ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਮੁ ਸੁਨਹੁ ਸਗਲ ਧਿਆਇਲੇ ਮੀਤਾ ॥ ਹਰਿ
 ਅਤਖਥੁ ਜਾ ਕਤ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਤਾ ਕੇ ਨਿਰਮਲ ਚੀਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਧਕਾਰੁ ਮਿਟਿਆਂ ਤਿਹ ਤਨ ਤੇ ਗੁਰਿ
 ਸਬਦਿ ਦੀਪਕੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਭ੍ਰਮ ਕੀ ਜਾਲੀ ਤਾ ਕੀ ਕਾਟੀ ਜਾ ਕਤ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਸ਼ਾਸਾ ॥੧॥ ਤਾਰੀਲੇ ਭਵਜਲੁ
 ਤਾਰੁ ਬਿਖੜਾ ਬੋਹਿਥ ਸਾਧੁ ਸੰਗਾ ॥ ਪੂਰਨ ਛੋਈ ਮਨ ਕੀ ਆਸਾ ਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆਂ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥੨॥ ਨਾਮ ਖਿਆਨਾ
 ਭਗਤੀ ਪਾਇਆ ਮਨ ਤਨ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤਾ ਕਤ ਦੇਵੈ ਜਾ ਕਤ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਏ
 ॥੩॥੧੨॥੧੩੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦਿਆ ਮਿਆ ਕਰਿ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਮੋਰੇ ਮੋਹਿ ਅਨਾਥ ਸਰਣਿ
 ਪ੍ਰਭ ਤੋਰੀ ॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਹਾਥ ਦੇ ਰਾਖਹੁ ਕਛੂ ਸਿਆਨਪ ਤਕਤਿ ਨ ਮੋਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਨ
 ਕਰਾਵਨ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤੁਮ ਹੀ ਤੁਮ ਸਮਰਥ ਨਾਹੀ ਅਨ ਹੋਰੀ ॥ ਤੁਮਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨੀ ਸੇ ਸੇਵਕ
 ਜਿਨ ਭਾਗ ਮਥੋਰੀ ॥੧॥ ਅਪੁਨੇ ਸੇਵਕ ਸੰਗਿ ਤੁਮ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤੇ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਭਗਤਨ ਸੰਗਿ ਜੋਰੀ ॥ ਪੂਤ
 ਪੂਤ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਦਰਸਨੁ ਚਾਹੈ ਜੈਸੇ ਵੂਸਟਿ ਓਹ ਚੰਦ ਚਕੋਰੀ ॥੨॥ ਰਾਮ ਸੰਤ ਮਹਿ ਭੇਦੁ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ
 ਏਕੁ ਜਨੁ ਕਈ ਮਹਿ ਲਾਖ ਕਰੋਰੀ ॥ ਜਾ ਕੈ ਹੀਐ ਪ੍ਰਗਟੁ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਆ ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਰਸਨ ਰਮੋਰੀ
 ॥੩॥ ਤੁਮ ਸਮਰਥ ਅਪਾਰ ਅਤਿ ਊਚੇ ਸੁਖਦਾਤੇ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧੋਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਕੀਜੈ ਕਿਰਪਾ

उन संतन कै संगि संगोरी ॥੪॥੧੩॥੧੩੪॥ गउड़ी महला ੫ ॥ तुम हरि सेती राते संतहु ॥
 निबाहि लेहु मो कउ पुरख बिधाते ओड़ि पहुचावहु दाते ॥੧॥ रहाउ ॥ तुमरा मरमु तुमा ही जानिआ
 तुम पूरन पुरख बिधाते ॥ राखहु सरणि अनाथ दीन कउ करहु हमारी गाते ॥੧॥ तरण सागर
 बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहु अपुनी भाते ॥ करि किरपा जिसु राखहु संगे ते ते पारि पराते ॥੨॥
 ईत ऊत प्रभ तुम समरथा सभु किछु तुमरै हाथे ॥ ऐसा निधानु देहु मो कउ हरि जन चलै हमारै साथे
 ॥੩॥ निरगुनीआरे कउ गुनु कीजै हरि नामु मेरा मनु जापे ॥ संत प्रसादि नानक हरि भेटे मन तन
 सीतल ध्रापे ॥੪॥੧੪॥੧੩੫॥ गउड़ी महला ੫ ॥ सहजि समाइओ देव ॥ मो कउ सतिगुर भए
 दइआल देव ॥੧॥ रहाउ ॥ काटि जेवरी कीओ दासरो संतन ठहलाइओ ॥ एक नाम को थीओ पूजारी
 मो कउ अचरजु गुरहि दिखाइओ ॥੧॥ भइओ प्रगासु सरब उजीआरा गुर गिआनु मनहि प्रगटाइओ
 ॥ अंमृतु नामु पीओ मनु तृपतिआ अनभै ठहराइओ ॥੨॥ मानि आगिआ सरब सुख पाए दूखह
 ठाउ गवाइओ ॥ जउ सुप्रसन्न भए प्रभ ठाकुर सभु आनद रूपु दिखाइओ ॥੩॥ ना किछु आवत ना
 किछु जावत सभु खेलु कीओ हरि राइओ ॥ कहु नानक अगम अगम है ठाकुर भगत टेक हरि नाइओ
 ॥੪॥੧੫॥੧੩੬॥ गउड़ी महला ੫ ॥ पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥
 जिनि धारे ब्रह्मंड खर्ड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥੧॥ रहाउ ॥ मन की मति तिआगहु हरि जन हुकमु
 बूझि सुखु पाईਐ रे ॥ जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईਐ रे ॥੧॥ कोटि पतित
 उधारे खिन महि करते बार न लागै रे ॥ दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिसु भावै तिसहि निवाजै रे
 ॥੨॥ सभ को मात पिता प्रतिपालक जीअ प्रान सुख सागरु रे ॥ देंदे तोटि नाही तिसु करते पूरि
 रहिओ रतनागरु रे ॥੩॥ जाचिकु जाचै नामु तेरा सुआमी घट घट अंतरि सोई रे ॥ नानकु दासु
 ता की सरणाई जा ते बृथा न कोई रे ॥੪॥੧੬॥੧੩੭॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਪ੍ਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਬਹੂ ਨ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰੇ ॥ ਈਹਾ ਊਹਾ ਸਰਬ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਗਲ ਘਟਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਮਹਾ ਕਸਟ ਕਾਟੈ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਚਿਤਾਰੇ ॥ ਸੀਤਲ ਸਾਁਤਿ ਸੂਖ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ਜਲਤੀ ਅਗਨਿ
ਨਿਵਾਰੇ ॥੨॥ ਗਰਭ ਕੁੰਡ ਨਰਕ ਤੇ ਰਾਖੈ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੇ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਆਰਾਧਤ ਮਨ ਮਹਿ ਜਮ ਕੀ
ਤਾਸ ਬਿਦਾਰੇ ॥੩॥ ਪੂਰਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਊਚਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਧਿਆਵਤ ਸੁਖ ਸਾਗਰ
ਜ੍ਰਾਏ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੇ ॥੪॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰਾਦਿ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਮਨੁ ਲੀਨੋ ਨਿਰਗੁਣ ਕੇ ਦਾਤਾਰੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੋ ਨਾਮੁ
ਦੀਜੈ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੪॥੧॥੧੩੮॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੫

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ਰੇ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਬਿਨਾ ॥ ਜੀਤਿ ਜਨਮੁ ਇਹੁ ਰਤਨੁ ਅਮੋਲਕੁ ਸਾਧਸ਼ੰਗਤਿ ਜਪਿ ਇਕ ਖਿਨਾ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਤ ਸੰਪਤਿ ਬਨਿਤਾ ਬਿਨੋਦ ॥ ਛੋਡਿ ਗਏ ਬਹੁ ਲੋਗ ਭੋਗ ॥੨॥ ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਰਾਜ ਰੰਗ ॥ ਤਿਆਗਿ
ਚਲਿਆਂ ਹੈ ਮੂੜ ਨਨਗ ॥੨॥ ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਦੇਹ ਫੂਲਿਆ ॥ ਸੋ ਤਨੁ ਧਰ ਸੰਗਿ ਰੁਲਿਆ ॥੩॥ ਮੋਹਿ ਮੋਹਿਆ ਜਾਨੈ
ਦੂਰਿ ਹੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਹਫੂਰਿ ਹੈ ॥੪॥੧॥੧੩੯॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਧਰ ਤਰਕੇ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨੋ ॥
ਸਾਗਰ ਲਹਹਿ ਸੰਸਾ ਸੰਸਾਰੁ ਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ ਪਾਰ ਗਰਾਮਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਲਿ ਕਾਲਖ ਅੰਧਿਆਰੀਆ ॥ ਗੁਰ
ਗਿਆਨ ਦੀਪਕ ਤਜਿਆਰੀਆ ॥੧॥ ਬਿਖੁ ਬਿਖਿਆ ਪਸਰੀ ਅਤਿ ਘਨੀ ॥ ਤਕਰੇ ਜਪਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਗੁਨੀ ॥੨॥
ਮਤਵਾਰੇ ਮਾਇਆ ਸੋਇਆ ॥ ਗੁਰ ਭੇਟਤ ਭ੍ਰਮੁ ਭਤ ਖੋਇਆ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਏਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ
ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥੪॥੨॥੧੪੦॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦੀਬਾਨੁ ਹਮਾਰੇ ਤੁਹੀ ਏਕ ॥ ਸੇਵਾ ਥਾਰੀ ਗੁਰਹਿ ਟੇਕ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਚਾਕਰ ਲੈ ਲਾਇਆ ॥੧॥ ਮਾਰੇ ਪੰਚ ਬਿਖਾਦੀਆ ॥
ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਦਲੁ ਸਾਧਿਆ ॥੨॥ ਬਖਸੀਸ ਵਜਹੁ ਮਿਲਿ ਏਕੁ ਨਾਮ ॥ ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨਦ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥੩॥

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਚਾਕਰ ਸੇ ਭਲੇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਮੁਖ ਊਜਲੇ ॥੪॥੩॥੧੪੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਅਰੇ ਓਲਾ ਨਾਮ
 ਕਾ ॥ ਅਵਰੁ ਜਿ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨੋ ਤਿਨ ਮਹਿ ਭਤ ਹੈ ਜਾਮ ਕਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਵਰ ਜਤਨਿ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ॥
 ਕਡੈ ਭਾਗਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਲਾਖ ਹਿਕਮਤੀ ਜਾਨੀਐ ॥ ਆਗੈ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਮਾਨੀਐ ॥੨॥ ਅਛਾਬੁਧਿ ਕਰਮ
 ਕਮਾਵਨੇ ॥ ਗ੍ਰੂ ਬਾਲੂ ਨੀਰਿ ਬਹਾਵਨੇ ॥੩॥ ਪ੍ਰਭੁ ਕ੃ਪਾਲੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਮਿਲੈ ॥
 ੪॥੪॥੧੪੨॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਾਰਨੈ ਬਲਿਹਾਰਨੈ ਲਖ ਬਰੀਆ ॥ ਨਾਮੋ ਹੋ ਨਾਮੁ ਸਾਹਿਬ ਕੋ ਪ੍ਰਾਨ
 ਅਧਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਨ ਕਗਵਨ ਤੁਹੀ ਏਕ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਕੀ ਤੁਹੀ ਟੇਕ ॥੧॥ ਰਾਜ ਜੋਬਨ ਪ੍ਰਭ ਤੂ
 ਧਨੀ ॥ ਤੂ ਨਿਰਗੁਨ ਤੂ ਸਰਗੁਨੀ ॥੨॥ ਈਹਾ ਊਹਾ ਤੁਮ ਰਖੋ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਕੋ ਲਖੋ ॥੩॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਪ੍ਰਭ
 ਸੁਜਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਤਕੀਆ ਤੁਹੀ ਤਾਣੁ ॥੪॥੫॥੧੪੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧੀਐ ॥
 ਸਾਂਤਸੰਗਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭਰਮੁ ਮੋਹੁ ਭਤ ਸਾਥੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ਸਿਮੂਤਿ ਭਨੇ ॥ ਸਭ ਊਚ
 ਬਿਰਾਜਿਤ ਜਨ ਸੁਨੇ ॥੧॥ ਸਗਲ ਅਸਥਾਨ ਮੈ ਭੀਤ ਚੀਨ ॥ ਰਾਮ ਸੇਵਕ ਮੈ ਰਹਤ ਕੀਨ ॥੨॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ
 ਜੀਨਿ ਫਿਰਹਿ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਲੋਕ ਨਹੀ ਜਨਮਿ ਮਰਹਿ ॥੩॥ ਬਲ ਬੁਧਿ ਸਿਆਨਪ ਹਤਮੈ ਰਹੀ ॥ ਹਰਿ ਸਾਧ ਸਰਣਿ
 ਨਾਨਕ ਗਹੀ ॥੪॥੬॥੧੪੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਈਐ ॥ ਨੀਤ ਨੀਤ ਹਰਿ ਸੇਵੀਐ
 ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਂਤਸੰਗਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ॥ ਦੁਖੁ ਦਰਦੁ ਅਨੇਰਾ ਭ੍ਰਮੁ ਨਸੈ ॥
 ੧॥ ਸਾਂਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਜਾਪੀਐ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਦ੍ਰਾਖਿ ਨ ਵਿਆਪੀਐ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਗੁਰੁ ਹਰਿ ਮੰਤੁ ਦੇ ॥ ਸੋ ਤਕਾਇਆ
 ਮਾਇਆ ਅਗਨਿ ਤੇ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਮਾਇਆ ਕਰਿ ॥ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਾਸੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ॥੪॥੭॥
 ੧੪੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਸਨਾ ਜਪੀਐ ਏਕੁ ਨਾਮ ॥ ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਆਨਦੁ ਘਨਾ ਆਗੈ ਜੀਅ ਕੈ ਸੰਗਿ
 ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਟੀਐ ਤੇਰਾ ਅਛਾ ਰੋਗੁ ॥ ਤੂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਰਿ ਰਾਜ ਜੋਗੁ ॥੧॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਜਿਨਿ
 ਜਨਿ ਚਾਖਿਆ ॥ ਤਾ ਕੀ ਤ੍ਰਸਨਾ ਲਾਥੀਆ ॥੨॥ ਹਰਿ ਬਿਸ਼ਾਮ ਨਿਧਿ ਪਾਇਆ ॥ ਸੋ ਬਹੁਰਿ ਨ ਕਤ ਹੀ
 ਧਾਇਆ ॥੩॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਾ ਕਤ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਾ ਭਤ ਗਇਆ ॥੪॥੮॥੧੪੬॥

ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕਤ ਬਿਸਰੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਤਾਹੂ ਕਤ ਪੀਰ ॥ ਸਾਧਸ਼ੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਰਵਹਿ ਸੇ ਗੁਣੀ
 ਗਹੀਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਿਦੈ ਬੁਧਿ ॥ ਤਾ ਕੈ ਕਰ ਤਲ ਨਵ ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ॥੧॥ ਜੋ ਜਾਨਹਿ ਹਰਿ
 ਪ੍ਰਭ ਧਨੀ ॥ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਤਾ ਕੈ ਕਮੀ ॥੨॥ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥ ਸਰਬ ਸੂਖ ਰੰਗ ਮਾਣਿਆ ॥੩॥ ਹਰਿ
 ਧਨੁ ਜਾ ਕੈ ਗ੍ਰਹਿ ਕਸੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਸੰਗਿ ਦੁਖੁ ਨਸੈ ॥੪॥੬॥੧੪੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗਰਬੁ ਬਡੋ
 ਮੂਲੁ ਝਿਤਨੋ ॥ ਰਹਨੁ ਨਹੀ ਗਹੁ ਕਿਤਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬੇਬਰਜਤ ਬੇਦ ਸੰਤਨਾ ਤਆਹੂ ਸਿਤ ਰੇ ਹਿਤਨੋ ॥ ਹਾਰ
 ਜੂਆਰ ਜੂਆ ਬਿਧੇ ਝਿੰਦ੍ਰੀ ਵਸਿ ਲੈ ਜਿਤਨੋ ॥੧॥ ਹਰਨ ਭਰਨ ਸੰਪੂਰਨਾ ਚਰਨ ਕਮਲ ਰੰਗਿ ਰਿਤਨੋ ॥ ਨਾਨਕ
 ਉਥੇ ਸਾਧਸ਼ੰਗਿ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਮੈ ਦਿਤਨੋ ॥੨॥੧੦॥੧੪੮॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੋਹਿ ਦਾਸਰੇ ਠਾਕੁਰ ਕੋ ॥
 ਧਾਨੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਖਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਐਸੋ ਹੈ ਰੇ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰੁ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੧॥ ਕਾਮੁ
 ਕਰੀ ਜੇ ਠਾਕੁਰ ਭਾਵਾ ॥ ਗੀਤ ਚਰਿਤ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਾ ॥੨॥ ਸਰਣਿ ਪਰਿਓ ਠਾਕੁਰ ਵਜੀਰਾ ॥ ਤਿਨਾ ਦੇਖਿ
 ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੩॥ ਏਕ ਟੇਕ ਏਕੋ ਆਧਾਰਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਲਾਗਾ ਕਾਰਾ ॥੪॥੧੧॥੧੪੯॥
 ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹੈ ਕੋਈ ਐਸਾ ਹਤਮੈ ਤੋਰੈ ॥ ਝਿਸੁ ਮੀਠੀ ਤੇ ਝਿਹੁ ਮਨੁ ਹੋਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਗਿਆਨੀ
 ਮਾਨੁਖੁ ਭਿਆ ਜੋ ਨਾਹੀ ਸੋ ਲੋਰੈ ॥ ਰੈਣ ਅੰਧਾਰੀ ਕਾਰਿਆ ਕਵਨ ਜੁਗਤਿ ਜਿਤੁ ਭੋਰੈ ॥੧॥ ਭ੍ਰਮਤੋ ਭ੍ਰਮਤੋ
 ਹਾਰਿਆ ਅਨਿਕ ਬਿਧੀ ਕਰਿ ਟੋਰੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਭਈ ਸਾਧਸ਼ੰਗਤਿ ਨਿਧਿ ਮੌਰੈ ॥੨॥੧੨॥੧੫੦॥
 ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਿੰਤਾਮਣਿ ਕਰੁਣਾ ਮਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥ ਜਾ ਕੈ
 ਸਿਮਰਣਿ ਸੁਖ ਭਏ ॥੧॥ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧ ॥ ਸੁਨਤ ਜਸੋ ਕੋਟਿ ਅਘ ਖਏ ॥੨॥ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ
 ਪ੍ਰਭ ਮਿਆ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਲਏ ॥੩॥੧੩॥੧੫੧॥ ਗਤੜੀ ਪੂਰਕੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸੁਖ ਪਾਏ ॥ ਜਾ ਦਿਨਿ ਬਿਸਰੈ ਪ੍ਰਾਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸੋ ਦਿਨੁ ਜਾਤ ਅਯਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਏਕ ਰੈਣ ਕੇ ਪਾਹੁਨ ਤੁਮ ਆਏ ਬਹੁ ਜੁਗ ਆਸ ਬਧਾਏ ॥ ਗ੍ਰਹ ਮੰਦਰ ਸੰਪੈ ਜੋ ਦੀਸੈ ਜਿਤ ਤਰਵਰ ਕੀ ਛਾਏ ॥
 ੧॥ ਤਨੁ ਮੇਰਾ ਸੰਪੈ ਸਭ ਮੇਰੀ ਬਾਗ ਮਿਲਖ ਸਭ ਜਾਏ ॥ ਦੇਵਨਹਾਰਾ ਬਿਸਰਿਓ ਠਾਕੁਰੁ ਖਿਨ ਮਹਿ ਹੋਤ

ਪਰਾਏ ॥੨॥ ਪਹਿਰੈ ਬਾਗਾ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨਾ ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਲਾਏ ॥ ਨਿਰਮਤ ਨਿਰਕਾਰ ਨਹੀ ਚੀਨਿਆ ਜਿਤ
ਹਸਤੀ ਨਾਵਾਏ ॥੩॥ ਜਤ ਹੋਇ ਕੁਪਾਲ ਤ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲੈ ਸਭਿ ਸੁਖ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਏ ॥ ਸੁਕਤੁ ਭਿਆ ਬੰਧਨ ਗੁਰਿ
ਖੋਲੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੪॥੧੪॥੧੫੨॥ ਗਤੜੀ ਪ੍ਰਬੰਦੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ
ਸਦ ਕਰੀਐ ॥ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਸਫਲੁ ਗੁਰਿ ਕੀਆ ਦਰਸਨ ਕਤ ਬਲਿਹਰੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੇਤੇ ਸਾਸ ਗ੍ਰਾਸ
ਮਨੁ ਲੇਤਾ ਤੇਤੇ ਹੀ ਗੁਨ ਗਾਈਐ ॥ ਜਤ ਹੋਇ ਦੈਆਲੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪੁਨਾ ਤਾ ਇਹ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈਐ ॥੧॥
ਮੇਰੇ ਮਨ ਨਾਮਿ ਲਾਏ ਜਮ ਬੰਧ ਤੇ ਛੂਟਹਿ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਸੁਖ ਪਾਈਐ ॥ ਸੇਵਿ ਸੁਆਮੀ ਸਤਿਗੁਰ ਦਾਤਾ ਮਨ ਬੰਛਤ
ਫਲ ਆਈਐ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਇਸਟੁ ਮੀਤ ਸੁਤ ਕਰਤਾ ਮਨ ਸੰਗਿ ਤੁਹਾਰੈ ਚਾਲੈ ॥ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਕੀ
ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਾਲੈ ॥੩॥ ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾਲਿ ਕ੃ਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ਬਿਨਸੇ ਸਰਬ ਅੰਦੇਸਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ
ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਮਿਟਿਆ ਸਗਲ ਕਲੇਸਾ ॥੪॥੧੫॥੧੫੩॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫

੧੪ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੂਸਨਾ ਬਿਰਲੇ ਹੀ ਕੀ ਬੁੜੀ ਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੋਟਿ ਜੋਰੇ ਲਾਖ ਕੋਰੇ ਮਨੁ ਨ ਹੋਰੇ ॥ ਪਰੈ ਪਰੈ ਹੀ ਕਤ ਲੁੜੀ ਹੇ
॥੧॥ ਸੁੰਦਰ ਨਾਰੀ ਅਨਿਕ ਪਰਕਾਰੀ ਪਰ ਗ੍ਰਹ ਬਿਕਾਰੀ ॥ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਨਹੀ ਸੁੜੀ ਹੇ ॥੨॥ ਅਨਿਕ ਬੰਧਨ
ਮਾਇਆ ਭਰਮਤੁ ਭਰਮਾਇਆ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਨਹੀ ਗਾਇਆ ॥ ਮਨ ਬਿਖੈ ਹੀ ਮਹਿ ਲੁੜੀ ਹੇ ॥੩॥ ਜਾ ਕਤ ਰੇ
ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ਜੀਵਤ ਸੋਈ ਮਰੈ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਤਰੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਦਰਿ ਹਰਿ ਸਿੜੀ ਹੇ ॥੪॥੧॥੧੫੪॥
ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਭਹੂ ਕੋ ਰਸੁ ਹਰਿ ਹੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਹੂ ਜੋਗ ਕਾਹੂ ਭੋਗ ਕਾਹੂ ਗਿਆਨ ਕਾਹੂ ਧਿਆਨ
॥ ਕਾਹੂ ਹੋ ਡੰਡ ਧਰਿ ਹੋ ॥੨॥ ਕਾਹੂ ਜਾਪ ਕਾਹੂ ਤਾਪ ਕਾਹੂ ਪ੍ਰਯਾ ਹੋਮ ਨੇਮ ॥ ਕਾਹੂ ਹੋ ਗਤੁ ਕਰਿ ਹੋ ॥੨॥
ਕਾਹੂ ਤੀਰ ਕਾਹੂ ਨੀਰ ਕਾਹੂ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰ ॥ ਨਾਨਕਾ ਭਗਤਿ ਪ੃ਅ ਹੋ ॥੩॥੨॥੧੫੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਗੁਨ ਕੀਰਤਿ ਨਿਧਿ ਮੌਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੂਂਹੀ ਰਸ ਤੂਂਹੀ ਜਸ ਤੂਂਹੀ ਰੂਪ ਤੂਹੀ ਰੰਗ ॥ ਆਸ ਓਟ ਪ੍ਰਭ ਤੋਰੀ ॥
੧॥ ਤੂਹੀ ਮਾਨ ਤੂਂਹੀ ਧਾਨ ਤੂਹੀ ਪਤਿ ਤੂਹੀ ਪ੍ਰਾਨ ॥ ਗੁਰਿ ਤੂਟੀ ਲੈ ਜੋਰੀ ॥੨॥ ਤੂਹੀ ਗ੍ਰਹਿ ਤੂਹੀ ਬਨਿ

ਤੂਹੀ ਗਾਤ ਤੂਹੀ ਸੁਨਿ ॥ ਹੈ ਨਾਨਕ ਨੇਰ ਨੇਰੀ ॥੩॥੩॥੧੫੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਤੋ ਹਰਿ ਰੰਗ ਮਾਤੋ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਉਹੀ ਪੀਓ ਆਉਹੀ ਖੀਓ ਗੁਰਹਿ ਦੀਓ ਦਾਨੁ ਕੀਓ ॥ ਤਾਹੂ ਸਿਉ ਮਨੁ ਰਾਤੋ ॥੧॥ ਆਉਹੀ
ਭਾਠੀ ਆਉਹੀ ਪੋਚਾ ਤਹੀ ਪਿਆਰੀ ਤਹੀ ਰੁਚਾ ॥ ਮਨਿ ਓਹੋ ਸੁਖੁ ਜਾਤੋ ॥੨॥ ਸਹਜ ਕੇਲ ਅਨਦ ਖੇਲ ਰਹੇ ਫੇਰ
ਭਏ ਮੇਲ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਰਾਤੋ ॥੩॥੪॥੧੫੭॥

ਰਾਗ ਗੌਡੀ ਮਾਲਵਾ ਮਹਲਾ ੫

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੇਹੁ ਮੀਤਾ ਲੇਹੁ ਆਗੈ ਬਿਖਮ ਪਥੁ ਭੈਆਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥

ਸੇਵਤ ਸੇਵਤ ਸਦਾ ਸੇਵਿ ਤੈਰੈ ਸੰਗਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਕਾਲੁ ॥ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਤ੍ਰਾਂ ਸਾਧ ਕੀ ਹੋ ਕਾਟੀਐ ਜਮ ਜਾਲੁ ॥੧॥
ਹੋਮ ਜਗ ਤੀਰਥ ਕੀਏ ਬਿਚਿ ਹਉਮੈ ਬਧੇ ਬਿਕਾਰ ॥ ਨਰਕੁ ਸੁਗੁ ਦੁਇ ਭੁੰਚਨਾ ਹੋਇ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ
ਅਵਤਾਰ ॥੨॥ ਸਿਵ ਪੁਰੀ ਬ੍ਰਹਮ ਇੰਦ੍ਰ ਪੁਰੀ ਨਿਹਚਲੁ ਕੋ ਥਾਤ ਨਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ਹੋ
ਸਾਕਤ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥੩॥ ਜੈਸੋ ਗੁਰਿ ਉਪਦੇਸਿਆ ਮੈ ਤੈਸੋ ਕਹਿਆ ਪੁਕਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸੁਨਿ ਰੇ ਮਨਾ
ਕਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਹੋਇ ਤਥਾਰੁ ॥੪॥੧॥੧੫੮॥

ਰਾਗ ਗਤੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਾਇਆਂ ਬਾਲ ਬੁਧਿ ਸੁਖੁ ਰੇ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਹਾਨਿ ਮਿਰਤੁ ਢੂਖ ਸੁਖ ਚਿਤਿ ਸਮਸਾਰਿ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਜਤ ਲਤ ਹਤ ਕਿਛੁ ਸੋਚਤ ਚਿਤਵਤ ਤਤ ਲਤ ਦੁਖਨੁ ਭਰੇ ॥ ਜਤ ਕ੃ਪਾਲੁ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਆ ਤਤ ਆਨਦ
ਸਹਜੇ ॥੧॥ ਜੇਤੀ ਸਿਆਨਪ ਕਰਮ ਹਤ ਕੀਏ ਤੇਤੇ ਬੰਧ ਪਰੇ ॥ ਜਤ ਸਾਧੂ ਕਰੁ ਮਸਤਕਿ ਧਰਿਆਂ ਤਬ ਹਮ
ਮੁਕਤ ਭਏ ॥੨॥ ਜਤ ਲਤ ਮੇਰੋ ਮੇਰੋ ਕਰਤੋ ਤਤ ਲਤ ਬਿਖੁ ਘੇਰੇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਬੁਧਿ ਅਰਪੀ ਠਾਕੁਰ ਕਤ ਤਬ
ਹਮ ਸਹਜਿ ਸੋਏ ॥੩॥ ਜਤ ਲਤ ਪੋਟ ਤਠਾਈ ਚਲਿਅਤ ਤਤ ਲਤ ਢਾਨ ਭਰੇ ॥ ਪੋਟ ਢਾਰਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ
ਮਿਲਿਆ ਤਤ ਨਾਨਕ ਨਿਰਭਏ ॥੪॥੧॥੧੫੯॥ ਗਤੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭਾਵਨੁ ਤਿਆਗਿਆਂ
ਰੀ ਤਿਆਗਿਆਂ ॥ ਤਿਆਗਿਆਂ ਮੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਤਿਆਗਿਆਂ ॥ ਸਰਬ ਸੁਖ ਆਨਦ ਮੰਗਲ ਰਸ ਮਾਨਿ ਗੋਬਿੰਦੈ

आगिओ ॥१॥ रहाउ ॥ मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिओ ॥ संपत हरखु न आपत
 दूखा रंगु ठाकुरै लागिओ ॥१॥ बास बासरी एकै सुआमी उदिआन दृसटागिओ ॥ निरभउ भए संत
 भ्रमु डारिओ पूरन सरबागिओ ॥२॥ जो किछु करतै कारणु कीनो मनि बुरो न लागिओ ॥ साधसंगति
 परसादि संतन कै सोडिओ मनु जागिओ ॥३॥ जन नानक ओडि तुहारी परिओ आडिओ सरणागिओ ॥
 नाम रंग सहज रस माणे फिरि दूखु न लागिओ ॥४॥२॥१६०॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ पाडिआ
 लालु रतनु मनि पाडिआ ॥ तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ सतगुर सबदि समाडिआ ॥१॥ रहाउ ॥
 लाथी भूख तृसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी ॥ करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ मनु जीतो जगु सारी
 ॥१॥ तृपति अधाडि रहे रिद अंतरि डोलन ते अब चूके ॥ अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ तोटि नही
 रे मूके ॥२॥ अचरजु एकु सुनहु रे भाई गुरि औसी बूझ बुझाई ॥ लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ
 बिसरी ताति पराई ॥३॥ कहिओ न जाई एहु अचंभउ सो जानै जिनि चाखिआ ॥ कहु नानक सच भए
 बिगासा गुरि निधानु रिदै लै राखिआ ॥४॥३॥१६१॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ उबरत राजा राम
 की सरणी ॥ सरब लोक माडिआ के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥१॥ रहाउ ॥ सासत सिंमृति
 बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥ बिनु हरि भजन नाही निसतारा सूखु न किनहूँ लहिआ ॥१॥
 तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे
 ॥२॥ अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल बृथे
 बिनु नामा ॥३॥ हरि का नामु जपहु मेरे मीता इहै सार सुखु पूरा ॥ साधसंगति जनम मरणु निवारै
 नानक जन की धूरा ॥४॥४॥१६२॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ मो कउ इह बिधि को समझावै ॥
 करता होइ जनावै ॥१॥ रहाउ ॥ अनजानत किछु इनहि कमानो जप तप कछू न साधा ॥ दह दिसि
 लै इहु मनु दउराडिओ कवन करम करि बाधा ॥२॥ मन तन धन भूमि का ठाकुरु हउ इस का

ਇਹੁ ਮੇਰਾ ॥ ਭਰਮ ਮੋਹ ਕਛੁ ਸ੍ਰੂਜਸਿ ਨਾਹੀ ਇਹੁ ਪੈਖਰ ਪਏ ਪੈਰਾ ॥੨॥ ਤਬ ਇਹੁ ਕਹਾ ਕਮਾਵਨ ਪਰਿਆ
 ਜਬ ਇਹੁ ਕਛੂ ਨ ਹੋਤਾ ॥ ਜਬ ਏਕ ਨਿਰੰਜਨ ਨਿਰਕਾਰ ਪ੍ਰਭ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪਹਿ ਕਰਤਾ ॥੩॥ ਅਪਨੇ ਕਰਤਬ
 ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਜਿਨਿ ਇਹੁ ਰਚਨੁ ਰਚਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਰਣਹਾਰੁ ਹੈ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ
 ॥੪॥੫॥੧੬੩॥ ਗਤੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰ ਕ੃ਆ ਬਿਰਥੇ ॥ ਯਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਕਰਮ
 ਕਮਾਣੇ ਇਹਿ ਓਹੈ ਮੂਸੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਰਤ ਨੇਮ ਸੰਜਮ ਮਹਿ ਰਹਤਾ ਤਿਨ ਕਾ ਆਢੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਆਗੈ
 ਚਲਣੁ ਅਤੁਰੁ ਹੈ ਭਾਈ ਊਂਹਾ ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਆ ॥੧॥ ਤੀਰਥਿ ਨਾਇ ਅਰੁ ਧਰਨੀ ਭਮਤਾ ਆਗੈ ਠਤਰ ਨ
 ਪਾਵੈ ॥ ਊਹਾ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਇਹੁ ਬਿਧਿ ਓਹੁ ਲੋਗਨ ਹੀ ਪਤੀਆਵੈ ॥੨॥ ਚਤੁਰ ਬੇਦ ਮੁਖ ਬਚਨੀ ਤਚਰੈ
 ਆਗੈ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਬੂੜੈ ਨਾਹੀ ਏਕੁ ਸੁਧਾਖਰੁ ਓਹੁ ਸਗਲੀ ਝਾਖ ਝਾਖਾਈਐ ॥੩॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹਤੋ ਇਹੁ
 ਬੀਚਾਰਾ ਜਿ ਕਮਾਵੈ ਸੁ ਪਾਰ ਗਰਾਮੀ ॥ ਗੁਰੁ ਸੇਵਹੁ ਅਰੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਤਿਆਗਹੁ ਮਨਹੁ ਗੁਮਾਨੀ ॥੪॥
 ੬॥੧੬੪॥ ਗਤੜੀ ਮਾਲਾ ੫ ॥ ਮਾਧਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਕਹੀਐ ॥ ਹਮ ਤੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵੈ ਸੁਆਮੀ
 ਜਿਤ ਰਾਖਹੁ ਤਿਤ ਰਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਿਆ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਕਿ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ਕਿਆ ਇਸੁ ਹਾਥਿ ਬਿਚਾਰੇ ॥ ਜਿਤੁ
 ਤੁਮ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤ ਹੀ ਲਾਗਾ ਪੂਰਨ ਖਸਮ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਸਰਬ ਕੇ ਦਾਤੇ ਏਕ ਰੂਪ ਲਿਵ ਲਾਵਹੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀ ਹਰਿ ਪਹਿ ਅਪੁਨਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥੨॥੭॥੧੬੫॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਮਾਝਾ ਮਹਲਾ ੫

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ਦਮੋਦਰ ਰਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਾ ਕਰਿ ਸੇਵ ਲਗਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਭਗਤ ਵਛਲੁ ਤੇਰਾ ਬਿਰਦੁ
 ਰਖਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਪੂਰਨ ਸਭਨੀ ਜਾਈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਕਿਤ ਪੇਖਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਕਵਣ ਸੁਕਰਣੀ ਜੀਤ ॥ ਸੰਤਾ ਦਾਸੀ
 ਸੇਵਾ ਚਰਣੀ ਜੀਤ ॥ ਇਹੁ ਜੀਤ ਵਤਾਈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈ ਜੀਤ ॥ ਤਿਸੁ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਤ ਪਾਈ ਜੀਤ ॥
 ੨॥ ਪੋਥੀ ਪਂਡਿਤ ਬੇਦ ਖੋਜੰਤਾ ਜੀਤ ॥ ਹੋਇ ਬੈਰਾਗੀ ਤੀਰਥਿ ਨਾਵੰਤਾ ਜੀਤ ॥ ਗੀਤ ਨਾਦ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਵੰਤਾ
 ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਨਿਰਭਤ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਜੀਤ ॥ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਲਗਿ

ਗੁਰ ਕੇ ਪੈਰੇ ਜੀਤ ॥ ਭ੍ਰਮੁ ਭਤ ਕਾਟਿ ਕੀਏ ਨਿਰਵੈਰੇ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਮਨ ਕੀ ਆਸ ਪ੍ਰਾਈ ਜੀਤ ॥੪॥ ਜਿਨੀ
 ਨਾਉ ਪਾਇਆ ਸੋ ਧਨਵੰਤਾ ਜੀਤ ॥ ਜਿਨੀ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇਆ ਸੁ ਸੋਮਾਵੰਤਾ ਜੀਤ ॥ ਜਿਸੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਤਿਸੁ ਸਭ
 ਸੁਕਰਣੀ ਜੀਤ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ਜੀਤ ॥੫॥੧॥੧੬੯॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ਮਾੜਾ ॥ ਆਉ ਹਮਾਰੈ
 ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ਜੀਤ ॥ ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਚਿਤਾਰੇ ਜੀਤ ॥ ਸੰਤ ਦੇਤ ਸੰਦੇਸਾ ਪੈ ਚਰਣਾਰੇ ਜੀਤ ॥ ਤੁਥੁ
 ਬਿਨੁ ਕਿਨੁ ਬਿਧਿ ਤਰੀਐ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸੰਗਿ ਤੁਮਾਰੈ ਮੈ ਕਰੇ ਅਨਨਦਾ ਜੀਤ ॥ ਵਣਿ ਤਿਣਿ ਤ੃ਭਵਣਿ ਸੁਖ
 ਪਰਮਾਨਨਦਾ ਜੀਤ ॥ ਸੇਜ ਸੁਹਾਕੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਬਿਗਸ਼ੰਦਾ ਜੀਤ ॥ ਪੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਇਹੁ ਸੁਖੁ ਲਹੀਐ ਜੀਤ ॥੨॥
 ਚਰਣ ਪਖਾਰਿ ਕਰੀ ਨਿਤ ਸੇਵਾ ਜੀਤ ॥ ਪ੍ਰਯਾ ਅਰਚਾ ਬੰਦਨ ਦੇਵਾ ਜੀਤ ॥ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸੁ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਲੇਵਾ ਜੀਤ
 ॥ ਬਿਨਤ ਠਾਕੁਰ ਪਹਿ ਕਹੀਐ ਜੀਤ ॥੩॥ ਇਛ ਪੁਨੀ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿਆ ਜੀਤ ॥ ਦਰਸਨ ਪੇਖਤ ਸਭ ਦੁਖ
 ਪਰਹਰਿਆ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਜਪਿ ਤਰਿਆ ਜੀਤ ॥ ਇਹੁ ਅਜਰੁ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਸਹੀਐ ਜੀਤ ॥
 ੪॥੨॥੧੬੭॥ ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਸਾਜਨ ਮਨ ਮਿਤ ਪਿਆਰੇ ਜੀਤ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਤੇਰਾ ਇਹੁ
 ਜੀਤ ਮਿ ਵਾਰੇ ਜੀਤ ॥ ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੇ ਜੀਤ ॥ ਸਦਾ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਜਿਸੁ
 ਮਿਲਿਐ ਮਨੁ ਜੀਕੈ ਭਾਈ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਈ ਜੀਤ ॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀਆ
 ਜਾਈ ਜੀਤ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਪੈ ਵਡਭਾਗੀ ਜੀਤ ॥ ਨਾਮ ਨਿਰੰਜਨ ਏਕ
 ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਮਿਟਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ਜੀਤ ॥੩॥
 ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਜੀਤ ॥ ਤ੍ਰੁੰ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਭਗਤੁ ਵਣਜਾਰਾ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਸਚੁ
 ਵਾਪਾਰਾ ਜੀਤ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਾ ਜੀਤ ॥੪॥੩॥੧੬੮॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫

੧੬੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤ੍ਰੁੰ ਮੇਰਾ ਬਹੁ ਮਾਣੁ ਕਰਤੇ ਤ੍ਰੁੰ ਮੇਰਾ ਬਹੁ ਮਾਣੁ ॥ ਜੋਰਿ ਤੁਮਾਰੈ ਸੁਖਿ ਵਸਾ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਸਭੇ ਗਲਾ ਜਾਤੀਆ ਸੁਣਿ ਕੈ ਚੁਪ ਕੀਆ ॥ ਕਦ ਹੀ ਸੁਰਤਿ ਨ ਲਧੀਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹਡਿਆ ॥੧॥ ਦੇਇ

ਬੁਝਾਰਤ ਸਾਰਤਾ ਸੇ ਅਖੀ ਡਿਠਡਿਆ ॥ ਕੋਈ ਜਿ ਮੂਰਖੁ ਲੋਭੀਆ ਮੂਲਿ ਨ ਸੁਣੀ ਕਹਿਆ ॥੨॥ ਇਕਸੁ ਦੁਹੁ
 ਚਹੁ ਕਿਆ ਗਣੀ ਸਭ ਇਕਤੁ ਸਾਦਿ ਸੁਠੀ ॥ ਇਕੁ ਅਥੁ ਨਾਡਿ ਰਸੀਅੜਾ ਕਾ ਵਿਰਲੀ ਜਾਡਿ ਵੁਠੀ ॥੩॥ ਭਗਤ
 ਸਚੇ ਦਰਿ ਸੋਹਦੇ ਅਨਦ ਕਰਹਿ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਪਰਮੇਸਰੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥੪॥੧॥੧੬੬
 ॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ਮਾੜਾ ॥ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਜੀ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਆਰਾਧੀਐ ਪੂਰਨ
 ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਤੁ ਘਟਿ ਕਸੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੋਈ ਸੁਹਾਵਾ ਥਾਤ ॥ ਜਮ ਕਂਕਰੁ ਨੇਡਿ ਨ
 ਆਵੰਈ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥੨॥ ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਨ ਜਾਣੀਆ ਨਾ ਜਾਪੈ ਆਰਾਧਿ ॥ ਓਟ ਤੇਰੀ ਜਗਜੀਵਨਾ
 ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ॥੨॥ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਗੁਸਾਈਆ ਨਠੇ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪ ॥ ਤਤੀ ਵਾਤ ਨ ਲਗੰਈ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਖੇ ਆਪਿ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਦਿਊ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਸਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰਿ ਤੁਹੈ ਸਭ ਕਿਛੁ
 ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥੪॥੨॥੧੭੦॥ ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ
 ॥ ਜਪਿ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਾਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਮ ਗੋਬਿੰਦ ਜਪੇਦਿਆ ਹੋਆ ਮੁਖੁ ਪਵਿਤੁ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਣੀਐ
 ਜਿਸ ਤੇ ਸੋਈ ਭਾਈ ਮਿਤੁ ॥੧॥ ਸਭਿ ਪਦਾਰਥ ਸਭਿ ਫਲਾ ਸਰਬ ਗੁਣਾ ਜਿਸੁ ਮਾਹਿ ॥ ਕਿਉ ਗੋਬਿੰਦੁ ਮਨਹੁ
 ਵਿਸਾਰੀਐ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥ ਜਿਸੁ ਲਡਿ ਲਗਿਐ ਜੀਵੀਐ ਭਵਜਲੁ ਪੰਈਐ ਪਾਰਿ ॥ ਮਿਲਿ
 ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਤਥਾਰੁ ਹੋਇ ਮੁਖ ਊਜਲ ਦਰਬਾਰਿ ॥੩॥ ਜੀਵਨ ਰੂਪ ਗੋਪਾਲ ਜਸੁ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਤਕਰੇ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਾਬਾਸਿ ॥੪॥੩॥੧੭੧॥ ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੀਠੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ
 ਜਿੰਦ੍ਹੂ ਤ੍ਰੂ ਸੀਠੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਮਿਲਿਆ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹੋਰਿ ਸਾਦ ਸਭਿ
 ਫਿਕਿਆ ਤਨੁ ਮਨੁ ਫਿਕਾ ਹੋਇ ॥ ਵਿਣੁ ਪਰਮੇਸਰ ਜੋ ਕਰੇ ਫਿਟੁ ਸੁ ਜੀਵਣੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਅੰਚਲੁ ਗਹਿ ਕੈ
 ਸਾਧ ਕਾ ਤਰਣਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਆਰਾਧੀਐ ਤਥੈ ਸਭ ਪਰਵਾਰੁ ॥੨॥ ਸਾਜਨੁ ਬੰਧੁ ਸੁਮਿਤੁ
 ਸੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਿਰਦੈ ਦੇਇ ॥ ਅਤਗਣ ਸਭਿ ਮਿਟਾਇ ਕੈ ਪਰਤਪਕਾਰੁ ਕਰੇਇ ॥੩॥ ਮਾਲੁ ਖਯਾਨਾ ਥੇਹੁ
 ਘਰੁ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਨਿਧਾਨ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਾਚਕੁ ਦਰਿ ਤੈ ਪ੍ਰਭ ਤੁਧਨੋ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ॥੪॥੪॥੧੭੨॥

੭੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਸਾਥੋ ਮਨ ਕਾ ਮਾਨੁ ਤਿਆਗਤ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਸੰਗਤਿ
 ਦੁਰਜਨ ਕੀ ਤਾ ਤੇ ਅਹਿਨਿਸਿ ਭਾਗਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਦੋਨੋ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਅਤਰੁ ਮਾਨੁ ਅਪਮਾਨਾ ॥
 ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ ਰਹੈ ਅਤੀਤਾ ਤਿਨਿ ਜਗਿ ਤਤੁ ਪਛਾਨਾ ॥੧॥ ਉਸਤਤਿ ਨਿੰਦਾ ਦੋਊ ਤਿਆਗੈ ਖੋਜੈ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਨਾ
 ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਖੇਲੁ ਕਠਨੁ ਹੈ ਕਿਨਹੂੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਨਾ ॥੨॥੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਸਾਥੋ ਰਚਨਾ
 ਰਾਮ ਬਨਾਈ ॥ ਇਕਿ ਬਿਨਸੈ ਇਕ ਅਸਥਿਰੁ ਮਾਨੈ ਅਚਰਜੁ ਲਖਿਓ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮੋਹ
 ਬਸਿ ਪ੍ਰਾਨੀ ਹਰਿ ਸੂਰਤਿ ਬਿਸਰਾਈ ॥ ਝੂਠਾ ਤਨੁ ਸਾਚਾ ਕਰਿ ਮਾਨਿਓ ਜਿਤ ਸੁਪਨਾ ਰੈਨਾਈ ॥੧॥ ਜੋ ਟੀਸੈ
 ਸੋ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੈ ਜਿਤ ਬਾਦਰ ਕੀ ਛਾਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜੁਗੁ ਜਾਨਿਓ ਮਿਥਿਆ ਰਹਿਓ ਰਾਮ ਸਰਨਾਈ ॥
 ੨॥੨॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਤ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮਨਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਮਗਨੁ ਰਹੈ ਮਾਇਆ ਮੈ
 ਕਹੁ ਕੈਸੇ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਤ ਮੀਤ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਸਿਤ ਇਹ ਬਿਧਿ ਆਪੁ ਬੰਧਾਵੈ ॥ ਸ੍ਰਗ
 ਤ੃ਸਨਾ ਜਿਤ ਝੂਠੋ ਇਹੁ ਜਗ ਦੇਖਿ ਤਾਸਿ ਤਠਿ ਧਾਵੈ ॥੧॥ ਭੁਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਕਾ ਕਾਰਨੁ ਸੁਆਮੀ ਸ੍ਰੂੰ ਤਾਹਿ
 ਬਿਸਰਾਵੈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੋਟਨ ਮੈ ਕੋਊ ਭਜਨੁ ਰਾਮ ਕੋ ਪਾਵੈ ॥੨॥੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਸਾਥੋ ਇਹੁ ਮਨੁ
 ਗਹਿਓ ਨ ਜਾਈ ॥ ਚੰਚਲ ਤ੃ਸਨਾ ਸੰਗਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਧਾਰੈ ਤੇ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਠਨ ਕਰੋਧ ਘਟ ਹੀ
 ਕੇ ਭੀਤਰਿ ਜਿਹ ਸੁਧਿ ਸਭ ਬਿਸਰਾਈ ॥ ਰਤਨੁ ਗਿਆਨੁ ਸਭ ਕੋ ਹਿਰਿ ਲੀਨਾ ਤਾ ਸਿਤ ਕਛੁ ਨ ਬਸਾਈ ॥੧॥
 ਜੋਗੀ ਜਤਨ ਕਰਤ ਸਭਿ ਹਾਰੇ ਗੁਨੀ ਰਹੇ ਗੁਨ ਗਾਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਏ ਦਿਆਲਾ ਤਤ ਸਭ ਬਿਧਿ ਬਨਿ
 ਆਈ ॥੨॥੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਸਾਥੋ ਗੋਬਿੰਦ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥ ਮਾਨਸ ਜਨਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਪਾਇਆਂ
 ਬਿਰਥਾ ਕਾਹਿ ਗਵਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਦੀਨ ਬੰਧ ਹਰਿ ਸਰਨਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਆਵਤ ॥ ਗਜ ਕੋ
 ਕਾਸੁ ਮਿਟਿਆਂ ਜਿਹ ਸਿਮਰਤ ਤੁਮ ਕਾਹੇ ਬਿਸਰਾਵਤ ॥੧॥ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਫੁਨਿ ਭਜਨ ਰਾਮ ਚਿਤੁ
 ਲਾਵਤ ॥ ਨਾਨਕ ਕਹਤ ਮੁਕਤਿ ਪੰਥ ਇਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਤੁਮ ਪਾਵਤ ॥੨॥੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਕੋਊ ਮਾਈ

ਭੂਲਿਆ ਮਨੁ ਸਮਝਾਵੈ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਾਧ ਮਗ ਸੁਨਿ ਕਰਿ ਨਿਮਖ ਨ ਹਹਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਰਲਮ
 ਦੇਹ ਪਾਇ ਮਾਨਸ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਸਿਰਾਵੈ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਮਹਾ ਸਂਕਟ ਬਨ ਤਾ ਸਿਉ ਰੁਚ ਉਪਯਾਵੈ ॥੧॥
 ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭੁ ਤਾ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ਨ ਲਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਮੁਕਤਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਮਾਨਹੁ ਜਿਹ ਘਟਿ ਰਾਮੁ
 ਸਮਾਵੈ ॥੨॥੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਸਾਧੋ ਰਾਮ ਸਰਨਿ ਬਿਸਰਾਮਾ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਪੜੇ ਕੋ ਇਹ ਗੁਨ ਸਿਮਰੇ
 ਹਹਿ ਕੋ ਨਾਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਲੋਭ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਫੁਨਿ ਅਤ ਬਿਖਿਅਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਪਰਸੈ
 ਜਿਹ ਨਾਹਨਿ ਸੋ ਮੂਰਤਿ ਹੈ ਦੇਵਾ ॥੧॥ ਸੁਗ ਨਰਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਿਖੁ ਏ ਸਭ ਤਿਉ ਕੱਚਨ ਅਥੁ ਪੈਸਾ ॥ ਤਉਤਾਤਿ
 ਨਿੰਦਾ ਏ ਸਮ ਜਾ ਕੈ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਫੁਨਿ ਤੈਸਾ ॥੨॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਏ ਬਾਧੇ ਜਿਹ ਨਾਹਨਿ ਤਿਹ ਤੁਮ ਜਾਨਤ ਗਿਆਨੀ
 ॥ ਨਾਨਕ ਮੁਕਤਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਮਾਨਤ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕੋ ਜੋ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥੩॥੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਮਨ ਰੇ ਕਹਾ
 ਭਿੰਡਿਆ ਤੈ ਬਤਰਾ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਅਤਥ ਘਟੈ ਨਹੀ ਜਾਨੈ ਭਿੰਡਿਆ ਲੋਭ ਸੰਗਿ ਹਤਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ
 ਤਜੁ ਤੈ ਅਪਨੋ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ਅਥੁ ਸੁਨਦਰ ਗ੍ਰਹ ਨਾਰੀ ॥ ਇਨ ਮੈ ਕਛੁ ਤੇਰੋ ਰੇ ਨਾਹਨਿ ਦੇਖੋ ਸੋਚ ਬਿਚਾਰੀ
 ॥੧॥ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਅਪਨੋ ਤੈ ਹਾਰਿਆ ਗੋਬਿੰਦ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ॥ ਨਿਮਖ ਨ ਲੀਨ ਭਿੰਡਿਆ ਚਰਨਨ ਸਿੰਤ
 ਬਿਰਥਾ ਅਤਥ ਸਿਰਾਨੀ ॥੨॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੋਈ ਨਰੁ ਸੁਖੀਆ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਅਤਰ ਸਗਲ ਜਗੁ
 ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਨਿਰਮੈ ਪਦੁ ਨਹੀ ਪਾਵੈ ॥੩॥੮॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਨਰ ਅਚੇਤ ਪਾਪ ਤੇ ਡਰੁ ਰੇ ॥ ਦੀਨ
 ਦੇਇਆਲ ਸਗਲ ਭੈ ਭੰਜਨ ਸਰਨਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਪਲੁ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਜਾਸ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਤਾ ਕੋ
 ਨਾਮੁ ਹੀਐ ਮੋ ਧਰੁ ਰੇ ॥ ਪਾਵਨ ਨਾਮੁ ਜਗਤਿ ਮੈ ਹਰਿ ਕੋ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਕਸਮਲ ਸਭ ਹਰੁ ਰੇ ॥੧॥ ਮਾਨਸ ਦੇਹ
 ਬਹੁਰਿ ਨਹ ਪਾਵੈ ਕਛੁ ਉਪਾਤ ਮੁਕਤਿ ਕਾ ਕਰੁ ਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਹਤ ਗਾਇ ਕਰੁਨਾ ਮੈ ਭਵ ਸਾਗਰ ਕੈ ਪਾਰਿ
 ਤਰੁ ਰੇ ॥੨॥੬॥੨੫੧॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ
 ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਪ੍ਰੰਨ ਪ੍ਰਾਰਿ ਰਹਿਆ ਬਿਖੁ ਮਾਰਿ ॥ ਤ੍ਰਕੁਟੀ ਛੂਟੀ ਬਿਮਲ ਮਝਾਰਿ ॥

੧੮੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਮਤਿ ਜੀਝਿ ਆਈ ਕਾਰਿ ॥੧॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਰਾਮ ਰਮਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਪਛਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਝਿਕੁ ਸੁਖੁ ਮਾਨਿਆ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
 ਲਾਲ ਭਏ ਸ੍ਰੂਹਾ ਰੁੰਗ ਮਾਇਆ ॥ ਨਦਰਿ ਭੰਡ ਬਿਖੁ ਠਾਕਿ ਰਹਾਇਆ ॥੨॥ ਤਲਟ ਭੰਡ ਜੀਵਤ ਮਰਿ ਜਾਗਿਆ
 ॥ ਸਬਦਿ ਰਖੇ ਮਨੁ ਹਰਿ ਸਿਤ ਲਾਗਿਆ ॥ ਰਸੁ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਬਿਖੁ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗਿਆ ॥ ਭਾਇ ਬਸੇ ਜਮ ਕਾ ਭਤ
 ਭਾਗਿਆ ॥੩॥ ਸਾਦ ਰਹੇ ਬਾਦੰ ਅਛਕਾਰਾ ॥ ਚਿਤੁ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਾਤਾ ਹੁਕਮਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਜਾਤਿ ਰਹੇ ਪਤਿ ਕੇ ਆਚਾਰਾ
 ॥ ਦੂਸਟਿ ਭੰਡ ਸੁਖੁ ਆਤਮ ਧਾਰਾ ॥੪॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਕੋਇ ਨ ਦੇਖਉ ਸੀਤੁ ॥ ਕਿਸੁ ਸੇਵਤ ਕਿਸੁ ਦੇਵਤ ਚੀਤੁ ॥
 ਕਿਸੁ ਪ੍ਰਥਤ ਕਿਸੁ ਲਾਗਤ ਪਾਇ ॥ ਕਿਸੁ ਉਪਦੇਸਿ ਰਹਾ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੫॥ ਗੁਰ ਸੇਵੀ ਗੁਰ ਲਾਗਤ ਪਾਇ ॥
 ਭਗਤਿ ਕਰੀ ਰਾਚਤ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥ ਸਿਖਿਆ ਦੀਖਿਆ ਭੋਜਨ ਭਾਤ ॥ ਹੁਕਮਿ ਸੰਜੋਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਜਾਤ ॥੬॥
 ਗਰਬ ਗਤਾਂ ਸੁਖ ਆਤਮ ਧਿਆਨਾ ॥ ਜੋਤਿ ਭੰਡ ਜੋਤੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥ ਲਿਖਤੁ ਮਿਟੈ ਨਹੀ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਨਾ ॥
 ਕਰਤਾ ਕਰਣਾ ਕਰਤਾ ਜਾਨਾ ॥੭॥ ਨਹ ਪਂਡਿਤੁ ਨਹ ਚਤੁਰੁ ਸਿਆਨਾ ॥ ਨਹ ਭੂਲੋ ਨਹ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਾ ॥ ਕਥਤ
 ਨ ਕਥਨੀ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਨਾ ॥੮॥੧॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨੁ
 ਕੁਂਚਰੁ ਕਾਇਆ ਤਦਿਆਨੈ ॥ ਗੁਰੁ ਅੰਕਸੁ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਨੈ ॥ ਰਾਜ ਦੁਆਰੈ ਸੋਭ ਸੁ ਮਾਨੈ ॥੧॥ ਚਤੁਰਾਈ
 ਨਹ ਚੀਨਿਆ ਜਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਮਾਰੇ ਕਿਤ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਘਰ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਤਸਕਰੁ ਲੇਈ ॥
 ਨਨਾਕਾਰੁ ਨ ਕੋਇ ਕਰੇਈ ॥ ਰਾਖੈ ਆਪਿ ਵਡਿਆਈ ਦੇਈ ॥੨॥ ਨੀਲ ਅਨੀਲ ਅਗਨਿ ਇਕ ਠਾਈ ॥ ਜਲਿ
 ਨਿਵਰੀ ਗੁਰਿ ਬੂੜਾ ਬੁੜਾਈ ॥ ਮਨੁ ਦੇ ਲੀਆ ਰਹਸਿ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੩॥ ਜੈਸਾ ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੋ ਤੈਸਾ ॥ ਬੈਸਿ ਗੁਫਾ
 ਮਹਿ ਆਖਤ ਕੈਸਾ ॥ ਸਾਗਰਿ ਝੂਗਰਿ ਨਿਰਭਤ ਐਸਾ ॥੪॥ ਮੂਏ ਕਤ ਕਹੁ ਮਾਰੇ ਕਤਨੁ ॥ ਨਿਡਰੇ ਕਤ ਕੈਸਾ ਡਰੁ
 ਕਵਨੁ ॥ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨੈ ਤੀਨੇ ਭਤਨ ॥੫॥ ਜਿਨਿ ਕਹਿਆ ਤਿਨਿ ਕਹਨੁ ਵਖਾਨਿਆ ॥ ਜਿਨਿ ਬੂੜਿਆ ਤਿਨਿ
 ਸਹਜਿ ਪਛਾਨਿਆ ॥ ਦੇਖਿ ਬੀਚਾਰਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੬॥ ਕੀਰਤਿ ਸੂਰਤਿ ਸੁਕਤਿ ਇਕ ਨਾਈ ॥ ਤਹੀ
 ਨਿਰਿੰਜਨੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਬਿਆਪਿ ਰਹਿਆ ਨਿਜ ਠਾਈ ॥੭॥ ਤਸਤਤਿ ਕਰਹਿ ਕੇਤੇ ਸੁਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ

॥ ਤਨਿ ਮਨਿ ਸੂਚੈ ਸਾਚੁ ਸੁ ਚੀਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜੁ ਨੀਤਾ ਨੀਤਿ ॥੮॥੨॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਨਾ ਮਨੁ ਮਰੈ ਨ ਕਾਰਜੁ ਹੋਇ ॥ ਮਨੁ ਵਸਿ ਟ੍ਰੂਤਾ ਦੁਰਮਤਿ ਦੋਇ ॥ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ਗੁਰ ਤੇ ਇਕੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਨਿਰਗੁਣ
 ਰਾਮੁ ਗੁਣਹ ਵਸਿ ਹੋਇ ॥ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰਿ ਬੀਚਾਰੇ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨੁ ਭੂਲੋ ਬਹੁ ਚਿਤੈ ਵਿਕਾਰੁ ॥ ਮਨੁ ਭੂਲੋ
 ਸਿਰਿ ਆਵੈ ਭਾਰੁ ॥ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ਹਰਿ ਏਕਕਾਰੁ ॥੨॥ ਮਨੁ ਭੂਲੋ ਮਾਇਆ ਘਰਿ ਜਾਇ ॥ ਕਾਮਿ ਬਿਝਦਤ ਰਹੈ ਨ
 ਠਾਇ ॥ ਹਰਿ ਭਜੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਰਸਨ ਰਸਾਇ ॥੩॥ ਗੈਵਰ ਹੈਵਰ ਕੱਚਨ ਸੁਤ ਨਾਰੀ ॥ ਬਹੁ ਚਿੰਤਾ ਪਿੜ ਚਾਲੈ ਹਾਰੀ
 ॥ ਜੂਐ ਖੇਲਣੁ ਕਾਚੀ ਸਾਰੀ ॥੪॥ ਸਾਂਪਤ ਸੰਚੀ ਭਾਏ ਵਿਕਾਰ ॥ ਹਰਖ ਸੋਕ ਉਮੈ ਦਰਵਾਰਿ ॥ ਸੁਖੁ ਸਹਜੇ ਜਪਿ
 ਰਿਦੈ ਸੁਰਾਰਿ ॥੫॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਗੁਣ ਸੰਗਹਿ ਅਤਗਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ
 ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਏ ॥੬॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਾਭ ਟ੍ਰੂਖ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਮਾਇਆ ਚਿਤ ਵਾਸੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ
 ਧੁਰਿ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿਆਸੁ ॥੭॥ ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ ਧਾਵਤੁ ਫੁਨਿ ਧਾਵੈ ॥ ਸਾਚੇ ਸੂਚੇ ਮੈਲੁ ਨ ਭਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੮॥੩॥ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਉਮੈ ਕਰਤਿਆ ਨਹ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਮਨਮਤਿ ਝੂਠੀ
 ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਸਗਲ ਬਿਗੂਤੇ ਭਾਵੈ ਦੋਇ ॥ ਸੋ ਕਮਾਵੈ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਹੋਇ ॥੧॥ ਐਸਾ ਜਗੁ ਦੇਖਿਆ ਜੂਆਰੀ ॥
 ਸਾਭਿ ਸੁਖ ਮਾਗੈ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਦਿਸਟੁ ਦਿਸੈ ਤਾ ਕਹਿਆ ਜਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਕਹਣਾ ਬਿਰਥਾ
 ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੀਸੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥ ਸੁਖੁ ਮਾਂਗਤ ਦੁਖੁ ਆਗਲ ਹੋਇ
 ॥ ਸਗਲ ਵਿਕਾਰੀ ਹਾਰੁ ਪਰੋਇ ॥ ਏਕ ਬਿਨਾ ਝੂਠੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਕਰਤਾ ਦੇਖੈ ਸੋਇ ॥੩॥ ਤ੃ਸਨਾ
 ਅਗਨਿ ਸਬਦਿ ਬੁੜਾਏ ॥ ਦ੍ਰਿੜਾ ਭਰਮੁ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਵਸਾਏ ॥ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ
 ਗਾਏ ॥੪॥ ਤਨ ਮਹਿ ਸਾਚੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਾਤ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ ਨਿਜ ਠਾਤ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਪਰਾਇਣ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਾਤ ॥
 ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਬੂੜੈ ਨਾਤ ॥੫॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲਾ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕੁਚੀਲ ਕੁਛਿਤ ਬਿਕਰਾਲਾ ॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਚੂਕੈ ਜੰਜਾਲਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਨਾਲਾ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜੈ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਨਿਜ
 ਘਰਿ ਵਾਸੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਏ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥ ਪ੍ਰੇਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਇਹ ਮਤਿ ਪਾਏ ॥੭॥ ਕਥਨੀ

ਕਥਤ ਨ ਆਵੈ ਓਰੁ ॥ ਗੁਰੁ ਪੁਛਿ ਦੇਖਿਆ ਨਾਹੀ ਦ੍ਰੁ ਹੋਰੁ ॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਭਾਣੈ ਤਿਸੈ ਰਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ
 ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੮॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਟ੍ਰੂਜੀ ਮਾਇਆ ਜਗਤ ਚਿਤ ਵਾਸੁ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਅਵਾਕਾਰ ਬਿਨਾਸੁ
 ॥੯॥ ਟ੍ਰੂਜਾ ਕਤਣੁ ਕਹਾ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਟ੍ਰੂਜੀ ਦੁਰਮਤਿ ਆਖੈ
 ਦੋਇ ॥ ਆਵੈ ਜਾਇ ਮਰਿ ਟ੍ਰੂਜਾ ਹੋਇ ॥੨॥ ਧਰਣਿ ਗਗਨ ਨਹ ਦੇਖਤ ਦੋਇ ॥ ਨਾਰੀ ਪੁਰਖ ਸਬਾਈ ਲੋਇ
 ॥੩॥ ਰਵਿ ਸਸਿ ਦੇਖਤ ਦੀਪਕ ਉਜਿਆਲਾ ॥ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਬਾਲਾ ॥੪॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰਾ
 ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੋ ਕਤ ਏਕੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥੫॥ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ॥ ਟ੍ਰੂਜਾ ਮਾਰਿ
 ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥੬॥ ਏਕੋ ਹੁਕਮੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਲੋਈ ॥ ਏਕਸੁ ਤੇ ਸਭ ਓਪਤਿ ਹੋਈ ॥੭॥ ਰਾਹ ਟੋਵੈ ਖਸਮੁ ਏਕੋ
 ਜਾਣੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੁ ॥੮॥ ਸਗਲ ਰੂਪ ਵਰਨ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਸਾਲਾਹੀ ॥
 ੯॥੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਅਧਿਆਤਮ ਕਰਮ ਕਰੇ ਤਾ ਸਾਚਾ ॥ ਮੁਕਤਿ ਭੇਦੁ ਕਿਆ ਜਾਣੈ ਕਾਚਾ ॥੧॥ ਐਸਾ
 ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਬੀਚਾਰੈ ॥ ਪੰਚ ਮਾਰਿ ਸਾਚੁ ਤਰਿ ਧਾਰੈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਸ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਸਾਚੁ ਵਸਾਵੈ ॥ ਜੋਗ
 ਜੁਗਤਿ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਪਾਵੈ ॥੩॥ ਰਵਿ ਸਸਿ ਏਕੋ ਗ੍ਰੂ ਤਦਿਆਨੈ ॥ ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਕਰਮ ਸਮਾਨੈ ॥੪॥ ਏਕ
 ਸਬਦ ਇਕ ਮਿਖਿਆ ਮਾਗੈ ॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਜੁਗਤਿ ਸਚੁ ਜਾਗੈ ॥੫॥ ਭੈ ਰਚਿ ਰਹੈ ਨ ਬਾਹਰਿ ਜਾਇ ॥
 ਕੀਮਤਿ ਕਤਣ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੬॥ ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਏ ॥੭॥
 ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਹਤਮੈ ਮਾਰੇ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥੮॥ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਪਾਠ ਪੁਰਾਣੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
 ਅਪਰੰਪਰ ਮਾਨੁ ॥੮॥੬॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਖਿਮਾ ਗਹੀ ਬ੍ਰਤੁ ਸੀਲ ਸੰਤੋਖੰ ॥ ਰੋਗੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਨਾ ਜਮ
 ਦੋਖੰ ॥ ਮੁਕਤ ਭਏ ਪ੍ਰਭ ਰੂਪ ਨ ਰੇਖੰ ॥੧॥ ਜੋਗੀ ਕਤ ਕੈਸਾ ਡੁ ਹੋਇ ॥ ਰੁਖਿ ਬਿਰਖਿ ਗ੍ਰਹਿ ਬਾਹਰਿ ਸੋਇ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਰਭਤ ਜੋਗੀ ਨਿਰੰਜਨੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥ ਸੋ ਜੋਗੀ ਮੇਰੈ ਮਨਿ
 ਭਾਵੈ ॥੨॥ ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਬ੍ਰਹਮ ਅਗਨੀ ਜਾਰੇ ॥ ਜਾਰ ਮਰਣ ਗਤੁ ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਪਿਤਰੀ
 ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੋ ਜੋਗੀ ਹੋਇ ॥ ਭੈ ਰਚਿ ਰਹੈ ਸੁ ਨਿਰਭਤ ਹੋਇ ॥ ਜੈਸਾ ਸੇਵੈ ਤੈਸੋ ਹੋਇ ॥

੪॥ ਨਰ ਨਿਹਕੇਵਲ ਨਿਰਭਤ ਨਾਤ ॥ ਅਨਾਥਹ ਨਾਥ ਕਰੇ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਪੁਨਰਧਿ ਜਨਮੁ ਨਾਹੀ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥
 ੫॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦੇ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਦਰਿ ਨੀਸਾਣੈ ॥੬॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ
 ਤਿਸੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥ ਆਵੈ ਨ ਜਾਵੈ ਚੂਕੈ ਆਸਾ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥੭॥ ਜੋ ਟੀਸੈ ਸੋ ਆਸ
 ਨਿਗਸਾ ॥ ਕਾਮ ਕੋਥ ਬਿਖੁ ਭੂਖ ਪਿਆਸਾ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਰਲੇ ਮਿਲਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥੮॥੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਐਸੇ ਦਾਸੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਦੁਖੁ ਵਿਸਰੈ ਪਾਵੈ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥੧॥ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਭੰਈ ਮਤਿ ਪ੍ਰੀ ॥ ਅਠਸਠਿ
 ਮਜਨੁ ਚਰਨਹ ਧੂਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨੇਤ ਸੰਤੋਖੇ ਏਕ ਲਿਵ ਤਾਰਾ ॥ ਜਿਹਵਾ ਸੂਚੀ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਰਾ ॥੨॥
 ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਅਭ ਅੰਤਰਿ ਸੇਵਾ ॥ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤਾਸਿਆ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥੩॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਤ ਤਹ ਤਹ ਸਾਚਾ ॥
 ਬਿਨੁ ਕੂੜੇ ਝਗਰਤ ਜਗੁ ਕਾਚਾ ॥੪॥ ਗੁਰੁ ਸਮਝਾਵੈ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਕੂੜੈ ਕੋਈ ॥੫॥ ਕਰਿ
 ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਹੁ ਰਖਵਾਲੇ ॥ ਬਿਨੁ ਕੂੜੇ ਪਸੂ ਭਏ ਬੇਤਾਲੇ ॥੬॥ ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਅਵਰੁ ਨਹੀ ਦੂਜਾ ॥ ਕਿਸੁ
 ਕਹੁ ਦੇਖਿ ਕਰਤ ਅਨ ਪ੍ਰਯਾ ॥੭॥ ਸੰਤ ਹੇਤਿ ਪ੍ਰਭਿ ਤ੃ਭਵਣ ਧਾਰੇ ॥ ਆਤਮੁ ਚੀਨੈ ਸੁ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੮॥
 ਸਾਚੁ ਰਿਦੈ ਸਚੁ ਪ੍ਰੇਮ ਨਿਵਾਸ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਹਮ ਤਾ ਕੇ ਦਾਸ ॥੯॥੮॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਬ੍ਰਹਮੈ
 ਗਰਬੁ ਕੀਆ ਨਹੀ ਜਾਨਿਆ ॥ ਬੇਦ ਕੀ ਬਿਪਤਿ ਪੜੀ ਪਛੁਤਾਨਿਆ ॥ ਜਹ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰੇ ਤਹੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ
 ॥੧॥ ਐਸਾ ਗਰਬੁ ਬੁਰਾ ਸੰਸਾਰੈ ॥ ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਲਿ ਰਾਜਾ
 ਮਾਇਆ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਜਗਨ ਕਰੈ ਬਹੁ ਭਾਰ ਅਫਾਰੀ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਥੇ ਜਾਇ ਪਇਆਰੀ ॥੨॥ ਹਰੀਚੰਦੁ
 ਦਾਨੁ ਕਰੈ ਜਸੁ ਲੇਵੈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇ ਅਭੇਵੈ ॥ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇ ਆਪੇ ਮਤਿ ਦੇਵੈ ॥੩॥ ਦੁਰਮਤਿ
 ਹਰਣਾਖਸੁ ਦੁਰਾਚਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਗਰਬ ਪ੍ਰਹਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਉਧਾਰੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੪॥ ਭੂਲੋ ਰਾਵਣੁ
 ਮੁਗਧੁ ਅਚੇਤਿ ॥ ਲੂਟੀ ਲਮਕਾ ਸੀਸ ਸਮੇਤਿ ॥ ਗਰਬਿ ਗਇਆ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਹੇਤਿ ॥੫॥ ਸਹਸਰਾਹੁ
 ਮਧੁ ਕੀਟ ਮਹਿਖਾਸਾ ॥ ਹਰਣਾਖਸੁ ਲੇ ਨਖਹੁ ਬਿਧਾਸਾ ॥ ਦੈਤ ਸੰਘਾਰੇ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਅਭਿਆਸਾ ॥੬॥
 ਜਰਾਸੰਧਿ ਕਾਲਜਮੁਨ ਸੰਘਾਰੇ ॥ ਰਕਤਬੀਜੁ ਕਾਲੁਨੇਮੁ ਬਿਦਾਰੇ ॥ ਦੈਤ ਸੰਘਾਰਿ ਸੰਤ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੭॥ ਆਪੇ

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਦ੍ਰਿਜੈ ਭਾਇ ਦੈਤ ਸੰਘਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਿ ਭਗਤਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੮॥ ਬ੍ਰਾਡਾ ਦੁਰਜੋਧਨੁ
 ਪਤਿ ਖੋਈ ॥ ਰਾਮੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥ ਜਨ ਕਤ ਟ੍ਰਖਿ ਪਚੈ ਟੁਖੁ ਹੋਈ ॥੯॥ ਜਨਮੇਜੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨ
 ਜਾਨਿਆ ॥ ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਿਆ ॥ ਝਿਕੁ ਤਿਲੁ ਭੂਲੇ ਬਹੁਰਿ ਪਛੁਤਾਨਿਆ ॥੧੦॥ ਕਂਸੁ ਕੇਸੁ
 ਚਾਂਡੂਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਰਾਮੁ ਨ ਚੀਨਿਆ ਅਪਨੀ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਨ ਰਾਖੈ ਕੋਈ ॥੧੧॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ
 ਗਰਬੁ ਨ ਮੇਟਿਆ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਧਰਮੁ ਧੀਰਜੁ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੧੨॥੬॥
 ਗਤਡੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਚੋਆ ਚੰਦੁ ਅੰਕਿ ਚੜਾਵਤ ॥ ਪਾਟ ਪਟੰਬਰ ਪਹਿਰਿ ਹਢਾਵਤ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ
 ਕਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਤ ॥੧॥ ਕਿਆ ਪਹਿਰਤ ਕਿਆ ਓਠਿ ਦਿਖਾਵਤ ॥ ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਕਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਤ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਨੀ ਕੁੰਡਲ ਗਲਿ ਮੌਤੀਅਨ ਕੀ ਮਾਲਾ ॥ ਲਾਲ ਨਿਹਾਲੀ ਫੂਲ ਗੁਲਾਲਾ ॥ ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਕਹਾ
 ਸੁਖੁ ਭਾਲਾ ॥੨॥ ਨੈਨ ਸਲੋਨੀ ਸੁੰਦਰ ਨਾਰੀ ॥ ਖੋਡ ਸੀਗਾਰ ਕਰੈ ਅਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥ ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਭਜੇ ਨਿਤ
 ਖੁਆਰੀ ॥੩॥ ਦਰ ਘਰ ਮਹਲਾ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਫੂਲ ਬਿਛਾਵੈ ਮਾਲੀ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸੁ ਦੇਹ
 ਦੁਖਾਲੀ ॥੪॥ ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਨੇਜੇ ਵਾਜੇ ॥ ਲਸਕਰ ਨੇਬ ਖਵਾਸੀ ਪਾਜੇ ॥ ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਝੂਠੇ ਦਿਵਾਜੇ ॥੫॥
 ਸਿਧੁ ਕਹਾਵਤ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਬੁਲਾਵਤ ॥ ਤਾਜ ਕੁਲਹ ਸਿਰਿ ਛੁਨ੍ਹ ਬਨਾਵਤ ॥ ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਕਹਾ ਸਚੁ
 ਪਾਵਤ ॥੬॥ ਖਾਨੁ ਮਲ੍ਹਕੁ ਕਹਾਵਤ ਰਾਜਾ ॥ ਅਥੇ ਤਥੇ ਕੂਡੇ ਹੈ ਪਾਜਾ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਸਵਰਸਿ ਕਾਜਾ ॥
 ੭॥ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਿਸਾਰੀ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਜਾਨਿਆ ਰਿਦੈ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ
 ਤੁਮਾਰੀ ॥੮॥੧੦॥ ਗਤਡੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੇਵਾ ਏਕ ਨ ਜਾਨਸਿ ਅਵਰੇ ॥ ਪਰਪੰਚ ਬਿਆਧਿ ਤਿਆਗੈ ਕਵਰੇ
 ॥ ਭਾਇ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਸਾਚੈ ਸਚੁ ਰੇ ॥੯॥ ਐਸਾ ਰਾਮ ਭਗਤੁ ਜਨੁ ਹੋਈ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਮਿਲੈ ਮਲੁ ਧੋਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਊਂਧੋ ਕਵਲੁ ਸਗਲ ਸਂਸਾਰੈ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਅਗਨਿ ਜਗਤ ਪਰਜਾਰੈ ॥ ਸੋ ਤਕਰੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੈ
 ॥੨॥ ਪਿੰਗ ਪਤੰਗੁ ਕੁੰਚਰੁ ਅਰੁ ਮੀਨਾ ॥ ਮਿਗੁ ਮਰੈ ਸਹਿ ਅਪੁਨਾ ਕੀਨਾ ॥ ਤ੃ਸਨਾ ਰਾਚਿ ਤਤੁ ਨਹੀ
 ਬੀਨਾ ॥੩॥ ਕਾਮੁ ਚਿਤੈ ਕਾਮਣਿ ਹਿਤਕਾਰੀ ॥ ਕ੍ਰੋਧੁ ਬਿਨਾਸੈ ਸਗਲ ਵਿਕਾਰੀ ॥ ਪਤਿ ਮਤਿ ਖੋਵਹਿ ਨਾਮੁ

ਵਿਸਾਰੀ ॥੪॥ ਪਰ ਘਰਿ ਚੀਤੁ ਮਨਮੁਖਿ ਡੋਲਾਇ ॥ ਗਲਿ ਜੇਵਰੀ ਧਾਂਧੈ ਲਪਟਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੂਟਸਿ ਹਰਿ
 ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੫॥ ਜਿਤ ਤਨੁ ਬਿਧਵਾ ਪਰ ਕਤ ਦੇਈ ॥ ਕਾਮਿ ਦਾਮਿ ਚਿਤੁ ਪਰ ਵਸਿ ਸੇਈ ॥ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਤ੃ਪਤਿ
 ਨ ਕਬਹੂੰ ਹੋਈ ॥੬॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਪੋਥੀ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਪਾਠਾ ॥ ਕੇਦ ਪੁਰਾਣ ਪੱਡੈ ਸੁਣਿ ਥਾਟਾ ॥ ਬਿਨੁ ਰਸ ਰਾਤੇ ਮਨੁ
 ਬਹੁ ਨਾਟਾ ॥੭॥ ਜਿਤ ਚਾਤੂਕ ਜਲ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਸਾ ॥ ਜਿਤ ਮੀਨਾ ਜਲ ਮਾਹਿ ਤਲਾਸਾ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀ
 ਤ੃ਪਤਾਸਾ ॥੮॥੧੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਠੁ ਕਰਿ ਮੈਰੈ ਨ ਲੇਖੈ ਪਾਵੈ ॥ ਵੇਸ ਕਰੈ ਬਹੁ ਭਸਮ ਲਗਾਵੈ ॥ ਨਾਮੁ
 ਬਿਸਾਰਿ ਬਹੁਰਿ ਪਛੁਤਾਵੈ ॥੯॥ ਤ੍ਰੂੰ ਮਨਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤ੍ਰੂੰ ਮਨਿ ਸ੍ਰੂਖ ॥ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਸਹਹਿ ਜਮ ਢੂਖ ॥੧॥ ਰਹਾਉ
 ॥ ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਅਗਰ ਕਪੂਰਿ ॥ ਮਾਇਆ ਮਗਨੁ ਪਰਮ ਪਦੁ ਦੂਰਿ ॥ ਨਾਮਿ ਬਿਸਾਰਿਐ ਸਭੁ ਕੂੜੀ ਕੂਰਿ ॥੨॥ ਨੇਜੇ
 ਕਾਜੇ ਤਖਤਿ ਸਲਾਮੁ ॥ ਅਥਕੀ ਤੂਸਨਾ ਵਿਆਪੈ ਕਾਮੁ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਜਾਚੇ ਭਗਤਿ ਨ ਨਾਮੁ ॥੩॥ ਵਾਦਿ ਅਛਕਾਰਿ
 ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਾ ॥ ਮਨੁ ਦੇ ਪਾਵਹਿ ਨਾਮੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥ ਢੂਜੈ ਭਾਇ ਅਗਿਆਨੁ ਦੁਹੇਲਾ ॥੪॥ ਬਿਨੁ ਦਮ ਕੇ ਸਤਦਾ
 ਨਹੀ ਹਾਟ ॥ ਬਿਨੁ ਬੋਹਿਥ ਸਾਗਰ ਨਹੀ ਕਾਟ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੇਵੇ ਘਾਟੇ ਘਾਟਿ ॥੫॥ ਤਿਸ ਕਤ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿ
 ਕਾਟ ਦਿਖਾਵੈ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥੬॥ ਵਾਹੁ
 ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਕਤ ਜਿਸ ਕਾ ਇਹੁ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਥਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਤ ॥ ਨਾਮ ਵਡਾਈ ਤੁਥੁ ਭਾਣੈ ਦੀਤ ॥੭॥
 ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕਿਤ ਜੀਵਾ ਮਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਤੁ ਰਹਤ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥੮॥
 ੧੨॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਤਮੈ ਕਰਤ ਭੇਖੀ ਨਹੀ ਜਾਨਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਵਿਰਲੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੧॥
 ਹਤ ਹਤ ਕਰਤ ਨਹੀ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ॥ ਹਤਮੈ ਜਾਇ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਤਮੈ ਕਰਿ ਰਾਜੇ
 ਬਹੁ ਧਾਵਹਿ ॥ ਹਤਮੈ ਖਪਹਿ ਜਨਮਿ ਮਰਿ ਆਵਹਿ ॥੩॥ ਹਤਮੈ ਨਿਕਰੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰੈ ॥ ਚੰਚਲ ਮਤਿ
 ਤਿਆਗੈ ਪੰਚ ਸੰਘਾਰੈ ॥੪॥ ਅੰਤਰਿ ਸਾਚੁ ਸਹਜ ਘਰਿ ਆਵਹਿ ॥ ਰਾਜਨੁ ਜਾਣਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥੫॥
 ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਗੁਰੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥ ਨਿਰਭਤ ਕੈ ਘਰਿ ਤਾਡੀ ਲਾਵੈ ॥੬॥ ਹਤ ਹਤ ਕਰਿ ਮਰਣਾ ਕਿਆ
 ਪਾਵੈ ॥ ਪ੍ਰਾ ਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਸੋ ਝੁਗਰੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥੭॥ ਜੇਤੀ ਹੈ ਤੇਤੀ ਕਿਹੁ ਨਾਹੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨ ਭੇਟਿ

ਗੁਣ ਗਾਹੀ ॥੭॥ ਹਉਮੈ ਬੰਧਨ ਬੰਧਿ ਭਵਾਰੈ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਰੈ ॥੮॥੧੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧
 ॥ ਪ੍ਰਥਮੇ ਬ੍ਰਹਮਾ ਕਾਲੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਕਮਲੁ ਪਾਇਆਲਿ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਆਗਿਆ ਨਹੀ ਲੀਨੀ ਭਰਮਿ
 ਭੁਲਾਇਆ ॥੯॥ ਜੋ ਉਪਜੈ ਸੋ ਕਾਲਿ ਸੰਘਾਰਿਆ ॥ ਹਮ ਹਰਿ ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਮਾਇਆ ਮੋਹੈ ਦੇਵੀ ਸਭਿ ਦੇਵਾ ॥ ਕਾਲੁ ਨ ਛੋਡੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥ ਓਹੁ ਅਵਿਨਾਸੀ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥੨॥
 ਸੁਲਤਾਨ ਖਾਨ ਬਾਦਿਸਾਹ ਨਹੀ ਰਹਨਾ ॥ ਨਾਮਹੁ ਭੂਲੈ ਜਮ ਕਾ ਦੁਖੁ ਸਹਨਾ ॥ ਮੈ ਧਰ ਨਾਮੁ ਜਿਤ ਰਾਖਹੁ ਰਹਨਾ
 ॥੩॥ ਚਤੁਧਰੀ ਰਾਜੇ ਨਹੀ ਕਿਸੈ ਮੁਕਾਮੁ ॥ ਸਾਹ ਮਰਹਿ ਸੰਚਹਿ ਮਾਇਆ ਦਾਮ ॥ ਮੈ ਧਨੁ ਦੀਜੈ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ
 ਨਾਮੁ ॥੪॥ ਰਧਤਿ ਮਹਰ ਮੁਕਦਮ ਸਿਕਦਾਰੈ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਕੋਇ ਨ ਦਿਸੈ ਸੰਸਾਰੈ ॥ ਅਫਰਿਤ ਕਾਲੁ ਕੂਝੁ ਸਿਰਿ
 ਮਾਰੈ ॥੫॥ ਨਿਹਚਲੁ ਏਕੁ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥ ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਸਾਜੀ ਤਿਨਹਿ ਸਭ ਗੋਈ ॥ ਓਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ਤਾਂ
 ਪਤਿ ਹੋਈ ॥੬॥ ਕਾਜੀ ਸੇਖ ਭੇਖ ਫਕੀਰਾ ॥ ਵਡੇ ਕਹਾਵਹਿ ਹਉਮੈ ਤਨਿ ਪੀਰਾ ॥ ਕਾਲੁ ਨ ਛੋਡੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕੀ ਧੀਰਾ ॥੭॥ ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜਿਹਵਾ ਅਝੁ ਨੈਣੀ ॥ ਕਾਨੀ ਕਾਲੁ ਸੁਣੈ ਬਿਖੁ ਬੈਣੀ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਮੂਠੇ ਦਿਨੁ ਰੈਣੀ
 ॥੮॥ ਹਿਰਦੈ ਸਾਚੁ ਵਸੈ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥ ਕਾਲੁ ਨ ਜੋਹਿ ਸਕੈ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੯
 ॥੧੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਬੋਲਹਿ ਸਾਚੁ ਮਿਥਿਆ ਨਹੀ ਰਾਈ ॥ ਚਾਲਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੁਕਮਿ ਰਾਈ ॥ ਰਹਹਿ
 ਅਤੀਤ ਸਚੇ ਸਰਣਾਈ ॥੧॥ ਸਚ ਘਰਿ ਬੈਸੈ ਕਾਲੁ ਨ ਜੋਹੈ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਤ ਆਵਤ ਜਾਵਤ ਦੁਖੁ ਮੋਹੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਅਪਿਤ ਪੀਅਤ ਅਕਥੁ ਕਥਿ ਰਹੀਐ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਬੈਸਿ ਸਹਜ ਘਰੁ ਲਹੀਐ ॥ ਹਰਿ ਰਸਿ ਮਾਤੇ ਇਹੁ
 ਸੁਖੁ ਕਹੀਐ ॥੨॥ ਗੁਰਮਤਿ ਚਾਲ ਨਿਹਚਲ ਨਹੀ ਡੋਲੈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚਿ ਸਹਜਿ ਹਰਿ ਬੋਲੈ ॥ ਪੀਵੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ
 ਤਨੁ ਵਿਰੋਲੈ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਖਿਆ ਦੀਖਿਆ ਲੀਨੀ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿਓ ਅੰਤਰ ਗਤਿ ਕੀਨੀ ॥ ਗਤਿ ਮਿਤਿ
 ਪਾਈ ਆਤਮੁ ਚੀਨੀ ॥੪॥ ਭੋਜਨੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਸਾਰੁ ॥ ਪਰਮ ਛਾਸੁ ਸਚੁ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥ ਜਹ ਦੇਖਤ ਤਹ
 ਏਕਕਾਰੁ ॥੫॥ ਰਹੈ ਨਿਰਾਲਮੁ ਏਕਾ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ॥ ਪਰਮ ਪਟੁ ਪਾਇਆ ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ॥ ਮਨ ਤੇ ਮਨੁ
 ਮਾਨਿਆ ਚੂਕੀ ਅਛਾ ਭਰਮਣੀ ॥੬॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਕਤਣੁ ਕਤਣੁ ਨਹੀ ਤਾਰਿਆ ॥ ਹਰਿ ਜਸਿ ਸੰਤ ਭਗਤ

ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪਾਏ ਹਮ ਅਕਰੁ ਨ ਭਾਰਿਆ ॥੭॥ ਸਾਚ ਮਹਲਿ ਗੁਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥ ਨਿਹਚਲ
ਮਹਲੁ ਨਹੀ ਛਾਇਆ ਮਾਇਆ ॥ ਸਾਚਿ ਸਾਂਤੋਖੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੮॥ ਜਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥
ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਮਲੁ ਖੋਈ ॥੬॥੧੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਰਾਮਿ ਨਾਮਿ
ਚਿਤੁ ਰਾਪੈ ਜਾ ਕਾ ॥ ਉਪਯੰਧਿ ਦਰਸਨੁ ਕੀਜੈ ਤਾ ਕਾ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨ ਜਪਹੁ ਅਭਾਗੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਦਾਤਾ
ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮੁ ਜਪੈ ਜਨੁ ਪ੍ਰੂਰਾ ॥ ਤਿਤੁ ਘਟ ਅਨਹਤ ਬਾਜੇ ਤ੍ਰੂਰਾ ॥੨॥ ਜੋ ਜਨ
ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਸੇ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੩॥ ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥ ਤਿਨ ਕਾ
ਦਰਸੁ ਪਰਸਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੪॥ ਸਰਬ ਜੀਆ ਮਹਿ ਏਕੋ ਰਖੈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਅਛਕਾਰੀ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਭਖੈ ॥੫॥ ਸੋ
ਕੂੜੈ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਏ ॥ ਹਤਮੈ ਮਾਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਪਾਏ ॥੬॥ ਅਰਥ ਤਰਥ ਕੀ ਸੰਧਿ ਕਿਤ ਜਾਨੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਸੰਧਿ ਮਿਲੈ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥੭॥ ਹਮ ਪਾਪੀ ਨਿਰਗੁਣ ਕਤ ਗੁਣੁ ਕਰੀਐ ॥ ਪ੍ਰਭ ਹੋਇ ਦਿਅਾਲੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਤਰੀਐ
॥੮॥੧੬॥ ਸੋਲਹ ਅਸਟਪਦੀਆ ਗੁਆਰੇਹੀ ਗਤੜੀ ਕੀਆ ॥

ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੧

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਿਤ ਗਾਈ ਕਤ ਗੋਡਿਲੀ ਰਾਖਹਿ ਕਰਿ ਸਾਰਾ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਪਾਲਹਿ ਰਾਖਿ ਲੇਹਿ ਆਤਮ ਸੁਖੁ ਧਾਰਾ ॥੧॥
ਇਤ ਤਤ ਰਾਖਹੁ ਦੀਨ ਦਿਅਾਲਾ ॥ ਤਤ ਸਰਣਾਗਤਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਾ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ ਦੇਖਤ ਤਹ ਰਖਿ
ਰਹੇ ਰਖੁ ਰਾਖਨਹਾਰਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਦਾਤਾ ਭੁਗਤਾ ਤ੍ਰੂਹੈ ਤ੍ਰੂ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰਾ ॥੨॥ ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਅਧ ਊਰਧੀ ਬਿਨੁ
ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਬਿਨੁ ਤਥਮਾ ਜਗਦੀਸ ਕੀ ਬਿਨਸੈ ਨ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥੩॥ ਜਗੁ ਬਿਨਸਤ ਹਮ ਦੇਖਿਆ ਲੋਭੇ
ਅਛਕਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ॥੪॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਮਹਲੁ ਅਪਾਰ ਕੋ ਅਪਰੰਪਰੁ ਸੋਈ
॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਥਿਰੁ ਕੋ ਨਹੀ ਕੂੜੈ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੫॥ ਕਿਆ ਲੈ ਆਇਆ ਲੇ ਜਾਇ ਕਿਆ ਫਾਸਹਿ ਜਮ ਜਾਲਾ ॥
ਡੋਲੁ ਬਧਾ ਕਸਿ ਜੇਵਰੀ ਆਕਾਸਿ ਪਤਾਲਾ ॥੬॥ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸਹਜੇ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ॥ ਅੰਤਰਿ
ਸਬਦੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਮਿਲਿ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ॥੭॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਗੁਣ ਅੰਕਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ

ਮੇਲੁ ਨ ਚੂਕੈ ਲਾਹਾ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥੮॥੧॥੧੭॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬ੍ਰਾਂਝਿ ਲੇ ਤਤ ਹੋਇ ਨਿਵੇਰਾ
 ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨਾ ਸੋ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਛੂਟੀਐ ਦੇਖਹੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਜੇ ਲਖ
 ਕਰਮ ਕਮਾਵਹੀ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅੰਧੇ ਅਕਲੀ ਬਾਹਰੇ ਕਿਆ ਤਿਨ ਸਿਤ ਕਹੀਐ ॥ ਬਿਨੁ
 ਗੁਰ ਪਥੁ ਨ ਸ੍ਰੂਝੈ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਨਿਰਕਹੀਐ ॥੨॥ ਖੋਟੇ ਕਤ ਖਰਾ ਕਹੈ ਖਰੇ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੈ ॥ ਅੰਧੇ ਕਾ ਨਾਉ
 ਪਾਰਖੂ ਕਲੀ ਕਾਲ ਵਿਡਾਣੈ ॥੩॥ ਸ੍ਰੂਤੇ ਕਤ ਜਾਗਤੁ ਕਹੈ ਜਾਗਤ ਕਤ ਸ੍ਰੂਤਾ ॥ ਜੀਵਤ ਕਤ ਮੂਆ ਕਹੈ ਮੂਏ
 ਨਹੀ ਰੋਤਾ ॥੪॥ ਆਵਤ ਕਤ ਜਾਤਾ ਕਹੈ ਜਾਤੇ ਕਤ ਆਇਆ ॥ ਪਰ ਕੀ ਕਤ ਅਪੁਨੀ ਕਹੈ ਅਪੁਨੋ ਨਹੀ ਭਾਇਆ
 ॥੫॥ ਮੀਠੇ ਕਤ ਕਤਡਾ ਕਹੈ ਕਡਾ ਕਤ ਮੀਠਾ ॥ ਰਾਤੇ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰਹਿ ਐਸਾ ਕਲਿ ਮਹਿ ਡੀਠਾ ॥੬॥ ਚੇਰੀ
 ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਠਾਕੁਰੁ ਨਹੀ ਦੀਸੈ ॥ ਪੋਖਰੁ ਨੀਰੁ ਵਿਰੋਲੀਐ ਮਾਖਨੁ ਨਹੀ ਰੀਸੈ ॥੭॥ ਇਸੁ ਪਦ ਜੋ ਅਰਥਾਇ
 ਲੇਇ ਸੋ ਗੁਰੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਚੀਨੈ ਆਪ ਕਤ ਸੋ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ॥੮॥ ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ
 ਭਰਮਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਬ੍ਰਾਂਝੀਐ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਸਮਾਇਆ ॥੯॥੨॥੧੮॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਨ ਕਾ ਸੂਤਕੁ ਦ੍ਰੂਜਾ ਭਾਤ ॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲੇ ਆਵਤ ਜਾਤ ॥੧॥ ਮਨਮੁਖਿ ਸੂਤਕੁ ਕਬਹਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਜਿਚਰੁ ਸਬਦਿ
 ਨ ਭੀਜੈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਭੋ ਸੂਤਕੁ ਜੇਤਾ ਮੋਹੁ ਆਕਾਰੁ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਵਾਰੇ ਵਾਰ ॥੨॥
 ਸੂਤਕੁ ਅਗਨਿ ਪਤਣੈ ਪਾਣੀ ਮਾਹਿ ॥ ਸੂਤਕੁ ਭੋਜਨੁ ਜੇਤਾ ਕਿਛੁ ਖਾਹਿ ॥੩॥ ਸੂਤਕਿ ਕਰਮ ਨ ਪ੍ਰੋਜਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਮਿ
 ਰਤੇ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੪॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਸੂਤਕੁ ਜਾਇ ॥ ਮਰੈ ਨ ਜਨਮੈ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਇ ॥੫॥ ਸਾਸਤ
 ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਸੋਧਿ ਦੇਖਹੁ ਕੋਇ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥੬॥ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਨਾਮੁ ਤਤਮੁ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ
 ॥ ਕਲਿ ਮਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤਰਸਿ ਪਾਰਿ ॥੭॥ ਸਾਚਾ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ
 ॥੮॥੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਰਾਖਹੁ ਹਿਰਦੈ ਤਰ ਧਾਰਾ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਭਾ ਸਾਚ ਦੁਆਰਾ ॥੧॥ ਪਂਡਿਤ ਹਰਿ ਪੜ੍ਹੁ ਤਜਹੁ ਵਿਕਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਤਜਲੁ ਤਤਰਹੁ ਪਾਰਾ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਕਸੈ ਮਨਿ
 ਆਇ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸਚਿ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਛਕਾਰੁ ਜਲਾਏ ਦੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ
 ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੩॥ ਆਪਣਾ ਮਨੁ ਪਰਬੋਧਹੁ ਬ੍ਰਿਜਹੁ ਸੋਈ ॥ ਲੋਕ ਸਮਝਾਵਹੁ ਸੁਣੇ ਨ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਮਝਾਹੁ
 ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੪॥ ਮਨਮੁਖਿ ਡੱਫੁ ਬਹੁਤੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਮਾਵੈ ਸੁ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥ ਆਵੈ ਜਾਵੈ ਠਤੁਰ
 ਨ ਕਾਈ ॥੫॥ ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਰੇ ਬਹੁਤੁ ਅਭਿਮਾਨਾ ॥ ਬਗ ਜਿਤ ਲਾਇ ਬਹੈ ਨਿਤ ਧਿਆਨਾ ॥ ਜਮਿ ਪਕਡਿਆ
 ਤਬ ਹੀ ਪਛੁਤਾਨਾ ॥੬॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰੂ ਦਾਤਾ
 ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੋਈ ॥੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਨਾਮੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਸਾਡਿਰ ਕੀ ਪੁਕੀ ਬਿਦਾਰਿ ਗਵਾਈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਝੂਠੀ ਚਤੁਰਾਈ ॥੮॥੨॥ ਗਤਡੀ ਮਃ ੩ ॥ ਇਸੁ ਜੁਗ ਕਾ ਧਰਮੁ ਪਡਹੁ ਤੁਮ ਭਾਈ ॥ ਪ੍ਰੈ ਗੁਰਿ ਸਭ
 ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥ ਅੈਥੈ ਅਗੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ॥੯॥ ਰਾਮ ਪਡਹੁ ਮਨਿ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੈਲੁ
 ਤਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵਾਦਿ ਵਿਰੋਧਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਫੀਕਾ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਚਿ
 ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥ ਹਉਮੈ ਮੈਲਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਨਿਤ ਤੀਰਥਿ ਨਾਵੈ ਨ ਜਾਇ ਅਛਕਾਰਾ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ
 ਜਮੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰਾ ॥੩॥ ਸੋ ਜਨੁ ਸਾਚਾ ਜਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪੰਚ ਸੰਘਾਰੈ ॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ
 ਕੁਲ ਤਾਰੈ ॥੪॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਨਟਿ ਬਾਜੀ ਪਾਈ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅਂਧ ਰਹੇ ਲਪਟਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਿਪਤ
 ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੫॥ ਬਹੁਤੇ ਭੇਖ ਕਰੈ ਭੇਖਧਾਰੀ ॥ ਅਂਤਰਿ ਤਿਸਨਾ ਫਿਰੈ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਆਪੁ ਨ ਚੀਨੈ ਬਾਜੀ
 ਹਾਰੀ ॥੬॥ ਕਾਪੜ ਪਹਿਰਿ ਕਰੇ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਅਤਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੇਵੇ ਬਹੁਤੁ
 ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥੭॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਗ੍ਰਹੀ ਅਂਤਰਿ ਸਾਚਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ॥੮॥੩॥ ਗਤਡੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਮੂਲੁ ਵੇਦ ਅਭਿਆਸਾ ॥ ਤਿਸ ਤੇ ਉਪਜੇ ਦੇਵ
 ਮੋਹ ਪਿਆਸਾ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਭਰਮੇ ਨਾਹੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥੯॥ ਹਮ ਹਰਿ ਰਾਖੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥
 ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮ ਜੰਜਾਲਾ ॥ ਪਡਿ ਵਾਟੁ

ਵਖਾਣਹਿ ਸਿਰ ਮਾਰੇ ਜਮਕਾਲਾ ॥ ਤਤੁ ਨ ਚੀਨਹਿ ਬਨਹਿ ਪੰਡ ਪਰਾਲਾ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨਿ ਕੁਮਾਰਗਿ
 ਪਾਏ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿਆ ਬਹੁ ਕਰਮ ਦ੃ਢਾਏ ॥ ਭਵਜਲਿ ਝੂਬੇ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਏ ॥੩॥ ਮਾਇਆ ਕਾ ਮੁਹਤਾਜੁ
 ਧੰਡਿਤੁ ਕਹਾਵੈ ॥ ਬਿਖਿਆ ਰਾਤਾ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥ ਜਮ ਕਾ ਗਲਿ ਜੇਵੜਾ ਨਿਤ ਕਾਲੁ ਸਤਾਵੈ ॥੪॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਜਮਕਾਲੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਹਉਮੈ ਦ੍ਰੂਜਾ ਸਬਦਿ ਜਲਾਵੈ ॥ ਨਾਮੇ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੫॥ ਮਾਇਆ ਦਾਸੀ
 ਭਗਤਾ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥ ਚਰਣੀ ਲਾਗੈ ਤਾ ਮਹਲੁ ਪਾਵੈ ॥ ਸਦ ਹੀ ਨਿਰਮਲੁ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ॥੬॥ ਹਰਿ ਕਥਾ
 ਸੁਣਹਿ ਸੇ ਧਨਕੰਤ ਦਿਸਹਿ ਜੁਗ ਮਾਹੀ ॥ ਤਿਨ ਕਤ ਸਭਿ ਨਿਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਪ੍ਰੌਜ ਕਰਾਹੀ ॥ ਸਹਜੇ ਗੁਣ ਰਖਹਿ
 ਸਾਚੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੭॥ ਪ੍ਰੌਜੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਮੇਟੇ ਚਤੁਰੈ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ
 ਮਾਰਿ ਬ੍ਰਹਮ ਮਿਲਾਇਆ ॥੮॥੮॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਕੇਦੁ ਪੱਡੈ ਵਾਦੁ ਵਖਾਣੈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਤਾਮਸੁ ਆਪੁ
 ਨ ਪਛਾਣੈ ॥ ਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਏ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵਖਾਣੈ ॥੧॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਕਰਤ ਫਿਰਿ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਖਾਧੇ
 ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਅਪਰਾਧੀ ਸੀਧੇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜਿ ਰੀਧੇ ॥ ਮੇਰਾ
 ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੀਧੇ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਕੈ ਮਨਿ
 ਭਾਏ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥੩॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਾਚੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਸਦਾ ਬਿਖੁ
 ਖਾਏ ॥ ਜਮ ਡੰਡੁ ਸਹਹਿ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥੪॥ ਜਮ੍ਹਾਂ ਨ ਜੋਹੈ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਸਚਿ ਲਿਵ
 ਲਾਈ ॥ ਸਦਾ ਰਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਪਵਿਤਾ ॥ ਮਨ ਸਿਤ
 ਮਨੁ ਮਿਲਾਇ ਸਭੁ ਜਗੁ ਜੀਤਾ ॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਕੁਸਲੁ ਤੈਰੈ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥ ਹਿਰਦੈ
 ਨਾਮੁ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥ ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ਸਬਦੁ ਵਜਾਏ ॥੭॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਕਵਨੁ ਕਵਨੁ ਨ ਸੀਧੋ ਮੇਰੇ
 ਭਾਈ ॥ ਭਗਤੀ ਸੀਧੇ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥੮॥੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਤੈ ਗੁਣ
 ਵਖਾਣੈ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਬੰਧਨ ਨ ਤ੍ਰੌਟਹਿ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਇ ॥ ਮੁਕਤਿ ਦਾਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੁਗ ਮਾਹਿ ॥੧॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਭਰਮੁ ਗਵਾਇ ॥ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਕਾਲੈ ਕੀ

सिरि करा ॥ नामु न चेतहि उपावणहारा ॥ मरि जंमहि फिरि वारो वारा ॥२॥ अंधे गुरु ते भरमु न
 जाई ॥ मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥ बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥३॥ माइआ करि मूलु जंत्र
 भरमाए ॥ हरि जीउ विसरिआ दूजै भाए ॥ जिसु नदरि करे सो परम गति पाए ॥४॥ अंतरि साचु बाहरि
 साचु वरताए ॥ साचु न छपै जे को रखै छपाए ॥ गिआनी बूझहि सहजि सुभाए ॥५॥ गुरमुखि साचि
 रहिआ लिव लाए ॥ हउमै माइआ सबदि जलाए ॥ मेरा प्रभु साचा मेलि मिलाए ॥६॥ सतिगुरु
 दाता सबदु सुणाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥७॥ आपे करता सूसटि सिरजि
 जिनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक गुरमुखि बूझै कोई ॥८॥६॥ गउड़ी महला ३ ॥
 नामु अमोलकु गुरमुखि पावै ॥ नामो सेवे नामि सहजि समावै ॥ अंमृतु नामु रसना नित गावै ॥ जिस नो
 कृपा करे सो हरि रसु पावै ॥१॥ अनदिनु हिरदै जपउ जगदीसा ॥ गुरमुखि पावउ परम पदु सूखा
 ॥१॥ रहाउ ॥ हिरदै सूखु भइआ परगासु ॥ गुरमुखि गावहि सचु गुणतासु ॥ दासनि दास नित
 होवहि दासु ॥ गृह कुटंब महि सदा उदासु ॥२॥ जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ॥ परम पदारथु पावै
 सोई ॥ तै गुण मेटे निरमलु होई ॥ सहजे साचि मिलै प्रभु सोई ॥३॥ मोह कुटंब सित प्रीति न होइ
 ॥ जा हिरदै वसिआ सचु सोइ ॥ गुरमुखि मनु बेधिआ असथिरु होइ ॥ हुकमु पछाणै बूझै सचु सोइ
 ॥४॥ तूं करता मै अवरु न कोइ ॥ तुझु सेवी तुझै ते पति होइ ॥ किरपा करहि गावा प्रभु सोइ ॥
 नाम रतनु सभ जग महि लोइ ॥५॥ गुरमुखि बाणी मीठी लागी ॥ अंतरु बिगसै अनदिनु लिव
 लागी ॥ सहजे सचु मिलिआ परसादी ॥ सतिगुरु पाइआ पूरै वडभागी ॥६॥ हउमै ममता दुरमति
 दुख नासु ॥ जब हिरदै राम नाम गुणतासु ॥ गुरमुखि बुधि प्रगटी प्रभ जासु ॥ जब हिरदै रविआ
 चरण निवासु ॥७॥ जिसु नामु देइ सोई जनु पाए ॥ गुरमुखि मेले आपु गवाए ॥ हिरदै साचा नामु
 वसाए ॥ नानक सहजे साचि समाए ॥८॥७॥ गउड़ी महला ३ ॥ मन ही मनु सवारिआ भै सहजि

ਸੁਭਾਇ ॥ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਰੰਗਿਆ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਰਜਾਇ ॥੧॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਿਐ
 ਜਾਇ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਗੋਵਿਦੁ ਪਾਈਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ਜਾ ਸਬਦਿ ਭਤ ਖਾਇ ॥ ਮੇਰਾ
 ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰਮਲਾ ਸਭ ਤੈ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੋ ਟਾਸੁ ਸੁਖੁ
 ਪਾਏ ॥ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਇਨ ਬਿਧਿ ਪਾਇਆ ਜਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੪॥ ਧਿਗੁ ਬਹੁ ਜੀਵਣੁ
 ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਧਿਗੁ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਕਾਮਣਿ ਮੋਹ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਤਿਨ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਜਿਨ ਨਾਮੁ
 ਅਧਾਰੁ ॥੫॥ ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਗ੍ਰਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਸੋਈ ਹਮਾਰਾ ਮੀਤੁ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ
 ਸੋਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸੈ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹਮ ਗਤਿ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ
 ਟ੍ਰੂਖੁ ਸਗਲ ਮਿਟਾਈ ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੭॥ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਮ ਕਤ ਸਰੀਰ ਸੁਧਿ
 ਭੰਝੀ ॥ ਹਉਮੈ ਤੂਸਨਾ ਸਭ ਅਗਨਿ ਬੁਝੰਝੀ ॥ ਬਿਨਸੇ ਕ੍ਰਿਧ ਖਿਮਾ ਗਹਿ ਲਈ ॥੮॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਨਾਮੁ
 ਦੇਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਤਨੁ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਲੇਵੈ ॥ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਅਲਖ ਅਭੇਵੈ ॥੯॥੮॥

੧੦੮੦ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਜੋ ਮੁਹ ਫੇਰੇ ਤੇ ਵੇਮੁਖ ਬੁਰੇ ਦਿਸ਼ਨਿ
 ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਨਿ ਫਿਰਿ ਵੇਲਾ ਨਾ ਲਛਾਨਿ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਕ੃ਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮੇਲਾਇ
 ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੇ ਭਗਤ ਹਰਿ ਭਾਵਦੇ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਾਇ ਚਲਮਨਿ ॥ ਆਪੁ
 ਛੋਡਿ ਸੇਵਾ ਕਰਨਿ ਜੀਵਤ ਮੁਏ ਰਹਾਨਿ ॥੩॥ ਜਿਸ ਢਾ ਪਿੰਡੁ ਪਰਾਣ ਹੈ ਤਿਸ ਕੀ ਸਿਰਿ ਕਾਰ ॥ ਓਹੁ ਕਿਤ ਮਨਹੁ
 ਵਿਸਾਰੀਐ ਹਰਿ ਰਖੀਐ ਹਿਰਦੈ ਧਾਰਿ ॥੪॥ ਨਾਮਿ ਮਿਲਿਐ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ਨਾਮਿ ਮਨਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਜੋ ਮੁਹੁ ਫੇਰੇ ਓਹਿ ਭ੍ਰਮਦੇ ਨਾ ਟਿਕਨਿ ॥
 ਧਰਤਿ ਅਸਮਾਨੁ ਨ ਝਲਈ ਵਿਚਿ ਵਿਸਟਾ ਪਾਏ ਪਚਨਿ ॥੬॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਮੋਹ ਠਗਤਲੀ
 ਪਾਇ ॥ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਭੇਟਿਆ ਤਿਨ ਨੇਡਿ ਨ ਮਿਟੈ ਮਾਇ ॥੭॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਨਿ ਸੋ ਸੋਹਣੇ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ

ਗਵਾਇ ॥ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਚਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥੭॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਤ੍ਰਂ ਤ੍ਰਂ ਆਪੇ ਬਖਸਿ
ਮਿਲਾਇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਛਡਾਇ ॥੮॥੧॥੬॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਪ੍ਰਭੀ ਮਹਲਾ ੪ ਕਰਹਲੇ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਰਹਲੇ ਮਨ ਪਰਦੇਸੀਆ ਕਿਤ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਮਾਇ ॥ ਗੁਰੁ ਭਾਗੀ ਪ੍ਰੈ ਪਾਇਆ ਗਲਿ ਮਿਲਿਆ ਪਿਆਰਾ
ਆਇ ॥੧॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵੀਚਾਰੀਆ ਹਰਿ ਰਾਮ
ਨਾਮ ਧਿਆਇ ॥ ਜਿਥੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਹਰਿ ਆਪੇ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥੩॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲਾ ਮਲੁ
ਲਾਗੀ ਹਉਮੈ ਆਇ ॥ ਪਰਤਖਿ ਪਿਲੁ ਘਰਿ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰਾ ਵਿਛੁਡਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥੪॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ
ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਹਰਿ ਰਿਦੈ ਭਾਲਿ ਭਾਲਾਇ ॥ ਤਪਾਇ ਕਿਤੈ ਨ ਲਾਭਈ ਗੁਰੁ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਦੇਖਾਇ ॥੫॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ
ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਘਰੁ ਜਾਇ ਪਾਵਹਿ ਰੰਗ ਮਹਲੀ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਹਰਿ ਮੇਲਾਇ ॥੬॥
ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਤ੍ਰਂ ਮੀਤੁ ਮੇਰਾ ਪਾਖੰਡੁ ਲੋਭੁ ਤਜਾਇ ॥ ਪਾਖੰਡਿ ਲੋਭੀ ਮਾਰੀਐ ਜਮ ਢੰਡੁ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥੭॥ ਮਨ
ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਤ੍ਰਂ ਮੈਲੁ ਪਾਖੰਡੁ ਭਰਮੁ ਗਵਾਇ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਰੁ ਗੁਰਿ ਪੂਰਿਆ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤੀ ਮਲੁ
ਲਹਿ ਜਾਇ ॥੮॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਇਕ ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਸੁਣਾਇ ॥ ਇਹੁ ਮੋਹੁ ਮਾਇਆ ਪਸਰਿਆ
ਅੰਤਿ ਸਾਥਿ ਨ ਕੋਈ ਜਾਇ ॥੯॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਸਾਜਨਾ ਹਰਿ ਖਰਚੁ ਲੀਆ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹ
ਪੈਨਾਇਆ ਹਰਿ ਆਪਿ ਲਿਇਆ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥੧੦॥੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ
ਵੀਚਾਰੀਆ ਵੀਚਾਰਿ ਦੇਖੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਬਨ ਫਿਰਿ ਥਕੇ ਬਨ ਵਾਸੀਆ ਪਿਲੁ ਗੁਰਮਤਿ ਰਿਦੈ ਨਿਹਾਲਿ ॥੨॥ ਮਨ
ਕਰਹਲਾ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦੁ ਸਮਾਲਿ ॥੩॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵੀਚਾਰੀਆ ਮਨਮੁਖ ਫਾਥਿਆ ਮਹਾ ਜਾਲਿ ॥
ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਸੁਕਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੪॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਤਿਗੁਰੁ
ਭਾਲਿ ॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਲਗਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਲੈ ਤੈਨਾਲਿ ॥੫॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵਡਭਾਗੀਆ

ਹਰਿ ਏਕ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥ ਆਪਿ ਛਡਾਏ ਛੁਟੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣ ਸਮਾਲਿ ॥੪॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ
ਪਿਆਰਿਆ ਵਿਚਿ ਦੇਹੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਲਿ ॥ ਗੁਰਿ ਨਤ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਵਿਖਾਲਿਆ ਹਰਿ ਦਾਤਿ ਕਰੀ ਦਿੱਖਾਲਿ ॥੫॥
ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਤ੍ਰਿੰ ਚੰਚਲਾ ਚਤੁਰਾਈ ਛਡਿ ਵਿਕਰਾਲਿ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤ੍ਰਿੰ ਹਰਿ ਮੁਕਤਿ ਕਰੇ ਅੰਤ ਕਾਲਿ
॥੬॥ ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵਡਭਾਗੀਆ ਤ੍ਰਿੰ ਗਿਆਨੁ ਰਤਨੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਖੜਗੁ ਹਥਿ ਧਾਰਿਆ ਜਮੁ
ਮਾਰਿਅੜਾ ਜਮਕਾਲਿ ॥੭॥ ਅੰਤਰਿ ਨਿਧਾਨੁ ਮਨ ਕਰਹਲੇ ਭ੍ਰਮਿ ਭਵਹਿ ਬਾਹਰਿ ਭਾਲਿ ॥ ਗੁਰੂ ਪੁਰਖੁ ਪੂਰਾ
ਭੇਟਿਆ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਲਧੜਾ ਨਾਲਿ ॥੮॥ ਰੰਗਿ ਰਤੜੇ ਮਨ ਕਰਹਲੇ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਕਟੇ
ਨ ਉਤਰੈ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲਿ ॥੯॥ ਹਮ ਪੰਖੀ ਮਨ ਕਰਹਲੇ ਹਰਿ ਤਰਕਰੁ ਪੁਰਖੁ ਅਕਾਲਿ ॥ ਵਡਭਾਗੀ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧੦॥੨॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ ੧੭ੰ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਬ ਇਹੁ ਮਨ ਮਹਿ ਕਰਤ ਗੁਮਾਨਾ ॥ ਤਬ ਇਹੁ ਬਾਵਰੁ ਫਿਰਤ ਬਿਗਾਨਾ ॥ ਜਬ ਇਹੁ ਹੂਆ ਸਗਲ ਕੀ
ਰੇਨਾ ॥ ਤਾ ਤੇ ਰਮੰਝਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਚੀਨਾ ॥੧॥ ਸਹਜ ਸੁਹੇਲਾ ਫਲੁ ਮਸਕੀਨੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੈ ਮੋਹਿ
ਦਾਨੁ ਦੀਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਬ ਕਿਸ ਕਤ ਇਹੁ ਜਾਨਸਿ ਮੰਦਾ ॥ ਤਬ ਸਗਲੇ ਇਸੁ ਮੇਲਹਿ ਫੰਦਾ ॥ ਮੇਰ
ਤੇਰ ਜਬ ਇਨਹਿ ਚੁਕਾਈ ॥ ਤਾ ਤੇ ਇਸੁ ਸੰਗਿ ਨਹੀ ਬੈਰਾਈ ॥੨॥ ਜਬ ਇਨ੍ਹਿ ਅਪੁਨੀ ਅਪਨੀ ਧਾਰੀ ॥ ਤਬ
ਇਸ ਕਤ ਹੈ ਸੁਸਕਲੁ ਭਾਰੀ ॥ ਜਬ ਇਨ੍ਹਿ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਤਾ ॥ ਤਬ ਇਸ ਨੋ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਤਾਤਾ ॥੩॥ ਜਬ
ਇਨ੍ਹਿ ਅਪੁਨੋ ਬਾਧਿਆ ਮੋਹਾ ॥ ਆਵੈ ਜਾਇ ਸਦਾ ਜਮਿ ਜੋਹਾ ॥ ਜਬ ਇਸ ਤੇ ਸਭ ਬਿਨਸੇ ਭਰਮਾ ॥ ਭੇਟੁ ਨਾਹੀ ਹੈ
ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਾ ॥੪॥ ਜਬ ਇਨ੍ਹਿ ਕਿਛੁ ਕਰਿ ਮਾਨੇ ਭੇਦਾ ॥ ਤਬ ਤੇ ਦ੍ਰੂਖ ਡੰਡ ਅਰੁ ਖੇਦਾ ॥ ਜਬ ਇਨ੍ਹਿ ਏਕੋ ਏਕੀ
ਬ੍ਰਾਂਜਿਆ ॥ ਤਬ ਤੇ ਇਸ ਨੋ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸ੍ਰੂਝਿਆ ॥੫॥ ਜਬ ਇਹੁ ਧਾਰੈ ਮਾਇਆ ਅਰਥੀ ॥ ਨਹ ਤ੃ਪਤਾਰੈ ਨਹ
ਤਿਸ ਲਾਥੀ ॥ ਜਬ ਇਸ ਤੇ ਇਹੁ ਹੋਇਆ ਜਤਲਾ ॥ ਪੀਛੈ ਲਾਗਿ ਚਲੀ ਤਠਿ ਕਤਲਾ ॥੬॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਤ
ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ॥ ਮਨ ਮੰਦਰ ਮਹਿ ਦੀਪਕੁ ਜਲਿਆ ॥ ਜੀਤ ਹਾਰ ਕੀ ਸੋਝੀ ਕਰੀ ॥ ਤਤ ਇਸੁ ਘਰ ਕੀ

ਕੀਮਤਿ ਪਰੀ ॥੭॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਏਕੈ ॥ ਆਪੇ ਬੁਧਿ ਬੀਚਾਰਿ ਬਿਕੇਕੈ ॥ ਦੂਰਿ ਨ ਨੈਰੈ ਸਭ ਕੈ ਸੰਗ
 ॥ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥੮॥੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਨਾਮੇ ਲਾਗਾ ॥ ਤਿਸ ਕਤ
 ਮਿਲਿਆ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗਾ ॥ ਤਿਸ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਰਖਿਆ ਸੋਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਨਿਹਚਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥
 ਐਸਾ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥ ਈਹਾ ਊਹਾ ਜੋ ਕਾਮਿ ਤੈਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਭਤ ਅਪਦਾ ਜਾਇ ॥
 ਧਾਵਤ ਮਨੂਆ ਆਵੈ ਠਾਇ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਫਿਰਿ ਢੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹ ਹਤਮੈ ਭਾਗੈ ॥੨॥ ਜਾਸੁ
 ਜਪਤ ਵਸਿ ਆਵਹਿ ਪੰਚਾ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਰਿਦੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸੰਚਾ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹ ਤੂਸਨਾ ਬੁੜੈ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ
 ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸਿੜੈ ॥੩॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਕੋਟਿ ਮਿਟਹਿ ਅਪਰਾਧ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਹਰਿ ਹੋਵਹਿ ਸਾਧ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ
 ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਵੈ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਮਲੁ ਸਗਲੀ ਖੋਵੈ ॥੪॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਰਤਨੁ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ॥ ਬਹੁਰਿ ਨ ਛੋਡੈ ਹਰਿ
 ਸੰਗਿ ਹਿਲੈ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਕਈ ਬੈਕੁਠ ਵਾਸੁ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥੫॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹ
 ਅਗਨਿ ਨ ਪੋਹਤ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹੁ ਕਾਲੁ ਨ ਜੋਹਤ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਤੇਰਾ ਨਿਰਮਲ ਮਾਥਾ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਸਗਲਾ
 ਢੂਖੁ ਲਾਥਾ ॥੬॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਮੁਸਕਲੁ ਕਛੂ ਨ ਬਨੈ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਸੁਣਿ ਅਨਹਤ ਧੁਨੈ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹ
 ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਕਮਲੁ ਸੀਧਾ ਹੋਇ ॥੭॥ ਗੁਰ ਸੁਭ ਵ੃ਸਟਿ ਸਭ ਊਪਰਿ ਕਰੀ ॥ ਜਿਸ ਕੈ
 ਹਿਰਦੈ ਮੰਤ੍ਰ ਦੇ ਹਰੀ ॥ ਅਖੰਡ ਕੀਰਤਨੁ ਤਿਨਿ ਭੋਜਨੁ ਚੂਰਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥੮॥੨॥
 ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰੈ ॥ ਪੰਚ ਜਨਾ ਸਿਤ ਸੰਗੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥ ਦਸ ਇੰਦੀ ਕਰਿ
 ਰਖੈ ਵਾਸਿ ॥ ਤਾ ਕੈ ਆਤਮੈ ਹੋਇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥ ਐਸੀ ਵੂਝਤਾ ਤਾ ਕੈ ਹੋਇ ॥ ਜਾ ਕਤ ਦਿਆ ਮਿਆ
 ਪ੍ਰਭ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਜਨੁ ਦੁਸਟੁ ਜਾ ਕੈ ਏਕ ਸਮਾਨੈ ॥ ਜੇਤਾ ਬੋਲਣੁ ਤੇਤਾ ਗਿਆਨੈ ॥ ਜੇਤਾ ਸੁਨਣਾ
 ਤੇਤਾ ਨਾਮੁ ॥ ਜੇਤਾ ਪੇਖਨੁ ਤੇਤਾ ਧਿਆਨੁ ॥੨॥ ਸਹਜੇ ਜਾਗਣੁ ਸਹਜੇ ਸੋਇ ॥ ਸਹਜੇ ਹੋਤਾ ਜਾਇ ਸੁ ਹੋਇ ॥
 ਸਹਜਿ ਬੈਰਾਗੁ ਸਹਜੇ ਹੀ ਹਸਨਾ ॥ ਸਹਜੇ ਚੂਪ ਸਹਜੇ ਹੀ ਜਪਨਾ ॥੩॥ ਸਹਜੇ ਭੋਜਨੁ ਸਹਜੇ ਭਾਤ ॥ ਸਹਜੇ
 ਮਿਟਿਆ ਸਗਲ ਦੁਰਾਤ ॥ ਸਹਜੇ ਹੋਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ॥ ਸਹਜਿ ਮਿਲਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਸੰਗੁ ॥੪॥ ਸਹਜੇ

ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਸਹਜਿ ਉਦਾਸੀ ॥ ਸਹਜੇ ਦੁਬਿਧਾ ਤਨ ਕੀ ਨਾਸੀ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਹਜਿ ਮਨਿ ਭਿੰਡਿਆ ਅਨਨਦੁ ॥ ਤਾ ਕਤ
 ਭੇਟਿਆ ਪਰਮਾਨਦੁ ॥੫॥ ਸਹਜੇ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਓ ਨਾਮੁ ॥ ਸਹਜੇ ਕੀਨੋ ਜੀਅ ਕੋ ਦਾਨੁ ॥ ਸਹਜ ਕਥਾ ਮਹਿ ਆਤਮੁ
 ਰਸਿਆ ॥ ਤਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਅਬਿਨਾਸੀ ਵਸਿਆ ॥੬॥ ਸਹਜੇ ਆਸਣੁ ਅਸਥਿਰੁ ਭਾਡਿਆ ॥ ਸਹਜੇ ਅਨਹਤ ਸਬਦੁ
 ਵਜਾਡਿਆ ॥ ਸਹਜੇ ਰੁਣ ਝੁਣਕਾਰੁ ਸੁਹਾਡਿਆ ॥ ਤਾ ਕੈ ਘਰਿ ਪਾਰਖਰਮੁ ਸਮਾਡਿਆ ॥੭॥ ਸਹਜੇ ਜਾ ਕਤ ਪਰਿਓ
 ਕਰਮਾ ॥ ਸਹਜੇ ਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਸਚੁ ਧਰਮਾ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਹਜੁ ਭਿੰਡਿਆ ਸੋ ਜਾਣੈ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਾ ਕੈ ਕੁਰਬਾਣੈ ॥
 ੮॥੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਥਮੇ ਗਰਭ ਵਾਸ ਤੇ ਟਰਿਆ ॥ ਪੁਰਕ ਕਲਤ ਕੁਟੰਬ ਸੰਗਿ ਜੁਰਿਆ ॥ ਭੋਜਨੁ ਅਨਿਕ
 ਪ੍ਰਕਾਰ ਬਹੁ ਕਪਰੇ ॥ ਸਰਪਰ ਗਵਨੁ ਕਰਹਿਗੇ ਬਪੁਰੇ ॥੧॥ ਕਵਨੁ ਅਸਥਾਨੁ ਜੋ ਕਬਹੁ ਨ ਟਰੈ ॥ ਕਵਨੁ ਸਬਦੁ
 ਜਿਤੁ ਦੁਰਮਤਿ ਹਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇੰਦ੍ਰ ਪੁਰੀ ਮਹਿ ਸਰਪਰ ਮਰਣਾ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਪੁਰੀ ਨਿਹਚਲੁ ਨਹੀ ਰਹਣਾ ॥
 ਸਿਵ ਪੁਰੀ ਕਾ ਹੋਡਿਗਾ ਕਾਲਾ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਮਾਡਿਆ ਬਿਨਸਿ ਬਿਤਾਲਾ ॥੨॥ ਗਿਰਿ ਤਰ ਧਰਣਿ ਗਗਨ ਅਝੁ
 ਤਾਰੇ ॥ ਰਵਿ ਸਸਿ ਪਵਣੁ ਪਾਵਕੁ ਨੀਰਾਰੇ ॥ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਬਰਤ ਅਝੁ ਭੇਦਾ ॥ ਸਾਸਤ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਬਿਨਸਹਿਗੇ
 ਬੇਦਾ ॥੩॥ ਤੀਰਥ ਦੇਵ ਦੇਹੁਰਾ ਪੋਥੀ ॥ ਮਾਲਾ ਤਿਲਕੁ ਸੋਚ ਪਾਕ ਹੋਤੀ ॥ ਧੋਤੀ ਡੱਡਤਿ ਪਰਸਾਦਨ ਭੋਗਾ ॥
 ਗਵਨੁ ਕਰੈਗੋ ਸਗਲੋ ਲੋਗਾ ॥੪॥ ਜਾਤਿ ਕਰਨ ਤੁਰਕ ਅਝੁ ਛਿਦ੍ਰੂ ॥ ਪਸੁ ਪੰਖੀ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਜਿੰਦ੍ਰੂ ॥ ਸਗਲ
 ਪਾਸਾਰੁ ਦੀਸੈ ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਬਿਨਸਿ ਜਾਡਿਗੋ ਸਗਲ ਆਕਾਰਾ ॥੫॥ ਸਹਜ ਸਿਫਤਿ ਭਗਤਿ ਤਤੁ ਗਿਆਨਾ ॥
 ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਨਿਹਚਲੁ ਸਚੁ ਥਾਨਾ ॥ ਤਹਾ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਗੁਣ ਰੱਸੈ ॥ ਅਨਭਤ ਨਗਰੁ ਤਹਾ ਸਦ ਵੱਸੈ ॥੬॥
 ਤਹ ਭਤ ਭਰਮਾ ਸੋਗੁ ਨ ਚਿੰਤਾ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਮਿਰਤੁ ਨ ਹੋਤਾ ॥ ਤਹ ਸਦਾ ਅਨਨਦ ਅਨਹਤ ਆਖਾਰੇ ॥
 ਭਗਤ ਵਸਹਿ ਕੀਰਤਨ ਆਧਾਰੇ ॥੭॥ ਪਾਰਖਰਮ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥ ਕਤਣੁ ਕਰੈ ਤਾ ਕਾ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥ ਨਿਹਚਲ ਥਾਨੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਰੈ ॥੮॥੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ
 ਸੋਈ ਸੂਰਾ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋਈ ਪੂਰਾ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸਹਿ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕਾ ਦੁਖੁ
 ਜਾਈ ॥੧॥ ਐਸਾ ਕੋਡਿ ਜਿ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ਗਵਾਵੈ ॥ ਇਸਹਿ ਮਾਰਿ ਰਾਜ ਜੋਗੁ ਕਮਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕਤ ਭਤ ਨਾਹਿ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕੀ ਤ੍ਰਸਨਾ ਬੁੜੈ ॥
 ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਦਰਗਹ ਸਿੜੈ ॥੨॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋ ਧਨਵੰਤਾ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋ ਪਤਿਵੰਤਾ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ
 ਸੋਈ ਜਤੀ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸੁ ਛੋਵੈ ਗਤੀ ॥੩॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕਾ ਆਇਆ ਗਨੀ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ
 ਨਿਹਚਲੁ ਧਨੀ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋ ਕਡਭਾਗਾ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਾ ॥੪॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਜੀਵਨ
 ਮੁਕਤਾ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਜੁਗਤਾ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋਈ ਸੁਗਿਆਨੀ ॥ ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਸਹਜ
 ਧਿਆਨੀ ॥੫॥ ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਥਾਇ ਨ ਪੈਰੈ ॥ ਕੋਟਿ ਕਰਮ ਜਾਪ ਤਪ ਕਰੈ ॥ ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਜਨਮੁ ਨ
 ਮਿਟੈ ॥ ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਜਮ ਤੇ ਨਹੀ ਛੁਟੈ ॥੬॥ ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਜ੍ਰਠਿ
 ਨ ਧੋਈ ॥ ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੈਲਾ ॥ ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਤਲਾ ॥੭॥ ਜਾ ਕਤ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ
 ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ॥ ਤਿਸੁ ਭਈ ਖਲਾਸੀ ਹੋਈ ਸਗਲ ਸਿਧਿ ॥ ਗੁਰਿ ਦੁਬਿਧਾ ਜਾ ਕੀ ਹੈ ਮਾਰੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੋ ਬ੍ਰਹਮ
 ਬੀਚਾਰੀ ॥੮॥੫॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੁਰੈ ਤ ਸਭੁ ਕੋ ਸੀਤੁ ॥ ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੁਰੈ ਤ ਨਿਹਚਲੁ ਚੀਤੁ ॥
 ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੁਰੈ ਨ ਵਿਆਪੈ ਕਾਡਾ ॥ ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੁਰੈ ਤ ਹੋਇ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੧॥ ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤ੍ਰਾਂ ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੋਰੁ ॥
 ਕਾਜਿ ਤੁਹਾਰੈ ਨਾਹੀ ਹੋਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਡੇ ਕਡੇ ਜੋ ਦੁਨੀਆਦਾਰ ॥ ਕਾਹੂ ਕਾਜਿ ਨਾਹੀ ਗਾਵਾਰ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ
 ਨੀਚ ਕੁਲੁ ਸੁਣਹਿ ॥ ਤਿਸ ਕੈ ਸੰਗਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਤਉਰਹਿ ॥੨॥ ਕੋਟਿ ਮਜਨ ਜਾ ਕੈ ਸੁਣਿ ਨਾਮ ॥ ਕੋਟਿ ਪ੍ਰਯਾ ਜਾ ਕੈ
 ਹੈ ਧਿਆਨ ॥ ਕੋਟਿ ਪੁਨਨ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥ ਕੋਟਿ ਫਲਾ ਗੁਰ ਤੇ ਬਿਧਿ ਜਾਣੀ ॥੩॥ ਮਨ ਅਪੁਨੇ ਮਹਿ ਫਿਰਿ
 ਫਿਰਿ ਚੇਤ ॥ ਬਿਨਸਿ ਜਾਹਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਹੇਤ ॥ ਹਰਿ ਅਬਿਨਾਸੀ ਤੁਮਰੈ ਸੰਗਿ ॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਰਚੁ ਰਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥
 ੪॥ ਜਾ ਕੈ ਕਾਮਿ ਉਤਰੈ ਸਭ ਭੂਖ ॥ ਜਾ ਕੈ ਕਾਮਿ ਨ ਜੋਹਹਿ ਟ੍ਰੂਤ ॥ ਜਾ ਕੈ ਕਾਮਿ ਤੇਰਾ ਵਡ ਗਮਰੁ ॥ ਜਾ ਕੈ ਕਾਮਿ
 ਹੋਵਹਿ ਤ੍ਰਾਂ ਅਮਰੁ ॥੫॥ ਜਾ ਕੇ ਚਾਕਰ ਕਤ ਨਹੀ ਢਾਨ ॥ ਜਾ ਕੇ ਚਾਕਰ ਕਤ ਨਹੀ ਬਾਨ ॥ ਜਾ ਕੈ ਦਫਤਰਿ ਪੁਛੈ ਨ
 ਲੇਖਾ ॥ ਤਾ ਕੀ ਚਾਕਰੀ ਕਰਹੁ ਬਿਸੇਖਾ ॥੬॥ ਜਾ ਕੈ ਊਨ ਨਾਹੀ ਕਾਹੂ ਬਾਤ ॥ ਏਕਹਿ ਆਪਿ ਅਨੇਕਹਿ ਭਾਤਿ ॥
 ਜਾ ਕੀ ਦੂਸਟਿ ਹੋਇ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਕਰਿ ਤਾ ਕੀ ਘਾਲ ॥੭॥ ਨਾ ਕੋ ਚਤੁਰੁ ਨਾਹੀ ਕੋ ਮੂੜਾ ॥ ਨਾ ਕੋ

हीणु नाही को सूरा ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा ॥ सो सेवकु नानक जिसु भागा ॥੮॥੬॥ गउड़ी
 महला ५ ॥ बिनु सिमरन जैसे सरप आरजारी ॥ तिउ जीवहि साकत नामु बिसारी ॥੧॥ एक निमख जो
 सिमरन महि जीआ ॥ कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ ॥੧॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन ध्रिगु करम करास
 ॥ काग बतन बिसटा महि वास ॥੨॥ बिनु सिमरन भए कूकर काम ॥ साकत बेसुआ पूत निनाम ॥੩॥
 बिनु सिमरन जैसे सीड़ छतारा ॥ बोलहि कूरु साकत मुखु कारा ॥੪॥ बिनु सिमरन गरधाभ की निआई
 ॥ साकत थान भरिस्ट फिराही ॥੫॥ बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥ साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥
 ੬॥ बिनु सिमरन है आतम घाती ॥ साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥੭॥ जिसु भइआ कृपालु तिसु
 सतसंगि मिलाइआ ॥ कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ॥੮॥੭॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर कै बचनि
 मोहि परम गति पाई ॥ गुरि पूरै मेरी पैज रखाई ॥੧॥ गुर कै बचनि धिआइओ मोहि नाउ ॥
 गुर परसादि मोहि मिलिआ थाउ ॥੧॥ रहाउ ॥ गुर कै बचनि सुणि रसन वखाणी ॥ गुर किरपा ते
 अंमृत मेरी बाणी ॥੨॥ गुर कै बचनि मिटिआ मेरा आपु ॥ गुर की दइआ ते मेरा वड परतापु ॥੩॥
 गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरमु ॥ गुर कै बचनि पेखिओ सभु ब्रहमु ॥੪॥ गुर कै बचनि कीनो राजु जोगु
 ॥ गुर कै संगि तरिआ सभु लोगु ॥੫॥ गुर कै बचनि मेरे कारज सिधि ॥ गुर कै बचनि पाइआ नाउ
 निधि ॥੬॥ जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा ॥ तिस की कटीਐ जम की फासा ॥੭॥ गुर कै बचनि
 जागिआ मेरा करमु ॥ नानक गुरु भेटिआ पारब्रहमु ॥੮॥੮॥ गउड़ी महला ५ ॥ तिसु गुर कउ
 सिमरउ सासि सासि ॥ गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥੧॥ रहाउ ॥ गुर का दरसनु देखि देखि
 जीवा ॥ गुर के चरण धोइ धोइ पीवा ॥੧॥ गुर की रेणु नित मजनु करउ ॥ जनम जनम की हउमै
 मलु हरउ ॥੨॥ तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥ महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥੩॥ तिसु गुर कै
 गृहि ढोवउ पाणी ॥ जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥੪॥ तिसु गुर कै गृहि पीसउ नीत ॥ जिसु

ਪਰਸਾਦਿ ਵੈਰੀ ਸਭ ਮੀਤ ॥੫॥ ਜਿਨਿ ਗੁਰਿ ਮੋ ਕਤ ਦੀਨਾ ਜੀਤ ॥ ਆਪੁਨਾ ਦਾਸਰਾ ਆਪੇ ਮੁਲਿ ਲੀਤ ॥੬॥
 ਆਪੇ ਲਾਡਿਆ ਅਪਨਾ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਤ ਕਰੀ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੭॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਭੈ ਭਰਮ ਟੁਖ
 ਲਾਥਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰਾ ਗੁਰੂ ਸਮਰਥਾ ॥੮॥੯॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਗੋਬਿੰਦ ਅਪਨਾ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ
 ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਅਸਨੇਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜੋ ਪਹਿਰੈ ਖਾਡਿ ॥ ਜਿਤ ਕੁਕੁਰੁ ਜੂਠਨ ਮਹਿ
 ਪਾਡਿ ॥੧॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜੇਤਾ ਬਿਤਹਾਰੁ ॥ ਜਿਤ ਮਿਰਤਕ ਮਿਥਿਆ ਸੀਗਾਰੁ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਕਰੇ ਰਸ ਭੋਗ
 ॥ ਸੁਖੁ ਸੁਪਨੈ ਨਹੀ ਤਨ ਮਹਿ ਰੋਗ ॥੩॥ ਨਾਮੁ ਤਿਆਗੀ ਕਰੇ ਅਨ ਕਾਜ ॥ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਝੂਠੇ ਸਭਿ ਪਾਜ
 ॥੪॥ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਲਾਵੈ ॥ ਕੋਟਿ ਕਰਮ ਕਰਤੇ ਨਰਕਿ ਜਾਵੈ ॥੫॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਿਨਿ ਮਨਿ ਨ
 ਆਰਾਧਾ ॥ ਚੋਰ ਕੀ ਨਿਆਈ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਾਧਾ ॥੬॥ ਲਾਖ ਅੰਡੰਬਰ ਬਹੁਤੁ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਝੂਠੇ
 ਪਾਸਾਰਾ ॥੭॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸੌਈ ਜਨੁ ਲੇਇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਦੇਇ ॥੮॥੧੦॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਆਦਿ ਮਧਿ ਜੋ ਅੰਤਿ ਨਿਬਾਹੈ ॥ ਸੋ ਸਾਜਨੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਚਾਹੈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਚਾਲੈ ॥
 ਦਿੱਤਿਆਲ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਨਸਤ ਨਾਹੀ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਜਹ ਪੇਖਾ ਤਹ ਰਹਿਆ
 ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਸੁੰਦਰੁ ਸੁਘੜੁ ਚਤੁਰੁ ਜੀਅ ਦਾਤਾ ॥ ਭਾਈ ਪ੍ਰਤੁ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮਾਤਾ ॥੩॥ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ
 ਮੇਰੀ ਰਾਸਿ ॥ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਕਰਿ ਰਿਟੈ ਨਿਵਾਸਿ ॥੪॥ ਮਾਡਿਆ ਸਿਲਕ ਕਾਟੀ ਗੋਪਾਲਿ ॥ ਕਰਿ ਅਪੁਨਾ ਲੀਨੋ
 ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੫॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਕਾਟੇ ਸਭਿ ਰੋਗ ॥ ਚਰਣ ਧਿਆਨ ਸਰਬ ਸੁਖ ਭੋਗ ॥੬॥ ਪੂਰਨ
 ਪੁਰਖੁ ਨਵਤਨੁ ਨਿਤ ਬਾਲਾ ॥ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਖਵਾਲਾ ॥੭॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਦੁ ਚੀਨ
 ॥ ਸਰਬਸੁ ਨਾਮੁ ਭਗਤ ਕਤ ਦੀਨ ॥੮॥੧੧॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਮਾੜਾ ਮਹਲਾ ੫

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਖੋਜਤ ਫਿਰੇ ਅਸੰਖ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰੀਆ ॥ ਸੇਈ ਹੋਏ ਭਗਤ ਜਿਨਾ ਕਿਰਪਾਰੀਆ ॥੧॥ ਹਤ ਵਾਰੀਆ ਹਰਿ ਵਾਰੀਆ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਪਥੁ ਡਰਾਤ ਬਹੁਤੁ ਭੈਹਾਰੀਆ ॥ ਮੈ ਤਕੀ ਓਟ ਸੰਤਾਹ ਲੇਹੁ ਤਵਾਰੀਆ ॥

੨॥ ਮੋਹਨ ਲਾਲ ਅਨੂਪ ਸਰਬ ਸਾਧਾਰੀਆ ॥ ਗੁਰ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਤ ਪਾਇ ਦੇਹੁ ਦਿਖਾਰੀਆ ॥੩॥ ਮੈ
ਕੀਏ ਮਿਤ ਅਨੇਕ ਝਿਕਸੁ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥ ਸਭ ਗੁਣ ਕਿਸ ਹੀ ਨਾਹਿ ਹਰਿ ਪੂਰ ਭੰਡਾਰੀਆ ॥੪॥ ਚਹੁ ਦਿਸਿ
ਜਪੀਐ ਨਾਉ ਸ੍ਰੂਖਿ ਸਵਾਰੀਆ ॥ ਮੈ ਆਹੀ ਓਡਿ ਤੁਹਾਰਿ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥੫॥ ਗੁਰਿ ਕਾਢਿਓ ਭੁਜਾ
ਪਸਾਰਿ ਮੋਹ ਕ੍ਰੂਪਾਰੀਆ ॥ ਮੈ ਜੀਤਿਓ ਜਨਮੁ ਅਪਾਰੁ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹਾਰੀਆ ॥੬॥ ਮੈ ਪਾਇਓ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨੁ
ਅਕਥੁ ਕਥਾਰੀਆ ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸੋਭਾਵਤ ਬਾਹ ਲੁਡਾਰੀਆ ॥੭॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਲਧਾ ਰਤਨੁ ਅਮੋਲੁ
ਅਪਾਰੀਆ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਭਤਜਲੁ ਤਰੀਐ ਕਹਤ ਪੁਕਾਰੀਆ ॥੮॥੧੨॥

ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਾਰਾਇਣ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰੰਗੋ ॥ ਜਪਿ ਜਿਹਵਾ ਹਰਿ ਏਕ ਮੰਗੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਜਿ ਹਤਮੈ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਭਜੋ ॥
ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਧੁਰਿ ਕਰਮ ਲਿਖਿਓ ॥੨॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਸੰਗਿ ਨ ਗਇਓ ॥ ਸਾਕਤੁ ਮੂਡੁ ਲਗੇ ਪਚਿ ਮੁਝਿਓ ॥
੨॥ ਮੋਹਨ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਰਵਿ ਰਹਿਓ ॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕਿਨੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਹਿਓ ॥੩॥ ਹਰਿ ਸੰਤਨ ਕਰਿ ਨਮੋ ਨਮੋ ॥
ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਵਹਿ ਅਤੁਲੁ ਸੁਖੋ ॥੪॥ ਨੈਨ ਅਲੋਕਤ ਸਾਧ ਜਨੋ ॥ ਹਿਰਦੈ ਗਾਵਹੁ ਨਾਮ ਨਿਧੋ ॥੫॥ ਕਾਮ
ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਤਜੋ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਹੁ ਤੇ ਰਹਿਓ ॥੬॥ ਦ੍ਰਾਖੁ ਅੰਧੇਰਾ ਘਰ ਤੇ ਮਿਟਿਓ ॥ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨੁ
ਦੂਝਾਇਓ ਦੀਪ ਬਲਿਓ ॥੭॥ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਸੋ ਪਾਰਿ ਪਖਿਓ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਗਤੁ ਤਰਿਓ ॥
੮॥੧॥੧੩॥ ਮਹਲਾ ੫ ਗਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤ ਭਰਮ ਗਏ ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਸਭਿ ਸੁਖ
ਪਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਲਤੋ ਜਲਤੋ ਤਤਕਿਆ ਗੁਰ ਚੰਦਨੁ ਸੀਤਲਾਇਓ ॥੨॥ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰਾ
ਮਿਟਿ ਗਇਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਦੀਪਾਇਓ ॥੨॥ ਪਾਵਕੁ ਸਾਗਰੁ ਗਹਰੇ ਚਰਿ ਸੰਤਨ ਨਾਵ ਤਰਾਇਓ ॥੩॥
ਨਾ ਹਮ ਕਰਮ ਨ ਧਰਮ ਸੁਚ ਪ੍ਰਭਿ ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਆਪਾਇਓ ॥੪॥ ਭਤ ਖੰਡਨੁ ਦੁਖ ਭੰਜਨੋ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਹਰਿ
ਨਾਇਓ ॥੫॥ ਅਨਾਥਹ ਨਾਥ ਕ੃ਪਾਲ ਦੀਨ ਸੰਮ੍ਰਥ ਸੰਤ ਓਟਾਇਓ ॥੬॥ ਨਿਰਗੁਨੀਅਾਰੇ ਕੀ ਬੇਨਤੀ
ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਹਰਿ ਰਾਇਓ ॥੭॥ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਤੁਹਾਰੀ ਠਾਕੁਰ ਸੇਵਕੁ ਦੁਆਰੈ ਆਇਓ ॥੮॥੨॥੧੪॥

ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੰਗ ਸੰਗਿ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਭੋਗ ਇਨ ਸੰਗਿ ਅੰਧ ਨ ਜਾਨੀ ॥੧॥ ਹਉ ਸੰਚਤ ਹਉ ਖਾਟਤਾ
ਸਗਲੀ ਅਵਧ ਬਿਹਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਉ ਸੂਰਾ ਪਰਥਾਨੁ ਹਉ ਕੋ ਨਾਹੀ ਮੁੜਾਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥੨॥ ਜੋਬਨਕਵਂਤ
ਅਚਾਰ ਕੁਲੀਨਾ ਮਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ਗੁਮਾਨੀ ॥੩॥ ਜਿਤ ਤਲਝਾਇਆ ਬਾਧ ਬੁਧਿ ਕਾ ਮਰਤਿਆ ਨਹੀ
ਬਿਸਰਾਨੀ ॥੪॥ ਭਾਈ ਮੀਤ ਬੰਧਪ ਸਖੇ ਪਾਛੇ ਤਿਨ੍ਹੂ ਕਤ ਸੰਧਾਨੀ ॥੫॥ ਜਿਤੁ ਲਾਗੇ ਮਨੁ ਬਾਸਨਾ ਅੰਤਿ
ਸਾਈ ਪ੍ਰਗਟਾਨੀ ॥੬॥ ਅਛਾਬੁਧਿ ਸੁਚਿ ਕਰਮ ਕਰਿ ਇਹ ਬੰਧਨ ਬੰਧਾਨੀ ॥੭॥ ਦਿਆਲ ਪੁਰਖ ਕਿਰਪਾ
ਕਰਹੁ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਨੀ ॥੮॥੩॥੧੫॥੪੪॥ ਜੁਮਲਾ

੯੮ੰ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗ ਗਤੜੀ ਪੂਰਕੀ ਛੱਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮੁੰਧ ਰੈਣ ਦੁਹੇਲੜੀਆ
ਜੀਤ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ॥ ਸਾ ਧਨ ਦੁਬਲੀਆ ਜੀਤ ਪਿਰ ਕੈ ਹਾਵੈ ॥ ਧਨ ਥੀਈ ਦੁਬਲਿ ਕੱਤ ਹਾਵੈ ਕੇਵ ਨੈਣੀ ਦੇਖਏ ॥
ਸੀਗਾਰ ਮਿਠ ਰਸ ਭੋਗ ਭੋਜਨ ਸਭੁ ਝੂਠੁ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖਏ ॥ ਮੈ ਮਤ ਜੋਬਨਿ ਗਰਬਿ ਗਾਲੀ ਦੁਧਾ ਥਣੀ ਨ ਆਵਏ ॥
ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਈ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਨੀਦ ਨ ਆਵਏ ॥੧॥ ਮੁੰਧ ਨਿਮਾਨੜੀਆ ਜੀਤ ਬਿਨੁ ਧਨੀ ਧਿਆਰੇ ॥
ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈਗੀ ਬਿਨੁ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਨਾਹ ਬਿਨੁ ਘਰ ਵਾਸੁ ਨਾਹੀ ਪੁਛਹੁ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀਆ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਪ੍ਰੀਤਿ
ਧਿਆਰੁ ਨਾਹੀ ਕਸਹਿ ਸਾਚਿ ਸੁਹੇਲੀਆ ॥ ਸਚੁ ਮਨਿ ਸਜਨ ਸੰਤੋਖਿ ਮੇਲਾ ਗੁਰਮਤੀ ਸਹੁ ਜਾਣਿਆ ॥ ਨਾਨਕ
ਨਾਮੁ ਨ ਛੋਡੈ ਸਾ ਧਨ ਨਾਮਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀਆ ॥੨॥ ਮਿਲੁ ਸਖੀ ਸਹੇਲੜੀਹੋ ਹਮ ਪਿਲੁ ਰਾਵੇਹਾ ॥ ਗੁਰ ਪੁਛਿ
ਲਿਖਉਗੀ ਜੀਤ ਸਬਦਿ ਸਨੇਹਾ ॥ ਸਬਦੁ ਸਾਚਾ ਗੁਰਿ ਦਿਖਾਇਆ ਮਨਮੁਖੀ ਪਛੁਤਾਣੀਆ ॥ ਨਿਕਸਿ ਜਾਤਤ ਰਹੈ
ਅਸਥਿਰੁ ਜਾਮਿ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥ ਸਾਚ ਕੀ ਮਤਿ ਸਦਾ ਨਤਨ ਸਬਦਿ ਨੇਹੁ ਨਵੇਲਾਂਓ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਸਹਜਿ
ਸਾਚਾ ਮਿਲਹੁ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀਹੋ ॥੩॥ ਮੇਰੀ ਇਛ ਪੁਨੀ ਜੀਤ ਹਮ ਘਰਿ ਸਾਜਨੁ ਆਇਆ ॥ ਮਿਲਿ ਕਰੁ ਨਾਰੀ
ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥ ਗੁਣ ਗਾਇ ਮੰਗਲੁ ਪ੍ਰੇਮਿ ਰਹਸੀ ਮੁੰਧ ਮਨਿ ਓਮਾਹਾਂਓ ॥ ਸਾਜਨ ਰਹਸੇ ਟੁਸਟ ਵਿਆਪੇ ਸਾਚੁ
ਜਪਿ ਸਚੁ ਲਾਹਾਂਓ ॥ ਕਰ ਜੋਡਿ ਸਾ ਧਨ ਕਰੈ ਬਿਨਤੀ ਰੈਣ ਦਿਨੁ ਰਸਿ ਮਿਨੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਪਿਲੁ ਧਨ ਕਰਹਿ

ਰਲੀਆ ਇਛ ਮੇਰੀ ਪੁਨੀਆ ॥੪॥੧॥ ਗਤਡੀ ਛਂਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੁਣਿ ਨਾਹ ਪ੍ਰਭੂ ਜੀਤ ਏਕਲਡੀ ਬਨ ਮਾਹੇ ॥ ਕਿਉ
ਧੀਰੈਗੀ ਨਾਹ ਬਿਨਾ ਪ੍ਰਭ ਵੇਪਰਵਾਹੇ ॥ ਧਨ ਨਾਹ ਬਾਝਹੁ ਰਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਬਿਖਮ ਰੈਣਿ ਘਣੇਰੀਆ ॥ ਨਹ ਨੀਦ ਆਵੈ
ਪੇਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਮੇਰੀਆ ॥ ਬਾਝਹੁ ਪਿਆਰੇ ਕੋਇ ਨ ਸਾਰੇ ਏਕਲਡੀ ਕੁਰਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਮਿਲੈ
ਮਿਲਾਈ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥੧॥ ਪਿਰਿ ਛੋਡਿਅਡੀ ਜੀਤ ਕਵਣੁ ਮਿਲਾਵੈ ॥ ਰਸਿ ਪ੍ਰੇਮਿ ਮਿਲੀ ਜੀਤ ਸਬਦਿ
ਸੁਹਾਵੈ ॥ ਸਬਦੇ ਸੁਹਾਵੈ ਤਾ ਪਤਿ ਪਾਵੈ ਟੀਪਕ ਦੇਹ ਤਜਾਰੈ ॥ ਸੁਣਿ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਸਾਚਿ ਸੁਹੇਲੀ ਸਾਚੇ ਕੇ ਗੁਣ
ਸਾਰੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲੀ ਤਾ ਪਿਰਿ ਰਾਵੀ ਬਿਗਸੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਤਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਜਾ ਤਿਸ ਕੈ
ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥੨॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਨੀਘਰੀਆ ਜੀਤ ਕੂਡਿ ਮੁਠੀ ਕੂਡਿਆਰੇ ॥ ਕਿਉ ਖੂਲੈ ਗਲ ਜੇਵਡੀਆ ਜੀਤ
ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੇ ਸਬਦਿ ਕੀਚਾਰੇ ਤਿਸ ਹੀ ਕਾ ਸੋ ਹੋਵੈ ॥ ਪੁਨਨ ਦਾਨ ਅਨੇਕ ਨਾਵਣ
ਕਿਉ ਅੰਤਰ ਮਲੁ ਧੋਵੈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਗਤਿ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵੈ ਹਠਿ ਨਿਗਰਿ ਬੇਬਾਣੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚ ਘਰੁ ਸਬਦਿ
ਸਿਜਾਪੈ ਟੁਕੁਧਾ ਮਹਲੁ ਕਿ ਜਾਣੈ ॥੩॥ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਜੀਤ ਸਬਦੁ ਸਚਾ ਕੀਚਾਰੇ ॥ ਤੇਰਾ ਮਹਲੁ ਸਚਾ ਜੀਤ
ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਵਾਪਾਰੇ ॥ ਨਾਮ ਕਾ ਵਾਪਾਰੁ ਮੀਠਾ ਭਗਤਿ ਲਾਹਾ ਅਨਦਿਨੋ ॥ ਤਿਸੁ ਬਾਝੁ ਕਥਰੁ ਕੋਇ ਨ ਸ੍ਰੂਝੈ ਨਾਮੁ
ਲੇਵਹੁ ਖਿਨੁ ਖਿਨੋ ॥ ਪਰਖਿ ਲੇਖਾ ਨਦਰਿ ਸਾਚੀ ਕਰਮਿ ਪ੍ਰੈ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਗੁਰਿ
ਪ੍ਰੈ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨॥

ਰਾਗੁ ਗਤਡੀ ਪ੍ਰੂਬੀ ਛਂਤ ਮਹਲਾ ੩

੧੮ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਾ ਧਨ ਬਿਨਤ ਕਰੇ ਜੀਤ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰੇ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਜੀਤ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ
ਪਿਆਰੇ ਰਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਜੋ ਗੁਰੁ ਕਹੈ ਸੋਈ ਪਰੁ ਕੀਜੈ ਤਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਈਐ ॥
ਹਰਿ ਸਾਚਾ ਸੋਈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ਬਿਨੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਈ ਜਿਸ
ਨੋ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥੧॥ ਧਨ ਰੈਣਿ ਸੁਹੇਲਡੀਏ ਜੀਤ ਹਰਿ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਭਾਉ ਕਰੇ ਜੀਤ
ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਗਾ ਭਾਓੇ ॥ ਸੁਣਿ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ

ਜੀਅ ਕੀ ਮੇਲੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਓ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰੀ ਤਾ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ਨਾਮੇ ਧਰੀ ਪਿਆਰੋ ॥ ਨਾਨਕ
 ਕਾਮਣਿ ਨਾਹ ਪਿਆਰੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗਲਿ ਹਾਰੋ ॥੨॥ ਧਨ ਏਕਲਡੀ ਜੀਤ ਬਿਨੁ ਨਾਹ ਪਿਆਰੇ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਡਿ ਮੁਠੀ
 ਜੀਤ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਕਰਾਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦ ਪਿਆਰੇ ਕਤਣੁ ਦੁਤਰੁ ਤਾਰੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਖੁਆਈ ॥ ਕੂਡਿ ਵਿਗੁਤੀ
 ਤਾ ਪਿਰਿ ਮੁਤੀ ਸਾ ਧਨ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਸਮਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ
 ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਹਰਿ ਜੀਤ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥੩॥ ਤਾ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਜੀਤ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਵਣੁ ਮਿਲਾਏ ॥
 ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਆਪਣੇ ਜੀਤ ਕਤਣੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਗੁਰੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ਇਤੁ ਮਿਲੀਐ ਮਾਏ ਤਾ ਸਾ ਧਨ ਸੁਖੁ
 ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਬਿਨੁ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰੁ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਗੁ ਨ ਪਾਏ ॥ ਕਾਮਣਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਕੀਚਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਹਰਿ ਕਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਡਿ ਪਿਆਰੇ ॥੪॥੧॥ ਗਉਡੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਪਿਰ ਬਿਨੁ
 ਖਰੀ ਨਿਮਾਣੀ ਜੀਤ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਕਿਤ ਜੀਵਾ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ਜੀਤ ਕਾਪੜੁ ਤਨਿ ਨ
 ਸੁਹਾਈ ॥ ਕਾਪੜੁ ਤਨਿ ਸੁਹਾਵੈ ਜਾ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਗੁਰਮਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣਿ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਗੁਰ
 ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਈਐ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੈ ਮੇਲਾ ਤਾ ਪਿਲੁ ਰਾਵੀ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਨਾਹ ਪਿਆਰੀ
 ਜਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰੇ ॥੧॥ ਸਾ ਧਨ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ਜੀਤ ਆਪਣੇ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਜੀਤ
 ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਿਲਹੁ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਾ ਧਨ ਸੋਹਾਗਣਿ
 ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਾਚੈ ਨਾਮਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਅਪੁਨੇ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਰਹੀਐ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਗਹੀਐ ਟੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ਨਿਵਾਰੇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਹਰਿ ਕਰੁ ਪਾਇਆ ਸਗਲੇ ਟ੍ਰੌਖ ਵਿਸਾਰੇ ॥੨॥ ਕਾਮਣਿ ਪਿਰਹੁ ਭੁਲੀ ਜੀਤ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ
 ਪਿਆਰੇ ॥ ਝੂਠੀ ਝੂਠਿ ਲਗੀ ਜੀਤ ਕੂਡਿ ਮੁਠੀ ਕੂਡਿਆਰੇ ॥ ਕੂਡੁ ਨਿਵਾਰੇ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਰੇ ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੇ ॥
 ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਸੇਵੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਵਸਾਏ ਐਸਾ ਕਰੇ ਸੀਗਾਰੋ ॥ ਨਾਨਕ
 ਕਾਮਣਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ਜਿਸੁ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥੩॥ ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਜੀਤ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਖਰੀ ਨਿਮਾਣੀ ॥
 ਮੈ ਨੈਣੀ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ਜੀਤ ਭਾਵੈ ਅਨੁ ਨ ਪਾਣੀ ॥ ਪਾਣੀ ਅਨੁ ਨ ਭਾਵੈ ਮਰੀਐ ਹਾਵੈ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਕਿਤ ਸੁਖੁ

ਪਾਈਐ ॥ ਗੁਰ ਆਗੈ ਕਰਤ ਬਿਨਤੀ ਜੇ ਗੁਰ ਭਾਵੈ ਜਿਤ ਮਿਲੈ ਤਿਵੈ ਮਿਲਾਈਐ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਸੁਖਦਾਤਾ
 ਆਪਿ ਮਿਲਿਆ ਘਰਿ ਆਏ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣਿ ਨਾ ਪਿਲੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ॥੪॥੨॥ ਗਤੜੀ
 ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਕਾਮਣਿ ਹਰਿ ਰਸਿ ਬੇਧੀ ਜੀਤ ਹਰਿ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਮੋਹਿ ਲੀਆ ਜੀਤ ਦੁਬਿਧਾ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ਕਾਮਣਿ ਵਰੁ ਪਾਏ ਗੁਰਮਤੀ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥ ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਕ੍ਰਿਡਿ ਕੁਸਤਿ
 ਭਰਿਆ ਗਲ ਤਾਈ ਪਾਪ ਕਮਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਜਿਤੁ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਏ ॥
 ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਪਿਰਹਿ ਪਿਆਰੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥੧॥ ਕਾਮਣਿ ਪਿਲੁ ਪਾਇਆ ਜੀਤ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੇ
 ॥ ਰੈਣ ਸੁਖਿ ਸੁਤੀ ਜੀਤ ਅੰਤਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ਮਿਲੀਐ ਪਿਆਰੇ ਅਨਦਿਨੁ ਦੁਖੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥
 ਅੰਤਰਿ ਮਹਲੁ ਪਿਲੁ ਰਾਵੇ ਕਾਮਣਿ ਗੁਰਮਤੀ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਪੀਆ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ਨਿਵਾਰੇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਮਿਲੀ ਸੋਹਾਗਣਿ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰੇ ॥੨॥ ਆਵਹੁ ਦਿਇਆ ਕਰੇ ਜੀਤ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥
 ਕਾਮਣਿ ਬਿਨਤ ਕਰੇ ਜੀਤ ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੇ ॥ ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰਜ ਸਵਾਰੇ
 ॥ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਈ ਬੂੜੈ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪੀ ਮੋਹਿ ਸੰਤਾਪੀ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਜਾਇ
 ਪੁਕਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਥਾਤ ਨ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੩॥ ਮੁੰਧ ਇਆਣੀ ਭੋਲੀ ਨਿਗੁਣੀਆ
 ਜੀਤ ਪਿਲੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲੀਐ ਜੀਤ ਆਪੇ ਬਖਸਣਹਾਰਾ ॥ ਅਵਗਣ ਬਖਸਣਹਾਰਾ
 ਕਾਮਣਿ ਕੰਤੁ ਪਿਆਰਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭਾਇ ਭਗਤੀ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬੂੜਾ ਬੁੜਾਈ
 ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਸਾ ਧਨ
 ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੪॥੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਾਇਆ ਸਰੁ ਸਬਲੁ ਵਰਤੈ ਜੀਤ ਕਿਤ ਕਰਿ ਦੁਤਰੁ ਤਰਿਆ
 ਜਾਇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਰਿ ਬੋਹਿਥਾ ਜੀਤ ਸਬਦੁ ਖੇਵਟੁ ਵਿਚਿ ਪਾਇ ॥ ਸਬਦੁ ਖੇਵਟੁ ਵਿਚਿ ਪਾਏ ਹਰਿ ਆਪਿ
 ਲਘਾਏ ਇਨ ਬਿਧਿ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਐ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਜੀਵਤਿਆ ਇਤ ਮਰੀਐ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ
 ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੇ ਭਏ ਪਵਿਤੁ ਸਰੀਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ਕੰਚਨ ਭਏ ਮਨੂਰਾ ॥੧॥

ਇਸਤਰੀ ਪੁਰਖ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪੇ ਜੀਤ ਰਾਮ ਨਾਮ ਕੀ ਬਿਧਿ ਨਹੀ ਜਾਣੀ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਭਾਈ ਖਰੇ
 ਪਿਆਰੇ ਜੀਤ ਝੂਬਿ ਮੁਏ ਬਿਨੁ ਪਾਣੀ ॥ ਝੂਬਿ ਮੁਏ ਬਿਨੁ ਪਾਣੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਣੀ ਹਉਮੈ ਧਾਤੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਜੋ
 ਆਇਆ ਸੋ ਸਭੁ ਕੋ ਜਾਸੀ ਤਕਰੇ ਗੁਰ ਕੀਚਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੈ ਆਪਿ ਤਰੈ ਕੁਲ ਤਾਰੇ ॥
 ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਕਥੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮਤਿ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰੇ ॥੨॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕੋ ਥਿਰੁ ਨਾਹੀ ਜੀਤ ਬਾਜੀ
 ਹੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਦੂਡੁ ਭਗਤਿ ਸਚੀ ਜੀਤ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ਗੁਰਮਤੀ
 ਧਨੁ ਪਾਈਐ ॥ ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਭਗਤਿ ਇਹ ਸਾਚੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ॥ ਹਮ ਮਤਿ ਹੀਣ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ
 ਅੰਧੇ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵੇ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੩॥ ਆਪਿ
 ਕਰਾਏ ਕਰੇ ਆਪਿ ਜੀਤ ਆਪੇ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਪਿ ਸਬਦੁ ਜੀਤ ਜੁਗ ਜੁਗ ਭਗਤ ਪਿਆਰੇ
 ॥ ਜੁਗ ਜੁਗ ਭਗਤ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ਆਪੇ ਭਗਤੀ ਲਾਏ ॥ ਆਪੇ ਦਾਨਾ ਆਪੇ ਬੀਨਾ ਆਪੇ ਸੇਵ
 ਕਰਾਏ ॥ ਆਪੇ ਗੁਣਦਾਤਾ ਅਕਗੁਣ ਕਾਟੇ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਚੇ ਵਿਟਹੁ ਆਪੇ
 ਕਰੇ ਕਰਾਏ ॥੪॥੪॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਰਿ ਪਿਰਾ ਜੀਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਮੰਜਹੁ ਟ੍ਰੈਨ
 ਨ ਜਾਹਿ ਪਿਰਾ ਜੀਤ ਘਰਿ ਬੈਠਿਆ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥ ਘਰਿ ਬੈਠਿਆ ਹਰਿ ਪਾਏ ਸਦਾ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਸਹਜੇ ਸਤਿ
 ਸੁਭਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਖਰੀ ਸੁਖਾਲੀ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥ ਨਾਮੋ ਬੀਜੇ ਨਾਮੋ ਜੰਮੈ ਨਾਮੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਏ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਪਿਰਾ ਜੀਤ ਜਾ ਚਾਖਹਿ
 ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ਮੁਧੇ ਜੀਤ ਅਨ ਰਸ ਸਾਦ ਗਵਾਏ ॥ ਸਦਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਏ ਜਾ ਹਰਿ ਭਾਏ
 ਰਸਨਾ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਏ ॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਨਾਮਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਨਾਮੇ ਉਪਜੈ ਨਾਮੇ ਬਿਨਸੈ
 ਨਾਮੇ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮਤੀ ਪਾਈਐ ਆਪੇ ਲਏ ਲਵਾਏ ॥੨॥ ਏਹ ਵਿਡਾਣੀ ਚਾਕਰੀ ਪਿਰਾ
 ਜੀਤ ਧਨ ਛੋਡਿ ਪਰਦੇਸਿ ਸਿਧਾਏ ॥ ਟ੍ਰੈਨੈ ਕਿਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਇਆ ਪਿਰਾ ਜੀਤ ਬਿਖਿਆ ਲੋਭਿ ਲੁਭਾਏ ॥ ਬਿਖਿਆ
 ਲੋਭਿ ਲੁਭਾਏ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ਓਹੁ ਕਿਤ ਕਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਚਾਕਰੀ ਵਿਡਾਣੀ ਖਰੀ ਦੁਖਾਲੀ ਆਪੁ ਵੇਚਿ ਧਰਮੁ

ਗਵਾਏ ॥ ਮਾਇਆ ਬੰਧਨ ਟਿਕੈ ਨਾਹੀ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਦੁਖੁ ਸੰਤਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਕਾ ਦੁਖੁ ਤਦੇ ਚੂਕੈ ਜਾ ਗੁਰ
ਸਬਦੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੩॥ ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਗਾਵਾਰੁ ਪਿਰਾ ਜੀਤ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਨ ਵਸਾਏ ॥ ਮਾਇਆ ਕਾ ਭਰਮੁ
ਅੰਧੁ ਪਿਰਾ ਜੀਤ ਹਰਿ ਮਾਰਗੁ ਕਿਤ ਪਾਏ ॥ ਕਿਤ ਮਾਰਗੁ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ਮਨਮੁਖਿ ਆਪੁ ਗਣਾਏ ॥
ਹਰਿ ਕੇ ਚਾਕਰ ਸਦਾ ਸੁਫਲੇ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕਰੇ ਕਿਰਪਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ
ਗਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਜਗਿ ਲਾਹਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਬੁਜ਼ਾਏ ॥੪॥੫॥੭॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਬੈਰਾਗੁ ਭਿਆ ਜੀਤ ਕਿਤ ਦੇਖਾ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ॥ ਮੈਰੇ ਮੀਤ ਸਖਾ ਹਰਿ ਜੀਤ

ਗੁਰ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ॥ ਪੁਰਖੋ ਬਿਧਾਤਾ ਏਕੁ ਸੀਧਰੁ ਕਿਤ ਮਿਲਹ ਤੁੜੈ ਤਡੀਣੀਆ ॥ ਕਰ ਕਰਹਿ ਸੇਵਾ ਸੀਸੁ
ਚਰਣੀ ਮਨਿ ਆਸ ਦਰਸ ਨਿਮਾਣੀਆ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਨ ਘੜੀ ਵਿਸਰੈ ਪਲੁ ਮੂਰਤੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤੇ ॥ ਨਾਨਕ
ਸਾਰਿਂਗ ਜਿਤ ਪਿਆਸੇ ਕਿਤ ਮਿਲੀਐ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ॥੧॥ ਇਕ ਬਿਨਤ ਕਰਤ ਜੀਤ ਸੁਣਿ ਕੱਤ ਪਿਆਰੇ ॥ ਮੇਰਾ
ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੋਹਿ ਲੀਆ ਜੀਤ ਦੇਖਿ ਚਲਤ ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਚਲਤਾ ਤੁਮਾਰੇ ਦੇਖਿ ਮੋਹੀ ਉਦਾਸ ਧਨ ਕਿਤ ਧੀਰਏ ॥
ਗੁਣਵੰਤ ਨਾਹ ਦਿੱਤਾਲੁ ਬਾਲਾ ਸਰਬ ਗੁਣ ਭਰਪੂਰਏ ॥ ਪਿਰ ਦੋਸੁ ਨਾਹੀ ਸੁਖਹ ਦਾਤੇ ਹਤ ਵਿਛੁੜੀ ਬੁਰਿਆਰੇ ॥
ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਿੱਤਾ ਧਾਰਹੁ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ਨਾਹ ਪਿਆਰੇ ॥੨॥ ਹਤ ਮਨੁ ਅਰਪੀ ਸਭੁ ਤਨੁ ਅਰਪੀ ਅਰਪੀ
ਸਭਿ ਦੇਸਾ ॥ ਹਤ ਸਿਰੁ ਅਰਪੀ ਤਿਸੁ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਦੇਇ ਸਦੇਸਾ ॥ ਅਰਪਿਆ ਤ ਸੀਸੁ ਸੁਥਾਨਿ ਗੁਰ ਪਹਿ
ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਸਗਲਾ ਦੂਖੁ ਮਿਟਿਆ ਮਨਹੁ ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਇਆ ॥ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਰਲੀਆ
ਕਰੈ ਕਾਮਣਿ ਮਿਟੇ ਸਗਲ ਅੰਦੇਸਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਕੰਤੁ ਮਿਲਿਆ ਲੋਡੇ ਹਮ ਜੈਸਾ ॥੩॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ
ਅਨਦੁ ਭਿਆ ਜੀਤ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥ ਘਰਿ ਲਾਲੁ ਆਇਆ ਪਿਆਰਾ ਸਭ ਤਿਖਾ ਬੁਜ਼ਾਈ ॥ ਮਿਲਿਆ ਤ
ਲਾਲੁ ਗੁਪਾਲੁ ਠਾਕੁਰੁ ਸਖੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥ ਸਭ ਮੀਤ ਬੰਧਪ ਹਰਖੁ ਤਪਜਿਆ ਢੂਤ ਥਾਤ ਗਵਾਇਆ ॥
ਅਨਹਤ ਵਾਜੇ ਵਜਹਿ ਘਰ ਮਹਿ ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਸੇਜ ਵਿਛਾਈ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਹਜਿ ਰਹੈ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ

ਕਨ੍ਤੁ ਸੁਖਦਾਈ ॥੪॥੧॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੋਹਨ ਤੇਰੇ ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਮਹਲ ਅਪਾਰਾ ॥ ਮੋਹਨ ਤੇਰੇ ਸੋਹਨਿ
 ਟੁਆਰ ਜੀਤ ਸੰਤ ਧਰਮ ਸਾਲਾ ॥ ਧਰਮ ਸਾਲ ਅਪਾਰ ਦੈਆਰ ਠਾਕੁਰ ਸਦਾ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਵਹੇ ॥ ਜਹ ਸਾਥ ਸੰਤ
 ਝਿਕਤ ਹੋਵਹਿ ਤਹਾ ਤੁੜਾਹਿ ਧਿਆਵਹੇ ॥ ਕਰਿ ਦਿੱਤਾ ਮਿਡਿਆ ਦਿੱਤਾਲ ਸੁਆਮੀ ਹੋਹੁ ਦੀਨ ਕ੃ਪਾਰਾ ॥
 ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਰਸ ਪਿਆਸੇ ਮਿਲਿ ਦਰਸਨ ਸੁਖੁ ਸਾਰਾ ॥੧॥ ਮੋਹਨ ਤੇਰੇ ਬਚਨ ਅਨੂਪ ਚਾਲ ਨਿਰਾਲੀ
 ॥ ਮੋਹਨ ਤ੍ਰੂ ਮਾਨਹਿ ਏਕੁ ਜੀ ਅਵਰ ਸਭ ਰਾਲੀ ॥ ਮਾਨਹਿ ਤ ਏਕੁ ਅਲੇਖੁ ਠਾਕੁਰੁ ਜਿਨਹਿ ਸਭ ਕਲ ਧਾਰੀਆ ॥
 ਤੁਧੁ ਬਚਨਿ ਗੁਰ ਕੈ ਵਸਿ ਕੀਆ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਬਨਵਾਰੀਆ ॥ ਤ੍ਰੂ ਆਪਿ ਚਲਿਆ ਆਪਿ ਰਹਿਆ ਆਪਿ ਸਭ
 ਕਲ ਧਾਰੀਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਪੈਜ ਰਾਖਹੁ ਸਭ ਸੇਵਕ ਸਰਨਿ ਤੁਮਾਰੀਆ ॥੨॥ ਮੋਹਨ ਤੁਧੁ ਸਤਸ਼ਗਤਿ
 ਧਿਆਵੈ ਦਰਸ ਧਿਆਨਾ ॥ ਮੋਹਨ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਤੁਧੁ ਜਪਹਿ ਨਿਦਾਨਾ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਤਿਨ ਕਤ ਲਗੈ
 ਨਾਹੀ ਜੋ ਝਿਕ ਮਨਿ ਧਿਆਵਹੇ ॥ ਮਨਿ ਬਚਨਿ ਕਰਮਿ ਜਿ ਤੁਧੁ ਅਰਾਧਹਿ ਸੇ ਸਭੇ ਫਲ ਪਾਵਹੇ ॥ ਮਲ ਮੂਤ
 ਮੂੜ ਜਿ ਸੁਗਧ ਹੋਤੇ ਸਿ ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਸੁਗਿਆਨਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਰਾਜੁ ਨਿਹਚਲੁ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਭਗਵਾਨਾ
 ॥੩॥ ਮੋਹਨ ਤ੍ਰੂ ਸੁਫਲੁ ਫਲਿਆ ਸਣੁ ਪਰਵਾਰੇ ॥ ਮੋਹਨ ਪੁਤ ਮੀਤ ਭਾਈ ਕੁਟੰਬ ਸਭਿ ਤਾਰੇ ॥ ਤਾਰਿਆ ਜਹਾਨੁ
 ਲਹਿਆ ਅਭਿਮਾਨੁ ਜਿਨੀ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਜਿਨੀ ਤੁਧਨੋ ਧਨੁ ਕਹਿਆ ਤਿਨ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਇਆ ॥ ਬੇਅੰਤ
 ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਕਥੇ ਨ ਜਾਹੀ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖ ਮੁਰਾਰੇ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਟੇਕ ਰਾਖੀ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰਿਆ ਸੰਸਾਰੇ ॥
 ੪॥੨॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਪਤਿਤ ਅਸੰਖ ਪੁਨੀਤ ਕਰਿ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ ਬਲਿਹਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ
 ਨਾਮੁ ਜਧਿ ਪੈਕਕੋ ਤਿਨ ਕਿਲਬਿਖ ਦਾਹਨਹਾਰ ॥੧॥ ਛੰਤ ॥ ਜਧਿ ਮਨਾ ਤ੍ਰੂ ਰਾਮ ਨਰਾਇਣੁ ਗੋਬਿੰਦਾ ਹਰਿ
 ਮਾਧੋ ॥ ਧਿਆਇ ਮਨਾ ਮੁਰਾਰਿ ਮੁਕਂਦੇ ਕਟੀਐ ਕਾਲ ਦੁਖ ਫਾਧੋ ॥ ਦੁਖਹਰਣ ਦੀਨ ਸਰਣ ਸੀਧਰ ਚਰਨ ਕਮਲ
 ਅਰਾਧੀਐ ॥ ਜਮ ਪਥੁ ਬਿਖੜਾ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਨਿਮਖ ਸਿਮਰਤ ਸਾਧੀਐ ॥ ਕਲਿਮਲਹ ਦਹਤਾ ਸੁਧੁ
 ਕਰਤਾ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਅਰਾਧੋ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਮਾਧੋ ॥੧॥ ਸਿਮਰਿ ਮਨਾ
 ਦਾਮੋਦਰੁ ਦੁਖਹਰੁ ਭੈ ਭੰਜਨੁ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਸੀਰਾਂਗੋ ਦਿੱਤਾਲ ਮਨੋਹਰੁ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਬਿਰਦਾਇਆ ॥

ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਮਨਹਿ ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਈਐ ॥ ਤਮ ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਉਧਾਰੈ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈਐ ॥
 ਸੁਰ ਸਿਧ ਗਣ ਗੰਧਰਵ ਮੁਨਿ ਜਨ ਗੁਣ ਅਨਿਕ ਭਗਤੀ ਗਾਇਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੨॥ ਚੇਤਿ ਮਨਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਸਰਬ ਕਲਾ ਜਿਨਿ ਧਾਰੀ ॥ ਕਰੁਣਾ ਮੈ
 ਸਮਰਥੁ ਸੁਆਮੀ ਘਟ ਘਟ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਾਣ ਮਨ ਤਨ ਜੀਅ ਦਾਤਾ ਬੇਅੰਤ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥ ਸਰਣ ਜੋਗੁ
 ਸਮਰਥੁ ਮੋਹਨੁ ਸਰਬ ਦੋਖ ਬਿਦਾਰੇ ॥ ਰੋਗ ਸੋਗ ਸਭਿ ਦੋਖ ਬਿਨਸਹਿ ਜਪਤ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ
 ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਸਮਰਥ ਸਭ ਕਲ ਧਾਰੀ ॥੩॥ ਗੁਣ ਗਾਤ ਮਨਾ ਅਚੁਤ ਅਭਿਨਾਸੀ ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਦਿੱਤਾਲਾ ॥
 ਬਿਸੰਭਰੁ ਦੇਵਨ ਕਤ ਏਕੈ ਸਰਬ ਕਰੈ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ਮਹਾ ਦਿੱਤਾਲ ਦਾਨਾ ਦਿੱਤਾ ਧਾਰੇ ਸਭ ਕਿਸੈ
 ॥ ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਨਾਸੈ ਜੀਅ ਜਾ ਕੈ ਪ੍ਰਭੁ ਬਸੈ ॥ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਦੇਵਾ ਸਫਲ ਸੇਵਾ ਭੰਡ ਪੂਰਨ ਘਾਲਾ ॥
 ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਇਛ ਪੁਨੀ ਜਪਤ ਦੀਨ ਦੈਆਲਾ ॥੪॥੩॥ ਗਤੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੁਣਿ ਸਖੀਏ ਮਿਲਿ ਤਦਮੁ
 ਕਰੇਹਾ ਮਨਾਇ ਲੈਹਿ ਹਰਿ ਕਤੈ ॥ ਮਾਨੁ ਤਿਆਗਿ ਕਰਿ ਭਗਤਿ ਠਗਤਰੀ ਮੋਹਹ ਸਾਧੂ ਮੰਤੈ ॥ ਸਖੀ ਵਸਿ
 ਆਇਆ ਫਿਰਿ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਇਹ ਰੇਤਿ ਭਲੀ ਭਗਵਾਂਤੈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਰਾ ਮਰਣ ਭੈ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੈ ਪੁਨੀਤ ਕਰੈ
 ਤਿਸੁ ਜਾਂਤੈ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਸਖੀਏ ਇਹ ਭਲੀ ਬਿਨਤੀ ਏਹੁ ਮਤਾਂਤੁ ਪਕਾਈਐ ॥ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਤੁਪਾਧਿ ਰਹਤ
 ਹੋਇ ਗੀਤ ਗੋਵਿੰਦਹਿ ਗਾਈਐ ॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟਹਿ ਭ੍ਰਮ ਨਾਸਹਿ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸਰ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੨॥ ਸਖੀ ਇਛ ਕਰੀ ਨਿਤ ਸੁਖ ਮਨਾਈ ਪ੍ਰਾਭ ਮੇਰੀ ਆਸ ਪੁਯਾਏ
 ॥ ਚਰਨ ਪਿਆਸੀ ਦਰਸ ਬੈਰਾਗਨਿ ਪੇਖਤ ਥਾਨ ਸਬਾਏ ॥ ਖੋਜਿ ਲਹਤ ਹਰਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਸੰਗੁ ਸੰਮੂਥ ਪੁਰਖ
 ਮਿਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਸੁਰਿਜਨੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਮਾਏ ॥੩॥ ਸਖੀ ਨਾਲਿ ਵਸਾ ਅਪੁਨੇ
 ਨਾਹ ਪਿਆਰੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਹਿਲਿਆ ॥ ਸੁਣਿ ਸਖੀਏ ਮੇਰੀ ਨੀਦ ਭਲੀ ਮੈ ਆਪਨੜਾ ਪਿਰੁ
 ਮਿਲਿਆ ॥ ਭ੍ਰਮੁ ਖੋਇਆ ਸਾਂਤਿ ਸਹਜਿ ਸੁਆਮੀ ਪਰਗਾਸੁ ਭਿੱਤਾ ਕਤਲੁ ਖਿਲਿਆ ॥ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ
 ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਨਾਨਕ ਸੋਹਾਗੁ ਨ ਟਲਿਆ ॥੪॥੪॥੨॥੫॥੧੧॥

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਗਤੜੀ ਬਾਵਨ ਅਖਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਮਾਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਪਿਤਾ ਗੁਰਦੇਵ
 ਸੁਆਮੀ ਪਰਮੇਸੁਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਸਖਾ ਅਗਿਆਨ ਭੰਜਨੁ ਗੁਰਦੇਵ ਬੰਧਿਪ ਸਹੋਦਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਤਪਦੇਸੈ ਗੁਰਦੇਵ ਮੰਤੁ ਨਿਰੋਧਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਸਾਂਤਿ ਸਤਿ ਬੁਧਿ ਮੂਰਤਿ ਗੁਰਦੇਵ ਪਾਰਸ ਪਰਸ ਪਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ
 ਤੀਰਥੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਰੋਵਰੁ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਮਜਨੁ ਅਪਰੰਪਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਕਰਤਾ ਸਭਿ ਪਾਪ ਹਰਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਪਤਿ
 ਪਵਿਤ ਕਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਗੁਰਦੇਵ ਮੰਤੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਤਥਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਿ
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਮ ਮੂੜ ਪਾਪੀ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਰਖਵਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਗੁਰਦੇਵ ਨਾਨਕ ਹਰਿ
 ਨਮਸਕਰਾ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਆਪਹਿ ਕੀਆ ਕਰਾਇਆ ਆਪਹਿ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥ ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਦ੍ਰਿਸ਼ਾ
 ਹੋਆ ਨ ਹੋਗੁ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਓਓਅਂ ਸਾਧ ਸਤਿਗੁਰ ਨਮਸਕਾਰਾਂ ॥ ਆਦਿ ਮਥਿ ਅੰਤਿ ਨਿਰਕਾਰਾਂ ॥ ਆਪਹਿ ਸੁਨਨ
 ਆਪਹਿ ਸੁਖ ਆਸਨ ॥ ਆਪਹਿ ਸੁਨਤ ਆਪ ਹੀ ਜਾਸਨ ॥ ਆਪਨ ਆਪੁ ਆਪਹਿ ਤਪਾਇਆਂ ॥ ਆਪਹਿ ਬਾਪ
 ਆਪ ਹੀ ਮਾਇਆਂ ॥ ਆਪਹਿ ਸ੍ਰੂਖਮ ਆਪਹਿ ਅਸਥੂਲਾ ॥ ਲਖੀ ਨ ਜਾਈ ਨਾਨਕ ਲੀਲਾ ॥੧॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ
 ਦੀਨ ਦਾਇਆਲਾ ॥ ਤੇਰੇ ਸੰਤਨ ਕੀ ਮਨੁ ਹੋਇ ਰਖਾਲਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਨਿਰਕਾਰ ਆਕਾਰ ਆਧਿ ਨਿਰਗੁਨ
 ਸਰਗੁਨ ਏਕ ॥ ਏਕਹਿ ਏਕ ਬਖਾਨਨੋ ਨਾਨਕ ਏਕ ਅਨੇਕ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਓਓਅਂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਓ ਅਕਾਰਾ ॥ ਏਕਹਿ
 ਸ੍ਰੂਤਿ ਪਰੋਵਨਹਾਰਾ ॥ ਭਿਨਨ ਭਿਨਨ ਤੈ ਗੁਣ ਬਿਸਥਾਰਾਂ ॥ ਨਿਰਗੁਨ ਤੇ ਸਰਗੁਨ ਦ੃ਸਟਾਰਾਂ ॥ ਸਗਲ ਭਾਤਿ ਕਰਿ
 ਕਰਹਿ ਤਪਾਇਆਂ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਮਨ ਮੋਹੁ ਬਢਾਇਆਂ ॥ ਦੁਹੂ ਭਾਤਿ ਤੇ ਆਧਿ ਨਿਰਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਤੁ ਨ
 ਪਾਰਵਾਰਾ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਸੇਈ ਸਾਹ ਭਗਵਂਤ ਸੇ ਸਚੁ ਸੰਧੈ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸੁਚਿ ਪਾਈਐ ਤਿਹ ਸੰਤਨ ਕੈ
 ਪਾਸਿ ॥੧॥ ਪਕੜੀ ॥ ਸਸਾ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸੋਤੁ ॥ ਸਤਿ ਪੁਰਖ ਤੇ ਭਿਨਨ ਨ ਕੋਤੁ ॥ ਸੋਤੁ ਸਰਨਿ ਪੈ ਜਿਹ ਪਾਧਿ
 ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ਸੁਨਾਧਿ ॥ ਸੰਸੈ ਭਰਮੁ ਨਹੀ ਕਛੁ ਬਿਆਪਤ ॥ ਪ੍ਰਗਟ ਪ੍ਰਤਾਪੁ ਤਾਹੂ ਕੋ ਜਾਪਤ ॥ ਸੋ
 ਸਾਧੂ ਇਹ ਪਹੁੰਚਨਹਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਕਹਾ ਪੁਕਾਰਤੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹ

ਸਭ ਕੂਰ ॥ ਨਾਮ ਬਿਹੌਨੇ ਨਾਨਕਾ ਹੋਤ ਜਾਤ ਸਭੁ ਧੂਰ ॥੧॥ ਪਵਡੀ ॥ ਧਧਾ ਧੂਰਿ ਪੁਨੀਤ ਤੇਰੇ ਜਨੂਆ ॥ ਧਨਿ ਤੇਊ
 ਜਿਹ ਰੁਚ ਇਆ ਮਨੂਆ ॥ ਧਨੁ ਨਹੀ ਬਾਛਹਿ ਸੁਰਗ ਨ ਆਛਹਿ ॥ ਅਤਿ ਪ੍ਰਤੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਾਥ ਰਜ ਰਾਚਹਿ ॥ ਧਿੰਧੇ
 ਕਹਾ ਬਿਆਪਹਿ ਤਾਹੂ ॥ ਜੋ ਏਕ ਛਾਡਿ ਅਨ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਹੂ ॥ ਜਾ ਕੈ ਹੀਐ ਦੀਓ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਥ ਪੂਰਨ
 ਭਗਵਾਨ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ॥ ਅਨਿਕ ਭੇਖ ਅਰੁ ਡਿਆਨ ਧਿਆਨ ਮਨਹਠਿ ਮਿਲਿਅਤ ਨ ਕੋਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
 ਕਿਰਪਾ ਭਈ ਭਗਤੁ ਡਿਆਨੀ ਸੋਇ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਡੱਡਾ ਡਿਆਨੁ ਨਹੀ ਮੁਖ ਬਾਤਤ ॥ ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ ਸਾਸਤਰ
 ਕਹਿ ਭਾਤਤ ॥ ਡਿਆਨੀ ਸੋਇ ਜਾ ਕੈ ਵੂੜ੍ਹ ਸੋਊ ॥ ਕਹਤ ਸੁਨਤ ਕਛੁ ਜੋਗੁ ਨ ਹੋਊ ॥ ਡਿਆਨੀ ਰਹਤ ਆਗਿਆ
 ਵੂੜ੍ਹ ਜਾ ਕੈ ॥ ਉਸਨ ਸੀਤ ਸਮਸਰਿ ਸਭ ਤਾ ਕੈ ॥ ਡਿਆਨੀ ਤਤੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਤ ਕਿਰਪਾ
 ਧਾਰੀ ॥੫॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਆਵਨ ਆਏ ਸੂਸਟਿ ਮਹਿ ਬਿਨੁ ਕੁੜ੍ਹੇ ਪਸੁ ਢੋਰ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋ ਕੁੜ੍ਹੈ ਜਾ ਕੈ ਭਾਗ
 ਮਥੋਰ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਧਾਰੁ ਯਾ ਜੁਗ ਮਹਿ ਏਕਹਿ ਕਤ ਆਇਆ ॥ ਜਨਮਤ ਮੋਹਿਓ ਮੋਹਨੀ ਮਾਇਆ ॥ ਗਰਭ ਕੁੰਟ
 ਮਹਿ ਤਰਧ ਤਪ ਕਰਤੇ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਤ ਪ੍ਰਭੁ ਰਹਤੇ ॥ ਤਰਝਿ ਪਰੇ ਜੋ ਛੋਡਿ ਛਡਾਨਾ ॥ ਟੇਵਨਹਾਰੁ ਮਨਹਿ
 ਬਿਸਰਾਨਾ ॥ ਧਾਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸਹਿ ਗੁਸਾਈ ॥ ਇਤ ਤਤ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਿਸਰਹੁ ਨਾਹੀ ॥੬॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਆਵਤ
 ਹੁਕਮਿ ਬਿਨਾਸ ਹੁਕਮਿ ਆਗਿਆ ਭਿੰਨ ਨ ਕੋਇ ॥ ਆਵਨ ਜਾਨਾ ਤਿਹ ਮਿਟੈ ਨਾਨਕ ਜਿਹ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥੧॥
 ਪਤਡੀ ॥ ਏਊ ਜੀਅ ਬਹੁਤੁ ਗ੍ਰਭ ਵਾਸੇ ॥ ਮੋਹ ਮਗਨ ਮੀਠ ਜੋਨਿ ਫਾਸੇ ॥ ਇਨ੍ਹਿ ਮਾਇਆ ਤੈ ਗੁਣ ਬਸਿ ਕੀਨੇ ॥
 ਆਪਨ ਮੋਹ ਘਟੇ ਘਟਿ ਦੀਨੇ ॥ ਏ ਸਾਜਨ ਕਛੁ ਕਹਹੁ ਤਪਾਇਆ ॥ ਜਾ ਤੇ ਤਰਤ ਬਿਖਮ ਇਹ ਮਾਇਆ ॥ ਕਰਿ
 ਕਿਰਪਾ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਮਾਏ ॥੭॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਕਿਰਤ ਕਮਾਵਨ ਸੁਭ ਅਸੁਭ ਕੀਨੇ
 ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ॥ ਪਸੁ ਆਪਨ ਹਤ ਹਤ ਕਰੈ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਕਹਾ ਕਮਾਤਿ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਏਕਹਿ ਆਪਿ
 ਕਰਾਵਨਹਾਰਾ ॥ ਆਪਹਿ ਪਾਪ ਪੁਨਨ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥ ਇਆ ਜੁਗ ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਆਪਹਿ ਲਾਇਆਓ ॥ ਸੋ ਸੋ ਪਾਇਆਓ ਜੁ
 ਆਪਿ ਦਿਵਾਇਆਓ ॥ ਤਾਂਤੁ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਊ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕਰੈ ਸੋਊ ਫੁਨਿ ਹੋਊ ॥ ਏਕਹਿ ਤੇ ਸਗਲਾ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥
 ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਸਵਾਰਨਹਾਰਾ ॥੮॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਰਾਚਿ ਰਹੇ ਬਨਿਤਾ ਬਿਨੋਦ ਕੁਸਮ ਰੰਗ ਬਿਖ ਸੋਰ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਹ

सरनी परउ बिनसि जाइ मै मोर ॥੧॥ पउड़ी ॥ रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥ जिह
 विधि कतहू न छूटीअै साकत तेऊ कमाहि ॥ हउ हउ करते करम रत ता को भारु अफार ॥ प्रीति नही जउ
 नाम सिउ तउ एऊ करम बिकार ॥ बाथे जम की जेवरी मीठी माइआ रंग ॥ भ्रम के मोहे नह बुझहि सो प्रभु
 सदहू संग ॥ लेखै गणत न छूटीअै काची भीति न सुधि ॥ जिसहि बुझाए नानका तिह गुरमुखि निरमल
 बुधि ॥੬॥ सलोकु ॥ टूटे बंधन जासु के होआ साधू संग ॥ जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंग ॥੭॥ पउड़ी ॥
 रारा रंगहु डिआ मनु अपना ॥ हरि हरि नामु जपहु जपु रसना ॥ रे रे दरगह कहै न कोऊ ॥ आउ
 बैठु आदरु सुभ देऊ ॥ उआ महली पावहि तू बासा ॥ जनम मरन नह होइ बिनासा ॥ मसतकि करमु
 लिखिओ धुरि जा कै ॥ हरि संपै नानक घरि ता कै ॥੧੦॥ सलोकु ॥ लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े
 अंध ॥ लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥੧॥ पउड़ी ॥ लला लपटि बिखै रस राते ॥ अह्वबुधि
 माइआ मद माते ॥ डिआ माइआ महि जनमहि मरना ॥ जिउ जिउ हुकमु तिवै तिउ करना ॥ कोऊ ऊन
 न कोऊ पूरा ॥ कोऊ सुघरु न कोऊ मूरा ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक ठाकुर सदा अलिपना
 ॥੧੧॥ सलोकु ॥ लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गंभीर अथाह ॥ दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह
 ॥੧॥ पउड़ी ॥ लला ता कै लवै न कोऊ ॥ एकहि आपि अवर नह होऊ ॥ होवनहारु होत सद आइआ ॥
 उआ का अंतु न काहू पाइआ ॥ कीट हसति महि पूर समाने ॥ प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने ॥ जा कउ दीनो
 हरि रसु अपना ॥ नानक गुरमुखि हरि हरि तिह जपना ॥੧੨॥ सलोकु ॥ आतम रसु जिह जानिआ हरि
 रंग सहजे माणु ॥ नानक धनि धनि धनि जन आए ते परवाणु ॥੧॥ पउड़ी ॥ आइआ सफल ताहू को
 गनीअै ॥ जासु रसन हरि हरि जसु भनीअै ॥ आइ बसहि साधू कै संगे ॥ अनदिनु नामु धिआवहि रंगे ॥
 आवत सो जनु नामहि राता ॥ जा कउ दइआ मइआ बिधाता ॥ एकहि आवन फिरि जोनि न आइआ ॥
 नानक हरि कै दरसि समाइआ ॥੧੩॥ सलोकु ॥ यासु जपत मनि होइ अन्दु बिनसै दूजा भाउ ॥ दूख

ਦਰਦ ਤੂਸਨਾ ਬੁੜੈ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਉ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਯਧਾ ਜਾਰਤ ਦੁਰਮਤਿ ਦੋਊ ॥ ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗੀ ਸੁਖ
 ਸਹਜੇ ਸੋਊ ॥ ਯਧਾ ਜਾਇ ਪਰਹੁ ਸੰਤ ਸਰਨਾ ॥ ਜਿਹ ਆਸਰ ਇਆ ਭਵਜਲੁ ਤਰਨਾ ॥ ਯਧਾ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵੈ ਸੋਊ
 ॥ ਏਕ ਨਾਮ ਲੇ ਮਨਹਿ ਪਰੋਊ ॥ ਯਧਾ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੀਐ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਕੀ ਟੇਕ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜਾ ਕੈ
 ਹੀਅਰੈ ਏਕ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਅਨਤਰਿ ਮਨ ਤਨ ਬਸਿ ਰਹੇ ਈਤ ਊਤ ਕੇ ਮੀਤ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਤਪਦੇਸਿਆ ਨਾਨਕ
 ਜਪੀਐ ਨੀਤ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਿਮਰਹੁ ਤਾਸੁ ਕਤ ਜੋ ਅੰਤਿ ਸਹਾਈ ਹੋਇ ॥ ਇਹ ਬਿਖਿਆ ਦਿਨ ਚਾਰਿ
 ਛਿਅ ਛਾਡਿ ਚਲਿਆਂ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਕਾ ਕੋ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਧੀਆ ॥ ਗ੍ਰਹ ਬਨਿਤਾ ਕਛੁ ਸੰਗਿ ਨ ਲੀਆ ॥ ਐਸੀ
 ਸੰਚਿ ਜੁ ਬਿਨਸਤ ਨਾਹੀ ॥ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਅਪੁਨੈ ਘਰਿ ਜਾਹੀ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਕਲਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਤੇ
 ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਇਆ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਕੁਲੀਨ ਚਤੁਰ ਮੁਖਿ ਡਿਆਨੀ ਧਨਵੰਤ ॥ ਮਿਰਤਕ ਕਹੀਅਹਿ
 ਨਾਨਕਾ ਜਿਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਹੀ ਭਗਵੰਤ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਡੱਡਾ ਖਟੁ ਸਾਸਤਰ ਹੋਇ ਡਿਆਤਾ ॥ ਪੂਰਕੁ ਕੁੰਭਕ ਰੇਚਕ
 ਕਰਮਾਤਾ ॥ ਡਿਆਨ ਧਿਆਨ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨੀ ॥ ਸੋਮਪਾਕ ਅਪਰਸ ਉਦਿਆਨੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਮਨਿ
 ਨਹੀ ਹੇਤਾ ॥ ਜੋ ਕਛੁ ਕੀਨੋ ਸੋਊ ਅਨੇਤਾ ॥ ਤਾਅ ਤੇ ਊਤਮੁ ਗਨਤ ਚੰਡਾਲਾ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਹ ਮਨਿ ਬਸਹਿ ਗੁਪਾਲਾ
 ॥੧੬॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਕੁੰਟ ਚਾਰਿ ਦਹ ਦਿਸਿ ਭਰਮੇ ਕਰਮ ਕਿਰਤਿ ਕੀ ਰੇਖ ॥ ਸੂਖ ਦ੍ਰਾਖ ਮੁਕਤਿ ਜੋਨਿ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆਂ ਲੇਖ
 ॥੧॥ ਪਵੜੀ ॥ ਕਕਾ ਕਾਰਨ ਕਰਤਾ ਸੋਊ ॥ ਲਿਖਿਆਂ ਲੇਖੁ ਨ ਮੇਟਤ ਕੋਊ ॥ ਨਹੀ ਹੋਤ ਕਛੁ ਦੋਊ ਬਾਰਾ ॥ ਕਰਨੈਹਾਰੁ
 ਨ ਭੂਲਨਹਾਰਾ ॥ ਕਾਹੂ ਪਥੁ ਦਿਖਾਰੈ ਆਪੈ ॥ ਕਾਹੂ ਉਦਿਆਨ ਭਰਮਤ ਪਛੁਤਾਪੈ ॥ ਆਪਨ ਖੇਲੁ ਆਪ ਹੀ ਕੀਨੋ ॥
 ਜੋ ਜੋ ਦੀਨੋ ਸੁ ਨਾਨਕ ਲੀਨੋ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਖਾਤ ਖਰਚਤ ਬਿਲਛਤ ਰਹੇ ਟ੍ਰੂਟਿ ਨ ਜਾਹਿ ਭੰਡਾਰ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਜਪਤ ਅਨੇਕ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਹਿ ਸੁਮਾਰ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਖਖਾ ਖੂਨਾ ਕਛੁ ਨਹੀ ਤਿਸੁ ਸੰਮਰਥ ਕੈ ਪਾਹਿ ॥ ਜੋ ਦੇਨਾ
 ਸੋ ਦੇ ਰਹਿਆਂ ਭਾਵੈ ਤਹ ਤਹ ਜਾਹਿ ॥ ਖਰਚੁ ਖਯਾਨਾ ਨਾਮ ਧਨੁ ਇਆ ਭਗਤਨ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥ ਖਿਮਾ ਗਰੀਬੀ ਅਨਦ
 ਸਹਜ ਜਪਤ ਰਹਹਿ ਗੁਣਤਾਸ ॥ ਖੇਲਹਿ ਬਿਗਸਹਿ ਅਨਦ ਸਿਤ ਜਾ ਕਤ ਹੋਤ ਕ੃ਪਾਲ ॥ ਸਦੀਵ ਗਨੀਵ ਸੁਹਾਵਨੇ
 ਰਾਮ ਨਾਮ ਗ੍ਰਹਿ ਮਾਲ ॥ ਖੇਟੁ ਨ ਦ੍ਰਾਖੁ ਨ ਡਾਨੁ ਤਿਹ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਿਆ ਪ੍ਰੀ

ਤਿਨਾ ਪਰੀ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਗਨਿ ਮਿਨਿ ਦੇਖਹੁ ਮਨੈ ਮਾਹਿ ਸਰਪਰ ਚਲਨੋ ਲੋਗ ॥ ਆਸ ਅਨਿਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਟੈ
 ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਅਰੋਗ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਗਗਾ ਗੋਬਿਦ ਗੁਣ ਰਵਹੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਜਪਿ ਨੀਤ ॥ ਕਹਾ ਬਿਸਾਸਾ ਦੇਹ
 ਕਾ ਬਿਲਮ ਨ ਕਰਿਹੋ ਮੀਤ ॥ ਨਹ ਬਾਰਿਕ ਨਹ ਜੋਬਨੈ ਨਹ ਬਿਰਥੀ ਕਛੁ ਬੰਧੁ ॥ ਓਹ ਬੇਰਾ ਨਹ ਬ੍ਰਝੀਐ ਜਤ
 ਆਇ ਪਰੈ ਜਮ ਫੰਧੁ ॥ ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਚਤੁਰ ਪੇਖਿ ਰਹਨੁ ਨਹੀਂ ਇਹ ਠਾਇ ॥ ਛਾਡਿ ਛਾਡਿ ਸਗਲੀ ਗੱਈ
 ਮੂੜ ਤਹਾ ਲਪਟਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਿਮਰਤ ਰਹੈ ਜਾਹੂ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ॥ ਨਾਨਕ ਆਏ ਸਫਲ ਤੇ ਜਾ ਕਤ
 ਪ੃ਅਹਿ ਸੁਹਾਗ ॥੧੯॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਘੋਖੇ ਸਾਸਕ ਬੇਦ ਸਭ ਆਨ ਨ ਕਥਤਤ ਕੋਇ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਹੁਣਿ ਹੋਕਤ
 ਨਾਨਕ ਏਕੈ ਸੋਇ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਘਧਾ ਘਾਲਹੁ ਮਨਹਿ ਏਹ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਦੂਸਰ ਨਾਹਿ ॥ ਨਹ ਹੋਆ ਨਹ ਹੋਕਨਾ
 ਜਤ ਕਤ ਓਹੀ ਸਮਾਹਿ ॥ ਘੁਲਹਿ ਤਤ ਮਨ ਜਤ ਆਵਹਿ ਸਰਨਾ ॥ ਨਾਮ ਤਤੁ ਕਲਿ ਮਹਿ ਪੁਨਹਚਰਨਾ ॥ ਘਾਲਿ
 ਘਾਲਿ ਅਨਿਕ ਪਛੁਤਾਵਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਕਹਾ ਥਿਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥ ਘੋਲਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਤਿਹ ਪੀਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਰਿ ਜਾ ਕਤ ਦੀਆ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਡਣਿ ਘਾਲੇ ਸਭ ਦਿਵਸ ਸਾਸ ਨਹ ਬਢਨ ਘਟਨ ਤਿਲੁ ਸਾਰ
 ॥ ਜੀਵਨ ਲੋਰਹਿ ਭਰਮ ਮੋਹ ਨਾਨਕ ਤੇਊ ਗਵਾਰ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਡੰਡਾ ਝਾਸੈ ਕਾਲੁ ਤਿਹ ਜੋ ਸਾਕਤ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨ ॥
 ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਜਨਮਹਿ ਮਰਹਿ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਨ ਚੀਨ ॥ ਡਿਆਨ ਧਿਆਨ ਤਾਹੂ ਕਤ ਆਏ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਹ
 ਆਪਿ ਦਿਵਾਏ ॥ ਡਣਤੀ ਡਣੀ ਨਹੀਂ ਕੋਊ ਛੂਟੈ ॥ ਕਾਚੀ ਗਾਗਰਿ ਸਰਪਰ ਫੂਟੈ ॥ ਸੋ ਜੀਵਤ ਜਿਹ ਜੀਵਤ ਜਪਿਆ
 ॥ ਪ੍ਰਗਟ ਭਏ ਨਾਨਕ ਨਹ ਛਪਿਆ ॥੨੧॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਚਿਤਿ ਚਿਤਵਤ ਚਰਣਾਰਬਿੰਦ ਊਥ ਕਵਲ ਬਿਗਸਾਂਤ ॥
 ਪ੍ਰਗਟ ਭਏ ਆਪਹਿ ਗੁੰਬਿੰਦ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਮਤਾਂਤ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਚਚਾ ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੁਰ ਲਾਗਾ ॥ ਧਨਿ ਧਨਿ
 ਤਉ ਦਿਨ ਸੰਜੋਗ ਸਭਾਗਾ ॥ ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਦਹ ਦਿਸਿ ਭ੍ਰਮਿ ਆਇਆਂਓ ॥ ਭਈ ਕ੃ਪਾ ਤਬ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆਂਓ ॥ ਚਾਰ
 ਬਿਚਾਰ ਬਿਨਸਿਆਂਓ ਸਭ ਦੂਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲ ਹੂਆ ॥ ਚਿੰਤ ਬਿਸਾਰੀ ਏਕ ਦੂਸਟੇਤਾ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਜਿਹ ਨੇਕਾ ॥੨੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਛਾਤੀ ਸੀਤਲ ਮਨੁ ਸੁਖੀ ਛੰਤ ਗੋਬਿਦ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥ ਐਸੀ ਕਿਰਪਾ
 ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਇ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਛਛਾ ਛੋਹਰੇ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਦਾਸ ਦਾਸਨ ਕੇ ਪਾਨੀਹਾਰੇ ॥ ਛਛਾ

ਛਾਰੁ ਹੋਤ ਤੇਰੈ ਸੰਤਾ ॥ ਅਪਨੀ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਭਗਵਂਤਾ ॥ ਛਾਡਿ ਸਿਆਨਪ ਬਹੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਸੰਤਨ ਕੀ ਮਨ ਟੇਕ
 ਟਿਕਾਈ ॥ ਛਾਰੁ ਕੀ ਪੁਤਰੀ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਤ ਸੰਤ ਸਹਾਈ ॥੨੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਜੋਰ ਜੁਲਮ
 ਫੂਲਹਿ ਘਨੋ ਕਾਚੀ ਦੇਹ ਬਿਕਾਰ ॥ ਅਛ਼ਬੁਧਿ ਬੰਧਨ ਪਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਛੁਟਾਰ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਜਾ ਜਾਨੈ ਹਤ ਕਛੁ
 ਹ੍ਰਾਂਆ ॥ ਬਾਧਿਓ ਜਿਤ ਨਲਿਨੀ ਭਰਮੀ ਸ੍ਰੂਆ ॥ ਜਤ ਜਾਨੈ ਹਤ ਭਗਤੁ ਗਿਆਨੀ ॥ ਆਗੈ ਠਾਕੁਰਿ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਮਾਨੀ
 ॥ ਜਤ ਜਾਨੈ ਮੈ ਕਥਨੀ ਕਰਤਾ ॥ ਬਿਆਪਾਰੀ ਬਸੁਧਾ ਜਿਤ ਫਿਰਤਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਿਹ ਹਤਮੈ ਮਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ
 ਤਾ ਕਤ ਮਿਲੇ ਮੁਗਰੀ ॥੨੪॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਝਾਲਾਧੇ ਉਠਿ ਨਾਮੁ ਜਧਿ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਆਰਾਧਿ ॥ ਕਾਹੂ ਤੁੜੈ ਨ
 ਬਿਆਪੈ ਨਾਨਕ ਮਿਟੈ ਤੁਪਾਧਿ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਝੜਾ ਝੂਰਨੁ ਮਿਟੈ ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਿਤ ਕਰਿ ਬਿਤਹਾਰੇ ॥
 ਝੂਰਤ ਝੂਰਤ ਸਾਕਤ ਸ੍ਰੂਆ ॥ ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਹੋਤ ਭਾਤ ਬੀਆ ॥ ਝਰਹਿ ਕਸ਼ਮਲ ਪਾਪ ਤੇਰੇ ਮਨੂਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਥਾ
 ਸੰਤਸੰਗਿ ਸੁਨੂਆ ॥ ਝਰਹਿ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਦੁਸਟਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਤ ਕ੃ਪਾ ਗੁਸਾਈ ॥੨੫॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਜਤਨ ਕਰਹੁ
 ਤੁਮ ਅਨਿਕ ਬਿਧਿ ਰਹਨੁ ਨ ਪਾਵਹੁ ਮੀਤ ॥ ਜੀਵਤ ਰਹਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਜਹੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਪਰੀਤਿ ॥੧॥ ਪਵੜੀ ॥
 ਯੰਭਾ ਜਾਣਹੁ ਵੂਦੂ ਸਹੀ ਬਿਨਸਿ ਜਾਤ ਏਹ ਹੇਤ ॥ ਗਣਤੀ ਗਣਤ ਨ ਗਣਿ ਸਕਤ ਊਠਿ ਸਿਧਾਰੇ ਕੇਤ ॥ ਜੋ
 ਪੇਖਤ ਸੋ ਬਿਨਸਤਤ ਕਾ ਸਿਤ ਕਰੀਐ ਸੰਗੁ ॥ ਜਾਣਹੁ ਇਆ ਬਿਧਿ ਸਹੀ ਚਿਤ ਝੂਠਤ ਮਾਇਆ ਰੰਗੁ ॥ ਜਾਣਤ
 ਸੋਈ ਸੰਤੁ ਸੁਝਿ ਭ੍ਰਮ ਤੇ ਕੀਚਿਤ ਭਿਨਨ ॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਤਿਹ ਕਢਹੁ ਜਿਹ ਹੋਵਹੁ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ॥ ਜਾ ਕੈ ਹਾਥਿ ਸਮਰਥ ਤੇ
 ਕਾਰਨ ਕਰਨੈ ਜੋਗ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਤੁਸਤਤਿ ਕਰਤ ਜਾਹੂ ਕੀਓ ਸੰਜੋਗ ॥੨੬॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਟ੍ਰੈਟੇ ਬੰਧਨ ਜਨਮ
 ਮਰਨ ਸਾਧ ਸੇਵ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਹੁ ਨ ਬੀਸਰੈ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗੋਬਿਦ ਰਾਇ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਟਹਲ ਕਰਹੁ
 ਤਤ ਏਕ ਕੀ ਜਾ ਤੇ ਬੂਥਾ ਨ ਕੋਇ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਹੀਐ ਕਈ ਜੋ ਚਾਹਹੁ ਸੋ ਹੋਇ ॥ ਟਹਲ ਮਹਲ ਤਾ ਕਤ
 ਮਿਲੈ ਜਾ ਕਤ ਸਾਧ ਕ੃ਪਾਲ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਤਤ ਕਬੈ ਜਤ ਆਪਨ ਹੋਹਿ ਦਿਇਆਲ ॥ ਟੋਹੇ ਟਾਹੇ ਬਹੁ ਭਵਨ
 ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੁਖੁ ਨਾਹਿ ॥ ਟਲਹਿ ਜਾਮ ਕੇ ਟ੍ਰੈਤ ਤਿਹ ਜੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਬਾਰਿ ਬਾਰਿ ਜਾਤ ਸੰਤ ਸਦਕੇ ॥
 ਨਾਨਕ ਪਾਪ ਬਿਨਾਸੇ ਕਦਿ ਕੇ ॥੨੭॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਠਾਕ ਨ ਹੋਤੀ ਤਿਨਹੁ ਦਰਿ ਜਿਹ ਹੋਵਹੁ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ॥ ਜੋ ਜਨ

ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੇ ਕਰੇ ਨਾਨਕ ਤੇ ਧਨਿ ਧੰਨਿ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਠਠਾ ਮਨੂਆ ਠਾਹਹਿ ਨਾਹੀ ॥ ਜੋ ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ
 ਏਕਹਿ ਲਪਟਾਹੀ ॥ ਠਹਕਿ ਠਹਕਿ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ਮੌਏ ॥ ਤਆ ਕੈ ਕੁਸਲ ਨ ਕਤਹੂ ਹ੍ਰਾਏ ॥ ਠਾਂਢਿ ਪਰੀ ਸੰਤਹ
 ਸੰਗਿ ਬਸਿਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਤਹਾ ਜੀਅ ਰਸਿਆ ॥ ਠਾਕੁਰ ਅਪੁਨੇ ਜੋ ਜਨੁ ਭਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤਆ ਕਾ ਮਨੁ
 ਸੀਤਲਾਇਆ ॥੨੮॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਡੰਡਤਿ ਬੰਦਨ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਸਰਬ ਕਲਾ ਸਮਰਥ ॥ ਡੋਲਨ ਤੇ ਰਾਖਹੁ ਪ੍ਰਭੂ
 ਨਾਨਕ ਦੇ ਕਰਿ ਹਥ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਡਡਾ ਡੇਰਾ ਇਹੁ ਨਹੀ ਜਹ ਡੇਰਾ ਤਹ ਜਾਨੁ ॥ ਤਆ ਡੇਰਾ ਕਾ ਸੰਜਮੋ ਗੁਰ ਕੈ
 ਸਬਦਿ ਪਛਾਨੁ ॥ ਇਆ ਡੇਰਾ ਕਤ ਸ਼ਰਮੁ ਕਰਿ ਘਾਲੈ ॥ ਜਾ ਕਾ ਤਸ੍ਰੂ ਨਹੀ ਸੰਗਿ ਚਾਲੈ ॥ ਤਆ ਡੇਰਾ ਕੀ ਸੋ ਮਿਤਿ
 ਜਾਨੈ ॥ ਜਾ ਕਤ ਦੂਸਟਿ ਪੂਰਨ ਭਗਵਾਨੈ ॥ ਡੇਰਾ ਨਿਹਚਲੁ ਸਚੁ ਸਾਧਸੰਗ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਨਹ
 ਡੋਲਾਇਆ ॥੨੯॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਢਾਹਨ ਲਾਗੇ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਿਨਹਿ ਨ ਘਾਲਿਓ ਬੰਧ ॥ ਨਾਨਕ ਤਕਰੇ ਜਪਿ ਹਰੀ
 ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਨਬੰਧ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਢਢਾ ਢੂਢਤ ਕਹ ਫਿਰਹੁ ਢੂਢਨੁ ਇਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਸੰਗਿ ਤੁਹਾਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਕਥੈ
 ਬਨੁ ਬਨੁ ਕਹਾ ਫਿਰਾਹਿ ॥ ਫੇਰੀ ਢਾਹਹੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਅਛਾਕੁਦਿ ਬਿਕਰਾਲ ॥ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਸਹਜੇ ਬਸਹੁ ਦਰਸਨੁ
 ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲ ॥ ਫੇਰੀ ਜਾਮੈ ਜਮਿ ਮਰੈ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਦੁਖ ਪਾਇ ॥ ਮੋਹ ਮਗਨ ਲਪਟਤ ਰਹੈ ਹਤ ਹਤ ਆਵੈ ਜਾਇ
 ॥ ਢਹਤ ਢਹਤ ਅਬ ਢਹਿ ਪਰੇ ਸਾਧ ਜਨਾ ਸਰਨਾਇ ॥ ਦੁਖ ਕੇ ਫਾਹੇ ਕਾਟਿਆ ਨਾਨਕ ਲੀਏ ਸਮਾਇ ॥੩੦॥
 ਸਲੋਕੁ ॥ ਜਹ ਸਾਧੂ ਗੋਬਿਦ ਭਜਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਨਾਨਕ ਨੀਤ ॥ ਣਾ ਹਤ ਣਾ ਤ੍ਰਾਂ ਣਹ ਛੁਟਹਿ ਨਿਕਟਿ ਨ ਜਾਈਅਹੁ
 ਢੂਤ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਣਾਣਾ ਰਣ ਤੇ ਸੀਝੀਐ ਆਤਮ ਜੀਤੈ ਕੋਇ ॥ ਹਤਮੈ ਅਨ ਸਿਤ ਲਹਿ ਮਰੈ ਸੋ ਸੋਭਾ ਢੂ
 ਹੋਇ ॥ ਮਣੀ ਮਿਟਾਇ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਉਪਦੇਸ ॥ ਮਨੂਆ ਜੀਤੈ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਤਿਹ ਸੂਰਤਣ ਵੇਸ ॥
 ਣਾ ਕੋ ਜਾਣੈ ਆਪਣੇ ਏਕਹਿ ਟੇਕ ਅਧਾਰ ॥ ਰੈਣ ਦਿਣਸੁ ਸਿਮਰਤ ਰਹੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰ ॥ ਰੇਣ
 ਸਗਲ ਇਆ ਮਨੁ ਕਰੈ ਏਤੁ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਹੁਕਮੈ ਬੂੜ੍ਹੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇ ॥੩੧॥
 ਸਲੋਕੁ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਅਰਪਤ ਤਿਸੈ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਵੈ ਮੋਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਭਰਮ ਭਤ ਕਾਟੀਐ ਚੂਕੈ ਜਮ ਕੀ
 ਜੋਹ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤਤਾ ਤਾ ਸਿਤ ਪ੍ਰੇਤਿ ਕਰਿ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗੋਬਿਦ ਰਾਇ ॥ ਫਲ ਪਾਵਹਿ ਮਨ ਬਾਛਤੇ

तपति तुहारी जाइ ॥ तास मिटै जम पंथ की जासु बसै मनि नाउ ॥ गति पावहि मति होइ प्रगास
 महली पावहि ठाउ ॥ ताहू संगि न धनु चलै गृह जोबन नह राज ॥ संतसंगि सिमरत रहहु इहै
 तुहारै काज ॥ ताता कछू न होई है जउ ताप निवारै आप ॥ प्रतिपालै नानक हमहि आपहि माई
 बाप ॥ ੩੨ ॥ सलोकु ॥ थाके बहु बिधि घालते तृपति न तृसना लाथ ॥ संचि संचि साकत मूए नानक
 माइआ न साथ ॥ ੧ ॥ पउड़ी ॥ थथा थिरु कोऊ नही काइ पसारहु पाव ॥ अनिक बंच बल छल करहु
 माइआ एक उपाव ॥ थैली संचहु स्रमु करहु थाकि परहु गावार ॥ मन कै कामि न आवई अंते
 अउसर बार ॥ थिति पावहु गोबिद भजहु संतह की सिख लेहु ॥ प्रीति करहु सद एक सिउ इआ साचा
 असनेहु ॥ कारन करन करावनो सभ बिधि एकै हाथ ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि नानक जंत
 अनाथ ॥ ੩੩ ॥ सलोकु ॥ दासह एकु निहारिआ सभु कछु देवनहार ॥ सासि सासि सिमरत रहहि नानक
 दरस अधार ॥ ੧ ॥ पउड़ी ॥ ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार ॥ देंदे तोटि न आवई अगनत भरे
 भंडार ॥ दैनहारु सद जीवनहारा ॥ मन मूरख किउ ताहि बिसारा ॥ दोसु नही काहू कउ मीता ॥
 माइआ मोह बंधु प्रभि कीता ॥ दरद निवारहि जा के आपे ॥ नानक ते ते गुरमुखि धापे ॥ ੩੪ ॥ सलोकु ॥
 धर जीअरे इक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥ नानक नामु धिआईअै कारजु आवै रासि ॥ ੧ ॥ पउड़ी ॥
 धधा धावत तउ मिटै संतसंगि होइ बासु ॥ धुर ते किरपा करहु आपि तउ होइ मनहि परगासु ॥ धनु
 साचा तेऊ सच साहा ॥ हरि हरि पूंजी नाम बिसाहा ॥ धीरजु जसु सोभा तिह बनिआ ॥ हरि हरि
 नामु स्रवन जिह सुनिआ ॥ गुरमुखि जिह घटि रहे समाई ॥ नानक तिह जन मिली वडाई ॥ ੩੫ ॥
 सलोकु ॥ नानक नामु नामु जपु जपिआ अंतरि बाहरि रंगि ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ नरकु नाहि साधसंगि
 ॥ ੧ ॥ पउड़ी ॥ न्नना नरकि परहि ते नाही ॥ जा कै मनि तनि नामु बसाही ॥ नामु निधानु गुरमुखि
 जो जपते ॥ बिखु माइआ महि ना ओड़ि खपते ॥ न्ननाकारु न होता ता कहु ॥ नामु मंत्रु गुरि दीनो जा कहु

॥ ਨਿਧਿ ਨਿਧਾਨ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਪੂਰੇ ॥ ਤਹ ਬਾਜੇ ਨਾਨਕ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥੩੬॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਪਤਿ ਰਾਖੀ ਗੁਰਿ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤਜਿ ਪਰਪੰਚ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਊ ਆਰਾਧੀਐ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਪਪਾ
 ਪਰਮਿਤਿ ਪਾਰੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਅਗਮ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਹੋਤ ਪੁਨੀਤ ਕੋਟ ਅਪਰਾਥੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ
 ਜਪਹਿ ਮਿਲਿ ਸਾਧੁ ॥ ਪਰਪਚ ਧੋਹ ਮੋਹ ਮਿਟਨਾਈ ॥ ਜਾ ਕਤ ਰਾਖਹੁ ਆਪਿ ਗੁਸਾਈ ॥ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਛਤ ਸਿਰ
 ਸੋਊ ॥ ਨਾਨਕ ਦੂਸਰ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਊ ॥੩੭॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਫਾਹੇ ਕਾਟੇ ਮਿਟੇ ਗਵਨ ਫਤਿਹ ਭਈ ਮਨਿ ਜੀਤ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰ ਤੇ ਥਿਤ ਪਾਈ ਫਿਰਨ ਮਿਟੇ ਨਿਤ ਨੀਤ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਫਫਾ ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਤੂ ਆਇਆ ॥ ਦੁਲਭ ਟੇਹ
 ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ॥ ਫਿਰਿ ਇਆ ਅਤਸਰੁ ਚਰੈ ਨ ਹਾਥਾ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਤਤ ਕਟੀਅਹਿ ਫਾਸਾ ॥ ਫਿਰਿ
 ਫਿਰਿ ਆਵਨ ਜਾਨੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਏਕਹਿ ਏਕ ਜਪਹੁ ਜਪੁ ਸੋਈ ॥ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਪ੍ਰਭ ਕਰਨੈਹਾਰੇ ॥ ਮੇਲਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ
 ਕੇਚਾਰੇ ॥੩੮॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਬਿਨਤ ਸੁਨਹੁ ਤੁਮ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ਗੁਪਾਲ ॥ ਸੁਖ ਸੰਪੈ ਬਹੁ ਭੋਗ ਰਸ
 ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਰਖਾਲ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਬਬਾ ਬ੍ਰਹਮੁ ਜਾਨਤ ਤੇ ਬ੍ਰਹਮਾ ॥ ਬੈਸਨੌ ਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਚ ਧਰਮਾ ॥ ਬੀਰਾ
 ਆਪਨ ਬੁਰਾ ਮਿਟਾਵੈ ॥ ਤਾਹੂ ਬੁਰਾ ਨਿਕਟਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥ ਬਾਧਿਓ ਆਪਨ ਹਤ ਹਤ ਬੰਧਾ ॥ ਦੋਸੁ ਦੇਤ ਆਗਹ
 ਕਤ ਅੰਧਾ ॥ ਬਾਤ ਚੀਤ ਸਭ ਰਹੀ ਸਿਆਨਪ ॥ ਜਿਸਹਿ ਜਨਾਵਹੁ ਸੋ ਜਾਨੈ ਨਾਨਕ ॥੩੯॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਭੈ ਭੰਜਨ
 ਅਘ ਦੂਖ ਨਾਸ ਮਨਹਿ ਅਰਾਧਿ ਹਰੇ ॥ ਸਾਂਤਸਾਂਗ ਜਿਹ ਰਿਦ ਬਸਿਓ ਨਾਨਕ ਤੇ ਨ ਭਰਮੇ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਭ੍ਰਮਾ
 ਭਰਮੁ ਮਿਟਾਵਹੁ ਅਪਨਾ ॥ ਇਆ ਸੰਸਾਰੁ ਸਗਲ ਹੈ ਸੁਪਨਾ ॥ ਭਰਮੇ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ॥ ਭਰਮੇ ਸਿਧ
 ਸਾਧਿਕ ਬ੍ਰਹਮੇਵਾ ॥ ਭਰਮਿ ਭਰਮਿ ਮਾਨੁਖ ਝਹਕਾਏ ॥ ਦੁਤਰ ਮਹਾ ਬਿਖਮ ਇਹ ਮਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਮੋਹ
 ਮਿਟਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇਹ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ॥੪੦॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਮਾਇਆ ਡੋਲੈ ਬਹੁ ਬਿਧੀ ਮਨੁ ਲਪਟਿਓ
 ਤਿਹ ਸਾਂਗ ॥ ਮਾਗਨ ਤੇ ਜਿਹ ਤੁਮ ਰਖਹੁ ਸੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮਹਿ ਰੰਗ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਮਮਾ ਮਾਗਨਹਾਰ ਇਆਨਾ ॥
 ਦੇਨਹਾਰ ਦੇ ਰਹਿਓ ਸੁਜਾਨਾ ॥ ਜੋ ਦੀਨੋ ਸੋ ਏਕਹਿ ਬਾਰ ॥ ਮਨ ਸੂਰਖ ਕਹ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰ ॥ ਜਤ ਮਾਗਹਿ
 ਤਤ ਮਾਗਹਿ ਬੀਆ ॥ ਜਾ ਤੇ ਕੁਸਲ ਨ ਕਾਹੂ ਥੀਆ ॥ ਮਾਗਨਿ ਮਾਗ ਤ ਏਕਹਿ ਮਾਗ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾ ਤੇ ਪਰਹਿ

ਪਰਾਗ ॥੪੧॥ ਸਲੋਕ ॥ ਮਤਿ ਪੂਰੀ ਪਰਥਾਨ ਤੇ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਮਨ ਮੰਤ ॥ ਜਿਹ ਜਾਨਿਐ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੁਨਾ ਨਾਨਕ ਤੇ
 ਭਗਵਾਂਤ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਮਮਾ ਜਾਹੂ ਮਰਮੁ ਪਛਾਨਾ ॥ ਭੇਟਤ ਸਾਧਸੰਗ ਪਤੀਆਨਾ ॥ ਦੁਖ ਸੁਖ ਤਾਅ ਕੈ ਸਮਤ
 ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਰਹਤ ਅਤਾਰਾ ॥ ਤਾਹੂ ਸੰਗ ਤਾਹੂ ਨਿਰਲੇਪਾ ॥ ਪੂਰਨ ਘਟ ਘਟ ਪੁਰਖ ਬਿਸੇਖਾ ॥
 ਤਾਅ ਰਸ ਮਹਿ ਤਾਅਹੂ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਲਿਪਤ ਨਹੀ ਤਿਹ ਮਾਇਆ ॥੪੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਧਾਰ ਮੀਤ
 ਸੁਨਿ ਸਾਜਨਹੁ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਛੂਟਨੁ ਨਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਬੰਧਨ ਕਟੇ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਨੀ ਪਾਹਿ ॥੧॥ ਪਵਡੀ ॥
 ਧਧਾ ਜਤਨ ਕਰਤ ਬਹੁ ਬਿਧੀਆ ॥ ਏਕ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਹ ਲਤ ਸਿਧੀਆ ॥ ਧਾਹੂ ਜਤਨ ਕਰਿ ਹੋਤ ਛੁਟਾਰਾ ॥
 ਤਾਅਹੂ ਜਤਨ ਸਾਧ ਸੰਗਾਰਾ ॥ ਧਾ ਤਥਰਨ ਧਾਰੈ ਸਭੁ ਕੋਊ ॥ ਤਾਅਹਿ ਜਪੇ ਬਿਨੁ ਤਥਰ ਨ ਹੋਊ ॥ ਧਾਹੂ ਤਰਨ
 ਤਾਰਨ ਸਮਰਾਥਾ ॥ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਨਿਰਗੁਨ ਨਰਨਾਥਾ ॥ ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮ ਜਿਹ ਆਪਿ ਜਨਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਹ
 ਮਤਿ ਪ੍ਰਗਟੀ ਆਈ ॥੪੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਰੋਸੁ ਨ ਕਾਹੂ ਸੰਗ ਕਰਹੁ ਆਪਨ ਆਪੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਹੋਇ ਨਿਮਾਨਾ ਜਗਿ
 ਰਹਹੁ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਰਿ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਰਾਰਾ ਰੇਨ ਹੋਤ ਸਭ ਜਾ ਕੀ ॥ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਛੁਟੈ ਤੇਰੀ ਬਾਕੀ ॥
 ਰਣ ਦਰਗਹਿ ਤਤ ਸੀਝਹਿ ਭਾਈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਰਹਤ ਰਹਤ ਰਹਿ ਜਾਹਿ ਬਿਕਾਰਾ
 ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਰਾਤੇ ਰੰਗ ਨਾਮ ਰਸ ਮਾਤੇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਰ ਕੀਨੀ ਦਾਤੇ ॥੪੪॥ ਸਲੋਕੁ ॥
 ਲਾਲਚ ਝੂਠ ਬਿਖੈ ਬਿਆਧਿ ਇਆ ਦੇਹੀ ਮਹਿ ਬਾਸ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੀਆ ਨਾਨਕ ਸ੍ਰੀਖਿ
 ਨਿਵਾਸ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਲਲਾ ਲਾਵਤ ਅਤਖਥ ਜਾਹੂ ॥ ਦ੍ਰੂਖ ਦਰਦ ਤਿਹ ਮਿਟਹਿ ਖਿਨਾਹੂ ॥ ਨਾਮ ਅਤਖਥੁ
 ਜਿਹ ਰਿਦੈ ਹਿਤਾਵੈ ॥ ਤਾਹਿ ਰੋਗੁ ਸੁਪਨੈ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥ ਹਰਿ ਅਤਖਥੁ ਸਭ ਘਟ ਹੈ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਬਿਨੁ ਬਿਧਿ
 ਨ ਬਨਾਈ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸੰਜਮੁ ਕਰਿ ਦੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤਤ ਫਿਰਿ ਦ੍ਰੂਖ ਨ ਥੀਆ ॥੪੫॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਵਾਸੁਦੇਵ
 ਸਰਬਤ ਮੈ ਊਨ ਨ ਕਤਹੂ ਠਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੰਗਿ ਹੈ ਨਾਨਕ ਕਾਇ ਦੁਰਾਇ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਕਵਾ
 ਕੈਰੁ ਨ ਕਰੀਐ ਕਾਹੂ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮ ਸਮਾਹੂ ॥ ਵਾਸੁਦੇਵ ਜਲ ਥਲ ਮਹਿ ਰਵਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
 ਵਿਰਲੈ ਹੀ ਗਵਿਆ ॥ ਕੈਰ ਕਿਰੋਧ ਮਿਟੇ ਤਿਹ ਮਨ ਤੇ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋ ਸੁਨਤੇ ॥ ਵਰਨ ਚਿਹਨ

ਸਗਲਹ ਤੇ ਰਹਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋ ਕਹਤਾ ॥੪੬॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਹਉ ਹਉ ਕਰਤ ਬਿਹਾਨੀਆ
 ਸਾਕਤ ਮੁਗਧ ਅਜਾਨ ॥ ਝੜਕਿ ਮੁਏ ਜਿਤ ਤ੍ਰਖਾਵਂਤ ਨਾਨਕ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਨ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਡਾਡਾ ਡਾਡਿ
 ਮਿਟੈ ਸੰਗਿ ਸਾਥੂ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਤਤੁ ਨਾਮ ਅਰਾਧੂ ॥ ਰੱਡੋ ਜਿਹ ਬਸਿਓ ਰਿਦ ਮਾਹੀ ॥ ਤਾਂਕੀ ਕੀ ਡਾਡਿ ਮਿਟਿ
 ਬਿਨਸਾਹੀ ॥ ਡਾਡਿ ਕਰਤ ਸਾਕਤ ਗਾਵਾਰਾ ॥ ਜੇਹ ਹੀਐ ਅਛਾਬੁਧਿ ਬਿਕਾਰਾ ॥ ਡਾਡਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਡਾਡਿ ਮਿਟਾਈ
 ॥ ਨਿਮਖ ਮਾਹਿ ਨਾਨਕ ਸਮਝਾਈ ॥੪੭॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਸਾਥੂ ਕੀ ਮਨ ਓਟ ਗਹੁ ਤਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਤਿਆਗੁ ॥ ਗੁਰ
 ਦੀਖਿਆ ਜਿਹ ਮਨਿ ਕਬੈ ਨਾਨਕ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਸਾ ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਅਥ ਹਾਰੇ ॥ ਸਾਸਕ
 ਸਿਮੂਤਿ ਬੇਦ ਪ੍ਰਕਾਰੇ ॥ ਸੋਧਤ ਸੋਧਤ ਸੋਧਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਨਹੀ ਛੁਟਕਾਰਾ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਹਮ
 ਭੂਲਨਹਾਰੇ ॥ ਤੁਮ ਸਮਰਥ ਆਗਨਤ ਅਪਾਰੇ ॥ ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਕੀ ਰਾਖੁ ਦਿਆਲਾ ॥ ਨਾਨਕ ਤੁਮਰੇ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲਾ
 ॥੪੮॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਖੁਦੀ ਮਿਟੀ ਤਕ ਸੁਖ ਭਏ ਮਨ ਤਨ ਭਏ ਅਰੋਗ ॥ ਨਾਨਕ ਦੂਸਟੀ ਆਇਆ ਤਸਤਤਿ ਕਰਨੈ
 ਜੋਗੁ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਖੁਖਾ ਖਰਾ ਸਰਾਹਉ ਤਾਹੂ ॥ ਜੋ ਖਿਨ ਮਹਿ ਊਨੇ ਸੁਭਰ ਭਰਾਹੂ ॥ ਖਰਾ ਨਿਮਾਨਾ ਹੋਤ ਪਰਾਨੀ
 ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਪੈ ਪ੍ਰਭ ਨਿਰਬਾਨੀ ॥ ਭਾਵੈ ਖਸਮ ਤ ਤਾਂ ਸੁਖੁ ਦੇਤਾ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਐਸੋ ਆਗਨਤਾ ॥ ਅਸੰਖ ਖਤੇ
 ਖਿਨ ਬਖਸਨਹਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਸਦਾ ਦਿਆਰਾ ॥੪੯॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਸਤਿ ਕਹਉ ਸੁਨਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਰਨਿ
 ਪਰਹੁ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਤਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲ ਤਿਆਗ ਨਾਨਕ ਲਏ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਸਾ ਸਿਆਨਪ
 ਛਾਡੁ ਇਆਨਾ ॥ ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਕਮਿ ਨ ਪ੍ਰਭੁ ਪਤੀਆਨਾ ॥ ਸਹਸ ਭਾਤਿ ਕਰਹਿ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਸੰਗਿ ਤੁਹਾਰੈ ਏਕ
 ਨ ਜਾਈ ॥ ਸੋਊ ਸੋਊ ਜਪਿ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ॥ ਰੇ ਜੀਅ ਚਲੈ ਤੁਹਾਰੈ ਸਾਥੀ ॥ ਸਾਥ ਸੇਵਾ ਲਾਵੈ ਜਿਹ ਆਪੈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਤਾ ਕਤ ਦ੍ਰੂਖੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥੫੦॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੁਖ ਤੇ ਬੋਲਨਾ ਮਨਿ ਕੂਠੈ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਭ
 ਮਹਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਸੋਇ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹੇਰਉ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਗਲ ਕੈ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਭਗਵਾਨ
 ॥ ਹੋਕਤ ਆਏ ਸਦ ਸਦੀਵ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ॥ ਹਉ ਛੁਟਕੈ ਹੋਇ ਅਨੰਦੁ ਤਿਹ ਹਉ ਨਾਹੀ ਤਹ ਆਪਿ
 ॥ ਹਤੇ ਦ੍ਰੂਖ ਜਨਮਹ ਮਰਨ ਸੰਤਸੰਗ ਪਰਤਾਪ ॥ ਹਿਤ ਕਰਿ ਨਾਮ ਵੂੰਡੈ ਦਿਆਲਾ ॥ ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਹੋਤ

ਕਿਰਪਾਲਾ ॥ ਓਰੈ ਕਛੂ ਨ ਕਿਨਹੂ ਕੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਛੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਹੂਆ ॥੫੧॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਲੇਖੈ ਕਤਹਿ ਨ
 ਛੂਟੀਐ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਭੂਲਨਹਾਰ ॥ ਬਖਸਨਹਾਰ ਬਖਸਿ ਲੈ ਨਾਨਕ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਲੂਣ ਹਰਾਮੀ
 ਗੁਨਹਗਾਰ ਬੇਗਾਨਾ ਅਲਪ ਮਤਿ ॥ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਜਿਨਿ ਸੁਖ ਦੀਏ ਤਾਹਿ ਨ ਜਾਨਤ ਤਤ ॥ ਲਾਹਾ ਮਾਇਆ ਕਾਰਨੇ
 ਦਹ ਦਿਸਿ ਢੂਢਨ ਜਾਇ ॥ ਦੇਵਨਹਾਰ ਦਾਤਾਰ ਪ੍ਰਭ ਨਿਮਖ ਨ ਮਨਹਿ ਬਸਾਇ ॥ ਲਾਲਚ ਝੂਠ ਬਿਕਾਰ ਮੋਹ ਇਆ
 ਸੰਪੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਲਮਘਟ ਚੋਰ ਨਿੰਦਕ ਮਹਾ ਤਿਨਹੂ ਸੰਗਿ ਬਿਹਾਇ ॥ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਖੋਟੇ ਸੰਗਿ ਖੇਰੇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਭਾਵੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਾਹਨ ਨੀਰਿ ਤਰੇ ॥੫੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਖਾਤ ਪੀਤ ਖੇਲਤ ਹਸਤ ਭਰਮੇ ਜਨਮ ਅਨੇਕ ॥
 ਭਵਜਲ ਤੇ ਕਾਢਹੁ ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਨਕ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਖੇਲਤ ਖੇਲਤ ਆਇਆ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਦੁਖ ਪਾਇ ॥ ਖੇਦ
 ਮਿਟੇ ਸਾਥੁ ਮਿਲਤ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨ ਸਮਾਇ ॥ ਖਿਮਾ ਗਹੀ ਸਚੁ ਸੰਚਿਆ ਖਾਇਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮ ॥ ਖਰੀ ਕ੃ਪਾ
 ਠਾਕੁਰ ਭੰਈ ਅਨਦ ਸ੍ਰੂਖ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਖੇਪ ਨਿਬਾਹੀ ਬਹੁਤੁ ਲਾਭ ਘਰਿ ਆਏ ਪਤਿਵੰਤ ॥ ਖਰਾ ਦਿਲਾਸਾ ਗੁਰਿ
 ਦੀਆ ਆਇ ਮਿਲੇ ਭਗਵਤਿ ॥ ਆਪਨ ਕੀਆ ਕਰਹਿ ਆਪਿ ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਆਪਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਤੁ ਸਰਾਹੀਐ ਜਿ
 ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਬਿਆਪਿ ॥੫੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਆਏ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨਾਗਤੀ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਦਿਇਆਲ ॥ ਏਕ ਅਖਰੁ
 ਹਰਿ ਮਨਿ ਬਸਤ ਨਾਨਕ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅਖਰ ਮਹਿ ਤ੃ਭਵਨ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੇ ॥ ਅਖਰ ਕਰਿ ਕਰਿ
 ਕੇਦ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਅਖਰ ਸਾਸਤ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੁਰਾਨਾ ॥ ਅਖਰ ਨਾਦ ਕਥਨ ਵਖਾਨਾ ॥ ਅਖਰ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ਭੈ ਭਰਮਾ
 ॥ ਅਖਰ ਕਰਮ ਕਿਰਤਿ ਸੁਚ ਧਰਮਾ ॥ ਦੂਸਟਿਮਾਨ ਅਖਰ ਹੈ ਜੇਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਿਰਲੇਪਾ ॥੫੪॥
 ਸਲੋਕੁ ॥ ਹਥਿ ਕਲਮਮ ਅਗੰਮ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਾਵਤੀ ॥ ਤਰਝਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਸੰਗਿ ਅਨੂਪ ਰੂਪਾਵਤੀ ॥ ਤਸਤਤਿ
 ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ਮੁਖਹੁ ਤੁਹਾਰੀਆ ॥ ਮੋਹੀ ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹੇ ਅਚੁਤ ਹੇ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਅਭਿਨਾਸੀ ਅਘਨਾਸ ॥ ਹੇ ਪੂਰਨ ਹੇ ਸਰਬ ਮੈ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਗੁਣਤਾਸ ॥ ਹੇ ਸੰਗੀ ਹੇ ਨਿਰਕਾਰ
 ਹੇ ਨਿਰਗੁਣ ਸਭ ਟੇਕ ॥ ਹੇ ਗੋਬਿਦ ਹੇ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਜਾ ਕੈ ਸਦਾ ਬਿਕੇਕ ॥ ਹੇ ਅਪਰੰਪਰ ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਹਿ ਭੀ
 ਹੋਵਨਹਾਰ ॥ ਹੇ ਸੰਤਹ ਕੈ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਨਿਧਾਰਾ ਆਧਾਰ ॥ ਹੇ ਠਾਕੁਰ ਹਤ ਦਾਸਰੇ ਮੈ ਨਿਰਗੁਨ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥

ਨਾਨਕ ਦੀਜੈ ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਰਾਖਤ ਹੀਐ ਪਰੋਇ ॥੫੫॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਮਾਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਪਿਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਸੁਆਮੀ
ਪਰਮੇਸੁਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਸਖਾ ਅਗਿਆਨ ਭੰਜਨੁ ਗੁਰਦੇਵ ਬਂਧਿਪ ਸਹੋਦਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਪਦੇਸੈ
ਗੁਰਦੇਵ ਮੰਤੁ ਨਿਰੋਧਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਸਾਁਤਿ ਸਤਿ ਬੁਧਿ ਮੂਰਤਿ ਗੁਰਦੇਵ ਪਾਰਸ ਪਰਸ ਪਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਤੀਰਥੁ
ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਰੋਵਰੁ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਮਜਨੁ ਅਪਰੰਪਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਕਰਤਾ ਸਭਿ ਪਾਪ ਹਰਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਪਤਿ
ਪਵਿਤ ਕਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਗੁਰਦੇਵ ਮੰਤੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਉਧਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਸਂਗਤਿ ਪ੍ਰਭ
ਮੇਲਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਮ ਮੂੜ੍ਹ ਪਾਪੀ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰਾ ॥ ਗੁਰਦੇਵ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਗੁਰਦੇਵ
ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਮਸਕਰਾ ॥੧॥ ਏਹੁ ਸਲੋਕੁ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਪੜਣਾ ॥

ਗਤੜੀ ਸੁਖਮਨੀ ਮਃ ੫ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਦਿ ਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥ ਜੁਗਾਦਿ ਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥ ਸਤਿਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰਦੇਵਏ ਨਮਹ ॥੧॥ ਅਸਟਪਦੀ
॥ ਸਿਮਰਤ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਤ ॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਤਨ ਮਾਹਿ ਮਿਟਾਵਤ ॥ ਸਿਮਰਤ ਜਾਸੁ ਬਿਸੁੰਭਰ
ਏਕੈ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਅਗਨਤ ਅਨੇਕੈ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਸੁਧਾਖ਼ਧਰ ॥ ਕੀਨੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਇਕ ਆਖ਼ਧਰ ॥
ਕਿਨਕਾ ਏਕ ਜਿਸੁ ਜੀਅ ਬਸਾਵੈ ॥ ਤਾ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਗਨੀ ਨ ਆਵੈ ॥ ਕਾਂਖੀ ਏਕੈ ਦਰਸ ਤੁਹਾਰੋ ॥ ਨਾਨਕ ਤਨ
ਸੰਗਿ ਮੋਹਿ ਉਧਾਰੋ ॥੧॥ ਸੁਖਮਨੀ ਸੁਖ ਅੰਮ੍ਰਤ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ
ਸਿਮਰਨਿ ਗਰਭਿ ਨ ਬਸੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਟ੍ਰੂਖੁ ਜਮੁ ਨਸੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਾਲੁ ਪਰਹਹੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ
ਦੁਸਮਨੁ ਟਰੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਤ ਕਛੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ
ਭਤ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦੁਖੁ ਨ ਸੰਤਾਪੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸਿਮਰਨੁ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕ
ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਤ ਨਿਧਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਤਤੁ ਬੁਧਿ
॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਜਪ ਤਪ ਪ੍ਰੂਜਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਬਿਨਸੈ ਟ੍ਰੂਜਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨੀ ॥
ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦਰਗਹ ਮਾਨੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਛੋਡਿ ਸੁ ਭਲਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸੁਫਲ ਫਲਾ ॥ ਸੇ

सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥ प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ
 कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरनि तृसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ प्रभ कै
 सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ अंमृत
 नामु रिद माहि समाइ ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि दसना ॥४॥ प्रभ
 कउ सिमरहि से धनवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ कउ
 सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥ प्रभ
 कउ सिमरहि से सुखवासी ॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अविनासी ॥ सिमरन ते लागे जिन आपि
 दइआला ॥ नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥ प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि
 तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ प्रभ
 कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन
 अनद घनेरे ॥ प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥ संत कृपा ते अनदिनु जागि ॥ नानक सिमरनु पूरै
 भागि ॥६॥ प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि हरि गुन
 बानी ॥ प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥ प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥ प्रभ कै सिमरनि कमल
 बिगासनु ॥ प्रभ कै सिमरनि अनहट झुनकार ॥ सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥ सिमरहि से जन
 जिन कउ प्रभ मड़िआ ॥ नानक तिन जन सरनी पड़िआ ॥७॥ हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥
 हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥ हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ हरि सिमरनि नीच चहु कुंट
 जाते ॥ हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि सिमरनि कीओ सगल
 अकारा ॥ हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥ करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥ नानक गुरमुखि
 हरि सिमरनु तिनि पाड़िआ ॥८॥१॥ सलोकु ॥ दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥ सरणि

ਤੁਮਾਰੀ ਆਇਆ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਸਾਥ ॥੧॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਜਹ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਮੀਤ ਨ ਭਾਈ ॥ ਮਨ ਊਹਾ
 ਨਾਮੁ ਤੈਰੈ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ॥ ਜਹ ਮਹਾ ਭਿਆਨ ਢੂਤ ਜਮ ਦਲੈ ॥ ਤਹ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਤੈਰੈ ਚਲੈ ॥ ਜਹ
 ਮੁਸਕਲ ਹੋਵੈ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਉਧਾਰੀ ॥ ਅਨਿਕ ਪੁਨਹਚਰਨ ਕਰਤ ਨਹੀ ਤੈਰੈ ॥ ਹਰਿ
 ਕੋ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਪਾਪ ਪਰਹੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਵਹੁ ਸ੍ਰੂਖ ਘਨੇਰੇ ॥੧॥ ਸਗਲ ਸੂਝਟਿ
 ਕੋ ਰਾਜਾ ਦੁਖੀਆ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹੋਇ ਸੁਖੀਆ ॥ ਲਾਖ ਕਰੋਰੀ ਬੰਧੁ ਨ ਪੈਰੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ
 ਨਿਸਤਰੈ ॥ ਅਨਿਕ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਤਿਖ ਨ ਬੁਝਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਆਘਾਵੈ ॥ ਜਿਹ ਮਾਰਗਿ ਇਹੁ ਜਾਤ
 ਡਿਕੇਲਾ ॥ ਤਹ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਹੋਤ ਸੁਹੇਲਾ ॥ ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਮ ਗਤਿ
 ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਛੁਟਤ ਨਹੀ ਕੋਟਿ ਲਖ ਬਾਹੀ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਤਹ ਪਾਰਿ ਪਰਾਹੀ ॥ ਅਨਿਕ ਬਿਘਨ ਜਹ ਆਇ
 ਸੰਘਾਰੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਤਤਕਾਲ ਉਧਾਰੈ ॥ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਜਨਮੈ ਮਰਿ ਜਾਮ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪਾਵੈ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥
 ਹਤ ਮੈਲਾ ਮਲੁ ਕਬਹੁ ਨ ਧੋਵੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਪਾਪ ਖੋਵੈ ॥ ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਰੰਗਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਪਾਈਐ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥੩॥ ਜਿਹ ਮਾਰਗ ਕੇ ਗਨੇ ਜਾਹਿ ਨ ਕੋਸਾ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਊਹਾ ਸੰਗਿ ਤੋਸਾ ॥ ਜਿਹ
 ਪੈਡੈ ਮਹਾ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਤਜੀਆਰਾ ॥ ਜਹਾ ਪੰਥਿ ਤੇਰਾ ਕੋ ਨ ਸਿਜਾਨੂ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ
 ਤਹ ਨਾਲਿ ਪਛਾਨੂ ॥ ਜਹ ਮਹਾ ਭਿਆਨ ਤਪਤਿ ਬਹੁ ਘਾਮ ॥ ਤਹ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਤੁਮ ਊਪਰਿ ਛਾਮ ॥
 ਜਹਾ ਤ੍ਰਖਾ ਮਨ ਤੁੜ੍ਹੁ ਆਕਰਖੈ ॥ ਤਹ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਬਰਖੈ ॥੪॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਬਰਤਨਿ
 ਨਾਮੁ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ਼ਾਮੁ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਦਾਸ ਕੀ ਓਟ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਉਧਰੇ ਜਨ ਕੋਟਿ ॥ ਹਰਿ
 ਜਸੁ ਕਰਤ ਸੰਤ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਤਖਥੁ ਸਾਧ ਕਮਾਤਿ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਜਨ ਕੀਨੋ ਦਾਨ ॥ ਮਨ ਤਨ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਰੰਗ ਏਕੈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੈ ਬਿਰਤਿ ਬਿਕੇਕੈ ॥੫॥ ਹਰਿ ਕਾ
 ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਤ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਜਨ ਕਤ ਤ੃ਪਤਿ ਭੁਗਤਿ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਾ ਰੂਪ ਰੰਗੁ
 ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕਬ ਪੈਰੈ ਨ ਭੰਗੁ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਜਨ ਸੋਭਾ

ਪਾਈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਤ ਭੋਗ ਜੋਗ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ਬਿਓਗੁ ॥ ਜਨੁ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ
 ਸੇਵਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੌਜੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦੇਵਾ ॥੬॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਮਾਲੁ ਖਜੀਨਾ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਨ ਕਤ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭਿ
 ਦੀਨਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਓਟ ਸਤਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਜਨ ਅਵਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਜਨ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਾਤੇ
 ॥ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧਿ ਨਾਮ ਰਸ ਮਾਤੇ ॥ ਆਠ ਪਫਰ ਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਭਗਤੁ ਪ੍ਰਗਟ ਨਹੀ ਛਪੈ ॥ ਹਰਿ
 ਕੀ ਭਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਬਹੁ ਕਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨ ਸੰਗਿ ਕੇਤੇ ਤਰੇ ॥੭॥ ਪਾਰਯਾਤੁ ਇਹੁ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥ ਕਾਮਧੇਨ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥ ਸਭ ਤੇ ਊਤਮ ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ॥ ਨਾਮੁ ਸੁਨਤ ਦਰਦ ਦੁਖ ਲਥਾ ॥ ਨਾਮ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਸੰਤ ਰਿਦ
 ਕਵਸੈ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਦੁਰਤੁ ਸਭੁ ਨਸੈ ॥ ਸੰਤ ਕਾ ਸੰਗੁ ਕਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥ ਸੰਤ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
 ਨਾਮ ਤੁਲਿ ਕਛੁ ਅਕਰੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਾਵੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥੮॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਬਹੁ ਸਾਸਤਰ ਬਹੁ
 ਸਿਮੂਤੀ ਪੇਖੇ ਸਰਬ ਢਠੋਲਿ ॥ ਪ੍ਰੌਜਸਿ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਹਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਅਮੋਲ ॥੯॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਜਾਪ ਤਾਪ
 ਗਿਆਨ ਸਭਿ ਧਿਆਨ ॥ ਖਟ ਸਾਸਤਰ ਸਿਮੂਤਿ ਵਖਿਆਨ ॥ ਜੋਗ ਅਭਿਆਸ ਕਰਮ ਧਰਮ ਕਿਰਿਆ ॥ ਸਗਲ
 ਤਿਆਗੁ ਬਨ ਮਧੇ ਫਿਰਿਆ ॥ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੀਏ ਬਹੁ ਜਤਨਾ ॥ ਪੁਨਨ ਦਾਨ ਹੋਮੇ ਬਹੁ ਰਤਨਾ ॥ ਸਰੀਰੁ ਕਟਾਇ
 ਹੋਮੈ ਕਰਿ ਰਾਤੀ ॥ ਵਰਤ ਨੇਮ ਕਰੈ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ॥ ਨਹੀ ਤੁਲਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬੀਚਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ
 ਇਕ ਬਾਰ ॥੧॥ ਨਤ ਖੰਡ ਪ੃ਥਮੀ ਫਿਰੈ ਚਿਰੁ ਜੀਵੈ ॥ ਸਹਾ ਉਦਾਸੁ ਤਪੀਸਰੁ ਥੀਵੈ ॥ ਅਗਨਿ ਮਾਹਿ ਹੋਮਤ
 ਪਰਾਨ ॥ ਕਨਿਕ ਅਸੜ ਹੈਕਰ ਭੂਮਿ ਦਾਨ ॥ ਨਿਤਲੀ ਕਰਮ ਕਰੈ ਬਹੁ ਆਸਨ ॥ ਜੈਨ ਮਾਰਗ ਸੰਜਮ ਅਤਿ ਸਾਧਨ
 ॥ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਕਰਿ ਸਰੀਰੁ ਕਟਾਵੈ ॥ ਤਤ ਭੀ ਹਤਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਸਮਸਰਿ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ॥
 ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਗਤਿ ਪਾਹਿ ॥੨॥ ਮਨ ਕਾਮਨਾ ਤੀਰਥ ਦੇਹ ਛੁਟੈ ॥ ਗਰਬੁ ਗੁਮਾਨੁ ਨ ਮਨ ਤੇ
 ਹੁਟੈ ॥ ਸੋਚ ਕਰੈ ਦਿਨਸੁ ਅਰੁ ਰਾਤਿ ॥ ਮਨ ਕੀ ਮੈਲੁ ਨ ਤਨ ਤੇ ਜਾਤਿ ॥ ਇਸੁ ਦੇਹੀ ਕਤ ਬਹੁ ਸਾਧਨਾ ਕਰੈ
 ॥ ਮਨ ਤੇ ਕਬਹੂ ਨ ਬਿਖਿਆ ਟਰੈ ॥ ਜਲਿ ਧੋਵੈ ਬਹੁ ਦੇਹ ਅਨੀਤਿ ॥ ਸੁਧ ਕਹਾ ਹੋਇ ਕਾਚੀ ਭੀਤਿ ॥ ਮਨ
 ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਊਚ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਉਧਰੇ ਪਤਿਤ ਬਹੁ ਮੂਚ ॥੩॥ ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਜਮ ਕਾ

ਭਤ ਬਿਆਪੈ ॥ ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਤ੃ਸਨ ਨਾ ਧਾਪੈ ॥ ਭੇਖ ਅਨੇਕ ਅਗਨਿ ਨਹੀਂ ਬੁੜੈ ॥ ਕੋਟਿ ਉਪਾਵ ਦਰਗਹ
 ਨਹੀਂ ਸਿੜੈ ॥ ਛੂਟਸਿ ਨਾਹੀਂ ਊਮ੍ਹ ਪਡਿਆਲਿ ॥ ਮੋਹਿ ਬਿਆਪਹਿ ਮਾਇਆ ਜਾਲਿ ॥ ਅਵਰ ਕਰਤੂਤਿ ਸਗਲੀ
 ਜਮੁ ਢਾਨੈ ॥ ਗੋਵਿੰਦ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਤਿਲੁ ਨਹੀਂ ਮਾਨੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਬੋਲੈ ਸਹਜਿ
 ਸੁਭਾਇ ॥੪॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਜੇ ਕੋ ਮਾਗੈ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਲਾਗੈ ॥ ਜੇ ਕੋ ਆਪੁਨਾ ਦੂਖੁ ਮਿਟਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸਦ ਗਾਵੈ ॥ ਜੇ ਕੋ ਅਪੁਨੀ ਸੋਭਾ ਲੋਰੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਇਹ ਹਤਮੈ ਛੋਰੈ ॥ ਜੇ ਕੋ ਜਨਮ ਮਰਣ ਤੇ ਡੈਰੈ ॥
 ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰੈ ॥ ਜਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸ ਪਿਆਸਾ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਸਾ ॥੫॥
 ਸਗਲ ਪੁਰਖ ਮਹਿ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਧਾਨੁ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਾ ਕਾ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਆਪਸ ਕਤ ਜੋ ਜਾਣੈ ਨੀਚਾ ॥ ਸੋਤੁ
 ਗਨੀਐ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ॥ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਹੋਇ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਿਨਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਚੀਨਾ ॥ ਮਨ
 ਅਪੁਨੇ ਤੇ ਬੁਰਾ ਮਿਟਾਨਾ ॥ ਪੇਖੈ ਸਗਲ ਸੂਸਟਿ ਸਾਜਨਾ ॥ ਸੂਖ ਦੂਖ ਜਨ ਸਮ ਵੂਸਟੇਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਪ ਪੁਨਨ
 ਨਹੀਂ ਲੇਪਾ ॥੬॥ ਨਿਰਧਨ ਕਤ ਧਨੁ ਤੇਰੋ ਨਾਤ ॥ ਨਿਥਾਵੇ ਕਤ ਨਾਤ ਤੇਰਾ ਥਾਤ ॥ ਨਿਮਾਨੇ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੋ
 ਮਾਨੁ ॥ ਸਗਲ ਘਟਾ ਕਤ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸੁਆਮੀ ॥ ਸਗਲ ਘਟਾ ਕੇ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਅਪਨੀ
 ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਜਾਨਹੁ ਆਪੇ ॥ ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਆਧਿ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤੇ ॥ ਤੁਮਰੀ ਉਸਤਤਿ ਤੁਮ ਤੇ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਅਕਰੁ ਨ
 ਜਾਨਸਿ ਕੋਇ ॥੭॥ ਸਰਬ ਧਰਮ ਮਹਿ ਸੇਵਟ ਧਰਮੁ ॥ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਨਿਰਮਲ ਕਰਮੁ ॥ ਸਗਲ ਕ੃ਆ ਮਹਿ
 ਊਤਮ ਕਿਰਿਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਹਿਰਿਆ ॥ ਸਗਲ ਤਦਮ ਮਹਿ ਤਦਮੁ ਭਲਾ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ
 ਜੀਅ ਸਦਾ ॥ ਸਗਲ ਬਾਨੀ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਨੀ ॥ ਹਰਿ ਕੋ ਜਸੁ ਸੁਨਿ ਰਸਨ ਬਖਾਨੀ ॥ ਸਗਲ ਥਾਨ ਤੇ ਓਹੁ ਊਤਮ
 ਥਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਹ ਘਟਿ ਕਥੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੮॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਨਿਰਗੁਨੀਆਰ ਇਆਨਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ
 ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਸੁ ਚੀਤਿ ਰਖੁ ਨਾਨਕ ਨਿਬਹੀ ਨਾਲਿ ॥੧॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਰਮਈਆ ਕੇ ਗੁਨ ਚੇਤਿ ਪਰਾਨੀ ॥
 ਕਵਨ ਮੂਲ ਤੇ ਕਵਨ ਵੂਸਟਾਨੀ ॥ ਜਿਨਿ ਤ੍ਰਿ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿ ਸੀਗਾਰਿਆ ॥ ਗਰਭ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਜਿਨਹਿ ਤਿਵਾਰਿਆ
 ॥ ਬਾਰ ਬਿਵਸਥਾ ਤੁੜਾਹਿ ਪਿਆਰੈ ਟੂਥ ॥ ਭਰਿ ਜੋਬਨ ਭੋਜਨ ਸੁਖ ਸੂਧ ॥ ਬਿਰਧਿ ਭਡਿਆ ਊਪਰਿ ਸਾਕ ਸੈਨ ॥

ਸੁਖਿ ਅਪਿਆਤ ਬੈਠ ਕਤ ਦੈਨ ॥ ਇਹੁ ਨਿਰਗੁਨੁ ਗੁਨੁ ਕਛੂ ਨ ਬੂੜੈ ॥ ਬਖਸਿ ਲੇਹੁ ਤਤ ਨਾਨਕ ਸੀਝੈ ॥੧॥ ਜਿਹ
 ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਧਰ ਊਪਰਿ ਸੁਖਿ ਬਸਹਿ ॥ ਸੁਤ ਭਾਤ ਮੀਤ ਬਨਿਤਾ ਸਂਗਿ ਹਸਹਿ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪੀਵਹਿ ਸੀਤਲ ਜਲਾ
 ॥ ਸੁਖਦਾਈ ਪਕਨੁ ਪਾਵਕੁ ਅਮੁਲਾ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭੋਗਹਿ ਸਭਿ ਰਸਾ ॥ ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਸਂਗਿ ਸਾਥਿ ਬਸਾ ॥
 ਦੀਨੇ ਹਸਤ ਪਾਵ ਕਰਨ ਨੇਤਰ ਰਸਨਾ ॥ ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਸਂਗਿ ਰਚਨਾ ॥ ਐਸੇ ਦੋਖ ਮੂੜ ਅੰਧ ਬਿਆਪੇ ॥
 ਨਾਨਕ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਆਪੇ ॥੨॥ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਜੋ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ॥ ਤਿਸ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਕਰੈ ਗਵਾਰੁ ॥ ਜਾ ਕੀ
 ਸੇਵਾ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਵੈ ॥ ਤਾ ਸਿਤ ਮੂੜਾ ਮਨੁ ਨਹੀ ਲਾਵੈ ॥ ਜੋ ਠਾਕੁਰੁ ਸਦ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥ ਤਾ ਕਤ ਅੰਧਾ ਜਾਨਤ
 ਦ੍ਰੌਰੇ ॥ ਜਾ ਕੀ ਟਹਲ ਪਾਵੈ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ॥ ਤਿਸਹਿ ਬਿਸਾਰੈ ਮੁਗਧੁ ਅਜਾਨੁ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਇਹੁ ਭੂਲਨਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਰਾਖਨਹਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ॥੩॥ ਰਤਨੁ ਤਿਆਗਿ ਕਤਡੀ ਸਂਗਿ ਰਚੈ ॥ ਸਾਚੁ ਛੋਡਿ ਝੂਠ ਸਂਗਿ ਮਚੈ ॥ ਜੋ ਛੜਨਾ ਸੁ
 ਅਸਥਿਰੁ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ॥ ਜੋ ਹੋਕਨੁ ਸੋ ਦ੍ਰਵਿ ਪਰਾਨੈ ॥ ਛੋਡਿ ਜਾਇ ਤਿਸ ਕਾ ਸ਼ਮੁ ਕਰੈ ॥ ਸਂਗਿ ਸਹਾਈ ਤਿਸੁ ਪਰਹਰੈ
 ॥ ਚੰਦਨ ਲੇਪੁ ਉਤਾਰੈ ਧੋਡਿ ॥ ਗਰਥਬ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭਸਮ ਸਂਗਿ ਛੋਡਿ ॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਪਤਿਤ ਬਿਕਰਾਲ ॥ ਨਾਨਕ
 ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਦਿੱਤਾਲ ॥੪॥ ਕਰਤੂਤਿ ਪਸੂ ਕੀ ਮਾਨਸ ਜਾਤਿ ॥ ਲੋਕ ਪਚਾਰਾ ਕਰੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਬਾਹਰਿ
 ਭੇਖ ਅੰਤਰਿ ਮਲੁ ਮਾਇਆ ॥ ਛਪਸਿ ਨਾਹਿ ਕਛੁ ਕਰੈ ਛਪਾਇਆ ॥ ਬਾਹਰਿ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਇਸਨਾਨ ॥
 ਅੰਤਰਿ ਬਿਆਪੈ ਲੋਭੁ ਸੁਆਨੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਅਗਨਿ ਬਾਹਰਿ ਤਨੁ ਸੁਆਹ ॥ ਗਲਿ ਪਾਥਰ ਕੈਸੇ ਤਰੈ ਅਥਾਹ ॥ ਜਾ ਕੈ
 ਅੰਤਰਿ ਬਸੈ ਪ੍ਰਮੁ ਆਪਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸਹਜਿ ਸਮਾਤਿ ॥੫॥ ਸੁਨਿ ਅੰਧਾ ਕੈਸੇ ਮਾਰਗੁ ਪਾਵੈ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ
 ਲੇਹੁ ਓਡਿ ਨਿਬਹਾਵੈ ॥ ਕਹਾ ਬੁੜਾਰਤਿ ਬੂੜੈ ਡੋਰਾ ॥ ਨਿਸਿ ਕਹੀਐ ਤਤ ਸਮਝੈ ਭੋਰਾ ॥ ਕਹਾ ਬਿਸਨਪਦ ਗਾਵੈ
 ਗੁਂਗ ॥ ਜਤਨ ਕਰੈ ਤਤ ਭੀ ਸੁਰ ਭੰਗ ॥ ਕਹ ਪਿੰਗੁਲ ਪਰਬਤ ਪਰ ਭਵਨ ॥ ਨਹੀ ਹੋਤ ਊਹਾ ਤਸੁ ਗਵਨ ॥
 ਕਰਤਾਰ ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਦੀਨੁ ਬੇਨਤੀ ਕਰੈ ॥ ਨਾਨਕ ਤੁਮਰੀ ਕਿਰਪਾ ਤਰੈ ॥੬॥ ਸਂਗਿ ਸਹਾਈ ਸੁ ਆਵੈ ਨ ਚੀਤਿ ॥
 ਜੋ ਬੈਰਾਈ ਤਾ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਬਲੂਆ ਕੇ ਗ੍ਰਹ ਭੀਤਰਿ ਬਸੈ ॥ ਅਨਦ ਕੇਲ ਮਾਇਆ ਰੰਗਿ ਰਸੈ ॥ ਦੂਢੁ ਕਰਿ
 ਮਾਨੈ ਮਨਹਿ ਪ੍ਰਤੀਤਿ ॥ ਕਾਲੁ ਨ ਆਵੈ ਮੂੜੇ ਚੀਤਿ ॥ ਬੈਰ ਬਿਰੋਧ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮੋਹ ॥ ਝੂਠ ਬਿਕਾਰ ਮਹਾ ਲੋਭ

ਧੋਹ ॥ ਇਆਹੂ ਜੁਗਤਿ ਬਿਹਾਨੇ ਕਈ ਜਨਮ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਆਪਨ ਕਰਿ ਕਰਮ ॥੭॥ ਤ੍ਰਾਂ ਠਾਕੁਰੁ ਤੁਮ
 ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰੀ ਰਾਸਿ ॥ ਤੁਮ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤੇਰੇ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਮਹਿ ਸੂਖ
 ਘਨੇਰੇ ॥ ਕੋਇ ਨ ਜਾਨੈ ਤੁਮਰਾ ਅੰਤੁ ॥ ਊਚੇ ਤੇ ਊਚਾ ਭਗਵਂਤ ॥ ਸਗਲ ਸਮਗੀ ਤੁਮਰੈ ਸੂਤ੍ਰ ਧਾਰੀ ॥ ਤੁਮ ਤੇ ਹੋਇ
 ਸੁ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥ ਤੁਮਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥੮॥ ਸਲੋਕੁ ॥
 ਦੇਨਹਾਰੁ ਪ੍ਰਭ ਛੋਡਿ ਕੈ ਲਾਗਹਿ ਆਨ ਸੁਆਇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਹੂ ਨ ਸੀਝਾਈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਤਿ ਜਾਇ ॥੯॥
 ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਦਸ ਬਸਤੂ ਲੇ ਪਾਛੈ ਪਾਵੈ ॥ ਏਕ ਬਸਤੁ ਕਾਰਨਿ ਬਿਖੋਟਿ ਗਵਾਵੈ ॥ ਏਕ ਭੀ ਨ ਦੇਇ ਦਸ ਭੀ
 ਹਿਰਿ ਲੇਇ ॥ ਤਤ ਮੂੜਾ ਕਹੁ ਕਹਾ ਕਰੇਇ ॥ ਜਿਸੁ ਠਾਕੁਰ ਸਿਤ ਨਾਹੀ ਚਾਰਾ ॥ ਤਾ ਕਤ ਕੀਜੈ ਸਦ ਨਮਸਕਾਰਾ
 ॥ ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਲਾਗ ਪ੍ਰਭੁ ਮੀਠਾ ॥ ਸਰਬ ਸੂਖ ਤਾਹੂ ਮਨਿ ਕੂਠਾ ॥ ਜਿਸੁ ਜਨ ਅਪਨਾ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਇਆ ॥ ਸਰਬ
 ਥੋਕ ਨਾਨਕ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਅਗਨਤ ਸਾਹੁ ਅਪਨੀ ਦੇ ਰਾਸਿ ॥ ਖਾਤ ਪੀਤ ਬਰਤੈ ਅਨਦ ਤਲਾਸਿ ॥
 ਅਪੁਨੀ ਅਮਾਨ ਕਛੁ ਬਹੁਰਿ ਸਾਹੁ ਲੇਇ ॥ ਅਗਿਆਨੀ ਮਨਿ ਰੋਸੁ ਕਰੇਇ ॥ ਅਪਨੀ ਪਰਤੀਤਿ ਆਪ ਹੀ ਖੋਵੈ ॥
 ਬਹੁਰਿ ਤਸ ਕਾ ਬਿਸ਼ਾਸੁ ਨ ਹੋਵੈ ॥ ਜਿਸ ਕੀ ਬਸਤੁ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਰਾਖੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਾਨੈ ਮਾਥੈ ॥ ਤਸ ਤੇ
 ਚਤੁਗੁਨ ਕਰੈ ਨਿਹਾਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਦਿਆਲੁ ॥੨॥ ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਹੇਤ ॥ ਸਰਪਰ
 ਹੋਕਤ ਜਾਨੁ ਅਨੇਤ ॥ ਬਿਰਖ ਕੀ ਛਾਇਆ ਸਿਤ ਰੁਂਗ ਲਾਵੈ ॥ ਓਹ ਬਿਨਸੈ ਤਹੁ ਮਨਿ ਪਛੁਤਾਵੈ ॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ
 ਚਾਲਨਹਾਰੁ ॥ ਲਪਟਿ ਰਹਿਓ ਤਹ ਅੰਧ ਅੰਧਾਰੁ ॥ ਬਟਾਊ ਸਿਤ ਜੋ ਲਾਵੈ ਨੇਹ ॥ ਤਾ ਕਤ ਹਾਥਿ ਨ ਆਵੈ ਕੇਹ ॥
 ਮਨ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਲਏ ਲਾਈ ॥੩॥ ਮਿਥਿਆ ਤਨੁ ਧਨੁ
 ਕੁਟੰਬੁ ਸਬਾਇਆ ॥ ਮਿਥਿਆ ਹਤਮੈ ਮਮਤਾ ਮਾਇਆ ॥ ਮਿਥਿਆ ਰਾਜ ਜੋਬਨ ਧਨ ਮਾਲ ॥ ਮਿਥਿਆ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ
 ਬਿਕਰਾਲ ॥ ਮਿਥਿਆ ਰਥ ਹਸਤੀ ਅਸੂ ਬਸਨਾ ॥ ਮਿਥਿਆ ਰੁਂਗ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਪੇਖਿ ਹਸਤਾ ॥ ਮਿਥਿਆ ਧੋਹ
 ਮੋਹ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਮਿਥਿਆ ਆਪਸ ਊਪਰਿ ਕਰਤ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਅਸਥਿਰੁ ਭਗਤਿ ਸਾਧ ਕੀ ਸਰਨ ॥ ਨਾਨਕ ਜਪਿ
 ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ॥੪॥ ਮਿਥਿਆ ਸ਼ਰਵਨ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਸੁਨਹਿ ॥ ਮਿਥਿਆ ਹਸਤ ਪਰ ਦਰਬ ਕਤ

हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत पर तृआ रूपाद ॥ मिथिआ रसना भोजन अन स्नाद ॥ मिथिआ चरन
 पर बिकार कउ धावहि ॥ मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ
 बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥੫॥ बिरथी
 साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ मुखि आवत ता कै
 दुरगंध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ गोबिद भजन बिनु बृथे
 सभ काम ॥ जिउ किरपन के निराथ दाम ॥ धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥ नानक
 ता कै बलि बलि जाउ ॥੬॥ रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गंद लावत ॥
 जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत जनमै
 मरै ॥ जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥ तिस की सीख तरै संसारु ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक
 उन जन चरन पराता ॥੭॥ करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि
 आप आपि करत निबेरा ॥ किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥
 सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ थान थन्तरि रहिआ समाइ ॥ सो
 सेवकु जिसु किरपा करी ॥ निमख निमख जपि नानक हरी ॥੮॥੫॥ सलोकु ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह
 बिनसि जाइ अह्मेव ॥ नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥੧॥ असटपदी ॥ जिह प्रसादि
 छतीह अंमृत खाहि ॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥ तिस कउ
 सिमरत परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥ तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥ जिह
 प्रसादि गृह संगि सुख बसना ॥ आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥
 नानक सदा धिआईऔ धिआवन जोग ॥੧॥ जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि ॥ तिसहि तिआगि
 कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥ जिह

ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੁੜ੍ਹੁ ਸਮੁ ਕੋਊ ਮਾਨੈ ॥ ਮੁਖਿ ਤਾ ਕੋ ਜਸੁ ਰਸਨ ਬਖਾਨੈ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੋ ਰਹਤਾ ਧਰਮੁ ॥ ਮਨ ਸਦਾ
 ਧਿਆਇ ਕੇਵਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਜਪਤ ਦੁਗਹ ਮਾਨੁ ਪਾਵਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਵਹਿ ॥੨॥
 ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਆਰੋਗ ਕੰਚਨ ਦੇਹੀ ॥ ਲਿਵ ਲਾਵਹੁ ਤਿਸੁ ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਓਲਾ ਰਹਤ ॥ ਮਨ
 ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਹਤ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੇ ਸਗਲ ਛਿਦ੍ਰ ਢਾਕੇ ॥ ਮਨ ਸਰਨੀ ਪਰੁ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭ ਤਾ ਕੈ
 ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੁੜ੍ਹੁ ਕੋ ਨ ਪਹੂੰਚੈ ॥ ਮਨ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਊਚੇ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਈ ਦੁਲਭ ਦੇਹ ॥
 ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰੇਹ ॥੩॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਆਭੂਖਨ ਪਹਿਰੀਜੈ ॥ ਮਨ ਤਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਕਿਤ ਆਲਸੁ ਕੀਜੈ ॥
 ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਅਸੁ ਹਸਤਿ ਅਸਵਾਰੀ ॥ ਮਨ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਕਬਹੂ ਨ ਬਿਸਾਰੀ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬਾਗ ਮਿਲਖ
 ਧਨਾ ॥ ਰਾਖੁ ਪਰੋਇ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨੇ ਮਨਾ ॥ ਜਿਨਿ ਤੇਰੀ ਮਨ ਬਨਤ ਬਨਾਈ ॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸਦ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਈ ॥
 ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਇ ਜੋ ਏਕ ਅਲਖੈ ॥ ਈਹਾ ਊਹਾ ਨਾਨਕ ਤੇਰੀ ਰਖੈ ॥੪॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਰਹਿ ਪੁਨਨ ਬਹੁ ਦਾਨ ॥
 ਮਨ ਆਠ ਪਹਰ ਕਰਿ ਤਿਸ ਕਾ ਧਿਆਨ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂ ਆਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ
 ਚਿਤਾਰੀ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਸੁੰਦਰ ਰੂਪੁ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਹੁ ਸਦਾ ਅਨੂਪੁ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੀ ਨੀਕੀ ਜਾਤਿ ॥ ਸੋ
 ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਿ ਸਦਾ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੀ ਪਤਿ ਰਹੈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਜਸੁ ਕਹੈ ॥੫॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
 ਸੁਨਹਿ ਕਰਨ ਨਾਦ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪੇਖਹਿ ਬਿਸਮਾਦ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬੋਲਹਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸਨਾ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ
 ਸਹਜੇ ਬਸਨਾ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਸਤ ਕਰ ਚਲਹਿ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੰਪੂਰਨ ਫਲਹਿ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਗਤਿ
 ਪਾਵਹਿ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਹਿ ॥ ਐਸਾ ਪ੍ਰਭੁ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਕਤ ਲਾਗਹੁ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
 ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਜਾਗਹੁ ॥੬॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂਂ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਮੂਲਿ ਨ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰਿ ॥ ਜਿਹ
 ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਪਰਤਾਪੁ ॥ ਰੇ ਮਨ ਮੂੜ ਤੂ ਤਾ ਕਤ ਜਾਪੁ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੇ ਕਾਰਜ ਪ੍ਰੌਰੇ ॥ ਤਿਸਹਿ ਜਾਨੁ ਮਨ
 ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂਂ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੁ ॥ ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂ ਤਾ ਸਿਤ ਰਾਚੁ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਭ ਕੀ ਗਤਿ
 ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾਪੁ ਜਪੈ ਜਪੁ ਸੋਇ ॥੭॥ ਆਪਿ ਜਪਾਏ ਜਪੈ ਸੋ ਨਾਤ ॥ ਆਪਿ ਗਾਵਾਏ ਸੁ ਹਾਰਿ ਗੁਨ ਗਾਤ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਆ ਤੇ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸੁ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਬਸੈ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਿਆ
 ਤੇ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਇ ॥ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਮਿਆ ॥ ਆਪਹੁ ਕਛੂ ਨ ਕਿਨਹੂ ਲਿਆ ॥ ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ
 ਲਾਵਹੁ ਤਿਤੁ ਲਗਹਿ ਹਰਿ ਨਾਥ ॥ ਨਾਨਕ ਇਨ ਕੈ ਕਛੂ ਨ ਹਾਥ ॥੮॥੯॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ
 ਸੋਇ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕਹੈ ਸੁ ਮੁਕਤਾ ਹੋਇ ॥ ਸੁਨਿ ਮੀਤਾ ਨਾਨਕੁ ਬਿਨਵਤਾ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਅਚਰਜ ਕਥਾ ॥੧॥
 ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮੁਖ ਊਜਲ ਹੋਤ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਲੁ ਸਗਲੀ ਖੋਤ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
 ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਗਟੈ ਸੁਗਿਆਨੁ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਬੁਝੈ ਪ੍ਰਭੁ ਨੇਰਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਭੁ ਹੋਤ ਨਿਵੇਰਾ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ
 ਪਾਏ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਏਕ ਊਪਰਿ ਜਤਨੁ ॥ ਸਾਧ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਬਰਨੈ ਕਤਨੁ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਧ
 ਕੀ ਸੋਭਾ ਪ੍ਰਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥੧॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਅਗੋਚਰੁ ਮਿਲੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਦਾ ਪਰਫੁਲੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ
 ਸੰਗਿ ਆਵਹਿ ਬਸਿ ਪੰਚਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸੁ ਭੁੰਚਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹੋਇ ਸਭ ਕੀ ਰੇਨ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ
 ਮਨੋਹਰ ਬੈਨ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਕਤਹੂੰ ਧਾਰੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਅਸਥਿਤਿ ਮਨੁ ਪਾਰੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਤੇ
 ਭਿਨਨ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ॥੨॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਸਮਨ ਸਭਿ ਮੀਤ ॥ ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਹਾ ਪੁਨੀਤ ॥
 ਸਾਧਸੰਗਿ ਕਿਸ ਸਿਤ ਨਹੀ ਬੈਰੁ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਬੀਗਾ ਪੈਰੁ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਕੋ ਮੰਦਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ
 ਜਾਨੇ ਪਰਮਾਨਨਦਾ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਹਤ ਤਾਪੁ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਜੈ ਸਭੁ ਆਪੁ ॥ ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਸਾਧ ਬਡਾਈ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਪ੍ਰਭੂ ਬਨਿ ਆਈ ॥੩॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਕਬਹੂੰ ਧਾਰੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਰੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ
 ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਲਹੈ ॥ ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਅਜਰੁ ਸਹੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਬਸੈ ਥਾਨਿ ਊਚੈ ॥ ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਹਲਿ ਪਹੂੰਚੈ ॥
 ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਦੂਡੈ ਸਭਿ ਧਰਮ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਕੇਵਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਏ ਨਾਮ ਨਿਧਾਨ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਾਧੂ ਕੈ ਕੁਰਬਾਨ ॥੪॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਭ ਕੁਲ ਉਧਾਰੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਾਜਨ ਮੀਤ ਕੁਟੰਬ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥ ਸਾਧੂ ਕੈ
 ਸੰਗਿ ਸੋ ਧਨੁ ਪਾਰੈ ॥ ਜਿਸੁ ਧਨ ਤੇ ਸਭੁ ਕੋ ਵਰਸਾਰੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਰੇ ਸੇਵਾ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸੋਭਾ
 ਸੁਰਦੇਵਾ ॥ ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਪ ਪਲਾਇਨ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਗੁਨ ਗਾਇਨ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸੁਖ ਥਾਨ ਗੰਮਿ ॥

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਫਲ ਜਨਮ ॥੫॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਹੀਂ ਕਛੁ ਘਾਲ ॥ ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਤ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲ ॥ ਸਾਧ
 ਕੈ ਸੰਗਿ ਕਲੂਖਤ ਹਰੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਰਕ ਪਰਹਰੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਈਹਾ ਊਹਾ ਸੁਹੇਲਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਬਿਛੁਰਤ
 ਹਰਿ ਮੇਲਾ ॥ ਜੋ ਝਿੱਥੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਬਿਰਥਾ ਜਾਵੈ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਾਧ ਰਿਦ ਬਸੈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਉਥਰੈ ਸਾਧ ਸੁਨਿ ਰਖੈ ॥੬॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸੁਨਤ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਤ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ
 ਨ ਮਨ ਤੇ ਬਿਸਰੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਰਪਰ ਨਿਸਤਰੈ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਲਗੈ ਪ੍ਰਭੁ ਮੀਠਾ ॥ ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਘਟਿ ਘਟਿ
 ਡੀਠਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਾਏ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਟੇ ਸਭਿ ਰੋਗ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਭੇਟੇ ਸੰਜੋਗ ॥੭॥ ਸਾਧ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਬੇਦ ਨ ਜਾਨਹਿ ॥ ਜੇਤਾ ਸੁਨਹਿ ਤੇਤਾ ਬਖਿਆਨਹਿ ॥ ਸਾਧ ਕੀ
 ਤੁਪਮਾ ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਤੇ ਟੂਰਿ ॥ ਸਾਧ ਕੀ ਤੁਪਮਾ ਰਹੀ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਕਾ ਨਾਹੀ ਅੰਤ ॥ ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਸਦਾ
 ਕੇਅੰਤ ॥ ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਊਚ ਤੇ ਊਚੀ ॥ ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਮੂੰਚ ਤੇ ਮੂੰਚੀ ॥ ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਸਾਧ ਬਨਿ ਆਈ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਪ੍ਰਭ ਭੇਟੁ ਨ ਭਾਈ ॥੮॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਸੁਖਿ ਸਾਚਾ ਸੋਝਿ ॥ ਅਵਰੁ ਨ ਪੇਖੈ ਏਕਸੁ ਬਿਨੁ
 ਕੋਝਿ ॥ ਨਾਨਕ ਝਿਹ ਲਛਣ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਹੋਝਿ ॥੯॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਨਿਰਲੇਪ ॥ ਜੈਸੇ
 ਜਲ ਮਹਿ ਕਮਲ ਅਲੇਪ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਨਿਰਦੀਖ ॥ ਜੈਸੇ ਸੂਰੂ ਸਰਬ ਕਤ ਸੋਖ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ
 ਦੂਸਟਿ ਸਮਾਨਿ ॥ ਜੈਸੇ ਰਾਜ ਰੰਕ ਕਤ ਲਾਗੈ ਤੁਲਿ ਪਵਾਨ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਧੀਰਜੁ ਏਕ ॥ ਜਿਤ ਬਸੁਧਾ
 ਕੋਊ ਖੋਟੈ ਕੋਊ ਚੰਦਨ ਲੇਪ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਝਿਵੈ ਗੁਨਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਤ ਪਾਵਕ ਕਾ ਸਹਜ ਸੁਭਾਤ ॥੧॥
 ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਨਿਰਮਲ ਤੇ ਨਿਰਮਲਾ ॥ ਜੈਸੇ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਜਲਾ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਮਨਿ ਹੋਝਿ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥
 ਜੈਸੇ ਧਰ ਊਪਰਿ ਆਕਾਸੁ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਮਿਤ ਸੁਤੁ ਸਮਾਨਿ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਹੀ ਅਭਿਮਾਨ ॥
 ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਊਚ ਤੇ ਊਚਾ ॥ ਮਨਿ ਅਪਨੈ ਹੈ ਸਭ ਤੇ ਨੀਚਾ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੇ ਜਨ ਭਏ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਪ੍ਰਭੁ
 ਆਪਿ ਕਰੇਝਿ ॥੨॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥ ਆਤਮ ਰਸੁ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਚੀਨਾ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ
 ਕੀ ਸਭ ਊਪਰਿ ਮਝਿਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਤੇ ਕਛੁ ਬੁਰਾ ਨ ਭਝਿਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਸਮਦਰਸੀ ॥

ब्रह्म गिआनी की दृसटि अंमृतु बरसी ॥ ब्रह्म गिआनी बंधन ते मुक्ता ॥ ब्रह्म गिआनी की
 निरमल जुगता ॥ ब्रह्म गिआनी का भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रह्म गिआनी का ब्रह्म धिआनु ॥३॥
 ब्रह्म गिआनी एक ऊपरि आस ॥ ब्रह्म गिआनी का नही बिनास ॥ ब्रह्म गिआनी कै गरीबी समाहा
 ॥ ब्रह्म गिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रह्म गिआनी कै नाही धंधा ॥ ब्रह्म गिआनी ले धावतु बंधा
 ॥ ब्रह्म गिआनी कै होइ सु भला ॥ ब्रह्म गिआनी सुफल फला ॥ ब्रह्म गिआनी संगि सगल उधारु ॥
 नानक ब्रह्म गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥ ब्रह्म गिआनी कै एकै रंग ॥ ब्रह्म गिआनी कै बसै
 प्रभु संग ॥ ब्रह्म गिआनी कै नामु आधारु ॥ ब्रह्म गिआनी कै नामु परवारु ॥ ब्रह्म गिआनी सदा
 सद जागत ॥ ब्रह्म गिआनी अद्विद्यु तिआगत ॥ ब्रह्म गिआनी कै मनि परमान्द ॥ ब्रह्म गिआनी
 कै घरि सदा अन्द ॥ ब्रह्म गिआनी सुख सहज निवास ॥ नानक ब्रह्म गिआनी का नही बिनास ॥५॥
 ब्रह्म गिआनी ब्रह्म का बेता ॥ ब्रह्म गिआनी एक संगि हेता ॥ ब्रह्म गिआनी कै होइ अचिंत ॥ ब्रह्म
 गिआनी का निरमल मंत ॥ ब्रह्म गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ ब्रह्म गिआनी का बड परताप ॥
 ब्रह्म गिआनी का दरसु बडभागी पाईਐ ॥ ब्रह्म गिआनी कउ बलि बलि जाईਐ ॥ ब्रह्म गिआनी
 कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रह्म गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ ब्रह्म गिआनी की कीमति नाहि ॥ ब्रह्म
 गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रह्म गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रह्म गिआनी कउ सदा अदेसु ॥
 ब्रह्म गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥ ब्रह्म गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रह्म गिआनी की मिति
 कउनु बखानै ॥ ब्रह्म गिआनी की गति ब्रह्म गिआनी जानै ॥ ब्रह्म गिआनी का अंतु न पारु ॥ नानक
 ब्रह्म गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥ ब्रह्म गिआनी सभ सृसटि का करता ॥ ब्रह्म गिआनी सद
 जीवै नही मरता ॥ ब्रह्म गिआनी मुक्ति जुगति जीअ का दाता ॥ ब्रह्म गिआनी पूरन पुरखु बिधाता
 ॥ ब्रह्म गिआनी अनाथ का नाथु ॥ ब्रह्म गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥ ब्रह्म गिआनी का सगल

अकारु ॥ ब्रह्म गिआनी आपि निरंकारु ॥ ब्रह्म गिआनी की सोभा ब्रह्म गिआनी बनी ॥ नानक ब्रह्म गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥ सलोकु ॥ उरि धारै जो अंतरि नामु ॥ सरब मै पेखै भगवानु ॥ निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥९॥ असटपटी ॥ मिथिआ नाही रसना परस ॥ मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥ पर तृथ रूपु न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल संतसंगि हेत ॥ करन न सुनै काहू की निंदा ॥ सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥ गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरै ॥ झिंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसन्न ॥ बिसन की माइआ ते होइ भिन्न ॥ करम करत होवै निहकरम ॥ तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की झिछा नही बाछै ॥ केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥ मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ आपि दृढ़े अवरह नामु जपावै ॥ नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥ भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥ सगल तिआगै दुस्ट का संगु ॥ मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ करि पूजै सगल पारब्रह्मु ॥ साधसंगि पापा मलु खोवै ॥ तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥ भगवंत की टहल करै नित नीति ॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥ सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥ राम नामु आतम महि सोधै ॥ राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥ बेद पुरान सिमृति बूझै मूल ॥ सूखम महि जानै असथूलु ॥ चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥ बीज मंत्र सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥ जो जो जपै तिस की गति होइ ॥ साधसंगि पावै जनु कोइ ॥ करि किरपा अंतरि उर धारै ॥ पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥ सरब रोग का अउखदु नामु ॥ कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ काहू जुगति कितै न पाईअै धरमि ॥ नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥ जिस कै

मनि पारब्रह्म का निवासु ॥ तिस का नामु सति रामदासु ॥ आतम रामु तिसु नदरी आङ्गिआ ॥ दास
 दसंतण भाङ्गि तिनि पाङ्गिआ ॥ सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥ सो दासु दरगह परवानु ॥ अपुने दास
 कउ आपि किरपा करै ॥ तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥ सगल संगि आतम उदासु ॥ ऐसी जुगति
 नानक रामदासु ॥^६॥ प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु तैसा
 उसु सोगु ॥ सदा अन्नदु तह नही बिओगु ॥ तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ तैसा अंमूतु तैसी बिखु खाटी
 ॥ तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ तैसा रंकु तैसा राजानु ॥ जो वरताए साई जुगति ॥ नानक ओहु पुरखु
 कहीअै जीवन मुकति ॥^७॥ पारब्रह्म के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन
 करावन जोगु ॥ प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥ लखे न जाहि पारब्रह्म
 के रंग ॥ जैसी मति देइ तैसा परगास ॥ पारब्रह्मु करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दइआल ॥
 सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥^८॥^९॥ सलोकु ॥ उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥
 नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥^१॥ असटपदी ॥ कई कोटि होए पूजारी ॥ कई
 कोटि आचार बित्तारी ॥ कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद
 के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि
 ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अंतु न पावहि ॥^१॥ कई कोटि भए अभिमानी
 ॥ कई कोटि अंध अगिआनी ॥ कई कोटि किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि
 पर दरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि पर दूखना करहि ॥ कई कोटि माङ्गिआ स्रम माहि ॥ कई कोटि
 परदेस भ्रमाहि ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥^२॥
 कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥ कई कोटि
 पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥ कई कोटि देस भू मंडल ॥ कई कोटि

ਸਸੀਅਰ ਸੂਰ ਨਖਾਤ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਦੇਵ ਦਾਨਵ ਇੰਦ੍ਰ ਸਿਰਿ ਛਤ ॥ ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਅਪਨੈ ਸੂਤਿ ਧਾਰੈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਜਿਸੁ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਤਿਸੁ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥੩॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਰਾਜਸ ਤਾਮਸ ਸਾਤਕ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ
 ਸਿਮੂਤਿ ਅਲੁ ਸਾਸਤ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਰਤਨ ਸਮੁਦ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਨਾ ਪ੍ਰਕਾਰ ਜੰਤ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਚਿਰ
 ਜੀਵੇ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਗਿਰੀ ਮੇਰ ਸੁਵਰਨ ਥੀਵੇ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਜਖਾਂ ਕਿਨਨਰ ਪਿਸਾਚ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਭੂਤ ਪ੍ਰੇਤ ਸੂਕਰ
 ਮ੃ਗਾਚ ॥ ਸਭ ਤੇ ਨੈਰੈ ਸਭਹੂ ਤੇ ਫੌਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੪॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਾਤਾਲ
 ਕੇ ਵਾਸੀ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਰਕ ਸੁਗ ਨਿਵਾਸੀ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਜਨਮਹਿ ਜੀਵਹਿ ਮਰਹਿ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਬਹੁ ਜੋਨੀ
 ਫਿਰਹਿ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਬੈਠਤ ਹੀ ਖਾਹਿ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਘਾਲਹਿ ਥਕਿ ਪਾਹਿ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਧਨਵਂਤ ॥ ਕਈ
 ਕੋਟਿ ਮਾਇਆ ਮਹਿ ਚਿੰਤ ॥ ਜਹ ਜਹ ਭਾਣਾ ਤਹ ਤਹ ਰਾਖੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਹਾਥੇ ॥੫॥ ਕਈ ਕੋਟਿ
 ਭਏ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਤਿਨਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਖੋਜੰਤੇ ॥ ਆਤਮ ਮਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ
 ਲਵਾਤੇ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਦਰਸਨ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਸ ॥ ਤਿਨ ਕਤ ਮਿਲਿਐ ਪ੍ਰਭੁ ਅਵਿਨਾਸ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਮਾਗਹਿ ਸਤਸੰਗੁ
 ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤਿਨ ਲਾਗਾ ਰੰਗੁ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਹੋਏ ਆਪਿ ਸੁਪ੍ਰਸਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸਦਾ ਧਨਿ ਧੰਨਿ ॥੬॥ ਕਈ
 ਕੋਟਿ ਖਾਣੀ ਅਲੁ ਖੰਡ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਅਕਾਸ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਹੋਏ ਅਵਤਾਰ ॥ ਕਈ ਜੁਗਤਿ ਕੀਨੀ ਬਿਸਥਾਰ
 ॥ ਕਈ ਬਾਰ ਪਸਰਿਐ ਪਾਸਾਰ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਇਕੁ ਏਕਕਾਰ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਨੇ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਭ
 ਮਾਹਿ ਸਮਾਤਿ ॥ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੭॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ
 ਦਾਸ ॥ ਤਿਨ ਹੋਵਤ ਆਤਮ ਪਰਗਾਸ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਤਤ ਕੇ ਬੇਤੇ ॥ ਸਦਾ ਨਿਹਾਰਹਿ ਏਕੋ ਨੇਤ੍ਰੇ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਮ
 ਰਸੁ ਪੀਵਹਿ ॥ ਅਮਰ ਭਏ ਸਦ ਸਦ ਹੀ ਜੀਵਹਿ ॥ ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ॥ ਆਤਮ ਰਸਿ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ
 ਸਮਾਵਹਿ ॥ ਅਪੁਨੇ ਜਨ ਕਤ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਓਇ ਪਰਮੇਸੁਰ ਕੇ ਪਿਆਰੇ ॥੮॥੧੦॥ ਸਲੋਕੁ ॥
 ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਹੈ ਫੌਰਨ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਸੋਇ ॥੯॥
 ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਇ ਹੋਗੁ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰਾ ॥

अंतु नही किछु पारावारा ॥ हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ हुकमे ऊच नीच
 बिउहार ॥ हुकमे अनिक रंग परकार ॥ करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभ महि रहिआ
 समाई ॥ ੧ ॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ
 भावै ता हरि गुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आपि करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरिआ का
 आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ जो भावै सो कार करावै ॥ नानक दृस्टी अवरु न आवै ॥ ੨ ॥
 कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ जो
 तिसु भावै सोई करेइ ॥ अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥ भरमे भूला दह
 दिसि धावै ॥ निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥ करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ नानक ते
 जन नामि मिलेइ ॥ ੩ ॥ खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥ जा का दृस्टि
 कछु न आवै ॥ तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥ जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै
 जगदीस ॥ जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥ अपनी बणत आपि
 बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥ ੪ ॥ इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ
 ॥ आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग
 हरख रंगि हसै ॥ कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पडिआल ॥ कबहू बेता ब्रहम बीचार
 ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥ ੫ ॥ कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ कबहू
 महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूं सरब की होत रवाल ॥ कबहू होइ बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का
 साजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर
 प्रसादि नानक सचु कहै ॥ ੬ ॥ कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥ कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥ कबहू
 तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ अनिक

ਜੋਨਿ ਭਰਮੈ ਭਰਮੀਆ ॥ ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਜਿਤ ਸ਼ਾਗੀ ਦਿਖਾਵੈ ॥ ਜਿਤ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਨਚਾਵੈ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ
 ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਟ੍ਰ੍ਹਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੭॥ ਕਬਹੂ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਇਹੁ ਪਾਵੈ ॥ ਉਸੁ ਅਸਥਾਨ ਤੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵੈ
 ॥ ਅਂਤਰਿ ਹੋਇ ਗਿਆਨ ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਉਸੁ ਅਸਥਾਨ ਕਾ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸੁ ॥ ਮਨ ਤਨ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਇਕ ਰੰਗਿ ॥
 ਸਦਾ ਬਸਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਮਹਿ ਜਲੁ ਆਇ ਖਟਾਨਾ ॥ ਤਿਤ ਜੋਤੀ ਸੰਗਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਨਾ ॥
 ਮਿਟਿ ਗਏ ਗਵਨ ਪਾਏ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨ ॥੮॥੧੧॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਸੁਖੀ ਬਸੈ ਮਸਕੀਨੀਆ
 ਆਪੁ ਨਿਵਾਰਿ ਤਲੇ ॥ ਬਡੇ ਬਡੇ ਅਛਕਾਰੀਆ ਨਾਨਕ ਗਰਬਿ ਗਲੇ ॥੯॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਜਿਸ ਕੈ ਅਂਤਰਿ
 ਰਾਜ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਸੋ ਨਰਕਪਾਤੀ ਹੋਵਤ ਸੁਆਨੁ ॥ ਜੋ ਜਾਨੈ ਮੈ ਜੋਬਨਵੰਤੁ ॥ ਸੋ ਹੋਵਤ ਬਿਸਟਾ ਕਾ ਜੰਤੁ ॥
 ਆਪਸ ਕਤ ਕਰਮਵੰਤੁ ਕਹਾਵੈ ॥ ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਾਵੈ ॥ ਧਨ ਭੂਮਿ ਕਾ ਜੋ ਕਰੈ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਸੋ ਮੂਰਖੁ
 ਅੰਧਾ ਅਗਿਆਨੁ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਗਰੀਬੀ ਬਸਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਈਹਾ ਮੁਕਤੁ ਆਗੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥
 ੧॥ ਧਨਵੰਤਾ ਹੋਇ ਕਰਿ ਗਰਬਾਵੈ ॥ ਤ੍ਰਣ ਸਮਾਨਿ ਕਛੁ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਵੈ ॥ ਬਹੁ ਲਸਕਰ ਮਾਨੁਖ ਊਪਰਿ ਕਰੇ
 ਆਸ ॥ ਪਲ ਭੀਤਰਿ ਤਾ ਕਾ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸ ॥ ਸਭ ਤੇ ਆਪ ਜਾਨੈ ਬਲਵੰਤੁ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ਜਾਇ ਭਸਮਤੁ ॥
 ਕਿਸੈ ਨ ਬਦੈ ਆਪਿ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਤਿਸੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਾ ਕਾ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਸੋ
 ਜਨੁ ਨਾਨਕ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥ ਕੋਟਿ ਕਰਮ ਕਰੈ ਹਤ ਧਾਰੇ ॥ ਸ਼ਮੁ ਪਾਵੈ ਸਗਲੇ ਬਿਰਥਾਰੇ ॥ ਅਨਿਕ
 ਤਪਸਿਆ ਕਰੇ ਅਛਕਾਰ ॥ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਅਵਤਾਰ ॥ ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਆਤਮ ਨਹੀ ਦ੍ਰਵੈ ॥
 ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਕਹੁ ਕੈਸੇ ਗਵੈ ॥ ਆਪਸ ਕਤ ਜੋ ਭਲਾ ਕਹਾਵੈ ॥ ਤਿਸਹਿ ਭਲਾਈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਸਰਬ ਕੀ
 ਰੇਨ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਹੋਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥੩॥ ਜਬ ਲਗੁ ਜਾਨੈ ਮੁੜਾ ਤੇ ਕਛੁ ਹੋਇ ॥ ਤਬ
 ਇਸ ਕਤ ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਜਬ ਇਹ ਜਾਨੈ ਮੈ ਕਿਛੁ ਕਰਤਾ ॥ ਤਬ ਲਗੁ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਮਹਿ ਫਿਰਤਾ ॥ ਜਬ
 ਧਾਰੈ ਕੋਤੁ ਬੈਰੀ ਮੀਤੁ ॥ ਤਬ ਲਗੁ ਨਿਹਚਲੁ ਨਾਹੀ ਚੀਤੁ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਮੋਹ ਮਗਨ ਸੰਗਿ ਮਾਇ ॥ ਤਬ ਲਗੁ
 ਧਰਮ ਰਾਇ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਬੰਧਨ ਤੂਟੈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਹਤ ਛੂਟੈ ॥੪॥ ਸਹਸ ਖਟੇ

ਲਖ ਕਤ ਤਠਿ ਧਾਰੈ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਨ ਆਰੈ ਮਾਇਆ ਪਾਛੈ ਪਾਰੈ ॥ ਅਨਿਕ ਭੋਗ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਕਰੈ ॥ ਨਹ ਤ੃ਪਤਾਰੈ
 ਖਪਿ ਖਪਿ ਮਰੈ ॥ ਬਿਨਾ ਸੰਤੋਖ ਨਹੀ ਕੋਊ ਰਾਜੈ ॥ ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਕ੃ਥੇ ਸਭ ਕਾਜੈ ॥ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਸਰਬ ਸੁਖੁ ਹੋਇ
 ॥ ਬਡਭਾਗੀ ਕਿਸੈ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥੫॥ ਕਰਨ
 ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥ ਇਸ ਕੈ ਹਾਥਿ ਕਹਾ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਜੈਸੀ ਦੂਸਟਿ ਕਰੇ ਤੈਸਾ ਹੋਇ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਪ੍ਰਮੁ
 ਸੋਇ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕੀਨੇ ਸੁ ਅਪਨੈ ਰੰਗਿ ॥ ਸਭ ਤੇ ਦ੍ਰਵਿ ਸਭਹੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਕੂੜੈ ਦੇਖੈ ਕਰੈ ਬਿਕੇਕ ॥ ਆਪਹਿ ਏਕ
 ਆਪਹਿ ਅਨੇਕ ॥ ਮਰੈ ਨ ਬਿਨਸੈ ਆਰੈ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਦ ਹੀ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੬॥ ਆਪਿ ਉਪਦੇਸੈ ਸਮਝੈ
 ਆਪਿ ॥ ਆਪੇ ਰਚਿਆ ਸਭ ਕੈ ਸਾਥਿ ॥ ਆਪਿ ਕੀਨੇ ਆਪਨ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥ ਸਭੁ ਕਛੁ ਤਸ ਕਾ ਓਹੁ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
 ਤਸ ਤੇ ਭਿਨਨ ਕਹਹੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਏਕੈ ਸੋਇ ॥ ਅਪੁਨੇ ਚਲਿਤ ਆਪਿ ਕਰਣੈਹਾਰ ॥ ਕਤਤਕ ਕਰੈ
 ਰੰਗ ਆਪਾਰ ॥ ਮਨ ਮਹਿ ਆਪਿ ਮਨ ਅਪੁਨੇ ਮਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀਮਤਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ॥੭॥ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਮੁ
 ਸੁਆਮੀ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਖਿਆਨੀ ॥ ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਭੁ ਕੀਨਾ ॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕਿਨੈ ਬਿਰਲੈ ਚੀਨਾ ॥ ਭਲਾ
 ਭਲਾ ਭਲਾ ਤੇਰਾ ਰੂਪ ॥ ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਅਪਾਰ ਅਨੂਪ ॥ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ
 ਸੁਨੀ ਸੁਵਨ ਬਖ਼ਾਣੀ ॥ ਪਵਿਤਰ ਪਵਿਤਰ ਪਵਿਤਰ ਪੁਨੀਤ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥੮॥੧੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥
 ਸੰਤ ਸਰਨਿ ਜੋ ਜਨੁ ਪਰੈ ਸੋ ਜਨੁ ਉਧਰਨਹਾਰ ॥ ਸੰਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਨਾਨਕਾ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਅਵਤਾਰ ॥੧॥
 ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਆਰਜਾ ਘਟੈ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਜਮ ਤੇ ਨਹੀ ਛੁਟੈ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਸੁਖੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥
 ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਨਰਕ ਮਹਿ ਪਾਇ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਮਤਿ ਹੋਇ ਮਲੀਨ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਸੋਭਾ ਤੇ ਹੀਨ ॥ ਸੰਤ ਕੇ
 ਹਤੇ ਕਤ ਰਖੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਥਾਨ ਭ੍ਰਸਟੁ ਹੋਇ ॥ ਸੰਤ ਕ੃ਪਾਲ ਕ੃ਪਾ ਜੇ ਕਰੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੰਤਸੰਗਿ
 ਨਿੰਦਕੁ ਭੀ ਤਰੈ ॥੧॥ ਸੰਤ ਕੇ ਟ੍ਰੂਖਨ ਤੇ ਮੁਖੁ ਭਵੈ ॥ ਸੰਤਨ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਕਾਗ ਜਿਤ ਲਵੈ ॥ ਸੰਤਨ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਸਰਪ
 ਜੋਨਿ ਪਾਇ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਤ੍ਰਗਦ ਜੋਨਿ ਕਿਰਮਾਇ ॥ ਸੰਤਨ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਤ੍ਰਸਨਾ ਮਹਿ ਜਲੈ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ
 ਸਭੁ ਕੋ ਛਲੈ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਤੇਜੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਟ੍ਰੂਖਨਿ ਨੀਚੁ ਨੀਚਾਇ ॥ ਸੰਤ ਦੋਖੀ ਕਾ ਥਾਉ ਕੋ ਨਾਹਿ ॥

ਨਾਨਕ ਸਨਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਓਡਿ ਭੀ ਗਤਿ ਪਾਹਿ ॥੨॥ ਸਨਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਮਹਾ ਅਤਤਾਈ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਖਿਨੁ ਟਿਕਨੁ
 ਨ ਪਾਈ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਮਹਾ ਹਤਿਆਰਾ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਪਰਮੇਸੁਰਿ ਮਾਰਾ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਰਾਜ ਤੇ ਹੀਨੁ
 ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਦੁਖੀਆ ਅਰੁ ਦੀਨੁ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਨਿੰਦਕ ਕਤ ਸਰਬ ਰੋਗ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਨਿੰਦਕ ਕਤ ਸਦਾ ਬਿਜੋਗ ॥
 ਸਨਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਦੋਖ ਮਹਿ ਦੋਖੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਨਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਤਸ ਕਾ ਭੀ ਹੋਡਿ ਮੋਖੁ ॥੩॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਅਪਵਿਤੁ
 ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਕਿਸੈ ਕਾ ਨਹੀ ਮਿਤੁ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਤ ਡਾਨੁ ਲਾਗੈ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਤ ਸਭ ਤਿਆਗੈ ॥ ਸਨਤ
 ਕਾ ਦੋਖੀ ਮਹਾ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਬਿਕਾਰੀ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਜਨਮੈ ਮਰੈ ॥ ਸਨਤ ਕੀ ਦੂਖਨਾ ਸੁਖ ਤੇ
 ਟੈ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਤ ਨਾਹੀ ਠਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਸਨਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਏ ਮਿਲਾਡਿ ॥੪॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਅਧ ਬੀਚ ਤੇ ਟ੍ਰੌਟੈ
 ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਕਿਤੈ ਕਾਜਿ ਨ ਪਹੂੰਚੈ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਤ ਉਦਿਆਨ ਭਰਮਾਈਐ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਤੁੜਾਡਿ ਪਾਈਐ
 ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਅੰਤਰ ਤੇ ਥੋਥਾ ॥ ਜਿਤ ਸਾਸ ਬਿਨਾ ਮਿਰਤਕ ਕੀ ਲੋਥਾ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕੀ ਜੜ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥
 ਆਪਨ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਹਿ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਤ ਅਕਰੁ ਨ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਨਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਏ ਤਬਾਰਿ
 ॥੫॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਝਿਉ ਬਿਲਲਾਡਿ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਬਿਹੂਨ ਮਛੁਲੀ ਤੱਫ਼ਡਾਡਿ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਭੂਖਾ ਨਹੀ
 ਰਾਜੈ ॥ ਜਿਤ ਪਾਵਕੁ ਈਧਨਿ ਨਹੀ ਧਾਪੈ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਛੁਟੈ ਝਿਕਲੇਲਾ ॥ ਜਿਤ ਬ੍ਰਾਅਡੁ ਤਿਲੁ ਖੇਤ ਮਾਹਿ ਦੁਹੇਲਾ
 ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਧਰਮ ਤੇ ਰਹਤ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦ ਮਿਥਿਆ ਕਹਤ ॥ ਕਿਰਤੁ ਨਿੰਦਕ ਕਾ ਧੁਰਿ ਹੀ ਪਇਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਥਿਆ ॥੬॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਬਿਗੜ ਰੂਪੁ ਹੋਡਿ ਜਾਡਿ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਤ ਦਰਗਹ
 ਮਿਲੈ ਸਜਾਡਿ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਸਹਕਾਈਐ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਨ ਮਰੈ ਨ ਜੀਵਾਈਐ ॥ ਸਨਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕੀ ਪੁਜੈ
 ਨ ਆਸਾ ॥ ਸਨਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਤਠਿ ਚਲੈ ਨਿਰਾਸਾ ॥ ਸਨਤ ਕੈ ਦੋਖਿ ਨ ਤੂਸਟੈ ਕੋਡਿ ॥ ਜੈਸਾ ਭਾਵੈ ਤੈਸਾ ਕੋਈ ਹੋਡਿ ॥
 ਪਇਆ ਕਿਰਤੁ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾਨੈ ਸਚਾ ਸੋਡਿ ॥੭॥ ਸਭ ਘਟ ਤਿਸ ਕੇ ਓਹੁ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ
 ਤਿਸ ਕਤ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਕਰਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ॥ ਸਭੁ
 ਕਛੁ ਵਰਤੈ ਤਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ॥ ਜੈਸਾ ਕਰੇ ਤੈਸਾ ਕੋ ਥੀਆ ॥ ਅਪਨਾ ਖੇਲੁ ਆਪਿ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥ ਦ੍ਰੂਸਰ ਕਤਨੁ

कहै बीचारु ॥ जिस नो कृपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥੮॥੧੩॥ सलोकु ॥
 तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ
 जाइ ॥੧॥ असटपदी ॥ मानुख की टेक बृथी सभ जानु ॥ देवन कउ एकै भगवानु ॥ जिस कै दीअै रहै
 अधाइ ॥ बहुरि न तृसना लागै आइ ॥ मारै रखै एको आपि ॥ मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का
 हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ नानक बिघनु
 न लागै कोइ ॥੨॥ उसतति मन महि करि निरंकार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥ निरमल रसना
 अंमूतु पीउ ॥ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥ साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥
 चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥ मिटहि पाप जपीअै हरि बिंद ॥ कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ हरि
 दरगह नानक ऊजल मथा ॥੩॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ राम नाम
 जो करहि बीचार ॥ से धनवंत गनी संसार ॥ मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी
 ॥ एको एकु एकु पछानै ॥ इत उत की ओहु सोझी जानै ॥ नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥ नानक तिनहि
 निरंजनु जानिआ ॥੪॥ गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिस की जानहु तृसना बुझै ॥ साधसंगि हरि
 हरि जसु कहत ॥ सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ गृहसत महि
 सोई निरबानु ॥ एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ तिस की कटीअै जम की फासा ॥ पारब्रहम की जिसु
 मनि भूख ॥ नानक तिसहि न लागहि दूख ॥੫॥ जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ सो संतु सुहेला
 नही डुलावै ॥ जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥ सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा दृसटाइआ ॥
 अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥ सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥ जब
 देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥੬॥ नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥
 आपन चलितु आप ही करै ॥ आवनु जावनु दृसटि अनदृसटि ॥ आगिआकारी धारी सभ सृसटि ॥

आपे आपि सगल महि आपि ॥ अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ अबिनासी नाही किछु खंड ॥ धारण
 धारि रहिओ ब्रह्मंड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥ जिन प्रभु जाता
 सु सोभावंत ॥ सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख
 बिसारन ॥ आपे मेलि लए किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥
 जिस नो कृपा करहि बड़भागै ॥ नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु
 ॥७॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ करणैहारु
 पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा दृसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि
 समाए ॥ ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ नानक प्रभ जनु एको जानु
 ॥८॥१४॥ सलोकु ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीअै नानक
 तिसु बलिहार ॥९॥ असटपदी ॥ टूटी गाढनहार गोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की
 चिंता जिसु मन माहि ॥ तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे
 आपि ॥ आपन कीआ कछू न होइ ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ गति
 नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥ रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ धनवंता
 होइ किआ को गरबै ॥ जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला
 बिना कह धावै ॥ जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ
 रेगु ॥ नानक सो जनु सदा अरेगु ॥२॥ जित मंदर कउ थामै थंमनु ॥ तित गुर का सबदु मनहि
 असर्थंमनु ॥ जित पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ जित अंधकार दीपक
 परगासु ॥ गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥ जित महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ तित साधू
 संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥ मन मूरख

काहे बिललाईअै ॥ पुरब लिखे का लिखिआ पाईअै ॥ दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर तिआगि तू
 तिसहि चितारु ॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु आई तेरै संग ॥
 लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥ राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती घरि जाहि ॥੪॥ जिसु
 वखर कउ लैनि तू आइआ ॥ राम नामु संतन घरि पाइआ ॥ तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ राम
 नामु हिरदे महि तोलि ॥ लादि खेप संतह संगि चालु ॥ अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥ धंनि धंनि कहै
 सभु कोडि ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोडि ॥ इहु वापारु विरला वापारै ॥ नानक ता कै सद बलिहारै ॥
 ੫॥ चरन साध के धोडि धोडि पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु इसनानु ॥ साध
 ऊपरि जाईअै कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईअै ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईअै ॥ अनिक
 बिघन ते साधू राखै ॥ हरि गुन गाइ अंमृत रसु चाखै ॥ ओट गही संतह दरि आइआ ॥ सरब सूख
 नानक तिह पाइआ ॥੬॥ मिरतक कउ जीवालनहार ॥ भूखे कउ देवत अधार ॥ सरब निधान जा की
 दृस्टी माहि ॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥ तिसु बिनु दूसर होआ
 न होगु ॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥ करि किरपा जिस कउ
 नामु दीआ ॥ नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥੭॥ जा कै मनि गुर की परतीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु
 चीति ॥ भगतु भगतु सुनीअै तिहु लोडि ॥ जा कै हिरदै एको होडि ॥ सचु करणी सचु ता की रहत ॥ सचु
 हिरदै सति मुखि कहत ॥ साची दृस्टि साचा आकारु ॥ सचु वरतै साचा पासारु ॥ पारब्रह्मु जिनि सचु
 करि जाता ॥ नानक सो जनु सचि समाता ॥੮॥੧੫॥ सलोकु ॥ रूपु न रेख न रंगु किछु तृहु गुण ते प्रभ
 भिन्न ॥ तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसन्न ॥੯॥ असटपदी ॥ अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ मानुख
 की तू प्रीति तिआगु ॥ तिस ते परै नाही किछु कोडि ॥ सरब निरंतरि एको सोडि ॥ आपे बीना आपे दाना
 ॥ गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥ पारब्रह्म परमेसुर गोबिंद ॥ कृपा निधान दिइआल बखसंद ॥ साध

तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इहु अनराउ ॥੧॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥ जो करि पाइआ
 सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेव फोरु ॥ तिस का मंत्र न जानै होरु ॥ अनद रूप मंगल सद जा कै ॥
 सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु गृहसत महि
 भोगी ॥ धिआडि धिआडि भगतह सुखु पाइआ ॥ नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥
 ੨॥ जा की लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
 सगल परोई अपुनै सूति ॥ सुमति गिआनु धिआनु जिन टेडि ॥ जन दास नामु धिआवहि सेडि ॥
 तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ ऊच नीच तिस के असथान ॥ जैसा
 जनावै तैसा नानक जान ॥੩॥ नाना रूप नाना जा के रंग ॥ नाना भेख करहि इक रंग ॥ नाना
 बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिओ पूरनु
 सभ ठाडि ॥ नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ अपनी कीमति आपे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ
 तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥੪॥ नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम के धारे खंड
 ब्रह्मंड ॥ नाम के धारे स्मृति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ नाम के धारे
 आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै संगि उधरे
 सुनि स्रवन ॥ करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥੫॥ रूपु
 सति जा का सति असथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सति सति जा की बाणी ॥ सति पुरख
 सभ माहि समाणी ॥ सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल
 निरमली ॥ जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥ बिस्त्रासु सति नानक
 गुर ते पाई ॥੬॥ सति बचन साधू उपदेस ॥ सति ते जन जा कै रिटै प्रवेस ॥ सति निरति
 बूझै जे कोडि ॥ नामु जपत ता की गति होडि ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ आपे जानै अपनी

ਮਿਤਿ ਗਤਿ ॥ ਜਿਸ ਕੀ ਸੂਸਟਿ ਸੁ ਕਰਪੈਹਾਰੁ ॥ ਅਵਰ ਨ ਬ੍ਰੂਜ਼ਿ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਕਰਤੇ ਕੀ ਮਿਤਿ ਨ ਜਾਨੈ ਕੀਆ
 ॥ ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਵਰਤੀਆ ॥੭॥ ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮ ਭਏ ਬਿਸਮਾਦ ॥ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਬ੍ਰੂਜ਼ਿਆ ਤਿਸੁ ਆਇਆ
 ਸ਼ਾਦ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗ ਰਾਚਿ ਜਨ ਰਹੇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਪਦਾਰਥ ਲਹੇ ॥ ਓਇ ਦਾਤੇ ਦੁਖ ਕਾਟਨਹਾਰ ॥ ਜਾ ਕੈ
 ਸੰਗਿ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰ ॥ ਜਨ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਸੋ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਗੁਨ ਗੋਬਿਦ ਕੀਰਤਨੁ ਜਨੁ
 ਗਾਵੈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ॥੮॥੧੬॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥ ਹੈ ਮਿ ਸਚੁ ਨਾਨਕ
 ਹੋਸੀ ਮਿ ਸਚੁ ॥੯॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਚਰਨ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪਰਸਨਹਾਰ ॥ ਪ੍ਰਯਾ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸੇਵਦਾਰ ॥ ਦਰਸਨੁ
 ਸਤਿ ਸਤਿ ਪੇਖਨਹਾਰ ॥ ਨਾਮੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਧਿਆਵਨਹਾਰ ॥ ਆਧਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਭ ਧਾਰੀ ॥ ਆਪੇ ਗੁਣ ਆਪੇ
 ਗੁਣਕਾਰੀ ॥ ਸਬਦੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬਕਤਾ ॥ ਸੁਰਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਜਿਸੁ ਸੁਨਤਾ ॥ ਬੁਝਨਹਾਰ ਕਤ ਸਤਿ ਸਭ ਹੋਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਸਤਿ ਸੱਚਲੁ ਰਿਦੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਾਨਿਆ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਮੂਲੁ ਪਛਾਨਿਆ
 ॥ ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਬਿਸਾਸੁ ਪ੍ਰਭ ਆਇਆ ॥ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਤਿਸੁ ਮਨਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥ ਭੈ ਤੇ ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ਬਸਾਨਾ
 ॥ ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜਿਆ ਤਿਸੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥ ਬਸਤੁ ਮਾਹਿ ਲੇ ਬਸਤੁ ਗਡਾਈ ॥ ਤਾ ਕਤ ਭਿਨਨ ਨ ਕਹਨਾ ਜਾਈ ॥
 ਬ੍ਰੂਜੈ ਬ੍ਰੂਜਨਹਾਰੁ ਬਿਕੇਕ ॥ ਨਾਰਾਇਨ ਮਿਲੇ ਨਾਨਕ ਏਕ ॥੨॥ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥ ਠਾਕੁਰ ਕਾ
 ਸੇਵਕੁ ਸਦਾ ਪ੍ਰਯਾਰੀ ॥ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕੈ ਮਨਿ ਪਰਤੀਤਿ ॥ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ਸੇਵਕ ਕੇ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥ ਠਾਕੁਰ
 ਕਤ ਸੇਵਕੁ ਜਾਨੈ ਸੰਗਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਨਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥ ਸੇਵਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਪਾਲਨਹਾਰਾ ॥ ਸੇਵਕ ਕੀ ਰਾਖੈ
 ਨਿਰਂਕਾਰਾ ॥ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਜਿਸੁ ਫਿਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਧਾਰੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਰੈ ॥੩॥ ਅਪੁਨੇ ਜਨ ਕਾ
 ਪਰਦਾ ਢਾਕੈ ॥ ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਸਰਪਰ ਰਾਖੈ ॥ ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕਤ ਦੇਇ ਵਡਾਈ ॥ ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕਤ ਨਾਮੁ
 ਜਪਾਈ ॥ ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਧਿ ਪਤਿ ਰਾਖੈ ॥ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕੋਇ ਨ ਲਾਖੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕਤ ਕੋ ਨ
 ਪਹੂੰਚੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਊਚ ਤੇ ਊਚੇ ॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੀ ਸੇਵਾ ਲਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਦਵ ਦਿਸਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ
 ॥੪॥ ਨੀਕੀ ਕੀਰੀ ਮਹਿ ਕਲ ਰਾਖੈ ॥ ਭਸਮ ਕਰੈ ਲਸਕਰ ਕੋਟਿ ਲਾਖੈ ॥ ਜਿਸ ਕਾ ਸਾਸੁ ਨ ਕਾਢਤ ਆਧਿ ॥

ਤਾ ਕਤ ਰਾਖਤ ਦੇ ਕਰਿ ਹਾਥ ॥ ਮਾਨਸ ਜਤਨ ਕਰਤ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥ ਤਿਸ ਕੇ ਕਰਤਬ ਬਿਰਥੇ ਜਾਤਿ ॥ ਮਾਰੈ ਨ
 ਰਾਖੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਡਿ ॥ ਸਰਬ ਜੀਆ ਕਾ ਰਾਖਾ ਸੋਡਿ ॥ ਕਾਹੇ ਸੋਚ ਕਰਹਿ ਰੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਅਲਖ
 ਵਿਡਾਣੀ ॥੫॥ ਬਾਰਂ ਬਾਰ ਬਾਰ ਪ੍ਰਭੁ ਜਪੀਐ ॥ ਪੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਧ੍ਰਿਪੀਐ ॥ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਜਿਨਿ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਡਿਆ ॥ ਤਿਸੁ ਕਿਛੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਦੂਸਟਾਡਿਆ ॥ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਾਮੋ ਰੂਪੁ ਰੰਗੁ ॥ ਨਾਮੋ ਸੁਖੁ ਹਰਿ
 ਨਾਮ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥ ਨਾਮ ਰਸਿ ਜੋ ਜਨ ਤ੃ਪਤਾਨੇ ॥ ਮਨ ਤਨ ਨਾਮਹਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਨੇ ॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਕਤ ਨਾਮ
 ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੈ ਸਦ ਕਾਮ ॥੬॥ ਬੋਲਹੁ ਜਸੁ ਜਿਹਬਾ ਟਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਜਨ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥
 ਕਰਹਿ ਭਗਤਿ ਆਤਮ ਕੈ ਚਾਡਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਸਿਉ ਰਹਹਿ ਸਮਾਡਿ ॥ ਜੋ ਹੋਆ ਹੋਕਤ ਸੋ ਜਾਨੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਕਾ
 ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਨੈ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਤਨ ਬਖਾਨਤ ॥ ਤਿਸ ਕਾ ਗੁਨੁ ਕਹਿ ਏਕ ਨ ਜਾਨਤ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ
 ਬਸਹਿ ਹਜੂਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਜਨ ਪੂਰੇ ॥੭॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤਿਨ ਕੀ ਓਟ ਲੇਹਿ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਪਨਾ ਤਿਨ ਜਨ
 ਦੇਹਿ ॥ ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਅਪਨਾ ਪ੍ਰਭੂ ਪਛਾਤਾ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਸਰਬ ਥੋਕ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਨਿ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ
 ॥ ਤਿਸ ਕੈ ਦਰਸਿ ਸਭ ਪਾਪ ਮਿਟਾਵਹਿ ॥ ਅਵਰ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲੀ ਛਾਡੁ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਤ੍ਰੂ ਸੇਵਾ ਲਾਗੁ ॥
 ਆਵਨੁ ਜਾਨੁ ਨ ਹੋਕੀ ਤੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੇ ਪ੍ਰਯਹੁ ਸਦ ਪੈਰਾ ॥੮॥੧੭॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਜਿਨਿ
 ਜਾਨਿਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਿਸ ਕਾ ਨਾਤ ॥ ਤਿਸ ਕੈ ਸਾਂਗਿ ਸਿਖੁ ਤਉਰੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਤ ॥੯॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕੀ ਕਰੈ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਸੇਵਕ ਕਤ ਗੁਰੁ ਸਦਾ ਦਿੱਤਾਲ ॥ ਸਿਖ ਕੀ ਗੁਰੁ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਹਿਰੈ ॥
 ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਚੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੈ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਿਖੁ ਬਿਕਾਰ ਤੇ ਹਾਟੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸਿਖ ਕਤ ਨਾਮ ਧਨੁ ਦੇਇ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਿਖੁ ਵਡਭਾਗੀ ਹੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕਾ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਵਾਰੈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕਤ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ਸਮਾਰੈ ॥੧॥ ਗੁਰ ਕੈ ਗ੍ਰਹਿ ਸੇਵਕੁ ਜੋ ਰਹੈ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਨ ਮਹਿ
 ਸਹੈ ॥ ਆਪਸ ਕਤ ਕਰਿ ਕਛੁ ਨ ਜਨਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸਦ ਧਿਆਵੈ ॥ ਮਨੁ ਬੇਚੈ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ
 ਪਾਸਿ ॥ ਤਿਸੁ ਸੇਵਕ ਕੇ ਕਾਰਜ ਰਸਿ ॥ ਸੇਵਾ ਕਰਤ ਹੋਡਿ ਨਿਹਕਾਮੀ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਹੋਤ ਪਰਾਪਤਿ ਸੁਆਮੀ ॥

अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥ २ ॥ बीस बिसवे गुर का मनु
मानै ॥ सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ अनिक बार गुर कउ
बलि जाउ ॥ सरब निधान जीअ का दाता ॥ आठ पहर पारब्रह्म रंगि राता ॥ ब्रह्म महि जनु जन
महि पारब्रह्मु ॥ एकहि आपि नही कछु भरमु ॥ सहस सिआनप लड़िआ न जाईअै ॥ नानक ऐसा
गुरु बडभागी पाईअै ॥ ३ ॥ सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत चरन गति निरमल रीति ॥ भेटत
संगि राम गुन ख्वे ॥ पारब्रह्म की दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि संतोखु आतम
पतीआने ॥ पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥ अंमृत दृसटि पेखै होइ संत ॥ गुण बिअंत कीमति नही
पाइ ॥ नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ ४ ॥ जिहबा एक उसतति अनेक ॥ सति पुरख पूरन
बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ निराहार निरवैर सुखदाई ॥
ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बंदन नित करहि ॥ चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ सद
बलिहारी सतिगुर अपने ॥ नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥ ५ ॥ इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥
अंमृतु पीवै अमरु सो होइ ॥ उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ आठ पहर
हरि का नामु लेइ ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥ मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥ मन महि राखै हरि
हरि एकु ॥ अंधकार दीपक परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥ ६ ॥ तपति माहि ठाढि
वरताई ॥ अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ
चूका निरभउ होइ बसे ॥ सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥ जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥ साधसंगि
जपि नामु मुरारी ॥ थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥ ७ ॥ निरगुनु आपि
सरगुनु भी ओही ॥ कला धारि जिनि सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥ अपुनी कीमति
आपे पाए ॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सरब निरंतरि एको सोइ ॥ ओति पोति रविआ रूप रंग ॥ भए

प्रगास साध कै संग ॥ रचि रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥੮॥੧੮॥ सलोकु ॥
 साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥ हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥੧॥
 असटपदी ॥ संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत
 बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ दृढ़ु करि गहहु नामु
 हरि वथु ॥ इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ संत जना का निरमल मंत ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥
 सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥੧॥ जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥
 जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥ सो सुखु साधू संगि परीति ॥ जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ सा सोभा
 भजु हरि की सरनी ॥ अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥ सरब निधान महि
 हरि नामु निधानु ॥ जपि नानक दरगहि परवानु ॥੨॥ मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥ दह दिसि धावत
 आवै ठाइ ॥ ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥ जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥ कलि ताती ठाँडा हरि नाउ ॥
 सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥ भगति भाइ आतम परगास ॥ तितु
 घरि जाइ बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥੩॥ ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ जनमि मरै
 सो काचो काचा ॥ आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥ आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ इउ रतन जनम का होइ
 उधारु ॥ हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिंमृति सासत बेद बीचारे ॥ हरि
 की भगति करहु मनु लाइ ॥ मनि बंछत नानक फल पाइ ॥੪॥ संगि न चालसि तेरै धना ॥ तूं किआ
 लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥ इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग
 माइआ बिसथार ॥ इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ असु हसती रथ असवारी ॥ झूठा डंफु झूठु पासारी ॥ जिनि
 दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु बिसारि नानक पछुताना ॥੫॥ गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ भगति
 बिना बहु डूबे सिआने ॥ हरि की भगति करहु मन मीत ॥ निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥ चरन कमल राखहु

ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਜਾਹਿ ॥ ਆਪਿ ਜਪਹੁ ਅਕਰਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥ ਸੁਨਤ ਕਹਤ ਰਹਤ ਗਤਿ
 ਪਾਵਹੁ ॥ ਸਾਰ ਭੂਤ ਸਤਿ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਉ ॥ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਡਿ ਨਾਨਕ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥੬॥ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਤੇਰੀ ਉਤਰਸਿ
 ਮੈਲੁ ॥ ਬਿਨਸਿ ਜਾਡਿ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਫੈਲੁ ॥ ਹੋਹਿ ਅਚਿੰਤੁ ਬਸੈ ਸੁਖ ਨਾਲਿ ॥ ਸਾਸਿ ਗ੍ਰਾਸਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥
 ਛਾਡਿ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲੀ ਮਨਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਵਹਿ ਸਚੁ ਧਨਾ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੰਜੀ ਸੰਚਿ ਕਰਹੁ ਬਿਤਹਾਰੁ ॥ ਈਹਾ
 ਸੁਖੁ ਦਰਗਹ ਜੈਕਾਰੁ ॥ ਸਰਬ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਏਕੋ ਦੇਖੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ॥੭॥ ਏਕੋ ਜਪਿ ਏਕੋ
 ਸਾਲਾਹਿ ॥ ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਏਕੋ ਮਨ ਆਹਿ ॥ ਏਕਸ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ਅਨ੍ਨਤ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਜਾਪਿ ਏਕ ਭਗਵਾਂਤ ॥
 ਏਕੋ ਏਕੁ ਏਕੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ॥ ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਪ੍ਰਭੁ ਬਿਆਪਿ ॥ ਅਨਿਕ ਬਿਸਥਾਰ ਏਕ ਤੇ ਭਏ ॥ ਏਕੁ
 ਅਰਾਧਿ ਪਰਾਛਤ ਗਏ ॥ ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਏਕੁ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਤਾ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਜਾਤਾ ॥੮॥੧੬॥
 ਸਲੋਕੁ ॥ ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਪ੍ਰਭ ਆਇਆ ਪਰਿਆ ਤਤ ਸਰਨਾਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਬੇਨਤੀ ਅਪਨੀ ਭਗਤੀ ਲਾਇ
 ॥੯॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਜਾਚਕ ਜਨੁ ਜਾਚੈ ਪ੍ਰਭ ਦਾਨੁ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੇਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਮਾਗਤ
 ਧੂਰਿ ॥ ਪਾਰਖਵਹਮ ਮੇਰੀ ਸਰਧਾ ਪੂਰਿ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਹਿ ਧਿਆਵਤ ॥
 ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਲਾਗੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰਤ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਨਿਤ ਨੀਤਿ ॥ ਏਕ ਓਟ ਏਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਮਾਗੈ
 ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਸਾਰੁ ॥੧॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਦੂਸਟਿ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ਬਿਰਲਾ ਕੋਇ ॥ ਜਿਨ ਚਾਖਿਆ ਸੇ
 ਜਨ ਤ੃ਪਤਾਨੇ ॥ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਨਹੀਂ ਡੋਲਾਨੇ ॥ ਸੁਭਰ ਭਰੇ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸ ਰੰਗਿ ॥ ਤੁਪਯੈ ਚਾਤ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਪਰੇ
 ਸਰਨਿ ਆਨ ਸਭ ਤਿਆਗਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਅਨਦਿਨੁ ਲਿਵ ਲਾਗਿ ॥ ਬਡਭਾਗੀ ਜਪਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਸੇਵਕ ਕੀ ਮਨਸਾ ਪੂਰੀ ਭਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਨਿਰਮਲ ਮਤਿ ਲਈ ॥ ਜਨ ਕਤ ਪ੍ਰਭੁ
 ਹੋਇਆਂ ਦਿਇਆਲੁ ॥ ਸੇਵਕੁ ਕੀਨੋ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲੁ ॥ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਮੁਕਤਿ ਜਨੁ ਭਇਆ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਢੂਖੁ
 ਭ੍ਰਮੁ ਗਇਆ ॥ ਇਛ ਪੁਨੀ ਸਰਧਾ ਸਭ ਪੂਰੀ ॥ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਦ ਸੰਗਿ ਹਜੂਰੀ ॥ ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਨਿ ਲੀਆ
 ਮਿਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤੀ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਸੋ ਕਿਤ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਘਾਲ ਨ ਭਾਨੈ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਬਿਸਰੈ ਜਿ

ਕੀਆ ਜਾਨੈ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਬਿਸਰੈ ਜਿਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੀਆ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਜੀਵਨ ਜੀਆ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਬਿਸਰੈ
 ਜਿ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਰਾਖੈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਬਿਰਲਾ ਲਾਖੈ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਬਿਖੁ ਤੇ ਕਾਢੈ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ
 ਟ੍ਰਟਾ ਗਾਢੈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੈ ਤਤੁ ਇਹੈ ਬੁੜਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਨਾਨਕ ਜਨ ਧਿਆਇਆ ॥੪॥ ਸਾਜਨ ਸੰਤ ਕਰਹੁ
 ਇਹੁ ਕਾਮੁ ॥ ਆਨ ਤਿਆਗੁ ਜਪਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ॥ ਆਪਿ ਜਪਹੁ ਅਵਰਹ
 ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥ ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਤਰੀਐ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਤਨੁ ਹੋਸੀ ਛਾਰੁ ॥ ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਸ੍ਰੂਖੁ ਨਿਧਿ
 ਨਾਮੁ ॥ ਬ੍ਰੂਡਤ ਜਾਤ ਪਾਏ ਬਿਸ਼ਾਮੁ ॥ ਸਗਲ ਟ੍ਰੂਖ ਕਾ ਹੋਕਤ ਨਾਸੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਗੁਨਤਾਸੁ ॥੫॥ ਉਪਜੀ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਚਾਤ ॥ ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਇਹੀ ਸੁਆਤ ॥ ਨੇਕਹੁ ਪੇਖਿ ਦਰਸੁ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਮਨੁ ਬਿਗਸੈ ਸਾਧ
 ਚਰਨ ਧੋਇ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰੁਂਗੁ ॥ ਬਿਰਲਾ ਕੋਤ ਪਾਵੈ ਸੰਗੁ ॥ ਏਕ ਬਸਤੁ ਦੀਜੈ ਕਰਿ ਮਿਇਆ ॥
 ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਮੁ ਜਧਿ ਲਿਇਆ ॥ ਤਾ ਕੀ ਉਪਮਾ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਸਮਾਇ ॥੬॥ ਪ੍ਰਭ
 ਬਖਸਂਦ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਸਦਾ ਕਿਰਪਾਲ ॥ ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ॥ ਸਰਬ ਘਟਾ
 ਕਰਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਕਾਰਣ ਕਰਤਾਰ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥ ਜੋ ਜੋ ਜਪੈ ਸੁ ਹੋਇ ਪੁਨੀਤ ॥
 ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਲਾਵੈ ਮਨ ਹੀਤ ॥ ਹਮ ਨਿਰਗੁਨੀਆਰ ਨੀਚ ਅਜਾਨ ॥ ਨਾਨਕ ਤੁਮਰੀ ਸਰਨਿ ਪੁਰਖ ਭਗਵਾਨ
 ॥੭॥ ਸਰਬ ਬੈਕੁਠੁ ਮੁਕਤਿ ਮੋਖ ਪਾਏ ॥ ਏਕ ਨਿਮਖ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥ ਅਨਿਕ ਰਾਜ ਭੋਗ ਬਡਿਆਈ ॥
 ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਕਥਾ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥ ਬਹੁ ਭੋਜਨ ਕਾਪਰ ਸੰਗੀਤ ॥ ਰਸਨਾ ਜਪਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨੀਤ ॥ ਭਲੀ ਸੁ
 ਕਰਨੀ ਸੋਭਾ ਧਨਵੰਤ ॥ ਹਿਰਦੈ ਬਸੇ ਪ੍ਰੰਨ ਗੁਰ ਮੰਤ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਦੇਹੁ ਨਿਵਾਸ ॥ ਸਰਬ ਸ੍ਰੂਖੁ ਨਾਨਕ
 ਪਰਗਾਸ ॥੮॥੨੦॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਸਰਗੁਨ ਨਿਰਗੁਨ ਨਿਰਕਾਰ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧੀ ਆਪਿ ॥ ਆਪਨ ਕੀਆ ਨਾਨਕਾ
 ਆਪੇ ਹੀ ਫਿਰਿ ਜਾਪਿ ॥੯॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਜਬ ਅਕਾਰੁ ਇਹੁ ਕਿਛੁ ਨ ਦ੃ਸਟੇਤਾ ॥ ਪਾਪ ਪੁਨਨ ਤਬ ਕਹ ਤੇ
 ਹੋਤਾ ॥ ਜਬ ਧਾਰੀ ਆਪਨ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧਿ ॥ ਤਬ ਬੈਰ ਬਿਰੋਧ ਕਿਸੁ ਸੰਗਿ ਕਮਾਤਿ ॥ ਜਬ ਇਸ ਕਾ ਬਰਨੁ ਚਿਹਨੁ
 ਨ ਜਾਪਤ ॥ ਤਬ ਹਰਖ ਸੋਗ ਕਹੁ ਕਿਸਹਿ ਬਿਆਪਤ ॥ ਜਬ ਆਪਨ ਆਪ ਆਪਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥ ਤਬ ਮੋਹ ਕਹਾ

ਕਿਸੁ ਹੋਵਤ ਭਰਮ ॥ ਆਪਨ ਖੇਲੁ ਆਪਿ ਵਰਤੀਜਾ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ॥੧॥ ਜਬ ਹੋਵਤ ਪ੍ਰਭ ਕੇਵਲ
 ਧਨੀ ॥ ਤਬ ਬੰਧ ਮੁਕਤਿ ਕਹੁ ਕਿਸ ਕਤ ਗਨੀ ॥ ਜਬ ਏਕਹਿ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥ ਤਬ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਕਹੁ
 ਕਤਨ ਅਤਤਾਰ ॥ ਜਬ ਨਿਰਗੁਨ ਪ੍ਰਭ ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ॥ ਤਬ ਸਿਵ ਸਕਤਿ ਕਹਹੁ ਕਿਤੁ ਠਾਇ ॥ ਜਬ ਆਪਹਿ
 ਆਪਿ ਅਪਨੀ ਜੋਤਿ ਧਰੈ ॥ ਤਬ ਕਵਨ ਨਿਡਰੁ ਕਵਨ ਕਤ ਡੈ ॥ ਆਪਨ ਚਲਿਤ ਆਪਿ ਕਰਨੈਹਾਰ ॥ ਨਾਨਕ
 ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥੨॥ ਅਵਿਨਾਸੀ ਸੁਖ ਆਪਨ ਆਸਨ ॥ ਤਹ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਹੁ ਕਹਾ ਬਿਨਾਸਨ ॥ ਜਬ
 ਪੂਰਨ ਕਰਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥ ਤਬ ਜਮ ਕੀ ਤਾਸ ਕਹਹੁ ਕਿਸੁ ਹੋਇ ॥ ਜਬ ਅਵਿਗਤ ਅਗੋਚਰ ਪ੍ਰਭ ਏਕਾ ॥ ਤਬ ਚਿਤ
 ਗੁਪਤ ਕਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਲੇਖਾ ॥ ਜਬ ਨਾਥ ਨਿਰੰਜਨ ਅਗੋਚਰ ਅਗਾਥੇ ॥ ਤਬ ਕਤਨ ਛੁਟੇ ਕਤਨ ਬੰਧਨ ਬਾਥੇ ॥
 ਆਪਨ ਆਪ ਆਪ ਹੀ ਅਚਰਜਾ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਨ ਰੂਪ ਆਪ ਹੀ ਉਪਰਜਾ ॥੩॥ ਜਹ ਨਿਰਸਲ ਪੁਰਖੁ ਪੁਰਖ ਪਤਿ
 ਹੋਤਾ ॥ ਤਹ ਬਿਨੁ ਮੈਲੁ ਕਹਹੁ ਕਿਆ ਧੋਤਾ ॥ ਜਹ ਨਿਰੰਜਨ ਨਿਰਕਾਰ ਨਿਰਿਵਾਨ ॥ ਤਹ ਕਤਨ ਕਤ ਮਾਨ ਕਤਨ
 ਅਭਿਮਾਨ ॥ ਜਹ ਸਰੂਪ ਕੇਵਲ ਜਗਦੀਸ ॥ ਤਹ ਛਲ ਛਿਦ੍ਰ ਲਗਤ ਕਹੁ ਕੀਸ ॥ ਜਹ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੀ ਜੋਤਿ ਸੰਗਿ
 ਸਮਾਵੈ ॥ ਤਹ ਕਿਸਹਿ ਭੂਖ ਕਵਨੁ ਤ੃ਪਤਾਵੈ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕਾ ਨਾਹਿ ਸੁਮਾਰੁ
 ॥੪॥ ਜਬ ਅਪਨੀ ਸੋਭਾ ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਬਨਾਈ ॥ ਤਬ ਕਵਨ ਮਾਇ ਬਾਪ ਮਿਤ ਸੁਤ ਭਾਈ ॥ ਜਹ ਸਰਬ ਕਲਾ
 ਆਪਹਿ ਪਰਕੀਨ ॥ ਤਹ ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਕਹਾ ਕੋਤ ਚੀਨ ॥ ਜਬ ਆਪਨ ਆਪੁ ਆਪਿ ਉਰਿ ਧਾਰੈ ॥ ਤਤ ਸਗਨ
 ਅਪਸਗਨ ਕਹਾ ਬੀਚਾਰੈ ॥ ਜਹ ਆਪਨ ਊਚ ਆਪਨ ਆਪਿ ਨੇਰਾ ॥ ਤਹ ਕਤਨ ਠਾਕੁਰੁ ਕਤਨੁ ਕਹੀਐ ਚੇਰਾ ॥
 ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮ ਰਹੇ ਬਿਸਮਾਦ ॥ ਨਾਨਕ ਅਪਨੀ ਗਤਿ ਜਾਨਹੁ ਆਪਿ ॥੫॥ ਜਹ ਅਛਲ ਅਛੇਦ ਅਭੇਦ
 ਸਮਾਇਆ ॥ ਊਹਾ ਕਿਸਹਿ ਬਿਆਪਤ ਮਾਇਆ ॥ ਆਪਸ ਕਤ ਆਪਹਿ ਆਦੇਸੁ ॥ ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਕਾ ਨਾਹੀ ਪਰਵੇਸੁ
 ॥ ਜਹ ਏਕਹਿ ਏਕ ਏਕ ਭਗਵਂਤਾ ॥ ਤਹ ਕਤਨੁ ਅਚਿੰਤੁ ਕਿਸੁ ਲਾਗੈ ਚਿੰਤਾ ॥ ਜਹ ਆਪਨ ਆਪੁ ਆਪਿ
 ਪਤੀਆਰਾ ॥ ਤਹ ਕਤਨੁ ਕਥੈ ਕਤਨੁ ਸੁਨਨੈਹਾਰਾ ॥ ਬਹੁ ਬੇਅੰਤ ਊਚ ਤੇ ਊਚਾ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਸ ਕਤ ਆਪਹਿ
 ਪਹੂੰਚਾ ॥੬॥ ਜਹ ਆਪਿ ਰਚਿਐ ਪਰਪੰਚੁ ਅਕਾਰੁ ॥ ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਮਹਿ ਕੀਨੋ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥ ਪਾਪੁ ਪੁਨੁ ਤਹ ਭੰਝੀ

कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥ आल जाल माइआ जंजाल ॥ हउमै मोह भरम भै भार ॥
 दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु संकोचै तउ
 नानक एकै ॥ ੭ ॥ जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ जह पसरै पासारु संत परतापि ॥ दुहू पाख का
 आपहि धनी ॥ उन की सोभा उनहू बनी ॥ आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन
 निरजोग ॥ जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत
 अतोलै ॥ जित बुलावहु तित नानक दास बोलै ॥ ੮ ॥ ੨੧ ॥ सलोकु ॥ जीअ जंत के ठाकुरा आपे
 वरतणहार ॥ नानक एको पसरिआ दूजा कह दृसटार ॥ ੧ ॥ असटपदी ॥ आपि कथै आपि सुननैहारु
 ॥ आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ जा तिसु भावै ता सृसटि उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए ॥ तुम ते
 भिन्न नही किछु होइ ॥ आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ सचु
 नामु सोई जनु पाए ॥ सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल सृसटि का जेता ॥ ੧ ॥ जीअ जंत्र
 सभ ता कै हाथ ॥ दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥ जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥ सो मूआ जिसु मनहु
 बिसारै ॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥ सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥ जीअ की जुगति जा कै सभ
 हाथि ॥ अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥ गुन निधान बेअंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥
 ੨ ॥ पूरन पूरि रहे दइआल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आपि ॥ अंतरजामी
 रहिओ बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥ जिसु भावै तिसु
 लए मिलाइ ॥ भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥ मन अंतरि बिस्त्रासु करि मानिआ ॥ करनहारु
 नानक इकु जानिआ ॥ ੩ ॥ जनु लागा हरि एकै नाइ ॥ तिस की आस न बिरथी जाइ ॥ सेवक
 कउ सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि परम पढु पाई ॥ इਸ ते ऊपरि नही बीचारु ॥ जा कै मनि
 बसिआ निरंकारु ॥ बंधन तोरि भए निरवैर ॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ इह लोक सुखीए

परलोक सुहेले ॥ नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥ साधसंगि मिलि करहु अन्नद ॥ गुन गावहु प्रभ
 परमान्नद ॥ राम नाम ततु करहु बीचारु ॥ द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥ अंमृत बचन हरि के गुन
 गात ॥ प्रान तरन का इहै सुआउ ॥ आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥
 सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
 राम नामु अंतरि उरि धारि ॥ पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ मनि
 तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह
 निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥ तिस ते दूरि
 कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी
 छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिंता जाइ मिटै अह्वाकारु ॥
 तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥७॥
 मति पूरी अंमृतु जा की दृसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत सृसटि ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल
 दरसनु सुंदर हरि रूप ॥ धनु सेवा सेवकु परवानु ॥ अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि बसै सु होत
 निहालु ॥ ता कै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥ साधसंगि नानक हरि
 धिआइआ ॥८॥२२॥ सलोकु ॥ गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥ हरि किरपा ते
 संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥९॥ असटपदी ॥ संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभु का
 लागा मीठा ॥ सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥ अनिक रंग नाना दृसटाहि ॥ नउ निधि अंमृतु
 प्रभ का नामु ॥ देही महि इस का बिस्त्रामु ॥ सुन्न समाधि अनहत तह नाद ॥ कहनु न जाई अचरज
 बिसमाद ॥ तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥ सो अंतरि सो बाहरि
 अन्नत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ धरनि माहि आकास पड़िआल ॥ सरब लोक पूरन

प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रह्मु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि
 ॥ चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥ तिस ते भिन्न नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥ बेद
 पुरान सिंमृति महि देखु ॥ ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ आपि अडोलु
 न कबहू डोलै ॥ सरब कला करि खेलै खेल ॥ मोलि न पाईअै गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की
 जोति ॥ धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ गुर परसादि भरम का नासु ॥ नानक तिन महि एहु बिसासु
 ॥३॥ संत जना का पेखनु सभु ब्रह्म ॥ संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥ संत जना सुनहि सुभ बचन ॥
 सरब बिआपी राम संगि रचन ॥ जिनि जाता तिस की इह रहत ॥ सति बचन साधू सभि कहत ॥ जो
 जो होइ सोई सुखु मानै ॥ करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥ नानक दरसनु
 देखि सभ मोही ॥४॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ तिसु भावै ता करे
 बिसथारु ॥ तिसु भावै ता एकंकारु ॥ अनिक कला लखी नह जाइ ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
 कवन निकटि कवन कहीअै दूरि ॥ आपे आपि आप भरपूरि ॥ अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥
 नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥ सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥ सगल
 समग्री जा का तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥ आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी
 कीनी माइआ ॥ सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ आगिआ आवै आगिआ
 जाइ ॥ नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥ इस ते होइ सु नाही बुरा ॥ ओरै कहहु किनै कछु करा ॥
 आपि भला करतूति अति नीकी ॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥ ओति पोति
 आपन संगि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइ ॥ दूसर होइ त सोझी पाइ ॥ तिस का कीआ सभु
 परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥ जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥ आपि मिलाइ लए प्रभु
 सोइ ॥ ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ धनु धनु धनु जनु आइआ ॥

ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥ ਜਨ ਆਵਨ ਕਾ ਇਹੈ ਸੁਆਉ ॥ ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਨਾਉ ॥
 ਆਪਿ ਮੁਕਤੁ ਮੁਕਤੁ ਕਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੮॥੨੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਪੂਰਾ ਪ੍ਰਭੁ
 ਆਰਾਧਿਆ ਪੂਰਾ ਜਾ ਕਾ ਨਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਪੂਰੇ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥੧॥ ਅਸਟਪਦੀ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕਾ
 ਸੁਨਿ ਤੁਪਦੇਸੁ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਪੇਖੁ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਮਨ ਅੰਤਰ ਕੀ ਤਤੈ ਚਿੰਦ ॥
 ਆਸ ਅਨਿਤ ਤਿਆਗਹੁ ਤਰੰਗ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਧੂਰਿ ਮਨ ਮੰਗ ॥ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਬੇਨਤੀ ਕਰਹੁ ॥ ਸਾਧਸਂਗਿ
 ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰਹੁ ॥ ਹਰਿ ਧਨ ਕੇ ਭਰਿ ਲੇਹੁ ਭੰਡਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਨਮਸਕਾਰ ॥੧॥ ਖੇਮ ਕੁਸਲ ਸਹਜ
 ਆਨਦ ॥ ਸਾਧਸਂਗਿ ਭਜੁ ਪਰਮਾਨਦ ॥ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰਿ ਤਥਾਰਹੁ ਜੀਤ ॥ ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪੀਤ ॥
 ਚਿਤਿ ਚਿਤਵਹੁ ਨਾਰਾਇਣ ਏਕ ॥ ਏਕ ਰੂਪ ਜਾ ਕੇ ਰੰਗ ਅਨੇਕ ॥ ਗੋਪਾਲ ਦਾਮੋਦਰ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ॥ ਦੁਖ ਭੰਜਨ
 ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾਲ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਮੁ ਬਾਰਂ ਬਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਜੀਅ ਕਾ ਇਹੈ ਅਧਾਰ ॥੨॥ ਉਤਮ ਸਲੋਕ ਸਾਧ
 ਕੇ ਬਚਨ ॥ ਅਮੁਲੀਕ ਲਾਲ ਏਹਿ ਰਤਨ ॥ ਸੁਨਤ ਕਮਾਵਤ ਹੋਤ ਤਥਾਰ ॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਲੋਕਹਿ ਨਿਸਤਾਰ ॥ ਸਫਲ
 ਜੀਵਨੁ ਸਫਲੁ ਤਾ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥ ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ॥ ਜੈ ਜੈ ਸਬਦੁ ਅਨਾਹਦੁ ਵਾਜੈ ॥ ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਅਨਦ
 ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਗਾਜੈ ॥ ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਪਾਲ ਮਹਾਂਤ ਕੈ ਮਾਥੇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਥਰੇ ਤਿਨ ਕੈ ਸਾਥੇ ॥੩॥ ਸਰਨਿ ਜੋਗੁ ਸੁਨਿ
 ਸਰਨੀ ਆਏ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪ ਮਿਲਾਏ ॥ ਮਿਟਿ ਗਏ ਬੈਰ ਭਏ ਸਭ ਰੇਨ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਾਧਸਂਗਿ
 ਲੈਨ ॥ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਭਏ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਸੇਵਕ ਕੀ ਸੇਵ ॥ ਆਲ ਜੰਜਾਲ ਬਿਕਾਰ ਤੇ ਰਹਤੇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ
 ਸੁਨਿ ਰਸਨਾ ਕਹਤੇ ॥ ਕਰਿ ਪ੍ਰਸਾਦੁ ਦਿਆ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਿਬਹੀ ਖੇਪ ਹਮਾਰੀ ॥੪॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਤਸਤਤਿ
 ਕਰਹੁ ਸੰਤ ਮੀਤ ॥ ਸਾਵਧਾਨ ਏਕਾਗਰ ਚੀਤ ॥ ਸੁਖਮਨੀ ਸਹਜ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਨ ਨਾਮ ॥ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਕਸੈ ਸੁ ਹੋਤ
 ਨਿਧਾਨ ॥ ਸਰਬ ਇਛਾ ਤਾ ਕੀ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ॥ ਪ੍ਰਧਾਨ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸਭ ਲੋਇ ॥ ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਪਾਏ ਅਸਥਾਨੁ
 ॥ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਵੈ ਆਵਨ ਜਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਾਟਿ ਚਲੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੫॥
 ਖੇਮ ਸਾਁਤਿ ਰਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ॥ ਬੁਧਿ ਗਿਆਨੁ ਸਰਬ ਤਹ ਸਿਧਿ ॥ ਬਿਦਿਆ ਤਪੁ ਜੋਗੁ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਨੁ ॥

ਗਿਆਨੁ ਸੇਸਟ ਊਤਮ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਕਮਲ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥ ਸਭ ਕੈ ਮਧਿ ਸਗਲ ਤੇ ਉਦਾਸ ॥ ਸੁਂਦਰੁ
ਚਤੁਰੁ ਤਤ ਕਾ ਬੇਤਾ ॥ ਸਮਦਰਸੀ ਏਕ ਦੂਸਟੇਤਾ ॥ ਇਹ ਫਲ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੈ ਮੁਖਿ ਭਨੇ ॥ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਨਾਮ
ਬਚਨ ਮਨਿ ਸੁਨੇ ॥੬॥ ਇਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਪੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥ ਸਭ ਜੁਗ ਮਹਿ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ
ਨਾਮ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ॥ ਸਿਮੂਤਿ ਸਾਸਕ ਬੇਦ ਬਖਾਣੀ ॥ ਸਗਲ ਮਤਾਂਤ ਕੇਵਲ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਭਗਤ ਕੈ
ਮਨਿ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਕੋਟਿ ਅਪ੍ਰਾਧ ਸਾਧਸਂਗਿ ਮਿਟੈ ॥ ਸੰਤ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਜਮ ਤੇ ਛੁਟੈ ॥ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਕਰਮ ਪ੍ਰਭਿ ਪਾਏ
॥ ਸਾਧ ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਤੇ ਆਏ ॥੭॥ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਸੁਨੈ ਲਾਇ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਆਵੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚੀਤਿ ॥
ਜਨਮ ਮਰਨ ਤਾ ਕਾ ਢੂਖੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥ ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਤਤਕਾਲ ਉਧਾਰੈ ॥ ਨਿਰਮਲ ਸੋਭਾ ਅੰਮ੍ਰਤ ਤਾ ਕੀ ਬਾਨੀ ॥ ਏਕੁ
ਨਾਮੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥ ਢੂਖ ਰੋਗ ਬਿਨਸੇ ਭੈ ਭਰਮ ॥ ਸਾਧ ਨਾਮ ਨਿਰਮਲ ਤਾ ਕੇ ਕਰਮ ॥ ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਤਾ ਕੀ
ਸੋਭਾ ਬਨੀ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹ ਗੁਣਿ ਨਾਮੁ ਸੁਖਮਨੀ ॥੮॥੨੪॥

ਥਿਤੀ ਗਤਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿਆ ਸੁਆਮੀ ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ॥ ਅਨਿਕ ਭਾੱਤਿ ਹੋਇ ਪਸਰਿਆ ਨਾਨਕ ਏਕਕਾਰੁ ॥੧॥
ਪਤਡੀ ॥ ਏਕਮ ਏਕਕਾਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਤ ਬੰਦਨਾ ਧਿਆਇ ॥ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨਿ ਪਰਤ ਹਰਿ ਰਾਇ
॥ ਤਾ ਕੀ ਆਸ ਕਲਿਆਣ ਸੁਖ ਜਾ ਤੇ ਸਭੁ ਕਛੁ ਹੋਇ ॥ ਚਾਰਿ ਕੁਟ ਦਹ ਦਿਸਿ ਭ੍ਰਮਿਐ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ
ਕੋਇ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮੂਤਿ ਸੁਨੇ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਨ ਭੈ ਹਰਨ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਨਿਰਕਾਰ
॥ ਦਾਤਾ ਭੁਗਤਾ ਦੇਨਹਾਰੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਜੋ ਚਾਹਹਿ ਸੋਈ ਮਿਲੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ
॥੧॥ ਗੋਬਿੰਦ ਜਸੁ ਗਈਐ ਹਰਿ ਨੀਤ ॥ ਮਿਲਿ ਭਜੀਐ ਸਾਧਸਂਗਿ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥
ਕਰਤ ਬੰਦਨਾ ਅਨਿਕ ਵਾਰ ਸਰਨਿ ਪਰਤ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਭ੍ਰਮੁ ਕਟੀਐ ਨਾਨਕ ਸਾਧਸਂਗਿ ਦੁਤੀਆ ਭਾਤ
ਮਿਟਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਦੁਤੀਆ ਦੁਰਮਤਿ ਦੂਰਿ ਕਰਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਕਰਿ ਨੀਤ ॥ ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਮਨਿ ਤਨਿ
ਬਸੈ ਤਜਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੀਤ ॥ ਮਣੁ ਮਿਟੈ ਜੀਵਨੁ ਮਿਲੈ ਬਿਨਸਹਿ ਸਗਲ ਕਲੇਸ ॥ ਆਪੁ ਤਜਹੁ

ਗੋਬਿੰਦ ਭਜਹੁ ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਪਰਵੇਸ ॥ ਲਾਭੁ ਮਿਲੈ ਤੋਟਾ ਹਿਰੈ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪਤਿਵੰਤ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ
 ਸੰਚਵੈ ਸਾਚ ਸਾਹ ਭਗਵਂਤ ॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਭਜਹੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਪਰੀਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਦੁਰਮਤਿ ਛੁਟਿ ਗੱਈ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਬਸੇ ਚੀਤਿ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਤੀਨਿ ਬਿਆਪਹਿ ਜਗਤ ਕਤ ਤੁਰੀਆ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਨਿਰਮਲ
 ਭਏ ਜਿਨ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤ੃ਤੀਆ ਕੈ ਗੁਣ ਬਿਖੈ ਫਲ ਕਬ ਉਤਮ ਕਬ ਨੀਚੁ ॥ ਨਰਕ
 ਸੁਰਗ ਭ੍ਰਮਤਤ ਘਣੋ ਸਦਾ ਸੰਘਾਰੈ ਮੀਚੁ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਸਹਸਾ ਸੰਸਾਰੁ ਹਤ ਹਤ ਕਰਤ ਬਿਹਾਇ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਏ
 ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣਨੀ ਚਿਤਵਹਿ ਅਨਿਕ ਤੁਪਾਇ ॥ ਆਧਿ ਬਿਆਧਿ ਤੁਪਾਧਿ ਰਸ ਕਬਹੁ ਨ ਤੂਟੈ ਤਾਪ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਪ੍ਰੰਨ ਧਨੀ ਨਹ ਕੂੜੀ ਪਰਤਾਪ ॥ ਮੋਹ ਭਰਮ ਕੂਡਤ ਘਣੋ ਮਹਾ ਨਰਕ ਮਹਿ ਵਾਸ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ
 ਨਾਨਕ ਤੇਰੀ ਆਸ ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਚਤੁਰ ਸਿਆਣਾ ਸੁਘੜੁ ਸੋਇ ਜਿਨਿ ਤਜਿਆ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ
 ਅਸਟ ਸਿਧਿ ਭਜੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੪॥ ਪਤੜੀ ॥ ਚਤੁਰਥਿ ਚਾਰੇ ਬੇਦ ਸੁਣਿ ਸੋਧਿਆਂ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਸਰਬ
 ਖੇਮ ਕਲਿਆਣ ਨਿਧਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਸਾਰੁ ॥ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੈ ਦੁਖ ਹੈਰੈ ਤੂਟਹਿ ਅਨਿਕ ਕਲੇਸ ॥ ਮੀਚੁ ਹੁਟੈ ਜਮ
 ਤੇ ਛੁਟੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਪਰਵੇਸ ॥ ਭਤ ਬਿਨਸੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਰਸੈ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥ ਦੁਖ ਦਾਰਿਦ ਅਪਵਿਕਤਾ
 ਨਾਸਹਿ ਨਾਮ ਅਧਾਰ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਖੋਜਤੇ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਗੋਪਾਲ ॥ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮੁਖੁ ਊਜਲਾ ਹੋਇ
 ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਰਖਾਲ ॥੪॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਪੰਚ ਬਿਕਾਰ ਮਨ ਮਹਿ ਬਸੇ ਰਾਚੇ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹੋਇ
 ਨਿਰਮਲਾ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੫॥ ਪਤੜੀ ॥ ਪੰਚਮਿ ਪੰਚ ਪ੍ਰਧਾਨ ਤੇ ਜਿਹ ਜਾਨਿਆਂ ਪਰਧੰਚੁ ॥ ਕੁਸਮ ਬਾਸ
 ਬਹੁ ਰੰਗੁ ਘਣੋ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਬਲਬੰਚੁ ॥ ਨਹ ਜਾਪੈ ਨਹ ਕੂੜੀਐ ਨਹ ਕਛੁ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਸੁਆਦ ਮੋਹ ਰਸ
 ਬੇਧਿਆਂ ਅਗਿਆਨਿ ਰਚਿਆਂ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਣ ਕੀਨੇ ਕਰਮ ਅਨੇਕ ॥ ਰਚਨਹਾਰੁ ਨਹ
 ਸਿਮਰਿਆਂ ਮਨਿ ਨ ਬੀਚਾਰਿ ਬਿਕੇ ॥ ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਭਗਵਾਨ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਲਿਪਤ ਨ ਰੰਚ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਰਲੇ
 ਪਾਈਅਹਿ ਜੋ ਨ ਰਚਹਿ ਪਰਧੰਚ ॥੫॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਖਟ ਸਾਸਤਰ ਊਚੈ ਕਹਹਿ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ
 ਗੁਣ ਗਾਵਤੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਦੁਆਰ ॥੬॥ ਪਤੜੀ ॥ ਖਸਟਮਿ ਖਟ ਸਾਸਤਰ ਕਹਹਿ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਕਥਹਿ ਅਨੇਕ ॥

ਊਤਮੁ ਊਚੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਗੁਣ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਸੇਖ ॥ ਨਾਰਦ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੁਕ ਬਿਆਸ ਜਸੁ ਗਾਵਤ ਗੋਬਿੰਦ ॥
 ਰਸ ਗੀਧੇ ਹਰਿ ਸਿਤ ਬੀਧੇ ਭਗਤ ਰਚੇ ਭਗਵਂਤ ॥ ਮੋਹ ਮਾਨ ਭਰਮੁ ਬਿਨਸਿਓ ਪਾਈ ਸਰਨਿ ਦਿੱਤਾਲ ॥
 ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਸੇ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲ ॥ ਲਾਭੁ ਮਿਲੈ ਤੋਟਾ ਹਿਰੈ ਸਾਧਸਂਗਿ ਲਿਵ ਲਾਡਿ ॥ ਖਾਟਿ
 ਖਾਜਾਨਾ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਹਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਡਿ ॥੬॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਸਤ ਮੰਡਲ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਥਹਿ ਬੋਲਹਿ ਸਤਿ
 ਸੁਭਾਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਸਾਂਤੋਖੀਐ ਏਕਸੁ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਡਿ ॥੭॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਪਤਮਿ ਸੰਚਹੁ ਨਾਮ ਧਨੁ ਟ੍ਰਟਿ ਨ
 ਜਾਹਿ ਭੰਡਾਰ ॥ ਸਾਂਤਸਾਂਗਤਿ ਮਹਿ ਪਾਈਐ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਵਾਰ ॥ ਆਪੁ ਤਜਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਭਜਹੁ ਸਰਨਿ ਪਰਹੁ ਹਰਿ
 ਰਾਡਿ ॥ ਦ੍ਰਖ ਹੈ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਡਿ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਮਨਿ ਹਰਿ ਜਪੈ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਣੁ
 ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ਪਛਾਣੁ ॥ ਸੋ ਸਾਜਨੁ ਸੋ ਸਖਾ ਮੀਤੁ ਜੋ ਹਰਿ ਕੀ ਮਤਿ ਦੇਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇਇ ॥੮॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਨ ਗਾਈਅਹਿ ਤਜੀਅਹਿ ਅਵਰਿ
 ਜੰਜਾਲ ॥ ਜਮਕਕਿਰੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਕਈ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿੱਤਾਲ ॥੯॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅਸਟਮੀ ਅਸਟ ਸਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ
 ॥ ਸਗਲ ਪਦਾਰਥ ਪੂਰਨ ਬੁਧਿ ॥ ਕਵਲ ਪ੍ਰਗਾਸ ਸਦਾ ਆਨਨਦ ॥ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ਨਿਰੋਧਰ ਮੰਤ ॥ ਸਗਲ
 ਧਰਮ ਪਵਿਤ੍ਰ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਊਚ ਬਿਸੇਖ ਗਿਆਨੁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਜਨੁ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਸੰਗਿ ॥ ਜਪਿ ਤਰੀਐ
 ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਨਾਰਾਇਣੁ ਨਹ ਸਿਮਰਿਓ ਮੋਹਿਓ ਸੁਆਦ ਬਿਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ
 ਬਿਸਾਰਿਐ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਅਵਤਾਰ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਤਮੀ ਨਵੇ ਛਿਦ੍ਰ ਅਪਵੀਤ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪਹਿ ਕਰਤ
 ਬਿਪਰੀਤਿ ॥ ਪਰ ਤੂਅ ਰਮਹਿ ਬਕਹਿ ਸਾਧ ਨਿੰਦ ॥ ਕਰਨ ਨ ਸੁਨਹੀ ਹਰਿ ਜਸੁ ਬਿੰਦ ॥ ਹਿਰਹਿ ਪਰ ਦਰਖੁ
 ਤਦਰ ਕੈ ਤਾਈ ॥ ਅਗਨਿ ਨ ਨਿਵਰੈ ਤੂਸਨਾ ਨ ਬੁੜਾਈ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਬਿਨੁ ਏਹ ਫਲ ਲਾਗੇ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ
 ਬਿਸਰਤ ਮਰਿ ਜਮਹਿ ਅਭਾਗੇ ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਦਸ ਦਿਸ ਖੋਜਤ ਮੈ ਫਿਰਿਓ ਜਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਸੋਇ ॥ ਮਨੁ ਬਸਿ
 ਆਵੈ ਨਾਨਕਾ ਜੇ ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾ ਹੋਇ ॥੪॥ ਪਤੜੀ ॥ ਦਸਮੀ ਦਸ ਦੁਆਰ ਬਸਿ ਕੀਨੇ ॥ ਮਨਿ ਸਾਂਤੋਖੁ ਨਾਮ
 ਜਪਿ ਲੀਨੇ ॥ ਕਰਨੀ ਸੁਨੀਐ ਜਸੁ ਗੋਪਾਲ ॥ ਨੈਨੀ ਪੇਖਤ ਸਾਧ ਦਿੱਤਾਲ ॥ ਰਸਨਾ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ਬੇਅੰਤ ॥ ਮਨ

ਮਹਿ ਚਿਤਵੈ ਪੂਰਨ ਭਗਵਤੁ ॥ ਹਸਤ ਚਰਨ ਸਾਂਤ ਟਹਲ ਕਮਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਸ਼ੰਜਮੁ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਪਾਈਐ
 ॥੧੦॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਏਕੋ ਏਕੁ ਬਖਾਨੀਐ ਬਿਰਲਾ ਜਾਣੈ ਸ਼ਾਦੁ ॥ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਨ ਜਾਣੀਐ ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਬਿਸਮਾਦੁ
 ॥੧੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਏਕਾਦਸੀ ਨਿਕਟਿ ਪੇਖਹੁ ਹਰਿ ਰਾਮੁ ॥ ਇੰਦ੍ਰੀ ਬਸਿ ਕਰਿ ਸੁਣਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥ ਮਨਿ ਸਾਂਤੋਖੁ
 ਸਰਬ ਜੀਅ ਦਿੱਡਿਆ ॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਬਰਤੁ ਸੰਪੂਰਨ ਭਿੱਡਿਆ ॥ ਧਾਵਤ ਮਨੁ ਰਾਖੈ ਇਕ ਠਾਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੁਧੁ
 ਜਪਤ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰਿ ਅਟਲ ਏਹੁ ਧਰਮ ॥੧੧॥
 ਸਲੋਕੁ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਹਰੀ ਸੇਵਾ ਕਰੀ ਮੇਟੇ ਸਾਧ ਕ੃ਪਾਲ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਬਿਨਸੇ ਸਗਲ ਜੰਜਾਲ
 ॥੧੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਦੁਆਦਸੀ ਦਾਨੁ ਨਾਮੁ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਤਜਿ ਮਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪਾਨ
 ਕਰਹੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ॥ ਮਨ ਤੂਪਤਾਸੈ ਕੀਰਤਨ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗਿ ॥ ਕੌਮਲ ਬਾਣੀ ਸਭ ਕਤ ਸਾਂਤੋਖੈ ॥ ਪੰਚ ਭੂ ਆਤਮਾ
 ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਸਿ ਪੋਖੈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਏਹ ਨਿਹਚਤ ਪਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਰਮਤ ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਈਐ ॥
 ੧੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਤੀਨਿ ਗੁਣਾ ਮਹਿ ਬਿਆਪਿਆ ਪੂਰਨ ਹੋਤ ਨ ਕਾਮ ॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਨਾਨਕ ਛੂਟੈ
 ਨਾਮ ॥੧੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕਤਦਸੀ ਤੀਨਿ ਤਾਪ ਸੰਸਾਰ ॥ ਆਵਤ ਜਾਤ ਨਰਕ ਅਕਤਾਰ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਜਨੁ ਨ
 ਮਨ ਮਹਿ ਆਇਆਂ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਮਖ ਨ ਗਾਇਆਂ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਕਾ ਦੇਹ ਕਰਿ ਬਾਧਿਆਂ ॥ ਦੀਰਘ ਰੋਗ
 ਮਾਇਆ ਆਸਾਧਿਆਂ ॥ ਦਿਨਹਿ ਬਿਕਾਰ ਕਰਤ ਸ਼ਮੁ ਪਾਇਆਂ ॥ ਨੈਨੀ ਨੀਦ ਸੁਪਨ ਬਰਡਾਇਆਂ ॥ ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ
 ਹੋਵਤ ਏਹ ਹਾਲ ॥ ਸਰਨਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਦਿੱਡਿਆਲ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਚਾਰਿ ਕੁਟੁ ਚਤੁਦਹ ਭਵਨ ਸਗਲ
 ਬਿਆਪਤ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਊਨ ਨ ਦੇਖੀਐ ਪੂਰਨ ਤਾ ਕੇ ਕਾਮ ॥੧੪॥ ਪਤੜੀ ॥ ਚਤੁਦਹਿ ਚਾਰਿ ਕੁਟੁ ਪ੍ਰਭ ਆਪ
 ॥ ਸਗਲ ਭਵਨ ਪੂਰਨ ਪਰਤਾਪ ॥ ਦੱਸੇ ਦਿਸਾ ਰਵਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ॥ ਧਰਨਿ ਅਕਾਸ ਸਭ ਮਹਿ ਪ੍ਰਭ ਪੇਖੁ ॥
 ਜਲ ਥਲ ਬਨ ਪਰਬਤ ਪਾਤਾਲ ॥ ਪਰਮੇਸ਼ਰ ਤਹ ਬਸਹਿ ਦਿੱਡਿਆਲ ॥ ਸੂਖਮ ਅਸਥੂਲ ਸਗਲ ਭਗਵਾਨ ॥
 ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਨ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਆਤਮੁ ਜੀਤਾ ਗੁਰਮਤੀ ਗੁਣ ਗਾਏ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਸਾਂਤ ਪ੍ਰਸਾਦੀ
 ਭੈ ਮਿਟੇ ਨਾਨਕ ਬਿਨਸੀ ਚਿੰਦ ॥੧੫॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅਮਾਵਸ ਆਤਮ ਸੁਖੀ ਭਏ ਸਾਂਤੋਖੁ ਦੀਆ ਗੁਰਦੇਵ ॥

मनु तनु सीतलु साँति सहज लागा प्रभ की सेव ॥ टूटे बंधन बहु बिकार सफल पूरन ता के काम ॥
दुर्मति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥ सरनि गही पारब्रह्म की मिटिआ आवा गवन ॥
आपि तरिआ कुटंब सिउ गुण गुबिंद प्रभ खवन ॥ हरि की टहल कमावणी जपीअै प्रभ का नामु ॥ गुर
पूरे ते पाइआ नानक सुख बिस्त्रामु ॥१५॥ सलोकु ॥ पूरनु कबहु न डोलता पूरा कीआ प्रभ आपि ॥
दिनु दिनु चड़ै सवाइआ नानक होत न घाटि ॥१६॥ पउड़ी ॥ पूरनमा पूरन प्रभ एकु करण कारण
समरथु ॥ जीअ जंत दइआल पुरखु सभ ऊपरि जा का हथु ॥ गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होइ
॥ अंतरजामी प्रभु सुजानु अलख निरंजन सोइ ॥ पारब्रह्मु परमेसरो सभ बिधि जानणहार ॥ संत सहाई
सरनि जोगु आठ पहर नमसकार ॥ अकथ कथा नह बूझीअै सिमरहु हरि के चरन ॥ पतित उधारन
अनाथ नाथ नानक प्रभ की सरन ॥१६॥ सलोकु ॥ दुख बिनसे सहसा गइओ सरनि गही हरि राइ ॥
मनि चिंदे फल पाइआ नानक हरि गुन गाइ ॥१७॥ पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥
को उपदेसै को दृड़ै तिस का होइ उधारु ॥ किलबिख काटै होइ निरमला जनम जनम मलु जाइ ॥
हलति पलति मुखु ऊजला नह पोहै तिसु माइ ॥ सो सुरता सो बैसनो सो गिआनी धनवंतु ॥ सो सूरा
कुलवंतु सोइ जिनि भजिआ भगवंतु ॥ खत्री ब्राह्मणु सूदु बैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥ जिनि जानिओ
प्रभु आपना नानक तिसहि खाल ॥१७॥

गउड़ी की वार महला ४ ॥

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु पुरखु दइआलु है जिस नो समतु सभु कोइ ॥ एक दृसटि करि देखदा मन भावनी
ते सिधि होइ ॥ सतिगुर विचि अंमृतु है हरि उतमु हरि पदु सोइ ॥ नानक किरपा ते हरि धिआईअै
गुरमुखि पावै कोइ ॥१॥ मः ४ ॥ हउमै माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥ लाहा
हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥ हउमै मैलु बिखु उतरै हरि अंमृतु हरि उर धारि ॥

सभि कारज तिन के सिधि हहि जिन गुरमुखि किरपा धारि ॥ नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि
 मेले सिरजणहारि ॥२॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचा गोसाई ॥ तुधुनो सभ धिआइटी
 सभ लगै तेरी पाई ॥ तेरी सिफति सुआलिउ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई ॥ गुरमुखा नो
 फलु पाइदा सचि नामि समाई ॥ वडे मेरे साहिबा वडी तेरी वडिआई ॥१॥ सलोक मः ४ ॥ विणु
 नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु ॥ मनमुख अह्नकारु सलाहदे हउमै ममता वादु ॥ जिन
 सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे जपि हरि हरि परमानादु ॥
 १॥ मः ४ ॥ सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मनि हरी ॥ नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली
 सभि दुख परहरी ॥२॥ पउड़ी ॥ तू आपे आपि निरंकारु है निरंजन हरि राइआ ॥ जिनी तू इक मनि
 सचु धिआइआ तिन का सभु दुखु गवाइआ ॥ तेरा सरीकु को नाही जिस नो लवै लाइ सुणाइआ ॥
 तुधु जेवडु दाता तूहै निरंजना तूहै सचु मेरै मनि भाइआ ॥ सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ ॥
 २॥ सलोक मः ४ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि
 सतिगुर साधू सजना ॥१॥ मः ४ ॥ मनु तनु रता रंग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु ॥ जन नानक हरि
 सरणागती हरि मेले गुर साबासि ॥२॥ पउड़ी ॥ तू करता पुरखु अगंमु है किसु नालि तू वडीअै ॥
 तुधु जेवडु होइ सु आखीअै तुधु जेहा तूहै पड़ीअै ॥ तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीअै ॥
 तू सचा सभस दा खसमु है सभ टू तू चड़ीअै ॥ तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीअै ॥३॥ सलोक
 मः ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु पिरंम का अठे पहर लग्नि ॥ जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि
 वसनि ॥१॥ मः ४ ॥ जिन अंदरि प्रीति पिरंम की जिउ बोलनि तिवै सोह्ननि ॥ नानक हरि आपे
 जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि ॥२॥ पउड़ी ॥ तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि नाही ॥ तू
 करहि सु सचे भला है गुर सबदि बुझाही ॥ तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही ॥ तू साहिबु अगमु

दइआलु है सभि तुधु धिआही ॥ सभि जीअ तेरे तू सभस दा तू सभ छडाही ॥४॥ सलोक मः ४ ॥ सुणि
 साजन प्रेम संदेसरा अखी तार लग्नि ॥ गुरि तुठै सजणु मेलिआ जन नानक सुखि सवंनि ॥१॥ मः ४ ॥
 सतिगुरु दाता दइआलु है जिस नो दइआ सदा होइ ॥ सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु
 डिकु सोइ ॥ निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइ ॥ सतिगुरु सभना दा
 भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ ॥ सतिगुर नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए कोइ ॥ नानक
 करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड
 जाणी ॥ जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लए सो साहिब मनि भाणी ॥ जे को ओस दी रीस करे सो मूँड अजाणी
 ॥ जिस नो सतिगुरु मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी ॥ नानक सचा सचु है बुझि सचि समाणी ॥५॥
 सलोक मः ४ ॥ हरि सति निरंजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरंकारु ॥ जिन जपिआ इक मनि
 इक चिति तिन लथा हउमै भारु ॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ तिन संत जना जैकारु ॥ कोई निंदा
 करे पूरे सतिगुरु की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥ सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे
 रखणहारु ॥ धनु धनु गुरु गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु ॥ जन नानक तिन कउ वारिआ जिन
 जपिआ सिरजणहारु ॥१॥ मः ४ ॥ आपे धरती साजीअनु आपे आकासु ॥ विचि आपे जंत उपाइअनु
 मुखि आपे देइ गिरासु ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि
 किलविख कटे तासु ॥२॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै ॥ जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम
 कंकरु नैड़ि न आवै ॥ तिन के मुख दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै ॥ कूड़िआर पिछाहा सटीअनि
 कूड़ु हिरदै कपटु महा दुखु पावै ॥ मुह काले कूड़िआरीआ कूड़िआर कूड़ो होइ जावै ॥६॥ सलोक मः ४ ॥
 सतिगुरु धरती धरम है तिसु विचि जेहा को बीजे तेहा फलु पाए ॥ गुरसिखी अंमूतु बीजिआ तिन
 अंमृत फलु हरि पाए ॥ ओना हलति पलति मुख उजले ओइ हरि दरगह सचि पैनाए ॥ इकना

ਅੰਦਰਿ ਖੋਟੁ ਨਿਤ ਖੋਟੁ ਕਮਾਵਹਿ ਓਹੁ ਜੇਹਾ ਬੀਜੇ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਖਾਏ ॥ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਰਾਫੁ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ
 ਸੁਆਵਗੀਰ ਸਭਿ ਉਧਿੜਿ ਆਏ ॥ ਓਡਿ ਜੇਹਾ ਚਿਤਵਹਿ ਨਿਤ ਤੇਹਾ ਪਾਇਨਿ ਓਡਿ ਤੇਹੋ ਜੇਹੇ ਦਧਿ ਵਜਾਏ ॥
 ਨਾਨਕ ਦੁਹੀ ਸਿਰੀ ਖਸਮੁ ਆਪੇ ਵਰਤੈ ਨਿਤ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਚਲਤ ਸਬਾਏ ॥੧॥ ਮ: ੪ ॥ ਇਕੁ ਮਨੁ ਇਕੁ
 ਵਰਤਦਾ ਜਿਤੁ ਲਗੈ ਸੋ ਥਾਇ ਪਾਇ ॥ ਕੋਈ ਗਲਾ ਕਰੇ ਘਨੇਰੀਆ ਜਿ ਘਰਿ ਵਥੁ ਹੋਵੈ ਸਾਈ ਖਾਇ ॥ ਬਿਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਸੋਝੀ ਨਾ ਪਵੈ ਅਛਕਾਰੁ ਨ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਅਛਕਾਰੀਆ ਨੋ ਦੁਖ ਭੁਖ ਹੈ ਹਥੁ ਤਡਹਿ ਘਰਿ ਘਰਿ
 ਮੰਗਾਇ ॥ ਕੂਡੁ ਠਗੀ ਗੁਝੀ ਨਾ ਰਹੈ ਮੁਲਮਮਾ ਪਾਜੁ ਲਹਿ ਜਾਇ ॥ ਜਿਸੁ ਹੋਵੈ ਪ੍ਰੂਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਇ ॥ ਜਿਤ ਲੋਹਾ ਪਾਰਸਿ ਭੇਟੀਐ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਸੁਵਰਨੁ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਤੂ ਧਣੀ
 ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਗੁਣ ਕੀ ਸਾਝੀ
 ਤਿਨ ਸਿਤ ਕਰੀ ਸਭਿ ਅਕਗਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥ ਅਤਗਣ ਵਿਕਣਿ ਪਲਰੀ ਜਿਸੁ ਦੇਹਿ ਸੁ ਸਚੇ ਪਾਏ ॥ ਬਲਿਹਾਰੀ
 ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਜਿਨਿ ਅਤਗਣ ਮੇਟਿ ਗੁਣ ਪਰਗਟੀਆਏ ॥ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੇ ਕੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਲਾਏ ॥੭॥
 ਸਲੋਕ ਮ: ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਮਤ
 ਸੁਚ ਸੰਜਮੁ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਤ੃ਪਤਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਾਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਬਾਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਰਖ ਕਰਾਵੈ ॥ ਜੋ ਚਿਤੁ ਲਾਇ
 ਪ੍ਰਜੇ ਗੁਰ ਮੂਰਤਿ ਸੋ ਮਨ ਇਛੇ ਫਲ ਪਾਵੈ ॥ ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੂਰੇ ਕੀ ਤਿਸੁ ਕਰਤਾ ਮਾਰ ਦਿਵਾਵੈ ॥ ਫੇਰਿ
 ਓਹ ਵੇਲਾ ਓਸੁ ਹਥਿ ਨ ਆਵੈ ਓਹੁ ਆਪਣਾ ਬੀਜਿਆ ਆਪੇ ਖਾਵੈ ॥ ਨਰਕਿ ਘੋਰਿ ਸੁਹਿ ਕਾਲੈ ਖਡਿਆ ਜਿਤ
 ਤਸਕਰੁ ਪਾਇ ਗਲਾਵੈ ॥ ਫਿਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣੀ ਪਵੈ ਤਾ ਤਕਾਰੈ ਜਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਹਰਿ ਬਾਤਾ
 ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਰਤੇ ਏਕੈ ਭਾਵੈ ॥੧॥ ਮ: ੪ ॥ ਪ੍ਰੂਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਮਨੈ ਓਹੁ ਮਨਮੁਖੁ ਅਗਿਆਨੁ
 ਸੁਠਾ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ॥ ਓਸੁ ਅੰਦਰਿ ਕੂਡੁ ਕੂਡੋ ਕਰਿ ਬੁੜੈ ਅਣਹੋਦੇ ਝਾਗੜੇ ਦਧਿ ਓਸ ਦੈ ਗਲਿ ਪਾਇਆ ॥ ਓਹੁ
 ਗਲ ਫਰੋਸੀ ਕਰੇ ਬਹੁਤੇਰੀ ਓਸ ਦਾ ਬੋਲਿਆ ਕਿਸੈ ਨ ਭਾਇਆ ॥ ਓਹੁ ਘਰਿ ਘਰਿ ਛਾਫੈ ਜਿਤ ਰਨ ਦੁਹਾਗਣਿ
 ਓਸੁ ਨਾਲਿ ਮੁਹੁ ਜੋਡੇ ਓਸੁ ਭੀ ਲਛਣੁ ਲਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਸੁ ਅਲਿਪਤੋ ਵਰਤੈ ਓਸ ਦਾ ਪਾਸੁ ਛਡਿ ਗੁਰ

ਪਾਸਿ ਬਹਿ ਜਾਇਆ ॥ ਜੋ ਗੁਰ ਗੋਪੇ ਆਪਣਾ ਸੁ ਭਲਾ ਨਾਹੀ ਪੰਚਹੁ ਓਨਿ ਲਾਹਾ ਮੂਲੁ ਸਭੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਪਹਿਲਾ
 ਆਗਮੁ ਨਿਗਮੁ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਤਪਰਿ ਆਇਆ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾ ਵਡਿਆਈ ਭਾਵੈ
 ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਕੀ ਮਨਮੁਖਾ ਓਹ ਕੇਲਾ ਹਥਿ ਨ ਆਇਆ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਭ ਫੂ ਵਡਾ ਹੈ ਸੋ ਲਾਏ ਜਿਸੁ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਟਿਕੇ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿ ਸਚੁ ਧਿਆਇਦਾ ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਇਕੇ ॥ ਸੋਈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ
 ਪੰਜੇ ਫੂਤ ਕੀਤੇ ਵਸਿ ਛਿਕੇ ॥ ਜਿ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ਤਿਨ ਅੰਦਰਿ ਕੂਝੁ ਫਿਟੁ ਫਿਟੁ ਮੁਹ ਫਿਕੇ
 ॥ ਓਇ ਬੋਲੇ ਕਿਸੈ ਨ ਭਾਵਨੀ ਮੁਹ ਕਾਲੇ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਚੁਕੇ ॥੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸਭੁ ਖੇਤੁ ਹੈ
 ਹਰਿ ਆਪਿ ਕਿਰਸਾਣੀ ਲਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਖਸਿ ਜਮਾਈਅਨੁ ਮਨਮੁਖੀ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਬੀਜੇ
 ਆਪਣੇ ਭਲੇ ਨੋ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਸੋ ਖੇਤੁ ਜਮਾਇਆ ॥ ਗੁਰਸਿਖੀ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਬੀਜਿਆ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਫਲੁ
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪਾਇਆ ॥ ਜਮੁ ਚੂਹਾ ਕਿਰਸ ਨਿਤ ਕੁਰਕਦਾ ਹਰਿ ਕਰਤੈ ਮਾਰਿ ਕਢਾਇਆ ॥ ਕਿਰਸਾਣੀ ਜੰਮੀ ਭਾਉ ਕਰਿ
 ਹਰਿ ਬੋਹਲ ਬਖਸ ਜਮਾਇਆ ॥ ਤਿਨ ਕਾ ਕਾਡਾ ਅੰਦੇਸਾ ਸਭੁ ਲਾਹਿਓਨੁ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇਆ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸਾਰਾ ਦਿਨੁ ਲਾਲਚਿ
 ਅਟਿਆ ਮਨਮੁਖਿ ਹੋਰੇ ਗਲਾ ॥ ਰਾਤੀ ਊਬੈ ਦੀਬਿਆ ਨਵੇ ਸੌਤ ਸਭਿ ਢਿਲਾ ॥ ਮਨਮੁਖਾ ਦੈ ਸਿਰਿ ਜੋਰਾ ਅਮਰੁ ਹੈ
 ਨਿਤ ਦੇਵਹਿ ਭਲਾ ॥ ਜੋਰਾ ਦਾ ਆਖਿਆ ਪੁਰਖ ਕਮਾਵਦੇ ਸੇ ਅਪਵਿਤ ਅਮੇਧ ਖੁਲਾ ॥ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪੇ ਕੁਸੁਧ ਨਰ
 ਸੇ ਜੋਰਾ ਪੁਛਿ ਚਲਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਆਖਿਐ ਜੋ ਚਲੈ ਸੋ ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਭਲ ਭਲਾ ॥ ਜੋਰਾ ਪੁਰਖ ਸਭਿ ਆਪਿ
 ਤਪਾਇਆਨੁ ਹਰਿ ਖੇਲ ਸਭਿ ਖਿਲਾ ॥ ਸਭ ਤੇਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਵਣੀ ਨਾਨਕ ਭਲ ਭਲਾ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਵੇਪਰਵਾਹੁ
 ਅਥਾਹੁ ਹੈ ਅਤੁਲੁ ਕਿਤ ਤੁਲੀਐ ॥ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿ ਤੁਧੁ ਧਿਆਇਦੇ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੀਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ
 ਸਤਿ ਸਰੂਪੁ ਹੈ ਗੁਰਬਾਣੀ ਬਣੀਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਰੀਸੈ ਹੋਰਿ ਕਚੁ ਪਿਚੁ ਬੋਲਦੇ ਸੇ ਕੂਡਿਆਰ ਕੂਡੇ ਝੜਿ ਪਡੀਐ ॥
 ਓਨਾ ਅੰਦਰਿ ਹੋਰੁ ਮੁਖਿ ਹੋਰੁ ਹੈ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਨੋ ਝਖਿ ਮਰਦੇ ਕਡੀਐ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ
 ਨਿਰਮਲੀ ਨਿਰਮਲ ਜਨੁ ਹੋਇ ਸੁ ਸੇਵਾ ਘਾਲੇ ॥ ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਕਪਟੁ ਵਿਕਾਰੁ ਝੂਠੁ ਓਇ ਆਪੇ ਸਚੈ ਵਖਿ ਕਢੇ ਜਜਮਾਲੇ

॥ ਸਚਿਆਰ ਸਿਖ ਬਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ਘਾਲਨਿ ਕੂਡਿਆਰ ਨ ਲਭਨੀ ਕਿਤੈ ਥਾਇ ਭਾਲੇ ॥ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ
ਆਖਿਆ ਸੁਖਾਵੈ ਨਾਹੀ ਤਿਨਾ ਮੁਹ ਭਲੇਰੇ ਫਿਰਹਿ ਦਧਿ ਗਾਲੇ ॥ ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਹੀ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ਸੇ ਕਿਚਰਕੁ
ਵੇਰਾਈਅਨਿ ਮਨਮੁਖ ਬੇਤਾਲੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਮਿਲੈ ਸੁ ਆਪਣਾ ਮਨੁ ਥਾਇ ਰਖੈ ਓਹੁ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਆਪਣੀ ਵਥੁ
ਨਾਲੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਇਕਨਾ ਗੁਰੂ ਮੇਲਿ ਸੁਖੁ ਦੇਵੈ ਇਕਿ ਆਪੇ ਵਖਿ ਕਢੈ ਠਗਵਾਲੇ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ
ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਤਿਨ ਕੇ ਕਾਜ ਦਧਿ ਆਦੇ ਰਾਸਿ ॥ ਤਿਨ ਚੂਕੀ ਮੁਹਤਾਜੀ ਲੋਕਨ ਕੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਗੁ ਕਰਿ ਬੈਠਾ
ਪਾਸਿ ॥ ਜਾਂ ਕਰਤਾ ਵਲਿ ਤਾ ਸਭੁ ਕੋ ਵਲਿ ਸਭਿ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਕਰਹਿ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਸਾਹੁ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕਾ
ਕੀਆ ਸਭਿ ਜਨ ਕਤ ਆਇ ਕਰਹਿ ਰਹਰਾਸਿ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਵਡਾ ਸੇਵਿ ਅਤੁਲੁ ਸੁਖੁ
ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦਾਨੁ ਦੀਆ ਹਰਿ ਨਿਹਚਲੁ ਨਿਤ ਬਖਸੇ ਚੱਡੈ ਸਵਾਇਆ ॥ ਕੌਰੈ ਨਿੰਦਕੁ ਵਡਿਆਈ ਦੇਖਿ
ਨ ਸਕੈ ਸੋ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਪਚਾਇਆ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਬੋਲੈ ਕਰਤੇ ਕੇ ਭਗਤਾ ਨੋ ਸਦਾ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ॥੨॥
ਪਉੜੀ ॥ ਤੂ ਸਾਹਿਬੁ ਅਗਮ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਵਡ ਦਾਤਾ ਦਾਣਾ ॥ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਮੈ ਹੋਰੁ ਕੋ ਦਿਸਿ ਨਾ ਆਵੰਈ ਤੂਹੈ
ਸੁਘੜੁ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ॥ ਮੋਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਦਿਸਿ ਆਵਦਾ ਸਭੁ ਚਲਣਹਾਰਾ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥ ਜੋ ਬਿਨੁ ਸਚੇ ਹੋਰਤੁ ਚਿਤੁ
ਲਾਇਦੇ ਸੇ ਕੂਡਿਆਰ ਕੂੜਾ ਤਿਨ ਮਾਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਬਿਨੁ ਸਚੇ ਪਚਿ ਪਚਿ ਮੁਏ ਅਜਾਣਾ ॥੧੦॥
ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਅਗੇ ਦੇ ਸਤ ਭਾਉ ਨ ਦਿਚੈ ਪਿਛੋ ਦੇ ਆਖਿਆ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਅਧ ਵਿਚਿ ਫਿਰੈ ਮਨਮੁਖੁ ਵੇਚਾਰਾ
ਗਲੀ ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਹੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੁ ਕੂੜੀ ਆਵੈ ਕੂੜੀ ਜਾਵੈ ॥ ਜੇ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਮੇਰਾ
ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਤਾ ਤਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਦਰੀ ਆਵੈ ॥ ਤਾ ਅਧਿਤ ਪੀਵੈ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਕੇਰਾ ਸਭੁ ਕਾੜਾ ਅੰਦੇਸਾ
ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਗੁਰ
ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਜੋ ਸਿਖੁ ਅਖਾਏ ਸੁ ਭਲਕੇ ਤਠਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਤਦਮੁ ਕਰੇ ਭਲਕੇ ਪਰਭਾਤੀ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰੇ
ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਹਿ ਨਾਵੈ ॥ ਤਪਦੇਸਿ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਾਪੈ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਦੋਖ ਲਹਿ ਜਾਵੈ ॥ ਫਿਰਿ ਚੱਡੈ
ਦਿਵਸੁ ਗੁਰਬਾਣੀ ਗਾਵੈ ਬਹਦਿਆ ਤਠਦਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਜੋ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਧਿਆਏ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਹਰਿ

ਸੋ ਗੁਰਸਿਖੁ ਗੁਰੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਫਿਝਾਲੁ ਹੋਵੈ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਸੁ ਗੁਰਸਿਖ ਗੁਰੁ ਤਪਦੇਸੁ ਸੁਣਾਵੈ ॥
 ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਧੂਡਿ ਮੰਗੈ ਤਿਸੁ ਗੁਰਸਿਖ ਕੀ ਜੋ ਆਪਿ ਜਪੈ ਅਵਰਹ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਸਚੁ
 ਧਿਆਇਦੇ ਸੇ ਵਿਰਲੇ ਥੋਡੇ ॥ ਜੋ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਫਿਕੁ ਅਰਾਧਦੇ ਤਿਨ ਕੀ ਬਰਕਤਿ ਖਾਹਿ ਅਸੰਖ ਕਰੋਡੇ ॥ ਤੁਧੁਨੋ ਸਭ
 ਧਿਆਇਦੀ ਸੇ ਥਾਇ ਪਏ ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਲੋਡੇ ॥ ਜੋ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਖਾਦੇ ਪੈਨਦੇ ਸੇ ਸੁਏ ਮਰਿ ਜਂਮੇ ਕੋਡੇ ॥ ਓਡਿ
 ਹਾਜਰੁ ਮਿਠਾ ਬੋਲਦੇ ਬਾਹਰਿ ਵਿਸੁ ਕਢਹਿ ਮੁਖਿ ਘੋਲੇ ॥ ਮਨਿ ਖੋਟੇ ਦਧਿ ਵਿਛੋਡੇ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਮਲੁ
 ਜ੍ਰੂਈ ਭਰਿਆ ਨੀਲਾ ਕਾਲਾ ਖਿਧੋਲੜਾ ਤਿਨਿ ਵੇਮੁਖਿ ਵੇਮੁਖੈ ਨੋ ਪਾਇਆ ॥ ਪਾਸਿ ਨ ਦੇਈ ਕੋਈ ਬਹਣਿ ਜਗਤ
 ਮਹਿ ਗ੍ਰਹ ਪਡਿ ਸਗਰੀ ਮਲੁ ਲਾਡਿ ਮਨਮੁਖੁ ਆਇਆ ॥ ਪਰਾਈ ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਚੁਗਲੀ ਨੋ ਵੇਮੁਖੁ ਕਰਿ ਕੈ ਭੇਜਿਆ
 ਓਥੈ ਭੀ ਸੁਹੁ ਕਾਲਾ ਦੁਹਾ ਵੇਮੁਖਾ ਦਾ ਕਰਾਇਆ ॥ ਤਡੇ ਸੁਣਿਆ ਸਭਤੁ ਜਗਤ ਵਿਚਿ ਭਾਈ ਵੇਮੁਖੁ ਸਣੈ ਨਫਰੈ
 ਪਤਲੀ ਪਤਦੀ ਫਾਵਾ ਹੋਡਿ ਕੈ ਤਠਿ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥ ਅਗੈ ਸਾਂਗਤੀ ਕੁਡਮੀ ਵੇਮੁਖੁ ਰਲਣਾ ਨ ਮਿਲੈ ਤਾ ਵਹੁਟੀ
 ਭਤੀਜੀ ਫਿਰਿ ਆਣਿ ਘਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਦੋਵੈ ਗਏ ਨਿਤ ਭੁਖਾ ਕੂਕੇ ਤਿਹਾਇਆ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੁਆਮੀ
 ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਨਿਆਉ ਸਚੁ ਬਹਿ ਆਪਿ ਕਰਾਇਆ ॥ ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਕੀ ਸੋ ਸਾਚੈ ਮਾਰਿ
 ਪਚਾਇਆ ॥ ਏਹੁ ਅਖਰੁ ਤਿਨਿ ਆਖਿਆ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਤਪਾਇਆ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਜਿਸ ਕਾ ਨਨਗਾ
 ਭੁਖਾ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਦਾ ਨਫਰੁ ਕਿਥਹੁ ਰਜਿ ਖਾਏ ॥ ਜਿ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਘਰਿ ਵਥੁ ਹੋਵੈ ਸੁ ਨਫਰੈ ਹਥਿ ਆਵੈ ਅਣਹੋਦੀ
 ਕਿਥਹੁ ਪਾਏ ॥ ਜਿਸ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਫਿਰਿ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਸਾ ਸੇਵਾ ਅਤਖੀ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਵਾ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਗੁਰ
 ਸਫਲ ਦਰਸਨ ਕੀ ਫਿਰਿ ਲੇਖਾ ਮੰਗੈ ਨ ਕੋਈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀਚਾਰਹਿ ਸੰਤ ਜਨ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਕਛਾਦੇ ॥
 ਭਗਤ ਮੁਖੈ ਤੇ ਬੋਲਦੇ ਸੇ ਵਚਨ ਹੋਵਂਦੇ ॥ ਪ੍ਰਗਟ ਪਹਾਰਾ ਜਾਪਦਾ ਸਭਿ ਲੋਕ ਸੁਣਂਦੇ ॥ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਇਨਿ ਮੁਗਧ
 ਨਰ ਸੰਤ ਨਾਲਿ ਖਛਾਦੇ ॥ ਓਡਿ ਲੋਚਨਿ ਓਨਾ ਗੁਣੈ ਨੋ ਓਡਿ ਅਛਕਾਰਿ ਸਡੰਦੇ ॥ ਓਡਿ ਵਿਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕਰਹਿ
 ਜਾ ਭਾਗ ਧੁਰਿ ਮੰਦੇ ॥ ਜੋ ਮਾਰੇ ਤਿਨਿ ਪਾਰਕੁਹਮਿ ਸੇ ਕਿਸੈ ਨ ਸੰਦੇ ॥ ਵੈਰੁ ਕਰਹਿ ਨਿਰਵੈਰ ਨਾਲਿ ਧਰਮ ਨਿਆਇ
 ਪਚਾਂਦੇ ॥ ਜੋ ਜੋ ਸੰਤਿ ਸਰਾਪਿਆ ਸੇ ਫਿਰਹਿ ਭਵਂਦੇ ॥ ਪੇਡੁ ਸੁਨਾਹੁੰ ਕਟਿਆ ਤਿਸੁ ਡਾਲ ਸੁਕਂਦੇ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪

॥ ਅਨਤਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰੂ ਧਿਆਇਦਾ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਤੁਸਿ ਦਿਤੀ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰ ਘਟੈ ਨਾਹੀ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਕਿਸੈ ਦੀ
ਘਟਾਈ ॥ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਵਲਿ ਹੈ ਤਾਂ ਝਾਖਿ ਝਾਖਿ ਮਰੈ ਸਭ ਲੋਕਾਈ ॥ ਨਿੰਦਕਾ ਕੇ ਮੁਹ ਕਾਲੇ ਕਰੇ
ਹਰਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਵਧਾਈ ॥ ਜਿਤ ਜਿਤ ਨਿੰਦ ਕਰਹਿ ਤਿਤ ਤਿਤ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ
ਹਰਿ ਆਰਾਧਿਆ ਤਿਨਿ ਪੈਰੀ ਆਣਿ ਸਭ ਪਾਈ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਤੀ ਗਣਤ ਜਿ ਰਖੈ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ
ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਗਇਆ ॥ ਨਿਤ ਝਾਹੀਆ ਪਾਏ ਝਾਗੂ ਸੁਟੇ ਝਾਖਦਾ ਝਾਖਦਾ ਝਾਡਿ ਪਇਆ ॥ ਨਿਤ ਉਪਾਵ ਕਰੈ
ਮਾਇਆ ਧਨ ਕਾਰਣਿ ਅਗਲਾ ਧਨੁ ਭੀ ਤਡਿ ਗਇਆ ॥ ਕਿਆ ਓਹੁ ਖਟੇ ਕਿਆ ਓਹੁ ਖਾਵੈ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਸਹਸਾ
ਫੁਖੁ ਪਇਆ ॥ ਨਿਰਖੈਰੈ ਨਾਲਿ ਜਿ ਕੈਰੁ ਰਚਾਏ ਸਭੁ ਪਾਪੁ ਜਗਤੈ ਕਾ ਤਿਨਿ ਸਿਰਿ ਲਇਆ ॥ ਓਸੁ ਅਗੈ ਧਿਉ
ਢੀਈ ਨਾਹੀ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਨਿੰਦਾ ਮੁਹਿ ਅੰਬੁ ਪਇਆ ॥ ਜੇ ਸੁਇਨੇ ਨੋ ਓਹੁ ਹਥੁ ਪਾਏ ਤਾ ਖੇਹੂ ਸੇਤੀ ਰਲਿ ਗਇਆ
॥ ਜੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣੀ ਫਿਰਿ ਓਹੁ ਆਵੈ ਤਾ ਧਿਉ ਅਤਗਣ ਬਖਸਿ ਲਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ
ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਗਇਆ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤ੍ਰਹੈ ਸਚਾ ਸਚੁ ਤ੍ਰ ਸਭ ਫੌ ਤਪਰਿ ਤ੍ਰ ਦੀਬਾਣੁ
॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਸਚੁ ਧਿਆਇਦੇ ਸਚੁ ਸੇਵਨਿ ਸਚੇ ਤੇਰਾ ਮਾਣੁ ॥ ਓਨਾ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਮੁਖ ਤਜਲੇ ਸਚੁ ਬੋਲਨਿ ਸਚੇ ਤੇਰਾ
ਤਾਣੁ ॥ ਸੇ ਭਗਤ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਲਾਹਿਆ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਸਚੁ ਜਿ ਸਚੇ ਸੇਵਦੇ ਤਿਨ ਵਾਰੀ ਸਦ
ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਧੁਰਿ ਮਾਰੇ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਈ ਹੁਣਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਾਰੇ ॥ ਜੇ ਮੇਲਣ ਨੋ ਬਹੁਤੇਰਾ
ਲੋਚੀਐ ਨ ਦੇਈ ਮਿਲਣ ਕਰਤਾਰੇ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਢੀਈ ਨਾ ਲਹਨਿ ਵਿਚਿ ਸਾਂਗਤਿ ਗੁਰਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਕੋਈ ਜਾਇ
ਮਿਲੈ ਹੁਣਿ ਓਨਾ ਨੋ ਤਿਸੁ ਮਾਰੇ ਜਮੁ ਜੰਦਾਰੇ ॥ ਗੁਰਿ ਬਾਬੈ ਫਿਟਕੇ ਸੇ ਫਿਟੇ ਗੁਰਿ ਅੰਗਦਿ ਕੀਤੇ ਕੂਡਿਆਰੇ ॥
ਗੁਰਿ ਤੀਜੀ ਪੀੜੀ ਵੀਚਾਰਿਆ ਕਿਆ ਹਥਿ ਏਨਾ ਵੇਚਾਰੇ ॥ ਗੁਰੂ ਚਤੁਰੀ ਪੀੜੀ ਟਿਕਿਆ ਤਿਨਿ ਨਿੰਦਕ ਦੁਸਟ
ਸਭਿ ਤਾਰੇ ॥ ਕੋਈ ਪੁਤੁ ਸਿਖੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਤਿਸੁ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ
ਪੁਤੁ ਧਨੁ ਲਖਮੀ ਖਡਿ ਮੇਲੇ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥ ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਹਰਿ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥
ਸੋ ਪਾਏ ਪ੍ਰਾ ਸਤਿਗੁਰ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਲਿਖਤੁ ਲਿਲਾਰੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਮਾਗੈ ਧ੍ਰਡਿ ਤਿਨ ਜੋ ਗੁਰਸਿਖ ਮਿਤ

पिआरे ॥१॥ मः ४ ॥ जिन कउ आपि देइ वडिआई जगतु भी आपे आणि तिन कउ पैरी पाए ॥ डरीअै ताँ जे किछु आप दू कीचै सभु करता आपणी कला वधाए ॥ देखहु भाई एहु अखाड़ा हरि प्रीतम सचे का जिनि आपणै जोरि सभि आणि निवाए ॥ आपणिआ भगता की रख करे हरि सुआमी निंदका दुसटा के मुह काले कराए ॥ सतिगुर की वडिआई नित चडै सवाई हरि कीरति भगति नित आपि कराए ॥ अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाए ॥ सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥ गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा गुर का जैकारु संसारि सभतु कराए ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाए ॥ २॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥ सचु पूजी नामु दृड़ाइ प्रभ वणजारे थारे ॥ सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथह निरारे ॥ सेवक भाइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥ तू सचा साहिबु अलखु है गुर सबदि लखारे ॥ १४॥ सलोक मः ४ ॥ जिसु अंदरि ताति पराई होवै तिस दा कदे न होवी भला ॥ ओस दै आखिअै कोई न लगै नित ओजाड़ी पूकारे खला ॥ जिसु अंदरि चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ ओस दा सभु गडिआ ॥ नित चुगली करे अणहोदी पराई मुहु कठि न सकै ओस दा काला भडिआ ॥ करम धरती सरीरु कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाए ॥ गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी तत्काल मरि जाए ॥ भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए ॥ जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि दर कीआ बाता आखि सुणाए ॥ १॥ मः ४ ॥ होदै परतखि गुरु जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ॥ कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही ॥ जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भूसे खाही ॥ जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही ॥ तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही ॥ ओना दा आखिआ को न सुणै नित हउले हउलि मराही ॥ सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ नाही ॥ जो सतिगुरि मारे तिन

ਜਾਇ ਮਿਲਹਿ ਰਹਦੀ ਖੁਹਦੀ ਸਭ ਪਤਿ ਗਵਾਹੀ ॥ ਓਡਿ ਅਗੈ ਕੁਸਟੀ ਗੁਰ ਕੇ ਫਿਟਕੇ ਜਿ ਓਸੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਕੁਸਟੁ
ਉਠਾਹੀ ॥ ਹਰਿ ਤਿਨ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਨਾ ਕਰਹੁ ਜੋ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਚਿਤੁ ਲਾਹੀ ॥ ਧੁਰਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ
ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ਕਿਹੁ ਚਾਰਾ ਨਾਹੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿ ਤੂ ਤਿਸੁ ਅਪਡਿ ਕੋ ਨ ਸਕਾਹੀ ॥ ਨਾਵੈ ਕੀ ਵਡਿਆਈ
ਵਡੀ ਹੈ ਨਿਤ ਸਵਾਈ ਚੱਡੈ ਚੜਾਹੀ ॥੨॥ ਮਃ ੪ ॥ ਜਿ ਹੌਂਦੈ ਗੁਰੁ ਬਹਿ ਟਿਕਿਆ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਵਡਿਆਈ
ਵਡੀ ਹੋਈ ॥ ਤਿਸੁ ਕਤ ਜਗਤੁ ਨਿਵਿਆ ਸਭੁ ਪੈਰੀ ਪਇਆ ਜਸੁ ਵਰਤਿਆ ਲੋਈ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ
ਨਮਸਕਾਰੁ ਕਰਹਿ ਜਿਸ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਹਥੁ ਧਰਿਆ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੌ ਸੋ ਪ੍ਰੌ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਨਿਤ ਚੱਡੈ
ਸਵਾਈ ਅਪਡਿ ਕੋ ਨ ਸਕੋਈ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਬਹਿ ਟਿਕਿਆ ਆਪੇ ਪੈਜ ਰਖੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥੩॥
ਪਤੜੀ ॥ ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਅਪਾਰੁ ਹੈ ਅੰਦਰਿ ਹਟਨਾਲੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਤਦਾ ਜੋ ਕਰੇ ਹਰਿ ਵਸਤੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਨਾਮੁ
ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਵਣਜੀਐ ਹੀਰੇ ਪਰਵਾਲੇ ॥ ਵਿਣੁ ਕਾਇਆ ਜਿ ਹੋਰ ਥੈ ਧਨੁ ਖੋਜਦੇ ਸੇ ਮੂੜ ਬੇਤਾਲੇ ॥ ਸੇ ਤੁੜਾਡਿ
ਭਰਮਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਜਿਤ ਝਾੜ ਮਿਗੁ ਭਾਲੇ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੌ ਕੀ ਸੁ
ਅਤਖਾ ਜਗ ਮਹਿ ਹੋਇਆ ॥ ਨਰਕ ਘੋਰੁ ਦੁਖ ਖੂਹੁ ਹੈ ਓਥੈ ਪਕਡਿ ਓਹੁ ਢੋਇਆ ॥ ਕੂਕ ਪੁਕਾਰ ਕੋ ਨ ਸੁਣੇ ਓਹੁ
ਅਤਖਾ ਹੋਇ ਹੋਇ ਰੋਇਆ ॥ ਓਨਿ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਭੁ ਗਵਾਇਆ ਲਾਹਾ ਮੂਲੁ ਸਭੁ ਖੋਇਆ ॥ ਓਹੁ ਤੇਲੀ ਸੰਦਾ
ਬਲਦੁ ਕਰਿ ਨਿਤ ਭਲਕੇ ਤਠਿ ਪ੍ਰਭਿ ਜੋਇਆ ॥ ਹਰਿ ਕੇਖੈ ਸੁਣੈ ਨਿਤ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਦੂ ਕਿਛੁ ਗੁਜ਼ਾ ਨ ਹੋਇਆ
॥ ਜੈਸਾ ਬੀਜੇ ਸੋ ਲੁਣੈ ਜੇਹਾ ਪੁਰਬਿ ਕਿਨੈ ਬੋਇਆ ॥ ਜਿਸੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ
ਧੋਇਆ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪਿਛੈ ਤਰਿ ਗਇਆ ਜਿਤ ਲੋਹਾ ਕਾਠ ਸੰਗੋਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ
ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇਆ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਵਡਭਾਗੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇ
॥ ਅੰਤਰ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਾਸੀਆ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਸਭੁ ਧਰਮੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ
ਸਚੇ ਕੀ ਵਿਚਿ ਜੋਤਿ ॥ ਗੁਹਜ ਰਤਨ ਵਿਚਿ ਲੁਕਿ ਰਹੇ ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਕੁ ਕਢੈ ਖੋਤਿ ॥ ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ
ਪਛਾਣਿਆ ਤਾਂ ਇਕੁ ਰਖਿਆ ਇਕੋ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ॥ ਇਕੁ ਦੇਖਿਆ ਇਕੁ ਮਨਿਆ ਇਕੋ ਸੁਣਿਆ ਸ਼ਰਣ ਸਰੋਤਿ ॥

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂ ਸਚੁ ਸਚੇ ਸੇਵਾ ਤੇਰੀ ਹੋਤਿ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਸਭਿ ਰਸ ਤਿਨ ਕੈ ਰਿਦੈ ਹਹਿ
ਜਿਨ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹਿ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਤਿਨ ਕਤ ਸਭਿ ਦੇਖਣ ਜਾਹਿ ॥ ਜਿਨ ਨਿਰਭਤ
ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਕਤ ਭਤ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥ ਹਰਿ ਉਤਸੁ ਤਿਨੀ ਸਰੇਵਿਆ ਜਿਨ ਕਤ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਆਹਿ ॥
ਤੇ ਹਰਿ ਦਰਗਹਿ ਪੈਨਾਈਅਹਿ ਜਿਨ ਹਰਿ ਕੁਠਾ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਓਡਿ ਆਪਿ ਤਰੇ ਸਭ ਕੁਟੰਬ ਸਿਤ ਤਿਨ ਪਿਛੈ
ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਛਡਾਹਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਜਨ ਤਿਨ ਵੇਖਿ ਵੇਖਿ ਹਮ ਜੀਵਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸਾ ਧਰਤੀ
ਭੰਡੀ ਹਰੀਆਵਲੀ ਜਿਥੈ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਬੈਠਾ ਆਇ ॥ ਸੇ ਜੰਤ ਭਏ ਹਰੀਆਵਲੇ ਜਿਨੀ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਖਿਆ
ਯਾਇ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਪਿਤਾ ਧਨੁ ਧਨੁ ਕੁਲੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੁ ਜਨਨੀ ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਜਣਿਆ ਮਾਇ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੁ ਜਿਨਿ
ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਜਿਨੀ ਡਿਠਾ ਤਿਨਾ ਲਾਏ ਛਡਾਇ ॥ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਾਹੁ ਦਿਆ ਕਰਿ ਜਨੁ
ਨਾਨਕੁ ਧੋਵੈ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਮਰੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਹਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰਿਆ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ
ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਬਿਖੁ ਮਾਰਿਆ ॥ ਜਾ ਡਿਠਾ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਾਁ ਅੰਦਰਹੁ ਮਨੁ ਸਾਧਾਰਿਆ ॥
ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਧੁਮਿ ਵਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਤਾ ਮਨਮੁਖਿ ਹਾਰਿਆ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪
॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿਓਨੁ ਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਸੀ ॥ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਵਸੀ ਗੁਰੁ
ਪੂਰਾ ਘਰੀ ਵਸਾਇਸੀ ॥ ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਤਿਨ ਕਾ ਭਤ ਸਭੁ ਗਵਾਇਸੀ ॥ ਜਿਨ ਰਖਣ ਕਤ ਹਰਿ
ਆਪਿ ਹੋਇ ਹੋਰ ਕੇਤੀ ਝਾਖਿ ਝਾਖਿ ਜਾਇਸੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਹਰਿ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਛੋਡਾਇਸੀ
॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਵਦੀ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਪੈਜ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕੀ ਨਿਤ
ਚੜੈ ਸਵਾਈ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਮਨਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਛਡਾਈ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਤਾਣੁ ਦੀਵਾਣੁ ਹਰਿ
ਤਿਨਿ ਸਭ ਆਣਿ ਨਿਵਾਈ ॥ ਜਿਨੀ ਡਿਠਾ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭਾਤ ਕਰਿ ਤਿਨ ਕੇ ਸਭਿ ਪਾਪ ਗਵਾਈ ॥ ਹਰਿ
ਦਰਗਹ ਤੇ ਸੁਖ ਉਜਲੇ ਕਹੁ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਮਾਂਗੈ ਧੂਡਿ ਤਿਨ ਜੋ ਗੁਰ ਕੇ ਸਿਖ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੨॥
ਪਤੜੀ ॥ ਹਤ ਆਖਿ ਸਲਾਹੀ ਸਿਫਤਿ ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਚੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸਲਾਹ ਸਚੁ ਸਚੁ ਕੀਮਤਿ

ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ ਰਸੁ ਜਿਨੀ ਚਖਿਆ ਸੇ ਤ੃ਪਤਿ ਰਹੇ ਆਘਾਈ ॥ ਇਹੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸੇਈ ਜਾਣਦੇ ਜਿਤ
 ਗ੍ਰੰਗੈ ਮਿਠਿਆਈ ਖਾਈ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਿਆ ਮਨਿ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਜਿਨਾ
 ਅੰਦਰਿ ਉਮਰਥਲ ਸੇਈ ਜਾਣਨਿ ਸੂਲੀਆ ॥ ਹਰਿ ਜਾਣਹਿ ਸੇਈ ਬਿਰਹੁ ਹਤ ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਸਦ ਧੁਮਿ ਧੋਲੀਆ
 ॥ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸਜਣੁ ਪੁਰਖੁ ਮੇਰਾ ਸਿਰੁ ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਤਲ ਰੋਲੀਆ ॥ ਜੋ ਸਿਖ ਗੁਰ ਕਾਰ ਕਮਾਵਹਿ ਹਤ ਗੁਲਮੁ
 ਤਿਨਾ ਕਾ ਗੋਲੀਆ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਜੋ ਰਤੇ ਤਿਨ ਮਿਨੀ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਚੋਲੀਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ
 ਮੇਲਿ ਗੁਰ ਪਹਿ ਸਿਰੁ ਵੇਚਿਆ ਮੋਲੀਆ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਅਤਗਣੀ ਭਰਿਆ ਸਰੀਰੁ ਹੈ ਕਿਤ ਸਤਹੁ ਨਿਰਮਲੁ
 ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਵੇਹਾਝੀਅਹਿ ਮਲੁ ਹਤਮੈ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥ ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਰੰਗ ਸਿਤ ਸਚੁ ਸਤਦਾ ਹੋਇ ॥
 ਤੋਟਾ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵੰਡ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਸਚੁ ਵਣੰਜਿਆ ਜਿਨਾ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਪਰਾਪਤਿ
 ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣਾ ਸਚੁ ਸਚਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਾਲੇ ॥ ਸਚੁ ਸੇਵੀ ਸਚੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਚੁ
 ਸਚਾ ਹਰਿ ਰਖਵਾਲੇ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ ਜਿਨੀ ਅਰਾਧਿਆ ਸੇ ਜਾਇ ਰਲੇ ਸਚ ਨਾਲੇ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ ਜਿਨੀ ਨ ਸੇਵਿਆ
 ਸੇ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਬੇਤਾਲੇ ॥ ਓਹ ਆਲੁ ਪਤਾਲੁ ਮੁਹਹੁ ਬੋਲਦੇ ਜਿਤ ਪੀਤੈ ਮਦਿ ਮਤਵਾਲੇ ॥੧੯॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੩
 ॥ ਗਤੜੀ ਰਾਗਿ ਸੁਲਖਣੀ ਜੇ ਖਸਮੈ ਚਿਤਿ ਕਰੇਇ ॥ ਭਾਣੈ ਚਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਐਸਾ ਸੀਗਾਰੁ ਕਰੇਇ ॥ ਸਚਾ
 ਸਬਦੁ ਭਤਾਰੁ ਹੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਰਾਵੇਇ ॥ ਜਿਤ ਤਥਲੀ ਮਜੀਠੈ ਰੁਂਗੁ ਗਹਗਹਾ ਤਿਤ ਸਚੇ ਨੋ ਜੀਤ ਦੇਇ ॥ ਰੰਗਿ
 ਚਲੂਲੈ ਅਤਿ ਰਤੀ ਸਚੇ ਸਿਤ ਲਗਾ ਨੇਹੁ ॥ ਕੂਡੂ ਠਗੀ ਗੁੜੀ ਨਾ ਰਹੈ ਕੂਡੂ ਮੁਲਮਮਾ ਪਲੇਟਿ ਧਰੇਹੁ ॥ ਕੂਡੀ ਕਰਨਿ
 ਵਡਾਈਆ ਕੂਡੇ ਸਿਤ ਲਗਾ ਨੇਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸਤਸਙਗਤਿ
 ਮਹਿ ਹਰਿ ਤਸਤਤਿ ਹੈ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰਿਆ ॥ ਓਇ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਾਣੀ ਧੰਨਿ ਜਨ ਹਹਿ ਉਪਦੇਸੁ ਕਰਹਿ
 ਪਰਤਪਕਾਰਿਆ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਵਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਣਾਵਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਜਗੁ ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰ ਕੇਖਣ
 ਕਤ ਸਭੁ ਕੋਈ ਲੋਚੈ ਨਵ ਖੰਡ ਜਗਤਿ ਨਮਸਕਾਰਿਆ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਆਪੁ ਰਖਿਆ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਗੁਰੁ ਆਪੇ
 ਤੁਧੁ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਪ੍ਰਾਜਿ ਪ੍ਰਾਜ ਕਰਾਵਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕਤ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿਆ ॥ ਕੋਈ ਵਿਛੁਡਿ ਜਾਇ

ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਹੁ ਤਿਸੁ ਕਾਲਾ ਮੁਹੁ ਜਮਿ ਮਾਰਿਆ ॥ ਤਿਸੁ ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਢੋਈ ਨਾਹੀ ਗੁਰਸਿਖੀ ਮਨਿ ਵੀਚਾਰਿਆ
 ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਮਿਲੇ ਸੇਈ ਜਨ ਤਥਰੇ ਜਿਨ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਿਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਗੁਰਸਿਖ ਪੁਤਹਹੁ ਹਰਿ
 ਜਪਿਅਹੁ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥੨॥ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਉਮੈ ਜਗਤੁ ਭੁਲਾਇਆ ਦੁਰਮਤਿ ਬਿਖਿਆ ਬਿਕਾਰ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮਿਲੈ ਤ ਨਦਰਿ ਹੋਇ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਅੰਧਿਆਰ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਾਏ ਜਿਸ ਨੋ ਸਬਦਿ ਲਾਏ ਪਿਆਰੁ ॥੩॥
 ਪਤਡੀ ॥ ਸਚੁ ਸਚੇ ਕੀ ਸਿਫਤਿ ਸਲਾਹ ਹੈ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰੁ ਭਿਜੈ ॥ ਜਿਨੀ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕੁ ਅਰਾਧਿਆ
 ਤਿਨ ਕਾ ਕਂਧੁ ਨ ਕਬਹੂ ਛਿਜੈ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਪੁਰਖ ਸਾਬਾਸਿ ਹੈ ਜਿਨ ਸਚੁ ਰਸਨਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪਿਜੈ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ ਜਿਨ
 ਮਨਿ ਭਾਵਦਾ ਸੇ ਮਨਿ ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਲਿਜੈ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਜਨਮੁ ਸਚਿਆਰੀਆ ਮੁਖ ਤਜਲ ਸਚੁ ਕਰਿਜੈ ॥੨੦॥
 ਸਲੋਕ ਮ: ੪ ॥ ਸਾਕਤ ਜਾਇ ਨਿਵਹਿ ਗੁਰ ਆਗੈ ਮਨਿ ਖੋਟੇ ਕੂਡਿ ਕੂਡਿਆਰੇ ॥ ਜਾ ਗੁਰੁ ਕਹੈ ਤਠਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ
 ਬਹਿ ਜਾਹਿ ਧੁਸਰਿ ਬਗੁਲਾਰੇ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾ ਅੰਦਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕਰਤੈ ਚੁਣਿ ਕਢੇ ਲਧੋਵਾਰੇ ॥ ਓਡਿ ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਬਹਿ
 ਮੁਹੁ ਛਪਾਇਨਿ ਨ ਰਲਨੀ ਖੋਟੇਆਰੇ ॥ ਓਨਾ ਦਾ ਭਖੁ ਸੁ ਓਥੈ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ਕੂਡੂ ਲਹਨਿ ਭੇਡਾਰੇ ॥ ਜੇ ਸਾਕਤੁ ਨਰੁ
 ਖਾਵਾਈਐ ਲੋਚੀਐ ਬਿਖੁ ਕਢੈ ਮੁਖਿ ਤਗਲਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਸਾਕਤ ਸੇਤੀ ਸੰਗੁ ਨ ਕਰੀਅਹੁ ਓਡਿ ਮਾਰੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ
 ॥ ਜਿਸ ਕਾ ਇਹੁ ਖੇਲੁ ਸੋਈ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰੇ ॥੧॥ ਮ: ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਜਿਸੁ
 ਅੰਦਰਿ ਹਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਅਪਡਿ ਕੋਡਿ ਨ ਸਕਈ ਜਿਸੁ ਵਲਿ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕਾ ਖੱਡਗੁ ਸੰਜੋਤ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹੈ ਜਿਤੁ ਕਾਲੁ ਕੱਟਕੁ ਮਾਰਿ ਵਿਡਾਰਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਰਖਣਹਾਰਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਹੈ
 ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਪਿਛੈ ਹਰਿ ਸਭਿ ਤਬਾਰਿਆ ॥ ਜੋ ਮੰਦਾ ਚਿਤਵੈ ਪ੍ਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਸੋ ਆਪਿ ਤਪਾਵਣਹਾਰੈ ਮਾਰਿਆ
 ॥ ਏਹ ਗਲ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸਚੇ ਕੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਅਗਮੁ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਸਚੁ ਸੁਤਿਆ ਜਿਨੀ
 ਅਰਾਧਿਆ ਜਾ ਤਠੇ ਤਾ ਸਚੁ ਚਵੇ ॥ ਸੇ ਵਿਰਲੇ ਜੁਗ ਮਹਿ ਜਾਣੀਅਹਿ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਰਵੇ ॥ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ
 ਤਿਨ ਕਤ ਜਿ ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੁ ਲਵੇ ॥ ਜਿਨ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਚਾ ਭਾਵਦਾ ਸੇ ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਗਵੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ
 ਬੋਲੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਦਾ ਨਵੇ ॥੨੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮ: ੪ ॥ ਕਿਆ ਸਵਣਾ ਕਿਆ ਜਾਗਣਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੇ

ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਜਿਨਾ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸੇ ਪੂਰੇ ਪੁਰਖ ਪਰਧਾਨ ॥ ਕਰਮੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਅਨਦਿਨੁ
 ਲਗੈ ਧਿਆਨੁ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹਾ ਦਰਗਹ ਪਾਈ ਮਾਨੁ ॥ ਸਤਦੇ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਉਚਰਹਿ ਉਠਦੇ ਭੀ
 ਵਾਹੁ ਕਰੇਨਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਜਿ ਨਿਤ ਉਠਿ ਸੰਮਾਲੇਨਿ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਆਪਣਾ
 ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਭਉਜਲਿ ਝੁਬਦਿਆ ਕਢਿ ਲਾਏ ਹਰਿ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੇ ਸਾਹ ਹੈ ਜਿ
 ਨਾਮਿ ਕਰਹਿ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਵਣਜਾਰੇ ਸਿਖ ਆਵਦੇ ਸਬਦਿ ਲਘਾਵਣਹਾਰੁ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਕਤ ਕ੃ਪਾ ਭੰਈ
 ਤਿਨ ਸੇਵਿਆ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਸਚੁ ਸਚੇ ਕੇ ਜਨ ਭਗਤ ਹਹਿ ਸਚੁ ਸਚਾ ਜਿਨੀ ਅਰਾਧਿਆ ॥ ਜਿਨ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਿ ਫੱਟੋਲਿਆ ਤਿਨ ਅੰਦਰਹੁ ਹੀ ਸਚੁ ਲਾਧਿਆ ॥ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਜਿਨੀ ਸੇਵਿਆ ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ
 ਮਾਰਿ ਤਿਨੀ ਸਾਧਿਆ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਭ ਟ੍ਰੂ ਵਡਾ ਹੈ ਸਚੁ ਸੇਵਨਿ ਸੇ ਸਚਿ ਰਲਾਧਿਆ ॥ ਸਚੁ ਸਚੇ ਨੋ ਸਾਬਾਸਿ ਹੈ
 ਸਚੁ ਸਚਾ ਸੇਵਿ ਫਲਾਧਿਆ ॥੨੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਮੁਗਧੁ ਹੈ ਨਾਮਹੀਣ ਭਰਮਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ
 ਮਨੂਆ ਨਾ ਟਿਕੈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਇ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਦਾਇਆਲ ਹੋਹਿ ਤਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤ੍ਰੂ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹੀ ਆਪਣਾ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਰੰਗਿ
 ਸੁਭਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਰਤਾ ਰਖਿਆ ਬਣਤ ਬਣਾਇ ॥ ਜਿਹਵਾ ਸਾਲਾਹਿ ਨ ਰਝੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਚਿਤੁ
 ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਕੀ ਮਨਿ ਭੁਖ ਹੈ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਖਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਸਚੁ ਸਚਾ ਕੁਦਰਤਿ ਜਾਣੀਐ
 ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜਿਨਿ ਬਣਾਈਆ ॥ ਸੋ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਚੇ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ॥ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ
 ਸਲਾਹ ਸਚੁ ਸਚੁ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ॥ ਜਾ ਮਿਲਿਆ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਾ ਹਾਜਰੁ ਨਦਰੀ ਆਈਆ ॥ ਸਚੁ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਸਲਾਹਿਆ ਤਿਨਾ ਭੁਖਾ ਸਭਿ ਗਰਵਾਈਆ ॥੨੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਮੈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਖੋਜਿ ਖੋਜੇਦਿਆ
 ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਲਧਾ ਲੋਡਿ ॥ ਵਿਸਟੁ ਗੁਰੁ ਮੈ ਪਾਇਆ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਦਿਤਾ ਜੋਡਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਾਇਆਧਾਰੀ
 ਅਤਿ ਅਨਨਾ ਬੋਲਾ ॥ ਸਬਦੁ ਨ ਸੁਣਈ ਬਹੁ ਰੋਲ ਘਚੋਲਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਸੁਣਿ ਮਨੇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਵਜਦਾ ਜੰਤੁ ਵਜਾਇਆ ॥੨॥

ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਜੋ ਜੀਆ ਅੰਦਰਿ ਵਰਤੈ ॥ ਤੂ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਅਗਣਤੁ ਹੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਵਿਚਿ
ਗਣਤੈ ॥ ਸਭੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਵਰਤਦਾ ਸਭ ਤੇਰੀ ਬਣਤੈ ॥ ਤੂ ਘਟਿ ਘਟਿ ਝਿਕੁ ਵਰਤਦਾ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬ ਚਲਤੈ ॥
ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਮਿਲੇ ਸੁ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਪਰਤੈ ॥੨੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਵੁਡੁ ਕਰਿ ਰਖੀਐ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਈਐ ਚਿਤੁ ॥ ਕਿਤ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਵਿਸਾਰੀਐ ਬਹਦਿਆ ਉਠਦਿਆ ਨਿਤ ॥ ਮਰਣ ਜੀਵਣ ਕੀ
ਚਿੰਤਾ ਗੈਂ ਇਹੁ ਜੀਅੜਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਵਸਿ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਖੁ ਤੂ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਬਖਸਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
ਮਨਮੁਖੁ ਅਛਕਾਰੀ ਮਹਲੁ ਨ ਜਾਣੈ ਖਿਨੁ ਆਗੈ ਖਿਨੁ ਪੀਛੈ ॥ ਸਦਾ ਬੁਲਾਈਐ ਮਹਲਿ ਨ ਆਵੈ ਕਿਤ ਕਰਿ
ਦਰਗਹ ਸੀੜੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਮਹਲੁ ਵਿਰਲਾ ਜਾਣੈ ਸਦਾ ਰਹੈ ਕਰ ਜੋਡਿ ॥ ਆਪਣੀ ਕੂਪਾ ਕਰੇ ਹਰਿ ਮੇਰਾ
ਨਾਨਕ ਲਏ ਬਹੋਡਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਾ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਸਫਲ ਹੈ ਜਿਤੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਮਨੁ ਮਨੇ ॥ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ
ਮਨੁ ਮਨਿਆ ਤਾ ਪਾਪ ਕਸ਼ਮਲ ਭਨੇ ॥ ਉਪਦੇਸੁ ਜਿ ਦਿਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੋ ਸੁਣਿਆ ਸਿਖੀ ਕਨੇ ॥ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ
ਕਾ ਭਾਣਾ ਮਨਿਆ ਤਿਨ ਚੜੀ ਚਕਗਣਿ ਵਨੇ ॥ ਇਹ ਚਾਲ ਨਿਰਾਲੀ ਗੁਰਮੁਖੀ ਗੁਰ ਦੀਖਿਆ ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਭਿਨੇ
॥੨੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਗੋਪਿਆ ਆਪਣਾ ਤਿਸੁ ਠਤਰ ਨ ਠਾਤ ॥ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਦੋਵੈ ਗਏ ਦਰਗਹ
ਨਾਹੀ ਥਾਤ ॥ ਓਹ ਕੇਲਾ ਹਥਿ ਨ ਆਵੈਂ ਫਿਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਲਗਹਿ ਪਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਗਣਤੈ ਘੁਸੀਐ ਦੁਖੇ
ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਕੈਰੁ ਹੈ ਆਪੇ ਲਏ ਜਿਸੁ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਸਨੁ ਜਿਨਾ ਵੇਖਾਲਿਐਨੁ
ਤਿਨਾ ਦਰਗਹ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਅਗਿਆਨੁ ਦੁਰਮਤਿ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜ੍ਰਾਏ ਮਤਿ
ਹਾਰੀ ॥ ਕੂਡੁ ਕੁਸਤੁ ਓਹੁ ਪਾਪ ਕਮਾਵੈ ॥ ਕਿਆ ਓਹੁ ਸੁਣੈ ਕਿਆ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਅਨਾ ਬੋਲਾ ਖੁਇ ਤਝਾਇ
ਪਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਅੰਧਾ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਥਾਇ ਨ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਇ
॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਨ ਕੇ ਚਿਤ ਕਠੋਰ ਹਹਿ ਸੇ ਬਹਹਿ ਨ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥ ਓਥੈ ਸਚੁ ਵਰਤਦਾ ਕੂਡਿਆਰਾ ਚਿਤ
ਤਦਾਸਿ ॥ ਓਇ ਵਲੁ ਛਲੁ ਕਰਿ ਝਾਤਿ ਕਢਦੇ ਫਿਰਿ ਜਾਇ ਬਹਹਿ ਕੂਡਿਆਰਾ ਪਾਸਿ ॥ ਵਿਚਿ ਸਚੇ ਕੂਡੁ ਨ ਗਡੈਂ
ਮਨਿ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥ ਕੂਡਿਆਰ ਕੂਡਿਆਰੀ ਜਾਇ ਰਲੇ ਸਚਿਆਰ ਸਿਖ ਬੈਠੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥

੨੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਰਹਦੇ ਖੁਹਦੇ ਨਿੰਦਕ ਮਾਰਿਅਨੁ ਕਰਿ ਆਪੇ ਆਹਰੁ ॥ ਸਤੰ ਸਹਾਈ ਨਾਨਕਾ ਵਰਤੈ ਸਮ
 ਜਾਹਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸੁੰਢਹੁ ਭੁਲੇ ਸੁੰਢ ਤੇ ਕਿਥੈ ਪਾਇਨਿ ਹਥੁ ॥ ਤਿਨੈ ਮਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਜਿ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ੫ ॥ ਲੈ ਫਾਹੇ ਰਾਤੀ ਤੁਰਹਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥ ਤਕਹਿ ਨਾਰਿ ਪਰਾਈਆ ਲੁਕਿ ਅੰਦਰਿ ਠਾਣੀ ॥
 ਸਨ੍ਨੀ ਦੇਨਿ ਵਿਖੰਮ ਥਾਇ ਮਿਠਾ ਮਦੁ ਮਾਣੀ ॥ ਕਰਮੀ ਆਪੋ ਆਪਣੀ ਆਪੇ ਪਛੁਤਾਣੀ ॥ ਅਜਰਾਈਲੁ ਫਰੇਸਤਾ
 ਤਿਲ ਪੀਡੇ ਘਾਣੀ ॥੨੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਸੇਵਕ ਸਚੇ ਸਾਹ ਕੇ ਸੇਈ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਦ੍ਰਿੜਾ ਸੇਵਨਿ ਨਾਨਕਾ ਸੇ
 ਪਚਿ ਪਚਿ ਸੁਏ ਅਜਾਣ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਪ੍ਰਭ ਮੇਟਣਾ ਨ ਜਾਇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਵਖਗੇ
 ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ੫ ॥ ਨਾਰਾਇਣਿ ਲਿਖਿਆ ਨਾਠੂਂਗੜਾ ਪੈਰ ਕਿਥੈ ਰਖੈ ॥ ਕਰਦਾ ਪਾਪ
 ਅਮਿਤਿਆ ਨਿਤ ਵਿਸੋ ਚਖੈ ॥ ਨਿੰਦਾ ਕਰਦਾ ਪਚਿ ਸੁਆ ਵਿਚਿ ਦੇਹੀ ਭਖੈ ॥ ਸਚੈ ਸਾਹਿਬ ਮਾਰਿਆ ਕਤਣੁ ਤਿਸ
 ਨੌ ਰਖੈ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜੋ ਪੁਰਖੁ ਅਲਖੈ ॥੨੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਨਰਕ ਘੋਰ ਬਹੁ ਦੁਖ ਘਣੇ
 ਅਕਿਰਤਧਣਾ ਕਾ ਥਾਨੁ ॥ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਮਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਹੋਇ ਹੋਇ ਸੁਏ ਹਰਾਮੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਅਵਖਧ ਸਮੇਂ ਕੀਤਿਅਨੁ
 ਨਿੰਦਕ ਕਾ ਦਾਰੁ ਨਾਹਿ ॥ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਨਾਨਕਾ ਪਚਿ ਪਚਿ ਜੋਨੀ ਪਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ੫ ॥ ਤੁਸਿ ਦਿਤਾ ਪੂਰੈ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸਚੁ ਅਖੁਟੁ ॥ ਸਭਿ ਅੰਦੇਸੇ ਮਿਟਿ ਗਏ ਜਮ ਕਾ ਭਤ ਛੁਟੁ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬੁਰਿਆਈਆਂ ਸੰਗਿ
 ਸਾਧੂ ਤੁਟੁ ॥ ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਦ੍ਰਿੜਾ ਸੇਵਦੇ ਹੁਇ ਮਰਸਨਿ ਬੁਟੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਗੁਰਿ ਬਖਿਸਿਆ ਨਾਮੈ ਸੰਗਿ ਜੁਟੁ ॥੨੯॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਤਪਾ ਨ ਹੋਵੈ ਅੰਦ੍ਰਹੁ ਲੋਭੀ ਨਿਤ ਮਾਇਆ ਨੌ ਫਿਰੈ ਜਜਮਾਲਿਆ ॥ ਅਗੋ ਦੇ ਸਦਿਆ ਸਤੈ ਦੀ
 ਮਿਖਿਆ ਲਏ ਨਾਹੀ ਪਿਛੋ ਦੇ ਪਛੁਤਾਇ ਕੈ ਆਣਿ ਤਪੈ ਪੁਤੁ ਵਿਚਿ ਬਹਾਲਿਆ ॥ ਪੰਚ ਲੋਗ ਸਭਿ ਹਸਣ
 ਲਗੇ ਤਪਾ ਲੋਭਿ ਲਹਰਿ ਹੈ ਗਾਲਿਆ ॥ ਜਿਥੈ ਥੋੜਾ ਧਨੁ ਵੇਖੈ ਤਿਥੈ ਤਪਾ ਮਿਟੈ ਨਾਹੀ ਧਨਿ ਬਹੁਤੈ ਡਿਠੈ ਤਪੈ
 ਧਰਮੁ ਹਾਰਿਆ ॥ ਭਾਈ ਏਹੁ ਤਪਾ ਨ ਹੋਵੀ ਬਗੁਲਾ ਹੈ ਬਹਿ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀਚਾਰਿਆ ॥ ਸਤ ਪੁਰਖ ਕੀ ਤਪਾ ਨਿੰਦਾ
 ਕਰੈ ਸੰਸਾਰੈ ਕੀ ਉਸਤਤੀ ਵਿਚਿ ਹੋਵੈ ਏਤੁ ਦੋਖੈ ਤਪਾ ਦਿਧਿ ਮਾਰਿਆ ॥ ਮਹਾ ਪੁਰਖਾਂ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਾ ਵੇਖੁ ਜਿ ਤਪੈ
 ਨੌ ਫਲੁ ਲਗਾ ਸਭੁ ਗਇਆ ਤਪੇ ਕਾ ਘਾਲਿਆ ॥ ਬਾਹਰਿ ਬਹੈ ਪੰਚਾ ਵਿਚਿ ਤਪਾ ਸਦਾਏ ॥ ਅੰਦਰਿ ਬਹੈ ਤਪਾ

ਪਾਪ ਕਮਾਏ ॥ ਹਰਿ ਅੰਦਰਲਾ ਪਾਪੁ ਪੰਚਾ ਨੋ ਤਘਾ ਕਰਿ ਵੇਖਾਲਿਆ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਜਮਕੱਕਰਾ ਨੋ ਆਖਿ
 ਛਡਿਆ ਏਸੁ ਤਪੇ ਨੋ ਤਿਥੈ ਖਡਿ ਪਾਇਹੁ ਜਿਥੈ ਮਹਾ ਮਹਾਂ ਹਤਿਆਰਿਆ ॥ ਫਿਰਿ ਏਸੁ ਤਪੇ ਦੈ ਸੁਹਿ ਕੋਈ
 ਲਗਹੁ ਨਾਹੀ ਏਹੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਹੈ ਫਿਟਕਾਰਿਆ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਦਰਿ ਵਰਤਿਆ ਸੁ ਨਾਨਕਿ ਆਖਿ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਸੋ ਬ੍ਰਾਜੈ
 ਜੁ ਦਧਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਾਂ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿਆ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ
 ਭਗਤ ਨਿਤ ਗਾਵਦੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਾਂ ਨੋ ਨਿਤ ਨਾਵੈ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ਬਖਸੀਅਨੁ ਨਿਤ ਚੱਡੈ
 ਸਵਾਈ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਾਂ ਨੋ ਥਿਰੁ ਘਰੀ ਬਹਾਲਿਅਨੁ ਅਪਣੀ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥ ਨਿੰਦਕਾਂ ਪਾਸਹੁ ਹਰਿ ਲੇਖਾ ਮੰਗਸੀ
 ਬਹੁ ਦੇਇ ਸਜਾਈ ॥ ਜੇਹਾ ਨਿੰਦਕ ਅਪਣੈ ਜੀਇ ਕਮਾਵਦੇ ਤੇਹੋ ਫਲੁ ਪਾਈ ॥ ਅੰਦਰਿ ਕਮਾਣਾ ਸਰਪਰ ਤਘਡੈ
 ਭਾਵੈ ਕੋਈ ਬਹਿ ਧਰਤੀ ਵਿਚਿ ਕਮਾਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਦੇਖਿ ਵਿਗਸਿਆ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ਮਃ ੫
 ॥ ਭਗਤ ਜਨਾਂ ਕਾ ਰਾਖਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਹੈ ਕਿਆ ਪਾਪੀ ਕਰੀਐ ॥ ਗੁਮਾਨੁ ਕਰਹਿ ਮੂੜ ਗੁਮਾਨੀਆ ਵਿਸੁ ਖਾਧੀ
 ਮਰੀਐ ॥ ਆਇ ਲਗੇ ਨੀ ਦਿਹ ਥੋੜ੍ਹੇ ਜਿਤ ਪਕਾ ਖੇਤੁ ਲੁਣੀਐ ॥ ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਤੇਵੇਹੋ ਭਜੀਐ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਕਾ ਖਸਮੁ ਵਡਾ ਹੈ ਸਭਨਾ ਦਾ ਧਣੀਐ ॥੩੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੂਲਹੁ ਭੁਲਿਆ ਵਿਚਿ ਲਬੁ ਲੋਭੁ
 ਅਵਾਕਾਰੁ ॥ ਝਗੜਾ ਕਰਦਿਆ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਦਰੈ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰਹਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਸੁਧਿ ਮਤਿ ਕਰਤੈ ਸਭ ਹਿਰਿ ਲੰਝੁ
 ਬੋਲਨਿ ਸਭੁ ਵਿਕਾਰੁ ॥ ਦਿਤੈ ਕਿਤੈ ਨ ਸੰਤੋਖੀਅਹਿ ਅੰਤਰਿ ਤਿਸਨਾ ਬਹੁ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਾ
 ਨਾਲੋ ਤੁਟੀ ਭਲੀ ਜਿਨ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਟ੍ਰ੍ਹਾ ਭਾਉ ਹੈ ਤਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰੀਤਿ
 ਨ ਹੋਇ ॥ ਓਹੁ ਆਵੈ ਜਾਇ ਭਵਾਈਐ ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਕੂੜੁ ਕਮਾਵੈ ਕੂੜੁ ਤਚਰੈ ਕੂਡਿ ਲਗਿਆ ਕੂੜੁ ਹੋਇ ॥
 ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਹੈ ਦੁਖਿ ਬਿਨਸੈ ਦੁਖੁ ਰੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਧਾਤੁ ਲਿਵੈ ਜੋੜੁ ਨ ਆਵੰਦੇ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
 ਜਿਨ ਕਤ ਪੋਤੈ ਪੁਨੁ ਪਇਆ ਤਿਨਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਵੀਚਾਰਹਿ ਸੰਤ ਮੁਨਿ
 ਜਨਾਂ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਕਛਾਦੇ ॥ ਭਗਤ ਸੁਖੈ ਤੇ ਬੋਲਦੇ ਸੇ ਵਚਨ ਹੋਵਾਂਦੇ ॥ ਪਰਗਟ ਪਾਹਾਰੈ ਜਾਪਦੇ ਸਭਿ ਲੋਕ ਸੁਣਾਂਦੇ ॥
 ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਇਨਿ ਸੁਗਧ ਨਰ ਸੰਤ ਨਾਲਿ ਖਛਾਦੇ ॥ ਓਇ ਲੋਚਨਿ ਓਨਾ ਗੁਣਾ ਨੋ ਓਇ ਅਵਾਕਾਰਿ ਸਡਾਂਦੇ ॥ ਓਇ

ਕੇਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਜਾਂ ਭਾਗ ਧੁਰਿ ਮਨਦੇ ॥ ਜੋ ਮਾਰੇ ਤਿਨਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਸੇ ਕਿਸੈ ਨ ਸਨਦੇ ॥ ਵੈਰੁ ਕਰਨਿ ਨਿਰਕੈਰ
 ਨਾਲਿ ਧਰਮਿ ਨਿਆਇ ਪਚਨਦੇ ॥ ਜੋ ਜੋ ਸੰਤਿ ਸਰਾਪਿਆ ਸੇ ਫਿਰਹਿ ਭਵਨਦੇ ॥ ਪੇਡੁ ਮੁੰਢਾਹੂ ਕਟਿਆ ਤਿਸੁ ਡਾਲ
 ਸੁਕਨਦੇ ॥ ੩੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵੜਾਇਆ ਭਨਣ ਘੜਣ ਸਮਰਥੁ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ
 ਸਮਾਲਹਿ ਮਿਤ ਤੂ ਦੁਖੁ ਸਬਾਇਆ ਲਥੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਖੁਧਿਆਕਵਨੁ ਨ ਜਾਣਈ ਲਾਜ ਕੁਲਾਜ ਕੁਬੋਲੁ ॥ ਨਾਨਕੁ
 ਮਾਂਗੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੰਜੋਗੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੇਵੇਹੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦਾ ਤੇਵੇਹੈ ਫਲਤੇ ॥ ਚਬੇ ਤਤਾ ਲੋਹ
 ਸਾਰੁ ਵਿਚਿ ਸੰਘੈ ਪਲਤੇ ॥ ਘਤਿ ਗਲਾਵਾਂ ਚਾਲਿਆ ਤਿਨਿ ਢੂਤਿ ਅਮਲ ਤੇ ॥ ਕਾਈ ਆਸ ਨ ਪੁਨੀਆ ਨਿਤ ਪਰ
 ਮਲੁ ਹਿਰਤੇ ॥ ਕੀਆ ਨ ਜਾਣੈ ਅਕਿਰਤਘਣ ਵਿਚਿ ਜੋਨੀ ਫਿਰਤੇ ॥ ਸਭੇ ਧਿਰਾਂ ਨਿਖੁਟੀਅਸੁ ਹਿਰਿ ਲੰਝੀਅਸੁ
 ਧਰ ਤੇ ॥ ਵਿਝਣ ਕਲਹ ਨ ਦੇਵਦਾ ਤਾਂ ਲਇਆ ਕਰਤੇ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕਰਤੇ ਅਛਾਮੇਤ ਝਾਡਿ ਧਰਤੀ ਪਡੇ ॥ ੩੨॥ ਸਲੋਕ
 ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਬਿਕੇਕ ਬੁਧਿ ਹੋਇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਿਰਦੈ ਹਾਰੁ ਪਰੋਇ ॥ ਪਵਿਤੁ ਪਾਵਨੁ ਪਰਮ
 ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਜਿ ਓਸੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੀ ॥ ਅਨੰਤਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਾਸਨਾ ਸਮਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਮਹਾ
 ਉਤਮ ਬਾਣੀ ॥ ਜਿ ਪੁਰਖੁ ਸੁਣੈ ਸੁ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥੧॥
 ਮਃ ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਜੀਅ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਪੈ ਕਿ ਪ੍ਰੌਦੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਵੈ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਅੰਦਰਿ ਸਤਿਗੁਰੂ ਵਰਤੈ ਜੋ
 ਸਿਖਾਂ ਨੋ ਲੋਚੈ ਸੋ ਗੁਰ ਖੁਸੀ ਆਵੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਆਖੈ ਸੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵਨਿ ਸੁ ਜਪੁ ਕਮਾਵਹਿ ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਕੀ ਘਾਲ
 ਸਚਾ ਥਾਇ ਪਾਵੈ ॥ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਹੁਕਮੈ ਜਿ ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਪਾਸਹੁ ਕੰਮੁ ਕਰਾਇਆ ਲੋਡੇ ਤਿਸੁ ਗੁਰਸਿਖੁ ਫਿਰਿ
 ਨੈਡਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਅਗੈ ਕੋ ਜੀਤ ਲਾਇ ਘਾਲੈ ਤਿਸੁ ਅਗੈ ਗੁਰਸਿਖੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥ ਜਿ ਠਗੀ ਆਵੈ
 ਠਗੀ ਉਠਿ ਜਾਇ ਤਿਸੁ ਨੈਡੈ ਗੁਰਸਿਖੁ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੁ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਜਿ ਵਿਣੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਮਨੁ ਮਨੇ ਕੰਮੁ ਕਰਾਏ ਸੋ ਜੰਤੁ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂਂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਅਤਿ ਵਡਾ ਤੁਹਿ
 ਜੇਵੱਡੁ ਤੂਂ ਵਡ ਕਡੇ ॥ ਜਿਸੁ ਤੂਂ ਮੇਲਹਿ ਸੋ ਤੁਧੁ ਮਿਲੈ ਤੂਂ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਲੇਖਾ ਛਡੇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੂਂ ਆਪਿ
 ਮਿਲਾਇਦਾ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵੇ ਮਨੁ ਗਡ ਗਡੇ ॥ ਤੂਂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਤੂ ਸਭੁ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਚੰਮੁ ਤੇਰਾ ਹਡੇ ॥ ਜਿਤ

ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਖੁ ਤ੍ਰਂ ਸਚਿਆ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਆਸ ਤੇਰੀ ਵਡ ਵਡੇ ॥੩੩॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

ਗਤੜੀ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ਰਾਡਿ ਕਮਾਲਦੀ ਮੋਜਦੀ ਕੀ ਵਾਰ ਕੀ ਧੁਨਿ ਉਪਰਿ ਗਾਵਣੀ
 ੧੮੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੋ ਜਨੁ ਜਪੈ ਸੋ ਆਡਿਆ ਪਰਖਾਣੁ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੈ
 ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨਿ ਭਜਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰਖਾਣੁ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖੁ ਕਟਿਆ ਹਰਿ ਭੇਟਿਆ ਪੁਰਖੁ ਸੁਯਾਣੁ ॥ ਸਨਤ
 ਸੰਗਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਤਾਣੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਭਲਕੇ ਤਠਿ ਪਰਾਹੁਣਾ ਮੈਰੈ ਘਰਿ ਆਵਤ ॥ ਪਾਤ
 ਪਖਾਲਾ ਤਿਸ ਕੇ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਿਤ ਭਾਵਤ ॥ ਨਾਮੁ ਸੁਣੇ ਨਾਮੁ ਸੱਗ੍ਰਹੈ ਨਾਮੇ ਲਿਵ ਲਾਵਤ ॥ ਗ੍ਰਹੁ ਧਨੁ ਸਭੁ ਪਵਿਤ੍ਰ
 ਹੋਇ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਵਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ
 ਭਲਾ ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਕਰਤਦਾ ਸਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣਾ ॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਰਖਿ ਰਹਿਆ ਜੀਅ
 ਅੰਦਰਿ ਜਾਣਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਪਾਈਐ ਮਨਿ ਸਚੇ ਭਾਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਸਦ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣਾ
 ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਚੇਤਾ ਈ ਤਾਂ ਚੇਤਿ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚਾ ਸੋ ਧਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਚਡਿ ਬੋਹਿਥਿ ਭਤਜਲੁ
 ਪਾਰਿ ਪਤ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਵਾਊ ਸੰਦੇ ਕਪਡੇ ਪਹਿਰਹਿ ਗਰਬਿ ਗਵਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਨੀ ਜਲਿ ਬਲਿ
 ਹੋਏ ਛਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੇਈ ਤਕਰੇ ਜਗੈ ਵਿਚਿ ਜੋ ਸਚੈ ਰਖੇ ॥ ਸੁਹਿ ਡਿਠੈ ਤਿਨ ਕੈ ਜੀਵੀਐ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਚਖੇ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਸੰਗਿ ਸਾਧਾ ਭਖੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਣੀ ਹਰਿ ਆਪਿ ਪਰਖੇ ॥ ਨਾਨਕ ਚਲਤ
 ਨ ਜਾਪਨੀ ਕੋ ਸਕੈ ਨ ਲਖੇ ॥੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਸੌਈ ਦਿਨਸੁ ਸੁਹਾਵਡਾ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭੁ ਆਵੈ ਚਿਤਿ ॥
 ਜਿਤੁ ਦਿਨਿ ਵਿਸਰੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਫਿਟੁ ਭਲੇਰੀ ਰੁਤਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਮਿਤ੍ਰਾਈ ਤਿਸੁ ਸਿਤ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਿਸ
 ਕੈ ਹਾਥਿ ॥ ਕੁਮਿਤ੍ਰਾ ਸੇਈ ਕਾਂਢੀਅਹਿ ਇਕ ਵਿਖ ਨ ਚਲਹਿ ਸਾਥਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ
 ਮਿਲਿ ਪੀਵਹੁ ਭਾਈ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸਭ ਤਿਖਾ ਬੁਝਾਈ ॥ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰ ਭੁਖ ਰਹੈ
 ਨ ਕਾਈ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੁਨਿਆ ਅਮਰਾ ਪਦੁ ਪਾਈ ॥ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਤ੍ਰੂਹੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਈ ॥੩॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਡਿਠੜੀ ਹਭ ਠਾਇ ਊਣ ਨ ਕਾਈ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਲਧਾ ਤਿਨ ਸੁਆਤ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ

ਭੇਟਿਆ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਦਾਮਨੀ ਚਮਤਕਾਰ ਤਿਉ ਵਰਤਾਰਾ ਜਗ ਖੇ ॥ ਵਥੁ ਸੁਹਾਵੀ ਸਾਇ ਨਾਨਕ ਨਾਤ ਜਪਂਦੋ
 ਤਿਸੁ ਧਣੀ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਿਮ੍ਰਤਿ ਸਾਸਕ ਸੋਧਿ ਸਭਿ ਕਿਨੈ ਕੀਮ ਨ ਜਾਣੀ ॥ ਜੋ ਜਨੁ ਭੇਟੈ ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਸੋ ਹਰਿ
 ਰੁਂ ਮਾਣੀ ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਏਹ ਰਤਨਾ ਖਾਣੀ ॥ ਮਸਤਕਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪਰਾਣੀ ॥
 ਤੋਸਾ ਦਿਚੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਮਿਹਮਾਣੀ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਅੰਤਰਿ ਚਿੰਤਾ ਨੈਣੀ ਸੁਖੀ ਮੂਲਿ ਨ ਉਤਰੈ ਭੁਖ
 ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਸੈ ਨ ਲਥੋ ਢੁਖੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਮੁਠੜੇ ਸੇਈ ਸਾਥ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਨ ਲਦਿਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਸੇ ਸਾਬਾਸਿ ਜਿਨੀ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਇਕੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਥੈ ਬੈਸਨਿ ਸਾਧ ਜਨ ਸੋ ਥਾਨੁ
 ਸੁਝਦਾ ॥ ਓਡਿ ਸੇਵਨਿ ਸੰਮੂਥੁ ਆਪਣਾ ਬਿਨਸੈ ਸਭੁ ਮੰਦਾ ॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ ਪਾਰਖ੍ਰਹਮ ਸੰਤ ਬੇਦੁ ਕਛਦਾ ॥
 ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਤੇਰਾ ਬਿਰਦੁ ਹੈ ਜੁਗ ਜੁਗ ਵਰਤੰਦਾ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਾਚੈ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭਾਵੰਦਾ ॥੫॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਚਿੜੀ ਚੁਹਕੀ ਪਹੁ ਫੁਟੀ ਕਗਨਿ ਬਹੁਤੁ ਤਰੰਗ ॥ ਅਚਰਜ ਰੂਪ ਸੰਤਨ ਰਚੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮਹਿ ਰੰਗ
 ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਘਰ ਮੰਦਰ ਖੁਸੀਆ ਤਹੀ ਜਹ ਤੂ ਆਵਹਿ ਚਿਤਿ ॥ ਢੁਨੀਆ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ਨਾਨਕ ਸਭਿ
 ਕੁਮਿਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸਚੀ ਰਾਸਿ ਹੈ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਜਾਤਾ ॥ ਤਿਸੈ ਪਰਾਪਤਿ ਭਾਇਰਹੁ ਜਿਸੁ ਦੇਇ
 ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਮਨ ਤਨ ਭੀਤਰਿ ਮਤਲਿਆ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਜਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ਸਭਿ ਦੋਖਹ ਖਾਤਾ
 ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਈ ਜੀਵਿਆ ਜਿਨਿ ਇਕੁ ਪਛਾਤਾ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਖਖੜੀਆ ਸੁਹਾਵੀਆ ਲਗੜੀਆ ਅਕ
 ਕੱਠਿ ॥ ਬਿਰਹ ਵਿਛੋੜਾ ਧਣੀ ਸਿਤ ਨਾਨਕ ਸਹਸੈ ਗੱਠਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਵਿਸਾਰੇਟੇ ਮਰਿ ਗਏ ਮਰਿ ਪਿ ਨ
 ਸਕਹਿ ਮੂਲਿ ॥ ਵੇਮੁਖ ਹੋਏ ਰਾਮ ਤੇ ਜਿਉ ਤਸਕਰ ਉਪਰਿ ਸੂਲਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨੁ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਹੈ
 ਅਵਿਨਾਸੀ ਸੁਣਿਆ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਹਰਿ ਭਣਿਆ ॥ ਊਚ ਨੀਚ ਸਭ ਇਕ ਸਮਾਨਿ
 ਕੀਟ ਹਸਤੀ ਬਣਿਆ ॥ ਮੀਤ ਸਖਾ ਸੁਤ ਬੰਧਿਪੋ ਸਭਿ ਤਿਸ ਦੇ ਜਣਿਆ ॥ ਤੁਸਿ ਨਾਨਕੁ ਦੈਕੈ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਤਿਨਿ
 ਹਰਿ ਰੁਂਗ ਮਣਿਆ ॥੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਜਿਨਾ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾਂ ਮਨਿ ਮੰਤੁ ॥ ਧਨੁ ਸਿ
 ਸੇਈ ਨਾਨਕਾ ਪੂਰਨੁ ਸੋਈ ਸੰਤੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਅਠੇ ਪਹਰ ਭਤਦਾ ਫਿਰੈ ਖਾਵਣ ਸੰਦੜੈ ਸੂਲਿ ॥ ਦੋਜਕਿ ਪਤਦਾ

ਕਿਤ ਰਹੈ ਜਾ ਚਿਤਿ ਨ ਹੋਇ ਰਸੂਲਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤਿਸੈ ਸਰੇਵਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀਹੋ ਜਿਸ ਦੈ ਨਾਉ ਪਲੈ ॥ ਐਥੈ ਰਹਹੁ
 ਸੁਹੇਲਿਆ ਅਗੈ ਨਾਲਿ ਚਲੈ ॥ ਘਰੁ ਬੰਧਹੁ ਸਚ ਧਰਮ ਕਾ ਗਡਿ ਥੰਮੁ ਅਹਲੈ ॥ ਓਟ ਲੈਹੁ ਨਾਰਾਇਣੈ ਦੀਨ
 ਦੁਨੀਆ ਝਲੈ ॥ ਨਾਨਕ ਪਕਡੇ ਚਰਣ ਹਰਿ ਤਿਸੁ ਦਰਗਹ ਮਲੈ ॥੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਜਾਚਕੁ ਮਂਗੈ ਦਾਨੁ ਦੇਹਿ
 ਪਿਆਰਿਆ ॥ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ਦਾਤਾਰੁ ਮੈ ਨਿਤ ਚਿਤਾਰਿਆ ॥ ਨਿਖੁਟਿ ਨ ਜਾਈ ਮੂਲਿ ਅਤੁਲ ਭੰਡਾਰਿਆ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਬਦੁ ਅਪਾਰੁ ਤਿਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸਾਰਿਆ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸਿਖਹੁ ਸਬਦੁ ਪਿਆਰਿਹੋ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕੀ ਟੇਕ ॥ ਮੁਖ
 ਊਜਲ ਸਦਾ ਸੁਖੀ ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਤ ਏਕ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਓਥੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਕੰਡੀਐ ਸੁਖੀਆ ਹਰਿ ਕਰਣੇ ॥ ਜਮ ਕੈ
 ਧੰਥਿ ਨ ਪਾਈਅਹਿ ਫਿਰਿ ਨਾਹੀ ਮਰਣੇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਆਇਆ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਤਿਸੈ ਹੀ ਜਰਣੇ ॥ ਬਾਣੀ ਉਚਰਹਿ
 ਸਾਧ ਜਨ ਅਮਿਤ ਚਲਹਿ ਝਾਰਣੇ ॥ ਪੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਨਾਨਕੁ ਜੀਵਿਆ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਧਰਣੇ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸੇਵਿਐ ਟ੍ਰਖਾ ਕਾ ਹੋਇ ਨਾਸੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਅਰਾਧਿਐ ਕਾਰਜੁ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥੭॥ ਮਃ ੫ ॥
 ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸੰਕਟ ਛੁਟਹਿ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਜਪੀਐ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਸਰਤ ਨਾਮੁ
 ॥੮॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ਕਿਆ ਗਣੀ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਧਾ ॥ ਸਾਧਾ ਸਰਣੀ ਜੋ ਪਕੈ ਸੁ ਛੁਟੈ ਬਧਾ ॥
 ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਅਬਿਨਾਸੀਐ ਜੋਨਿ ਗਰਭਿ ਨ ਦਧਾ ॥ ਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹਰਿ ਪਡਿ ਬੁਝਿ ਸਮਧਾ ॥ ਨਾਨਕ
 ਪਾਇਆ ਸੋ ਧਣੀ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਧਾ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਕਾਮੁ ਨ ਕਰਹੀ ਆਪਣਾ ਫਿਰਹਿ ਅਵਤਾ
 ਲੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਇ ਵਿਸਾਰਿਐ ਸੁਖੁ ਕਿਨੇਹਾ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਬਿਖੈ ਕਤੁਡਤਣਿ ਸਗਲ ਮਾਹਿ ਜਗਤਿ
 ਰਹੀ ਲਪਟਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨਿ ਵੀਚਾਰਿਆ ਸੀਠਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਹ ਨੀਸਾਣੀ ਸਾਧ ਕੀ
 ਜਿਸੁ ਭੇਟਤ ਤਰੀਐ ॥ ਜਮਕੰਕਰੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੰਦ ਫਿਰਿ ਬਹੁਡਿ ਨ ਮਰੀਐ ॥ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਖੁ ਸੋ
 ਪਾਰਿ ਉਤਰੀਐ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗੁਂਫਹੁ ਮਨਿ ਮਾਲ ਹਰਿ ਸਭ ਮਲੁ ਪਰਹਰੀਐ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮਿਲਿ ਰਹੇ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਰਹਰੀਐ ॥੧੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਕੁਠਾ ਚਿਤਿ ॥ ਗਾਲੀ
 ਅਲ ਪਲਾਲੀਆ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵਹਿ ਮਿਤ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਦੂਸਟੀ ਆਇਆ ਪੂਰਨ ਅਗਮ

ਬਿਸਮਾਦ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਕੀਤਾ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਧੋਹੁ ਨ ਚਲੀ ਖਸਮ ਨਾਲਿ ਲਬਿ
 ਮੋਹਿ ਵਿਗੁਤੇ ॥ ਕਰਤਬ ਕਰਨਿ ਭਲੇਰਿਆ ਮਦਿ ਮਾਇਆ ਸੁਤੇ ॥ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨਿ ਭਵਾਈਅਨਿ ਜਮ ਮਾਰਗਿ
 ਸੁਤੇ ॥ ਕੀਤਾ ਪਾਇਨਿ ਆਪਣਾ ਦੁਖ ਸੇਤੀ ਜੁਤੇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਇ ਵਿਸਾਰਿਐ ਸਭ ਮੰਦੀ ਰੁਤੇ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
 ਤਠਂਦਿਆ ਬਝਦਿਆ ਸਵੰਦਿਆ ਸੁਖੁ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਲਾਹਿਐ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫
 ॥ ਲਾਲਚਿ ਅਟਿਆ ਨਿਤ ਫਿਰੈ ਸੁਆਰਥੁ ਕਰੇ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਨਾਨਕਾ ਤਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਸਭੇ ਕਵਸਤ੍ਰੂ ਕਤੜੀਆ ਸਚੇ ਨਾਉ ਮਿਠਾ ॥ ਸਾਟੁ ਆਇਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਜਨਾਂ ਚਖਿ ਸਾਧੀ ਡਿਠਾ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਮਨਿ ਤਿਸੈ ਕੁਠਾ ॥ ਇਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਭਾਉ ਦੁਧਾ ਕੁਠਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਨਕੁ
 ਮੰਗੈ ਜੋਡਿ ਕਰ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਵੈ ਤੁਠਾ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਜਾਚੜੀ ਸਾ ਸਾਰੁ ਜੋ ਜਾਚੰਦੀ ਹੇਕੜੀ ॥ ਗਲੀ ਬਿਆ
 ਵਿਕਾਰ ਨਾਨਕ ਧਣੀ ਵਿਹੂਣੀਆ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਨੀਹਿ ਜਿ ਵਿਧਾ ਮਨੁ ਪਛਾਣੁ ਵਿਰਲੋ ਥਿਓ ॥ ਜੋਡਣਹਾਰਾ
 ਸੰਤੁ ਨਾਨਕ ਪਾਥਰੁ ਪਧਰੋ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੋਈ ਸੇਵਿਹੁ ਜੀਅਡੇ ਦਾਤਾ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥ ਕਿਲਵਿਖ ਸਭਿ ਬਿਨਾਸੁ
 ਹੋਨਿ ਸਿਮਰਤ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥ ਹਰਿ ਮਾਰਗੁ ਸਾਧੂ ਦਸਿਆ ਜਪੀਐ ਗੁਰਮੰਤੁ ॥ ਮਾਇਆ ਸੁਆਦ ਸਭਿ ਫਿਕਿਆ ਹਰਿ
 ਮਨਿ ਭਾਵੰਦੁ ॥ ਧਿਆਇ ਨਾਨਕ ਪਰਮੇਸ਼ਰੈ ਜਿਨਿ ਦਿਤੀ ਜਿੰਦੁ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਕਤ ਲਗੀ ਸਚੇ ਨਾਮ
 ਕੀ ਜੋ ਬੀਜੇ ਸੋ ਖਾਇ ॥ ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਨਾਨਕਾ ਜਿਸ ਨੋ ਲਿਖਿਆ ਆਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਮੰਗਣਾ ਤ ਸਚੁ
 ਇਕੁ ਜਿਸੁ ਤੁਸਿ ਟੇਵੈ ਆਪਿ ॥ ਜਿਤੁ ਖਾਈ ਮਨੁ ਤ੍ਰਧੀਐ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਦਾਤਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਲਾਹਾ ਜਗ
 ਮਹਿ ਸੇ ਖਟਹਿ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥ ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਨ ਜਾਣਨੀ ਸਚੇ ਦੀ ਆਸ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਏਕੁ ਸਰੇਵਿਆ
 ਹੋਰੁ ਸਭ ਵਿਣਾਸੁ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿਸੁ ਵਿਸਰੈ ਤਿਸੁ ਬਿਰਥਾ ਸਾਸੁ ॥ ਕੱਠਿ ਲਾਇ ਜਨ ਰਖਿਆ ਨਾਨਕ ਬਲਿ
 ਜਾਸੁ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਫੁਰਮਾਇਆ ਮੀਹੁ ਕੁਠਾ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਅਨੁ ਧਨੁ ਬਹੁਤੁ
 ਤਪਜਿਆ ਪ੍ਰਥਮੀ ਰਜੀ ਤਿਪਤਿ ਅਘਾਇ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਗੁਣ ਤਚੈ ਦੁਖੁ ਦਾਲਦੁ ਗਿਆ ਬਿਲਾਇ ॥ ਪੂਰਬਿ
 ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿਆ ਤਿਸੈ ਰਾਇ ॥ ਪਰਮੇਸਰਿ ਜੀਵਾਲਿਆ ਨਾਨਕ ਤਿਸੈ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥

ਜੀਵਨ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੁ ਇਕੋ ਸਿਮਰੀਐ ॥ ਟ੍ਰੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਧੀਰੀਐ ॥ ਡਿਠਾ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ਸੁਖੁ ਨ
 ਨਾਮ ਬਿਨੁ ॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਹੋਸੀ ਛਾਰੁ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ਜਨੁ ॥ ਰੰਗ ਰੂਪ ਰਸ ਬਾਦਿ ਕਿ ਕਰਹਿ ਪਰਾਣੀਆ ॥ ਜਿਸੁ
 ਮੁਲਾਏ ਆਪਿ ਤਿਸੁ ਕਲ ਨਹੀ ਜਾਣੀਆ ॥ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਨਿਰਬਾਣੁ ਸਚਾ ਗਾਵਹੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਦੁਆਰਿ ਜੇ
 ਤੁਧੁ ਭਾਵਹੀ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਤਿਨੁ ਕਤ ਜੋ ਹਰਿ ਲਡਿ ਲਾਗੇ ॥ ਜੀਵਤ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਏ ਹਰਿ
 ਕੀਰਤਨਿ ਜਾਗੇ ॥ ਸਾਧਸੰਗੁ ਜਿਨ ਪਾਇਆ ਸੇਈ ਵਡਭਾਗੇ ॥ ਨਾਇ ਵਿਸਰਿਐ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣਾ ਤੂਟੇ ਕਚ ਧਾਗੇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਧੂਡਿ ਪੁਨੀਤ ਸਾਧ ਲਖ ਕੋਟਿ ਪਿਰਾਗੇ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥ ਧਰਣਿ ਸੁਵਨੀ ਖੜ੍ਹ ਰਤਨ ਜੜਾਵੀ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਪੁਰਖੁ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ॥ ਸਭੇ ਕਾਜ ਸੁਹੇਲਡੇ ਥੀਏ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਫਿਰਦੀ
 ਫਿਰਦੀ ਦਹ ਦਿਸਾ ਜਲ ਪਰਕਤ ਬਨਰਾਇ ॥ ਜਿਥੈ ਡਿਠਾ ਮਿਰਤਕੋ ਇਲ ਬਹਿਠੀ ਆਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥
 ਜਿਸੁ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਫਲ ਲੋਡੀਅਹਿ ਸੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਤ ॥ ਨੇਡੈ ਦੇਖਉ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਤ ॥ ਹੋਇ
 ਸਗਲ ਕੀ ਰੇਣੁਕਾ ਹਰਿ ਸਾਂਗਿ ਸਮਾਵਤ ॥ ਟ੍ਰੂਖੁ ਨ ਦੇਈ ਕਿਸੈ ਜੀਅ ਪਤਿ ਸਿਉ ਘਰਿ ਜਾਵਤ ॥ ਪਤਿਤ
 ਪੁਨੀਤ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਾਨਕ ਸੁਣਾਵਤ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕ ਦੋਹਾ ਮਃ ੫ ॥ ਏਕੁ ਜਿ ਸਾਜਨੁ ਮੈ ਕੀਆ ਸਰਬ ਕਲਾ
 ਸਮਰਥੁ ॥ ਜੀਤ ਹਮਾਰਾ ਖਨੀਐ ਹਰਿ ਮਨ ਤਨ ਸਾਂਡੀ ਵਥੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਜੇ ਕਰੁ ਗਹਹਿ ਪਿਆਰਡੇ ਤੁਧੁ ਨ
 ਛੋਡਾ ਮੂਲਿ ॥ ਹਰਿ ਛੋਡਨਿ ਸੇ ਦੁਰਜਨਾ ਪਡਹਿ ਦੋਜਕ ਕੈ ਸੂਲਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਘਰਿ ਜਿਸ ਦੈ
 ਹਰਿ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਵੈ ॥ ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵਹਿ ਸੰਤ ਜਨ ਪਾਪਾ ਮਲੁ ਧੋਵੈ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਵਸਹਿ ਸੰਕਟ ਸਭਿ ਖੋਵੈ
 ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਜਿਸੁ ਭੇਟੀਐ ਮਰਿ ਜਨਮਿ ਨ ਰੋਵੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸ ਪਿਆਸ ਨਾਨਕ ਘਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਦੇਵੈ ॥੧੮॥
 ਸਲੋਕ ਝੁਖਣਾ ਮਃ ੫ ॥ ਭੋਰੀ ਭਰਮੁ ਵਜਾਇ ਪਿਰੀ ਮੁਹਬਤਿ ਹਿਕੁ ਤ੍ਰੂ ॥ ਜਿਥਹੁ ਵੱਕੈ ਜਾਇ ਤਿਥਾਊ ਮਤਜੂਦੁ
 ਸੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਚਡਿ ਕੈ ਘੋੜਡੈ ਕੁਂਦੇ ਪਕਡਹਿ ਖੂੰਡੀ ਦੀ ਖੇਡਾਰੀ ॥ ਛਾਸਾ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਤਲਾਸਹਿ ਕੁਕੜ੍ਹ ਦੀ
 ਓਡਾਰੀ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਰਸਨਾ ਤਚਰੈ ਹਰਿ ਸ਼ਰਣੀ ਸੁਣੈ ਸੋ ਤਥਰੈ ਮਿਤਾ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਲਿਖਹਿ ਲਾਇ
 ਭਾਵਨੀ ਸੇ ਹਸਤ ਪਵਿਤਾ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਮਜਨਾ ਸਭਿ ਪੁਨ ਤਿਨਿ ਕਿਤਾ ॥ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਤੇ ਤਥਰੈ

ਬਿਖਿਆ ਗੜ੍ਹ ਜਿਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਲਡਿ ਲਾਇ ਉਧਾਰਿਅਨੁ ਦਿਧੁ ਸੇਵਿ ਅਮਿਤਾ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਧੰਧਡੇ
ਕੁਲਾਹ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਹੇਕੜੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਤਨ ਫੁਟਨਿ ਜਿਨਾ ਸਾਈ ਵਿਸਰੈ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਪਰੇਤਹੁ ਕੀਤੋਨੁ
ਦੇਵਤਾ ਤਿਨਿ ਕਰਣੈਹਾਰੇ ॥ ਸਭੇ ਸਿਖ ਉਬਾਰਿਅਨੁ ਪ੍ਰਭਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥ ਨਿੰਦਕ ਪਕਡਿ ਪਛਾਡਿਅਨੁ ਝੂਠੇ
ਦਰਕਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਕਡਾ ਹੈ ਆਪਿ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰੇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਬੇਅੰਤੁ ਕਿਛੁ ਅੰਤੁ ਨਾਹਿ ਸਭੁ
ਤਿਸੈ ਕਰਣਾ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਸਾਹਿਬੀ ਜੀਓਾਂ ਕਾ ਪਰਣਾ ॥ ਹਸਤ ਦੇਇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਦਾ ਭਰਣ ਪੋਖਣੁ ਕਰਣਾ ॥
ਮਿਹਰਵਾਨੁ ਬਖਸਿੰਦੁ ਆਪਿ ਜਪਿ ਸਚੇ ਤਰਣਾ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭਲਾ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਰਣਾ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕ
ਮਃ ੫ ॥ ਤਿਨਾ ਭੁਖ ਨ ਕਾ ਰਹੀ ਜਿਸ ਦਾ ਪ੍ਰਭੁ ਹੈ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਚਰਣੀ ਲਗਿਆ ਉਧਰੈ ਸਭੋ ਕੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫
॥ ਜਾਚਿਕੁ ਮੰਗੈ ਨਿਤ ਨਾਮੁ ਸਾਹਿਬੁ ਕਰੇ ਕਬੂਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪਰਮੇਸਰੁ ਜਜਮਾਨੁ ਤਿਸਹਿ ਭੁਖ ਨ ਮੂਲਿ ॥੨॥
ਪਤੜੀ ॥ ਮਨੁ ਰਤਾ ਗੋਵਿੰਦ ਸੰਗਿ ਸਚੁ ਭੋਜਨੁ ਜੋਡੇ ॥ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸਿਤ ਏ ਹਸਤੀ ਘੋਡੇ ॥ ਰਾਜ ਮਿਲਖ
ਖੁਸ਼ੀਆ ਘਣੀ ਧਿਆਇ ਸੁਖੁ ਨ ਮੋਡੇ ॥ ਢਾਢੀ ਦਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੰਗਣਾ ਦੁ ਕਦੇ ਨ ਛੋਡੇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਤਨਿ ਚਾਤ
ਏਹੁ ਨਿਤ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਲੋਡੇ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ ਕੀਚੇ

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਭਗਤਾਂ ਕੀ ਬਾਣੀ

੧੮ੰ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗਤੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਸੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੇ ਚਤੁਪਦੇ ੧੪ ॥ ਅਥ ਮੋਹਿ ਜਲਤ ਰਾਮ ਜਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਰਾਮ ਉਦਕਿ
ਤਨੁ ਜਲਤ ਬੁੜਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨੁ ਮਾਰਣ ਕਾਰਣਿ ਬਨ ਜਾਈਐ ॥ ਸੋ ਜਲੁ ਬਿਨੁ ਭਗਵਾਂਤ ਨ ਪਾਈਐ
॥੧॥ ਜਿਹ ਪਾਵਕ ਸੁਰਿ ਨਰ ਹੈ ਜਾਰੇ ॥ ਰਾਮ ਉਦਕਿ ਜਨ ਜਲਤ ਉਬਾਰੇ ॥੨॥ ਭਵ ਸਾਗਰ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਮਾਹੀ ॥
ਪੀਵਿ ਰਹੇ ਜਲ ਨਿਖੁਟਤ ਨਾਹੀ ॥੩॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਭਜੁ ਸਾਰਿਗਪਾਨੀ ॥ ਰਾਮ ਉਦਕਿ ਮੇਰੀ ਤਿਖਾ ਬੁੜਾਨੀ ॥
੪॥੧॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਮਾਧਤ ਜਲ ਕੀ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਇ ॥ ਜਲ ਮਹਿ ਅਗਨਿ ਤਠੀ ਅਧਿਕਾਇ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਜਲਨਿਧਿ ਹਤ ਜਲ ਕਾ ਸੀਨੁ ॥ ਜਲ ਮਹਿ ਰਹਤ ਜਲਹਿ ਬਿਨੁ ਖੀਨੁ ॥੧॥ ਤ੍ਰਾਂ ਪਿੰਜਰੁ ਹਤ ਸ੍ਰਾਵਟਾ
ਤੌਰ ॥ ਜਮੁ ਮੰਜਾਰੁ ਕਹਾ ਕਰੈ ਮੋਰ ॥੨॥ ਤ੍ਰਾਂ ਤਰਕਰੁ ਹਤ ਪੱਖੀ ਆਹਿ ॥ ਮੰਦਭਾਗੀ ਤੇਰੋ ਦਰਸਨੁ ਨਾਹਿ ॥੩॥

ਤ੍ਰਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਉ ਨਉਤਨੁ ਚੇਲਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਿਲੁ ਅੰਤ ਕੀ ਬੇਲਾ ॥੪॥੨॥ ਗਤਡੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਜਬ ਹਮ
 ਏਕੋ ਏਕੁ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥ ਤਬ ਲੋਗਹ ਕਾਹੇ ਦੁਖੁ ਮਾਨਿਆ ॥੧॥ ਹਮ ਅਪਤਹ ਅਪੁਨੀ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥ ਹਮਰੈ ਖੋਜਿ
 ਪਰਹੁ ਮਤਿ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਮ ਮੰਦੇ ਮੰਦੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਸਾਝਾ ਪਾਤਿ ਕਾਹੂ ਸਿਤ ਨਾਹੀ ॥੨॥ ਪਤਿ ਅਪਤਿ
 ਤਾ ਕੀ ਨਾਹੀ ਲਾਜ ॥ ਤਬ ਜਾਨਹੁਗੇ ਜਬ ਉਘਰੈਗੇ ਪਾਜ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਪਤਿ ਹਰਿ ਪਰਵਾਨੁ ॥ ਸਰਬ ਤਿਆਗਿ
 ਭਜੁ ਕੇਵਲ ਰਾਮੁ ॥੪॥੩॥ ਗਤਡੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਨਗਨ ਫਿਰਤ ਜੌ ਪਾਈਐ ਜੋਗੁ ॥ ਬਨ ਕਾ ਮਿਰਗੁ ਮੁਕਤਿ ਸਭੁ
 ਹੋਗੁ ॥੧॥ ਕਿਆ ਨਾਗੇ ਕਿਆ ਬਾਧੇ ਚਾਮ ॥ ਜਬ ਨਾਹੀ ਚੀਨਸਿ ਆਤਮ ਰਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੂਡ ਮੁੰਡਾਏ ਜੌ
 ਸਿਧਿ ਪਾਈ ॥ ਮੁਕਤੀ ਖੇਡ ਨ ਗੱਈਆ ਕਾਈ ॥੨॥ ਬਿੰਦੁ ਰਾਖਿ ਜੌ ਤਰੀਐ ਭਾਈ ॥ ਖੁਸਰੈ ਕਿਤ ਨ ਪਰਮ ਗਤਿ
 ਪਾਈ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਨਰ ਭਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਨਿ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੪॥੪॥ ਗਤਡੀ ਕਬੀਰ ਜੀ
 ॥ ਸੰਧਿਆ ਪ੍ਰਾਤ ਇਸ਼ਾਨੁ ਕਰਾਹੀ ॥ ਜਿਤ ਭਏ ਦਾਦੁਰ ਪਾਨੀ ਮਾਹੀ ॥੧॥ ਜਤ ਪੈ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਤਿ ਨਾਹੀ ॥ ਤੇ
 ਸਭਿ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੈ ਜਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਇਆ ਰਤਿ ਬਹੁ ਰੂਪ ਰਚਾਹੀ ॥ ਤਿਨ ਕਤ ਦਾਇਆ ਸੁਪਨੈ ਭੀ
 ਨਾਹੀ ॥੨॥ ਚਾਰਿ ਚਰਨ ਕਹਹਿ ਬਹੁ ਆਗਰ ॥ ਸਾਥੂ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਕਲਿ ਸਾਗਰ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਬਹੁ
 ਕਾਇ ਕਰੀਜੈ ॥ ਸਰਬਸੁ ਛੋਡਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੪॥੫॥ ਕਬੀਰ ਜੀ ਗਤਡੀ ॥ ਕਿਆ ਜਧੁ ਕਿਆ ਤਪੁ ਕਿਆ
 ਬ੍ਰਤ ਪ੍ਰੂਜਾ ॥ ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਭਾਤ ਹੈ ਟ੍ਰੂਜਾ ॥੧॥ ਰੇ ਜਨ ਮਨੁ ਮਾਧਤ ਸਿਤ ਲਾਈਐ ॥ ਚਤੁਰਾਈ ਨ ਚਤੁਰਭੁਜੁ
 ਪਾਈਐ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਰਹਰੁ ਲੋਭੁ ਅਰੁ ਲੋਕਾਚਾਰੁ ॥ ਪਰਹਰੁ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਛਕਾਰੁ ॥੨॥ ਕਰਮ ਕਰਤ ਬਧੇ
 ਅਛਮੇਵ ॥ ਮਿਲਿ ਪਾਥਰ ਕੀ ਕਰਹੀ ਸੇਵ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਭੋਲੇ ਭਾਇ ਮਿਲੇ
 ਰਘੁਰਾਇਆ ॥੪॥੬॥ ਗਤਡੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਗਰਭ ਵਾਸ ਮਹਿ ਕੁਲੁ ਨਹੀ ਜਾਤੀ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਬਿੰਦੁ ਤੇ ਸਭ
 ਤਤਪਾਤੀ ॥੧॥ ਕਹੁ ਰੇ ਪੰਡਿਤ ਬਾਮਨ ਕਬ ਕੇ ਹੋਏ ॥ ਬਾਮਨ ਕਹਿ ਕਹਿ ਜਨਮੁ ਮਤ ਖੋਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜੌ ਤ੍ਰਂ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਬ੍ਰਾਹਮਣੀ ਜਾਇਆ ॥ ਤਤ ਆਨ ਬਾਟ ਕਾਹੇ ਨਹੀ ਆਇਆ ॥੨॥ ਤੁਮ ਕਤ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਹਮ ਕਤ
 ਸ੍ਰੂਦ ॥ ਹਮ ਕਤ ਲੋਹੂ ਤੁਮ ਕਤ ਦੂਧ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜੋ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥ ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਕਹੀਅਤੁ ਹੈ ਹਮਾਰੈ

॥४॥७॥ गउड़ी कबीर जी ॥ अंधकार सुखि कबहि न सोई है ॥ राजा रंकु दोऊ मिलि रोई है ॥१॥ जउ पै
रसना रामु न कहिबो ॥ उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥२॥ रहाउ ॥ जस देखीऔ तरवर की छाइआ ॥
प्रान गए कहु का की माइआ ॥२॥ जस जंती महि जीउ समाना ॥ मूए मरमु को का कर जाना ॥३॥
झासा सरवरु कालु सरीर ॥ राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥४॥८॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जोति की जाति
जाति की जोती ॥ तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥१॥ कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऔ ॥ भउ भजि जाइ
अभै होइ रहीऔ ॥१॥ रहाउ ॥ तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥ चार अचार रहे उरझाइ ॥२॥
पाप पुन्न दुइ एक समान ॥ निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥३॥ कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥ इसु
परचाइ परचि रहु एसु ॥४॥९॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन परमिति परमनु जाना ॥ बातन ही
बैकुंठ समाना ॥१॥ ना जाना बैकुंठ कहा ही ॥ जानु जानु सभि कहहि तहा ही ॥१॥ रहाउ ॥ कहन
कहावन नह पतीर्झ है ॥ तउ मनु मानै जा ते हउमै जई है ॥२॥ जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥
तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥३॥ कहु कबीर इह कहीऔ काहि ॥ साधसंगति बैकुंठै आहि ॥
४॥१०॥ गउड़ी कबीर जी ॥ उपजै निपजै निपजि समाई ॥ नैनह देखत इहु जगु जाई ॥१॥ लाज
न मरहु कहहु घरु मेरा ॥ अंत की बार नही कछु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जतन करि काइआ पाली
॥ मरती बार अगनि संगि जाली ॥२॥ चोआ चंदनु मरदन अंगा ॥ सो तनु जलै काठ कै संगा ॥३॥
कहु कबीर सुनहु रे गुनीआ ॥ बिनसैगो रूपु देखै सभ दुनीआ ॥४॥११॥ गउड़ी कबीर जी ॥ अवर
मूए किआ सोगु करीजै ॥ तउ कीजै जउ आपन जीजै ॥१॥ मै न मरउ मरिबो संसारा ॥ अब मोहि
मिलिओ है जीआवनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ इआ देही परमल महकंदा ॥ ता सुख बिसरे परमानंदा
॥२॥ कूअटा एकु पंच पनिहारी ॥ टूटी लाजु भरै मति हारी ॥३॥ कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥
ना ओहु कूअटा ना पनिहारी ॥४॥१२॥ गउड़ी कबीर जी ॥ असथावर जंगम कीट पतंगा ॥ अनिक

ਜਨਮ ਕੀਏ ਬਹੁ ਰੰਗਾ ॥੧॥ ਐਸੇ ਘਰ ਹਮ ਬਹੁਤੁ ਬਸਾਏ ॥ ਜਬ ਹਮ ਰਾਮ ਗਰਭ ਹੋਇ ਆਏ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਤਪੀ ਬ੍ਰਹਮਚਾਰੀ ॥ ਕਬਹੂ ਰਾਜਾ ਛਨਪਤਿ ਕਬਹੂ ਖੇਖਾਰੀ ॥੨॥ ਸਾਕਤ ਮਰਹਿ ਸੰਤ ਸਭਿ ਜੀਵਹਿ ॥
 ਰਾਮ ਰਸਾਇਨੁ ਰਸਨਾ ਪੀਵਹਿ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥ ਹਾਰਿ ਪਰੇ ਅਥ ਪੂਰਾ ਦੀਜੈ ॥੪॥੧੩॥
 ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ ਨਾਲਿ ਰਲਾਇ ਲਿਖਿਆ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਐਸੇ ਅਚਰਜੁ ਦੇਖਿਆਂ ਕਬੀਰ ॥ ਦਧਿ ਕੈ ਭੋਲੈ
 ਬਿਰੋਲੈ ਨੀਠੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰੀ ਅੰਗੂਰੀ ਗਦਹਾ ਚੈਰੈ ॥ ਨਿਤ ਤਠਿ ਹਾਸੈ ਹੀਗੈ ਮੈਰੈ ॥੨॥ ਮਾਤਾ ਭੈਸਾ ਅੰਮੁਹਾ
 ਜਾਇ ॥ ਕੁਦਿ ਕੁਦਿ ਚੈਰੈ ਰਸਾਤਲਿ ਪਾਇ ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਪਰਗਟੁ ਭਈ ਖੇਡ ॥ ਲੇਲੇ ਕਤ ਚੂਝੈ ਨਿਤ ਭੇਡ
 ॥੩॥ ਰਾਮ ਰਮਤ ਮਤਿ ਪਰਗਟੀ ਆਈ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਗੁਰਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥੪॥੧॥੧੪॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ
 ਪਚਹਿੰਦੇ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਛੋਡਿ ਬਾਹਰਿ ਭਇਆਂ ਮੀਨਾ ॥ ਪੂਰਬ ਜਨਮ ਹਤ ਤਪ ਕਾ ਹੀਨਾ ॥੧॥ ਅਥ ਕਹੁ ਰਾਮ
 ਕਵਨ ਗਤਿ ਮੌਰੀ ॥ ਤਜੀ ਲੇ ਬਨਾਰਸ ਮਤਿ ਭਈ ਥੋਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਗਲ ਜਨਮੁ ਸਿਵ ਪੁਰੀ ਗਵਾਇਆ ॥
 ਮਰਤੀ ਬਾਰ ਮਗਹਰਿ ਤਠਿ ਆਇਆ ॥੨॥ ਬਹੁਤੁ ਬਰਸ ਤਪੁ ਕੀਆ ਕਾਸੀ ॥ ਮਰਨੁ ਭਇਆ ਮਗਹਰ ਕੀ
 ਬਾਸੀ ॥੩॥ ਕਾਸੀ ਮਗਹਰ ਸਮ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਓਛੀ ਭਗਤਿ ਕੈਸੇ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰੀ ॥੪॥ ਕਹੁ ਗੁਰ ਗਜ ਸਿਵ ਸਭੁ
 ਕੋ ਜਾਨੈ ॥ ਸੁਆ ਕਬੀਰੁ ਰਮਤ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮੈ ॥੫॥੧੫॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਮਰਦਨ ਅੰਗਾ ॥ ਸੋ
 ਤਨੁ ਜਲੈ ਕਾਠ ਕੈ ਸੰਗਾ ॥੧॥ ਇਸੁ ਤਨ ਧਨ ਕੀ ਕਵਨ ਬਡਾਈ ॥ ਧਰਨਿ ਪਰੈ ਤਰਵਾਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਤਿ ਜਿ ਸੋਵਹਿ ਦਿਨ ਕਰਹਿ ਕਾਮ ॥ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਲੇਹਿ ਨ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥੨॥ ਹਾਥਿ ਤ ਡੋਰ ਸੁਖਿ
 ਖਾਇਆਂ ਤੱਬੋਰ ॥ ਮਰਤੀ ਬਾਰ ਕਸਿ ਬਾਧਿਆਂ ਚੋਰ ॥੩॥ ਗੁਰਮਤਿ ਰਸਿ ਰਸਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਰਾਮੈ ਰਾਮ
 ਰਮਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੪॥ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਨਾਮੁ ਵੱਡਾਈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਾਸੁ ਸੁਗੰਧ ਬਸਾਈ ॥੫॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ
 ਚੇਤਿ ਰੇ ਅੰਧਾ ॥ ਸਤਿ ਰਾਮੁ ਝੂਠਾ ਸਭੁ ਧੰਧਾ ॥੬॥੧੬॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਤਿਪਦੇ ਚਾਰਤੁਕੇ ॥ ਜਮ ਤੇ
 ਤਲਟਿ ਭਏ ਹੈ ਰਾਮ ॥ ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖ ਕੀਓ ਬਿਸਰਾਮ ॥ ਬੈਰੀ ਤਲਟਿ ਭਏ ਹੈ ਸੀਤਾ ॥ ਸਾਕਤ ਤਲਟਿ
 ਸੁਜਨ ਭਏ ਚੀਤਾ ॥੧॥ ਅਥ ਮੋਹਿ ਸਰਬ ਕੁਸਲ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥ ਸਾਂਤਿ ਭਈ ਜਬ ਗੋਬਿਦੁ ਜਾਨਿਆ ॥੧॥

ਰਹਾਤ ॥ ਤਨ ਮਹਿ ਹੋਤੀ ਕੋਟਿ ਉਪਾਧਿ ॥ ਤਲਟਿ ਖੰਡੁ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ॥ ਆਪੁ ਪਛਾਨੈ ਆਪੈ ਆਪ ॥ ਰੋਗ
 ਨ ਬਿਆਪੈ ਤੀਨੈ ਤਾਪ ॥੨॥ ਅਬ ਮਨੁ ਤਲਟਿ ਸਨਾਤਨੁ ਹ੍ਰਾਂਗ ॥ ਤਬ ਜਾਨਿਆ ਜਬ ਜੀਵਤ ਮੂਆ ॥ ਕਹੁ
 ਕਬੀਰ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਤ ॥ ਆਪਿ ਨ ਡਰਤ ਨ ਅਵਰ ਡਰਾਵਤ ॥੩॥੧੭॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਪਿੰਡਿ
 ਮੂਥੈ ਜੀਤ ਕਿਹ ਘਰਿ ਜਾਤਾ ॥ ਸਬਦਿ ਅਤੀਤਿ ਅਨਾਹਦਿ ਰਤਾ ॥ ਜਿਨਿ ਰਾਮੁ ਜਾਨਿਆ ਤਿਨਹਿ ਪਛਾਨਿਆ
 ॥ ਜਿਤ ਗ੍ਰੰਗੇ ਸਾਕਰ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੧॥ ਐਸਾ ਗਿਆਨੁ ਕਥੈ ਬਨਵਾਰੀ ॥ ਮਨ ਰੇ ਪਵਨ ਵ੃ਡੁ ਸੁਖਮਨ ਨਾਰੀ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੋ ਗੁਰੁ ਕਰਹੁ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਕਰਨਾ ॥ ਸੋ ਪਦੁ ਖਹੁ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਖਨਾ ॥ ਸੋ ਧਿਆਨੁ ਧਰਹੁ
 ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਧਰਨਾ ॥ ਐਸੇ ਮਰਹੁ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਮਰਨਾ ॥੨॥ ਤਲਟੀ ਗੰਗਾ ਜਮੁਨ ਮਿਲਾਵਤ ॥ ਬਿਨੁ ਜਲ
 ਸੰਗਮ ਮਨ ਮਹਿ ਨਾਵਤ ॥ ਲੋਚਾ ਸਮਸਰਿ ਝਿਹੁ ਬਿਤਹਾਰਾ ॥ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਿ ਕਿਆ ਅਵਰਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥੩॥ ਅਪੁ
 ਤੇਜੁ ਬਾਝਿ ਪ੃ਥਮੀ ਆਕਾਸਾ ॥ ਐਸੀ ਰਹਤ ਰਹਤ ਹਰਿ ਪਾਸਾ ॥ ਕਹੈ ਕਬੀਰ ਨਿਰੰਜਨ ਧਿਆਵਤ ॥ ਤਿਤੁ ਘਰਿ
 ਜਾਤ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵਤ ॥੪॥੧੮॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਤਿਪਦੇ ॥ ਕੰਚਨ ਸਿਤ ਪਾਈਐ ਨਹੀ ਤੋਲਿ ॥ ਮਨੁ
 ਦੇ ਰਾਮੁ ਲੀਆ ਹੈ ਮੋਲਿ ॥੧॥ ਅਬ ਮੋਹਿ ਰਾਮੁ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ੧੫ ਜਾਨਿਆ ॥ ਸਹਜ ਸੁਭਾਝਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬ੍ਰਹਮੈ ਕਥਿ ਕਥਿ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਬੈਠੇ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਚੰਚਲ
 ਮਤਿ ਤਿਆਗੀ ॥ ਕੇਵਲ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਨਿਜ ਭਾਗੀ ॥੩॥੧॥੧੯॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਜਿਹ ਮਰਨੈ ਸਭੁ ਜਗਤੁ
 ਤਰਾਸਿਆ ॥ ਸੋ ਮਰਨਾ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ॥੧॥ ਅਬ ਕੈਂਦੇ ਮਰਤ ਮਰਨਿ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ
 ਜਾਤੇ ਜਿਨ ਰਾਮੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਰਨੋ ਮਰਨੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਸਹਜੇ ਮੈ ਅਮਰੁ ਹੋਇ ਸੋਈ
 ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਮਨਿ ਭਇਆ ਅਨਨਦਾ ॥ ਗਇਆ ਭਰਮੁ ਰਹਿਆ ਪਰਮਾਨਦਾ ॥੩॥੨੦॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ
 ਜੀ ॥ ਕਤ ਨਹੀ ਠਤਰ ਮੂਲੁ ਕਤ ਲਾਵਤ ॥ ਖੋਜਤ ਤਨ ਮਹਿ ਠਤਰ ਨ ਪਾਵਤ ॥੧॥ ਲਾਗੀ ਹੋਇ ਸੁ ਜਾਨੈ
 ਪੀਰ ॥ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਅਨੀਆਲੇ ਤੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਕ ਭਾਝਿ ਦੇਖਤ ਸਭ ਨਾਰੀ ॥ ਕਿਆ ਜਾਨਤ ਸਹ
 ਕਤਨ ਪਿਆਰੀ ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ॥ ਸਭ ਪਰਹਾਰਿ ਤਾ ਕਤ ਮਿਲੈ ਸੁਹਾਗੁ ॥੩॥੨੧॥

ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਸਾ ਠਾਕੁਰੁ ਭਾਈ ॥ ਸੁਕਤਿ ਅਨ੍ਨਤ ਪੁਕਾਰਣਿ ਜਾਈ ॥੧॥ ਅਬ ਕਹੁ ਰਾਮ
 ਭਰੋਸਾ ਤੋਰਾ ॥ ਤਬ ਕਾਹੂ ਕਾ ਕਵਨੁ ਨਿਹੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਜਾ ਕੈ ਹਹਿ ਭਾਰ ॥ ਸੋ ਕਾਹੇ ਨ ਕਰੈ
 ਪ੍ਰਤਿਪਾਰ ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਇਕ ਬੁਧਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਕਿਆ ਬਸੁ ਜਤ ਬਿਖੁ ਦੇ ਮਹਤਾਰੀ ॥੩॥੨੨॥ ਗਤੜੀ
 ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤ ਸਤੀ ਹੋਇ ਕੈਸੇ ਨਾਰਿ ॥ ਪਂਡਿਤ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬੀਚਾਰਿ ॥੧॥ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਬਧੈ
 ਸਨੇਹੁ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਰਸੁ ਤਬ ਲਗੁ ਨਹੀ ਨੇਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਹਨਿ ਸਤੁ ਕਰੈ ਜੀਅ ਅਪਨੈ ॥ ਸੋ ਰਮਧੇ ਕਤ
 ਮਿਲੈ ਨ ਸੁਪਨੈ ॥੨॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਗ੍ਰਹੁ ਸਤਧਿ ਸਗਰੁ ॥ ਸੋਈ ਸੁਹਾਗਨਿ ਕਹੈ ਕਬੀਰੁ ॥੩॥੨੩॥ ਗਤੜੀ
 ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਬਿਖਿਆ ਬਿਆਪਿਆ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਬਿਖਿਆ ਲੈ ਝੂਬੀ ਪਰਵਾਰੁ ॥੧॥ ਰੇ ਨਰ ਨਾਵ ਚਤਡਿ
 ਕਤ ਬੋਡੀ ॥ ਹਰਿ ਸਿਤ ਤੋਡਿ ਬਿਖਿਆ ਸੰਗਿ ਜੋਡੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦਾਧੇ ਲਾਗੀ ਆਗਿ ॥ ਨਿਕਟਿ
 ਨੀਰੁ ਪਸੁ ਪੀਵਸਿ ਨ ਝਾਗਿ ॥੨॥ ਚੇਤਤ ਚੇਤਤ ਨਿਕਸਿਐ ਨੀਰੁ ॥ ਸੋ ਜਲੁ ਨਿਰਮਲੁ ਕਥਤ ਕਬੀਰੁ ॥੩॥੨੪॥
 ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਜਿਹ ਕੁਲਿ ਪ੍ਰਤੁ ਨ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਬਿਧਵਾ ਕਸ ਨ ਭੰਝੇ ਮਹਤਾਰੀ ॥੧॥ ਜਿਹ ਨਰ
 ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਨਹਿ ਸਾਧੀ ॥ ਜਨਮਤ ਕਸ ਨ ਮੁਆ ਅਪਰਾਧੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੁਚੁ ਮੁਚੁ ਗਰਭ ਗਏ ਕੀਨ ਬਚਿਆ
 ॥ ਬੁਡਮੁਜ ਰੂਪ ਜੀਵੇ ਜਗ ਮਝਿਆ ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜੈਸੇ ਸੁੰਦਰ ਸਰੂਪ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜੈਸੇ ਕੁਬਜ ਕੁਰੂਪ
 ॥੩॥੨੫॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਜੋ ਜਨ ਲੇਹਿ ਖਸਮ ਕਾ ਨਾਤ ॥ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥੧॥ ਸੋ
 ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਸੋ ਭਾਈ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਹ ਘਟ ਰਾਮੁ ਰਹਿਆ
 ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਪਗ ਪੰਕਜ ਹਮ ਧੂਰਿ ॥੨॥ ਜਾਤਿ ਜੁਲਾਹਾ ਮਤਿ ਕਾ ਧੀਰੁ ॥ ਸਹਜਿ ਸਹਜਿ ਗੁਣ ਰਮੈ
 ਕਬੀਰੁ ॥੩॥੨੬॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਗਗਨਿ ਰਸਾਲ ਚੁਅੈ ਮੇਰੀ ਭਾਠੀ ॥ ਸੰਚਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਤਨੁ ਭਿੰਡਿਆ
 ਕਾਠੀ ॥੧॥ ਤਾਂਤ੍ਰਾ ਕਤ ਕਹੀਐ ਸਹਜ ਮਤਵਾਰਾ ॥ ਪੀਵਤ ਰਾਮ ਰਸੁ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਹਜ
 ਕਲਾਲਨਿ ਜਤ ਮਿਲਿ ਆਈ ॥ ਆਨੰਦਿ ਮਾਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਈ ॥੨॥ ਚੀਨਤ ਚੀਤੁ ਨਿਰੰਜਨ ਲਾਇਆ ॥
 ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਤੌ ਅਨਭਤ ਪਾਇਆ ॥੩॥੨੭॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਮਨ ਕਾ ਸੁਭਾਤ ਮਨਹਿ ਬਿਆਪੀ ॥

ਮਨਹਿ ਮਾਰਿ ਕਵਨ ਸਿਧਿ ਥਾਪੀ ॥੧॥ ਕਵਨੁ ਸੁ ਮੁਨਿ ਜੋ ਮਨੁ ਮਾਰੈ ॥ ਮਨ ਕਤ ਮਾਰਿ ਕਹਹੁ ਕਿਸੁ ਤਾਰੈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਬੋਲੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਮਨ ਮਾਰੇ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜੋ ਜਾਨੈ
 ਖੇਤ ॥ ਮਨੁ ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਤ੍ਰਭਵਣ ਦੇਤ ॥੩॥੨੮॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਓਡਿ ਜੁ ਦੀਸਹਿ ਅੰਬਰਿ ਤਾਰੇ ॥
 ਕਿਨਿ ਓਡਿ ਚੀਤੇ ਚੀਤਨਹਾਰੇ ॥੧॥ ਕਹੁ ਰੇ ਪੰਡਿਤ ਅੰਬਰੁ ਕਾ ਸਿਤ ਲਾਗਾ ॥ ਬੂੜੀ ਬੂੜਨਹਾਰੁ ਸਭਾਗਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਸੂਰਜ ਚੰਦੁ ਕਰਹਿ ਉਜੀਆਰਾ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਪਸਰਿਆ ਬ੍ਰਹਮ ਪਸਾਰਾ ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਾਨੈਗਾ
 ਸੋਡਿ ॥ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਮੁਖਿ ਰਾਮੈ ਹੋਡਿ ॥੩॥੨੯॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਬੇਦ ਕੀ ਪੁਤੀ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਭਾਈ ॥ ਸਾਂਕਲ
 ਜੇਵਰੀ ਲੈ ਹੈ ਆਈ ॥੧॥ ਆਪਨ ਨਗਰੁ ਆਪ ਤੇ ਬਾਧਿਆ ॥ ਮੋਹ ਕੈ ਫਾਧਿ ਕਾਲ ਸਰੁ ਸਾਂਧਿਆ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਕਟੀ ਨ ਕਟੈ ਤ੍ਰਟਿ ਨਹ ਜਾਈ ॥ ਸਾ ਸਾਪਨਿ ਹੋਡਿ ਜਗ ਕਤ ਖਾਈ ॥੨॥ ਹਮ ਦੇਖਤ ਜਿਨਿ ਸਭੁ ਜਗੁ
 ਲੂਟਿਆ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਮੈ ਰਾਮ ਕਹਿ ਛੂਟਿਆ ॥੩॥੩੦॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਦੇਇ ਮੁਹਾਰ ਲਗਾਮੁ
 ਪਹਿਰਾਵਤ ॥ ਸਗਲ ਤ ਜੀਨੁ ਗਗਨ ਦੱਤਰਾਵਤ ॥੧॥ ਅਪਨੈ ਬੀਚਾਰਿ ਅਸਵਾਰੀ ਕੀਯੈ ॥ ਸਹਜ ਕੈ ਪਾਵੜੈ
 ਪਗੁ ਧਰਿ ਲੀਯੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਲੁ ਰੇ ਬੈਕੁਠ ਤੁਝਹਿ ਲੇ ਤਾਰਤ ॥ ਹਿਚਹਿ ਤ ਪ੍ਰੇਮ ਕੈ ਚਾਕੁਕ ਮਾਰਤ ॥੨॥
 ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਭਲੇ ਅਸਵਾਰਾ ॥ ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਤੇ ਰਹਹਿ ਨਿਰਾਰਾ ॥੩॥੩੧॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਜਿਹ ਮੁਖਿ
 ਪਾਂਚਤ ਅੰਮ੍ਰਤ ਖਾਏ ॥ ਤਿਹ ਮੁਖ ਦੇਖਤ ਲੂਕਟ ਲਾਏ ॥੧॥ ਇਕੁ ਦੁਖੁ ਰਾਮ ਰਾਇ ਕਾਟਹੁ ਮੇਰਾ ॥ ਅਗਨਿ
 ਦਹੈ ਅਝ ਗਰਭ ਬਸੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਇਆ ਬਿਗੂਤੀ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾਤੀ ॥ ਕੋ ਜਾਰੇ ਕੋ ਗਡਿ ਲੇ ਮਾਟੀ
 ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਹਰਿ ਚਰਣ ਦਿਖਾਵਹੁ ॥ ਪਾਛੈ ਤੇ ਜਮੁ ਕਿਤ ਨ ਪਠਾਵਹੁ ॥੩॥੩੨॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
 ਆਪੇ ਪਾਵਕੁ ਆਪੇ ਪਵਨਾ ॥ ਜਾਰੈ ਖਸਮੁ ਤ ਰਾਖੈ ਕਵਨਾ ॥੧॥ ਰਾਮ ਜਪਤ ਤਨੁ ਜਰਿ ਕੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਰਾਮ
 ਨਾਮ ਚਿਤੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾ ਕੋ ਜਾਰੈ ਕਾਹਿ ਹੋਡਿ ਹਾਨਿ ॥ ਨਟ ਵਟ ਖੇਲੈ ਸਾਰਿਗਪਾਨਿ
 ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਅਖਰ ਦੁਇ ਭਾਖਿ ॥ ਹੋਇਗਾ ਖਸਮੁ ਤ ਲੇਇਗਾ ਰਾਖਿ ॥੩॥੩੩॥ ਗਤੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਟੁਪਦੇ
 ॥ ਨਾ ਮੈ ਜੋਗ ਧਿਆਨ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਬਿਨੁ ਬੈਰਾਗ ਨ ਛੂਟਸਿ ਮਾਇਆ ॥੧॥ ਕੈਸੇ ਜੀਵਨੁ ਹੋਡਿ ਹਮਾਰਾ ॥

जब न होइ राम नाम अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ कहु कबीर खोजउ असमान ॥ राम समान न देखउ आन
॥२॥३४॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह सिरि रचि रचि बाधत पाग ॥ सो सिरु चुंच सवारहि काग
॥१॥ इसु तन धन को किआ गरबईआ ॥ राम नामु काहे न दृढ़ीआ ॥१॥ रहाउ ॥ कहत कबीर
सुनहु मन मेरे ॥ इही हवाल होहिगे तेरे ॥२॥३५॥ गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की

७८८ सतिगुर प्रसादि ॥ सुखु माँगत दुखु आगै आवै ॥ सो सुखु हमहु न माँगिआ भावै ॥१॥ बिखिआ
अजहु सुरति सुख आसा ॥ कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥ इसु सुख ते सिव ब्रह्म डराना
॥ सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥२॥ सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥ तिन भी तन महि मनु नही पेखा
॥३॥ इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ तन छूटे मनु कहा समाई ॥४॥ गुर परसादी जैदेउ नामाँ ॥
भगति कै प्रेमि इन ही है जानाँ ॥५॥ इसु मन कउ नही आवन जाना ॥ जिस का भरमु गइआ तिनि
साचु पछाना ॥६॥ इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥ हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥७॥ इस
मन का कोई जानै भेउ ॥ इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥८॥ जीउ एक अरु सगल सरीरा ॥ इसु मन
कउ रवि रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥ गउड़ी गुआरेरी ॥ अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिध
भए लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥ साधक सिध सगल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिप तर तारे ॥१॥ जो हरि
हरे सु होहि न आना ॥ कहि कबीर राम नाम पछाना ॥२॥३७॥ गउड़ी भी सोरठि भी ॥ रे जीअ निलज
लाज तुोहि नाही ॥ हरि तजि कत काहू के जाही ॥१॥ रहाउ ॥ जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥ सो जनु पर घर
जात न सोही ॥१॥ सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥ सदा संगि नाही हरि दूरि ॥२॥ कवला चरन
सरन है जा के ॥ कहु जन का नाही घर ता के ॥३॥ सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥ सो संम्रथु
निज पति है दाता ॥४॥ कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥ जा के हिरदै अवरु न होई ॥५॥३८॥

कउनु को पूतु पिता को का को ॥ कउनु मरै को देइ संतापो ॥१॥ हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥
 हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥२॥ रहाउ ॥ कउन को पुरखु कउन की नारी ॥ इआ तत
 लेहु सरीर बिचारी ॥३॥ कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥ गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ
 ॥४॥३६॥ अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥ जनम मरन कटि परम गति पाई ॥५॥ रहाउ ॥
 साधू संगति दीओ रलाइ ॥ पंच दूत ते लीओ छडाइ ॥ अंमृत नामु जपउ जपु रसना ॥ अमोल
 दासु करि लीनो अपना ॥६॥ सतिगुर कीनो परउपकारु ॥ काढि लीन सागर संसार ॥ चरन कमल
 सिउ लागी प्रीति ॥ गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥७॥ माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥
 मनि संतोखु नामु आधारु ॥ जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥ जत पेखउ तत अंतरजामी ॥८॥
 अपनी भगति आप ही दृढ़ाई ॥ पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥ जिसु कृपा करे तिसु पूरन
 साज ॥ कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥९॥४०॥ जलि है सूतकु थलि है सूतकु सूतक ओपति
 होई ॥ जनमे सूतकु मूए फुनि सूतकु सूतक परज बिगोई ॥१॥ कहु रे पंडीआ कउन पवीता ॥
 ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥२॥ रहाउ ॥ नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु स्रवनी होई ॥ ऊठत
 बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥३॥ फासन की बिधि सभु कोऊ जानै छूटन की इकु कोई ॥
 कहि कबीर रामु रिटै बिचारै सूतकु तिनै न होई ॥४॥४१॥ गउड़ी ॥ झगरा एकु निबेरहु राम ॥
 जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥५॥ रहाउ ॥ इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥ रामु बडा कै
 रामहि जानिआ ॥६॥ ब्रह्मा बडा कि जासु उपाइआ ॥ बेदु बडा कि जहाँ ते आइआ ॥७॥
 कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥ तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥८॥४२॥ रागु गउड़ी चेती ॥
 देखौ भाई ग्यान की आई आँधी ॥ सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बाँधी ॥९॥ रहाउ ॥
 दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोह बलेडा टूटा ॥ तिसना छानि परी धर ऊपरि दुरमति भाँडा फूटा ॥

੧॥ ਆਂਧੀ ਪਾਛੇ ਜੋ ਜਲੁ ਬਰਖੈ ਤਿਹਿ ਤੇਰਾ ਜਨੁ ਭੀਨਾਂ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਨਿ ਭਿੰਡਿਆ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ਤਦੈ ਭਾਨੁ
ਜਬ ਚੀਨਾ ॥੨॥੪੩॥

ਗਤੜੀ ਚੇਤੀ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਨਹਿ ਨ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ॥ ਬਾਤਨ ਹੀ ਅਸਮਾਨੁ ਗਿਰਾਵਹਿ ॥੧॥ ਐਸੇ ਲੋਗਨ ਸਿਤ ਕਿਆ
ਕਹੀਐ ॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਕੀਏ ਭਗਤਿ ਤੇ ਬਾਹਜ ਤਿਨ ਤੇ ਸਦਾ ਡਰਾਨੇ ਰਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪਿ ਨ ਦੇਹਿ ਚੁਝ
ਭਰਿ ਪਾਨੀ ॥ ਤਿਹ ਨਿੰਦਹਿ ਜਿਹ ਗੱਂਗਾ ਆਨੀ ॥੨॥ ਬੈਠਤ ਉਠਤ ਕੁਟਿਲਤਾ ਚਾਲਹਿ ॥ ਆਪੁ ਗਏ
ਅਤਰਨ ਹੂ ਘਾਲਹਿ ॥੩॥ ਛਾਡਿ ਕੁਚਰਚਾ ਆਨ ਨ ਜਾਨਹਿ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਹੂ ਕੋ ਕਹਿਓ ਨ ਮਾਨਹਿ ॥੪॥ ਆਪੁ
ਗਏ ਅਤਰਨ ਹੂ ਖੋਵਹਿ ॥ ਆਗਿ ਲਗਾਇ ਮੰਦਰ ਮੈ ਸੋਵਹਿ ॥੫॥ ਅਵਰਨ ਹਸਤ ਆਪ ਹਹਿ ਕਾਨੇ ॥ ਤਿਨ
ਕਤ ਦੇਖਿ ਕਬੀਰ ਲਜਾਨੇ ॥੬॥੧॥੪੪॥

ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗ੍ਯਿ ਕਬੀਰ ਜੀ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜੀਵਤ ਪਿਤਰ ਨ ਮਾਨੈ ਕੋਊ ਸ੍ਰੂਏਂ ਸਿਰਾਧ ਕਰਾਹੀ ॥ ਪਿਤਰ ਭੀ ਬਪੁਰੇ ਕਹੁ ਕਿਤ ਪਾਵਹਿ ਕਊਆ ਕੂਕਰ ਖਾਹੀ
॥੧॥ ਮੋ ਕਤ ਕੁਸਲੁ ਬਤਾਵਹੁ ਕੋਈ ॥ ਕੁਸਲੁ ਕੁਸਲੁ ਕਰਤੇ ਜਗੁ ਬਿਨਸੈ ਕੁਸਲੁ ਭੀ ਕੈਥੇ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਮਾਟੀ ਕੇ ਕਰਿ ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਜੀਤ ਦੇਹੀ ॥ ਐਸੇ ਪਿਤਰ ਤੁਮਾਰੇ ਕਹੀਅਹਿ ਆਪਨ ਕਹਿਆ ਨ ਲੇਹੀ
॥੨॥ ਸਰਜੀਤ ਕਾਟਹਿ ਨਿਰਜੀਤ ਪ੍ਰੂਜਹਿ ਅੰਤ ਕਾਲ ਕਤ ਭਾਰੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ਭੈ ਝੂਬੇ
ਸੰਸਾਰੀ ॥੩॥ ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਪ੍ਰੂਜਹਿ ਡੋਲਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਹੀ ਜਾਨਾ ॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਅਕੁਲੁ ਨਹੀ ਚੇਤਿਆ
ਬਿਖਿਆ ਸਿਤ ਲਪਟਾਨਾ ॥੪॥੧॥੪੫॥ ਗਤੜੀ ॥ ਜੀਵਤ ਮੈ ਮੈ ਫੁਨਿ ਜੀਵੈ ਐਸੇ ਸੁਣਿ ਸਮਾਇਆ ॥
ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਹੀਐ ਬਹੁਡਿ ਨ ਭਵਜਲਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਮੈਰੇ ਰਾਮ ਐਸਾ ਖੀਰੁ ਬਿਲੋਈਐ ॥
ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੂਆ ਅਸਥਿਰੁ ਰਾਖਹੁ ਇਨ ਬਿਧਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਓਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਬਾਣਿ ਬਜਰ ਕਲ
ਛੇਟੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਪਟੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਸਕਤਿ ਅਧੇਰ ਜੇਵੜੀ ਭਰਮੁ ਚੂਕਾ ਨਿਹਚਲੁ ਸਿਵ ਘਰਿ ਬਾਸਾ ॥੨॥ ਤਿਨਿ

ਬਿਨੁ ਬਾਣੈ ਧਨਖੁ ਚਢਾਈਐ ਇਹੁ ਜਗੁ ਬੇਧਿਆ ਭਾਈ ॥ ਦਹ ਦਿਸ ਕੂਡੀ ਪਵਨੁ ਝੁਲਾਵੈ ਡੋਰਿ ਰਹੀ ਲਿਵ ਲਾਈ
 ॥੩॥ ਤਨਮਨਿ ਮਨ੍ਹਾ ਸੁਨਿ ਸਮਾਨਾ ਟੁਬਿਧਾ ਦੁਰਮਤਿ ਭਾਗੀ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਅਨਭਤ ਇਕੁ ਦੇਖਿਆ ਰਾਮ
 ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੪॥੨॥੪੬॥ ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਤਿਪਦੇ ॥ ਉਲਟਤ ਪਵਨ ਚਕ ਖਟੁ ਭੇਦੇ ਸੁਰਤਿ ਸੁਨਨ
 ਅਨਰਾਗੀ ॥ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ਮਰੈ ਨ ਜੀਵੈ ਤਾਸੁ ਖੋਜੁ^੩ ਬੈਰਾਗੀ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਮਨ ਹੀ ਉਲਟਿ ਸਮਾਨਾ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਅਕਲਿ ਭਈ ਅਵਰੈ ਨਾਤਰੁ ਥਾ ਬੇਗਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਵਰੈ ਟ੍ਰੂਰਿ ਟ੍ਰੂਰਿ ਫੁਨਿ ਨਿਵਰੈ ਜਿਨਿ
 ਜੈਸਾ ਕਾਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥ ਅਲਤਤੀ ਕਾ ਜੈਸੇ ਭਇਆ ਬੇਡਾ ਜਿਨਿ ਪੀਆ ਤਿਨਿ ਜਾਨਿਆ ॥੨॥ ਤੇਰੀ ਨਿਰਗੁਨ
 ਕਥਾ ਕਾਇ ਸਿਤ ਕਹੀਐ ਐਸਾ ਕੋਇ ਬਿਕੇਕੀ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਿਨਿ ਦੀਆ ਪਲੀਤਾ ਤਿਨਿ ਤੈਸੀ ਝਲ ਦੇਖੀ
 ॥੩॥੩॥੪੭॥ ਗਤੜੀ ॥ ਤਹ ਪਾਵਸ ਸਿੰਧੁ ਧ੍ਰੂਪ ਨਹੀ ਛਹੀਆ ਤਹ ਉਤਪਤਿ ਪਰਲਤ ਨਾਹੀ ॥ ਜੀਵਨ ਮਿਰਤੁ
 ਨ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਬਿਆਪੈ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧਿ ਦੋਤੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਸਹਜ ਕੀ ਅਕਥ ਕਥਾ ਹੈ ਨਿਰਾਰੀ ॥ ਤੁਲਿ ਨਹੀ ਚਢੈ
 ਜਾਇ ਨ ਮੁਕਾਤੀ ਹਲੁਕੀ ਲਗੈ ਨ ਭਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਰਧ ਤੁਰਧ ਦੋਤੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ਰਾਤਿ ਦਿਨਸੁ ਤਹ
 ਨਾਹੀ ॥ ਜਲੁ ਨਹੀ ਪਵਨੁ ਪਾਵਕੁ ਫੁਨਿ ਨਾਹੀ ਸਤਿਗੁਰ ਤਹਾ ਸਮਾਹੀ ॥੨॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਰਹੈ ਨਿਰਾਂਤਰਿ
 ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਲਹੀਐ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਬਲਿ ਜਾਤ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਸਤਸ਼ੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹੀਐ ॥੩॥੪॥੪੮॥
 ਗਤੜੀ ॥ ਪਾਪੁ ਪੁਨੁ ਦੁਇ ਬੈਲ ਬਿਸਾਹੇ ਪਵਨੁ ਪ੍ਰਯੀ ਪਰਗਾਸਿਆਂ ॥ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਗ੍ਰੰਣਿ ਭਰੀ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਇਨ
 ਬਿਧਿ ਟਾਂਡ ਬਿਸਾਹਿਆਂ ॥੧॥ ਐਸਾ ਨਾਇਕੁ ਰਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ਕੀਓ ਬਨਜਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਦੁਇ ਭਏ ਜਗਾਤੀ ਮਨ ਤਰੰਗ ਬਟਵਾਰਾ ॥ ਪੰਚ ਤਤੁ ਮਿਲਿ ਦਾਨੁ ਨਿਬੇਰਹਿ ਟਾਂਡਾ ਉਤਰਿਆਂ ਪਾਰਾ
 ॥੨॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਅਬ ਐਸੀ ਬਨਿ ਆਈ ॥ ਘਾਟੀ ਚਢਤ ਬੈਲੁ ਇਕੁ ਥਾਕਾ ਚਲੋ ਗੋਨਿ
 ਛਿਟਕਾਈ ॥੩॥੫॥੪੬॥ ਗਤੜੀ ਪੰਚਪਦਾ ॥ ਪੇਵਕੜੈ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ਹੈ ਸਾਹੁਰਡੈ ਜਾਣਾ ॥ ਅੰਧਾ ਲੋਕੁ ਨ ਜਾਣਈ
 ਸੂਰਖੁ ਏਆਣਾ ॥੧॥ ਕਹੁ ਡੱਡੀਆ ਬਾਈ ਧਨ ਖੜੀ ॥ ਪਾਹੂ ਘਰਿ ਆਏ ਸੁਕਲਾਤੁ ਆਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਓਹ
 ਜਿ ਦਿਸੈ ਖੂਹੜੀ ਕਤਨ ਲਾਜੁ ਵਹਾਰੀ ॥ ਲਾਜੁ ਘੜੀ ਸਿਤ ਤ੍ਰਿਟਿ ਪੜੀ ਤਠਿ ਚਲੀ ਪਨਿਹਾਰੀ ॥੨॥ ਸਾਹਿਬੁ

ਹੋਇ ਦਿਆਲੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਅਪੁਨਾ ਕਾਰਜੁ ਸਵਾਰੇ ॥ ਤਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਜਾਣੀਐ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੩॥ ਕਿਰਤ
ਕੀ ਬਾਂਧੀ ਸਭ ਫਿਰੈ ਦੇਖਹੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਏਸ ਨੋ ਕਿਆ ਆਖੀਐ ਕਿਆ ਕਰੇ ਵਿਚਾਰੀ ॥੪॥ ਭਈ ਨਿਰਾਸੀ ਤਠਿ
ਚਲੀ ਚਿਤ ਬੰਧਿ ਨ ਧੀਰਾ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗਿ ਰਹੁ ਭਜੁ ਸਰਣਿ ਕਬੀਰਾ ॥੫॥੬॥੫੦॥ ਗੁਝੀ ॥ ਜੋਗੀ
ਕਹਹਿ ਜੋਗੁ ਭਲ ਮੀਠਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦ੍ਰਿਆ ਭਾਈ ॥ ਰੁੰਡਿਤ ਮੁੰਡਿਤ ਏਕੈ ਸਬਦੀ ਏਹਿ ਕਹਹਿ ਸਿਧਿ ਪਾਈ ॥੧॥
ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨੇ ਅੰਧਾ ॥ ਜਾ ਪਹਿ ਜਾਤ ਆਪੁ ਛੁਟਕਾਵਨਿ ਤੇ ਬਾਧੇ ਬਹੁ ਫੰਧਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ ਤੇ
ਉਪਜੀ ਤਹੀ ਸਮਾਨੀ ਇਹ ਬਿਧਿ ਬਿਸਰੀ ਤਬ ਹੀ ॥ ਪੰਡਿਤ ਗੁਣੀ ਸੂਰ ਹਮ ਦਾਤੇ ਏਹਿ ਕਹਹਿ ਬਡ ਹਮ ਹੀ
॥੨॥ ਜਿਸਹਿ ਬੁਝਾਏ ਸੋਈ ਬੂੜੀ ਬਿਨੁ ਬੂੜੇ ਕਿਤ ਰਹੀਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਅੰਧੇਰਾ ਚੂਕੈ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਾਣਕੁ
ਲਹੀਐ ॥੩॥ ਤਜਿ ਬਾਵੇ ਦਾਹਨੇ ਬਿਕਾਰਾ ਹਰਿ ਪਦੁ ਵੂਡੁ ਕਰਿ ਰਹੀਐ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਗ੍ਰੰਗੈ ਗੁਝੁ ਖਾਇਆ
ਪ੍ਰਥੇ ਤੇ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ॥੪॥੭॥੫੧॥

ਰਾਗੁ ਗੁਝੀ ਪੂਰਬੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਹ ਕਛੁ ਅਹਾ ਤਹਾ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ^੧ ਪੰਚ ਤਤੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ॥ ਇਡਾ ਪਿੰਗੁਲਾ ਸੁਖਮਨ ਬੰਦੇ ਏ ਅਵਗਨ ਕਤ ਜਾਹੀ ॥
੧॥ ਤਾਗਾ ਤੂਟਾ ਗਗਨੁ ਬਿਨਸਿ ਗਿਆ ਤੇਰਾ ਬੋਲਤੁ ਕਹਾ ਸਮਾਈ ॥ ਏਹ ਸੰਸਾ ਮੋ ਕਤ ਅਨਦਿਨੁ ਬਿਆਪੈ
ਮੋ ਕਤ ਕੋ ਨ ਕਹੈ ਸਮਝਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ ਬਰਭੰਡੁ ਪਿੰਡੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ਰਚਨਹਾਰੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ॥ ਜੋਡਨਹਾਰੇ
ਸਦਾ ਅਤੀਤਾ ਇਹ ਕਹੀਐ ਕਿਸੁ ਮਾਹੀ ॥੨॥ ਜੋਡੀ ਜੁਡੈ ਨ ਤੋਡੀ ਤ੍ਰੌਟੈ ਜਬ ਲਗੁ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸੀ ॥ ਕਾ ਕੋ ਠਾਕੁਰੁ
ਕਾ ਕੋ ਸੇਵਕੁ ਕੋ ਕਾਹੂ ਕੈ ਜਾਸੀ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਲਿਵ ਲਾਗਿ ਰਹੀ ਹੈ ਜਹਾ ਬਸੇ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ॥ ਤਾਂਤ੍ਰਾ ਕਾ ਮਰਮੁ
ਓਹੀ ਪਲੁ ਜਾਨੈ ਓਹੁ ਤਤ ਸਦਾ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥੪॥੧॥੫੨॥ ਗੁਝੀ ॥ ਸੁਰਤਿ ਸਿਮੂਤਿ ਦੁਇ ਕਨੀ ਮੁੰਦਾ
ਪਰਮਿਤਿ ਬਾਹਰਿ ਖਿੰਥਾ ॥ ਸੁਨਨ ਗੁਫਾ ਮਹਿ ਆਸਣੁ ਕੈਸਣੁ ਕਲਪ ਬਿਕਰਜਿਤ ਪੰਥਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਜਨ ਮੈ ਕੈਰਾਗੀ
ਯੋਗੀ ॥ ਮਰਤ ਨ ਸੋਗ ਬਿਓਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਮਹਿ ਸਿੰਡੀ ਮੇਰਾ ਬਟ੍ਠਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਭਸਮਾਧਾਰੀ
॥ ਤਾਡੀ ਲਾਗੀ ਤ੍ਰਪਲੁ ਪਲਟੀਐ ਛੂਟੈ ਹੋਇ ਪਸਾਰੀ ॥੨॥ ਮਨੁ ਪਵਨੁ ਦੁਇ ਤੁੰਬਾ ਕਰੀ ਹੈ ਜੁਗ ਜੁਗ

सारद साजी ॥ थिरु भई तंती तूटसि नाही अनहद किंगुरी बाजी ॥३॥ सुनि मन मगन भए है पूरे
 माइआ डोल न लागी ॥ कहु कबीर ता कउ पुनरपि जनमु नही खेलि गड्हिओ बैरागी ॥४॥२॥५३॥
 गउड़ी ॥ गज नव गज दस गज इकीस पुरीआ एक तनाई ॥ साठ सूत नव खंड बहतरि पाटु लगे
 अधिकाई ॥१॥ गई बुनावन माहो ॥ घर छोडिअै जाइ जुलाहो ॥१॥ रहाउ ॥ गजी न मिनीअै तोलि न
 तुलीअै पाचनु सेर अढाई ॥ जौ करि पाचनु बेगि न पावै झगरु करै घरहाई ॥२॥ दिन की बैठ खसम
 की बरकस इह बेला कत आई ॥ छूटे कूंडे भीगै पुरीआ चलिओ जुलाहो रीसाई ॥३॥ छोछी नली तंतु
 नही निकसै नतर रही उरझाई ॥ छोडि पसारु ईहा रहु बपुरी कहु कबीर समझाई ॥४॥३॥५४॥
 गउड़ी ॥ एक जोति एका मिली किंबा होइ महोइ ॥ जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइ ॥१॥
 सावल सुंदर रामईआ ॥ मेरा मनु लागा तोहि ॥१॥ रहाउ ॥ साधु मिलै सिधि पाईअै कि एहु जोगु कि
 भोगु ॥ दुहु मिलि कारजु ऊपजै राम नाम संजोगु ॥२॥ लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥
 जित कासी उपदेसु होइ मानस मरती बार ॥३॥ कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥ कहु
 कबीर संसा नही अंति परम गति पाइ ॥४॥१॥४॥५५॥ गउड़ी ॥ जेते जतन करत ते डूबे भव
 सागरु नही तारिओ रे ॥ करम धरम करते बहु संजम अह्नाबुधि मनु जारिओ रे ॥१॥ सास ग्रास को
 दातो ठाकुरु सो कित मनहु बिसारिओ रे ॥ हीरा लालु अमोलु जनमु है कउडी बदलै हारिओ रे ॥
 १॥ रहाउ ॥ तृसना तृखा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहि बीचारिओ रे ॥ उनमत मान हिरिओ मन
 माही गुर का सबदु न धारिओ रे ॥२॥ सुआद लुभत इंद्री रस प्रेरिओ मद रस लैत बिकारिओ रे ॥
 करम भाग संतन संगाने कासट लोह उधारिओ रे ॥३॥ धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि
 हम हारिओ रे ॥ कहि कबीर गुर मिलत महा रसु प्रेम भगति निसतारिओ रे ॥४॥१॥५॥५६॥
 गउड़ी ॥ कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ जगदीस ॥ काम सुआइ गज बसि परे

ਮਨ ਬਤਰਾ ਰੇ ਅੰਕਸੁ ਸਹਿਆਂ ਸੀਸ ॥੧॥ ਬਿਖੈ ਬਾਚੁ ਹਰਿ ਰਾਚੁ ਸਮਝ੍ਹੁ ਮਨ ਬਤਰਾ ਰੇ ॥ ਨਿਰਮੈ ਹੋਇ ਨ ਹਰਿ
 ਭਜੇ ਮਨ ਬਤਰਾ ਰੇ ਗਹਿਆਂ ਨ ਰਾਮ ਜਹਾਜੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਰਕਟ ਮੁਸਟੀ ਅਨਾਜ ਕੀ ਮਨ ਬਤਰਾ ਰੇ ਲੀਨੀ
 ਹਾਥੁ ਪਸਾਰਿ ॥ ਛੂਟਨ ਕੋ ਸਹਸਾ ਪਰਿਆ ਮਨ ਬਤਰਾ ਰੇ ਨਾਚਿਆਂ ਘਰ ਘਰ ਬਾਰਿ ॥੨॥ ਜਿਤ ਨਲਨੀ ਸ੍ਰਵਾਟਾ
 ਗਹਿਆਂ ਮਨ ਬਤਰਾ ਰੇ ਮਾਧਾ ਇਹੁ ਬਿਤਹਾਰੁ ॥ ਜੈਸਾ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਕਾ ਮਨ ਬਤਰਾ ਰੇ ਤਿਤ ਪਸਰਿਆਂ ਪਾਸਾਰੁ
 ॥੩॥ ਨਾਵਨ ਕਤ ਤੀਰਥ ਘਨੇ ਮਨ ਬਤਰਾ ਰੇ ਪ੍ਰਯਨ ਕਤ ਬਹੁ ਦੇਵ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਛੂਟਨੁ ਨਹੀ ਮਨ ਬਤਰਾ
 ਰੇ ਛੂਟਨੁ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵ ॥੪॥੧॥੬॥੫੭॥ ਗਤੜੀ ॥ ਅਗਨਿ ਨ ਢਹੈ ਪਵਨੁ ਨਹੀ ਮਗਨੈ ਤਸਕਰੁ ਨੇਰਿ ਨ
 ਆਵੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਕਰਿ ਸੰਚਤਨੀ ਸੋ ਧਨੁ ਕਤ ਹੀ ਨ ਜਾਵੈ ॥੧॥ ਹਮਰਾ ਧਨੁ ਮਾਧਤ ਗੋਬਿੰਦੁ ਧਰਣੀਧਰੁ
 ਇਹੈ ਸਾਰ ਧਨੁ ਕਹੀਐ ॥ ਜੋ ਸੁਖੁ ਪ੍ਰਭ ਗੋਬਿੰਦ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਸੁਖੁ ਰਾਜਿ ਨ ਲਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਸੁ
 ਧਨ ਕਾਰਣਿ ਸਿਵ ਸਨਕਾਦਿਕ ਖੋਜਤ ਭਏ ਤਦਾਸੀ ॥ ਮਨਿ ਮੁਕਂਦੁ ਜਿਹਬਾ ਨਾਰਾਇਨੁ ਪਰੈ ਨ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ
 ॥੨॥ ਨਿਜ ਧਨੁ ਗਿਆਨੁ ਭਗਤਿ ਗੁਰਿ ਦੀਨੀ ਤਾਸੁ ਸੁਮਤਿ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥ ਜਲਤ ਅੰਭ ਥੰਭਿ ਮਨੁ ਧਾਵਤ
 ਭਰਮ ਬੰਧਨ ਭਤ ਭਾਗਾ ॥੩॥ ਕਹੈ ਕਬੀਰੁ ਮਦਨ ਕੇ ਮਾਤੇ ਹਿਰਦੈ ਦੇਖੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਤੁਮ ਘਰਿ ਲਾਖ ਕੋਟਿ
 ਅਸ੍ਥ ਹਸਤੀ ਹਮ ਘਰਿ ਏਕੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੪॥੧॥੭॥੫੮॥ ਗਤੜੀ ॥ ਜਿਤ ਕਪਿ ਕੇ ਕਰ ਮੁਸਟਿ ਚਨਨ ਕੀ
 ਲੁਬਧਿ ਨ ਤਿਆਗੁ ਦਿਓ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕਰਮ ਕੀਏ ਲਾਲਚ ਸਿਤ ਤੇ ਫਿਰਿ ਗਰਹਿ ਪਰਿਆਂ ॥੧॥ ਭਗਤਿ ਬਿਨੁ
 ਬਿਰਥੇ ਜਨਮੁ ਗਿਓ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਭਗਵਾਨ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਕਹੀ ਨ ਸਚੁ ਰਹਿਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਤ
 ਤਦਿਆਨ ਕੁਸਮ ਪਰਫੁਲਿਤ ਕਿਨਹਿ ਨ ਘਾਤ ਲਿਓ ॥ ਤੈਸੇ ਭਰਮਤ ਅਨੇਕ ਜੋਨਿ ਮਹਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਕਾਲ
 ਹਿਓ ॥੨॥ ਇਆ ਧਨ ਜੋਬਨ ਅਲੁ ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਪੇਖਨ ਕਤ ਜੁ ਦਿਓ ॥ ਤਿਨ ਹੀ ਮਾਹਿ ਅਟਕਿ ਜੋ ਤਰੜੇ ਇੰਦ੍ਰੀ
 ਪੇਰਿ ਲਿਓ ॥੩॥ ਅਤਥ ਅਨਲ ਤਨੁ ਤਿਨ ਕੋ ਮੰਦਰੁ ਚਹੁ ਦਿਸ ਠਾਟੁ ਠਿਓ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਭੈ ਸਾਗਰ
 ਤਰਨ ਕਤ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰ ਓਟ ਲਿਓ ॥੪॥੧॥੮॥੫੯॥ ਗਤੜੀ ॥ ਪਾਨੀ ਮੈਲਾ ਮਾਟੀ ਗੋਰੀ ॥ ਇਸ ਮਾਟੀ ਕੀ
 ਪੁਤਰੀ ਜੋਰੀ ॥੧॥ ਮੈ ਨਾਹੀ ਕਛੁ ਆਹਿ ਨ ਮੋਰਾ ॥ ਤਨੁੰ ਧਨੁ ਸਭੁ ਰਸੁ ਗੋਬਿੰਦ ਤੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਸ

ਮਾਟੀ ਮਹਿ ਪਵਨੁ ਸਮਾਇਆ ॥ ਝੂਠਾ ਪਰਪਂਚੁ ਜੋਰਿ ਚਲਾਇਆ ॥੨॥ ਕਿਨਹੂ ਲਾਖ ਪਾਂਚ ਕੀ ਜੋਰੀ ॥ ਅੰਤ ਕੀ
 ਬਾਰ ਗਗਰੀਆ ਫੋਰੀ ॥੩॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਇਕ ਨੀਵ ਉਸਾਰੀ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਅਛਕਾਰੀ ॥੪॥੧॥
 ੬॥੬੦॥ ਗਤੜੀ ॥ ਰਾਮ ਜਪਤ ਜੀਅ ਐਸੇ ਐਸੇ ॥ ਧ੍ਰ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਜਪਿਓ ਹਰਿ ਜੈਸੇ ॥੧॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ
 ਭਰੋਸੇ ਤੇਰੇ ॥ ਸਭੁ ਪਰਵਾਰੁ ਚੜਾਇਆ ਬੇਡੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਵੈ ॥ ਇਸ ਬੇਡੇ ਕਤ
 ਪਾਰਿ ਲਘਾਵੈ ॥੨॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਐਸੀ ਬੁਧਿ ਸਮਾਨੀ ॥ ਚੂਕਿ ਗੰਡੀ ਫਿਰਿ ਆਵਨ ਜਾਨੀ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ
 ਭਜੁ ਸਾਰਿਗਪਾਨੀ ॥ ਤੁਰਵਾਰਿ ਪਾਰਿ ਸਭ ਏਕੋ ਢਾਨੀ ॥੪॥੨॥੧੦॥੬੧॥ ਗਤੜੀ ੬ ॥ ਜੋਨਿ ਛਾਡਿ ਜਤ ਜਗ
 ਮਹਿ ਆਇਆਂ ॥ ਲਾਗਤ ਪਵਨ ਖਸਮੁ ਬਿਸਰਾਇਆ ॥੧॥ ਜੀਅਰਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨਾ ਗਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਮਹਿ ਤੁਰਥ ਤਪੁ ਕਰਤਾ ॥ ਤਤ ਜਠਰ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਰਹਤਾ ॥੨॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਜੋਨਿ ਭਰਮਿ
 ਆਇਆਂ ॥ ਅਥ ਕੇ ਛੁਟਕੇ ਠਤਰ ਨ ਠਾਇਆਂ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਭਜੁ ਸਾਰਿਗਪਾਨੀ ॥ ਆਵਤ ਦੀਸੈ ਜਾਤ
 ਨ ਜਾਨੀ ॥੪॥੧॥੧੧॥੬੨॥ ਗਤੜੀ ਪੂਰ੍ਬੀ ॥ ਸੁਰਾ ਬਾਸੁ ਨ ਬਾਛੀਐ ਡਰੀਐ ਨ ਨਰਕਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਹੋਨਾ
 ਹੈ ਸੋ ਹੋਈ ਹੈ ਮਨਹਿ ਨ ਕੀਜੈ ਆਸ ॥੧॥ ਰਮੰਡਿਆ ਗੁਨ ਗਾਈਐ ॥ ਜਾ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਕਿਆ ਜਪੁ ਕਿਆ ਤਪੁ ਸੰਜਮੋ ਕਿਆ ਬਰਤੁ ਕਿਆ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਨੀਐ
 ਭਾਤ ਭਗਤਿ ਭਗਵਾਨ ॥੨॥ ਸੰਪੈ ਦੇਖਿ ਨ ਹਰਖੀਐ ਬਿਪਤਿ ਦੇਖਿ ਨ ਰੋਇ ॥ ਜਿਤ ਸੰਪੈ ਤਿਤ ਬਿਪਤਿ ਹੈ
 ਬਿਧ ਨੇ ਰਚਿਆ ਸੋ ਹੋਇ ॥੩॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਅਥ ਜਾਨਿਆ ਸੰਤਨ ਰਿਦੈ ਮੜਾਰਿ ॥ ਸੇਵਕ ਸੋ ਸੇਵਾ ਭਲੇ
 ਜਿਹ ਘਟ ਬਸੈ ਮੁਰਾਰਿ ॥੪॥੧॥੧੨॥੬੩॥ ਗਤੜੀ ॥ ਰੇ ਮਨ ਤੇਰੇ ਕੋਇ ਨਹੀ ਖਿੰਚਿ ਲੇਇ ਜਿਨਿ
 ਭਾਰੁ ॥ ਬਿਰਖ ਬਸੇਰੇ ਪੱਖਿ ਕੋ ਤੈਸੋ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥੧॥ ਰਾਮ ਰਸੁ ਪੀਆ ਰੇ ॥ ਜਿਹ ਰਸ ਬਿਸਰਿ ਗਏ ਰਸ
 ਅਤਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਤਰ ਮੁਏ ਕਿਆ ਰੋਈਐ ਜਤ ਆਪਾ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਇ ॥ ਜੋ ਤਥੈ ਸੋ ਬਿਨਸਿ ਹੈ
 ਦੁਖੁ ਕਰਿ ਰੋਵੈ ਬਲਾਇ ॥੨॥ ਜਹ ਕੀ ਤਥੀ ਤਹ ਰਾਚੀ ਪੀਵਤ ਮਰਦਨ ਲਾਗ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਚਿਤਿ
 ਚੇਤਿਆ ਰਾਮ ਸਿਮਰਿ ਬੈਰਾਗ ॥੩॥੨॥੧੩॥੬੪॥ ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ॥ ਪਥੁ ਨਿਹਾਰੈ ਕਾਮਨੀ ਲੋਚਨ

ਭਰੀ ਲੇ ਉਸਾਸਾ ॥ ਤਰ ਨ ਭੀਜੈ ਪਗੁ ਨਾ ਖਿਸੈ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਕੀ ਆਸਾ ॥੧॥ ਤਡਹੁ ਨ ਕਾਗਾ ਕਾਰੇ ॥
 ਬੇਗਿ ਮਿਲੀਜੈ ਅਪੁਨੇ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਜੀਵਨ ਪਦ ਕਾਰਨਿ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ
 ਕਰੀਜੈ ॥ ਏਕੁ ਆਧਾਰੁ ਨਾਮੁ ਨਾਰਾਇਨ ਰਸਨਾ ਰਾਮੁ ਰਖੀਜੈ ॥੨॥੧॥੧੪॥੬੫॥ ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ੧੧ ॥ ਆਸ
 ਪਾਸ ਘਨ ਤੁਰਸੀ ਕਾ ਬਿਰਵਾ ਮਾੜਾ ਬਨਾ ਰਸਿ ਗਾੜਂ ਰੇ ॥ ਤਆ ਕਾ ਸਰੂਪੁ ਦੇਖਿ ਮੋਹੀ ਗੁਆਰਨਿ ਮੋ ਕਤ ਛੋਡਿ
 ਨ ਆਤ ਨ ਜਾਹੂ ਰੇ ॥੧॥ ਤੋਹਿ ਚਰਨ ਮਨੁ ਲਾਗੇ ਸਾਰਿਗਧਰ ॥ ਸੋ ਮਿਲੈ ਜੋ ਬਡਭਾਗੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਬਿੰਦ੍ਰਾਬਨ ਮਨ ਹਰਨ ਮਨੋਹਰ ਕ੃ਸਨ ਚਰਕਤ ਗਾੜ ਰੇ ॥ ਜਾ ਕਾ ਠਾਕੁਰੁ ਤੁਹੀ ਸਾਰਿਗਧਰ ਮੋਹਿ ਕਬੀਰਾ ਨਾਊ
 ਰੇ ॥੨॥੨॥੧੫॥੬੬॥ ਗਤੜੀ ਪੂਰਕੀ ੧੨ ॥ ਬਿਪਲ ਬਸਲ ਕੇਤੇ ਹੈ ਪਹਿਰੇ ਕਿਆ ਬਨ ਮਧੇ ਬਾਸਾ ॥ ਕਹਾ
 ਮਇਆ ਨਰ ਦੇਵਾ ਧੋਖੇ ਕਿਆ ਜਲਿ ਕੌਰਿਆ ਗਿਆਤਾ ॥੧॥ ਜੀਅਰੇ ਜਾਹਿਗਾ ਮੈ ਜਾਨਾਂ ॥ ਅਕਿਗਤ
 ਸਮੜ੍ਹੁ ਇਆਨਾ ॥ ਜਤ ਜਤ ਦੇਖਉ ਬਹੁਰਿ ਨ ਪੇਖਉ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਲਪਟਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗਿਆਨੀ
 ਧਿਆਨੀ ਬਹੁ ਤਪਦੇਸੀ ਇਹੁ ਜਗੁ ਸਗਲੋ ਧੰਧਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਇਕ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਇਆ ਜਗੁ ਮਾਇਆ ਅੰਧਾ
 ॥੨॥੧॥੧੬॥੬੭॥ ਗਤੜੀ ੧੨ ॥ ਮਨ ਰੇ ਛਾਡਹੁ ਭਰਮੁ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਇ ਨਾਚਹੁ ਇਆ ਮਾਇਆ ਕੇ ਡਾੱਡੇ ॥ ਸ੍ਰੂ
 ਕਿ ਸਨਮੁਖ ਰਨ ਤੇ ਡਰਪੈ ਸਤੀ ਕਿ ਸਾਂਚੈ ਭਾੱਡੇ ॥੧॥ ਡਗਮਗ ਛਾਡਿ ਰੇ ਮਨ ਬਤਰਾ ॥ ਅਬ ਤਤ ਜਰੇ ਮਰੇ
 ਸਿਧਿ ਪਾਈਐ ਲੀਨੋ ਹਾਥਿ ਸੰਧਤਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਮਾਇਆ ਕੇ ਲੀਨੇ ਇਆ ਬਿਧਿ ਜਗਤੁ ਬਿਗੂਤਾ ॥
 ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਨ ਛੋਡਤ ਸਗਲ ਊਚ ਤੇ ਊਚਾ ॥੨॥੨॥੧੭॥੬੮॥ ਗਤੜੀ ੧੩ ॥ ਫੁਰਮਾਨੁ ਤੇਰਾ ਸਿਰੈ
 ਊਪਰਿ ਫਿਰਿ ਨ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰ ॥ ਤੁਹੀ ਦਰੀਆ ਤੁਹੀ ਕਰੀਆ ਤੁੜੈ ਤੇ ਨਿਸਤਾਰ ॥੧॥ ਬੰਦੇ ਬੰਦੀ ਇਕਤੀਆਰ
 ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਰੋਸੁ ਧਰਤ ਕਿ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ਮੇਰਾ ਜਿਤ ਫੂਲੁ ਜੰਈ ਹੈ ਨਾਰਿ ॥ ਕਹਿ
 ਕਬੀਰ ਗੁਲਾਮੁ ਘਰ ਕਾ ਜੀਆਇ ਭਾਵੈ ਮਾਰਿ ॥੨॥੧੮॥੬੯॥ ਗਤੜੀ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਜੀਅ ਜੋਨਿ
 ਮਹਿ ਭ੍ਰਮਤ ਨਨਦੁ ਬਹੁ ਥਾਕੇ ਰੇ ॥ ਭਗਤਿ ਹੇਤਿ ਅਵਤਾਰੁ ਲੀਓ ਹੈ ਭਾਗੁੰ ਬਡੋ ਬਪੁਰਾ ਕੋ ਰੇ ॥੧॥ ਤੁਮ ਜੁ ਕਹਤ
 ਹਤ ਨਨਦ ਕੋ ਨਨਦਨੁ ਨਨਦ ਸੁ ਨਨਦਨੁ ਕਾ ਕੋ ਰੇ ॥ ਧਰਨਿ ਅਕਾਸੁ ਦਸੋ ਦਿਸ ਨਾਹੀ ਤਬ ਇਹੁ ਨਨਦੁ ਕਹਾ ਥੋ ਰੇ ॥

੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਂਕਟਿ ਨਹੀ ਪੈ ਜੋਨਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਜਾ ਕੋ ਰੇ ॥ ਕਬੀਰ ਕੋ ਸੁਆਮੀ ਐਸੋ ਠਾਕੁਰੁ
 ਜਾ ਕੈ ਮਾਈ ਨ ਬਾਪੋ ਰੇ ॥੨॥੧੬॥੭੦॥ ਗਤੜੀ ॥ ਨਿੰਦਤ ਨਿੰਦਤ ਮੋ ਕਤ ਲੋਗੁ ਨਿੰਦਤ ॥ ਨਿੰਦਾ ਜਨ ਕਤ
 ਖਰੀ ਪਿਆਰੀ ॥ ਨਿੰਦਾ ਬਾਪੁ ਨਿੰਦਾ ਮਹਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿੰਦਾ ਹੋਇ ਤ ਬੈਕੁਂਠਿ ਜਾਈਐ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ
 ਮਨਹਿ ਬਸਾਈਐ ॥ ਰਿਦੈ ਸੁਧ ਜਤ ਨਿੰਦਾ ਹੋਇ ॥ ਹਮਰੇ ਕਪਰੇ ਨਿੰਦਕੁ ਧੋਇ ॥੧॥ ਨਿੰਦਾ ਕਰੈ ਸੁ ਹਮਰਾ
 ਮੀਤੁ ॥ ਨਿੰਦਕ ਮਾਹਿ ਹਮਾਰਾ ਚੀਤੁ ॥ ਨਿੰਦਕੁ ਸੋ ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਹੋਰੈ ॥ ਹਮਰਾ ਜੀਵਨੁ ਨਿੰਦਕੁ ਲੋਰੈ ॥੨॥ ਨਿੰਦਾ
 ਹਮਰੀ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰੁ ॥ ਨਿੰਦਾ ਹਮਰਾ ਕਰੈ ਉਧਾਰੁ ॥ ਜਨ ਕਬੀਰ ਕਤ ਨਿੰਦਾ ਸਾਰੁ ॥ ਨਿੰਦਕੁ ਝੂਬਾ ਹਮ ਤਤਰੇ
 ਪਾਰਿ ॥੩॥੨੦॥੭੧॥ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਤ੍ਰਾਂ ਐਸਾ ਨਿਰਭਤ ਤਰਨ ਤਾਰਨ ਰਾਮ ਰਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਬ ਹਮ
 ਹੋਤੇ ਤਬ ਤੁਮ ਨਾਹੀ ਅਬ ਤੁਮ ਹਹੁ ਹਮ ਨਾਹੀ ॥ ਅਬ ਹਮ ਤੁਮ ਏਕ ਭਾਏ ਹਹਿ ਏਕੈ ਦੇਖਤ ਮਨੁ ਪਤੀਆਹੀ ॥
 ੧॥ ਜਬ ਬੁਧਿ ਹੋਤੀ ਤਬ ਬਲੁ ਕੈਸਾ ਅਬ ਬੁਧਿ ਬਲੁ ਨ ਖਟਾਈ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਬੁਧਿ ਹਰਿ ਲਈ ਮੇਰੀ ਬੁਧਿ
 ਬਦਲੀ ਸਿਧਿ ਪਾਈ ॥੨॥੨੧॥੭੨॥ ਗਤੜੀ ॥ ਖਟ ਨੇਮ ਕਰਿ ਕੋਠੜੀ ਬਾਂਧੀ ਬਸਤੁ ਅਨੂਪੁ ਬੀਚ ਪਾਈ ॥
 ਕੁੰਜੀ ਕੁਲਫੁ ਪ੍ਰਾਨ ਕਰਿ ਰਾਖੇ ਕਰਤੇ ਬਾਰ ਨ ਲਾਈ ॥੧॥ ਅਬ ਮਨ ਜਾਗਤ ਰਹੁ ਰੇ ਭਾਈ ॥ ਗਾਫਲੁ ਹੋਇ ਕੈ
 ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਚੋਲੁ ਮੁਸੈ ਘਰੁ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੰਚ ਪਹ਼ਲਾ ਦਰ ਮਹਿ ਰਹਤੇ ਤਿਨ ਕਾ ਨਹੀ
 ਪਤੀਆਰਾ ॥ ਚੇਤਿ ਸੁਚੇਤ ਚਿਤ ਹੋਇ ਰਹੁ ਤਤ ਲੈ ਪਰਗਾਸੁ ਤਜਾਰਾ ॥੨॥ ਨਤ ਘਰ ਦੇਖਿ ਜੁ ਕਾਮਨਿ ਭੂਲੀ
 ਬਸਤੁ ਅਨੂਪ ਨ ਪਾਈ ॥ ਕਹਤੁ ਕਬੀਰ ਨਕੈ ਘਰ ਮੂਸੇ ਦਸਕੈ ਤਤੁ ਸਮਾਈ ॥੩॥੨੨॥੭੩॥ ਗਤੜੀ ॥ ਮਾਈ
 ਮੋਹਿ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ਆਨਾਨਾਂ ॥ ਸਿਵ ਸਨਕਾਦਿ ਜਾਸੁ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ਤਾਸੁ ਬਸਹਿ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨਾਨਾਂ ॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਹਿਰਦੇ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਗਿਆਨ ਗੁਰ ਗੰਮਿਤ ਗਗਨ ਮੰਡਲ ਮਹਿ ਧਿਆਨਾਨਾਂ ॥ ਬਿਖੈ ਰੋਗ ਭੈ ਬੰਧਨ ਭਾਗੇ ਮਨ ਨਿਜ
 ਘਰਿ ਸੁਖੁ ਜਾਨਾਨਾ ॥੧॥ ਏਕ ਸੁਮਤਿ ਰਤਿ ਜਾਨਿ ਮਾਨਿ ਪ੍ਰਭ ਦ੍ਰਾਸਰ ਮਨਹਿ ਨ ਆਨਾਨਾ ॥ ਚੰਦਨ ਬਾਸੁ ਭਾਏ
 ਮਨ ਬਾਸਨ ਤਿਆਗੁ ਘਟਿਆ ਅਭਿਮਾਨਾਨਾ ॥੨॥ ਜੋ ਜਨ ਗਾਇ ਧਿਆਇ ਜਸੁ ਠਾਕੁਰ ਤਾਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਹੈ
 ਥਾਨਾਨਾਂ ॥ ਤਿਹ ਬਡ ਭਾਗ ਬਸਿਆ ਮਨਿ ਜਾ ਕੈ ਕਰਮ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮਥਾਨਾਨਾ ॥੩॥ ਕਾਟਿ ਸਕਤਿ ਸਿਵ ਸਹਜੁ

ਪ੍ਰਗਾਸਿਓ ਏਕੈ ਏਕ ਸਮਾਨਾਨਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਗੁਰ ਭੇਟਿ ਮਹਾ ਸੁਖ ਭਰਮਤ ਰਹੇ ਮਨੁ ਮਾਨਾਨਾਂ ॥੪॥੨੩॥੭੪॥

ਰਾਗੁ ਗਤਡੀ ਪੂਰਬੀ ਬਾਵਨ ਅਖਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੀ
ਬਾਵਨ ਅਛਰ ਲੋਕ ਲੈ ਸਭੁ ਕਛੁ ਇਨ ਹੀ ਮਾਹਿ ॥ ਏ ਅਖਰ ਖਿਰਿ ਜਾਹਿਗੇ ਓਡਿ ਅਖਰ ਇਨ ਮਹਿ ਨਾਹਿ ॥੧॥
ਜਹਾ ਬੋਲ ਤਹ ਅਛਰ ਆਵਾ ॥ ਜਹ ਅਬੋਲ ਤਹ ਮਨੁ ਨ ਰਹਾਵਾ ॥ ਬੋਲ ਅਬੋਲ ਮਧਿ ਹੈ ਸੋਈ ॥ ਜਸ ਓਹੁ ਹੈ ਤਸ
ਲਖੈ ਨ ਕੋਈ ॥੨॥ ਅਲਹ ਲਹਤ ਤਤ ਕਿਆ ਕਹਤ ਕਹਤ ਤ ਕੋ ਉਪਕਾਰ ॥ ਬਟਕ ਬੀਜ ਮਹਿ ਰਵਿ ਰਹਿਓ
ਜਾ ਕੋ ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਬਿਸਥਾਰ ॥੩॥ ਅਲਹ ਲਵਾਤਾ ਭੇਦ ਛੈ ਕਛੁ ਕਛੁ ਪਾਇਓ ਭੇਦ ॥ ਤਲਟਿ ਭੇਦ ਮਨੁ ਬੇਧਿਓ
ਪਾਇਓ ਅਭੰਗ ਅਛੇਦ ॥੪॥ ਤੁਰਕ ਤਰੀਕਤਿ ਜਾਨੀਐ ਛਿਦ੍ਰ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ॥ ਮਨ ਸਮਝਾਵਨ ਕਾਰਨੇ ਕਛੁਅਕ
ਪਡੀਐ ਗਿਆਨ ॥੫॥ ਓਅੰਕਾਰ ਆਦਿ ਮੈ ਜਾਨਾ ॥ ਲਿਖਿ ਅਲੁ ਮੇਟੈ ਤਾਹਿ ਨ ਮਾਨਾ ॥ ਓਅੰਕਾਰ ਲਖੈ ਜਤ ਕੋਈ
॥ ਸੋਈ ਲਖਿ ਮੇਟਣਾ ਨ ਹੋਈ ॥੬॥ ਕਕਾ ਕਿਰਣਿ ਕਮਲ ਮਹਿ ਪਾਵਾ ॥ ਸਸਿ ਬਿਗਾਸ ਸੱਪਟ ਨਹੀ ਆਵਾ ॥
ਅਲੁ ਜੇ ਤਹਾ ਕੁਸਮ ਰਸੁ ਪਾਵਾ ॥ ਅਕਹ ਕਹਾ ਕਹਿ ਕਾ ਸਮਝਾਵਾ ॥੭॥ ਖਖਾ ਇਹੈ ਖੋਡਿ ਮਨ ਆਵਾ ॥ ਖੋਡੇ
ਛਾਡਿ ਨ ਦਹ ਦਿਸ ਧਾਵਾ ॥ ਖਸਮਹਿ ਜਾਣਿ ਖਿਮਾ ਕਰਿ ਰਹੈ ॥ ਤਤ ਹੋਇ ਨਿਖਿਅਤ ਅਖੈ ਪਦੁ ਲਹੈ ॥੮॥ ਗਗ
ਗੁਰ ਕੇ ਬਚਨ ਪਛਾਨਾ ॥ ਢੂਜੀ ਬਾਤ ਨ ਧਰੈ ਕਾਨਾ ॥ ਰਹੈ ਬਿਵਾਗਮ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ਅਗਹ ਗਹੈ ਗਹਿ
ਗਗਨ ਰਹਾਈ ॥੯॥ ਘਧਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਿਮਸੈ ਸੋਈ ॥ ਘਟ ਫੂਟੇ ਘਟਿ ਕਬਹਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਤਾ ਘਟ ਮਾਹਿ ਘਾਟ
ਜਤ ਪਾਵਾ ॥ ਸੋ ਘਟੁ ਛਾਡਿ ਅਵਘਟ ਕਤ ਧਾਵਾ ॥੧੦॥ ਡੰਡਾ ਨਿਗਰਿ ਸਨੇਹੁ ਕਰਿ ਨਿਰਵਾਰੇ ਸੰਦੇਹ ॥ ਨਾਹੀ
ਦੇਖਿ ਨ ਭਾਜੀਐ ਪਰਮ ਸਿਆਨਪ ਏਹ ॥੧੧॥ ਚਚਾ ਰਚਿਤ ਚਿਤ ਹੈ ਭਾਰੀ ॥ ਤਜਿ ਚਿਤੈ ਚੇਤਹੁ ਚਿਤਕਾਰੀ ॥
ਚਿਤ ਬਚਿਤ ਇਹੈ ਅਵਝੇਰਾ ॥ ਤਜਿ ਚਿਤੈ ਚਿਤੁ ਰਾਖਿ ਚਿਤੇਰਾ ॥੧੨॥ ਛਛਾ ਇਹੈ ਛਤਪਤਿ ਪਾਸਾ ॥ ਛਕਿ ਕਿ ਨ
ਰਹਹੁ ਛਾਡਿ ਕਿ ਨ ਆਸਾ ॥ ਰੇ ਮਨ ਮੈ ਤਤ ਛਿਨ ਛਿਨ ਸਮਝਾਵਾ ॥ ਤਾਹਿ ਛਾਡਿ ਕਤ ਆਪੁ ਬਧਾਵਾ ॥੧੩॥ ਜਯਾ
ਜਤ ਤਨ ਜੀਵਤ ਜਰਾਵੈ ॥ ਜੋਬਨ ਜਾਰਿ ਜੁਗਤਿ ਸੋ ਪਾਵੈ ॥ ਅਸ ਜਰਿ ਪਰ ਜਰਿ ਜਰਿ ਜਬ ਰਹੈ ॥ ਤਬ ਜਾਇ ਜੋਤਿ

੧੬ੰ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤਜਾਰਤ ਲਹੈ ॥੧੪॥ ਝੜਿਆ ਤਰਝਿ ਸੁਰਝਿ ਨਹੀ ਜਾਨਾ ॥ ਰਹਿਓ ਝੜਿਕਿ ਨਾਹੀ ਪਰਵਾਨਾ ॥ ਕਤ ਝਾਖਿ ਝਾਖਿ
 ਅਤਰਨ ਸਮਝਾਵਾ ॥ ਝਗਰੁ ਕੀਏ ਝਗਰਤ ਹੀ ਪਾਵਾ ॥੧੫॥ ਯੰਗ ਨਿਕਟਿ ਜੁ ਘਟ ਰਹਿਓ ਦੂਰਿ ਕਹਾ ਤਜਿ
 ਜਾਇ ॥ ਜਾ ਕਾਰਣਿ ਜਗੁ ਢੂਢਿਅਤ ਨੇਰਤ ਪਾਇਅਤ ਤਾਹਿ ॥੧੬॥ ਟਟਾ ਬਿਕਟ ਘਟ ਘਟ ਮਾਹੀ ॥ ਖੋਲਿ
 ਕਪਾਟ ਮਹਲਿ ਕਿ ਨ ਜਾਹੀ ॥ ਦੇਖਿ ਅਟਲ ਟਲਿ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਵਾ ॥ ਰਹੈ ਲਪਟਿ ਘਟ ਪਰਚਤ ਪਾਵਾ ॥੧੭॥
 ਠਠਾ ਝਿਵੈ ਦੂਰਿ ਠਗ ਨੀਰਾ ॥ ਨੀਠਿ ਨੀਠਿ ਮਨੁ ਕੀਆ ਧੀਰਾ ॥ ਜਿਨਿ ਠਗਿ ਠਗਿਆ ਸਗਲ ਜਗੁ ਖਾਵਾ ॥ ਸੋ
 ਠਗੁ ਠਗਿਆ ਠਤਰ ਮਨੁ ਆਵਾ ॥੧੮॥ ਡਡਾ ਡਰ ਉਪਜੇ ਡਰੁ ਜਾਈ ॥ ਤਾ ਡਰ ਮਹਿ ਡਰੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥
 ਜਤ ਡਰ ਡਰੈ ਤਾ ਫਿਰਿ ਡਰੁ ਲਾਗੈ ॥ ਨਿਡਰ ਹੂਆ ਡਰੁ ਤਰ ਹੋਇ ਭਾਗੈ ॥੧੯॥ ਡਢਾ ਡਿਗ ਢੂਢਹਿ ਕਤ ਆਨਾ ॥
 ਢੂਢਤ ਹੀ ਢਹਿ ਗਏ ਪਰਾਨਾ ॥ ਚਡਿ ਸੁਮੇਰਿ ਢੂਢਿ ਜਬ ਆਵਾ ॥ ਜਿਹ ਗੜੁ ਗਡਿਓ ਸੁ ਗੜੁ ਮਹਿ ਪਾਵਾ ॥੨੦॥
 ਣਾਣਾ ਰਣਿ ਰੂਤਤ ਨਰ ਨੇਹੀ ਕਰੈ ॥ ਨਾ ਨਿਵੈ ਨਾ ਫੁਨਿ ਸੱਚਰੈ ॥ ਧੰਨਿ ਜਨਮੁ ਤਾਹੀ ਕੋ ਗਣੈ ॥ ਮਾਰੈ ਏਕਹਿ ਤਜਿ
 ਜਾਇ ਘਣੈ ॥੨੧॥ ਤਤਾ ਅਤਰ ਤਰਿਓ ਨਹ ਜਾਈ ॥ ਤਨ ਤ੍ਰਭਵਣ ਮਹਿ ਰਹਿਓ ਸਮਾਈ ॥ ਜਤ ਤ੍ਰਭਵਣ ਤਨ
 ਮਾਹਿ ਸਮਾਵਾ ॥ ਤਤ ਤਤਹਿ ਤਤ ਮਿਲਿਆ ਸਚੁ ਪਾਵਾ ॥੨੨॥ ਥਥਾ ਅਥਾਹ ਥਾਹ ਨਹੀ ਪਾਵਾ ॥ ਓਹੁ ਅਥਾਹ
 ਇਹੁ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਵਾ ॥ ਥੋੜੈ ਥਲਿ ਥਾਨਕ ਆਰੰਭੈ ॥ ਬਿਨੁ ਹੀ ਥਾਭਹ ਮੰਦਿਰੁ ਥੰਭੈ ॥੨੩॥ ਦਦਾ ਦੇਖਿ ਜੁ
 ਬਿਨਸਨਹਾਰਾ ॥ ਜਸ ਅਦੇਖਿ ਤਸ ਰਾਖਿ ਬਿਚਾਰਾ ॥ ਦਸਵੈ ਦੁਆਰਿ ਕੁੰਚੀ ਜਬ ਦੀਜੈ ॥ ਤਤ ਦਿੱਤਿਆਲ ਕੋ ਦਰਸਨੁ
 ਕੀਜੈ ॥੨੪॥ ਧਧਾ ਅਰਧਹਿ ਤਰਧ ਨਿਕੇਰਾ ॥ ਅਰਧਹਿ ਤਰਧ ਮੰਝਿ ਬਸੇਰਾ ॥ ਅਰਧਹਿ ਛਾਡਿ ਤਰਧ ਜਤ ਆਵਾ
 ॥ ਤਤ ਅਰਧਹਿ ਤਰਧ ਮਿਲਿਆ ਸੁਖ ਪਾਵਾ ॥੨੫॥ ਨਨਾ ਨਿਸਿ ਦਿਨੁ ਨਿਰਖਤ ਜਾਈ ॥ ਨਿਰਖਤ ਨੈਨ ਰਹੇ
 ਰਤਵਾਈ ॥ ਨਿਰਖਤ ਨਿਰਖਤ ਜਬ ਜਾਇ ਪਾਵਾ ॥ ਤਬ ਲੇ ਨਿਰਖਹਿ ਨਿਰਖ ਮਿਲਾਵਾ ॥੨੬॥ ਪਪਾ ਅਪਰ ਪਾਰੁ
 ਨਹੀ ਪਾਵਾ ॥ ਪਰਮ ਜੋਤਿ ਸਿਤ ਪਰਚਤ ਲਾਵਾ ॥ ਪਾਂਚਤ ਇੰਦ੍ਰੀ ਨਿਗ੍ਰਹ ਕਰੈ ॥ ਪਾਪੁ ਪੁਨ੍ਨੁ ਦੋਤੁ ਨਿਰਵਰੈ ॥
 ॥੨੭॥ ਫਫਾ ਬਿਨੁ ਫੂਲਹ ਫਲੁ ਹੋਈ ॥ ਤਾ ਫਲ ਫਂਕ ਲਖੈ ਜਤ ਕੋਈ ॥ ਟ੍ਰਣਿ ਨ ਪਰੈ ਫਂਕ ਬਿਚਾਰੈ ॥ ਤਾ ਫਲ
 ਫਂਕ ਸਭੈ ਤਨ ਫਾਰੈ ॥੨੮॥ ਬਬਾ ਬਿੰਦਹਿ ਬਿੰਦ ਮਿਲਾਵਾ ॥ ਬਿੰਦਹਿ ਬਿੰਦ ਨ ਬਿਛੁਰਨ ਪਾਵਾ ॥ ਬੰਦਤ ਹੋਇ

ਬੰਦਗੀ ਗਹੈ ॥ ਬੰਦਕ ਹੋਇ ਬੰਧ ਸੁਧਿ ਲਹੈ ॥੨੬॥ ਭਮਾ ਭੇਦਹਿ ਭੇਦ ਮਿਲਾਵਾ ॥ ਅਥ ਭਤ ਭਾਨਿ ਭਰੋਸਤ
 ਆਵਾ ॥ ਜੋ ਬਾਹਰਿ ਸੋ ਭੀਤਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥ ਭਡਿਆ ਭੇਟੁ ਭੂਪਤਿ ਪਹਿਚਾਨਿਆ ॥੩੦॥ ਮਮਾ ਮੂਲ ਗਹਿਆ ਮਨੁ
 ਮਾਨੈ ॥ ਮਰਮੀ ਹੋਇ ਸੁ ਮਨ ਕਤ ਜਾਨੈ ॥ ਮਤ ਕੋਈ ਮਨ ਮਿਲਤਾ ਬਿਲਮਾਵੈ ॥ ਮਗਨ ਭਡਿਆ ਤੇ ਸੋ ਸਚੁ ਪਾਵੈ
 ॥੩੧॥ ਮਮਾ ਮਨ ਸਿਤ ਕਾਜੁ ਹੈ ਮਨ ਸਾਥੇ ਸਿਧਿ ਹੋਇ ॥ ਮਨ ਹੀ ਮਨ ਸਿਤ ਕਹੈ ਕਬੀਰਾ ਮਨ ਸਾ ਮਿਲਿਆ
 ਨ ਕੋਇ ॥੩੨॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਕਤੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸੀਤ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਪੰਚ ਤਤ ਕੋ ਜੀਤ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲੇ ਜਤ ਉਨਮਨਿ
 ਰਹੈ ॥ ਤਤ ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਕੀ ਬਾਤੈ ਕਹੈ ॥੩੩॥ ਧਧਾ ਜਤ ਜਾਨਹਿ ਤਤ ਦੁਰਮਤਿ ਹਨਿ ਕਰਿ ਬਸਿ ਕਾਇਆ
 ਗਤ ॥ ਰਣ ਰੱਤਤ ਭਾਜੈ ਨਹੀ ਸੂਰਤ ਥਾਰਤ ਨਾਤ ॥੩੪॥ ਰਾਰਾ ਰਸੁ ਨਿਰਸ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥ ਹੋਇ ਨਿਰਸ
 ਸੁ ਰਸੁ ਪਹਿਚਾਨਿਆ ॥ ਇਹ ਰਸ ਛਾਡੇ ਤਹ ਰਸੁ ਆਵਾ ॥ ਤਹ ਰਸੁ ਪੀਆ ਇਹ ਰਸੁ ਨਹੀ ਭਾਵਾ ॥੩੫॥
 ਲਲਾ ਐਸੇ ਲਿਵ ਮਨੁ ਲਾਵੈ ॥ ਅਨਤ ਨ ਜਾਇ ਪਰਮ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥ ਅਥ ਜਤ ਤਹਾ ਪ੍ਰੇਮ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥ ਤਤ ਅਲਹ
 ਲਹੈ ਲਹਿ ਚਰਨ ਸਮਾਵੈ ॥੩੬॥ ਕਵਾ ਬਾਰ ਬਾਰ ਬਿਸਨ ਸਮੂਹਿ ॥ ਬਿਸਨ ਸਮੂਹਿ ਨ ਆਵੈ ਹਾਰਿ ॥ ਬਲਿ
 ਬਲਿ ਜੇ ਬਿਸਨਤਨਾ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ॥ ਵਿਸਨ ਮਿਲੇ ਸਭ ਹੀ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥੩੭॥ ਕਵਾ ਕਵਾ ਜਾਨੀਐ ਵਾ ਜਾਨੇ ਇਹੁ
 ਹੋਇ ॥ ਇਹੁ ਅਥ ਓਹੁ ਜਬ ਮਿਲੈ ਤਬ ਮਿਲਤ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥੩੮॥ ਸਸਾ ਸੋ ਨੀਕਾ ਕਰਿ ਸੋਧਹੁ ॥ ਘਟ ਪਰਚਾ
 ਕੀ ਬਾਤ ਨਿਰੋਧਹੁ ॥ ਘਟ ਪਰਚੈ ਜਤ ਤਪਯੈ ਭਾਤ ॥ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਤਹ ਤ੃ਭਵਣ ਰਾਤ ॥੩੯॥ ਖਖਾ ਖੋਜਿ
 ਪੈ ਜਤ ਕੋਈ ॥ ਜੋ ਖੋਜੈ ਸੋ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਖੋਜ ਬੂਝਿ ਜਤ ਕਰੈ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਤਤ ਭਵਜਲ ਤਰਤ ਨ ਲਾਵੈ
 ਬਾਰਾ ॥੪੦॥ ਸਸਾ ਸੋ ਸਹ ਸੇਜ ਸਵਾਰੈ ॥ ਸੋਈ ਸਹੀ ਸਂਦੇਹ ਨਿਵਾਰੈ ॥ ਅਲਪ ਸੁਖ ਛਾਡਿ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਵਾ
 ॥ ਤਬ ਇਹ ਕੀਅ ਓਹੁ ਕੰਤੁ ਕਹਾਵਾ ॥੪੧॥ ਹਾਹਾ ਹੋਤ ਹੋਇ ਨਹੀ ਜਾਨਾ ॥ ਜਬ ਹੀ ਹੋਇ ਤਬਹਿ ਮਨੁ ਮਾਨਾ
 ॥ ਹੈ ਤਤ ਸਹੀ ਲਖੈ ਜਤ ਕੋਈ ॥ ਤਬ ਓਹੀ ਤਹੁ ਏਹੁ ਨ ਹੋਈ ॥੪੨॥ ਲਿਮਤ ਲਿਮਤ ਕਰਤ ਫਿਰੈ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ॥
 ਤਾ ਕਾਰਣ ਬਿਆਪੈ ਬਹੁ ਸੋਗੁ ॥ ਲਖਿਮੀ ਕਰ ਸਿਤ ਜਤ ਲਿਤ ਲਾਵੈ ॥ ਸੋਗੁ ਮਿਟੈ ਸਭ ਹੀ ਸੁਖ ਪਾਵੈ ॥੪੩॥
 ਖਖਾ ਖਿਰਤ ਖਪਤ ਗਏ ਕੇਤੇ ॥ ਖਿਰਤ ਖਪਤ ਅਜਹੂ ਨਹ ਚੇਤੇ ॥ ਅਥ ਜਗੁ ਜਾਨਿ ਜਤ ਮਨਾ ਰਹੈ ॥ ਜਹ ਕਾ

ਬਿਛੁਰਾ ਤਹ ਥਿਰੁ ਲਹੈ ॥੪੪॥ ਬਾਵਨ ਅਖਰ ਜੋਰੇ ਆਨਿ ॥ ਸਕਿਆ ਨ ਅਖਰੁ ਏਕੁ ਪਛਾਨਿ ॥ ਸਤ ਕਾ ਸਬਦੁ
ਕਬੀਰਾ ਕਹੈ ॥ ਪੰਡਿਤ ਹੋਇ ਸੁ ਅਨਮੈ ਰਹੈ ॥ ਪੰਡਿਤ ਲੋਗਹ ਕਤ ਬਿਤਹਾਰ ॥ ਗਿਆਨਵਂਤ ਕਤ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰ
॥ ਜਾ ਕੈ ਜੀਅ ਜੈਸੀ ਬੁਧਿ ਹੋਈ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਜਾਨੈਗਾ ਸੋਈ ॥੪੫॥

੧੮੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗ ਗਤੜੀ ਥਿਤੀਂ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਪੰਦਰਹ ਥਿਤੀਂ ਸਾਤ ਵਾਰ ॥ ਕਹਿ
ਕਬੀਰ ਤੁਰਵਾਰ ਨ ਪਾਰ ॥ ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਲਖੈ ਜਤ ਭੇਤ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਦੇਤ ॥੧॥ ਥਿਤੀਂ ॥ ਅੰਮਾਵਸ
ਮਹਿ ਆਸ ਨਿਵਾਰਹੁ ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਰਾਮੁ ਸਮਾਰਹੁ ॥ ਜੀਵਤ ਪਾਵਹੁ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ॥ ਅਨਭਤ ਸਬਦੁ ਤਤੁ ਨਿਜੁ
ਸਾਰ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੋਬਿੰਦ ਰੰਗ ਲਾਗਾ ॥ ਸਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਏ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਮਹਿ ਅਨਦਿਨੁ
ਜਾਗਾ ॥੩॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਰਿਵਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰ ॥ ਘਟ ਮਹਿ ਖੇਲੈ ਅਘਟ ਅਪਾਰ ॥ ਕਾਲ ਕਲਪਨਾ ਕਦੇ ਨ
ਖਾਇ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਮਹਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੪॥ ਦੁਤੀਆ ਦੁਹ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਅੰਗ ॥ ਮਾਇਆ ਬ੍ਰਹਮ ਰਮੈ ਸਭ ਸੰਗ ॥
ਨਾ ਓਹੁ ਬਢੈ ਨ ਘਟਤਾ ਜਾਇ ॥ ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨ ਏਕੈ ਭਾਇ ॥੫॥ ਤ੃ਤੀਆ ਤੀਨੇ ਸਮ ਕਰਿ ਲਿਆਵੈ ॥ ਆਨਦ
ਮੂਲ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਵੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਉਪਜੈ ਬਿਸ਼ਾਸ ॥ ਬਾਹਰਿ ਭੀਤਰਿ ਸਦਾ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥੬॥ ਚਤੁਰਥਿ ਚੰਚਲ
ਮਨ ਕਤ ਗਹਹੁ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਸੰਗਿ ਕਬਹੁ ਨ ਬਹਹੁ ॥ ਜਲ ਥਲ ਮਾਹੇ ਆਪਹਿ ਆਪ ॥ ਆਪੈ ਜਪਹੁ ਆਪਨਾ
ਜਾਪ ॥੭॥ ਪਾਂਚੈ ਪੰਚ ਤਤ ਬਿਸਥਾਰ ॥ ਕਨਿਕ ਕਾਮਿਨੀ ਜੁਗ ਬਿਤਹਾਰ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਸੁਧਾ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਕੋਇ ॥ ਜਗ
ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਫੇਰਿ ਨ ਹੋਇ ॥੮॥ ਛਠਿ ਖਟੁ ਚਕ੍ਰ ਛਹੁੰ ਦਿਸ ਧਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਪਰਚੈ ਨਹੀ ਥਿਰਾ ਰਹਾਇ ॥ ਦੁਬਿਧਾ
ਮੇਟਿ ਖਿਮਾ ਗਹਿ ਰਹਹੁ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਕੀ ਸੂਲ ਨ ਸਹਹੁ ॥੯॥ ਸਾਤੈ ਸਤਿ ਕਰਿ ਬਾਚਾ ਜਾਣਿ ॥ ਆਤਮ ਰਾਮੁ
ਲੇਹੁ ਪਰਵਾਣਿ ॥ ਛੂਟੈ ਸੱਸਾ ਮਿਟਿ ਜਾਹਿ ਦੁਖ ॥ ਸੁਨਨ ਸਰੋਵਰਿ ਪਾਵਹੁ ਸੁਖ ॥੧੦॥ ਅਸਟਮੀ ਅਸਟ ਧਾਤੁ ਕੀ
ਕਾਇਆ ॥ ਤਾ ਮਹਿ ਅਕੁਲ ਮਹਾ ਨਿਧਿ ਰਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਗਮ ਗਿਆਨ ਬਤਾਵੈ ਭੇਦ ॥ ਤਲਟਾ ਰਹੈ ਅੰਭੰਗ
ਅਛੇਦ ॥੧੧॥ ਨਤੁਮੀ ਨਵੈ ਦੁਆਰ ਕਤ ਸਾਧਿ ॥ ਬਹਤੀ ਮਨਸਾ ਰਾਖਹੁ ਬਾਂਧਿ ॥ ਲੋਭ ਮੋਹ ਸਭ ਬੀਸਰਿ ਜਾਹੁ ॥

ਜੁਗ ਜੁਗ ਜੀਵਹੁ ਅਮਰ ਫਲ ਖਾਹੁ ॥੧੦॥ ਦਸਮੀ ਦਹ ਦਿਸ ਹੋਇ ਅਨਨਦ ॥ ਛੂਟੈ ਭਰਮੁ ਮਿਲੈ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਜੋਤਿ
ਸਰੂਪੀ ਤਤ ਅਨੂਪ ॥ ਅਮਲ ਨ ਮਲ ਨ ਛਾਹ ਨਹੀ ਧੂਪ ॥੧੧॥ ਏਕਾਦਸੀ ਏਕ ਦਿਸ ਧਾਰੈ ॥ ਤਤ ਜੋਨੀ ਸੰਕਟ
ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਰੈ ॥ ਸੀਤਲ ਨਿਰਮਲ ਭਿੱਡਿਆ ਸਰੀਰਾ ॥ ਦੂਰਿ ਬਤਾਵਤ ਪਾਇਆ ਨੀਰਾ ॥੧੨॥ ਬਾਰਸਿ ਬਾਰਹ
ਤਗਰੈ ਸੂਰ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰ ॥ ਦੇਖਿਆ ਤਿਹੂ ਲੋਕ ਕਾ ਪੀਤ ॥ ਅਚਰਜੁ ਭਿੱਡਿਆ ਜੀਵ ਤੇ ਸੀਤ
॥੧੩॥ ਤੇਰਸਿ ਤੇਰਹ ਅਗਮ ਬਖਾਣਿ ॥ ਅਰਥ ਉਰਥ ਬਿਚਿ ਸਮ ਪਹਿਚਾਣਿ ॥ ਨੀਚ ਊਚ ਨਹੀ ਮਾਨ ਅਮਾਨ ॥
ਬਿਆਪਿਕ ਰਾਮ ਸਗਲ ਸਾਮਾਨ ॥੧੪॥ ਚਤੁਦਸਿ ਚਤੁਦਹ ਲੋਕ ਮਝਾਰਿ ॥ ਰੇਮ ਰੇਮ ਮਹਿ ਬਸਹਿ ਸੁਰਾਰਿ ॥
ਸਤ ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਧਰਹੁ ਧਿਆਨ ॥ ਕਥਨੀ ਕਥੀਐ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ ॥੧੫॥ ਪ੍ਰਾਨਿ ਪ੍ਰਾਨ ਚੰਦ ਅਕਾਸ ॥ ਪਸਰਹਿ
ਕਲਾ ਸਹਜ ਪਰਗਾਸ ॥ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਮਥਿ ਹੋਇ ਰਹਿਆ ਥੀਰ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਮਹਿ ਰਮਹਿ ਕਬੀਰ ॥੧੬॥

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਗਤੜੀ ਵਾਰ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੇ ੭ ॥ ਬਾਰ ਬਾਰ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥ ਗੁਰ
ਗਮਿ ਭੇਟੁ ਸੁ ਹਰਿ ਕਾ ਪਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਦਿਤ ਕਰੈ ਭਗਤਿ ਆਰੰਭ ॥ ਕਾਇਆ ਮੰਦਰ ਮਨਸਾ ਥੰਭ ॥
ਅਹਿਨਿਸਿ ਅਖੰਡ ਸੁਰਹੀ ਜਾਇ ॥ ਤਤ ਅਨਹਦ ਬੇਣੁ ਸਹਜ ਮਹਿ ਬਾਇ ॥੨॥ ਸੋਮਵਾਰਿ ਸਸਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਝੜੈ ॥
ਚਾਖਤ ਬੇਗਿ ਸਗਲ ਬਿਖ ਹੈਰੈ ॥ ਬਾਣੀ ਰੋਕਿਆ ਰਹੈ ਦੁਆਰ ॥ ਤਤ ਮਨੁ ਮਤਵਾਰੋ ਪੀਵਨਹਾਰ ॥੨॥
ਮੰਗਲਵਾਰੇ ਲੇ ਮਾਹੀਤਿ ॥ ਪੰਚ ਚੌਰ ਕੀ ਜਾਣੈ ਰੀਤਿ ॥ ਘਰ ਛੋਡੋਂ ਬਾਹਰਿ ਜਿਨਿ ਜਾਇ ॥ ਨਾਤਲੁ ਖਰਾ ਰਿਸੈ ਹੈ
ਰਾਇ ॥੩॥ ਬੁਧਵਾਰਿ ਬੁਧਿ ਕਰੈ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥ ਹਿਰਦੈ ਕਮਲ ਮਹਿ ਹਰਿ ਕਾ ਬਾਸ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਦੋਤੁ ਏਕ ਸਮ ਧੈਰੈ
॥ ਉਰਥ ਪੰਕ ਲੈ ਸੂਧਾ ਕਰੈ ॥੪॥ ਬੂਹਸਪਤਿ ਬਿਖਿਆ ਦੇਇ ਬਹਾਇ ॥ ਤੀਨਿ ਦੇਵ ਏਕ ਸੰਗਿ ਲਾਇ ॥ ਤੀਨਿ
ਨਦੀ ਤਹ ਤ੍ਰਕੁਟੀ ਮਾਹਿ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਸਮਲ ਧੋਵਹਿ ਨਾਹਿ ॥੫॥ ਸੁਕੂਤੁ ਸਹਾਰੈ ਸੁ ਇਹ ਬ੍ਰਤਿ ਚੱਡੈ ॥
ਅਨਦਿਨ ਆਪਿ ਆਪ ਸਿਤ ਲੱਡੈ ॥ ਸੁਰਖੀ ਪਾਂਚਤ ਰਾਖੈ ਸਬੈ ॥ ਤਤ ਦ੍ਰਿਜੀ ਵ੃ਸਟਿ ਨ ਪੈਸੈ ਕਬੈ ॥੬॥ ਥਾਵਰ
ਧਿਰੁ ਕਰਿ ਰਾਖੈ ਸੋਇ ॥ ਜੋਤਿ ਢੀ ਕਟੀ ਘਟ ਮਹਿ ਜੋਇ ॥ ਬਾਹਰਿ ਭੀਤਰਿ ਭਿੱਡਿਆ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥ ਤਬ ਹੂਆ

सगल करम का नासु ॥७॥ जब लगु घट महि दूजी आन ॥ तउ लउ महलि न लाभै जान ॥ रमत
राम सिउ लागो रंगु ॥ कहि कबीर तब निरमल अंग ॥८॥१॥

रागु गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की

९८१ सतिगुर प्रसादि ॥

देवा पाहन तारीअले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥१॥ रहाउ ॥ तारीले गनिका

बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥ चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥ हउ बलि बलि
जिन राम कहे ॥१॥ दासी सुत जनु बिद्रु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए ॥ जप हीन तप हीन कुल
हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥२॥१॥

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

९८१ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥ मेरा करमु कुटिलता
जनमु कुभाँती ॥१॥ राम गुर्सईआ जीअ के जीवना ॥ मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥ चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२॥ कहु रविदास परउ
तेरी साभा ॥ बेगि मिलहु जन करि न बिलाँबा ॥३॥१॥ बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही
तिहि ठाउ ॥ नाँ तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥ अब मोहि खूब वतन
गह पाई ॥ ऊहाँ खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सैम एक
सो आही ॥ आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहाँ गनी बसहि मामूर ॥२॥ तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥ कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥

९८१ सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥ घट अवघट डूगर घणा झिकु निरगुणु
बैलु हमार ॥ रमईए सिउ झिक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१॥ को बनजारो राम को मेरा टाँडा

ਲਾਦਿਆ ਜਾਇ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਉ ਬਨਜਾਰੋ ਰਾਮ ਕੋ ਸਹਜ ਕਰਉ ਬਧਾਪਾਰੁ ॥ ਮੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਲਾਦਿਆ
ਬਿਖੁ ਲਾਦੀ ਸੰਸਾਰਿ ॥੨॥ ਤਰਵਾਰ ਪਾਰ ਕੇ ਦਾਨੀਆ ਲਿਖਿ ਲੇਹੁ ਆਲ ਪਤਾਲੁ ॥ ਮੋਹਿ ਜਮ ਡੰਡੁ ਨ ਲਾਗੰਈ
ਤਜੀਲੇ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲ ॥੩॥ ਜੈਸਾ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਕਾ ਤੈਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਮੇਰੇ ਰਮੰਝੇ ਰੰਗੁ ਮਜੀਠ ਕਾ ਕਹੁ
ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰ ॥੪॥੧॥

ਗਤੜੀ ਪੂਰਕੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਤ

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕੂਪੁ ਭਰਿਓ ਜੈਸੇ ਦਾਦਿਰਾ ਕਛੁ ਟੇਸੁ ਬਿਦੇਸੁ ਨ ਬੂੜਾ ॥ ਐਸੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਬਿਖਿਆ ਬਿਮੋਹਿਆ ਕਛੁ ਆਰਾ ਪਾਰੁ ਨ
ਸੂੜਾ ॥੧॥ ਸਗਲ ਭਵਨ ਕੇ ਨਾਇਕਾ ਇਕੁ ਛਿਨੁ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਇ ਜੀ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਲਿਨ ਭਈ ਮਤਿ ਮਾਧਵਾ
ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਲਖੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਭਰਮੁ ਚੂਕੈ ਮੈ ਸੁਮਤਿ ਦੇਹੁ ਸਮਝਾਇ ॥੨॥ ਜੋਗੀਸਰ ਪਾਵਹਿ ਨਹੀਂ
ਤੁਅ ਗੁਣ ਕਥਨੁ ਅਪਾਰ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਕੈ ਕਾਰਣੈ ਕਹੁ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰ ॥੩॥੧॥

ਗਤੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਤਜੁਗਿ ਸਤੁ ਤੇਤਾ ਜਗੀ ਦੁਆਪਰਿ ਪ੍ਰਯਾਚਾਰ ॥ ਤੀਨੈ ਜੁਗ ਤੀਨੈ ਦਿੜੇ ਕਲਿ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਅਧਾਰ ॥੧॥ ਪਾਰੁ
ਕੈਂਦੇ ਪਾਇਓ ਰੇ ॥ ਮੋ ਸਤ ਕੋਊ ਨ ਕਹੈ ਸਮਝਾਇ ॥ ਜਾ ਤੇ ਆਵਾ ਗਵਨੁ ਬਿਲਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਧਰਮ
ਨਿਰੂਪੀਐ ਕਰਤਾ ਦੀਸੈ ਸਭ ਲੋਇ ॥ ਕਵਨ ਕਰਮ ਤੇ ਛੂਟੀਐ ਜਿਹ ਸਾਥੇ ਸਭ ਸਿਧਿ ਹੋਇ ॥੨॥ ਕਰਮ ਅਕਰਮ
ਬੀਚਾਰੀਐ ਸੰਕਾ ਸੁਨਿ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ॥ ਸੰਸਾ ਸਦ ਹਿਰਦੈ ਬਸੈ ਕਤਨੁ ਹਿਰੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੩॥ ਬਾਹਰੁ ਤਦਕਿ ਪਖਾਰੀਐ
ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਬਿਬਿਧਿ ਬਿਕਾਰ ॥ ਸੁਧ ਕਵਨ ਪਰ ਹੋਇਓ ਸੁਚ ਕੁੰਚਰ ਬਿਧਿ ਬਿਤਹਾਰ ॥੪॥ ਰਵਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਰਜਨੀ
ਜਥਾ ਗਤਿ ਜਾਨਤ ਸਭ ਸੰਸਾਰ ॥ ਪਾਰਸ ਮਾਨੋ ਤਾਬੋ ਛੁਏ ਕਨਕ ਹੋਤ ਨਹੀਂ ਬਾਰ ॥੫॥ ਪਰਮ ਪਰਸ ਗੁਰੂ
ਭੇਟੀਐ ਪੂਰਕ ਲਿਖਤ ਲਿਲਾਟ ॥ ਉਨਮਨ ਮਨ ਮਨ ਹੀ ਮਿਲੇ ਛੁਟਕਤ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ॥੬॥ ਭਗਤਿ ਜੁਗਤਿ
ਮਤਿ ਸਤਿ ਕਰੀ ਭਰਮ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਬਿਕਾਰ ॥ ਸੋਈ ਬਸਿ ਰਸਿ ਮਨ ਮਿਲੇ ਗੁਨ ਨਿਰਗੁਨ ਏਕ ਬਿਚਾਰ ॥੭॥
ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਨਿਗਰਾਹ ਕੀਏ ਟਾਰੀ ਨ ਟੈ ਭਰਮ ਫਾਸ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਨਹੀਂ ਊਪਜੈ ਤਾ ਤੇ ਰਵਿਦਾਸ ਤਦਾਸ ॥੮॥੧॥

੧੦੮ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਸੋ ਫਰੁ ॥

ਸੋ ਫਰੁ ਤੇਰਾ ਕੇਹਾ ਸੋ ਘਰੁ ਕੇਹਾ ਜਿਤੁ ਬਹਿ ਸਰਬ ਸਮਾਲੇ ॥ ਵਾਜੇ ਤੇਰੇ ਨਾਦ ਅਨੇਕ ਅਸੰਖਾ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ
ਗਾਵਣਹਾਰੇ ॥ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਰਾਗ ਪਰੀ ਸਿਤ ਕਹੀਅਹਿ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਗਾਵਣਹਾਰੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਪਤਣੁ ਪਾਣੀ
ਬੈਸ਼ਂਤਰੁ ਗਾਵੈ ਰਾਜਾ ਧਰਮ ਟੁਆਰੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਚਿਤੁ ਗੁਪਤੁ ਲਿਖਿ ਜਾਣਨਿ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਧਰਮੁ ਬੀਚਾਰੇ
॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਈਸਰੁ ਬ੍ਰਹਮਾ ਦੇਵੀ ਸੋਹਨਿ ਤੇਰੇ ਸਦਾ ਸਵਾਰੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਇੰਦ੍ਰ ਇੰਦ੍ਰਾਸਣਿ ਬੈਠੇ
ਦੇਵਤਿਆ ਦਰਿ ਨਾਲੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਸਿਧ ਸਮਾਧੀ ਅੰਦਰਿ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਸਾਥ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ
ਜਤੀ ਸਤੀ ਸੰਤੋਖੀ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਕੀਰ ਕਰਾਰੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਪੰਡਿਤ ਪਡੇ ਰਖੀਸੁਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਬੇਦਾ ਨਾਲੇ
॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਮੋਹਣੀਆ ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਸੁਰਗੁ ਮਛੁ ਪਇਆਲੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਰਤਨ ਤਪਾਏ ਤੇਰੇ ਜੇਤੇ
ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਲੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸ੍ਰੂ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਖਾਣੀ ਚਾਰੇ ॥ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ
ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਖੇ ਤੇਰੇ ਧਾਰੇ ॥ ਸੇਈ ਤੁਧਨੋ ਗਾਵਨਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਨਿ ਰਤੇ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਰਸਾਲੇ
॥ ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਤੁਧਨੋ ਗਾਵਨਿ ਸੇ ਮੈ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਨਿ ਨਾਨਕੁ ਕਿਆ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਸੋਈ ਸੋਈ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ
ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ॥ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਜਾਇ ਨ ਜਾਸੀ ਰਚਨਾ ਜਿਨਿ ਰਚਾਈ ॥ ਰੰਗੀ ਰੰਗੀ ਭਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਮਾਇਆ
ਜਿਨਿ ਤਪਾਈ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਕੀਤਾ ਅਪਣਾ ਜਿਤ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ਫਿਰਿ

ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥ ਸੋ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸਾਹਾ ਪਤਿ ਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਰਹਣੁ ਰਜਾਈ ॥੧॥੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਸੋ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਅਗਮਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥ ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ
 ਜੀ ਹਰਿ ਸਚੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥ ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀ ਤੂੰ ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸੰਤਹੁ ਜੀ ਸਭਿ
 ਦ੍ਰਖ ਵਿਸਾਰਣਹਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਹਰਿ ਆਪੇ ਸੇਵਕੁ ਜੀ ਕਿਆ ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰਾ ॥੧॥ ਤੂੰ ਘਟ ਘਟ
 ਅੰਤਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਜੀ ਹਰਿ ਏਕੋ ਪੁਰਖੁ ਸਮਾਣਾ ॥ ਇਕਿ ਦਾਤੇ ਇਕਿ ਭੇਖਾਰੀ ਜੀ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਾ ॥
 ਤੂੰ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ਜੀ ਹਉ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਣਾ ॥ ਤੂੰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਬੇਅੰਤੁ ਬੇਅੰਤੁ ਜੀ ਤੇਰੇ ਕਿਆ
 ਗੁਣ ਆਖਿ ਕਖਾਣਾ ॥ ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨੁ ਕੁਰਬਾਣਾ ॥੨॥ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹਿ ਹਰਿ
 ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਸੇ ਜਨ ਜੁਗ ਮਹਿ ਸੁਖ ਵਾਸੀ ॥ ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਭਏ ਜਿਨੁ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜੀਤ ਤਿਨ
 ਟੂਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥ ਜਿਨ ਨਿਰਭਤ ਜਿਨੁ ਹਰਿ ਨਿਰਭਤ ਧਿਆਇਆ ਜੀਤ ਤਿਨ ਕਾ ਭਤ ਸਭੁ ਗਵਾਸੀ ॥ ਜਿਨੁ
 ਸੇਵਿਆ ਜਿਨੁ ਸੇਵਿਆ ਮੇਰਾ ਹਹਿ ਜੀਤ ਤੇ ਹਹਿ ਹਹਿ ਰੂਪਿ ਸਮਾਸੀ ॥ ਸੇ ਧਨੁ ਸੇ ਧਨੁ ਜਿਨ ਹਹਿ ਧਿਆਇਆ
 ਜੀਤ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਬਲਿ ਜਾਸੀ ॥੩॥ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਜੀ ਭਰੇ ਬੇਅੰਤ ਬੇਅੰਤਾ ॥ ਤੇਰੇ
 ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਸਲਾਹਨਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਹਰਿ ਅਨਿਕ ਅਨੇਕ ਅਨ੍ਨਤਾ ॥ ਤੇਰੀ ਅਨਿਕ ਤੇਰੀ ਅਨਿਕ ਕਰਹਿ ਹਰਿ
 ਪ੍ਰਯਾ ਜੀ ਤਪੁ ਤਾਪਹਿ ਜਪਹਿ ਬੇਅੰਤਾ ॥ ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਪਡਹਿ ਬਹੁ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਸਾਸਤ ਜੀ ਕਰਿ ਕਿਰਿਆ
 ਖਟੁ ਕਰਮ ਕਰਨਾ ॥ ਸੇ ਭਗਤ ਸੇ ਭਗਤ ਭਲੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜੀ ਜੋ ਭਾਵਹਿ ਮੇਰੇ ਹਹਿ ਭਗਵਨਤਾ ॥੪॥ ਤੂੰ ਆਦਿ
 ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਜੀ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਤੂੰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੂੰ ਏਕੋ ਜੀ ਤੂੰ ਨਿਹਚਲੁ
 ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਵਰਤੈ ਜੀ ਤੂੰ ਆਪੇ ਕਰਹਿ ਸੁ ਛੋਈ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸੂਸਟਿ ਸਭ ਤਪਾਈ ਜੀ
 ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸਿਰਜਿ ਸਭ ਗੋਈ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਕਰਤੇ ਕੇ ਜੀ ਜੋ ਸਭਸੈ ਕਾ ਜਾਣੋਈ ॥੫॥੨॥

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੨ ॥ ਸੁਣਿ ਵਡਾ ਆਖੈ ਸਭ ਕੋਈ ॥ ਕੇਵਡੁ ਵਡਾ

ਡੀਠਾ ਹੋਈ ॥ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਇ ॥ ਕਹਣੈ ਵਾਲੇ ਤੇਰੇ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਵਡੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਗਹਿਰ
 ਗੰਭੀਰਾ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰਾ ॥ ਕੌਈ ਨ ਜਾਣੈ ਤੇਰਾ ਕੇਤਾ ਕੇਵਡੁ ਚੀਰਾ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਭਿ ਸੁਰਤੀ ਮਿਲਿ ਸੁਰਤਿ ਕਮਾਈ
 ॥ ਸਭਿ ਕੀਮਤਿ ਮਿਲਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥ ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਗੁਰ ਗੁਰ ਹਾਈ ॥ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਤੇਰੀ ਤਿਲੁ
 ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਸਭਿ ਸਤ ਸਭਿ ਤਪ ਸਭਿ ਚੰਗਿਆਈਆ ॥ ਸਿਧਾ ਪੁਰਖਾ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆਂ ॥ ਤੁਥੁ ਵਿਣੁ
 ਸਿਧੀ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ॥ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਨਾਹੀ ਠਾਕਿ ਰਹਾਈਆ ॥੩॥ ਆਖਣ ਵਾਲਾ ਕਿਆ ਬੇਚਾਰਾ ॥ ਸਿਫਤੀ
 ਭਰੇ ਤੇਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰੁਟੁ ਦੇਹਿ ਤਿਸੈ ਕਿਆ ਚਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੪॥੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਆਖਾ ਜੀਵਾ ਵਿਸਰੈ ਮਰਿ ਜਾਤ ॥ ਆਖਣਿ ਅਤਖਾ ਸਾਚਾ ਨਾਤ ॥ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਲਾਗੈ ਭੂਖ ॥ ਤਿਤੁ ਭੂਖੈ ਖਾਇ
 ਚਲੀਅਹਿ ਦ੍ਰੂਖ ॥੧॥ ਸੋ ਕਿਤ ਵਿਸਰੈ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਕੀ
 ਤਿਲੁ ਵਡਿਆਈ ॥ ਆਖਿ ਥਕੇ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥ ਜੇ ਸਭਿ ਮਿਲਿ ਕੈ ਆਖਣ ਪਾਹਿ ॥ ਵਡਾ ਨ ਹੋਵੈ ਘਾਟਿ ਨ
 ਜਾਇ ॥੨॥ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ ॥ ਦੇਂਦਾ ਰਹੈ ਨ ਚੂਕੈ ਭੋਗੁ ॥ ਗੁਣ ਏਹੋ ਹੋਰੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਨਾ ਕੋ ਹੋਆ
 ਨਾ ਕੋ ਹੋਇ ॥੩॥ ਜੇਵਡੁ ਆਪਿ ਤੇਵਡ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ॥ ਜਿਨਿ ਦਿਨੁ ਕਰਿ ਕੈ ਕੀਤੀ ਰਾਤਿ ॥ ਖਸਮੁ ਵਿਸਾਰਹਿ ਤੇ
 ਕਮਜਾਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਬਾੜ੍ਹੁ ਸਨਾਤਿ ॥੪॥੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੇ ਦਰਿ ਮਾਂਗਤੁ ਕੂਕ ਕਰੇ ਮਹਲੀ ਖਸਮੁ
 ਸੁਣੇ ॥ ਭਾਵੈ ਧੀਰਕ ਭਾਵੈ ਧਕੈ ਏਕ ਵਡਾਈ ਦੇਇ ॥੧॥ ਜਾਣਹੁ ਜੋਤਿ ਨ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤੀ ਆਗੈ ਜਾਤਿ ਨ ਹੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਆਪਿ ਕਰੇਇ ॥ ਆਪਿ ਤਲਾਸੇ ਚਿਤਿ ਧਰੇਇ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰੁਟੁ ਕਰਣਹਾਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਕਿਆ
 ਮੁਹਤਾਜੀ ਕਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥੨॥ ਆਪਿ ਤਪਾਏ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥ ਆਪੇ ਦੁਰਮਤਿ ਮਨਹਿ ਕਰੇਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਵਸੈ
 ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਦੁਖੁ ਅਨੇਰਾ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥੩॥ ਸਾਚੁ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਕਰੇਇ ॥ ਅਵਰੀ ਕਤ ਸਾਚੁ ਨ ਦੇਇ ॥ ਜੇ
 ਕਿਸੈ ਦੇਇ ਕਖਾਣੈ ਨਾਨਕੁ ਆਗੈ ਪ੍ਰਭੁ ਨ ਲੇਇ ॥੪॥੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਤਾਲ ਮਦੀਰੇ ਘਟ ਕੇ ਘਾਟ ॥ ਦੋਲਕ
 ਢੁਨੀਆ ਵਾਜਹਿ ਵਾਜ ॥ ਨਾਰਦੁ ਨਾਚੈ ਕਲਿ ਕਾ ਭਾਤ ॥ ਜਤੀ ਸਤੀ ਕਹ ਰਾਖਹਿ ਪਾਤ ॥੧॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ
 ਕੁਰਬਾਣੁ ॥ ਅੰਧੀ ਢੁਨੀਆ ਸਾਹਿਬੁ ਜਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰੂ ਪਾਸਹੁ ਫਿਰਿ ਚੇਲਾ ਖਾਇ ॥ ਤਾਮਿ ਪਰੀਤਿ ਵਸੈ ਘਰਿ

ਆਇ ॥ ਜੇ ਸਤ ਵਹਿਆ ਜੀਵਣ ਖਾਣੁ ॥ ਖਸਮ ਪਛਾਣੈ ਸੋ ਦਿਨੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥੨॥ ਦਰਸਨਿ ਦੇਖਿਐ ਦਿੱਗਿਆ
 ਨ ਹੋਇ ॥ ਲਏ ਦਿਤੇ ਵਿਣੁ ਰਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਰਾਜਾ ਨਿਆਉ ਕਰੇ ਹਥਿ ਹੋਇ ॥ ਕਹੈ ਖੁਦਾਇ ਨ ਮਾਨੈ ਕੋਇ ॥੩॥
 ਮਾਣਸ ਮੂਰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ॥ ਕਰਣੀ ਕੁਤਾ ਦਰਿ ਫੁਰਮਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਜਾਣੈ ਮਿਹਮਾਨੁ ॥ ਤਾ ਕਿਛੁ ਦਰਗਹ
 ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ॥੪॥੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੇਤਾ ਸਬਦੁ ਸੁਰਤਿ ਧੁਨਿ ਤੇਤੀ ਜੇਤਾ ਰੂਪੁ ਕਾਇਆ ਤੇਰੀ ॥ ਤੁੰ ਆਪੇ
 ਰਸਨਾ ਆਪੇ ਬਸਨਾ ਅਕਰੁ ਨ ਟ੍ਰੂਜਾ ਕਹਤ ਮਾਈ ॥੧॥ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਏਕੋ ਹੈ ॥ ਏਕੋ ਹੈ ਭਾਈ ਏਕੋ ਹੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਆਪੇ ਮਾਰੇ ਆਪੇ ਛੋਡੈ ਆਪੇ ਲੇਵੈ ਦੇਇ ॥ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਆਪੇ ਵਿਗਸੈ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥ ਜੋ ਕਿਛੁ
 ਕਰਣਾ ਸੋ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ਅਕਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥ ਜੈਸਾ ਕਰਤੈ ਤੈਸੋ ਕਹੀਐ ਸਭ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੩॥ ਕਲਿ
 ਕਲਵਾਲੀ ਮਾਇਆ ਮਦੁ ਮੀਠਾ ਮਨੁ ਮਤਵਾਲਾ ਪੀਵਤੁ ਰਹੈ ॥ ਆਪੇ ਰੂਪ ਕਰੇ ਬਹੁ ਭਾਁਤੀ ਨਾਨਕੁ ਬਪੁੜਾ ਏਵ
 ਕਹੈ ॥੪॥੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਵਾਜਾ ਮਤਿ ਪਖਾਵਜੁ ਭਾਉ ॥ ਹੋਇ ਅਨਨਦੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਚਾਉ ॥ ਏਹਾ ਭਗਤਿ
 ਏਹੋ ਤਪ ਤਾਉ ॥ ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਨਾਚਹੁ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪਾਉ ॥੧॥ ਪੂਰੇ ਤਾਲ ਜਾਣੈ ਸਾਲਾਹ ॥ ਹੋਰੁ ਨਚਣਾ ਖੁਸੀਆ
 ਮਨ ਮਾਹ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਵਜਹਿ ਟੁਇ ਤਾਲ ॥ ਪੈਰੀ ਵਾਜਾ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥ ਰਾਗੁ ਨਾਦੁ ਨਹੀ ਟ੍ਰੂਜਾ
 ਭਾਉ ॥ ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਨਾਚਹੁ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪਾਉ ॥੨॥ ਭਤ ਫੇਰੀ ਹੋਵੈ ਮਨ ਚੀਤਿ ॥ ਬਹਦਿਆ ਤਠਦਿਆ ਨੀਤਾ
 ਨੀਤਿ ॥ ਲੇਟਣਿ ਲੇਟਿ ਜਾਣੈ ਤਨੁ ਸੁਆਹੁ ॥ ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਨਾਚਹੁ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪਾਉ ॥੩॥ ਸਿਖ ਸਭਾ ਦੀਖਿਆ ਕਾ
 ਭਾਉ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਣਣਾ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਆਖਣੁ ਵੇਰਾ ਵੇਰ ॥ ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਨਾਚਹੁ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪੈਰ ॥੪॥੬
 ॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਪਤਣੁ ਤਪਾਇ ਧਰੀ ਸਭ ਧਰਤੀ ਜਲ ਅਗਨੀ ਕਾ ਬੰਧੁ ਕੀਆ ॥ ਅੰਧੁਲੈ ਦਹਸਿਰਿ ਮੂੰਡੁ
 ਕਟਾਇਆ ਰਾਵਣੁ ਮਾਰਿ ਕਿਆ ਵਡਾ ਭਿਆ ॥੧॥ ਕਿਆ ਤਪਮਾ ਤੇਰੀ ਆਖੀ ਜਾਇ ॥ ਤੁੰ ਸਰਬੇ ਪ੍ਰਾਂ ਰਹਿਆ
 ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੀਅ ਤਪਾਇ ਜੁਗਤਿ ਹਥਿ ਕੀਨੀ ਕਾਲੀ ਨਥਿ ਕਿਆ ਵਡਾ ਭਿਆ ॥ ਕਿਸੁ ਤੁੰ
 ਪੁਰਖੁ ਜੋਰੁ ਕਤਣ ਕਹੀਐ ਸਰਖ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥੨॥ ਨਾਲਿ ਕੁਟੰਬੁ ਸਾਥਿ ਕਰਦਾਤਾ ਬ੍ਰਹਮਾ ਭਾਲਣ
 ਸੂਸਟਿ ਗਿਆ ॥ ਆਗੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ਤਾ ਕਾ ਕਂਸੁ ਛੇਦਿ ਕਿਆ ਵਡਾ ਭਿਆ ॥੩॥ ਰਤਨ ਤਪਾਇ

ਧਰੇ ਖੀਝ ਮਥਿਆ ਹੋਰਿ ਭਖਲਾਏ ਜਿ ਅਸੀ ਕੀਆ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਛਪੈ ਕਿਤ ਛਪਿਆ ਏਕੀ ਏਕੀ ਵੰਡਿ ਦੀਆ
 ॥੪॥੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਰਮ ਕਰਤੂਤਿ ਬੇਲਿ ਬਿਸਥਾਰੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਫਲੁ ਹ੍ਰਾਅ ॥ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖ
 ਅਨਾਹਦੁ ਵਾਜੈ ਸਬਦੁ ਨਿਰੰਜਨਿ ਕੀਆ ॥੧॥ ਕਰੇ ਵਖਿਆਣੁ ਜਾਣੈ ਜੇ ਕੋਈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ
 ॥ ਜਿਨੁ ਪੀਆ ਸੇ ਮਸਤ ਭਏ ਹੈ ਤ੍ਰਟੇ ਬੰਧਨ ਫਾਹੇ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਭੀਤਰਿ ਤਾ ਛੋਡੇ ਮਾਇਆ ਕੇ ਲਾਹੇ ॥੨॥
 ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਰੂਪੁ ਤੇਰਾ ਦੇਖਿਆ ਸਗਲ ਭਵਨ ਤੇਰੀ ਮਾਇਆ ॥ ਰਾਰੈ ਰੂਪਿ ਨਿਰਾਲਮੁ ਬੈਠਾ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਵਿਚਿ
 ਛਾਇਆ ॥੩॥ ਬੀਣਾ ਸਬਦੁ ਵਜਾਵੈ ਜੋਗੀ ਦੁਰਸਨਿ ਰੂਪਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਸਬਦਿ ਅਨਾਹਦਿ ਸੋ ਸਹੁ ਰਤਾ ਨਾਨਕੁ
 ਕਹੈ ਵਿਚਾਰਾ ॥੪॥੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮੈ ਗੁਣ ਗਲਾ ਕੇ ਸਿਰਿ ਭਾਰ ॥ ਗਲੀ ਗਲਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰ ॥
 ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਹਸਣਾ ਬਾਦਿ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਰਿਦੈ ਨ ਆਵਹਿ ਧਾਦਿ ॥੧॥ ਤਤ ਪਰਵਾਹ ਕੇਹੀ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥ ਜਨਮਿ
 ਜਨਮਿ ਕਿਛੁ ਲੀਜੀ ਲੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਮਤਾਗਲੁ ਮਤਾ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਬੋਲੀਐ ਸਭੁ ਖਤੋ ਖਤਾ ॥
 ਕਿਆ ਸੁਹੁ ਲੈ ਕੀਚੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਪਾਪੁ ਪੁਨ੍ਨੁ ਢੁਇ ਸਾਖੀ ਪਾਸਿ ॥੨॥ ਜੈਸਾ ਤ੍ਰਤੁ ਕਰਹਿ ਤੈਸਾ ਕੋ ਹੋਇ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ
 ਦ੍ਰੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਜੇਹੀ ਤ੍ਰਤੁ ਮਤਿ ਦੇਹਿ ਤੇਹੀ ਕੋ ਪਾਵੈ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵੈ ॥੩॥ ਰਾਗ ਰਤਨ
 ਪਰੀਆ ਪਰਵਾਰ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਉਪਜੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕਾ ਇਹੁ ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥ ਜੇ ਕੋ ਬੂੜੈ ਏਹੁ
 ਬੀਚਾਰੁ ॥੪॥੯॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ਤਾ ਮਿਲਿ ਸਖੀਆ ਕਾਜੁ ਰਚਾਇਆ
 ॥ ਖੇਲੁ ਦੇਖਿ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਸਹੁ ਕੀਆਹਣ ਆਇਆ ॥੧॥ ਗਾਵਹੁ ਗਾਵਹੁ ਕਾਮਣੀ ਬਿਕੇ ਕੀਚਾਰੁ ॥
 ਹਮਰੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਭਤਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰੁ ਢੁਆਰੈ ਹਮਰਾ ਕੀਆਹੁ ਜਿ ਹੋਆ ਜੌਂ ਸਹੁ
 ਮਿਲਿਆ ਤਾਂ ਜਾਨਿਆ ॥ ਤਿਹੁ ਲੋਕਾ ਮਹਿ ਸਬਦੁ ਰਵਿਆ ਹੈ ਆਪੁ ਗਿਆ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੨॥ ਆਪਣਾ ਕਾਰਜੁ
 ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ਹੋਰਨਿ ਕਾਰਜੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਜਿਤੁ ਕਾਰਜਿ ਸਤੁ ਸਤੋਖੁ ਦਿਆ ਧਰਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜੈ ਕੋਈ ॥੩॥
 ਭਨਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਭਨਾ ਕਾ ਪਿਲੁ ਏਕੋ ਸੋਝਿ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਹੋਇ ॥੪॥੧੦॥ ਆਸਾ
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗ੍ਰਹੁ ਬਨੁ ਸਮਸਰਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਗਤੁ ਭੰਡੀ ਕੀਰਤਿ ਠਾਇ ॥ ਸਚ ਪਤੜੀ ਸਾਚਤ

ਸੁਖਿ ਨਾਂਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਪਾਏ ਨਿਜ ਥਾਉ ॥੧॥ ਮਨ ਚੂਰੈ ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਜਾਣੁ ॥ ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਪੂਰਨ ਭਗਵਾਨੁ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਧਿਕ ਤਿਆਸ ਭੇਖ ਬਹੁ ਕਰੈ ॥ ਦੁਖੁ ਬਿਖਿਆ ਸੁਖੁ ਤਨਿ ਪਰਹਰੈ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅੰਤਰਿ ਧਨੁ
 ਹਿੱਹੈ ॥ ਦੁਖਿਧਾ ਛੋਡਿ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਰੈ ॥੨॥ ਸਿਫਤਿ ਸਲਾਹਣੁ ਸਹਜ ਅਨਨਦ ॥ ਸਖਾ ਸੈਨੁ ਪ੍ਰੇਮੁ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਆਪੇ
 ਕਰੇ ਆਪੇ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹਰਿ ਪਹਿ ਆਗੈ ਜਿੰਦੁ ॥੩॥ ਝੂਠ ਵਿਕਾਰ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਦੇਹ ॥ ਭੇਖ ਵਰਨ ਦੀਸਹਿ
 ਸਭਿ ਖੇਹ ॥ ਜੋ ਉਪਜੈ ਸੋ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਅਸਥਿਰੁ ਨਾਮੁ ਰਜਾਇ ॥੪॥੧੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਏਕੋ
 ਸਰਵਰੁ ਕਮਲ ਅਨੂਪ ॥ ਸਦਾ ਬਿਗਾਸੈ ਪਰਮਲ ਰੂਪ ॥ ਊਜਲ ਮੌਤੀ ਚੂਗਹਿ ਛਾਸ ॥ ਸਰਬ ਕਲਾ ਜਗਟੀਸੈ
 ਅੰਸ ॥੧॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ॥ ਬਿਨੁ ਜਲ ਸਰਵਰਿ ਕਮਲੁ ਨ ਦੀਸੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਰਲਾ ਬ੍ਰਾਂਜੈ ਪਾਵੈ
 ਭੇਦੁ ॥ ਸਾਖਾ ਤੀਨਿ ਕਹੈ ਨਿਤ ਬੇਦੁ ॥ ਨਾਦ ਬਿੰਦ ਕੀ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇ ॥੨॥
 ਮੁਕਤੋ ਰਾਤਤ ਰੰਗਿ ਰਖਾਂਤਤ ॥ ਰਾਜਨ ਰਾਜਿ ਸਦਾ ਬਿਗਸਾਂਤਤ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਾਂ ਰਾਖਹਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਬ੍ਰਾਂਜਤ
 ਪਾਹਨ ਤਾਰਹਿ ਤਾਰਿ ॥੩॥ ਤ੍ਰਭਵਣ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਤ੍ਰਭਵਣ ਮਹਿ ਜਾਣਿਆ ॥ ਤਲਟ ਰਿਵੈ ਘਰੁ ਘਰ ਮਹਿ
 ਆਣਿਆ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗੈ ਪਾਇ ॥੪॥੧੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧
 ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚੀ ਹੁਜਤਿ ਦ੍ਰਾਰਿ ॥ ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਲਾਗੈ ਧੂਰਿ ॥ ਲਾਗੀ ਮੈਲੁ ਮਿਟੈ ਸਚ ਨਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ
 ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਹੈ ਹਜੂਰਿ ਹਾਜਰੁ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਾਚੁ ਕਰਤੇ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕ੍ਰਿਡੁ
 ਕਮਾਵੈ ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥ ਕਹਣਿ ਕਥਨਿ ਵਾਰਾ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥ ਕਿਆ ਦੇਖਾ ਸ੍ਰਵਾ ਬ੍ਰਾਂਜਾ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਨਿ
 ਤ੍ਰਾਪਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥ ਜੋ ਜਨਮੇ ਸੇ ਰੋਗਿ ਵਿਆਪੇ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਦ੍ਰਾਖਿ ਸੰਤਾਪੇ ॥ ਸੇ ਜਨ ਬਾਚੇ ਜੋ
 ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਚਾਖੇ ॥੩॥ ਚਲਤਤ ਮਨੁ ਰਾਖੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਚਾਖੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸੇਵਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਬਦੁ ਭਾਖੈ ॥ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਮੁਕਤਿ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥੪॥੧੩॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੋ ਤਿਨਿ ਕੀਆ ਸੋ ਸਚੁ ਥੀਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ
 ਨਾਹੀ ਮਨਿ ਖੰਗੁ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੇ ਸੰਗੁ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਰਾਖਹੁ ਅਪਨੀ ਸਖਣਾਈ ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸਚੁ
 ਸਾਚਾ ਨਾਤ ॥ ਤਾ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ਸੇ ਜਨ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੁ
 ॥੨॥ ਹਰਿ ਕਰੁ ਜਿਨਿ ਪਾਇਆ ਧਨ ਨਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਾਤੀ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਸੰਗਤਿ ਕੁਲ
 ਤਾਰੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥੩॥ ਹਮਰੀ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਸਚੁ ਨਾਤ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸੰਜਮੁ ਸਤ ਭਾਤ ॥
 ਨਾਨਕ ਬਖਸੇ ਪ੍ਰਭ ਨ ਹੋਇ ॥ ਟ੍ਰੂਜਾ ਮੇਟੇ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥੪॥੧੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਇਕਿ ਆਵਹਿ ਇਕਿ
 ਜਾਵਹਿ ਆਈ ॥ ਇਕਿ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ਰਹਹਿ ਸਮਾਈ ॥ ਇਕਿ ਧਰਨਿ ਗਗਨ ਮਹਿ ਠਤਰ ਨ ਪਾਵਹਿ ॥ ਸੇ
 ਕਰਮਹੀਣ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਧਿਆਵਹਿ ॥੧॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਪਾਈ ॥ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਖੁ ਕਤ ਅਤਿ
 ਭਤਜਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਆਪ ਲਾਏ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲਿ ॥ ਤਿਨ ਕਤ
 ਕਾਲੁ ਨ ਸਾਕੈ ਪੇਲਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲ ਰਹਹਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਅੰਭ ਊਪਰਿ ਕਮਲ ਨਿਰਾਰੇ ॥੨॥
 ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਕਹੁ ਕਿਸ ਨੌ ਕਹੀਐ ॥ ਦੀਸੈ ਬ੍ਰਹਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਲਹੀਐ ॥ ਅਕਥੁ ਕਥਤ ਗੁਰਮਤਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥
 ਮਿਲਿ ਗੁਰ ਸੰਗਤਿ ਪਾਵਤ ਪਾਰੁ ॥੩॥ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਬਹੁ ਭੇਦ ॥ ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਰੇਦ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲੁ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਕਡੇ ਧੁਰਿ ਭਾਗੈ ॥੪॥੧੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਪਾਇ ਲਗਤ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਨਿਹਾਰਿਆ ॥ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਰਵਿਆ ਹਿਰਦੈ
 ਦੇਖਿ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥੧॥ ਬੋਲਹੁ ਰਾਮੁ ਕਰੇ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਰਤਨੁ ਹਰਿ ਲਾਭੈ ਮਿਟੈ ਅਗਿਆਨੁ ਹੋਇ
 ਤਜੀਆਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖਨੀ ਖੈ ਬੰਧਨ ਨਹੀ ਤੂਟਹਿ ਵਿਚਿ ਹਤਮੈ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ
 ਤ ਹਤਮੈ ਤੂਟੈ ਤਾ ਕੋ ਲੇਖੈ ਪਾਈ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਭਗਤਿ
 ਕਛਲੁ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੩॥ ਮਨ ਸਿਉ ਜੂਝਿ ਮਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਏ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ
 ਸਮਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਜਗਜੀਵਨੁ ਸਹਜ ਭਾਇ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥੪॥੧੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਿਸ
 ਕਤ ਕਹਹਿ ਸੁਣਾਵਹਿ ਕਿਸ ਕਤ ਕਿਸੁ ਸਮਝਾਵਹਿ ਸਮਝਿ ਰਹੇ ॥ ਕਿਸੈ ਪੜਾਵਹਿ ਪਡਿ ਗੁਣ ਬ੍ਰੂਜੇ ਸਤਿਗੁਰ

ਸਬਦਿ ਸਂਤੋਖਿ ਰਹੇ ॥੧॥ ਐਸਾ ਗੁਰਮਤਿ ਰਮਤੁ ਸਰੀਰਾ ॥ ਹਰਿ ਭਜੁ ਮੇਰੇ ਮਨ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਅਨਤ ਤਰੰਗ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸ੍ਰੂਚੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸੰਗਾ ॥ ਮਿਥਿਆ ਜਨਮੁ ਸਾਕਤ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਰਾਮ
 ਭਗਤਿ ਜਨੁ ਰਹੈ ਨਿਰਾਰਾ ॥੨॥ ਸ੍ਰੂਚੀ ਕਾਇਆ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥ ਆਤਮੁ ਚੀਨਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇਆ
 ॥ ਆਦਿ ਅਪਾਰੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਹੀਰਾ ॥ ਲਾਲਿ ਰਤਾ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੩॥ ਕਥਨੀ ਕਹਹਿ ਕਹਹਿ ਸੇ ਮੂਏ ॥
 ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਟੂਰਿ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਤੂਂ ਹੈ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਦੇਖਿਆ ਮਾਇਆ ਛਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ
 ॥੪॥੧੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਤਿਨੁਕਾ ॥ ਕੋਈ ਭੀਖਕੁ ਭੀਖਿਆ ਖਾਇ ॥ ਕੋਈ ਰਾਜਾ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
 ਕਿਸ ਹੀ ਮਾਨੁ ਕਿਸੈ ਅਪਮਾਨੁ ॥ ਢਾਹਿ ਉਸਾਰੇ ਧਰੇ ਧਿਆਨੁ ॥ ਤੁੜਾ ਤੇ ਵਡਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਕਿਸੁ ਕੇਖਾਲੀ ਚੰਗਾ
 ਹੋਇ ॥੧॥ ਮੈ ਤਾਂ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥ ਤੂੰ ਦਾਤਾ ਕਰਣਹਾਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵਾਟ ਨ ਪਾਵਤ ਕੀਗਾ
 ਜਾਤ ॥ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣ ਨਾਹੀ ਥਾਤ ॥ ਮਨ ਕਾ ਅੰਧੁਲਾ ਮਾਇਆ ਕਾ ਬੰਧੁ ॥ ਖੀਨ ਖਰਾਬੁ ਹੋਵੈ ਨਿਤ ਕੰਧੁ ॥
 ਖਾਣ ਜੀਵਣ ਕੀ ਬਹੁਤੀ ਆਸ ॥ ਲੇਖੈ ਤੈਰੈ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸ ॥੩॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਅੰਧੁਲੇ ਦੀਪਕੁ ਦੇਇ ॥ ਭਉਜਲ
 ਝੂਕਤ ਚਿੰਤ ਕਰੇਇ ॥ ਕਹਹਿ ਸੁਣਹਿ ਜੋ ਮਾਨਹਿ ਨਾਤ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੈ ਤਾ ਕੈ ਜਾਤ ॥ ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਹੈ
 ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੈਰੈ ਪਾਸਿ ॥੪॥ ਜਾਂ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਜਪੀ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ॥ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣ ਹੋਵੈ ਥਾਤ ॥ ਜਾਂ
 ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਦੁਰਮਤਿ ਜਾਇ ॥ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਆਇ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ
 ਨਾਨਕੁ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ॥੫॥੧੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਪੰਚਪਟੇ ॥ ਦੁਧ ਬਿਨੁ ਧੈਨੁ ਪੱਖ ਬਿਨੁ ਪੱਖੀ ਜਲ ਬਿਨੁ
 ਤਤਮੁਜ ਕਾਮਿ ਨਾਹੀ ॥ ਕਿਆ ਸੁਲਤਾਨੁ ਸਲਾਮ ਵਿਹੂਣਾ ਅੰਧੀ ਕੋਠੀ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਨਾਹੀ ॥੬॥ ਕੀ ਵਿਸਰਹਿ ਦੁਖੁ
 ਬਹੁਤਾ ਲਾਗੈ ॥ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਤੂੰ ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ॥੭॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਖੀ ਅੰਧੁ ਜੀਭ ਰਸੁ ਨਾਹੀ ਕਨੀ ਪਵਣੁ ਨ ਵਾਜੈ
 ॥ ਚਰਣੀ ਚਲੈ ਪਯੂਤਾ ਆਗੈ ਵਿਣੁ ਸੇਵਾ ਫਲ ਲਾਗੇ ॥੮॥ ਅਖਰ ਬਿਰਖ ਬਾਗ ਭੁਇ ਚੋਖੀ ਸਿੰਚਿਤ ਭਾਤ
 ਕਰੇਹੀ ॥ ਸਭਨਾ ਫਲੁ ਲਾਗੈ ਨਾਮੁ ਏਕੋ ਬਿਨੁ ਕਰਮਾ ਕੈਸੇ ਲੇਹੀ ॥੯॥ ਜੇਤੇ ਜੀਅ ਤੇਤੇ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਵਿਣੁ ਸੇਵਾ
 ਫਲੁ ਕਿਸੈ ਨਾਹੀ ॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਭਾਣਾ ਤੇਰਾ ਹੋਵੈ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਜੀਤ ਰਹੈ ਨਾਹੀ ॥੧੦॥ ਮਤਿ ਵਿਚਿ ਮਰਣੁ ਜੀਵਣੁ

होरु कैसा जा जीवा ताँ जुगति नाही ॥ कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥੫॥੧੬॥
 आसा महला ੧ ॥ काइआ ब्रहमा मनु है धोती ॥ गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥ हरि नामा जसु
 जाचउ नाउ ॥ गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥੧॥ पाँडे औसा ब्रहम बीचारु ॥ नामे सुचि नामो पड़उ
 नामे चजु आचारु ॥੧॥ रहाउ ॥ बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥ धोती टिका नामु समालि ॥ औथै
 ओथै निबही नालि ॥ विणु नावै होरि करम न भालि ॥੨॥ पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥ एको वेखहु
 अवरु न भालि ॥ चीनै ततु गगन दस दुआर ॥ हरि मुखि पाठ पड़े बीचार ॥੩॥ भोजनु भाउ भरमु
 भउ भागै ॥ पाहरूअरा छबि चोरु न लागै ॥ तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु ॥ बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु
 ॥੪॥ आचारी नही जीतिआ जाइ ॥ पाठ पड़े नही कीमति पाइ ॥ असट दसी चहु भेदु न पाइआ ॥
 नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥੫॥੨੦॥ आसा महला ੧ ॥ सेवकु दासु भगतु जनु सोई ॥ ठाकुर
 का दासु गुरमुखि होई ॥ जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥੧॥
 साचु नामु गुर सबदि वीचारि ॥ गुरमुखि साचे साचै दरबारि ॥੧॥ रहाउ ॥ सचा अरजु सची अरदासि
 ॥ महली खसमु सुणे साबासि ॥ सचै तखति बुलावै सोई ॥ दे वडिआई करे सु होइ ॥੨॥ तेरा ताणु
 तूहै दीबाणु ॥ गुर का सबदु सचु नीसाणु ॥ मने हुकमु सु परगटु जाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ
 ॥੩॥ पंडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥ अंतरि वसतु न जाणहि भेदु ॥ गुर बिनु सोझी बूझा न होइ ॥ साचा
 रवि रहिआ प्रभु सोई ॥੪॥ किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥ तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ नानक
 एको दरु दीबाणु ॥ गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥੫॥੨੧॥ आसा महला ੧ ॥ काची गागरि देह दुहेली
 उपजै बिनसै दुखु पाई ॥ इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऔ बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥੧॥ तुझ
 बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ सरबी रंगी रूपी तूहै तिसु बखसे जिसु
 नदरि करे ॥੧॥ रहाउ ॥ सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥ सखी साजनी के

ਹਉ ਚਰਨ ਸਰੇਵਤ ਹਰਿ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਦਰਿ ਧਰੀ ॥੨॥ ਆਪੁ ਬੀਚਾਰਿ ਮਾਰਿ ਮਨੁ ਦੇਖਿਆ ਤੁਮ ਸਾ
 ਮੀਤੁ ਨ ਅਕਰੁ ਕੋਈ ॥ ਜਿਤ ਤ੍ਰਾਂ ਰਾਖਹਿ ਤਿਵ ਹੀ ਰਹਣਾ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਦੇਵਹਿ ਕਰਹਿ ਸੋਈ ॥੩॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ
 ਦੋਊ ਬਿਨਾਸਤ ਤੂਹੁ ਗੁਣ ਆਸ ਨਿਰਾਸ ਭੰਈ ॥ ਤੁਰੀਆਵਸਥਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਸੰਤ ਸਭਾ ਕੀ ਓਟ ਲਹੀ
 ॥੪॥ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਸਗਲੇ ਸਭਿ ਜਪ ਤਪ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ
 ਰਾਤਾ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਏ ਸਹਜ ਸੇਵਾ ॥੫॥੨੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਪੰਚਪੁਦੇ ॥ ਮੋਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਮੋਹੁ ਸਭ ਕਾਰ ॥ ਮੋਹੁ
 ਤੁਮ ਤਜਹੁ ਸਗਲ ਵੇਕਾਰ ॥੧॥ ਮੋਹੁ ਅਰੁ ਭਰਮੁ ਤਜਹੁ ਤੁਮੁ ਕੀਰ ॥ ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੇ ਰਵੈ ਸਰੀਰ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਜਾ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥ ਰੋਵੈ ਪ੍ਰਾਨੁ ਨ ਕਲਪੈ ਮਾਈ ॥੨॥ ਏਤੁ ਮੋਹਿ ਝੂਬਾ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਕੋਈ ਤਤਰੈ ਪਾਰਿ ॥੩॥ ਏਤੁ ਮੋਹਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਹਿ ॥ ਮੋਹੇ ਲਾਗਾ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਹਿ ॥੪॥ ਗੁਰ ਦੀਖਿਆ ਲੇ ਜਪੁ
 ਤਪੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਨਾ ਮੋਹੁ ਤੂਟੈ ਨਾ ਥਾਇ ਪਾਹਿ ॥੫॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਏਹੁ ਮੋਹੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਹੈ
 ਸਮਾਇ ॥੬॥੨੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਪਿ ਕਰੇ ਸਚੁ ਅਲਖ ਅਪਾਰੁ ॥ ਹਉ ਪਾਪੀ ਤ੍ਰਾਂ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੧॥
 ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ॥ ਮਨਹਠਿ ਕੀਚੈ ਅੰਤਿ ਵਿਗੋਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕੀ ਮਤਿ ਕੂਡਿ ਵਿਆਪੀ
 ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸਿਮਰਣ ਪਾਪਿ ਸੰਤਾਪੀ ॥੨॥ ਦੁਰਮਤਿ ਤਿਆਗਿ ਲਾਹਾ ਕਿਛੁ ਲੇਵਹੁ ॥ ਜੋ ਉਪਜੈ ਸੋ ਅਲਖ
 ਅਭੇਵਹੁ ॥੩॥ ਐਸਾ ਹਮਰਾ ਸਖਾ ਸਹਾਈ ॥ ਗੁਰ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਭਗਤਿ ਵ੃ਡਾਈ ॥੪॥ ਸਗਲੀਂ ਸਤਦੀਂ
 ਤੋਟਾ ਆਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੫॥੨੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਚਤੁਪੁਦੇ ॥ ਵਿਦਿਆ ਕੀਚਾਰੀ ਤਾਂ
 ਪਰਤਪਕਾਰੀ ॥ ਜਾਂ ਪੰਚ ਰਾਸੀ ਤਾਂ ਤੀਰਥ ਵਾਸੀ ॥੧॥ ਘੁੰਘਰੁ ਵਾਜੈ ਜੇ ਮਨੁ ਲਾਗੈ ॥ ਤਤ ਜਮੁ ਕਹਾ ਕਰੇ ਮੋ
 ਸਿਤ ਆਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਸ ਨਿਰਾਸੀ ਤਤ ਸੰਨਿਆਸੀ ॥ ਜਾਂ ਜਤੁ ਜੋਗੀ ਤਾਂ ਕਾਇਆ ਭੋਗੀ ॥੨॥ ਦਿਇਆ
 ਦਿਗੰਬਰੁ ਦੇਹ ਕੀਚਾਰੀ ॥ ਆਪਿ ਮਰੈ ਅਕਰਾ ਨਹ ਮਾਰੀ ॥੩॥ ਏਕੁ ਤ੍ਰਾਂ ਹੋਰਿ ਵੇਸ ਬਹੁਤੇਰੇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਾਣੈ ਚੋਜ
 ਨ ਤੇਰੇ ॥੪॥੨੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਏਕ ਨ ਭਰੀਆ ਗੁਣ ਕਰਿ ਧੋਵਾ ॥ ਮੇਰਾ ਸਹੁ ਜਾਗੈ ਹਉ ਨਿਸਿ
 ਭਰਿ ਸੋਵਾ ॥੧॥ ਝਿਉ ਕਿਉ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ਹੋਵਾ ॥ ਸਹੁ ਜਾਗੈ ਹਉ ਨਿਸ ਭਰਿ ਸੋਵਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥

ਆਸ ਪਿਆਸੀ ਸੇਜੈ ਆਵਾ ॥ ਆਗੈ ਸਹ ਭਾਵਾ ਕਿ ਨ ਭਾਵਾ ॥੨॥ ਕਿਆ ਜਾਨਾ ਕਿਆ ਹੋਇਗਾ ਰੀ ਮਾਈ ॥ ਹਰਿ
 ਦਰਸਨ ਬਿਨੁ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨ ਚਾਖਿਆ ਮੇਰੀ ਤਿਸ ਨ ਬੁਝਾਨੀ ॥ ਗਿੜਿਆ ਸੁ ਜੋਬਨੁ
 ਧਨ ਪਛੁਤਾਨੀ ॥੩॥ ਅਜੈ ਸੁ ਜਾਗਤ ਆਸ ਪਿਆਸੀ ॥ ਭਿੜਲੇ ਉਦਾਸੀ ਰਹਤ ਨਿਰਾਸੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਹਉਮੈ ਖੋਇ ਕਰੇ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਤਤ ਕਾਮਣਿ ਸੇਜੈ ਰਵੈ ਭਤਾਰੁ ॥੪॥ ਤਤ ਨਾਨਕ ਕਂਤੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥ ਛੋਡਿ
 ਕਵਾਈ ਅਪਣੇ ਖਸਮ ਸਮਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥੨੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਪੇਵਕਡੈ ਧਨ ਖਰੀ ਇਆਣੀ ॥
 ਤਿਸੁ ਸਹ ਕੀ ਮੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥੧॥ ਸਹੁ ਮੇਰਾ ਏਕੁ ਟ੍ਰ੍ਹੜਾ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮੇਲਾਵਾ ਹੋਈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਹੁਰਡੈ ਧਨ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਅਪਣਾ ਪਿਰੁ ਜਾਣਿਆ ॥੨॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਐਸੀ ਮਤਿ ਆਵੈ ॥ ਤਾਂ ਕਾਮਣਿ ਕਂਤੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੩॥ ਕਹਤੁ ਨਾਨਕੁ ਭੈ ਭਾਵ ਕਾ ਕਰੇ ਸੀਗਾਰੁ
 ॥ ਸਦ ਹੀ ਸੇਜੈ ਰਵੈ ਭਤਾਰੁ ॥੪॥੨੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨ ਕਿਸ ਕਾ ਪ੍ਰਤੁ ਨ ਕਿਸ ਕੀ ਮਾਈ ॥ ਝੂਠੈ ਮੋਹਿ
 ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਹਤ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ॥ ਜਾਂ ਤ੍ਰ੍ਹੜ ਦੇਹਿ ਜਪੀ ਨਾਤ ਤੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਹੁਤੇ
 ਅਤਗਣ ਕੂਕੈ ਕੋਈ ॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਬਖਿ ਸੋਈ ॥੨॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਦੁਰਮਤਿ ਖੋਈ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਏਕੋ
 ਸੋਈ ॥੩॥ ਕਹਤ ਨਾਨਕ ਐਸੀ ਮਤਿ ਆਵੈ ॥ ਤਾਂ ਕੋ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥੪॥੨੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਦੁਪਦੇ ॥
 ਤਿਤੁ ਸਰਵਰਡੈ ਭਿੜਲੇ ਨਿਵਾਸਾ ਪਾਣੀ ਪਾਵਕੁ ਤਿਨਹਿ ਕੀਆ ॥ ਪੰਕਜੁ ਮੋਹ ਪਗੁ ਨਹੀਂ ਚਾਲੈ ਹਮ ਦੇਖਾ
 ਤਹ ਡੂਬੀਅਲੇ ॥੧॥ ਮਨ ਏਕੁ ਨ ਚੇਤਸਿ ਮੂੜ ਮਨਾ ॥ ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਲਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਨਾ ਹਤ ਜਤੀ ਸਤੀ ਨਹੀਂ ਪਡਿਆ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧਾ ਜਨਮੁ ਭਿੜਿਆ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਤਿਨੁ ਕੀ ਸਰਣਾ ਜਿਨ੍
 ਤ੍ਰ੍ਹੜ ਨਾਹੀ ਕੀਸਰਿਆ ॥੨॥੨੯॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਛਿਅ ਘਰ ਛਿਅ ਗੁਰ ਛਿਅ ਉਪਦੇਸ ॥ ਗੁਰ ਗੁਰੁ ਏਕੋ
 ਕੇਵਲ ਅਨੇਕ ॥੧॥ ਜੈ ਘਰਿ ਕਰਤੇ ਕੀਰਤਿ ਹੋਇ ॥ ਸੋ ਘਰੁ ਰਾਖੁ ਕਵਾਈ ਤੋਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵਿਸੁਏ
 ਚਸਿਆ ਘੜੀਆ ਪਹਰਾ ਥਿਤੀ ਵਾਰੀ ਮਾਹੁ ਭਿੜਿਆ ॥ ਸੂਰਜੁ ਏਕੋ ਰੁਤਿ ਅਨੇਕ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੇ ਕੇਤੇ
 ਕੇਵਲ ॥੨॥੩੦॥

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਆਸਾ ਘਰੁ ੩ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਲਖ ਲਸਕਰ ਲਖ ਵਾਜੇ ਨੇਜੇ ਲਖ ਉਠਿ ਕਰਹਿ ਸਲਾਮੁ
 ॥ ਲਖਾ ਉਪਰਿ ਫੁਰਮਾਇਸਿ ਤੇਰੀ ਲਖ ਉਠਿ ਰਾਖਹਿ ਮਾਨੁ ॥ ਜਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਨਾ ਪਵੈ ਤਾਂ ਸਭਿ ਨਿਰਾਫਲ ਕਾਮ
 ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜਗੁ ਧੰਧਾ ॥ ਜੇ ਬਹੁਤਾ ਸਮਝਾਈਐ ਭੋਲਾ ਭੀ ਸੋ ਅੰਧੋ ਅੰਧਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਲਖ
 ਖਟੀਅਹਿ ਲਖ ਸੰਜੀਅਹਿ ਖਾਜਹਿ ਲਖ ਆਵਹਿ ਲਖ ਜਾਹਿ ॥ ਜਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਨਾ ਪਵੈ ਤਾਂ ਜੀਅ ਕਿਥੈ ਫਿਰਿ ਪਾਹਿ
 ॥੨॥ ਲਖ ਸਾਸਤ ਸਮਝਾਵਣੀ ਲਖ ਪੰਡਿਤ ਪੜਹਿ ਪੁਰਾਣ ॥ ਜਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਨਾ ਪਵੈ ਤਾਂ ਸਭੇ ਕੁਪਰਵਾਣ ॥੩॥
 ਸਚ ਨਾਮਿ ਪਤਿ ਊਪਜੈ ਕਰਮਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਿਰਦੈ ਜੇ ਵਸੈ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਰੁ ॥੪॥੧॥੩੧॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਦੀਵਾ ਮੇਰਾ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਦੁਖੁ ਵਿਚਿ ਪਾਇਆ ਤੇਲੁ ॥ ਤਨਿ ਚਾਨਣਿ ਓਹੁ ਸੋਖਿਆ ਚੂਕਾ ਜਮ
 ਸਿਤ ਮੇਲੁ ॥੧॥ ਲੋਕਾ ਮਤ ਕੋ ਫਕਡਿ ਪਾਇ ॥ ਲਖ ਮਡਿਆ ਕਰਿ ਏਕਠੇ ਏਕ ਰਤੀ ਲੇ ਭਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਪਿੰਡੁ ਪਤਲਿ ਮੇਰੀ ਕੇਸਤ ਕਿਰਿਆ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਅੈਥੈ ਓਥੈ ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਏਹੁ ਮੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥੨॥ ਗੁੰਗ
 ਬਨਾਰਸਿ ਸਿਫਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ਨਾਵੈ ਆਤਮ ਰਾਤ ॥ ਸਚਾ ਨਾਵਣੁ ਤਾਂ ਥੀਐ ਜਾਂ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਾਗੈ ਭਾਤ ॥੩॥ ਇਕ ਲੋਕੀ
 ਹੋਰੁ ਛਮਿਛਰੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਵਟਿ ਪਿੰਡੁ ਖਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪਿੰਡੁ ਬਖਸੀਸ ਕਾ ਕਬਹੂੰ ਨਿਖੂਟਸਿ ਨਾਹਿ ॥੪॥੨॥੩੨॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੪ ਮਹਲਾ ੧

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਦੇਵਤਿਆ ਦਰਸਨ ਕੈ ਤਾਈ ਟ੍ਰੂਖ ਭੂਖ ਤੀਰਥ ਕੀਏ ॥ ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਜੁਗਤਿ ਮਹਿ ਰਹਤੇ
 ਕਰਿ ਕਰਿ ਭਗਵੇ ਭੇਖ ਭਏ ॥੧॥ ਤਤ ਕਾਰਣਿ ਸਾਹਿਬਾ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ॥ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਅਨੇਕਾ ਰੂਪ ਅਨ੍ਨਤਾ ਕਹਣੁ
 ਨ ਜਾਹੀ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਕੇਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਰ ਘਰ ਮਹਲਾ ਹਸਤੀ ਘੋੜੇ ਛੋਡਿ ਵਿਲਾਇਤਿ ਦੇਸ ਗਏ ॥ ਪੀਰ
 ਪੇਕਾੰਬਰ ਸਾਲਿਕ ਸਾਦਿਕ ਛੋਡੀ ਦੁਨੀਆ ਥਾਇ ਪਏ ॥੨॥ ਸਾਦ ਸਹਜ ਸੁਖ ਰਸ ਕਸ ਤਜੀਅਲੇ ਕਾਪੜੇ ਛੋਡੇ
 ਚਮੜੇ ਲੀਏ ॥ ਦੁਖੀਏ ਦਰਦਵੰਦ ਦਰਿ ਤੈਰੈ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਦਰਵੇਸ ਭਏ ॥੩॥ ਖਲੜੀ ਖਪਰੀ ਲਕੜੀ ਚਮੜੀ
 ਸਿਖਾ ਸੂਤੁ ਧੋਤੀ ਕੀਨੀ ॥ ਤੂੰ ਸਾਹਿਬੁ ਹਤ ਸਾਂਗੀ ਤੇਰਾ ਪ੍ਰਣਵੈ ਨਾਨਕੁ ਜਾਤਿ ਕੈਸੀ ॥੪॥੧॥੩੩॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੫ ਮਹਲਾ ੧

੧੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਭੀਤਰਿ ਪੰਚ ਗੁਪਤ ਮਨਿ ਵਾਸੇ ॥ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਹਿ ਜੈਸੇ ਭਵਹਿ ਤਦਾਸੇ ॥੧॥ ਮਨੁ
ਮੇਰਾ ਦਿੱਅਲ ਸੇਤੀ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹੈ ॥ ਲੋਭੀ ਕਪਟੀ ਪਾਪੀ ਪਾਖੰਡੀ ਮਾਝਿਆ ਅਧਿਕ ਲਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਫੂਲ ਮਾਲਾ ਗਲਿ ਪਹਿਰਤਗੀ ਹਾਰੇ ॥ ਮਿਲੈਗਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਤਬ ਕਰਤਗੀ ਸੀਗਾਰੇ ॥੨॥ ਪੰਚ ਸਖੀ ਹਮ ਏਕੁ
ਭਤਾਰੇ ॥ ਪੇਡਿ ਲਗੀ ਹੈ ਜੀਅੜਾ ਚਾਲਣਹਾਰੇ ॥੩॥ ਪੰਚ ਸਖੀ ਮਿਲਿ ਰੁਦਨੁ ਕਰੇਹਾ ॥ ਸਾਹੁ ਪਜੂਤਾ ਪ੍ਰਣਵਤਿ
ਨਾਨਕ ਲੇਖਾ ਦੇਹਾ ॥੪॥੧॥੩੪॥

੧੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੬ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨੁ ਮੌਤੀ ਜੇ ਗਹਣਾ ਹੋਵੈ ਪਤਣੁ ਹੋਵੈ ਸੂਤ ਧਾਰੀ ॥ ਖਿਮਾ ਸੀਗਾਰੁ ਕਾਮਣਿ ਤਨਿ
ਪਹਿਰੈ ਰਾਵੈ ਲਾਲ ਪਿਆਰੀ ॥੧॥ ਲਾਲ ਬਹੁ ਗੁਣ ਕਾਮਣਿ ਮੌਹੀ ॥ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਹੋਹਿ ਨ ਅਵਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਾਰੁ ਕੱਠਿ ਲੇ ਪਹਿਰੈ ਦਾਮੋਦਰੁ ਦੰਤੁ ਲੇਈ ॥ ਕਰ ਕਰਿ ਕਰਤਾ ਕੰਗਨ ਪਹਿਰੈ ਇਨ ਬਿਧਿ ਚਿਤੁ
ਧਰੇਈ ॥੨॥ ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਕਰ ਮੁੰਦਰੀ ਪਹਿਰੈ ਪਰਮੇਸਰੁ ਪਟੁ ਲੇਈ ॥ ਧੀਰਜੁ ਧੜੀ ਬੰਧਾਵੈ ਕਾਮਣਿ ਸੀਰੰਗੁ
ਸੁਰਮਾ ਦੇਈ ॥੩॥ ਮਨ ਮੰਦਰਿ ਜੇ ਟੀਪਕੁ ਜਾਲੇ ਕਾਝਿਆ ਸੇਜ ਕਰੇਈ ॥ ਗਿਆਨ ਰਾਤ ਜਬ ਸੇਜੈ ਆਵੈ ਤ
ਨਾਨਕ ਭੋਗੁ ਕਰੇਈ ॥੪॥੧॥੩੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕੀਤਾ ਹੋਵੈ ਕਰੇ ਕਰਾਝਿਆ ਤਿਸੁ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਭਾਈ
॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੋ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ਕੀਤੇ ਕਿਆ ਚਤੁਰਾਈ ॥੧॥ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਭਲਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ
ਤਾ ਕਤ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ਸਾਚੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਿਰਤੁ ਪਡਿਆ ਪਰਵਾਣਾ ਲਿਖਿਆ ਬਾਹੁਡਿ
ਹੁਕਮੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਜੈਸਾ ਲਿਖਿਆ ਤੈਸਾ ਪਡਿਆ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥੨॥ ਜੇ ਕੋ ਦਰਗਹ ਬਹੁਤਾ ਬੋਲੈ ਨਾਤ
ਪਵੈ ਬਾਜਾਰੀ ॥ ਸਤਰੰਜ ਬਾਜੀ ਪਕੈ ਨਾਹੀ ਕਚੀ ਆਵੈ ਸਾਰੀ ॥੩॥ ਨਾ ਕੋ ਪਡਿਆ ਪੰਡਿਤੁ ਬੀਨਾ ਨਾ ਕੋ ਮੂਰਖੁ
ਮੰਦਾ ॥ ਬੰਦੀ ਅੰਦਰਿ ਸਿਫਤਿ ਕਰਾਏ ਤਾ ਕਤ ਕਹੀਐ ਬੰਦਾ ॥੪॥੨॥੩੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੁਰ ਕਾ
ਸਬਦੁ ਮਨੈ ਮਹਿ ਮੁੰਦ੍ਰਾ ਖਿੰਥਾ ਖਿਮਾ ਹਫਾਵਤ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਭਲਾ ਕਰਿ ਮਾਨਤ ਸਹਜ ਜੋਗ ਨਿਧਿ ਪਾਵਤ

॥੧॥ ਬਾਬਾ ਜੁਗਤਾ ਜੀਤ ਜੁਗਹ ਜੁਗ ਜੋਗੀ ਪਰਮ ਤਂ ਮਹਿ ਜੋਗੰ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਪਾਇਆ ਗਿਆਨ
 ਕਾਇਆ ਰਸ ਭੋਗੰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਵ ਨਗਰੀ ਮਹਿ ਆਸਣਿ ਬੈਸਤ ਕਲਪ ਤਿਆਗੀ ਬਾਟਂ ॥ ਸਿੰਡੀ ਸਬਦੁ
 ਸਦਾ ਧੁਨਿ ਸੋਹੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਪ੍ਰੈ ਨਾਦਂ ॥੨॥ ਪਤੁ ਵੀਚਾਰੁ ਗਿਆਨ ਮਤਿ ਡੰਡਾ ਵਰਤਮਾਨ ਬਿਭੂਤਂ ॥ ਹਰਿ
 ਕੀਰਤਿ ਰਹਰਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੰਥੁ ਅਤੀਤਂ ॥੩॥ ਸਗਲੀ ਜੋਤਿ ਹਮਾਰੀ ਸੰਮਿਆ ਨਾਨਾ ਵਰਨ ਅਨੇਕਂ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ ਭਰਥਰਿ ਜੋਗੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਲਿਵ ਏਕਂ ॥੪॥੩॥੩੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੁਝੁ ਕਰਿ
 ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਕਰਿ ਧਾਵੈ ਕਰਿ ਕਰਣੀ ਕਸੁ ਪਾਈਐ ॥ ਭਾਠੀ ਭਵਨੁ ਪ੍ਰੇਮ ਕਾ ਪੋਚਾ ਇਤੁ ਰਸਿ ਅਮਿਤ
 ਚੁਆਈਐ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਮਨੁ ਮਤਵਾਰੇ ਨਾਮ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਸਹਜ ਰੰਗ ਰਚਿ ਰਹਿਆ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਬਨੀ ਪ੍ਰੇਮ
 ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਸਬਦੁ ਅਨਾਹਟ ਗਹਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੂਰਾ ਸਾਚੁ ਧਿਆਲਾ ਸਹਜੇ ਤਿਸਹਿ ਪੀਆਏ ਜਾ ਕਤ
 ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾ ਵਾਪਾਰੀ ਹੋਵੈ ਕਿਆ ਮਦਿ ਛੂਛੈ ਭਾਤ ਧੇਰੇ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਖੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ
 ਪੀਵਤ ਹੀ ਪਰਵਾਣੁ ਭਿਆ ॥ ਦਰ ਦਰਸਨ ਕਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਹੋਵੈ ਸੁਕਤਿ ਬੈਕੁਠੈ ਕੈ ਕਿਆ ॥੩॥ ਸਿਫਤੀ ਰਤਾ
 ਸਦ ਬੈਰਾਗੀ ਜ੍ਰੈ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ ਭਰਥਰਿ ਜੋਗੀ ਖੀਕਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰੈ ॥੪॥੪॥੩੮॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਖੁਰਾਸਾਨ ਖਸਮਾਨਾ ਕੀਆ ਛਿਦੁਸਤਾਨੁ ਡਰਾਇਆ ॥ ਆਪੈ ਦੋਸੁ ਨ ਦੇਈ ਕਰਤਾ ਜਮੁ
 ਕਰਿ ਮੁਗਲੁ ਚੜਾਇਆ ॥ ਏਤੀ ਮਾਰ ਪੱਈ ਕਰਲਾਣੇ ਤੈ ਕੀ ਦਰਦੁ ਨ ਆਇਆ ॥੧॥ ਕਰਤਾ ਤੂੰ ਸਭਨਾ ਕਾ
 ਸੀਈ ॥ ਜੇ ਸਕਤਾ ਸਕਤੇ ਕਤ ਮਾਰੇ ਤਾ ਮਨਿ ਰੋਸੁ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਕਤਾ ਸੀਹੁ ਮਾਰੇ ਪੈ ਕਗੈ ਖਸਮੈ ਸਾ
 ਪੁਰਸਾਈ ॥ ਰਤਨ ਵਿਗਾਡਿ ਵਿਗੋਏ ਕੁਤੰਤੀ ਮੁਇਆ ਸਾਰ ਨ ਕਾਈ ॥ ਆਪੇ ਜੋਡਿ ਵਿਛੋਡੇ ਆਪੇ ਕੇਖੁ ਤੇਰੀ
 ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਜੇ ਕੋ ਨਾਤ ਧਰਾਏ ਵਡਾ ਸਾਦ ਕਰੇ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥ ਖਸਮੈ ਨਦਰੀ ਕੀਡਾ ਆਵੈ ਜੇਤੇ ਚੁਗੈ ਦਾਣੇ
 ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੀਵੈ ਤਾ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੇ ॥੩॥੫॥੩੯॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੨ ਮਹਲਾ ੩

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਵੈ ਵਡਭਾਗਿ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਬੈਰਾਗਿ ॥ ਖਟੁ ਦਰਸਨੁ ਵਰਤੈ

ਕਰਤਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥੧॥ ਗੁਰ ਕੈ ਦਰਸਨਿ ਮੁਕਤਿ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥ ਸਾਚਾ ਆਪਿ ਵਸੈ
 ਮਨਿ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰ ਦਰਸਨਿ ਉਥੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਜੇ ਕੋ ਲਾਏ ਭਾਉ ਪਿਆਰਾ ॥ ਭਾਉ ਪਿਆਰਾ ਲਾਏ
 ਵਿਰਲਾ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਦਰਸਨਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕੈ ਦਰਸਨਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਪਰਵਾਰ
 ਸਾਧਾਰੁ ॥ ਨਿਗੁਰੇ ਕਤ ਗਤਿ ਕਾਈ ਨਾਹੀ ॥ ਅਵਗਣਿ ਮੁਠੇ ਚੋਟਾ ਖਾਹੀ ॥੩॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁਖੁ ਸਾਂਤਿ
 ਸਰੀਰ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਾ ਕਤ ਲਗੈ ਨ ਪੀਰ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਤਿਸੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ
 ॥੪॥੧॥੪੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਬਦਿ ਮੁਆ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥
 ਨਿਰਭਤ ਦਾਤਾ ਸਦਾ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਪਾਏ ਭਾਗਿ ਕੋਇ ॥੧॥ ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹੁ ਵਿਚਹੁ ਅਤਗੁਣ ਜਾਹਿ
 ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਣਾ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਹੋਵੈ ਸੋ ਗੁਣ ਜਾਣੈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਬਦਿ ਨਾਮੁ
 ਕਖਾਣੈ ॥ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸੂਚਾ ਹੋਇ ॥ ਗੁਣ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੨॥ ਗੁਣ ਅਮੋਲਕ ਪਾਏ ਨ ਜਾਹਿ ॥ ਮਨਿ
 ਨਿਰਮਲ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨ੍ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਸਦਾ ਗੁਣਦਾਤਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ
 ॥੩॥ ਜੋ ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਤਿਨ੍ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਾਚੇ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਆਪੇ ਫੇਵੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥੪॥੨॥੪੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਚਿਰੀ
 ਵਿਛੁਨ੍ਨੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਆਪਣੀ ਕੀਮਤਿ ਆਪੇ ਪਾਏ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੀ ਕੀਮਤਿ
 ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਹੋਇ ॥ ਹਰਿ ਅਪਰੰਪਰੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਮਤਿ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥ ਵਿਰਲੇ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਊਚੀ ਬਾਣੀ ਊਚਾ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ
 ਕਖਾਣੈ ਕੋਇ ॥੨॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਦਰਦੁ ਸਰੀਰ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਖੇਟੇ ਤਾ ਉਤਰੈ ਪੀਰ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਖੇਟੇ ਦੁਖੁ
 ਕਮਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਬਹੁਤੀ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੩॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਅਤਿ ਰਸੁ ਹੋਇ ॥ ਪੀਕਤ ਰਹੈ ਪੀਆਏ
 ਸੋਇ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥੪॥੩॥੪੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ॥ ਸੇਵਤ ਹੀ ਸੁਖੁ ਸਾਂਤਿ ਸਰੀਰ ॥ ਸਬਦਿ ਤਰੇ ਜਨ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਤਿਨ ਕੈ

हम सद लागह पाइ ॥१॥ जो मनि राते हरि रंगु लाइ ॥ तिन का जन्म मरण दुखु लाथा ते हरि
 दरगह मिले सुभाइ ॥२॥ रहाउ ॥ सबदु चाखै साचा सादु पाए ॥ हरि का नामु मनि वसाए ॥ हरि प्रभु
 सदा रहिआ भरपूरि ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥२॥ आखणि आखै बकै सभु कोइ ॥ आपे बखसि मिलाए
 सोइ ॥ कहणै कथनि न पाइआ जाइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥३॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाइ
 ॥ हरि रंगि राते मोहु चुकाइ ॥ अति निरमलु गुर सबद वीचार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥४॥
 ४॥४३॥ आसा महला ३ ॥ दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ ॥ बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ॥
 सतिगुरु सेवै सोझी होइ ॥ दूजै भाइ न लागै कोइ ॥१॥ मूलि लागे से जन परवाणु ॥ अनदिनु राम
 नामु जपि हिरदै गुर सबदी हरि एको जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ डाली लागै निहफलु जाइ ॥ अंधं
 कंमी अंध सजाइ ॥ मनमुखु अंधा ठउर न पाइ ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ॥२॥ गुर
 की सेवा सदा सुखु पाए ॥ संतसंगति मिलि हरि गुण गाए ॥ नामे नामि करे वीचारु ॥ आपि तरै
 कुल उधरणहारु ॥३॥ गुर की बाणी नामि वजाए ॥ नानक महलु सबदि घरु पाए ॥ गुरमति
 सत सरि हरि जलि नाइआ ॥ दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ॥४॥५॥४४॥ आसा महला ३ ॥
 मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥ दूजै भाइ आतम संधारहि ॥ मेरा मेरा करि करि विगूता ॥
 आतमु न चीनै भरमै विचि सूता ॥१॥ मरु मुइआ सबदै मरि जाइ ॥ उसतति निंदा गुरि सम
 जाणाई इसु जुग महि लाहा हरि जपि लै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ नाम विहूण गरभ गलि जाइ ॥ बिरथा
 जनमु दूजै लोभाइ ॥ नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई ॥ सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥२॥ मनु चंचलु
 बहु चोटा खाइ ॥ एथहु छुड़किआ ठउर न पाइ ॥ गरभ जोनि विसटा का वासु ॥ तितु घरि मनमुखु करे
 निवासु ॥३॥ अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ॥ गुरमुखि जोती जोति मिलाई ॥ निरमल बाणी
 निज घरि वासा ॥ नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥४॥६॥४५॥ आसा महला ३ ॥ लालै आपणी

ਜਾਤਿ ਗਵਾਈ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਰਪੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਕਡੀ ਕਵਿਡਿਆਈ ॥ ਸਦਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪ੍ਰਭੁ
 ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੧॥ ਸੋ ਲਾਲਾ ਜੀਕਤੁ ਮਰੈ ॥ ਸੋਗੁ ਹਰਖੁ ਦੁਇ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਬਦਿ ਉਧਰੈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਧੁਰਹੁ ਫੁਰਮਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਕੋ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥ ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਈ
 ॥ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਢਿਲ ਨ ਪਾਈ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਰਾਸੀ ਕੂੜਾ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਵਿਣੁ ਰਾਸੀ
 ਕਖਰੁ ਪਲੈ ਨ ਪਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਭੁਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੁ ਲਾਲਾ ਹੋਇ ॥ ਊਤਮ ਜਾਤੀ
 ਊਤਮੁ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪਤੜੀ ਸਭ ਟ੍ਰੂ ਊਚਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਕਵਡਾਈ ਹੋਇ ॥੪॥੭॥੪੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩
 ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਝੂਠੋ ਝੂਠੁ ਕਮਾਵੈ ॥ ਖਸਮੈ ਕਾ ਮਹਲੁ ਕਦੇ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਟ੍ਰੂਜੈ ਲਗੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਵੈ ॥ ਮਮਤਾ ਬਾਧਾ
 ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥੧॥ ਦੋਹਾਗਣੀ ਕਾ ਮਨ ਦੇਖੁ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਪੁਰ ਕਲਤਿ ਧਨਿ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਝੂਠੁ ਮੋਹੁ ਪਾਖੰਡ
 ਵਿਕਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਵੈ ॥ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ
 ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰਾਵੈ ॥ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥ ਸਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਾਚੀ ਜਿਸੁ ਸਾਚਿ ਧਿਆਰੁ ॥
 ਅਪਣਾ ਪਿਲੁ ਰਾਖੈ ਸਦਾ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਨੇਡੈ ਵੇਖੈ ਸਦਾ ਹਵ੍ਵਰਿ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੩॥ ਆਗੈ
 ਜਾਤਿ ਰੂਪੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਤੇਹਾ ਹੋਵੈ ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਸਬਦੇ ਊਚੋ ਊਚਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ
 ॥੪॥੮॥੪੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਭਗਤਿ ਰਤਾ ਜਨੁ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਭੈ ਸਾਚੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥ ਬਿਨੁ
 ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਰੁਨੇ ਅਪਨੀ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ॥ ਸਦਾ
 ਅਨਨਦੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਤੇ ਪੂਰਾ ਪਾਏ ॥ ਹਿਰਦੈ ਸਬਦੁ ਸਚੁ
 ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥ ਅੰਤਰੁ ਨਿਰਮਲੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰਿ ਨਾਏ ॥ ਸਦਾ ਸੂਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਏ ॥੨॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਵੇਖੈ ਸਦਾ
 ਹਜੂਰਿ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਜਹਾ ਜਾਤ ਤਹ ਵੇਖਾ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਦਾਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ
 ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਸਾਗਰੁ ਪੂਰਾ ਭੰਡਾਰ ॥ ਊਤਮ ਰਤਨ ਜਵਾਹਰ ਅਪਾਰ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਬਖਸੇ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੪॥੬॥੪੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰੁ ਸਾਡਿਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰ

ਸੇਵਾ ਹੋਇ ॥ ਸੋ ਕੂੜੀ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੇਵ ਕਰਾਏ ॥੧॥ ਗਿਆਨ ਰਤਨਿ ਸਭ ਸੋਝੀ ਹੋਇ
 ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਅਗਿਆਨੁ ਬਿਨਾਸੈ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ਵੇਖੈ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੋਹੁ ਗੁਮਾਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਜਲਾਏ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਪਾਏ ॥ ਅੰਤਰਿ ਮਹਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਰਹੈ ਥਿਰੁ ਨਾਮਿ
 ਸਮਾਣੇ ॥੨॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਹੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਅਚੇਤੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਬਹੁ ਕੂਡੁ ਕਮਾਵੈ
 ॥ ਵਿਸਟਾ ਕਾ ਕੀਡਾ ਵਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਵੈ ॥੩॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲਿ ਸਭ ਸੋਝੀ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਹਰਿ
 ਭਗਤਿ ਫੂਡਾਏ ॥ ਭਾਣਾ ਮਨੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੧੦॥੪੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩
 ਪੰਚਪਦੇ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਅਨਨਦ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਨਾ ਫਿਰਿ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਪੂਰੇ
 ਗੁਰ ਤੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਨਾਮੁ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਲੇਖੁ ॥ ਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਧਿਆਵਹਿ ਗੁਰ
 ਪੂਰੇ ਤੇ ਭਗਤਿ ਵਿਸੇਖੁ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥ ਤਿਨ੍ ਕੀ ਗਹਣ ਗਤਿ ਕਹੀ ਨ
 ਜਾਇ ॥ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰ ਦਿਤੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਊਤਮ ਪਦਵੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ॥੨॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਆਪੇ
 ਆਪਿ ॥ ਏਕ ਘੜੀ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪਿ ॥ ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਹਣਾ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥ ਜੇ ਸਤ ਘਾਲੇ ਥਾਇ ਨ ਪਾਏ
 ॥੩॥ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਪੋਤੈ ਪੁਨ੍ਨੁ ਤਿਨ੍ਹਾ ਗੁਰੁ ਮਿਲਾਏ ॥ ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਗੁਰੁ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥ ਜਹਾਂ ਸਬਦੁ ਕਥੈ ਤਹਾਂ ਦੁਖੁ
 ਜਾਏ ॥ ਗਿਆਨਿ ਰਤਨਿ ਸਾਚੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥ ਨਾਵੈ ਜੇਕੂ ਹੋਰੁ ਧਨੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ
 ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥ ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਮੰਨਿ ਕਥਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੫॥੧੧॥੫੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਨਿਰਤਿ ਕਰੇ ਬਹੁ ਵਾਜੇ ਕਥਾਏ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਅੰਧਾ ਬੋਲਾ ਹੈ ਕਿਸੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਭਰਮੁ ਅਨਲ
 ਵਾਤ ॥ ਦੀਵਾ ਬਲੈ ਨ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ
 ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਤਿ ਹਰਿ ਲਾਗੈ ਭਾਤ ॥ ਪੂਰੇ ਤਾਲ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ
 ਸਾਚਾ ਆਪੇ ਜਾਣੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣੁ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੁ ॥
 ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਹਜਿ ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਜੁਗਤਿ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥ ਪਾਖੰਡਿ ਭਗਤਿ ਨਿਰਤਿ ਦੁਖੁ ਹੋਇ

॥੩॥ ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਜਨੁ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਭਗਤਿ ਥਾਇ ਪਾਇ ॥
ਹਰਿ ਜੀਤ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੪॥ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਾਏ ॥ ਨਿਹਚਲ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਸਿਤ
ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਭਗਤਿ ਰਤੇ ਤਿਨੁ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੫॥੧੨॥੫੧॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੮ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੩

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਬ੍ਰੂੜੈ ਸੋਈ ॥੧॥ ਮੈ ਸਹੁ ਦਾਤਾ
ਏਕੁ ਹੈ ਅਕਰੁ ਨਾਹੀ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ
ਨਿਰਭਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਮ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧ ਗਵਾਰਿ ॥੨॥
ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜਨੁ ਸੇਵਾ ਕਰੈ ਬ੍ਰੂੜੈ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਸਾਲਾਹੀਐ ਭਾਣੈ ਮਨਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੩॥
ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤ੍ਰਾਂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਤਿ ਹੋਈ
॥੪॥੩੬॥੧੩॥੫੨॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤ੍ਰਾਂ ਕਰਤਾ ਸਚਿਆਰੁ ਮੈਡਾ ਸਾਈ ॥ ਜੋ ਤਤ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਥੀਸੀ ਜੋ ਤ੍ਰਾਂ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਹਤ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਭ
ਤੇਰੀ ਤ੍ਰਾਂ ਸਭਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹਿ ਤਿਨਿ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਧਾ ਮਨਮੁਖਿ
ਗਵਾਇਆ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਵਿਛੋਡਿਆ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧॥ ਤ੍ਰਾਂ ਦਰੀਆਉ ਸਭ ਤੁਝ ਹੀ ਮਾਹਿ ॥ ਤੁਝ ਬਿਨੁ
ਦੂਜਾ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ॥ ਵਿਜੋਗਿ ਮਿਲਿ ਵਿਛੁਡਿਆ ਸੰਜੋਗੀ ਮੇਲੁ ॥੨॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤ੍ਰਾਂ
ਯਾਣਾਇਹਿ ਸੋਈ ਜਨੁ ਜਾਣੈ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਦ ਹੀ ਆਖਿ ਵਖਾਣੈ ॥ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
ਸਹਜੇ ਹੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੩॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਹੋਇ ॥ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਅਕਰੁ ਨ
ਕੋਡਿ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖਹਿ ਜਾਣਹਿ ਸੋਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੪॥੧॥੫੩॥

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗ ਆਸਾ ਘਰੂ ੨ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਕਿਸ ਹੀ ਧੜਾ ਕੀਆ ਮਿਤ ਸੁਤ ਨਾਲਿ ਭਾਈ ॥
 ਕਿਸ ਹੀ ਧੜਾ ਕੀਆ ਕੁਝਮ ਸਕੇ ਨਾਲਿ ਜਵਾਈ ॥ ਕਿਸ ਹੀ ਧੜਾ ਕੀਆ ਸਿਕਦਾਰ ਚਤੁਧਰੀ ਨਾਲਿ ਆਪਣੈ
 ਸੁਆਈ ॥ ਹਮਾਰਾ ਧੜਾ ਹਰਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੧॥ ਹਮ ਹਰਿ ਸਿਤ ਧੜਾ ਕੀਆ ਮੇਰੀ ਹਰਿ ਟੇਕ ॥ ਮੈ ਹਰਿ
 ਬਿਨੁ ਪਖੁ ਧੜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਹਤ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਅਸੰਖ ਅਨੇਕ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ੍ ਸਿਤ ਧੜੇ ਕਰਹਿ
 ਸੇ ਜਾਹਿ ॥ ਝੂਠੁ ਧੜੇ ਕਰਿ ਪਛੇਤਾਹਿ ॥ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਹਿ ਮਨਿ ਖੋਟੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਹਮ ਹਰਿ ਸਿਤ ਧੜਾ ਕੀਆ ਜਿਸ ਕਾ
 ਕੋਈ ਸਮਰਥੁ ਨਾਹਿ ॥੨॥ ਏਹ ਸਭਿ ਧੜੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਸਾਰੀ ॥ ਮਾਇਆ ਕਤ ਲੂਝਹਿ ਗਾਵਾਰੀ ॥
 ਜਨਮਿ ਮਰਹਿ ਜੂਐ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥ ਹਮਰੈ ਹਰਿ ਧੜਾ ਜਿ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਭੁ ਸਵਾਰੀ ॥੩॥ ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ
 ਧੜੇ ਪੰਚ ਚੌਰ ਝਾਗੜਾਏ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਵਧਾਏ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਏ
 ॥ ਹਮਰਾ ਹਰਿ ਧੜਾ ਜਿਨਿ ਏਹ ਧੜੇ ਸਭਿ ਗਵਾਏ ॥੪॥ ਮਿਥਿਆ ਟ੍ਰ੍ਹੁ ਭਾਉ ਧੜੇ ਬਹਿ ਪਾਵੈ ॥ ਪਰਾਇਆ
 ਛਿਦੁ ਅਟਕਲੈ ਆਪਣਾ ਅਛਾਕਾਰੁ ਵਧਾਵੈ ॥ ਜੈਸਾ ਬੀਜੈ ਤੈਸਾ ਖਾਵੈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਾ ਹਰਿ ਧੜਾ ਧਰਮੁ
 ਸਭ ਸੂਸਟਿ ਜਿਣਿ ਆਵੈ ॥੫॥੨॥੫੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਿਰਦੈ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਮਨਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਭਾਇਆ ॥
 ਗੁਰਬਾਣੀ ਹਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੀ ਭੈਨਾ ॥ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਘਟ
 ਅੰਤਰਿ ਮੁਖਿ ਬੋਲਹੁ ਗੁਰ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬੈਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਮਹਾ ਬੈਰਾਗੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ
 ਪਾਇਆ ਵਡਭਾਗੁ ॥੨॥ ਟ੍ਰ੍ਹੁ ਜੈ ਭਾਇ ਭਵਹਿ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ॥ ਭਾਗਹੀਨ ਨਹੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਪੀਆਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੪॥੩॥੫੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪
 ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪੀ ਨਾਮੋ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਸਾਜਨ
 ਸੈਨਾ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲੈਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਹੀ
 ਜੀਵਿਆ ਜਾਇ ॥ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਇ ॥੨॥ ਨਾਮਹੀਨ ਕਾਲਖ ਮੁਖਿ ਮਾਇਆ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ

ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਜੀਵਾਇਆ ॥੩॥ ਵਡਾ ਵਡਾ ਹਰਿ ਭਾਗ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਦਿਵਾਇਆ
 ॥੪॥੮॥੫੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਗੁਣ ਬੋਲੀ ਬਾਣੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਆਖਿ
 ਕਖਾਣੀ ॥੧॥ ਜਪਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਿਆ ਅਨਨਦਾ ॥ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਰਸਿ ਗਾਏ
 ਗੁਣ ਪਰਮਾਨਨਦਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਜਨ ਲੋਗਾ ॥ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਪਾਏ ਹਰਿ ਨਿਰਜੋਗਾ ॥
 ੨॥ ਗੁਣ ਵਿਹੂਣ ਮਾਇਆ ਮਲੁ ਧਾਰੀ ॥ ਵਿਣੁ ਗੁਣ ਜਨਮਿ ਮੁਏ ਅਛਕਾਰੀ ॥੩॥ ਸਰੀਰਿ ਸਰੋਵਰਿ ਗੁਣ
 ਪਰਗਟਿ ਕੀਏ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਥਿ ਤਤੁ ਕਢੀਏ ॥੪॥੫॥੫੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਨਾਮੁ ਸੁਣੀ
 ਨਾਮੋ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਵੈ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਮੈ
 ਧਰ ਨਹੀਂ ਕਾਈ ਨਾਮੁ ਰਖਿਆ ਸਭ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੈ ਸੁਰਤਿ ਸੁਨੀ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥ ਜੋ
 ਨਾਮੁ ਸੁਨਾਵੈ ਸੋ ਮੇਰਾ ਮੀਤੁ ਸਖਾਈ ॥੨॥ ਨਾਮਹੀਣ ਗਏ ਮੂੜ ਨਨਗਾ ॥ ਪਚਿ ਪਚਿ ਮੁਏ ਬਿਖੁ ਦੇਖਿ ਪਤੰਗਾ ॥
 ੩॥ ਆਪੇ ਥਾਪੇ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪੇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ॥੪॥੬॥੫੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੇਲਿ ਵਧਾਈ ॥ ਫਲ ਲਾਗੇ ਹਰਿ ਰਸਕ ਰਸਾਈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਅਨਤ ਤਰੰਗਾ ॥
 ਜਪਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਲਾਹੀ ਮਾਰਿਆ ਕਾਲੁ ਜਮਕੱਕਰ ਭੁਝਿਅੰਗਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰ
 ਮਹਿ ਭਗਤਿ ਰਖਾਈ ॥ ਗੁਰੂ ਤੁਠਾ ਸਿਖ ਦੇਵੈ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੨॥ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਿਛੁ ਬਿਧਿ ਨਹੀਂ ਜਾਣੈ ॥ ਜਿਤ
 ਕੁਂਚਰੁ ਨਾਇ ਖਾਕੁ ਸਿਰਿ ਛਾਣੈ ॥੩॥ ਜੇ ਵਡ ਭਾਗ ਹੋਵਹਿ ਵਡ ਊਚੇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪਹਿ ਸਚਿ ਸੂਚੇ ॥
 ੪॥੭॥੫੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਮਨਿ ਭ੍ਰੂਖ ਲਗਾਈ ॥ ਨਾਮਿ ਸੁਨਿਐ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤੈ
 ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਗੁਰਸਿਖ ਮੀਤਾ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਨਾਮੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਨਾਮੁ ਰਖਹੁ ਗੁਰਮਤਿ
 ਮਨਿ ਚੀਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੋ ਨਾਮੁ ਸੁਣੀ ਮਨੁ ਸਰਸਾ ॥ ਨਾਮੁ ਲਾਹਾ ਲੈ ਗੁਰਮਤਿ ਬਿਗਸਾ ॥੨॥
 ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੁਸਟੀ ਮੋਹ ਅੰਧਾ ॥ ਸਭ ਨਿਹਫਲ ਕਰਮ ਕੀਏ ਢੁਖੁ ਧੰਧਾ ॥੩॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਜਪੈ
 ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੪॥੮॥੬੦॥

੧੯॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਮਹਲਾ ੪ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੬ ਕੇ ੩ ॥ ਹਥਿ ਕਰਿ ਤਨ੍ਤੁ ਵਜਾਵੈ ਜੋਗੀ ਥੋਥਰ ਵਾਜੈ ਬੇਨ ॥
 ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਬੋਲਹੁ ਜੋਗੀ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਹਰਿ ਰੰਗੀ ਭੇਨ ॥੧॥ ਜੋਗੀ ਹਰਿ ਦੇਹੁ ਮਤੀ ਉਪਦੇਸੁ ॥ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਏਕੋ ਵਰਤੈ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਹਮ ਆਦੇਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗਾਵਹਿ ਰਾਗ ਭਾਤਿ ਬਹੁ ਬੋਲਹਿ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਖੇਲੈ
 ਖੇਲ ॥ ਜੋਵਹਿ ਕੂਪ ਸਿੰਚਨ ਕਤ ਬਸੁਧਾ ਤਠਿ ਬੈਲ ਗਏ ਚਰਿ ਬੇਲ ॥੨॥ ਕਾਇਆ ਨਗਰ ਮਹਿ ਕਰਮ ਹਰਿ ਬੋਵਹੁ
 ਹਰਿ ਜਾਮੈ ਹਰਿਆ ਖੇਤੁ ॥ ਮਨੂਆ ਅਸਥਿਰੁ ਕੈਲੁ ਮਨੁ ਜੋਵਹੁ ਹਰਿ ਸਿੰਚਹੁ ਗੁਰਮਤਿ ਜੇਤੁ ॥੩॥ ਜੋਗੀ ਜੰਗਮ ਸੂਸਟਿ
 ਸਭ ਤੁਮਰੀ ਜੋ ਦੇਹੁ ਮਤੀ ਤਿਤੁ ਚੇਲ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਹਰਿ ਲਾਵਹੁ ਮਨੂਆ ਪੇਲ ॥੪॥੬॥੬੧॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਕਬ ਕੋ ਭਾਲੈ ਬੁੰਘਰੁ ਤਾਲਾ ਕਬ ਕੋ ਬਜਾਵੈ ਰਖਾਵੁ ॥ ਆਵਤ ਜਾਤ ਬਾਰ ਖਿਨੁ ਲਾਗੈ ਹਤ ਤਬ
 ਲਗੁ ਸਮਾਰਤ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਐਸੀ ਭਗਤਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥ ਹਤ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਜੈਸੇ
 ਜਲ ਬਿਨੁ ਸੀਨੁ ਮਰਿ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਬ ਕੋਤੁ ਮੇਲੈ ਪੰਚ ਸਤ ਗਾਇਣ ਕਬ ਕੋ ਰਾਗ ਧੁਨਿ ਤਠਾਵੈ ॥ ਮੇਲਤ
 ਚੁਨਤ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਚਸਾ ਲਾਗੈ ਤਬ ਲਗੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥੨॥ ਕਬ ਕੋ ਨਾਚੈ ਪਾਵ ਪਸਾਰੈ ਕਬ ਕੋ ਹਾਥ
 ਪਸਾਰੈ ॥ ਹਾਥ ਪਾਵ ਪਸਾਰਤ ਬਿਲਮੁ ਤਿਲੁ ਲਾਗੈ ਤਬ ਲਗੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਮ ਸਮਾਰੈ ॥੩॥ ਕਬ ਕੋਤੁ ਲੋਗਨ ਕਤ
 ਪਤੀਆਵੈ ਲੋਕਿ ਪਤੀਣੈ ਨਾ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸਦ ਧਿਆਵਹੁ ਤਾ ਜੈ ਜੈ ਕਰੇ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥੪॥
 ੧੦॥੬੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਸਾਧੂ ਮਿਲਿ ਸਾਂਗਤਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਗਿਆਨ
 ਰਤਨੁ ਬਲਿਆ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਜਾਇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜਨ ਨਾਚਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥ ਐਸੇ ਸੰਤ
 ਮਿਲਹਿ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਹਮ ਜਨ ਕੇ ਧੋਕਹ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ
 ਲਾਇ ॥ ਜੋ ਝਿਛਹੁ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ਫਿਰਿ ਭੂਖ ਨ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥੨॥ ਆਪੇ ਹਰਿ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਹਰਿ ਆਪੇ
 ਬੋਲਿ ਬੁਲਾਇ ॥ ਸੇਈ ਸੰਤ ਭਲੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਜਿਨ੍ ਕੀ ਪਤਿ ਪਾਵਹਿ ਥਾਇ ॥੩॥ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਨ ਰਾਜੈ ਹਰਿ ਗੁਣ
 ਜਿਤ ਆਖੈ ਤਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਟੀਏ ਹਰਿ ਅਪੁਨੇ ਗੁਣ ਗਾਹਕੁ ਵਣਜਿ ਲੈ ਜਾਇ ॥੪॥੧੧॥੬੩॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੮ ਕੇ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਆਇਆ ਮਰਣੁ ਧੁਰਾਹੁ ਹਤਮੈ ਰੋਈਐ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਈਐ ॥੧॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਸਾਬਾਸਿ ਚਲਣੁ ਜਾਣਿਆ ॥ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਸੁ ਸਾਰੁ
 ਸਬਦਿ ਸਮਾਣਿਆ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖੇ ਡੇਹ ਸਿ ਆਏ ਮਾਇਆ ॥ ਚਲਣੁ ਅਜੁ ਕਿ ਕਲਿ ਧੁਰਹੁ
 ਫੁਰਮਾਇਆ ॥੨॥ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਤਿਨਾ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥ ਜੂਐ ਖੇਲਣੁ ਜਗਿ ਕਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹਾਰਿਆ
 ॥੩॥ ਜੀਵਣਿ ਮਰਣਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਜਿਨਾ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੈ ਸਚਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੧੨॥੬੪॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁਝਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧॥
 ਜਿਨ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਤਿਨੀ ਨਾਮੁ ਕਮਾਇਆ ॥ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥੨॥ ਅੰਤਰਿ ਵਸਤੁ
 ਅਨੇਕ ਮਨਮੁਖਿ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ॥ ਹਤਮੈ ਗਰਬੈ ਗਰਬੁ ਆਪਿ ਖੁਆਈਐ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ
 ਖੁਆਈਐ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਮਨਿ ਪਰਗਾਸੁ ਸਚਾ ਪਾਈਐ ॥੪॥੧੩॥੬੫॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾਵਰੀ ਘਰੁ ੧੬ ਕੇ ੨ ਮਹਲਾ ੪ ਸੁਧਾਂਗ ੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਤ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੋ ਕਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਤਾਇਆ ਹਤ ਹਰਿ
 ਬਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮਰੈ ਸ਼ਰਣੁ ਸਿਮਰਨੁ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਹਤ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਿ
 ਨ ਸਕਤ ਹਤ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ॥ ਜੈਸੇ ਛਾਸੁ ਸਰਵਰ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਤੈਸੇ ਹਰਿ ਜਨੁ ਕਿਤ ਰਹੈ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਬਿਨੁ
 ॥੧॥ ਕਿਨਹੂੰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਦ੍ਰਾਂ ਭਾਉ ਰਿਦ ਧਾਰਿ ਕਿਨਹੂੰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਮੋਹ ਅਪਮਾਨ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰੀਤਿ
 ਲਾਈ ਹਰਿ ਨਿਰਬਾਣ ਪਦ ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਵਾਨ ॥੨॥੧੪॥੬੬॥ ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੪
 ॥ ਮਾਈ ਮੋਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਰਾਮੁ ਬਤਾਵਹੁ ਰੀ ਮਾਈ ॥ ਹਤ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਜੈਸੇ ਕਰਹਲੁ ਬੇਲਿ
 ਰੀਝਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮਰਾ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗ ਬਿਰਕਤੁ ਭਿੜਿਆਂ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਮੀਤ ਕੈ ਤਾਈ ॥ ਜੈਸੇ

अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥੧॥ राखु सरणि जगदीसुर
पिआरे मोहि सरथा पूरि हरि गुसाई ॥ जन नानक कै मनि अनंदु होत है हरि दरसनु निमख
दिखाई ॥੨॥੩੬॥੧੩॥੧੫॥੬੭॥

रागु आसा घरु ੨ महला ੫

੧੭੮ सतिगुर प्रसादि ॥

जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥ जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥ भाई मीत
कुटंब देखि बिबाटे ॥ हम आई वसगति गुर परसाटे ॥੧॥ औसा देखि बिमोहित होए ॥ साधिक सिध
सुरदेव मनुखा बिनु साधू सभि धोहनि धोहे ॥੧॥ रहाउ ॥ इकि फिरहि उदासी तिन् कामि विआपै ॥
इकि संचहि गिरही तिन् होइ न आपै ॥ इकि सती कहावहि तिन् बहुतु कलपावै ॥ हम हरि राखे
लगि सतिगुर पावै ॥੨॥ तपु करते तपसी भूलाए ॥ पंडित मोहे लोभि सबाए ॥ तै गुण मोहे मोहिआ
आकासु ॥ हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥੩॥ गिआनी की होइ वरती दासि ॥ कर जोड़े सेवा करे
अरदासि ॥ जो तूं कहहि सु कार कमावा ॥ जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥੪॥੧॥ आसा महला ੫ ॥
ससू ते पिरि कीनी वाखि ॥ देर जिठाणी मुई दूखि संतापि ॥ घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥ पिरि रखिआ
कीनी सुधड़ सुजाणि ॥੧॥ सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥ दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ
हरि नामु दिवाइआ ॥੧॥ रहाउ ॥ प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥ दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥ तै गुण
तिआगि दुरजन मीत समाने ॥ तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥੨॥ सहज गुफा महि आसणु बाधिआ ॥
जोति सरूप अनाहटु वाजिआ ॥ महा अनंदु गुर सबटु बीचारि ॥ पृअ सित राती धन सोहागणि नारि
॥੩॥ जन नानकु बोले ब्रह्म बीचारु ॥ जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥
हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥੪॥੨॥ आसा महला ੫ ॥ निज भगती सीलवंती नारि ॥ रूपि अनूप पूरी
आचारि ॥ जितु गृहि वसै सो गृह सोभावंता ॥ गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥੧॥ सुकरणी कामणि

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਹਮ ਪਾਈ ॥ ਜਜਿ ਕਾਜਿ ਪਰਥਾਇ ਸੁਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਚਰੁ ਵਸੀ ਪਿਤਾ ਕੈ ਸਾਥਿ ॥ ਤਿਚਰੁ
 ਕੰਤੁ ਬਹੁ ਫਿਰੈ ਉਦਾਸਿ ॥ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਆਣੀ ਘਰ ਮਹਿ ਤਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਇਆ
 ॥੨॥ ਬਤੀਹ ਸੁਲਖਣੀ ਸਚੁ ਸਨਤਿ ਪ੍ਰਤ ॥ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਸੁਘੜ ਸਰੂਪ ॥ ਇਛ ਪ੍ਰੇ ਮਨ ਕੰਤ ਸੁਆਮੀ ॥
 ਸਗਲ ਸਨਤੋਖੀ ਦੇਰ ਜੇਠਾਨੀ ॥੩॥ ਸਭ ਪਰਖਾਰੈ ਮਾਹਿ ਸਰੇਸਟ ॥ ਮਤੀ ਦੇਵੀ ਦੇਵਰ ਜੇਸਟ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਗ੍ਰਹੁ ਜਿਤੁ
 ਪ੍ਰਗਟੀ ਆਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖੇ ਸੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥੪॥੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਤਾ ਕਰਤ ਸੋ ਪਕਨਿ ਨ ਦੇਈ
 ॥ ਸੀਲ ਸੰਜਮ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਖਲੋਈ ॥ ਵੇਸ ਕਰੇ ਬਹੁ ਰੂਪ ਦਿਖਾਵੈ ॥ ਗ੍ਰਹਿ ਬਸਨਿ ਨ ਦੇਈ ਵਖਿ ਵਖਿ ਭਰਮਾਵੈ
 ॥੧॥ ਘਰ ਕੀ ਨਾਇਕਿ ਘਰ ਵਾਸੁ ਨ ਦੇਵੈ ॥ ਜਤਨ ਕਰਤ ਉਰਝਾਇ ਪਰੇਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧੁਰ ਕੀ ਭੇਜੀ
 ਆਈ ਆਮਰਿ ॥ ਨਤ ਖੰਡ ਜੀਤੇ ਸਾਭਿ ਥਾਨ ਥਨਤਰ ॥ ਤਟਿ ਤੀਰਥਿ ਨ ਛੋਡੈ ਜੋਗ ਸੰਨਿਆਸ ॥ ਪਡਿ ਥਾਕੇ
 ਸਿੰਮੂਤਿ ਬੇਦ ਅਭਿਆਸ ॥੨॥ ਜਹ ਬੈਸਤ ਤਹ ਨਾਲੇ ਬੈਸੈ ॥ ਸਗਲ ਭਵਨ ਮਹਿ ਸਬਲ ਪ੍ਰਵੇਸੈ ॥ ਹੋਛੀ
 ਸਰਣਿ ਪਇਆ ਰਹਣੁ ਨ ਪਾਈ ॥ ਕਹੁ ਮੀਤਾ ਹਤ ਕੈ ਪਹਿ ਜਾਈ ॥੩॥ ਸੁਣਿ ਉਪਦੇਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਹਿ
 ਆਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੋਹਿ ਮੰਨੁ ਦ੃ੜਾਇਆ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਗੁਣ ਗਾਇ ਅਨੱਤਾ ॥ ਪ੍ਰਭੁ
 ਮਿਲਿਐ ਨਾਨਕ ਭਏ ਅਚਿੰਤਾ ॥੪॥ ਘਰੁ ਮੇਰਾ ਇਹ ਨਾਇਕਿ ਹਮਾਰੀ ॥ ਇਹ ਆਮਰਿ ਹਮ ਗੁਰਿ ਕੀਏ
 ਦਰਕਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ਦ੍ਰੂਜਾ ॥੪॥੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਥਮੇ ਮਤਾ ਜਿ ਪਕੀ ਚਲਾਵਤ ॥ ਦੁਤੀਏ
 ਮਤਾ ਦੁਇ ਮਾਨੁਖ ਪਹੁਚਾਵਤ ॥ ਤ੃ਤੀਏ ਮਤਾ ਕਿਛੁ ਕਰਤ ਉਪਾਇਆ ॥ ਮੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਛੋਡਿ ਪ੍ਰਭ ਤੁਹੀ
 ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਅਚਿੰਤ ਸਹਜਾਇਆ ॥ ਦੁਸਮਨ ਦ੍ਰੂਤ ਮੁਏ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੋ ਕਤ ਦੀਆ ਉਪਦੇਸੁ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦੇਸੁ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੀ ਸੁ ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ॥ ਤ੍ਰੁੰ ਮੇਰੀ
 ਓਟ ਤ੍ਰੁੰਹੈ ਦੀਕਾਣੁ ॥੨॥ ਤੁਧਨੋ ਛੋਡਿ ਜਾਈਐ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਧਰਿ ॥ ਆਨ ਨ ਬੀਆ ਤੇਰੀ ਸਮਸਰਿ ॥ ਤੇਰੇ ਸੇਵਕ
 ਕਤ ਕਿਸ ਕੀ ਕਾਣਿ ॥ ਸਾਕਤੁ ਭੂਲਾ ਫਿਰੈ ਬੇਬਾਣਿ ॥੩॥ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਜਹ ਕਹ
 ਰਾਖਿ ਲੈਹਿ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੀ ਪੈਜ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥੪॥੫॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਰਦੇਸੁ ਝਾਗਿ ਸਤਦੇ ਕਤ ਆਇਆ ॥ ਵਸਤੁ ਅਨੂਪ ਸੁਣੀ ਲਾਭਾਇਆ ॥ ਗੁਣ ਰਾਸਿ
 ਬੰਨਿ ਪਲੈ ਆਨੀ ॥ ਦੇਖਿ ਰਤਨੁ ਛਿਹੁ ਮਨੁ ਲਪਟਾਨੀ ॥੧॥ ਸਾਹ ਵਾਪਾਰੀ ਢੁਆਰੈ ਆਏ ॥ ਵਖਰੁ ਕਾਢਹੁ
 ਸਤਦਾ ਕਰਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਹਿ ਪਠਾਇਆ ਸਾਹੈ ਪਾਸਿ ॥ ਅਮੋਲ ਰਤਨ ਅਮੋਲਾ ਰਾਸਿ ॥ ਵਿਸਟੁ ਸੁਭਾਈ
 ਪਾਇਆ ਮੀਤ ॥ ਸਤਦਾ ਮਿਲਿਆ ਨਿਹਚਲ ਚੀਤ ॥੨॥ ਭਤ ਨਹੀ ਤਸਕਰ ਪਤਣ ਨ ਪਾਨੀ ॥ ਸਹਜਿ ਵਿਹਾਝੀ
 ਸਹਜਿ ਲੈ ਜਾਨੀ ॥ ਸਤ ਕੈ ਖਟਿਐ ਦੁਖੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥ ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਘਰਿ ਲੈ ਆਇਆ ॥੩॥ ਮਿਲਿਆ
 ਲਾਹਾ ਭਏ ਅਨੰਦ ॥ ਧਨੁ ਸਾਹ ਪ੍ਰੇ ਬਖਿਸਿੰਦ ॥ ਛਿਹੁ ਸਤਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਪਾਇਆ ॥ ਸਹਲੀ ਖੇਪ
 ਨਾਨਕੁ ਲੈ ਆਇਆ ॥੪॥੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਨੁ ਅਵਗਨੁ ਮੇਰੋ ਕਛੁ ਨ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਨਹ ਦੇਖਿਓ ਰੂਪ ਰੰਗ
 ਸੰਗਾਰੇ ॥ ਚਜ ਅਚਾਰ ਕਿਛੁ ਬਿਧਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ॥ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਪ੍ਰਤ ਸੇਜੈ ਆਨੀ ॥੧॥ ਸੁਨਿਬੋ ਸਖੀ ਕੰਤਿ
 ਹਮਾਰੇ ਕੀਅਲੋ ਖਸਮਾਨਾ ॥ ਕਰੁ ਮਸਤਕਿ ਧਾਰਿ ਰਾਖਿਓ ਕਰਿ ਅਪੁਨਾ ਕਿਆ ਜਾਨੈ ਛਿਹੁ ਲੋਕੁ ਅਜਾਨਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਹਾਗੁ ਹਮਾਰੇ ਅਥ ਹੁਣਿ ਸੋਹਿਓ ॥ ਕੰਤੁ ਮਿਲਿਓ ਮੇਰੋ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਜੋਹਿਓ ॥ ਆਂਗਨਿ ਮੈਰੈ ਸੋਭਾ ਚੰਦ ॥
 ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਪ੍ਰਤ ਸੰਗਿ ਅਨੰਦ ॥੨॥ ਬਸਤ ਹਮਾਰੇ ਰੰਗ ਚਲੂਲ ॥ ਸਗਲ ਆਭਰਣ ਸੋਭਾ ਕੰਠਿ ਫੂਲ ॥
 ਪ੍ਰਤ ਪੇਖੀ ਦੂਸਟਿ ਪਾਏ ਸਗਲ ਨਿਧਾਨ ॥ ਦੁਸਟ ਦ੍ਰਤ ਕੀ ਚੂਕੀ ਕਾਨਿ ॥੩॥ ਸਦ ਖੁਸੀਆ ਸਦਾ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ॥
 ਨਤ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਤ੃ਪਤਾਨੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਤ ਪਿਰਹਿ ਸੀਗਾਰੀ ॥ ਥਿਰੁ ਸੋਹਾਗਨਿ ਸੰਗਿ ਭਤਾਰੀ
 ॥੪॥੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦਾਨੁ ਦੇਇ ਕਰਿ ਪ੍ਰਯਾ ਕਰਨਾ ॥ ਲੈਤ ਦੇਤ ਤਨੁ ਮੂਕਰਿ ਪਰਨਾ ॥ ਜਿਤੁ ਦਰਿ ਤੁਮ
 ਹੈ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਜਾਣਾ ॥ ਤਿਤੁ ਦਰਿ ਤੂਂਹੀ ਹੈ ਪਛੁਤਾਣਾ ॥੧॥ ਐਸੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਡੂਬੇ ਭਾਈ ॥ ਨਿਰਾਪਰਾਧ ਚਿਤਵਹਿ
 ਬੁਰਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲੋਮੁ ਫਿਰਹਿ ਹਲਕਾਏ ॥ ਨਿੰਦਾ ਕਰਹਿ ਸਿਰਿ ਭਾਰੁ ਤਠਾਏ ॥ ਮਾਇਆ ਮੂਠਾ
 ਚੈਤੈ ਨਾਹੀ ॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਬਹੁਤੀ ਰਾਹੀ ॥੨॥ ਬਾਹਰਿ ਭੇਖ ਕਰਹਿ ਘਨੇਰੇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਿਖਿਆ ਉਤਰੀ ਘੇਰੇ ॥
 ਅਵਰ ਉਪਦੇਸੈ ਆਪਿ ਨ ਬੂੜੈ ॥ ਐਸਾ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਕਹੀ ਨ ਸੀੜੈ ॥੩॥ ਮੂਰਖ ਬਾਮਣ ਪ੍ਰਭੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਦੇਖਤ ਸੁਨਤ
 ਤੈਰੈ ਹੈ ਨਾਲਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੇ ਹੋਵੀ ਭਾਗੁ ॥ ਮਾਨੁ ਛੋਡਿ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥੪॥੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

ਦ੍ਰਖ ਰੋਗ ਭਏ ਗਤੁ ਤਨ ਤੇ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਭਏ ਅਨਨਦ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਅਬ ਮੇਰਾ
 ਮਨੁ ਕਤ ਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਤਪਤਿ ਬੁਝੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਾਇ ॥ ਬਿਨਸਿ ਗਇਆਂ ਤਾਪ ਸਭ ਸਹਸਾ ਗੁਰੂ ਸੀਤਲੁ
 ਮਿਲਿਆਂ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਧਾਵਤ ਰਹੇ ਏਕੁ ਇਕੁ ਬ੍ਰਾਂਝਿਆ ਆਇ ਬਸੇ ਅਬ ਨਿਹਚਲੁ ਥਾਇ ॥
 ਜਗਤੁ ਤਥਾਰਨ ਸੰਤ ਤੁਮਾਰੇ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਰਹੇ ਅਧਾਇ ॥੨॥ ਜਨਮ ਦੋਖ ਪਰੇ ਮੇਰੇ ਪਾਛੈ ਅਬ ਪਕਰੇ
 ਨਿਹਚਲੁ ਸਾਧੂ ਪਾਇ ॥ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਗਾਵੈ ਮੰਗਲ ਮਨੂਆ ਅਬ ਤਾ ਕਤ ਫੁਨਿ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਇ ॥੩॥ ਕਰਨ
 ਕਾਰਨ ਸਮਰਥ ਹਮਾਰੇ ਸੁਖਦਾਈ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਾਇ ॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਨਾਨਕੁ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਮੇਰੈ
 ਸੰਗਿ ਸਹਾਇ ॥੪॥੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਰਡਾਵੈ ਬਿਲਲਾਵੈ ਨਿੰਦਕੁ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਬਿਸਰਿਆ
 ਅਪਣਾ ਕੀਤਾ ਪਾਵੈ ਨਿੰਦਕੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੇ ਕੋਈ ਤਥ ਕਾ ਸੰਗੀ ਹੋਵੈ ਨਾਲੇ ਲਾਏ ਸਿਧਾਵੈ ॥ ਅਣਹੋਦਾ
 ਅਜਗਰੁ ਭਾਰੁ ਤਠਾਏ ਨਿੰਦਕੁ ਅਗਨੀ ਮਾਹਿ ਜਲਾਵੈ ॥੧॥ ਪਰਮੇਸਰ ਕੈ ਟੁਆਰੈ ਜਿ ਹੋਇ ਬਿਤੀਤੈ ਸੁ ਨਾਨਕੁ
 ਆਖਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਤ ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਹੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇ ਬਿਗਸਾਵੈ ॥੨॥੧੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਜਤ ਮੈ ਕੀਓ ਸਗਲ ਸੀਗਾਰਾ ॥ ਤਤ ਭੀ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਨ ਪਤੀਆਰਾ ॥ ਅਨਿਕ ਸੁਗੰਧਤ ਤਨ ਮਹਿ ਲਾਵਤ ॥
 ਓਹੁ ਸੁਖੁ ਤਿਲੁ ਸਮਾਨਿ ਨਹੀ ਪਾਵਤ ॥ ਮਨ ਮਹਿ ਚਿਤਵਤ ਐਸੀ ਆਸਾਈ ॥ ਪ੍ਰਤ ਦੇਖਤ ਜੀਵਤ ਮੇਰੀ ਮਾਈ
 ॥੧॥ ਮਾਈ ਕਹਾ ਕਰਤ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨ ਧੀਰੈ ॥ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰੀਤਮ ਬੈਰਾਗੁ ਹਿਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਸਤ ਬਿਭੂਖਨ ਸੁਖ
 ਬਹੁਤ ਬਿਸੇਖੈ ॥ ਓਇ ਭੀ ਜਾਨਤ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖੈ ॥ ਪਤਿ ਸੋਭਾ ਅਝ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ॥ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਸਗਲ ਜਗਤੁ
 ॥ ਗ੍ਰਹੁ ਐਸਾ ਹੈ ਸੁੰਦਰ ਲਾਲ ॥ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਾ ਤਾ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥੨॥ ਬਿੰਜਨ ਭੋਜਨ ਅਨਿਕ ਪਰਕਾਰ ॥ ਰੰਗ
 ਤਮਾਸੇ ਬਹੁਤੁ ਬਿਸਥਾਰ ॥ ਰਾਜ ਮਿਲਖ ਅਝ ਬਹੁਤੁ ਫੁਰਮਾਇਸਿ ॥ ਮਨੁ ਨਹੀ ਧਾਪੈ ਤ੃ਸਨਾ ਨਾ ਜਾਇਸਿ ॥
 ਬਿਨੁ ਮਿਲਕੇ ਇਹੁ ਦਿਨੁ ਨ ਬਿਹਾਵੈ ॥ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੂ ਤਾ ਸਭ ਸੁਖ ਪਾਵੈ ॥੩॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਸੁਨੀ ਇਹ ਸੋਇ ॥
 ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਨੁ ਤਰਿਓ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਤਿਨਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਤੀ ਆਸਾ ਮਨੁ
 ਤ੍ਰਪਤਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਿਆ ਤਾ ਚੂਕੀ ਡੱਝਾ ॥ ਨਾਨਕ ਲਧਾ ਮਨ ਤਨ ਮੰਝਾ ॥੪॥੧੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫

ਪਂਚਪਦੇ ॥ ਪ੍ਰਥਮੇ ਤੇਰੀ ਨੀਕੀ ਜਾਤਿ ॥ ਦੁਤੀਆ ਤੇਰੀ ਮਨੀਐ ਪਾਂਤਿ ॥ ਤ੃ਤੀਆ ਤੇਰਾ ਸੁੰਦਰ ਥਾਨੁ ॥ ਬਿਗੜ
 ਰੂਪੁ ਮਨ ਮਹਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੧॥ ਸੋਹਨੀ ਸੱਖਣਿ ਸੁਜਾਣਿ ਬਿਚਖਨਿ ॥ ਅਤਿ ਗਰਬੈ ਮੋਹਿ ਫਾਕੀ ਤ੍ਰੂੰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਅਤਿ ਸ੍ਰੂਚੀ ਤੇਰੀ ਪਾਕਸਾਲ ॥ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨੁ ਪ੍ਰਯਾ ਤਿਲਕੁ ਲਾਲ ॥ ਗਲੀ ਗਰਬਹਿ ਮੁਖਿ ਗੋਵਹਿ ਗਿਆਨ ॥
 ਸਭਿ ਬਿਧਿ ਖੋਈ ਲੋਭਿ ਸੁਆਨ ॥੨॥ ਕਾਪਰ ਪਹਿਰਹਿ ਭੋਗਹਿ ਭੋਗ ॥ ਆਚਾਰ ਕਰਹਿ ਸੋਭਾ ਮਹਿ ਲੋਗ ॥ ਚੋਆ
 ਚੰਦਨ ਸੁਗੰਧ ਬਿਸਥਾਰ ॥ ਸਾਂਗੀ ਖੋਟਾ ਕ੍ਰੋਧੁ ਚੰਡਾਲ ॥੩॥ ਅਵਰ ਜੋਨਿ ਤੇਰੀ ਪਨਿਹਾਰੀ ॥ ਇਸੁ ਧਰਤੀ ਮਹਿ ਤੇਰੀ
 ਸਿਕਦਾਰੀ ॥ ਸੁਝਿਨਾ ਰੂਪਾ ਤੁੜਾ ਪਹਿ ਦਾਮ ॥ ਸੀਲੁ ਬਿਗਾਰਿਐ ਤੇਰਾ ਕਾਮ ॥੪॥ ਜਾ ਕਤ ਦੂਸਟਿ ਮਇਆ
 ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਸਾ ਬੰਦੀ ਤੇ ਲੈਈ ਛਡਾਇ ॥ ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਫਲ ਓਹ
 ਕਾਇਆ ॥੫॥ ਸਭਿ ਰੂਪ ਸਭਿ ਸੁਖ ਕਨੇ ਸੁਹਾਗਨਿ ॥ ਅਤਿ ਸੁੰਦਰਿ ਬਿਚਖਨਿ ਤ੍ਰੂੰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ਦ੍ਰੂਜਾ ॥੧੨॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਇਕਤੁਕੇ ੨ ॥ ਜੀਵਤ ਦੀਸੈ ਤਿਸੁ ਸਰਪਰ ਮਰਣਾ ॥ ਮੁਆ ਹੋਵੈ ਤਿਸੁ ਨਿਹਚਲੁ ਰਹਣਾ ॥੧॥
 ਜੀਵਤ ਸੁਏ ਸੁਏ ਸੇ ਜੀਵੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਵਖਧੁ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਚੀ ਮਟੁਕੀ ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸਾ ॥ ਜਿਸੁ ਛੌਟੈ ਤ੍ਰਕੁਟੀ ਤਿਸੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥੨॥ ਊਚਾ ਚੱਡੈ ਸੁ ਪਵੈ
 ਪਾਇਆਲਾ ॥ ਧਰਨਿ ਪੱਡੈ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਨ ਕਾਲਾ ॥੩॥ ਭ੍ਰਮਤ ਫਿਰੇ ਤਿਨ ਕਿਛੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਸੇ ਅਸਥਿਰ ਜਿਨ
 ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇਆ ॥੪॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕਾ ਮਾਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥੫॥੧੩॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੁਤਰੀ ਤੇਰੀ ਬਿਧਿ ਕਰਿ ਥਾਟੀ ॥ ਜਾਨੁ ਸਤਿ ਕਰਿ ਹੋਇਗੀ ਮਾਟੀ ॥੧॥ ਮੂਲੁ ਸਮਾਲਹੁ
 ਅਚੇਤ ਗਵਾਰਾ ॥ ਇਤਨੇ ਕਤ ਤੁਸੁ ਕਿਆ ਗਰਬੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੀਨਿ ਸੇਰ ਕਾ ਦਿਹਾਡੀ ਮਿਹਮਾਨੁ ॥ ਅਵਰ
 ਵਸਤੁ ਤੁੜਾ ਪਾਹਿ ਅਮਾਨ ॥੨॥ ਬਿਸਟਾ ਅਸਤ ਰਕਤੁ ਪਰੇਟੇ ਚਾਮ ॥ ਇਸੁ ਊਪਰਿ ਲੇ ਰਾਖਿਐ ਗੁਮਾਨ ॥੩॥
 ਏਕ ਵਸਤੁ ਬੂੜਾਹਿ ਤਾ ਹੋਵਹਿ ਪਾਕ ॥ ਬਿਨੁ ਬੂੜੇ ਤ੍ਰੂੰ ਸਦਾ ਨਾਪਾਕ ॥੪॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕਤ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥
 ਜਿਸ ਤੇ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਨੁ ॥੫॥੧੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਇਕਤੁਕੇ ਚਤੁਪਦੇ ॥ ਇਕ ਘੜੀ ਦਿਨਸੁ
 ਮੋ ਕਤ ਬਹੁਤੁ ਦਿਹਾਰੇ ॥ ਮਨੁ ਨ ਰਹੈ ਕੈਸੇ ਮਿਲਤ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਇਕੁ ਪਲੁ ਦਿਨਸੁ ਮੋ ਕਤ ਕਬਹੁ ਨ ਬਿਹਾਰੈ ॥

दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मो कउ पिरहि मिलावै ॥੧॥ रहाउ ॥ चारि पहर चहु
 जुगह समाने ॥ रैणि भई तब अंतु न जाने ॥੨॥ पंच टूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥ भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ
 पछोड़ी ॥੩॥ जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ ॥ आतमु चीनि परम सुखु पाइआ ॥੪॥੧੫॥
 आसा महला ੫ ॥ हरि सेवा महि परम निधानु ॥ हरि सेवा मुखि अंमृत नामु ॥੧॥ हरि मेरा साथी
 संगि सखाई ॥ दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो कउ कहा डराई ॥੧॥ रहाउ ॥ हरि मेरी
 ओट मै हरि का ताणु ॥ हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥੨॥ हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु ॥
 गुरमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥੩॥ गुर किरपा ते इह मति आवै ॥ जन नानकु हरि कै अंकि
 समावै ॥੪॥੧੬॥ आसा महला ੫ ॥ प्रभु होइ कृपालु त इहु मनु लाई ॥ सतिगुरु सेवि सभै फल
 पाई ॥੧॥ मन किउ बैरागु करहिगा सतिगुरु मेरा पूरा ॥ मनसा का दाता सभ सुख निधानु अंमृत
 सरि सद ही भरपूरा ॥੧॥ रहाउ ॥ चरण कमल रिद अंतरि धारे ॥ प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥
 ੨॥ पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ ॥ अनहट बाणी नादु वजाइआ ॥੩॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ
 हरि राइ ॥ सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥੪॥੧੭॥ आसा महला ੫ ॥ करि किरपा हरि
 परगटी आइआ ॥ मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥੧॥ ऐसा हरि धनु संचीअै भाई ॥ भाहि न
 जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥੧॥ रहाउ ॥ तोटि न आवै निखुटि न जाइ ॥
 खाइ खरचि मनु रहिआ अधाइ ॥੨॥ सो सचु साहु जिसु घरि हरि धनु संचाणा ॥ इसु धन ते सभु जगु
 वरसाणा ॥੩॥ तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा ॥ जन नानक अंति वार नामु
 गहणा ॥੪॥੧੮॥ आसा महला ੫ ॥ जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥ काची पाकी बाढि परानी ॥੧॥ जो
 जनमै सो जानहु मूआ ॥ गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥੧॥ रहाउ ॥ दिन ते सरपर पउसी राति ॥
 रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥੨॥ माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ गुर प्रसादि को विरला

जागे ॥३॥ कहु नानक गुण गाईअहि नीत ॥ मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥४॥१॥ आसा महला ५
 ॥ नउ निधि तेरै सगल निधान ॥ इछा पूरकु रखै निदान ॥१॥ तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥ तूं मनि
 वसिआ लगै न दूखा ॥१॥ रहाउ ॥ जो तूं करहि सोई परवाणु ॥ साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥२॥ जा
 तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥ तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥३॥ साचे साहिब अलख अभेव ॥ नानक
 लाइआ लागा सेव ॥४॥२०॥ आसा महला ५ ॥ निकटि जीअ कै सद ही संगा ॥ कुदरति वरतै रूप
 अरु रंगा ॥१॥ करै न झूरै ना मनु रोवनहारा ॥ अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु
 हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥ जिस की मीरा राखै आणि ॥२॥ जो लउडा प्रभि
 कीआ अजाति ॥ तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥३॥ वेमुहताजा वेपरवाहु ॥ नानक दास कहहु गुर
 वाहु ॥४॥२१॥ आसा महला ५ ॥ हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥ घर महि वसतु बाहरि उठि जाता
 ॥१॥ सुनी न जाई सचु अंमृत काथा ॥ रारि करत झूठी लगि गथा ॥१॥ रहाउ ॥ वजहु साहिब का
 सेव बिरानी ॥ औसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥२॥ तिसु सिउ लूक जो सद ही संगी ॥ कामि न आवै सो
 फिरि फिरि मंगी ॥३॥ कहु नानक प्रभ दीन दिआला ॥ जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥४॥२२॥
 आसा महला ५ ॥ जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥ ईहा ऊहाँ उन संगि कामु ॥१॥ बिनु हरि नाम
 अवरु सभु थोरा ॥ तृपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ भगति भंडार गुरबाणी
 लाल ॥ गावत सुनत कमावत निहाल ॥२॥ चरण कमल सिउ लागो मानु ॥ सतिगुरि तूठै कीनो दानु
 ॥३॥ नानक कउ गुरि दीखिआ दीन् ॥ प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन् ॥४॥२३॥ आसा महला ५
 ॥ अनद बिनोद भरेपुरि धारिआ ॥ अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥१॥ पूर समग्री पूरे ठाकुर
 की ॥ भरिपुरि धारि रही सोभ जा की ॥१॥ रहाउ ॥ नामु निधानु जा की निरमल सोइ ॥ आपे
 करता अवरु न कोइ ॥२॥ जीअ जंत सभि ता कै हाथि ॥ रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥३॥

ਪੂਰਾ ਗੁਰੂ ਪੂਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੨੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਬਨਾਵਹੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਸੰਚਹੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ॥੧॥ ਊਤਮ ਮਤਿ ਮੈਰੈ ਰਿਦੈ ਤ੍ਰਾਂ ਆਤ ॥
 ਧਿਆਵਤ ਗਾਵਤ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦਾ ਅਤਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮੋਹਿ ਲਾਗੈ ਨਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਅਘਾਵਨੁ ਸਾਚੈ
 ਨਾਡਿ ॥ ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਸੰਤ ਧੂਰਾਇ ॥੨॥ ਸਭ ਮਹਿ ਜਾਨਤ ਕਰਤਾ ਏਕ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਬੁਧਿ
 ਬਿਕੇਕ ॥੩॥ ਦਾਸੁ ਸਗਲ ਕਾ ਛੋਡਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਗੁਰਿ ਦੀਨੋ ਦਾਨੁ ॥੪॥੨੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਬੁਧਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਭਈ ਮਤਿ ਪੂਰੀ ॥ ਤਾ ਤੇ ਬਿਨਸੀ ਦੁਰਮਤਿ ਢੂਰੀ ॥੧॥ ਐਸੀ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈਐਲੇ ॥ ਕ੍ਰਿਡਤ ਘੋਰ
 ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਨਿਕਸਿਐ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਹਾ ਅਗਾਹ ਅਗਨਿ ਕਾ ਸਾਗਰੁ ॥ ਗੁਰੂ ਬੋਹਿਥੁ
 ਤਾਰੇ ਰਤਨਾਗਰੁ ॥੨॥ ਦੁਤਰ ਅੰਧ ਬਿਖਮ ਇਹ ਮਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਪਰਗਟੁ ਮਾਰਗੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥੩॥
 ਜਾਪ ਤਾਪ ਕਛੁ ਤਕਤਿ ਨ ਮੌਰੀ ॥ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਗਤਿ ਤੌਰੀ ॥੪॥੨੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਤਿਪਦੇ ੨ ॥
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵਤ ਸਦ ਹੀ ਰਾਤਾ ॥ ਆਨ ਰਸਾ ਖਿਨ ਮਹਿ ਲਹਿ ਜਾਤਾ ॥ ਹਰਿ ਰਸ ਕੇ ਮਾਤੇ ਮਨਿ ਸਦਾ ਅੰਨਦ ॥
 ਆਨ ਰਸਾ ਮਹਿ ਵਿਆਪੈ ਚਿੰਦ ॥੧॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਅਲਮਸਤੁ ਮਤਵਾਰਾ ॥ ਆਨ ਰਸਾ ਸਭਿ ਹੋਛੇ ਰੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਰਸ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਾਧੂ ਹਾਟਿ ਸਮਾਇ ॥ ਲਾਖ ਕਰੋਰੀ ਮਿਲੈ ਨ ਕੇਹ ॥
 ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਸ ਹੀ ਦੇਹਿ ॥੨॥ ਨਾਨਕ ਚਾਖਿ ਭਏ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਆਇਆ ਸਾਦੁ ॥ ਈਤ
 ਊਤ ਕਤ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੀਧਾ ਹਰਿ ਰਸ ਮਾਹਿ ॥੩॥੨੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ
 ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਮਿਟਾਵੈ ਛੁਟਕੈ ਦੁਰਮਤਿ ਅਪੁਨੀ ਧਾਰੀ ॥ ਹੋਇ ਨਿਮਾਣੀ ਸੇਵ ਕਮਾਵਹਿ ਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਹੋਵਹਿ ਮਨਿ
 ਪਿਆਰੀ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਸੁਨਦਰਿ ਸਾਧੂ ਬਚਨ ਉਧਾਰੀ ॥ ਦ੍ਰਾਖ ਭ੍ਰਾਖ ਮਿਟੈ ਤੇਰੋ ਸਹਸਾ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਤ੍ਰਾਂ ਸੁਖਮਨਿ
 ਨਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਰਣ ਪਖਾਰਿ ਕਰਤ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਆਤਮ ਸੁਧੁ ਬਿਖੁ ਤਿਆਸ ਨਿਵਾਰੀ ॥ ਦਾਸਨ
 ਕੀ ਹੋਇ ਦਾਸਿ ਦਾਸਰੀ ਤਾ ਪਾਵਹਿ ਸੋਭਾ ਹਰਿ ਦੁਆਰੀ ॥੨॥ ਇਹੀ ਅਚਾਰ ਇਹੀ ਬਿਤਹਾਰਾ ਆਗਿਆ
 ਮਾਨਿ ਭਗਤਿ ਹੋਇ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਜੋ ਇਹੁ ਮੰਨੁ ਕਮਾਵੈ ਨਾਨਕ ਸੋ ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੀ ॥੩॥੨੮॥

आसा महला ੫ ਦੁਪਦੇ ॥ ਭਈ ਪਰਾਪਤਿ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹੁਰੀਆ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਮਿਲਣ ਕੀ ਇਹ ਤੇਰੀ ਬਰੀਆ ॥
 ਅਵਰਿ ਕਾਜ ਤੈਰੈ ਕਿਤੈ ਨ ਕਾਮ ॥ ਮਿਲੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਭਜੁ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ॥੧॥ ਸਰੰਜਾਮਿ ਲਾਗੁ ਭਵਜਲ
 ਤਰਨ ਕੈ ॥ ਜਨਮੁ ਬ੃ਥਾ ਜਾਤ ਰੰਗ ਮਾਇਆ ਕੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਧਰਮੁ ਨ ਕਮਾਇਆ ॥
 ਸੇਵਾ ਸਾਧ ਨ ਜਾਨਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਮ ਨੀਚ ਕਰੰਮਾ ॥ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਕੀ ਰਾਖਹੁ ਸਰਮਾ
 ॥੨॥੨੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਮੈ ਟ੍ਰੌਜਾ ਤ੍ਰੌ ਮੇਰੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਤ੍ਰੌ ਸਾਜਨੁ ਸੰਗੀ ਪ੍ਰਮ੍ਰਾ
 ਮੇਰਾ ਕਾਹੇ ਜੀਅ ਡਰਾਹੀ ॥੧॥ ਤੁਮਰੀ ਓਟ ਤੁਮਾਰੀ ਆਸਾ ॥ ਬੈਠਤ ਊਠਤ ਸੋਕਤ ਜਾਗਤ ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ
 ਤ੍ਰੌ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੀ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ ਵਿਕਰਾਲਾ ॥ ਨਾਨਕ
 ਕੇ ਸੁਖਦਾਤੇ ਸਤਿਗੁਰ ਹਮ ਤੁਮਰੇ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲਾ ॥੨॥੩੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਲੀਨੇ ਪ੍ਰਮ੍ਰਾ
 ਛਡਾਇ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿਤ ਮੇਰੋ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਤਾਪੁ ਮੁਆ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਾਲਾ ਤਾਊ ਕਛੂ ਨ
 ਬਿਆਪੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥ ਡਾਕੀ ਕੋ ਚਿਤਿ ਕਛੂ ਨ ਲਾਗੈ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਰਨਾਇ ॥੧॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
 ਭਏ ਕਿਰਪਾਲਾ ਛੋਏ ਆਪਿ ਸਹਾਇ ॥ ਗੁਨ ਨਿਧਾਨ ਨਿਤ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕੁ ਸਹਸਾ ਦੁਖੁ ਮਿਟਾਇ ॥੨॥੩੧॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਤਖਥੁ ਖਾਇਆਂ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਤ ॥ ਸੁਖ ਪਾਏ ਦੁਖ ਬਿਨਸਿਆ ਥਾਤ ॥੧॥ ਤਾਪੁ
 ਗਿਆ ਬਚਨਿ ਗੁਰ ਪ੍ਰੌ ॥ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਸਭਿ ਮਿਟੇ ਵਿਸੂਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲ ਸੁਖੁ
 ਪਾਇਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥੨॥੩੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਾਂਛਤ ਨਾਹੀ ਸੁ ਬੇਲਾ ਆਈ
 ॥ ਬਿਨੁ ਹੁਕਮੈ ਕਿਤ ਬੁੜੈ ਬੁੜਾਈ ॥੧॥ ਠੰਢੀ ਤਾਤੀ ਮਿਟੀ ਖਾਈ ॥ ਓਹੁ ਨ ਬਾਲਾ ਬ੍ਰਾਂਠਾ ਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਾਧ ਸਰਣਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਤ ਪਾਰਿ ਪਰਾਈ ॥੨॥੩੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ
 ਆਤਮ ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਚਰਣ ਨਿਵਾਸੁ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਤ ਜਧਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥ ਸੀਤਲ ਸਾਂਤਿ
 ਸਦਾ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਕਿਲਵਿਖ ਜਾਹਿ ਸਭੇ ਮਨ ਤੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੇ ਪੂਰਨ ਕਰਮ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮੇਟੇ ਪੂਰਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥੨॥੩੪॥ ਟ੍ਰੌਜੇ ਘਰ ਕੇ ਚਤੁਤੀਸ ॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕਾ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਮ੍ਰਾ

ਕੇਲੀ ॥ ਪੀੜ ਗੰਡ ਫਿਰਿ ਨਹੀਂ ਦੁਹੇਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਚਰਨ ਸੰਗਿ ਮੇਲੀ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ
 ਸੁਹੇਲੀ ॥੧॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਅਤੋਲੀ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਨਾਨਕ ਭਈ ਅਮੋਲੀ ॥੨॥੩੫॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਾਇਆ ਮਦ ਮਤਸਰ ਏ ਖੇਲਤ ਸਭਿ ਜ੍ਰਾਤੈ ਹਾਰੇ ॥ ਸਤੁ ਸਾਂਤੋਖੁ ਦਿਆ ਧਰਮੁ
 ਸਚੁ ਇਹ ਅਪੁਨੈ ਗ੍ਰੂਹ ਭੀਤਰਿ ਵਾਰੇ ॥੧॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਚੂਕੇ ਸਭਿ ਭਾਰੇ ॥ ਮਿਲਤ ਸੰਗਿ ਭਇਆਓ ਮਨੁ
 ਨਿਰਮਲੁ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਲੈ ਖਿਨ ਮਹਿ ਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭ ਕੀ ਰੇਨੁ ਹੋਇ ਰਹੈ ਮਨ੍ਨਾ ਸਗਲੇ ਦੀਸਹਿ ਮੀਤ
 ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਭ ਮਧੇ ਰਵਿਆ ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਦਾਨੁ ਦੇਤ ਸਭਿ ਜੀਅ ਸਮਾਰੇ ॥੨॥ ਏਕੋ ਏਕੁ ਆਪਿ ਇਕੁ ਏਕੈ ਹੈ
 ਸਗਲਾ ਪਾਸਾਰੇ ॥ ਜਧਿ ਜਧਿ ਹੋਏ ਸਗਲ ਸਾਥ ਜਨ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਬਹੁਤੁ ਉਧਾਰੇ ॥੩॥ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ
 ਬਿਅੰਤ ਗੁਸਾਈ ਅੰਤੁ ਨਹੀਂ ਕਿਛੁ ਪਾਰਾਵਾਰੇ ॥ ਤੁਸ੍ਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕ ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਪ੍ਰਭ ਕਤ
 ਨਮਸਕਾਰੇ ॥੪॥੩੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੂ ਬਿਅੰਤੁ ਅਵਿਗਤੁ ਅਗੋਚਰੁ ਇਹੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਆਕਾਰੁ ॥ ਕਿਆ
 ਹਮ ਜਂਤ ਕਰਹ ਚਤੁਰਾਈ ਜਾਂ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁੜੈ ਮੜਾਰਿ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪਨੇ ਬਾਲਿਕ ਰਾਖਹੁ ਲੀਲਾ
 ਧਾਰਿ ॥ ਦੇਹੁ ਸੁਮਤਿ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈਸੇ ਜਨਨਿ ਜਠਰ ਮਹਿ
 ਪ੍ਰਾਨੀ ਓਹੁ ਰਹਤਾ ਨਾਮ ਅਧਾਰਿ ॥ ਅਨਦੁ ਕਰੈ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਰੈ ਨਾ ਪੋਹੈ ਅਗਨਾਰਿ ॥੨॥ ਪਰ ਧਨ
 ਪਰ ਦਾਰਾ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਇਨ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਿਵਾਰਿ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸੇਵੀ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇਰੇ ਕੈ ਆਧਾਰਿ
 ॥੩॥ ਗ੍ਰੂਹ ਮੰਦਰ ਮਹਲਾ ਜੋ ਦੀਸਹਿ ਨਾ ਕੋਈ ਸੰਗਾਰਿ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਜੀਵਹਿ ਕਲੀ ਕਾਲ ਮਹਿ ਜਨ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਿ ॥੪॥੩੭॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੩ ਮਹਲਾ ੫

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਜ ਮਿਲਕ ਜੋਬਨ ਗ੍ਰੂਹ ਸੋਭਾ ਰੂਪਵਂਤੁ ਜੁਆਨੀ ॥ ਬਹੁਤੁ ਦਰਖੁ ਹਸਤੀ ਅਰੁ ਘੋੜੇ ਲਾਲ ਲਾਖ ਬੈ ਆਨੀ ॥
 ਆਗੈ ਦਰਗਹਿ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਛੋਡਿ ਚਲੈ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥੧॥ ਕਾਹੇ ਏਕ ਬਿਨਾ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ
 ਸੋਵਤ ਜਾਗਤ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਹਾ ਬਚਿਤ ਸੁੰਦਰ ਆਖਾਡੇ ਰਣ ਮਹਿ ਜਿਤੇ

ਪਵਾਡੇ ॥ ਹਤ ਮਾਰਤ ਹਤ ਬੰਧਤ ਛੋਡਤ ਸੁਖ ਤੇ ਏਵ ਬਬਾਡੇ ॥ ਆਇਆ ਹੁਕਮੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਛੋਡਿ ਚਲਿਆ
ਏਕ ਦਿਹਾਡੇ ॥੨॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਜੁਗਤਿ ਬਹੁ ਕਰਤਾ ਕਰਣੈਹਾਉ ਨ ਜਾਨੈ ॥ ਤਉਦੇਸੁ ਕਰੈ ਆਪਿ ਨ ਕਮਾਵੈ ਤਤੁ
ਸਬਦੁ ਨ ਪਛਾਨੈ ॥ ਨਾਂਗਾ ਆਇਆ ਨਾਂਗੋ ਜਾਸੀ ਜਿਤ ਹਸਤੀ ਖਾਕੁ ਛਾਨੈ ॥੩॥ ਸੰਤ ਸਜਨ ਸੁਨਹੁ ਸਭਿ ਮੀਤਾ
ਝੂਠਾ ਏਹੁ ਪਸਾਰਾ ॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਕਰਿ ਝੂਬੇ ਖਧਿ ਖਧਿ ਸੁਏ ਗਵਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ
ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੪॥੧॥੩੮॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੫ ਮਹਲਾ ੫

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਭ੍ਰਮ ਮਹਿ ਸੋਈ ਸਗਲ ਜਗਤ ਧੰਧ ਅੰਧ ॥ ਕੋਊ ਜਾਗੈ ਹਰਿ ਜਨੁ ॥੧॥ ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਮਗਨ ਪੂਅ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰਾਨ ॥
ਕੋਊ ਤਿਆਗੈ ਵਿਰਲਾ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਆਨ੍ਤੂ ਹਰਿ ਸੰਤ ਮੰਤ ॥ ਕੋਊ ਲਾਗੈ ਸਾਥੂ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਸਾਥੂ ਸੰਗਿ
ਜਾਗੇ ਗਿਆਨ ਰੰਗਿ ॥ ਵਡਭਾਗੇ ਕਿਰਪਾ ॥੪॥੧॥੩੯॥

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੬ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਪਰਵਾਨਾ ਸੂਖੁ ਸਹਜੁ ਮਨਿ ਸੋਈ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ
ਅਪਾਰਾ ਅਕਰੁ ਨਾਹੀ ਰੇ ਕੋਈ ॥੧॥ ਤੇਰੇ ਜਨ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ॥ ਮਸਲਤਿ ਮਤਾ ਸਿਆਣਪ
ਜਨ ਕੀ ਜੋ ਤੂੰ ਕਰਹਿ ਕਰਾਵਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਪਿਆਰੇ ਸਾਧਸੰਗਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥
ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਇ ਸੇਈ ਜਨ ਪੂਰੇ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਟੇਕ ਤੁਮਾਰੀ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਕਤ
ਨਾਹੀ ਚਿੰਤਾ ॥ ਜਾ ਕਤ ਦਇਆ ਤੁਮਾਰੀ ਹੋਈ ਸੇ ਸਾਹ ਭਲੇ ਭਗਵਂਤਾ ॥੩॥ ਭਰਮ ਮੋਹ ਧੋਹ ਸਭਿ ਨਿਕਸੇ
ਜਬ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਵਰਤਣਿ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕੀਨਾ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਰੰਗਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੧॥੪੦॥
ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਮਲੁ ਧੋਵੈ ਪਰਾਈ ਆਪਣਾ ਕੀਤਾ ਪਾਵੈ ॥ ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ਦਰਗਹ ਫੌਰੀ
ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਇ ਪਚਾਵੈ ॥੧॥ ਨਿੰਦਕਿ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਪਹੁਚਿ ਨ ਸਾਕੈ ਕਾਹੂ ਬਾਤੈ ਆਗੈ ਠਤਰ
ਨ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਨਿੰਦਕ ਬਪੁਰੇ ਕਾ ਕਿਆ ਓਹੁ ਕਰੈ ਬਿਚਾਰਾ ॥ ਤਹਾ ਬਿਗੂਤਾ

ਜਹ ਕੋਇ ਨ ਰਾਖੈ ਓਹੁ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰਾ ॥੨॥ ਨਿੰਦਕ ਕੀ ਗਤਿ ਕਤਹੂੰ ਨਾਹੀ ਖਸਮੈ ਏਵੈ ਭਾਣਾ ॥
 ਜੋ ਜੋ ਨਿੰਦ ਕਰੇ ਸੰਤਨ ਕੀ ਤਿਉ ਸੰਤਨ ਸੁਖੁ ਮਾਨਾ ॥੩॥ ਸੰਤਾ ਟੇਕ ਤੁਮਾਰੀ ਸੁਆਮੀ ਤ੍ਰੁੰ ਸੰਤਨ ਕਾ ਸਹਾਈ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਹਰਿ ਰਾਖੇ ਨਿੰਦਕ ਦੀਏ ਰੁੜਾਈ ॥੪॥੨॥੪੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਾਹਰੁ ਧੋਇ ਅੰਤਰੁ
 ਮਨੁ ਮੈਲਾ ਦੁਇ ਠਤਰ ਅਪੁਨੇ ਖੋਏ ॥ ਈਹਾ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪਿਆ ਆਗੈ ਮੁਸਿ ਮੁਸਿ ਰੋਏ ॥੧॥
 ਗੋਵਿੰਦ ਭਜਨ ਕੀ ਮਤਿ ਹੈ ਹੋਰਾ ॥ ਵਰਮੀ ਮਾਰੀ ਸਾਪੁ ਨ ਮਰੈ ਨਾਮੁ ਨ ਸੁਨੈ ਡੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਇਆ
 ਕੀ ਕਿਰਤਿ ਛੋਡਿ ਗਵਾਈ ਭਗਤੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਨੈ ॥ ਬੇਦ ਸਾਸਕ ਕਤ ਤਰਕਨਿ ਲਾਗਾ ਤਤੁ ਜੋਗੁ ਨ ਪਛਾਨੈ ॥
 ੨॥ ਤਥਰਿ ਗਇਆ ਜੈਸਾ ਖੋਟਾ ਢਕੂਆ ਨਦਰਿ ਸਰਫਾ ਆਇਆ ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਨੈ ਤਿਸ ਤੇ
 ਕਹਾ ਛਪਾਇਆ ॥੩॥ ਕ੍ਰਿਡਿ ਕਪਟਿ ਬੰਚਿ ਨਿਮੁਨੀਆਦਾ ਬਿਨਸਿ ਗਇਆ ਤਤਕਾਲੇ ॥ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ
 ਨਾਨਕਿ ਕਹਿਆ ਅਪਨੈ ਹਿਰਦੈ ਦੇਖੁ ਸਮਾਲੇ ॥੪॥੩॥੪੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਦਮੁ ਕਰਤ ਹੋਵੈ ਮਨੁ
 ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਚੈ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਪੰਚ ਜਨਾ ਲੇ ਵਸਗਤਿ ਰਾਖੈ ਮਨ ਮਹਿ ਏਕਕਾਰੇ ॥੧॥ ਤੇਰਾ ਜਨੁ ਨਿਰਤਿ
 ਕਰੇ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਰਥਾਬੁ ਪਖਾਵਜ ਤਾਲ ਧੁੰਘੁ ਅਨਹਟ ਸਬਦੁ ਵਜਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਥਮੇ ਮਨੁ ਪਰਬੋਧੈ
 ਅਪਨਾ ਪਾਛੈ ਅਵਰ ਰੀਝਾਵੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਪੁ ਹਿਰਦੈ ਜਾਪੈ ਮੁਖ ਤੇ ਸਗਲ ਸੁਨਾਵੈ ॥੨॥ ਕਰ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ
 ਚਰਨ ਪਖਾਰੈ ਸੰਤ ਧੂਰਿ ਤਨਿ ਲਾਵੈ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਧਰੇ ਗੁਰ ਆਗੈ ਸਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਵੈ ॥੩॥ ਜੋ ਜੋ
 ਸੁਨੈ ਪੇਖੈ ਲਾਇ ਸਰਧਾ ਤਾ ਕਾ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖੁ ਭਾਗੈ ॥ ਐਸੀ ਨਿਰਤਿ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੈ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਜਾਗੈ ॥੪॥੪॥੪੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਧਮ ਚੰਡਾਲੀ ਭਈ ਬ੍ਰਹਮਣੀ ਸ੍ਰੂਦੀ ਤੇ ਸੇਸਟਾਈ ਰੇ ॥ ਪਾਤਾਲੀ
 ਆਕਾਸੀ ਸਖਨੀ ਲਹਬਰ ਬੂਜੀ ਖਾਈ ਰੇ ॥੧॥ ਘਰ ਕੀ ਬਿਲਾਈ ਅਵਰ ਸਿਖਾਈ ਮੂਸਾ ਦੇਖਿ ਡਰਾਈ ਰੇ ॥
 ਅਜ ਕੈ ਵਸਿ ਗੁਰਿ ਕੀਨੀ ਕੇਹਰਿ ਕੂਕਰ ਤਿਨਹਿ ਲਗਾਈ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਝੂ ਥੂਨੀਆ ਛਪਰਾ ਥਾਮਿਆ
 ਨੀਧਰਿਆ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਜਡੀਏ ਲੈ ਜਡਿਆ ਜਡਾਵਾ ਥੇਵਾ ਅਚਰਜੁ ਲਾਇਆ ਰੇ ॥੨॥ ਦਾਦੀ
 ਦਾਦਿ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰਾ ਚੂਪੀ ਨਿਰਨਤ ਪਾਇਆ ਰੇ ॥ ਮਾਲਿ ਦੁਲੀਚੈ ਬੈਠੀ ਲੇ ਮਿਰਤਕੁ ਨੈਨ ਦਿਖਾਲਨੁ

ਧਾਇਆ ਰੇ ॥੩॥ ਸੋਈ ਅਜਾਣੁ ਕਹੈ ਮੈ ਜਾਨਾ ਜਾਨਣਹਾਰੁ ਨ ਛਾਨਾ ਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਅਮਿਤ
 ਪੀਆਇਆ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਬਿਗਸਾਨਾ ਰੇ ॥੪॥੫॥੪੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਬਿਸਾਰੇ ਅਤਗਨ
 ਅਪਨਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਰਿਆ ॥ ਹੋਏ ਕ੃ਪਾਲ ਮਾਤ ਪਿਤ ਨਿਆਈ ਬਾਰਿਕ ਜਿਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰਿਆ ॥੧॥ ਗੁਰਸਿਖ
 ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਿ ॥ ਕਾਢਿ ਲੀਏ ਮਹਾ ਭਵਜਲ ਤੇ ਅਪਨੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ
 ਜਮ ਤੇ ਛੁਟੀਐ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਜਪਹੁ ਜਪੁ ਰਸਨਾ ਨੀਤ ਨੀਤ ਗੁਣ ਗਾਈਐ
 ॥੨॥ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਸਾਧਸਂਗਿ ਦੁਖ ਨਾਠੇ ॥ ਛਿਜੈ ਨ ਜਾਇ ਕਿਛੁ ਭਤ ਨ ਬਿਆਪੇ ਹਰਿ
 ਧਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਗਾਠੇ ॥੩॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਸਹਾਈ ਇਤ ਉਤ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਮੀਤ ਹੀਤ ਧਨੁ ਮੈਰੈ
 ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੪॥੬॥੪੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰੂ ਸਾਹਿਬੁ ਤਾ ਭਤ ਕੇਹਾ ਹਤ ਤੁਥੁ ਬਿਨੁ ਕਿਸੁ
 ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਏਕੁ ਤ੍ਰੂ ਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਮੈ ਤੁਥੁ ਬਿਨੁ ਢ੍ਵਾ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਬਿਖੁ ਦੇਖਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਰਖਿਆ
 ਕਰਹੁ ਗੁਸਾਈ ਮੇਰੇ ਮੈ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾਣਹਿ ਬਿਰਥਾ ਸਭਾ ਮਨ ਕੀ ਛੋਰੁ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਆਖਿ
 ਸੁਣਾਈਐ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਤਰਾਇਆ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਕਿਸੁ ਆਖਿ
 ਸੁਣਾਈਐ ਜਿ ਕਹਣਾ ਸੁ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਪਾਸਿ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਕਰਤੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੇਰੀ ਆਸ ॥੩॥ ਜੇ
 ਦੇਹਿ ਵਡਿਆਈ ਤਾ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਇਤ ਉਤ ਤੁਝਹਿ ਧਿਆਉ ॥ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤੇ ਮੈ ਤਾਣੁ
 ਤੇਰਾ ਇਕੁ ਨਾਉ ॥੪॥੭॥੪੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਠਾਕੁਰ ਏਹੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਜਨਹਿ ਪੀਓ
 ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਚੂਕੇ ਭੈ ਭਾਰੇ ਦੁਰਤੁ ਬਿਨਾਸਿਓ ਭਰਮੁ ਬੀਓ ॥੧॥ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਮੈ ਜੀਓ ॥ ਸੁਨਿ ਕਰਿ ਬਚਨ
 ਤੁਮਾਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੇਰਾ ਠਾਰੁ ਥੀਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਭਡਿਓ ਸਾਧਸਂਗੁ ਏਹੁ ਕਾਜੁ ਤੁਮ
 ਆਪਿ ਕੀਓ ॥ ਦਿੜ੍ਹੁ ਕਰਿ ਚਰਣ ਗਹੇ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੇ ਸਹਜੇ ਬਿਖਿਆ ਭੰਡੀ ਖੀਓ ॥੨॥ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ
 ਤੁਮਰਾ ਏਹੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਮੰਨੁ ਲੀਓ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਨਾ ਤਾਪੁ ਸੰਤਾਪੁ ਮੇਰਾ ਬੈਰੁ ਗੀਓ ॥੩॥
 ਧਨੁ ਸੁ ਮਾਣਸ ਦੇਹੀ ਪਾਈ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਮੇਲਿ ਲੀਓ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਕਲਿਜੁਗੁ ਸਾਧਸਂਗਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਹੀਓ ॥੪॥੮॥੪੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਗੈ ਹੀ ਤੇ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੂਆ ਅਵਰੁ ਕਿ ਜਾਣੈ
 ਗਿਆਨਾ ॥ ਭੂਲ ਚੂਕ ਅਪਨਾ ਬਾਰਿਕੁ ਬਖਿਸਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਭਗਵਾਨਾ ॥੧॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਦਿੱਤਿਆਲਾ
 ਮੋਹਿ ਦੀਨ ਕਤ ਰਾਖਿ ਲੀਆ ॥ ਕਾਟਿਆ ਰੋਗੁ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਅਨਿਕ ਪਾਪ ਮੇਰੇ ਪਰਹਰਿਆ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਮੁਕਤ ਭਏ ॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਾ ਘੋਰ ਤੇ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਗੁਰਿ
 ਕਾਢਿ ਲੀਏ ॥੨॥ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ਸਗਲ ਭਤ ਮਿਟਿਆ ਰਾਖੇ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥ ਐਸੀ ਦਾਤਿ ਤੇਰੀ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕਾਰਜ
 ਸਗਲ ਸਕਾਰੇ ॥੩॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਸਾਹਿਬ ਮਨਿ ਮੇਲਾ ॥ ਸਰਣਿ ਪਿਛਿਆ ਨਾਨਕ ਸੁਹੇਲਾ ॥੪॥੬॥੪੮॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੍ਰਿ ਵਿਸਰਹਿ ਤਾਂ ਸਭੁ ਕੋ ਲਾਗੂ ਚੀਤਿ ਆਵਹਿ ਤਾਂ ਸੇਵਾ ॥ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਤੁ ਦ੍ਰਿਆ ਸ੍ਰੂਝੈ ਸਾਚੇ
 ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥੧॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਦਾ ਦਿੱਤਿਆਲਾ ਲੋਗਨ ਕਿਆ ਕੇਚਾਰੇ ॥ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਕਹੁ ਕਿਸ ਨੋ
 ਕਹੀਐ ਸਗਲੇ ਜੀਅ ਤੁਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰਾ ਹਾਥ ਦੇਇ ਤ੍ਰਿ ਰਾਖਹਿ ॥ ਜਿਸੁ ਜਨ
 ਊਪਰਿ ਤੇਰੀ ਕਿਰਪਾ ਤਿਸ ਕਤ ਬਿਪੁ ਨ ਕੋਤੁ ਭਾਖੈ ॥੨॥ ਓਹੋ ਸੁਖੁ ਓਹਾ ਵਡਿਆਈ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥
 ਤ੍ਰਿ ਦਾਨਾ ਤ੍ਰਿ ਸਦ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀ ॥੩॥ ਤੁਧੁ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ
 ਤੇਰਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਭ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਕੋਈ ਨਾਤ ਨ ਜਾਣੈ ਮੇਰਾ ॥੪॥੧੦॥੪੯॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਿ
 ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ॥ ਖੋਲਿ ਕਿਵਾਰ ਦਿਖਾਲੇ ਦਰਸਨੁ ਪੁਨਰਧਿ ਜਨਮਿ ਨ
 ਆਈਐ ॥੧॥ ਮਿਲਤ ਪਰੀਤਮ ਸੁਆਮੀ ਅਪੁਨੇ ਸਗਲੇ ਢੂਖ ਹਰਤ ਰੇ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿਨਿ ਰਿਦੈ ਅਰਾਧਿਆ
 ਤਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਰਤ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਹਾ ਤਦਿਆਨ ਪਾਵਕ ਸਾਗਰ ਭਏ ਹਰਖ ਸੋਗ ਮਹਿ ਬਸਨਾ ॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿ ਭਿੱਡਿਆ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਜਧਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ॥੨॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਥਾਧਿ ਕੀਓ ਸਭੁ ਅਪਨਾ
 ਕੋਮਲ ਬੰਧਨ ਬਾਂਧਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਭਏ ਜਨ ਮੁਕਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ॥੩॥ ਰਾਖਿ ਲੀਏ
 ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖਨਹਾਰੈ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਭਾਣੇ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੁਮਾਰਾ ਦਾਤੇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੇ ॥੪॥੧੧॥
 ੫੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੋਹ ਮਲਨ ਨੀਦ ਤੇ ਛੁਟਕੀ ਕਤਨੁ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਭਿੱਡਿਆ ਰੀ ॥ ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਤੁਧੁ ਨ

ਵਿਆਪੈ ਤੇਰਾ ਆਲਸੁ ਕਹਾ ਗਿਆ ਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਛਕਾਰੁ ਗਾਖਰੋ ਸੰਜਮਿ ਕਤਨ ਛੁਟਿਆ
ਰੀ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵ ਅਸੁਰ ਤੈ ਗੁਨੀਆ ਸਗਲੋ ਭਵਨੁ ਲੁਟਿਆ ਰੀ ॥੨॥ ਦਾਵਾ ਅਗਨਿ ਬਹੁਤੁ ਤ੃ਣ ਜਾਲੇ
ਕੋਈ ਹਰਿਆ ਬੂਟੁ ਰਹਿਆ ਰੀ ॥ ਐਸੋ ਸਮਰਥੁ ਵਰਨਿ ਨ ਸਾਕਤ ਤਾ ਕੀ ਉਪਮਾ ਜਾਤ ਨ ਕਹਿਆ ਰੀ ॥
੨॥ ਕਾਜਰ ਕੋਠ ਮਹਿ ਭਈ ਨ ਕਾਰੀ ਨਿਰਮਲ ਬਰਨੁ ਬਨਿਆ ਰੀ ॥ ਮਹਾ ਮੰਨੁ ਗੁਰ ਹਿਰਦੈ ਬਸਿਆ
ਅਚਰਜ ਨਾਮੁ ਸੁਨਿਆ ਰੀ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਨਦਰਿ ਅਵਲੋਕਨ ਅਪੁਨੈ ਚਰਣਿ ਲਗਾਈ ॥ ਪ੍ਰੇਮ
ਭਗਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਸਮਾਈ ॥੪॥੧੨॥੫੧॥

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੭ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਲਾਲੁ ਚੋਲਨਾ ਤੈ ਤਨਿ ਸੋਹਿਆ ॥ ਸੁਰਿਜਨ ਭਾਨੀ
ਤਾਂ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ॥੧॥ ਕਵਨ ਬਨੀ ਰੀ ਤੇਰੀ ਲਾਲੀ ॥ ਕਵਨ ਰੰਗਿ ਤ੍ਰੁੰ ਭਈ ਗੁਲਾਲੀ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਮ ਹੀ
ਸੁਨਦਰਿ ਤੁਮਹਿ ਸੁਹਾਗੁ ॥ ਤੁਮ ਘਰਿ ਲਾਲਨੁ ਤੁਮ ਘਰਿ ਭਾਗੁ ॥੨॥ ਤ੍ਰੁੰ ਸਤਕਂਤੀ ਤ੍ਰੁੰ ਪਰਧਾਨਿ ॥ ਤ੍ਰੁੰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਾਨੀ
ਤੁਹੀ ਸੁਰ ਗਿਆਨਿ ॥੩॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਾਨੀ ਤਾਂ ਰੰਗਿ ਗੁਲਾਲ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਭ ਦੂਸਟਿ ਨਿਹਾਲ ॥੪॥ ਸੁਨਿ
ਰੀ ਸਖੀ ਇਹ ਹਮਰੀ ਘਾਲ ॥ ਪ੍ਰਭ ਆਪਿ ਸੀਗਾਰਿ ਸਵਾਰਨਹਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ਦ੍ਰਿੜਾ ॥੧॥੫੨॥ ਆਸਾ
ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦ੍ਰਿੜਖੁ ਘਨੋ ਜਬ ਹੋਤੇ ਦ੍ਰਿੜਿ ॥ ਅਬ ਮਸਲਤਿ ਮੋਹਿ ਮਿਲੀ ਹਦ੍ਰਿ ॥੧॥ ਚੁਕਾ ਨਿਹੋਰਾ ਸਖੀ ਸਹੇਰੀ ॥
ਭਰਮੁ ਗਿਆ ਗੁਰਿ ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਮੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਕਟਿ ਆਨਿ ਪ੍ਰਤ੍ਵ ਸੇਜ ਧਰੀ ॥ ਕਾਣਿ ਕਢਨ ਤੇ ਛੂਟਿ
ਪਰੀ ॥੨॥ ਮੰਦਰਿ ਮੈਰੈ ਸਬਦਿ ਉਜਾਰਾ ॥ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦੀ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥੩॥ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਮੈ ਪਿਲੁ ਘਰਿ
ਆਇਆ ॥ ਥਿਰੁ ਸੋਹਾਗੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨॥੫੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ
ਲਾਗਾ ॥ ਲੋਗਨ ਸਿਤ ਮੇਰਾ ਠਾਠਾ ਬਾਗਾ ॥੧॥ ਬਾਹਰਿ ਸੂਤੁ ਸਗਲ ਸਿਤ ਮਤਲਾ ॥ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹਤ ਜੈਸੇ ਜਲ
ਮਹਿ ਕਤਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੁਖ ਕੀ ਬਾਤ ਸਗਲ ਸਿਤ ਕਰਤਾ ॥ ਜੀਅ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਧਰਤਾ ॥੨॥ ਦੀਸਿ
ਆਵਤ ਹੈ ਬਹੁਤੁ ਭੀਹਾਲਾ ॥ ਸਗਲ ਚਰਨ ਕੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਲਾ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਜਨਿ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰਾ ਪਾਇਆ ॥

अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ ॥४॥३॥५४॥ आसा महला ५ ॥ पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥ नाम
 बिना माटी संगि रलीआ ॥१॥ कान कुंडलीआ बसत्र ओढलीआ ॥ सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ
 ॥१॥ रहाउ ॥ तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥ हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥२॥
 रूप सुंदरीआ अनिक इस्तरीआ ॥ हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥३॥ माइआ छलीआ
 बिकार बिखलीआ ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख दिइअलीआ ॥४॥४॥५५॥ आसा महला ५ ॥ एकु
 बगीचा पेड घन करिआ ॥ अंमृत नामु तहा महि फलिआ ॥१॥ ऐसा करहु बीचारु गिआनी ॥ जा ते
 पाईअै पटु निरबानी ॥ आसि पासि बिखूआ के कुंटा बीचि अंमृतु है भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥
 सिंचनहारे एकै माली ॥ खबरि करतु है पात पत डाली ॥२॥ सगल बनसपति आणि जड़ाई ॥ सगली
 फूली निफल न काई ॥३॥ अंमृत फलु नामु जिनि गुर ते पाइआ ॥ नानक दास तरी तिनि माइआ
 ॥४॥५॥५६॥ आसा महला ५ ॥ राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई
 ॥१॥ सरब सुखा बने तेरै ओलै ॥ भ्रम के परदे सतिगुर खोले ॥१॥ रहाउ ॥ हुकमु बूझि रंग रस माणे ॥
 सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥२॥ जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥ नामि रता सोई
 निरबाणु ॥३॥ जा कउ मिलिओ नामु निधाना ॥ भनति नानक ता का पूर खजाना ॥४॥६॥५७॥ आसा
 महला ५ ॥ तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥ पंडित पूछउ त माइआ राते ॥१॥ सो असथानु बतावहु
 मीता ॥ जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥१॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पाप पुन्न वीचार ॥ नरकि सुरगि
 फिरि फिरि अउतार ॥२॥ गिरसत महि चिंत उदास अह्वाकार ॥ करम करत जीअ कउ जंजार ॥३॥
 प्रभ किरपा ते मनु वसि आइआ ॥ नानक गुरमुखि तरी तिनि माइआ ॥४॥ साधसंगि हरि कीरतनु
 गाईअै ॥ इहु असथानु गुरु ते पाईअै ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७॥५८॥ आसा महला ५ ॥ घर महि
 सूख बाहरि फुनि सूखा ॥ हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥१॥ सगल सूख जाँ तूं चिति आँवै ॥

सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥१॥ रहाउ ॥ तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥ हरि हरि जपत ढ्है
 दुख डेरा ॥२॥ हुकमु बूझै सोई परवानु ॥ साचु सबदु जा का नीसानु ॥३॥ गुरि पूरै हरि नामु
 दृढ़ाइआ ॥ भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥४॥੮॥੫੬॥ आसा महला ੫ ॥ जहा पठावहु तह
 तह जाइंगी ॥ जो तुम देहु सोई सुखु पाइंगी ॥१॥ सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥ तुमरी कृपा ते तृपति
 अघाइंगी ॥१॥ रहाउ ॥ तुमरा दीआ पैन्त खाइंगी ॥ तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाइंगी ॥२॥ मन तन
 अंतरि तुझै धिआइंगी ॥ तुमरै लवै न कोऊ लाइंगी ॥३॥ कहु नानक नित डिवै धिआइंगी ॥ गति होवै
 संतह लगि पाइंगी ॥४॥੬॥੬੦॥ आसा महला ੫ ॥ ऊठत बैठत सोवत धिआईअै ॥ मारगि चलत
 हरे हरि गाईअै ॥१॥ स्वन सुनीजै अंमृत कथा ॥ जासु सुनी मनि होडि अन्नदा दूख रोग मन सगले
 लथा ॥१॥ रहाउ ॥ कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥ गुर प्रसादि हरि अंमृतु पीजै ॥२॥ दिनसु
 रैनि हरि कीरतनु गाईअै ॥ सो जनु जम की वाट न पाईअै ॥३॥ आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥
 गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥४॥੧੦॥੬੧॥ आसा महला ੫ ॥ जा कै सिमरनि सूख निवासु ॥
 भई कलिआण दुख होवत नासु ॥१॥ अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥ सतिगुरु अपना सद सदा
 मनावहु ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥ थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥२॥
 पर का बुरा न राखहु चीत ॥ तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥३॥ हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीना ॥ इहु
 सुखु नानक अनदिनु चीना ॥४॥੧੧॥੬੨॥ आसा महला ੫ ॥ जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥ नामु
 जपत उहु चहु कुंट मानै ॥१॥ दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥ तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥१॥
 रहाउ ॥ जा कै निकटि न आवै कोई ॥ सगल सृसटि उआ के चरन मलि धोई ॥२॥ जो प्रानी काहू
 न आवत काम ॥ संत प्रसादि ता को जपीअै नाम ॥३॥ साधसंगि मन सोवत जागे ॥ तब प्रभ नानक
 मीठे लागे ॥४॥੧੨॥੬੩॥ आसा महला ੫ ॥ एको एकी नैन निहारउ ॥ सदा सदा हरि नामु

ਸਮਾਰਤ ॥੧॥ ਰਾਮ ਰਾਮਾ ਰਾਮਾ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥ ਸਨਤ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਤ ਰੇ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਗਲ ਸਮਗੀ ਜਾ ਕੈ ਸੂਤਿ ਪਰੋਈ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿਆ ਸੋਈ ॥੨॥ ਓਪਤਿ ਪਰਲਤ
 ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਰਤਾ ॥ ਆਪਿ ਅਲੇਪਾ ਨਿਰਗੁਨੁ ਰਹਤਾ ॥੩॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਅਨੰਦ ਕਰੈ
 ਨਾਨਕ ਕਾ ਸੁਆਮੀ ॥੪॥੧੩॥੬੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਰਹੇ ਭਵਾਰੇ ॥ ਦੁਲਭ ਦੇਹ
 ਜੀਤੀ ਨਹੀ ਹਾਰੇ ॥੧॥ ਕਿਲਬਿਖ ਬਿਨਾਸੇ ਦੁਖ ਦਰਦ ਦ੍ਰਵਿ ॥ ਭਏ ਪੁਨੀਤ ਸਨਤਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸਨਤ ਉਧਾਰਨ ਜੋਗ ॥ ਤਿਸੁ ਭੇਟੇ ਜਿਸੁ ਧੂਰਿ ਸੰਜੋਗ ॥੨॥ ਮਨਿ ਆਨਦੁ ਮੰਨੁ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥ ਤ੃ਸਨ
 ਬੁੜੀ ਮਨੁ ਨਿਹਚਲੁ ਥੀਆ ॥੩॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਤ ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਬੁਧਿ ॥੪॥੧੪॥
 ੬੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਿਟੀ ਤਿਆਸ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰੇ ॥ ਸਾਧ ਸੇਵਾ ਅਥ ਕਟੇ ਘਨੇਰੇ ॥੧॥ ਸੂਖ
 ਸਹਜ ਆਨਦੁ ਘਨਾ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਭਏ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਬਿਨਸਿਓ ਮਨ ਕਾ ਮੂਰਖੁ ਢੀਠਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਭਾਣਾ ਲਾਗ ਮੀਠਾ ॥੨॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੇ ਚਰਣ ਗਹੇ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ
 ਕੇ ਪਾਪ ਲਹੇ ॥੩॥ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਛਿਹੁ ਸਫਲ ਭਿੱਡਿਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕਰੀ ਮਿੱਡਿਆ ॥੪॥੧੫॥੬੬॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਨਾ ਸਦ ਸਦਾ ਸਮਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਕੇਸ ਸੰਗਿ ਝਾਰੇ ॥੧॥ ਜਾਗੁ ਰੇ ਮਨ
 ਜਾਗਨਹਾਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਆਵਸਿ ਕਾਮਾ ਝੂਠਾ ਮੋਹੁ ਮਿਥਿਆ ਪਸਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ
 ਸਿਤ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥ ਗੁਰੁ ਕਿਰਪਾਲੁ ਛੋਇ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੨॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਵਾ ਨਾਹੀ ਥਾਤ ॥ ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਗੁਰੁ
 ਦੇਵੈ ਨਾਤ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਆਪਿ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਜਾਪਿ ॥੪॥੧੬॥੬੭॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਪੇ ਪੇਡੁ ਬਿਸਥਾਰੀ ਸਾਖ ॥ ਅਪਨੀ ਖੇਤੀ ਆਪੇ ਰਾਖ ॥੧॥ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਤ ਏਕੈ ਓਹੀ ॥
 ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਆਪੇ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੇ ਸੂਰੁ ਕਿਰਣਿ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥ ਸੋਈ ਗੁਪਤੁ ਸੋਈ ਆਕਾਰੁ
 ॥੨॥ ਸਰਗੁਣ ਨਿਰਗੁਣ ਥਾਪੈ ਨਾਤ ॥ ਦੁਹ ਮਿਲਿ ਏਕੈ ਕੀਨੋ ਠਾਤ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਭ੍ਰਮੁ ਭਤ ਖੋਇਆ
 ॥ ਅਨੰਦ ਰੂਪੁ ਸਭੁ ਨੈਨ ਅਲੋਇਆ ॥੪॥੧੭॥੬੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਨਾ ॥

ਦਿਨੁ ਰੈਣ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਵਖਾਨਾ ॥੧॥ ਮੈ ਨਿਰਗੁਨ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਪ੍ਰਭ ਸੋਇ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਸੂਰਖ ਸੁਗਧ ਅਗਿਆਨ ਅਵੀਚਾਰੀ ॥ ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਕੀ ਆਸ ਮਨਿ ਧਾਰੀ ॥੨॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਕਰਮ
 ਨ ਸਾਧਾ ॥ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭੂ ਕਾ ਮਨਹਿ ਅਰਾਧਾ ॥੩॥ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਨਾ ਮਤਿ ਮੇਰੀ ਥੋਰੀ ॥ ਬਿਨਵਤਿ ਨਾਨਕ ਓਟ
 ਪ੍ਰਭ ਤੋਰੀ ॥੪॥੧੮॥੬੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਖਰ ਦੁਇ ਇਹ ਮਾਲਾ ॥ ਜਪਤ ਜਪਤ ਭਏ ਦੀਨ
 ਦਿਇਆਲਾ ॥੧॥ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੀ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਹੁ ਸਰਣਾਈ ਮੋ ਕਤ ਦੇਹੁ ਹਰੇ ਹਰਿ
 ਜਪਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਮਾਲਾ ਤੁਰ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰੈ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਕਾ ਢੂਖੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥੨॥ ਹਿਰਦੈ ਸਮਾਲੈ
 ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੈ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਇਤ ਤਤ ਕਤਹਿ ਨ ਡੋਲੈ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਰਾਚੈ ਨਾਇ ॥ ਹਰਿ ਮਾਲਾ ਤਾ ਕੈ
 ਸੰਗਿ ਜਾਇ ॥੪॥੧੯॥੭੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸ ਕਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕਾ ਹੋਇ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਲੇਪੁ ਨ
 ਬਿਆਪੈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਸਦ ਹੀ ਮੁਕਤਾ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸੋਈ ਭਲ ਜਨ ਕੈ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲ ਦਾਸ
 ਕੀ ਜੁਗਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਗਲ ਤਿਆਗੀ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ਆਇਆ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਹਾ ਬਿਆਪੈ ਮਾਇਆ ॥
 ੨॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਾ ਕੇ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਚਿੰਤਾ ਸੁਪਨੈ ਨਾਹਿ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ
 ॥ ਭਰਮੁ ਮੋਹੁ ਸਗਲ ਬਿਨਸਾਇਆ ॥੪॥੨੦॥੭੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਤ ਸੁਪ੍ਰਸਾਨੁ ਹੋਇਆਂ ਪ੍ਰਭੁ
 ਮੇਰਾ ॥ ਤਾਂ ਢੂਖੁ ਭਰਮੁ ਕਹੁ ਕੈਂਦੇ ਨੇਰਾ ॥੧॥ ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਜੀਵਾ ਸੋਇ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਨ ਕਤ ਲੇਹੁ
 ਤਥਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਿਟਿ ਗਇਆ ਢੂਖੁ ਬਿਸਾਰੀ ਚਿੰਤਾ ॥ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਜਪਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮੰਤਾ ॥੨॥
 ਸੋਈ ਸਤਿ ਸਤਿ ਹੈ ਸੋਇ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਰਖੁ ਕੱਠਿ ਪਰੋਇ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਤਨ ਤਹ ਕਰਮਾ ॥
 ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥੪॥੨੧॥੭੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਅਛਕਾਰਿ ਵਿਗੂਤੇ ॥ ਹਰਿ
 ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਛੂਟੇ ॥੧॥ ਸੋਇ ਰਹੇ ਮਾਇਆ ਮਦ ਮਾਤੇ ॥ ਜਾਗਤ ਭਗਤ ਸਿਮਰਤ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਮੋਹ ਭਰਮਿ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭਵਾਇਆ ॥ ਅਸਥਿਰੁ ਭਗਤ ਹਰਿ ਚਰਣ ਧਿਆਇਆ ॥੨॥ ਬੰਧਨ
 ਅੰਧ ਕੂਪ ਗ੍ਰਹ ਮੇਰਾ ॥ ਸੁਕਤੇ ਸੰਤ ਬੁਝਾਹਿ ਹਰਿ ਨੇਰਾ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥ ਈਹਾ ਸੁਖੁ

आगै गति पाई ॥४॥२२॥७३॥ आसा महला ५ ॥ तू मेरा तरंगु हम मीन तुमारे ॥ तू मेरा ठाकुरु
 हम तेरै दुआरे ॥१॥ तू मेरा करता हउ सेवकु तेरा ॥ सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥१॥ रहाउ ॥ तू
 मेरा जीवनु तू आधारु ॥ तुझ्हाहि पेखि बिगसै कउलारु ॥२॥ तू मेरी गति पति तू परवानु ॥ तू समरथु
 मै तेरा ताणु ॥३॥ अनदिनु जपउ नाम गुणतासि ॥ नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥४॥२३॥७४॥
 आसा महला ५ ॥ रोवनहारै झूठु कमाना ॥ हसि हसि सोगु करत बेगाना ॥१॥ को मूआ का कै घरि
 गावनु ॥ को रोवै को हसि हसि पावनु ॥१॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा ते बिरधाना ॥ पहुचि न मूका फिरि
 पछुताना ॥२॥ तृहु गुण महि वरतै संसारा ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥३॥ कहु नानक
 जो लाडिआ नाम ॥ सफल जनमु ता का परवान ॥४॥२४॥७५॥ आसा महला ५ ॥ सोडि रही प्रभ
 खबरि न जानी ॥ भोरु भडिआ बहुरि पछुतानी ॥१॥ पृथ्र प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥ प्रभ
 मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥१॥ रहाउ ॥ कर महि अंमूतु आणि निसारिओ ॥
 खिसरि गडिओ भूम परि डारिओ ॥२॥ सादि मोहि लादी अद्वाकारे ॥ दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥३॥
 साधसंगि मिटे भरम अंधारे ॥ नानक मेली सिरजणहारे ॥४॥२५॥७६॥ आसा महला ५ ॥
 चरन कमल की आस पिआरे ॥ जमकंकर नसि गए विचारे ॥१॥ तू चिति आवहि तेरी मडिआ ॥
 सिमरत नाम सगल रोग खडिआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक दूख देवहि अवरा कउ ॥ पहुचि न साकहि
 जन तेरे कउ ॥२॥ दरस तेरे की पिआस मनि लागी ॥ सहज अन्नद बसै बैरागी ॥३॥ नानक की
 अरदासि सुणीजै ॥ केवल नामु रिदे महि दीजै ॥४॥२६॥७७॥ आसा महला ५ ॥ मनु तृपतानो मिटे
 जंजाल ॥ प्रभु अपुना होडिआ किरपाल ॥१॥ संत प्रसादि भली बनी ॥ जा कै गृहि सभु किछु है पूरनु
 सो भेटिआ निरभै धनी ॥१॥ रहाउ ॥ नामु दृढ़ाडिआ साध कृपाल ॥ मिटि गई भूख महा बिकराल
 ॥२॥ ठाकुरि अपुनै कीनी दाति ॥ जलनि बुझी मनि होई साँति ॥३॥ मिटि गई भाल मनु

सहजि समाना ॥ नानक पाइआ नाम खजाना ॥४॥२७॥७੮॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर सिउ जा की
 बनि आई ॥ भोजन पूर्न रहे अधाई ॥१॥ कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥ खात खरचत बिलछत
 देवन कउ ॥१॥ रहाउ ॥ जा का धनी अगम गुसाई ॥ मानुख की कहु केत चलाई ॥२॥ जा की सेवा
 दस असट सिधाई ॥ पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥३॥ जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥
 कहु नानक नाही तिन कामी ॥४॥२८॥७९॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥
 तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥१॥ मिटि गई गणत बिनासिउ संसा ॥ नामि रते जन भए
 भगवंता ॥१॥ रहाउ ॥ जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥ तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥२॥ जउ मै ओट गही
 प्रभ तेरी ॥ ताँ पूर्न होई मनसा मेरी ॥३॥ देखि चलित मनि भए दिलासा ॥ नानक दास तेरा
 भरवासा ॥४॥२९॥८०॥ आसा महला ५ ॥ अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥ गिरत कूप महि खाहि
 मिठाई ॥१॥ सोचत साचत रैनि बिहानी ॥ अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै
 सारिंगपानी ॥१॥ रहाउ ॥ दुम की छाइआ निहचल गृह बाँधिआ ॥ काल कै फाँसि सकत स魯
 साँधिआ ॥२॥ बालू कनारा तरंग मुखि आइआ ॥ सो थानु मूँडि निहचलु करि पाइआ ॥३॥ साधसंगि
 जपिओ हरि राइ ॥ नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥४॥३०॥८१॥ आसा महला ५ दुतुके ६ ॥ उन कै
 संगि तू करती केल ॥ उन कै संगि हम तुम संगि मेल ॥ उन् कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै ॥ ओसु बिना कोऊ
 मुखु नही जोरै ॥१॥ ते बैरागी कहा समाए ॥ तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥२॥ रहाउ ॥ उन् कै संगि तू
 गृह महि माहरि ॥ उन् कै संगि तू होई है जाहरि ॥ उन् कै संगि तू रखी पपोलि ॥ ओसु बिना तूं छुटकी
 रोलि ॥२॥ उन् कै संगि तेरा मानु महतु ॥ उन् कै संगि तुम साकु जगतु ॥ उन् कै संगि तेरी सभ बिधि
 थाटी ॥ ओसु बिना तूं होई है माटी ॥३॥ ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥
 जोडि विछोड़े नानक थापि ॥ अपनी कुदरति जाणै आपि ॥४॥३१॥८२॥ आसा महला ५ ॥

ना ओहु मरता ना हम डरिआ ॥ ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥ ना ओहु निरधनु ना हम भूखे ॥ ना
 ओसु दूखु न हम कउ दूखे ॥१॥ अवरु न कोऊ मारनवारा ॥ जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥१॥ रहाउ ॥
 ना उसु बंधन ना हम बाधे ॥ ना उसु धंधा ना हम धाधे ॥ ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥ ओसु अन्नदु त
 हम सद केला ॥२॥ ना उसु सोचु न हम कउ सोचा ॥ ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥ ना उसु भूख न
 हम कउ तृसना ॥ जा उहु निरमलु ताँ हम जचना ॥३॥ हम किछु नाही एकै ओही ॥ आगै पाछै एको
 सोई ॥ नानक गुरि खोए भ्रम भंगा ॥ हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥४॥३२॥८॥ आसा महला ५ ॥
 अनिक भाँति करि सेवा करीਐ ॥ जीउ प्रान धनु आगै धरीਐ ॥ पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥
 अनिक बार जाईਐ कुरबानु ॥१॥ साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥
 १॥ रहाउ ॥ दासनि दासी की पनिहारि ॥ उन् की रेणु बसै जीअ नालि ॥ माथै भागु त पावउ संगु ॥
 मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥२॥ जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥ करम धरम अरपउ सभ होमा ॥ गरबु
 मोहु तजि होवउ रेन ॥ उन् कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥३॥ निमख निमख एही आराधउ ॥ दिनसु रैणि
 एह सेवा साधउ ॥ भए कृपाल गुपाल गोबिंद ॥ साधसंगि नानक बखसिंद ॥४॥३३॥८॥
 आसा महला ५ ॥ प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥ प्रभ की प्रीति हउमै
 मलु खोइ ॥ प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ॥१॥ सुनहु मीत औसा प्रेम पिआरु ॥ जीअ प्रान घट
 घट आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ की प्रीति भए सगल निधान ॥ प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम ॥
 प्रभ की प्रीति सद सोभावंत ॥ प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ॥२॥ प्रभ की प्रीति इहु भवजलु तरै ॥
 प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै ॥ प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥ प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥३॥
 आपहु कोई मिलै न भूलै ॥ जिसु कृपालु तिसु साधसंगि धूलै ॥ कहु नानक तरै कुरबाणु ॥ संत ओट
 प्रभ तेरा ताणु ॥४॥३४॥८॥ आसा महला ५ ॥ भूपति होइ कै राजु कमाइआ ॥ करि करि अनरथ

ਵਿਹਾਝੀ ਮਾਇਆ ॥ ਸੰਚਤ ਸੰਚਤ ਥੈਲੀ ਕੀਨੀ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਤਸ ਤੇ ਢਾਰਿ ਅਵਰ ਕਤ ਦੀਨੀ ॥੧॥ ਕਾਚ ਗਗਰੀਆ
 ਅੰਭ ਮੜਾਰੀਆ ॥ ਗਰਬਿ ਗਰਬਿ ਤਾਹੂ ਮਹਿ ਪਰੀਆ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਰਮਤ ਹੋਇਆ ਭਿਆ ਨਿਵਾਗਾ ॥
 ਚੀਤਿ ਨ ਆਇਆ ਕਰਤਾ ਸੰਗਾ ॥ ਲਸਕਰ ਜੋਡੇ ਕੀਆ ਸੰਬਾਹਾ ॥ ਨਿਕਸਿਆ ਫੂਕ ਤ ਹੋਇ ਗਿਆ ਸੁਆਹਾ
 ॥੨॥ ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਮਹਲ ਅਰੁ ਰਾਨੀ ॥ ਹਸਤਿ ਘੋਡੇ ਜੋਡੇ ਮਨਿ ਭਾਨੀ ॥ ਵਡ ਪਰਵਾਰੁ ਪ੍ਰੂਤ ਅਰੁ ਧੀਆ ॥ ਮੋਹਿ
 ਪਚੇ ਪਚਿ ਅੰਧਾ ਮੂਆ ॥੩॥ ਜਿਨਹਿ ਉਪਾਹਾ ਤਿਨਹਿ ਬਿਨਾਹਾ ॥ ਰੰਗ ਰਸਾ ਜੈਸੇ ਸੁਪਨਾਹਾ ॥ ਸੋਈ ਮੁਕਤਾ
 ਤਿਸੁ ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਜਿਸੁ ਖਸਮੁ ਦਿਆਲੁ ॥੪॥੩੫॥੮੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਇਨ੍ ਸਿਤ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੀ ਘਨੇਰੀ ॥ ਜਤ ਮਿਲੀਐ ਤਤ ਵਧੈ ਵਧੇਰੀ ॥ ਗਲਿ ਚਮਡੀ ਜਤ ਛੋਡੈ ਨਾਹੀ ॥ ਲਾਗਿ ਛੁਟੋ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕੀ ਪਾਈ ॥੧॥ ਜਾਗ ਮੋਹਨੀ ਹਮ ਤਿਆਗਿ ਗਰਾਈ ॥ ਨਿਰਗੁਨੁ ਮਿਲਿਆ ਵਜੀ ਵਧਾਈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਐਸੀ
 ਸੁਨਦਰਿ ਮਨ ਕਤ ਮੋਹੈ ॥ ਬਾਟਿ ਘਾਟਿ ਗ੍ਰਹਿ ਬਨਿ ਬਨਿ ਜੋਹੈ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਲਾਗੈ ਹੋਇ ਕੈ ਮੀਠੀ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
 ਮੈ ਖੋਟੀ ਡੀਠੀ ॥੨॥ ਅਗਰਕ ਤਸ ਕੇ ਵਡੇ ਠਗਾਊ ॥ ਛੋਡਹਿ ਨਾਹੀ ਬਾਪ ਨ ਮਾਊ ॥ ਮੇਲੀ ਅਪਨੇ ਤਨਿ ਲੇ
 ਬਾਂਧੇ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮੈ ਸਗਲੇ ਸਾਥੇ ॥੩॥ ਅਬ ਮੋਰੈ ਮਨਿ ਭਿਆ ਅਨੰਦ ॥ ਭਤ ਚੂਕਾ ਟੂਟੇ ਸਭਿ ਫੰਦ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਘਰੁ ਸਗਲਾ ਮੈ ਸੁਖੀ ਬਸਾਇਆ ॥੪॥੩੬॥੮੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਆਠ ਪਹਰ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਕੀਆ ਮੀਠਾ ਮਾਨੈ ॥ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਸੰਤਨ ਆਧਾਰੁ ॥ ਹੋਇ ਰਹੇ ਸਭ
 ਕੀ ਪਗ ਛਾਰੁ ॥੧॥ ਸੰਤ ਰਹਤ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਤਾਂ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਕਰਤਣਿ ਜਾ ਕੈ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ॥ ਅਨੰਦ ਰੂਪ ਕੀਰਤਨੁ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਮਿਤ ਸੁਕੁ ਜਾ ਕੈ ਏਕ ਸਮਾਨੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ
 ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨੈ ॥੨॥ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਅਧ ਕਾਟਨਹਾਰਾ ॥ ਦੁਖ ਦੂਰਿ ਕਰਨ ਜੀਅ ਕੇ ਦਾਤਾਰਾ ॥ ਸੂਰਬੀਰ
 ਬਚਨ ਕੇ ਬਲੀ ॥ ਕਤਲਾ ਬਪੁਰੀ ਸੰਤੀ ਛਲੀ ॥੩॥ ਤਾ ਕਾ ਸੰਗੁ ਬਾਛਹਿ ਸੁਰਦੇਵ ॥ ਅਮੋਘ ਦਰਸੁ ਸਫਲ
 ਜਾ ਕੀ ਸੇਵ ॥ ਕਰ ਜੋਡਿ ਨਾਨਕੁ ਕਰੇ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਮੋਹਿ ਸੰਤਹ ਟਹਲ ਦੀਜੈ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥੪॥੩੭॥੮੮॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਗਲ ਸੂਖ ਜਧਿ ਏਕੈ ਨਾਮ ॥ ਸਗਲ ਧਰਮ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥ ਮਹਾ ਪਵਿਤ੍ਰ

साध का संगु ॥ जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥੧॥ गुर प्रसादि ओङ्गि आनन्द पावै ॥ जिसु सिमरत मनि
 होङ्गि प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥੧॥ रहाउ ॥ वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ बेद पुरान
 तिनि सिंमृति सुनीजा ॥ महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥ साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥੨॥
 प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥ पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ जा कउ भेटिओ हरि हरि राङ्गि ॥ ता की
 गति मिति कथनु न जाङ्गि ॥੩॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ उन साधा का दरसनु पावउ ॥ मोहि
 गरीब कउ लेहु रलाङ्गि ॥ नानक आङ्गि पए सरणाङ्गि ॥੪॥੩੮॥੮॥ आसा महला ੫ ॥ आठ पहर
 उदक इसनानी ॥ सद ही भोगु लगाङ्गि सुगिआनी ॥ बिरथा काहू छोडै नाही ॥ बहुरि बहुरि तिसु
 लागह पाई ॥੧॥ सालगिरामु हमारै सेवा ॥ पूजा अरचा बंदन देवा ॥੧॥ रहाउ ॥ घंटा जा का
 सुनीअै चहु कुंठ ॥ आसनु जा का सदा बैकुंठ ॥ जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥ ता का धूपु सदा परफुलै
 ॥੨॥ घटि घटि संपटु है रे जा का ॥ अभग सभा संगि है साधा ॥ आरती कीरतनु सदा अनन्द ॥ महिमा
 सुंदर सदा बेअंत ॥੩॥ जिसहि परापति तिस ही लहना ॥ संत चरन ओहु आङ्गिओ सरना ॥ हाथि चड़िओ
 हरि सालगिरामु ॥ कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥੪॥੩੯॥੧੦॥ आसा महला ੫ पंचपदा ॥ जिह पैडै
 लूटी पनिहारी ॥ सो मारगु संतन दूरारी ॥੧॥ सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥ नाम तेरे की मुकते बीथी
 जम का मारगु दूरि रहिआ ॥੧॥ रहाउ ॥ जह लालच जागाती घाट ॥ दूरि रही उह जन ते
 बाट ॥੨॥ जह आवटे बहुत घन साथ ॥ पारब्रह्म के संगी साध ॥੩॥ चित्र गुपतु सभ लिखते
 लेखा ॥ भगत जना कउ दृसटि न पेखा ॥੪॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ वाजे ता कै अनहद
 तूरा ॥੫॥੪੦॥੬॥ आसा महला ੫ दुपदा ੧ ॥ साधू संगि सिखाङ्गिओ नामु ॥ सरब मनोरथ पूरन
 काम ॥ बुझि गई तृसना हरि जसहि अघाने ॥ जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥੧॥ करन करावन
 सरनि परिआ ॥ गुर परसादि सहज घरु पाङ्गिआ मिटिआ अंधेरा चंदु चड़िआ ॥੧॥ रहाउ ॥

ਲਾਲ ਜਵੇਹਰ ਭੇਈ ਭੰਡਾਰ ॥ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਜਪਿ ਨਿਰਕਾਰ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਬਦੁ ਪੀਵੈ ਜਨੁ ਕੋਝਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ
 ਪਰਮ ਗਤਿ ਹੋਝਿ ॥੨॥੪੧॥੬੨॥ ਆਸਾ ਘਰੁ ੭ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਿਟੈ ਨਿਤ ਧਿਆਈ ॥ ਸੰਗੀ
 ਸਾਥੀ ਸਗਲ ਤਰੈਝੀ ॥੧॥ ਗੁਰੁ ਮੈਰੈ ਸੰਗੀ ਸਦਾ ਹੈ ਨਾਲੇ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਮੀਠਾ ਲਾਗੈ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਨਕੁ ਮਾਂਗੈ ॥੨॥੪੨॥੬੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਤਰਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮਨਹਿ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੁਰਦੇਵ ਪਿਆਰੇ ॥
 ਪ੍ਰਯਹਿ ਸੰਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਭਾਗੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਾ ਥਿਰੁ
 ਸੋਹਾਗੁ ॥੨॥੪੩॥੬੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੀਠੀ ਆਗਿਆ ਪਿਰ ਕੀ ਲਾਗੀ ॥ ਸਤਕਨਿ ਘਰ ਕੀ ਕੰਤਿ
 ਤਿਆਗੀ ॥ ਪੂਰ੍ਖ ਸੋਹਾਗਨਿ ਸੀਗਾਰਿ ਕਰੀ ॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਕੀ ਤਪਤਿ ਹਰੀ ॥੧॥ ਭਲੋ ਭਵਿਓ ਪੂਰ੍ਖ ਕਹਿਆ
 ਮਾਨਿਆ ॥ ਸੂਖੁ ਸਹਜੁ ਝਿਸੁ ਘਰ ਕਾ ਜਾਨਿਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਤ ਬੰਦੀ ਪੂਰ੍ਖ ਖਿਜਮਤਦਾਰ ॥ ਓਹੁ ਅਬਿਨਾਸੀ
 ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥ ਲੇ ਪਖਾ ਪੂਰ੍ਖ ਝਲਤ ਪਾਏ ॥ ਭਾਗਿ ਗਏ ਪੰਚ ਢੂਤ ਲਾਵੇ ॥੨॥ ਨਾ ਮੈ ਕੁਲੁ ਨਾ ਸੋਭਾਵਤ
 ॥ ਕਿਆ ਜਾਨਾ ਕਿਤ ਭਾਨੀ ਕੰਤ ॥ ਮੋਹਿ ਅਨਾਥ ਗਰੀਬ ਨਿਮਾਨੀ ॥ ਕੰਤ ਪਕਰਿ ਹਮ ਕੀਨੀ ਰਾਨੀ ॥੩॥
 ਜਬ ਮੁਖਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸਾਜਨੁ ਲਾਗਾ ॥ ਸੂਖ ਸਹਜ ਮੇਰਾ ਧਨੁ ਸੋਹਾਗਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੋਰੀ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲੀ ਪ੍ਰਭ ਗੁਣਤਾਸਾ ॥੪॥੧॥੬੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਥੈ ਤੂਕੁਟੀ ਦੂਸਟਿ ਕਰੁਰਿ ॥ ਬੋਲੈ
 ਕਤੜਾ ਜਿਹਬਾ ਕੀ ਫ੍ਰਾਡਿ ॥ ਸਦਾ ਭੂਖੀ ਪਿਰੁ ਜਾਨੈ ਢੂਰਿ ॥੧॥ ਐਸੀ ਝਿਸਕੀ ਝਿਕ ਰਾਮਿ ਤਪਾਈ ॥
 ਤਨਿ ਸਭੁ ਜਗੁ ਖਾਇਆ ਹਮ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਾਇ ਠਗਤਲੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਜੋਹਿਆ ॥
 ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹਾਦੇਤ ਮੋਹਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਲਗੇ ਸੇ ਸੋਹਿਆ ॥੨॥ ਵਰਤ ਨੇਮ ਕਰਿ ਥਾਕੇ
 ਪੁਨਹਚਰਨਾ ॥ ਤਟ ਤੀਰਥ ਭਵੇ ਸਭ ਧਰਨਾ ॥ ਸੇ ਤਕਰੇ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਨਾ ॥੩॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ
 ਸਭੋ ਜਗੁ ਬਾਧਾ ॥ ਹਤਮੈ ਪਚੈ ਮਨਮੁਖ ਮੂਰਾਖਾ ॥ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਹਮ ਰਾਖਾ ॥੪॥੨॥੬੬॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਰਬ ਢੂਖ ਜਬ ਬਿਸਰਹਿ ਸੁਆਮੀ ॥ ਝਿਹਾ ਊਹਾ ਕਾਮਿ ਨ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥੧॥ ਸੰਤ ਤੂਪਤਾਸੇ

हरि हरि ध्याइ ॥ करि किरपा अपुनै नाइ लाए सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥ संगि होवत कउ
 जानत दूरि ॥ सो जनु मरता नित नित झूरि ॥ २ ॥ जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥ महा
 बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभु सिमरहु एक ॥ गति पाईਐ गुर पूरे टेक ॥ ४
 ॥ ३ ॥ ६७ ॥ आसा महला ५ ॥ नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥ कलमल दोख सगल परहरिआ ॥
 १ ॥ सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥ हरि गुन गाइ परम गति पाई ॥ रहाउ ॥ साध जना के पूजे पैर ॥
 मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥ २ ॥ गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ ॥ पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥
 ३ ॥ जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥ नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ आसा महला ५ ॥
 गावि लेहि तू गावनहारे ॥ जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥ जा की सेवा सरब सुख पावहि ॥ अवर काहू
 पहि बहुड़ि न जावहि ॥ १ ॥ सदा अन्नद अन्नदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीਐ ॥ बलिहारी
 तिसु संत पिथारे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीਐ ॥ रहाउ ॥ जा का दानु निखूटै नाही ॥ भली भाति
 सभ सहजि समाही ॥ जा की बख्स न मेटै कोई ॥ मनि वासाईਐ साचा सोई ॥ २ ॥ सगल समग्री गृह
 जा कै पूरन ॥ प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥ ओटि गही निरभउ पदु पाईਐ ॥ सासि सासि सो गुन
 निधि गाईਐ ॥ ३ ॥ दूरि न होई कतहू जाईਐ ॥ नदरि करे ता हरि हरि पाईਐ ॥ अरदासि करी
 पूरे गुर पासि ॥ नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६६ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मिटिआ तन
 का दूख ॥ मन सगल कउ होआ सूखु ॥ करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥ बलि बलि तिसु सतिगुर कउ
 जाउ ॥ १ ॥ गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई ॥ रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥
 गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ मन चिंतत सगले फल पाए ॥ अगनि बुझी सभ होई साँति ॥ करि
 किरपा गुरि कीनी दाति ॥ २ ॥ निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥ निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥ बंधन
 काटि सेवक करि राखे ॥ अंमृत बानी रसना चाखे ॥ ३ ॥ वडै भागि पूज गुर चरना ॥ सगल तिआगि

ਪਾਈ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨਾ ॥ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਤ ਭਿੱਅਦ ਦਿੱਅਲਾ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਹੋਆ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲਾ ॥੪॥੬॥੧੦੦॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਚੈ ਟੀਆ ਭੇਜਿ ॥ ਚਿਰੁ ਜੀਵਨੁ ਉਪਜਿਆ ਸੰਜੋਗਿ ॥ ਉਦਰੈ ਮਾਹਿ ਆਇ
 ਕੀਆ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਮਾਤਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਹੁਤੁ ਬਿਗਾਸੁ ॥੧॥ ਜੰਮਿਆ ਪ੍ਰਤੁ ਭਗਤੁ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ॥ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਸਭ
 ਮਹਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰ ਕਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੱਸੀ ਮਾਸੀ ਹੁਕਮਿ ਬਾਲਕ ਜਨਮੁ ਲੀਆ ॥ ਮਿਟਿਆ ਸੋਗੁ ਮਹਾ ਅਨਨਦੁ
 ਥੀਆ ॥ ਗੁਰਬਾਣੀ ਸਖੀ ਅਨਨਦੁ ਗਾਵੈ ॥ ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੨॥ ਵਧੀ ਵੇਲਿ ਬਹੁ ਪੀਡੀ ਚਾਲੀ ॥
 ਧਰਮ ਕਲਾ ਹਰਿ ਕੰਧਿ ਬਹਾਲੀ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦਿਵਾਇਆ ॥ ਭਏ ਅਚਿੰਤ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਇਆ
 ॥੩॥ ਜਿਤ ਬਾਲਕੁ ਪਿਤਾ ਊਪਰਿ ਕਰੇ ਬਹੁ ਮਾਣੁ ॥ ਬੁਲਾਇਆ ਬੋਲੈ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣਿ ॥ ਗੁੜੀ ਛਨੀ ਨਾਹੀ ਬਾਤ
 ॥ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕੁ ਤੁਠਾ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥੪॥੭॥੧੦੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਰਾਖਿਆ ਦੇ ਹਾਥ ॥
 ਪ੍ਰਗਟੁ ਭਿੱਅਦ ਜਨ ਕਾ ਪਰਤਾਪੁ ॥੧॥ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਜਪੀ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਧਿਆਈ ॥ ਜੀਅ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਗੁਰੂ ਪਹਿ
 ਪਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਸਾਚੇ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਸੇਵਕ ਸੇਵ ॥੨॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਜੋਬਨੁ ਰਾਖੈ ਪ੍ਰਾਨ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕਤ ਕੁਰਬਾਨ ॥੩॥੮॥੧੦੨॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੮ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੫

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੈ ਬੰਦਾ ਕੈ ਖਰੀਦੁ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਦਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਤੇਰਾ ॥੧॥ ਮਾਣੁ ਨਿਮਾਣੇ ਤੂੰ
 ਧਣੀ ਤੇਰਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥ ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਅਨ ਟੇਕ ਹੈ ਸੋ ਜਾਣਹੁ ਕਾਚਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਅਪਾਰ ਹੈ ਕੋਈ
 ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਏ ॥ ਜਿਸੁ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਭੇਟਸੀ ਸੋ ਚਲੈ ਰਖਾਏ ॥੨॥ ਚਤੁਰਾਈ ਸਿਆਣਪਾ ਕਿਤੈ ਕਾਮਿ ਨ ਆਈਐ ॥
 ਤੁਠਾ ਸਾਹਿਬੁ ਜੋ ਟੇਕੈ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੩॥ ਜੇ ਲਖ ਕਰਮ ਕਮਾਈਅਹਿ ਕਿਛੁ ਪਵੈ ਨ ਕੰਧਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ
 ਕੀਤਾ ਨਾਮੁ ਧਰ ਹੋਰੁ ਛੋਡਿਆ ਧੰਧਾ ॥੪॥੧॥੧੦੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਮੈ ਭਾਲਿਆ ਹਰਿ ਜੇਵਡੁ
 ਨ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰ ਤੁਠੇ ਤੇ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸੋਈ ॥੧॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਸਦ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥ ਨਾਮੁ
 ਨ ਵਿਸਰਤ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਚਸਾ ਇਹੁ ਕੀਜੈ ਦਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭਾਗਠੁ ਸਚਾ ਸੋਝੀ ਹੈ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਧਨੁ

अंतरि ॥ सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥२॥ गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक
 सत सरु ॥ ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥३॥ नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु
 रंगे ॥ जीउ प्राण धनु गुरु है नानक कै संगे ॥४॥२॥१०४॥ आसा महला ५ ॥ साई अलखु अपारु
 भोरी मनि वसै ॥ दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥१॥ हउ वंजा कुरबाणु साई आपणे ॥ होवै
 अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥१॥ रहाउ ॥ बिंदक गालि सुणी सचे तिसु धणी ॥ सूखी हूँ सुखु पाइ
 माइ न कीम गणी ॥२॥ नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥ मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि
 लाइ लई ॥३॥ बेद कतेब संसार हभा हूँ बाहरा ॥ नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥४॥३॥१०५॥
 आसा महला ५ ॥ लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥ कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखर्व
 जीउ ॥१॥ तेरी टेक गोविंद गुपाल दिआल प्रभ ॥ तूं सभना के नाथ तेरी सृसटि सभ ॥१॥ रहाउ ॥
 सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥ नाम बिहूनडिआ से मरनि विसूरि विसूरि ॥२॥ दास दासतण
 भाइ मिटिआ तिना गउणु ॥ विसरिआ जिना नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥३॥ जैसे पसु हरिआउ
 तैसा संसारु सभ ॥ नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥४॥४॥१०६॥ आसा महला ५ ॥ हभे
 थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥ झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥१॥ आठ पहर सालाहि
 सिरजनहार तूं ॥ जीवाँ तेरी दाति किरपा करहु मूँ ॥१॥ रहाउ ॥ सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥
 सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥२॥ जो न ढह्दो मूलि सो घरु रासि करि ॥ हिको चिति वसाइ कदे
 न जाइ मरि ॥३॥ तिना पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥ गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ
 ॥४॥५॥१०७॥ आसा महला ५ ॥ जिना न विसरै नामु से किनेहिआ ॥ भेदु न जाणहु मूलि
 साई जेहिआ ॥१॥ मनु तनु होइ निहालु तुम् संगि भेटिआ ॥ सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु
 मेटिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जेते खंड ब्रह्मंड उधारे तिन् खे ॥ जिन् मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥२॥

ਜਿਸ ਨੋ ਮਨੇ ਆਪਿ ਸੋਈ ਮਾਨੀਐ ॥ ਪ੍ਰਗਟ ਪੁਰਖੁ ਪਰਵਾਣੁ ਸਮ ਠਾਈ ਜਾਨੀਐ ॥੩॥ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣ ਆਰਾਧਿ
 ਸਮਾਲੇ ਸਾਹ ਸਾਹ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਲੋਚਾ ਪੂਰਿ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥੪॥੬॥੧੦੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੂਰਿ
 ਰਹਿਆ ਸੁਭ ਠਾਈ ਹਮਾਰਾ ਖਸਮੁ ਸੋਝਿ ॥ ਏਕੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਰਿ ਛਤੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ਨਾਹਿ ਕੋਝਿ ॥੧॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਉ
 ਰਾਖੁ ਰਾਖਣਹਾਰਿਆ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਝਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ
 ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਾਰੀਐ ॥ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ਆਪਿ ਤਿਸੁ ਨ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥੨॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਆਪਿ ਆਪਣ
 ਭਾਣਿਆ ॥ ਭਗਤਾ ਕਾ ਸਹਾਈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਜਾਣਿਆ ॥੩॥ ਜਪਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਕਦੇ ਨ ਝੂਰੀਐ ॥
 ਨਾਨਕ ਦਰਸ ਪਿਆਸ ਲੋਚਾ ਪੂਰੀਐ ॥੪॥੭॥੧੦੯॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਿਆ ਸੋਵਹਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ
 ਗਾਫਲ ਗਹਿਲਿਆ ॥ ਕਿਤੀ ਇਤੁ ਦਰੀਆਇ ਕੰਜਨਿ ਕਹਦਿਆ ॥੧॥ ਬੋਹਿਥਡਾ ਹਰਿ ਚਰਣ ਮਨ ਚਡਿ
 ਲਘੀਐ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਇ ਸਾਧੂ ਸੰਗੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭੋਗਹਿ ਭੋਗ ਅਨੇਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸੁੰਭਿਆ ॥
 ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਬਿਨਾ ਮਹਿ ਮਹਿ ਰੁਨਿਆ ॥੨॥ ਕਪੜ ਭੋਗ ਸੁਗੰਧ ਤਨਿ ਮਰਦਨ ਮਾਲਣਾ ॥ ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ
 ਤਨੁ ਛਾਲ ਸਰਪਰ ਚਾਲਣਾ ॥੩॥ ਮਹਾ ਬਿਖਮੁ ਸੰਸਾਲੁ ਵਿਰਲੈ ਪੇਖਿਆ ॥ ਛੂਟਨੁ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਿ ਲੇਖੁ ਨਾਨਕ
 ਲੇਖਿਆ ॥੪॥੮॥੧੧੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੋਝਿ ਨ ਕਿਸ ਹੀ ਸੰਗਿ ਕਾਹੇ ਗਰਬੀਐ ॥ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ
 ਭਤਜਲੁ ਤਰਬੀਐ ॥੧॥ ਮੈ ਗਰੀਬ ਸਚੁ ਟੇਕ ਤ੍ਰ੍ਯੰ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ॥ ਦੇਖਿ ਤੁਮਾਰਾ ਦਰਸਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਧੀਰੇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ਜੰਜਾਲੁ ਕਾਜਿ ਨ ਕਿਤੈ ਗਨੂੰ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਆਧਾਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਏਹੁ ਧਨੂੰ ॥੨॥
 ਜੇਤੇ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਤੇਤ ਪਛਾਵਿਆ ॥ ਸੁਖ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵਿਆ ॥੩॥ ਸਚਾ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ
 ਤ੍ਰੰ ਪ੍ਰਭ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੇ ॥ ਆਸ ਭਰੋਸਾ ਖਸਮ ਕਾ ਨਾਨਕ ਕੇ ਜੀਅਰੇ ॥੪॥੬॥੧੧੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸੁ
 ਸਿਮਰਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥ ਰੈਣ ਦਿਨਸੁ ਕਰ ਜੋਝਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਨਾਨਕ ਕਾ
 ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਝਿ ਜਿਸ ਕਾ ਸਭੁ ਕੋਝਿ ॥ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸੋਝਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੰਗਿ
 ਸਹਾਈ ਗਿਆਨ ਜੋਗੁ ॥ ਤਿਸਹਿ ਅਰਾਧਿ ਮਨਾ ਬਿਨਾਸੈ ਸਗਲ ਰੋਗੁ ॥੨॥ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ਰਾਖੈ ਅਗਨਿ

ਮਾਹਿ ॥ ਸੀਤਲੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਤ ਤਪਤਿ ਜਾਇ ॥੩॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਆਨਦ ਘਣਾ ਨਾਨਕ ਜਨ ਧੂਰਾ ॥
 ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਸਿਧਿ ਭਏ ਭੇਟਿਆ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥੪॥੧੦॥੧੧੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੋਬਿੰਦੁ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ ॥ ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਦਿੱਤਾਲੁ ਹਰਿ ਰੰਗ ਮਾਣੀਐ ॥੧॥ ਆਵਹੁ ਸੰਤ ਮਿਲਾਹ ਹਰਿ ਕਥਾ
 ਕਹਾਣੀਆ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਿਮਰਹ ਨਾਮੁ ਤਜਿ ਲਾਜ ਲੋਕਾਣੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਧਿ ਜਧਿ ਜੀਵਾ ਨਾਮੁ ਹੋਵੈ
 ਅਨਦੁ ਘਣਾ ॥ ਮਿਥਿਆ ਮੋਹੁ ਸਾਂਸਾਰੁ ਝੂਠਾ ਵਿਣਸਣਾ ॥੨॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਸਾਂਗਿ ਨੇਹੁ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਲਾਇਆ ॥
 ਧਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਮੁਖੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੩॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਕਾਲ ਸਿਮਰਤ ਮਿਟਿ ਜਾਵੰਈ ॥ ਨਾਨਕ ਕੈ
 ਸੁਖੁ ਸੋਇ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੰਈ ॥੪॥੧੧॥੧੧੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਵਹੁ ਮੀਤ ਇਕਤਰ ਹੋਇ ਰਸ ਕਸ ਸਭਿ
 ਮੁੰਚਹ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਹ ਮਿਲਿ ਪਾਪਾ ਮੁੰਚਹ ॥੧॥ ਤਤੁ ਕੀਚਾਰਹੁ ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਤਾ ਤੇ ਬਿਧਨੁ ਨ
 ਲਾਗੈ ॥ ਖੀਨ ਭਏ ਸਭਿ ਤਸਕਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨੁ ਜਾਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੁਧਿ ਗਰੀਬੀ ਖਰਚੁ ਲੈਹੁ ਹਤਮੈ ਬਿਖੁ
 ਜਾਰਹੁ ॥ ਸਾਚਾ ਹਟੁ ਪੂਰਾ ਸਤਦਾ ਕਖਰੁ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰਹੁ ॥੨॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਧਨੁ ਅਰਪਿਆ ਸੇਈ ਪਤਿਵਾਂਤੇ ॥
 ਆਪਨਡੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਿਆ ਨਿਤ ਕੇਲ ਕਰਾਂਤੇ ॥੩॥ ਦੁਰਮਤਿ ਮਢੁ ਜੋ ਪੀਵਤੇ ਬਿਖਲੀ ਪਤਿ ਕਮਲੀ ॥ ਰਾਮ
 ਰਸਾਇਣਿ ਜੋ ਰਤੇ ਨਾਨਕ ਸਚ ਅਮਲੀ ॥੪॥੧੨॥੧੧੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਦਮੁ ਕੀਆ ਕਰਾਇਆ
 ਆਰੰਭੁ ਰਚਾਇਆ ॥ ਨਾਮੁ ਜਧੇ ਜਧਿ ਜੀਵਣਾ ਗੁਰਿ ਮੰਨੁ ਦੂਝਾਇਆ ॥੧॥ ਪਾਇ ਪਰਹ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕੈ ਜਿਨਿ ਭਰਮੁ
 ਬਿਦਾਰਿਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਣੀ ਸਚੁ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਆਪਣੇ ਸਚੁ
 ਛੁਕਮਿ ਰਿਆਈ ॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਦਿਤੀ ਦਾਤਿ ਸਾ ਪੂਰਨ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਈਅਹਿ ਜਧਿ ਨਾਮੁ
 ਸੁਰਾਰੀ ॥ ਨੇਮੁ ਨਿਬਾਹਿਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੩॥ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਗੁਣ ਗਾਤ ਲਾਮੁ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਦਿਤਾ ॥
 ਵਣਜਾਰੇ ਸੰਤ ਨਾਨਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਹੁ ਅਮਿਤਾ ॥੪॥੧੩॥੧੧੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕਾ ਠਾਕੁਰੁ ਤੁਹੀ ਪ੍ਰਭ
 ਤਾ ਕੇ ਵਡਭਾਗਾ ॥ ਓਹੁ ਸੁਹੇਲਾ ਸਦ ਸੁਖੀ ਸਭੁ ਭਰਮੁ ਭਤ ਭਾਗਾ ॥੧॥ ਹਮ ਚਾਕਰ ਗੋਬਿੰਦ ਕੇ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ
 ਭਾਰਾ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਗਲ ਬਿਧਿ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਟ੍ਰੂਜਾ ਨਾਹੀ ਅਤੁਰੁ ਕੋ ਤਾ ਕਾ ਭਤ

करीਐ ॥ गुर सेवा महलु पाईਐ जगु दुतरु तरीਐ ॥२॥ दृसटि तेरी सुखु पाईਐ मन माहि निधाना
 ॥ जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥३॥ अंमृत रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ वजहु
 नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥४॥१४॥११६॥ आसा महला ५ ॥ जा प्रभ की हउ चेरुली
 सो सभ ते ऊचा ॥ सभु किछु ता का काँढ़ीऐ थोरा अरु मूचा ॥१॥ जीआ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ
 ॥ नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥१॥ रहाउ ॥ वेपरवाहु अन्नद मै नाउ माणक हीरा ॥
 रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥२॥ सखी सहेरी संग की सुमति दृड़ावउ ॥ सेवहु साधू भाउ करि
 तउ निधि हरि पावउ ॥३॥ सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥ जिसहि सीगारे नानका तिसु
 सुखहि बसेरा ॥४॥१५॥११७॥ आसा महला ५ ॥ संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥ सगल
 गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥१॥ इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥
 तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥१॥ रहाउ ॥ भरता कहै सु मानीऐ एहु
 सीगारु बणाइ री ॥ दूजा भाउ विसारीऐ एहु तंबोला खाइ री ॥२॥ गुर का सबदु करि दीपको इह
 सत की सेज बिछाइ री ॥ आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥३॥ तिस ही चजु सीगारु
 सभु साई रूपि अपारि री ॥ साई सुहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥४॥१६॥११८॥
 आसा महला ५ ॥ डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥ भ्रम काटे गुरि आपणे पाए बिसरामा ॥
 १॥ ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे ॥ हम छूटे अब उना ते ओइ हम ते छूटे ॥१॥ रहाउ ॥ मेरा
 तेरा जानता तब ही ते बंधा ॥ गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥२॥ जब लगु हुकमु न बूझता
 तब ही लउ दुखीआ ॥ गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ॥३॥ ना को दुसमनु दोखीआ
 नाही को मंदा ॥ गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥४॥१७॥११६॥ आसा महला ५ ॥ सूख सहज
 आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥ गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥१॥ बलिहारी गुर आपणे

सद सद बलि जाउ ॥ गुरु विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ सगुन अपसगुन
तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥ तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥२॥ पुन्न दान
जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥ हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥३॥ भै बिनसे भ्रम मोह गए को
दिसै न बीआ ॥ नानक राखे पारब्रह्मि फिरि दूखु न थीआ ॥४॥१८॥१२०॥

आसा घरु ६ महला ५

१८ सतिगुर प्रसादि ॥

चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥ एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर
कै पहि जावउ ॥१॥ हउ मागउ आन लजावउ ॥ सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥
२॥ रहाउ ॥ ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक सनक
सन्नदन सनातन सनतकुमार तिन् कउ महलु दुलभावउ ॥२॥ अगम अगम आगाधि बोध कीमति
परै न पावउ ॥ ताकी सरणि सति पुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥३॥ भइओ कृपालु दिइआलु
प्रभु ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ॥ कहु नानक जउ साधसंगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ
॥४॥१॥१२१॥ आसा महला ५ ॥ अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥ संगि चलन
कउ तोसा दीना गोबिंद नाम के बिउहारी ॥१॥ अवर बिसारी बिसारी ॥ नाम दानु गुरि पूरै दीओ मै
एहो आधारी ॥२॥ रहाउ ॥ दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि समारी ॥ नाम दृढ़ु गुरि
मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥२॥ दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥
सतसंगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत संगारी ॥३॥ जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ
पावउ संत रेन उरि धारी ॥ स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मस्तकु गुर चरनारी ॥४॥२॥१२२॥

१८ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु १० महला ५ ॥ जिस नो तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा

॥ पुत्र कलत्र गृह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥१॥ रे मन किआ करहि है हा हा ॥ दृसटि
देखु जैसे हरिचंदउरी इङ्कु राम भजनु लै लाहा ॥२॥ रहाउ ॥ जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोङ्गि चारि
भोराहा ॥ भीति ऊपरे केतकु धाईअै अंति ओरको आहा ॥३॥ जैसे अंभ कुँड करि राखिओ परत सिंधु
गलि जाहा ॥ आवगि आगिआ पारब्रह्म की उठि जासी मुहत चसाहा ॥४॥१॥१२३
॥ आसा महला ५ ॥ अपुसट बात ते भई सीधरी ढूत दुसट सजनई ॥ अंधकार महि रतनु प्रगासिओ
मलीन बुधि हछनई ॥२॥ जउ किरपा गोबिंद भई ॥ सुख संपति हरि नाम फल पाए सतिगुर मिलई
॥३॥ रहाउ ॥ मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई ॥ संगि बैठनो कही न पावत
हुणि सगल चरण सेवई ॥४॥२॥१२४॥ आसा महला ५ ॥ रे मूँडे लाहे कउ तूं
ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ ॥ ससत वखरु तूं घिन्हि नाही पापी बाधा रेनाइआ ॥१॥
सतिगुर तेरी आसाइआ ॥ पतित पावनु तेरो नामु पारब्रह्म मै एहा ओटाइआ ॥२॥ रहाउ ॥
गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइआ ॥ निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिओ बूझी
उलटाइआ ॥३॥ पर धन पर तन पर ती निंदा अखाधि खाहि हरकाइआ ॥ साच धरम सिउ रुचि नही
आवै सति सुनत छोहाइआ ॥४॥३॥१२५॥ आसा महला ५ ॥ मिथिआ संगि संगि
लपटाए मोह माइआ करि बाधे ॥ जह जानो सो चीति न आवै अह्वाबुधि भए आँधे ॥५॥ मन बैरागी
किउ न अराधे ॥ काच कोठरी माहि तूं बसता संगि सगल बिखै की बिआधे ॥६॥ रहाउ ॥ मेरी मेरी करत

दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे ॥ जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धंधि दुरगाधे ॥२॥ काम क्रोध
अरु लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे ॥ दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥३॥ जउ
भडिओ कृपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥ कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि
काढी सगल उपाधे ॥४॥ इउ जपिओ भाई पुरखु बिधाते ॥ भडिओ कृपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण
दुख लाथे ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥१२६॥ आसा महला ५ ॥ निमख काम सुआद कारणि कोटि
दिनस दुखु पावहि ॥ घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥१॥ अंधे चेति हरि हरि
राइआ ॥ तेरा सो दिनु नेड़ै आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ पलक दृसटि देखि भूलो आक नीम को तूमरु ॥ जैसा
संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर गृहु ॥२॥ बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना ॥
छोडि जाहि तिन ही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥३॥ सगल संसारु इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ
जिसु गुरु पूरा ॥ कहु नानक भव सागरु तरिओ भए पुनीत सरीरा ॥४॥५॥१२७॥ आसा महला ५
दुपदे ॥ लूकि कमानो सोई तुम पेखिओ मूँड मुगध मुकरानी ॥ आप कमाने कउ ले बाँधे फिरि पाछै
पछुतानी ॥१॥ प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी ॥ भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीअ की मानी ॥१॥
रहाउ ॥ जितु जितु लाए तितु तितु लागे किआ को करै परानी ॥ बखसि लैहु पारब्रहम सुआमी नानक
सद कुरबानी ॥२॥६॥१२८॥ आसा महला ५ ॥ अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥ जह
जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥१॥ सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥ जो जो कहै ठाकुर
पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥१॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ तिस की
सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥२॥७॥१२९॥

आसा घरु ११ महला ५

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है ओहु तैसा रे ॥ अनिक जोनि भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही

परवेसा रे ॥१॥ साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे ॥ साधसंगि मिलि हरि गुण गाए
 इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥१॥ रहाउ ॥ तै गुण माइआ ब्रह्म की कीनी कहहु कवन बिधि तरीऔ
 रे ॥ धूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऔ रे ॥२॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु
 नानक इहु जाना रे ॥ सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥३॥१॥१३०॥
 आसा महला ५ दुपदे ॥ गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे ॥ नाम रंगि इहु मनु
 तृपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥१॥ हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे ॥ खिन
 महि थापि उथापनहारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥२॥ रहाउ ॥ जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ
 अवरहि चीति न पावउ रे ॥ नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥
 २॥२॥१३१॥ आसा महला ५ ॥ चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥ सुंदर
 सुधर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे ॥१॥ जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर औसो कउनु बली रे ॥
 जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥२॥ रहाउ ॥ वडी कोम वसि भागहि नाही
 मुहकम फउज हठली रे ॥ कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साधसंगति कै झली रे ॥२॥३॥१३२॥
 आसा महला ५ ॥ नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥१॥ रहाउ ॥ बहु गुनि
 धुनि मुनि जन खटु बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥१॥ बिखारी निरारी अपारी सहजारी साधसंगि
 नानक पीकी रे ॥२॥४॥१३३॥ आसा महला ५ ॥ हमारी पिआरी अंमृत धारी गुरि निमख न मन ते
 टारी रे ॥१॥ रहाउ ॥ दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥२॥ खिनु रम गुर गम
 हरि दम नह जम हरि कंठि नानक उरि हारी रे ॥२॥५॥१३४॥ आसा महला ५ ॥ नीकी साध संगानी
 ॥ रहाउ ॥ पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥१॥ चालत बैसत सोवत हरि जसु
 मनि तनि चरन खटानी ॥२॥ हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥३॥६॥१३५॥

रागु आसा महला ५ घरु १२

੧੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਤਿਆਗੀ ਸਗਲ ਸਿਆਨਪਾ ਭਜੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਿਰਂਕਾਰੁ ॥ ਏਕ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਬਾਝਹੁ
 ਸਗਲ ਦੀਸੈ ਛਾਰੁ ॥੧॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੀਐ ਸਦ ਸੰਗਿ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਬ੍ਰਾਂਸੀਐ ਏਕ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਸਰਣੀ ਸਮਰਥ ਏਕ ਕੇਰੀ ਦ੍ਰੂਜਾ ਨਾਹੀ ਠਾਤ ॥ ਮਹਾ ਭਉਜਲੁ ਲਮਧੀਐ ਸਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥੨॥ ਜਨਮ
 ਮਰਣੁ ਨਿਵਾਰੀਐ ਢੁਖੁ ਨ ਜਮ ਪੁਰਿ ਹੋਇ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸੌਈ ਪਾਏ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੌਇ ॥੩॥ ਏਕ ਟੇਕ
 ਅਧਾਰੁ ਏਕੋ ਏਕ ਕਾ ਮਨਿ ਜੋਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜਪੀਐ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਹੋਰੁ ॥੪॥੧॥੧੩੬
 ॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਤ ਮਨੁ ਤਨੁ ਪ੍ਰਾਨ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਦੀਏ ਸਭਿ ਰਸ ਭੋਗ ॥ ਦੀਨ ਬੰਧਪ ਜੀਅ ਦਾਤਾ ਸਰਣੀ
 ਰਾਖਣ ਜੋਗ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸਹਾਇ ਸੰਗੇ ਏਕ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਤ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੇਦ ਸਾਸਤ ਜਨ ਧਿਆਵਹਿ ਤਰਣ ਕਤ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਅਨੇਕ ਕਿਰਿਆ ਸਭ ਊਪਰਿ
 ਨਾਮੁ ਅਚਾਰੁ ॥੨॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਛਕਾਰੁ ਬਿਨਸੈ ਮਿਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਵ ॥ ਨਾਮੁ ਵ੍ਰਡੁ ਕਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਕੀ ਭਲੀ
 ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸੇਵ ॥੩॥ ਚਰਣ ਸਰਣ ਦਿੱਤਾਲ ਤੇਰੀ ਤੁਂ ਨਿਮਾਣੇ ਮਾਣੁ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੁ ਤੇਰਾ ਨਾਨਕ ਕਾ
 ਪ੍ਰਭੁ ਤਾਣੁ ॥੪॥੨॥੧੩੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਡੋਲਿ ਡੋਲਿ ਮਹਾ ਢੁਖੁ ਪਾਇਆ ਬਿਨਾ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ॥ ਖਾਟਿ ਲਾਮੁ
 ਗੋਬਿੰਦ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਇਕ ਰੰਗ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਨੀਤਿ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਧਿਆਇ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ
 ਤਿਆਗੀ ਅਵਰ ਪਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜੀਅ ਦਾਤਾ ਆਪਿ ॥ ਤਿਆਗੀ ਸਗਲ
 ਸਿਆਣਪਾ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪਿ ॥੨॥ ਮੀਤੁ ਸਖਾ ਸਹਾਇ ਸੰਗੀ ਊਚ ਅਗਮ ਅਪਾਰੁ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਬਸਾਇ
 ਹਿਰਦੈ ਜੀਅ ਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਣ ਤੇਰਾ ਜਸੁ ਗਾਤ ॥ ਸਰਬ ਸੂਖ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ
 ਜਾਪਿ ਜੀਵੈ ਨਾਨਕੁ ਨਾਤ ॥੪॥੩॥੧੩੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਉਦਮੁ ਕਰਤ ਕਰਾਵਹੁ ਠਾਕੁਰ ਪੇਖਤ ਸਾਧੂ
 ਸੰਗਿ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚਰਾਵਹੁ ਰੰਗਨਿ ਆਪੇ ਹੀ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗਿ ॥੧॥ ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਜਾਪਿ ॥ ਕਰਿ
 ਕਿਰਪਾ ਵਸਹੁ ਮੈਰੈ ਹਿਰਦੈ ਹੋਇ ਸਹਾਈ ਆਪਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭੁ ਪੇਖਨ

का चाउ ॥ दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥२॥ तनु धनु तेरा तूं प्रभु मेरा हमरै
वसि किछु नाहि ॥ जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥३॥ जनम जनम के किलविख
काटै मजनु हरि जन धूरि ॥ भाइ भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥४॥४॥१३६॥
आसा महला ५ ॥ अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु ॥ आपि कृपालि कृपा प्रभि
धारी सतिगुरि बखसिआ हरि नामु ॥१॥ कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥ मल मूत मूड़ जि मुघद होते
सभि लगे तेरी सेव ॥२॥ रहाउ ॥ तू आपि करता सभ सृमटि धरता सभ महि रहिआ समाइ ॥
धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ॥२॥ सतजुगु लेता दुआपरु भणीऔ कलिजुगु ऊतमो
जुगा माहि ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाए कोई न पकड़ीऔ किसै थाइ ॥३॥ हरि जीउ सोई करहि
जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु
॥४॥५॥१४०॥

राग आसा महला ५ घरु १३

१८१ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ निरगुण निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत
संगारे ॥१॥ जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन् के कुल उधारे ॥२॥ कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु
हरि दुआरे ॥३॥ कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥४॥१॥१४१॥
आसा महला ५ ॥ बावर सोइ रहे ॥१॥ रहाउ ॥ मोह कुटंब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥१॥
मिथन मनोरथ सुपन आन्द उलास मनि मुखि सति कहे ॥२॥ अंमृतु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु
न लहे ॥३॥ करि किरपा राखे सतसंगे नानक सरणि आहे ॥४॥२॥१४२॥ आसा महला ५ तिपदे ॥
ओहा प्रेम पिरी ॥१॥ रहाउ ॥ कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥१॥ राज न भाग न

हुकम न सादन ॥ किछु किछु न चाही ॥२॥ चरनन सरनन संतन बंदन ॥ सुखो सुखु पाही ॥ नानक तपति
हरी ॥ मिले प्रेम पिरी ॥३॥३॥१४३॥ आसा महला ५ ॥ गुरहि दिखाइओ लोइना ॥१॥ रहाउ ॥
ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि तूंही तूंही मोहिना ॥१॥ कारन करना धारन धरना एकै एकै
सोहिना ॥२॥ संतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइना ॥३॥४॥१४४॥
आसा महला ५ ॥ हरि हरि नामु अमोला ॥ ओहु सहजि सुहेला ॥१॥ रहाउ ॥ संगि सहाई छोडि न
जाई ओहु अगह अतोला ॥१॥ प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओला ॥२॥ अलखु लखाइआ
गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का चोला ॥३॥५॥१४५॥ आसा महला ५ ॥ आपुनी भगति निबाहि
॥ ठाकुर आइओ आहि ॥१॥ रहाउ ॥ नामु पदारथु होडि सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥१॥ एह
मुक्ता एह जुगता राखहु संत संगाहि ॥२॥ नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि
॥३॥६॥१४६॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर चरण सुहावे ॥ हरि संतन पावे ॥१॥ रहाउ ॥ आपु
गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥१॥ एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥२॥
दइआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥३॥७॥१४७॥ आसा महला ५ ॥
एकु सिमरि मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥१॥ प्रभ
सरनी आईअै सरब फल पाईअै सगले दुख जाही ॥२॥ जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि
घटि आही ॥३॥८॥१४८॥ आसा महला ५ ॥ हरि बिसरत सो मूआ ॥१॥ रहाउ ॥ नामु धिआवै सरब
फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥१॥ राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमि सूआ ॥२॥
कहु नानक जिसु सतिगुर भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥३॥९॥१४९॥

आसा महला ५ घरु १४

१४९ सतिगुर प्रसादि ॥

ओहु नेहु नवेला ॥ अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥१॥ रहाउ ॥ जो प्रभ भावै जनमि न आवै ॥ हरि

प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥१॥ प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु ॥२॥१॥१५०॥ आसा महला ५ ॥ मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥१॥ रहाउ ॥ सिंमृति सासत्र बहु करम कमाए प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥१॥ वरत नेम संजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥२॥२॥१५१॥

आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥ पकरि केस जमि उठारिओ तद ही घरि जावै ॥१॥ लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥ खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥१॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥ निपटि बाजी हारि मुका पछुताइओ मनि भोरा ॥२॥ डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥ जेंह कारजि रहै ओला सोइ कामु न करिआ ॥३॥ औसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ ॥ मानु तानु तजि सिथानप सरणि नानकु आइआ ॥४॥१॥१५२॥ आसा महला ५ ॥ बापारि गोविंद नाए ॥ साध संत मनाए पृथ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए ॥१॥ रहाउ ॥ किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविंद सित ॥ संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥१॥ गुर गिआनु मनि दृढ़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥ सभ तजी मनै की काम करा ॥ चिरु चिरु चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥ हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम बतावहु ॥ नानक दीन सरणि आए गलि लाए ॥२॥२॥१५३॥ आसा महला ५ ॥ कोऊ बिखम गार तोरै ॥ आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥१॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥१॥ संतसंगि नाम रंगि गुन गोविंद गावउ ॥ अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥ भ्रम भीति जीति मिटावउ ॥ निधि नामु नानक मोरै ॥२॥३॥१५४॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥ मनि सिमरि गोविंद नाम ॥ हरि भजन सफल काम ॥

੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਜਿ ਮਾਨ ਮੋਹ ਵਿਕਾਰ ਮਿਥਿਆ ਜਪਿ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ॥ ਮਨ ਸੰਤਨਾ ਕੈ ਚਰਨਿ ਲਾਗੁ ॥੧॥
 ਪ੍ਰਭ ਗੋਪਾਲ ਦੀਨ ਦਿੱਖਾਲ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਿਮਰਿ ਜਾਗੁ ॥ ਕਰਿ ਭਗਤਿ ਨਾਨਕ
 ਪੂਰਨ ਭਾਗੁ ॥੨॥੪॥੧੫੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਬੈਰਾਗ ਅਨਨਦੀ ਖੇਲੁ ਰੀ ਦਿਖਾਇਆਂ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਖਿਨਹੂੰ ਭੈ ਨਿਰਭੈ ਖਿਨਹੂੰ ਖਿਨਹੂੰ ਤਠਿ ਧਾਇਆਂ ॥ ਖਿਨਹੂੰ ਰਸ ਭੋਗਨ ਖਿਨਹੂੰ ਖਿਨਹੂੰ ਤਜਿ ਜਾਇਆਂ
 ॥੧॥ ਖਿਨਹੂੰ ਜੋਗ ਤਾਪ ਬਹੁ ਪ੍ਰਯਾ ਖਿਨਹੂੰ ਭਰਮਾਇਆਂ ॥ ਖਿਨਹੂੰ ਕਿਰਪਾ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗ
 ਲਾਇਆਂ ॥੨॥੫॥੧੫੬॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੭ ਆਸਾਵਰੀ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਕਰਿ ਹਾਁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਧਿਆਰਿ ਹਾਁ ॥ ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਸੁ ਚਿਤਿ ਧਰਿ ਹਾਁ ॥ ਅਨ ਸਿਉ ਤੌਰਿ ਫੇਰਿ
 ਹਾਁ ॥ ਐਸੇ ਲਾਲਨੁ ਪਾਇਆਂ ਰੀ ਸਖੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੰਕਜ ਮੋਹ ਸਾਰਿ ਹਾਁ ॥ ਪਗੁ ਨਹੀ ਚਲੈ ਹਰਿ ਹਾਁ ॥ ਗਹਡਿਆਂ
 ਮੂੜ ਨਾਰਿ ਹਾਁ ॥ ਅਨਿਨ ਤਪਾਵ ਕਰਿ ਹਾਁ ॥ ਤਤ ਨਿਕਸੈ ਸਰਨਿ ਪੈ ਰੀ ਸਖੀ ॥੧॥ ਥਿਰ ਥਿਰ ਚਿਤ ਥਿਰ ਹਾਁ ॥
 ਬਨੁ ਗੂਹ ਸਮਸਰਿ ਹਾਁ ॥ ਅਂਤਰਿ ਏਕ ਪਿਰ ਹਾਁ ॥ ਬਾਹਰਿ ਅਨੇਕ ਧਰਿ ਹਾਁ ॥ ਰਾਜਨ ਜੋਗੁ ਕਰਿ ਹਾਁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
 ਲੋਗ ਅਲੋਗੀ ਰੀ ਸਖੀ ॥੨॥੧॥੧੫੭॥ ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨਸਾ ਏਕ ਮਾਨਿ ਹਾਁ ॥ ਗੁਰ ਸਿਉ ਨੇਤ
 ਧਿਆਨਿ ਹਾਁ ॥ ਦੂਢੁ ਸੰਤ ਮੰਤ ਗਿਆਨਿ ਹਾਁ ॥ ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਚਰਾਨਿ ਹਾਁ ॥ ਤਤ ਮਿਲੀਐ ਗੁਰ ਕ੃ਪਾਨਿ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਟੂਟੇ ਅਨ ਭਰਾਨਿ ਹਾਁ ॥ ਰਵਿਆਂ ਸਰਬ ਥਾਨਿ ਹਾਁ ॥ ਲਹਿਆਂ ਜਮ ਭਇਆਨਿ ਹਾਁ ॥ ਪਾਇਆਂ ਪੇਡ ਥਾਨਿ ਹਾਁ ॥
 ਤਤ ਚੂਕੀ ਸਗਲ ਕਾਨਿ ॥੧॥ ਲਹਨੋ ਜਿਸੁ ਮਥਾਨਿ ਹਾਁ ॥ ਭੈ ਪਾਵਕ ਪਾਰਿ ਪਰਾਨਿ ਹਾਁ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਿਸਹਿ ਥਾਨਿ
 ਹਾਁ ॥ ਹਰਿ ਰਸ ਰਸਹਿ ਮਾਨਿ ਹਾਁ ॥ ਲਾਥੀ ਤਿਸ ਭੁਖਾਨਿ ਹਾਁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆਂ ਰੇ ਮਨਾ ॥੨॥੨॥੧੫੮॥
 ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਨੀ ਹਾਁ ॥ ਜਪੀਐ ਸਹਜ ਧੁਨੀ ਹਾਁ ॥ ਸਾਧੂ ਰਸਨ ਭਨੀ ਹਾਁ ॥ ਛੂਟਨ
 ਬਿਧਿ ਸੁਨੀ ਹਾਁ ॥ ਪਾਈਐ ਵਡ ਪੁਨੀ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖੋਜਹਿ ਜਨ ਸੁਨੀ ਹਾਁ ॥ ਸ਼ਬ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਧਨੀ ਹਾਁ
 ॥ ਟੁਲਭ ਕਲਿ ਟੁਨੀ ਹਾਁ ॥ ਟੂਖ ਬਿਨਾਸਨੀ ਹਾਁ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ ਆਸਨੀ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਮਨ ਸੋ ਸੇਵੀਐ ਹਾਁ ॥

अलख अभेवीऐ हाँ ॥ ताँ सिउ प्रीति करि हाँ ॥ बिनसि न जाइ मरि हाँ ॥ गुर ते जानिआ हाँ ॥ नानक
 मनु मानिआ मेरे मना ॥२॥३॥१५६॥ आसावरी महला ५ ॥ एका ओट गहु हाँ ॥ गुर का सबदु कहु
 हाँ ॥ आगिआ सति सहु हाँ ॥ मनहि निधानु लहु हाँ ॥ सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ जीवत
 जो मरै हाँ ॥ दुतरु सो तरै हाँ ॥ सभ की रेनु होइ हाँ ॥ निरभउ कहउ सोइ हाँ ॥ मिटे अंदेसिआ हाँ ॥ संत
 उपदेसिआ मेरे मना ॥१॥ जिसु जन नाम सुखु हाँ ॥ तिसु निकटि न कदे दुखु हाँ ॥ जो हरि हरि जसु सुने
 हाँ ॥ सभु को तिसु मन्ने हाँ ॥ सफलु सु आडिआ हाँ ॥ नानक प्रभ भाडिआ मेरे मना ॥२॥४॥१६०॥
 आसावरी महला ५ ॥ मिलि हरि जसु गाईऐ हाँ ॥ परम पदु पाईऐ हाँ ॥ उआ रस जो बिधे हाँ ॥
 ता कउ सगल सिधे हाँ ॥ अनदिनु जागिआ हाँ ॥ नानक बडभागिआ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ संत पग
 धोईऐ हाँ ॥ दुरमति खोईऐ हाँ ॥ दासह रेनु होइ हाँ ॥ बिआपै दुखु न कोइ हाँ ॥ भगताँ सरनि परु हाँ
 ॥ जनमि न कदे मरु हाँ ॥ असथिरु से भए हाँ ॥ हरि हरि जिनु जपि लए मेरे मना ॥१॥ साजनु मीतु तूं
 हाँ ॥ नामु दृङ्गाइ मूँ हाँ ॥ तिसु बिनु नाहि कोइ हाँ ॥ मनहि अराधि सोइ हाँ ॥ निमख न वीसरै हाँ ॥
 तिसु बिनु किउ सरै हाँ ॥ गुर कउ कुरबानु जाउ हाँ ॥ नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥२॥५॥१६१॥
 आसावरी महला ५ ॥ कारन करन तूं हाँ ॥ अवरु ना सुझै मूँ हाँ ॥ करहि सु होईऐ हाँ ॥ सहजि सुखि
 सोईऐ हाँ ॥ धीरज मनि भए हाँ ॥ प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ साधू संगमे हाँ ॥ पूरन संजमे हाँ ॥
 जब ते छुटे आप हाँ ॥ तब ते मिटे ताप हाँ ॥ किरपा धारीआ हाँ ॥ पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥१॥
 दिहु सुखु जानीऐ हाँ ॥ हरि करे सु मानीऐ हाँ ॥ मंदा नाहि कोइ हाँ ॥ संत की रेन होइ हाँ ॥ आपे जिसु
 रखै हाँ ॥ हरि अंमूतु सो चखै मेरे मना ॥२॥ जिस का नाहि कोइ हाँ ॥ तिस का प्रभू सोइ हाँ ॥ अंतरगति
 बुझै हाँ ॥ सभु किछु तिसु सुझै हाँ ॥ पतित उधारि लेहु हाँ ॥ नानक अरदासि एहु मेरे मना ॥३॥६॥१६२॥
 आसावरी महला ५ इकतुका ॥ ओइ परदेसीआ हाँ ॥ सुनत संदेसिआ हाँ ॥१॥ रहाउ ॥ जा सिउ रचि

रहे हाँ ॥ सभ कउ तजि गए हाँ ॥ सुपना जिउ भए हाँ ॥ हरि नामु जिनि लए ॥੧॥ हरि तजि अन लगे हाँ ॥
जनमहि मरि भगे हाँ ॥ हरि हरि जनि लहे हाँ ॥ जीवत से रहे हाँ ॥ जिसहि कृपालु होइ हाँ ॥ नानक
भगतु सोइ ॥੨॥੭॥੧੬੩॥੨੩੨॥

੧੬੩੦ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਬਿਰਥਾ ਕਹਤ ਕਤਨ
ਸਿਉ ਮਨ ਕੀ ॥ ਲੋਭਿ ਗ੍ਰਸਿਆ ਦਸ ਹੂ ਦਿਸ ਧਾਵਤ ਆਸਾ ਲਾਗਿਆ ਧਨ ਕੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਖ ਕੈ ਹੇਤਿ ਬਹੁਤੁ
ਦੁਖੁ ਪਾਵਤ ਸੇਵ ਕਰਤ ਜਨ ਜਨ ਕੀ ॥ ਦੁਆਰਹਿ ਦੁਆਰਿ ਸੁਆਨ ਜਿਉ ਡੋਲਤ ਨਹ ਸੁਧ ਰਾਮ ਭਜਨ ਕੀ
॥੧॥ ਮਾਨਸ ਜਨਮ ਅਕਾਰਥ ਖੋਵਤ ਲਾਜ ਨ ਲੋਕ ਹਸਨ ਕੀ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਿਉ ਨਹੀ ਗਾਵਤ ਕੁਮਤਿ
ਬਿਨਾਸੈ ਤਨ ਕੀ ॥੨॥੧॥੨੩੩॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੨

ਉਤਰਿ ਅਵਧਟਿ ਸਰਵਰਿ ਨਾਵੈ ॥ ਬਕੈ ਨ ਬੋਲੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਜਲੁ ਆਕਾਸੀ ਸੁਨਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਰਸੁ ਸਤੁ
ਝੋਲਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ॥੧॥ ਐਸਾ ਗਿਆਨੁ ਸੁਨਹੁ ਅਭ ਮੋਰੇ ॥ ਭਰਿਪੁਰਿ ਧਾਰਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਠਤੇ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਸਚੁ ਬ੍ਰਤੁ ਨੇਮੁ ਨ ਕਾਲੁ ਸੰਤਾਵੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਕਰੋਧੁ ਜਲਾਵੈ ॥ ਗਗਨਿ ਨਿਵਾਸਿ ਸਮਾਧਿ
ਲਗਾਵੈ ॥ ਪਾਰਸੁ ਪਰਸਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥ ਸਚੁ ਮਨ ਕਾਰਣਿ ਤਤੁ ਬਿਲੋਵੈ ॥ ਸੁਭਰ ਸਰਵਰਿ ਮੈਲੁ ਨ
ਧੋਵੈ ॥ ਜੈ ਸਿਉ ਰਾਤਾ ਤੈਸੋ ਹੋਵੈ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਵੈ ॥੩॥ ਗੁਰ ਹਿਵ ਸੀਤਲੁ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਵੈ ॥ ਸੇਵਾ
ਸੁਰਤਿ ਬਿਭੂਤ ਚੜਾਵੈ ॥ ਦਰਸਨੁ ਆਪਿ ਸਹਜ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥ ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਨਾਟੁ ਵਜਾਵੈ ॥੪॥ ਅੰਤਰਿ
ਗਿਆਨੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਸਾਰਾ ॥ ਤੀਰਥ ਮਜਨੁ ਗੁਰ ਕੀਚਾਰਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਯਾ ਥਾਨੁ ਮੁਰਾਰਾ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ
ਮਿਲਾਵਣਹਾਰਾ ॥੫॥ ਰਸਿ ਰਸਿਆ ਮਤਿ ਏਕੈ ਭਾਇ ॥ ਤਖਤ ਨਿਵਾਸੀ ਪੰਚ ਸਮਾਇ ॥ ਕਾਰ ਕਮਾਈ ਖਸਮ
ਰਯਾਇ ॥ ਅਵਿਗਤ ਨਾਥੁ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਇ ॥੬॥ ਜਲ ਮਹਿ ਉਪਯੈ ਜਲ ਤੇ ਟ੍ਰੂਰਿ ॥ ਜਲ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਰਹਿਆ
ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਕਿਸੁ ਨੇੜੇ ਕਿਸੁ ਆਖਾ ਟ੍ਰੂਰਿ ॥ ਨਿਧਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਦੇਖਿ ਹਟ੍ਰੂਰਿ ॥੭॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਅਵਰੁ ਨ

੧੬੩੧ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕੋਇ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਫੁਨਿ ਹੋਇ ॥ ਸੁਣਿ ਭਰਥਰਿ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥
 ੮ ॥੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਭਿ ਜਪ ਸਭਿ ਤਪ ਸਭ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਊਝਾਇ ਭਰਮੈ ਰਾਹਿ ਨ ਪਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਕੂੜੇ
 ਕੋ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਛੌਣੈ ਮਾਥੇ ਛਾਈ ॥੧॥ ਸਾਚ ਧਣੀ ਜਗੁ ਆਇ ਬਿਨਾਸਾ ॥ ਛੂਟਸਿ ਪ੍ਰਾਣੀ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਗੁ ਮੋਹਿ ਬਾਧਾ ਬਹੁਤੀ ਆਸਾ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਇਕਿ ਭਏ ਤਦਾਸਾ ॥ ਅਂਤਰਿ
 ਨਾਮੁ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਤਿਨੁ ਕਤ ਨਾਹੀ ਜਮ ਕੀ ਤਾਸਾ ॥੨॥ ਜਗੁ ਤ੍ਰਤੀ ਜਿਤੁ ਕਾਮਣਿ ਹਿਤਕਾਰੀ ॥ ਪੁਤ
 ਕਲਕ ਲਗਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰੀ ॥ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ॥੩॥
 ਬਾਹਰਹੁ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ॥ ਅੰਦਰਹੁ ਮੁਕਤੁ ਲੇਪੁ ਕਦੇ ਨ ਲਾਏ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
 ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਸਦ ਹਿਰਦੈ ਧਿਆਏ ॥੪॥ ਧਾਵਤੁ ਰਾਖੈ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥ ਸਿਖ ਸੰਗਤਿ ਕਰਮਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਗੁਰ
 ਬਿਨੁ ਭੂਲੋ ਆਵੈ ਜਾਏ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੰਜੋਗਿ ਮਿਲਾਏ ॥੫॥ ਰੁੜੀ ਕਹਤ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥ ਅਕਥ ਕਥਤ ਨਹ
 ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥ ਸਭ ਦੁਖ ਤੇਰੇ ਸੂਖ ਰਯਾਈ ॥ ਸਭਿ ਦੁਖ ਮੇਟੇ ਸਾਚੈ ਨਾਈ ॥੬॥ ਕਰ ਬਿਨੁ ਵਾਜਾ ਪਾਗ ਬਿਨੁ
 ਤਾਲਾ ॥ ਜੇ ਸਬਦੁ ਕੁੜੈ ਤਾ ਸਚੁ ਨਿਹਾਲਾ ॥ ਅਂਤਰਿ ਸਾਚੁ ਸਭੇ ਸੁਖ ਨਾਲਾ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਰਾਖੈ ਰਖਵਾਲਾ ॥੭॥
 ਤ੍ਰਭਵਣ ਸੂੜੈ ਆਪੁ ਗਵਾਵੈ ॥ ਬਾਣੀ ਕੂੜੈ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ਏਕ ਲਿਵ ਤਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਧਨ੍ਨੁ
 ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੮ ॥੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਲੇਖ ਅਸੰਖ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਮਾਨੁ ॥ ਮਨਿ ਮਾਨਿਐ ਸਚੁ ਸੁਰਤਿ
 ਕਖਾਨੁ ॥ ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਪਡਿ ਪਡਿ ਭਾਰੁ ॥ ਲੇਖ ਅਸੰਖ ਅਲੇਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥੧॥ ਐਸਾ ਸਾਚਾ ਤ੍ਰੈ ਏਕੋ ਜਾਣੁ ॥
 ਯੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਜਗੁ ਬਾਧਾ ਜਮਕਾਲਿ ॥ ਬਾੰਧਾ ਛੂਟੈ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ
 ॥ ਗੁਰੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਅਕਰੁ ਨ ਭਾਲਿ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਨਿਕਹੀ ਤੁਧੁ ਨਾਲਿ ॥੨॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਾਂ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਏ
 ॥ ਅਚਰੁ ਚੈ ਤਾਂ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤੁ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਤ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥੩॥
 ਜਿਨਿ ਧਰ ਸਾਜੀ ਗਗਨੁ ਅਕਾਸੁ ॥ ਜਿਨਿ ਸਭ ਥਾਪੀ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
 ਕਿਸੈ ਨ ਪ੍ਰਛੇ ਬਖਿਸੇ ਆਪਿ ॥੪॥ ਤ੍ਰੁ ਪੁਰੁ ਸਾਗਰੁ ਮਾਣਕ ਹੀਰੁ ॥ ਤ੍ਰੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਚੁ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰੁ ॥

सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ एको साहिबु एकु वजीरु ॥੫॥ जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥ जगि गिआनी
 विरला आचारी ॥ जगि पंडितु विरला वीचारी ॥ बिनु सतिगुरु भेटे सभ ਫਿਰੈ ਅਛਕਾਰੀ ॥੬॥ जगु
 दੁਖੀਆ ਸੁਖੀਆ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥ ਜਗੁ ਰੋਗੀ ਖੋਗੀ ਗੁਣ ਰੋਇ ॥ ਜਗੁ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਬ੍ਰਾਈ
 ਸੋਇ ॥੭॥ ਮਹਘੋ ਮੋਲਿ ਭਾਰਿ ਅਫਾਰੁ ॥ ਅਟਲ ਅਛਲੁ ਗੁਰਮਤੀ ਥਾਰੁ ॥ ਭਾਇ ਮਿਲੈ ਭਾਵੈ ਭਿਡਿਕਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕੁ
 ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥੮॥੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਏਕੁ ਮਰੈ ਪਂਚੇ ਮਿਲਿ ਰੋਵਹਿ ॥ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ਸਬਦਿ ਮਲੁ
 ਧੋਵਹਿ ॥ ਸਮਝਿ ਸ੍ਰੂਝਿ ਸਹਜ ਘਰਿ ਹੋਵਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰਾਈ ਸਗਲੀ ਪਤਿ ਖੋਵਹਿ ॥੯॥ ਕਤਣੁ ਮਰੈ ਕਤਣੁ ਰੋਵੈ
 ਓਹੀ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਭਸੈ ਸਿਰਿ ਤੋਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮ੍ਰਾਏ ਕਤ ਰੋਵੈ ਦੁਖੁ ਕੋਇ ॥ ਸੋ ਰੋਵੈ ਜਿਸੁ ਬੇਦਨ ਹੋਇ ॥
 ਜਿਸੁ ਕੀਤੀ ਜਾਣੈ ਪ੍ਰਭ ਸੋਇ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਜੀਵਤ ਮਰਣਾ ਤਾਰੇ ਤਰਣਾ ॥ ਜੈ ਜਗਦੀਸ
 ਪਰਮ ਗਤਿ ਸਰਣਾ ॥ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣਾ ॥ ਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ ਸਬਦਿ ਭੈ ਤਰਣਾ ॥੩॥ ਨਿਰਭਤ ਆਪਿ
 ਨਿਰਂਤਰਿ ਜੋਤਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੂਤਕੁ ਜਗਿ ਛੋਤਿ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਬਿਨਸੈ ਕਿਆ ਕਹਿ ਰੋਤਿ ॥ ਜਨਮਿ ਮ੍ਰਾਏ ਬਿਨੁ
 ਭਗਤਿ ਸਰੋਤਿ ॥੪॥ ਮ੍ਰਾਏ ਕਤ ਸਚੁ ਰੋਵਹਿ ਮੀਤ ॥ ਕੈ ਗੁਣ ਰੋਵਹਿ ਨੀਤਾ ਨੀਤ ॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਸਹਜਿ
 ਸੁਚੀਤ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਤਪਤ ਕ੃ਸਨ ਪਰੀਤ ॥੫॥ ਭੀਤਰਿ ਏਕੁ ਅਨੇਕ ਅਸੰਖ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਬਹੁ ਸੰਖ ਅਸੰਖ
 ॥ ਬਿਨੁ ਭੈ ਭਗਤੀ ਜਨਮੁ ਬਿਰਥ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਮਿਲਿ ਪਰਮਾਰਥ ॥੬॥ ਆਪਿ ਮਰੈ ਮਾਰੇ ਭੀ ਆਪਿ ॥
 ਆਪਿ ਤਪਾਏ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪਿ ॥ ਸ੍ਰੂਸਟਿ ਤਪਾਈ ਜੋਤੀ ਤ੍ਰੂ ਜਾਤਿ ॥ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ਮਿਲਣੁ ਨਹੀਂ ਭਾਤਿ ॥੭॥
 ਸੂਤਕੁ ਅਗਨਿ ਭਖੈ ਜਗੁ ਖਾਇ ॥ ਸੂਤਕੁ ਜਲਿ ਥਲਿ ਸਭ ਹੀ ਥਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੂਤਕਿ ਜਨਮਿ ਮਰੀਜੈ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੮॥੪॥ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਪੁ ਵੀਚਾਰੈ ਸੁ ਪਰਖੇ ਹੀਰਾ ॥ ਏਕ ਦੂਸਟਿ
 ਤਾਰੇ ਗੁਰ ਪੂਰਾ ॥ ਗੁਰੁ ਮਾਨੈ ਮਨ ਤੇ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੧॥ ਐਸਾ ਸਾਹੁ ਸਰਾਫੀ ਕਰੈ ॥ ਸਾਚੀ ਨਦਰਿ ਏਕ ਲਿਵ
 ਤਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰੰਜੀ ਨਾਮੁ ਨਿਰਂਜਨ ਸਾਰੁ ॥ ਨਿਰਮਲੁ ਸਾਚਿ ਰਤਾ ਪੈਕਾਰੁ ॥ ਸਿਫਤਿ ਸਹਜ ਘਰਿ ਗੁਰੁ
 ਕਰਤਾਰੁ ॥੨॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥ ਰਾਮ ਨਰਾਇਣੁ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਵਾਟ ਮਹਲੁ

ਘਰੁ ਪਾਏ ॥੩॥ ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਜੋਤਿ ਅਨੂਪੁ ॥ ਤ੍ਰਭਵਣ ਦੇਵਾ ਸਗਲ ਸਰ੍ਹਪੁ ॥ ਮੈ ਸੋ ਧਨੁ ਪਲੈ ਸਾਚੁ ਅਖੂਟ
 ॥੪॥ ਪੰਚ ਤੀਨਿ ਨਵ ਚਾਰਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਧਰਣਿ ਗਗਨੁ ਕਲ ਧਾਰਿ ਰਹਾਵੈ ॥ ਬਾਹਰਿ ਜਾਤਤ ਤਲਟਿ ਪਰਾਵੈ ॥
 ੫॥ ਮੂਰਖੁ ਹੋਇ ਨ ਆਖੀ ਸ੍ਰੂਜੈ ॥ ਜਿਹਵਾ ਰਸੁ ਨਹੀ ਕਹਿਆ ਬ੍ਰੂਜੈ ॥ ਬਿਖੁ ਕਾ ਮਾਤਾ ਜਗ ਸਿਤ ਲ੍ਰੂਜੈ ॥੬॥ ਊਤਮ
 ਸੰਗਤਿ ਊਤਮੁ ਹੋਵੈ ॥ ਗੁਣ ਕਤ ਧਾਵੈ ਅਕਗਣ ਧੋਵੈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸਹਜੁ ਨ ਹੋਵੈ ॥੭॥ ਹੀਰਾ ਨਾਮੁ ਜਵੇਹਰ
 ਲਾਲੁ ॥ ਮਨੁ ਮੌਤੀ ਹੈ ਤਿਸ ਕਾ ਮਾਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪਰਖੈ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੁ ॥੮॥੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਮਨਿ ਮਾਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਹਲੀ ਮਹਲੁ ਪਛਾਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਰਤਿ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਨੁ ॥੧॥ ਐਸੇ
 ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਕੀਚਾਰੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਿਰਮਲੁ ਥਾਨਿ ਸੁਥਾਨੁ ॥
 ਤੀਨ ਭਵਨ ਨਿਹਕੇਵਲ ਗਿਆਨੁ ॥ ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਤੇ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਨੁ ॥੨॥ ਸਾਚਾ ਹਰਖੁ ਨਾਹੀ ਤਿਸੁ ਸੋਗੁ ॥
 ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗਿਆਨੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਭੋਗੁ ॥ ਪੰਚ ਸਮਾਈ ਸੁਖੀ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ॥੩॥ ਸਗਲੀ ਜੋਤਿ ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਆਪੇ
 ਜੋਡਿ ਵਿਛੋਡੇ ਸੋਈ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥੪॥ ਢਾਹਿ ਤਸਾਰੇ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਹੁਕਮੋ ਵਰਤੈ ਜੋ ਤਿਸੁ
 ਭਾਵੈ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰਾ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵੈ ॥੫॥ ਬਾਲਕ ਬਿਰਧਿ ਨ ਸੁਰਤਿ ਪਰਾਨਿ ॥ ਭਰਿ ਜੋਬਨਿ ਬ੍ਰੂਡੈ ਅਭਿਮਾਨਿ
 ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਆ ਲਹਸਿ ਨਿਦਾਨਿ ॥੬॥ ਜਿਸ ਕਾ ਅਨੁ ਧਨੁ ਸਹਜਿ ਨ ਜਾਨਾ ॥ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਾ ਫਿਰਿ
 ਪਛੁਤਾਨਾ ॥ ਗਲਿ ਫਾਹੀ ਬਤਰਾ ਬਤਰਾਨਾ ॥੭॥ ਬ੍ਰੂਡਤ ਜਗੁ ਦੇਖਿਆ ਤਤ ਡਰਿ ਭਾਗੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਾਖੇ
 ਸੇ ਕਡਭਾਗੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕੀ ਚੱਣੀ ਲਾਗੇ ॥੮॥੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗਾਵਹਿ ਗੀਤੇ ਚੀਤਿ ਅਨੀਤੇ ॥
 ਰਾਗ ਸੁਣਾਇ ਕਹਾਵਹਿ ਬੀਤੇ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਨਿ ਝੂਠੁ ਅਨੀਤੇ ॥੧॥ ਕਹਾ ਚਲਹੁ ਮਨ ਰਹਹੁ ਘਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਤ੃ਪਤਾਸੇ ਖੋਜਤ ਪਾਵਹੁ ਸਹਜਿ ਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਮਨਿ ਮੋਹੁ ਸਰੀਰਾ ॥ ਲਕੁ ਲੋਭੁ
 ਅਛਕਾਰੁ ਸੁ ਪੀਰਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੨॥ ਅੰਤਰਿ ਨਾਵਣੁ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਅੰਤਰ ਕੀ
 ਗਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੈ ॥ ਸਾਚ ਸਬਦ ਬਿਨੁ ਮਹਲੁ ਨ ਪਛਾਣੈ ॥੩॥ ਨਿਰਕਾਰ ਮਹਿ ਆਕਾਰੁ ਸਮਾਵੈ ॥
 ਅਕਲ ਕਲਾ ਸਚੁ ਸਾਚਿ ਟਿਕਾਵੈ ॥ ਸੋ ਨਾ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥੪॥ ਜਹਾਂ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਹ ਜਾਤ ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕਰਮ ਕਮਾਤ ॥ ਨਾਮੇ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥੫॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਆਪੁ ਪਛਾਤਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ
 ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਬਾਣੀ ਨਾਮੇ ਰਾਤਾ ॥੬॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਏ ਤਾ ਕੋ ਲਾਗੈ ॥ ਹਉਮੈ
 ਮਾਰੇ ਸਬਦੇ ਜਾਗੈ ॥ ਐਥੈ ਓਥੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਆਗੈ ॥੭॥ ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ ਬਿਧਿ ਨਾਹੀ ਜਾਣੈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਮੈਲਾ ਸਬਦੁ ਨ
 ਪਛਾਣੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੈ ॥੮॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਆਗੈ ਕਰੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਸਾਧੂ ਜਨ ਸੰਗਤਿ ਹੋਇ
 ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਕਾਟੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥੯॥ ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੁ ਆਚਾਰੁ ਪਰਾਤਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨੀ
 ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥੧੦॥੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨੁ ਮੈਗਲੁ ਸਾਕਤੁ ਟੇਵਾਨਾ ॥
 ਬਨ ਖੱਡਿ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਹੈਰਾਨਾ ॥ ਇਤ ਤਤ ਜਾਹਿ ਕਾਲ ਕੇ ਚਾਪੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਿ ਲਹੈ ਘਰ ਆਪੇ ॥੧॥
 ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੈ ਮਨੁ ਨਹੀ ਠਤਰਾ ॥ ਸਿਮਰਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲੁ ਅਵਰ ਤਿਆਗਹੁ ਹਉਮੈ ਕਤਰਾ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮੁਗਧੁ ਕਹਹੁ ਕਿਤ ਰਹਸੀ ॥ ਬਿਨੁ ਸਮਯੇ ਜਮ ਕਾ ਦੁਖੁ ਸਹਸੀ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੈ ॥ ਕਾਲੁ ਕਟਕੁ ਮਾਰੇ ਸਚੁ ਪੇਲੈ ॥੨॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਕਰਮਾ ਇਹੁ ਮਨੁ ਧਰਮਾ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਪੰਚ
 ਤਤੁ ਤੇ ਜਨਮਾ ॥ ਸਾਕਤੁ ਲੋਭੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮੂੜਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਮਨੁ ਰੂੜਾ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਅਸਥਾਨੇ
 ਸੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤ੃ਭਵਣਿ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਜੋਗੀ ਭੋਗੀ ਤਪੁ ਤਾਪੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚੀਨੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੈ
 ॥੪॥ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ਹਉਮੈ ਤਿਆਗੀ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਮਨਸਾ ਦੁਕਿਧਾ ਲਾਗੀ ॥ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਾਖੈ ॥
 ਦਰਿ ਘਰਿ ਮਹਲੀ ਹਰਿ ਪਤਿ ਰਾਖੈ ॥੫॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਜਾ ਸੂਰ ਸੰਗ੍ਰਾਮਿ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਿਰਭਤ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਨਾਮਿ ॥ ਮਾਰੇ ਪੰਚ ਅਪੁਨੈ ਵਸਿ ਕੀਏ ॥ ਹਉਮੈ ਗ੍ਰਾਸਿ ਇਕਤੁ ਥਾਇ ਕੀਏ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਗ ਸੁਆਦ ਅਨ
 ਤਿਆਗੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭਗਤੀ ਜਾਗੇ ॥ ਅਨਹਦ ਸੁਣਿ ਮਾਨਿਆ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰੀ ॥ ਆਤਮੁ ਚੀਨ੍ਹਿ ਭਏ
 ਨਿਰਂਕਾਰੀ ॥੭॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਦਰਿ ਘਰਿ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਭਾਤ ਧੁਨਿ ਹੋਈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ
 ਹਰਿ ਜਸੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ॥੮॥ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਾਤਾ ॥
 ਸਰਬ ਰਸਾਇਣੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ॥ ਭਗਤਿ ਹੇਤੁ ਗੁਰ ਚਰਣ ਨਿਵਾਸਾ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਨ ਕੇ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ

॥੬॥੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਤਨੁ ਬਿਨਸੈ ਧਨੁ ਕਾ ਕੋ ਕਹੀਐ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਤ ਲਹੀਐ ॥
 ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਸੰਗਿ ਸਖਾਈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਵਨੁ ਹਮਾਰਾ
 ॥ ਸੁਖ ਦੁਖ ਸਮ ਕਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਛੋਡਤ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਨਿਕ ਕਾਮਨੀ ਹੇਤੁ
 ਗਵਾਰਾ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਲਾਗੇ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਾ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਾਂ ਬਖਸਹਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਇ ॥ ਦ੍ਰਾਤੁ ਨ ਲਾਗਿ ਸਕੈ ਗੁਨ ਗਾਇ
 ॥੨॥ ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਰਾਮ ਗੁਪਾਲਾ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖੁ ਦਿਇਆਲਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮੁ ਮੈਰੈ ਮਨਿ
 ਭਾਇਆ ॥ ਰੋਗ ਮਿਟੇ ਦੁਖੁ ਠਾਕਿ ਰਹਾਇਆ ॥੩॥ ਅਵਰੁ ਨ ਅਤਖਧੁ ਤੱਤ ਨ ਮੰਤਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਣੁ
 ਕਿਲਵਿਖ ਛੁਤਾ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪਿ ਭੁਲਾਵਹਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਰਾਖਹਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੪॥ ਰੋਗੁ ਭਰਮੁ ਭੇਦੁ
 ਮਨਿ ਦ੍ਰਾਂਜਾ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਭਰਮਿ ਜਪਹਿ ਜਧੁ ਦ੍ਰਾਂਜਾ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਗੁਰ ਦਰਸ ਨ ਦੇਖਹਿ ॥ ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਸਬਦੈ
 ਜਨਮੁ ਕਿ ਲੇਖਹਿ ॥੫॥ ਦੇਖਿ ਅਚਰਜੁ ਰਹੇ ਬਿਸਮਾਦਿ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੁਰ ਨਰ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ॥ ਭਰਿਪੁਰਿ
 ਧਾਰਿ ਰਹੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਤੁਮ ਸਮਸਾਰਿ ਅਵਰੁ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥੬॥ ਜਾ ਕੀ ਭਗਤਿ ਹੇਤੁ ਸੁਖਿ ਨਾਮੁ ॥ ਸੰਤ ਭਗਤ ਕੀ
 ਸੰਗਤਿ ਰਾਮੁ ॥ ਬੰਧਨ ਤੌਰੇ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥ ਛੂਟੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ॥੭॥ ਨਾ ਜਮਦੂਤ ਦੁਖੁ ਤਿਸੁ
 ਲਾਗੈ ॥ ਜੋ ਜਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਜਾਗੈ ॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਭਗਤਾ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ॥ ਨਾਨਕ ਮੁਕਤਿ ਭਏ ਹਰਿ ਰੰਗਿ
 ॥੮॥੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਇਕਤੁਕੀ ॥ ਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੋ ਠਾਕੁਰ ਜਾਨੈ ॥ ਦੁਖੁ ਮਿਟੈ ਸਚੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨੈ ॥੧॥
 ਰਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੀ ਸਖੀ ਸਖੈਨੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਦੇਖਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਨੈਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੰਧਨ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੰਸਾਰਿ
 ॥ ਬੰਧਨ ਸੁਤ ਕਨਿਆ ਅਝ ਨਾਰਿ ॥੨॥ ਬੰਧਨ ਕਰਮ ਧਰਮ ਹਤ ਕੀਆ ॥ ਬੰਧਨ ਪੁਤੁ ਕਲਤੁ ਮਨਿ ਬੀਆ
 ॥੩॥ ਬੰਧਨ ਕਿਰਖੀ ਕਰਹਿ ਕਿਰਸਾਨ ॥ ਹਉਮੈ ਢਨੁ ਸਹੈ ਰਾਜਾ ਮੰਗੈ ਦਾਨ ॥੪॥ ਬੰਧਨ ਸਤਦਾ
 ਅਣਵੀਚਾਰੀ ॥ ਤਿਪਤਿ ਨਾਹੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਸਾਰੀ ॥੫॥ ਬੰਧਨ ਸਾਹ ਸੰਚਹਿ ਧਨੁ ਜਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ
 ਭਗਤਿ ਨ ਪਵੰਈ ਥਾਇ ॥੬॥ ਬੰਧਨ ਬੇਦੁ ਬਾਦੁ ਅਛਕਾਰ ॥ ਬੰਧਨਿ ਬਿਨਸੈ ਮੋਹ ਵਿਕਾਰ ॥੭॥ ਨਾਨਕ
 ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਰਣਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਬੰਧੁ ਨ ਪਾਈ ॥੮॥੧੦॥

रागु आसा महला ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੩

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਿਨ ਸਿਰਿ ਸੋਹਨਿ ਪਟੀਆ ਮਾੜੀ ਪਾਇ ਸੰਧੂਰੁ ॥ ਸੇ ਸਿਰ ਕਾਤੀ ਮੁਨ੍ਨੀਅਨਿ ਗਲ ਵਿਚਿ ਆਵੈ ਥ੍ਰਡਿ ॥ ਮਹਲਾ ਅੰਦਰਿ ਹੋਦੀਆ ਹੁਣਿ ਬਹਣਿ ਨ ਮਿਲਨਿ ਹਫੂਰਿ ॥੧॥ ਆਦੇਸੁ ਬਾਬਾ ਆਦੇਸੁ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖਹਿ ਵੇਸ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਦਹੁ ਸੀਆ ਵੀਆਹੀਆ ਲਾਡੇ ਸੋਹਨਿ ਪਾਸਿ ॥ ਹੀਡੋਲੀ ਚਡਿ ਆਈਆ ਦੰਦ ਖੰਡ ਕੀਤੇ ਰਾਸਿ ॥ ਉਪਰਹੁ ਪਾਣੀ ਵਾਰੀਐ ਝਾਲੇ ਛਿਮਕਨਿ ਪਾਸਿ ॥੨॥ ਇਕੁ ਲਖੁ ਲਹਨਿ ਬਹਠੀਆ ਲਖੁ ਲਹਨਿ ਖੱਡੀਆ ॥ ਗਰੀ ਛੁਹਾਰੇ ਖਾਂਦੀਆ ਮਾਣਨਿ ਸੇਜੱਡੀਆ ॥ ਤਿਨ੍ ਗਲਿ ਸਿਲਕਾ ਪਾਈਆ ਤੁਟਨਿ ਮੋਤਸਰੀਆ ॥੩॥ ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਦੁਇ ਵੈਰੀ ਹੋਏ ਜਿਨ੍ ਰਖੇ ਰੁਂਗ ਲਾਇ ॥ ਦੂਤਾ ਨੋ ਫੁਰਮਾਇਆ ਲੈ ਚਲੇ ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥ ਜੇ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਜੇ ਭਾਵੈ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥੪॥ ਅਗੇ ਦੇ ਜੇ ਚੇਤੀਐ ਤਾਂ ਕਾਇਤੁ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥ ਸਾਹਾਂ ਸੁਰਤਿ ਗਰਵਾਈਆ ਰੰਗ ਤਮਾਸੈ ਚਾਇ ॥ ਬਾਬਰਵਾਣੀ ਫਿਰਿ ਗੰਡੀ ਕੁਇਲੁ ਨ ਰੋਟੀ ਖਾਇ ॥੫॥ ਇਕਨਾ ਵਖਤ ਖੁਆਈਅਹਿ ਇਕਨਾ ਪ੍ਰ੍ਹਾਜਾ ਜਾਇ ॥ ਚਤੁਕੇ ਵਿਣੁ ਛਿਦਰਵਾਣੀਆ ਕਿਤ ਟਿਕੇ ਕਢਹਿ ਨਾਇ ॥ ਰਾਮੁ ਨ ਕਬਹੂ ਚੇਤਿਓ ਹੁਣਿ ਕਹਣਿ ਨ ਮਿਲੈ ਖੁਦਾਇ ॥੬॥ ਇਕਿ ਘਰਿ ਆਵਹਿ ਆਪਣੈ ਇਕਿ ਮਿਲਿ ਮਿਲਿ ਪੁਛਹਿ ਸੁਖ ॥ ਇਕਨਾ ਏਹੋ ਲਿਖਿਆ ਬਹਿ ਬਹਿ ਰੋਵਹਿ ਦੁਖ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਨਾਨਕ ਕਿਆ ਮਾਨੁਖ ॥੭॥੧੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਹਾ ਸੁ ਖੇਲ ਤਬੇਲਾ ਘੋੜੇ ਕਹਾ ਭੇਰੀ ਸਹਨਾਈ ॥ ਕਹਾ ਸੁ ਤੇਗਬੰਦ ਗਾਡੇਰਡਿ ਕਹਾ ਸੁ ਲਾਲ ਕਵਾਈ ॥ ਕਹਾ ਸੁ ਆਰਸੀਆ ਸੁਹ ਬੰਕੇ ਔਥੈ ਦਿਸਹਿ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਤੇਰਾ ਤ੍ਰੂ ਗੋਸਾਈ ॥ ਏਕ ਘੱਡੀ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪੇ ਜਰੁ ਵੰਡਿ ਦੇਵੈ ਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਹਾਂ ਸੁ ਘਰ ਦਰ ਮੰਡਪ ਮਹਲਾ ਕਹਾ ਸੁ ਬੰਕ ਸਰਾਈ ॥ ਕਹਾਂ ਸੁ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਕਾਮਣਿ ਜਿਸੁ ਵੇਖਿ ਨੀਦ ਨ ਪਾਈ ॥ ਕਹਾ ਸੁ ਪਾਨ ਤੰਬੋਲੀ ਹਰਮਾ ਹੋਈਆ ਛਾਈ ਮਾਈ ॥੨॥ ਇਸੁ ਜਰ ਕਾਰਣਿ ਘਣੀ ਵਿਗੁਤੀ ਇਨਿ ਜਰ ਘਣੀ ਖੁਆਈ ॥ ਪਾਪਾ ਬਾਝਹੁ ਹੋਵੈ ਨਾਹੀ ਸੁਇਆ ਸਾਥਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਖੁਆਏ ਕਰਤਾ ਖੁਸਿ ਲਏ ਚੰਗਿਆਈ ॥੩॥ ਕੋਟੀ ਹੂ ਪੀਰ ਵਰਜਿ ਰਹਾਏ ਜਾ ਮੀਰੁ

ਸੁਣਿਆ ਧਾਇਆ ॥ ਥਾਨ ਸੁਕਾਮ ਜਲੇ ਬਿਜ ਮੰਦਰ ਸੁਛਿ ਸੁਛਿ ਕੁਝਿ ਰੁਲਾਇਆ ॥ ਕੋਈ ਸੁਗਲੁ ਨ ਹੋਆ ਅੰਧਾ
ਕਿਨੈ ਨ ਪਰਚਾ ਲਾਇਆ ॥੪॥ ਸੁਗਲ ਪਠਾਣਾ ਭਈ ਲੜਾਈ ਰਣ ਮਹਿ ਤੇਗ ਵਗਾਈ ॥ ਓਨ੍ਹੀ ਤੁਪਕ ਤਾਣਿ
ਚਲਾਈ ਓਨ੍ਹੀ ਹਸਤਿ ਚਿੜਾਈ ॥ ਜਿਨ੍ਹ ਕੀ ਚੀਰੀ ਦਰਗਹ ਪਾਟੀ ਤਿਨਾ ਮਰਣਾ ਭਾਈ ॥੫॥ ਇਕ ਛਿਦਰਾਣੀ
ਅਵਰ ਤੁਰਕਾਣੀ ਭਟਿਆਣੀ ਠਕੁਰਾਣੀ ॥ ਇਕਨਾ ਪੇਰਣ ਸਿਰ ਖੁਰ ਪਾਟੇ ਇਕਨਾ ਵਾਸੁ ਮਸਾਣੀ ॥ ਜਿਨ੍ਹ ਕੇ ਬੰਕੇ
ਘਰੀ ਨ ਆਇਆ ਤਿਨ੍ਹ ਕਿਤ ਰੈਣ ਵਿਹਾਣੀ ॥੬॥ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈਐ ॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ
ਤੈਰੈ ਭਾਣੈ ਹੋਵੈ ਕਿਸ ਥੈ ਜਾਇ ਰੁਆਈਐ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੀ ਚਲਾਏ ਵਿਗਸੈ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਪਾਈਐ ॥੭॥੧੨॥

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਆਸਾ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰ ੮ ਅਸਟਪਦੀਆ ॥ ਜੈਸੇ ਗੋਡਿਲਿ ਗੋਡਿਲੀ ਤੈਸੇ ਸੰਸਾਰ
॥ ਕੂਝੁ ਕਮਾਵਹਿ ਆਦਮੀ ਬਾਂਧਹਿ ਘਰ ਬਾਰਾ ॥੧॥ ਜਾਗਹੁ ਜਾਗਹੁ ਸੂਤਿਹੋ ਚਲਿਆ ਵਣਜਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਨੀਤ ਨੀਤ ਘਰ ਬਾਂਧੀਅਹਿ ਜੇ ਰਹਣਾ ਹੋਈ ॥ ਪਿੰਡੁ ਪਵੈ ਜੀਤ ਚਲਸੀ ਜੇ ਜਾਣੈ ਕੋਈ ॥੨॥ ਓਹੀ ਓਹੀ ਕਿਆ
ਕਰਹੁ ਹੈ ਹੋਸੀ ਸੋਈ ॥ ਤੁਮ ਰੋਵਹੁਗੇ ਓਸ ਨੋ ਤੁਸੁ ਕਤ ਕਤਣੁ ਰੋਈ ॥੩॥ ਧੰਧਾ ਪਿਟਿਹੁ ਭਾਈਹੋ ਤੁਸੁ ਕੂਝੁ ਕਮਾਵਹੁ
॥ ਓਹੁ ਨ ਸੁਣਈ ਕਤ ਹੀ ਤੁਸੁ ਲੋਕ ਸੁਣਾਵਹੁ ॥੪॥ ਜਿਸ ਤੇ ਸੁਤਾ ਨਾਨਕਾ ਜਾਗਾਏ ਸੋਈ ॥ ਜੇ ਘਰ ਕੂੜੈ ਆਪਣਾ ਤਾਂ
ਨੀਦ ਨ ਹੋਈ ॥੫॥ ਜੇ ਚਲਦਾ ਲੈ ਚਲਿਆ ਕਿਛੁ ਸੱਪੈ ਨਾਲੇ ॥ ਤਾ ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਦੇਖਿ ਕੈ ਕੂੜਹੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੬॥ ਵਣਜੁ
ਕਰਹੁ ਮਖਸੂਦੁ ਲੈਹੁ ਮਤ ਪਛੋਤਾਵਹੁ ॥ ਅਤਗਣ ਛੋਡਹੁ ਗੁਣ ਕਰਹੁ ਐਸੇ ਤਤੁ ਪਰਾਵਹੁ ॥੭॥ ਧਰਮੁ ਭ੍ਰਮਿ ਸਤੁ
ਬੀਜੁ ਕਰਿ ਐਸੀ ਕਿਰਸ ਕਮਾਵਹੁ ॥ ਤਾਂ ਵਾਪਾਰੀ ਜਾਣੀਅਹੁ ਲਾਹਾ ਲੈ ਜਾਵਹੁ ॥੮॥ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ
ਕੂੜੈ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੈ ਸੁਣੇ ਨਾਮੁ ਨਾਮੇ ਬਿਤਹਾਰਾ ॥੯॥ ਜਿਤ ਲਾਹਾ ਤੋਟਾ ਤਿਵੈ ਵਾਟ ਚਲਦੀ ਆਈ ॥
ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਸਾਈ ਵਡਿਆਈ ॥੧੦॥੧੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਫੂਢੀਆ ਕੋ ਨੀਮੀ ਮੈਡਾ ॥
ਜੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਹਿਬਾ ਤੂ ਮੈ ਹਤ ਤੈਡਾ ॥੧॥ ਦੁਰੁ ਬੀਭਾ ਮੈ ਨੀਮ੍ਹਿ ਕੋ ਕੈ ਕਰੀ ਸਲਾਮੁ ॥ ਹਿਕੋ ਮੈਡਾ ਤੂ ਧਣੀ ਸਾਚਾ
ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਧਾ ਸੇਵਨਿ ਸਿਧ ਪੀਰ ਮਾਗਹਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ॥ ਮੈ ਝਿਕੁ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸੈਰੈ ਸਾਚੇ ਗੁਰ

ਬੁਧਿ ॥੨॥ ਜੋਗੀ ਭੋਗੀ ਕਾਪੜੀ ਕਿਆ ਭਵਹਿ ਦਿਸੰਤਰ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨਹੀ ਤਤੁ ਸਾਰੁ ਨਿਰਂਤਰ ॥੩॥
 ਪੰਡਿਤ ਪਾਥੇ ਜੋਇਸੀ ਨਿਤ ਪੜ੍ਹਹਿ ਪੁਰਾਣਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਵਸਤੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਘਟਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਲੁਕਾਣਾ ॥੪॥ ਇਕਿ
 ਤਪਸੀ ਬਨ ਮਹਿ ਤਪੁ ਕਰਹਿ ਨਿਤ ਤੀਰਥ ਵਾਸਾ ॥ ਆਪੁ ਨ ਚੀਨਹਿ ਤਾਮਸੀ ਕਾਹੇ ਭਏ ਉਦਾਸਾ ॥੫॥ ਇਕਿ
 ਬਿੰਦੁ ਜਤਨ ਕਰਿ ਰਾਖਦੇ ਸੇ ਜਤੀ ਕਹਾਵਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਛੂਟਹੀ ਭ੍ਰਮਿ ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ॥੬॥ ਇਕਿ
 ਗਿਰਹੀ ਸੇਵਕ ਸਾਧਿਕਾ ਗੁਰਮਤੀ ਲਾਗੇ ॥ ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਵੂੜੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁ ਜਾਗੇ ॥੭॥ ਗੁਰ ਤੇ ਦੁ
 ਘਰੁ ਜਾਣੀਐ ਸੋ ਜਾਇ ਸਿਜਾਣੈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸਾਚੇ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥੮॥੧੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਇਲੇ ਭਉਜਲੁ ਸਚਿ ਤਰਣਾ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਦਇਆਲੁ ਤੂ ਠਾਕੁਰ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾ ॥੧॥
 ਤੂ ਦਾਤੌ ਹਮ ਜਾਚਿਕਾ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਦੀਜੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਮਨ ਮੰਦੁ ਭੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਕੂੜਾ ਲਾਲਚੁ ਛੋਡੀਐ ਤਤ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਈਐ ਪਰਮਾਰਥੁ ਜਾਣੈ ॥੨॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਜਾ
 ਲੋਭੀਆ ਲੁਭਤਤ ਲੋਭਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲੋਭੁ ਨਿਵਾਰੀਐ ਹਰਿ ਸਿਤ ਬਣਿ ਆਈ ॥੩॥ ਕਲਾਰਿ ਖੇਤੀ ਬੀਜੀਐ
 ਕਿਤ ਲਾਹਾ ਪਾਵੈ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਸਚਿ ਨ ਭੀਜੈ ਕੂੜੁ ਕੂੜਿ ਗਡਾਵੈ ॥੪॥ ਲਾਲਚੁ ਛੋਡਹੁ ਅੰਧਿਹੋ ਲਾਲਚਿ
 ਦੁਖੁ ਭਾਰੀ ॥ ਸਾਚੌ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਕਥੈ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਮਾਰੀ ॥੫॥ ਦੁਬਿਧਾ ਛੋਡਿ ਕੁਵਾਟੜੀ ਮੂਸਹੁਗੇ ਭਾਈ ॥
 ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੬॥ ਮਨਮੁਖ ਪਥਰੁ ਸੈਲੁ ਹੈ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਫੀਕਾ ॥
 ਜਲ ਮਹਿ ਕੇਤਾ ਰਾਖੀਐ ਅਭ ਅੰਤਰਿ ਸੂਕਾ ॥੭॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਪ੍ਰੈ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ
 ਵੀਸਰੈ ਮਥਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆ ॥੮॥੧੫॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਚਲੇ ਚਲਣਹਾਰ ਵਾਟ ਕਟਾਇਆ ॥ ਧੰਧੁ ਪਿਟੇ
 ਸੰਸਾਰੁ ਸਚੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥੧॥ ਕਿਆ ਭਵੀਐ ਕਿਆ ਢੂਢੀਐ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਮਮਤਾ ਮੋਹੁ
 ਵਿਸਰਜਿਆ ਅਪਨੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਚਿ ਮਿਲੈ ਸਚਿਆਰੁ ਕੂੜਿ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਸਚੇ ਸਿਤ ਚਿਤੁ
 ਲਾਇ ਬਹੁਡਿ ਨ ਆਈਐ ॥੨॥ ਮੋਇਆ ਕਤ ਕਿਆ ਰੋਵਹੁ ਰੋਇ ਨ ਜਾਣਹੂ ॥ ਰੋਵਹੁ ਸਚੁ ਸਲਾਹਿ ਹੁਕਮੁ
 ਪਛਾਣਹੂ ॥੩॥ ਹੁਕਮੀ ਵਜਹੁ ਲਿਖਾਇ ਆਇਆ ਜਾਣੀਐ ॥ ਲਾਹਾ ਪਲੈ ਪਾਇ ਹੁਕਮੁ ਸਿਜਾਣੀਐ ॥੪॥

हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीअै ॥ हुकमे ही सिरि मार बंदि रबाणीअै ॥੫॥ लाहा सचु निआउ मनि
 वसाईअै ॥ लिखिआ पलै पाइ गरबु वजाईअै ॥੬॥ मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईअै ॥ ठगि
 मुठी कूड़िआर बंनि चलाईअै ॥੭॥ साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही ॥ गुनहाँ बखसणहारु सबदु
 कमावही ॥੮॥ नानकु मंग सचु गुरमुखि घालीअै ॥ मै तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहालीअै
 ॥੯॥੧੬॥ आसा महला ੧ ॥ किआ जंगलु ढूढ़ी जाइ मै घरि बनु हरीआवला ॥ सचि टिकै घरि आइ
 सबदि उतावला ॥੧॥ जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीअै ॥ गुर की कार कमाइ महलु पछाणीअै
 ॥੧॥ रहाउ ॥ आपि मिलावै सचु ता मनि भावई ॥ चलै सदा रजाइ अंकि समावई ॥੨॥ सचा
 साहिबु मनि वसै वसिआ मनि सोई ॥ आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥੩॥ अबे तबे की
 चाकरी किउ दरगह पावै ॥ पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै ॥੪॥ आपनड़ा मनु वेचीअै सिरु
 दीजै नाले ॥ गुरमुखि वसतु पछाणीअै अपना घर भाले ॥੫॥ जंमण मरणा आखीअै तिनि करतै
 कीआ ॥ आਪु गवाइआ मरि रहे फिरि मरणु न थीआ ॥੬॥ साई कार कमावणी धुर की फुरमाई ॥
 जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥੭॥ रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई ॥ नानक
 साहिबु मनि वसै सची वडिआई ॥੮॥੧੭॥ आसा महला ੧ ॥ जिन੍ਹी नामु विसारिआ ढूजै भरमि
 भुलाई ॥ मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥੧॥ बिनु नावै किउ छूटीअै जे जाणै कोई ॥
 गुरमुखि होइ त छूटीअै मनमुखि पति खोई ॥੨॥ रहाउ ॥ जिन੍ही एको सेविआ पूरी मति भाई ॥ आदि
 जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ॥੩॥ साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई ॥ किरपा ते सुखु
 पाइआ साचे परथाई ॥੪॥ गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए ॥ आपि दिखावै वाटड़ी सची
 भगति दृड़ाए ॥੫॥ मनमुखु जे समझाईअै भी उझड़ि जाए ॥ बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक
 समाए ॥੬॥ जनमि मरै भरमाईअै हरि नामु न लेवै ॥ ता की कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ॥੭॥

ਜੇਹੀ ਸੇਵ ਕਰਾਈਐ ਕਰਣੀ ਭੀ ਸਾਈ ॥ ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੀਐ ਵੇਖੈ ਵਡਿਆਈ ॥੭॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੇ
 ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਿਰੂ ਦੇ ਛੂਟੀਐ ਦਰਗਹ ਪਤਿ ਪਾਏ ॥੮॥੯॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਰੁਝੋ ਠਾਕੁਰ
 ਮਾਹਰੋ ਰੁਝੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ॥ ਵਡੈ ਭਾਗੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲੈ ਪਾਈਐ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੧॥ ਮੈ ਓਲਗੀਆ ਓਲਗੀ
 ਹਮ ਛੋਰੂ ਥਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਤੂਂ ਰਾਖਹਿ ਤਿਤ ਰਹਾ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਿਆਸਾ ਘਣੀ ਭਾਣੀ
 ਮਨਿ ਭਾਈਐ ॥ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਹਾਥਿ ਵਡਿਆਈਆ ਭਾਣੀ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਸਾਚਤ ਟੂਰਿ ਨ ਜਾਣੀਐ ਅੰਤਰਿ ਹੈ
 ਸੋਈ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਵਿ ਰਹੇ ਕਿਨਿ ਕੀਮਤਿ ਹੋਈ ॥੩॥ ਆਪਿ ਕਰੇ ਆਪੇ ਹਰੇ ਵੇਖੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੀਐ ਇਤ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥੪॥ ਜੀਵਦਿਆ ਲਾਹਾ ਮਿਲੈ ਗੁਰ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥ ਪੂਰਬਿ ਹੋਕੈ ਲਿਖਿਆ
 ਤਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪਾਵੈ ॥੫॥ ਮਨਮੁਖ ਤੋਟਾ ਨਿਤ ਹੈ ਭਰਮਹਿ ਭਰਮਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਅਂਧੁ ਨ ਚੇਤਈ ਕਿਤ ਦਰਸਨੁ ਪਾਏ
 ॥੬॥ ਤਾ ਜਗਿ ਆਇਆ ਜਾਣੀਐ ਸਾਚੈ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਪਾਰਸੁ ਭਏ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਏ ॥੭॥ ਅਹਿਨਿਸਿ
 ਰਹੈ ਨਿਰਾਲਮੋ ਕਾਰ ਧੁਰ ਕੀ ਕਰਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸੰਤੋਖੀਆ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ॥੮॥੧੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧
 ॥ ਕੇਤਾ ਆਖਣੁ ਆਖੀਐ ਤਾ ਕੇ ਅੰਤ ਨ ਜਾਣਾ ॥ ਮੈ ਨਿਧਰਿਆ ਧਰ ਏਕ ਤੂਂ ਮੈ ਤਾਣੁ ਸਤਾਣਾ ॥੧॥ ਨਾਨਕ ਕੀ
 ਅਰਦਾਸਿ ਹੈ ਸਚ ਨਾਮਿ ਸੁਹੇਲਾ ॥ ਆਪੁ ਗਿਆ ਸੋਝੀ ਪਈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੇਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਉਮੈ ਗਰਖੁ
 ਗਵਾਈਐ ਪਾਈਐ ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਸਾਹਿਬ ਸਿਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਦੇ ਸਾਚੁ ਅਧਾਰੁ ॥੨॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮਿ ਸੰਤੋਖੀਆ
 ਸੇਵਾ ਸਚੁ ਸਾਈ ॥ ਤਾ ਕਤ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਚਾਲੈ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ॥੩॥ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ਜੋ ਚਲੈ ਸੋ ਪਵੈ
 ਖਿਆਨੈ ॥ ਖੋਟੇ ਠਵਰ ਨ ਪਾਇਨੀ ਰਲੇ ਜੂਠਾਨੈ ॥੪॥ ਨਿਤ ਨਿਤ ਖਰਾ ਸਮਾਲੀਐ ਸਚੁ ਸਤਦਾ ਪਾਈਐ ॥ ਖੋਟੇ
 ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਨੀ ਲੇ ਅਗਨਿ ਜਲਾਈਐ ॥੫॥ ਜਿਨੀ ਆਤਮੁ ਚੀਨਿਆ ਪਰਮਾਤਮੁ ਸੋਈ ॥ ਏਕੋ ਅੰਮ੍ਰਤ
 ਬਿਰਖੁ ਹੈ ਫਲੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹੋਈ ॥੬॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਫਲੁ ਜਿਨੀ ਚਾਖਿਆ ਸਚਿ ਰਹੇ ਅਧਾਈ ॥ ਤਿਨਾ ਭਰਮੁ ਨ ਭੇਦੁ
 ਹੈ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥੭॥ ਹੁਕਮਿ ਸੰਜੋਗੀ ਆਇਆ ਚਲੁ ਸਦਾ ਰਜਾਈ ॥ ਅਤਗਣਿਆਰੇ ਕਤ ਗੁਣੁ ਨਾਨਕੈ
 ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ॥੮॥੨੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨੁ ਰਾਤਤ ਹਰਿ ਨਾਇ ਸਚੁ ਵਖਾਣਿਆ ॥ ਲੋਕਾ ਦਾ

ਕਿਆ ਜਾਇ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਣਿਆ ॥੧॥ ਜਤ ਲਗੁ ਜੀਤ ਪਰਾਣ ਸਚੁ ਧਿਆਈਐ ॥ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਮਿਲੈ
 ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਕਾਰ ਦੇਹਿ ਦਿੱਅਲ ਤ੍ਰਿੰ ॥ ਹਤ ਜੀਵਾ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹਿ ਮੈ ਟੇਕ ਅਧਾਰੁ
 ਤ੍ਰਿੰ ॥੨॥ ਦਰਿ ਸੇਵਕੁ ਦਰਖਾਨੁ ਦਰਦੁ ਤ੍ਰਿੰ ਜਾਣਹੀ ॥ ਭਗਤਿ ਤੇਰੀ ਹੈਰਾਨੁ ਦਰਦੁ ਗਵਾਵਹੀ ॥੩॥ ਦਰਗਹ
 ਨਾਮੁ ਹਫੂਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣਸੀ ॥ ਵੇਲਾ ਸਚੁ ਪਰਵਾਣੁ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣਸੀ ॥੪॥ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਕਰਿ ਭਾਤ ਤੋਸਾ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੇਇ ॥ ਮਨਹੁ ਛੋਡਿ ਵਿਕਾਰ ਸਚਾ ਸਚੁ ਦੇਇ ॥੫॥ ਸਚੇ ਸਚਾ ਨੇਹੁ ਸਚੈ ਲਾਇਆ ॥ ਆਪੇ ਕਰੇ
 ਨਿਆਤ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਇਆ ॥੬॥ ਸਚੇ ਸਚੀ ਦਾਤਿ ਦੇਹਿ ਦਿੱਅਲੁ ਹੈ ॥ ਤਿਸੁ ਸੇਕੀ ਫਿਨੁ ਰਾਤਿ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲੁ
 ਹੈ ॥੭॥ ਤ੍ਰਿੰ ਤਤਸੁ ਹਤ ਨੀਚੁ ਸੇਵਕੁ ਕਾਢੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇਹੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਵਾਢੀਆ ॥੮॥੨੧॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਕਿਤ ਰਹੈ ਕਿਤ ਮੇਲਾ ਹੋਈ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਕਾ ਦੁਖੁ ਘਣੋ ਨਿਤ ਸਹਸਾ
 ਦੋਈ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਆ ਜੀਵਨਾ ਫਿਟੁ ਧਿਗੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਧੁ ਨ ਸੇਵਿਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨ
 ਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਤਤ ਰਹੈ ਪਾਈਐ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰਾਂ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਦੇਇ ਬਿਨਸੈ
 ਭਰਮੁ ਕੂਰਾ ॥੨॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਤ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਧਨੁ ਧਨੁ ਜਸੁ ਗਾਏ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ
 ਪਾਏ ॥੩॥ ਨਟ੍ਠੈ ਸਾਁਗੁ ਬਣਾਇਆ ਬਾਜੀ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਬਾਜੀ ਦੇਖੀਐ ਤੁੜਰਤ ਨਹੀ ਬਾਰਾ ॥੪॥
 ਹਤਮੈ ਚਤੁਪਡਿ ਖੇਲਣਾ ਝੂਠੇ ਅਛਕਾਰਾ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਹਾਰੈ ਸੋ ਜਿਣੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥੫॥ ਜਿਤ ਅੰਧੁਲੈ
 ਹਥਿ ਟੋਹਣੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਟੇਕ ਹੈ ਨਿਸਿ ਦੁਤ ਸਵਾਰੈ ॥੬॥ ਜਿਤ ਤ੍ਰਿੰ ਰਾਖਹਿ ਤਿਤ
 ਰਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਅਧਾਰਾ ॥ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ਪਾਇਆ ਜਨ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ॥੭॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਮੇਟਿਆ
 ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਪ੍ਰਾਂ ਗੁਰੁ ਤਾਰੇ ॥੮॥੨੨॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੨

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਾਸਤੁ ਬੇਦੁ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਰੁ ਤੇਰਾ ਸੁਰਸਰੀ ਚਰਣ ਸਮਾਣੀ ॥ ਸਾਖਾ ਤੀਨਿ ਮੂਲੁ ਮਤਿ ਰਾਵੈ ਤ੍ਰਿੰ ਤਾਂ ਸਰਬ
 ਵਿਡਾਣੀ ॥੧॥ ਤਾ ਕੇ ਚਰਣ ਜਪੈ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੇਤੀਸ ਕਰੋਡੀ ਦਾਸ

तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥ ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि वीचारी ॥२॥ तीनि
 गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ॥ करमु होवै ता परम पदु पाईअै कथे अकथ कहाणी ॥
 ३॥ तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ॥ जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि
 समाणी ॥४॥ नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी ॥ जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर
 मनमुखि फिरै डिआणी ॥५॥ चारे वेद ब्रह्मे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ॥ ता का हुकमु न बूझै
 बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥६॥ जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥ तिन भी
 अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥७॥ तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु
 वखाणी ॥ जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥८॥१॥२३॥ आसा महला ३ ॥
 सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥ हरि नामु निरंजनु मनि वसाइआ ॥ सबदु चीनि सदा सुखु
 पाइआ ॥१॥ सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥ देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईअै नामु निधानु
 ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर भेटे की वडिआई ॥ जिनि ममता अगनि तृसना बुझाई ॥ सहजे माता हरि
 गुण गाई ॥२॥ विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥ माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥ गुरमुखि नामु मिलै हरि
 बाणी ॥३॥ गुर सेवा तपाँ सिरि तपु सारु ॥ हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥ दरि साचै
 दीसै सचिआरु ॥४॥ गुर सेवा ते तृभवण सोझी होइ ॥ आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥ साची बाणी
 महलु परापति होइ ॥५॥ गुर सेवा ते सभ कुल उधारे ॥ निरमल नामु रखै उरि धारे ॥ साची सोभा
 साचि दुआरे ॥६॥ से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ॥ अनदिनु भगति सचु नामु दृढ़ाए ॥ नामे
 उधरे कुल सबाए ॥७॥ नानकु साचु कहै वीचारु ॥ हरि का नामु रखहु उरि धारि ॥ हरि भगती राते
 मोख दुआरु ॥८॥२॥२४॥ आसा महला ३ ॥ आसा आस करे सभु कोई ॥ हुकमै बूझै निरासा होई ॥
 आसा विचि सुते कई लोई ॥ सो जागै जागावै सोई ॥१॥ सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख

ਨ ਜਾਈ ॥ ਨਾਮੇ ਤੂਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁੜੈ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੈ ਰਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਲਿ ਕੀਰਤਿ ਸਬਦੁ ਪਛਾਨੁ ॥
 ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਚੂਕੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਹੋਵੈ ਪਰਵਾਨੁ ॥ ਜਿਨਿ ਆਸਾ ਕੀਤੀ ਤਿਸ ਨੋ ਜਾਨੁ ॥੨॥ ਤਿਸੁ
 ਕਿਆ ਦੀਜੈ ਜਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਇਹੁ ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥ ਹੁਕਮੈ
 ਬੁੜੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੩॥ ਆਪਿ ਕਰੇ ਤੈ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥ ਆਪਿ ਭੁਲਾਵੈ ਆਪਿ
 ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਸਚੀ ਹੈ ਬਾਣੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਆਖਿ
 ਵਖਾਣੀ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਮੋਹਿ ਭਰਮਿ ਭੋਲਾਣੀ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਫਿਰੈ ਬਤਰਾਣੀ ॥੫॥ ਤੀਨਿ ਭਵਨ ਮਹਿ ਏਕਾ
 ਮਾਇਆ ॥ ਮੂਰਖਿ ਪਡਿ ਪਡਿ ਟ੍ਰੋਝਾ ਭਾਉ ਟ੍ਰੋਝਾਇਆ ॥ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਦੁਖੁ ਸਬਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ
 ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੬॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੀਠਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭੋਗੇ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ॥ ਸਹਜਿ ਅਨਨਦਿ
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਸਚਿ ਪਿਆਰਿ ॥੭॥ ਹਰਿ ਜਪਿ ਪਡੀਐ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਜਪਿ
 ਪਡੀਐ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਭਵਿ ਸਚਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮਤਿ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੮॥੩॥੨੫॥

੯੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੮ ਕਾਫੀ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਁਤਿ ਊਪਜੈ ਜਿਨਿ
 ਤੂਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁੜਾਈ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਚੇਤਿ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਜਗਤੁ
 ਜਲਮਦਾ ਦੇਖਿ ਕੈ ਭਜਿ ਪਾਏ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਗਿਆਨੁ ਊਪਜੈ ਮਹਾ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਘਰੁ
 ਦਰੁ ਪਾਇਆ ਭਗਤੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਬੁੜੈ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਸਲਾਹ
 ਹੈ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰਾ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੂਖੁ ਊਪਜੈ ਦੁਖੁ ਕਦੇ ਨ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਤਮੈ ਮਾਰੀਐ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ
 ਹੋਈ ॥੪॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਆਪੁ ਗਿਆ ਤੂਭਵਣ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥ ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਪਸਰਿ ਰਹੀ ਜੋਤੀ
 ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥੫॥ ਪ੍ਰੈ ਗੁਰਿ ਸਮਝਾਇਆ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਈ ॥ ਅੰਤਰੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਁਤਿ ਹੋਇ ਨਾਮੇ ਸੁਖੁ ਹੋਈ
 ॥੬॥ ਪ੍ਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਾਁ ਮਿਲੈ ਜਾਁ ਨਦਰਿ ਕਰੇਈ ॥ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਸਭ ਕਟੀਅਹਿ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਬਿਘਨੁ ਨ

ਹੋਈ ॥੭॥ ਆਪਣੈ ਹਥਿ ਵਡਿਆਈਆ ਦੇ ਨਾਮੇ ਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਵਡਿਆਈ ਪਾਏ
 ॥੮॥੨੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ ਤੂਂ ਆਪੇ ਆਇ ਮਿਲੈ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੀ
 ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਸਚੈ ਚਿਤੁ ਲਾਈ ॥੯॥ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂਂ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਹਉਮੈ ਦ੍ਰਿਜਾ ਦ੍ਰਿਜਿ ਕਰਿ
 ਕਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਸੁ ਭਗਤੀ ਨੋ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਲੋਚਦੇ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਈ ਨ ਜਾਇ ॥
 ਪਂਡਿਤ ਪੜਦੇ ਜੋਤਿਕੀ ਤਿਨ ਬ੍ਰਾਂਸ ਨ ਪਾਇ ॥੨॥ ਆਪੈ ਥੈ ਸਭੁ ਰਖਿਆਨੁ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਆਪੇ ਦੇਇ ਸੁ
 ਪਾਈਐ ਗੁਰਿ ਬ੍ਰਾਂਸ ਬੁਝਾਈ ॥੩॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤਿਸ ਦੇ ਸਭਨਾ ਕਾ ਸੋਈ ॥ ਮੰਦਾ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜੇ ਦ੍ਰਿਜਾ
 ਹੋਈ ॥੪॥ ਇਕੋ ਹੁਕਮੁ ਵਰਤਦਾ ਏਕਾ ਸਿਰਿ ਕਾਰਾ ॥ ਆਪਿ ਭਵਾਲੀ ਦਿਤੀਅਨੁ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਵਿਕਾਰਾ ॥੫॥
 ਇਕ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਤਿਅਨੁ ਬ੍ਰਾਂਸਨਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਭਗਤਿ ਭੀ ਓਨਾ ਨੋ ਬਖਸੀਅਨੁ ਅੰਤਰਿ ਭੰਡਾਰਾ ॥੬॥
 ਗਿਆਨੀਆ ਨੋ ਸਭੁ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੁ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਓਇ ਭੁਲਾਏ ਕਿਸੈ ਦੇ ਨ ਭੁਲਨੀ ਸਚੁ ਜਾਣਨਿ ਸੋਈ ॥੭॥ ਘਰ
 ਮਹਿ ਪਂਚ ਵਰਤਦੇ ਪਂਚੇ ਵੀਚਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਵਸਿ ਨ ਆਵਨੀ ਨਾਮਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥੮॥੫॥੨੭॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਘਰੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਵਥੁ ਹੈ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਈਐ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟ
 ਖੁਲਾਹੀ ॥੧॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਭਾਈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਹੋਵੈ ਸੋ ਲਾਏ ਪਾਏ ਰਤਨੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਅੰਦਰੁ ਖੋਲੈ ਦਿਬ ਦਿਸਟਿ ਦੇਖੈ ਮੁਕਤਿ
 ਭੰਡਾਰਾ ॥੨॥ ਅੰਦਰਿ ਮਹਲ ਅਨੇਕ ਹਹਿ ਜੀਤ ਕਰੇ ਵਸੇਰਾ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ ਫਿਰਿ ਹੋਇ ਨ ਫੇਰਾ
 ॥੩॥ ਪਾਰਖੀਆ ਵਥੁ ਸਮਾਲਿ ਲੰਈ ਗੁਰ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਅਮੁਲੁ ਸਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੪॥
 ਬਾਹਰੁ ਭਾਲੇ ਸੁ ਕਿਆ ਲਹੈ ਵਥੁ ਘਰੈ ਅੰਦਰਿ ਭਾਈ ॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਿਰੈ ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥੫॥
 ਘਰੁ ਦਰੁ ਛੋਡੇ ਆਪਣਾ ਪਰ ਘਰਿ ਝੂਠਾ ਜਾਈ ॥ ਚੌਰੈ ਵਾਂਗੁ ਪਕੜੀਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਚੋਟਾ ਖਾਈ ॥੬॥ ਜਿਨੀ
 ਘਰੁ ਜਾਤਾ ਆਪਣਾ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਭਾਈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੭॥ ਆਪੇ ਦਾਨੁ
 ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੀਐ ਆਪੇ ਦੇਇ ਬੁਝਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂਂ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥੮॥੬॥੨੮॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਆਪੈ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸਾਦੁ ਮੀਠਾ ਭਾਈ ॥ ਹਰਿ ਰਸਿ ਚਾਖਿਐ ਮੁਕਤੁ ਭਏ ਜਿਨ੍ਹਾ ਸਾਚੋ
 ਭਾਈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਮਨਿ ਵਾਸਾ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਸਾਲਾਹੀਐ ਬਿਖਿਆ ਮਾਹਿ
 ਤਦਾਸਾ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਆਪੁ ਨ ਜਾਪਈ ਸਭ ਅਂਧੀ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਨਾਮੁ ਅੰਤਿ
 ਸਖਾਈ ॥੩॥ ਨਾਮੇ ਹੀ ਨਾਮਿ ਵਰਤਦੇ ਨਾਮੇ ਵਰਤਾਰਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਖਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਨਾਮੇ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਾ
 ॥੪॥ ਨਾਮੁ ਸੁਣੀਐ ਨਾਮੁ ਮਨੀਐ ਨਾਮੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਮੇ ਮਹਲੁ ਪਾਈ ॥੫॥ ਨਾਮੇ
 ਹੀ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਨਾਮੇ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਨਾਮੇ ਸਰਣਾਈ ॥੬॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋਇ ਨ ਮਨੀਐ
 ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਾਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਈ ॥੭॥ ਨਾਮੈ ਕੀ ਸਭ ਸੇਵਾ ਕਰੈ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਬੁੜਾਈ ॥ ਨਾਮਹੁ ਹੀ ਨਾਮੁ ਮਨੀਐ ਨਾਮੇ ਵਡਿਆਈ ॥੮॥ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਵੈ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਗੁਰਮਤੀ
 ਨਾਮੁ ਬੁੜਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਭ ਕਿਛੁ ਨਾਵੈ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਕੋ ਪਾਈ ॥੯॥੭॥੨੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਦੋਹਾਗਣੀ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਇਨੀ ਨ ਜਾਣਨਿ ਪਿਰ ਕਾ ਸੁਆਤ ॥ ਫਿਕਾ ਬੋਲਹਿ ਨਾ ਨਿਵਹਿ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ਭਾਤ ਸੁਆਤ ॥
 ੧॥ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਕਿਤ ਕਰਿ ਵਸਿ ਆਵੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਠਾਕੀਐ ਗਿਆਨ ਮਤੀ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਸੋਹਾਗਣੀ ਆਪਿ ਸਵਾਰੀਓਨੁ ਲਾਇ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਚਲਦੀਆ ਨਾਮੇ ਸਹਜਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥੨॥
 ਸਦਾ ਰਾਵਹਿ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ ਸਚੀ ਸੇਜ ਸੁਭਾਇ ॥ ਪਿਰ ਕੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਮੋਹੀਆ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥੩॥ ਗਿਆਨ
 ਅਪਾਰੁ ਸੀਗਾਰੁ ਹੈ ਸੋਭਾਵਂਤੀ ਨਾਰਿ ॥ ਸਾ ਸਭਰਾਈ ਸੁੰਦਰੀ ਪਿਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੪॥ ਸੋਹਾਗਣੀ ਵਿਚਿ ਰੰਗ
 ਰਖਿਓਨੁ ਸਚੈ ਅਲਖਿ ਅਪਾਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਸਚੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥੫॥ ਸੋਹਾਗਣੀ ਸੀਗਾਰੁ
 ਬਣਾਇਆ ਗੁਣ ਕਾ ਗਲਿ ਹਾਰੁ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਰਮਲੁ ਤਨਿ ਲਾਵਣਾ ਅੰਤਰਿ ਰਤਨੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥੬॥ ਭਗਤਿ ਰਤੇ
 ਸੇ ਊਤਮਾ ਜਤਿ ਪਤਿ ਸਬਦੇ ਹੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਨੀਚ ਜਾਤਿ ਹੈ ਬਿਸਟਾ ਕਾ ਕੀਡਾ ਹੋਇ ॥੭॥ ਹਤ ਹਤ
 ਕਰਦੀ ਸਭ ਫਿਰੈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਹਤ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਹਤਮੈ ਗੈ ਸਚੈ ਰਹੇ ਸਮਾਇ
 ॥੮॥੮॥੩੦॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਚੈ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਸਦਾ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥ ਅੈਥੈ ਘਰਿ ਘਰਿ ਜਾਪਦੇ ਆਗੈ

ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਏ ਮਨ ਰੂਡੇ ਰੁਗਲੇ ਤ੍ਰਾਂ ਸਚਾ ਰੁਗ ਚੜਾਇ ॥ ਰੂਡੀ ਬਾਣੀ ਜੇ ਰਪੈ ਨਾ ਇਹੁ ਰੁਗ
 ਲਹੈ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਮ ਨੀਚ ਮੈਲੇ ਅਤਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਵਿਕਾਰ ॥ ਗੁਰਿ ਪਾਰਸਿ ਮਿਲਿਐ
 ਕੰਚਨੁ ਹੋਏ ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥੨॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕੋਇ ਨ ਰੰਗਿਐ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਰੁਗ ਚੜਾਉ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਭੈ
 ਭਾਇ ਜੋ ਰਤੇ ਸਿਫਤੀ ਸਚਿ ਸਮਾਉ ॥੩॥ ਭੈ ਬਿਨੁ ਲਾਗਿ ਨ ਲਗਈ ਨਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਭੈ ਕਰਮ
 ਕਮਾਵਣੇ ਝੂਠੇ ਠਾਉ ਨ ਕੋਇ ॥੪॥ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪੇ ਰੰਗੇ ਸੁ ਰਖਸੀ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸਤਸਾਂਗਤਿ
 ਊਪਜੈ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸੁਭਾਇ ॥੫॥ ਬਿਨੁ ਸਾਂਗਤੀ ਸਭਿ ਐਸੇ ਰਹਹਿ ਜੈਸੇ ਪਸੁ ਢੋਰ ॥ ਜਿਨ੍ਹਿ ਕੀਤੇ ਤਿਸੈ ਨ ਜਾਣਨੀ
 ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭਿ ਚੋਰ ॥੬॥ ਇਕਿ ਗੁਣ ਵਿਹਾਇਓ ਅਤਗਣ ਵਿਕਣਹਿ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ
 ਨਾਉ ਪਾਇਆ ਕੁਠਾ ਅੰਦਰਿ ਆਇ ॥੭॥ ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੇ ਲਾਇ
 ਸਵਾਰਿਅਨੁ ਸਬਦੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੮॥੯॥੩੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਭ ਨਾਵੈ ਨੋ ਲੋਚਦੀ ਜਿਸੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ
 ਸੋ ਪਾਏ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਹੈ ਸੁਖੁ ਤਿਸੁ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਕਵਸਾਏ ॥੧॥ ਤ੍ਰਾਂ ਬੇਅਤੁ ਦਿਆਲੁ ਹੈ ਤੇਰੀ
 ਸਰਣਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਈਐ ਨਾਮੇ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੁ ਹੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਸੂਸਟਿ
 ਤੁਪਾਈ ॥ ਹੁਕਮੇ ਕਾਰ ਕਰਾਇਦਾ ਦ੍ਰਿਆ ਕਿਸੁ ਕਹੀਐ ਭਾਈ ॥੩॥ ਬੁਝਣਾ ਅਬੁਝਣਾ ਤੁਧੁ ਕੀਆ ਇਹ ਤੇਰੀ
 ਸਿਰਿ ਕਾਰ ॥ ਇਕਨਾ ਬਖਸਿਹਿ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਇਕਿ ਦਰਗਹ ਮਾਰਿ ਕਢੇ ਕੂਡਿਆਰ ॥੪॥ ਇਕਿ ਧੁਰਿ ਪਵਿਤ
 ਪਾਵਨ ਹਹਿ ਤੁਧੁ ਨਾਮੇ ਲਾਏ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਏ ॥੫॥ ਇਕਿ ਕੁਚਲ ਕੁਚੀਲ
 ਵਿਖਲੀ ਪਤੇ ਨਾਵਹੁ ਆਪਿ ਖੁਆਏ ॥ ਨਾ ਓਨ ਸਿਧਿ ਨ ਬੁਧਿ ਹੈ ਨ ਸੰਜਮੀ ਫਿਰਹਿ ਉਤਵਤਾਏ ॥੬॥ ਨਦਰਿ
 ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਆਪਣੀ ਤਿਸ ਨੋ ਭਾਵਨੀ ਲਾਏ ॥ ਸਤੁ ਸਾਂਤੋਖੁ ਇਹ ਸੰਜਮੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥੭॥ ਲੇਖਾ
 ਪਡਿ ਨ ਪਹੂੰਚੀਐ ਕਥਿ ਕਹਣੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈਐ ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੮॥ ਇਹੁ
 ਮਨੁ ਦੇਹੀ ਸੋਧਿ ਤ੍ਰਾਂ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਇਸੁ ਦੇਹੀ ਵਿਚਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ
 ਅਪਾਰਿ ॥੯॥੧੦॥੩੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਚਿ ਰਤੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰਿ ॥

ਘਰ ਹੀ ਸੋ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥੧॥ ਅਵਗਣ ਗੁਣੀ ਬਖਸਾਇਆ ਹਰਿ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
 ਹਰਿ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਕਾਮਣੀ ਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਕਿ ਪਿਰੁ ਹਟੂਰਿ ਨ ਜਾਣਨੀ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਰਮਿ
 ਭੁਲਾਇ ॥ ਕਿਤ ਪਾਇਨ੍ਹਿ ਡੋਹਾਗਣੀ ਦੁਖੀ ਰੈਣ ਵਿਹਾਇ ॥੩॥ ਜਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਸਚੁ ਵਸਿਆ ਸਚੀ ਕਾਰ
 ਕਮਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸੇਵਹਿ ਸਹਜ ਸਿਤ ਸਚੇ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥ ਦੋਹਾਗਣੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈਆ ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ
 ਬਿਖੁ ਖਾਹਿ ॥ ਪਿਰੁ ਨ ਜਾਣਨਿ ਆਪਣਾ ਸੁੰਝੀ ਸੇਜ ਦੁਖੁ ਪਾਹਿ ॥੫॥ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਹੈ ਮਤੁ ਮਨ ਭਰਮਿ
 ਭੁਲਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਾਂਛਿ ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਸਚੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਹਿ ॥੬॥ ਸੋਹਾਗਣੀ ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਹਤਮੈ
 ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਪਿਰ ਸੇਤੀ ਅਨਦਿਨੁ ਗਹਿ ਰਹੀ ਸਚੀ ਸੇਜ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥੭॥ ਸੋ ਪਿਰੁ ਮੇਰਾ ਏਕੁ ਹੈ ਏਕਸੁ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਜੇ ਸੁਖੁ ਲੋਡਾਹਿ ਕਾਮਣੀ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ ॥੮॥੧੧॥੩੩॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ
 ਜਿਨਾ ਚਖਾਇਓਨੁ ਰਸੁ ਆਇਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਸਚਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਹੈ ਤਿਸ ਨੋ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੯॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ
 ਸਚਾ ਵਰਸਦਾ ਗੁਰਮੁਖਾ ਮੁਖਿ ਪਾਇ ॥ ਮਨੁ ਸਦਾ ਹਰੀਆਵਲਾ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਮਨਮੁਖਿ ਸਦਾ ਦੋਹਾਗਣੀ ਦਰਿ ਖੜੀਆ ਬਿਲਲਾਹਿ ॥ ਜਿਨਾ ਪਿਰ ਕਾ ਸੁਆਦੁ ਨ ਆਇਓ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ
 ਸੁੰਹੋ ਕਮਾਹਿ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੀਜੇ ਸਚੁ ਜਮੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਜੋ ਇਤੁ ਲਾਹੈ ਲਾਇਅਨੁ ਭਗਤੀ ਦੇਇ ਖੰਡਾਰ ॥
 ੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣੀ ਭੈ ਭਗਤਿ ਸੀਗਾਰਿ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਵਹਿ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ ਸਚੁ ਰਖਹਿ ਤਰ ਧਾਰਿ
 ॥੪॥ ਜਿਨਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵਿਆ ਆਪਣਾ ਤਿਨਾ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਸਦਾ ਪਿਰ ਕੈ ਸੰਗਿ ਰਹਹਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ
 ਗਵਾਇ ॥੫॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਮੁਖ ਤਜਲੇ ਪਿਰ ਕੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਪਿਰੁ ਖੈ ਹਤਮੈ
 ਤੂਸਨਾ ਮਾਰਿ ॥੬॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਘਰਿ ਆਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰਿ ॥ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਕੇਵਲ
 ਏਕੁ ਸੁਰਾਰਿ ॥੭॥ ਸਭੇ ਗੁਨਹ ਬਖਸਾਇ ਲਇਅਨੁ ਮੇਲੇ ਮੇਲਣਹਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਆਖਣੁ ਆਖੀਐ ਜੇ ਸੁਣਿ
 ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥੮॥੧੨॥੩੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਗੁਣ ਊਪਜੈ ਜਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲੈ ਸੋਇ ॥

सहजे नामु धिआईअै गिआनु परगटु होइ ॥१॥ ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हटूरि ॥
 सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥२॥ रहाउ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ तिनी इक मनि
 धिआइआ ॥ सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥३॥ ए मन तेरा को नही करि वेखु
 सबदि वीचारु ॥ हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥४॥ सबदि सुणीअै सबदि बुझीअै सचि
 रहै लिव लाइ ॥ सबदे हउमै मारीअै सचै महलि सुखु पाइ ॥५॥ इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै
 सोभ न होइ ॥ इह माइआ की सोभा चारि टिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥६॥ जिनी नामु विसारिआ से
 मुए मरि जाहि ॥ हरि रस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥७॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु
 अनदिनु नामे लाइ ॥ सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥८॥ बिनु सबदै सुणीअै न देखीअै
 जगु बोला अन्ना भरमाइ ॥ बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥९॥ जिन बाणी सितु चितु
 लाइआ से जन निरमल परवाणु ॥ नानक नामु तिना कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥१०॥१३॥३५॥
 आसा महला ३ ॥ सबदौ ही भगत जापदे जिन् की बाणी सची होइ ॥ विचहु आपु गडिआ नाउ मनिआ
 सचि मिलावा होइ ॥१॥ हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥ सफलु तिना का जनमु है तिन् मानै सभु
 कोइ ॥२॥ रहाउ ॥ हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥ सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति
 मिलै भगवानु ॥३॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥ नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट
 भंडारा ॥४॥ आवहि इसु रासी के वापारीए जिना नामु पिआरा ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिना
 अंतरि सबदु वीचारा ॥५॥ भगती सार न जाणनी मनमुख अह्वाकारी ॥ धुरहु आपि खुआइअनु जूअै
 बाजी हारी ॥६॥ बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ॥ प्रेम पदारथु पाईअै गुर भगती
 मन धीरि ॥७॥ जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ॥ हिरदै एको नामु वसै हउमै दुबिधा
 मारि ॥८॥ भगता की जति पति एको नामु है आपे लए सवारि ॥ सदा सरणाई तिस की जित भावै

ਤਿਉ ਕਾਰਜੁ ਸਾਰਿ ॥੮॥ ਭਗਤਿ ਨਿਰਾਲੀ ਅਲਾਹ ਦੀ ਜਾਪੈ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਹਿਰਦੈ ਵਸੈ ਐ
 ਭਗਤੀ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰਿ ॥੬॥੧੪॥੩੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਅਨ ਰਸ ਮਹਿ ਭੋਲਾਇਆ ਬਿਨੁ ਨਾਮੈ ਟੁਖ ਪਾਇ
 ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨ ਭੇਟਿਓ ਜਿ ਸਚੀ ਬੂੜਾ ਬੁਝਾਇ ॥੧॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰੇ ਬਾਵਲੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਖਿ ਸਾਦੁ ਪਾਇ ॥
 ਅਨ ਰਸਿ ਲਾਗਾ ਤ੍ਰੂਂ ਫਿਰਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਗੁਰਮੁਖ ਨਿਰਮਲੇ ਸਚਿ
 ਨਾਮਿ ਰਹਹਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ਨਹੀਂ ਕਿਆ ਕਰਿ ਕਹਿਆ ਜਾਇ ॥੨॥ ਆਪੁ ਪਛਾਣਹਿ
 ਸਬਦਿ ਮਰਹਿ ਮਨਹੁ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਪਾਏ ਬਖਸ਼ੇ ਬਖਸਣਹਾਰ ॥੩॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੁਖੁ ਨ
 ਪਾਈਐ ਨਾ ਟੁਖੁ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪਿਆ ਦ੍ਰਵੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥੪॥ ਦੋਹਾਗਣੀ
 ਪਿਰ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਹੀ ਕਿਆ ਕਰਿ ਕਰਹਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਜਲਦੀਆ ਫਿਰਹਿ ਸੇਜੈ ਰਵੈ ਨ ਭਤਾਰੁ
 ॥੫॥ ਸੋਹਾਗਣੀ ਮਹਲੁ ਪਾਇਆ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੀਗਾਰੀਆ ਅਪਣੇ ਸਹਿ ਲੰਝਾਇ
 ਮਿਲਾਇ ॥੬॥ ਮਰਣਾ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਭੀ ਮਰਹਿ
 ਜਮ ਦਰਿ ਹੋਹਿ ਖੁਆਰੁ ॥੭॥ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਸੇ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਮੁਖ
 ਤਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੮॥੨੨॥੧੫॥੩੭॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੨ ੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਪੰਚ ਮਨਾਏ ਪੰਚ ਰੁਸਾਏ ॥ ਪੰਚ ਵਸਾਏ
 ਪੰਚ ਗਵਾਏ ॥੧॥ ਇਨ੍ ਬਿਧਿ ਨਗਰੁ ਕੁਠਾ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਦੁਰਤੁ ਗਇਆ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨੁ ਦ੃ੜਾਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਚ ਧਰਮ ਕੀ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਵਾਰਿ ॥ ਫਰਹੇ ਮੁਹਕਮ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਖੇਤੀ ਬੀਜਹੁ
 ਭਾਈ ਮੀਤ ॥ ਸਤਦਾ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਸੇਵਹੁ ਨੀਤ ॥੩॥ ਸਾਁਤਿ ਸਹਜ ਸੁਖ ਕੇ ਸਭਿ ਹਾਟ ॥ ਸਾਹ ਵਾਪਾਰੀ ਏਕੈ
 ਥਾਟ ॥੪॥ ਜੇਜੀਆ ਡਨ੍ਨੁ ਕੋ ਲਏ ਨ ਜਗਾਤਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਧੁਰ ਕੀ ਛਾਪ ॥੫॥ ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਲਦਿ
 ਖੇਪ ਚਲਾਵਹੁ ॥ ਲੈ ਲਾਹਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਹੁ ਸਿਖ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰੰਜੀ ਨਾਮੁ ਲੇਖਾ
 ਸਾਚੁ ਸਮ੍ਰਾਰੇ ॥੭॥ ਸੋ ਵਸੈ ਇਤੁ ਘਰਿ ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਸੇਵ ॥ ਅਬਿਚਲ ਨਗਰੀ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ॥੮॥੧॥

आसावरी महला ५ घरु ३

९८ि सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥ साधसंगि हरि हरि जपत निरमल साची
रीति ॥१॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥ करहु अनुग्रहु पारब्रह्म हरि
किरपा धारि मुरारि ॥२॥ मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संगि ॥ जिसु वखर कउ चाहता सो
पाइओ नामहि रंगि ॥३॥ जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥ भगत रते तेरे नाम सिउ
सुखु भुंचहि सभ ठाइ ॥४॥ सभु जगु चलतउ पेखीऔ निहचलु हरि को नाउ ॥ करि मित्राई साध सिउ
निहचलु पावहि ठाउ ॥५॥ मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ ॥ एकु निवाहू राम नाम दीना का
प्रभु नाथ ॥६॥ चरन कमल बोहिथ भए लगि सागरु तरिओ तेह ॥ भेटिओ पूरा सतिगुरु साचा प्रभ सिउ
नेह ॥७॥ साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥ जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥८॥
सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अन्नद ॥ कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमान्नद ॥९॥१॥२॥

आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति

९८ि सतिगुर प्रसादि ॥ पारब्रह्मु प्रभु सिमरीऔ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥१॥ जिसु सिमरत
दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥२॥ इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ
॥३॥ सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥४॥ कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर
चरनी पाइ ॥५॥ जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥६॥ हरि रसु जिनी चाखिआ
पिआरे तृपति रहे आघाइ ॥७॥ अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥८॥१॥३॥
जनम मरण दुखु कटीऔ पिआरे जब भेटै हरि राइ ॥१॥ सुंदरु सुधरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु
दिखाइ ॥२॥ जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥३॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै
पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥४॥ जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ ॥५॥ साची प्रीति

ਨ ਤੁਟਿ ਪਿਆਰੇ ਜੁਗ ਜੁਗ ਰਹੀ ਸਮਾਇ ॥੬॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭਲਾ ਪਿਆਰੇ ਤੇਰੀ ਅਮਰੁ ਰਜਾਇ ॥੭॥
 ਨਾਨਕ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਨਾਰਾਇਣੈ ਪਿਆਰੇ ਮਾਤੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੮॥੨॥੪॥ ਸਭ ਬਿਧਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨਤੇ ਪਿਆਰੇ
 ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਕਹਤ ਸੁਨਾਇ ॥੯॥ ਤ੍ਰੂੰ ਦਾਤਾ ਜੀਆ ਸਭਨਾ ਕਾ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਪਹਿਰਹਿ ਖਾਇ ॥੨॥ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਤੇਰੀ
 ਆਗਿਆ ਪਿਆਰੇ ਦ੍ਰੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥੩॥ ਜੋ ਤ੍ਰੂੰ ਕਰਾਵਹਿ ਸੋ ਕਰੀ ਪਿਆਰੇ ਅਵਰੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
 ੪॥ ਦਿਨੁ ਰੈਣ ਸਭ ਸੁਹਾਵਣੇ ਪਿਆਰੇ ਜਿਤੁ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥੫॥ ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਪਿਆਰੇ ਧੁਰਿ
 ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਇ ॥੬॥ ਏਕੋ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੭॥ ਸੰਸਾਰ ਕੂਪ
 ਤੇ ਉਧਰਿ ਲੈ ਪਿਆਰੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਰਣਾਇ ॥੮॥੩॥੨੨॥੧੫॥੨॥੪੨॥

ਰਾਗ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਪਟੀ ਲਿਖੀ

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਸੈ ਸੋਝਿ ਸੂਸਟਿ ਜਿਨਿ ਸਾਜੀ ਸਭਨਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਭਿਆ ॥ ਸੇਵਤ ਰਹੇ ਚਿਤੁ ਜਿਨ੍ ਕਾ ਲਾਗਾ ਆਇਆ ਤਿਨ੍
 ਕਾ ਸਫਲੁ ਭਿਆ ॥੧॥ ਮਨ ਕਾਹੇ ਭੂਲੇ ਮੂੜ ਮਨਾ ॥ ਜਬ ਲੇਖਾ ਦੇਵਹਿ ਬੀਰਾ ਤਤ ਪਡਿਆ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਈਵਡੀ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥ ਏਨਾ ਅਖਰਾ ਮਹਿ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜੈ ਤਿਸੁ
 ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥੨॥ ਊੜੈ ਤਥਮਾ ਤਾ ਕੀ ਕੀਜੈ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਸੇਈ ਫਲੁ
 ਪਾਵਹਿ ਜਿਨ੍ੀ ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥੩॥ ਡੱਡੈ ਡਿਆਨੁ ਬੂੜੈ ਜੇ ਕੋਈ ਪਡਿਆ ਪੰਡਿਤੁ ਸੋਈ ॥ ਸਰਬ ਜੀਆ ਮਹਿ
 ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਤਾ ਹਤਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਈ ॥੪॥ ਕਕੈ ਕੇਸ ਪੁੰਡਰ ਜਬ ਹ੍ਰਾਏ ਵਿਣੁ ਸਾਬ੍ਰਣੈ ਤਜ਼ਿਲਿਆ ॥ ਜਮ ਰਾਜੇ ਕੇ
 ਹੇਠ ਆਏ ਮਾਇਆ ਕੈ ਸੰਗਲਿ ਬੰਧਿ ਲਿਆ ॥੫॥ ਖਖੈ ਖੁੰਦਕਾਰੁ ਸਾਹ ਆਲਮੁ ਕਰਿ ਖਰੀਦਿ ਜਿਨਿ ਖਰਚੁ
 ਦੀਆ ॥ ਬੰਧਨਿ ਜਾ ਕੈ ਸਭੁ ਜੁਗ ਬਾਧਿਆ ਅਵਰੀ ਕਾ ਨਹੀ ਹੁਕਮੁ ਪਿਆ ॥੬॥ ਗੈ ਗੋਇ ਗਾਇ ਜਿਨਿ
 ਛੋਡੀ ਗਲੀ ਗੋਬਿਦੁ ਗਰਬਿ ਭਿਆ ॥ ਘਡਿ ਭਾੱਡੇ ਜਿਨਿ ਆਕੀ ਸਾਜੀ ਚਾਡਣ ਵਾਹੈ ਰਈ ਕੀਆ ॥੭॥ ਘਘੈ
 ਘਾਲ ਸੇਵਕੁ ਜੇ ਘਾਲੈ ਸਬਦਿ ਗੁਰੁ ਕੈ ਲਾਗਿ ਰਹੈ ॥ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਜੇ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਇਨ ਬਿਧਿ ਸਾਹਿਬੁ ਰਮਤੁ
 ਰਹੈ ॥੮॥ ਚਚੈ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਜਿਨਿ ਸਾਜੇ ਚਾਰੇ ਖਾਣੀ ਚਾਰਿ ਜੁਗਾ ॥ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਜੋਗੀ ਖਾਣੀ ਭੋਗੀ ਪਡਿਆ ਪੰਡਿਤੁ

आपि थीआ ॥६॥ छछै छाइआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ ॥ भरमु उपाइ भुलाईअनु
 आपे तेरा करमु होआ तिन् गुरु मिलिआ ॥१०॥ जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ
 ॥ एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥११॥ झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे
 रहिआ ॥ दे दे वेखै हुकमु चलाए जित जीआ का रिकु पड़िआ ॥१२॥ जंजै नदरि करे जा देखा दूजा
 कोई नाही ॥ एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही ॥१३॥ टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी
 कि मुहति कि उठि चलणा ॥ जूअै जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ॥१४॥ ठठै ठाढि
 वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन् का चितु लागा ॥ चितु लागा सई जन निस्तरे तउ परसादी सुखु
 पाइआ ॥१५॥ डडै डंफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा ॥ तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु
 सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥१६॥ ढढै ढाहि उसारै आपे जित तिसु भावै तिवै करे ॥ करि करि वेखै
 हुकमु चलाए तिसु निस्तारे जा कउ नदरि करे ॥१७॥ णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई
 ॥ आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥१८॥ ततै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न
 पाइआ ॥ ना तर ना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइआ ॥१९॥ थथै थानि थान्नतरि सोई
 जा का कीआ सभु होआ ॥ किआ भरमु किआ माइआ कहीअै जो तिसु भावै सोई भला ॥२०॥ ददै दोसु न
 देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ ॥ जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥२१॥ धधै धारि
 कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ ॥ तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पड़िआ
 ॥२२॥ ननै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना संमूलिआ ॥ गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मै
 मिलिआ ॥२३॥ पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥ देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि
 बाहरि रवि रहिआ ॥२४॥ फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लड़िआ ॥ गुर परसादी से
 नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पड़िआ ॥२५॥ बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा

॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭ ਸਾਰੀ ਕੀਤੇ ਪਾਸਾ ਢਾਲਣਿ ਆਪਿ ਲਗਾ ॥੨੬॥ ਭਮੈ ਭਾਲਹਿ ਸੇ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ
ਜਿਨ੍ ਕਤ ਭਤ ਪਡਿਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਫਿਰਹਿ ਨ ਚੇਤਹਿ ਮੂੜੇ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਫੇਰੁ ਪਡਿਆ ॥੨੭॥ ਮੰਮੈ ਮੋਹੁ
ਮਰਣੁ ਮਥੁਸੂਦਨੁ ਮਰਣੁ ਭਡਿਆ ਤਬ ਚੇਤਵਿਆ ॥ ਕਾਡਿਆ ਭੀਤਰਿ ਅਵਰੋ ਪਡਿਆ ਮੰਮਾ ਅਖਰੁ ਵੀਸਰਿਆ
॥੨੮॥ ਧਧੈ ਜਨਮੁ ਨ ਹੋਵੀ ਕਦ ਹੀ ਜੇ ਕਰਿ ਸਚੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਾਝੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੋ ਜਾਣੈ
॥੨੯॥ ਰਾਰੈ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਜੇਤੇ ਕੀਏ ਜੰਤਾ ॥ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਧੰਧੈ ਸਭ ਲਾਏ ਕਰਮੁ ਹੋਆ ਤਿਨ ਨਾਮੁ
ਲਡਿਆ ॥੩੦॥ ਲਲੈ ਲਾਡਿ ਧੰਧੈ ਜਿਨਿ ਛੋਡੀ ਮੀਠਾ ਮਾਡਿਆ ਮੋਹੁ ਕੀਆ ॥ ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਸਮ ਕਰਿ ਸਹਣਾ
ਭਾਣੈ ਤਾ ਕੈ ਹੁਕਮੁ ਪਡਿਆ ॥੩੧॥ ਕਵੈ ਵਾਸੁਦੇਤ ਪਰਮੇਸਰੁ ਕੇਖਣ ਕਤ ਜਿਨਿ ਕੇਸੁ ਕੀਆ ॥ ਕੇਖੈ ਚਾਖੈ ਸਭੁ
ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥੩੨॥ ਡਾੜੈ ਰਾਡਿ ਕਰਹਿ ਕਿਆ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਜਿ
ਅਮਰੁ ਹੋਆ ॥ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹੁ ਓਸੁ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ਕੀਆ ॥੩੩॥ ਹਾਹੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ
ਦਾਤਾ ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਜਿਨਿ ਰਿਜਕੁ ਦੀਆ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਹੁ ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਹਾ ਹਰਿ
ਨਾਮੁ ਲੀਆ ॥੩੪॥ ਆਇੜੈ ਆਪਿ ਕਰੇ ਜਿਨਿ ਛੋਡੀ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ॥ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਸਭ
ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਨਾਨਕ ਸਾਡਿਰ ਇਵ ਕਹਿਆ ॥੩੫॥੧॥

ਰਾਗ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਪਟੀ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਧੋ ਅੰਡੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਆਇਆ ਕਾਖੈ ਘੰਡੈ ਕਾਲੁ ਭਡਿਆ ॥ ਰੀਰੀ ਲਲੀ ਪਾਪ ਕਮਾਣੇ ਪਡਿ ਅਵਗਣ ਗੁਣ
ਵੀਸਰਿਆ ॥੧॥ ਮਨ ਐਸਾ ਲੇਖਾ ਤ੍ਰੂ ਕੀ ਪਡਿਆ ॥ ਲੇਖਾ ਦੇਣਾ ਤੈਰੈ ਸਿਰਿ ਰਹਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਸਿਧਿਂਡਾਇਐ ਸਿਮਰਹਿ ਨਾਹੀ ਨਨੈ ਨਾ ਤੁਧੁ ਨਾਮੁ ਲਡਿਆ ॥ ਛਛੈ ਛੀਜਹਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਮੂੜੇ ਕਿਤ ਛੂਟਹਿ ਜਮਿ
ਪਾਕਡਿਆ ॥੨॥ ਕਕੈ ਬ੍ਰਾਝਹਿ ਨਾਹੀ ਮੂੜੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲੇ ਤੇਰਾ ਜਨਮੁ ਗਡਿਆ ॥ ਅਣਹੋਦਾ ਨਾਤ ਧਰਾਇਓ ਪਾਧਾ
ਅਵਰਾ ਕਾ ਭਾਰੁ ਤੁਧੁ ਲਡਿਆ ॥੩॥ ਜਜੈ ਜੋਤਿ ਹਿਰਿ ਲੜੈ ਤੇਰੀ ਮੂੜੇ ਅੰਤਿ ਗਡਿਆ ਪਛੁਤਾਵਹਿਗਾ ॥ ਏਕੁ
ਸਬਦੁ ਤ੍ਰੂ ਚੀਨਹਿ ਨਾਹੀ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਆਵਹਿਗਾ ॥੪॥ ਤੁਧੁ ਸਿਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਪੜ੍ਹ ਪੰਡਿਤ ਅਵਰਾ ਨੋ ਨ

ਸਿਖਾਲਿ ਬਿਖਿਆ ॥ ਪਹਿਲਾ ਫਾਹਾ ਪਇਆ ਪਾਥੇ ਪਿਛੋ ਦੇ ਗਲਿ ਚਾਟਡਿਆ ॥੫॥ ਸਸੈ ਸੰਜਮੁ ਗਇਆ ਮੂੜੇ
 ਏਕੁ ਦਾਨੁ ਤੁਧੁ ਕੁਥਾਇ ਲਡਿਆ ॥ ਸਾਈ ਪੁਨੀ ਜਜਮਾਨ ਕੀ ਸਾ ਤੇਰੀ ਏਤੁ ਧਾਨਿ ਖਾਥੈ ਤੇਰਾ ਜਨਮੁ ਗਇਆ
 ॥੬॥ ਮੰਮੈ ਮਤਿ ਹਿਰਿ ਲੰਝੈ ਤੇਰੀ ਮੂੜੇ ਹਉਮੈ ਵਡਾ ਰੋਗੁ ਪਇਆ ॥ ਅੰਤਰ ਆਤਮੈ ਬ੍ਰਹਮੁ ਨ ਚੀਨਿਆ ਮਾਇਆ
 ਕਾ ਮੁਹਤਾਜੁ ਭਡਿਆ ॥੭॥ ਕਕੈ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰਿਧਿ ਭਰਮਿਓਹੁ ਮੂੜੇ ਮਮਤਾ ਲਾਗੇ ਤੁਧੁ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿਆ ॥ ਪਡਹਿ
 ਗੁਣਹਿ ਤ੍ਰਾਂ ਬਹੁਤੁ ਪੁਕਾਰਹਿ ਵਿਣੁ ਬੂੜ੍ਹੇ ਤ੍ਰਾਂ ਝੂਬਿ ਮੁਆ ॥੮॥ ਤਤੈ ਤਾਮਸਿ ਜਲਿਓਹੁ ਮੂੜੇ ਥਥੈ ਥਾਨ ਭਰਿਸਟੁ
 ਹੋਆ ॥ ਘੈਂਦੈ ਘਰਿ ਘਰਿ ਫਿਰਹਿ ਤ੍ਰਾਂ ਮੂੜੇ ਫਦੈ ਦਾਨੁ ਨ ਤੁਧੁ ਲਡਿਆ ॥੯॥ ਪਪੈ ਪਾਰਿ ਨ ਪਕਹੀ ਮੂੜੇ ਪਰਪਂਚਿ
 ਤ੍ਰਾਂ ਪਲਚਿ ਰਹਿਆ ॥ ਸਚੈ ਆਪਿ ਖੁਆਇਓਹੁ ਮੂੜੇ ਇਹੁ ਸਿਰਿ ਤੈਰੈ ਲੇਖੁ ਪਇਆ ॥੧੦॥ ਭਖੈ ਭਵਜਲਿ ਢੁਬੋਹੁ
 ਮੂੜੇ ਮਾਇਆ ਵਿਚਿ ਗਲਤਾਨੁ ਭਡਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਏਕ ਘੜੀ ਮਹਿ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥੧੧॥
 ਕਵੈ ਵਾਰੀ ਆਈਆ ਮੂੜੇ ਵਾਸੁਦੇਤ ਤੁਧੁ ਵੀਸਰਿਆ ॥ ਏਹ ਵੇਲਾ ਨ ਲਹਸਹਿ ਮੂੜੇ ਫਿਰਿ ਤ੍ਰਾਂ ਜਮ ਕੈ ਵਸਿ
 ਪਇਆ ॥੧੨॥ ਝੜ੍ਹੈ ਕਦੇ ਨ ਝੂਰਹਿ ਮੂੜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਿ ਤ੍ਰਾਂ ਵਿਖਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝਹੁ ਗੁਰੁ ਨਹੀਂ
 ਕੋਈ ਨਿਗੁਰੇ ਕਾ ਹੈ ਨਾਤ ਬੁਰਾ ॥੧੩॥ ਧਥੈ ਧਾਵਤ ਕਰਜਿ ਰਖੁ ਮੂੜੇ ਅੰਤਰਿ ਤੈਰੈ ਨਿਧਾਨੁ ਪਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਹੋਵਹਿ ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵਹਿ ਜੁਗਾ ਜੁਗਤਰਿ ਖਾਹਿ ਪਇਆ ॥੧੪॥ ਗੈ ਗੋਬਿਦੁ ਚਿਤਿ ਕਰਿ ਮੂੜੇ ਗਲੀ
 ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਇ ਮੂੜੇ ਪਿਛਲੇ ਗੁਨਹ ਸਭ ਬਖਸਿ ਲਡਿਆ ॥੧੫॥ ਹਾਹੈ ਹਰਿ
 ਕਥਾ ਬੂੜ੍ਹੇ ਤ੍ਰਾਂ ਮੂੜੇ ਤਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਪਡਹਿ ਤੇਤਾ ਢੁਖੁ ਲਾਗੇ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ
 ॥੧੬॥ ਰਾਰੈ ਰਾਮੁ ਚਿਤਿ ਕਰਿ ਮੂੜੇ ਹਿਰਦੈ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨ੍ ਰਾਮੁ ਪਛਾਤਾ
 ਨਿਰਗੁਣ ਰਾਮੁ ਤਿਨ੍ ਬੂੜ੍ਹਿ ਲਹਿਆ ॥੧੭॥ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ਅਕਥੁ ਨ ਜਾਈ ਹਰਿ ਕਥਿਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਆ ਤਿਨ੍ ਕਾ ਲੇਖਾ ਨਿਬਡਿਆ ॥੧੮॥੧॥੨॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਮੁੰਧ ਜੋਬਨਿ ਬਾਲਡੀਏ ਮੇਰਾ ਪਿਲੁ ਰਲੀਆਲਾ ਰਾਮ ॥ ਧਨ ਪਿਰ ਨੇਹੁ ਘਣਾ

रसि प्रीति दइआला राम ॥ धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥ सेजा सुहावी
 संगि पिर कै सात सर अंमृत भरे ॥ करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ ॥
 नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि ओमाहओ ॥੧॥ मुंध सहजि सलोनड़ीए इक प्रेम बिन्नती राम ॥
 मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम ॥ प्रभ प्रेमि राती हरि बिन्नती नामि हरि कै सुखि वसै ॥
 तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥ तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि
 सुनणि न धीजए ॥ नानका पृउ पृउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥੨॥ सखीहो सहेलड़ीहो मेरा
 पिरु वणजारा राम ॥ हरि नामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥ मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ
 भावै ता मुंध भली ॥ इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥ करण कारण समरथ
 स्रीधर आपि कारजु सारए ॥ नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ॥੩॥ हम घरि साचा
 सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ॥ रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम ॥ आपणा मनु
 दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए ॥ तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अंमृत फलु
 पावए ॥ बुधि पाठि न पाईਐ बहु चतुराईਐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥ नानक ठाकुर मीत हमारे हम
 नाही लोकाणे ॥੪॥੧॥ आसा महला ੧ ॥ अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥ मेरा मनो मेरा मनु
 राता लाल पिआरे राम ॥ अनदिनु राता मनु बैरागी सुन्न मंडलि घरु पाइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु
 पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥ नानक
 नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे ॥੨॥ तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईਐ राम
 ॥ सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईਐ राम ॥ सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईਐ
 गुणी निधाना ॥ तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥ जपु तपु करि करि संजम थाकी
 हठि निग्रहि नही पाईਐ ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईਐ ॥੨॥ गुरु सागरो

ਰਤਨਾਗਰੁ ਤਿਤੁ ਰਤਨ ਘਣੇਰੇ ਰਾਮ ॥ ਕਰਿ ਮਜਨੋ ਸਪਤ ਸਰੇ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ॥ ਨਿਰਮਲ ਜਲਿ ਨਾਏ
 ਜਾ ਪ੍ਰਭ ਭਾਏ ਪੰਚ ਮਿਲੇ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਕਾਮੁ ਕਰੋਧੁ ਕਪਟੁ ਬਿਖਿਆ ਤਜਿ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਹਉਮੈ ਲੋਭ ਲਹਰਿ
 ਲਬ ਥਾਕੇ ਪਾਏ ਦੀਨ ਦਿੱਡਿਆਲਾ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਮਾਨਿ ਤੀਰਥੁ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥੩॥ ਹਉ
 ਬਨੁ ਬਨੋ ਦੇਖਿ ਰਹੀ ਤ੍ਰਣੁ ਦੇਖਿ ਸਬਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਤ੍ਰਭਵਣੇ ਤੁਝਹਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਸਬਾਇਆ ਰਾਮ ॥
 ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਕੀਆ ਤ੍ਰਾਂ ਥਿਝ ਥੀਆ ਤੁਧੁ ਸਮਾਨਿ ਕੋ ਨਾਹੀਂ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਦਾਤਾ ਸਭ ਜਾਚਿਕ ਤੇਰੇ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਕਿਸੁ ਸਾਲਾਹੀ
 ॥ ਅਣਮਂਗਿਆ ਦਾਨੁ ਦੀਜੈ ਦਾਤੇ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ
 ਵੀਚਾਰਾ ॥੪॥੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੋ ਆਦਿ
 ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੋ ਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਥਾਨੋ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ
 ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਅਕਰੁ ਝੂਠਾ ਸਭੁ ਮਾਨੋ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੈ ਸੁਰਤਿ ਮੁਕਤਿ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਮਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ
 ਰਾਮ ॥ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਈ ਰਾਮ ॥ ਮਾਤਾ ਪਿਤ ਭਾਈ ਸੁਤ ਚਤੁਰਾਈ ਸੰਗਿ ਨ ਸੰਪੈ ਨਾਰੇ ॥
 ਸਾਇਰ ਕੀ ਪੁਕੀ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗੀ ਚਰਣ ਤਲੈ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖਿ ਇਕੁ ਚਲਤੁ ਦਿਖਾਇਆ ਜਹ
 ਦੇਖਾ ਤਹ ਸੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਨ ਛੋਡਤ ਸਹਜੇ ਹੋਇ ਸੁ ਹੋਈ ॥੨॥ ਮੇਰਾ ਮਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ
 ਸਾਚੁ ਸਮਾਲੇ ਰਾਮ ॥ ਅਕਗਣ ਮੇਟਿ ਚਲੇ ਗੁਣ ਸੰਗਮ ਨਾਲੇ ਰਾਮ ॥ ਅਕਗਣ ਪਰਹਰਿ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ਦਰਿ
 ਸਚੈ ਸਚਿਆਰੇ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਸਾਜਨੁ ਮੀਤੁ ਸੁਜਾਣੁ ਸਖਾ ਤ੍ਰਾਂ
 ਸਚਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਐਸੀ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈ ॥੩॥ ਸਚੁ ਅੰਜਨੋ ਅੰਜਨੁ
 ਸਾਰਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਾਤਾ ਰਾਮ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜਗਜੀਵਨੋ ਦਾਤਾ ਰਾਮ ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਹਰਿ
 ਮਨਿ ਰਾਤਾ ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਮੇਲਾਇਆ ॥ ਸਾਧ ਸਭਾ ਸੰਤਾ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਨਦਰਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਕੀ
 ਭਗਤਿ ਰਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਚੂਕੇ ਮੋਹ ਪਿਆਸਾ ॥ ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਪਤੀਣੇ ਵਿਰਲੇ ਦਾਸ ਤਦਾਸਾ ॥੪॥੩॥

ਰਾਗ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ ਘਰੂ ੨

੭੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਤੂੰ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਜਿਥੈ ਹਉ ਜਾਈ ਸਾਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ਜੀਤ ॥ ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਾਤਾ
 ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ਦ੍ਰੂਖ ਬਿਸਾਰਣਹਾਰੁ ਜੀਤ ॥ ਦ੍ਰੂਖ ਬਿਸਾਰਣਹਾਰੁ ਸੁਆਮੀ ਕੀਤਾ ਜਾ ਕਾ ਹੋਵੈ ॥ ਕੋਟ ਕੋਟਾਂਤਰ
 ਪਾਪਾ ਕੇਰੇ ਏਕ ਘੜੀ ਮਹਿ ਖੋਵੈ ॥ ਛਾਸ ਸਿ ਛਾਸਾ ਬਗ ਸਿ ਬਗ ਘਟ ਘਟ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ਜੀਤ ॥ ਤੂੰ ਸਭਨੀ ਥਾਈ
 ਜਿਥੈ ਹਉ ਜਾਈ ਸਾਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ਜੀਤ ॥੧॥ ਜਿਨ੍ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ੍ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਤੇ ਵਿਰਲੇ
 ਸੰਸਾਰਿ ਜੀਤ ॥ ਤਿਨ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਵੈ ਕਬਹੁ ਨ ਆਵਹਿ ਹਾਰਿ ਜੀਤ ॥ ਤੇ ਕਬਹੁ ਨ
 ਹਾਰਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰਹਿ ਤਿਨ੍ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਚੂਕਾ ਜੋ ਹਰਿ ਲਾਗੇ ਪਾਵੈ ॥
 ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹਰਿ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਰ ਧਾਰਿ ਜੀਤ ॥ ਜਿਨ੍ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ੍
 ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਤੇ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ਜੀਤ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਆ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ਤਿਸੈ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ
 ਜੀਤ ॥ ਤਾ ਕੀ ਸੇਵ ਕਰੀਐ ਲਾਹਾ ਲੀਜੈ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪਾਈਐ ਮਾਣੁ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ਸੋਈ ਜਨੁ
 ਪਾਵੈ ਜੋ ਨਰੁ ਏਕੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਓਹੁ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਵੈ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਨਿਤ ਹਰਿ ਗੁਣ ਆਖਿ ਕਖਾਣੈ ॥
 ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਤਿਸੈ ਕਾ ਲੀਜੈ ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਪੁਰਖੁ ਪਰਥਾਨੁ ਜੀਤ ॥ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਆ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ
 ਹਉ ਤਿਸੈ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਨੁ ਜੀਤ ॥੩॥ ਨਾਮੁ ਲੈਨਿ ਸਿ ਸੋਹਹਿ ਤਿਨ ਸੁਖ ਫਲ ਹੋਵਹਿ ਮਾਨਹਿ ਸੇ ਜਿਣਿ ਜਾਹਿ ਜੀਤ
 ॥ ਤਿਨ ਫਲ ਤੌਟਿ ਨ ਆਵੈ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਜੇ ਜੁਗ ਕੇਤੇ ਜਾਹਿ ਜੀਤ ॥ ਜੇ ਜੁਗ ਕੇਤੇ ਜਾਹਿ ਸੁਆਮੀ ਤਿਨ ਫਲ ਤੌਟਿ
 ਨ ਆਵੈ ॥ ਤਿਨ੍ ਜਰਾ ਨ ਮਰਣਾ ਨਰਕਿ ਨ ਪਰਣਾ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਹਿ ਸਿ ਸ੍ਰੂਕਹਿ ਨਾਹੀ
 ਨਾਨਕ ਪੀਡੁ ਨ ਖਾਹਿ ਜੀਤ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਨਿ ਸਿ ਸੋਹਹਿ ਤਿਨ੍ ਸੁਖ ਫਲ ਹੋਵਹਿ ਮਾਨਹਿ ਸੇ ਜਿਣਿ ਜਾਹਿ ਜੀਤ ॥੪॥
 ੧॥੪॥

੭੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ ਘਰੂ ੩ ॥ ਤੂੰ ਸੁਣਿ ਹਰਣਾ ਕਾਲਿਆ ਕੀ ਵਾਡੀਐ ਰਾਤਾ
 ਰਾਮ ॥ ਬਿਖੁ ਫਲੁ ਮੀਠਾ ਚਾਰਿ ਦਿਨ ਫਿਰਿ ਹੋਵੈ ਤਾਤਾ ਰਾਮ ॥ ਫਿਰਿ ਹੋਇ ਤਾਤਾ ਖਰਾ ਮਾਤਾ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਪਰਤਾਪਏ ॥

ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए ॥ हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझ्हाहि बिसारिआ ॥
 सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥੧॥ भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम ॥
 मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥ बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रतओ ॥ सूरजु
 चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ ॥ जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥ सचु
 कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥੨॥ मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले
 राम ॥ साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥ मछुली विछुन्नी नैण रुन्नी जालु बधिकि
 पाइआ ॥ संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ ॥ भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि
 मनहु अंदेसिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥੩॥ नदीआ वाह विछुन्निआ
 मेला संजोगी राम ॥ जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥ कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरु
 जिनि चेतिआ ॥ बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥ हरि नामु भगति न रिटै साचा
 से अंति धाही रुन्निआ ॥ सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुन्निआ ॥੪॥੧॥੫॥

੯੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ੩ ਛਾਂਤ ਘਰੁ ੧ ॥ ਹਮ ਘਰੇ ਸਾਚਾ ਸੋਹਿਲਾ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ
 ਰਾਮ ॥ ਧਨ ਪਿਰ ਮੇਲੁ ਭਡਿਆ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ਸਚੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ
 ਕਾਮਣਿ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੀ ਸਚਿ ਸਵਾਰੀ ਸਦਾ ਰਾਵੇ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ॥ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਹਰਿ ਕਰੁ ਪਾਏ
 ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀ ਸਫਲਿਤ ਜਨਮੁ ਸਬਾਇਆ ॥੧॥ ਟ੍ਰੈਂਜਡੈ
 ਕਾਮਣਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲੀ ਹਰਿ ਕਰੁ ਨ ਪਾਏ ਰਾਮ ॥ ਕਾਮਣਿ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ਰਾਮ ॥ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ
 ਗਵਾਏ ਮਨਮੁਖਿ ਇਆਣੀ ਅਤਗਣਕਂਤੀ ਝੂਰੇ ॥ ਆਪਣਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਤਾ ਪਿਲੁ ਮਿਲਿਆ
 ਹਟੂਰੇ ॥ ਦੇਖਿ ਪਿਲੁ ਵਿਗਸੀ ਅੰਦਰਹੁ ਸਰਸੀ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕਾਮਣਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੨॥ ਪਿਰੁ ਸੰਗਿ ਕਾਮਣਿ ਜਾਣਿਆ ਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ਰਾਮ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦਿ ਮਿਲੀ
ਸਹਜੇ ਤਪਤਿ ਬੁਝਾਈ ਰਾਮ ॥ ਸਬਦਿ ਤਪਤਿ ਬੁਝਾਈ ਅੰਤਰਿ ਸਾਁਤਿ ਆਈ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ॥ ਮਿਲਿ
ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਪਣੇ ਸਦਾ ਰੰਗੁ ਮਾਣੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਖਿਆ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਪੰਡਿਤ ਮੋਨੀ ਥਾਕੇ ਭੇਖੀ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈ ॥
ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਜਗੁ ਬਤਰਾਨਾ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਈ ॥੩॥ ਸਾ ਧਨ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਵਿਆ ਹਰਿ ਜੀਤ ਮੇਲਿ
ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸਾ ਧਨ ਹਰਿ ਕੈ ਰਸੀ ਰਸੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰੇ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰੇ ਸਦਾ
ਗੁਣ ਸਾਰੇ ਮਨਿ ਵਸੇ ॥ ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਜਾ ਪਿਰਿ ਰਾਵੀ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਕਗਣ ਨਸੇ ॥ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਨਾਮੁ ਹਾਰਿ ਸਦਾ
ਧਿਆਈਐ ਸੋਹਿਲੜਾ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਅਨਦੁ ਹੈ ਹਾਰਿ ਮਿਲਿਆ ਕਾਰਜ ਸਾਰੇ ॥੪॥੧॥੬॥

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਛੱਤ ਘਰੁ ੩ ॥ ਸਾਜਨ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਹੁ ਤੁਮ ਸਹ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰੇਹੋ ॥
ਗੁਰੁ ਸੇਵਹੁ ਸਦਾ ਆਪਣਾ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਲੇਹੋ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਤੁਮ ਸਹੈ ਕੇਰੀ ਜੋ ਸਹ ਪਿਆਰੇ ਭਾਵਏ ॥
ਆਪਣਾ ਭਾਣਾ ਤੁਮ ਕਰਹੁ ਤਾ ਫਿਰਿ ਸਹ ਖੁਸੀ ਨ ਆਵਏ ॥ ਭਗਤਿ ਭਾਵ ਇਹੁ ਮਾਰਗੁ ਬਿਖੜਾ ਗੁਰ ਦੁਆਰੈ
ਕੋ ਪਾਵਏ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਸੁ ਕਰੇ ਕਿਰਪਾ ਸੋ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵਏ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਬੈਰਾਗੀਆ ਤ੍ਰੂ ਬੈਰਾਗੁ
ਕਰਿ ਕਿਸੁ ਦਿਖਾਵਹਿ ॥ ਹਰਿ ਸੋਹਿਲਾ ਤਿਨ੍ ਸਦ ਸਦਾ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ॥ ਕਰਿ ਬੈਰਾਗੁ ਤ੍ਰੂ ਛੋਡਿ ਪਾਖੰਡੁ ਸੋ
ਸਹੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਏ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਏਕੋ ਸੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਏ ॥ ਜਿਨਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਤਾ ਹਰੀ
ਕੇਰਾ ਸੋਈ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਏ ॥ ਇਵ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੋ ਬੈਰਾਗੀ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਵਏ ॥੨॥ ਜਹ ਜਹ ਮਨ
ਤ੍ਰੂ ਧਾਵਦਾ ਤਹ ਤਹ ਹਰਿ ਤੈਰੈ ਨਾਲੇ ॥ ਮਨ ਸਿਆਣਪ ਛੋਡੀਐ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਸਾਥਿ ਤੈਰੈ ਸੋ ਸਹੁ ਸਦਾ
ਹੈ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਹੇ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਤੈਰੇ ਪਾਪ ਕਟੇ ਅੰਤਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਵਹੇ ॥ ਸਾਚੇ ਨਾਲਿ ਤੇਰਾ
ਗੰਢੁ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ॥ ਇਤ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਹ ਮਨ ਤ੍ਰੂ ਧਾਵਦਾ ਤਹ ਹਰਿ ਤੈਰੈ ਸਦਾ ਨਾਲੇ ॥੩॥
ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਧਾਵਤੁ ਥੰਮਿਆ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਆਏ ॥ ਨਾਮੁ ਵਿਹਾਝੇ ਨਾਮੁ ਲਏ ਨਾਮਿ ਰਹੇ ਸਮਾਏ ॥

ਧਾਰਤੁ ਥੰਮਿਆ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਦਸਵਾ ਦੁਆਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਤਿਥੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭੋਜਨੁ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਜਿਤੁ
 ਸਬਦਿ ਜਗਤੁ ਥੰਮਿ ਰਹਾਇਆ ॥ ਤਹ ਅਨੇਕ ਵਾਜੇ ਸਦਾ ਅਨਦੁ ਹੈ ਸਚੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥ ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਧਾਰਤੁ ਥੰਮਿਆ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਆਏ ॥੪॥ ਮਨ ਤੂੰ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੁ ਹੈ ਆਪਣਾ ਮੂਲੁ ਪਛਾਣੁ ॥
 ਮਨ ਹਰਿ ਜੀ ਤੇਰੈ ਨਾਲਿ ਹੈ ਗੁਰਮਤੀ ਰੰਗੁ ਮਾਣੁ ॥ ਮੂਲੁ ਪਛਾਣਹਿ ਤਾਂ ਸਹੁ ਜਾਣਹਿ ਮਰਣ ਜੀਵਣ ਕੀ ਸੋਝੀ ਹੋਈ
 ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਜਾਣਹਿ ਤਾਂ ਟ੍ਰੂਜਾ ਭਾਉ ਨ ਹੋਈ ॥ ਮਨਿ ਸਾਂਤਿ ਆਈ ਵਜੀ ਵਧਾਈ ਤਾ ਹੋਆ ਪਰਵਾਣੁ ॥
 ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਨ ਤੂੰ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੁ ਹੈ ਅਪਣਾ ਮੂਲੁ ਪਛਾਣੁ ॥੫॥ ਮਨ ਤੂੰ ਗਾਰਬਿ ਅਟਿਆ ਗਾਰਬਿ ਲਦਿਆ
 ਜਾਹਿ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਮੋਹਿਆ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਭਵਾਹਿ ॥ ਗਾਰਬਿ ਲਾਗਾ ਜਾਹਿ ਮੁਗਧ ਮਨ ਅੰਤਿ ਗਿਆ
 ਪਛੁਤਾਵਹੇ ॥ ਅਛਾਕਾਰੁ ਤਿਸਨਾ ਰੋਗੁ ਲਗਾ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਹੇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਚੇਤਹਿ ਨਾਹੀ ਅਗੈ
 ਗਿਆ ਪਛੁਤਾਵਹੇ ॥ ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਨ ਤੂੰ ਗਾਰਬਿ ਅਟਿਆ ਗਾਰਬਿ ਲਦਿਆ ਜਾਵਹੇ ॥੬॥ ਮਨ ਤੂੰ ਮਤ
 ਮਾਣੁ ਕਰਹਿ ਜਿ ਹਤ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਮਾਣਾ ਹੋਹੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਅਗਿਆਨੁ ਹਤ ਬੁਧਿ ਹੈ ਸਚਿ ਸਬਦਿ
 ਮਲੁ ਖੋਹੁ ॥ ਹੋਹੁ ਨਿਮਾਣਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਗੈ ਮਤ ਕਿਛੁ ਆਪੁ ਲਖਾਵਹੇ ॥ ਆਪਣੈ ਅਛਾਕਾਰਿ ਜਗਤੁ ਜਲਿਆ ਮਤ ਤੂੰ
 ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਗਵਾਵਹੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਕਰਹਿ ਕਾਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਲਾਗਿ ਰਹੁ ॥ ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ
 ਆਪੁ ਛਡਿ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਮਨ ਨਿਮਾਣਾ ਹੋਇ ਰਹੁ ॥੭॥ ਧਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਸੋ ਸਹੁ ਚਿਤਿ
 ਆਇਆ ॥ ਮਹਾ ਅਨਨਦੁ ਸਹਜੁ ਭਇਆ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸੋ ਸਹੁ ਚਿਤਿ ਆਇਆ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ
 ਅਵਗਣ ਸਭਿ ਵਿਸਾਰੇ ॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਗੁਣ ਪਰਗਟ ਹੋਏ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਸੇ ਜਨ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਏ
 ਜਿਨ੍ਹੀ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਦਿਡਿਆ ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਧਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਮਿਲਿਆ ਸੋ ਸਹੁ ਚਿਤਿ ਆਇਆ ॥੮॥ ਇਕਿ ਜੰਤ ਭਰਮਿ ਭੁਲੇ ਤਿਨਿ ਸਹਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ॥ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ਫਿਰਹਿ
 ਹਤਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥ ਤਿਨਿ ਸਹਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਕੁਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ਤਿਨ ਕਾ ਕਿਛੁ ਨ ਵਸਾਈ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਗਤਿ
 ਅਵਗਤਿ ਤੂਂਹੈ ਜਾਣਹਿ ਜਿਨਿ ਇਹ ਰਖਾਈ ॥ ਛੁਕਮੁ ਤੇਰਾ ਖਰਾ ਭਾਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਸੈ ਬੁਜਾਏ ॥ ਇਉ ਕਹੈ

ਨਾਨਕੁ ਕਿਆ ਜਂਤ ਵਿਚਾਰੇ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥੬॥ ਸਚੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਤ੍ਰਾਂ
ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਬੇਅੰਤੁ ਸੁਆਮੀ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਕਤ ਤੁਧੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ
ਸਦਾ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹੇ ॥ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਸਚੇ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਵਹੇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤ੍ਰੂਂ ਆਪੇ ਮੇਲਹਿ
ਸੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹੈ ਸਮਾਈ ॥ ਇਤੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਚੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧੦॥੨॥੭॥੫॥੨॥੭॥

ਰਾਗ ਆਸਾ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੂ ੧

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਜੀਕਨੋ ਮੈ ਜੀਕਨੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਾਏ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਟੇਕੈ ਮੈਰੈ
ਪ੍ਰਾਨਿ ਵਸਾਏ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੈਰੈ ਪ੍ਰਾਨਿ ਵਸਾਏ ਸਭੁ ਸੰਸਾ ਦ੍ਰਿੜੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਅਦਿਸਟੁ ਅਗੋਚਰੁ
ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਧਿਆਇਆ ਪਕਿਰ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥ ਅਨਹਦ ਧੁਨਿ ਵਾਜਹਿ ਨਿਤ ਵਾਜੇ ਗਾਈ ਸਤਿਗੁਰ
ਬਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਤਿ ਕਰੀ ਪ੍ਰਭਿ ਦਾਤੈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥੧॥ ਮਨਮੁਖਾ ਮਨਮੁਖਿ ਮੁਏ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਮਾਇਆ
ਰਾਮ ॥ ਖਿਨੁ ਆਵੈ ਖਿਨੁ ਜਾਵੈ ਟੁਗਾਂਧ ਮਡੈ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਲਾਇਆ ਟੁਗਾਂਧ ਮਡੈ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ਜਿਤ
ਗੁਣ ਕਸੁੰਭ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਖਿਨੁ ਪ੍ਰੂਬਿ ਖਿਨੁ ਪਛਮਿ ਛਾਏ ਜਿਤ ਚਕੁ ਕੁਸ਼ਿਆਰਿ ਭਵਾਇਆ ॥ ਦੁਖੁ ਖਾਵਹਿ ਦੁਖੁ
ਸੰਚਹਿ ਭੋਗਹਿ ਦੁਖ ਕੀ ਬਿਰਥਿ ਵਰਧਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਖਮੁ ਸੁਹੇਲਾ ਤਰੀਐ ਜਾ ਆਵੈ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥ ਮੇਰਾ
ਠਾਕੁਰੋ ਠਾਕੁਰੁ ਨੀਕਾ ਅਗਮ ਅਥਾਹਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੂਜੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰੂਜੀ ਚਾਹੀ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਹਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੂਜੀ
ਚਾਹੀ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਹੀ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਭਾਵੈ ॥ ਨੀਦ ਭ੍ਰਾਨ ਸਭ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗੀ ਸੁਨ੍ਹੇ ਸੁਣਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਵਣਜਾਰੇ ਇਕ
ਭਾਤੀ ਆਵਹਿ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੈ ਜਾਹੇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਗੁਰ ਆਗੈ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਸੋ ਪਾਏ ॥੩॥
ਰਤਨਾ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਬਹੁ ਸਾਗਰੁ ਭਰਿਆ ਰਾਮ ॥ ਬਾਣੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ਲਾਗੇ ਤਿਨੁ ਹਥਿ ਚਡਿਆ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਬਾਣੀ
ਲਾਗੇ ਤਿਨੁ ਹਥਿ ਚਡਿਆ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਰਤਨੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਤੋਲਕੁ ਪਾਇਆ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭਰੇ
ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਸਮੁੰਦੁ ਵਿਰੋਲਿ ਸਰੀਰੁ ਹਮ ਦੇਖਿਆ ਇਕ ਵਸਤੁ ਅਨੂਪ ਦਿਖਾਈ ॥ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੁਰੁ ਹੈ
ਨਾਨਕ ਭੇਦੁ ਨ ਭਾਈ ॥੪॥੧॥੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਝਿਮਿ ਝਿਮੇ ਝਿਮਿ ਝਿਮਿ ਵਰਸੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰਾ ਰਾਮ ॥

ਗੁਰਮੁਖੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰੀ ਰਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ਰਾਮ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ਜਗਤ ਨਿਸਤਾਰਾ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ
 ॥ ਕਲਿਜੁਗਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਬੋਹਿਥਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ ਲਧਾਈ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਸੁਹੇਲੇ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਤਿ ਦਿੱਤਾ ਕਰਿ ਦੇਵੈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਾਮੋ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ
 ਦੁਖ ਕਿਲਵਿਖ ਨਾਸ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਪਰਚੈ ਗੁਰ ਪਰਚੈ ਧਿਆਇਆ ਮੈ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਖਾਇਆ ਰਾਮ ॥
 ਰਵਿਆ ਰਾਮੁ ਹਿਰਦੈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਜਾ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਆਏ ॥ ਲੋਭ ਵਿਕਾਰ ਨਾਵ ਢੁਬਦੀ ਨਿਕਲੀ ਜਾ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਏ ॥ ਜੀਅ ਦਾਨੁ ਗੁਰੈ ਪ੍ਰੈ ਟੀਆ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਆਪਿ ਕ੃ਪਾਲੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ
 ਦੇਵੈ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਰਣਾਏ ॥੨॥ ਬਾਣੀ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੁਣੀ ਸਿਧਿ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸੁਹਾਏ ਰਾਮ ॥ ਰੋਮੇ ਰੋਮਿ ਰੋਮਿ
 ਰੋਮੇ ਮੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮੁ ਧਿਆਏ ਰਾਮ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਪਵਿਤੁ ਹੋਇ ਆਏ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਕਾਈ ॥
 ਰਾਮੋ ਰਾਮੁ ਰਵਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਭ ਤ੍ਰਸਨਾ ਭੂਖ ਗਵਾਈ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸੀਗਾਰੁ ਸਭੁ ਹੋਆ ਗੁਰਮਤਿ
 ਰਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਕੀਆ ਹਮ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ॥੩॥ ਜਿਨੀ ਰਾਮੋ ਰਾਮ ਨਾਮੁ
 ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੇ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਅਭਾਗੀ ਰਾਮ ॥ ਤਿਨ ਅੰਤਰੇ ਮੋਹੁ ਵਿਆਪੈ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਮਾਇਆ ਲਾਗੀ ਰਾਮ ॥
 ਮਾਇਆ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਮੂੜ ਭਏ ਅਭਾਗੀ ਜਿਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਹ ਭਾਇਆ ॥ ਅਨੇਕ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਅਭਿਮਾਨੀ
 ਹਰਿ ਰਾਮੋ ਨਾਮੁ ਚੋਰਾਇਆ ॥ ਮਹਾ ਬਿਖਮੁ ਜਮ ਪਥੁ ਦੁਹੇਲਾ ਕਾਲੂਖਤ ਮੋਹ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਇਆ ਤਾ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰਾ ॥੪॥ ਰਾਮੋ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗੁਰੁ ਰਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖੇ ਜਾਣੈ ਰਾਮ ॥ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਖਿਨੁ
 ਊਭ ਪਿੱਤਾਲੀ ਭਰਮਦਾ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਣੈ ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਣੈ ਸਭ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਜਾਣੈ ਹਰਿ
 ਰਾਮੋ ਨਾਮੁ ਰਸਾਏ ॥ ਜਨ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖੈ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਉਧਾਰਿ ਤਰਾਏ ॥ ਰਾਮੋ ਰਾਮੁ ਰਮੋ ਰਮੁ ਊਚਾ ਗੁਣ
 ਕਹਤਿਆ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਭੀਨੇ ਰਾਮੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੫॥ ਜਿਨ ਅੰਤਰੇ ਰਾਮ
 ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਤਿਨ ਚਿੰਤਾ ਸਭ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਸਭਿ ਅਰਥਾ ਸਭਿ ਧਰਮ ਮਿਲੇ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਆ
 ਰਾਮ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਕਬੁਧਿ ਗੁਰੈ ਸੁਧਿ

ਹੋਈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਲਾਏ ॥ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਸਰੀਰੁ ਸਭੁ ਹੋਆ ਜਿਤੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜੁ
ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਿਆ ॥੬॥ ਜਿਨ ਸਰਧਾ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਗੀ ਤਿਨ੍ ਟ੍ਰੌਜੈ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਇਆ
ਰਾਮ ॥ ਜੇ ਧਰਤੀ ਸਭ ਕਂਚਨੁ ਕਰਿ ਦੀਜੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਪਰਮ
ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਅੰਤਿ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਸਖਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਪ੍ਰੰਜੀ ਸੰਚੀ ਨਾ ਝੂਬੈ ਨਾ ਜਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਇਸੁ
ਯੁਗ ਮਹਿ ਤੁਲਹਾ ਜਮਕਾਲੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮੁ ਪਛਾਤਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥੭॥
ਰਾਮੋ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਤੇ ਸਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣਿਆ ਰਾਮ ॥ ਸੇਵਕੋ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲਾਗਾ ਜਿਨਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਚੜਾਇਆ
ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿਆ ਬਹੁਤੁ ਮਨਿ ਸਰਧਿਆ ਗੁਰ ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਮਿਲਾਏ ॥ ਦੀਨਾ ਨਾਥੁ ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾ ਪੂਰੇ
ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰੂ ਸਿਖੁ ਸਿਖੁ ਗੁਰੂ ਹੈ ਏਕੋ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੁ ਚਲਾਏ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਮੰਤੁ ਹਿਰਦੈ ਦੇਵੈ ਨਾਨਕ ਮਿਲਣੁ
ਸੁਭਾਏ ॥੮॥੨॥੬॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਆਸਾ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਤਾ ਟ੍ਰੌਖ ਬਿਨਾਸਨੁ
ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਭਾਈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਾਮੁ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ
ਊਤਮੁ ਕਾਮੁ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਵੈ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੋਵੈ ਟ੍ਰੌਖ ਮੇਟੇ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖਿ ਸੋਵੈ ॥
ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਹੁ ਠਾਕੁਰ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਤਾ ਟ੍ਰੌਖ ਬਿਨਾਸਨੁ ਪਤਿਤ
ਪਾਵਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਤ ॥੧॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਕਲਿਜੁਗਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ਜੀਤ ॥
ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪੜੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸੁਣੀਐ ਹਰਿ ਜਪਤ ਸੁਣਤ ਟ੍ਰੌਖੁ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ
ਟ੍ਰੌਖੁ ਬਿਨਸਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਬਲਿਆ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਅਗਿਆਨੁ ਅਂਧੇਰੁ
ਗਵਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਿਨੀ ਆਰਾਧਿਆ ਜਿਨ ਮਸਤਕਿ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ
ਕਲਿਜੁਗਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ਜੀਤ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਇਆ
ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਪਟੁ ਨਿਰਕਾਣੁ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਭਰਮੁ ਚ੍ਰਕਾ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਜੀਤ ॥

आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि गुण गाइआ ॥ जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि
 हरि नामि समाइआ ॥ जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ
 ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पटु निरबाणु जीउ ॥३॥ जिन् हरि मीठ लगाना
 ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ हरि नामु वडाई हरि नामु सखाई गुर सबदी हरि
 रस भोग जीउ ॥ हरि रस भोग महा निरजोग वडभागी हरि रसु पाइआ ॥ से धन्नु वडे सत पुरखा पूरे
 जिन गुरमति नामु धिआइआ ॥ जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥ जिन्
 हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥४॥३॥१०॥ आसा महला ४ ॥
 सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि
 हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥ गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥
 अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई ॥ हरि हरि लिव लाई हरि नामु सखाई हरि दरगह
 पावै मानु जीउ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥१॥ तेता जुगु आइआ
 अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ पगु चउथा खिसिआ तै पग टिकिआ मनि हिरदै
 क्रोधु जलाइ जीउ ॥ मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइआ ॥ अंतरि ममता
 रोगु लगाना हउमै अह्नकारु वधाइआ ॥ हरि हरि कृपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि
 लहि जाइ जीउ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥२॥ जुगु
 दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कानु उपाइ जीउ ॥ तपु तापन तापहि जग पुन्न
 आरंभहि अति किरिआ करम कमाइ जीउ ॥ किरिआ करम कमाइआ पग दुइ खिसकाइआ दुइ पग
 टिकै टिकाइ जीउ ॥ महा जुध जोध बहु कीने विचि हउमै पचै पचाइ जीउ ॥ दीन दइआलि गुरु साधु
 मिलाइआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी

ਕਾਨੁ ਤਪਾਇ ਜੀਤ ॥੩॥ ਕਲਿਜੁਗੁ ਹਰਿ ਕੀਆ ਪਗ ਤੈ ਖਿਸਕੀਆ ਪਗੁ ਚਤਥਾ ਟਿਕੈ ਟਿਕਾਇ ਜੀਤ ॥
 ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇਆ ਅਤਖਧੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਰਿ ਸਾਂਤਿ ਪਾਇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਰੁਤਿ ਆਈ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਖੇਤੁ ਜਮਾਇਆ ॥ ਕਲਿਜੁਗਿ ਬੀਜੁ ਬੀਜੇ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਲਾਹਾ ਮੂਲੁ
 ਗਵਾਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੂਧ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਲਖਾਇ ਜੀਤ ॥ ਕਲਜੁਗੁ ਹਰਿ ਕੀਆ ਪਗ
 ਤੈ ਖਿਸਕੀਆ ਪਗੁ ਚਤਥਾ ਟਿਕੈ ਟਿਕਾਇ ਜੀਤ ॥੪॥੪॥੧੧॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਮਨਿ ਭਾਈ
 ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ
 ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ਪੁਰਾਨ ਜੀਤ ॥ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਗੁ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥
 ਮਸਤਕਿ ਮਣੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਹੁ ਪ੍ਰਗਟੀ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਸੋਹਾਇਆ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੀ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿ
 ਸਤਿਗੁਰ ਮਨੂਆ ਮਾਨ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਮਨਿ ਭਾਈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨ ਜੀਤ
 ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਇਆ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਤੇ ਊਤਮ ਜਨ ਪਰਧਾਨ ਜੀਤ ॥ ਤਿਨੁ ਹਮ ਚਰਣ ਸੇਵਹ
 ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪਗ ਧੋਵਹ ਜਿਨ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਮੀਠਾ ਲਾਇਆ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ਮੁਖਿ ਭਾਗਾ
 ਰਤੀ ਚਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ਹਰਿ ਹਾਰੁ ਤਰਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਕੱਠਿ ਧਾਰੇ ॥ ਸਭ ਏਕ ਦੂਸਟਿ
 ਸਮਤੁ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਨ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਇਆ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਤੇ ਊਤਮ ਜਨ
 ਪਰਧਾਨ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਨਿ ਭਾਈ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ਵਿਚਿ ਸਾਂਗਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹੋਇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਆਰਾਧਿਆ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸਿਆ ਬੀਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਜੀਤ ॥ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸੋਇ ਜਿਨਿ
 ਪੀਆ ਸੋ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੂਧ ਪਾਇਆ ਲਗਿ ਸਾਂਗਤਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਨਾਮੋ ਸੇਵਿ ਨਾਮੋ ਆਰਾਧੈ
 ਬਿਨੁ ਨਾਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਜੀਤ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਨਿ ਭਾਈ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ਵਿਚਿ ਸਾਂਗਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹੋਇ
 ਜੀਤ ॥੩॥ ਹਰਿ ਦਿਆ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ ਪਾਖਣ ਹਮ ਤਾਰਹੁ ਕਢਿ ਲੇਵਹੁ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ ਜੀਤ ॥ ਸੋਹਿ ਚੀਕਡਿ ਫਾਥੇ
 ਨਿਘਰਤ ਹਮ ਜਾਤੇ ਹਰਿ ਬਾਂਹ ਪ੍ਰਭੁ ਪਕਰਾਇ ਜੀਤ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਬਾਂਹ ਪਕਰਾਈ ਊਤਮ ਮਤਿ ਪਾਈ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਜਨੁ

ਲਾਗਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਆਰਾਧਿਆ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਸਭਾਗਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ
 ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੀਠਾ ਲਾਇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਦਿੱਖਾ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ ਪਾਖਣ ਹਮ ਤਾਰਹੁ ਕਢਿ ਲੇਵਹੁ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ
 ਜੀਤ ॥੪॥੫॥੧੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਨਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਨਾ ਹਰਿ ਭਗਤ ਜਨਾ ਮਨਿ
 ਚਾਤ ਜੀਤ ॥ ਜੋ ਜਨ ਮਰਿ ਜੀਵੇ ਤਿਨੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵੇ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਗੁਰਮਤਿ ਭਾਤ ਜੀਤ ॥ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਾਤ
 ਗੁਰੁ ਕਰੇ ਪਸਾਤ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤੁ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਜੀਵਣਿ ਮਰਣਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹੇਲੇ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸੋਈ ॥
 ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਸਿਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸ ਗਟਾਕ ਪੀਆਤ ਜੀਤ ॥ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਨਾ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਨਾ ਹਰਿ ਭਗਤ ਜਨਾ ਮਨਿ ਚਾਤ ਜੀਤ ॥੧॥ ਜਗਿ ਮਰਣੁ ਨ ਭਾਇਆ ਨਿਤ ਆਪੁ ਲੁਕਾਇਆ
 ਮਤ ਜਮੁ ਪਕਰੈ ਲੈ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ ਇਹੁ ਜੀਅਡਾ ਰਖਿਆ ਨ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥
 ਕਿਤ ਜੀਤ ਰਖੀਜੈ ਹਰਿ ਵਸਤੁ ਲੋਡੀਜੈ ਜਿਸ ਕੀ ਵਸਤੁ ਸੋ ਲੈ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਰਣ ਪਲਾਵ ਕਰਿ ਭਰਮੇ
 ਸਭਿ ਅਤਖਥ ਦਾਰੁ ਲਾਇ ਜੀਤ ॥ ਜਿਸ ਕੀ ਵਸਤੁ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਏ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਤੁਕਰੇ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ਜੀਤ ॥ ਜਗਿ
 ਮਰਣੁ ਨ ਭਾਇਆ ਨਿਤ ਆਪੁ ਲੁਕਾਇਆ ਮਤ ਜਮੁ ਪਕਰੈ ਲੈ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥੨॥ ਧੁਰਿ ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇਆ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਹਾਇਆ ਜਨ ਤੁਕਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਨਿ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ
 ਦਰਗਹ ਪੈਧੇ ਜਾਨਿ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪੈਧੇ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਸੀਧੇ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ
 ਦੋਵੈ ਟੁਖ ਮੇਟੇ ਹਰਿ ਰਾਮੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰਭੁ ਰਲਿ ਏਕੋ ਹੋਏ ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕ ਸਮਾਨਿ ਜੀਤ ॥
 ਧੁਰਿ ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਹਾਇਆ ਜਨ ਤੁਕਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਨਿ ਜੀਤ ॥੩॥ ਜਗੁ ਤੁਪਯੈ ਬਿਨਸੈ
 ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸੈ ਲਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਇ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰੁ ਮੰਨੁ ਦੂਡਾਏ ਹਰਿ ਰਸਕਿ ਰਸਾਏ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਚੋਇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਮੁਆ ਜੀਵਾਇਆ ਫਿਰਿ ਬਾਹੁਡਿ ਮਰਣੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਮਰ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਟੇਕ ਹੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਅਕਰੁ
 ਨ ਕੋਇ ਜੀਤ ॥ ਜਗੁ ਤੁਪਯੈ ਬਿਨਸੈ ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸੈ ਲਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਇ ਜੀਤ ॥੪॥੬॥੧੩॥

आसा महला ४ छंत ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ ॥ गोविंदु अलख अपारु अपरंपरु आपु आपणा जाणै ॥ किआ इह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै ॥ जिस नो नदरि करहि तूं अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ ੧ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ घट अंतरि पाखब्रहमु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ ॥ तिसु रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सदा अनन्दि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ ੨ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥ पुरखु सुजानु तूं परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तेरा सबदु सभु तूंहै वरतहि तूं आपे करहि सु होई ॥ हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ ੩ ॥ सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ ॥ सभ सबदि समावै जाँ तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥ गुरमुखि बुधि पाईਐ आपु गवाईਐ सबदे रहिआ समाई ॥ तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईਐ नानक नामि समाइ जीउ ॥ सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ ੪ ॥ ੭ ॥ ੧੪ ॥

੧੮੯ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥ हरि अंमृत भिन्ने लोइणा मनु प्रेमि रतन्ना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविन्ना ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिन्ना ॥

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਮੁਸਕਿ ਝਕੋਲਿਆ ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਧਨੁ ਧਨਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਬਾਣੀ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਅਣੀਆਲੇ ਅਣੀਆ
 ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਜਿਸੁ ਲਾਗੀ ਪੀਰ ਪਿਰਂਮ ਕੀ ਸੋ ਜਾਣੈ ਜਰੀਆ ॥ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਸੋ ਆਖੀਐ ਮਰਿ ਜੀਵੈ ਮਰੀਆ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਹਰਿ ਜਗੁ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਆ ॥੨॥ ਹਮ ਸ੍ਰਾਖ ਸੁਗਧ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮਿਲੁ ਗੋਵਿੰਦ
 ਰੰਗ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਇਕ ਮੰਗਾ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸਿਆ
 ਜਪਿ ਅਨਤ ਤਰੰਗਾ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਨ ਜਨਾ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸਤਸੰਗਾ ॥੩॥ ਦੀਨ ਦਿਓਅਲ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਹਉ ਮਾਗਤ ਸਰਣਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥ ਭਗਤਿ
 ਬਛਲੁ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਹੈ ਹਰਿ ਲਾਜ ਰਖਾਇਆ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਤਰਾਇਆ ॥੪॥੮॥੧੫॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਢੌਂਡਿ ਢੂਠੇਦਿਆ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਲਧਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਕੋਟ ਗੜ੍ਹ ਵਿਚਿ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਧਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹੀਰਾ ਰਤਨੁ ਹੈ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਵਿਧਾ ॥ ਧੁਰਿ ਭਾਗ ਵਡੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ
 ਰਸਿ ਗੁਧਾ ॥੧॥ ਪਥੁ ਦਸਾਵਾ ਨਿਤ ਖੜੀ ਸੁਂਧ ਜੋਬਨਿ ਬਾਲੀ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚੇਤਾਇ ਗੁਰ ਹਰਿ
 ਮਾਰਗਿ ਚਾਲੀ ॥ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ਹੈ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਜਾਲੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਬਨਵਾਲੀ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਿਆਰੇ ਆਇ ਮਿਲੁ ਮੈ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁਨ੍ਹੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ
 ਤਨੁ ਬਹੁਤੁ ਬੈਰਾਗਿਆ ਹਰਿ ਨੈਣ ਰਸਿ ਭਿਨ੍ਹੇ ॥ ਮੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਿਆਰਾ ਦਸਿ ਗੁਰੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਮਨੁ ਮਨ੍ਹੇ ॥ ਹਉ
 ਸ੍ਰਾਖੁ ਕਾਰੈ ਲਾਈਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੰਮੇ ॥੩॥ ਗੁਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਿਨ੍ਹੀ ਦੇਹੂਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬੁਰਕੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਜਿਨਾ
 ਗੁਰਬਾਣੀ ਮਨਿ ਭਾਈਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਛਕਿ ਛਕੇ ॥ ਗੁਰ ਤੁਠੈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਚੂਕੇ ਧਕ ਧਕੇ ॥ ਹਰਿ ਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਹੋਇਆ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਇਕੇ ॥੪॥੬॥੧੬॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਗਤਿ ਖੰਡਾਰ ਹੈ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ
 ਪਾਸੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਹੈ ਸਿਖ ਦੇਇ ਹਰਿ ਰਾਸੇ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਵਣਯਾਰਾ ਵਣਜੁ ਹੈ ਗੁਰੁ ਸਾਹੁ
 ਸਾਬਾਸੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰੁ ਤਿਨੀ ਪਾਇਆ ਜਿਨ ਧੁਰਿ ਲਿਖਤੁ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖਾਸੇ ॥੧॥ ਸਚੁ ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ
 ਤ੍ਰੂ ਧਣੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਵਣਯਾਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਸਭ ਭਾਂਡੇ ਤੁਥੈ ਸਾਜਿਆ ਵਿਚਿ ਵਸਤੁ ਹਰਿ ਥਾਰਾ ॥ ਜੋ ਪਾਵਹਿ ਭਾਂਡੇ

ਵਿਚਿ ਵਸਤੁ ਸਾ ਨਿਕਲੈ ਕਿਆ ਕੋਈ ਕਰੇ ਵੇਚਾਰਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਹਰਿ ਬਖਸਿਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰਾ ॥
 ੨॥ ਹਮ ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਵਿਥਰਹ ਸੁਆਮੀ ਤੂੰ ਅਪਰ ਅਪਾਰੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹਹ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ
 ਏਹਾ ਆਸ ਆਧਾਰੇ ॥ ਹਮ ਮੂਰਖ ਕਿਛੂਅ ਨ ਜਾਣਹਾ ਕਿਵ ਪਾਵਹ ਪਾਰੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਹਰਿ ਦਾਸ
 ਪਨਿਹਾਰੇ ॥੩॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖਿ ਲੈ ਹਮ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਆਏ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਹਮ ਭੂਲਿ ਵਿਗਾੜਹ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ
 ਹਰਿ ਲਾਜ ਰਖਾਏ ॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤੂੰ ਗੁਰੁ ਪਿਤਾ ਹੈ ਦੇ ਮਤਿ ਸਮਯਾਏ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਹਰਿ ਕਾਂਢਿਆ ਹਰਿ
 ਪੈਜ ਰਖਾਏ ॥੪॥੧੦॥੧੭॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਨ ਮਸਤਕਿ ਧੁਰਿ ਹਰਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ
 ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਅਗਿਆਨੁ ਅਂਧੇਰਾ ਕਟਿਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਘਟਿ ਬਲਿਆ ॥ ਹਰਿ ਲਧਾ ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੋ ਫਿਰਿ
 ਬਹੁੜਿ ਨ ਚਲਿਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਆਰਾਧਿਆ ਆਰਾਧਿ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ॥੧॥ ਜਿਨੀ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ
 ਚੇਤਿਓ ਸੇ ਕਾਹੇ ਜਗਿ ਆਏ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਇਹੁ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਦੁਲਸ਼ਭੁ ਹੈ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਬਿਰਥਾ ਸਭੁ ਜਾਏ ॥ ਹੁਣਿ ਵਤੈ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਬੀਜਿਓ ਅਗੈ ਭੁਖਾ ਕਿਆ ਖਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਫਿਰਿ ਜਨਮੁ ਹੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਾਏ ॥੨॥ ਤੂੰ ਹਰਿ ਤੇਰਾ
 ਸਭੁ ਕੋ ਸਭਿ ਤੁਧੁ ਉਪਾਏ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਕਿਛੁ ਹਾਥਿ ਕਿਸੈ ਦੈ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਸਭਿ ਚਲਹਿ ਚਲਾਏ ॥ ਜਿਨ੍ ਤੂੰ ਮੇਲਹਿ
 ਪਿਆਰੇ ਸੇ ਤੁਧੁ ਮਿਲਹਿ ਜੋ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਤਰਾਏ ॥੩॥ ਕੋਈ
 ਗਾਵੈ ਰਾਗੀ ਨਾਦੀ ਬੇਦੀ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ਕਰਿ ਨਹੀ ਹਰਿ ਭੀਜੈ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਜਿਨਾ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ ਵਿਕਾਰੁ ਹੈ ਤਿਨਾ
 ਰੋਇ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥ ਹਰਿ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਸਿਰਿ ਰੋਗ ਹਥੁ ਦੀਜੈ ॥ ਜਿਨਾ ਨਾਨਕ ਗੁਰਸਿਖਿ ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ
 ਹੈ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਲੀਜੈ ॥੪॥੧੧॥੧੮॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਨ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਤੇ ਜਨ ਸੁਘੜ
 ਸਿਆਣੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਜੇ ਬਾਹਰਹੁ ਭੂਲਿ ਚੁਕਿ ਬੋਲਦੇ ਭੀ ਖੇਡੇ ਹਰਿ ਭਾਣੇ ॥ ਹਰਿ ਸੰਤਾ ਨੋ ਹੋਰੁ ਥਾਤ ਨਾਹੀ ਹਰਿ
 ਮਾਣੁ ਨਿਮਾਣੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਦੀਬਾਣੁ ਹੈ ਹਰਿ ਤਾਣੁ ਸਤਾਣੇ ॥੧॥ ਜਿਥੈ ਜਾਇ ਬਹੈ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੋ
 ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਗੁਰਸਿਖੀ ਸੋ ਥਾਨੁ ਭਾਲਿਆ ਲੈ ਧੂਰਿ ਸੁਖਿ ਲਾਵਾ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੀ ਘਾਲ ਥਾਇ ਪੱਈ
 ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਾ ॥ ਜਿਨ੍ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰੋਜਿਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰੋਜ਼ ਕਰਾਵਾ ॥੨॥ ਗੁਰਸਿਖਾ ਮਨਿ ਹਰਿ

प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरु भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुन्न बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुन्न केरी ॥३॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरु डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिना मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥४॥१२॥१६॥ आसा महला ४ ॥ जिना भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरु तिन हरि नामु दृड़ावै राम राजे ॥ तिस की तृसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन् जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिनी सतिगुरु पिआरा सेविआ तिना सुखु सद होई ॥ जिना नानकु सतिगुरु भेटिआ तिना मिलिआ हरि सोई ॥२॥ जिना अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन् हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन् की निंदा कोई किआ करे जिन् हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥३॥ हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अद्यकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक औसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥४॥१३॥२०॥

आसा महला ४ छंत घरु ५

१८॥ सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ हरि गुरु मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥१॥ मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥ मनि तृसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥ नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥ भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥२॥

ਪਿਰ ਰਤਿਅਡੇ ਮੈਡੇ ਲੋਡਿਣ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਚਾਤੂਕ ਬੂਂਦ ਜਿਵੈ ॥ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਬੂਂਦ ਪੀਵੈ ॥
 ਤਨਿ ਬਿਰਹੁ ਜਗਾਵੈ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਨੀਦ ਨ ਪਵੈ ਕਿਵੈ ॥ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਲਧਾ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਲਿਵੈ ॥੩॥
 ਚਡਿ ਚੇਤੁ ਬਸਤੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਭਲੀਅ ਰੁਤੇ ॥ ਪਿਰ ਬਾੜਾਡਿਅਹੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਆਂਗਣਿ ਥ੍ਰੂਡਿ ਲੁਤੇ ॥ ਮਨਿ ਆਸ
 ਤਡੀਣੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਦੁਡਿ ਨੈਨ ਜੁਤੇ ॥ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਦੇਖਿ ਵਿਗਸੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਜਿਤ ਮਾਤ ਸੁਤੇ ॥੪॥ ਹਰਿ
 ਕੀਆ ਕਥਾ ਕਹਾਣੀਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੁਣਾਈਆ ॥ ਗੁਰ ਵਿਟਡਿਅਹੁ ਹਤ ਘੋਲੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਜਿਨਿ
 ਹਰਿ ਮੇਲਾਈਆ ॥ ਸਭਿ ਆਸਾ ਹਰਿ ਪੂਰੀਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਅਡਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਤੁਠਡਾ ਮੇਰੇ
 ਪਿਆਰੇ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੫॥ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨ ਖੇਲਸਾ ॥ ਕਿਤ ਪਾਈ ਗੁਰੁ ਜਿਤੁ ਲਗਿ
 ਪਿਆਰਾ ਦੇਖਸਾ ॥ ਹਰਿ ਦਾਤਡੇ ਮੇਲਿ ਗੁਰੁ ਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਸਾ ॥ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਥੁਰਿ
 ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਸਾ ॥੬॥੧੪॥੨੧॥

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧ ॥ ਅਨਦੋ ਅਨਦੁ

ਘਣਾ ਮੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਡੀਠਾ ਰਾਮ ॥ ਚਾਖਿਅਡਾ ਚਾਖਿਅਡਾ ਮੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਮਨ ਮਹਿ ਵੂਠਾ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੂਠਾ ਸਹਜੁ ਭਇਆ ॥ ਗ੍ਰਹੁ ਵਸਿ ਆਇਆ ਮਂਗਲੁ ਗਾਇਆ ਪੰਚ ਦੁਸਟ ਓਡਿ ਭਾਗਿ ਗਇਆ ॥
 ਸੀਤਲ ਆਘਾਣੇ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੇ ਸਾਜਨ ਸੰਤ ਬਸੀਠਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਨੈਣੀ ਡੀਠਾ
 ॥੧॥ ਸੋਹਿਅਡੇ ਸੋਹਿਅਡੇ ਮੇਰੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰੇ ਰਾਮ ॥ ਪਾਹੁਨਡੇ ਪਾਹੁਨਡੇ ਮੇਰੇ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ
 ਕਾਰਜ ਸਾਰੇ ਨਮਸਕਾਰ ਕਰਿ ਲਗੇ ਸੇਵਾ ॥ ਆਪੇ ਜਾਜੀ ਆਪੇ ਮਾਜੀ ਆਪਿ ਸੁਆਮੀ ਆਪਿ ਦੇਵਾ ॥ ਅਪਣਾ
 ਕਾਰਜੁ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ਆਪੇ ਧਾਰਨ ਧਾਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਹੁ ਘਰ ਮਹਿ ਬੈਠਾ ਸੋਹੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰੇ ॥੨॥ ਨਵ ਨਿਧੇ
 ਨਤ ਨਿਧੇ ਮੇਰੇ ਘਰ ਮਹਿ ਆਈ ਰਾਮ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਰਾਮ ॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ
 ਸਦਾ ਸਖਾਈ ਸਹਜ ਸੁਭਾਈ ਗੋਵਿੰਦਾ ॥ ਗਣਤ ਮਿਟਾਈ ਚੂਕੀ ਧਾਈ ਕਦੇ ਨ ਵਿਆਪੈ ਮਨ ਚਿੰਦਾ ॥ ਗੋਵਿੰਦ ਗਾਜੇ
 ਅਨਹਦ ਵਾਜੇ ਅਚਰਜ ਸੋਭ ਬਣਾਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪਿਰੁ ਮੈਰੈ ਸੰਗੇ ਤਾ ਮੈ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੩॥ ਸਰਸਿਅਡੇ

ਸਰਸਿਅਡੇ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਸਭ ਮੀਤਾ ਰਾਮ ॥ ਬਿਖਮੋ ਬਿਖਮੁ ਅਖਾੜਾ ਮੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਜੀਤਾ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਜੀਤਾ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੀਤਾ ਤੂਟੀ ਭੀਤਾ ਭਰਮ ਗੜਾ ॥ ਪਾਇਆ ਖਜਾਨਾ ਬਹੁਤੁ ਨਿਧਾਨਾ ਸਾਣਥ ਮੇਰੀ ਆਪਿ ਖੜਾ ॥ ਸੋਈ
 ਸੁਗਿਆਨਾ ਸੋ ਪਰਧਾਨਾ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨਾ ਕੀਤਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾਂ ਵਲਿ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਸਰਸੇ ਭਾਈ ਮੀਤਾ ॥੪॥੧
 ॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਕਥਾ ਹਰਿ ਅਕਥ ਕਥਾ ਕਿਛੁ ਜਾਇ ਨ ਜਾਣੀ ਰਾਮ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ
 ਸਹਜਿ ਵਖਾਣੀ ਰਾਮ ॥ ਸਹਜੇ ਵਖਾਣੀ ਅਮਿਤ ਬਾਣੀ ਚਰਣ ਕਮਲ ਰੰਗੁ ਲਾਇਆ ॥ ਜਪਿ ਏਕੁ ਅਲਖੁ ਪ੍ਰਭੁ
 ਨਿਰੰਜਨੁ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਤਜਿ ਮਾਨੁ ਸੋਹੁ ਵਿਕਾਰੁ ਢੂਜਾ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਸਦਾ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਸੰਤਾ ਹਰਿ ਸੰਤ ਸਜਨ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ਸਹਾਈ ਰਾਮ ॥ ਵਡਭਾਗੀ
 ਵਡਭਾਗੀ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਰਾਮ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਏ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਲਾਥੇ ਢੂਖ ਸੰਤਾਪੈ ॥ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਾਗੇ ਭ੍ਰਮ
 ਭਤ ਭਾਗੇ ਆਪੁ ਮਿਟਾਇਆ ਆਪੈ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲੇ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਵਿਛੁਡਿ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ
 ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਤੇਰਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥ ਹਰਿ ਦੇਰੇ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਹਨਿ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥ ਵਾਰੀ
 ਤਿਨ ਵਾਰੀ ਜਾਵਾ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ਕਰਿ ਨਮਸਕਾਰੇ ਜਿਨ ਭੇਟਤ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ
 ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਥਾਈ ਪ੍ਰੰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੇ ॥
 ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੇਰੀ ਰਾਖੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੇ ॥੩॥ ਬੇਅੰਤਾ ਬੇਅੰਤ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਕੇਤਕ ਗਾਵਾ ਰਾਮ ॥ ਤੇਰੇ
 ਚਰਣਾ ਤੇਰੇ ਚਰਣ ਧੂਡਿ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਵਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਧੂੜੀ ਨਾਈਐ ਮੈਲੁ ਗਰਾਈਐ ਜਨਮ ਮਰਣ ਢੁਖ ਲਾਥੇ
 ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਦਾ ਹਟ੍ਟੇ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਥੇ ॥ ਮਿਟੇ ਢੂਖ ਕਲਿਆਣ ਕੀਰਤਨ ਬਹੁਡਿ ਜੋਨਿ ਨ ਪਾਵਾ ॥
 ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਰਣਿ ਤਰੀਐ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਾ ॥੪॥੨॥

ਆਸਾ ਛੱਤ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਕਿਛੁ ਆਨ ਨ ਮੀਠਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਮਿਲਿ ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਆਰਾਧਿਆ ਹਰਿ ਘਟਿ
 ਘਟੇ ਡੀਠਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਹਰਿ ਘਟਿ ਘਟੇ ਡੀਠਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੇ ਕ੍ਰਿਤਾ ਜਨਮ ਮਰਨ ਢੁਖ ਨਾਠੇ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗਾਇਆ

ਸਭ ਦੂਖ ਮਿਟਾਇਆ ਹਉਮੈ ਬਿਨਸੀ ਗਾਠੇ ॥ ਪ੍ਰਤ ਸਹਜ ਸੁਭਾਈ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਮਨਿ ਲਾਗ ਰੁਂਗ ਮਜ਼ੀਠਾ ॥
 ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਬੇਧੇ ਚਰਨ ਕਮਲ ਕਿਛੁ ਆਨ ਨ ਮੀਠਾ ॥੧॥ ਜਿਤ ਰਾਤੀ ਜਲਿ ਮਾਛੁਲੀ ਤਿਤ ਰਾਮ ਰਸਿ ਮਾਤੇ
 ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੈ ਉਪਦੇਸਿਆ ਜੀਵਨ ਗਤਿ ਭਾਤੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਜੀਵਨ ਗਤਿ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਆਪਿ
 ਲੀਏ ਲਡਿ ਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥੋ ਪਰਗਟੋ ਪ੍ਰੂਨੋ ਛੋਡਿ ਨ ਕਤਹੂ ਜਾਏ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਘਰੁ ਸੱਖਪੁ ਸੁਜਾਨੁ
 ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਕੀ ਮਿਟੈ ਨ ਦਾਤੇ ॥ ਜਲ ਸੰਗਿ ਰਾਤੀ ਮਾਛੁਲੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮਾਤੇ ॥੨॥ ਚਾਤੂਕੁ ਜਾਚੈ ਕੁੰਦ ਜਿਤ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਮਾਲੁ ਖਜੀਨਾ ਸੁਤ ਭਾਤ ਮੀਤ ਸਭਹੂਂ ਤੇ ਪਿਆਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਸਭਹੂਂ ਤੇ
 ਪਿਆਰਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਾਰਾ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਣੀਐ ॥ ਹਰਿ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਬਿਸਰੈ ਕਬਹੂਂ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਰੁਂਗ
 ਮਾਣੀਐ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਪੁਰਖੁ ਜਗਜੀਵਨੋ ਸੰਤ ਰਸੁ ਪੀਵਨੋ ਜਧਿ ਭਰਮ ਮੋਹ ਦੁਖ ਡਾਰਾ ॥ ਚਾਤੂਕੁ ਜਾਚੈ ਕੁੰਦ ਜਿਤ
 ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪਿਆਰਾ ॥੩॥ ਮਿਲੇ ਨਰਾਇਣ ਆਪਣੇ ਮਾਨੋਰਥੋ ਪ੍ਰੂਨਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਢਾਠੀ ਭੀਤਿ ਭਰਮ ਕੀ
 ਭੇਟਤ ਗੁਰੁ ਸੂਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥ ਪ੍ਰੂਨ ਗੁਰ ਪਾਏ ਪੁਰਬਿ ਲਿਖਾਏ ਸਭ ਨਿਧਿ ਦੀਨ ਦਿਆਲਾ ॥ ਆਦਿ ਮਧਿ
 ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ਸੁੰਦਰ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਆਨਦ ਘਨੇਰੇ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਸਾਧੂ ਧੂਰਾ ॥ ਹਰਿ ਮਿਲੇ
 ਨਰਾਇਣ ਨਾਨਕਾ ਮਾਨੋਰਥੋ ਪ੍ਰੂਨਾ ॥੪॥੧॥੩॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੬

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਜਾ ਕਤ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਸੇਈ ਜਪਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ
 ਤਿਨੁ ਰਾਮ ਸਿਤ ਭੇਟਤ ਸਾਧ ਸੰਗਾਤ ॥੧॥ ਛੰਤੁ ॥ ਜਲ ਦੁਧ ਨਿਆਈ ਰੀਤਿ ਅਬ ਦੁਧ ਆਚ ਨਹੀ ਮਨ ਐਸੀ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰੇ ॥ ਅਬ ਤੁਰੜਿਆਂ ਅਲਿ ਕਮਲੇਹ ਬਾਸਨ ਮਾਹਿ ਮਗਨ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਭੀ ਨਾਹਿ ਟੈ ॥ ਖਿਨੁ ਨਾਹਿ
 ਟਰੀਐ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰੀਐ ਸੀਗਾਰ ਹਭਿ ਰਸ ਅਰਪੀਐ ॥ ਜਹ ਦੂਖੁ ਸੁਣੀਐ ਜਮ ਪਥੁ ਭਣੀਐ ਤਹ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨ
 ਡਰਪੀਐ ॥ ਕਰਿ ਕੀਰਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣੀਐ ਸਗਲ ਪ੍ਰਾਛਤ ਦੂਖ ਹਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਛੰਤ ਗੋਵਿੰਦ ਹਰਿ ਕੇ ਮਨ
 ਹਰਿ ਸਿਤ ਨੇਹੁ ਕਰੇਹੁ ਐਸੀ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰੇ ॥੨॥ ਜੈਸੀ ਮਛੁਲੀ ਨੀਰ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਭੀ ਨਾ ਧੀਰੇ ਮਨ ਐਸਾ

ਨੇਹੁ ਕਰੇਹੁ ॥ ਜੈਸੀ ਚਾਤ੍ਰਕ ਪਿਆਸ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਬੂਂਦ ਚਵੈ ਬਰਸੁ ਸੁਹਾਵੇ ਮੇਹੁ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੀਜੈ ਝਿਹੁ ਮਨੁ
 ਦੀਜੈ ਅਤਿ ਲਾਈਐ ਚਿਤੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਮਾਨੁ ਨ ਕੀਜੈ ਸਰਣਿ ਪਰੀਜੈ ਦਰਸਨ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਗੁਰ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨੇ
 ਮਿਲੁ ਨਾਹ ਵਿਛੁਨੇ ਧਨ ਦੇਦੀ ਸਾਚੁ ਸਨੇਹਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਛਾਂਤ ਅਨ੍ਨਤ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਹਰਿ ਸਿਉ ਕੀਜੈ ਨੇਹਾ ਮਨ
 ਐਸਾ ਨੇਹੁ ਕਰੇਹੁ ॥੨॥ ਚਕਵੀ ਸੂਰ ਸਨੇਹੁ ਚਿਤਵੈ ਆਸ ਘਣੀ ਕਦਿ ਦਿਨੀਅਰੁ ਦੇਖੀਐ ॥ ਕੋਕਿਲ ਅੰਬ
 ਪਰੀਤਿ ਚਵੈ ਸੁਹਾਵੀਆ ਮਨ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਕੀਜੀਐ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੀਜੈ ਮਾਨੁ ਨ ਕੀਜੈ ਇਕ ਰਾਤੀ ਕੇ ਹਭਿ
 ਪਾਹੁਣਿਆ ॥ ਅਥ ਕਿਆ ਰੰਗੁ ਲਾਡਿਆਓ ਮੋਹੁ ਰਚਾਡਿਆਓ ਨਾਗੇ ਆਵਣ ਜਾਵਣਿਆ ॥ ਥਿਰੁ ਸਾਧੂ ਸਰਣੀ ਪਡੀਐ
 ਚਰਣੀ ਅਥ ਟੂਟਸਿ ਮੋਹੁ ਜੁ ਕਿਤੀਐ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਛਾਂਤ ਦਿਇਆਲ ਪੁਰਖ ਕੇ ਮਨ ਹਰਿ ਲਾਡਿ ਪਰੀਤਿ ਕਬ
 ਦਿਨੀਅਰੁ ਦੇਖੀਐ ॥੩॥ ਨਿਸਿ ਕੁਰਕ ਜੈਸੇ ਨਾਟ ਸੁਣਿ ਸ਼ਰਣੀ ਹੀਤ ਡਿਵੈ ਮਨ ਐਸੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕੀਜੈ ॥ ਜੈਸੀ
 ਤਰੁਣਿ ਭਤਾਰ ਤੁੜੀ ਪਿਰਹਿ ਸਿਵੈ ਝਿਹੁ ਮਨੁ ਲਾਲ ਦੀਜੈ ॥ ਮਨੁ ਲਾਲਹਿ ਦੀਜੈ ਭੋਗ ਕਰੀਜੈ ਹਭਿ ਖੁਸੀਆ
 ਰੰਗ ਮਾਣੇ ॥ ਪਿਰੁ ਅਪਨਾ ਪਾਇਆ ਰੰਗੁ ਲਾਲੁ ਬਣਾਇਆ ਅਤਿ ਮਿਲਿਆ ਮਿਤ ਚਿਰਾਣੇ ॥ ਗੁਰੁ ਥੀਆ ਸਾਖੀ
 ਤਾ ਡਿਠਮੁ ਆਖੀ ਪਿਰ ਜੇਹਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦੀਸੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਛਾਂਤ ਦਿਇਆਲ ਮੋਹਨ ਕੇ ਮਨ ਹਰਿ ਚਰਣ ਗਹੀਜੈ
 ਐਸੀ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕੀਜੈ ॥੪॥੧॥੪॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਬਨੁ ਬਨੁ ਫਿਰਤੀ ਖੋਜਤੀ ਹਾਰੀ ਬਹੁ
 ਅਵਗਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਭੇਟੇ ਸਾਧ ਜਬ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਛਾਂਤ ॥ ਜਾ ਕਤ ਖੋਜਹਿ ਅਸੰਖ ਮੁਨੀ
 ਅਨੇਕ ਤਪੇ ॥ ਬ੍ਰਹਮੇ ਕੋਟਿ ਅਰਾਧਹਿ ਗਿਆਨੀ ਜਾਪ ਜਪੇ ॥ ਜਪ ਤਾਪ ਸੰਜਮ ਕਿਰਿਆ ਪ੍ਰਯਾ ਅਨਿਕ ਸੋਧਨ
 ਬੰਦਨਾ ॥ ਕਰਿ ਗਵਨੁ ਬਸੁਧਾ ਤੀਰਥਹ ਮਜਨੁ ਮਿਲਨ ਕਤ ਨਿਰੰਜਨਾ ॥ ਮਾਨੁਖ ਬਨੁ ਤਿਨੁ ਪਸ੍ਰੁ ਪੱਖੀ ਸਗਲ
 ਤੁੜਾਹਿ ਅਰਾਧਤੇ ॥ ਦਿਇਆਲ ਲਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਨਕ ਮਿਲੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹੋਇ ਗਤੇ ॥੧॥ ਕੋਟਿ ਬਿਸਨ ਅਵਤਾਰ
 ਸੰਕਰ ਜਟਾਧਾਰ ॥ ਚਾਹਹਿ ਤੁੜਾਹਿ ਦਿਇਆਰ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰੁਚ ਅਪਾਰ ॥ ਅਪਾਰ ਅਗਮ ਗੋਬਿੰਦ ਠਾਕੁਰ ਸਗਲ
 ਪੂਰਕ ਪ੍ਰਭ ਧਨੀ ॥ ਸੁਰ ਸਿਧ ਗਣ ਗੰਧਰਖ ਧਿਆਵਹਿ ਜਖ ਕਿਨਰ ਗੁਣ ਭਨੀ ॥ ਕੋਟਿ ਝਿੰਦ੍ਰ ਅਨੇਕ ਦੇਵਾ ਜਪਤ
 ਸੁਆਮੀ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰ ॥ ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਦਿਇਆਲ ਨਾਨਕ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਉਧਾਰ ॥੨॥ ਕੋਟਿ ਦੇਵੀ ਜਾ ਕਤ

सेवहि लखिमी अनिक भाति ॥ गुपत प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥ नखिअत्र
 ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावए ॥ सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवए ॥
 सिमृति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति ॥ पतित पावन भगति वछल नानक मिलीअै
 संगि साति ॥३॥ जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥ अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी ॥ अविगत
 अगनत अथाह ठाकुर सगल मंझे बाहरा ॥ सरब जाचिक एकु दाता नह दूरि संगी जाहरा ॥ वसि
 भगत थीआ मिले जीआ ता की उपमा कित गनी ॥ इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरि चरनी
 ॥४॥२॥५॥ आसा महला ५ ॥ सलोक ॥ उद्मु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ ॥ नानक जिसु
 सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥१॥ छंतु ॥ नामु जपत गोबिंद नह अलसाईअै ॥ भेटत
 साधू संग जम पुरि नह जाईअै ॥ दूख दरद न भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी ॥ सासि सासि
 अराधि हरि हरि धिआइ सो प्रभु मनि मुखी ॥ कृपाल दइआल रसाल गुण निधि करि दइआ सेवा
 लाईअै ॥ नानकु पडिअंपै चरण जंपै नामु जपत गोबिंद नह अलसाईअै ॥१॥ पावन पतित पुनीत
 नाम निरंजना ॥ भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना ॥ गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जलि थलि
 महीअलि पूरिआ ॥ इक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ ॥ अगाधि बोध समरथ
 सुआमी सरब का भउ भंजना ॥ नानकु पडिअंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥२॥
 ओट गही गोपाल दइआल कृपा निधे ॥ मोहि आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे ॥ हरि चरन कारन
 करन सुआमी पतित उधरन हरि हरे ॥ सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे ॥ आदि अंति
 बेअंत खोजहि सुनी उधरन संतसंग बिधे ॥ नानकु पडिअंपै चरन जंपै ओट गही गोपाल दइआल
 कृपा निधे ॥३॥ भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥ जह जह संत अराधहि तह तह प्रगटाइआ
 ॥ प्रभि आपि लीए समाइ सहजि सुभाइ भगत कारज सारिआ ॥ आनन्द हरि जस महा मंगल सरब

दूख विसारिआ ॥ चमतकार प्रगासु दह दिस एकु तह दृसटाइआ ॥ नानकु पड़िअंपै चरण जंपै
 भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥४॥३॥६॥ आसा महला ५ ॥ थिरु संतन सोहागु मरै न
 जावए ॥ जा कै गृहि हरि नाहु सु सद ही रावए ॥ अविनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला
 ॥ नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा ॥ प्रानपति गति मति जा ते पृथ्र प्रीति
 प्रीतमु भावए ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥१॥ जा कउ राम
 भतारु ता कै अनदु घणा ॥ सुख्खवंती सा नारि सोभा पूरि बणा ॥ माणु महतु कलिआणु हरि जसु संगि
 सुरजनु सो प्रभू ॥ सरब सिधि नव निधि तितु गृहि नही ऊना सभु कछू ॥ मधुर बानी पिरहि मानी
 थिरु सोहागु ता का बणा ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा को रामु भतारु ता कै अनदु घणा ॥२॥
 आउ सखी संत पासि सेवा लागीऔ ॥ पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऔ ॥ तजि आपु मिटै संतापु
 आपु नह जाणाईऔ ॥ सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऔ ॥ करि दास दासी तजि उदासी
 कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऔ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सखी संत पासि सेवा लागीऔ ॥
 ३॥ जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ ता की पूरन आस जिन् साधसंगु पाइआ ॥ साधसंगि
 हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिआ ॥ भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिआगिआ ॥ मनि
 साँति सहजु सुभाउ वूठा अनद मंगल गुण गाइआ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि
 भाग सि सेवा लाइआ ॥४॥४॥७॥ आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कछु न
 कहै जमकालु ॥ नानक मनु तनु सुखी होइ अंते मिलै गोपालु ॥१॥ छंत ॥ मिलउ संतन कै संगि मोहि
 उधारि लेहु ॥ बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥ हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु
 तिआगउ तुम् दइआ ॥ कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणा मै प्रभ करि मड़िआ ॥ समरथ अगथ
 अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ एहु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥

੧॥ ਅਪਰਾਧੀ ਮਤਿਹੀਨੁ ਨਿਰਗੁਨੁ ਅਨਾਥੁ ਨੀਚੁ ॥ ਸਠ ਕਠੋਰੁ ਕੁਲਹੀਨੁ ਬਿਆਪਤ ਮੋਹ ਕੀਚੁ ॥ ਮਲ ਭਰਮ
 ਕਰਮ ਅਵਾਸ ਮਮਤਾ ਮਰਣੁ ਚੀਤਿ ਨ ਆਵਏ ॥ ਬਨਿਤਾ ਬਿਨੋਦ ਅਨਨਦ ਮਾਇਆ ਅਗਿਆਨਤਾ ਲਪਟਾਵਏ ॥
 ਖਿਸੈ ਜੋਬਨੁ ਬਦੈ ਜਰੂਆ ਦਿਨ ਨਿਹਾਰੇ ਸੰਗਿ ਮੀਚੁ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਆਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਸਾਧੂ ਰਾਖੁ ਨੀਚੁ
 ॥੨॥ ਭਰਮੇ ਜਨਮ ਅਨੇਕ ਸੰਕਟ ਮਹਾ ਜੋਨ ॥ ਲਪਟਿ ਰਹਿਓ ਤਿਹ ਸੰਗਿ ਮੀਠੇ ਭੋਗ ਸੋਨ ॥ ਭ੍ਰਮਤ ਭਾਰ
 ਅਗਨਤ ਆਇਆਓ ਬਹੁ ਪ੍ਰਦੇਸਹ ਧਾਇਆਓ ॥ ਅਬ ਓਟ ਧਾਰੀ ਪ੍ਰਭ ਮੁਰਾਰੀ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹਰਿ ਨਾਇਆਓ ॥ ਰਾਖਨਹਾਰੇ
 ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਰੇ ਮੁੜਾ ਤੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਆ ਹੋਨ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਆਨਨਦ ਨਾਨਕ ਕ੃ਪਾ ਤੇਰੀ ਤਰੈ ਭਤਨ ॥੩॥ ਨਾਮ
 ਧਾਰੀਕ ਤਉਹਾਰੇ ਭਗਤਹ ਸੰਸਾ ਕਤਨ ॥ ਜੇਨ ਕੇਨ ਪਰਕਾਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਨਹੁ ਸ਼ਕਵਨ ॥ ਸੁਨਿ ਸ਼ਕਵਨ ਬਾਨੀ
 ਪੁਰਖ ਗਿਆਨੀ ਮਨਿ ਨਿਧਾਨਾ ਪਾਵਹੇ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਪ੍ਰਭ ਬਿਧਾਤੇ ਰਾਮ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹੇ ॥ ਕਸੁਧ ਕਾਗਦ
 ਬਨਰਾਜ ਕਲਮਾ ਲਿਖਣ ਕਤ ਜੇ ਹੋਇ ਪਕਵਨ ॥ ਬੇਅੰਤ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਇ ਪਾਇਆ ਗਹੀ ਨਾਨਕ ਚਰਣ ਸਰਨ
 ॥੪॥੫॥੯॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੁਰਖ ਪਤੇ ਭਗਵਾਨ ਤਾ ਕੀ ਸਰਣਿ ਗਹੀ ॥ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ਪਰਾਨ ਚਿੰਤਾ
 ਸਗਲ ਲਹੀ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਮੀਤ ਸੁਰਿਜਨ ਇਸਟ ਬੰਧਪ ਜਾਣਿਆ ॥ ਗਹੀ ਕੱਠਿ ਲਾਇਆ ਗੁਰਿ
 ਮਿਲਾਇਆ ਜਸੁ ਬਿਮਲ ਸੰਤ ਵਖਾਣਿਆ ॥ ਬੇਅੰਤ ਗੁਣ ਅਨੇਕ ਮਹਿਮਾ ਕੀਮਤਿ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ਕਹੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਏਕ
 ਅਨਿਕ ਅਲਖ ਠਾਕੁਰ ਓਟ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗਹੀ ॥੧॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਨੁ ਸੰਸਾਰੁ ਸਹਾਈ ਆਪਿ ਭਏ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ
 ਤਰ ਹਾਰੁ ਬਿਖੁ ਕੇ ਦਿਕਸ ਗਏ ॥ ਗਤੁ ਭਰਮ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ ਬਿਨਸੇ ਜੋਨਿ ਆਵਣ ਸਭ ਰਹੇ ॥ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ
 ਭਏ ਸੀਤਲ ਸਾਧ ਅੰਚਲ ਗਹੀ ਰਹੇ ॥ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ਦਿਇਆਲ ਸੰਮ੍ਰਥ ਬੋਲਿ ਸਾਧੂ ਹਰਿ ਜੈ ਜਏ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਪੂਰਨ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਈ ਪਰਮ ਗਤੇ ॥੨॥ ਜਹ ਦੇਖਉ ਤਹ ਸੰਗਿ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥ ਘਟ ਘਟ
 ਵਾਸੀ ਆਪਿ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਲਹਿਆ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿ ਪੂਰਨ ਕੀਟ ਹਸਤਿ ਸਮਾਨਿਆ ॥ ਆਦਿ
 ਅੰਤੇ ਮਧਿ ਸੋਈ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਜਾਨਿਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਸਰਿਆ ਬ੍ਰਹਮ ਲੀਲਾ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਜਨਿ ਕਹਿਆ ॥
 ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਹਰਿ ਏਕੁ ਨਾਨਕ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥੩॥ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਸੁਹਾਵਡੀ ਆਈ ਸਿਮਰਤ

ਨਾਮੁ ਹਰੇ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਲਮਲ ਪਾਪ ਟਰੇ ॥ ਦ੍ਰੂਖ ਭੂਖ ਦਾਰਿਦ੍ਰ ਨਾਠੇ ਪ੍ਰਗਟੁ ਮਗੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗੇ ਨਾਮ ਰੰਗੇ ਮਨਿ ਲੋਡੀਦਾ ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਦੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਝਿਛ ਪੁਨੰਨੀ ਕੁਲ ਸੰਬੂਹਾ ਸਭਿ ਤਰੇ ॥
ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਅਨੰਦ ਅਨਦਿਨੁ ਸਿਮਰਤਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥੪॥੬॥੬॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੭ ੧੯੮੩ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥ ਸੁਭ ਚਿੰਤਨ ਗੋਬਿੰਦ ਰਮਣ ਨਿਰਮਲ ਸਾਥੁ ਸੰਗ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵਿਸਰਤ ਝਿਕ ਘੜੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ
ਭਗਵਾਂਤ ॥੧॥ ਛੰਤ ॥ ਭਿੰਨੀ ਰੈਨਡੀਐ ਚਾਮਕਨਿ ਤਾਰੇ ॥ ਜਾਗਹਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ॥ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ
ਸਦਾ ਜਾਗਹਿ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਹਿ ਅਨਦਿਨੋ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਧਿਆਨੁ ਹਿਰਦੈ ਪ੍ਰਭ ਬਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਝਿਕੁ ਖਿਨੋ ॥ ਤਜਿ
ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਬਿਕਾਰੁ ਮਨ ਕਾ ਕਲਮਲਾ ਦੁਖ ਜਾਰੇ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਜਾਗਹਿ ਹਰਿ ਦਾਸ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ
॥੨॥ ਮੇਰੀ ਸੇਜਡੀਐ ਆਡੰਬਰੁ ਬਣਿਆ ॥ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਵਤ ਸੁਣਿਆ ॥ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਸੁਆਮੀ
ਸੁਖਹ ਗਾਮੀ ਚਾਵ ਮੰਗਲ ਰਸ ਭੇਰੇ ॥ ਅੰਗ ਸੰਗਿ ਲਾਗੇ ਦੁਖ ਭਾਗੇ ਪ੍ਰਾਣ ਮਨ ਤਨ ਸਭਿ ਹਰੇ ॥ ਮਨ ਝਿਛ ਪਾਈ
ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਈ ਸੰਜੋਗੁ ਸਾਹਾ ਸੁਭ ਗਣਿਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮਿਲੇ ਸ਼੍ਰੀਧਰ ਸਗਲ ਆਨੰਦ ਰਸੁ ਬਣਿਆ ॥੨॥
ਮਿਲਿ ਸਖੀਆ ਪੁਛਹਿ ਕਹੁ ਕੰਤ ਨੀਸਾਣੀ ॥ ਰਸਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਰੀ ਕਛੁ ਬੋਲਿ ਨ ਜਾਣੀ ॥ ਗੁਣ ਗੂੜ ਗੁਪਤ ਅਪਾਰ
ਕਰਤੇ ਨਿਗਮ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵਹੇ ॥ ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਧਿਆਇ ਸੁਆਮੀ ਸਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹੇ ॥ ਸਗਲ ਗੁਣ
ਸੁਗਿਆਨ ਪੂਰਨ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਪ੍ਰੇਮ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ॥੩॥ ਸੁਖ ਸੋਹਿਲਡੇ
ਹਰਿ ਗਾਵਣ ਲਾਗੇ ॥ ਸਾਜਨ ਸਰਸਿਅਡੇ ਦੁਖ ਦੁਸਮਨ ਭਾਗੇ ॥ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸਰਸੇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਹਸੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ
ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀਆ ॥ ਹਰਿ ਚਰਣ ਲਾਗੇ ਸਦਾ ਜਾਗੇ ਮਿਲੇ ਪ੍ਰਭ ਬਨਵਾਰੀਆ ॥ ਸੁਭ ਦਿਵਸ ਆਏ ਸਹਜਿ ਪਾਏ
ਸਗਲ ਨਿਧਿ ਪ੍ਰਭ ਪਾਗੇ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਨ ਤਾਗੇ ॥੪॥੧॥੧੦॥ ਆਸਾ
ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਠਿ ਵੰਜੁ ਕਟਾਊਡਿਆ ਤੈ ਕਿਆ ਚਿਰੁ ਲਾਇਆ ॥ ਸੁਹਲਤਿ ਪੁਨਡੀਆ ਕਿਤੁ ਕੂਡਿ ਲੋਭਾਇਆ ॥
ਕੂਡੇ ਲੁਭਾਇਆ ਧੋਹੁ ਮਾਇਆ ਕਰਹਿ ਪਾਪ ਅਮਿਤਿਆ ॥ ਤਨੁ ਭਸਮ ਫੇਰੀ ਜਮਹਿ ਹੇਰੀ ਕਾਲਿ ਬਪੁਡੈ ਜਿਤਿਆ

॥ ਮਾਲੁ ਜੋਬਨੁ ਛੋਡਿ ਵੈਸੀ ਰਹਿਓ ਪੈਨਣੁ ਖਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਕਮਾਣਾ ਸੰਗਿ ਜੁਲਿਆ ਨਹ ਜਾਇ ਕਿਰਤੁ
 ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥ ਫਾਥੋਹੁ ਮਿਰਗ ਜਿਵੈ ਪੇਖਿ ਰੈਣਿ ਚੰਦ੍ਰਾਇਣੁ ॥ ਸੂਖਹੁ ਟ੍ਰ੍ਹਖ ਭਏ ਨਿਤ ਪਾਪ ਕਮਾਇਣੁ ॥ ਪਾਪਾ
 ਕਮਾਣੇ ਛਡਹਿ ਨਾਹੀ ਲੈ ਚਲੇ ਘਤਿ ਗਲਾਵਿਆ ॥ ਹਰਿਚੰਦੁਰੀ ਦੇਖਿ ਮੂਠਾ ਕੂੰਡੁ ਸੇਜਾ ਰਾਵਿਆ ॥ ਲਬਿ
 ਲੋਭਿ ਅਵਾਕਾਰਿ ਮਾਤਾ ਗਰਬਿ ਭਿਆ ਸਮਾਇਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਮ੃ਗ ਅਗਿਆਨਿ ਬਿਨਸੇ ਨਹ ਮਿਟੈ ਆਵਣੁ
 ਜਾਇਣੁ ॥੨॥ ਮਿਠੈ ਮਖੁ ਮੁਆ ਕਿਤ ਲਏ ਓਡਾਰੀ ॥ ਹਸਤੀ ਗਰਤਿ ਪਇਆ ਕਿਤ ਤਰੀਐ ਤਾਰੀ ॥ ਤਰਣੁ
 ਢੁਹੇਲਾ ਭਿਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਖਸਮੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਆ ॥ ਟ੍ਰ੍ਹਖਾ ਸਜਾਈ ਗਣਤ ਨਾਹੀ ਕੀਆ ਅਪਣਾ ਪਾਇਆ ॥
 ਗੁੜਿਆ ਕਮਾਣਾ ਪ੍ਰਗਟੁ ਹੋਆ ਈਤ ਉਤਹਿ ਖੁਆਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝੁ ਮੂਠਾ ਮਨਮੁਖੋ ਅਵਾਕਾਰੀ ॥੩॥ ਹਰਿ
 ਕੇ ਦਾਸ ਜੀਵੇ ਲਗਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਚਰਣੀ ॥ ਕੱਠਿ ਲਗਾਇ ਲੀਏ ਤਿਸੁ ਠਾਕੁਰ ਸਰਣੀ ॥ ਕਲ ਬੁਧਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ
 ਅਪਣਾ ਆਪਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਇਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਆਪਿ ਹੋਆ ਆਪਿ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਰਖਣਹਾਰੈ
 ਸਦਾ ਨਿਰਮਲ ਕਰਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਰਕਿ ਨ ਜਾਹਿ ਕਬਹੂੰ ਹਰਿ ਸੰਤ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣੀ ॥੪॥੨॥੧॥
 ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੰਭੁ ਮੇਰੇ ਆਲਸਾ ਹਰਿ ਪਾਸਿ ਬੇਨਤੀ ॥ ਰਾਵਤ ਸਹੁ ਆਪਨਡਾ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਸੋਵਾਤੀ ॥ ਸੰਗੇ
 ਸੋਵਾਤੀ ਕੰਤ ਸੁਆਮੀ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣੀ ਰਾਵੀਐ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਚਿਤਾਰਿ ਜੀਵਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪੇਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੀਐ ॥
 ਬਿਰਹਾ ਲਜਾਇਆ ਦਰਸੁ ਪਾਇਆ ਅਮਿਤ ਵੂਸਟਿ ਸਿੰਚਂਤੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਮੇਰੀ ਇਛ ਪੁਨੰਨੀ ਮਿਲੇ ਜਿਸੁ
 ਖੋਜਂਤੀ ॥੧॥ ਨਸਿ ਕੰਬਹੁ ਕਿਲਵਿਖਹੁ ਕਰਤਾ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥ ਟ੍ਰ੍ਹਤਹ ਦਹਨੁ ਭਿਆ ਗੋਵਿੰਦੁ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥
 ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਪਾਲ ਗੋਵਿੰਦ ਲਾਲਨ ਸਾਧਸੰਗਿ ਵਖਾਣਿਆ ॥ ਆਚਰਜੁ ਡੀਠਾ ਅਮਿਤ ਕੂਠਾ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ
 ਜਾਣਿਆ ॥ ਮਨਿ ਸਾਁਤਿ ਆਈ ਕਜੀ ਵਧਾਈ ਨਹ ਅੰਤੁ ਜਾਈ ਪਾਇਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਮੇਲਾ
 ਪ੍ਰਭੂ ਆਪਿ ਬਣਾਇਆ ॥੨॥ ਨਰਕ ਨ ਡੀਠਿਆ ਸਿਮਰਤ ਨਾਰਾਇਣ ॥ ਜੈ ਜੈ ਧਰਮੁ ਕਰੇ ਟ੍ਰ੍ਹਤ ਭਏ ਪਲਾਇਣ
 ॥ ਧਰਮ ਧੀਰਜ ਸਹਜ ਸੁਖੀਏ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਭਜੇ ॥ ਕਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਰਾਖਿ ਲੀਨੇ ਮੋਹ ਮਮਤਾ ਸਭ ਤਜੇ ॥
 ਗਹਿ ਕੱਠਿ ਲਾਏ ਗੁਰਿ ਮਿਲਾਏ ਗੋਵਿੰਦ ਜਪਤ ਅਧਾਇਣ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸਗਲ ਆਸ

ਪੁਜਾਇਣ ॥੩॥ ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ਚਰਣ ਗਹੇ ਤਾ ਕੇਹਾ ਕਾੜਾ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਵਸਿ ਜਿਸੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੂ ਅਸਾੜਾ ॥ ਗਹਿ
 ਮੁਜਾ ਲੀਨੇ ਨਾਮ ਦੀਨੇ ਕਰੁ ਧਾਰਿ ਮਸਤਕਿ ਰਾਖਿਆ ॥ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰੁ ਨਹ ਵਿਆਪੈ ਅਮਿਤ ਹਰਿ ਰਸੁ
 ਚਾਖਿਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗੇ ਨਾਮ ਰੰਗੇ ਰਣੁ ਜੀਤਿ ਕਡਾ ਅਖਾੜਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ਬਹੁਡਿ ਜਮਿ
 ਨ ਤਪਾੜਾ ॥੪॥੩॥੧੨॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਕਮਾਇਅੜੋ ਸੋ ਆਇਓ ਮਾਥੈ ॥ ਜਿਸੁ ਪਾਸਿ
 ਲੁਕਾਇਦੱਡੋ ਸੋ ਵੇਖੀ ਸਾਥੈ ॥ ਸੰਗਿ ਦੇਖੈ ਕਰਣਹਾਰਾ ਕਾਇ ਪਾਪੁ ਕਮਾਈਐ ॥ ਸੁਕੂਤੁ ਕੀਜੈ ਨਾਮੁ ਲੀਜੈ ਨਰਕਿ
 ਮੂਲਿ ਨ ਜਾਈਐ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਹੁ ਚਲੈ ਤੈਰੈ ਸਾਥੈ ॥ ਭਜੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਮਿਟਹਿ
 ਦੋਖ ਕਮਾਤੇ ॥੧॥ ਵਲਵੰਚ ਕਰਿ ਉਦਰੁ ਭਰਹਿ ਮੂਰਖ ਗਾਵਾਰਾ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੇ ਰਹਿਆ ਹਰਿ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥
 ਦਾਤਾਰੁ ਸਦਾ ਦਇਆਲੁ ਸੁਆਮੀ ਕਾਇ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥ ਮਿਲੁ ਸਾਧਸੰਗੇ ਭਜੁ ਨਿਸ਼ਾਂਗੇ ਕੁਲ ਸਮ੍ਰਹਾ
 ਤਾਰੀਐ ॥ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਦੇਵ ਮੁਨਿ ਜਨ ਭਗਤ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਭਜੀਐ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ
 ਕਰਣੈਹਾਰਾ ॥੨॥ ਖੋਟੁ ਨ ਕੀਚੰਈ ਪ੍ਰਭੁ ਪਰਖਣਹਾਰਾ ॥ ਕੂੜੁ ਕਪਟੁ ਕਮਾਵਦੱਡੇ ਜਨਮਹਿ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਸੰਸਾਰੁ
 ਸਾਗਰੁ ਤਿਨੀ ਤਰਿਆ ਜਿਨੀ ਏਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਤਜਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਨਿੰਦ ਨਿੰਦਾ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ਆਇਆ ॥
 ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਵਿਆ ਸੁਆਮੀ ਊਚ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਟੇਕ ਜਨ ਕੀ ਚਰਣ ਕਮਲ
 ਅਧਾਰਾ ॥੩॥ ਪੇਖੁ ਹਰਿਚੰਦੁਰੁਡੀ ਅਸਥਿਰੁ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ॥ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਜੇਤੇ ਸੇ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਹੀ ॥ ਹਰਿ
 ਸੰਗਿ ਸਾਥੀ ਸਦਾ ਤੈਰੈ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਸਮਾਲੀਐ ॥ ਹਰਿ ਏਕ ਬਿਨੁ ਕਛੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਭਾਉ ਢੁਤੀਆ ਜਾਲੀਐ ॥
 ਮੀਤੁ ਜੋਬਨੁ ਮਾਲੁ ਸਰਬਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਕਰਿ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਵਡਭਾਗਿ ਪਾਈਐ ਸ੍ਰੂਖਿ ਸਹਜਿ
 ਸਮਾਹੀ ॥੪॥੪॥੧੩॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੮

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਕਮਲਾ ਭਰਮ ਭੀਤਿ ਕਮਲਾ ਭਰਮ ਭੀਤਿ ਹੇ ਤੀਖਣ ਮਦ ਬਿਪਰੀਤਿ ਹੇ ਅਵਧ ਅਕਾਰਥ
 ਜਾਤ ॥ ਗਹਵਰ ਬਨ ਧੋਰ ਗਹਵਰ ਬਨ ਧੋਰ ਹੇ ਗ੃ਹ ਮੂਸਤ ਮਨ ਚੋਰ ਹੇ ਦਿਨਕਰੋ ਅਨਦਿਨੁ ਖਾਤ ॥ ਦਿਨ

ਖਾਤ ਜਾਤ ਬਿਹਾਤ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨੁ ਮਿਲਹੁ ਪ੍ਰਭ ਕਰੁਣਾ ਪਤੇ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਅਨੇਕ ਬੀਤੇ ਪ੍ਰਤ ਸੰਗ ਬਿਨੁ ਕਛੁ ਨਹ ਗਤੇ ॥ ਕੁਲ ਰੂਪ ਧੂਪ ਗਿਆਨਹੀਨੀ ਤੁੜਾ ਬਿਨਾ ਮੋਹਿ ਕਵਨ ਮਾਤ ॥ ਕਰ ਜੋਡਿ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣਿ ਆਇਓ ਪ੍ਰਤ ਨਾਥ ਨਰਹਰ ਕਰਹੁ ਗਾਤ ॥੧॥ ਮੀਨਾ ਜਲਹੀਨ ਮੀਨਾ ਜਲਹੀਨ ਹੇ ਓਹੁ ਬਿਛੁਰਤ ਮਨ ਤਨ ਖੀਨ ਹੇ ਕਤ ਜੀਕਨੁ ਪ੍ਰਤ ਬਿਨੁ ਹੋਤ ॥ ਸਨਮੁਖ ਸਹਿ ਬਾਨ ਸਨਮੁਖ ਸਹਿ ਬਾਨ ਹੇ ਮ੍ਰਗ ਅਰਧੇ ਮਨ ਤਨ ਪ੍ਰਾਨ ਹੇ ਓਹੁ ਬੇਧਿਓ ਸਹਜ ਸਰੋਤ ॥ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਗੀ ਮਿਲੁ ਬੈਰਾਗੀ ਖਿਨੁ ਰਹਨੁ ਧਿਗੁ ਤਨੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ॥ ਪਲਕਾ ਨ ਲਾਗੈ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰੇਮ ਪਾਗੈ ਚਿਤਵੰਤਿ ਅਨਦਿਨੁ ਪ੍ਰਭ ਮਨਾ ॥ ਸ਼੍ਰੀਰਾਂਗ ਰਾਤੇ ਨਾਮ ਮਾਤੇ ਭੈ ਭਰਮ ਦੁਤੀਆ ਸਗਲ ਖੋਤ ॥ ਕਰਿ ਮਿਡਿਆ ਦਿਇਆ ਦਿਇਆਲ ਪੂਰਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਨਕ ਮਗਨ ਹੋਤ ॥੨॥ ਅਲੀਅਲ ਗੁੰਜਾਤ ਅਲੀਅਲ ਗੁੰਜਾਤ ਹੈ ਮਕਰਦ ਰਸ ਬਾਸਨ ਮਾਤ ਹੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਮਲ ਕੰਧਾਵਤ ਆਪ ॥ ਚਾਤੂਕ ਚਿਤ ਪਿਆਸ ਚਾਤੂਕ ਚਿਤ ਪਿਆਸ ਹੈ ਘਨ ਬੂੰਦ ਬਚਿਤ੍ਰ ਮਨਿ ਆਸ ਹੈ ਅਲ ਪੀਵਤ ਬਿਨਸਤ ਤਾਪ ॥ ਤਾਪਾ ਬਿਨਾਸਨ ਢੂਖ ਨਾਸਨ ਮਿਲੁ ਪ੍ਰੇਮੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਅਤਿ ਘਨਾ ॥ ਸੁੰਦਰੁ ਚਤੁਰੁ ਸੁਜਾਨ ਸੁਆਮੀ ਕਵਨ ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਭਨਾ ॥ ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੇਵਹੁ ਨਾਮੁ ਦੇਵਹੁ ਦੂਸਟਿ ਧਾਰਤ ਮਿਟਤ ਪਾਪ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜੱਧੈ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਹਰਿ ਦਰਸੁ ਪੇਖਤ ਨਹ ਸੰਤਾਪ ॥੩॥ ਚਿਤਵਤ ਚਿਤ ਨਾਥ ਚਿਤਵਤ ਚਿਤ ਨਾਥ ਹੈ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਸਰਣਿ ਅਨਾਥ ਹੈ ਮਿਲੁ ਚਾਤ ਚਾਈਲੇ ਪ੍ਰਾਨ ॥ ਸੁੰਦਰ ਤਨ ਧਿਆਨ ਸੁੰਦਰ ਤਨ ਧਿਆਨ ਹੈ ਮਨੁ ਲੁਬਧ ਗੋਪਾਲ ਗਿਆਨ ਹੈ ਜਾਚਿਕ ਜਨ ਰਾਖਤ ਮਾਨ ॥ ਪ੍ਰਭ ਮਾਨ ਪੂਰਨ ਢੂਖ ਬਿਦੀਰਨ ਸਗਲ ਇਛ ਪੁਜਾਂਤੀਆ ॥ ਹਰਿ ਕੰਠਿ ਲਾਗੇ ਦਿਨ ਸਭਾਗੇ ਮਿਲਿ ਨਾਹ ਸੇਜ ਸੋਝਾਤੀਆ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦੂਸਟਿ ਧਾਰੀ ਮਿਲੇ ਮੁਰਾਰੀ ਸਗਲ ਕਲਮਲ ਭਏ ਹਾਨ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਆਸ ਪੂਰਨ ਮਿਲੇ ਸ਼੍ਰੀਧਰ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ॥੪॥੧॥੧੪॥

੧੪ੰ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਖਾਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
॥ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਵਾਰ ਸਲੋਕਾ ਨਾਲਿ ਸਲੋਕ ਭੀ ਮਹਲੇ ਪਹਿਲੇ ਕੇ ਲਿਖੇ ਟੁੰਡੇ ਅਸ ਰਾਜੈ ਕੀ ਧੁਨੀ ॥
ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਦਿਉਹਾਡੀ ਸਦ ਵਾਰ ॥ ਜਿਨਿ ਮਾਣਸ ਤੇ ਦੇਵਤੇ ਕੀਏ ਕਰਤ ਨ ਲਾਗੀ

ਵਾਰ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਜੇ ਸਤ ਚੰਦਾ ਉਗਵਹਿ ਸੂਰਜ ਚੜਹਿ ਹਜਾਰ ॥ ਏਤੇ ਚਾਨਣ ਹੋਦਿਆਁ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰ
 ਅੰਧਾਰ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰੂ ਨ ਚੇਤਨੀ ਮਨਿ ਆਪਣੈ ਸੁਚੇਤ ॥ ਛੁਟੇ ਤਿਲ ਬ੍ਰਾਡ ਜਿਤ ਸੁੰਬੇ ਅੰਦਰਿ
 ਖੇਤ ॥ ਖੇਤੈ ਅੰਦਰਿ ਛੁਟਿਆ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਤ ਨਾਹ ॥ ਫਲੀਅਹਿ ਫੁਲੀਅਹਿ ਬਪੁੜੇ ਭੀ ਤਨ ਵਿਚਿ ਸੁਆਹ
 ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੀਨੈ ਆਪੁ ਸਾਜਿਓ ਆਪੀਨੈ ਰਚਿਓ ਨਾਤ ॥ ਦੁਧੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਾਜੀਐ ਕਰਿ ਆਸਣੁ ਡਿਠੋ
 ਚਾਤ ॥ ਦਾਤਾ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਤ੍ਰੂਂ ਤੁਸਿ ਦੇਵਹਿ ਕਰਹਿ ਪਸਾਤ ॥ ਤ੍ਰੂਂ ਜਾਣੀਈ ਸਭਸੈ ਦੇ ਲੈਸਹਿ ਜਿੰਦੁ ਕਵਾਤ ॥ ਕਰਿ
 ਆਸਣੁ ਡਿਠੋ ਚਾਤ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਖੰਡ ਸਚੇ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥ ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਲੋਅ ਸਚੇ ਆਕਾਰ ॥ ਸਚੇ
 ਤੇਰੇ ਕਰਣੇ ਸਰਬ ਬੀਚਾਰ ॥ ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਅਮਰੁ ਸਚਾ ਟੀਬਾਣੁ ॥ ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਸਚਾ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥ ਸਚਾ ਤੇਰਾ
 ਕਰਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਸਚੇ ਤੁਧੁ ਆਖਹਿ ਲਖ ਕਰੋਡਿ ॥ ਸਚੈ ਸਭਿ ਤਾਣਿ ਸਚੈ ਸਭਿ ਜੋਰਿ ॥ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਸਿਫਤਿ
 ਸਚੀ ਸਾਲਾਹ ॥ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਇਨਿ ਸਚੁ ॥ ਜੋ ਮਰਿ ਜਂਮੇ ਸੁ ਕਚੁ
 ਨਿਕਚੁ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਵਡਾ ਨਾਤ ॥ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਸਚੁ ਨਿਆਤ ॥ ਵਡੀ
 ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਨਿਹਚਲ ਥਾਤ ॥ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾਣੈ ਆਲਾਤ ॥ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਬੁੜੈ ਸਭਿ ਭਾਤ ॥ ਵਡੀ
 ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਪੁਛਿ ਨ ਦਾਤਿ ॥ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਰ ਨ ਕਥਨੀ ਜਾਇ ॥ ਕੀਤਾ
 ਕਰਣਾ ਸਰਬ ਰਜਾਇ ॥੨॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਸਚੈ ਕੀ ਹੈ ਕੋਠੜੀ ਸਚੇ ਕਾ ਵਿਚਿ ਵਾਸੁ ॥ ਇਕਨਾ ਹੁਕਮਿ
 ਸਮਾਇ ਲਏ ਇਕਨਾ ਹੁਕਮੇ ਕਰੇ ਵਿਣਾਸੁ ॥ ਇਕਨਾ ਭਾਣੈ ਕਢਿ ਲਏ ਇਕਨਾ ਮਾਇਆ ਵਿਚਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਏਵ
 ਭਿ ਆਖਿ ਨ ਜਾਪੈ ਜਿ ਕਿਸੈ ਆਣੇ ਰਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਕਤ ਆਪਿ ਕਰੇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੩॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਨਕ ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਕੈ ਲਿਖਿ ਨਾਵੈ ਧਰਮੁ ਬਹਾਲਿਆ ॥ ਓਥੈ ਸਚੇ ਹੀ ਸਚਿ ਨਿਬੱਦੈ ਚੁਣਿ ਵਖਿ
 ਕਢੇ ਜਜਮਾਲਿਆ ॥ ਥਾਤ ਨ ਪਾਇਨਿ ਕੂਡਿਆਰ ਮੁਹ ਕਾਲੈ ਦੋਜਕਿ ਚਾਲਿਆ ॥ ਤੈਰੈ ਨਾਇ ਰਤੇ ਸੇ ਜਿਣਿ ਗਏ
 ਹਾਰਿ ਗਏ ਸਿ ਠਗਣ ਵਾਲਿਆ ॥ ਲਿਖਿ ਨਾਵੈ ਧਰਮੁ ਬਹਾਲਿਆ ॥੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਨਾਦ
 ਵਿਸਮਾਦੁ ਵੇਦ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਜੀਅ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੇਦ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰੂਪ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰੰਗ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਨਾਗੇ ਫਿਰਹਿ

ਜਨਤ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਪਤਣੁ ਵਿਸਮਾਦੁ ਪਾਣੀ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਅਗਨੀ ਖੇਡਹਿ ਵਿਡਾਣੀ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਧਰਤੀ ਵਿਸਮਾਦੁ
 ਖਾਣੀ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਦਿ ਲਗਹਿ ਪਰਾਣੀ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸੰਜੋਗੁ ਵਿਸਮਾਦੁ ਵਿਜੋਗੁ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੁਖ ਵਿਸਮਾਦੁ
 ਭੋਗੁ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਿਫਤਿ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਲਾਹ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਤੱਝੜ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰਾਹ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਨੇਡੈ ਵਿਸਮਾਦੁ
 ਦ੍ਰੂਰਿ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਦੇਖੈ ਹਾਜਰਾ ਹਜੂਰਿ ॥ ਕੇਖਿ ਵਿਡਾਣੁ ਰਹਿਆ ਵਿਸਮਾਦੁ ॥ ਨਾਨਕ ਬੁਝਣੁ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ॥੧॥
 ਮਃ ੧ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਦਿਸੈ ਕੁਦਰਤਿ ਸੁਣੀਐ ਕੁਦਰਤਿ ਭਤ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਪਾਤਾਲੀ ਆਕਾਸੀ ਕੁਦਰਤਿ
 ਸਰਬ ਆਕਾਰੁ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਕੇਵਦ ਪੁਰਾਣ ਕਤੇਬਾ ਕੁਦਰਤਿ ਸਰਬ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਪੈਨਣੁ
 ਕੁਦਰਤਿ ਸਰਬ ਪਿਆਰੁ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਜਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਰੰਗੀ ਕੁਦਰਤਿ ਜੀਅ ਜਹਾਨ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਨੇਕੀਆ ਕੁਦਰਤਿ
 ਬਦੀਆ ਕੁਦਰਤਿ ਮਾਨੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਪਤਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸਤੰਤਰੁ ਕੁਦਰਤਿ ਧਰਤੀ ਖਾਕੁ ॥ ਸਭ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ
 ਤ੍ਰ੍ਯੰ ਕਾਦਿਰੁ ਕਰਤਾ ਪਾਕੀ ਨਾਈ ਪਾਕੁ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਕੇਖੈ ਵਰਤੈ ਤਾਕੋ ਤਾਕੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੀਨੈ
 ਭੋਗ ਭੋਗਿ ਕੈ ਹੋਇ ਭਸਮਡਿ ਭਤਰੁ ਸਿਧਾਇਆ ॥ ਕਡਾ ਹੋਆ ਟੁਨੀਦਾਰੁ ਗਲਿ ਸੰਗਲੁ ਘਤਿ ਚਲਾਇਆ ॥ ਅਗੈ
 ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਵਾਚੀਐ ਬਹਿ ਲੇਖਾ ਕਰਿ ਸਮਝਾਇਆ ॥ ਥਾਉ ਨ ਹੋਵੀ ਪਤਦੀਈ ਹੁਣਿ ਸੁਣੀਐ ਕਿਆ
 ਰੂਆਇਆ ॥ ਮਨਿ ਅੰਧੈ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਪਵਣੁ ਵਹੈ ਸਦਵਾਤ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ
 ਚਲਹਿ ਲਖ ਦਰੀਆਤ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਅਗਨਿ ਕਢੈ ਵੇਗਾਰਿ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਧਰਤੀ ਢਕੀ ਭਾਰਿ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਝਿੰਦੁ ਫਿਰੈ
 ਸਿਰ ਭਾਰਿ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਰਾਜਾ ਧਰਮ ਟੁਆਰੁ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਸੂਰਜੁ ਭੈ ਵਿਚਿ ਚੰਦੁ ॥ ਕੋਹ ਕਰੋਡੀ ਚਲਤ ਨ ਅੰਤੁ ॥
 ਭੈ ਵਿਚਿ ਸਿਧ ਬੁਧ ਸੁਰ ਨਾਥ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਆਡਾਣੇ ਆਕਾਸ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਆਵਹਿ
 ਜਾਵਹਿ ਪੂਰ ॥ ਸਗਲਿਆ ਭਤ ਲਿਖਿਆ ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕਾਰੁ ਸਚੁ ਏਕੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥
 ਨਾਨਕ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕਾਰੁ ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਰਾਮ ਰਵਾਲ ॥ ਕੇਤੀਆ ਕਨ੍ਨ ਕਹਾਣੀਆ ਕੇਤੇ ਕੇਵਦ ਬੀਚਾਰ ॥ ਕੇਤੇ ਨਚਹਿ
 ਮੰਗਤੇ ਗਿਡਿ ਸੁਡਿ ਪੂਰਹਿ ਤਾਲ ॥ ਬਾਜਾਰੀ ਬਾਜਾਰ ਮਹਿ ਆਇ ਕਢਹਿ ਬਾਜਾਰ ॥ ਗਾਵਹਿ ਰਾਜੇ ਰਾਣੀਆ
 ਬੋਲਹਿ ਆਲ ਪਤਾਲ ॥ ਲਖ ਟਕਿਆ ਕੇ ਮੁੰਦੜੇ ਲਖ ਟਕਿਆ ਕੇ ਹਾਰ ॥ ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਪਾਈਅਹਿ ਨਾਨਕਾ

से तन होवहि छार ॥ गिआनु न गलीई ढूढ़ीअै कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईअै होर
 हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ एहु
 जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु
 लोक सबाइआ ॥ सतिगुरि मिलिअै सचु पाइआ जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ जिनि सचो सचु
 बुझाइआ ॥४॥ सलोक मः १ ॥ घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कन्न गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसंतरु
 चंदु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ नानक मुसै गिआन विहूणी
 खाइ गइआ जमकालु ॥१॥ मः १ ॥ वाइनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइनि फेरनि सिर ॥ उडि
 उडि रावा झाटै पाइ ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि
 धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ गावनि कन् ॥ गावनि सीता राजे राम ॥ निरभउ निरंकारु सचु नामु
 ॥ जा का कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ भिन्नी रैणि जिना मनि चाउ ॥ सिखी
 सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अन्नतु
 ॥ लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥ सूअै चाड़ि भवाईअहि जंत ॥ नानक
 भउदिआ गणत न अंत ॥ बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ पड़िअै किरति नचै सभु कोइ ॥ नचि नचि हसहि
 चलहि से रोइ ॥ उडि न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ नानक जिन् मनि भउ तिना
 मनि भाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइअै नरकि न जाईअै ॥ जीउ पिंडु सभु
 तिस दा दे खाजै आखि गवाईअै ॥ जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुन्हु नीचु सदाईअै ॥ जे जरवाणा
 परहरै जरु वेस करेदी आईअै ॥ को रहै न भरीअै पाईअै ॥५॥ सलोक मः १ ॥ मुसलमाना सिफति
 सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही
 सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुनि

ਧਿਆਵਨਿ ਜੇਤੇ ਅਲਖ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਸ੍ਰੋਖਮ ਮੂਰਤਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਕਾਇਆ ਕਾ ਆਕਾਰੁ ॥ ਸਤੀਆ ਮਨਿ
 ਸੰਤੋਖੁ ਉਪਯੈ ਦੇਣੈ ਕੈ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਦੇ ਦੇ ਮੰਗਹਿ ਸਹਸਾ ਗ੍ਰੋਣਾ ਸੋਭ ਕਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਚੋਰਾ ਜਾਰਾ ਤੈ ਕ੍ਰਿਡਿਆਰਾ ਖਾਰਾਬਾ
 ਕੇਕਾਰ ॥ ਇਕਿ ਹੋਦਾ ਖਾਇ ਚਲਹਿ ਔਥਾਊ ਤਿਨਾ ਭਿ ਕਾਈ ਕਾਰ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਜੀਆ ਪੁਰੀਆ ਲੋਆ ਆਕਾਰਾ
 ਆਕਾਰ ॥ ਓਹਿ ਜਿ ਆਖਹਿ ਸੁ ਤੁਂਹੈ ਜਾਣਹਿ ਤਿਨਾ ਭਿ ਤੇਰੀ ਸਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਭੁਖ ਸਾਲਾਹਣੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ
 ਆਧਾਰੁ ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦਿ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਣਵੰਤਿਆ ਪਾ ਛਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਮਿਟੀ ਸੁਸਲਮਾਨ ਕੀ ਪੇਡੈ ਪੱਈ
 ਕੁਮਿਆਰ ॥ ਘਡਿ ਭਾੱਡੇ ਝਿਟਾ ਕੀਆ ਜਲਟੀ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ॥ ਜਲਿ ਜਲਿ ਰੋਵੈ ਬਪੁੜੀ ਝਾਡਿ ਝਾਡਿ ਪਵਹਿ ਅੰਗਿਆਰ
 ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਾਰਣੁ ਕੀਆ ਸੋ ਜਾਣੈ ਕਰਤਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆਓ
 ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਆਪੁ ਰਖਿਓਨੁ ਕਰਿ ਪਰਗਟੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮਿਲਿਐ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਤਤਮੁ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਸਚੇ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ
 ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਪਾਇਆ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ ਆਇਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਗਇਆ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ
 ਜੰਮਿਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਮੁਆ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ ਦਿਤਾ ਹਉ ਵਿਚਿ ਲਇਆ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ ਖਟਿਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਗਇਆ ॥
 ਹਉ ਵਿਚਿ ਸਚਿਆਰੁ ਕ੍ਰਿਡਿਆਰੁ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ ਪਾਪ ਪੁਨ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ ਅਵਤਾਰੁ ॥ ਹਉ
 ਵਿਚਿ ਹਸੈ ਹਉ ਵਿਚਿ ਰੋਵੈ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ ਭਰੀਐ ਹਉ ਵਿਚਿ ਧੋਵੈ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ ਜਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਖੋਵੈ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ
 ਮੂਰਖੁ ਹਉ ਵਿਚਿ ਸਿਆਣਾ ॥ ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਾ ॥ ਹਉ ਵਿਚਿ ਮਾਇਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਛਾਇਆ ॥
 ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜੰਤ ਤੁਪਾਇਆ ॥ ਹਉਮੈ ਬੂੜੈ ਤਾ ਦਰੁ ਸੂੜੈ ॥ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣਾ ਕਥਿ ਕਥਿ ਲੂੜੈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਹੁਕਮੀ ਲਿਖੀਐ ਲੇਖੁ ॥ ਜੇਹਾ ਕੇਖਹਿ ਤੇਹਾ ਕੇਖੁ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਹਉਮੈ ਏਹਾ ਜਾਤਿ ਹੈ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥
 ਹਉਮੈ ਏਈ ਬੰਧਨਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਹਿ ॥ ਹਉਮੈ ਕਿਥਹੁ ਊਪਯੈ ਕਿਤੁ ਸੰਜਮਿ ਇਹ ਜਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਏਹੋ
 ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਫਿਰਾਹਿ ॥ ਹਉਮੈ ਦੀਰਘ ਰੋਗੁ ਹੈ ਦਾਰੁ ਭੀ ਇਸੁ ਮਾਹਿ ॥ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ
 ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸੁਣਹੁ ਜਨਹੁ ਇਤੁ ਸੰਜਮਿ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੇਵ ਕੀਤੀ

ਸਂਤੋਖੀਝੰਨੀ ਜਿਨੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਓਨ੍ਹੀ ਮੰਦੈ ਪੈਰੁ ਨ ਰਖਿਓ ਕਰਿ ਸੁਕੂਤੁ ਧਰਮੁ ਕਮਾਇਆ ॥ ਓਨ੍ਹੀ
 ਦੁਨੀਆ ਤੋਡੇ ਬੰਧਨਾ ਅਨੁ ਪਾਣੀ ਥੋੜਾ ਖਾਇਆ ॥ ਤੂੰ ਬਖਸੀਸੀ ਅਗਲਾ ਨਿਤ ਦੇਵਹਿ ਚੜਹਿ ਸਵਾਇਆ ॥
 ਵਡਿਆਈ ਵਡਾ ਪਾਇਆ ॥੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਪੁਰਖਾਂ ਬਿਰਖਾਂ ਤੀਰਥਾਂ ਤਟਾਂ ਮੇਘਾਂ ਖੇਤਾਂਹ ॥ ਦੀਪਾਂ ਲੋਆਂ
 ਮੰਡਲਾਂ ਖੱਡਾਂ ਵਰਭੰਡਾਂਹ ॥ ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਉਤਪੁਜਾਂ ਖਾਣੀ ਸੇਤਜਾਂਹ ॥ ਸੋ ਮਿਤਿ ਜਾਣੈ ਨਾਨਕਾ ਸਰਾਂ ਮੇਰਾਂ ਜੰਤਾਹ
 ॥ ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਕੈ ਸੰਮਾਲੇ ਸਭਨਾਹ ॥ ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਰਣਾ ਕੀਆ ਚਿੰਤਾ ਮਿਕਰਣੀ ਤਾਹ ॥ ਸੋ ਕਰਤਾ
 ਚਿੰਤਾ ਕਰੇ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ਜਗੁ ॥ ਤਿਸੁ ਜੋਹਾਰੀ ਸੁਅਸਤਿ ਤਿਸੁ ਤਿਸੁ ਦੀਬਾਣੁ ਅਭਗੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ
 ਬਿਨੁ ਕਿਆ ਟਿਕਾ ਕਿਆ ਤਗੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਲਖ ਨੇਕੀਆ ਚੰਗਿਆਈਆ ਲਖ ਪੁਨਾ ਪਰਖਾਣੁ ॥ ਲਖ ਤਪ
 ਉਪਰਿ ਤੀਰਥਾਂ ਸਹਜ ਜੋਗ ਬੇਬਾਣ ॥ ਲਖ ਸੂਰਤਣ ਸਾਂਗਰਾਮ ਰਣ ਮਹਿ ਛੁਟਹਿ ਪਰਾਣ ॥ ਲਖ ਸੁਰਤੀ ਲਖ
 ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਪਡੀਅਹਿ ਪਾਠ ਪੁਰਾਣ ॥ ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਰਣਾ ਕੀਆ ਲਿਖਿਆ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਮਤੀ
 ਮਿਥਿਆ ਕਰਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਤੂੰ ਜਿਨਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਵਰਤਾਇਆ ॥ ਜਿਸੁ ਤੂੰ
 ਦੇਹਿ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਤਾ ਤਿਨੀ ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਸਚੁ
 ਵਸਾਇਆ ॥ ਮੂਰਖ ਸਚੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਮਨਮੁਖੀ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਵਿਚਿ ਦੁਨੀਆ ਕਾਹੇ ਆਇਆ ॥੮॥
 ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਗਡੀ ਲਦੀਅਹਿ ਪਡਿ ਪਡਿ ਭਰੀਅਹਿ ਸਾਥ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਬੇਡੀ ਪਾਈਐ ਪਡਿ ਪਡਿ
 ਗਡੀਅਹਿ ਖਾਤ ॥ ਪਡੀਅਹਿ ਜੇਤੇ ਬਰਸ ਬਰਸ ਪਡੀਅਹਿ ਜੇਤੇ ਮਾਸ ॥ ਪਡੀਐ ਜੇਤੀ ਆਰਜਾ ਪਡੀਅਹਿ ਜੇਤੇ
 ਸਾਸ ॥ ਨਾਨਕ ਲੇਖੈ ਇਕ ਗਲ ਹੋਰੁ ਹਤਮੈ ਝਾਖਣਾ ਝਾਖ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਪਡਿਆ ॥ ਤੇਤਾ ਕਡਿਆ ॥ ਬਹੁ
 ਤੀਰਥ ਭਵਿਆ ॥ ਤੇਤੇ ਲਵਿਆ ॥ ਬਹੁ ਭੇਖ ਕੀਆ ਦੇਹੀ ਦੁਖੁ ਦੀਆ ॥ ਸਹੁ ਵੇ ਜੀਆ ਅਪਣਾ ਕੀਆ ॥ ਅਨੁ ਨ
 ਖਾਇਆ ਸਾਦੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਬਹੁ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਦ੍ਰੂਜਾ ਭਾਇਆ ॥ ਬਸਤ ਨ ਪਹਿਰੈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਹਰੈ ॥ ਮੋਨਿ
 ਵਿਗੂਤਾ ॥ ਕਿਤ ਜਾਗੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸੂਤਾ ॥ ਪਗ ਉਪੇਤਾਣਾ ॥ ਅਪਣਾ ਕੀਆ ਕਮਾਣਾ ॥ ਅਲੁ ਮਲੁ ਖਾਈ ਸਿਰਿ ਛਾਈ
 ਪਾਈ ॥ ਮੂਰਖਿ ਅੰਧੈ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕਿਛੁ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥ ਰਹੈ ਬੇਬਾਣੀ ਮੜੀ ਮਸਾਣੀ ॥ ਅੰਧੁ ਨ

ਜਾਣੈ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਣੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਭੇਟੇ ਸੋ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ
 ਪਾਏ ॥ ਆਸ ਅੰਦੇਸੇ ਤੇ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਭਗਤ ਤੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵਦੇ ਦਰਿ ਸੋਹਨਿ
 ਕੀਰਤਿ ਗਾਵਦੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਮਾ ਬਾਹਰੇ ਦਰਿ ਢੋਅ ਨ ਲਹਨੀ ਧਾਵਦੇ ॥ ਇਕਿ ਮੂਲੁ ਨ ਬੁਝਾਨ੍ਤਿ ਆਪਣਾ ਅਣਹੋਦਾ
 ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ॥ ਹਉ ਢਾਢੀ ਕਾ ਨੀਚ ਜਾਤਿ ਹੋਰਿ ਤਤਮ ਜਾਤਿ ਸਦਾਇਦੇ ॥ ਤਿਨ੍ ਮੰਗ ਜਿ ਤੁੜੈ ਧਿਆਇਦੇ ॥
 ੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਕੂਝੁ ਰਾਜਾ ਕੂਝੁ ਪਰਯਾ ਕੂਝੁ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਕੂਝੁ ਮੰਡਪ ਕੂਝੁ ਮਾਡੀ ਕੂਝੁ ਬੈਸਣਹਾਰੁ ॥ ਕੂਝੁ
 ਸੁਇਨਾ ਕੂਝੁ ਰੂਪਾ ਕੂਝੁ ਪੈਨ੍ਣਹਾਰੁ ॥ ਕੂਝੁ ਕਾਇਆ ਕੂਝੁ ਕਪਡੁ ਕੂਝੁ ਰੂਪੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਕੂਝੁ ਮੀਆ ਕੂਝੁ ਬੀਬੀ ਖਪਿ ਹੋਏ
 ਖਾਰੁ ॥ ਕੂਝਿ ਕੂਝੈ ਨੇਹੁ ਲਗਾ ਵਿਸਰਿਆ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਕਿਸੁ ਨਾਲਿ ਕੀਚੈ ਦੋਸਤੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥ ਕੂਝੁ ਮਿਠਾ
 ਕੂਝੁ ਮਾਖਿਤ ਕੂਝੁ ਡੋਬੇ ਪ੍ਰੂ ॥ ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਬੇਨਤੀ ਤੁਥੁ ਬਾਝੁ ਕੂਝੋ ਕੂਝੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ
 ਰਿਦੈ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥ ਕੂਝੁ ਕੀ ਮਲੁ ਤਤਰੈ ਤਨੁ ਕਰੇ ਹਛਾ ਧੋਇ ॥ ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਚਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਨਾਤ
 ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਰਹਸੀਐ ਤਾ ਪਾਏ ਸੋਖ ਟੁਆਰੁ ॥ ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਜੁਗਤਿ ਜਾਣੈ ਜੀਤ ॥ ਧਰਤਿ ਕਾਇਆ
 ਸਾਧਿ ਕੈ ਵਿਚਿ ਦੇਇ ਕਰਤਾ ਬੀਤ ॥ ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਿਖ ਸਚੀ ਲੇਇ ॥ ਦੇਇਆ ਜਾਣੈ ਜੀਅ ਕੀ ਕਿਛੁ
 ਪੁਨੁ ਦਾਨੁ ਕਰੇਇ ॥ ਸਚੁ ਤਾਂ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਆਤਮ ਤੀਰਥਿ ਕਰੇ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਨੋ ਪੁਛਿ ਕੈ ਬਹਿ ਰਹੈ ਕਰੇ
 ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਸਚੁ ਸਭਨਾ ਹੋਇ ਟਾਰੁ ਪਾਪ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਬੇਨਤੀ ਜਿਨ ਸਚੁ ਪਲੈ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ
 ॥ ਦਾਨੁ ਮਹਿਡਾ ਤਲੀ ਖਾਕੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤ ਮਸਤਕਿ ਲਾਈਐ ॥ ਕੂਝਾ ਲਾਲਚੁ ਛਡੀਐ ਹੋਇ ਇਕ ਮਨਿ ਅਲਖੁ
 ਧਿਆਈਐ ॥ ਫਲੁ ਤੇਵੇਹੋ ਪਾਈਐ ਜੇਵੇਹੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈਐ ॥ ਜੇ ਹੋਵੈ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਾ ਧ੍ਰਿ ਤਿਨਾ ਦੀ ਪਾਈਐ ॥
 ਮਤਿ ਥੋਡੀ ਸੇਵ ਗਰਵਾਈਐ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸਚਿ ਕਾਲੁ ਕੂਝੁ ਵਰਤਿਆ ਕਲਿ ਕਾਲਖ ਬੇਤਾਲ ॥ ਬੀਤ ਬੀਜਿ
 ਪਤਿ ਲੈ ਗਏ ਅਥ ਕਿਤ ਤਗਵੈ ਦਾਲਿ ॥ ਜੇ ਇਕੁ ਹੋਇ ਤ ਤਗਵੈ ਰੁਤੀ ਹੂ ਰੁਤਿ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਹੈ ਬਾਹਰਾ
 ਕੌਰੈ ਰੰਗੁ ਨ ਸੋਇ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਖੁੰਬਿ ਚੜਾਈਐ ਸਰਮੁ ਪਾਹੁ ਤਨਿ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤੀ ਜੇ ਰੱਪੈ ਕੂਝੈ ਸੋਇ ਨ
 ਕੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਲਬੁ ਪਾਪੁ ਟੁਇ ਰਾਜਾ ਮਹਤਾ ਕੂਝੁ ਹੋਆ ਸਿਕਦਾਰੁ ॥ ਕਾਮੁ ਨੇਬੁ ਸਦਿ ਪੁਛੀਐ ਬਹਿ

ਬਹਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਅਂਧੀ ਰਥਤਿ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਭਾਹਿ ਭਰੇ ਮੁਰਦਾਰੁ ॥ ਗਿਆਨੀ ਨਚਹਿ ਵਾਜੇ ਵਾਵਹਿ ਰੂਪ
 ਕਰਹਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਊਚੇ ਕੂਕਹਿ ਵਾਦਾ ਗਾਵਹਿ ਜੋਧਾ ਕਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਮੂਰਖ ਪੰਡਿਤ ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਜਤਿ ਸੰਜੈ ਕਰਹਿ
 ਪਿਆਰੁ ॥ ਧਰਮੀ ਧਰਮੁ ਕਰਹਿ ਗਾਵਾਵਹਿ ਮੰਗਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਜਤੀ ਸਦਾਵਹਿ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਣਹਿ ਛਡਿ
 ਬਹਹਿ ਘਰ ਬਾਰੁ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਪ੍ਰਾ ਆਪੇ ਹੋਵੈ ਘਟਿ ਨ ਕੋਈ ਆਖੈ ॥ ਪਤਿ ਪਰਵਾਣਾ ਪਿਛੈ ਪਾਈਐ ਤਾ ਨਾਨਕ
 ਤੋਲਿਆ ਜਾਪੈ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਵਦੀ ਸੁ ਵਜਗਿ ਨਾਨਕਾ ਸਚਾ ਵੇਖੈ ਸੋਝਿ ॥ ਸਭਨੀ ਛਾਲਾ ਮਾਰੀਆ ਕਰਤਾ ਕਰੇ
 ਸੁ ਹੋਇ ॥ ਅਗੈ ਜਾਤਿ ਨ ਜੋਖੁ ਹੈ ਅਗੈ ਜੀਤ ਨਵੇ ॥ ਜਿਨ ਕੀ ਲੇਖੈ ਪਤਿ ਪਵੈ ਚੰਗੇ ਸੇਈ ਕੋਇ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਧੁਰਿ ਕਰਸੁ ਜਿਨਾ ਕਤ ਤੁਧੁ ਪਾਇਆ ਤਾ ਤਿਨੀ ਖਸਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਏਨਾ ਜੰਤਾ ਕੈ ਵਸਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਤੁਧੁ ਵੇਕੀ
 ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਇਕਨਾ ਨੋ ਤ੍ਰੂ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਇਕਿ ਆਪਹੁ ਤੁਧੁ ਖੁਆਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਜਾਣਿਆ
 ਜਿਥੈ ਤੁਧੁ ਆਪੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਦੁਖੁ ਦਾਰੁ ਸੁਖੁ ਰੋਗੁ ਭਿਆ
 ਜਾ ਸੁਖੁ ਤਾਮਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਤ੍ਰੂ ਕਰਤਾ ਕਰਣਾ ਮੈ ਨਾਹੀ ਜਾ ਹਤ ਕਰੀ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਵਸਿਆ
 ॥ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾਤਿ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਮਹਿ ਜਾਤਾ ਅਕਲ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰਿ
 ਰਹਿਆ ॥ ਤ੍ਰੂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਫਤਿ ਸੁਆਲਿਤ ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ ਸੋ ਪਾਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੀਆ
 ਬਾਤਾ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ॥੨॥ ਮਃ ੨ ॥ ਜੋਗ ਸਬਦੰ ਗਿਆਨ ਸਬਦੰ ਬੇਦ ਸਬਦੰ ਬ੍ਰਾਹਮਣਹ ॥
 ਖਨੀ ਸਬਦੰ ਸ੍ਰੂ ਸਬਦੰ ਸ੍ਰੂ ਸਬਦੰ ਪਰਾ ਕ੃ਤਹ ॥ ਸਰਬ ਸਬਦੰ ਏਕ ਸਬਦੰ ਜੇ ਕੋ ਜਾਣੈ ਭੇਤ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ
 ਦਾਸੁ ਹੈ ਸੋਈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਤ ॥੩॥ ਮਃ ੨ ॥ ਏਕ ਕੁਝਨੁ ਸਰਬ ਦੇਵਾ ਦੇਵ ਦੇਵਾ ਤ ਆਤਮਾ ॥ ਆਤਮਾ
 ਬਾਸੁਦੇਵਸਿਧ ਜੇ ਕੋ ਜਾਣੈ ਭੇਤ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਸੋਈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਤ ॥੪॥ ਮਃ ੧ ॥ ਕੁਝੇ ਬਧਾ ਜਲੁ ਰਹੈ
 ਜਲ ਬਿਨੁ ਕੁਝੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਗਿਆਨ ਕਾ ਬਧਾ ਮਨੁ ਰਹੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਇ ॥੫॥ ਪਤੜੀ ॥ ਪਾਇਆ
 ਹੋਵੈ ਗੁਨਹਗਾਰੁ ਤਾ ਓਮੀ ਸਾਧੁ ਨ ਮਾਰੀਐ ॥ ਜੇਹਾ ਘਾਲੇ ਘਾਲਣਾ ਤੇਵੇਹੋ ਨਾਤ ਪਚਾਰੀਐ ॥ ਐਸੀ ਕਲਾ ਨ
 ਖੇਡੀਐ ਜਿਤੁ ਦਰਗਹ ਗਿਆ ਹਾਰੀਐ ॥ ਪਾਇਆ ਅਤੈ ਓਮੀਆ ਵੀਚਾਰੁ ਅਗੈ ਵੀਚਾਰੀਐ ॥ ਸੁਹਿ ਚਲੈ ਸੁ

ਅਗੈ ਮਾਰੀਐ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਮੇਰੁ ਸਰੀਰ ਕਾ ਇਕੁ ਰਥੁ ਇਕੁ ਰਥਵਾਹੁ ॥ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਫੇਰਿ
 ਕਟਾਈਅਹਿ ਗਿਆਨੀ ਬੁਝਾਹਿ ਤਾਹਿ ॥ ਸਤਜੁਗਿ ਰਥੁ ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਧਰਮੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥ ਕੇਤੈ ਰਥੁ ਜਤੈ ਕਾ ਜੋਝੁ
 ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥ ਦੁਆਪੁਰਿ ਰਥੁ ਤਪੈ ਕਾ ਸਤੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥ ਕਲਜੁਗਿ ਰਥੁ ਅਗਨਿ ਕਾ ਕੂਡੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ
 ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸਾਮ ਕਹੈ ਸੇਤੰਬਰੁ ਸੁਆਮੀ ਸਚ ਮਹਿ ਆਛੈ ਸਾਚਿ ਰਹੇ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਰਿਗੁ ਕਹੈ
 ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਦੇਵਾ ਮਹਿ ਸ੍ਰੂ ॥ ਨਾਇ ਲਿਝਾਈ ਪਰਾਛਤ ਜਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਤ ਮੋਖਿਤਰੁ ਪਾਹਿ ॥
 ਜੁਜ ਮਹਿ ਜੋਰਿ ਛਲੀ ਚੰਦ੍ਰਾਵਲਿ ਕਾਨੁ ਕ੃ਸਨੁ ਜਾਦਮੁ ਭਿਆ ॥ ਪਾਰਯਾਤੁ ਗੋਪੀ ਲੈ ਆਇਆ ਬਿੰਦ੍ਰਾਬਨ ਮਹਿ
 ਰੰਗੁ ਕੀਆ ॥ ਕਲਿ ਮਹਿ ਬੇਦੁ ਅਥਰਬਣੁ ਹ੍ਰਾਅ ਨਾਉ ਖੁਦਾਈ ਅਲਹੁ ਭਿਆ ॥ ਨੀਲ ਬਸਤ ਲੇ ਕਪਡੇ ਪਹਿਰੇ
 ਤੁਰਕ ਪਠਾਣੀ ਅਮਲੁ ਕੀਆ ॥ ਚਾਰੇ ਵੇਦ ਹੋਏ ਸਚਿਆਰ ॥ ਪਡਹਿ ਗੁਣਹਿ ਤਿਨੁ ਚਾਰ ਵੀਚਾਰ ॥ ਭਤ ਭਗਤਿ
 ਕਰਿ ਨੀਚੁ ਸਦਾਏ ॥ ਤਤ ਨਾਨਕ ਮੋਖਿਤਰੁ ਪਾਏ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ
 ਖਸਮੁ ਸਮਾਲਿਆ ॥ ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਦੀਆ ਇਨ੍ਹੀ ਨੇਤੀ ਜਗਤੁ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥ ਖਸਮੁ
 ਛੀਡਿ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਗੇ ਢੁਕੇ ਸੇ ਵਣਯਾਰਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੈ ਬੋਹਿਥਾ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਿ
 ਤਤਾਰਿਆ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸਿੰਮਲ ਰੁਖੁ ਸਰਾਇਰਾ ਅਤਿ ਦੀਰਘ ਅਤਿ ਮੁਚੁ ॥ ਓਇ ਜਿ ਆਵਹਿ ਆਸ
 ਕਰਿ ਜਾਹਿ ਨਿਰਾਸੇ ਕਿਤੁ ॥ ਫਲ ਫਿਕੇ ਫੁਲ ਬਕਬਕੇ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵਹਿ ਪਤ ॥ ਮਿਠਤੁ ਨੀਵੀ ਨਾਨਕਾ ਗੁਣ
 ਚੰਗਿਆਈਆ ਤਤੁ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਨਿਵੈ ਆਪ ਕਤ ਪਰ ਕਤ ਨਿਵੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਧਰਿ ਤਾਰਾਜੂ ਤੋਲੀਐ ਨਿਵੈ ਸੁ ਗਤਰਾ
 ਹੋਇ ॥ ਅਪਰਾਧੀ ਟ੍ਰੌਣਾ ਨਿਵੈ ਜੋ ਛਾਤਾ ਮਿਰਗਾਹਿ ॥ ਸੀਸਿ ਨਿਵਾਇਐ ਕਿਆ ਥੀਐ ਜਾ ਰਿਦੈ ਕੁਸੁਧੇ ਜਾਹਿ ॥੧॥
 ਮਃ ੧ ॥ ਪਡਿ ਪੁਸਤਕ ਸਂਧਿਆ ਬਾਦੰ ॥ ਸਿਲ ਪ੍ਰਯਸਿ ਬਗੁਲ ਸਮਾਧੰ ॥ ਮੁਖਿ ਝ੍ਰੂਠ ਬਿਭੂਖਣ ਸਾਰੰ ॥ ਕੈਪਾਲ
 ਤਿਹਾਲ ਬਿਚਾਰੰ ॥ ਗਲਿ ਮਾਲਾ ਤਿਲਕੁ ਲਿਲਾਟੰ ॥ ਟੁਇ ਧੋਤੀ ਬਸਤ ਕਪਾਟੰ ॥ ਜੇ ਜਾਣਸਿ ਬ੍ਰਹਮੰ ਕਰਮੰ ॥
 ਸਭਿ ਫੋਕਟ ਨਿਸਚਤ ਕਰਮੰ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਹਚਤ ਧਿਆਵੈ ॥ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਵਾਟ ਨ ਪਾਵੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਕਪਡੁ ਰੂਪੁ ਸੁਹਾਵਣਾ ਛਡਿ ਟੁਨੀਆ ਅੰਦਰਿ ਜਾਵਣਾ ॥ ਮੰਦਾ ਚੰਗਾ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਕੀਤਾ ਪਾਵਣਾ ॥ ਹੁਕਮ

ਕੀਏ ਮਨਿ ਭਾਵਦੇ ਰਾਹਿ ਭੀਡੈ ਅਗੈ ਜਾਵਣਾ ॥ ਨਨਗਾ ਦੋਜਕਿ ਚਾਲਿਆ ਤਾ ਦਿਸੈ ਖਰਾ ਡਰਾਵਣਾ ॥ ਕਰਿ
 ਅਤਗਣ ਪਛੋਤਾਵਣਾ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਦਿੱਤਿਆ ਕਪਾਹ ਸੰਤੋਖੁ ਸੂਤੁ ਜਤੁ ਗੰਢੀ ਸਤੁ ਵਟੁ ॥ ਏਹੁ ਜਨੇਊ
 ਜੀਅ ਕਾ ਹੰਈ ਤ ਪਾਡੇ ਘਤੁ ॥ ਨਾ ਏਹੁ ਤੁਟੈ ਨਾ ਮਲੁ ਲਗੈ ਨਾ ਏਹੁ ਜਲੈ ਨ ਜਾਇ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਮਾਣਸ ਨਾਨਕਾ ਜੋ
 ਗਲਿ ਚਲੇ ਪਾਇ ॥ ਚਤੁਕਡਿ ਸੁਲਿ ਅਣਾਇਆ ਬਹਿ ਚਤੁਕੈ ਪਾਇਆ ॥ ਸਿਖਾ ਕੰਨਿ ਚੜਾਈਆ ਗੁਰੁ
 ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਥਿਆ ॥ ਓਹੁ ਮੁਆ ਓਹੁ ਝਾਡਿ ਪਾਇਆ ਵੇਤਗਾ ਗਿਆ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਲਖ ਚੋਰੀਆ ਲਖ ਜਾਰੀਆ
 ਲਖ ਕੂੜੀਆ ਲਖ ਗਾਲਿ ॥ ਲਖ ਠਗੀਆ ਪਹਿਨਾਮੀਆ ਰਾਤਿ ਦਿਨਸੁ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ॥ ਤਗੁ ਕਪਾਹਹੁ ਕਤੀਐ
 ਬਾਸਣੁ ਵਟੇ ਆਇ ॥ ਕੁਹਿ ਬਕਰਾ ਰਿਨ੍ਹਿ ਖਾਇਆ ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਪਾਇ ॥ ਹੋਇ ਪੁਰਾਣਾ ਸੁਟੀਐ ਭੀ ਫਿਰਿ
 ਪਾਈਐ ਹੋਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਤਗੁ ਨ ਤੁਟੰਦ ਜੇ ਤਗਿ ਹੋਵੈ ਜੋਰੁ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਇ ਮੰਨਿਐ ਪਤਿ ਊਪਜੈ ਸਾਲਾਹੀ
 ਸਚੁ ਸੂਤੁ ॥ ਦਰਗਹ ਅੰਦਰਿ ਪਾਈਐ ਤਗੁ ਨ ਤੂਟਸਿ ਪ੍ਰਤ ॥੩॥ ਮਃ ੧ ॥ ਤਗੁ ਨ ਇੰਦ੍ਰੀ ਤਗੁ ਨ ਨਾਰੀ ॥ ਭਲਕੇ
 ਥੁਕ ਪਵੈ ਨਿਤ ਦਾੜੀ ॥ ਤਗੁ ਨ ਪੈਰੀ ਤਗੁ ਨ ਹਥੀ ॥ ਤਗੁ ਨ ਜਿਹਵਾ ਤਗੁ ਨ ਅਖੀ ॥ ਵੇਤਗਾ ਆਪੇ ਵਤੈ ॥ ਵਟਿ
 ਧਾਗੇ ਅਵਰਾ ਘਤੈ ॥ ਲੈ ਭਾਡਿ ਕਰੇ ਕੀਆਹੁ ॥ ਕਢਿ ਕਾਗਲੁ ਦਸੇ ਰਾਹੁ ॥ ਸੁਣਿ ਵੇਖਹੁ ਲੋਕਾ ਏਹੁ ਵਿਡਾਣੁ ॥
 ਮਨਿ ਅੰਧਾ ਨਾਤ ਸੁਜਾਣੁ ॥੪॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਹੋਇ ਦਿੱਤਿਆਲੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਰਾਇਸੀ ॥ ਸੋ
 ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਜਿਸ ਨੋ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਇਸੀ ॥ ਹੁਕਮਿ ਮੰਨਿਐ ਹੋਵੈ ਪਰਵਾਣੁ ਤਾ ਖਸਮੈ ਕਾ ਮਹਲੁ ਪਾਇਸੀ ॥
 ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਮਨਹੁ ਚਿੰਦਿਆ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ ॥ ਤਾ ਦਰਗਹ ਪੈਧਾ ਜਾਇਸੀ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
 ਗੜ ਬਿਰਾਹਮਣ ਕਤ ਕਰੁ ਲਾਵਹੁ ਗੋਬਰਿ ਤਰਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਧੋਤੀ ਟਿਕਾ ਤੈ ਜਪਮਾਲੀ ਧਾਨੁ ਮਲੇਛਾਂ ਖਾਈ ॥
 ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਯਾ ਪਡਹਿ ਕਤੇਬਾ ਸੰਜਮੁ ਤੁਰਕਾ ਭਾਈ ॥ ਛੋਡੀਲੇ ਪਾਖੰਡਾ ॥ ਨਾਮਿ ਲਿਇਐ ਜਾਹਿ ਤਰੰਦਾ ॥੧॥
 ਮਃ ੧ ॥ ਮਾਣਸ ਖਾਣੇ ਕਰਹਿ ਨਿਵਾਜ ॥ ਛੁਰੀ ਕਗਾਇਨਿ ਤਿਨ ਗਲਿ ਤਾਗ ॥ ਤਿਨ ਘਰਿ ਬ੍ਰਹਮਣ ਪ੍ਰਹਿ
 ਨਾਦ ॥ ਤਨਾ ਭਿ ਆਵਹਿ ਓਈ ਸਾਦ ॥ ਕੂੜੀ ਰਸਿ ਕੂੜਾ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਕਰਹਿ ਆਹਾਰੁ ॥ ਸਰਮ ਧਰਮ
 ਕਾ ਡੇਰਾ ਟ੍ਰੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕੂੜੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਮਥੈ ਟਿਕਾ ਤੇਡਿ ਧੋਤੀ ਕਖਾਈ ॥ ਹਥਿ ਛੁਰੀ ਜਗਤ

कासाई ॥ नील वसत पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा
 बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ दे कै चउका कढी कार ॥ उपरि आँडि बैठे कूँडिआर ॥
 मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अनु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु
 नानक सचु धिआईअै ॥ सुचि होवै ता सचु पाईअै ॥ ੨॥ पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी
 हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि
 धंधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥ ੧੬॥
 सलोकु मः ੧ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिजाणीअै पितरी चोर करेइ ॥
 वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥ ੧॥ मः ੧ ॥
 जित जोरु सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न
 आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ सूचे सई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥ ੨॥ पउड़ी ॥ तुरे
 पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥
 चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु
 विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥ ੧੭॥ सलोकु मः ੧ ॥ जे करि सूतकु मन्नीअै सभ तै सूतकु होइ
 ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अन्न के जीआ बाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ
 है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीअै सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न
 उतरै गिआनु उतरे धोइ ॥ ੧॥ मः ੧ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ ॥ अखी सूतकु
 वेखणा पर तृआ पर धन रूपु ॥ कन्नी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥ नानक ह्वासा आदमी
 बधे जम पुरि जाहि ॥ ੨॥ मः ੧ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा हुकमु है
 भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा पविन् है दितोनु रिजकु संबाहि ॥ नानक जिनी गुरमुखि बुझिआ

ਤਿਨਾ ਸੂਤਕੁ ਨਾਹਿ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਵਡਾ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਸੁ ਵਿਚਿ ਵਡੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ॥ ਸਹਿ
 ਮੇਲੇ ਤਾ ਨਦਰੀ ਆਈਆ ॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾ ਮਨਿ ਵਸਾਈਆ ॥ ਕਰਿ ਹੁਕਮੁ ਮਸਤਕਿ ਹਥੁ ਧਰਿ ਵਿਚਹੁ
 ਮਾਰਿ ਕਢੀਆ ਬੁਰਿਆਈਆ ॥ ਸਹਿ ਤੁਠੈ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਈਆ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਪਹਿਲਾ ਸੁਚਾ ਆਪਿ
 ਹੋਇ ਸੁਚੈ ਬੈਠਾ ਆਇ ॥ ਸੁਚੇ ਅਗੈ ਰਖਿਓਨੁ ਕੋਇ ਨ ਭਿਟਿਓ ਜਾਇ ॥ ਸੁਚਾ ਹੋਇ ਕੈ ਜੇਵਿਆ ਲਗਾ ਪੜਣਿ
 ਸਲੋਕੁ ॥ ਕੁਹਥੀ ਜਾਈ ਸਟਿਆ ਕਿਸੁ ਏਹੁ ਲਗਾ ਦੋਖੁ ॥ ਅਨੁ ਦੇਵਤਾ ਪਾਣੀ ਦੇਵਤਾ ਬੈਸਤੰਤੁ ਦੇਵਤਾ ਲੂਣ
 ਪੱਜਵਾ ਪਾਇਆ ਧਿਰਤੁ ॥ ਤਾ ਹੋਆ ਪਾਕੁ ਪਵਿਤੁ ॥ ਪਾਪੀ ਸਿਤ ਤਨੁ ਗਡਿਆ ਥੁਕਾ ਪੰਈਆ ਤਿਤੁ ॥ ਜਿਤੁ
 ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨ ਊਚਰਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਰਸ ਖਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਤਿਤੁ ਮੁਖਿ ਥੁਕਾ ਪਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥
 ਭੰਡਿ ਜ਼ਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਮੰਗਣੁ ਕੀਆਹੁ ॥ ਭੰਡਹੁ ਹੋਵੈ ਦੋਸਤੀ ਭੰਡਹੁ ਚਲੈ ਰਾਹੁ ॥ ਭੰਡੁ ਮੁਆ ਭੰਡੁ
 ਭਾਲੀਐ ਭੰਡਿ ਹੋਵੈ ਬੰਧਾਨੁ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜ਼ਮਹਿ ਰਾਜਾਨ ॥ ਭੰਡਹੁ ਹੀ ਭੰਡੁ ਊਪਜੈ ਭੰਡੈ ਬਾੜ੍ਹੁ
 ਨ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਭੰਡੈ ਬਾਹਰਾ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਜਿਤੁ ਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਭਾਗਾ ਰਤੀ ਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ
 ਮੁਖ ਊਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਆਪਣਾ ਜਿਸੁ ਨਾਹੀ ਸੋ ਚੁਣਿ ਕਢੀਐ ॥
 ਕੀਤਾ ਆਪੋ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਲੇਖਾ ਸੰਢੀਐ ॥ ਜਾ ਰਹਣਾ ਨਾਹੀ ਐਤੁ ਜਗਿ ਤਾ ਕਾਇਤੁ ਗਾਰਬਿ ਛਾਫੀਐ ॥
 ਮੰਦਾ ਕਿਸੈ ਨ ਆਖੀਐ ਪਡਿ ਅਖਰੁ ਏਹੋ ਬੁੜੀਐ ॥ ਮੂਰਖੈ ਨਾਲਿ ਨ ਲੁੜੀਐ ॥੧੯॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
 ਨਾਨਕ ਫਿਕੈ ਕੋਲਿਐ ਤਨੁ ਮਨੁ ਫਿਕਾ ਹੋਇ ॥ ਫਿਕੋ ਫਿਕਾ ਸਦੀਐ ਫਿਕੇ ਫਿਕੀ ਸੋਇ ॥ ਫਿਕਾ ਦਰਗਹ
 ਸਟੀਐ ਮੁਹਿ ਥੁਕਾ ਫਿਕੇ ਪਾਇ ॥ ਫਿਕਾ ਮੂਰਖੁ ਆਖੀਐ ਪਾਣਾ ਲਹੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਅੰਦਰਹੁ ਝੂਠੇ
 ਪੈਜ ਬਾਹਰਿ ਦੁਨੀਆ ਅੰਦਰਿ ਫੈਲੁ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਜੇ ਨਾਵਹਿ ਉਤਰੈ ਨਾਹੀ ਮੈਲੁ ॥ ਜਿਨ ਪਟੁ ਅੰਦਰਿ
 ਬਾਹਰਿ ਗੁਦੜੁ ਤੇ ਭਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਤਿਨੁ ਨੇਹੁ ਲਗਾ ਰਕ ਸੇਤੀ ਦੇਖਨੇ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਰੰਗਿ ਹਸਹਿ ਰੰਗਿ ਰੋਵਹਿ ਚੁਪ
 ਭੀ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ॥ ਪਰਵਾਹ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਕੇਰੀ ਬਾੜ੍ਹੁ ਸਚੇ ਨਾਹ ॥ ਦਰਿ ਵਾਟ ਊਪਰਿ ਖਰਚੁ ਮੰਗਾ ਜਬੈ ਦੇਇ ਤ
 ਖਾਹਿ ॥ ਟੀਬਾਨੁ ਏਕੋ ਕਲਮ ਏਕਾ ਹਮਾ ਤੁਮਾ ਮੇਲੁ ॥ ਦਰਿ ਲਾਏ ਲੇਖਾ ਪੀਡਿ ਛੁਟੈ ਨਾਨਕਾ ਜਿਤ ਤੇਲੁ ॥

੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਕਰਣਾ ਕੀਓ ਕਲ ਆਪੇ ਹੀ ਤੈ ਧਾਰੀਐ ॥ ਦੇਖਹਿ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਧਰਿ ਕਚੀ ਪਕੀ
 ਸਾਰੀਐ ॥ ਜੋ ਆਡਿਆ ਸੋ ਚਲਸੀ ਸਭੁ ਕੋਈ ਆਈ ਵਾਰੀਐ ॥ ਜਿਸ ਕੇ ਜੀਅ ਪਰਾਣ ਹਹਿ ਕਿਤ ਸਾਹਿਬੁ
 ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥ ਆਪਣ ਹਥੀ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਕਾਜੁ ਸਵਾਰੀਐ ॥ ੨੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਏਹ
 ਕਿਨੇਹੀ ਆਸਕੀ ਟ੍ਰੂਜੈ ਲਗੈ ਜਾਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਆਸਕੁ ਕਾਂਢੀਐ ਸਦ ਹੀ ਰਹੈ ਸਮਾਡਿ ॥ ਚੰਗੈ ਚੰਗਾ ਕਰਿ ਮਨੇ
 ਮੰਦੈ ਮੰਦਾ ਹੋਡਿ ॥ ਆਸਕੁ ਏਹੁ ਨ ਆਖੀਐ ਜਿ ਲੇਖੈ ਵਰਤੈ ਸੋਡਿ ॥ ੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਸਲਾਮੁ ਜਬਾਬੁ ਟ੍ਰੋਵੈ ਕਰੇ
 ਸੁਨਫੁ ਘੁਥਾ ਜਾਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਟ੍ਰੋਵੈ ਕੂੜੀਆ ਥਾਡਿ ਨ ਕਾਈ ਪਾਡਿ ॥ ੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ
 ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲੀਐ ॥ ਜਿਤੁ ਕੀਤਾ ਪਾਈਐ ਆਪਣਾ ਸਾ ਘਾਲ ਬੁਰੀ ਕਿਤ ਘਾਲੀਐ ॥ ਮੰਦਾ ਮੂਲਿ ਨ
 ਕੀਚੰਡੀ ਦੇ ਲਮ੍ਮੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀਐ ॥ ਜਿਤ ਸਾਹਿਬ ਨਾਲਿ ਨ ਹਾਰੀਐ ਤੇਵੇਹਾ ਪਾਸਾ ਢਾਲੀਐ ॥ ਕਿਛੁ ਲਾਹੇ
 ਤੁਪਰਿ ਘਾਲੀਐ ॥ ੨੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਚਾਕਰੁ ਲਗੈ ਚਾਕਰੀ ਨਾਲੇ ਗਾਰਬੁ ਵਾਦੁ ॥ ਗਲਾ ਕਰੇ ਘਣੇਰੀਆ
 ਖਸਮ ਨ ਪਾਏ ਸਾਦੁ ॥ ਆਪੁ ਗਵਾਡਿ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਤਾ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਨੋ ਲਗਾ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ
 ਲਗਾ ਸੋ ਪਰਵਾਨੁ ॥ ੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਜੋ ਜੀਡਿ ਹੋਡਿ ਸੁ ਤਗਵੈ ਮੁਹ ਕਾ ਕਹਿਆ ਵਾਤ ॥ ਬੀਜੇ ਬਿਖੁ ਮੰਗੈ
 ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਕੇਖਹੁ ਏਹੁ ਨਿਆਤ ॥ ੨॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਨਾਲਿ ਇਆਣੇ ਦੋਸਤੀ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥ ਜੇਹਾ ਜਾਣੈ
 ਤੇਹੋ ਵਰਤੈ ਕੇਖਹੁ ਕੋ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥ ਵਸਤੂ ਅੰਦਰਿ ਵਸਤੁ ਸਮਾਵੈ ਟ੍ਰੂਜੀ ਹੋਵੈ ਪਾਸਿ ॥ ਸਾਹਿਬ ਸੇਤੀ ਹੁਕਮੁ ਨ ਚਲੈ
 ਕਹੀ ਬਣੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਕੂੜਿ ਕਮਾਣੈ ਕੂੜੋ ਹੋਵੈ ਨਾਨਕ ਸਿਫਤਿ ਵਿਗਾਸਿ ॥ ੩॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਨਾਲਿ ਇਆਣੇ
 ਦੋਸਤੀ ਵਡਾਰੁ ਸਿਤ ਨੇਹੁ ॥ ਪਾਣੀ ਅੰਦਰਿ ਲੀਕ ਜਿਤ ਤਿਸ ਦਾ ਥਾਤ ਨ ਥੇਹੁ ॥ ੪॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਹੋਡਿ ਇਆਣਾ
 ਕਰੇ ਕੰਮੁ ਆਣਿ ਨ ਸਕੈ ਰਾਸਿ ॥ ਜੇ ਇਕ ਅਧ ਚੰਗੀ ਕਰੇ ਟ੍ਰੂਜੀ ਭੀ ਕੇਰਾਸਿ ॥ ੫॥ ਪਤੜੀ ॥ ਚਾਕਰੁ ਲਗੈ
 ਚਾਕਰੀ ਜੇ ਚਲੈ ਖਸਮੈ ਭਾਡਿ ॥ ਹੁਰਮਤਿ ਤਿਸ ਨੋ ਅਗਲੀ ਓਹੁ ਵਜਹੁ ਮਿ ਟ੍ਰੂਣਾ ਖਾਡਿ ॥ ਖਸਮੈ ਕਰੇ ਬਰਾਬਰੀ
 ਫਿਰਿ ਗੈਰਤਿ ਅੰਦਰਿ ਪਾਡਿ ॥ ਵਜਹੁ ਗਵਾਏ ਅਗਲਾ ਸੁਹੇ ਸੁਹਿ ਪਾਣਾ ਖਾਡਿ ॥ ਜਿਸ ਦਾ ਦਿਤਾ ਖਾਵਣਾ ਤਿਸੁ
 ਕਹੀਐ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਚਲੰਡੀ ਨਾਲਿ ਖਸਮ ਚਲੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ੨੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਏਹ

ਕਿਨੇਹੀ ਦਾਤਿ ਆਪਸ ਤੇ ਜੋ ਪਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾ ਕਰਮਾਤਿ ਸਾਹਿਬ ਤੁਠੈ ਜੋ ਮਿਲੈ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਏਹ
 ਕਿਨੇਹੀ ਚਾਕਰੀ ਜਿਤੁ ਭਤ ਖਸਮ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਵਕੁ ਕਾਢੀਐ ਜਿ ਸੇਤੀ ਖਸਮ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਨਾਨਕ ਅੰਤ ਨ ਜਾਪਨੀ ਹਰਿ ਤਾ ਕੇ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਸਾਖਤੀ ਫਿਰਿ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਮਾਰ ॥ ਇਕਨਾ
 ਗਲੀ ਜੰਜੀਰੀਆ ਇਕਿ ਤੁਰੀ ਚੜਹਿ ਬਿਸੀਆਰ ॥ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ ਆਪਿ ਹਤ ਕੈ ਸਿਤ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ
 ਕਰਣਾ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਫਿਰਿ ਤਿਸ ਹੀ ਕਰਣੀ ਸਾਰ ॥੨੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਆਪੇ ਭਾੱਡੇ ਸਾਜਿਅਨੁ ਆਪੇ ਪੂਰਣੁ
 ਦੇਇ ॥ ਇਕਨੀ ਦੁਧੁ ਸਮਾਈਐ ਇਕਿ ਚੁਲੈ ਰਹਨਿ ਚੜੇ ॥ ਇਕਿ ਨਿਹਾਲੀ ਪੈ ਸਵਨਿ ਇਕਿ ਉਪਰਿ ਰਹਨਿ ਖੜੇ
 ॥ ਤਿਨਾ ਸਵਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਆਪੇ ਸਾਜੇ ਕਰੇ ਆਪਿ ਜਾਈ ਭਿ ਰਖੈ ਆਪਿ ॥
 ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਕੈ ਦੇਖੈ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥ ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਨਾਨਕਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ
 ॥ ਕਡੇ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ਕਿਛੁ ਕਹਣਾ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸੋ ਕਰਤਾ ਕਾਦਰ ਕਰੀਮੁ ਦੇ ਜੀਆ ਰਿਜਕੁ ਸੰਭਾਹਿ
 ॥ ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਧੁਰਿ ਛੋਡੀ ਤਿਨੈ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਏਕੀ ਬਾਹਰੀ ਹੋਰ ਟ੍ਰੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿ ਤਿਸੈ
 ਰਿਗਾਇ ॥੨੪॥੧॥ ਸੁਧੁ

੧੮ੰ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਾਂ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
 ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ॥ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਨਾਮਦੇਤ ਜੀਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਤ ॥ ਆਸਾ ਸੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ॥
 ਗੁਰ ਚਰਣ ਲਾਗਿ ਹਮ ਬਿਨਵਤਾ ਪ੍ਰਾਤ ਕਹ ਜੀਤ ਪਾਇਆ ॥ ਕਵਨ ਕਾਜਿ ਜਗੁ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ਕਹਹੁ
 ਮੋਹਿ ਸਮਝਾਇਆ ॥੧॥ ਦੇਵ ਕਰਹੁ ਦਿਆ ਮੋਹਿ ਮਾਰਗਿ ਲਾਵਹੁ ਜਿਤੁ ਐ ਬੰਧਨ ਤੂਟੈ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ
 ਦੁਖ ਫੇਡੇ ਕਰਮ ਸੁਖ ਜੀਅ ਜਨਮ ਤੇ ਛੂਟੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਇਆ ਫਾਸ ਬੰਧ ਨਹੀ ਫਾਰੈ ਅਰੁ ਮਨ ਸੁਨਿ
 ਨ ਲੂਕੇ ॥ ਆਪਾ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੁ ਨ ਚੀਨਿਆ ਇਨ ਬਿਧਿ ਅਭਿਤ ਨ ਚੂਕੇ ॥੨॥ ਕਹੀ ਨ ਉਪਜੈ ਉਪਜੀ ਜਾਣੈ
 ਭਾਵ ਅਭਾਵ ਬਿਹੂਣਾ ॥ ਤਦੈ ਅਸਤ ਕੀ ਮਨ ਬੁਧਿ ਨਾਸੀ ਤਤ ਸਦਾ ਸਹਜਿ ਲਿਵ ਲੀਣਾ ॥੩॥ ਜਿਤ ਪ੍ਰਤਿਬਿੰਬੁ
 ਬਿੰਬ ਕਤ ਮਿਲੀ ਹੈ ਤਦਕ ਕੁਂਭੁ ਬਿਗਰਾਨਾ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਐਸਾ ਗੁਣ ਭਰਮੁ ਭਾਗਾ ਤਤ ਮਨੁ ਸੁਨਿ ਸਮਾਨਾਂ

॥੪॥੧॥ ਆਸਾ ॥ ਗਜ ਸਾਢੇ ਤੈ ਤੈ ਧੋਤੀਆ ਤਿਹਰੇ ਪਾਇਨਿ ਤਗ ॥ ਗਲੀ ਜਿਨਾ ਜਪਮਾਲੀਆ ਲੋਟੇ ਹਥਿ
 ਨਿਵਗ ॥ ਓਡਿ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਨ ਆਖੀਅਹਿ ਬਾਨਾਰਸਿ ਕੇ ਠਗ ॥੧॥ ਐਸੇ ਸੰਤ ਨ ਮੋ ਕਤ ਭਾਵਹਿ ॥ ਢਾਲਾ ਸਿਉ
 ਪੇਡਾ ਗਟਕਾਵਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਸਨ ਮਾੜਿ ਚਰਾਵਹਿ ਊਪਰਿ ਕਾਠੀ ਧੋਡਿ ਜਲਾਵਹਿ ॥ ਬਸੁਧਾ ਖੋਦਿ ਕਰਹਿ
 ਦੁਡਿ ਚੂਲੇ ਸਾਰੇ ਮਾਣਸ ਖਾਵਹਿ ॥੨॥ ਓਡਿ ਪਾਪੀ ਸਦਾ ਫਿਰਹਿ ਅਪਰਾਧੀ ਮੁਖਹੁ ਅਪਰਸ ਕਹਾਵਹਿ ॥
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਫਿਰਹਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ਸਗਲ ਕੁਟੰਬ ਡੁਬਾਵਹਿ ॥੩॥ ਜਿਤੁ ਕੋ ਲਾਇਆ ਤਿਤ ਹੀ ਲਾਗਾ ਤੈਸੇ ਕਰਮ
 ਕਮਾਵੈ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੈ ਪੁਨਰਧਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥੪॥੨॥ ਆਸਾ ॥ ਬਾਪਿ ਦਿਲਾਸਾ ਮੇਰੇ
 ਕੀਨਾ ॥ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਦੀਨਾ ॥ ਤਿਸੁ ਬਾਪ ਕਤ ਕਿਤ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀ ॥ ਆਗੈ ਗਇਆ ਨ ਬਾਜੀ
 ਹਾਰੀ ॥੧॥ ਸੁਈ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ਹਤ ਖਰਾ ਸੁਖਾਲਾ ॥ ਪਹਿਰਤ ਨਹੀ ਦਗਲੀ ਲਗੈ ਨ ਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਲਿ
 ਤਿਸੁ ਬਾਪੈ ਜਿਨਿ ਹਤ ਜਾਇਆ ॥ ਪੰਚਾ ਤੇ ਮੇਰਾ ਸੰਗੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਪੰਚ ਮਾਰਿ ਪਾਵਾ ਤਲਿ ਦੀਨੇ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ
 ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਭੀਨੇ ॥੨॥ ਪਿਤਾ ਹਮਾਰੋ ਵਡ ਗੋਸਾਈ ॥ ਤਿਸੁ ਪਿਤਾ ਪਹਿ ਹਤ ਕਿਤ ਕਰਿ ਜਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੇ
 ਤ ਮਾਰਗੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਜਗਤ ਪਿਤਾ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥੩॥ ਹਤ ਪੂਰੂ ਤੇਰਾ ਤੂੰ ਬਾਪੁ ਮੇਰਾ ॥ ਏਕੈ ਠਾਹਰ ਦੁਹਾ
 ਬਚੇਰਾ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਨਿ ਏਕੋ ਬ੍ਰਾਂਝਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸ੍ਰਾਂਝਿਆ ॥੪॥੩॥ ਆਸਾ ॥ ਇਕਤੁ ਪਤਰਿ
 ਭਰਿ ਤੁਰਕਟ ਕੁਰਕਟ ਇਕਤੁ ਪਤਰਿ ਭਰਿ ਪਾਨੀ ॥ ਆਸਿ ਪਾਸਿ ਪੰਚ ਜੋਗੀਆ ਬੈਠੇ ਬੀਚਿ ਨਕਟ ਦੇ ਰਾਨੀ ॥
 ੧॥ ਨਕਟੀ ਕੋ ਠਨਗਨੁ ਬਾਡਾ ਡੁੰ ॥ ਕਿਨਹਿ ਬਿਕੇਕੀ ਕਾਟੀ ਤੂੰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਗਲ ਮਾਹਿ ਨਕਟੀ ਕਾ ਵਾਸਾ
 ਸਗਲ ਮਾਰਿ ਅਤਹੇਰੀ ॥ ਸਗਲਿਆ ਕੀ ਹਤ ਬਹਿਨ ਭਾਨਜੀ ਜਿਨਹਿ ਕਰੀ ਤਿਸੁ ਚੇਰੀ ॥੨॥ ਹਮਰੇ ਭਰਤਾ
 ਬਡੇ ਬਿਕੇਕੀ ਆਪੇ ਸੰਤੁ ਕਹਾਵੈ ॥ ਓਹੁ ਹਮਾਰੈ ਮਾਥੈ ਕਾਇਮੁ ਅਤਰੁ ਹਮਾਰੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥੩॥ ਨਾਕਹੁ ਕਾਟੀ
 ਕਾਨਹੁ ਕਾਟੀ ਕਾਟਿ ਕੂਟਿ ਕੈ ਡਾਰੀ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਸੰਤਨ ਕੀ ਬੈਰਨਿ ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਕੀ ਪਿਆਰੀ ॥੪॥੪॥
 ਆਸਾ ॥ ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਤਪੀ ਸੰਨਿਆਸੀ ਬਹੁ ਤੀਰਥ ਭਰਮਨਾ ॥ ਲੁੰਜਿਤ ਮੁੰਜਿਤ ਮੋਨਿ ਜਟਾਧਰ ਅੰਤਿ ਤੱਤ ਮਰਨਾ ॥
 ੧॥ ਤਾ ਤੇ ਸੇਵੀਅਲੇ ਰਾਮਨਾ ॥ ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਿਤੁ ਜਾ ਕੈ ਕਹਾ ਕਰੈ ਜਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਗਮ ਨਿਰਗਮ

जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ तंत मंत सभ अउखध जानहि अंति तऊ मरना ॥२॥ राज भोग
 अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना ॥ पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥३॥ बेद पुरान
 सिंमृति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥ कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥४॥५॥ आसा ॥
 फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥ पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥१॥
 राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥ किनै बूझनहारै खाए ॥२॥ रहाउ ॥ बैठि सिंधु घरि पान लगावै
 धीस गलउरे लिआवै ॥ घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥२॥ बंस को पूतु
 बीआहन चलिआ सुइने मंडप छाए ॥ रूप कनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंध गुन गाए ॥३॥ कहत कबीर
 सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइआ ॥ कछूआ कहै अंगार भि लोउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥४॥६॥
 आसा ॥ बटूआ एकु बहतरि आधारी एको जिसहि दुआरा ॥ नवै खंड की पृथमी मागै सो जोगी जगि
 सारा ॥१॥ औसा जोगी नउ निधि पावै ॥ तल का ब्रह्मु ले गगनि चरावै ॥२॥ रहाउ ॥ खिंथा गिआन
 धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥ पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥२॥
 दइआ फाहुरी काइआ करि धूई दृसटि की अगनि जलावै ॥ तिस का भाउ लए रिद अंतरि चहु जुग
 ताड़ी लावै ॥३॥ सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना ॥ कहु कबीर जे किरपा धारै देइ
 सचा नीसाना ॥४॥७॥ आसा ॥ ह्लिटू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥ दिल महि सोचि
 बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥१॥ काजी तै कवन कतेब बखानी ॥ पह्लत गुनत औसे सभ
 मारे किनहूं खबरि न जानी ॥२॥ रहाउ ॥ सकति सनेहु करि सुन्नति करीअै मै न बदउगा भाई ॥
 जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥२॥ सुन्नति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का
 किआ करीअै ॥ अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते ह्लिटू ही रहीअै ॥३॥ छाडि कतेब रामु भजु बउरे
 जुलम करत है भारी ॥ कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥४॥८॥ आसा ॥ जब लगु

तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥ तेल जले बाती ठहरानी सूना मंदरु होई ॥੧॥ रे
बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥ तू राम नामु जपि सोई ॥੧॥ रहाउ ॥ का की मात पिता कहु का को
कवन पुरख की जोई ॥ घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥੨॥ देहरी बैठी माता रोवै
खटीआ ले गए भाई ॥ लट छिटकाए तिरीआ रोवै ह्यसु डिकेला जाई ॥੩॥ कहत कबीर सुनहु रे
संतहु भै सागर कै ताई ॥ इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥੪॥੬॥ दुतुके

੧੮੦ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਆਸਾ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੇ ਚਤੁਪਦੇ ਇਕਤੁਕੇ ॥ ਸਨਕ ਸਨਦ ਅਤੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥
ਬੇਦ ਪਡੇ ਪਡਿ ਬ੍ਰਹਮੇ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕਾ ਬਿਲੋਵਨਾ ਬਿਲੋਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਸਹਜਿ ਬਿਲੋਵਹੁ
ਜੈਸੇ ਤਤੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਨੁ ਕਰਿ ਮਟੁਕੀ ਮਨ ਮਾਹਿ ਬਿਲੋਈ ॥ ਇਸੁ ਮਟੁਕੀ ਮਹਿ ਸਬਦੁ ਸੰਜੋਈ
॥੨॥ ਹਰਿ ਕਾ ਬਿਲੋਵਨਾ ਮਨ ਕਾ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਵੈ ਅੰਮ੍ਰਤ ਧਾਰਾ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਨਦਰਿ
ਕਰੇ ਜੇ ਮੀਰਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਗਿ ਉਤਰੇ ਤੀਰਾ ॥੪॥੧॥੧੦॥ ਆਸਾ ॥ ਬਾਤੀ ਸ੍ਰ੍ਕੀ ਤੇਲੁ ਨਿਖੂਟਾ ॥ ਮੰਦਲੁ ਨ
ਬਾਜੈ ਨਟੁ ਪੈ ਸੂਤਾ ॥੧॥ ਬੁਝਿ ਗੈ ਅਗਨਿ ਨ ਨਿਕਸਿਐ ਥੁੰਆ ॥ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਏਕੁ ਅਕਰੁ ਨਹੀ ਦ੍ਰਾਓ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਟੂਟੀ ਤੰਤੁ ਨ ਬਜੈ ਰਖਾਬੁ ॥ ਭੂਲਿ ਬਿਗਾਰਿਐ ਅਪਨਾ ਕਾਜੁ ॥੨॥ ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਕਹਨੁ
ਕਹਾਵਨੁ ॥ ਸਮਝਿ ਪਰੀ ਤਤ ਬਿਸਰਿਐ ਗਾਵਨੁ ॥੩॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਪੰਚ ਜੋ ਚੂਰੇ ॥ ਤਿਨ ਤੇ ਨਾਹਿ ਪਰਮ ਪਦੁ
ਦ੍ਰੌ ॥੪॥੨॥੧੧॥ ਆਸਾ ॥ ਸੁਤੁ ਅਪਰਾਧ ਕਰਤ ਹੈ ਜੇਤੇ ॥ ਜਨਨੀ ਚੀਤਿ ਨ ਰਾਖਸਿ ਤੇਤੇ ॥੧॥ ਰਾਮੈਆ
ਹਤ ਬਾਰਿਕੁ ਤੇਰਾ ॥ ਕਾਹੇ ਨ ਖੰਡਸਿ ਅਕਗਨੁ ਮੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੇ ਅਤਿ ਕ੍ਰੋਪ ਕਰੇ ਕਰਿ ਧਾਇਆ ॥ ਤਾ
ਭੀ ਚੀਤਿ ਨ ਰਾਖਸਿ ਮਾਇਆ ॥੨॥ ਚਿੰਤ ਭਵਨਿ ਮਨੁ ਪਰਿਐ ਹਮਾਰਾ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰਾ
॥੩॥ ਦੇਹਿ ਬਿਮਲ ਮਤਿ ਸਦਾ ਸਰੀਰਾ ॥ ਸਹਜਿ ਸਹਜਿ ਗੁਨ ਰਵੈ ਕਬੀਰਾ ॥੪॥੩॥੧੨॥ ਆਸਾ ॥ ਹਜ
ਹਮਾਰੀ ਗੋਮਤੀ ਤੀਰ ॥ ਜਹਾ ਬਸਹਿ ਪੀਤੰਬਰ ਪੀਰ ॥੧॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਿਆ ਖੂਬੁ ਗਾਵਤਾ ਹੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ

मेरै मनि भावता है ॥१॥ रहाउ ॥ नारद सारद करहि खवासी ॥ पासि बैठी बीबी कवला दासी ॥२॥ कंठे माला जिहवा रामु ॥ सद्घास नामु लै लै करउ सलामु ॥३॥ कहत कबीर राम गुन गावउ ॥ हिंटू तुरक दोऊ समझावउ ॥४॥४॥१३॥

आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे ६ दुतुके ५ ੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਾਤੀ ਤੌਰੈ ਮਾਲਿਨੀ ਪਾਤੀ ਪਾਤੀ ਜੀਉ ॥ ਜਿਸੁ ਪਾਹਨ ਕਤ ਪਾਤੀ ਤੌਰੈ ਸੋ ਪਾਹਨ ਨਿਰਜੀਉ ॥੧॥ ਭੂਲੀ ਮਾਲਿਨੀ ਹੈ ਏਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਜਾਗਤਾ ਹੈ ਟੇਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਾਤੀ ਬਿਸਨੁ ਡਾਰੀ ਫੂਲ ਸੰਕਰਟੇਤ ॥ ਤੀਨਿ ਟੇਵ ਪ੍ਰਤਖਿ ਤੋਰਹਿ ਕਰਹਿ ਕਿਸ ਕੀ ਸੇਤ ॥੨॥ ਪਾਖਾਨ ਗਢਿ ਕੈ ਮੂਰਤਿ ਕੀਨੀ ਦੇ ਕੈ ਛਾਤੀ ਪਾਤ ॥ ਜੇ ਏਹ ਮੂਰਤਿ ਸਾਚੀ ਹੈ ਤਤ ਗੁਣਹਾਰੇ ਖਾਤ ॥੩॥ ਭਾਤੁ ਪਹਿਤਿ ਅਰੁ ਲਾਪਸੀ ਕਰਕਰਾ ਕਾਸਾਰੁ ॥ ਭੋਗਨਹਾਰੇ ਭੋਗਿਆ ਇਸੁ ਮੂਰਤਿ ਕੇ ਮੁਖ ਛਾਰੁ ॥੪॥ ਮਾਲਿਨਿ ਭੂਲੀ ਜਗੁ ਭੁਲਾਨਾ ਹਮ ਭੁਲਾਨੇ ਨਾਹਿ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਹਮ ਰਾਮ ਰਾਖੇ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥੫॥੧॥੧੪॥ ਆਸਾ ॥ ਬਾਰਹ ਬਰਸ ਬਾਲਪਨ ਬੀਤੇ ਬੀਸ ਬਰਸ ਕਛੁ ਤਪੁ ਨ ਕੀਓ ॥ ਤੀਸ ਬਰਸ ਕਛੁ ਟੇਵ ਨ ਪ੍ਰਯਾ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਨਾ ਬਿਰਥਿ ਭਿੱਡਿਓ ॥੬॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤੇ ਜਨਮੁ ਗਿੱਡਿਓ ॥ ਸਾਡਿਲੁ ਸੋਖਿ ਭੁਜੰ ਬਲਿੱਡਿਓ ॥੭॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੂਕੇ ਸਰਵਰਿ ਪਾਲਿ ਬਿੰਧਾਵੈ ਲੂਣੈ ਖੇਤਿ ਹਥ ਵਾਰਿ ਕਰੈ ॥ ਆਡਿਓ ਚੌਰੁ ਤੁਰੰਤਹ ਲੈ ਗਿੱਡਿਓ ਮੇਰੀ ਰਾਖਤ ਮੁਗਧੁ ਫਿਰੈ ॥੮॥ ਚਰਨ ਸੀਸੁ ਕਰ ਕੰਪਨ ਲਾਗੇ ਨੈਨੀ ਨੀਰੁ ਅਸਾਰ ਬਹੈ ॥ ਜਿਹਵਾ ਬਚਨੁ ਸੁਧੁ ਨਹੀ ਨਿਕਸੈ ਤਬ ਰੇ ਧਰਮ ਕੀ ਆਸ ਕਰੈ ॥੯॥ ਹਰਿ ਜੀਉ ਕ੃ਪਾ ਕਰੈ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੀਓ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਾਡਿਓ ਅੰਤੇ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਚਲਿਓ ॥੧੦॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਅਨੁ ਧਨੁ ਕਛੂਐ ਲੈ ਨ ਗਿੱਡਿਓ ॥ ਆਈ ਤਲਬ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ਕੀ ਮਾਡਿਆ ਮੰਦਰ ਛੋਡਿ ਚਲਿਓ ॥੧੧॥੨॥੧੫॥ ਆਸਾ ॥ ਕਾਹੂ ਦੀਨੇ ਪਾਟ ਪਟਂਬਰ ਕਾਹੂ ਪਲਘ ਨਿਵਾਰਾ ॥ ਕਾਹੂ ਗਰੀ ਗੋਦਰੀ ਨਾਹੀ ਕਾਹੂ ਖਾਨ ਪਰਾਰਾ ॥੧॥ ਅਹਿਰਖ ਵਾਦੁ ਨ ਕੀਜੈ ਰੇ ਮਨ ॥ ਸੁਕੂਤੁ ਕਰਿ ਕਰਿ ਲੀਜੈ ਰੇ ਮਨ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੁਮਾਰੈ ਏਕ ਜੁ ਮਾਟੀ ਗ੍ਰੰਧੀ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਬਾਨੀ ਲਾਈ ॥ ਕਾਹੂ ਮਹਿ ਮੋਤੀ ਮੁਕਤਾਹਲ ਕਾਹੂ ਬਿਆਧਿ ਲਗਾਈ ॥੩॥ ਸੂਮਹਿ ਧਨੁ

राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा ॥ जम का डंडु मूँड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥३॥
 हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥ जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मनि वसाई
 ॥४॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥ चिरगट फारि चटारा लै गडिओ तरी तागरी छूटी
 ॥५॥३॥१६॥ आसा ॥ हम मसकीन खुदाई बंदे तुम राजसु मनि भावै ॥ अलह अवलि दीन को साहिबु
 जोरु नही फुरमावै ॥१॥ काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥२॥ रहाउ ॥ रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा
 भिसति न होई ॥ सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥२॥ निवाज सोई जो निआउ बिचारै
 कलमा अकलहि जानै ॥ पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥३॥ खसमु पछानि तरस
 करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी ॥ आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥४॥
 माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रह्मु पछाना ॥ कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना
 ॥५॥४॥१७॥ आसा ॥ गगन नगरि इक बूँद न बरखै नादु कहा जु समाना ॥ पारब्रह्म परमेसुर माधो
 परम ह्यसु ले सिधाना ॥१॥ बाबा बोलते ते कहा गए देही के संगि रहते ॥ सुरति माहि जो निरते करते
 कथा बारता कहते ॥२॥ रहाउ ॥ बजावनहारो कहा गडिओ जिनि इहु मंदरु कीना ॥ साखी सबदु
 सुरति नही उपजै खिंचि तेजु सभु लीना ॥२॥ स्रवनन बिकल भए संगि तेरे इंद्री का बलु थाका ॥ चरन
 रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥३॥ थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥ थाका
 मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥४॥ मिरतक भए दसै बंद छूटे मिल भाई सभ छोरे ॥ कहत
 कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥५॥५॥१८॥ आसा इकतुके ४ ॥ सरपनी ते ऊपरि नही
 बलीआ ॥ जिनि ब्रह्मा बिसनु महादेउ छलीआ ॥१॥ मारु मारु स्रपनी निरमल जलि पैठी ॥ जिनि
 तृभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥२॥ रहाउ ॥ स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई ॥ जिनि साचु
 पछानिआ तिनि स्रपनी खाई ॥२॥ स्रपनी ते आन छूछ नही अवरा ॥ स्रपनी जीती कहा करै जमरा

॥੩॥ ਇਹ ਸੁਪਨੀ ਤਾ ਕੀ ਕੀਤੀ ਹੋਈ ॥ ਬਲੁ ਅਵਲੁ ਕਿਆ ਇਸ ਤੇ ਹੋਈ ॥੪॥ ਇਹ ਬਸਤੀ ਤਾ ਬਸਤ ਸਰੀਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਹਜਿ ਤਰੇ ਕਬੀਰਾ ॥੫॥੬॥੧੬॥ ਆਸਾ ॥ ਕਹਾ ਸੁਆਨ ਕਤ ਸਿਮੂਤਿ ਸੁਨਾਏ ॥ ਕਹਾ ਸਾਕਤ ਪਹਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥੧॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਮੇ ਰਮੀ ਰਹੀਐ ॥ ਸਾਕਤ ਸਿਤ ਭੂਲਿ ਨਹੀ ਕਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਊਆ ਕਹਾ ਕਪੂਰ ਚਰਾਏ ॥ ਕਹ ਬਿਸੀਅਰ ਕਤ ਦ੍ਰਿਧੁ ਪੀਆਏ ॥੨॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲਿ ਬਿਕੇਕ ਬੁਧਿ ਹੋਈ ॥ ਪਾਰਸੁ ਪਰਸਿ ਲੋਹਾ ਕੰਚਨੁ ਸੋਈ ॥੩॥ ਸਾਕਤੁ ਸੁਆਨੁ ਸਭੁ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ ॥੪॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਲੈ ਲੈ ਨੀਮੁ ਸਿੰਚਾਈ ॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਤਾਕੇ ਸਹਜੁ ਨ ਜਾਈ ॥੫॥੭॥੨੦॥ ਆਸਾ ॥ ਲਮਕਾ ਸਾ ਕੋਟੁ ਸਮੁੰਦ ਸੀ ਖਾਈ ॥ ਤਿਹ ਰਾਵਨ ਘਰ ਖਬਰਿ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥ ਕਿਆ ਮਾਗਤ ਕਿਛੁ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਈ ॥ ਦੇਖਤ ਨੈਨ ਚਲਿਆਂ ਜਗੁ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਕੁ ਲਖੁ ਪ੍ਰਤ ਸਵਾ ਲਖੁ ਨਾਤੀ ॥ ਤਿਹ ਰਾਵਨ ਘਰ ਦੀਆ ਨ ਬਾਤੀ ॥੨॥ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਜਾ ਕੇ ਤਪਤ ਰਸੋਈ ॥ ਬੈਸਾਂਤਰੁ ਜਾ ਕੇ ਕਪਰੇ ਧੋਈ ॥੩॥ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮੈ ਨਾਮਿ ਬਸਾਈ ॥ ਅਸਥਿਰੁ ਰਹੈ ਨ ਕਤਹੁੰ ਜਾਈ ॥੪॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਲੋਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੫॥੮॥੨੧॥ ਆਸਾ ॥ ਪਹਿਲਾ ਪ੍ਰਤੁ ਪਿਛੈਰੀ ਮਾਈ ॥ ਗੁਰੁ ਲਾਗੇ ਚੇਲੇ ਕੀ ਪਾਈ ॥੧॥ ਏਕੁ ਅਚੰਭਤ ਸੁਨਹੁ ਤੁਸ੍ ਭਾਈ ॥ ਦੇਖਤ ਸਿੰਘੁ ਚਰਾਵਤ ਗਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਲ ਕੀ ਮਛੁਲੀ ਤਰਵਰਿ ਬਿਆਈ ॥ ਦੇਖਤ ਕੁਤਰਾ ਲੈ ਗੈਂਡ ਬਿਲਾਈ ॥੨॥ ਤਲੈ ਰੇ ਬੈਸਾ ਊਪਰਿ ਸੂਲਾ ॥ ਤਿਸ ਕੈ ਪੇਡਿ ਲਗੇ ਫਲ ਫੂਲਾ ॥੩॥ ਧੌਰੈ ਚਰਿ ਭੈਸ ਚਰਾਵਨ ਜਾਈ ॥ ਬਾਹਰਿ ਬੈਲੁ ਗੋਨਿ ਘਰਿ ਆਈ ॥੪॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਜੁ ਇਸ ਪਦ ਬੂੜੈ ॥ ਰਾਮ ਰਸਤ ਤਿਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੂੜੈ ॥੫॥੬॥੨੨॥ ਬਾਈਸ ਚਤੁਪਦੇ ਤਥਾ ਪੰਚਪਦੇ

ਆਸਾ ਸੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੇ ਤਿਪਦੇ ੮ ਦੁਤੁਕੇ ੭ ਇਕਤੁਕਾ ੧

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਬਿੰਦੁ ਤੇ ਜਿਨਿ ਪਿੰਡੁ ਕੀਆ ਅਗਨਿ ਕੁੰਡ ਰਹਾਇਆ ॥ ਦਸ ਮਾਸ ਮਾਤਾ ਤਦਰਿ ਰਾਖਿਆ ਬਹੁਰਿ ਲਾਗੀ ਮਾਇਆ ॥੧॥ ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਾਹੇ ਕਤ ਲੋਭਿ ਲਾਗੇ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਖੋਇਆ ॥ ਪੂਰਬ ਜਨਮਿ ਕਰਮ ਭੂਮਿ ਬੀਜੁ ਨਾਹੀ ਬੋਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਰਿਕ ਤੇ ਬਿਰਧਿ ਭਵਿਆ ਹੋਨਾ ਸੋ ਹੋਇਆ ॥ ਜਾ ਜਮੁ ਆਇ ਝੋਟ ਪਕਰੈ ਤਬਹਿ ਕਾਹੇ

रोइआ ॥२॥ जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा ॥ बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा
 ॥३॥१॥२३॥ आसा ॥ तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥ राम राइ सिउ भावरि
 लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥१॥ गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥ मेरे गृह आए राजा राम
 भतारा ॥१॥ रहाउ ॥ नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रह्म गिआन उचारा ॥ राम राइ सो दूलहु
 पाइओ अस बडभाग हमारा ॥२॥ सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानाँ ॥ कहि कबीर
 मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥३॥२॥२४॥ आसा ॥ सासु की दुखी ससुर की पिआरी
 जेठ के नामि डरउ रे ॥ सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरउ रे ॥१॥ मेरी मति बउरी मै रामु
 बिसारिओ किन बिधि रहनि रहउ रे ॥ सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु का सउ कहउ रे ॥१॥ रहाउ
 ॥ बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी ॥ बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी
 ॥२॥ कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ॥ झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम
 रमत सुखु पाइआ ॥३॥३॥२५॥ आसा ॥ हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥ तुम तउ
 बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥१॥ मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा
 ॥ जम दुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥१॥ रहाउ ॥ हम गोरू तुम गुआर गुसाई
 जनम जनम रखवारे ॥ कबहूं न पारि उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ॥२॥ तूं बामनु मै कासीक
 जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ तुम् तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥३॥४॥२६॥ आसा ॥
 जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं ॥ साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं
 ॥१॥ बाबा माइआ मोह हितु कीन् ॥ जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन् ॥१॥ रहाउ ॥ नैन देखि पतंगु
 उरझै पसु न देखै आगि ॥ काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥२॥ करि बिचारु बिकार
 परहरि तरन तारन सोइ ॥ कहि कबीर जगजीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥३॥५॥२७॥ आसा ॥

जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥ तागा तंतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ॥१॥
 अब मोहि नाचनो न आवै ॥ मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु माडिआ लै जारी
 तृसना गागरि फूटी ॥ काम चोलना भडिआ है पुराना गडिआ भरमु सभु छूटी ॥२॥ सरब भूत एकै
 करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥ कहि कबीर मै पूरा पाडिआ भए राम परसादा ॥३॥६॥२८॥
 आसा ॥ रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥ आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झाख मारै
 ॥१॥ काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥ खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते
 जनमु अलेखै ॥१॥ रहाउ ॥ साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ॥ पढे गुने नाही कछु बउरे
 जउ दिल महि खबरि न होई ॥२॥ अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥ छिटू तुरक
 दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥३॥७॥२६॥ आसा ॥ तिपदा ॥ इकतुका ॥ कीओ सिंगारु मिलन के
 ताई ॥ हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥१॥ हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥ राम बडे मै तनक
 लहुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ धन पिर एकै संगि बसेरा ॥ सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥२॥ धंनि सुहागनि जो
 पीअ भावै ॥ कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥३॥८॥३०॥

आसा सी कबीर जीउ के दुपदे

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥ सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई
 ॥१॥ हरि की कथा अनाहद बानी ॥ ह्लसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥१॥ रहाउ ॥ कहि कबीर हीरा अस
 देखिओ जग मह रहा समाई ॥ गुपता हीरा प्रगट भडिओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥२॥१॥३॥
 आसा ॥ पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेर्हौ बुरी ॥ अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे
 उदरि धरी ॥१॥ भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥ जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥१॥ रहाउ ॥
 कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ ॥ लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिओ

॥२॥२॥३२॥ आसा ॥ मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥ ले राखिओ राम जनीआ नाउ ॥१॥ इन्
 मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥ बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥२॥ रहाउ ॥ कहतु कबीर सुनहु मेरी
 माई ॥ इन् मुंडीअन मेरी जाति गवाई ॥२॥३॥३३॥ आसा ॥ रहु रहु री बहुरीआ धूंधटु जिनि
 काढै ॥ अंत की बार लहैगी न आढै ॥१॥ रहाउ ॥ धूंधटु काढि गई तेरी आगै ॥ उन की गैलि तोहि
 जिनि लागै ॥१॥ धूंधट काढे की इहै बडाई ॥ दिन दस पाँच बहू भले आई ॥२॥ धूंधटु तेरो तउ परि
 साचै ॥ हरि गुन गाइ कूदहि अरु नाचै ॥३॥ कहत कबीर बहू तब जीतै ॥ हरि गुन गावत जनमु
 बितीतै ॥४॥१॥३४॥ आसा ॥ करवतु भला न करवट तेरी ॥ लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥१॥ हउ
 वारी मुखु फेरि पिआरे ॥ करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे ॥१॥ रहाउ ॥ जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ
 ॥ पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥२॥ हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥ तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥
 ३॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥ अब तुमरी परतीति न होई ॥४॥२॥३५॥ आसा ॥ कोरी को काहू
 मरमु न जानाँ ॥ सभु जगु आनि तनाइओ तानाँ ॥१॥ रहाउ ॥ जब तुम सुनि ले बेद पुरानाँ ॥ तब हम
 इतनकु पसरिओ तानाँ ॥१॥ धरनि अकास की करगह बनाई ॥ चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥२॥
 पाई जोरि बात इक कीनी तह ताँती मनु मानाँ ॥ जोलाहे घरु अपना चीनाँ घट ही रामु पछानाँ ॥३॥
 कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥ सूतै सूत मिलाए कोरी ॥४॥३॥३६॥ आसा ॥ अंतरि मैलु जे तीरथ नावै
 तिसु बैकुंठ न जानाँ ॥ लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥१॥ पूजहु रामु एकु ही देवा ॥ साचा
 नावणु गुर की सेवा ॥१॥ रहाउ ॥ जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ जैसे मेंडुक
 तैसे ओड़ि नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥२॥ मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बाँचिआ जाई ॥
 हरि का संतु मरै हाड़बै त सगली सैन तराई ॥३॥ दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै
 निरंकारा ॥ कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥४॥४॥३७॥

੧੭॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਸ੍ਰੀ ਨਾਮਦੇਉ ਜੀ ਕੀ

ਏਕ ਅਨੇਕ ਬਿਆਪਕ ਪੂਰਕ ਜਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਸੋਈ ॥ ਮਾਇਆ ਚਿਨ੍ਹ ਬਚਿਨ੍ਹ ਬਿਮੋਹਿਤ ਬਿਰਲਾ ਕ੍ਰੂਜੈ ਕੋਈ ॥੧॥
 ਸਭੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ਹੈ ਸਭੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ਹੈ ਗੋਬਿੰਦ ਬਿਨੁ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ॥ ਸ੍ਰੂਤੁ ਏਕੁ ਮਣਿ ਸਤ ਸਵਾਸ ਜੈਸੇ ਓਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਲ ਤਰਂਗ ਅਥ ਫੇਨ ਬੁਦਕੁਦਾ ਜਲ ਤੇ ਭਿੰਨ ਨ ਹੋਈ ॥ ਇਹੁ ਪਰਪਂਚੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਲੀਲਾ
 ਬਿਚਰਤ ਆਨ ਨ ਹੋਈ ॥੨॥ ਮਿਥਿਆ ਭਰਮੁ ਅਥ ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਸਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਜਾਨਿਆ ॥ ਸੁਕੂਤ ਮਨਸਾ
 ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੀ ਜਾਗਤ ਹੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੩॥ ਕਹਤ ਨਾਮਦੇਉ ਹਰਿ ਕੀ ਰਚਨਾ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਘਟ
 ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਕੇਵਲ ਏਕ ਸੁਰਾਰੀ ॥੪॥੧॥ ਆਸਾ ॥ ਆਨੀਲੇ ਕੁੰਭ ਭਰਾਈਲੇ ਊਦਕ ਠਾਕੁਰ
 ਕਤ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰਤ ॥ ਬਿਡਿਆਲੀਸ ਲਖ ਜੀ ਜਲ ਮਹਿ ਹੋਤੇ ਬੀਠਲੁ ਭੈਲਾ ਕਾਇ ਕਰਤ ॥੧॥ ਜਨ ਜਾਤ
 ਤਤ ਬੀਠਲੁ ਭੈਲਾ ॥ ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਕਰੇ ਸਦ ਕੇਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਨੀਲੇ ਫੂਲ ਪਰੋਈਲੇ ਮਾਲਾ ਠਾਕੁਰ ਕੀ
 ਹਤ ਪ੍ਰਯ ਕਰਤ ॥ ਪਹਿਲੇ ਬਾਸੁ ਲੰਝੈ ਹੈ ਭਵਰਹ ਬੀਠਲੁ ਭੈਲਾ ਕਾਇ ਕਰਤ ॥੨॥ ਆਨੀਲੇ ਦ੍ਰਿੜੁ ਰੀਧਾਈਲੇ ਖੀਰਾਂ
 ਠਾਕੁਰ ਕਤ ਨੈਕੇਦੁ ਕਰਤ ॥ ਪਹਿਲੇ ਦ੍ਰਿੜੁ ਬਿਟਾਰਿਆਂ ਬਛੈ ਬੀਠਲੁ ਭੈਲਾ ਕਾਇ ਕਰਤ ॥੩॥ ਈਖੈ ਬੀਠਲੁ ਊਖੈ
 ਬੀਠਲੁ ਬੀਠਲ ਬਿਨੁ ਸੰਸਾਰੁ ਨਹੀਂ ॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਣਕੈ ਪ੍ਰਾਰੰਥੁ ਰਹਿਆਂ ਤ੍ਰਿੰ ਸਰਬ ਮਹੀ ॥੪॥੨॥ ਆਸਾ
 ॥ ਮਨੁ ਮੇਰੋ ਗਜੁ ਜਿਹਬਾ ਮੇਰੀ ਕਾਤੀ ॥ ਮਧਿ ਮਧਿ ਕਾਟਤ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥੧॥ ਕਹਾ ਕਰਤ ਜਾਤੀ ਕਹ ਕਰਤ ਪਾਤੀ ॥
 ਰਾਮ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਰਾਂਗਨਿ ਰਾਂਗਤ ਸੀਵਨਿ ਸੀਵਤ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ
 ਘਰੀਆਂ ਨ ਜੀਵਤ ॥੨॥ ਭਗਤਿ ਕਰਤ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਅਪਨਾ ਖਸਮੁ ਧਿਆਵਤ ॥੩॥
 ਸੁਇਨੇ ਕੀ ਸ੍ਰੂਈ ਰੂਪੇ ਕਾ ਧਾਗਾ ॥ ਨਾਮੇ ਕਾ ਚਿਤੁ ਹਰਿ ਸਤ ਲਾਗਾ ॥੪॥੩॥ ਆਸਾ ॥ ਸਾਪੁ ਕੁੰਚ ਛੋਡੈ ਬਿਖੁ
 ਨਹੀਂ ਛਾਡੈ ॥ ਊਦਕ ਮਾਹਿ ਜੈਸੇ ਕਗੁ ਧਿਆਨੁ ਮਾਡੈ ॥੧॥ ਕਾਹੇ ਕਤ ਕੀਜੈ ਧਿਆਨੁ ਜਪਨਾ ॥ ਜਬ ਤੇ ਸੁਧੁ
 ਨਾਹੀਂ ਮਨੁ ਅਪਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਿੰਘਚ ਭੋਜਨੁ ਜੋ ਨਾਲੁ ਜਾਨੈ ॥ ਅੈਸੇ ਹੀ ਠਗਦੇਉ ਬਖਾਨੈ ॥੨॥ ਨਾਮੇ ਕੇ

ਸੁਆਮੀ ਲਾਹਿ ਲੇ ਝਗਰਾ ॥ ਰਾਮ ਰਸਾਇਨ ਪੀਤ ਰੇ ਦਗਰਾ ॥੩॥੪॥ ਆਸਾ ॥ ਪਾਰਕ੍ਰਹਮੁ ਜਿ ਚੀਨ੍ਸੀ ਆਸਾ
ਤੇ ਨ ਭਾਵਸੀ ॥ ਰਾਮਾ ਭਗਤਹ ਚੇਤੀਅਲੇ ਅਚਿੰਤ ਮਨੁ ਰਾਖਸੀ ॥੧॥ ਕਈ ਮਨ ਤਰਹਿਗਾ ਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ਸਾਗਰੁ
ਬਿਖੈ ਕੋ ਬਨਾ ॥ ਝੂਠੀ ਮਾਇਆ ਦੇਖਿ ਕੈ ਭੂਲਾ ਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਛੀਪੇ ਕੇ ਘਰਿ ਜਨਮੁ ਦੈਲਾ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੁ
ਭੈਲਾ ॥ ਸੰਤਹ ਕੈ ਪਰਸਾਦਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਭੇਟੁਲਾ ॥੨॥੫॥

ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਸ੍ਰੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਤ ਕੀ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸ੍ਰਗ ਮੀਨ ਭਿੰਗ ਪਤਂਗ ਕੁੰਚਰ ਏਕ ਟੋਖ ਬਿਨਾਸ ॥ ਪੰਚ ਟੋਖ ਅਸਾਧ ਜਾ ਮਹਿ ਤਾ ਕੀ ਕੇਤਕ ਆਸ ॥੧॥
ਮਾਧੀ ਅਬਿਦਿਆ ਹਿਤ ਕੀਨ ॥ ਬਿਕੇਕ ਦੀਪ ਮਲੀਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤ੍ਰਗਦ ਜੋਨਿ ਅਚੇਤ ਸੰਭਵ ਪੁਨ ਪਾਪ
ਅਸੋਚ ॥ ਮਾਨੁਖਾ ਅਵਤਾਰ ਦੁਲਭ ਤਿਹੀ ਸੰਗਤਿ ਪੋਚ ॥੨॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਜਹਾ ਜਹਾ ਲਗੁ ਕਰਮ ਕੇ ਬਸਿ ਜਾਇ
॥ ਕਾਲ ਫਾਸ ਅਬਧ ਲਾਗੇ ਕਛੁ ਨ ਚਲੈ ਉਪਾਇ ॥੩॥ ਰਵਿਦਾਸ ਦਾਸ ਤਦਾਸ ਤਜੁ ਭ੍ਰਮੁ ਤਪਨ ਤਪੁ ਗੁਰ
ਗਿਆਨ ॥ ਭਗਤ ਜਨ ਭੈ ਹਰਨ ਪਰਮਾਨੰਦ ਕਰਹੁ ਨਿਦਾਨ ॥੪॥੧॥ ਆਸਾ ॥ ਸੰਤ ਤੁਝੀ ਤਨੁ ਸੰਗਤਿ ਪ੍ਰਾਨ ॥
ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨ ਜਾਨੈ ਸੰਤ ਦੇਵਾ ਦੇਵ ॥੧॥ ਸੰਤ ਚੀ ਸੰਗਤਿ ਸੰਤ ਕਥਾ ਰਸੁ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰੇਮ ਮਾੜੈ ਦੀਜੈ ਦੇਵਾ ਦੇਵ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਤ ਆਚਰਣ ਸੰਤ ਚੋ ਮਾਰਗੁ ਸੰਤ ਚ ਓਲ੍ਹੁਗ ਓਲ੍ਹੁਗਣੀ ॥੨॥ ਅਤਰ ਇਕ ਮਾਗਤ ਭਗਤਿ
ਚਿੰਤਾਮਣਿ ॥ ਜਣੀ ਲਖਾਵਹੁ ਅਸੰਤ ਪਾਪੀ ਸਣਿ ॥੩॥ ਰਵਿਦਾਸੁ ਭਣੈ ਜੋ ਜਾਣੈ ਸੋ ਜਾਣੁ ॥ ਸੰਤ ਅਨੰਤਹਿ ਅੰਤਰੁ
ਨਾਹੀ ॥੪॥੨॥ ਆਸਾ ॥ ਤੁਮ ਚੰਦਨ ਹਮ ਇੰਡ ਬਾਪੁਰੇ ਸੱਗਿ ਤੁਮਾਰੇ ਬਾਸਾ ॥ ਨੀਚ ਰੁਖ ਤੇ ਊਚ ਭਏ ਹੈ ਗੁਧ
ਸੁਗੰਧ ਨਿਵਾਸਾ ॥੧॥ ਮਾਧਤ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਰਨਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਹਮ ਅਤਗਨ ਤੁਮ੍ ਉਪਕਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਤੁਮ ਮਖਤੂਲ ਸੁਪੇਦ ਸਪੀਅਲ ਹਮ ਬਪੁਰੇ ਜਸ ਕੀਰਾ ॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹੀਐ ਮਾਧਤ ਜੈਸੇ ਮਧੁਪ ਮਖੀਰਾ
॥੨॥ ਜਾਤੀ ਓਛਾ ਪਾਤੀ ਓਛਾ ਜਨਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰਾ
॥੩॥੩॥ ਆਸਾ ॥ ਕਹਾ ਭਿੱਓ ਜਤ ਤਨੁ ਭਿੱਓ ਛਿਨੁ ਛਿਨੁ ॥ ਪ੍ਰੇਮੁ ਜਾਇ ਤਤ ਡਰਪੈ ਤੇਰੋ ਜਨੁ ॥੧॥ ਤੁਝਾਹਿ
ਚਰਨ ਅਰਬਿੰਦ ਭਵਨ ਮਨੁ ॥ ਪਾਨ ਕਰਤ ਪਾਇੱਓ ਪਾਇੱਓ ਰਾਮੰਝਾ ਧਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਪਤਿ ਬਿਪਤਿ

ਪਟਲ ਮਾਇਆ ਧਨੁ ॥ ਤਾ ਮਹਿ ਮਗਨ ਹੋਤ ਨ ਤੇਰੋ ਜਨੁ ॥੨॥ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਜੇਵਰੀ ਬਾਧਿਓ ਤੇਰੋ ਜਨ ॥ ਕਹਿ
ਰਵਿਦਾਸ ਛੂਟਿਬੋ ਕਵਨ ਗੁਨ ॥੩॥੪॥ ਆਸਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਜਨ ਗਏ
ਨਿਸਤਰਿ ਤਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕਬੀਰ ਤਜਾਗਰ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਾਟੇ ਕਾਗਰ ॥੧॥ ਨਿਮਤ
ਨਾਮਦੇਤ ਦ੍ਰਥੁ ਪੀਆਇਆ ॥ ਤਤ ਜਗ ਜਨਮ ਸਂਕਟ ਨਹੀਂ ਆਇਆ ॥੨॥ ਜਨ ਰਵਿਦਾਸ ਰਾਮ ਰੰਗ ਰਾਤਾ ॥
ਇਤ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਨਰਕ ਨਹੀਂ ਜਾਤਾ ॥੩॥੫॥ ਮਾਟੀ ਕੋ ਪੁਤਰਾ ਕੈਥੇ ਨਚਤੁ ਹੈ ॥ ਦੇਖੈ ਦੇਖੈ ਸੁਨੈ ਬੋਲੈ ਦੱਤਾਰਿਓ
ਫਿਰਤੁ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਬ ਕਛੁ ਪਾਵੈ ਤਬ ਗਰਬੁ ਕਰਤੁ ਹੈ ॥ ਮਾਇਆ ਗੰਡੀ ਤਬ ਰੋਵਨੁ ਲਗਤੁ ਹੈ ॥੧॥
ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮ ਰਸ ਕਸਹਿ ਲੁਭਾਨਾ ॥ ਬਿਨਸਿ ਗਇਆ ਜਾਇ ਕਹੁੰ ਸਮਾਨਾ ॥੨॥ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਬਾਜੀ
ਜਨੁ ਭਾਈ ॥ ਬਾਜੀਗਰ ਸਤ ਸੁਹਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥੩॥੬॥

ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਧਨੇ ਜੀ ਕੀ

੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਭ੍ਰਮਤ ਫਿਰਤ ਬਹੁ ਜਨਮ ਬਿਲਾਨੇ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਨਹੀਂ ਥੀਰੇ ॥ ਲਾਲਚ ਬਿਖੁ ਕਾਮ ਲੁਵਧ ਰਾਤਾ ਮਨਿ ਬਿਸਰੇ
ਪ੍ਰਭ ਹੀਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਖੁ ਫਲ ਸੀਠ ਲਗੇ ਮਨ ਬਤੇ ਚਾਰ ਬਿਚਾਰ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਗੁਨ ਤੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਢੀ
ਅਨ ਭਾਂਤੀ ਜਨਮ ਮਰਨ ਫਿਰਿ ਤਾਨਿਆ ॥੧॥ ਜੁਗਤਿ ਜਾਨਿ ਨਹੀਂ ਰਿਦੈ ਨਿਵਾਸੀ ਜਲਤ ਜਾਲ ਜਮ ਫੰਧ
ਪਰੇ ॥ ਬਿਖੁ ਫਲ ਸੰਚਿ ਭਰੇ ਮਨ ਐਸੇ ਪਰਮ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭ ਮਨ ਬਿਸਰੇ ॥੨॥ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਵੇਸੁ ਗੁਰਹਿ ਧਨੁ ਦੀਆ
ਧਿਆਨੁ ਮਾਨੁ ਮਨ ਏਕ ਮਾਣੇ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਾਨੀ ਸੁਖੁ ਜਾਨਿਆ ਤ੃ਪਤਿ ਅਘਾਨੇ ਸੁਕਤਿ ਭਏ ॥੩॥ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ
ਸਮਾਨੀ ਜਾ ਕੈ ਅਛਲੀ ਪ੍ਰਭੁ ਪਹਿਚਾਨਿਆ ॥ ਧਨੈ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਧਰਣੀਧਰੁ ਮਿਲਿ ਜਨ ਸੰਤ ਸਮਾਨਿਆ ॥
੪॥੧॥ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਸੰਗਿ ਨਾਮਦੇਤ ਮਨੁ ਲੀਣਾ ॥ ਆਫ ਦਾਮ ਕੋ ਛੀਪਰੇ ਹੋਇਆਂ
ਲਾਖੀਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬੁਨਨਾ ਤਨਨਾ ਤਿਆਗਿ ਕੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਰਨ ਕਬੀਰਾ ॥ ਨੀਚ ਕੁਲਾ ਜੋਲਾਹਰਾ ਭਿੱਓ
ਗੁਨੀਧ ਗਹੀਰਾ ॥੧॥ ਰਵਿਦਾਸੁ ਢੁਕਵਤਾ ਫੌਰ ਨੀਤਿ ਤਿਨਿ ਤਿਆਗੀ ਮਾਇਆ ॥ ਪਰਗਟੁ ਹੋਆ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ
ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਸੈਨੁ ਨਾਈ ਬੁਤਕਾਰੀਆ ਓਹੁ ਘਰਿ ਘਰਿ ਸੁਨਿਆ ॥ ਹਿਰਦੇ ਵਸਿਆ ਪਾਰਖਵਹਮੁ ਭਗਤਾ

ਮहि गनिआ ॥३॥ इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥ मिले प्रतखि गुसाईआ धन्ना वडभागा ॥४॥२॥ रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥ जे धावहि ब्रह्मंड खंड कउ करता करै सु होई ॥१॥ रहाउ ॥ जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥ देइ अहारु अगनि महि राखै औसा खसमु हमारा ॥१॥ कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥ पूरन परमान्द मनोहर समझि देखु मन माही ॥२॥ पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥ कहै धन्ना पूरन ताहू को मत रे जीअ डराही ॥३॥३॥

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

दिलहु मुहबति जिन् सई सचिआ ॥ जिन् मनि होरु मुखि होरु सि काँडे कचिआ ॥१॥ रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥ विसरिआ जिन् नामु ते भुइ भारु थीए ॥१॥ रहाउ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥ तिन धन्नु जणोदी माउ आए सफलु से ॥२॥ परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥ जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूँ ॥३॥ तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥ सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥४॥१॥ आसा ॥ बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ॥ इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥१॥ आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥१॥ रहाउ ॥ जे जाणा मरि जाईअै धुमि न आईअै ॥ झूठी दुनीआ लगि न आपु वजाईअै ॥२॥ बोलीअै सचु धरमु झूठु न बोलीअै ॥ जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीअै ॥३॥ छैल लम्घंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥ कंचन वन्ने पासे कलवति चीरिआ ॥४॥ सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥ जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गडिआ ॥५॥ कतिक कूंजाँ चेति डउ सावणि बिजुलीआँ ॥ सीआले सोह्नादीआँ पिर गलि बाहड़ीआँ ॥६॥ चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥ गंठेदिआँ छिअ माह तुड़ंदिआ हिकु खिनो ॥७॥ जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए ॥ जालण गोराँ नालि उलामे जीअ सहे ॥८॥२॥

੧ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗ ਗ੍ਰੰਥ ਮਹਲਾ ੧ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੧ ॥

ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਕਰੀ ਚਨਣਾਠੀਆ ਜੇ ਮਨੁ ਤਰਸਾ ਹੋਇ ॥ ਕਰਣੀ ਕੁਂਗੁ ਜੇ ਰਲੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਯਾ ਹੋਇ ॥੧॥
ਪ੍ਰਯਾ ਕੀਚੈ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪ੍ਰਯ ਨ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਹਰਿ ਦੇਵ ਪਖਾਲੀਅਹਿ ਜੇ ਮਨੁ ਧੋਵੈ
ਕੋਇ ॥ ਜੂਠਿ ਲਹੈ ਜੀਤ ਮਾਜੀਐ ਮੋਖ ਪਇਆਣਾ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਸੂ ਮਿਲਹਿ ਚੰਗਿਆਈਆ ਖੜ੍ਹ ਖਾਵਹਿ
ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਦੇਹਿ ॥ ਨਾਮ ਵਿਹ੍ਣੇ ਆਦਮੀ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣ ਕਰਮ ਕਰੇਹਿ ॥੩॥ ਨੇੜਾ ਹੈ ਫ੍ਰੌਰਿ ਨ ਜਾਣਿਅਹੁ ਨਿਤ
ਸਾਰੇ ਸੰਸਾਲੇ ॥ ਜੋ ਦੇਵੈ ਸੋ ਖਾਵਣਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਹੇ ॥੪॥੧॥ ਗ੍ਰੰਥ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਾਭਿ ਕਮਲ ਤੇ
ਬ੍ਰਹਮਾ ਉਪਜੇ ਬੇਦ ਪਡਹਿ ਮੁਖਿ ਕਂਠਿ ਸਵਾਰਿ ॥ ਤਾ ਕੋ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਣਾ ਆਵਤ ਜਾਤ ਰਹੈ ਗੁਬਾਰਿ ॥੧॥
ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਿਤ ਬਿਸਰਹਿ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰ ॥ ਜਾ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਜਨ ਪੂਰੇ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਵਹਿ ਗੁਰ ਕੀਚਾਰਿ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਵਿ ਸਸਿ ਟੀਪਕ ਜਾ ਕੇ ਤ੃ਭਵਣਿ ਏਕਾ ਜੋਤਿ ਸੁਰਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਸੁ ਅਹਿਨਿਸਿ
ਨਿਰਮਲੁ ਮਨਮੁਖਿ ਰੈਣ ਅੰਧਾਰਿ ॥੨॥ ਸਿਧ ਸਮਾਧਿ ਕਰਹਿ ਨਿਤ ਝਾਗਰਾ ਫੁਹੁ ਲੋਚਨ ਕਿਆ ਹੋਰੈ ॥ ਅੰਤਰਿ
ਜੋਤਿ ਸਬਦੁ ਧੁਨਿ ਜਾਗੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਝਾਗਰੁ ਨਿਕੇਰੈ ॥੩॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਨਾਥ ਬੇਅੰਤ ਅਜੋਨੀ ਸਾਚੈ ਮਹਲਿ
ਅਪਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਮਿਲੇ ਜਗਜੀਵਨ ਨਦਰਿ ਕਰਹੁ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੪॥੨॥

ਰਾਗ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਧਿਗੁ ਝਿਵੇਹਾ ਜੀਵਣਾ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਪਾਇ ॥ ਜਿਤੁ ਕੰਮਿ ਹਰਿ ਵੀਸਰੈ ਟ੍ਰੌਜੈ
 ਲਗੈ ਜਾਇ ॥੧॥ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਮਨਾ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਗੋਵਿਦ ਪ੍ਰੀਤਿ ਊਪਜੈ ਅਵਰ ਵਿਸਰਿ ਸਭ ਜਾਇ ॥
 ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਗਹਿ ਰਹੈ ਜਾਨ ਕਾ ਭਤ ਨ ਹੋਵਈ ਜੀਵਨ ਪਦਵੀ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਿਉ
 ਝਿਕੁ ਸਹਜੁ ਤਪਜਿਆ ਵੇਖੁ ਜੈਸੀ ਭਗਤਿ ਬਨੀ ॥ ਆਪ ਸੇਤੀ ਆਪੁ ਖਾਇਆ ਤਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ
 ਸਮੰਈ ॥੨॥ ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਪਾਈਐ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਕੂਡੈ ਕੀ ਪਾਲਿ ਵਿਚਹੁ ਨਿਕਲੈ ਤਾ
 ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਐਸੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਕਿਆ ਓਹੁ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਗੁਰ ਆਗੈ ਜੀਤ ਧਰੇਇ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਚਿਤਿ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪੇ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇਇ ॥੪॥੧॥੩॥ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਤੁਮ
 ਸੇਵਾ ਕਰਹੁ ਟ੍ਰੌਜੀ ਸੇਵਾ ਕਰਹੁ ਨ ਕੋਇ ਜੀ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਤੇ ਮਨਹੁ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ਟ੍ਰੌਜੀ ਸੇਵਾ ਜਨਮੁ
 ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ਜੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰੀਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਕਥਾ ਕਹਾਨੀ ਜੀ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੇਰਾ
 ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਏਹਾ ਸੇਵ ਬਨੀ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਿਮੂਤਿ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਾਸਕ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਬੰਧਪੁ ਹਰਿ
 ਮੇਰਾ ਭਾਈ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਮੈ ਭੂਖ ਲਾਗੈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤੈ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਾਕੁ ਅੰਤਿ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੨॥
 ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਹੋਰ ਰਾਸਿ ਕੂਡੀ ਹੈ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਧਨੁ ਮੇਰੈ ਸਾਥਿ ਚਾਲੈ ਜਹਾ ਹਤ ਜਾਤ
 ਤਹ ਜਾਈ ॥੩॥ ਸੋ ਝੂਠਾ ਜੋ ਝੂਠੇ ਲਾਗੈ ਝੂਠੇ ਕਰਮ ਕਮਾਈ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਭਾਣਾ ਹੋਆ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ
 ਜਾਈ ॥੪॥੨॥੪॥ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੁਗ ਮਾਹਿ ਨਾਮੁ ਦੁਲਮ੍ਬੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ
 ਸੁਕਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਵਿਤਪਾਇ ॥੧॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਹਜੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾਂ ਭਤ ਪਾਏ ਆਪਣਾ ਬੈਰਾਗੁ ਤਪਜੈ ਮਨਿ ਆਇ
 ॥ ਬੈਰਾਗੈ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਸੇਇ ਸੁਕਤ ਜਿ ਮਨੁ ਜਿਣਹਿ ਫਿਰਿ ਧਾਤੁ ਨ ਲਾਗੈ
 ਆਇ ॥ ਦਸਵੈ ਦੁਆਰਿ ਰਹਤ ਕਰੇ ਤੂਭਵਣ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਗੁਰੁ ਹੋਇਆ ਵੇਖਹੁ ਤਿਸ ਕੀ

रजाइ ॥ इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥४॥३॥५॥ गूजरी महला ३ ॥ राम राम सभु को
 कहै कहिअै रामु न होइ ॥ गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥१॥ अंतरि गोविंद जिसु
 लागै प्रीति ॥ हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥१॥ रहाउ ॥ हिरटै जिन् कै
 कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥ तृसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ॥२॥ अनेक तीरथ जे
 जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥ जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरम राइ तिसु देइ
 सजाइ ॥३॥ करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥ नानक विचहु हउमै मारे ताँ हरि भेटै सोई
 ॥४॥४॥६॥ गूजरी महला ३ ॥ तिसु जन साँति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए ॥ सो जनु
 निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥१॥ हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई ॥
 गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै
 पारसु होइ त पूज कराए ॥ जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै साचु बुझाए ॥२॥ विणु पारसै पूज न
 होवई विणु मन परचे अवरा समझाए ॥ गुरु सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए ॥३॥
 नानक विणु नदरी किछू न पाईअै जिसु नदरि करे सो पाए ॥ गुर परसादी दे वडिआई अपणा
 सबदु वरताए ॥४॥५॥७॥ गूजरी महला ३ पंचपदे ॥ ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ॥
 सतिगुर मिलिअै मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ॥१॥ हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मनि वसाइ ॥
 इह मति तेरी थिरु रहै ताँ भरमु विचहु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि चरण रिटै वसाइ तू किलविख
 होवहि नासु ॥ पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु ॥२॥ मनमुखि इहु मनु मुगधु है
 सोझी किछू न पाइ ॥ हरि का नामु न बुझई अंति गडिआ पछुताइ ॥३॥ इहु मनु कासी सभि तीरथ
 सिमृति सतिगुर दीआ बुझाइ ॥ अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरटै रहिआ समाइ
 ॥४॥ नानक सतिगुर मिलिअै हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ॥ जो तुधु भावै सभु सचु है सचे

रहै समाइ ॥੫॥੬॥੮॥ गूजरी महला ३ तीजा ॥ एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥ दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥੧॥ हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥ हरि रसु रसना चाखु तूं ताँ मनु निरमलु होई ॥੨॥ रहाउ ॥ सतिगुर मिलिअै मनु संतोखीअै ता फिरि तृसना भूख न होइ ॥ नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥੩॥ कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ्न न होइ ॥ गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥੪॥ सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥ सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥੫॥ सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जित तिस की रजाइ ॥੬॥੭॥੮॥

੯੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु ੧ ॥ हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥੧॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥੨॥ रहाउ ॥ हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरथा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥੩॥ जिन् हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए धिगु जीवे धिगु जीवासि ॥੪॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धनु धनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥੫॥੧॥ गूजरी महला ४ ॥ गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ॥ जपि गोविंदु गोविंदु धिआईअै सभ कउ दानु देइ प्रभु ओहै ॥੨॥ मेरे भाई जना मो कउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥ गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥੩॥ रहाउ ॥ सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै ॥ जन कउ

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਸੋਹੈ ॥੨॥ ਦੁਰਮਤਿ ਭਾਗਹੀਨ ਮਤਿ ਫੀਕੇ ਨਾਮੁ ਸੁਨਤ ਆਵੈ
 ਮਨਿ ਰੋਹੈ ॥ ਕਤਾ ਕਾਗ ਕਤ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸੁ ਪਾਈਐ ਤ੃ਪਤੈ ਵਿਸਟਾ ਖਾਇ ਮੁਖਿ ਗੋਹੈ ॥੩॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਰੁ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਤਿਵਾਦੀ ਜਿਤੁ ਨਾਤੈ ਕਤਾ ਛਾਸੁ ਹੋਹੈ ॥ ਨਾਨਕ ਧਨੁ ਧਨੁ ਕਡੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨ੍ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ
 ਰਿਦੈ ਮਲੁ ਧੋਹੈ ॥੪॥੨॥ ਗ੍ਰੂਜ਼ੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਊਤਮ ਊਤਮ ਬਾਣੀ ਮੁਖਿ ਬੋਲਹਿ ਪਰਤਪਕਾਰੇ ॥ ਜੋ ਜਨੁ
 ਸੁਣੈ ਸਰਧਾ ਭਗਤਿ ਸੇਤੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਮੋ ਕਤ ਹਰਿ ਜਨ ਮੇਲਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ
 ਪ੍ਰਾਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਹਮ ਪਾਪੀ ਗੁਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਡਭਾਗੀ ਵਡਭਾਗੇ ਜਿਨ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵਹਿ ਗੁਰਮਤਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰੇ ॥੨॥ ਜਿਨ ਦਰਸਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਸਤ ਪੁਰਖ ਨ ਪਾਇਆ ਤੇ ਭਾਗਹੀਣ ਜਮਿ ਮਾਰੇ ॥ ਸੇ ਕੂਕਰ ਸੂਕਰ ਗਰਥਭ ਪਵਹਿ ਗਰਭ ਜੋਨੀ ਦਧਿ
 ਮਾਰੇ ਮਹਾ ਹਤਿਆਰੇ ॥੩॥ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ਹੋਹੁ ਜਨ ਊਪਰਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਤਬਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨ ਹਰਿ ਕੀ
 ਸਰਣਾਈ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੪॥੩॥ ਗ੍ਰੂਜ਼ੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹੋਹੁ ਦਿਇਆਲ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲਾਕਹੁ ਹਤ
 ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਧਿਆਈ ॥ ਸਭਿ ਸੁਖ ਸਭਿ ਗੁਣ ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਹਰਿ ਜਿਤੁ ਜਪਿਐ ਦੁਖ ਭੁਖ ਸਭ
 ਲਹਿ ਜਾਈ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਮੇਰਾ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਖਾ ਹਰਿ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਸੁ ਗਾਵਾ ਅੰਤਿ ਬੇਲੀ
 ਦਰਗਹ ਲਏ ਛਡਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੋਚ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਲਾਈ ॥
 ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਲੋਚ ਲਗੀ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਪ੍ਰਭਿ ਲੋਚ ਪ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਪੁੰਨਿ ਕਰਿ
 ਪਾਇਆ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਬਿਰਥਾ ਜਾਈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਰਸ ਕਸ ਦੁਖੁ ਖਾਵੈ ਮੁਖੁ ਫੀਕਾ ਥੁਕ ਥੂਕ ਮੁਖਿ
 ਪਾਈ ॥੩॥ ਜੋ ਜਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਰਣਾ ਤਿਨ ਦਰਗਹ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਾਬਾਸਿ
 ਕਹੈ ਪ੍ਰਭੁ ਜਨ ਕਤ ਜਨ ਨਾਨਕ ਮੇਲਿ ਲਏ ਗਲਿ ਲਾਈ ॥੪॥੪॥ ਗ੍ਰੂਜ਼ੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ
 ਮੇਰੀ ਮੋ ਕਤ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਜੀਵਾਇਆ ॥ ਹਮ ਹੋਵਹ ਲਾਲੇ ਗੋਲੇ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੇ ਜਿਨਾ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ
 ਪ੍ਰਭੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਬਿਰਹੁ ਗੁਰਸਿਖ ਪਗ ਲਾਇਆ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਸਖਾ ਗੁਰ ਕੇ

ਸਿਖ ਭਾਈ ਮੋ ਕਤ ਕਰਹੁ ਤਪਦੇਸੁ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਮੇਲੇ ਜਿਨ੍ ਵਚਨ ਗੁਰੂ ਸਤਿਗੁਰ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਕੇ ਸਿਖ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਨਿਰਬਾਣੀ ਨਿਰਬਾਣ
 ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਸਤਸਙਗਤਿ ਗੁਰ ਕੀ ਹਰਿ ਪਿਆਰੀ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੀਠਾ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਜਿਨ
 ਸਤਿਗੁਰ ਸਂਗਤਿ ਸੰਗੁ ਨ ਪਾਇਆ ਸੇ ਭਾਗਹੀਣ ਪਾਪੀ ਜਮਿ ਖਾਇਆ ॥੩॥ ਆਪਿ ਕ੃ਪਾਲੁ ਕ੃ਪਾ ਪ੍ਰਭੁ ਧਾਰੇ
 ਹਰਿ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੇ ਗੁਣ ਬਾਣੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ
 ॥੪॥੫॥ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਮੋ ਕਤ ਕਰਿ ਤਪਦੇਸੁ ਹਰਿ
 ਸੀਠ ਲਗਾਵੈ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਭ ਹਰਿਆ ਹੋਆ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥੧॥ ਭਾਈ ਰੇ ਮੋ ਕਤ ਕੋਈ
 ਆਇ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਵੈ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਭੁ ਦੇਵਾ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਨਾਵੈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧੀਰਜੁ ਧਰਮੁ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਨਿਤ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਵੈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ
 ਬਚਨ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਜੋ ਬੋਲੈ ਸੋ ਸੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਜਿਤੁ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮਤਿ
 ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜਿਨ ਨਰ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ਸੇ ਭਾਗਹੀਣ ਮੁਏ ਮਰਿ ਜਾਵੈ ॥੩॥ ਆਨਦ
 ਮੂਲੁ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤਾ ਸਭ ਜਨ ਕਤ ਅਨਦੁ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਦਾਤਾ ਜੀਅ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਜਨ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਖ਼ਸਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥੪॥੬॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੩ ॥ ਮਾਈ ਬਾਪ ਪੁਰ ਸਭਿ ਹਰਿ ਕੇ ਕੀਏ ॥ ਸਭਨਾ ਕਤ ਸਨਬੰਧੁ ਹਰਿ ਕਰਿ ਦੀਏ ॥੧॥
 ਹਮਰਾ ਜੋਝੁ ਸਭੁ ਰਹਿਓ ਮੇਰੇ ਬੀਰ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਸਰੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ
 ਕਤ ਸਰਧਾ ਆਪਿ ਹਰਿ ਲਾਈ ॥ ਕਿਚੇ ਗ੍ਰਹਣ ਉਦਾਸ ਰਹਾਈ ॥੨॥ ਜਬ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰਿ ਸਿਤ ਬਨਿ ਆਈ
 ॥ ਤਕ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਈ ॥੩॥ ਜਿਤੁ ਕਾਰੈ ਕੰਮਿ ਹਮ ਹਰਿ ਲਾਏ ॥ ਸੋ ਹਮ ਕਰਹ ਜੁ ਆਪਿ
 ਕਰਾਏ ॥੪॥ ਜਿਨ ਕੀ ਭਗਤਿ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਈ ॥ ਤੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੫॥੧॥੭॥੧੯॥

ਗ੍ਰੰਥ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੂ ੧

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਾਹੇ ਰੇ ਮਨ ਚਿਤਵਹਿ ਉਦਸੁ ਜਾ ਆਹਰਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਪਰਿਆ ॥ ਸੈਲ ਪਥਰ ਮਹਿ ਜੰਤ ਉਪਾਏ ਤਾ ਕਾ ਰਿਜਕੁ
ਆਗੈ ਕਰਿ ਧਰਿਆ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਾਧਤ ਜੀ ਸਤਸ਼ੰਗਤਿ ਮਿਲੇ ਸਿ ਤਰਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ
ਸੂਕੇ ਕਾਸਟ ਹਰਿਆ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਨਨਿ ਪਿਤਾ ਲੋਕ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਕੋਝਿ ਨ ਕਿਸ ਕੀ ਧਰਿਆ ॥ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ
ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹੇ ਠਾਕੁਰੁ ਕਾਹੇ ਮਨ ਭਤ ਕਰਿਆ ॥੨॥ ਊਡੈ ਊਡਿ ਆਵੈ ਸੈ ਕੋਸਾ ਤਿਸੁ ਪਾਛੈ ਬਚੇ ਛਰਿਆ ॥
ਉਨ ਕਵਨੁ ਖਲਾਵੈ ਕਵਨੁ ਚੁਗਾਵੈ ਮਨ ਮਹਿ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਿਆ ॥੩॥ ਸਭ ਨਿਧਾਨ ਦਸ ਅਸਟ ਸਿਧਾਨ ਠਾਕੁਰ
ਕਰ ਤਲ ਧਰਿਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਰਿਆ ॥੪॥੧॥

ਗ੍ਰੰਥ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੂ ੨

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਿਰਿਆਚਾਰ ਕਰਹਿ ਖਟੁ ਕਰਮਾ ਇਤੁ ਰਾਤੇ ਸੰਸਾਰੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਹਤਮੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ
॥੧॥ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਸੇਵਕੁ ਹੋਰਿ ਸਗਲੇ ਬਿਤਹਾਰੀ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਸਿਮੂਤਿ ਸਭਿ ਸੋਧੇ ਸਭ ਏਕਾ ਬਾਤ ਪੁਕਾਰੀ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਕੋਊ ਪਾਵੈ ਮਨਿ ਕੇਖਹੁ
ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥੨॥ ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨਾ ਭ੍ਰਮਿ ਆਏ ਧਰ ਸਾਰੀ ॥ ਅਨਿਕ ਸੋਚ ਕਰਹਿ ਦਿਨ ਰਾਤੀ
ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਅੰਧਿਆਰੀ ॥੩॥ ਧਾਵਤ ਧਾਵਤ ਸਭੁ ਜਗੁ ਧਾਇਆਂ ਅਥ ਆਏ ਹਰਿ ਦੁਆਰੀ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਮੇਟਿ
ਬੁਧਿ ਪਰਗਾਸੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਾਰੀ ॥੪॥੧॥੨॥ ਗ੍ਰੰਥ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਾਪ ਹਰਿ ਧਨੁ ਤਾਪ
ਹਰਿ ਧਨੁ ਭੋਜਨੁ ਭਾਇਆ ॥ ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਸਰਤ ਮਨ ਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਾਧਸ਼ੰਗਤਿ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਮਾਈ
ਖਾਟਿ ਆਇਆਂ ਘਰਿ ਪ੍ਰੂਤਾ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਚਲਤੇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਬੈਸੇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਾਗਤ ਸੂਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ
ਇਸਨਾਨੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਗਿਆਨੁ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਲਾਇ ਧਿਆਨਾ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਤੁਲਹਾ ਹਰਿ ਧਨੁ ਬੇੜੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਾਰਿ

पराना ॥२॥ हरि धन मेरी चिंत विसारी हरि धनि लाहिआ धोखा ॥ हरि धन ते मै नव निधि पाई
 हाथि चरिओ हरि थोका ॥३॥ खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥ लादि खजाना गुरि
 नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥४॥२॥३॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु सिमरत सभि
 किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥ सो हरि हरि तुम् सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥१॥ पूता
 माता की आसीस ॥ निमख न बिसरउ तुम् कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु
 तुम् कउ होइ दिआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥ कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति
 ॥२॥ अंमृतु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अन्नता ॥ रंग तमासा पूरन आसा कबहि
 न बिआपै चिंता ॥३॥ भवरु तुमारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ नानक दासु उन संगि
 लपटाइओ जिउ बूंदहि चातृकु मउला ॥४॥३॥४॥ गूजरी महला ५ ॥ मता करै पछम कै ताई
 पूरब ही लै जात ॥ खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥१॥ सिआनप काहू कामि
 न आत ॥ जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥१॥ रहाउ ॥ देसु कमावन धन जोरन की
 मनसा बीचे निकसे सास ॥ लसकर नेब खवास सभ तिआगे जम पुरि ऊठि सिधास ॥२॥ होइ अनन्नि
 मनहठ की दृढ़ता आपस कउ जानात ॥ जो अनिंदु निंदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ॥३॥
 सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत
 उदास ॥४॥४॥५॥ गूजरी महला ५ ॥ नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के बंधन काटे ॥ काम क्रोध
 माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ॥१॥ हरि जसु साधसंगि मिलि गाइओ ॥ गुर परसादि
 भइओ मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ॥१॥ रहाउ ॥ जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति
 कमानी ॥ मित्र सतु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥२॥ पूरन पूरि रहिओ स्रब थाई आन न
 कतहूं जाता ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि रंगि रविओ रंगि राता ॥३॥ भए कृपाल दिआल

ਗੁਪਾਲਾ ਤਾ ਨਿਰਭੈ ਕੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟੇ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆ
॥੪॥੫॥੬॥ ਗ੍ਰੂਜ਼ਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸੁ ਮਾਨੁਖ ਪਹਿ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀ ਸੋ ਅਪਨੈ ਦੁਖਿ ਭਰਿਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ
ਜਿਨਿ ਰਿਦੈ ਅਰਾਧਿਆ ਤਿਨਿ ਭਤ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ॥੧॥ ਗੁਰ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕੋ ਨ ਬ੃ਥਾ ਦੁਖੁ ਕਾਟੈ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਤਜਿ
ਅਵਰ ਸੇਵਕੁ ਜੇ ਹੋਈ ਹੈ ਤਿਤੁ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ਜਸੁ ਘਾਟੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਇਆ ਕੇ ਸਨਬੰਧ ਸੈਨ ਸਾਕ ਕਿਤ ਹੀ
ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਨੀਚ ਕੁਲੁ ਊਚਾ ਤਿਸੁ ਸੰਗਿ ਮਨ ਬਾਂਛਤ ਫਲ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਲਾਖ ਕੋਟਿ
ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਬਿੰਜਨ ਤਾ ਮਹਿ ਤੂਸਨ ਨ ਬੂਝੀ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਤੁਜੀਆਰਾ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਸੂਝੀ ॥੩॥
ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਤੁਸ੍ਰੈ ਦੁਆਰਿ ਆਇਆ ਭੈ ਭੰਜਨ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਸਾਧ ਕੇ ਚਰਨ ਧੂਰਿ ਜਨੁ ਬਾਛੈ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ
ਇਹੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੬॥੭॥

ਗ੍ਰੂਜ਼ਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਪੰਚਪਦਾ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਥਮੇ ਗਰਭ ਮਾਤਾ ਕੈ ਵਾਸਾ ਊਹਾ ਛੋਡਿ ਧਰਨਿ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥ ਚਿਨ ਸਾਲ ਸੁੰਦਰ ਬਾਗ ਮੰਦਰ ਸੰਗਿ ਨ ਕਛਹੁ
ਜਾਇਆ ॥੧॥ ਅਵਰ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਲੋਭ ਲਵੀ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੌਦੀ ਦੀਓ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਜੀਅ ਕਤ ਏਹਾ ਵਸਤੁ ਫਕੀ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਸਟ ਮੀਤ ਬੰਧਪ ਸੁਤ ਭਾਈ ਸੰਗਿ ਬਨਿਤਾ ਰਚਿ ਹਸਿਆ ॥ ਜਬ ਅੰਤੀ ਅਤਸਰੁ ਆਇ
ਬਨਿਓ ਹੈ ਤਨੁ ਪੇਖਤ ਹੀ ਕਾਲਿ ਗ੍ਰਸਿਆ ॥੨॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਅਨਰਥ ਬਿਹਾਝੀ ਸੱਪੈ ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਦਾਮਾ ॥ ਭਾਡੀ
ਕਤ ਓਹੁ ਭਾਡਾ ਮਿਲਿਆ ਹੋਰੁ ਸਗਲ ਭਇਓ ਬਿਰਾਨਾ ॥੩॥ ਹੈਕਰ ਗੈਕਰ ਰਥ ਸੰਬਾਹੇ ਗਹੁ ਕਰਿ ਕੀਨੇ ਮੇਰੇ ॥
ਜਬ ਤੇ ਹੋਈ ਲਾਂਮੀ ਧਾਈ ਚਲਹਿ ਨਾਹੀ ਇਕ ਪੈਰੇ ॥੪॥ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਸੁਖ ਰਾਜਾ ਨਾਮੁ ਕੁਟੰਬ ਸਹਾਈ ॥
ਨਾਮੁ ਸੰਪਤਿ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕ ਕਤ ਦੀਈ ਓਹ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥੫॥੧॥੮॥

ਗ੍ਰੂਜ਼ਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਤਿਪਦੇ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖ ਕੀਆ ਨਿਵਾਸਾ ਤੂਸਨਾ ਜਲਨਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਵੂਝਾਇਆ ਬਿਨਸਿ ਨ
ਆਵੈ ਜਾਈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜਪਿ ਮਾਇਆ ਬੰਧਨ ਤੂਟੇ ॥ ਭਏ ਕੁਪਾਲ ਦਿਇਆਲ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਛੂਟੇ

॥१॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता ॥ हरख सोग दुहु माहि निराला
करणैहारु पछाता ॥२॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई ॥ कहु नानक प्रभ
पुरख दिआला कीमति कहणु न जाई ॥३॥१॥६॥

गूजरी महला ५ दुपदे घरु २

१८१ सतिगुर प्रसादि ॥

पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥ बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन
रवारो ॥१॥ ठाकुर ऐसो नामु तुमारो ॥ सगल सृसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥१॥ रहाउ ॥
साधसंगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो ॥ नामदेउ तूलोचनु कबीर दासरो मुकति भड़िओ
चंमिआरो ॥२॥१॥१०॥ गूजरी महला ५ ॥ है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता ॥ सिव बिरंचि
अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥१॥ प्रभ की अगम अगाधि कथा ॥ सुनीऐ अवर अवर बिधि
बुझीऐ बकन कथन रहता ॥१॥ रहाउ ॥ आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥ नानक को प्रभु
पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥२॥२॥१॥ गूजरी महला ५ ॥ मता मसूरति अवर सिआनप जन
कउ कछू न आडिओ ॥ जह जह अउसरु आडि बनिओ है तहा तहा हरि धिआडिओ ॥१॥ प्रभ को भगति
वछलु बिरदाडिओ ॥ करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाडिओ ॥१॥ रहाउ ॥ जप
तप संजम करम धरम हरि कीरतनु जनि गाडिओ ॥ सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुखु
पाडिओ ॥२॥३॥१२॥ गूजरी महला ५ ॥ दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥ संत
सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥१॥ मोहनु प्रान मान रागीला ॥ बासि रहिओ
हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु सिमरत मनि होत अन्नदा उतरै मनहु
जंगीला ॥ मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥२॥४॥१३॥ गूजरी महला ५ ॥
मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीने बसि अपनही ॥ तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति

कछु न रही ॥१॥ बलवंति बिआपि रही सभ मही ॥ अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही
 ॥१॥ रहाउ ॥ जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही ॥ कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी
 चरन गही ॥२॥५॥१४॥ गूजरी महला ५ ॥ दुड़ि कर जोड़ि करी बेन्ती ठाकुरु अपना धिआडिआ ॥
 हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाडिआ ॥१॥ ठाकुर होए आपि दडिआल ॥ भई कलिआण
 आन्नद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥१॥ रहाउ ॥ मिलि वर नारी मंगलु गाडिआ ठाकुर का जैकारु ॥
 कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥२॥६॥१५॥ गूजरी महला ५ ॥ मात पिता
 भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥ अनिक रंग माडिआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥१॥
 ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥ मोहि अनाथ निरगुन गुण नाही मै आहिओ तुम्हा धोरा ॥१॥ रहाउ ॥
 बलि बलि बलि बलि चरण तुम्हारे ईहा ऊहा तुम्हारा जोरा ॥ साधसंगि नानक दरसु पाडिओ बिनसिओ
 सगल निहोरा ॥२॥७॥१६॥ गूजरी महला ५ ॥ आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई ॥ मन
 कउ इह उपदेसु दृढ़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥१॥ साजन औसो संतु सहाई ॥ जिसु भेटे तूटहि
 माडिआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥१॥ रहाउ ॥ करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥
 मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥२॥८॥१७॥ गूजरी महला ५ ॥ खिन महि
 थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी ॥ राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥१॥ धिआईओ
 अपनो सदा हरी ॥ सोच अंदेसा ता का कहा करीऔ जा महि एक घरी ॥१॥ रहाउ ॥ तुम्हरी टेक पूरे मेरे
 सतिगुर मन सरनि तुम्हारै परी ॥ अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥२॥९॥१८
 ॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही ॥ चरण कमल रिद माहि समाए
 तह भरमु अंधेरा नाही ॥१॥ ठाकुर जा सिमरा तूं ताही ॥ करि किरपा सरब प्रतिपालक प्रभ कउ
 सदा सलाही ॥१॥ रहाउ ॥ सासि सासि तेरा नामु समारउ तुम ही कउ प्रभ आही ॥ नानक टेक भई

करते की होर आस बिडाणी लाही ॥२॥१०॥१६॥ गूजरी महला ५ ॥ करि किरपा अपना दरसु दीजै
 जसु गावउ निसि अरु भोर ॥ केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥१॥ ठाकुर तुझ बिनु बीआ
 न होर ॥ चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥१॥ रहाउ ॥ दिइआल पुरख सरब
 के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥ नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥२॥११॥२०॥
 गूजरी महला ५ ॥ ब्रह्म लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ ॥ साधसंगति कउ जोहि न साकै
 मलि मलि धोवै पाइ ॥१॥ अब मोहि आइ परिओ सरनाइ ॥ गुहज पावको बहुतु प्रजारै मो कउ
 सतिगुरि दीओ है बताइ ॥१॥ रहाउ ॥ सिध साधिक अरु जख्य किन्नर नर रही कंठि उरझाइ ॥ जन
 नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि ऐसी दासाइ ॥२॥१२॥२१॥ गूजरी महला ५ ॥ अपजसु
 मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईअै ॥ जम की तास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती
 घरि जाईअै ॥१॥ जा ते घाल न बिरथी जाईअै ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा
 धिआईअै ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि सोई प्रभ पाईअै ॥ चरण कमल नानक
 रंगि राते हरि दासह पैज रखाईअै ॥२॥१३॥२२॥ गूजरी महला ५ ॥ बिस्थंभर जीअन को दाता
 भगति भरे भंडार ॥ जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥१॥ मन मेरे चरन कमल
 संगि राचु ॥ सगल जीअ जा कउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥१॥ रहाउ ॥ नानक सरणि तुमारी
 करते तूं प्रभ प्रान अधार ॥ होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥२॥१४॥२३॥
 गूजरी महला ५ ॥ जन की पैज सवारी आप ॥ हरि हरि नामु दीओ गुरि अवखदु उतरि गडिओ सभु
 ताप ॥१॥ रहाउ ॥ हरिगोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥ मिटी बिआधि सरब सुख
 होए हरि गुण सदा बीचारि ॥१॥ अंगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥ अबिचल
 नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥२॥१५॥२४॥ गूजरी महला ५ ॥ कबहू हरि सितु

चीतु न लाइओ ॥ धंधा करत बिहानी अउधहि गुण निधि नामु न गाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ कउडी कउडी
जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ ॥ बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥१॥
करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ॥ गोबिंद दइआल कृपाल सुख सागर नानक
हरि सरणाइओ ॥२॥१६॥२५॥ गूजरी महला ५ ॥ रसना राम राम रवंत ॥ छोडि आन बिउहार
मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥१॥ रहाउ ॥ नामु एकु अधारु भगता ईत आगै टेक ॥ करि कृपा गोबिंद
दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥१॥ करण कारण संम्रथ स्रीधर सरणि ता की गही ॥ मुकति जुगति
रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥२॥१७॥२६॥

गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥ पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥१॥ रे चित
चरण कमल अराधि ॥ सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता
सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ ॥ ईत ऊत जीअ नालि संगी सरब रविआ सोइ ॥२॥ कोटि
जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥ सरणि साधू निरमला गति होइ प्रभ कै नामि ॥३॥
अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥ तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु
॥४॥१॥२७॥ गूजरी महला ५ ॥ आपना गुरु सेवि सद ही रमहु गुण गोबिंद ॥ सासि सासि अराधि
हरि हरि लहि जाइ मन की चिंद ॥१॥ मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥ सूख सहज अन्नद पावहि मिली
निरमल थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि ॥ कामु क्रोधु अह्वाकारु
बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥२॥ अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ता की आउ ॥ चरण कमल
अराधि हिरदै एक सित लिव लाउ ॥३॥ पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीने आपि ॥ सरब
सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥४॥२॥२८॥ गूजरी महला ५ ॥ गुर प्रसादी प्रभु

धिआङ्गिआ गई संका तूटि ॥ दुख अनेरा भै बिनासे पाप गए निखूटि ॥१॥ हरि हरि नाम की मनि
प्रीति ॥ मिलि साध बचन गोबिंद धिआए महा निरमल रीति ॥२॥ रहाउ ॥ जाप ताप अनेक करणी
सफल सिमरत नाम ॥ करि अनुग्रहु आपि राखे भए पूरन काम ॥३॥ सासि सासि न बिसरु कबहूं
ब्रह्म प्रभ समरथ ॥ गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ ॥४॥३॥
दीन दरद निवारि
तारण दिइआल किरपा करण ॥ अटल पदवी नाम सिमरण दृढ़ नानक हरि हरि सरण ॥४॥३॥
२६॥ गूजरी महला ५ ॥ अद्वाबुधि बहु सघन माङ्गिआ महा दीरघ रेगु ॥ हरि नामु अउखधु गुरि
नामु दीनो करण कारण जोगु ॥१॥ मनि तनि बाछीअै जन धूरि ॥ कोटि जनम के लहहि पातिक
गोबिंद लोचा पूरि ॥२॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि आसा कूकरी बिकराल ॥ गुर गिआन कीरतन
गोबिंद रमणं काटीअै जम जाल ॥३॥ काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा आवा गवण ॥ प्रभ प्रेम भगति
गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥४॥ मित्र पुत्र कलत्र सुर रिद तीनि ताप जलम्त ॥ जपि राम रामा
दुख निवारे मिलै हरि जन संत ॥५॥४॥३०॥

गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

आराधि स्रीधर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥ गुण रमण
स्वरण अपार महिमा फिरि न होत बिओगु ॥१॥ मन चरणारबिंद उपास ॥ कलि कलेस मिटंत
सिमरणि काटि जमदूत फास ॥२॥ रहाउ ॥ सत्रु दहन हरि नाम कहन अवर कछु न उपाउ ॥
करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ॥३॥१॥३॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं समरथु सरनि को
दाता दुख भंजनु सुख राङ्गि ॥ जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाङ्गि ॥४॥ गोविंद
तुझ बिनु अवरु न ठाउ ॥ करि किरपा पारब्रह्म सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर

सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिव लागी ॥ कवल प्रगास भए साधसंगे दुरमति बुधि तिआगी ॥२॥ आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥ आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ॥३॥ चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि ॥ सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ॥४॥२॥३२॥

गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

एक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥ तृहृदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥१॥ चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥ रामु रिटै जपमाली ॥१॥ रहाउ ॥ उरथ मूल जिसु साख तलाहा चारि बेट जितु लगे ॥ सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रह्म लिव जागे ॥२॥ पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥ सरब जोति निरंजन संभू छोडहु बहुतु जंजाला ॥३॥ सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥ मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥४॥ सो गुरु सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥ तिसु कारणि कंमु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥५॥ कामु क्रोधु अह्वाकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ ॥ मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥६॥ गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता ॥ ब्रह्म कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥७॥ महा गंभीर पत्र पाताला नानक सरब जुआइआ ॥ उपदेस गुरु मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अंमूतु पीआइआ ॥८॥१॥ गूजरी महला १ ॥ कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अंत न परहि सुमार ॥ जैसी भूख होइ अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ॥१॥ औ जी जपु तपु संजमु सचु अधार ॥ हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऔ तेरी भगति भरे भंडार ॥१॥ रहाउ ॥ सुन्न समाधि रहहि लिव लागे एकी सबदु बीचार ॥ जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥२॥ ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज चंद न जोति अपार ॥ सरब

दृस्टि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु तृभवण सार ॥३॥ पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रह्मा
 बिसनु महेस अकार ॥ सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥४॥ कोटि तेतीस जाचहि
 प्रभ नाइक देदे तोटि नाही भंडार ॥ ऊंधै भाँडै कछु न समावै सीधै अंमृतु परै निहार ॥५॥ सिध
 समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार ॥ जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि
 परकार ॥६॥ बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार ॥ ता कउ कालु नाही जमु जोहै
 बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥७॥ अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि ॥
 नानक चातृकु अंमृत जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥८॥२॥ गूजरी महला १ ॥ औं जी जनमि
 मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥ गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥९॥
 भाई रे राम नामि चितु लाई ॥ गुर परसादी हरि प्रभ जाचे औंसी नाम बडाई ॥१॥ रहाउ ॥ औं जी
 बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥ बिनु हरि भगति नाही सुखु प्राणी बिनु गुर
 गरबु न जाई ॥२॥ औं जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥ साचै सबदि रते से
 बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥३॥ गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई ॥ अविगत नाथ
 निरंजनि राते निरभउ सित लिव लाई ॥४॥ औं जीउ नामु दिड्हु नामे लिव लावहु सतिगुर
 टेक टिकाई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥५॥ औं जी भागि परे गुर सरणि
 तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई ॥ अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥६॥ औं जी राखहु
 पैज नाम अपुने की तुझ ही सित बनि आई ॥ करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई
 ॥७॥ औं जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई ॥ नानक नामु
 पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥८॥३॥ गूजरी महला १ ॥ औं जी ना हम उतम नीच न मधिम
 हरि सरणागति हरि के लोग ॥ नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥१॥ भाई रे

गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥ सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि गुण रसन खवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥ बिनु हरि नाम बृथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफल मेक घरी ॥२॥ औ जी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नही काई ॥ रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥३॥ औ जी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥ निंदक नर काले मुख निंदा जिन् गुर की दाति न भाई ॥४॥ औ जी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥ आनंद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥५॥ औ जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥ पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥६॥ हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥ पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥७॥ तूं वड पुरखु अगंम तरोवरु हम पंखी तुझ्न माही ॥ नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥८॥८॥

गूजरी महला १ घरु ४

१८ सतिगुर प्रसादि ॥

भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं ॥ बिललाप बिलल बिन्तीआ सुख भाइ चित हितं ॥१॥ जपि मन नामु हरि सरणी ॥ संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥२॥ रहाउ ॥ ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं ॥ मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥२॥ चल चित वित भ्रमा भ्रमं जगु मोह मगन हितं ॥ थिरु नामु भगति दिँ मती गुर वाकि सबद रतं ॥३॥ भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं ॥ असथानु हरि निहकेवलं सति मती नाम तपं ॥४॥ इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं ॥ भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥५॥ गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं ॥ सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥६॥ भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਿਰਦੈ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਾਵਨੁ ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਤਤ ਸਰਣੀ ॥੭॥ ਲਬ ਲੋਭ ਲਹਾਰਿ ਨਿਵਾਰਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮ
ਰਸਿ ਮਨੰ ॥ ਮਨੁ ਮਾਰਿ ਤੁਹੀ ਨਿਰੰਜਨਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕਾ ਸਰਨੰ ॥੮॥੧॥੫॥

ਗ੍ਰੰਥ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੂ ੧

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਿਰਤਿ ਕਰੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਚਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਆਪੁ ਗਰਵਾਈ ॥ ਚਿਤੁ ਥਿਰੁ ਰਾਖੈ ਸੋ ਮੁਕਤਿ ਹੋਵੈ ਜੋ ਇਛੀ
ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਈ ॥੧॥ ਨਾਚੁ ਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਕੈ ਆਗੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਨਾਚਹਿ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਅੰਤੇ ਜਮ ਭਤ
ਭਾਗੈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਪਿ ਨਚਾਏ ਸੋ ਭਗਤੁ ਕਹੀਐ ਆਪਣਾ ਪਿਆਰੁ ਆਪਿ ਲਾਏ ॥ ਆਪੇ ਗਾਵੈ ਆਪਿ ਸੁਣਾਵੈ
ਇਸੁ ਮਨ ਅੰਧੇ ਕਤ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥੨॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਚੈ ਸਕਤਿ ਨਿਵਾਰੈ ਸਿਵ ਘਰਿ ਨੀਦ ਨ ਹੋਈ ॥ ਸਕਤੀ
ਘਰਿ ਜਗਤੁ ਸੂਤਾ ਨਾਚੈ ਟਾਪੈ ਅਕਰੋ ਗਾਵੈ ਮਨਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੩॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਵਿਰਤਿ ਪਖਿ ਕਰਮੀ
ਨਾਚੇ ਮੁਨਿ ਜਨ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਨਾਚੇ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਧਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥੪॥
ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਕੈ ਗੁਣ ਨਾਚੇ ਜਿਨ ਲਾਗੀ ਹਰਿ ਲਿਵ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭੇ ਹੀ ਨਾਚੇ ਨਾਚਹਿ ਖਾਣੀ ਚਾਰੀ
॥੫॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਸੇਈ ਨਾਚਹਿ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਸੇ ਭਗਤ ਸੇ ਤਤੁ ਗਿਆਨੀ ਜਿਨ
ਕਤ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਏ ॥੬॥ ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਸਚੇ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ਬਿਨੁ ਸੇਵਾ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਜੀਕਤੁ ਮਰੈ ਤਾ
ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੈ ਤਾ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੭॥ ਮਾਇਆ ਕੈ ਅਰਥਿ ਬਹੁਤ ਲੋਕ ਨਾਚੇ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥
ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ਜਿਨ ਕਤ ਕ੃ਪਾ ਤੁਮਾਰੀ ॥੮॥ ਇਕੁ ਦਮੁ ਸਾਚਾ ਵੀਸਰੈ ਸਾ ਵੇਲਾ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ
॥ ਸਾਹਿ ਸਾਹਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੀਐ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਕਰੇ ਰਾਇ ॥੯॥ ਸੇਈ ਨਾਚਹਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੀ ॥
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੇ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਜਿਨ ਕਤ ਨਦਰਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧੦॥੧॥੬॥

ਗ੍ਰੰਥ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੂ ੨

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਜੀਅਰਾ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਜਿਤ ਬਾਲਕੁ ਖੀਰ ਅਧਾਰੀ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਅਪੁਨੇ
ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਤਰੁ ਤਾਰੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਜਲੁ ਪਾਈਐ ਜਿਨ

कउ कृपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ सनक सन्नदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥
 सरणागति प्रह्लाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥२॥ अलख निरंजनु एको वरतै एका जोति मुरारी
 ॥ सभि जाचिक तू एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥३॥ भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ
 कथा नित निआरी ॥ सफल जनमु भड़िआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥४॥ मनमुख दुबिधा
 दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी ॥ संत जना की कथा न भावै ओइ डूबे सणु परवारी ॥५॥
 निंदकु निंदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआधारी ॥ संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न
 पारी ॥६॥ एहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥ हरि एको सूतु वरतै जुग
 अंतरि सूतु खिंचै एकंकारी ॥७॥ रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥ नानक
 हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥८॥१॥७॥

गूजरी महला ५ घरु २

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

रजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥ ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा
 ॥१॥ पिता मेरो बडो धनी अगमा ॥ उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥२॥ रहाउ ॥
 सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता ॥ तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन
 महि राता ॥३॥ सूरन महि सूरा तूं कहीअहि भोगन महि भोगी ॥ ग्रसतन महि तूं बडो गृहसती
 जोगन महि जोगी ॥४॥ करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥ साहन महि
 तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥५॥ दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥
 लखिमी केतक गनी न जाईऔ गनि न सकउ सीका ॥६॥ नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन
 महि गिआनी ॥ जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥७॥ सिधन महि
 तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा ॥ आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा

॥७॥ जित बोलावहि तित बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥ साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥८॥१॥८॥

ગૂજરી મહલા ૫ ઘરુ ૪

૧૮૩ સતિગુર પ્રસાદિ ॥

નાથ નરહર દીન બંધવ પતિત પાવન દેવ ॥ ભૈ ક્રાસ નાસ કૃપાલ ગુણ નિધિ સફલ સુઆમી સેવ
॥૧॥ હરિ ગોપાલ ગુર ગોબિંદ ॥ ચરણ સરણ દિલ્લિઆલ કેસવ તારિ જગ ભવ સિંધ ॥૨॥ રહાઉ ॥
કામ ક્રોધ હરન મદ્ મોહ દહન મુરારિ મન મકરંદ ॥ જનમ મરણ નિવારિ ધરણીધર પતિ રાખુ
પરમાનંદ ॥૨॥ જલત અનિક તરંગ માઝિਆ ગુર ગિઆન હરિ રિદ મંત ॥ છેદિ અદ્ભુતુધિ કરુણા મૈ
ચિંત મેટિ પુરખ અન્નત ॥૩॥ સિમરિ સમરથ પલ મહૂરત પ્રભ ધિઆનુ સહજ સમાધિ ॥ દીન દિલ્લિઆલ
પ્રસન્ન પૂરન જાચીઓ રજ સાધ ॥૪॥ મોહ મિથન દુરંત આસા બાસના બિકાર ॥ રખુ ધરમ ભરમ
બિદારિ મન તે ઉધરુ હરિ નિરંકાર ॥૫॥ ધનાઢિ આઢિ ભંડાર હરિ નિધિ હોત જિના ન ચીર ॥ ખલ
મુગધ મૂડુ કટાખ્ય સ્ત્રીધર ભએ ગુણ મતિ ધીર ॥૬॥ જીવન મુકત જગદીસ જપિ મન ધારિ રિદ પરતીતિ
॥ જીઓ દિલ્લિઆ મિઝા સરબત્ર રમણ પરમ હ્યાસહ રીતિ ॥૭॥ દેત દરસનુ સ્વવન હરિ જસુ રસન નામ
ઉચાર ॥ અંગ સંગ ભગવાન પરસન પ્રભ નાનક પતિત ઉધાર ॥૮॥૧॥૨॥૫॥૧॥૨॥૫॥૭॥

ગૂજરી કી વાર મહલા ૩ સિકંદર બિરાહિમ કી વાર કી ધૂની ગાઉણી

૧૮૩ સતિગુર પ્રસાદિ ॥

સલોકુ મઃ ૩ ॥ ઇહુ જગતુ મમતા મુઆ જીવણ કી બિધિ નાહિ ॥ ગુર કૈ ભાણૈ જો ચલૈ તાં
જીવણ પદવી પાહિ ॥ ઓઝિ સદા સદા જન જીવતે જો હરિ ચરણી ચિતુ લાહિ ॥ નાનક નદરી
મનિ વસૈ ગુરમુખિ સહજિ સમાહિ ॥૧॥ મઃ ૩ ॥ અંદરિ સહસા દુખુ હૈ આપૈ સિરિ ધંધૈ માર ॥
દૂજૈ ભાઇ સુતે કબહિ ન જાગહિ માઝિਆ મોહ પિઆર ॥ નામુ ન ચેતહિ સબદુ ન વીચારહિ ઇહુ

मनमुख का आचारु ॥ हरि नामु न पाइआ जनमु विरथा गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥२॥
 पउड़ी ॥ आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥ मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥ तदहु
 आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥ तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥ जिउ तिसु भावै
 तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥१॥ सलोकु मः ३ ॥ साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥ ओहु
 अउहाणी कदे नाहि ना आवै ना जाइ ॥ सदा सदा सो सेवीअै जो सभ महि रहै समाइ ॥ अवरु दूजा
 किउ सेवीअै जंमै तै मरि जाइ ॥ निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु न जाणहि आपणा अवरी कउ
 चितु लाइ ॥ नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सचा नामु धिआईअै सभो
 वरतै सचु ॥ नानक हुकमु बुझि परवाणु होइ ता फलु पावै सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि
 न बुझई अंधा कचु निकचु ॥२॥ पउड़ी ॥ संजोगु विजोगु उपाइओनु सृसटी का मूलु रचाइआ ॥ हुकमी
 सृसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ॥ जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ ब्रह्मा
 बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ ॥ माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥२॥
 सलोकु मः ३ ॥ सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै ॥ सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै ॥ नानक आपु छोडि
 गुर माहि समावै ॥१॥ मः ३ ॥ गुर की सिख को विरला लेवै ॥ नानक जिसु आपि वडिआई देवै
 ॥२॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी ॥ पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीअै
 तारी ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरि पारि उतारी ॥ गुर सबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी ॥
 हरि हरि नामु धिआईअै हरि हरि निसतारी ॥३॥ सलोकु ॥ कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा रई
 दसवै भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउ करि जाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा
 करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥१॥ मः ३ ॥ नानक मुकति दुआरा अति
 नीका नाना होइ सु जाइ ॥ हउमै मनु असथूलु है किउ करि विचु दे जाइ ॥ सतिगुर मिलैअै हउमै

ਗਈ ਜੋਤਿ ਰਹੀ ਸਭ ਆਇ ॥ ਇਹੁ ਜੀਤ ਸਦਾ ਸੁਕਤੁ ਹੈ ਸਹਜੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਸੰਸਾਰੁ
 ਤਪਾਇ ਕੈ ਵਸਿ ਆਪਣੈ ਕੀਤਾ ॥ ਗਣਤੈ ਪ੍ਰਭੂ ਨ ਪਾਈਐ ਟ੍ਰੌ ਭਰਮੀਤਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਜੀਕਤੁ ਮਰੈ ਬੁਝਿ
 ਸਚਿ ਸਮੀਤਾ ॥ ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਖੋਈਐ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲੀਤਾ ॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਕਰੇ ਆਪਿ ਆਪੇ ਵਿਗਸੀਤਾ
 ॥੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਇਆ ਨਾਮੁ ਨ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਧਿਗੁ ਇਕੇਹਾ ਜੀਵਿਆ
 ਕਿਆ ਜੁਗ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ਆਇ ॥ ਮਾਇਆ ਖੋਟੀ ਰਾਸਿ ਹੈ ਏਕ ਚਸੇ ਮਹਿ ਪਾਜੁ ਲਹਿ ਜਾਇ ॥ ਹਥਹੁ ਛੁਡਕੀ
 ਤਨੁ ਸਿਆਹੁ ਹੋਇ ਬਦਨੁ ਜਾਇ ਕੁਮਲਾਇ ॥ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਤਿਨ੍ ਸੁਖੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ
 ਆਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਰੰਗ ਸਿਤ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਸੋ ਧਨੁ
 ਸਤਪਿਆ ਜਿ ਜੀਅ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਰੰਗੁ ਤਿਸੈ ਕਤ ਅਗਲਾ ਵਨੀ ਚੜੈ ਚੜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਮਾਇਆ ਹੋਈ ਨਾਗਨੀ ਜਗਤਿ ਰਹੀ ਲਪਟਾਇ ॥ ਇਸ ਕੀ ਸੇਵਾ ਜੋ ਕਰੇ ਤਿਸ ਹੀ ਕਤ ਫਿਰਿ ਖਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਕੋਈ ਗਾਰ੍ਡੂ ਤਿਨਿ ਮਲਿ ਢਲਿ ਲਾਈ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਤਕਰੇ ਜਿ ਸਚਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਢਾਢੀ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ਪ੍ਰਭੂ ਸੁਣਾਇਸੀ ॥ ਅਨੰਦਰਿ ਧੀਰਕ ਹੋਇ ਪੂਰਾ ਪਾਇਸੀ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ
 ਲੇਖੁ ਸੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇਸੀ ॥ ਜਾ ਹੋਵੈ ਖਸਮੁ ਫਿਆਲੁ ਤਾ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਪਾਇਸੀ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਅਤਿ ਵਡਾ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਾਇਸੀ ॥੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਭਨਾ ਕਾ ਸਹੁ ਏਕੁ ਹੈ ਸਦ ਹੀ ਰਹੈ ਹਜੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ
 ਮਨਿਈ ਤਾ ਘਰ ਹੀ ਅਨੰਦਰਿ ਢੂਰਿ ॥ ਹੁਕਮੁ ਭੀ ਤਿਨਾ ਮਨਾਇਸੀ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਹੁਕਮੁ ਮਨਿ
 ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰੇਮ ਸੁਹਾਗਣਿ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਰੈਣ ਸਬਾਈ ਜਲਿ ਮੁੜੈ ਕੰਤ ਨ ਲਾਇਆ ਭਾਤ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸੁਖਿ ਵਸਨਿ ਸੁਹਾਗਣੀ ਜਿਨ੍ ਪਿਆਰਾ ਪੁਰਖੁ ਹਰਿ ਰਾਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਿਰਿ ਮੈ ਦੇਖਿਆ ਹਰਿ
 ਇਕੋ ਦਾਤਾ ॥ ਤਪਾਇ ਕਿਤੈ ਨ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਗੁਰ ਸ਼ਬਦੀ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਸਹਜੇ
 ਜਾਤਾ ॥ ਅਨੰਦਰਹੁ ਤ੍ਰਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝੀ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਰਿ ਨਾਤਾ ॥ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੇ ਕੀ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਬੋਲਾਤਾ ॥੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਕਾਇਆ ਛਸ ਕਿਆ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਜਿ ਪਇਆ ਹੀ ਛਡਿ ਜਾਇ ॥ ਏਸ ਨੋ ਕੂਡੁ

ਬੋਲਿ ਕਿ ਖਵਾਲੀਐ ਜਿ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਕਾਇਆ ਮਿਟੀ ਅੰਧੁ ਹੈ ਪਤਣੈ ਪੁਛਹੁ ਜਾਇ ॥ ਹਤ ਤਾ
 ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਾ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਤੋ ਖਸਮ ਕਾ ਜਿ ਰਹਾ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
 ਮਃ ੩ ॥ ਏਕੋ ਨਿਹਚਲ ਨਾਮ ਧਨੁ ਹੋਰੁ ਧਨੁ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਇਸੁ ਧਨ ਕਤ ਤਸਕਰੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਕਈ ਨਾ ਓਚਕਾ
 ਲੈ ਜਾਇ ॥ ਇਹੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜੀਐ ਸੇਤੀ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜੀਐ ਨਾਲੇ ਜਾਇ ॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈਐ ਮਨਮੁਖਿ ਪਲੈ
 ਨ ਪਾਇ ॥ ਧਨੁ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨਾ ਨਾਮ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਆਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਮੇਰਾ ਸਾਹਿਬੁ ਅਤਿ ਵਡਾ
 ਸਚੁ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਤਿਸ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਚੀਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਈਐ ਨਿਹਚਲੁ ਧਨੁ
 ਧੀਰਾ ॥ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭੇਟੈ ਗੁਰੂ ਸ੍ਰਵਾ ॥ ਗੁਣਵਂਤੀ ਸਾਲਾਹਿਆ ਸਦਾ ਥਿਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਹਰਿ ਪੂਰਾ
 ॥੭॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਧਿਗੁ ਤਿਨਾ ਦਾ ਜੀਵਿਆ ਜੋ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗਦੇ ਦੁਖੁ ਹਤਮੈ ਪਾਪ ਕਮਾਇ ॥
 ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪੇ ਤਿਨ ਕ੍ਰਿਝ ਨ ਕਾਈ ਪਾਇ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਓਇ ਸੁਖੁ ਨ
 ਪਾਵਹਿ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਤਿਸੁ ਹਤਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ
 ਪ੍ਰਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਆਇ ਪਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਊਥਾ ਕਤਲੁ ਹੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਭਗਤਿ
 ਨ ਨਾਤ ॥ ਸਕਤੀ ਅੰਦਰਿ ਕਰਤਦਾ ਕੂਝੁ ਤਿਸ ਕਾ ਹੈ ਉਪਾਤ ॥ ਤਿਸ ਕਾ ਅੰਦਰੁ ਚਿਤੁ ਨ ਮਿਜਈ ਮੁਖਿ ਫੀਕਾ
 ਆਲਾਤ ॥ ਓਇ ਧਰਮਿ ਰਲਾਏ ਨਾ ਰਲਨਿ ਓਨਾ ਅੰਦਰਿ ਕੂਝੁ ਸੁਆਤ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਤੈ ਬਣਤ ਬਣਾਈ
 ਮਨਮੁਖ ਕੂਝੁ ਬੋਲਿ ਡੁਬੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੇ ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਬਿਨੁ ਕ੍ਰਿਝੇ ਵਡਾ ਫੇਰੁ ਪਇਆ
 ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨ ਕੀਤੀਆ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਈ ॥ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰੂ
 ਪਾਈਐ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਰਾਈ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਭੁਖ ਵਿਚਹੁ ਤਰੈ ਸੁਖੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ
 ਹਿਰਦੈ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੮॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਆਪਣਾ ਤਿਸ ਨੋ ਪ੍ਰਯੇ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਸਭਨਾ ਉਪਾਵਾ
 ਸਿਰਿ ਉਪਾਤ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸੀਤਲ ਸਾਤਿ ਵਸੈ ਜਪਿ ਹਿਰਦੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
 ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਖਾਣਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੈਨਣਾ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਹੋਇ ॥੯॥ ਮਃ ੩ ॥ ਏ ਮਨ ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਸੁਣਿ ਹਰਿ

ਪਾਵਹਿ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਤਾ
 ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਗੈ ਧਿਆਨੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਤੁ ਸਂਤੋਖੁ ਸਭੁ ਸਚੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਵਿਤਾ ॥ ਅੰਦਰਹੁ ਕਪਟੁ ਵਿਕਾਰੁ
 ਗਇਆ ਮਨੁ ਸਹਜੇ ਜਿਤਾ ॥ ਤਹ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਅਨੰਦ ਰਸੁ ਅਗਿਆਨੁ ਗਵਿਤਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਖੈ
 ਗੁਣ ਪਰਗਟੁ ਕਿਤਾ ॥ ਸਭਨਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਇਕੋ ਹਰਿ ਮਿਤਾ ॥੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬਿੰਦੇ ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ
 ਕਹੀਐ ਜਿ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਛੈ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਕਮਾਵੈ ਹਉਮੈ ਰੋਗ ਤਿਸੁ ਜਾਏ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ
 ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਬ੍ਰਾਹਮ ਗਿਆਨੀ ਜਿ ਹਉਮੈ ਮੇਟਿ ਸਮਾਏ ॥
 ਨਾਨਕ ਤਿਸ ਨੋ ਮਿਲਿਆ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਜਿ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ
 ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਰਸਨਾ ਝੂਠੁ ਬੋਲਾਇ ॥ ਕਪਟਿ ਕੀਤੈ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨ ਭੀਜੈ ਨਿਤ ਕੇਖੈ ਸੁਣੈ ਸੁਭਾਇ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ
 ਭਾਇ ਜਾਇ ਜਗੁ ਪਰਬੋਧੈ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਸੁਆਇ ॥ ਇਤੁ ਕਮਾਣੈ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ਜਂਮੈ ਮੈਰੈ ਫਿਰਿ ਆਵੈ
 ਜਾਇ ॥ ਸਹਸਾ ਮੂਲਿ ਨ ਚੁਕੰਈ ਵਿਚਿ ਵਿਸਟਾ ਪਚੈ ਪਚਾਇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕੁਪਾ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕੀ
 ਸਿਖ ਸੁਣਾਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਅੰਤਿ ਛਡਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਨਾ ਹੁਕਮੁ
 ਮਨਾਇਆਨੁ ਤੇ ਪ੍ਰੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਪ੍ਰੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਸਚੈ
 ਸਬਦਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਮਹਲੁ ਤਿਨੀ ਪਾਇਆ ਜਿਨ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿ ਰਹੇ
 ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਨ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਤਉਜੈ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ
 ਲਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਕੇਖਹਿ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਬੋਲਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਹਜਿ ਰੰਗ ਲਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਤਿਮਰ
 ਅਗਿਆਨੁ ਅਧੇਰੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਧੁਰਿ ਪੂਰਾ ਤਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
 ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਜਿਨਾ ਨ ਸੇਵਿਆ ਸਬਦਿ ਨ ਲਗੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਹਜੇ ਨਾਮੁ ਨ ਧਿਆਇਆ ਕਿਤੁ ਆਇਆ
 ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਈਐ ਵਿਸਟਾ ਸਦਾ ਖੁਆਰੁ ॥ ਕੂਡੈ ਲਾਲਚਿ ਲਗਿਆ ਨਾ ਤਰਵਾਰੁ ਨ ਪਾਰੁ

॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਬਰੇ ਜਿ ਆਪਿ ਮੇਲੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਭਗਤ ਸਚੈ ਦਰਿ ਸੋਹਦੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ
ਰਹਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਤਿਨ ਊਪਜੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਕਸਾਏ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਹਹਿ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਰਸਨਾ ਹਰਿ
ਰਸੁ ਪਿਆਏ ॥ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਜਿਨ੍ਹੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਹਰਿ ਜੀਤ ਰਿਦੈ ਵਸਾਏ ॥ ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਫਿਰੈ ਬਿਲਲਾਦੀ
ਦ੍ਰੌਜੈ ਭਾਡਿ ਖੁਆਏ ॥੧੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਭਗਤੀ ਖਟਿਆ ਹਰਿ ਤਤਮ ਪਦੁ
ਪਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਾਇਆ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਵਿਚੇ ਗ੍ਰਹ ਗੁਰ ਬਚਨਿ
ਉਦਾਸੀ ਹਤਮੈ ਮੋਹੁ ਜਲਾਇਆ ॥ ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਕੁਲ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ਧਨੁ ਜਣੇਦੀ ਮਾਇਆ ॥ ਐਸਾ
ਸਤਿਗੁਰ ਸੋਈ ਪਾਏ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਵਿਟਹੁ
ਜਿਨਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਕੇਖਿ ਮੁਲੇ ਜਿਤ ਦੇਖਿ ਦੀਪਕਿ ਪਤਂਗ
ਪਚਾਇਆ ॥ ਪੰਡਿਤ ਭੁਲਿ ਭੁਲਿ ਮਾਇਆ ਕੇਖਹਿ ਦਿਖਾ ਕਿਨੈ ਕਿਹੁ ਆਣਿ ਚੜਾਇਆ ॥ ਦ੍ਰੌਜੈ ਭਾਡਿ ਪਡਹਿ
ਨਿਤ ਬਿਖਿਆ ਨਾਵਹੁ ਦਧਿ ਖੁਆਇਆ ॥ ਜੋਗੀ ਜੰਗਮ ਸੰਨਿਆਸੀ ਮੁਲੇ ਓਨਾ ਅਛਕਾਰੁ ਬਹੁ ਗਰਬੁ
ਕਥਾਇਆ ॥ ਛਾਦਨੁ ਭੋਜਨੁ ਨ ਲੈਹੀ ਸਤ ਭਿਖਿਆ ਮਨਹਠਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਏਤਡਿਆ ਵਿਚਹੁ ਸੋ ਜਨੁ
ਸਮਧਾ ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈਐ ਜਾ ਕਰਦੇ ਸਭਿ ਕਰਾਇਆ
॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਪਰੇਤੁ ਹੈ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਅਛਕਾਰਾ ॥ ਏਹ ਜਮ ਕੀ ਸਿਰਕਾਰ ਹੈ ਏਨਾ ਤਪਰਿ ਜਮ ਕਾ
ਡੰਡੁ ਕਰਾਰਾ ॥ ਮਨਮੁਖ ਜਮ ਮਾਗਿ ਪਾਈਐਨਿ ਜਿਨ੍ਹ ਦ੍ਰੌਜਾ ਭਾਉ ਪਿਆਰਾ ॥ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਐਨਿ ਕੋ ਸੁਣੈ
ਨ ਪ੍ਰਕਾਰਾ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਗੁਰੂ ਮਿਲੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਹਤਮੈ ਮਮਤਾ
ਮੋਹਣੀ ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਗੈ ਖਾਇ ॥ ਜੋ ਮੋਹਿ ਦ੍ਰੌਜੈ ਚਿਤੁ ਲਾਇਦੇ ਤਿਨਾ ਵਿਆਪਿ ਰਹੀ ਲਪਟਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
ਪਰਜਾਲੀਐ ਤਾ ਏਹ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹੋਵੈ ਤਜਲਾ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਕਾ
ਮਾਰਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਕੇਤਡਿਆ ਜੁਗ ਭਰਮਿਆ ਥਿਰੁ
ਰਹੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ ਭਾਣਾ ਤਾ ਭਰਮਾਇਅਨੁ ਕਰਿ ਪਰਧਨੁ ਖੇਲੁ ਤਪਾਇ ॥ ਜਾ ਹਰਿ ਬਖਸੇ ਤਾ ਗੁਰ

ਮਿਲੈ ਅਸਥਿਰੁ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨ ਹੀ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਨਾ ਕਿਛੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਅਪਾਰੁ ਹੈ ਮਿਲਣਾ ਸੰਜੋਗੀ ॥ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਆਪਿ ਵਸਿ ਰਹਿਆ ਆਪੇ ਰਸ ਭੋਗੀ ॥ ਆਪਿ
 ਅਤੀਤੁ ਅਲਿਪਤੁ ਹੈ ਨਿਰਜੋਗੁ ਹਰਿ ਜੋਗੀ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਹਰਿ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਗੀ ॥ ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਈਐ ਲਹਿ ਜਾਹਿ ਵਿਜੋਗੀ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਆਪਿ ਅਖਾਇਦਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਸੋਇ
 ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਿਫਤਿ ਸਲਾਹ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੰਝੈ ਕੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤੀ ਰਸਨਾ ਸਬਦਿ
 ਸੁਹਾਈ ॥ ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਆਈ ॥ ਵਡਭਾਗੀਆ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸੁਹਹੁ ਕਢਾਈ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਹਿ
 ਸੇਈ ਜਨ ਸੋਹਣੇ ਤਿਨੁ ਕਤ ਪਰਯਾ ਪ੍ਰਯਣ ਆਈ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਸਚੈ
 ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ਕਾਇਆ ਗੜ ਭੀਤਰਿ ਕੂਡੁ ਕੁਸਤੁ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ
 ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਨੀ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਅਗਿਆਨੀ ॥ ਤੁਧਾਇ ਕਿਤੈ ਨ ਲਭਨੀ ਕਰਿ ਭੇਖ ਥਕੇ ਭੇਖਵਾਨੀ ॥
 ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਖੋਲਾਈਅਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਨੀ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਿਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨ ਪੀਆ ਤੇ ਤ੃ਪਤਾਨੀ ॥
 ੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਰੈਣ ਸੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਹੋਵੈ
 ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਹਰਿ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਮੀ ਬੋਲੈ ਬੋਲਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ
 ਕਰਤਿਆ ਸੋਭਾ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਤਿ ਰਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਲਧੀ ਭਾਲਿ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਬਦੇ ਉਚਰੈ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਹਿਰਦੈ ਨਾਲਿ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਹਜੇ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਾਲਿ ॥ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਿਦੈ ਸਮਾਲਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਏ ਮਨਾ ਅਤਿ ਲੋਭੀਆ
 ਨਿਤ ਲੋਭੇ ਰਤਾ ॥ ਮਾਇਆ ਮਨਸਾ ਮੋਹਣੀ ਦਹ ਦਿਸ ਫਿਰਾਤਾ ॥ ਅਗੈ ਨਾਤ ਜਾਤਿ ਨ ਜਾਇਸੀ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੁ
 ਖਾਤਾ ॥ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨ ਚਖਿਐ ਫੀਕਾ ਬੋਲਾਤਾ ॥ ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਚਾਖਿਆ ਸੇ ਜਨ ਤ੃ਪਤਾਤਾ
 ॥੧੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿ ਸਚਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ

ਜਿ ਗੁਣਦਾਤਾ ਮਤਿ ਧੀਰੂ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਨੋ
 ਆਖੀਐ ਜਿ ਦੇਦਾ ਰਿਜਕੁ ਸਬਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਇਕੋ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਆ ਦਿਖਾਇ
 ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਰਮੁਖ ਸਦਾ ਕਰਹਿ ਮਨਮੁਖ ਮਰਹਿ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥ ਓਨਾ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਨ ਭਾਰੰਡ
 ਦੁਖੇ ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਣਾ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਹਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਹਿ
 ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲੇ ਤ੃ਭਵਣ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੇਵਾ ਭਗਤਿ ਬਨੀਜੈ ॥ ਹਰਿ
 ਕੈ ਭਾਣੈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਹਜੇ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਨਿਤ ਲੀਜੈ ॥ ਹਰਿ ਕੈ
 ਤਖਤਿ ਬਹਾਲੀਐ ਨਿਜ ਘਰਿ ਸਦਾ ਵਸੀਜੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਭਾਣਾ ਤਿਨੀ ਮੰਨਿਆ ਜਿਨਾ ਗੁਰੁ ਮਿਲੀਜੈ ॥੧੬॥
 ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸੇ ਜਨ ਸਦਾ ਕਰਹਿ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਆਪੇ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਮਨੁ
 ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਰਸਿਖੁ ਜੋ ਨਿਤ ਕਰੇ ਸੋ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥ ਵਾਹੁ
 ਵਾਹੁ ਕਰਹਿ ਸੇ ਜਨ ਸੋਹਣੇ ਹਰਿ ਤਿਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਹਿਰਦੈ ਤਚਰਾ ਮੁਖਹੁ ਭੀ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ
 ਕਰੇਤ ॥ ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜੋ ਕਰਹਿ ਹਉ ਤਨੁ ਮਨੁ ਤਿਨ੍ ਕਤ ਦੇਤ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ
 ਹੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਜਾ ਕਾ ਨਾਤ ॥ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਣੀ
 ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਸੁ ਖਾਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਲਿ ਥਲਿ ਭਰਪੂਰੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਵਾਹੁ
 ਵਾਹੁ ਗੁਰਸਿਖ ਨਿਤ ਸਾਭ ਕਰਹੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਭਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜੋ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ
 ਜਮਕੰਕਰੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਚਾ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਸਚੁ ਪਛਾਣੀਐ
 ਸਚਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਹਿ ਨਾ ਸਵਹਿ ਜਾਗਤ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ
 ਸੇ ਪੁਨਨ ਪਰਾਣੀ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਪਚਿ ਮੁਏ ਅਜਾਣੀ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਬਾਣੀ
 ਨਿਰਂਕਾਰ ਹੈ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਅਗਮ ਅਥਾਹੁ ਹੈ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ
 ਕੇਪਰਵਾਹੁ ਹੈ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਮੀ

ਪਾਈਐ ਆਪਿ ਦਿਆ ਕਰਿ ਦੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਲਏਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩
 ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸਾਤਿ ਨ ਆਵੰਦ ਟ੍ਰੌਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥ ਜੇ ਬਹੁਤੇਰਾ ਲੋਚੀਐ ਵਿਣੁ ਕਰਮੈ ਨ ਪਾਇਆ
 ਜਾਇ ॥ ਜਿਨਾ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭ ਵਿਕਾਰੁ ਹੈ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਚੁਕੰਦ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ॥
 ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਸੁ ਖਾਲੀ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥ ਤਿਨ ਜਮ ਕੀ ਤਲਬ ਨ ਹੋਵੰਦ ਨਾ ਓਇ ਦੁਖ
 ਸਹਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੁਕਰੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਢਾਢੀ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿ ਖਸਮੈ ਧਰੇ
 ਪਿਆਰੁ ॥ ਦਰਿ ਖੜਾ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਢਾਢੀ ਦੁਰੁ ਘਰੁ ਪਾਇਸੀ ਸਚੁ ਰਖੈ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਢਾਢੀ
 ਕਾ ਮਹਲੁ ਅਗਲਾ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥ ਢਾਢੀ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰਿ ॥੧੮॥
 ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਜਰੀ ਜਾਤਿ ਗਵਾਰਿ ਜਾ ਸਹੁ ਪਾਏ ਆਪਣਾ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਜਪੁ
 ਜਾਪਣਾ ॥ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਭਤ ਪਵੈ ਸਾ ਕੁਲਵੰਤੀ ਨਾਰਿ ॥ ਸਾ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਕੰਤ ਕਾ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ
 ਕੀਤੀ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਓਹ ਕੁਚਜੀ ਕੁਲਖਣੀ ਪਰਹਰਿ ਛੋਡੀ ਭਤਾਰਿ ॥ ਭੈ ਪਾਇਐ ਮਲੁ ਕਟੀਐ ਨਿਰਮਲ ਹੋਵੈ ਸਰੀਰੁ
 ॥ ਅੰਤਰਿ ਪਰਗਾਸੁ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਜਪਿ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰੁ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਬੈਸੈ ਭੈ ਰਹੈ ਭੈ ਵਿਚਿ ਕਮਾਵੈ ਕਾਰ ॥
 ਐਥੈ ਸੁਖੁ ਵਡਿਆਈਆ ਦਰਗਹ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ॥ ਭੈ ਤੇ ਨਿਰਭਤ ਪਾਈਐ ਮਿਲਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥ ਨਾਨਕ
 ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ਸਾ ਭਲੀ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪੇ ਕਖਸੇ ਕਰਤਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਸਚੇ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਤ
 ॥ ਨਾਨਕ ਏਕੁ ਛੋਡਿ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਗੈ ਸਾ ਜਿਹਵਾ ਜਲਿ ਜਾਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅੰਸਾ ਅਤਤਾਰੁ ਤਪਾਇਐਨੁ ਭਾਤ
 ਦ੍ਰੌਜਾ ਕੀਆ ॥ ਜਿਤ ਰਾਜੇ ਰਾਜੁ ਕਮਾਵਦੇ ਦੁਖ ਸੁਖ ਮਿਡੀਆ ॥ ਈਸਰੁ ਬ੍ਰਹਮਾ ਸੇਵਦੇ ਅੰਤੁ ਤਿਨੀ ਨ ਲਹੀਆ ॥
 ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਂਕਾਰੁ ਅਲਖੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਗਟੀਆ ॥ ਤਿਥੈ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਨ ਵਿਆਪੰਦ ਅਸਥਿਰੁ ਜਗਿ ਥੀਆ
 ॥੧੯॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਏਹੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਹੈ ਜੇਤਾ ਹੈ ਆਕਾਰੁ ॥ ਜਿਨਿ ਏਹੁ ਲੇਖਾ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਹੋਆ
 ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜੇ ਕੋ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦਾ ਸੋ ਸੂਰਖੁ ਗਾਵਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨੁ ਕੁਂਚਰੁ ਪੀਲਕੁ ਗੁਰੁ ਗਿਆਨੁ
 ਕੁੰਡਾ ਜਹ ਖਿੰਚੇ ਤਹ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਸਤੀ ਕੁੰਡੇ ਬਾਹਰਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਤੁੜਾਇ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤਿਸੁ ਆਗੈ

ਅਰਦਾਸਿ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਣਾ ਸੇਵਿ ਸਭ ਫਲ ਪਾਇਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ਸਦਾ
 ਧਿਆਇਆ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਢੁਖੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਭਏ ਅਚਿੰਤੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਨਿਹਚਲਾਇਆ ॥੨੦॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਖੋਤਿ ਮਿਆਲਾ ਤਚੀਆ ਘਰੁ ਤਚਾ ਨਿਰਣਤ ॥ ਮਹਲ ਭਗਤੀ ਘਰਿ ਸਰੈ ਸਜਣ ਪਾਹੁਣਿਅਤ
 ॥ ਬਰਸਨਾ ਤ ਬਰਸੁ ਘਨਾ ਬਹੁਡਿ ਬਰਸਹਿ ਕਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨ੍ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਮਨ
 ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਿਠਾ ਸੋ ਜੋ ਭਾਵਦਾ ਸਜਣੁ ਸੋ ਜਿ ਰਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਕਤ ਆਪਿ
 ਕਰੇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਿ ਜਨ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਈ ॥ ਤੂ ਰਖਵਾਲਾ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਤ
 ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੇਰਿਆ ਤੂ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਜੋ ਦਾਸ ਤੇਰੇ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਮਾਰਿ ਪਚਾਈ
 ॥ ਚਿੰਤਾ ਛਡਿ ਅਚਿੰਤੁ ਰਹੁ ਨਾਨਕ ਲਗਿ ਪਾਈ ॥੨੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਆਸਾ ਕਰਤਾ ਜਗੁ ਸੁਆ ਆਸਾ ਮਰੈ
 ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਆਸਾ ਪੂਰੀਆ ਸਚੇ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਮਰਿ ਜਾਇਸੀ ਜਿਨਿ
 ਕੀਤੀ ਸੋ ਲੈ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਿਹਚਲੁ ਕੋ ਨਹੀ ਬਾਝਹੁ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਸੋਨੁ
 ਕਰਿ ਪੂਰਾ ਥਾਟੁ ॥ ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਹਰਿ ਹਾਟੁ ॥ ਆਪੇ ਸਾਗਰੁ ਆਪੇ ਬੋਹਿਥਾ ਆਪੇ ਹੀ
 ਖੋਵਾਟੁ ॥ ਆਪੇ ਗੁਰੁ ਚੇਲਾ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਦੱਸੇ ਘਾਟੁ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੁ
 ॥੨੨॥੧॥ ਸੁਧੁ

ਰਾਗੁ ਗੂਜਰੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੫

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰੁ ਆਰਾਧਣਾ ਜਿਹਵਾ ਜਧਿ ਗੁਰ ਨਾਉ ॥ ਨੇਕੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੇਖਣਾ ਸ਼ਵਣੀ ਸੁਨਣਾ
 ਗੁਰ ਨਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਦਰਗਹ ਪਾਈਐ ਠਾਉ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜਿਸ ਨੇ ਏਹ ਵਥੁ ਦੇਇ
 ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਤਤਮ ਕਾਢੀਅਹਿ ਵਿਰਲੇ ਕੋਈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਰਖੇ ਰਖਣਹਾਰਿ ਆਪਿ ਤਬਾਰਿਅਨੁ ॥ ਗੁਰ ਕੀ
 ਪੈਰੀ ਪਾਇ ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਅਨੁ ॥ ਹੋਆ ਆਪਿ ਦਿੱਤਿਆਲੁ ਮਨਹੁ ਨ ਵਿਸਾਰਿਅਨੁ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਭਵਜਲੁ
 ਤਾਰਿਅਨੁ ॥ ਸਾਕਤ ਨਿੰਦਕ ਦੁਸਟ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਬਿਦਾਰਿਅਨੁ ॥ ਤਿਸੁ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਟੇਕ ਨਾਨਕ ਮਨੈ ਮਾਹਿ ॥

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਸਗਲੇ ਟ੍ਰੂਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨ ਪੁਰਖੁ ਅਗਮੁ ਅਪਾਰੀਐ ॥ ਸਚੋ
 ਸਚਾ ਸਚੁ ਸਚੁ ਨਿਹਾਰੀਐ ॥ ਕੂਡੁ ਨ ਜਾਪੈ ਕਿਛੁ ਤੇਰੀ ਧਾਰੀਐ ॥ ਸਭਸੈ ਦੇ ਦਾਤਾਰੁ ਜੇਤ ਉਪਾਰੀਐ ॥ ਇਕਤੁ
 ਸੂਤਿ ਪਰੋਇ ਜੋਤਿ ਸੰਜਾਰੀਐ ॥ ਹੁਕਮੇ ਭਵਜਲ ਮੰਝਿ ਹੁਕਮੇ ਤਾਰੀਐ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਤੁਥੁ ਧਿਆਏ ਸੋਇ ਜਿਸੁ ਭਾਗੁ
 ਮਥਾਰੀਐ ॥ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਲਖੀ ਨ ਜਾਇ ਹਤ ਤੁਥੁ ਬਲਿਹਾਰੀਐ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰੂਂ ਤੁਸਹਿ
 ਮਿਹਰਵਾਨ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸਹਿ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰੂਂ ਤੁਸਹਿ ਮਿਹਰਵਾਨ ਨਤ ਨਿਧਿ ਘਰ ਮਹਿ ਪਾਹਿ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰੂਂ ਤੁਸਹਿ
 ਮਿਹਰਵਾਨ ਤਾ ਗੁਰ ਕਾ ਮੰਤੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰੂਂ ਤੁਸਹਿ ਮਿਹਰਵਾਨ ਤਾ ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥
 ਕਿਤੀ ਬੈਹਨਿ ਬੈਹਣੇ ਮੁਚੁ ਵਜਾਇਨਿ ਕਵਜ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਵਿਣੁ ਕਿਸੈ ਨ ਰਹੀਆ ਲਜ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੁਥੁ
 ਧਿਆਇਨਿ ਬੇਦ ਕਤੇਬਾ ਸਣੁ ਖੱਡੇ ॥ ਗਣਤੀ ਗਣੀ ਨ ਜਾਇ ਤੈਰੈ ਦਰਿ ਪਡੇ ॥ ਬ੍ਰਹਮੇ ਤੁਥੁ ਧਿਆਇਨਿ ਇੰਦ੍ਰ
 ਇੰਦ੍ਰਾਸਣਾ ॥ ਸੰਕਰ ਬਿਸਨ ਅਵਤਾਰ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮੁਖਿ ਭਣਾ ॥ ਪੀਰ ਪਿਕਾਬਰ ਸੇਖ ਮਸਾਇਕ ਅਤਲੀਏ ॥ ਓਤਿ
 ਪੋਤਿ ਨਿਰਿਕਾਰ ਘਟਿ ਘਟਿ ਮਤਲੀਏ ॥ ਕੂਡਹੁ ਕਰੇ ਵਿਣਾਸੁ ਧਰਮੇ ਤਗੀਐ ॥ ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਇਹਿ ਆਪਿ ਤਿਤੁ
 ਤਿਤੁ ਲਗੀਐ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥ ਚੰਗਿਆਇੰ ਆਲਕੁ ਕਰੇ ਬੁਰਿਆਇੰ ਹੋਇ ਸੇਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਅਜੁ ਕਲਿ ਆਵਸੀ
 ਗਾਫਲ ਫਾਹੀ ਪੇਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਕਿਤੀਆ ਕੁਢਂਗ ਗੁੜਾ ਥੀਐ ਨ ਹਿਤੁ ॥ ਨਾਨਕ ਤੈ ਸਹਿ ਢਕਿਆ ਮਨ ਮਹਿ
 ਸਚਾ ਮਿਤੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਤ ਮਾਗਤ ਤੁੜੈ ਦਿੱਤਾਲ ਕਰਿ ਦਾਸਾ ਗੋਲਿਆ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ਰਾਜੁ ਜੀਵਾ
 ਬੋਲਿਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਦਾਸਾ ਘਰਿ ਘਣਾ ॥ ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਿਹਾਲੁ ਸ਼ਰਵਣੀ ਜਸੁ ਸੁਣਾ ॥ ਕਮਾਵਾ
 ਤਿਨ ਕੀ ਕਾਰ ਸਰੀਰੁ ਪਵਿਤੁ ਹੋਇ ॥ ਪਖਾ ਪਾਣੀ ਪੀਸਿ ਬਿਗਸਾ ਪੈਰ ਧੋਇ ॥ ਆਪਹੁ ਕਛੂ ਨ ਹੋਇ ਪ੍ਰਭ ਨਦਰਿ
 ਨਿਹਾਲੀਐ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ ਦਿਚੈ ਥਾਉ ਸਤ ਧਰਮ ਸਾਲੀਐ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਸਾਜਨ ਤੇਰੇ ਚਰਨ ਕੀ ਹੋਇ
 ਰਹਾ ਸਦ ਧੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣ ਤੁਹਾਰੀਆ ਪੇਖਤ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਅਸੰਖ ਹੋਹਿ
 ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਗ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਜਿਸੁ ਨਾਨਕ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਿਤ
 ਜਪੀਐ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨਾਉ ਪਰਖਦਿਗਾਰ ਦਾ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕਰੇ ਰਹ੍ਯਮ ਤਿਸੁ ਨ ਵਿਸਾਰਦਾ ॥ ਆਪਿ ਉਪਾਵਣਹਾਰ

आपे ही मारदा ॥ सभु किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥ अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा ॥
 जिस नो लाइ सचि तिसहि उधारदा ॥ जिस दै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥ सदा अभगु दीबाणु है हउ
 तिसु नमसकारदा ॥४॥ सलोक मः ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु छोड़ीअै दीजै अगनि जलाइ ॥ जीवदिआ नित
 जापीअै नानक साचा नाउ ॥१॥ मः ५ ॥ सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाए आहि ॥ नानक
 नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥ तिस की
 गई बलाइ मिटे अंदेसिआ ॥ तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥ जन कै संगि निहालु पापा
 मैलु धोइ ॥ अंमृतु साचा नाउ ओथै जापीअै ॥ मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्यापीअै ॥ जिसु घटि वसिआ
 नाउ तिसु बंधन काटीअै ॥ गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीअै ॥५॥ सलोक मः ५ ॥ मन
 महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत ॥ हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत
 ॥१॥ मः ५ ॥ दृसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥ नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी
 सूलि ॥२॥ पउड़ी ॥ जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥ छोड़ि सिआणप सगल मनु तनु
 अरपि धरि ॥ पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि ॥ साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥ सेवहु
 सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥ खिन महि करे निहालु ऊणे सुभर भरि ॥ मन कउ होइ संतोखु
 धिआईअै सदा हरि ॥ सो लगा सतिगुर सेव जा कउ करमु धुरि ॥६॥ सलोक मः ५ ॥ लगड़ी सुथानि
 जोड़णहारै जोड़ीआ ॥ नानक लहरी लख सै आन डुबण देइ न मा पिरी ॥१॥ मः ५ ॥ बनि भीहावलै
 हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥ बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामाँ ॥२॥
 पउड़ी ॥ पाईअनि सभि निधान तैरै रंगि रतिआ ॥ न होवी पछोताउ तुध नो जपतिआ ॥ पहुचि न
 सकै कोड़ि तेरी टेक जन ॥ गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥ गुर पहि सिफति भंडारु करमी
 पाईअै ॥ सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईअै ॥ रखै आपि दड़िआलु करि दासा आपणे ॥ हरि

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਵਾ ਸੁਣਿ ਸੁਣੇ ॥੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਪਟੋਲਾ ਤੈ ਸਹਿ ਦਿਤਾ ਢਕਣ ਕ੍ਰਿ ਪਤਿ ਮੇਰੀ ॥
 ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਸਾਈ ਮੈਡਾ ਨਾਨਕ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਾ ਤੇਰੀ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਤੈਡੈ ਸਿਮਰਣਿ ਹਭੁ ਕਿਛੁ ਲਧਮੁ ਬਿਖਮੁ
 ਨ ਡਿਠਮੁ ਕੋਈ ॥ ਜਿਸੁ ਪਤਿ ਰਖੈ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹੋਵੈ ਸੁਖੁ ਘਣਾ ਦਧਿ
 ਧਿਆਇਐ ॥ ਕੰਬੈ ਰੋਗਾ ਘਾਣਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਐ ॥ ਅਂਦਰਿ ਕਰਤੈ ਠਾਢਿ ਪ੍ਰਭਿ ਚਿਤਿ ਆਇਐ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਵੈ
 ਆਸ ਨਾਇ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਐ ॥ ਕੋਇਂ ਨ ਲਗੈ ਬਿਘਨੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਐ ॥ ਗਿਆਨ ਪਦਾਰਥੁ ਮਤਿ ਗੁਰ ਤੇ
 ਪਾਇਐ ॥ ਤਿਨਿ ਪਾਏ ਸਭੇ ਥੋਕ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਦਿਵਾਇਐ ॥ ਤ੍ਰਿ ਸਮਨਾ ਕਾ ਖਸਮੁ ਸਭ ਤੇਰੀ ਛਾਇਐ ॥੮॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਨਦੀ ਤਰੰਦੜੀ ਮੈਡਾ ਖੋਜੁ ਨ ਖੁੰਬੈ ਮੰਝਿ ਸੁਹਿਬਤਿ ਤੇਰੀ ॥ ਤਤ ਸਹ ਚਰਣੀ ਮੈਡਾ ਹੀਅੜਾ ਸੀਤਮੁ
 ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਤੁਲਹਾ ਬੇੜੀ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਜਿਨਾ ਦਿਸ਼ਦਿੱਤਿਆ ਦੁਰਮਤਿ ਕੰਬੈ ਮਿਤ ਅਸਾਡੇ ਸੇਈ ॥ ਹਉ ਢੂਢੇਦੀ
 ਜਗੁ ਸਬਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਵਿਰਲੇ ਕੋਈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਕੈ ਸਾਹਿਬੁ ਚਿਤਿ ਤੇਰਿਆ ਭਗਤਾ ਡਿਠਿਆ ॥
 ਮਨ ਕੀ ਕਟੀਐ ਮੈਲੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਕੁਠਿਆ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਤ ਕਟੀਐ ਜਨ ਕਾ ਸਬਦੁ ਜਪਿ ॥ ਬੰਧਨ ਖੋਲਨਿ
 ਸੰਤ ਦੂਤ ਸਭਿ ਜਾਹਿ ਛਪਿ ॥ ਤਿਸੁ ਸਿਤ ਲਾਇਨਿ ਰੰਗੁ ਜਿਸ ਦੀ ਸਭ ਧਾਰੀਆ ॥ ਊਚੀ ਹੁੰ ਊਚਾ ਥਾਨੁ ਅਗਮ
 ਅਪਾਰੀਆ ॥ ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਕਰ ਜੋਡਿ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਧਿਆਈਐ ॥ ਜਾ ਆਪੇ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤਾਂ ਭਗਤ ਸੰਗੁ
 ਪਾਈਐ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਬਾਰਿ ਵਿਡਾਨਡੈ ਹੁੰਮਸ ਧੁੰਮਸ ਕ੍ਰਿਕਾ ਪੰਈਆ ਰਾਹੀ ॥ ਤਤ ਸਹ ਸੇਤੀ ਲਗੜੀ
 ਡੋਰੀ ਨਾਨਕ ਅਨਦ ਸੇਤੀ ਬਨੁ ਗਾਹੀ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸਚੀ ਕੈਸਕ ਤਿਨਾ ਸੰਗਿ ਜਿਨ ਸੰਗਿ ਜਪੀਐ ਨਾਤ ॥ ਤਿਨ
 ਸੰਗਿ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਚੰਈ ਨਾਨਕ ਜਿਨਾ ਆਪਣਾ ਸੁਆਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਾ ਵੇਲਾ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਤੁ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਭੇਟਿਆ ॥ ਹੋਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਫਿਰਿ ਦੂਖ ਨ ਤੇਟਿਆ ॥ ਪਾਇਆ ਨਿਹਚਲੁ ਥਾਨੁ ਫਿਰਿ ਗਰਭਿ ਨ ਲੇਟਿਆ ॥
 ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਇਕੁ ਸਗਲ ਬ੍ਰਹਮੇਟਿਆ ॥ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਲਾਇ ਧਿਆਨੁ ਵ੃ਸਟਿ ਸਮੇਟਿਆ ॥ ਸਭੋ ਜਪੀਐ
 ਜਾਪੁ ਜਿ ਸੁਖਹੁ ਬੋਲੇਟਿਆ ॥ ਹੁਕਮੇ ਬੁਝਿ ਨਿਹਾਲੁ ਸੁਖਿ ਸੁਖੇਟਿਆ ॥ ਪਰਖਿ ਖਜਾਨੈ ਪਾਏ ਸੇ ਬਹੁਡਿ ਨ ਖੋਟਿਆ
 ॥੧੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥ ਵਿਛੋਹੇ ਜੰਬੂਰ ਖਵੇ ਨ ਵੰਜਨਿ ਗਾਖੜੇ ॥ ਜੇ ਸੋ ਧਣੀ ਮਿਲਮਨਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਸੰਬੂਹ ਸਚੁ ॥੧॥

मः ५ ॥ जिमी वसंदी पाणीअै ईधणु रखै भाहि ॥ नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥२॥
 पउडी ॥ तेरे कीते कंम तुधै ही गोचरे ॥ सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥ बिसमु भए बिसमाद देखि
 कुदरति तेरीआ ॥ सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ ॥ तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥
 जिस नो होइ दइआलु हरि नामु सेडि लेहि ॥ अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईअै ॥ जिस नो होहि
 कृपालु सु नामु धिआईअै ॥१॥ सलोक मः ५ ॥ कड्छीआ फिरनि सुआउ न जाणनि सुजीआ ॥ सेई
 मुख दिसंनि नानक रते प्रेम रसि ॥१॥ मः ५ ॥ खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाडि ॥ तै सहि दिती वाडि
 नानक खेतु न छिझई ॥२॥ पउडी ॥ आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥ दुहा सिरिआ खसमु
 आपि खिन महि करे रासि ॥ तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥ पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख
 लहु ॥ करम धरम ततु गिआनु संता संगु होइ ॥ जपीअै अंमृत नामु बिघनु न लगै कोइ ॥ जिस नो
 आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥ पाईअनि सभि निधान साहिबि तुठिआ ॥१२॥ सलोक मः ५ ॥
 लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी ॥ इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीअै ॥१॥ मः ५ ॥
 पापडिआ पछाडि बाणु सचावा संनि कै ॥ गुर मंत्रडा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥२॥ पउडी ॥
 वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि ॥ जीअ जंत मिहरवानु तिस नो सदा जापि ॥ दइआ धारी
 समरथि चुके बिल बिलाप ॥ नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥ कीतीअनु आपणी रख गरीब
 निवाजि थापि ॥ आपे लडिअनु छडाडि बंधन सगल कापि ॥ तिसन बुझी आस पुन्नी मन संतोखि ध्रापि
 ॥ वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ॥१३॥ सलोक मः ५ ॥ जा कउ भए कृपाल प्रभ
 हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन राम सित भेटत साध संगात ॥१॥ मः ५ ॥ रामु
 रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥ नानक नामि अराधिअै बिघनु न लागै कोइ ॥२॥
 पउडी ॥ भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाडि ॥ भगता तेरी टेक रते सचि नाडि ॥ जिस नो

ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਤਿਸ ਕਾ ਦ੍ਰਖੁ ਜਾਇ ॥ ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਦਿਆਲ ਓਨਾ ਮਿਹਰ ਪਾਇ ॥ ਦ੍ਰਖੁ ਦਰਦੁ ਵਡ ਰੋਗੁ ਨ ਪੋਹੇ
 ਤਿਸੁ ਮਾਇ ॥ ਭਗਤਾ ਏਹੁ ਅਧਾਰੁ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਗਾਇ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਝਿਕੁ ਧਿਆਇ ॥ ਪੀਵਤਿ
 ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਜਨ ਨਾਮੇ ਰਹੇ ਅਧਾਇ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਕੋਟਿ ਬਿਘਨ ਤਿਸੁ ਲਾਗਤੇ ਜਿਸ ਨੋ ਵਿਸਰੈ
 ਨਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਬਿਲਪਤੇ ਜਿਤ ਸੁੰਜੈ ਘਰਿ ਕਾਤ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਪਿਰੀ ਮਿਲਾਵਾ ਜਾ ਥੀਐ ਸਾਈ
 ਸੁਹਾਵੀ ਰੁਤਿ ॥ ਘੜੀ ਮੁਹਤੁ ਨਹ ਕੀਸਰੈ ਨਾਨਕ ਰਖੀਐ ਨਿਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੂਰਬੀਰ ਵਰੀਆਮ ਕਿਨੈ ਨ
 ਹੋਡੀਐ ॥ ਫਤਜ ਸਤਾਣੀ ਹਾਠ ਪੰਚਾ ਜੋਡੀਐ ॥ ਦੱਸ ਨਾਰੀ ਅਤਥੂਤ ਦੇਨਿ ਚਮੋਡੀਐ ॥ ਜਿਣਿ ਜਿਣਿ ਲੈਨਿ
 ਰਲਾਇ ਏਹੋ ਏਨਾ ਲੋਡੀਐ ॥ ਕੈ ਗੁਣ ਝਿਨ ਕੈ ਵਸਿ ਕਿਨੈ ਨ ਮੋਡੀਐ ॥ ਭਰਮੁ ਕੋਟੁ ਮਾਇਆ ਖਾਈ ਕਹੁ ਕਿਤੁ
 ਬਿਧਿ ਤੋਡੀਐ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਆਰਾਧਿ ਬਿਖਮ ਢਲੁ ਫੋਡੀਐ ॥ ਹਤ ਤਿਸੁ ਅਗੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਰਹਾ ਕਰ ਜੋਡੀਐ
 ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਕਿਲਵਿਖ ਸਭੇ ਉਤਰਨਿ ਨੀਤ ਨੀਤ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਕੋਟਿ ਕਲੇਸਾ ਊਪਜਹਿ ਨਾਨਕ
 ਬਿਸਰੈ ਨਾਉ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭੇਟਿਐ ਪੂਰੀ ਹੋਵੈ ਜੁਗਤਿ ॥ ਹਸਾਂਦਿਆ ਖੇਲਮਦਿਆ ਪੈਨਨਦਿਆ
 ਖਾਵਂਦਿਆ ਵਿਚੇ ਹੋਵੈ ਮੁਕਤਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਜਿਨਿ ਭਰਮ ਗੜੁ ਤੋਡਿਆ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸਿਤ ਜੋਡਿਆ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਅਖੁਟੁ ਗੁਰੁ ਦੇਇ ਦਾਰੁਓ ॥ ਮਹਾ ਰੋਗੁ ਬਿਕਰਾਲ ਤਿਨੈ
 ਬਿਦਾਰੁਓ ॥ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਬਹੁਤੁ ਖਜਾਨਿਆ ॥ ਜਿਤਾ ਜਨਮੁ ਅਪਾਰੁ ਆਪੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥ ਮਹਿਮਾ
 ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ਗੁਰ ਸਮਰਥ ਦੇਵ ॥ ਗੁਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਅਪਰਾਂਪਰ ਅਲਖ ਅਮੇਵ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥
 ਉਦਮੁ ਕਰੇਦਿਆ ਜੀਤ ਤ੍ਰੁਂ ਕਮਾਵਦਿਆ ਸੁਖ ਭੁੰਚੁ ॥ ਧਿਆਇਦਿਆ ਤ੍ਰੁਂ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਉਤਰੀ ਚਿੰਤ
 ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸੁਭ ਚਿੰਤਨ ਗੋਬਿੰਦ ਰਮਣ ਨਿਰਮਲ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵਿਸਰਤ ਝਿਕ ਘੜੀ
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭਗਵਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੇਰਾ ਕੀਤਾ ਹੋਇ ਤ ਕਾਹੇ ਡਰਪੀਐ ॥ ਜਿਸੁ ਮਿਲਿ ਜਪੀਐ ਨਾਉ ਤਿਸੁ
 ਜੀਤ ਅਰਪੀਐ ॥ ਆਇਐ ਚਿਤਿ ਨਿਹਾਲੁ ਸਾਹਿਬ ਬੇਸੁਮਾਰ ॥ ਤਿਸ ਨੋ ਪੋਹੇ ਕਵਣੁ ਜਿਸੁ ਵਲਿ ਨਿਰਕਾਰ ॥
 ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕੈ ਵਸਿ ਨ ਕੋਈ ਬਾਹਰਾ ॥ ਸੋ ਭਗਤਾ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ਸਚਿ ਸਮਾਹਰਾ ॥ ਤੇਰੇ ਦਾਸ ਧਿਆਇਨਿ

ਤੁਧੁ ਤ੍ਰੂ ਰਖਣ ਵਾਲਿਆ ॥ ਸਿਰਿ ਸਭਨਾ ਸਮਰਥੁ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਦ
 ਲੋਭ ਮੋਹ ਟੁਸਟ ਬਾਸਨਾ ਨਿਵਾਰਿ ॥ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥
 ਖਾਁਦਿਆ ਖਾਁਦਿਆ ਸੁਹੁ ਘਠਾ ਪੈਨਦਿਆ ਸਭੁ ਅੰਗੁ ॥ ਨਾਨਕ ਧਿਗੁ ਤਿਨਾ ਦਾ ਜੀਵਿਆ ਜਿਨ ਸਚਿ ਨ ਲਗੇ
 ਰੰਗੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਤ ਜਿਤ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਤਿਵੈ ਤਿਤ ਹੋਵਣਾ ॥ ਜਹ ਜਹ ਰਖਹਿ ਆਪਿ ਤਹ ਜਾਇ ਖਡੋਵਣਾ
 ॥ ਨਾਮ ਤੈਰੈ ਕੈ ਰੰਗ ਟੁਰਮਤਿ ਧੋਵਣਾ ॥ ਜਪਿ ਜਪਿ ਤੁਧੁ ਨਿਰਂਕਾਰ ਭਰਸੁ ਭਤ ਖੋਵਣਾ ॥ ਜੋ ਤੈਰੈ ਰੰਗ ਰਤੇ ਸੇ
 ਜੋਨਿ ਨ ਜੋਵਣਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਇਕੁ ਨੈਣ ਅਲੋਵਣਾ ॥ ਜਿਨੀ ਪਛਤਾ ਹੁਕਮੁ ਤਿਨੁ ਕਦੇ ਨ ਰੋਵਣਾ ॥ ਨਾਉ
 ਨਾਨਕ ਬਖਸੀਸ ਮਨ ਮਾਹਿ ਪਰੋਵਣਾ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਜੀਵਦਿਆ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੁਆ ਰਲਮਦੜੇ ਖਾਕ ॥
 ਨਾਨਕ ਦੁਨੀਆ ਸੰਗਿ ਗੁਦਾਰਿਆ ਸਾਕਤ ਮੂੜ ਨਧਾਕ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਜੀਵਦਿਆ ਹਰਿ ਚੇਤਿਆ ਮਰਦਿਆ ਹਰਿ
 ਰੰਗੀ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਤਾਰਿਆ ਨਾਨਕ ਸਾਧੂ ਸੰਗੀ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਆਪਿ ਰਖਣ ਵਾਲਿਆ
 ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ਸਚੁ ਪਸਾਰਿਆ ॥ ਊਣਾ ਕਹੀ ਨ ਹੋਇ ਘਟੇ ਘਟਿ ਸਾਰਿਆ ॥ ਮਿਹਰਵਾਨ ਸਮਰਥ ਆਪੇ
 ਹੀ ਘਾਲਿਆ ॥ ਜਿਨੁ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ਆਪਿ ਸੇ ਸਦਾ ਸੁਖਾਲਿਆ ॥ ਆਪੇ ਰਚਨੁ ਰਚਾਇ ਆਪੇ ਹੀ ਪਾਲਿਆ ॥
 ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਬੇਅੰਤ ਅਪਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇਰੇ ਕੀ ਟੇਕ ਨਾਨਕ ਸੰਮਾਲਿਆ ॥੧੯॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
 ਆਦਿ ਮਧਿ ਅਰੁ ਅੰਤਿ ਪਰਮੇਸਰਿ ਰਖਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਿਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਚਖਿਆ ॥ ਸਾਧਾ ਸੰਗੁ
 ਅਪਾਰੁ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਖੈ ॥ ਪਾਏ ਮਨੋਰਥ ਸਭਿ ਜੋਨੀ ਨਹ ਭਖੈ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕਰਤੇ ਹਥਿ ਕਾਰਣੁ ਜੋ ਕਰੈ
 ॥ ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਸੰਤਾ ਧੂਰਿ ਤਰੈ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਤਿਸ ਨੇ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥ ਜਿਨਿ ਜਨਿ
 ਧਿਆਇਆ ਖਸਮੁ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਇਆ ॥ ਹੁਕਮੈ ਬੁੜਿ ਨਿਹਾਲੁ
 ਖਸਮਿ ਫੁਰਮਾਇਆ ॥ ਜਿਸੁ ਹੋਆ ਆਪਿ ਕ੃ਪਾਲੁ ਸੁ ਨਹ ਭਰਮਾਇਆ ॥ ਜੋ ਜੋ ਦਿਤਾ ਖਸਮਿ ਸੋਈ ਸੁਖੁ
 ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸਹਿ ਦਿਇਆਲੁ ਬੁੜਾਏ ਹੁਕਮੁ ਮਿਤ ॥ ਜਿਸਹਿ ਭੁਲਾਏ ਆਪਿ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਮਹਿ ਨਿਤ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਿੰਦਕ ਮਾਰੇ ਤਤਕਾਲਿ ਖਿਨੁ ਟਿਕਣ ਨ ਦਿਤੇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਾਸ ਕਾ ਦੁਖੁ ਨ ਖਵਿ ਸਕਹਿ ਫਿਡਿ

जोनी जुते ॥ मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥ दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥ कंठि
लाडि दास रखिअनु नानक हरि सते ॥ २० ॥ सलोक मः ५ ॥ रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु
सोडि ॥ नानक नामि धिआड़िऐ बिघनु न लागै कोडि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो
विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंजै घरि काउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिमरि सिमरि दातारु
मनोरथ पूरिआ ॥ इछ पुन्नी मनि आस गए विसूरिआ ॥ पाड़िआ नामु निधानु जिस नो भालदा ॥ जोति
मिली संगि जोति रहिआ घालदा ॥ सूख सहज आनंद वुठे तितु घरि ॥ आवण जाण रहे जनमु न तहा
मरि ॥ साहिबु सेवकु इकु इकु दृसटाड़िआ ॥ गुर प्रसादि नानक सचि समाड़िआ ॥ २१ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु

रागु गूजरी भगता की बाणी

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

सी कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥
ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूँड लुकईहै ॥ १ ॥ हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥ फाटे नाकन
टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥ २ ॥ रहाउ ॥ सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अर्घईहै ॥
जन भगतन को कहो न मानो कीओ अपनो पईहै ॥ ३ ॥ दुख सुख करत महा भ्रमि बूढो अनिक जोनि
भरमईहै ॥ रतन जनमु खोड़िओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥ ४ ॥ भ्रमत फिरत तेलक के
कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहईहै ॥ कहत कबीर राम नाम बिनु मूँड धुने पछुतईहै ॥ ५ ॥ १ ॥
गूजरी घरु ३ ॥ मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ २ ॥ तनना बुनना
सभु तजिओ है कबीर ॥ हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥ ३ ॥ रहाउ ॥ जब लगु तागा बाहउ बेही
॥ तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥ ४ ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नामु लहिओ मै लाहा
॥ ५ ॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥ ६ ॥ २ ॥

गूजरी स्त्री नामदेव जी के पदे घरु १

१७८ सतिगुर प्रसादि ॥

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥ जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥ तूं हरि भजु मन मेरे पदु
निरबानु ॥ बहुरि न होड़ि तेरा आवन जानु ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥ जिस तूं
देवहि तिसहि बुझाई ॥२॥ सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥ किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई
॥३॥ एकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजै पाथर धरीअै पाउ ॥ जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥ कहि नामदेउ
हम हरि की सेवा ॥४॥१॥ गूजरी घरु १ ॥ मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥ आवत
किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥१॥ कउणु कहै किणि बूझीअै रमईआ आकुलु री बाई ॥१॥
रहाउ ॥ जित आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥ जित जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई
॥२॥ जित आकासै घड़अलो मृग तृसना भरिआ ॥ नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥३॥२॥

गूजरी स्त्री रविदास जी के पदे घरु ३

१७९ सतिगुर प्रसादि ॥

दूध त बछरै थनहु बिटारिओ ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥१॥ माई गोबिंद पूजा कहा
लै चरावउ ॥ अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ मैलागर बेरै है भुइअंगा ॥ बिखु
अंमूतु बसहि इक संगा ॥२॥ धूप दीप नईबेदहि बासा ॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥३॥
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥४॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥
कहि रविदास कवन गति मोरी ॥५॥१॥

गूजरी स्त्री तूलोचन जीउ के पदे घरु १

१८० सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीना काहे

ਭਿਆ ਸੰਨਿਆਸੀ ॥੧॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲੀ ਰੇ ਜੈ ਚੰਦਾ ॥ ਨਹੀ ਨਹੀ ਚੀਨਿਆ ਪਰਮਾਨਦਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਘਰਿ ਘਰਿ ਖਾਡਿਆ ਪਿੰਡੁ ਬਧਾਡਿਆ ਖਿੰਥਾ ਮੁੰਦਾ ਮਾਡਿਆ ॥ ਭੂਮਿ ਮਸਾਣ ਕੀ ਭਸਮ ਲਗਾਈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ
 ਤਤੁ ਨ ਪਾਡਿਆ ॥੨॥ ਕਾਡਿ ਜਪਹੁ ਰੇ ਕਾਡਿ ਤਪਹੁ ਰੇ ਕਾਡਿ ਬਿਲੋਵਹੁ ਪਾਣੀ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਜਿਨਿ
 ਤਪਾਈ ਸੋ ਸਿਮਰਹੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੩॥ ਕਾਡਿ ਕਮੰਡਲੁ ਕਾਪਡੀਆ ਰੇ ਅਠਸਠਿ ਕਾਡਿ ਫਿਰਾਹੀ ॥ ਬਦਤਿ
 ਤ੍ਰਲੋਚਨੁ ਸੁਨੁ ਰੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਕਣ ਬਿਨੁ ਗਾਹੁ ਕਿ ਪਾਹੀ ॥੪॥੧॥ ਗੂਜਰੀ ॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਜੋ ਲਛਮੀ
 ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥ ਸਰਪ ਜੋਨਿ ਵਲਿ ਵਲਿ ਅਤਤਰੈ ॥੧॥ ਅਰੀ ਬਾਈ ਗੋਬਿਦ ਨਾਮੁ
 ਮਤਿ ਬੀਸਰੈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਜੋ ਇਸਕੀ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥ ਕੇਸਵਾ ਜੋਨਿ
 ਵਲਿ ਵਲਿ ਅਤਤਰੈ ॥੨॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਜੋ ਲਡਿਕੇ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥ ਸੂਕਰ ਜੋਨਿ
 ਵਲਿ ਵਲਿ ਅਤਤਰੈ ॥੩॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਜੋ ਮੰਦਰ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥ ਪ੍ਰੇਤ ਜੋਨਿ
 ਵਲਿ ਵਲਿ ਅਤਤਰੈ ॥੪॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਨਾਰਾਇਣੁ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥ ਬਦਤਿ
 ਤਿਲੋਚਨੁ ਤੇ ਨਰ ਮੁਕਤਾ ਪੀਤੰਬਰੁ ਵਾ ਕੇ ਰਿਟੈ ਬਸੈ ॥੫॥੨॥

ਗੂਜਰੀ ਸ੍ਰੀ ਜੈਦੇਵ ਜੀਤ ਕਾ ਪਦਾ ਘਰੁ ੪ ੧੯੮੫ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਰਮਾਦਿ ਪੁਰਖਮਨੋਪਿਮਿ ਸਤਿ ਆਦਿ ਭਾਵ ਰਤਿ ॥ ਪਰਮਦ੍ਰਭੁਤਿ ਪਰਕ੃ਤਿ ਪਰਿ
 ਜਦਿਚਿੰਤਿ ਸਰਬ ਗਤਿ ॥੧॥ ਕੇਵਲ ਰਾਮ ਨਾਮ ਮਨੋਰਮਿ ॥ ਬਦਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਤਤ ਮਇਆਂ ॥ ਨ ਦਨੋਤਿ
 ਜਸਮਰਣੇਨ ਜਨਮ ਜਰਾਧਿ ਮਰਣ ਭਿਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਛਸਿ ਜਮਾਦਿ ਪਰਾਭਯਿ ਜਸੁ ਸ਼ੁਸਤਿ
 ਸੁਕੂਤ ਕ੃ਤਿ ॥ ਭਵ ਭੂਤ ਭਾਵ ਸਮਬਿਧਿਆਂ ਪਰਮਿ ਪ੍ਰਸਨਨਮਿਦਿੰ ॥੨॥ ਲੋਭਾਦਿ ਵੂਸਟਿ ਪਰ ਗ੍ਰਹਿ ਜਦਿਬਿਧਿ
 ਆਚਰਣਿ ॥ ਤਜਿ ਸਕਲ ਦੁਹਕੂਤ ਦੁਰਮਤੀ ਭਜੁ ਚਕਧਰ ਸ਼ਰਣਿ ॥੩॥ ਹਰਿ ਭਗਤ ਨਿਜ ਨਿਹਕੇਵਲਾ
 ਰਿਦ ਕਰਮਣਾ ਬਚਸਾ ॥ ਜੋਗੇਨ ਕਿਂ ਜਗੇਨ ਕਿਂ ਦਾਨੇਨ ਕਿਂ ਤਪਸਾ ॥੪॥ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦੇਤਿ ਜਪਿ ਨਰ
 ਸਕਲ ਸਿਧਿ ਪਦਿੰ ॥ ਜੈਦੇਵ ਆਇਤ ਤਸ ਸਫੁਟਿੰ ਭਵ ਭੂਤ ਸਰਬ ਗਤਿ ॥੫॥੧॥

੧੬ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ॥

ਸੇਵਕ ਜਨ ਬਨੇ ਠਾਕੁਰ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥ ਜੋ ਤੁਮਰਾ ਜਸੁ ਕਹਤੇ ਗੁਰਮਤਿ ਤਿਨ ਮੁਖ ਭਾਗ ਸਭਾਗੇ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਟੂਟੇ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬੰਧਨ ਫਾਹੇ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥ ਹਮਰਾ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆਂ ਗੁਰ ਮੋਹਨਿ ਹਮ
ਬਿਸਮ ਭਈ ਮੁਖਿ ਲਾਗੇ ॥੧॥ ਸਗਲੀ ਰੈਣਿ ਸੋਈ ਅੰਧਿਆਰੀ ਗੁਰ ਕਿੰਚਤ ਕਿਰਪਾ ਜਾਗੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ
ਪ੍ਰਭ ਸੁਨਦਰ ਸੁਆਮੀ ਮੋਹਿ ਤੁਮ ਸਹਿ ਅਵਰੁ ਨ ਲਾਗੇ ॥੨॥੧॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥ ਮੇਰੇ ਸੁਨਦਰੁ ਕਹਹੁ ਮਿਲੈ
ਕਿਤੁ ਗਲੀ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਬਤਾਵਹੁ ਮਾਰਗੁ ਹਮ ਪੀਛੈ ਲਾਗਿ ਚਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਾਤਿ ਕੇ ਬਚਨ
ਸੁਖਾਨੇ ਹੀਅਰੈ ਇਹ ਚਾਲ ਬਨੀ ਹੈ ਭਲੀ ॥ ਲਟੁਰੀ ਮਧੁਰੀ ਠਾਕੁਰ ਭਾਈ ਓਹ ਸੁਨਦਰਿ ਹਰਿ ਢੁਲਿ ਮਿਲੀ ॥੧॥
ਏਕੋ ਪ੍ਰਤ ਸਖੀਆ ਸਭ ਪ੍ਰਾਤਿ ਕੀ ਜੋ ਭਾਵੈ ਪਿਰ ਸਾ ਭਲੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਗਰੀਬੁ ਕਿਆ ਕਰੈ ਬਿਚਾਰਾ ਹਰਿ ਭਾਵੈ
ਤਿਤੁ ਰਾਹਿ ਚਲੀ ॥੨॥੨॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੀਐ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗ ਚਲੂਲੈ
ਰਾਤੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭੀਨੀ ਚੋਲੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਤ ਫਿਰਤ ਦਿਵਾਨੀ ਆਵਲ ਬਾਵਲ ਤਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਹਰਿ
ਢੋਲੀਐ ॥ ਕੋਈ ਮੇਲੈ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਿਆਰਾ ਹਮ ਤਿਸ ਕੀ ਗੁਲ ਗੋਲੀਐ ॥੧॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਵਹੁ
ਅਪੁਨਾ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀ ਝੋਲੀਐ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਲਾਧਾ ਦੇਹ ਟੋਲੀਐ ॥੨॥੩॥
ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥ ਅਥ ਹਮ ਚਲੀ ਠਾਕੁਰ ਪਹਿ ਹਾਰਿ ॥ ਜਬ ਹਮ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭੂ ਕੀ ਆਈ ਰਾਖੁ ਪ੍ਰਭੂ ਭਾਵੈ ਮਾਰਿ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਲੋਕਨ ਕੀ ਚਤੁਰਾਈ ਉਪਮਾ ਤੇ ਬੈਸ਼ੰਤਰਿ ਜਾਰਿ ॥ ਕੋਈ ਭਲਾ ਕਹਤ ਭਾਵੈ ਬੁਰਾ ਕਹਤ ਹਮ
ਤਨੁ ਦੀਆਂ ਹੈ ਢਾਰਿ ॥੧॥ ਜੋ ਆਵਤ ਸਰਣਿ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭੁ ਤੁਮਰੀ ਤਿਸੁ ਰਾਖਹੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ
ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਹਰਿ ਜੀਤ ਰਾਖਹੁ ਲਾਜ ਮੁਰਾਰਿ ॥੨॥੪॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਤ ਤਿਸੁ
ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਦੇਖਿ ਦੇਖਿ ਜੀਵਾ ਸਾਧ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਜਿਸੁ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਮ ਪਵਿਤਰ
ਪਾਵਨ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਕਿਤ ਕਰਿ ਮਿਲਹ ਜੂਠਾਰੀ ॥ ਹਮਰੈ ਜੀਝਿ ਹੋਰੁ ਮੁਖਿ ਹੋਰੁ ਹੋਤ ਹੈ ਹਮ ਕਰਮਹੀਣ
ਕੂਡਿਆਰੀ ॥੧॥ ਹਮਰੀ ਸੁਦ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਦੁਸਟ ਦੁਸਟਾਰੀ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖਹੁ
ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥੫॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸੁਨਦਰਿ ਹੈ ਨਕਟੀ ॥
ਜਿਤ ਬੇਸੁਆ ਕੇ ਘਰਿ ਪੂਤੁ ਜਮਤੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਨਾਮੁ ਪਰਿਆਂ ਹੈ ਧਕਟੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਨਾਹਿ
ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਤੇ ਬਿਗਡ਼ ਰੂਪ ਬੇਰਕਟੀ ॥ ਜਿਤ ਨਿਗੁਰਾ ਬਹੁ ਬਾਤਾ ਜਾਣੈ ਓਹੁ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਹੈ ਭ੍ਰਸਟੀ ॥੧॥
ਜਿਨ ਕਤ ਦਿਆਲੁ ਹੋਆ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਨਾ ਸਾਧ ਜਨਾ ਪਗ ਚਕਟੀ ॥ ਨਾਨਕ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਮਿਲ
ਸੰਗਤਿ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਛੈ ਛੁਕਟੀ ॥੨॥੬॥ ਛਕਾ ੧

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਾਈ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਤਰਿ ਏਕੋ ਬਾਹਰਿ ਏਕੋ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਸਮਾਈਐ ॥ ਘਟਿ ਅਵਘਟਿ ਰਵਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ਹਰਿ ਪੂਰਨ
ਬ੍ਰਹਮੁ ਦਿਖਾਈਐ ॥੧॥ ਤਉ ਤਾਤਿ ਕਰਹਿ ਸੇਵਕ ਮੁਨਿ ਕੇਤੇ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਕਤਹੂ ਪਾਈਐ ॥ ਸੁਖਦਾਤੇ
ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ॥੨॥੧॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥ ਮਾਈ ਹੋਨਹਾਰ ਸੋ ਹੋਈਐ ॥
ਰਾਚਿ ਰਹਿਆਂ ਰਚਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨੀ ਕਹਾ ਲਾਭੁ ਕਹਾ ਖੋਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਹ ਫੂਲਹਿ ਆਨਨਦ ਬਿਖੈ ਸੋਗ
ਕਬ ਹਸਨੋ ਕਬ ਰੋਈਐ ॥ ਕਬਹੂ ਮੈਲੁ ਭਰੇ ਅਭਿਮਾਨੀ ਕਬ ਸਾਥੂ ਸੰਗਿ ਧੋਈਐ ॥੧॥ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟੈ ਪ੍ਰਭ ਕਾ
ਕੀਆ ਦੂਸਰ ਨਾਹੀ ਅਲੋਈਐ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸੋਈਐ ॥੨॥੨॥

ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ॥ ਮਾਈ ਸੁਨਤ ਸੋਚ ਭੈ ਡਰਤ ॥ ਮੇਰ ਤੇਰ ਤਜਤ ਅਭਿਮਾਨਾ ਸਰਨਿ ਸੁਆਮੀ ਕੀ ਪਰਤ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕਹੈ ਸੋਈ ਭਲ ਮਾਨਤ ਨਾਹਿ ਨ ਕਾ ਬੋਲ ਕਰਤ ॥ ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਸਰਤ ਹੀਏ ਮੋਰੇ ਤੇ
 ਬਿਸਰਤ ਜਾਈ ਹਤ ਮਰਤ ॥੧॥ ਸੁਖਦਾਈ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਤਾ ਮੇਰੀ ਬਹੁਤੁ ਇਆਨਪ ਜਰਤ ॥ ਨਿਰਗੁਨਿ
 ਕਰੂਪਿ ਕੁਲਹੀਣ ਨਾਨਕ ਹਤ ਅਨਦ ਰੂਪ ਸੁਆਮੀ ਭਰਤ ॥੨॥੩॥ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ॥ ਮਨ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਰਿ
 ਸਦਹੂਂ ॥ ਗਾਵਤ ਸੁਨਤ ਜਪਤ ਉਧਾਰੈ ਬਰਨ ਅਬਰਨਾ ਸਭਹੂਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ ਤੇ ਉਪਜਿਓ ਤਹੀ
 ਸਮਾਇਓ ਇਹ ਬਿਧਿ ਜਾਨੀ ਤਬਹੂਂ ॥ ਜਹਾ ਜਹਾ ਇਹ ਦੇਹੀ ਧਾਰੀ ਰਹਨੁ ਨ ਪਾਇਓ ਕਬਹੂਂ ॥੧॥ ਸੁਖੁ
 ਆਇਓ ਭੈ ਭਰਮ ਬਿਨਾਸੇ ਕ੃ਪਾਲ ਹ੍ਰਾਏ ਪ੍ਰਭ ਜਬਹੂਂ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੇ ਮਨੋਰਥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਜਿ ਲਬਹੂਂ
 ॥੨॥੪॥ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ॥ ਮਨ ਜਿਤ ਅਪੁਨੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਤ ॥ ਨੀਚਹੁ ਨੀਚੁ ਨੀਚੁ ਅਤਿ ਨਾਨਾ ਹੋਇ ਗਰੀਬੁ
 ਬੁਲਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਅਡੰਬਰ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬਿਰਥੇ ਤਾ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਘਟਾਵਤ ॥ ਜਿਤ ਅਪੁਨੋ
 ਸੁਆਮੀ ਸੁਖੁ ਮਾਨੈ ਤਾ ਮਹਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਤ ॥੧॥ ਦਾਸਨ ਦਾਸ ਰੇਣੁ ਦਾਸਨ ਕੀ ਜਨ ਕੀ ਟਹਲ ਕਮਾਵਤ ॥
 ਸਰਬ ਸੂਖ ਬਡਿਆਈ ਨਾਨਕ ਜੀਵਤ ਸੁਖਹੁ ਬੁਲਾਵਤ ॥੨॥੫॥ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਰਮੁ
 ਡਾਰਿਓ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਸਭੁ ਕੋ ਅਪਨਾ ਮਨ ਮਹਿ ਇਹੈ ਬੀਚਾਰਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਮਿਟੇ
 ਤੇਰੀ ਸੇਵਾ ਦਰਸਨਿ ਢੂਖੁ ਤਤਾਰਿਓ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਓ ਚਿੰਤਾ ਰੋਗੁ ਬਿਦਾਰਿਓ ॥੧॥ ਕਾਮੁ
 ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਝੂਠੁ ਨਿੰਦਾ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਬਿਸਾਰਿਓ ॥ ਮਾਇਆ ਬੰਧ ਕਾਟੇ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਉਧਾਰਿਓ
 ॥੨॥੬॥ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ॥ ਮਨ ਸਗਲ ਸਿਆਨਪ ਰਹੀ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸੁਆਮੀ ਨਾਨਕ ਓਟ ਗਹੀ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੁ ਮੇਟਿ ਪਏ ਸਰਣਾਈ ਇਹ ਮਤਿ ਸਾਧੂ ਕਹੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਾਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ
 ਭਰਮੁ ਅਧੇਰਾ ਲਹੀ ॥੧॥ ਜਾਨ ਪ੍ਰਬੀਨ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਅਹੀ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ
 ਤਥਾਪਨਹਾਰੇ ਕੁਦਰਤਿ ਕੀਮ ਨ ਪਹੀ ॥੨॥੭॥ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਪ੍ਰਭੂ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥
 ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਾਹੂ ਜਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਤ ਤੁਮਾਰੇ ਤੁਮਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤਿਨ ਕਤ ਕਾਲ ਨ ਖਾਤੇ ॥ ਰੰਗਿ ਤੁਮਾਰੈ ਲਾਲ

भए है राम नाम रसि माते ॥१॥ महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ दृसठि तुहारी हाते ॥ सोवत जागि
 हरि हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥२॥८॥ देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु जत कत पेखिओ
 नैणी ॥ सुखदाई जीअन को दाता अंमूतु जा की बैणी ॥१॥ रहाउ ॥ अगिआनु अधेरा संती काटिआ
 जीअ दानु गुर दैणी ॥ करि किरपा करि लीनो अपुना जलते सीतल होणी ॥१॥ करमु धरमु किछु
 उपजि न आइओ नह उपजी निरमल करणी ॥ छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ॥
 २॥९॥ देवगंधारी ५ ॥ हरि राम नामु जपि लाहा ॥ गति पावहि सुख सहज अन्नदा काटे जम के
 फाहा ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जना पहि आहा ॥ तिन् परापति एहु
 निधाना जिन् कै करमि लिखाहा ॥१॥ से बडभागी से पतिवंते सई पूरे साहा ॥ सुंदर सुधड़ सरूप ते
 नानक जिन् हरि हरि नामु विसाहा ॥२॥१०॥ देवगंधारी ५ ॥ मन कह अह्नकारि अफारा ॥
 दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी
 जीउ प्रान जिनि धारा ॥ तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥१॥ अंध
 गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा ॥ करन करावनहार समरथा किआ नानक जंत
 बिचारा ॥२॥११॥ देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥ सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद
 दिनु रैनि साझ सवेरै ॥१॥ रहाउ ॥ उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै ॥ घरी न
 मुहतु न चसा बिलम्बहु कालु नितहि नित हेरै ॥१॥ अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि
 तेरै ॥ नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥२॥१२॥ छके २ ॥ देवगंधारी ५ ॥ मन
 गुर मिलि नामु अराधिओ ॥ सूख सहज आन्नद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिओ ॥१॥ रहाउ ॥
 करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ ॥ भाउ भगति गाइ गुण गोबिद जम का
 मारगु साधिओ ॥१॥ भडिओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ॥ बलिहारै नानक

लख बेरा मेरे ठाकुर अगम अगाधिओ ॥२॥१३॥ देवगंधारी ५ ॥ माई जो प्रभ के गुन गावै ॥
 सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रह्म लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुधडु सूरु सो बेता जो
 साधू संगु पावै ॥ नामु उचारु करे हरि रसना बहुङ्गि न जोनी धावै ॥१॥ पूरन ब्रह्मु रविआ मन तन
 महि आन न दृसटी आवै ॥ नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लङ्गि लावै ॥२॥१४॥
 देवगंधारी ५ ॥ चंचलु सुपनै ही उरझाइओ ॥ इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भड़िओ संगि
 माड़िओ ॥१॥ रहाउ ॥ कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ ॥ लोभ सुनै मनि सुखु करि
 मानै बेगि तहा उठि धाइओ ॥१॥ फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइओ संत दुआरै आइओ ॥ करी कृपा
 पारब्रह्मि सुआमी नानक लीओ समाइओ ॥२॥१५॥ देवगंधारी ५ ॥ सरब सुखा गुर चरना ॥
 कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥१॥ रहाउ ॥ पूजा अरचा सेवा बंदन इहै
 टहल मोहि करना ॥ बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥१॥ सफल मूरति परसउ
 संतन की इहै धिआना धरना ॥ भड़िओ कृपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥२॥१६॥
 देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने हरि पहि बिनती कहीअै ॥ चारि पदारथ अनद मंगल निधि सूख
 सहज सिधि लहीअै ॥१॥ रहाउ ॥ मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीअै ॥ आँच
 न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीअै ॥१॥ कोटि पराध महा अकृतघन बहुरि बहुरि
 प्रभ सहीअै ॥ करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीअै ॥२॥१७॥ देवगंधारी ५ ॥
 गुर के चरन रिदै परवेसा ॥ रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥१॥ रहाउ ॥ जनम
 जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥ नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि
 धिआना ॥१॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे ॥ जपि जपि नामु जीवा तेरी
 बाणी नानक दास बलिहारे ॥२॥१८॥ छके ३ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई प्रभ के चरन

ਨਿਹਾਰਤ ॥ ਕਰਹੁ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਮਨ ਤੇ ਕਬਹੁ ਨ ਢਾਰਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧੂ ਧੂਰਿ ਲਾਈ ਮੁਖਿ
 ਮਸਤਕਿ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਖੁ ਜਾਰਤ ॥ ਸਭ ਤੇ ਨੀਚੁ ਆਤਮ ਕਰਿ ਮਾਨਤ ਮਨ ਮਹਿ ਛਿਹੁ ਸੁਖੁ ਧਾਰਤ ॥੧॥
 ਗੁਨ ਗਾਵਹ ਠਾਕੁਰ ਅਭਿਨਾਸੀ ਕਲਮਲ ਸਗਲੇ ਝਾਰਤ ॥ ਨਾਮ ਨਿਧਾਨੁ ਨਾਨਕ ਦਾਨੁ ਪਾਵਤ ਕੱਠਿ
 ਲਾਇ ਤਰਿ ਧਾਰਤ ॥੨॥੧੬॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਪੇਖਤ ਦਰਸੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਸੁੰਦਰ ਧਿਆਨੁ
 ਧਾਰੁ ਦਿਨੁ ਰੈਨੀ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਤੇ ਪਿਆਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਅਵਿਲੋਕੇ ਸਿਮ੃ਤਿ ਤਤੁ
 ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਟੀਨਾ ਨਾਥ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਪੂਰਨ ਭਵਜਲ ਉਧਰਨਹਾਰਾ ॥੧॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਭਗਤ ਜਨ ਸੇਵਕ
 ਤਾ ਕੀ ਬਿਖੈ ਅਧਾਰਾ ॥ ਤਿਨ ਜਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ਬਾਛੈ ਨਿਤ ਨਾਨਕੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਦੇਵਨਹਾਰਾ ॥੨॥੨੦॥
 ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੇਰਾ ਜਨੁ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣਿ ਮਾਤਾ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸਾ ਨਿਧਿ ਜਾ ਕਤ ਉਪਜੀ ਛੋਡਿ ਨ
 ਕਤਹੂ ਜਾਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੋਕਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਤਾ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ
 ਮਜਨੁ ਕੀਨੀ ਸਾਧੂ ਧੂਰੀ ਨਾਤਾ ॥੧॥ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਹਰਿ ਜਨ ਕਾ ਉਪਜਿਆ ਜਿਨੀ ਕੀਨੀ ਸਤਤੁ ਬਿਧਾਤਾ
 ॥ ਸਗਲ ਸਮੂਹ ਲੈ ਉਧਰੇ ਨਾਨਕ ਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਤਾ ॥੨॥੨੧॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ
 ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਫਿਰਤ ਬਿਲਲਾਤੇ ਮਿਲਤ ਨਹੀ ਗੋਸਾਈਐ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਮੋਹ ਰੋਗ ਸੋਗ ਤਨੁ ਬਾਧਿਓ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਭਰਮਾਈਐ ॥ ਟਿਕਨੁ ਨ ਪਾਵੈ ਬਿਨੁ ਸਤਸਾਂਗਤਿ
 ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਜਾਇ ਰੂਆਈਐ ॥੧॥ ਕਰੈ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰਾ ਸਾਧ ਚਰਨ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥
 ਸੰਕਟ ਘੋਰ ਕਟੇ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਦਰਸਿ ਸਮਾਈਐ ॥੨॥੨੨॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਠਾਕੁਰ ਹੋਏ ਆਪਿ ਦਿਆਲ ॥ ਭਈ ਕਲਿਆਣ ਅਨਨਦ ਰੂਪ ਹੋਈ ਹੈ ਤਥੇ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲ ॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਦੁਇ ਕਰ ਜੋਡਿ ਕਰੀ ਬੇਨਤੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਹਾਥੁ ਦੇਇ ਰਾਖੇ ਪਰਮੇਸੁਰਿ ਸਗਲਾ ਦੁਰਤੁ
 ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥ ਕਰ ਨਾਰੀ ਮਿਲਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਜੈਕਾਰੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕਤ ਬਲਿ
 ਜਾਈਐ ਜੋ ਸਭਨਾ ਕਰੇ ਉਧਾਰੁ ॥੨॥੨੩॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਹਿ ਬਿਨਤ ਕਹਿਆ ॥ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਦਿੱਤਿਆਲ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਮੇਰਾ
ਸਗਲ ਅੰਦੇਸ਼ਾ ਗਿਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਮ ਪਾਪੀ ਪਾਖੰਡੀ ਲੋਭੀ ਹਮਰਾ ਗੁਨੁ ਅਕਗੁਨੁ ਸਭੁ ਸਹਿਆ ॥ ਕਰੁ
ਮਸਤਕਿ ਧਾਰਿ ਸਾਜਿ ਨਿਵਾਜੇ ਮੁਏ ਦੁਸਟ ਜੋ ਖਿਆ ॥੧॥ ਪਰਤਪਕਾਰੀ ਸਰਬ ਸਥਾਰੀ ਸਫਲ ਦਰਸਨ
ਸਹਜਿਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਰਗੁਣ ਕਤ ਦਾਤਾ ਚਰਣ ਕਮਲ ਤਰ ਧਰਿਆ ॥੨॥੨੪॥ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫
॥ ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਪ੍ਰਭ ਹਮਾਰੇ ॥ ਸਰਨਿ ਆਇਆ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਰਬ ਪਾਖ ਰਾਖੁ ਸੁਰਾਰੇ ॥ ਆਗੈ ਪਾਛੈ
ਅੰਤੀ ਵਾਰੇ ॥੧॥ ਜਬ ਚਿਤਵਤ ਤਬ ਤੁਹਾਰੇ ॥ ਤਨ ਸਮਾਰਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਸਥਾਰੇ ॥੨॥ ਸੁਨਿ ਗਾਵਤ ਗੁਰ ਬਚਨਾਰੇ
॥ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਤ ਸਾਧ ਦਰਸਾਰੇ ॥੩॥ ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਖਤ ਏਕ ਅਸਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕਰਨੈਹਾਰੇ
॥੪॥੨੫॥ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਇਹੈ ਮਨੋਰਥੁ ਮੇਰਾ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ ਦਿੱਤਿਆਲ ਮੌਹਿ ਦੀਜੈ ਕਰਿ
ਸੰਤਨ ਕਾ ਚੇਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਾਤਹਕਾਲ ਲਾਗਤ ਜਨ ਚਰਨੀ ਨਿਸ ਬਾਸੁਰ ਦਰਸੁ ਪਾਵਤ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਰਪਿ
ਕਰਤ ਜਨ ਸੇਵਾ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥੧॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਤ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਸੰਤਸੰਗਿ ਨਿਤ ਰਹੀਐ ॥
ਏਕੁ ਅਧਾਰੁ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਮੋਰਾ ਅਨਦੁ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਲਹੀਐ ॥੨॥੨੬॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੀਤਾ ਐਸੇ ਹਰਿ ਜੀਤ ਪਾਏ ॥ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਸਦ ਹੀ ਸੰਗੇ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਗਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਮਿਲਿਆ ਮਨੋਹਰੁ ਸਰਬ ਸੁਖੈਨਾ ਤਿਆਗਿ ਨ ਕਤਹੂ ਜਾਏ ॥ ਅਨਿਕ ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ਬਹੁ ਪੇਖੇ ਪੂਅ ਰੋਮ ਨ
ਸਮਸਰਿ ਲਾਏ ॥੧॥ ਮੰਦਰਿ ਭਾਗੁ ਸੋਭ ਦੁਆਰੈ ਅਨਹਤ ਰੁਣੁ ਝੁਣੁ ਲਾਏ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਰੁਣੁ ਮਾਣੇ ਗ੍ਰਹ
ਪੂਅ ਥੀਤੇ ਸਦ ਥਾਏ ॥੨॥੧॥੨੭॥ ਦੇਵਗਂਧਾਰੀ ੫ ॥ ਦਰਸਨ ਨਾਮ ਕਤ ਮਨੁ ਆਛੈ ॥ ਭ੍ਰਮਿ ਆਇਆ
ਹੈ ਸਗਲ ਥਾਨ ਰੇ ਆਹਿ ਪਰਿਆ ਸੰਤ ਪਾਛੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਿਸੁ ਹਤ ਸੇਵੀ ਕਿਸੁ ਆਰਾਧੀ ਜੋ ਦਿਸਟੈ ਸੋ

ਗਾਛੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰੀਐ ਚਰਣ ਰੇਨੁ ਮਨੁ ਬਾਛੈ ॥੧॥ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਨਾ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ਮਹਾ
ਦੁਤਰੁ ਮਾਇ ਆਛੈ ॥ ਆਇ ਪਇਆਂ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਤਤ ਤਤਰੀ ਸਗਲ ਦੁਰਾਛੈ ॥੨॥੨॥੨੮॥
ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰਤ ਬਚਨ ਤੁਹਾਰੇ ॥ ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਮਨਮੋਹਨ ਪਿਆਰੇ ਸਭਹੂ ਮਥਿ ਨਿਰਾਰੇ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਜੁ ਨ ਚਾਹਤ ਸੁਕਤਿ ਨ ਚਾਹਤ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਰਨ ਕਮਲਾਰੇ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਮਹੇਸ ਸਿਥ ਸੁਨਿ ਇੰਦ੍ਰਾ
ਮੋਹਿ ਠਾਕੁਰ ਹੀ ਦਰਸਾਰੇ ॥੧॥ ਦੀਨੁ ਦੁਆਰੈ ਆਇਆਂ ਠਾਕੁਰ ਸਰਨਿ ਪਰਿਆਂ ਸਤਿ ਹਾਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ
ਮਨੋਹਰ ਮਨੁ ਸੀਤਲ ਬਿਗਸਾਰੇ ॥੨॥੩॥੨੯॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸੇਵਕੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿਆਂ
॥ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਭਏ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਬਹੁਡਿ ਜਨਮਿ ਨਹੀ ਮਾਰਿਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧਸੰਗਮਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹ
ਹਰਿ ਕੇ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਨਹੀ ਹਾਰਿਆਂ ॥ ਪ੍ਰਭ ਗੁਨ ਗਾਇ ਬਿਖੈ ਬਨੁ ਤਰਿਆ ਕੁਲਹ ਸਮ੍ਰਹ ਤਥਾਰਿਆਂ ॥੧॥
ਚਰਨ ਕਮਲ ਬਸਿਆ ਰਿਦ ਭੀਤਰਿ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਤਚਾਰਿਆਂ ॥ ਨਾਨਕ ਓਟ ਗਹੀ ਜਗਦੀਸੁਰ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ
ਬਾਲਿਹਾਰਿਆਂ ॥੨॥੪॥੩੦॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਰਤ ਫਿਰੇ ਬਨ ਭੇਖ ਮੋਹਨ ਰਹਤ ਨਿਰਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਥਨ ਸੁਨਾਵਨ ਗੀਤ ਨੀਕੇ ਗਾਵਨ ਮਨ ਮਹਿ ਧਰਤੇ
ਗਾਰ ॥੧॥ ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਬਹੁ ਚਤੁਰ ਸਿਆਨੇ ਬਿਦਿਆ ਰਸਨਾ ਚਾਰ ॥੨॥ ਮਾਨ ਮੋਹ ਮੇਰ ਤੇਰ ਬਿਵਰਜਿਤ
ਏਹੁ ਮਾਰਗੁ ਖੰਡੇ ਧਾਰ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਨਿ ਭਵਜ਼ਲੁ ਤਰੀਅਲੇ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਸਤਿ ਸੰਗਾਰ ॥੪॥੧॥੩੧॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੫

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੈ ਪੇਖਿਆਂ ਰੀ ਊਚਾ ਮੋਹਨੁ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ॥ ਆਨ ਨ ਸਮਸਰਿ ਕੋਤ ਲਾਗੈ ਢੂਢਿ ਰਹੇ ਹਮ ਮੂਚਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਬਹੁ ਕੇਅਨ੍ਤੁ ਅਤਿ ਬਡੋ ਗਾਹਰੋ ਥਾਹ ਨਹੀ ਅਗਹੂਚਾ ॥ ਤੋਲਿ ਨ ਤੁਲੀਐ ਮੋਲਿ ਨ ਮੁਲੀਐ ਕਤ ਪਾਈਐ ਮਨ
ਰੁਚਾ ॥੧॥ ਖੋਜ ਅਸੰਖਾ ਅਨਿਕ ਤਪਥਾ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਨਹੀ ਪਹੂਚਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀ ਠਾਕੁਰ ਮਿਲਿ

ਸਾਧੂ ਰਸ ਭੁੰਚਾ ॥੨॥੧॥੩੨॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਪੇਖਿਆਂ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ਨਾਹੀ ਰੀ ਕੋਊ ॥ ਖੰਡ
ਦੀਪ ਸਭ ਭੀਤਰਿ ਰਵਿਆ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆਂ ਸਭ ਲੋਊ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਗਮ ਅਗੰਮਾ ਕਵਨ ਮਛਿਮਾ ਮਨੁ ਜੀਵੈ
ਸੁਨਿ ਸੋਊ ॥ ਚਾਰਿ ਆਸਰਮ ਚਾਰਿ ਬਰਨਾ ਮੁਕਤਿ ਭਏ ਸੇਵਤੋਊ ॥੧॥ ਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਵ੍ਰਡਾਇਆ ਪਰਮ ਪਦੁ
ਪਾਇਆ ਦੁਤੀਆ ਗਏ ਸੁਖ ਹੋਊ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ਹਰਿ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ਸਹਜੋਊ ॥੨॥੨॥੩੩॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬

੧੪ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਏਕੈ ਰੇ ਹਰਿ ਏਕੈ ਜਾਨ ॥ ਏਕੈ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਹੇ ਭ੍ਰਮਤ ਹਤ ਤੁਮ ਭ੍ਰਮਹੁ ਨ ਭਾਈ ਰਵਿਆ
ਰੇ ਰਵਿਆ ਸ਼ਬ ਥਾਨ ॥੧॥ ਜਿਤ ਕੈਸਤਰੁ ਕਾਸਟ ਮਝਾਰਿ ਬਿਨੁ ਸੰਜਮ ਨਹੀ ਕਾਰਜ ਸਾਰਿ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਨ
ਪਾਵੈਗੇ ਹਰਿ ਜੀ ਕੋ ਢੁਆਰ ॥ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪਾਏ ਹੈ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨ ॥੨॥੧॥੩੪
॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥ ਜਾਨੀ ਨ ਜਾਈ ਤਾ ਕੀ ਗਾਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਹ ਪੇਖਾਰਤ ਹਤ ਕਰਿ ਚਤੁਰਾਈ
ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮੇ ਕਹਨ ਕਹਾਤਿ ॥੧॥ ਗਣ ਗੰਧਰਬ ਸਿਧ ਅਰੁ ਸਾਧਿਕ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵ ਬ੍ਰਹਮ ਬ੍ਰਹਮਾਦਿਕ ॥
ਚਤੁਰ ਬੇਦ ਤਚਰਤ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਅਗਮ ਅਗਮ ਠਾਕੁਰੁ ਆਗਾਧਿ ॥ ਗੁਨ ਬੇਅੰਤ ਬੇਅੰਤ ਭਨੁ ਨਾਨਕ ਕਹਨੁ ਨ
ਜਾਈ ਪਰੈ ਪਰਾਤਿ ॥੨॥੨॥੩੫॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਧਿਆਏ ਗਏ ਕਰਨੈਹਾਰ ॥ ਭਤ ਨਾਹੀ ਸੁਖ ਸਹਜ
ਅਨੰਦਾ ਅਨਿਕ ਓਹੀ ਰੇ ਏਕ ਸਸਮਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਫਲ ਸੂਰਤਿ ਗੁਰੁ ਮੇਰੈ ਮਾਥੈ ॥ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਤ ਤਤ
ਤਤ ਸਾਥੈ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥੧॥ ਸਮਰਥ ਅਥਾਹ ਬਢਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਾਹਿਬੁ
ਨੇਰਾ ॥ ਤਾਕੀ ਸਰਨਿ ਆਸਰ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥੨॥੩॥੩੬॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਉਲਟੀ ਰੇ ਮਨ ਉਲਟੀ ਰੇ ॥ ਸਾਕਤ ਸਿਤ ਕਰਿ ਉਲਟੀ ਰੇ ॥ ਝੂਠੈ ਕੀ ਰੇ ਝੂਠੁ ਪਰੀਤਿ ਛੁਟਕੀ ਰੇ ਮਨ ਛੁਟਕੀ
ਰੇ ਸਾਕਤ ਸੰਗਿ ਨ ਛੁਟਕੀ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਤ ਕਾਜਰ ਭਰਿ ਮੰਦਰੁ ਰਾਖਿਆਂ ਜੋ ਪੈਸੈ ਕਾਲੂਖੀ ਰੇ ॥ ਦੌਰਹੁ
ਛੀ ਤੇ ਭਾਗਿ ਗਿਓ ਹੈ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਛੁਟਕੀ ਤ੍ਰਕੁਟੀ ਰੇ ॥੧॥ ਮਾਗਤ ਦਾਨੁ ਕ੃ਪਾਲ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਮੇਰਾ

ਮुखु साकत संगि न जुटसी रे ॥ जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूँडु साध पगा हेठि रुलसी
रे ॥੨॥੪॥੩੭॥

रਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੭

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਭ ਦਿਨ ਕੇ ਸਮਰਥ ਪਥ ਬਿਠੁਲੇ ਹਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਗਾਵਨ ਭਾਵਨ ਸੰਤਨ ਤੌਰੈ ਚਰਨ ਤਵਾ ਕੈ ਪਾਤ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾਸਨ ਬਾਸਨ ਸਹਜ ਕੇਲ ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਏਕ ਅਨ੍ਨਤ ਅਨੂਪੈ ਠਾਤ ॥੧॥ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਿਧਿ
ਕਰ ਤਲ ਜਗਜੀਵਨ ਸ਼ਬ ਨਾਥ ਅਨੇਕੈ ਨਾਤ ॥ ਦਿਇਆ ਮਇਆ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਕਤ ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਜਸੁ
ਜੀਵਾਤ ॥੨॥੧॥੩੮॥੬॥੪੪॥

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਯਹ ਮਨੁ ਨੈਕ ਨ ਕਹਿਆਂ ਕਰੈ ॥ ਸੀਖ ਸਿਖਾਇ
ਰਹਿਆਂ ਅਪਨੀ ਸੀ ਦੁਰਮਤਿ ਤੇ ਨ ਟੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਦਿ ਮਾਇਆ ਕੈ ਭਿਓ ਬਾਵਰੋ ਹਰਿ ਜਸੁ ਨਹਿ
ਉਚਰੈ ॥ ਕਰਿ ਪਰਧਨੁ ਜਗਤ ਕਤ ਡਹਕੈ ਅਪਨੋ ਉਦਰੁ ਭਰੈ ॥੧॥ ਸੁਆਨ ਪ੍ਰਭ ਜਿਤ ਹੋਇ ਨ ਸ੍ਰਧੋ ਕਹਿਆਂ ਨ
ਕਾਨ ਧਰੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਜੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਤ ਜਾ ਤੇ ਕਾਜੁ ਸਰੈ ॥੨॥੧॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਸਭ ਕਿਛੁ
ਜੀਵਤ ਕੋ ਬਿਵਹਾਰ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਅਝ ਫੁਨਿ ਗ੍ਰਹ ਕੀ ਨਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਨ ਤੇ ਪ੍ਰਾਨ
ਹੋਤ ਜਬ ਨਿਆਰੇ ਟੇਰਤ ਪ੍ਰੇਤਿ ਪੁਕਾਰਿ ॥ ਆਧ ਘਰੀ ਕੋਝ ਨਹਿ ਰਾਖੈ ਘਰ ਤੇ ਦੇਤ ਨਿਕਾਰਿ ॥੧॥ ਮ੍ਰਗ
ਤੂਸਨਾ ਜਿਤ ਜਗ ਰਚਨਾ ਯਹ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬਿਚਾਰਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਜੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਤ ਜਾ ਤੇ ਹੋਤ ਉਧਾਰ
॥੨॥੨॥ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਜਗਤ ਮੈ ਝੂਠੀ ਦੇਖੀ ਪ੍ਰੇਤਿ ॥ ਅਪਨੇ ਹੀ ਸੁਖ ਸਿਤ ਸਭ ਲਾਗੇ ਕਿਆ
ਦਾਰਾ ਕਿਆ ਮੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੇਰਤ ਮੇਰਤ ਸਭੈ ਕਹਤ ਹੈ ਹਿਤ ਸਿਤ ਬਾਧਿਆਂ ਚੀਤ ॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਸੰਗੀ
ਨਹ ਕੋਝ ਇਹ ਅਚਰਜ ਹੈ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਮਨ ਮੂਰਖ ਅਜਹੂ ਨਹ ਸਮਝਤ ਸਿਖ ਦੈ ਹਾਰਿਆਂ ਨੀਤ ॥ ਨਾਨਕ
ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਪੈ ਜਤ ਗਾਵੈ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੀਤ ॥੨॥੩॥੬॥੩੮॥੪੭॥

੧੬ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਚਤੁਪਦੇ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ॥

ਦੂਤਨ ਸੰਗਰੀਆ ॥ ਭੁਝਿਅੰਗਨਿ ਬਸਰੀਆ ॥ ਅਨਿਕ ਤਪਰੀਆ ॥੧॥ ਤਤ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰੀਆ ॥ ਤਤ
ਸੁਖ ਸਹਜਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਿਥਨ ਮੋਹਰੀਆ ॥ ਅਨ ਕਤ ਮੇਰੀਆ ॥ ਵਿਚਿ ਘੁਮਨ ਘਿਰੀਆ ॥੨॥
ਸਗਲ ਬਟਰੀਆ ॥ ਬਿਰਖ ਇਕ ਤਰੀਆ ॥ ਬਹੁ ਬੰਧਹਿ ਪਰੀਆ ॥੩॥ ਥਿਰੁ ਸਾਧ ਸਫਰੀਆ ॥ ਜਹ
ਕੀਰਤਨੁ ਹਰੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਨਰੀਆ ॥੪॥੧॥

੧੬ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹਿ ਕੋਊ ਜਾਨੈ ॥ ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਤਪੀ ਪਚਿ
ਹਾਰੇ ਅਝੁ ਬਹੁ ਲੋਗ ਸਿਆਨੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਛਿਨ ਮਹਿ ਰਾਤ ਰਂਕ ਕਤ ਕਰੈ ਰਾਤ ਰਂਕ ਕਰਿ ਡਾਰੇ ॥ ਰੀਤੇ ਭਰੇ
ਭਰੇ ਸਖਨਾਵੈ ਧਹ ਤਾ ਕੋ ਬਿਵਹਾਰੇ ॥੧॥ ਅਪਨੀ ਮਾਇਆ ਆਪਿ ਪਸਾਰੀ ਆਪਹਿ ਦੇਖਨਹਾਰਾ ॥ ਨਾਨਾ ਰੂਪੁ
ਧਰੇ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਸਭ ਤੇ ਰਹੈ ਨਿਆਰਾ ॥੨॥ ਅਗਨਤ ਅਪਾਰੁ ਅਲਖ ਨਿਰੰਜਨ ਜਿਹ ਸਭ ਜਗੁ ਭਰਮਾਇਆਂ ॥
ਸਗਲ ਭਰਮ ਤਜਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਰਨਿ ਤਾਹਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆਂ ॥੩॥੧॥੨॥

ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧

੧੬ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁਡੀਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲੇ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਰਸਿ ਬੀਧਾ ਹਰਿ ਮਨੁ ਪਿਆਰਾ

ਮਨੁ ਹਰਿ ਰਸਿ ਨਾਮਿ ਝਕੋਲੇ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੁ ਠਹਰਾਈਐ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਅਨਤ ਨ ਕਾਹੂ ਡੋਲੇ ਰਾਮ ॥
 ਮਨ ਚਿੰਦਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਣ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਬੋਲੇ ਰਾਮ ॥੧॥ ਗੁਰਮਤਿ ਮਨਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਵੁਠੜਾ
 ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਸੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬੈਣ ਅਲਾਏ ਰਾਮ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਮਨਿ ਸੁਣੀਐ
 ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ਰਾਮ ॥ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁਨਨਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਗਲਿ ਮਿਲਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ
 ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਅਨਹਤ ਸਬਦ ਵਜਾਏ ਰਾਮ ॥੨॥ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਮੇਰੀਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ
 ਕੋਈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਰਾਮ ॥ ਹਉ ਮਨੁ ਦੇਵਤ ਤਿਸੁ ਆਪਣਾ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ
 ਸੁਣਾਵੈ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਅਰਾਧਿ ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਮਨ ਚਿੰਦਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਭਜੁ
 ਹਰਿ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਕਡਖਾਗੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ਰਾਮ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਇ ਮਿਲੁ ਮੇਰੀ
 ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸੇ ਰਾਮ ॥ ਹਉ ਹਰਿ ਬਾੜ੍ਹੁ ਤਡੀਣੀਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਜਿਤ ਜਲ ਬਿਨੁ ਕਮਲ
 ਤਦਾਸੇ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਮੇਲਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਸੇ ਰਾਮ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੂ ਹਰਿ
 ਦਸਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਬਿਗਾਸੇ ਰਾਮ ॥੪॥੧॥ ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਏ ਰਾਮ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਬਿਖੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ
 ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤਿ ਬਿਖੁ ਲਹਿ ਜਾਏ ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਸੁਕਾ ਹਰਿਆ ਹੋਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ
 ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਭਾਗ ਕਢੇ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਸਾਏ ਰਾਮ ॥੧॥ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਮਨੁ
 ਬੇਧਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਜਿਤ ਬਾਲਕ ਲਗਿ ਟੁਧ ਖੀਰੇ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਸਾਁਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ
 ਜਿਤ ਚਾਤੂਕੁ ਜਲ ਬਿਨੁ ਟੇਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਣੀ ਜਾਇ ਪਤ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਗੁਣ ਦਸੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੇ
 ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮੇਲਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਘਰਿ ਵਾਜੇ ਸਬਦ ਘਣੇਰੇ ਰਾਮ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖਿ ਹਉਮੈ
 ਵਿਛੁੜੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਬਿਖੁ ਬਾਧੇ ਹਉਮੈ ਜਾਲੇ ਰਾਮ ॥ ਜਿਤ ਪੱਖੀ ਕਪੋਤਿ ਆਪੁ ਬਨਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ
 ਤਿਤ ਮਨਮੁਖ ਸਭਿ ਵਸਿ ਕਾਲੇ ਰਾਮ ॥ ਜੋ ਮੋਹਿ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਲਾਇਦੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ੍ਹੀਏ ਸੇ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ

ਬਿਤਾਲੇ ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਕਾਹਿ ਕਾਹਿ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਖਵਾਲੇ ਰਾਮ ॥੩॥
 ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਲਿਵ ਤਬਰੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਧੁਰਿ ਭਾਗ ਕਡੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪੋਤੁ ਹੈ ਮੇਰੀ
 ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰ ਖੇਵਟ ਸਬਦਿ ਤਰਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਦਿਆਲੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮੀਠ ਲਗਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਰਾਮ ॥੪॥੨॥
 ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਗਿ ਸੁਕ੍ਰਤੁ ਕੀਰਤਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਵਿਤੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਥਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸਭ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਦੁਖ
 ਕਟਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਮਲੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਤਤਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਕਡ ਪੁਨੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਮ
 ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਨਿਸਤਾਰੇ ਰਾਮ ॥੧॥ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਨਾ ਪੰਚੇ ਵਸਗਤਿ ਆਏ ਰਾਮ ॥
 ਅੰਤਰਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਲਖੁ ਲਖਾਏ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਪੂਰੀਆ
 ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਭੁਖ ਸਭ ਜਾਏ ਰਾਮ ॥ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਲਿਖਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਰਾਮ ॥੨॥ ਹਮ ਪਾਪੀ ਬਲਵੰਚੀਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਪਰਦ੍ਰੋਹੀ ਠਗ ਮਾਇਆ ਰਾਮ ॥
 ਕਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਮੁਖਿ
 ਚੋਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਫਿਰਿ ਮਰਦਾ ਬਹੁਡਿ ਜੀਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਜੋ ਮਿਲੇ ਮੇਰੀ
 ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਨ ਕੇ ਸਭ ਦੁਖ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥੩॥ ਅਤਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਤੁ ਜਪਿਐ
 ਪਾਪ ਗਵਾਤੇ ਰਾਮ ॥ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਕੀਏ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਚਹੁ ਕੁੰਡੀ ਚਹੁ ਜੁਗਿ ਜਾਤੇ ਰਾਮ ॥ ਹਉਮੈ
 ਮੈਲੁ ਸਭ ਊਤਰੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਸਾਰਿ ਨਾਤੇ ਰਾਮ ॥ ਅਪਰਾਧੀ ਪਾਪੀ ਊਧਰੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਖਿਨੁ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ਰਾਮ ॥੪॥੩॥ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ੍ ਕਤ ਮੇਰੀ
 ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੋ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਬਿਖੁ
 ਭਤਜਲੁ ਤਾਰਣਹਾਰੋ ਰਾਮ ॥ ਜਿਨ ਇਕ ਮਨਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਨ ਸੰਤ ਜਨਾ ਜੈਕਾਰੋ

राम ॥ नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए सभि दूख निवारणहारो राम ॥१॥ सा रसना
धनु धनु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥ ते स्ववन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए
हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥ सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर
पैरे राम ॥ गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥२॥ ते नेत्र
भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥ ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी
जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥ तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो
मारगि धरम चलेसहि राम ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सुणि हरि नामु मनेसहि
राम ॥३॥ धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ पउणु पाणी
बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीए नित हरि हरि जसु गावै राम ॥ वणु तृणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीए
मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ नानक ते हरि दरि पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए जो गुरमुखि भगति
मनु लावै राम ॥४॥४॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिंदुड़ीए
ते मनमुख मूँड़ डिआणे राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से अंति गए पछुताणे
राम ॥ हरि दरगह ढोई ना लहनि मेरी जिंदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम ॥ जन नानक
गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥१॥ सभि जाइ मिलहु
सतिगुरु कउ मेरी जिंदुड़ीए जो हरि हरि नामु दृड़ावै राम ॥ हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीर्झि
मेरी जिंदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥ सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु
है मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए
जमकंकरु नेड़ि न आवै राम ॥२॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए सो डरै जिनि पाप
कमते राम ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम ॥ हरि

निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम ॥ गुरु पूरा नानकि सेविआ
 मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥३॥ सो औसा हरि नित सेवीअै मेरी जिंदुड़ीए जो
 सभ दू साहिबु वडा राम ॥ जिनी डिक मनि डिकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु
 चडा राम ॥ गुरु सेविअै हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम ॥ जन
 नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥४॥५॥ बिहागड़ा महला ४
 ॥ सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीडि कमाईअै राम ॥ हरि अंतरि बाहरि नालि
 है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईअै राम ॥ मनमुखा नो हरि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी
 घाल गवाईअै राम ॥ जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईअै
 राम ॥१॥ से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥ से हरि दरगह पैनाइआ
 मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम ॥ तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि
 नीसाणे राम ॥ नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥२॥ हे रसना
 जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि तृसना जाए राम ॥ जिसु दद्हिआ करे मेरा पारब्रहमु मेरी
 जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाए राम ॥ जिसु भेटे पूरा सतिगुरु मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाए
 राम ॥ वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाए राम ॥३॥ थान थन्नतरि रवि
 रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम ॥ ता का अंतु न पाईअै मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु
 बिधाता राम ॥ सरब जीआ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जित बालक पित माता राम ॥ सहस सिआणप
 नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥४॥६॥ छका १ ॥

बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का एकु अचंभउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआए राम ॥ हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु

मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम ॥ आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ ॥
 डिकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए डिकि भरमि भूले फिरदिआ ॥ अंतु तेरा तूंहै जाणहि तूं सभ महि
 रहिआ समाए ॥ सचु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि वरतै धरम निआए ॥੧॥ आवहु मिलहु सहेलीहो
 मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरु मेरे लाल जीउ जम का मारगु
 साधे राम ॥ मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईਐ ॥ जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ
 तिना रैणि दिनु लिव लाईਐ ॥ हउमै ममता मोहु छुटा जा संगि मिलिआ साधे ॥ जनु कहै नानकु
 मुक्तु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥੨॥ कर जोड़िहु संत इकत्र होइ मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु
 पूजेहा राम ॥ बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥ मनु तनु धनु
 सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए ॥ जिसु होइ कृपालु दइआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावए ॥
 भागु मसतकि होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥ जनु कहै नानकु मिलि साधसंगति हरि हरि नामु
 पूजेहा ॥੩॥ दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम ॥ हरि मंदरु
 हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम ॥ सरबे समाणा आपि सुआमी
 गुरमुखि परगटु होइआ ॥ मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ ॥ जहा देखा तहा सुआमी
 पारब्रहमु सभ ठाए ॥ जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए ॥੪॥੧॥
 रागु बिहागड़ा महला ੫ ॥ अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥ सुंदर सोभा लाल
 गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥ गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥
 नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥ गिआन अंजन नाम बिंजन भए सगल सीगारा
 ॥ नानकु पड़िअंपै संत जंपै मेलि कंतु हमारा ॥੧॥ लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम
 ॥ मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम ॥ चल चित बित अनित पृआ बिनु कवन बिधी

ਨ ਧੀਜੀਐ ॥ ਖਾਨ ਪਾਨ ਸੀਗਾਰ ਬਿਰਥੇ ਹਰਿ ਕੰਤ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਜੀਜੀਐ ॥ ਆਸਾ ਪਿਆਸੀ ਰੈਨਿ ਦਿਨੀਅਰੁ
 ਰਹਿ ਨ ਸਕੀਐ ਝਿਕੁ ਤਿਲੈ ॥ ਨਾਨਕੁ ਪਇਆਂਪੈ ਸੰਤ ਦਾਸੀ ਤਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੇਰਾ ਪਿਲੁ ਮਿਲੈ ॥੨॥ ਸੇਜ ਏਕ
 ਪ੍ਰਤ ਸੰਗਿ ਦਰਸੁ ਨ ਪਾਈਐ ਰਾਮ ॥ ਅਕਗਨ ਮੋਹਿ ਅਨੇਕ ਕਤ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਈਐ ਰਾਮ ॥ ਨਿਰਗੁਨਿ
 ਨਿਮਾਣੀ ਅਨਾਥਿ ਬਿਨਵੈ ਮਿਲਹੁ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧੇ ॥ ਭ੍ਰਮ ਭੀਤਿ ਖੋਈਐ ਸਹਜਿ ਸੋਈਐ ਪ੍ਰਭ ਪਲਕ ਪੇਖਤ
 ਨਵ ਨਿਧੇ ॥ ਗ੍ਰਹਿ ਲਾਲੁ ਆਵੈ ਮਹਲੁ ਪਾਵੈ ਮਿਲਿ ਸੰਗਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕੁ ਪਇਆਂਪੈ ਸੰਤ ਸਰਣੀ ਮੋਹਿ
 ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਈਐ ॥੩॥ ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਝਿਛ ਪੁਨੀ ਮਨਿ ਸਾਁਤਿ ਤਪਤਿ
 ਬੁਝਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਸਫਲਾ ਸੁ ਦਿਨਸ ਰੈਣੇ ਸੁਹਾਵੀ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਰਸੁ ਘਨਾ ॥ ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਲਾਲਨ
 ਕਵਨ ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਭਨਾ ॥ ਭ੍ਰਮ ਲੋਭ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ ਥਾਕੇ ਮਿਲਿ ਸਖੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕੁ ਪਇਆਂਪੈ ਸੰਤ
 ਜਾਪੈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੰਜੋਗਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੪॥੨॥ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਪ੍ਰੇ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ਰਾਮ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਤਚਰਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮਿਠਾ ਲਾਗੈ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ਰਾਮ ॥ ਕਰਿ
 ਦਾਇਆ ਮਾਇਆ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਕੋਇ ਨਾਹੀ ਤੁੜਾ ਬਿਨਾ ॥ ਸਮਰਥ ਅਗਥ ਅਪਾਰ ਪੂਰਨ ਜੀਤ ਤਨੁ ਧਨੁ ਤੁਸੁ
 ਮਨਾ ॥ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਅਨਾਥ ਚੰਚਲ ਬਲਹੀਨ ਨੀਚ ਅਜਾਣਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੇਰੀ ਰਖਿ ਲੇਹੁ
 ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥੧॥ ਸਾਧਹ ਸਰਣੀ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਜੀਤ ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਹਰਿ ਨੀਤਾ ਰਾਮ ॥ ਧੂਰਿ ਭਗਤਨ ਕੀ
 ਮਨਿ ਤਨਿ ਲਗਤ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਭ ਪਤਿ ਪੁਨੀਤਾ ਰਾਮ ॥ ਪਤਿਤਾ ਪੁਨੀਤਾ ਹੋਹਿ ਤਿਨ੍ ਸੰਗਿ ਜਿਨ੍ ਬਿਧਾਤਾ
 ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਮ ਰਾਤੇ ਜੀਅ ਦਾਤੇ ਨਿਤ ਦੇਹਿ ਚੜਹਿ ਸਵਾਇਆ ॥ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਿਨੀ
 ਆਤਮੁ ਜੀਤਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਵਡਭਾਗਿ ਪਾਈਅਹਿ ਸਾਧ ਸਾਜਨ ਮੀਤਾ ॥੨॥ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਵਣੰਜਿਆ
 ਹਰਿ ਜੀਤ ਸੇ ਪ੍ਰੇ ਸਾਹਾ ਰਾਮ ॥ ਬਹੁਤੁ ਖਜਾਨਾ ਤਿਨਨ ਪਹਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਲਾਹਾ ਰਾਮ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ
 ਨ ਲੋਭੁ ਬਿਆਪੈ ਜੋ ਜਨ ਪ੍ਰਭ ਸਿਤ ਰਾਤਿਆ ॥ ਏਕੁ ਜਾਨਹਿ ਏਕੁ ਮਾਨਹਿ ਰਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ਮਾਤਿਆ ॥ ਲਗਿ ਸੰਤ
 ਚਰਣੀ ਪਡੇ ਸਰਣੀ ਮਨਿ ਤਿਨਾ ਓਮਾਹਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਨਾਮੁ ਪਲੈ ਸੇਈ ਸਚੇ ਸਾਹਾ ॥੩॥ ਨਾਨਕ

ਸੋਈ ਸਿਮਰੀਐ ਹਰਿ ਜੀਤ ਜਾ ਕੀ ਕਲ ਧਾਰੀ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨਹੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ
ਮੁਰਾਰੀ ਰਾਮ ॥ ਟ੍ਰਖੁ ਰੋਗੁ ਨ ਭਤ ਬਿਆਪੈ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਿਦਿਆਇਆ ॥ ਸਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤਰੇ ਭਵਜਲੁ ਪੂਰਬਿ
ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ॥ ਵਜੀ ਵਧਾਈ ਮਨਿ ਸਾਂਤਿ ਆਈ ਮਿਲਿਆ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਿਮਰਿ
ਹਰਿ ਹਰਿ ਇਛ ਪੁਨੀ ਹਮਾਰੀ ॥੪॥੩॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਵਧੁ ਸੁਖੁ ਰੈਨਡੀਏ ਪ੍ਰਤੁ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਗਾ ॥ ਘਟੁ ਦੁਖ ਨੀਦੱਡੀਏ ਪਰਸਤ ਸਦਾ ਪਗਾ ॥ ਪਗ ਧੂਰਿ ਬਾਂਘਤ ਸਦਾ
ਯਾਚਤ ਨਾਮ ਰਸਿ ਬੈਰਾਗਨੀ ॥ ਪ੍ਰਤੁ ਰੰਗ ਰਾਤੀ ਸਹਜ ਮਾਤੀ ਮਹਾ ਦੁਰਮਤਿ ਤਿਆਗਨੀ ॥ ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੀਨੀ
ਪ੍ਰੇਮ ਭੀਨੀ ਮਿਲਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਚ ਮਗਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਹਤ ਚਰਣਹ ਸੰਗਿ ਲਗਾ ॥੧॥
ਮੇਰੀ ਸਖੀ ਸਹੇਲਡੀਹੋ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਚਰਣਿ ਲਗਹ ॥ ਮਨਿ ਪ੍ਰਤੁ ਪ੍ਰੇਮੁ ਘਣਾ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਮਂਗਹ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ
ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ਜਾਇ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਜਨਾ ॥ ਮਾਨੁ ਸੋਹੁ ਬਿਕਾਰੁ ਤਜੀਐ ਅਰਪਿ ਤਨੁ ਧਨੁ ਇਹੁ
ਮਨਾ ॥ ਬਡ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਗੁਣ ਸੰਪੂਰਨ ਭਰਮ ਭੀਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਿਲਿ ਭਗਹ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ
ਮੰਤੁ ਸਖੀਏ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਨਿਤ ਜਪਹ ॥੨॥ ਹਰਿ ਨਾਰਿ ਸੁਹਾਗਣੇ ਸਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ॥ ਰੱਡ ਨ
ਬੈਸਈ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਚਿਰਾਣੇ ॥ ਨਹ ਟ੍ਰਖ ਪਾਵੈ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਵੈ ਧੰਨਿ ਤੇ ਬਡਭਾਗੀਆ ॥ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਸੋਵਹਿ
ਕਿਲਬਿਖ ਖੋਵਹਿ ਨਾਮ ਰਸਿ ਰੰਗ ਜਾਗੀਆ ॥ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਹਣਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਗਹਣਾ ਪ੍ਰਤੁ ਬਚਨ ਮੀਠੇ
ਭਾਣੇ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮਨ ਇਛ ਪਾਈ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਪੁਰਖ ਚਿਰਾਣੇ ॥੩॥ ਤਿਤੁ ਗ੍ਰਹਿ ਸੋਹਿਲਡੇ ਕੋਡ
ਅਨਨਦਾ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭ ਪਰਮਾਨਦਾ ॥ ਹਰਿ ਕੰਤ ਅਨੰਤ ਦਿਓਅਲ ਸੀਧਰ ਗੋਬਿੰਦ
ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣੇ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਕੂਪਾ ਧਾਰੀ ਹਰਿ ਮੁਰਾਰੀ ਭੈ ਸਿੰਧੁ ਸਾਗਰ ਤਾਰਣੇ ॥ ਜੋ ਸਰਣਿ ਆਵੈ ਤਿਸੁ
ਕੱਠਿ ਲਾਵੈ ਇਹੁ ਬਿਰਦੁ ਸੁਆਮੀ ਸੰਦਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੰਤੁ ਮਿਲਿਆ ਸਦਾ ਕੇਲ ਕਰੰਦਾ
॥੪॥੧॥੪॥ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਰੋਵਰ ਤਹ ਕਰਹੁ ਨਿਵਾਸੁ ਮਨਾ ॥

करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥ करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे ॥
 जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे ॥ मिलु साधसंगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥ बिनवंति
 नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥੧॥ तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम
 ॥ मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥ मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस
 रंगि भिन्नीआ ॥ हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुनिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ
 कीने प्रभ एक अगम अपारो ॥ बिनवंति नानक सदा निरमल सचु सबदु रुण झुणकारो ॥੨॥ सुणि
 वडभागीआ हरि अंमृत बाणी राम ॥ जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम ॥ अकथ कहाणी
 तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥ अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे ॥ हरि सरणि
 पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥ बिनवंति नानक सदा गाईਐ पवित्र अंमृत बाणी
 ॥੩॥ मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम ॥ जिस ते उपजिअङ्गा तिनि लीआ समाई राम ॥
 मिलि ब्रह्म जोती ओति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥ जलि थलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा
 दृसटाइआ ॥ बणि तृणि तृभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई ॥ बिनवंति नानक आपि
 जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥੪॥੨॥੫॥ बिहागङ्गा महला ੫ ॥ खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण
 अधारे राम ॥ ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥ प्रभ मिलहु पिआरे मइआ धारे
 करि दइआ लड़ि लाइ लीजीਐ ॥ देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीਐ ॥
 समरथ पूरन सदा निहचल ऊच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे
 ॥੧॥ जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम ॥ तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥
 प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीਐ ॥ अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु
 अउगणु न बीचारीਐ ॥ दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा ॥ नानक चातृक हरि

ਬ੍ਰੂਂਦ ਮਾਗੈ ਜਪਿ ਜੀਵਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਰਣਾ ॥੨॥ ਅਮਿਅ ਸਰੋਵਰੇ ਪੀਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਰਾਮ ॥ ਸਨਤਹ ਸੰਗਿ
 ਮਿਲੈ ਜਪਿ ਪੂਰਨ ਕਾਮਾ ਰਾਮ ॥ ਸਭ ਕਾਮ ਪੂਰਨ ਦੁਖ ਬਿਦੀਰਨ ਹਰਿ ਨਿਮਖ ਮਨਹੁ ਨ ਬੀਸਰੈ ॥ ਆਨਨਦ
 ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਸਾਚਾ ਸਰਖ ਗੁਣ ਜਗਦੀਸਰੈ ॥ ਅਗਣਤ ਊਚ ਅਪਾਰ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਜਾ ਕੋ ਧਾਮਾ ॥
 ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਇਛ ਪੂਰਨ ਮਿਲੇ ਸੀਰੰਗ ਰਾਮਾ ॥੩॥ ਕਈ ਕੋਟਿਕ ਜਗ ਫਲਾ ਸੁਣਿ ਗਾਵਨਹਾਰੇ
 ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕੁਲ ਸਗਲੇ ਤਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੋਝਾਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਾ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਿਤ
 ਗਨਾ ॥ ਹਰਿ ਬਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਾਨ ਪਿਆਰੇ ਚਿਤਵੰਤਿ ਦਰਸਨੁ ਸਦ ਮਨਾ ॥ ਸੁਭ ਦਿਵਸ ਆਏ ਗਹਿ ਕਂਠਿ ਲਾਏ
 ਪ੍ਰਭ ਊਚ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਫਲੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੪॥੩॥੬॥
 ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ॥ ਅਨ ਕਾਏ ਰਾਤਡਿਆ ਵਾਟ ਦੁਹੇਲੀ ਰਾਮ ॥ ਧਾਪ ਕਮਾਵਦਿਆ ਤੇਰਾ ਕੋਇ ਨ
 ਕੇਲੀ ਰਾਮ ॥ ਕੋਏ ਨ ਕੇਲੀ ਹੋਇ ਤੇਰਾ ਸਦਾ ਪਛੋਤਾਵਹੇ ॥ ਗੁਨ ਗੁਪਾਲ ਨ ਜਪਹਿ ਰਸਨਾ ਫਿਰਿ ਕਦਹੁ ਸੇ
 ਦਿਹ ਆਵਹੇ ॥ ਤਰਵਰ ਵਿਛੁਨੇ ਨਹ ਪਾਤ ਜੁੜਤੇ ਜਮ ਮਗਿ ਗਤਨੁ ਇਕੇਲੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਮ
 ਹਰਿ ਕੇ ਸਦਾ ਫਿਰਤ ਦੁਹੇਲੀ ॥੧॥ ਤੁੰ ਵਲਵੰਚ ਲੂਕਿ ਕਰਹਿ ਸਭ ਜਾਣੈ ਜਾਣੀ ਰਾਮ ॥ ਲੇਖਾ ਧਰਮ ਭਡਿਆ
 ਤਿਲ ਪੀਡੇ ਘਾਣੀ ਰਾਮ ॥ ਕਿਰਤ ਕਮਾਣੇ ਦੁਖ ਸਹੁ ਪਰਾਣੀ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਭਰਮਾਡਿਆ ॥ ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਸੰਗਿ
 ਰਤਾ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਗਵਾਡਿਆ ॥ ਇਕਸੁ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਾਜ਼ਹੁ ਆਨ ਕਾਜ ਸਿਆਣੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਲੇਖੁ
 ਲਿਖਿਆ ਭਰਮਿ ਮੋਹਿ ਲੁਭਾਣੀ ॥੨॥ ਬੀਚੁ ਨ ਕੋਇ ਕਰੇ ਅਕੂਤਘਣੁ ਵਿਛੁਡਿ ਪਡਿਆ ॥ ਆਏ ਖਰੇ ਕਠਿਨ
 ਜਮਕਂਕਰਿ ਪਕਡਿ ਲਡਿਆ ॥ ਪਕਡੇ ਚਲਾਡਿਆ ਅਪਣਾ ਕਮਾਡਿਆ ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਰਾਤਿਆ ॥ ਗੁਨ ਗੋਵਿੰਦ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨ ਜਪਿਆ ਤਪਤ ਥੰਮੁ ਗਲਿ ਲਾਤਿਆ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧਿ ਅਛਕਾਰਿ ਮੂਠ ਖੋਡਿ ਗਿਆਨੁ ਪਛੁਤਾਪਿਆ
 ॥ ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਸੰਜੋਗਿ ਭੂਲਾ ਹਰਿ ਜਾਪੁ ਰਸਨ ਨ ਜਾਪਿਆ ॥੩॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਕੋ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਨਹਾਰਾ
 ਰਾਮ ॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਤੁਮਾਰਾ ਰਾਮ ॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਨ ਸਰਨਿ ਸੁਆਮੀ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਦਿਇਆਲਾ
 ॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਉਧਰੁ ਕਰਤੇ ਸਗਲ ਘਟ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥ ਸਰਨਿ ਤੇਰੀ ਕਟਿ ਮਹਾ ਬੇਡੀ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਦੇਹਿ ਅਧਾਰਾ

॥ ਬਿਨਵਂਤ ਨਾਨਕ ਕਰ ਦੇਇ ਰਾਖਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਦੀਨ ਦਿੱਡਿਆਰਾ ॥੪॥ ਸੋ ਦਿਨੁ ਸਫਲੁ ਗਣਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਮੂ
 ਮਿਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਸਭਿ ਸੁਖ ਪਰਗਟਿਆ ਟੁਖ ਟੂਰਿ ਪਰਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਸੁਖ ਸਹਜ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਸਦ ਹੀ
 ਗੁਨ ਗੁਪਾਲ ਨਿਤ ਗਈਐ ॥ ਭਜੁ ਸਾਧਸੰਗੇ ਮਿਲੇ ਰੰਗੇ ਬਹੁਡਿ ਜੋਨਿ ਨ ਧਾਈਐ ॥ ਗਹਿ ਕਂਠਿ ਲਾਏ ਸਹਜਿ
 ਸੁਭਾਏ ਆਦਿ ਅੰਕੁਰੁ ਆਇਆ ॥ ਬਿਨਵਂਤ ਨਾਨਕ ਆਧਿ ਮਿਲਿਆ ਬਹੁਡਿ ਕਤਹੂ ਨ ਜਾਇਆ ॥੫॥੪॥੭॥
 ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ॥ ਸੁਨਹੁ ਬੇਨਤੀਆ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ॥ ਕੋਟਿ ਅਪ੍ਰਾਧ ਭਰੇ ਭੀ ਤੇਰੇ ਚੇਰੇ ਰਾਮ ॥
 ਟੁਖ ਹਰਨ ਕਿਰਪਾ ਕਰਨ ਮੋਹਨ ਕਲਿ ਕਲੇਸ਼ਹ ਭੰਜਨਾ ॥ ਸਰਨਿ ਤੇਰੀ ਰਖਿ ਲੇਹੁ ਮੇਰੀ ਸਰਖ ਮੈ ਨਿਰੰਜਨਾ ॥
 ਸੁਨਤ ਪੇਖਤ ਸੰਗਿ ਸਭ ਕੈ ਪ੍ਰਭ ਨੇਰਹੂ ਤੇ ਨੇਰੇ ॥ ਅਰਦਾਸਿ ਨਾਨਕ ਸੁਨਿ ਸੁਆਮੀ ਰਖਿ ਲੇਹੁ ਘਰ ਕੇ ਚੇਰੇ ॥੧॥
 ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਸਦਾ ਹਮ ਦੀਨ ਭੇਖਾਰੀ ਰਾਮ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਮਗਨੁ ਕਢਿ ਲੇਹੁ ਸੁਰਾਰੀ ਰਾਮ ॥ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਬਿਕਾਰਿ
 ਬਾਧਿਐ ਅਨਿਕ ਦੋਖ ਕਮਾਵਨੇ ॥ ਅਲਿਪਤ ਬੰਧਨ ਰਹਤ ਕਰਤਾ ਕੀਆ ਅਪਨਾ ਪਾਵਨੇ ॥ ਕਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ
 ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭਰਮਤੇ ਹਾਰੀ ॥ ਬਿਨਵਂਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਹਰਿ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੀ ॥੨॥ ਤੂ
 ਸਮਰਥੁ ਵਡਾ ਮੇਰੀ ਮਤਿ ਥੋਰੀ ਰਾਮ ॥ ਪਾਲਹਿ ਅਕਿਰਤਘਨਾ ਪ੍ਰੰਨ ਵੁਸਟਿ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ॥ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ
 ਅਪਾਰ ਕਰਤੇ ਮੋਹਿ ਨੀਚੁ ਕਛੂ ਨ ਜਾਨਾ ॥ ਰਤਨੁ ਤਿਆਗਿ ਸਾਂਗਹਨ ਕਤਡੀ ਪਸੂ ਨੀਚੁ ਇਆਨਾ ॥ ਤਿਆਗਿ
 ਚਲਤੀ ਮਹਾ ਚੰਚਲਿ ਦੋਖ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜੋਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਸਮਰਥ ਸੁਆਮੀ ਪੈਜ ਰਾਖਹੁ ਮੌਰੀ ॥੩॥ ਜਾ ਤੇ
 ਕੀਛੁਡਿਆ ਤਿਨਿ ਆਧਿ ਮਿਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਮੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਗੁਣ ਗਾਇ ਗੋਵਿਦ
 ਸਦਾ ਨੀਕੇ ਕਲਿਆਣ ਮੈ ਪਰਗਟ ਭਏ ॥ ਸੇਜਾ ਸੁਹਾਵੀ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਭ ਕਰਿ ਲਏ ॥ ਛੋਡਿ ਚਿੰਤ ਅਚਿੰਤ
 ਹੋਏ ਬਹੁਡਿ ਦ੍ਰਖੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਿ ਜੀਵੇ ਗੋਵਿਦ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗਾਇਆ ॥੪॥੫॥੮॥
 ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ॥ ਬੋਲਿ ਸੁਧਰਮੀਡਿਆ ਮੋਨਿ ਕਤ ਧਾਰੀ ਰਾਮ ॥ ਤੂ ਨੇਕੀ ਦੇਖਿ ਚਲਿਆ ਮਾਇਆ
 ਬਿਤਹਾਰੀ ਰਾਮ ॥ ਸੰਗਿ ਤੈਰੈ ਕਛੁ ਨ ਚਾਲੈ ਬਿਨਾ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮਾ ॥ ਦੇਸ ਵੇਸ ਸੁਵਰਨ ਰੂਪਾ ਸਗਲ ਊਪੇ
 ਕਾਮਾ ॥ ਪੁਤ ਕਲਤਰ ਨ ਸੰਗਿ ਸੋਭਾ ਹਸਤ ਘੋਰਿ ਵਿਕਾਰੀ ॥ ਬਿਨਵਂਤ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਾਧਸੰਗਮ ਸਭ ਮਿਥਿਆ

संसारी ॥१॥ राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥ माइआ झूठु रुदनु केते
बिललाही राम ॥ बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥ सहस सिआणप उपाव
थाके जह भावत तह जाही ॥ आदि अंते मधि पूरन सरबत घटि घटि आही ॥ बिनवंत नानक जिन
साधसंगमु से पति सेती घरि जाही ॥२॥ नरपति जाणि ग्रहिओ सेवक सिआणे राम ॥ सरपर
वीछुडणा मोहे पछुताणे राम ॥ हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईਐ ॥ बिनु नाम हरि के
आन रचना अहिला जनमु गवाईਐ ॥ हउ हउ करत न तृसन बूझै नह काँम पूरन गिआने ॥
बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥३॥ धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥
भुजा गहि काढि लीओ साधू संग दीना राम ॥ साधसंगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥
महा धरम सुदान किरिआ संगि तेरै से चले ॥ रसना अराधै एकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥
नानक जिस नो हरि मिलाए सो सरब गुण परबीना ॥४॥६॥६॥

बिहागड़े की वार महला ४

१७८ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु पाईਐ होर थै सुखु न भालि ॥ गुर कै सबदि मनु भेदीਐ सदा वसै
हरि नालि ॥ नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥१॥ मः ३ ॥ सिफति
खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइ ॥ सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइ ॥
नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु
उपाइआ ॥ सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ ॥ तिस दी तू भगति थाइ पाइहि जो तुधु
मनि भाइआ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीਐ सभि करनि तेरा कराइआ ॥ सलाहिहु हरि सभना ते वडा
जो संत जनाँ की पैज रखदा आइआ ॥१॥ सलोक मः ३ ॥ नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु
कोइ ॥ नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ॥ गुरमति मति अचलु है चलाइ न सकै कोइ ॥ भगता

का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥ मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अह्नाकारु ॥
 झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥ सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु
 विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि तृसना बहुतु अग्यानु अंधारु ॥ नानक मनमुखा नालहु तुटीआ
 भली जिना माडिआ मोहि पिआरु ॥੧॥ मः ੩ ॥ तिन् भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि
 करतारु ॥ धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥
 नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥੨॥ पउड़ी ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि ॥
 जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥ तू इको दाता सभस दा हरि
 पहि अरदासि ॥ जिस दी तुधु भावै तिस दी तू मनि लैहि सो जनु साबासि ॥ सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु
 सुखु तुधु पासि ॥੨॥ सलोक मः ੩ ॥ गुरमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर ॥ साजन मनि आनन्दु है
 गुर का सबटु वीचार ॥ अंतरि सबटु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ नानक
 रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥੧॥ मः ੩ ॥ गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥ जेहा
 सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ ॥੨॥ पउड़ी ॥ तेरी
 वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऔ तुधु जेवडु
 तूहै होई ॥ जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिस दी रीस करे किआ कोई ॥ तू भन्नण घड़ण
 समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई ॥ तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न
 आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥੩॥ सलोक मः ੩ ॥ मनि
 परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥ सबदै सादु न पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ ॥ नानक
 आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥੧॥ मः ੩ ॥ आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि
 दुखाए ॥ मुँढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए ॥ सतिगुर कै भै भनि न घडिओ रहै

अंकि समाए ॥ अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए ॥ कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित
धंधा करत विहाए ॥ चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़े आए ॥ सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि
नव निधि पाए ॥ जीवतु मरै मरै फुनि जीवै ताँ मोखंतरु पाए ॥ धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा
किआ पाए ॥ गुर का सबदु समालि तू मूड़े गति मति सबदे पाए ॥ नानक सतिगुरु तद ही पाए जाँ
विचहु आपु गवाए ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस दै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै
दा लोड़ीअै ॥ हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीअै ॥ जिनि
हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए नित संत जना की संगति जाइ बहीअै मुहु जोड़ीअै ॥ सभि
दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीअै ॥ हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि
भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीअै ॥४॥ सलोक मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि
हरि का सुआउ न पाइआ ॥ नानक रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ ॥१॥ मः ३ ॥
सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥ नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ
पिआरिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए ॥ हरि आपे वेखै
विगसै आपे जितु भावै तितु लाए ॥ हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझाड़ि पाए ॥ हरि
सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए ॥ गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए
॥५॥ सलोक मः ३ ॥ दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥ जे घरि घरि ह्याढै मंगदा धिगु जीवणु
धिगु वेसु ॥ जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥ तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ
बलिहारै जाउ ॥१॥ मः ३ ॥ नानक तरवरु एकु फलु दुड़ि पंखेरु आहि ॥ आवत जात न दीसही ना
पर पंखी ताहि ॥ बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥ हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा
नीसाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे धरती आपे है राहकु आपि जंमाइ पीसावै ॥ आपि पकावै आपि भाँडे

ਦੇਇ ਪਰੋਸੈ ਆਪੇ ਹੀ ਬਹਿ ਖਾਵੈ ॥ ਆਪੇ ਜਲੁ ਆਪੇ ਦੇ ਛਿੰਗਾ ਆਪੇ ਚੁਲੀ ਭਰਾਵੈ ॥ ਆਪੇ ਸੰਗਤਿ ਸਦਿ
 ਬਹਾਲੈ ਆਪੇ ਵਿਦਾ ਕਰਾਵੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾਲੁ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਤਿਸ ਨੋ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਵੈ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
 ਕਰਮ ਧਰਮ ਸਭਿ ਬੰਧਨਾ ਪਾਪ ਪੁਨ੍ਨ ਸਨਬੰਧੁ ॥ ਮਮਤਾ ਮੋਹੁ ਸੁ ਬੰਧਨਾ ਪੁਤ ਕਲਤ੍ਰ ਸੁ ਧੰਧੁ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ
 ਜੇਕਰੀ ਮਾਇਆ ਕਾ ਸਨਬੰਧੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਵਰਤਣਿ ਵਰਤੈ ਅੰਧੁ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਅੰਧੇ ਚਾਨਣੁ ਤਾ
 ਥੀਐ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਰਜਾਇ ॥ ਬੰਧਨ ਤੋਡੈ ਸਚਿ ਵਸੈ ਅਗਿਆਨੁ ਅਧੇਰਾ ਜਾਇ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੇਖੈ ਤਿਸੈ ਕਾ
 ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਨੁ ਸਾਜਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਕਰਤਾਰ ਕੀ ਕਰਤਾ ਰਾਖੈ ਲਾਜ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਦੁਹੁ ਆਪੇ ਥਾਟੁ
 ਕੀਆ ਬਹਿ ਕਰਤੈ ਤਦੁਹੁ ਪੁਛਿ ਨ ਸੇਵਕੁ ਬੀਆ ॥ ਤਦੁਹੁ ਕਿਆ ਕੋ ਲੇਵੈ ਕਿਆ ਕੋ ਦੇਵੈ ਜਾਂ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ
 ਕੀਆ ॥ ਫਿਰਿ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ਕਰਤੈ ਦਾਨੁ ਸਭਨਾ ਕਤ ਦੀਆ ॥ ਆਪੇ ਸੇਵ ਬਣਾਈਅਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਆਪੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆ ॥ ਆਪਿ ਨਿਰਕਾਰ ਆਕਾਰੁ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਕਰੈ ਸੁ ਥੀਆ ॥੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਹਿ ਸਦ ਸਾਚਾ ਅਨਦਿਨੁ ਸਹਜਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦਿ ਗਾਵਹਿ ਗੁਣ ਸਾਚੇ ਅਰਧਿ ਤਰਧਿ
 ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਵਸਿਆ ਧੁਰਿ ਕਰਮੁ ਲਿਖਿਆ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਆਪੇ
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕਹਿਐ ਕਥਿਐ ਨ ਪਾਈਐ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਵਿਣੁ ਕਰਮੈ
 ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਭਤਕਿ ਮੁਏ ਬਿਲਲਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਭਿਜੈ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਵੇਦ ਪੁਰਾਣ ਸਭਿ ਸਾਸਤ ਆਪਿ ਕਥੈ ਆਪਿ ਭੀਜੈ
 ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਬਹਿ ਪ੍ਰਯੋ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਪਰਧਾਂਚੁ ਕਰੀਜੈ ॥ ਆਪਿ ਪਰਵਿਰਤਿ ਆਪਿ ਨਿਰਵਿਰਤੀ ਆਪੇ ਅਕਥੁ
 ਕਥੀਜੈ ॥ ਆਪੇ ਪੁਨ੍ਨੁ ਸਭੁ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਆਪਿ ਅਲਿਪਤੁ ਵਰਤੀਜੈ ॥ ਆਪੇ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਦੇਵੈ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਬਖਸ
 ਕਰੀਜੈ ॥੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸੇਖਾ ਅੰਦਰਹੁ ਜੋਰੁ ਛਡਿ ਤੂ ਭਤ ਕਰਿ ਝਲੁ ਗਵਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਭੈ ਕੇਤੇ ਨਿਸਤਰੇ
 ਭੈ ਵਿਚਿ ਨਿਰਭਤ ਪਾਇ ॥ ਮਨੁ ਕਠੋਰੁ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਤੂ ਸਾਂਤਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਸਾਂਤੀ ਵਿਚਿ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ
 ਸਾ ਖਸਮੁ ਪਾਏ ਥਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਪੁਛਹੁ ਗਿਆਨੀ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥

ਮਨਮੁਖ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਹੈ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਕੂਡੁ ਕਮਾਵੈ ਕੂਡੁ ਸ਼ੰਗਹੈ ਕੂਡੁ ਕਰੇ ਆਹਾਰੁ ॥ ਬਿਖੁ
 ਮਾਇਆ ਧਨੁ ਸੰਚਿ ਮਰਹਿ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਭੁ ਛਾਰੁ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸੁਚ ਸੰਜਮ ਕਰਹਿ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਵਿਕਾਰੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਜਿ ਮਨਮੁਖੁ ਕਮਾਵੈ ਸੁ ਥਾਇ ਨਾ ਪਵੈ ਦਰਗਹਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਖਾਣੀ ਆਪੇ
 ਬਾਣੀ ਆਪੇ ਖੰਡ ਕਰਮੰਡ ਕਰੇ ॥ ਆਪਿ ਸਮੁੰਦੁ ਆਪਿ ਹੈ ਸਾਗਰੁ ਆਪੇ ਹੀ ਵਿਚਿ ਰਤਨ ਧਰੇ ॥ ਆਪਿ ਲਹਾਏ
 ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸ ਨੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰੇ ਹਰੇ ॥ ਆਪੇ ਭਉਜਲੁ ਆਪਿ ਹੈ ਬੋਹਿਥਾ ਆਪੇ ਖੇਵਟੁ ਆਪਿ ਤਰੇ ॥
 ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਅਕਰੁ ਨ ਢੂਜਾ ਤੁੜ੍ਹੈ ਸਰੇ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਫਲ ਹੈ ਜੇ ਕੋ
 ਕਰੇ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖੁ ਕਟੀਐ ਹਉਮੈ
 ਮਮਤਾ ਜਾਇ ॥ ਉਤਮ ਪਦਵੀ ਪਾਈਐ ਸਚੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰਬਿ ਜਿਨ ਕਤ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੈ ਕਲਿਜੁਗ ਬੋਹਿਥੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਪਾਰਿ
 ਪਵੈ ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੇ ਨਾਮੁ ਸ਼ੰਗਹੈ ਨਾਮੇ ਹੀ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ
 ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਪਾਰਸੁ ਆਪਿ ਧਾਤੁ ਹੈ ਆਪਿ ਕੀਤੋਨੁ ਕੱਚਨੁ ॥ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ
 ਸੇਵਕੁ ਆਪੇ ਆਪੇ ਹੀ ਪਾਪ ਖੰਡਨੁ ॥ ਆਪੇ ਸਭਿ ਘਟ ਭੋਗਵੈ ਸੁਆਮੀ ਆਪੇ ਹੀ ਸਭੁ ਅੰਜਨੁ ॥ ਆਪਿ ਬਿਕੇਕੁ
 ਆਪਿ ਸਭੁ ਬੇਤਾ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭੰਜਨੁ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਾਲਾਹਿ ਨ ਰਜੈ ਤੁਧੁ ਕਰਤੇ ਤ੍ਰਾਂ ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਵਡਨੁ
 ॥੧੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜੀਅ ਕੇ ਬੰਧਨਾ ਜੇਤੇ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ
 ਠਵਰ ਨ ਪਾਵਹੀ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਫਿਕਾ ਬੋਲਣਾ ਨਾਮੁ ਨ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਥੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਮੁਹਿ ਕਾਲੈ ਤਠਿ ਜਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇਕਿ
 ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਚਾਕਰੀ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਨਿ ਆਪਣਾ ਕੁਲ ਕਾ
 ਕਰਨਿ ਉਧਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਚਾਟਸਾਲ ਆਪਿ ਹੈ ਪਾਧਾ ਆਪੇ ਚਾਟਡੇ ਪਡਣ ਕਤ ਆਣੇ ॥ ਆਪੇ ਪਿਤਾ
 ਮਾਤਾ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਬਾਲਕ ਕਰੇ ਸਿਆਣੇ ॥ ਇਕ ਥੈ ਪਡਿ ਬੁੜੈ ਸਭੁ ਆਪੇ ਇਕ ਥੈ ਆਪੇ ਕਰੇ ਇਆਣੇ ॥ ਇਕਨਾ

ਅੰਦਰਿ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਏ ਜਾ ਆਪਿ ਤੈਰੈ ਮਨਿ ਸਚੇ ਭਾਣੇ ॥ ਜਿਨਾ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇ ਕਵਿਅਈ ਸੇ ਜਨ ਸਚੀ
 ਦਰਗਹਿ ਜਾਣੇ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਰਦਾਨਾ ੧ ॥ ਕਲਿ ਕਲਵਾਲੀ ਕਾਮੁ ਮਦੁ ਮਨੂਆ ਪੀਵਣਹਾਰੁ ॥ ਕ੍ਰਿਧ ਕਟੋਰੀ
 ਮੋਹਿ ਭਰੀ ਪੀਲਾਵਾ ਅਛਕਾਰੁ ॥ ਮਜਲਸ ਕੂਡੇ ਲਬ ਕੀ ਪੀ ਪੀ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥ ਕਰਣੀ ਲਾਹਣਿ ਸਤੁ ਗੁਡੁ ਸਚੁ
 ਸਰਾ ਕਰਿ ਸਾਰੁ ॥ ਗੁਣ ਮੰਡੇ ਕਰਿ ਸੀਲੁ ਘਿਤ ਸਰਮੁ ਮਾਸੁ ਆਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਨਾਨਕਾ ਖਾਥੈ ਜਾਹਿ
 ਬਿਕਾਰ ॥੨॥ ਮਰਦਾਨਾ ੧ ॥ ਕਾਇਆ ਲਾਹਣਿ ਆਪੁ ਮਦੁ ਮਜਲਸ ਤ੃ਸਨਾ ਧਾਤੁ ॥ ਮਨਸਾ ਕਟੋਰੀ ਕੂਡਿ
 ਭਰੀ ਪੀਲਾਏ ਜਮਕਾਲੁ ॥ ਇਤੁ ਮਦਿ ਪੀਤੈ ਨਾਨਕਾ ਬਹੁਤੇ ਖਟੀਅਹਿ ਬਿਕਾਰ ॥ ਗਿਆਨੁ ਗੁਡੁ ਸਾਲਾਹ ਮੰਡੇ
 ਭਤ ਮਾਸੁ ਆਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਭੋਜਨੁ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੁ ਨਾਸੁ ਆਧਾਰੁ ॥੨॥ ਕਾਁਧਾਂ ਲਾਹਣਿ ਆਪੁ ਮਦੁ ਅੰਮ੍ਰਤ
 ਤਿਸ ਕੀ ਧਾਰ ॥ ਸਤਸਙਗਤਿ ਸਿਤ ਮੇਲਾਪੁ ਹੋਇ ਲਿਵ ਕਟੋਰੀ ਅੰਮ੍ਰਤ ਭਰੀ ਪੀ ਪੀ ਕਟਹਿ ਬਿਕਾਰ ॥੩॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਸੁਰਿ ਨਰ ਗਣ ਗੰਧਰਕਾ ਆਪੇ ਖਟ ਦਰਸਨ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥ ਆਪੇ ਸਿਵ ਸੰਕਰ ਮਹੇਸਾ ਆਪੇ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਆਪੇ ਜੋਗੀ ਆਪੇ ਭੋਗੀ ਆਪੇ ਸਾਂਨਿਆਸੀ ਫਿਰੈ ਬਿਬਾਣੀ ॥ ਆਪੈ ਨਾਲਿ ਗੋਸਟਿ
 ਆਪਿ ਉਪਦੇਸੈ ਆਪੇ ਸੁਘੜੁ ਸਰੂਪੁ ਸਿਆਣੀ ॥ ਆਪਣਾ ਚੋਜੁ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਹੈ ਜਾਣੀ
 ॥੧੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਏਹਾ ਸੰਧਿਆ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ॥ ਹਰਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ
 ਊਪਜੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਲਾਵੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਦੁਕਿਧਾ ਮਰੈ ਮਨੂਆ ਅਸਥਿਰੁ ਸੰਧਿਆ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸੰਧਿਆ ਕਰੈ ਮਨਮੁਖੀ ਜੀਤ ਨ ਟਿਕੈ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰਤ ਕਰਤੀ ਸਭੁ ਜਗੁ
 ਫਿਰੀ ਮੇਰੀ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਮੇਰੀ ਪਿਆਸ ਗੰਝ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਘਰਿ ਆਇ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਤੰਤੁ ਪਰਮ ਤੰਤੁ ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਦਾਸੁ ਭਿਆ ॥ ਆਪੇ ਦਸ ਅਠ ਵਰਨ ਤਪਾਇਅਨੁ
 ਆਪਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਆਪਿ ਰਾਜੁ ਲਿਆ ॥ ਆਪੇ ਮਾਰੇ ਆਪੇ ਛੋਡੈ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਕਰੇ ਦਿਆ ॥ ਆਪਿ ਅਭੁਲੁ ਨ ਭੁਲੈ
 ਕਬ ਹੀ ਸਭੁ ਸਚੁ ਤਪਾਵਸੁ ਸਚੁ ਥਿਆ ॥ ਆਪੇ ਜਿਨਾ ਬੁੜਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਿਨ ਅੰਦਰਹੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ਭਰਮੁ ਗਿਆ
 ॥੧੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥ ਹਰਿ ਨਾਸੁ ਨ ਸਿਮਰਹਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ਤੈ ਤਨਿ ਤੱਡੈ ਖੇਹ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ ਤਿਸੈ ਨ ਜਾਣਿ

ਨਾਨਕ ਫਿਟੁ ਅਲੂਣੀ ਦੇਹ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਘਟਿ ਵਸਹਿ ਚਰਣਾਰਬਿੰਦ ਰਸਨਾ ਜਪੈ ਗੁਪਾਲ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਮੁ
 ਸਿਮਰੀਐ ਤਿਸੁ ਦੇਹੀ ਕਤ ਪਾਲਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਕਰੇ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਆਪੇ
 ਸੰਜਮਿ ਵਰਤੈ ਸ਼ਾਮੀ ਆਪਿ ਜਪਾਇਹਿ ਨਾਮੁ ॥ ਆਪਿ ਦਿਆਲੁ ਹੋਇ ਭਤ ਖੰਡਨੁ ਆਪਿ ਕਰੈ ਸਭੁ ਦਾਨੁ ॥
 ਜਿਸ ਨੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਬੁੜਾਏ ਸੋ ਸਦ ਹੀ ਦਰਗਹਿ ਪਾਏ ਮਾਨੁ ॥ ਜਿਸ ਦੀ ਪੈਜ ਰਖੈ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਸਚਾ
 ਹਰਿ ਜਾਨੁ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਜਗੁ ਅੰਧੁ ਹੈ ਅੰਧੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਸਬਦੈ
 ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਵੰਦ ਜਿਤੁ ਸੁਖੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਤਾਮਸਿ ਲਗਾ ਸਦਾ ਫਿਰੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਜਲਤੁ ਬਿਹਾਇ ॥
 ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਫੁਰਮਾਇਆ ਕਾਰੀ ਏਹ ਕਰੇਹੁ ॥ ਗੁਰੁ
 ਟੁਆਰੈ ਹੋਇ ਕੈ ਸਾਹਿਬੁ ਸੰਮਾਲੇਹੁ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ਹੈ ਭਰਮੈ ਕੇ ਛਤੜ ਕਟਿ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਧਰੇਹੁ ॥
 ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹੈ ਦਾਰੁ ਏਹੁ ਲਾਏਹੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਚਿਤਿ ਰਖਹੁ ਸੰਜਮੁ ਸਚਾ ਨੇਹੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਐਥੈ ਸੁਖੈ ਅੰਦਰਿ ਰਖਸੀ ਅਗੈ ਹਰਿ ਸਿਉ ਕੇਲ ਕਰੇਹੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਭਾਰ ਅਠਾਰਹ ਬਣਸਪਤਿ ਆਪੇ
 ਹੀ ਫਲ ਲਾਏ ॥ ਆਪੇ ਮਾਲੀ ਆਪਿ ਸਭੁ ਸਿੰਚੈ ਆਪੇ ਹੀ ਮੁਹਿ ਪਾਏ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ਆਪੇ ਦੇਇ
 ਦਿਵਾਏ ॥ ਆਪੇ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪੇ ਹੈ ਰਾਖਾ ਆਪੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕ ਵਡਿਆਈ ਆਖੈ ਹਰਿ ਕਰਤੇ
 ਕੀ ਜਿਸ ਨੋ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਏ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਮਾਣਸੁ ਭਰਿਆ ਆਣਿਆ ਮਾਣਸੁ ਭਰਿਆ ਆਇ ॥
 ਜਿਤੁ ਪੀਤੈ ਮਤਿ ਢੂਰਿ ਹੋਇ ਬਰਲੁ ਪਕੈ ਵਿਚਿ ਆਇ ॥ ਆਪਣਾ ਪਰਾਇਆ ਨ ਪਛਾਣੰ ਖਸਮਹੁ ਧਕੇ
 ਖਾਇ ॥ ਜਿਤੁ ਪੀਤੈ ਖਸਮੁ ਵਿਸਰੈ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥ ਝੂਠਾ ਮਦੁ ਮੂਲਿ ਨ ਪੀਚੰਈ ਜੇ ਕਾ ਪਾਰਿ ਵਸਾਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਸਚੁ ਮਦੁ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਆਇ ॥ ਸਦਾ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਹੈ ਮਹਲੀ ਪਾਵੈ
 ਥਾਤ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇਹੁ ਜਗਤੁ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਜਾ ਇਸ ਨੋ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥ ਜਾ ਤਿਨ੍ਹਿ ਸਵਾਲਿਆ ਤਾਂ ਸਵਿ ਰਹਿਆ
 ਜਗਾਏ ਤਾਂ ਸੁਧਿ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੈ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਤਾ
 ਫਿਰਿ ਮਰਣੁ ਨ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਸ ਦਾ ਕਿਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਨੋ ਪਰਖਾਹ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਕੇਰੀ ॥ ਹਰਿ

ਜੀਤ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਸਭੁ ਕੋ ਖਾਵੈ ਸਭ ਮੁਹਤਾਜੀ ਕਢੈ ਤੇਰੀ ॥ ਜਿ ਤੁਧ ਨੋ ਸਾਲਾਹੇ ਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਵੈ ਜਿਸ ਨੋ
 ਕਿਰਪਾ ਨਿਰੰਜਨ ਕੇਰੀ ॥ ਸੋਈ ਸਾਹੁ ਸਚਾ ਵਣਯਾਰਾ ਜਿਨਿ ਵਖਰੁ ਲਦਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਤੇਰੀ ॥ ਸਭਿ
 ਤਿਸੈ ਨੋ ਸਾਲਾਹਿਹੁ ਸੰਤਹੁ ਜਿਨਿ ਟ੍ਰ੍ਹੇ ਭਾਵ ਕੀ ਮਾਰਿ ਵਿਡਾਰੀ ਫੇਰੀ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ॥ ਕਬੀਰਾ ਮਰਤਾ ਮਰਤਾ
 ਜਗੁ ਸੁਆ ਮਰਿ ਭਿ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥ ਐਸੀ ਮਰਨੀ ਜੋ ਮਰੈ ਬਹੁਰਿ ਨ ਮਰਨਾ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕਿਆ ਜਾਣਾ
 ਕਿਵ ਮਰਹਗੇ ਕੈਸਾ ਮਰਣਾ ਹੋਇ ॥ ਜੇ ਕਰਿ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਹੁ ਨ ਕੀਸਰੈ ਤਾ ਸਹਿਲਾ ਮਰਣਾ ਹੋਇ ॥ ਮਰਣੈ ਤੇ
 ਜਗਤੁ ਫੈਰੈ ਜੀਵਿਆ ਲੋਡੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਕਤੁ ਮਰੈ ਹੁਕਮੈ ਬ੍ਰਾਵੈ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਐਸੀ ਮਰਨੀ ਜੋ
 ਮਰੈ ਤਾ ਸਦ ਜੀਕਣੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਾ ਆਪਿ ਕ੃ਪਾਲੁ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਆਪਣਾਂ ਨਾਉ ਹਰਿ ਆਪਿ
 ਜਪਾਵੈ ॥ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਸੁਖੁ ਦੇਵੈ ਆਪਣਾਂ ਸੇਵਕੁ ਆਪਿ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ॥ ਆਪਣਿਆ ਸੇਵਕਾ ਕੀ ਆਪਿ
 ਪੈਜ ਰਖੈ ਆਪਣਿਆ ਭਗਤਾ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਵੈ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਹੈ ਹਰਿ ਕਾ ਕੀਆ ਹਰਿ ਜਨ ਸੇਵਕ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ
 ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਕਾ ਪਿਆਰਾ ਸੋ ਸਭਨਾ ਕਾ ਪਿਆਰਾ ਹੋਰ ਕੇਤੀ ਝਾਖਿ ਝਾਖਿ ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਰਾਮੁ
 ਰਾਮੁ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਿਰੈ ਰਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਤਿ ਵਡਾ ਅਤੁਲੁ ਨ ਤੁਲਿਆ
 ਜਾਇ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ਕਿਤੈ ਨ ਲਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿਆ ਇਨ ਬਿਧਿ ਵਸਿਆ
 ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਅਮੇਤ ਹੈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਆਪੇ ਮਿਲਿਆ ਮਿਲਿ ਰਹਿਆ
 ਆਪੇ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਏ ਮਨ ਇਹੁ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਤੋਟਾ ਮੂਲਿ
 ਨ ਆਵੰਡ ਲਾਹਾ ਸਦ ਹੀ ਹੋਇ ॥ ਖਾਥੈ ਖਰਚਿਐ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੰਡ ਸਦਾ ਸਦਾ ਓਹੁ ਦੇਇ ॥ ਸਹਸਾ ਮੂਲਿ ਨ
 ਹੋਵੰਡ ਹਾਣਤ ਕਦੇ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਸਭ
 ਘਟ ਅੰਦਰੇ ਆਪੇ ਹੀ ਬਾਹਰਿ ॥ ਆਪੇ ਗੁਪਤੁ ਕਰਤਦਾ ਆਪੇ ਹੀ ਜਾਹਰਿ ॥ ਜੁਗ ਛਤੀਹ ਗੁਬਾਰੁ ਕਰਿ
 ਕਰਤਿਆ ਸੁਨਨਾਹਰਿ ॥ ਓਥੈ ਵੇਦ ਪੁਰਾਨ ਨ ਸਾਸਤਾ ਆਪੇ ਹਰਿ ਨਰਹਰਿ ॥ ਬੈਠਾ ਤਾਡੀ ਲਾਇ ਆਪਿ ਸਭ ਫ੍ਰੈਂਡੀ
 ਹੀ ਬਾਹਰਿ ॥ ਆਪਣੀ ਮਿਤਿ ਆਪਿ ਜਾਣਦਾ ਆਪੇ ਹੀ ਗਤਹਰੁ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਜਗਤੁ

ਸੁਆ ਮਰਦੀ ਮਰਦੀ ਜਾਇ ॥ ਜਿਚਰੁ ਵਿਚਿ ਦੰਮੁ ਹੈ ਤਿਚਰੁ ਨ ਚੇਤੰਈ ਕਿ ਕਰੇਗੁ ਅਗੈ ਜਾਇ ॥ ਗਿਆਨੀ ਹੋਇ
 ਸੁ ਚੇਤਨੁ ਹੋਇ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਏਥੈ ਕਮਾਵੈ ਸੋ ਮਿਲੈ ਅਗੈ ਪਾਏ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਧੁਰਿ ਖਸਮੈ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਪਇਆ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਚੇਤਿਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ
 ਸਦਾ ਰਹਿਆ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਦਮਿ ਦਮਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲਦਾ ਦੰਮੁ ਨ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਾ ਭਤ
 ਗਇਆ ਜੀਵਨ ਪਦਵੀ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਮਰਤਬਾ ਤਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਾਇ ॥੨॥
 ਪਤਡੀ ॥ ਆਪੇ ਦਾਨਾਂ ਬੀਨਿਆ ਆਪੇ ਪਰਧਾਨਾਂ ॥ ਆਪੇ ਰੂਪ ਦਿਖਾਲਦਾ ਆਪੇ ਲਾਇ ਧਿਆਨਾਂ ॥ ਆਪੇ
 ਮੌਨੀ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ ਕਥੈ ਗਿਆਨਾਂ ॥ ਕਤਡਾ ਕਿਸੈ ਨ ਲਗੰਈ ਸਭਨਾ ਹੀ ਭਾਨਾ ॥ ਉਸਤਤਿ ਬਰਨਿ ਨ
 ਸਕੀਐ ਸਦ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਕਲੀ ਅੰਦਰਿ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨਾਂ ਦਾ ਅਤਤਾਰੁ ॥ ਪੁਤੁ
 ਜਿਨ੍ਹਾ ਧੀਅ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਜੋਝ ਜਿਨਾ ਦਾ ਸਿਕਦਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਛਿਦ੍ਰ ਮੂਲੇ ਭੂਲੇ ਅਖੁਟੀ ਜਾਂਹੀ ॥ ਨਾਰਦਿ
 ਕਹਿਆ ਸਿ ਪ੍ਰਯ ਕਰਾਂਹੀ ॥ ਅੰਧੇ ਗੁਂਗੇ ਅੰਧ ਅੰਧਾਰੁ ॥ ਪਾਥਰ ਲੇ ਪ੍ਰਯਹਿ ਮੁਗਧ ਗਵਾਰ ॥ ਓਹਿ ਜਾ ਆਪਿ
 ਡੁਬੇ ਤੁਮ ਕਹਾ ਤਰਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਸਭੁ ਕਿਹੁ ਤੈਰੈ ਵਸਿ ਹੈ ਤ੍ਰਾਂ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ॥ ਭਗਤ ਰਤੇ ਰੰਗਿ ਏਕ ਕੈ
 ਪ੍ਰਾਂ ਵੇਸਾਹੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਭੋਜਨੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਰਜਿ ਰਜਿ ਜਨ ਖਾਹੁ ॥ ਸਭਿ ਪਦਾਰਥ ਪਾਈਅਨਿ ਸਿਮਰਣੁ ਸਚੁ
 ਲਾਹੁ ॥ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਪਾਰਖ੍ਰਹਮ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਾਹੁ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੁਕਮੇ
 ਆਵਦਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੁਕਮੇ ਜਾਇ ॥ ਜੇ ਕੋ ਸੂਰਖੁ ਆਪਹੁ ਜਾਣੈ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਕੋ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਬੁੜੈ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸੋ ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਸੋ ਪਾਏ ਜਿਸ ਨੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ
 ਹੋਇ ॥ ਤਿਸੁ ਜੋਗੀ ਕੀ ਨਗਰੀ ਸਭੁ ਕੋ ਵਸੈ ਭੇਖੀ ਜੋਗੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਜੋਗੀ ਜਿਸੁ ਘਟਿ
 ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਆਪੇ ਜੰਤ ਉਪਾਇਅਨੁ ਆਪੇ ਆਧਾਰੁ ॥ ਆਪੇ ਸੂਖਮੁ ਭਾਲੀਐ ਆਪੇ ਪਾਸਾਰੁ ॥
 ਆਪਿ ਇਕਾਤੀ ਹੋਇ ਰਹੈ ਆਪੇ ਵਡ ਪਰਵਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਸੰਤਾ ਰੇਨਾਰੁ ॥ ਹੋਰੁ ਦਾਤਾਰੁ ਨ
 ਸੁਝੰਈ ਤ੍ਰਾਂ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

੧੬ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ॥

ਅਮਲੀ ਅਮਲੁ ਨ ਅੰਬੜੇ ਮਛੀ ਨੀਰੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਜੋ ਰਤੇ ਸਹਿ ਆਪਣੈ ਤਿਨ ਭਾਵੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥੧॥ ਹਤ ਵਾਰੀ
ਕੰਝ ਖਨੀਐ ਕੰਝ ਤਤ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਨਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਸਫਲਿਆਂ ਰੁਖੜਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਜਾ ਕਾ ਨਾਤ ॥
ਜਿਨ ਪੀਆ ਤੇ ਤ੃ਪਤ ਭਏ ਹਤ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥੨॥ ਮੈ ਕੀ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਹੀ ਕਥਹਿ ਹਾਭੀਆਂ ਨਾਲਿ
॥ ਤਿਖਾ ਤਿਹਾਇਆ ਕਿਤ ਲਹੈ ਜਾ ਸਰ ਭੀਤਰਿ ਪਾਲਿ ॥੩॥ ਨਾਨਕੁ ਤੇਰਾ ਬਾਣੀਆ ਤ੍ਰਾਂ ਸਾਹਿਬੁ ਮੈ ਰਾਸਿ ॥
ਮਨ ਤੇ ਧੋਖਾ ਤਾ ਲਹੈ ਜਾ ਸਿਫਤਿ ਕਰੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥੪॥੧॥ ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੁਣਕੰਤੀ ਸਹੁ ਰਾਵਿਆ
ਨਿਰਗੁਣਿ ਕੂਕੇ ਕਾਇ ॥ ਜੇ ਗੁਣਕੰਤੀ ਥੀ ਰਹੈ ਤਾ ਭੀ ਸਹੁ ਰਾਵਣ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਕੰਤੁ ਰੀਸਾਲੂ ਕੀ ਧਨ
ਅਵਰਾ ਰਾਵੇ ਜੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਣੀ ਕਾਮਣ ਜੇ ਥੀਐ ਜੇ ਮਨੁ ਧਾਗਾ ਹੋਇ ॥ ਮਾਣਕੁ ਮੁਲਿ ਨ ਪਾਈਐ ਲੀਜੈ
ਚਿਤਿ ਪਰੋਇ ॥੨॥ ਰਾਹੁ ਦਸਾਈ ਨ ਜੁਲਾਂ ਆਖਾਂ ਅੰਮੜੀਆਸੁ ॥ ਤੈ ਸਹ ਨਾਲਿ ਅਕੂਆਣਾ ਕਿਤ ਥੀਕੈ
ਘਰ ਵਾਸੁ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਏਕੀ ਬਾਹਰਾ ਦ੍ਰਿੜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਤੈ ਸਹ ਲਗੀ ਜੇ ਰਹੈ ਭੀ ਸਹੁ ਰਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੨॥
ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ॥ ਮੋਰੀ ਰੁਣ ਝੁਣ ਲਾਇਆ ਭੈਣੇ ਸਾਵਣੁ ਆਇਆ ॥ ਤੇਰੇ ਮੁੰਧ ਕਟਾਰੇ ਜੇਵਡਾ ਤਿਨਿ
ਲੋਭੀ ਲੋਭ ਲੁਭਾਇਆ ॥ ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਵਿਟਹੁ ਖਨੀਐ ਕੰਝ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੇ ॥ ਜਾ ਤ੍ਰਾਂ ਤਾ ਮੈ ਮਾਣ
ਕੀਆ ਹੈ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਕੇਹਾ ਮੇਰਾ ਮਾਣੇ ॥ ਚੂੜਾ ਭਨੁ ਪਲਘ ਸਿਤ ਮੁੰਧੇ ਸਣੁ ਬਾਹੀ ਸਣੁ ਬਾਹਾ ॥ ਏਤੇ ਵੇਸ

ਕਰੇਦੀਏ ਮੁੰਧੇ ਸਹੁ ਰਾਤੋ ਅਵਰਾਹਾ ॥ ਨਾ ਮਨੀਆਰੁ ਨ ਚੂੜੀਆ ਨਾ ਸੇ ਵੰਗੁੜੀਆਹਾ ॥ ਜੋ ਸਹ ਕੱਠਿ ਨ ਲਗੀਆ
ਜਲਨੁ ਸਿ ਬਾਹੜੀਆਹਾ ॥ ਸਭਿ ਸਹੀਆ ਸਹੁ ਰਾਵਣਿ ਗੰਡੀਆ ਹਤ ਦਾਧੀ ਕੈ ਦਰਿ ਜਾਵਾ ॥ ਅੰਮਾਲੀ ਹਤ
ਖਰੀ ਸੁਚਜੀ ਤੈ ਸਹ ਏਕਿ ਨ ਭਾਵਾ ॥ ਮਾਠਿ ਗੁੰਦਾਇੰਦੀ ਪਟੀਆ ਭਰੀਐ ਮਾਗ ਸੰਧੂਰੇ ॥ ਅਗੈ ਗੰਡੀ ਨ ਮਨੀਆ
ਮਰਤ ਵਿਸੂਰਿ ਵਿਸੂਰੇ ॥ ਮੈ ਰੋਕਂਦੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਰੁਨਾ ਰੁਨਡੇ ਵਣਹੁ ਪੰਖੇਰੁ ॥ ਇਕੁ ਨ ਰੁਨਾ ਮੇਰੇ ਤਨ ਕਾ ਬਿਰਹਾ
ਜਿਨਿ ਹਤ ਪਿਰਹੁ ਵਿਛੋੜੀ ॥ ਸੁਪਨੈ ਆਇਆ ਭੀ ਗਿਆ ਮੈ ਜਲੁ ਭਰਿਆ ਰੋਇ ॥ ਆਇ ਨ ਸਕਾ ਤੁੜਾ ਕਨਿ
ਪਿਆਰੇ ਭੇਜਿ ਨ ਸਕਾ ਕੋਇ ॥ ਆਤ ਸਭਾਗੀ ਨੀਦੜੀਏ ਮਤੁ ਸਹੁ ਦੇਖਾ ਸੋਇ ॥ ਤੈ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਬਾਤ ਜਿ ਆਖੈ
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਆ ਦੀਜੈ ॥ ਸੀਸੁ ਵਠੇ ਕਰਿ ਬੈਸਣੁ ਦੀਜੈ ਵਿਣੁ ਸਿਰ ਸੇਵ ਕਰੀਜੈ ॥ ਕਿਉ ਨ ਮਰੀਜੈ ਜੀਅਡਾ ਨ
ਦੀਜੈ ਜਾ ਸਹੁ ਭਿਆ ਵਿਡਾਣਾ ॥੧॥੩॥

ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਨਿ ਮੈਲੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੈਲਾ ਤਨਿ ਧੋਤੈ ਮਨੁ ਹਛਾ ਨ ਹੋਇ ॥ ਇਹ ਜਗਤੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਵਿਰਲਾ ਬੂੜੈ ਕੋਇ
॥੧॥ ਜਪਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਮੋ ਕਤ ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਧਾ ਕੇ ਆਸਣ
ਜੇ ਸਿਖੈ ਇੰਦ੍ਰੀ ਵਸਿ ਕਰਿ ਕਮਾਇ ॥ ਮਨ ਕੀ ਮੈਲੁ ਨ ਤਤਰੈ ਹਤਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥ ਇਸੁ ਮਨ ਕਤ ਹੋਰੁ
ਸੰਜਮੁ ਕੋ ਨਾਹੀ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਤਲਟੀ ਭੰਡੀ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਇ ॥੩॥
ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਤ ਮਿਲਦੋ ਮਰੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸ਼ਬਦਿ ਫਿਰਿ ਜੀਕੈ ਕੋਇ ॥ ਮਮਤਾ ਕੀ ਮਲੁ ਤਤਰੈ ਇਹੁ ਮਨੁ
ਹਛਾ ਹੋਇ ॥੪॥੧॥ ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਦਰੀ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਨਦਰੀ ਸੇਵਾ ਹੋਇ ॥ ਨਦਰੀ ਇਹੁ ਮਨੁ
ਵਸਿ ਆਵੈ ਨਦਰੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਚੇਤਿ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਏਕੋ ਚੇਤਹਿ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਫਿਰਿ
ਦੂਖੁ ਨ ਮੂਲੇ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਦਰੀ ਮਰਿ ਕੈ ਜੀਕੀਐ ਨਦਰੀ ਸ਼ਬਦੁ ਕਥੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਨਦਰੀ ਹੁਕਮੁ
ਬੁਝੀਐ ਹੁਕਮੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਜਿਹਵਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨ ਚਖਿਐ ਸਾ ਜਿਹਵਾ ਜਲਿ ਜਾਤ ॥ ਅਨ ਰਸ
ਸਾਦੇ ਲਗਿ ਰਹੀ ਦੂਖੁ ਪਾਇਆ ਦ੍ਰਾਜੈ ਭਾਇ ॥੩॥ ਸਭਨਾ ਨਦਰਿ ਏਕ ਹੈ ਆਪੇ ਫਰਕੁ ਕਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ

सतगुरि मिलिअै फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥४॥२॥ वडह्यसु महला ३ ॥ माइआ मोहु गुबारु
 है गुर बिनु गिआनु न होई ॥ सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥१॥ मन मेरे गुरमति
 करणी सारु ॥ सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥१॥ रहाउ ॥ गुणा का निधानु एकु
 है आपे देइ ता को पाए ॥ बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥२॥ मेरी मेरी करदे घटि
 गए तिना हथि किहु न आइआ ॥ सतगुरि मिलिअै सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥३॥ आसा
 मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए ॥ नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराए ॥४॥३॥
 वडह्यसु महला ३ ॥ सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ॥ सदा पिरु रावहि आपणा
 विचहु आपु गवाइ ॥१॥ मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ॥ सतगुरि मो कउ हरि दीआ बुझाइ
 ॥१॥ रहाउ ॥ दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ ॥ दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि
 आगै जाइ ॥२॥ गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ ॥ अउगणवंती कामणी दुखु लागै
 बिललाइ ॥३॥ सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ ॥ नानक आपे वेक कीतिअनु
 नामे लइअनु लाइ ॥४॥४॥ वडह्यसु महला ३ ॥ अंमृत नामु सद मीठा लागा गुर सबदी सादु
 आइआ ॥ सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥१॥ हरि करि किरपा सतगुरु
 मिलाइआ ॥ पूरै सतगुरि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रह्मै बेद बाणी परगासी माइआ
 मोह पसारा ॥ महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अद्विकारा ॥२॥ किसनु सदा अवतारी
 रुधा कितु लगि तरै संसारा ॥ गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥३॥ सतगुर सेवा
 ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥ साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोख दुआरा ॥४॥ एको सचु वरतै
 सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला ॥ नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला
 ॥५॥५॥ वडह्यसु महला ३ ॥ गुरमुखि सचु संजमु ततु गिआनु ॥ गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥१॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਸਦਾ ਨਿਵਹੈ ਚਲੈ ਤੇਰੈ ਨਾਲਿ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਸਚੁ ਸੋਇ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਸਖਾਈ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਕਰੇ ਸੋ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ
 ਕਡਾਈ ਦੇਵੈ ਸੋਇ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਪਰਵਾਰੈ ਸਾਧਾਰੁ ॥੪॥੬॥
 ਵਡਛਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਸਾਦਿ ਲਗੀ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥
 ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥ ਆਪਣੇ ਸਤਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਸਦਾ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਖੀ ਸੰਤੋਖੀਆ
 ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਮਨੁ ਸੰਤੋਖਿਆ ਢੂਜਾ ਭਾਉ ਗਵਾਇ ॥੨॥ ਦੇਹ ਸਰੀਰਿ ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥
 ਨਾਮੁ ਪਰਮਲੁ ਹਿਰਦੈ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਮਸਤਕਿ ਜਿਸੁ ਵਡਭਾਗੁ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਹਜ ਬੈਰਾਗੁ
 ॥੪॥੭॥ ਵਡਛਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਏ ਮਨ
 ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਤੂ ਪਾਇ ॥ ਆਪਣੇ ਗੁਰ ਕੀ ਮੰਨਿ ਲੈ ਰਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵਿਚਹੁ ਮੈਲੁ
 ਗਵਾਇ ॥ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਕਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੨॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਫਿਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਜਮੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੁ
 ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥੪॥੮॥
 ਵਡਛਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਉਮੈ ਨਾਵੈ ਨਾਲਿ ਵਿਰੋਧੁ ਹੈ ਦੁਇ ਨ ਕਵਹਿ ਇਕ ਠਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸੇਵਾ ਨ ਹੋਵੰਈ
 ਤਾ ਮਨੁ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਚੇਤਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ॥ ਹੁਕਮੁ ਮਨਹਿ ਤਾ ਹਰਿ ਮਿਲੈ
 ਤਾ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਉਮੈ ਸਭੁ ਸਰੀਰੁ ਹੈ ਹਉਮੈ ਓਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਹਉਮੈ ਵਡਾ ਗੁਬਾਰੁ ਹੈ ਹਉਮੈ
 ਵਿਚਿ ਬੁਝਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥੨॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵੰਈ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੁਝਿਆ ਜਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਜੀਤ
 ਬੰਧੁ ਹੈ ਨਾਮੁ ਨ ਕਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਉਮੈ ਗੰਡ ਤਾ ਸਚੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ
 ॥ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਸਚਿ ਰਹੈ ਸਚੇ ਸੇਵਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੯॥੧੨॥

ਵਡਛਾਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੇਜ ਏਕ ਏਕੋ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਰਾਵੇ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ॥੧॥ ਮੈ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਣ ਪ੍ਰੇਮ ਮਨਿ ਆਸਾ ॥

ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਮੇਲਾਵੈ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਹਉ ਵਾਰਿ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਕਤ ਜਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੈ ਅਵਗਣ
 ਭਰਪੂਰਿ ਸਰੀਰੇ ॥ ਹਉ ਕਿਤ ਕਰਿ ਮਿਲਾ ਅਪਣੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰੋ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਗੁਣਵਂਤੀ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਾਇਆ ॥
 ਸੇ ਮੈ ਗੁਣ ਨਾਹੀ ਹਉ ਕਿਤ ਮਿਲਾ ਮੇਰੀ ਮਾਇਆ ॥੩॥ ਹਉ ਕਰਿ ਕਰਿ ਥਾਕਾ ਉਪਾਵ ਬਹੁਤੇਰੇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗਰੀਬ ਰਾਖਹੁ ਹਰਿ ਮੇਰੇ ॥੪॥੧॥ ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਨਦਰੁ ਮੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥ ਹਉ ਹਰਿ
 ਪ੍ਰਭ ਛੋਡਿ ਟ੍ਰ੍ਹੌਜੈ ਲੋਭਾਣੀ ॥੨॥ ਹਉ ਕਿਤ ਕਰਿ ਪਿਰ ਕਤ ਮਿਲਤ ਇਆਣੀ ॥ ਜੋ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਸਾ ਸੋਹਾਗਣਿ
 ਸਾਈ ਪਿਰ ਕਤ ਮਿਲੈ ਸਿਆਣੀ ॥੩॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੈ ਵਿਚਿ ਦੋਸ ਹਉ ਕਿਤ ਕਰਿ ਪਿਰੁ ਪਾਵਾ ॥ ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ
 ਪਿਆਰੇ ਹਉ ਪਿਰ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਾ ॥੪॥ ਜਿਨਿ ਪਿਰੁ ਰਾਵਿਆ ਸਾ ਭਲੀ ਸੁਹਾਗਣਿ ॥ ਸੇ ਮੈ ਗੁਣ ਨਾਹੀ ਹਉ
 ਕਿਆ ਕਰੀ ਦੁਹਾਗਣਿ ॥੫॥ ਨਿਤ ਸੁਹਾਗਣਿ ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵੈ ॥ ਮੈ ਕਰਮਹੀਣ ਕਬ ਹੀ ਗਲਿ ਲਾਵੈ ॥੬॥ ਤੂ
 ਪਿਰੁ ਗੁਣਵਂਤਾ ਹਉ ਅਤਗੁਣਿਆਰਾ ॥ ਮੈ ਨਿਰਗੁਣ ਬਖ਼ਸਿ ਨਾਨਕੁ ਵੇਚਾਰਾ ॥੭॥੨॥

ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨

੭੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੈ ਮਨਿ ਕਡੀ ਆਸ ਹਰੇ ਕਿਤ ਕਰਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਵਾ ॥ ਹਉ ਜਾਇ ਪੁਛਾ ਅਪਨੇ ਸਤਗੁਰੈ ਗੁਰ ਪੁਛਿ ਮਨੁ
 ਸੁਗਧੁ ਸਮਝਾਵਾ ॥ ਭੂਲਾ ਮਨੁ ਸਮਝੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਏ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮੇਰਾ
 ਪਿਆਰਾ ਸੋ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੧॥ ਹਉ ਸਭਿ ਵੇਸ ਕਰੀ ਪਿਰ ਕਾਰਣ ਜੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਭਾਵਾ ॥
 ਸੋ ਪਿਰੁ ਪਿਆਰਾ ਮੈ ਨਦਰਿ ਨ ਦੇਖੈ ਹਉ ਕਿਤ ਕਰਿ ਧੀਰਜੁ ਪਾਵਾ ॥ ਜਿਸੁ ਕਾਰਣ ਹਉ ਸੀਗਾਰੁ ਸੀਗਾਰੀ ਸੋ
 ਪਿਰੁ ਰਤਾ ਮੇਰਾ ਅਵਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਧਨੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੋਹਾਗਣਿ ਜਿਨਿ ਪਿਰੁ ਰਾਵਿਅੜਾ ਸਚੁ ਸਵਰਾ ॥੨॥
 ਹਉ ਜਾਇ ਪੁਛਾ ਸੋਹਾਗ ਸੁਹਾਗਣਿ ਤੁਸੀ ਕਿਤ ਪਿਰੁ ਪਾਇਅੜਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥ ਮੈ ਊਪਰਿ ਨਦਰਿ ਕਰੀ ਪਿਰਿ
 ਸਾਚੈ ਮੈ ਛੋਡਿਅੜਾ ਮੇਰਾ ਤੇਰਾ ॥ ਸਭੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜੀਤ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਇਤੁ ਮਾਰਗਿ ਭੈਣੇ ਮਿਲੀਐ ॥
 ਆਪਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਨਾਨਕ ਜੋਤਿ ਜੋਤੀ ਰਲੀਐ ॥੩॥ ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਮੈ ਦੇਇ ਸਨੇਹਾ ਤਿਸੁ
 ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਪਣਾ ਦੇਵਾ ॥ ਨਿਤ ਪਖਾ ਫੇਰੀ ਸੇਵ ਕਮਾਵਾ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਪਾਣੀ ਢੋਵਾਂ ॥ ਨਿਤ ਨਿਤ ਸੇਵ ਕਰੀ

ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਏ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੂ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਾਨ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਆਸ ਪੁਜਾਏ ॥੪॥ ਗੁਰੂ ਸਜਣੁ ਮੇਰਾ ਮੇਲਿ ਹਰੇ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਾ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਛੁ ਹਰਿ ਗੋਸਟਿ ਪ੍ਰਭਾਂ ਕਰਿ ਸਾਡੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾਂ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਨਿਤ ਨਿਤ ਸਦ ਹਰਿ ਕੇ ਮਨੁ ਜੀਵੈ ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਤੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਤੁ ਵੇਲਾ ਵਿਸਰੈ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਤੁ ਵੇਲੈ ਮਹਿ ਜਾਇ ਜੀਤ ਮੇਰਾ ॥੫॥ ਹਰਿ ਵੇਖਣ ਕਤ ਸਭੁ ਕੋਈ ਲੋਚੈ ਸੋ ਵੇਖੈ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਵਿਖਾਲੇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ॥ ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪ੍ਰਾਨ ਮੇਰਾ ਮਿਲਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਇਕੇ ਹੋਏ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰਲਿਆ ॥੬॥੧॥੩॥

ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਤਿ ਊਚਾ ਤਾ ਕਾ ਦਰਬਾਰਾ ॥ ਅੰਤੁ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਲਖ ਧਾਰੈ ॥ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਤਾ ਕਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਰੈ ॥੧॥ ਸੁਹਾਵੀ ਕਤਣੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਲਾਖ ਭਗਤ ਜਾ ਕਤ ਆਰਾਧਹਿ ॥ ਲਾਖ ਤਪੀਸਰ ਤਪੁ ਹੀ ਸਾਧਹਿ ॥ ਲਾਖ ਜੋਗੀਸਰ ਕਰਤੇ ਜੋਗਾ ॥ ਲਾਖ ਭੋਗੀਸਰ ਭੋਗਹਿ ਭੋਗਾ ॥੨॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਸਹਿ ਜਾਣਹਿ ਥੋਰਾ ॥ ਹੈ ਕੋਈ ਸਾਜਣੁ ਪਰਦਾ ਤੋਰਾ ॥ ਕਰਤ ਜਤਨ ਜੇ ਹੋਇ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥ ਤਾ ਕਤ ਢੇਈ ਜੀਤ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥੩॥ ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਸੰਤਨ ਪਹਿ ਆਇਆ ॥ ਦ੍ਰਾਖ ਭ੍ਰਮੁ ਹਮਾਰਾ ਸਗਲ ਮਿਟਾਇਆ ॥ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਇਆ ਪ੍ਰਭ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਭ੍ਰਚਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਊਚਾ ॥੪॥੧॥ ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਦਰਸਨੁ ਕਰਣਾ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣਾ ॥੧॥ ਜੀਅ ਕੇ ਦਾਤੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥ ਮਨੁ ਜੀਵੈ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ਚਿਤੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਚੁ ਮੰਨੁ ਤੁਮਾਰਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥ ਸੀਤਲ ਪੁਰਖ ਦੂਸਟਿ ਸੁਜਾਣੀ ॥੨॥ ਸਚੁ ਹੁਕਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਤਖਤਿ ਨਿਵਾਸੀ ॥ ਆਇ ਨ ਜਾਵੈ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥੩॥ ਤੁਮ ਮਿਹਰਵਾਨ ਦਾਸ ਹਮ ਦੀਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਭਰਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ॥੪॥੨॥ ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੂ ਬੇਅੰਤੁ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਜਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ॥੧॥ ਸੇਵਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ

ਪਿਆਰੇ ॥ ਜਪਿ ਜੀਕਾ ਪ੍ਰਭ ਚਰਣ ਤੁਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਿੱਖਾਲ ਪੁਰਖ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ॥ ਜਿਸਹਿ ਜਨਾਵਹੁ
 ਤਿਨਹਿ ਤੁਮ ਜਾਤੇ ॥੨॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਈ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਝਿਤ ਉਤ ਦੇਖਉ ਓਟ ਤੁਮਾਰੀ ॥੩॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ
 ਗੁਣ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਥੂ ਦੇਖਿ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥੪॥੩॥ ਵਡਵਾਸੁ ਮਃ ੫ ॥ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪੂਰਾ ॥
 ਦਾਨੁ ਦੇਇ ਸਾਥੂ ਕੀ ਧੂਰਾ ॥੧॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਿੱਖਾਲਾ ॥ ਤੇਰੀ ਓਟ ਪੂਰਨ ਗੋਪਾਲਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਢੂਰੇ ॥੨॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਿਏ
 ਸੋ ਧਿਆਏ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੩॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥ ਸਰਣਿ ਪਰਿਆਂ ਨਾਨਕ
 ਹਰਿ ਦੁਆਰੇ ॥੪॥੪॥ ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੂ ਵਡ ਦਾਤਾ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਰਖਿਆ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭ
 ਸੁਆਮੀ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥ ਹਉ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਕਾ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੇਰੀ
 ਸਰਣਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਰੇ ਪੂਰੇ ॥ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ਸੰਤਾ ਧੂਰੇ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਤੇਰੇ
 ਦਰਸਨ ਕਤ ਜਾਈ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵਾ ॥੪॥੫॥
 ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਥਸੰਗਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਯੈ ॥ ਨਾ ਜੀਤ ਮਰੈ ਨ ਕਬਹੂ ਛੀਯੈ ॥੧॥ ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੂ
 ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਤਨ ਜਵਾਹਰ ਹਰਿ ਮਾਣਕ ਲਾਲਾ ॥
 ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਨਿਹਾਲਾ ॥੨॥ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਉ ਸਾਥੂ ਸਰਣਾ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਨਿਰਮਲ ਮਨੁ
 ਕਰਣਾ ॥੩॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਕੂਠਾ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਤੂਠਾ ॥੪॥੬॥ ਵਡਵਾਸੁ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਿੱਖਾਲਾ ॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ
 ਚਿਤਿ ਆਵਹਿ ਸੋ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ॥ ਜਿਤੁ ਵੇਲਾ ਵਿਸਰਹਿ ਤਾ ਲਾਗੈ ਹਾਵਾ ॥੧॥ ਤੇਰੇ ਜੀਅ ਤੂ ਸਦ ਹੀ ਸਾਥੀ ॥
 ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਤੇ ਕਢੁ ਦੇ ਹਾਥੀ ॥੨॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਤੁਮ ਹੀ ਕੀਆ ॥ ਜਿਸ ਤੂ ਰਾਖਹਿ ਤਿਸੁ ਢੂਖੁ ਨ
 ਥੀਆ ॥੩॥ ਤੂ ਏਕੋ ਸਾਹਿਬੁ ਅਕਰੁ ਨ ਹੋਰਿ ॥ ਬਿਨਤ ਕਰੈ ਨਾਨਕੁ ਕਰ ਜੋਰਿ ॥੪॥੭॥
 ਵਡਵਾਸੁ ਮਃ ੫ ॥ ਤੂ ਜਾਣਾਇਹਿ ਤਾ ਕੋਈ ਜਾਣੈ ॥ ਤੇਰਾ ਦੀਆ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥੧॥ ਤੂ ਅਚਰਜੁ ਕੁਦਰਤਿ

ਤੇਰੀ ਬਿਸਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਕਾਰਣੁ ਆਪੇ ਕਰਣਾ ॥ ਹੁਕਮੇ ਜ਼ਮਣੁ ਹੁਕਮੇ ਮਰਣਾ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ
ਮਨ ਤਨ ਆਧਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਬਖਸੀਸ ਤੁਮਾਰੀ ॥੩॥੮॥

ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੨

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੈਰੈ ਅੰਤਰਿ ਲੋਚਾ ਮਿਲਣ ਕੀ ਪਿਆਰੇ ਹਉ ਕਿਤ ਪਾਈ ਗੁਰ ਪ੍ਰੋਰੇ ॥ ਜੇ ਸਤ ਖੇਲ ਖੇਲਾਈਐ ਬਾਲਕੁ ਰਹਿ
ਨ ਸਕੈ ਬਿਨੁ ਖੀਰੇ ॥ ਮੈਰੈ ਅੰਤਰਿ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੈ ਅੰਮਾਲੀ ਜੇ ਸਤ ਭੋਜਨ ਮੈ ਨੀਰੇ ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ
ਧਿਰਿਮ ਕਾ ਬਿਨੁ ਦਰਸਨ ਕਿਤ ਮਨੁ ਧੀਰੇ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਸਜਣ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਾਈ ਮੈ ਮੇਲਿਹੁ ਮਿਨੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
ਓਹੁ ਜੀਅ ਕੀ ਮੇਰੀ ਸਭ ਬੇਦਨ ਜਾਣੈ ਨਿਤ ਸੁਣਾਵੈ ਹਰਿ ਕੀਆ ਬਾਤਾ ॥ ਹਉ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਾ
ਜਿਤ ਚਾਤੂਕੁ ਜਲ ਕਤ ਬਿਲਲਾਤਾ ॥ ਹਉ ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੀ ਮੈ ਨਿਰਗੁਣ ਕਤ ਰਖਿ ਲੇਤਾ
॥੨॥ ਹਉ ਭਈ ਤਡੀਣੀ ਕੰਤ ਕਤ ਅੰਮਾਲੀ ਸੋ ਪਿਲੁ ਕਦਿ ਨੈਣੀ ਦੇਖਾ ॥ ਸਭਿ ਰਸ ਭੋਗਣ ਵਿਸਰੇ ਬਿਨੁ
ਪਿਰ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖਾ ॥ ਇਹੁ ਕਾਪਡੁ ਤਨਿ ਨ ਸੁਖਾਵੈ ਕਰਿ ਨ ਸਕਤ ਹਉ ਵੇਸਾ ॥ ਜਿਨੀ ਸਖੀ ਲਾਲੁ ਰਾਵਿਆ
ਪਿਆਰਾ ਤਿਨ ਆਗੈ ਹਮ ਆਦੇਸਾ ॥੩॥ ਮੈ ਸਭਿ ਸੀਗਾਰ ਬਣਾਇਆ ਅੰਮਾਲੀ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਕਾਮਿ ਨ ਆਏ ॥
ਜਾ ਸਹਿ ਬਾਤ ਨ ਪੁਛੀਆ ਅੰਮਾਲੀ ਤਾ ਬਿਰਥਾ ਜੋਬਨੁ ਸਭੁ ਜਾਏ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਤੇ ਸੋਹਾਗਣੀ ਅੰਮਾਲੀ ਜਿਨ
ਸਹੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥ ਹਉ ਵਾਰਿਆ ਤਿਨ ਸੋਹਾਗਣੀ ਅੰਮਾਲੀ ਤਿਨ ਕੇ ਧੋਵਾ ਸਦ ਪਾਏ ॥੪॥ ਜਿਚਰੁ ਟ੍ਰੂਝਾ
ਭਰਮੁ ਸਾ ਅੰਮਾਲੀ ਤਿਚਰੁ ਮੈ ਜਾਣਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਟ੍ਰੂਰੇ ॥ ਜਾ ਮਿਲਿਆ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅੰਮਾਲੀ ਤਾ ਆਸਾ ਮਨਸਾ
ਸਭ ਪੂਰੇ ॥ ਮੈ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ਅੰਮਾਲੀ ਪਿਲੁ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗੁ
ਮਾਣਿਆ ਅੰਮਾਲੀ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਲਗਿ ਪੈਰੇ ॥੫॥੧॥੬॥

ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਧੁਨਿ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੁ ਸਲਾਹਣਾ ਧਨੁ ਧਨੁ
ਵਡਭਾਗ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਹੋਇ ਰਹਹਿ ਤਾ ਪਾਵਹਿ

ਸਚਾ ਨਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਹਵਾ ਸਚੀ ਸਚਿ ਰਤੀ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਹੋਰੁ ਸਾਲਾਹਣਾ ਜਾਸਹਿ
 ਜਨਮੁ ਸਭੁ ਖੋਇ ॥੨॥ ਸਚੁ ਖੇਤੀ ਸਚੁ ਬੀਜਣਾ ਸਾਚਾ ਵਾਪਾਰਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਹਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਭਗਤਿ ਭਰੇ
 ਘੰਡਾਰਾ ॥੩॥ ਸਚੁ ਖਾਣਾ ਸਚੁ ਪੈਨਣਾ ਸਚੁ ਟੇਕ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਮਹਲੀ ਪਾਏ ਥਾਤ ॥
 ੪॥ ਆਵਹਿ ਸਚੇ ਜਾਵਹਿ ਸਚੇ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਮੂਲਿ ਨ ਪਾਹਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਚਿਆਰ ਹਹਿ ਸਾਚੇ ਮਾਹਿ
 ਸਮਾਹਿ ॥੫॥ ਅਂਤਰੁ ਸਚਾ ਮਨੁ ਸਚਾ ਸਚੀ ਸਿਫਤਿ ਸਨਾਇ ॥ ਸਚੈ ਥਾਨਿ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣਾ ਸਤਿਗੁਰ ਬਲਿਹਾਰੈ
 ਜਾਤ ॥੬॥ ਸਚੁ ਕੇਲਾ ਮੂਰਤੁ ਸਚੁ ਜਿਤੁ ਸਚੇ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਚੁ ਕੇਖਣਾ ਸਚੁ ਬੋਲਣਾ ਸਚਾ ਸਭੁ ਆਕਾਰੁ
 ॥੭॥ ਨਾਨਕ ਸਚੈ ਮੇਲੇ ਤਾ ਮਿਲੇ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਖਸੀ ਆਪੇ ਕਰੇ ਰਖਾਇ ॥੮॥੧॥
 ਵਡਛਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨੂਆ ਦਹ ਦਿਸ ਧਾਵਦਾ ਓਹੁ ਕੈਸੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਇੰਦ੍ਰੀ ਵਿਆਪਿ ਰਹੀ ਅਧਿਕਾਰੀ
 ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨਿਤ ਸੰਤਾਵੈ ॥੧॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਹਜੇ ਗੁਣ ਰਖੀਜੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਦੁਲਭੁ ਹੈ ਗੁਰਮਤਿ
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਬਦੁ ਚੀਨਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਤਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਆਪੈ ਆਪੁ
 ਧਾਣੈ ਤਾ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਵੈ ॥੩॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਦਾ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਹਰਿ
 ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਤ ॥੪॥ ਬਿਖੁ ਸੇ ਅੰਮ੍ਰਤ ਭਏ ਗੁਰਮਤਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ॥ ਅਕਹੁ
 ਪਰਮਲ ਭਏ ਅੰਤਰਿ ਵਾਸਨਾ ਵਸਾਈ ॥੫॥ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਦੁਲਭੁ ਹੈ ਜਗ ਮਹਿ ਖਟਿਆ ਆਇ ॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੬॥ ਮਨਮੁਖ ਭੂਲੇ ਬਿਖੁ ਲਗੇ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ
 ਸਦਾ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਸਾਚਾ ਸਬਦੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥੭॥ ਮੁਖਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਕਰੈ ਵਿਰਲੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਇਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਤਿਨੁ ਪਾਇਆ ॥੮॥੨॥

ਵਡਛਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ਛਾਂਤ

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਾਇਆ ਕੂਝਿ ਵਿਗਾਇ ਕਾਹੇ ਨਾਈਐ ॥ ਨਾਤਾ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਸਚੁ ਕਮਾਈਐ ॥ ਜਬ ਸਾਚ ਅੰਦਰਿ ਹੋਇ ਸਾਚਾ

ਤਾਮਿ ਸਾਚਾ ਪਾਈਐ ॥ ਲਿਖੇ ਬਾੜਹੁ ਸੁਰਤਿ ਨਾਹੀ ਬੋਲਿ ਬੋਲਿ ਗਰਵਾਈਐ ॥ ਜਿਥੈ ਜਾਇ ਬਹੀਐ ਭਲਾ ਕਹੀਐ
 ਸੁਰਤਿ ਸਬਦੁ ਲਿਖਾਈਐ ॥ ਕਾਇਆ ਕ੍ਰਿਡਿ ਵਿਗਾਡਿ ਕਾਹੇ ਨਾਈਐ ॥੧॥ ਤਾ ਮੈ ਕਹਿਆ ਕਹਣੁ ਜਾ ਤੁੜੈ
 ਕਹਾਇਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਮਨਹਿ ਲਾਗ ਟ੍ਰਖਿ ਡੇਰਾ ਢਾਹਿਆ ॥
 ਸੂਖੁ ਮਨ ਮਹਿ ਆਇ ਵਸਿਆ ਜਾਮਿ ਤੈ ਫੁਰਮਾਇਆ ॥ ਨਦਰਿ ਤੁਧੁ ਅਰਦਾਸਿ ਮੇਰੀ ਜਿੰਨਿ ਆਪੁ ਤਪਾਇਆ ॥
 ਤਾ ਮੈ ਕਹਿਆ ਕਹਣੁ ਜਾ ਤੁੜੈ ਕਹਾਇਆ ॥੨॥ ਵਾਰੀ ਖਸਮੁ ਕਢਾਏ ਕਿਰਤੁ ਕਮਾਵਣਾ ॥ ਮੰਦਾ ਕਿਸੈ ਨ ਆਖਿ
 ਝਗੜਾ ਪਾਵਣਾ ॥ ਨਹ ਪਾਇ ਝਗੜਾ ਸੁਆਮਿ ਸੇਤੀ ਆਪਿ ਆਪੁ ਵਜਾਵਣਾ ॥ ਜਿਸੁ ਨਾਲਿ ਸੰਗਤਿ ਕਰਿ ਸਰੀਕੀ
 ਜਾਇ ਕਿਆ ਰੂਆਵਣਾ ॥ ਜੋ ਦੇਇ ਸਹਣਾ ਮਨਹਿ ਕਹਣਾ ਆਖਿ ਨਾਹੀ ਵਾਵਣਾ ॥ ਵਾਰੀ ਖਸਮੁ ਕਢਾਏ ਕਿਰਤੁ
 ਕਮਾਵਣਾ ॥੩॥ ਸਭ ਤਪਾਈਅਨੁ ਆਪਿ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥ ਕਤੜਾ ਕੋਇ ਨ ਮਾਗੈ ਮੀਠਾ ਸਭ ਮਾਗੈ ॥ ਸਭੁ
 ਕੋਇ ਮੀਠਾ ਮੰਗਿ ਦੇਖੈ ਖਸਮ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ॥ ਕਿਛੁ ਪੁਨਨ ਦਾਨ ਅਨੇਕ ਕਰਣੀ ਨਾਮ ਤੁਲਿ ਨ ਸਮਸਰੇ ॥
 ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਨਾਮੁ ਮਿਲਿਆ ਕਰਮੁ ਹੋਆ ਧੁਰਿ ਕਦੇ ॥ ਸਭ ਤਪਾਈਅਨੁ ਆਪਿ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੪॥੧॥
 ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਰਹੁ ਦਿਇਆ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ॥ ਸਭ ਤਪਾਈਐ ਆਪਿ ਆਪੇ ਸਰਬ ਸਮਾਣਾ ॥ ਸਰਬੇ
 ਸਮਾਣਾ ਆਪਿ ਤੂਹੈ ਤਪਾਇ ਧੰਧੈ ਲਾਈਆ ॥ ਇਕਿ ਤੁੜਾ ਹੀ ਕੀਏ ਰਾਜੇ ਇਕਨਾ ਭਿਖ ਭਰਵਾਈਆ ॥ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ
 ਤੁੜੁ ਕੀਆ ਮੀਠਾ ਏਤੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣਾ ॥ ਸਦਾ ਦਿਇਆ ਕਰਹੁ ਅਪਣੀ ਤਾਮਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ
 ਹੈ ਸਾਚਾ ਸਦਾ ਮੈ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ॥ ਟ੍ਰਖੁ ਗਿਇਆ ਸੁਖੁ ਆਇ ਸਮਾਣਾ ॥ ਗਾਵਨਿ ਸੁਰਿ ਨਰ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣਾ ॥
 ਸੁਰਿ ਨਰ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣ ਗਾਵਹਿ ਜੋ ਤੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵਹੇ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੇ ਚੇਤਹਿ ਨਾਹੀ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਹੇ
 ॥ ਇਕਿ ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਨ ਚੇਤਹਿ ਮੂਲੇ ਜੋ ਆਇਆ ਤਿਸੁ ਜਾਣਾ ॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਸਦਾ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ਮੈ ਮਨਿ ਭਾਣਾ
 ॥੨॥ ਤੇਰਾ ਵਖਤੁ ਸੁਹਾਵਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥ ਸੇਵਕ ਸੇਵਹਿ ਭਾਉ ਕਰਿ ਲਾਗ ਸਾਤ ਪਰਾਣੀ ॥ ਸਾਤ
 ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਨਾ ਲਾਗ ਜਿਨੀ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਮਿ ਤੈਰੈ ਜੋਇ ਰਾਤੇ ਨਿਤ ਚੜਹਿ ਸਵਾਇਆ ॥ ਇਕੁ ਕਰਮੁ
 ਧਰਮੁ ਨ ਹੋਇ ਸੰਜਮੁ ਜਾਮਿ ਨ ਏਕੁ ਪਛਾਣੀ ॥ ਵਖਤੁ ਸੁਹਾਵਾ ਸਦਾ ਤੇਰਾ ਅੰਮ੍ਰਤ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥੩॥ ਹਉ

बलिहारी साचे नावै ॥ राजु तेरा कबहु न जावै ॥ राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए ॥
 चाकरु त तेरा सोङ्गि होवै जोङ्गि सहजि समावए ॥ दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवए ॥ हउ
 बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥ ४॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ कीरति करहि सुआमी तेरे
 दुआरे ॥ जपहि त साचा एकु मुरारे ॥ साचा मुरारे तामि जापहि जामि मनि वसावहे ॥ भरमो भुलावा
 तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे ॥ गुर परसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥ जुगह जुगंतरि भगत
 तुमारे ॥ ५॥ वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥ किउ करि करउ बेन्ती हउ आखि न जाणा ॥ नदरि
 करहि ता साचु पछाणा ॥ साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥ दूख भूख संसारि कीए सहसा
 एहु चुकावहे ॥ बिनवंति नानकु जाङ्गि सहसा बुझै गुर बीचारा ॥ वडा साहिबु है आपि अलख अपारा
 ॥ ६॥ तेरे बंके लोङ्गिण दंत रीसाला ॥ सोहणे नक जिन लम्मड़े वाला ॥ कंचन काङ्गिआ सुङ्गिने की ढाला
 ॥ सोवन्न ढाला कृसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥ जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥
 ह्यस ह्यसा बग बगा लहै मन की जाला ॥ बंके लोङ्गिण दंत रीसाला ॥ ७॥ तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी
 बाणी ॥ कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥ तरला जुआणी आपि भाणी झिछ मन की पूरीए ॥ सारंग
 जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरए ॥ स्रीरंग राती फिरै माती उदकु गंगा वाणी ॥ बिनवंति
 नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ ८॥ २॥

वडह्यासु महला ३ छंत

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे ॥ सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाङ्गि पिआरे
 ॥ सचै भाङ्गि पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाङ्गिआ ॥ आपु गवाङ्गिआ ता पिरु पाङ्गिआ
 गुर कै सबदि समाङ्गिआ ॥ सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥ नानक सा धन
 मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥ १॥ निरगुणवंतड़ीए पिरु देखि हट्टोरे राम ॥ गुरमुखि जिनी

ਰਾਵਿਆ ਮੁੰਝੇ ਪਿਲੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ਰਾਮ ॥ ਪਿਲੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ਵੇਖੁ ਹਜੂਰੇ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਏਕੋ
 ਜਾਤਾ ॥ ਧਨ ਬਾਲੀ ਭੋਲੀ ਪਿਲੁ ਸਹਜਿ ਰਾਵੈ ਮਿਲਿਆ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਸਬਦਿ
 ਸੁਭਾਖਿਆ ਹਰਿ ਸਰਿ ਰਹੀ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਸਾ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਸਬਦੇ ਰਹੈ ਹਫ਼ਦੂਰੇ ॥੨॥ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਾਇ
 ਪ੍ਰਛੁ ਮੁੰਝੇ ਜਿਨੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਪਿਰ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਮੁੰਝੇ ਜਿਨੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਨ
 ਗਵਾਇਆ ॥ ਜਿਨੀ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਤਿਨੀ ਪਿਲੁ ਪਾਇਆ ਰੰਗ ਸਿਤ ਰਲੀਆ ਮਾਣੈ ॥ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ
 ਮਾਤੀ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੈ ॥ ਕਾਮਣਿ ਵਡਭਾਗੀ ਅੰਤਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਹਰਿ ਕਾ ਪ੍ਰੇਮੁ ਸੁਭਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ
 ਕਾਮਣਿ ਸਹਜੇ ਰਾਤੀ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਇਆ ॥੩॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮੁੰਝੇ ਤੂ ਚਲੁ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਏ ॥ ਹਰਿ
 ਕਰੁ ਰਾਵਹਿ ਸਦਾ ਮੁੰਝੇ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਏ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਏ ਸਬਦੁ ਵਜਾਏ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣਿ
 ਨਾਰੀ ॥ ਪਿਲੁ ਰਲੀਆਲਾ ਜੋਬਨੁ ਬਾਲਾ ਅਨਦਿਨੁ ਕੱਤਿ ਸਵਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਕਰੁ ਸੋਹਾਗੋ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੋ ਸਚੈ ਸਬਦਿ
 ਸੁਹਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਜਾ ਚਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ॥੪॥੧॥ ਵਡਛਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸਭੁ ਵਾਪਾਰੁ ਭਲਾ ਜੇ ਸਹਜੇ ਕੀਯੈ ਰਾਮ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੀਐ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਯੈ ਰਾਮ ॥ ਲਾਹਾ ਹਰਿ
 ਰਸੁ ਲੀਯੈ ਹਰਿ ਰਾਵੀਯੈ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੈ ॥ ਗੁਣ ਸੰਗਹਿ ਅਕਗਣ ਵਿਕਣਹਿ ਆਪੈ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ॥
 ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈ ਕਡੀ ਵਡਿਆਈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰਸੁ ਪੀਯੈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਨਿਰਾਲੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ
 ਕੀਯੈ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੇਤੀ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬੀਜੀਐ ਹਰਿ ਲੀਯੈ ਸਰੀਰਿ ਜਮਾਏ ਰਾਮ ॥ ਆਪਣੇ ਘਰ ਅੰਦਰਿ ਰਸੁ
 ਭੁੰਚੁ ਤੂ ਲਾਹਾ ਲੈ ਪਰਥਾਏ ਰਾਮ ॥ ਲਾਹਾ ਪਰਥਾਏ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਧਨੁ ਖੇਤੀ ਵਾਪਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ
 ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਬੂੰਝੈ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਮਨਮੁਖ ਖੇਤੀ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਥਾਕੇ ਤ੃ਸਨਾ ਭੁਖ ਨ ਜਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਬੀਜਿ
 ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਏ ॥੨॥ ਹਰਿ ਵਾਪਾਰਿ ਸੇ ਜਨ ਲਾਗੇ ਜਿਨਾ ਮਸਤਕਿ ਮਣੀ ਵਡਭਾਗੋ ਰਾਮ ॥
 ਗੁਰਮਤੀ ਮਨੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਬੈਰਾਗੋ ਰਾਮ ॥ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੋ ਸਚਿ ਬੈਰਾਗੋ ਸਾਚਿ ਰਤੇ
 ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਤਰਾਨਾ ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਲਾਗਿ ਮਤਿ ਤੁਪਯੈ ਗੁਰਮੁਖਿ

नामु सोहागो ॥ नानक सबदि मिलै भउ भंजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥३॥ खेती वणजु सभु हुकमु है
 हुकमे मनि वडिआई राम ॥ गुरमती हुकमु बूझीअै हुकमे मेलि मिलाई राम ॥ हुकमि मिलाई सहजि
 समाई गुर का सबदु अपारा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥ भउ भंजनु पाइआ
 आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ
 समाई ॥४॥२॥ वडह्सु महला ३ ॥ मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥ आपणै घरि तू
 सुखि वसहि पोहि न सकै जमकालु जीउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए ॥ सदा
 सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ॥ दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखि मोही जमकालि ॥ कहै
 नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥१॥ मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न
 भालि ॥ जो भावै सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि ॥ गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु
 सखाई ॥ मनमुख अंधुले गिआन विहौणे दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि
 ॥ नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥२॥ मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइ कै इकि
 सचि लगे वापारा ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ॥ अंतरि सबदु अपारा हरि नामु
 पिआरा नामे नउ निधि पाई ॥ मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई ॥ हउमै
 मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई ॥ नानक माणस जनमु दुलम्भु है सतिगुरि बूझ बुझाई
 ॥३॥ मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥ जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी
 राम ॥ से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥ मति निहचल अति गूँड़ी गुरमुखि
 सहजे नामु वखाणिआ ॥ इक कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे ॥
 नानक सहजे सेवहि गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥४॥३॥ वडह्सु महला ३ ॥ रतन पदारथ
 वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥ लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥

गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥ बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई
 गुरमति नामु अधारे ॥ वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो एतु वापारि लाए ॥ रतन पदारथ वणजीअहि
 जाँ सतिगुरु देइ बुझाए ॥१॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम ॥ कूडु बोलि बिखु खावणी
 बहु वधहि विकारा राम ॥ बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥ पड़ि पड़ि
 पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई ॥ आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा ॥
 माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥२॥ खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥
 खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥ ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु
 गवाइआ ॥ बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ॥ मनमुख संता नालि
 वैरु करि दुखु खटे संसारा ॥ खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरवारा राम ॥३॥ आपि करे किसु आखीऔ
 होरु करणा किछू न जाई राम ॥ जितु भावै तितु लाइसी जित तिस दी वडिआई राम ॥ जित तिस दी
 वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥ जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बख्से सोई ॥
 गुर परसादी आपु गवाईऔ नानक नामि पति पाई ॥ आपि करे किसु आखीऔ होरु करणा किछू न
 जाई ॥४॥४॥ वडह्सु महला ३ ॥ सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥ गुरमती हरि नामु
 वणजीऔ अति मोलु अफारा राम ॥ अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥ अंतरि
 बाहरि भगती रते सचि नामि लिव लागी ॥ नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि बीचारा ॥ नानक
 नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥१॥ ह्यउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै
 राम ॥ गुरमती मनु निरमला रसना हरि रसु पीजै राम ॥ रसना हरि रसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि
 बीचारी ॥ अंतरि खूहटा अंमृति भरिआ सबदे काढि पीऔ पनिहारी ॥ जिसु नदरि करे सोई सचि लागै
 रसना रामु रखीजै ॥ नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै ॥२॥ पंडित जोतकी सभि

ਪਡਿ ਪਡਿ ਕੂਕਦੇ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰਾ ਰਾਮ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਅੰਤਰਿ ਮਲੁ ਲਾਗੈ ਮਾਇਆ ਕੇ ਵਾਪਾਰਾ
 ਰਾਮ ॥ ਮਾਇਆ ਕੇ ਵਾਪਾਰਾ ਜਗਤਿ ਪਿਆਰਾ ਆਵਣਿ ਜਾਣਿ ਟੁਖੁ ਪਾਈ ॥ ਬਿਖੁ ਕਾ ਕੀੜਾ ਬਿਖੁ ਸਿਉ ਲਾਗਾ
 ਬਿਛਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਈ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੋਝਿ ਕਮਾਵੈ ਕੋਝਿ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਸਦਾ
 ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹੋਰਿ ਮੂਰਖ ਕੁਕਿ ਮੁਏ ਗਾਵਾਰਾ ॥੩॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਮਨੁ ਰੰਗਿਆ ਮੋਹਿ ਸੁਧਿ ਨ ਕਾਈ ਰਾਮ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਝਿਹੁ ਮਨੁ ਰੰਗੀਐ ਟ੍ਰੂਜਾ ਰੰਗ ਜਾਈ ਰਾਮ ॥ ਟ੍ਰੂਜਾ ਰੰਗ ਜਾਈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਈ ਸਾਚਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ਬ੍ਰੂਜੈ ਸਾਚਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਸੋ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਹੋਰੁ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਏ ॥ ਨਾਨਕ
 ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਝਿਕਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥੪॥੫॥ ਵਡਿਆਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ
 ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਸੰਸਾਰੁ ਹੈ ਅੰਤਿ ਸਾਚਿ ਨਿਬੇਡਾ ਰਾਮ ॥ ਆਪੇ ਸਚਾ ਬਖਸਿ ਲਾਏ ਫਿਰਿ ਹੋਝਿ ਨ ਫੇਰਾ ਰਾਮ ॥ ਫਿਰਿ
 ਹੋਝਿ ਨ ਫੇਰਾ ਅੰਤਿ ਸਾਚਿ ਨਿਬੇਡਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਸਾਚੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਸਹਜੇ ਮਾਤੇ ਸਹਜੇ ਰਹੇ
 ਸਮਾਈ ॥ ਸਚਾ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਸਚੁ ਵਸਾਇਆ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਅੰਤਿ ਨਿਬੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਸਾਚਿ
 ਸਮਾਣੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਭਵਜਲਿ ਫੇਰਾ ॥੧॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਬਰਲੁ ਹੈ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਈ ਰਾਮ ॥ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ
 ਸਭੁ ਹੇਤੁ ਹੈ ਹੇਤੇ ਪਲਚਾਈ ਰਾਮ ॥ ਹੇਤੇ ਪਲਚਾਈ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਈ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥ ਜਿਨਿ ਸੂਸਟਿ ਸਾਜੀ
 ਸੋ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧਾ ਤਪਿ ਤਪਿ ਖਪੈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਈ ॥
 ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ਭੁਲਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਖੁਆਈ ॥੨॥ ਏਹੁ ਜਗੁ ਜਲਤਾ ਟੇਖਿ ਕੈ ਭਜਿ ਪਾਏ ਹਰਿ
 ਸਰਣਾਈ ਰਾਮ ॥ ਅਰਦਾਸਿ ਕਰੀ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਆਗੈ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਦੇਹੁ ਵਡਾਈ ਰਾਮ ॥ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਸਰਣਾਈ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦਾਤਾ ॥ ਸੇਵਾ ਲਾਗੇ ਸੇ ਵਡਭਾਗੇ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥ ਜਤੁ ਸਤੁ
 ਸੰਜਮੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗਤਿ ਨਹੀਂ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸ ਨੋ ਸਬਦੁ ਬੁਝਾਏ ਜੋ ਜਾਇ ਪਕੈ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ
 ॥੩॥ ਜੋ ਹਰਿ ਮਤਿ ਦੇਝਿ ਸਾ ਊਪਜੈ ਹੋਰ ਮਤਿ ਨ ਕਾਈ ਰਾਮ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੁ ਤੂ ਆਪੇ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ
 ਰਾਮ ॥ ਆਪੇ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ਅਵਰ ਨ ਭਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ॥ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਦਾ ਹੈ ਸਾਚਾ ਸਾਚੈ

सबदि सुभाखिआ ॥ घर महि निज घर पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥ नानक जो नामि रते सई
महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥४॥६॥

वड्ह्यसु महला ४ छंत

१८ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥ हरि हरि हरि नामु मेरै मनि वसाई राम ॥
हरि हरि नामु मेरै मनि वसाई सभि दूख विसारणहारा ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु
सतिगुरु हमारा ॥ ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविथै साँति पाई ॥ मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर
प्रीति लगाई ॥१॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥ हरि नामो हरि नामु वृङ्गाए जपि
हरि हरि नामु विगसे राम ॥ जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवं निधि पाई ॥ हउमै
रोग गडिआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ॥ हरि नामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर
देव मनु परसे ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥२॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा
सतिगुरु पूरा राम ॥ हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥ हउ मनु तनु काटि
काटि तिसु दर्इ जो सतिगुर बचन सुणाए ॥ मेरै मनि बैरागु भडिआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु
पाए ॥ हरि हरि कृपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै
मेरा सतिगुरु पूरा ॥३॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥ हरि दानो हरि दानु देवै
हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥ सेवक
भाडि मिले वडभागी जिन गुर चरनी मनु लागा ॥ कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख
सुखु होई ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥४॥१॥ वड्ह्यसु महला ४ ॥ ह्याउ गुर बिनु
ह्याउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥ जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥ सतिगुरु मेलि
हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआडिआ ॥ जिसु कारणि ह्याउ ढूँढि ढूँढेदी सो सजणु हरि घरि

पाइआ ॥ एक दृष्टि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥ ह्यउ गुर बिनु ह्यउ गुर बिनु खरी
 निमाणी ॥१॥ जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम ॥ तिन चरण
 तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम ॥ हरि हरि चरण सरेवह तिन के जिन सतिगुरु पुरखु
 प्रभु ध्याइआ ॥ तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥ गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी
 अनदिनु राम गुण गाए ॥ जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥२॥
 ह्यउ वारी ह्यउ वारी गुरसिख मीत पिआरे राम ॥ हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे
 राम ॥ हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवाँ ॥ हरि हरि कृपा करे
 सुखदाता गुरमुख अंमृतु पीवाँ ॥ हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे ॥ ह्यउ वारी
 ह्यउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥३॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि आपे हरि
 आपे मेलै करै सो होई राम ॥ जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥ बहुतु सिआणप लाइआ
 न जाई करि थाके सभि चतुराई ॥ गुर प्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥ हरि
 आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥४॥२॥ वडह्यसु महला ४ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि
 हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम ॥ तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ
 राम ॥ गुर गिआन अंजनु सतिगुरु पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे ॥ सतिगुर सेवि परम पटु
 पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥ जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ ॥ हरि
 सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥१॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा
 मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम ॥ हरि हरि नामु
 मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु दृढ़ाइआ ॥ जिथै पुतु कलतु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि
 नामि छडाइआ ॥ धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई ॥ मेरा सतिगुरु मेरा

सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥२॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न
 पाइਆ राम ॥ तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु बृथा गवाइआ राम ॥ निहफलु जनमु तिन
 बृथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झ़ोरे ॥ घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भागहीण हरि दूरे ॥ हरि
 हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु
 सतिगुर पुरख न पाइआ ॥३॥ हम चातृक हम चातृक दीन हरि पासि बेन्ती राम ॥ गुर मिलि गुर
 मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥ हरि हरि सतिगुर करह भगती जाँ हरि प्रभु
 किरपा धारे ॥ मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हम्सारे ॥ कहु नानक गुरि नामु
 दृद्धाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥ हम चातृक हम चातृक दीन हरि पासि बेन्ती ॥४॥३॥
 वडह्यासु महला ४ ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥ हम पूछह हम पूछह
 सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥ सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥ पाइ
 लगह नित करह बिन्ती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ ॥ सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि
 हरि नामि हरि राता ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥१॥ सुणि गुरमुखि
 सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे छाउमै पापा राम ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअडे जगि
 तापा राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे ॥ सतिगुरि गिआन खड़गु हथि
 दीना जमकंकर मारि बिदारे ॥ हरि प्रभि कृपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप संतापा ॥ सुणि गुरमुखि
 सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे छाउमै पापा ॥२॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ
 राम ॥ मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥ गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ
 अरोगत भए सरीरा ॥ अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर गंभीरा ॥ जाति अजाति
 नामु जिन धिआइआ तिन परम पदारथु पाइआ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि

ਭਾਇਆ ॥੩॥ ਹਰਿ ਧਾਰਹੁ ਹਰਿ ਧਾਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਤਬਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਹਮ ਪਾਪੀ ਹਮ ਪਾਪੀ
ਨਿਰਗੁਣ ਦੀਨ ਤੁਮਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਹਮ ਪਾਪੀ ਨਿਰਗੁਣ ਦੀਨ ਤੁਮਾਰੇ ਹਰਿ ਦੈਆਲ ਸਰਣਾਇਆ ॥ ਤੂ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ
ਸਰਬ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਮ ਪਾਥਰ ਤਰੇ ਤਰਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਉਧਾਰੇ ॥
ਹਰਿ ਧਾਰਹੁ ਹਰਿ ਧਾਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਤਬਾਰੇ ਰਾਮ ॥੪॥੪॥

ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘੋੜੀਆ

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੇਹ ਤੇਜਣਿ ਜੀ ਰਾਮਿ ਉਪਾਈਆ ਰਾਮ ॥ ਧਨੁ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਪੁਨਿ ਪਾਈਆ ਰਾਮ ॥ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਵਡ ਪੁਨੇ
ਪਾਇਆ ਦੇਹ ਸੁ ਕੰਚਨ ਚੰਗੜੀਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗੁ ਚਲ੍ਹੂਲਾ ਪਾਵੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਵ ਰੰਗੜੀਆ ॥ ਏਹ ਦੇਹ
ਸੁ ਬਾਂਕੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਜਾਪੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵੀਆ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਰਾਮਿ
ਉਪਾਈਆ ॥੧॥ ਦੇਹ ਪਾਵਤ ਜੀਨੁ ਬੁਝਿ ਚੰਗਾ ਰਾਮ ॥ ਚਡ਼ਿ ਲਮਧਾ ਜੀ ਬਿਖਮੁ ਭੁਝਿਅੰਗਾ ਰਾਮ ॥ ਬਿਖਮੁ
ਭੁਝਿਅੰਗਾ ਅਨਤ ਤਰੰਗਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ ਲਮਧਾਏ ॥ ਹਰਿ ਬੋਹਿਥਿ ਚਡ਼ਿ ਵਡਭਾਗੀ ਲਮਧੈ ਗੁਰੁ ਖੇਵਟੁ ਸਬਦਿ
ਤਰਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਰੰਗੀ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਿਰਬਾਣ ਪਦੁ ਪਾਇਆ
ਹਰਿ ਤਤਮੁ ਹਰਿ ਪਦੁ ਚੰਗਾ ॥੨॥ ਕਡੀਆਲੁ ਮੁਖੇ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨੁ ਵੜਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਹਰਿ ਚਾਬਕੁ
ਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਾਇ ਚਾਬਕੁ ਮਨੁ ਜਿਣੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੀਤਿਆ ॥ ਅਗੜੋ ਘੜਾਵੈ ਸਬਦੁ
ਪਾਵੈ ਅਪਿਤ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਤਿਆ ॥ ਸੁਣਿ ਸ਼ਵਣ ਬਾਣੀ ਗੁਰਿ ਕਖਾਣੀ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਤੁਰੀ ਚੜਾਇਆ ॥ ਮਹਾ
ਮਾਰਗੁ ਪਥੁ ਬਿਖੜਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪਾਰਿ ਲਮਧਾਇਆ ॥੩॥ ਘੋੜੀ ਤੇਜਣਿ ਦੇਹ ਰਾਮਿ ਉਪਾਈਆ ਰਾਮ ॥ ਜਿਤੁ
ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੈ ਸਾ ਧਨੁ ਧਨੁ ਤੁਖਾਈਆ ਰਾਮ ॥ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੈ ਸਾ ਧਨੁ ਸਾਬਾਸੈ ਧੁਰਿ ਪਾਇਆ ਕਿਰਤੁ
ਜੁਡੰਦਾ ॥ ਚਡ਼ਿ ਦੇਹਡਿ ਘੋੜੀ ਬਿਖਮੁ ਲਧਾਏ ਮਿਲੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਮਾਨਦਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਾਜੁ ਰਚਾਇਆ ਪੂਰੈ
ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਜੰਬ ਆਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਰੁ ਪਾਇਆ ਮੰਗਲੁ ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਵਾਧਾਈ ॥੪॥੧॥੫॥
ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਦੇਹ ਤੇਜਨੜੀ ਹਰਿ ਨਵ ਰੰਗੀਆ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਗੁਰੁ ਹਰਿ ਮੰਗੀਆ ਰਾਮ ॥

ਗਿਆਨ ਮੰਗੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਚੰਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਜਾਣੀਆ ॥ ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਸਫਲਿਤ ਕੀਆ ਕਰਤੈ ਹਰਿ
 ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਖਾਣੀਆ ॥ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਜਨ ਮੰਗੀਆ ॥ ਜਨੁ ਕਹੈ
 ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਚੰਗੀਆ ॥੧॥ ਦੇਹ ਕੰਚਨ ਜੀਨੁ ਸੁਵਿਨਾ ਰਾਮ ॥ ਜਡਿ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਰਤਨਾ ਰਾਮ ॥ ਜਡਿ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਗੋਵਿੰਦ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸੁਖ ਘਣੇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਪਾਇਆ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਰੰਗ ਹਰਿ ਬਣੇ ॥ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਹਰਿ ਨਵਤਨ ਹਰਿ
 ਨਵ ਰੰਗੀਆ ॥ ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਨਾਮੁ ਜਾਣੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੰਗੀਆ ॥੨॥ ਕਡੀਆਲੁ ਮੁਖੇ ਗੁਰਿ ਅੰਕਸੁ
 ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਮੈਗਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਸਿ ਆਇਆ ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਵਸਗਤਿ ਆਇਆ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ
 ਸਾ ਧਨ ਕੰਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਗ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਸੋਹੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਨਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ
 ਮਾਤੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨੁ ਹਰਿ ਦਾਸੁ ਕਹਤੁ ਹੈ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ
 ॥੩॥ ਦੇਹ ਘੋੜੀ ਜੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਜੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਗਾਇ
 ਮੰਗਲੁ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਸੇਵ ਸੇਵਕ ਸੇਵਕੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜਾਇ ਪਾਵੈ ਰੰਗ ਮਹਲੀ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੈ ਰੰਗ ਕੀ ॥ ਗੁਣ
 ਰਾਮ ਗਾਏ ਮਨਿ ਸੁਭਾਏ ਹਰਿ ਗੁਰਮਤੀ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਦੇਹ ਘੋੜੀ ਚਡਿ
 ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨॥੬॥

ਰਾਗੁ ਵਡਵਾਸੁ ਸ਼ਹਿਰੁ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੪

੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਲਧਾ ਜੀ ਰਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ਰਾਮ ॥ ਡਿਹੁ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦਿਤੜਾ ਵਾਰੇ ਵਾਰਾ ਰਾਮ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦਿਤਾ ਭਵਜਲੁ
 ਜਿਤਾ ਚੂਕੀ ਕਾਁਣਿ ਜਮਾਣੀ ॥ ਅਸਥਿਰੁ ਥੀਆ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆ ਰਹਿਆ ਆਵਣ ਜਾਣੀ ॥ ਸੋ ਘਰੁ ਲਧਾ ਸਹਜਿ
 ਸਮਧਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਮਾਣੇ ਰਲੀਆਁ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੱਤ ਨਮਸਕਾਰਾ ॥੧॥ ਸੁਣਿ
 ਸਜਣ ਜੀ ਮੈਡੜੇ ਸੀਤਾ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਮੰਨੁ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਦੀਤਾ ਰਾਮ ॥ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਧਿਆਇਆ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ
 ਚੂਕੇ ਮਨਹੁ ਅਦੇਸਾ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਇਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਬੈਸਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਭਾਣਾ ਸਚਾ

ਮਾਣਾ ਪ੍ਰਭਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸਹਜੇ ਦੀਤਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤੇਰਾ ਦਾਨੁ ਸਭਨੀ ਹੈ ਲੀਤਾ ॥੨॥
 ਤਤ ਭਾਣਾ ਤਾਂ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਏ ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਥੀਆ ਠੰਢਾ ਸਮ ਤ੍ਰਸਨ ਬੁੜਾਏ ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਥੀਆ ਠੰਢਾ ਚੂਕੀ
 ਡੰਝਾ ਪਾਇਆ ਬਹੁਤੁ ਖ਼ਜਾਨਾ ॥ ਸਿਖ ਸੇਵਕ ਸਭਿ ਭੁੰਚਣ ਲਗੇ ਛਾਉ ਸਤਗੁਰ ਕੈ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥ ਨਿਰਭਤ ਭਏ
 ਖਸਮ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਜਮ ਕੀ ਕਾਸ ਬੁੜਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਸਦਾ ਸਾਂਗਿ ਸੇਵਕੁ ਤੇਰੇ ਭਗਤਿ ਕਰਤ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥੩॥
 ਪੂਰੀ ਆਸਾ ਜੀ ਮਨਸਾ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ ਜੀਤ ਸਭਿ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸਭਿ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਮੇਰੇ
 ਕਿਤੁ ਮੁਖਿ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਗੁਣੁ ਅਵਗੁਣੁ ਮੇਰਾ ਕਿਛੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ਬਖਸਿ ਲੀਆ ਖਿਨ ਮਾਹੀ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ
 ਪਾਈ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ਵਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਕਰੁ ਘਰਿ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਲਾਥੇ ਜੀ ਸਗਲ ਵਿਸੂਰੇ
 ॥੪॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਕਿਆ ਸੁਣੇਂਦੋ ਕੂਡੂ ਕੰਬਨਿ ਪਵਣ ਝੁਲਾਰਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸੁਣੀਅਰ ਤੇ ਪਰਵਾਣੁ ਜੋ ਸੁਣੇਂਦੇ
 ਸਚੁ ਧਣੀ ॥੧॥ ਛਾਂਤੁ ॥ ਤਿਨ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਜਿਨ ਪ੍ਰਭੁ ਸ਼ਰਣੀ ਸੁਣਿਆ ਰਾਮ ॥ ਸੇ ਸਹਜਿ ਸੁਹੇਲੇ ਜਿਨ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਭਣਿਆ ਰਾਮ ॥ ਸੇ ਸਹਜਿ ਸੁਹੇਲੇ ਗੁਣਹ ਅਮੋਲੇ ਜਗਤ ਉਧਾਰਣ ਆਏ ॥ ਭੈ ਬੋਹਿਥ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰਭ
 ਚਰਣਾ ਕੇਤੇ ਪਾਰਿ ਲਘਾਏ ॥ ਜਿਨ ਕਿੱਤ ਕੂਪਾ ਕਰੀ ਮੈਰੈ ਠਾਕੁਰਿ ਤਿਨ ਕਾ ਲੇਖਾ ਨ ਗਣਿਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
 ਤਿਸੁ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਜਿਨੀ ਪ੍ਰਭੁ ਸ਼ਰਣੀ ਸੁਣਿਆ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਲੋਡਿਣ ਲੋਈ ਡਿਠ ਪਿਆਸ ਨ ਬੁੜੈ ਮੂ
 ਘਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇ ਅਖਡੀਆਂ ਬਿਅੰਨਿ ਜਿਨੀ ਡਿਸਾਂਦੋ ਮਾ ਧਿਰੀ ॥੧॥ ਛਾਂਤੁ ॥ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡਿਠਾ ਤਿਨ
 ਕੁਰਬਾਣੇ ਰਾਮ ॥ ਸੇ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਭਾਣੇ ਰਾਮ ॥ ਠਾਕੁਰਿ ਮਾਨੇ ਸੇ ਪਰਧਾਨੇ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥ ਹਰਿ
 ਰਸਹਿ ਅਧਾਏ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮੈਆ ਜਾਤੇ ॥ ਸੇਈ ਸਜਣ ਸਾਂਤ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਠਾਕੁਰ ਅਪਣੇ ਭਾਣੇ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡਿਠਾ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੇ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਦੇਹ ਅੰਧਾਰੀ ਅੰਧ ਸੁੰਜੀ ਨਾਮ
 ਵਿਹੂਣੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਜੈ ਘਟਿ ਕੁਠਾ ਸਚੁ ਧਣੀ ॥੧॥ ਛਾਂਤੁ ॥ ਤਿਨ ਖਨੀਐ ਵੰਜਾਂ ਜਿਨ ਮੇਰਾ ਹਰਿ
 ਪ੍ਰਭੁ ਡੀਠਾ ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਚਾਖਿ ਅਧਾਣੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੀਠਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਮਨਹਿ ਮੀਠਾ ਪ੍ਰਭੂ ਤੂਠਾ
 ਅਮਿਤ ਕੂਠਾ ਸੁਖ ਭਏ ॥ ਦੁਖ ਨਾਸ ਭਰਮ ਬਿਨਾਸ ਤਨ ਤੇ ਜਪਿ ਜਗਦੀਸ ਈਸਹ ਜੈ ਜਏ ॥ ਮੋਹ ਰਹਤ ਬਿਕਾਰ

थाके पंच ते संगु तूटा ॥ कहु नानक तिन खन्नीअै वंजा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥੩॥ सलोकु ॥ जो
लोड़ीदे राम सेवक सेई काँडिआ ॥ नानक जाणे सति साँई संत न बाहरा ॥੧॥ छंतु ॥ मिलि जलु
जलहि खटाना राम ॥ संगि जोती जोति मिलाना राम ॥ संमाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीअै
॥ तह सुनि सहजि समाधि लागी एकु एकु वखाणीअै ॥ आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना ॥
नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ॥੪॥੨॥ वडह्यसु महला ੫ ॥ प्रभ करण कारण
समरथा राम ॥ रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥ समरथ सरणा जोगु सुआमी कृपा निधि सुखदाता ॥
झउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता ॥ वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते अकथा ॥ बिनवंति
नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥੧॥ एहि जीअ तेरे तू करता राम ॥ प्रभ दूख दरद
भ्रम हरता राम ॥ भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥ मात पिता सुआमि
सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥ जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥ बिनवंति
नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥੨॥ आठ पहर हरि धिआईअै राम ॥ मन इछिअङ्गा फलु
पाईअै राम ॥ मन इछ पाईअै प्रभु धिआईअै मिटहि जम के त्रासा ॥ गोबिंदु गाइआ साध संगाइआ
भई पूरन आसा ॥ तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईअै ॥ बिनवंति नानक दिनसु रैणी
सदा हरि हरि धिआईअै ॥੩॥ दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥ घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥
गोविंद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥ गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥
आपि उपाए आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे ॥ बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि
अनहद वाजे ॥੪॥੩॥

रागु वडह्यसु महला ੧ घरु ੫ अलाहणीआ

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

धनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइਆ ॥ मुहलति पुनੀ पਾਈ ਭਰੀ ਜਾਨੀਅਡਾ ਘਤਿ

ਚਲਾਇਆ ॥ ਜਾਨੀ ਘਤਿ ਚਲਾਇਆ ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ਰੁਨੇ ਵੀਰ ਸਬਾਏ ॥ ਕਾਁਇਆ ਛਾਸ ਥੀਆ ਵੇਛੋਡਾ
 ਜਾਂ ਦਿਨ ਪੁਨੇ ਮੇਰੀ ਮਾਏ ॥ ਜੇਹਾ ਲਿਖਿਆ ਤੇਹਾ ਪਾਇਆ ਜੇਹਾ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਇਆ ॥ ਧਨੁ ਸਿਰਦਾ ਸਚਾ
 ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਜਿਨਿ ਜਗੁ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ॥੧॥ ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਮਰਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈਹੋ ਸਭਨਾ ਏਹੁ ਪਇਆਣਾ ॥ ਏਥੈ ਧੰਧਾ
 ਕ੍ਰੂਡਾ ਚਾਰਿ ਦਿਹਾ ਆਗੈ ਸਰਪਰ ਜਾਣਾ ॥ ਆਗੈ ਸਰਪਰ ਜਾਣਾ ਜਿਤ ਮਿਹਮਾਣਾ ਕਾਹੇ ਗਾਰਬੁ ਕੀਜੈ ॥ ਜਿਤੁ
 ਸੇਵਿਐ ਦੁਰਗਹ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਤਿਸੈ ਕਾ ਲੀਜੈ ॥ ਆਗੈ ਹੁਕਮੁ ਨ ਚਲੈ ਮੂਲੇ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਕਿਆ ਵਿਹਾਣਾ ॥
 ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਮਰਿਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈਹੋ ਸਭਨਾ ਏਹੁ ਪਇਆਣਾ ॥੨॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੰਮ੍ਰਥ ਸੋ ਥੀਐ ਹੀਲਡਾ ਏਹੁ
 ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਾਚਡਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥ ਸਾਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ਅਲਖ ਅਪਾਰੇ
 ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਆਇਆ ਤਿਨ ਕਾ ਸਫਲੁ ਭਇਆ ਹੈ ਇਕ ਮਨਿ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥ ਢਾਹੇ ਢਾਹਿ
 ਤੁਸਾਰੇ ਆਪੇ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰੇ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੰਮ੍ਰਥ ਸੋ ਥੀਐ ਹੀਲਡਾ ਏਹੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਰੁਨਾ
 ਬਾਬਾ ਜਾਣੀਐ ਜੇ ਰੋਵੈ ਲਾਇ ਪਿਆਰੇ ॥ ਵਾਲੇਵੇ ਕਾਰਣਿ ਬਾਬਾ ਰੋਈਐ ਰੋਵਣੁ ਸਗਲ ਬਿਕਾਰੇ ॥ ਰੋਵਣੁ ਸਗਲ
 ਬਿਕਾਰੇ ਗਾਫਲੁ ਸੰਸਾਰੇ ਮਾਇਆ ਕਾਰਣਿ ਰੋਵੈ ॥ ਚੰਗਾ ਮੰਦਾ ਕਿਛੁ ਸ੍ਰੂੰਜੈ ਨਾਹੀ ਇਹੁ ਤਨੁ ਏਵੈ ਖੋਵੈ ॥ ਐਥੈ
 ਆਇਆ ਸਭੁ ਕੋ ਜਾਸੀ ਕੂਡਿ ਕਰਹੁ ਅਛਕਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਰੁਨਾ ਬਾਬਾ ਜਾਣੀਐ ਜੇ ਰੋਵੈ ਲਾਇ ਪਿਆਰੇ ॥੪॥੧॥
 ਕਡਛਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਵਹੁ ਮਿਲਹੁ ਸਹੇਲੀਹੋ ਸਚਡਾ ਨਾਮੁ ਲਏਹਾਁ ॥ ਰੋਵਹ ਬਿਰਹਾ ਤਨ ਕਾ ਆਪਣਾ ਸਾਹਿਬੁ
 ਸੰਮਾਲੇਹਾਁ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਸਮਾਲਿਹ ਪਥੁ ਨਿਹਾਲਿਹ ਅਸਾ ਪਿ ਓਥੈ ਜਾਣਾ ॥ ਜਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ਤਿਨ ਹੀ ਲੀਆ ਹੋਆ
 ਤਿਸੈ ਕਾ ਭਾਣਾ ॥ ਜੋ ਤਿਨਿ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ਸੁ ਆਗੈ ਆਇਆ ਅਸੀ ਕਿ ਹੁਕਮੁ ਕਰੇਹਾ ॥ ਆਵਹੁ ਮਿਲਹੁ
 ਸਹੇਲੀਹੋ ਸਚਡਾ ਨਾਮੁ ਲਏਹਾ ॥੧॥ ਮਰਣੁ ਨ ਮੰਦਾ ਲੋਕਾ ਆਖੀਐ ਜੇ ਮਰਿ ਜਾਣੈ ਐਸਾ ਕੋਇ ॥ ਸੇਵਿਹੁ ਸਾਹਿਬੁ
 ਸੰਮ੍ਰਥੁ ਆਪਣਾ ਪਥੁ ਸੁਹੇਲਾ ਆਗੈ ਹੋਇ ॥ ਪਥਿ ਸੁਹੇਲੈ ਜਾਵਹੁ ਤਾਂ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ਆਗੈ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ॥ ਭੇਟੈ
 ਸਿਤ ਜਾਵਹੁ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹੁ ਤਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਪਾਈ ॥ ਮਹਲੀ ਜਾਇ ਪਾਵਹੁ ਖਸਮੈ ਭਾਵਹੁ ਰੰਗ ਸਿਤ ਰਲੀਆ
 ਮਾਣੈ ॥ ਮਰਣੁ ਨ ਮੰਦਾ ਲੋਕਾ ਆਖੀਐ ਜੇ ਕੋਈ ਮਰਿ ਜਾਣੈ ॥੨॥ ਮਰਣੁ ਮੁਣਸਾ ਸ੍ਰਾਰਿਆ ਹਕੁ ਹੈ ਜੋ ਹੋਇ ਮਰਨਿ

ਪਰਵਾਣੇ ॥ ਸੂਰੇ ਸੇਈ ਆਗੈ ਆਖੀਅਹਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੀ ਮਾਣੋ ॥ ਦਰਗਹ ਮਾਣੁ ਪਾਵਹਿ ਪਤਿ ਸਿਤ
 ਜਾਵਹਿ ਆਗੈ ਟ੍ਰੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਕਰਿ ਏਕੁ ਧਿਆਵਹਿ ਤਾਂ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਭਤ ਭਾਗੈ ॥ ਊਚਾ ਨਹੀ
 ਕਹਣਾ ਮਨ ਮਹਿ ਰਹਣਾ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਜਾਣੋ ॥ ਮਰਣੁ ਮੁਣਸਾਁ ਸੂਰਿਆ ਹਕੁ ਹੈ ਜੋ ਹੋਇ ਮਰਹਿ ਪਰਵਾਣੋ ॥੩॥
 ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਬਾਬਾ ਰੋਈਐ ਬਾਜੀ ਹੈ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਕੀਤਾ ਵੇਖੈ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪਣਾ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੇ ॥
 ਕੁਦਰਤਿ ਬੀਚਾਰੇ ਧਾਰਣ ਧਾਰੇ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਸੋ ਜਾਣੈ ॥ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਆਪੇ ਕੂੜੈ ਆਪੇ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਜਿਨਿ
 ਕਿਛੁ ਕੀਆ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਤਾ ਕਾ ਰੂਪੁ ਅਪਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਬਾਬਾ ਰੋਈਐ ਬਾਜੀ ਹੈ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥੪॥੨॥
 ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ਦਖਣੀ ॥ ਸਚੁ ਸਿਰਦਾ ਸਚਾ ਜਾਣੀਐ ਸਚਡਾ ਪਰਵਦਗਾਰੇ ॥ ਜਿਨਿ ਆਪੀਨੈ ਆਪੁ ਸਾਜਿਆ
 ਸਚਡਾ ਅਲਖ ਅਪਾਰੇ ॥ ਦੁਇ ਪੁੜ੍ਹ ਜੋਡਿ ਵਿਛੋਡਿਅਨੁ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰੁ ਅੰਧਾਰੇ ॥ ਸੂਰਜੁ ਚੰਦੁ ਸਿਰਜਿਅਨੁ
 ਅਹਿਨਿਸਿ ਚਲਤੁ ਕੀਚਾਰੇ ॥੧॥ ਸਚਡਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਤੂ ਸਚਡਾ ਦੇਹਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਥੁ ਸਿਰਜੀ ਮੇਦਨੀ
 ਢੁਖੁ ਸੁਖੁ ਦੇਵਣਹਾਰੇ ॥ ਨਾਰੀ ਪੁਰਖ ਸਿਰਜਿਐ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਸੋਹੁ ਪਿਆਰੇ ॥ ਖਾਣੀ ਬਾਣੀ ਤੇਰੀਆ ਦੇਹਿ
 ਜੀਆ ਆਧਾਰੇ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਤਖਤੁ ਰਚਾਇਆ ਸਚਿ ਨਿਬੇਡਣਹਾਰੇ ॥੨॥ ਆਵਾ ਗਵਣੁ ਸਿਰਜਿਆ ਤੂ ਥਿਰੁ
 ਕਰਣੈਹਾਰੇ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਆਇ ਗਿਆ ਬਧਿਕੁ ਜੀਤ ਬਿਕਾਰੇ ॥ ਭੂਡੱਡੇ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਬੂਡੱਡੇ ਕਿਆ
 ਤਿਸੁ ਚਾਰੇ ॥ ਗੁਣ ਛੋਡਿ ਬਿਖੁ ਲਦਿਆ ਅਕਗੁਣ ਕਾ ਵਣਜਾਰੇ ॥੩॥ ਸਦੱਡੇ ਆਏ ਤਿਨਾ ਜਾਨੀਆ ਹੁਕਮਿ
 ਸਚੇ ਕਰਤਾਰੇ ॥ ਨਾਰੀ ਪੁਰਖ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ਵਿਛੁਡਿਆ ਮੇਲਣਹਾਰੇ ॥ ਰੂਪੁ ਨ ਜਾਣੈ ਸੋਹਣੀਐ ਹੁਕਮਿ ਬਧੀ
 ਸਿਰਿ ਕਾਰੇ ॥ ਬਾਲਕ ਬਿਰਧਿ ਨ ਜਾਣਨੀ ਤੋਡਨਿ ਹੇਤੁ ਪਿਆਰੇ ॥੪॥ ਨਤ ਦਰ ਠਕੇ ਹੁਕਮਿ ਸਚੈ ਛਾਸੁ ਗਿਆ
 ਗੈਣਾਰੇ ॥ ਸਾ ਧਨ ਛੁਟੀ ਮੁਠੀ ਝ੍ਰੂਠਿ ਵਿਧਣੀਆ ਮਿਰਤਕਡਾ ਅੰਡਨਡੇ ਬਾਰੇ ॥ ਸੁਰਤਿ ਸੁਈ ਮਰੁ ਮਾਈ ਮਹਲ
 ਰੁਨੀ ਦਰ ਬਾਰੇ ॥ ਰੋਵਹੁ ਕਂਤ ਮਹੇਲੀਹੋ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰੇ ॥੫॥ ਜਲਿ ਮਲਿ ਜਾਨੀ ਨਾਵਾਲਿਆ ਕਪਡਿ ਪਟਿ
 ਅੰਬਾਰੇ ॥ ਵਾਜੇ ਵਜੇ ਸਚੀ ਬਾਣੀਆ ਪੰਚ ਸੁਏ ਮਨੁ ਮਾਰੇ ॥ ਜਾਨੀ ਵਿਛੁਨਨਡੇ ਮੇਰਾ ਮਰਣੁ ਭਿਆ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ
 ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਜੀਵਨੁ ਮਰੈ ਸੁ ਜਾਣੀਐ ਪਿਰ ਸਚੱਡੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੬॥ ਤੁਸੀ ਰੋਵਹੁ ਰੋਵਣ ਆਈਹੋ ਝ੍ਰੂਠਿ ਮੁਠੀ

ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਹਉ ਸੁਠੜੀ ਧੰਧੈ ਧਾਵਣੀਆ ਪਿਰਿ ਛੋਡਿਅੜੀ ਵਿਧਣਕਾਰੇ ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਕਨ੍ਤੁ ਸ਼ਹੇਲੀਆ ਰੂਡੈ ਹੇਤਿ
 ਪਿਆਰੇ ॥ ਮੈ ਪਿਰੁ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣਾ ਹਉ ਰਹਸਿਅੜੀ ਨਾਮਿ ਭਤਾਰੇ ॥੭॥ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਵੇਸੁ ਪਲਟਿਆ
 ਸਾ ਧਨ ਸਚੁ ਸੀਗਾਰੇ ॥ ਆਵਹੁ ਮਿਲਹੁ ਸ਼ਹੇਲੀਹੋ ਸਿਮਰਹੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥ ਬੰਝਅਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਗਣੀ ਸਚੁ
 ਸਵਾਰਣਹਾਰੇ ॥ ਗਾਵਹੁ ਗੀਤੁ ਨ ਬਿਰਹੜਾ ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੇ ॥੮॥੩॥ ਕਵਲਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਿਨਿ ਜਗੁ
 ਸਿਰਜਿ ਸਮਾਇਆ ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ ਕੁਦਰਤਿ ਜਾਣੋਵਾ ॥ ਸਚੜਾ ਦ੍ਰਵਿ ਨ ਭਾਲੀਐ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੋਵਾ ॥
 ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣਹੁ ਦ੍ਰਵਿ ਨ ਜਾਣਹੁ ਜਿਨਿ ਏਹ ਰਚਨਾ ਰਾਚੀ ॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਿੜ੍ਹੀ
 ਕਾਚੀ ॥ ਜਿਨਿ ਥਾਪੀ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ਸੌਈ ਕਿਆ ਕੋ ਕਹੈ ਕਖਾਣੋ ॥ ਜਿਨਿ ਜਗੁ ਥਾਪਿ ਵਤਾਇਆ ਜਾਲੁ ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ
 ਪਰਵਾਣੋ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਆਇਆ ਹੈ ਤਠਿ ਚਲਣਾ ਅਥ ਪੰਧੈ ਹੈ ਸੰਸਾਰੋਵਾ ॥ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਸਚੜੈ ਲਿਖਿਆ ਦੁਖੁ
 ਸੁਖੁ ਪੁਰਬਿ ਕੀਚਾਰੋਵਾ ॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਦੀਆ ਜੇਹਾ ਕੀਆ ਸੋ ਨਿਵਹੈ ਜੀਅ ਨਾਲੇ ॥ ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਦ੍ਰਵੀ
 ਕਾਰ ਨ ਭਾਲੇ ॥ ਆਪਿ ਨਿਰਾਲਮੁ ਧੰਧੈ ਬਾਧੀ ਕਰਿ ਹੁਕਮੁ ਛਡਾਵਣਹਾਰੇ ॥ ਅਜੁ ਕਲਿ ਕਰਦਿਆ ਕਾਲੁ ਬਿਆਪੈ
 ਦ੍ਰਵੈ ਭਾਇ ਵਿਕਾਰੇ ॥੨॥ ਜਮ ਮਾਰਗ ਪਥੁ ਨ ਸੁਝੰਈ ਤਝੜੁ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰੋਵਾ ॥ ਨਾ ਜਲੁ ਲੇਫ ਤੁਲਾਈਆ ਨਾ
 ਭੋਜਨ ਪਰਕਾਰੋਵਾ ॥ ਭੋਜਨ ਭਾਉ ਨ ਠੰਢਾ ਪਾਣੀ ਨਾ ਕਾਪੜੁ ਸੀਗਾਰੇ ॥ ਗਲਿ ਸੰਗਲੁ ਸਿਰਿ ਮਾਰੇ ਊਭੈ ਨਾ ਦੀਸੈ
 ਘਰ ਬਾਰੇ ॥ ਇਕ ਕੇ ਰਾਹੇ ਜੰਮਨਿ ਨਾਹੀ ਪਛੁਤਾਣੇ ਸਿਰਿ ਭਾਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਕੋ ਬੇਲੀ ਨਾਹੀ ਸਾਚਾ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥
 ੩॥ ਬਾਬਾ ਰੋਵਹਿ ਰਵਹਿ ਸੁ ਜਾਣੀਅਹਿ ਮਿਲਿ ਰੋਵੈ ਗੁਣ ਸਾਰੇਵਾ ॥ ਰੋਵੈ ਮਾਇਆ ਸੁਠੜੀ ਧੰਧੜਾ ਰੋਵਣਹਾਰੇਵਾ
 ॥ ਧੰਧਾ ਰੋਵੈ ਮੈਲੁ ਨ ਧੋਵੈ ਸੁਪਨਤਰੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਬਾਜੀਗਰੁ ਭਰਮੈ ਭੂਲੈ ਝੂਠਿ ਸੁਠੀ ਅਛਕਾਰੇ ॥ ਆਪੇ
 ਮਾਰਗਿ ਪਾਵਣਹਾਰਾ ਆਪੇ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਰਖੇ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥੪॥੪॥
 ਕਵਲਾਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਬਾਬਾ ਆਇਆ ਹੈ ਤਠਿ ਚਲਣਾ ਇਹੁ ਜਗੁ ਝੂਠੁ ਪਸਾਰੋਵਾ ॥ ਸਚਾ ਘਰੁ ਸਚੜੈ ਸੇਵੀਐ
 ਸਚੁ ਖਰਾ ਸਚਿਆਰੋਵਾ ॥ ਕੂਡਿ ਲਿਭਿ ਜਾਂ ਥਾਇ ਨ ਪਾਸੀ ਅਗੈ ਲਹੈ ਨ ਠਾਓ ॥ ਅੰਤਰਿ ਆਉ ਨ ਬੈਸਹੁ
 ਕਹੀਐ ਜਿਤ ਸੁੰਜੈ ਘਰਿ ਕਾਓ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਵਡਾ ਵੇਛੋੜਾ ਬਿਨਸੈ ਜਗੁ ਸਬਾਏ ॥ ਲਿਭਿ ਧੰਧੈ ਮਾਇਆ ਜਗਤੁ

ਮੁਲਾਇਆ ਕਾਲੁ ਖੜਾ ਰੂਆਏ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਆਵਹੁ ਭਾਈਹੋ ਗਲਿ ਮਿਲਹ ਮਿਲਿ ਦੇਹ ਆਸੀਸਾ ਹੈ ॥
 ਬਾਬਾ ਸਚੜਾ ਮੇਲੁ ਨ ਚੁਕੰਡੀ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕੀਆ ਦੇਹ ਅਸੀਸਾ ਹੈ ॥ ਆਸੀਸਾ ਦੇਵਹੋ ਭਗਤਿ ਕਰੇਵਹੋ ਮਿਲਿਆ ਕਾ
 ਕਿਆ ਮੇਲੋ ॥ ਇਕਿ ਭੂਲੇ ਨਾਵਹੁ ਥੇਹਹੁ ਥਾਵਹੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਖੇਲੋ ॥ ਜਮ ਮਾਰਗਿ ਨਹੀ ਜਾਣਾ ਸਬਦਿ
 ਸਮਾਣਾ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸਾਚੈ ਕੇਵੇ ॥ ਸਾਜਨ ਸੈਣ ਮਿਲਹੁ ਸੰਜੋਗੀ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਖੋਲੇ ਫਾਸੇ ॥੨॥ ਬਾਬਾ ਨਾਂਗੜਾ
 ਆਇਆ ਜਗ ਮਹਿ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਇਆ ॥ ਲਿਖਿਅਡਾ ਸਾਹਾ ਨਾ ਟਲੈ ਜੇਹੜਾ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਇਆ ॥ ਬਹਿ
 ਸਾਚੈ ਲਿਖਿਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬਿਖਿਆ ਜਿਤੁ ਲਾਇਆ ਤਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥ ਕਾਮਣਿਆਰੀ ਕਾਮਣ ਪਾਏ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਗਲਿ
 ਤਾਗਾ ॥ ਹੋਛੀ ਮਤਿ ਭਇਆ ਮਨੁ ਹੋਛਾ ਗੁਡੁ ਸਾ ਮਖੀ ਖਾਇਆ ॥ ਨਾ ਮਰਯਾਦੁ ਆਇਆ ਕਲਿ ਭੀਤਰਿ ਨਾਂਗੇ
 ਕੰਧਿ ਚਲਾਇਆ ॥੩॥ ਬਾਬਾ ਰੋਵਹੁ ਜੇ ਕਿਸੈ ਰੋਵਣਾ ਜਾਨੀਅਡਾ ਕੰਧਿ ਪਠਾਇਆ ਹੈ ॥ ਲਿਖਿਅਡਾ ਲੇਖੁ ਨ
 ਮੇਟੀਐ ਦਰਿ ਹਾਕਾਰਡਾ ਆਇਆ ਹੈ ॥ ਹਾਕਾਰਾ ਆਇਆ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਇਆ ਰੁਨੇ ਰੋਵਣਹਾਰੇ ॥ ਪੁਤ ਭਾਈ
 ਭਾਤੀਜੇ ਰੋਵਹਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਭੈ ਰੋਵੈ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੇ ਕੋ ਮਰੈ ਨ ਸੁਇਆ ਨਾਲੇ ॥ ਨਾਨਕ ਜੁਗਿ
 ਜੁਗਿ ਜਾਣ ਸਿਜਾਣਾ ਰੋਵਹਿ ਸਚੁ ਸਮਾਲੇ ॥੪॥੫॥

ਕਡਹਿਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ਮਹਲਾ ਤੀਜਾ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪ੍ਰਭੁ ਸਚੜਾ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਕਾਰਜੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥ ਸਾ ਧਨ ਰੱਡ ਨ ਕਬਹੂ ਬੈਸਈ ਨਾ ਕਦੇ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ
 ॥ ਨਾ ਕਦੇ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ ਅਨਦਿਨੁ ਰਸ ਭੋਗ ਸਾ ਧਨ ਮਹਲਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਤ ਜਾਤਾ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ਬੋਲੇ
 ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ॥ ਗੁਣਕੰਤੀਆ ਗੁਣ ਸਾਰਹਿ ਅਪਣੇ ਕੰਤ ਸਮਾਲਹਿ ਨਾ ਕਦੇ ਲਗੈ ਵਿਜੋਗੇ ॥ ਸਚੜਾ ਪਿਲੁ
 ਸਾਲਾਹੀਐ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣੈ ਜੋਗੇ ॥੧॥ ਸਚੜਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਏ ॥ ਸਾ ਧਨ
 ਪ੍ਰਤ ਕੈ ਰੰਗ ਰਤੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਫਿਰਿ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥
 ਕਾਮਣਿ ਇਛ ਪੁਨੀ ਅੰਤਰਿ ਮਿਨੀ ਮਿਲਿਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ॥ ਸਬਦ ਰੰਗ ਰਾਤੀ ਜੋਬਨਿ ਮਾਤੀ ਪਿਰ ਕੈ
 ਅੰਕਿ ਸਮਾਏ ॥ ਸਚੜਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥ ਜਿਨੀ ਆਪਣਾ ਕੰਤੁ ਪਛਾਣਿਆ

ਹਤ ਤਿਨ ਪ੍ਰਚਤ ਸੰਤਾ ਜਾਏ ॥ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਸੇਵਾ ਕਰੀ ਪਿਰੁ ਸਚਡਾ ਮਿਲੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਪਿਰੁ ਸਚਾ ਮਿਲੈ
 ਆਏ ਸਾਚੁ ਕਮਾਏ ਸਾਚਿ ਸਬਦਿ ਧਨ ਰਾਤੀ ॥ ਕਦੇ ਨ ਰੱਡ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜ ਸਮਾਧੀ ॥ ਪਿਰੁ
 ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ਕੇਖੁ ਹਫੂਰੇ ਰੰਗੁ ਮਾਣੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਜਿਨੀ ਆਪਣਾ ਕੰਤੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਤ ਤਿਨ ਪ੍ਰਚਤ
 ਸੰਤਾ ਜਾਏ ॥੩॥ ਪਿਰਹੁ ਵਿਛੁਨੀਆ ਭੀ ਮਿਲਹ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਗਹ ਸਾਚੇ ਪਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਦਾ ਦਿਆਲੁ
 ਹੈ ਅਵਗੁਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥ ਅਤਗੁਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ਟ੍ਰੂਜਾ ਭਾਉ ਗਵਾਏ ਸਚੇ ਹੀ ਸਚਿ ਰਾਤੀ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ
 ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਤਮੈ ਗੰਡੀ ਭਰਾਤੀ ॥ ਪਿਰੁ ਨਿਰਮਾਇਲੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥
 ਪਿਰਹੁ ਵਿਛੁਨੀਆ ਭੀ ਮਿਲਹ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਗਹ ਸਾਚੇ ਪਾਏ ॥੪॥੧॥ ਵਡਵਾਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੁਣਿਅਹੁ ਕੰਤ
 ਮਹੇਲੀਹੋ ਪਿਰੁ ਸੇਵਿਹੁ ਸਬਦਿ ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਅਵਗਣਕਾਂਤੀ ਪਿਰੁ ਨ ਜਾਣਈ ਸੁਠੀ ਰੋਵੈ ਕੰਤ ਵਿਸਾਰਿ ॥ ਰੋਵੈ ਕੰਤ
 ਸੰਮਾਲਿ ਸਦਾ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ਨਾ ਪਿਰੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ਸਾਚੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਸਮਾਏ ॥ ਜਿਨੀ
 ਅਪਣਾ ਪਿਰੁ ਨਹੀਂ ਜਾਤਾ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ਕੂਡਿ ਸੁਠੀ ਕੂਡਿਆਰੇ ॥ ਸੁਣਿਅਹੁ ਕੰਤ ਮਹੇਲੀਹੋ ਪਿਰੁ ਸੇਵਿਹੁ
 ਸਬਦਿ ਕੀਚਾਰੇ ॥੧॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਆਪਿ ਤਪਾਇਓਨੁ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਖੁਆਇਅਨੁ ਮਰਿ
 ਜ਼ਿੰਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ॥ ਮਰਿ ਜ਼ਿੰਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ਕਥਹਿ ਬਿਕਾਰਾ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਸ੍ਰੂਠੀ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਪਿਰੁ ਨ
 ਪਾਇਆ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਰੋਵੈ ਅਵਗੁਣਿਆਰੀ ਝੂਠੀ ॥ ਪਿਰੁ ਜਗਜੀਵਨੁ ਕਿਸ ਨੌ ਰੋਈਐ ਰੋਵੈ ਕੰਤੁ ਵਿਸਾਰੇ ॥
 ਸਭੁ ਜਗੁ ਆਪਿ ਤਪਾਇਓਨੁ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥੨॥ ਸੋ ਪਿਰੁ ਸਚਾ ਸਦ ਹੀ ਸਾਚਾ ਹੈ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ
 ॥ ਭੂਲੀ ਫਿਰੈ ਧਨ ਇਆਣੀਆ ਰੱਡ ਬੈਠੀ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਏ ॥ ਰੱਡ ਬੈਠੀ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਏ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ਆਵ
 ਘਟੈ ਤਨੁ ਛੀਜੈ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਆਇਆ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਸੀ ਦੁਖੁ ਲਾਗਾ ਭਾਇ ਟ੍ਰੂਜੈ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਸੂਝੈ ਮਾਇਆ ਜਗੁ
 ਲੂਝੈ ਲਕਿ ਲੋਭਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਸੋ ਪਿਰੁ ਸਾਚਾ ਸਦ ਹੀ ਸਾਚਾ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ॥੩॥ ਇਕਿ ਰੋਵਹਿ ਪਿਰਹਿ
 ਵਿਛੁਨੀਆ ਅੰਧੀ ਨਾ ਜਾਣੈ ਪਿਰੁ ਨਾਲੇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਾਚਾ ਪਿਰੁ ਮਿਲੈ ਅੰਤਰਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ॥ ਪਿਰੁ ਅੰਤਰਿ
 ਸਮਾਲੇ ਸਦਾ ਹੈ ਨਾਲੇ ਮਨਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਟ੍ਰੂਰੇ ॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਰੁਲੈ ਰੁਲਾਇਆ ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਆ ਜਿਨੀ ਖਸਮੁ ਨ

जाता हदूरे ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुन्नीआ
 अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥४॥२॥ वड्ह्यासु मः ३ ॥ रोवहि पिरहि विछुन्नीआ मै पिरु सचड़ा है सदा
 नाले ॥ जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले ॥ सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले
 सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ ॥ सबदे कालु मारि सचु उरि धारि फिरि आवण जाणु न होइआ ॥ सचा
 साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥ रोवहि पिरहु विछुन्नीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥१॥
 प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किव मिलाँ प्रीतम पिआरे ॥ सतिगुरि मेली ताँ सहजि मिली पिरु
 राखिआ उर धारे ॥ सदा उर धारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै ॥ माइआ मोह का कचा
 चोला तितु पैथै पगु खिसै ॥ पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैथै तिखा निवारे ॥ प्रभु मेरा साहिबु
 सभ दू ऊचा है कित मिला प्रीतम पिआरे ॥२॥ मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ मै
 सदा रावे पिरु आपणा सचड़े सबदि वीचारे ॥ सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर
 प्रीतमु पाइआ ॥ अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ॥ अपने गुर कंउ तनु
 मनु दीजै ताँ मनु भीजै तृसना दूख निवारे ॥ मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥३॥
 सचड़े आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ॥
 आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि
 साचै सचिआरो ॥ गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥ सचड़े आपि जगतु
 उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥४॥३॥ वड्ह्यासु महला ३ ॥ इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै
 आए ॥ गुरि राखे से उबरे होरु मरि जंमै आवै जाए ॥ होरि मरि जंमहि आवहि जावहि अंति गए
 पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥ औथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥ जम पुरि घोर
 अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई ॥ इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आई ॥१॥ काइआ

ਕੰਚਨੁ ਤਾਂ ਥੀਐ ਜਾਂ ਸਤਿਗੁਰ ਲਏ ਮਿਲਾਏ ॥ ਭ੍ਰਮੁ ਮਾਇਆ ਵਿਚਹੁ ਕਟੀਐ ਸਚਡੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ॥ ਸਚੈ ਨਾਮਿ
ਸਮਾਏ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਵਿਚਹੁ ਛਾਉਮੈ ਜਾਏ ॥ ਜਿਨੀ
ਪੁਰਖੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਤਿਨ ਕੈ ਛਾਉ ਲਾਗਤ ਪਾਏ ॥ ਕਾਇਆ ਕੰਚਨੁ ਤਾਂ ਥੀਐ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰ ਲਏ
ਮਿਲਾਏ ॥੨॥ ਸੋ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀਐ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਇ ਬੁਝਾਏ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀਆ ਕਿਆ
ਮੁਹੁ ਦੇਸਨਿ ਆਗੈ ਜਾਏ ॥ ਕਿਆ ਦੇਨਿ ਮੁਹੁ ਜਾਏ ਅਕਗੁਣਿ ਪਛੁਤਾਏ ਦੁਖੋ ਦੁਖੁ ਕਮਾਏ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੀਆ ਸੇ
ਰੰਗਿ ਚਲੂਲਾ ਪਿਰ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਏ ॥ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਸ੍ਰੂਝਈ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਕਹੀਐ ਜਾਏ ॥ ਸੋ ਸਚਾ ਸਚੁ
ਸਲਾਹੀਐ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਇ ਬੁਝਾਏ ॥੩॥ ਜਿਨੀ ਸਚਡਾ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀਆ ਛਾਉ ਤਿਨ ਲਾਗਤ ਪਾਏ ॥ ਸੇ ਜਨ
ਸਚੈ ਨਿਰਮਲੇ ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਮਲੁ ਸਭ ਜਾਏ ॥ ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਮਲੁ ਸਭ ਜਾਏ ਸਚੈ ਸਰਿ ਨਾਏ ਸਚੈ ਸਹਜਿ
ਸੁਭਾਏ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬੁਝਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥ ਜਿਨੀ ਸਚਡਾ ਸਚੁ ਧਿਆਇਆ ਛਾਉ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਤ ਪਾਏ ॥੪॥੪॥

ਵਡਛਾਸ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ਲਲਾਂ ਬਹਲੀਮਾ ਕੀ ਧੁਨਿ ਗਾਵਣੀ

੯੮੧ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਵਡ ਛਾਸ ਹੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਸਚੁ ਸੰਗ੍ਰਹਹਿ ਸਦ
ਸਚਿ ਰਹਹਿ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲ ਮੈਲੁ ਨ ਲਗਈ ਨਦਰਿ ਕੀਤੀ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹਤ
ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਹਿ ਸੁਰਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮੈ ਜਾਨਿਆ ਵਡ ਛਸੁ ਹੈ ਤਾ ਮੈ ਕੀਆ ਸੰਗੁ ॥
ਜੇ ਜਾਣਾ ਕੁਗੁ ਕਪੁੜਾ ਤ ਜਨਮਿ ਨ ਦੇਦੀ ਅੰਗੁ ॥੨॥ ਮਃ ੩ ॥ ਛਸਾ ਵੇਖਿ ਤਰੰਦਿਆ ਬਗਾਂ ਭਿ ਆਧਾ ਚਾਤ ॥
ਡੁਬਿ ਮੁਏ ਕਗ ਕਪੁੜੇ ਸਿਰੁ ਤਲਿ ਤਪਰਿ ਪਾਤ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪਿ ਕਾਰਣੁ ਕੀਆ
॥ ਤੂ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰਂਕਾਰੁ ਹੈ ਕੋ ਅਵਰੁ ਨ ਕੀਆ ॥ ਤੂ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਤੂ ਕਰਹਿ ਸੁ ਥੀਆ ॥ ਤੂ
ਅਣਮਂਗਿਆ ਦਾਨੁ ਦੇਵਣਾ ਸਭਨਾਹਾ ਜੀਆ ॥ ਸਭਿ ਆਖਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿਨਿ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ

ਦੀਆ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਸਭੁ ਆਕਾਰੁ ਹੈ ਨਿਰਭਤ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸੋਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਹਰਿ ਮਨਿ
 ਕਸੈ ਤਿਥੈ ਭਤ ਕਦੇ ਨ ਹੋਇ ॥ ਦੁਸਮਨੁ ਦੁਖੁ ਤਿਸ ਨੋ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨਿ ਵੀਚਾਰਿਆ
 ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਹੀ ਪਤਿ ਰਖਸੀ ਕਾਰਜ ਸਵਾਰੇ ਸੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇਕਿ ਸਜਣ ਚਲੇ
 ਇਕਿ ਚਲਿ ਗਏ ਰਹਦੇ ਭੀ ਫੁਨਿ ਜਾਹਿ ॥ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵਿਓ ਸੇ ਆਇ ਗਏ ਪਛੁਤਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਿ
 ਰਤੇ ਸੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤਿਸੁ ਮਿਲੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਸਜਣੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ
 ਗੁਣਕਾਰੀ ॥ ਤਿਸੁ ਮਿਲੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਮੈ ਜਿਨਿ ਛਾਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰੀ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਧਨੁ ਧਨੁ ਹੈ
 ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਦੇ ਸਭ ਸ੍ਰ਷ਟਿ ਸਵਾਰੀ ॥ ਨਿਤ ਜਪਿਅਹੁ ਸੰਤਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਭਉਜਲ ਬਿਖੁ ਤਾਰੀ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ
 ਹਰਿ ਉਪਦੇਸਿਆ ਗੁਰ ਵਿਟਡਿਅਹੁ ਛਾਉ ਸਦ ਵਾਰੀ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਸੁਖੀ ਹੈ
 ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥ ਐਥੈ ਮਿਲਨਿ ਵਡਿਆਈਆ ਦਰਗਹ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਸਚੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਸਚੁ ਪੈਨਣੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ
 ਅਧਾਰੁ ॥ ਸਚੀ ਸੰਗਤਿ ਸਚਿ ਮਿਲੈ ਸਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਹਰਖੁ ਸਦਾ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੈ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੈ ਕਰਤਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਹੋਰ ਵਿਡਾਣੀ ਚਾਕਰੀ
 ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਧਿਗੁ ਵਾਸੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਛੋਡਿ ਬਿਖੁ ਲਗੇ ਬਿਖੁ ਖਟਣਾ ਬਿਖੁ ਰਾਸਿ ॥ ਬਿਖੁ ਖਾਣਾ ਬਿਖੁ ਪੈਨਣਾ
 ਬਿਖੁ ਕੇ ਮੁਖਿ ਗਿਰਾਸ ॥ ਐਥੈ ਦੁਖੋ ਦੁਖੁ ਕਮਾਵਣਾ ਮੁਝਿਆ ਨਰਕਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੁਹਿ ਮੈਲੈ ਸਬਦੁ ਨ
 ਜਾਣਨੀ ਕਾਮ ਕਰੋਧਿ ਵਿਣਾਸੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਤ ਛੋਡਿਆ ਮਨਹਠਿ ਕਂਮੁ ਨ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ
 ਮਾਰੀਅਹਿ ਕੋ ਨ ਸੁਣੇ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਵਣਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ
 ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਹੁ ਸਾਧ ਜਨੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵੱਡਾਇਆ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਯਹੁ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ
 ਜਿਨਿ ਜਗਨਾਥੁ ਜਗਦੀਸੁ ਜਪਾਇਆ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਖਹੁ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕਾ ਹਰਿ ਪਥੁ
 ਬਤਾਇਆ ॥ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਭ ਪਗੀ ਪਵਹੁ ਜਿਨਿ ਮੋਹ ਅੰਧੇਰੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਸੋ ਸਤਗੁਰੁ ਕਹਹੁ ਸਭਿ
 ਧਨੁ ਧਨੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਲਹਾਇਆ ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲੀਐ ਭੁਖ ਗੁਰੈ ਭੇਖੀ

ਭੁਖ ਨ ਜਾਇ ॥ ਦੁਖਿ ਲਗੈ ਘਰਿ ਫਿਰੈ ਅਗੈ ਟ੍ਰਣੀ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥ ਅੰਦਰਿ ਸਹਜੁ ਨ ਆਇਆ ਸਹਜੇ ਹੀ
 ਲੈ ਖਾਇ ॥ ਮਨਹਠਿ ਜਿਸ ਤੇ ਮੰਗਣਾ ਲੈਣਾ ਦੁਖੁ ਮਨਾਇ ॥ ਇਸੁ ਖੇਖੈ ਥਾਵਹੁ ਗਿਰਹੋ ਭਲਾ ਜਿਥਹੁ ਕੋ ਵਰਸਾਇ
 ॥ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਤਿਨਾ ਸੋਝੀ ਪਈ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥ ਪਿੱਤੈ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਵਣਾ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵਹਿ ਸੇ ਭਲੇ ਜਿਨ ਕੀ ਪਤਿ ਪਾਵਹਿ ਥਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਜਨਮ
 ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਚਿੰਤਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਵਈ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਤੀਰਥੁ ਗਿਆਨੁ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਦੀਆ ਬੁਝਾਇ ॥ ਮੈਲੁ ਗੰਡੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਰਿ ਤੀਰਥਿ ਨਾਇ ॥ ਸਜਣ ਮਿਲੇ ਸਜਣਾ ਸਚੈ ਸਬਦਿ
 ਸੁਭਾਇ ॥ ਘਰ ਹੀ ਪਰਚਾ ਪਾਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਪਾਖਿੰਡਿ ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਛੋਡਈ ਲੈ ਜਾਸੀ ਪਤਿ ਗਵਾਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਤੁਕਰੇ ਸਚੈ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤਿਨੁ ਜਾਇ ਬਹਹੁ ਸਤਸਙਗਤੀ ਜਿਥੈ
 ਹਰਿ ਕਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਿਲੋਈਐ ॥ ਸਹਜੇ ਹੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੇਹੁ ਹਰਿ ਤਤੁ ਨ ਖੋਈਐ ॥ ਨਿਤ ਜਪਿਅਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਹਰਿ ਦੁਰਗਹ ਢੋਈਐ ॥ ਸੋ ਪਾਏ ਪੂਰਾ ਸਤਗੁਰੁ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖੋਈਐ ॥ ਤਿਸੁ
 ਗੁਰ ਕੰਤ ਸਭਿ ਨਮਸਕਾਰੁ ਕਰਹੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਗਾਲ ਗਲੋਈਐ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਜਣ ਮਿਲੇ
 ਸਜਣਾ ਜਿਨ ਸਤਗੁਰ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ਸਚੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਮਨ ਹੀ ਤੇ
 ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰਿ ॥ ਏਹਿ ਸਜਣ ਮਿਲੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਜਿ ਆਪਿ ਮੇਲੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਇਕਨਾ
 ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਆਈਆ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰਹਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਵਿਛੁਡਿਆ ਕਾ ਕਿਆ ਵਿਛੁਡੈ ਜਿਨਾ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ
 ਪਿਆਰੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਸੇਤੀ ਦੋਸਤੀ ਥੋੜਿਆ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ॥ ਇਸੁ ਪਰੀਤੀ ਤੁਟਦੀ ਵਿਲਮੁ ਨ ਹੋਵਈ ਇਤੁ ਦੋਸਤੀ
 ਚਲਨਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਸਚੈ ਕਾ ਭਤ ਨਾਹੀ ਨਾਮਿ ਨ ਕਰਹਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਸਿਉ ਕਿਆ
 ਕੀਚੈ ਦੋਸਤੀ ਜਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਕਰਤਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇਕਿ ਸਦਾ ਇਕਤੈ ਰੰਗ ਰਹਹਿ ਤਿਨ ਕੈ ਹਤ ਸਦ
 ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਅਰਪੀ ਤਿਨ ਕਤ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਤ ਪਾਇ ॥ ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਮਨੁ ਸ਼ਨੀਖੀਐ
 ਤ੍ਰਸਨਾ ਭੁਖ ਸਭ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੀਏ ਸਦਾ ਸਚੈ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ

ਕਤ ਹਤ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਈ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਤ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਵਾ
 ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰ ਪਿਆਰਾ ਮੈਰੈ ਨਾਲਿ ਹੈ ਜਿਥੈ ਕਿਥੈ ਮੈਨੋ ਲਏ ਛਡਾਈ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਤ ਸਾਬਾਸਿ
 ਹੈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕੀ ਆਸ ਪੁਰਾਈ
 ॥੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਦਾਧੀ ਜਲਿ ਸੁਈ ਜਲਿ ਜਲਿ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੀਤਲ ਜੇ ਮਿਲੈ ਫਿਰਿ
 ਜਲੈ ਨ ਢੂਜੀ ਵਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਿਰਭਤ ਕੋ ਨਹੀ ਜਿਚਰੁ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਖੇਖੀ
 ਅਗਨਿ ਨ ਬੁਝਾਈ ਚਿੰਤਾ ਹੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਕਰਮੀ ਮਾਰੀ ਸਾਪੁ ਨ ਮੈਰੈ ਤਿਉ ਨਿਗੁਰੇ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਦਾਤਾ ਸੇਵੀਐ ਸਬਦੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਁਤਿ ਹੋਇ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਇ ॥ ਸੁਖਾ ਸਿਰਿ
 ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਜਾ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਦਾਸੀ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਚਿੰਤਾ ਮੂਲਿ
 ਨ ਹੋਵਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਜਾ ਆਘਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਹ ਛੂਟੀਐ ਹਤਮੈ ਪਚਹਿ ਪਚਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥
 ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨੀ ਪਾਇਅਡੇ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ॥ ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜਿਨ
 ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਮਨਿ ਲਾਗੀ ਭੁਖਾ ॥ ਜਿਨੀ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਆਰਾਧਿਆ ਤਿਨ ਵਿਸਰਿ ਗਏ ਸਭਿ ਦੁਖਾ ॥ ਤੇ
 ਸੰਤ ਭਲੇ ਗੁਰਸਿਖ ਹੈ ਜਿਨ ਨਾਹੀ ਚਿੰਤ ਪਰਾਈ ਚੁਖਾ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਗੁਰੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਫਲ ਹਰਿ
 ਲਾਗੇ ਮੁਖਾ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਕਲਿ ਮਹਿ ਜਮੁ ਜਂਦਾਰੁ ਹੈ ਹੁਕਮੇ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਤੁਕਰੇ
 ਮਨਮੁਖਾ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥ ਜਮਕਾਲੈ ਵਸਿ ਜਗੁ ਬਾਂਧਿਆ ਤਿਸ ਦਾ ਫਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜਿਨਿ ਜਮੁ ਕੀਤਾ ਸੋ ਸੇਵੀਐ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਮੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਜਿਨ ਮਨਿ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਏਹਾ ਕਾਇਆ
 ਰੋਗਿ ਭਰੀ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਦੁਖੁ ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਸੁਖਦਾਤਾ ਦੁਖੁ ਵਿਸਰਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਜਿਨਿ ਜਗਜੀਵਨੁ
 ਤਪਦੇਸਿਆ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਤ ਹਤ ਸਦਾ ਧੁਮਾਇਆ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਤ ਹਤ ਖਨੀਐ ਜਿਨਿ ਮਧੁਸूਦਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਤ ਹਤ ਵਾਰਣੈ ਜਿਨਿ ਹਤਮੈ ਬਿਖੁ ਸਭੁ ਰੋਗੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਤ

ਵਡ ਪੁਨ੍ਨੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਅਵਗਣ ਕਟਿ ਗੁਣੀ ਸਮਝਾਇਆ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰ ਤਿਨ ਕਤ ਭੇਟਿਆ ਜਿਨ ਕੈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ
 ਭਾਗੁ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥੭॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਮਰਜੀਵਡੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਸਦਾ ਹੋਇ ॥ ਓਨਾ
 ਕਤ ਧੁਰਿ ਭਗਤਿ ਖਜਾਨਾ ਬਖਸਿਆ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਮਨਿ ਪਾਇਆ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਫਿਰਿ ਵਿਛੋਡਾ ਕਦੇ ਨ ਹੋਇ ॥੮॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀਆ ਕਿਆ ਓਹੁ
 ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਸਬਦੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਈ ਬਿਖੁ ਭੂਲਾ ਗਾਵਾਰੁ ॥ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ
 ਪਿਆਰੁ ॥ ਅਣਹੋਦਾ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ਜਮੁ ਮਾਰਿ ਕਰੇ ਤਿਨ ਖੁਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਾ ਆਪੇ
 ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਜਿਸੁ ਤੂ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਤੂ ਮੇਲਿ
 ਲੈਹਿ ਕਿਆ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰੇ ॥ ਤੂ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਸਚੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥ ਜਿਸੁ ਤੂ ਮੇਲਹਿ ਪਿਆਰਿਆ ਸੋ
 ਤੁਧੁ ਮਿਲੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪਣੇ ਜਿਨਿ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਰੇ ॥੯॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਰਤਨਾ ਪਾਰਖੁ ਜੋ ਹੋਵੈ ਸੁ ਰਤਨਾ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਰਤਨਾ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਈ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ
 ਅੰਧਾਰੁ ॥ ਰਤਨੁ ਗੁਰੁ ਕਾ ਸਬਦੁ ਹੈ ਬ੍ਰਾਂਸੈ ਬ੍ਰਾਂਸਣਹਾਰੁ ॥ ਮੂਰਖ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ਮਾਰਿ ਜੰਮਹਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਰਤਨਾ ਸੋ ਲਹੈ ਜਿਸੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਮੁ ਤਚੈਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਨਿਤ ਬਿਤਹਾਰੁ ॥
 ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਹਰਿ ਰਖਾ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨ
 ਲਗੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਮਤ ਤੁਮ ਜਾਣਹੁ ਓਡਿ ਜੀਵਦੇ ਓਡਿ ਆਪਿ ਮਾਰੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਹਉਮੈ ਵਡਾ ਰੋਗੁ ਹੈ ਭਾਇ ਟ੍ਰੌਜੈ
 ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਜੀਵਦਿਆ ਮੁਏ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿਆ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰੁ
 ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਸਭਿ ਨਮਸਕਾਰੀ ॥ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ
 ॥ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਬੁਧਿ ਬਿਕੇਕੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭਨਾ ਕਾ ਮਿਤੁ ਹੈ ਸਭ ਤਿਸਹਿ ਪਿਆਰੀ ॥
 ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਸਾਰਿਆ ਗੁਰ ਬੁਧਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜੀਅ ਕੇ ਬੰਧਨਾ
 ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਠਤਰ ਨ ਪਾਵਹੀ ਮਾਰਿ ਜੰਮਹਿ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ

सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअनि
 मुहि कालै उठि जाहि ॥੧॥ महला ੧ ॥ जालउ औसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥ नानक साई
 भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥੨॥ पउड़ी ॥ हरि इको दाता सेवीअै हरि इकु धिआईअै ॥
 हरि इको दाता मंगीअै मन चिंदिआ पाईअै ॥ जे दूजे पासहु मंगीअै ता लाज मराईअै ॥ जिनि सेविआ
 तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईअै ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु
 हिरदै हरि नामु धिआईअै ॥੧੦॥ सलोकु मঃ ੩ ॥ भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे
 लड़िअनु जन लाडि ॥ पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाडि ॥ सदा
 सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाडि ॥ राजे ओडि न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥
 नानक विणु नावै नकंी वढंी फिरहि सोभा मूलि न पाहि ॥੧॥ मঃ ੩ ॥ सुणि सिखिअै सादु न आडिओ
 जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ सतिगुरि सेविअै नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै ॥ जेहा सतिगुर
 नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै
 ॥੨॥ पउड़ी ॥ गुरसिखाँ मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥ हरि नामु वणंजहि रंग सित लाहा
 हरि नामु लै जावहि ॥ गुरसिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥ गुरु सतिगुरु बोहलु हरि नाम का
 वडभागी सिख गुण साँझ करावहि ॥ तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरि नामु
 धिआवहि ॥੧੧॥ सलोक मঃ ੩ ॥ नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाडि ॥ मनमुख घरि होटी
 वथु न जाणनी अंधे भउकि मुए बिललाडि ॥੧॥ मঃ ੩ ॥ कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि
 सचि लागी ॥ निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥ नानक गुरमुखि सदा सुखु
 पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥੨॥ पउड़ी ॥ से गुरसिख धनु धन्नु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि
 कन्नी ॥ गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाडिआ तिनि ह्यउमै दुबिधा भन्नी ॥ बिनु हरि नावै को मित्रु नाही

ਕੀਚਾਰਿ ਡਿਠਾ ਹਰਿ ਜਨੀ ॥ ਜਿਨਾ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕਤ ਹਰਿ ਸੰਤੁਸਟੁ ਹੈ ਤਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਗਲ ਮਨੀ ॥ ਜੋ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇੰਦੇ ਤਿਨੀ ਚੜੀ ਚਕਗਣਿ ਵਨੀ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਕਾਇਲੁ ਕਰੂਪੁ ਹੈ
 ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਨਕੁ ਨਾਹਿ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਧੰਧੈ ਵਿਆਪਿਆ ਸੁਪਨੈ ਭੀ ਸੁਖੁ ਨਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵਹਿ ਤਾ
 ਤਉਰਹਿ ਨਾਹਿ ਤ ਬਥੇ ਦੁਖ ਸਹਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਦਰਿ ਸੋਹਣੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਅਂਤਰਿ
 ਸਾਂਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥
 ਪਤੱਡੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਕਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਬਸਿਸਟਿ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਕਿਨੈ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ
 ਹਰਿ ਆਪਿ ਲਹਾਈ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਆਈਆ ਸਬਦਿ ਨ ਲਾਗੇ ਭਾਉ ॥
 ਓਸ ਨੋ ਸੁਖੁ ਨ ਉਪਯੈ ਭਾਵੈ ਸਤ ਗੇਡਾ ਆਵਤ ਜਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਸਚੇ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਤ ॥
 ੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਏ ਮਨ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਖੋਜਿ ਲਹੁ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਸਹਸਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਵੈ
 ਹਤਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥ ਕੂੜੈ ਕੀ ਪਾਲਿ ਵਿਚਹੁ ਨਿਕਲੈ ਸਚੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਅਂਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਮਨਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ
 ਸਚ ਸੰਜਮਿ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਖਾਇ ॥੨॥ ਪਤੱਡੀ ॥
 ਜਿਸ ਕੈ ਘਰਿ ਦੀਬਾਨੁ ਹਰਿ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਕੀ ਮੁਠੀ ਵਿਚਿ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਆਇਆ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਤਲਕੀ ਕਿਸੈ ਦੀ
 ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਦੀਬਾਨਿ ਸਭਿ ਆਣਿ ਪੈਰੀ ਪਾਇਆ ॥ ਮਾਣਸਾ ਕਿਅਹੁ ਦੀਬਾਣਹੁ ਕੋਈ ਨਸਿ ਭਜਿ ਨਿਕਲੈ ਹਰਿ
 ਦੀਬਾਣਹੁ ਕੋਈ ਕਿਥੈ ਜਾਇਆ ॥ ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਦੀਬਾਨੁ ਵਸਿਆ ਭਗਤਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਤਿਨਿ ਰਹਦੇ ਖੁਹਦੇ ਆਣਿ
 ਸਭਿ ਭਗਤਾ ਅਗੈ ਖਲਵਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਨਾਵੈ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ
 ਧਿਆਇਆ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜਗਤੁ ਮੁਆ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥ ਦ੍ਰਾਜੈ ਭਾਇ
 ਅਤਿ ਦੁਖੁ ਲਗਾ ਮਰਿ ਜਾਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਵਿਸਟਾ ਅੰਦਰਿ ਵਾਸੁ ਹੈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ
 ਨਾਵੈ ਜਮੁ ਮਾਰਸੀ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਪੁਰਖੁ ਏਕੁ ਹੈ ਹੋਰ ਸਗਲੀ ਨਾਰਿ

ਸਬਾਈ ॥ ਸਭਿ ਘਟ ਭੋਗਵੈ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹੈ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖਣਾ ਜਾਈ ॥ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਵੇਖਾਲਿਆ ਸਬਦੇ ਸੋਝੀ ਪਾਈ
 ॥ ਪੁਰਖੈ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਪੁਰਖ ਹੋਵਹਿ ਜਿਨੀ ਹਤਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਈ ॥ ਤਿਸ ਕਾ ਸਰੀਕੁ ਕੋ ਨਹੀ ਨਾ ਕੋ ਕਟਕੁ ਵੈਰਾਈ
 ॥ ਨਿਹਚਲ ਰਾਜੁ ਹੈ ਸਦਾ ਤਿਸੁ ਕੇਰਾ ਨਾ ਆਵੈ ਨਾ ਜਾਈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਹਰਿ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਈ
 ॥ ਨਾਨਕੁ ਵੇਖਿ ਵਿਗਸਿਆ ਹਰਿ ਸਚੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਜਿਨ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਸਦ ਹਿਰਦੈ
 ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਤਿਨ ਕੰਤ ਰਖਣਹਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਮਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਮਿਲੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਹਰਿ
 ਨਾਵੈ ਨਾਲਿ ਗਲਾ ਹਰਿ ਨਾਵੈ ਨਾਲਿ ਮਸਲਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੀ ਕਰਦਾ ਨਿਤ ਸਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੀ
 ਸੰਗਤਿ ਅਤਿ ਪਿਆਰੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕੁਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਖਾਰਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੰਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਗੁਰਿ ਦੀਆ
 ਹਰਿ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸਦਾ ਕਰੇ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿਨ ਕੰਤ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਸੇ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ
 ਸਦਾ ਕਮਾਹਿ ॥ ਅਚਿੰਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਕੁਲੁ ਤਥਾਰਹਿ ਆਪਣਾ ਮੋਖ
 ਪਦਵੀ ਆਪੇ ਪਾਹਿ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਿਨ ਕੰਤ ਸੰਤੁਸ਼ਟੁ ਭਇਆ ਜੋ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਜਨ ਪਾਹਿ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ
 ਦਾਸੁ ਹੈ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਲਾਜ ਰਖਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਛਾਉਮੈ ਅੰਦਰਿ ਖੜਕੁ ਹੈ ਖੜਕੇ ਖੜਕਿ ਵਿਹਾਇ ॥
 ਛਾਉਮੈ ਕਡਾ ਰੋਗੁ ਹੈ ਮਰਿ ਜਿਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਾ ਸਤਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤਕਰੇ ਹਤਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਗਤੁ
 ਅਗੋਚਰੁ ਅਭਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮ ਸੇਵਹ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮ ਪ੍ਰਯਹ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥
 ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਜੇਵਡੁ ਕੋਈ ਅਕਰੁ ਨ ਸੂਝੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਅੰਤਿ ਛਡਾਤਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਗੁਰਿ ਪਰਤਪਕਾਰੀ ਧਨੁ
 ਧਨੁ ਗੁਰੁ ਕਾ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ॥ ਛਾਉ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਣੇ ਕੰਤ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੀ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੈ ਜਾਤਾ
 ॥੧੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਆਓ
 ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਵਾਰੇ ਵਾਰ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧੁ ਨ ਚੇਤੈਈ ਕਿਤੁ ਆਇਆ ਸੈਸਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੇ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਮਘੇ ਪਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇਕੋ ਸਤਿਗੁਰ ਜਾਗਤਾ ਹੋਏ ਜਗੁ ਸੂਤਾ ਮੋਹਿ ਪਿਆਸਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ

जागन्नि से जो रते सचि नामि गुणतासि ॥ मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥ नानक
 गुरमुखि तिनी नामु धिआड़िआ जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा भोजनु
 छतीह परकार जितु खाइअै हम कउ तृपति भई ॥ हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि न्नगे न होवह
 होर पैनण की हमारी सरथ गई ॥ हरि नामु हमारा वणजु हरि नामु वापारु हरि नामै की हम कंउ
 सतिगुरि कारकुनी दीई ॥ हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई ॥ हरि का
 नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआड़िआ जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥१७॥ सलोक मः ३
 ॥ जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाड़ि करम कमाड़ि ॥ दूजै भाड़ि जेते करम करे दुखु लगै तनि धाड़ि ॥
 गुर परसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाड़ि ॥ सची बाणी करम करे अनदिनु नामु धिआड़ि ॥
 नानक जितु आपे लाए तितु लगे कहणा किछू न जाड़ि ॥१॥ मः ३ ॥ हम घरि नामु खजाना सदा है
 भगति भरे भंडारा ॥ सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा ॥ अनदिनु कीरतनु सदा करहि
 गुर कै सबदि अपारा ॥ सबदु गुरु का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ इहु मनूआ सदा सुखि
 वसै सहजे करे वापारा ॥ अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥ नानक जिस नो
 नदरि करे सो पाए सो होवै दरि सचिआरा ॥२॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सो गुरसिखु कहीअै जो सतिगुर चरणी
 जाड़ि पड़िआ ॥ धनु धनु सो गुरसिखु कहीअै जिनि हरि नामा मुखि रामु कहिआ ॥ धनु धनु सो गुरसिखु
 कहीअै जिसु हरि नामि सुणिअै मनि अनदु भड़िआ ॥ धनु धनु सो गुरसिखु कहीअै जिनि सतिगुर सेवा
 करि हरि नामु लड़िआ ॥ तिसु गुरसिख कंउ ह्वात सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिआ
 ॥१८॥ सलोकु मः ३ ॥ मनहठि किनै न पाड़िओ सभ थके करम कमाड़ि ॥ मनहठि भेख करि भरमदे
 दुखु पाड़िआ दूजै भाड़ि ॥ रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आड़ि ॥ गुर सेवा ते मनु निरमलु
 होवै अगिआनु अंधेरा जाड़ि ॥ नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाड़ि ॥१॥ मः ३ ॥

ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਆ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੋ ਪਿਆਰੁ ॥ ਰਸਨਾ ਫਿਕਾ ਬੋਲਣਾ ਨਿਤ ਨਿਤ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਕਿਰਤਿ ਪਇਐ ਕਮਾਵਣਾ ਕੋਡਿ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਮਾਰਾ ਜਿਤੁ
 ਮਿਲਿਐ ਹਮ ਕਤ ਸਾਂਤਿ ਆਈ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਮਾਰਾ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਹਮ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਪਾਈ
 ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਮਾਰਾ ਜਿਸ ਕੀ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਮ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਹਰਿ
 ਗਿਆਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਮਾਰਾ ਜਿਨਿ ਵੈਰੀ ਮਿਤੁ ਹਮ ਕਤ ਸਭ ਸਮ ਦੂਸਟਿ ਦਿਖਾਈ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਤੁ
 ਹਮਾਰਾ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸਿਤ ਹਮਾਰੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਣਾਈ ॥੧੯॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਘਰ ਹੀ ਸੁਂਧਿ ਵਿਟੇਸਿ ਪਿਝੁ
 ਨਿਤ ਝੂਰੇ ਸੰਮੂਲੇ ॥ ਮਿਲਦਿਆ ਢਿਲ ਨ ਹੋਵੈ ਜੇ ਨੀਅਤਿ ਰਾਸਿ ਕਰੇ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਗਾਲੀ ਕੂੜੀਆ
 ਬਾੜ੍ਹੁ ਪਰੀਤਿ ਕਰੇਇ ॥ ਤਿਚਰੁ ਜਾਣੈ ਭਲਾ ਕਰਿ ਜਿਚਰੁ ਲੇਵੈ ਦੇਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਨਿ ਉਪਾਏ ਜੀਅ ਤਿਨਿ
 ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਚਾ ਨਾਤ ਭੋਜਨੁ ਚਾਖਿਆ ॥ ਤਿਪਤਿ ਰਹੇ ਆਘਾਇ ਮਿਟੀ ਭਭਾਖਿਆ ॥ ਸਭ ਅੰਦਰਿ
 ਇਕੁ ਕਰਤੈ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਲਾਖਿਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਭਏ ਨਿਹਾਲੁ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪਾਖਿਆ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਸਭੁ ਕੋ ਕੇਖਦਾ ਜੇਤਾ ਜਗਤੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਡਿਠੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਵੈ ਜਿਚਰੁ ਸ਼ਬਦਿ ਨ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
 ਹਤਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਚੁਕੈ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਇਕਿ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਦੁਬਿਧਾ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥
 ਨਾਨਕ ਇਕਿ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਮਰਿ ਮਿਲੇ ਸਤਿਗੁਰ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵਿਓ ਮੂਰਖ
 ਅੰਧ ਗਵਾਰਿ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਲਾਗਾ ਜਲਤਾ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ॥ ਜਿਨ ਕਾਰਣਿ ਗੁਰੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੇ ਨ
 ਤਥਕਰੇ ਅੰਤੀ ਵਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਬਖਸੇ ਬਖਸਣਹਾਰ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਆਪਿ
 ਆਪਿ ਸਭੁ ਕਰਤਾ ਕੋਈ ਟ੍ਰੌਜਾ ਹੋਇ ਸੁ ਅਕਰੋ ਕਹੀਐ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਬੋਲੈ ਆਪਿ ਬੁਲਾਵੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਜਲਿ ਥਲਿ
 ਰਵਿ ਰਹੀਐ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਮਾਰੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਛੋਡੈ ਮਨ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ਪਡਿ ਰਹੀਐ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕੋਈ ਮਾਰਿ
 ਜੀਵਾਲਿ ਨ ਸਕੈ ਮਨ ਹੋਇ ਨਿਚਿੰਦ ਨਿਸਲੁ ਹੋਇ ਰਹੀਐ ॥ ਤਠਦਿਆ ਬਹਦਿਆ ਸੁਤਿਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲਹੀਐ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ

੧੭ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਚਤੁਪਦੇ ॥

ਸਭਨਾ ਮਰਣਾ ਆਇਆ ਕੇਛੋਡਾ ਸਭਨਾਹ ॥ ਪੁਛਹੁ ਜਾਇ ਸਿਆਣਿਆ ਆਗੈ ਮਿਲਣੁ ਕਿਨਾਹ ॥ ਜਿਨ ਮੇਰਾ
ਸਾਹਿਬੁ ਵੀਸਰੈ ਵਡੀ ਕੇਵਦਨ ਤਿਨਾਹ ॥੧॥ ਭੀ ਸਾਲਾਹਿਹੁ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥ ਜਾ ਕੀ ਨਦਰਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
ਰਹਾਤ ॥ ਕਡਾ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹਣਾ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਸੋਇ ॥ ਸਭਨਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਤੂ ਮਾਣਸ ਦਾਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ
ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਰਨ ਕਿ ਰੁਨੈ ਹੋਇ ॥੨॥ ਧਰਤੀ ਤਪਰਿ ਕੋਟ ਗੜ੍ਹ ਕੇਤੀ ਗੜ੍ਹ ਵਜਾਇ ॥ ਜੋ ਅਸਮਾਨਿ ਨ ਮਾਵਨੀ
ਤਿਨ ਨਕਿ ਨਥਾ ਪਾਇ ॥ ਜੇ ਮਨ ਜਾਣਹਿ ਸੂਲੀਆ ਕਾਹੇ ਮਿਠਾ ਖਾਹਿ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਅਤਗੁਣ ਜੇਤੜੇ ਤੇਤੇ
ਗਲੀ ਜੰਜੀਰ ॥ ਜੇ ਗੁਣ ਹੋਨਿ ਤ ਕਟੀਅਨਿ ਸੇ ਭਾਈ ਸੇ ਵੀਰ ॥ ਅਗੈ ਗਏ ਨ ਮਨੀਅਨਿ ਮਾਰਿ ਕਢਹੁ ਕੇਪੀਰ
॥੪॥੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ॥ ਮਨੁ ਹਾਲੀ ਕਿਰਸਾਣੀ ਕਰਣੀ ਸਰਮੁ ਪਾਣੀ ਤਨੁ ਖੇਤੁ ॥ ਨਾਮੁ ਬੀਜੁ
ਸੰਤੋਖੁ ਸੁਹਾਗਾ ਰਖੁ ਗਰੀਬੀ ਕੇਸੁ ॥ ਭਾਉ ਕਰਮ ਕਰਿ ਜ਼ਿੰਮਸੀ ਸੇ ਘਰ ਭਾਗਠ ਦੇਖੁ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਮਾਇਆ ਸਾਥਿ
ਨ ਹੋਇ ॥ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮਾਇਆ ਜਗੁ ਮੋਹਿਆ ਵਿਰਲਾ ਬੂੜ੍ਹੈ ਕੋਇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਾਣੁ ਹਟੁ ਕਰਿ ਆਰਜਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਿ
ਕਥੁ ॥ ਸੁਰਤਿ ਸੋਚ ਕਰਿ ਭਾਁਡਸਾਲ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਤਿਸ ਨੋ ਰਖੁ ॥ ਵਣਯਾਰਿਆ ਸਿਤ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਲੈ ਲਾਹਾ ਮਨ
ਹਸੁ ॥੨॥ ਸੁਣਿ ਸਾਸਤ ਸਤਦਾਗਰੀ ਸਤੁ ਘੋੜੇ ਲੈ ਚਲੁ ॥ ਖਰਚੁ ਬਨੁ ਚੰਗਿਆਈਆ ਮਤੁ ਮਨ ਜਾਣਹਿ ਕਲੁ
॥ ਨਿਰਕਾਰ ਕੈ ਦੇਸਿ ਜਾਹਿ ਤਾ ਸੁਖਿ ਲਹਹਿ ਮਹਲੁ ॥੩॥ ਲਾਇ ਚਿਤੁ ਕਰਿ ਚਾਕਰੀ ਮੰਨਿ ਨਾਮੁ ਕਰਿ ਕੰਮੁ ॥

ਬਨੁ ਬਦੀਆ ਕਰਿ ਧਾਵਣੀ ਤਾ ਕੋ ਆਖੈ ਧਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਵੇਖੈ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਚੜੈ ਚਵਗਣ ਵਨੁ ॥੪॥੨॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੧ ਚਤੁਰਕੇ ॥ ਮਾਝਿ ਬਾਪ ਕੋ ਬੇਟਾ ਨੀਕਾ ਸਸੁਰੈ ਚਤੁਰ ਜਵਾਈ ॥ ਬਾਲ ਕਨਿਆ ਕੌ ਬਾਪੁ ਪਿਆਰਾ
 ਭਾਈ ਕੌ ਅਤਿ ਭਾਈ ॥ ਹੁਕਮੁ ਭਇਆ ਬਾਹਰੁ ਘਰੁ ਛੋਡਿਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਈ ਪਰਾਈ ॥ ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ
 ਨ ਮਨਮੁਖਿ ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਧੂਡਿ ਧੁਮਾਈ ॥੧॥ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ॥ ਪਾਝਿ ਪਰਤ ਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੈ
 ਜਿਨਿ ਸਾਚੀ ਬੂੜਾ ਬੁੜਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਗ ਸਿਤ ਝੂਠ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਜਨ ਸਿਤ ਵਾਦੁ ਰਚਾਈ ॥ ਮਾਝਿਆ
 ਮਗਨੁ ਅਹਿਨਿਸਿ ਮਗੁ ਜੋਹੈ ਨਾਮੁ ਨ ਲੇਵੈ ਮਰੈ ਬਿਖੁ ਖਾਈ ॥ ਗਾਂਧਣ ਵੈਣਿ ਰਤਾ ਹਿਤਕਾਰੀ ਸਬਦੈ ਸੁਰਤਿ ਨ
 ਆਈ ॥ ਰੰਗਿ ਨ ਰਤਾ ਰਸਿ ਨਹੀ ਬੇਧਿਆ ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥੨॥ ਸਾਥ ਸਭਾ ਮਹਿ ਸਹਜੁ ਨ ਚਾਖਿਆ
 ਜਿਹਬਾ ਰਸੁ ਨਹੀ ਰਾਈ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਧਨੁ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ਦਰ ਕੀ ਖਬਰਿ ਨ ਪਾਈ ॥ ਅਖੀ ਮੀਟਿ
 ਚਲਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ਘਰੁ ਦੁਰੁ ਦਿਸੈ ਨ ਭਾਈ ॥ ਜਮ ਦਰਿ ਬਾਧਾ ਠਤਰ ਨ ਪਾਵੈ ਅਪੁਨਾ ਕੀਆ ਕਮਾਈ ॥੩॥
 ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਅਖੀ ਵੇਖਾ ਕਹਣਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਕਨ੍ਨੀ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਰਿਦੈ ਵਸਾਈ
 ॥ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕਾਰੁ ਨਿਰਕੈਰੁ ਪ੍ਰੰਨ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਵਿਣੁ ਭਰਮੁ ਨ ਭਾਗੈ ਸਚਿ ਨਾਮਿ
 ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੩॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਦੁਤੁਕੇ ॥ ਪੁਡੁ ਧਰਤੀ ਪੁਡੁ ਪਾਣੀ ਆਸਣੁ ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਚਤੁਬਾਰਾ ॥
 ਸਗਲ ਭਵਣ ਕੀ ਮੂਰਤਿ ਏਕਾ ਮੁਖਿ ਤੈਰੈ ਟਕਸਾਲਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਤੇਰੇ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਾ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ
 ਮਹੀਅਲਿ ਭਰਿਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ਆਪੇ ਸਰਬ ਸਮਾਣਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ਤੇਰਾ ਰੂਪੁ ਕਿਨੇਹਾ
 ॥ ਇਕਤੁ ਰੂਪਿ ਫਿਰਹਿ ਪਰਛਨਾ ਕੋਇ ਨ ਕਿਸ ਹੀ ਜੇਹਾ ॥੨॥ ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਉਤਭੁਜ ਸੇਤਜ ਤੇਰੇ ਕੀਤੇ ਜੰਤਾ ॥
 ਏਕੁ ਪੁਰਬੁ ਮੈ ਤੇਰਾ ਦੇਖਿਆ ਤੂ ਸਭਨਾ ਮਾਹਿ ਖਵਂਤਾ ॥੩॥ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਬਹੁਤੇ ਮੈ ਏਕੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ਮੈ ਮੂਰਖ
 ਕਿਛੁ ਦੀਜੈ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਡੁਬਦਾ ਪਥਰੁ ਲੀਜੈ ॥੪॥੪॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਤ
 ਪਾਪੀ ਪਤਿਤੁ ਪਰਮ ਪਾਖੰਡੀ ਤੂ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਕਾਰੀ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਚਾਖਿ ਪਰਮ ਰਸਿ ਰਾਤੇ ਠਾਕੁਰ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ
 ॥੧॥ ਕਰਤਾ ਤੂ ਮੈ ਮਾਣੁ ਨਿਮਾਣੇ ॥ ਮਾਣੁ ਮਹਤੁ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਪਲੈ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਣੇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੂ ਪ੍ਰਾ

हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ तुझ्हा ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मन रे ॥२॥
 तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥ अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे
 ॥३॥ अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति
 जानिआ सोई ॥४॥५॥ सोरठि महला १ ॥ अलख अपार अगंम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥
 जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥१॥ साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥ ना तिसु रूप
 वरनु नहीं रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥ ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न
 नारी ॥ अकुल निरंजन अपर परंपरु सगली जोति तुमारी ॥२॥ घट घट अंतरि ब्रह्मु लुकाइआ
 घटि घटि जोति सबाई ॥ बजर कपाट मुकते गुरमति निरभै ताड़ी लाई ॥३॥ जंत उपाइ कालु सिरि
 जंता वसगति जुगति सबाई ॥ सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥४॥ सूचै भाडै
 साचु समावै विरले सूचाचारी ॥ तंतै कउ परम तंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥५॥६॥
 सोरठि महला १ ॥ जिउ मीना बिनु पाणीअै तिउ साकतु मरै पिआस ॥ तिउ हरि बिनु मरीअै रे मना
 जो बिरथा जावै सासु ॥१॥ मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि
 देइ ॥ रहाउ ॥ संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥ अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु
 परापति होइ ॥२॥ जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु ॥ तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै
 अंतरि दोखु ॥३॥ साकत प्रेमु न पाईअै हरि पाईअै सतिगुर भाइ ॥ सुख दुख दाता गुरु मिलै कहु
 नानक सिफति समाइ ॥४॥७॥ सोरठि महला १ ॥ तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ
 ॥ मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥१॥ घटि घटि रवि रहिआ
 बनवारी ॥ जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ मरत
 पड़िआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ ॥ सो ब्रह्मु अजोनी है भी होनी घट भीतरि

ਦੇਖੁ ਮੁਰਾਰੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਤ ਇਹੁ ਜਗੁ ਬਪੁੜੋ ਇਨ੍ਹਿ ਦ੍ਰਵੈ ਭਗਤਿ ਵਿਸਾਰੀ ਜੀਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮਿਲੈ ਤ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈਐ ਸਾਕਤ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ਜੀਤ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬੰਧਨ ਤੋਡਿ ਨਿਰਾਰੇ ਬਹੁਡਿ ਨ ਗਰਭ
 ਮਝਾਰੀ ਜੀਤ ॥ ਨਾਨਕ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਨਿਰਂਕਾਰੀ ਜੀਤ ॥੪॥੮॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਿਸੁ ਜਲ ਨਿਧਿ ਕਾਰਣਿ ਤੁਮ ਜਗਿ ਆਏ ਸੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰ ਪਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਛੋਡਹੁ ਵੇਸੁ ਭੇਖ
 ਚਤੁਰਾਈ ਦੁਬਿਧਾ ਇਹੁ ਫਲੁ ਨਾਹੀ ਜੀਤ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਥਿਰੁ ਰਹੁ ਮਤੁ ਕਤ ਜਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਬਾਹਰਿ ਢੂਢਤ
 ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਘਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਘਟ ਮਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਵਗੁਣ ਛੋਡਿ ਗੁਣਾ ਕਤ ਧਾਰਹੁ ਕਰਿ
 ਅਵਗੁਣ ਪਛੁਤਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਸਰ ਅਪਸਰ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਹਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਕੀਚ ਬੁਡਾਹੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਅੰਤਰਿ
 ਮੈਲੁ ਲੋਭ ਬਹੁ ਝੂਠੇ ਬਾਹਰਿ ਨਾਵਹੁ ਕਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਸਦ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰ ਕੀ ਗਤਿ ਤਾਹੀ
 ਜੀਤ ॥੩॥ ਪਰਹਰਿ ਲੋਭੁ ਨਿੰਦਾ ਕੂਝੁ ਤਿਆਗਹੁ ਸਚੁ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਫਲੁ ਪਾਹੀ ਜੀਤ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖਹੁ
 ਹਰਿ ਜੀਤ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ਜੀਤ ॥੪॥੬॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਪੰਚਪਦੇ ॥ ਅਪਨਾ ਘਰੁ ਮੂਸਤ
 ਰਾਖਿ ਨ ਸਾਕਹਿ ਕੀ ਪਰ ਘਰੁ ਜੋਹਨ ਲਾਗਾ ॥ ਘਰੁ ਦਰੁ ਰਾਖਹਿ ਜੇ ਰਸੁ ਚਾਖਹਿ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਕੁ ਲਾਗਾ
 ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਸਮਝੁ ਕਵਨ ਮਤਿ ਲਾਗਾ ॥ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਅਨ ਰਸੁ ਲੋਭਾਨੇ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਹਿ ਅਭਾਗਾ ॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਆਵਤ ਕਤ ਹਰਖ ਜਾਤ ਕਤ ਰੋਵਹਿ ਇਹੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਨਾਲੇ ਲਾਗਾ ॥ ਆਪੇ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਭੋਗ ਭੋਗਾਵੈ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋ ਅਨਰਾਗਾ ॥੨॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਊਪਰਿ ਅਵਰੁ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਜਿਨਿ ਪੀਆ ਸੋ ਤ੃ਪਤਾਗਾ ॥ ਮਾਇਆ
 ਮੋਹਿਤ ਜਿਨਿ ਇਹੁ ਰਸੁ ਖੋਇਆ ਜਾ ਸਾਕਤ ਦੁਰਮਤਿ ਲਾਗਾ ॥੩॥ ਮਨ ਕਾ ਜੀਤ ਪਵਨਪਤਿ ਦੇਹੀ ਦੇਹੀ
 ਮਹਿ ਦੇਤ ਸਮਾਗਾ ॥ ਜੇ ਤ੍ਰਾਂ ਦੇਹਿ ਤ ਹਰਿ ਰਸੁ ਗਾਈ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤੈ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥੪॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਹਿ
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਜਮ ਭਤ ਭਾਗਾ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਏ ਮਸਤਕਿ
 ਭਾਗਾ ॥੫॥੧੦॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਰਬ ਜੀਆ ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ ਧੁਰਾਹੂ ਬਿਨੁ ਲੇਖੈ ਨਹੀ ਕੋਈ ਜੀਤ ॥ ਆਪਿ ਅਲੇਖੁ
 ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਏ ਸੋਈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਰਾਮ ਜਪਹੁ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਸਰੇਵਹੁ ਹਰਿ ਦਾਤਾ ਭੁਗਤਾ ਸੋਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਅੰਤਰਿ ਸੋ ਬਾਹਰਿ ਦੇਖਹੁ ਅਵਰੁ ਨ ਟ੍ਰੂਜਾ ਕੋਈ
ਜੀਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕ ਦ੃ਸ਼ਟਿ ਕਰਿ ਦੇਖਹੁ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਸਮੋਈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਚਲਤੌ ਠਾਕਿ ਰਖਹੁ ਘਰਿ
ਅਪਨੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਇਹ ਮਤਿ ਹੋਈ ਜੀਤ ॥ ਦੇਖਿ ਅਦੂਸਟੁ ਰਹਤ ਬਿਸਮਾਦੀ ਦੁਖੁ ਬਿਸਰੈ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ਜੀਤ
॥੩॥ ਪੀਵਹੁ ਅਧਿਤ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਹੋਈ ਜੀਤ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਵ ਭੰਜਨੁ ਗਾਈਐ
ਪੁਨਰਥਿ ਜਨਮੁ ਨ ਹੋਈ ਜੀਤ ॥੪॥ ਤਤੁ ਨਿਰਿਜਨੁ ਜੋਤਿ ਸਬਾਈ ਸੋਝਾ ਭੇਦੁ ਨ ਕੋਈ ਜੀਤ ॥ ਅਪਰਾਂਪਰ
ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮਿਲਿਆ ਸੋਈ ਜੀਤ ॥੫॥੧੧॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵਾ ਤਦ ਹੀ ਗਾਵਾ ॥ ਤਾ ਗਾਵੇ ਕਾ ਫਲੁ ਪਾਵਾ ॥ ਗਾਵੇ ਕਾ ਫਲੁ ਹੋਈ ॥ ਜਾ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਸੋਈ ॥੧॥
ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥ ਤਾ ਤੇ ਸਚ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਅੰਤਰਿ ਜਾਗੀ
॥ ਤਾ ਚੰਚਲ ਮਤਿ ਤਿਆਗੀ ॥ ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਕਾ ਤਜੀਆਰਾ ॥ ਤਾ ਮਿਟਿਆ ਸਗਲ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥੨॥ ਗੁਰ ਚਰਨੀ
ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥ ਤਾ ਜਮ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਭਾਗਾ ॥ ਭੈ ਵਿਚਿ ਨਿਰਭਤ ਪਾਇਆ ॥ ਤਾ ਸਹਜੈ ਕੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੩॥
ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਬੂੜੀ ਕੋ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ॥ ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਹੋਈ ॥ ਜਾ ਆਪੇ ਮਿਲਿਆ
ਸੋਈ ॥੪॥੧॥੧੨॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੇਵਕ ਸੇਵ ਕਰਹਿ ਸਭਿ ਤੇਰੀ ਜਿਨ ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਆਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ
ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਨਿਤ ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਹਮ
ਬਾਰਿਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸਚੁ ਤ੍ਰੂ ਕੇਵਲੁ ਆਪਿ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾਗਤ ਰਹੇ ਤਿਨੀ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ
ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥ ਗਿਰਹੀ ਮਹਿ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਨ ਤਦਾਸੀ ਗਿਆਨ ਤਤ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ
ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰ ਧਾਰੀ ॥੨॥ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵਦਾ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇਆ ॥

मनमुख मुगधु हरि नामु न चेतै विरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु
 चुकाइआ ॥३॥ हरि जन साचे साचु कमावहि गुर कै सबदि वीचारी ॥ आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु
 रखिआ उर धारी ॥ नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥४॥१॥ सोरठि महला ३ ॥
 भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइ ॥ अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै
 न कीमति होइ ॥ नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ ॥१॥ मन मेरे गुर सबदी हरि
 पाइआ जाइ ॥ बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ ॥ रहाउ ॥ इसु देही अंदरि
 पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अह्यकारा ॥ अंमूतु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा
 ॥ अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरु गुबारा ॥२॥ हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न
 चलदिआ नालि ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरि नामु समालि ॥ सची बाणी हरि गुण गावै
 नदरी नदरि निहालि ॥३॥ सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥ अनदिनु
 भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा
 ॥४॥२॥ सोरठि मः ३ ॥ दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥ भगता का कारजु हरि
 अन्नदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥ सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥१॥ हरि
 जीउ साची नदरि तुमारी ॥ आपणिआ दासा नो कृपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥
 सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा ॥ मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ
 चितु लागा ॥ साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥२॥ महा गंभीरु सदा सुखदाता
 तिस का अंतु न पाइआ ॥ पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ ॥ मनु तनु निरमलु
 सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥३॥ हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाए गुर वीचारा ॥
 हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥ नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा

॥੪॥੩॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੁਧੁ ਨੋ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀ ਪਿਆਰੇ ਜਿਚਰੁ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਹੈ ਸਾਸਾ ॥ ਇਕੁ
 ਪਲੁ ਖਿਨੁ ਵਿਸਰਹਿ ਤ੍ਰੂ ਸੁਆਮੀ ਜਾਣਤ ਬਰਸ ਪਚਾਸਾ ॥ ਹਮ ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਸਦਾ ਸੇ ਭਾਈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਪ੍ਰਗਾਸਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੁਮ ਆਪੇ ਦੇਹੁ ਬੁਝਾਈ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੁਧੁ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਸਦ ਹੀ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ
 ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮ ਸਬਦਿ ਮੁਏ ਸਬਦਿ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲੇ ਭਾਈ ਸਬਦੇ ਹੀ ਸੁਕਤਿ ਪਾਈ ॥ ਸਬਦੇ ਮਨੁ
 ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਈ ॥ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਦਾਤਾ ਜਿਤੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਹਿਆ
 ਸਮਾਈ ॥੨॥ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਸੇ ਅਨੇ ਬੋਲੇ ਸੇ ਕਿਤੁ ਆਏ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨ ਪਾਇਆ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ
 ਗਵਾਇਆ ਜੰਮਹਿ ਵਾਰੇ ਵਾਰਾ ॥ ਬਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀਡੇ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੇ ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਗੁਬਾਰਾ ॥੩॥
 ਆਪੇ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਮਾਰਗਿ ਲਾਏ ਭਾਈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟੈ
 ਭਾਈ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਭਾਈ ਅਕਰੁ ਨ ਢੂਜਾ ਕੋਈ ॥੪॥੪॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੇ ॥ ਭਗਤਾ ਕੀ ਸਾਰ ਕਰਹਿ
 ਆਪਿ ਰਾਖਹਿ ਜੋ ਤੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥ ਤ੍ਰੂ ਗੁਣਦਾਤਾ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਣੇ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ
 ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ ॥ ਅੰਤ ਕਾਲਿ ਤੇਰਾ ਕੇਲੀ ਹੋਕੈ ਸਦਾ ਨਿਬਹੈ ਤੈਰੈ ਨਾਲਿ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਸਟ ਚਤਕੜੀ
 ਸਦਾ ਕੂਝੁ ਕਮਾਵਹਿ ਨਾ ਬੂਝਾਹਿ ਕੀਚਾਰੇ ॥ ਨਿੰਦਾ ਦੁਸਟੀ ਤੇ ਕਿਨਿ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਰਣਾਖਸ ਨਖਹਿ ਬਿਦਾਰੇ ॥
 ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ ਜਨੁ ਸਦ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਜੀਤ ਲਏ ਤਬਾਰੇ ॥੨॥ ਆਪਸ ਕਤ ਬਹੁ ਭਲਾ ਕਰਿ ਜਾਣਹਿ
 ਮਨਮੁਖਿ ਮਤਿ ਨ ਕਾਈ ॥ ਸਾਧੂ ਜਨ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਵਿਆਪੇ ਜਾਸਨਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਦੇ ਚੇਤਹਿ
 ਨਾਹੀ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਈ ॥੩॥ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਭਗਤਾ ਕਾ ਕੀਤਾ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਆਪਿ ਲਾਏ ॥ ਸਬਦੇ ਰਾਤੇ
 ਸਹਜੇ ਮਾਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਹਤ ਲਾਗਾ ਤਿਨ ਕੈ ਪਾਏ ॥੪॥੫॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੋ ਸਿਖੁ ਸਖਾ ਬੰਧਪੁ ਹੈ ਭਾਈ ਜਿ ਗੁਰ ਕੇ ਭਾਣੇ ਵਿਚਿ ਆਵੈ ॥ ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਭਾਈ
 ਵਿਛੁਡਿ ਚੋਟਾ ਖਾਵੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਖੁ ਕਦੇ ਨ ਪਾਵੈ ਭਾਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਪਛੋਤਾਵੈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ

सुहेले भाई ॥ जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ इहु कुटंबु सभु
 जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैसारा ॥ बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥ करम
 करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥२॥ हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइ
 न किस ही केरा ॥ गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ॥ औथै बूझै सु आपु
 पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥३॥ सतिगुरु सदा दिआलु है भाई विणु भागा किआ पाईਐ ॥
 एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईਐ ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु
 आपु गवाईਐ ॥४॥६॥ सोरठि महला ३ चौतुके ॥ सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥
 सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी ॥ बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै
 इआणी ॥ मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥१॥ भाई रे सदा रहहु सरणाई
 ॥ आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै
 वीचारा ॥ हिरदै जगजीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अह्यकारा ॥ सदा हजूरि रविआ सभ ठाई
 हिरदै नामु अपारा ॥ जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥२॥ सतिगुरु सेवि
 जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ ॥ हरि रसु चाखि सदा मनु तृपतिआ गुण गावै गुणी
 अघाइआ ॥ कमलु प्रगासि सदा रंगि राता अनहद सबदु वजाइआ ॥ तनु मनु निरमलु निरमल
 बाणी सचे सचि समाइआ ॥३॥ राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥ गुरमुखि होवै
 सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥ जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥ नानक
 नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥४॥७॥ सोरठि मः ३ दुतुके ॥ सतिगुर मिलाई
 उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ ॥ सो गुरु सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥१॥
 मन रे हरि हरि सेती लिव लाइ ॥ मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਮਨਮੁਖਿ ਢੂਜੈ ਭਾਇ ॥ ਤੁਹ ਕੁਟਹਿ ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਭਾਈ ਪਲੈ ਕਿਛੂ ਨ
 ਪਾਇ ॥੨॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਰਵਿਆ ਭਾਈ ਸਾਚੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਰਵੈ ਭਾਈ
 ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰਿ ॥੩॥ ਆਇਆ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਭਾਈ ਜਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਹਰਿ
 ਪਾਈਐ ਭਾਈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੇਲਾਇ ॥੪॥੮॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ॥ ਤਿਹੀ ਗੁਣੀ ਤ੃ਭਵਣੁ ਵਿਆਪਿਆ
 ਭਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜਾ ਬੁੜਾਇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਗਿ ਛੂਟੀਐ ਭਾਈ ਪ੍ਰਥਾਹੁ ਗਿਆਨੀਆ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ
 ਕੈ ਗੁਣ ਛੋਡਿ ਚਤੁਰੈ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੈਰੈ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭਾਈ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਮੈ
 ਤੇ ਸਭਿ ਊਪਜੇ ਭਾਈ ਨਾਇ ਵਿਸਰਿਐ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥ ਅਗਿਆਨੀ ਜਗਤੁ ਅੰਧੁ ਹੈ ਭਾਈ ਸੂਤੇ ਗਏ ਸੁਹਾਇ ॥੨॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਗੇ ਸੇ ਤਕਰੇ ਭਾਈ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰਿ ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਭਾਈ ਹਿਰਦੈ ਰਖਿਆ
 ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੩॥ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਤਕਰੇ ਭਾਈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਤ ਕੇਡਾ ਨਾਤ ਤੁਲਹੜਾ
 ਭਾਈ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਪਾਰਿ ਜਨ ਪਾਇ ॥੪॥੯॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਜਗ ਅੰਤਰਿ
 ਹੋਰ ਥੈ ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ॥ ਹਉਮੈ ਜਗਤੁ ਦੁਖਿ ਰੋਗਿ ਵਿਆਪਿਆ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਰੋਵੈ ਧਾਹੀ ॥੧॥ ਪ੍ਰਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਨਾਹਿ ਤ ਜਾਹਿਗਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੈ ਗੁਣ
 ਧਾਤੁ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵਹਿ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਆ ॥ ਸੰਧਿਆ ਤਰਪਣੁ ਕਰਹਿ ਗਾਇਤ੍ਰੀ ਬਿਨੁ ਬੂੜੇ ਦੁਖੁ
 ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੋ ਕਵਭਾਗੀ ਜਿਸ ਨੌ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀ ਜਨ ਸਦਾ ਤ੃ਪਤਾਸੇ
 ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥੩॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਅੰਧਾ ਸਭੁ ਅੰਧੁ ਕਮਾਵੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਗੁ ਨ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਮਿਲੈ ਤ ਅਖੀ ਕੇਖੈ ਘਰੈ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਪਾਏ ॥੪॥੧੦॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਬਹੁਤਾ ਦੁਖੁ
 ਲਾਗਾ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਭਰਮਾਈ ॥ ਹਮ ਦੀਨ ਤੁਮ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਦਾਤੇ ਸਬਦੇ ਦੇਹਿ ਬੁੜਾਈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕੂਪਾ
 ਕਰਹੁ ਤੁਮ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਵਹੁ ਆਧਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨਸਾ ਮਾਰਿ
 ਦੁਬਿਧਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟਣਹਾਰਾ

॥੨॥ ਸਬਦਿ ਮਰਹੁ ਫਿਰਿ ਜੀਵਹੁ ਸਦ ਹੀ ਤਾ ਫਿਰਿ ਮਰਣੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਮੀਠਾ ਸਬਦੇ
 ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੩॥ ਦਾਤੈ ਦਾਤਿ ਰਖੀ ਹਥਿ ਅਪਣੈ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਟੇਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ
 ਦਰਗਹ ਜਾਪਹਿ ਸੇਈ ॥੪॥੧੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਤਾ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਯੈ ਗਤਿ ਮਤਿ
 ਤਦ ਹੀ ਪਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭੁ ਜੁ
 ਬਤਰਾਨਾ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧਾ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣੈ ਝੂਠੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਭਰਮਿ
 ਭੁਲਾਇਆ ਹਉਮੈ ਬੰਧਨ ਕਮਾਏ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਊਭਤ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥੨॥ ਤੈ ਗੁਣ
 ਵਰਤਹਿ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰਾ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਚਤੁਰਥਾ ਪਦੁ ਚੀਨੈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ
 ॥੩॥ ਤੈ ਗੁਣ ਸਾਭਿ ਤੇਰੇ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਜੋ ਤ੍ਰਾਂ ਕਰਹਿ ਸੁ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ
 ਖੋਈ ॥੪॥੧੨॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਆਪਿ ਅਪਾਹੁ ॥ ਵਣਜਾਰਾ ਜੁਗੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਾਚਾ ਸਾਹੁ ॥
 ਆਪੇ ਵਣਜੁ ਵਾਪਾਰੀਆ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਚੁ ਵੇਸਾਹੁ ॥੧॥ ਜਧਿ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ
 ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਿਆਰਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਅਗਮ ਅਥਾਹ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੇ ਸੁਣਿ ਸਭ ਵੇਖਦਾ ਪਿਆਰਾ ਮੁਖਿ ਬੋਲੇ ਆਪਿ
 ਸੁਹਾਹੁ ॥ ਆਪੇ ਤੱਝਾਡਿ ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਵਿਖਾਲੇ ਰਾਹੁ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਸਭੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ
 ਕੇਪਰਵਾਹੁ ॥੨॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਤੁਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਸਿਰਿ ਆਪੇ ਧੰਧੜੈ ਲਾਹੁ ॥ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਸਾਖਤੀ ਪਿਆਰਾ
 ਆਪਿ ਮਾਰੇ ਮਰਿ ਜਾਹੁ ॥ ਆਪੇ ਪਤਣੁ ਪਾਤਣੀ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਹੁ ॥੩॥ ਆਪੇ ਸਾਗਰੁ ਬੋਹਿਥਾ
 ਪਿਆਰਾ ਗੁਰੁ ਖੇਕਟੁ ਆਪਿ ਚਲਾਹੁ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਚਡਿ ਲਮਘਦਾ ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਚੋਜ ਵੇਖੈ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥ ਆਪੇ
 ਆਪਿ ਦਿੱਤਿਆਲੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਹੁ ॥੪॥੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ਚਤੁਰਥਾ ॥ ਆਪੇ ਅੰਡਜ
 ਜੇਰਜ ਸੇਤਜ ਤਤਭੁਜ ਆਪੇ ਖੰਡ ਆਪੇ ਸਭ ਲੋਡਿ ॥ ਆਪੇ ਸੂਨੁ ਆਪੇ ਬਹੁ ਮਣੀਆ ਕਰਿ ਸਕਤੀ ਜਗਤੁ ਪਰੋਡਿ ॥

आपे ही सूतधारु है पिआरा सूत खिंचे ढहि ढेरी होइ ॥१॥ मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
 सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दड़िआ अंमृतु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥ आपे जल थलि
 सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ ॥ सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ ॥ आपे
 खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥२॥ आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइ
 ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ आपे अलखु न लखीअै पिआरा आपि लखावै सोइ
 ॥३॥ आपे गहिर गंभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि
 नारी पुरख सभु सोइ ॥ नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥ सोरठि महला ४
 ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥ आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु
 आपै ॥ आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥१॥ जपि मन हरि हरि नाम रसि
 ध्रापै ॥ अंमृत नामु महा रसु मीठा गुर सबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥ आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा
 आपि तरै प्रभु आपै ॥ आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै ॥ आपि अभुलु न
 भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥२॥ आपे सिंडी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाए आपै ॥ आपे
 जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥ आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥३॥
 आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥ आपे अंमृतु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥
 आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥४॥३॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे कंडा
 आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥ आपे
 धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥१॥ मेरे मन हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ ॥ हरि
 हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥ आपे धरती आपि जलु पिआरा
 आपे करे कराइआ ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइआ ॥ आपे ही भउ

ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਬੰਨਿ ਬਕਰੀ ਸੀਹੁ ਹਠਾਇਆ ॥੨॥ ਆਪੇ ਕਾਸਟ ਆਪਿ ਹਰਿ ਪਿਆਰਾ ਵਿਚਿ ਕਾਸਟ
 ਅਗਨਿ ਰਖਾਇਆ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਭੈ ਅਗਨਿ ਨ ਸਕੈ ਜਲਾਇਆ ॥ ਆਪੇ ਮਾਰਿ
 ਜੀਵਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਸਾਹ ਲੈਂਦੇ ਸਭਿ ਲਵਾਇਆ ॥੩॥ ਆਪੇ ਤਾਣੁ ਦੀਬਾਣੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਕਾਰੈ
 ਲਾਇਆ ॥ ਜਿਤ ਆਪਿ ਚਲਾਏ ਤਿਤ ਚਲੀਐ ਪਿਆਰੇ ਜਿਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਭਾਇਆ ॥ ਆਪੇ ਜੰਤੀ ਜੰਤੁ ਹੈ
 ਪਿਆਰਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਵਜਹਿ ਵਜਾਇਆ ॥੪॥੪॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਆਪੇ ਸੂਸਟਿ ਉਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ
 ਕਰਿ ਸੂਰਜੁ ਚੰਦੁ ਚਾਨਾਣੁ ॥ ਆਪਿ ਨਿਤਾਣਿਆ ਤਾਣੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਨਿਮਾਣਿਆ ਮਾਣੁ ॥ ਆਪਿ ਦਾਇਆ
 ਕਰਿ ਰਖਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ
 ਧਿਆਇ ਤੂ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਹੁਡਿ ਨ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਗੁਣ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਪਰਵਾਣੁ
 ॥ ਆਪੇ ਬਖਸ ਕਰਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਆਪੇ ਹੁਕਮਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਫੁਰਮਾਣੁ
 ॥੨॥ ਆਪੇ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਟੇਵੈ ਦਾਣੁ ॥ ਆਪੇ ਸੇਵ ਕਰਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਦਿਵਾਵੈ
 ਮਾਣੁ ॥ ਆਪੇ ਤਾਡੀ ਲਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੩॥ ਆਪੇ ਵਡਾ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ
 ਪਰਥਾਣੁ ॥ ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਤੁਲੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਆਪੇ ਅਤੁਲੁ ਤੁਲਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੪॥੫॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਆਪੇ ਸੇਵਾ ਲਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਭਗਤਿ ਤਮਾਹਾ ॥
 ਆਪੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਾ ॥ ਆਪੇ ਲੇਖਣਿ ਆਪਿ ਲਿਖਾਰੀ ਆਪੇ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਹਾ
 ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਅਨਦੁ ਹੋਵੈ ਵਡਭਾਗੀ ਲੈ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ॥ ਰਹਾਉ
 ॥ ਆਪੇ ਗੋਪੀ ਕਾਨੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਬਨਿ ਆਪੇ ਗੜ ਚਰਾਹਾ ॥ ਆਪੇ ਸਾਵਲ ਸੁੰਦਰਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਕੱਸੁ ਵਜਾਹਾ
 ॥ ਕੁਵਲੀਆ ਪੀਡੁ ਆਪਿ ਮਰਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਬਾਲਕ ਰੂਪਿ ਪਚਾਹਾ ॥੨॥ ਆਪਿ ਅਖਾੜਾ ਪਾਇਦਾ
 ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਆਪਿ ਚੋਜਾਹਾ ॥ ਕਰਿ ਬਾਲਕ ਰੂਪ ਉਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਚੰਡ੍ਰੁ ਕੰਸੁ ਕੇਸੁ ਮਾਰਾਹਾ ॥ ਆਪੇ
 ਹੀ ਬਲੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਬਲੁ ਭਨੈ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧਾਹਾ ॥੩॥ ਸਭੁ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਵਸਿ

आपे जुगति हथाहा ॥ गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जित प्रभु खिंचै तित जाहा ॥ जो गरबै सो
 पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥४॥६॥ सोरठि मঃ ४ दुतुके ॥ अनिक जनम विछुड़े दुखु
 पाइआ मनमुखि करम करै अह्नाकारी ॥ साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥१॥
 गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥ जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ साँति मुरारी ॥ रहाउ ॥
 तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी ॥ सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ
 गुण गावै गुण वीचारी ॥२॥ गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी ॥ आतम
 ब्रह्मु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥३॥ पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ
 किरपा भई तुमारी ॥ नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥४॥७॥
 सोरठि महला ४ ॥ हरि सित प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई ॥ जित मछुली बिनु
 नीरै बिनसै तित नामै बिनु मरि जाई ॥१॥ मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥ हउ अंतरि नामु
 मंगा दिनु राती नामे ही साँति पाई ॥ रहाउ ॥ जित चातृकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस
 न जाई ॥ गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥२॥ मनमुख भूखे दह दिस डोलहि
 बिनु नावै दुखु पाई ॥ जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगहि मिलै सजाई ॥३॥ कृपा करहि ता हरि
 गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥ नानक दीन दिआल भए है तृसना सबदि बुझाई ॥४॥८॥
 सोरठि महला ४ पंचपदा ॥ अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥ प्रेम के सर लागे तन
 भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥१॥ मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥ गुरमति राम नामु
 परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥
 हरि जीउ कृपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥२॥ जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ
 सु पाए ॥ वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥३॥ जिनि इह चाखी सोई जाणै

गूंगे की मिठिआई ॥ रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥४॥ सभु किछु तेरा तू
अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥ जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥५॥६॥

सोरठि महला ५ घरु १ तितुके

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

किस हउ जाची किस आराधी जा सभु को कीता होसी ॥ जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥ निरभउ
निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नव निधि देसी ॥१॥ हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥ माणसु बपुड़ा किआ
सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख
गवाई ॥ औसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कब ही जाई ॥ अनदु भइआ सुख सहजि समाणे
सतिगुरि मेलि मिलाई ॥२॥ मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥ उपदेसु सुणि
साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥ जिन कउ कृपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥३॥
कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइआला ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम
बाल गुपाला ॥ राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जित पिता पूत किरपाला ॥४॥१॥ सोरठि महला ५
घरु १ चौतुके ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऔ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥ साचा साहिबु मनि वसै भाई
एहा करणी सार ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार ॥ साधसंगति कउ वारिआ भाई
जिन एकंकार अधार ॥१॥ सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ ॥ गुरि पूरै जाणाइआ
भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाइ गणी ॥ विणु सच
सोच न पाईऔ भाई साचा अगम धणी ॥ आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥ गुरमुखि कोटि
उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥२॥ सिंमृति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ ॥
अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइ ॥ चारे कुँडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर

नाही जाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥३॥ सचु सदा है निरमला भाई
 निरमल साचे सोइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥ कोटि मधे जनु पाईअै भाई
 विरला कोई कोइ ॥ नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥४॥२॥ सोरठि महला ५
 दुतुके ॥ जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु द्वाई ॥ आन आपना करत बीचारा तउ
 लउ बीचु बिखाई ॥१॥ माधवे औसी देहु बुझाई ॥ सेवउ साध गहउ ओट चरना नह बिसरै मुहतु
 चसाई ॥ रहाउ ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम औसी रिटै न आई ॥ प्रानपति तिआगि आन
 तू रचिआ उरझिओ संगि बैराई ॥२॥ सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई ॥ साकत
 का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥३॥ कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥
 जन नानक दीन सरनि आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥४॥३॥ सोरठि महला ५ ॥ पुत्र कलत्र
 लोक गृह बनिता माइआ सनबंधेही ॥ अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥१॥ रे
 नर काहे पपोरहु देही ॥ ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥ तीनि संडिआ करि
 देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥ होइ आमरो गृह महि बैठा करण कारण बिसरोही ॥२॥ अनिक भाति
 करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥ तूटि जाइगो सूत बापुरे फिरि पाछै पछुतोही ॥३॥ जिनि तुम
 सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥ जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर ओट
 गहेही ॥४॥४॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा भेटिओ वडभागी मनहि भइआ परगासा ॥ कोइ न
 पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥१॥ अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥ आगै सुखु पाछै सुख
 सहजा घरि आनंदु हमारै ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी करणहारा सोई खसमु हमारा ॥ निरभउ भए
 गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥२॥ सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥
 कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥३॥ वडी वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ

रासे ॥ नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ॥४॥५॥ सोरठि महला ५ ॥ सुखीए कउ पेखै
 सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥ करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥१॥ मन मेरे
 जिनि अपुना भरमु गवाता ॥ तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रह्मु पछाता ॥ रहाउ ॥ संत
 संगि जा का मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठाँढी ॥ हउमै रोगि जा का मनु बिआपित ओहु जनमि मरै
 बिललाती ॥२॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री पड़िआ ता कउ सरब प्रगासा ॥ अगिआनि अंधेरै सूझसि
 नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥३॥ सुणि बेन्ती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै ॥ जह कीरतनु
 तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥४॥६॥ सोरठि महला ५ ॥ तनु संतन का धनु संतन का मनु
 संतन का कीआ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ ॥१॥ संतन बिनु अवरु
 न दाता बीआ ॥ जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटहि जन
 सेवा हरि कीरतनु रसि गाईਐ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईਐ ॥२॥
 रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीਐ ॥ अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि
 संतन की लहीਐ ॥३॥ निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥ बूडत मोह गृह अंध कूप
 महि नानक लेहु निबाही ॥४॥७॥ सोरठि महला ५ घर १ ॥ जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तै
 आस पुजाई ॥ दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि भाई ॥१॥ तेरी अकथ कथा कथनु
 न जाई ॥ गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥ सो सो करम करत है प्राणी जैसी
 तुम लिखि पाई ॥ सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥२॥ सरब निरंतरि तुमहि समाने
 जा कउ तुधु आपि बुझाई ॥ गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥३॥ सोई गिआनी
 सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई ॥ कहु नानक जिसु भए दइआला ता कउ मन ते बिसरि न जाई
 ॥४॥८॥ सोरठि महला ५ ॥ सगल समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे ॥ सुधु न होईਐ काहू

जतना ओङ्कि को न पहूचे ॥१॥ मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥ बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई
 फिरि आवत बारे बारा ॥ रहाउ ॥ ओहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि उरझिओ सगल संसारा ॥
 पूरन भगतु पुरख सुआमी का सरब थोक ते निआरा ॥२॥ निंदउ नाही काहू बातै एहु खसम का
 कीआ ॥ जा कउ कृपा करी प्रभि मेरै मिलि साधसंगति नाउ लीआ ॥३॥ पारब्रहम परमेसुर
 सतिगुर सभना करत उधारा ॥ कहु नानक गुर बिनु नही तरीਐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥४॥६॥
 सोरठि महला ५ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ राम नामु ततु सारा ॥ किलबिख काटे निमख अराधिआ
 गुरमुखि पारि उतारा ॥१॥ हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी ॥ सुणि सुणि महा तृपति मनु पावै साधू
 अंमृत बानी ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति सचु पाईਐ सरब सुखा का दाता ॥ अपुने दास कउ
 भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥२॥ स्रवणी सुणीਐ रसना गाईਐ हिरदै धिआईਐ सोई ॥
 करण कारण समरथ सुआमी जा ते बृथा न कोई ॥३॥ वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु कृपा
 किरपाला ॥ साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गुपाला ॥४॥१०॥ सोरठि महला ५ ॥ करि
 इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥ कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा
 ॥१॥ प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥ गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥
 साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥ संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु
 प्रतिपाला ॥२॥ हरि अंमृत नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥ जरा मरा तापु सभु
 नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥३॥ सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई ॥ प्रगट भई
 सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥४॥११॥

सोरठि महला ५ घरु २ चउपटे

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि

ਦਰਸਨੁ ਦੇਹੁ ਦਿਖਾਈ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਮੀਤਾ ਧੂਰੀ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੇਰਾ ਭਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਾਵ
 ਮਲੋਵਾ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਾ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੈ ਕੂ ਦੇਸਾ ॥ ਸੁਣਿ ਮੀਤਾ ਹਤ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਆਇਆ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਤ ਦੇਹੁ
 ਉਪਦੇਸਾ ॥੨॥ ਮਾਨੁ ਨ ਕੀਜੈ ਸਰਣਿ ਪਰੀਜੈ ਕਰੈ ਸੁ ਭਲਾ ਮਨਾਈਐ ॥ ਸੁਣਿ ਮੀਤਾ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਨੁ
 ਅਰਪੀਜੈ ਇਤ ਦਰਸਨੁ ਹਰਿ ਜੀਤ ਪਾਈਐ ॥੩॥ ਭਇਆਂ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੰਤਨ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹੈ ਮੀਠਾ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਸਭੁ ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨੁ ਡੀਠਾ ॥੪॥੧॥੧੨॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੋਟਿ
 ਬ੍ਰਹਮਿੰਡ ਕੋ ਠਾਕੁਰੁ ਸੁਆਮੀ ਸਰਬ ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾ ਰੇ ॥ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਨਿਤ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੈ ਇਕੁ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ਮੂਰਖਿ
 ਜਾਤਾ ਰੇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿ ਨ ਜਾਨਾ ਰੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾ ਰੇ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਨਾਮੁ ਪਰਿਆਂ ਰਾਮਦਾਸੁ
 ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ਕ੃ਪਾਲ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਸਰਬ ਘਟਾ ਭਰਪੂਰੀ ਰੇ ॥ ਪੇਖਤ ਸੁਨਤ ਸਦਾ ਹੈ ਸੰਗੇ ਮੈ ਮੂਰਖ
 ਜਾਨਿਆ ਢੂਰੀ ਰੇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਬਿਅੰਤੁ ਹਤ ਮਿਤਿ ਕਰਿ ਵਰਨਤ ਕਿਆ ਜਾਨਾ ਹੋਇ ਕੈਸੋ ਰੇ ॥ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀ
 ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਮੈ ਮੂਰਖ ਦੇਹੁ ਉਪਦੇਸੋ ਰੇ ॥੩॥ ਮੈ ਮੂਰਖ ਕੀ ਕੇਤਕ ਬਾਤ ਹੈ ਕੋਟਿ ਪਰਾਧੀ ਤਰਿਆ ਰੇ ॥ ਗੁਰੁ
 ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਸੁਣਿਆ ਪੇਖਿਆ ਸੇ ਫਿਰਿ ਗਰਭਾਸਿ ਨ ਪਰਿਆ ਰੇ ॥੪॥੨॥੧੩॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਨਾ
 ਬਾਤ ਕੋ ਬਹੁਤੁ ਅੰਦੇਸਰੋ ਤੇ ਮਿਟੇ ਸਭਿ ਗਿਆ ॥ ਸਹਜ ਸੈਨ ਅਰੁ ਸੁਖਮਨ ਨਾਰੀ ਊਥ ਕਮਲ ਬਿਗਸਿਆ ॥
 ੧॥ ਦੇਖਹੁ ਅਚਰਜੁ ਭਇਆ ॥ ਜਿਹ ਠਾਕੁਰ ਕਤ ਸੁਨਤ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ ਸੋ ਰਿਦੈ ਗੁਰਿ ਦਿਆ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋਇ
 ਢੂਤ ਮੋਹਿ ਬਹੁਤੁ ਸੰਤਾਕਤ ਤੇ ਭਇਆਨਕ ਭਇਆ ॥ ਕਰਹਿ ਬੇਨਤੀ ਰਾਖੁ ਠਾਕੁਰ ਤੇ ਹਮ ਤੇਰੀ ਸਰਨਿਆ
 ॥੨॥ ਜਹ ਭੰਡਾਰੁ ਗੋਬਿੰਦ ਕਾ ਖੁਲਿਆ ਜਿਹ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਤਿਹ ਲਿਆ ॥ ਏਕੁ ਰਤਨੁ ਮੋ ਕਤ ਗੁਰਿ ਦੀਨਾ ਮੇਰਾ
 ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਥਿਆ ॥੩॥ ਏਕ ਕੁੰਦ ਗੁਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਦੀਨੋ ਤਾ ਅਟਲੁ ਅਮਰੁ ਨ ਮੁਆ ॥ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ
 ਗੁਰਿ ਨਾਨਕ ਕਤ ਸਤਪੇ ਫਿਰਿ ਲੇਖਾ ਮੂਲਿ ਨ ਲਿਆ ॥੪॥੩॥੧੪॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ
 ਸਿਤ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ਸੇ ਜਨ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਈ ॥ ਗੁਣ ਅਮੋਲ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਨ ਵਸਿਆ ਤੇ ਨਰ ਤ੃ਸਨ ਤ੍ਰਖਾਈ
 ॥੧॥ ਹਰਿ ਆਰਾਧੇ ਅਰੋਗ ਅਨਦਾਈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਵਿਸਰੈ ਮੇਰਾ ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ ਤਿਸੁ ਲਾਖ ਬੇਦਨ ਜਣੁ ਆਈ

॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਹ ਜਨ ਓਟ ਗਹੀ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਪ੍ਰਭ ਸਣੇ ॥ ਜਿਹ ਨਰ ਬਿਸਰਿਆ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ਤੇ
 ਦੁਖੀਆ ਮਹਿ ਗਨਣੇ ॥੨॥ ਜਿਹ ਗੁਰ ਮਾਨਿ ਪ੍ਰਭੂ ਲਿਵ ਲਾਈ ਤਿਹ ਮਹਾ ਅਨਨਦ ਰਸੁ ਕਰਿਆ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਭੂ
 ਬਿਸਾਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਬੇਮੁਖਾਈ ਤੇ ਨਰਕ ਧੋਰ ਮਹਿ ਪਰਿਆ ॥੩॥ ਜਿਤੁ ਕੋ ਲਾਇਆ ਤਿਤ ਹੀ ਲਾਗ ਤੈਸੋ ਹੀ
 ਕਰਤਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹ ਪਕਰੀ ਸੰਤਨ ਕੀ ਰਿਦੈ ਭਏ ਮਗਨ ਚਰਨਾਰਾ ॥੪॥੪॥੧੫॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਰਾਜਨ ਮਹਿ ਰਾਜਾ ਉਝ਼ਾਇਆ ਮਾਨਨ ਮਹਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥ ਲੋਭਨ ਮਹਿ ਲੋਭੀ ਲੋਭਾਇਆ ਤਿਤ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰਚੇ
 ਗਿਆਨੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜਨ ਕਤ ਇਹੀ ਸੁਹਾਵੈ ॥ ਪੇਖਿ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਹੀ ਤ੃ਪਤਾਵੈ
 ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਮਲਨ ਸਿਤ ਅਮਲੀ ਲਪਟਾਇਆ ਭੂਮਨ ਭੂਮਿ ਪਿਆਰੀ ॥ ਖੀਰ ਸੰਗ ਬਾਰਿਕੁ ਹੈ ਲੀਨਾ ਪ੍ਰਭ
 ਸੰਤ ਐਸੇ ਹਿਤਕਾਰੀ ॥੨॥ ਬਿਦਿਆ ਮਹਿ ਬਿਦੁਅਂਸੀ ਰਚਿਆ ਨੈਨ ਦੇਖਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥ ਜੈਸੇ ਰਸਨਾ ਸਾਦਿ
 ਲੁਭਾਨੀ ਤਿਤ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ॥੩॥ ਜੈਸੀ ਭੂਖ ਤੈਸੀ ਕਾ ਪੂਰਕੁ ਸਗਲ ਘਟਾ ਕਾ ਸੁਆਮੀ ॥
 ਨਾਨਕ ਪਿਆਸ ਲਗੀ ਦਰਸਨ ਕੀ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਅਂਤਰਜਾਮੀ ॥੪॥੫॥੧੬॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਮ ਮੈਲੇ
 ਤੁਮ ਊਜਲ ਕਰਤੇ ਹਮ ਨਿਰਗੁਨ ਤ੍ਰੂ ਦਾਤਾ ॥ ਹਮ ਮੂਰਖ ਤੁਮ ਚਤੁਰ ਸਿਆਣੇ ਤ੍ਰੂ ਸਰਬ ਕਲਾ ਕਾ ਗਿਆਤਾ ॥੧॥
 ਮਾਧੀ ਹਮ ਐਸੇ ਤ੍ਰੂ ਐਸਾ ॥ ਹਮ ਪਾਪੀ ਤੁਮ ਪਾਪ ਖੰਡਨ ਨੀਕੋ ਠਾਕੁਰ ਦੇਸਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਮ ਸਭ ਸਾਜੇ ਸਾਜਿ
 ਨਿਵਾਜੇ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਦੇ ਪ੍ਰਾਨਾ ॥ ਨਿਰਗੁਨੀਆਰੇ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ਤੁਮ ਦਾਨੁ ਦੇਹੁ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥੨॥ ਤੁਮ ਕਰਹੁ
 ਭਲਾ ਹਮ ਭਲੋ ਨ ਜਾਨਹ ਤੁਮ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਿਇਆਲਾ ॥ ਤੁਮ ਸੁਖਦਾਈ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਤੁਮ ਰਾਖਹੁ ਅਪੁਨੇ
 ਬਾਲਾ ॥੩॥ ਤੁਮ ਨਿਧਾਨ ਅਟਲ ਸੁਲਿਤਾਨ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਜਾਚੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਮ ਇਹੈ ਹਵਾਲਾ ਰਾਖੁ
 ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਾਛੈ ॥੪॥੬॥੧੭॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ॥ ਮਾਤ ਗਰਭ ਮਹਿ ਆਪਨ ਸਿਮਰਨੁ ਦੇ ਤਹ ਤੁਮ
 ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥ ਪਾਵਕ ਸਾਗਰ ਅਥਾਹ ਲਹਰਿ ਮਹਿ ਤਾਰਹੁ ਤਾਰਨਹਾਰੇ ॥੧॥ ਮਾਧੀ ਤ੍ਰੂ ਠਾਕੁਰੁ ਸਿਰਿ ਮੌਰਾ ॥
 ਈਹਾ ਊਹਾ ਤੁਹਾਰੋ ਧੋਰਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੀਤੇ ਕਤ ਮੈਰੈ ਸੰਮਾਨੈ ਕਰਣਹਾਰੁ ਤ੍ਰਣੁ ਜਾਨੈ ॥ ਤ੍ਰੂ ਦਾਤਾ ਮਾਗਨ ਕਤ
 ਸਗਲੀ ਦਾਨੁ ਦੇਹਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਨੈ ॥੨॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਅਵਰੁ ਖਿਨੈ ਮਹਿ ਅਵਰਾ ਅਚਰਜ ਚਲਤ ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਰੁਝੋ

ਗ੍ਰਹੋ ਗਹਿਰ ਗੰਮੀਰੇ ਊਚੈ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥੩॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਤ ਤੁਮਹਿ ਮਿਲਾਇਆ ਤਤ ਸੁਨੀ ਤੁਮਾਰੀ ਬਾਣੀ
 ॥ ਅਨਦੁ ਭਿਆ ਪੇਖਤ ਹੀ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਤਾਪ ਪੁਰਖ ਨਿਰਕਾਣੀ ॥੪॥੭॥੧੮॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਮ ਸੰਤਨ
 ਕੀ ਰੇਨੁ ਪਿਆਰੇ ਹਮ ਸੰਤਨ ਕੀ ਸਰਣਾ ॥ ਸੰਤ ਹਮਾਰੀ ਓਟ ਸਤਾਣੀ ਸੰਤ ਹਮਾਰਾ ਗਹਣਾ ॥੧॥ ਹਮ ਸੰਤਨ
 ਸਿਉ ਬਣਿ ਆਈ ॥ ਪ੍ਰੂਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਈ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੇਰਾ ਭਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਤਨ ਸਿਉ ਮੇਰੀ ਲੇਵਾ ਦੇਵੀ
 ਸੰਤਨ ਸਿਉ ਬਿਤਹਾਰਾ ॥ ਸੰਤਨ ਸਿਉ ਹਮ ਲਾਹਾ ਖਾਟਿਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥੨॥ ਸੰਤਨ ਮੋ ਕਤ ਪ੍ਰੰਜੀ
 ਸਤਪੀ ਤਤ ਤਤ ਰਿਆ ਮਨ ਕਾ ਧੋਖਾ ॥ ਧਰਮ ਰਾਈ ਅਥ ਕਹਾ ਕਰੈਗੇ ਜਤ ਫਾਟਿਆ ਸਗਲੋ ਲੇਖਾ ॥੩॥ ਮਹਾ
 ਅਨਦ ਭਏ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਰਸਾਦੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਬਿਸਮਾਦੇ
 ॥੪॥੮॥੧੯॥ ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੫ ॥ ਜੇਤੀ ਸਮਗੀ ਦੇਖਹੁ ਰੇ ਨਰ ਤੇਤੀ ਹੀ ਛਡਿ ਜਾਨੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਕਰਿ
 ਬਿਤਹਾਰਾ ਪਾਵਹਿ ਪਦੁ ਨਿਰਕਾਨੀ ॥੧॥ ਪਿਆਰੇ ਤੂ ਮੇਰੇ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੀਆ ਤਪਦੇਸਾ ਤੁਮ ਹੀ ਸੰਗਿ
 ਪਰਾਤਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਲੋਭ ਮੋਹ ਅਭਿਮਾਨਾ ਤਾ ਮਹਿ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ॥ ਹੋਹੁ ਰੇਨ ਤੂ ਸਗਲ ਕੀ ਮੇਰੇ
 ਮਨ ਤਤ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਘਾਲ ਨ ਭਾਨੈ ਅੰਤਰ ਬਿਧਿ ਜਾਨੈ ਤਾ ਕੀ ਕਰਿ ਮਨ ਸੇਵਾ ॥ ਕਰਿ
 ਪ੍ਰਯਾ ਹੋਮਿ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਗੁਰਦੇਵਾ ॥੩॥ ਗੋਬਿਦ ਦਾਮੋਦਰ ਦਿਆਲ ਮਾਧਵੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਨਿਰਂਕਾਰਾ ॥ ਨਾਮੁ ਕਰਤਣਿ ਨਾਮੋ ਵਾਲੇਵਾ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੪॥੬॥੨੦॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮਿਰਤਕ ਕਤ ਪਾਇਆ ਤਨਿ ਸਾਸਾ ਬਿਛੁਰਤ ਆਨਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਪਸੂ ਪਰੇਤ ਸੁਗਧ ਭਏ ਸ਼੍ਰੋਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮਾ
 ਮੁਖਿ ਗਾਇਆ ॥੧॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਦੇਖੁ ਵਡਾਈ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਟ੍ਰਖ ਸੋਗ ਕਾ
 ਢਾਹਿਆ ਡੇਰਾ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਬਿਸਰਾਮਾ ॥ ਮਨ ਬਾਁਛਤ ਫਲ ਮਿਲੇ ਅਚਿੰਤਾ ਪ੍ਰੰਨ ਹੋਏ ਕਾਮਾ ॥੨॥ ਈਹਾ
 ਸੁਖੁ ਆਗੈ ਮੁਖ ਊਜਲ ਮਿਟਿ ਗਏ ਆਵਣ ਜਾਣੇ ॥ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ
 ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥੩॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਟ੍ਰਖੁ ਦਰਦੁ ਭ੍ਰਮੁ ਭਾਗਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੇ ਪੂਰ ਕਰੰਮਾ
 ਜਾ ਕਾ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥੪॥੧੦॥੨੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਤਨੁ ਛਾਡਿ ਕਤਡੀ ਸੰਗਿ ਲਾਗੇ ਜਾ ਤੇ

ਕਛੂ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਪੂਰਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਸਿਮਰਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਪਰਾਨੀ ॥ ਬਿਨਸੈ ਕਾਚੀ ਦੇਹ ਅਗਿਆਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮ੃ਗ ਤ੃ਸਨਾ ਅਰੁ ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਤਾ ਕੀ ਕਛੂ ਨ
 ਬਡਾਈ ॥ ਰਾਮ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਸਿ ਸੰਗਿ ਨ ਕਾਹੂ ਜਾਈ ॥੨॥ ਹਉ ਹਉ ਕਰਤ ਬਿਹਾਇ ਅਵਰਦਾ
 ਜੀਅ ਕੋ ਕਾਮੁ ਨ ਕੀਨਾ ॥ ਧਾਵਤ ਧਾਵਤ ਨਹ ਤ੃ਪਤਾਸਿਆ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਹੀ ਚੀਨਾ ॥੩॥ ਸਾਦ ਬਿਕਾਰ ਬਿਖੈ
 ਰਸ ਮਾਤੇ ਅਸੰਖ ਖਤੇ ਕਰਿ ਫੇਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਪਾਹਿ ਬਿਨਤੀ ਕਾਟਹੁ ਅਕਗੁਣ ਮੇਰੇ ॥੪॥੧੧॥੨੨॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਪੂਰਨ ਅਵਿਨਾਸੀ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਖੁ ਜਾਰੇ ॥ ਮਹਾ ਬਿਖਵੁ ਅਗਨਿ ਕੋ ਸਾਗਰੁ
 ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਉਧਾਰੇ ॥੧॥ ਪ੍ਰੈ ਗੁਰਿ ਮੇਟਿਆ ਭਰਮੁ ਅੰਧੇਰਾ ॥ ਭਜੁ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਨੇਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨ ਰਸੁ ਪੀਆ ਮਨ ਤਨ ਰਹੇ ਅਧਾਈ ॥ ਜਤ ਕਤ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਪਰਮੇਸਰੁ ਕਤ ਆਵੈ ਕਤ ਜਾਈ
 ॥੨॥ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਗਿਆਨ ਤਤ ਬੇਤਾ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਕਵੈ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ
 ਤਾ ਕੀ ਪੂਰਨ ਘਾਲਾ ॥੩॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟੇ ਦੁਖ ਸਗਲੇ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਮਨ ਤਨ ਭਏ ਬਿਗਾਸਾ ॥੪॥੧੨॥੨੩॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਣ ਕਰਾਵਣਹਾਰ ਪ੍ਰਭੁ ਦਾਤਾ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਆਮੀ ॥ ਸਗਲੇ ਜੀਅ ਕੀਏ ਦਾਇਆਲਾ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਹੋਆ ਆਪਿ
 ਸਹਾਈ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਮੰਗਲ ਰਸ ਅਚਰਜ ਭਈ ਬਡਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਿ ਪਏ ਭੈ ਨਾਸੇ
 ਸਾਚੀ ਦੁਰਗਹ ਮਾਨੇ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਆਰਾਧਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਆਏ ਅਪੁਨੈ ਥਾਨੇ ॥੨॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਕਰੈ ਸਭ ਤਿਤੁ
 ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਪਿਆਰੀ ॥ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ਜਾਤ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਜਿਨਿ ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੩॥ ਗੋਸਟਿ ਗਿਆਨੁ
 ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਉਧਰੇ ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਭਿਆਓ ਕ੃ਪਾਲੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਅਨਦ ਸੇਤੀ ਘਰਿ
 ਆਇਆ ॥੪॥੧੩॥੨੪॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਣਿ ਸਗਲ ਭੈ ਲਾਥੇ ਦੁਖ ਬਿਨਸੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
 ਦਾਇਆਲੁ ਹੋਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੁਆਮੀ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਤੂ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬੁ ਦਾਤਾ ॥
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਾਇਆਲਾ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਵ੃ਡਾਇਆ

ਚਿੰਤਾ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੀ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੋ ਕਰਿ ਲੀਨਾ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥੨॥ ਤਾ ਕਤ ਬਿਘਨੁ
 ਨ ਕੋਤ ਲਾਗੈ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰਿ ਅਪੁਨੈ ਰਾਖੇ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਬਸੇ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੇ ॥੩॥ ਕਰਿ
 ਸੇਵਕ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਜਿਨਿ ਮਨ ਕੀ ਇਛਿ ਪੁਜਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਿਨਿ ਪੂਰਨ ਪੈਜ
 ਰਖਾਈ ॥੪॥੧੪॥੨੫॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਡਿਆ ਮੋਹ ਮਗਨੁ ਅੰਧਿਆਰੈ ਦੇਵਨਹਾਰੁ ਨ ਜਾਨੈ ॥ ਜੀਤ
 ਪਿੰਡੁ ਸਾਜਿ ਜਿਨਿ ਰਚਿਆ ਬਲੁ ਅਪੁਨੋ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ॥੧॥ ਮਨ ਮੂੜੇ ਦੇਖਿ ਰਹਿਓ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ
 ਕਰਹਿ ਸੋਈ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਰਹੈ ਨ ਕਛੂਐ ਛਾਨੀ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਹਵਾ ਸੁਆਦ ਲੋਭ ਮਦਿ ਮਾਤੇ ਉਪਜੇ ਅਨਿਕ
 ਬਿਕਾਰਾ ॥ ਬਹੁਤੁ ਜੋਨਿ ਭਰਮਤ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਉਮੈ ਬੰਧਨ ਕੇ ਭਾਰਾ ॥੨॥ ਟੋਡਿ ਕਿਵਾਡਿ ਅਨਿਕ ਪੱਡੇ
 ਮਹਿ ਪਰ ਦਾਰਾ ਸੰਗਿ ਫਾਕੈ ॥ ਚਿਤ ਗੁਪਤੁ ਜਬ ਲੇਖਾ ਮਾਗਹਿ ਤਬ ਕਤਣੁ ਪੱਡਦਾ ਤੇਰਾ ਢਾਕੈ ॥੩॥ ਦੀਨ
 ਦਿਇਆਲ ਪੂਰਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਤੁਮ ਬਿਨੁ ਓਟ ਨ ਕਾਈ ॥ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਮਹਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ
 ॥੪॥੧੫॥੨੬॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹੋਆ ਸਹਾਈ ਕਥਾ ਕੀਰਤਨੁ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ
 ਬਾਣੀ ਜਧਿ ਅਨਦੁ ਕਰਹੁ ਨਿਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਸਾਚਾ ਸਿਮਰਹੁ ਭਾਈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ
 ਹਰਿ ਬਿਸਰਿ ਨ ਕਬਹੂ ਜਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਤੇਰਾ ਜੋ ਸਿਮਰੈ ਸੋ ਜੀਵੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕਰਮਿ
 ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਥੀਵੈ ॥੨॥ ਬਿਘਨ ਬਿਨਾਸਨ ਸਭਿ ਦੁਖ ਨਾਸਨ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
 ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਅਚੁਤ ਅਬਿਨਾਸੀ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਜਾਗਾ ॥੩॥ ਮਨ ਇਛੇ ਸੇਈ ਫਲ ਪਾਏ ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ
 ਸੁਹੇਲੀ ॥ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਮਧਿ ਨਾਨਕ ਕਤ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਆ ਬੇਲੀ ॥੪॥੧੬॥੨੭॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਪੰਚਪਦਾ ॥
 ਬਿਨਸੈ ਮੋਹੁ ਮੇਰਾ ਅਰੁ ਤੇਰਾ ਬਿਨਸੈ ਅਪਨੀ ਧਾਰੀ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਇਹਾ ਬਤਾਵਹੁ ਕਾਰੀ ॥ ਜਿਤੁ ਹਉਮੈ ਗਰਕੁ
 ਨਿਵਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਰਕ ਭੂਤ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ਹੋਵਾਂ ਸਗਲ ਰੇਨਾਰੀ ॥੨॥ ਪੇਖਿਓ ਪ੍ਰਭ
 ਜੀਤ ਅਪੁਨੈ ਸੰਗੇ ਚੂਕੈ ਭੀਤਿ ਭਰਮਾਰੀ ॥੩॥ ਅਤਖਥੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰਮਲ ਜਲੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪਾਈਐ ਗੁਰੁ ਦੁਆਰੀ
 ॥੪॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਰੋਗ ਬਿਦਾਰੀ ॥੫॥੧੭॥੨੮॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੨ ਟੁਪਦੇ

੧੯ੳ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਗਲ ਬਨਸਪਤਿ ਮਹਿ ਬੈਸਤਨੁ ਸਗਲ ਟ੍ਰਥ ਮਹਿ ਘੀਆ ॥ ਊਚ ਨੀਚ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਮਾਧਤ
ਜੀਆ ॥੧॥ ਸਤਹੁ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਹਿਓ ॥ ਪ੍ਰੂਨ ਪ੍ਰੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸਰਬ ਮਹਿ ਜਲਿ ਥਲਿ ਰਮਈਆ
ਆਹਿਓ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕੁ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਓ ॥ ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਸਦਾ
ਅਲੇਪਾ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇਓ ॥੨॥੧॥੨੬॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਹੋਇ ਅਨਨਦਾ
ਬਿਨਸੈ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ ਦੁਖੀ ॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਵਹਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਤ੃ਸਨਾ ਭੁਖੀ ॥੧॥ ਜਾ ਕੋ ਨਾਮੁ
ਲੈਤ ਤ੍ਰੂ ਸੁਖੀ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਧਿਆਵਹੁ ਠਾਕੁਰ ਕਤ ਮਨ ਤਨ ਜੀਅਰੇ ਮੁਖੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਂਤਿ ਪਾਵਹਿ
ਹੋਵਹਿ ਮਨ ਸੀਤਲ ਅਗਨਿ ਨ ਅੰਤਰਿ ਧੁਖੀ ॥ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਖਾਇਆ ਜਲਿ ਥਲਿ ਤ੃ਭਵਣਿ ਰੁਖੀ
॥੨॥੨॥੩੦॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਝੂਠ ਨਿੰਦਾ ਇਨ ਤੇ ਆਪਿ ਛਡਾਵਹੁ ॥ ਇਹ ਭੀਤਰ ਤੇ
ਇਨ ਕਤ ਡਾਰਹੁ ਆਪਨ ਨਿਕਟਿ ਬੁਲਾਵਹੁ ॥੧॥ ਅਪੁਨੀ ਬਿਧਿ ਆਪਿ ਜਨਾਵਹੁ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਮੰਗਲ ਗਾਵਹੁ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਕਬਹੂ ਹੀਏ ਤੇ ਇਹ ਬਿਧਿ ਮਨ ਮਹਿ ਪਾਵਹੁ ॥ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੂਰਾ ਭੇਟਿਓ ਵਡਭਾਗੀ
ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤਹਿ ਨ ਧਾਵਹੁ ॥੨॥੩॥੩੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਸਭੁ ਕਛੁ ਪਾਈਐ ਬਿਰਥੀ
ਘਾਲ ਨ ਜਾਈ ॥ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਕਤ ਰਾਚਹੁ ਜੋ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਸਿਮਰਹੁ ਸੰਤ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਪ੍ਰੂਨ ਹੋਵੈ ਘਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੈ
ਨਿਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਪ੍ਰੇਮ ਸਹਿਤ ਗਲਿ ਲਾਵੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੇ ਬਿਸਰਤ ਜਗਤ ਜੀਵਨੁ ਕੈਸੇ ਪਾਵੈ
॥੨॥੪॥੩੨॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਭਿਨਾਸੀ ਜੀਅਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਸਿਮਰਤ ਸਭ ਮਲੁ ਖੋਈ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ
ਭਗਤਨ ਕਤ ਬਰਤਨਿ ਬਿਰਲਾ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥ ਜਾ ਕੀ ਸਰਣਿ
ਪਇਆਁ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਬਾਹੁਡਿ ਦ੍ਰੂਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਨ ਭੇਟ

दुरमति खोई ॥ तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ॥२॥५॥३३॥
 सोरठि महला ५ ॥ जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥ दरसनु भेटत होत निहाला हरि का
 नामु बीचारै ॥१॥ मेरा बैदु गुरु गोविंदा ॥ हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥१॥
 रहाउ ॥ समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥ अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम
 अधारा ॥२॥६॥३४॥ सोरठि महला ५ ॥ अंतर की गति तुम ही जानी तुझ्न ही पाहि निबेरो ॥ बखसि
 लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो ॥१॥ प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥ हरि चरण सरण मोहि
 चेरो ॥१॥ रहाउ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो ॥ काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ
 नानक कहा निहोरो ॥२॥७॥३५॥ सोरठि मঃ ५ ॥ भए कृपाल गुरु गोविंदा सगल मनोरथ पाए ॥
 असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥१॥ भलो समूरतु पूरा ॥ साँति सहज आनंद
 नामु जपि वाजे अनहट तूरा ॥१॥ रहाउ ॥ मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥ हरि नामु
 निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥२॥८॥३६॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर के चरन बसे
 रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ॥ भए कृपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥१॥ मेरो
 गुरु रखवारो मीत ॥ दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ जंत प्रभि सगल
 उधारे दरसनु देखणहारे ॥ गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥२॥९॥३७॥
 सोरठि महला ५ ॥ संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार ॥ बिलछि बिनोद आनंद सुख
 माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥१॥ हरि के चरन कमल आधार ॥ संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु
 चड़ि लम्घउ बिखु संसार ॥१॥ रहाउ ॥ भए कृपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥ पेखि पेखि
 नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥२॥१०॥३८॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै अपनी कल धारी
 सभ घट उपजी दइआ ॥ आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भडिआ ॥१॥ सतिगुरु पूरा मेरै

नालि ॥ पारब्रह्मु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि थान थन्नतरि जत कत पेखउ सोई ॥
 नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥२॥११॥३६॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख
 मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥ राखनहारै राखिओ बारिकु सतिगुरि तापु
 उतारिआ ॥१॥ उबरे सतिगुर की सरणाई ॥ जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ घर महि सूख
 बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला ॥ नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला
 ॥२॥१२॥४०॥ सोरठि महला ५ ॥ साधू संगि भइआ मनि उटमु नामु रतनु जसु गाई ॥ मिटि गई
 चिंता सिमरि अन्नता सागरु तरिआ भाई ॥१॥ हिरदै हरि के चरण वसाई ॥ सुखु पाइआ सहज
 धुनि उपजी रोग घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥
 नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥२॥१३॥४१॥ सोरठि मः ५ ॥ गए कलेस
 रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥ आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥१॥
 हरि जीउ तू सुख संपति रासि ॥ राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ जो मागउ
 सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥
 ॥२॥१४॥४२॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥ ताप
 रोग गए गुर बचनी मन डिछे फल पाइआ ॥१॥ मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥ करण कारण समरथ
 सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ अन्नद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥
 जै जै कार भए जग भीतरि होआ पारब्रह्मु रखवाला ॥२॥१५॥४३॥ सोरठि महला ५ ॥ हमरी
 गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥ हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा रंगु माणि
 ॥१॥ साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥ बंधु पाइआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सरब कलिआण ॥
 रहाउ ॥ जीउ पाइ पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु ॥ अपणे दास की आपि पैज राखी नानक

ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੨॥੧੬॥੪੪॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦੁਰਤੁ ਗਵਾਇਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ
 ਤਥਾਰਿਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਅਪਣਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਰਿਆ ॥੧॥ ਹੋਈ ਰਾਜੇ ਰਾਮ ਕੀ ਰਖਵਾਲੀ
 ॥ ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨਦ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਦੇਹ ਸੁਖਵਾਲੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ
 ਮੋਹਿ ਤਿਸ ਕਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥ ਬਖਸਿ ਲਏ ਸਭਿ ਸਚੈ ਸਾਹਿਬਿ ਸੁਣਿ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਾ ॥੨॥੧੭॥੪੫॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਖਸਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸ਼ਰਿ ਸਗਲੇ ਰੋਗ ਬਿਦਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਸਰਣੀ ਤਥੇ
 ਕਾਰਜ ਸਗਲ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜਨਿ ਸਿਮਰਿਆ ਨਾਮ ਅਧਾਰਿ ॥ ਤਾਪੁ ਤਥਾਰਿਆ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਅਪਣੀ
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਦਾ ਅਨੰਦ ਕਰਹ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਗੋਵਿਦੁ ਗੁਰਿ ਰਾਖਿਆ ॥ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ
 ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੀ ਸਾਚੁ ਸਬਦੁ ਸਤਿ ਭਾਖਿਆ ॥੨॥੧੮॥੪੬॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਸੁਆਮੀ
 ਮੇਰੇ ਤਿਤੁ ਸਾਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਤਾਪੁ ਗਵਾਇਆ ਭਾਈ ਠਾਂਢਿ ਪੱਈ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਅਪਣੇ ਜੀਅ ਜੰਤ
 ਆਪੇ ਰਾਖੇ ਜਮਹਿ ਕੀਓ ਹਟਤਾਰਿ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਰਿਟੈ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰੀਐ
 ਭਾਈ ਦੁਖ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟਣਹਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਣੀ ਊਬਰੈ ਭਾਈ ਜਿਨਿ ਰਚਿਆ ਸਭੁ ਕੋਇ
 ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਸੋ ਭਾਈ ਸਚੈ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਈਐ ਭਾਈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ
 ॥੨॥੧੯॥੪੭॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰਭੁ ਵਿਸਰਤ ਨਾਹੀ
 ਮਨ ਚਿੰਦਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਤਾਪੁ ਗਵਾਇਆ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਦਿੱਤਿਆਲਾ ਦੁਖੁ ਮਿਟਿਆ ਸਭ ਪਰਖਾਰੀ ॥੧॥ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਮੰਗਲ ਰਸ ਰੂਪਾ
 ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਪਤਿ ਰਾਖੀ ਪਰਮੇਸ਼ਰਿ ਉਧਰਿਆ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥੨॥੨੦॥੪੮॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਰਖਵਾਲਾ ਹੋਆ ॥ ਧਾਰਿ ਕ੃ਪਾ ਪ੍ਰਭ ਹਾਥ ਦੇ ਰਾਖਿਆ ਹਰਿ ਗੋਵਿਦੁ
 ਨਵਾ ਨਿਰੋਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਾਪੁ ਗਿਆ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਟਾਇਆ ਜਨ ਕੀ ਲਾਜ ਰਖਾਈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ
 ਤੇ ਸਭ ਫਲ ਪਾਏ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥੧॥ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਪ੍ਰਭ ਦੋਵੈ ਸਵਾਰੇ ਹਮਰਾ ਗੁਣੁ ਅਕਗੁਣੁ

ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥ ਅਟਲ ਬਚਨੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇਰਾ ਸਫਲ ਕਰੁ ਮਸਤਕਿ ਧਾਰਿਆ ॥੨॥੨੧॥੪੬॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਅ ਜੰਵ ਸਭਿ ਤਿਸ ਕੇ ਕੀਏ ਸੋਈ ਸੰਤ ਸਹਾਈ ॥ ਅਪੁਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਪੇ ਰਾਖੈ ਪੂਰਨ
 ਖੰਡੀ ਬਡਾਈ ॥੧॥ ਪਾਰਖ੍ਰਹਮੁ ਪੂਰਾ ਮੇਰੈ ਨਾਲਿ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪੂਰੀ ਸਭ ਰਾਖੀ ਹੋਏ ਸਰਬ ਦਿਆਲ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥ ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਕਤ ਕੱਠਿ ਲਾਡਿ ਰਾਖੈ ਜਿਤ
 ਬਾਰਿਕ ਪਿਤ ਮਾਤਾ ॥੨॥੨੨॥੫੦॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ਚਤੁਪਦੇ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਿਲਿ ਪੰਚਹੁ ਨਹੀ ਸਹਸਾ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਸਿਕਦਾਰਹੁ ਨਹ ਪਤੀਆਇਆ ॥ ਤਮਰਾਵਹੁ ਆਗੈ ਝੇਰਾ ॥ ਮਿਲਿ
 ਰਾਜਨ ਰਾਮ ਨਿਕੇਰਾ ॥੧॥ ਅਥ ਢੂਢਨ ਕਤਹੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਗੋਬਿਦ ਭੇਟੇ ਗੁਰ ਗੋਸਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਇਆ
 ਪ੍ਰਭ ਦਰਬਾਰਾ ॥ ਤਾ ਸਗਲੀ ਮਿਟੀ ਪ੍ਰਕਾਰਾ ॥ ਲਬਧਿ ਆਪਣੀ ਪਾਈ ॥ ਤਾ ਕਤ ਆਵੈ ਕਤ ਜਾਈ ॥੨॥ ਤਹ
 ਸਾਚ ਨਿਆਇ ਨਿਕੇਰਾ ॥ ਊਹਾ ਸਮ ਠਾਕੁਰੁ ਸਮ ਚੇਰਾ ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਜਾਨੈ ॥ ਬਿਨੁ ਬੋਲਤ ਆਪਿ ਪਛਾਨੈ
 ॥੩॥ ਸਰਬ ਥਾਨ ਕੋ ਰਾਜਾ ॥ ਤਹ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਅਗਾਜਾ ॥ ਤਿਸੁ ਪਹਿ ਕਿਆ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ
 ਆਪੁ ਗਰਾਈ ॥੪॥੧॥੫੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਇਹੁ ॥ ਘਰਿ ਬੈਠੇ ਗੁਰੁ ਧਿਆਇਹੁ ॥
 ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸਚੁ ਕਹਿਆ ॥ ਸੋ ਸੁਖੁ ਸਾਚਾ ਲਹਿਆ ॥੧॥ ਅਪੁਨਾ ਹੋਇਆਂ ਗੁਰੁ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥ ਅਨਦ ਸੂਖ
 ਕਲਿਆਣ ਮੰਗਲ ਸਿਤ ਘਰਿ ਆਏ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਚੀ ਗੁਰ ਵਡਿਆਈ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ
 ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹਾ ॥ ਗੁਰ ਭੇਟਤ ਮਨਿ ਓਮਾਹਾ ॥੨॥ ਸਗਲ ਪਰਾਛਤ ਲਾਥੇ ॥ ਮਿਲਿ
 ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਸਾਥੇ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥ ਜਧਿ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਾਮਾ ॥੩॥ ਗੁਰਿ ਕੀਨੋ ਮੁਕਤਿ
 ਦੁਆਰਾ ॥ ਸਭ ਸੂਸਟਿ ਕਰੈ ਜੈਕਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਮੈਰੈ ਸਾਥੇ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ ਲਾਥੇ ॥੪॥੨॥੫੨॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਪੂਰੀ ਲੋਚ ਹਮਾਰੀ ॥ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨੁ ਗ੍ਰਹਿ ਆਏ ॥
 ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਸੁਖ ਪਾਏ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਰੀਐ ॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ

ਅਨਦਿਨੁ ਸੁਕ੍ਰਤੁ ਕਰੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਤ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਧਰਮ ਕੀ ਪਤੜੀ ਕੋ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਏ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ
 ਕਿਲਬਿਖ ਨਾਸੇ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੨॥ ਉਸਤਤਿ ਕਰਹੁ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਜਿਨਿ ਪੂਰੀ ਕਲ ਰਾਖੀ ॥
 ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਭਏ ਪਵਿਤ੍ਰਾ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਚੁ ਸਾਖੀ ॥੩॥ ਬਿਘਨ ਬਿਨਾਸਨ ਸਭਿ ਦੁਖ ਨਾਸਨ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੃ੜਾਇਆ ॥ ਖੋਏ ਪਾਪ ਭਏ ਸਭਿ ਪਾਵਨ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੪॥੩॥੫੩॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਨੀ ਗਹੇਰਾ ॥ ਘਰੁ ਲਸਕਰੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ॥ ਰਖਵਾਲੇ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਸਭਿ ਜੀਅ
 ਭਏ ਫਿਝਾਇਆਲਾ ॥੧॥ ਜਥਿ ਅਨਦਿ ਰਹਤ ਗੁਰ ਚਰਣਾ ॥ ਭਤ ਕਤਹਿ ਨਹੀਂ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੇਰਿਆ
 ਦਾਸਾ ਰਿਦੈ ਸੁਰਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਅਬਿਚਲ ਨੀਵ ਤਸਾਰੀ ॥ ਬਲੁ ਧਨੁ ਤਕੀਆ ਤੇਰਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਭਾਰੇ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥੨॥
 ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਤਰਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮ ਰਖੁ ਦੀਆ ॥ ਕੁਸਲ ਖੇਮ
 ਸਭ ਥੀਆ ॥੩॥ ਹੋਏ ਪ੍ਰਭੂ ਸਹਾਈ ॥ ਸਭ ਤਠਿ ਲਾਗੀ ਪਾਈ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ॥ ਹਰਿ ਮੰਗਲੁ
 ਨਾਨਕ ਗਾਈਐ ॥੪॥੪॥੫੪॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦਾ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਐ ਮਨਿ ਭਾਵਂਦਾ ॥
 ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਤਾ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੀ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥ ਨਿਤ ਬਾਜੇ
 ਅਨਹਤ ਬੀਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਚਰਣ ਕੀ ਓਟ ਸਤਾਣੀ ॥ ਸਭ ਚੂਕੀ ਕਾਣਿ ਲੋਕਾਣੀ ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ
 ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭ ਕਾਟਿਆ ਜਮ ਕਾ ਫਾਸਾ ॥ ਮਨ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸਾ
 ॥ ਜਹ ਪੇਖਾ ਤਹ ਸੋਈ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੇ ॥ ਸਭਿ ਜਨਮ ਜਨਮ
 ਦੁਖ ਲਾਥੇ ॥ ਨਿਰਭਤ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਅਟਲ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ॥੪॥੫॥੫੫॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਠਾਢਿ ਪਾਈ ਕਰਤਾਰੇ ॥ ਤਾਪੁ ਛੋਡਿ ਗਇਆ ਪਰਵਾਰੇ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹੈ ਰਾਖੀ ॥ ਸਰਣਿ ਸਚੇ ਕੀ ਤਾਕੀ ॥੧॥
 ਪਰਮੇਸਰੁ ਆਪਿ ਹੋਆ ਰਖਵਾਲਾ ॥ ਸਾਁਤਿ ਸਹਜ ਸੁਖ ਖਿਨ ਮਹਿ ਉਪਜੇ ਮਨੁ ਹੋਆ ਸਦਾ ਸੁਖਾਲਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਦਾਰੁ ॥ ਤਿਨਿ ਸਗਲਾ ਰੋਗੁ ਬਿਦਾਰੁ ॥ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਤਿਨਿ ਸਗਲੀ ਬਾਤ
 ਸਵਾਰੀ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਰਿਆ ॥ ਹਮਰਾ ਗੁਣੁ ਅਵਗੁਣੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ

ਭਇਆ ਸਾਖੀ ॥ ਤਿਨਿ ਸਗਲੀ ਲਾਜ ਰਾਖੀ ॥੩॥ ਬੋਲਾਇਆ ਬੋਲੀ ਤੇਰਾ ॥ ਤੂ ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਣੀ ਗਹੇਰਾ ॥ ਜਪਿ
 ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਚੁ ਸਾਖੀ ॥ ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਕੀ ਪੈਜ ਰਾਖੀ ॥੪॥੬॥੫੬॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਵਿਚਿ ਕਰਤਾ
 ਪੁਰਖੁ ਖਲੋਆ ॥ ਵਾਲੁ ਨ ਵਿੰਗਾ ਹੋਆ ॥ ਮਜਨੁ ਗੁਰ ਆਂਦਾ ਰਾਸੇ ॥ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਲਵਿਖ ਨਾਸੇ
 ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਰਾਮਦਾਸ ਸਰੋਵਰੁ ਨੀਕਾ ॥ ਜੋ ਨਾਵੈ ਸੋ ਕੁਲੁ ਤਰਾਵੈ ਉਧਾਰੁ ਹੋਆ ਹੈ ਜੀ ਕਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਜਗੁ ਗਾਵੈ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਅਡੇ ਫਲ ਪਾਵੈ ॥ ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਨਾਇ ਆਏ ॥ ਅਪਣਾ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਏ
 ॥੨॥ ਸੰਤ ਸਰੋਵਰ ਨਾਵੈ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥੩॥
 ਇਹੁ ਬ੍ਰਹਮ ਬਿਚਾਰੁ ਸੁ ਜਾਨੈ ॥ ਜਿਸੁ ਦਿੱਤਿਆਲੁ ਹੋਇ ਭਗਵਾਨੈ ॥ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥ ਸਭ ਚਿੰਤਾ
 ਗਣਤ ਮਿਟਾਈ ॥੪॥੭॥੫੭॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਨਿਬਾਹੀ ਪੂਰੀ ॥ ਕਾਈ ਬਾਤ ਨ ਰਹੀਆ
 ਊਰੀ ॥ ਗੁਰਿ ਚਰਨ ਲਾਇ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰੇ ॥੧॥ ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕਾ ਸਦਾ ਰਖਵਾਲਾ ॥
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੇ ਕਰਿ ਰਾਖੇ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਜਿਤ ਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
 ਜਿਨਿ ਜਮ ਕਾ ਪੰਥੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥ ਜਪਿ ਜੀਵਹਿ ਸੇ ਵਡਭਾਗਾ ॥੨॥ ਹਰਿ
 ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਗਾਵੈ ॥ ਸਾਧਾ ਕੀ ਧੂਰੀ ਨਾਵੈ ॥ ਅਪੁਨਾ ਨਾਮੁ ਆਪੇ ਦੀਆ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਰਣਹਾਰ ਰਖਿ ਲੀਆ ॥੩॥
 ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥ ਇਹੁ ਪੂਰਨ ਬਿਮਲ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਦਾਸ ਨਾਨਕ
 ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ॥੪॥੮॥੫੮॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਚਰਨੀ ਲਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ
 ਪਾਇਆ ॥ ਜਹ ਜਾਈਐ ਤਹਾ ਸੁਹੇਲੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਲੇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਸਦਾ ਸੁਭਾਈ ॥
 ਮਨ ਚਿੰਦੇ ਸਗਲੇ ਫਲ ਪਾਵਹੁ ਜੀਅ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰਾ ॥ ਹਮ
 ਸੰਤ ਜਨਾਂ ਰੇਨਾਰਾ ॥ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਕਰਿ ਲੀਨੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਦੀਨੇ ॥੨॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰੇ
 ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥ ਸਦ ਜੀਅ ਸੰਗਿ ਰਖਵਾਲਾ ॥ ਹਰਿ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥ ਬਹੁਡਿ ਨ ਜੋਨੀ ਪਾਈਐ
 ॥੩॥ ਜਿਸੁ ਦੇਵੈ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਤਿਨ ਹੀ ਜਾਤਾ ॥ ਜਮਕੰਕਰੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਇਆ ॥ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ

सरणी पाइआ ॥४॥६॥५६॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै कीती पूरी ॥ प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥
 खेम कुसल भइआ इਸनाना ॥ पारब्रह्म विटहु कुरबाना ॥१॥ गुर के चरन कवल रिद धारे ॥
 बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥२॥ रहाउ ॥ मिलि साधू दुरमति खोए ॥ पतित
 पुनीत सभ होए ॥ रामदासि सरोवर नाते ॥ सभ लाथे पाप कमाते ॥३॥ गुन गोबिंद नित गईअै ॥
 साधसंगि मिलि धिआईअै ॥ मन बाँछत फल पाए ॥ गुरु पूरा रिटै धिआए ॥४॥ गुर गोपाल
 आनन्दा ॥ जपि जपि जीवै परमानन्दा ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ प्रभ अपना बिरदु रखाइआ
 ॥५॥१०॥६०॥ रागु सोरठि महला ५ ॥ दह दिस छत्र मेघ घटा घट दामनि चमकि डराइओ ॥ सेज
 इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥१॥ हुणि नही संदेसरो माइओ ॥ एक कोसरो सिधि
 करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥ किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुखदाइओ
 ॥ मंदरि चरि कै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥२॥ हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि
 निकटाइओ ॥ भाँभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥३॥ भइओ किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो
 दूखु मिटाइओ ॥ कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥४॥ सभु रहिओ
 अंदेसरो माइओ ॥ जो चाहत सो गुरु मिलाइओ ॥ सरब गुना निधि राइओ ॥ रहाउ दूजा ॥१॥६१॥
 सोरठि महला ५ ॥ गई बहोडु बंदी छोडु निरंकारु दुखदारी ॥ करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी
 माइआधारी ॥ नामु परिओ भगतु गोबिंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥१॥ हरि जीउ निमाणिआ तू
 माणु ॥ निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ जैसा बालकु भाइ
 सुभाई लख अपराध कमावै ॥ करि उपदेसु झिङ्के बहु भाती बहुङ्गि पिता गलि लावै ॥ पिछले
 अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥२॥ हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि
 आखि सुणाईअै ॥ कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईअै ॥ अवर ओट मै सगली देखी

ਇਕ ਤੇਰੀ ਓਟ ਰਹਾਈਐ ॥੩॥ ਹੋਇ ਦਿੱਆਲੁ ਕਿਰਪਾਲੁ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰੁ ਆਪੇ ਸੁਣੈ ਬੇਨਤੀ ॥ ਪੂਰਾ ਸਤਗੁਰੁ
ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵੈ ਸਭ ਚੂਕੈ ਮਨ ਕੀ ਚਿੰਤੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਵਖਦੁ ਸੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਵਸੰਤੀ
॥੪॥੧੨॥੬੨॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਅਨਨਦਾ ਦੁਖ ਕਲੇਸ ਸਭਿ ਨਾਠੇ ॥ ਗੁਨ
ਗਾਵਤ ਧਿਆਵਤ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਸਾਁਠੇ ॥੧॥ ਜਗਜੀਵਨ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਦੀਓ
ਉਪਦੇਸਾ ਜਪਿ ਭਤਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੂਹੈ ਮੰਤ੍ਰੀ ਸੁਨਹਿ ਪ੍ਰਭ ਤੂਹੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ॥
ਤੂ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ਕਿਆ ਇਹੁ ਜੰਤੁ ਵਿਚਾਰਾ ॥੨॥ ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ਕੀਮਤਿ
ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਜੀਵੈ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਅਚਰਜੁ ਤੁਮਹਿ ਵਡਾਈ ॥੩॥ ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਆਪਿ
ਪ੍ਰਭ ਸ਼ਾਮੀ ਪਤਿ ਮਤਿ ਕੀਨੀ ਪੂਰੀ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀ ਬਾਛਤ ਸੰਤਾ ਧੂਰੀ ॥੪॥੧੩॥੬੩॥
ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੫ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਨਮਸਕਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਸਭੇ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ
ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੧॥ ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕੋ ਭਿੱਓ ਸਹਾਈ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਕੀਨੇ ਕਰਤੈ ਊਣੀ ਬਾਤ ਨ ਕਾਈ ॥
ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਤੈ ਪੁਰਖਿ ਤਾਲੁ ਦਿਵਾਇਆ ॥ ਧਿਛੈ ਲਗਿ ਚਲੀ ਮਾਇਆ ॥ ਤੋਟਿ ਨ ਕਤਹੂ ਆਵੈ ॥ ਮੇਰੇ ਪੂਰੇ
ਸਤਗੁਰ ਭਾਵੈ ॥੨॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਦਿੱਆਲਾ ॥ ਸਭਿ ਜੀਅ ਭਏ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਗੁਸਾਈ ॥ ਜਿਨਿ
ਪੂਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥੩॥ ਤੂ ਭਾਰੋ ਸੁਆਮੀ ਮੋਰਾ ॥ ਇਹੁ ਪੁਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਤੇਰਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਏਕੁ ਧਿਆਇਆ
॥ ਸਰਬ ਫਲਾ ਪੁਨੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੧੪॥੬੪॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ਟੁਪਦੇ

੧੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਮਦਾਸ ਸਰੋਵਰਿ ਨਾਤੇ ॥ ਸਭਿ ਤਤੇ ਪਾਪ ਕਮਾਤੇ ॥ ਨਿਰਮਲ ਹੋਏ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨਾ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕੀਨੇ
ਦਾਨਾ ॥੧॥ ਸਭਿ ਕੁਸਲ ਖੇਮ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੇ ॥ ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਸਭਿ ਥੋਕ ਤਕਾਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥
ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਲੁ ਲਾਥੀ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਭਿੱਓ ਸਾਥੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭੁ
ਪਾਇਆ ॥੨॥੧॥੬੫॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਤੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਚਿਤਿ ਆਇਆ ॥ ਸੋ ਘਰੁ ਦਧਿ ਵਸਾਇਆ

॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਤਾ ਸਹਸਾ ਸਗਲ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਆਠ
 ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਜਨ ਬੋਲਹਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ॥
 ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਵਖਾਣੀ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਜਾਣੀ ॥੨॥੨॥੬੬॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਗੈ ਸੁਖੁ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥
 ਪਾਛੈ ਕੁਸਲ ਖੇਮ ਗੁਰਿ ਕੀਆ ॥ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰੁ ਅਪੁਨਾ ਰਿਦੈ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਅਪਨੇ
 ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਮਨ ਇਛੇ ਫਲ ਪਾਈ ॥ ਸੰਤਹੁ ਦਿਨੁ ਦਿਨੁ ਚੱਡੈ ਸਕਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ
 ਸਭਿ ਭਏ ਦਿਇਆਲਾ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੇ ਕਰਿ ਦੀਨੇ ॥ ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ਮਿਲੇ ਗੋਪਾਲਾ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਪਤੀਨੇ
 ॥੨॥੩॥੬੭॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਖਵਾਰੇ ॥ ਚਤਕੀ ਚਤਗਿਰਦ ਹਮਾਰੇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ
 ਲਾਗਾ ॥ ਜਮੁ ਲਜਾਇ ਕਰਿ ਭਾਗਾ ॥੧॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤੂ ਮੇਰੋ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਕਰੇ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ
 ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਅਕਿਨਾਸੀ ॥ ਤਾ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਬਿਰਥੀ ਜਾਸੀ ॥ ਅਨਦ ਕਰਹਿ
 ਤੇਰੇ ਦਾਸਾ ॥ ਜਪਿ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸਾ ॥੨॥੪॥੬੮॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੁ ਅਪੁਨੇ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਜਿਨਿ
 ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਸਕਾਰੀ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਸਦਾ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਤਿਸੁ
 ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਪ੍ਰਭੁ ਸੌਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਕਰ ਦੀਨੇ ॥ ਸਗਲ ਜੀਅ ਕਵਿ ਕੀਨੇ
 ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਤਾ ਸਗਲੇ ਢੂਖ ਮਿਟਾਇਆ ॥੨॥੫॥੬੯॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾਪੁ
 ਗਵਾਇਆ ਗੁਰਿ ਪੂਰੇ ॥ ਵਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥ ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਧਿ ਦੀਨੇ ॥੧॥
 ਬੇਦਨ ਸਤਿਗੁਰਿ ਆਧਿ ਗਵਾਈ ॥ ਸਿਖ ਸੰਤ ਸਭਿ ਸਰਸੇ ਹੋਏ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੋ ਮੰਗਹਿ
 ਸੋ ਲੇਵਹਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਅਪਣਿਆ ਸੰਤਾ ਦੇਵਹਿ ॥ ਹਰਿ ਗੋਵਿਦੁ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖਿਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਸੁਭਾਖਿਆ
 ॥੨॥੬॥੭੦॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੌਈ ਕਰਾਇ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ॥ ਮੋਹਿ ਸਿਆਣਪ ਕਛੂ ਨ ਆਵੈ ॥ ਹਮ
 ਬਾਰਿਕ ਤਤ ਸਰਣਾਈ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ
 ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਣ ਲਾਗਾ ਕਰੀ ਤੇਰਾ ਕਰਾਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਤੇਰੇ ਧਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਡੋਰੀ ਹਾਥਿ ਤੁਮਾਰੇ ॥

ਜਿ ਕਰਾਵੈ ਸੋ ਕਰਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾ ॥੨॥੭॥੭੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ
 ਪਰੋਇਆ ॥ ਸਭੁ ਕਾਜੁ ਹਮਾਰਾ ਹੋਇਆ ॥ ਪ੍ਰਭ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥ ਪੂਰਨ ਜਾ ਕੇ ਭਾਗਾ ॥੧॥ ਮਿਲਿ
 ਸਾਧਸਂਗਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਅਰਾਧਿਓ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਪਰਾ ਪੂਰਬਲਾ ਅੰਕੁਰੁ ਜਾਗਿਆ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਲਾਗਿਆ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਰਿ ਦਰਸਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ
 ਸਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੨॥੮॥੭੨॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰਭੂ ਚਿਤਾਰਿਆ ॥ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥
 ਮੰਦਾ ਕੋ ਨ ਅਲਾਏ ॥ ਸਭ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਸੁਣਾਏ ॥੧॥ ਸਾਂਤਹੁ ਸਾਚੀ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਹਾਥਿ
 ਤਿਸੈ ਕੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਤਬ ਸਭਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਰੇ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ
 ਪ੍ਰਭ ਨਾਮਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥੨॥੯॥੭੩॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਾਰਖਾਹਿਮਿ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥
 ਇਹੁ ਲਹੁਡਾ ਗੁਰੂ ਤਬਾਰਿਆ ॥ ਅਨਦ ਕਰਹੁ ਪਿਤ ਮਾਤਾ ॥ ਪਰਮੇਸਰੁ ਜੀਅ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥੧॥ ਸੁਭ ਚਿਤਵਨਿ
 ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਰਾਖਹਿ ਪੈਜ ਦਾਸ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਕਾਰਜ ਆਧਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਰਤਪਕਾਰੀ ॥ ਪੂਰਨ
 ਕਲ ਜਿਨਿ ਧਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣੀ ਆਇਆ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥੧੦॥੭੪॥ ਸੋਰਠਿ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਾਪੇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਬਾਲਕ ਰਾਖੇ ਆਪੇ ॥ ਸੀਤਲਾ ਠਕਿ ਰਹਾਈ ॥ ਬਿਘਨ ਗਏ ਹਰਿ
 ਨਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਆ ਸਦਾ ਦਿੱਤਾਲਾ ॥ ਅਰਦਾਸਿ ਸੁਣੀ ਭਗਤ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਸਭ ਜੀਅ ਭਿੱਤਾ
 ਕਿਰਪਾਲਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਾਥਾ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਲਾਥਾ ॥ ਅਪਣੇ ਦਾਸ ਕੀ ਸੁਣੀ
 ਬੈਨ੍ਨਤੀ ॥ ਸਭ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਸਵਂਤੀ ॥੨॥੧੧॥੭੫॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਪਨਾ ਗੁਰੂ ਧਿਆਏ ॥ ਮਿਲਿ ਕੁਸਲ
 ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਆਏ ॥ ਨਾਮੈ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਤਿਸੁ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਸਾਂਤਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਆਰਾਧਹੁ ॥ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿ ਸਭੋ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਸਾਧਹੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਲਾਗੀ ॥
 ਸੋ ਪਾਏ ਜਿਸੁ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਤਿਨਿ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਫਲ ਪਾਇਆ ॥੨॥੧੨॥੭੬॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਰਮੇਸਰਿ ਦਿਤਾ ਬਨਾ ॥ ਦੁਖ ਰੋਗ ਕਾ ਡੇਰਾ ਭਨਾ ॥ ਅਨਦ ਕਰਹਿ ਨਰ ਨਾਰੀ ॥ ਹਰਿ

हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ पारब्रहमु पूर्न परमेसरु रवि रहिआ
 सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ दिइआल पुरख
 मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥२॥१३॥७७॥ सोरठि महला ५ ॥ औथै ओथै रखवाला ॥ प्रभ
 सतिगुर दीन दिइआला ॥ दास अपने आपि राखे ॥ घटि घटि सबदु सुभाखे ॥१॥ गुर के चरण
 ऊपरि बलि जाई ॥ दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूर्नु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ आपि सहाई
 होआ ॥ सचे दा सचा ढोआ ॥ तेरी भगति वडिआई ॥ पाई नानक प्रभ सरणाई ॥२॥१४॥७८॥
 सोरठि महला ५ ॥ सतिगुर पूरे भाणा ॥ ता जपिआ नामु रमाणा ॥ गोबिंद किरपा धारी ॥ प्रभि राखी
 पैज हमारी ॥१॥ हरि के चरन सदा सुखदाई ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई
 ॥१॥ रहाउ ॥ कृपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै ॥ प्रेम भगति ता का मनु लीणा
 पारब्रहम मनि भावै ॥२॥ आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी ॥ संगि मिलाइ लीआ
 मेरै करतै संत साध भए साथी ॥३॥ करु गहि लीने सरबसु दीने आपहि आपु मिलाइआ ॥ कहु
 नानक सरब थोक पूर्न पूरा सतिगुरु पाइआ ॥४॥१५॥७९॥ सोरठि महला ५ ॥ गरीबी गदा
 हमारी ॥ खन्ना सगल रेनु छारी ॥ इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥ गुर पूरे एह गल सारी ॥१॥ हरि
 हरि नामु संतन की ओटा ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥१॥ रहाउ ॥ संत
 संगि जसु गाइआ ॥ इहु पूर्न हरि धनु पाइआ ॥ कहु नानक आपु मिटाइआ ॥ सभु पारब्रहमु
 नदरी आइआ ॥२॥१६॥८०॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै पूरी कीनी ॥ बखस अपुनी करि दीनी
 ॥ नित अन्नद सुख पाइआ ॥ थाव सगले सुखी वसाइआ ॥१॥ हरि की भगति फल दाती ॥ गुरि
 पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ॥ रहाउ ॥ गुरबाणी गावह भाई ॥ ओह सफल सदा
 सुखदाई ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥२॥१७॥८१॥ सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਆਰਥੇ ॥ ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਸਾਧੇ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰੇ ॥ ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥੧॥ ਸਤਿਹੁ ਰਾਮੁ
 ਜਪਤ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਤਿ ਅਸਥਾਨਿ ਬਸੇ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਸਗਲੇ ਟ੍ਰ੍ਹਖ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ
 ਕੀ ਬਾਣੀ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸਿ ਵਖਾਣੀ ॥ ਨਿਰਮਲ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥੨॥੧੮॥੮੨॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭੂਖੇ ਖਾਵਤ ਲਾਜ ਨ ਆਵੈ ॥ ਤਿਤ ਹਰਿ ਜਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਅਪਨੇ ਕਾਜ ਕਤ
 ਕਿਤ ਅਲਕਾਈਐ ॥ ਜਿਤੁ ਸਿਮਰਨਿ ਦਰਗਹ ਮੁਖੁ ਊਜਲ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਤ
 ਕਾਮੀ ਕਾਮੀ ਲੁਭਾਵੈ ॥ ਤਿਤ ਹਰਿ ਦਾਸ ਹਰਿ ਜਸੁ ਭਾਵੈ ॥੨॥ ਜਿਤ ਮਾਤਾ ਬਾਲਿ ਲਪਟਾਵੈ ॥ ਤਿਤ ਗਿਆਨੀ
 ਨਾਮੁ ਕਮਾਵੈ ॥੩॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਵੈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥੪॥੧੬॥੮੩॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸੁਖ ਸਾਁਦਿ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥ ਨਿੰਦਕ ਕੈ ਮੁਖਿ ਛਾਇਆ ॥ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਪਹਿਰਾਇਆ ॥ ਬਿਨਸੇ ਦੁਖ ਸਕਾਇਆ
 ॥੧॥ ਸਤਿਹੁ ਸਾਚੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜਿਨਿ ਅਚਰਜ ਸੋਭ ਬਣਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬੋਲੇ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਭਾਣੀ
 ॥ ਦਾਸੁ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਜਿਨਿ ਪੂਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥੨॥੨੦॥੮੪॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਰਿਦੈ ਧਿਆਏ ॥ ਘਰਿ ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਆਏ ॥ ਸਤਿਖੁ ਭਿਆ ਸੱਸਾਰੇ ॥
 ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਲੈ ਤਾਰੇ ॥੧॥ ਸਤਿਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਦਾਇਆਲਾ ॥ ਅਪਨੇ ਭਗਤ ਕੀ ਗਣਤ ਨ ਗਣੈ ਰਾਖੈ
 ਬਾਲ ਗੁਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਤਿਨਿ ਸਭੇ ਥੋਕ ਸਵਾਰੇ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਤੁਸਿ
 ਦੀਆ ॥ ਫਿਰਿ ਨਾਨਕ ਟ੍ਰ੍ਹਖੁ ਨ ਥੀਆ ॥੨॥੨੧॥੮੫॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਈ ॥
 ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਕਰੇ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਹਤ ਕੁਰਬਾਨੁ
 ਜਾਈ ਤੇਰੇ ਨਾਵੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਿਸਿ ਲੈਹਿ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸੋ ਜਸੁ ਤੇਰਾ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤ੍ਰ੍ਹੁ ਭਾਰੇ ਸੁਆਮੀ
 ਮੇਰਾ ॥ ਸਤਾਂ ਭਰਵਾਸਾ ਤੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥ ਮੁਖਿ ਨਿੰਦਕ ਕੈ ਛਾਈ ॥੨॥੨੨॥੮੬॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਗੈ ਸੁਖੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ॥ ਪਾਛੇ ਆਨਦੁ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਤਾ ॥ ਪਰਮੇਸੁਰਿ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਫਿਰਿ
 ਡੋਲਤ ਕਤਹੂ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਸਿਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਹਰਿ ਸਰਕ ਨਿਰਂਤਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सभ जीअ तेरे दिइआला ॥ अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥ अचरजु तेरी वडिआई ॥ नित नानक
 नामु धिआई ॥२॥२३॥८७॥ सोरठि महला ५ ॥ नालि नराइणु मेरै ॥ जमदूतु न आवै नेरै ॥
 कंठि लाइ प्रभ राखै ॥ सतिगुर की सचु साखै ॥१॥ गुरि पूरै पूरी कीती ॥ दुसमन मारि विडारे
 सगले दास कउ सुमति दीती ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभि सगले थान वसाए ॥ सुखि साँदि फिरि आए ॥
 नानक प्रभ सरणाए ॥ जिनि सगले रोग मिटाए ॥२॥२४॥८८॥ सोरठि महला ५ ॥ सरब सुखा का
 दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईਐ ॥ दरਸनु भेटत होत अन्नदा ढूखु गडिआ हरि गाईਐ ॥१॥
 हरि रसु पीवहु भाई ॥ नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ तिसहि परापति
 जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥ नानक की बेन्नती प्रभ जी नामि रहा लिव लाई ॥२॥२५॥८९॥
 सोरठि महला ५ ॥ करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥ जै जै कारु होतु जग भीतरि
 सबदु गुरु रसु चाखै ॥१॥ प्रभ जी तेरी ओट गुसाई ॥ तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्
 धिआई ॥ रहाउ ॥ जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही ॥ सतिगुर चरन लगे भउ
 मिटिआ हरि गुन गाए मन माही ॥२॥ सूख सहज आनन्द घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा ॥ जिणि
 घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥३॥ पूरा गुरु पूरी मति जा की पूरन प्रभ के कामा ॥
 गुर चरनी लागि तरिओ भव सागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥४॥२६॥१०॥ सोरठि महला ५ ॥
 भड़िओ किरपालु दीन दुख भंजनु आपे सभ बिधि थाटी ॥ खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर
 पूरै बेड़ी काटी ॥१॥ मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईਐ ॥ सगल कलेस मिटहि इसु तन ते
 मन चिंदिआ फलु पाईਐ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत जा के सभि कीने प्रभु ऊचा अगम अपारा ॥ साधसंगि
 नानक नामु धिआइआ मुख ऊजल भए दरबारा ॥२॥२७॥११॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरउ
 अपुना साई ॥ दिनसु रैनि सद धिआई ॥ हाथ देइ जिनि राखे ॥ हरि नाम महा रस चाखे ॥१॥

अपने गुर ऊपरि कुरबानु ॥ भए किरपाल पूर्न प्रभ दाते जीअ होए मिहरवान ॥ रहाउ ॥ नानक जन सरनाई ॥ जिनि पूरन पैज रखाई ॥ सगले दूख मिटाई ॥ सुखु भुंचहु मेरे भाई ॥२॥२८॥६२॥
 सोरठि महला ५ ॥ सुनहु बिन्नती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥ राखु पैज नाम अपुने की करन करावनहारे ॥१॥ प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥
 २॥२९॥६३॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे ॥ अंगीकारु कीओ प्रभ अपुने भव निधि पारि उतारे ॥१॥ संतन के कारज सगल सवारे ॥ दीन दिइआल कृपाल कृपा निधि पूर्न खसम हमारे ॥ रहाउ ॥ आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता ॥
 भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥२॥३०॥६४॥

सोरठि महला ६

੧੬ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

रे मन राम सित करि प्रीति ॥ स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥ करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ कालु बिआलु जित परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥ आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥ कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥२॥१॥ सोरठि महला ६ ॥ मन की मन ही माहि रही ॥ ना हरि भजे न तीरथ सेवे छोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूर्न सभ मही ॥ अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥१॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥ नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥ सोरठि महला ६ ॥ मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥ पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥१॥ रहाउ ॥ मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन

ਕਤ ਧਾਇਆ ॥ ਅੰਤਿ ਸੰਗ ਕਾਹੂ ਨਹੀ ਦੀਨਾ ਬਿਰਥਾ ਆਪੁ ਬੰਧਾਇਆ ॥੧॥ ਨਾ ਹਰਿ ਭਜਿਆ ਨ ਗੁਰ ਜਨੁ
 ਸੇਵਿਆ ਨਹ ਉਪਜਿਆ ਕਛੁ ਗਿਆਨਾ ॥ ਘਟ ਹੀ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਤੈਰੈ ਤੈ ਖੋਜਤ ਤਦਿਆਨਾ ॥੨॥ ਬਹੁਤੁ ਜਨਮ
 ਭਰਮਤ ਤੈ ਹਾਰਿਆ ਅਸਥਿਰ ਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥ ਮਾਨਸ ਦੇਹ ਪਾਇ ਪਦ ਹਰਿ ਭਜੁ ਨਾਨਕ ਬਾਤ ਬਤਾਈ
 ॥੩॥੩॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਮਨ ਰੇ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਨਿ ਬਿਚਾਰੇ ॥ ਜਿਹ ਸਿਮਰਤ ਗਨਕਾ ਸੀ ਉਥਰੀ ਤਾ ਕੋ ਜਸੁ
 ਤੁਰ ਧਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਟਲ ਭਿਆਂ ਧੂਅ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਅਝ ਨਿਰਮੈ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥ ਦੁਖ ਹਰਤਾ
 ਇਹ ਬਿਧਿ ਕੋ ਸੁਆਮੀ ਤੈ ਕਾਹੇ ਬਿਸਰਾਇਆ ॥੧॥ ਜਬ ਹੀ ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਗਜ ਗਰਾਹ ਤੇ ਛੂਟਾ
 ॥ ਮਹਮਾ ਨਾਮ ਕਹਾ ਲਤ ਬਰਨਤ ਰਾਮ ਕਹਤ ਬੰਧਨ ਤਿਹ ਤੂਟਾ ॥੨॥ ਅਜਾਮਲੁ ਪਾਪੀ ਜਗੁ ਜਾਨੇ ਨਿਮਖ
 ਮਾਹਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਕਹਤ ਚੇਤ ਚਿੰਤਾਮਨਿ ਤੈ ਭੀ ਉਤਰਹਿ ਪਾਰਾ ॥੩॥੪॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥
 ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਤਨੁ ਉਪਾਤ ਕਰੈ ॥ ਜਾ ਤੇ ਭਗਤਿ ਰਾਮ ਕੀ ਪਾਵੈ ਜਮ ਕੋ ਤਾਸੁ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਤਨੁ ਕਰਮ
 ਬਿਦਿਆ ਕਹੁ ਕੈਸੀ ਧਰਮੁ ਕਤਨੁ ਫੁਨਿ ਕਰੈ ॥ ਕਤਨੁ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰੈ ਭਵ ਸਾਗਰ ਕਤ ਤਰੈ
 ॥੧॥ ਕਲ ਮੈ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਜਾਹਿ ਜਪੈ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥ ਅਤਰ ਧਰਮ ਤਾ ਕੈ ਸਮ ਨਾਹਨਿ ਇਹ ਬਿਧਿ
 ਬੇਦੁ ਬਤਾਵੈ ॥੨॥ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਰਹਤ ਸਦਾ ਨਿਰਲੇਪੀ ਜਾ ਕਤ ਕਹਤ ਗੁਸਾਈ ॥ ਸੋ ਤੁਮ ਹੀ ਮਹਿ ਬਸੈ ਨਿਰੰਤਰਿ
 ਨਾਨਕ ਦਰਪਨਿ ਨਿਆਈ ॥੩॥੫॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਮਾਈ ਮੈ ਕਿਹਿ ਬਿਧਿ ਲਖਤ ਗੁਸਾਈ ॥ ਮਹਾ ਮੋਹ
 ਅਗਿਆਨਿ ਤਿਮਰਿ ਮੋ ਮਨੁ ਰਹਿਆਂ ਤੁਰਯਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਗਲ ਜਨਮ ਭਰਮ ਹੀ ਭਰਮ ਖੋਇਆ ਨਹ
 ਅਸਥਿਰੁ ਮਤਿ ਪਾਈ ॥ ਬਿਖਿਆਸਕਤ ਰਹਿਆ ਨਿਸ ਬਾਸੁਰ ਨਹ ਛੂਟੀ ਅਧਮਾਈ ॥੧॥ ਸਾਧਸੰਗੁ ਕਬਹੂ
 ਨਹੀ ਕੀਨਾ ਨਹ ਕੀਰਤਿ ਪ੍ਰਭ ਗਾਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਮੈ ਨਾਹਿ ਕੋਊ ਗੁਨੁ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਸਰਨਾਈ ॥੨॥੬॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਮਾਈ ਮਨੁ ਮੇਰੋ ਬਸਿ ਨਾਹਿ ॥ ਨਿਸ ਬਾਸੁਰ ਬਿਖਿਅਨ ਕਤ ਧਾਵਤ ਕਿਹਿ ਬਿਧਿ ਰੋਕਤ
 ਤਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮੂਤਿ ਕੇ ਮਤ ਸੁਨਿ ਨਿਮਖ ਨ ਹੀਏ ਬਸਾਵੈ ॥ ਪਰ ਧਨ ਪਰ ਦਾਰਾ ਸਿਤ
 ਰਚਿਆ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਸਿਰਾਵੈ ॥੧॥ ਮਦਿ ਮਾਇਆ ਕੈ ਭਿਆਂ ਬਾਵਰੋ ਸੂਜਿਤ ਨਹ ਕਛੁ ਗਿਆਨਾ ॥ ਘਟ ਹੀ

ਭੀਤਰਿ ਬਸਤ ਨਿਰੰਜਨੁ ਤਾ ਕੋ ਮਰਮੁ ਨ ਜਾਨਾ ॥੨॥ ਜਬ ਹੀ ਸਰਨਿ ਸਾਧ ਕੀ ਆਇਆ ਦੁਰਮਤਿ ਸਗਲ
 ਬਿਨਾਸੀ ॥ ਤਥ ਨਾਨਕ ਚੇਤਿਆ ਚਿੰਤਾਮਨਿ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥੩॥੭॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਰੇ ਨਰ ਇਹ
 ਸਾਚੀ ਜੀਅ ਧਾਰਿ ॥ ਸਗਲ ਜਗਤੁ ਹੈ ਜੈਸੇ ਸੁਪਨਾ ਬਿਨਸਤ ਲਗਤ ਨ ਬਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਰੂ ਭੀਤਿ
 ਬਨਾਈ ਰਚਿ ਪਚਿ ਰਹਤ ਨਹੀਂ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ॥ ਤੈਸੇ ਹੀ ਇਹ ਸੁਖ ਮਾਇਆ ਕੇ ਉਰਝਿਆ ਕਹਾ ਗਵਾਰ ॥੧॥
 ਅਜਹੂ ਸਮਝਿ ਕਛੁ ਬਿਗਰਿਆ ਨਾਹਿਨਿ ਭਜਿ ਲੇ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਜ ਮਤੁ ਸਾਧਨ ਕਤ ਭਾਖਿਆ
 ਤੋਹਿ ਪੁਕਾਰਿ ॥੨॥੮॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਇਹ ਜਗਿ ਮੀਤੁ ਨ ਦੇਖਿਆ ਕੌਈ ॥ ਸਗਲ ਜਗਤੁ ਅਪਨੈ ਸੁਖਿ
 ਲਾਗਿਆ ਦੁਖ ਮੈ ਸੰਗਿ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਾਰਾ ਮੀਤ ਪ੍ਰਤ ਸਨਬੰਧੀ ਸਗਰੇ ਧਨ ਸਿਤ ਲਾਗੇ ॥ ਜਬ ਹੀ
 ਨਿਰਧਨ ਦੇਖਿਆ ਨਰ ਕਤ ਸੰਗੁ ਛਾਡਿ ਸਭ ਭਾਗੇ ॥੧॥ ਕਹਵਤ ਕਹਾ ਧਿਆ ਮਨ ਬਤਰੇ ਕਤ ਇਨ ਸਿਤ ਨੇਹੁ
 ਲਗਾਇਆ ॥ ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਸਕਲ ਭੈ ਭੰਜਨ ਜਸੁ ਤਾ ਕੀ ਬਿਸਰਾਇਆ ॥੨॥ ਸੁਆਨ ਪ੍ਰਤ ਜਿਤ ਭਇਆ ਨ
 ਸੂਧਤ ਬਹੁਤੁ ਜਤਨੁ ਮੈ ਕੀਨਤ ॥ ਨਾਨਕ ਲਾਜ ਬਿਰਦ ਕੀ ਰਾਖਹੁ ਨਾਮੁ ਤੁਹਾਰਤ ਲੀਨਤ ॥੩॥੯॥
 ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਮਨ ਰੇ ਗਹਿਆ ਨ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੁ ॥ ਕਹਾ ਭਇਆ ਜਤ ਮੂੜੁ ਮੁਡਾਇਆ ਭਗਵਤ ਕੀਨੋ ਭੇਸੁ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਚ ਛਾਡਿ ਕੈ ਝੂਠਹ ਲਾਗਿਆ ਜਨਮੁ ਅਕਾਰਥੁ ਖੋਇਆ ॥ ਕਰਿ ਪਰਧਾਂਚ ਤਦਰ ਨਿਜ ਪੋਖਿਆ
 ਪਸੁ ਕੀ ਨਿਆਈ ਸੋਇਆ ॥੧॥ ਰਾਮ ਭਜਨ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹੀਂ ਜਾਨੀ ਮਾਇਆ ਹਾਥਿ ਬਿਕਾਨਾ ॥ ਉਰਝਿ ਰਹਿਆ
 ਬਿਖਿਅਨ ਸੰਗਿ ਬਤਰਾ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਬਿਸਰਾਨਾ ॥੨॥ ਰਹਿਆ ਅਚੇਤੁ ਨ ਚੇਤਿਆ ਗੋਬਿੰਦ ਬਿਰਥਾ ਅਤਥ
 ਸਿਰਾਨੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਪਛਾਨਤ ਭੂਲੇ ਸਦਾ ਪਰਾਨੀ ॥੩॥੧੦॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਜੋ ਨਰੁ ਦੁਖ
 ਮੈ ਦੁਖੁ ਨਹੀਂ ਮਾਨੈ ॥ ਸੁਖ ਸਨੇਹੁ ਅਰੁ ਭੈ ਨਹੀਂ ਜਾ ਕੈ ਕੰਚਨ ਮਾਟੀ ਮਾਨੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਹ ਨਿੰਦਿਆ ਨਹ
 ਤਸਤਤਿ ਜਾ ਕੈ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਅਭਿਮਾਨਾ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ ਰਹੈ ਨਿਆਰਤ ਨਾਹਿ ਮਾਨ ਅਪਮਾਨਾ ॥੧॥ ਆਸਾ
 ਮਨਸਾ ਸਗਲ ਤਿਆਗੈ ਜਗ ਤੇ ਰਹੈ ਨਿਰਾਸਾ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜਿਹ ਪਰਸੈ ਨਾਹਨਿ ਤਿਹ ਘਟਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਵਾਸਾ
 ॥੨॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਜਿਹ ਨਰ ਕਤ ਕੀਨੀ ਤਿਹ ਇਹ ਜੁਗਤਿ ਪਛਾਨੀ ॥ ਨਾਨਕ ਲੀਨ ਭਇਆ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿਤ

ਜਿਤ ਪਾਨੀ ਸੰਗਿ ਪਾਨੀ ॥੩॥੧੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਜਾਨਿ ਲੇਹੁ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਅਪਨੇ ਸੁਖ ਸਿਤ
ਹੀ ਜਗੁ ਫਾੱਧਿਆਂ ਕੋ ਕਾਹੂ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੁਖ ਮੈ ਆਨਿ ਬਹੁਤੁ ਮਿਲਿ ਬੈਠਤ ਰਹਤ ਚਹੂ ਦਿਸਿ ਘੈਰੈ
॥ ਬਿਪਤਿ ਪਰੀ ਸਭ ਹੀ ਸੰਗੁ ਛਾਡਿਤ ਕੋਊ ਨ ਆਵਤ ਨੈਰੈ ॥੧॥ ਘਰ ਕੀ ਨਾਰਿ ਬਹੁਤੁ ਹਿਤੁ ਜਾ ਸਿਤ
ਸਦਾ ਰਹਤ ਸੰਗ ਲਾਗੀ ॥ ਜਬ ਹੀ ਛਾਸ ਤਜੀ ਇਹ ਕਾਂਡਿਆ ਪ੍ਰੇਤ ਪ੍ਰੇਤ ਕਰਿ ਭਾਗੀ ॥੨॥ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕੋ
ਬਿਤਹਾਰੁ ਬਨਿਆਂ ਹੈ ਜਾ ਸਿਤ ਨੇਹੁ ਲਗਾਇਆਂ ॥ ਅੰਤ ਬਾਰ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਜੀ ਕੋਊ ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਆਂ
॥੩॥੧੨॥੧੩੬॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਚਤੁਤੁਕੀ

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੁਖਿਧਾ ਨ ਪੜ੍ਹ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਹੋਰੁ ਨ ਪ੍ਰੂਜਤ ਮੱਡੈ ਮਸਾਣਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ਤੂਸਨਾ ਰਾਚਿ ਨ ਪਰ ਘਰਿ ਜਾਵਾ ਤੂਸਨਾ
ਨਾਮਿ ਬੁੜਾਈ ॥ ਘਰ ਭੀਤਰਿ ਘਰੁ ਗੁਰੁ ਦਿਖਾਇਆ ਸਹਜਿ ਰਤੇ ਮਨ ਭਾਈ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਦਾਨਾ ਆਪੇ ਬੀਨਾ ਤੂ
ਦੇਵਹਿ ਮਤਿ ਸਾਈ ॥੧॥ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ਰਤਤ ਬੈਰਾਗੀ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ
ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਬਾਣੀ ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਸੰਖ ਬੈਰਾਗੀ ਕਹਹਿ ਬੈਰਾਗ ਸੋ ਬੈਰਾਗੀ ਜਿ
ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ॥ ਹਿਰਦੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਭੈ ਰਚਿਆ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥ ਏਕੋ ਚੇਤੈ ਮਨੂਆ ਨ ਡੋਲੈ ਧਾਵਤੁ ਵਰਜਿ
ਰਹਾਵੈ ॥ ਸਹਜੇ ਮਾਤਾ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਸਾਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੨॥ ਮਨੂਆ ਪਤਣੁ ਬਿੰਦੁ ਸੁਖਵਾਸੀ ਨਾਮਿ ਵਸੈ
ਸੁਖ ਭਾਈ ॥ ਜਿਹਬਾ ਨੇਤ੍ਰ ਸੋਤ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਜਲਿ ਬੂੜੀ ਤੁੜਾਹਿ ਬੁੜਾਈ ॥ ਆਸ ਨਿਰਾਸ ਰਹੈ ਬੈਰਾਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ
ਤਾੜੀ ਲਾਈ ॥ ਮਿਖਿਆ ਨਾਮਿ ਰਜੇ ਸੰਤੋਖੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਹਜਿ ਪੀਆਈ ॥੩॥ ਦੁਖਿਧਾ ਵਿਚਿ ਬੈਰਾਗੁ ਨ ਹੋਵੀ
ਜਬ ਲਗੁ ਦੂਜੀ ਰਾਈ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਤੇਰਾ ਤੂ ਏਕੋ ਦਾਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਭਾਈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਜੰਤ ਦੁਖਿ ਸਦਾ
ਨਿਵਾਸੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਅਪਰ ਅਪਾਰ ਅਗੰਮ ਅਗੋਚਰ ਕਹਣੈ ਕੀਮ ਨ ਪਾਈ ॥੪॥ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧਿ
ਮਹਾ ਪਰਮਾਰਥੁ ਤੀਨਿ ਭਵਣ ਪਤਿ ਨਾਮਂ ॥ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਜੀਆ ਜਗਿ ਜੋਨੀ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ ਸਹਾਮਂ ॥ ਕਰਮ
ਸੁਕਰਮ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਆਪੇ ਭਗਤਿ ਦੂਝਾਮਂ ॥ ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਜ੍ਰਥਿ ਲਹੈ ਭੈ ਮਾਨਂ ਆਪੇ ਗਿਆਨੁ ਅਗਾਮਂ ॥੫॥

ਜਿਨ ਚਾਖਿਆ ਸੇਈ ਸਾਦੁ ਜਾਣਨਿ ਜਿਤ ਗੁਂਗੇ ਮਿਠਿਆਈ ॥ ਅਕਥੈ ਕਾ ਕਿਆ ਕਥੀਐ ਭਾਈ ਚਾਲਤ ਸਦਾ
 ਰਿਆਈ ॥ ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਮੇਲੇ ਤਾ ਮਤਿ ਹੋਵੈ ਨਿਗੁਰੇ ਮਤਿ ਨ ਕਾਈ ॥ ਜਿਤ ਚਲਾਏ ਤਿਉ ਚਾਲਹ ਭਾਈ ਹੋਰ ਕਿਆ
 ਕੋ ਕਰੇ ਚਤੁਰਾਈ ॥੬॥ ਇਕਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ਇਕਿ ਭਗਤੀ ਰਾਤੇ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਜਿਤੁ ਤੁਧੁ ਲਾਏ ਤੇਹਾ
 ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਤ੍ਰੂ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਵਣਹਾਰਾ ॥ ਸੇਵਾ ਕਰੀ ਜੇ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ਅਪਣਾ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਮਿਲਿਐ ਕਿਰਪਾ ਕੀਨੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥੭॥ ਗਗਨਤਰਿ ਵਾਸਿਆ ਗੁਣ ਪਰਗਾਸਿਆ ਗੁਣ ਮਹਿ
 ਗਿਆਨ ਧਿਆਨਾਂ ॥ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਕਹੈ ਕਹਾਵੈ ਤਤੋ ਤਤੁ ਵਖਾਨਾਂ ॥ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਪੀਰਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ਬਿਨੁ
 ਸਬਦੈ ਜਗੁ ਬਤਰਾਨਾਂ ॥ ਪੂਰਾ ਬੈਰਾਗੀ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਗੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਮਾਨਾਂ ॥੮॥੧॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧
 ਤਿਤੁਕੀ ॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਬੰਧਨੀ ਭਾਈ ਕਰਮ ਧਰਮ ਬੰਧਕਾਰੀ ॥ ਪਾਪਿ ਪੁੰਨਿ ਜਗੁ ਜਾਇਆ ਭਾਈ ਬਿਨਸੈ
 ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰੀ ॥ ਇਹ ਮਾਇਆ ਜਗਿ ਮੋਹਣੀ ਭਾਈ ਕਰਮ ਸਭੇ ਵੇਕਾਰੀ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਪੰਡਿਤ ਕਰਮਾ ਕਾਰੀ ॥
 ਜਿਤੁ ਕਰਮਿ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਸੁ ਆਤਮ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਸਤੁ ਬੇਦੁ ਬਕੈ ਖੜ੍ਹੋ ਭਾਈ ਕਰਮ ਕਰਹੁ
 ਸੰਸਾਰੀ ॥ ਪਾਖਂਡਿ ਮੈਲੁ ਨ ਚੂਕੈ ਭਾਈ ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਵਿਕਾਰੀ ॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਢੂਬੀ ਮਾਕੁਰੀ ਭਾਈ ਊੰਡੀ ਸਿਰ
 ਕੈ ਭਾਰੀ ॥੨॥ ਦੁਰਮਤਿ ਘਣੀ ਵਿਗੁਤੀ ਭਾਈ ਦ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਈਐ ਭਾਈ
 ਬਿਨੁ ਨਾਮੈ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਭਾਈ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਰਹਾਈ ॥੩॥ ਸਾਚੁ ਸਹਜੁ
 ਗੁਰ ਤੇ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਾਚਿ ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੋ ਬੂੰਝੈ ਭਾਈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਮਗੁ ਨ ਪਾਈ ॥ ਜਿਸੁ
 ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਕਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਭਾਈ ਕੂੰਡੁ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਈ ॥੪॥ ਪੰਡਿਤ ਦਹੀ ਵਿਲੋਈਐ ਭਾਈ ਵਿਚਹੁ
 ਨਿਕਲੈ ਤਥੁ ॥ ਜਲੁ ਮਥੀਐ ਜਲੁ ਦੇਖੀਐ ਭਾਈ ਇਹੁ ਜਗੁ ਏਹਾ ਵਥੁ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਭਰਮਿ ਵਿਗੁਚੀਐ ਭਾਈ ਘਟਿ
 ਘਟਿ ਦੇਤ ਅਲਖੁ ॥੫॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਤਾਗੇ ਸੂਤ ਕੋ ਭਾਈ ਦਹ ਦਿਸ ਬਾਧੋ ਮਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗਾਠਿ ਨ ਛੂਟੈ
 ਭਾਈ ਥਾਕੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਭਾਈ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਇ ॥੬॥ ਗੁਰ
 ਮਿਲਿਐ ਭਤ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭਾਈ ਭੈ ਮਰਣਾ ਸਚੁ ਲੇਖੁ ॥ ਮਜਨੁ ਦਾਨੁ ਚੰਗਿਆਈਆ ਭਾਈ ਦਰਗਹ ਨਾਮੁ ਵਿਸੇਖੁ

॥ ਗੁਰ ਅੰਕਸੁ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਇਆ ਭਾਈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਚੂਕਾ ਭੇਖੁ ॥੭॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਹਾਟੁ ਸਰਾਫ ਕੋ ਭਾਈ
 ਕਖਰੁ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਇਹੁ ਕਖਰੁ ਵਾਪਾਰੀ ਸੋ ਦੂਡੈ ਭਾਈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਕਰੇ ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਧਨੁ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਨਕਾ
 ਭਾਈ ਮੇਲਿ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰੁ ॥੮॥੨॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨ੍ਹ ਕੇ ਸਾਥ ਤਰੇ ॥
 ਤਿਨਾ ਠਾਕ ਨ ਪਾਈਐ ਪਿਆਰੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸਨ ਹਰੇ ॥ ਬ੍ਰੂਡੇ ਭਾਰੇ ਭੈ ਬਿਨਾ ਪਿਆਰੇ ਤਾਰੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੯॥
 ਭੀ ਤੂਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ ਪਿਆਰੇ ਭੀ ਤੇਰੀ ਸਾਲਾਹ ॥ ਵਿਣੁ ਬੋਹਿਥ ਭੈ ਢੁਕੀਐ ਪਿਆਰੇ ਕੰਧੀ ਪਾਇ ਕਹਾਹ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਲਾਹੀ ਸਾਲਾਹਣਾ ਪਿਆਰੇ ਢੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਸਾਲਾਹਨਿ ਸੇ ਭਲੇ ਪਿਆਰੇ ਸਬਦਿ
 ਰਤੇ ਰੰਗੁ ਹੋਇ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਜੇ ਮਿਲੈ ਪਿਆਰੇ ਰਸੁ ਲੈ ਤਤੁ ਵਿਲੋਇ ॥੨॥ ਪਤਿ ਪਰਵਾਨਾ ਸਾਚ ਕਾ
 ਪਿਆਰੇ ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਆਇਆ ਲਿਖਿ ਲੈ ਜਾਵਣਾ ਪਿਆਰੇ ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੁ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਹੁਕਮੁ
 ਨ ਬੂੜੀਐ ਪਿਆਰੇ ਸਾਚੇ ਸਾਚਾ ਤਾਣੁ ॥੩॥ ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਨਿੰਮਿਆ ਪਿਆਰੇ ਹੁਕਮੈ ਤੁਦਰ ਮੜਾਰਿ ॥ ਹੁਕਮੈ
 ਅੰਦਰਿ ਜਨਮਿਆ ਪਿਆਰੇ ਊਥਤ ਸਿਰ ਕੈ ਭਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਰਗਹ ਜਾਣੀਐ ਪਿਆਰੇ ਚਲੈ ਕਾਰਜ ਸਾਰਿ ॥੪॥
 ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਆਇਆ ਪਿਆਰੇ ਹੁਕਮੇ ਜਾਦੋ ਜਾਇ ॥ ਹੁਕਮੇ ਬੰਨਿ ਚਲਾਈਐ ਪਿਆਰੇ ਮਨਮੁਖਿ ਲਹੈ ਸਜਾਇ
 ॥ ਹੁਕਮੇ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਪਿਆਰੇ ਦਰਗਹ ਪੈਥਾ ਜਾਇ ॥੫॥ ਹੁਕਮੇ ਗਣਤ ਗਣਾਈਐ ਪਿਆਰੇ ਹੁਕਮੇ
 ਹਤਮੈ ਦੌਇ ॥ ਹੁਕਮੇ ਭਵੈ ਭਵਾਈਐ ਪਿਆਰੇ ਅਵਗਣਿ ਮੁਠੀ ਰੋਇ ॥ ਹੁਕਮੁ ਸਿਜਾਪੈ ਸਾਹ ਕਾ ਪਿਆਰੇ ਸਚੁ
 ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਹੋਇ ॥੬॥ ਆਖਣਿ ਅਤਖਾ ਆਖੀਐ ਪਿਆਰੇ ਕਿਤ ਸੁਣੀਐ ਸਚੁ ਨਾਤ ॥ ਜਿਨੀ ਸੋ
 ਸਾਲਾਹਿਆ ਪਿਆਰੇ ਹਤ ਤਿਨ੍ਹ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਨਾਤ ਮਿਲੈ ਸੰਤੋਖੀਆਁ ਪਿਆਰੇ ਨਦਰੀ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਤ
 ॥੭॥ ਕਾਇਆ ਕਾਗਦੁ ਜੇ ਥੀਐ ਪਿਆਰੇ ਮਨੁ ਮਸਵਾਣੀ ਧਾਰਿ ॥ ਲਲਤਾ ਲੇਖਣਿ ਸਚ ਕੀ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ
 ਗੁਣ ਲਿਖਹੁ ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਧਨੁ ਲੇਖਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਪਿਆਰੇ ਸਾਚੁ ਲਿਖੈ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥੮॥੩॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧
 ਪਹਿਲਾ ਦੁਤੁਕੀ ॥ ਤੂ ਗੁਣਦਾਤੈ ਨਿਰਮਲੇ ਭਾਈ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾ ਮਨੁ ਹੋਇ ॥ ਹਮ ਅਪਰਾਧੀ ਨਿਗੁਣੇ ਭਾਈ
 ਤੁੜ੍ਹ ਹੀ ਤੇ ਗੁਣੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਤੂ ਕਰਤਾ ਕਰਿ ਵੇਖੁ ॥ ਹਤ ਪਾਪੀ ਪਾਖੰਡੀਆ ਭਾਈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮ

ਵਿਸੇਖੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਮੋਹਿਆ ਭਾਈ ਚਤੁਰਾਈ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥ ਚਿਤ ਮਹਿ ਠਾਕੁਰੁ ਸਚਿ ਵਸੈ
 ਭਾਈ ਜੇ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਸਮੋਇ ॥੨॥ ਰੂੜ੍ਹੀ ਰੂੜ੍ਹੀ ਆਖੀਐ ਭਾਈ ਰੂੜ੍ਹੀ ਲਾਲ ਚਲੂਲੁ ॥ ਜੇ ਮਨੁ ਹਰਿ ਸਿਉ ਬੈਰਾਗੀਐ
 ਭਾਈ ਦਰਿ ਘਰਿ ਸਾਚੁ ਅਭੂਲੁ ॥੩॥ ਪਾਤਾਲੀ ਆਕਾਸਿ ਤੂ ਭਾਈ ਘਰਿ ਘਰਿ ਤੂ ਗੁਣ ਗਿਆਨੁ ॥ ਗੁਰ
 ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਭਾਈ ਚੂਕਾ ਮਨਹੁ ਗੁਮਾਨੁ ॥੪॥ ਜਲਿ ਮਲਿ ਕਾਇਆ ਮਾਜੀਐ ਭਾਈ ਭੀ ਮੈਲਾ ਤਨੁ
 ਹੋਇ ॥ ਗਿਆਨਿ ਮਹਾ ਰਸਿ ਨਾਈਐ ਭਾਈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੫॥ ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਪ੍ਰਯੀਐ ਭਾਈ ਕਿਆ
 ਮਾਗਤ ਕਿਆ ਦੇਹਿ ॥ ਪਾਹਣੁ ਨੀਰਿ ਪਖਾਲੀਐ ਭਾਈ ਜਲ ਮਹਿ ਕੂਡਹਿ ਤੇਹਿ ॥੬॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਅਲਖੁ ਨ
 ਲਖੀਐ ਭਾਈ ਜਗੁ ਕੂਡੈ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਹਾਥਿ ਵਡਾਈਆ ਭਾਈ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥੭॥ ਬੰਝਾਰਿ
 ਕੋਲੈ ਮੀਠੁਲੀ ਭਾਈ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਪਿਰ ਭਾਇ ॥ ਬਿਰਹੈ ਕੇਥੀ ਸਚਿ ਵਸੀ ਭਾਈ ਅਧਿਕ ਰਹੀ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੮॥
 ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਆਪਣਾ ਭਾਈ ਗੁਰ ਤੇ ਬੁੜੈ ਸੁਜਾਨੁ ॥ ਜੋ ਕੀਥੇ ਸੇ ਊਕਰੇ ਭਾਈ ਸਬਦੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਨੁ ॥੯॥
 ਈਧਨੁ ਅਧਿਕ ਸਕੇਲੀਐ ਭਾਈ ਪਾਵਕੁ ਰੰਚਕ ਪਾਇ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਨਾਮੁ ਰਿਟੈ ਵਸੈ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਮਿਲਣੁ
 ਸੁਭਾਇ ॥੧੦॥੮॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ਤਿਤੁਕੀ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਭਗਤਾ ਦੀ ਸਦਾ ਤੂ ਰਖਦਾ ਹਰਿ ਜੀਤ ਧੁਰਿ ਤੂ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ॥ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਜਨ ਤੁਧੁ ਰਾਖਿ ਲਏ ਹਰਿ
 ਜੀਤ ਹਰਣਾਖਸੁ ਮਾਰਿ ਪਚਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਾ ਨੋ ਪਰਤੀਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਜੀਤ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥੧॥
 ਹਰਿ ਜੀ ਏਹ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਭਗਤਾ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖੁ ਤੂ ਸੁਆਮੀ ਭਗਤ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭਗਤਾ ਨੋ
 ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਕਾਲੁ ਨ ਨੈਡੈ ਜਾਈ ॥ ਕੇਵਲ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਨਾਮੇ ਹੀ ਮੁਕਤਿ ਪਾਈ ॥ ਰਿਧਿ
 ਸਿਧਿ ਸਭ ਭਗਤਾ ਚਰਣੀ ਲਾਗੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਈ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਆਕੀ ਅੰਤਰਿ
 ਲੋਭ ਸੁਆਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਸਬਦੁ ਨ ਭੇਦਿਓ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨ ਲਾਗਾ ਭਾਤ ॥ ਕੂੜ ਕਪਟ ਪਾਜੁ ਲਹਿ ਜਾਸੀ
 ਮਨਮੁਖ ਫੀਕਾ ਅਲਾਤ ॥੩॥ ਭਗਤਾ ਵਿਚਿ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਭਗਤੀ ਹੂ ਤੂ ਜਾਤਾ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਸਭ

लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ॥ हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥४॥
 अचिंत कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ॥ गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज
 सवारणहारा ॥ ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है रखवारा ॥५॥ बिनु सतिगुर सेवे किनै
 न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई ॥ आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई ॥
 गुरमुखि होवै सु अंमृतु पीवै सहजे साचि समाई ॥६॥ बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम
 करै अधिकाई ॥ वेद पढ़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥ सचा सतिगुरु साची जिसु
 बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥७॥ जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥
 ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा ॥ नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ
 उरि धारा ॥८॥१॥ सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा
 लाइ ॥ सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥२॥ हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ
 ॥ गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ कउण कउण अपराधी
 बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि ॥ भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेडै चाड़ि ॥२॥
 मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ॥ आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति
 मिलाइ ॥३॥ हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ॥ नामु निधानु जिनि
 दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥४॥ गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥
 सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥५॥ गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी
 सचु सारु ॥ प्रेम पदारथु पाईअै भाई सचु नामु आधारु ॥६॥ जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई
 तिन कै हउ लागउ पाइ ॥ जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥७॥ सचु बाणी
 सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ ॥ नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै

ਕੋਇ ॥੮॥੨॥ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਬਦੇ ਜਾਪਦਾ ਭਾਈ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਸਦਾ ਸੁਖੁ
ਸੋਹਾਗਣੀ ਭਾਈ ਅਨਦਿਨੁ ਰਤੀਆ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਰੰਗੁ ਚੜਾਇ ॥ ਗਾਵਹੁ ਗਾਵਹੁ ਰੰਗਿ
ਰਾਤਿਹੋ ਭਾਈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਭਾਈ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
ਸਦਾ ਸਹਜੁ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਨ ਲਗਈ ਭਾਈ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕਥੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੨॥ ਪਿਰ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਣਈ ਭਾਈ
ਸਾ ਕੁਲਖਣੀ ਕੁਨਾਰਿ ॥ ਮਨਹਠਿ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਭਾਈ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੂਡਿਆਰਿ ॥੩॥ ਸੇ ਗਾਵਹਿ ਜਿਨ
ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਹੈ ਭਾਈ ਭਾਇ ਸਚੈ ਬੈਰਾਗੁ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਤੇ ਗੁਣ ਰਖਹਿ ਭਾਈ ਨਿਰਭਤ ਗੁਰ ਲਿਵ ਲਾਗੁ
॥੪॥ ਸਭਨਾ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਦਾ ਭਾਈ ਸੋ ਸੇਵਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ਭਾਈ ਜਿਸ ਟੀ
ਕਡੀ ਹੈ ਦਾਤਿ ॥੫॥ ਮਨਮੁਖਿ ਮੈਲੀ ਡੁੰਮਣੀ ਭਾਈ ਦਰਗਹ ਨਾਹੀ ਥਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਤ ਗੁਣ ਰਖੈ ਭਾਈ
ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਚਿ ਸਮਾਤ ॥੬॥ ਏਤੁ ਜਨਮਿ ਹਰਿ ਨ ਚੇਤਿਓ ਭਾਈ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸੀ ਜਾਇ ॥ ਕਿਡੀ ਪਕੰਦੀ
ਮੁਹਾਇਓਨੁ ਭਾਈ ਬਿਖਿਆ ਨੋ ਲੋਭਾਇ ॥੭॥ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਹਿ ਸੁਖਿ ਕਥਹਿ ਭਾਈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਸਾਂਤਿ ਸਰੀਰ ॥
ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤ੍ਰਾਂ ਭਾਈ ਅਪਰੰਪਰ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰ ॥੮॥੩॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਭੁ ਜਗੁ ਜਿਨਹਿ ਉਪਾਇਆ ਭਾਈ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਜਿਨਿ ਸਾਜਿਆ ਭਾਈ ਦੇ ਕਰਿ
ਅਪਣੀ ਵਥੁ ॥ ਕਿਨਿ ਕਹੀਐ ਕਿਤ ਦੇਖੀਐ ਭਾਈ ਕਰਤਾ ਏਕੁ ਅਕਥੁ ॥ ਗੁਰੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਸਲਾਹੀਐ ਭਾਈ ਜਿਸ ਤੇ
ਜਾਪੈ ਤਥੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਭਗਵਂਤਾ ॥ ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਦੇਇ ਜਨ ਅਪਨੇ ਦੂਖ ਦਰਦ ਕਾ ਛੁਤਾ
॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾ ਕੈ ਘਰਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਭਾਈ ਨਤ ਨਿਧਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਭਾਈ ਊਚਾ
ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਦਾ ਭਾਈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਕਰਦਾ ਸਾਰ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟੀਐ ਭਾਈ
ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰ ॥੨॥ ਸਚੇ ਚਰਣ ਸਰੇਵੀਅਹਿ ਭਾਈ ਭਰਮੁ ਭਤ ਹੋਵੈ ਨਾਸੁ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਂਤ ਸਭਾ ਮਨੁ
ਮਾਂਜੀਐ ਭਾਈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਮਿਟੈ ਅਂਧੇਰਾ ਅਗਿਆਨਤਾ ਭਾਈ ਕਮਲ ਹੋਵੈ ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ

सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥३॥ मेरा तेरा छोड़ीअै भाई होईअै सभ की धूरि ॥ घटि
 घटि ब्रह्मु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रह्मु भाई तितु दिनि मरीअै झूरि
 ॥ करन करावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ॥४॥ प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु
 ॥ तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु ॥ गुरमुखि कमलु प्रगासीअै भाई रिदै होवै
 परगासु ॥ प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ॥५॥ गुरि पूरै संतोखिआ भाई
 अहिनिसि लागा भाउ ॥ रसना रामु खै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥ करनी सुणि सुणि जीविआ
 भाई निहचलु पाइआ थाउ ॥ जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ॥६॥ बहु गुण
 मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥ ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ ॥
 रिजकु संबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जा का नाउ ॥ जिसु गुरु साचा भेटीअै भाई पूरा तिसु करमाउ
 ॥७॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवीअै भाई सरब कला भरपूरि ॥ सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा
 हजूरि ॥ साधू संगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ भरपूरि ॥ जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित
 नित मरदे झूरि ॥८॥ अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु ॥ करि किरपा नदरि
 निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु ॥ मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥ नानक
 तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥९॥१॥ सोरठि महला ੫ ॥ मात गरभ दुख सागरो
 पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ ॥ बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ ॥
 जिस नो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरु मिलाइआ ॥ सो आराधे सासि सासि पिआरे राम
 नाम लिव लाइआ ॥१॥ मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥ तुधु बिनु अवरु न
 करनहारु पिआरे अंतरजामी एक ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ
 ॥ साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ ॥ जिन भेटै पूरा सतिगुरू पिआरे से लागे

ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥ ਤਿਨਾ ਪਿਛੈ ਛੁਟੀਐ ਪਿਆਰੇ ਜੋ ਸਾਚੀ ਸਰਣਾਇ ॥੨॥ ਮਿਠਾ ਕਰਿ ਕੈ ਖਾਇਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨਿ
 ਤਨਿ ਕੀਤਾ ਰੋਗੁ ॥ ਕਤੜਾ ਹੋਇ ਪਤਿਸਟਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਸ ਤੇ ਉਪਜਿਆ ਸੋਗੁ ॥ ਭੋਗ ਭੁੰਚਾਇ ਭੁਲਾਇਅਨੁ
 ਪਿਆਰੇ ਤਤਰੈ ਨਹੀ ਵਿਜੋਗੁ ॥ ਜੋ ਗੁਰ ਮੇਲਿ ਉਧਾਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨ ਧੁਰੇ ਪਇਆ ਸੰਜੋਗੁ ॥੩॥ ਮਾਇਆ
 ਲਾਲਚਿ ਅਟਿਆ ਪਿਆਰੇ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਹਿ ਮੂਲਿ ॥ ਜਿਨ ਤ੍ਰ ਵਿਸਰਹਿ ਪਾਰਖਰਮ ਸੁਆਮੀ ਸੇ ਤਨ ਹੋਏ ਥ੍ਰਿ
 ॥ ਬਿਲਲਾਟ ਕਰਹਿ ਬਹੁਤੇਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਤਰੈ ਨਾਹੀ ਸੂਲੁ ॥ ਜੋ ਗੁਰ ਮੇਲਿ ਸਵਾਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨ ਕਾ
 ਰਹਿਆ ਮੂਲੁ ॥੪॥ ਸਾਕਤ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਝੰਈ ਪਿਆਰੇ ਜੇ ਕਾ ਪਾਰਿ ਵਸਾਇ ॥ ਜਿਸੁ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਵਿਸਰੈ
 ਪਿਆਰੇ ਸੂਦੁ ਸੁਹਿ ਕਾਲੈ ਤਠਿ ਜਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਫੌਈ ਨਹ ਮਿਲੈ ਪਿਆਰੇ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥ ਜੋ ਗੁਰ
 ਮੇਲਿ ਸਵਾਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨਾ ਪੂਰੀ ਪਾਇ ॥੫॥ ਸੰਜਮ ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਪਿਆਰੇ ਇਕ ਨ ਚਲੀ ਨਾਲਿ ॥
 ਜੋ ਬੇਮੁਖ ਗੋਬਿੰਦ ਤੇ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨ ਕੁਲਿ ਲਾਗੈ ਗਾਲਿ ॥ ਹੋਦੀ ਵਸਤੁ ਨ ਜਾਤੀਆ ਪਿਆਰੇ ਕੂਡੁ ਨ ਚਲੀ ਨਾਲਿ
 ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਜਿਨਾ ਮਿਲਾਇਓਨੁ ਪਿਆਰੇ ਸਾਚਾ ਨਾਸੁ ਸਮਾਲਿ ॥੬॥ ਸਤੁ ਸਤੋਖੁ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਪਿਆਰੇ
 ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਗੁਣ ਖੈ ਪਿਆਰੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੂਰ ਭਰੇ ॥ ਦੁਖ ਸਾਗਰੁ ਤਿਨ ਲਮਘਿਆ
 ਪਿਆਰੇ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ॥ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਪਿਆਰੇ ਸੇਈ ਸਦਾ ਖਰੇ ॥੭॥ ਸੰਮ੍ਰਥ ਪੁਰਖੁ
 ਦਿਇਆਲ ਦੇਤ ਪਿਆਰੇ ਭਗਤਾ ਤਿਸ ਕਾ ਤਾਣੁ ॥ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਈ ਫਹਿ ਪਏ ਪਿਆਰੇ ਜਿ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਜਾਣੁ
 ॥ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਵਾਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਮਸਤਕਿ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਕਦੇ ਨ ਵੀਸਰੈ ਪਿਆਰੇ ਨਾਨਕ ਸਦ
 ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੮॥੨॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਅਸਟਪਦੀਆ ੧੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਾਠੁ ਪਡਿਆਂ ਅਝੁ ਬੇਦੁ ਬੀਚਾਰਿਆਂ ਨਿਵਲਿ ਭੁਅੰਗਮ ਸਾਥੇ ॥ ਪੰਚ ਜਨਾ ਸਿਤ ਸੰਗੁ ਨ ਛੁਟਕਿਆਂ ਅਧਿਕ
 ਅਛਾਕੁਧਿ ਬਾਧੇ ॥੧॥ ਪਿਆਰੇ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਿਲਣੁ ਨ ਜਾਈ ਮੈ ਕੀਏ ਕਰਮ ਅਨੇਕਾ ॥ ਹਾਰਿ ਪਰਿਆਂ ਸੁਆਮੀ
 ਕੈ ਦੁਆਰੈ ਦੀਜੈ ਬੁਧਿ ਬਿਵੇਕਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੋਨਿ ਭਡਿਆਂ ਕਰਪਾਤੀ ਰਹਿਆਂ ਨਗਨ ਫਿਰਿਆਂ ਬਨ ਮਾਹੀ ॥ ਤਟ

ਤੀਰਥ ਸਭ ਧਰਤੀ ਭਰਮਿਓ ਦੁਬਿਧਾ ਛੁਟਕੈ ਨਾਹੀ ॥੨॥ ਮਨ ਕਾਮਨਾ ਤੀਰਥ ਜਾਇ ਬਸਿਓ ਸਿਰਿ ਕਰਵਤ ਧਰਾਏ
 ॥ ਮਨ ਕੀ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਇਹ ਬਿਧਿ ਜੇ ਲਖ ਜਤਨ ਕਰਾਏ ॥੩॥ ਕਨਿਕ ਕਾਮਿਨੀ ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਦਾਨੁ
 ਦਾਤਾਰਾ ॥ ਅਨ੍ਨ ਬਸਤਰ ਭੂਮਿ ਬਹੁ ਅਰਪੇ ਨਹ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਦੁਆਰਾ ॥੪॥ ਪ੍ਰਯਾ ਅਰਚਾ ਬੰਦਨ ਡੰਡਤ ਖੁਟੁ
 ਕਰਮਾ ਰਤੁ ਰਹਤਾ ॥ ਹਤ ਹਤ ਕਰਤ ਬੰਧਨ ਮਹਿ ਪਰਿਆ ਨਹ ਮਿਲੀਐ ਇਹ ਜੁਗਤਾ ॥੫॥ ਜੋਗ ਸਿਧ ਆਸਣ
 ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਏ ਭੀ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ॥ ਵਡੀ ਆਰਜਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜਨਮੈ ਹਰਿ ਸਿਤ ਸੰਗੁ ਨ ਗਹਿਆ ॥੬॥
 ਰਾਜ ਲੀਲਾ ਰਾਜਨ ਕੀ ਰਚਨਾ ਕਰਿਆ ਹੁਕਮੁ ਅਫਾਰਾ ॥ ਸੇਜ ਸੋਹਨੀ ਚੰਦ੍ਰੁ ਚੋਆ ਨਰਕ ਘੋਰ ਕਾ ਦੁਆਰਾ
 ॥੭॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹੈ ਸਿਰਿ ਕਰਮਨ ਕੈ ਕਰਮਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਭਇਆ ਪਰਾਪਤਿ ਜਿਸੁ
 ਪੁਰਖ ਲਿਖੇ ਕਾ ਲਹਨਾ ॥੮॥ ਤੇਰੋ ਸੇਵਕੁ ਇਹ ਰੰਗਿ ਮਾਤਾ ॥ ਭਇਆ ਕ੃ਪਾਲੁ ਦੀਨ ਦੁਖ ਖੰਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਕੀਰਤਨਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਰਹਾਤ ਦ੍ਰਿੜਾ ॥੧॥੩॥

ਰਾਗ ਸੋਰਠਿ ਵਾਰ ਮਹਲੇ ੪ ਕੀ

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸੋਰਠਿ ਸਦਾ ਸੁਹਾਵਣੀ ਜੇ ਸਚਾ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥ ਦੰਦੀ ਮੈਲੁ ਨ ਕਤੁ ਮਨਿ ਜੀਖੈ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
 ਸਸੁਰੈ ਪੇਈਐ ਭੈ ਵਸੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਨਿਸਂਗ ॥ ਪਰਹਰਿ ਕਪੜੁ ਜੇ ਪਿਰ ਮਿਲੈ ਖੁਸੀ ਰਾਵੈ ਪਿਲੁ ਸੰਗਿ ॥ ਸਦਾ
 ਸੀਗਾਰੀ ਨਾਤ ਮਨਿ ਕਦੇ ਨ ਮੈਲੁ ਪਤੰਗੁ ॥ ਦੇਵਰ ਜੇਠ ਮੁਏ ਦੁਖਿ ਸਸ੍ਰੂ ਕਾ ਡੁਰੁ ਕਿਸੁ ॥ ਜੇ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ
 ਕਰਮ ਮਣੀ ਸਭੁ ਸਚੁ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸੋਰਠਿ ਤਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਜਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਡੰਢੋਲੇ ॥ ਗੁਰ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਵੈ
 ਆਪਣਾ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੇ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮਿ ਕਸਾਈ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਹਰਿ ਰਤੀ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਚੋਲੇ ॥ ਹਰਿ ਜੈਸਾ
 ਪੁਰਖੁ ਨ ਲਭੈ ਸਭੁ ਦੇਖਿਆ ਜਗਤੁ ਮੈ ਟੋਲੇ ॥ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਵ੍ਰਡਾਇਆ ਮਨੁ ਅਨਤ ਨ ਕਾਹੂ
 ਡੋਲੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਗੋਲ ਗੋਲੇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤ੍ਰੂ ਆਪੇ ਸਿਸਟਿ ਕਰਤਾ
 ਸਿਰਜਣਹਾਰਿਆ ॥ ਤੁਥੁ ਆਪੇ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇ ਤੁਥੁ ਆਪਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਦਾਤਾ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਆਪਿ ਭੋਗਣਹਾਰਿਆ
 ॥ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਸਕਦੁ ਵਰਤੈ ਉਪਾਵਣਹਾਰਿਆ ॥ ਹਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਲਾਹੀ ਗੁਰ ਕਤ ਵਾਰਿਆ ॥੧॥

सलोकु मः ३ ॥ हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥ पौरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पन्नै
 पाइ ॥ इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ॥ सबदि रते से सीतल भए नानक
 सचु कमाइ ॥ ੧॥ मः ३ ॥ सफलिओ सतिगुरु सेविआ धन्नु जनमु परवाणु ॥ जिना सतिगुरु जीवदिआ
 मुइआ न विसरै सई पुरख सुजाण ॥ कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥ गुरमुखि मुए जीवदे
 परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥ ੨॥ पउड़ी
 ॥ हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरि नामु धिआईअै ॥ सतसंगति साधू लगि हरि नामि समाईअै ॥ हरि
 तेरी वडी कार मै मूरख लाईअै ॥ हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईअै ॥ हउ गुरमुखि कार
 कमावा जि गुरि समझाईअै ॥ ੨॥ सलोकु मः ३ ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु
 ॥ मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥ मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु ॥ जिनी
 गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहणि न मिलनी पासि ॥ दुखु लागा बहु अति घण पुतु कलतु न साथि
 कोई जासि ॥ लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास ॥ मनमुखा नो को न विसही चुकि गडिआ
 वेसासु ॥ नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु ॥ ੧॥ मः ३ ॥ से सैण से सजणा
 जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ ॥ सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ ॥ दूजै भाइ
 लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार ॥ मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥
 नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ ੨॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै आपि
 खेलु रचाइआ ॥ तै गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ ॥ विचि हउमै लेखा मंगीअै फिरि
 आवै जाइआ ॥ जिना हरि आपि कृपा करे से गुरि समझाइआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा
 घुमाइआ ॥ ੩॥ सलोकु मः ३ ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ॥ मनमुख
 खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ॥ बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी

आइआ ॥ धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुखदाता मनि न वसाइआ ॥ नानक नामु तिना
 कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥१॥ मः ३ ॥ घर ही महि अंमृतु भरपूरु है मनमुखा
 सादु न पाइआ ॥ जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥ अंमृतु तजि बिखु संग्रहै
 करतै आपि खुआइआ ॥ गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रह्मु दिखाइआ ॥ तनु मनु सीतलु
 होइआ रसना हरि सादु आइआ ॥ सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ बिनु सबदै सभु
 जगु बउरना बिरथा जनमु गवाइआ ॥ अंमृतु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥२॥ पउड़ी
 ॥ सो हरि पुरखु अगंमु है कहु कितु बिधि पाईਐ ॥ तिसु रूपु न रेख अदृसटु कहु जन किउ धिआईਐ
 ॥ निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईਐ ॥ जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि
 पाईਐ ॥ गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईਐ ॥४॥ सलोकु मः ३ ॥ जिउ तनु कोलू पीड़ीਐ रतु न
 भोरी डेहि ॥ जीउ वंबै चउ खन्नीऐ सचे संदडै नेहि ॥ नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥१॥
 मः ३ ॥ सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ ॥ जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥ नानक रंगु न
 उतरै बिआ न लगै केह ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि आपि वरतै आपि हरि आपि बुलाइदा ॥ हरि आपे
 सृसटि सवारि सिरि धंधै लाइदा ॥ इकना भगती लाइ इकि आपि खुआइदा ॥ इकना मारगि
 पाइ इकि उझड़ि पाइदा ॥ जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥५॥ सलोकु मः ३ ॥
 सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ ॥ मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥
 बंधन तोड़े मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥ इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥
 नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुख मनु अजितु है दूजै लगै
 जाइ ॥ तिस नो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ ॥ घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि
 लगाइ ॥ इहु मनु वसि न आवई थके करम कमाइ ॥ भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ

॥ ਮਨ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ ਹਉਮੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਭਤ ਪਇਆ ਵਡਭਾਗਿ ਵਸਿਆ ਮਨਿ
ਆਇ ॥ ਭੈ ਪਇਐ ਮਨੁ ਵਸਿ ਹੋਆ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥ ਸਚਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥
ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਨਾਉ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਏਹ ਭੂਪਤਿ ਰਾਣੇ ਰੰਗ ਦਿਨ ਚਾਰਿ
ਸੁਹਾਵਣਾ ॥ ਏਹੁ ਮਾਇਆ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਖਿਨ ਮਹਿ ਲਹਿ ਜਾਵਣਾ ॥ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲੈ ਸਿਰਿ ਪਾਪ ਲੈ
ਜਾਵਣਾ ॥ ਜਾਁ ਪਕਡਿ ਚਲਾਇਆ ਕਾਲਿ ਤਾਁ ਖਰਾ ਡਰਾਵਣਾ ॥ ਓਹ ਵੇਲਾ ਹਥਿ ਨ ਆਵੈ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਵਣਾ
॥੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਜੋ ਮੁਹ ਫਿਰੇ ਸੇ ਬਧੇ ਦੁਖ ਸਹਾਹਿ ॥ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਮਿਲਣੁ ਨ ਪਾਇਨੀ
ਯੰਮਹਿ ਤੈ ਮਰਿ ਜਾਹਿ ॥ ਸਹਸਾ ਰੋਗੁ ਨ ਛੋਡੈ ਦੁਖ ਹੀ ਮਹਿ ਦੁਖ ਪਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਬਖਸਿ ਲੇਹਿ ਸਬਦੇ
ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਮੁਹ ਫਿਰੇ ਤਿਨਾ ਠਤਰ ਨ ਠਾਤ ॥ ਜਿਤ ਛੁਟਡਿ ਘਰਿ ਘਰਿ
ਫਿਰੈ ਦੁਹਚਾਰਣ ਬਦਨਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਖਸੀਅਹਿ ਸੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੋ
ਸੇਵਹਿ ਸਤਿ ਮੁਰਾਰਿ ਸੇ ਭਵਜਲ ਤਰਿ ਗਇਆ ॥ ਜੋ ਬੋਲਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਉ ਤਿਨ ਜਮੁ ਛਡਿ ਗਇਆ ॥ ਸੇ
ਦਰਗਹ ਪੈਥੇ ਜਾਹਿ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਜਧਿ ਲਇਆ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵਹਿ ਸੇਈ ਪੁਰਖ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਤੁਥੁ ਮਇਆ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਾ
ਪਿਆਰੇ ਨਿਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਰਮ ਭਤ ਗਇਆ ॥੭॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਥਾਲੈ ਵਿਚਿ ਤੈ ਵਸਤ੍ਰ ਪਈਓ ਹਰਿ ਭੋਜਨੁ
ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਾਰੁ ॥ ਜਿਤੁ ਖਾਧੈ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤੀਐ ਪਾਈਐ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਇਹੁ ਭੋਜਨੁ ਅਲਭੁ ਹੈ ਸੰਤਹੁ ਲਭੈ ਗੁਰ
ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਏਹ ਸੁਦਾਵਣੀ ਕਿਤ ਵਿਚਹੁ ਕਢੀਐ ਸਦਾ ਰਖੀਐ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਏਹ ਸੁਦਾਵਣੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਈ
ਗੁਰਸਿਖਾ ਲਈ ਭਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਬੁੜਾਏ ਸੁ ਬੁੜਸੀ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਘਾਲਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ
ਮੇਲੇ ਸੇ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਆਪਿ ਵਿਛੋਡੇਨੁ ਸੇ ਵਿਛੁਡੇ ਦ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ
ਕਰਮਾ ਕਿਆ ਪਾਈਐ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਬਹਿ ਸਖੀਆ ਜਸੁ ਗਾਵਹਿ ਗਾਵਣਹਾਰੀਆ
॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿਹੁ ਨਿਤ ਹਰਿ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥ ਜਿਨੀ ਸੁਣਿ ਮਨਿਆ ਹਰਿ ਨਾਉ ਤਿਨਾ ਹਤ ਵਾਰੀਆ
॥ ਗੁਰਮੁਖੀਆ ਹਰਿ ਮੇਲੁ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰੀਆ ॥ ਹਤ ਬਲਿ ਜਾਵਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਗੁਰ ਦੇਖਣਹਾਰੀਆ ॥੮॥ ਸਲੋਕੁ

ਮਃ ੩ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭਿ ਭਰਮਦੇ ਨਿਤ ਜਗਿ ਤੋਟਾ ਸੈਸਾਰਿ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਹਉਮੈ ਅੰਧੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਕਣਾ ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਹਜੇ ਜਾਗੈ ਸਹਜੇ ਸੋਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਨਦਿਨੁ
 ਤਸਤਤਿ ਹੋਵੈ ॥ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮੈ ਸਹਸਾ ਹੋਵੈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਚਿੰਤਾ ਨੀਦ ਨ ਸੋਵੈ ॥ ਗਿਆਨੀ ਜਾਗਹਿ ਸਵਹਿ ਸੁਭਾਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤਿਆ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਜੋ ਹਰਿ ਰਤਿਆ ॥ ਹਰਿ ਇਕੁ
 ਧਿਆਵਹਿ ਇਕੁ ਇਕੋ ਹਰਿ ਸਤਿਆ ॥ ਹਰਿ ਇਕੋ ਵਰਤੈ ਇਕੁ ਇਕੋ ਉਤਪਤਿਆ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ
 ਤਿਨ ਢੁ ਸਟਿ ਘਤਿਆ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਫੇਰੈ ਆਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਗਿਆਨੁ ਨ ਆਇਆ ਜਿਤੁ ਕਿਛੁ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥ ਵਿਣੁ ਡਿਠਾ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹੀਐ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੀਐ ਨਾਮੁ ਕਥੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇਕਾ ਬਾਣੀ ਇਕੁ ਗੁਰੂ ਇਕੋ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਸਚਾ
 ਸਤਦਾ ਹਟੁ ਸਚੁ ਰਤਨੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਈਐਨਿ ਜੇ ਫੇਰੈ ਫੇਰਣਹਾਰੁ ॥ ਸਚਾ ਸਤਦਾ ਲਾਮੁ
 ਸਦਾ ਖਟਿਆ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਵਿਖੁ ਵਿਚਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਕਰਮਿ ਪੀਆਵਣਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀਐ
 ਧਨੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਕੂਝੁ ਵਰਤੈ ਸਚੁ ਨ ਭਾਵੰਈ ॥ ਜੇ ਕੋ ਬੋਲੈ ਸਚੁ ਕੂੜਾ ਜਲਿ
 ਜਾਵੰਈ ॥ ਕੂਡਿਆਰੀ ਰਜੈ ਕੂਡਿ ਜਿਤ ਵਿਸਟਾ ਕਾਗੁ ਖਾਵੰਈ ॥ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਸੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੰਈ ॥
 ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿ ਕੂਝੁ ਪਾਪੁ ਲਹਿ ਜਾਵੰਈ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸੇਖਾ ਚਤੁਚਕਿਆ ਚਤਵਾਇਆ
 ਏਹੁ ਮਨੁ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਣਿ ॥ ਏਹੜ ਤੇਹੜ ਛਡਿ ਤੂ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਅਗੈ ਫ਼ਹਿ ਪਤ ਸਮੁ
 ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਜਾਣੁ ॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਜਲਾਇ ਤੂ ਹੋਇ ਰਹੁ ਮਿਹਮਾਣੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਭੀ ਚਲਹਿ ਤਾ ਦਰਗਹ
 ਪਾਵਹਿ ਮਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਨੀ ਤਿਨ ਧਿਗੁ ਪੈਨਣੁ ਧਿਗੁ ਖਾਣੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਤੋਟਿ ਨ
 ਆਵੰਈ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਖਹਿ ਗੁਣ ਮਹਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਹਰਿ ਚੋਲੀ ਫੇਹ ਸਵਾਰੀ ਕਢਿ ਪੈਧੀ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ॥ ਹਰਿ ਪਾਟੁ ਲਗਾ ਅਧਿਕਾਈ ਬਹੁ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾਤਿ ਕਰਿ ॥
 ਕੋਈ ਬੂੜੈ ਬੂੜਣਹਾਰਾ ਅੰਤਰਿ ਬਿਕੇਕੁ ਕਰਿ ॥ ਸੋ ਬੂੜੈ ਏਹੁ ਬਿਕੇਕੁ ਜਿਸੁ ਬੁੜਾਏ ਆਪਿ ਹਰਿ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ

ਵਿਚਾਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਤਿ ਹਰਿ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਪਰਥਾਇ ਸਾਖੀ ਮਹਾ ਪੁਰਖ ਬੋਲਦੇ ਸਾਝੀ ਸਗਲ
 ਜਹਾਨੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਸੁ ਭਤ ਕਰੇ ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਤਾ ਮਨ ਹੀ ਤੇ ਮਨੁ
 ਮਾਨੈ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਮਨ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ਨਾਹੀ ਨਾਨਕ ਸੇ ਕਿਆ ਕਥਹਿ ਗਿਆਨੈ ॥੨॥ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਿਤੁ
 ਨ ਲਾਡਿਆ ਅੰਤਿ ਦੁਖੁ ਪਹੁਤਾ ਆਇ ॥ ਅੰਦਰਹੁ ਬਾਹਰਹੁ ਅੰਧਿਆਂ ਸੁਧਿ ਨ ਕਾਈ ਪਾਇ ॥ ਪਂਡਿਤ ਤਿਨ ਕੀ
 ਬਰਕਤੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਖਾਇ ਜੋ ਰਤੇ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥ ਜਿਨ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹਿਆ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥
 ਪਂਡਿਤ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਬਰਕਤਿ ਨ ਹੋਵਰੈ ਨਾ ਧਨੁ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥ ਪਡਿ ਥਕੇ ਸਨਤੋਖੁ ਨ ਆਇਆ ਅਨਦਿਨੁ ਜਲਤ
 ਵਿਹਾਇ ॥ ਕੂਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਨ ਚੁਕੰਈ ਨਾ ਸੰਸਾ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੁਣਿਆ ਸੁਹਿ ਕਾਲੈ ਤਠਿ ਜਾਇ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਯਜਣ ਮੇਲਿ ਪਿਆਰੇ ਮਿਲਿ ਪਥੁ ਦਸਾਈ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਦੱਸੇ ਮਿਤੁ ਤਿਸੁ ਹਤ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥
 ਗੁਣ ਸਾਝੀ ਤਿਨ ਸਿਉ ਕਰੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵੀ ਪਿਆਰਾ ਨਿਤ ਸੇਵਿ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥ ਬਲਿਹਾਰੀ
 ਸਤਿਗੁਰ ਤਿਸੁ ਜਿਨਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਪਂਡਿਤ ਮੈਲੁ ਨ ਚੁਕੰਈ ਜੇ ਵੇਦ ਪੜੈ ਜੁਗ ਚਾਰਿ ॥
 ਕੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਮੂਲੁ ਹੈ ਵਿਚਿ ਹਤਮੈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ॥ ਪਂਡਿਤ ਭੂਲੇ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਾਗੇ ਮਾਇਆ ਕੈ ਵਾਪਾਰਿ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਤ੍ਰਸਨਾ ਭੁਖ ਹੈ ਮੂਰਖ ਭੁਖਿਆ ਸੁਏ ਗਵਾਰ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਅੰਦਰਹੁ
 ਤ੍ਰਸਨਾ ਭੁਖ ਗੰਈ ਸਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਹਜੇ ਰਜੇ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਰਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥੧॥
 ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਸੇਵਿਆ ਦੁਖੁ ਲਗਾ ਬਹੁਤਾ ਆਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰੁ ਹੈ ਸੁਧਿ ਨ
 ਕਾਈ ਪਾਇ ॥ ਮਨਹਠਿ ਸਹਜਿ ਨ ਬੀਜਿਆ ਭੁਖਾ ਕਿ ਅਗੈ ਖਾਇ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਗਾ ਜਾਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਹਿ ਵਡਿਆਈਆ ਜੇ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਵੈ
 ਖਰੀ ਸੁਹਾਵਣੀ ॥ ਜੋ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਬੋਲੈ ਸਾ ਹਰਿ ਭਾਵਣੀ ॥ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਖੈ ਸਾਦੁ ਸਾ ਤ੃ਪਤਾਵਣੀ ॥
 ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਪਿਆਰੇ ਨਿਤ ਗੁਣ ਗਾਇ ਗੁਣੀ ਸਮਝਾਵਣੀ ॥ ਜਿਸੁ ਹੋਵੈ ਆਪਿ ਦਿੱਤਾਲੁ ਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰੁ
 ਬੁਲਾਵਣੀ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਹਸਤੀ ਸਿਰਿ ਜਿਤ ਅੰਕਸੁ ਹੈ ਅਹਰਣਿ ਜਿਤ ਸਿਰੁ ਦੇਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ

आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥ इउ गुरमुखि आपु निवारीਐ सभु राजु सृसटि का लेइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीਐ जा आपे नदरि करेइ ॥੧॥ मঃ ੩ ॥ जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु ॥ नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥੨॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥ इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ ॥ जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरु देवाईआ ॥ गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥ गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आग्खि गुरु जीवाईआ ॥੧੪॥ सलोकु मঃ ੩ ॥ नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ॥ जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥੧॥ मঃ ੩ ॥ नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥ हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥੨॥ पउड़ी ॥ धनु संपै माइआ संचीਐ अंते दुखदाई ॥ घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥ हर रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई ॥ जन लावहु चितु हरि नाम सिउ अंति होइ सखाई ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥੧੫॥ सलोकु मঃ ੩ ॥ बिनु करमै नाउ न पाईਐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ॥੧॥ मঃ ੧ ॥ इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि ॥ इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि ॥ नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥੨॥ पउड़ी ॥ तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥ तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते ॥ तिन के करम धरम कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥ जिन कै पोतै पुन्नु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥੧੬॥ सलोकु मঃ ੩ ॥ नानक नावहु धुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥ जपु तपु संजमु सभु हरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥ जम दरि बधे मारीअहि

ਬहੁਤੀ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸੰਤਾ ਨਾਲਿ ਵੈਰੁ ਕਮਾਵਦੇ ਦੁਸਟਾ ਨਾਲਿ ਮੋਹੁ ਪਿਆਰੁ ॥ ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਸੁਖੁ
 ਨਹੀ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਵਾਰੇ ਵਾਰ ॥ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਕਦੇ ਨ ਬੁੜੀ ਟੁਬਿਧਾ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥ ਮੁਹ ਕਾਲੇ ਤਿਨਾ ਨਿੰਦਕਾ ਤਿਤੁ
 ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣਿਆ ਨਾ ਤੁਰਵਾਰਿ ਨ ਪਾਰਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਂਦੇ
 ਸੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਜਿਨਾ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਇਕੁ ਅਰਾਧਿਆ ਤਿਨਾ ਇਕਿਸ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥
 ਸੇਈ ਪੁਰਖ ਹਰਿ ਸੇਵਦੇ ਜਿਨ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਹੀ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਨਿਤ ਗਾਵਦੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ
 ਗੁਣੀ ਸਮਝਾਹੀ ॥ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਗੁਰਮੁਖਾ ਗੁਰ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹੀ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕੀ ਸੇਵਾ ਗਾਖੜੀ ਸਿਰੁ ਟੀਜੈ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰਹਿ ਫਿਰਿ ਨਾ ਮਰਹਿ ਤਾ ਸੇਵਾ ਪਵੈ ਸਭ ਥਾਇ ॥
 ਪਾਰਸ ਪਰਸਿਐ ਪਾਰਸੁ ਹੋਵੈ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਾਂਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ
 ਆਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗਣਤੈ ਸੇਵਕੁ ਨਾ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਸੋ ਪਵੈ ਥਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਹਲੁ ਕੁਮਹਲੁ ਨ ਜਾਣਨੀ
 ਮੂਰਖ ਅਪਣੈ ਸੁਆਇ ॥ ਸਬਦੁ ਚੀਨਹਿ ਤਾ ਮਹਲੁ ਲਹਹਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥ ਸਦਾ ਸਚੇ ਕਾ ਭਤ ਮਨਿ ਕਸੈ
 ਤਾ ਸਭਾ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਣੈ ਘਰਿ ਕਰਤਦਾ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ
 ਸਭ ਪੂਰੀ ਪੰਡੀ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਭਗਤ ਜਨਾ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮਾ
 ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਕਹਤਿਆ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਸੰਤ ਜਨਾ ਜੋ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸ਼ਰਣੀ ਸੁਣਤਿਆ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਤਿਨਾ
 ਸਾਧ ਜਨਾ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇ ਗੁਣੀ ਜਨ ਬਣਤਿਆ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਾ ਜੋ ਗੁਰਸਿਖ ਲੈ ਮਨੁ
 ਜਿਣਤਿਆ ॥ ਸਭ ਦ੍ਰਿੜੁ ਵਡੇ ਭਾਗ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੇ ਜੋ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਸਿਖ ਪਢਤਿਆ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਬ੍ਰਹਮੁ
 ਬਿੰਦੈ ਤਿਸ ਦਾ ਬ੍ਰਹਮਤੁ ਰਹੈ ਏਕ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਵ ਨਿਧੀ ਅਠਾਰਹ ਸਿਧੀ ਪਿਛੈ ਲਗੀਆ ਫਿਰਹਿ
 ਜੋ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸਦਾ ਵਸਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਉ ਨ ਪਾਈਐ ਬੁੜਾਹੁ ਕਰਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਜੁਗ ਚਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕਿਆ ਗਭਰੁ ਕਿਆ ਬਿਰਧਿ ਹੈ ਮਨਮੁਖ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਨ
 ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੇ ਰਤਿਆ ਸੀਤਲੁ ਹੋਏ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਅੰਦਰੁ ਤ੃ਪਤਿ ਸੰਤੋਖਿਆ ਫਿਰਿ ਭੁਖ ਨ ਲਗੈ

ਆਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਹਿ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜੋ ਨਾਮਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ
 ਤਿਨ ਕੰਤ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਿਖਾ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਤਿਨ ਦਰਸਨੁ ਪਿਖਾ ॥ ਸੁਣਿ ਕੀਰਤਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਖਾ
 ਹਰਿ ਜਸੁ ਮਨਿ ਲਿਖਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੀ ਰੰਗ ਸਿਤ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕੂਖਾ ॥ ਧਨੁ ਧਨ੍ਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਸੋ ਸਰੀਰੁ
 ਥਾਨੁ ਹੈ ਜਿਥੈ ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਧਰੇ ਵਿਖਾ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਰਵਈ ਨਾ ਸੁਖੁ ਕਥੈ ਮਨਿ
 ਆਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੇ ਮਨਮੁਖੀ ਜਾਸਨਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਨਾਵੈ ਨੋ ਸਭਿ
 ਖੋਜਦੇ ਥਕਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪੈਨਣੁ
 ਖਾਣੁ ਸਭੁ ਬਾਦਿ ਹੈ ਧਿਗੁ ਸਿਧੀ ਧਿਗੁ ਕਰਮਾਤਿ ॥ ਸਾ ਸਿਧਿ ਸਾ ਕਰਮਾਤਿ ਹੈ ਅਚਿੰਤੁ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਦਾਤਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਕਥੈ ਏਹਾ ਸਿਧਿ ਏਹਾ ਕਰਮਾਤਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਮ ਢਾਢੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਖਸਮ ਕੇ
 ਨਿਤ ਗਾਵਹ ਹਰਿ ਗੁਣ ਛੰਤਾ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰਹ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਣਹ ਤਿਸੁ ਕਵਲਾ ਕੰਤਾ ॥ ਹਰਿ ਦਾਤਾ ਸਭੁ
 ਜਗਤੁ ਭਿਖਾਰੀਆ ਮੰਗਤ ਜਨ ਜੰਤਾ ॥ ਹਰਿ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਦਿਆਲ ਹੋਇ ਵਿਚਿ ਪਾਥਰ ਕ੍ਰਮ ਜੰਤਾ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਨਵੰਤਾ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਪਡਣਾ ਗੁਡਣਾ ਸੰਸਾਰ ਕੀ ਕਾਰ ਹੈ
 ਅੰਦਰਿ ਤੂਸਨਾ ਵਿਕਾਰੁ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸਭਿ ਪਡਿ ਥਕੇ ਦ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਰੁ ॥ ਸੋ ਪਡਿਆ ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਬੀਨਾ
 ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਅੰਦਰੁ ਖੋਜੈ ਤਤੁ ਲਹੈ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਹਜਿ ਕਰੇ
 ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਧਨ੍ਨੁ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਸੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਵਿਣੁ ਮਨੁ ਮਾਰੇ ਕੋਇ ਨ ਸਿੜਾਈ
 ਕੇਖਹੁ ਕੋ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਭੇਖਧਾਰੀ ਤੀਰਥੀ ਭਵਿ ਥਕੇ ਨਾ ਏਹੁ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਹੁ ਮਨੁ ਜੀਕਤੁ
 ਮਰੈ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਇਸੁ ਮਨ ਕੀ ਮਲੁ ਇਤ ਉਤਰੈ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੰਤ ਮਿਲਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੂਝਾਵਹੁ ਇਕ ਕਿਨਕਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੀਗਾਰੁ ਬਨਾਵਹੁ ਹਰਿ ਜਨ
 ਹਰਿ ਕਾਪਡੁ ਪਹਿਰਹੁ ਖਿਮ ਕਾ ॥ ਐਸਾ ਸੀਗਾਰੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਹਰਿ ਲਾਗੈ ਪਿਆਰਾ ਪ੍ਰਮ ਕਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਬੋਲਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੈ ਇਕ ਪਲਕਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਿਆਲੁ ਛੋਵੈ ਜਿਸੁ ਤਪਰਿ ਸੋ ਗੁਰਮੁਖਿ

हरि जपि जिणका ॥२१॥ सलोकु मः ३ ॥ जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु
 ॥ खन्नली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति
 बदलाहु ॥ नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥१॥ मः ३ ॥ चहु जुगी कलि काली काँढी इक
 उतम पदवी इसु जुग माहि ॥ गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईਐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥ नानक
 गुर परसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि हरि मेलि
 साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥ हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि
 रंगु सदा माणि ॥ हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा धाणि ॥ जिना सासि गिरासि
 न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि
 ॥२२॥ सलोकु मः ३ ॥ रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ ॥ सतिगुर का सबदु सुणि न
 जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥ सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥ जगतु जलम्दा
 डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥१॥ मः ३ ॥ सबदि
 रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥ पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ सेज सुहावी सदा पिरु
 रावै हरि वरु पाइआ नारि ॥ ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ नानक हरि प्रभ
 मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥२॥ पउड़ी ॥ जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥ हरि
 जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥ ओहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट
 नारी ॥ वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी ॥ हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी
 ॥२३॥ सलोकु मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ॥ जंमणु मरणा मिटि गइआ
 कालै का किछु न बसाइ ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥ नानक हउ बलिहारी
 तिन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥१॥ मः ३ ॥ बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥

ਪਿਰ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਈ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਾ ਕੁਸੁਧ ਸਾ ਕੁਲਖਣੀ ਨਾਨਕ ਨਾਰੀ ਵਿਚਿ ਕੁਨਾਰਿ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਪਣੀ ਦਿੱਗਿਆ ਕਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੀ ਬੈਣੀ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਹਰਿ ਤਚਰਾ ਹਰਿ ਲਾਹਾ
 ਲੈਣੀ ॥ ਜੋ ਜਪਦੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਤਿਨ ਹਤ ਕੁਰਬੈਣੀ ॥ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਅਰਾਧਿਆ
 ਤਿਨ ਜਨ ਦੇਖਾ ਨੈਣੀ ॥ ਹਤ ਵਾਰਿਆ ਅਪਣੇ ਗੁਰੂ ਕਤ ਜਿਨਿ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਮੇਲਿਆ ਸੈਣੀ ॥੨੪॥
 ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੋ ਮਿਤੁ ॥ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਜਿਤ ਜੰਤੀ ਕੈ ਵਸਿ
 ਜੰਤੁ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਹਰਿ ਧਿਆਇਂਦੇ ਕਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿਤ ਨੇਹੁ ॥ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਸੁਨਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸਭ ਜਗ ਮਹਿ
 ਕਰਸੈ ਮੇਹੁ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਹੈ ਸਾ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹਰਿ ਆਪਣੀ ਵਡਿਆਈ ਭਾਵਦੀ
 ਜਨ ਕਾ ਜੈਕਾਰੁ ਕਰਾਈ ॥ ਸੋ ਹਰਿ ਜਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨੁ ਇਕ ਸਮਾਨਿ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ
 ਦਾਸੁ ਹੈ ਹਰਿ ਪੈਜ ਰਖਹੁ ਭਗਵਾਨ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਤਿਨਿ ਸਾਚੈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਈ
 ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਪਰਭਾਤਿ ਤ੍ਰੌਹੈ ਹੀ
 ਗਾਵਣਾ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਰਕਤ ਨਾਉ ਤੇਰਾ ਧਿਆਵਣਾ ॥ ਤ੍ਰੌ ਦਾਤਾ ਦਾਤਾਰੁ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਖਾਵਣਾ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ
 ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਪ ਗਵਾਵਣਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਵਣਾ ॥੨੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਅਗਿਆਨੁ ਭੰਝੇ ਮਤਿ ਮਥਿਮ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ਨਾਹੀ ॥ ਅੰਦਰਿ ਕਪਟੁ ਸਭੁ ਕਪਟੋ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਕਪਟੇ
 ਖਪਹਿ ਖਪਾਹੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਆਪਣੈ ਸੁਆਇ ਫਿਰਾਹੀ ॥ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ
 ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹੀ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪੇ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਮਨੂਆ ਥਿਰੁ ਨਾਹਿ ॥
 ਅਨਦਿਨੁ ਜਲਤ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਤਮੈ ਖਪਹਿ ਖਪਾਹੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਮਹਾ ਗੁਬਾਰਾ ਤਿਨ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ
 ਕੋਈ ਜਾਹਿ ॥ ਓਇ ਆਪਿ ਦੁਖੀ ਸੁਖੁ ਕਬਹੂ ਨ ਪਾਵਹਿ ਜਨਮਿ ਮਰਹਿ ਮਰਿ ਜਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਬਖਸਿ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ
 ਸਾਚਾ ਜਿ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਚਿਤੁ ਲਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੰਤ ਭਗਤ ਪਰਵਾਣੁ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਭਾਇਆ ॥ ਸੇਈ ਬਿਚਖਣ
 ਜੰਤ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਇਆ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਧੂਰਿ ਮਸਤਕਿ

ਲਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਭਏ ਪੁਨੀਤ ਹਰਿ ਤੀਰਥਿ ਨਾਇਆ ॥੨੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਹੈ
 ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਮੋ ਚਿਤਵੈ ਨਾਮੁ ਪਢੈ ਨਾਮਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ਚਿੰਤਾ
 ਗਈ ਬਿਲਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਨਾਮੁ ਊਪਜੈ ਤਿਸਨਾ ਭੁਖ ਸਭ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਨਾਮੋ ਪਲੈ
 ਪਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖਿ ਜਿ ਮਾਰਿਆ ਭਰਮਿ ਭਰਮਿਆ ਘਰ ਛੋਡਿ ਗਇਆ ॥ ਓਸੁ ਧਿਉ ਕਜੈ ਫਕਡੀ
 ਸੁਹੁ ਕਾਲਾ ਆਗੈ ਭਇਆ ॥ ਓਸੁ ਅਰਲੁ ਬਰਲੁ ਸੁਹੁ ਨਿਕਲੈ ਨਿਤ ਝਾਗ੍ ਸੁਟਦਾ ਸੁਆ ॥ ਕਿਆ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਹੀ
 ਟੈ ਕੀਤੈ ਜਾਂ ਧੁਰਿ ਕਿਰਤੁ ਓਸ ਦਾ ਏਹੋ ਜੇਹਾ ਪਾਇਆ ॥ ਜਿਥੈ ਓਹੁ ਜਾਇ ਤਿਥੈ ਓਹੁ ਝੂਠਾ ਕੂਡੁ ਬੋਲੇ ਕਿਸੈ ਨ ਭਾਵੈ
 ॥ ਕੇਖਹੁ ਭਾਈ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਸੰਤਹੁ ਸੁਆਮੀ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਜੈਸਾ ਕੋਈ ਕਰੈ ਤੈਸਾ ਕੋਈ ਪਾਵੈ ॥ ਏਹੁ ਬ੍ਰਹਮ
 ਬੀਚਾਰੁ ਹੋਵੈ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਅਗੇ ਦੇ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਗੁਰਿ ਸਚੈ ਬਧਾ ਥੇਹੁ ਰਖਵਾਲੇ
 ਗੁਰਿ ਦਿਤੇ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਨ ਰਤੇ ॥ ਗੁਰਿ ਕ੃ਪਾਲਿ ਬੇਅੰਤਿ ਅਵਗੁਣ ਸਭਿ ਹਤੇ ॥ ਗੁਰਿ
 ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਅਪਣੇ ਕਰਿ ਲਿਤੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਕੇ ਗੁਣ ਇਤੇ ॥੨੭॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਤਾ ਕੀ ਰਿਆਇ ਲੇਖਿਆ ਪਾਇ ਅਬ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ਪਾੱਂਡੇ ॥ ਹੁਕਮੁ ਹੋਆ ਹਾਸਲੁ ਤਦੇ ਹੋਇ
 ਨਿਬਿਡਿਆ ਛਾਫ਼ਹਿ ਜੀਅ ਕਮਾੰਦੇ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਨਕਿ ਨਥ ਖਸਮ ਹਥ ਕਿਰਤੁ ਧਕੇ ਦੇ ॥ ਜਹਾ ਦਾਣੇ ਤਹਾਂ
 ਖਾਣੇ ਨਾਨਕਾ ਸਚੁ ਹੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭੇ ਗਲਾ ਆਪਿ ਥਾਟਿ ਬਹਾਲੀਓਨੁ ॥ ਆਪੇ ਰਚਨੁ ਰਚਾਇ ਆਪੇ ਹੀ
 ਘਾਲਿਓਨੁ ॥ ਆਪੇ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਆਪਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿਓਨੁ ॥ ਦਾਸ ਰਖੇ ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਓਨੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਭਾਉ ਟ੍ਰੂਜਾ ਜਾਲਿਓਨੁ ॥੨੮॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਏ ਮਨ ਹਰਿ ਜੀ ਧਿਆਇ ਤੂ ਇਕ
 ਮਨਿ ਇਕ ਚਿਤਿ ਭਾਇ ॥ ਹਰਿ ਕੀਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਵਡਿਆਈਆ ਦੇਇ ਨ ਪਛੇਤਾਇ ॥ ਹਉ ਹਰਿ ਕੈ ਸਦ
 ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਆਪੇ ਸੇਵਾ ਲਾਇਅਨੁ ਆਪੇ ਬਖਸ ਕਰੇਇ ॥ ਸਭਨਾ ਕਾ ਮਾ ਧਿਤ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪੇ ਸਾਰ ਕਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਨਿ ਤਿਨ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ਹੈ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਸੋਭਾ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ

ਹਹਿ ਕਰਤੇ ਮੈ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸਿਸਟਿ ਸਿਰਜੀਆ ਆਪੇ ਫੁਨਿ ਗੋਈ ॥ ਸਭੁ ਇਕੋ ਸਬਦੁ
ਵਰਤਦਾ ਜੋ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿ ਪਾਵੈ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਆਰਾਧਿਆ
ਸਭਿ ਆਖਹੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੂ ਸੋਈ ॥੨੬॥੧॥ ਸੁਧੁ

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ ਘਰੁ ੧

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਬੁਤ ਪ੍ਰੂਜਿ ਪ੍ਰੂਜਿ ਛਿਦ੍ਰੁ ਮੂਏ ਤੁਰਕ ਮੂਏ ਸਿਰੁ ਨਾਈ ॥ ਓਇ ਲੇ ਜਾਰੇ ਓਇ ਲੇ ਗਡੇ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਢੁਹੂ ਨ ਪਾਈ ॥
੧॥ ਮਨ ਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ਅੰਧ ਗਹੇਰਾ ॥ ਚਹੁ ਟਿਸ ਪਸਰਿਓ ਹੈ ਜਮ ਜੇਵਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਕਿਤ ਪਡੇ ਪਡਿ
ਕਕਿਤਾ ਮੂਏ ਕਪੜੇ ਕੇਦਾਰੈ ਜਾਈ ॥ ਜਟਾ ਧਾਰਿ ਧਾਰਿ ਜੋਗੀ ਮੂਏ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਇਨਹਿ ਨ ਪਾਈ ॥੨॥ ਦਰਖੁ
ਸੰਚਿ ਸੰਚਿ ਰਾਜੇ ਮੂਏ ਗਡਿ ਲੇ ਕੱਚਨ ਭਾਰੀ ॥ ਬੇਦ ਪਡੇ ਪਡਿ ਪੰਡਿਤ ਮੂਏ ਰੂਪੁ ਦੇਖਿ ਦੇਖਿ ਨਾਰੀ ॥੩॥ ਰਾਮ
ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਸਭੈ ਬਿਗੂਤੇ ਦੇਖਹੁ ਨਿਰਖਿ ਸਰੀਰਾ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਨਿ ਗਤਿ ਪਾਈ ਕਹਿ ਉਪਦੇਸੁ ਕਕਿਤਾ
॥੪॥੧॥ ਜਬ ਜਰੀਐ ਤਬ ਹੋਇ ਭਸਮ ਤਨੁ ਰਹੈ ਕਿਰਮ ਦਲ ਖਾਈ ॥ ਕਾਚੀ ਗਾਗਰਿ ਨੀਝੁ ਪਰਤੁ ਹੈ ਇਆ
ਤਨ ਕੀ ਇਹੈ ਬਡਾਈ ॥੧॥ ਕਾਹੇ ਭੰਡਿਆ ਫਿਰਤੈ ਫੂਲਿਆ ਫੂਲਿਆ ॥ ਜਬ ਦਸ ਮਾਸ ਤੁਰਥ ਮੁਖ ਰਹਤਾ
ਸੋ ਦਿਨੁ ਕੈਸੇ ਭੂਲਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਤ ਮਧੁ ਮਾਖੀ ਤਿਤ ਸਠੋਰਿ ਰਸੁ ਜੋਰਿ ਜੋਰਿ ਧਨੁ ਕੀਆ ॥ ਮਰਤੀ
ਬਾਰ ਲੇਹੁ ਲੇਹੁ ਕਰੀਐ ਭੂਤੁ ਰਹਨ ਕਿਤ ਦੀਆ ॥੨॥ ਦੇਹੂਰੀ ਲਤ ਕਰੀ ਨਾਰਿ ਸੰਗਿ ਭੰਡੈ ਆਗੈ ਸਜਨ ਸੁਹੇਲਾ
॥ ਮਰਘਟ ਲਤ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ਕੁਟੰਬੁ ਭਡਿਓ ਆਗੈ ਛਾਸੁ ਅਕੇਲਾ ॥੩॥ ਕਹਤੁ ਕਕਿਤ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਪ੍ਰਾਨੀ ਪਰੇ ਕਾਲ
ਗ੍ਰਸ ਕੂਆ ॥ ਝੂਠੀ ਮਾਇਆ ਆਪੁ ਬੰਧਾਇਆ ਜਿਤ ਨਲਨੀ ਭਰਮੀ ਸੂਆ ॥੪॥੨॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਭੈ ਮਤ
ਸੁਨਿ ਕੈ ਕਰੀ ਕਰਮ ਕੀ ਆਸਾ ॥ ਕਾਲ ਗ੍ਰਸਤ ਸਭ ਲੋਗ ਸਿਆਨੇ ਤਠਿ ਪੰਡਿਤ ਪੈ ਚਲੇ ਨਿਰਾਸਾ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ
ਸਹਿਓ ਨ ਏਕੈ ਕਾਜਾ ॥ ਭਜਿਓ ਨ ਰਘੁਪਤਿ ਰਾਜਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਨ ਖੰਡ ਜਾਇ ਜੋਗੁ ਤਪੁ ਕੀਨੀ ਕੰਦ ਮੂਲੁ
ਚੁਨਿ ਖਾਇਆ ॥ ਨਾਦੀ ਬੇਦੀ ਸਬਦੀ ਮੌਨੀ ਜਮ ਕੇ ਪਟੈ ਲਿਖਾਇਆ ॥੨॥ ਭਗਤਿ ਨਾਰਦੀ ਰਿਦੈ ਨ ਆਈ ਕਾਛਿ
ਕੂਛਿ ਤਨੁ ਦੀਨਾ ॥ ਰਾਗ ਰਾਗਨੀ ਡਿੰਭ ਹੋਇ ਬੈਠਾ ਤਨਿ ਹਰਿ ਪਹਿ ਕਿਆ ਲੀਨਾ ॥੩॥ ਪਰਿਓ ਕਾਲੁ ਸਭੈ

ਜਗ ਊਪਰ ਮਾਹਿ ਲਿਖੇ ਭ੍ਰਮ ਗਿਆਨੀ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਨ ਭਏ ਖਾਲਸੇ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਜਿਹ ਜਾਨੀ ॥੪॥੩॥
 ਘਰੂ ੨ ॥ ਟੁਡਿ ਟੁਡਿ ਲੋਚਨ ਪੇਖਾ ॥ ਹਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਤਰੁ ਨ ਦੇਖਾ ॥ ਨੈਨ ਰਹੇ ਰੰਗ ਲਾਈ ॥ ਅਥ ਬੇ ਗਲ
 ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਹਮਰਾ ਭਰਮੁ ਗਿਆ ਭਤ ਭਾਗਾ ॥ ਜਬ ਰਾਮ ਨਾਮ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਜੀਗਰ
 ਡਕ ਬਜਾਈ ॥ ਸਭ ਖਲਕ ਤਮਾਸੇ ਆਈ ॥ ਬਾਜੀਗਰ ਸ਼ਾਁਗੁ ਸਕੇਲਾ ॥ ਅਪਨੇ ਰੰਗ ਰਵੈ ਅਕੇਲਾ ॥੨॥ ਕਥਨੀ
 ਕਹਿ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਭ ਕਥਿ ਕਥਿ ਰਹੀ ਲੁਕਾਈ ॥ ਜਾ ਕਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਬੁੜਾਈ ॥ ਤਾ ਕੇ ਹਿਰਦੈ ਰਹਿਆ
 ਸਮਾਈ ॥੩॥ ਗੁਰ ਕਿੰਚਤ ਕਿਰਪਾ ਕੀਨੀ ॥ ਸਭੁ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦੇਹ ਹਰਿ ਲੀਨੀ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਰੰਗ ਰਾਤਾ ॥
 ਮਿਲਿਓ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤਾ ॥੪॥੪॥ ਜਾ ਕੇ ਨਿਗਮ ਦ੍ਰਵਧ ਕੇ ਠਾਟਾ ॥ ਸਮੁੰਦੁ ਬਿਲੋਵਨ ਕਤ ਮਾਟਾ ॥ ਤਾ ਕੀ
 ਹੋਹੁ ਬਿਲੋਵਨਹਾਰੀ ॥ ਕਿਤ ਮੇਟੈ ਗੋ ਛਾਛਿ ਤੁਹਾਰੀ ॥੧॥ ਚੇਰੀ ਤੂ ਰਾਮੁ ਨ ਕਰਸਿ ਭਤਾਰਾ ॥ ਜਗਜੀਵਨ ਪ੍ਰਾਨ
 ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੇਰੇ ਗਲਹਿ ਤਤਕੁ ਪਗ ਬੇਰੀ ॥ ਤੂ ਘਰ ਘਰ ਰਮੰਝੈ ਫੇਰੀ ॥ ਤੂ ਅਜਹੁ ਨ ਚੇਤਸਿ
 ਚੇਰੀ ॥ ਤੂ ਜਮਿ ਬਪੁਰੀ ਹੈ ਹੇਰੀ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰੀ ॥ ਕਿਆ ਚੇਰੀ ਹਾਥ ਬਿਚਾਰੀ ॥ ਸੋਈ ਸੋਈ
 ਜਾਗੀ ॥ ਜਿਤੁ ਲਾਈ ਤਿਤੁ ਲਾਗੀ ॥੩॥ ਚੇਰੀ ਤੈ ਸੁਮਤਿ ਕਹਾਁ ਤੇ ਪਾਈ ॥ ਜਾ ਤੇ ਭ੍ਰਮ ਕੀ ਲੀਕ ਮਿਟਾਈ ॥ ਸੁ
 ਰਸੁ ਕਬੀਰੈ ਜਾਨਿਆ ॥ ਮੇਰੋ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੪॥੫॥ ਜਿਹ ਬਾੜ੍ਹੁ ਨ ਜੀਆ ਜਾਈ ॥ ਜਤ ਮਿਲੈ
 ਤ ਘਾਲ ਅਧਾਈ ॥ ਸਦ ਜੀਵਨੁ ਭਲੋ ਕਹਾਁਹੀ ॥ ਮੂਏ ਬਿਨੁ ਜੀਵਨੁ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਅਥ ਕਿਆ ਕਥੀਐ ਗਿਆਨੁ
 ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਨਿਜ ਨਿਰਖਤ ਗਤ ਬਿਤਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਘਸਿ ਕੁੰਕਮ ਚੰਦਨੁ ਗਾਰਿਆ ॥ ਬਿਨੁ ਨੈਨਹੁ ਜਗਤੁ
 ਨਿਹਾਰਿਆ ॥ ਪ੍ਰਤਿ ਪਿਤਾ ਇਕੁ ਜਾਇਆ ॥ ਬਿਨੁ ਠਾਹਰ ਨਗਰੁ ਬਸਾਇਆ ॥੨॥ ਜਾਚਕ ਜਨ ਦਾਤਾ ਪਾਇਆ
 ॥ ਸੋ ਦੀਆ ਨ ਜਾਈ ਖਾਇਆ ॥ ਛੋਡਿਆ ਜਾਇ ਨ ਮੂਕਾ ॥ ਅਤਰਨ ਪਹਿ ਜਾਨਾ ਚੂਕਾ ॥੩॥ ਜੋ ਜੀਵਨ ਮਰਨਾ
 ਜਾਨੈ ॥ ਸੋ ਪੰਚ ਸੈਲ ਸੁਖ ਮਾਨੈ ॥ ਕਬੀਰੈ ਸੋ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਭੇਟਤ ਆਪੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥੪॥੬॥ ਕਿਆ
 ਪਡੀਐ ਕਿਆ ਗੁਨੀਐ ॥ ਕਿਆ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨਾਂ ਸੁਨੀਐ ॥ ਪਢੇ ਸੁਨੇ ਕਿਆ ਹੋਈ ॥ ਜਤ ਸਹਜ ਨ ਮਿਲਿਓ ਸੋਈ
 ॥੧॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪਸਿ ਗਵਾਰਾ ॥ ਕਿਆ ਸੋਚਹਿ ਬਾਰਂ ਬਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਧਿਆਰੇ ਦੀਪਕੁ ਚਹੀਐ

॥ ਇਕ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਲਹੀਐ ॥ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਪਾਈ ॥ ਘਟਿ ਦੀਪਕੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੨॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ
ਅਬ ਜਾਨਿਆ ॥ ਜਬ ਜਾਨਿਆ ਤਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਮਨ ਮਾਨੇ ਲੋਗੁ ਨ ਪਤੀਜੈ ॥ ਨ ਪਤੀਜੈ ਤਤ ਕਿਆ ਕੀਜੈ
॥੩॥੭॥ ਹਦੈ ਕਪਟੁ ਮੁਖ ਗਿਆਨੀ ॥ ਝੂਠੇ ਕਹਾ ਬਿਲੋਵਸਿ ਪਾਨੀ ॥੧॥ ਕਾਂਡਿਆ ਮਾੱਜਸਿ ਕਤਨ ਗੁਨਾਂ
॥ ਜਤ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਹੈ ਮਲਨਾਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਲਤਕੀ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਈ ॥ ਕਤਰਾਪਨੁ ਤਤ ਨ ਜਾਈ
॥੨॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਤਾਰਿ ਮੁਰਾਰੀ ॥੩॥੮॥

ਸੋਰਠਿ

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਬਹੁ ਪਰਪੰਚ ਕਰਿ ਪਰ ਧਨੁ ਲਿਆਵੈ ॥ ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਪਹਿ ਆਨਿ ਲੁਟਾਵੈ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਭੂਲੇ ਕਪਟੁ ਨ ਕੀਜੈ ॥
ਅੰਤਿ ਨਿਬੇਰਾ ਤੇਰੇ ਜੀਅ ਪਹਿ ਲੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਛਿਨੁ ਛਿਨੁ ਤਨੁ ਛੀਜੈ ਜਗ ਜਨਾਵੈ ॥ ਤਬ ਤੇਰੀ ਓਕ ਕੋਈ
ਪਾਨੀਓ ਨ ਪਾਵੈ ॥੨॥ ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ ਕੋਈ ਨਹੀ ਤੇਰਾ ॥ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਕੀ ਨ ਜਪਹਿ ਸਵੇਰਾ ॥੩॥੬॥ ਸੰਤਹੁ
ਮਨ ਪਕਨੈ ਸੁਖੁ ਬਨਿਆ ॥ ਕਿਛੁ ਜੋਗੁ ਪਰਾਪਤਿ ਗਨਿਆ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਿ ਦਿਖਲਾਈ ਮੌਰੀ ॥ ਜਿਤੁ ਮਿਰਗ
ਪਝਤ ਹੈ ਚੋਰੀ ॥ ਮੂੰਦਿ ਲੀਏ ਦਰਖਾਜੇ ॥ ਬਾਜੀਅਲੇ ਅਨਹਦ ਬਾਜੇ ॥੧॥ ਕੁੰਭ ਕਮਲੁ ਜਲਿ ਭਰਿਆ ॥ ਜਲੁ
ਮੇਟਿਆ ਊਭਾ ਕਰਿਆ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਜਤ ਜਾਨਿਆ ਤਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੨॥੧੦॥
ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ॥ ਭੂਖੇ ਭਗਤਿ ਨ ਕੀਜੈ ॥ ਧਹ ਮਾਲਾ ਅਪਨੀ ਲੀਜੈ ॥ ਹਤ ਮਾਂਗਤ ਸੰਤਨ ਰੇਨਾ ॥ ਮੈ ਨਾਹੀ ਕਿਸੀ
ਕਾ ਦੇਨਾ ॥੧॥ ਮਾਧੋ ਕੈਸੀ ਬਨੈ ਤੁਮ ਸੰਗੇ ॥ ਆਪਿ ਨ ਦੇਹੁ ਤ ਲੇਵਤ ਮੰਗੇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਟੁਡਿ ਸੇਰੇ ਮਾਂਗਤ ਚੂਨਾ
॥ ਪਾਤ ਘੀਤ ਸੰਗਿ ਲੂਨਾ ॥ ਅਧ ਸੇਰੁ ਮਾਂਗਤ ਦਾਲੇ ॥ ਮੋ ਕਤ ਦੋਨਤ ਕਖਤ ਜਿਵਾਲੇ ॥੨॥ ਖਾਟ ਮਾਂਗਤ
ਚਤਪਾਈ ॥ ਸਿਰਹਾਨਾ ਅਵਰ ਤੁਲਾਈ ॥ ਊਪਰ ਕਤ ਮਾਂਗਤ ਖੀਧਾ ॥ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਕਰੈ ਜਨੁ ਥੀਧਾ ॥੩॥ ਮੈ
ਨਾਹੀ ਕੀਤਾ ਲਬੋ ॥ ਇਕੁ ਨਾਤ ਤੇਰਾ ਮੈ ਫਕੋ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਤਤ ਹਰਿ ਜਾਨਿਆ
॥੪॥੧੧॥

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇ ਜੀ ਕੀ ਘਰੁ ੨

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਜਬ ਦੇਖਾ ਤਕ ਗਾਵਾ ॥ ਤਤ

ਜਨ ਧੀਰਜੁ ਪਾਵਾ ॥੧॥ ਨਾਦਿ ਸਮਾਇਲੋ ਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟਿਲੇ ਦੇਵਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ ਝਿਲਿ ਮਿਲਿ ਕਾਰੁ
ਦਿਸਤਾ ॥ ਤਹ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਬਜੰਤਾ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਨੀ ॥ ਮੈ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਾਨੀ ॥੨॥ ਰਤਨ ਕਮਲ
ਕੋਠਰੀ ॥ ਚਮਕਾਰ ਬੀਜੁਲ ਤਹੀ ॥ ਨੇਰੈ ਨਾਹੀ ਦ੍ਰਵਿ ॥ ਨਿਜ ਆਤਮੈ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੩॥ ਜਹ ਅਨਹਤ ਸੂਰ
ਉਜ਼ਾਰਾ ॥ ਤਹ ਦੀਪਕ ਜਲੈ ਛੱਥਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਾਨਿਆ ॥ ਜਨੁ ਨਾਮਾ ਸਹਜ ਸਮਾਨਿਆ ॥੪॥੧॥
ਘਰੁ ੪ ਸੋਰਠਿ ॥ ਪਾਡ਼ ਪਡੋਸਣਿ ਪ੍ਰਾਂਛਿ ਲੇ ਨਾਮਾ ਕਾ ਪਹਿ ਛਾਨਿ ਛਵਾਈ ਹੋ ॥ ਤੋ ਪਹਿ ਦੁਗਣੀ ਮਜੂਰੀ ਟੈਹਤ
ਮੋ ਕਤ ਬੇਢੀ ਟੇਹੁ ਬਤਾਈ ਹੋ ॥੧॥ ਰੀ ਬਾਈ ਬੇਢੀ ਟੇਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਟੇਖੁ ਬੇਢੀ ਰਹਿਓ ਸਮਾਈ ॥ ਹਮਾਰੈ ਬੇਢੀ
ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੇਢੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਜੂਰੀ ਮਾਂਗੈ ਜਤ ਕੋਤ ਛਾਨਿ ਛਵਾਵੈ ਹੋ ॥ ਲੋਗ ਕੁਟੰਬ ਸਭਹੁ ਤੇ
ਤੌਰੈ ਤਤ ਆਪਨ ਬੇਢੀ ਆਵੈ ਹੋ ॥੨॥ ਐਸੋ ਬੇਢੀ ਕਰਨਿ ਨ ਸਾਕਤ ਸਭ ਅੰਤਰ ਸਭ ਠੱਈ ਹੋ ॥ ਗ੍ਰੰਗੈ ਮਹਾ
ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਪ੍ਰਾਂਛੇ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ਹੋ ॥੩॥ ਬੇਢੀ ਕੇ ਗੁਣ ਸੁਨਿ ਰੀ ਬਾਈ ਜਲਧਿ ਬਾਂਧਿ ਥ੍ਰੂ ਥਾਪਿਓ
ਹੋ ॥ ਨਾਮੇ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਸੀਅ ਬਹੋਰੀ ਲਮਕ ਭਮੀਖਣ ਆਪਿਓ ਹੋ ॥੪॥੨॥ ਸੋਰਠਿ ਘਰੁ ੩ ॥ ਅਣਮਡਿਆ
ਮੰਦਲੁ ਬਾਜੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਾਵਣ ਘਨਹਰੁ ਗਾਜੈ ॥ ਬਾਦਲ ਬਿਨੁ ਬਰਖਾ ਹੋਈ ॥ ਜਤ ਤਤੁ ਬਿਚਾਰੈ ਕੋਈ ॥੧॥
ਮੋ ਕਤ ਮਿਲਿਓ ਰਾਮੁ ਸਨੇਹੀ ॥ ਜਿਹ ਮਿਲਿਐ ਦੇਹ ਸੁਦੇਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਿਲਿ ਪਾਰਸ ਕੰਚਨੁ ਹੋਇਆ ॥
ਸੁਖ ਮਨਸਾ ਰਤਨੁ ਪਰੋਇਆ ॥ ਨਿਜ ਭਾਤ ਭਡਿਆ ਭ੍ਰਮੁ ਭਾਗਾ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਾਂਛੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਗਾ ॥੨॥ ਜਲ
ਭੀਤਰਿ ਕੁੰਭ ਸਮਾਨਿਆ ॥ ਸਭ ਰਾਮੁ ਏਕੁ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥ ਗੁਰ ਚੇਲੇ ਹੈ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਜਨ ਨਾਮੈ ਤਤੁ
ਪਛਾਨਿਆ ॥੩॥੩॥

ਰਾਗ ਸੋਰਠਿ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਕੀ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਬ ਹਮ ਹੋਤੇ ਤਬ ਤ੍ਰੂ ਨਾਹੀ ਅਬ ਤ੍ਰੂਹੀ ਮੈ ਨਾਹੀ ॥ ਅਨਲ ਅਗਮ ਜੈਸੇ ਲਹਰਿ ਮਡਿ ਓਦਧਿ ਜਲ
ਕੇਵਲ ਜਲ ਮਾਂਹੀ ॥੧॥ ਮਾਧਵੇ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਭ੍ਰਮੁ ਐਸਾ ॥ ਜੈਸਾ ਮਾਨੀਐ ਹੋਇ ਨ ਤੈਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਨਰਪਤਿ ਏਕੁ ਸਿੰਘਾਸਨਿ ਸੋਇਆ ਸੁਪਨੇ ਭਡਿਆ ਭਿਖਾਰੀ ॥ ਅਛਤ ਰਾਜ ਬਿਛੁਰਤ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸੋ ਗਤਿ

भई हमारी ॥२॥ राज भुइ़अंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥ अनिक कटक जैसे भूलि
 परे अब कहते कहनु न आइआ ॥३॥ सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥ कहि रविदास
 हाथ पै नैरै सहजे होइ सु होई ॥४॥१॥ जउ हम बाँधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ अपने
 छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥१॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ अब कहा करहुगे
 औसी ॥१॥ रहाउ ॥ मीनु पकरि फाँकिओ अरु काटिओ राँधि कीओ बहु बानी ॥ खंड खंड करि भोजनु
 कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥२॥ आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सभु
 जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥३॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ
 कहीअै ॥ जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीअै ॥४॥२॥ दुलभ जनमु पुन्न फल पाइओ
 बिरथा जात अबिबेकै ॥ राजे इंद्र समसरि गृह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१॥ न
 बीचारिओ राजा राम को रमु ॥ जिह रस अनरस बीसरि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ जानि अजान भए हम
 बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२॥
 कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ कहि रविदास उदास दास मति
 परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥३॥ सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥ चारि
 पदारथ अस्ट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥१॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सभ
 तिआगि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर माँही ॥ बिआस
 बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥ सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि
 लिव लागी ॥ कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥३॥४॥ जउ तुम गिरिवर
 तउ हम मोरा ॥ जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥ माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही
 तोरहि ॥ तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥ रहाउ ॥ जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ जउ

ਤੁਮ ਤੀਰਥ ਤਤ ਹਮ ਜਾਤੀ ॥੨॥ ਸਾਚੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਮ ਤੁਮ ਸਿਤ ਜੋਰੀ ॥ ਤੁਮ ਸਿਤ ਜੋਰਿ ਅਵਰ ਸੰਗਿ ਤੋਰੀ ॥੩॥
 ਜਹ ਜਹ ਜਾਤ ਤਹਾ ਤੇਰੀ ਸੇਵਾ ॥ ਤੁਮ ਸੋ ਠਾਕੁਰੁ ਅਤ਼ਰੁ ਨ ਦੇਵਾ ॥੪॥ ਤੁਮਰੇ ਭਜਨ ਕਟਹਿ ਜਮ ਫਾੱਸਾ ॥
 ਭਗਤਿ ਹੇਤ ਗਾਵੈ ਰਵਿਦਾਸਾ ॥੫॥੫॥ ਜਲ ਕੀ ਭੀਤਿ ਪਵਨ ਕਾ ਥੰਭਾ ਰਕਤ ਬੁੰਦ ਕਾ ਗਾਰਾ ॥ ਹਾਡ ਮਾਸ
 ਨਾਡੀ ਕੋ ਪਿੰਜਰੁ ਪੰਖੀ ਬਸੈ ਬਿਚਾਰਾ ॥੧॥ ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਿਆ ਮੇਰਾ ਕਿਆ ਤੇਰਾ ॥ ਜੈਸੇ ਤਰਵਰ ਪੰਖਿ ਬਸੇਰਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਖਹੁ ਕਂਧ ਤੁਸਾਰਹੁ ਨੀਵਾਂ ॥ ਸਾਢੇ ਤੀਨਿ ਹਾਥ ਤੇਰੀ ਸੀਵਾਂ ॥੨॥ ਬੰਕੇ ਬਾਲ ਪਾਗ ਸਿਰਿ ਡੇਰੀ ॥
 ਛਿਹੁ ਤਨੁ ਹੋਇਗੇ ਭਸਮ ਕੀ ਡੇਰੀ ॥੩॥ ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਸੁੰਦਰ ਨਾਰੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੪॥ ਮੇਰੀ
 ਜਾਤਿ ਕਮੀਨੀ ਪਾੱਤਿ ਕਮੀਨੀ ਓਛਾ ਜਨਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਤੁਮ ਸਰਨਾਗਤਿ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਚੰਦ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰਾ
 ॥੫॥੬॥ ਚਮਰਟਾ ਗਾੱਠਿ ਨ ਜਨੰਈ ॥ ਲੋਗੁ ਗਠਾਵੈ ਪਨਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਰ ਨਹੀ ਜਿਹ ਤੋਪਤ ॥ ਨਹੀ
 ਰੱਬੀ ਠਾਤ ਰੋਪਤ ॥੧॥ ਲੋਗੁ ਗੱਠਿ ਗੱਠਿ ਖਰਾ ਬਿਗੂਚਾ ॥ ਹਤ ਬਿਨੁ ਗੱਠੇ ਜਾਇ ਪਹੂਚਾ ॥੨॥ ਰਵਿਦਾਸੁ
 ਜਪੈ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ॥ ਮੋਹਿ ਜਮ ਸਿਤ ਨਾਹੀ ਕਾਮਾ ॥੩॥੭॥

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਭੀਖਨ ਕੀ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨੈਨਹੁ ਨੀਝੁ ਕਹੈ ਤਨੁ ਖੀਨਾ ਭਏ ਕੇਸ ਦੁਧ ਵਾਨੀ ॥ ਰੂਧਾ ਕੰਠੁ ਸਬਦੁ ਨਹੀ ਉਚੈਰੈ ਅਬ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਪਰਾਨੀ
 ॥੧॥ ਰਾਮ ਰਾਇ ਹੋਹਿ ਬੈਦ ਬਨਵਾਰੀ ॥ ਅਪਨੇ ਸੰਤਹ ਲੇਹੁ ਤਬਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਥੇ ਪੀਰ ਸਰੀਰਿ
 ਜਲਨਿ ਹੈ ਕਰਕ ਕਰੇਜੇ ਮਾਹੀ ॥ ਐਸੀ ਬੇਦਨ ਤਥਾ ਖਰੀ ਭੰਈ ਵਾ ਕਾ ਅਤਖਥੁ ਨਾਹੀ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ
 ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਜਲੁ ਨਿਰਮਲੁ ਇਹੁ ਅਤਖਥੁ ਜਗਿ ਸਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਹੈ ਜਨੁ ਭੀਖਨੁ ਪਾਵਤ ਮੋਖ ਦੁਆਰਾ
 ॥੩॥੧॥ ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਪੁਨਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ॥ ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਹਿਰਦੈ ਰਾਖਿਆ
 ਰਤਨੁ ਨ ਛਪੈ ਛਪਾਇਆ ॥੧॥ ਹਰਿ ਗੁਨ ਕਹਤੇ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਜੈਸੇ ਗ੍ਰੰਗੇ ਕੀ ਮਿਠਿਆਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਰਸਨਾ ਰਮਤ ਸੁਨਤ ਸੁਖੁ ਸ਼ਰਨਾ ਚਿਤ ਚੇਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਕਹੁ ਭੀਖਨ ਦੁਇ ਨੈਨ ਸੰਤੋਖੇ ਜਹ ਦੇਖਾਂ
 ਤਹ ਸੋਈ ॥੨॥੨॥

ধনাসরী মহলা ১ ঘর ১ চতুর্পদে

੧੭ੰসতি নামু করতা পুরখু নিরভত নিরবৈর অকাল মূরতি অজুনী সৈভং গুর প্রসাদি ॥

জীউ ডরতু হৈ আপণা কৈ সিউ করী পুকার ॥ দুখ বিসারণু সেবিআ সদা সদা দাতারু ॥১॥ সাহিবু
মেরা নীত নবা সদা সদা দাতারু ॥১॥ রহাউ ॥ অনদিনু সাহিবু সেবীঔ অংতি ছড়াই সোঁড়ি ॥ সুণি
সুণি মেরী কামণী পারি উতারা হোঁড়ি ॥২॥ দিইআল তেরৈ নামি তরা ॥ সদ কুরবাণৈ জাউ ॥১॥
রহাউ ॥ সরবং সাচা একু হৈ দুজা নাহী কোঁড়ি ॥ তা কী সেবা সো করে জা কউ নদরি করে ॥৩॥ তুঁধু
বাঙ্গু পিআরে কেব রহা ॥ সা বডিআর্ড দেহি জিতু নামি তেরে লাগি রহাঁ ॥ দুজা নাহী কোঁড়ি জিসু আগৈ
পিআরে জাই কহা ॥১॥ রহাউ ॥ সেবী সাহিবু আপণা অবরু ন জাচংত কোঁড়ি ॥ নানকু তা কা দাসু
হৈ বিংদ বিংদ চুখ চুখ হোঁড়ি ॥৪॥ সাহিব তেরে নাম বিটহু বিংদ বিংদ চুখ চুখ হোঁড়ি ॥১॥ রহাউ
॥৪॥১॥ ধনাসরী মহলা ১ ॥ হম আদমী হাঁ ইক দমী মুহলতি মুহতু ন জাণা ॥ নানকু বিনবৈ তিসৈ
সরেবহু জা কে জীআ পরাণা ॥১॥ অংধে জীবনা বীচারি দেখি কেতে কে দিনা ॥১॥ রহাউ ॥ সাসু মাসু
সভু জীউ তুমারা তু মৈ খরা পিআরা ॥ নানকু সাইরু এব কহতু হৈ সচে পরবদগারা ॥২॥ জে তু কিসৈ
ন দেহী মেরে সাহিবা কিআ কো কঢ়ৈ গহণা ॥ নানকু বিনবৈ সো কিছু পার্ড়াই পুরবি লিখে কা লহণা
॥৩॥ নামু খসম কা চিতি ন কীআ কপটী কপটু কমাণা ॥ জম দুআরি জা পকড়ি চলাইআ তা

ਚਲਦਾ ਪਛੁਤਾਣਾ ॥੪॥ ਜਬ ਲਗੁ ਟੁਨੀਆ ਰਹੀਐ ਨਾਨਕ ਕਿਛੁ ਸੁਣੀਐ ਕਿਛੁ ਕਹੀਐ ॥ ਭਾਲਿ ਰਹੇ ਹਮ
ਰਹਣੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜੀਵਤਿਆ ਮਰਿ ਰਹੀਐ ॥੫॥੨॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰ ਦੂਜਾ

੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਿਉ ਸਿਮਰੀ ਸਿਵਰਿਆ ਨਹੀ ਜਾਇ ॥ ਤਪੈ ਹਿਆਤ ਜੀਅੜਾ ਬਿਲਲਾਇ ॥ ਸਿਰਜਿ ਸਵਾਰੇ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥
ਤਿਸੁ ਵਿਸਰਿਐ ਚੰਗਾ ਕਿਉ ਹੋਇ ॥੧॥ ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਕਮਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਕਿਉ ਕਰਿ ਸਾਚਿ ਮਿਲਤ ਮੇਰੀ
ਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਦੇਖਣ ਕੋਈ ਜਾਇ ॥ ਨਾ ਕੋ ਚਾਖੈ ਨਾ ਕੋ ਖਾਇ ॥ ਲੋਕਿ ਪਤੀਣੈ ਨਾ ਪਤਿ
ਹੋਇ ॥ ਤਾ ਪਤਿ ਰਹੈ ਰਾਖੈ ਜਾ ਸੋਇ ॥੨॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਤੁਥੁ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਵੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
ਜੇ ਕੋ ਕਰੇ ਕੀਤੈ ਕਿਆ ਹੋਇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥੩॥ ਹੁਣਿ ਤਠਿ ਚਲਣਾ ਸੁਹਤਿ ਕਿ ਤਾਲਿ ॥
ਕਿਆ ਸੁਹੁ ਦੇਸਾ ਗੁਣ ਨਹੀ ਨਾਲਿ ॥ ਜੈਸੀ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤੈਸਾ ਹੋਇ ॥ ਵਿਣੁ ਨਦਰੀ ਨਾਨਕ ਨਹੀ ਕੋਇ
॥੪॥੧॥੩॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਸਿਮਰਿਆ ਜਾਇ ॥ ਆਤਮਾ ਦ੍ਰਵੈ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
ਆਤਮਾ ਪਰਾਤਮਾ ਏਕੋ ਕਰੈ ॥ ਅੰਤਰ ਕੀ ਦੁਬਿਧਾ ਅੰਤਰਿ ਮਰੈ ॥੧॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ
ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਗੈ ਫਿਰਿ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਚਿ ਸਿਮਰਿਐ ਹੋਵੈ ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਤਾ ਤੇ ਬਿਖਿਆ ਮਹਿ
ਰਹੈ ਤਦਾਸੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਐਸੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ ਵਿਚੇ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੨॥ ਐਸੀ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੈ ॥
ਜਿਸ ਕਾ ਜੀਉ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਧੈਰੈ ॥ ਸਾਹਿਬ ਭਾਵੈ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ਮਾਣੁ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰ
ਕੀ ਮੂਰਤਿ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਏ ॥ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਜਮ ਤੇ ਕੈਸਾ
ਡੈ ॥੪॥ ਭਨਤਿ ਨਾਨਕੁ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸਿਉ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਤਾ ਕੋ ਪਾਵੈ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਜਪੁ
ਤਪੁ ਸਭੁ ਇਹੁ ਸਬਦੁ ਹੈ ਸਾਰੁ ॥੫॥੨॥੪॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੀਉ ਤਪਤੁ ਹੈ ਬਾਰੋ ਬਾਰ ॥ ਤਪਿ ਤਪਿ
ਖਪੈ ਬਹੁਤੁ ਬੇਕਾਰ ॥ ਜੈ ਤਨਿ ਬਾਣੀ ਵਿਸਰਿ ਜਾਇ ॥ ਜਿਉ ਪਕਾ ਰੋਗੀ ਵਿਲਲਾਇ ॥੧॥ ਬਹੁਤਾ ਬੋਲਣੁ
ਯਖਣੁ ਹੋਇ ॥ ਵਿਣੁ ਬੋਲੇ ਜਾਣੈ ਸਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨਿ ਕਨ ਕੀਤੇ ਅਖੀ ਨਾਕੁ ॥ ਜਿਨਿ ਜਿਹਵਾ

ਦਿਤੀ ਬੋਲੇ ਤਾਤੁ ॥ ਜਿਨਿ ਮਨੁ ਰਾਖਿਆ ਅਗਨੀ ਪਾਇ ॥ ਵਾਜੈ ਪਕਣੁ ਆਖੈ ਸਮ ਜਾਇ ॥੨॥ ਜੇਤਾ ਮੋਹੁ ਪਰੀਤਿ
 ਸੁਆਦ ॥ ਸਭਾ ਕਾਲਖ ਦਾਗ ਦਾਗ ॥ ਦਾਗ ਦੋਸ ਮੁਹਿ ਚਲਿਆ ਲਾਇ ॥ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥੩॥
 ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਆਖਣੁ ਤੇਰਾ ਨਾਉ ॥ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰਣਾ ਹੋਰੁ ਨਹੀ ਥਾਉ ॥ ਜੇ ਕੋ ਢੂਬੈ ਫਿਰਿ ਹੋਵੈ ਸਾਰ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਾਚਾ ਸਰਬ ਦਾਤਾਰ ॥੪॥੩॥੫॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਚੋਰੁ ਸਲਾਹੇ ਚੀਤੁ ਨ ਭੀਜੈ ॥ ਜੇ ਬਦੀ ਕਰੇ ਤਾ ਤਸੂ
 ਨ ਛੀਜੈ ॥ ਚੋਰ ਕੀ ਹਾਮਾ ਭਰੇ ਨ ਕੋਇ ॥ ਚੋਰੁ ਕੀਆ ਚੰਗਾ ਕਿਤ ਹੋਇ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਅੰਧੇ ਕੁਤੇ ਕੂਡਿਆਰ ॥
 ਬਿਨੁ ਬੋਲੇ ਬੂੜੀਐ ਸਚਿਆਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚੋਰੁ ਸੁਆਲਿਤ ਚੋਰੁ ਸਿਆਣਾ ॥ ਖੋਟੇ ਕਾ ਮੁਲੁ ਇਕੁ ਟੁਗਾਣਾ ॥
 ਜੇ ਸਾਥਿ ਰਖੀਐ ਦੀਜੈ ਰਲਾਇ ॥ ਜਾ ਪਰਖੀਐ ਖੋਟਾ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥੨॥ ਜੈਸਾ ਕਰੇ ਸੁ ਤੈਸਾ ਪਾਵੈ ॥ ਆਪਿ
 ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਵੈ ॥ ਜੇ ਵਡਿਆਈਆ ਆਪੇ ਖਾਇ ॥ ਜੇਹੀ ਸੁਰਤਿ ਤੇਹੈ ਰਾਹਿ ਜਾਇ ॥੩॥ ਜੇ ਸਤ ਕੂੜੀਆ
 ਕੂਡੁ ਕਬਾਡੁ ॥ ਭਾਵੈ ਸਭੁ ਆਖਤ ਸੰਸਾਰ ॥ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਅਧੀ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾਣੈ ਜਾਣੁ ਸੁਜਾਣੁ
 ॥੪॥੪॥੬॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਾਇਆ ਕਾਗਦੁ ਮਨੁ ਪਰਵਾਣਾ ॥ ਸਿਰ ਕੇ ਲੇਖ ਨ ਪਢੈ ਇਆਣਾ ॥
 ਦਰਗਹ ਘੜੀਅਹਿ ਤੀਨੇ ਲੇਖ ॥ ਖੋਟਾ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਵੇਖੁ ॥੧॥ ਨਾਨਕ ਜੇ ਵਿਚਿ ਰੂਪਾ ਹੋਇ ॥ ਖਰਾ ਖਰਾ
 ਆਖੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਦੀ ਕੂਡੁ ਬੋਲਿ ਮਲੁ ਖਾਇ ॥ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਨਾਵੈ ਜੀਆ ਘਾਇ ॥ ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ
 ਨ ਜਾਣੈ ਅੰਧੁ ॥ ਤੀਨੇ ਓਯਾਡੇ ਕਾ ਬੰਧੁ ॥੨॥ ਸੋ ਜੋਗੀ ਜੋ ਜੁਗਤਿ ਪਛਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥ ਕਾਜੀ
 ਸੋ ਜੋ ਤਲਟੀ ਕਰੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਕਰੁ ਮਰੈ ॥ ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਜੋ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ ਕੁਲ
 ਤਾਰੈ ॥੩॥ ਦਾਨਸਬਂਦੁ ਸੋਈ ਦਿਲਿ ਧੋਵੈ ॥ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਸੋਈ ਮਲੁ ਖੋਵੈ ॥ ਪਡਿਆ ਬੂੜੈ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਜਿਸੁ
 ਸਿਰਿ ਦਰਗਹ ਕਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥੪॥੫॥੭॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਾਲੁ ਨਾਹੀ ਜੋਗੁ ਨਾਹੀ ਨਾਹੀ ਸਤ ਕਾ ਢਬੁ ॥ ਥਾਨਸਟ ਜਗ ਭਰਿਸਟ ਹੋਏ ਢੂਬਤਾ ਇਵ ਜਗੁ ॥੧॥ ਕਲ ਮਹਿ
 ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਾਰੁ ॥ ਅਖੀ ਤ ਮੀਟਹਿ ਨਾਕ ਪਕਡਹਿ ਠਗਣ ਕਤ ਸੰਸਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਂਟ ਸੇਤੀ ਨਾਕੁ

ਪਕਡਹਿ ਸੂੜਤੇ ਤਿਨਿ ਲੋਅ ॥ ਮਗਰ ਪਾਛੈ ਕਛੁ ਨ ਸੂੜੈ ਏਹੁ ਪਦਮੁ ਅਲੋਅ ॥੨॥ ਖਤੀਆ ਤ ਧਰਮੁ ਛੋਡਿਆ
ਮਲੇਛ ਭਾਖਿਆ ਗਹੀ ॥ ਸੂਸਟਿ ਸਭ ਇਕ ਵਰਨ ਹੋਈ ਧਰਮ ਕੀ ਗਤਿ ਰਹੀ ॥੩॥ ਅਸਟ ਸਾਜ ਸਾਜਿ
ਪੁਰਾਣ ਸੋਧਹਿ ਕਰਹਿ ਬੇਦ ਅਭਿਆਸੁ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ਮੁਕਤਿ ਨਾਹੀ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ॥੪॥੧॥੬॥੮॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਆਰਤੀ

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗਗਨ ਮੈ ਥਾਲੁ ਰਵਿ ਚੰਦੁ ਦੀਪਕ ਬਨੇ ਤਾਰਿਕਾ ਮੰਡਲ ਜਨਕ ਮੋਤੀ ॥ ਧੂਪੁ ਮਲਆਨਲੋ ਪਵਣੁ ਚਵਰੋ ਕਰੇ
ਸਗਲ ਬਨਰਾਇ ਫੂਲਮਤ ਜੋਤੀ ॥੧॥ ਕੈਸੀ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ਭਵ ਖੰਡਨਾ ਤੇਰੀ ਆਰਤੀ ॥ ਅਨਹਤਾ ਸਬਦ ਵਾਜ਼ਤ
ਭੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਹਸ ਤਵ ਨੈਨ ਨਨ ਨੈਨ ਹੈ ਤੋਹਿ ਕਤ ਸਹਸ ਮੂਰਤਿ ਨਨਾ ਏਕ ਤੋਹੀ ॥ ਸਹਸ ਪਦ
ਬਿਮਲ ਨਨ ਏਕ ਪਦ ਗੰਧ ਬਿਨੁ ਸਹਸ ਤਵ ਗੰਧ ਇਵ ਚਲਤ ਮੋਹੀ ॥੨॥ ਸਭ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਹੈ ਸੋਇ ॥
ਤਿਸ ਕੈ ਚਾਨਣਿ ਸਭ ਮਹਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਜੋਤਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਆਰਤੀ ਹੋਇ
॥੩॥ ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਮਲ ਮਕਰੰਦ ਲੋਭਿਤ ਮਨੋ ਅਨਦਿਨੋ ਮੋਹਿ ਆਹੀ ਪਿਆਸਾ ॥ ਕ੃ਪਾ ਜਲੁ ਦੇਹਿ ਨਾਨਕ
ਸਾਰਿਗ ਕਤ ਹੋਇ ਜਾ ਤੇ ਤੈਰੈ ਨਾਮਿ ਵਾਸਾ ॥੪॥੧॥੭॥੬॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੨ ਚਤੁਪਦੇ

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਝਿਹੁ ਧਨੁ ਅਖੁਟੁ ਨ ਨਿਖੁਟੈ ਨ ਜਾਇ ॥ ਪ੍ਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਇ ॥ ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕਤ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈ
॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥੧॥ ਸੇ ਧਨਵੰਤ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਹਰਿ ਧਨੁ
ਪਰਗਾਸਿਆ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਕਗੁਣ ਕਾਟਿ ਗੁਣ ਰਿਦੈ ਸਮਾਇ ॥ ਪ੍ਰੈ ਗੁਰ ਕੈ
ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਪ੍ਰੈ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ॥ ਸੁਖ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ॥੨॥ ਏਕੁ ਅਚਰਜੁ ਜਨ
ਦੇਖਹੁ ਭਾਈ ॥ ਟੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਵਸੈ
ਮਨਿ ਆਇ ॥੩॥ ਸਭ ਮਹਿ ਵਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਘਟਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥ ਸਹਜੇ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣਿ

ਪਛਾਣਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੪॥੧॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਿਰਮਲੁ
 ਅਤਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਨਾਮ ਧਨ ਬਿਨੁ ਹੋਰ ਸਭ ਬਿਖੁ ਜਾਣੁ ॥ ਮਾਝਿਆ ਮੋਹਿ ਜਲੈ
 ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੈ ਕੋਝਿ ॥ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਪਰਾਪਤਿ
 ਹੋਝਿ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਬਦੁ ਦੀਪਕੁ ਵਰਤੈ ਤਿਹੁ ਲੋਝਿ ॥ ਜੋ ਚਾਖੈ ਸੋ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਝਿ ॥ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮਿ ਹਉਮੈ ਮਲੁ
 ਧੋਝਿ ॥ ਸਾਚੀ ਭਗਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਝਿ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਸੋ ਹਰਿ ਜਨੁ ਲੋਗੁ ॥ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਹਰਖੁ
 ਨਾਹੀ ਕਦੇ ਸੋਗੁ ॥ ਆਪਿ ਮੁਕਤੁ ਅਵਰਾ ਮੁਕਤੁ ਕਰਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਹਰਿ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੩॥ ਬਿਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਸਭ ਸੁਝੈ ਬਿਲਲਾਝਿ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਦਾਝਾਹਿ ਸਾਤਿ ਨ ਪਾਝਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲੈ ਸਭੁ ਤ੃ਸਨ ਕੁਝਾਏ ॥
 ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਾਁਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੪॥੨॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਦਾ ਧਨੁ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ
 ਜਿਨਹਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ॥ ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਤਿਨ ਕਤ ਪਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥੧॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਪਾਵੈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਪਰਗਾਸੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਝਿਹੁ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਗ੍ਰੰਥਾ ਧਨ ਪਿਰ ਹੋਝਿ ॥
 ਸਾਁਤਿ ਸੀਗਾਰੁ ਰਾਵੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਝਿ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕੋਝਿ ਨ ਪਾਏ ॥ ਮੂਲਹੁ ਭੁਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥੨॥ ਗੁਰ ਤੇ
 ਸਾਤਿ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਬਾਣੀ ॥ ਸੇਵਾ ਸਾਚੀ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸਦਾ ਧਿਆਏ ॥ ਸਾਚ ਨਾਮਿ
 ਵਡਿਆਈ ਪਾਏ ॥੩॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸੋਝਿ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮੇਲਾਵਾ ਹੋਝਿ ॥ ਗੁਰਬਾਣੀ ਤੇ ਹਰਿ ਮੰਨਿ
 ਕਵਸਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥੪॥੩॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਤੀਜਾ ॥ ਜਗੁ ਮੈਲਾ ਮੈਲੀ ਹੋਝਿ
 ਜਾਝਿ ॥ ਆਵੈ ਜਾਝਿ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲੋਭਾਝਿ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਝਿ ਸਭ ਪਰਜ ਵਿਗੋਈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਚੋਟਾ ਖਾਝਿ ਅਪੁਨੀ ਪਤਿ ਖੋਈ
 ॥੧॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਝਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਪਤਿ ਊਤਮ ਹੋਝਿ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਕਰੇ
 ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਰਾਤੇ ਭਗਤਿ ਦੂਝਾਈ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਜਨੁ ਵਡਿਆਈ ਪਾਏ ॥ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਸੁਖ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥੨॥ ਸਾਚੇ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਜਾਣੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣੁ ॥ ਸਾਚੀ ਰਾਸਿ ਸਾਚਾ
 ਕਾਪਾਰੁ ॥ ਸੋ ਧਨੁ ਪੁਰਖੁ ਜਿਸੁ ਨਾਮਿ ਪਿਆਰੁ ॥੩॥ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਸਾਚੈ ਝਿਕਿ ਸਚਿ ਲਾਏ ॥ ਊਤਮ ਬਾਣੀ ਸਬਦੁ

सुणाए ॥ प्रभ साचे की साची कार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥४॥४॥ धनासरी महला ३ ॥ जो हरि
 सेवहि तिन बलि जाउ ॥ तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ ॥ साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ॥ साचै
 सबदि वसै मनि आइ ॥१॥ गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥ सहजे हरि नामु मनि वसाए ॥१॥ रहाउ ॥
 कूड़ु कुसतु तृसना अगनि बुझाए ॥ अंतरि साँति सहजि सुखु पाए ॥ गुर कै भाणै चलै ता आपु जाइ ॥
 साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥२॥ न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥ मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥
 सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ॥ हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥३॥ किस नो कहीअै दाता डिकु सोइ ॥
 किरपा करे सबदि मिलावा होइ ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचा भावा ॥४॥५॥
 धनासरी महला ३ ॥ मनु मरै धातु मरि जाइ ॥ बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ॥ इहु मनु मरै दारू
 जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥१॥ जिस नो बखसे हरि दे वडिआई ॥ गुर परसादि वसै
 मनि आई ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल
 मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥ मनु असाधु साधै जनु कोई ॥ अचरु चरै ता निरमलु
 होई ॥ गुरमुखि इहु मनु लडिआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजै विकार ॥३॥ जो धुरि रखिअनु मेलि
 मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु
 पछाणै ॥४॥६॥ धनासरी महला ३ ॥ काचा धनु संचहि मूरख गावार ॥ मनमुख भूले अंध गावार ॥
 बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ ॥ ना साथि जाइ न परापति होइ ॥१॥ साचा धनु गुरमती पाए ॥
 काचा धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥ मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥ भवजलि डूबे न उरवारि न
 पारि ॥ सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥ साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥२॥ चहु जुग महि अंमृतु साची
 बाणी ॥ पूरै भागि हरि नामि समाणी ॥ सिध साधिक तरसहि सभि लोइ ॥ पूरै भागि परापति होइ
 ॥३॥ सभु किछु साचा साचा है सोइ ॥ ऊतम ब्रह्मु पछाणै कोइ ॥ सचु साचा सचु आपि दृङ्गाए ॥

ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਕੇਖੈ ਆਪੇ ਸਚਿ ਲਾਏ ॥੪॥੭॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਾਵੈ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਮਿਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
 ਸੇ ਜਨ ਧਨੁ ਜਿਨ ਇਕ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚੀ ਸਾਚਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਦੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥੧॥
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਚਰਜੁ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਸੁਣਾਏ ॥ ਕਲੀ ਕਾਲ ਵਿਚਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਮ ਮੂਰਖ ਮੂਰਖ
 ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸਭ ਕਾਰ ਕਮਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਛਾਉਮੈ ਜਾਇ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ
 ॥੨॥ ਬਿਖਿਆ ਕਾ ਧਨੁ ਬਹੁਤੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਅਛਕਾਰਿ ਝੂਬੈ ਨ ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ॥ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥
 ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥੩॥ ਆਪੇ ਸਾਜੇ ਕਰਤਾ ਸੋਇ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਫੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜਿਸੁ ਸਚਿ
 ਲਾਏ ਸੋਈ ਲਾਗੈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਆਗੈ ॥੪॥੮॥

ਰਾਗ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੪

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਮ ਭੀਖਕ ਭੇਖਾਰੀ ਤੇਰੇ ਤੂ ਨਿਜ ਪਤਿ ਹੈ ਦਾਤਾ ॥ ਹੋਹੁ ਦੈਆਲ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ਮੰਗਤ ਜਨ ਕੱਤ ਸਦਾ ਰਹਉ
 ਰੰਗ ਰਾਤਾ ॥੧॥ ਛਾਉ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ਸਾਚੇ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਭਨਾ ਕਾ ਏਕੋ ਅਵਰੁ ਨ
 ਫੂਜਾ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਹੁਤੇ ਫੇਰ ਪਾਏ ਕਿਰਪਨ ਕਤ ਅਥ ਕਿਛੁ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥ ਹੋਹੁ ਫਿਆਲ ਦਰਸਨੁ
 ਦੇਹੁ ਅਪੁਨਾ ਅੈਸੀ ਬਖਸ ਕਰੀਜੈ ॥੨॥ ਭਨਤਿ ਨਾਨਕ ਭਰਮ ਪਟ ਖੂਲੇ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਾਨਿਆ ॥ ਸਾਚੀ
 ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਹੈ ਭੀਤਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੩॥੧॥੬॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ਚਤੁਪਦੇ

੧੯੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜੋ ਹਰਿ ਸੇਵਹਿ ਸੰਤ ਭਗਤ ਤਿਨ ਕੇ ਸਭਿ ਪਾਪ ਨਿਵਾਰੀ ॥ ਹਮ ਊਪਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਸੁਆਮੀ ਰਖੁ ਸੰਗਤਿ
 ਤੁਮ ਜੁ ਪਿਆਰੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਕਹਿ ਨ ਸਕਤ ਬਨਵਾਰੀ ॥ ਹਮ ਪਾਪੀ ਪਾਥਰ ਨੀਰਿ ਢੁਕਤ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ
 ਪਾਖਣ ਹਮ ਤਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਲਾਗੇ ਬਿਖੁ ਮੌਰਚਾ ਲਗਿ ਸੰਗਤਿ ਸਾਥ ਸਵਾਰੀ ॥ ਜਿਤ
 ਕੱਚਨੁ ਬੈਸੰਤਰਿ ਤਾਇਆ ਮਲੁ ਕਾਟੀ ਕਟਿਤ ਤਤਾਰੀ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਜਪਤ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜਪਿ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਤਖਥੁ ਜਗਿ ਪ੍ਰਾ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥੩॥

हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपरंपर पुरख अपारी ॥ जन कउ कृपा करहु जगजीवन जन नानक
 पैज सवारी ॥४॥१॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी
 ॥ अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥१॥ हरि कै नामि रता बैरागी ॥ हरि हरि कथा
 सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥ संत जना की जाति हरि सुआमी तुम ठाकुर
 हम साँगी ॥ जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥२॥ किआ हम किरम नान् निक
 कीरे तुमु वड पुरख वडागी ॥ तुमुरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥३
 ॥ हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि सेवा लागी ॥ नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि
 कथा कथागी ॥४॥२॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी
 ॥ जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी ॥१॥ हरि के संत सुनहु जसु कानी ॥ हरि हरि
 कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥१॥ रहाउ ॥ ऐसा संतु साधु जिन
 पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥ तिन की धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥२॥ हरि हरि
 सफलिओ बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से तृपतानी ॥ हरि हरि अंमृतु पी तृपतासे सभ लाथी भूख
 भुखानी ॥३॥ जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी ॥ तिन हरि संगति मेलि प्रभ
 सुआमी जन नानक दास दसानी ॥४॥३॥ धनासरी महला ४ ॥ हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते
 किउ चालह गुर चाली ॥ सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥१॥ गुरसिख मीत
 चलहु गुर चाली ॥ जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के संत
 सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काली
 ॥२॥ हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि
 मिलिआ केल केलाली ॥३॥ हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ जन

ਨਾਨਕ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਹਮ ਸਾਧ ਜਨਾ ਪਗ ਰਾਲੀ ॥੪॥੪॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਕ੍ਰਿਂਦ ਭਏ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਚਾਤੂਕ ਬਿਲਲ ਬਿਲਲਾਤੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੀ ਮੁਖਿ ਦੇਵਹੁ
 ਹਰਿ ਨਿਮਖਾਤੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਇਕ ਰਾਤੀ ॥ ਜਿਤ ਬਿਨੁ ਅਮਲੈ ਅਮਲੀ ਮਰਿ ਜਾਈ ਹੈ
 ਤਿਤ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਹਮ ਮਰਿ ਜਾਤੀ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਮ ਹਰਿ ਸਰਵਰ ਅਤਿ ਅਗਾਹ ਹਮ ਲਹਿ ਨ ਸਕਹਿ ਅੰਤੁ ਮਾਤੀ
 ॥ ਤੂ ਪੈ ਪੈ ਅਪਰੰਪਰੁ ਸੁਆਮੀ ਮਿਤਿ ਜਾਨਹੁ ਆਪਨ ਗਾਤੀ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਜਨਾ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਗੁਰ
 ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਰਾਤੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਬਨੀ ਅਤਿ ਸੋਭਾ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਊਤਮ ਪਾਤੀ ॥੩॥ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਆਪੇ
 ਸੇਵਕੁ ਆਪਿ ਬਨਾਵੈ ਭਾਤੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਨੁ ਤੁਮਰੀ ਸਰਣਾਈ ਹਰਿ ਰਖਹੁ ਲਾਜ ਭਗਤੀ ॥੪॥੫॥ ਧਨਾਸਰੀ
 ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਕਲਿਜੁਗ ਕਾ ਧਰਮੁ ਕਹਹੁ ਤੁਮ ਭਾਈ ਕਿਵ ਛੂਟਹੁ ਹਮ ਛੁਟਕਾਕੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਕੇਡੀ ਹਰਿ
 ਤੁਲਹਾ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਤਰੈ ਤਰਾਕੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀ ਲਾਜ ਰਖਹੁ ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਜਪਾਵਹੁ
 ਅਪਨਾ ਹਮ ਮਾਗੀ ਭਗਤਿ ਇਕਾਕੀ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੇਵਕ ਸੇ ਹਰਿ ਪਿਆਰੇ ਜਿਨ ਜਪਿਓ ਹਰਿ ਬਚਨਾਕੀ
 ॥ ਲੇਖਾ ਚਿਤ ਗੁਪਤਿ ਜੋ ਲਿਖਿਆ ਸਭ ਛੂਟੀ ਜਮ ਕੀ ਬਾਕੀ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਜਪਿਓ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਗਿ
 ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ॥ ਦਿਨੀਅਰੁ ਸੂਰੁ ਤੂਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਨੀ ਸਿਵ ਚਰਿਓ ਚੰਦੁ ਚੰਦਾਕੀ ॥੩॥ ਤੁਮ ਵੱਡ
 ਪੁਰਖ ਵੱਡ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਤੁਮ ਆਪੇ ਆਪਿ ਅਪਾਕੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ਕਰਿ ਦਾਸਨਿ
 ਦਾਸ ਦਸਾਕੀ ॥੪॥੬॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੫ ਟੁਪਦੇ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤਰ ਧਾਰਿ ਬੀਚਾਰਿ ਮੁਰਾਰਿ ਰਮੋ ਰਮੁ ਮਨਮੋਹਨ ਨਾਮੁ ਜਪੀਨੇ ॥ ਅਦੂਸਟੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਪਰੰਪਰ ਸੁਆਮੀ ਗੁਰਿ
 ਪੂਰੈ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਿ ਦੀਨੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਪਾਰਸ ਚੰਦਨ ਹਮ ਕਾਸਟ ਲੋਸਟ ॥ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਹਰੀ ਸਤਸੰਗੁ ਭਏ ਹਰਿ
 ਕੱਚਨੁ ਚੰਦਨੁ ਕੀਨੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਵ ਛਿਅ ਖੱਟੁ ਬੋਲਹਿ ਮੁਖ ਆਗਰ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਇਵ ਨ ਪਤੀਨੇ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸਦ ਧਿਆਵਹੁ ਇਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਭੀਨੇ ॥੨॥੧॥੭॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥

ਗੁਨ ਕਹੁ ਹਰਿ ਲਹੁ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਇਵ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਭਾਵਹਿ ਫਿਰਿ ਜਨਮਿ
 ਨ ਆਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥੧॥ ਜਪਿ ਮਨ ਨਾਮੁ ਹਰੀ ਹੋਹਿ ਸਰਬ ਸੁਖੀ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਊਚ
 ਸਭਨਾ ਤੇ ਊਪਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੇਵਿ ਛਡਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਕੀਨੀ ਗੁਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਦੀਨੀ
 ਤਬ ਹਰਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥ ਬਹੁ ਚਿੰਤ ਵਿਸਾਰੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਰਿ ਧਾਰੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਏ ਹੈ ਸਖਾਈ
 ॥੨॥੨॥੮॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਪੜ੍ਹੁ ਹਰਿ ਲਿਖੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਗਾਤ ਹਰਿ ਭਤਜਲੁ ਪਾਰਿ
 ਤਤਾਰੀ ॥ ਮਨਿ ਬਚਨਿ ਰਿਟੈ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਹੋਇ ਸਨ੍ਤੁਸ਼ਟੁ ਇਵ ਭਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਰਾਰੀ ॥੧॥ ਮਨਿ ਜਪੀਐ
 ਹਰਿ ਜਗਦੀਸ ॥ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਸਾਥੂ ਮੀਤ ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਰਿ ਬਨਵਾਰੀ ॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰੀ ਵੂਸਟਿ ਤਬ ਭਇਆ ਮਨਿ ਉਦਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਕੀ ਪਤਿ ਰਾਖੁ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਆਇ ਪਰਿਆ ਹੈ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥੩॥੬॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਚਤੁਰਸੀਹ ਸਿਧ ਬੁਧ ਤੇਤੀਸ ਕੋਟਿ ਸੁਨਿ ਜਨ ਸਭਿ ਚਾਹਹਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੇਰੋ ਨਾਤ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਵਿਰਲਾ
 ਪਾਵੈ ਜਿਨ ਕਤ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਭਾਉ ॥੧॥ ਜਪਿ ਮਨ ਰਾਮੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਜਸੁ ਊਤਮ ਕਾਮ ॥ ਜੋ ਗਾਵਹਿ
 ਸੁਣਹਿ ਤੇਰਾ ਜਸੁ ਸੁਆਮੀ ਹਤ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਰਣਾਗਤਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ
 ਜੋ ਤੁਮ ਦੇਹੁ ਸੋਈ ਹਤ ਪਾਤ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਦੀਜੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਮਰਣ ਕਾ ਹੈ ਚਾਤ
 ॥੨॥੪॥੧੦॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸੇਵਕ ਸਿਖ ਪ੍ਰਯਣ ਸਭਿ ਆਵਹਿ ਸਭਿ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਊਤਮ
 ਬਾਨੀ ॥ ਗਾਵਿਆ ਸੁਣਿਆ ਤਿਨ ਕਾ ਹਰਿ ਥਾਇ ਪਾਵੈ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਆਗਿਆ ਸਤਿ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨੀ
 ॥੧॥ ਬੋਲਹੁ ਭਾਈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਰਿ ਭਵਜਲ ਤੀਰਥਿ ॥ ਹਰਿ ਦਰਿ ਤਿਨ ਕੀ ਊਤਮ ਬਾਤ ਹੈ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ
 ਕਥਾ ਜਿਨ ਜਨਹੁ ਜਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਪੇ ਗੁਰੁ ਚੇਲਾ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚੋਜ ਵਿਡਾਨੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ
 ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ਸੋਈ ਹਰਿ ਮਿਲਸੀ ਅਵਰ ਸਭ ਤਿਆਗੁ ਓਹਾ ਹਰਿ ਭਾਨੀ ॥੨॥੫॥੧੧॥ ਧਨਾਸਰੀ
 ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਇਛਾ ਪ੍ਰਕੁ ਸਰਬ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਰਿ ਜਾ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਕਾਮਧੇਨਾ ॥ ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਮੇਰੇ

ਜੀਅਡੇ ਤਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਜਪਿ ਮਨ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ
 ਸੁਖ ਊਜਲ ਹੋਈ ਹੈ ਨਿਤ ਧਿਆਈਐ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਹ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਭਿੱਥਾ ਤਹ
 ਤਪਾਧਿ ਗਤੁ ਕੀਨੀ ਕਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਜਪਨਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਗੁਰਿ ਇਹ ਮਤਿ ਦੀਨੀ ਜਪਿ ਹਰਿ ਭਵਜਲੁ
 ਤਰਨਾ ॥੨॥੬॥੧੨॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਮੈ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਹਮਰੀ ਬੇਦਨਿ ਤੂ
 ਜਾਨਤਾ ਸਾਹਾ ਅਵਰੁ ਕਿਆ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਤੂ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਸਚੁ ਸਮੁ
 ਹੋਇ ॥ ਝੂਠਾ ਕਿਸ ਕਤ ਆਖੀਐ ਸਾਹਾ ਟ੍ਰੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥੧॥ ਸਭਨਾ ਵਿਚਿ ਤੂ ਵਰਤਦਾ ਸਾਹਾ ਸਭਿ ਤੁਝਾਹਿ
 ਧਿਆਵਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਸਭਿ ਤੁਝ ਹੀ ਥਾਵਹੁ ਮਂਗਦੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਤੂ ਸਭਨਾ ਕਰਹਿ ਇਕ ਦਾਤਿ ॥੨॥ ਸਭੁ ਕੋ
 ਤੁਝ ਹੀ ਵਿਚਿ ਹੈ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਤੁਝ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥ ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਤੂ ਸਭਸ ਦਾ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਸਭਿ ਤੁਝ ਹੀ
 ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥੩॥ ਸਭਨਾ ਕੀ ਤੂ ਆਸ ਹੈ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸਭਿ ਤੁਝਾਹਿ ਧਿਆਵਹਿ ਮੇਰੇ ਸਾਹ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ
 ਤਿਤ ਰਖੁ ਤੂ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥੪॥੭॥੧੩॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ਚਤੁਪਦੇ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਭਵ ਖੰਡਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਸ਼ਾਮੀ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਨਿਰਂਕਾਰੇ ॥ ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਮਿਟੇ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਜਾਁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ
 ਸਮਾਰੇ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਹੈ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ॥ ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲਿ ਕਰੀ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਵਸਿ ਕੀਨੇ ਪੰਚ ਢੂਤਾਰੇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੇਰਾ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਰੂਪੁ ਸੁਹਾਵਾ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਦਰਬਾਰੇ ॥ ਸਰਬ ਜੀਆ ਕੇ ਦਾਤੇ ਸੁਆਮੀ
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਤਬਾਰੇ ॥੨॥ ਤੇਰਾ ਵਰਨੁ ਨ ਜਾਪੈ ਰੂਪੁ ਨ ਲਖੀਐ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਤਨੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਜਲਿ
 ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਖਿਆ ਸ਼ਬ ਠਾਈ ਅਗਮ ਰੂਪ ਗਿਰਧਾਰੇ ॥੩॥ ਕੀਰਤਿ ਕਰਹਿ ਸਗਲ ਜਨ ਤੇਰੀ ਤੂ ਅਬਿਨਾਸੀ
 ਪੁਰਖੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖਹੁ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਢੁਆਰੇ ॥੪॥੧॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਬਿਨੁ ਜਲ ਪ੍ਰਾਨ ਤਜੇ ਹੈ ਮੀਨਾ ਜਿਨਿ ਜਲ ਸਿਤ ਹੇਤੁ ਬਢਾਇਆਂ ॥ ਕਮਲ ਹੇਤਿ ਬਿਨਸਿਆਂ ਹੈ ਭਵਰਾ ਤਨਿ
 ਮਾਰਗੁ ਨਿਕਸਿ ਨ ਪਾਇਆਂ ॥੧॥ ਅਬ ਮਨ ਏਕਸ ਸਿਤ ਮੋਹੁ ਕੀਨਾ ॥ ਮਰੈ ਨ ਜਾਵੈ ਸਦ ਹੀ ਸੰਗੇ ਸਤਿਗੁਰ

सबदी चीना ॥१॥ रहाउ ॥ काम हेति कुंचरु लै फाँकिओ ओहु पर वसि भड़िओ बिचारा ॥ नाद हेति
 सिरु डारिओ कुरंका उस ही हेत बिदारा ॥२॥ देखि कुटंबु लोभि मोहिओ प्रानी माड़िआ कउ लपटाना ॥
 अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥३॥ बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा ओहु
 जाणहु सदा दुहेला ॥ कहु नानक गुर इहै बुझाड़िओ प्रीति प्रभू सद केला ॥४॥२॥ धनासरी मः ५ ॥
 करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए ॥ मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए
 ॥१॥ साधसंगि चिंत बिरानी छाडी ॥ अह्नाबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥१॥ रहाउ ॥
 ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥ ब्रह्मु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी
 पाई ॥२॥ सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ दूरि पराड़िओ मन का बिरहा ता
 मेलु कीओ मेरै राजन ॥३॥ बिनसिओ ढीठा अंमृतु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥ जलि थलि महीअलि
 सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥४॥३॥ धनासरी मः ५ ॥ जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस
 ओड़ि आए ॥ महा अन्नदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥१॥ अब मोहि राम जसो मनि
 गाड़िओ ॥ भड़िओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाड़िओ ॥१॥ रहाउ ॥ गुण निधानु रिदि
 भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा ॥ भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥२॥
 चिंत अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥ हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका ॥३॥
 गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥ कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै
 कुरबाणी ॥४॥४॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघडु सुजानी ॥
 तिन ही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥१॥ जीअ की एकै ही पहि मानी ॥ अवरि
 जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥ अंमृत नामु निरमोलकु हीरा गुरि
 दीनो मंतानी ॥ डिगै न डोलै दृढ़ु करि रहिओ पूरन होड़ि तृपतानी ॥२॥ ओड़ि जु बीच हम तुम कछु

होते तिन की बात बिलानी ॥ अलम्कार मिलि थैली होई है ता ते कनिक वखानी ॥३॥ प्रगटिओ जोति
 सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥ कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥४॥५॥
 धनासरी महला ५ ॥ वडे वडे राजन अरु भूमन ता की तृसन न बूझी ॥ लपटि रहे माइआ रंग माते
 लोचन कछू न सूझी ॥१॥ बिखिआ महि किन ही तृपति न पाई ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु
 हरि कहा अधाई ॥ रहाउ ॥ दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ता की मिटै न भूखा ॥ उद्मु करै
 सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥२॥ कामवंत कामी बहु नारी पर गृह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति
 करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥३॥ हरि हरि नामु अपार अमोला अंमृतु एकु निधाना ॥ सूखु
 सहजु आन्दु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥४॥६॥ धनासरी मঃ ५ ॥ लवै न लागन कउ है कछूअै
 जा कउ फिरि इहु धावै ॥ जा कउ गुरि दीनो इहु अंमृतु तिस ही कउ बनि आवै ॥१॥ जा कउ
 आइओ एकु रसा ॥ खान पान आन नही खुधिआ ता कै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ मउलिओ मनु तनु
 होइओ हरिआ एक बूँद जिनि पाई ॥ बरनि न साकउ उसतति ता की कीमति कहणु न जाई ॥२॥
 घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥ जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि
 गुरहि कमानो मंता ॥३॥ दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीआ प्रतिपाला ॥ ओति पोति नानक
 संगि रविआ जिउ माता बाल गोपाला ॥४॥७॥ धनासरी महला ५ ॥ बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि
 जिनि हरि हरि नामु दृढ़ाया ॥ महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥१॥ हमरे
 प्रान गुपाल गोबिंद ॥ ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि
 सरब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥ नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥२॥ सरब
 मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥ पारब्रह्म अपरंपर सुआमी सिमरत पारि पराना ॥३॥ सीतल
 साँति महा सुखु पाइआ संतसंगि रहिओ ओला ॥ हरि धनु संचनु हरि नामु भोजनु इहु नानक कीनो

चोला ॥४॥८॥ धनासरी महला ५ ॥ जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा कमानी रीति ॥ संत की निंदा
 साकत की पूजा ऐसी दृढ़ी बिपरीति ॥१॥ माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥ हरिचंदउरी बन हर
 पात रे इहै तुहारो बीत ॥१॥ रहाउ ॥ चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥ अंमृत
 संगि नाहि रुच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥२॥ उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत
 ॥ जात अकारथ जनमु पदारथ काच बादरै जीत ॥३॥ जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन
 अंजनु नेत्र दीत ॥ साधसंगि इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत ॥४॥६॥ धनासरी महला ५ ॥
 पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥ सासि सासि मनु नामु समारै इहु बिस्त्राम निधि
 पाई ॥१॥ तुम् करहु दइआ मेरे साई ॥ ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥१॥
 रहाउ ॥ तुमरी कृपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई ॥ अनद रूपु रविओ सभ मधे जत कत
 पेखउ जाई ॥२॥ तुम् दइआल किरपाल कृपा निधि पतित पावन गोसाई ॥ कोटि सूख आन्द राज
 पाए मुख ते निमख बुलाई ॥३॥ जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥ नामु जपत तृसना
 सभ बुझी है नानक तृपति अधाई ॥४॥१०॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि कीने वसि अपुनै तै गुण
 भवण चतुर संसारा ॥ जग इसनान ताप थान खंडे किआ इहु जंतु विचारा ॥१॥ प्रभ की ओट गही
 तउ छूटो ॥ साध प्रसादि हरि हरि गाए बिखै बिआधि तब हूटो ॥१॥ रहाउ ॥ नह सुणीअै नह
 मुख ते बकीअै नह मोहै उह डीठी ॥ ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥२॥ माइ
 बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ दूआ ॥ किस ही वाधि घाटि किस ही पहि सगले लरि
 लरि मूआ ॥३॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ ॥ गूँझी भाहि जलै संसारा
 भगत न बिआपै माइआ ॥४॥ संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे ॥ हरि हरि नामु
 नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥५॥१॥ धनासरी महला ५ ॥ तुम दाते ठाकुर

प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥१॥
 जिहवा एक कवन गुन कहीਐ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किन ही लहीਐ ॥२॥ रहाउ ॥
 कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु
 रखावहु ॥२॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले ॥ राखहु राखनहार दिइआला नानक
 घर के गोले ॥३॥१२॥ धनासरी महला ५ ॥ पूजा वरत तिलक इसनाना पुन्न दान बहु दैन ॥ कहूं न
 भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥१॥ प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥ बहु प्रकार खोजहि सभि
 ता कउ बिखमु न जाई लैन ॥१॥ रहाउ ॥ जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरथ ताप लै गैन ॥ इह
 बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥२॥ अंमृत नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइओ
 जिसु किरपैन ॥ साधसंगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥३॥१३॥ धनासरी महला ५ ॥
 बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥ असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न
 कतहू धावै ॥१॥ है कोऊ ऐसो हमरा मीतु ॥ सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥१॥
 रहाउ ॥ पर धन पर तन पर की निंदा इन सित प्रीति न लागै ॥ संतह संगु संत संभाखनु हरि
 कीरतनि मनु जागै ॥२॥ गुण निधान दिइआल पुरख प्रभ सरब सूख दिइआला ॥ मागै दानु नामु तेरो
 नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥३॥१४॥ धनासरी महला ५ ॥ हरि हरि लीने संत उबारि ॥ हरि के
 दास की चितवै बुरिआई तिस ही कउ फिरि मारि ॥१॥ रहाउ ॥ जन का आपि सहाई होआ
 निंदक भागे हारि ॥ भ्रमत भ्रमत ऊहाँ ही मौए बाहुड़ि गृहि न मंझारि ॥१॥ नानक सरणि परिओ
 दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि ॥ निंदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥२॥१५॥
 धनासिरी महला ५ ॥ अब हरि राखनहारु चितारिआ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु
 बिदारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ ॥ सिमरि सिमरि पूरन

ਨਾਰਾਇਨ ਸੰਗੀ ਸਗਲੇ ਤਾਰਿਆ ॥੧॥ ਅਤਖਥ ਮੰਤ ਮੂਲ ਮਨ ਏਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ਼ਾਸੁ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਿਆ ॥ ਚਰਨ
ਰੇਨ ਬਾਂਛੈ ਨਿਤ ਨਾਨਕੁ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ ਬਲਿਹਾਰਿਆ ॥੨॥੧੬॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰਾ ਲਾਗੇ ਰਾਮ ਸਿਉ
ਵੇਤੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੁਖ ਕਾ ਕਾਟਿਆ ਕੇਤੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਾਥ ਦੇਡਿ ਰਾਖਿਓ ਅਪੁਨਾ
ਕਰਿ ਬਿਰਥਾ ਸਗਲ ਮਿਟਾਈ ॥ ਨਿੰਦਕ ਕੇ ਮੁਖ ਕਾਲੇ ਕੀਨੇ ਜਨ ਕਾ ਆਪਿ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ
ਹੋਆ ਰਖਵਾਲਾ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਕੱਠਿ ਲਾਇ ॥ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ਸਦਾ ਸੁਖ ਮਾਣੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ
॥੨॥੧੭॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਤਖਥੁ ਤੇਰੋ ਨਾਮੁ ਦਿਇਆਲ ॥ ਮੋਹਿ ਆਤੁਰ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਨਹੀਂ ਜਾਨੀ
ਤੁਂ ਆਪਿ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਨਿਵਾਰਿ ॥ ਬੰਧਨ
ਕਾਟ ਲੇਹੁ ਅਪੁਨੇ ਕਰਿ ਕਬੂਲ ਨ ਆਵਹ ਹਾਰਿ ॥੧॥ ਤੇਰੀ ਸਰਨਿ ਪਇਆ ਹਤ ਜੀਵਾਂ ਤੁਂ ਸੰਮ੍ਰਥੁ ਪੁਰਖੁ
ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਆਰਾਧੀ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੨॥੧੮॥

ਰਾਗ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਾ ਹਾ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ॥ ਹਮ ਤੇ ਕਿਛੂ ਨ ਹੋਇ ਮੇਰੇ ਸ਼ਾਮੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨਾ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਅਗਨਿ ਕੁਟੰਬ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰ ॥ ਭਰਮ ਮੌਹ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਾਰ ॥੧॥ ਊਚ ਨੀਚ ਸੂਖ ਦੂਖ ॥ ਧਾਪਸਿ ਨਾਹੀ
ਤ੃ਸਨਾ ਭੂਖ ॥੨॥ ਮਨਿ ਬਾਸਨਾ ਰਚਿ ਬਿਖੈ ਬਿਆਧਿ ॥ ਪਂਚ ਟੂਤ ਸੰਗਿ ਮਹਾ ਅਸਾਧ ॥੩॥ ਜੀਅ ਜਹਾਨੁ
ਪ੍ਰਾਨ ਧਨੁ ਤੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾਨੁ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨੇਰਾ ॥੪॥੧॥੧੬॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦੀਨ ਦਰਦ ਨਿਵਾਰਿ
ਠਾਕੁਰ ਰਾਖੈ ਜਨ ਕੀ ਆਪਿ ॥ ਤਰਣ ਤਾਰਣ ਹਰਿ ਨਿਧਿ ਦੂਖੁ ਨ ਸਕੈ ਬਿਆਪਿ ॥੧॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਭਜਹੁ ਗੁਪਾਲ
॥ ਆਨ ਸੰਜਮ ਕਿਛੁ ਨ ਸੂੜੈ ਇਹ ਜਤਨ ਕਾਟਿ ਕਲਿ ਕਾਲ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਦਿਇਆਲ ਪੂਰਨ ਤਿਸੁ
ਬਿਨਾ ਨਹੀਂ ਕੋਇ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਨਿਵਾਰਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸੋਇ ॥੨॥ ਬੇਦ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਕਥੈ ਸਾਸਤ
ਭਗਤ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਮੁਕਤਿ ਪਾਈਐ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਅੰਧਾਰੁ ॥੩॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਅਧਾਰੁ ਜਨ

का रासि पूंजी एक ॥ ताणु माणु दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥४॥२॥२०॥ धनासरी महला ५ ॥
 फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ ॥ आन सगल बिधि काँमि न आवै हरि हरि नामु
 धिआइआ ॥१॥ ता ते मोहि धारी ओट गोपाल ॥ सरनि परिओ पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल
 ॥ रहाउ ॥ सुरग मिरत पड़िआल भू मंडल सगल बिआपे माइ ॥ जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि
 हरि नामु धिआइ ॥२॥ नानक नामु निरंजनु गाईਐ पाईਐ सरब निधाना ॥ करि किरपा जिसु
 देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥३॥३॥२१॥

धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

छोਡि जाहि से करहि पराल ॥ कामि न आवहि से जंजाल ॥ संगि न चालहि तिन सित हीत ॥ जो बैराई
 सੇई मीत ॥१॥ औसे भरमि भुले संसारा ॥ जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥ साचु धरमु नही
 भावै डीठा ॥ झूठ धोह सित रचिओ मीठा ॥ दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ जाणै नाही मरणु
 विचारा ॥२॥ वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥ करਮ धरम सगला ई खोवै ॥ हुकमु न बूझै आवण जाणे
 ॥ पाप करै ता पछोताणे ॥३॥ जो तुधु भावै सो परवाणु ॥ तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥ नानकु गरीबु बंदा
 जनु तेरा ॥ रਾਖਿ लੇਇ ਸਾਹਿਬੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥४॥१॥२੨॥ धनासरी महला ५ ॥ मोहि मसकीन प्रभु
 नामु अधारु ॥ खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥ संचण कउ हरि एको नामु ॥ हलति पलति ता कै आवै
 काम ॥१॥ नामि रते प्रभ रंगि अपार ॥ साध गावहि गुण एक निरंकार ॥ रहाउ ॥ साध की
 सोभा अति मसकीनी ॥ संत वडाई हरि जसु चीनी ॥ अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥ सूखु संतन
 कै बिनਸी चिंद ॥२॥ जह साध संतन होवहि इकत्र ॥ तह हरि जसु गावहि नाद कवित ॥ साध
 सभा महि अनद बਿਸ਼ਾਮ ॥ उन संगु सो पाए जिसु मਸਤਕਿ ਕਰਾਮ ॥३॥ दੁਇ ਕਰ ਜੋਡਿ ਕਰੀ
 ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਚਰਨ ਪਖਾਰਿ ਕਹਾਁ ਗੁਣਤਾਸ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਿਆਲ ਕਿਰਪਾਲ ਹਜੂਰਿ ॥ नानकु जीवै संता धूरि ॥

੪॥੨॥੨੩॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਃ ੫ ॥ ਸੋ ਕਤ ਡੈ ਜਿ ਖਸਮੁ ਸਮਾਰੈ ॥ ਡਰਿ ਡਰਿ ਪਚੇ ਮਨਮੁਖ ਵੇਚਾਰੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਜਾ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੇਵ ॥ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਜਾ ਕੀ
 ਰਾਸਿ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹੋਵਤ ਪਰਗਾਸ ॥੧॥ ਜੀਅਨ ਕਾ ਦਾਤਾ ਪੂਰਨ ਸਭ ਠਾਇ ॥ ਕੋਟਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟਹਿ
 ਹਰਿ ਨਾਇ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਸਗਲਾ ਦੁਖੁ ਨਾਸੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਾਸੈ ॥੨॥ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਲਏ
 ਲਾਇ ॥ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਤਿਸੈ ਹੀ ਜਾਇ ॥ ਸੇਈ ਭਗਤ ਜਿ ਸਾਚੇ ਭਾਣੇ ॥ ਜਮਕਾਲ ਤੇ ਭਏ ਨਿਕਾਣੇ ॥੩॥
 ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਦਰਬਾਰੁ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਤਣੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਅੰਤਰਿ ਸਗਲ ਅਧਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕੁ
 ਜਾਚੈ ਸੰਤ ਰੇਣਾਰੁ ॥੪॥੩॥੨੪॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਤੇਰਾ ਭਰਵਾਸਾ ਤ੍ਰੂ ਜਨ ਕੈ ਹੈ ਸੰਗਿ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹਰਿ ਰੰਗਿ
 ॥੧॥ ਜਨ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਕਾ ਤਾਣੁ ॥ ਜੋ ਤ੍ਰੂ ਕਰਹਿ ਕਰਾਵਹਿ ਸੁਆਮੀ ਸਾ ਮਸਲਤਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਧਰਿ ਪਰਮੇਸਰੁ ਗਤਿ ਨਾਰਾਇਣੁ ਧਨੁ ਗੁਪਾਲ ਗੁਣ ਸਾਖੀ ॥ ਚਰਨ ਸਰਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੰਤੀ ਇਹ
 ਬਿਧਿ ਜਾਤੀ ॥੨॥੧॥੨੫॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਪਾਏ ਕੱਠਿ ਲਾਇ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ॥
 ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਮਹਿ ਜਲਨਿ ਨ ਦੀਨੇ ਕਿਨੈ ਨ ਦੁਤਰੁ ਭਾਖੇ ॥੧॥ ਜਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਬਿਸ਼ਾਸੁ ॥ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ
 ਸੁਆਮੀ ਕੀ ਸੋਭਾ ਆਨਦੁ ਸਦਾ ਤਲਾਸੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚਰਨ ਸਰਨਿ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸਰ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸਾਖਿਆਂ ॥
 ਜਾਨਿ ਬ੍ਰੂਝਿ ਅਪਨਾ ਕੀਆਂ ਨਾਨਕ ਭਗਤਨ ਕਾ ਅੰਕੁਰੁ ਰਾਖਿਆਂ ॥੨॥੨॥੨੬॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਹ
 ਜਹ ਪੇਖਤ ਤਹ ਹਜੂਰਿ ਦੂਰਿ ਕਤਹੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬਕ ਮੈ ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਈ ॥੧॥ ਈਤ ਊਤ
 ਨਹੀਂ ਬੀਛੁੜੈ ਸੋ ਸੰਗੀ ਗਨੀਐ ॥ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਜੋ ਨਿਮਖ ਮਹਿ ਸੋ ਅਲਪ ਸੁਖੁ ਭਨੀਐ ॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਅਧਿਆਤ ਦੇਇ ਕਛੁ ਊਨ ਨ ਹੋਈ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸੰਮਾਲਤਾ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥੨॥ ਅਛਲ
 ਅਛੇਦ ਅਪਾਰ ਪ੍ਰਭ ਊਚਾ ਜਾ ਕਾ ਰੂਪੁ ॥ ਜਪਿ ਜਪਿ ਕਰਹਿ ਅਨੰਦੁ ਜਨ ਅਚਰਜ ਆਨੂਪੁ ॥੩॥ ਸਾ ਮਤਿ ਦੇਹੁ

ਦਿੜਿਆਲ ਪ੍ਰਭ ਜਿਤੁ ਤੁਮਹਿ ਅਰਾਧਾ ॥ ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਪ੍ਰਭ ਰੇਨ ਪਗ ਸਾਧਾ ॥੪॥੩॥੨੭॥ ਧਨਾਸਰੀ
ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਨਿ ਤੁਮ ਖੇਜੇ ਤਿਨਹਿ ਬੁਲਾਏ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਆਉ ॥ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਗੁਨ ਗਾਉ ਸਹਜ
ਧੁਨਿ ਨਿਹਚਲ ਰਾਜੁ ਕਮਾਉ ॥੧॥ ਤੁਮ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ॥ ਤੁਮਰੇ ਦੋਖੀ ਹਰਿ ਆਪਿ ਨਿਵਾਰੇ ਅਪਦਾ
ਭਈ ਬਿਤੀਤ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਨੇ ਪ੍ਰਭ ਕਰਨੈਹਾਰੇ ਨਾਸਨ ਭਾਜਨ ਥਾਕੇ ॥ ਘਰਿ ਮੰਗਲ ਵਾਜਹਿ ਨਿਤ ਵਾਜੇ
ਅਪੁਨੈ ਖਸਮਿ ਨਿਵਾਜੇ ॥੨॥ ਅਸਥਿਰ ਰਹਹੁ ਡੌਲਹੁ ਮਤ ਕਬਹੂ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਅਧਾਰਿ ॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਸਗਲ
ਭੂ ਮੰਡਲ ਮੁਖ ਊਜਲ ਦਰਬਾਰ ॥੩॥ ਜਿਨ ਕੇ ਜੀਅ ਤਿਨੈ ਹੀ ਫੇਰੇ ਆਪੇ ਭਡਿਆ ਸਹਾਈ ॥ ਅਚਰਜੁ ਕੀਆ
ਕਰਨੈਹਾਰੈ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੪॥੨੮॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੁਨਹੁ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਬਿਨਤ ਹਮਾਰੇ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਸੁਕਤਿ ਨ ਕਾਹੂ ਜੀਤ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਕਰਮ
ਕਰਿ ਤਾਰਨ ਤਰਨ ਹਰਿ ਅਵਰਿ ਜੰਜਾਲ ਤੈਰੈ ਕਾਹੂ ਨ ਕਾਮ ਜੀਤ ॥ ਜੀਵਨ ਦੇਵਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੇਵਾ ਇਹੁ ਤਪਦੇਸੁ
ਮੋ ਕਤ ਗੁਰਿ ਦੀਨਾ ਜੀਤ ॥੧॥ ਤਿਸੁ ਸਿਤ ਨ ਲਾਈਐ ਹੀਤੁ ਜਾ ਕੋ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਕੀਤੁ ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਓਹੁ ਸੰਗਿ
ਨ ਚਾਲੈ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਤੂ ਆਰਾਧ ਹਰਿ ਕੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਧ ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੇਰੇ ਬੰਧਨ ਛੂਟੈ ॥੨॥ ਗਹੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
ਸਰਨ ਹਿਰਦੈ ਕਮਲ ਚਰਨ ਅਵਰ ਆਸ ਕਛੁ ਪਟਲੁ ਨ ਕੀਜੈ ॥ ਸੋਈ ਭਗਤੁ ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਤਪਾ ਸੋਈ
ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਤ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥੩॥੧॥੨੬॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਭਲੋ ਰੇ ਭਲੋ ਰੇ ਭਲੋ
ਹਰਿ ਮੰਗਨਾ ॥ ਦੇਖਹੁ ਪਸਾਰਿ ਨੈਨ ਸੁਨਹੁ ਸਾਧੂ ਕੇ ਬੈਨ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਚਿਤਿ ਰਾਖੁ ਸਗਲ ਹੈ ਮਰਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
ਚੰਦਨ ਚੋਆ ਰਸ ਭੋਗ ਕਰਤ ਅਨੇਕੈ ਬਿਖਿਆ ਬਿਕਾਰ ਦੇਖੁ ਸਗਲ ਹੈ ਫੀਕੇ ਏਕੈ ਗੋਬਿਦ ਕੋ ਨਾਮੁ ਨੀਕੋ ਕਹਤ
ਹੈ ਸਾਧ ਜਨ ॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਆਪਨ ਥਾਪਿਓ ਹਰਿ ਜਪੁ ਨ ਨਿਮਖ ਜਾਪਿਓ ਅਰਥੁ ਦ੍ਰਕੁ ਦੇਖੁ ਕਛੁ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ
ਚਲਨਾ ॥੧॥ ਜਾ ਕੋ ਰੇ ਕਰਮੁ ਭਲਾ ਤਿਨਿ ਓਟ ਗਹੀ ਸੰਤ ਪਲਾ ਤਿਨ ਨਾਹੀ ਰੇ ਜਮੁ ਸੰਤਾਵੈ ਸਾਧੂ ਕੀ ਸੰਗਨਾ ॥
ਪਾਡਿਓ ਰੇ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੁ ਮਿਟਿਓ ਹੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ਏਕੈ ਨਿਰਕਾਰ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਲਗਨਾ ॥੨॥੨॥੩੦॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੭

੧੪ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਲੋਭ ਮੋਹ ਮਹਾ ਭਤਜਲੁ ਤਾਰੇ ॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਦਿਨਸੁ ਰੈਨਿ ਚਿਤਾਰੇ ॥ ਸਾਧਸੰਗ ਜਪਿ ਨਿਸੰਗ ਮਨਿ ਨਿਧਾਨੁ ਧਾਰੇ ॥੧॥ ਚਰਨ
 ਕਮਲ ਨਮਸਕਾਰ ਗੁਨ ਗੋਬਿਦ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਰੇਨ ਨਾਨਕ ਮੰਗਲ ਸ੍ਰੂਖ ਸਧਾਰੇ ॥੨॥੧॥੩੧॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੮ ਟੁਪਦੇ

੧੪ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਿਮਰਤ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖ ਪਾਵਤ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਲੇ ॥ ਇਹ ਲੋਕਿ ਪਰਲੋਕਿ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਜਤ ਕਤ
 ਮੋਹਿ ਰਖਵਾਲੇ ॥੧॥ ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਬਸੈ ਜੀਅ ਨਾਲੇ ॥ ਜਲਿ ਨਹੀ ਢੂਬੈ ਤਸਕਰੁ ਨਹੀ ਲੇਵੈ ਭਾਹਿ ਨ ਸਾਕੈ
 ਜਾਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਰਧਨ ਕਤ ਧਨੁ ਅਂਧੁਲੇ ਕਤ ਟਿਕ ਮਾਤ ਟ੍ਰੌਧੁ ਜੈਸੇ ਬਾਲੇ ॥ ਸਾਗਰ ਮਹਿ ਬੋਹਿਥੁ
 ਪਾਇਆਂ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਕਰੀ ਕ੃ਪਾ ਕਿਰਪਾਲੇ ॥੨॥੧॥੩੨॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਦਿਆਲ
 ਗੋਬਿੰਦਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਿਦੈ ਸਿੰਚਾਈ ॥ ਨਵ ਨਿਧਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਹਰਿ ਲਾਗਿ ਰਹੀ ਜਨ ਪਾਈ ॥੧॥ ਸੰਤਨ ਕਤ
 ਅਨਦੁ ਸਗਲ ਹੀ ਜਾਈ ॥ ਗ੍ਰਹਿ ਬਾਹਰਿ ਠਾਕੁਰੁ ਭਗਤਨ ਕਾ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸ਼ਬ ਠਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਤਾ ਕਤ ਕੋਇ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰਾ ਜਾ ਕੈ ਅੰਗਿ ਗੁਸਾਈ ॥ ਜਮ ਕੀ ਤਾਸ ਮਿਟੈ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਈ ॥੨॥੨॥੩੩॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦਰਕਵਾਂਤੁ ਦਰਕੁ ਦੇਖਿ ਗਰਬੈ ਭੂਮਕਵਾਂਤੁ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥ ਰਾਜਾ
 ਜਾਨੈ ਸਗਲ ਰਾਜੁ ਹਮਰਾ ਤਿਤ ਹਰਿ ਜਨ ਟੇਕ ਸੁਆਮੀ ॥੧॥ ਜੇ ਕੋਊ ਅਪੁਨੀ ਓਟ ਸਮਾਰੈ ॥ ਜੈਸਾ ਬਿਤੁ ਤੈਸਾ
 ਹੋਇ ਵਰਤੈ ਅਪੁਨਾ ਬਲੁ ਨਹੀ ਹਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਨ ਤਿਆਗਿ ਭਏ ਇਕ ਆਸਰ ਸਰਣਿ ਸਰਣਿ ਕਰਿ
 ਆਏ ॥ ਸੰਤ ਅਨੁਗ੍ਰਹ ਭਏ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥੨॥੩॥੩੪॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਜਾ ਕਤ ਹਰਿ ਰੰਗ ਲਾਗੇ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਸੋ ਕਹੀਅਤ ਹੈ ਸੂਰਾ ॥ ਆਤਮ ਜਿਣੈ ਸਗਲ ਵਸਿ ਤਾ ਕੈ ਜਾ ਕਾ

सतिगुरु पूरा ॥੧॥ ठाकुरु गाईਐ आतम रंगि ॥ सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन
 संगि ॥੧॥ रहाउ ॥ जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥ जन की धूरि देहु किरपा
 निधि नानक कै सुखु एही ॥੨॥੪॥੩੫॥ धनासरी महला ੫ ॥ जतन करै मानुख डहकावै ओहु
 अंतरजामी जानै ॥ पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥੧॥ जानत दूरि तुमहि प्रभ
 नेरि ॥ उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ जब लगु तुटै नाही मन भरमा
 तब लगु मुक्तु न कोई ॥ कहु नानक दिइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥੨॥੫॥੩੬॥
 धनासरी महला ੫ ॥ नामु गुरि दीओ है अपुनै जा कै मसतकि करमा ॥ नामु दृढ़ावै नामु जपावै ता का
 जुग महि धरमा ॥੧॥ जन कउ नामु बडाई सोभ ॥ नामो गति नामो पति जन की मानै जो जो होग
 ॥੧॥ रहाउ ॥ नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥ नामु बिउहारा नानक आधारा नामु
 परापति लाहा ॥੨॥੬॥੩੭॥ धनासरी महला ੫ ॥ नेत्र पुनीत भए दरस पेखे माथै परउ रवाल ॥
 रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥੧॥ तुम तउ राखनहार दिइआल ॥
 सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥੧॥ रहाउ ॥ महा अन्नद मंगल रूप तुमरे
 बचन अनूप रसाल ॥ हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बाँधिओ पाल ॥੨॥੭॥੩੮॥ धनासरी
 महला ੫ ॥ अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै ॥ सरब सूख भोग रस देवै मन ही
 नालि समावै ॥੧॥ हमरे पिता गोपाल दिइआल ॥ जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ
 पाल ॥੧॥ रहाउ ॥ मीत साजन सरब गुण नाइक सदा सलामति देवा ॥ ईत ऊत जत कत
 तत तुम ही मिलै नानक संत सेवा ॥੨॥੮॥੩੯॥ धनासरी महला ੫ ॥ संत कृपाल दिइआल
 दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥ राजु मालु जोबनु तनु जीअरा इन ऊपरि लै बारे ॥੧॥ मनि
 तनि राम नाम हितकारे ॥ सूख सहज आन्द मंगल सहित भव निधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥

ਧਿੰਨਿ ਸੁ ਥਾਨੁ ਧਿੰਨਿ ਓਡਿ ਭਵਨਾ ਜਾ ਮਹਿ ਸੰਤ ਬਸਾਰੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀ ਸਰਧਾ ਪੂਰ੍ਹੁ ਠਾਕੁਰ ਭਗਤ
 ਤੇਰੇ ਨਮਸਕਾਰੇ ॥੨॥੬॥੪੦॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਛਡਾਇ ਲੀਓ ਮਹਾ ਬਲੀ ਤੇ ਅਪਨੇ ਚਰਨ
 ਪਰਾਤਿ ॥ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਮਨ ਮੰਤਾ ਬਿਨਸਿ ਨ ਕਤਹੂ ਜਾਤਿ ॥੧॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਕੀਰਤਨ ਕਤ ਭੰਡੀ ਹਮਾਰੀ ਗਾਤਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਓ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਭਗਤਨ ਕੀ
 ਰਾਖੀ ਪਾਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਚਰਨ ਗਹੇ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆਂ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥੨॥੧੦॥੪੧॥ ਧਨਾਸਰੀ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਰ ਹਰਨਾ ਲੋਮੁ ਝੂਠ ਨਿੰਦ ਇਵ ਹੀ ਕਰਤ ਗੁਦਾਰੀ ॥ ਮ੍ਰਗ ਤ੍ਰਸਨਾ ਆਸ ਮਿਥਿਆ ਮੀਠੀ ਇਹ
 ਟੇਕ ਮਨਹਿ ਸਾਧਾਰੀ ॥੧॥ ਸਾਕਤ ਕੀ ਆਵਰਦਾ ਜਾਇ ਬੂਧਾਰੀ ॥ ਜੈਸੇ ਕਾਗਦ ਕੇ ਭਾਰ ਮੂਸਾ ਟ੍ਰਕਿ ਗਵਾਵਤ
 ਕਾਮਿ ਨਹੀ ਗਾਵਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੁਆਮੀ ਇਹ ਬੰਧਨ ਛੁਟਕਾਰੀ ॥ ਕ੍ਰੂਡਤ ਅੰਧ
 ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕਾਢਤ ਸਾਧ ਜਨਾ ਸੰਗਾਰੀ ॥੨॥੧੧॥੪੨॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ
 ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਸੀਤਲ ਤਨੁ ਮਨੁ ਛਾਤੀ ॥ ਰੂਪ ਰੰਗ ਸੂਖ ਧਨੁ ਜੀਅ ਕਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੌਰੈ ਜਾਤੀ ॥੧॥
 ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਰਸਾਇਨਿ ਮਾਤੀ ॥ ਰੰਗ ਰੰਗੀ ਰਾਮ ਅਪਨੇ ਕੈ ਚਰਨ ਕਮਲ ਨਿਧਿ ਥਾਤੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਸ ਕਾ
 ਸਾ ਤਿਨ ਹੀ ਰਖਿ ਲੀਆ ਪ੍ਰੰਨ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਭਾਤੀ ॥ ਮੇਲਿ ਲੀਓ ਆਪੇ ਸੁਖਦਾਤੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਾਖੀ ਪਾਤੀ
 ॥੨॥੧੨॥੪੩॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦ੍ਰਿੜ ਦੁਸਮਨ ਸਭਿ ਤੁੜ ਤੇ ਨਿਵਰਹਿ ਪ੍ਰਗਟ ਪ੍ਰਤਾਪੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥
 ਜੋ ਜੋ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਦੁਖਾਏ ਓਹੁ ਤਤਕਾਲ ਤੁਮ ਮਾਰਾ ॥੧॥ ਨਿਰਖਤ ਤੁਮਰੀ ਓਰਿ ਹਰਿ ਨੀਤ ॥ ਸੁਰਾਰਿ ਸਹਾਇ
 ਹੋਹੁ ਦਾਸ ਕਤ ਕਰੁ ਗਹਿ ਤੁਧਰਹੁ ਮੀਤ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੁਣੀ ਬੇਨਤੀ ਠਾਕੁਰਿ ਮੈਰੈ ਖਸਮਾਨਾ ਕਰਿ ਆਪਿ ॥
 ਨਾਨਕ ਅਨਦ ਭਏ ਦੁਖ ਭਾਗੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥੨॥੧੩॥੪੪॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਤੁਰ ਦਿਸਾ
 ਕੀਨੀ ਬਲੁ ਅਪਨਾ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਕਰੁ ਧਾਰਿਆਂ ॥ ਕ੃ਪਾ ਕਟਾਖਧ ਅਵਲੋਕਨੁ ਕੀਨੀ ਦਾਸ ਕਾ ਦ੍ਰਿੜੁ ਬਿਦਾਰਿਆਂ ॥੧॥
 ਹਰਿ ਜਨ ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦ ॥ ਕੱਠਿ ਲਾਇ ਅਵਗੁਣ ਸਭਿ ਮੇਟੇ ਦਿਆਲ ਪੁਰਖ ਬਖਸ਼ਦ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੋ ਮਾਗਹਿ
 ਠਾਕੁਰ ਅਪੁਨੇ ਤੇ ਸੋਈ ਸੋਈ ਦੇਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਮੁਖ ਤੇ ਜੋ ਬੋਲੈ ਈਹਾ ਊਹਾ ਸਚੁ ਹੋਵੈ ॥੨॥੧੪॥੪੫॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਤਖੀ ਘੜੀ ਨ ਦੇਖਣ ਦੇਈ ਅਪਨਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖੈ ਅਪਨੇ ਕਤ
 ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ॥੧॥ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਲਾਗਿ ਰਹਿਓ ਮੇਰਾ ਚੀਤੁ ॥ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਧਨੁ
 ਹਮਾਰਾ ਮੀਤੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਿ ਬਿਲਾਸ ਭਏ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਅਚਰਜ ਦੇਖਿ ਬਡਾਈ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਆਨਦ
 ਕਰਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥੨॥੧੫॥੪੬॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸ ਕਤ ਬਿਸਰੈ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ
 ਦਾਤਾ ਸੋਈ ਗਨਹੁ ਅਭਾਗਾ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਰਾਗਿਓ ਅਮਿਆ ਸਰੋਵਰ ਪਾਗਾ ॥੧॥ ਤੇਰਾ
 ਜਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਜਾਗਾ ॥ ਆਲਸੁ ਛੀਜਿ ਗਇਆ ਸਭੁ ਤਨ ਤੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿਉ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ
 ਜਹ ਪੇਖਤ ਤਹ ਨਾਰਾਇਣ ਸਗਲ ਘਟਾ ਮਹਿ ਤਾਗਾ ॥ ਨਾਮ ਤਦਕੁ ਪੀਕਤ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਿਆਗੇ ਸਭਿ
 ਅਨੁਰਾਗਾ ॥੨॥੧੬॥੪੭॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਨ ਕੇ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਾਮ ॥ ਕਲੀ ਕਾਲ ਮਹਾ ਬਿਖਿਆ
 ਮਹਿ ਲਜਾ ਰਾਖੀ ਰਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਜਾਮ ॥
 ਸੁਕਤਿ ਬੈਕੁਠ ਸਾਧ ਕੀ ਸਾਂਗਤਿ ਜਨ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕਾ ਧਾਮ ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ਥਾਤੀ
 ਕੋਟਿ ਸ੍ਰੋਖ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਗੋਬਿੰਦੁ ਦਮੋਦਰ ਸਿਮਰਤ ਦਿਨ ਰੈਨਿ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨ ॥੨॥੧੭॥੪੮॥
 ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਂਗਤ ਰਾਮ ਤੇ ਇਕੁ ਦਾਨੁ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨ ਹੋਵਹਿ ਸਿਮਰਤ ਤੁਮਰਾ ਨਾਮੁ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਰਨ ਤੁਮਾਰੇ ਹਿਰਦੈ ਵਾਸਹਿ ਸੰਤਨ ਕਾ ਸੰਗੁ ਪਾਵਤ ॥ ਸੋਗ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਮਨੁ ਨ ਵਿਆਪੈ
 ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ॥੧॥ ਸ਼ੁਸਤਿ ਬਿਵਸਥਾ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਮਧੁੰਤ ਪ੍ਰਭ ਜਾਪਣ ॥ ਨਾਨਕ ਰੁਂਗੁ ਲਗਾ
 ਪਰਮੇਸਰ ਬਾਹੁਡਿ ਜਨਮ ਨ ਛਾਪਣ ॥੨॥੧੮॥੪੯॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਂਗਤ ਰਾਮ ਤੇ ਸਭਿ ਥੋਕ
 ॥ ਮਾਨੁਖ ਕਤ ਜਾਚਤ ਸ਼ਮੁ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਮੋਖ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਘੋੜੇ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਪੁਰਾਨਾਂ
 ਕੇਦ ਪੁਕਾਰਹਿ ਘੋੜ ॥ ਕ੃ਪਾ ਸਿੰਧੁ ਸੇਵਿ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਦੋਵੈ ਸੁਹੇਲੇ ਲੋਕ ॥੧॥ ਆਨ ਅਚਾਰ ਬਿਤਹਾਰ ਹੈ ਜੇਤੇ
 ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਫੋਕ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ ਕਾਟੇ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਬਿਨਸੇ ਸੋਕ ॥੨॥੧੯॥੫੦॥
 ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਬੁੜੈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ॥ ਮਹਾ ਸਾਂਤੋਖੁ ਹੋਵੈ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਲਾਗੈ ਪੂਰਨ

ਧਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਹਾ ਕਲੋਲ ਬੁੜਹਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰੇ ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲ ॥ ਅਪਣਾ
ਨਾਮੁ ਦੇਹਿ ਜਧਿ ਜੀਵਾ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ਦਾਸ ਕੀ ਘਾਲ ॥੧॥ ਸਰਬ ਮਨੋਰਥ ਰਾਜ ਸ੍ਰੂਖ ਰਸ ਸਦ ਖੁਸੀਆ
ਕੀਰਤਨੁ ਜਧਿ ਨਾਮ ॥ ਜਿਸ ਕੈ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਕਰਤੈ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੇ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ॥੨॥੨੦॥੫੧॥
ਧਨਾਸਰੀ ਮਃ ੫ ॥ ਜਨ ਕੀ ਕੀਨੀ ਪਾਰਖਹਮਿ ਸਾਰ ॥ ਨਿੰਦਕ ਟਿਕਨੁ ਨ ਪਾਵਨਿ ਮੂਲੇ ਊਡਿ ਗਏ ਬੇਕਾਰ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਉ ਤਹ ਤਹ ਸੁਆਮੀ ਕੋਇ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕਰੈ ਅਵਗਿਆ ਜਨ ਕੀ ਹੋਇ
ਗਿਆ ਤਤ ਛਾਰ ॥੧॥ ਕਰਨਹਾਰੁ ਰਖਵਾਲਾ ਹੋਆ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਵਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਰਖੇ ਪ੍ਰਭਿ
ਅਪੁਨੈ ਨਿੰਦਕ ਕਾਢੇ ਮਾਰਿ ॥੨॥੨੧॥੫੨॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬ ਪੜਤਾਲ ੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਚਰਨ ਸਰਨ ਗੋਬਿੰਦ ਦੁਖ ਭੰਜਨਾ ਦਾਸ ਅਪੁਨੇ ਕਤ ਨਾਮੁ ਦੇਵਹੁ ॥ ਦੂਸਟਿ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ
ਤਾਰਹੁ ਭੁਜਾ ਗਹਿ ਕੂਪ ਤੇ ਕਾਢਿ ਲੇਵਹੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਕਰਿ ਅੰਧ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬੰਧ ਅਨਿਕ ਦੋਖਾ ਤਨਿ
ਛਾਦਿ ਪੂਰੇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨਾ ਆਨ ਨ ਰਾਖਨਹਾਰਾ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਾਵਹੁ ਸਰਨਿ ਸੂਰੇ ॥੧॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣਾ ਜੀਅ
ਜੰਤ ਤਾਰਣਾ ਬੇਦ ਉਚਾਰ ਨਹੀ ਅੰਤੁ ਪਾਇਆਂ ॥ ਗੁਣਹ ਸੁਖ ਸਾਗਰਾ ਬ੍ਰਹਮ ਰਤਨਾਗਰਾ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਨਾਨਕ
ਗਾਇਆਂ ॥੨॥੧॥੫੩॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਲਤਿ ਸੁਖੁ ਪਲਤਿ ਸੁਖੁ ਨਿਤ ਸੁਖੁ ਸਿਮਰਨੋ ਨਾਮੁ ਗੋਬਿੰਦ
ਕਾ ਸਦਾ ਲੀਜੈ ॥ ਮਿਟਹਿ ਕਮਾਣੇ ਪਾਪ ਚਿਰਾਣੇ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਸੁਆ ਜੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਜ ਜੋਬਨ
ਬਿਸਰਂਤ ਹਰਿ ਮਾਇਆ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਏਹੁ ਮਹਾਂਤ ਕਹੈ ॥ ਆਸ ਪਿਆਸ ਰਮਣ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਏਹੁ ਪਦਾਰਥੁ
ਭਾਗਕੰਤੁ ਲਹੈ ॥੧॥ ਸਰਣ ਸਮਰਥ ਅਕਥ ਅਗੋਚਰਾ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਨਾਨਕ ਕੇ
ਸੁਆਮੀ ਸਰਬਤ ਪੂਰਨ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥੨॥੨॥੫੪॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੨ ੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਬੰਦਨਾ ਹਰਿ ਬੰਦਨਾ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵਡੈ ਭਾਗੀ ਭੇਟੇ ਗੁਰਦੇਵਾ ॥ ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਮਿਟੇ

ਹਰਿ ਸੇਵਾ ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਰਾਪੈ ॥ ਸੋਗ ਅਗਨਿ ਤਿਸੁ ਜਨ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥੨॥ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ
 ਸਾਧੂ ਸੰਗੇ ॥ ਨਿਰਭਤ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਹਰਿ ਰੰਗੇ ॥੩॥ ਪਰ ਧਨ ਦੋਖ ਕਿਛੁ ਪਾਪ ਨ ਫੇਡੇ ॥ ਜਮ ਜੰਦਾਲੁ ਨ ਆਵੈ
 ਨੇਡੇ ॥੪॥ ਤ੃ਸਨਾ ਅਗਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਉਥੇ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥੫॥੧॥੫੫॥ ਧਨਾਸਰੀ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਭਈ ਸਚੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਇਆ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਜੀਵਨਾ ਹਰਿ
 ਜੀਵਨਾ ॥ ਜੀਵਨੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸਾਧਸੰਗੀ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰੀ ਬਸਤ ਓਢਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ
 ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥੨॥ ਹਸਤੀ ਰਥ ਅਸੁ ਅਸਵਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਰਿਟੈ ਨਿਹਾਰੀ ॥੩॥ ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ
 ਚਰਨ ਧਿਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸਿ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨॥੫੬॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਜੀਅ ਕਾ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥ ਸਮੁੰਦੁ ਸਾਗਰੁ ਜਿਨਿ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਤਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਈ ਹੋਆ ਕ੍ਰਮ
 ਰਤੁ ਕੋਈ ਤੀਰਥ ਨਾਇਆ ॥ ਦਾਸੀ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਬੰਧਨ ਕਾਟਨਹਾਰੁ ਸੁਆਮੀ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕੁ ਸਿਮਰੈ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥੨॥੩॥੫੭॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਿਤੈ ਪ੍ਰਕਾਰਿ ਨ ਤੂਟਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਦਾਸ
 ਤੇਰੇ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮਨ ਧਨ ਤੇ ਪਿਆਰਾ ॥ ਹਉਮੈ ਬੰਧੁ ਹਰਿ ਦੇਵਣਹਾਰਾ
 ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਲਾਗਤ ਨੇਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀ ਏਹ ॥੨॥੪॥੫੮॥

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਕਾਹੇ ਰੇ ਬਨ ਖੋਜਨ ਜਾਈ ॥ ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਸਦਾ ਅਲੇਪਾ ਤੋਹੀ ਸੰਗਿ ਸਮਾਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਪੁਹਪ ਮਥਿ ਜਿਤ ਬਾਸੁ ਬਸਤੁ ਹੈ ਮੁਕਰ ਮਾਹਿ ਜੈਸੇ ਛਾਈ ॥ ਤੈਸੇ ਹੀ ਹਰਿ ਬਸੇ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਘਟ ਹੀ
 ਖੋਜਹੁ ਭਾਈ ॥੧॥ ਬਾਹਰਿ ਭੀਤਰਿ ਏਕੋ ਜਾਨਹੁ ਇਹੁ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਬਤਾਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਆਪਾ ਚੀਜੈ
 ਮਿਟੈ ਨ ਭਰਮ ਕੀ ਕਾਈ ॥੨॥੧॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਸਾਧੋ ਇਹੁ ਜਗੁ ਭਰਮ ਭੁਲਾਨਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਕਾ
 ਸਿਮਰਨੁ ਛੋਡਿਆ ਮਾਇਆ ਹਾਥਿ ਬਿਕਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਤਾ ਕੈ ਰਸਿ

ਲਪਟਾਨਾ ॥ ਜੋਬਨੁ ਧਨੁ ਪ੍ਰਭਤਾ ਕੈ ਮਦ ਮੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਹੈ ਦਿਵਾਨਾ ॥੧॥ ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲ ਸਦਾ
 ਢੁਖ ਭੰਜਨ ਤਾ ਸਿਉ ਮਨੁ ਨ ਲਗਾਨਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੋਟਨ ਮੈ ਕਿਨਹੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਪਛਾਨਾ ॥੨॥੨॥
 ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਤਿਹ ਜੋਗੀ ਕਤ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਨਤ ॥ ਲੋਭ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਫੁਨਿ ਜਿਹ ਘਟਿ ਮਾਹਿ
 ਪਛਾਨਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਤੁਸਤਤਿ ਨਹ ਜਾ ਕੈ ਕੰਚਨ ਲੋਹ ਸਮਾਨੋ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ ਰਹੈ ਅਤੀਤਾ
 ਜੋਗੀ ਤਾਹਿ ਬਖਾਨੋ ॥੧॥ ਚੰਚਲ ਮਨੁ ਦਹ ਦਿਸਿ ਕਤ ਧਾਵਤ ਅਚਲ ਜਾਹਿ ਠਹਰਾਨੋ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਹ
 ਬਿਧਿ ਕੋ ਜੋ ਨਨ੍ਹ ਸੁਕਤਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਮਾਨੋ ॥੨॥੩॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਅਥ ਮੈ ਕਤਨੁ ਤਉਤ ਕਰਤ ॥
 ਜਿਹ ਬਿਧਿ ਮਨ ਕੋ ਸੰਸਾ ਚੂਕੈ ਭਤ ਨਿਧਿ ਪਾਰਿ ਪਰਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਨਮੁ ਪਾਇ ਕਛੁ ਭਲੋ ਨ ਕੀਨੋ ਤਾ ਤੇ
 ਅਧਿਕ ਡਰਤ ॥ ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮ ਹਰਿ ਗੁਨ ਨਹੀ ਗਾਏ ਯਹ ਜੀਅ ਸੋਚ ਧਰਤ ॥੧॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸੁਨਿ ਕਛੁ
 ਗਿਆਨੁ ਨ ਉਪਜਿਐ ਪਸੁ ਜਿਤ ਉਦਰੁ ਭਰਤ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਬਿਰਦੁ ਪਛਾਨਤ ਤਕ ਹਤ ਪਤਿਤ ਤਰਤ ॥
 ੨॥੪॥੬॥੬॥੧੩॥੫੮॥੪॥੬੩॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰੁ ਸਾਗਰੁ ਰਤਨੀ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੰਤ ਚੁਗਹਿ ਨਹੀ ਦੂਰੇ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚੋਗ ਚੁਗਹਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥ ਸਰਵਰ
 ਮਹਿ ਛਾਸੁ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਪਾਵੈ ॥੧॥ ਕਿਆ ਬਗੁ ਬਪੁੜਾ ਛਪੜੀ ਨਾਇ ॥ ਕੀਚਡਿ ਡੂਬੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਰਖਿ ਰਖਿ ਚਰਨ ਧਰੇ ਕੀਚਾਰੀ ॥ ਟੁਬਿਧਾ ਛੋਡਿ ਭਏ ਨਿਰਿਕਾਰੀ ॥ ਸੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਹਰਿ ਰਸ ਚਾਖੇ ॥
 ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ॥੨॥ ਸਰਵਰ ਛਾਸਾ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇ ॥
 ਸਰਵਰ ਮਹਿ ਛਾਸੁ ਛਾਸ ਮਹਿ ਸਾਗਰੁ ॥ ਅਕਥ ਕਥਾ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਆਦਰੁ ॥੩॥ ਸੁਨਨ ਮੰਡਲ ਇਕੁ ਜੋਗੀ ਬੈਸੇ ॥
 ਨਾਰਿ ਨ ਪੁਰਖੁ ਕਹਹੁ ਕੋਤੁ ਕੈਸੇ ॥ ਤ੃ਭਵਣ ਜੋਤਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਨਾਥ ਸਚੇ ਸਰਣਾਈ ॥੪॥
 ਆਨੰਦ ਮੂਲੁ ਅਨਾਥ ਅਧਾਰੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਸਹਜਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਭੈ ਕਾਟਣਹਾਰੇ ॥ ਹਤਮੈ
 ਮਾਰਿ ਮਿਲੇ ਪਗੁ ਧਾਰੇ ॥੫॥ ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਕਾਲੁ ਸੰਤਾਏ ॥ ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇ ਮੰਡਲ ਮਹਿ ਆਏ ॥

ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਦੁਬਿਧਾ ਖੋਵੈ ॥ ਆਪੁ ਨ ਚੀਨਸਿ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਰੋਵੈ ॥੬॥ ਕਹਤਤ ਪੜਤਤ ਸੁਣਤਤ ਏਕ ॥
 ਧੀਰਜ ਧਰਮੁ ਧਰਣੀਧਰ ਟੇਕ ॥ ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਰਿਟੈ ਸਮਾਏ ॥ ਚਤੁਰੇ ਪਦ ਕਤ ਜੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਏ ॥੭॥
 ਸਾਚੇ ਨਿਰਮਲ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭਰਮ ਭਤ ਭਾਗੈ ॥ ਸੂਰਤਿ ਮੂਰਤਿ ਆਦਿ ਅਨੂਪੁ ॥ ਨਾਨਕੁ
 ਜਾਚੈ ਸਾਚੁ ਸੱਖੁਪੁ ॥੮॥੧॥ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਿਆ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਨਾ ਤਿਸੁ ਮਰਣੁ ਨ
 ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ॥ ਠਾਕੁਰ ਮਹਿ ਦਾਸੁ ਦਾਸ ਮਹਿ ਸੋਝਿ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਝਿ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ
 ਸਹਜ ਘਰੁ ਪਾਈਐ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਮਰਿ ਆਈਐ ਜਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੋ ਗੁਰੁ ਕਰਤ ਜਿ ਸਾਚੁ ਦੂਡਾਵੈ
 ॥ ਅਕਥੁ ਕਥਾਵੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਲੋਗ ਅਵਰ ਨਹੀਂ ਕਾਰਾ ॥ ਸਾਚਤ ਠਾਕੁਰੁ ਸਾਚੁ ਪਿਆਰਾ ॥੨॥
 ਤਨ ਮਹਿ ਮਨ੍ਹਾ ਮਨ ਮਹਿ ਸਾਚਾ ॥ ਸੋ ਸਾਚਾ ਮਿਲਿ ਸਾਚੇ ਰਾਚਾ ॥ ਸੇਵਕੁ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਲਾਗੈ ਪਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਪੂਰਾ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥ ਆਪਿ ਦਿਖਾਵੈ ਆਪੇ ਦੇਖੈ ॥ ਹਠਿ ਨ ਪਤੀਜੈ ਨਾ ਬਹੁ ਭੇਖੈ ॥ ਘਡਿ ਭਾਡੇ ਜਿਨਿ
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭਿ ਮਨੁ ਪਤੀਆਇਆ ॥੪॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਭੂਲਹਿ ਚੋਟਾ ਖਾਹਿ ॥ ਬਹੁਤੁ
 ਸਿਆਣਪ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਭਤ ਭੋਜਨੁ ਖਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਕ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੫॥ ਪ੍ਰੌਜਿ ਸਿਲਾ
 ਤੀਰਥ ਬਨ ਵਾਸਾ ॥ ਭਰਮਤ ਡੋਲਤ ਭਏ ਉਦਾਸਾ ॥ ਮਨਿ ਮੈਲੈ ਸੂਚਾ ਕਿਤ ਹੋਇ ॥ ਸਾਚਿ ਮਿਲੈ ਪਾਵੈ ਪਤਿ
 ਸੋਇ ॥੬॥ ਆਚਾਰਾ ਵੀਚਾਰੁ ਸਰੀਰਿ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਸਹਜਿ ਮਨੁ ਧੀਰਿ ॥ ਪਲ ਪੰਕਜ ਮਹਿ ਕੋਟਿ ਤਥਾਰੇ ॥
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਪਿਆਰੇ ॥੭॥ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਪ੍ਰਭ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾ ਮੈ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥ ਜਿਤ
 ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖੁ ਰਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਭਾਇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੮॥੨॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਃ ੫ ਘਰੁ ੬ ਅਸਟਪਦੀ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜੋ ਜੋ ਜੂਨੀ ਆਇਆਓ ਤਿਹ ਤਿਹ ਤਰੜਾਇਆਓ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਸੰਜੋਗਿ ਪਾਇਆ ॥ ਤਾਕੀ ਹੈ ਓਟ ਸਾਧ
 ਰਾਖਹੁ ਦੇ ਕਰਿ ਹਾਥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲਹੁ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥ ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਭ੍ਰਮਿ ਥਿਤਿ ਨਹੀਂ ਪਾਈ ॥ ਕਰਤ
 ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਲਾਗਤ ਚਰਨ ਗੋਵਿੰਦ ਜੀ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਦੇਹੁ ਜੀ ਬਤਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਕਰਤ

ਮाइਆ ਕਤ ਬਚਿਤਿ ਧਰਤ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤ ਸਦ ਹੀ ਵਿਹਾਰੈ ॥ ਕੋਈ ਐਸੋ ਰੇ ਭੇਟੈ ਸਨ੍ਤੁ ਮੇਰੀ ਲਾਹੈ ਸਗਲ
 ਚਿੰਤ ਠਾਕੁਰ ਸਿਤ ਮੇਰਾ ਰੰਗੁ ਲਾਰੈ ॥੨॥ ਪਡੇ ਰੇ ਸਗਲ ਬੇਦ ਨਹ ਚੂਕੈ ਮਨ ਭੇਦ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਨ ਧੀਰਹਿ ਮੇਰੇ
 ਘਰ ਕੇ ਪੰਚਾ ॥ ਕੋਈ ਐਸੋ ਰੇ ਭਗਤੁ ਜੁ ਮਾਇਆ ਤੇ ਰਹਤੁ ਇਕੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਰਿਦੈ ਸਿੰਚਾ ॥੩॥ ਜੇਤੇ ਰੇ
 ਤੀਰਥ ਨਾਏ ਅਛੁਕੁਧਿ ਮੈਲੁ ਲਾਏ ਘਰ ਕੋ ਠਾਕੁਰੁ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਨ ਮਾਨੈ ॥ ਕਦਿ ਪਾਵਤ ਸਾਧਸੰਗੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ
 ਆਨਨਦੁ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਇਸਨਾਨੈ ॥੪॥ ਸਗਲ ਅਸ਼ਰਮ ਕੀਨੇ ਮਨੂਆ ਨਹ ਪਤੀਨੇ ਬਿਵੇਕਹੀਨ
 ਦੇਹੀ ਧੋਏ ॥ ਕੋਈ ਪਾਈਐ ਰੇ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ਪਾਰਖਰਹਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕੀ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਖੋਏ ॥੫॥
 ਕਰਮ ਧਰਮ ਜੁਗਤਾ ਨਿਮਖ ਨ ਹੇਤੁ ਕਰਤਾ ਗਰਬਿ ਗਰਬਿ ਪਡੈ ਕਹੀ ਨ ਲੇਖੈ ॥ ਜਿਸੁ ਭੇਟੀਐ ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਕਰੈ
 ਸਦਾ ਕੀਰਤਿ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕੋਊ ਨੇਕਹੁ ਪੇਖੈ ॥੬॥ ਮਨਹਠਿ ਜੋ ਕਮਾਰੈ ਤਿਲੁ ਨ ਲੇਖੈ ਪਾਰੈ ਕਗੁਲ ਜਿਤ
 ਧਿਆਨੁ ਲਾਰੈ ਮਾਇਆ ਰੇ ਧਾਰੀ ॥ ਕੋਈ ਐਸੋ ਰੇ ਸੁਖਹ ਦਾਈ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਕਥਾ ਸੁਨਾਈ ਤਿਸੁ ਭੇਟੇ ਗਤਿ ਹੋਇ
 ਹਮਾਰੀ ॥੭॥ ਸੁਪਰਸਨਨ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ਕਾਟੈ ਰੇ ਬੰਧਨ ਮਾਇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ
 ਆਨਨਦੁ ਭੇਟਿਆ ਨਿਰਖੈ ਗੋਬਿੰਦੁ ਸੁਖ ਨਾਨਕ ਲਾਧੇ ਹਰਿ ਚਰਨ ਪਰਾਤਾ ॥੮॥ ਸਫਲ ਸਫਲ ਭੰਡ ਸਫਲ
 ਜਾਤਾ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਮਿਲੇ ਸਾਧਾ ॥੯॥ ਰਹਾਤ ਦ੍ਰੂਜਾ ॥੧॥੩॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਛੱਤ

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਣ ਜਾਤ ਤੀਰਥੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ॥ ਤੀਰਥੁ ਸਬਦ ਬੀਚਾਰੁ ਅੰਤਰਿ ਗਿਆਨੁ ਹੈ ॥ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਸਾਚਾ ਥਾਨੁ
 ਤੀਰਥੁ ਦਸ ਪੁਰਖ ਸਦਾ ਦਸਾਹਰਾ ॥ ਹਉ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਕਾ ਸਦਾ ਜਾਚਤ ਦੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਧਰਣੀਧਰਾ ॥ ਸੰਸਾਰੁ ਰੋਗੀ
 ਨਾਮੁ ਦਾਰੁ ਮੈਲੁ ਲਾਗੈ ਸਚ ਬਿਨਾ ॥ ਗੁਰ ਵਾਕੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਚਾਨਣੁ ਨਿਤ ਸਾਚੁ ਤੀਰਥੁ ਮਜਨਾ ॥੧॥ ਸਾਚਿ
 ਨ ਲਾਗੈ ਮੈਲੁ ਕਿਆ ਮਲੁ ਧੋਈਐ ॥ ਗੁਣਹਿ ਹਾਰੁ ਪਰੋਇ ਕਿਸ ਕਤ ਰੋਈਐ ॥ ਵੀਚਾਰਿ ਮਾਰੈ ਤਰੈ ਤਰੈ
 ਤਲਟਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਵਏ ॥ ਆਪਿ ਪਾਰਸੁ ਪਰਮ ਧਿਆਨੀ ਸਾਚੁ ਸਾਚੇ ਭਾਵਏ ॥ ਆਨਨਦੁ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਖੁ ਸਾਚਾ
 ਦ੍ਰੂਖ ਕਿਲਵਿਖ ਪਰਹਰੇ ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਿ ਦਿਖਾਇਆ ਮੈਲੁ ਨਾਹੀ ਸਚ ਮਨੇ ॥੨॥ ਸੰਗਤਿ

ਮੀਤ ਮਿਲਾਪੁ ਪੂਰਾ ਨਾਵਣੋ ॥ ਗਾਵੈ ਗਾਵਣਹਾਰੁ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣੋ ॥ ਸਾਲਾਹਿ ਸਾਚੇ ਮੰਨਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਨਨ
 ਦਾਨ ਦਿੱਖਾ ਮਤੇ ॥ ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਭਾਵੈ ਸਹਜਿ ਨਾਵੈ ਬੇਣੀ ਤ ਸੰਗਮੁ ਸਤ ਸਤੇ ॥ ਆਰਾਧਿ ਏਕਕਾਰੁ ਸਾਚਾ ਨਿਤ
 ਦੇਵਿ ਚੜੈ ਸਵਾਇਆ ॥ ਗਤਿ ਸੰਗਿ ਮੀਤਾ ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਕਰਿ ਨਦਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੩॥ ਕਹਣੁ ਕਹੈ
 ਸਭੁ ਕੋਇ ਕੇਵਡੁ ਆਖੀਐ ॥ ਹਤ ਮੂਰਖੁ ਨੀਚੁ ਅਜਾਣੁ ਸਮਝਾ ਸਾਖੀਐ ॥ ਸਚੁ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਖੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਾਖੀ
 ਤਿਤੁ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਮੇਰਾ ॥ ਕੂਚੁ ਕਰਹਿ ਆਵਹਿ ਬਿਖੁ ਲਾਦੇ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥ ਆਖਣਿ ਤੋਟਿ ਨ ਭਗਤਿ
 ਭੰਡਾਰੀ ਭਰਿਪੁਰਿ ਰਹਿਆ ਸੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਮਨੁ ਮਾੜੈ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥੪॥੧॥ ਧਨਾਸਰੀ
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੀਵਾ ਤੇਰੈ ਨਾਇ ਮਨਿ ਆਨਨਦੁ ਹੈ ਜੀਤ ॥ ਸਾਚੋ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦੁ ਹੈ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ
 ਅਪਾਰਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ਜਿਨਿ ਸਿਰਜੀ ਤਿਨਿ ਗੋਈ ॥ ਪਰਵਾਣਾ ਆਇਆ ਹੁਕਮਿ ਪਠਾਇਆ ਫੇਰਿ ਨ ਸਕੈ
 ਕੋਈ ॥ ਆਪੇ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਲੇਖੈ ਆਪੇ ਸੁਰਤਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਜੀਵਾ
 ਸਚੀ ਨਾਈ ॥੧॥ ਤੁਮ ਸਹਿ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਆਇਆ ਜਾਇਸੀ ਜੀਤ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਇ ਨਿਬੇਡੁ ਭਰਮੁ
 ਚੁਕਾਇਸੀ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ਅਕਥੁ ਕਹਾਏ ਸਚ ਮਹਿ ਸਾਚੁ ਸਮਾਣਾ ॥ ਆਪਿ ਤੁਪਾਏ ਆਪਿ ਸਮਾਏ
 ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਾ ॥ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਤ੍ਰਾਂ ਮਨਿ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਅਵਰੁ ਨ
 ਢੂਜਾ ਨਾਮਿ ਤੇਰੈ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਤ੍ਰਾਂ ਸਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ਅਲਖ ਸਿਰਦਿਆ ਜੀਤ ॥ ਏਕੁ ਸਾਹਿਬੁ ਦੁਇ ਰਾਹ
 ਵਾਦ ਵਧਾਂਦਿਆ ਜੀਤ ॥ ਦੁਇ ਰਾਹ ਚਲਾਏ ਹੁਕਮਿ ਸਬਾਏ ਜਨਮਿ ਮੁਆ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ ਕੋ ਬੇਲੀ
 ਬਿਖੁ ਲਾਦੀ ਸਿਰਿ ਭਾਰਾ ॥ ਹੁਕਮੀ ਆਇਆ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬ੍ਰਾਈ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ
 ਸਬਦਿ ਸਿਜਾਪੈ ਸਾਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥੩॥ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਦਰਵਾਰਿ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਬੋਲਹਿ
 ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣਿ ਰਸਨ ਰਸਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਰਸਨ ਰਸਾਏ ਨਾਮਿ ਤਿਸਾਏ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵਿਕਾਣੇ ॥ ਪਾਰਸਿ
 ਪਰਸਿਐ ਪਾਰਸੁ ਹੋਏ ਜਾ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥ ਅਮਰਾ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਵਿਰਲਾ ਗਿਆਨ ਵੀਚਾਰੀ
 ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਸੋਹਨਿ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਾਚੇ ਕੇ ਵਾਪਾਰੀ ॥੪॥ ਭੂਖ ਪਿਆਸੋ ਆਥਿ ਕਿਤ ਦਰਿ ਜਾਇਸਾ ਜੀਤ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਭਤ ਜਾਇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਸਾ ਜੀਤ ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਸਾਚੁ ਚਵਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣਾ ॥
 ਦੀਨਾ ਨਾਥੁ ਦਿੱਤਾਲੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ॥ ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਧੁਰਹੁ ਫੁਰਮਾਈ ਆਪਿ ਮੁਆ
 ਮਨੁ ਮਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਤ੃ਸਨਾ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਰੀ ॥੫॥੨॥ ਧਨਾਸਰੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਮੂਠਡੀਏ ਖਬਰਿ ਨ ਪਾਈਆ ਜੀਤ ॥ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਅੜਾ ਲੇਖੁ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਇਆ ਜੀਤ ॥ ਲੇਖੁ
 ਨ ਮਿਟੈ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਇਆ ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਕਿਆ ਹੋਸੀ ॥ ਗੁਣੀ ਅਚਾਰਿ ਨਹੀ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਅਕਗੁਣ ਬਹਿ
 ਬਹਿ ਰੋਸੀ ॥ ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਆਕ ਕੀ ਛਾਇਆ ਬਿਰਧਿ ਭਏ ਦਿਨ ਪੁੰਨਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਦੋਹਾਗਣਿ
 ਛੂਟੀ ਝੂਠਿ ਵਿਛੁਨਿਆ ॥੧॥ ਕੁਡੀ ਘਰੁ ਘਾਲਿਓ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਚਲੋ ॥ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਪਾਵਹਿ ਸੁਖਿ
 ਮਹਲੋ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਪੰਡਿਅੜੈ ਦਿਨ ਚਾਰੇ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਜਾਇ ਕਹੈ ਸਚੁ ਪਾਏ ਅਨਦਿਨੁ
 ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਵਿਣੁ ਭਗਤੀ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ਨ ਹੋਕੀ ਸੁਣਿਅਹੁ ਲੋਕ ਸਕਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਸੀ ਤਾ ਪਿਲੁ ਪਾਏ
 ਰਾਤੀ ਸਾਚੈ ਨਾਏ ॥੨॥ ਪਿਲੁ ਧਨ ਭਾਵੈ ਤਾ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਨਾਰੀ ਜੀਤ ॥ ਰੰਗਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਾਤੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਕੀਚਾਰੀ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਕੀਚਾਰੀ ਨਾਹ ਪਿਆਰੀ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਭਗਤਿ ਕਰੈਈ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਲਾਏ
 ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਰਸ ਮਹਿ ਰੁਂਗੁ ਕਰੈਈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਸੇਤੀ ਰੰਗਿ ਰੰਗੇਤੀ ਲਾਲ ਭਈ ਮਨੁ ਮਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਕਵੀ
 ਸੋਹਾਗਣਿ ਪਿਰ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥੩॥ ਪਿਰ ਘਰਿ ਸੋਹੈ ਨਾਰਿ ਜੇ ਪਿਰ ਭਾਵਏ ਜੀਤ ॥ ਝੂਠੇ ਵੈਣ ਚਕੇ
 ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਏ ਜੀਤ ॥ ਝੂਠੁ ਅਲਾਵੈ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾ ਪਿਲੁ ਟੇਖੈ ਨੈਣੀ ॥ ਅਕਗੁਣਿਆਰੀ ਕੱਤਿ ਵਿਸਾਰੀ
 ਛੂਟੀ ਵਿਧਣ ਰੈਣੀ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨ ਮਾਨੈ ਫਾਹੀ ਫਾਥੀ ਸਾ ਧਨ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥ ਧਨ ਸੋਹਾਗਣਿ ਨਾਰਿ ਜਿਨਿ ਪਿਲੁ ਜਾਣਿਆ ਜੀਤ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੂਡਿਆਰਿ
 ਕੂਡੁ ਕਮਾਣਿਆ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ਸਾਚੇ ਭਾਵੀ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤੀ ॥ ਪਿਲੁ ਰਲੀਆਲਾ ਜੋਬਨਿ
 ਬਾਲਾ ਤਿਸੁ ਰਾਵੇ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸੀ ਸਹੁ ਰਾਵਾਸੀ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ
 ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਪਿਰ ਘਰਿ ਸੋਹੈ ਨਾਰੀ ॥੫॥੩॥

ਧਨਾਸਰੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰ ਜੀਤ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਜੀਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਸੁਭਾਡਿ ਸਹਜਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ਜੀਤ ॥
 ਗੁਣ ਗਾਡਿ ਵਿਗਸੈ ਸਦਾ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾ ਆਪਿ ਸਾਚੇ ਭਾਵਏ ॥ ਅਛਾਕਾਰੁ ਹਉਮੈ ਤਜੈ ਮਾਡਿਆ ਸਹਜਿ ਨਾਮਿ
 ਸਮਾਵਏ ॥ ਆਪਿ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੋਈ ਆਪਿ ਦੇਇ ਤ ਪਾਈਐ ॥ ਹਰ ਜੀਤ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ
 ਜੀਤ ॥੧॥ ਅਂਦਰਿ ਸਾਚਾ ਨੇਹੁ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰੈ ਜੀਤ ॥ ਹਉ ਤਿਸੁ ਸੇਵੀ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਮੈ ਕਦੇ ਨ ਕੀਸਰੈ ਜੀਤ ॥
 ਕਦੇ ਨ ਵਿਸਾਰੀ ਅਨਦਿਨੁ ਸਮਾਰੀ ਜਾ ਨਾਮੁ ਲੰਝੈ ਤਾ ਜੀਵਾ ॥ ਸੁਖਣੀ ਸੁਣੀ ਤ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੁਪਤੈ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵਾ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲੇ ਅਨਦਿਨੁ ਬਿਕੇਕ ਬੁਧਿ ਬਿਚਰੈ ॥ ਅਂਦਰਿ ਸਾਚਾ ਨੇਹੁ ਪੂਰੇ
 ਸਤਿਗੁਰੈ ॥੨॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲੈ ਵਡਭਾਗਿ ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਆਵਏ ਜੀਤ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ਤ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਏ ਜੀਤ ॥ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ਤਾ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਸਦਾ ਅਤੀਤੁ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸੋਭਾ
 ਜਗ ਅੰਤਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਦੁਹਾ ਤੇ ਮੁਕਤਾ ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰੇ ਸੁ ਭਾਵਏ ॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲੈ
 ਵਡਭਾਗਿ ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਆਵਏ ਜੀਤ ॥੩॥ ਦ੍ਰਿੜੈ ਭਾਡਿ ਦੁਖੁ ਹੋਇ ਮਨਮੁਖ ਜਮਿ ਜੋਹਿਆ ਜੀਤ ॥ ਹਾਡਿ ਹਾਡਿ
 ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਮਾਡਿਆ ਦੁਖਿ ਮੋਹਿਆ ਜੀਤ ॥ ਮਾਡਿਆ ਦੁਖਿ ਮੋਹਿਆ ਹਉਮੈ ਰੋਹਿਆ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤ
 ਵਿਹਾਵਏ ॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਇ ਤਿਸੁ ਚੇਤੈ ਨਾਹੀ ਅੰਤਿ ਗਿਆ ਪਛੁਤਾਵਏ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਸਾਥਿ ਨ ਚਾਲੈ ਪੁਲ
 ਕਲਤਰ ਮਾਡਿਆ ਧੋਹਿਆ ॥ ਦ੍ਰਿੜੈ ਭਾਡਿ ਦੁਖੁ ਹੋਇ ਮਨਮੁਖਿ ਜਮਿ ਜੋਹਿਆ ਜੀਤ ॥੪॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ
 ਮਿਲਾਡਿ ਮਹਲੁ ਹਰਿ ਪਾਡਿਆ ਜੀਤ ॥ ਸਦਾ ਰਹੈ ਕਰ ਜੋਡਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਭਾਡਿਆ ਜੀਤ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਤਾ
 ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਵੈ ਹੁਕਮੁ ਮੰਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਡਿਆ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਤ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਡਿਆ ॥
 ਨਾਮੋ ਨਾਮੁ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਵਏ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਮਿਲਾਡਿ ਮਹਲੁ ਹਰਿ
 ਪਾਵਏ ਜੀਤ ॥੫॥੧॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਛਤ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਜਿਸੁ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਗਾਵੀਐ ਜੀਤ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਕਾ

ਨਾਮੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਰਾਵੀਐ ਜੀਤ ॥ ਭਜੁ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ ਇਕੁ ਅਰਾਧੂ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖ ਨਾਸਏ ॥ ਧੁਰਿ ਕਰਮੁ
ਲਿਖਿਆ ਸਾਚੁ ਸਿਖਿਆ ਕਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਏ ॥ ਭੈ ਭਰਮ ਨਾਠੇ ਛੁਟੀ ਗਾਠੇ ਜਮ ਪਥਿ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵੀਐ ॥
ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੀਐ ॥੧॥ ਨਿਧਰਿਆ ਧਰ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੋ ਜੀਤ ॥
ਤੂ ਦਾਤਾ ਦਾਤਾਰੁ ਸਰਬ ਦੁਖ ਭੰਜਨੋ ਜੀਤ ॥ ਦੁਖ ਹਰਤ ਕਰਤਾ ਸੁਖਹ ਸੁਆਮੀ ਸਰਣਿ ਸਾਧੂ ਆਇਆ ॥ ਸੰਸਾਰੁ
ਸਾਗਰੁ ਮਹਾ ਬਿਖੜਾ ਪਲ ਏਕ ਮਾਹਿ ਤਰਾਇਆ ॥ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਥਾਈ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਨੇਤੀ ਅੰਜਨੋ ॥
ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਸਿਮਰੀ ਸਰਬ ਦੁਖ ਭੈ ਭੰਜਨੋ ॥੨॥ ਆਪਿ ਲੀਏ ਲਡਿ ਲਾਇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀਆ ਜੀਤ
॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣੁ ਨੀਚੁ ਅਨਾਥੁ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਅਪਾਰੀਆ ਜੀਤ ॥ ਦਿਆਲ ਸਦਾ ਕ੃ਪਾਲ ਸੁਆਮੀ ਨੀਚ
ਥਾਪਣਹਾਰਿਆ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਵਸਿ ਤੇਰੈ ਸਗਲ ਤੇਰੀ ਸਾਰਿਆ ॥ ਆਪਿ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਭੁਗਤਾ ਆਪਿ
ਸਗਲ ਬੀਚਾਰੀਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਇ ਜੀਵਾ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਪਤ ਬਨਵਾਰੀਆ ॥੩॥ ਤੇਰਾ ਦਰਸੁ
ਅਪਾਰੁ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਈ ਜੀਤ ॥ ਨਿਤ ਜਪਹਿ ਤੇਰੇ ਦਾਸ ਪੁਰਖ ਅਤੋਲਈ ਜੀਤ ॥ ਸੰਤ ਰਸਨ ਕੂਠਾ ਆਪਿ ਤੂਠਾ
ਹਰਿ ਰਸਹਿ ਸੇਈ ਮਾਤਿਆ ॥ ਗੁਰ ਚਰਨ ਲਾਗੇ ਮਹਾ ਭਾਗੇ ਸਦਾ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਿਆ ॥ ਸਦ ਸਦਾ ਸਿੰਮ੍ਰਤਬਿਧ ਸੁਆਮੀ
ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਗੁਣ ਬੋਲਈ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧੂਰਿ ਸਾਧੂ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭੂ ਅਮੋਲਈ ॥੪॥੧॥

ਰਾਗੁ ਧਨਾਸਰੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਨਕ ਸਨਦ ਮਹੇਸ ਸਮਾਨਾਂ ॥ ਸੇਖਨਾਗਿ ਤੇਰੇ ਮਰਮੁ ਨ ਜਾਨਾਂ ॥੧॥ ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਬਸਾਈ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਹਨੂਮਾਨ ਸਰਿ ਗੁਰੁਡ਼ ਸਮਾਨਾਂ ॥ ਸੁਰਪਤਿ ਨਰਪਤਿ ਨਹੀ ਗੁਨ ਜਾਨਾਂ ॥੨॥ ਚਾਰਿ ਬੇਦ ਅਥ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ
ਪੁਰਾਨਾਂ ॥ ਕਮਲਾਪਤਿ ਕਵਲਾ ਨਹੀ ਜਾਨਾਂ ॥੩॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਸੋ ਭਰਮੈ ਨਾਹੀ ॥ ਪਗ ਲਗਿ ਰਾਮ ਰਹੈ

ਸਰਨਾਂਹੀ ॥੪॥੧॥ ਦਿਨ ਤੇ ਪਹਰ ਪਹਰ ਤੇ ਘਰੀਆਂ ਆਵ ਘਟੈ ਤਨੁ ਛੀਜੈ ॥ ਕਾਲੁ ਅਹੇਰੀ ਫਿਰੈ ਬਧਿਕ ਜਿਤ
 ਕਹਹੁ ਕਵਨ ਬਿਧਿ ਕੀਜੈ ॥੧॥ ਸੋ ਦਿਨੁ ਆਵਨ ਲਾਗਾ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਕਹਹੁ ਕੋਝ ਹੈ ਕਾ ਕਾ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਜੋਤਿ ਕਾਡਿਆ ਮਹਿ ਬਰਤੈ ਆਪਾ ਪਸ੍ਥੁ ਨ ਬੂੜੈ ॥ ਲਾਲਚ ਕਰੈ ਜੀਵਨ ਪਦ ਕਾਰਨ
 ਲੋਚਨ ਕਛੂ ਨ ਸੂੜੈ ॥੨॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਪ੍ਰਾਨੀ ਛੋਡਹੁ ਮਨ ਕੇ ਭਰਮਾ ॥ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਰੇ ਪ੍ਰਾਨੀ
 ਪਰਹੁ ਏਕ ਕੀ ਸਰਨਾਂ ॥੩॥੨॥ ਜੋ ਜਨੁ ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਕਛੁ ਜਾਨੈ ਤਾ ਕਤ ਅਚਰਜੁ ਕਾਹੋ ॥ ਜਿਤ ਜਲੁ ਜਲ ਮਹਿ
 ਪੈਸਿ ਨ ਨਿਕਸੈ ਤਿਤ ਢੁਰਿ ਮਿਲਿਓ ਜੁਲਾਹੋ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਲੋਗਾ ਮੈ ਤਤ ਮਤਿ ਕਾ ਭੋਰਾ ॥ ਜਤ ਤਨੁ ਕਾਸੀ
 ਤਜਹਿ ਕਬੀਰਾ ਰਮੰਡਿਐ ਕਹਾ ਨਿਹੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਲੋਈ ਭਰਮਿ ਨ ਭੂਲਹੁ ਕੋਈ ॥
 ਕਿਆ ਕਾਸੀ ਕਿਆ ਊਖਰੁ ਮਗਹਰੁ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਜਤ ਹੋਈ ॥੨॥੩॥ ਇੰਦ ਲੋਕ ਸਿਵ ਲੋਕਹਿ ਜੈਬੋ ॥ ਓਛੇ ਤਪ
 ਕਰਿ ਬਾਹੁਰਿ ਐਬੋ ॥੧॥ ਕਿਆ ਮਾਂਗਤ ਕਿਛੁ ਥਿਰੁ ਨਾਹੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਖੁ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੋਭਾ
 ਰਾਜ ਬਿਖੈ ਬਡਿਆਈ ॥ ਅੰਤਿ ਨ ਕਾਹੂ ਸਾਂਗ ਸਹਾਈ ॥੨॥ ਪੁਤ ਕਲਤ ਲਛਮੀ ਮਾਡਿਆ ॥ ਇਨ ਤੇ ਕਹੁ
 ਕਵਨੈ ਸੁਖੁ ਪਾਡਿਆ ॥੩॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਅਵਰ ਨਹੀ ਕਾਮਾ ॥ ਹਮਰੈ ਮਨ ਧਨ ਰਾਮ ਕੋ ਨਾਮਾ ॥੪॥੪॥
 ਰਾਮ ਸਿਮਰਿ ਰਾਮ ਸਿਮਰਿ ਰਾਮ ਸਿਮਰਿ ਭਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਬਿਨੁ ਬੂਡਤੇ ਅਧਿਕਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਬਨਿਤਾ ਸੁਤ ਦੇਹ ਗੇਹ ਸੰਪਤਿ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਇਨ੍ ਮੈ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ਤੇਰੋ ਕਾਲ ਅਵਧ ਆਈ ॥੧॥ ਅਜਾਮਲ ਗਜ
 ਗਨਿਕਾ ਪਤਿਤ ਕਰਮ ਕੀਨੇ ॥ ਤੇਝੁ ਤਤਰਿ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲੀਨੇ ॥੨॥ ਸੂਕਰ ਕੂਕਰ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮੇ ਤਤੁ
 ਲਾਜ ਨ ਆਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਛਾਡਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾਹੇ ਬਿਖੁ ਖਾਈ ॥੩॥ ਤਜਿ ਭਰਮ ਕਰਮ ਬਿਧਿ ਨਿਖੇਧ ਰਾਮ
 ਨਾਮੁ ਲੇਹੀ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਨ ਕਬੀਰ ਰਾਮੁ ਕਰਿ ਸਨੇਹੀ ॥੪॥੫॥

ਧਨਾਸਰੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਕੀ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗਹਰੀ ਕਰਿ ਕੈ ਨੀਵ ਖੁਦਾਈ ਊਪਰਿ ਮੰਡਪ ਛਾਏ ॥ ਮਾਰਕਂਡੇ ਤੇ ਕੋ ਅਧਿਕਾਈ ਜਿਨਿ ਤ੍ਰਣ ਧਰਿ ਮੂੰਡ ਬਲਾਏ
 ॥੧॥ ਹਮਰੇ ਕਰਤਾ ਰਾਮੁ ਸਨੇਹੀ ॥ ਕਾਹੇ ਰੇ ਨਰ ਗਰਖੁ ਕਰਤ ਹਹੁ ਬਿਨਸਿ ਜਾਡਿ ਝੂਠੀ ਦੇਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥

मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥ बारह जोजन छत्र चलै था देही गिरझन खाई ॥२॥ सरब
 सुड्हिन की लम्का होती रावन से अधिकाई ॥ कहा भड्हिओ दरि बाँधे हाथी खिन महि भई पराई ॥३॥
 दुरबासा सित करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥ कृपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन
 गाए ॥४॥१॥ दस बैरागनि मोहि बसि कीनी पंचहु का मिट नावउ ॥ सतरि दोड्हि भरे अंमृत सरि
 बिखु कउ मारि कढावउ ॥१॥ पाछै बहुरि न आवनु पावउ ॥ अंमृत बाणी घट ते उचरउ आतम
 कउ समझावउ ॥१॥ रहाउ ॥ बजर कुठारु मोहि है छीनाँ करि मिन्नति लगि पावउ ॥ संतन के हम
 उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ ॥२॥ इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ ॥
 माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥३॥ इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ
 सगल चुकाईअै ॥ कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईअै ॥४॥२॥ मारवाड़ि
 जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥ जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ
 ॥१॥ तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ धरणी कउ इंद्रु
 बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥ जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥२॥
 चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर छासुला ॥ जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि
 रामईआ ॥३॥ बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चातृक मुख जैसे जलधरा ॥ मछुली कउ जैसे नीरु बालहा
 तिउ मेरै मनि रामईआ ॥४॥ साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥ सगल भवण
 तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥५॥३॥ पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥ ता चे छासा सगले
 जनाँ ॥ कृस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥१॥ पहिल पुरसाबिरा ॥ अथोन पुरसादमरा
 ॥ असगा अस उसगा ॥ हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥१॥ रहाउ ॥ नाचंती गोपी
 जन्ना ॥ नईआ ते बैरे कन्ना ॥ तरकु न चा ॥ भ्रमीआ चा ॥ केसवा बचउनी अईए मईए एक आन

ਜੀਤ ॥੨॥ ਪਿੰਧੀ ਉਮਕਲੇ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਆਏ ਤੁਮ ਚੇ ਦੁਆਰਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਕੁਨੁ ਰੇ ॥ ਮੈ ਜੀ ॥ ਨਾਮਾ ॥
ਛੋ ਜੀ ॥ ਆਲਾ ਤੇ ਨਿਵਾਰਣਾ ਜਮ ਕਾਰਣਾ ॥੩॥੪॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਮਾਧਤ ਬਿਰਦੁ ਤੇਰਾ ॥ ਧੰਨਿ ਤੇ ਵੈ
ਮੁਨਿ ਜਨ ਜਿਨ ਧਿਆਇਆਂ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥੧॥ ਮੇਰੈ ਮਾਥੈ ਲਾਗੀ ਲੇ ਧੂਰਿ ਗੋਬਿੰਦ ਚਰਨਨ ਕੀ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ
ਮੁਨਿ ਜਨ ਤਿਨਹੂ ਤੇ ਦੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੀਨ ਕਾ ਦਿਆਲੁ ਮਾਧੈ ਗਰਬ ਪਰਹਾਰੀ ॥ ਚਰਨ ਸਰਨ ਨਾਮਾ
ਬਲਿ ਤਿਹਾਰੀ ॥੨॥੫॥

ਧਨਾਸਰੀ ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਕੀ

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਮ ਸਹਿ ਦੀਨੁ ਦਿਆਲੁ ਨ ਤੁਮ ਸਹਿ ਅਥ ਪਤੀਆਖ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥ ਬਚਨੀ ਤੋਰ ਮੋਰ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ਜਨ ਕਤ
ਪ੍ਰਾਨੁ ਦੀਜੈ ॥੧॥ ਹਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਤ ਰਮਈਆ ਕਾਰਨੇ ॥ ਕਾਰਨ ਕਵਨ ਅਬੋਲ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਹੁਤ ਜਨਮ
ਬਿਛੁਰੇ ਥੇ ਮਾਧਤ ਇਹੁ ਜਨਮੁ ਤੁਸਾਰੇ ਲੇਖੇ ॥ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਆਸ ਲਗਿ ਜੀਵਤ ਚਿਰ ਭਿਆਂ ਦਰਸਨੁ
ਦੇਖੇ ॥੨॥੧॥ ਚਿਤ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਤ ਨੈਨ ਅਵਿਲੋਕਨੋ ਸ਼ਰਵਨ ਬਾਨੀ ਸੁਜਸੁ ਪੂਰਿ ਰਾਖਤ ॥ ਮਨੁ ਸੁ ਮਧੁਕਰੁ
ਕਰਤ ਚਰਨ ਹਿਰਦੇ ਧਰਤ ਰਸਨ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਾਮ ਨਾਮ ਭਾਖਤ ॥੧॥ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿਉ ਜਿਨਿ ਘਟੈ ॥
ਮੈ ਤਤ ਮੌਲਿ ਮਹਗੀ ਲਈ ਜੀਅ ਸਟੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧਸਾਂਗਤਿ ਬਿਨਾ ਭਾਤ ਨਹੀ ਊਪਜੈ ਭਾਵ ਬਿਨੁ
ਭਗਤਿ ਨਹੀ ਹੋਇ ਤੇਰੀ ॥ ਕਹੈ ਰਵਿਦਾਸੁ ਇਕ ਬੇਨਤੀ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪੈਜ ਰਾਖਹੁ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੇਰੀ ॥੨॥੨॥ ਨਾਮੁ
ਤੇਰੇ ਆਰਤੀ ਮਜਨੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਝੂਠੇ ਸਗਲ ਪਾਸਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਆਸਨੋ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ
ਤੁਰਸਾ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਕੇਸਰੋ ਲੇ ਛਿਟਕਾਰੇ ॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਅੰਮ੍ਰਲਾ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਚੰਦਨੋ ਘਸਿ ਜਪੇ ਨਾਮੁ ਲੇ ਤੁਝਹਿ ਕਤ
ਚਾਰੇ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਦੀਵਾ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਬਾਤੀ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਤੇਲੁ ਲੇ ਮਾਹਿ ਪਸਾਰੇ ॥ ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਕੀ ਜੋਤਿ ਲਗਾਈ
ਭਿਆਂ ਤਜਿਆਰੇ ਭਵਨ ਸਗਲਾਰੇ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਤਾਗਾ ਨਾਮੁ ਫੂਲ ਮਾਲਾ ਭਾਰ ਅਠਾਰਹ ਸਗਲ ਜੂਠਾਰੇ ॥
ਤੇਰੇ ਕੀਆ ਤੁਝਹਿ ਕਿਆ ਅਰਪਤ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਤੁਹੀ ਚਵਰ ਢੋਲਾਰੇ ॥੩॥ ਦਸ ਅਠਾ ਅਠਸਠੇ ਚਾਰੇ ਖਾਣੀ
ਡਿਹੈ ਵਰਤਣਿ ਹੈ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਕਹੈ ਰਵਿਦਾਸੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਆਰਤੀ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਹਰਿ ਭੋਗ ਤੁਹਾਰੇ ॥੪॥੩॥

धनासरी बाणी भगताँ की तृलोचन

੧॥ सतिगुर प्रसादि ॥ नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥ दुकुतु सुकुतु थारे करमु री ॥੧॥
 रहाउ ॥ संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥ कुल जन मधे मिल्यो सारग पान रे ॥ करम करि
 कलम्कु मफीटसि री ॥੨॥ बिस्थ का दीपकु स्थामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥
 करम करि अरुण पिंगुला री ॥੩॥ अनिक पातिक हरता तृभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता
 लहै न पारु री ॥ करम करि कपालु मफीटसि री ॥੪॥ अंमृत ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि
 सुनागर नदी चे नाथं ॥ करम करि खारु मफीटसि री ॥੫॥ धाधीले लम्का गडु उपाड़ीले रावण बणु
 सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥ करम करि कछउटी मफीटसि री ॥੬॥ धूप दीप ध्रित साजि आरती ॥
 वारने जाउ कमला पती ॥੭॥ मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु
 राजा राम राइ को ॥੮॥ रहाउ ॥ ऊतमु दीआरा निरमल बाती ॥ तुहंनी निरंजनु कमला पाती ॥੯॥
 रामा भगति रामान्नदु जानै ॥ पूरन परमान्नदु बखानै ॥੧॥ मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥
 सैनु भणै भजु परमान्नदे ॥੨॥ पीपा ॥ कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥ काइअउ धूप
 दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥੩॥ काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ ना कछु
 आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥੪॥ रहाउ ॥ जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
 पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥੫॥ धन्ना ॥ गोपाल तेरा आरता ॥ जो जन तुमरी भगति
 करंते तिन के काज सवारता ॥੬॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ धीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
 पनीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥੭॥ गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी
 चंगेरी ॥ घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धन्ना लेवै मंगी ॥੮॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੂ ੧ ਚਤੁਪਦੇ

੧੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੈਰੈ ਹੀਅਰੈ ਰਤਨੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਬਸਿਆ ਗੁਰਿ ਹਾਥੁ ਧਰਿਆ ਮੈਰੈ ਮਾਥਾ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਦੁਖ ਉਤਰੇ
ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਰਿਨੁ ਲਾਥਾ ॥੧॥ ਮੈਰੇ ਮਨ ਭਜੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਭਿ ਅਰਥਾ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵ੃ਡਾਇਆ
ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜੀਕਨੁ ਬਿਰਥਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੂੜ ਭਏ ਹੈ ਮਨਮੁਖ ਤੇ ਸੋਹ ਮਾਇਆ ਨਿਤ ਫਾਥਾ ॥ ਤਿਨ ਸਾਧੂ
ਚਰਣ ਨ ਸੇਵੇ ਕਬਹੂ ਤਿਨ ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਅਕਾਥਾ ॥੨॥ ਜਿਨ ਸਾਧੂ ਚਰਣ ਸਾਧ ਪਗ ਸੇਵੇ ਤਿਨ ਸਫਲਿਆਂ ਜਨਮੁ
ਸਨਾਥਾ ॥ ਸੋ ਕਤ ਕੀਯੈ ਦਾਸੁ ਦਾਸ ਦਾਸਨ ਕੋ ਹਰਿ ਦਿਆ ਧਾਰਿ ਜਗਨਾਥਾ ॥੩॥ ਹਮ ਅੰਧੁਲੇ ਗਿਆਨਹੀਨ
ਅਗਿਆਨੀ ਕਿਤ ਚਾਲਹ ਮਾਰਗਿ ਪਂਥਾ ॥ ਹਮ ਅੰਧੁਲੇ ਕਤ ਗੁਰ ਅੰਚਲੁ ਦੀਯੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਚਲਹ ਮਿਲਮਥਾ
॥੪॥੧॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹੀਰਾ ਲਾਲੁ ਅਮੋਲਕੁ ਹੈ ਭਾਰੀ ਬਿਨੁ ਗਾਹਕ ਮੀਕਾ ਕਾਖਾ ॥ ਰਤਨ ਗਾਹਕੁ
ਗੁਰੁ ਸਾਧੂ ਦੇਖਿਆਂ ਤਕ ਰਤਨੁ ਬਿਕਾਨੋ ਲਾਖਾ ॥੧॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਗੁਪਤ ਹੀਰੁ ਹਰਿ ਰਾਖਾ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲਿ
ਮਿਲਾਇਆਂ ਗੁਰੁ ਸਾਧੂ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹੀਰੁ ਪਰਾਖਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕੌਠੀ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਤਿਨ ਘਰਿ
ਰਤਨੁ ਨ ਲਾਖਾ ॥ ਤੇ ਊੜਾਡਿ ਭਰਮਿ ਸੁਏ ਗਾਵਾਰੀ ਮਾਇਆ ਭੁਅੰਗ ਬਿਖੁ ਚਾਖਾ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਾਧ ਮੇਲਹੁ
ਜਨ ਨੀਕੇ ਹਰਿ ਸਾਧੂ ਸਰਣਿ ਹਮ ਰਾਖਾ ॥ ਹਰਿ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਪਰੇ ਭਾਗਿ ਤੁਮ ਪਾਖਾ
॥੩॥ ਜਿਹਵਾ ਕਿਆ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣਹ ਤੁਮ ਵਡ ਅਗਮ ਵਡ ਪੁਰਖਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ

ਪਾਖਾਣੁ ਡੁਬਤ ਹਰਿ ਰਾਖਾ ॥੪॥੨॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਃ ੪ ॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਕਛੂਆ ਨ ਜਾਨਹ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੇਰੇ ਮੂਰਖ
 ਸੁਗਧ ਇਆਨਾ ॥ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਦੀਜੈ ਮਤਿ ਊਤਮ ਕਰਿ ਲੀਜੈ ਸੁਗਧੁ ਸਿਆਨਾ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ
 ਆਲਸੀਆ ਉਘਲਾਨਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਨਿ ਮਿਲਾਇਆ ਗੁਰੁ ਸਾਥੁ ਮਿਲਿ ਸਾਥੁ ਕਪਟ ਖੁਲਾਨਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਗੁਰ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਵਹੁ ਮੈਰੈ ਹੀਅਰੈ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਨਾਮੁ ਪਰਾਨਾ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਾਰਿ ਜਾਈਐ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ
 ਜਿਤ ਅਮਲੀ ਅਮਲਿ ਲੁਭਾਨਾ ॥੨॥ ਜਿਨ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ਤਿਨ ਧੁਰਿ ਭਾਗ ਪੁਰਾਨਾ ॥ ਤਿਨ
 ਹਮ ਚਰਣ ਸਰੇਵਹ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਜਿਨ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨਾ ॥੩॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਧਾਰੀ ਮੈਰੈ ਠਾਕੁਰਿ ਜਨੁ
 ਬਿਛੁਰਿਆ ਚਿਰੀ ਮਿਲਾਨਾ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਦੂਝਾਇਆ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਸੁ ਕੁਰਬਾਨਾ
 ॥੪॥੩॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਜਨੁ ਪੁਰਖੁ ਵਡ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਫਲ ਲਾਗਿਬਾ ॥
 ਮਾਇਆ ਭੁਇਅਂਗ ਗੁਸਿਆਂ ਹੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਬਿਸੁ ਹਰਿ ਕਾਢਿਬਾ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਸਿ
 ਲਾਗਿਬਾ ॥ ਹਰਿ ਕੀਏ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਮਿਲਿ ਸਾਥ ਗੁਰ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਬਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ
 ਵਡਭਾਗ ਮਿਲਿਆਂ ਗੁਰੁ ਸਾਥੁ ਮਿਲਿ ਸਾਥੁ ਲਿਵ ਉਨਮਨਿ ਲਾਗਿਬਾ ॥ ਤੂਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝੀ ਸਾਁਤਿ ਪਾਈ
 ਹਰਿ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਗੁਨ ਗਾਇਬਾ ॥੨॥ ਤਿਨ ਕੇ ਭਾਗ ਖੀਨ ਧੁਰਿ ਪਾਏ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਦਰਸੁ ਨ ਪਾਇਬਾ
 ॥ ਤੇ ਦ੍ਰਿਜੈ ਭਾਇ ਪਵਹਿ ਗ੍ਰਭ ਜੋਨੀ ਸਭੁ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਤਿਨ ਜਾਇਬਾ ॥੩॥ ਹਰਿ ਦੇਹ ਬਿਮਲ ਮਤਿ ਗੁਰ ਸਾਥ
 ਪਗ ਸੇਵਹ ਹਮ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਇਬਾ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਰੇਣ ਸਾਥ ਪਗ ਮਾਗੈ ਹਰਿ ਹੋਇ ਦਿਵਾਇਅਲੁ ਦਿਵਾਇਅਿਬਾ
 ॥੪॥੪॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਨ ਬਸਿਆਂ ਤਿਨ ਮਾਤ ਕੀਜੈ ਹਰਿ ਬਾੜਿਆ ॥ ਤਿਨ ਸੁੰਝੀ
 ਦੇਹ ਫਿਰਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਓਇ ਖਧਿ ਖਧਿ ਮੁਏ ਕਰਾੜਿਆ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਧਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਮਾਝਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਕ੃ਪਾਲਿ ਕ੃ਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨੁ ਦੀਆਂ ਮਨੁ ਸਮਝਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਲਜੁਗਿ ਪਦੁ ਊਤਮੁ
 ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰ ਮਾਝਾ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਜਿਨਿ ਗੁਪਤੁ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਝਾ ॥੨॥
 ਦਰਸਨੁ ਸਾਥ ਮਿਲਿਆਂ ਵਡਭਾਗੀ ਸਭਿ ਕਿਲਬਿਖ ਗਏ ਗਵਾਝਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਹੁ ਪਾਇਆ ਵਡ ਦਾਣਾ ਹਰਿ

ਕੀਏ ਬਹੁ ਗੁਣ ਸਾਝਾ ॥੩॥ ਜਿਨ ਕਤ ਕ੃ਪਾ ਕਰੀ ਜਗਜੀਵਨਿ ਹਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰਿਓ ਮਨ ਮਾਝਾ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ
 ਦਰਿ ਕਾਗਦ ਫਾਰੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਲੇਖਾ ਸਮਝਾ ॥੪॥੫॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਾਥ ਪਾਈ
 ਵਡਭਾਗੀ ਮਨੁ ਚਲਤੌ ਭਿੱਓ ਅਰੂੜਾ ॥ ਅਨਹਤ ਧੁਨਿ ਵਾਜਹਿ ਨਿਤ ਵਾਜੇ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰ ਰਸਿ ਲੀਡਾ
 ॥੬॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਰੂੜਾ ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਹਰਿ ਮਿਲਿਓ ਲਾਇ
 ਝਪੀਡਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਕਤ ਬੰਧ ਭਏ ਹੈ ਮਾਇਆ ਬਿਖੁ ਸੰਚਹਿ ਲਾਇ ਜਕੀਡਾ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਅਰਥਿ ਖਰਚਿ ਨਹ
 ਸਾਕਹਿ ਜਮਕਾਲੁ ਸਹਹਿ ਸਿਰਿ ਪੀਡਾ ॥੨॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਅਰਥਿ ਸਰੀਰੁ ਲਗਾਇਆ ਗੁਰ ਸਾਥੁ ਬਹੁ ਸਰਧਾ
 ਲਾਇ ਮੁਖਿ ਧੂੜਾ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਹਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਲਗਾ ਮਨਿ ਗੂੜਾ ॥੩॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੇਲਿ
 ਮੇਲਿ ਜਨ ਸਾਥੁ ਹਮ ਸਾਥ ਜਨਾ ਕਾ ਕੀਡਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਪਗ ਸਾਥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਸਾਥੁ ਪਾਖਾਣੁ
 ਹਰਿਓ ਮਨੁ ਮੂੜਾ ॥੪॥੬॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਹੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖੁ ਮਿਟੈ ਹਮਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਵਹੁ
 ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥੧॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਮੀਤ ਹਮਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਖਹੁ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਸੁਣਾਵਹੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਪਰਗਟੁ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥੨॥ ਮਧੁਸੂਦਨ ਹਰਿ ਮਾਧੋ ਪ੍ਰਾਨਾ ॥
 ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮੀਠ ਲਗਾਨਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਿੱਤਾ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ਰਾਮ
 ॥੩॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਹਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ
 ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥੪॥੧॥੭॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਹਾ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਦੂੜਾਵਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਆਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੧॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੱਤਾਲੁ ਧਿਆਹਾ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਘੁੰਮਰਿ ਪਾਵਹੁ
 ਮਿਲਿ ਸਤਸਾਂਗਿ ਆਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੨॥ ਆਤ ਸਖੀ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਹਾ ॥ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਨਾਮੁ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਧਾਰਿ ਗੁਰ ਮੇਲਹੁ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕੀਰਤਿ ਜਸੁ ਅਗਮ ਅਥਾਹਾ
 ॥ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗਾਵਾਹਾ ॥ ਮੋ ਕਤ ਧਾਰਿ ਕ੃ਪਾ ਮਿਲੀਐ ਗੁਰ ਦਾਤੇ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਭਗਤਿ ਓਮਾਹਾ
 ਰਾਮ ॥੪॥੨॥੮॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਃ ੪ ॥ ਰਸਿ ਰਸਿ ਰਾਮੁ ਰਸਾਲੁ ਸਲਾਹਾ ॥ ਮਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਭੀਨਾ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥
 ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮਤਿ ਭਗਤਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਜਪਾਹਾ
 ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜੀਤਿ ਸਬਦੁ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਪੰਚ ਫ੍ਰੂਤ ਵਸਿ ਆਵਹਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਰਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੨॥
 ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਸਦਾ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਮਾਧੋ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੩॥ ਜਪਿ ਜਗਦੀਸੁ ਜਪਤ ਮਨ ਮਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਗਨਾਥੁ ਜਗਿ ਲਾਹਾ ॥ ਧਨੁ
 ਧਨੁ ਵਡੇ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਭਗਤਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੪॥੩॥੬॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਆਪੇ ਜੋਗੀ
 ਜੁਗਤਿ ਜੁਗਾਹਾ ॥ ਆਪੇ ਨਿਰਭਤ ਤਾਡੀ ਲਾਹਾ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਆਪੇ ਨਾਮਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ
 ॥੧॥ ਆਪੇ ਦੀਪ ਲੋਅ ਦੀਪਾਹਾ ॥ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਮੁੰਦੁ ਮਥਾਹਾ ॥ ਆਪੇ ਮਥਿ ਮਥਿ ਤਤੁ ਕਢਾਏ ਜਪਿ
 ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੨॥ ਸਖੀ ਮਿਲਹੁ ਮਿਲਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾਹਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਫ੍ਰੂਡੀ ਮਨਿ ਭਾਈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੩॥ ਆਪੇ ਵਡ ਦਾਣਾ ਵਡ ਸਾਹਾ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰੰਜੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਾਤਿ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਗੁਣ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥
 ॥੪॥੪॥੧੦॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸੰਗਿ ਗੁਰਾਹਾ ॥ ਪ੍ਰੰਜੀ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਸਾਹਾ ॥
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਧਾਰਿ ਮਧੁਸੂਦਨ ਮਿਲਿ ਸਤਸਾਂਗਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੧॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਬਾਣੀ ਸ਼ਵਣਿ ਸੁਣਾਹਾ ॥
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਾਹਾ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਗੁਣ ਬੋਲਹੁ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਜਪਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੨॥
 ਸਭਿ ਤੀਰਥ ਵਰਤ ਜਗ ਪੁਨ੍ਨ ਤੁਲਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਪੁਜਹਿ ਪੁਜਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਤੁਲੁ ਤੋਲੁ ਅਤਿ
 ਭਾਰੀ ਗੁਰਮਤਿ ਜਪਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੩॥ ਸਭਿ ਕਰਮ ਧਰਮ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਹਾ ॥ ਕਿਲਵਿਖ ਮੈਲੁ ਪਾਪ
 ਧੋਵਾਹਾ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਹੋਹੁ ਜਨ ਊਪਰਿ ਦੇਹੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੪॥੫॥੧੧॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੩

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕੋਈ ਜਾਨੈ ਕਵਨੁ ਈਹਾ ਜਗਿ ਮੀਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਸੋਈ ਬਿਧਿ ਬੂੜੈ ਤਾ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਬਨਿਤਾ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਇਸਟ ਮੀਤ ਅਥੁ ਭਾਈ ॥ ਪ੍ਰੂਬ ਜਨਮ ਕੇ ਮਿਲੇ ਸੰਜੋਗੀ ਅੰਤਹਿ ਕੋ
ਨ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਮੁਕਤਿ ਮਾਲ ਕਨਿਕ ਲਾਲ ਹੀਰਾ ਮਨ ਰੰਜਨ ਕੀ ਮਾਇਆ ॥ ਹਾ ਹਾ ਕਰਤ ਬਿਹਾਨੀ ਅਵਧਹਿ
ਤਾ ਮਹਿ ਸੰਤੋਖੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਹਸਤਿ ਰਥ ਅੱਥ ਪਵਨ ਤੇਜ ਧਣੀ ਭੂਮਨ ਚਤੁਰਾਂਗਾ ॥ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲਿਓ
ਇਨ ਮਹਿ ਕਛੂਐ ਊਠਿ ਸਿਧਾਇਆਂ ਨਾਂਗਾ ॥੩॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਪ੍ਰਾਤ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਤਾ ਕੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਾਈਐ
॥ ਨਾਨਕ ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਆਗੈ ਮੁਖੁ ਊਜਲ ਸੰਗਿ ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਾਈਐ ॥੪॥੧॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੩ ਟੁਪਦੇ

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੇਹੁ ਸੰਦੇਸਰੋ ਕਹੀਅਤ ਪ੍ਰਾਤ ਕਹੀਅਤ ॥ ਬਿਸਮੁ ਭਈ ਮੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਸੁਨਤੇ ਕਹਹੁ ਸੁਹਾਗਨਿ ਸਹੀਅਤ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਕੋ ਕਹਤੋ ਸਭ ਬਾਹਰਿ ਬਾਹਰਿ ਕੋ ਕਹਤੋ ਸਭ ਮਹੀਅਤ ॥ ਬਰਨੁ ਨ ਦੀਸੈ ਚਿਹਨੁ ਨ ਲਖੀਐ ਸੁਹਾਗਨਿ
ਸਾਤਿ ਬੁਝਹੀਅਤ ॥੧॥ ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਾਸੀ ਲੇਪੁ ਨਹੀ ਅਲਪਹੀਅਤ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹਤ ਸੁਨਹੁ ਰੇ
ਲੋਗਾ ਸੰਤ ਰਸਨ ਕੋ ਬਸਹੀਅਤ ॥੨॥੧॥੨॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਃ ੫ ॥ ਧੀਰਤ ਸੁਨਿ ਧੀਰਤ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਭੁ ਅਰਪਤ ਨੀਰਤ ਪੇਖਿ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਨੀਰਤ ॥੧॥ ਬੇਸੁਮਾਰ ਬੇਅਤੁ ਬਡ ਦਾਤਾ ਮਨਹਿ
ਗਹੀਰਤ ਪੇਖਿ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ॥੨॥ ਜੋ ਚਾਹਉ ਸੋਈ ਸੋਈ ਪਾਵਤ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਪ੍ਰਾਤ ਜਪਿ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ॥੩॥
ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਦ੍ਰਾਖਿ ਨ ਕਵਹੂ ਝੂਰਤ ਬੁੜਿ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ॥੪॥੨॥੩॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਲੋਡੀਦੜਾ ਸਾਜਨੁ ਮੇਰਾ ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਮੰਗਲ ਗਾਵਹੁ ਨੀਕੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਤਿਸਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸ੍ਰੂਖਿ
ਅਰਾਧਨੁ ਦ੍ਰਾਖਿ ਅਰਾਧਨੁ ਬਿਸਰੈ ਨ ਕਾਹੂ ਬੇਰਾ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕੋਟਿ ਸੂਰ ਤਜਾਰਾ ਬਿਨਸੈ ਭਰਮੁ ਅੰਧੇਰਾ ॥੧॥ ਥਾਨਿ
ਥਨਨਤਰਿ ਸਭਨੀ ਜਾਈ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਤੇਰਾ ॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਪਾਵੈ ਜੋ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਈ ਹੈ ਫੇਰਾ ॥੨॥੩॥੪॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੪ ਟੁਪਦੇ

੧੬ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਥ ਮੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਆਗਿਧ ॥ ਤਜੀ ਸਿਆਨਪ ਚਿੰਤ ਵਿਸਾਰੀ ਅਛ੍ਯ ਛੋਡਿਆ ਹੈ ਤਿਆਗਿਧ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਸਗਲ ਮੋਹਿ ਮੋਹੀਅਤ ਤਤ ਸਰਨਿ ਪਰਿਆ ਗੁਰ ਭਾਗਿ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਟਹਲ ਹਰਿ ਲਾਇਆ
 ਤਤ ਜਮਿ ਛੋਡੀ ਮੋਰੀ ਲਾਗਿ ॥੧॥ ਤਰਿਆ ਸਾਗਰੁ ਪਾਵਕ ਕੋ ਜਤ ਸੰਤ ਭੇਟੇ ਵਡ ਭਾਗਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਬ
 ਸੁਖ ਪਾਏ ਮੋਰੇ ਹਰਿ ਚਰਨੀ ਚਿਤੁ ਲਾਗਿ ॥੨॥੧॥੫॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਮਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਧਿਆਨੁ
 ਧਰਾ ॥ ਵ੍ਰਿਡਿਆ ਗਿਆਨੁ ਮੰਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਮਿਡਿਆ ਕਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਲ ਜਾਲ ਅਝ ਮਹਾ
 ਜੰਜਾਲਾ ਛੁਟਕੇ ਜਮਹਿ ਡਰਾ ॥ ਆਇਆ ਦੁਖ ਹਰਣ ਸਰਣ ਕਰੁਣਾਪਤਿ ਗਹਿਆ ਚਰਣ ਆਸਰਾ ॥੧॥ ਨਾਵ
 ਰੂਪ ਭਿਡਿਆ ਸਾਧਸੰਗੁ ਭਵ ਨਿਧਿ ਪਾਰਿ ਪਰਾ ॥ ਅਧਿਤ ਪੀਓ ਗਤੁ ਥੀਓ ਭਰਮਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਜ਼ੁ ਜਰਾ
 ॥੨॥੨॥੬॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕਤ ਭਾਏ ਗੋਬਿੰਦ ਸਹਾਈ ॥ ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਸਗਲ ਸਿਤ ਵਾ ਕਤ
 ਬਿਆਧਿ ਨ ਕਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦੀਸਹਿ ਸਭ ਸੰਗਿ ਰਹਹਿ ਅਲੇਪਾ ਨਹ ਵਿਆਪੈ ਉਨ ਮਾਈ ॥ ਏਕੈ ਰੰਗਿ
 ਤਤ ਕੇ ਕੇਤੇ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਦਿਡਿਆ ਮਿਡਿਆ ਕਿਰਪਾ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ਸੇਈ ਸੰਤ ਸੁਭਾਈ ॥ ਤਿਨ
 ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਨਿਸਤਰੀਐ ਜਿਨ ਰਸਿ ਰਸਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਈ ॥੨॥੩॥੭॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਗੋਬਿੰਦ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨ ਰੂਪ ॥ ਅਗਿਆਨ ਮੋਹ ਮਗਨ ਮਹਾ ਪ੍ਰਾਨੀ ਅੰਧਿਆਰੇ ਮਹਿ ਟੀਪ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਤੁਮਰਾ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ ਚਰਨ ਕਮਲ ਆਨੂਪ ॥ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਕਰਤ ਤਿਹ ਬੰਦਨ ਮਨਹਿ ਚੂਰਾਵਤ
 ਧੂਪ ॥੧॥ ਹਾਰਿ ਪਰਿਆ ਤੁਮਰੈ ਪ੍ਰਭ ਦੁਆਰੈ ਵ੍ਰਿਡ ਕਰਿ ਗਹੀ ਤੁਮਾਰੀ ਲੂਕ ॥ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਅਪੁਨੇ
 ਕਤ ਸੰਸਾਰ ਪਾਵਕ ਕੇ ਕੂਪ ॥੨॥੪॥੮॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੋਈ ਜਨੁ ਹਰਿ ਸਿਤ ਦੇਵੈ ਜੋਰਿ ॥ ਚਰਨ
 ਗਹਤ ਬਕਤ ਸੁਭ ਰਸਨਾ ਦੀਜਹਿ ਪ੍ਰਾਨ ਅਕੋਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲ ਕਰਤ ਕਿਆਰੇ ਹਰਿ
 ਸਿੰਚੈ ਸੁਧਾ ਸੰਜੋਰਿ ॥ ਇਆ ਰਸ ਮਹਿ ਮਗਨੁ ਹੋਤ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਹਾ ਬਿਖਿਆ ਤੇ ਤੋਰਿ ॥੧॥ ਆਇਆ ਸਰਣਿ

ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਚਿਤਵਤ ਤੁਮਰੀ ਓਰਿ ॥ ਅਮੈ ਪਦੁ ਦਾਨੁ ਸਿਮਰਨੁ ਸੁਆਮੀ ਕੋ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਬੰਧਨ ਛੋਰਿ ॥੨॥੫॥੬॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਾਤੂਕ ਚਿਤਵਤ ਬਰਸਤ ਮੌਹ ॥ ਕ੃ਪਾ ਸਿੰਧੁ ਕਰੁਣਾ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ
ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਕੋ ਨੈਂਹ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਸੂਖ ਚਕਵੀ ਨਹੀ ਚਾਹਤ ਅਨਦ ਪੂਰਨ ਪੇਖਿ ਦੇਂਹ ॥ ਆਨ
ਉਪਾਵ ਨ ਜੀਵਤ ਮੀਨਾ ਬਿਨੁ ਜਲ ਮਰਨਾ ਤੈਂਹ ॥੧॥ ਹਮ ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ਅਪੁਨੀ ਕ੃ਪਾ ਕਰੋਹ
॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਨਾਨਕੁ ਆਰਾਧੈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਆਨ ਨ ਕੌਂਹ ॥੨॥੬॥੧੦॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨਿ
ਤਨਿ ਬਸਿ ਰਹੇ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਾਧੂ ਸਾਂਗਿ ਭੇਟੇ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਸੁਜਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਠਗਤੀ
ਜਿਨ ਕਤ ਪਾਈ ਤਿਨ ਰਸੁ ਪੀਅਤ ਭਾਰੀ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਨ ਹਸ਼ਾਰੀ ॥੧॥
ਲਾਡਿ ਲਏ ਲਡਿ ਦਾਸ ਜਨ ਅਧੁਨੇ ਤਥਰੇ ਤਥਰਨਹਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ
ਸਰਣਿ ਦੁਆਰੇ ॥੨॥੭॥੧੧॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਏ ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਭ੍ਰਮਿ ਸਰਣੀ ॥ ਤਥਰੁ ਦੇਹ
ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਲਾਵਹੁ ਅਪੁਨੀ ਚਰਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਕਿਛੁ ਕਰਮੁ ਨ ਜਾਨਾ ਨਾਹਿਨ ਨਿਰਮਲ
ਕਰਣੀ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਅੰਚਲਿ ਲਾਵਹੁ ਬਿਖਮ ਨਦੀ ਜਾਡਿ ਤਰਣੀ ॥੧॥ ਸੁਖ ਸੰਪਤਿ ਮਾਡਿਆ ਰਸ ਮੀਠੇ
ਇਹ ਨਹੀ ਮਨ ਮਹਿ ਧਰਣੀ ॥ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਤ੃ਪਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਪਾਵਤ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰੰਗ ਆਭਰਣੀ ॥੨॥
੮॥੧੨॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਸਿਮਰਹੁ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਕਤ ਅਪਦਾ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ
ਪੂਰਨ ਦਾਸ ਕੇ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਟਿ ਬਿਘਨ ਬਿਨਸਹਿ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਨਿਹਚਲੁ ਗੋਵਿਦ ਧਾਮ ॥ ਭਗਕੰਤ
ਭਗਤ ਕਤ ਭਤ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਆਦਰੁ ਦੇਵਤ ਜਾਮ ॥੧॥ ਤਜਿ ਗੋਪਾਲ ਆਨ ਜੋ ਕਰਣੀ ਸੋਈ ਸੋਈ ਬਿਨਸਤ ਖਾਮ
॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਗਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਸਮੂਹ ਬਿਸਰਾਮ ॥੨॥੬॥੧੩॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੬

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਭੂਲਿਆ ਮਨੁ ਮਾਡਿਆ ਤੁਰੜਾਇਆ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕਰਮ ਕੀਓ ਲਾਲਚ ਲਗਿ ਤਿਹ ਤਿਹ ਆਪੁ ਬੰਧਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਸਮਝਨ ਨ ਪਰੀ ਬਿਖੈ ਰਸ ਰਚਿਆ ਜਸੁ ਹਰਿ ਕੋ ਬਿਸਰਾਇਆ ॥ ਸਾਂਗਿ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਜਾਨਿਆ ਨਾਹਿਨ ਬਨੁ ਖੋਜਨ

ਕਤ ਧਾਇਆਂ ॥੧॥ ਰਤਨੁ ਰਾਮੁ ਘਟ ਹੀ ਕੇ ਭੀਤਰਿ ਤਾ ਕੋ ਗਿਆਨੁ ਨ ਪਾਇਆਂ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਭਗਵਂਤ ਭਜਨ
 ਬਿਨੁ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆਂ ॥੨॥੧॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਹਰਿ ਜ੍ਰੂ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਪਤਿ ਮੇਰੀ ॥ ਜਮ ਕੋ ਕਾਸ
 ਭਾਇਆਂ ਤਰ ਅੰਤਰਿ ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਤੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਹਾ ਪਤਿ ਮੁਗਧ ਲੋਭੀ ਫੁਨਿ ਕਰਤ
 ਪਾਪ ਅਬ ਹਾਰਾ ॥ ਭੈ ਮਰਕੇ ਕੋ ਬਿਸਰਤ ਨਾਹਿਨ ਤਿਹ ਚਿੰਤਾ ਤਨੁ ਜਾਰਾ ॥੧॥ ਕੀਏ ਤੁਧਾਰ ਮੁਕਤਿ ਕੇ ਕਾਰਨਿ
 ਦਹ ਦਿਸਿ ਕਤ ਤਠਿ ਧਾਇਆ ॥ ਘਟ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਬਸੈ ਨਿਰੰਜਨੁ ਤਾ ਕੋ ਮਰਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਨਾਹਿਨ ਗੁਨੁ
 ਨਾਹਿਨ ਕਛੁ ਜਪੁ ਤਪੁ ਕਤਨੁ ਕਰਮੁ ਅਬ ਕੀਜੈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਾਰਿ ਪਰਿਆਂ ਸਰਨਾਗਤਿ ਅਮੈ ਦਾਨੁ ਪ੍ਰਭ ਦੀਜੈ
 ॥੩॥੨॥ ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਮਨ ਰੇ ਸਾਚਾ ਗਹੋ ਬਿਚਾਰਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮਿਥਿਆ ਮਾਨੋ ਸਗਰੋ ਇਹੁ
 ਸੰਸਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾ ਕਤ ਜੋਗੀ ਖੋਜਤ ਹਾਰੇ ਪਾਇਆਂ ਨਾਹਿ ਤਿਹ ਪਾਰਾ ॥ ਸੋ ਸੁਆਮੀ ਤੁਮ ਨਿਕਟਿ ਪਛਾਨੋ
 ਰੂਪ ਰੇਖ ਤੇ ਨਿਆਰਾ ॥੧॥ ਪਾਵਨ ਨਾਮੁ ਜਗਤ ਮੈ ਹਰਿ ਕੋ ਕਬਹੂ ਨਾਹਿ ਸੰਭਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਪਰਿਆਂ
 ਜਗ ਬੰਦਨ ਰਾਖਹੁ ਬਿਰਦੁ ਤੁਹਾਰਾ ॥੨॥੩॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧

੧੭੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕ ॥ ਦਰਸਨ ਪਿਆਸੀ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਚਿਤਵਤ ਅਨਦਿਨੁ ਨੀਤ ॥ ਖੋਲਿ ਕਪਟ ਗੁਰਿ ਮੇਲੀਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ
 ਸੰਗਿ ਮੀਤ ॥੧॥ ਛੰਤ ॥ ਸੁਣਿ ਧਾਰ ਹਮਾਰੇ ਸਜਣ ਇਕ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀਆ ॥ ਤਿਸੁ ਮੋਹਨ ਲਾਲ ਪਿਆਰੇ ਹਤ
 ਫਿਰਤ ਖੋਜਨੀਆ ॥ ਤਿਸੁ ਦਿਸਿ ਪਿਆਰੇ ਸਿਰੁ ਧਰੀ ਉਤਾਰੇ ਇਕ ਭੌਰੀ ਦਰਸਨੁ ਦੀਜੈ ॥ ਨੈਨ ਹਮਾਰੇ ਪ੍ਰਤਾ ਰੰਗ
 ਰੰਗਾਰੇ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਭੀ ਨਾ ਧੀਰੀਜੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਿਤ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ਜਿਤ ਜਲ ਮੀਨਾ ਚਾਤ੍ਰਕ ਜਿਵੈ ਤਿਸੰਤੀਆ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਸਗਲੀ ਤਿਖਾ ਬੁੜੀਤੀਆ ॥੧॥ ਧਾਰ ਵੇ ਪ੍ਰਤਾ ਹਮੈ ਸਖੀਆ ਮ੍ਰਾਂ ਕਹੀ ਨ ਜੇਹੀਆ ॥
 ਧਾਰ ਵੇ ਹਿਕ ਝੁੰ ਹਿਕ ਚਾਡੈ ਹਤ ਕਿਸੁ ਚਿਤੇਹੀਆ ॥ ਹਿਕ ਢੁੰ ਹਿਕਿ ਚਾਡੈ ਅਨਿਕ ਪਿਆਰੇ ਨਿਤ ਕਰਦੇ ਭੋਗ
 ਬਿਲਾਸਾ ॥ ਤਿਨਾ ਦੇਖਿ ਮਨਿ ਚਾਤ ਤਠੰਦਾ ਹਤ ਕਦਿ ਪਾਈ ਗੁਣਤਾਸਾ ॥ ਜਿਨੀ ਮੈਡਾ ਲਾਲੁ ਰੀਝਾਇਆ ਹਤ
 ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਮਨੁ ਡੋਹੀਆ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸੁਣਿ ਬਿਨਤ ਸੁਹਾਗਣਿ ਮ੍ਰਾਂ ਦਿਸਿ ਡਿਖਾ ਪਿਰੁ ਕੇਹੀਆ ॥੨॥ ਧਾਰ ਵੇ

ਪਿਰੁ ਆਪਣ ਭਾਣਾ ਕਿਛੁ ਨੀਸੀ ਛੰਦਾ ॥ ਧਾਰ ਵੇ ਤੈ ਰਾਵਿਆ ਲਾਲਨੁ ਮੂ ਦਸਿ ਦਸੰਦਾ ॥ ਲਾਲਨੁ ਤੈ ਪਾਇਆ
 ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਜੈ ਧਨ ਭਾਗ ਮਥਾਣੇ ॥ ਬਾਂਹ ਪਕਡਿ ਠਾਕੁਰਿ ਹਤ ਧਿਧੀ ਗੁਣ ਅਵਗਣ ਨ ਪਛਾਣੇ ॥ ਗੁਣ
 ਹਾਰੁ ਤੈ ਪਾਇਆ ਰੰਗ ਲਾਲੁ ਬਣਾਇਆ ਤਿਸੁ ਹਭੋ ਕਿਛੁ ਸੁਵਾਦਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਧੰਨਿ ਸੁਹਾਗਣਿ ਸਾਈ ਜਿਸੁ
 ਸੰਗਿ ਭਤਾਰੁ ਕਵਸੰਦਾ ॥੩॥ ਧਾਰ ਵੇ ਨਿਤ ਸੁਖ ਸੁਖੇਦੀ ਸਾ ਮੈ ਪਾਈ ॥ ਕਰੁ ਲੋਝੀਦਾ ਆਇਆ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥
 ਮਹਾ ਮੰਗਲੁ ਰਹਸੁ ਥੀਆ ਪਿਰੁ ਦਿੱਤਾਲੁ ਸਦ ਨਵ ਰੰਗੀਆ ॥ ਕਵਡ ਭਾਗਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਿ ਮਿਲਾਇਆ ਸਾਧ ਕੈ
 ਸਤਸੰਗੀਆ ॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਸਗਲ ਪ੍ਰੂਰੀ ਪ੍ਰਤੀ ਅੰਕਿ ਅੰਕੁ ਮਿਲਾਈ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸੁਖ ਸੁਖੇਦੀ ਸਾ ਮੈ ਗੁਰ
 ਮਿਲਿ ਪਾਈ ॥੪॥੧॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਛੰਤ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਊਚਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ਪ੍ਰਭੁ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਇ ਅਕਥੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਰਾਖਨ ਕਤ ਸਮਰਥੁ ॥੧॥ ਛੰਤੁ ॥ ਜਿਤ ਜਾਨਹੁ ਤਿਤ ਰਾਖੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਿਆ ॥ ਕੇਤੇ ਗਨਤ
 ਅਸੰਖ ਅਵਗਣ ਮੇਰਿਆ ॥ ਅਸੰਖ ਅਵਗਣ ਖਤੇ ਫੇਰੇ ਨਿਤਪਰਤਿ ਸਦ ਭੂਲੀਐ ॥ ਮੋਹ ਮਗਨ ਬਿਕਰਾਲ ਮਾਇਆ
 ਤਤ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਧੂਲੀਐ ॥ ਲੂਕ ਕਰਤ ਬਿਕਾਰ ਬਿਖੜੇ ਪ੍ਰਭ ਨੇਰ ਹੂ ਤੇ ਨੇਰਿਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਿੱਤਾ ਧਾਰਹ
 ਕਾਢਿ ਭਵਜਲ ਫੇਰਿਆ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਨਿਰਤਿ ਨ ਪਵੈ ਅਸੰਖ ਗੁਣ ਊਚਾ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀਆ
 ਮਿਲੈ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਤ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਦੂਸਰ ਨਾਹੀ ਠਾਤ ਕਾ ਪਹਿ ਜਾਈਐ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਕਰ ਜੋਡਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ
 ਧਿਆਈਐ ॥ ਧਿਆਇ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਅਪੁਨਾ ਮਨਹਿ ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਈਐ ॥ ਤਜਿ ਮਾਨ ਮੋਹੁ ਵਿਕਾਰੁ ਦੂਜਾ ਏਕ
 ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਈਐ ॥ ਅਰਪਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਪ੍ਰਭੁ ਆਗੈ ਆਪੁ ਸਗਲ ਮਿਟਾਈਐ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ
 ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈਐ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਰੇ ਮਨ ਤਾ ਕਤ ਧਿਆਈਐ ਸਭ ਬਿਧਿ ਜਾ ਕੈ ਹਾਥਿ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ
 ਸੰਚੀਐ ਨਾਨਕ ਨਿਬਹੈ ਸਾਥਿ ॥੩॥ ਛੰਤੁ ॥ ਸਾਥੀਅੜਾ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਦੂਸਰ ਨਾਹਿ ਕੋਡਿ ॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਆਪਿ ਜਲਿ
 ਥਲਿ ਪੂਰ ਸੋਡਿ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਦਾਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਧਨੀ ॥ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਅੰਤੁ ਨਾਹੀ
 ਬੇਅੰਤ ਗੁਣ ਤਾ ਕੇ ਕਿਆ ਗਨੀ ॥ ਭਜੁ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖਹ ਗਾਮੀ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ਅਨ ਨਾਹਿ ਕੋਡਿ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ

ਨਾਨਕ ਦਿੱਤਾ ਧਾਰਹੁ ਤਿਸੁ ਪਰਾਪਤਿ ਨਾਮੁ ਹੋਇ ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਚਿਤਿ ਜਿ ਚਿਤਵਿਆ ਸੋ ਮੈ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸੁਖ ਸਬਾਇਆ ॥੪॥ ਛੰਤੁ ॥ ਅਬ ਮਨੁ ਛੂਟਿ ਗਿੱਤਾ ਸਾਥ੍ਵ ਸੰਗਿ ਮਿਲੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਲਿੱਤਾ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਰਲੇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਤ ਮਿਟੇ ਕਿਲਬਿਖ ਬੁੜੀ ਤਪਤਿ ਅਧਾਨਿਆ ॥ ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੀਨੇ ਦਿੱਤਾ ਕਿਨੇ ਆਪਨੇ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥ ਲੈ ਅੰਕਿ ਲਾਏ ਹਰਿ ਮਿਲਾਏ ਜਨਮ ਮਰਣਾ ਦੁਖ ਜਲੇ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਿੱਤਾ ਧਾਰੀ ਮੇਲਿ ਲੀਨੇ ਇਕ ਪਲੇ ॥੪॥੨॥ ਜੈਤਸਰੀ ਛੰਤ ਮਃ ੫ ॥ ਪਾਧਾਣ੍ਹ ਸੰਸਾਰੁ ਗਾਰਬਿ ਅਟਿਆ ॥ ਕਰਤੇ ਪਾਪ ਅਨੇਕ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਰਟਿਆ ॥ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਅਭਿਮਾਨਿ ਕੂਡੇ ਮਰਣੁ ਚੀਤਿ ਨ ਆਵਏ ॥ ਪੁਤ ਮਿਤ ਬਿਤਹਾਰ ਬਨਿਤਾ ਏਹ ਕਰਤ ਬਿਹਾਵਏ ॥ ਪੁਜਿ ਦਿਵਸ ਆਏ ਲਿਖੇ ਮਾਏ ਦੁਖੁ ਧਰਮ ਦੂਤਹ ਡਿਠਿਆ ॥ ਕਿਰਤ ਕਰਮ ਨ ਮਿਟੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮ ਧਨੁ ਨਹੀ ਖਟਿਆ ॥੧॥ ਉਦਮ ਕਰਹਿ ਅਨੇਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਗਾਵਹੀ ॥ ਭਰਮਹਿ ਜੋਨਿ ਅਸੰਖ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਆਵਹੀ ॥ ਪਸੂ ਪੰਖੀ ਸੈਲ ਤਰਵਰ ਗਣਤ ਕਛੂ ਨ ਆਵਏ ॥ ਬੀਜੁ ਬੋਵਸਿ ਭੋਗ ਭੋਗਹਿ ਕੀਆ ਅਪਣਾ ਪਾਵਏ ॥ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਹਾਰਂਤ ਜੂਐ ਪ੍ਰਭੂ ਆਪਿ ਨ ਭਾਵਹੀ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਭਰਮਹਿ ਭ੍ਰਮਾਏ ਖਿਨੁ ਏਕੁ ਟਿਕਣੁ ਨ ਪਾਵਹੀ ॥੨॥ ਜੋਬਨੁ ਗਿੱਤਾ ਬਿਤੀਤਿ ਜਰੁ ਮਲਿ ਬੈਠੀਆ ॥ ਕਰ ਕਂਧਿ ਸਿਰੁ ਡੋਲ ਨੈਣ ਨ ਡੀਠਿਆ ॥ ਨਹ ਨੈਣ ਦੀਸੈ ਬਿਨੁ ਭਜਨ ਈਸੈ ਛੋਡਿ ਮਾਇਆ ਚਾਲਿਆ ॥ ਕਹਿਆ ਨ ਮਾਨਹਿ ਸਿਰਿ ਖਾਕੁ ਛਾਨਹਿ ਜਿਨ ਸੰਗਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜਾਲਿਆ ॥ ਸੀਰਾਮ ਰੰਗ ਅਪਾਰ ਪੂਰਨ ਨਹ ਨਿਮਖ ਮਨ ਮਹਿ ਵੂਠਿਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕੋਟਿ ਕਾਗਰ ਬਿਨਸ ਬਾਰ ਨ ਝੂਠਿਆ ॥੩॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਰਣਾਇ ਨਾਨਕੁ ਆਇਆ ॥ ਦੁਤਰੁ ਭੈ ਸੰਸਾਰੁ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਤਰਾਇਆ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗੇ ਭਜੇ ਸ੍ਰੀਧਰ ਕਰਿ ਅੰਗੁ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤਾਰਿਆ ॥ ਹਰਿ ਮਾਨਿ ਲੀਏ ਨਾਮ ਦੀਏ ਅਵਰੁ ਕਛੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਅਪਾਰ ਠਾਕੁਰ ਮਨਿ ਲੋਡੀਦਾ ਪਾਇਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਦਾ ਤ੍ਰਪਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਇਆ ॥੪॥੨॥੩॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਵਾਰ ਸਲੋਕਾ ਨਾਲਿ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕ ॥ ਆਦਿ ਪੂਰਨ ਮਧਿ ਪੂਰਨ ਅੰਤਿ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰਹ ॥ ਸਿਮਰਹਿ ਸੰਤ ਸਰਬਕਰ ਰਮਣ ਨਾਨਕ ਅਧਨਾਸਨ

ਜਗਦੀਸੁਰਹ ॥੧॥ ਪੇਖਨ ਸੁਨਨ ਸੁਨਾਵਨੋ ਮਨ ਮਹਿ ਦੂਡੀਐ ਸਾਚੁ ॥ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸਰਬਤ ਮੈ ਨਾਨਕ
 ਹਰਿ ਰੰਗ ਰਾਚੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਗਾਈਐ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਸੋਈ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ
 ਪ੍ਰਭੁ ਜੋ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਦਾ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਪਾਤਾਲ ਟੀਪ ਰਵਿਆ
 ਸਭ ਲੋਈ ॥ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਸੋ ਬੁਝਸੀ ਨਿਰਮਲ ਜਨੁ ਸੋਈ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ॥ ਰਚਨਿ ਜੀਅ ਰਚਨਾ ਮਾਤ
 ਗਰਭ ਅਸਥਾਪਨਾਂ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਨਿ ਨਾਨਕ ਮਹਾ ਅਗਨਿ ਨ ਬਿਨਾਸਨਾਂ ॥੨॥ ਮੁਖੁ ਤਲੈ ਪੈਰ ਉਪਰੇ
 ਕਲਾਂਦੀ ਕੁਹਥਡੈ ਥਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਧਣੀ ਕਿਤ ਵਿਸਾਰਿਓ ਉਧਰਹਿ ਜਿਸ ਟੈ ਨਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਰਕਤੁ ਬਿੰਦੁ
 ਕਰਿ ਨਿੰਮਿਆ ਅਗਨਿ ਉਦਰ ਮਝਾਰਿ ॥ ਉਥ ਮੁਖੁ ਕੁਚੀਲ ਬਿਕਲੁ ਨਰਕਿ ਘੋਰਿ ਗੁਬਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ
 ਤ੍ਰਾਂ ਨਾ ਜਲਹਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਬਿਖਮ ਥਾਨਹੁ ਜਿਨਿ ਰਖਿਆ ਤਿਸੁ ਤਿਲੁ ਨ ਵਿਸਾਰਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਬਿਸਰਤ
 ਸੁਖੁ ਕਦੇ ਨਾਹਿ ਜਾਸਹਿ ਜਨਮੁ ਹਾਰਿ ॥੨॥ ਸਲੋਕ ॥ ਮਨ ਇਛਾ ਦਾਨ ਕਰਣਾ ਸਰਬਤ ਆਸਾ ਪੂਰਨਹ ॥ ਖੰਡਣ
 ਕਲਿ ਕਲੇਸਹ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ ਨਹ ਢੂਰਨਹ ॥੧॥ ਹਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣਹਿ ਜਿਸੁ ਸੰਗਿ ਤੈ ਸਿਤ ਲਾਈਐ
 ਨੇਹੁ ॥ ਸੋ ਸਹੁ ਬਿੰਦ ਨ ਵਿਸਰਤ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਸੁੰਦਰੁ ਰਚਿਆ ਦੇਹੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੀਤ ਪ੍ਰਾਨ ਤਨੁ ਧਨੁ
 ਦੀਆ ਦੀਨੇ ਰਸ ਭੋਗ ॥ ਗ੍ਰਹ ਮੰਦਰ ਰਥ ਅਸੁ ਦੀਏ ਰਚਿ ਭਲੇ ਸੰਜੋਗ ॥ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਸਾਜਨ ਸੇਵਕ ਦੀਏ ਪ੍ਰਭ
 ਦੇਵਨ ਜੋਗ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹਰਿਆ ਲਹਿ ਜਾਹਿ ਵਿਜੋਗ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਮਹੁ ਬਿਨਸੇ
 ਸਭਿ ਰੋਗ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ॥ ਕੁਟੰਬ ਜਤਨ ਕਰਣਾ ਮਾਇਆ ਅਨੇਕ ਉਦਮਹ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭਾਵ ਹੀਣਾਂ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ
 ਬਿਸਰਤ ਤੇ ਪ੍ਰੇਤਤਹ ॥੧॥ ਤੁਟੜੀਆ ਸਾ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜੋ ਲਾਈ ਬਿਅਨਨ ਸਿਤ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੀ ਰੀਤਿ ਸਾਈ ਸੇਤੀ
 ਰੀਤਿਆ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਸੁ ਬਿਸਰਤ ਤਨੁ ਭਸਮ ਹੋਇ ਕਹਤੇ ਸਭਿ ਪ੍ਰੇਤੁ ॥ ਖਿਨੁ ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਬਸਨ ਨ ਦੇਵਹੀ
 ਜਿਨ ਸਿਤ ਸੋਈ ਹੇਤੁ ॥ ਕਰਿ ਅਨਰਥ ਦਰਖੁ ਸੰਚਿਆ ਸੋ ਕਾਰਜਿ ਕੇਤੁ ॥ ਜੈਸਾ ਬੀਜੈ ਸੋ ਲੁਣੈ ਕਰਮ ਇਹੁ ਖੇਤੁ ॥
 ਅਕਿਰਤਧਣਾ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿਆ ਜੋਨੀ ਭਰਮੇਤੁ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ॥ ਕੋਟਿ ਦਾਨ ਇਸਨਾਨਾਂ ਅਨਿਕ ਸੋਧਨ
 ਪਵਿਤਰਤਹ ॥ ਉਚਰਨਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਸਰਬ ਪਾਪ ਬਿਮੁਚਤੇ ॥੧॥ ਈਧਣੁ ਕੀਤੋਮ੍ਰਾ ਘਣਾ ਭੋਰੀ

ਦਿਤੀਮੁ ਭਾਹਿ ॥ ਮਨਿ ਵਸੰਦ੍ਡੋ ਸਚੁ ਸਹੁ ਨਾਨਕ ਹਖੈ ਝੁਖੜੇ ਤਲਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕੋਟਿ ਅਘਾ ਸਭਿ ਨਾਸ
 ਹੋਹਿ ਸਿਮਰਤ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦੇ ਫਲ ਪਾਈਐਹਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ ਕਟੀਐਹਿ ਨਿਹਚਲ
 ਸਚੁ ਥਾਉ ॥ ਪੂਰਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਮਾਉ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਜਾਉ
 ॥੫॥ ਸਲੋਕ ॥ ਗ੍ਰਹ ਰਖਨਾ ਅਪਾਰਾਂ ਮਨਿ ਬਿਲਾਸ ਸੁਆਦਾਂ ਰਸਹ ॥ ਕਦਾਂਚ ਨਹ ਸਿਮਰਨਿ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜੰਤ
 ਬਿਸਟਾ ਕ੃ਮਹ ॥੧॥ ਮੁਚੁ ਅਡੰਬਰੁ ਹਭੁ ਕਿਹੁ ਮੰਝਿ ਮੁਹਬਤਿ ਨੇਹ ॥ ਸੋ ਸਾਈ ਜੈ ਵਿਸਰੈ ਨਾਨਕ ਸੋ ਤਨੁ ਖੇਹ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੁਨਦਰ ਸੇਜ ਅਨੇਕ ਸੁਖ ਰਸ ਭੋਗਣ ਪ੍ਰੇ ॥ ਗ੍ਰਹ ਸੋਝਿਨ ਚੰਦਨ ਸੁਗਂਧ ਲਾਇ ਮੋਤੀ ਹੀਰੇ ॥ ਮਨ
 ਝਿਛੇ ਸੁਖ ਮਾਣਦਾ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ਵਿਸੂਰੇ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੰਡ ਵਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ
 ਸਾਁਤਿ ਹੋਇ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਨੁ ਧੀਰੇ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਬਿਰਵਾ ਖੋਜੰਤ ਬੈਰਾਣੀ ਫਲ ਦਿਸਹ ॥ ਤਿਆਗਨਿ
 ਕਪਟ ਰੂਪ ਮਾਇਆ ਨਾਨਕ ਆਨਨਦ ਰੂਪ ਸਾਧ ਸੰਗਮਹ ॥੧॥ ਮਨਿ ਸਾਈ ਮੁਖਿ ਤਚਰਾ ਕਤਾ ਹਖੈ ਲੋਅ ॥
 ਨਾਨਕ ਹਭਿ ਅਡੰਬਰ ਕੂਝਿਆ ਸੁਣਿ ਜੀਕਾ ਸਚੀ ਸੋਝਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਬਸਤਾ ਤੂਟੀ ਝੁੱਪੜੀ ਚੀਰ ਸਭਿ ਛਿੰਨਾ
 ॥ ਜਾਤਿ ਨ ਪਤਿ ਨ ਆਦਰੋ ਉਦਿਆਨ ਭਰਮਿਨਾ ॥ ਮਿਤ ਨ ਝਿਠ ਧਨ ਰੂਪਹੀਣ ਕਿਛੁ ਸਾਕੁ ਨ ਸਿਨਾ ॥ ਰਾਜਾ
 ਸਗਲੀ ਸੂਸਟਿ ਕਾ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਭਿਨਾ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਧੂਝਿ ਮਨੁ ਤਥਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇ ਸੁਪਰਸਨਾ ॥੭॥ ਸਲੋਕ ॥
 ਅਨਿਕ ਲੀਲਾ ਰਾਜ ਰਸ ਰੂਪਾਂ ਛਲ ਚਮਰ ਤਖਤ ਆਸਨਾਂ ॥ ਰਚਨਿ ਮੂੜ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਹ ਨਾਨਕ ਸੁਪਨ
 ਮਨੋਰਥ ਮਾਇਆ ॥੧॥ ਸੁਪਨੈ ਹਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣਿਆ ਮਿਠਾ ਲਗੜਾ ਮੋਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੀਆ ਸੁਨਦਰਿ
 ਮਾਇਆ ਧੋਹੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੁਪਨੇ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਮੂਰਖਿ ਲਾਇਆ ॥ ਬਿਸਰੇ ਰਾਜ ਰਸ ਭੋਗ ਜਾਗਤ ਭਖਲਾਇਆ ॥
 ਆਰਜਾ ਗੰਡ ਵਿਹਾਇ ਧੰਧੈ ਧਾਇਆ ॥ ਪੂਰਨ ਭਏ ਨ ਕਾਮ ਮੋਹਿਆ ਮਾਇਆ ॥ ਕਿਆ ਕੇਚਾਰਾ ਜੰਤੁ ਜਾ
 ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥੮॥ ਸਲੋਕ ॥ ਬਸਨਿ ਸੁਰਗ ਲੋਕਹ ਜਿਤਤੇ ਪ੃ਥਕੀ ਨਵ ਖੰਡਣਹ ॥ ਬਿਸਰਨਿ ਹਰਿ ਗੋਪਾਲਹ
 ਨਾਨਕ ਤੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਉਦਿਆਨ ਭਰਮਣਹ ॥੧॥ ਕਤਤਕ ਕੋਡ ਤਮਾਸਿਆ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਸੁ ਨਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਕੋਡੀ
 ਨਰਕ ਬਰਾਬਰੇ ਤਜੜੁ ਸੋਈ ਥਾਉ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮਹਾ ਭਿਅਨ ਉਦਿਆਨ ਨਗਰ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥ ਝੂਠ

समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ काम क्रोधि अह्नकारि फिरहि देवानिआ ॥ सिरि लगा जम डंडु ता
 पछुतानिआ ॥ बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥੬॥ सलोक ॥ राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल
 गरबतह ॥ संचंति बिखिआ छलं छिदं नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥੧॥ पेखंदङो की भुलु तुंमा
 दिसमु सोहणा ॥ अदु न लह्नदङो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥੨॥ पउड़ी ॥ चलदिआ नालि
 न चलै सो किउ संजीअै ॥ तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीअै ॥ हरि बिसरिअै किउ तृपतावै ना
 मनु रंजीअै ॥ प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीअै ॥ होहु कृपाल दिआल नानक भउ भंजीअै ॥੧੦॥
 सलोक ॥ नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ ॥ मिसटं साधसंगि हरि
 नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥੧॥ लगड़ा सो नेहु मन्न मझाहू रतिआ ॥ विधड़ो सच थोकि नानक
 मिठड़ा सो धणी ॥੨॥ पउड़ी ॥ हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥ आन सुआद सभि
 फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥ चरन कमल मनु बेधिआ
 जिउ रंगु मजीठा ॥ जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥੧੧॥ सलोक ॥ तिअकत जलं नह जीव
 मीनं नह तिआगि चातृक मेघ मंडलह ॥ बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह ॥ चरन
 कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥੧॥ मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥ जीवण
 संगमु तिसु धणी हरि नानक संताँ मितु ॥੨॥ पउड़ी ॥ जिउ मछुली बिनु पाणीअै किउ जीवणु पावै ॥
 बूंद विहूणा चातृको किउ करि तृपतावै ॥ नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥ भवरु लोभी कुसम
 बासु का मिलि आपु बंधावै ॥ तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥੧੨॥ सलोक ॥ चितवंति
 चरन कमलं सासि सासि अराधनह ॥ नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥੧॥
 सीतड़ा मन्न मंझाहि पलक न थीवै बाहरा ॥ नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ॥੨॥ पउड़ी
 ॥ आसावंती आस गुसाई पूरीअै ॥ मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीअै ॥ देहु दरसु मनि चाउ लहि

ਜਾਹਿ ਵਿਸੂਰੀਐ ॥ ਹੋਇ ਪਵਿਤ ਸਰੀਰੁ ਚਰਨਾ ਧੂਰੀਐ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰਦੇਵ ਸਦਾ ਹਜੂਰੀਐ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕ ॥
 ਰਸਨਾ ਉਚਰਣਿ ਨਾਮੁ ਸ਼ਵਣੁ ਸੁਨਨਿ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਤਹ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੁ ਜਿਨਾ ਧਿਆਨੁ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਣਹ ॥੧॥ ਹਭਿ ਕੂੜਾਵੇ ਕੰਮ ਇਕਸੁ ਸਾਈ ਬਾਹਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਧਨੁ ਜਿਨਾ ਪਿਰਹੜੀ ਸਚ ਸਿਤੁ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨਾ ਜਿ ਸੁਨਤੇ ਹਰਿ ਕਥਾ ॥ ਪ੍ਰੂਰੇ ਤੇ ਪਰਥਾਨ ਨਿਵਾਵਹਿ ਪ੍ਰਭ ਮਥਾ ॥ ਹਰਿ
 ਜਸੁ ਲਿਖਹਿ ਬੇਅੰਤ ਸੋਹਹਿ ਸੇ ਹਥਾ ॥ ਚਰਨ ਪੁਨੀਤ ਪਵਿਤ ਚਾਲਹਿ ਪ੍ਰਭ ਪਥਾ ॥ ਸੰਤਾਂ ਸੰਗਿ ਤਥਾਰੁ ਸਗਲਾ
 ਦੁਖੁ ਲਥਾ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਭਾਵੀ ਤਦੋਤ ਕਰਣਾਂ ਹਰਿ ਰਮਣਾਂ ਸੰਜੋਗ ਪੂਰਨਹ ॥ ਗੋਪਾਲ ਦਰਸ ਭੇਟੁਂ ਸਫਲ
 ਨਾਨਕ ਸੋ ਮਹੂਰਤਹ ॥੧॥ ਕੀਮ ਨ ਸਕਾ ਪਾਇ ਸੁਖ ਮਿਤੀ ਹੂ ਬਾਹਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾ ਵੇਲੜੀ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਤੁ
 ਮਿਲਮਦੜੋ ਮਾ ਪਿਰੀ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਾ ਵੇਲਾ ਕਹੁ ਕਤਣੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਪਾਈ ॥ ਸੋ ਮੂਰਤੁ ਭਲਾ ਸੰਜੋਗੁ ਹੈ
 ਜਿਤੁ ਮਿਲੈ ਗੁਸਾਈ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਕੈ ਮਨ ਇਛ ਪੁਜਾਈ ॥ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਸਤਸਾਂਗੁ ਹੋਇ ਨਿਵਿ
 ਲਾਗਾ ਪਾਈ ॥ ਮਨਿ ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਿਆਸ ਹੈ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ॥ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਗੋਬਿੰਦਹ
 ਸਰਬ ਦੋਖ ਨਿਵਾਰਣਹ ॥ ਸਰਣਿ ਸੂਰ ਭਗਵਾਨਹ ਜਪਣਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥੧॥ ਛਡਿਓ ਹਭੁ ਆਪੁ
 ਲਗੜੋ ਚਰਣਾ ਪਾਸਿ ॥ ਨਠੜੋ ਦੁਖ ਤਾਪੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਪੇਖਾਂਦਿਆ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮੇਲਿ ਲੈਹੁ ਦਿਆਲ ਢਹਿ
 ਪਏ ਦੁਆਰਿਆ ॥ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਭਰਮਤ ਬਹੁ ਹਾਰਿਆ ॥ ਭਗਤਿ ਕਛਲੁ ਤੇਰਾ ਬਿਰਦੁ ਹਰਿ ਪਤਿਤ
 ਤਥਾਰਿਆ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ਬਿਨਤ ਮੋਹਿ ਸਾਰਿਆ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੈਹੁ ਦਿਆਲ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰਿਆ
 ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ॥ ਸੰਤ ਉਧਰਣ ਦਿਆਲਾਂ ਆਸਰਾਂ ਗੋਪਾਲ ਕੀਰਤਨਹ ॥ ਨਿਰਮਲਾਂ ਸੰਤ ਸੰਗੇਣ ਓਟ ਨਾਨਕ
 ਪਰਮੇਸੁਰਹ ॥੧॥ ਚੰਦਨ ਚੰਦੁ ਨ ਸਰਦ ਰੁਤਿ ਮੂਲਿ ਨ ਮਿਟੰਦ ਘੱਮ ॥ ਸੀਤਲੁ ਥੀਵੈ ਨਾਨਕਾ ਜਪਦੜੋ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਕੀ ਓਟ ਉਧਰੇ ਸਗਲ ਜਨ ॥ ਸੁਣਿ ਪਰਤਾਪੁ ਗੋਵਿੰਦ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ਮਨ ॥
 ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਮੂਲਿ ਸੰਚਿਆ ਨਾਮੁ ਧਨ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਸਿਤੁ ਸੰਗੁ ਪਾਈਐ ਵਡੈ ਪੁਨ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਧਿਆਇ
 ਹਰਿ ਜਸੁ ਨਿਤ ਸੁਨ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕ ॥ ਦਿਆ ਕਰਣਾਂ ਦੁਖ ਹਰਣਾਂ ਉਚਰਣਾਂ ਨਾਮ ਕੀਰਤਨਹ ॥ ਦਿਆਲ

ਪੁਰਖ ਭਗਵਾਨਹ ਨਾਨਕ ਲਿਪਤ ਨ ਮਾਇਆ ॥੧॥ ਭਾਹਿ ਬਲਮਦੀ ਬੁਝਿ ਗੈ ਰਖਿੰਦੀ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥ ਜਿਨਿ
ਉਪਾਈ ਮੇਦਨੀ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਾ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਦਿੱਤਾਲ ਨ ਬਿਆਪੈ ਮਾਇਆ ॥ ਕੋਟਿ
ਅਧਾ ਗਏ ਨਾਸ ਹਰਿ ਇਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਨਿਰਮਲ ਭਏ ਸਰੀਰ ਜਨ ਧੂਰੀ ਨਾਇਆ ॥ ਮਨ ਤਨ ਭਏ ਸੰਤੋਖ
ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ॥ ਤਰੇ ਕੁਟੰਬ ਸੰਗਿ ਲੋਗ ਕੁਲ ਸਬਾਇਆ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕ ॥ ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਪਾਲ ਗੁਰ
ਗੁਰ ਪੂਰਨ ਨਾਰਾਇਣਹ ॥ ਗੁਰ ਦਿੱਤਾਲ ਸਮਰਥ ਗੁਰ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣਹ ॥੧॥ ਭਤਜਲੁ ਬਿਖਮੁ
ਅਸਗਾਹੁ ਗੁਰਿ ਬੋਹਿਥੈ ਤਾਰਿਅਮੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰ੍ਵ ਕਰੰਮ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਗਿਆ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ
ਗੁਰਦੇਵ ਜਿਸੁ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਜਪੇ ॥ ਗੁਰ ਕ੃ਪਾਲ ਜਬ ਭਏ ਤ ਅਕਗੁਣ ਸਭਿ ਛਪੇ ॥ ਪਾਰਭਰਮ ਗੁਰਦੇਵ ਨੀਚਹੁ
ਤਚ ਥਪੇ ॥ ਕਾਟਿ ਸਿਲਕ ਦੁਖ ਮਾਇਆ ਕਰਿ ਲੀਨੇ ਅਪ ਦਸੇ ॥ ਗੁਣ ਗਾਏ ਬੇਅੰਤ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਜਸੇ ॥੧੯॥
ਸਲੋਕ ॥ ਦੂਸਟਤਾ ਏਕੋ ਸੁਨੀਅੰਤ ਏਕੋ ਵਰਤਤਾ ਏਕੋ ਨਰਹਰਹ ॥ ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਜਾਚਨਿ ਨਾਨਕ ਦਿੱਤਾਲ
ਪੁਰਖ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹ ॥੧॥ ਹਿਕੁ ਸੇਵੀ ਹਿਕੁ ਸੰਮਲਾ ਹਰਿ ਇਕਸੁ ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਨਾਮ ਵਖਰੁ ਧਨੁ ਸੰਚਿਆ
ਨਾਨਕ ਸਚੀ ਰਾਸਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਿੱਤਾਲ ਬੇਅੰਤ ਪੂਰਨ ਇਕੁ ਏਹੁ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ
ਦੂਜਾ ਕਹਾ ਕੇਹੁ ॥ ਆਪਿ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਦਾਨੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਲੇਹੁ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਹੁਕਮੁ ਸਭੁ ਨਿਹਚਲੁ ਤੁਧੁ ਥੇਹੁ ॥
ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ॥੨੦॥੧॥

ਜੈਤਸਰੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਾਥ ਕਛੂਅ ਨ ਜਾਨਤ ॥ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਕੈ ਹਾਥਿ ਬਿਕਾਨਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਮ ਕਹੀਅਤ ਹੈ ਜਗਤ ਗੁਰ ਸੁਆਮੀ
॥ ਹਮ ਕਹੀਅਤ ਕਲਿਜੁਗ ਕੇ ਕਾਮੀ ॥੧॥ ਇਨ ਪੰਚਨ ਮੇਰੇ ਮਨੁ ਜੁ ਬਿਗਾਰਿਐ ॥ ਪਲੁ ਪਲੁ ਹਰਿ ਜੀ ਤੇ ਅੰਤਰੁ
ਪਾਰਿਐ ॥੨॥ ਜਤ ਦੇਖਤ ਤਤ ਦੁਖ ਕੀ ਰਾਸੀ ॥ ਅਜੈਂ ਨ ਪਤਿਆਇ ਨਿਗਮ ਭਏ ਸਾਖੀ ॥੩॥ ਗੋਤਮ ਨਾਰਿ
ਤਮਾਪਤਿ ਸ਼ਾਮੀ ॥ ਸੀਸੁ ਧਰਨਿ ਸਹਸ ਭਗ ਗਾੰਮੀ ॥੪॥ ਇਨ ਦੂਤਨ ਖਲੁ ਬਧੁ ਕਰਿ ਮਾਰਿਐ ॥ ਬਡੋ ਨਿਲਾਜੁ
ਅਜਹੂ ਨਹੀ ਹਾਰਿਐ ॥੫॥ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਕਹਾ ਕੈਸੇ ਕੀਜੈ ॥ ਬਿਨੁ ਰਘੁਨਾਥ ਸਰਨਿ ਕਾ ਕੀ ਲੀਜੈ ॥੬॥੧॥

੧੬ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਭਵਜਲਿ ਫੇਰਾ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਮੈਰੈ ਹੀਅਰੈ ਲੋਚ ਲਗੀ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੀ ਹਰਿ ਨੈਨਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹੇਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਿੱਤਿਆਲਿ ਹਰਿ
ਨਾਮੁ ਦੂੜਾਇਆ ਹਰਿ ਪਾਧਰੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਰੰਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਗੋਵਿੰਦ ਹਰਿ
ਪ੍ਰਭ ਕੇਰਾ ॥ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੀਠਾ ਲਾਗਾ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਚੰਗੇਰਾ ॥੨॥ ਲੋਭ ਵਿਕਾਰ ਜਿਨਾ
ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿਆ ਪੁਰਖੁ ਚੰਗੇਰਾ ॥ ਓਡਿ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਅਗਿਆਨੀ ਕਹੀਅਹਿ ਤਿਨ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ
ਮੰਦੇਰਾ ॥੩॥ ਬਿਕੇਕ ਬੁਧਿ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਗੁਰੁ ਤੇ
ਪਾਇਆ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਲਿਖੇਰਾ ॥੪॥੧॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ਦੁਪਦੇ

੧੬ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੰਤਨ ਅਵਰ ਨ ਕਾਹੂ ਜਾਨੀ ॥ ਬੇਪਰਵਾਹ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਹਰਿ ਕੈ ਜਾ ਕੋ ਪਾਖੁ ਸੁਆਮੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਊਚ ਸਮਾਨਾ
ਠਾਕੁਰ ਤੇਰੋ ਅਵਰ ਨ ਕਾਹੂ ਤਾਨੀ ॥ ਐਸੋ ਅਮਰੁ ਮਿਲਿਐ ਭਗਤਨ ਕਤ ਰਾਚਿ ਰਹੇ ਰੰਗਿ ਗਿਆਨੀ ॥੧॥
ਰੋਗ ਸੋਗ ਦੁਖ ਜਾ ਮਰਾ ਹਰਿ ਜਨਹਿ ਨਹੀ ਨਿਕਟਾਨੀ ॥ ਨਿਰਭਤ ਹੋਇ ਰਹੇ ਲਿਵ ਏਕੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮਨੁ
ਮਾਨੀ ॥੨॥੧॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਸਦਾ ਖੁਆਰੀ ॥ ਤਾ ਕਤ ਧੋਖਾ ਕਹਾ ਬਿਆਪੈ ਜਾ ਕਤ ਓਟ

ਤੁਹਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਜੋ ਜੀਵਨੁ ਬਲਨਾ ਸਰਪ ਜੈਸੇ ਅਰਜਾਰੀ ॥ ਨਵ ਖੰਡਨ ਕੋ ਰਾਜੁ ਕਮਾਵੈ
ਅੰਤਿ ਚਲੈਗੋ ਹਾਰੀ ॥੧॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਗੁਣ ਤਿਨ ਹੀ ਗਾਏ ਜਾ ਕਤ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਸੋ ਸੁਖੀਆ ਧਨੁ ਤਉ
ਜਨਮਾ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੨॥੨॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੨ ਚਤੁਪਦੇ

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਧਾਇਆਂ ਰੇ ਮਨ ਦਹ ਦਿਸ ਧਾਇਆਂ ॥ ਮਾਇਆ ਮਗਨ ਸੁਆਦਿ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿਆਂ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆਂ ॥
ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਕਥਾ ਹਰਿ ਜਸ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਿਤ ਝਿਕੁ ਮੁਹਤੁ ਨ ਝਿਹੁ ਮਨੁ ਲਾਇਆਂ ॥ ਬਿਗਸਿਆਂ ਪੇਖਿ ਰੰਗ
ਕਸੁੰਭ ਕੋ ਪਰ ਗ੍ਰਹ ਜੋਹਨਿ ਜਾਇਆਂ ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਭਾਉ ਨ ਕੀਨੋ ਨਹ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਇਆਂ ॥ ਧਾਵਤ
ਕਤ ਧਾਵਹਿ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ਜਿਤ ਤੇਲੀ ਬਲਦੁ ਭਰਮਾਇਆਂ ॥੨॥ ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਨ ਕੀਓ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ
ਕੀਰਤਿ ਗਾਇਆਂ ॥ ਨਾਨਾ ਝੂਠਿ ਲਾਇ ਮਨੁ ਤੌਖਿਆਂ ਨਹ ਬੂੜਿਆਂ ਅਪਨਾਇਆਂ ॥੩॥ ਪਰਤਪਕਾਰ ਨ ਕਬਹੂ
ਕੀਏ ਨਹੀਂ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਧਿਆਇਆਂ ॥ ਪੰਚ ਫੂਤ ਰਚਿ ਸੰਗਤਿ ਗੋਸਟਿ ਮਤਵਾਰੇ ਮਦ ਮਾਇਆਂ ॥੪॥ ਕਰਤ
ਬੇਨਤੀ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਸੁਣਿ ਆਇਆਂ ॥ ਨਾਨਕ ਭਾਗਿ ਪਰਿਆਂ ਹਰਿ ਪਾਛੈ ਰਾਖੁ ਲਾਜ
ਅਪੁਨਾਇਆਂ ॥੫॥੧॥੩॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਨੁਖੁ ਬਿਨੁ ਬੂੜੇ ਬਿਰਥਾ ਆਇਆ ॥ ਅਨਿਕ ਸਾਜ ਸੀਗਾਰ
ਬਹੁ ਕਰਤਾ ਜਿਤ ਮਿਰਤਕੁ ਓਢਾਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਧਾਇ ਧਾਇ ਕ੃ਪਨ ਸ਼ਮੁ ਕੀਨੋ ਇਕਤਰ ਕਰੀ ਹੈ ਮਾਇਆ ॥
ਦਾਨੁ ਪੁਨੁ ਨਹੀਂ ਸੰਤਨ ਸੇਵਾ ਕਿਤ ਹੀ ਕਾਜਿ ਨ ਆਇਆ ॥੧॥ ਕਰਿ ਆਭਰਣ ਸਵਾਰੀ ਸੇਜਾ ਕਾਮਨਿ ਥਾਟੁ
ਬਨਾਇਆ ॥ ਸੰਗੁ ਨ ਪਾਇਆਂ ਅਪੁਨੇ ਭਰਤੇ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਸਾਰੇ ਦਿਨਸੁ ਮਜੂਰੀ ਕਰਤਾ
ਤੁਹੁ ਮੂਸਲਹਿ ਛਰਾਇਆ ॥ ਖੇਦੁ ਭਿਆਂ ਬੇਗਾਰੀ ਨਿਆਈ ਘਰ ਕੈ ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਆ ॥੩॥ ਭਿਆਂ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ
ਯਾ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਕੋ ਤਿਸੁ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਇਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਪਾਛੈ ਪਰਿਅਤ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ
॥੪॥੨॥੪॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਬਸਹੁ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਨੀਤ ॥ ਤੈਸੀ ਬੁਧਿ ਕਰਹੁ ਪਰਗਾਸਾ ਲਾਗੈ ਪ੍ਰਭ
ਸੰਗਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ਕੀ ਪਾਵਤ ਧੂਰਾ ਮਸਤਕਿ ਲੇ ਲੇ ਲਾਵਤ ॥ ਮਹਾ ਪਤਿਤ ਤੇ ਹੋਤ ਪੁਨੀਤਾ

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ॥੧॥ ਆਗਿਆ ਤੁਮਰੀ ਮੀਠੀ ਲਾਗਤ ਕੀਓ ਤੁਹਾਰੇ ਭਾਵਤ ॥ ਜੋ ਤੂ ਦੇਹਿ ਤਹੀ
ਛਿਹੁ ਤ੃ਪਤੈ ਆਨ ਨ ਕਤਹੂ ਧਾਵਤ ॥੨॥ ਸਦ ਹੀ ਨਿਕਟਿ ਜਾਨਤ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਸਗਲ ਰੇਣ ਹੋਇ ਰਹੀਐ ॥
ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਹੋਇ ਪਰਾਪਤਿ ਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਲਹੀਐ ॥੩॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਮ ਛੋਹਰੇ ਤੁਮਰੇ ਤੂ ਪ੍ਰਭ ਹਮਰੇ ਮੀਰਾ
॥ ਨਾਨਕ ਬਾਰਿਕ ਤੁਮ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰੇ ਖੀਰਾ ॥੪॥੩॥੫॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਦੁਪਦੇ ੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਾਗਤ ਦਾਨੁ ਠਾਕੁਰ ਨਾਮ ॥ ਅਵਰੁ ਕਛੂ ਮੈਰੈ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਮਿਲੈ ਕ੃ਪਾ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਜੁ
ਮਾਲੁ ਅਨੇਕ ਭੋਗ ਰਸ ਸਗਲ ਤਰਕਾਰ ਕੀ ਛਾਮ ॥ ਧਾਇ ਧਾਇ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਕਤ ਧਾਵੈ ਸਗਲ ਨਿਰਾਰਥ ਕਾਮ
॥੧॥ ਬਿਨੁ ਗੋਵਿੰਦ ਅਵਰੁ ਜੇ ਚਾਹਤ ਦੀਸੈ ਸਗਲ ਬਾਤ ਹੈ ਖਾਮ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਰੇਨ ਮਾਗਤ ਮੇਰੇ ਮਨੁ
ਪਾਵੈ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥੨॥੧॥੬॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਕੀ ਨਾਮੁ ਮਨਹਿ ਸਾਧਾਰੈ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਸੂਖ ਇਸੁ ਮਨ
ਕਤ ਬਰਤਨਿ ਏਹ ਹਮਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਜਾਤਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰੀ ਪਤਿ ਹੈ ਨਾਮੁ ਮੈਰੈ ਪਰਵਾਰੈ ॥ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ
ਸਦਾ ਮੈਰੈ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੌ ਕਤ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥੧॥ ਬਿਖੈ ਬਿਲਾਸ ਕਹੀਅਤ ਬਹੁਤੇਰੇ ਚਲਤ ਨ ਕਛੂ ਸੰਗਾਰੈ ॥
ਇਸਟੁ ਮੀਤੁ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਕੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੈਰੈ ਖੰਡਾਰੈ ॥੨॥੨॥੭॥ ਟੋਡੀ ਮਃ ੫ ॥ ਨੀਕੇ ਗੁਣ ਗਾਤ ਮਿਟਹੀ
ਰੋਗ ॥ ਮੁਖ ਊਜਲ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲ ਹੋਈ ਹੈ ਤੇਰੋ ਰਹੈ ਈਹਾ ਊਹਾ ਲੋਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਰਨ ਪਖਾਰਿ ਕਰਤ ਗੁਰ
ਸੇਵਾ ਮਨਹਿ ਚਰਾਵਤ ਭੋਗ ॥ ਛੋਡਿ ਆਪਤੁ ਬਾਦੁ ਅਛਕਾਰਾ ਮਾਨੁ ਸੌਈ ਜੋ ਹੋਗੁ ॥੧॥ ਸੰਤ ਟਹਲ ਸੌਈ ਹੈ
ਲਾਗਾ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਲਿਖੋਗੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਏਕ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥੨॥੩॥੮॥
ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਆਇਆ ਸਰਣਿ ਤੁਹਾਰੀ ॥ ਮਿਲੈ ਸੂਖੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸੋਭਾ ਚਿੰਤਾ ਲਾਹਿ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਅਵਰ ਨ ਸੂੜੈ ਦ੍ਰਿੜੀ ਠਾਹਰ ਹਾਰਿ ਪਰਿਆਂ ਤਤ ਦੁਆਰੀ ॥ ਲੇਖਾ ਛੋਡਿ ਅਲੇਖੈ ਛੂਟਹ ਹਮ ਨਿਰਗੁਨ
ਲੇਹੁ ਤਬਾਰੀ ॥੧॥ ਸਦ ਬਖਿੰਦੁ ਸਦਾ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ਸਭਨਾ ਦੇਇ ਅਧਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸੰਤ ਪਾਛੈ ਪਰਿਆਂ
ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਇਹ ਬਾਰੀ ॥੨॥੪॥੬॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਗੋਪਾਲ ਨਿਧਿ ਗਾਇਣ ॥ ਸਾਁਤਿ ਸਹਜੁ

रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥१॥ रहाउ ॥ जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण
 रसाइण ॥ जनम मरण दुहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण ॥२॥ खोजत खोजत ततु बीचारिओ
 दास गोविंद पराइण ॥ अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥३॥५॥१०॥
 टोडी महला ५ ॥ निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ ॥ पारब्रहम प्रभ भए दिआला सिव कै बाण सिरु
 काटिओ ॥४॥ रहाउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिओ ॥ खात खरचत किछु निखुटत
 नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥५॥ भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइਆ ॥ आगम
 निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइआ ॥६॥६॥११॥ टोडी मः ५ ॥ किरपन तन मन
 किलविख भरे ॥ साधसंगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥७॥ रहाउ ॥ अनिक छिद्र बोहिथ
 के छुटकत थाम न जाही करे ॥ जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥८॥ गली सैल उठावत
 चाहै ओइ ऊहा ही है धरे ॥ जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥९॥७॥१२॥
 टोडी महला ५ ॥ हरि के चरन कमल मनि धिआउ ॥ काढि कुठारु पित बात ह्यता अउखधु हरि को
 नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ तीने ताप निवारणहारा दुख ह्यता सुख रासि ॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की
 प्रभ आगै अरदासि ॥२॥ संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥ बाल बुधि पूर्न
 सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥३॥८॥१३॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥ धारि
 अनुग्रहु पारब्रहम सुआमी वसटी कीनी आपि ॥४॥ रहाउ ॥ जिस के से फिरि तिन ही समाले बिनसे
 सोग संताप ॥ हाथ देइ राखे जन अपने हरि होए माई बाप ॥५॥ जीअ जंत होए मिहरवाना दया
 धारी हरि नाथ ॥ नानक सरनि परे दुख भंजन जा का बड परताप ॥६॥९॥१४॥ टोडी महला ५ ॥
 स्वामी सरनि परिओ दरबारे ॥ कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ॥७॥ रहाउ ॥
 खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे ॥ साधसंगि परम गति पाईਐ माइआ रघि बंधि

ਹਾਰੇ ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਾਂਗਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨਿ ਲਾਗੀ ਸੁਰਿ ਜਨ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਅਨਦ ਕਰੇ ਹਰਿ ਜਪਿ
ਜਪਿ ਸਗਲੇ ਰੋਗ ਨਿਵਾਰੇ ॥੨॥੧੦॥੧੫॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ਚਤੁਪਦੇ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਾਁ ਹਾਁ ਲਪਟਿਆਂ ਰੇ ਮੂੜੇ ਕਛੂ ਨ ਥੋਰੀ ॥ ਤੇਰੋ ਨਹੀਂ ਸੁ ਜਾਨੀ ਮੌਰੀ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪਨ ਰਾਮੁ ਨ ਚੀਨੋ ਖਿਨੂਆ ॥
ਜੋ ਪਰਾਈ ਸੁ ਅਪਨੀ ਮਨੂਆ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਸਾਂਗੀ ਸੋ ਮਨਿ ਨ ਬਸਾਇਆਂ ॥ ਛੋਡਿ ਜਾਹਿ ਵਾਹੂ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆਂ
॥੨॥ ਸੋ ਸਾਂਚਿਆਂ ਜਿਤੁ ਭੂਖ ਤਿਸਾਇਆਂ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਤੋਸਾ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆਂ ॥੩॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧਿ ਮੋਹ ਕੂਪਿ
ਪਰਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਕੋ ਤਰਿਆ ॥੪॥੧॥੧੬॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਮਾਰੈ ਏਕੈ ਹਰੀ ਹਰੀ ॥ ਆਨ
ਅਵਰ ਸਿਜਾਣਿ ਨ ਕਰੀ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਵੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰੁ ਅਪੁਨਾ ਪਾਇਆਂ ॥ ਗੁਰਿ ਮੋ ਕਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਇਆਂ
॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਾਪ ਤਾਪ ਬ੍ਰਤ ਨੇਮਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਕੁਸਲ ਸਭਿ ਖੇਮਾ ॥੨॥ ਆਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰ ਜਾਤਿ
ਹਰਿ ਗੁਨੀਆ ॥ ਮਹਾ ਅਨਨਦ ਕੀਰਤਨ ਹਰਿ ਸੁਨੀਆ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਠਾਕੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ
ਤਿਸ ਕੇ ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥੪॥੨॥੧੭॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪ ਦੁਪਦੇ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰੁੜ੍ਹੇ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗੇ ਲੋਡੈ ॥ ਗਾਲੀ ਹਰਿ ਨੀਹੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਤ ਢੂਢੇਦੀ ਦਰਸਨ ਕਾਰਣਿ ਬੀਥੀ ਬੀਥੀ
ਪੇਖਾ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਭਰਮੁ ਗਵਾਇਆ ਹੈ ॥੧॥ ਇਹ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ਮੈ ਸਾਧੂ ਕਨਹੁ ਲੇਖੁ ਲਿਖਿਆਂ ਧੁਰਿ ਮਾਥੈ ॥
ਇਹ ਬਿਧਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨੈਣ ਅਲੋਇ ॥੨॥੧॥੧੮॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗਰਬਿ ਗਹਿਲੜੇ ਮੂੜੜੇ ਹੀਆਂ ਰੇ ॥
ਹੀਆਂ ਮਹਰਾਜ ਰੀ ਮਾਇਆਂ ॥ ਡੀਹਰ ਨਿਆਈ ਮੋਹਿ ਫਾਕਿਆਂ ਰੇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਘਣੋ ਘਣੋ ਘਣੋ ਸਦ ਲੋਡੈ ਬਿਨੁ
ਲਹਣੇ ਕੈਠੈ ਪਾਇਆਂ ਰੇ ॥ ਮਹਰਾਜ ਰੇ ਗਥੁ ਵਾਹੂ ਸਿਤ ਲੁਭਡਿਆਂ ਨਿਹਭਾਗੜੇ ਭਾਹਿ ਸੰਜੋਇਆਂ ਰੇ ॥੧॥ ਸੁਣਿ
ਮਨ ਸੀਖ ਸਾਧੂ ਜਨ ਸਗਲੇ ਥਾਰੇ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਾਛਤ ਮਿਟਿਆਂ ਰੇ ॥ ਜਾ ਕੋ ਲਹਣੋ ਮਹਰਾਜ ਰੀ ਗਾਠੜੀਆਂ ਜਨ
ਨਾਨਕ ਗਰਭਾਸਿ ਨ ਪਤਡਿਆਂ ਰੇ ॥੨॥੨॥੧੬॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੫ ਦੁਪਦੇ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਐਸੇ ਗੁਜੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਕੀਨ ॥ ਪੰਚ ਦੋਖ ਅਥਵਾ ਰੋਗ ਇਹ ਤਨ ਤੇ ਸਗਲ ਟੂਰਿ
 ਕੀਨ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬੰਧਨ ਤੋਰਿ ਛੌਰਿ ਬਿਖਿਆ ਤੇ ਗੁਰ ਕੋ ਸਬਦੁ ਮੈਰੈ ਹੀਅਰੈ ਦੀਨ ॥ ਰੂਪੁ ਅਨਰੂਪੁ ਮੋਰੇ ਕਛੁ
 ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ਪ੍ਰੇਮ ਗਹਿਆ ਮੋਹਿ ਹਰਿ ਰੰਗ ਭੀਨ ॥੧॥ ਪੇਖਿਆ ਲਾਲਨੁ ਪਾਟ ਬੀਚ ਖੋਏ ਅਨਦ ਚਿਤਾ ਹਰਖੇ
 ਪਤੀਨ ॥ ਤਿਸ ਹੀ ਕੋ ਗ੍ਰਹੁ ਸੋਈ ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਨਕ ਸੋ ਠਾਕੁਰੁ ਤਿਸ ਹੀ ਕੋ ਧੀਨ ॥੨॥੧॥੨੦॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮਾਈ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਏਹੀ ਕਰਮ ਧਰਮ ਜਪ ਏਹੀ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਰਮਲ ਹੈ ਰੇਤਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਾਨ
 ਅਧਾਰ ਜੀਵਨ ਧਨ ਮੈਰੈ ਦੇਖਨ ਕਤ ਦਰਸਨ ਪ੍ਰਭ ਨੀਤਿ ॥ ਬਾਟ ਘਾਟ ਤੋਸਾ ਸੰਗਿ ਮੈਰੈ ਮਨ ਅਪੁਨੇ ਕਤ ਮੈ
 ਹਰਿ ਸਖਾ ਕੀਤ ॥੧॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਏ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੇ ਕਰਿ ਲੀਤ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ
 ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਭਗਤਨ ਕੇ ਮੀਤ ॥੨॥੨॥੨੧॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ
 ਪ੍ਰਾਨ ॥ ਬਿਸਰੁ ਨਹੀਂ ਨਿਮਖ ਹੀਅਰੇ ਤੇ ਅਪਨੇ ਭਗਤ ਕਤ ਪੂਰਨ ਦਾਨ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਖੋਕਹੁ ਭਰਮੁ ਰਾਖੁ ਮੇਰੇ
 ਪ੍ਰੀਤਮ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਨ ॥ ਕੋਟਿ ਰਾਜ ਨਾਮ ਧਨੁ ਮੈਰੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਦੂਸਟਿ ਧਾਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਮਾਨ ॥੧॥ ਆਠ
 ਪਹਰ ਰਸਨਾ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ਜਸੁ ਪੂਰਿ ਅਧਾਰਵਹਿ ਸਮਰਥ ਕਾਨ ॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣ ਜੀਅਨ ਕੇ ਦਾਤੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਨਕ
 ਕੁਰਬਾਨ ॥੨॥੩॥੨੨॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਪਗ ਕੀ ਧੂਰਿ ॥ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮਨਮੋਹਨ
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰੀ ਲੋਚਾ ਪੂਰਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦਵ ਦਿਸ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜਸੁ ਤੁਮਰਾ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥ ਜੋ
 ਤੁਮਰਾ ਜਸੁ ਗਾਵਹਿ ਕਰਤੇ ਸੇ ਜਨ ਕਬਹੁ ਨ ਮਰਤੇ ਝੂਰਿ ॥੧॥ ਧੰਧ ਬੰਧ ਬਿਨਸੇ ਮਾਇਆ ਕੇ ਸਾਥੂ ਸੰਗਤਿ
 ਮਿਟੇ ਬਿਸੂਰ ॥ ਸੁਖ ਸੰਪਤਿ ਭੋਗ ਇਸੁ ਜੀਅ ਕੇ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਜਾਨੇ ਕੂਰ ॥੨॥੪॥੨੩॥ ਟੋਡੀ ਮਃ ੫ ॥
 ਮਾਈ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕੀ ਪਿਆਸ ॥ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਦਰਸਨ ਦੇਖਨ ਕਤ ਧਾਰੀ ਮਨਿ
 ਆਸ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਕਰਤੇ ਮਨ ਤਨ ਤੇ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਨਾਸ ॥ ਪੂਰਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਸੁਖਦਾਤੇ ਅਵਿਨਾਸੀ ਬਿਮਲ ਜਾ ਕੋ ਜਾਸ ॥੧॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੇਰੇ ਪੂਰ ਮਨੋਰਥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭੇਟੇ ਗੁਣਤਾਸ ॥

ਸਾਁਤਿ ਸਹਜ ਸੂਖ ਮਨਿ ਉਪਜਿਓ ਕੋਟਿ ਸੂਰ ਨਾਨਕ ਪਰਗਾਸ ॥੨॥੫॥੨੪॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਪਤਿ ਪਾਵਨ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮਾਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਮਨ ਕੇ ਭਾਵਨ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਂਦਰੁ ਸੁਘੜੁ ਚਤੁਰੁ ਸਭ
 ਬੇਤਾ ਰਿਦ ਦਾਸ ਨਿਵਾਸ ਭਗਤ ਗੁਨ ਗਾਵਨ ॥ ਨਿਰਮਲ ਰੂਪ ਅਨੂਪ ਸੁਆਮੀ ਕਰਮ ਭੂਮਿ ਬੀਜਨ ਸੋ ਖਾਵਨ
 ॥੧॥ ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮ ਭਏ ਬਿਸਮਾਦਾ ਆਨ ਨ ਬੀਓ ਦੂਸਰ ਲਾਵਨ ॥ ਰਸਨਾ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਜਸੁ ਜੀਵਾ
 ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਬਲਿ ਜਾਵਨ ॥੨॥੬॥੨੫॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਮਾਇਆ ਛਲੁ ॥ ਤ੍ਰਣ ਕੀ ਅਗਨਿ
 ਮੇਘ ਕੀ ਛਾਇਆ ਗੋਬਿਦ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਹੜ ਕਾ ਜਲੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਛੋਡਿ ਸਿਆਨਪ ਬਹੁ ਚਤੁਰਾਈ ਦੁਇ ਕਰ
 ਜੋਡਿ ਸਾਥ ਮਗਿ ਚਲੁ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹ ਕਾ ਝਿਹੁ ਊਤਮ ਫਲੁ ॥੧॥ ਬੇਦ ਬਖਿਆਨ
 ਕਰਤ ਸਾਥੂ ਜਨ ਭਾਗਹੀਨ ਸਮਝਨ ਨਹੀ ਖਲੁ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਰਾਚੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਦਹਨ ਭਏ ਮਲ
 ॥੨॥੭॥੨੬॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਚਰਨ ਗੁਰ ਮੀਠੇ ॥ ਕਵੈ ਭਾਗਿ ਦੇਵੈ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਕੋਟਿ ਫਲਾ ਦਰਸਨ
 ਗੁਰ ਢੀਠੇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਅਚੁਤ ਅਵਿਨਾਸੀ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਬਿਨਸੇ ਮਦ ਢੀਠੇ ॥ ਅਸਥਿਰ ਭਏ ਸਾਚ
 ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਜਨਮ ਮਰਨ ਬਾਹੁਰਿ ਨਹੀ ਪੀਠੇ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਰੰਗ ਰਸ ਜੇਤੇ ਸੱਤ ਦਿਆਲ ਜਾਨੇ ਸਭਿ
 ਝੂਠੇ ॥ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਿਛੂਨ ਚਲੇ ਸਭਿ ਮੂਠੇ ॥੨॥੮॥੨੭॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚਿਤਾਰਾ ॥ ਸਹਜਿ ਅਨੰਦੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਅੰਕੁਰੁ ਭਲੋ ਹਮਾਰਾ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ
 ਭੇਟਿਆ ਬਡਭਾਗੀ ਜਾ ਕੋ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਕਾਢਿ ਲੀਓ ਜਨੁ ਅਪੁਨਾ ਬਿਖੁ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰਾ ॥੧॥
 ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਾਟੇ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਬਹੁਡਿ ਨ ਸੰਕਟ ਦੁਆਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਸੁਆਮੀ ਕੀ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ
 ਨਮਸਕਾਰਾ ॥੨॥੯॥੨੮॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕੋ ਸੁਖੁ ॥ ਕੋਟਿ ਅਨੰਦ ਰਾਜ ਸੁਖੁ ਭੁਗਵੈ
 ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਬਿਨਸੈ ਸਭ ਦੁਖੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਕਿਖ ਨਾਸਹਿ ਸਿਮਰਤ ਪਾਵਨ ਤਨ ਮਨ
 ਸੁਖ ॥ ਦੇਖਿ ਸਰੂਪੁ ਪੂਰਨੁ ਭੰਈ ਆਸਾ ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਤ ਤਤਰੀ ਭੁਖ ॥੧॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਅਸਟ ਮਹਾ ਸਿਧਿ
 ਕਾਮਧੇਨੁ ਪਾਰਜਾਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰੁਖੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਸੁਖੁ ਸਾਗਰ ਜਨਮ ਮਰਨ ਫਿਰਿ ਗਰਭ ਨ ਧੁਖੁ

॥੨॥੧੦॥੨੬॥ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਰਨ ਰਿਦੈ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪੁਨਾ
ਕਾਰਜ ਸਫਲ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪੁਨ ਦਾਨ ਪ੍ਰਯਾ ਪਰਮੇਸਰ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਗੁਨ ਗਾਵਤ
ਅਤੁਲ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥੧॥ ਜੋ ਜਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਅਪਨੇ ਕੀਨੇ ਤਿਨ ਕਾ ਬਾਹੁਰਿ ਕਛੁ ਨ
ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਸੁਨਿ ਜਧਿ ਜਧਿ ਜੀਵਾ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਕਠ ਮੜਾਰੇ ॥੨॥੧੧॥੩੦॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੬

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਕਹਤ ਕਹਾ ਅਪਨੀ ਅਧਮਾਈ ॥ ਤੁਰਵਿਓ ਕਨਕ ਕਾਮਨੀ ਕੇ ਰਸ ਨਹ ਕੀਰਤਿ ਪ੍ਰਭ
ਗਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਗ ਝੂਠੇ ਕਤ ਸਾਚੁ ਜਾਨਿ ਕੈ ਤਾ ਸਿਉ ਰੁਚ ਉਪਜਾਈ ॥ ਦੀਨ ਬੰਧ ਸਿਮਰਿਓ ਨਹੀ ਕਬਹੂ
ਹੋਤ ਜੁ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਮਗਨ ਰਹਿਓ ਮਾਇਆ ਮੈ ਨਿਸ ਦਿਨਿ ਛੁਟੀ ਨ ਮਨ ਕੀ ਕਾਈ ॥ ਕਹਿ ਨਾਨਕ ਅਥ
ਨਾਹਿ ਅਨਤ ਗਤਿ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਨਾਈ ॥੨॥੧॥੩੧॥

ਟੋਡੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾਂ ਕੀ ੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕੋਈ ਬੋਲੈ ਨਿਰਵਾ ਕੋਈ ਬੋਲੈ ਦੂਰਿ ॥ ਜਲ ਕੀ ਮਾਛੁਲੀ ਚੱਹੈ ਖੜ੍ਹਰਿ ॥੧॥ ਕਾਂਝਿ ਰੇ ਬਕਬਾਦੁ ਲਾਇਓ ॥ ਜਿਨਿ
ਹਰਿ ਪਾਇਓ ਤਿਨਹਿ ਛਪਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਾਂਡਿਤੁ ਹੋਇ ਕੈ ਬੇਦੁ ਬਖਾਨੈ ॥ ਮੂਰਖੁ ਨਾਮਦੇਤ ਰਾਮਹਿ
ਜਾਨੈ ॥੨॥੧॥ ਕਤਨ ਕੋ ਕਲਮਕੁ ਰਹਿਓ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਲੇਤ ਹੀ ॥ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਭਏ ਰਾਮੁ ਕਹਤ ਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਰਾਮ ਸੰਗਿ ਨਾਮਦੇਵ ਜਨ ਕਤ ਪ੍ਰਤਗਿਆ ਆਈ ॥ ਏਕਾਦਸੀ ਭਰਤੁ ਰਹੈ ਕਾਹੇ ਕਤ ਤੀਰਥ ਜਾਇੰੀ ॥੧॥ ਭਨਤਿ
ਨਾਮਦੇਤ ਸੁਕ੃ਤ ਸੁਮਤਿ ਭਏ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮੁ ਕਹਿ ਕੋ ਕੋ ਨ ਬੈਕੁਂਠਿ ਗਏ ॥੨॥੨॥ ਤੀਨਿ ਛੰਦੇ ਖੇਲੁ ਆਛੈ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੁੰਭਾਰ ਕੇ ਘਰ ਹਾੰਡੀ ਆਛੈ ਰਾਜਾ ਕੇ ਘਰ ਸਾੰਡੀ ਗੇ ॥ ਬਾਮਨ ਕੇ ਘਰ ਰਾੰਡੀ ਆਛੈ ਰਾੰਡੀ ਸਾੰਡੀ
ਹਾੰਡੀ ਗੇ ॥੧॥ ਬਾਣੀਏ ਕੇ ਘਰ ਹੀਗੁ ਆਛੈ ਭੈਸਰ ਮਾਥੈ ਸੀਗੁ ਗੇ ॥ ਦੇਵਲ ਮਧੇ ਲੀਗੁ ਆਛੈ ਲੀਗੁ ਸੀਗੁ
ਹੀਗੁ ਗੇ ॥੨॥ ਤੇਲੀ ਕੈ ਘਰ ਤੇਲੁ ਆਛੈ ਜੰਗਲ ਮਧੇ ਬੇਲ ਗੇ ॥ ਮਾਲੀ ਕੇ ਘਰ ਕੇਲ ਆਛੈ ਕੇਲ ਬੇਲ ਤੇਲ ਗੇ ॥੩॥
ਸੰਤਾਂ ਮਧੇ ਗੋਬਿੰਦੁ ਆਛੈ ਗੋਕਲ ਮਧੇ ਸਿਆਮ ਗੇ ॥ ਨਾਮੇ ਮਧੇ ਰਾਮੁ ਆਛੈ ਰਾਮ ਸਿਆਮ ਗੋਬਿੰਦ ਗੇ ॥੪॥੩॥

ਰਾਗੁ ਬੈਰਾਡੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ਦੁਪਦੇ

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੁਨਿ ਮਨ ਅਕਥ ਕਥਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥ ਰਿਧਿ ਬੁਧਿ ਸਿਧਿ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਭਜੁ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਾਮ ਰਾਮ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਨਾ ਖਿਆਨ ਪੁਰਾਨ ਜਸੁ ਊਤਮ ਖਟ ਦਰਸਨ ਗਾਵਹਿ ਰਾਮ ॥ ਸਂਕਰ ਕ੍ਰੋਡਿ ਤੇਤੀਸ ਧਿਆਇਆਂ
 ਨਹੀ ਜਾਨਿਆਂ ਹਰਿ ਮਰਮਾਮ ॥੧॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਗਣ ਗੰਧਬ ਜਸੁ ਗਾਵਹਿ ਸਭ ਗਾਵਤ ਜੇਤ ਤਪਾਮ ॥ ਨਾਨਕ
 ਕ੃ਪਾ ਕਰੀ ਹਰਿ ਜਿਨ ਕਤ ਤੇ ਸੰਤ ਭਲੇ ਹਰਿ ਰਾਮ ॥੨॥੧॥ ਬੈਰਾਡੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਨ ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ
 ਜਸੁ ਗਾਇਆਂ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਤਨੁ ਰਤਨੁ ਹਰਿ ਨੀਕੋ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਾਨੁ ਦਿਵਾਇਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਭੁ ਦੇਵਤ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਨਾਇਆਂ ॥ ਧਨੁ ਮਾਇਆ ਸਾਂਪੈ ਤਿਸੁ ਦੇਵਤ
 ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਮੀਤੁ ਮਿਲਾਇਆਂ ॥੧॥ ਖਿਨੁ ਕਿੰਚਿਤ ਕ੃ਪਾ ਕਰੀ ਜਗਦੀਸਾਰਿ ਤਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ
 ਧਿਆਇਆਂ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਹਰਿ ਭੇਟੇ ਸੁਆਮੀ ਦੁਖੁ ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ ਗਵਾਇਆਂ ॥੨॥੨॥ ਬੈਰਾਡੀ ਮਹਲਾ ੪
 ॥ ਹਰਿ ਜਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਜੇ ਕੌਈ ਨਿੰਦ ਕਰੇ ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ਅਪੁਨਾ ਗੁਨੁ ਨ ਗਵਾਵੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਆਪੇ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਆਪੇ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਹੀ ਮਤਿ ਦੇਵੈ ਸੁਆਮੀ

ਹਰਿ ਆਪੇ ਬੋਲਿ ਬੁਲਾਵੈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਪੰਚ ਤਤੁ ਬਿਸਥਾਰਾ ਵਿਚਿ ਧਾਤ੍ਰੂ ਪੰਚ ਆਪਿ ਪਾਵੈ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮੇਲੇ ਆਪੇ ਹਰਿ ਆਪੇ ਝਾਗੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥੨॥੩॥ ਬੈਰਾਡੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਪਿ ਮਨ
 ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥ ਕੋਟ ਕੋਟਨਤਰ ਕੇ ਪਾਪ ਸਭਿ ਖੋਵੈ ਹਰਿ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਕਾਇਆ ਨਗਰਿ ਬਸਤ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕੈਰੁ ਨਿਰਕਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਨਿਕਟਿ ਬਸਤ ਕਛੁ
 ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੈ ਹਰਿ ਲਾਧਾ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਸਰਾਫੁ ਰਤਨੁ ਹੀਰਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕੀਆ
 ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਹਾਡੇ ਸੋ ਸਾਹੁ ਸਚਾ ਵਣਜਾਰਾ ॥੨॥੪॥ ਬੈਰਾਡੀ ਮਹਲਾ ੪
 ॥ ਜਪਿ ਮਨ ਹਰਿ ਨਿਰਿੰਜਨੁ ਨਿਰਕਾਰਾ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਸੁਖਦਾਤਾ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰਾ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਗਨਿ ਕੁੰਟ ਮਹਿ ਤੁਰਥ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ਹਰਿ ਰਾਖੈ ਤਦਰ ਮੰਝਾਰਾ ॥ ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਸੇਵਹੁ
 ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਅੰਤਿ ਛਡਾਵਣਹਾਰਾ ॥੧॥ ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਬਸਿਆ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਕਰਹੁ
 ਨਮਸਕਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਜਪੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥੨॥੫॥ ਬੈਰਾਡੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਜਪਿ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਧਿਆਇ ॥ ਜੋ ਇਛਹਿ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿ ਫਿਰਿ ਟ੍ਰੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ਆਇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੋ ਜਪੁ ਸੋ ਤਪੁ ਸਾ ਬ੍ਰਤ ਪ੍ਰੂਜਾ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੋਰ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਭ ਝੂਠੀ ਇਕ ਖਿਨ ਮਹਿ ਬਿਸਰਿ ਸਭ ਜਾਇ ॥੧॥ ਤੂ ਬੇਅੰਤੁ ਸਰਬ ਕਲ ਪੂਰਾ ਕਿਛੁ ਕੀਮਤਿ
 ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਹਰਿ ਜੀਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਛਡਾਇ ॥੨॥੬॥

ਰਾਗ ਬੈਰਾਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਇਆਂ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਟ੍ਰੂਖ ਗਵਾਇਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਚਾਹਤ ਸੋਈ ਮਨਿ
 ਪਾਇਆਂ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿਵਾਇਆਂ ॥੧॥ ਸਰਬ ਸੂਖ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਵਡਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ
 ਮਤਿ ਪਾਈ ॥੨॥੧॥੭॥

ਰਾਗ ਤਿਲੰਗ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੂ ੧

੧ਓਈਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਧਕ ਅਰਜ ਗੁਫਤਮ ਪੇਸਿ ਤੋ ਦਰ ਗੋਸ ਕੁਨ ਕਰਤਾਰ ॥ ਹਕਾ ਕਬੀਰ ਕਰੀਮ ਤੂ ਬੇਐਬ ਪਰਵਦਗਾਰ ॥੧॥
ਦੁਨੀਆ ਮੁਕਾਮੇ ਫਾਨੀ ਤਹਕੀਕ ਦਿਲ ਦਾਨੀ ॥ ਮਮ ਸਰ ਮੂਝਿ ਅਜਰਾਈਲ ਗਿਰਫਤਹ ਦਿਲ ਹੇਚਿ ਨ ਦਾਨੀ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਨ ਪਿਸਰ ਪਦਰ ਬਿਰਾਦਰਾਂ ਕਸ ਨੇਸ ਦਸਤਾਂਗੀਰ ॥ ਆਖਿਰ ਬਿਅਫਤਮ ਕਸ ਨ ਦਾਰਦ ਚੂ
ਸਵਦ ਤਕਬੀਰ ॥੨॥ ਸਥ ਰੋਜ ਗਸਤਮ ਦਰ ਹਵਾ ਕਰਦੇਮ ਬਦੀ ਖਿਆਲ ॥ ਗਾਹੇ ਨ ਨੇਕੀ ਕਾਰ ਕਰਦਮ
ਮਮ ਇੰਹੀ ਚਿਨੀ ਅਹਵਾਲ ॥੩॥ ਬਦਬਖਤ ਹਮ ਚੁ ਬਖੀਲ ਗਾਫਿਲ ਬੇਨਜਰ ਬੇਬਾਕ ॥ ਨਾਨਕ ਬੁਗੋਧਦ ਜਨੁ
ਤੁਰਾ ਤੇਰੇ ਚਾਕਰਾਂ ਪਾ ਖਾਕ ॥੪॥੧॥

ਤਿਲੰਗ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੂ ੨ ੧ਓਈਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਭਤ ਤੇਰਾ ਭਾਂਗ ਖਲਡੀ ਮੇਰਾ ਚੀਤੁ ॥ ਮੈ
ਦੇਵਾਨਾ ਭਿਆ ਅਤੀਤੁ ॥ ਕਰ ਕਾਸਾ ਦਰਸਨ ਕੀ ਭੂਖ ॥ ਮੈ ਦਰਿ ਮਾਗਤ ਨੀਤਾ ਨੀਤ ॥੧॥ ਤਤ ਦਰਸਨ
ਕੀ ਕਰਤ ਸਮਾਇ ॥ ਮੈ ਦਰਿ ਮਾਗਤੁ ਭੀਖਿਆ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੇਸਰਿ ਕੁਸਮ ਮਿਰਗਮੈ ਹਰਣਾ ਸਰਕ
ਸਰੀਰੀ ਚੜ੍ਹਣਾ ॥ ਚੰਦਨ ਭਗਤਾ ਜੋਤਿ ਇਨੇਹੀ ਸਰਬੇ ਪਰਮਲੁ ਕਰਣਾ ॥੨॥ ਧਿਆ ਪਟ ਭਾੰਡਾ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥
ਔਈ ਭਗਤੁ ਵਰਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ॥ ਤੈਰੈ ਨਾਮਿ ਨਿਵੇ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਦਰਿ ਭੀਖਿਆ ਪਾਇ
॥੩॥੧॥੨॥

ਤਿਲੰਗ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੂ ੩ ੧ਓਈ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਮਾਇਆ ਪਾਹਿਆ ਪਿਆਰੇ ਲੀਤੜਾ ਲਕਿ

ਰंगाए ॥ ਮੇਰੈ ਕਂਤ ਨ ਭਾਵੈ ਚੋਲੜਾ ਪਿਆਰੇ ਕਿਤ ਧਨ ਸੇਜੈ ਜਾਏ ॥੧॥ ਛਾਤ ਕੁਰਬਾਨੈ ਜਾਤ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ਛਾਤ
 ਕੁਰਬਾਨੈ ਜਾਤ ॥ ਛਾਤ ਕੁਰਬਾਨੈ ਜਾਤ ਤਿਨਾ ਕੈ ਲੈਨਿ ਜੋ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ॥ ਲੈਨਿ ਜੋ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ਤਿਨਾ ਕੈ ਛਾਤ ਸਦ
 ਕੁਰਬਾਨੈ ਜਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਇਆ ਰੰਡਣਿ ਜੇ ਥੀਐ ਪਿਆਰੇ ਪਾਈਐ ਨਾਤ ਮਜੀਠ ॥ ਰੰਡਣ ਵਾਲਾ ਜੇ ਰੰਡੈ
 ਸਾਹਿਬੁ ਅੈਸਾ ਰੰਗੁ ਨ ਡੀਠ ॥੨॥ ਜਿਨ ਕੇ ਚੋਲੇ ਰਤੜੇ ਪਿਆਰੇ ਕੰਤੁ ਤਿਨਾ ਕੈ ਪਾਸਿ ॥ ਧੂਡਿ ਤਿਨਾ ਕੀ ਜੇ ਮਿਲੈ ਜੀ
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥੩॥ ਆਪੇ ਸਾਜੇ ਆਪੇ ਰੰਗੇ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਕਂਤੈ ਭਾਵੈ ਆਪੇ ਹੀ
 ਰਾਵੇਇ ॥੪॥੧॥੩॥ ਤਿਲਾਂਗ ਮਃ ੧ ॥ ਇਆਨਡੀਏ ਮਾਨੜਾ ਕਾਇ ਕਰੇਹਿ ॥ ਆਪਨਡੈ ਘਰਿ ਹਰਿ ਰੰਗੇ ਕੀ ਨ
 ਮਾਣੇਹਿ ॥ ਸਹੁ ਨੇਡੈ ਧਨ ਕੰਮਲੀਏ ਬਾਹਰੁ ਕਿਆ ਫੂਫੇਹਿ ॥ ਭੈ ਕੀਆ ਦੇਹਿ ਸਲਾਈਆ ਨੈਣੀ ਭਾਵ ਕਾ ਕਰਿ ਸੀਗਾਰੇ
 ॥ ਤਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਜਾਣੀਐ ਲਾਗੀ ਜਾ ਸਹੁ ਧਰੇ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਇਆਣੀ ਬਾਲੀ ਕਿਆ ਕਰੇ ਜਾ ਧਨ ਕਂਤ ਨ ਭਾਵੈ ॥
 ਕਰਣ ਪਲਾਹ ਕਰੇ ਬਹੁਤੇਰੇ ਸਾ ਧਨ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ਨਾਹੀ ਜੇ ਬਹੁਤੇਰਾ ਧਾਵੈ ॥ ਲਕ
 ਲੋਭ ਅਛਕਾਰ ਕੀ ਮਾਤੀ ਮਾਇਆ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਇਨੀ ਬਾਤੀ ਸਹੁ ਪਾਈਐ ਨਾਹੀ ਭੰਡ ਕਾਮਣਿ ਇਆਣੀ ॥੨॥
 ਜਾਇ ਪੁਛਹੁ ਸੋਹਾਗਣੀ ਵਾਹੈ ਕਿਨੀ ਬਾਤੀ ਸਹੁ ਪਾਈਐ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੋ ਭਲਾ ਕਰਿ ਮਾਨੀਐ ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਕਮੁ
 ਚੁਕਾਈਐ ॥ ਜਾ ਕੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਤਤ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥ ਸਹੁ ਕਹੈ ਸੋ ਕੀਜੈ ਤਨੁ ਮਨੋ ਦੀਜੈ ਅੈਸਾ
 ਪਰਮਲੁ ਲਾਈਐ ॥ ਏਵ ਕਹਹਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਭੈਣੇ ਇਨੀ ਬਾਤੀ ਸਹੁ ਪਾਈਐ ॥੩॥ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ਤਾ ਸਹੁ ਪਾਈਐ
 ਅਤੁਰੁ ਕੈਸੀ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਸਹੁ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਸੋ ਦਿਨੁ ਲੇਖੈ ਕਾਮਣਿ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥ ਆਪਣੇ ਕਂਤ ਪਿਆਰੀ ਸਾ
 ਸੋਹਾਗਣਿ ਨਾਨਕ ਸਾ ਸਭਰਾਈ ॥ ਅੈਸੇ ਰੰਗੇ ਰਾਤੀ ਸਹਜ ਕੀ ਮਾਤੀ ਅਹਿਨਿਸਿ ਭਾਇ ਸਮਾਣੀ ॥ ਸੁਨਦਰਿ ਸਾਇ
 ਸਰੂਪ ਬਿਚਖਣਿ ਕਹੀਐ ਸਾ ਸਿਆਣੀ ॥੪॥੨॥੪॥ ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੈਸੀ ਮੈ ਆਵੈ ਖਸਮ ਕੀ ਬਾਣੀ ਤੈਸਡਾ
 ਕਰੀ ਗਿਆਨੁ ਵੇ ਲਾਲੋ ॥ ਪਾਪ ਕੀ ਜੰਬ ਲੈ ਕਾਬਲਹੁ ਧਾਇਆ ਜੋਰੀ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਵੇ ਲਾਲੋ ॥ ਸਰਮੁ ਧਰਮੁ ਫੁਝਿ
 ਛਪਿ ਖਲੋਏ ਕੂਡੁ ਫਿਰੈ ਪਰਧਾਨੁ ਵੇ ਲਾਲੋ ॥ ਕਾਜੀਆ ਬਾਮਣਾ ਕੀ ਗਲ ਥਕੀ ਅਗਦੁ ਪੱਡੈ ਸੈਤਾਨੁ ਵੇ ਲਾਲੋ ॥
 ਮੁਸਲਮਾਨੀਆ ਪਝਹਿ ਕਤੇਬਾ ਕਸਟ ਮਹਿ ਕਰਹਿ ਖੁਦਾਇ ਵੇ ਲਾਲੋ ॥ ਜਾਤਿ ਸਨਾਤੀ ਹੋਰਿ ਹਿਦਵਾਣੀਆ ਏਹਿ

ਭੀ ਲੇਖੈ ਲਾਇ ਵੇ ਲਾਲੋ ॥ ਖੂਨ ਕੇ ਸੋਹਿਲੇ ਗਾਰੀਅਹਿ ਨਾਨਕ ਰਤੁ ਕਾ ਕੁਂਗ੍ਰ ਪਾਇ ਵੇ ਲਾਲੋ ॥੧॥ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਗੁਣ
ਨਾਨਕੁ ਗਾਰੈ ਮਾਸ ਪੁਰੀ ਵਿਚਿ ਆਖੁ ਮਸੋਲਾ ॥ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ਰੰਗਿ ਰਵਾਈ ਬੈਠਾ ਵੇਖੈ ਵਖਿ ਇਕੇਲਾ ॥ ਸਚਾ ਸੋ
ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਤਪਾਵਸੁ ਸਚੜਾ ਨਿਆਉ ਕਰੇਗੁ ਮਸੋਲਾ ॥ ਕਾਇਆ ਕਪਡੁ ਟੁਕੁ ਟੁਕੁ ਹੋਸੀ ਹਿਦੁਸਤਾਨੁ ਸਮਾਲਸੀ
ਬੋਲਾ ॥ ਆਵਨਿ ਅਠਤਰੈ ਜਾਨਿ ਸਤਾਨਵੈ ਹੋਰੁ ਭੀ ਉਠਸੀ ਮਰਦ ਕਾ ਚੇਲਾ ॥ ਸਚ ਕੀ ਬਾਣੀ ਨਾਨਕੁ ਆਖੈ ਸਚੁ
ਸੁਣਾਇਸੀ ਸਚ ਕੀ ਬੇਲਾ ॥੨॥੩॥੫॥

ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨ ੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਭਿ ਆਏ ਹੁਕਮਿ ਖਸਮਾਹੁ ਹੁਕਮਿ ਸਭ ਵਰਤਨੀ
॥ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚਾ ਖੇਲੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਧਨੀ ॥੧॥ ਸਾਲਾਹਿਹੁ ਸਚੁ ਸਭ ਊਪਰਿ ਹਰਿ ਧਨੀ ॥ ਜਿਸੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ
ਸਰੀਕੁ ਕਿਸੁ ਲੇਖੈ ਹਤ ਗਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਤਣ ਪਾਣੀ ਧਰਤੀ ਆਕਾਸੁ ਘਰ ਮੰਦਰ ਹਰਿ ਬਨੀ ॥ ਵਿਚਿ ਵਰਤੈ ਨਾਨਕ
ਆਪਿ ਝੂਠੁ ਕਹੁ ਕਿਆ ਗਨੀ ॥੨॥੧॥ ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਨਿਤ ਨਿਹਫਲ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ਬਫਾਵੈ ਦੁਰਮਤੀਆ
॥ ਜਬ ਆਣੈ ਵਲਵੰਚ ਕਰਿ ਝੂਠੁ ਤਬ ਜਾਣੈ ਜਗੁ ਜਿਤੀਆ ॥੧॥ ਐਸਾ ਬਾਜੀ ਸੈਸਾਰੁ ਨ ਚੇਤੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥ ਖਿਨ
ਮਹਿ ਬਿਨਸੈ ਸਭੁ ਝੂਠੁ ਮੇਰੇ ਮਨ ਧਿਆਇ ਰਾਮਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾ ਵੇਲਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਜਿਤੁ ਆਇ ਕੰਟਕੁ ਕਾਲੁ ਗ੍ਰਸੈ
॥ ਤਿਸੁ ਨਾਨਕ ਲਏ ਛਡਾਇ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਹਿਰਦੈ ਵਸੈ ॥੨॥੨॥

ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਖਾਕ ਨੂਰ ਕਰਦਾ
ਆਲਮ ਦੁਨੀਆਇ ॥ ਅਸਮਾਨ ਜਿਮੀ ਦਰਖਤ ਆਬ ਪੈਦਾਇਸਿ ਖੁਦਾਇ ॥੧॥ ਬੰਦੇ ਚਸਮ ਦੀਂਦਾ ਫਨਾਇ ॥ ਦੁਨੀਆ
ਮੁਰਦਾਰ ਖੁਰਦਨੀ ਗਾਫਲ ਹਵਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੈਬਾਨ ਹੈਵਾਨ ਹਰਾਮ ਕੁਸਤਨੀ ਮੁਰਦਾਰ ਬਖੋਰਾਇ ॥ ਦਿਲ ਕਬਜ
ਕਬਜਾ ਕਾਦਰੋ ਦੋਜਕ ਸਜਾਇ ॥੨॥ ਵਲੀ ਨਿਆਮਤਿ ਬਿਰਾਦਰਾ ਦਰਬਾਰ ਮਿਲਕ ਖਾਨਾਇ ॥ ਜਬ ਅਜਰਾਈਲੁ
ਬਸਤਨੀ ਤਬ ਚਿ ਕਾਰੇ ਬਿਦਾਇ ॥੩॥ ਹਵਾਲ ਮਾਲੂਮੁ ਕਰਦਾ ਪਾਕ ਅਲਾਹ ॥ ਬੁਗੋ ਨਾਨਕ ਅਰਦਾਸਿ ਪੇਸਿ ਦਰਵੇਸ
ਬੰਦਾਹ ॥੪॥੧॥ ਤਿਲਾਂਗ ਘਰੁ ੨ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਟ੍ਰੁਝਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਤ੍ਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ਕਰਹਿ ਸੋ ਹੋਇ ॥ ਤੇਰਾ
ਯੋਰੁ ਤੇਰੀ ਮਨਿ ਟੇਕ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਧਿ ਨਾਨਕ ਏਕ ॥੧॥ ਸਭ ਊਪਰਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ਤੇਰਾ

आधारੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹੈ ਤੂਹੈ ਤੂ ਹੋਵਨਹਾਰ ॥ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਊਚ ਆਪਾਰ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਸੇਵਹਿ ਤਿਨ ਭਤ ਦੁਖੁ
 ਨਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਹਿ ॥੨॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਤੇਰਾ ਰੂਪੁ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਗੋਵਿੰਦ ਅਨੂਪ ॥
 ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਜਨ ਸੋਝਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੩॥ ਜਿਨਿ ਜਪਿਆ ਤਿਸ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰ
 ॥ ਤਿਸ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਲੋਚਾ ਪੂਰਿ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਬਾਛਤ ਧੂਰਿ ॥੪॥੨॥ ਤਿਲਾਂਗ
 ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ॥ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ਸਾਹਿਬੁ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥ ਜੀਅ ਸਗਲ ਕਤ ਦੇਇ
 ਦਾਨੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੂ ਕਾਹੇ ਡੋਲਹਿ ਪ੍ਰਾਣੀਆ ਤੁਧੁ ਰਾਖੈਗਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥ ਜਿਨਿ ਪੈਟਾਇਸਿ ਤੂ ਕੀਆ ਸੋਈ ਦੇਇ
 ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ਮੇਦਨੀ ਸੋਈ ਕਰਦਾ ਸਾਰ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਮਾਲਕੁ ਦਿਲਾ ਕਾ ਸਚਾ ਪਰਵਦਗਾਰੁ
 ॥੨॥ ਕੁਦਰਤਿ ਕੀਮ ਨ ਜਾਣੀਐ ਵੱਡਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥ ਕਰਿ ਬੰਦੇ ਤੂ ਬੰਦਗੀ ਜਿਚੁ ਘਟ ਮਹਿ ਸਾਹੁ ॥੩॥ ਤੂ
 ਸਮਰਥੁ ਅਕਥੁ ਅਗੋਚਰੁ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਤੇਰੀ ਰਾਸਿ ॥ ਰਹਮ ਤੇਰੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ
 ॥੪॥੩॥ ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ॥ ਕਰਤੇ ਕੁਦਰਤੀ ਸੁਸਤਾਕੁ ॥ ਦੀਨ ਦੁਨੀਆ ਏਕ ਤੂਹੀ ਸਭ ਖਲਕ ਹੀ ਤੇ
 ਪਾਕੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਦਾ ਆਚਰਜ ਤੇਰੇ ਰੂਪ ॥ ਕਤਣੁ ਜਾਣੈ ਚਲਤ ਤੇਰੇ ਅੰਧਿਆਰੇ ਮਹਿ
 ਦੀਪ ॥੧॥ ਖੁਦਿ ਖਸਮ ਖਲਕ ਜਹਾਨ ਅਲਹ ਮਿਹਰਵਾਨ ਖੁਦਾਇ ॥ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਜਿ ਤੁਧੁ ਅਰਾਧੇ ਸੋ ਕਿਤ
 ਦੋਜਕਿ ਜਾਇ ॥੨॥ ਅਜਰਾਈਲੁ ਧਾਰੁ ਬੰਦੇ ਜਿਸੁ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥ ਗੁਨਹ ਤਸ ਕੇ ਸਗਲ ਆਫੂ ਤੇਰੇ ਜਨ ਦੇਖਹਿ
 ਦੀਦਾਰੁ ॥੩॥ ਦੁਨੀਆ ਚੀਜ ਫਿਲਹਾਲ ਸਗਲੇ ਸਚੁ ਸੁਖੁ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਾਂਝਿਆ ਸਦਾ ਏਕਸੁ
 ਗਾਤ ॥੪॥੪॥ ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੀਰਾਂ ਦਾਨਾਂ ਦਿਲ ਸੋਚ ॥ ਮੁਹਬਤੇ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਸੈ ਸਚੁ ਸਾਹ ਬੰਦੀ ਮੋਚ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੀਦਨੇ ਦੀਦਾਰ ਸਾਹਿਬ ਕਛੁ ਨਹੀ ਇਸ ਕਾ ਮੌਲੁ ॥ ਪਾਕ ਪਰਵਦਗਾਰ ਤੂ ਖੁਦਿ ਖਸਮੁ ਵੱਡਾ
 ਅਤੋਲੁ ॥੧॥ ਦੱਸਗੀਰੀ ਦੇਹਿ ਦਿਲਾਵਰ ਤੂਹੀ ਤੂਹੀ ਏਕ ॥ ਕਰਤਾਰ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਣ ਖਾਲਕ ਨਾਨਕ ਤੇਰੀ
 ਟੇਕ ॥੨॥੫॥

ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਨਿ ਦੇਖਿਆ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਰੇ ਭਾਈ ॥

आपे जाणै करे आपि जिनि वाड़ी है लाई ॥१॥ राइसा पिआरे का राइसा जितु सदा सुखु होई ॥
 रहाउ ॥ जिनि रंगि कंतु न राविआ सा पछो रे ताणी ॥ हाथ पछोड़ै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी ॥२॥
 पछोतावा ना मिलै जब चूकैगी सारी ॥ ता फिरि पिआरा रावीअै जब आवैगी वारी ॥३॥ कंतु लीआ
 सोहागणी मै ते वधवी एह ॥ से गुण मुझै न आवनी कै जी दोसु धरेह ॥४॥ जिनी सखी सहु राविआ तिन
 पूछउगी जाए ॥ पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए ॥५॥ हुकमु पछाणै नानका भउ चंदनु
 लावै ॥ गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै ॥६॥ जो दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ मिलिआ
 कहीअै रे सोई ॥ जे बहुतेरा लोचीअै बाती मेलु न होई ॥७॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ
 धावै ॥ गुर परसादी जाणीअै तउ अनभउ पावै ॥८॥ पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै ॥ रसीआ
 होवै मुसक का तब फूलु पछाणै ॥९॥ अपितु पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥ सहजे सहजे मिलि रहै
 अमरा पढु पावै ॥१०॥१॥ तिलंग महला ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥
 बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि जाईआ ॥२॥ आइ मिलु गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरु के
 पिआरे ॥ रहाउ ॥ हरि के गुण हरि भावदे से गुरु ते पाए ॥ जिन गुर का भाणा मंनिआ तिन धुमि धुमि
 जाए ॥२॥ जिन सतिगुरु पिआरा देखिआ तिन कउ हउ वारी ॥ जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद
 बलिहारी ॥३॥ हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा ॥ गुर सेवा ते पाईअै गुरमुखि निसतारा ॥४॥
 जो हरि नामु धिआइदे ते जन परवाना ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥५॥ सा
 हरि तेरी उसतति है जो हरि प्रभ भावै ॥ जो गुरमुखि पिआरा सेवदे तिन हरि फलु पावै ॥६॥ जिना
 हरि सेती पिरहड़ी तिना जीअ प्रभ नाले ॥ ओइ जपि जपि पिआरा जीवदे हरि नामु समाले ॥७॥ जिन
 गुरमुखि पिआरा सेविआ तिन कउ धुमि जाइआ ॥ ओइ आपि छुटे परवार सिउ सभु जगतु छडाइआ
 ॥८॥ गुरि पिआरै हरि सेविआ गुरु धन्नु गुरु धन्नो ॥ गुरि हरि मारगु दसिआ गुर पुन्नु वड पुन्नो ॥९॥

ਜੋ ਗੁਰਸਿਖ ਗੁਰੂ ਸੇਵਦੇ ਸੇ ਪੁਨੰ ਪਰਾਣੀ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕਤ ਵਾਰਿਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਣੀ ॥੧੦॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀਆ ਸੇ ਆਪਿ ਹਰਿ ਭਾਈਆ ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪੈਨਾਈਆ ਹਰਿ ਆਪਿ ਗਲਿ ਲਾਈਆ
 ॥੧੧॥ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਤਿਨ ਦਰਸਨੁ ਦੀਜੈ ॥ ਹਮ ਤਿਨ ਕੇ ਚਰਣ ਪਖਾਲਦੇ ਥ੍ਰੂਡਿ ਘੋਲਿ ਘੋਲਿ
 ਪੀਜੈ ॥੧੨॥ ਪਾਨ ਸੁਪਾਰੀ ਖਾਤੀਆ ਮੁਖਿ ਬੀਡੀਆ ਲਾਈਆ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਦੇ ਨ ਚੇਤਿਓ ਜਮਿ ਪਕਡਿ
 ਚਲਾਈਆ ॥੧੩॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਚੇਤਿਆ ਹਿਰਦੈ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਤਿਨ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੰਦੁ ਗੁਰਸਿਖ
 ਗੁਰ ਪਿਆਰੇ ॥੧੪॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਰੰਗਿ
 ਰਲੀਆ ਮਾਣੈ ॥੧੫॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਆਖੀਐ ਤੁਸਿ ਕਰੇ ਪਸਾਓ ॥ ਹਉ ਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਸਦ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਿ
 ਦਿਤੜਾ ਨਾਓ ॥੧੬॥ ਸੋ ਧਨੁ ਗੁਰੁ ਸਾਬਾਸਿ ਹੈ ਹਰਿ ਦੇਇ ਸਨੇਹਾ ॥ ਹਉ ਕੋਖਿ ਕੋਖਿ ਗੁਰੁ ਵਿਗਸਿਆ ਗੁਰ
 ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਹਾ ॥੧੭॥ ਗੁਰ ਰਸਨਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਬੋਲਦੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵੀ ॥ ਜਿਨ ਸੁਣਿ ਸਿਖਾ ਗੁਰੁ ਮੰਨਿਆ
 ਤਿਨਾ ਭੁਖ ਸਭ ਜਾਵੀ ॥੧੮॥ ਹਰਿ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਆਖੀਐ ਕਹੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਜਾਈਐ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਹੈ
 ਹਰਿ ਖਰਚੁ ਲੈ ਜਾਈਐ ॥੧੯॥ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿਆ ਸੇ ਸਾਹ ਕਡ ਦਾਣੇ ॥ ਹਉ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਤ
 ਸਦ ਵਾਰਿਆ ਗੁਰੁ ਬਚਨਿ ਸਮਾਣੇ ॥੨੦॥ ਤੂ ਠਾਕੁਰੁ ਤੂ ਸਾਹਿਬੀ ਤੂਹੈ ਮੇਰਾ ਮੀਰਾ ॥ ਤੁਥੁ ਭਾਵੈ ਤੇਰੀ ਬੰਦਗੀ
 ਤੂ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰਾ ॥੨੧॥ ਆਪੇ ਹਰਿ ਝਿਕ ਰੰਗੁ ਹੈ ਆਪੇ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਸਾਈ ਗਲ ਚੰਗੀ
 ॥੨੨॥੨॥

ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੬ ਕਾਫੀ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਚੇਤਨਾ ਹੈ ਤਤ ਚੇਤ ਲੈ ਨਿਸਿ ਦਿਨਿ ਮੈ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥ ਛਿਨੁ ਛਿਨੁ ਅਤਥ ਬਿਹਾਤੁ ਹੈ ਫੂਟੈ
 ਘਟ ਜਿਤ ਪਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਗੁਨ ਕਾਹਿ ਨ ਗਾਵਹੀ ਮੂਰਖ ਅਗਿਆਨਾ ॥ ਝੂਠੈ ਲਾਲਚਿ ਲਾਗਿ ਕੈ ਨਹਿ
 ਮਰਨੁ ਪਛਾਨਾ ॥੨॥ ਅਜਹੂ ਕਛੁ ਬਿਗਰਿਓ ਨਹੀ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਭਜਨ ਤੇ ਨਿਰਮੈ ਪਦੁ ਪਾਵੈ ॥
 ੨॥੧॥ ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਜਾਗ ਲੇਹੁ ਰੇ ਮਨਾ ਜਾਗ ਲੇਹੁ ਕਹਾ ਗਾਫਲ ਸੋਇਆ ॥ ਜੋ ਤਨੁ ਉਪਜਿਆ ਸੱਗ
 ਹੀ ਸੋ ਭੀ ਸੰਗਿ ਨ ਹੋਇਆ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਬੰਧ ਜਨ ਹਿਤੁ ਜਾ ਸਿਤ ਕੀਨਾ ॥ ਜੀਤ ਛੂਟਿਓ ਜਬ

ਦੇਹ ਤੇ ਡਾਰਿ ਅਗਨਿ ਮੈਂ ਦੀਨਾ ॥੧॥ ਜੀਵਤ ਲਤ ਬਿਤਹਾਰੁ ਹੈ ਜਗ ਕਤ ਤੁਮ ਜਾਨਤ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ
ਲੈ ਸਭ ਸੁਫਨ ਸਮਾਨਤ ॥੨॥੨॥ ਤਿਲਾਂਗ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਰੇ ਮਨਾ ਗਾਇ ਲੈ ਜੋ ਸੰਗੀ ਹੈ ਤੇਰੋ ॥ ਅਤਸ਼ੁ
ਬੀਤਿਆਂ ਜਾਤੁ ਹੈ ਕਹਿਆਂ ਮਾਨ ਲੈ ਮੇਰੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਪਤਿ ਰਥ ਧਨ ਰਾਜ ਸਿਉ ਅਤਿ ਨੇਹੁ ਲਗਾਇਆਂ ॥
ਕਾਲ ਫਾਸ ਜਬ ਗਲਿ ਪਰੀ ਸਭ ਭਿਆਂ ਪਰਾਇਆਂ ॥੧॥ ਜਾਨਿ ਕੂੜਾ ਕੈ ਬਾਵਰੇ ਤੈ ਕਾਜੁ ਬਿਗਾਰਿਆਂ ॥ ਪਾਪ
ਕਰਤ ਸੁਕਚਿਆਂ ਨਹੀਂ ਨਹ ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰਿਆਂ ॥੨॥ ਜਿਹ ਬਿਧਿ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸਿਆ ਸੋ ਸੁਨੁ ਰੇ ਭਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਕਹਤ
ਪੁਕਾਰਿ ਕੈ ਗੁਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨਾਈ ॥੩॥੩॥

ਤਿਲਾਂਗ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਇਫਤਰਾ ਭਾਈ ਦਿਲ ਕਾ ਫਿਕਰੁ
ਨ ਜਾਇ ॥ ਟੁਕੁ ਦਮੁ ਕਰਾਰੀ ਜਤ ਕਰਹੁ ਹਾਜਿਰ ਹਜੂਰਿ ਖੁਦਾਇ ॥੧॥ ਬੰਦੇ ਖੋਜੁ ਦਿਲ ਹਰ ਰੋਜ ਨਾ ਫਿਰੁ ਪਰੇਸਾਨੀ
ਮਾਹਿ ॥ ਇਹ ਜੁ ਦੁਨੀਆ ਸਿਹਰੁ ਮੇਲਾ ਦਸਤਗੀਰੀ ਨਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਰੋਗੁ ਪਡਿ ਪਡਿ ਖੁਸੀ ਹੋਇ ਬੇਖਬਰ
ਬਾਦੁ ਬਕਾਹਿ ॥ ਹਕੁ ਸਚੁ ਖਾਲਕੁ ਖਲਕ ਮਿਆਨੇ ਸਿਆਮ ਸੂਰਤਿ ਨਾਹਿ ॥੨॥ ਅਸਮਾਨ ਮਿਧਾਨੇ ਲਛਾਗ ਦਰੀਆ
ਗੁਸਲ ਕਰਦਨ ਕੂੜ੍ਹ ॥ ਕਹਿ ਫਕਰੁ ਦਾਇਮ ਲਾਇ ਚਸਮੇ ਜਹ ਤਹਾ ਮਤਜੂਦੁ ॥੩॥ ਅਲਾਹ ਪਾਕਂ ਪਾਕ ਹੈ ਸਕ ਕਰਤ
ਜੇ ਦੂਸਰ ਹੋਇ ॥ ਕਬੀਰ ਕਰਮੁ ਕਰੀਮ ਕਾ ਤਹੁ ਕਰੈ ਜਾਨੈ ਸੋਇ ॥੪॥੧॥ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ॥ ਮੈਂ ਅਂਧੁਲੇ ਕੀ ਟੇਕ ਤੇਰਾ
ਨਾਮੁ ਖੁੰਦਕਾਰਾ ॥ ਮੈਂ ਗਰੀਬ ਮੈਂ ਮਸਕੀਨ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਹੈ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰੀਮਾਂ ਰਹੀਮਾਂ ਅਲਾਹ ਤੂ ਗਨੰਨੀ
॥ ਹਾਜਰਾ ਹਜੂਰਿ ਦਰਿ ਪੇਸਿ ਤੂੰ ਮਨੀ ॥੧॥ ਦਰੀਆਤ ਤੂੰ ਦਿਵਾਦ ਤੂੰ ਬਿਸੀਆਰ ਤੂੰ ਧਨੀ ॥ ਦੇਹਿ ਲੇਹਿ ਏਕੁ ਤੂੰ
ਦਿਗਰ ਕੋ ਨਹੀਂ ॥੨॥ ਤੂੰ ਦਾਨਾਂ ਤੂੰ ਬੀਨਾਂ ਮੈਂ ਬੀਚਾਰੁ ਕਿਆ ਕਰੀ ॥ ਨਾਮੇ ਚੇ ਸੁਆਮੀ ਬਖਸਂਦ ਤੂੰ ਹਰੀ ॥੩॥੧॥੨॥
ਹਲੇ ਧਾਰਾਂ ਹਲੇ ਧਾਰਾਂ ਖੁਸਿਖਬਰੀ ॥ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਂਤ ਹਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਂਤ ॥ ਨੀਕੀ ਤੇਰੀ ਬਿਗਾਰੀ ਆਲੇ ਤੇਰਾ
ਨਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੁਝਾ ਆਮਦ ਕੁਝਾ ਰਫਤੀ ਕੁਝਾ ਮੇਂ ਖੀ ॥ ਦ੍ਰਾਰਿਕਾ ਨਗਰੀ ਰਾਸਿ ਬੁਗੋਈ ॥੧॥ ਖੂਬੁ ਤੇਰੀ
ਪਾਗਰੀ ਮੀਠੇ ਤੇਰੇ ਬੋਲ ॥ ਦ੍ਰਾਰਿਕਾ ਨਗਰੀ ਕਾਹੇ ਕੇ ਮਗੋਲ ॥੨॥ ਚੰਦੀ ਹਜਾਰ ਆਲਮ ਏਕਲ ਖਾਨਾਂ ॥ ਹਮ ਚਿਨੀ
ਪਾਤਿਸਾਹ ਸਾਁਵਲੇ ਬਰਨਾਂ ॥੩॥ ਅਸਪਤਿ ਗਜਪਤਿ ਨਰਹ ਨਰਿਦ ॥ ਨਾਮੇ ਕੇ ਸ਼ਾਮੀ ਮੀਰ ਮੁਕੰਦ ॥੪॥੨॥੩॥

੧ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੧

ਮਾਂਡਾ ਧੋਇ ਬੈਸਿ ਧ੍ਰੂਪੁ ਦੇਵਹੁ ਤਤ ਦ੍ਰਵਾਈ ਕਤ ਜਾਵਹੁ ॥ ਦ੍ਰਵੁ ਕਰਮ ਫੁਨਿ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਇਣੁ ਹੋਇ ਨਿਰਾਸ
ਜਮਾਵਹੁ ॥੧॥ ਜਪਹੁ ਤ ਏਕੋ ਨਾਮਾ ॥ ਅਵਰਿ ਨਿਰਾਫਲ ਕਾਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਈਟੀ ਹਾਥਿ
ਕਰਹੁ ਫੁਨਿ ਨੇਕਤ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ॥ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਤਬ ਮਥੀਐ ਇਨ ਬਿਧਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪਾਵਹੁ ॥੨॥
ਮਨੁ ਸੰਪਟੁ ਜਿਤੁ ਸਤ ਸਰਿ ਨਾਵਣੁ ਭਾਵਨ ਪਾਤੀ ਤ੃ਪਤਿ ਕਰੇ ॥ ਪ੍ਰਸਾਦ ਪ੍ਰਾਣ ਸੇਵਕੁ ਜੇ ਸੇਵੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਬਿਧਿ
ਸਾਹਿਬੁ ਰਖਤੁ ਰਹੈ ॥੩॥ ਕਹਦੇ ਕਹਹਿ ਕਹੇ ਕਹਿ ਜਾਵਹਿ ਤੁਮ ਸਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਭਗਤਿ ਹੀਣੁ ਨਾਨਕੁ
ਜਨੁ ਜਾਂਪੈ ਹਉ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥੪॥੧॥

ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨

ਅੰਤਰਿ ਵਸੈ ਨ ਬਾਹਰਿ ਜਾਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਛੋਡਿ ਕਾਹੇ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥੧॥ ਐਸਾ ਗਿਆਨੁ ਜਪਹੁ ਮਨ
ਮੇਰੇ ॥ ਹੋਵਹੁ ਚਾਕਰ ਸਾਚੇ ਕੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਸਭੁ ਕੋਈ ਰਖੈ ॥ ਬਾਂਧਨਿ ਬਾਂਧਿਆ
ਸਭੁ ਜਗੁ ਭਖੈ ॥੨॥ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਸੁ ਚਾਕਰੁ ਹੋਇ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਖਿ ਰਹਿਆ ਸੋਇ ॥੩॥ ਹਮ
ਨਹੀ ਚੰਗੇ ਬੁਰਾ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਤਾਰੇ ਸੋਇ ॥੪॥੧॥੨॥

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੬ ॥ ੧੪॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਉਜਲੁ ਕੈਹਾ ਚਿਲਕਣਾ ਘੋਟਿਮ ਕਾਲੜੀ ਮਸੁ ॥ ਧੋਤਿਆ ਜੂਠਿ ਨ ਤਤਰੈ ਜੇ ਸਤ ਧੋਵਾ ਤਿਸੁ ॥੧॥ ਸਜਣ ਸੇਈ
ਨਾਲਿ ਮੈ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਚਲਮਨਿ ॥ ਜਿਥੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਤਿਥੈ ਖੱਡੇ ਦਿਸਨਿ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਠੇ ਮੰਡਪ
ਮਾੜੀਆ ਪਾਸਹੁ ਚਿਤਵੀਆਹਾ ॥ ਢਠੀਆ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵਨ੍ਹੀ ਵਿਚਹੁ ਸਖਣੀਆਹਾ ॥੨॥ ਬਗਾ ਬਗੇ ਕਪੱਡੇ
ਤੀਰਥ ਮੰਝਿ ਵਸਨਿ ॥ ਧੁਟਿ ਧੁਟਿ ਜੀਆ ਖਾਵਣੇ ਬਗੇ ਨਾ ਕਹੀਅਨਿ ॥੩॥ ਸਿੰਮਲ ਰੁਖੁ ਸਰੀਰੁ ਮੈ ਮੈਜਨ
ਦੇਖਿ ਭੁਲਮਨਿ ॥ ਸੇ ਫਲ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵਨ੍ਹੀ ਤੇ ਗੁਣ ਮੈ ਤਨਿ ਛਾਨਿ ॥੪॥ ਅੰਧੁਲੈ ਭਾਰੁ ਤਠਾਇਆ ਝੂਗਰ ਵਾਟ
ਬਹੁਤੁ ॥ ਅਖੀ ਲੋਡੀ ਨਾ ਲਹਾ ਹਤ ਚਡਿ ਲਮਧਾ ਕਿਤੁ ॥੫॥ ਚਾਕਰੀਆ ਚੰਗਿਆਈਆ ਅਵਰ ਸਿਆਣਪ ਕਿਤੁ ॥
ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੁੰ ਬਧਾ ਛੁਟਹਿ ਜਿਤੁ ॥੬॥੧॥੩॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਪ ਤਪ ਕਾ ਬੰਧੁ ਬੇਡੁਲਾ ਜਿਤੁ
ਲਮਧਹਿ ਵਹੇਲਾ ॥ ਨਾ ਸਰਵਰੁ ਨਾ ਊਛਲੈ ਐਸਾ ਪਥੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥੧॥ ਤੇਰਾ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਮੰਜੀਠੜਾ ਰਤਾ ਮੇਰਾ ਚੋਲਾ
ਸਦ ਰੰਗ ਢੋਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਜਨ ਚਲੇ ਪਿਆਰਿਆ ਕਿਤ ਮੇਲਾ ਹੋਈ ॥ ਜੇ ਗੁਣ ਹੋਵਹਿ ਗੱਠੜੀਐ ਮੇਲੇਗਾ
ਸੋਈ ॥੨॥ ਮਿਲਿਆ ਹੋਇ ਨ ਵੀਛੁੜੈ ਜੇ ਮਿਲਿਆ ਹੋਈ ॥ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਨਿਵਾਰਿਆ ਹੈ ਸਾਚਾ ਸੋਈ ॥੩॥
ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ਨਿਵਾਰਿਆ ਸੀਤਾ ਹੈ ਚੋਲਾ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਸਹ ਕੇ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬੋਲਾ ॥੪॥ ਨਾਨਕੁ
ਕਹੈ ਸਹੇਲੀਹੋ ਸਹੁ ਖਰਾ ਪਿਆਰਾ ॥ ਹਮ ਸਹ ਕੇਰੀਆ ਦਾਸੀਆ ਸਾਚਾ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥੫॥੨॥੪॥
ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਭਾੰਡੈ ਭਾਤ ਤਿਨਾ ਸਵਾਰਸੀ ॥ ਸ੍ਰੂਖੀ ਕਰੈ ਪਸਾਤ ਟ੍ਰੂਖ ਵਿਸਾਰਸੀ ॥ ਸਹਸਾ ਮੂਲੇ
ਨਾਹਿ ਸਰਪਰ ਤਾਰਸੀ ॥੧॥ ਤਿਨਾ ਮਿਲਿਆ ਗੁਰੁ ਆਇ ਜਿਨ ਕਤ ਲੀਖਿਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਤ ਦੇਵੈ
ਦੀਖਿਆ ॥ ਚਾਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ਭਵਹਿ ਨ ਭੀਖਿਆ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਮਹਲੁ ਹਜੂਰਿ ਟ੍ਰੂਜੇ ਨਿਵੈ ਕਿਸੁ ॥ ਦਰਿ
ਦਰਖਾਣੀ ਨਾਹਿ ਮੂਲੇ ਪੁਛ ਤਿਸੁ ॥ ਛੁਟੈ ਤਾ ਕੈ ਬੋਲਿ ਸਾਹਿਬ ਨਦਰਿ ਜਿਸੁ ॥੩॥ ਘਲੇ ਆਣੇ ਆਪਿ ਜਿਸੁ
ਨਾਹੀ ਟ੍ਰੂਜਾ ਮਤੈ ਕੋਇ ॥ ਫਾਹਿ ਤਸਾਰੇ ਸਾਜਿ ਜਾਣੈ ਸਭ ਸੋਇ ॥ ਨਾਤ ਨਾਨਕ ਬਖਸੀਸ ਨਦਰੀ ਕਰਮੁ ਹੋਇ ॥

੪॥੩॥੫॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਭਾੰਡਾ ਹਛਾ ਸੋਇ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵਸੀ ॥ ਭਾੰਡਾ ਅਤਿ ਮਲੀਣ ਧੋਤਾ ਹਛਾ ਨ ਹੋਇਸੀ ॥
 ਗੁਰੂ ਦੁਆਰੈ ਹੋਇ ਸੋਝੀ ਪਾਇਸੀ ॥ ਏਤੁ ਦੁਆਰੈ ਧੋਇ ਹਛਾ ਹੋਇਸੀ ॥ ਮੈਲੇ ਹਛੇ ਕਾ ਵੀਚਾਰੁ ਆਪਿ ਵਰਤਾਇਸੀ ॥
 ਮਤੁ ਕੋ ਜਾਣੈ ਜਾਇ ਅਗੈ ਪਾਇਸੀ ॥ ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ਤੇਹਾ ਹੋਇਸੀ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ਆਪਿ
 ਵਰਤਾਇਸੀ ॥ ਚਲਿਆ ਪਤਿ ਸਿਤ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਿ ਵਾਜਾ ਵਾਇਸੀ ॥ ਮਾਣਸੁ ਕਿਆ ਵੇਚਾਰਾ ਤਿਹੁ ਲੋਕ
 ਸੁਣਾਇਸੀ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਨਿਹਾਲ ਸਭਿ ਕੁਲ ਤਾਰਸੀ ॥੧॥੪॥੬॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੋਗੀ ਹੋਵੈ ਜੋਗੈ ਭੋਗੀ
 ਹੋਵੈ ਖਾਇ ॥ ਤਪੀਆ ਹੋਵੈ ਤਪੁ ਕਰੇ ਤੀਗਥਿ ਮਲਿ ਮਲਿ ਨਾਇ ॥੧॥ ਤੇਰਾ ਸਦੜਾ ਸੁਣੀਜੈ ਭਾਈ ਜੇ ਕੋ ਬਹੈ
 ਅਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈਸਾ ਬੀਜੈ ਸੋ ਲੁਣੇ ਜੋ ਖੇਟੇ ਸੋ ਖਾਇ ॥ ਅਗੈ ਪੁਛ ਨ ਹੋਵੈ ਜੇ ਸਣੁ ਨੀਸਾਣੈ ਜਾਇ
 ॥੨॥ ਤੈਸੋ ਜੈਸਾ ਕਾਢੀਐ ਜੈਸੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਜੋ ਦਮੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਸੋ ਦਮੁ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥੩॥ ਇਹੁ ਤਨੁ
 ਵੇਚੀ ਬੈ ਕਰੀ ਜੇ ਕੋ ਲਏ ਵਿਕਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵੈ ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਨਾਹੀ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥੪॥੫॥੭॥

ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰ ੭

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਜੋਗੁ ਨ ਖਿੰਥਾ ਜੋਗੁ ਨ ਡੰਡੈ ਜੋਗੁ ਨ ਭਸਮ ਚੜਾਈਐ ॥ ਜੋਗੁ ਨ ਮੁੰਦੀ ਮੂੰਡਿ ਮੁੰਡਾਇਐ
 ਜੋਗੁ ਨ ਸਿੰਡੀ ਵਾਈਐ ॥ ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਹੀਐ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਇਵ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਗਲੀ ਜੋਗੁ ਨ ਹੋਈ
 ॥ ਏਕ ਵ੃ਸਟਿ ਕਰਿ ਸਮਸਰਿ ਜਾਣੈ ਜੋਗੀ ਕਹੀਐ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋਗੁ ਨ ਬਾਹਰਿ ਮਡੀ ਮਸਾਣੀ ਜੋਗੁ ਨ
 ਤਾਡੀ ਲਾਈਐ ॥ ਜੋਗੁ ਨ ਦੇਸਿ ਦਿਸ਼ਾਂਤਰਿ ਭਵਿਐ ਜੋਗੁ ਨ ਤੀਰਥਿ ਨਾਈਐ ॥ ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਹੀਐ
 ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਇਵ ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਤਾ ਸਹਸਾ ਤੂਟੈ ਧਾਵਤੁ ਵਰਜਿ ਰਹਾਈਐ ॥ ਨਿਝਾਰੁ ਝੈਰੈ ਸਹਜ
 ਧੁਨਿ ਲਾਗੈ ਘਰ ਹੀ ਪਰਚਾ ਪਾਈਐ ॥ ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਹੀਐ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਇਵ ਪਾਈਐ ॥੩॥
 ਨਾਨਕ ਜੀਵਤਿਆ ਮਰਿ ਰਹੀਐ ਐਸਾ ਜੋਗੁ ਕਮਾਈਐ ॥ ਵਾਜੇ ਬਾਝਹੁ ਸਿੰਡੀ ਵਾਜੈ ਤਤ ਨਿਰਭਤ ਪਦੁ ਪਾਈਐ
 ॥ ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਹੀਐ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਤਤ ਪਾਈਐ ॥੪॥੧॥੮॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਤਣ ਤਰਾਜੀ
 ਕਵਣੁ ਤੁਲਾ ਤੇਰਾ ਕਵਣੁ ਸਰਾਫੁ ਬੁਲਾਵਾ ॥ ਕਤਣੁ ਗੁਰੂ ਕੈ ਪਹਿ ਦੀਖਿਆ ਲੇਵਾ ਕੈ ਪਹਿ ਮੁਲੁ ਕਰਾਵਾ

॥੧॥ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਤ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣਾ ॥ ਤ੍ਰਿ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਭਰਿਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ਤ੍ਰਿ ਆਪੇ ਸਰਬ
ਸਮਾਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨੁ ਤਾਰਾਜੀ ਚਿਤੁ ਤੁਲਾ ਤੇਰੀ ਸੇਵ ਸਰਾਫੁ ਕਮਾਵਾ ॥ ਘਟ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਸੋ ਸਹੁ ਤੋਲੀ
ਛਿਨ ਬਿਧਿ ਚਿਤੁ ਰਹਾਵਾ ॥੨॥ ਆਪੇ ਕੰਡਾ ਤੋਲੁ ਤਰਾਜੀ ਆਪੇ ਤੋਲਣਹਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਦੇਖੈ ਆਪੇ ਬੂੜੈ ਆਪੇ
ਹੈ ਵਣਜਾਰਾ ॥੩॥ ਅੰਧੁਲਾ ਨੀਚ ਜਾਤਿ ਪਰਦੇਸੀ ਖਿਨੁ ਆਵੈ ਤਿਲੁ ਜਾਵੈ ॥ ਤਾ ਕੀ ਸੱਗਤਿ ਨਾਨਕੁ ਰਹਦਾ
ਕਿਤ ਕਰਿ ਮੂੜਾ ਪਾਵੈ ॥੪॥੨॥੬॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਨਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਆਰਾਧਿਆ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਗੁਰੁ ਗੁਰ ਕੇ ॥ ਸਭਿ ਇਛਾ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੀਅ ਸਭੁ ਚੂਕਾ ਡੁ ਜਮ ਕੇ
॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ॥ ਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਮਨੁ ਪਰਬੋਧਿਆ ਹਰਿ ਪੀਆ ਰਸੁ ਗਟਕੇ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਊਤਮ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇਰੀ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ॥ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸਤਸੰਗਤਿ
ਹਮ ਧੀਵਹ ਪਗ ਜਨ ਕੇ ॥੨॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਭੁ ਹੈ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਰਸੁ ਗੁਰਮਤਿ ਰਸੁ ਰਸਕੇ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ
ਜਲੁ ਪਾਇਆ ਸਭ ਲਾਥੀ ਤਿਸ ਤਿਸ ਕੇ ॥੩॥ ਹਮਰੀ ਜਾਤਿ ਪਾਤਿ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਮ ਵੇਚਿਆਂ ਸਿਰੁ ਗੁਰ ਕੇ ॥
ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪਰਿਆਂ ਗੁਰ ਚੇਲਾ ਗੁਰ ਰਾਖਹੁ ਲਾਜ ਜਨ ਕੇ ॥੪॥੧॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
ਭਜਿਆਂ ਪੁਰਖੋਤਮੁ ਸਭਿ ਬਿਨਸੇ ਢਾਲਦ ਢਲਘਾ ॥ ਭਤ ਜਨਮ ਮਰਣਾ ਮੇਟਿਆਂ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਅਸਥਿਰੁ ਸੇਵਿ
ਸੁਖਿ ਸਮਘਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਭਜੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਅਤਿ ਪਿਰਘਾ ॥ ਮੈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਧਿ ਧਰਿਆਂ ਗੁਰ ਆਗੈ ਸਿਰੁ ਵੇਚਿ
ਲੀਆਂ ਮੁਲਿ ਮਹਘਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਰਪਤਿ ਰਾਜੇ ਰੰਗ ਰਸ ਮਾਣਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਕਡਿ ਖੜੇ ਸਭਿ ਕਲਘਾ ॥
ਧਰਮ ਰਾਇ ਸਿਰਿ ਡੱਡੁ ਲਗਾਨਾ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਨੇ ਹਥ ਫਲਘਾ ॥੨॥ ਹਰਿ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਜਨ ਕਿਰਮ ਤੁਮਾਰੇ
ਸਰਣਾਗਤਿ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਤਿਪਲਘਾ ॥ ਦਰਸਨੁ ਸੰਤ ਦੇਹੁ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਪ੍ਰਭ ਲੋਚ ਪ੍ਰੂਰਿ ਜਨੁ ਤੁਮਘਾ ॥੩॥ ਤੁਮ ਸਮਰਥ
ਪੁਰਖ ਕਡੇ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਮੋ ਕਤ ਕੀਯੈ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਨਿਮਘਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਹਮ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ
ਸਦ ਘੁਮਘਾ ॥੪॥੨॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਰੰਡੁ ਹੈ ਹਰਿ ਰੰਡੁ ਮਜੀਠੈ ਰੰਡੁ ॥ ਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਹਰਿ ਰੰਗੁ

ਚਾਡਿਆ ਫਿਰਿ ਬਹੁਡਿ ਨ ਹੋਵੀ ਭੰਡੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਕਰਿ ਰੰਡੁ ॥ ਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸਿਆ
ਹਰਿ ਭੇਟਿਆ ਰਾਤ ਨਿਸੰਡੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੁਂਧ ਝਿਆਣੀ ਮਨਮੁਖੀ ਫਿਰਿ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਅੰਡੁ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ
ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਆ ਮਨਿ ਟ੍ਰ੍ਯੁ ਭਾਉ ਸਹਲਮੰਡੁ ॥੨॥ ਹਮ ਮੈਲੁ ਭਰੇ ਦੁਹਚਾਰੀਆ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਅੰਗੀ ਅੰਡੁ ॥ ਗੁਰਿ
ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਾਰਿ ਨਵਲਾਡਿਆ ਸਭਿ ਲਾਥੇ ਕਿਲਵਿਖ ਪੰਡੁ ॥੩॥ ਹਰਿ ਦੀਨਾ ਦੀਨ ਦਿਓਇਆਲ ਪ੍ਰਭੁ ਸਤਸਾਂਗਤਿ
ਮੈਲਹੁ ਸੰਡੁ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਂਗਤਿ ਹਰਿ ਰੰਗ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰੰਡੁ ॥੪॥੩॥ ਸ੍ਰੋਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਹਿ ਨਿਤ ਕਪਟੁ ਕਮਾਵਹਿ ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਬਹੁਤੇਰੇ ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ
ਹੋਈ ॥੧॥ ਗਿਆਨੀ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਕੋਰੈ ਰੰਗੁ ਕਦੇ ਨ ਚੜੈ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਜਪੁ ਤਪ ਸਾਜਮ ਵਰਤ ਕਰੇ ਪ੍ਰਯਾ ਮਨਮੁਖ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਅਂਤਰਿ ਰੋਗੁ ਮਹਾ ਅਭਿਮਾਨਾ ਟ੍ਰ੍ਯੁ ਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਈ
॥੨॥ ਬਾਹਰਿ ਭੇਖ ਬਹੁਤੁ ਚਤੁਰਾਈ ਮਨੂਆ ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਰੈ ॥ ਹਤਮੈ ਬਿਆਪਿਆ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਜੈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ
ਜੂਨੀ ਆਰੈ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਕੂੜੈ ਸੋ ਜਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਕੂੜੈ ਏਕਸੁ
ਮਾਹਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥੪॥

ਸ੍ਰੋਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨ ੧੪ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰਮਤਿ ਨਗਰੀ ਖੋਜਿ ਖੋਜਾਈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਾਁਤਿ ਵਸਾਈ ॥
ਤਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝੀ ਖਿਨ ਅਂਤਰਿ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਭ ਭੁਖ ਗਰਵਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਜੀਵਾ
ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਿਓਇਆਲਿ ਗੁਣ ਨਾਮੁ ਵ੃ਡਾਈ ॥੨॥ ਹਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਿਆਰਾ ਢੂਠਿ ਢੂਢਾਈ ॥
ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਈ ॥੩॥ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖ ਲਿਖੇ ਹਰਿ ਪਾਈ ॥ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਤੁਠਾ ਮੈਲੈ ਹਰਿ
ਮਾਈ ॥੪॥੧॥੫॥ ਸ੍ਰੋਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਮਨਿ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ
॥੧॥ ਹਰਿ ਰੰਗੀ ਰਾਤਾ ਮਨੁ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਣੇ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗ ਕਤ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗੁ ਚਲੂਲਾ ਹੋਈ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖਿ ਸੁਗਧੁ ਨਾਲ ਕੋਰਾ ਹੋਇ

॥ ਜੇ ਸਤ ਲੋਚੈ ਰੁਂਗ ਨ ਹੋਵੈ ਕੋਇ ॥੩॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸਿ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਸਮਾਵੈ
॥੪॥੨॥੬॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਹਵਾ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਹੀ ਅਧਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੀਵੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਹਰਿ
ਰਸੁ ਜਨ ਚਾਖਹੁ ਜੇ ਭਾਈ ॥ ਤਤ ਕਤ ਅਨਤ ਸਾਦਿ ਲੋਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਰਸੁ ਰਾਖਹੁ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥
ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਾਤੇ ਰੰਗਿ ਮੁਰਾਰਿ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਕਰੈ ਬਹੁਤੀ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ
॥੩॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੪॥੩॥੭॥

ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੬

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨੀਚ ਜਾਤਿ ਹਰਿ ਜਪਤਿਆ ਉਤਮ ਪਦਵੀ ਪਾਇ ॥ ਪ੍ਰਥਾਹੁ ਬਿਦਰ ਦਾਸੀ ਸੁਤੈ ਕਿਸਨੁ ਉਤਰਿਆ ਘਰਿ ਜਿਸੁ
ਜਾਇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੀ ਅਕਥ ਕਥਾ ਸੁਨਹੁ ਜਨ ਭਾਈ ਜਿਤੁ ਸਹਸਾ ਦ੍ਰੂਖ ਭੂਖ ਸਭ ਲਹਿ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਰਵਿਦਾਸੁ ਚਮਾਰੁ ਉਸਤਤਿ ਕਰੇ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਨਿਮਖ ਇਕ ਗਾਇ ॥ ਪਤਿਤ ਜਾਤਿ ਉਤਮੁ ਭਇਆ ਚਾਰਿ ਵਰਨ
ਪਾਏ ਪਾਗਿ ਆਇ ॥੨॥ ਨਾਮਦੇਤੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲੋਕੁ ਛੀਪਾ ਕਹੈ ਬੁਲਾਇ ॥ ਖਨੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਪਿਠਿ ਦੇ
ਛੀਡੇ ਹਰਿ ਨਾਮਦੇਤ ਲੀਆ ਮੁਖਿ ਲਾਇ ॥੩॥ ਜਿਤਨੇ ਭਗਤ ਹਰਿ ਸੇਵਕਾ ਮੁਖਿ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਤਿਨ ਤਿਲਕੁ
ਕਢਾਇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕਤ ਅਨਦਿਨੁ ਪਰਸੇ ਜੇ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥੪॥੧॥੮॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
ਤਿਨੀ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿਆ ਜਿਨ ਕਤ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲਿਖਤੁ ਲਿਲਾਰਾ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਬਖੀਲੀ ਕੋਈ ਕਿਆ
ਕਰੇ ਜਿਨ ਕਾ ਅੰਗੁ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਕਰਤਾਰਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਮਨ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਜਨਮ
ਜਨਮ ਕੇ ਸਭਿ ਦ੍ਰੂਖ ਨਿਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਧੁਰਿ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਤ ਬਖਸਿਆ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਭਗਤਿ
ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਮੂਰਖੁ ਹੋਵੈ ਸੁ ਉਨ ਕੀ ਰੀਸ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਮੁਹੁ ਕਾਰਾ ॥੨॥ ਸੇ ਭਗਤ ਸੇ ਸੇਵਕਾ ਜਿਨਾ
ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਸਿਰਿ ਨਿੰਦਕ ਕੈ ਪਕੈ ਛਾਰਾ ॥੩॥ ਜਿਸੁ ਘਰਿ ਵਿਰਤੀ
ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਜਗਤ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਂਤਿ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਚਹੁ ਪੀਡੀ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਬਖੀਲੀ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਐ
ਹਰਿ ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੪॥੨॥੬॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਥੈ ਹਰਿ ਆਰਾਧੀਐ ਤਿਥੈ ਹਰਿ ਮਿਨੁ

ਸਹਾਈ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹੋਰਤੁ ਬਿਧਿ ਲਿਡਿਆ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੰਚੀਐ ਭਾਈ ॥
 ਜਿ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਹਰਿ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤੀ ਸਾਂਗਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਟੀਐ ਹੋਰ ਥੈ ਹੋਰਤੁ
 ਤਪਾਇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਕਿਤੈ ਨ ਪਾਈ ॥ ਹਰਿ ਰਤਨੈ ਕਾ ਵਾਪਾਰੀਆ ਹਰਿ ਰਤਨ ਧਨੁ ਵਿਹਾਜੇ ਕਚੈ ਕੇ ਵਾਪਾਰੀਏ
 ਵਾਕਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਲਿਡਿਆ ਨ ਜਾਈ ॥੨॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਤਨੁ ਜਵੇਹਰੁ ਮਾਣਕੁ ਹਰਿ ਧਨੈ ਨਾਲਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਵੇਲੈ
 ਕਤੈ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਵੇਲੈ ਕਤੈ ਕਾ ਬੀਜਿਆ ਭਗਤ ਖਾਇ ਖਰਚਿ ਰਹੇ
 ਨਿਖੁਟੈ ਨਾਹੀ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਹਰਿ ਧਨੈ ਕੀ ਭਗਤਾ ਕਤ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈ ॥੩॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਨਿਰਭਤ
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਅਸਥਿਰੁ ਹੈ ਸਾਚਾ ਇਹੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਅਗਨੀ ਤਸਕਰੈ ਪਾਣੀਐ ਜਮਦੂਤੈ ਕਿਸੈ ਕਾ ਗਵਾਇਆ ਨ
 ਜਾਈ ॥ ਹਰਿ ਧਨ ਕਤ ਤੁਚਕਾ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵਈ ਜਮੁ ਜਾਗਾਤੀ ਢੁੰਡੁ ਨ ਲਗਾਈ ॥੪॥ ਸਾਕਤੀ ਪਾਪ ਕਰਿ ਕੈ
 ਬਿਖਿਆ ਧਨੁ ਸੰਚਿਆ ਤਿਨਾ ਇਕ ਵਿਖ ਨਾਲਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ਹਲਤੈ ਵਿਚਿ ਸਾਕਤ ਦੁਹੇਲੇ ਭਏ ਹਥਹੁ ਛੁਡਕਿ
 ਗਿਡਿਆ ਅਗੈ ਪਲਤਿ ਸਾਕਤੁ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਫੌਈ ਨ ਪਾਈ ॥੫॥ ਇਸੁ ਹਰਿ ਧਨ ਕਾ ਸਾਹੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਹੈ
 ਸੰਤਹੁ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਸੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਲਦਿ ਚਲਾਈ ॥ ਇਸੁ ਹਰਿ ਧਨੈ ਕਾ ਤੋਟਾ ਕਦੇ ਨ ਆਵਈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ
 ਗੁਰਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥੬॥੩॥੧੦॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਹਰਿ ਸੁਪ੍ਰਸਾਨੁ ਹੋਇ ਸੋ ਹਰਿ ਗੁਣਾ ਖੈ ਸੋ ਭਗਤੁ
 ਸੋ ਪਰਵਾਨੁ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਿਆ ਵਰਨੀਐ ਜਿਸ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਭਗਵਾਨੁ ॥੧॥
 ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ਜੀਤ ਲਾਇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਾਲਿ ਧਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾ ਸੇਵਾ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕੀ ਸਫਲ ਹੈ ਜਿਸ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਜੋ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਸਾਕਤ ਕਾਮਨਾ ਅਰਥ ਦੁਰਗਾਂਧ ਸਰੇਕਦੇ ਸੋ
 ਨਿਹਫਲ ਸਭੁ ਅਗਿਆਨੁ ॥੨॥ ਜਿਸ ਨੋ ਪਰਤੀਤਿ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਕਾ ਗਾਵਿਆ ਥਾਇ ਪਵੈ ਸੋ ਪਾਵੈ ਦਰਗਹ
 ਮਾਨੁ ॥ ਜੋ ਬਿਨੁ ਪਰਤੀਤੀ ਕਪਟੀ ਕੂੜੀ ਕੂੜੀ ਅਖੀ ਸੀਟਦੇ ਤਨ ਕਾ ਤਤਰਿ ਜਾਇਗਾ ਝੂਠੁ ਗੁਮਾਨੁ ॥੩॥
 ਜੇਤਾ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਤ੍ਰਾਂ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਪੁਰਖੁ ਭਗਵਾਨੁ ॥ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸੁ ਕਹੈ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਜੇਹਾ ਤ੍ਰਾਂ
 ਕਰਾਇਹਿ ਤੇਹਾ ਹਤ ਕਰੀ ਵਖਿਆਨੁ ॥੪॥੪॥੧੧॥

ਸ੍ਰੋਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੂ ੭

੧੬੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੇਰੇ ਕਵਨ ਕਵਨ ਗੁਣ ਕਹਿ ਕਹਿ ਗਾਵਾ ਤੂ ਸਾਹਿਬ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨਾ ॥ ਤੁਮਰੀ ਮਹਿਮਾ ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਤ ਤੂ
 ਠਾਕੁਰ ਊਚ ਭਗਵਾਨਾ ॥੧॥ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਰ ਸੋਈ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖੁ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਮੈ ਤੁੜ ਬਿਨੁ
 ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੈ ਤਾਣੁ ਦੀਬਾਣੁ ਤੂਹੈ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਮੈ ਤੁਧੁ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਮੈ ਹੌਰੁ ਥਾਤ
 ਨਾਹੀ ਜਿਸੁ ਪਹਿ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀ ਮੇਰਾ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਤੁੜਾ ਹੀ ਪਾਸਿ ॥੨॥ ਵਿਚੇ ਧਰਤੀ ਵਿਚੇ ਪਾਣੀ ਵਿਚਿ ਕਾਸਟ
 ਅਗਨਿ ਧਰੀਜੈ ॥ ਬਕਰੀ ਸਿੰਘੁ ਇਕਤੈ ਥਾਇ ਰਾਖੇ ਮਨ ਹਰਿ ਜਪਿ ਭਰਮੁ ਭਤ ਟ੍ਰੌਰਿ ਕੀਜੈ ॥੩॥ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ
 ਦੇਖਹੁ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਨਿਮਾਣਿਆ ਮਾਣੁ ਦੇਵਾਏ ॥ ਜਿਤ ਧਰਤੀ ਚਰਣ ਤਲੇ ਤੇ ਊਪਰਿ ਆਵੈ ਤਿਤ ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਜਨਾ
 ਜਗਤੁ ਆਣਿ ਸਭੁ ਪੈਰੀ ਪਾਏ ॥੪॥੧॥੧੨॥ ਸ੍ਰੋਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਤੂਂ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਜਾਣਹਿ ਕਿਆ ਤੁਧੁ
 ਪਹਿ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈਐ ॥ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਤੁਧੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸ੍ਰੂੜੈ ਜੇਹਾ ਕੋ ਕਰੇ ਤੇਹਾ ਕੋ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਤੂਂ
 ਅੰਤਰ ਕੀ ਬਿਧਿ ਜਾਣਹਿ ॥ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਤੁਧੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸ੍ਰੂੜੈ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਬੁਲਾਵਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭੁ ਮੋਹੁ
 ਮਾਇਆ ਸਰੀਰੁ ਹਰਿ ਕੀਆ ਵਿਚਿ ਦੇਹੀ ਮਾਨੁਖ ਭਗਤਿ ਕਰਾਈ ॥ ਇਕਨਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲਿ ਸੁਖੁ ਦੇਵਹਿ ਇਕਿ
 ਮਨਮੁਖਿ ਧੰਧੁ ਪਿਟਾਈ ॥੨॥ ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰਾ ਤੂਂ ਸਭਨਾ ਕਾ ਮੇਰੇ ਕਰਤੇ ਤੁਧੁ ਸਭਨਾ ਸਿਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ॥ ਜੇਹੀ
 ਤੂਂ ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਤੇਹਾ ਕੋ ਹੋਵੈ ਬਿਨੁ ਨਦਰੀ ਨਾਹੀ ਕੋ ਭੇਖੁ ॥੩॥ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਤੂਂਹੈ ਜਾਣਹਿ ਸਭ ਤੁਧਨੋ ਨਿਤ
 ਧਿਆਏ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸ ਨੋ ਤੂਂ ਮੇਲਹਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੋ ਥਾਇ ਪਾਏ ॥੪॥੨॥੧੩॥ ਸ੍ਰੋਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਜਿਨ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਵਸਿਆ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਿਨ ਕੇ ਸਭਿ ਰੋਗ ਗਵਾਏ ॥ ਤੇ ਮੁਕਤ ਭਏ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ
 ਤਿਨ ਪਵਿਤੁ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਏ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਹਰਿ ਜਨ ਆਰੋਗ ਭਏ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਜਿਨਾ ਜਪਿਆ ਮੇਰਾ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਤਿਨ ਕੇ ਹਉਮੈ ਰੋਗ ਗਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹਾਦੇਤ ਤੈ ਗੁਣ ਰੋਗੀ ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਕਾਰ ਕਮਾਈ
 ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਏ ਤਿਸਹਿ ਨ ਚੇਤਹਿ ਬਪੁੜੇ ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥੨॥ ਹਉਮੈ ਰੋਗੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਬਿਆਪਿਆ

ਤਿਨ ਕਤ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਭਾਰੀ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਛੂਟੈ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੩॥
ਜਿਨਿ ਸਿਸਟਿ ਸਾਜੀ ਸੋਈ ਹਰਿ ਜਾਣੈ ਤਾ ਕਾ ਰੂਪੁ ਅਪਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਵੇਖਿ ਹਰਿ ਬਿਗਸੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮ
ਬੀਚਾਰੇ ॥੪॥੩॥੧੪॥ ਸ੍ਰਵੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਕੀਤਾ ਕਰਣਾ ਸਰਬ ਰਯਾਈ ਕਿਛੁ ਕੀਚੈ ਜੇ ਕਰਿ ਸਕੀਐ ॥ ਆਪਣਾ
ਕੀਤਾ ਕਿਛੁ ਨ ਹੋਵੈ ਜਿਤ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਖੀਐ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਭੁ ਕੋ ਤੈਰੈ ਵਸਿ ॥ ਅਸਾ ਜੋਝੁ ਨਾਹੀ ਜੇ
ਕਿਛੁ ਕਰਿ ਹਮ ਸਾਕਹ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਬਖਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭੁ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਦੀਆ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਕਾਰੈ
ਲਾਇਆ ॥ ਜੇਹਾ ਤ੍ਰਾਂ ਹੁਕਮੁ ਕਰਹਿ ਤੇਹੇ ਕੋ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਜੇਹਾ ਤੁਧੁ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਪੰਚ ਤਤੁ ਕਰਿ ਤੁਧੁ
ਸ੍ਰਵੀ ਸਭ ਸਾਜੀ ਕੋਈ ਛੇਵਾ ਕਰਿਤ ਜੇ ਕਿਛੁ ਕੀਤਾ ਹੋਵੈ ॥ ਇਕਨਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲਿ ਤ੍ਰਾਂ ਬੁਝਾਵਹਿ ਇਕਿ ਮਨਮੁਖਿ
ਕਰਹਿ ਸਿ ਰੋਵੈ ॥੩॥ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਹਤ ਆਖਿ ਨ ਸਾਕਾ ਹਤ ਸੂਰਖੁ ਸੁਗਧੁ ਨੀਚਾਣੁ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ
ਹਰਿ ਬਖਸਿ ਲੈ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਸਰਣਾਗਤਿ ਪਇਆ ਅਜਾਣੁ ॥੪॥੪॥੧੫॥੨੪॥

ਰਾਗ ਸ੍ਰਵੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਬਾਜੀਗਰਿ ਜੈਸੇ ਬਾਜੀ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਭੇਖ ਦਿਖਲਾਈ ॥ ਸਾਁਗੁ ਉਤਾਰਿ ਥੰਮਿਆ ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਤਬ ਏਕੋ
ਏਕਕਾਰਾ ॥੧॥ ਕਵਨ ਰੂਪ ਦੂਸਟਿਆ ਬਿਨਸਾਇਆ ॥ ਕਤਹਿ ਗਿਆਓ ਤਹੁ ਕਤ ਤੇ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਜਲ ਤੇ ਊਠਹਿ ਅਨਿਕ ਤਰੰਗਾ ॥ ਕਨਿਕ ਭੂਖਨ ਕੀਨੇ ਬਹੁ ਰੰਗਾ ॥ ਬੀਜੁ ਬੀਜਿ ਦੇਖਿਆ ਬਹੁ ਪਰਕਾਰਾ ॥ ਫਲ
ਪਾਕੇ ਤੇ ਏਕਕਾਰਾ ॥੨॥ ਸਹਸ ਘਟਾ ਮਹਿ ਏਕੁ ਆਕਾਸੁ ॥ ਘਟ ਫ੍ਰੋਟੇ ਤੇ ਓਹੀ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥ ਭਰਮ ਲੋਭ ਮੋਹ
ਮਾਇਆ ਵਿਕਾਰ ॥ ਭਰਮ ਛੂਟੇ ਤੇ ਏਕਕਾਰ ॥੩॥ ਓਹੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਬਿਨਸਤ ਨਾਹੀ ॥ ਨਾ ਕੋ ਆਵੈ ਨਾ ਕੋ ਜਾਹੀ
॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਹਤਮੈ ਮਲੁ ਧੋਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਪਰਮ ਗਤਿ ਹੋਈ ॥੪॥੧॥ ਸ੍ਰਵੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੀਤਾ
ਲੋਡਹਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭ ਹੋਇ ॥ ਤੁੜਨ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਵਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਜੋ ਜਨੁ ਸੇਵੇ ਤਿਸੁ ਪੂਰਨ ਕਾਜ ॥ ਦਾਸ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਰਾਖਹੁ
ਲਾਜ ॥੧॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣ ਪੂਰਨ ਦਇਆਲਾ ॥ ਤੁੜਨ ਬਿਨੁ ਕਵਨੁ ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ
ਮਹੀਅਲਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਦ੍ਰਵਿ ॥ ਲੋਕ ਪਤੀਆਰੈ ਕਿਛੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਸਾਚਿ

ਲਗੈ ਤਾ ਹਤਮੈ ਜਾਈਐ ॥੨॥ ਜਿਸ ਨੋ ਲਾਡਿ ਲਏ ਸੋ ਲਾਗੈ ॥ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਅੰਤਰਿ ਤਿਸੁ ਜਾਗੈ ॥ ਦੁਰਮਤਿ
 ਜਾਡਿ ਪਰਮ ਪਟੁ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥੩॥ ਟੁਡਿ ਕਰ ਜੋਡਿ ਕਰਤ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਤੁਧੁ
 ਭਾਵੈ ਤਾ ਆਣਹਿ ਰਾਸਿ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨੀ ਭਗਤੀ ਲਾਡਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਧਿਆਡਿ ॥੪॥੨॥
 ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਧਨੁ ਸੋਹਾਗਨਿ ਜੋ ਪ੍ਰਭੂ ਪਛਾਨੈ ॥ ਮਾਨੈ ਹੁਕਮੁ ਤਜੈ ਅਭਿਮਾਨੈ ॥ ਪ੍ਰਤ ਸਿਤ ਰਾਤੀ ਰਲੀਆ
 ਮਾਨੈ ॥੧॥ ਸੁਨਿ ਸਖੀਏ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਣ ਨੀਸਾਨੀ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਤਜਿ ਲਾਜ ਲੋਕਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਕਤ ਸਮਝਾਵੈ ॥ ਸੋਈ ਕਮਾਵੈ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥ ਸਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਅੰਕਿ ਸਮਾਵੈ ॥੨॥ ਗਰਬਿ
 ਗਹੇਲੀ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਵੈ ਜਬ ਰੈਣ ਬਿਹਾਵੈ ॥ ਕਰਮਹੀਣਿ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੩॥
 ਬਿਨਤ ਕਰੀ ਜੇ ਜਾਣਾ ਦੂਰਿ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਵਿਨਾਸੀ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗਾਵੈ ਦੇਖਿ ਹਦੂਰਿ ॥੪॥੩॥
 ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗ੍ਰਹੁ ਵਸਿ ਗੁਰਿ ਕੀਨਾ ਹਤ ਘਰ ਕੀ ਨਾਰਿ ॥ ਦਸ ਦਾਸੀ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਭਤਾਰਿ ॥ ਸਗਲ
 ਸਮਗ੍ਰੀ ਮੈ ਘਰ ਕੀ ਜੋਡੀ ॥ ਆਸ ਪਿਆਸੀ ਪਿਰ ਕਤ ਲੋਡੀ ॥੧॥ ਕਵਨ ਕਹਾ ਗੁਨ ਕਂਤ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸੁਘੜ
 ਸਰੂਪ ਦਿੱਤਾਲ ਮੁਰਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤੁ ਸੀਗਾਰੁ ਭਤ ਅੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਤੰਬੋਲੁ ਮੁਖਿ
 ਖਾਇਆ ॥ ਕਾਮਣ ਕਰਿ ਰੀਝਾਇਆ ॥ ਵਸਿ ਕਰਿ ਲੀਨਾ ਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ਮੰਦਰੁ ਮੇਰਾ ॥ ਸਭ ਕਾਮਣ
 ਕਰਿ ਕੰਤੁ ਰੀਝਾਇਆ ॥ ਵਸਿ ਕਰਿ ਲੀਨਾ ਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ਮੰਦਰੁ ਮੇਰਾ ॥ ਸਭ ਕਾਮਣ
 ਤਿਆਗੀ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮੇਰਾ ॥੩॥ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਸ੍ਰੂ ਜੋਤਿ ਤੁਜੀਆਰਾ ॥ ਸੇਜ ਵਿਛਾਈ ਸਰਧ ਅਪਾਰਾ ॥
 ਨਵ ਰੰਗ ਲਾਲੁ ਸੇਜ ਰਾਵਣ ਆਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪਿਰ ਧਨ ਮਿਲਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੪॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਤਮਕਿਓ ਹੀਤ ਮਿਲਨ ਪ੍ਰਭ ਤਾਈ ॥ ਖੋਜਤ ਚਰਿਓ ਦੇਖਉ ਪ੍ਰਤ ਜਾਈ ॥ ਸੁਨਤ ਸਦੇਸਰੇ ਪ੍ਰਤ ਗ੍ਰਹਿ ਸੇਜ
 ਵਿਛਾਈ ॥ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਆਇਓ ਤਤ ਨਦਰਿ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥ ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਹੀਅਰੇ ਥੀਰੈ ਨਿਮਾਨੋ ॥ ਮਿਲੁ ਸਾਜਨ
 ਹਤ ਤੁਝੁ ਕੁਰਬਾਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਕਾ ਸੇਜ ਵਿਛੀ ਧਨ ਕੰਤਾ ॥ ਧਨ ਸੂਤੀ ਪਿਰੁ ਸਦ ਜਾਗੰਤਾ ॥ ਪੀਓ ਮਦਰੋ
 ਧਨ ਮਤਵੰਤਾ ॥ ਧਨ ਜਾਗੈ ਜੇ ਪਿਰੁ ਬੋਲਮਤਾ ॥੨॥ ਭੰਡੀ ਨਿਰਾਸੀ ਬਹੁਤੁ ਦਿਨ ਲਾਗੇ ॥ ਦੇਸ ਦਿਸ਼ਤਰ ਮੈ ਸਗਲੇ

झागे ॥ खिनु रहनु न पावउ बिनु पग पागे ॥ होइ कृपालु प्रभ मिलह सभागे ॥੩॥ भड़िओ कृपालु
सतसंगि मिलाइआ ॥ बूझी तपति घरहि पिरु पाइआ ॥ सगल सीगार हुणि मुझाहि सुहाइआ ॥ कहु
नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥੪॥ जह देखा तह पिरु है भाई ॥ खोलिओ कपाटु ता मनु ठहराई ॥੧॥ रहाउ
दूजा ॥੫॥ सूही महला ੫ ॥ किआ गुण तेरे सारि समाली मोहि निरगुन के दातारे ॥ बै खरीदु किआ करे
चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥੧॥ लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥੧॥
रहाउ ॥ प्रभु दाता मोहि ढीनु भेखारी तुम् सदा सदा उपकारे ॥ सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर
अगम अपारे ॥੨॥ किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ मिति नही
पाईਐ अंतु न लहीਐ मनु तरसै चरनारे ॥੩॥ पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ॥
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥੪॥੬॥

सूही महला ੫ ਘਰੁ ੩

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੇਵਾ ਥੋਰੀ ਮਾਗਨੁ ਬਹੁਤਾ ॥ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵੈ ਕਹਤੋ ਪਹੁਤਾ ॥੧॥ ਜੋ ਪੂਅ ਮਾਨੇ ਤਿਨ ਕੀ ਰੀਸਾ ॥ ਕੂਝੇ ਸੂਰਖ ਕੀ
ਹਾਠੀਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਭੇਖ ਦਿਖਾਵੈ ਸਚੁ ਨ ਕਮਾਵੈ ॥ ਕਹਤੋ ਮਹਲੀ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥ ਅਤੀਤੁ ਸਦਾਏ
ਮਾਇਆ ਕਾ ਮਾਤਾ ॥ ਮਨਿ ਨਹੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਹੈ ਮੁਖਿ ਰਾਤਾ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨਤ ਸੁਨੀਜੈ ॥ ਕੁਚਲੁ
ਕਠੋਰੁ ਕਾਮੀ ਸੁਕਤੁ ਕੀਜੈ ॥੪॥ ਦਰਸਨ ਦੇਖੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਤੁਮ् ਸੁਖਦਾਤੇ ਪੁਰਖ ਸੁਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ
ਦੂਜਾ ॥੧॥੭॥ ਸूਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬੁਰੇ ਕਾਮ ਕਉ ਊਠਿ ਖਲੋਇਆ ॥ ਨਾਮ ਕੀ ਬੇਲਾ ਪੈ ਪੈ ਸੋਇਆ ॥੧॥
ਅਤਸਰੁ ਅਪਨਾ ਬੂੜੈ ਨ ਇਆਨਾ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਰੰਗ ਲਪਟਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਲੋਭ ਲਹਰਿ ਕਉ ਬਿਗਸਿ
ਫੂਲਿ ਬੈਠਾ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕਾ ਦਰਸੁ ਨ ਡੀਠਾ ॥੨॥ ਕਬਹੂ ਨ ਸਮਝੈ ਅਗਿਆਨੁ ਗਵਾਰਾ ॥ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ
ਲਪਟਿਓ ਜੰਜਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਖੈ ਨਾਦ ਕਰਨ ਸੁਣਿ ਭੀਨਾ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਨਤ ਆਲਸੁ ਮਨਿ ਕੀਨਾ ॥੩॥
ਦੂਸਟਿ ਨਾਹੀ ਰੇ ਪੇਖਤ ਅਂਧੇ ॥ ਛੋਡਿ ਜਾਹਿ ਝੂਠੇ ਸਭਿ ਧੰਧੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਬਖਸ ਕਰੀਜੈ ॥

करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ॥੪॥ ਤਤ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ਜਤ ਹੋਈਐ ਰੇਨਾ ॥ ਜਿਸਹਿ ਬੁਝਾਏ ਤਿਸੁ ਨਾਮੁ
 ਲੈਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥੨॥੮॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਘਰ ਮਹਿ ਠਾਕੁਰੁ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਗਲ ਮਹਿ ਪਾਹਣੁ ਲੈ
 ਲਟਕਾਵੈ ॥੧॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਸਾਕਤੁ ਫਿਰਤਾ ॥ ਨੀਂ ਬਿਰੋਲੈ ਖਪਿ ਖਪਿ ਮਰਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਸੁ ਪਾਹਣ
 ਕਤ ਠਾਕੁਰੁ ਕਹਤਾ ॥ ਓਹੁ ਪਾਹਣੁ ਲੈ ਤਸ ਕਤ ਢੁਬਤਾ ॥੨॥ ਗੁਨਹਗਾਰ ਲੂਣ ਹਰਾਮੀ ॥ ਪਾਹਣ ਨਾਵ ਨ
 ਪਾਰਗਿਰਾਮੀ ॥੩॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰੁ ਜਾਤਾ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਨ ਬਿਧਾਤਾ ॥੪॥੩॥੬॥
 ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਲਾਲਨੁ ਰਾਵਿਆ ਕਵਨ ਗਤੀ ਰੀ ॥ ਸਖੀ ਬਤਾਵਹੁ ਮੁਝਾਹਿ ਮਤੀ ਰੀ ॥੧॥ ਸ੍ਰਹਬ ਸ੍ਰਹਬ
 ਸ੍ਰਹਵੀ ॥ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਤੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਾਵ ਮਲੋਵਤ ਸੰਗਿ ਨੈਨ ਭਤੀਰੀ ॥ ਜਹਾ ਪਠਾਵਹੁ ਜਾਁਤ
 ਤਤੀ ਰੀ ॥੨॥ ਜਧ ਤਧ ਸੰਜਮ ਦੇਤ ਜਤੀ ਰੀ ॥ ਇਕ ਨਿਮਖ ਮਿਲਾਵਹੁ ਮੋਹਿ ਪ੍ਰਾਨਪਤੀ ਰੀ ॥੩॥ ਮਾਣੁ ਤਾਣੁ
 ਅਛਿਕੁਧਿ ਹਤੀ ਰੀ ॥ ਸਾ ਨਾਨਕ ਸੋਹਾਗਵਤੀ ਰੀ ॥੪॥੪॥੧੦॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੍ਰਨ ਜੀਕਨੁ ਤ੍ਰਨ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥
 ਤੁੜਾ ਹੀ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਮਨੁ ਸਾਧਾਰਾ ॥੧॥ ਤ੍ਰਨ ਸਾਜਨੁ ਤ੍ਰਨ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮੇਰਾ ॥ ਚਿਤਹਿ ਨ ਬਿਸਰਹਿ ਕਾਹੂ ਬੇਰਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਬੈ ਖਰੀਦੁ ਹਤ ਦਾਸਰੇ ਤੇਰਾ ॥ ਤ੍ਰਨ ਭਾਰੇ ਠਾਕੁਰੁ ਗੁਣੀ ਗਹੇਰਾ ॥੨॥ ਕੋਟਿ ਦਾਸ ਜਾ ਕੈ ਦਰਬਾਰੇ ॥ ਨਿਮਖ
 ਨਿਮਖ ਕਵਸੈ ਤਿਨ੍ ਨਾਲੇ ॥੩॥ ਹਤ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ॥ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਨਾਨਕ ਸੰਗਿ ਬਚੇਰਾ ॥੪॥੫॥
 ੧੧॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸ੍ਰਹਖ ਮਹਲ ਜਾ ਕੈ ਊਚ ਦੁਆਰੇ ॥ ਤਾ ਮਹਿ ਵਾਸਹਿ ਭਗਤ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਸਹਜ ਕਥਾ
 ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਅਤਿ ਮੀਠੀ ॥ ਵਿਰਲੈ ਕਾਹੂ ਨੈਕਹੁ ਡੀਠੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਹ ਗੀਤ ਨਾਦ ਅਖਾਰੇ ਸੰਗਾ ॥ ਊਹਾ ਸੰਤ
 ਕਰਹਿ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥੨॥ ਤਹ ਮਰਣੁ ਨ ਜੀਵਣੁ ਸੋਗੁ ਨ ਹਰਖਾ ॥ ਸਾਚ ਨਾਮ ਕੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵਰਖਾ ॥੩॥ ਗੁਹਜ
 ਕਥਾ ਇਹ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥੪॥੬॥੧੨॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕੈ ਦਰਸਿ ਪਾਪ
 ਕੋਟਿ ਉਤਾਰੇ ॥ ਭੇਟਤ ਸੰਗਿ ਇਹੁ ਭਵਜਲੁ ਤਾਰੇ ॥੧॥ ਓਡਿ ਸਾਜਨ ਓਡਿ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ॥ ਜੋ ਹਮ ਕਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਚਿਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸੁਨਤ ਸੁਖ ਸਾਰੇ ॥ ਜਾ ਕੀ ਟਹਲ ਜਮਟੂਤ ਬਿਦਾਰੇ ॥੨॥ ਜਾ ਕੀ ਧੀਰਕ
 ਇਸੁ ਮਨਹਿ ਸਧਾਰੇ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਮੁਖ ਤਜਲਾਰੇ ॥੩॥ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਸਰਣਿ

ਨਾਨਕ ਤਿਨ੍ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੪॥੭॥੧੩॥ ਸ੍ਰਵੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਹਣੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵਾ ॥ ਊਠਿ
 ਸਿਧਾਰੇ ਕਰਿ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਵਾ ॥੧॥ ਜੀਵਤ ਪੇਖੇ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਿਨ੍ ਦਰਸਨੁ
 ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਦਿਸਾਹ ਸਾਹ ਵਾਪਾਰੀ ਮਰਨਾ ॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਕਾਲਹਿ ਖਰਨਾ ॥੨॥ ਕੂੰਡੈ ਮੋਹਿ
 ਲਪਟਿ ਲਪਟਾਨਾ ॥ ਛੋਡਿ ਚਲਿਆ ਤਾ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਨਾ ॥੩॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਕਰਹੁ ਦਾਤਿ ॥
 ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਜਪੀ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥੪॥੮॥੧੪॥ ਸ੍ਰਵੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਤੁਮਹਿ ਬਸਾਰੇ ॥ ਸਗਲ
 ਸਮਗੀ ਸੂਤਿ ਤੁਮਾਰੇ ॥੧॥ ਤੁਂ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤੁਂ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੇ ॥ ਤੁਮ ਹੀ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਮਨੁ ਬਿਗਸਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਹਾਰੇ ॥ ਓਟ ਗਹੀ ਅਥ ਸਾਥ ਸੰਗਾਰੇ ॥੨॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਅਲਖ ਅਪਾਰੇ ॥
 ਨਾਨਕੁ ਸਿਮਰੈ ਦਿਨੁ ਰੈਨਾਰੇ ॥੩॥੬॥੧੫॥ ਸ੍ਰਵੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਵਨ ਕਾਜ ਮਾਇਆ ਵਡਿਆਰੈ ॥ ਜਾ ਕਤ
 ਬਿਨਸਤ ਬਾਰ ਨ ਕਾਈ ॥੧॥ ਇਹੁ ਸੁਪਨਾ ਸੋਵਤ ਨਹੀ ਜਾਨੈ ॥ ਅਚੇਤ ਬਿਵਸਥਾ ਮਹਿ ਲਪਟਾਨੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ
 ॥ ਮਹਾ ਮੋਹਿ ਮੋਹਿਆ ਗਾਵਾਰਾ ॥ ਪੇਖਤ ਪੇਖਤ ਊਠਿ ਸਿਧਾਰਾ ॥੨॥ ਊਚ ਤੇ ਊਚ ਤਾ ਕਾ ਦਰਖਾਰਾ ॥ ਕਈ ਜੰਤ
 ਬਿਨਾਹਿ ਤਪਾਰਾ ॥੩॥ ਟ੍ਰੂਸਰ ਹੋਆ ਨਾ ਕੋ ਹੋਈ ॥ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਏਕੋ ਸੋਈ ॥੪॥੧੦॥੧੬॥ ਸ੍ਰਵੀ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਤਾ ਕਤ ਹਤ ਜੀਵਾ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਤੇਰੇ ਧੋਇ ਧੋਇ ਪੀਵਾ ॥੧॥ ਸੋ ਹਰਿ ਮੇਰਾ
 ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗੁ ਸੁਆਮੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਾ ॥ ਆਠ
 ਪਹਰ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ॥੨॥ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਲੀਲਾ ਮਨਿ ਆਨੰਦਾ ॥ ਗੁਣ ਅਪਾਰ ਪ੍ਰਭ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥੩॥ ਜਾ ਕੈ
 ਸਿਮਰਨਿ ਕਛੁ ਭਤ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਾਪੈ ॥੪॥੧੧॥੧੭॥ ਸ੍ਰਵੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕੈ
 ਬਚਨਿ ਰਿਦੈ ਧਿਆਨੁ ਧਾਰੀ ॥ ਰਸਨਾ ਜਾਪੁ ਜਪਤ ਬਨਵਾਰੀ ॥੧॥ ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਦਰਸਨ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
 ਚਰਣ ਕਮਲ ਮਨ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਨਮ ਮਰਣ ਨਿਵਾਰੀ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਕਥਾ ਸੁਣਿ ਕਰਨ
 ਅਧਾਰੀ ॥੨॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਮੋਹ ਤਜਾਰੀ ॥ ਵ੍ਰੂਪੁ ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਸੁਚਾਰੀ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਤਤੁ
 ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਪਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੀ ॥੪॥੧੨॥੧੮॥ ਸ੍ਰਵੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਮਗਨ ਅਪਰਾਧੀ ॥

करणहार की सेव न साधी ॥੧॥ पतित पावन प्रभ नाम तुमारे ॥ राखि लेहु मोहि निरगुनीआरे ॥੧॥
 रहाउ ॥ तूं दाता प्रभ अंतरजामी ॥ काची देह मानुख अभिमानी ॥੨॥ सुआद बाद ईरख मद माइआ
 ॥ इन संगि लागि रतन जनमु गवाइआ ॥੩॥ दुख भंजन जगजीवन हरि राइआ ॥ सगल तिआगि
 नानकु सरणाइआ ॥੪॥੧੩॥੧੬॥ सूही महला ੫ ॥ पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीअै
 नाही ॥ निकटि वसतु कउ जाणै द्वैरे पापी पाप कमाही ॥੧॥ सो किछु करि जितु छुटहि परानी ॥ हरि
 हरि नामु जपि अंमृत बानी ॥੨॥ रहाउ ॥ घोर महल सदा रंगि राता ॥ संगि तुमारै कछू न जाता
 ॥੨॥ रखहि पोचारि माटी का भाँडा ॥ अति कुचील मिलै जम डाँडा ॥੩॥ काम क्रोधि लोभि मोहि बाधा ॥
 महा गरत महि निघरत जाता ॥੪॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ डूबत पाहन प्रभ मेरे लीजै ॥
 ੫॥੧੪॥੨੦॥ सूही महला ੫ ॥ जीवत मरै बुझै प्रभु सोइ ॥ तिसु जन करमि परापति होइ ॥੧॥ सुणि
 साजन इउ दुतरु तरीअै ॥ मिलि साधू हरि नामु उचरीअै ॥੧॥ रहाउ ॥ एक बिना टूजा नही जानै ॥
 घट घट अंतरि पारब्रहमु पछानै ॥੨॥ जो किछु करै सोई भल मानै ॥ आदि अंत की कीमति जानै ॥੩॥
 कहु नानक तिसु जन बलिहारी ॥ जा कै हिरदै वसहि मुरारी ॥੪॥੧੫॥੨੧॥ सूही महला ੫ ॥ गुरु
 परमेसरु करणैहारु ॥ सगल सृसटि कउ दे आधारु ॥੧॥ गुर के चरण कमल मन धिआइ ॥ दूखु
 दरदु इसु तन ते जाइ ॥੧॥ रहाउ ॥ भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥੨॥
 गुर की सेवा करहु दिनु राति ॥ सूख सहज मनि आवै साँति ॥੩॥ सतिगुर की रेणु वडभागी पावै ॥
 नानक गुर कउ सद बलि जावै ॥੪॥੧੬॥੨੨॥ सूही महला ੫ ॥ गुर अपुने ऊपरि बलि जाईअै ॥
 आठ पहर हरि हरि जसु गईअै ॥੧॥ सिमरउ सो प्रभु अपना सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी
 ॥੧॥ रहाउ ॥ चरण कमल सिउ लागी प्रीति ॥ साची पूरन निरमल रीति ॥੨॥ संत प्रसादि वसै
 मन माही ॥ जनम जनम के किलविख जाही ॥੩॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानकु मागै

ਸਤੰ ਰਵਾਲਾ ॥੪॥੧੭॥੨੩॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਜੀਵਾ ਗੁਰ ਤੇਰਾ ॥ ਪੂਰਨ ਕਰਮੁ ਹੋਇ ਪ੍ਰਭ
 ਮੇਰਾ ॥੧॥ ਇਹ ਬੇਨਤੀ ਸੁਣਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥ ਦੇਹਿ ਨਾਮੁ ਕਰਿ ਅਪਣੇ ਚੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਪਣੀ ਸਰਣਿ ਰਾਖੁ
 ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਜਾਤੇ ॥੨॥ ਸੁਨਹੁ ਬਿਨਤ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਵਸਹਿ ਮੇਰੈ
 ਚੀਤਾ ॥੩॥ ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਰੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਪੂਰਨ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥੪॥੧੮॥੨੪॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਮੀਤੁ ਸਾਜਨੁ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਭਾਈ ॥ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਤ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਜਤਿ ਮੇਰੀ ਪਤਿ ਮੇਰੀ ਧਨੁ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ॥ ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨਦ ਬਿਸਰਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਪਿ ਪਹਿਰਿ ਸਨਾਹ ॥ ਕੋਟਿ ਆਵਧ ਤਿਸੁ
 ਬੇਧਤ ਨਾਹਿ ॥੨॥ ਹਰਿ ਚਰਨ ਸਰਣ ਗੜ ਕੋਟ ਹਮਾਰੈ ॥ ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਜਮੁ ਤਿਸੁ ਨ ਬਿਦਾਰੈ ॥੩॥ ਨਾਨਕ
 ਦਾਸ ਸਦਾ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਸੇਵਕ ਸਤੰ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੁਰਾਰੀ ॥੪॥੧੯॥੨੫॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਣ ਗੋਪਾਲ
 ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਨਿਤ ਗਾਹਾ ॥ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਮੰਗਲ ਸੁਖ ਤਾਹਾ ॥੧॥ ਚਲੁ ਸਖੀਏ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਵਣ ਜਾਹਾ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ
 ਕੀ ਚਰਣੀ ਪਾਹਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਿ ਬੇਨਤੀ ਜਨ ਧੂਰਿ ਬਾਛਾਹਾ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਲਾਹਾਂ ॥੨॥
 ਮਨੁ ਤਨੁ ਪ੍ਰਾਣ ਜੀਤ ਅਰਪਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਕਟਾਹਾਂ ॥੩॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਕਰਹੁ
 ਤਤਸਾਹਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਹਰਿ ਸਰਣਿ ਸਮਾਹਾ ॥੪॥੨੦॥੨੬॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੈਕੁਠੁ ਨਗਰੁ ਜਹਾ
 ਸਤੰ ਵਾਸਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਚਰਣ ਕਮਲ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਨਿਵਾਸਾ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਤਨ ਤੁੜ੍ਹੁ ਸੁਖੁ ਦਿਖਲਾਵਤ ॥ ਹਰਿ
 ਅਨਿਕ ਬਿੰਜਨ ਤੁੜ੍ਹੁ ਭੋਗ ਭੁੰਚਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਭੁੰਚੁ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਅਚਰਜ ਸਾਦ ਤਾ ਕੇ
 ਬਰਨੇ ਨ ਜਾਹੀ ॥੨॥ ਲੋਭੁ ਮੂਆ ਤ੃ਸਨਾ ਬੁੜਿ ਥਾਕੀ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਸਰਣਿ ਜਨ ਤਾਕੀ ॥੩॥ ਜਨਮ
 ਜਨਮ ਕੇ ਭੈ ਮੋਹ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੇ ॥੪॥੨੧॥੨੭॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਨਿਕ
 ਕੀਂਗ ਦਾਸ ਕੇ ਪਰਹਿਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨਾ ਕਰਿਆ ॥੧॥ ਤੁਮਹਿ ਛਡਾਇ ਲੀਓ ਜਨੁ ਅਪਨਾ ॥
 ਤਰਝਿ ਪਰਿਆਂ ਜਾਲੁ ਜਗੁ ਸੁਪਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਰਬਤ ਦੋਖ ਮਹਾ ਬਿਕਰਾਲਾ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਢੂਰਿ
 ਕੀਏ ਦਿਆਲਾ ॥੨॥ ਸੋਗ ਰੋਗ ਬਿਪਤਿ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ॥ ਢੂਰਿ ਭੰਡੇ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੩॥ ਦੂਸਟਿ

ਧਾਰਿ ਲੀਨੋ ਲਡਿ ਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਚਰਣ ਗਹੇ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਇ ॥੪॥੨੨॥੨੮॥
 ਛਡਾਇ ਟੁਨੀ ਜੋ ਲਾਏ ॥ ਟੁਹੀ ਸਰਈ ਖੁਨਾਮੀ ਕਹਾਏ ॥੧॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਆਪਣੀ ਕੁਦਰਤਿ
 ਆਪੇ ਜਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਚਾ ਧਰਮੁ ਪੁਨ੍ਨੁ ਭਲਾ ਕਰਾਏ ॥ ਦੀਨ ਕੈ ਤੋਸੈ ਟੁਨੀ ਨ ਜਾਏ ॥੨॥ ਸਰਬ ਨਿਰਂਤਰਿ
 ਏਕੋ ਜਾਗੈ ॥ ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਇਆ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਕੋ ਲਾਗੈ ॥੩॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ
 ਬੋਲਾਇਆ ਤੇਰਾ ॥੪॥੨੩॥੨੯॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਾਤਹਕਾਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਚਾਰੀ ॥ ਈਤ ਊਤ ਕੀ ਓਟ
 ਸਚਾਰੀ ॥੧॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਵਹਿ ਮਨ ਕੇ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ
 ਰੈਣ ਦਿਨੁ ਗਾਉ ॥ ਜੀਵਤ ਮਰਤ ਨਿਹਚਲੁ ਪਾਵਹਿ ਥਾਉ ॥੨॥ ਸੋ ਸਾਹੁ ਸੇਵਿ ਜਿਤੁ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਖਾਤ
 ਖਰਚਤ ਸੁਖਿ ਅਨਦਿ ਵਿਹਾਵੈ ॥੩॥ ਜਗਜੀਵਨ ਪੁਰਖੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਇਆ ॥੪॥੨੪॥੩੦॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਜਬ ਭਏ ਦਿਇਆਲ ॥ ਟੁਖ ਬਿਨਸੇ ਪੂਰਨ ਭੰਡ
 ਘਾਲ ॥੧॥ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਜੀਵਾ ਦਰਸੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਜਾਈ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਠਾਕੁਰ ਕਵਨੁ
 ਹਮਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਣਿ ਆਈ ॥ ਪੂਰਬ ਕਰਮਿ ਲਿਖਤ ਧੁਰਿ ਪਾਈ ॥੨॥ ਜਪਿ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਚਰਜੁ ਪਰਤਾਪ ॥ ਜਾਲਿ ਨ ਸਾਕਹਿ ਤੀਨੇ ਤਾਪ ॥੩॥ ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਸਰਹਿ ਹਰਿ ਚਰਣ
 ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਮਾਗੈ ਦਾਨੁ ਪਿਆਰੇ ॥੪॥੨੫॥੩੧॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੇ ਸੰਜੋਗ ਕਰਹੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ॥
 ਜਿਤੁ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਚਾਰੇ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲਾ ॥ ਸਾਧ ਗਾਵਹਿ ਗੁਣ ਸਦਾ ਰਸਾਲਾ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੀਵਨ ਰੂਪੁ ਸਿਮਰਣੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਾ ॥ ਜਿਸੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹਿ ਬਸਹਿ ਤਿਸੁ ਨੇਰਾ ॥੨॥ ਜਨ ਕੀ ਭੂਖ
 ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਅਹਾਰੁ ॥ ਤ੍ਰਿ ਦਾਤਾ ਪ੍ਰਭ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥੩॥ ਰਾਮ ਰਮਤ ਸੰਤਨ ਸੁਖੁ ਮਾਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦੇਵਨਹਾਰ
 ਸੁਜਾਨਾ ॥੪॥੨੬॥੩੨॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਹਤੀ ਜਾਤ ਕਦੇ ਦੂਸਟਿ ਨ ਧਾਰਤ ॥ ਮਿਥਿਆ ਮੋਹ ਬੰਧਹਿ ਨਿਤ
 ਪਾਰਚ ॥੧॥ ਮਾਧਵੇ ਭਜੁ ਦਿਨ ਨਿਤ ਰੈਣੀ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜੀਤਿ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਤ
 ਬਿਕਾਰ ਦੋਤੁ ਕਰ ਝਾਰਤ ॥ ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਰਿਦ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਧਾਰਤ ॥੨॥ ਭਰਣ ਪੋਖਣ ਸੰਗਿ ਅਤਥ ਬਿਹਾਣੀ ॥

जै जगदीस की गति नहीं जाणी ॥३॥ सरणि समरथ अगोचर सुआमी ॥ उधरु नानक प्रभ अंतरजामी
 ॥४॥२७॥३३॥ सूही महला ५ ॥ साधसंगि तरै भै सागर ॥ हरि हरि नामु सिमरि रतनागरु ॥१॥
 सिमरि सिमरि जीवा नाराइण ॥ दूख रोग सोग सभि बिनसे गुर पूरे मिलि पाप तजाइण ॥१॥ रहाउ ॥
 जीवन पदवी हरि का नाउ ॥ मनु तनु निरमलु साचु सुआउ ॥२॥ आठ पहर पारब्रह्मु धिआईअै ॥
 पूरबि लिखतु होइ ता पाईअै ॥३॥ सरणि पए जपि दीन दिइआला ॥ नानकु जाचै संत रवाला
 ॥४॥२८॥३४॥ सूही महला ५ ॥ घर का काजु न जाणी रङड़ा ॥ झूठै धंधै रचिओ मूङड़ा ॥१॥ जितु तूं
 लावहि तितु तितु लगना ॥ जा तूं देहि तेरा नाउ जपना ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के दास हरि सेती राते
 ॥ राम रसाइणि अनदिनु माते ॥२॥ बाह पकरि प्रभि आपे काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥
 उधरु सुआमी प्रभ किरपा धारे ॥ नानक दास हरि सरणि दुआरे ॥४॥२९॥३५॥ सूही महला ५ ॥
 संत प्रसादि निहचलु घरु पाइआ ॥ सरब सूख फिरि नहीं डुलाइआ ॥१॥ गुरु धिआइ हरि चरन
 मनि चीने ॥ ता ते करतै असथिरु कीने ॥१॥ रहाउ ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी ॥ ता ते काटी जम
 की फासी ॥२॥ करि किरपा लीने लड़ि लाए ॥ सदा अनदु नानक गुण गाए ॥३॥३०॥३६॥
 सूही महला ५ ॥ अंमृत बचन साध की बाणी ॥ जो जो जपै तिस की गति होवै हरि हरि नामु नित रसन
 बखानी ॥१॥ रहाउ ॥ कली काल के मिटे कलेसा ॥ एको नामु मन महि परवेसा ॥१॥ साधू धूरि मुखि
 मसतकि लाई ॥ नानक उधरे हरि गुर सरणाई ॥२॥३१॥३७॥ सूही महला ५ घरु ३ ॥ गोबिंदा
 गुण गाउ दिइआला ॥ दरसनु देहु पूरन किरपाला ॥ रहाउ ॥ करि किरपा तुम ही प्रतिपाला ॥ जीउ
 पिंडु सभु तुमरा माला ॥१॥ अंमृत नामु चलै जपि नाला ॥ नानकु जाचै संत रवाला ॥२॥३२॥३८॥
 सूही महला ५ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ आपे थंमै सचा सोई ॥१॥ हरि हरि नामु मेरा
 आधारु ॥ करण कारण समरथु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ सभ रोग मिटावे नवा निरोआ ॥ नानक रखा

आपे होआ ॥੨॥੩੩॥੩੬॥ सूही महला ੫ ॥ दरसन कउ लोचै सभु कोई ॥ पूरै भागि परापति होई
॥ रहाउ ॥ सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई ॥ महा मोहनी ढूता लाई ॥੧॥ प्रेम बिछोहा करत
कसाई ॥ निरदै जंतु तिसु दिइआ न पाई ॥੨॥ अनिक जनਮ बीतीअन भरमाई ॥ घरि वासु न देवै
दुतर माई ॥੩॥ दिनु रैनि अपना कीआ पाई ॥ किसु दोसु न दीजै किरतु भवाई ॥੪॥ सुणि साजन
संत जन भाई ॥ चरण सरण नानक गति पाई ॥੫॥੩੪॥੪੦॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਭਲੀ ਸੁਹਾਵੀ ਛਾਪਰੀ ਜਾ ਮਹਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥ ਕਿਤ ਹੀ ਕਾਮਿ ਨ ਧਤਲਹਰ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਬਿਸਰਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਅਨਦੁ ਗਰੀਬੀ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭ ਚਿਤਿ ਆਏ ॥ ਜਲਿ ਜਾਤ ਏਹੁ ਬਡਪਨਾ ਮਾਇਆ ਲਪਟਾਏ ॥੧॥
ਪੀਸਨੁ ਪੀਸਿ ਓਠਿ ਕਾਮਰੀ ਸੁਖੁ ਮਨੁ ਸੰਤੋਖਾਏ ॥ ਐਸੋ ਰਾਜੁ ਨ ਕਿਤੈ ਕਾਜਿ ਜਿਤੁ ਨਹ ਤ੃ਪਤਾਏ ॥੨॥ ਨਗਨ
ਫਿਰਤ ਰੰਗਿ ਏਕ ਕੈ ਓਹੁ ਸੋਭਾ ਪਾਏ ॥ ਪਾਟ ਪਟੰਬਰ ਬਿਰਥਿਆ ਜਿਹ ਰਚਿ ਲੋਭਾਏ ॥੩॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁਮਰੈ
ਹਾਥਿ ਪ੍ਰਭ ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਤ ਰਹਾ ਨਾਨਕ ਦਾਨੁ ਪਾਏ ॥੪॥੧॥੪੧॥ ਸੂਹੀ
ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਸੰਤੁ ਪਰਾਨ ਧਨ ਤਿਸ ਕਾ ਪਨਿਹਾਰਾ ॥ ਭਾਈ ਮੀਤ ਸੁਤ ਸਗਲ ਤੇ ਜੀਅ ਹੂੰ ਤੇ ਪਿਆਰਾ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੇਸਾ ਕਾ ਕਰਿ ਬੀਜਨਾ ਸੰਤ ਚਤੁਰੁ ਢੁਲਾਵਤ ॥ ਸੀਸੁ ਨਿਹਾਰਤ ਚਰਣ ਤਲਿ ਧੂਰਿ ਮੁਖਿ
ਲਾਵਤ ॥੧॥ ਮਿਸਟ ਬਚਨ ਬੇਨਤੀ ਕਰਤ ਦੀਨ ਕੀ ਨਿਆਈ ॥ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਸਰਣੀ ਪਰਤ ਹਰਿ ਗੁਣ
ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੨॥ ਅਵਲੋਕਨ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ ਕਰਤ ਜਨ ਕਾ ਦਰਸਾਰੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਮਨ ਮਹਿ ਸਿੰਚਤ
ਬੰਦਤ ਬਾਰ ਬਾਰ ॥੩॥ ਚਿਤਵਤ ਮਨਿ ਆਸਾ ਕਰਤ ਜਨ ਕਾ ਸੰਗੁ ਮਾਗਤ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਦਿਇਆ ਕਰਿ
ਦਾਸ ਚਰਣੀ ਲਾਗਤ ॥੪॥੨॥੪੨॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਨਿ ਮੋਹੈ ਬ੍ਰਹਮਿੰਦ ਖੰਡ ਤਾਹੂ ਮਹਿ ਪਾਤ ॥ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ
ਇਹੁ ਬਿਖਵੈ ਜੀਤ ਦੇਹੁ ਅਪੁਨਾ ਨਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਤੇ ਨਾਹੀ ਕੋ ਸੁਖੀ ਤਾ ਕੈ ਪਾਛੈ ਜਾਤ ॥ ਛੋਡਿ ਜਾਹਿ
ਜੋ ਸਗਲ ਕਤ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਲਪਟਾਤ ॥੧॥ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰੁਣਾਪਤੇ ਤੇਰੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ

ਕੇਨਤੀ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਮਾਉ ॥੨॥੩॥੪੩॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੫ ਪੜਤਾਲ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪ੍ਰੀਤੀ ਪ੍ਰੀਤੀ ਗੁਰੀਆ ਮੋਹਨ ਲਾਲਨਾ ॥ ਜਧਿ ਮਨ ਗੋਬਿੰਦ ਏਕੈ ਅਵਰੁ ਨਹੀਂ ਕੋ ਲੇਖੈ ਸੰਤ ਲਾਗੁ ਮਨਹਿ ਛਾਡੁ
ਦੁਬਿਧਾ ਕੀ ਕੁਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਿਰਗੁਨ ਹਰੀਆ ਸਰਗੁਨ ਧਰੀਆ ਅਨਿਕ ਕੋਠਰੀਆ ਭਿੰਨ
ਭਿੰਨ ਭਿੰਨ ਭਿੰਨ ਕਰੀਆ ॥ ਵਿਚਿ ਮਨ ਕੋਟਵਰੀਆ ॥ ਨਿਜ ਮੰਦਰਿ ਪਿਰੀਆ ॥ ਤਹਾ ਆਨਦ ਕਰੀਆ ॥
ਨਹ ਮਰੀਆ ਨਹ ਜਰੀਆ ॥੧॥ ਕਿਰਤਨਿ ਜੁਰੀਆ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਫਿਰੀਆ ਪਰ ਕਤ ਹਿਰੀਆ ॥ ਬਿਖਨਾ
ਧਿਰੀਆ ॥ ਅਥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਪਰੀਆ ॥ ਹਰਿ ਦੁਆਰੈ ਖਰੀਆ ॥ ਦਰਸਨੁ ਕਰੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮਿਰੀਆ ॥
ਬਹੁਰਿ ਨ ਫਿਰੀਆ ॥੨॥੧॥੪੪॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਸਿ ਮੰਡਲੁ ਕੀਨੋ ਆਖਾਰਾ ॥ ਸਗਲੋ ਸਾਜਿ
ਰਖਿਐ ਪਾਸਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਰੂਪ ਰੰਗ ਆਪਾਰਾ ॥ ਪੇਖੈ ਖੁਸੀ ਭੋਗ ਨਹੀਂ ਹਾਰਾ ॥ ਸਭਿ ਰਸ
ਲੈਤ ਬਸਤ ਨਿਰਾਰਾ ॥੧॥ ਬਰਨੁ ਚਿਹਨੁ ਨਾਹੀਂ ਮੁਖੁ ਨ ਮਾਸਾਰਾ ॥ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ਖੇਲੁ ਤੁਹਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ
ਝੋਣ ਸੰਤ ਚਰਨਾਰਾ ॥੨॥੨॥੪੫॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਤ ਮੈ ਆਇਆ ਸਰਨੀ ਆਇਆ ॥ ਭਰੋਸੈ ਆਇਆ
ਕਿਰਪਾ ਆਇਆ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮਾਰਗੁ ਗੁਰਹਿ ਪਠਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਹਾ
ਦੁਤਰੁ ਮਾਇਆ ॥ ਜੈਸੇ ਪਕਨੁ ਝੂਲਾਇਆ ॥੧॥ ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਹੀ ਡਰਾਇਆ ॥ ਕਰਰੇ ਧਰਮਰਾਇਆ ॥੨॥
ਗ੍ਰਹ ਅੰਧ ਕੂਪਾਇਆ ॥ ਪਾਕਕੁ ਸਗਰਾਇਆ ॥੩॥ ਗਹੀ ਓਟ ਸਾਧਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥
ਅਥ ਮੈ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥੪॥੩॥੪੬॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ਕੇਨਤੀਆ ਮਿਲੈ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰਾ ॥ ਤੁਠਾ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਤਾਪੁ ਗਿਆ ਸੰਸਾਰਾ ॥੧॥ ਭਗਤਾ
ਕੀ ਟੇਕ ਤ੍ਰ੍ਯਾਂ ਸੰਤਾ ਕੀ ਓਟ ਤ੍ਰ੍ਯਾਂ ਸਚਾ ਸਿਰਜਨਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਚੁ ਤੇਰੀ ਸਾਮਗਰੀ ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਦਰਬਾਰਾ ॥
ਸਚੁ ਤੇਰੇ ਖਾਜੀਨਿਆ ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਪਾਸਾਰਾ ॥੨॥ ਤੇਰਾ ਰੂਪੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਅਨੂਪੁ ਤੇਰਾ ਦਰਸਾਰਾ ॥ ਹਉ

ਕੁਰਬਾਣੀ ਤੇਰਿਆ ਸੇਵਕਾ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥੩॥ ਸਭੇ ਝਿਥਾ ਪੂਰੀਆ ਜਾ ਪਾਇਆ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਮਿਲਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤੇਰਿਆ ਚਰਣਾ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥੪॥੧॥੪੭॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੭

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ਤ੍ਰਹੈ ਮਨਾਇਹਿ ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਹਿ ਦਿਇਆਲਾ ॥ ਸਾਈ ਭਗਤਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤ੍ਰਨ ਸਰਬ ਜੀਆ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਰਾਇ ਸੰਤਾ ਟੇਕ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਤ੍ਰਹੈ ਅਧਾਰੀ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥
ਤ੍ਰਨ ਦਿਇਆਲੁ ਕ੃ਪਾਲੁ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਮਨਸਾ ਪ੍ਰਗਣਹਾਰਾ ॥ ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਸਭਿ ਪ੍ਰਾਣਪਤਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤ੍ਰਨ ਭਗਤਨ ਕਾ
ਪਿਆਰਾ ॥੨॥ ਤ੍ਰਨ ਅਥਾਹੁ ਅਪਾਰੁ ਅਤਿ ਊਚਾ ਕੋਈ ਅਕਰੁ ਨ ਤੇਰੀ ਭਾਤੇ ॥ ਇਹ ਅਰਦਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ਸੁਆਮੀ
ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥੩॥ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਜੇ ਸੁਆਮੀ ਤੁਧੁ ਭਾਵਾ ॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਸੁਖੁ
ਨਾਨਕੁ ਮਾਗੈ ਸਾਹਿਬ ਤੁਠੈ ਪਾਵਾ ॥੪॥੧॥੪੮॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਵਿਸਰਹਿ ਨਾਹੀ ਜਿਤੁ ਤ੍ਰਨ ਕਬਹੂ ਸੋ ਥਾਨੁ
ਤੇਰਾ ਕੇਹਾ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਜਿਤੁ ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ਨਿਰਮਲ ਹੋਵੈ ਦੇਹਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਹਤ ਸੋ ਥਾਨੁ ਭਾਲਣ
ਆਇਆ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਭਿਇਆ ਸਾਧਸੰਗੁ ਤਿਨੁ ਸਰਣਾਈ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬੇਦ ਪਡੇ ਪਡਿ ਬ੍ਰਹਮੇ
ਹਾਰੇ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥ ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਫਿਰਹਿ ਬਿਲਲਾਤੇ ਤੇ ਭੀ ਮੋਹੇ ਮਾਈ ॥੨॥ ਦਸ ਅਤਤਾਰ
ਰਾਜੇ ਹੋਇ ਵਰਤੇ ਮਹਾਦੇਵ ਅਤਥੂਤਾ ॥ ਤਿਨੁ ਭੀ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਓ ਤੇਰਾ ਲਾਇ ਥਕੇ ਬਿਭੂਤਾ ॥੩॥ ਸਹਜ ਸ੍ਰਹੀ
ਆਨੰਦ ਨਾਮ ਰਸ ਹਰਿ ਸੰਤੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥ ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਿਓ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਤਾ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਧਿਆਇਆ ॥੪॥੨॥੪੯॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਪਾਖੰਡ ਜੋ ਦੀਸਹਿ ਤਿਨ ਜਮੁ ਜਾਗਾਤੀ ਲੂਟੈ ॥
ਨਿਰਕਾਣ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਵਹੁ ਕਰਤੇ ਕਾ ਨਿਮਖ ਸਿਮਰਤ ਜਿਤੁ ਛੂਟੈ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਸਾਗਰੁ ਪਾਰਿ ਉਤਰੀਐ ॥ ਜੇ ਕੋ
ਬਚਨੁ ਕਮਾਵੈ ਸੰਤਨ ਕਾ ਸੋ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤਰੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੋਟਿ ਤੀਰਥ ਮਜਨ ਇਸਨਾਨਾ ਇਸੁ ਕਲਿ ਮਹਿ
ਮੈਲੁ ਭਰੀਜੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੋ ਨਿਰਮਲੁ ਕਰਿ ਲੀਜੈ ॥੨॥ ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਸਿਮੂਤਿ ਸਭਿ ਸਾਸਤ
ਇਨ੍ ਪਡਿਆ ਸੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਏਕੁ ਅਖਰੁ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ਤਿਸ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੋਈ ॥੩॥ ਖਤੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣ

सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक
 माझा ॥४॥३॥५०॥ सूही महला ५ ॥ जो किछु करै सोई प्रभ मानहि ओङ्गि राम नाम रंगि राते ॥
 तिन् की सोभा सभनी थाई जिन् प्रभ के चरण पराते ॥१॥ मेरे राम हरि संता जेवडु न कोई ॥ भगता
 बणि आई प्रभ अपने सित जलि थलि महीअलि सोई ॥२॥ रहाउ ॥ कोटि अप्राधी संतसंगि उधरै
 जमु ता कै नेड़ि न आवै ॥ जनम जनम का बिछुड़िआ होवै तिन् हरि सित आणि मिलावै ॥२॥ माड़िआ
 मोह भरमु भउ काटै संत सरणि जो आवै ॥ जेहा मनोरथु करि आगधे सो संतन ते पावै ॥३॥ जन की
 महिमा केतक बरनउ जो प्रभ अपने भाणे ॥ कहु नानक जिन सतिगुरु भेटिआ से सभ ते भए निकाणे
 ॥४॥४॥५१॥ सूही महला ५ ॥ महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई ॥ तेरा माणु ताणु
 रिद अंतरि होर ढूजी आस चुकाई ॥१॥ मेरे राम राइ तुधु चिति आड़िअै उबरे ॥ तेरी टेक भरवासा
 तुम्रा जपि नामु तुम्रा उधरे ॥२॥ रहाउ ॥ अंध कूप ते काढि लीए तुम् आपि भए किरपाला ॥
 सारि समालि सरब सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ॥२॥ आपणी नदरि करे परमेसरु बंधन काटि
 छडाए ॥ आपणी भगति प्रभि आपि कराई आपे सेवा लाए ॥३॥ भरमु गड़िआ भै मोह बिनासे
 मिटिआ सगल विसूरा ॥ नानक दड़िआ करी सुखदातै भेटिआ सतिगुरु पूरा ॥४॥५॥५२॥
 सूही महला ५ ॥ जब कछु न सीओ तब किआ करता कवन करम करि आड़िआ ॥ अपना खेलु आपि
 करि देखै ठाकुरि रचनु रचाड़िआ ॥१॥ मेरे राम राइ मुझ ते कछु न होई ॥ आपे करता आपि
 कराए सरब निरंतरि सोई ॥२॥ रहाउ ॥ गणती गणी न छूटै कतहू काची देह डिआणी ॥ कृपा करहु
 प्रभ करणैहारे तेरी बखस निराली ॥२॥ जीअ जंत सभ तेरे कीते घटि घटि तुही धिआईअै ॥ तेरी
 गति मिति तूहै जाणहि कुदरति कीम न पाईअै ॥३॥ निरगुणु मुगधु अजाणु अगिआनी करम धरम
 नही जाणा ॥ दड़िआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा ॥४॥६॥५३॥ सूही महला ५ ॥

ਭਾਗਠੜੇ ਹਰਿ ਸੰਤ ਤੁਮਾਰੇ ਜਿਨ੍ਹ ਘਰਿ ਧਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥ ਪਰਵਾਣੁ ਗਣੀ ਸੇਈ ਫਿਝ ਆਏ ਸਫਲ ਤਿਨਾ ਕੇ
 ਕਾਮਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਹਉ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਕੇਸਾ ਕਾ ਕਰਿ ਚਵਰੁ ਢੁਲਾਵਾ ਚਰਣ ਧੂਡਿ ਮੁਖਿ ਲਾਈ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਹੂ ਮਹਿ ਨਾਹੀ ਜਨ ਪਰਤਪਕਾਰੀ ਆਏ ॥ ਜੀਅ ਦਾਨੁ ਦੇ ਭਗਤੀ ਲਾਇਨਿ ਹਰਿ
 ਸਿਤ ਲੈਨਿ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥ ਸਚਾ ਅਮਰੁ ਸਚੀ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਾਤੇ ॥ ਸਚਾ ਸੁਖੁ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਜਿਸ ਕੇ
 ਸੇ ਤਿਨਿ ਜਾਤੇ ॥੩॥ ਪਖਾ ਫੇਰੀ ਪਾਣੀ ਢੋਕਾ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਪੀਸਣੁ ਪੀਸਿ ਕਮਾਵਾ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਿ ਬੇਨਤੀ
 ਤੇਰੇ ਜਨ ਦੇਖਣੁ ਪਾਵਾ ॥੪॥੭॥੫੪॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸਰ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪੇ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ॥
 ਚਰਣ ਧੂਡਿ ਤੇਰੀ ਸੇਵਕੁ ਮਾਗੈ ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਰਾਇ ਜਿਤ ਰਾਖਹਿ ਤਿਤ ਰਹੀਐ
 ॥ ਤੁਥੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹਿ ਸੁਖੁ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਲਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੁਕਤਿ ਭੁਗਤਿ ਜੁਗਤਿ ਤੇਰੀ ਸੇਵਾ
 ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪਿ ਕਰਾਇਹਿ ॥ ਤਹਾ ਬੈਕੁਂਠੁ ਜਹ ਕੀਰਤਨੁ ਤੇਰਾ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਸਰਧਾ ਲਾਇਹਿ ॥੨॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ
 ਸਿਮਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਕਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲਾ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਤੇਰੇ ਧੋਡਿ ਧੋਡਿ ਪੀਕਾ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਨ
 ਦਿਇਆਲਾ ॥੩॥ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜਾਈ ਤਸੁ ਕੇਲਾ ਸੁਹਾਕੀ ਜਿਤੁ ਤੁਮਰੈ ਦੁਆਰੈ ਆਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਭਏ
 ਕ੃ਪਾਲਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥੪॥੮॥੫੫॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੁਥੁ ਚਿਤਿ ਆਏ ਮਹਾ ਅਨੰਦਾ ਜਿਸੁ
 ਵਿਸਰਹਿ ਸੋ ਮਰਿ ਜਾਏ ॥ ਦਿਇਆਲੁ ਹੋਕਹਿ ਜਿਸੁ ਊਪਰਿ ਕਰਤੇ ਸੋ ਤੁਥੁ ਸਦਾ ਧਿਆਏ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਤ੍ਰਾਂ
 ਮੈ ਮਾਣੁ ਨਿਮਾਣੀ ॥ ਅਰਦਾਸਿ ਕਰੀ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਆਗੈ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਕਾ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚਰਣ
 ਧੂਡਿ ਤੇਰੇ ਜਨ ਕੀ ਹੋਕਾ ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਰਿਦੈ ਤਰਿ ਧਾਰੀ ਤਤ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸੰਗੁ
 ਪਾਈ ॥੨॥ ਅੰਤਰ ਕੀ ਗਤਿ ਤੁਥੁ ਪਹਿ ਸਾਰੀ ਤੁਥੁ ਜੇਕਡੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਜਿਸ ਨੇ ਲਾਇ ਲੈਹਿ ਸੋ ਲਾਗੈ ਭਗਤੁ
 ਤੁਹਾਰਾ ਸੋਈ ॥੩॥ ਟੁਡਿ ਕਰ ਜੋਡਿ ਮਾਗਤ ਇਕੁ ਦਾਨਾ ਸਾਹਿਬਿ ਤੁਠੈ ਪਾਵਾ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਨਾਨਕੁ ਆਰਾਧੇ
 ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ॥੪॥੯॥੫੬॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸ ਕੇ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਤ੍ਰਾਂ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਦੁਖੁ ਕੈਸਾ ਪਾਵੈ ॥
 ਬੋਲਿ ਨ ਜਾਣੈ ਮਾਇਆ ਮਦਿ ਮਾਤਾ ਮਰਣਾ ਚੀਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਰਾਇ ਤ੍ਰਾਂ ਸੰਤਾ ਕਾ ਸੰਤ ਤੇਰੇ ॥

ਤੇਰੇ ਸੇਵਕ ਕਤ ਭਤ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਜਮੁ ਨਹੀ ਆਵੈ ਨੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਤੈਰੈ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਸੁਆਮੀ ਤਿਨ੍ ਕਾ
ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਨਾਸਾ ॥ ਤੇਰੀ ਬਖਸ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਈ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਦਿਲਾਸਾ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਨਿ ਸੁਖ ਫਲ
ਪਾਇਨਿ ਆਠ ਪਹਰ ਆਰਾਧਹਿ ॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣ ਤੈਰੈ ਭਰਵਾਸੈ ਪੰਚ ਦੁਸਟ ਲੈ ਸਾਧਹਿ ॥੩॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ
ਕਿਛੁ ਕਰਮੁ ਨ ਜਾਣਾ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਾ ਤੇਰੀ ॥ ਸਭ ਤੇ ਵਡਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨਿ ਕਲ ਰਾਖੀ ਮੇਰੀ ॥
੪॥੧੦॥੫੭॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਗੁਰ ਸਰਣੀ ਆਇਆ ਰਾਖਹੁ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥ ਜਿਤੁ ਤੂ
ਲਾਵਹਿ ਤਿਤੁ ਹਮ ਲਾਗਹ ਕਿਆ ਏਹਿ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰੇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਜੀ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਕਰਿ
ਕਿਰਪਾ ਗੁਰਦੇਵ ਦਿੱਤਾਲਾ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਨਿਤ ਸੁਆਮੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਧਿਆਈਐ
ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਤ ਤਰੀਐ ॥ ਆਪੁ ਤਿਆਗਿ ਹੋਈਐ ਸਭ ਰੇਣਾ ਜੀਵਤਿਆ ਇਤ ਮਰੀਐ ॥੨॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ
ਤਿਸ ਕਾ ਜਗ ਭੀਤਰਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਤ ਜਾਪੇ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਤਿਸ ਕੇ ਪੂਰਨ ਜਿਸੁ ਦਿੱਤਾਲਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ
ਆਪੇ ॥੩॥ ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲ ਕ੃ਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਤੇਰੀ ਸਰਣ ਦਿੱਤਾਲਾ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨਾ ਨਾਮੁ
ਦੀਜੈ ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਖਾਲਾ ॥੪॥੧੧॥੫੮॥

ਰਾਗ ਸੂਹੀ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਭਿ ਅਵਗਣ ਮੈ ਗੁਣੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਕੰਤ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਈ ॥੧॥ ਨਾ ਮੈ ਰੂਪੁ ਨ ਬੰਕੇ ਨੈਣਾ ॥ ਨਾ
ਕੁਲ ਢੰਗੁ ਨ ਮੀਠੇ ਬੈਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਹਜਿ ਸੀਗਾਰ ਕਾਮਣਿ ਕਰਿ ਆਵੈ ॥ ਤਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਜਾ ਕੰਤੈ ਭਾਵੈ
॥੨॥ ਨਾ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਕਾਈ ॥ ਅੰਤਿ ਨ ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਮਰਿਆ ਜਾਈ ॥੩॥ ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਨਾਹੀ
ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਲਾਵਹੁ ਪਾਈ ॥੪॥ ਖਰੀ ਸਿਆਣੀ ਕੰਤ ਨ ਭਾਣੀ ॥ ਮਾਇਆ ਲਾਗੀ ਭਰਮਿ
ਭੁਲਾਣੀ ॥੫॥ ਹਉਮੈ ਜਾਈ ਤਾ ਕੰਤ ਸਮਾਈ ॥ ਤਤ ਕਾਮਣਿ ਪਿਆਰੇ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੬॥ ਅਨਿਕ
ਜਨਮ ਬਿਛੁਰਤ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਰਾਇਆ ॥੭॥ ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਹੁ ਹੈ ਭੀ
ਹੋਂਸੀ ॥ ਜੈ ਭਾਵੈ ਪਿਆਰਾ ਤੈ ਰਾਵੇਸੀ ॥੮॥੧॥

ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੬

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਚਾ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਖ ਕਾ ਥੋੜਡਿਆ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ਜੀਤ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਭਰਮੀ ਭੁਲੀਆ ਠਗੀ ਸੁਠੀ ਕੂਡਿਆਰਿ ਜੀਤ ॥
 ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਜਨਮੁ ਨ ਦ੍ਰਔਜੀ ਵਾਰ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰੰਗੇ ਕਾ ਕਿਆ ਰੰਗੀਐ ਜੋ ਰਤੇ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ਜੀਤ ॥ ਰੰਗਣ
 ਵਾਲਾ ਸੇਵੀਐ ਸਚੇ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ਜੀਤ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਜੇ ਭਵਹਿ ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਧਨੁ ਨਾਹਿ ਜੀਤ ॥
 ਅਵਗਣਿ ਸੁਠੀ ਜੇ ਫਿਰਹਿ ਬਧਿਕ ਥਾਇ ਨ ਪਾਹਿ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਤਕਰੇ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਮਨ ਮਾਹਿ ਜੀਤ
 ॥੨॥ ਚਿਟੇ ਜਿਨ ਕੇ ਕਪਡੇ ਮੈਲੇ ਚਿਤ ਕਠੋਰ ਜੀਤ ॥ ਤਿਨ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨ ਊਪਜੈ ਟ੍ਰੌਜੈ ਵਿਆਪੇ ਚੋਰ ਜੀਤ ॥
 ਸ੍ਰੂਲੁ ਨ ਬ੍ਰੂਜ਼ਹਿ ਆਪਣਾ ਸੇ ਪਸ੍ਰੂਆ ਸੇ ਢੋਰ ਜੀਤ ॥੩॥ ਨਿਤ ਨਿਤ ਖੁਸ਼ੀਆ ਮਨੁ ਕਰੇ ਨਿਤ ਨਿਤ ਮੰਗੈ ਸੁਖ ਜੀਤ
 ॥ ਕਰਤਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਲਗਹਿ ਦੁਖ ਜੀਤ ॥ ਸੁਖ ਦੁਖ ਦਾਤਾ ਮਨਿ ਕਸੈ ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਕੈਸੀ ਭੁਖ
 ਜੀਤ ॥੪॥ ਬਾਕੀ ਵਾਲਾ ਤਲਬੀਐ ਸਿਰਿ ਮਾਰੇ ਜੰਦਾਰੁ ਜੀਤ ॥ ਲੇਖਾ ਮੰਗੈ ਦੇਵਣਾ ਪੁਛੈ ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੁ ਜੀਤ ॥
 ਸਚੇ ਕੀ ਲਿਵ ਤਕਰੈ ਬਖਿਦੇ ਬਖਿਸਣਹਾਰੁ ਜੀਤ ॥੫॥ ਅਨ ਕੋ ਕੀਜੈ ਮਿਤੜਾ ਖਾਕੁ ਰਲੈ ਮਹਿ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥
 ਬਹੁ ਰੰਗ ਦੇਖਿ ਭੁਲਾਇਆ ਭੁਲਿ ਭੁਲਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥ ਨਦਰਿ ਪ੍ਰਭੂ ਤੇ ਛੁਟੀਐ ਨਦਰੀ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ
 ਜੀਤ ॥੬॥ ਗਾਫਲ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣਿਆ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਭਾਲਿ ਜੀਤ ॥ ਖਿੰਚੋਤਾਣਿ ਵਿਗੁਚੀਐ ਬੁਰਾ
 ਭਲਾ ਟ੍ਰੁਡਿ ਨਾਲਿ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਭੈ ਰਤਿਆ ਸਭ ਜੋਹੀ ਜਮਕਾਲਿ ਜੀਤ ॥੭॥ ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਕਾਰਣੁ
 ਧਾਰਿਆ ਸਭਸੈ ਦੇਇ ਆਧਾਰੁ ਜੀਤ ॥ ਸੋ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਾਤਾਰੁ ਜੀਤ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ
 ਕੀਵੇਂ ਨਿਧਾਰਾ ਆਧਾਰੁ ਜੀਤ ॥੮॥੧॥੨॥

ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਕਾਫੀ ਘਰੁ ੧੦

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਟੁਲਮ੍ਬੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹੋਇ ਚੁਲਮ੍ਬੁ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇਆ ॥੧॥ ਚਲੈ ਜਨਮੁ
 ਸਵਾਰਿ ਵਖਰੁ ਸਚੁ ਲੈ ॥ ਪਤਿ ਪਾਏ ਦਰਬਾਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਭੈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਚੁ ਸਲਾਹਿ

साचे मनि भाइआ ॥ लालि रता मनु मानिआ गुरु पूरा पाइआ ॥२॥ हउ जीवा गुण सारि अंतरि
 तू वसै ॥ तूं वसहि मन माहि सहजे रसि रसै ॥३॥ मूरख मन समझाइ आखउ केतड़ा ॥ गुरमुखि
 हरि गुण गाइ रंगि रंगेतड़ा ॥४॥ नित नित रिटै समालि प्रीतमु आपणा ॥ जे चलहि गुण नालि
 नाही दुखु संतापणा ॥५॥ मनमुख भरमि भुलाणा ना तिसु रंगु है ॥ मरसी होइ विडाणा मनि तनि
 भंगु है ॥६॥ गुर की कार कमाइ लाहा घरि आणिआ ॥ गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ ॥७॥
 छिक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥ मै दीजै नाम निवासु हरि गुण गावसी ॥८॥१॥३॥
 सूही महला १ ॥ जिउ आरण लोहा पाइ भंनि घडाईअै ॥ तिउ साकतु जोनी पाइ भवै भवाईअै ॥१
 ॥ बिनु बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा ॥ हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा ॥१॥ रहाउ ॥ तूं गुरमुखि
 रखणहारु हरि नामु धिआईअै ॥ मेलहि तुझहि रजाइ सबदु कर्माईअै ॥२॥ तूं करि करि वेखहि
 आपि देहि सु पाईअै ॥ तूं देखहि थापि उथापि दरि बीनाईअै ॥३॥ देही होवगि खाकु पवणु
 उडाईअै ॥ छिहु किथै घरु अउताकु महलु न पाईअै ॥४॥ दिहु दीवी अंध घोरु घबु मुहाईअै ॥
 गरबि मुसै घरु चोरु किसु रुआईअै ॥५॥ गुरमुखि चोरु न लागि हरि नामि जगाईअै ॥ सबदि
 निवारी आगि जोति दीपाईअै ॥६॥ लालु रतनु हरि नामु गुरि सुरति बुझाईअै ॥ सदा रहै निहकामु
 जे गुरमति पाईअै ॥७॥ राति दिहै हरि नाउ मंनि वसाईअै ॥ नानक मेलि मिलाइ जे तुधु भाईअै
 ॥८॥२॥४॥ सूही महला १ ॥ मनहु न नामु विसारि अहिनिसि धिआईअै ॥ जिउ राखहि किरपा धारि
 तिवै सुखु पाईअै ॥१॥ मै अंधुले हरि नामु लकुटी टोहणी ॥ रहउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी ॥१॥
 रहाउ ॥ जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ ॥ अंतरि बाहरि भालि सबदि निहालिआ ॥२॥ सेवी
 सतिगुर भाइ नामु निरंजना ॥ तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भंजना ॥३॥ जनमत ही दुखु लागै
 मरणा आइ कै ॥ जनमु मरणु परवाणु हरि गुण गाइ कै ॥४॥ हउ नाही तूं होवहि तुधु ही

ਸਾਜਿਆ ॥ ਆਪੇ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਜਿਆ ॥੫॥ ਦੇਹੀ ਭਸਮ ਰੁਲਾਇ ਨ ਜਾਪੀ ਕਹ ਗਿਆ ॥
ਆਪੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ਸੋ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭਿਆ ॥੬॥ ਤੂਂ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਟੂਰਿ ਜਾਣਹਿ ਸਭ ਤੂ ਹੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਕੇਖਿ ਹਟੂਰਿ ਅੰਤਰਿ ਭੀ ਤੂ ਹੈ ॥੭॥ ਮੈ ਦੀਜੈ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੁ ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਹੋਇ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ
ਸਤਿਗੁਰ ਮਤਿ ਦੇਇ ॥੮॥੩॥੫॥

ਰਾਗ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਾਮੈ ਹੀ ਤੇ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਆ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਨ ਜਾਪੈ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਹਾ ਰਖੁ ਮੀਠਾ ਬਿਨੁ ਚਾਖੇ ਸਾਦੁ
ਨ ਜਾਪੈ ॥ ਕਤਡੀ ਬਦਲੈ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਚੀਨਸਿ ਨਾਹੀ ਆਪੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਤਾ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਹਤਮੈ ਦੁਖੁ
ਨ ਸੰਤਾਪੈ ॥੧॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਅਪਣੇ ਵਿਟਹੁ ਜਿਨਿ ਸਾਚੇ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਸਬਦੁ ਚੀਨਿ ਆਤਮੁ
ਪਰਗਾਸਿਆ ਸਹਜੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜ੍ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥
ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਗੁਰ ਤੇ ਤੁਪਯੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰਜ ਸਵਾਰੇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਵੈ ਬਿਖੁ ਖਟੇ ਸੰਸਾਰੇ ॥
ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੨॥ ਸੋਈ ਸੇਵਕੁ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਚਾਲੈ ਸਤਿਗੁਰ
ਭਾਏ ॥ ਸਾਚਾ ਸਬਦੁ ਸਿਫਤਿ ਹੈ ਸਾਚੀ ਸਾਚਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖੈ ਹਤਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਏ
॥ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਕਰਮੁ ਹੈ ਸਾਚਾ ਸਾਚਾ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਘਾਲੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖਟੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ
ਜਪਾਏ ॥ ਸਦਾ ਅਲਿਪਤੁ ਸਾਚੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਸਦ ਹੀ ਕੂੜੋ ਬੋਲੈ ਬਿਖੁ ਬੀਜੈ
ਬਿਖੁ ਖਾਏ ॥ ਜਮਕਾਲਿ ਬਾਧਾ ਤੂਸਨਾ ਦਾਧਾ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਵਣੁ ਛਡਾਏ ॥੪॥ ਸਚਾ ਤੀਰਥੁ ਜਿਤੁ ਸਤ ਸਰਿ
ਨਾਵਣੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਬੁੜਾਏ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਦਿਖਾਏ ਤਿਤੁ ਨਾਤੈ ਮਲੁ ਜਾਏ ॥ ਸਚਾ ਸਬਦੁ
ਸਚਾ ਹੈ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾ ਮਲੁ ਲਗੈ ਨ ਲਾਏ ॥ ਸਚੀ ਸਿਫਤਿ ਸਚੀ ਸਾਲਾਹ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਏ ॥੫॥ ਤਨੁ ਮਨੁ
ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹਰਿ ਤਿਸੁ ਕੇਰਾ ਦੁਰਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਏ ॥ ਹੁਕਮੁ ਹੋਵੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਹਤਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਏ ॥ ਗੁਰ
ਕੀ ਸਾਖੀ ਸਹਜੇ ਚਾਖੀ ਤੂਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁੜਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਾਤਾ ਸਹਜੇ ਮਾਤਾ ਸਹਜੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ

॥੬॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸਤਿ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਸਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰੇ ॥ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸਭ ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਕੀਚਾਰੇ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਤਾ ਬਖਸੇ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਸਵਾਰੇ ॥੭॥ ਸਭੋ ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਚੁ ਵਰਤੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਈ ਜਾਣੈ ॥ ਜੰਮਣ ਮਰਣਾ ਹੁਕਮੋ ਵਰਤੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭਾਏ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸ ਦਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ਜਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥੮॥੧॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਕਾਇਆ ਕਾਮਣਿ ਅਤਿ ਸੁਆਲਿਤ ਪਿਲੁ ਵਸੈ ਜਿਸੁ ਨਾਲੇ ॥ ਪਿਰ ਸਚੇ ਤੇ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣਿ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਹਤਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਲੇ ॥੧॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਉਪਜੀ ਸਾਚਿ ਸਮਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਵਸੈ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਪਾਤਾਲਾ ॥ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤਾ ਵਸੈ ਸਭਨਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥ ਕਾਇਆ ਕਾਮਣਿ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਾ ॥੨॥ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਆਪੇ ਵਸੈ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਈ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਸੁਗਧੁ ਕੂੜੈ ਨਾਹੀ ਬਾਹਰਿ ਭਾਲਣਿ ਜਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਸਤਿਗੁਰਿ ਅਲਖੁ ਦਿਤਾ ਲਖਾਈ ॥੩॥ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਇਸੁ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਨਤਖੰਡ ਪ੃ਥਮੀ ਹਾਟ ਪਟਣ ਬਾਜਾਰਾ ॥ ਇਸੁ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਕੀਚਾਰਾ ॥੪॥ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਤੋਲਿ ਤੁਲਾਵੈ ਆਪੇ ਤੋਲਣਹਾਰਾ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਤਨੁ ਜਵਾਹਰ ਮਾਣਕੁ ਤਿਸ ਕਾ ਮੌਲੁ ਅਫਾਰਾ ॥ ਮੌਲਿ ਕਿਤ ਹੀ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਨਾਹੀ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਕੀਚਾਰਾ ॥੫॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਕਾਇਆ ਖੋਜੈ ਹੋਰ ਸਭ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥ ਜਿਸ ਨੇ ਦੇਇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਵੈ ਹੋਰ ਕਿਆ ਕੋ ਕਰੇ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਭਤ ਭਾਤ ਵਸੈ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਈ ॥੬॥ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸਾ ਸਭ ਓਪਤਿ ਜਿਤੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਸਚੈ ਆਪਣਾ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇਆ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਪ੍ਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਆਪਿ ਦਿਖਾਇਆ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੭॥ ਸਾ ਕਾਇਆ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਸਚੈ ਆਪਿ ਸਵਾਰੀ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਦਰਿ ਢੋਈ ਨਾਹੀ ਤਾ ਜਮੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਵਡਿਆਈ ਪਾਏ ਜਿਸ ਨੇ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੮॥੨॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧੦

੧੬ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੁਨੀਆ ਨ ਸਾਲਾਹਿ ਜੋ ਮਰਿ ਵੰਜਸੀ ॥ ਲੋਕਾ ਨ ਸਾਲਾਹਿ ਜੋ ਮਰਿ ਖਾਕੁ ਥੀਈ ॥੧॥ ਵਾਹੁ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਵਾਹੁ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਲਾਹੀਐ ਸਚਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਨੀਆ ਕੇਰੀ ਦੋਸਤੀ ਮਨਮੁਖ ਦੜਿ ਮਰਨਿ ॥
 ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਵੇਲਾ ਨ ਲਾਵਾਨਿ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਸਕਾਰਥਾ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਲਗਨਿ ॥ ਆਤਮ
 ਰਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ਸਹਜੇ ਸੁਖਿ ਰਹਾਨਿ ॥੩॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਢੂਜੈ ਭਾਡਿ ਰਚਨਿ ॥ ਤਿਸਨਾ ਭੁਖ ਨ
 ਤਤਰੈ ਅਨਦਿਨੁ ਜਲਤ ਫਿਰਨਿ ॥੪॥ ਦੁਸਟਾ ਨਾਲਿ ਦੋਸਤੀ ਨਾਲਿ ਸੰਤਾ ਵੈਰੁ ਕਰਨਿ ॥ ਆਪਿ ਝੁਕੇ ਕੁਟੰਬ
 ਸਿਉ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਡੋਬਨਿ ॥੫॥ ਨਿੰਦਾ ਭਲੀ ਕਿਸੈ ਕੀ ਨਾਹੀ ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਕਰਨਿ ॥ ਸੁਹ ਕਾਲੇ ਤਿਨ
 ਨਿੰਦਕਾ ਨਰਕੇ ਧੋਰਿ ਪਵਨਿ ॥੬॥ ਏ ਮਨ ਜੈਸਾ ਸੇਵਹਿ ਤੈਸਾ ਹੋਵਹਿ ਤੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਆਪਿ ਬੀਜਿ ਆਪੇ
 ਹੀ ਖਾਵਣਾ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਇ ॥੭॥ ਮਹਾ ਪੁਰਖਾ ਕਾ ਬੋਲਣਾ ਹੋਵੈ ਕਿਤੈ ਪਰਥਾਇ ॥ ਓਇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਰੇ
 ਭਰਪੂਰ ਹਹਿ ਓਨਾ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੮॥ ਗੁਣਕਾਰੀ ਗੁਣ ਸੰਘਰੈ ਅਵਰਾ ਉਪਦੇਸੇਨਿ ॥ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿ
 ਓਨਾ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਲਏਨਿ ॥੯॥ ਦੇਸੀ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ਮੇਦਨੀ ॥ ਏਕੋ ਹੈ ਦਾਤਾਰੁ
 ਸਚਾ ਆਪਿ ਧਣੀ ॥੧੦॥ ਸੋ ਸਚੁ ਤੈਰੈ ਨਾਲਿ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ
 ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ ॥੧੧॥ ਮਨੁ ਮੈਲਾ ਸਚੁ ਨਿਰਮਲਾ ਕਿਤ ਕਰਿ ਮਿਲਿਆ ਜਾਇ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲੇ ਤਾ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਹਤਮੈ
 ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥੧੨॥ ਸੋ ਸਹੁ ਸਚਾ ਵੀਸਰੈ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਨਾ ਵੀਸਰੈ ਗੁਰਮਤੀ
 ਵੀਚਾਰਿ ॥੧੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਤਾ ਮਿਲਿ ਰਹਾ ਸਾਚੁ ਰਖਾ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਮਿਲਿਆ ਹੋਇ ਨ ਵੀਛੁੜੈ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ
 ਪਿਆਰਿ ॥੧੪॥ ਪਿਰੁ ਸਾਲਾਹੀ ਆਪਣਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸੋਭਾਵਤੀ
 ਨਾਰਿ ॥੧੫॥ ਮਨਮੁਖ ਮਨੁ ਨ ਮਿਜਈ ਅਤਿ ਮੈਲੇ ਚਿਤਿ ਕਠੋਰ ॥ ਸਪੈ ਦੁਧੁ ਪੀਆਈਐ ਅੰਦਰਿ ਵਿਸੁ ਨਿਕੋਰ
 ॥੧੬॥ ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੀਐ ਆਪੇ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੈਲੁ ਤਤਰੈ ਤਾ ਸਚੁ ਬਣਿਆ ਸੀਗਾਰੁ

॥੧੭॥ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰੇ ਓਥੈ ਕੂਡੇ ਨ ਟਿਕਨਿ ॥ ਓਨਾ ਸਚੁ ਨ ਭਾਰਵੰਦ ਦੁਖ ਹੀ ਮਾਹਿ ਪਚਨਿ ॥੧੮॥
 ਹਉਮੈ ਮੈਲਾ ਜਗੁ ਫਿਰੈ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਵਣਾ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰ ॥੧੯॥ ਸੰਤਾ
 ਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਤਾ ਸਚਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀ ਸਚੁ ਮਨਿ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰੁ ॥੨੦॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ
 ਪੂਰੀ ਮਤਿ ਹੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥ ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਕਡ ਰੋਗੁ ਹੈ ਵਿਚਹੁ ਠਾਕਿ ਰਹਾਇ ॥੨੧॥ ਗੁਰੁ
 ਸਾਲਾਹੀ ਆਪਣਾ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਾ ਪਾਇ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਤਪੀ ਆਗੈ ਧਰੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥੨੨॥
 ਖਿੰਚੋਤਾਣਿ ਵਿਗੁਚੀਐ ਏਕਸੁ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਛਡਿ ਤੂ ਤਾ ਸਚਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨੩॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਨੋ ਮਿਲੇ ਸਿ ਭਾਇਦਿ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਲਗਨਿ ॥ ਸਚਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਦਰਿ ਸਚੈ ਦਿਸਨਿ ॥੨੪॥ ਸੇ ਭਾਈ
 ਸੇ ਸਜਣਾ ਜੋ ਸਚਾ ਸੇਵਨਿ ॥ ਅਵਗਣ ਵਿਕਣਿ ਪਲਰਨਿ ਗੁਣ ਕੀ ਸਾਜ਼ ਕਰਨਿ ॥੨੫॥ ਗੁਣ ਕੀ ਸਾਜ਼ ਸੁਖੁ
 ਊਪਜੈ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਕਰੇਨਿ ॥ ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦ ਸਿਤ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਲਏਨਿ ॥੨੬॥ ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਪਾਪ
 ਕਰਿ ਕਰਿ ਸੰਚੀਐ ਚਲੈ ਨ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਸੀ ਸਭ ਸੁਠੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥੨੭॥
 ਮਨ ਕਾ ਤੋਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਹਿਰਦੈ ਰਖਹੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਏਹੁ ਖਰਚੁ ਅਖੁਟੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਬਹੈ ਨਾਲਿ ॥੨੮॥ ਏ
 ਮਨ ਮੂਲਹੁ ਭੁਲਿਆ ਜਾਸਹਿ ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥ ਇਹੁ ਜਗਤੁ ਮੋਹਿ ਟ੍ਰੌਜੈ ਵਿਆਪਿਆ ਗੁਰਮਤੀ ਸਚੁ ਧਿਆਇ
 ॥੨੯॥ ਹਰਿ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨ ਪਵੈ ਹਰਿ ਜਸੁ ਲਿਖਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰੱਧੈ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਹੈ
 ਸਮਾਇ ॥੩੦॥ ਸੋ ਸਹੁ ਮੇਰਾ ਰੰਗੁਲਾ ਰੰਗੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਕਾਮਣਿ ਰੰਗ ਤਾ ਚੜੈ ਜਾ ਪਿਰ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਇ
 ॥੩੧॥ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁਨੇ ਭੀ ਮਿਲਨਿ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਖਾਨਿ ਖਰਚਨਿ ਨ
 ਨਿਖੁਟੰਦੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਹਜਿ ਰਖਨਿ ॥੩੨॥ ਨਾ ਓਇ ਜਨਮਹਿ ਨਾ ਮਰਹਿ ਨਾ ਓਇ ਦੁਖ ਸਵਾਨਿ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ
 ਸੇ ਤਕਰੇ ਹਰਿ ਸਿਤ ਕੇਲ ਕਰਨਿ ॥੩੩॥ ਸਜਣ ਮਿਲੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਜਿ ਅਨਦਿਨੁ ਮਿਲੇ ਰਵਾਨਿ ॥ ਇਸੁ ਜਗ
 ਮਹਿ ਵਿਰਲੇ ਜਾਣੀਅਹਿ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਲਵਾਨਿ ॥੩੪॥੧॥੩॥ ਸ੍ਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਰਿ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਖੁਮੁ ਅਗਮੁ ਹੈ
 ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਿਲਿਆ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭਰਮੁ ਕਟੀਐ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ

नामु जपनि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै मनि हरि गुण सदा रवंनि ॥੧॥ रहाउ ॥ गुरु सरवरु मान सरोवरु है वडभागी पुरख लद्धानि ॥ सेवक गुरमुखि खोजिआ से द्वासुले नामु लद्धानि ॥੨॥ नामु धिआडिनि रंग सिउ गुरमुखि नामि लगंनि ॥ धुरि पूरबि होवै लिखिआ गुर भाणा मंनि लएनि ॥੩॥ वडभागी घरु खोजिआ पाडिआ नामु निधानु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ प्रभु आतम रामु पछानु ॥੪॥ सभना का प्रभु एकु है दूजा अवरु न कोड़ि ॥ गुर परसादी मनि वसै तितु घटि परगटु होड़ि ॥੫॥ सभु अंतरजामी ब्रह्मु है ब्रह्मु वसै सभ थाड़ि ॥ मंदा किस नो आखीऔ सबदि वेखहु लिव लाड़ि ॥੬॥ बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि ॥ गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाड़ि ॥੭॥ सेवा सा प्रभ भावसी जो प्रभु पाए थाड़ि ॥ जन नानक हरि आराधिआ गुर चरणी चितु लाड़ि ॥੮॥੨॥੬॥

रागु सूही अस्टपदीआ महला ४ घरु २

१८३ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥੧॥ दरसनु हरि देखण कै ताई ॥ कृपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥੧॥ रहाउ ॥ जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥੨॥ जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥੩॥ तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥੪॥ पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥੫॥ नानकु गरीबु ढहि पडिआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥੬॥ अखी काढि धरी चरणा तलि सभ धरती फिरि मत पाई ॥੭॥ जे पासि बहालहि ता तुझहि अराधी जे मारि कढहि भी धिआई ॥੮॥ जे लोकु सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै त छोडि न जाई ॥੯॥ जे तुधु वलि रहै ता कोई किहु आखउ तुधु विसरिऔ मरि जाई ॥੧੦॥ वारि वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरी संत मनाई ॥੧੧॥ नानकु विचारा भडिआ दिवाना हरि तउ दरसन कै ताई ॥੧੨॥ झखडु झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥੧੩॥ समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लमघि गुर पहि जाई ॥੧੪॥ जिउ प्राणी

जल बिनु है मरता तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥੧੫॥ जिउ धरती सोभ करे जलु बरसै तिउ सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥੧੬॥ सेवक का होइ सेवकु वरता करि करि बिनउ बुलाई ॥੧੭॥ नानक की बेन्ती हरि पहि गुर मिलि गुर सुखु पाई ॥੧੮॥ तू आपे गुरु चेला है आपे गुर विचु दे तुझहि धिआई ॥੧੯॥ जो तुधु सेवहि सो तूहै होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ॥੨੦॥ भंडार भरे भगती हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ॥੨੧॥ जिसु तूं देहि सोई जनु पाए होर निहफल सभ चतुराई ॥੨੨॥ सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोडिआ मनु जागाई ॥੨੩॥ इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई ॥੨੪॥ जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥੨੫॥ गुरमुखि बोलहि सो थाइ पाए मनमुखि किछु थाइ न पाई ॥੨੬॥ पाला ककरु वरफ वरसै गुरसिखु गुर देखण जाई ॥੨੭॥ सभु दिनसु रैण देखउ गुरु अपुना विचि अखी गुर पैर धराई ॥੨੮॥ अनेक उपाव करी गुर कारण गुर भावै सो थाइ पाई ॥੨੯॥ रैण दिनसु गुर चरण अराधी दडिआ करहु मेरे साई ॥੩੦॥ नानक का जीउ पिंडु गुरु है गुर मिलि तृपति अघाई ॥੩੧॥ नानक का प्रभु पूरि रहिओ है जत कत तत गोसाई ॥੩੨॥੧॥

रागु सूही महला ४ असटपदीआ घरु १०

੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम आपणै ॥ तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा सामणे ॥੧॥ मै हरि हरि नामु विसाहु ॥ गुर पूरे ते पाइआ अंमूतु अगम अथाहु ॥੨॥ रहाउ ॥ हउ सतिगुरु वेखि विगसीआ हरि नामे लगा पिआरु ॥ किरपा करि कै मेलिअनु पाइआ मोख दुआरु ॥੩॥ सतिगुरु बिरही नाम का जे मिलै त तनु मनु देउ ॥ जे पूरबि होवै लिखिआ ता अंमूतु सहजि पीएउ ॥੪॥ सुतिआ गुरु सालाहीऔ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥ कोई औसा गुरमुखि जे मिलै हउ ता के धोवा पाउ ॥੫॥ कोई औसा सजणु लोडि लहु मै प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिअै हरि पाइआ

ਮਿਲਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਗਰੁ ਗੁਣ ਨਾਮ ਕਾ ਮੈ ਤਿਸੁ ਦੇਖਣ ਕਾ ਚਾਤ ॥ ਹਉ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ
ਘੜੀ ਨ ਜੀਵਤੁ ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਮਰਿ ਜਾਤ ॥੬॥ ਜਿਤ ਮਛੁਲੀ ਵਿਣੁ ਪਾਣੀਐ ਰਹੈ ਨ ਕਿਤੈ ਉਪਾਇ ॥ ਤਿਤ ਹਰਿ
ਬਿਨੁ ਸੰਤੁ ਨ ਜੀਵੰਡੁ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥੭॥ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਤੀ ਪਿਰਹੜੀ ਕਿਤ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਜੀਵਾ
ਮਾਤ ॥ ਮੈ ਗੁਰਬਾਣੀ ਆਧਾਰੁ ਹੈ ਗੁਰਬਾਣੀ ਲਾਗਿ ਰਹਾਤ ॥੮॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਹੈ ਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ਦੇਵੈ
ਮਾਇ ॥ ਮੈ ਧਰ ਸਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਹਾ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੯॥ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ
ਦੇਇ ਦੂਡਾਇ ॥ ਜਿਸੁ ਪਰਾਪਤਿ ਸੋ ਲਹੈ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥੧੦॥ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਕੋ ਪ੍ਰੀਤਮੁ
ਆਖੈ ਆਇ ॥ ਤਿਸੁ ਦੇਵਾ ਮਨੁ ਆਪਣਾ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਾ ਪਾਇ ॥੧੧॥ ਸਜਣੁ ਮੇਰਾ ਏਕੁ ਤੁੰ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ
ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੀਤਿ ਮਿਲਾਇਆ ਮੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ॥੧੨॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾ ਆਵੈ
ਨ ਜਾਇ ॥ ਓਹੁ ਅਭਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੧੩॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਸੰਚਿਆ ਸਾਬਤੁ
ਪ੍ਰੰਜੀ ਰਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਗਹ ਮੰਨਿਆ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਸਾਬਾਸਿ ॥੧੪॥੧॥੨॥੧੧॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਉਰਝਿ ਰਹਿਓ ਬਿਖਿਆ ਕੈ ਸੰਗਾ ॥ ਮਨਹਿ ਬਿਆਪਤ ਅਨਿਕ ਤਰੰਗਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ॥
ਕਤ ਪਾਈਐ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸਰ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੋਹ ਮਗਨ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਬਿਆਪੇ ॥ ਅਤਿ ਤੂਸਨਾ ਕਬਹੂ
ਨਹੀ ਧਾਪੇ ॥੩॥ ਬਸਡਿ ਕਰੋਧੁ ਸਰੀਰਿ ਚੰਡਾਰਾ ॥ ਅਗਿਆਨਿ ਨ ਸੂਝੈ ਮਹਾ ਗੁਬਾਰਾ ॥੪॥ ਭ੍ਰਮਤ
ਬਿਆਪਤ ਜਰੇ ਕਿਵਾਰਾ ॥ ਜਾਣੁ ਨ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭ ਦਰਬਾਰਾ ॥੫॥ ਆਸਾ ਅੰਦੇਸਾ ਬੰਧਿ ਪਰਾਨਾ ॥ ਮਹਲੁ
ਨ ਪਾਵੈ ਫਿਰਤ ਬਿਗਾਨਾ ॥੬॥ ਸਗਲ ਬਿਆਧਿ ਕੈ ਵਸਿ ਕਰਿ ਦੀਨਾ ॥ ਫਿਰਤ ਪਿਆਸ ਜਿਤ ਜਲ ਬਿਨੁ
ਮੀਨਾ ॥੭॥ ਕਛੂ ਸਿਆਨਪ ਉਕਤਿ ਨ ਮੋਰੀ ॥ ਏਕ ਆਸ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭ ਤੌਰੀ ॥੮॥ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀ ਸੰਤਨ
ਪਾਸੇ ॥ ਮੇਲਿ ਲੈਹੁ ਨਾਨਕ ਅਰਦਾਸੇ ॥੯॥ ਭਿਓ ਕ੃ਪਾਲੁ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤੂਪਤੇ ਪੂਰਾ
ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ਦ੍ਰੂਜਾ ॥੧॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩

੧੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਿਥਨ ਮੋਹ ਅਗਨਿ ਸੋਕ ਸਾਗਰ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਉਥਰੁ ਹਰਿ ਨਾਗਰ ॥੧॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਸਰਣਾਇ
ਨਰਾਇਣ ॥ ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਭਗਤ ਪਰਾਇਣ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਾਥਾ ਨਾਥ ਭਗਤ ਭੈ ਮੇਟਨ ॥ ਸਾਧਸਾਂਗਿ
ਜਮਦੂਤ ਨ ਭੇਟਨ ॥੨॥ ਜੀਵਨ ਰੂਪ ਅਨੂਪ ਦਿਆਲਾ ॥ ਰਖਣ ਗੁਣਾ ਕਟੀਐ ਜਮ ਜਾਲਾ ॥੩॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ
ਨਾਮੁ ਰਸਨ ਨਿਤ ਜਾਪੈ ॥ ਰੇਗ ਰੂਪ ਮਾਇਆ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥੪॥ ਜਪਿ ਗੋਬਿੰਦ ਸੰਗੀ ਸਭਿ ਤਾਰੇ ॥ ਪੋਹਤ
ਨਾਹੀ ਪੰਚ ਬਟਵਾਰੇ ॥੫॥ ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਧਿਆਏ ॥ ਸਰਬ ਫਲਾ ਸੌਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥੬॥ ਧਾਰਿ
ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਅਪਨਾ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨਾ ॥ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਭਗਤਿ ਰਸੁ ਦੀਨਾ ॥੭॥ ਆਦਿ ਮਥਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੌਈ ॥
ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੮॥੧॥੨॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੬

੧੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਿਨ ਡਿਠਿਆ ਮਨੁ ਰਹਸੀਐ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਤਿਨੁ ਸੰਗੁ ਜੀਤ ॥ ਸੰਤ ਸਜਨ ਮਨ ਮਿਤ ਸੇ ਲਾਇਨਿ ਪ੍ਰਭ ਸਿਤ
ਰੰਗੁ ਜੀਤ ॥ ਤਿਨੁ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਤੁਟੈ ਕਬਹੁ ਨ ਹੋਵੈ ਖੰਗੁ ਜੀਤ ॥੧॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਕਰਿ ਦਿਆ ਗੁਣ
ਗਾਵਾ ਤੇਰੇ ਨਿਤ ਜੀਤ ॥ ਆਇ ਮਿਲਹੁ ਸੰਤ ਸਜਣਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹ ਮਨ ਮਿਤ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੇਖੈ ਸੁਣੇ ਨ
ਜਾਣੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਅੰਧੁ ਜੀਤ ॥ ਕਾਚੀ ਦੇਹਾ ਵਿਣਸਣੀ ਕੂਝੁ ਕਮਾਵੈ ਧੰਧੁ ਜੀਤ ॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਸੇ
ਜਿਣਿ ਚਲੇ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਸਨਬੰਧੁ ਜੀਤ ॥੨॥ ਹੁਕਮੇ ਜੁਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ਚਲਣੁ ਹੁਕਮਿ ਸੰਜੋਗੀ ਜੀਤ ॥ ਹੁਕਮੇ
ਪਰਪੰਚੁ ਪਸਰਿਆ ਹੁਕਮਿ ਕਰੇ ਰਸ ਭੋਗ ਜੀਤ ॥ ਜਿਸ ਨੇ ਕਰਤਾ ਵਿਸਰੈ ਤਿਸਹਿ ਵਿਛੋੜਾ ਸੋਗੁ ਜੀਤ ॥੩॥
ਆਪਨਡੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਿਆ ਦਰਗਹ ਪੈਧਾ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥ ਐਥੈ ਸੁਖੁ ਮੁਖੁ ਤਜਲਾ ਇਕੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਜੀਤ ॥
ਆਦਰੁ ਦਿਤਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਸਤ ਭਾਇ ਜੀਤ ॥੪॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਰਖਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਜੀਆ
ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ਜੀਤ ॥ ਸਚੁ ਖਜਾਨਾ ਸੰਚਿਆ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਮਾਲ ਜੀਤ ॥ ਮਨ ਤੇ ਕਬਹੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਜਾ ਆਪੇ ਹੋਇ

ਦਿੱਖਾਲ ਜੀਤ ॥੫॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਰਹਿ ਗਏ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ਨਿਰਂਕਾਰੁ ਜੀਤ ॥ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਈਐ ਊਚਾ
ਅਗਮ ਅਪਾਰੁ ਜੀਤ ॥ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਣਾ ਵਿਸਰੈ ਸੋ ਮਹਿ ਜਂਮੈ ਲਖ ਵਾਰ ਜੀਤ ॥੬॥ ਸਾਚੁ ਨੇਹੁ ਤਿਨ ਪ੍ਰੀਤਮਾ
ਜਿਨ ਮਨਿ ਕੁਠਾ ਆਪਿ ਜੀਤ ॥ ਗੁਣ ਸਾਝੀ ਤਿਨ ਸੰਗਿ ਬਸੇ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਜਾਪਿ ਜੀਤ ॥ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਪਰਮੇਸਰੈ
ਬਿਨਸੇ ਸਗਲ ਸੰਤਾਪ ਜੀਤ ॥੭॥ ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਤੂੰ ਕਰਣਹਾਰੁ ਤੂਹੈ ਏਕੁ ਅਨੇਕ ਜੀਤ ॥ ਤੂੰ ਸਮਰਥੁ ਤੂੰ ਸਰਕ ਮੈ ਤੂਹੈ
ਬੁਧਿ ਬਿਕੇਕ ਜੀਤ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਜਪੀ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਟੇਕ ਜੀਤ ॥੮॥੧॥੩॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੧੦ ਕਾਫੀ ੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜੇ ਭੁਲੀ ਜੇ ਚੁਕੀ ਸਾਝੀ ਭੀ ਤਛਿਜੀ ਕਾਢੀਆ ॥ ਜਿਨਾ ਨੇਹੁ ਦ੍ਰਵਾਣੇ ਲਗਾ ਝੂਰਿ ਮਰਹੁ ਸੇ ਵਾਢੀਆ ॥੧॥ ਹਉ
ਨਾ ਛੋਡਤ ਕੰਤ ਪਾਸਰਾ ॥ ਸਦਾ ਰੰਗੀਲਾ ਲਾਲੁ ਪਿਆਰਾ ਏਹੁ ਮਹਿਜਾ ਆਸਰਾ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਜਣੁ ਤੂਹੈ
ਸੈਣੁ ਤੂੰ ਮੈ ਤੁੜਾ ਉਪਰਿ ਬਹੁ ਮਾਣੀਆ ॥ ਜਾ ਤੂੰ ਅੰਦਰਿ ਤਾ ਸੁਖੇ ਤੂੰ ਨਿਮਾਣੀ ਮਾਣੀਆ ॥੨॥ ਜੇ ਤੂੰ ਤੁਠਾ
ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ ਨਾ ਦ੍ਰਵਾ ਵੇਖਾਲਿ ॥ ਏਹਾ ਪਾਈ ਮੂੰ ਦਾਤਡੀ ਨਿਤ ਹਿਰਦੈ ਰਖਾ ਸਮਾਲਿ ॥੩॥ ਪਾਵ ਜੁਲਾਈ
ਪੰਧ ਤਤ ਨੈਣੀ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਲਿ ॥ ਸ਼ਵਣੀ ਸੁਣੀ ਕਹਾਣੀਆ ਜੇ ਗੁਰੁ ਥੀਕੈ ਕਿਰਪਾਲਿ ॥੪॥ ਕਿਤੀ ਲਖ ਕਰੋਡਿ
ਪਿਰੀਏ ਰੋਮ ਨ ਪੁਜਨਿ ਤੇਰਿਆ ॥ ਤੂੰ ਸਾਹੀ ਹੂੰ ਸਾਹੁ ਹਉ ਕਹਿ ਨ ਸਕਾ ਗੁਣ ਤੇਰਿਆ ॥੫॥ ਸਹੀਆ ਤਤੁ ਅਸੰਖ
ਮੰਗਹੁ ਹਭਿ ਵਧਾਣੀਆ ॥ ਹਿਕ ਭੌਰੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ਦੇਹਿ ਦਰਸੁ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀਆ ॥੬॥ ਜੈ ਡਿਠੇ ਮਨੁ ਧੀਰੀਐ
ਕਿਲਵਿਖ ਕੰਬਨਿ ਟ੍ਰੈਂਡੇ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਵਿਸਰੈ ਮਾਤ ਮੈ ਜੋ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥੭॥ ਹੋਇ ਨਿਮਾਣੀ ਢਹਿ ਪਈ
ਮਿਲਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਸਹਾਇ ॥੮॥੧॥੮॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਸਿਮੂਤਿ ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ਪੁਕਾਰਨਿ ਪੋਥੀਆ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸਭਿ ਕੂਡ੍ਹ ਗਲੀ ਹੋਛੀਆ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਅਪਾਰੁ
ਭਗਤਾ ਮਨਿ ਕਵੈ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਮੋਹੁ ਦੁਖੁ ਸਾਥੁ ਸੰਗਿ ਨਸੈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੋਹਿ ਬਾਦਿ ਅਛਕਾਰਿ ਸਰਪਰ
ਰੁਨਿਆ ॥ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਇਨਿ ਮੂਲਿ ਨਾਮ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ॥੨॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਧਾਰਿ ਬੰਧਨਿ ਬੰਧਿਆ ॥ ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ
ਅਵਤਾਰ ਮਾਇਆ ਧੰਧਿਆ ॥੩॥ ਸੋਧਤ ਸੋਧਤ ਸੋਧਿ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸੁਖੁ ਨਾਹਿ ਸਰਪਰ

ਹਾਰਿਆ ॥੪॥ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ਅਨੇਕ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਨਮਤੇ ॥ ਬਿਨੁ ਕੂੜੇ ਸਭੁ ਵਾਦਿ ਜੋਨੀ ਭਰਮਤੇ ॥੫॥ ਜਿਨ
ਕਤ ਭਏ ਦਿੱਖਾਲ ਤਿਨ੍ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਭਿੱਖਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਤਿਨੀ ਜਨੀ ਜਪਿ ਲਿੱਖਾ ॥੬॥
ਖੋਜਹਿ ਕੋਟਿ ਅਸੰਖ ਬਹੁਤੁ ਅਨੰਤ ਕੇ ॥ ਜਿਸੁ ਬੁਝਾਏ ਆਪਿ ਨੇੜਾ ਤਿਸੁ ਹੈ ॥੭॥ ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਦਾਤਾਰ ਆਪਣਾ
ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਨਾਨਕ ਚਾਉ ਏਹੁ ॥੮॥੨॥੫॥੧੬॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਕੁਚਜੀ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੰਜੁ ਕੁਚਜੀ ਅੰਮਾਵਣਿ ਡੋਸਡੇ ਹਤ ਕਿਤ ਸਹੁ ਰਾਵਣਿ ਜਾਤ ਜੀਤ ॥ ਇਕ ਦ੍ਰੂ ਇਕਿ ਚਢ਼ੰਟੀਆ ਕਤਣੁ ਜਾਣੈ ਮੇਗ
ਨਾਤ ਜੀਤ ॥ ਜਿਨੀ ਸਖੀ ਸਹੁ ਰਾਵਿਆ ਸੇ ਅੰਬੀ ਛਾਵਡੀਏਹਿ ਜੀਤ ॥ ਸੇ ਗੁਣ ਮੰਜੁ ਨ ਆਵਨੀ ਹਤ ਕੈ ਜੀ
ਦੋਸ ਧੇਰੇਤ ਜੀਤ ॥ ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਵਿਥਰਾ ਹਤ ਕਿਆ ਕਿਆ ਬਿਨਾ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ਜੀਤ ॥ ਇਕਤੁ ਟੋਲਿ ਨ
ਅੰਬੜਾ ਹਤ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੈ ਤੈਰੈ ਜਾਤ ਜੀਤ ॥ ਸੁਝਿਨਾ ਰੂਪਾ ਰੁਗੁਲਾ ਮੌਤੀ ਤੈ ਮਾਣਿਕੁ ਜੀਤ ॥ ਸੇ ਵਸਤੂ ਸਹਿ
ਦਿਤੀਆ ਮੈ ਤਿਨ੍ ਸਿਤ ਲਾਇਆ ਚਿਤੁ ਜੀਤ ॥ ਮੰਦਰ ਮਿਟੀ ਸੰਦੜੇ ਪਥਰ ਕੀਤੇ ਰਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਹਤ ਏਨੀ ਟੋਲੀ
ਭੁਲੀਅਸੁ ਤਿਸੁ ਕੰਤ ਨ ਬੈਠੀ ਪਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਅੰਬਰਿ ਕੁੰਜਾ ਕੁਰਲੀਆ ਬਗ ਬਹਿਠੇ ਆਇ ਜੀਤ ॥ ਸਾ ਧਨ ਚਲੀ
ਸਾਹੁਰੈ ਕਿਆ ਸੁਹੁ ਦੇਸੀ ਅਗੈ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥ ਸੁਤੀ ਸੁਤੀ ਝਾਲੁ ਥੀਆ ਭੁਲੀ ਵਾਟਡੀਆਸੁ ਜੀਤ ॥ ਤੈ ਸਹ ਨਾਲਹੁ
ਸੁਤੀਅਸੁ ਦੁਖਾ ਕੁੰ ਧਰੀਆਸੁ ਜੀਤ ॥ ਤੁਥੁ ਗੁਣ ਮੈ ਸਭਿ ਅਕਗਣਾ ਇਕ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਸਭਿ
ਰਾਤੀ ਸੋਹਾਗਣੀ ਮੈ ਡੋਹਾਗਣਿ ਕਾਈ ਰਾਤਿ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਸੁਚਜੀ ॥ ਜਾ ਤੂ ਤਾ ਮੈ ਸਭੁ ਕੋ ਤੂ
ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰੀ ਰਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਤੁਥੁ ਅੰਤਰਿ ਹਤ ਸੁਖਿ ਵਸਾ ਤੂੰ ਅੰਤਰਿ ਸਾਬਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਭਾਣੈ ਤਖਤਿ ਵਡਾਈਆ
ਭਾਣੈ ਭੀਖ ਉਦਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਭਾਣੈ ਥਲ ਸਿਰਿ ਸਰੁ ਕਹੈ ਕਮਲੁ ਫੁਲੈ ਆਕਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਭਾਣੈ ਭਵਜਲੁ ਲਮਘੀਐ
ਭਾਣੈ ਮੰਝਿ ਭਰੀਆਸਿ ਜੀਤ ॥ ਭਾਣੈ ਸੋ ਸਹੁ ਰੁਗੁਲਾ ਸਿਫਤਿ ਰਤਾ ਗੁਣਤਾਸਿ ਜੀਤ ॥ ਭਾਣੈ ਸਹੁ ਭੀਹਾਵਲਾ
ਹਤ ਆਵਣਿ ਜਾਣਿ ਸੁਈਆਸਿ ਜੀਤ ॥ ਤੂ ਸਹੁ ਅਗਮੁ ਅਤੋਲਵਾ ਹਤ ਕਹਿ ਕਹਿ ਢਹਿ ਪੰਝਾਸਿ ਜੀਤ ॥
ਕਿਆ ਮਾਗਤ ਕਿਆ ਕਹਿ ਸੁਣੀ ਮੈ ਦਰਸਨ ਭੂਖ ਪਿਆਸਿ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਹੁ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਕੀ

ਅਰਦਾਸਿ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸ੍ਰਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਗੁਣਵਂਤੀ ॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਗੁਰਸਿਖਡਾ ਤਿਸੁ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਤ ਪਾਇ
ਜੀਤ ॥ ਆਖਾ ਬਿਰਥਾ ਜੀਅ ਕੀ ਗੁਰ ਸਜਣੁ ਦੇਹਿ ਮਿਲਾਇ ਜੀਤ ॥ ਸੌਈ ਦਸਿ ਉਪਦੇਸਡਾ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਅਨਤ
ਨ ਕਾਹੂ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੈ ਕੁਂ ਡੇਵਸਾ ਮੈ ਮਾਰਗੁ ਦੇਹੁ ਬਤਾਇ ਜੀਤ ॥ ਹਤ ਆਇਆ ਦ੍ਰਵਹੁ ਚਲਿ ਕੈ
ਮੈ ਤਕੀ ਤਤ ਸਰਣਾਇ ਜੀਤ ॥ ਮੈ ਆਸਾ ਰਖੀ ਚਿਤਿ ਮਹਿ ਮੇਰਾ ਸਮ੍ਰਾਤੁ ਦੁਖੁ ਗਵਾਇ ਜੀਤ ॥ ਇਨ੍ਹਾ ਮਾਰਗਿ ਚਲੇ
ਭਾਈਅੰਡੇ ਗੁਰੁ ਕਹੈ ਸੁ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ਜੀਤ ॥ ਤਿਆਂਗੇ ਮਨ ਕੀ ਮਤਡੀ ਵਿਸਾਰੇਂ ਦ੍ਰੂਜਾ ਭਾਤ ਜੀਤ ॥ ਇਤੁ
ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਦਰਸਾਵਡਾ ਨਹ ਲਗੈ ਤਤੀ ਵਾਤ ਜੀਤ ॥ ਹਤ ਆਪਹੁ ਬੋਲਿ ਨ ਜਾਣਦਾ ਮੈ ਕਹਿਆ ਸਭੁ ਹੁਕਮਾਤ
ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਖਜਾਨਾ ਬਖ਼ਸਿਆ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕਿ ਕੀਆ ਪਸਾਤ ਜੀਤ ॥ ਮੈ ਬਹੁਡਿ ਨ ਤ੃ਸਨਾ ਭੁਖਡੀ
ਹਤ ਰਖਾ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਇ ਜੀਤ ॥ ਜੋ ਗੁਰ ਦੀਸੈ ਸਿਖਡਾ ਤਿਸੁ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਤ ਪਾਇ ਜੀਤ ॥੩॥

ਰਾਗ ਸ੍ਰਹੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਭਰਿ ਜੋਬਨਿ ਮੈ ਮਤ ਪੇਈਅੰਡੈ ਘਰਿ ਪਾਹੁਣੀ
ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਮੈਲੀ ਅਵਗਣਿ ਚਿਤਿ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗੁਣ ਨ ਸਮਾਵਨੀ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਗੁਣ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ
ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ਜੋਬਨੁ ਬਾਦਿ ਗਵਾਇਆ ॥ ਕਰੁ ਘਰੁ ਦਰੁ ਦਰਸਨੁ ਨਹੀ ਜਾਤਾ ਪਿਰ ਕਾ ਸਹਜੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥
ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਥਿ ਨ ਮਾਰਗਿ ਚਾਲੀ ਸ੍ਰੂਤੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਬਾਲਤਣਿ ਰਾਡੇਪਾ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਧਨ ਕੁਮਲਾਣੀ
॥੧॥ ਬਾਬਾ ਮੈ ਕਰੁ ਦੇਹਿ ਮੈ ਹਰਿ ਕਰੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸ ਕੀ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜੁਗ ਚਾਰਿ ਤ੃ਭਵਣ ਬਾਣੀ
ਜਿਸ ਕੀ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਤ੃ਭਵਣ ਕਂਤੁ ਰਖੈ ਸੋਹਾਗਣਿ ਅਵਗਣਵਂਤੀ ਦ੍ਰੋਰੇ ॥ ਜੈਸੀ ਆਸਾ ਤੈਸੀ ਮਨਸਾ ਪ੍ਰਾਰੰ
ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਨਾਰਿ ਸੁ ਸਰਬ ਸੁਹਾਗਣਿ ਰਾੱਡ ਨ ਮੈਲੈ ਕੇਸੇ ॥ ਨਾਨਕ ਮੈ ਕਰੁ ਸਾਚਾ ਭਾਵੈ ਜੁਗਿ
ਜੁਗਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤੈਸੇ ॥੨॥ ਬਾਬਾ ਲਗਨੁ ਗਣਾਇ ਛਾ ਭੀ ਕੰਝਾ ਸਾਹੁਰੈ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਸਾਹਾ ਹੁਕਮੁ ਰਾਇ ਸੋ ਨ
ਟਲੈ ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰੈ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਕਿਰਤੁ ਪਾਇਆ ਕਰਤੈ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥ ਜਾਜੀ ਨਾਤ
ਨਰਹ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਤਿਹੁ ਲੋਈ ॥ ਮਾਇ ਨਿਰਾਸੀ ਰੋਇ ਵਿਛੁਨੀ ਬਾਲੀ ਬਾਲੈ ਹੇਤੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚ

ਸਬਦਿ ਸੁਖ ਮਹਲੀ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਪ੍ਰਮੁ ਚੇਤੇ ॥੩॥ ਬਾਬੁਲਿ ਦਿਤੜੀ ਟੂਰਿ ਨਾ ਆਵੈ ਘਰਿ ਪੇਈਐ ਬਲਿ ਰਾਮ
ਜੀਤ ॥ ਰਹਸੀ ਵੇਖਿ ਹਟੂਰਿ ਪਿਰਿ ਰਾਵੀ ਘਰਿ ਸੋਹੀਐ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਸਾਚੇ ਪਿਰ ਲੋੜੀ ਪ੍ਰੀਤਮ ਜੋੜੀ ਮਤਿ
ਪੂਰੀ ਪਰਥਾਨੇ ॥ ਸੰਜੋਗੀ ਮੇਲਾ ਥਾਨਿ ਸੁਹੇਲਾ ਗੁਣਵਂਤੀ ਗੁਰ ਗਿਆਨੇ ॥ ਸਤੁ ਸਤੋਖੁ ਸਦਾ ਸਚੁ ਪਲੈ ਸਚੁ ਬੋਲੈ
ਪਿਰ ਭਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਛੁਡਿ ਨਾ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ਗੁਰਮਤਿ ਅੰਕਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥੧॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤੁ ਘਰੁ ੨ ੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਮ ਘਰਿ ਸਾਜਨ ਆਏ ॥ ਸਾਚੈ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਏ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਏ ਪੰਚ ਮਿਲੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
ਸਾਈ ਵਸਤੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਈ ਜਿਸੁ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਲਾਇਆ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਮੇਲੁ ਭਇਆ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਘਰ ਮੰਦਰ
ਸੋਹਾਏ ॥ ਪੰਚ ਸਬਦ ਧੁਨਿ ਅਨਹਦ ਵਾਜੇ ਹਮ ਘਰਿ ਸਾਜਨ ਆਏ ॥੧॥ ਆਵਹੁ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ॥ ਮੰਗਲ ਗਾਵਹੁ
ਨਾਰੇ ॥ ਸਚੁ ਮੰਗਲੁ ਗਾਵਹੁ ਤਾ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਹੁ ਸੋਹਿਲੜਾ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ॥ ਅਪਨੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ਥਾਨਿ ਸੁਹਾਇਆ
ਕਾਰਜ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਗਿਆਨ ਮਹਾ ਰਸੁ ਨੇਤੀ ਅੰਜਨੁ ਤ੍ਰਭਵਣ ਰੂਪੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਸਖੀ ਮਿਲਹੁ ਰਸਿ
ਮੰਗਲੁ ਗਾਵਹੁ ਹਮ ਘਰਿ ਸਾਜਨੁ ਆਇਆ ॥੨॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਭਿੰਨਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਰਤਨਾ ॥ ਅੰਤਰਿ
ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਮੈਰੈ ਪਰਮ ਤਤੁ ਵੀਚਾਰੋ ॥ ਜੰਤ ਭੇਖ ਤ੍ਰ ਸਫਲਿਓ ਦਾਤਾ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਦੇਵਣਹਾਰੋ ॥ ਤ੍ਰ ਜਾਨੁ
ਗਿਆਨੀ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਆਪੇ ਕਾਰਣੁ ਕੀਨਾ ॥ ਸੁਨਹੁ ਸਖੀ ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਮੋਹਿਆ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਭੀਨਾ ॥੩॥
ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਸਾਚਾ ਖੇਲੁ ਤੁਸਾਰਾ ॥ ਸਚੁ ਖੇਲੁ ਤੁਸਾਰਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਕਤਣੁ ਕੁਝਾਏ ॥
ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਸਿਆਣੇ ਕੇਤੇ ਤੁੜੁ ਬਿਨੁ ਕਵਣੁ ਕਹਾਏ ॥ ਕਾਲੁ ਬਿਕਾਲੁ ਭਏ ਦੇਵਾਨੇ ਮਨੁ ਰਾਖਿਆ ਗੁਰਿ ਠਾਏ ॥
ਨਾਨਕ ਅਵਗਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ਗੁਣ ਸੰਗਮਿ ਪ੍ਰਮੁ ਪਾਏ ॥੪॥੧॥੨॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩ ੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਵਹੁ ਸਜਣਾ ਹਉ ਦੇਖਾ ਦਰਸਨੁ ਤੇਰਾ ਰਾਮ ॥ ਘਰਿ ਆਪਨਡੈ ਖੜੀ ਤਕਾ ਮੈ ਮਨਿ ਚਾਤ ਘਨੇਰਾ ਰਾਮ ॥ ਮਨਿ
ਚਾਤ ਘਨੇਰਾ ਸੁਣਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰਾ ਮੈ ਤੇਰਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਭੰਡੀ ਨਿਹਕੇਵਲ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਨਾਸਾ ॥

ਸਗਲੀ ਜੋਤਿ ਜਾਤਾ ਤੂ ਸੋਈ ਮਿਲਿਆ ਭਾਇ ਸੁਭਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਜਨ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ਸਾਚਿ ਮਿਲੇ ਘਰਿ
ਆਏ ॥੧॥ ਘਰਿ ਆਇਅਡੇ ਸਾਜਨਾ ਤਾ ਧਨ ਖਰੀ ਸਰਸੀ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਮੋਹਿਅਡੀ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਠਾਕੁਰ
ਦੇਖਿ ਰਹਸੀ ਰਾਮ ॥ ਗੁਣ ਸੰਗ ਰਹਸੀ ਖਰੀ ਸਰਸੀ ਜਾ ਰਾਵੀ ਰੰਗ ਰਾਤੈ ॥ ਅਵਗਣ ਮਾਰਿ ਗੁਣੀ ਘਰੁ
ਛਾਇਆ ਪ੍ਰੈ ਪੁਰਖਿ ਬਿਧਾਤੈ ॥ ਤਸਕਰ ਮਾਰਿ ਕਥੀ ਪੰਚਾਇਣਿ ਅਦਲੁ ਕਰੇ ਕੀਚਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ
ਨਿਸਤਾਰਾ ਗੁਰਮਤਿ ਮਿਲਹਿ ਪਿਆਰੇ ॥੨॥ ਕਰੁ ਪਾਇਅਡਾ ਬਾਲਡੀਏ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਪੂਰੀ ਰਾਮ ॥ ਪਿਰਿ
ਰਾਵਿਅਡੀ ਸਬਦਿ ਰਲੀ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਨਹ ਟੂਰੀ ਰਾਮ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਟੂਰਿ ਨ ਹੋਈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੋਈ ਤਿਸ ਕੀ ਨਾਰਿ
ਸਬਾਈ ॥ ਆਪੇ ਰਸੀਆ ਆਪੇ ਰਾਵੇ ਜਿਤ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਅਮਰ ਅਡੋਲੁ ਅਮੋਲੁ ਅਪਾਰਾ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ
ਸਚੁ ਪਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਜੋਗ ਸਜੋਗੀ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਲਿਵ ਲਾਈਐ ॥੩॥ ਪਿਰੁ ਤਚਡੀਐ ਮਾਡੀਐ ਤਿਹੁ
ਲੋਆ ਸਿਰਤਾਜਾ ਰਾਮ ॥ ਹਤ ਬਿਸਮ ਰਿੰਦੀ ਦੇਖਿ ਗੁਣਾ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਅਗਾਜਾ ਰਾਮ ॥ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰੀ ਕਰਣੀ
ਸਾਰੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨੀਸਾਣੋ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਖੋਟੇ ਨਹੀ ਠਾਹਰ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਪਰਵਾਣੋ ॥ ਪਤਿ ਮਤਿ ਪੂਰੀ ਪੂਰਾ
ਪਰਵਾਨਾ ਨਾ ਆਵੈ ਨਾ ਜਾਸੀ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਪ੍ਰਭ ਜੈਸੇ ਅਵਿਨਾਸੀ ॥੪॥੧॥੩॥

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਛੱਤ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਨਿ ਦੇਖਿਆ ਜਗੁ ਧੰਧੈ
ਲਾਇਆ ॥ ਦਾਨਿ ਤੈਰੈ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਤਨਿ ਚੰਦੁ ਦੀਪਾਇਆ ॥ ਚੰਦੋ ਦੀਪਾਇਆ ਦਾਨਿ ਹਰਿ ਕੈ ਟੁਖੁ ਅੰਧੇਰਾ
ਤਠਿ ਗਇਆ ॥ ਗੁਣ ਜੰਬ ਲਾਡੇ ਨਾਲਿ ਸੋਹੈ ਪਰਖਿ ਮੋਹਣੀਐ ਲਾਇਆ ॥ ਕੀਵਾਹੁ ਹੋਆ ਸੋਭ ਸੇਤੀ ਪੰਚ ਸਬਦੀ
ਆਇਆ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਨਿ ਦੇਖਿਆ ਜਗੁ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ॥੧॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਾਜਨਾ ਮੀਤਾ ਅਵਰੀਤਾ ॥
ਇਹੁ ਤਨੁ ਜਿਨ ਸਿਤ ਗਾਡਿਆ ਮਨੁ ਲੀਅਡਾ ਦੀਤਾ ॥ ਲੀਆ ਤ ਦੀਆ ਮਾਨੁ ਜਿਨੁ ਸਿਤ ਸੇ ਸਜਨ ਕਿਤ ਕੀਸਰਹਿ
॥ ਜਿਨੁ ਦਿਸਿ ਆਇਆ ਹੋਹਿ ਰਲੀਆ ਜੀਅ ਸੇਤੀ ਗਹਿ ਰਹਹਿ ॥ ਸਗਲ ਗੁਣ ਅਵਗਣੁ ਨ ਕੋਈ ਹੋਹਿ ਨੀਤਾ
ਨੀਤਾ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਾਜਨਾ ਮੀਤਾ ਅਵਰੀਤਾ ॥੨॥ ਗੁਣਾ ਕਾ ਹੋਵੈ ਵਾਸੁਲਾ ਕਢਿ ਵਾਸੁ ਲਈਜੈ ॥ ਜੇ ਗੁਣ

होवनि साजना मिलि साझा करीजै ॥ साझा करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीअै ॥ पहिरे पठंबर करि
 अडंबर आपणा पिंडु मलीअै ॥ जिथै जाइ बहीअै भला कहीअै झोलि अंमृतु पीजै ॥ गुणा का होवै
 वासुला कठि वासु लईजै ॥३॥ आपि करे किसु आखीअै होरु करे न कोई ॥ आखण ता कउ जाईअै
 जे भूलड़ा होई ॥ जे होइ भूला जाइ कहीअै आपि करता किउ भुलै ॥ सुणे देखे बाझु कहिअै दानु
 अणमंगिआ दिवै ॥ दानु देइ दाता जगि बिधाता नानका सचु सोई ॥ आपि करे किसु आखीअै होरु
 करे न कोई ॥४॥१॥४॥ सूही महला ੧ ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ गुर की पउड़ी
 साच की साचा सुखु होई ॥ सुखि सहजि आवै साच भावै साच की मति किउ टलै ॥ इसनानु दानु
 सुगिआनु मजनु आपि अछलिओ किउ छलै ॥ परपंच मोह बिकार थाके कूड़ु कपटु न दोई ॥ मेरा मनु
 राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥१॥ साहिबु सो सालाहीअै जिनि कारणु कीआ ॥ मैलु लागी मनि
 मैलिअै किनै अंमृतु पीआ ॥ मथि अंमृतु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ ॥ आपनड़ा
 प्रभु सहजि पछाता जा मनु साचै लाइआ ॥ तिसु नालि गुण गावा जे तिसु भावा किउ मिलै होइ
 पराइआ ॥ साहिबु सो सालाहीअै जिनि जगतु उपाइआ ॥२॥ आइ गइआ की न आइओ किउ
 आवै जाता ॥ प्रीतम सिउ मनु मानिआ हरि सेती राता ॥ साहिब रंगि राता सच की बाता जिनि बिंब
 का कोटु उसारिआ ॥ पंच भू नाइको आपि सिरंदा जिनि सच का पिंडु सवारिआ ॥ हम अवगणिआरे
 तू सुणि पिआरे तुधु भावै सचु सोई ॥ आवण जाणा ना थीअै साची मति होई ॥३॥ अंजनु तैसा अंजीअै
 जैसा पिर भावै ॥ समझै सूझै जाणीअै जे आपि जाणावै ॥ आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ
 लेवए ॥ करम सुकरम कराए आपे कीमति कउण अभेवए ॥ तंतु मंतु पाखंडु न जाणा रामु रिदै मनु
 मानिआ ॥ अंजनु नामु तिसै ते सूझै गुर सबदी सचु जानिआ ॥४॥ साजन होवनि आपणे किउ पर घर
 जाही ॥ साजन राते सच के संगे मन माही ॥ मन माहि साजन करहि रलीआ करम धरम सबाइआ ॥

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਪੁਨ ਪ੍ਰਾਜਾ ਨਾਮੁ ਸਾਚਾ ਭਾਇਆ ॥ ਆਪਿ ਸਾਜੇ ਥਾਪਿ ਕੇਖੈ ਤਿਸੈ ਭਾਣਾ ਭਾਇਆ ॥ ਸਾਜਨ
 ਰਾਂਗਿ ਰੰਗੀਲੜੇ ਰੰਗ ਲਾਲੁ ਬਣਾਇਆ ॥੫॥ ਅੰਧਾ ਆਗੂ ਜੇ ਥੀਐ ਕਿਤ ਪਾਧਰੁ ਜਾਣੈ ॥ ਆਪਿ ਮੁਸੈ ਮਤਿ
 ਹੋਛੀਐ ਕਿਤ ਰਾਹੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਕਿਤ ਰਾਹਿ ਜਾਵੈ ਮਹਲੁ ਪਾਵੈ ਅੰਧ ਕੀ ਮਤਿ ਅੰਧਲੀ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ਕਛੁ
 ਨ ਸੂੜੈ ਅੰਧੁ ਬੂੜੈ ਧੰਧਲੀ ॥ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਚਾਨਣੁ ਚਾਤ ਉਪਯੈ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਕਾ ਮਨਿ ਵਸੈ ॥ ਕਰ ਜੋਡਿ ਗੁਰ ਪਹਿ
 ਕਰਿ ਬਿਨਤੀ ਰਾਹੁ ਪਾਧਰੁ ਗੁਰੁ ਦਸੈ ॥੬॥ ਮਨੁ ਪਰਦੇਸੀ ਜੇ ਥੀਐ ਸਭੁ ਦੇਸੁ ਪਰਾਇਆ ॥ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਖੋਲੁਤ
 ਗਾਂਠੜੀ ਢੂਖੀ ਭਰਿ ਆਇਆ ॥ ਢੂਖੀ ਭਰਿ ਆਇਆ ਜਗਤੁ ਸਬਾਇਆ ਕਤਣੁ ਜਾਣੈ ਬਿਧਿ ਮੇਰੀਆ ॥ ਆਵਣੇ
 ਜਾਵਣੇ ਖਰੇ ਡਰਾਵਣੇ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਫੇਰੀਆ ॥ ਨਾਮ ਵਿਵ੍ਹਾਣੇ ਊਣੇ ਝ੍ਝੀਣੇ ਨਾ ਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਮਨੁ
 ਪਰਦੇਸੀ ਜੇ ਥੀਐ ਸਭੁ ਦੇਸੁ ਪਰਾਇਆ ॥੭॥ ਗੁਰ ਮਹਲੀ ਘਰਿ ਆਪਣੈ ਸੋ ਭਰਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ॥ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਤਾਁ
 ਕਰੇ ਸਚ ਸਬਦਿ ਪਤੀਣਾ ॥ ਸਬਦੇ ਪਤੀਯੈ ਅੰਕੁ ਭੀਯੈ ਸੁ ਮਹਲੁ ਮਹਲਾ ਅੰਤਰੇ ॥ ਆਪਿ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੋਈ ਪ੍ਰਮੁ
 ਆਪਿ ਅੰਤਿ ਨਿਰਾਂਤਰੇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਮੇਲਾ ਤਾਁ ਸੁਹੇਲਾ ਬਾਜ਼ਤ ਅਨਹਦ ਬੀਣਾ ॥ ਗੁਰ ਮਹਲੀ ਘਰਿ ਆਪਣੈ
 ਸੋ ਭਰਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ॥੮॥ ਕੀਤਾ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹੀਐ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਸੋਈ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨ ਪਕੈ ਜੇ ਲੋਚੈ ਕੋਈ
 ॥ ਕੀਮਤਿ ਸੋ ਪਾਵੈ ਆਪਿ ਜਾਣਾਵੈ ਆਪਿ ਅਮੁਲੁ ਨ ਭੁਲਏ ॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਕਰਹਿ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਅਮੁਲਏ ॥ ਹੀਣਤ ਨੀਚੁ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀ ਸਾਚੁ ਨ ਛੋਡਤ ਭਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਦੇਖਿਆ ਦੇਵੈ ਮਤਿ
 ਸਾਈ ॥੯॥੨॥੫॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰਹੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੨

ਸੁਖ ਸੋਹਿਲੜਾ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ
 ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਢੂਖ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਅਪਣੇ ਵਿਟਹੁ ਜਿਨਿ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕ੃ਪਾ
 ਕਰੇ ਹਰਿ ਜਾਪਹੁ ਸੁਖ ਫਲ ਹਰਿ ਜਨ ਪਾਵਹੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸੁਣਹੁ ਜਨ ਭਾਈ ਸੁਖ ਸੋਹਿਲੜਾ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ
 ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਭੀਨੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤਿਨ ਗੁਰੂ ਮਿਲਿਆ ਤਿਨ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਤ ਭਾਗ ॥ ਅੰਦਰਹੁ ਦੁਰਮਤਿ ਟ੍ਰੌਜੀ ਖੋਈ ਸੋ ਜਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥
 ਜਿਨ ਕਤ ਕ੃ਪਾ ਕੀਨੀ ਮੈਰੈ ਸੁਆਮੀ ਤਿਨ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਭੀਨੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥੨॥
 ਜੁਗ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਉਪਯੈ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਾ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ
 ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਸੁ ਪਾਏ ॥ ਸਹਜੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਕਿਲਵਿਖ ਸਭਿ ਗਵਾਏ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰਾ ਤੂ ਸਭਨਾ
 ਕਾ ਹਤ ਤੇਰਾ ਤੂ ਹਮਾਰਾ ॥ ਜੁਗ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੩॥ ਸਾਜਨ ਆਇ ਕੁਠੇ ਘਰ ਮਾਹੀ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ
 ਗਾਵਹਿ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਹੀ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਸਦਾ ਤ੃ਪਤਾਸੀ ਫਿਰਿ ਭੂਖ ਨ ਲਾਗੈ ਆਏ ॥ ਦਹ ਦਿਸਿ ਪ੍ਰੂਜ
 ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਆਪੇ ਜੋਡਿ ਵਿਛੋਡੇ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕੋ ਟ੍ਰੌਜਾ ਨਾਹੀ ॥
 ਸਾਜਨ ਆਇ ਕੁਠੇ ਘਰ ਮਾਹੀ ॥੪॥੧॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੩ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ

ਹਰਿ ਜੀਤ ਰਾਖੈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ਰਾਮ ॥ ਸੋ ਭਗਤੁ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਹਤਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇਆ
 ਰਾਮ ॥ ਹਤਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇਆ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਭਾਇਆ ਜਿਸ ਦੀ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ॥ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ
 ਰਾਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖਿ ਕਖਾਣੀ ॥ ਭਗਤਾ ਕੀ ਚਾਲ ਸਚੀ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਜਿਨੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥੧॥ ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਕੀ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਹੈ ਭਗਤ
 ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਵਹਿ ਜਿਨ ਗੁਣ ਅਵਗਣ ਪਛਾਣੇ
 ਰਾਮ ॥ ਗੁਣ ਅਤਗਣ ਪਛਾਣੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੈ ਭੈ ਭਗਤਿ ਮੀਠੀ ਲਾਗੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ
 ਰਾਤੀ ਘਰ ਹੀ ਮਹਿ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਭਗਤੀ ਰਾਤੇ ਸਦਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕੇਖਹਿ ਸਦਾ ਨਾਲੇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸੇ ਭਗਤ ਹਰਿ ਕੈ ਦਰਿ ਸਾਚੇ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੇ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥ ਹਤਮੈ ਮਾਇਆ ਰੋਗਿ ਵਿਆਪੇ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਟੁਖੁ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥
 ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਟੁਖੁ ਹੋਈ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਪਰਜ ਵਿਗੋਈ ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਤਤੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਭਗਤਿ ਵਿਹੂਣਾ ਸਭੁ

ਜਗੁ ਭਰਮਿਆ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਨਿਆ ॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕਿਨੈ ਪਛਾਣਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਦ੍ਰਿਜੈ ਭਾਇ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥੩॥ ਭਗਤਾ ਕੈ ਘਰਿ ਕਾਰਜੁ ਸਾਚਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਦਾ ਵਖਾਣੇ
 ਰਾਮ ॥ ਭਗਤਿ ਖਜਾਨਾ ਆਪੇ ਦੀਆ ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਮਾਰਿ ਸਮਾਣੇ ਰਾਮ ॥ ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਮਾਰਿ ਸਮਾਣੇ ਹਰਿ ਮਨਿ
 ਭਾਣੇ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਦਾ ਅਖੁਟੁ ਕਦੇ ਨ ਨਿਖੁਟੈ ਹਰਿ ਦੀਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਜਨ
 ਊਚੇ ਸਦ ਹੀ ਊਚੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਏ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸੋਭਾ ਪਾਇਆ
 ॥੪॥੧॥੨॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਸਚੁ ਸੋਹਿਲਾ ਜਿਥੈ ਸਚੇ ਕਾ ਹੋਇ ਵੀਚਾਰੋ ਰਾਮ ॥ ਹਉਮੈ ਸਭਿ
 ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੇ ਸਾਚੁ ਰਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਸਚੁ ਰਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ਦੁਤਰੁ ਤਾਰੇ ਫਿਰਿ ਭਵਜਲੁ ਤਰਣੁ ਨ
 ਹੋਈ ॥ ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਵਿਖਾਲਿਆ ਸੋਈ ॥ ਸਾਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ਸਚੁ ਕੇਖੈ
 ਸਭੁ ਸੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ਸਚੁ ਨਿਸਤਾਰਾ ਹੋਈ ॥੧॥ ਸਾਚੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਾਚੁ ਬੁਜ਼ਾਇਆ
 ਪਤਿ ਰਾਖੈ ਸਚੁ ਸੋਈ ਰਾਮ ॥ ਸਚਾ ਭੋਜਨੁ ਭਾਉ ਸਚਾ ਹੈ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥ ਸਾਚੈ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ਮਰੈ
 ਨ ਕੋਈ ਗਰਭਿ ਨ ਜੂਨੀ ਵਾਸਾ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ਸਚਿ ਸਮਾਈ ਸਚਿ ਨਾਇ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਜਾਤਾ
 ਸੇ ਸਚੇ ਹੋਏ ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੁ ਧਿਆਇਨਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਜਿਨ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਨਾ ਵੀਛੁਡਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਨਿ
 ॥੨॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਸੋਹਿਲਾ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥ ਨਿਰਮਲ ਗੁਣ ਸਾਚੇ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਾਚਾ
 ਵਿਚਿ ਸਾਚਾ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ਰਾਮ ॥ ਸਭੁ ਸਚੁ ਵਰਤੈ ਸਚੀ ਬੋਲੈ ਜੋ ਸਚੁ ਕਰੈ ਸੁ ਹੋਈ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਸਚੁ
 ਪਸਰਿਆ ਅਕਰੁ ਨ ਦ੍ਰਿਜਾ ਕੋਈ ॥ ਸਚੇ ਤੁਪਜੈ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਦ੍ਰਿਜਾ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ
 ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਕਰਾਵੈ ਸੋਈ ॥੩॥ ਸਚੇ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਦਰਖਾਰੇ ਸਚੀ ਸਚੁ ਵਖਾਣੇ ਰਾਮ ॥ ਘਟ ਅੰਤਰੇ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ
 ਸਾਚੀ ਆਪਿ ਪਛਾਣੇ ਰਾਮ ॥ ਆਪੁ ਪਛਾਣਹਿ ਤਾ ਸਚੁ ਜਾਣਹਿ ਸਾਚੇ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਸਚਾ ਸਕਦੁ ਸਚੀ ਹੈ ਸੋਭਾ
 ਸਾਚੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਭਗਤ ਇਕ ਰੰਗੀ ਦ੍ਰਿਜਾ ਰੰਗੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਕਤ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ
 ਤਿਸੁ ਸਚੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਈ ॥੪॥੨॥੩॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਧਨ ਜੇ ਭਵੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੋਹਾਗੁ ਨ

होई राम ॥ निहचलु राजु सदा हरि केरा तिसु बिनु अवरु न कोई राम ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई सदा
 सचु सोई गुरमुखि एको जाणिआ ॥ धन पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ॥ सतिगुरु मिलिआ
 ता हरि पाइਆ बिनु हरि नावै मुकति न होई ॥ नानक कामणि कंतै रावे मनि मानिअै सुखु होई ॥੧॥
 सतिगुरु सेवि धन बालड़ीए हरि वरु पावहि सोई राम ॥ सदा होवहि सोहागणी फिरि मैला वेसु न होई
 राम ॥ फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै मारि पछाणिआ ॥ करणी कार कमावै सबदि
 समावै अंतरि एको जाणिआ ॥ गुरमुखि प्रभु रावे दिनु राती आपणा साची सोभा होई ॥ नानक कामणि
 पिरु रावे आपणा रवि रहिआ प्रभु सोई ॥੨॥ गुर की कार करे धन बालड़ीए हरि वरु देइ मिलाए
 राम ॥ हरि कै रंगि रती है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाए राम ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाए सचि समाए
 सचु वरतै सभ थाई ॥ सचा सीगारु करे दिनु राती कामणि सचि समाई ॥ हरि सुखदाता सबदि
 पछाता कामणि लड़िआ कंठि लाए ॥ नानक महली महलु पछाणै गुरमती हरि पाए ॥੩॥ सा धन बाली
 धुरि मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ॥ गुरमती घटि चानणु होआ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई राम ॥
 प्रभु रवि रहिआ सभ थाई मनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ सेज सुखाली मेरे प्रभ भाणी सचु
 सीगारु बणाइआ ॥ कामणि निरमल हउमै मलु खोई गुरमति सचि समाई ॥ नानक आपि मिलाई
 करतै नामु नवै निधि पाई ॥੪॥੩॥੪॥ सूही महला ੩ ॥ हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे पाए
 राम ॥ अनदिनो सबदि रवहु अनहद सबद वजाए राम ॥ अनहद सबद वजाए हरि जीउ घरि आए हरि
 गुण गावहु नारी ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै सा धन कंत पिआरी ॥ गुर का सबदु वसिआ घट
 अंतरि से जन सबदि सुहाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला हरि करि किरपा घरि आए ॥੧॥ भगता
 मनि आनन्दु भड़िआ हरि नामि रहे लिव लाए राम ॥ गुरमुखे मनु निरमलु होआ निरमल हरि गुण
 गाए राम ॥ निरमल गुण गाए नामु मनि वसाए हरि की अंमृत बाणी ॥ जिन् मनि वसिआ सेई जन

ਨਿਸਤਰੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਬਦਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਹਿ ਸਬਦੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਤਿਨ ਕੇਰਾ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥੨॥ ਸਂਤਸਙਗਤਿ ਸਿਉ ਮੇਲੁ ਭਡਿਆ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਦ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤ ਭਏ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮਿ
 ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ਮਨ੍ਨ੍ਹਾ ਰਤਾ ਹਰਿ ਨਾਲੇ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਪਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ
 ਸਮਾਲੇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਰਤਾ ਸਹਜੇ ਮਾਤਾ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਘਰਿ ਸਦ ਹੀ ਸੋਹਿਲਾ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸੇਵਿ ਸਮਾਏ ॥੩॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਜਗੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਹਰਿ ਕਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮੁਖੇ ਇਕਿ
 ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ਤਿਨ ਕੇ ਦ੍ਰੂਖ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਤਿਨ ਕੇ ਦ੍ਰੂਖ ਗਵਾਇਆ ਜਾ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਸਦਾ
 ਗਾਵਹਿ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਭਗਤ ਸਦਾ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸਦ ਹੀ ਜਾਤੇ ॥ ਸਾਚੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਰਿ
 ਜਾਪਹਿ ਘਰਿ ਦਰਿ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਸੋਹਿਲਾ ਸਚੀ ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਸਬਦੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੪॥੪॥੫॥
 ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੇ ਲੋਡ਼ਿਹਿ ਕਰੁ ਬਾਲਡੀਏ ਤਾ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਰਾਮ ॥ ਸਦਾ ਹੋਵਹਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਹਰਿ
 ਜੀਤ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ਸਾ ਧਨ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ॥ ਸਚਿ ਸੰਜਮਿ
 ਸਦਾ ਹੈ ਨਿਰਮਲ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੀ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਸਦ ਹੀ ਸਾਚਾ ਜਿਨਿ ਆਪੇ ਆਪੁ ਤਥਾਇਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਆਪਣਾ ਜਿਨਿ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥੧॥ ਪਿਰੁ ਪਾਇਅਡਾ ਬਾਲਡੀਏ ਅਨਦਿਨੁ
 ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਡਿਆ ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਮੈਲੁ ਨ ਰਾਤੀ ਰਾਮ ॥ ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਮੈਲੁ ਨ ਰਾਤੀ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਤੀ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਵੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਣਾ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥ ਗੁਰਮਤਿ
 ਪਾਇਆ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਇਆ ਅਪਣੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਾਤੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਵੇ ਰੰਗ ਰਾਤੀ
 ॥੨॥ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਰੰਗ ਰਾਤਡੀਏ ਪਿਰ ਕਾ ਮਹਲੁ ਤਿਨ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਸੋ ਸਹੋ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲੁ ਦਾਤਾ ਜਿਨਿ
 ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਵਿਚਹੁ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ਜਾ ਹਰਿ ਭਾਇਆ ਹਰਿ ਕਾਮਣਿ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥
 ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਿਤ ਸਾਚੇ ਕਥੇ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਸਾਚਾ ਏਕੋ ਵਰਤੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ

ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਰੰਗ ਖੈ ਰੰਗ ਰਾਤੀ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥੩॥ ਕਾਮਣਿ ਮਨਿ ਸੋਹਿਲਡਾ
 ਸਾਜਨ ਮਿਲੇ ਧਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ
 ਤਰਿ ਧਾਰੇ ਅਪਨਾ ਕਾਰਜੁ ਸਵਾਰੇ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਜਾਤਾ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮਿ ਮੋਹਿ ਲਾਇਆ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ਪਾਇਆ ਕਰਮ
 ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮੰਨਿ ਸੁਰਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਮੇਲਿ ਲਈ ਗੁਰਿ ਅਪੁਨੈ
 ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥੪॥੫॥੬॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੋਹਿਲਡਾ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਕੀਚਾਰੇ ਰਾਮ ॥
 ਹਰਿ ਮਨੁ ਤਨੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭੀਜੈ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਿਆਰੇ ਸਭਿ ਕੁਲ ਤਉਧਾਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੁਖਿ
 ਬਾਣੀ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਘਰਿ ਅਨਹਦ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਏਕੋ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ
 ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੇ ॥ ਸੋਹਿਲਡਾ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਕੀਚਾਰੇ ॥੧॥ ਹਮ ਨੀਵੀ ਪ੍ਰਭੁ ਅਤਿ ਊਚਾ
 ਕਿਤ ਕਰਿ ਮਿਲਿਆ ਜਾਏ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਮੇਲੀ ਕਹੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਹਰਿ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਏ ਰਾਮ ॥ ਮਿਲੁ ਸਬਦਿ
 ਸੁਭਾਏ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਰੰਗ ਸਿਤ ਰਲੀਆ ਮਾਣੇ ॥ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਜਾ ਪ੍ਰਭੁ ਭਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ॥
 ਨਾਨਕ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਾ ਕਡਭਾਗੀ ਜੇ ਚਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ॥ ਹਮ ਨੀਵੀ ਪ੍ਰਭੁ ਅਤਿ ਊਚਾ ਕਿਤ ਕਰਿ ਮਿਲਿਆ
 ਜਾਏ ਰਾਮ ॥੨॥ ਘਟਿ ਘਟੇ ਸਭਨਾ ਵਿਚਿ ਏਕੋ ਏਕੋ ਰਾਮ ਭਤਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਇਕਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਦ੍ਰੂਰਿ ਕਥੈ ਇਕਨਾ ਮਨਿ
 ਆਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਇਕਨਾ ਮਨ ਆਧਾਰੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ਕਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ
 ਸੁਆਮੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥ ਸਹਜੇ ਅਨਦੁ ਹੋਆ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਕੀਚਾਰੇ ॥ ਘਟਿ
 ਘਟੇ ਸਭਨਾ ਵਿਚਿ ਏਕੋ ਏਕੋ ਰਾਮ ਭਤਾਰੇ ਰਾਮ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ
 ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਧੂਡਿ ਦੇਵਹੁ ਮੈ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਹਮ ਪਾਪੀ ਮੁਕਤੁ ਕਰਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਪਾਪੀ ਮੁਕਤੁ ਕਰਾਏ ਆਪੁ ਗਵਾਏ
 ਨਿਜ ਘਰਿ ਪਾਇਆ ਵਾਸਾ ॥ ਬਿਕੇਕ ਬੁਧੀ ਸੁਖਿ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮਿ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਨਦੁ
 ਭਇਆ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਏ ॥ ਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ
 ॥੪॥੬॥੭॥੫॥੭॥੧੨॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧

੧੬੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਇ ਅਵਗਣ ਵਿਕਣਾ ਗੁਣ ਰਖਾ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਗੁਰਬਾਣੀ
ਨਿਤ ਨਿਤ ਚਵਾ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰਬਾਣੀ ਸਦ ਮੀਠੀ ਲਾਗੀ ਪਾਪ ਵਿਕਾਰ ਗਵਾਇਆ ॥ ਹਉਮੈ ਰੋਗ
ਗਿਆ ਭਤ ਭਾਗਾ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਕਾਇਆ ਸੇਜ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੁਖਾਲੀ ਗਿਆਨ ਤਤਿ ਕਰਿ ਭੋਗੋ
॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸੁਖਿ ਮਾਣੇ ਨਿਤ ਰਲੀਆ ਨਾਨਕ ਧੁਰਿ ਸੰਜੋਗੋ ॥੧॥ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਕਰਿ ਭਾਉ ਕੁਝੁ ਕੁਝਮਾਈ
ਆਇਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਰਿ ਮੇਲੁ ਗੁਰਬਾਣੀ ਗਾਵਾਈਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਬਾਣੀ ਗੁਰ ਗਾਈ
ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਪੰਚ ਮਿਲੇ ਸੋਹਾਇਆ ॥ ਗਿਆ ਕਰੋਧੁ ਮਮਤਾ ਤਨਿ ਨਾਠੀ ਪਾਖੰਡੁ ਭਰਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
ਹਉਮੈ ਪੀਰ ਗੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਆਰੋਗਤ ਭਏ ਸਰੀਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਤਾ ਨਾਨਕ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰਾ
॥੨॥ ਮਨਮੁਖਿ ਵਿਛੁਡੀ ਫੂਰਿ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਏ ਬਲਿ ਗੈ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਅੰਤਰਿ ਮਮਤਾ ਕੂਰਿ ਕੂਝੁ ਵਿਹਾਜੇ
ਕੂਝਿ ਲੈ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਕੂਝੁ ਕਪਟੁ ਕਮਾਵੈ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮਗੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਤਝੜ
ਪਥਿ ਭਰਮੈ ਗਾਵਾਰੀ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਧਕੇ ਖਾਇਆ ॥ ਆਪੇ ਦਾਇਆ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਦਾਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਏ ॥
ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਵਿਛੁਡੇ ਜਨ ਮੇਲੇ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥੩॥ ਆਇਆ ਲਗਨੁ ਗਣਾਇ ਹਿਰਦੈ ਧਨ
ਓਮਾਹੀਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਪੰਡਿਤ ਪਾਧੇ ਆਣਿ ਪਤੀ ਬਹਿ ਵਾਚਾਈਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਪਤੀ ਵਾਚਾਈ
ਮਨਿ ਵਜੀ ਵਧਾਈ ਜਬ ਸਾਜਨ ਸੁਣੇ ਘਰਿ ਆਏ ॥ ਗੁਣੀ ਗਿਆਨੀ ਬਹਿ ਮਤਾ ਪਕਾਇਆ ਫੇਰੇ ਤਤੁ ਦਿਵਾਏ ॥
ਕਰੁ ਪਾਇਆ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਦ ਨਵਤਨੁ ਬਾਲ ਸਖਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਮੇਲੇ ਵਿਛੁਡਿ ਕਦੇ
ਨ ਜਾਈ ॥੪॥੧॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਪਹਿਲਡੀ ਲਾਵ ਪਰਵਿਰਤੀ ਕਰਮ ਦ੃ਝਾਇਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥
ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮਾ ਵੇਦੁ ਧਰਮੁ ਦੂਝੁ ਪਾਪ ਤਜਾਇਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਧਰਮੁ ਦੂਝੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ
ਸਿਮੂਤਿ ਨਾਮੁ ਦ੃ਝਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰਾ ਆਰਾਧਹੁ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਗਵਾਇਆ ॥ ਸਹਜ ਅਨਨਦੁ

ਹੋਆ ਵਡਭਾਗੀ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੀਠਾ ਲਾਇਆ ॥ ਜਨੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਲਾਵ ਪਹਿਲੀ ਆਰੰਭੁ ਕਾਜੁ ਰਚਾਇਆ
॥੧॥ ਹਰਿ ਟ੍ਰੂਜੜੀ ਲਾਵ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਇਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਨਿਰਮਲੁ ਭੈ ਮਨੁ ਹੋਇ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ
ਗਵਾਇਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਨਿਰਮਲੁ ਭਤ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ਹਰਿ ਕੇਖੈ ਰਾਮੁ ਹਫ਼ਦੂਰੇ ॥ ਹਰਿ
ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਸਾਰਿਆ ਸੁਆਮੀ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਅਂਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਜਨ
ਮੰਗਲ ਗਾਏ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਟ੍ਰੂਜੀ ਲਾਵ ਚਲਾਈ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਵਜਾਏ ॥੨॥ ਹਰਿ ਤੀਜੜੀ ਲਾਵ ਮਨਿ ਚਾਤ
ਭਡਿਆ ਕੈਰਾਗੀਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਹਰਿ ਮੇਲੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਵਡਭਾਗੀਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥
ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ਮੁਖਿ ਬੋਲੀ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਇਆ ਹਰਿ
ਕਥੀਐ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧੁਨਿ ਉਪਜੀ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਜੀਤ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ
ਬੋਲੇ ਤੀਜੀ ਲਾਵੈ ਹਰਿ ਉਪਜੈ ਮਨਿ ਕੈਰਾਗੁ ਜੀਤ ॥੩॥ ਹਰਿ ਚਤੁਰਥੜੀ ਲਾਵ ਮਨਿ ਸਹਜੁ ਭਇਆ ਹਰਿ ਪਾਇਆ
ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿਆ ਸੁਭਾਇ ਹਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸੀਠਾ ਲਾਇਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਸੀਠਾ
ਲਾਇਆ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਇਆ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ
ਕਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਠਾਕੁਰਿ ਕਾਜੁ ਰਚਾਇਆ ਧਨ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮਿ ਵਿਗਾਸੀ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੇ ਚਤੁਰੀ
ਲਾਵੈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਅਵਿਨਾਸੀ ॥੪॥੨॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਛੱਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥ ਹਿਰਦੈ ਰਸਨ ਰਸਾਏ ॥ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਏ
ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਏ ਮਿਲਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭੋਗ ਭੋਗੇ ਸੁਖਿ ਸੋਵੈ ਸਬਦਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਵਡੈ ਭਾਗਿ
ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਮਿਲਿਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਨਾਨਕ ਸੁਨਿ ਸਮਾਏ ॥੧॥
ਸੰਗਤਿ ਸੰਤ ਮਿਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਸਾਰਿ ਨਿਰਮਲਿ ਨਾਏ ॥ ਨਿਰਮਲਿ ਜਲਿ ਨਾਏ ਮੈਲੁ ਗਵਾਏ ਭਏ ਪਵਿਤੁ ਸਰੀਰਾ ॥
ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਗੜੀ ਭਰਮੁ ਭਾਗਾ ਹਉਮੈ ਬਿਨਠੀ ਪੀਰਾ ॥ ਨਦਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਨਿਜ ਘਰਿ ਹੋਆ

ਵਾਸਾ ॥ ਹਰਿ ਮੰਗਲ ਰਸਿ ਰਸਨ ਰਸਾਏ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ॥੨॥ ਅੰਤਰਿ ਰਤਨੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਨਾਮੁ ਪਿਆਰੇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰੇ ਸਬਦਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ਅਗਿਆਨੁ ਅਧੇਰੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਗਿਆਨੁ ਪ੍ਰਚੰਡੁ
ਬਲਿਆ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਘਰ ਮੰਦਰ ਸੋਹਾਇਆ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਰਪਿ ਸੀਗਾਰ ਬਣਾਏ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਭਾਇਆ ॥
ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਕਹੈ ਸੋਈ ਪਲੁ ਕੀਜੈ ਨਾਨਕ ਅੰਕਿ ਸਮਾਇਆ ॥੩॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਾਜੁ ਰਚਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਆਹਣਿ
ਆਇਆ ॥ ਕੀਆਹਣਿ ਆਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਾ ਧਨ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਮੰਗਲ
ਗਾਏ ਹਰਿ ਜੀਤ ਆਪਿ ਸਵਾਰੀ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਗਣ ਗੰਧਰਥ ਮਿਲਿ ਆਏ ਅਪੂਰਥ ਜੰਬ ਬਣਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ
ਪਾਇਆ ਮੈ ਸਾਚਾ ਨਾ ਕਦੇ ਮਰੈ ਨ ਜਾਈ ॥੪॥੧॥੩॥

ਰਾਗ ਸੂਹੀ ਛੱਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੩

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਵਹੋ ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਗੋਵਿੰਦ ਕੇਰੇ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿ ਰਹੀਐ ਘਰਿ ਵਾਜਹਿ ਸਬਦ ਘਨੇਰੇ ਰਾਮ
॥ ਸਬਦ ਘਨੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਤੂ ਕਰਤਾ ਸਭ ਥਾਈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਜਪੀ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਈ
॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਹਜਿ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਪ੍ਰਯਾ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੁ ਪਛਾਣੈ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣੈ
ਦੂਜਾ ॥੧॥ ਸਭ ਮਹਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਰਵੈ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ
ਸੁਆਮੀ ਰਾਮ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਵਿਆ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਸਹਜਿ
ਸਮਾਈਐ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਸਹਜੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਜੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਾ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ
ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਬਦੇ ਜਾਪੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥੨॥ ਇਹੁ ਜਗੇ ਦੁਤਰੁ ਮਨਮੁਖੁ ਪਾਰਿ ਨ ਪਾਈ ਰਾਮ ॥ ਅੰਤਰੇ
ਹਤਮੈ ਮਮਤਾ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਚਤੁਰਾਈ ਰਾਮ ॥ ਅੰਤਰਿ ਚਤੁਰਾਈ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
ਜਮ ਮਗਿ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ਚੋਟਾ ਖਾਵੈ ਅੰਤਿ ਗਿਆ ਪਛੁਤਾਇਆ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਬੇਲੀ ਨਾਹੀ ਪੁਤੁ ਕੁਟੰਬੁ ਸੁਤੁ
ਭਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਪਸਾਰਾ ਆਗੈ ਸਾਥਿ ਨ ਜਾਈ ॥੩॥ ਹਤ ਪ੍ਰਥਾਤ ਅਪਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ
ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਐ ਰਾਮ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ਚਲਹੁ ਜੀਵਤਿਆ ਇਵ ਮਰੀਐ ਰਾਮ ॥ ਜੀਵਤਿਆ ਮਰੀਐ

ਭਤਜਲੁ ਤਰੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਪੂਰਾ ਪੁਰਖੁ ਪਾਇਆ ਵਡਭਾਗੀ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥ ਮਤਿ
ਪਰਗਾਸੁ ਭਈ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਇਆ ਜੋਤੀ
ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥੪॥੧॥੪॥

ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੫

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰੁ ਸੰਤ ਜਨੋ ਪਿਆਰਾ ਮੈ ਮਿਲਿਆ ਮੇਰੀ ਤ੃ਸਨਾ ਬੁੜਿ ਗੰਝਾਸੇ ॥ ਹਉ ਮਨੁ ਤਨੁ ਦੇਵਾ ਸਤਿਗੁਰੈ ਮੈ ਮੇਲੇ
ਪ੍ਰਭ ਗੁਣਤਾਸੇ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੁ ਵਡ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਮੈ ਦੱਸੇ ਹਰਿ ਸਾਬਾਸੇ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ
ਨਾਮਿ ਕਿਗਾਸੇ ॥੧॥ ਗੁਰੁ ਸਜਣੁ ਪਿਆਰਾ ਮੈ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਮਾਰਗੁ ਪਥੁ ਦਸਾਹਾ ॥ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ਚਿਰੀ
ਕਿਛੁਨਿਆ ਮਿਲੁ ਸਬਦਿ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਹਾ ॥ ਹਉ ਤੁੜ੍ਹੁ ਬਾਝਾਹੁ ਖਰੀ ਤਡੀਣੀਆ ਜਿਤ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮੀਨੁ ਮਗਹਾ ॥
ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹਾ ॥੨॥ ਮਨੁ ਦਹ ਦਿਸਿ ਚਲਿ ਚਲਿ ਭਰਮਿਆ ਮਨਮੁਖੁ
ਭਰਮਿ ਮੁਲਾਇਆ ॥ ਨਿਤ ਆਸਾ ਮਨਿ ਚਿਤਵੈ ਮਨ ਤ੃ਸਨਾ ਭੁਖ ਲਗਾਇਆ ॥ ਅਨਤਾ ਧਨੁ ਧਰਿ ਦਬਿਆ
ਫਿਰਿ ਬਿਖੁ ਭਾਲਣ ਗਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤ੍ਰ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਚਿ ਪਚਿ ਮੁਇਆ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਸੁੰਦਰੁ
ਮੋਹਨੁ ਪਾਇ ਕਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਬਾਣੀ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ॥ ਮੇਰੈ ਹਿਰਦੈ ਸੁਧਿ ਬੁਧਿ ਵਿਸਰਿ ਗੈ ਮਨ ਆਸਾ ਚਿੰਤ
ਵਿਸਾਰਿਆ ॥ ਮੈ ਅੰਤਰਿ ਕੇਦਨ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਗੁਰ ਦੇਖਤ ਮਨੁ ਸਾਧਾਰਿਆ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਪ੍ਰਭ ਆਇ ਮਿਲੁ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ
ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਵਾਰਿਆ ॥੪॥੧॥੫॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਾਰੇਹਿਸੁ ਵੇ ਜਨ ਹਉਮੈ ਬਿਖਿਆ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ
ਮਿਲਣ ਨ ਦਿਤੀਆ ॥ ਦੇਹ ਕੰਚਨ ਵੇ ਕਨੀਆ ਇਨਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਵਿਗੁਤੀਆ ॥ ਮੋਹੁ ਮਾਇਆ ਵੇ ਸਭ ਕਾਲਖਾ
ਇਨਿ ਮਨਮੁਖਿ ਮੂਡਿ ਸਜੁਤੀਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਕਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਉਮੈ ਛੁਟੀਆ ॥੧॥ ਵਸਿ ਆਣਿਹੁ ਵੇ
ਜਨ ਇਸੁ ਮਨ ਕਤ ਮਨੁ ਬਾਸੇ ਜਿਤ ਨਿਤ ਭਤਦਿਆ ॥ ਦੁਖਿ ਰੈਣਿ ਵੇ ਵਿਹਾਣੀਆ ਨਿਤ ਆਸਾ ਆਸ ਕਰੇਦਿਆ
॥ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਵੇ ਸੰਤ ਜਨੋ ਮਨਿ ਆਸ ਪੂਰੀ ਹਰਿ ਚਤਦਿਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਦੇਹੁ ਮਤੀ ਛਡਿ ਆਸਾ ਨਿਤ
ਸੁਖਿ ਸਤਦਿਆ ॥੨॥ ਸਾ ਧਨ ਆਸਾ ਚਿਤਿ ਕਰੇ ਰਾਮ ਰਾਜਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਸੇਜੜੀਐ ਆਈ ॥ ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੁ

अगम दिइआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥ मेरै मनि तनि लोचा गुरमुखे राम राजिआ हरि सरधा सेज विछाई ॥ जन नानक हरि प्रभ भाणीआ राम राजिआ मिलिआ सहजि सुभाई ॥३॥ डिकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि मेलेई ॥ मै मनि तनि प्रेम बैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई ॥ हउ गुर विटहु घोलि घुमाइआ राम राजिआ जीउ सतिगुर आगै दर्दै ॥ गुरु तुठा जीउ राम राजिआ जन नानक हरि मेलेई ॥४॥२॥६॥५॥७॥८॥१८॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु १

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

सुणि बावरे तू काए देखि भुलाना ॥ सुणि बावरे नेहु कूड़ा लाइओ कुसंभ रंगाना ॥ कूड़ी डेखि भुलो अढु लहै न मुलो गोविद नामु मजीठा ॥ थीवहि लाला अति गुलाला सबदु चीनि गुर मीठा ॥ मਿਥਿਆ ਮੋਹਿ ਮਗਨੁ ਥੀ ਰਹਿਆ ਝੂਠ ਸੰਗਿ ਲਪਟਾਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦੀਨ ਸਰਣਿ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਰਾਖੁ ਲਾਜ ਭਗਤਾਨਾ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਬਾਵਰੇ ਸੇਵਿ ਠਾਕੁਰੁ ਨਾਥੁ ਪਰਾਣਾ ॥ ਸੁਣਿ ਬਾਵਰੇ ਜੋ ਆਇਆ ਤਿਸੁ ਜਾਣਾ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਹਭ ਵੈਸੀ ਸੁਣਿ ਪਰਦੇਸੀ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਰਹੀਐ ॥ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਭਾਗੀ ਸੁਣਿ ਬੈਰਾਗੀ ਚਰਣ ਪ੍ਰਭੂ ਗਹਿ ਰਹੀਐ ॥ ਏਹੁ ਮਨੁ ਦੀਜੈ ਸੰਕ ਨ ਕੀਜੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਜਿ ਬਹੁ ਮਾਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦੀਨ ਭਗਤ ਭਵ ਤਾਰਣ ਤੇਰੇ ਕਿਆ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣਾ ॥੨॥ ਸੁਣਿ ਬਾਵਰੇ ਕਿਆ ਕੀਚੈ ਕੂଡਾ ਮਾਨੋ ॥ ਸੁਣਿ ਬਾਵਰੇ ਹਭੁ ਵੈਸੀ ਗਰਬੁ ਗੁਮਾਨੋ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਹਭ ਜਾਣਾ ਮਿਥਿਆ ਮਾਣਾ ਸੰਤ ਪ੍ਰਭੂ ਹੋਇ ਦਾਸਾ ॥ ਜੀਕਤ ਮਰੀਐ ਭਉਜਲੁ ਤਰੀਐ ਜੇ ਥੀਕੈ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿਆਸਾ ॥ ਗੁਰੁ ਸੇਵੀਜੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਜੈ ਜਿਸੁ ਲਾਵਹਿ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੋ ॥ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਦੁਆਰੈ ਹउ ਬਲਿ ਬਲਿ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨੋ ॥੩॥ ਸੁਣਿ ਬਾਵਰੇ ਮਤੁ ਜਾਣਹਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੈ ਪਾਇਆ ॥ ਸੁਣਿ ਬਾਵਰੇ ਥੀਤ ਰੇਣੁ ਜਿਨੀ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਜਿਨੀ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਵਡਭਾਗੀ ਦਰਸਨੁ ਪਾਈਐ ॥ ਥੀਤ ਨਿਮਾਣਾ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣਾ ਸਗਲਾ ਆਪੁ ਮਿਟਾਈਐ ॥ ਓਹੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਸੁਧਾ ਜਿਨੀ ਪ੍ਰਭੁ ਲਧਾ ਹਮ ਤਿਸੁ ਪਹਿ ਆਪੁ ਵੇਚਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਦੀਨ ਸਰਣਿ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਰਾਖੁ ਲਾਜ ਅਪਨਾਇਆ ॥੪॥੧॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਮਲ

की टेक सतिगुरि दिती तुसि कै बलि राम जीउ ॥ हरि अंमृति भरे भंडार सभु किछु है घरि तिस कै
बलि राम जीउ ॥ बाबुलु मेरा वड समरथा करण कारण प्रभु हारा ॥ जिसु सिमरत दुखु कोई न लागै
भउजलु पारि उतारा ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा उसतति करि करि जीवा ॥ नानक नामु महा रसु
मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥੧॥ हरि आपे लए मिलाइ किउ वेछोङ्गा थीवई बलि राम जीउ ॥
जिस नो तेरी टेक सो सदा सद जीवई बलि राम जीउ ॥ तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा ॥
जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा ॥ संत जना मिलि मंगलु गाइआ दिनु रैनि आस तुमारी ॥
सफलु दरसु भेटिआ गुरु पूरा नानक सद बलिहारी ॥੨॥ संमलिआ सचु थानु मानु महतु सचु पाइआ
बलि राम जीउ ॥ सतिगुरु मिलिआ दइआलु गुण अबिनासी गाइआ बलि राम जीउ ॥ गुण गोबिंद
गाउ नित नित प्राण प्रीतम सुआमीआ ॥ सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए मिले अंतरजामीआ ॥ सतु
संतोखु वजहि वाजे अनहदा झुणकारे ॥ सुणि भै बिनासे सगल नानक प्रभ पुरख करणहारे ॥੩॥ उपजिआ
ततु गिआनु साहुरै पेरईअै इकु हरि बलि राम जीउ ॥ ब्रह्मै ब्रह्मु मिलिआ कोइ न साकै भिन्न करि
बलि राम जीउ ॥ बिसमु पेखै बिसमु सुणीअै बिसमादु नदरी आइआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन
सुआमी घटि घटि रहिआ समाइआ ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाइआ कीमति कहणु न जाए ॥
जिस के चलत न जाही लखणे नानक तिसहि धिआए ॥੪॥੨॥

रागु सूही छंत महला ੫ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

गोबिंद गुण गावण लागे ॥ हरि रंगि अनदिनु जागे ॥ हरि रंगि जागे पाप भागे मिले संत पिआरिआ
॥ गुर चरण लागे भरम भागे काज सगल सवारिआ ॥ सुणि स्रवण बाणी सहजि जाणी हरि नामु जपि
वडभागै ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी जीउ पिंडु प्रभ आगै ॥੧॥ अनहत सबदु सुहावा ॥ सचु
मंगलु हरि जसु गावा ॥ गुण गाइ हरि हरि दूख नासे रहसु उपजै मनि घणा ॥ मनु तनु निरमलु

ਦੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਮੁਖਿ ਭਣਾ ॥ ਹੋਇ ਰੇਣ ਸਾਧੂ ਪ੍ਰਭ ਅਰਾਧੂ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ
ਦਿੱਖਾ ਧਾਰਹੁ ਸਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ॥੨॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ॥ ਹਰਿ ਚਰਣ ਜਪਤ ਨਿਸਤਰਿਆ
॥ ਹਰਿ ਚਰਣ ਧਿਆਏ ਸਭਿ ਫਲ ਪਾਏ ਮਿਟੇ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਸੁਭਾਇ ਹਰਿ ਜਪਿ ਆਪਣੇ
ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਾ ॥ ਜਪਿ ਏਕੁ ਅਲਖ ਅਪਾਰ ਪੂਰਨ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਖੋਇਆ
ਜਤ ਦੇਖਾ ਤਤ ਸੋਈ ॥੩॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥ ਪੂਰਨ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੇ ਕਾਮਾ ॥ ਗੁਰੁ ਸੰਤੁ ਪਾਇਆ
ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇਆ ਸਗਲ ਇਛਾ ਪੁਨੀਆ ॥ ਹਉ ਤਾਪ ਬਿਨਸੇ ਸਦਾ ਸਰਸੇ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ॥
ਮਨਿ ਸਾਤਿ ਆਈ ਕਜੀ ਕਵਧਾਈ ਮਨਹੁ ਕਦੇ ਨ ਕੀਸਾਰੈ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੂਝਾਇਆ ਸਦਾ
ਭਜੁ ਜਗਦੀਸਾਰੈ ॥੪॥੧॥੩॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੂ ਠਾਕੁਰੋ ਬੈਰਾਗਰੋ ਮੈ ਜੇਹੀ ਘਣ ਚੇਰੀ ਰਾਮ ॥ ਤੂਂ ਸਾਗਰੋ ਰਤਨਾਗਰੋ ਹਉ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਾ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ॥ ਸਾਰ ਨ
ਜਾਣਾ ਤੂ ਕਡ ਦਾਣਾ ਕਰਿ ਮਿਹਰਿਮਤਿ ਸਾਈ ॥ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ਸਾ ਮਤਿ ਦੀਜੈ ਆਠ ਪਹਰ ਤੁਥੁ ਧਿਆਈ ॥ ਗਰਬੁ
ਨ ਕੀਜੈ ਰੇਣ ਹੋਵੀਜੈ ਤਾ ਗਤਿ ਜੀਅਰੇ ਤੇਰੀ ॥ ਸਭ ਊਪਰਿ ਨਾਨਕ ਕਾ ਠਾਕੁਰੁ ਮੈ ਜੇਹੀ ਘਣ ਚੇਰੀ ਰਾਮ ॥੧॥ ਤੁਮ
ਗਤਹਰ ਅਤਿ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ਤੁਮ ਪਿਰ ਹਮ ਬਹੁਰੀਆ ਰਾਮ ॥ ਤੁਮ ਕਡੇ ਕਡੇ ਕਡ ਊਚੇ ਹਉ ਇਤਨੀਕ ਲਹੁਰੀਆ
ਰਾਮ ॥ ਹਉ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀਂ ਏਕੋ ਤੂਹੈ ਆਪੇ ਆਪਿ ਸੁਜਾਨਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵ੃ਸਟਿ ਨਿਮਖ ਪ੍ਰਭ ਜੀਵਾ ਸਰਬ ਰੰਗ ਰਸ
ਮਾਨਾ ॥ ਚਰਣਹ ਸਰਨੀ ਦਾਸਹ ਦਾਸੀ ਮਨਿ ਮਤਲੈ ਤਨੁ ਹਰੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰੁ ਸਰਬ ਸਮਾਣਾ ਆਪਨ
ਭਾਵਨ ਕਰੀਆ ॥੨॥ ਤੁੜ੍ਹੁ ਊਪਰਿ ਮੇਰਾ ਹੈ ਮਾਣਾ ਤੂਹੈ ਮੇਰਾ ਤਾਣਾ ਰਾਮ ॥ ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਚਤੁਰਾਈ ਤੇਰੀ ਤੂ
ਜਾਣਾਇਹਿ ਜਾਣਾ ਰਾਮ ॥ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ਪਛਾਣੈ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਸਿਰਦੇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਭੂਲੀ ਬਹੁਤੀ ਰਾਹੀਂ ਫਾਥੀ
ਮਾਇਆ ਫਂਦੇ ॥ ਠਾਕੁਰ ਭਾਣੀ ਸਾ ਗੁਣਵੰਤੀ ਤਿਨ ਹੀ ਸਭ ਰੰਗ ਮਾਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਧਰ ਤੂਹੈ ਠਾਕੁਰ ਤੂ ਨਾਨਕ
ਕਾ ਮਾਣਾ ॥੩॥ ਹਉ ਵਾਰੀ ਕਂਝਾ ਘੋਲੀ ਕਂਝਾ ਤੂ ਪਰਬਤੁ ਮੇਰਾ ਓਲਾ ਰਾਮ ॥ ਹਉ ਬਲਿ ਜਾਈ ਲਖ ਲਖ ਲਖ

ਕਰਿਆ ਜਿਨਿ ਭ੍ਰਮੁ ਪਰਦਾ ਖੋਲਾ ਰਾਮ ॥ ਮਿਟੇ ਅੰਧਾਰੇ ਤਜੇ ਬਿਕਾਰੇ ਠਾਕੁਰ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਭਾਣੀ
 ਭਈ ਨਿਕਾਣੀ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਨਾ ॥ ਭਈ ਅਮੋਲੀ ਭਾਰਾ ਤੋਲੀ ਸੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ਦਰੁ ਖੋਲਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
 ਹਤ ਨਿਰਭਤ ਹੋਈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਓਲਾ ॥੪॥੧॥੪॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਜਨੁ ਪੁਰਖੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਪੂਰਾ
 ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਣਾ ਰਾਮ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ਰਾਮ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ
 ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਦੀਆ ਸਰਬ ਗੁਣਾ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਤਾ ਕੀ ਸਰਣਿ
 ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਏ ਹੋਏ ਸਰਬ ਕਲਿਆਣਾ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰੈ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣਾ ॥੧॥ ਐਸਾ
 ਗੁਰੁ ਕਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੈ ਰਾਮ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਉਤਰਹਿ ਹਰਿ ਸੰਤ ਧੂਡੀ
 ਨਿਤ ਨਾਪੈ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਧੂਡੀ ਨਾਈਐ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ਬਾਹੁਡਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਈਐ ॥ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਾਗੇ ਭ੍ਰਮ
 ਭਤ ਭਾਗੇ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਨਿਤ ਗਾਏ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਫਿਰਿ ਸੋਗੁ ਨਾਹੀ ਸੰਤਾਪੈ ॥
 ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜੀਅ ਕਾ ਦਾਤਾ ਪੂਰਾ ਜਿਸੁ ਪਰਤਾਪੈ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਨਿਧੇ ਹਰਿ ਸੰਤਨ ਕੈ ਵਸਿ ਆਏ
 ਰਾਮ ॥ ਸੰਤ ਚਰਣ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲਾਗੇ ਤਿਨੀ ਪਰਮ ਪਦ ਪਾਏ ਰਾਮ ॥ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਆਪੁ ਮਿਟਾਇਆ ਹਰਿ
 ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਹੋਆ ਭਤ ਭਾਗ ਹਰਿ ਭੇਟਿਆ ਏਕੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਨ ਹੀ ਮੇਲਿ
 ਲੀਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਜਪੀਐ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥ ਗਾਤ
 ਮੰਗਲੋ ਨਿਤ ਹਰਿ ਜਨਹੁ ਪੁਨੰਨੀ ਇਛ ਸਬਾਈ ਰਾਮ ॥ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਅਪੁਨੇ ਸੁਆਮੀ ਸੇਤੀ ਸੈਨੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਈ ਰਾਮ
 ॥ ਅਕਿਨਾਸੀ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪਾਏ ॥ ਸਾਁਤਿ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਘਨੇਰੇ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਨੁ
 ਲਾਏ ॥ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਅਕਿਨਾਸੀ ਥਾਨ ਥਨਨਤਰਿ ਸਾਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਪੂਰੇ
 ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਈ ॥੪॥੨॥੫॥ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਆਮੀ ਨੇਤ ਦੇਖਹਿ ਦਰਸੁ
 ਤੇਰਾ ਰਾਮ ॥ ਲਾਖ ਜਿਹਵਾ ਦੇਹੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸੁਖੁ ਹਰਿ ਆਰਾਧੇ ਮੇਰਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਆਰਾਧੇ ਜਮ ਪਥੁ ਸਾਧੇ ਟ੍ਰਖੁ
 ਨ ਵਿਆਪੈ ਕੋਈ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਨ ਸੁਆਮੀ ਜਤ ਦੇਖਾ ਤਤ ਸੋਈ ॥ ਭਰਮ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ ਨਾਠੇ ਪ੍ਰਭੁ

ਨੇਰ ਹੂ ਤੇ ਨੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ਨੇਵ ਦੇਖਹਿ ਦਰਸੁ ਤੇਰਾ ॥੧॥ ਕੋਟਿ ਕਰਨ ਦੀਜਹਿ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ
 ਹਰਿ ਗੁਣ ਸੁਣੀਅਹਿ ਅਬਿਨਾਸੀ ਰਾਮ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਛੋਵੈ ਕਟੀਐ ਕਾਲ ਕੀ ਫਾਸੀ ਰਾਮ ॥
 ਕਟੀਐ ਜਮ ਫਾਸੀ ਸਿਮਰਿ ਅਬਿਨਾਸੀ ਸਗਲ ਮੰਗਲ ਸੁਗਿਆਨਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਪੀਐ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਲਾਗੈ
 ਸਹਜਿ ਧਿਆਨਾ ॥ ਕਲਮਲ ਦੁਖ ਜਾਰੇ ਪ੍ਰਭੂ ਚਿਤਾਰੇ ਮਨ ਕੀ ਦੁਰਮਤਿ ਨਾਸੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ
 ਹਰਿ ਗੁਣ ਸੁਣੀਅਹਿ ਅਵਿਨਾਸੀ ॥੨॥ ਕਰੋਡਿ ਹਸਤ ਤੇਰੀ ਟਹਲ ਕਮਾਵਹਿ ਚਰਣ ਚਲਹਿ ਪ੍ਰਭ ਮਾਰਗਿ ਰਾਮ
 ॥ ਭਵ ਸਾਗਰ ਨਾਵ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਜੋ ਚੱਡੇ ਤਿਸੁ ਤਾਰਗਿ ਰਾਮ ॥ ਭਵਜਲੁ ਤਰਿਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿਆ ਸਗਲ
 ਮਨੋਰਥ ਪ੍ਰੇਰੇ ॥ ਮਹਾ ਬਿਕਾਰ ਗਏ ਸੁਖ ਉਪਜੇ ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤ੍ਰੈਰੇ ॥ ਮਨ ਬਾਂਘਤ ਫਲ ਪਾਏ ਸਗਲੇ ਕੁਦਰਤਿ ਕੀਮ
 ਅਪਾਰਗਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ਮਨੁ ਸਦਾ ਚਲੈ ਤੈਰੈ ਮਾਰਗਿ ॥੩॥ ਏਹੋ ਕਰੁ ਏਹਾ ਵਡਿਆਈ ਇਹੁ
 ਧਨੁ ਹੋਇ ਵਡਭਾਗਾ ਰਾਮ ॥ ਏਹੋ ਰੁਂਗ ਏਹੋ ਰਸ ਭੋਗਾ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਚਰਣੇ ਪ੍ਰਭ ਕੀ
 ਸਰਣੇ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ਤ੍ਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲਾ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ
 ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮਨੁ ਜਾਗਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਕੀਨੀ ਚਰਣ ਕਮਲ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥੪॥
 ੩॥੬॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਜਪੇ ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ ਸਾਜਿਆ ਸੰਤ ਭਗਤ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਰਾਮ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ
 ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਸਗਲੇ ਪਾਪ ਤਜਾਵਹਿ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਊਤਮ ਬਾਣੀ
 ॥ ਸਹਜ ਕਥਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਅਤਿ ਮੀਠੀ ਕਥੀ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਭਲਾ ਸੰਜੋਗੁ ਮੂਰਤੁ ਪਲੁ ਸਾਚਾ ਅਬਿਚਲ ਨੀਵ
 ਰਖਾਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਦਿਇਆਲਾ ਸਰਬ ਕਲਾ ਬਣਿ ਆਈ ॥੧॥ ਆਨਦਾ ਵਜਹਿ ਨਿਤ ਵਾਜੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ
 ਮਨਿ ਵੂਠਾ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮੁਖੇ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ਬਿਨਸੇ ਭਰਮ ਐ ਝੂਠਾ ਰਾਮ ॥ ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਖਾਣੀ ਜਸੁ
 ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿਆ ॥ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਤਿਸ ਹੀ ਬਣਿ ਆਏ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨਾ ਕਰਿਆ ॥ ਘਰ ਮਹਿ ਨਵ ਨਿਧਿ
 ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਰੁਂਗ ਲਾਗਾ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨ ਪ੍ਰਭੁ ਕਦੇ ਨ ਵਿਸਰੈ ਪੂਰਨ ਜਾ ਕੇ ਭਾਗਾ ॥੨॥ ਛਾਇਆ ਪ੍ਰਭਿ
 ਛਵਪਤਿ ਕੀਨੀ ਸਗਲੀ ਤਪਤਿ ਬਿਨਾਸੀ ਰਾਮ ॥ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਡੇਰਾ ਢਾਠਾ ਕਾਰਜੁ ਆਇਆ ਰਾਸੀ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ

ਪ੍ਰਭਿ ਫੁਰਮਾਇਆ ਮਿਟੀ ਬਲਾਇਆ ਸਾਚੁ ਧਰਮੁ ਪੁਨ੍ਨੁ ਫਲਿਆ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਸੋਵਤ ਬੈਸਤ
 ਖਲਿਆ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਸੁਆਮੀ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਸੋਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਣਾਈ
 ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਕੁ ਨ ਕੋਈ ॥੩॥ ਮੇਰਾ ਘਰੁ ਬਨਿਆ ਬਨੁ ਤਾਲੁ ਬਨਿਆ ਪ੍ਰਭ ਪਰਸੇ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਮੇਰਾ
 ਮਨੁ ਸੋਹਿਆ ਮੀਤ ਸਾਜਨ ਸਰਸੇ ਗੁਣ ਮੰਗਲ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਗੁਣ ਗਾਇ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਇ ਸਾਚਾ ਸਗਲ
 ਇਛਾ ਪਾਈਆ ॥ ਗੁਰ ਚਰਣ ਲਾਗੇ ਸਦਾ ਜਾਗੇ ਮਨਿ ਵਜੀਆ ਵਾਧਾਈਆ ॥ ਕਰੀ ਨਦਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖਹ ਗਾਮੀ
 ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਕਾਰਿਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਨਿਤ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਜਿਨਿ ਧਾਰਿਆ ॥੪॥੪॥੭॥
 ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭੈ ਸਾਗਰੇ ਭੈ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਰਾਮ ॥ ਬੋਹਿਥਡਾ ਹਰਿ ਚਰਣ ਅਰਾਧੇ
 ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਰਿ ਲਘਾਏ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਤਰੀਐ ਬਹੁਡਿ ਨ ਮਰੀਐ ਚੂਕੈ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ
 ਕਰੈ ਸੋਈ ਭਲ ਮਾਨਤ ਤਾ ਮਨੁ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣਾ ॥ ਦ੍ਰਾਖ ਨ ਭ੍ਰਾਖ ਨ ਰੋਗੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਸਰਣੀ ਪਾਏ ॥
 ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ ਰੰਗ ਰਾਤਾ ਮਨ ਕੀ ਚਿੰਤ ਮਿਟਾਏ ॥੧॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਹਰਿ ਮੰਨੁ ਵੜਾਇਆ ਹਰਿ
 ਸਾਜਨ ਵਸਗਤਿ ਕੀਨੇ ਰਾਮ ॥ ਆਪਨਡਾ ਮਨੁ ਆਗੈ ਧਰਿਆ ਸਰਬਸੁ ਠਾਕੁਰਿ ਦੀਨੇ ਰਾਮ ॥ ਕਰਿ ਅਪੁਨੀ ਦਾਸੀ
 ਮਿਟੀ ਉਦਾਸੀ ਹਰਿ ਮੰਦਰਿ ਥਿਤਿ ਪਾਈ ॥ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਵਿਛੁਡਿ ਕਬਹੂ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਾ
 ਕਡਭਾਗਣਿ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਣ ਚੀਨੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਰਖਿ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਪ੍ਰੇਮ ਮਹਾ ਰਸਿ ਭੀਨੇ ॥੨॥
 ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਭਏ ਨਿਤ ਸਖੀਏ ਮੰਗਲ ਸਦਾ ਹਮਾਰੈ ਰਾਮ ॥ ਆਪਨਡੈ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਸੀਗਾਰੀ ਸੋਭਾਵਂਤੀ ਨਾਰੇ
 ਰਾਮ ॥ ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ਭਏ ਕਿਰਪਾਲਾ ਗੁਣ ਅਕਗਣ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥ ਕੱਠਿ ਲਗਾਇ ਲੀਏ ਜਨ ਅਪੁਨੇ ਰਾਮ
 ਨਾਮ ਤਰਿ ਧਾਰਿਆ ॥ ਮਾਨ ਮੋਹ ਮਦ ਸਗਲ ਬਿਆਪੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭੈ ਸਾਗਰੁ
 ਤਰਿਆ ਪੂਰਨ ਕਾਜ ਹਮਾਰੇ ॥੩॥ ਗੁਣ ਗੋਪਾਲ ਗਾਵਹੁ ਨਿਤ ਸਖੀਹੋ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪਾਏ ਰਾਮ ॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ
 ਹੋਆ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਏਕਕਾਰੁ ਧਿਆਏ ਰਾਮ ॥ ਜਪਿ ਏਕ ਪ੍ਰਭੂ ਅਨੇਕ ਰਖਿਆ ਸਰਬ ਮੰਡਲਿ ਛਾਇਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮੋ
 ਪਸਾਰਾ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਸਰਿਆ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਵੂਸਟੀ ਆਇਆ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪ੍ਰਾਂ ਪ੍ਰਾਨ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ਨਹੀ

जाए ॥ पेखि दरसनु नानक बिगसे आपि लए मिलाए ॥४॥५॥८॥ सूही महला ५ ॥ अबिचल नगरु
 गोबिंद गुरु का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥ मन डिछे सई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥
 करतै आपि वसाइआ सरब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगसे ॥ गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु
 आइआ रासे ॥ प्रभु आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइआ ॥ कहु नानक सतिगुर
 बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥१॥ घर मंदर हटनाले सोहे जिसु विचि नामु निवासी राम ॥ संत
 भगत हरि नामु अराधहि कटीअै जम की फासी राम ॥ काटी जम फासी प्रभि अबिनासी हरि हरि नामु
 धिआए ॥ सगल समग्री पूरन होई मन डिछे फल पाए ॥ संत सजन सुखि माणहि रलीआ दूख दरद
 भ्रम नासी ॥ सबदि सवारे सतिगुरि पूरे नानक सद बलि जासी ॥२॥ दाति खसम की पूरी होई नित
 नित चड़ै सवाई राम ॥ पारब्रह्मि खसमाना कीआ जिस दी वडी वडिआई राम ॥ आदि जुगादि
 भगतन का रखा सो प्रभु भडिआ दिआला ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाए प्रभि आपे करि प्रतिपाला ॥
 दह दिस पूरि रहिआ जसु सुआमी कीमति कहणु न जाई ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि
 अबिचल नीव रखाई ॥३॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर हरि हरि कथा नित सुणीअै राम ॥ अनहट
 चोज भगत भव भंजन अनहट वाजे धुनीअै राम ॥ अनहट झुणकारे ततु बीचारे संत गोसटि नित होवै ॥
 हरि नामु अराधहि मैलु सभ काटहि किलविख सगले खोवै ॥ तह जनम न मरणा आवण जाणा बहुड़ि न
 पाईअै जुनीअै ॥ नानक गुरु परमेसरु पाइआ जिसु प्रसादि डिछ पुनीअै ॥४॥६॥६॥ सूही महला ५ ॥
 संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥ धरति सुहावी तालु सुहावा विचि
 अंमृत जलु छाइआ राम ॥ अंमृत जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥ जै जै कारु
 भडिआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥ पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥
 अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥१॥ नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि

ਨ ਆਵੈ ਕਾਈ ਰਾਮ ॥ ਖਾਤ ਖਰਚਤ ਬਿਲਛਤ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਕਰਤੇ ਕੀ ਦਾਤਿ ਸਵਾਈ ਰਾਮ ॥ ਦਾਤਿ ਸਵਾਈ
 ਨਿਖੁਟਿ ਨ ਜਾਈ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪਾਇਆ ॥ ਕੋਟਿ ਬਿਧਨ ਸਗਲੇ ਤਠਿ ਨਾਠੇ ਟ੍ਰੂਖੁ ਨ ਨੇਡੈ ਆਇਆ ॥ ਸਾਁਤਿ
 ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਘਨੇਰੇ ਬਿਨਸੀ ਭੂਖ ਸਬਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸੁਆਮੀ ਕੇ ਅਚਰਜੁ ਜਿਸੁ ਵਡਿਆਈ ਰਾਮ
 ॥੨॥ ਜਿਸ ਕਾ ਕਾਰਜੁ ਤਿਨ ਹੀ ਕੀਆ ਮਾਣਸੁ ਕਿਆ ਕੇਚਾਰਾ ਰਾਮ ॥ ਭਗਤ ਸੋਹਨਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ
 ਸਦਾ ਕਰਹਿ ਜੈਕਾਰਾ ਰਾਮ ॥ ਗੁਣ ਗਾਇ ਗੋਬਿੰਦ ਅਨਦ ਉਪਜੇ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸੰਗਿ ਬਨੀ ॥ ਜਿਨਿ ਤਦਮੁ ਕੀਆ
 ਤਾਲ ਕੇਰਾ ਤਿਸ ਕੀ ਉਪਮਾ ਕਿਆ ਗਨੀ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਪੁਨ ਕਿਹਿਆ ਮਹਾ ਨਿਰਮਲ ਚਾਰਾ ॥ ਪਤਿਤ
 ਪਾਵਨੁ ਬਿਰਦੁ ਸੁਆਮੀ ਨਾਨਕ ਸਬਦ ਅਧਾਰਾ ॥੩॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਤਾ ਤਸਤਤਿ ਕਤਨੁ ਕਰੀਜੈ
 ਰਾਮ ॥ ਸੰਤਾ ਕੀ ਬੇਨਤੀ ਸੁਆਮੀ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਦੀਜੈ ਰਾਮ ॥ ਨਾਮੁ ਦੀਜੈ ਦਾਨੁ ਕੀਜੈ ਬਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਇਕ ਖਿਨੋ
 ॥ ਗੁਣ ਗੋਪਾਲ ਉਚਰੁ ਰਸਨਾ ਸਦਾ ਗਾਈਐ ਅਨਦਿਨੋ ॥ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਗੀ ਨਾਮ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅੰਮ੍ਰਤ
 ਭੀਜੈ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਇਛ ਪੁਨੰਨੀ ਪੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਜੀਜੈ ॥੪॥੭॥੧੦॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਛਨਤ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਿਠ ਬੋਲਡਾ ਜੀ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਸੁਆਮੀ ਮੋਰਾ ॥ ਹਉ ਸੰਮਲਿ ਥਕੀ ਜੀ ਓਹੁ ਕਦੇ ਨ ਬੋਲੈ ਕਤਾ ॥ ਕਤਡਾ ਬੋਲਿ
 ਨ ਜਾਨੈ ਪੂਰਨ ਭਗਵਾਨੈ ਅਤਗਣੁ ਕੋ ਨ ਚਿਤਾਰੇ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੁ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਸਦਾਏ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਭਨੈ
 ਘਾਲੇ ॥ ਘਟ ਘਟ ਵਾਸੀ ਸਰਕ ਨਿਵਾਸੀ ਨੈਰੈ ਹੀ ਤੇ ਨੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਸਦਾ ਸਰਣਾਗਤਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਜਣੁ
 ਮੇਰਾ ॥੧॥ ਹਉ ਬਿਸਮੁ ਭਈ ਜੀ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਮੇਰਾ ਸੁਂਦਰੁ ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਹਉ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪਗ
 ਛਾਰਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪੇਖਤ ਜੀਵਾ ਠੰਢੀ ਥੀਵਾ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਮਥਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰਵਿਆ ਜਲਿ
 ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਸੋਈ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਧਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ਭਵਜਲ ਉਤਰੇ ਪਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਪੂਰਨ
 ਪਰਮੇਸੁਰ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥੨॥ ਹਉ ਨਿਮਖ ਨ ਛੋਡਾ ਜੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੇ ॥ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕਹਿਆ ਜੀ ਸਾਚਾ ਅਗਮ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਦੀਨਾ ਤਾ ਨਾਮੁ ਲੀਨਾ ਜਨਮ ਮਰਣ ਟ੍ਰੂਖ ਨਾਠੇ ॥ ਸਹਜ ਸੂਖ

आनंद घनेरे हउमै बिनठी गाठे ॥ सभ कै मधि सभ हू ते बाहरि राग दोख ते निआरो ॥ नानक दास गोबिंद सरणाई हरि प्रीतमु मनहि सधारो ॥३॥ मै खोजत खोजत जी हरि निहचलु सु घरु पाइਆ ॥ सभि अध्यव डिठे जीउ ता चरन कमल चितु लाइआ ॥ प्रभु अबिनासी हउ तिस की दासी मरै न आवै जाए ॥ धरम अरथ काम सभि पूरन मनि चिंदी इछ पुजाए ॥ सुति सिमृति गुन गावहि करते सिध साधिक मुनि जन धिआइआ ॥ नानक सरनि कृपा निधि सुआमी वडभागी हरि हरि गाइआ ॥४॥१॥१॥

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਵਾਰ ਸੂਹੀ ਕੀ ਸਲੋਕਾ ਨਾਲਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸੂਹੈ ਵੇਸਿ ਦੋਹਾਗਣੀ ਪਰ ਪਿਰੁ ਰਾਵਣ ਜਾਇ ॥ ਪਿਰੁ ਛੋਡਿਆ ਘਰਿ ਆਪਣੈ ਮੋਹੀ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ॥ ਮਿਠਾ ਕਰਿ ਕੈ ਖਾਇਆ ਬਹੁ ਸਾਫ਼ੁ ਵਧਿਆ ਰੋਗੁ ॥ ਸੁਧੁ ਭਤਾਰੁ ਹਰਿ ਛੋਡਿਆ ਫਿਰਿ ਲਗਾ ਜਾਇ ਵਿਜੋਗੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਪਲਟਿਆ ਹਰਿ ਰਾਤੀ ਸਾਜਿ ਸੀਗਾਰਿ ॥ ਸਹਜਿ ਸਚੁ ਪਿਰੁ ਰਾਵਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਆਪਿ ਮੇਲੀ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਸਾਚਾ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਨਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸੂਹਵੀਏ ਨਿਮਾਣੀਏ ਸੋ ਸਹੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਹਿ ਆਪਣਾ ਕੁਲੁ ਭੀ ਛੁਟੀ ਨਾਲਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਆਪੇ ਤਖਤੁ ਰਚਾਇਆਨੁ ਆਕਾਸ ਪਤਾਲਾ ॥ ਹੁਕਮੇ ਧਰਤੀ ਸਾਜੀਅਨੁ ਸਚੀ ਧਰਮ ਸਾਲਾ ॥ ਆਪਿ ਤਪਾਇ ਖਪਾਇਦਾ ਸਚੇ ਦੀਨ ਦਿਆਲਾ ॥ ਸਭਨਾ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿਦਾ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਨਿਰਾਲਾ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸੂਹਬ ਤਾ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਾ ਮੰਨਿ ਲੈਹਿ ਸਚੁ ਨਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਣਾ ਮਨਾਇ ਲੈ ਰੂਪੁ ਚੱਡੀ ਤਾ ਅਗਲਾ ਟ੍ਰੌਜਾ ਨਾਹੀ ਥਾਉ ॥ ਐਸਾ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਇ ਤ੍ਰੂ ਮੈਲਾ ਕਦੇ ਨ ਹੋਰੰਝੀ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਾਗੈ ਭਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਹਾਗਣਿ ਕਾ ਕਿਆ ਚਿਹਨੁ ਹੈ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਮੁਖੁ ਤਜਲਾ ਖਸਮੈ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਲੋਕਾ ਵੇ ਹउ ਸੂਹਵੀ ਸੂਹਾ ਵੇਸੁ ਕਰੀ ॥ ਵੇਸੀ ਸਹੁ ਨ ਪਾਈਐ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਸ ਰਹੀ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨੀ ਸਹੁ ਪਾਇਆ ਜਿਨੀ ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਸੁਣੀ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਇਨ ਬਿਧਿ ਕੰਤ ਮਿਲੀ ॥੨॥

ਪਤੜੀ ॥ ਹੁਕਮੀ ਸੂਸਟਿ ਸਾਜੀਅਨੁ ਬਹੁ ਭਿਤਿ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਪੀ ਕੇਤੜਾ ਸਚੇ ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ॥
 ਝਿਕਨਾ ਨੋ ਤ੍ਰੂ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਸਚਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਹਉਮੈ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰਾ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰੂ
 ਮੇਲਹਿ ਸੋ ਤੁਥੁ ਮਿਲੈ ਸੋਈ ਸਚਿਆਰਾ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸੂਹਵੀਏ ਸੂਹਾ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ਹੈ ਜਿਨ ਦੁਰਮਤਿ
 ਦ੍ਰੂਜਾ ਭਾਤ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਝੂਠੁ ਸਭੁ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਜਿਤ ਟਿਕੈ ਨ ਬਿਰਖ ਕੀ ਛਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਲੋ ਲਾਲੁ ਹੈ
 ਜਿਤ ਰੰਗਿ ਮਜੀਠ ਸਚੜਾਤ ॥ ਤਲਟੀ ਸਕਤਿ ਸਿਵੈ ਘਰਿ ਆਈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਤ ॥
 ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸੂਹਾ ਰੰਗੁ ਵਿਕਾਰੁ ਹੈ ਕੰਤੁ ਨ
 ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਇਸੁ ਲਹਦੇ ਬਿਲਮ ਨ ਹੋਰੰਡ ਰੰਡ ਬੈਠੀ ਦ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ॥ ਮੁੰਧ ਝਿਆਣੀ ਟੁੰਮਣੀ ਸੂਹੈ ਵੇਸਿ
 ਲੋਭਾਇ ॥ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਰੰਗੁ ਲਾਲੁ ਕਰਿ ਭੈ ਭਾਇ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿ ਚਲਨਿ
 ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਉਪਾਇਅਨੁ ਆਪਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥ ਤਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪਈ
 ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੁੜਾਈ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ਹੈ ਦ੍ਰੂਜੈ ਭਰਮਾਈ ॥ ਮਨਮੁਖ ਠਤਰ ਨ ਪਾਇਨੀ ਫਿਰਿ ਆਵੈ
 ਜਾਈ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਸਭ ਚਲੈ ਰਿਆਈ ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸੂਹੈ ਵੇਸਿ ਕਾਮਣਿ ਕੁਲਖਣੀ ਜੋ ਪ੍ਰਭ
 ਛੋਡਿ ਪਰ ਪੁਰਖ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਓਸੁ ਸੀਲੁ ਨ ਸੰਜਮੁ ਸਦਾ ਝੂਠੁ ਬੋਲੈ ਮਨਮੁਖਿ ਕਰਮ ਖੁਆਰੁ ॥ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਬਿ
 ਹੌਕੈ ਲਿਖਿਆ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਭਤਾਰੁ ॥ ਸੂਹਾ ਵੇਸੁ ਸਭੁ ਤਤਾਰਿ ਧਰੇ ਗਲਿ ਪਹਿਰੈ ਖਿਮਾ ਸੀਗਾਰੁ ॥
 ਪੇਈਐ ਸਾਹੂਰੈ ਬਹੁ ਸੋਭਾ ਪਾਏ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਯ ਕਰੇ ਸਭੁ ਸੈਸਾਰੁ ॥ ਓਹ ਰਲਾਈ ਕਿਸੈ ਦੀ ਨਾ ਰਲੈ ਜਿਸੁ ਰਾਵੇ
 ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣੀ ਜਿਸੁ ਅਵਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਭਰਤਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸੂਹਾ ਰੰਗੁ
 ਸੁਪਨੈ ਨਿਸੀ ਬਿਨੁ ਤਾਗੇ ਗਲਿ ਹਾਰੁ ॥ ਸਚਾ ਰੰਗੁ ਮਜੀਠ ਕਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੇਮ ਮਹਾ ਰਸੀ
 ਸਭਿ ਬੁਰਿਆਈਆ ਛਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਆਪਿ ਉਪਾਇਓਨੁ ਕਰਿ ਚੋਜ ਵਿਡਾਨੁ ॥ ਪੰਚ ਧਾਤੁ
 ਵਿਚਿ ਪਾਈਅਨੁ ਮੋਹੁ ਝੂਠੁ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਆਵੈ ਜਾਇ ਭਵਾਈਐ ਮਨਮੁਖੁ ਅਗਿਆਨੁ ॥ ਝਿਕਨਾ ਆਪਿ ਬੁੜਾਇਓਨੁ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗਿਆਨੁ ॥ ਭਗਤਿ ਖਜਾਨਾ ਬਖਸਿਓਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸੂਹਵੀਏ

ਸ੍ਰੂਹਾ ਵੇਸੁ ਛਡਿ ਤੂ ਤਾ ਪਿਰ ਲਗੀ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸ੍ਰੂਹੈ ਵੇਸਿ ਪਿਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਮਨਮੁਖਿ ਦੱਸਿ ਮੁੰਝ ਗਾਵਾਰਿ ॥
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸ੍ਰੂਹਾ ਵੇਸੁ ਗਇਆ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰਿ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਲਾਲੁ ਹੋਆ ਰਸਨਾ ਰਤੀ ਗੁਣ
 ਸਾਰਿ ॥ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਭੈ ਭਾਇ ਕਰੇ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਮੀ ਮਹਲੁ ਪਾਇਆ ਪਿਰ ਰਾਖਿਆ
 ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮੁੰਧੇ ਸ੍ਰੂਹਾ ਪਰਹਰਹੁ ਲਾਲੁ ਕਰਹੁ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਵੀਸਰੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ
 ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਮੁੰਧ ਸੁਹਾਵੀ ਸੋਹਣੀ ਜਿਸੁ ਘਰਿ ਸਹਜਿ ਭਤਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਰਾਵੀਐ ਰਾਵੇ ਰਾਵਣਹਾਰੁ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਮੋਹੁ ਕੂਡੁ ਕੁਟੰਬੁ ਹੈ ਮਨਮੁਖੁ ਮੁਗਧੁ ਰਤਾ ॥ ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਕਰਿ ਮੁਏ ਕਿਛੁ ਸਾਥਿ ਨ ਲਿਤਾ ॥ ਸਿਰ ਤਪਰਿ
 ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਸੁਝਾਈ ਟ੍ਰੌ ਭਰਮਿਤਾ ॥ ਫਿਰਿ ਵੇਲਾ ਹਥਿ ਨ ਆਵੰਈ ਜਮਕਾਲਿ ਵਸਿ ਕਿਤਾ ॥ ਜੇਹਾ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ
 ਪਾਇਆਨੁ ਸੇ ਕਰਮ ਕਮਿਤਾ ॥੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤੀਆ ਏਹਿ ਨ ਆਖੀਅਨਿ ਜੋ ਮਿਡਿਆ ਲਗਿ ਜਲਮਨਿ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਤੀਆ ਜਾਣੀਅਨਿ ਜਿ ਬਿਰਹੇ ਚੋਟ ਮਰਨਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਭੀ ਸੋ ਸਤੀਆ ਜਾਣੀਅਨਿ ਸੀਲ ਸੰਤੋਖਿ
 ਰਵਾਨਿ ॥ ਸੇਵਨਿ ਸਾਈ ਆਪਣਾ ਨਿਤ ਤਠਿ ਸੰਮਾਲਮਨਿ ॥੨॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕੰਤਾ ਨਾਲਿ ਮਹੇਲੀਆ ਸੇਤੀ ਅਗਿ
 ਜਲਾਹਿ ॥ ਜੇ ਜਾਣਹਿ ਪਿਰ ਆਪਣਾ ਤਾ ਤਨਿ ਦੁਖ ਸਹਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕੰਤ ਨ ਜਾਣਨੀ ਸੇ ਕਿਤ ਅਗਿ ਜਲਾਹਿ
 ॥ ਭਾਵੈ ਜੀਵਤ ਕੈ ਮਰਤ ਦੂਰਹੁ ਹੀ ਭਜਿ ਜਾਹਿ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੁਧੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਨਾਲਿ ਉਪਾਇਆ ਲੇਖੁ ਕਰਤੈ
 ਲਿਖਿਆ ॥ ਨਾਵੈ ਜੇਵਡ ਹੋਰ ਦਾਤਿ ਨਾਹੀ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰਿਖਿਆ ॥ ਨਾਮੁ ਅਖੁਟੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨਿ
 ਵਸਿਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮੁ ਦੇਵਸੀ ਫਿਰਿ ਲੇਖੁ ਨ ਲਿਖਿਆ ॥ ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਸੇ ਜਨ ਮਿਲੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਜਪੁ
 ਜਪਿਆ ॥੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੨ ॥ ਜਿਨੀ ਚਲਣੁ ਜਾਣਿਆ ਸੇ ਕਿਤ ਕਰਹਿ ਵਿਥਾਰ ॥ ਚਲਣ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ
 ਕਾਜ ਸਵਾਰਣਹਾਰ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਰਾਤਿ ਕਾਰਣਿ ਧਨੁ ਸੰਚੀਐ ਭਲਕੇ ਚਲਣੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਈ
 ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਵਾ ਹੋਇ ॥੨॥ ਮਃ ੨ ॥ ਬਧਾ ਚਟੀ ਜੋ ਭਰੇ ਨਾ ਗੁਣੁ ਨਾ ਤਪਕਾਰੁ ॥ ਸੇਤੀ ਖੁਸੀ ਸਵਾਰੀਐ ਨਾਨਕ
 ਕਾਰਜੁ ਸਾਰੁ ॥੩॥ ਮਃ ੨ ॥ ਮਨਹਠਿ ਤਰਫ ਨ ਜਿਪੰਈ ਜੇ ਬਹੁਤਾ ਘਾਲੇ ॥ ਤਰਫ ਜਿਣੈ ਸਤ ਭਾਤ ਦੇ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰੇ ॥੪॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕਰਤੈ ਕਾਰਣੁ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਸੋ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ॥ ਆਪੇ ਸੂਸਟਿ ਉਪਾਈਅਨੁ

आपे फुनि गोई ॥ जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ॥ सतिगुरि एकु विखालिआ मनि तनि
 सुखु होई ॥ गुरमुखि सदा सलाहीअै करता करे सु होई ॥ ੭ ॥ सलोक महला २ ॥ जिना भउ तिन् नाहि
 भउ मुचु भउ निभविआह ॥ नानक एहु पटंतरा तितु दीबाणि गडिआह ॥ ੧ ॥ मः २ ॥ तुरदे कउ
 तुरदा मिलै उडते कउ उडता ॥ जीवते कउ जीवता मिलै मूए कउ मूआ ॥ नानक सो सालाहीअै जिनि
 कारणु कीआ ॥ ੨ ॥ पउड़ी ॥ सचु धिआडिनि से सचे गुर सबदि वीचारी ॥ हउमै मारि मनु निरमला
 हरि नामु उरि धारी ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लगि पाए गावारी ॥ जिनि कीए तिसहि न जाणनी
 मनमुखि गुबारी ॥ जिसु बुझाडिहि सो बुझसी सचिआ किआ जंत विचारी ॥ ੮ ॥ सलोक मः ३ ॥ कामणि
 तउ सीगारु करि जा पहिलाँ कंतु मनाइ ॥ मतु सेजै कंतु न आवई एवै बिरथा जाइ ॥ कामणि पिर
 मनु मानिआ तउ बणिआ सीगारु ॥ कीआ तउ परवाणु है जा सहु धरे पिआरु ॥ भउ सीगारु तबोल
 रसु भोजनु भाउ करेइ ॥ तनु मनु सउपे कंत कउ तउ नानक भोगु करेइ ॥ ੧ ॥ मः ३ ॥ काजल फूल
 तंबोल रसु ले धन कीआ सीगारु ॥ सेजै कंतु न आडिओ एवै भडिआ विकारु ॥ ੨ ॥ मः ३ ॥ धन पिरु
 एहि न आखीअनि बहनि झिकठे होइ ॥ एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीअै सोइ ॥ ੩ ॥ पउड़ी ॥
 भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुरि मिलिअै भउ ऊपजै भै भाइ रंग सवारि
 ॥ तनु मनु रता रंग सिउ हउमै तृसना मारि ॥ मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ कृसन
 मुरारि ॥ भउ भाउ सभु तिस दा सो सचु वरतै संसारि ॥ ੬ ॥ सलोक मः १ ॥ वाहु खसम तू वाहु
 जिनि रचि रचना हम कीए ॥ सागर लहरि समुंद सर वेलि वरस वराहु ॥ आपि खड़ोवहि आपि
 करि आपीणै आपाहु ॥ गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु ॥ मसकति लहहु मजूरीआ
 मंगि मंगि खसम दराहु ॥ नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥ ੧ ॥
 महला १ ॥ उजल मोती सोहणे रतना नालि जुड़नि ॥ तिन जरु वैरी नानका जि बुढे थीइ मरंनि ॥

੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹੀ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਤਪਿ ਸਰੀਰੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਸਚਾ ਗਹਿਰ
 ਗੰਭੀਰੁ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਿਰਦੈ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਹਰਿ ਹੀਰਾ ਹੀਰੁ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਕਾ ਢੁਖੁ ਗਇਆ ਫਿਰਿ ਪਰੈ ਨ
 ਫੀਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂ ਹਰਿ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰੁ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਤਨੁ ਜਾਲਿ ਜਿਨਿ
 ਜਲਿਐ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥ ਪਤਦੀ ਜਾਇ ਪਰਾਲਿ ਪਿਛੈ ਹਥੁ ਨ ਅੰਬੜੈ ਤਿਤੁ ਨਿਵਾਂਧੈ ਤਾਲਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥
 ਨਾਨਕ ਮਨ ਕੇ ਕੰਮ ਫਿਟਿਆ ਗਣਤ ਨ ਆਵਹੀ ॥ ਕਿਤੀ ਲਹਾ ਸਹਾਮ ਜਾ ਬਖਸੇ ਤਾ ਧਕਾ ਨਹੀ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਸਚਾ ਅਮਰੁ ਚਲਾਇਆਨੁ ਕਰਿ ਸਚੁ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥ ਸਦਾ ਨਿਹਚਲੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸੋ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ
 ਸੇਵੀਐ ਸਚੁ ਸਬਦਿ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਪ੍ਰਾ ਥਾਟੁ ਬਣਾਇਆ ਰੰਗੁ ਗੁਰਮਤਿ ਮਾਣੁ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਅਲਖੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਹਰਿ ਜਾਣੁ ॥੧੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਬਦਰਾ ਮਾਲ ਕਾ ਭੀਤਰਿ ਧਰਿਆ ਆਣਿ ॥ ਖੋਟੇ ਖਰੇ ਪਰਖੀਅਨਿ
 ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਦੀਬਾਣਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਵਣ ਚਲੇ ਤੀਰਥੀ ਮਨਿ ਖੋਟੈ ਤਨਿ ਚੋਰ ॥ ਇਕੁ ਭਾਉ ਲਥੀ ਨਾਤਿਆ
 ਦੁਝੀ ਭਾ ਚੜੀਅਸੁ ਹੋਰ ॥ ਬਾਹਰਿ ਧੋਤੀ ਤ੍ਰੂਮੜੀ ਅੰਦਰਿ ਵਿਸੁ ਨਿਕੋਰ ॥ ਸਾਧ ਭਲੇ ਅਣਨਾਤਿਆ ਚੋਰ ਸਿ ਚੋਰਾ
 ਚੋਰ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਇਦਾ ਜਗੁ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ॥ ਇਕਿ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਲਾਇਆਨੁ ਗੁਰ ਤੇ
 ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਦਹ ਦਿਸ ਇਹੁ ਮਨੁ ਧਾਵਦਾ ਗੁਰਿ ਠਾਕਿ ਰਹਾਇਆ ॥ ਨਾਵੈ ਨੋ ਸਭ ਲੋਚਦੀ ਗੁਰਮਤੀ ਪਾਇਆ
 ॥ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੀਐ ਜੋ ਹਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਦੁਝੀ ਦੀਵੇ ਚਤੁਦਹ
 ਹਟਨਾਲੇ ॥ ਜੇਤੇ ਜੀਅ ਤੇਤੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਖੁਲ੍ਹੇ ਹਟ ਹੋਆ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਜੋ ਪਹੁੱਚੈ ਸੋ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥ ਧਰਮੁ ਦਲਾਲੁ ਪਾਏ
 ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਲਾਹਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਘਰਿ ਆਏ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥ ਸਚ ਨਾਮ ਕੀ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥
 ਮਃ ੧ ॥ ਰਾਤੀ ਹੋਵਨਿ ਕਾਲੀਆ ਸੁਪੇਦਾ ਸੇ ਵਨਨ ॥ ਦਿਹੁ ਕਗਾ ਤਪੈ ਘਣਾ ਕਾਲਿਆ ਕਾਲੇ ਵਨਨ ॥ ਅੰਧੇ ਅਕਲੀ
 ਬਾਹਰੇ ਸੂਰਖ ਅੰਧ ਗਿਆਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਬਾਹਰੇ ਕਬਹਿ ਨ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕਾਇਆ
 ਕੋਟੁ ਰਚਾਇਆ ਹਰਿ ਸਚੈ ਆਪੇ ॥ ਇਕਿ ਟ੍ਰੈਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇਆਨੁ ਹਤਮੈ ਵਿਚਿ ਵਿਆਪੇ ॥ ਇਹੁ ਮਾਨਸ
 ਜਨਮੁ ਦੁਲਮਭੁ ਸਾ ਮਨਮੁਖ ਸੰਤਾਪੇ ॥ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਸੋ ਬੁਝਸੀ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਥਾਪੇ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਖੇਲੁ

ਰਚਾਇਆਨੁ ਸਭ ਵਰਤੈ ਆਪੇ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਚੋਰਾ ਜਾਰਾ ਰੰਡੀਆ ਕੁਟਣੀਆ ਦੀਬਾਣੁ ॥ ਵੇਦੀਨਾ
 ਕੀ ਦੋਸਤੀ ਵੇਦੀਨਾ ਕਾ ਖਾਣੁ ॥ ਸਿਫਤੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ ਸਦਾ ਵਸੈ ਸੈਤਾਨੁ ॥ ਗਦਹੁ ਚੰਦਨਿ ਖਤਲੀਐ ਭੀ
 ਸਾਹੂ ਸਿਤ ਪਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕੂੜੈ ਕਤਿਐ ਕੂੜਾ ਤਣੀਐ ਤਾਣੁ ॥ ਕੂੜਾ ਕਪਡੁ ਕਛੀਐ ਕੂੜਾ ਪੈਨਣੁ ਮਾਣੁ ॥੧॥
 ਮਃ ੧ ॥ ਬਾਂਗਾ ਬੁਰਗੁ ਸਿੰਡੀਆ ਨਾਲੇ ਮਿਲੀ ਕਲਾਣ ॥ ਇਕਿ ਦਾਤੇ ਇਕਿ ਮੰਗਤੇ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਜਿਨੀ ਸੁਣਿ ਕੈ ਮੰਨਿਆ ਹਤ ਤਿਨਾ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਵਾਣੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਕੂੜੁ ਹੈ
 ਕੂੜੋ ਹੋਇ ਗਇਆ ॥ ਹਤਮੈ ਝਗੜਾ ਪਾਇਆਨੁ ਝਗੜੈ ਜਗੁ ਮੁਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਝਗੜੁ ਚੁਕਾਇਆਨੁ ਇਕੋ
 ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥ ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਭਉਜਲੁ ਤਰਿ ਗਇਆ ॥ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਜੋਤਿ ਵਿਚਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮਿ ਸਮਇਆ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਭੀਖਿਆ ਦੇਹਿ ਮੈ ਤ੍ਰੂ ਸੰਮ੍ਰਥੁ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਹਤਮੈ ਗਰਖੁ
 ਨਿਵਾਰੀਐ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਛਾਕਾਰੁ ॥ ਲਕੁ ਲੋਭੁ ਪਰਜਾਲੀਐ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਆਧਾਰੁ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਵਤਨ
 ਨਿਰਮਲਾ ਮੈਲਾ ਕਬਹੂੰ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹ ਬਿਧਿ ਛੁਟੀਐ ਨਦਰਿ ਤੇਰੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਇਕੋ
 ਕੰਤੁ ਸਬਾਈਆ ਜਿਤੀ ਦਰਿ ਖੱਡੀਆਹ ॥ ਨਾਨਕ ਕੰਤੈ ਰਤੀਆ ਪੁਛਹਿ ਬਾਤੜੀਆਹ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸਭੇ ਕੰਤੈ
 ਰਤੀਆ ਮੈ ਦੋਹਾਗਣਿ ਕਿਤੁ ॥ ਮੈ ਤਨਿ ਅਵਗਣ ਏਤੜੇ ਖਸਮੁ ਨ ਫੇਰੇ ਚਿਤੁ ॥੩॥ ਮਃ ੧ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ
 ਤਿਨ ਕਤ ਸਿਫਤਿ ਜਿਨਾ ਦੈ ਵਾਤਿ ॥ ਸਭਿ ਰਾਤੀ ਸੋਹਾਗਣੀ ਇਕ ਮੈ ਦੋਹਾਗਣਿ ਰਾਤਿ ॥੪॥ ਪਤੜੀ ॥ ਦਰਿ
 ਮੰਗਤੁ ਜਾਚੈ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਦੀਜੈ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲੇਹੁ ਮਿਲਾਇ ਜਨੁ ਪਾਵੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ॥ ਅਨਹਦ ਸਬਦੁ
 ਕਾਇ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਧਰਿ ॥ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਜੈ ਜੈ ਸਬਦੁ ਹਰਿ ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਆਪਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਜਿਨੀ ਨ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਕੰਤ ਨ ਪਾਇਆ ਸਾਤ ॥ ਸੁੰਬੇ ਘਰ ਕਾ
 ਪਾਹੁਣਾ ਜਿਤ ਆਇਆ ਤਿਤ ਜਾਤ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸਾਤ ਓਲਾਮੇ ਦਿਨੈ ਕੇ ਰਾਤੀ ਮਿਲਨਿ ਸਵਾਸ ॥ ਸਿਫਤਿ
 ਸਲਾਹਣੁ ਛਡਿ ਕੈ ਕਰੰਗੀ ਲਗਾ ਛਾਸੁ ॥ ਫਿਟੁ ਇਕੇਹਾ ਜੀਵਿਆ ਜਿਤੁ ਖਾਇ ਵਧਾਇਆ ਪੇਟੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ
 ਵਿਣੁ ਸਭੋ ਟੁਸਮਨੁ ਹੇਤੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਢਾਢੀ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਿਤ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਿ ਸਲਾਹਿ

सचा उर धारिआ ॥ घरु दरु पावै महलु नामु पिआरिआ ॥ गुरमुखि पाइआ नामु हउ गुर कउ
 वारिआ ॥ तू आपि सवारहि आपि सिरजनहारिआ ॥ ੧੬ ॥ सलोक मः ੧ ॥ दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥
 बेद पाठ मति पापा खाइ ॥ उगवै सूरु न जापै चंदु ॥ जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥ बेद
 पाठ संसार की कार ॥ पड़ि पड़ि पंडित करहि बीचार ॥ बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥ नानक गुरमुखि
 उतरसि पारि ॥ ੧ ॥ मः ੧ ॥ सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ रसना फिका बोलणा नित
 नित होइ खुआरु ॥ नानक पड़िअै किरति कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ ੨ ॥ पउड़ी ॥ जि प्रभु सालाहे
 आपणा सो सोभा पाए ॥ हउमै विचहु दूरि करि सचु मंनि वसाए ॥ सचु बाणी गुण उचरै सचा सुखु पाए
 ॥ मेलु भइआ चिरि विछुनिआ गुर पुरखि मिलाए ॥ मनु मैला इव सुधु है हरि नामु धिआए ॥ ੧੭ ॥
 सलोक मः ੧ ॥ काइआ कूमल फुल गुण नानक गुपसि माल ॥ एनी फुली रउ करे अवर कि
 चुणीअहि डाल ॥ ੧ ॥ महला ੨ ॥ नानक तिना बसंतु है जिन् घरि वसिआ कंतु ॥ जिन के कंत दिसापुरी
 से अहिनिसि फिरहि जलम्त ॥ ੨ ॥ पउड़ी ॥ आपे बखसे दइआ करि गुर सतिगुर बचनी ॥ अनदिनु
 सेवी गुण ख्वा मनु सचै रचनी ॥ प्रभु मेरा बेअंतु है अंतु किनै न लखनी ॥ सतिगुर चरणी लगिआ
 हरि नामु नित जपनी ॥ जो इछै सो फलु पाइसी सभि घरै विचि जचनी ॥ ੧੮ ॥ सलोक मः ੧ ॥ पहिल
 बसंतै आगमनि पहिला मउलिओ सोइ ॥ जितु मउलिअै सभ मउलीअै तिसहि न मउलिहु कोइ ॥
 ੧ ॥ मः ੨ ॥ पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु ॥ नानक सो सालाहीअै जि सभसै दे आधारु
 ॥ ੨ ॥ मः ੨ ॥ मिलिअै मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥ अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ
 कहीअै सोइ ॥ ੩ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु सलाहीअै सचु कार कमावै ॥ दूजी कारै लगिआ फिरि जोनी
 पावै ॥ नामि रतिआ नामु पाईअै नामे गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सलाहीअै हरि नामि समावै ॥
 सतिगुर सेवा सफल है सेविअै फल पावै ॥ ੧੯ ॥ सलोक मः ੨ ॥ किस ही कोई कोइ मंਜु निमाणी

ਇਕੁ ਤੂ ॥ ਕਿਤ ਨ ਮਰੀਜੈ ਰੋਡਿ ਜਾ ਲਗੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਹੀ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਜਾਂ ਸੁਖੁ ਤਾ ਸਹੁ ਰਾਵਿਆ ਦੁਖਿ ਭੀ
ਸੰਮਾਲਿਆਓਡਿ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸਿਆਣੀਏ ਇਤ ਕਂਤ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਡਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਉ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹੀ
ਕਿਰਮ ਜੰਤੁ ਵਡੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਤੂ ਅਗਮ ਦਿਆਲੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਆਪਿ ਲੈਹਿ ਮਿਲਾਈ ॥ ਮੈ ਤੁੜ੍ਹ
ਬਿਨੁ ਬੇਲੀ ਕੋ ਨਹੀ ਤੂ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ॥ ਜੋ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਗਤੀ ਤਿਨ ਲੈਹਿ ਛਡਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਹੈ
ਤਿਸੁ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਈ ॥੨੦॥੧॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਬਾਣੀ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਤਥਾ ਸਭਨਾ ਭਗਤਾ ਕੀ ॥ ਕਬੀਰ ਕੇ ੧੯੮੫ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ਅਵਤਾਰਿ ਆਇ ਕਹਾ ਤੁਮ ਕੀਨਾ ॥ ਰਾਮ ਕੋ ਨਾਮੁ ਨ ਕਬਹੂ ਲੀਨਾ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨ ਜਪਹੁ ਕਵਨ ਮਤਿ ਲਾਗੇ ॥
ਮਰਿ ਜਡਿਬੇ ਕਤ ਕਿਆ ਕਰਹੁ ਅਭਾਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਖ ਸੁਖ ਕਰਿ ਕੈ ਕੁਟੰਬੁ ਜੀਵਾਇਆ ॥ ਮਰਤੀ ਬਾਰ
ਇਕਸਰ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਕਂਠ ਗਹਨ ਤਬ ਕਰਨ ਪੁਕਾਰਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਆਗੇ ਤੇ ਨ ਸੰਮਾਰਾ ॥੩॥੧॥
ਸੂਹੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥ ਥਰਹਰ ਕਂਪੈ ਬਾਲਾ ਜੀਤ ॥ ਨਾ ਜਾਨਤ ਕਿਆ ਕਰਸੀ ਪੀਤ ॥੧॥ ਰੈਨਿ ਗੰਡ ਮਤ ਦਿਨੁ ਭੀ
ਜਾਇ ॥ ਭਵਰ ਗਏ ਬਗ ਬੈਠੇ ਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਚੈ ਕਰਵੈ ਰਹੈ ਨ ਪਾਨੀ ॥ ਛਾਸੁ ਚਲਿਆ ਕਾਇਆ
ਕੁਮਲਾਨੀ ॥੨॥ ਕੁਆਰ ਕਨਿਆ ਜੈਸੇ ਕਰਤ ਸੀਗਾਰਾ ॥ ਕਿਤ ਰਲੀਆ ਮਾਨੈ ਬਾੜ੍ਹੁ ਭਤਾਰਾ ॥੩॥ ਕਾਗ
ਤਡਾਵਤ ਭੁਜਾ ਪਿਰਾਨੀ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਇਹ ਕਥਾ ਸਿਰਾਨੀ ॥੪॥੨॥ ਸੂਹੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ॥ ਅਮਲੁ ਸਿਰਾਨੇ
ਲੇਖਾ ਦੇਨਾ ॥ ਆਏ ਕਠਿਨ ਢੂਤ ਜਮ ਲੇਨਾ ॥ ਕਿਆ ਤੈ ਖਟਿਆ ਕਹਾ ਗਵਾਇਆ ॥ ਚਲਹੁ ਸਿਤਾਬ ਟੀਬਾਨਿ
ਬੁਲਾਇਆ ॥੧॥ ਚਲੁ ਦਰਹਾਲੁ ਦੀਵਾਨਿ ਬੁਲਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਫੁਰਮਾਨੁ ਦਰਗਹ ਕਾ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਕਰਤ ਅਰਦਾਸਿ ਗਾਵ ਕਿਛੁ ਬਾਕੀ ॥ ਲੇਤ ਨਿਬੇਰਿ ਆਜੁ ਕੀ ਰਾਤੀ ॥ ਕਿਛੁ ਭੀ ਖਰਚੁ ਤੁਮਾਰਾ ਸਾਰਤ ॥
ਸੁਫ਼ਲ ਨਿਵਾਜ ਸਰਾਇ ਗੁਜਾਰਤ ॥੨॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਾ ਕਤ ਹਰਿ ਰੁਂਗੁ ਲਾਗਾ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੋ ਜਨੁ ਪੁਰਖੁ
ਸਭਾਗਾ ॥ ਈਤ ਊਤ ਜਨ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੇ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜੀਤਿ ਅਮੋਲੇ ॥੩॥ ਜਾਗਤੁ ਸੋਇਆ ਜਨਮੁ
ਗਵਾਇਆ ॥ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ਜੋਰਿਆ ਭਡਿਆ ਪਰਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਤੇਈ ਨਰ ਭੂਲੇ ॥ ਖਸਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਮਾਟੀ

ਸੰਗਿ ਰੂਲੇ ॥੪॥੩॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਲਲਿਤ ॥ ਥਾਕੇ ਨੈਨ ਸ਼ਰਵਨ ਸੁਨਿ ਥਾਕੇ ਥਾਕੀ ਸੁਂਦਰਿ ਕਾਇਆ ॥ ਜਾ ਹਾਕ ਦੀ ਸਭ ਮਤਿ ਥਾਕੀ ਏਕ ਨ ਥਾਕਸਿ ਮਾਇਆ ॥੧॥ ਬਾਵਰੇ ਤੈ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਬ ਲਗੁ ਪ੍ਰਾਨੀ ਤਿਸੈ ਸਰੇਵਹੁ ਜਬ ਲਗੁ ਘਟ ਮਹਿ ਸਾਸਾ ॥ ਜੇ ਘਟੁ ਜਾਇ ਤ ਭਾਤ ਨ ਜਾਸੀ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ਨਿਵਾਸਾ ॥੨॥ ਜਿਸ ਕਤ ਸਬਦੁ ਬਸਾਵੈ ਅੰਤਰਿ ਚ੍ਰੂਕੈ ਤਿਸਹਿ ਪਿਆਸਾ ॥ ਹੁਕਮੈ ਬੂੜ੍ਹੈ ਚਤੁਪਡਿ ਖੇਲੈ ਮਨੁ ਜਿਣ ਢਾਲੇ ਪਾਸਾ ॥੩॥ ਜੋ ਜਨ ਜਾਨਿ ਭਜਹਿ ਅਬਿਗਤ ਕਤ ਤਿਨ ਕਾ ਕਛੂ ਨ ਨਾਸਾ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਤੇ ਜਨ ਕਬਹੁ ਨ ਹਾਰਹਿ ਢਾਲਿ ਜੁ ਜਾਨਹਿ ਪਾਸਾ ॥੪॥੪॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ਲਲਿਤ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ॥ ਏਕੁ ਕੋਟੁ ਪੰਚ ਸਿਕਦਾਰਾ ਪੰਚੇ ਮਾਗਹਿ ਹਾਲਾ ॥ ਜਿਮੀ ਨਾਹੀ ਮੈ ਕਿਸੀ ਕੀ ਬੋਈ ਐਸਾ ਦੇਨੁ ਦੁਖਾਲਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਲੋਗ ਮੋ ਕਤ ਨੀਤਿ ਡੱਸੈ ਪਟਵਾਰੀ ॥ ਊਪਰਿ ਭੁਜਾ ਕਰਿ ਮੈ ਗੁਰ ਪਹਿ ਪੁਕਾਰਿਆ ਤਿਨਿ ਹਤ ਲੀਆ ਤੁਕਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਤ ਡਾਡੀ ਦਸ ਮੁੱਸਫ ਧਾਵਹਿ ਰੱਝਾਤਿ ਬਸਨ ਨ ਦੇਹੀ ॥ ਡੌਰੀ ਪੂਰੀ ਮਾਪਹਿ ਨਾਹੀ ਕਹੁ ਬਿਸਟਾਲਾ ਲੇਹੀ ॥੨॥ ਬਹਤਰਿ ਘਰ ਇਕੁ ਪੁਰਖੁ ਸਮਾਇਆ ਤਨਿ ਦੀਆ ਨਾਮੁ ਲਿਖਵਾਈ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਾ ਟਫਤਰੁ ਸੋਧਿਆ ਬਾਕੀ ਰਿਜਮ ਨ ਕਾਈ ॥੩॥ ਸੰਤਾ ਕਤ ਮਤਿ ਕੋਈ ਨਿੰਦਹੁ ਸੰਤ ਰਾਮੁ ਹੈ ਏਕੁ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਮੈ ਸੋ ਗੁਰ ਪਾਇਆ ਜਾ ਕਾ ਨਾਤ ਬਿਕੇਕੁ ॥੪॥੫॥

ਰਾਗੁ ਸ੍ਰੂਹੀ ਬਾਣੀ ਸ੍ਰੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਤ ਕੀ

੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਹ ਕੀ ਸਾਰ ਸੁਹਾਗਨਿ ਜਾਨੈ ॥ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਸੁਖ ਰਲੀਆ ਮਾਨੈ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦੇਇ ਨ ਅੰਤਰੁ ਰਾਖੈ ॥ ਅਵਰਾ ਦੇਖਿ ਨ ਸੁਨੈ ਅਭਾਖੈ ॥੧॥ ਸੋ ਕਤ ਜਾਨੈ ਪੀਰ ਪਰਾਈ ॥ ਜਾ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਦਰਦੁ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਖੀ ਦੁਹਾਗਨਿ ਦੁਇ ਪਖ ਹੀਨੀ ॥ ਜਿਨਿ ਨਾਹ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਭਗਤਿ ਨ ਕੀਨੀ ॥ ਪੁਰ ਸਲਾਤ ਕਾ ਪੰਥੁ ਦੁਹੇਲਾ ॥ ਸੰਗਿ ਨ ਸਾਥੀ ਗਵਨੁ ਇਕੇਲਾ ॥੨॥ ਦੁਖੀਆ ਦਰਦਵੰਦੁ ਦਰਿ ਆਇਆ ॥ ਬਹੁਤੁ ਪਿਆਸ ਜਬਾਬੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਸਰਨਿ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ॥ ਜਿਤ ਜਾਨਹੁ ਤਿਤ ਕਰੁ ਗਤਿ ਮੇਰੀ ॥੩॥੧॥ ਸ੍ਰੂਹੀ ॥ ਜੋ ਦਿਨ ਆਵਹਿ ਸੋ ਦਿਨ ਜਾਹੀ ॥ ਕਰਨਾ ਕੂਚੁ ਰਹਨੁ ਥਿਉ ਨਾਹੀ ॥ ਸੰਗੁ ਚਲਤ ਹੈ ਹਮ ਭੀ ਚਲਨਾ ॥ ਟ੍ਰੌਰਿ ਗਵਨੁ ਸਿਰ ਊਪਰਿ

ਮਰਨਾ ॥੧॥ ਕਿਆ ਤੂ ਸੋਇਆ ਜਾਗੁ ਇਆਨਾ ॥ ਤੈ ਜੀਵਨੁ ਜਗਿ ਸਚੁ ਕਰਿ ਜਾਨਾ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ੍ਹਾਂ
ਜੀਤ ਦੀਆ ਸੁ ਰਿਜਕੁ ਅੰਬਰਾਵੈ ॥ ਸਭ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਹਾਟੁ ਚਲਾਵੈ ॥ ਕਰਿ ਬੰਦਿਗੀ ਛਾਡਿ ਮੈ ਮੇਰਾ ॥ ਹਿਰਦੈ
ਨਾਮੁ ਸਸ਼ਾਰਿ ਸਵੇਰਾ ॥੨॥ ਜਨਮੁ ਸਿਰਾਨੋ ਪਥੁ ਨ ਸਵਾਰਾ ॥ ਸਾੱਝ ਪਰੀ ਫਲ ਦਿਸ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥ ਕਹਿ
ਰਵਿਦਾਸ ਨਿਦਾਨਿ ਦਿਵਾਨੇ ॥ ਚੇਤਸਿ ਨਾਹੀ ਦੁਨੀਆ ਫਨ ਖਾਨੇ ॥੩॥੨॥ ਸੂਹੀ ॥ ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਸਾਲ ਰਸੋਈ ॥
ਏਕ ਘਰੀ ਫੁਨਿ ਰਹਨੁ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਐਸਾ ਜੈਸੇ ਘਾਸ ਕੀ ਟਾਟੀ ॥ ਜਲਿ ਗਇਆ ਘਾਸੁ ਰਲਿ
ਗਇਆ ਮਾਟੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭਾਈ ਬੰਧ ਕੁਟੰਬ ਸਹੇਰਾ ॥ ਓਇ ਭੀ ਲਾਗੇ ਕਾਢੁ ਸਵੇਰਾ ॥੨॥ ਘਰ ਕੀ ਨਾਰਿ
ਉਰਹਿ ਤਨ ਲਾਗੀ ॥ ਤਹ ਤਤ ਭੂਤੁ ਭੂਤੁ ਕਰਿ ਭਾਗੀ ॥੩॥ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਸਭੈ ਜਗੁ ਲੂਟਿਆ ॥ ਹਮ ਤਤ
ਏਕ ਰਾਮੁ ਕਹਿ ਛੂਟਿਆ ॥੪॥੩॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਸੂਹੀ ਬਾਣੀ ਸੇਖ ਫਰੀਦ ਜੀ ਕੀ ॥ ਤਪਿ ਤਪਿ ਲੁਹਿ ਲੁਹਿ ਹਾਥ ਮਰੋਰਤ ॥ ਬਾਵਲਿ ਹੋਈ ਸੋ ਸਹੁ ਲੋਰਤ ॥
ਤੈ ਸਹਿ ਮਨ ਮਹਿ ਕੀਆ ਰੋਸੁ ॥ ਮੁੜ੍ਹੁ ਅਵਗਨ ਸਹ ਨਾਹੀ ਦੋਸੁ ॥੧॥ ਤੈ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਮੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਨੀ ॥ ਜੋਬਨੁ
ਖੋਇ ਪਾਛੈ ਪਛੁਤਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਲੀ ਕੌਇਲ ਤੂ ਕਿਤ ਗੁਨ ਕਾਲੀ ॥ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕੇ ਹਤ ਬਿਰਹੈ
ਜਾਲੀ ॥ ਪਿਰਹਿ ਬਿਛੂਨ ਕਤਹਿ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਜਾ ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਤਾ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥ ਵਿਧਣ ਖੂਹੀ ਮੁੰਧ
ਡਿਕੇਲੀ ॥ ਨਾ ਕੋ ਸਾਥੀ ਨਾ ਕੋ ਬੇਲੀ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਸਾਧਸਂਗਿ ਮੇਲੀ ॥ ਜਾ ਫਿਰਿ ਦੇਖਾ ਤਾ ਮੇਰਾ ਅਲਹੁ
ਬੇਲੀ ॥੩॥ ਵਾਟ ਹਮਾਰੀ ਖਰੀ ਤਡੀਣੀ ॥ ਖੰਨਿਅਹੁ ਤਿਖੀ ਬਹੁਤੁ ਪਿੰਝੀ ॥ ਤਉ ਊਪਰਿ ਹੈ ਮਾਰਗੁ
ਮੇਰਾ ॥ ਸੇਖ ਫਰੀਦਾ ਪਥੁ ਸਸ਼ਾਰਿ ਸਵੇਰਾ ॥੪॥੧॥ ਸੂਹੀ ਲਲਿਤ ॥ ਬੇਡਾ ਬੰਧਿ ਨ ਸਕਿਆ ਬੰਧਨ ਕੀ ਵੇਲਾ
॥ ਭਰਿ ਸਰਕਰੁ ਜਬ ਊਛਲੈ ਤਬ ਤਰਣੁ ਦੁਹੇਲਾ ॥੧॥ ਹਥੁ ਨ ਲਾਇ ਕਸੁੰਭਡੈ ਜਲਿ ਜਾਸੀ ਢੋਲਾ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਇਕ ਆਪੀਨੈ ਪਤਲੀ ਸਹ ਕੇਰੇ ਬੋਲਾ ॥ ਦੁਧਾ ਥਣੀ ਨ ਆਵੰਝ ਫਿਰਿ ਹੋਇ ਨ ਮੇਲਾ ॥੨॥
ਕਹੈ ਫਰੀਦੁ ਸਹੇਲੀਹੋ ਸਹੁ ਅਲਾਏਸੀ ॥ ਛਾਸੁ ਚਲਸੀ ਝੁੰਮਣਾ ਅਹਿ ਤਨੁ ਫੇਰੀ ਥੀਸੀ ॥੩॥੨॥

੧੮ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਖੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੧ ॥

ਤੂ ਸੁਲਤਾਨੁ ਕਹਾ ਹਤ ਮੀਆ ਤੇਰੀ ਕਵਨ ਵਡਾਈ ॥ ਜੋ ਤੂ ਦੇਹਿ ਸੁ ਕਹਾ ਸੁਆਮੀ ਮੈ ਮੂਰਖ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਜੈਸੇ ਸਚ ਮਹਿ ਰਹਤ ਰਖਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਆ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁੜਾ ਤੇ ਤੇਰੀ ਸਭ ਅਸਨਾਈ ॥ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣਾ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਮੈ ਅੰਧੁਲੇ ਕਿਆ ਚਤੁਰਾਈ ॥੨॥ ਕਿਆ ਹਤ ਕਥੀ ਕਥੇ ਕਥਿ ਦੇਖਾ ਮੈ ਅਕਥੁ ਨ ਕਥਨਾ ਜਾਈ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਆਖਾ ਤਿਲੁ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੩॥ ਏਤੇ ਕੂਕਰ ਹਤ ਕੇਗਾਨਾ ਭਤਕਾ ਫਿਸੁ ਤਨ ਤਾਈ ॥ ਭਗਤਿ ਹੀਣੁ ਨਾਨਕੁ ਜੇ ਹੋਇਗਾ ਤਾ ਖਸਮੈ ਨਾਤ ਨ ਜਾਈ ॥੪॥੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨੁ ਮੰਦਰੁ ਤਨੁ ਕੇਸ ਕਲਮਦਰੁ ਘਟ ਹੀ ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਾ ॥ ਏਕੁ ਸਬਦੁ ਮੈਰੈ ਪ੍ਰਾਨਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਬਾਹੁਡਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵਾ ॥੧॥ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਫਿਅਲ ਸੇਤੀ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥ ਕਉਣੁ ਜਾਣੈ ਪੀਰ ਪਰਾਈ ॥ ਹਮ ਨਾਹੀ ਚਿੰਤ ਪਰਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ਚਿੰਤਾ ਕਰਹੁ ਹਮਾਰੀ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਭਰਿਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥ ਸਿਖ ਮਤਿ ਸਭ ਬੁਧਿ ਤੁਮਾਰੀ ਮੰਦਿਰ ਛਾਵਾ ਤੇਰੇ ॥ ਤੁੜਾ ਕਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਣਾ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਨਿਤ ਤੇਰੇ ॥੩॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਸਰਬ ਚਿੰਤ ਤੁਧੁ ਪਾਸੇ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਚੰਗਾ ਫਿਕ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸੇ ॥੪॥੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਪੇ ਸਬਦੁ ਆਪੇ ਨੀਸਾਨੁ ॥ ਆਪੇ ਸੁਰਤਾ ਆਪੇ ਜਾਨੁ ॥ ਆਪੇ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਤਾਣੁ ॥ ਤੂ ਦਾਤਾ

ਨਾਮੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥੧॥ ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਤੁ ॥ ਹਉ ਜਾਚਿਕੁ ਤੂ ਅਲਖ ਅਭੇਤੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ
 ਧਰਕਟੀ ਨਾਰਿ ॥ ਭ੍ਰਾਂਡੀ ਕਾਮਣਿ ਕਾਮਣਿਆਰਿ ॥ ਰਾਜੁ ਰੂਪੁ ਝੂਠਾ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ॥ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਚਾਨਣੁ ਅੰਧਿਆਰਿ
 ॥੨॥ ਚਖਿ ਛੋਡੀ ਸਹਸਾ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥ ਬਾਪੁ ਦਿਸੈ ਵੇਜਾਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਏਕੇ ਕਤ ਨਾਹੀ ਭਤ ਕੋਇ ॥ ਕਰਤਾ
 ਕਰੇ ਕਰਾਵੈ ਸੋਇ ॥੩॥ ਸਬਦਿ ਸੁਏ ਮਨੁ ਮਨ ਤੇ ਮਾਰਿਆ ॥ ਠਾਕਿ ਰਹੇ ਮਨੁ ਸਾਚੈ ਧਾਰਿਆ ॥ ਅਕਰੁ ਨ ਸ੍ਰੂੜੈ
 ਗੁਰ ਕਤ ਵਾਰਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥੪॥੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਮਨੁ
 ਸਹਜ ਧਿਆਨੇ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਮਨੁ ਮਾਨੇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਿ ਭੁਲੇ ਬਤਰਾਨੇ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਰਹੀਐ
 ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨੇ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਦਰਸਨ ਕੈਸੇ ਜੀਵਤ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਜੀਅਰਾ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਖਿਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਬ੍ਰਾਂਡ ਬੁੜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਬਿਸਰੈ ਹਉ ਮਰਤ ਦੁਖਾਲੀ ॥ ਸਾਚਿ ਗਿਰਾਚਿ ਜਪਤ ਅਪੁਨੇ
 ਹਰਿ ਭਾਲੀ ॥ ਸਦ ਬੈਰਾਗਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਹਾਲੀ ॥ ਅਥ ਜਾਨੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਲੀ ॥੨॥ ਅਕਥ ਕਥਾ ਕਹੀਐ
 ਗੁਰ ਭਾਇ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਦੇਇ ਦਿਖਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਰਣੀ ਕਿਆ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਮੇਟਿ
 ਚਲੈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਮਨਮੁਖੁ ਵਿਛੁਡੈ ਖੋਟੀ ਰਾਸਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਹਰਿ
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥੪॥੪॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਖਾਇਆ ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਸੋਇਆ ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਕਾਪੜੁ ਅੰਗਿ ਚੜਾਇਆ ॥ ਧਿਗੁ ਸਰੀਰੁ ਕੁਟੰਬ
 ਸਹਿਤ ਸਿਤ ਜਿਤੁ ਹੁਣਿ ਖਸਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਪਤੜੀ ਛੁੜਕੀ ਫਿਰਿ ਹਾਥਿ ਨ ਆਵੈ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ
 ॥੧॥ ਦ੍ਰੂਜਾ ਭਾਤ ਨ ਦੇਈ ਲਿਵ ਲਾਗਣਿ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਵਿਸਾਰੇ ॥ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤਾ ਜਨ ਸੇਵਕ ਤੇਰੇ
 ਤਿਨ ਕੇ ਤੈ ਦ੍ਰੂਖ ਨਿਵਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੂ ਦਿਇਆਲੁ ਦਿਇਆਪਤਿ ਦਾਤਾ ਕਿਆ ਏਹਿ ਜਂਤ ਵਿਚਾਰੇ ॥ ਮੁਕਤ
 ਬੰਧ ਸਭਿ ਤੁੜਾ ਤੇ ਹੋਏ ਐਸਾ ਆਖਿ ਵਖਾਣੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਸੁਕਤੁ ਕਹੀਐ ਮਨਮੁਖ ਬੰਧ ਵਿਚਾਰੇ ॥੨॥
 ਸੋ ਜਨੁ ਸੁਕਤੁ ਜਿਸੁ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਸਦਾ ਰਹੈ ਹਰਿ ਨਾਲੇ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਗਹਣ ਗਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਈ ਸਚੈ ਆਪਿ

सवारे ॥ भरमि भुलाणे सि मनमुख कहीअहि ना उरवारि न पारे ॥३॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु
 पाए गुर का सबटु समाले ॥ हरि जन माइआ माहि निसतारे ॥ नानक भागु होवै जिसु मसतकि
 कालहि मारि बिदारे ॥४॥१॥ बिलावलु महला ३ ॥ अतुलु किउ तोलिआ जाइ ॥ दूजा होइ त सोझी
 पाइ ॥ तिस ते दूजा नाही कोइ ॥ तिस दी कीमति किकू होइ ॥२॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥
 ता को जाणै दुबिधा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ आपि सराफु कसवटी लाए ॥ आपे परखे आपि चलाए ॥ आपे
 तोले पूरा होइ ॥ आपे जाणै एको सोइ ॥२॥ माइआ का रूपु सभु तिस ते होइ ॥ जिस नो मेले सु निरमलु
 होइ ॥ जिस नो लाए लगै तिसु आइ ॥ सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ ॥३॥ आपे लिव धातु है आपे
 ॥ आपि बुझाए आपे जापे ॥ आपे सतिगुरु सबटु है आपे ॥ नानक आखि सुणाए आपे ॥४॥२॥
 बिलावलु महला ३ ॥ साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को कहै बहाना ॥ ऐसा इकु तेरा खेलु
 बनिआ है सभ महि एकु समाना ॥१॥ सतिगुरि परचै हरि नामि समाना ॥ जिसु करमु होवै सो सतिगुरु
 पाए अनदिनु लागै सहज धिआना ॥१॥ रहाउ ॥ किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना
 ॥ जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना ॥२॥ आपे गुरु चेला है आपे
 आपे गुणी निधाना ॥ जिउ आपि चलाए तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै भगवाना ॥३॥ कहत नानकु
 तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामाँ ॥ इकना घर महि दे वडिआई इकि भरमि भवहि अभिमाना
 ॥४॥३॥ बिलावलु महला ३ ॥ पूरा थाटु बणाइआ पूरै वेखहु एक समाना ॥ इसु परपंच महि
 साचे नाम की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥१॥ सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि
 समाना ॥ इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥२॥ रहाउ ॥ चहु जुगा का हुणि
 निबेड़ा नर मनुखा नो एकु निधाना ॥ जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति हरि नामा
 ॥२॥ जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ॥ गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि

ਜਗਿ ਤੇ ਪੂਰੇ ਪਰਵਾਨਾ ॥੩॥ ਕਹਤ ਨਾਨਕੁ ਸਚੇ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਏ ਚੂਕੈ ਮਨਿ ਅਭਿਮਾਨਾ ॥ ਕਹਤ ਸੁਣਤ ਸਭੇ
 ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨਤ ਪਾਹਿ ਨਿਧਾਨਾ ॥੪॥੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪੇ ਲਾਏ ॥
 ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਬਿਲਾਵਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਏ ॥ ਮੰਗਲੁ ਨਾਰੀ ਗਾਵਹਿ ਆਏ ॥ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੧॥
 ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਕਤ ਮਿਲਿਆ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਹਜਿ
 ਸੁਭਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਤੈਰੈ ਚਾਏ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਏ ॥ ਆਪੇ ਸੋਭਾ ਸਦ ਹੀ
 ਪਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲੈ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਤੇ ਸਬਦਿ ਰੰਗਾਏ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ
 ॥ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਹਰਿ ਰਸਿ ਭਾਏ ॥ ਝਿਹੁ ਰੰਗੁ ਕਦੇ ਨ ਤਤਰੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਏ ॥੩॥ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਮਿਟਿਆ
 ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮੇਰਾ ॥ ਜੋ ਸਾਚਿ ਰਾਤੇ ਤਿਨ ਬਹੁਡਿ ਨ ਫੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਦੂੜਾਏ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥੪॥੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਵਡਿਆਈ ਪਾਈ ॥ ਅਚਿੰਤ ਨਾਮੁ
 ਕਾਸਿਆ ਮਨਿ ਆਈ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਸਬਦਿ ਜਲਾਈ ॥ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਗੁਰ ਤੇ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥੧॥ ਜਗਦੀਸ
 ਸੇਵਤ ਮੈ ਅਕਰੁ ਨ ਕਾਜਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਅਨਦੁ ਹੋਵੈ ਮਨਿ ਮੈਰੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਾਗਤ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਨਿਵਾਜਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਮਨ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ਮਨ ਤੇ ਪਾਈ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸਬਦਿ ਬੁੜਾਈ ॥ ਜੀਵਣ ਮਰਣੁ ਕੋ ਸਮਸ਼ਰਿ ਕੇਖੈ ॥
 ਬਹੁਡਿ ਨ ਮਰੈ ਨਾ ਜਮੁ ਪੇਖੈ ॥੨॥ ਘਰ ਹੀ ਮਹਿ ਸਭਿ ਕੋਟ ਨਿਧਾਨ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਿਖਾਏ ਗਿਆ ਅਭਿਮਾਨੁ
 ॥ ਸਦ ਹੀ ਲਾਗਾ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਗਾਵੈ ਏਕੋ ਨਾਮ ॥੩॥ ਝਿਝੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਵਡਿਆਈ ਪਾਈ ॥
 ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥੪॥
 ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅਤਿ ਮੀਠਾ ਲਾਇਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਤ੃ਸਨ ਬੁੜੀ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੫॥੬॥੪॥੬॥੧੦॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੩

੧੪ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਉਦਮ ਮਤਿ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਜਿਤ ਪ੍ਰੇਰੇ ਤਿਤ ਕਰਨਾ ॥ ਜਿਤ ਨਟ੍ਟਆ ਤੰਤੁ ਵਜਾਏ ਤੰਤੀ ਤਿਤ ਵਾਜਹਿ ਜੰਤ

जना ॥१॥ जपि मन राम नामु रसना ॥ मसतकि लिखत लिखे गुरु पाइआ हरि हिरदै हरि बसना ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ गिरसति भ्रमतु है प्रानी रखि लेवहु जनु अपना ॥ जिउ प्रहिलादु हरणाखसि ग्रसिओ हरि राखिओ हरि सरना ॥२॥ कवन कवन की गति मिति कहीअै हरि कीए पतित पवन्ना ॥ ओहु ढोवै ढोर हाथि चमु चमरे हरि उधरिओ परिओ सरना ॥३॥ प्रभ दीन दिआल भगत भव तारन हम पापी राखु पपना ॥ हरि दासन दास दास हम करीअहु जन नानक दास दासन्ना ॥४॥१॥ बिलावलु महला ४ ॥ हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा ॥ करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा ॥१॥ मेरे मन भजु राम नामै रामा ॥ गुरमति हरि रसु पाईअै होरि तिआगहु निहफल कामा ॥२॥ रहाउ ॥ हरि जन सेवक से हरि तारे हम निरगुन राखु उपमा ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे ठाकुर हरि जपीअै वडे करंमा ॥२॥ नामहीन ध्रिगु जीवते तिन वड दूख सह्यमा ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मंदभागी मूँड अकरमा ॥३॥ हरि जन नामु अधारु है धुरि पूरबि लिखे वड करमा ॥ गुरि सतिगुरि नामु दृढ़ाइआ जन नानक सफलु जन्नमा ॥४॥२॥ बिलावलु महला ४ ॥ हमरा चितु लुभत मोहि बिखिआ बहु दुरमति मैलु भरा ॥ तुमरी सेवा करि न सकह प्रभ हम किउ करि मुगध तरा ॥१॥ मेरे मन जपि नरहर नामु नरहरा ॥ जन ऊपरि किरपा प्रभि धारी मिलि सतिगुर पारि परा ॥२॥ रहाउ ॥ हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हरि देहु मती जसु करा ॥ तुमरै संगि लगे से उधरे जिउ संगि कासट लोह तरा ॥३॥ साकत नर होछी मति मधिम जिन् हरि हरि सेव न करा ॥ ते नर भागहीन दुहचारी ओइ जनमि मुए फिरि मरा ॥४॥३॥ जिन कउ तुम् हरि मेलहु सुआमी ते नाए संतोख गुर सरा ॥ दुरमति मैलु गई हरि भजिआ जन नानक पारि परा ॥५॥४॥ बिलावलु महला ४ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि कथा करहु ॥ हरि हरि नामु बोहिथु है कलजुगि खेवटु गुर सबदि तरहु ॥६॥ मेरे मन हरि गुण हरि उचरहु ॥ मसतकि लिखत लिखे गुन गाए मिलि

ਸੰਗਤਿ ਪਾਰਿ ਪਰਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਇਆ ਨਗਰ ਮਹਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਊਤਮੁ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਉਪਦੇਸੁ ਜਨ ਕਰਹੁ
 ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਸਫਲ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਮਿਲਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਅਹੁ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਹਰਿ ਮੀਠਾ ਹਰਿ ਸੰਤਹੁ ਚਾਖਿ ਦਿਖਹੁ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਲਾਗਾ ਤਿਨ ਬਿਸਰੇ ਸਭਿ ਬਿਖ ਰਸਹੁ
 ॥੩॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਸੁ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਹਰਿ ਸੇਵਹੁ ਸੰਤ ਜਨਹੁ ॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਚਾਰੇ ਪਾਏ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਨਕ
 ਹਰਿ ਭਜਹੁ ॥੪॥੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਖਨੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਸ੍ਰੂਦੁ ਵੈਸੁ ਕੋ ਜਾਪੈ ਹਰਿ ਮੰਤੁ ਜਪੈਨੀ ॥ ਗੁਰੁ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰਿ ਪ੍ਰਯਹੁ ਨਿਤ ਸੇਵਹੁ ਦਿਨਸੁ ਸਭ ਰੈਨੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜਨ ਟੇਖਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨੈਨੀ ॥ ਜੋ
 ਛਿਛਹੁ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ਹਰਿ ਬੋਲਹੁ ਗੁਰਮਤਿ ਬੈਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਚਿਤਵੀਅਹਿ ਬਹੁਤੇਰੇ
 ਸਾ ਹੋਵੈ ਜਿ ਬਾਤ ਹੋਵੈਨੀ ॥ ਅਪਨਾ ਭਲਾ ਸਭੁ ਕੋਈ ਬਾਛੈ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿ ਮੈਰੈ ਚਿਤਿ ਨ ਚਿਤੈਨੀ ॥੨॥ ਮਨ ਕੀ
 ਮਤਿ ਤਿਆਗਹੁ ਹਰਿ ਜਨ ਏਹਾ ਬਾਤ ਕਠੈਨੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਮਤਿ
 ਲੈਨੀ ॥੩॥ ਮਤਿ ਸੁਮਤਿ ਤੇਰੈ ਵਸਿ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਜਂਤ ਤ੍ਰ ਪੁਰਖੁ ਜੱਤੈਨੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਕਰਤੇ ਸੁਆਮੀ
 ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਬੁਲੈਨੀ ॥੪॥੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਅਨਦ ਮੂਲੁ ਧਿਆਇਆ ਪੁਰਖੋਤਮੁ ਅਨਦਿਨੁ
 ਅਨਦ ਅਨਨਦੇ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੀ ਕਾਣਿ ਚੁਕਾਈ ਸਭਿ ਚੂਕੇ ਜਮ ਕੇ ਛੰਦੇ ॥੧॥ ਜਧਿ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਗੁੰਬਿੰਦੇ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਣ ਗਾਏ ਪਰਮਾਨਦੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਕਤ ਮੂੜ ਮਾਇਆ
 ਕੇ ਬਧਿਕ ਵਿਚਿ ਮਾਇਆ ਫਿਰਹਿ ਫਿਰਦੇ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਜਲਤ ਕਿਰਤ ਕੇ ਬਾਧੇ ਜਿਤ ਤੇਲੀ ਬਲਦ ਭਵਦੇ ॥੨॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵ ਲਗੇ ਸੇ ਤਥੇ ਵਡਭਾਗੀ ਸੇਵ ਕਰਦੇ ॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਜਧਿਆ ਤਿਨ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਸਭਿ ਤ੍ਰਟੇ
 ਮਾਇਆ ਫੰਦੇ ॥੩॥ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਆਪੇ ਸੇਵਕੁ ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਗੋਵਿੰਦੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਆਪਿ ਸਭੁ
 ਵਰਤੈ ਜਿਤ ਰਾਖੈ ਤਿਵੈ ਰਵਾਦੇ ॥੪॥੬॥

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ਪੜਤਾਲ ਘਰੁ ੧੩ ॥ ਬੋਲਹੁ ਭੰਝਾ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੋ ॥ ਹਰਿ ਸੰਤ ਭਗਤ

तारनो ॥ हरि भरिपुरे रहिआ ॥ जलि थले राम नामु ॥ नित गाईअै हरि दूख बिसारनो ॥੧॥ रहाउ ॥
हरि कीआ है सफल जनमु हमारा ॥ हरि जपिआ हरि दूख बिसारनहारा ॥ गुरु भेटिआ है मुकति दाता
॥ हरि कीई हमारी सफल जाता ॥ मिलि संगती गुन गावनो ॥੧॥ मन राम नाम करि आसा ॥ भाउ
दूजा बिनसि बिनासा ॥ विचि आसा होइ निरासी ॥ सो जनु मिलिआ हरि पासी ॥ कोई राम नाम गुन
गावनो ॥ जनु नानकु तिसु पगि लावनो ॥੨॥੧॥੭॥੮॥੬॥੭॥੧੭॥

रागु बिलावलु महला ੫ चउपटे घरु ੧

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਦਰੀ ਆਵੈ ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਮੋਹੁ ॥ ਕਿਉ ਮਿਲੀਐ ਪ੍ਰਭ ਅਬਿਨਾਸੀ ਤੋਹਿ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਵਹੁ ॥
ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਅੰਚਲਿ ਲਾਵਹੁ ॥੧॥ ਕਿਉ ਤਰੀਐ ਬਿਖਿਆ ਸੱਸਾਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬੋਹਿਥੁ ਪਾਵੈ ਪਾਰਿ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਪਵਨ ਝੁਲਾਰੇ ਮਾਇਆ ਦੇਇ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਭਗਤ ਸਦਾ ਥਿਰੁ ਸੇਇ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ ਰਹਹਿ ਨਿਰਾਰਾ ॥ ਸਿਰ
ਊਪਰਿ ਆਪਿ ਗੁਰੁ ਰਖਵਾਰਾ ॥੨॥ ਪਾਇਆ ਵੇਡੁ ਮਾਇਆ ਸਰਬ ਭੁਇਅੰਗਾ ॥ ਹਤਮੈ ਪਚੇ ਟੀਪਕ ਦੇਖਿ ਪਤੰਗਾ
॥ ਸਗਲ ਸੀਗਾਰ ਕਰੇ ਨਹੀ ਪਾਵੈ ॥ ਜਾ ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਤਾ ਗੁਰੁ ਮਿਲਾਵੈ ॥੩॥ ਹਤ ਫਿਰਤ ਉਦਾਸੀ ਮੈ ਇਕੁ
ਰਤਨੁ ਦਸਾਇਆ ॥ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਹੀਰਾ ਮਿਲੈ ਨ ਉਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਮੰਦਰੁ ਤਿਸੁ ਮਹਿ ਲਾਲੁ ॥ ਗੁਰਿ ਖੋਲਿਆ
ਪਡਦਾ ਦੇਖਿ ਭੰਈ ਨਿਹਾਲੁ ॥੪॥ ਜਿਨਿ ਚਾਖਿਆ ਤਿਸੁ ਆਇਆ ਸਾਦੁ ॥ ਜਿਉ ਗ੍ਰੰਗਾ ਮਨ ਮਹਿ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥
ਆਨਦ ਰੂਪੁ ਸਭੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਆਖਿ ਸਮਾਇਆ ॥੫॥੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਕੀਏ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਸੇਵਕੁ ਅਪਨੀ ਲਾਇਆ ਸੇਵ ॥ ਬਿਧਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਜਪਿ ਅਲਖ ਅਭੇਵ ॥੧॥
ਧਰਤਿ ਪੁਨੀਤ ਭੰਈ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥ ਦੁਰਤੁ ਗਿਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਰਖਿਆ
ਆਪਿ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜਾ ਕਾ ਵਡ ਪਰਤਾਪੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਨ ਹੋਇ ਸੰਤਾਪੁ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਲਗੇ ਮਨਿ
ਮੀਠੇ ॥ ਨਿਰਬਿਧਨ ਹੋਇ ਸਭ ਥਾਈ ਕੂਠੇ ॥ ਸਭਿ ਸੁਖ ਪਾਏ ਸਤਿਗੁਰ ਤੂਠੇ ॥੩॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਰਖਵਾਲੇ
॥ ਜਿਥੈ ਕਿਥੈ ਦੀਸਹਿ ਨਾਲੇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਖਸਮਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ॥੪॥੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨ

ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥ ਅਗਨਤ ਗੁਣ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ॥ ਮੋਹਿ ਅਨਾਥ ਤੁਮਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਚਰਨ
ਧਿਆਈ ॥੧॥ ਦਿੜਿਆ ਕਰਹੁ ਬਸਹੁ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਨ ਲੀਜੈ ਲਡਿ ਲਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ
ਆਵੈ ਤਾ ਕੈਸੀ ਭੀਡ਼ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵਕ ਨਾਹੀ ਜਮ ਪੀਡ਼ ॥ ਸਰਬ ਦੂਖ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਨਸੇ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਾਂਗਿ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੁ
ਬਸੈ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਆਧਾਰੁ ॥ ਬਿਸਰਤ ਨਾਮੁ ਹੋਵਤ ਤਨੁ ਛਾਰੁ ॥ ਪ੍ਰਭ ਚਿਤਿ ਆਏ ਪੂਰਨ ਸਭ
ਕਾਜ ॥ ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਸਭ ਕਾ ਮੁਹਤਾਜ ॥੩॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਾਂਗਿ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਬਿਸਰਿ ਗੱਈ ਸਭ ਦੁਰਮਤਿ
ਰੀਤਿ ॥ ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੰਤ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤਨ ਕੈ ਘਰਿ ਸਦਾ ਅਨਨਦ ॥੪॥੩॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਧਾਨਡੀਏ ਕੈ ਘਰਿ ਗਾਵਣਾ ੧੭੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੈ ਮਨਿ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ਮੇਰੇ ਧਿਆਰੇ ਮੈ ਮਨਿ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ॥ ਅਵਰ ਸਿਆਣਧਾ ਬਿਰਥੀਆ ਧਿਆਰੇ ਰਾਖਨ ਕਤ ਤੁਮ
ਏਕ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰਾ ਜੇ ਮਿਲੈ ਧਿਆਰੇ ਸੋ ਜਨੁ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲਾ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੇ ਧਿਆਰੇ
ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਇ ਦਿੜਿਆਲਾ ॥ ਸਫਲ ਸੂਰਤਿ ਗੁਰਦੇਤ ਸੁਆਮੀ ਸਰਬ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ
ਪਰਮੇਸਰੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਵਾ ਸੋਇ ਤਿਨਾ ਕੀ ਜਿਨ੍ ਅਪੁਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥ ਹਰਿ
ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਹਿ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਸੇਵਕੁ ਜਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਮਾਗੈ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ
ਕਮਾਵਾ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀ ਸੁਆਮੀ ਤੇਰੇ ਜਨ ਦੇਖਣੁ ਪਾਵਾ ॥੨॥ ਵਡਭਾਗੀ ਸੇ ਕਾਢੀਅਹਿ ਧਿਆਰੇ
ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਜਿਨਾ ਵਾਸੋ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧੀਐ ਨਿਰਮਲੁ ਮਨੈ ਹੋਵੈ ਪਰਗਾਸੋ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ
ਕਾਟੀਐ ਧਿਆਰੇ ਚੂਕੈ ਜਮ ਕੀ ਕਾਣੇ ॥ ਤਿਨਾ ਪਰਾਪਤਿ ਦਰਸਨੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਅਪਣੇ ਭਾਣੇ ॥੩॥
ਊਚ ਅਪਾਰ ਬੇਅੰਤ ਸੁਆਮੀ ਕਤਣੁ ਜਾਣੈ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ॥ ਗਾਵਤੇ ਉਧਰਹਿ ਸੁਣਤੇ ਉਧਰਹਿ ਬਿਨਸਹਿ ਪਾਪ
ਘਨੇਰੇ ॥ ਪਸੂ ਪਰੇਤ ਮੁਗਧ ਕਤ ਤਾਰੇ ਪਾਹਨ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੈ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਸਦਾ ਸਦਾ
ਬਲਿਹਾਰੈ ॥੪॥੧॥੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਿਖੈ ਬਨੁ ਫੀਕਾ ਤਿਆਗਿ ਰੀ ਸਖੀਏ ਨਾਮੁ ਮਹਾ
ਰਸੁ ਪੀਓ ॥ ਬਿਨੁ ਰਸ ਚਾਖੇ ਬੁਡਿ ਗੱਈ ਸਗਲੀ ਸੁਖੀ ਨ ਹੋਵਤ ਜੀਓ ॥ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ਨ ਸਕਤਿ ਹੀ

ਕਾਈ ਸਾਧਾ ਦਾਸੀ ਥੀਓ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇ ਦਰਿ ਸੋਭਾਵਤੇ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਕੀਓ ॥੧॥ ਹਰਿਚੰਦਤਰੀ
 ਚਿਤ ਭਰਮੁ ਸਖੀਏ ਮ੃ਗ ਤੂਸਨਾ ਟੁਮ ਛਾਡਿਆ ॥ ਚੰਚਲਿ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲਤੀ ਸਖੀਏ ਅੰਤਿ ਤਜਿ ਜਾਵਤ
 ਮਾਡਿਆ ॥ ਰਸਿ ਭੋਗਣ ਅਤਿ ਰੂਪ ਰਸ ਮਾਤੇ ਇਨ ਸੰਗਿ ਸ੍ਰੂਖੁ ਨ ਪਾਡਿਆ ॥ ਧੰਨਿ ਧੰਨਿ ਹਰਿ ਸਾਧ ਜਨ
 ਸਖੀਏ ਨਾਨਕ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਡਿਆ ॥੨॥ ਜਾਡਿ ਬਸਹੁ ਵਡਭਾਗਣੀ ਸਖੀਏ ਸੰਤਾ ਸੰਗਿ ਸਮਾਈਐ ॥
 ਤਹ ਫੂਖ ਨ ਭੂਖ ਨ ਰੋਗੁ ਬਿਆਪੈ ਚਰਨ ਕਮਲ ਲਿਵ ਲਾਈਐ ॥ ਤਹ ਜਨਮ ਨ ਮਰਣੁ ਨ ਆਵਣ ਜਾਣਾ
 ਨਿਹਚਲੁ ਸਰਣੀ ਪਾਈਐ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਬਿਛੋਹੁ ਨ ਮੋਹੁ ਬਿਆਪੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਇਕੁ ਧਿਆਈਐ ॥੩॥ ਦੂਸਟਿ ਧਾਰਿ
 ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਪਿਆਰੇ ਰਤੜੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥
 ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਰਾਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਮਨ ਤਨ ਇਛ ਪੁਯਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਅਚਰਜੁ ਅਚਰਜ ਸਿਉ ਮਿਲਿਆ ਕਹਣਾ
 ਕਛੂ ਨ ਜਾਏ ॥੪॥੨॥੫॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਏਕ ਰੂਪ ਸਗਲੋ ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਬਨਜੁ ਆਪਿ ਬਿਤਹਾਰਾ ॥੧॥ ਐਸੋ ਗਿਆਨੁ ਬਿਰਲੋ ਈ ਪਾਏ ॥ ਜਤ ਜਤ
 ਜਾਈਐ ਤਤ ਦੂਸਟਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਨਿਰਗੁਨ ਇਕ ਰੰਗਾ ॥ ਆਪੇ ਜਲੁ ਆਪ ਹੀ ਤਰੰਗਾ
 ॥੨॥ ਆਪ ਹੀ ਮੰਦਰੁ ਆਪਹਿ ਸੇਵਾ ॥ ਆਪ ਹੀ ਪ੍ਰਾਜਾਰੀ ਆਪ ਹੀ ਦੇਵਾ ॥੩॥ ਆਪਹਿ ਜੋਗ ਆਪ ਹੀ ਜੁਗਤਾ
 ॥ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਸਦ ਹੀ ਸੁਕਤਾ ॥੪॥੧॥੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਪਿ ਉਪਾਵਨ ਆਪਿ ਸਧਰਨਾ ॥
 ਆਪਿ ਕਰਾਵਨ ਦੋਸੁ ਨ ਲੈਨਾ ॥੧॥ ਆਪਨ ਬਚਨੁ ਆਪ ਹੀ ਕਰਨਾ ॥ ਆਪਨ ਬਿਭਤ ਆਪ ਹੀ ਜਰਨਾ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪ ਹੀ ਮਸਟਿ ਆਪ ਹੀ ਬੁਲਨਾ ॥ ਆਪ ਹੀ ਅਛਲੁ ਨ ਜਾਈ ਛਲਨਾ ॥੨॥ ਆਪ ਹੀ
 ਗੁਪਤ ਆਪਿ ਪਰਗਟਨਾ ॥ ਆਪ ਹੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਆਪਿ ਅਲਿਪਨਾ ॥੩॥ ਆਪੇ ਅਵਿਗਤੁ ਆਪ ਸੰਗਿ
 ਰਚਨਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸਭਿ ਜਚਨਾ ॥੪॥੨॥੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭੂਲੇ ਮਾਰਗੁ ਜਿਨਹਿ
 ਬਤਾਡਿਆ ॥ ਐਸਾ ਗੁਰੁ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਡਿਆ ॥੧॥ ਸਿਮਰਿ ਮਨਾ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਚਿਤਾਰੇ ॥ ਬਸਿ ਰਹੇ ਹਿਰਦੈ

ਗੁਰ ਚਰਨ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਮੁਕਤਿ ਗੁਰਿ ਕੀਨਾ
 ॥੨॥ ਦੁਖ ਸੁਖ ਕਰਤ ਜਨਮਿ ਫੁਨਿ ਮੂਆ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੁਰਿ ਆਸ਼ਮੁ ਦੀਆ ॥੩॥ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ
 ਬ੍ਰਡਤ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੪॥੩॥੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ
 ਧਨੁ ਅਰਪਤ ਸਭੁ ਅਪਨਾ ॥ ਕਵਨ ਸੁ ਮਤਿ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨਾ ॥੧॥ ਕਰਿ ਆਸਾ ਆਇਐ ਪ੍ਰਭ ਮਾਗਨਿ
 ॥ ਤੁਮ ਪੇਖਤ ਸੋਭਾ ਮੈਰੈ ਆਗਨਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ ਕਰਿ ਬਹੁਤੁ ਬੀਚਾਰਤ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਇਸੁ
 ਮਨਹਿ ਉਧਾਰਤ ॥੨॥ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਸੁਰਤਿ ਨਾਹੀ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਤਾ ਮਿਲੀਐ ਜਾ ਲਏ ਮਿਲਾਈ ॥੩॥ ਨੈਨ ਸੰਤੋਖੇ
 ਪ੍ਰਭ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਫਲੁ ਸੋ ਆਇਆ ॥੪॥੪॥੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ
 ਸੁਤ ਸਾਥਿ ਨ ਮਾਇਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਭੁ ਦ੍ਰਖੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭ ਮਹਿ ਆਪੇ ॥ ਹਰਿ
 ਜਪੁ ਰਸਨਾ ਦੁਖੁ ਨ ਵਿਆਪੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਿਖਾ ਭ੍ਰਖ ਬਹੁ ਤਪਤਿ ਵਿਆਪਿਆ ॥ ਸੀਤਲ ਭਏ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਜਸੁ ਜਾਪਿਆ ॥੨॥ ਕੋਟਿ ਜਤਨ ਸੰਤੋਖੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤਾਨਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥੩॥ ਦੇਹੁ ਭਗਤਿ
 ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨ੍ਤੀ ਸੁਆਮੀ ॥੪॥੫॥੧੦॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਵਡਭਾਗੀ
 ਪਾਈਐ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਸਰਨਾ ॥ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟੈ ਭਜੁ
 ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਵਰਿ ਕਰਮ ਸਭਿ ਲੋਕਾਚਾਰ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਹੋਇ ਉਧਾਰ ॥੨॥
 ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਜਪੀਐ ਨਾਮੁ ਜਿਤੁ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੇ ॥੩॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀਐ
 ॥ ਸਾਧੂ ਧੂਰਿ ਮਿਲੈ ਨਿਸਤਰੀਐ ॥੪॥੬॥੧੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਿਦੇ ਮਹਿ ਚੀਨਾ ॥
 ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨ ਆਸੀਨਾ ॥੧॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਾ ਮੁਖੁ ਊਜਲੁ ਕੀਨਾ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨਾ ਨਾਮੁ
 ਦੀਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨਾ ॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਜਗਤਿ ਪ੍ਰਗਟੀਨਾ ॥੨॥ ਨੀਚਾ ਤੇ ਊਚ
 ਊਨ ਪੂਰੀਨਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਲੀਨਾ ॥੩॥ ਮਨ ਤਨ ਨਿਰਮਲ ਪਾਪ ਜਲਿ ਖੀਨਾ ॥ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਪ੍ਰਸੀਨਾ ॥੪॥੭॥੧੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪਾਈਅਹਿ ਮੀਤਾ ॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਲਾਈਐ ਚੀਤਾ ॥੧॥ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜੋ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਵਤ ॥ ਜਲਨਿ ਬੁੜੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਨ
 ਗਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਹੋਵਤ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਰਾਮਹਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੨॥ ਮਤਿ ਪਤਿ
 ਧਨੁ ਸੁਖ ਸਹਜ ਅਨੰਦਾ ॥ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ ਵਿਸਰਹੁ ਪਰਮਾਨਦਾ ॥੩॥ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਕੀ ਮਨਿ ਧਿਆਸ
 ਘਨੇਰੀ ॥ ਭਨਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ॥੪॥੮॥੧੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਨ ਸਭ
 ਗੁਣਹ ਬਿਛੂਨਾ ॥ ਦਿੱਡਿਆ ਧਾਰਿ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਲੀਨਾ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿ ਗੋਪਾਲਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭੁ ਘਰ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਭੈ ਕਾਟਨਹਾਰੇ ॥ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਅਥਵਾ
 ਤਤ੍ਰੇ ਪਾਰੇ ॥੨॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪ੍ਰਭ ਬਿਰਦੁ ਬੇਦਿ ਲੇਖਿਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੋ ਨੈਨਹੁ ਪੇਖਿਆ ॥੩॥ ਸਾਧਸੰਗਿ
 ਪ੍ਰਗਟੇ ਨਾਰਾਇਣ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਭਿ ਦੂਖ ਪਲਾਇਣ ॥੪॥੬॥੧੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਵਨੁ
 ਜਾਨੈ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੀ ਸੇਵਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਅਵਿਨਾਸੀ ਅਲਖ ਅਮੇਵਾ ॥੧॥ ਗੁਣ ਬੇਅੰਤ ਪ੍ਰਭ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੇ ॥ ਊਚ ਮਹਲ
 ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥ ਤੂ ਅਪਰਾਂਪਰ ਠਾਕੁਰ ਮੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਏਕਸ ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਕੋ ਟ੍ਰੋਜਾ ॥ ਤੁਸੁ ਹੀ ਜਾਨਹੁ
 ਅਪਨੀ ਪ੍ਰੋਜਾ ॥੨॥ ਆਪਹੁ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵਤ ਭਾਈ ॥ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਵੈ ਸੋ ਨਾਮੁ ਪਾਈ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਜਨੁ
 ਪ੍ਰਭ ਭਾਇਆ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਪ੍ਰਭੁ ਤਿਨ ਹੀ ਪਾਇਆ ॥੪॥੧੦॥੧੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਤ
 ਗਰਭ ਮਹਿ ਹਾਥ ਦੇ ਰਾਖਿਆ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਛੋਡਿ ਬਿਖਿਆ ਫਲੁ ਚਾਖਿਆ ॥੧॥ ਭਜੁ ਗੋਬਿਦ ਸਭ ਛੋਡਿ ਜੰਜਾਲ
 ॥ ਜਬ ਜਮੁ ਆਇ ਸੰਘਾਰੈ ਸ੍ਰੋਤੇ ਤਬ ਤਨੁ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਬੇਹਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਅਪਨਾ ਕਰਿ
 ਥਾਪਿਆ ॥ ਕਰਨਹਾਰੁ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ ਜਾਪਿਆ ॥੨॥ ਮਹਾ ਮੋਹ ਅੰਧ ਕੂਪ ਪਰਿਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਮਾਇਆ
 ਪਟਲਿ ਬਿਸਰਿਆ ॥੩॥ ਕਵੈ ਭਾਗਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇਆ ॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥
 ੧੧॥੧੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਭਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਹੋਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਹਾਈ
 ॥੧॥ ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਘਣੇ ॥ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਪੂਰੀ ਜਾ ਕੀ ਬਾਣੀ ਅਨਿਕ ਗੁਣਾ ਜਾ ਕੇ ਜਾਹਿ ਨ ਗਣੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਸਗਲ ਸਰੰਜਾਮ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ॥ ਭਏ ਮਨੋਰਥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੇ ॥੨॥ ਅਰਥ ਧਰਮ ਕਾਮ ਮੋਖ ਕਾ

ਦਾਤਾ ॥ ਪੂਰੀ ਭਈ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਬਿਧਾਤਾ ॥੩॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣਿਆ ॥ ਘਰਿ ਆਇਆ ਪੂਰੈ
ਗੁਰਿ ਆਣਿਆ ॥੪॥੧੨॥੧੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸ਼੍ਰਬ ਨਿਧਾਨ ਪੂਰਨ ਗੁਰਦੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ
ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਨਰ ਜੀਵੇ ॥ ਮਾਰਿ ਖੁਆਰੁ ਸਾਕਤ ਨਰ ਥੀਵੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹੋਆ ਰਖਵਾਰਾ ॥ ਝੱਖ ਮਾਰਤ
ਸਾਕਤੁ ਵੇਚਾਰਾ ॥੨॥ ਨਿੰਦਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਪਚਹਿ ਘਨੇਰੇ ॥ ਮਿਰਤਕ ਫਾਸ ਗਲੈ ਸਿਰਿ ਪੈਰੇ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
ਜਪਹਿ ਜਨ ਨਾਮ ॥ ਤਾ ਕੇ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਜਾਮ ॥੪॥੧੩॥੧੮॥

ਰਾਗ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪ ਟੁਪਦੇ ੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਵਨ ਸੰਜੋਗ ਮਿਲਤ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ॥ ਪਲੁ ਪਲੁ ਨਿਮਖ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਪਨੇ ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਨਿਤ
ਧਿਆਵਤ ॥ ਕਵਨ ਸੁ ਮਤਿ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਐਸੀ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਨਕ
ਬਿਸਰੁ ਨ ਕਾਹੂ ਕੇਰੇ ॥੨॥੧॥੧੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰਭ ਹਿਰਦੈ ਧਿਆਏ ॥ ਰੋਗ ਗਏ
ਸਗਲੇ ਸੁਖ ਪਾਏ ॥੧॥ ਗੁਰਿ ਟੁਖੁ ਕਾਟਿਆ ਦੀਨੋ ਦਾਨੁ ॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਜੀਵਨ ਪਰਵਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਅਕਥ ਕਥਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰਭ ਬਾਨੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਜੀਵੇ ਗਿਆਨੀ ॥੨॥੨॥੨੦॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਸਾਁਤਿ ਪਾਈ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੇ ॥ ਸੁਖ ਉਪਜੇ ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਾਪ ਪਾਪ ਸੰਤਾਪ
ਬਿਨਾਸੇ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਕਿਲਵਿਖ ਸਭਿ ਨਾਸੇ ॥੧॥ ਅਨਦੁ ਕਰਹੁ ਮਿਲਿ ਸੁੰਦਰ ਨਾਰੀ ॥ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕਿ
ਮੇਰੀ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੨॥੩॥੨੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਮਤਾ ਮੋਹ ਧੋਹ ਮਦਿ ਮਾਤਾ ਬੰਧਨਿ ਬਾਧਿਆ
ਅਤਿ ਬਿਕਰਾਲ ॥ ਦਿਨੁ ਦਿਨੁ ਛਿਜਤ ਬਿਕਾਰ ਕਰਤ ਅਤਥ ਫਾਹੀ ਫਾਥਾ ਜਮ ਕੈ ਜਾਲ ॥੧॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ
ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਿੱਤਿਆਲਾ ॥ ਮਹਾ ਬਿਖਮ ਸਾਗਰੁ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ਤਥਰਹੁ ਸਾਥ੍ਵ ਸੰਗਿ ਰਖਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਭ
ਸੁਖਦਾਤੇ ਸਮਰਥ ਸੁਆਮੀ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੁਮਰਾ ਮਾਲ ॥ ਭ੍ਰਮ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟਹੁ ਪਰਮੇਸਰ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ
ਸਦਾ ਕ੃ਪਾਲ ॥੨॥੪॥੨੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਗਲ ਅਨਨਦੁ ਕੀਆ ਪਰਮੇਸਰਿ ਅਪਣਾ ਬਿਰਦੁ
ਸਮਾਰਿਆ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਹੋਏ ਕਿਰਪਾਲਾ ਬਿਗਸੇ ਸਭਿ ਪਰਵਾਰਿਆ ॥੧॥ ਕਾਰਜੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਆਪਿ ਸਵਾਰਿਆ

॥ ਵਡੀ ਆਰਜਾ ਹਰਿ ਗੋਬਿੰਦ ਕੀ ਸੂਖ ਮੰਗਲ ਕਲਿਆਣ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵਣ ਤ੍ਰਣ ਤ੍ਰਭਵਣ
 ਹਰਿਆ ਹੋਏ ਸਗਲੇ ਜੀਅ ਸਾਧਾਰਿਆ ॥ ਮਨ ਇਛੇ ਨਾਨਕ ਫਲ ਪਾਏ ਪੂਰਨ ਇਛ ਪੁਜਾਰਿਆ ॥੨॥੫॥੨੩॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸੁ ਊਪਰਿ ਹੋਵਤ ਦਿੱਤਾਲੁ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਕਾਟੈ ਸੋ ਕਾਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਜੀਐ ਗੋਪਾਲੁ ॥ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਤੂਟੈ ਜਮ ਜਾਲੁ ॥੧॥ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਪੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਨਾਨਕੁ
 ਜਾਚੈ ਸਾਧ ਰਖਾਲ ॥੨॥੬॥੨੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਮਹਿ ਸਿੰਚਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥ ਅਨਦਿਨੁ
 ਕੀਰਤਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥੧॥ ਐਸੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਜਾਨਹੁ ਨੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੇ ਨਿਰਮਲ ਭਾਗ ॥ ਹਰਿ ਚਰਨੀ ਤਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲਾਗ ॥੨॥੭॥੨੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਰੋਗ ਗਿੱਤਾ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਗਵਾਇਆ ॥ ਨੀਦ ਪੰਡੀ ਸੁਖ ਸਹਜ ਘਰੁ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਜਿ ਰਜਿ
 ਭੋਜਨੁ ਖਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਧਿਆਈ ॥੧॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਸਰਨਾਈ ॥ ਜਿਨਿ
 ਅਪਨੇ ਨਾਮ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥੨॥੮॥੨੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਰਿ ਦੀਨੇ ਅਸਥਿਰ ਘਰ ਬਾਰ
 ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਜੋ ਨਿੰਦ ਕਰੈ ਇਨ ਗ੍ਰਹਨ ਕੀ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਹੀ ਮਾਰੈ ਕਰਤਾਰ ॥੧॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਾ ਕੀ
 ਸਰਨਾਈ ਜਾ ਕੋ ਸਬਦੁ ਅਖੰਡ ਅਪਾਰ ॥੨॥੯॥੨੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾਪ ਸੰਤਾਪ ਸਗਲੇ ਗਏ
 ਬਿਨਸੇ ਤੇ ਰੋਗ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਤੂ ਬਖਿਸਿਆ ਸੰਤਨ ਰਸ ਭੋਗ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਰਕ ਸੁਖਾ ਤੇਰੀ ਮੰਡਲੀ ਤੇਰਾ ਮਨੁ
 ਤਨੁ ਆਰੋਗ ॥ ਗੁਨ ਗਾਵਹੁ ਨਿਤ ਰਾਮ ਕੇ ਇਹ ਅਵਖਦ ਜੋਗ ॥੧॥ ਆਇ ਬਸਹੁ ਘਰ ਦੇਸ ਮਹਿ ਇਹ ਭਲੇ
 ਸੰਜੋਗ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਭਏ ਲਹਿ ਗਏ ਬਿਅੋਗ ॥੨॥੧੦॥੨੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਾਹੂ ਸੰਗਿ
 ਨ ਚਾਲਹੀ ਮਾਇਆ ਜੰਜਾਲ ॥ ਊਠਿ ਸਿਧਾਰੇ ਛਤਪਤਿ ਸੰਤਨ ਕੈ ਖਿਆਲ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਛਾਬੁਧਿ ਕਤ ਬਿਨਸਨਾ
 ਇਹ ਧੁਰ ਕੀ ਢਾਲ ॥ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਜਨਮਹਿ ਮਰਹਿ ਬਿਖਿਆ ਬਿਕਰਾਲ ॥੧॥ ਸਤਿ ਬਚਨ ਸਾਥੂ ਕਹਹਿ ਨਿਤ
 ਜਪਹਿ ਗੁਪਾਲ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ ਤਰੇ ਹਰਿ ਕੇ ਰੰਗ ਲਾਲ ॥੨॥੧੧॥੨੯॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਅਨੰਦ ਸੂਖ ਪੂਰੇ ਗੁਰਿ ਦੀਨ ॥ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਗੁਣ ਚੀਨ ॥ ਰਹਾਤ ॥

जै जै कारु जगत्र महि लोचहि सभि जीआ ॥ सुप्रसन्न भए सतिगुर प्रभू कछु बिघनु न थीआ ॥१॥ जा का
अंगु दड़िआल प्रभ ता के सभ दास ॥ सदा सदा वडिआईआ नानक गुर पासि ॥२॥१२॥३०॥

राग बिलावल महला ५ घरु ५ चउपदे

१८ सतिगुर प्रसादि ॥

मृत मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ॥ बिनसत बार न लागई जिउ कागद बूंदार ॥१॥
 सुनि मेरी मनसा मनै माहि सति देखु बीचारि ॥ सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार ॥२॥
 रहाउ ॥ जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥ दृस्टिमान सभु बिनसीऔ किआ लगहि गवार ॥३॥
 कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥ इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार ॥४॥१॥३॥
 जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ॥५॥१॥३॥
 बिलावलु महला ५ ॥ लोकन कीआ वडिआईआ बैसंतरि पागउ ॥ जिउ मिलै पिआरा आपना ते
 बोल करागउ ॥१॥ जउ प्रभ जीउ दडिआल होडि तउ भगती लागउ ॥ लपटि रहिओ मनु बासना
 गुर मिलि इह तिआगउ ॥२॥ रहाउ ॥ करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ ॥ अरथ
 आन सभि वारिआ पृअ निमख सोहागउ ॥३॥ पंच संगु गुर ते छुटे दोख अरु रागउ ॥ रिटै प्रगासु
 प्रगट भडिआ निसि बासुर जागउ ॥४॥२॥३॥ सरणि सोहागनि आइआ जिसु मसतकि भागउ ॥ कहु
 नानक तिनि पाइआ तनु मनु सीतलागउ ॥५॥३॥ बिलावलु महला ५ ॥ लाल रंगु तिस कउ
 लगा जिस के वडभागा ॥ मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥६॥ प्रभु पाइआ सुखदाईआ
 मिलिआ सुख भाइ ॥ सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥७॥ रहाउ ॥ जरा मरा नह विआर्पई
 फिरि दूखु न पाइआ ॥ पी अंमृतु आधानिआ गुरि अमरु कराइआ ॥८॥ सो जानै जिनि चाखिआ
 हरि नामु अमोला ॥ कीमति कही न जाईऔ किआ कहि मुखि बोला ॥९॥ सफल दरसु तेरा पारब्रह्म

ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥ ਪਾਵਤ ਧੂਰਿ ਤੇਰੈ ਦਾਸ ਕੀ ਨਾਨਕ ਕੁਰਬਾਣੀ ॥੪॥੩॥੩੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਰਾਖਹੁ ਅਪਨੀ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਮੋਹਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੇ ॥ ਸੇਵਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਨਤੁ ਨੀਚੁ ਮੂਰਖਾਰੇ ॥੧॥ ਮਾਨੁ ਕਰਤ ਤੁਧੁ
 ਊਪਰੇ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪਿਆਰੇ ॥ ਹਮ ਅਪਰਾਧੀ ਸਦ ਭੂਲਤੇ ਤੁਸੁ ਬਖਿਸਨਹਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮ ਅਵਗਨ ਕਰਹ
 ਅਸੰਖ ਨੀਤਿ ਤੁਸੁ ਨਿਰਗੁਨ ਦਾਤਾਰੇ ॥ ਦਾਸੀ ਸੰਗਤਿ ਪ੍ਰਭੂ ਤਿਆਗਿ ਏ ਕਰਮ ਹਮਾਰੇ ॥੨॥ ਤੁਸੁ ਦੇਵਹੁ ਸਭੁ
 ਕਿਛੁ ਦਿਇਆ ਧਾਰਿ ਹਮ ਅਕਿਰਤਧਨਾਰੇ ॥ ਲਾਗਿ ਪਰੇ ਤੇਰੈ ਦਾਨ ਸਿਉ ਨਹ ਚਿਤਿ ਖਸਮਾਰੇ ॥੩॥ ਤੁੜ੍ਹ ਤੇ
 ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਹੀਂ ਭਵ ਕਾਟਨਹਾਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਦਿਇਆਲ ਗੁਰ ਲੇਹੁ ਮੁਗਧ ਤੁਧਾਰੇ ॥੪॥੪॥੩੪॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦੋਸੁ ਨ ਕਾਹੂ ਦੀਜੀਐ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਧਿਆਈਐ ॥ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਘਨਾ ਮਨ
 ਸੋਈ ਗਾਈਐ ॥੧॥ ਕਹੀਐ ਕਾਇ ਪਿਆਰੇ ਤੁੜ੍ਹ ਬਿਨਾ ॥ ਤੁਸੁ ਦਿਇਆਲ ਸੁਆਮੀ ਸਭ ਅਵਗਨ ਹਮਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਤ ਤੁਸੁ ਰਾਖਹੁ ਤਿਤ ਰਹਾ ਅਵਰੁ ਨਹੀਂ ਚਾਰਾ ॥ ਨੀਧਰਿਆ ਧਰ ਤੇਰੀਆ ਇਕ ਨਾਮ ਅਧਾਰਾ ॥੨॥
 ਜੋ ਤੁਸੁ ਕਰਹੁ ਸੋਈ ਭਲਾ ਮਨਿ ਲੇਤਾ ਸੁਕਤਾ ॥ ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਤੇਰੀਆ ਸਭ ਤੇਰੀ ਜੁਗਤਾ ॥੩॥ ਚਰਨ ਪਖਾਰਤ
 ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਜੇ ਠਾਕੁਰ ਭਾਵੈ ॥ ਹੋਹੁ ਕ੃ਪਾਲ ਦਿਇਆਲ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੪॥੫॥੩੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਿਰਤੁ ਹਸੈ ਸਿਰ ਊਪਰੇ ਪਸੂਆ ਨਹੀਂ ਬੂੜੈ ॥ ਬਾਦ ਸਾਦ ਅਛਕਾਰ ਮਹਿ ਮਰਣਾ ਨਹੀਂ ਸੂੜੈ ॥੧॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹੁ ਆਪਨਾ ਕਾਹੇ ਫਿਰਹੁ ਅਭਾਗੇ ॥ ਦੇਖਿ ਕਸੁੰਭਾ ਰੁਗੁਲਾ ਕਾਹੇ ਭੂਲਿ ਲਾਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਕਰਿ ਕਰਿ ਪਾਪ ਦਰਖੁ ਕੀਆ ਵਰਤਣ ਕੈ ਤਾਈ ॥ ਮਾਟੀ ਸਿਉ ਮਾਟੀ ਰਲੀ ਨਾਗਾ ਤਠਿ ਜਾਈ ॥੨॥ ਜਾ ਕੈ ਕੀਐ
 ਸ਼ਮੁ ਕਰੈ ਤੇ ਬੈਰ ਬਿਰੋਧੀ ॥ ਅੰਤ ਕਾਲਿ ਭਜਿ ਜਾਹਿਗੇ ਕਾਹੇ ਜਲਹੁ ਕਰੋਧੀ ॥੩॥ ਦਾਸ ਰੇਣੁ ਸੋਈ ਹੋਆ ਜਿਸੁ
 ਮਸਤਕਿ ਕਰਮਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬੰਧਨ ਛੁਟੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਨਾ ॥੪॥੬॥੩੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਧਿੰਗੁਲ ਪਰਕਤ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ਖਲ ਚਤੁਰ ਬਕੀਤਾ ॥ ਅੰਧੁਲੇ ਤੂਭਵਣ ਸੂਝਿਆ ਗੁਰ ਭੇਟਿ ਪੁਨੀਤਾ ॥੧॥ ਮਹਿਮਾ
 ਸਾਧੂ ਸੰਗ ਕੀ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ॥ ਮੈਲੁ ਖੋਈ ਕੀਟਿ ਅਥ ਹਰੇ ਨਿਰਮਲ ਭਏ ਚੀਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਐਸੀ
 ਭਗਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਕੀ ਕੀਟਿ ਹਸਤੀ ਜੀਤਾ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕੀਨੋ ਆਪਨੋ ਤਿਸੁ ਅਭੈ ਦਾਨੁ ਦੀਤਾ ॥੨॥ ਸਿੰਘੁ ਬਿਲਾਈ

ਹੋਇ ਗਿਆ ਤ੍ਰਣੁ ਮੇਰੁ ਦਿਖੀਤਾ ॥ ਸ਼ਮੁ ਕਰਤੇ ਦਮ ਆਢ ਕਤ ਤੇ ਗਨੀ ਧਨੀਤਾ ॥੩॥ ਕਵਨ ਵਡਾਈ ਕਹਿ
 ਸਕਤ ਬੇਅੰਤ ਗੁਨੀਤਾ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ਨਾਨਕ ਦਰ ਸਰੀਤਾ ॥੪॥੭॥੩੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਛੁਕੁਥਿ ਪਰਬਾਦ ਨੀਤ ਲੋਭ ਰਸਨਾ ਸਾਦਿ ॥ ਲਪਟਿ ਕਪਟਿ ਗ੍ਰਹਿ ਬੇਧਿਆ ਮਿਥਿਆ
 ਬਿਖਿਆਦਿ ॥੧॥ ਐਸੀ ਪੇਖੀ ਨੇਤ੍ਰ ਮਹਿ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਜ ਮਿਲਖ ਧਨ ਜੋਬਨਾ ਨਾਮੈ ਬਿਨੁ ਬਾਦਿ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰੂਪ ਧੂਪ ਸੋਗਂਧਤਾ ਕਾਪਰ ਭੋਗਾਦਿ ॥ ਮਿਲਤ ਸੰਗਿ ਪਾਪਿਸਟ ਤਨ ਹੋਏ ਦੁਰਗਾਦਿ ॥੨॥
 ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਮਾਨੁਖੁ ਭਿੰਡਿਆ ਖਿਨ ਭੰਗਨ ਦੇਹਾਦਿ ॥ ਇਹ ਅਤਸਰ ਤੇ ਚੂਕਿਆ ਬੁਝੁ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਾਦਿ ॥੩॥ ਪ੍ਰਭ
 ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਿਸਮਾਦ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਨਾਨਕ ਅਨੰਦ ਤਾ ਕੈ ਪੂਰਨ ਨਾਦ ॥੪॥੮॥੩੮॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਨ ਭਏ ਸੰਤ ਕੋਹਿਥਾ ਤਰੇ ਸਾਗਰੁ ਜੇਤ ॥ ਮਾਰਗ ਪਾਏ ਤਦਿਆਨ ਮਹਿ ਗੁਰਿ ਦਸੇ
 ਭੇਤ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹੇਤ ॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਕਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚੇਤ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਪੰਚ ਚੋਰ ਆਗੈ ਭਗੇ ਜਬ ਸਾਧਸੰਗੇਤ ॥ ਪ੍ਰੰਜੀ ਸਾਬਤੁ ਘਣੋ ਲਾਭੁ ਗ੍ਰਹਿ ਸੋਭਾ ਸੇਤ ॥੨॥ ਨਿਹਚਲ
 ਆਸਣੁ ਮਿਟੀ ਚਿੰਤ ਨਾਹੀ ਡੋਲੇਤ ॥ ਭਰਮੁ ਭੁਲਾਵਾ ਮਿਟਿ ਗਿੰਡਿਆ ਪ੍ਰਭ ਪੇਖਤ ਨੇਤ ॥੩॥ ਗੁਣ ਗ੍ਰਹੀਰ ਗੁਨ
 ਨਾਇਕਾ ਗੁਣ ਕਹੀਅਹਿ ਕੇਤ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰੇਤ ॥੪॥੬॥੩੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਿਨੁ ਸਾਧੂ ਜੋ ਜੀਵਨਾ ਤੇਤੋ ਕਿਰਥਾਰੀ ॥ ਮਿਲਤ ਸੰਗਿ ਸਭਿ ਭ੍ਰਮ ਮਿਟੇ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥
 ਜਾ ਦਿਨ ਭੇਟੇ ਸਾਧ ਮੋਹਿ ਤਉ ਦਿਨ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਪਨੋ ਜੀਅਰਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਹਤ ਵਾਰੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਏਤ ਛਡਾਈ ਮੋਹਿ ਤੇ ਇਤਨੀ ਵ੃ਡਤਾਰੀ ॥ ਸਗਲ ਰੇਨ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭਿੰਡਿਆ ਬਿਨਸੀ ਅਪਧਾਰੀ ॥੨॥
 ਨਿੰਦ ਚਿੰਦ ਪਰ ਦ੍ਰੂਖਨਾ ਏ ਖਿਨ ਮਹਿ ਜਾਰੀ ॥ ਦਿੱਡਿਆ ਮਿੱਡਿਆ ਅਥ ਨਿਕਟਿ ਪੇਖੁ ਨਾਹੀ ਦੂਰਾਰੀ ॥੩॥
 ਤਨ ਮਨ ਸੀਤਲ ਭਏ ਅਬ ਮੁਕਤੇ ਸੰਸਾਰੀ ॥ ਹੀਤ ਚੀਤ ਸਭ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨ ਨਾਨਕ ਦਰਸਾਰੀ ॥੪॥੧੦॥੪੦॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਟਹਲ ਕਰਤ ਤੇਰੇ ਦਾਸ ਕੀ ਪਗ ਝਾਰਤ ਬਾਲ ॥ ਮਸਤਕੁ ਅਪਨਾ ਭੇਟ ਦੇਤ ਗੁਨ ਸੁਨਤ
 ਰਸਾਲ ॥੧॥ ਤੁਮੁ ਮਿਲਤੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਜੀਓ ਤੁਮੁ ਮਿਲਹੁ ਦਿੱਡਿਆਲ ॥ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਹੋਤ ਚਿਤਕਤ

ਕਿਰਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਗਤ ਉਧਾਰਨ ਸਾਧ ਪ੍ਰਭ ਤਿਨੁ ਲਾਗਹੁ ਪਾਲ ॥ ਮੋ ਕਤ ਦੀਜੈ ਦਾਨੁ ਪ੍ਰਭ ਸੰਤਨ ਪਗ
 ਰਾਲ ॥੨॥ ਤਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਕਛੁ ਨਹੀਂ ਨਾਹੀਂ ਕਛੁ ਘਾਲ ॥ ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਰਾਖਹੁ ਮੋਹ ਤੇ ਕਾਟਹੁ ਜਮ ਜਾਲ ॥੩॥
 ਬਿਨਤ ਕਰਤ ਕਰੁਣਾਪਤੇ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਤੇਰੇ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਸਾਲ ॥੪॥੧੧॥
 ੪੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੀਤਾ ਲੋਡ਼ਹਿ ਸੋ ਕਰਹਿ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ॥ ਪਰਤਾਪੁ ਤੁਮਾਰਾ ਦੇਖਿ ਕੈ
 ਜਮਦੂਤ ਛਡਿ ਜਾਹਿ ॥੧॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਛੂਟੀਐ ਬਿਨਸੈ ਅਛਾਮੇਵ ॥ ਸਰਬ ਕਲਾ ਸਮਰਥ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰੇ ਗੁਰਦੇਵ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਖੋਜਿਆ ਨਾਮੈ ਬਿਨੁ ਕੂਰੁ ॥ ਜੀਵਨ ਸੁਖੁ ਸਭੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਮਨਸਾ ਪੂਰੁ ॥੨॥
 ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਗਹਿ ਸਿਆਨਪ ਸਭ ਜਾਲੀ ॥ ਜਤ ਕਤ ਤੁਸੁ ਭਰਪੂਰ ਹਹੁ ਮੇਰੇ ਦੀਨ
 ਦਿਇਆਲੀ ॥੩॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁਮ ਤੇ ਮਾਗਨਾ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਪ੍ਰਭ ਜੀਵਾ ਗੁਨ ਗਾਏ
 ॥੪॥੧੨॥੪੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਬਾਸਬੈ ਕਲਮਲ ਸਭਿ ਨਸਨਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸੇਤੀ ਰੰਗਿ
 ਰਾਤਿਆ ਤਾ ਤੇ ਗਰਭਿ ਨ ਗ੍ਰਸਨਾ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਕਹਤ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਸੂਚੀ ਭੰਈ ਰਸਨਾ ॥ ਮਨ ਤਨ ਨਿਰਮਲ ਹੋਈ
 ਹੈ ਗੁਰ ਕਾ ਜਪੁ ਜਪਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਤ ਧਾਪਿਆ ਮਨਿ ਰਸੁ ਲੈ ਹਸਨਾ ॥ ਬੁਧਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਪ੍ਰਗਟ
 ਭੰਈ ਤਲਟਿ ਕਮਲੁ ਬਿਗਸਨਾ ॥੨॥ ਸੀਤਲ ਸਾਂਤਿ ਸੰਤੋਖੁ ਹੋਇ ਸਭ ਬੂੜੀ ਤ੃ਸਨਾ ॥ ਦਹ ਦਿਸ ਧਾਵਤ ਮਿਟਿ
 ਗਏ ਨਿਰਮਲ ਥਾਨਿ ਬਸਨਾ ॥੩॥ ਰਾਖਨਹਾਰੈ ਰਾਖਿਆ ਭਏ ਭ੍ਰਮ ਭਸਨਾ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖੀ ਪੇਖਿ
 ਸਾਧ ਦਰਸਨਾ ॥੪॥੧੩॥੪੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਾਣੀ ਪਖਾ ਪੀਸੁ ਦਾਸ ਕੈ ਤਬ ਹੋਹਿ ਨਿਹਾਲੁ ॥
 ਰਾਜ ਮਿਲਖ ਸਿਕਦਾਰੀਆ ਅਗਨੀ ਮਹਿ ਜਾਲੁ ॥੧॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਾ ਛੋਹਰਾ ਤਿਸੁ ਚਰਣੀ ਲਾਗਿ ॥ ਮਾਡਿਆਧਾਰੀ
 ਛਤਪਤਿ ਤਿਨੁ ਛੋਡਤ ਤਿਆਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਤਨ ਕਾ ਦਾਨਾ ਰੁਖਾ ਸੋ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ॥ ਗ੍ਰੂਹਿ ਸਾਕਤ
 ਛਤੀਹ ਪ੍ਰਕਾਰ ਤੇ ਬਿਖੂ ਸਮਾਨ ॥੨॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਾ ਲੂਗਰਾ ਓਡਿ ਨਗਨ ਨ ਹੋਈ ॥ ਸਾਕਤ ਸਿਰਪਾਤ
 ਰੇਸਮੀ ਪਹਿਰਤ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥੩॥ ਸਾਕਤ ਸਿਤ ਮੁਖਿ ਜੋਰਿਐ ਅਥ ਵੀਚਹੁ ਟੂਟੈ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਜੋ ਕਰੇ
 ਡਿਤ ਊਤਹਿ ਛੂਟੈ ॥੪॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤੁਸੁ ਹੀ ਤੇ ਹੋਆ ਆਪਿ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਤ ਸਾਧ ਕਾ ਨਾਨਕ

ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੫॥੧੪॥੪੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸ਼ਰਨੀ ਸੁਨਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ਠਾਕੁਰ ਜਸੁ ਗਾਵਤ
 ॥ ਸਤਿ ਚਰਣ ਕਰ ਸੀਸੁ ਧਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਤ ॥੧॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦਿੱਖਾਲ ਪ੍ਰਭ ਇਹ ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ
 ਪਾਵਤ ॥ ਸਤਿ ਜਨਾ ਕੀ ਰੇਣੁਕਾ ਲੈ ਮਾਥੈ ਲਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨੀਚ ਤੇ ਨੀਚੁ ਅਤਿ ਨੀਚੁ ਹੋਇ ਕਰਿ ਬਿਨਤ
 ਬੁਲਾਵਤ ॥ ਪਾਵ ਮਲੋਵਾ ਆਪੁ ਤਿਆਗੀ ਸੰਤਸੰਗੀ ਸਮਾਵਤ ॥੨॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਨਹ ਕੀਸੈ ਅਨ ਕਤਹਿ
 ਨ ਧਾਵਤ ॥ ਸਫਲ ਦਰਸਨ ਗੁਰੂ ਭੇਟੀਐ ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਮਿਟਾਵਤ ॥੩॥ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਦਿੱਖਾ ਧਰਮੁ ਸੀਗਾਰੁ
 ਬਨਾਵਤ ॥ ਸਫਲ ਸੁਹਾਗਣਿ ਨਾਨਕਾ ਅਪੁਨੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਤ ॥੪॥੧੫॥੪੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਅਟਲ ਬਚਨ ਸਾਧੂ ਜਨਾ ਸਭ ਮਹਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥ ਜਿਸੁ ਜਨ ਹੋਆ ਸਾਧਸੰਗੁ ਤਿਸੁ ਭੇਟੈ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥
 ਇਹ ਪਰਤੀਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਕੀ ਜਪਿ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਅਨਿਕ ਬਾਤਾ ਸਭਿ ਕਰਿ ਰਹੇ ਗੁਰੂ ਘਰਿ ਲੈ
 ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਕੀ ਰਾਖਤਾ ਨਾਹੀ ਸਹਸਾਇਆ ॥ ਕਰਮ ਭੂਮਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬੋਇ
 ਅਤਸਰੁ ਟੁਲਭਾਇਆ ॥੨॥ ਅੰਤਰਯਾਸੀ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਘਣੇ ਕਰੇ
 ਠਾਕੁਰ ਬਿਰਦਾਇਆ ॥੩॥ ਮਤ ਭੂਲਹੁ ਮਾਨੁਖ ਜਨ ਮਾਇਆ ਭਰਮਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਪਤਿ ਰਾਖਸੀ
 ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਪਹਿਰਾਇਆ ॥੪॥੧੬॥੪੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਟੀ ਤੇ ਜਿਨਿ ਸਾਜਿਆ ਕਰਿ
 ਦੁਰਲਭ ਦੇਹ ॥ ਅਨਿਕ ਛਿਦ੍ਰ ਮਨ ਮਹਿ ਢਕੇ ਨਿਰਮਲ ਦੂਸਟੇਹ ॥੧॥ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨੈ ਤੇ ਜਿਸ ਕੇ
 ਗੁਣ ਏਹ ॥ ਪ੍ਰਭ ਤਜਿ ਰਚੇ ਜਿ ਆਨ ਸਿਤ ਸੋ ਰਲੀਐ ਖੇਹ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਮਰਹੁ ਸਿਮਰਹੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ
 ਮਤ ਬਿਲਮ ਕਰੇਹ ॥ ਛੋਡਿ ਪ੍ਰਪਚੁ ਪ੍ਰਭ ਸਿਤ ਰਚਹੁ ਤਜਿ ਕੂੜੇ ਨੇਹ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਅਨਿਕ ਏਕ ਬਹੁ ਰੰਗ ਕੀਏ
 ਹੈ ਹੋਸੀ ਏਹ ॥ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਤਿਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰ ਤੇ ਮਤਿ ਲੇਹ ॥੩॥ ਊਚੇ ਤੇ ਊਚਾ ਵਡਾ ਸਭ ਸੰਗਿ ਬਰਨੇਹ ॥
 ਦਾਸ ਦਾਸ ਕੋ ਦਾਸਰਾ ਨਾਨਕ ਕਰਿ ਲੇਹ ॥੪॥੧੭॥੪੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਏਕ ਟੇਕ ਗੋਵਿੰਦ ਕੀ
 ਤਿਆਗੀ ਅਨ ਆਸ ॥ ਸਭ ਊਪਰਿ ਸਮਰਥ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ ਗੁਣਤਾਸ ॥੧॥ ਜਨ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਹੈ ਪ੍ਰਭ
 ਸਰਣੀ ਪਾਹਿ ॥ ਪਰਮੇਸਰ ਕਾ ਆਸਰਾ ਸੰਤਨ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪਿ ਰਖੈ ਆਪਿ ਦੇਵਸੀ

आपे प्रतिपारै ॥ दीन दिइआल कृपा निधे सासि सासि समरै ॥२॥ करणहारु जो करि रहिआ साई
 वडिआई ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ सुखु खसम रजाई ॥३॥ चिंत अंदेसा गणत तजि जनि हुकमु पछाता
 ॥ नह बिनसै नह छोडि जाइ नानक रंगि राता ॥४॥१८॥४८॥ बिलावलु महला ५ ॥ महा तपति
 ते भई साँति परसत पाप नाठे ॥ अंध कूप महि गलत थे काढे दे हाथे ॥१॥ ओइ हमारे साजना हम
 उन की रेन ॥ जिन भेटत होवत सुखी जीअ दानु देन ॥२॥ रहाउ ॥ परा पूरबला लीखिआ मिलिआ
 अब आइ ॥ बसत संगि हरि साध कै पूरन आसाइ ॥३॥ भै बिनसे तिहु लोक के पाए सुख थान ॥
 दिइआ करी समरथ गुरि बसिआ मनि नाम ॥४॥ नानक की तू टेक प्रभ तेरा आधार ॥ करण कारण
 समरथ प्रभ हरि अगम अपार ॥५॥१९॥४९॥ बिलावलु महला ५ ॥ सोई मलीनु दीनु हीनु जिसु
 प्रभु बिसराना ॥ करनैहारु न बूझई आपु गनै बिगाना ॥६॥ दूखु तदे जदि वीसरै सुखु प्रभ चिति
 आए ॥ संतन कै आन्नदु एहु नित हरि गुण गाए ॥७॥ रहाउ ॥ ऊचे ते नीचा करै नीच खिन महि
 थापै ॥ कीमति कही न जाईਐ ठाकुर परतापै ॥८॥ पेखत लीला रंग रूप चलनै दिनु आइआ ॥
 सुपने का सुपना भइआ संगि चलिआ कमाइआ ॥९॥ करण कारण समरथ प्रभ तेरी सरणाई ॥
 हरि दिनसु रैणि नानकु जपै सद सद बलि जाई ॥१०॥२०॥५०॥ बिलावलु महला ५ ॥ जलु ढोवउ
 इह सीस करि कर पग पखलावउ ॥ बारि जाउ लख बेरीआ दरसु पेखि जीवावउ ॥१॥ करउ मनोरथ
 मनै माहि अपने प्रभ ते पावउ ॥ देउ सूहनी साध कै बीजनु ढोलावउ ॥२॥ रहाउ ॥ अंमृत गुण
 संत बोलते सुणि मनहि पीलावउ ॥ उआ रस महि साँति तृपति होइ बिखै जलनि बुझावउ ॥३॥
 जब भगति करहि संत मंडली तिनु मिलि हरि गावउ ॥ करउ नमसकार भगत जन धूरि मुखि लावउ
 ॥४॥२१॥५१॥ बिलावलु महला ५ ॥ इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥ साधसंगति कै संगि

ਕਸੈ ਕਡਭਾਗੀ ਪਾਏ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਕੈ ਦਾਸੁ ਤੁਸੁ ਬਾਣੀ ਜਨ ਆਖੀ ॥ ਪ੍ਰਗਟ ਭਈ ਸਭ ਲੋਅ ਮਹਿ ਸੇਵਕ
 ਕੀ ਰਾਖੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ ਤੇ ਕਾਢਿਆ ਪ੍ਰਭਿ ਜਲਨਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਜਲੁ ਸੰਚਿਆ
 ਗੁਰ ਭਏ ਸਹਾਈ ॥੨॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਕਾਟਿਆ ਸੁਖ ਕਾ ਥਾਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਕਾਟੀ ਸਿਲਕ ਭ੍ਰਮ ਮੋਹ ਕੀ
 ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਇਆ ॥੩॥ ਮਤ ਕੋਈ ਜਾਣਹੁ ਅਕਰੁ ਕਛੁ ਸਭ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਹਾਥਿ ॥ ਸਰਬ ਸੂਖ ਨਾਨਕ ਪਾਏ ਸੰਗਿ
 ਸੰਤਨ ਸਾਥਿ ॥੪॥੨੨॥੫੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭਿ ਹੋਆ ਕਿਰਪਾਲ ॥ ਦੀਨ
 ਦਿਇਆਲ ਪ੍ਰਭ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤਾ ਕੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ॥੧॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੌ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀ ਕਾਟਿਆ ਦੁਖੁ ਰੋਗੁ ॥ ਮਨੁ
 ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸੁਖੀ ਭਇਆ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਵਨ ਜੋਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਤਖਥੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਰੋਗੁ ਨ ਵਿਆਪੈ
 ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਿਤੈ ਫਿਰਿ ਦੂਖੁ ਨ ਜਾਪੈ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਾਪੀਐ ਅੰਤਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
 ਕਿਲਵਿਖ ਤਤਰਹਿ ਸੁਧੁ ਹੋਇ ਸਾਧੂ ਸਰਣਾਈ ॥੩॥ ਸੁਨਤ ਜਪਤ ਹਰਿ ਨਾਮ ਜਸੁ ਤਾ ਕੀ ਦੂਰਿ ਬਲਾਈ ॥
 ਮਹਾ ਮੰਤੁ ਨਾਨਕੁ ਕਥੈ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੪॥੨੩॥੫੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭੈ ਤੇ ਉਪਜੈ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭ
 ਅੰਤਰਿ ਹੋਇ ਸਾਁਤਿ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਬਿਨਸੈ ਭ੍ਰਮ ਭ੍ਰਾਂਤਿ ॥੧॥ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੌ ਜਿਸੁ ਭੇਟਿਆ ਤਾ ਕੈ ਸੁਖਿ
 ਪਰਵੇਸੁ ॥ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਤਿਆਗੀਐ ਸੁਣੀਐ ਉਪਦੇਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਿਮਰਤ ਸਿਮਰਤ ਸਿਮਰੀਐ ਸੋ ਪੁਰਖੁ
 ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਮਨ ਤੇ ਕਬਹੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸੋ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਰੰਗ ਲਗਾ ਅਚਰਜ ਗੁਰਦੇਵ
 ॥ ਜਾ ਕਤ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਤਾ ਕਤ ਲਾਵਹੁ ਸੇਵ ॥੩॥ ਨਿਧਿ ਨਿਧਾਨ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆ ਮਨਿ ਤਨਿ ਆਨਨਦ
 ॥ ਨਾਨਕ ਕਬਹੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਪ੍ਰਭ ਪਰਮਾਨਨਦ ॥੪॥੨੪॥੫੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੍ਰਸਨ ਬੁਝੀ ਮਮਤਾ
 ਗਈ ਨਾਠੇ ਭੈ ਭਰਮਾ ॥ ਥਿਤਿ ਪਾਈ ਆਨਦੁ ਭਇਆ ਗੁਰਿ ਕੀਨੇ ਧਰਮਾ ॥੧॥ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੌ ਆਰਾਧਿਆ ਬਿਨਸੀ
 ਮੇਰੀ ਪੀਰ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਭੁ ਸੀਤਲੁ ਭਇਆ ਪਾਇਆ ਸੁਖੁ ਬੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੋਵਤ ਹਰਿ ਜਧਿ ਜਾਗਿਆ
 ਪੇਖਿਆ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥ ਪੀ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਤ੃ਪਤਾਸਿਆ ਤਾ ਕਾ ਅਚਰਜ ਸੁਆਦੁ ॥੨॥ ਆਪਿ ਮੁਕਤੁ ਸੰਗੀ ਤਰੇ
 ਕੁਲ ਕੁਟੰਬ ਤੁਧਾਰੇ ॥ ਸਫਲ ਸੇਵਾ ਗੁਰਦੇਵ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਦਰਖਾਰੇ ॥੩॥ ਨੀਚੁ ਅਨਾਥੁ ਅਜਾਨੁ ਮੈ ਨਿਰਗੁਨੁ

ਗੁਣਹੀਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਕਿਰਪਾ ਭਈ ਦਾਸੁ ਅਪਨਾ ਕੀਨੁ ॥੪॥੨੫॥੫੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ
 ਭਗਤਾ ਕਾ ਆਸਰਾ ਅਨ ਨਾਹੀ ਠਾਤ ॥ ਤਾਣੁ ਟੀਬਾਣੁ ਪਰਵਾਰ ਧਨੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ॥੧॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ
 ਆਪਣੀ ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਰਖਿ ਲੀਏ ॥ ਨਿੰਦਕ ਨਿੰਦਾ ਕਰਿ ਪਚੇ ਜਮਕਾਲਿ ਗ੍ਰਸੀਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਤਾ ਏਕੁ
 ਧਿਆਵਨਾ ਦੂਸਰ ਕੋ ਨਾਹਿ ॥ ਏਕਸੁ ਆਗੈ ਬੇਨਤੀ ਰਖਿਆ ਸੁਥ ਥਾਇ ॥੨॥ ਕਥਾ ਪੁਰਾਤਨ ਇਉ ਸੁਣੀ
 ਭਗਤਨ ਕੀ ਬਾਨੀ ॥ ਸਗਲ ਦੁਸਟ ਖੰਡ ਖੰਡ ਕੀਏ ਜਨ ਲੀਏ ਮਾਨੀ ॥੩॥ ਸਤਿ ਬਚਨ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਪਰਗਟ
 ਸਭ ਮਾਹਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਤਿਨ ਕਤ ਭਤ ਨਾਹਿ ॥੪॥੨੬॥੫੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਬੰਧਨ ਕਾਟੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੂ ਜਾ ਕੈ ਕਲ ਹਾਥ ॥ ਅਵਰ ਕਰਮ ਨਹੀ ਛੂਟੀਐ ਰਾਖਹੁ ਹਰਿ ਨਾਥ ॥੧॥ ਤਤ ਸਰਣਾਗਤਿ
 ਮਾਧਵੇ ਪੂਰਨ ਦਿੱਤਾਲ ॥ ਛੂਟਿ ਜਾਇ ਸੰਸਾਰ ਤੇ ਰਾਖੈ ਗੋਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਸਾ ਭਰਮ ਬਿਕਾਰ ਮੋਹ
 ਇਨ ਮਹਿ ਲੋਭਾਨਾ ॥ ਝੂਠੁ ਸਮਗ੍ਰੀ ਮਨਿ ਵਸੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨ ਜਾਨਾ ॥੨॥ ਪਰਮ ਜੋਤਿ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਸਭਿ ਜੀਅ
 ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਤੂ ਰਾਖਹਿ ਤਿਤ ਰਹਾ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥੩॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਪ੍ਰਭ ਦੇਹਿ ਅਪਨਾ ਨਾਤ
 ॥ ਨਾਨਕ ਤਰੀਐ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥੪॥੨੭॥੫੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਵਨੁ ਕਵਨੁ
 ਨਹੀ ਪਤਰਿਆ ਤੁਮਰੀ ਪਰਤੀਤਿ ॥ ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਮੋਹਿਆ ਨਰਕ ਕੀ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਮਨ ਖੁਟਹਰ ਤੇਰਾ ਨਹੀ
 ਬਿਸਾਸੁ ਤੂ ਮਹਾ ਉਦਮਾਦਾ ॥ ਖਰ ਕਾ ਪੈਖਰੁ ਤਤ ਛੁਟੈ ਜਤ ਊਪਰਿ ਲਾਦਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ
 ਤੁਮ ਖੰਡੇ ਜਮ ਕੇ ਦੁਖ ਢਾੱਡ ॥ ਸਿਮਰਹਿ ਨਾਹੀ ਜੋਨਿ ਦੁਖ ਨਿਰਲਜੇ ਭਾੱਡ ॥੨॥ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਮਹਾ
 ਮੀਤੁ ਤਿਸ ਸਿਤ ਤੇਰਾ ਖੇਦੁ ॥ ਬੀਧਾ ਪੰਚ ਬਟਵਾਰੈ ਉਪਜਿਓ ਮਹਾ ਖੇਦੁ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਸੰਤਨ ਸਰਣਾਗਤੀ
 ਜਿਨ ਮਨੁ ਵਸਿ ਕੀਨਾ ॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਸਰਕਸੁ ਆਪਣਾ ਪ੍ਰਭਿ ਜਨ ਕਤ ਦੀਨਾ ॥੪॥੨੮॥੫੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਉਦਮੁ ਕਰਤ ਆਨਦੁ ਭਿੱਤਾ ਸਿਮਰਤ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥ ਜਪਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਗੋਬਿੰਦ ਕਾ ਪੂਰਨ ਬੀਚਾਰੁ
 ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੁਰ ਕੇ ਜਪਤ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਤ ਜੀਵਾ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਆਰਾਧਤੇ ਸੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਸੁਖਿ ਬਸੇ ਸਭ ਕੈ ਮਨਿ ਲੋਚ ॥ ਪਰਤਪਕਾਰੁ ਨਿਤ ਚਿਤਵਤੇ ਨਾਹੀ ਕਛੁ ਪੋਚ ॥੨॥

ਧਨੁ ਸੁ ਥਾਨੁ ਬਸਤ ਧਨੁ ਜਹ ਜਪੀਐ ਨਾਮੁ ॥ ਕਥਾ ਕੀਰਤਨੁ ਹਰਿ ਅਤਿ ਘਨਾ ਸੁਖ ਸਹਜ ਬਿਸ਼ਾਮੁ ॥੩॥
 ਮਨ ਤੇ ਕਦੇ ਨ ਵੀਸਰੈ ਅਨਾਥ ਕੋ ਨਾਥ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਾ ਕੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹਾਥ ॥੪॥੨੬॥੫੬॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਨਿ ਤੂ ਬੰਧਿ ਕਰਿ ਛੋਡਿਆ ਫੁਨਿ ਸੁਖ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ॥ ਸਦਾ ਸਿਮਰਿ ਚਰਣਾਰਬਿੰਦ
 ਸੀਤਲ ਹੋਤਾਇਆ ॥੧॥ ਜੀਵਤਿਆ ਅਥਵਾ ਮੁਇਆ ਕਿਛੁ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਜਿਨਿ ਏਹੁ ਰਚਨੁ ਰਖਾਇਆ
 ਕੋਊ ਤਿਸ ਸਿਤ ਰੁੰਗ ਲਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਰੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਉਸਨ ਸੀਤ ਕਰਤਾ ਕਰੈ ਘਾਮ ਤੇ ਕਾਢੈ ॥ ਕੀਰੀ ਤੇ ਹਸਤੀ
 ਕਰੈ ਟੂਟਾ ਲੇ ਗਾਢੈ ॥੨॥ ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਸੇਤਜ ਉਤਭੁਜਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਇਹ ਕਿਰਤਿ ॥ ਕਿਰਤ ਕਮਾਵਨ ਸਰਬ ਫਲ
 ਰਖੀਐ ਹਰਿ ਨਿਰਤਿ ॥੩॥ ਹਮ ਤੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵਨਾ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਸਾਧ ॥ ਮੋਹ ਮਗਨ ਕੂਪ ਅੰਧ ਤੇ ਨਾਨਕ ਗੁਰ
 ਕਾਢ ॥੪॥੩੦॥੬੦॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਮੈ ਫਿਰਾ ਖੋਜਤ ਬਨ ਥਾਨ ॥ ਅਛਲ ਅਛੇਦ
 ਅਭੇਦ ਪ੍ਰਭ ਐਸੇ ਭਗਵਾਨ ॥੧॥ ਕਬ ਦੇਖਉ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਨਾ ਆਤਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥ ਜਾਗਨ ਤੇ ਸੁਪਨਾ ਭਲਾ ਬਸੀਐ
 ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਰਨ ਆਸ੍ਰਮ ਸਾਸਤ ਸੁਨਤ ਦਰਸਨ ਕੀ ਧਿਆਸ ॥ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖ ਨ ਪੰਚ ਤਤ
 ਠਾਕੁਰ ਅਵਿਨਾਸ ॥੨॥ ਓਹੁ ਸਰੂਪੁ ਸੰਤਨ ਕਹਹਿ ਵਿਰਲੇ ਜੋਗੀਸੁਰ ॥ ਕਿਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਾ ਕਤ ਮਿਲੇ ਧਨਿ
 ਧਨਿ ਤੇ ਈਸੁਰ ॥੩॥ ਸੋ ਅੰਤਰਿ ਸੋ ਬਾਹਰੇ ਬਿਨਸੇ ਤਹ ਭਰਮਾ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਭੇਟਿਆ ਜਾ ਕੇ ਪੂਰਨ
 ਕਰਮਾ ॥੪॥੩੧॥੬੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਭਾਏ ਦੇਖਿ ਪ੍ਰਭ ਪਰਤਾਪ ॥ ਕਰਜੁ
 ਤਤਾਰਿਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਰਿ ਆਹਰੁ ਆਪ ॥੧॥ ਖਾਤ ਖਰਚਤ ਨਿਬਹਤ ਰਹੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਅਖੂਟ ॥ ਪੂਰਨ ਭਈ
 ਸਮਗਰੀ ਕਬਹੂ ਨਹੀ ਤੂਟ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਆਰਾਧਨਾ ਹਰਿ ਨਿਧਿ ਆਪਾਰ ॥ ਧਰਮ ਅਰਥ ਅਲੁ ਕਾਮ
 ਮੋਖ ਦੇਤੇ ਨਹੀ ਬਾਰ ॥੨॥ ਭਗਤ ਅਰਾਧਹਿ ਏਕ ਰੰਗਿ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਸੰਚਿਆ ਜਾ ਕਾ
 ਨਹੀ ਸੁਮਾਰੁ ॥੩॥ ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀਆ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਈਐ ਬੇਅੰਤ ਗੁਸਾਈ
 ॥੪॥੩੨॥੬੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭੁ ਕਾਰਜ ਭਾਏ ਰਾਸਿ ॥ ਕਰਤਾਰ ਪੁਰਿ
 ਕਰਤਾ ਵਸੈ ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਧਨੁ ਨ ਕੋਊ ਲਾਗਤਾ ਗੁਰ ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਰਖਵਾਲਾ

गोबिंद राइ भगतन की रासि ॥੧॥ तोटि न आवै कदे मूलि पूरन भंडार ॥ चरन कमल मनि तनि
बसे प्रभ अगम अपार ॥੨॥ बसत कमावत सभि सुखी किछु ऊन न दीसै ॥ संत प्रसादि भेटे प्रभू पूरन
जगदीसै ॥੩॥ जै जै कारु सभै करहि सचु थानु सुहाइआ ॥ जपि नानक नामु निधान सुख पूरा गुरु
पाइआ ॥੪॥੩੩॥੬੩॥ बिलावलु महला ੫ ॥ हरि हरि हरि आराधीअै होईअै आरोग ॥ रामचंद्र
की लसटिका जिनि मारिआ रोग ॥੧॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा हरि जापीअै नित कीचै भोग ॥ साधसंगति
कै वारणै मिलिआ संजोगु ॥੧॥ जिसु सिमरत सुखु पाईअै बिनसै बिओगु ॥ नानक प्रभ सरणागती
करण कारण जोगु ॥੨॥੩੪॥੬੪॥

रागु बिलावलु महला ੫ दुपदे घरु ੫ ੯੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइआ ॥ ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ
॥੧॥ गुरु पूरा आराधिआ सगला दुखु गइआ ॥ राखनहारै राखिआ अपनी करि महिआ ॥੧॥
रहाउ ॥ बाह पकड़ि प्रभि काढिआ कीना अपनइआ ॥ सिमरि सिमरि मन तन सुखी नानक
निरभइआ ॥੨॥੧॥੬੫॥ बिलावलु महला ੫ ॥ करु धरि मसतकि थापिआ नामु दीनो दानि ॥
सफल सेवा पारब्रह्म की ता की नही हानि ॥੧॥ आपे ही प्रभु राखता भगतन की आनि ॥ जो जो
चितवहि साध जन सो लेता मानि ॥੧॥ रहाउ ॥ सरणि परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान ॥ सहजि
सुभाइ नानक मिले जोती जोति समान ॥੨॥੨॥੬੬॥ बिलावलु महला ੫ ॥ चरण कमल का आसरा
दीनो प्रभि आपि ॥ प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परतापु ॥੧॥ राखनहार अपार प्रभ ता की
निरमल सेव ॥ राम राज रामदास पुरि कीने गुरदेव ॥੧॥ रहाउ ॥ सदा सदा हरि धिआईअै किछु
बिघनु न लागै ॥ नानक नामु सलाहीअै भइ दुसमन भागै ॥੨॥੩॥੬੭॥ बिलावलु महला ੫ ॥
मनि तनि प्रभु आराधीअै मिलि साध समागै ॥ उचरत गुन गोपाल जसु दूर ते जमु भागै ॥੧॥ राम

ਨਾਮੁ ਜੋ ਜਨੁ ਜਪੈ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦ ਜਾਗੈ ॥ ਤੰਤੁ ਮੰਤੁ ਨਹ ਜੋਹੰਈ ਤਿਤੁ ਚਾਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ
 ਮਦ ਮਾਨ ਮੋਹ ਬਿਨਸੇ ਅਨਰਾਗੈ ॥ ਆਨਦ ਮਗਨ ਰਸਿ ਰਾਮ ਰੰਗੀ ਨਾਨਕ ਸਰਨਾਗੈ ॥੨॥੪॥੬੮॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਅ ਜੁਗਤਿ ਵਸਿ ਪ੍ਰਭੂ ਕੈ ਜੋ ਕਹੈ ਸੁ ਕਰਨਾ ॥ ਭਏ ਪ੍ਰਸਨਨ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ਭਉ ਕਿਛੁ
 ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ॥੧॥ ਦ੍ਰੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕਦੇ ਤੁਥੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਚਿਤਾਰੇ ॥ ਜਮਕੰਕਰੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਰਵੰਝੁ ਗੁਰਸਿਖ ਪਿਆਰੇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਹੀਂ ਹੋਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਸਾਚਾ ਮਨਿ ਜੋਰੁ ॥
 ੨॥੫॥੬੯॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਨਾ ਨਾਠਾ ਦੁਖ ਠਾਤ ॥ ਬਿਸ਼ਾਮ ਪਾਏ ਮਿਲਿ
 ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਾ ਤੇ ਬਹੁਡਿ ਨ ਧਾਤ ॥੧॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਨੇ ਚਰਨਨ੍ਤ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਅਨਦ ਸ੍ਰੂਖ ਮੰਗਲ
 ਕਨੇ ਪੇਖਤ ਗੁਨ ਗਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਥਾ ਕੀਰਤਨੁ ਰਾਗ ਨਾਟ ਧੁਨਿ ਇਹੁ ਬਨਿਆ ਸੁਆਤ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ
 ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਭਏ ਬਾਁਛਤ ਫਲ ਪਾਤ ॥੨॥੬॥੭੦॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦਾਸ ਤੇਰੇ ਕੀ ਬੇਨਤੀ ਰਿਦ ਕਹਿ ਪਰਗਾਸੁ
 ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਦੋਖਨ ਕੋ ਨਾਸੁ ॥੧॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਕਾ ਆਸਰਾ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥ ਕੀਰਤਨ
 ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਤ ਰਹਤ ਜਬ ਲਗੁ ਘਟਿ ਸਾਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਬੰਧਪ ਤੂਹੈ ਤੂ ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਾ ਕੋ ਨਿਰਮਲ ਜਾਸੁ ॥੨॥੭॥੭੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਰਬ ਸਿਧਿ ਹਰਿ ਗਾਈਐ
 ਸਭਿ ਭਲਾ ਮਨਾਵਹਿ ॥ ਸਾਧੁ ਸਾਧੁ ਮੁਖ ਤੇ ਕਹਹਿ ਸੁਣਿ ਦਾਸ ਮਿਲਾਵਹਿ ॥੧॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਕਲਿਆਣ ਰਸ
 ਪ੍ਰੈ ਗੁਰਿ ਕੀਨ੍ ॥ ਜੀਅ ਸਗਲ ਦਿੱਤਾਲ ਭਏ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚੀਨ੍ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰੌਰਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬਕ
 ਮਹਿ ਪ੍ਰਭ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਆਨਦ ਮੈ ਪੇਖਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਧੀਰ ॥੨॥੮॥੭੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਅਰਦਾਸਿ ਸੁਣੀ ਦਾਤਾਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਹੋਏ ਕਿਰਪਾਲ ॥ ਰਾਖਿ ਲੀਆ ਅਪਨਾ ਸੇਵਕੋ ਮੁਖਿ ਨਿੰਦਕ ਛਾਰੁ ॥੧॥ ਤੁਝਾਹਿ
 ਨ ਜੋਹੈ ਕੋ ਮੀਤ ਜਨ ਤੂਂ ਗੁਰ ਕਾ ਦਾਸ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਤੂ ਰਾਖਿਆ ਦੇ ਅਪਨੇ ਹਾਥ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੀਅਨ ਕਾ
 ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਬੀਆ ਨਹੀਂ ਹੋਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀਆ ਮੈ ਤੇਰਾ ਜੋਰੁ ॥੨॥੯॥੭੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮੀਤ ਹਮਾਰੇ ਸਾਜਨਾ ਰਾਖੇ ਗੋਵਿੰਦ ॥ ਨਿੰਦਕ ਮਿਰਤਕ ਹੋਇ ਗਏ ਤੁਮ ਹੋਹੁ ਨਿਚਿੰਦ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਗਲ

ਮਨੋਰਥ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਏ ਭੇਟੇ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਜਗਤ ਮਹਿ ਸਫਲ ਜਾ ਕੀ ਸੇਵ ॥੧॥ ਊਚ ਅਪਾਰ ਅਗਨਤ
 ਹਰਿ ਸਭਿ ਜੀਅ ਜਿਸੁ ਹਾਥਿ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਤ ਕਤ ਮੈਰੈ ਸਾਥਿ ॥੨॥੧੦॥੭੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਆਰਾਧਿਆ ਹੋਏ ਕਿਰਪਾਲ ॥ ਮਾਰਗੁ ਸੰਤਿ ਬਤਾਇਆ ਤੂਟੇ ਜਮ ਜਾਲ ॥੧॥ ਦ੍ਰੂਖ
 ਭੂਖ ਸੰਸਾ ਮਿਟਿਆ ਗਾਵਤ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮ ॥ ਸਹਜ ਸ੍ਰੂਖ ਆਨਦ ਰਸ ਪੂਰਨ ਸਭਿ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਲਨਿ
 ਬੁੜੀ ਸੀਤਲ ਭਏ ਰਾਖੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਾ ਕਾ ਵਡ ਪਰਤਾਪ ॥੨॥੧੧॥੭੫॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਧਰਤਿ ਸੁਹਾਕੀ ਸਫਲ ਥਾਨੁ ਪੂਰਨ ਭਏ ਕਾਮ ॥ ਭਤ ਨਾਠਾ ਭਰਮੁ ਮਿਟਿ ਗਿਇਆ
 ਰਵਿਆ ਨਿਤ ਰਾਮ ॥੧॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਬਸਤ ਸੁਖ ਸਹਜ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਸਾਈ ਘੜੀ ਸੁਲਖਣੀ ਸਿਮਰਤ
 ਹਰਿ ਨਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਗਟ ਭਏ ਸੰਸਾਰ ਮਹਿ ਫਿਰਤੇ ਪਹਨਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਘਟ ਘਟ
 ਸਭ ਜਾਨ ॥੨॥੧੨॥੭੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੋਗੁ ਮਿਟਾਇਆ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭਿ ਤਥਿਆ ਸੁਖੁ ਸਾਁਤਿ ॥
 ਕਵਡ ਪਰਤਾਪੁ ਅਚਰਜ ਰੂਪੁ ਹਰਿ ਕੀਨ੍ਹੀ ਦਾਤਿ ॥੧॥ ਗੁਰਿ ਗੋਵਿੰਦਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੀ ਰਾਖਿਆ ਮੇਰਾ ਭਾਈ ॥ ਹਮ
 ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜੋ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਰਥੀ ਕਦੇ ਨ ਹੋਵੈ ਜਨ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਜੋਝ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਪੂਰਨ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥੨॥੧੩॥੭੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਨਮੇ ਜਿਨ ਬਿਸਰਿਆ
 ਜੀਵਨ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਨਿ ਸੇਵਿਆ ਅਨਦਿਨੁ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥੧॥ ਸਾਁਤਿ ਸਹਜੁ ਆਨਦੁ ਘਨਾ ਪੂਰਨ
 ਭੈ ਆਸ ॥ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਿਮਰਤ ਗੁਣਤਾਸ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਆਮੀ ਅਰਦਾਸਿ ਜਨ
 ਤੁਮੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹੇ ਨਾਨਕ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ॥੨॥੧੪॥੭੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਤਾਤੀ ਵਾਤ ਨ ਲਗੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸਰਣਾਈ ॥ ਚਤੁਗਿਰਦ ਹਮਾਰੈ ਰਾਮ ਕਾਰ ਦੁਖੁ ਲਗੈ ਨ ਭਾਈ ॥੧॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਆ ਜਿਨਿ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਅਤਖਥੁ ਦੀਆ ਏਕਾ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਤਿਨਿ ਰਖਨਹਾਰਿ ਸਭ ਬਿਆਧਿ ਮਿਟਾਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਭੰਡੀ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਸਹਾਈ ॥
 ੨॥੧੫॥੭੯॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਪਣੇ ਬਾਲਕ ਆਪਿ ਰਾਖਿਅਨੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਸੁਖ ਸਾਁਤਿ

सहज आनंद भए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ रोग
मिटाइ जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥२॥ दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥ मन बाँछत
फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥२॥१६॥८०॥

रागु बिलावलु महला ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਦੁਪਦੇ ਘਰੁ ੬ ੧੭੩ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮेरੇ ਮੋਹਨ ਸ਼ਰਵਨੀ ਇਹ ਨ ਸੁਨਾਏ ॥ ਸਾਕਤ ਗੀਤ ਨਾਦ ਧੁਨਿ ਗਾਵਤ ਬੋਲਤ ਬੋਲ ਅਜਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਸੇਵਤ ਸੇਵਿ ਸੇਵਿ ਸਾਧ ਸੇਵਤ ਸਦਾ ਕਰਤ ਕਿਰਤਾਏ ॥ ਅਭੈ ਦਾਨੁ ਪਾਵਤ ਪੁਰਖ ਦਾਤੇ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਗੁਣ
ਗਾਏ ॥੧॥ ਰਸਨਾ ਅਗਹ ਅਗਹ ਗੁਨ ਰਾਤੀ ਨੈਨ ਦਰਸ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥ ਛੋਹੁ ਕ੃ਪਾਲ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਮੋਹਿ
ਚਰਣ ਰਿਦੈ ਕਵਸਾਏ ॥੨॥ ਸਾਭਹੂ ਤਲੈ ਤਲੈ ਸਾਭ ਊਪਰਿ ਏਹ ਵੂਸਟਿ ਵੂਸਟਾਏ ॥ ਅਭਿਮਾਨੁ ਖੋਇ ਖੋਇ ਖੋਇ
ਖੋਈ ਹਤ ਮੋ ਕਤ ਸਤਿਗੁਰ ਮੰਨੁ ਵੂਡਾਏ ॥੩॥ ਅਤੁਲੁ ਅਤੁਲੁ ਅਤੁਲੁ ਨਹ ਤੁਲੀਐ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਕਿਰਪਾਏ ॥
ਜੋ ਜੋ ਸਰਣਿ ਪਾਰਿਆ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਅਭੈ ਦਾਨੁ ਸੁਖ ਪਾਏ ॥੪॥੧॥੮੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤੂ
ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੈ ॥ ਨਮਸਕਾਰ ਡੰਡਤਿ ਬੰਦਨਾ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਜਾਤ ਬਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ
ਸੋਕਤ ਜਾਗਤ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੁੜਹਿ ਚਿਤਾਰੈ ॥ ਸੂਖ ਦੂਖ ਇਸੁ ਮਨ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਤੁੜਾ ਹੀ ਆਗੈ ਸਾਰੈ ॥੧॥ ਤੂ
ਮੇਰੀ ਓਟ ਬਲ ਬੁਧਿ ਧਨੁ ਤੁਮ ਹੀ ਤੁਮਹਿ ਮੇਰੈ ਪਰਵਾਰੈ ॥ ਜੋ ਤੁਮ ਕਰਹੁ ਸੋਈ ਭਲ ਹਮਰੈ ਪੇਖਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖ
ਚਰਨਾਰੈ ॥੨॥੨॥੮੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੁਨੀਅਤ ਪ੍ਰਭ ਤਤ ਸਗਲ ਉਧਾਰਨ ॥ ਮੋਹ ਮਗਨ ਪਤਿਤ
ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਾਨੀ ਐਸੇ ਮਨਹਿ ਬਿਸਾਰਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਚਿ ਬਿਖਿਆ ਲੇ ਗ੍ਰਾਹਜੁ ਕੀਨੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮਨ ਤੇ ਡਾਰਨ
॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਰਤੁ ਨਿੰਦਾ ਸਤੁ ਸਤੋਖੁ ਬਿਦਾਰਨ ॥੧॥ ਇਨ ਤੇ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਹਾਰਿ ਪਰੇ ਤੁਮ
ਸਾਰਨ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨਤੀ ਪ੍ਰਭ ਪਹਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ਰੱਕ ਤਾਰਨ ॥੨॥੩॥੮੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤਨ ਕੈ
ਸੁਨੀਅਤ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਬਾਤ ॥ ਕਥਾ ਕੀਰਤਨੁ ਆਨੰਦ ਮੰਗਲ ਧੁਨਿ ਪੂਰਿ ਰਹੀ ਦਿਨਸੁ ਅਝ ਰਾਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੇ ਨਾਮ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ

ਇਸੁ ਤਨ ਤੇ ਜਾਤ ॥੧॥ ਤ੍ਰਪਤਿ ਅਧਾਏ ਪੇਖਿ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸਨੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਹਰਿ ਰਸੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਤ ॥ ਚਰਨ ਸਰਨ
 ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਤ ॥੨॥੪॥੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਖਿ ਲੀਏ
 ਅਪਨੇ ਜਨ ਆਪ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਨੋ ਬਿਨਸਿ ਗਏ ਸਭ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਣ
 ਗੋਵਿੰਦ ਗਾਵਹੁ ਸਭਿ ਹਰਿ ਜਨ ਰਾਗ ਰਤਨ ਰਸਨਾ ਆਲਾਪ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੀ ਤੂਸਨਾ ਨਿਵਰੀ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣਿ
 ਆਤਮ ਧਾਪ ॥੧॥ ਚਰਣ ਗਹੇ ਸਰਣਿ ਸੁਖਦਾਤੇ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਜਪੇ ਹਰਿ ਜਾਪ ॥ ਸਾਗਰ ਤਰੇ ਭਰਮ ਭੈ ਬਿਨਸੇ
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰ ਪਰਤਾਪ ॥੨॥੫॥੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾਪੁ ਲਾਹਿਆ ਗੁਰ ਸਿਰਜਨਹਾਰਿ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਅਪਨੇ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਈ ਜਿਨਿ ਪੈਜ ਰਖੀ ਸਾਰੈ ਸੰਸਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰੁ ਮਸਤਕਿ ਧਾਰਿ ਬਾਲਿਕੁ
 ਰਖਿ ਲੀਨੋ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਦੀਨੋ ॥੧॥ ਦਾਸ ਕੀ ਲਾਜ ਰਖੈ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ
 ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥੬॥੮॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਟੁਪਦੇ ਘਰੁ ੭ ੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਤੁਯਾਰੇ ਦੀਪਾ ॥ ਬਿਨਸਿਓ ਅੰਧਕਾਰ ਤਿਹ ਮੰਦਰਿ ਰਤਨ ਕੋਠੜੀ ਖੁਲ੍ਹੀ ਅਨੂਪਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮ ਭਏ ਜਤ ਪੇਖਿਓ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਮਗਨ ਭਏ ਊਹਾ ਸੰਗਿ ਮਾਤੇ ਓਤਿ
 ਪੋਤਿ ਲਪਟਾਈ ॥੧॥ ਆਲ ਜਾਲ ਨਹੀ ਕਛੂ ਜੰਜਾਰਾ ਅਛਾਬੁਧਿ ਨਹੀ ਭੋਰਾ ॥ ਊਚਨ ਊਚਾ ਬੀਚੁ ਨ ਖੀਚਾ ਹਤ
 ਤੇਰਾ ਤ੍ਰੂ ਮੋਰਾ ॥੨॥ ਏਕਕਾਰੁ ਏਕੁ ਪਾਸਾਰਾ ਏਕੈ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ॥ ਏਕੁ ਬਿਸਥੀਰਨੁ ਏਕੁ ਸੰਪੂਰਨੁ ਏਕੈ ਪ੍ਰਾਨ
 ਅਧਾਰਾ ॥੩॥ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਸ੍ਰੂਚਾ ਸ੍ਰੂਚੋ ਸ੍ਰੂਚਾ ਸ੍ਰੂਚੋ ਸ੍ਰੂਚਾ ॥ ਅੰਤ ਨ ਅੰਤਾ ਸਦਾ ਬੇਅੰਤਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਊਚੋ
 ਊਚਾ ॥੪॥੧॥੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਤ ਹੈ ॥ ਜਾ ਸਿਤ ਰਾਚਿ ਮਾਚਿ ਤੁਮ
 ਲਾਗੇ ਓਹ ਮੋਹਨੀ ਮੋਹਾਵਤ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਨਿਕ ਕਾਮਿਨੀ ਸੇਜ ਸੋਹਨੀ ਛੋਡਿ ਖਿਨੈ ਮਹਿ ਜਾਵਤ ਹੈ ॥
 ਤੁਰਝਿ ਰਹਿਓ ਇੰਦੀ ਰਸ ਪ੍ਰੇਰਿਓ ਬਿਖੈ ਠਗਤਰੀ ਖਾਵਤ ਹੈ ॥੧॥ ਤ੍ਰਣ ਕੋ ਮੰਦਰੁ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿਓ ਪਾਵਕੁ ਤਲੈ
 ਜਾਵਤ ਹੈ ॥ ਐਸੇ ਗੜ ਮਹਿ ਐਠਿ ਹਠੀਲੋ ਫੂਲਿ ਫੂਲਿ ਕਿਆ ਪਾਵਤ ਹੈ ॥੨॥ ਪੰਚ ਟੂਤ ਮੂੰ ਪਰਿ ਠਾਢੇ ਕੇਸ

ਗਹੇ ਫੇਰਾਵਤ ਹੇ ॥ ਦੂਸਟਿ ਨ ਆਵਹਿ ਅੰਧ ਅਗਿਆਨੀ ਸੋਝਿ ਰਹਿਓ ਮਦ ਮਾਵਤ ਹੇ ॥੩॥ ਜਾਲੁ ਪਸਾਰਿ ਚੋਗ
 ਬਿਸਥਾਰੀ ਪੱਖੀ ਜਿਤ ਫਾਹਾਵਤ ਹੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬੰਧਨ ਕਾਟਨ ਕਤ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਵਤ ਹੇ
 ॥੪॥੨॥੮੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰ ਅਮੋਲੀ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਪਿਆਰੇ ਮਨਹਿ ਅਧਾਰੇ ਚੀਤਿ
 ਚਿਤਵਤ ਜੈਸੇ ਪਾਨ ਤੰਬੋਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆ ਗੁਰਹਿ ਬਤਾਇਆ ਰੰਗ ਰੰਗੀ ਮੇਰੇ ਤਨ ਕੀ
 ਚੋਲੀ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮੁਖਿ ਲਾਗੇ ਜਤ ਵਡਭਾਗੇ ਸੁਹਾਗੁ ਹਮਾਰੇ ਕਤਹੁ ਨ ਡੋਲੀ ॥੧॥ ਰੂਪ ਨ ਧ੍ਰੂਪ ਨ ਗੰਧ ਨ ਦੀਪਾ
 ਆਓਤਿ ਪੋਤਿ ਅੰਗ ਅੰਗ ਸਾਂਗਿ ਮਤਲੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਰਕੀ ਸੁਹਾਗਨਿ ਅਤਿ ਨੀਕੀ ਮੇਰੀ ਬਨੀ ਖਟੋਲੀ
 ॥੨॥੩॥੮੯॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਮਈ ॥ ਜਬ ਤੇ ਭੇਟੇ ਸਾਥ ਦਿਆਅਾਰਾ ਤਬ ਤੇ
 ਦੁਰਮਤਿ ਦ੍ਰਹਿ ਭਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰੂਨ ਪ੍ਰੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸੰਪੂਰਨ ਸੀਤਲ ਸਾਁਤਿ ਦਿਆਅਾਲ ਦੰਡੈ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ
 ਤੂਸਨਾ ਅਛਾਕਾਰਾ ਤਨ ਤੇ ਹੋਏ ਸਗਲ ਖੰਡੈ ॥੧॥ ਸਤੁ ਸਾਂਤੋਖੁ ਦਿਆ ਧਰਮੁ ਸੁਚਿ ਸਾਂਤਨ ਤੇ ਇਹੁ ਮੰਤੁ ਲੰਡੈ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਮਨਹੁ ਪਛਾਨਿਆ ਤਿਨ ਕਤ ਸਗਲੀ ਸੋਝਾ ਪੰਡੈ ॥੨॥੪॥੯੦॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਕਿਆ ਹਮ ਜੀਅ ਜੰਤ ਬੇਚਾਰੇ ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਹ ਏਕ ਰੋਮਾਈ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਮਹੇਸ ਸਿਧ ਮੁਨਿ ਇੰਦ੍ਰਾ ਬੇਅੰਤ ਠਾਕੁਰ
 ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥੧॥ ਕਿਆ ਕਥੀਐ ਕਿਛੁ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਹ ਮਹਾ ਭਿਆਨ ਦ੍ਰੂਖ ਜਮ ਸੁਨੀਐ ਤਹ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਤੂਹੈ ਸਹਾਈ ॥ ਸਰਨਿ ਪਰਿਆਂ ਹਰਿ ਚਰਨ
 ਗਹੇ ਪ੍ਰਭ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕ ਕਤ ਬੂੜਾ ਬੁੜਾਈ ॥੨॥੫॥੯੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਗਮ ਰੂਪ ਅਬਿਨਾਸੀ
 ਕਰਤਾ ਪਤਿਤ ਪਕਿਤ ਇਕ ਨਿਮਖ ਜਪਾਈਐ ॥ ਅਚਰਜੁ ਸੁਨਿਆਂ ਪਰਾਪਤਿ ਭੇਟੁਲੇ ਸੰਤ ਚਰਨ ਚਰਨ ਮਨੁ
 ਲਾਈਐ ॥੧॥ ਕਿਤੁ ਬਿਧੀਐ ਕਿਤੁ ਸੰਜਮਿ ਪਾਈਐ ॥ ਕਹੁ ਸੁਰਜਨ ਕਿਤੁ ਜੁਗਤੀ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜੋ ਮਾਨੁਖੁ ਮਾਨੁਖ ਕੀ ਸੇਵਾ ਓਹੁ ਤਿਸ ਕੀ ਲੰਡੈ ਲੰਡੈ ਫੁਨਿ ਜਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਸਰਣਿ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਮੋਹਿ
 ਟੇਕ ਤੇਰੋ ਇਕ ਨਾਈਐ ॥੨॥੬॥੯੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤ ਸਰਣਿ ਸੰਤ ਟਹਲ ਕਰੀ ॥ ਧੰਧੁ ਬੰਧੁ ਅਝੁ
 ਸਗਲ ਜੰਜਾਰੇ ਅਵਰ ਕਾਜ ਤੇ ਛੂਟਿ ਪਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੂਖ ਸਹਜ ਅਝ ਘਨੋ ਅਨੰਦਾ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆਂ

ਨਾਮੁ ਹਰੀ ॥ ਐਸੋ ਹਰਿ ਰਸੁ ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਤ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਮੇਰੀ ਤਲਟਿ ਧਰੀ ॥੧॥ ਪੇਖਿਆਂ ਮੋਹਨੁ ਸਭ ਕੈ ਸੰਗੇ
 ਊਨ ਨ ਕਾਹੂ ਸਗਲ ਭਰੀ ॥ ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆਂ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰੀ ਪਰੀ ॥੨॥੭॥੬੩॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਕਿਆ ਕਹਤਾ ਹਤ ਕਿਆ ਕਹਤਾ ॥ ਜਾਨ ਪ੍ਰਬੀਨ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਤਿਸੁ ਆਗੈ
 ਕਿਆ ਕਹਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਬੋਲੇ ਕਤ ਤੁਹੀ ਪਛਾਨਹਿ ਜੋ ਜੀਅਨ ਮਹਿ ਹੋਤਾ ॥ ਰੇ ਮਨ ਕਾਇ ਕਹਾ ਲਤ
 ਡਹਕਹਿ ਜਤ ਪੇਖਤ ਹੀ ਸੰਗਿ ਸੁਨਤਾ ॥੧॥ ਐਸੋ ਜਾਨਿ ਭਏ ਮਨਿ ਆਨਦ ਆਨ ਨ ਬੀਓ ਕਰਤਾ ॥ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਭਏ ਦਿਇਆਰਾ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਨ ਕਬਹੂ ਲਹਤਾ ॥੨॥੮॥੬੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਿੰਦਕੁ
 ਐਸੇ ਹੀ ਝਾਰਿ ਪਰੀਐ ॥ ਇਹ ਨੀਸਾਨੀ ਸੁਨਹੁ ਤੁਮ ਭਾਈ ਜਿਤ ਕਾਲਰ ਭੀਤਿ ਗਿਰੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਤ
 ਦੇਖੈ ਛਿਦੁ ਤਤ ਨਿੰਦਕੁ ਤਮਾਹੈ ਭਲੋ ਦੇਖਿ ਦੁਖ ਭਰੀਐ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਚਿਤਕੈ ਨਹੀ ਪਹੁੱਚੈ ਬੁਗ ਚਿਤਵਤ
 ਚਿਤਵਤ ਮਰੀਐ ॥੧॥ ਨਿੰਦਕੁ ਪ੍ਰਭੂ ਭੁਲਾਇਆ ਕਾਲੁ ਨੇਰੈ ਆਇਆ ਹਰਿ ਜਨ ਸਿਤ ਬਾਦੁ ਤਠੀਐ ॥
 ਨਾਨਕ ਕਾ ਰਾਖਾ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਆਮੀ ਕਿਆ ਮਾਨਸ ਬਪੁਰੇ ਕਰੀਐ ॥੨॥੬॥੬੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਐਸੇ ਕਾਹੇ ਭੂਲਿ ਪਰੇ ॥ ਕਰਹਿ ਕਰਾਵਹਿ ਮੂਕਰਿ ਪਾਵਹਿ ਪੇਖਤ ਸੁਨਤ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਚ
 ਬਿਹਾਇਨ ਕੰਚਨ ਛਾਡਨ ਬੈਰੀ ਸੰਗਿ ਹੇਤੁ ਸਾਜਨ ਤਿਆਗਿ ਖਰੇ ॥ ਹੋਵਨੁ ਕਤਰਾ ਅਨਹੋਵਨੁ ਮੀਠਾ ਬਿਖਿਆ
 ਮਹਿ ਲਪਟਾਇ ਜਰੇ ॥੧॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਪਰਿਆਂ ਪਰਾਨੀ ਭਰਮ ਗੁਬਾਰ ਮੋਹ ਬੰਧਿ ਪਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ
 ਹੋਤ ਦਿਇਆਰਾ ਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਕਾਢੈ ਬਾਹ ਫਰੇ ॥੨॥੧੦॥੬੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਤਨ ਰਸਨਾ ਹਰਿ
 ਚੀਨਾ ॥ ਭਏ ਅਨਨਦਾ ਮਿਟੇ ਅੰਦੇਸੇ ਸਰਬ ਸੂਖ ਮੋ ਕਤ ਗੁਰਿ ਦੀਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਆਨਪ ਤੇ ਸਭ ਭੰਈ
 ਸਿਆਨਪ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ॥ ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖੈ ਅਪਨੇ ਕਤ ਕਾਹੂ ਨ ਕਰਤੇ ਕਛੁ ਖੀਨਾ ॥੧॥
 ਬਲਿ ਜਾਵਤ ਦਰਸਨ ਸਾਧੂ ਕੈ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੀਨਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰ ਭਾਰੋਸੈ ਕਹੂ ਨ ਮਾਨਿਆਂ
 ਮਨਿ ਛੀਨਾ ॥੨॥੧੧॥੬੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਮੇਰੀ ਰਾਖਿ ਲਈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ
 ਰਿਟੇ ਮਹਿ ਦੀਨੋ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਮੈਲੁ ਗੈਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਵਰੇ ਦੂਤ ਦੁਸਟ ਬੈਰਾਈ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕਾ ਜਪਿਆ

जापु ॥ कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड़ परतापु ॥१॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ
 चरन कमल रखु मन माही ॥ ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥२॥१२॥६८॥
 बिलावलु महला ५ ॥ सदा सदा जपीਐ प्रभ नाम ॥ जरा मरा कछु दूखु न बिआपै आगै दरगह पूरन
 काम ॥१॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि परीਐ नित सरनी गुर ते पाईਐ एहु निधानु ॥ जनम मरण की
 कटीਐ फासी साची दरगह का नीसानु ॥२॥ जो तुम् करहु सोई भल मानउ मन ते छूटै सगल गुमानु
 ॥ कहु नानक ता की सरणाई जा का कीआ सगल जहानु ॥३॥६९॥ बिलावलु महला ५ ॥
 मन तन अंतरि प्रभु आही ॥ हरि गुन गावत परउपकार नित तिसु रसना का मोलु किछु नाही
 ॥४॥ रहाउ ॥ कुल समूह उधरे खिन भीतरि जनम जनम की मलु लाही ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु
 अपना अनद सेती बिखिआ बनु गाही ॥५॥ चरन प्रभु के बोहिथु पाए भव सागरु पारि पराही ॥
 संत सेवक भगत हरि ता के नानक मनु लागा है ताही ॥६॥१४॥१००॥ बिलावलु महला ५ ॥
 धीरउ देखि तुम्हारै रंगा ॥ तुही सुआमी अंतरजामी तूही वसहि साध कै संगा ॥७॥ रहाउ ॥ खिन महि
 थापि निवाजे ठाकुर नीच कीट ते करहि राजंगा ॥८॥ कबहू न बिसरै हीए मोरे ते नानक दास इही
 दानु मंगा ॥९॥१५॥१०१॥ बिलावलु महला ५ ॥ अचुत पूजा जोग गोपाल ॥ मनु तनु अरपि रखउ
 हरि आगै सरब जीआ का है प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ सरनि सम्रथ अकथ सुखदाता किरपा सिंधु बडो
 दइआल ॥ कंठि लाइ राखै अपने कउ तिस नो लगै न ताती बाल ॥२॥ दामोदर दइआल सुआमी
 सरबसु संत जना धन माल ॥ नानक जाचिक दरसु प्रभ मागै संत जना की मिलै खाल ॥३॥१६॥१०२
 ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरत नामु कोटि जतन भए ॥ साधसंगि मिलि हरि गुन गाए जमदूतन कउ
 त्रास अहे ॥४॥ रहाउ ॥ जेते पुनहचरन से कीने मनि तनि प्रभ के चरण गहे ॥ आवण जाणु भरमु
 भउ नाठा जनम जनम के किलविख दहे ॥५॥ निरभउ होइ भजहु जगदीसै एहु पदारथु वडभागि लहे

॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ਨਿਰਮਲ ਜਸੁ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਕਹੈ ॥੨॥੧੭॥੧੦੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸੁਲਹੀ ਤੇ ਨਾਰਾਇਣ ਰਾਖੁ ॥ ਸੁਲਹੀ ਕਾ ਹਾਥੁ ਕਹੀ ਨ ਪਹੁੱਚੈ ਸੁਲਹੀ ਹੋਇ ਮੂਆ ਨਾਪਾਕੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਕਾਢਿ ਕੁਠਾਰੁ ਖਸਮਿ ਸਿਰੁ ਕਾਟਿਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ਗਿਆ ਹੈ ਖਾਕੁ ॥ ਮੰਦਾ ਚਿਤਵਤ ਚਿਤਵਤ ਪਚਿਆ
 ਜਿਨਿ ਰਚਿਆ ਤਿਨਿ ਦੀਨਾ ਧਾਕੁ ॥੧॥ ਪੁਨ ਮੀਤ ਧਨੁ ਕਿਛੁ ਨ ਰਹਿਓ ਸੁ ਛੋਡਿ ਗਿਆ ਸਭ ਭਾਈ ਸਾਕੁ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜਿਨਿ ਜਨ ਕਾ ਕੀਨੋ ਪੂਰਨ ਵਾਕੁ ॥੨॥੧੮॥੧੦੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਪੂਰੀ ਸੇਵ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਸੁਆਮੀ ਕਾਰਜੁ ਰਾਸਿ ਕੀਆ ਗੁਰਦੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਦਿ
 ਮਥਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਿ ਸੁਆਮੀ ਅਪਨਾ ਥਾਟੁ ਬਨਾਇਆ ਆਪਿ ॥ ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਪੇ ਰਾਖੈ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕੋ ਕਡ
 ਪਰਤਾਪੁ ॥੧॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਵਸਿ ਕੀਨੇ ਜਿਨਿ ਸਗਲੇ ਜੰਤ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਈ
 ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਧਿ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤ ॥੨॥੧੯॥੧੦੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾਪ ਪਾਪ ਤੇ ਰਾਖੇ ਆਪ ॥
 ਸੀਤਲ ਭਾਏ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਲਾਗੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਿਰਦੇ ਮਹਿ ਜਾਪ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਸਤ ਪ੍ਰਭਿ ਦੀਨੇ
 ਜਗਤ ਉਧਾਰ ਨਵ ਖੰਡ ਪ੍ਰਤਾਪ ॥ ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖ ਅਨਦ ਪ੍ਰਵੇਸਾ ਤ੃ਸਨ ਬੁੜੀ ਮਨ ਤਨ ਸਚੁ ਧਾਪ ॥੧॥
 ਅਨਾਥ ਕੋ ਨਾਥੁ ਸਰਣਿ ਸਮਰਥਾ ਸਗਲ ਸੂਸਟਿ ਕੋ ਮਾਈ ਬਾਪੁ ॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਭੈ ਭੰਜਨ ਸੁਆਮੀ ਗੁਣ
 ਗਾਵਤ ਨਾਨਕ ਆਲਾਪ ॥੨॥੨੦॥੧੦੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜਿਆ ਤਿਸਹਿ ਪਛਾਨੁ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਧਿਆਇਆ ਕੁਸਲ ਖੇਮ ਹੋਏ ਕਲਿਆਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਆ ਬਡ ਭਾਗੀ
 ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਨੁ ॥ ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖੇ ਕਰਿ ਅਪਨੇ ਬਡ ਸਮਰਥੁ ਨਿਮਾਣਿਆ ਕੋ ਮਾਨੁ ॥੧॥ ਭ੍ਰਮ ਭੈ
 ਬਿਨਸਿ ਗਏ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਅੰਧਕਾਰ ਪ੍ਰਗਟੇ ਚਾਨਾਣੁ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਆਰਾਧੈ ਨਾਨਕੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਈਐ
 ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੨॥੨੧॥੧੦੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦੌਰੈ ਥਾਵ ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਸੂਰੇ ॥ ਹਲਤ ਪਲਤ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ
 ਸਵਾਰੇ ਕਾਰਜ ਹੋਏ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਮਜਨੁ ਹੋਵਤ ਸਾਧੂ ਧੂਰੇ
 ॥ ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਥਿਤਿ ਪਾਈ ਜਨਮ ਮਰਣ ਕੇ ਮਿਟੇ ਬਿਸੂਰੇ ॥੧॥ ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਤਰੇ ਛੁਟੇ ਭੈ ਜਮ ਕੇ ਘਟਿ ਘਟਿ

एकु रहिआ भरपूरे ॥ नानक सरणि परिओ दुख भंजन अंतरि बाहरि पेखि हजूरे ॥२॥२२॥१०८॥
 बिलावलु महला ५ ॥ दरसनु देखत दोख नसे ॥ कबहु न होवहु दृसठि अगोचर जीअ कै संगि बसे
 ॥१॥ रहाउ ॥ प्रीतम प्रान अधार सुआमी ॥ पूरि रहे प्रभ अंतरजामी ॥१॥ किआ गुण तेरे सारि
 समारी ॥ सासि सासि प्रभ तुझाहि चितारी ॥२॥ किरपा निधि प्रभ दीन दइआला ॥ जीअ जंत की करहु
 प्रतिपाला ॥३॥ आठ पहर तेरा नामु जनु जापे ॥ नानक प्रीति लाई प्रभि आपे ॥४॥२३॥१०९॥
 बिलावलु महला ५ ॥ तनु धनु जोबनु चलत गड़िआ ॥ राम नाम का भजनु न कीनो करत बिकार
 निसि भोरु भड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन नित खाते मुख दंत घसि खीन खड़िआ ॥
 मेरी मेरी करि करि मूठउ पाप करत नह परी दड़िआ ॥१॥ महा बिकार घोर दुख सागर
 तिसु महि प्राणी गलतु पड़िआ ॥ सरनि परे नानक सुआमी की बाह पकरि प्रभि काढि लड़िआ
 ॥२॥२४॥११०॥ बिलावलु महला ५ ॥ आपना प्रभु आड़िआ चीति ॥ दुस्मन दुस्ट रहे झख मारत
 कुसलु भड़िआ मेरे भाई मीत ॥१॥ रहाउ ॥ गई बिआधि उपाधि सभ नासी अंगीकारु कीओ
 करतारि ॥ साँति सूख अरु अनद घनेरे प्रीतम नामु रिदै उर हारि ॥१॥ जीउ पिंडु धनु रासि प्रभ
 तेरी तूं समरथु सुआमी मेरा ॥ दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा ॥२॥२५॥१११॥
 बिलावलु महला ५ ॥ गोबिंदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ मिटी उपाधि भड़िआ सुखु साचा अंतरजामी
 सिमरिआ जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ दास
 अपुने की आपे राखी भै भंजन ऊपरि करते माणु ॥१॥ भई मित्राई मिटी बुराई दुस्ट दूत हरि
 काढे छाणि ॥ सूख सहज आन्द घनेरे नानक जीवै हरि गुणह वखाणि ॥२॥२६॥११२॥
 बिलावलु महला ५ ॥ पारब्रह्म प्रभ भए कृपाल ॥ कारज सगल सवारे सतिगुर जपि जपि साधू
 भए निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए रवाल ॥ कंठि लाइ

ਰਖੇ ਜਨ ਅਪਨੇ ਤਥਾਰਿ ਲੀਏ ਲਾਡਿ ਅਪਨੈ ਪਾਲ ॥੧॥ ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਮਿਲਿ ਘਰਿ ਆਏ ਨਿੰਦਕ ਕੇ
ਮੁਖ ਛੋਏ ਕਾਲ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥੨॥੨੭॥੧੧੩॥
ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੂ ਲਾਲਨ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੋਰੀ ਨ ਤੂਟੈ ਛੋਰੀ ਨ ਛੂਟੈ ਐਸੀ ਮਾਧੀ ਖਿੰਚ
ਤਨੀ ॥੧॥ ਦਿਨਸੁ ਰੈਨਿ ਮਨ ਮਾਹਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਤੂ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੀ ॥੨॥ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਤ ਸਿਆਮ
ਸੁਨਦਰ ਕਤ ਅਕਥ ਕਥਾ ਜਾ ਕੀ ਬਾਤ ਸੁਨੀ ॥੩॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸੁ ਕਹੀਅਤ ਹੈ ਮੋਹਿ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ
ਠਾਕੁਰ ਅਪੁਨੀ ॥੪॥੨੮॥੧੧੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ਜਧਿ ਜਾਂਤ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥ ਗੁਰੂ ਮੇਰਾ
ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਤਾ ਕਾ ਹਿਰਦੈ ਧਰਿ ਮਨ ਧਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ
ਜਾ ਕਾ ਕੀਆ ਸਗਲ ਜਹਾਨੁ ॥ ਰਸਨਾ ਰਖੁ ਏਕੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਸਾਚੀ ਦੁਰਗਹ ਪਾਵਹੁ ਮਾਨੁ ॥੧॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ
ਪਰਾਪਤਿ ਜਾ ਕਤ ਤਿਨ ਹੀ ਪਾਇਆ ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਗਾਵਤ ਗੁਣ ਕੀਰਤਨੁ ਨਿਤ ਸੁਆਮੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ
ਨਾਨਕ ਦੀਜੈ ਦਾਨੁ ॥੨॥੨੯॥੧੧੫॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣ ॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ
ਛੋਆ ਜਗ ਅੰਤਰਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਮੇਰੇ ਤਾਰਣ ਤਰਣ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਸ਼ੰਭਰ ਪ੍ਰੂਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ
ਪੋਖਣ ਭਰਣ ॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਸਰਕ ਨਿਰਤਰਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ॥੧॥ ਜੀਅ ਜੁਗਤਿ ਵਸਿ
ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਸਰਕ ਸਿਧਿ ਤੁਮ ਕਾਰਣ ਕਰਣ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ
ਨਾਨਕ ਨਹੀ ਢਰਣ ॥੨॥੩੦॥੧੧੬॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਟੁਪਦੇ ਘਰੁ ੮ ੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੈ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ॥ ਈਧੈ ਨਿਰਗੁਨ ਊਘੈ ਸਗੁਨ ਕੇਲ ਕਰਤ ਬਿਚਿ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਨਗਰ ਮਹਿ ਆਪਿ ਬਾਹਰਿ ਫੁਨਿ ਆਪਨ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕੋ ਸਗਲ ਬਸੇਰਾ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਰਾਜਨੁ ਆਪੇ ਹੀ ਰਾਇਆ ਕਹ
ਕਹ ਠਾਕੁਰੁ ਕਹ ਕਹ ਚੇਰਾ ॥੧॥ ਕਾ ਕਤ ਟੁਰਾਉ ਕਾ ਸਿਤ ਬਲਬੰਚਾ ਜਹ ਜਹ ਪੇਖਤ ਤਹ ਤਹ ਨੇਰਾ ॥ ਸਾਧ
ਮੂਰਤਿ ਗੁਰੂ ਭੇਟਿਆ ਨਾਨਕ ਮਿਲਿ ਸਾਗਰ ਬ੍ਰੰਦ ਨਹੀ ਅਨ ਹੇਰਾ ॥੨॥੧॥੧੧੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥

ਤੁਮ ਸਮਰਥਾ ਕਾਰਨ ਕਰਨ ॥ ਢਾਕਨ ਢਾਕਿ ਗੋਬਿਦ ਗੁਰ ਮੇਰੇ ਮੋਹਿ ਅਪਰਾਧੀ ਸਰਨ ਚਰਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਜੋ ਜੋ ਕੀਨੀ ਸੋ ਤੁਮ ਜਾਨਿਆਂ ਪੇਖਿਆਂ ਠਤਰ ਨਾਹੀ ਕਛੁ ਢੀਠ ਸੁਕਰਨ ॥ ਬਡ ਪਰਤਾਪੁ ਸੁਨਿਆਂ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੋ ਕੋਟਿ
 ਅਧਾ ਤੇਰੋ ਨਾਮ ਹਰਨ ॥੧॥ ਹਮਰੇ ਸਹਾਤ ਸਦਾ ਸਦ ਭੂਲਨ ਤੁਮਰੋ ਬਿਰਦੁ ਪਤਿਤ ਉਧਰਨ ॥ ਕਰੁਣਾ ਮੈ
 ਕਿਰਪਾਲ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਜੀਵਨ ਪਦ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ॥੨॥੨॥੧੧੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਐਸੀ
 ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਕਰਹੁ ॥ ਸਤਹ ਚਰਣ ਹਮਾਰੇ ਮਾਥਾ ਨੈਨ ਦਰਸੁ ਤਨਿ ਧੂਰਿ ਪਰਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਸਬਦੁ
 ਮੈਰੈ ਹੀਅਰੈ ਬਾਸੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਮਨ ਸੰਗਿ ਧਰਹੁ ॥ ਤਸਕਰ ਪੰਚ ਨਿਵਾਰਹੁ ਠਾਕੁਰ ਸਗਲੋ ਭਰਮਾ ਹੋਮਿ ਜਗਹੁ
 ॥੧॥ ਜੋ ਤੁਮ ਕਰਹੁ ਸੋਈ ਭਲ ਮਾਨੈ ਭਾਵਨੁ ਦੁਬਿਧਾ ਟ੍ਰੌਰਿ ਟਰਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮ ਹੀ ਦਾਤੇ ਸਤਸੰਗਿ
 ਲੇ ਮੋਹਿ ਉਧਰਹੁ ॥੨॥੩॥੧੧੯॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਐਸੀ ਦੀਖਿਆ ਜਨ ਸਿਤ ਮੰਗਾ ॥ ਤੁਮਰੋ ਧਿਆਨੁ
 ਤੁਮਾਰੇ ਰੰਗਾ ॥ ਤੁਮਰੀ ਸੇਵਾ ਤੁਮਾਰੇ ਅੰਗਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਨ ਕੀ ਟਹਲ ਸੰਭਾਖਨੁ ਜਨ ਸਿਤ ਊਠਨੁ ਬੈਠਨੁ
 ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਾ ॥ ਜਨ ਚਰ ਰਜ ਸੁਖਿ ਮਾਥੈ ਲਾਗੀ ਆਸਾ ਪੂਰਨ ਅੰਨਤ ਤਰੰਗਾ ॥੧॥ ਜਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਜਾ ਕੀ
 ਨਿਰਮਲ ਮਹਿਮਾ ਜਨ ਕੇ ਚਰਨ ਤੀਰਥ ਕੋਟਿ ਗੱਗਾ ॥ ਜਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ਕੀਓ ਮਜਨੁ ਨਾਨਕ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਹਰੇ
 ਕਲੰਗਾ ॥੨॥੪॥੧੨੦॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਮੋਹਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸਰ
 ਸਤਿਗੁਰ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤੁਮ ਪਿਤਾ ਕਿਰਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਕੋਈ ਪਹੁਚਿ ਨ ਸਾਕਤ
 ਤੁਮਰੀ ਘਾਲ ॥ ਤੁਮਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨਹੁ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੁਮਰੋ ਮਾਲ ॥੧॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਪੁਰਖ
 ਸੁਆਮੀ ਅਨਬੋਲਤ ਹੀ ਜਾਨਹੁ ਹਾਲ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ਹਮਾਰੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ॥
 ੨॥੫॥੧੨੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਖੁ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੈ ਸਾਥ ॥ ਤ੍ਰ ਹਮਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਨਮੋਹਨੁ ਤੁੜ ਬਿਨੁ
 ਜੀਵਨੁ ਸਗਲ ਅਕਾਥ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰੰਕ ਤੇ ਰਾਤ ਕਰਤ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰੋ ਅਨਾਥ ਕੋ ਨਾਥ ॥ ਜਲਤ
 ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਜਨ ਆਪਿ ਉਧਾਰੇ ਕਰਿ ਅਪੁਨੇ ਦੇ ਰਾਖੇ ਹਾਥ ॥੧॥ ਸੀਤਲ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆਂ ਮਨ ਤ੃ਪਤੇ ਹਰਿ
 ਸਿਮਰਤ ਸੁਖ ਸਗਲੇ ਲਾਥ ॥ ਨਿਧਿ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਅਵਰ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲ ਅਕਾਥ ॥

॥੨॥੬॥੧੨੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕਤ ਕਬਹੁ ਨ ਬਿਸਾਰਹੁ ॥ ਤਉ ਲਾਗਹੁ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭ
 ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੋਬ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੋਬਿੰਦ ਬੀਚਾਰਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪ੍ਰਭ ਬਿਰਦੁ ਤੁਮਾਰੇ ਹਮਰੇ ਦੋਖ ਰਿਟੈ ਮਤ
 ਧਾਰਹੁ ॥ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਾਨ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੁਖੁ ਤੁਮ ਹੀ ਹਉਮੈ ਪਟਲੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਜਾਰਹੁ ॥੧॥ ਜਲ ਬਿਹੂਨ ਮੀਨ ਕਤ
 ਜੀਵਨ ਦ੍ਰਥ ਬਿਨਾ ਰਹਨੁ ਕਤ ਬਾਰੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪਿਆਸ ਚਰਨ ਕਮਲਨ੍ ਕੀ ਪੇਖਿ ਦਰਸੁ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖ ਸਾਰੇ
 ॥੨॥੭॥੧੨੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਕੁਸਲੁ ਭਿੱਡਿਆ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪੂਰੀ ਸਭ ਰਾਖੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ
 ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੀ ਮਡਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਖਿ ਰਹਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਦ੍ਰਥ ਦਰਦ ਸਗਲਾ ਮਿਟਿ
 ਗਿੱਡਿਆ ॥ ਸਾਁਤਿ ਸਹਜ ਆਨਦ ਗੁਣ ਗਾਏ ਦ੍ਰਤ ਦੁਸਟ ਸਭਿ ਹੋਏ ਖਿੱਡਿਆ ॥੧॥ ਗੁਨੁ ਅਵਗੁਨੁ ਪ੍ਰਭਿ ਕਛੁ
 ਨ ਬੀਚਾਰਿਆਂ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਲਿੱਡਿਆ ॥ ਅਤੁਲ ਬਡਾਈ ਅਚੁਤ ਅਭਿਨਾਸੀ ਨਾਨਕੁ ਤਚਰੈ ਹਰਿ
 ਕੀ ਜਿੱਡਿਆ ॥੨॥੮॥੧੨੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਿਨੁ ਭੈ ਭਗਤੀ ਤਰਨੁ ਕੈਸੇ ॥ ਕਰਹੁ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਪਤਿਤ
 ਤਥਾਰਨ ਰਾਖੁ ਸੁਆਮੀ ਆਪ ਭਰੋਸੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਮਰਨੁ ਨਹੀ ਆਵਤ ਫਿਰਤ ਮਦ ਮਾਵਤ ਬਿਖਿਆ
 ਰਤਾ ਸੁਆਨ ਜੈਸੇ ॥ ਅਤਥ ਬਿਹਾਵਤ ਅਧਿਕ ਮੋਹਾਵਤ ਪਾਪ ਕਮਾਵਤ ਬੁਡੇ ਐਸੇ ॥੧॥ ਸਰਨਿ ਦੁਖ ਭੰਜਨ
 ਪੁਰਖ ਨਿਰੰਜਨ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਰਖਣੁ ਜੈਸੇ ॥ ਕੇਸਵ ਕਲੇਸ ਨਾਸ ਅਘ ਖੰਡਨ ਨਾਨਕ ਜੀਵਤ ਦਰਸ ਦਿਸੇ
 ॥੨॥੯॥੧੨੫॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਟੁਪਦੇ ਘਰੁ ੬ ੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਪਹਿ ਮੇਲਿ ਲਏ ॥ ਜਬ ਤੇ ਸਰਨਿ ਤੁਮਾਰੀ ਆਏ ਤਬ ਤੇ ਦੋਖ ਗਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਅਝੁ
 ਚਿੰਤ ਬਿਰਾਨੀ ਸਾਧਹ ਸਰਨ ਪਏ ॥ ਜਧਿ ਜਧਿ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤਨ ਤੇ ਰੋਗ ਖਏ ॥੧॥ ਮਹਾ ਮੁਗਧ
 ਅਜਾਨ ਅਗਿਆਨੀ ਰਾਖੇ ਧਾਰਿ ਦਾਏ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਆਂ ਆਵਨ ਜਾਨ ਰਹੇ ॥੨॥੧॥੧੨੬॥
 ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਵਤ ਨਾਮੁ ਸੁਨੀ ॥ ਜਤ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਭਏ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤਬ ਮੇਰੀ ਆਸ ਪੁਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਪੀਰ ਗੰਡੀ ਬਾਧੀ ਮਨਿ ਧੀਰਾ ਮੋਹਿਆਂ ਅਨਦ ਧੁਨੀ ॥ ਤਉਜਿਆਂ ਚਾਤ ਮਿਲਨ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਇ

ਖਿਨੀ ॥੧॥ ਅਨਿਕ ਭਗਤ ਅਨਿਕ ਜਨ ਤਾਰੇ ਸਿਮਰਹਿ ਅਨਿਕ ਮੁਨੀ ॥ ਅੰਧੁਲੇ ਟਿਕ ਨਿਰਧਨ ਧਨੁ
ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਅਨਿਕ ਗੁਨੀ ॥੨॥੨॥੧੨੭॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੩ ਪਡਤਾਲ

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੋਹਨ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ਹਾਵੈ ਹਾਰ ਕਜਰ ਬਸਤ ਅਭਰਨ ਕੀਨੇ ॥ ਤੁਡੀਨੀ ਤੁਡੀਨੀ ਤੁਡੀਨੀ ॥ ਕਬ ਘਰਿ ਆਵੈ ਰੀ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਰਨਿ ਸੁਹਾਗਨਿ ਚਰਨ ਸੀਸੁ ਧਰਿ ॥ ਲਾਲਨੁ ਮੋਹਿ ਮਿਲਾਵਹੁ ॥ ਕਬ ਘਰਿ ਆਵੈ ਰੀ ॥੨॥ ਸੁਨਹੁ
ਸਹੇਰੀ ਮਿਲਨ ਬਾਤ ਕਹਤ ਸਗਰੇ ਅੜਾ ਮਿਟਾਵਹੁ ਤਤ ਘਰ ਹੀ ਲਾਲਨੁ ਪਾਵਹੁ ॥ ਤਬ ਰਸ ਮੰਗਲ ਗੁਨ
ਗਾਵਹੁ ॥ ਆਨਦ ਰੂਪ ਧਿਆਵਹੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਦੁਆਰੈ ਆਇਆ ਓ ॥ ਤਤ ਮੈ ਲਾਲਨੁ ਪਾਇਆ ਰੀ ॥੨॥ ਮੋਹਨ ਰੂਪੁ
ਦਿਖਾਵੈ ॥ ਅਥ ਮੋਹਿ ਨੀਦ ਸੁਹਾਵੈ ॥ ਸਭ ਮੇਰੀ ਤਿਖਾ ਬੁਝਾਨੀ ॥ ਅਥ ਮੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਨੀ ॥ ਮੀਠੀ ਪਿਰਹਿ
ਕਹਾਨੀ ॥ ਮੋਹਨੁ ਲਾਲਨੁ ਪਾਇਆ ਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ਦ੍ਰੂਜਾ ॥੧॥੧੨੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੌਰੀ ਅੜਾ ਜਾਇ
ਦਰਸਨ ਪਾਵਤ ਹੈ ॥ ਰਾਚਹੁ ਨਾਥ ਹੀ ਸਹਾਈ ਸੰਤਨਾ ॥ ਅਥ ਚਰਨ ਗਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਹੇ ਮਨ
ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਵੈ ਚਰਨਾਵੈ ਚਰਨਾਵੈ ਤਲਝਿਆ ਅਲਿ ਮਕਰਦ ਕਮਲ ਜਿਤ ॥ ਅਨ ਰਸ ਨਹੀ ਚਾਹੈ ਏਕੈ ਹਰਿ
ਲਾਹੈ ॥੧॥ ਅਨ ਤੇ ਟੂਟੀਐ ਰਿਖ ਤੇ ਛੂਟੀਐ ॥ ਮਨ ਹਰਿ ਰਸ ਘੂਟੀਐ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ ਤਲਟੀਐ ॥ ਅਨ ਨਾਹੀ
ਨਾਹੀ ਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਰਨ ਚਰਨ ਹੈ ॥੨॥੨॥੧੨੯॥

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੬ ਟੁਪਦੇ

੧੮੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੁਖ ਹਰਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਨੋ ॥ ਅਜਾਮਲੁ ਗਨਿਕਾ ਜਿਹ ਸਿਮਰਤ ਮੁਕਤ ਭਏ ਜੀਅ ਜਾਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਗਜ ਕੀ ਤਾਸ ਮਿਟੀ ਛਿਨਹੂ ਮਹਿ ਜਬ ਹੀ ਰਾਮੁ ਬਖਾਨੋ ॥ ਨਾਰਦ ਕਹਤ ਸੁਨਤ ਧ੍ਰਾਅ ਬਾਰਿਕ ਭਜਨ ਮਾਹਿ
ਲਪਟਾਨੋ ॥੧॥ ਅਚਲ ਅਮਰ ਨਿਰਮੈ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਜਗਤ ਜਾਹਿ ਹੈਰਾਨੋ ॥ ਨਾਨਕ ਕਹਤ ਭਗਤ ਰਾਹਿ
ਨਿਕਟਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਮਾਨੋ ॥੨॥੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥ ਭਗਤਿ ਬਿਨਾ
ਸਹਸਾ ਨਹ ਚੂਕੈ ਗੁਰੂ ਝਿਹੁ ਭੇਦੁ ਬਤਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਹਾ ਭਿਆ ਤੀਰਥ ਬ੍ਰਤ ਕੀਏ ਰਾਮ ਸਰਨਿ ਨਹੀ

आवै ॥ जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥੧॥ मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के
गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥੨॥੨॥ बिलावलु महला ੬ ॥ जा मै
भजनु राम को नाही ॥ तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥੧॥ रहाउ ॥ तीरथ
करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥ निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥੧॥
जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेटै नाहि तिह पानी ॥ तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी
॥੨॥ कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥ कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन
गावै ॥੩॥੩॥

बिलावलु असटपटीआ महला ੧ ਘਰੁ ੧੦

੧੮ੰਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਦੇਖੈ ਸਭੁ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਬੂੜ੍ਹੈ ਕੋਈ ॥ ਵਿਣੁ ਭੈ ਪਇਐ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਸਬਦਿ ਰਤੇ
ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੧॥ ਐਸਾ ਗਿਆਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਮੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵਸਿ ਰਸਿ ਰਸਿ ਮਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਗਿਆਨੁ ਗਿਆਨੁ ਕਥੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਕਥਿ ਕਥਿ ਬਾਦੁ ਕਰੇ ਦੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਕਥਿ ਕਹਣੈ ਤੇ ਰਹੈ ਨ ਕੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਰਸ
ਰਤੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੨॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਸਭੁ ਗੁਰ ਤੇ ਹੋਈ ॥ ਸਾਚੀ ਰਹਤ ਸਾਚਾ ਮਨਿ ਸੋਈ ॥ ਮਨਮੁਖ
ਕਥਨੀ ਹੈ ਪਰੁ ਰਹਤ ਨ ਹੋਈ ॥ ਨਾਵਹੁ ਭੂਲੇ ਥਾਉ ਨ ਕੋਈ ॥੩॥ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਬੰਧਿओ ਸਰ ਜਾਲਿ ॥ ਘਟਿ
ਘਟਿ ਬਿਆਪਿ ਰਹਿଓ ਬਿਖੁ ਨਾਲਿ ॥ ਜੋ ਆੱਜੈ ਸੋ ਦੀਸੈ ਕਾਲਿ ॥ ਕਾਰਜੁ ਸੀਧੋ ਰਿਟੈ ਸਮਾਲਿ ॥੪॥
ਸੋ ਗਿਆਨੀ ਜਿਨਿ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਹਤਮੈ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤੈ ਭਗਤਿ ਕਰਾਈ
॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥੫॥ ਰੈਣਿ ਅੰਧਾਰੀ ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਝੂਠੇ ਕੁਚਲ ਕਛੋਤਿ ॥
ਕੇਦੁ ਪੁਕਾਰੈ ਭਗਤਿ ਸਰੋਤਿ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਮਾਨੈ ਕੇਖੈ ਜੋਤਿ ॥੬॥ ਸਾਸਤ ਸਿਮੂਤਿ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਮਂ ॥
ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਂਤਿ ਊਤਮ ਕਰਾਮਂ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਜੋਨੀ ਟ੍ਰੌਖ ਸਹਾਮਂ ॥ ਬੰਧਨ ਤੂਟੇ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਵਸਾਮਂ ॥੭॥
ਮਨੇ ਨਾਮੁ ਸਚੀ ਪਤਿ ਪ੍ਰੌਜਾ ॥ ਕਿਸੁ ਕੇਖਾ ਨਾਹੀ ਕੋ ਟ੍ਰੌਜਾ ॥ ਦੇਖਿ ਕਹਤ ਭਾਵੈ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ

ਅਵਰੁ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥੮॥੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨ ਕਾ ਕਹਿਆ ਮਨਸਾ ਕਰੈ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਪੁਨ੍ਨੁ
ਪਾਪੁ ਤਚਰੈ ॥ ਮਾਇਆ ਮਦਿ ਮਾਤੇ ਤ੃ਪਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਸੁਕਤਿ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਭਾਵੈ ॥੧॥ ਤਨੁ ਧਨੁ
ਕਲਤੁ ਸਭੁ ਦੇਖੁ ਅਭਿਮਾਨਾ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਛੁ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੀਚਹਿ ਰਸ ਭੋਗ ਖੁਸੀਆ
ਮਨ ਕੇਰੀ ॥ ਧਨੁ ਲੋਕਾਂ ਤਨੁ ਭਸਮੈ ਫੇਰੀ ॥ ਖਾਕੁ ਖਾਕੁ ਰਲੈ ਸਭੁ ਫੈਲੁ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਨਹੀ ਤਤਰੈ ਮੈਲੁ ॥੨॥
ਗੀਤ ਰਾਗ ਘਨ ਤਾਲ ਸਿ ਕੂਰੇ ॥ ਤ੍ਰਹੁ ਗੁਣ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ਫ੍ਰੈਰੇ ॥ ਫ੍ਰੌਜੀ ਦੁਰਮਤਿ ਦਰਦੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਛੂਟੈ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਾਰੁ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੩॥ ਧੋਤੀ ਊਜਲ ਤਿਲਕੁ ਗਲਿ ਮਾਲਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਪਡਹਿ ਨਾਟ ਸਾਲਾ ॥
ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਮਾਇਆ ਮਦੁ ਪੀਆ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਗਤਿ ਨਾਹੀ ਸੁਖੁ ਥੀਆ ॥੪॥ ਸੂਕਰ ਸੁਆਨ ਗਰਥਭ
ਮੰਜਾਰਾ ॥ ਪਸੂ ਮਲੇਛ ਨੀਚ ਚੰਡਾਲਾ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਸੁਹੁ ਫੇਰੇ ਤਿਨ੍ ਜੋਨਿ ਭਵਾਈਐ ॥ ਬੰਧਨਿ ਬਾਧਿਆ ਆਈਐ
ਯਾਈਐ ॥੫॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਲਹੈ ਪਦਾਰਥੁ ॥ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਕਿਰਤਾਰਥੁ ॥ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਪ੍ਰਭ ਨ ਹੋਇ ॥
ਮਾਨੇ ਹੁਕਮੁ ਸੀझੈ ਦਰਿ ਸੋਇ ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤ ਤਿਸ ਕਤ ਜਾਣੈ ॥ ਰਹੈ ਰਖਾਈ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਹੁਕਮੁ
ਪਛਾਣਿ ਸਚੈ ਦਰਿ ਵਾਸੁ ॥ ਕਾਲ ਬਿਕਾਲ ਸਬਦਿ ਭਏ ਨਾਸੁ ॥੭॥ ਰਹੈ ਅਤੀਤੁ ਜਾਣੈ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ
ਅਰਪੈ ਹੈ ਇਹੁ ਜਿਸ ਕਾ ॥ ਨਾ ਓਹੁ ਆਵੈ ਨਾ ਓਹੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੮॥੨॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀ ਘਰ ੧੦

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਗੁ ਕਤਾਆ ਸੁਖਿ ਚੁੰਚ ਗਿਆਨੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਝੂਠੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਾਜੁ ਲਹਗੁ ਨਿਦਾਨਿ ॥੧॥
ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਨਾਮੁ ਕਵੈ ਮਨਿ ਚੀਤਿ ॥ ਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚੇਤਾਵੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰ ਝੂਠੁ ਪਰੀਤਿ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਸਾ ਕਾਰ ਕਮਾਵਹੁ ॥ ਸਬਦੁ ਚੀਨਿ ਸਹਜ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ॥ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ਵਡਾਈ ਪਾਵਹੁ
॥੨॥ ਆਪਿ ਨ ਬੂੜੈ ਲੋਕ ਬੁਝਾਵੈ ॥ ਮਨ ਕਾ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਵੈ ॥ ਦਰੁ ਘਰੁ ਮਹਲੁ ਠਤਰੁ ਕੈਸੇ ਪਾਵੈ
॥੩॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸੇਵੀਐ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਜਿਸ ਕੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਨੀ ॥ ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ਕਿਆ ਚਲੈ

ਪਹਨਾਮੀ ॥੪॥ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਜਾਨੈ ॥ ਆਪੈ ਆਪੁ ਮਿਲੈ ਚੂਕੈ ਅਭਿਮਾਨੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ
ਸਦਾ ਵਖਾਨੈ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਟ੍ਰ੍ਹੀ ਦੁਰਮਤਿ ਜਾਈ ॥ ਅਤਗਣ ਕਾਟਿ ਪਾਪਾ ਮਤਿ ਖਾਈ ॥ ਕੰਚਨ
ਕਾਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਕਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਦੁਖੁ ਕਾਟੈ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਈ ॥
ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥੭॥ ਗੁਰਮਤਿ ਮਾਨਿਆ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਮਾਨਿਆ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਮਾਨਿਆ ਪਰਵਾਰੈ ਸਾਧਾਰੁ ॥੮॥੧॥੩॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੧੧

੧੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਪੈ ਆਪੁ ਖਾਇ ਹਉ ਮੈਟੈ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰਸ ਗੀਤ ਗਰੰਝਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਚੈ ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਨਿਰਭਤ
ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੰਝਾ ॥੧॥ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਰਮੰਝਾ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਠ ਪਡੰਝਾ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਕੁ ਗਿਰਹੁ ਦਸ ਦੁਆਰ ਹੈ ਜਾ ਕੇ ਅਹਿਨਿਸਿ ਤਸਕਰ
ਪੰਚ ਚੋਰ ਲਗੰਝਾ ॥ ਧਰਮੁ ਅਰਥੁ ਸਭੁ ਹਿਰਿ ਲੇ ਜਾਵਹਿ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੁਲੇ ਖਬਰਿ ਨ ਪਈਆ ॥੨॥ ਕੰਚਨ
ਕੋਟੁ ਬਹੁ ਮਾਣਕਿ ਭਰਿਆ ਜਾਗੇ ਗਿਆਨ ਤਤਿ ਲਿਵ ਲੰਝਾ ॥ ਤਸਕਰ ਹੇਝੁ ਆਇ ਲੁਕਾਨੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
ਪਕਢਿ ਬੰਧਿ ਪਈਆ ॥੩॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪੋਤੁ ਬੋਹਿਥਾ ਖੇਕਟੁ ਸਬਦੁ ਗੁਰੁ ਪਾਰਿ ਲਮਘੰਝਾ ॥ ਜਮੁ ਜਾਗਾਤੀ
ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾ ਕੋ ਤਸਕਰੁ ਚੋਰੁ ਲਗੰਝਾ ॥੪॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਮੈ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਹਤੇ
ਅੰਤੁ ਨ ਲਹੀਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੂਆ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਵੈ ਮਿਲਤ ਗੋਪਾਲ ਨੀਸਾਨੁ ਬਜੰਝਾ ॥੫॥ ਨੈਨੀ
ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਮਨੁ ਤ੍ਰਤੈ ਸ਼ਰਨ ਬਾਣੀ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਸੁਣੰਝਾ ॥ ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਆਤਮ ਦੇਵ ਹੈ ਭੀਨੇ ਰਸਿ ਰਸਿ
ਰਾਮ ਗੋਪਾਲ ਰਖੰਝਾ ॥੬॥ ਤੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪੇ ਤੁਰੀਆ ਗੁਣੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਹੀਆ ॥ ਏਕ ਵ੃ਸਟਿ
ਸਭ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਨਦਰੀ ਆਵੈ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਸਰੰਝਾ ॥੭॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹੈ ਜੋਤਿ ਸਬਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ
ਅਲਖੁ ਲਖੰਝਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ਭਏ ਹੈ ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮੰਝਾ ॥੮॥੧॥੪॥
ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੀਤਲ ਜਲੁ ਧਿਆਵਹੁ ਹਰਿ ਚੰਦਨ ਵਾਸੁ ਸੁਗੰਧ ਗੰਧੰਝਾ ॥

मिलि सतसंगति परम पटु पाइआ मै हिरड पलास संगि हरि बुहीआ ॥੧॥ जपि जगन्नाथ जगदीस
 गुर्सईआ ॥ सरणि परे सई जन उबरे जिउ प्रहिलाद उधारि समईआ ॥੨॥ रहाउ ॥ भार अठारह
 महि चंदनु ऊतम चंदन निकटि सभ चंदनु हुईआ ॥ साकत कूड़े ऊभ सुक हूए मनि अभिमानु विछुड़ि
 दूरि गईआ ॥੨॥ हरि गति मिति करता आपे जाणै सभ बिधि हरि हरि आपि बनईआ ॥ जिसु
 सतिगुरु भेटे सु कंचनु होवै जो धुरि लिखिआ सु मिटै न मिटईआ ॥੩॥ रतन पदारथ गुरमति पावै
 सागर भगति भंडार खुलईआ ॥ गुर चरणी इक सरधा उपजी मै हरि गुण कहते तृपति न भईआ
 ॥੪॥ परम बैरागु नित नित हरि धिआए मै हरि गुण कहते भावनी कहीआ ॥ बार बार खिनु खिनु
 पलु कहीअै हरि पारु न पावै परै परईआ ॥੫॥ सासत बेद पुराण पुकारहि धरमु करहु खटु करम
 दृढ़ईआ ॥ मनमुख पाखंडि भरमि विगूते लोभ लहरि नाव भारि बुड़ईआ ॥੬॥ नामु जपहु नामे
 गति पावहु सिमृति सासत्र नामु दृढ़ईआ ॥ हउमै जाइ त निरमलु होवै गुरमुखि परचै परम पटु
 पईआ ॥੭॥ इहु जगु वरनु रूपु सभु तेरा जितु लावहि से करम कर्मईआ ॥ नानक जंत वजाए
 वाजहि जितु भावै तितु राहि चलईआ ॥੮॥੨॥੫॥ बिलावलु महला ੪ ॥ गुरमुखि अगम अगोचरु
 धिआइआ हउ बलि बलि सतिगुर सति पुरखईआ ॥ राम नामु मेरै प्राणि वसाए सतिगुर परसि
 हरि नामि समईआ ॥੧॥ जन की टेक हरि नामु टिकईआ ॥ सतिगुर की धर लागा जावा गुर
 किरपा ते हरि दरु लहीआ ॥੧॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु करम की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु
 कर्दईआ ॥ लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भाँडै भाउ पवै तितु अईआ ॥੨॥ दासनि दास दास होइ
 रहीअै जो जन राम भगत निज भईआ ॥ मनु बुधि अरपि धरउ गुर आगै गुर परसादी मै अकथु
 कर्थईआ ॥੩॥ मनमुख माइआ मोहि विआपे इहु मनु तृसना जलत तिखईआ ॥ गुरमति
 नामु अंमृत जलु पाइआ अगनि बुझी गुर सबदि बुझईआ ॥੪॥ इहु मनु नाचै सतिगुर आगै

ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਧੁਨਿ ਤੂਰ ਵਜੰਈਆ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਸਤਤਿ ਕਰੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਰਖਿ ਰਖਿ ਚਰਣ ਹਰਿ ਤਾਲ
 ਪ੍ਰਰੰਝਾ ॥੫॥ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਮਨੁ ਗਾਵੈ ਰਸਿ ਰਸਾਲ ਰਸਿ ਸਬਦੁ ਰਖੰਝਾ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਧਾਰ ਚੁਐ
 ਅਤਿ ਨਿਰਮਲ ਜਿਨਿ ਪੀਆ ਤਿਨ ਹੀ ਸੁਖੁ ਲਹੀਆ ॥੬॥ ਮਨਹਠਿ ਕਰਮ ਕਰੈ ਅਭਿਮਾਨੀ ਜਿਤ ਬਾਲਕ
 ਬਾਲੂ ਘਰ ਤਸਰੰਝਾ ॥ ਆਵੈ ਲਹਰਿ ਸਮੁੰਦ ਸਾਗਰ ਕੀ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਿਨ ਭਿਨ ਢਹਿ ਪੰਝਾ ॥੭॥ ਹਰਿ ਸ਼ੁ
 ਸਾਗਰੁ ਹਰਿ ਹੈ ਆਪੇ ਇਹੁ ਜਗੁ ਹੈ ਸਭੁ ਖੇਲੁ ਖੇਲੰਝਾ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਤਰੰਗ ਜਲੁ ਜਲਹਿ ਸਮਾਵਹਿ ਨਾਨਕ
 ਆਪੇ ਆਪਿ ਰਮੰਝਾ ॥੮॥੩॥੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਰਚੈ ਮਨਿ ਮੁੰਦਾ ਪਾਈ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ
 ਤਨਿ ਭਸਸਮ ਵ੃ਡੰਝਾ ॥ ਅਮਰ ਪਿੰਡ ਭਏ ਸਾਥੂ ਸੰਗਿ ਜਨਮ ਮਰਣ ਟੋਊ ਮਿਟਿ ਗੰਝਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ
 ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹੀਆ ॥ ਕੁਪਾ ਕਰਹੁ ਮਧਸੂਦਨ ਮਾਧਤ ਮੈ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਸਾਥੂ ਚਰਣ ਪਖੰਝਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਤਜੈ ਗਿਰਸਤੁ ਭਇਆ ਬਨ ਵਾਸੀ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਮਨੂਆ ਟਿਕੈ ਨ ਟਿਕੰਝਾ ॥ ਧਾਵਤੁ ਧਾਇ ਤਦੇ ਘਰਿ
 ਆਵੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਾਥੂ ਸਰਣਿ ਪਵੰਝਾ ॥੨॥ ਧੀਆ ਪੂਤ ਛੋਡਿ ਸੰਨਿਆਸੀ ਆਸਾ ਆਸ ਮਨਿ ਬਹੁਤੁ
 ਕਰੰਝਾ ॥ ਆਸਾ ਆਸ ਕਰੈ ਨਹੀ ਕੁੜੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਨਿਰਾਸ ਸੁਖੁ ਲਹੀਆ ॥੩॥ ਤੁਪਜੀ ਤਰਕ ਦਿਗੰਬਰੁ
 ਹੋਆ ਮਨੁ ਦਹ ਦਿਸ ਚਲਿ ਚਲਿ ਗਵਨੁ ਕਰੰਝਾ ॥ ਪ੍ਰਭਵਨੁ ਕਰੈ ਕੁੜੈ ਨਹੀ ਤੂਸਨਾ ਮਿਲਿ ਸੰਗਿ ਸਾਥ
 ਦਇਆ ਘਰੁ ਲਹੀਆ ॥੪॥ ਆਸਣ ਸਿਧ ਸਿਖਹਿ ਬਹੁਤੇਰੇ ਮਨਿ ਮਾਗਹਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਚੇਟਕ ਚੇਟਕੰਝਾ ॥
 ਤੂਪਤਿ ਸੰਤੋਖੁ ਮਨਿ ਸਾਁਤਿ ਨ ਆਵੈ ਮਿਲਿ ਸਾਥੂ ਤੂਪਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਿਧਿ ਪੰਝਾ ॥੫॥ ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਸੇਤਜ
 ਤਤਭੁਜ ਸਭਿ ਵਰਨ ਰੂਪ ਜੀਅ ਜੰਤ ਤਪੰਝਾ ॥ ਸਾਥੂ ਸਰਣਿ ਪਰੈ ਸੋ ਤਕੈ ਖਕੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਸ੍ਰੂਦੁ ਵੈਸੁ ਚੰਡਾਲੁ
 ਚੰਡੰਝਾ ॥੬॥ ਨਾਮਾ ਜੈਦੇਤ ਕੰਬੀਰੁ ਤੂਲੋਚਨੁ ਅਤਯਾਤਿ ਰਵਿਦਾਸੁ ਚਮਿਆਰੁ ਚਮੰਝਾ ॥ ਜੋ ਜੋ ਮਿਲੈ
 ਸਾਥੂ ਜਨ ਸੰਗਤਿ ਧਨੁ ਧਨਾ ਜਟੁ ਸੈਣੁ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਦੰਝਾ ॥੭॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਹਰਿ ਪੈਜ ਰਖਵੰਝਾ
 ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕਰੰਝਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਜਗਜੀਵਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਰਖੰਝਾ
 ॥੮॥੪॥੭॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਅੰਤਰਿ ਪਿਆਸ ਤਠੀ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੀ ਸੁਣਿ ਗੁਰ ਬਚਨ ਮਨਿ ਤੀਰ ਲਗੰਝਾ

॥ मन की बिरथा मन ही जाणै अवरु कि जाणै को पीर परईआ ॥१॥ राम गुरि मोहनि मोहि मनु लईआ ॥ हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ लोट पोट होइ पईआ ॥२॥ रहाउ ॥ हउ निरखत फिरउ सभि देस दिसंतर मै प्रभ देखन को बहुतु मनि चईआ ॥ मनु तनु काटि देत गुर आगै जिनि हरि प्रभ मारु पंथु दिखईआ ॥३॥ कोई आणि सदेसा देइ प्रभ केरा रिद अंतरि मनि तनि मीठ लगईआ ॥ मसतकु काटि देत चरणा तलि जो हरि प्रभु मेले मेलि मिलईआ ॥४॥ चलु चलु सखी हम प्रभु परबोधह गुण कामण करि हरि प्रभु लहीआ ॥ भगति वछलु उआ को नामु कहीअतु है सरणि प्रभू तिसु पाछै पईआ ॥५॥ खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ रसि रसि भोग करे प्रभु मेरा हम तिसु आगै जीउ कटि कटि पईआ ॥६॥ हरि हरि हारु कंठि है बनिआ मनु मोतीचूरु वड गहन गहनईआ ॥ हरि हरि सरधा सेज विछाई प्रभु छोडि न सकै बहुतु मनि भईआ ॥७॥ कहै प्रभु अवरु अवरु किछु कीजै सभु बादि सीगारु फोकट फोकटईआ ॥ कीओ सीगारु मिलण कै ताई प्रभु लीओ सुहागनि थूक मुखि पईआ ॥८॥ हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥ दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥९॥१॥१॥ बिलावलु महला ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु अगम ठाकुर का खिनु खिनु सरधा मनि बहुतु उठईआ ॥ गुर देखे सरधा मन पूरी जिउ चातृक पृउ पृउ बूँद मुखि पईआ ॥१॥ मिलु मिलु सखी हरि कथा सुनईआ ॥ सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले मै तिसु आगै सिरु कटि कटि पईआ ॥२॥ रहाउ ॥ रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ ॥ बैदक नाटिक देखि भुलाने मै हिरटै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ ॥३॥ हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ ॥ जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन् अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥४॥ कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥ अनेक

जनम के विछुड़े जन मेले जा सति सति सतिगुर सरणि पर्वईआ ॥४॥ सेज एक एको प्रभु ठाकुर महलु
न पावै मनमुख भरमईआ ॥ गुरु गुरु करत सरणि जे आवै प्रभु आँड़ि मिलै खिनु ढील न पईआ ॥५॥
करि करि किरिआचार वधाए मनि पाखंड करमु कपट लोभईआ ॥ बेसुआ कै घरि बेटा जनमिआ
पिता ताहि किआ नामु सदईआ ॥६॥ पूरब जनमि भगति करि आए गुरि हरि हरि हरि हरि
भगति जमईआ ॥ भगति भगति करते हरि पाइआ जा हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥७॥
प्रभि आणि आणि महिदी पीसाई आपे घोलि घोलि अंगि लईआ ॥ जिन कउ ठाकुरि किरपा धारी
बाह पकरि नानक कठि लईआ ॥८॥६॥२॥१॥६॥६॥

रागु बिलावलु महला ५ अस्टपदी घरु १२

१८ सतिगुर प्रसादि ॥

उपमा जात न कही मेरे प्रभ की उपमा जात न कही ॥ तजि आन सरणि गही ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ
चरन कमल अपार ॥ हउ जाउ सद बलिहार ॥ मनि प्रीति लागी ताहि ॥ तजि आन कतहि न जाहि
॥२॥ हरि नाम रसना कहन ॥ मल पाप कलमल दहन ॥ चड़ि नाव संत उधारि ॥ भै तरे सागर
पारि ॥३॥ मनि डोरि प्रेम परीति ॥ इह संत निरमल रीति ॥ तजि गए पाप बिकार ॥ हरि मिले
प्रभ निरंकार ॥४॥ प्रभ पेखीअै बिसमाद ॥ चखि अनद पूरन साद ॥ नह डोलीअै इत ऊत ॥ प्रभ
बसे हरि हरि चीत ॥५॥ तिन् नाहि नरक निवासु ॥ नित सिमरि प्रभ गुणतासु ॥ ते जमु न पेखहि
नैन ॥ सुनि मोहे अनहत बैन ॥६॥ हरि सरणि सूर गुपाल ॥ प्रभ भगत वसि दडिआल ॥ हरि
निगम लहहि न भेव ॥ नित करहि मुनि जन सेव ॥७॥ दुख दीन दरद निवार ॥ जा की महा बिखड़ी
कार ॥ ता की मिति न जानै कोइ ॥ जलि थलि महीअलि सोइ ॥८॥ करि बंदना लख बार ॥ थकि
परिओ प्रभ दरबार ॥ प्रभ करहु साधू धूरि ॥ नानक मनसा पूरि ॥९॥ बिलावलु महला ५ ॥
प्रभ जनम मरन निवारि ॥ हारि परिओ दुआरि ॥ गहि चरन साधू संग ॥ मन मिसट हरि रंग ॥

ਕਰਿ ਦਿਆ ਲੇਹੁ ਲਡਿ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਦਿਆਲ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ
 ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਦਿਆਲ ॥ ਜਾਚਤ ਸੰਤ ਰਵਾਲ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਖਿਆ ਕੂਪ ॥ ਤਮ ਅਗਿਆਨ ਮੋਹਤ
 ਘੂਪ ॥ ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਲੇਹੁ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਪੁਨਾ ਦੇਹੁ ॥ ਪ੍ਰਭ ਤੁੜ੍ਹ ਬਿਨਾ ਨਹੀ ਠਾਉ ॥ ਨਾਨਕਾ ਬਲਿ
 ਬਲਿ ਜਾਉ ॥੨॥ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਬਾਧੀ ਦੇਹ ॥ ਬਿਨੁ ਭਜਨ ਹੋਵਤ ਖੇਹ ॥ ਜਮਦੂਤ ਮਹਾ ਭਿਆਨ ॥ ਚਿਤ ਗੁਪਤ
 ਕਰਮਹਿ ਜਾਨ ॥ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਸਾਖਿ ਸੁਨਾਇ ॥ ਨਾਨਕਾ ਹਰਿ ਸਰਨਾਇ ॥੩॥ ਭੈ ਭੰਜਨਾ ਮੁਰਾਰਿ ॥ ਕਰਿ
 ਦਿਆ ਪਤਿਤ ਤੁਧਾਰਿ ॥ ਮੇਰੇ ਟੋਖ ਗਨੇ ਨ ਜਾਹਿ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨਾ ਕਤਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਗਹਿ ਓਟ ਚਿਤਕੀ ਨਾਥ ॥
 ਨਾਨਕਾ ਦੇ ਰਖੁ ਹਾਥ ॥੪॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਨਿਧੇ ਗੋਪਾਲ ॥ ਸਰਬ ਘਟ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਦਰਸਨ ਪਿਆਸ
 ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਪੂਰਨ ਆਸ ॥ ਇਕ ਨਿਮਖ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਕਡ ਭਾਗਿ ਨਾਨਕ ਪਾਇ ॥੫॥ ਪ੍ਰਭ ਤੁੜ੍ਹ ਬਿਨਾ
 ਨਹੀ ਹੋਰ ॥ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚੰਦ ਚਕੋਰ ॥ ਜਿਤ ਮੀਨ ਜਲ ਸਿਤ ਹੇਤੁ ॥ ਅਲਿ ਕਮਲ ਮਿਨੁ ਨ ਭੇਤੁ ॥ ਜਿਤ ਚਕਕੀ
 ਸੂਰਜ ਆਸ ॥ ਨਾਨਕ ਚਰਨ ਪਿਆਸ ॥੬॥ ਜਿਤ ਤਰੁਨਿ ਭਰਤ ਪਰਾਨ ॥ ਜਿਤ ਲੋਭੀਐ ਧਨੁ ਦਾਨੁ ॥
 ਜਿਤ ਦ੍ਰਵਧ ਜਲਹਿ ਸੰਜੋਗੁ ॥ ਜਿਤ ਮਹਾ ਖੁਧਿਆਰਥ ਭੋਗੁ ॥ ਜਿਤ ਮਾਤ ਪ੍ਰਤਹਿ ਹੇਤੁ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ
 ਨੇਤ ॥੭॥ ਜਿਤ ਦੀਪ ਪਤਨ ਪਤਾਂਗ ॥ ਜਿਤ ਚੌਰ ਹਿਰਤ ਨਿਸਾਂਗ ॥ ਮੈਗਲਹਿ ਕਾਮੈ ਬੰਧੁ ॥ ਜਿਤ ਗ੍ਰਸਤ
 ਬਿਖੰਡੀ ਧੰਧੁ ॥ ਜਿਤ ਜੂਆਰ ਬਿਸਨੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਾਇ ॥੮॥ ਕੁਰੱਕ ਨਾਦੈ ਨੇਹੁ ॥
 ਚਾਤੂਕੁ ਚਾਹਤ ਮੇਹੁ ॥ ਜਨ ਜੀਵਨਾ ਸਤਸਾਂਗਿ ॥ ਗੋਬਿੰਦੁ ਭਜਨਾ ਰੰਗਿ ॥ ਰਸਨਾ ਬਖਾਨੈ ਨਾਮੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਦਰਸਨ ਦਾਨੁ ॥੯॥ ਗੁਨ ਗਾਇ ਸੁਨਿ ਲਿਖਿ ਦੇਇ ॥ ਸੋ ਸਰਬ ਫਲ ਹਰਿ ਲੇਇ ॥ ਕੁਲ ਸਮੂਹ ਕਰਤ ਤੁਧਾਰੁ
 ॥ ਸੰਸਾਰੁ ਤਰਸਿ ਪਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਚਰਨ ਬੋਹਿਥ ਤਾਹਿ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਜਸੁ ਗਾਹਿ ॥ ਹਰਿ ਪੈਜ ਰਖੈ
 ਮੁਰਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਦੁਆਰਿ ॥੧੦॥੨॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ਥਿਤੀ ਘਰੁ ੧੦ ਜਤਿ

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਏਕਮ ਏਕਕਾਰੁ ਨਿਰਾਲਾ ॥ ਅਮਰੁ ਅਜੋਨੀ ਜਾਤਿ ਨ ਜਾਲਾ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ

ਘਟਿ ਘਟਿ ਦੇਖਿਆ ॥ ਜੋ ਦੇਖਿ ਦਿਖਾਵੈ ਤਿਸ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈ ॥੧॥
 ਕਿਆ ਜਪੁ ਜਾਪਤ ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਦੀਸੈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਢ੍ਵਜੈ ਭਾਡਿ ਲਗੇ
 ਪਛੁਤਾਣੇ ॥ ਜਮ ਦਰਿ ਬਾਧੇ ਆਵਣ ਜਾਣੇ ॥ ਕਿਆ ਲੈ ਆਵਹਿ ਕਿਆ ਲੇ ਜਾਹਿ ॥ ਸਿਰਿ ਜਮਕਾਲੁ ਸਿ ਚੋਟਾ
 ਖਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਛੂਟਸਿ ਕੋਡਿ ॥ ਪਾਖਿੰਡਿ ਕੀਨੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਡਿ ॥੨॥ ਆਪੇ ਸਚੁ ਕੀਆ ਕਰ ਜੋਡਿ ॥
 ਅੰਡਜ ਫੋਡਿ ਜੋਡਿ ਵਿਛੋਡਿ ॥ ਧਰਤਿ ਅਕਾਸੁ ਕੀਏ ਬੈਸਣ ਕਤ ਥਾਤ ॥ ਰਾਤਿ ਦਿਨਤੁ ਕੀਏ ਭਤ ਭਾਤ ॥ ਜਿਨਿ
 ਕੀਏ ਕਰਿ ਵੇਖਣਹਾਰਾ ॥ ਅਵਰੁ ਨ ਢ੍ਵਜਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥੩॥ ਤੂਤੀਆ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸਾ ॥ ਦੇਵੀ ਟੇਵ
 ਤੁਪਾਏ ਵੇਸਾ ॥ ਜੋਤੀ ਜਾਤੀ ਗਣਤ ਨ ਆਵੈ ॥ ਜਿਨਿ ਸਾਜੀ ਸੋ ਕੀਮਤਿ ਪਾਵੈ ॥ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ
 ॥ ਕਿਸੁ ਨੇਡੈ ਕਿਸੁ ਆਖਾ ਢ੍ਵਰਿ ॥੪॥ ਚਤੁਰਥਿ ਤੁਪਾਏ ਚਾਰੇ ਬੇਦਾ ॥ ਖਾਣੀ ਚਾਰੇ ਬਾਣੀ ਭੇਦਾ ॥ ਅਸਟ ਦਸਾ ਖਟੁ
 ਤੀਨਿ ਤੁਪਾਏ ॥ ਸੋ ਬੂੜ੍ਹੈ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁੜਾਏ ॥ ਤੀਨਿ ਸਮਾਵੈ ਚਤੁਰੈ ਵਾਸਾ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਹਮ ਤਾ ਕੇ ਦਾਸਾ
 ॥੫॥ ਪੰਚਮੀ ਪੰਚ ਭੂਤ ਬੇਤਾਲਾ ॥ ਆਪਿ ਅਗੋਚਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਾਲਾ ॥ ਇਕਿ ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਖੇ ਮੋਹ ਪਿਆਸੇ ॥ ਇਕਿ ਰਸੁ
 ਚਾਖਿ ਸਬਦਿ ਤ੃ਪਤਾਸੇ ॥ ਇਕਿ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਇਕਿ ਮਰਿ ਧੂਰਿ ॥ ਇਕਿ ਦਰਿ ਘਰਿ ਸਾਚੈ ਦੇਖਿ ਹਫੂਰਿ ॥੬॥ ਝੂਠੇ
 ਕਤ ਨਾਹੀ ਪਤਿ ਨਾਤ ॥ ਕਬਹੁ ਨ ਸੂਚਾ ਕਾਲਾ ਕਾਤ ॥ ਪਿੰਜਰਿ ਪੰਖੀ ਬੰਧਿਆ ਕੋਡਿ ॥ ਛੇਰੀ ਭਰਮੈ ਮੁਕਤਿ ਨ
 ਹੋਡਿ ॥ ਤਤ ਛੂਟੈ ਜਾ ਖਸਮੁ ਛਡਾਏ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਮੇਲੇ ਭਗਤਿ ਵੂੜਾਏ ॥੭॥ ਖਸਟੀ ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਪ੍ਰਭ ਸਾਜੇ ॥
 ਅਨਹਦ ਸਬਦੁ ਨਿਰਾਲਾ ਵਾਜੇ ॥ ਜੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਵੈ ॥ ਸਬਦੇ ਭੇਦੇ ਤਤ ਪਤਿ ਪਾਵੈ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ
 ਵੇਸ ਖਪਹਿ ਜਲਿ ਜਾਵਹਿ ॥ ਸਾਚੈ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵਹਿ ॥੮॥ ਸਪਤਮੀ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਸਰੀਰਿ ॥ ਸਾਤ ਸਮੁੰਦ ਭਰੇ
 ਨਿਰਮਲ ਨੀਰਿ ॥ ਮਜਨੁ ਸੀਲੁ ਸਚੁ ਰਿਦੈ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਾਵੈ ਸਭਿ ਪਾਰਿ ॥ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਮੁਖਿ
 ਸਾਚਤ ਭਾਡਿ ॥ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੈ ਠਾਕ ਨ ਪਾਡਿ ॥੯॥ ਅਸਟਮੀ ਅਸਟ ਸਿਧਿ ਬੁਧਿ ਸਾਧੈ ॥ ਸਚੁ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਕਰਮਿ
 ਅਰਾਧੈ ॥ ਪਤਣ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ ਬਿਸਰਾਤ ॥ ਤਹੀ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸਾਚੋ ਨਾਤ ॥ ਤਿਸੁ ਮਹਿ ਮਨੂਆ ਰਹਿਆ
 ਲਿਵ ਲਾਡਿ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਡਿ ॥੧੦॥ ਨਾਤ ਨਤਮੀ ਨਵੇ ਨਾਥ ਨਵ ਖੰਡਾ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਾਥੁ

महा बलवंडा ॥ आई पूता इहु जगु सारा ॥ प्रभ आदेसु आदि रखवारा ॥ आदि जुगादी है भी होगु ॥
 ओहु अपरंपरु करणै जोगु ॥ १ ॥ दसमी नामु दानु इसनानु ॥ अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु ॥
 सचि मैलु न लागै भ्रमु भउ भागै ॥ बिलमु न तूटसि काचै तागै ॥ जिउ तागा जगु एवै जाणहु ॥ असथिरु
 चीतु साचि रंगु माणहु ॥ २ ॥ एकादसी इकु रिदै वसावै ॥ ह्विसा ममता मोहु चुकावै ॥ फलु पावै ब्रतु
 आतम चीनै ॥ पाखंडि राचि ततु नही बीनै ॥ निरमलु निराहारु निहकेवलु ॥ सूचै साचे ना लागै मलु
 ॥ ३ ॥ जह देखउ तह एको एका ॥ होरि जीअ उपाए वेको वेका ॥ फलोहार कीए फलु जाइ ॥ रस कस खाए
 सादु गवाइ ॥ कूडै लालचि लपटै लपटाइ ॥ छूटै गुरमुखि साचु कमाइ ॥ ४ ॥ दुआदसि मुद्रा मनु
 अउधूता ॥ अहिनिसि जागहि कबहि न सूता ॥ जागतु जागि रहै लिव लाइ ॥ गुर परचै तिसु कालु
 न खाइ ॥ अतीत भए मारे बैराई ॥ प्रणवति नानक तह लिव लाई ॥ ५ ॥ दुआदसी दइआ दानु
 करि जाणै ॥ बाहरि जातो भीतरि आणै ॥ बरती बरत रहै निहकाम ॥ अजपा जापु जपै मुखि नाम ॥ तीनि
 भवण महि एको जाणै ॥ सभि सुचि संजम साचु पछाणै ॥ ६ ॥ तेरसि तरवर समुद कनारै ॥ अंमृतु
 मूलु सिखरि लिव तारै ॥ डर डरि मरै न बूडै कोइ ॥ निडरु बूडि मरै पति खोइ ॥ डर महि घरु घर
 महि डरु जाणै ॥ तखति निवासु सचु मनि भाणै ॥ ७ ॥ चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ राजस तामस
 सत काल समावै ॥ ससीअर कै घरि सूरु समावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥ चउदसि भवन
 पाताल समाए ॥ खंड ब्रह्मंड रहिआ लिव लाए ॥ ८ ॥ अमावसिआ चंदु गुपतु गैणारि ॥ बूझहु
 गिआनी सबदु बीचारि ॥ ससीअरु गगनि जोति तिहु लोई ॥ करि करि वेखै करता सोई ॥ गुर ते दीसै
 सो तिस ही माहि ॥ मनमुखि भूले आवहि जाहि ॥ ९ ॥ घरु दरु थापि थिरु थानि सुहावै ॥ आपु
 पछाणै जा सतिगुरु पावै ॥ जह आसा तह बिनसि बिनासा ॥ फूटै खपरु दुबिधा मनसा ॥ ममता जाल
 ते रहै उदासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥ १० ॥ १ ॥

बिलावलु महला ੩ वार सत घरु ੧੦

੧੭੯ सतिगुर प्रसादि ॥

आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥ आपे वरतै अवरु न कोई ॥ ओति पोति जगु रहिआ परोई ॥ आपे करता करै सु होई ॥ नामि रते सदा सुखु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥੧॥ हिरदै जपनी जपउ गुणतासा ॥ हरि अगम अगोचरु अपरंपर सुआमी जन पगि लगि धिआवउ होइ दासनि दासा ॥੨॥ रहाउ ॥ सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥ तिस की कीमति कही न जाइ ॥ आखि आखि रहे सभि लिव लाइ ॥ जिसु देवै तिसु पलै पाइ ॥ अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥੨॥ मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ गुर कै सबदि दरु घरु सूझै ॥ प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥ हउमै ममता सबदि जलाइ ॥੩॥ बुधवारि आपे बुधि सारु ॥ गुरमुखि करणी सबटु बीचारु ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ हरि गुण गावै हउमै मलु खोइ ॥ दरि सचै सद सोभा पाए ॥ नामि रते गुर सबदि सुहाए ॥੪॥ लाहा नामु पाए गुर दुआरि ॥ आपे देवै देवणहारु ॥ जो देवै तिस कउ बलि जाईਐ ॥ गुर परसादी आਪु गवाईਐ ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥੫॥ वीरवारि वीर भरमि भुलाए ॥ प्रेत भूत सभि ढूजै लाए ॥ आपि उपाए करि वेखै वेका ॥ सभना करते तेरी टेका ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥੬॥ सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥ आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ गुरमुखि होवै सु करै बीचारु ॥ सचु संजमु करणी है कर ॥ वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥ बिनु बूझे सभु भाउ है ढूजा ॥੭॥ छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥ हउमै मेरा भरमै संसारु ॥ मनमुखु अंधा ढूजै भाइ ॥ जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥ गुर परसादी सदा सुखु पाए ॥ सचु करणी साचि लिव लाए ॥੮॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ हउमै मारि सचि लिव लागी ॥ तेरै रंगि राते सहजि सुभाइ

॥ ਤੂ ਸੁਖਦਾਤਾ ਲੈਹਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਏਕਸ ਤੇ ਦ੍ਰਿਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਾਝੈ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥੬॥ ਪੰਦਰਾ ਥਿਤਾਂ
 ਤੈ ਸਤ ਵਾਰ ॥ ਮਾਹਾ ਰੁਤੀ ਆਵਹਿ ਵਾਰ ਵਾਰ ॥ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣ ਤਿਵੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਕੀਆ ਕਰਤਾਰਿ
 ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਸਾਚੁ ਰਹਿਆ ਕਲ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਾਝੈ ਕੋ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥੧੦॥੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ
 ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਆਪੇ ਸੂਸਟਿ ਸਾਜੇ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਪਾਜੇ ॥ ਦ੍ਰਿਜੈ ਭਾਇ ਪਰਧਾਂਚਿ ਲਾਗੇ
 ॥ ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ਮਰਹਿ ਅਭਾਗੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭੇਟਿਐ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥ ਪਰਧਾਂਚੁ ਚੂਕੈ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਜਾ ਕੈ
 ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ॥ ਤਾ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੂਸਟਿ ਉਪਾਇ ਆਪੇ ਸਭੁ ਵੇਖੈ ॥
 ਕੋਇ ਨ ਮੇਟੈ ਤੈਰੈ ਲੇਖੈ ॥ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਜੇ ਕੋ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਆਵੈ ਜਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਸੋ ਜਨੁ ਬ੍ਰਾਝੈ
 ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਤਾ ਦਰੁ ਸ੍ਰੂਝੈ ॥੨॥ ਏਕਸੁ ਤੇ ਸਭੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ਹੂਆ ॥ ਏਕੋ ਵਰਤੈ ਅਵਰੁ ਨ ਬੀਆ ॥ ਦ੍ਰਿਜੇ ਤੇ ਜੇ ਏਕੋ
 ਜਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਦਰਿ ਨੀਸਾਣੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਤਾ ਏਕੋ ਪਾਏ ॥ ਵਿਚਹੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥੩॥
 ਜਿਸ ਦਾ ਸਾਹਿਬੁ ਡਾਢਾ ਹੋਇ ॥ ਤਿਸ ਨੋ ਮਾਰਿ ਨ ਸਾਕੈ ਕੋਇ ॥ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਸੇਵਕੁ ਰਹੈ ਸਰਣਾਈ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ
 ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਤਿਸ ਤੇ ਊਪਰਿ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਕਉਣੁ ਡੈ ਡੁ ਕਿਸ ਕਾ ਹੋਇ ॥੪॥ ਗੁਰਮਤੀ ਸਾਁਤਿ ਵਸੈ
 ਸਰੀਰ ॥ ਸਬਦੁ ਚੀਨਿ ਫਿਰਿ ਲਗੈ ਨ ਪੀਰ ॥ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ਨਾ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਨਾਮੇ ਰਾਤੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥
 ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਖੈ ਹਫ਼ੂਰਿ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੫॥ ਇਕਿ ਸੇਵਕ ਇਕਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥
 ਆਪੇ ਕਰੇ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥ ਏਕੋ ਵਰਤੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਮਨਿ ਰੋਸੁ ਕੀਜੈ ਜੇ ਦ੍ਰਿਜਾ ਹੋਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ
 ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ॥ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਾਚੇ ਵੀਚਾਰੀ ॥੬॥ ਥਿਤੀ ਵਾਰ ਸਭਿ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਤਾ ਫਲੁ
 ਪਾਏ ॥ ਥਿਤੀ ਵਾਰ ਸਭਿ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨਿਹਚਲੁ ਸਦਾ ਸਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਥਿਤੀ ਵਾਰ ਤਾ ਜਾ ਸਚਿ
 ਰਾਤੇ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭਿ ਭਰਮਹਿ ਕਾਚੇ ॥੭॥ ਮਨਮੁਖ ਮਰਹਿ ਮਰਿ ਬਿਗਤੀ ਜਾਹਿ ॥ ਏਕੁ ਨ ਚੇਤਹਿ ਦ੍ਰਿਜੈ
 ਲੋਭਾਹਿ ॥ ਅਚੇਤ ਪਿੰਡੀ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਕਿਤ ਪਾਏ ਪਾਰੁ ॥ ਆਪਿ ਤਥਾਏ ਤਥਾਵਣਹਾਰੁ ॥
 ਆਪੇ ਕੀਤੋਨੁ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰੁ ॥੮॥ ਬਹੁਤੇ ਭੇਖ ਕਰਹਿ ਭੇਖਧਾਰੀ ॥ ਭਵਿ ਭਵਿ ਭਰਮਹਿ ਕਾਚੀ ਸਾਰੀ ॥ ਔਥੈ

ਸੁਖੁ ਨ ਆਗੈ ਹੋਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੁਏ ਅਪਣਾ ਜਨਮੁ ਖੋਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਘਰ ਹੀ ਅੰਦਰਿ
ਸਚੁ ਮਹਲੁ ਪਾਏ ॥੬॥ ਆਪੇ ਪੂਰਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥ ਏਹਿ ਥਿਤੀ ਵਾਰ ਦ੍ਰਿਜਾ ਦੋਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝਹੁ ਅੰਧੁ
ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਥਿਤੀ ਵਾਰ ਸੇਵਹਿ ਸੁਗਧ ਗਵਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜ੍ਹੈ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥ ਇਕਤੁ ਨਾਮਿ ਸਦਾ
ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੧੦॥੨॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ ਦੱਖਣੀ

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੁੰਧ ਨਵੇਲਡੀਆ ਗੋਡਿਲਿ ਆਈ ਰਾਮ ॥ ਮਟੁਕੀ ਢਾਰਿ ਧਰੀ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ਰਾਮ ॥ ਲਿਵ ਲਾਇ ਹਰਿ ਸਿਉ
ਰਹੀ ਗੋਡਿਲਿ ਸਹਜਿ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੀਆ ॥ ਕਰ ਜੋਡਿ ਗੁਰ ਪਹਿ ਕਰਿ ਬਿਨਤੀ ਮਿਲਹੁ ਸਾਚਿ ਪਿਆਰੀਆ ॥
ਧਨ ਭਾਇ ਭਗਤੀ ਦੇਖਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧੁ ਨਿਵਾਰਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਮੁੰਧ ਨਵੇਲ ਸੁਨਦਰਿ ਦੇਖਿ ਪਿਰੁ ਸਾਧਾਰਿਆ
॥੧॥ ਸਚਿ ਨਵੇਲਡੀਏ ਜੋਬਨਿ ਬਾਲੀ ਰਾਮ ॥ ਆਤ ਨ ਜਾਤ ਕਹੀ ਅਪਨੇ ਸਹ ਨਾਲੀ ਰਾਮ ॥ ਨਾਹ ਅਪਨੇ
ਸੰਗਿ ਦਾਸੀ ਮੈ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਕੀ ਭਾਵਏ ॥ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ ਅਕਥੁ ਕਥੀਐ ਸਹਜਿ ਪ੍ਰਭ ਗੁਣ ਗਾਵਏ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ
ਰਸਾਲ ਰਸੀਆ ਰਖੈ ਸਾਚਿ ਪਿਆਰੀਆ ॥ ਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਦੀਆ ਦਾਨੁ ਕੀਆ ਨਾਨਕਾ ਵੀਚਾਰੀਆ ॥੨॥ ਸੀਧਰ
ਮੋਹਿਅਡੀ ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਸੂਤੀ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਚਲੋ ਸਾਚਿ ਸੰਗੂਤੀ ਰਾਮ ॥ ਧਨ ਸਾਚਿ ਸੰਗੂਤੀ ਹਰਿ ਸੰਗਿ
ਸੂਤੀ ਸੰਗਿ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀਆ ॥ ਇਕ ਭਾਇ ਇਕ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਮ ਮੇਲੀਆ ॥ ਦਿਨੁ ਰੈਣ
ਘੜੀ ਨ ਚਸਾ ਵਿਸਰੈ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਨਿਰੰਜਨੋ ॥ ਸਬਦਿ ਜੋਤਿ ਜਗਾਇ ਦੀਪਕੁ ਨਾਨਕਾ ਭਤ ਭੰਜਨੋ ॥੩॥
ਜੋਤਿ ਸਬਾਇਡੀਏ ਤ੃ਭਵਣ ਸਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਖਿ ਰਹਿਆ ਅਲਖ ਅਪਾਰੇ ਰਾਮ ॥ ਅਲਖ ਅਪਾਰ
ਅਪਾਰੁ ਸਾਚਾ ਆਪੁ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਈਐ ॥ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਲੋਭੁ ਜਾਲਹੁ ਸਬਦਿ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਈਐ ॥ ਦਰਿ ਜਾਇ
ਦਰਸਨੁ ਕਰੀ ਭਾਣੈ ਤਾਰਿ ਤਾਰਣਹਾਰਿਆ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਚਾਖਿ ਤ੃ਪਤੀ ਨਾਨਕਾ ਤਰ ਧਾਰਿਆ
॥੪॥੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮੈ ਮਨਿ ਚਾਤ ਘਣਾ ਸਾਚਿ ਵਿਗਾਸੀ ਰਾਮ ॥ ਮੋਹੀ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਰੇ ਪ੍ਰਭਿ
ਅਵਿਨਾਸੀ ਰਾਮ ॥ ਅਵਿਗਤੋ ਹਰਿ ਨਾਥੁ ਨਾਥਹ ਤਿਸੈ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ॥ ਕਿਰਪਾਲੁ ਸਦਾ ਦਿਆਲੁ ਦਾਤਾ

ਜੀਆ ਅਂਦਰਿ ਤ੍ਰਾਂ ਜੀਐ ॥ ਮੈ ਅਕਰੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਧਿਆਨੁ ਪ੍ਰੋਜਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਤਰਿ ਵਸਿ ਰਹੇ ॥ ਭੇਖੁ ਭਵਨੀ
ਹਠੁ ਨ ਜਾਨਾ ਨਾਨਕਾ ਸਚੁ ਗਹਿ ਰਹੇ ॥੧॥ ਮਿਨਡੀ ਰੈਣਿ ਭਲੀ ਦਿਨਸ ਸੁਹਾਏ ਰਾਮ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਸੂਤਡੀਏ
ਪਿਰਮੁ ਜਗਾਏ ਰਾਮ ॥ ਨਵ ਹਾਣਿ ਨਵ ਧਨ ਸਬਦਿ ਜਾਗੀ ਆਪਣੇ ਪਿਰ ਭਾਣੀਆ ॥ ਤਜਿ ਕੂਡੁ ਕਪਟੁ ਸੁਭਾਉ
ਦ੍ਰੂਜਾ ਚਾਕਰੀ ਲੋਕਾਣੀਆ ॥ ਮੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਕਾ ਹਾਰੁ ਕੱਠੇ ਸਾਚ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣਿਆ ॥ ਕਰ ਜੋਡਿ ਨਾਨਕੁ ਸਾਚੁ
ਮਾਗੈ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਤੁਧੁ ਭਾਣਿਆ ॥੨॥ ਜਾਗੁ ਸਲੋਨਡੀਏ ਬੋਲੈ ਗੁਰਬਾਣੀ ਰਾਮ ॥ ਜਿਨਿ ਸੁਣਿ ਮੰਨਿਅਡੀ
ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ਰਾਮ ॥ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ਪਟੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝਾਏ ॥ ਓਹੁ ਸਬਦਿ ਸਮਾਏ
ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਤ੃ਭਵਣ ਸੋਝੀ ਸੂਝਾਏ ॥ ਰਹੈ ਅਤੀਤੁ ਅਪਰੰਪਰਿ ਰਾਤਾ ਸਾਚੁ ਮਨਿ ਗੁਣ ਸਾਰਿਆ ॥ ਓਹੁ ਪੂਰਿ
ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਠਾਈ ਨਾਨਕਾ ਤਰਿ ਧਾਰਿਆ ॥੩॥ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਇਡੀਏ ਭਗਤਿ ਸਨੇਹੀ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮਤਿ
ਮਨਿ ਰਹਸੀ ਸੀਝਸਿ ਦੇਹੀ ਰਾਮ ॥ ਮਨੁ ਮਾਰਿ ਰੀझੈ ਸਬਦਿ ਸੀਝੈ ਤੈ ਲੋਕ ਨਾਥੁ ਪਛਾਣਏ ॥ ਮਨੁ ਡੀਗਿ ਡੋਲਿ ਨ
ਯਾਇ ਕਤ ਹੀ ਆਪਣਾ ਪਿਲੁ ਜਾਣਏ ॥ ਮੈ ਆਧਾਰੁ ਤੇਰਾ ਤ੍ਰਾਂ ਖਸਮੁ ਮੇਰਾ ਮੈ ਤਾਣੁ ਤਕੀਆ ਤੇਰਓ ॥ ਸਾਚਿ ਸੂਚਾ
ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਝਗਰੁ ਨਿਕੇਰਓ ॥੪॥੨॥

ਛਤ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ਮੰਗਲ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਜੈ ਆਇਆ ਮਨੁ ਸੁਖਿ ਸਮਾਣਾ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਰੰਗ ਰਲੀਆ ਮਾਣਾ
ਰਾਮ ॥ ਵਡਭਾਗੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਹਰਿ ਮਸਤਕਿ ਮਾਣਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿ ਸੋਹਾਗੁ ਹੈ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਭਾਣਾ
ਰਾਮ ॥੧॥ ਨਿੰਮਾਣਿਆ ਹਰਿ ਮਾਣੁ ਹੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿ ਆਪੈ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਨਿਤ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਜਾਪੈ ਰਾਮ ॥ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੈ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਹਰਿ ਰਾਪੈ ਰਾਮ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਇਆ ਹਰਿ
ਰਸਿ ਹਰਿ ਧਾਪੈ ਰਾਮ ॥੨॥ ਮਾਣਸ ਜਨਮਿ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਰਾਵਣ ਕੇਰਾ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੁ ਸੋਹਾਗਣੀ
ਰੰਗੁ ਹੋਇ ਘਣੇਰਾ ਰਾਮ ॥ ਜਿਨ ਮਾਣਸ ਜਨਮਿ ਨ ਪਾਇਆ ਤਿਨ੍ ਭਾਗੁ ਮੰਦੇਰਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਰਾਖੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕੁ ਜਨੁ ਤੇਰਾ ਰਾਮ ॥੩॥ ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅਗਮੁ ਦੂਝਾਇਆ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰੰਗਿ ਭੀਨਾ ਰਾਮ ॥

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲੀਨਾ ਰਾਮ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਜੀਵਦੇ ਜਿਤ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮੀਨਾ
ਰਾਮ ॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨਾ ਰਾਮ ॥੪॥੧॥੩॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੪ ਸਲੋਕੁ ॥
ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਜਣੁ ਲੋਡਿ ਲਹੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਵਡਭਾਗੁ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਵੇਖਾਲਿਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੁ ॥੧॥ ਛੰਤ ॥
ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਵਣਿ ਆਈਆ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਝਾਗੇ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਆਪੁ ਮਿਟਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੇ
ਰਾਮ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੀ ਜਾਗੇ ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਪੂਰੈ ਵਡਭਾਗੇ
ਰਾਮ ॥੧॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਵਧਾਈ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਲਿਵ ਲਾਈ ਰਾਮ ॥ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਕਟਿਆ ਜੋਤਿ ਪਰਗਟਿਆਈ ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਹੈ
ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ਰਾਮ ॥੨॥ ਧਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਪਿਆਰੈ ਰਾਵੀਆ ਜਾਂ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਈ ਰਾਮ ॥ ਅਖੀ ਪ੍ਰੇਮ
ਕਸਾਈਆ ਜਿਤ ਬਿਲਕ ਮਸਾਈ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਮੇਲਿਆ ਹਰਿ ਰਸਿ ਆਧਾਈ ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ
ਵਿਗਾਸਿਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ਰਾਮ ॥੩॥ ਹਮ ਸੂਰਖ ਸੁਗਧ ਮਿਲਾਇਆ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਰਾਮ ॥ ਧਨੁ
ਧਨੁ ਗੁਰੂ ਸਾਬਾਸਿ ਹੈ ਜਿਨਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ਰਾਮ ॥ ਜਿਨ੍ ਵਡਭਾਗੀਆ ਵਡਭਾਗੁ ਹੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤੁਰ ਧਾਰੀ ਰਾਮ ॥
ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂ ਨਾਮੇ ਬਲਿਹਾਰੀ ਰਾਮ ॥੪॥੨॥੪॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੰਗਲ ਸਾਜੁ ਭਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਗਾਇਆ ਰਾਮ ॥ ਅਬਿਨਾਸੀ ਕਰੁ ਸੁਣਿਆ ਮਨਿ ਉਪਜਿਆ ਚਾਇਆ ਰਾਮ ॥
ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਗੈ ਕਡੈ ਭਾਗੈ ਕਬ ਮਿਲੀਐ ਪ੍ਰੰਨ ਪਤੇ ॥ ਸਹਜੇ ਸਮਾਈਐ ਗੋਵਿੰਦੁ ਪਾਈਐ ਦੇਹੁ ਸਖੀਏ ਮੋਹਿ
ਮਤੇ ॥ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਠਾਢੀ ਕਰਤ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਭੁ ਕਵਨ ਜੁਗਤੀ ਪਾਇਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਲੈਹੁ
ਮੋਹਿ ਲਡਿ ਲਾਇਆ ॥੧॥ ਭਿਆ ਸਮਾਹੜਾ ਹਰਿ ਰਤਨੁ ਵਿਸਾਹਾ ਰਾਮ ॥ ਖੋਜੀ ਖੋਜਿ ਲਧਾ ਹਰਿ ਸੰਤਨ ਪਾਹਾ
ਰਾਮ ॥ ਮਿਲੇ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਦਿਆ ਧਾਰੇ ਕਥਹਿ ਅਕਥ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਇਕ ਚਿਤਿ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇ ਸੁਆਮੀ
ਲਾਇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਕਰ ਜੋਡਿ ਪ੍ਰਭ ਪਹਿ ਕਰਿ ਬਿਨ੍ਤੀ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਜਸੁ ਲਾਹਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਤੇਰਾ

मेरा प्रभु अगम अथाहा ॥२॥ साहा अटलु गणिआ पूरन संजोगो राम ॥ सुखह समूह भड़िआ गड़िआ
 विजोगो राम ॥ मिलि संत आए प्रभ धिआए बणे अचरज जाजीआँ ॥ मिलि डिकत्र होए सहजि ढोए मनि
 प्रीति उपजी माजीआ ॥ मिलि जोति जोती ओति पोती हरि नामु सभि रस भोगो ॥ बिनवंति नानक सभ संति
 मेली प्रभु करण कारण जोगो ॥३॥ भवनु सुहावड़ा धरति सभागी राम ॥ प्रभु हरि आड़िअड़ा गुर चरणी
 लागी राम ॥ गुर चरण लागी सहजि जागी सगल इछा पुन्नीआ ॥ मेरी आस पूरी संत धूरी हरि मिले
 कंत विछुंनिआ ॥ आनन्द अनदिनु वजहि वाजे अह्वा मति मन की तिआगी ॥ बिनवंति नानक सरणि
 सुआमी संतसंगि लिव लागी ॥४॥१॥ बिलावलु महला ५ ॥ भाग सुलखणा हरि कंतु हमारा राम ॥
 अनहद बाजित्रा तिसु धुनि दरबारा राम ॥ आनन्द अनदिनु वजहि वाजे दिनसु रैणि उमाहा ॥ तह
 रोग सोग न दूखु बिआपै जनम मरणु न ताहा ॥ रिधि सिधि सुधा रसु अंमृतु भगति भरे भंडारा ॥
 बिनवंति नानक बलिहारि वंजा पारब्रहम प्रान अधारा ॥१॥ सुणि सखीअ सहेलड़ीहो मिलि मंगलु
 गावह राम ॥ मनि तनि प्रेमु करे तिसु प्रभ कउ रावह राम ॥ करि प्रेमु रावह तिसै भावह इक निमख
 पलक न तिआगीअै ॥ गहि कंठि लाईअै नह लजाईअै चरन रज मनु पागीअै ॥ भगति ठगउरी पाइ
 मोहह अनत कतहू न धावह ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साजन अमर पदवी पावह ॥२॥ बिसमन
 बिसम भई पेखि गुण अबिनासी राम ॥ करु गहि भुजा गही कटि जम की फासी राम ॥ गहि भुजा
 लीनी दासि कीनी अंकुरि उदोतु जणाइआ ॥ मलन मोह बिकार नाठे दिवस निरमल आड़िआ ॥
 दृसटि धारी मनि पिआरी महा दुरमति नासी ॥ बिनवंति नानक भई निरमल प्रभ मिले अबिनासी
 ॥३॥ सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥ जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥ ब्रहमु दीसै
 ब्रहमु सुणीअै एकु एकु वखाणीअै ॥ आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीअै ॥ आपि करता
 आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥ बिनवंति नानक सई जाणहि जिनी हरि रसु पीआ ॥४॥२॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਛਂਤ

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਖੀ ਆਤ ਸਖੀ ਵਸਿ ਆਤ ਸਖੀ ਅਸੀ ਪਿਰ ਕਾ ਮੰਗਲੁ ਗਾਵਹ ॥ ਤਜਿ ਮਾਨੁ ਸਖੀ ਤਜਿ ਮਾਨੁ ਸਖੀ ਮਤੁ
 ਆਪਣੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਾਵਹ ॥ ਤਜਿ ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਬਿਕਾਰੁ ਦ੍ਰੂਜਾ ਸੇਵਿ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੋ ॥ ਲਗੁ ਚਰਣ ਸਰਣ ਦਿਆਲ
 ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਗਲ ਦੁਰਤ ਬਿਖੰਡਨੋ ॥ ਹੋਇ ਦਾਸ ਦਾਸੀ ਤਜਿ ਉਦਾਸੀ ਬਹੁਡਿ ਬਿਧੀ ਨ ਧਾਵਾ ॥ ਨਾਨਕੁ ਪਿਇਅੰਪੈ
 ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਤਾਮਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਵਾ ॥੧॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪ੍ਰਤ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੈ ਅੰਧੁਲੇ ਟੋਹਨੀ ॥ ਓਹ ਜੋਹੈ ਬਹੁ ਪਰਕਾਰ
 ਸੁੰਦਰਿ ਮੋਹਨੀ ॥ ਮੋਹਨੀ ਮਹਾ ਬਚਿਤ੍ਰ ਚੰਚਲਿ ਅਨਿਕ ਭਾਵ ਦਿਖਾਵਏ ॥ ਹੋਇ ਢੀਠ ਮੀਠੀ ਮਨਹਿ ਲਾਗੈ ਨਾਮੁ
 ਲੈਣ ਨ ਆਵਏ ॥ ਗ੍ਰਹ ਬਨਹਿ ਤੀਰੈ ਕਰਤ ਪ੍ਰਯਾ ਬਾਟ ਘਾਟੈ ਜੋਹਨੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਪਿਇਅੰਪੈ ਦਿਆ ਧਾਰਹੁ ਮੈ
 ਨਾਮੁ ਅੰਧੁਲੇ ਟੋਹਨੀ ॥੨॥ ਮੋਹਿ ਅਨਾਥ ਪ੍ਰਤ ਨਾਥ ਜਿਤ ਜਾਨਹੁ ਤਿਤ ਰਖਹੁ ॥ ਚਤੁਰਾਈ ਮੋਹਿ ਨਾਹਿ ਰੀਝਾਵਤ
 ਕਹਿ ਸੁਖਹੁ ॥ ਨਹ ਚਤੁਰਿ ਸੁਧਾਰਿ ਸੁਜਾਨ ਬੇਤੀ ਮੋਹਿ ਨਿਗੁਨਿ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ॥ ਨਹ ਰੂਪ ਧੂਪ ਨ ਨੈਣ ਬੰਕੇ ਜਹ ਭਾਵੈ
 ਤਹ ਰਖੁ ਤੁਹੀ ॥ ਜੈ ਜੈ ਜਿਇਅੰਪਹਿ ਸਗਲ ਜਾ ਕਤ ਕਰਣਾਪਤਿ ਗਤਿ ਕਿਨਿ ਲਖਹੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਪਿਇਅੰਪੈ ਸੇਵ
 ਸੇਵਕੁ ਜਿਤ ਜਾਨਹੁ ਤਿਤ ਮੋਹਿ ਰਖਹੁ ॥੩॥ ਮੋਹਿ ਮਛੁਲੀ ਤੁਮ ਨੀਰ ਤੁੜ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਸਰੈ ॥ ਮੋਹਿ ਚਾਤੂਕ
 ਤੁਮ ਕੁੰਦ ਤ੃ਪਤਤ ਮੁਖਿ ਪਰੈ ॥ ਮੁਖਿ ਪਰੈ ਹਰੈ ਪਿਆਸ ਮੇਰੀ ਜੀਅ ਹੀਆ ਪ੍ਰਾਨਪਤੇ ॥ ਲਾਡਿਲੇ ਲਾਡ ਲਡਾਇ
 ਸਭ ਮਹਿ ਮਿਲੁ ਹਮਾਰੀ ਹੋਇ ਗਤੇ ॥ ਚੀਤਿ ਚਿਤਕਤ ਮਿਟੁ ਅੰਧਾਰੇ ਜਿਤ ਆਸ ਚਕਵੀ ਦਿਨੁ ਚਰੈ ॥ ਨਾਨਕੁ
 ਪਿਇਅੰਪੈ ਪ੍ਰਤ ਸੰਗ ਮੇਲੀ ਮਛੁਲੀ ਨੀਰੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ॥੪॥ ਧਨਿ ਧੰਨਿ ਹਮਾਰੇ ਭਾਗ ਘਰਿ ਆਇਆ ਪਿਲੁ ਮੇਰਾ
 ॥ ਸੋਹੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰ ਸਗਲਾ ਬਨੁ ਹਰਾ ॥ ਹਰ ਹਰਾ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖਹ ਗਾਮੀ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਰਸੁ ਘਣਾ ॥ ਨਵਲ
 ਨਵਤਨ ਨਾਹੁ ਬਾਲਾ ਕਵਨ ਰਸਨਾ ਗੁਨ ਭਣਾ ॥ ਮੇਰੀ ਸੇਜ ਸੋਹੀ ਦੇਖਿ ਮੋਹੀ ਸਗਲ ਸਹਸਾ ਦੁਖੁ ਹਰਾ ॥ ਨਾਨਕੁ
 ਪਿਇਅੰਪੈ ਮੇਰੀ ਆਸ ਪੂਰੀ ਮਿਲੇ ਸੁਆਮੀ ਅਪਰੰਪਰਾ ॥੫॥੧॥੩॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਛਂਤ ਮੰਗਲ

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਸੁੰਦਰ ਸਾਁਤਿ

ਦਿੱਖਾਲ ਪ੍ਰਭ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਨਿਧਿ ਪੀਤ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰਭ ਭੇਟਿਐ ਨਾਨਕ ਸੁਖੀ ਹੋਤ ਇਹੁ ਜੀਤ ॥੧॥ ਛੰਤ ॥
 ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਈਐ ਜਬ ਹੋਵੈ ਭਾਗੋ ਰਾਮ ॥ ਮਾਨਨਿ ਮਾਨੁ ਵਜਾਈਐ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਲਾਗੋ ਰਾਮ ॥ ਛੋਡਿ
 ਸਿਆਨਪ ਚਾਤੁਰੀ ਦੁਰਮਤਿ ਬੁਧਿ ਤਿਆਗੋ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਪਤ ਸਰਣਾਈ ਰਾਮ ਰਾਇ ਥਿਰੁ ਹੋਇ ਸੁਹਾਗੋ ਰਾਮ
 ॥੧॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਤਜਿ ਕਤ ਲਾਗੀਐ ਜਿਸੁ ਬਿਨੁ ਮਰਿ ਜਾਈਐ ਰਾਮ ॥ ਲਾਜ ਨ ਆਵੈ ਅਗਿਆਨ ਮਤੀ ਦੁਰਜਨ
 ਬਿਰਮਾਈਐ ਰਾਮ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪ੍ਰਭੁ ਤਿਆਗਿ ਕਰੇ ਕਹੁ ਕਤ ਠਹਰਾਈਐ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤਿ ਭਾਉ
 ਕਰਿ ਦਿੱਖਾਲ ਕੀ ਜੀਵਨ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ਰਾਮ ॥੨॥ ਸ੍ਰੀ ਗੋਪਾਲੁ ਨ ਉਚਰਹਿ ਬਲਿ ਗੜ੍ਹੇ ਦੁਹਚਾਰਣਿ
 ਰਸਨਾ ਰਾਮ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਭਗਤਿ ਬਛਲੁ ਨਹ ਸੇਵਹੀ ਕਾਇਆ ਕਾਕ ਗ੍ਰਸਨਾ ਰਾਮ ॥ ਭਰਮਿ ਮੋਹੀ ਦੂਖ ਨ ਜਾਣਹੀ
 ਕੋਟਿ ਜੋਨੀ ਬਸਨਾ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਅਵਰੁ ਜਿ ਚਾਹਨਾ ਬਿਸਟਾ ਕ੃ਮ ਭਸਮਾ ਰਾਮ ॥੩॥ ਲਾਇ
 ਬਿਰਹੁ ਭਗਵਤਿ ਸੰਗੇ ਹੋਇ ਮਿਲੁ ਬੈਰਾਗਨਿ ਰਾਮ ॥ ਚੰਦਨ ਚੀਰ ਸੁਗੰਧ ਰਸਾ ਹਤਮੈ ਬਿਖੁ ਤਿਆਗਨਿ ਰਾਮ ॥
 ਈਤ ਊਤ ਨਹ ਢੋਲੀਐ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਜਾਗਨਿ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਆਪਣਾ ਸਾ ਅਟਲ ਸੁਹਾਗਨਿ
 ਰਾਮ ॥੪॥੧॥੪॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਖੋਜਹੁ ਵਡਭਾਗੀਹੋ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗੇ ਰਾਮ ॥ ਗੁਨ ਗੋਵਿਦ
 ਸਦ ਗਈਅਹਿ ਪਾਰਕਹਮ ਕੈ ਰੰਗੇ ਰਾਮ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦ ਹੀ ਸੇਵੀਐ ਪਾਈਅਹਿ ਫਲ ਮੰਗੇ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ
 ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਪਿ ਅਨਤ ਤਰੰਗੇ ਰਾਮ ॥੧॥ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਪ੍ਰਭੂ ਨ ਵੀਸਰੈ ਜਿਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੀਨਾ ਰਾਮ ॥
 ਵਡਭਾਗੀ ਮੇਲਾਵੜਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਿਲੁ ਚੀਨਾ ਰਾਮ ॥ ਬਾਹ ਪਕਿਡਿ ਤਮ ਤੇ ਕਾਫਿਆ ਕਰਿ ਅਪੁਨਾ ਲੀਨਾ
 ਰਾਮ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਨਾਨਕ ਜੀਵੈ ਸੀਤਲੁ ਮਨੁ ਸੀਨਾ ਰਾਮ ॥੨॥ ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਕਹਿ ਸਕਤ ਪ੍ਰਭ
 ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਰਾਮ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਰਾਇਣੈ ਭਏ ਪਾਰਗਰਾਮੀ ਰਾਮ ॥ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਗੋਵਿੰਦ ਕੇ ਸਭ ਇਛ
 ਪੁਜਾਮੀ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਉਧਰੇ ਜਪਿ ਹਰੇ ਸਭਹੂ ਕਾ ਸੁਆਮੀ ਰਾਮ ॥੩॥ ਰਸ ਪਿੰਨਿਅਡੇ ਅਪੁਨੇ ਰਾਮ ਸੰਗੇ ਸੇ
 ਲੋਇਣ ਨੀਕੇ ਰਾਮ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪੇਖਤ ਇਛਾ ਪੁਨੀਆ ਮਿਲਿ ਸਾਜਨ ਜੀ ਕੇ ਰਾਮ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ
 ਬਿਖਿਆ ਰਸ ਫੀਕੇ ਰਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਜਲੁ ਜਲਹਿ ਸਮਾਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮੀਕੇ ਰਾਮ ॥੪॥੨॥੫॥੬॥

बिलावलु की वार महला ४

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ हरि उतमु हरि प्रभु गाविआ करि नादु बिलावलु रागु ॥ उपदेसु गुरु सुणि मनिआ
धुरि मसतकि पूरा भागु ॥ सभ दिनसु रैणि गुण उचरै हरि हरि उरि लिव लागु ॥ सभु तनु मनु
हरिआ होइआ मनु खिडिआ हरिआ बागु ॥ अगिआनु अंधेरा मिटि गडिआ गुर चानणु गिआनु
चरागु ॥ जनु नानकु जीवै देखि हरि इक निमख घड़ी मुखि लागु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बिलावलु तब ही
कीजीअै जब मुखि होवै नामु ॥ राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥ राग नाद छोडि हरि
सेवीअै ता दरगह पाईअै मानु ॥ नानक गुरमुखि ब्रह्मु बीचारीअै चूकै मनि अभिमानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
तू हरि प्रभु आपि अगंमु है सभि तुधु उपाइआ ॥ तू आपे आपि वरतदा सभु जगतु सबाइआ ॥ तुधु
आपे ताड़ी लाईअै आपे गुण गाइआ ॥ हरि धिआवहु भगतहु दिनसु राति अंति लए छडाइआ ॥
जिनि सेविआ तिनि सुखु पाइआ हरि नामि समाइआ ॥ १ ॥ सलोक मः ३ ॥ दूजै भाइ बिलावलु न
होवई मनमुखि थाइ न पाइ ॥ पाखंडि भगति न होवई पारब्रह्मु न पाइआ जाइ ॥ मनहठि करम
कमावणे थाइ न कोई पाइ ॥ नानक गुरमुखि आपु बीचारीअै विचहु आपु गवाइ ॥ आपे आपि
पारब्रह्मु है पारब्रह्मु वसिआ मनि आइ ॥ जंमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥ २ ॥ मः ३ ॥
बिलावलु करिहु तुम् पिआरिहो एकसु सित लिव लाइ ॥ जनम मरण दुखु कटीअै सचे रहै समाइ ॥
सदा बिलावलु अन्नदु है जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सतसंगती बहि भाउ करि सदा हरि के गुण गाइ
॥ नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभना जीआ विचि हरि आपि सो
भगता का मितु हरि ॥ सभु कोई हरि कै वसि भगता कै अन्नदु घरि ॥ हरि भगता का मेली सरबत सउ
निसुल जन टंग धरि ॥ हरि सभना का है खसमु सो भगत जन चिति करि ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै सभ

ਝਖਿ ਝਖਿ ਪਵੈ ਝਾਡਿ ॥੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬਿੰਦਹਿ ਤੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾ ਜੇ ਚਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥ ਜਿਨ ਕੈ
 ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਗਵਾਇ ॥ ਗੁਣ ਰਖਹਿ ਗੁਣ ਸੱਗ੍ਰਹਹਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ
 ਵਿਰਲੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬਿੰਦਹਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨੁ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਹਰਿ ਸਚਾ ਸੇ ਨਾਮਿ ਰਹੇ
 ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਤੀਆ ਸਬਦਿ ਨ ਲਗੇ ਭਾਤ ॥ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਕਮਾਵਣਾ ਅਤਿ
 ਦੀਰਘੁ ਬਹੁ ਸੁਆਤ ॥ ਮਨਹਠਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ
 ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਨਾਮ ਧਨੁ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭ ਵਡਿਆਈਆ
 ਹਰਿ ਨਾਮ ਵਿਚਿ ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਈਐ ॥ ਜਿ ਵਸਤੁ ਮੰਗੀਐ ਸਾਈ ਪਾਈਐ ਜੇ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥
 ਗੁਹਜ ਗਲ ਜੀਅ ਕੀ ਕੀਚੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਸਿ ਤਾ ਸਰਬ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਦੇਇ ਸਭ ਭੁਖ
 ਲਹਿ ਜਾਈਐ ॥ ਜਿਸੁ ਪੂਰਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਖਾਲੀ
 ਕੋ ਨਹੀ ਮੈਰੈ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜੇਹਾ ਕੋ ਇਛੇ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕਾ
 ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹੈ ਸਭ ਤੂਸਨਾ ਭੁਖ ਗਵਾਏ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀ ਸੰਤੋਖੁ ਹੋਆ ਸਚੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਏ ॥ ਸਚੁ
 ਧਿਆਇ ਅਮਰਾ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਕਾਇ ॥ ਸਚੋ ਦਹ ਦਿਸਿ ਪਸਰਿਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
 ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਹੈ ਸੇ ਜਨ ਛਪਹਿ ਨ ਕਿਸੈ ਦੇ ਛਪਾਏ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ
 ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਮਾਨਸ ਤੇ ਦੇਵਤੇ ਭਾਏ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਜਿਸੁ ਦੇਇ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਗੁਰ ਕੈ
 ਸਬਦਿ ਸੁਚੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਨਾਮੁ ਵਡਿਆਈ ਦੇਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਨਾਵੈ
 ਕੀ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਵਰਧਾਈ ॥ ਸੇਵਕ ਸਿਖ ਸਭਿ ਵੇਖਿ ਵੇਖਿ ਜੀਵਨਿ ਓਨਾ ਅੰਦਰਿ ਹਿਰਦੈ
 ਭਾਈ ॥ ਨਿੰਦਕ ਦੁਸਟ ਵਡਿਆਈ ਵੇਖਿ ਨ ਸਕਨਿ ਓਨਾ ਪਰਾਇਆ ਭਲਾ ਨ ਸੁਖਾਈ ॥ ਕਿਆ ਹੋਵੈ ਕਿਸ ਹੀ
 ਕੀ ਝਖ ਮਾਰੀ ਜਾ ਸਚੇ ਸਿਤ ਬਣਿ ਆਈ ॥ ਜਿ ਗਲ ਕਰਤੇ ਭਾਵੈ ਸਾ ਨਿਤ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ਸਭ ਝਖਿ ਝਖਿ
 ਮਰੈ ਲੋਕਾਈ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਧਿਗੁ ਏਹ ਆਸਾ ਦ੍ਰਹਜੇ ਭਾਵ ਕੀ ਜੋ ਮੋਹਿ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਸੁਖੁ

ਪਲਰਿ ਤਿਆਗਿਆ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁਲੇ ਜਨਮਿ ਮਰਹਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਏ
 ॥ ਕਾਰਜ ਸਿਧਿ ਨ ਹੋਵਨੀ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਏ ॥ ਜਿਸੁ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਏ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਜਨ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਨਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਬਲਿ ਜਾਏ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ
 ਜਗਿ ਮੋਹਣੀ ਜਿਨਿ ਮੋਹਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਜਮ ਕੇ ਚੀਰੇ ਵਿਚਿ ਹੈ ਜੇਤਾ ਸਭੁ ਆਕਾਰੁ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੀ ਜਮੁ
 ਲਗਦਾ ਸੋ ਤਬਰੈ ਜਿਸੁ ਬਖਸੈ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਹੁ ਮਨੁ ਤਾਂ ਤਰੈ ਜਾ ਛੋਡੈ ਅਛਕਾਰੁ ॥ ਆਸਾ
 ਮਨਸਾ ਮਾਰੇ ਨਿਰਾਸੁ ਹੋਇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਥੈ ਜਾਈਐ ਜਗਤ ਮਹਿ ਤਿਥੈ ਹਰਿ ਸਾਈ ॥
 ਅਗੈ ਸਭੁ ਆਪੇ ਕਰਤਦਾ ਹਰਿ ਸਚਾ ਨਿਆਈ ॥ ਕੂਝਿਆਰਾ ਕੇ ਮੁਹ ਫਿਟਕੀਅਹਿ ਸਚੁ ਭਗਤਿ ਵਡਿਆਈ ॥ ਸਚੁ
 ਸਾਹਿਬੁ ਸਚਾ ਨਿਆਉ ਹੈ ਸਿਰਿ ਨਿੰਦਕ ਛਾਈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਅਰਾਧਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥੫॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਈਐ ਜੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬਖਸ ਕਰੇਇ ॥ ਓਪਾਵਾ ਸਿਰਿ ਓਪਾਉ ਹੈ ਨਾਉ
 ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਅੰਦਰੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਂਤਿ ਹੈ ਹਿਰਦੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਖਾਣਾ ਪੈਨ੍ਣਾ ਨਾਨਕ ਨਾਇ
 ਵਡਿਆਈ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਏ ਮਨ ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਸੁਣਿ ਪਾਇਹਿ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਵਸੈ
 ਹਤਮੈ ਜਾਇ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਤਨੇ ਪਾਤਿਸਾਹ
 ਸਾਹ ਰਾਜੇ ਖਾਨ ਤਮਰਾਵ ਸਿਕਦਾਰ ਹਹਿ ਤਿਤਨੇ ਸਭਿ ਹਰਿ ਕੇ ਕੀਏ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹਰਿ ਕਰਾਵੈ ਸੁ ਓਇ ਕਰਹਿ
 ਸਭਿ ਹਰਿ ਕੇ ਅਰਥੀਏ ॥ ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਸਭਨਾ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਵਲਿ ਹੈ ਤਿਨਿ ਸਭਿ ਵਰਨ ਚਾਰੇ ਖਾਣੀ
 ਸਭ ਸੂਸਟਿ ਗੋਲੇ ਕਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਅਗੈ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣ ਕਤ ਦੀਏ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵੇ ਕੀ ਐਸੀ ਵਡਿਆਈ ਦੇਖਹੁ ਹਰਿ
 ਸੰਤਹੁ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਕਾਇਆ ਨਗਰੀ ਦੁਸਮਨ ਦੂਤ ਸਭਿ ਮਾਰਿ ਕਢੀਏ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾਲੁ ਹੋਆ ਭਗਤ ਜਨਾ
 ਤਪਰਿ ਹਰਿ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਹਰਿ ਆਪਿ ਰਖਿ ਲੀਏ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਅੰਦਰਿ ਕਪਟੁ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਹੈ
 ਮਨਮੁਖ ਧਿਆਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਦੁਖ ਵਿਚਿ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਦੁਖੁ ਵਰਤੈ ਦੁਖੁ ਆਗੈ ॥ ਕਰਮੀ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੀਐ ਤਾ
 ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਅੰਦਰਹੁ ਭ੍ਰਮੁ ਭਤ ਭਾਗੈ ॥੭॥ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ

ਹਰਿ ਰੁਂਗ ਹੈ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਤ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਖਣੁ ਬੋਲਣਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ਤਿਮਰ ਅਗਿਆਨੁ ਅਂਧੇਰੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੨॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੇ ਮਰਹਿ
 ਗਵਾਰ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਭਨਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਜਨ ਭਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਹੁ
 ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਜਾਈ ॥ ਅਂਦਰਿ ਸਾਂਸਾ ਦ੍ਰੂਖੁ ਵਿਆਪੇ ਸਿਰਿ ਧੰਧਾ ਨਿਤ ਮਾਰ ॥ ਦ੍ਰੂਜੈ ਭਾਈ ਸ੍ਰੂਤੇ ਕਬਹੁ ਨ ਜਾਗਹਿ
 ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਿਆਰ ॥ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਹਿ ਸਬਦੁ ਨ ਵੀਚਾਰਹਿ ਇਹੁ ਮਨਮੁਖ ਕਾ ਬੀਚਾਰ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ
 ਭਾਇਆ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਨਾਨਕ ਜਮੁ ਮਾਰਿ ਕਰੇ ਯੁਆਰ ॥੩॥ ਪਤਡੀ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸਚੁ
 ਬਖਸੀਅਨੁ ਸੋ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਸੁਹਤਾਜੀ ਲੋਕੁ ਕਢਦਾ ਹੋਰਤੁ ਹਟਿ ਨ ਕਥੁ ਨ ਵੇਸਾਹੁ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਤ
 ਸਨਮੁਖੁ ਹੋਵੈ ਸੁ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਲਾਏ ਵੇਮੁਖ ਭਸੁ ਪਾਹੁ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੇ ਵਾਪਾਰੀ ਹਰਿ ਭਗਤ ਹਹਿ ਜਮੁ ਜਾਗਾਤੀ
 ਤਿਨਾ ਨੇਡਿ ਨ ਜਾਹੁ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਧਨੁ ਲਦਿਆ ਸਦਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਇਸੁ
 ਜੁਗ ਮਹਿ ਭਗਤੀ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਹੌਰ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ
 ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਬਿਖਿਆ ਮਾਹਿ ਤਦਾਸ ਹੈ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇਆ ॥ ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਕੁਲ
 ਉਥਰੇ ਧਨੁ ਜਣੇਂਦੀ ਮਾਇਆ ॥ ਸਦਾ ਸਹਜੁ ਸੁਖੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚੇ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਇਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ
 ਮਹਾਦੇਤ ਤੈ ਗੁਣ ਭੁਲੇ ਹਉਮੈ ਮੋਹੁ ਵਧਾਇਆ ॥ ਪਾਂਡਿਤ ਪਡਿ ਪਡਿ ਮੋਨੀ ਭੁਲੇ ਦ੍ਰੂਜੈ ਭਾਈ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥
 ਜੋਗੀ ਜਾਂਗਮ ਸਾਂਨਿਆਸੀ ਭੁਲੇ ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਤਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਦੁਖੀਏ ਸਦਾ ਭ੍ਰਮਿ ਭੁਲੇ ਤਿਨੀ ਬਿਰਥਾ
 ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇਈ ਜਨ ਸਮਥੇ ਜਿ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸੋ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਸੁ ਵਸਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥ ਤਿਸਹਿ ਸਰੇਵਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀਹੋ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਅਂਤਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਧਨੁ ਨ ਖਟਿਆਂ ਸੇ ਦੇਵਾਲੀਏ
 ਜੁਗ ਮਾਹਿ ॥ ਓਡਿ ਮੰਗਦੇ ਫਿਰਹਿ ਸਭ ਜਗਤ ਮਹਿ ਕੋਈ ਸੁਹਿ ਥੁਕ ਨ ਤਿਨ ਕਤ ਪਾਹਿ ॥ ਪਰਾਈ ਬਖੀਲੀ
 ਕਰਹਿ ਆਪਣੀ ਪਰਤੀਤਿ ਖੋਵਨਿ ਸਗਵਾ ਭੀ ਆਪੁ ਲਖਾਹਿ ॥ ਜਿਸੁ ਧਨ ਕਾਰਣਿ ਚੁਗਲੀ ਕਰਹਿ ਸੋ ਧਨੁ

ਚੁਗਲੀ ਹਥਿ ਨ ਆਵੈ ਓਡਿ ਭਾਵੈ ਤਿਥੈ ਜਾਹਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਕ ਭਾਡਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਮਿਲੈ ਤਿਥਹੁ ਕਰਮਹੀਣ ਲੈ
 ਨ ਸਕਹਿ ਹੋਰ ਥੈ ਦੇਸ ਦਿਸਤਰਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਨਾਹਿ ॥੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੰਸਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਵਈ ਚਿੰਤਾ
 ਵਿਚਹੁ ਜਾਡਿ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਡਿ ਸੁ ਸਹਜੇ ਹੋਡਿ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕਾ ਆਖਿਆ ਆਪਿ ਸੁਣੇ
 ਜਿ ਲਿਝਿਅਨੁ ਪਨੈ ਪਾਡਿ ॥੯॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕਾਲੁ ਮਾਰਿ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਣੀ ਅੰਤਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਤ ॥
 ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ਕਦੇ ਨ ਸੋਵੈ ਸਹਜੇ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪਿਆਤ ॥ ਮੀਠਾ ਬੋਲੇ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਤ
 ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਸਟਾ ਸੋਹਦੇ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਸੁਖੁ ਪਾਤ ॥੧॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਤਨ ਜਵੇਹਰੀ
 ਸੋ ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਹਰਿ ਪਾਸਹੁ ਦੇਵਾਇਆ ॥ ਜੇ ਕਿਸੈ ਕਿਹੁ ਦਿਸਿ ਆਵੈ ਤਾ ਕੋਈ ਕਿਹੁ ਮੰਗਿ ਲਏ ਅਕੈ ਕੋਈ
 ਕਿਹੁ ਦੇਵਾਏ ਏਹੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜੋਰਿ ਕੀਤੈ ਕਿਸੈ ਨਾਲਿ ਨ ਜਾਡਿ ਵੰਡਾਇਆ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਲਿ ਹਰਿ ਸਰਧਾ
 ਲਾਏ ਤਿਸੁ ਹਰਿ ਧਨ ਕੀ ਵੰਡ ਹਥਿ ਆਵੈ ਜਿਸ ਨੋ ਕਰਤੈ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥ ਇਸੁ ਹਰਿ ਧਨ ਕਾ ਕੋਈ
 ਸਰੀਕੁ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਕਾ ਖਤੁ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਕੈ ਸੀਵ ਬੜੈ ਰੋਲੁ ਨਾਹੀ ਜੇ ਕੋ ਹਰਿ ਧਨ ਕੀ ਬਖੀਲੀ ਕਰੇ ਤਿਸ ਕਾ
 ਮੁਹੁ ਹਰਿ ਚਹੁ ਕੁੰਡਾ ਵਿਚਿ ਕਾਲਾ ਕਰਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਦਿਤੇ ਨਾਲਿ ਕਿਸੈ ਜੋਰੁ ਬਖੀਲੀ ਨ ਚਲੈਂਦਿ ਦਿਹੁ ਦਿਹੁ
 ਨਿਤ ਨਿਤ ਚੱਡੈ ਸਵਾਇਆ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਜਗਤੁ ਜਲਮਦਾ ਰਖਿ ਲੈ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਜਿਤੁ
 ਦੁਆਰੈ ਤਬਰੈ ਤਿਤੈ ਲੈਹੁ ਤਬਾਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੁਖੁ ਵੇਖਾਲਿਆ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਅਵਰੁ ਨ
 ਸੁਝੈਂਦੀ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਗੈ ਜਾਡਿ ॥ ਨਾ ਇਹ ਮਾਰੀ ਨ
 ਮਰੈ ਨਾ ਇਹ ਹਟਿ ਵਿਕਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਰਯਾਲੀਐ ਤਾ ਇਹ ਵਿਚਹੁ ਜਾਡਿ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹੋਵੈ ਤਜਲਾ
 ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਕਾ ਮਾਰਣੁ ਸਬਦੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਡਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਿਤੀ ਧੁਰਹੁ ਹੁਕਮੁ ਬੁਝਿ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਪੁਤੀ ਭਾਤੀਈ ਜਾਵਾਈ ਸਕੀ ਅਗਹੁ
 ਪਿਛਹੁ ਟੋਲਿ ਡਿਠਾ ਲਾਹਿਓਨੁ ਸਭਨਾ ਕਾ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਜਿਥੈ ਕੋ ਵੇਖੈ ਤਿਥੈ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਰਿ ਬਖਸਿਓਸੁ ਸਭੁ
 ਜਹਾਨੁ ॥ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਮਿਲਿ ਮਨੇ ਸੁ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸਿੜੈ ਜਿ ਵੇਮੁਖੁ ਹੋਵੈ ਸੁ ਫਿਰੈ ਭਰਿਸਟ ਥਾਨੁ ॥

जन नानक कै वलि होआ मेरा सुआमी हरि सजण पुरखु सुजानु ॥ पउदी भिति देखि कै सभि आँडि पए
 सतिगुर की पैरी लाहिओनु सभना किअहु मनहु गुमानु ॥੧੦॥ सलोक मः ੧ ॥ कोई वाहे को लुणै को
 पाए खलिहानि ॥ नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि ॥੧॥ मः ੧ ॥ जिसु मनि वसिआ तरिआ सोइ
 ॥ नानक जो भावै सो होइ ॥੨॥ पउड़ी ॥ पारब्रह्मि दिइआलि सागरु तारिआ ॥ गुरि पूरै मिहरवानि
 भरमु भउ मारिआ ॥ काम क्रोधु बिकरालु दूत सभि हारिआ ॥ अंमृत नामु निधानु कंठि उरि धारिआ
 ॥ नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ ॥੧੧॥ सलोक मः ੩ ॥ जिनी नामु विसारिआ कूड़े कहण
 कह्ननि ॥ पंच चोर तिना घरु मुहनि हउमै अंदरि संनि ॥ साकत मुठे दुरमती हरि रसु न जाणनि ॥
 जिनी अंमृतु भरमि लुटाइआ बिखु सित रचहि रचनि ॥ दुसटा सेती पिरहड़ी जन सित वादु करनि
 ॥ नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सह्ननि ॥ पड़िअै किरति कमावदे जिव राखहि तिवै रह्ननि
 ॥੧॥ मः ੩ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु ॥ सासि गिरासि सदा मनि वसै जमु जोहि न
 सकै तिसु ॥ हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु ॥ हरि दासा का दासु होइ परम पदारथु
 तिसु ॥ नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु ॥ जिन् कउ पूरबि लिखिआ रसु संत
 जना सित तिसु ॥੨॥ पउड़ी ॥ जो बोले पूरा सतिगुरु सो परमेसरि सुणिआ ॥ सोई वरतिआ जगत महि
 घटि घटि मुखि भणिआ ॥ बहुतु वडिआईआ साहिबै नह जाही गणीआ ॥ सचु सहजु अनदु सतिगुरु
 पासि सची गुर मणीआ ॥ नानक संत सवारे पारब्रह्मि सचे जित बणिआ ॥੧੨॥ सलोक मः ੩ ॥
 अपणा आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दौरि ॥ गुर की सेवा विसरी कित मनु रहै हजूरि ॥ मनमुखि
 जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि ॥ नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥੧॥ मः ੩ ॥ हरि
 प्रभु सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनदु ॥
 वडभागी हरि पाइआ पूरनु परमाननदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुइ न मनि तनि भंग ॥੨॥

ਪਤੜੀ ॥ ਕੋਈ ਨਿੰਦਕੁ ਹੋਵੈ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਫਿਰਿ ਸਰਣਿ ਗੁਰ ਆਵੈ ॥ ਪਿਛਲੇ ਗੁਨਹ ਸਤਿਗੁਰ ਬਖਸਿ ਲਏ
ਸਤਸੰਗਤਿ ਨਾਲਿ ਰਲਾਵੈ ॥ ਜਿਤ ਮੀਹਿ ਕੁਠੈ ਗਲੀਆ ਨਾਲਿਆ ਟੋਭਿਆ ਕਾ ਜਲੁ ਜਾਇ ਪਵੈ ਵਿਚਿ ਸੁਰਸਰੀ
ਸੁਰਸਰੀ ਮਿਲਤ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਾਵਨੁ ਹੋਇ ਜਾਵੈ ॥ ਏਹ ਵਡਿਆਈ ਸਤਿਗੁਰ ਨਿਰਵੈਰ ਵਿਚਿ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਤਿਸਨਾ
ਭੁਖ ਤਉਰੈ ਹਰਿ ਸਾਂਤਿ ਤਡੁ ਆਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਅਚਰਜੁ ਦੇਖਹੁ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਸਚੇ ਸਾਹ ਕਾ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨੋ ਮਨੈ
ਸੁ ਸਭਨਾਂ ਭਾਵੈ ॥੧੩॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ॥ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੀ
ਔਸੋ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਪੇਖਨਾ ਰਹਨੁ ਨ ਕੋਊ ਪੰਝੈ ਰੇ ॥ ਸੂਧੇ ਸੂਧੇ ਰੇਗਿ ਚਲਹੁ ਤੁਮ ਨਤਰ ਕੁਧਕਾ ਦਿਵੰਝੈ ਰੇ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਰੇ ਬੂਢੇ ਤਰ੍ਹਨੇ ਭਈਆ ਸਭਹੂ ਜਮੁ ਲੈ ਜੰਝੈ ਰੇ ॥ ਮਾਨਸੁ ਬਪੁਰਾ ਮੂਸਾ ਕੀਨੋ ਮੀਚੁ
ਬਿਲਈਆ ਖੰਝੈ ਰੇ ॥੨॥ ਧਨਕੰਤਾ ਅਥ ਨਿਰਧਨ ਮਨੰਝੈ ਤਾ ਕੀ ਕਛੂ ਨ ਕਾਨੀ ਰੇ ॥ ਰਾਜਾ ਪਰਯਾ ਸਮ
ਕਰਿ ਮਾਰੈ ਔਸੋ ਕਾਲੁ ਬਡਾਨੀ ਰੇ ॥੩॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੇਕਕ ਜੋ ਹਰਿ ਭਾਏ ਤਿਨੁ ਕੀ ਕਥਾ ਨਿਰਾਰੀ ਰੇ ॥ ਆਵਹਿ ਨ
ਜਾਹਿ ਨ ਕਬਹੂ ਮਰਤੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੰਗਾਰੀ ਰੇ ॥੪॥੧॥ ਪੁਤ ਕਲਤ ਲਿਛਿਮੀ ਮਾਇਆ ਇਹੈ ਤਜਹੁ ਜੀਅ ਜਾਨੀ ਰੇ
॥ ਕਹਤ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਮਿਲਿਹੈ ਸਾਰਿਗਪਾਨੀ ਰੇ ॥੪॥੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ॥ ਬਿਦਿਆ ਨ ਪਰਤ ਬਾਦੁ
ਨਹੀ ਜਾਨਤ ॥ ਹਰਿ ਗੁਨ ਕਥਤ ਸੁਨਤ ਬਤਰਾਨੋ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਬਾਬਾ ਮੈ ਬਤਰਾ ਸਭ ਖਲਕ ਸੈਆਨੀ ਮੈ ਬਤਰਾ
॥ ਮੈ ਬਿਗਰਿਆਂ ਬਿਗਰੈ ਮਤਿ ਅਤਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪਿ ਨ ਬਤਰਾ ਰਾਮ ਕੀਆਂ ਬਤਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਾਰਿ
ਗਿਆਂ ਭਰਮੁ ਮੋਰਾ ॥੨॥ ਮੈ ਬਿਗਰੇ ਅਪਨੀ ਮਤਿ ਖੋਈ ॥ ਮੇਰੇ ਭਰਮਿ ਭੂਲਤ ਮਤਿ ਕੋਈ ॥੩॥ ਸੋ ਬਤਰਾ ਜੋ
ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਨੈ ॥ ਆਪੁ ਪਛਾਨੈ ਤ ਏਕੈ ਜਾਨੈ ॥੪॥ ਅਬਹਿ ਨ ਮਾਤਾ ਸੁ ਕਬਹੂ ਨ ਮਾਤਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ
ਰਾਮੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥੫॥੨॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ॥ ਗ੍ਰਹੁ ਤਜਿ ਬਨ ਖੰਡ ਜਾਈਐ ਚੁਨਿ ਖਾਈਐ ਕੰਦਾ ॥ ਅਜਹੁ ਬਿਕਾਰ
ਨ ਛੋਡਿ ਪਾਪੀ ਮਨੁ ਮੰਦਾ ॥੧॥ ਕਿਤ ਛੂਟਤ ਕੈਸੇ ਤਰਤ ਭਵਜਲ ਨਿਧਿ ਭਾਰੀ ॥ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਮੇਰੇ ਬੀਠੁਲਾ
ਜਨੁ ਸਰਨਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਖੈ ਬਿਖੈ ਕੀ ਬਾਸਨਾ ਤਜੀਅ ਨਹ ਜਾਈ ॥ ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ

राखीऐ फिरि फिरि लपटाई ॥२॥ जरा जीवन जोबनु गड़िआ किछु कीआ न नीका ॥ इहु जीअरा
 निरमोलको कउडी लगि मीका ॥३॥ कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥ तुम समसरि नाही
 दड़िआलु मोहि समसरि पापी ॥४॥३॥ बिलावलु ॥ नित उठि कोरी गागरि आनै लीपत जीउ
 गड़िओ ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रसि लपटिओ ॥१॥ हमारे कुल कउने रामु कहिओ ॥
 जब की माला लई निपूते तब ते सुखु न भड़िओ ॥१॥ रहाउ ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु
 एकु भड़िओ ॥ सात सूत डिनि मुडीए खोए इहु मुडीआ किउ न मुड़िओ ॥२॥ सरब सुखा का एकु हरि
 सुआमी सो गुरि नामु दड़िओ ॥ संत प्रह्लाद की पैज जिनि राखी हरनाखसु नख बिदरिओ ॥३॥ घर के
 देव पितर की छोडी गुर को सबदु लड़िओ ॥ कहत कबीर सगल पाप खंडनु संतह लै उधरिओ ॥
 ४॥४॥ बिलावलु ॥ कोऊ हरि समानि नही राजा ॥ ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा
 ॥१॥ रहाउ ॥ तेरो जनु होइ सोइ कत डोलै तीनि भवन पर छाजा ॥ हाथु पसारि सकै को जन कउ बोलि
 सकै न अंदाजा ॥१॥ चेति अचेत मूँड मन मेरे बाजे अनहट बाजा ॥ कहि कबीर संसा भ्रमु चूको
 धू प्रह्लाद निवाजा ॥२॥५॥ बिलावलु ॥ राखि लेहु हम ते बिगरी ॥ सीलु धरमु जपु भगति न कीनी
 हउ अभिमान टेढ पगरी ॥१॥ रहाउ ॥ अमर जानि संची इह काड़िआ इह मिथिआ काची गगरी ॥
 जिनहि निवाजि साजि हम कीए तिसहि बिसारि अवर लगरी ॥१॥ संधिक तोहि साध नही कहीअउ
 सरनि परे तुमरी पगरी ॥ कहि कबीर इह बिनती सुनीअहु मत घालहु जम की खबरी ॥२॥६॥
 बिलावलु ॥ दरमादे ठाडे दरबारि ॥ तुझ बिनु सुरति करै को मेरी दरसनु दीजै खोलि किवार ॥१॥
 रहाउ ॥ तुम धन धनी उदार तिआगी स्रवनन् सुनीअतु सुजसु तुम्हार ॥ मागउ काहि रंक सभ देखउ
 तुम ही ते मेरो निसतारु ॥१॥ जैदेउ नामा बिप सुदामा तिन कउ कृपा भई है अपार ॥ कहि कबीर
 तुम संम्रथ दाते चारि पदारथ देत न बार ॥२॥७॥ बिलावलु ॥ डंडा मुंद्रा खिंथा आधारी ॥ भ्रम कै

ਭਾਇ ਭਰੈ ਭੇਖਧਾਰੀ ॥੧॥ ਆਸਨੁ ਪਵਨ ਟੂਰਿ ਕਰਿ ਬਕਰੇ ॥ ਛੋਡਿ ਕਪਟੁ ਨਿਤ ਹਰਿ ਭਜੁ ਬਕਰੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਹ ਤੂ ਜਾਚਹਿ ਸੋ ਤ੍ਰਭਵਨ ਭੋਗੀ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਕੇਸੈ ਜਗਿ ਜੋਗੀ ॥੨॥੮॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ॥
 ਇਨ੍ਹਿ ਮਾਇਆ ਜਗਦੀਸ ਗੁਸਾਈ ਤੁਸਰੇ ਚਰਨ ਬਿਸਾਰੇ ॥ ਕਿੰਚਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਉਪਯੈ ਜਨ ਕਤ ਜਨ ਕਹਾ
 ਕਰਹਿ ਬੇਚਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਿਗੁ ਤਨੁ ਧਿਗੁ ਧਨੁ ਧਿਗੁ ਇਹ ਮਾਇਆ ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਫਨੀ ॥
 ਇਸ ਮਾਇਆ ਕਤ ਦੂੜੁ ਕਰਿ ਰਾਖਹੁ ਬਾਂਧੇ ਆਪ ਬਚਨੀ ॥੧॥ ਕਿਆ ਖੇਤੀ ਕਿਆ ਲੇਵਾ ਦੇਈ ਪਰਪਂਚ
 ਝੂਠੁ ਗੁਮਾਨਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਤੇ ਅੰਤਿ ਬਿਗੂਤੇ ਆਇਆ ਕਾਲੁ ਨਿਦਾਨਾ ॥੨॥੯॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ॥ ਸਗੋਰ
 ਸਰੋਵਰ ਭੀਤਰੇ ਆਛੈ ਕਮਲ ਅਨੂਪ ॥ ਪਰਮ ਜੋਤਿ ਪੁਰਖੋਤਮੇ ਜਾ ਕੈ ਰੇਖ ਨ ਰੂਪ ॥੧॥ ਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਭਜੁ
 ਭਰੁ ਤਜਹੁ ਜਗਜੀਵਨ ਰਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਵਤ ਕਛੂ ਨ ਟੀਸਈ ਨਹ ਟੀਸੈ ਜਾਤ ॥ ਜਹ ਉਪਯੈ ਬਿਨਸੈ
 ਤਹੀ ਜੈਸੇ ਪੁਰਿਵਨ ਪਾਤ ॥੨॥ ਮਿਥਿਆ ਕਰਿ ਮਾਇਆ ਤਜੀ ਸੁਖ ਸਹਜ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਸੇਵਾ
 ਕਰਹੁ ਮਨ ਮੰਝਿ ਸੁਰਾਰਿ ॥੩॥੧੦॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਾ ਭਰੁ ਗਇਆ ਗੋਬਿਦ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
 ਜੀਕਤ ਸੁਨਿ ਸਮਾਨਿਆ ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਜਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਸੀ ਤੇ ਧੁਨਿ ਊਪਯੈ ਧੁਨਿ ਕਾਸੀ ਜਾਈ ॥ ਕਾਸੀ
 ਫੂਟੀ ਪੰਡਿਤਾ ਧੁਨਿ ਕਹਾਁ ਸਮਾਈ ॥੧॥ ਤ੍ਰਕੁਟੀ ਸੰਧਿ ਮੈ ਪੇਖਿਆ ਘਟ ਹੂ ਘਟ ਜਾਗੀ ॥ ਐਸੀ ਬੁਧਿ ਸਮਾਚਰੀ
 ਘਟ ਮਾਹਿ ਤਿਆਗੀ ॥੨॥ ਆਪੁ ਆਪ ਤੇ ਜਾਨਿਆ ਤੇਜ ਤੇਜੁ ਸਮਾਨਾ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਅਥ ਜਾਨਿਆ ਗੋਬਿਦ
 ਮਨੁ ਮਾਨਾ ॥੩॥੧੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਾ ਕੈ ਰਿਟੈ ਬਸਹਿ ਸੋ ਜਨੁ ਕਿਤ ਢੌਲੈ ਦੇਵ ॥ ਮਾਨੈ
 ਸਭ ਸੁਖ ਨਤ ਨਿਧਿ ਤਾ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸਹਜਿ ਜਸੁ ਬੋਲੈ ਦੇਵ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਥ ਇਹ ਮਤਿ ਜਤ ਸਭ ਮਹਿ ਪੇਖੈ
 ਕੁਟਿਲ ਗਾਂਠਿ ਜਬ ਖੋਲੈ ਦੇਵ ॥ ਬਾਰਂ ਬਾਰ ਮਾਇਆ ਤੇ ਅਟਕੈ ਲੈ ਨਰਜਾ ਮਨੁ ਤੋਲੈ ਦੇਵ ॥੧॥ ਜਹ ਤਹੁ
 ਜਾਇ ਤਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਮਾਇਆ ਤਾਸੁ ਨ ਝੋਲੈ ਦੇਵ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਰਾਮ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕੀਓ ਲੈ
 ਦੇਵ ॥੨॥੧੨॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਕੀ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਮੋ ਕਤ ਗੁਰ ਕੀਨਾ ॥

ਦੁਖ ਬਿਸਾਰਿ ਸੁਖ ਅੰਤਰਿ ਲੀਨਾ ॥੧॥ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਮੋ ਕਤ ਗੁਰਿ ਦੀਨਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਜੀਵਨੁ
ਮਨ ਹੀਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਮਦੇਇ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਿ ਜਾਨਾਂ ॥ ਜਗਜੀਵਨ ਸਿਉ ਜੀਉ ਸਮਾਨਾਂ ॥੨॥੧॥

ਬਿਲਾਵਲੁ ਬਾਣੀ ਰਵਿਦਾਸ ਭਗਤ ਕੀ

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦਾਰਿਦੁ ਦੇਖਿ ਸਭ ਕੋ ਹਸੈ ਐਸੀ ਦਸਾ ਹਮਾਰੀ ॥ ਅਸਟ ਦਸਾ ਸਿਧਿ ਕਰ ਤਲੈ ਸਭ ਕ੃ਪਾ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧॥ ਤੂ
ਜਾਨਤ ਮੈ ਕਿਛੁ ਨਹੀਂ ਭਵ ਖੰਡਨ ਰਾਮ ॥ ਸਗਲ ਜੀਅ ਸਰਨਾਗਤੀ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੋ ਤੇਰੀ
ਸਰਨਾਗਤਾ ਤਿਨ ਨਾਹੀਂ ਭਾਰੁ ॥ ਊਚ ਨੀਚ ਤੁਮ ਤੇ ਤਰੇ ਆਲਜੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥੨॥ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਅਕਥ ਕਥਾ ਬਹੁ
ਕਾਇ ਕਰੀਜੈ ॥ ਜੈਸਾ ਤੂ ਤੈਸਾ ਤੁਹੀ ਕਿਆ ਉਪਮਾ ਦੀਜੈ ॥੩॥੧॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ॥ ਜਿਹ ਕੁਲ ਸਾਧੁ ਬੈਸਨੌ ਹੋਇ ॥
ਬਰਨ ਅਬਰਨ ਰੰਕੁ ਨਹੀਂ ਈਸੁਰੁ ਬਿਮਲ ਬਾਸੁ ਜਾਨੀਐ ਜਗਿ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬ੍ਰਹਮਨ ਬੈਸ ਸ੍ਰੂਦ ਅਝੁ
ਖਾਂਤੀ ਢੋਮ ਚੰਡਾਰ ਮਲੇਛ ਮਨ ਸੋਇ ॥ ਹੋਇ ਪੁਨੀਤ ਭਗਵਤ ਭਜਨ ਤੇ ਆਪੁ ਤਾਰਿ ਤਾਰੇ ਕੁਲ ਦੋਇ ॥੧॥ ਧੰਨਿ
ਸੁ ਗਾਤ ਧੰਨਿ ਸੋ ਠਾਤ ਧੰਨਿ ਪੁਨੀਤ ਕੁਟੰਬ ਸਭ ਲੋਇ ॥ ਜਿਨਿ ਪੀਆ ਸਾਰ ਰਸੁ ਤਜੇ ਆਨ ਰਸ ਹੋਇ ਰਸ
ਮਗਨ ਡਾਰੇ ਬਿਖੁ ਖੋਇ ॥੨॥ ਪਾਂਡਿਤ ਸੂਰ ਛਕਪਤਿ ਰਾਜਾ ਭਗਤ ਬਰਾਬਰਿ ਅਤੁਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜੈਸੇ ਪੁਰੈਨ
ਪਾਤ ਰਹੈ ਜਲ ਸਮੀਪ ਭਨਿ ਰਵਿਦਾਸ ਜਨਮੇ ਜਗਿ ਓਇ ॥੩॥੨॥

ਬਾਣੀ ਸਧਨੇ ਕੀ ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ

੧੮੫ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨੂਪ ਕੰਨਿਆ ਕੇ ਕਾਰਨੈ ਇਕੁ ਭਿੱਡਿਆ ਭੇਖਧਾਰੀ ॥ ਕਾਮਾਰਥੀ ਸੁਆਰਥੀ ਵਾ ਕੀ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੧॥ ਤਵ ਗੁਨ
ਕਹਾ ਜਗਤ ਗੁਰਾ ਜਤ ਕਰਮੁ ਨ ਨਾਸੈ ॥ ਸਿੰਘ ਸਰਨ ਕਤ ਜਾਈਐ ਜਤ ਜੰਬੁਕੁ ਗ੍ਰਾਸੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਏਕ
ਬ੍ਰੂਂਦ ਜਲ ਕਾਰਨੇ ਚਾਤੂਕੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਗਏ ਸਾਗਰੁ ਮਿਲੈ ਫੁਨਿ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥ ਪ੍ਰਾਨ ਜੁ ਥਾਕੇ
ਥਿਰੁ ਨਹੀਂ ਕੈਸੇ ਬਿਰਮਾਵਤ ॥ ਬ੍ਰੂਡਿ ਮੂਏ ਨਤਕਾ ਮਿਲੈ ਕਹੁ ਕਾਹਿ ਚਢਾਵਤ ॥੩॥ ਮੈ ਨਾਹੀਂ ਕਛੁ ਹਤ ਨਹੀਂ
ਕਿਛੁ ਆਹਿ ਨ ਮੋਰਾ ॥ ਅਤਸਰ ਲਜਾ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਸਧਨਾ ਜਨੁ ਤੋਰਾ ॥੪॥੧॥

੧੮ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਗੋੜ ਚਤਪਦੇ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ॥

ਜੇ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਆਸ ਰਖਹਿ ਹਰਿ ਊਪਰਿ ਤਾ ਮਨ ਚਿੰਦੇ ਅਨੇਕ ਅਨੇਕ ਫਲ ਪਾਈ ॥ ਹਰਿ ਜਾਣੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜੋ
ਜੀਡਿ ਵਰਤੈ ਪ੍ਰਭੁ ਘਾਲਿਆ ਕਿਸੈ ਕਾ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਨ ਗਵਾਈ ॥ ਹਰਿ ਤਿਸ ਕੀ ਆਸ ਕੀਜੈ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜੋ ਸਭ
ਮਹਿ ਸੁਆਮੀ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਆਸਾ ਕਰਿ ਜਗਦੀਸ ਗੁਸਾਈ ॥ ਜੋ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਆਸ
ਅਵਰ ਕਾਹੂ ਕੀ ਕੀਜੈ ਸਾ ਨਿਹਫਲ ਆਸ ਸਭ ਬਿਰਥੀ ਜਾਈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਟੀਸੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹ
ਕੁਟੰਬੁ ਸਭੁ ਮਤ ਤਿਸ ਕੀ ਆਸ ਲਗਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਈ ॥ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕੈ ਕਿਛੁ ਹਾਥਿ ਨਹੀਂ ਕਹਾ ਕਰਹਿ ਇਹਿ
ਬਪੁੜੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਾ ਵਾਹਿਆ ਕਛੁ ਨ ਵਸਾਈ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਆਸ ਕਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਜੋ ਤੁੜ੍ਹੁ ਤੈਰੈ
ਤੇਰਾ ਕੁਟੰਬੁ ਸਭੁ ਛਡਾਈ ॥੨॥ ਜੇ ਕਿਛੁ ਆਸ ਅਵਰ ਕਰਹਿ ਪਰਮਿਤੀ ਮਤ ਤੂੰ ਜਾਣਹਿ ਤੈਰੈ ਕਿਤੈ
ਕਿਮਿ ਆਈ ॥ ਇਹਿ ਆਸ ਪਰਮਿਤੀ ਭਾਉ ਫ੍ਰੋਜਾ ਹੈ ਖਿਨ ਮਹਿ ਝੂਠੁ ਬਿਨਸਿ ਸਭ ਜਾਈ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਆਸਾ
ਕਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਚੇ ਕੀ ਜੋ ਤੇਰਾ ਘਾਲਿਆ ਸਭੁ ਥਾਇ ਪਾਈ ॥੩॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਸਭ ਤੇਰੀ

मेरे सुआमी जैसी तू आस करावहि तैसी को आस कराई ॥ किछु किसी कै हथि नाही मेरे सुआमी ऐसी
 मेरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ जन नानक की आस तू जाणहि हरि दरसनु देखि हरि दरसनि
 तृपताई ॥४॥१॥ गोंड महला ४ ॥ ऐसा हरि सेवीअै नित धिआईअै जो खिन महि किलविख सभि
 करे बिनासा ॥ जे हरि तिआगि अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥ मेरे मन
 हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविअै सभ भुख लहासा ॥१॥ मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा
 ॥ जह जाईअै तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥१॥ रहाउ ॥ जे अपनी
 बिरथा कहहु अवरा पहि ता आगै अपनी बिरथा बहु बहुतु कढासा ॥ अपनी बिरथा कहहु हरि
 अपुने सुआमी पहि जो तुम्रे दूख ततकाल कटासा ॥ सो ऐसा प्रभु छोडि अपनी बिरथा अवरा पहि
 कहीअै अवरा पहि कहि मन लाज मरासा ॥२॥ जो संसारै के कुटंब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते
 सभि अपनै सुआइ मिलासा ॥ जितु दिनि उन् का सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेड़े को न ढुकासा
 ॥ मन मेरे अपना हरि सेवि दिनु राती जो तुधु उपकरै दूखि सुखासा ॥३॥ तिस का भरवासा किउ
 कीजै मन मेरे जो अंती अउसरि रखि न सकासा ॥ हरि जपु मंतु गुर उपदेसु लै जापहु तिन् अंति
 छडाए जिन् हरि प्रीति चितासा ॥ जन नानक अनदिनु नामु जपहु हरि संतहु इहु छूटण का साचा
 भरवासा ॥४॥२॥ गोंड महला ४ ॥ हरि सिमरत सदा होइ अन्नदु सुखु अंतरि साँति सीतल मनु
 अपना ॥ जैसे सकति सूरु बहु जलता गुर ससि देखे लहि जाइ सभ तपना ॥१॥ मेरे मन अनदिनु
 धिआइ नामु हरि जपना ॥ जहा कहा तुझु राखै सभ ठाई सो ऐसा प्रभु सेवि सदा तू अपना ॥१॥
 रहाउ ॥ जा महि सभि निधान सो हरि जपि मन मेरे गुरमुखि खोजि लहहु हरि रतना ॥ जिन हरि
 धिआइआ तिन हरि पाइआ मेरा सुआमी तिन के चरण मलहु हरि दसना ॥२॥ सबदु पछाणि
 राम रसु पावहु ओहु ऊतमु संतु भइओ बड बडना ॥ तिसु जन की वडिआई हरि आपि वधाई ओहु

ਘਟੈ ਨ ਕਿਸੈ ਕੀ ਘਟਾਈ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਤਿਲਨਾ ॥੩॥ ਜਿਸ ਤੇ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸੋ ਸਦਾ ਧਿਆਇ
 ਨਿਤ ਕਰ ਜੁਰਨਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਹਰਿ ਦਾਨੁ ਇਕੁ ਦੀਜੈ ਨਿਤ ਬਸਹਿ ਰਿਟੈ ਹਰੀ ਮੋਹਿ ਚਰਨਾ ॥
 ੪॥੩॥ ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਤਨੇ ਸਾਹ ਪਾਤਿਸਾਹ ਉਮਰਾਵ ਸਿਕਦਾਰ ਚਤੁਧਰੀ ਸਭਿ ਮਿਥਿਆ ਝੂਠੁ ਭਾਉ
 ਦ੍ਰੂਜਾ ਜਾਣੁ ॥ ਹਰਿ ਅਬਿਨਾਸੀ ਸਦਾ ਥਿਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਤਿਸੁ ਮੇਰੇ ਮਨ ਭਜੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਨਾਮੁ
 ਹਰੀ ਭਜੁ ਸਦਾ ਦੀਬਾਣੁ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਮਹਲੁ ਪਾਵੈ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਦਾ ਤਾਣੁ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਤਨੇ ਧਨਵਂਤ ਕੁਲਵਂਤ ਮਿਲਖਵਂਤ ਦੀਸਹਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਭਿ ਬਿਨਸਿ ਜਾਹਿ ਜਿਤ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ
 ਕਚਾਣੁ ॥ ਹਰਿ ਸਤਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸਦਾ ਸੇਵਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਤੂ ਮਾਣੁ ॥੨॥ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ
 ਖਨੀ ਸ੍ਰੂਦ ਵੈਸ ਚਾਰਿ ਵਰਨ ਚਾਰਿ ਆਸ਼ਮ ਹਹਿ ਜੋ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਸੋ ਪਰਧਾਨੁ ॥ ਜਿਤ ਚੰਦਨ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ
 ਹਿਰਡੁ ਬਪੁੜਾ ਤਿਤ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲਿ ਪਤਿਤ ਪਰਵਾਣੁ ॥੩॥ ਓਹੁ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ਸਭ ਤੇ ਸ੍ਰੂਚਾ ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ
 ਵਸਿਆ ਭਗਵਾਨੁ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਤਿਸ ਕੇ ਚਰਨ ਪਖਾਲੈ ਜੋ ਹਰਿ ਜਨੁ ਨੀਚੁ ਜਾਤਿ ਸੇਵਕਾਣੁ ॥੪॥੪॥
 ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸਭਤੈ ਵਰਤੈ ਜੇਹਾ ਹਰਿ ਕਰਾਏ ਤੇਹਾ ਕੋ ਕਰਈਐ ॥ ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਸੇਵਿ
 ਸਦਾ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜੋ ਤੁਧਨੋ ਸਭ ਦੂ ਰਖਿ ਲਈਐ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਜਧਿ ਹਰਿ ਨਿਤ ਪਡੈਐ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ
 ਕੋ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਿ ਨ ਸਾਕੈ ਤਾ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕਾਇਤੁ ਕਡੈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਪਰਧਾਂਚੁ ਕੀਆ ਸਭੁ ਕਰਤੈ
 ਵਿਚਿ ਆਪੇ ਆਪਣੀ ਜੋਤਿ ਧਰਈਐ ॥ ਹਰਿ ਏਕੋ ਬੋਲੈ ਹਰਿ ਏਕੁ ਬੁਲਾਏ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਹਰਿ ਏਕੁ ਦਿਖਈਐ
 ॥੨॥ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਨਾਲੇ ਬਾਹਰਿ ਨਾਲੇ ਕਹੁ ਤਿਸੁ ਪਾਸਹੁ ਮਨ ਕਿਆ ਚੋਰਈਐ ॥ ਨਿਹਕਪਟ ਸੇਵਾ ਕੀਜੈ
 ਹਰਿ ਕੇਰੀ ਤਾਂ ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਈਐ ॥੩॥ ਜਿਸ ਦੈ ਵਸਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੋ ਸਭ ਦੂ ਵਡਾ ਸੋ ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਦਾ
 ਧਿਅੰਈਐ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੋ ਹਰਿ ਨਾਲਿ ਹੈ ਤੈਂ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ਤੂ ਤੁਧੁ ਲਏ ਛਡੈਐ ॥੪॥੫॥
 ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਕਤ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਬਹੁ ਤਪਤੈ ਜਿਤ ਤ੃ਖਾਵਂਤੁ ਬਿਨੁ ਨੀਰ ॥੧॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ
 ਲਗੇ ਹਰਿ ਤੀਰ ॥ ਹਮਰੀ ਬੇਦਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਨੈ ਮੇਰੇ ਮਨ ਅੰਤਰ ਕੀ ਪੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ

की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥२॥ मिल मिल सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की
मति धीर ॥३॥ जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि साँति सरीर ॥४॥६॥ छका १॥

रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु १

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਭੁ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਭੁਗਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੁਨਤੋ ਕਰਤਾ ਪੇਖਤ ਕਰਤਾ ॥ ਅਦੂਸਟੋ ਕਰਤਾ ਦੂਸਟੋ ਕਰਤਾ ॥
ਓਪਤਿ ਕਰਤਾ ਪਰਲਤ ਕਰਤਾ ॥ ਬਿਆਪਤ ਕਰਤਾ ਅਲਿਪਤੋ ਕਰਤਾ ॥੧॥ ਬਕਤੋ ਕਰਤਾ ਬੂਝਾਤ ਕਰਤਾ ॥
ਆਵਤੁ ਕਰਤਾ ਜਾਤੁ ਭੀ ਕਰਤਾ ॥ ਨਿਰਗੁਨ ਕਰਤਾ ਸਰਗੁਨ ਕਰਤਾ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਸਮਦੂਸਟਾ
॥੨॥੧॥ ਗੋਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਫਾਕਿਆ ਮੀਨ ਕਪਿਕ ਕੀ ਨਿਆਈ ਤੂ ਤਰਝਿ ਰਹਿਆ ਕਸੁੰਭਾਇਲੇ ॥ ਪਗ
ਧਾਰਹਿ ਸਾਸੁ ਲੇਖੈ ਲੈ ਤਤ ਉਧਰਹਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਲੇ ॥੧॥ ਮਨ ਸਮਝੁ ਛੋਡਿ ਆਵਾਇਲੇ ॥ ਅਪਨੇ
ਰਹਨ ਕਤ ਠਤੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਕਾਏ ਪਰ ਕੈ ਜਾਇਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਤ ਮੈਗਲੁ ਇੰਦ੍ਰੀ ਰਸਿ ਪੇਰਿਆ ਤੂ
ਲਾਗਿ ਪਰਿਆ ਕੁਟੰਬਾਇਲੇ ॥ ਜਿਤ ਪੱਖੀ ਇਕਤ ਹੋਇ ਫਿਰਿ ਬਿਛੁਰੈ ਥਿਰੁ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਲੇ
॥੨॥ ਜੈਸੇ ਮੀਨੁ ਰਸਨ ਸਾਦਿ ਬਿਨਸਿਆ ਓਹੁ ਮੂਠੈ ਮੂਡੁ ਲੋਭਾਇਲੇ ॥ ਤੂ ਹੋਆ ਪੰਚ ਵਾਸਿ ਕੈ ਛੂਟਹਿ
ਪਰੁ ਸਰਨਾਇਲੇ ॥੩॥ ਹੋਹੁ ਕ੃ਪਾਲ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਸਭਿ ਤੁਮਰੇ ਜੀਅ ਜੰਤਾਇਲੇ ॥ ਪਾਵਤ ਦਾਨੁ ਸਦਾ
ਦਰਸੁ ਪੇਖਾ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਇਲੇ ॥੪॥੨॥

ਰਾਗੁ ਗੋਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ਚਉਪਦੇ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਕੀਏ ਜਿਨਿ ਸਾਜਿ ॥ ਮਾਟੀ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਰਖੀ ਨਿਵਾਜਿ ॥ ਬਰਤਨ ਕਤ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਭੋਜਨ ਭੋਗਾਇ ॥
ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਤਜਿ ਮੂਡੇ ਕਤ ਜਾਇ ॥੧॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਲਾਗਤ ਸੇਵ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਸੁਝੈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਵ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਏ ਰੰਗ ਅਨਿਕ ਪਰਕਾਰ ॥ ਓਪਤਿ ਪਰਲਤ ਨਿਮਖ ਮਝਾਰ ॥ ਜਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕਹੀ
ਨ ਜਾਇ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ॥੨॥ ਆਇ ਨ ਜਾਵੈ ਨਿਹਚਲੁ ਧਨੀ ॥ ਬੇਅੰਤ ਗੁਨਾ ਤਾ ਕੇ ਕੇਤਕ

ਗਨੀ ॥ ਲਾਲ ਨਾਮ ਜਾ ਕੈ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥ ਸਗਲ ਘਟਾ ਦੇਵੈ ਆਧਾਰ ॥੩॥ ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਜਾ ਕੋ ਹੈ ਨਾਤ ॥ ਮਿਟਹਿ
 ਕੋਟਿ ਅਥ ਨਿਮਖ ਜਸੁ ਗਾਤ ॥ ਬਾਲ ਸਖਾਈ ਭਗਤਨ ਕੋ ਮੀਤ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ਨਾਨਕ ਹਿਤ ਚੀਤ ॥੪॥੧॥੩॥
 ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਕੀਨੋ ਬਿਤਹਾਰੁ ॥ ਨਾਮੁ ਹੀ ਇਸੁ ਮਨ ਕਾ ਅਧਾਰੁ ॥ ਨਾਮੋ ਹੀ ਚਿਤਿ ਕੀਨੀ ਓਟ
 ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਿਟਹਿ ਪਾਪ ਕੋਟਿ ॥੧॥ ਰਾਸਿ ਦੀਈ ਹਰਿ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ॥ ਮਨ ਕਾ ਇਸਟੁ ਗੁਰ ਸੰਗਿ ਧਿਆਨੁ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੇ ਜੀਅ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥ ਨਾਮੋ ਸੰਗੀ ਜਤ ਕਤ ਜਾਤ ॥ ਨਾਮੋ ਹੀ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਮੀਠਾ ॥
 ਜਲਿ ਥਲਿ ਸਭ ਮਹਿ ਨਾਮੋ ਡੀਠਾ ॥੨॥ ਨਾਮੇ ਦੁਰਗਹ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ॥ ਨਾਮੇ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਉਧਰੇ ॥ ਨਾਮਿ
 ਹਮਾਰੇ ਕਾਰਜ ਸੀਧ ॥ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਇਹੁ ਮਨ੍ਨਾ ਗੀਧ ॥੩॥ ਨਾਮੇ ਹੀ ਹਮ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ॥ ਨਾਮੇ ਆਵਨ
 ਜਾਵਨ ਰਹੇ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਮੇਲੇ ਗੁਣਤਾਸ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥੪॥੨॥੪॥ ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਨਿਮਾਨੇ ਕਤ ਜੋ ਦੇਤੋ ਮਾਨੁ ॥ ਸਗਲ ਭੂਖੇ ਕਤ ਕਰਤਾ ਦਾਨੁ ॥ ਗਰਭ ਘੋਰ ਮਹਿ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ॥ ਤਿਸੁ ਠਾਕੁਰ ਕਤ
 ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੧॥ ਐਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ਧਿਆਇ ॥ ਘਟਿ ਅਵਘਟਿ ਜਤ ਕਤਹਿ ਸਹਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਰਂਕੁ ਰਾਤ ਜਾ ਕੈ ਏਕ ਸਮਾਨਿ ॥ ਕੀਟ ਹਸਤਿ ਸਗਲ ਪ੍ਰਾਨ ॥ ਬੀਓ ਪ੍ਰਾਂਛਿ ਨ ਮਸਲਤਿ ਧੈਰੈ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸੁ
 ਆਪਹਿ ਕਰੈ ॥੨॥ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨਸਿ ਕੋਇ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਇ ॥ ਆਪਿ ਅਕਾਰੁ ਆਪਿ
 ਨਿਰਂਕਾਰੁ ॥ ਘਟ ਘਟ ਘਟਿ ਸਭ ਘਟ ਆਧਾਰੁ ॥੩॥ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਭਗਤ ਭਏ ਲਾਲ ॥ ਜਸੁ ਕਰਤੇ ਸੰਤ ਸਦਾ
 ਨਿਹਾਲ ॥ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਜਨ ਰਹੇ ਅਧਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਜਨ ਲਾਗੈ ਪਾਇ ॥੪॥੩॥੫॥ ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਕਿਲਬਿਖ ਹੋਹਿ ਨਾਸ ॥ ਜਾ ਕੈ
 ਸੰਗਿ ਰਿਦੈ ਪਰਗਾਸ ॥੧॥ ਸੇ ਸੰਤਨ ਹਰਿ ਕੇ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ॥ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਗਾਈਐ ਜਾ ਕੈ ਨੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਜਾ ਕੈ ਮੰਤ੍ਰ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ॥ ਜਾ ਕੈ ਉਪਦੇਸਿ ਭਰਮੁ ਭਤ ਨਸੈ ॥ ਜਾ ਕੈ ਕੀਰਤਿ ਨਿਰਮਲ ਸਾਰ ॥
 ਜਾ ਕੀ ਰੇਨੁ ਬਾਂਛੈ ਸੰਸਾਰ ॥੨॥ ਕੋਟਿ ਪਤਿਤ ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਉਧਾਰ ॥ ਏਕੁ ਨਿਰਂਕਾਰ ਜਾ ਕੈ ਨਾਮ ਅਧਾਰ ॥
 ਸਰਬ ਜੀਆਂ ਕਾ ਜਾਨੈ ਭੇਤ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਤ ॥੩॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਜਬ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ॥ ਤਕ ਭੇਟੇ

ਗੁਰ ਸਾਧ ਦਿਇਆਲ ॥ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਹਰਿ ਨਾਏ ॥੪॥੪॥੬॥ ਗੋਂਡ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਮੂਰਤਿ ਮਨ ਮਹਿ ਧਿਆਨੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮੰਤੁ ਮਨੁ ਮਾਨ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਰਿਦੈ ਲੈ
 ਧਾਰਤ ॥ ਗੁਰੁ ਪਾਰਭਰਹਮੁ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰਤ ॥੧॥ ਮਤ ਕੋ ਭਰਮਿ ਭੁਲੈ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਕੋਇ ਨ ਉਤਰਸਿ
 ਪਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭੂਲੇ ਕਤ ਗੁਰਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇਆ ॥ ਅਵਰ ਤਿਆਗਿ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਲਾਇਆ ॥ ਜਨਮ
 ਮਰਨ ਕੀ ਤਾਸ ਮਿਟਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਬੇਅੰਤ ਵਡਾਈ ॥੨॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਊਰਥ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸ ॥ ਅਂਧਕਾਰ
 ਮਹਿ ਭਇਆ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਸੋ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਨਿਆ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸੁਗਧ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੩॥ ਗੁਰੁ
 ਕਰਤਾ ਗੁਰੁ ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥ ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਹੈ ਭੀ ਹੋਗੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਇਹੈ ਜਨਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੁਕਤਿ ਨ
 ਪਾਈਐ ਭਾਈ ॥੪॥੫॥੭॥ ਗੋਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਿ ਮਨ ਸੋਰ ॥ ਗੁਰੁ ਬਿਨਾ ਮੈ ਨਾਹੀ ਹੋਰ ॥
 ਗੁਰ ਕੀ ਟੇਕ ਰਹਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਜਾ ਕੀ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟੈ ਦਾਤਿ ॥੧॥ ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਏਕੋ ਜਾਣੁ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ
 ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲਾਗੈ ॥ ਢੂਖੁ ਦਰਦੁ ਭਰਮੁ ਤਾ ਕਾ ਭਾਗੈ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ
 ਪਾਏ ਮਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਊਪਰਿ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਪ੍ਰੰਨ
 ਘਾਲ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕਤ ਦੁਖੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਢਹ ਦਿਸਿ ਜਾਪੈ ॥੩॥ ਗੁਰ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਥਨੁ
 ਨ ਜਾਇ ॥ ਪਾਰਭਰਹਮੁ ਗੁਰੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੇ ਪੂਰੇ ਭਾਗ ॥ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਤਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲਾਗ
 ॥੪॥੬॥੮॥ ਗੋਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੁ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰਯਾ ਗੁਰੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ॥ ਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਪਾਰਭਰਹਮੁ ਗੁਰੁ ਭਗਵਾਂਤੁ ॥ ਗੁਰੁ
 ਮੇਰਾ ਦੇਤ ਅਲਖ ਅਭੇਤ ॥ ਸਰਬ ਪ੍ਰਯ ਚਰਨ ਗੁਰ ਸੇਤ ॥੧॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਮੈ ਥਾਤ ॥ ਅਨਦਿਨੁ
 ਜਪਤ ਗੁਰੁ ਗੁਰ ਨਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਗਿਆਨੁ ਗੁਰੁ ਰਿਦੈ ਧਿਆਨੁ ॥ ਗੁਰੁ ਗੋਪਾਲੁ ਪੁਰਖੁ
 ਭਗਵਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਿ ਰਹਤ ਕਰ ਜੋਰਿ ॥ ਗੁਰੁ ਬਿਨਾ ਮੈ ਨਾਹੀ ਹੋਰੁ ॥੨॥ ਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ ਤਾਰੇ ਭਵ
 ਪਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਜਮ ਤੇ ਛੁਟਕਾਰਿ ॥ ਅਂਧਕਾਰ ਮਹਿ ਗੁਰ ਮੰਤੁ ਤਜਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਗਲ ਨਿਸਤਾਰਾ
 ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਢੂਖੁ ਨ ਲਾਗੀ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਕਦੁ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰੁ

ਨਾਨਕੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥੪॥੭॥੬॥ ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਸੰਗਿ ਕਰਿ ਬਿਤਹਾਰ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ
 ਰਾਮ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇ ॥ ਰਮਤ ਰਾਮੁ ਸਭ ਰਹਿਓ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਸੰਤ ਜਨਾ
 ਮਿਲਿ ਬੋਲਹੁ ਰਾਮ ॥ ਸਭ ਤੇ ਨਿਰਮਲ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਧਨੁ ਸੰਚਿ ਖੰਡਾਰ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ
 ਰਾਮ ਕਰਿ ਆਹਾਰ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਵੀਸਰਿ ਨਹੀ ਜਾਇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬਤਾਇ ॥੨॥ ਰਾਮ ਰਾਮ
 ਰਾਮ ਸਦਾ ਸਹਾਇ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਜਪਿ ਨਿਰਮਲ ਭਏ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ
 ਗਏ ॥੩॥ ਰਮਤ ਰਾਮ ਜਨਮ ਮਰਣੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥ ਤੁਚਰਤ ਰਾਮ ਭੈ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੈ ॥ ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਰਾਮ ਪਰਗਾਸ ॥
 ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ॥੪॥੮॥੧੦॥ ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਨ ਕਤ ਖਸਮਿ ਕੀਨੀ ਠਾਕਹਾਰੇ ॥ ਦਾਸ
 ਸੰਗ ਤੇ ਮਾਰਿ ਬਿਦਾਰੇ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਭਗਤ ਕਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਰਾਮ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥੧॥
 ਸਗਲ ਸੂਸਟਿ ਕੇ ਪੰਚ ਸਿਕਦਾਰ ॥ ਰਾਮ ਭਗਤ ਕੇ ਪਾਨੀਹਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਗਤ ਪਾਸ ਤੇ ਲੇਤੇ ਦਾਨੁ ॥
 ਗੋਬਿੰਦ ਭਗਤ ਕਤ ਕਰਹਿ ਸਲਾਮੁ ॥ ਲੂਟਿ ਲੇਹਿ ਸਾਕਤ ਪਤਿ ਖੋਵਹਿ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਪਗ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਹਿ
 ॥੨॥ ਪੰਚ ਪੂਤ ਜਣੇ ਝਿਕ ਮਾਇ ॥ ਤਤਭੁਜ ਖੇਲੁ ਕਰਿ ਜਗਤ ਵਿਆਇ ॥ ਤੀਨਿ ਗੁਣਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਰਚਿ ਰਸੇ ॥
 ਇਨ ਕਤ ਛੋਡਿ ਊਪਰਿ ਜਨ ਬਸੇ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਨ ਲੀਏ ਛੱਡਾਇ ॥ ਜਿਸ ਕੇ ਸੇ ਤਿਨਿ ਰਖੇ ਹਟਾਇ ॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਸਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਸਭ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੪॥੬॥੧੧॥ ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਲਿ
 ਕਲੇਸ ਮਿਟੇ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥ ਟੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖ ਕੀਨੋ ਠਾਤ ॥ ਜਪਿ ਜਪਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਅਧਾਏ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
 ਸਗਲ ਫਲ ਪਾਏ ॥੧॥ ਰਾਮ ਜਪਤ ਜਨ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਪਾਪ ਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰ ਕੇ
 ਚਰਨ ਰਿਟੈ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ ਤੇ ਤਤਰੇ ਪਾਰੇ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਸਭ ਮਿਟੀ ਤਪਾਧਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਿਤ ਲਾਗੀ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ॥੨॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਏਕੋ ਸੁਆਮੀ ॥ ਸਗਲ ਘਟਾ ਕਾ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਾ ਕਤ
 ਮਤਿ ਦੇਇ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਤ ਲੇਇ ॥੩॥ ਜਾ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਵਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥ ਤਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਹੋਇ
 ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥ ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰੀਐ ॥ ਜਪਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਾਨਕ ਨਿਸਤਰੀਐ ॥੪॥੧੦॥੧੨॥ ਗੌਂਡ

ਮहਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਕਮਲ ਨਮਸਕਾਰਿ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਇਸੁ ਤਨ ਤੇ ਮਾਰਿ ॥ ਹੋਇ ਰਹੀਐ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥
 ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮਈਆ ਸਭ ਮਹਿ ਚੀਨਾ ॥੧॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਰਮਹੁ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦੁ ॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀ
 ਜਿੰਦੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਕੋ ਇਹੈ ਸੁਆਉ ॥ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਜਾਨੁ ਪ੍ਰਭੁ
 ਸੰਗਿ ॥ ਸਾਥ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਸਿਤ ਮਨੁ ਰੰਗਿ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਤੂੰ ਕੀਆ ਤਿਸ ਕਤ ਜਾਨੁ ॥ ਆਗੈ ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ
 ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੁ ॥ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਗੋਪਾਲ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰੇ ਦੀਨ ਦਿਆਲਾ ॥
 ਸਾਧੂ ਕੀ ਮਨੁ ਮੰਗੈ ਖਾਲਾ ॥ ਹੋਹੁ ਦਿਆਲ ਦੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਦਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ॥੪॥੧॥੧੩॥
 ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਧੂਪ ਦੀਪ ਸੇਵਾ ਗੋਪਾਲ ॥ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਬੰਦਨ ਕਰਤਾਰ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਣਿ ਗਹੀ ਸਭ
 ਤਿਆਗਿ ॥ ਗੁਰ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਭਏ ਕਡ ਭਾਗਿ ॥੧॥ ਆਠ ਪਹਰ ਗਾਈਐ ਗੋਬਿੰਦੁ ॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀ
 ਜਿੰਦੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਮਤ ਭਏ ਆਨੰਦ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਬਖਸ਼ੰਦ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਨ ਸੇਵਾ
 ਲਾਏ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਮੇਟਿ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਇਹੁ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਪੀਐ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ॥ ਸਾਗਰ ਤਰਿ ਬੋਹਿਥ ਪ੍ਰਭ ਚਰਣ ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਪ੍ਰਭ ਕਾਰਣ ਕਰਣ ॥੩॥ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਅਪਨੀ ਕਿਰਪਾ
 ਧਾਰਿ ॥ ਪੰਚ ਦੂਤ ਭਾਗੇ ਬਿਕਰਾਲ ॥ ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਨ ਕਬਹੂ ਹਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾ ਅੰਗ ਕੀਆ ਕਰਤਾਰਿ
 ॥੪॥੧੨॥੧੪॥ ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੁਖ ਅਨਦ ਕਰੇਇ ॥ ਬਾਲਕ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਗੁਰਦੇਵਿ ॥ ਪ੍ਰਭ
 ਕਿਰਪਾਲ ਦਿਆਲ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਬਖਸਿੰਦ ॥੧॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਜਪਿ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਿਆਲ ਦੂਸਰ ਕੋਈ ਨਾਹੀ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ
 ਸਰਬ ਸਮਾਹੀ ॥ ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕਾ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਵਾਰੈ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪ੍ਰਭ ਬਿਰਦੁ ਤੁਸ਼ਾਰੈ ॥੨॥ ਅਤਖਥ
 ਕੋਟਿ ਸਿਮਰਿ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਤੱਤੁ ਮੰਤੁ ਭਜੀਐ ਭਗਵਾਂਤ ॥ ਰੋਗ ਸੋਗ ਮਿਟੇ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਏ ॥ ਮਨ ਬਾਁਛਤ ਪੂਰਨ ਫਲ
 ਪਾਏ ॥੩॥ ਕਰਨ ਕਾਰਨ ਸਮਰਥ ਦਿਆਰ ॥ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਮਹਾ ਬੀਚਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਬਖਸਿ ਲੀਏ ਪ੍ਰਭਿ
 ਆਪਿ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਏਕੋ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥੪॥੧੩॥੧੫॥ ਗੌਂਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ

ਮੀਤ ॥ ਨਿਰਮਲ ਹੋਇ ਤੁਮਾਰਾ ਚੀਤ ॥ ਮਨ ਤਨ ਕੀ ਸਭ ਮਿਟੈ ਬਲਾਇ ॥ ਦ੍ਰਖੁ ਅੰਧੇਰਾ ਸਗਲਾ ਜਾਇ ॥੧॥
 ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਤਰੀਐ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਵਡ ਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੋ ਜਨੁ ਕਰੈ ਕੀਰਤਨੁ
 ਗੋਪਾਲ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕੈ ਜਮਕਾਲੁ ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਪਨਾ ਖਸਮੁ
 ਪਛਾਣੁ ॥੨॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਿਟਹਿ ਤਨਮਾਦ ॥ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ਜਾਣੁ ਭਗਵਂਤ ॥
 ਪ੍ਰੇਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਪੂਰਨ ਮੰਤ ॥੩॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਾਟਿ ਕੀਏ ਭੰਡਾਰ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰ ॥ ਹਰਿ ਕੇ
 ਨਾਮ ਰੰਗ ਸੰਗਿ ਜਾਗਾ ॥ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥੪॥੧੪॥੧੬॥ ਗੋੰਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭਵ ਸਾਗਰ
 ਬੋਹਿਥ ਹਰਿ ਚਰਣ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਨਾਹੀ ਫਿਰਿ ਮਰਣ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਮਤ ਨਾਹੀ ਜਮ ਪਥ ॥ ਮਹਾ ਬੀਚਾਰ
 ਪਂਚ ਟ੍ਰੂਤਹ ਮਥ ॥੧॥ ਤਤ ਸਰਣਾਈ ਪੂਰਨ ਨਾਥ ॥ ਜੰਤ ਅਪਨੇ ਕਤ ਦੀਜਹਿ ਹਾਥ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਿਮੂਤਿ
 ਸਾਸਤਰ ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਕਰਹਿ ਵਖਿਆਣ ॥ ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਬੈਸਨੋ ਰਾਮਦਾਸ ॥ ਮਿਤਿ ਨਾਹੀ ਬ੍ਰਹਮ
 ਅਵਿਨਾਸ ॥੨॥ ਕਰਣ ਪਲਾਹ ਕਰਹਿ ਸਿਵ ਦੇਵ ॥ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਕੁਝਾਇ ਅਲਖ ਅਭੇਵ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਜਿਸੁ
 ਆਪੇ ਦੇਇ ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਵਿਰਲੇ ਕੇਈ ਕੋਇ ॥੩॥ ਸੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ ਗੁਣੁ ਕਿਛਹੂ ਨਾਹਿ ॥ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ
 ਤੇਰੀ ਦੂਸਟੀ ਮਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕੁ ਦੀਨੁ ਜਾਚੈ ਤੇਰੀ ਸੇਵ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੀਜੈ ਗੁਰਦੇਵ ॥੪॥੧੫॥੧੭॥
 ਗੋੰਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤ ਕਾ ਲੀਆ ਧਰਤਿ ਬਿਦਾਰਤ ॥ ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਅਕਾਸ ਤੇ ਟਾਰਤ ॥ ਸੰਤ ਕਤ ਰਾਖਤ
 ਅਪਨੇ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ॥ ਸੰਤ ਉਧਾਰਤ ਤਤਖਿਣ ਤਾਲਿ ॥੧॥ ਸੋਈ ਸੰਤੁ ਜਿ ਭਾਵੈ ਰਾਮ ॥ ਸੰਤ ਗੋਬਿੰਦ ਕੈ ਏਕੈ
 ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਊਪਰਿ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਹਾਥ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਸੰਗਿ ਬਸੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸੰਤਹ
 ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿ ॥ ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਰਾਜ ਤੇ ਟਾਲਿ ॥੨॥ ਸੰਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰਹੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜੋ ਨਿੰਦੈ ਤਿਸ ਕਾ ਪਤਨੁ
 ਹੋਇ ॥ ਜਿਸ ਕਤ ਰਾਖੈ ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ॥ ਝੱਖ ਮਾਰਤ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ॥੩॥ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਕਾ ਭਿਓ ਬਿਸਾਸੁ
 ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਉਪਜੀ ਪਰਤੀਤਿ ॥ ਮਨਮੁਖ ਹਾਰ ਗੁਰਮੁਖ ਸਦ ਜੀਤਿ
 ॥੪॥੧੬॥੧੮॥ ਗੋੰਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਨੀਰਿ ਨਰਾਇਣ ॥ ਰਸਨਾ ਸਿਮਰਤ ਪਾਪ ਬਿਲਾਇਣ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਸਭ ਮਾਹਿ ਨਿਵਾਸ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਘਟਿ ਘਟਿ ਪਰਗਾਸ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਕਹਤੇ
 ਨਰਕਿ ਨ ਜਾਹਿ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਸੇਵਿ ਸਗਲ ਫਲ ਪਾਹਿ ॥੧॥ ਨਾਰਾਇਣ ਮਨ ਮਾਹਿ ਅਧਾਰ ॥ ਨਾਰਾਇਣ
 ਬੋਹਿਥ ਸੰਸਾਰ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਕਹਤ ਜਮੁ ਭਾਗਿ ਪਲਾਇਣ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਦੰਤ ਭਾਨੇ ਡਾਇਣ ॥੨॥
 ਨਾਰਾਇਣ ਸਦ ਸਦ ਬਖਸਿੰਦ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਕੀਨੇ ਸ੍ਰੂਖ ਅਨੰਦ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਨੋ ਪਰਤਾਪ ॥ ਨਾਰਾਇਣ
 ਸੰਤ ਕੋ ਮਾਈ ਬਾਪ ॥੩॥ ਨਾਰਾਇਣ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਰਾਇਣ ॥ ਬਾਰਂ ਬਾਰ ਨਰਾਇਣ ਗਾਇਣ ॥ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ
 ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਲਹੀ ॥ ਨਾਰਾਇਣ ਓਟ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਗਹੀ ॥੪॥੧੭॥੧੬॥ ਗੌਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾ ਕਤ ਰਾਖੈ
 ਰਾਖਣਹਾਰੁ ॥ ਤਿਸ ਕਾ ਅੰਗੁ ਕਰੇ ਨਿਰਕਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਤ ਗਰਭ ਮਹਿ ਅਗਨਿ ਨ ਜੋਹੈ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ
 ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਨ ਪੋਹੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਪੈ ਨਿਰਕਾਰੁ ॥ ਨਿੰਦਕ ਕੈ ਮੁਹਿ ਲਾਗੈ ਛਾਰੁ ॥੧॥ ਰਾਮ ਕਵਚੁ ਦਾਸ ਕਾ
 ਸਨਾਹੁ ॥ ਢੂਤ ਦੁਸਟ ਤਿਸੁ ਪੋਹਤ ਨਾਹਿ ॥ ਜੋ ਜੋ ਗਰਬੁ ਕਰੇ ਸੋ ਜਾਇ ॥ ਗਰੀਬ ਦਾਸ ਕੀ ਪ੍ਰਭੁ ਸਰਣਾਇ
 ॥੨॥ ਜੋ ਜੋ ਸਰਣਿ ਪਇਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਸੋ ਦਾਸੁ ਰਖਿਆ ਅਪਣੈ ਕੱਠਿ ਲਾਇ ॥ ਜੇ ਕੋ ਬਹੁਤੁ ਕਰੇ ਅਛਕਾਰੁ
 ॥ ਓਹੁ ਖਿਨ ਮਹਿ ਰੁਲਤਾ ਖਾਕੂ ਨਾਲਿ ॥੩॥ ਹੈ ਭੀ ਸਾਚਾ ਹੋਵਣਹਾਰੁ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਇੰੀ ਬਲਿਹਾਰ
 ॥ ਅਪਣੇ ਦਾਸ ਰਖੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰ ॥੪॥੧੮॥੨੦॥ ਗੌਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਅਚਰਜ ਕਥਾ ਮਹਾ ਅਨੂਪ ॥ ਪ੍ਰਾਤਮਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਰੂਪੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾ ਇਹੁ ਬੂਢਾ ਨਾ ਇਹੁ ਬਾਲਾ ॥ ਨਾ
 ਇਸੁ ਢੂਖੁ ਨਹੀ ਜਮ ਜਾਲਾ ॥ ਨਾ ਇਹੁ ਬਿਨਸੈ ਨਾ ਇਹੁ ਜਾਇ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੧॥
 ਨਾ ਇਸੁ ਤਉ ਨਹੀ ਇਸੁ ਸੀਤੁ ॥ ਨਾ ਇਸੁ ਦੁਸਮਨੁ ਨਾ ਇਸੁ ਮੀਤੁ ॥ ਨਾ ਇਸੁ ਹਰਖੁ ਨਹੀ ਇਸੁ ਸੋਗੁ ॥
 ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਇਸ ਕਾ ਇਹੁ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥੨॥ ਨਾ ਇਸੁ ਬਾਪੁ ਨਹੀ ਇਸੁ ਮਾਇਆ ॥ ਇਹੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਹੋਤਾ
 ਆਇਆ ॥ ਪਾਪ ਪੁਨ ਕਾ ਇਸੁ ਲੇਪੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਦ ਹੀ ਜਾਗੈ ॥੩॥ ਤੀਨਿ ਗੁਣਾ ਇਕ
 ਸਕਤਿ ਤਪਾਇਆ ॥ ਮਹਾ ਮਾਇਆ ਤਾ ਕੀ ਹੈ ਛਾਇਆ ॥ ਅਛਲ ਅਛੇਦ ਅਮੇਦ ਦਿਇਆਲ ॥ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ
 ਸਦਾ ਕਿਰਪਾਲ ॥ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕਛੂ ਨ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਇ ॥੪॥੧੯॥੨੧॥

ਗੋਡ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਸੰਤਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਰਾਮ ਗੁਨ ਗਾਤ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਿਲਵਿਖ
ਸਭਿ ਗਏ ॥ ਸੰਤ ਸਰਣਿ ਵਡਭਾਗੀ ਪਏ ॥੧॥ ਰਾਮੁ ਜਪਤ ਕਛੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਅਪੁਨਾ
ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਬ ਹੋਇ ਦਿਅਾਲ ॥ ਸਾਥੁ ਜਨ ਕੀ ਕਰੈ ਰਖਾਲ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਇਸੁ
ਤਨ ਤੇ ਜਾਇ ॥ ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਕਥੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੨॥ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਤਾਂ ਕਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਕਟਿ
ਕਰਿ ਜਾਣੁ ॥ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀਰਤਨਿ ਲਾਗੈ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਸੋਇਆ ਜਾਗੈ ॥੩॥ ਚਰਨ ਕਮਲ
ਜਨ ਕਾ ਆਧਾਰੁ ॥ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਰਤੁੰ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਦਾਸ ਜਨਾ ਕੀ ਮਨਸਾ ਪੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ
ਜਨ ਧੂਰਿ ॥੪॥੨੦॥੨੨॥੬॥੨੮॥

ਰਾਗ ਗੋਡ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਰਿ ਨਮਸਕਾਰ ਪੂਰੇ ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਸਫਲ ਜਾ ਕੀ ਸੇਵ ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਆਠ
ਪਹਰ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥੧॥ ਗੁਰੁ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਰੁ ਗੋਪਾਲ ॥ ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕਤ ਰਾਖਨਹਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਪਾਤਿਸਾਹ ਸਾਹ ਤਮਰਾਤ ਪਤੀਆਏ ॥ ਦੁਸਟ ਅਛਕਾਰੀ ਮਾਰਿ ਪਚਾਏ ॥ ਨਿੰਦਕ ਕੈ ਮੁਖਿ ਕੀਨੋ ਰੋਗੁ ॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ
ਕਰੈ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ॥੨॥ ਸੰਤਨ ਕੈ ਮਨਿ ਮਹਾ ਅਨੰਦੁ ॥ ਸੰਤ ਜਪਹਿ ਗੁਰਦੇਤ ਭਗਵਾਂਤੁ ॥ ਸੰਗਤਿ ਕੇ ਮੁਖ ਊਜਲ ਭਏ
॥ ਸਗਲ ਥਾਨ ਨਿੰਦਕ ਕੇ ਗਏ ॥੩॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਜਨੁ ਸਦਾ ਸਲਾਹੇ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰ ਬੇਪਰਵਾਹੇ ॥ ਸਗਲ
ਭੈ ਮਿਟੇ ਜਾ ਕੀ ਸਰਨਿ ॥ ਨਿੰਦਕ ਮਾਰਿ ਪਾਏ ਸਭਿ ਧਰਨਿ ॥੪॥ ਜਨ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜੋ ਕਰੈ ਸੋ
ਦੁਖੀਆ ਹੋਇ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਜਨੁ ਏਕੁ ਧਿਆਏ ॥ ਜਮੂਆ ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਜਾਏ ॥੫॥ ਜਨ ਨਿਰਵੈਰ ਨਿੰਦਕ
ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਜਨ ਭਲ ਮਾਨਹਿ ਨਿੰਦਕ ਵੇਕਾਰੀ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਿਖਿ ਸਤਿਗੁਰੂ ਧਿਆਇਆ ॥ ਜਨ ਤਿਥੇ ਨਿੰਦਕ
ਨਰਕਿ ਪਾਇਆ ॥੬॥ ਸੁਣਿ ਸਾਜਨ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਤਿ ਬਚਨ ਵਰਤਹਿ ਹਰਿ ਦੁਆਰੇ ॥ ਜੈਸਾ ਕਰੇ ਸੁ
ਤੈਸਾ ਪਾਏ ॥ ਅਭਿਮਾਨੀ ਕੀ ਜੱਡ ਸਰਪਰ ਜਾਏ ॥੭॥ ਨੀਧਰਿਆ ਸਤਿਗੁਰ ਧਰ ਤੇਰੀ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਹੁ
ਜਨ ਕੇਰੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੮॥੧॥੨੬॥

ਰਾਗੁ ਗੋਂਡ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ॥ ਕਬੀਰ ਜੀ ਘਰੁ ੧

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੰਤੁ ਮਿਲੈ ਕਿਛੁ ਸੁਨੀਐ ਕਹੀਐ ॥ ਮਿਲੈ ਅਸੰਤੁ ਮਸਟਿ ਕਰਿ ਰਹੀਐ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਬੋਲਨਾ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ॥
ਜੈਸੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਵਿ ਰਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਤਨ ਸਿਤ ਬੋਲੇ ਉਪਕਾਰੀ ॥ ਮੂਰਖ ਸਿਤ ਬੋਲੇ ਝੁਖ ਮਾਰੀ ॥੨॥
ਬੋਲਤ ਬੋਲਤ ਬਢਹਿ ਬਿਕਾਰਾ ॥ ਬਿਨੁ ਬੋਲੇ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥੩॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਛੂਛਾ ਘਟੁ ਬੋਲੈ ॥
ਭਰਿਆ ਹੋਇ ਸੁ ਕਬਹੁ ਨ ਢੋਲੈ ॥੪॥੧॥ ਗੋਂਡ ॥ ਨਰੁ ਮਰੈ ਨਰੁ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਪਸੂ ਮਰੈ ਦਸ ਕਾਜ ਸਵਾਰੈ
॥੧॥ ਅਪਨੇ ਕਰਮ ਕੀ ਗਤਿ ਮੈ ਕਿਆ ਜਾਨਤ ॥ ਮੈ ਕਿਆ ਜਾਨਤ ਬਾਬਾ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਾਡ ਜਲੇ ਜੈਸੇ
ਲਕਰੀ ਕਾ ਤੂਲਾ ॥ ਕੇਥ ਜਲੇ ਜੈਸੇ ਧਾਸ ਕਾ ਪੂਲਾ ॥੨॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਤਬ ਹੀ ਨਰੁ ਜਾਗੈ ॥ ਜਮ ਕਾ ਡੰਡੁ ਮੂੰਡ
ਮਹਿ ਲਾਗੈ ॥੩॥੨॥ ਗੋਂਡ ॥ ਆਕਾਸਿ ਗਗਨੁ ਪਾਤਾਲਿ ਗਗਨੁ ਹੈ ਚਹੁ ਦਿਸਿ ਗਗਨੁ ਰਹਾਇਲੇ ॥ ਆਨਦ
ਮੂਲੁ ਸਦਾ ਪੁਰਖੋਤਸੁ ਘਟੁ ਬਿਨਸੈ ਗਗਨੁ ਨ ਜਾਇਲੇ ॥੧॥ ਸੋਹਿ ਬੈਰਾਗੁ ਭਿੱਓ ॥ ਇਹੁ ਜੀਤ ਆਇ ਕਹਾ
ਗਿੱਓ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੰਚ ਤਤੁ ਮਿਲਿ ਕਾਇਆ ਕੀਨੀ ਤਤੁ ਕਹਾ ਤੇ ਕੀਨੁ ਰੇ ॥ ਕਰਮ ਬਧ ਤੁਮ ਜੀਤ
ਕਹਤ ਹੈ ਕਰਮਹਿ ਕਿਨਿ ਜੀਤ ਦੀਨੁ ਰੇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਮਹਿ ਤਨੁ ਹੈ ਤਨ ਮਹਿ ਹਰਿ ਹੈ ਸਰਕ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਸੋਇ ਰੇ ॥
ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨ ਛੋਡਤ ਸਹਜੇ ਹੋਇ ਸੁ ਹੋਇ ਰੇ ॥੩॥੩॥

ਰਾਗੁ ਗੋਂਡ ਬਾਣੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੀ ਘਰੁ ੨

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਭੁਜਾ ਬਾੰਧਿ ਮਿਲਾ ਕਰਿ ਡਾਰਿਓ ॥ ਹਸਤੀ ਕ੍ਰੋਪਿ ਮੂੰਡ ਮਹਿ ਮਾਰਿਓ ॥ ਹਸਤਿ ਭਾਗਿ ਕੈ ਚੀਸਾ ਮਾਰੈ ॥
ਇਆ ਮੂਰਤਿ ਕੈ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੈ ॥੧॥ ਆਹਿ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਤੁਮਰਾ ਜੋਰੁ ॥ ਕਾਜੀ ਬਕਿਬੋ ਹਸਤੀ ਤੋਰੁ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਰੇ ਮਹਾਵਤ ਤੁੜ੍ਹੁ ਡਾਰਤ ਕਾਟਿ ॥ ਇਸਹਿ ਤੁਰਾਵਹੁ ਘਾਲਹੁ ਸਾਟਿ ॥ ਹਸਤਿ ਨ ਤੌਰੈ ਧਰੈ ਧਿਆਨੁ
॥ ਵਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਕਸੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥੨॥ ਕਿਆ ਅਪਰਾਧੁ ਸੰਤ ਹੈ ਕੀਨਾ ॥ ਬਾੰਧਿ ਪੋਟ ਕੁੰਚਰ ਕਤ ਦੀਨਾ ॥
ਕੁੰਚਰ ਪੋਟ ਲੈ ਲੈ ਨਮਸਕਾਰੈ ॥ ਬੂੜੀ ਨਹੀ ਕਾਜੀ ਅੰਧਿਆਰੈ ॥੩॥ ਤੀਨਿ ਬਾਰ ਪਤੀਆ ਭਰਿ ਲੀਨਾ ॥

ਮਨ ਕਠੋਰੁ ਅਜਹੂ ਨ ਪਤੀਨਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਹਮਰਾ ਗੋਬਿੰਦੁ ॥ ਚਤੁਰੇ ਪਦ ਮਹਿ ਜਨ ਕੀ ਜਿੰਦੁ ॥੪॥੧॥੪॥
 ਗੌਂਡੁ ॥ ਨਾ ਇਹੁ ਮਾਨਸੁ ਨਾ ਇਹੁ ਦੇਤੁ ॥ ਨਾ ਇਹੁ ਜਤੀ ਕਹਾਵੈ ਸੇਤੁ ॥ ਨਾ ਇਹੁ ਜੋਗੀ ਨਾ ਅਵਧੂਤਾ ॥
 ਨਾ ਇਸੁ ਮਾਇ ਨ ਕਾਹੂ ਪ੍ਰਤਾ ॥੧॥ ਇਆ ਮੰਦਰ ਮਹਿ ਕੈਨ ਬਸਾਈ ॥ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਕੋਊ ਪਾਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤੁ ॥ ਨਾ ਇਹੁ ਗਿਰਹੀ ਨਾ ਓਦਾਸੀ ॥ ਨਾ ਇਹੁ ਰਾਜ ਨ ਭੀਖ ਮਂਗਾਸੀ ॥ ਨਾ ਇਸੁ ਪਿੰਡੁ ਨ ਰਕਤੂ ਰਾਤੀ ॥
 ਨਾ ਇਹੁ ਬ੍ਰਹਮਨੁ ਨਾ ਇਹੁ ਖਾਤੀ ॥੨॥ ਨਾ ਇਹੁ ਤਪਾ ਕਹਾਵੈ ਸੇਖੁ ॥ ਨਾ ਇਹੁ ਜੀਵੈ ਨ ਮਰਤਾ ਦੇਖੁ ॥ ਇਸੁ
 ਮਰਤੇ ਕਤ ਜੇ ਕੋਊ ਰੋਵੈ ॥ ਜੋ ਰੋਵੈ ਸੋਈ ਪਤਿ ਖੋਵੈ ॥੩॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੈ ਡਗਰੇ ਪਾਇਆ ॥ ਜੀਵਨ ਮਖੁ
 ਦੋਊ ਮਿਟਵਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਇਹੁ ਰਾਮ ਕੀ ਅੰਸੁ ॥ ਜਸ ਕਾਗਦ ਪਰ ਮਿਟੈ ਨ ਮੰਸੁ ॥੪॥੨॥੫॥
 ਗੌਂਡੁ ॥ ਤ੍ਰਾਟੇ ਤਾਗੇ ਨਿਖੁਟੀ ਪਾਨਿ ॥ ਦੁਆਰ ਊਪਰਿ ਝਿਲਕਾਵਹਿ ਕਾਨ ॥ ਕੂਚ ਬਿਚਾਰੇ ਫ੍ਰੂਏ ਫਾਲ ॥ ਇਆ
 ਸੁੰਡੀਆ ਸਿਰਿ ਚਢਿਬੋ ਕਾਲ ॥੧॥ ਇਹੁ ਸੁੰਡੀਆ ਸਗਲੇ ਦ੍ਰਕੁ ਖੋਈ ॥ ਆਵਤ ਜਾਤ ਨਾਕ ਸਰ ਹੋਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤੁ ॥ ਤੁਰੀ ਨਾਰਿ ਕੀ ਛੋਡੀ ਬਾਤਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਵਾ ਕਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਲਖਿਕੀ ਲਖਿਕਨ ਖੈਬੋ ਨਾਹਿ ॥
 ਸੁੰਡੀਆ ਅਨਦਿਨੁ ਧਾਪੇ ਜਾਹਿ ॥੨॥ ਇਕ ਦੁਇ ਮੰਦਰਿ ਇਕ ਦੁਇ ਬਾਟ ॥ ਹਮ ਕਤ ਸਾਥਰੁ ਉਨ ਕਤ ਖਾਟ
 ॥ ਮੂੰਡ ਪਲੋਸਿ ਕਮਰ ਬਧਿ ਪੋਥੀ ॥ ਹਮ ਕਤ ਚਾਬਨੁ ਉਨ ਕਤ ਰੋਟੀ ॥੩॥ ਸੁੰਡੀਆ ਸੁੰਡੀਆ ਹ੍ਰਾਏ ਏਕ ॥ ਏ
 ਸੁੰਡੀਆ ਬੂਡਤ ਕੀ ਟੇਕ ॥ ਸੁਨਿ ਅੰਧਲੀ ਲੋਈ ਬੇਪੀਰਿ ॥ ਇਨ੍ ਸੁੰਡੀਅਨ ਭਜਿ ਸਰਨਿ ਕਬੀਰ ॥੪॥੩॥੬॥
 ਗੌਂਡੁ ॥ ਖਸਮੁ ਮਰੈ ਤਤ ਨਾਰਿ ਨ ਰੋਵੈ ॥ ਤਸੁ ਰਖਵਾਰਾ ਅਤਰੇ ਹੋਵੈ ॥ ਰਖਵਾਰੇ ਕਾ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸ ॥ ਆਗੈ
 ਨਰਕੁ ਈਹਾ ਭੋਗ ਬਿਲਾਸ ॥੧॥ ਏਕ ਸੁਹਾਗਨਿ ਜਗਤ ਪਿਆਰੀ ॥ ਸਗਲੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਕੀ ਨਾਰੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਤੁ ॥ ਸੋਹਾਗਨਿ ਗਲਿ ਸੋਹੈ ਹਾਰੁ ॥ ਸੰਤ ਕਤ ਬਿਖੁ ਬਿਗਸੈ ਸੱਸਾਰੁ ॥ ਕਰਿ ਸੀਗਾਰੁ ਬਹੈ ਪਖਿਆਰੀ ॥
 ਸੰਤ ਕੀ ਠਿਠਕੀ ਫਿਰੈ ਬਿਚਾਰੀ ॥੨॥ ਸੰਤ ਭਾਗਿ ਓਹ ਪਾਛੈ ਪਰੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਾਰਹੁ ਡਰੈ ॥ ਸਾਕਤ ਕੀ
 ਓਹ ਪਿੰਡ ਪਰਾਇਣਿ ॥ ਹਮ ਕਤ ਦੂਸਟਿ ਪਰੈ ਤਖਿ ਡਾਇਣਿ ॥੩॥ ਹਮ ਤਿਸ ਕਾ ਬਹੁ ਜਾਨਿਆ ਭੇਤ ॥ ਜਬ
 ਹ੍ਰਾਏ ਕ੃ਪਾਲ ਮਿਲੇ ਗੁਰਦੇਤੁ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਅਬ ਬਾਹਰਿ ਪਰੀ ॥ ਸੰਸਾਰੈ ਕੈ ਅੰਚਲਿ ਲਰੀ ॥੪॥੪॥੭॥

ਗੋਡ ॥ ਗ੍ਰਹਿ ਸੋਭਾ ਜਾ ਕੈ ਰੇ ਨਾਹਿ ॥ ਆਵਤ ਪਹੀਆ ਖੂਧੇ ਜਾਹਿ ॥ ਵਾ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਨਹੀ ਸਾਂਤੋਖੁ ॥ ਬਿਨੁ
 ਸੋਹਾਗਨਿ ਲਾਗੈ ਦੋਖੁ ॥੧॥ ਧਨੁ ਸੋਹਾਗਨਿ ਮਹਾ ਪਵੀਤ ॥ ਤਪੇ ਤਪੀਸਰ ਢੋਲੈ ਚੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਸੋਹਾਗਨਿ ਕਿਰਪਨ ਕੀ ਪ੍ਰੂਤੀ ॥ ਸੇਵਕ ਤਜਿ ਜਗਤ ਸਿਤ ਸੂਤੀ ॥ ਸਾਧੂ ਕੈ ਠਾਫ਼ੀ ਦਰਬਾਰਿ ॥ ਸਰਨਿ ਤੇਰੀ
 ਮੋ ਕਤ ਨਿਸਤਾਰਿ ॥੨॥ ਸੋਹਾਗਨਿ ਹੈ ਅਤਿ ਸੁੰਦਰੀ ॥ ਪਗ ਨੇਵਰ ਛਨਕ ਛਨਹਰੀ ॥ ਜਤ ਲਗੁ ਪ੍ਰਾਨ ਤਤੁ
 ਲਗੁ ਸੰਗੇ ॥ ਨਾਹਿ ਤ ਚਲੀ ਬੇਗਿ ਤਥਿ ਨੰਗੇ ॥੩॥ ਸੋਹਾਗਨਿ ਭਵਨ ਤੈ ਲੀਆ ॥ ਦੱਸ ਅਠ ਪੁਰਾਣ ਤੀਰਥ
 ਰਸ ਕੀਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸਰ ਬੇਧੇ ॥ ਬਡੇ ਭੂਪਤਿ ਰਾਜੇ ਹੈ ਛੇਧੇ ॥੪॥ ਸੋਹਾਗਨਿ ਤੁਰਵਾਰਿ ਨ
 ਪਾਰਿ ॥ ਪਾਂਚ ਨਾਰਦ ਕੈ ਸਾਂਗਿ ਬਿਧਵਾਰਿ ॥ ਪਾਂਚ ਨਾਰਦ ਕੇ ਮਿਟਵੇ ਫੂਟੇ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਛੂਟੇ
 ॥੫॥੫॥੮॥ ਗੋਡ ॥ ਜੈਸੇ ਮੰਦਰ ਮਹਿ ਬਲਹਰ ਨਾ ਠਾਹਰੈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਪਾਰਿ ਤਤਰੈ ॥ ਕੁੰਭ
 ਬਿਨਾ ਜਲੁ ਨਾ ਟੀਕਾਵੈ ॥ ਸਾਧੂ ਬਿਨੁ ਐਸੇ ਅਬਗਤੁ ਜਾਵੈ ॥੧॥ ਜਾਰਤ ਤਿਸੈ ਜੁ ਰਾਮੁ ਨ ਚੇਤੈ ॥ ਤਨ ਮਨ
 ਰਮਤ ਰਹੈ ਮਹਿ ਖੇਤੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੈਸੇ ਹਲਹਰ ਬਿਨਾ ਜਿਮੀ ਨਹੀ ਬੋਈਐ ॥ ਸੂਤ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਮਣੀ ਪਰੋਈਐ
 ॥ ਘੁੰਡੀ ਬਿਨੁ ਕਿਆ ਗਂਠਿ ਚੜਾਈਐ ॥ ਸਾਧੂ ਬਿਨੁ ਤੈਸੇ ਅਬਗਤੁ ਜਾਈਐ ॥੨॥ ਜੈਸੇ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਬਿਨੁ
 ਬਾਲੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਬਿੰਬ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਕਪਰੇ ਧੋਈ ॥ ਘੋਰ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਅਸਵਾਰ ॥ ਸਾਧੂ ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਦਰਵਾਰ
 ॥੩॥ ਜੈਸੇ ਬਾਜੇ ਬਿਨੁ ਨਹੀ ਲੀਜੈ ਫੇਰੀ ॥ ਖਸਮਿ ਦੁਹਾਗਨਿ ਤਜਿ ਅਤਹੇਰੀ ॥ ਕਹੈ ਕਬੀਰ ਏਕੈ ਕਰਿ ਕਰਨਾ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਬਹੁਰਿ ਨਹੀ ਮਰਨਾ ॥੪॥੬॥੬॥ ਗੋਡ ॥ ਕੂਟਨੁ ਸੋਇ ਜੁ ਮਨ ਕਤ ਕੂਟੈ ॥ ਮਨ ਕੂਟੈ ਤਤ
 ਜਮ ਤੇ ਛੂਟੈ ॥ ਕੁਟਿ ਕੁਟਿ ਮਨੁ ਕਸਵਟੀ ਲਾਵੈ ॥ ਸੋ ਕੂਟਨੁ ਮੁਕਤਿ ਬਹੁ ਪਾਵੈ ॥੧॥ ਕੂਟਨੁ ਕਿਸੈ ਕਹਹੁ ਸੰਸਾਰ
 ॥ ਸਗਲ ਬੋਲਨ ਕੇ ਮਾਹਿ ਬੀਚਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਚਨੁ ਸੋਇ ਜੁ ਮਨ ਸਿਤ ਨਾਚੈ ॥ ਝੂਠਿ ਨ ਪਤੀਐ ਪਰਚੈ
 ਸਾਚੈ ॥ ਇਸੁ ਮਨ ਆਗੇ ਪ੍ਰੈ ਤਾਲ ॥ ਇਸੁ ਨਾਚਨ ਕੇ ਮਨ ਰਖਵਾਲ ॥੨॥ ਬਜਾਰੀ ਸੋ ਜੁ ਬਜਾਰਹਿ ਸੋਧੈ ॥
 ਪਾਂਚ ਪਲੀਤਹ ਕਤ ਪਰਬੋਧੈ ॥ ਨਤ ਨਾਇਕ ਕੀ ਭਗਤਿ ਪਛਾਨੈ ॥ ਸੋ ਬਾਜਾਰੀ ਹਮ ਗੁਰ ਮਾਨੇ ॥੩॥ ਤਸਕਰੁ
 ਸੋਇ ਜਿ ਤਾਤਿ ਨ ਕਰੈ ॥ ਇੰਦ੍ਰੀ ਕੈ ਜਤਨਿ ਨਾਮੁ ਤਚਰੈ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਹਮ ਐਸੇ ਲਖਨ ॥ ਧਨੁ ਗੁਰਦੇਵ ਅਤਿ

ਰूप बिचखन ॥४॥७॥१०॥ गोंड ॥ धनु गुपाल धनु गुरदेव ॥ धनु अनादि भूखे कवलु टहकेव ॥
 धनु ओङ्गि संत जिन ऐसी जानी ॥ तिन कउ मिलिबो सारिंगपानी ॥१॥ आदि पुरख ते होङ्गि अनादि
 ॥ जपीऔ नामु अन्न कै सादि ॥१॥ रहाउ ॥ जपीऔ नामु जपीऔ अन्नु ॥ अंभै कै संगि नीका वन्नु ॥
 अन्नै बाहरि जो नर होवहि ॥ तीनि भवन महि अपनी खोवहि ॥२॥ छोडहि अन्नु करहि पाखंड ॥ ना
 सोहागनि ना ओहि रंड ॥ जग महि बकते दूधाधारी ॥ गुपती खावहि वटिका सारी ॥३॥ अन्नै बिना
 न होङ्गि सुकालु ॥ तजिऔ अंनि न मिलै गुपालु ॥ कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ धनु अनादि
 ठाकुर मनु मानिआ ॥४॥८॥११॥

राग गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु ੧

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

असुमेध जगने ॥ तुला पुरख दाने ॥ प्राग इसनाने ॥१॥ तउ न पुजहि हरि कीरति नामा ॥ अपुने
 रामहि भजु रे मन आलसीआ ॥१॥ रहाउ ॥ गडिआ पिंडु भरता ॥ बनारसि असि बसता ॥ मुखि
 बेद चतुर पड़ता ॥२॥ सगल धरम अछिता ॥ गुर गिआन इंद्री दृढ़ता ॥ खटु करम सहित रहता
 ॥३॥ सिवा सकति संबादं ॥ मन छोडि छोडि सगल भेदं ॥ सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥ भजु नामा तरसि
 भव सिंधं ॥४॥१॥ गोंड ॥ नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥ प्रान तजे वा को धिआनु न जाए ॥१॥ ऐसे
 रामा ऐसे हेरउ ॥ रामु छोडि चितु अनत न फेरउ ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥ सोना
 गढते हेरै सुनारा ॥२॥ जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥ कउडा डारत हेरै जुआरी ॥३॥ जह जह
 देखउ तह तह रामा ॥ हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥४॥२॥ गोंड ॥ मो कउ तारि ले रामा तारि
 ले ॥ मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥१॥ रहाउ ॥ नर ते सुर होङ्गि जात
 निमख मै सतਿਗੁਰ ਬੁਧਿ ਸਿਖਲਾਈ ॥ नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ ਸੋ ਅਕਖਧ ਮै ਪਾਈ ॥१॥
 जहा जहा धूअ नारटु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥ तेरे नाम अविलम्बि बहुतु जन उधरे नामे की निज

ਮति ਏਹ ॥੨॥੩॥ ਗੋਂਡ ॥ ਮੋਹਿ ਲਾਗਤੀ ਤਾਲਾਬੇਲੀ ॥ ਬਛਰੇ ਬਿਨੁ ਗਾਇ ਅਕੇਲੀ ॥੧॥ ਪਾਨੀਆ
 ਬਿਨੁ ਮੀਨੁ ਤਲਫੈ ॥ ਐਸੇ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਬਿਨੁ ਬਾਪੁਰੋ ਨਾਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈਸੇ ਗਾਇ ਕਾ ਬਾਛਾ ਛੂਟਲਾ ॥
 ਥਨ ਚੋਖਤਾ ਮਾਖਨੁ ਘੂਟਲਾ ॥੨॥ ਨਾਮਦੇਉ ਨਾਰਾਇਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰੁ ਭੇਟਤ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥੩॥
 ਜੈਸੇ ਬਿਖੈ ਹੇਤ ਪਰ ਨਾਰੀ ॥ ਐਸੇ ਨਾਮੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੁਰਾਰੀ ॥੪॥ ਜੈਸੇ ਤਾਪਤੇ ਨਿਰਮਲ ਧਾਮਾ ॥ ਤੈਸੇ ਰਾਮ
 ਨਾਮਾ ਬਿਨੁ ਬਾਪੁਰੋ ਨਾਮਾ ॥੫॥੪॥

ਰਾਗ ਗੋਂਡ ਬਾਣੀ ਨਾਮਦੇਉ ਜੀਤ ਕੀ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਤ ਮਿਟੇ ਸਭਿ ਭਰਮਾ ॥ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਲੈ ਊਤਮ ਧਰਮਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਤ ਜਾਤਿ ਕੁਲ ਹਰੀ
 ॥ ਸੋ ਹਰਿ ਅੰਧੁਲੇ ਕੀ ਲਾਕਰੀ ॥੧॥ ਹਰਾਏ ਨਮਸਤੇ ਹਰਾਏ ਨਮਹ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਤ ਨਹੀਂ ਦੁਖੁ ਜਮਹ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਨਾਖਸ ਹਰੇ ਪਰਾਨ ॥ ਅਜੈਮਲ ਕੀਓ ਬੈਕੁਂਠਹਿ ਥਾਨ ॥ ਸ੍ਰਵਾ ਪਡਾਵਤ ਗਨਿਕਾ
 ਤਰੀ ॥ ਸੋ ਹਰਿ ਨੈਨਹੁ ਕੀ ਪ੍ਰਤਰੀ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਤ ਪ੍ਰਤਨਾ ਤਰੀ ॥ ਬਾਲ ਧਾਤਨੀ ਕਪਟਹਿ ਭਰੀ ॥
 ਸਿਮਰਨ ਟ੍ਰੋਪਦ ਸੁਤ ਉਧਰੀ ॥ ਗੁਤਮ ਸਤੀ ਸਿਲਾ ਨਿਸਤਰੀ ॥੩॥ ਕੇਸੀ ਕਂਸ ਮਥਨੁ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ॥
 ਜੀਅ ਦਾਨੁ ਕਾਲੀ ਕਤ ਦੀਆ ॥ ਪ੍ਰਣਵੈ ਨਾਮਾ ਐਸੋ ਹਰੀ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਭੈ ਅਪਦਾ ਟਰੀ ॥੪॥੧॥੫॥
 ਗੋਂਡ ॥ ਭੈਰਤ ਭੂਤ ਸੀਤਲਾ ਧਾਵੈ ॥ ਖਰ ਬਾਹਨੁ ਤਹੁ ਛਾਰੁ ਤਡਾਵੈ ॥੧॥ ਹਤ ਤਤ ਏਕੁ ਰਮੰਝਾ
 ਲੈਹਤ ॥ ਆਨ ਦੈਵ ਬਦਲਾਵਨਿ ਦੈਹਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਵ ਸਿਵ ਕਰਤੇ ਜੋ ਨਰੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਬਰਦ
 ਚਢੇ ਡਤੁਰੁ ਫਮਕਾਵੈ ॥੨॥ ਮਹਾ ਮਾਈ ਕੀ ਪ੍ਰਯਾ ਕਰੈ ॥ ਨਰ ਸੈ ਨਾਰਿ ਹੋਇ ਅਤਰੈ ॥੩॥ ਤੂ
 ਕਹੀਅਤ ਹੀ ਆਦਿ ਭਵਾਨੀ ॥ ਮੁਕਤਿ ਕੀ ਕਰੀਆ ਕਹਾ ਛਪਾਨੀ ॥੪॥ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗਹੁ ਮੀਤਾ ॥
 ਪ੍ਰਣਵੈ ਨਾਮਾ ਇਤ ਕਹੈ ਗੀਤਾ ॥੫॥੨॥੬॥ ਬਿਲਾਵਲੁ ਗੋਂਡ ॥ ਆਜੁ ਨਾਮੇ ਬੀਠਲੁ ਦੇਖਿਆ ਮੂਰਖ ਕੋ
 ਸਮਝਾਊ ਰੇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਾਂਡੇ ਤੁਮਰੀ ਗਾਇਕੀ ਲੋਧੇ ਕਾ ਖੇਤੁ ਖਾਤੀ ਥੀ ॥ ਲੈ ਕਰਿ ਠੇਗਾ ਟਗਰੀ ਤੋਰੀ ਲਾਂਗਤ
 ਲਾਂਗਤ ਜਾਤੀ ਥੀ ॥੧॥ ਪਾਂਡੇ ਤੁਮਰਾ ਮਹਾਦੇਉ ਧਤਲੇ ਬਲਦ ਚਡਿਆ ਆਵਤੁ ਦੇਖਿਆ ਥਾ ॥ ਮੋਦੀ ਕੇ ਘਰ

खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥२॥ पाँडे तुमरा रामचंद्रु सो भी आवतु देखिआ था ॥ रावन
सेती सरबर होई घर की जोड़ि गवाई थी ॥३॥ ह्यादू अन्ना तुरकू काणा ॥ दुहाँ ते गिआनी सिआणा
॥ ह्यादू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥ नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥४॥३॥७॥

राग गोड बाणी रविदास जीउ की घरु २

੧੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥ सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥ सोई
 मुकंदु हमरा पित माता ॥१॥ जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ ता के सेवक कउ सदा अन्दे ॥१॥
 रहाउ ॥ मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥ सेव मुकंद करै बैरागी ॥ सोई
 मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥२॥ एकु मुकंदु करै उपकारु ॥ हमरा कहा करै संसारु ॥ मेटी जाति
 हूए दरबारि ॥ तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥३॥ उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥ करि किरपा
 लीने कीट दास ॥ कहु रविदास अब तृसना चूकी ॥ जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४॥१॥ गोंड ॥
 जे ओहु अठसठि तीरथ नावै ॥ जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥ जे ओहु कूप तटा देवावै ॥ करै निंद
 सभ बिरथा जावै ॥२॥ साध का निंदकु कैसे तरै ॥ सरपर जानहु नरक ही परै ॥१॥ रहाउ ॥
 जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ अरपै नारि सीगार समेति ॥ सगली सिंमृति स्रवनी सुनै ॥
 करै निंद कवनै नही गुनै ॥२॥ जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥ भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥
 अपना बिगारि बिराँना साँढै ॥ करै निंद बहु जोनी हाँढै ॥३॥ निंदा कहा करहु संसारा ॥ निंदक
 का परगटि पाहारा ॥ निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥
 ४॥२॥१॥७॥२॥४॥ जोड़ु ॥

रामकली महला ੧ ਘਰ ੧ ਚਤੁਪਦੇ

੧ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕੋਈ ਪੜਤਾ ਸਹਸਾਕਿਰਤਾ ਕੋਈ ਪੱਡੈ ਪੁਰਾਨਾ ॥ ਕੋਈ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਜਪਮਾਲੀ ਲਾਗੈ ਤਿਸੈ ਧਿਆਨਾ ॥ ਅਥੈ ਹੀ
ਕਬ ਹੀ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਨਾ ਤੇਰਾ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਪਛਾਨਾ ॥੧॥ ਨ ਜਾਣਾ ਹਰੇ ਮੇਰੀ ਕਵਨ ਗਤੇ ॥ ਹਮ ਮੂਰਖ ਅਗਿਆਨ
ਸਰਨਿ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਹੁ ਮੇਰੀ ਲਾਜ ਪਤੇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਬਹੂ ਜੀਅੜਾ ਊਭਿ ਚੜਤੁ ਹੈ
ਕਬਹੂ ਜਾਇ ਪਇਆਲੇ ॥ ਲੋਭੀ ਜੀਅੜਾ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਤੁ ਹੈ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਭਾਲੇ ॥੩॥ ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇ ਮੰਡਲ
ਮਹਿ ਆਏ ਜੀਵਣੁ ਸਾਜਹਿ ਮਾਈ ॥ ਏਕਿ ਚਲੇ ਹਮ ਦੇਖਹ ਸੁਆਮੀ ਭਾਹਿ ਬਲਮਤੀ ਆਈ ॥੪॥ ਨ ਕਿਸੀ
ਕਾ ਮੀਤੁ ਨ ਕਿਸੀ ਕਾ ਭਾਈ ਨਾ ਕਿਸੈ ਬਾਪੁ ਨ ਮਾਈ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਜੇ ਤੂ ਦੇਵਹਿ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਖਾਈ
॥੫॥੧॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਤੇਰੀ ਪਸ਼ਿ ਰਹੀ ॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਨਰਹਰੀ ॥੧॥
ਜੀਵਨ ਤਲਬ ਨਿਵਾਰਿ ਸੁਆਮੀ ॥ ਅੰਧ ਕੂਪਿ ਮਾਇਆ ਮਨੁ ਗਾਡਿਆ ਕਿਤ ਕਰਿ ਉਤਰਤ ਪਾਰਿ ਸੁਆਮੀ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਹ ਭੀਤਰਿ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਬਸਿਆ ਬਾਹਰਿ ਕਾਹੇ ਨਾਹੀ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸਾਰ ਕਰੇ ਨਿਤ ਸਾਹਿਬੁ
ਸਦਾ ਚਿੰਤ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੨॥ ਆਪੇ ਨੇੜੈ ਆਪੇ ਦੂਰਿ ॥ ਆਪੇ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਸਤਗੁਰੁ ਮਿਲੈ

अंधेरा जाइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥३॥ अंतरि सहसा बाहरि माइआ नैणी लागसि
 बाणी ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा परतापहिंगा प्राणी ॥४॥२॥ रामकली महला १ ॥ जितु
 दरि वसहि कवनु दरु कहीऔ दरा भीतरि दरु कवनु लहै ॥ जिसु दर कारणि फिरा उदासी सो दरु
 कोई आइ कहै ॥१॥ किन बिधि सागरु तरीऔ ॥ जीवतिआ नह मरीऔ ॥१॥ रहाउ ॥ दुखु
 दरवाजा रोहु रखवाला आसा अंदेसा दुइ पट जड़े ॥ माइआ जलु खाई पाणी घरु बाधिआ सत कै
 आसणि पुरखु रहै ॥२॥ किंते नामा अंतु न जाणिआ तुम सरि नाही अवरु हरे ॥ ऊचा नही कहणा
 मन महि रहणा आपे जाणै आपि करे ॥३॥ जब आसा अंदेसा तब ही कित करि एकु कहै ॥ आसा
 भीतरि रहै निरासा तउ नानक एकु मिलै ॥४॥ इन बिधि सागरु तरीऔ ॥ जीवतिआ इउ मरीऔ
 ॥१॥ रहाउ दूजा ॥३॥ रामकली महला १ ॥ सुरति सबदु साखी मेरी सिंडी बाजै लोकु सुणे ॥ पतु
 झोली मंगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥१॥ बाबा गोरखु जागै ॥ गोरखु सो जिनि गोड़ि उठाली करते
 बार न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ पाणी प्राण पवणि बंधि रखे चंदु सूरजु मुखि दीए ॥ मरण जीवण कउ
 धरती दीनी एते गुण विसरे ॥२॥ सिधि साधिक अरु जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥ जे तिन मिला
 त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥३॥ कागदु लूणु रहै ध्रित संगे पाणी कमलु रहै ॥ औसे भगत
 मिलहि जन नानक तिन जमु किआ करै ॥४॥४॥ रामकली महला १ ॥ सुणि माछिंद्रा नानकु बोलै
 ॥ वसगति पंच करे नह डोलै ॥ औसी जुगति जोग कउ पाले ॥ आपि तरै सगले कुल तारे ॥१॥ सो
 अउधूतु औसी मति पावै ॥ अहिनिसि सुनि समाधि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ भिखिआ भाइ भगति भै चलै
 ॥ होवै सु तृपति संतोखि अमुलै ॥ धिआन रूपि होड़ि आसणु पावै ॥ सचि नामि ताड़ी चितु लावै ॥२॥
 नानकु बोलै अंमृत बाणी ॥ सुणि माछिंद्रा अउधू नीसाणी ॥ आसा माहि निरासु वलाए ॥ निहचउ
 नानक करते पाए ॥३॥ प्रणवति नानकु अगमु सुणाए ॥ गुर चेले की संधि मिलाए ॥ दीखिआ दारू

भोजनु खाइ ॥ छिअ दरसन की सोझी पाइ ॥४॥५॥ रामकली महला ੧ ॥ हम डोलत बेड़ी पाप भरी
 है पवणु लगै मतु जाई ॥ सनमुख सिध भेटण कउ आए निहचउ देहि वडिआई ॥६॥ गुर तारि
 तारणहारिआ ॥ देहि भगति पूर्न अविनासी हउ तुझ कउ बलिहारिआ ॥७॥ रहाउ ॥ सिध साधिक
 जोगी अरु जंगम एकु सिधु जिनी धिआइआ ॥ परसत पैर सिङ्गत ते सुआमी अखरु जिन कउ आइआ
 ॥८॥ जप तप संजम करम न जाना नामु जपी प्रभ तेरा ॥ गुरु परमेसरु नानक भेटिओ साचै सबदि
 निबेरा ॥९॥१॥ रामकली महला ੧ ॥ सुरती सुरति रलाईअै एतु ॥ तनु करि तुलहा लम्घहि जेतु
 ॥ अंतरि भाहि तिसै तू रखु ॥ अहिनिसि दीवा बलै अथकु ॥१॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ जितु दीवै
 सभ सोझी पाइ ॥२॥ रहाउ ॥ हछी मिटी सोझी होइ ॥ ता का कीआ मानै सोइ ॥ करणी ते करि चकहु
 ढालि ॥ औथै ओथै निबही नालि ॥३॥ आपे नदरि करे जा सोइ ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोइ ॥ तितु
 घटि दीवा निहचलु होइ ॥ पाणी मरै न बुझाइआ जाइ ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥४॥ डोलै वाउ
 न वडा होइ ॥ जापै जिउ सिंघासणि लोइ ॥ खत्री ब्राह्मणु सूदु कि वैसु ॥ निरति न पाईआ गणी
 सह्यस ॥ ऐसा दीवा बाले कोइ ॥ नानक सो पारंगति होइ ॥५॥७॥ रामकली महला ੧ ॥ तुधनो
 निवणु मन्नणु तेरा नाउ ॥ साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥ सतु संतोखु होवै अरदासि ॥ ता सुणि सदि
 बहाले पासि ॥१॥ नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ ऐसी दरगह साचा सोइ ॥२॥ रहाउ ॥ प्रापति
 पोता करमु पसाउ ॥ तू देवहि मंगत जन चाउ ॥ भाडै भाउ पवै तितु आइ ॥ धुरि तै छोडी कीमति
 पाइ ॥३॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ अपनी कीमति आपे धरै ॥ गुरमुखि परगटु होआ
 हरि राइ ॥ ना को आवै ना को जाइ ॥४॥ लोकु धिकारु कहै मंगत जन मागत मानु न पाइआ ॥
 सह कीआ गला दर कीआ बाता तै ता कहणु कहाइआ ॥५॥८॥ रामकली महला ੧ ॥ सागर
 महि बूंद बूंद महि सागरु कवणु बुझै बिधि जाणै ॥ उतभुज चलत आपि करि चीनै आपे ततु पछाणै

॥੧॥ ਐਸਾ ਗਿਆਨੁ ਬੀਚਾਰੈ ਕੋਈ ॥ ਤਿਸ ਤੇ ਸੁਕਤਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਿਨ ਮਹਿ ਰੈਣ
 ਰੈਣ ਮਹਿ ਦਿਨੀਅਰੁ ਤਸਨ ਸੀਤ ਬਿਧਿ ਸੋਈ ॥ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸਮਝਾ ਨ
 ਹੋਈ ॥੨॥ ਪੁਰਖ ਮਹਿ ਨਾਰਿ ਨਾਰਿ ਮਹਿ ਪੁਰਖਾ ਬੂਜ਼ਹੁ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ॥ ਧੁਨਿ ਮਹਿ ਧਿਆਨੁ ਧਿਆਨ
 ਮਹਿ ਜਾਨਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥ ਕਹਾਨੀ ॥੩॥ ਮਨ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਮਹਿ ਮਨ੍ਤ੍ਰਾ ਪੰਚ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਭਾਈ ॥
 ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜਿਨ ਏਕ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੪॥੬॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਾ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਤਾ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰੀ ॥ ਸੋ ਸੇਵਕਿ ਰਾਮ ਪਿਆਰੀ ॥ ਜੋ ਗੁਰ ਸਬਦੀ
 ਬੀਚਾਰੀ ॥੧॥ ਸੋ ਹਰਿ ਜਨੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਲਾਜ ਛੋਡਿ ਹਰਿ
 ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧੁਨਿ ਵਾਜੇ ਅਨਹਦ ਘੋਰਾ ॥ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਹਰਿ ਰਸਿ ਮੋਰਾ ॥ ਗੁਰ
 ਪ੍ਰੈ ਸਚੁ ਸਮਾਇਆ ॥ ਗੁਰੁ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਸਭਿ ਨਾਦ ਬੇਦ ਗੁਰਬਾਣੀ ॥ ਮਨੁ ਰਾਤਾ
 ਸਾਰਿਗਪਾਣੀ ॥ ਤਹ ਤੀਰਥ ਕਰਤ ਤਪ ਸਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੩॥ ਜਹ ਆਪੁ ਗਿਆ
 ਭਤ ਭਾਗਾ ॥ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਸੇਵਕੁ ਲਾਗਾ ॥ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ
 ਮਿਲਾਇਆ ॥੪॥੧੦॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਛਾਦਨੁ ਭੋਜਨੁ ਮਾਗਤੁ ਭਾਗੈ ॥ ਖੁਧਿਆ ਦੁਸਟ ਜਲੈ
 ਦੁਖੁ ਆਗੈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਨਹੀ ਲੀਨੀ ਦੁਰਮਤਿ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਭਗਤਿ ਪਾਵੈ ਜਨੁ ਕੋਈ ॥੧॥ ਜੋਗੀ
 ਜੁਗਤਿ ਸਹਜ ਘਰਿ ਵਾਸੈ ॥ ਏਕ ਦੂਸਟਿ ਏਕੋ ਕਰਿ ਦੇਖਿਆ ਭੀਖਿਆ ਭਾਇ ਸਬਦਿ ਤ੃ਪਤਾਸੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਪੰਚ ਬੈਲ ਗੱਡੀਆ ਦੇਹ ਧਾਰੀ ॥ ਰਾਮ ਕਲਾ ਨਿਬਹੈ ਪਤਿ ਸਾਰੀ ॥ ਧਰ ਤੂਟੀ ਗਾਡੀ ਸਿਰ ਭਾਰਿ
 ॥ ਲਕਰੀ ਬਿਖਰਿ ਜਰੀ ਮੰਝ ਭਾਰਿ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ਜੋਗੀ ॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮ ਕਰਣਾ ਸੋਗ
 ਬਿਓਗੀ ॥ ਭੁਗਤਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਅਸਥਿਰੁ ਕਂਧੁ ਜਪੈ ਨਿਰਂਕਾਰੀ ॥੩॥ ਸਹਜ ਜਗੋਟਾ
 ਬਾਂਧਨ ਤੇ ਛੂਟਾ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਲੂਟਾ ॥ ਮਨ ਮਹਿ ਸੁੰਦਰਾ ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਰਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ
 ਭਗਤਿ ਜਨ ਤਰਣਾ ॥੪॥੧੧॥

੧੯॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ॥ ਸਤਜੁਗਿ ਸਚੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ
 ਭਗਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਈ ॥ ਸਤਜੁਗਿ ਧਰਮੁ ਪੈਰ ਹੈ ਚਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜ੍ਹੈ ਕੋ ਬੀਚਾਰਿ ॥੧॥ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਨਾਮਿ
 ਵਡਿਆਈ ਹੋਈ ॥ ਜਿ ਨਾਮਿ ਲਾਗੈ ਸੋ ਮੁਕਤਿ ਹੋਵੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੇਤੈ ਇਕ
 ਕਲ ਕੀਨੀ ਟ੍ਰੂਰਿ ॥ ਪਾਖਣਦੁ ਵਰਤਿਆ ਹਰਿ ਜਾਣਨਿ ਟ੍ਰੂਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜ੍ਹੈ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਸੁਖੁ
 ਹੋਈ ॥੨॥ ਦੁਆਪੁਰਿ ਟ੍ਰੂਜੈ ਦੁਬਿਧਾ ਹੋਇ ॥ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨੇ ਜਾਣਹਿ ਟ੍ਰੋਇ ॥ ਦੁਆਪੁਰਿ ਧਰਮਿ ਟੁਇ ਪੈਰ
 ਰਖਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਤ ਨਾਮੁ ਵ੍ਰਡਾਏ ॥੩॥ ਕਲਜੁਗਿ ਧਰਮ ਕਲਾ ਇਕ ਰਹਾਏ ॥ ਇਕ ਪੈਰਿ ਚਲੈ ਮਾਇਆ
 ਮੋਹੁ ਵਧਾਏ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਅਤਿ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਸਤਗੁਰੁ ਭੈਟੈ ਨਾਮਿ ਤਥਾਰੁ ॥੪॥ ਸਭ ਜੁਗ ਮਹਿ ਸਾਚਾ ਏਕੋ
 ਸੋਈ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਸਚੁ ਟ੍ਰੂਜਾ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥ ਸਾਚੀ ਕੀਰਤਿ ਸਚੁ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ਕੋਈ ॥੫॥
 ਸਭ ਜੁਗ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਊਤਸੁ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਬੂੜ੍ਹੈ ਕੋਈ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਭਗਤੁ ਜਨੁ ਸੋਈ ॥
 ਨਾਨਕ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ਹੋਈ ॥੬॥੧॥

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧

੧੯॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜੇ ਵਡ ਭਾਗ ਹੋਵਹਿ ਵਡਭਾਗੀ ਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਨਾਮੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ
 ਸਮਾਵੈ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਸਦ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥ ਹਿਰਦੈ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਹੋਵੈ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ
 ਸਮਾਣੀ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹੀਰਾ ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਮਾਣਕ ਬਹੁ ਸਾਗਰ ਭਰਪੂਰੁ ਕੀਆ ॥ ਜਿਸੁ ਵਡ ਭਾਗੁ ਹੋਵੈ ਵਡ
 ਮਸਤਕਿ ਤਿਨਿ ਗੁਰਮਤਿ ਕਢਿ ਕਢਿ ਲੀਆ ॥੨॥ ਰਤਨੁ ਜਵੇਹਰੁ ਲਾਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਗੁਰਿ ਕਾਢਿ ਤਲੀ
 ਦਿਖਲਾਇਆ ॥ ਭਾਗਹੀਣ ਮਨਮੁਖਿ ਨਹੀ ਲੀਆ ਤ੍ਰਣ ਓਲੈ ਲਾਖੁ ਛਪਾਇਆ ॥੩॥ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਹੋਵੈ
 ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਤਾ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਾ ਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਪਾਵੈ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥੪॥੧॥
 ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਰਾਮ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਭਡਿਆ ਅਨਦਾ ਹਰਿ ਨੀਕੀ ਕਥਾ ਸੁਨਾਇ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਗੱਈ

सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ॥१॥ राम जन गुरमति रामु बोलाइ ॥ जो जो सुणै कहै सो
 मुकता राम जपत सोहाइ ॥२॥ रहाउ ॥ जे वड भाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइ ॥
 दरसनु संत देहु करि किरपा सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥३॥ हरि के लोग राम जन नीके भागहीण
 न सुखाइ ॥ जित जित राम कहहि जन ऊचे नर निंदक डंसु लगाइ ॥४॥ धिगु धिगु नर निंदक
 जिन जन नहीं भाए हरि के सखा सखाइ ॥ से हरि के चोर वेमुख मुख काले जिन गुर की पैज न भाइ ॥५॥
 दिआ दिआ करि राखहु हरि जीउ हम दीन तेरी सरणाइ ॥ हम बारिक तुम पिता प्रभ मेरे जन
 नानक बखसि मिलाइ ॥६॥२॥ रामकली महला ४ ॥ हरि के सखा साध जन नीके तिन ऊपरि हाथु
 वतावै ॥ गुरमुखि साध सई प्रभ भाए करि किरपा आपि मिलावै ॥७॥ राम मो कउ हरि जन मेलि
 मनि भावै ॥ अमित अमित हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥८॥ रहाउ ॥ हरि के लोग
 राम जन ऊतम मिलि ऊतम पदवी पावै ॥ हम होवत चेरी दास दासन की मेरा ठाकुरु खुसी करावै
 ॥९॥ सेवक जन सेवहि से वडभागी रिद मनि तनि प्रीति लगावै ॥ बिनु प्रीती करहि बहु बाता कूड़ु
 बोलि कूड़ो फलु पावै ॥१०॥ मो कउ धारि कृपा जगजीवन दाते हरि संत पगी ले पावै ॥ हउ काटउ
 काटि बाढि सिरु राखउ जितु नानक संतु चड़ि आवै ॥११॥३॥ रामकली महला ४ ॥ जे वड भाग होवहि
 वड मेरे जन मिलदिआ ढिल न लाईअै ॥ हरि जन अंमृत कुंट सर नीके वडभागी तितु नावाईअै
 ॥१२॥ राम मो कउ हरि जन कारै लाईअै ॥ हउ पाणी पखा पीसउ संत आगै पग मलि मलि धूरि मुखि
 लाईअै ॥१३॥ रहाउ ॥ हरि जन वडे वडे वड ऊचे जो सतगुर मेलि मिलाईअै ॥ सतगुर जेवडु अवरु न
 कोई मिलि सतगुर पुरख धिआईअै ॥१४॥ सतगुर सरणि परे तिन पाइआ मेरे ठाकुर लाज रखाईअै ॥
 डिकि अपणै सुआइ आइ बहहि गुर आगै जित बगुल समाधि लगाईअै ॥१५॥ बगुला काग नीच
 की संगति जाइ करंग बिखू मुखि लाईअै ॥ नानक मेलि मेलि प्रभ संगति मिलि संगति ह्वासु कराईअै

॥੪॥੮॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਤਗੁਰ ਦਿੜਿਆ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਣ ਹਰਿ ਰਾਡਿਆ ॥
 ਹਮ ਚੇਰੀ ਛੋਡਿ ਲਗਹ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮਾਰਗੁ ਪਥੁ ਦਿਖਾਡਿਆ ॥੧॥ ਰਾਮ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਮਨਿ ਭਾਡਿਆ ॥ ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਬੇਲੀ ਮੇਰਾ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ਹਰਿ ਸਖਾਡਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੇਰੇ
 ਛਿਕੁ ਖਿਨੁ ਪ੍ਰਾਨ ਨ ਰਹਹਿ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਮਰਹਿ ਮੇਰੀ ਮਾਡਿਆ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਕਡ ਭਾਗ ਗੁਰ ਸਰਣੀ
 ਆਏ ਹਰਿ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਡਿਆ ॥੨॥ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਸੂਝੈ ਕੂਝੈ ਮਨਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਪਤ ਜਪਾਡਿਆ
 ॥ ਨਾਮਹੀਣ ਫਿਰਹਿ ਸੇ ਨਕਟੇ ਤਿਨ ਘਸਿ ਘਸਿ ਨਕ ਕਢਾਡਿਆ ॥੩॥ ਮੋ ਕਤ ਜਗਜੀਵਨ ਜੀਵਾਲਿ ਲੈ
 ਸੁਆਮੀ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਕਵਸਾਡਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਹੈ ਪ੍ਰੂਗ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਧਿਆਡਿਆ ॥
 ੪॥੫॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਤਗੁਰ ਦਾਤਾ ਕਡਾ ਕਡ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਜੀਅ
 ਦਾਨੁ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੀਆ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਂਠਿ ਧਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਕਥਾ ਸੁਣੀ ਮਨਿ ਭਾਈ ਧਨੁ ਧਨੁ ਕਡ ਭਾਗ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸ ਧਿਆਵਹਿ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ
 ਨ ਪਾਵਹਿ ਪਾਰੇ ॥ ਹਿਰਦੈ ਕਾਮ ਕਾਮਨੀ ਮਾਗਹਿ ਰਿਧਿ ਮਾਗਹਿ ਹਾਥੁ ਪਸਾਰੇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਜਪਿ ਜਪੁ ਕਡਾ
 ਕਡੇਗਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਖਤ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਜੇ ਕਡ ਭਾਗ ਹੋਵਹਿ ਤਾ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਭਤਜਲੁ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੇ ॥੩॥
 ਹਰਿ ਜਨ ਨਿਕਟਿ ਨਿਕਟਿ ਹਰਿ ਜਨ ਹੈ ਹਰਿ ਰਾਖੈ ਕਂਠਿ ਜਨ ਧਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ਹੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਹਮ
 ਬਾਰਿਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥੪॥੬॥੧੮॥

ਰਾਗੁ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਿਰਪਾ ਕਰਹੁ ਦੀਨ ਕੇ ਦਾਤੇ ਮੇਰਾ ਗੁਣੁ ਅਕਗਣੁ ਨ ਬੀਚਾਰਹੁ ਕੋਈ ॥ ਮਾਟੀ ਕਾ ਕਿਆ ਧੋਪੈ ਸੁਆਮੀ ਮਾਣਸ
 ਕੀ ਗਤਿ ਏਹੀ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਜੋ ਛਿਛਹੁ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ਫਿਰਿ ਟ੍ਰੁਖੁ ਨ ਵਿਆਪੈ
 ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਚੇ ਭਾਡੇ ਸਾਜਿ ਨਿਵਾਜੇ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥ ਜੈਸਾ ਲਿਖਤੁ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਕਰਤੈ
 ਹਮ ਤੈਸੀ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਈ ॥੨॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਥਾਪਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਅਪਨਾ ਏਹੋ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥ ਜਿਨਿ ਦੀਆ ਸੋ

चिति न आवै मोहि अंधु लपटाणा ॥३॥ जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु अपारा ॥ भगति
 करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥४॥१॥ रामकली महला ५ ॥ पवहु चरणा तलि ऊपरि
 आवहु ऐसी सेव कमावहु ॥ आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु ॥१॥ संतहु ऐसी
 कथहु कहाणी ॥ सुर पवित्र नर देव पवित्रा खिनु बोलहु गुरमुखि बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ परपंचु छोडि
 सहज घरि बैसहु झूठा कहहु न कोई ॥ सतिगुर मिलहु नवै निधि पावहु इन बिधि ततु बिलोई ॥२॥
 भरमु चुकावहु गुरमुखि लिव लावहु आतमु चीनहु भाई ॥ निकटि करि जाणहु सदा प्रभु हाजरु किसु
 सित करहु बुराई ॥३॥ सतिगुरि मिलिऐ मारगु मुकता सहजे मिले सुआमी ॥ धनु धनु से जन जिनी
 कलि महि हरि पाइआ जन नानक सद कुरबानी ॥४॥२॥ रामकली महला ५ ॥ आवत हरख न
 जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ सदा अन्नदु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी
 ॥१॥ इह बिधि है मनु जोगनी ॥ मोहु सोगु रोगु लोगु न बिआपै तह हरि हरि रस भोगनी ॥१॥
 रहाउ ॥ सुरग पवित्रा मिरत पवित्रा पड़िआल पवित्र अलोगनी ॥ आगिआकारी सदा सुखु भुंचै
 जत कत पेखउ हरि गुनी ॥२॥ नह सिव सकती जलु नही पवना तह अकारु नही मेदनी ॥ सतिगुर
 जोग का तहा निवासा जह अविगत नाथु अगम धनी ॥३॥ तनु मनु हरि का धनु सभु हरि का
 हरि के गुण हउ किआ गनी ॥ कहु नानक हम तुम गुरि खोई है अंभै अंभु मिलोगनी ॥४॥३॥
 रामकली महला ५ ॥ त्रै गुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥ रतन कोठड़ी अंमृत संपूर्न
 सतिगुर कै खजानै ॥१॥ अचरजु किछु कहणु न जाई ॥ बसतु अगोचर भाई ॥१॥ रहाउ ॥ मोलु
 नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ॥ कथन कहण कउ सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै
 ॥२॥ सोई जाणै करणैहारा कीता किआ बेचारा ॥ आपणी गति मिति आपे जाणै हरि आपे पूर
 भंडारा ॥३॥ ऐसा रसु अंमृतु मनि चाखिआ तृपति रहे आधाई ॥ कहु नानक मेरी आसा पूरी

सतिगुर की सरणाई ॥४॥४॥ रामकली महला ५ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै बैरी सगले
साधे ॥ जिनि बैरी है इहु जगु लूटिआ ते बैरी लै बाधे ॥१॥ सतिगुरु परमेसरु मेरा ॥ अनिक
रज भोग रस माणी नाउ जपी भरवासा तेरा ॥२॥ रहाउ ॥ चीति न आवसि दूजी बाता सिर
ऊपरि रखवारा ॥ बेपरवाहु रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा ॥३॥ पूरन होइ मिलिओ
सुखदाई ऊन न काई बाता ॥ ततु सारु परम पदु पाइआ छोडि न कतहू जाता ॥४॥५॥ बरनि न
साकउ जैसा तू है साचे अलख अपारा ॥ अतुल अथाह अडोल सुआमी नानक खसमु हमारा ॥६॥६॥
रामकली महला ५ ॥ तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥ तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता
हम कैसी ताती ॥७॥ एकै एकै एक तूही ॥ एकै एकै तू राइआ ॥ तउ किरपा ते सुखु पाइआ ॥८॥
रहाउ ॥ तू सागरु हम द्वास तुमारे तुम महि माणक लाला ॥ तुम देवहु तिलु संक न मानहु हम भुंचह
सदा निहाला ॥९॥ हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥ हम खेलह सभि लाड
लडावह तुम सद गुणी गहीरा ॥१०॥ तुम पूरन पूरि रहे संपूरन हम भी संगि अघाए ॥ मिलत
मिलत मिलत मिलि रहिआ नानक कहणु न जाए ॥११॥७॥ रामकली महला ५ ॥ कर करि ताल
पखावजु नैनहु माथै वजहि रबाबा ॥ करनहु मधु बासुरी बाजै जिहवा धुनि आगाजा ॥ निरति करे
करि मनूआ नाचै आणे घूंधर साजा ॥१२॥ राम को निरतिकारी ॥ पेखै पेखनहारु दिइआला जेता
साजु सीगारी ॥१३॥ रहाउ ॥ आखार मंडली धरणि सबाई ऊपरि गगनु चंदोआ ॥ पवनु विचोला
करत इकेला जल ते ओपति होआ ॥ पंच ततु करि पुतरा कीना किरत मिलावा होआ ॥१४॥ चंदु
सूरजु दुइ जरे चरागा चहु कुंट भीतरि राखे ॥ दस पातउ पंच संगीता एकै भीतरि साथे ॥ भिन्न
होइ भाव दिखावहि सभहु निरारी भाखे ॥१५॥ घरि घरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा
॥ एकि नचावहि एकि भवावहि इकि आइ जाइ होइ धूरा ॥ कहु नानक सो बहुरि न नाचै जिसु गुरु

ਖੇਟੈ ਪੂਰਾ ॥੪॥੭॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਓਅਂਕਾਰਿ ਏਕ ਧੁਨਿ ਏਕੈ ਏਕੈ ਰਾਗੁ ਅਲਾਪੈ ॥ ਏਕਾ ਦੇਸੀ ਏਕੁ
 ਦਿਖਾਵੈ ਏਕੋ ਰਹਿਆ ਬਿਆਪੈ ॥ ਏਕਾ ਸੁਰਤਿ ਏਕਾ ਹੀ ਸੇਵਾ ਏਕੋ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਪੈ ॥੧॥ ਭਲੋ ਭਲੋ ਰੇ ਕੀਰਤਨੀਆ
 ॥ ਰਾਮ ਰਮਾ ਰਾਮਾ ਗੁਨ ਗਾਤ ॥ ਛੋਡਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਧੰਧ ਸੁਆਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੰਚ ਬਜਿਤ ਕਰੇ ਸੰਤੋਖਾ
 ਸਾਤ ਸੁਰਾ ਲੈ ਚਾਲੈ ॥ ਬਾਜਾ ਮਾਣੁ ਤਾਣੁ ਤਜਿ ਤਾਨਾ ਪਾਤ ਨ ਬੀਗਾ ਘਾਲੈ ॥ ਫੇਰੀ ਫੇਰੁ ਨ ਹੋਵੈ ਕਬ ਹੀ ਏਕੁ
 ਸਬਦੁ ਬੰਧਿ ਪਾਲੈ ॥੨॥ ਨਾਰਦੀ ਨਰਹਰ ਜਾਣਿ ਹਫੂਰੇ ॥ ਘੁੰਘਰ ਖੱਡਕੁ ਤਿਆਗਿ ਵਿਸੂਰੇ ॥ ਸਹਜ ਅਨਨਦ
 ਦਿਖਾਵੈ ਭਾਵੈ ॥ ਏਹੁ ਨਿਰਤਿਕਾਰੀ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥੩॥ ਜੇ ਕੋ ਅਪਨੇ ਠਾਕੁਰ ਭਾਵੈ ॥ ਕੋਟਿ ਮਥਿ ਏਹੁ ਕੀਰਤਨੁ
 ਗਾਵੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੀ ਜਾਵਤ ਟੇਕ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਕੀਰਤਨੁ ਏਕ ॥੪॥੮॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਕੋਈ ਬੋਲੈ ਰਾਮ ਰਾਮ ਕੋਈ ਖੁਦਾਇ ॥ ਕੋਈ ਸੇਵੈ ਗੁਸਈਆ ਕੋਈ ਅਲਾਹਿ ॥੧॥ ਕਾਰਣ ਕਰਣ ਕਰੀਮ ॥
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਰਹੀਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਈ ਨਾਵੈ ਤੀਰਥਿ ਕੋਈ ਹਜ ਜਾਇ ॥ ਕੋਈ ਕਰੈ ਪ੍ਰਯਾ ਕੋਈ ਸਿਰੁ
 ਨਿਵਾਇ ॥੨॥ ਕੋਈ ਪੜੈ ਬੇਦ ਕੋਈ ਕਤੇਬ ॥ ਕੋਈ ਓਢੈ ਨੀਲ ਕੋਈ ਸੁਪੇਦ ॥੩॥ ਕੋਈ ਕਹੈ ਤੁਰਕੁ ਕੋਈ ਕਹੈ
 ਛਿਟ੍ਠੁ ॥ ਕੋਈ ਬਾਛੈ ਭਿਸਤੁ ਕੋਈ ਸੁਰਗਿੰਦ੍ਰੁ ॥੪॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਤਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਤਿਨਿ
 ਭੇਦੁ ਜਾਤਾ ॥੫॥੬॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪਵਨੈ ਮਹਿ ਪਵਨੁ ਸਮਾਇਆ ॥ ਜੋਤੀ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਰਲਿ
 ਜਾਇਆ ॥ ਮਾਟੀ ਮਾਟੀ ਹੋਈ ਏਕ ॥ ਰੋਵਨਹਾਰੇ ਕੀ ਕਵਨ ਟੇਕ ॥੧॥ ਕਤਨੁ ਮੂਆ ਰੇ ਕਤਨੁ ਮੂਆ ॥
 ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਮਿਲਿ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰਾ ਝਿਹੁ ਤਤ ਚਲਤੁ ਭਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਗਲੀ ਕਿਛੁ ਖਬਰਿ ਨ
 ਪਾਈ ॥ ਰੋਵਨਹਾਰੁ ਭਿ ਊਠਿ ਸਿਧਾਈ ॥ ਭਰਮ ਮੋਹ ਕੇ ਬਾੰਧੇ ਬੰਧ ॥ ਸੁਪਨੁ ਭਇਆ ਭਖਲਾਏ ਅੰਧ ॥੨॥ ਝਿਹੁ
 ਤਤ ਰਚਨੁ ਰਚਿਆ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਆਵਤ ਜਾਵਤ ਹੁਕਮਿ ਅਪਾਰਿ ॥ ਨਹ ਕੋ ਮੂਆ ਨ ਮਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥ ਨਹ ਬਿਨਸੈ
 ਅਬਿਨਾਸੀ ਹੋਗੁ ॥੩॥ ਜੋ ਝਿਹੁ ਜਾਣਹੁ ਸੋ ਝਿਹੁ ਨਾਹਿ ॥ ਜਾਨਣਹਾਰੇ ਕਤ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ
 ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਨਾ ਕੋਈ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇਆ ॥੪॥੧੦॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਧਿ ਗੋਬਿੰਦੁ
 ਗੋਪਾਲ ਲਾਲੁ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਿਮਰਿ ਤੂ ਜੀਵਹਿ ਫਿਰਿ ਨ ਖਾਈ ਮਹਾ ਕਾਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਭਰਮਿ

ਭਰਮੀ ਭਰਮੀ ਆਇਆਂ ॥ ਕਡੈ ਭਾਗੀ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਾਇਆਂ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੋ ਨਾਹੀ ਤਥਾਰੁ ॥ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕੁ
ਆਖੈ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥੨॥੧੧॥

ਰਾਗੁ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨

੧੭੩ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਚਾਰਿ ਪੁਕਾਰਹਿ ਨਾ ਤੂ ਮਾਨਹਿ ॥ ਖੱਟੁ ਭੀ ਏਕਾ ਬਾਤ ਵਖਾਨਹਿ ॥ ਦੱਸ ਅਸਟੀ ਮਿਲਿ ਏਕੋ ਕਹਿਆ ॥ ਤਾ ਭੀ
ਜੋਗੀ ਭੇਦੁ ਨ ਲਹਿਆ ॥੧॥ ਕਿੰਕੁਰੀ ਅਨੂਪ ਵਾਜੈ ॥ ਜੋਗੀਆ ਮਤਵਾਰੇ ਰੇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਥਮੇ ਵਸਿਆ
ਸਤ ਕਾ ਖੇੜਾ ॥ ਤੂਤੀਏ ਮਹਿ ਕਿਛੁ ਭਇਆ ਢੁਤੇੜਾ ॥ ਢੁਤੀਆ ਅਰਥੋ ਅਰਥਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਏਕੁ ਰਹਿਆ ਤਾ
ਏਕੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥੨॥ ਏਕੈ ਸੂਤਿ ਪਰੋਏ ਮਣੀਏ ॥ ਗਾਠੀ ਭਿਨਿ ਭਿਨਿ ਭਿਨਿ ਤਣੀਏ ॥ ਫਿਰਤੀ ਮਾਲਾ
ਕਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾਇ ॥ ਖਿੰਚਿਆ ਸੂਤੁ ਤ ਆਈ ਥਾਇ ॥੩॥ ਚਹੁ ਮਹਿ ਏਕੈ ਮਟੁ ਹੈ ਕੀਆ ॥ ਤਹ ਬਿਖੜੇ ਥਾਨ
ਅਨਿਕ ਖਿੜਕੀਆ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਢੁਆਰੇ ਆਇਆ ॥ ਤਾ ਨਾਨਕ ਜੋਗੀ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥ ਇਉ
ਕਿੰਕੁਰੀ ਆਨੂਪ ਵਾਜੈ ॥ ਸੁਣਿ ਜੋਗੀ ਕੈ ਮਨਿ ਸੀਠੀ ਲਾਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ਢੂਜਾ ॥੧॥੧੨॥ ਰਾਮਕਲੀ
ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾਗਾ ਕਰਿ ਕੈ ਲਾਈ ਥਿਗਲੀ ॥ ਲਤ ਨਾਡੀ ਸੂਆ ਹੈ ਅਸਤੀ ॥ ਅੰਭੈ ਕਾ ਕਰਿ ਡੰਡਾ ਧਰਿਆ ॥
ਕਿਆ ਤੂ ਜੋਗੀ ਗਰਬਹਿ ਪਰਿਆ ॥੧॥ ਜਧਿ ਨਾਥੁ ਦਿਨੁ ਰੈਨਾਈ ॥ ਤੇਰੀ ਖਿੰਥਾ ਦੋ ਦਿਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਗਹਰੀ ਬਿਭੂਤ ਲਾਇ ਬੈਠਾ ਤਾਡੀ ॥ ਮੇਰੀ ਤੇਰੀ ਮੁੰਦਾ ਧਾਰੀ ॥ ਮਾਗਹਿ ਟ੍ਰਕਾ ਤ੃ਪਤਿ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਨਾਥੁ ਛੋਡਿ
ਯਾਚਹਿ ਲਾਜ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥ ਚਲ ਚਿਤ ਜੋਗੀ ਆਸਣੁ ਤੇਰਾ ॥ ਸਿੰਡੀ ਵਾਜੈ ਨਿਤ ਉਦਾਸੇਰਾ ॥ ਗੁਰ ਗੋਰਖ ਕੀ
ਤੈ ਬੂੜਾ ਨ ਪਾਈ ॥ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਗੀ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥੩॥ ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਆ ਨਾਥੁ ਕ੃ਪਾਲਾ ॥ ਰਹਾਸਿ ਹਮਾਰੀ
ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਨਾਮੈ ਖਿੰਥਾ ਨਾਮੈ ਕਸਤਰੁ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜੋਗੀ ਹੋਆ ਅਸਥਿਰੁ ॥੪॥ ਇਉ ਜਧਿਆ ਨਾਥੁ
ਦਿਨੁ ਰੈਨਾਈ ॥ ਹੁਣਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰੁ ਗੋਸਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ਢੂਜਾ ॥੨॥੧੩॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਨ
ਕਰਾਵਨ ਸੋਈ ॥ ਆਨ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਈ ॥ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਨਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿਆ ਰੰਗ ਮਾਨਾ ॥੧॥
ਐਸੋ ਰੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸੀਠਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਡੀਠਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮ

॥ ਪੀਵਤ ਅਮਰ ਭਏ ਨਿਹਕਾਮ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਅਗਨਿ ਨਿਵਾਰੀ ॥ ਅਨਦ ਰੂਪ ਪ੍ਰਗਟੇ ਸੰਸਾਰੀ ॥੨॥
 ਕਿਆ ਦੇਵਤ ਜਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ॥ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ਜਾਤ ਲਖ ਬੇਰਾ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਦੇ ਸਾਜਿਆ ॥
 ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨੀਚੁ ਨਿਵਾਜਿਆ ॥੩॥ ਖੋਲਿ ਕਿਵਾਰਾ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਇਆ ॥ ਜੈਸਾ ਸਾ ਤੈਸਾ ਦਿਖਲਾਇਆ
 ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਪਡਦਾ ਤੂਟਾ ॥ ਹਉ ਤੇਰਾ ਤੂ ਮੈ ਮਨਿ ਕੂਠਾ ॥੪॥੩॥੧੪॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸੇਵਕੁ ਲਾਇਆ ਅਪੁਨੀ ਸੇਵ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਮੁਖਿ ਦੇਵ ॥ ਸਗਲੀ ਚਿੰਤਾ ਆਪਿ ਨਿਵਾਰੀ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ
 ਕਤ ਹਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੧॥ ਕਾਜ ਹਮਾਰੇ ਪੂਰੇ ਸਤਗੁਰ ॥ ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ਸਤਗੁਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਮਹਿਮਾ ਜਾ ਕੀ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ॥ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੁ ਦੇਇ ਜਿਸੁ ਧੀਰ ॥ ਜਾ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਰਾਇ ॥ ਸੋ ਨਰੁ ਬਹੁਰਿ
 ਨ ਜੋਨੀ ਪਾਇ ॥੨॥ ਜਾ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਆਪ ॥ ਤਾ ਕਤ ਨਾਹੀ ਦ੍ਰੂਖ ਸੰਤਾਪ ॥ ਲਾਲੁ ਰਤਨੁ ਤਿਸੁ ਪਾਲੈ
 ਪਰਿਆ ॥ ਸਗਲ ਕੁਟੰਬ ਓਹੁ ਜਨੁ ਲੈ ਤਰਿਆ ॥੩॥ ਨਾ ਕਿਛੁ ਭਰਮੁ ਨ ਦੁਬਿਧਾ ਦ੍ਰਿੜਾ ॥ ਏਕੋ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨ
 ਪ੍ਰਿੜਾ ॥ ਜਤ ਕਤ ਦੇਖਉ ਆਪਿ ਦਇਆਲ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਰਸਾਲ ॥੪॥੪॥੧੫॥ ਰਾਮਕਲੀ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਨ ਤੇ ਛੁਟਕੀ ਅਪਨੀ ਧਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਲਗੀ ਪਿਆਰੀ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸੁ ਮਨਿ
 ਮੈਰੈ ਮੀਠਾ ॥ ਤਾ ਇਹੁ ਅਚਰਜੁ ਨੈਨਹੁ ਡੀਠਾ ॥੧॥ ਅਥ ਮੋਹਿ ਜਾਨੀ ਰੇ ਮੇਰੀ ਗੱਈ ਬਲਾਇ ॥ ਬੁਝਿ ਗੱਈ
 ਤੂਸਨ ਨਿਵਾਰੀ ਮਮਤਾ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਲੀਆ ਸਮਯਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਿਆ ਗੁਰਿ ਸਰਨਾ ॥
 ਗੁਰਿ ਪਕਰਾਏ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨਾ ॥ ਬੀਸ ਬਿਸੁਏ ਜਾ ਮਨ ਠਹਰਾਨੇ ॥ ਗੁਰ ਪਾਰਖ੍ਰਹਮ ਏਕੈ ਹੀ ਜਾਨੇ ॥੨॥ ਜੋ ਜੋ
 ਕੀਨੋ ਹਮ ਤਿਸ ਕੇ ਦਾਸ ॥ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕੋ ਸਗਲ ਨਿਵਾਸ ॥ ਨਾ ਕੋ ਢੂਤੁ ਨਹੀ ਬੈਰਾਈ ॥ ਗਲਿ ਮਿਲਿ ਚਾਲੇ
 ਏਕੈ ਭਾਈ ॥੩॥ ਜਾ ਕਤ ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਦੀਏ ਸੂਖਾ ॥ ਤਾ ਕਤ ਬਹੁਰਿ ਨ ਲਾਗਹਿ ਦ੍ਰੂਖਾ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਸਰਕ
 ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਤਤ ਰੰਗ ਗੋਪਾਲ ॥੪॥੫॥੧੬॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੁਖ ਤੇ ਪਡਤਾ ਟੀਕਾ
 ਸਹਿਤ ॥ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਨਹੀ ਪੂਰਨ ਰਹਤ ॥ ਉਪਦੇਸੁ ਕਰੇ ਕਰਿ ਲੋਕ ਦ੃ਢਾਵੈ ॥ ਅਪਨਾ ਕਹਿਆ ਆਪਿ ਨ
 ਕਮਾਵੈ ॥੧॥ ਪਂਡਿਤ ਬੇਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ਪਂਡਿਤ ॥ ਮਨ ਕਾ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨਿਵਾਰਿ ਪਂਡਿਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਗੈ

राखिओ साल गिरामु ॥ मनु कीनो दह दिस बिस्रामु ॥ तिलकु चरावै पाई पाइ ॥ लोक पचारा अंधु
 कमाइ ॥२॥ खटु करमा अरु आसणु धोती ॥ भागठि गृहि पड़े नित पोथी ॥ माला फेरै मंगै बिभूत ॥
 डिह बिधि कोइ न तरिओ मीत ॥३॥ सो पंडितु गुर सबदु कमाइ ॥ लै गुण की ओसु उतरी माइ ॥ चतुर
 बेद पूरन हरि नाइ ॥ नानक तिस की सरणी पाइ ॥४॥६॥१७॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि बिघन
 नही आवहि नेरि ॥ अनिक माइआ है ता की चेरि ॥ अनिक पाप ता के पानीहार ॥ जा कउ माइआ भई
 करतार ॥१॥ जिसहि सहाई होइ भगवान ॥ अनिक जतन उथा कै सरंजाम ॥१॥ रहाउ ॥ करता
 रखै कीता कउनु ॥ कीरी जीतो सगला भवनु ॥ बेअंत महिमा ता की केतक बरन ॥ बलि बलि जाईअै
 ता के चरन ॥२॥ तिन ही कीआ जपु तपु धिआनु ॥ अनिक प्रकार कीआ तिनि दानु ॥ भगतु सोई कलि
 महि परवानु ॥ जा कउ ठाकुरि दीआ मानु ॥३॥ साधसंगि मिलि भए प्रगास ॥ सहज सूख आस निवास
 ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बिसास ॥ नानक होए दासनि दास ॥४॥७॥१८॥ रामकली महला ५ ॥ दोसु
 न दीजै काहू लोग ॥ जो कमावनु सोई भोग ॥ आपन करम आपे ही बंध ॥ आवनु जावनु माइआ धंध
 ॥१॥ ऐसी जानी संत जनी ॥ परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥१॥ रहाउ ॥ तनु धनु कलतु मिथिआ
 बिसथार ॥ हैवर गैवर चालनहार ॥ राज रंग रूप सभि कूर ॥ नाम बिना होइ जासी धूर ॥२॥ भरमि
 भूले बादि अह्यकारी ॥ संगि नाही रे सगल पसारी ॥ सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ साकत इव ही
 करत बिहानी ॥३॥ हरि का नामु अंमृतु कलि माहि ॥ एहु निधाना साधू पाहि ॥ नानक गुरु
 गोविदु जिसु तूठा ॥ घटि घटि रमईआ तिन ही डीठा ॥४॥८॥१६॥ रामकली महला ५ ॥ पंच
 सबद तह पूरन नाद ॥ अनहद बाजे अचरज बिसमाद ॥ केल करहि संत हरि लोग ॥ पारब्रहम
 पूरन निरजोग ॥१॥ सूख सहज आनंद भवन ॥ साधसंगि बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नही
 जनम मरन ॥१॥ रहाउ ॥ ऊहा सिमरहि केवल नामु ॥ बिरले पावहि ओहु बिस्रामु ॥ भोजनु भाउ

ਕੀਰਤਨ ਆਧਾਰੁ ॥ ਨਿਹਚਲ ਆਸਨੁ ਬੇਸੁਮਾਰੁ ॥੨॥ ਡਿਗਿ ਨ ਡੋਲੈ ਕਤਹੂ ਨ ਧਾਰੈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਇਹੁ
 ਮਹਲੁ ਪਾਰੈ ॥ ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਮੋਹ ਨ ਮਾਇਆ ਜਾਲ ॥ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧਿ ਪ੍ਰਭੂ ਕਿਰਪਾਲ ॥੩॥ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਵਾਰੁ
 ॥ ਆਪੇ ਗੁਪਤੁ ਆਪੇ ਪਾਸਾਰੁ ॥ ਜਾ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੁਆਦੁ ॥ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ਨਾਨਕ ਬਿਸਮਾਦੁ
 ॥੪॥੬॥੨੦॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਭੇਟਤ ਸੰਗਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਚਿਤਿ ਆਇਆ ॥ ਸੰਗਤਿ ਕਰਤ ਸੰਤੋਖੁ ਮਨਿ
 ਪਾਇਆ ॥ ਸੰਤਹ ਚਰਨ ਮਾਥਾ ਮੇਰੇ ਪਤਤ ॥ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਸੰਤਹ ਢੰਡਤ ॥੧॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸੰਤਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੀ
 ॥ ਜਾ ਕੀ ਓਟ ਗਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਰਾਖੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਤਹ ਚਰਣ ਧੋਇ ਧੋਇ ਪੀਵਾ ॥ ਸੰਤਹ
 ਦਰਸੁ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਜੀਵਾ ॥ ਸੰਤਹ ਕੀ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਆਸ ॥ ਸੰਤ ਹਮਾਰੀ ਨਿਰਮਲ ਰਾਸਿ ॥੨॥ ਸੰਤ ਹਮਾਰਾ ਰਾਖਿਆ
 ਪਡਦਾ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੋਹਿ ਕਬਹੂ ਨ ਕਡਦਾ ॥ ਸੰਤਹ ਸੰਗੁ ਦੀਆ ਕਿਰਪਾਲ ॥ ਸੰਤ ਸਹਾਈ ਭਏ ਦਿਆਲ
 ॥੩॥ ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ਅਪਾਰ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
 ਨਾਨਕ ਸੰਤਹ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲ ॥੪॥੧੦॥੨੧॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੈਰੈ ਕਾਜਿ ਨ ਗ੍ਰਹੁ ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ॥ ਤੈਰੈ
 ਕਾਜਿ ਨ ਬਿਖੈ ਜੰਜਾਲੁ ॥ ਇਸਟ ਮੀਤ ਜਾਣੁ ਸਭ ਛਲੈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਤੈਰੈ ਚਲੈ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨਾਮ
 ਗੁਣ ਗਾਇ ਲੇ ਮੀਤਾ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਤੇਰੀ ਲਾਜ ਰਹੈ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਜਮੁ ਕਛੁ ਨ ਕਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਨੁ
 ਹਰਿ ਸਗਲ ਨਿਰਾਰਥ ਕਾਮ ॥ ਸੁਝਿਨਾ ਰੂਪਾ ਮਾਟੀ ਦਾਮ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਜਾਪਿ ਮਨ ਸੁਖਾ ॥ ਈਹਾ ਊਹਾ ਤੇਰੋ
 ਊਜਲ ਮੁਖਾ ॥੨॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਥਾਕੇ ਵਡੇ ਵਡੇਰੇ ॥ ਕਿਨ ਹੀ ਨ ਕੀਏ ਕਾਜ ਮਾਇਆ ਪ੍ਰੇਰੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੈ
 ਜਨੁ ਕੋਇ ॥ ਤਾ ਕੀ ਆਸਾ ਪ੍ਰੰਨ ਹੋਇ ॥੩॥ ਹਰਿ ਭਗਤਨ ਕੋ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਸੰਤੀ ਜੀਤਾ ਜਨਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥
 ਹਰਿ ਸੰਤੁ ਕਰੇ ਸੋਈ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਤਾ ਕੈ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੪॥੧੧॥੨੨॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸਿੰਚਹਿ ਦਰਖੁ ਦੇਹਿ ਦੁਖੁ ਲੋਗ ॥ ਤੈਰੈ ਕਾਜਿ ਨ ਅਵਰਾ ਜੋਗ ॥ ਕਰਿ ਅਛਕਾਰੁ ਹੋਇ ਵਰਤਹਿ ਅੰਧ ॥ ਜਮ ਕੀ
 ਜੇਵਡੀ ਤੂ ਆਗੈ ਬੰਧ ॥੧॥ ਛਾਡਿ ਵਿਡਾਣੀ ਤਾਤਿ ਸ੍ਰੂਝੇ ॥ ਈਹਾ ਬਸਨਾ ਰਾਤਿ ਸ੍ਰੂਝੇ ॥ ਮਾਇਆ ਕੇ ਮਾਤੇ ਤੈ ਤਠਿ
 ਚਲਨਾ ॥ ਰਾਚਿ ਰਹਿਓ ਤੂ ਸੰਗਿ ਸੁਪਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਲ ਬਿਵਸਥਾ ਬਾਰਿਕੁ ਅੰਧ ॥ ਭਰਿ ਜੋਬਨਿ ਲਾਗਾ

ਦੁਰਗਂਧ ॥ ਤ੍ਰਤੀਅ ਬਿਵਸਥਾ ਸਿੰਚੇ ਮਾਇ ॥ ਬਿਰਧਿ ਭਇਆ ਛੋਡਿ ਚਲਿਐ ਪਛੁਤਾਇ ॥੨॥ ਚਿਰਕਾਲ
 ਪਾਈ ਦੁਲਭ ਦੇਹ ॥ ਨਾਮ ਬਿਛੂਣੀ ਹੋਈ ਖੇਹ ॥ ਪਸੂ ਪਰੇਤ ਸੁਗਧ ਤੇ ਬੁਰੀ ॥ ਤਿਸਹਿ ਨ ਕ੍ਰਿਸ਼ੈ ਜਿਨਿ ਏਹ ਸਿਰੀ
 ॥੩॥ ਸੁਣਿ ਕਰਤਾਰ ਗੋਵਿੰਦ ਗੋਪਾਲ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਸਦਾ ਕਿਰਪਾਲ ॥ ਤੁਮਹਿ ਛਡਾਵਹੁ ਛੁਟਕਹਿ ਬੰਧ
 ॥ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਵਹੁ ਨਾਨਕ ਜਗ ਅੰਧ ॥੪॥੧੨॥੨੩॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਿ ਸੰਜੋਗੁ ਬਨਾਈ ਕਾਛਿ ॥
 ਤਿਸੁ ਸੰਗਿ ਰਹਿਐ ਇਆਨਾ ਰਾਚਿ ॥ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੈ ਨਿਤ ਸਾਰਿ ਸਮਾਰੈ ॥ ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਊਠਿ ਸਿਧਾਰੈ ॥੧॥
 ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸਭੁ ਝੂਠੁ ਪਰਾਨੀ ॥ ਗੋਵਿੰਦ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਅਵਰ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਤੇ ਸਭਿ ਮਾਇਆ ਮੂਠੁ ਪਰਾਨੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਤੀਰਥ ਨਾਇ ਨ ਉਤਰਸਿ ਮੈਲੁ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸਭਿ ਹਉਮੈ ਫੈਲੁ ॥ ਲੋਕ ਪਚਾਰੈ ਗਤਿ ਨਹੀਂ ਹੋਇ ॥
 ਨਾਮ ਬਿਛੂਣੇ ਚਲਸਹਿ ਰੋਇ ॥੨॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਟ੍ਰੂਟਸਿ ਪਟਲ ॥ ਸੋਧੇ ਸਾਸਕ ਸਿਮੂਤਿ ਸਗਲ ॥ ਸੋ
 ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਜਪਾਏ ॥ ਸਗਲ ਫਲਾ ਸੇ ਸ੍ਰਖਿ ਸਮਾਏ ॥੩॥ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ਰਾਖਹੁ ਆਪਿ ॥ ਸਗਲ
 ਸੁਖਾ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੈ ਹਾਥਿ ॥ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹਿ ਤਿਤੁ ਲਾਗਹ ਸੁਆਮੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥੪॥੧੩॥੨੪॥
 ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਜਾਨਾ ॥ ਮਨੁ ਅਸਮਝੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਤੀਆਨਾ ॥ ਡੋਲਨ ਤੇ ਚੂਕਾ
 ਠਹਰਾਇਆ ॥ ਸਤਿ ਮਾਹਿ ਲੇ ਸਤਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧॥ ਦ੍ਰਖੁ ਗਇਆ ਸਭੁ ਰੋਗੁ ਗਇਆ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ
 ਮਨ ਮਹਿ ਮਾਨੀ ਮਹਾ ਪੁਰਖ ਕਾ ਸੰਗੁ ਭਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਗਲ ਪਵਿਤ ਸਰਬ ਨਿਰਮਲਾ ॥ ਜੋ ਵਰਤਾਏ
 ਸੋਈ ਭਲਾ ॥ ਜਹ ਰਾਖੈ ਸੋਈ ਸੁਕਤਿ ਥਾਨੁ ॥ ਜੋ ਜਪਾਏ ਸੋਈ ਨਾਮੁ ॥੨॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਜਹ ਸਾਧ ਪਗ
 ਧਰਹਿ ॥ ਤਹ ਬੈਕੁਂਠੁ ਜਹ ਨਾਮੁ ਉਚਰਹਿ ॥ ਸਰਬ ਅਨੰਦ ਜਬ ਦਰਸਨੁ ਪਾਈਐ ॥ ਰਾਮ ਗੁਣਾ ਨਿਤ ਨਿਤ
 ਹਰਿ ਗਾਈਐ ॥੩॥ ਆਪੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਬਿਆਪਿ ॥ ਦਿਆਲ ਪੁਰਖ ਪਰਗਟ ਪਰਤਾਪ ॥ ਕਪਟ
 ਖੁਲਾਨੇ ਭਰਮ ਨਾਠੇ ਦ੍ਰੌਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਪੂਰੇ ॥੪॥੧੪॥੨੫॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੋਟਿ ਜਾਪ
 ਤਾਪ ਬਿਸ਼ਾਮ ॥ ਰਿਧਿ ਕੁਧਿ ਸਿਧਿ ਸੁਰ ਗਿਆਨ ॥ ਅਨਿਕ ਰੂਪ ਰੰਗ ਭੋਗ ਰਸੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨਿਮਖ ਰਿਦੈ
 ਵਸੈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੂਰਬੀਰ ਧੀਰਜ

ਮਤਿ ਪੂਰਾ ॥ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਧੁਨਿ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ॥ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਤਾ ਕੇ ਪੂਰੇ ਕਾਮ ॥ ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਵਸੈ ਹਰਿ ਨਾਮ
 ॥੨॥ ਸਗਲ ਸ੍ਰੂਖ ਆਨਦ ਅਰੋਗ ॥ ਸਮਦਰਸੀ ਪੂਰਨ ਨਿਰਜੋਗ ॥ ਆਇ ਨ ਜਾਇ ਡੋਲੈ ਕਤ ਨਾਹੀ ॥ ਜਾ ਕੈ
 ਨਾਮੁ ਬਸੈ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੩॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਗੁਪਾਲ ਗੋਵਿੰਦ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਪੀਐ ਤਤੈ ਚਿੰਦ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ
 ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਨਾਮੁ ॥ ਸੰਤਨ ਕੀ ਟਹਲ ਸੰਤ ਕਾ ਕਾਮੁ ॥੪॥੧੫॥੨੬॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬੀਜ ਮੰਨ੍ਹ ਹਰਿ
 ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਉ ॥ ਆਗੈ ਮਿਲੀ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਉ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਸੋਇਆ ਜਾਗੁ
 ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਾਪੁ ਜਪਲਾ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਿਰਦੈ ਵਾਸੈ ਭਤਜਲੁ ਪਾਰਿ ਪਰਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਮੁ
 ਨਿਧਾਨੁ ਧਿਆਇ ਮਨ ਅਟਲ ॥ ਤਾ ਛੂਟਹਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਪਟਲ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪੀਉ ॥ ਤਾ
 ਤੇਰਾ ਹੋਇ ਨਿਰਮਲ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸੋਧਤ ਸੋਧਤ ਸੋਧਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨਹੀ ਛੁਟਕਾਰਾ ॥ ਸੋ ਹਰਿ
 ਭਜਨੁ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਾਪੈ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੩॥ ਛੋਡਿ ਸਿਆਣਪ ਕਹੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਮਨ ਬਿਨੁ ਹਰਿ
 ਨਾਵੈ ਜਾਇ ਨ ਕਾਈ ॥ ਦਿਆਇ ਧਾਰੀ ਗੋਵਿਦ ਗੁਸਾਈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਟੇਕ ਟਿਕਾਈ ॥੪॥੧੬॥੨੭॥
 ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤ ਕੈ ਸੰਗਿ ਰਾਮ ਰੰਗ ਕੇਲ ॥ ਆਗੈ ਜਮ ਸਿਉ ਹੋਇ ਨ ਮੇਲ ॥ ਅਛ੍ਯਾਕੁਧਿ ਕਾ ਭਇਆ
 ਬਿਨਾਸ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਹੋਈ ਸਗਲੀ ਨਾਸ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਣ ਗਾਇ ਪੰਡਿਤ ॥ ਕਰਮ ਕਾਂਡ ਅਛਕਾਰੁ ਨ
 ਕਾਜੈ ਕੁਸਲ ਸੇਤੀ ਘਰ ਜਾਹਿ ਪੰਡਿਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਜਸੁ ਨਿਧਿ ਲੀਆ ਲਾਭ ॥ ਪੂਰਨ ਭਏ ਮਨੋਰਥ
 ਸਾਭ ॥ ਦੁਖੁ ਨਾਠਾ ਸੁਖੁ ਘਰ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਮਲੁ ਬਿਗਸਾਇਆ ॥੨॥ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਜਿਨਿ
 ਪਾਇਆ ਦਾਨੁ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਹੋਏ ਸਗਲ ਨਿਧਾਨ ॥ ਸੰਤੋਖੁ ਆਇਆ ਮਨਿ ਪੂਰਾ ਪਾਇ ॥ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਮਾਗਨ
 ਕਾਹੇ ਜਾਇ ॥੩॥ ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ਸੁਨਤ ਪਵਿਤ ॥ ਜਿਹਵਾ ਬਕਤ ਪਾਈ ਗਤਿ ਮਤਿ ॥ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ
 ਵਸਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਊਤਮ ਭਾਈ ॥੪॥੧੭॥੨੮॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗਹੁ ਕਰਿ ਪਕਰੀ ਨ ਆਈ
 ਹਾਥਿ ॥ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੀ ਚਾਲੀ ਨਹੀ ਸਾਥਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਤ ਤਿਆਗਿ ਫੜੈ ॥ ਤਕ ਓਹ ਚਰਣੀ ਆਇ ਪਈ
 ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਸੰਤਹੁ ਨਿਰਮਲ ਬੀਚਾਰ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਗਤਿ ਨਹੀ ਕਾਈ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਤ ਤਥਾਰ ॥੧॥

ਰਹਾਤ ॥ ਜਬ ਤਸ ਕਤ ਕੋਈ ਦੇਵੈ ਮਾਨੁ ॥ ਤਬ ਆਪਸ ਊਪਰਿ ਰਖੈ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਜਬ ਤਸ ਕਤ ਕੋਈ ਮਨਿ
 ਪਰਹਰੈ ॥ ਤਬ ਓਹ ਸੇਵਕਿ ਸੇਵਾ ਕਰੈ ॥੨॥ ਮੁਖਿ ਬੇਰਾਵੈ ਅੰਤਿ ਠਗਾਵੈ ॥ ਇਕਤੁ ਠਤਰ ਓਹ ਕਹੀ ਨ ਸਮਾਵੈ ॥
 ਤਨਿ ਮੋਹੇ ਬਹੁਤੇ ਬ੍ਰਹਮਂਡ ॥ ਰਾਮ ਜਨੀ ਕੀਨੀ ਖੰਡ ਖੰਡ ॥੩॥ ਜੋ ਮਾਗੈ ਸੋ ਭੂਖਾ ਰਹੈ ॥ ਇਸੁ ਸੰਗਿ ਰਾਚੈ ਸੁ ਕਛੂ
 ਨ ਲਹੈ ॥ ਇਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਕਰੈ ॥ ਕਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕ ਓਹੁ ਤਰੈ ॥੪॥੧੮॥੨੬॥ ਰਾਮਕਲੀ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਸਰਬ ਮਹਿ ਪੇਖੁ ॥ ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭ ਏਕੁ ॥ ਰਤਨੁ ਅਮੋਲੁ ਰਿਦੇ ਮਹਿ ਜਾਨੁ ॥
 ਅਪਨੀ ਵਸਤੁ ਤ੍ਰ ਆਧਿ ਪਛਾਨੁ ॥੧॥ ਪੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੰਤਨ ਪਰਸਾਦਿ ॥ ਕਡੇ ਭਾਗ ਹੋਵਹਿ ਤਤ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ
 ਜਿਹਵਾ ਕਿਆ ਜਾਣੈ ਸੁਆਦੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਠ ਦਸ ਬੇਦ ਸੁਨੇ ਕਹ ਡੋਰਾ ॥ ਕੋਟਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਨ ਦਿਸੈ ਅੰਧੇਰਾ
 ॥ ਪਸੂ ਪਰੀਤਿ ਘਾਸ ਸੰਗਿ ਰਚੈ ॥ ਜਿਸੁ ਨਹੀ ਬੁੜਾਵੈ ਸੋ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਬੁੜੈ ॥੨॥ ਜਾਨਣਹਾਰੁ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭੁ
 ਜਾਨਿ ॥ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਭਗਤਨ ਸੰਗਾਨਿ ॥ ਬਿਗਸਿ ਬਿਗਸਿ ਅਪੁਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਗਾਵਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਜਮ ਨੇਡਿ ਨ
 ਆਵਹਿ ॥੩॥੧੬॥੩੦॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦੀਨੋ ਨਾਮੁ ਕੀਓ ਪਵਿਤੁ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਨਿਰਾਸ ਇਹ
 ਕਿਤੁ ॥ ਕਾਟੀ ਬੰਧਿ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੧॥ ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਬਾਜਾ ॥
 ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਜਨ ਅਪਨੈ ਗੁਰਦੇਵਿ ਨਿਵਾਜਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਇ ਬਨਿਓ ਪ੍ਰਬਲਾ
 ਭਾਗੁ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਸੋਇਆ ਜਾਗੁ ॥ ਗੁਰੂ ਗਿਲਾਨਿ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਾਤੋ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੨॥
 ਰਾਖੇ ਰਾਖਨਹਾਰ ਦਿਇਆਲ ॥ ਨਾ ਕਿਛੁ ਸੇਵਾ ਨਾ ਕਿਛੁ ਘਾਲ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੀ ਦਿਇਆ ॥ ਬ੍ਰਾਤ
 ਦੁਖ ਮਹਿ ਕਾਢਿ ਲਿਇਆ ॥੩॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਉਪਜਿਓ ਮਨ ਮਹਿ ਚਾਤ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥
 ਗਾਵਤ ਗਾਵਤ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੪॥੨੦॥੩੧॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਕਤਡੀ ਬਦਲੈ ਤਿਆਗੈ ਰਤਨੁ ॥ ਛੋਡਿ ਜਾਇ ਤਾਹੂ ਕਾ ਜਤਨੁ ॥ ਸੋ ਸੰਚੈ ਜੋ ਹੋਛੀ ਬਾਤ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ
 ਟੇਢਤ ਜਾਤ ॥੧॥ ਅਮਾਗੇ ਤੈ ਲਾਜ ਨਾਹੀ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਹਰਿ ਨ ਚੇਤਿਓ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਕਤਰਾ ਬਿਖਿਆ ਮੀਠੀ ॥ ਸਾਕਤ ਕੀ ਬਿਧਿ ਨੈਨਹੁ ਡੀਠੀ ॥ ਕ੍ਰਿਡਿ ਕਪਟਿ ਅਛਕਾਰਿ

ਰੀਝਾਨਾ ॥ ਨਾਮੁ ਸੁਨਤ ਜਨੁ ਬਿਛੂਆ ਡਸਾਨਾ ॥੨॥ ਮਾਇਆ ਕਾਰਣ ਸਦ ਹੀ ਝੂਰੈ ॥ ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਕਬਹਿ ਨ
 ਤਸਤਤਿ ਕਰੈ ॥ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕਾਰ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਕਰੈ ਗਵਾਰੁ ॥੩॥ ਸਭ ਸਾਹਾ ਸਿਰਿ
 ਸਾਚਾ ਸਾਹੁ ॥ ਵੇਮੁਹਤਾਜੁ ਪ੍ਰਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥ ਮੋਹ ਮਗਨ ਲਪਟਿਆ ਭ੍ਰਮ ਗਿਰਹ ॥ ਨਾਨਕ ਤਰੀਐ ਤੇਰੀ ਮਿਹਰ
 ॥੪॥੨੧॥੩੨॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਜਪਤ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥ ਆਗੈ ਦਰਗਹ ਪਾਵਤ ਥਾਤ ॥ ਸਦਾ
 ਅਨਨਦੁ ਨ ਹੋਵੀ ਸੋਗੁ ॥ ਕਬਹੂ ਨ ਬਿਆਪੈ ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ ॥੧॥ ਖੋਜਹੁ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ॥ ਬਿਸਮਨ
 ਬਿਸਮ ਭਾਏ ਬਿਸਮਾਦਾ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪਰਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗਨਿ ਮਿਨਿ ਦੇਖਹੁ ਸਗਲ
 ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੋ ਸਕੈ ਨ ਤਾਰਿ ॥ ਸਗਲ ਤਥਾਵ ਨ ਚਾਲਹਿ ਸੰਗਿ ॥ ਭਵਜਲੁ ਤਰੀਐ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗਿ
 ॥੨॥ ਦੇਹੀ ਧੋਇ ਨ ਤਤੈ ਮੈਲੁ ॥ ਹਤਮੈ ਬਿਆਪੈ ਦੁਕਿਧਾ ਫੈਲੁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਤਖਥੁ ਜੋ ਜਨੁ ਖਾਇ ॥ ਤਾ ਕਾ
 ਰੋਗੁ ਸਗਲ ਮਿਟਿ ਜਾਇ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਦਿਇਆਲ ॥ ਮਨ ਤੇ ਕਬਹੂ ਨ ਬਿਸਰੁ ਗੁਪਾਲ ॥ ਤੇਰੇ
 ਦਾਸ ਕੀ ਹੋਵਾ ਧੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਸਰਥਾ ਪ੍ਰਾਰਿ ॥੪॥੨੨॥੩੩॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣ ਪੂਰੇ
 ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਤੁਥੁ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਤ੍ਰਿ ਸਮਰਥੁ ਪੂਰਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥ ਸੋ ਧਿਆਏ ਪੂਰਾ ਜਿਸੁ ਕਰਮੁ ॥੧॥
 ਤਰਣ ਤਾਰਣ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਨਾਤ ॥ ਏਕਾ ਸਰਣ ਗਹੀ ਮਨ ਮੇਰੈ ਤੁਥੁ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿਜਾ ਨਾਹੀ ਠਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਪਿ
 ਜਪਿ ਜੀਵਾ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ॥ ਆਗੈ ਦਰਗਹ ਪਾਵਤ ਠਾਤ ॥ ਦ੍ਰਿਖੁ ਅਂਧੇਰਾ ਮਨ ਤੇ ਜਾਇ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਬਿਨਸੈ ਰਾਚੈ
 ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥ ਭਤ ਭਾਗ ਨਿਰਭਤ
 ਮਨਿ ਬਸੈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਰਸਨਾ ਨਿਤ ਜਪੈ ॥੩॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਕਾਟੇ ਫਾਹੇ ॥ ਪਾਇਆ ਲਾਮੁ ਸਚਾ ਧਨੁ ਲਾਹੇ
 ॥ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਅਖੁਟ ਭੰਡਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਹਰਿ ਦੁਆਰ ॥੪॥੨੩॥੩੪॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਰਤਨ ਜਕੇਹਰ ਨਾਮ ॥ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਗਿਆਨ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਦਿਇਆ ਕਾ ਪੋਤਾ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਹਵਾਲੈ ਹੋਤਾ
 ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਕੋ ਭੰਡਾਰੁ ॥ ਖਾਤ ਖਰਚਿ ਕਛੁ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਅੰਤੁ ਨਹੀ ਹਰਿ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਕੀਰਤਨੁ ਨਿਰਮੋਲਕ ਹੀਰਾ ॥ ਆਨਨਦ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰਾ ॥ ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ਪ੍ਰੰਜੀ ॥ ਸੰਤਨ ਹਥਿ ਰਾਖੀ ਕੁੰਜੀ

॥੨॥ ਸੁਨ ਸਮਾਧਿ ਗੁਫਾ ਤਹ ਆਸਨੁ ॥ ਕੇਵਲ ਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਤਹ ਬਾਸਨੁ ॥ ਭਗਤ ਸਂਗਿ ਪ੍ਰਭੁ ਗੋਸਟਿ ਕਰਤ
 ॥ ਤਹ ਹਰਖ ਨ ਸੋਗ ਨ ਜਨਮ ਨ ਮਰਤ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਦਿਵਾਇਆ ॥ ਸਾਧਸਂਗਿ ਤਿਨਿ
 ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਦਿਅਾਲ ਪੁਰਖ ਨਾਨਕ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਵਰਤਣਿ ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਰਾਸਿ
 ॥੪॥੨੪॥੩੫॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਹਿਮਾ ਨ ਜਾਨਹਿ ਬੇਦ ॥ ਬ੍ਰਹਮੇ ਨਹੀ ਜਾਨਹਿ ਭੇਦ ॥ ਅਵਤਾਰ ਨ
 ਜਾਨਹਿ ਅੰਤੁ ॥ ਪਰਮੇਸਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਬੇਅੰਤੁ ॥੧॥ ਅਪਨੀ ਗਤਿ ਆਪਿ ਜਾਨੈ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਅਵਰ ਵਖਾਨੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਕਰਾ ਨਹੀ ਜਾਨਹਿ ਭੇਵ ॥ ਖੋਜਤ ਹਾਰੇ ਦੇਵ ॥ ਦੇਵੀਆ ਨਹੀ ਜਾਨੈ ਮਰਮ ॥ ਸਭ ਊਪਰਿ ਅਲਖ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥੨॥ ਅਪਨੈ ਰੰਗਿ ਕਰਤਾ ਕੇਲ ॥ ਆਪਿ ਬਿਛੌਰੈ ਆਪੇ ਮੇਲ ॥ ਇਕਿ ਭਰਮੇ ਇਕਿ ਭਗਤੀ ਲਾਏ ॥
 ਅਪਣਾ ਕੀਆ ਆਪਿ ਜਣਾਏ ॥੩॥ ਸੰਤਨ ਕੀ ਸੁਣਿ ਸਾਚੀ ਸਾਖੀ ॥ ਸੋ ਬੋਲਹਿ ਜੋ ਪੇਖਹਿ ਆਖੀ ॥ ਨਹੀ ਲੇਪੁ
 ਤਿਸੁ ਪੁੰਨਿ ਨ ਪਾਧਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥੪॥੨੫॥੩੬॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਿਛੂ ਕਾਜੁ
 ਨ ਕੀਓ ਜਾਨਿ ॥ ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਗਿਆਨਿ ॥ ਜਾਪ ਤਾਪ ਸੀਲ ਨਹੀ ਧਰਮ ॥ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਨਤ ਕੈਸਾ
 ਕਰਮ ॥੧॥ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਭੂਲਹ ਚੂਕਹ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਰਿਧਿ ਨ ਬੁਧਿ ਨ ਸਿਧਿ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥ ਬਿਖੈ ਬਿਆਧਿ ਕੇ ਗਾਵ ਮਹਿ ਬਾਸੁ ॥ ਕਰਣਹਾਰ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਏਕ ॥ ਨਾਮ
 ਤੇਰੇ ਕੀ ਮਨ ਮਹਿ ਟੇਕ ॥੨॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਵਤ ਮਨਿ ਇਹੁ ਬਿਸ਼ਾਮੁ ॥ ਪਾਪ ਖੰਡਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੋ ਨਾਮੁ ॥ ਤੂ
 ਅਗਨਤੁ ਜੀਅ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥ ਜਿਸਹਿ ਜਣਾਵਹਿ ਤਿਨਿ ਤੂ ਜਾਤਾ ॥੩॥ ਜੋ ਉਪਾਇਆਂ ਤਿਸੁ ਤੇਰੀ ਆਸ ॥
 ਸਗਲ ਅਰਾਧਹਿ ਪ੍ਰਭ ਗੁਣਤਾਸ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੈਰੈ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥ ਬੇਅੰਤ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਮਿਹਰਵਾਣੁ
 ॥੪॥੨੬॥੩੭॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਖਨਹਾਰ ਦਿਅਾਲ ॥ ਕੋਟਿ ਭਵ ਖੰਡੇ ਨਿਮਖ ਖਿਆਲ ॥
 ਸਗਲ ਅਰਾਧਹਿ ਜੰਤ ॥ ਮਿਲੀਐ ਪ੍ਰਭ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਮੰਤ ॥੧॥ ਜੀਅਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ॥ ਪੂਰਨ
 ਪਰਮੇਸੁਰ ਸੁਆਮੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਾਤਾ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਾ ਕੀ ਗਹੀ ਮਨ ਓਟ ॥ ਬੰਧਨ ਤੇ ਹੋਈ
 ਛੋਟ ॥ ਹਿਰਦੈ ਜਧਿ ਪਰਮਾਨਦ ॥ ਮਨ ਮਾਹਿ ਭਏ ਅਨਨਦ ॥੨॥ ਤਾਰਣ ਤਰਣ ਹਰਿ ਸਰਣ ॥ ਜੀਵਨ

रूप हरि चरण ॥ संतन के प्राण अधार ॥ ऊचे ते ऊच अपार ॥३॥ सु मति सारु जितु हरि सिमरीजै ॥
 करि किरपा जिसु आपे दीजै ॥ सूख सहज आनंद हरि नाउ ॥ नानक जपिआ गुर मिलि नाउ
 ॥४॥२७॥३८॥ रामकली महला ५ ॥ सगल सिआनप छाडि ॥ करि सेवा सेवक साजि ॥ अपना
 आपु सगल मिटाइ ॥ मन चिंदे सेई फल पाइ ॥१॥ होहु सावधान अपुने गुर सिउ ॥ आसा मनसा
 पूर्न होवै पावहि सगल निधान गुर सिउ ॥१॥ रहाउ ॥ दूजा नही जानै कोइ ॥ सतगुरु निरंजनु
 सोइ ॥ मानुख का करि रूपु न जानु ॥ मिली निमाने मानु ॥२॥ गुर की हरि टेक टिकाइ ॥ अवर
 आसा सभ लाहि ॥ हरि का नामु मागु निधानु ॥ ता दरगह पावहि मानु ॥३॥ गुर का बचनु जपि
 मंतु ॥ एहा भगति सार ततु ॥ सतिगुर भए दिआल ॥ नानक दास निहाल ॥४॥२८॥३९॥
 रामकली महला ५ ॥ होवै सोई भल मानु ॥ आपना तजि अभिमानु ॥ दिनु रैनि सदा गुन गाउ ॥
 पूर्न एही सुआउ ॥१॥ आनंद करि संत हरि जपि ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई गुर का जपि
 मंतु निरमल ॥१॥ रहाउ ॥ एक की करि आस भीतरि ॥ निरमल जपि नामु हरि हरि ॥ गुर के चरन
 नमसकारि ॥ भवजलु उतरहि पारि ॥२॥ देवनहार दातार ॥ अंतु न पारावार ॥ जा कै घरि सरब
 निधान ॥ राखनहार निदान ॥३॥ नानक पाइआ एहु निधान ॥ हरे हरि निरमल नाम ॥ जो जपै
 तिस की गति होइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥४॥२९॥४०॥ रामकली महला ५ ॥ दुलभ देह
 सवारि ॥ जाहि न दरगह हारि ॥ हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥ अंत की बेला लए छडाई
 ॥१॥ राम के गुन गाउ ॥ हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले अचरज पुरखु धिआउ ॥१॥ रहाउ ॥ ऊठत
 बैठत हरि जापु ॥ बिनसै सगल संतापु ॥ बैरी सभि होवहि मीत ॥ निरमलु तेरा होवै चीत ॥२॥ सभ
 ते ऊतम इहु करमु ॥ सगल धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि सिमरनि तेरा होइ उधारु ॥ जनम जनम
 का उतरै भारु ॥३॥ पूर्न तेरी होवै आस ॥ जम की कटीअै तेरी फास ॥ गुर का उपदेसु सुनीजै ॥ नानक

सुखि सहजि समीजै ॥४॥३०॥४१॥ रामकली महला ५ ॥ जिस की तिस की करि मानु ॥ आपन लाहि
 गुमानु ॥ जिस का तू तिस का सभु कोइ ॥ तिसहि अराधि सदा सुखु होइ ॥१॥ काहे भ्रमि भ्रमहि बिगाने
 ॥ नाम बिना किछु कामि न आवै मेरा मेरा करि बहुतु पछुताने ॥२॥ रहाउ ॥ जो जो करै सोई मानि
 लेहु ॥ बिनु माने रलि होवहि खेह ॥ तिस का भाणा लागै मीठा ॥ गुर प्रसादि विरले मनि वूठा ॥२॥
 वेपरवाहु अगोचरु आपि ॥ आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ जिसु चिति आए बिनसहि दुखा ॥ हलति
 पलति तेरा ऊजल मुखा ॥३॥ कउन कउन उधरे गुन गाइ ॥ गनणु न जाई कीम न पाइ ॥ बूढत
 लोह साधसंगि तरै ॥ नानक जिसहि परापति करै ॥४॥३१॥४२॥ रामकली महला ५ ॥ मन माहि
 जापि भगवंतु ॥ गुरि पूरै इहु दीनो मंतु ॥ मिटे सगल भै लास ॥ पूरन होई आस ॥१॥ सफल सेवा
 गुरदेवा ॥ कीमति किछु कहणु न जाई साचे सचु अलख अभेवा ॥२॥ रहाउ ॥ करन करावन आपि ॥
 तिस कउ सदा मन जापि ॥ तिस की सेवा करि नीत ॥ सचु सहजु सुखु पावहि मीत ॥२॥ साहिबु मेरा
 अति भारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जन का राखा सोई ॥३॥ करि
 किरपा अरदासि सुणीजै ॥ अपणे सेवक कउ दरसनु दीजै ॥ नानक जापी जपु जापु ॥ सभ ते ऊच जा का
 परतापु ॥४॥३२॥४३॥ रामकली महला ५ ॥ बिरथा भरवासा लोक ॥ ठाकुर प्रभ तेरी टेक ॥ अवर
 छूटी सभ आस ॥ अचिंत ठाकुर भेटे गुणतास ॥१॥ एको नामु धिआइ मन मेरे ॥ कारजु तेरा होवै
 पूरा हरि हरि गुण गाइ मन मेरे ॥२॥ रहाउ ॥ तुम ही कारन करन ॥ चरन कमल हरि सरन
 ॥ मनि तनि हरि ओही धिआइआ ॥ आन्नद हरि रूप दिखाइआ ॥२॥ तिस ही की ओट सदीव ॥
 जा के कीने है जीव ॥ सिमरत हरि करत निधान ॥ राखनहार निदान ॥३॥ सरब की रेण होवीजै ॥
 आपु मिटाइ मिलीजै ॥ अनदिनु धिआईऔ नामु ॥ सफल नानक इहु कामु ॥४॥३३॥४४॥
 रामकली महला ५ ॥ कारन करन करीम ॥ सरब प्रतिपाल रहीम ॥ अलह अलख अपार ॥ खुदि

ਖੁਦਾਇ ਵਡ ਬੇਸੁਮਾਰ ॥੧॥ ਆਂ ਨਮੋ ਭਗਵਤੁ ਗੁਸਾਈ ॥ ਖਾਲਕੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਠਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜਗਨਾਥ ਜਗਜੀਵਨ ਮਾਧੋ ॥ ਭਤ ਭੰਜਨ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਅਰਾਧੋ ॥ ਰਿਖੀਕੇਸ ਗੋਪਾਲ ਗੋਵਿੰਦ ॥ ਪੂਰਨ ਸਰਬਕ
 ਮੁਕੰਦ ॥੨॥ ਮਿਹਰਵਾਨ ਮਤਲਾ ਤ੍ਰਹੀ ਏਕ ॥ ਪੀਰ ਪੈਕਾਬੰਦ ਸੇਖ ॥ ਦਿਲਾ ਕਾ ਮਾਲਕੁ ਕਰੇ ਹਾਕੁ ॥ ਕੁਰਾਨ
 ਕਤੇਬ ਤੇ ਪਾਕੁ ॥੩॥ ਨਾਰਾਇਣ ਨਰਹਰ ਦਿੱਤਾਲ ॥ ਰਮਤ ਰਾਮ ਘਟ ਘਟ ਆਧਾਰ ॥ ਬਾਸੁਦੇਵ ਬਸਤ ਸਭ
 ਠਾਈ ॥ ਲੀਲਾ ਕਿਛੁ ਲਖੀ ਨ ਜਾਇ ॥੪॥ ਮਿਹਰ ਦਿੱਤਾ ਕਰਿ ਕਰਨੈਹਾਰ ॥ ਭਗਤਿ ਬੰਦਗੀ ਦੇਹਿ
 ਸਿਰਜਣਹਾਰ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਖੋਏ ਭਰਮ ॥ ਏਕੋ ਅਲਹੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥੫॥੩੪॥੪੫॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫
 ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਬਿਨਸੇ ਪਾਪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਤ ਨਾਹੀ ਸੰਤਾਪ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨਿ ਵਸੇ ॥ ਮਹਾ
 ਬਿਕਾਰ ਤਨ ਤੇ ਸਭਿ ਨਸੇ ॥੧॥ ਗੋਪਾਲ ਕੋ ਜਸੁ ਗਾਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥ ਅਕਥ ਕਥਾ ਸਾਚੀ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ
 ਸਮਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤ੃ਸਨਾ ਭੂਖ ਸਭ ਨਾਸੀ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਪਿਆ ਅਵਿਨਾਸੀ ॥ ਰੈਨਿ ਦਿਨਸੁ ਪ੍ਰਭ
 ਸੇਵ ਕਮਾਨੀ ॥ ਹਰਿ ਮਿਲਣੈ ਕੀ ਏਹ ਨੀਸਾਨੀ ॥੨॥ ਮਿਟੇ ਜੰਜਾਲ ਹੋਏ ਪ੍ਰਭ ਦਿੱਤਾਲ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ
 ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲ ॥ ਪਰਾ ਪੂਰਬਲਾ ਕਰਮੁ ਬਣਿ ਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਨਿਤ ਰਸਨਾ ਗਾਇਆ ॥੩॥ ਹਰਿ ਕੇ
 ਸੰਤ ਸਦਾ ਪਰਖਾਣੁ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਸਤਕਿ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਦਾਸ ਕੀ ਰੇਣੁ ਪਾਏ ਜੇ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸ ਕੀ
 ਪਰਮ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥੪॥੩੫॥੪੬॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦਰਸਨ ਕਤ ਜਾਈਐ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ
 ਹਿਰਦੈ ਧਰਿ ਧਿਆਨੁ ॥ ਧੂਰਿ ਸੰਤਨ ਕੀ ਮਸਤਕਿ ਲਾਇ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਜਾਇ ॥੧॥ ਜਿਸੁ
 ਭੇਟਤ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਭੁ ਨਦਰੀ ਆਵੈ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪੂਰਨ ਭਗਵਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰ ਕੀ
 ਕੀਰਤਿ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਨਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਭਗਤਿ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੁਰਤਿ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਜਾਨੁ ॥
 ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨੁ ॥੨॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸਮਸਰਿ ਸੁਖ ਢੂਖ ॥ ਕਦੇ ਨ ਬਿਆਪੈ ਤ੃ਸਨਾ ਭੂਖ ॥ ਮਨਿ
 ਸੰਤੋਖੁ ਸਬਦਿ ਗੁਰ ਰਾਜੇ ॥ ਜਪਿ ਗੋਵਿੰਦੁ ਪੜਦੇ ਸਭਿ ਕਾਜੇ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਗੁਰੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥ ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ
 ਦਿੱਤਾਲ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਿਸੁ ਪੂਰਨ ਭਾਗਾ ॥੪॥੩੬॥੪੭॥

रामकली महला ५ ॥ किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥ मूँड मुगध तेरा संगी कवन ॥ रामु संगी तिसु
 गति नही जानहि ॥ पंच बटवारे से मीत करि मानहि ॥੧॥ सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥ गुण
 गोविंद रवीअहि दिनु राती साधसंगि करि मन की प्रीति ॥੨॥ रहाउ ॥ जनमु बिहानो अह्वाकारि अरु
 वादि ॥ तृपति न आवै बिखिआ सादि ॥ भरमत भरमत महा दुखु पाइआ ॥ तरी न जाई दुतर
 माइआ ॥੨॥ कामि न आवै सु कार कमावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥ राखन कउ दूसर नही
 कोइ ॥ तउ निसतरै जउ किरपा होइ ॥੩॥ पतित पुनीत प्रभ तेरो नामु ॥ अपने दास कउ कीजै दानु ॥
 करि किरपा प्रभ गति करि मेरी ॥ सरणि गही नानक प्रभ तेरी ॥੪॥੩੭॥੪੮॥ रामकली महला ५ ॥
 इह लोके सुखु पाइआ ॥ नही भेटत धरम राइआ ॥ हरि दरगह सोभावंत ॥ फुनि गरभि नाही बसंत
 ॥੧॥ जानी संत की मिलाई ॥ करि किरपा दीनो हरि नामा पूरबि संजोगि मिलाई ॥੧॥ रहाउ ॥
 गुर कै चरणि चितु लागा ॥ धनि धनि संजोगु सभागा ॥ संत की धूरि लागी मेरै माथे ॥ किलविख दुख
 सगले मेरे लाथे ॥੨॥ साध की सचु टहल कमानी ॥ तब होए मन सुध परानी ॥ जन का सफल दरसु
 डीठा ॥ नामु प्रभू का घटि घटि वूठा ॥੩॥ मिटाने सभि कलि कलेस ॥ जिस ते उपजे तिसु महि
 परवेस ॥ प्रगटे आनूप गोविंद ॥ प्रभ पूरे नानक बखसिंद ॥੪॥੩੮॥੪੯॥ रामकली महला ५ ॥ गऊ
 कउ चारे सारदूलु ॥ कउडी का लख हूआ मूलु ॥ बकरी कउ हसती प्रतिपाले ॥ अपना प्रभु नदरि
 निहाले ॥੧॥ कृपा निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ बरनि न साकउ बहु गुन तेरे ॥੧॥ रहाउ ॥ दीसत
 मासु न खाइ बिलाई ॥ महा कसाबि छुरी सटि पाई ॥ करणहार प्रभु हिरदै वूठा ॥ फाथी मछुली का
 जाला तूटा ॥੨॥ सूके कासट हरे चलूल ॥ ऊचै थलि फूले कमल अनूप ॥ अगनि निवारी सतिगुर
 देव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥੩॥ अकिरतघणा का करे उधारु ॥ प्रभु मेरा है सदा दइआरु ॥
 संत जना का सदा सहाई ॥ चरन कमल नानक सरणाई ॥੪॥੩੯॥੫੦॥ रामकली महला ५ ॥

ਪਂਚ ਸਿੰਘ ਰਾਖੇ ਪ੍ਰਭਿ ਮਾਰਿ ॥ ਦਸ ਬਿਧਿਆਡੀ ਲੰਈ ਨਿਵਾਰਿ ॥ ਤੀਨਿ ਆਵਰਤ ਕੀ ਚੂਕੀ ਘੇਰ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ
 ਚੂਕੇ ਭੈ ਫੇਰ ॥੧॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਜੀਵਾ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਿਓ ਦਾਸੁ ਅਪਨਾ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਚਾ
 ਬਖਸਿੰਦ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦਾਝਿ ਗਏ ਤ੍ਰਣ ਪਾਪ ਸੁਮੇਰ ॥ ਜਪਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਜੇ ਪ੍ਰਭ ਪੈਰ ॥ ਅਨਦ ਰੂਪ ਪ੍ਰਗਟਿਓ
 ਸਭ ਥਾਨਿ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਜੋਰੀ ਸੁਖ ਮਾਨਿ ॥੨॥ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਓ ਬਾਛਰ ਖੋਜ ॥ ਖੇਦੁ ਨ ਪਾਇਓ ਨਹ ਫੁਨਿ ਰੋਜ
 ॥ ਸਿੰਧੁ ਸਮਾਇਓ ਘਟੁਕੇ ਮਾਹਿ ॥ ਕਰਣਹਾਰ ਕਤ ਕਿਛੁ ਅਚਰਜੁ ਨਾਹਿ ॥੩॥ ਜਤ ਛੂਟਤ ਤਤ ਜਾਇ
 ਪਾਇਆਲ ॥ ਜਤ ਕਾਢਿਓ ਤਤ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ॥ ਪਾਪ ਪੁਨ ਹਮਰੈ ਵਸਿ ਨਾਹਿ ॥ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਨਾਨਕ
 ਗੁਣ ਗਾਹਿ ॥੪॥੪੦॥੫੧॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਾ ਤਨੁ ਤੇਰਾ ਨਾ ਮਨੁ ਤੋਹਿ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਬਿਆਪਿਆ
 ਧੋਹਿ ॥ ਕੁਦਮ ਕਰੈ ਗਡਰ ਜਿਤ ਛੇਲ ॥ ਅਚਿੰਤੁ ਜਾਲੁ ਕਾਲੁ ਚਕੁ ਪੇਲ ॥੧॥ ਹਰਿ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਰਨਾਇ
 ਮਨਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੁ ਧਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਊਨੇ ਕਾਜ ਨ ਹੋਵਤ ਪੂਰੇ
 ॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰਿਧਿ ਮਦਿ ਸਦ ਹੀ ਝੂਰੇ ॥ ਕਰੈ ਬਿਕਾਰ ਜੀਅਰੇ ਕੈ ਤਾਈ ॥ ਗਾਫਲ ਸੰਗਿ ਨ ਤਸੂਆ ਜਾਈ ॥੨॥
 ਧਰਤ ਧੋਹ ਅਨਿਕ ਛਲ ਜਾਨੈ ॥ ਕਤਡੀ ਕਤਡੀ ਕਤ ਖਾਕੁ ਸਿਰਿ ਛਾਨੈ ॥ ਜਿਨਿ ਦੀਆ ਤਿਸੈ ਨ ਚੇਤੈ ਮੂਲਿ ॥
 ਮਿਥਿਆ ਲੋਭੁ ਨ ਉਤਰੈ ਸੂਲੁ ॥੩॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਜਬ ਭਏ ਦਿਆਲ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹੋਆ ਸਾਧ ਖਾਲ ॥ ਹਸਤ
 ਕਮਲ ਲਡਿ ਲੀਨੋ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੪੧॥੫੨॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਜਾ
 ਰਾਮ ਕੀ ਸਰਣਾਇ ॥ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕੈ ਰਾਮੁ
 ਬਸੈ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਦੁਤਰੁ ਪੇਖਤ ਨਾਹੀ ॥ ਸਗਲੇ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ਅਪਨੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਸਨ ਨਿਤ
 ਜਪਨੇ ॥੧॥ ਜਿਸ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਹਾਥੁ ਗੁਰੁ ਧੈਰੈ ॥ ਸੋ ਦਾਸੁ ਅਦੇਸਾ ਕਾਹੇ ਕਰੈ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਕੀ ਚੂਕੀ ਕਾਣਿ ॥
 ਪੂਰੈ ਗੁਰ ਊਪਰਿ ਕੁਰਬਾਣ ॥੨॥ ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਭੇਟਿ ਨਿਹਾਲ ॥ ਸੋ ਦਰਸਨੁ ਪਾਏ ਜਿਸੁ ਹੋਇ ਦਿਆਲੁ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸੋ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ॥੩॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵਹੁ ਸਾਧ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸੁਖ ਊਜਲ
 ਸਾਚੈ ਦਰਬਾਰੇ ॥ ਅਨਦ ਕਰਹੁ ਤਜਿ ਸਗਲ ਬਿਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਪਿ ਉਤਰਹੁ ਪਾਰਿ ॥੪॥੪੨॥੫੩॥

रामकली महला ५ ॥ इੰਧन ते बैसंतरु भागै ॥ माटी कउ जलु दह दिस तिआगै ॥ ऊपरि चरन तलै
 आकासु ॥ घट महि सिंधु कीओ परगासु ॥१॥ औसा संम्रथु हरि जीउ आपि ॥ निमख न बिसरै जीअ
 भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि ॥२॥ रहाउ ॥ प्रथमे माखनु पाछै दूधु ॥ मैलू कीनो साबुनु
 सूधु ॥ भै ते निरभउ डरता फिरै ॥ होंदी कउ अणहोंदी हिरै ॥३॥ देही गुपत बिदेही दीसै ॥ सगले
 साजि करत जगदीसै ॥ ठगणहार अणठगदा ठागै ॥ बिनु वखर फिरि फिरि उठि लागै ॥४॥ संत
 सभा मिलि करहु बखिआण ॥ सिंमृति सासत बेद पुराण ॥ ब्रह्म बीचारु बीचारे कोइ ॥ नानक
 ता की परम गति होइ ॥४॥४३॥५४॥ रामकली महला ५ ॥ जो तिसु भावै सो थीआ ॥ सदा सदा
 हरि की सरणाई प्रभ बिनु नाही आन बीआ ॥१॥ रहाउ ॥ पुतु कलत्रु लखिमी दीसै इन महि
 किछू न संगि लीआ ॥ बिखै ठगउरी खाइ भुलाना माइआ मंदरु तिआगि गइआ ॥२॥ निंदा
 करि करि बहुतु विगूता गरभ जोनि महि किरति पड़िआ ॥ पुरब कमाणे छोडहि नाही जमदूति
 ग्रासिओ महा भड़िआ ॥२॥ बोलै झूठु कमावै अवरा तृसन न बूझै बहुतु हड़िआ ॥ असाध रोगु
 उपजिआ संत दूखनि देह बिनासी महा खड़िआ ॥३॥ जिनहि निवाजे तिन ही साजे आपे कीने संत
 जड़िआ ॥ नानक दास कंठि लाइ राखे करि किरपा पारब्रह्म मड़िआ ॥४॥४४॥५५॥ रामकली
 महला ५ ॥ औसा पूरा गुरदेउ सहाई ॥ जा का सिमरनु बिरथा न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखत
 होइ निहालु ॥ जा की धूरि काटै जम जालु ॥ चरन कमल बसे मेरे मन के ॥ कारज सवारे सगले तन के
 ॥१॥ जा कै मसतकि राखै हाथु ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथु ॥ पतित उधारणु कृपा निधानु ॥ सदा
 सदा जाईਐ कुरबानु ॥२॥ निरमल मंतु देइ जिसु दानु ॥ तजहि बिकार बिनसै अभिमानु ॥ एकु
 धिआईਐ साध कै संगि ॥ पाप बिनासे नाम कै रंगि ॥३॥ गुर परमेसुर सगल निवास ॥ घटि घटि
 रवि रहिआ गुणतास ॥ दरसु देहि धारउ प्रभ आस ॥ नित नानकु चितवै सचु अरदासि ॥४॥४५॥५६॥

ਰਾਗੁ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਟੁਪਦੇ

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗਾਵਹੁ ਰਾਮ ਕੇ ਗੁਣ ਗੀਤ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਮਿਟੈ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਹੋਵਤ ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਹਿ ਹੋਇ ਨਿਵਾਸੁ ॥੧॥ ਸਂਤਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਹੋਇ ਉਧਾਰੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਭਵਜਲੁ ਤਤਰਸਿ ਪਾਰਿ ॥੨॥੧॥੫੭॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥ ਰਾਮ
 ਨਾਮੁ ਜਧਿ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੇ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੇ ਰੋਗ ਕੂਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਏਕੁ ਅਰਾਧਹੁ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥ ਜਾ ਕੀ
 ਸਰਨਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਨੀਦ ਸੁਹੇਲੀ ਨਾਮ ਕੀ ਲਾਗੀ ਭੂਖ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਬਿਨਸੇ ਸਭ ਟ੍ਰਖ ॥੨॥
 ਸਹਜਿ ਅਨਨਦ ਕਰਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸਭ ਚਿੱਤ ਮਿਟਾਈ ॥੩॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਜਪੁ ਜਾਧਿ ॥
 ਨਾਨਕ ਰਾਖਾ ਹੋਆ ਆਧਿ ॥੪॥੨॥੫੮॥

ਰਾਗੁ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ਪੜਤਾਲ ਘਰੁ ੩

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਰਨਰਹ ਨਮਸਕਾਰਾਂ ॥ ਜਲਨ ਥਲਨ ਬਸੁਧ ਗਗਨ ਏਕ ਏਕਕਾਰਾਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਨ ਧਰਨ ਪੁਨ ਪੁਨਹ
 ਕਰਨ ॥ ਨਹ ਗਿਰਹ ਨਿਰਹਾਰਾਂ ॥੧॥ ਗੰਭੀਰ ਧੀਰ ਨਾਮ ਹੀਰ ਊਚ ਮੂਚ ਅਪਾਰਾਂ ॥ ਕਰਨ ਕੇਲ ਗੁਣ ਅਮੋਲ ਨਾਨਕ
 ਬਲਿਹਾਰਾਂ ॥੨॥੧॥੫੯॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੂਪ ਰੰਗ ਸੁਗੰਧ ਭੋਗ ਤਿਆਗਿ ਚਲੇ ਮਾਇਆ ਛਲੇ
 ਕਨਿਕ ਕਾਮਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਭੰਡਾਰ ਦਰਬ ਅਰਥ ਖਰਬ ਪੇਖਿ ਲੀਲਾ ਮਨੁ ਸਧਾਰੈ ॥ ਨਹ ਸੰਗਿ ਗਾਮਨੀ
 ॥੧॥ ਸੁਤ ਕਲਕ ਭਾਤ ਮੀਤ ਤਰਝਿ ਪਰਿਓ ਭਰਮਿ ਮੋਹਿਓ ਛਿਹ ਬਿਰਖ ਛਾਮਨੀ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਰਨ
 ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਸੰਤ ਭਾਵਨੀ ॥੨॥੨॥੬੦॥

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੬ ਤਿਪਦੇ ॥ ਰੇ ਮਨ ਓਟ ਲੇਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦੁਰਮਤਿ ਨਾਸੈ ਪਾਵਹਿ ਪਦੁ
 ਨਿਰਬਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਡਭਾਗੀ ਤਿਹ ਜਨ ਕਤ ਜਾਨਹੁ ਜੋ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਪਾਪ

खोड़ि कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥१॥ अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥ जाँ गति कउ
 जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥२॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि
 कीना ॥ नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥३॥१॥ रामकली महला ६ ॥ साधो कउन
 जुगति अब कीजै ॥ जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मनु माइआ महि
 उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥ कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥१॥
 भए दिआल कृपाल संत जन तब इह बात बताई ॥ सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ
 कीरति गाई ॥२॥ राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥ जम को त्रासु मिटै नानक
 तिह अपुनो जनमु सवारै ॥३॥२॥ रामकली महला ६ ॥ प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥ छिनु छिनु
 अउध घटै निसि बासुर बृथा जातु है देह ॥१॥ रहाउ ॥ तरनापो बिखिअन सिउ खोड़िओ बालपनु
 अगिआना ॥ बिरधि भड़िओ अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥१॥ मानस जनमु दीओ जिह
 ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥ मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ ॥२॥ माइआ
 को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥ नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई ॥
 ३॥३॥८॥

रामकली महला १ अस्टपदीआ

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई चंदु चड़हि से तारे सोई दिनीअरु तपत रहै ॥ सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे
 ॥१॥ जीवन तलब निवारि ॥ होवै परवाणा करहि धिङणा कलि लखण वीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ कितै
 देसि न आइआ सुणीऔ तीरथ पासि न बैठा ॥ दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा
 ॥२॥ जे को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु न होई ॥ जे को नाउ लए बदनावी कलि के लखण एई
 ॥३॥ जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ॥ जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु

ਮਰਣਾ ॥੪॥ ਆਖੁ ਗੁਣਾ ਕਲਿ ਆਈਐ ॥ ਤਿਹੁ ਜੁਗ ਕੇਰਾ ਰਹਿਆ ਤਪਾਵਸੁ ਜੇ ਗੁਣ ਦੇਹਿ ਤ ਪਾਈਐ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਕਲਿ ਕਲਵਾਲੀ ਸਰਾ ਨਿਬੇਡੀ ਕਾਜੀ ਕੁਸਨਾ ਹੋਆ ॥ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬੇਟੁ ਅਥਰਬਣੁ ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ
 ਲਹਿਆ ॥੫॥ ਪਤਿ ਵਿਣੁ ਪ੍ਰਯਾ ਸਤ ਵਿਣੁ ਸੰਜਮੁ ਜਤ ਵਿਣੁ ਕਾਹੇ ਜਨੇਊ ॥ ਨਾਵਹੁ ਧੋਵਹੁ ਤਿਲਕੁ ਚੜਾਵਹੁ ਸੁਚ
 ਵਿਣੁ ਸੋਚ ਨ ਹੋਈ ॥੬॥ ਕਲਿ ਪਰਵਾਣੁ ਕਤੇਬ ਕੁਰਾਣੁ ॥ ਪੋਥੀ ਪੰਡਿਤ ਰਹੇ ਪੁਰਾਣ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਤ ਭਿੰਡਿਆ
 ਰਹਮਾਣੁ ॥ ਕਰਿ ਕਰਤਾ ਤੂ ਏਕੋ ਜਾਣੁ ॥੭॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਏਢੂ ਤਪਰਿ ਕਰਮੁ ਨਹੀ ॥ ਜੇ ਘਰਿ
 ਹੋਟੈ ਮੰਗਣਿ ਜਾਈਐ ਫਿਰਿ ਓਲਾਮਾ ਮਿਲੈ ਤਹੀ ॥੮॥੧॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੁ ਪਰਬੋਧਹਿ ਮੜੀ
 ਬਧਾਵਹਿ ॥ ਆਸਣੁ ਤਿਆਗਿ ਕਾਹੇ ਸਚੁ ਪਾਵਹਿ ॥ ਮਮਤਾ ਮੋਹੁ ਕਾਮਣਿ ਹਿਤਕਾਰੀ ॥ ਨਾ ਅਤਥੂਤੀ ਨਾ
 ਸੰਸਾਰੀ ॥੨॥ ਜੋਗੀ ਬੈਸਿ ਰਹਹੁ ਦੁਬਿਧਾ ਦੁਖੁ ਭਾਗੈ ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਮਾਗਤ ਲਾਜ ਨ ਲਾਗੈ ॥੩॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਗਾਵਹਿ ਗੀਤ ਨ ਚੀਨਹਿ ਆਪੁ ॥ ਕਿਤ ਲਾਗੀ ਨਿਵਰੈ ਪਰਤਾਪੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਚੈ ਮਨ ਭਾਇ ॥ ਮਿਖਿਆ
 ਸਹਜ ਵੀਚਾਰੀ ਖਾਇ ॥੪॥ ਭਸਮ ਚੜਾਇ ਕਰਹਿ ਪਾਖੰਡੁ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਸਹਹਿ ਜਮ ਢੰਡੁ ॥ ਫੂਟੈ ਖਾਪਰੁ
 ਭੀਖ ਨ ਭਾਇ ॥ ਬੰਧਨਿ ਬਾਧਿਆ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੫॥ ਬਿੰਦੁ ਨ ਰਾਖਹਿ ਜਤੀ ਕਹਾਵਹਿ ॥ ਮਾਈ ਮਾਗਤ ਕੈ
 ਲੋਭਾਵਹਿ ॥ ਨਿਰਦਿੰਡਿਆ ਨਹੀ ਜੋਤਿ ਤਜਾਲਾ ॥ ਬੂਡਤ ਬੂਡੇ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲਾ ॥੬॥ ਭੇਖ ਕਰਹਿ ਖਿੰਥਾ ਬਹੁ
 ਥਟੂਆ ॥ ਝੂਠੇ ਖੇਲੁ ਖੇਲੈ ਬਹੁ ਨਟੂਆ ॥ ਅੰਤਰਿ ਅਗਨਿ ਚਿੰਤਾ ਬਹੁ ਜਾਰੇ ॥ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਕੈਸੇ ਤਤਰਸਿ ਪਾਰੇ
 ॥੭॥ ਸੁੰਦ੍ਰਾ ਫਟਕ ਬਨਾਈ ਕਾਨਿ ॥ ਮੁਕਤਿ ਨਹੀ ਬਿਦਿਆ ਬਿਗਿਆਨਿ ॥ ਜਿਹਵਾ ਇੰਦ੍ਰੀ ਸਾਦਿ ਲੂਭਾਨਾ ॥
 ਪਸੂ ਭਏ ਨਹੀ ਮਿਟੈ ਨੀਸਾਨਾ ॥੮॥ ਤੂਬਿਧਿ ਲੋਗਾ ਤੂਬਿਧਿ ਜੋਗਾ ॥ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੈ ਚੂਕਸਿ ਸੋਗਾ ॥ ਊਜਲੁ
 ਸਾਚੁ ਸੁ ਸਬਦੁ ਹੋਇ ॥ ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਵੀਚਾਰੇ ਸੋਇ ॥੯॥ ਤੁੜਨ ਪਹਿ ਨਤ ਨਿਧਿ ਤੂ ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪੇ
 ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਗੁ ॥ ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਸਚੁ ਸੁਚੀਤੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋਗੀ ਤੂਭਵਣ ਮੀਤੁ ॥੧॥੨॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਖਟੁ ਮਟੁ ਦੇਹੀ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਸੁਰਤਿ ਸਬਦੁ ਧੁਨਿ ਅੰਤਰਿ ਜਾਗੀ ॥ ਵਾਜੈ ਅਨਹਟੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲੀਣਾ ॥
 ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਪਤੀਣਾ ॥੧॥ ਪ੍ਰਾਣੀ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੀਠਾ ਲਾਗੈ

हरि हरि नामि समाईै ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु बिवरजि समाए ॥ सतिगुरु भेटै मेलि मिलाए ॥
 नामु रतनु निरमोलकु हीरा ॥ तितु राता मेरा मनु धीरा ॥२॥ हउमै ममता रोगु न लागै ॥ राम
 भगति जम का भउ भागै ॥ जमु जंदारु न लागै मोहि ॥ निरमल नामु रिदै हरि सोहि ॥३॥ सबदु बीचारि
 भए निरंकारी ॥ गुरमति जागे दुरमति परहारी ॥ अनदिनु जागि रहे लिव लाई ॥ जीवन मुकति
 गति अंतरि पाई ॥४॥ अलिपत गुफा महि रहहि निरारे ॥ तसकर पंच सबदि संघारे ॥ पर घर
 जाइ न मनु डोलाए ॥ सहज निरंतरि रहउ समाए ॥५॥ गुरमुखि जागि रहे अउधूता ॥ सद् बैरागी
 ततु परोता ॥ जगु सूता मरि आवै जाइ ॥ बिनु गुर सबद न सोझी पाइ ॥६॥ अनहद सबदु वजै दिनु
 राती ॥ अविगत की गति गुरमुखि जाती ॥ तउ जानी जा सबदि पछानी ॥ एको रवि रहिआ निरबानी
 ॥७॥ सुन्न समाधि सहजि मनु राता ॥ तजि हउ लोभा एको जाता ॥ गुर चेले अपना मनु मानिआ ॥
 नानक दूजा मेटि समानिआ ॥८॥३॥ रामकली महला ੧ ॥ साहा गणहि न करहि बीचारु ॥ साहे
 ऊपरि एकंकारु ॥ जिसु गुरु मिलै सोई बिधि जाणै ॥ गुरमति होइ त हुकमु पछाणै ॥१॥ झूठु न बोलि
 पाडे सचु कहीै ॥ हउमै जाइ सबदि घरु लहीै ॥२॥ रहाउ ॥ गणि गणि जोतकु काँडी कीनी ॥ पड़ै
 सुणावै ततु न चीनी ॥ सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥ होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥२॥
 नावहि धोवहि पूजहि सैला ॥ बिनु हरि राते मैलो मैला ॥ गरबु निवारि मिलै प्रभु सारथि ॥ मुकति
 प्रान जपि हरि किरतारथि ॥३॥ वाचै वादु न बेदु बीचारै ॥ आपि डुबै कित पितरा तारै ॥ घटि
 घटि ब्रहमु चीनै जनु कोइ ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होइ ॥४॥ गणत गणीै सहसा दुखु जीै ॥ गुर की
 सरणि पवै सुखु थीै ॥ करि अपराध सरणि हम आइआ ॥ गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ ॥५॥
 गुर सरणि न आईै ब्रहमु न पाईै ॥ भरमि भुलाईै जनमि मरि आईै ॥ जम दरि बाधउ
 मरै बिकारु ॥ ना रिदै नामु न सबदु अचारु ॥६॥ इकि पाधे पंडित मिसर कहावहि ॥ दुबिधा राते

ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ॥ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕੋ ਜਨੁ ਆਪਾਰੁ ॥੭॥ ਏਕੁ ਬੁਰਾ ਭਲਾ
 ਸਚੁ ਏਕੈ ॥ ਬ੍ਰਾਂਜੁ ਗਿਆਨੀ ਸਤਗੁਰ ਕੀ ਟੇਕੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੀ ਏਕੋ ਜਾਣਿਆ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਮੇਟਿ
 ਸਮਾਣਿਆ ॥੮॥ ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਏਕਕਾਰੁ ॥ ਸਰਬ ਗੁਣੀ ਸਾਚਾ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥੯॥੮॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਠੁ ਨਿਗ੍ਰਹੁ ਕਰਿ ਕਾਇਆ ਛੀਜੈ ॥ ਵਰਤੁ
 ਤਪਨੁ ਕਰਿ ਮਨੁ ਨਹੀ ਭੀਜੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਪ੍ਰੌਜੈ ॥੧॥ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਮਨਾ ਹਰਿ ਜਨ ਸੰਗੁ ਕੀਜੈ ॥
 ਜਮੁ ਜਨਦਾਰੁ ਜੋਹਿ ਨਹੀ ਸਾਕੈ ਸਰਪਨਿ ਡਸਿ ਨ ਸਕੈ ਹਰਿ ਕਾ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵਾਦੁ ਪਡੈ ਰਾਗੀ ਜਗੁ
 ਭੀਜੈ ॥ ਕੈ ਗੁਣ ਬਿਖਿਆ ਜਨਮਿ ਮਰੀਜੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਖੁ ਸਹੀਜੈ ॥੨॥ ਚਾਡਸਿ ਪਵਨੁ ਸਿੰਘਾਸਨੁ ਭੀਜੈ
 ॥ ਨਿਤਲੀ ਕਰਮ ਖਟੁ ਕਰਮ ਕਰੀਜੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਬਿਰਥਾ ਸਾਸੁ ਲੀਜੈ ॥੩॥ ਅੰਤਰਿ ਪੰਚ ਅਗਨਿ ਕਿਤ
 ਧੀਰਜੁ ਧੀਜੈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਚੋਰੁ ਕਿਤ ਸਾਦੁ ਲਹੀਜੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਕਾਇਆ ਗੁਡੁ ਲੀਜੈ ॥੪॥ ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ
 ਤੀਰਥ ਭਰਮੀਜੈ ॥ ਮਨੁ ਨਹੀ ਸੂਚਾ ਕਿਆ ਸੋਚ ਕਰੀਜੈ ॥ ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਦੋਸੁ ਕਾ ਕਤ ਦੀਜੈ ॥੫॥ ਅੰਨੁ ਨ
 ਖਾਹਿ ਦੇਹੀ ਦੁਖੁ ਦੀਜੈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਤ੃ਪਤਿ ਨਹੀ ਥੀਜੈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਜਨਮੈ ਜਨਮਿ ਮਰੀਜੈ ॥੬॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਥਿ ਸੰਗਤਿ ਜਨ ਕੀਜੈ ॥ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰਾਚੈ ਨਹੀ ਜਨਮਿ ਮਰੀਜੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਆ ਕਰਮੁ ਕੀਜੈ
 ॥੭॥੫॥ ਊਂਦਰ ਢੂਂਦਰ ਪਾਸਿ ਧਰੀਜੈ ॥ ਧੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਰਾਮੁ ਰਖੀਜੈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀਜੈ
 ॥੮॥੫॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਅੰਤਰਿ ਉਤਮੁਜੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਜੋ ਕਹੀਐ ਸੋ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਹੋਈ ॥ ਜੁਗਹ
 ਜੁਗਤਰਿ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥ ਉਤਪਤਿ ਪਰਲਤ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੧॥ ਐਸਾ ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ॥
 ਜਿਨਿ ਜਪਿਆ ਤਿਨ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਜਮ ਤੀਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਹੀਰਾ
 ਨਿਰਮੋਲੁ ॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਅਮਰੁ ਅਤੋਲੁ ॥ ਜਿਹਵਾ ਸੂਚੀ ਸਾਚਾ ਬੋਲੁ ॥ ਘਰਿ ਦਰਿ ਸਾਚਾ ਨਾਹੀ ਰੋਲੁ
 ॥੨॥ ਇਕਿ ਬਨ ਮਹਿ ਬੈਸਹਿ ਝੂਗਰਿ ਅਸਥਾਨੁ ॥ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਪਚਹਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕਿਆ
 ਗਿਆਨ ਧਿਆਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵਹਿ ਦਰਗਹਿ ਮਾਨੁ ॥੩॥ ਹਠੁ ਅਛਕਾਰੁ ਕਰੈ ਨਹੀ ਪਾਵੈ ॥ ਪਾਠ ਪਡੈ ਲੇ

ਲੋਕ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਤੀਰਥਿ ਭਰਮਸਿ ਬਿਆਧਿ ਨ ਜਾਵੈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੮॥ ਜਤਨ ਕਰੈ ਬਿੰਦੁ ਕਿਵੈ
 ਨ ਰਹਾਈ ॥ ਮਨੂਆ ਡੋਲੈ ਨਰਕੇ ਪਾਈ ॥ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਾਧੋ ਲਹੈ ਸਜਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜੀਤ ਜਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈ
 ॥੫॥ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਕੇਤੇ ਸੁਨਿ ਦੇਵਾ ॥ ਹਠਿ ਨਿਗਹਿ ਨ ਤ੃ਪਤਾਵਹਿ ਭੇਵਾ ॥ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ਗਹਹਿ ਗੁਰ
 ਸੇਵਾ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਿਰਮਲ ਅਭਿਮਾਨ ਆਖੇਵਾ ॥੬॥ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਪਾਵੈ ਸਚੁ ਨਾਉ ॥ ਤੁਮ ਸਰਣਾਗਤਿ
 ਰਹਤ ਸੁਭਾਉ ॥ ਤੁਮ ਤੇ ਉਪਜਿਓ ਭਗਤੀ ਭਾਉ ॥ ਜਪੁ ਜਾਪਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥੭॥ ਹਉਮੈ ਗਰਬੁ ਜਾਇ
 ਮਨ ਭੀਨੈ ॥ ਝੂਠਿ ਨ ਪਾਵਸਿ ਪਾਖੰਡਿ ਕੀਨੈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨਹੀ ਘਰੁ ਬਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ
 ਬੀਚਾਰੁ ॥੮॥੬॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਿਤ ਆਇਆ ਤਿਤ ਜਾਵਹਿ ਬਤਰੇ ਜਿਤ ਜਨਮੇ ਤਿਤ ਮਰਣੁ
 ਭਇਆ ॥ ਜਿਤ ਰਸ ਭੋਗ ਕੀਏ ਤੇਤਾ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਭਵਜਲਿ ਪਇਆ ॥੧॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਦੇਖਤ
 ਗਰਬਿ ਗਇਆ ॥ ਕਨਿਕ ਕਾਮਨੀ ਸਿਤ ਹੇਤੁ ਵਧਾਇਹਿ ਕੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਹਿ ਭਰਮਿ ਗਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਸੀਲੁ ਨ ਰਾਖਿਆ ਪ੍ਰੇਤ ਪਿੰਜਰ ਮਹਿ ਕਾਸਟੁ ਭਇਆ ॥ ਪੁਨ੍ਨ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਨ ਸੰਜਮੁ
 ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਨੁ ਬਾਦਿ ਜਇਆ ॥੨॥ ਲਾਲਚਿ ਲਾਗੈ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿਓ ਆਵਤ ਜਾਵਤ ਜਨਮੁ ਗਇਆ ॥
 ਜਾ ਜਮੁ ਧਾਇ ਕੇਸ ਗਹਿ ਮਾਰੈ ਸੁਰਤਿ ਨਹੀ ਮੁਖਿ ਕਾਲ ਗਇਆ ॥੩॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਿੰਦਾ ਤਾਤਿ ਪਰਾਈ
 ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਨ ਸਰਬ ਦਇਆ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਗਤਿ ਪਤਿ ਪਾਵਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਨਰਕਿ ਗਇਆ
 ॥੪॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਵੇਸ ਕਰਹਿ ਨਟ੍ਠਾ ਜਿਤ ਮੋਹ ਪਾਪ ਮਹਿ ਗਲਤੁ ਗਇਆ ॥ ਇਤ ਉਤ ਮਾਇਆ ਦੇਖਿ
 ਪਸਾਰੀ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਕੈ ਮਗਨੁ ਭਇਆ ॥੫॥ ਕਰਹਿ ਬਿਕਾਰ ਵਿਥਾਰ ਘਨੇਰੇ ਸੁਰਤਿ ਸਬਦ ਬਿਨੁ ਭਰਮਿ
 ਪਇਆ ॥ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਲਾਗਾ ਗੁਰਮਤਿ ਲੇਵਹੁ ਰੋਗੁ ਗਇਆ ॥੬॥ ਸੁਖ ਸੰਪਤਿ ਕਤ ਆਵਤ ਦੇਖੈ
 ਸਾਕਤ ਮਨਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਭਇਆ ॥ ਜਿਸ ਕਾ ਇਹੁ ਤਨੁ ਧਨੁ ਸੋ ਫਿਰਿ ਲੇਵੈ ਅੰਤਰਿ ਸਹਸਾ ਦ੍ਰਖੁ ਪਇਆ ॥੭॥
 ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਕਿਛੁ ਸਾਥਿ ਨ ਚਾਲੈ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸਭੁ ਤਿਸਹਿ ਮਇਆ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਰਿਟੈ ਲੈ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥੮॥ ਮ੍ਰਾਏ ਕਤ ਰੋਵਹਿ ਕਿਸਹਿ ਸੁਣਾਵਹਿ ਭੈ ਸਾਗਰ ਅਸਰਾਲਿ ਪਇਆ ॥ ਦੇਖਿ

ਕੁਟੰਬੁ ਮਾਇਆ ਗ੍ਰਹ ਮੰਦਰੁ ਸਾਕਤੁ ਜੰਜਾਲਿ ਪਰਾਲਿ ਪਇਆ ॥੬॥ ਜਾ ਆਏ ਤਾ ਤਿਨਹਿ ਪਠਾਏ ਚਾਲੇ
 ਤਿਨੈ ਬੁਲਾਇ ਲਿਝਿਆ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੋ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ਬਖਸਣਹਾਰੈ ਬਖਸਿ ਲਿਝਿਆ ॥੧੦॥ ਜਿਨਿ ਏਹੁ
 ਚਾਖਿਆ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਖੋਜੁ ਭਿਝਿਆ ॥ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਬੁਧਿ ਗਿਆਨੁ ਗੁਰੂ ਤੇ ਪਾਇਆ ਮੁਕਤਿ
 ਪਦਾਰਥੁ ਸਰਣਿ ਪਇਆ ॥੧੧॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣਾ ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ ਬਿਰਕਤੁ ਭਿਝਿਆ ॥ ਆਪੁ
 ਮਾਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਏ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇ ਲਿਝਿਆ ॥੧੨॥੭॥ ਰਾਮਕਲੀ ਦੱਖਣੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਤੁ
 ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਸਾਚੁ ਦੂਡਾਇਆ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਰਸਿ ਲੀਣਾ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਗੁਰੂ ਦਿਇਆਲੁ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਲੀਣਾ ॥
 ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਹੈ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਸਾਚੇ ਦੇਖਿ ਪਤੀਣਾ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਹੈ ਗਗਨ ਪੁਰਿ ਦੂਸਟਿ ਸਮੈਸਰਿ
 ਅਨਹਤ ਸਬਦਿ ਰੰਗੀਣਾ ॥੨॥ ਸਤੁ ਬੰਧਿ ਕੁਪੀਨ ਭਰਿਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ਜਿਹਵਾ ਰੰਗਿ ਰਸੀਣਾ ॥੩॥ ਮਿਲੈ ਗੁਰ
 ਸਾਚੇ ਜਿਨਿ ਰਚੁ ਰਾਚੇ ਕਿਰਤੁ ਵੀਚਾਰਿ ਪਤੀਣਾ ॥੪॥ ਏਕ ਮਹਿ ਸਰਬ ਸਰਬ ਮਹਿ ਏਕਾ ਏਹ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੇਖਿ
 ਦਿਖਾਈ ॥੫॥ ਜਿਨਿ ਕੀਏ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਲਖਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੬॥ ਦੀਪਕ ਤੇ ਦੀਪਕੁ ਪਰਗਾਸਿਆ
 ਤ੃ਭਵਣ ਜੋਤਿ ਦਿਖਾਈ ॥੭॥ ਸਚੈ ਤਖਤਿ ਸਚ ਮਹਲੀ ਬੈਠੇ ਨਿਰਭਤ ਤਾਡੀ ਲਾਈ ॥੮॥ ਮੋਹਿ ਗਿਝਿਆ
 ਬੈਰਾਗੀ ਜੋਗੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਕਿੰਗੁਰੀ ਵਾਈ ॥੯॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭੂ ਕੀ ਛੂਟੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਚੁ ਸਖਾਈ ॥੧੦॥੮॥
 ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਅਤਹਠਿ ਹਸਤ ਮਡੀ ਘਰੁ ਛਾਇਆ ਧਰਣਿ ਗਗਨ ਕਲ ਧਾਰੀ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੇਤੀ
 ਸਬਦਿ ਉਧਾਰੀ ਸੰਤਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਮਤਾ ਮਾਰਿ ਹਤਮੈ ਸੋਖੈ ਤ੃ਭਵਣਿ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥ ਮਨਸਾ ਮਾਰਿ
 ਮਨੈ ਮਹਿ ਰਾਖੈ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੩॥ ਸਿੰਡੀ ਸੁਰਤਿ ਅਨਾਹਦਿ ਵਾਜੈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੪॥
 ਪਰਪੰਚ ਬੇਣੁ ਤਹੀ ਮਨੁ ਰਾਖਿਆ ਬ੍ਰਹਮ ਅਗਨਿ ਪਰਜਾਰੀ ॥੫॥ ਪੰਚ ਤਤੁ ਮਿਲਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਦੀਪਕੁ ਨਿਰਮਲ
 ਜੋਤਿ ਅਪਾਰੀ ॥੬॥ ਰਵਿ ਸਸਿ ਲਤਕੇ ਇਹੁ ਤਨੁ ਕਿੰਗੁਰੀ ਵਾਜੈ ਸਬਦੁ ਨਿਰਾਰੀ ॥੭॥ ਸਿਵ ਨਗਰੀ ਮਹਿ
 ਆਸਣੁ ਅਤਥੂ ਅਲਖੁ ਅਗੰਮੁ ਅਪਾਰੀ ॥੮॥ ਕਾਇਆ ਨਗਰੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਜਾ ਪੰਚ ਵਸਹਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੮॥
 ਸਬਦਿ ਰਖੈ ਆਸਣਿ ਘਰਿ ਰਾਜਾ ਅਦਲੁ ਕਰੇ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥੧੦॥ ਕਾਲੁ ਬਿਕਾਲੁ ਕਹੇ ਕਹਿ ਬਪੁਰੇ ਜੀਵਤ ਮੂਆ

ਮਨੁ ਮਾਰੀ ॥੧੧॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸ ਇਕ ਮੂਰਤਿ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਾਰੀ ॥੧੨॥ ਕਾਇਆ ਸੋਧਿ ਤਰੈ
 ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਆਤਮ ਤਤੁ ਵੀਚਾਰੀ ॥੧੩॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਰਵਿਆ ਗੁਣਕਾਰੀ
 ॥੧੪॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਗੁਣਦਾਤਾ ਹਉਮੈ ਤ੃ਸਨਾ ਮਾਰੀ ॥੧੫॥ ਕੈ ਗੁਣ ਮੇਟੇ ਚਤੁਰੈ ਵਰਤੈ ਏਹਾ ਭਗਤਿ
 ਨਿਰਾਰੀ ॥੧੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋਗ ਸਬਦਿ ਆਤਮੁ ਚੀਨੈ ਹਿਰਦੈ ਏਕੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੧੭॥ ਮਨੂਆ ਅਸਥਿਰੁ ਸਬਦੇ
 ਰਾਤਾ ਏਹਾ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ॥੧੮॥ ਬੇਦੁ ਬਾਦੁ ਨ ਪਾਖੰਡੁ ਅਤਥੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥੧੯॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਜੋਗੁ ਕਮਾਵੈ ਅਤਥੂ ਜਤੁ ਸਤੁ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੨੦॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਮਨੁ ਮਾਰੇ ਅਤਥੂ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਵੀਚਾਰੀ
 ॥੨੧॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਭਵਜਲੁ ਹੈ ਅਵਥੂ ਸਬਦਿ ਤਰੈ ਕੁਲ ਤਾਰੀ ॥੨੨॥ ਸਬਦਿ ਸੂਰ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਅਤਥੂ ਬਾਣੀ
 ਭਗਤਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੨੩॥ ਏਹੁ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਅਤਥੂ ਨਿਕਸੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੨੪॥ ਆਪੇ ਕਖਸੇ
 ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨੫॥੬॥

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਰਮੈ ਦੀਆ ਸੁੰਦਰਾ ਕਨੀ ਪਾਇ ਜੋਗੀ ਖਿੰਥਾ ਕਰਿ ਤੂ ਦਿੱਤਾ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਬਿਭੂਤਿ ਲਾਇ ਜੋਗੀ ਤਾ ਤੀਨਿ
 ਭਵਣ ਜਿਣ ਲਿੱਤਾ ॥੧॥ ਅੈਸੀ ਕਿੰਗੁਰੀ ਵਜਾਇ ਜੋਗੀ ॥ ਜਿਤੁ ਕਿੰਗੁਰੀ ਅਨਹਦੁ ਵਾਜੈ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਹੈ
 ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਪਤੁ ਕਰਿ ਝੋਲੀ ਜੋਗੀ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਭੁਗਤਿ ਪਾਈ ॥ ਧਿਆਨ ਕਾ
 ਕਰਿ ਡੰਡਾ ਜੋਗੀ ਸਿੰਡੀ ਸੁਰਤਿ ਵਜਾਈ ॥੨॥ ਮਨੁ ਦੂਢੁ ਕਰਿ ਆਸਣਿ ਬੈਸੁ ਜੋਗੀ ਤਾ ਤੇਰੀ ਕਲਪਣਾ ਜਾਈ
 ॥ ਕਾਇਆ ਨਗਰੀ ਮਹਿ ਮੰਗਣਿ ਚੜਹਿ ਜੋਗੀ ਤਾ ਨਾਮੁ ਪਲੈ ਪਾਈ ॥੩॥ ਇਤੁ ਕਿੰਗੁਰੀ ਧਿਆਨੁ ਨ ਲਾਗੈ
 ਜੋਗੀ ਨਾ ਸਚੁ ਪਲੈ ਪਾਈ ॥ ਇਤੁ ਕਿੰਗੁਰੀ ਸਾਁਤਿ ਨ ਆਵੈ ਜੋਗੀ ਅਭਿਮਾਨੁ ਨ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥੪॥ ਭਤ
 ਭਾਤ ਦੁਇ ਪਤ ਲਾਇ ਜੋਗੀ ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਕਰਿ ਡੰਡੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵਹਿ ਤਾ ਤੰਤੀ ਵਾਜੈ ਇਨ ਬਿਧਿ ਤ੃ਸਨਾ
 ਖਿੰਡੀ ॥੫॥ ਹੁਕਮੁ ਬੁੜੈ ਸੋ ਜੋਗੀ ਕਹੀਐ ਏਕਸ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਸਹਸਾ ਤੂਟੈ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਜੋਗ
 ਜੁਗਤਿ ਇਵ ਪਾਏ ॥੬॥ ਨਦਰੀ ਆਵਦਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਬਿਨਸੈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਲਿ

ਤੇਰੀ ਭਾਵਨੀ ਲਾਗੈ ਤਾ ਇਹ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੭॥ ਏਹੁ ਜੋਗੁ ਨ ਹੋਵੈ ਜੋਗੀ ਜਿ ਕੁਟੰਬੁ ਛੋਡਿ ਪਰਖਣੁ ਕਰਹਿ ॥
 ਗ੍ਰਹ ਸਰੀਰ ਮਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਅਪਣਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਲਹਹਿ ॥੮॥ ਇਹੁ ਜਗਤੁ ਮਿਟੀ ਕਾ
 ਪੁਤਲਾ ਜੋਗੀ ਇਸੁ ਮਹਿ ਰੋਗੁ ਵਡਾ ਤੂਸਨਾ ਮਾਇਆ ॥ ਅਨੇਕ ਜਤਨ ਭੇਖ ਕਰੇ ਜੋਗੀ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਇ ਗਵਾਇਆ
 ॥੯॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਤਖਥੁ ਹੈ ਜੋਗੀ ਜਿਸ ਨੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ਬ੍ਰੂਜੈ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਸੋ ਪਾਏ
 ॥੧੦॥ ਜੋਗੈ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਬਿਖਮੁ ਹੈ ਜੋਗੀ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ॥ ਅਂਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੋ ਕੇਖੈ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ
 ਚੁਕਾਏ ॥੧੧॥ ਵਿਣੁ ਵਜਾਈ ਕਿੰਗੁਰੀ ਵਾਜੈ ਜੋਗੀ ਸਾ ਕਿੰਗੁਰੀ ਵਜਾਇ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮੁਕਤਿ ਹੋਵਹਿ ਜੋਗੀ
 ਸਾਚੇ ਰਹਹਿ ਸਮਾਇ ॥੧੨॥੧॥੧੦॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਭਗਤਿ ਖਜਾਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬ੍ਰੂਜਿ
 ਬੁਝਾਈ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਚਿ ਰਹਹੁ ਸਦਾ ਸਹਜੁ ਸੁਖੁ ਤਪਯੈ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ
 ਵਿਚਹੁ ਜਾਈ ॥੨॥ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਮਮਤਾ ਸਬਦਿ ਜਲਾਈ ॥੩॥ ਜਿਸ ਤੇ ਤਪਯੈ ਤਿਸ ਤੇ ਬਿਨਸੈ
 ਅੰਤੇ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ॥੪॥ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ਫੂਰਿ ਨਹ ਦੇਖਹੁ ਰਚਨਾ ਜਿਨਿ ਰਚਾਈ ॥੫॥ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਰਖੈ ਘਟ
 ਅਂਤਰਿ ਸਚੇ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੬॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਪਾਇਆ ਜਾਈ ॥੭॥
 ਭਰਮਿ ਨ ਭੂਲਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹੁ ਮਨੁ ਰਾਖਹੁ ਇਕ ਠਾਈ ॥੮॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਭੂਲੀ ਫਿਰਦੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ
 ਗਵਾਈ ॥੯॥ ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਗਵਾਈ ਛਾਫੈ ਪਾਖਿੰਡਿ ਜੋਗੁ ਨ ਪਾਈ ॥੧੦॥ ਸਿਵ ਨਗਰੀ ਮਹਿ ਆਸਣਿ ਬੈਸੈ
 ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਜੋਗੁ ਪਾਈ ॥੧੧॥ ਧਾਤੁਰ ਬਾਜੀ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਰੇ ਨਾਮੁ ਕਿਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥੧੨॥ ਏਹੁ ਸਰੀਰੁ
 ਸਰਕਰੁ ਹੈ ਸੰਤਹੁ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰੇ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧੩॥ ਨਾਮਿ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰਹਿ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਸਬਦੇ ਮੈਲੁ
 ਗਵਾਈ ॥੧੪॥ ਤੈ ਗੁਣ ਅਚੇਤ ਨਾਮੁ ਚੇਤਹਿ ਨਾਹੀ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਿਨਸਿ ਜਾਈ ॥੧੫॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ
 ਤੈ ਮੂਰਤਿ ਤ੍ਰਗੁਣਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥੧੬॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤ੍ਰਕੁਟੀ ਛੂਟੈ ਚਤੁਰੈ ਪਦਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧੭॥
 ਪਂਡਿਤ ਪੜਹਿ ਪਡਿ ਵਾਦੁ ਕਖਾਣਹਿ ਤਿੰਨਾ ਬ੍ਰੂਜ਼ ਨ ਪਾਈ ॥੧੮॥ ਬਿਖਿਆ ਮਾਤੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ਤਪਦੇਸੁ
 ਕਹਹਿ ਕਿਸੁ ਭਾਈ ॥੧੯॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਊਤਮ ਬਾਣੀ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਰਹੀ ਸਮਾਈ ॥੨੦॥ ਬਾਣੀ ਲਾਗੈ ਸੋ

ਗਤਿ ਪਾਏ ਸਬਦੇ ਸਚਿ ਸਮਾਈ ॥੨੧॥ ਕਾਇਆ ਨਗਰੀ ਸਬਦੇ ਖੋਜੇ ਨਾਮੁ ਨਵਂ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੨੨॥ ਮਨਸਾ
 ਮਾਰਿ ਮਨੁ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣਾ ਬਿਨੁ ਰਸਨਾ ਉਸਤਤਿ ਕਰਾਈ ॥੨੩॥ ਲੋਡਿਣ ਦੇਖਿ ਰਹੇ ਬਿਸਮਾਦੀ ਚਿਤੁ
 ਅਦਿਸਟਿ ਲਗਾਈ ॥੨੪॥ ਅਦਿਸਟੁ ਸਦਾ ਰਹੈ ਨਿਰਾਲਮੁ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥੨੫॥ ਹਤ ਗੁਰੂ ਸਾਲਾਹੀ
 ਸਦਾ ਆਪਣਾ ਜਿਨਿ ਸਾਚੀ ਬੂੜਾ ਬੁੜਾਈ ॥੨੬॥ ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਨਾਵਹੁ ਗਤਿ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥੨੭॥੨॥
 ੧੧॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਪ੍ਰਯਾ ਢੁਲਸਭ ਹੈ ਸੰਤਹੁ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੂਰਾ
 ਪਾਈ ॥ ਨਾਮੋ ਪ੍ਰਯ ਕਰਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੈਲਾ ਸੰਤਹੁ ਕਿਆ ਹਤ ਪ੍ਰਯ ਚੜਾਈ ॥੨॥
 ਹਰਿ ਸਾਚੇ ਭਾਵੈ ਸਾ ਪ੍ਰਯਾ ਹੋਵੈ ਭਾਣਾ ਮਨਿ ਵਸਾਈ ॥੩॥ ਪ੍ਰਯਾ ਕਈ ਸਭੁ ਲੋਕੁ ਸੰਤਹੁ ਮਨਮੁਖਿ ਥਾਇ ਨ
 ਪਾਈ ॥੪॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸੰਤਹੁ ਏਹ ਪ੍ਰਯਾ ਥਾਇ ਪਾਈ ॥੫॥ ਪਵਿਤ ਪਾਵਨ ਸੇ ਜਨ ਸਾਚੇ ਏਕ
 ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੬॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰ ਪ੍ਰਯ ਨ ਹੋਕੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲੀ ਲੋਕਾਈ ॥੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ
 ਸੰਤਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੮॥ ਆਪੇ ਨਿਰਮਲੁ ਪ੍ਰਯ ਕਰਾਏ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਥਾਇ ਪਾਈ ॥੯॥ ਪ੍ਰਯਾ
 ਕਰਹਿ ਪਰੁ ਬਿਧਿ ਨਹੀ ਜਾਣਹਿ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਮਲੁ ਲਾਈ ॥੧੦॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਪ੍ਰਯਾ ਜਾਣੈ ਭਾਣਾ ਮਨਿ
 ਵਸਾਈ ॥੧੧॥ ਭਾਣੇ ਤੇ ਸਭਿ ਸੁਖ ਪਾਵੈ ਸੰਤਹੁ ਅੰਤੇ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ॥੧੨॥ ਅਪਣਾ ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਣਹਿ ਸੰਤਹੁ
 ਕੂਡਿ ਕਰਹਿ ਵਡਿਆਈ ॥੧੩॥ ਪਾਖਿੰਡਿ ਕੀਨੈ ਜਮੁ ਨਹੀ ਛੋਡੈ ਲੈ ਜਾਸੀ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥੧੪॥ ਜਿਨ ਅੰਤਰਿ
 ਸਬਦੁ ਆਪੁ ਪਛਾਣਹਿ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤਿਨ ਹੀ ਪਾਈ ॥੧੫॥ ਏਹੁ ਮਨੂਆ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਵੈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ
 ਮਿਲਾਈ ॥੧੬॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਹਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਾਈ ॥੧੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵੈ ਆਪੁ
 ਗਵਾਵੈ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥੧੮॥ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਵਖਾਣੈ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧੯॥ ਭੈ
 ਭੰਜਨੁ ਅਤਿ ਪਾਪ ਨਿਖਿੰਜਨੁ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ॥੨੦॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ
 ਵਡਿਆਈ ॥੨੧॥੩॥੧੨॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਮ ਕੁਚਲ ਕੁਚੀਲ ਅਤਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ਮਿਲਿ ਸਬਦੇ ਮੈਲੁ
 ਤਤਾਰੀ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰੀ ॥ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਸਵਾਰੀ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਾਰਸ ਪਰਸੇ ਫਿਰਿ ਪਾਰਸੁ ਹੋਏ ਹਰਿ ਜੀਤ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੨॥ ਇਕਿ ਭੇਖ ਕਰਹਿ
 ਫਿਰਹਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ਤਿਨ ਜੂਐ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੩॥ ਇਕਿ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਤਰਿ
 ਧਾਰੀ ॥੪॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਤੇ ਸਹਜੇ ਮਾਤੇ ਸਹਜੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥੫॥ ਭੈ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ਕਬ ਹੀ ਭੈ ਭਾਇ
 ਭਗਤਿ ਸਵਾਰੀ ॥੬॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇਆ ਗਿਆਨਿ ਤਤਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥੭॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਕਰਾਏ
 ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਭੰਡਾਰੀ ॥੮॥ ਤਿਸ ਕਿਆ ਗੁਣਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ਹਤ ਗਾਵਾ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੯॥
 ਹਰਿ ਜੀਤ ਜਪੀ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਾਲਾਹੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰੀ ॥੧੦॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ਅਖੁਟ
 ਸਚੇ ਭੰਡਾਰੀ ॥੧੧॥ ਅਪਣਿਆ ਭਗਤਾ ਨੋ ਆਪੇ ਤੁਠਾ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕਲ ਧਾਰੀ ॥੧੨॥ ਤਿਨ ਸਾਚੇ
 ਨਾਮ ਕੀ ਸਦਾ ਮੁਖ ਲਾਗੀ ਗਾਵਨਿ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੧੩॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਤਿਸ ਕਾ ਆਖਣੁ ਬਿਖਮੁ
 ਬੀਚਾਰੀ ॥੧੪॥ ਸਬਦਿ ਲਗੇ ਸੇਈ ਜਨ ਨਿਸਤਰੇ ਭਤਜਲੁ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੀ ॥੧੫॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸਾਚੇ ਕੋ ਪਾਰਿ
 ਨ ਪਾਵੈ ਕੂੜੈ ਕੋ ਵੀਚਾਰੀ ॥੧੬॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੋਈ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀ ॥੧੭॥ ਕਾਇਆ
 ਕੰਚਨੁ ਸਬਦੇ ਰਾਤੀ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰੀ ॥੧੮॥ ਕਾਇਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਰਹੀ ਭਰਪੂਰੇ ਪਾਈਐ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ
 ॥੧੯॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਖੋਜਹਿ ਸੇਈ ਪਾਵਹਿ ਹੋਰਿ ਫ੍ਰਾਟਿ ਮੂਏ ਅਛਕਾਰੀ ॥੨੦॥ ਬਾਦੀ ਬਿਨਸਹਿ ਸੇਵਕ ਸੇਵਹਿ ਗੁਰ
 ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥੨੧॥ ਸੋ ਜੋਗੀ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਬੀਚਾਰੇ ਹਉਮੈ ਤ੃ਸਨਾ ਮਾਰੀ ॥੨੨॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਤਿਨੈ
 ਪਛਾਤਾ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵਹਿ ਮਾਇਆ ਲਾਗੇ ਢੂਬਿ ਮੂਏ ਅਛਕਾਰੀ ॥੨੪॥
 ਜਿਚਰੁ ਅੰਦਰਿ ਸਾਸੁ ਤਿਚਰੁ ਸੇਵਾ ਕੀਚੈ ਜਾਇ ਮਿਲੀਐ ਰਾਮ ਮੁਰਾਰੀ ॥੨੫॥ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਤ ਰਹੈ ਦਿਨੁ
 ਰਾਤੀ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਤੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥੨੬॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਵਾਰੀ ਵਾਰਿ ਘੁਮਾਈ ਅਪਨੇ ਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿਹਾਰੀ
 ॥੨੭॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇਗਾ ਤਕਰੇ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੨੮॥ ਆਪਿ ਜਗਾਏ ਸੇਈ ਜਾਗੇ ਗੁਰ ਕੈ
 ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੨੯॥ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਮੂਏ ਜਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਹਿ ਭਗਤ ਜੀਵੇ ਵੀਚਾਰੀ ॥੩੦॥੪॥੧੩॥
 ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਾਮੁ ਖ਼ਜਾਨਾ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ਤ੃ਪਤਿ ਰਹੇ ਆਧਾਈ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ

ਮुक्ति गति पाई ॥ एकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई ॥੧॥ रहाउ ॥ आपे करता आपे
 भुगता देदा रिजकु सबाई ॥੨॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥੩॥ आपे साजे
 सृसटि उपाए सिरि सिरि धंधै लाई ॥੪॥ तिसहि सरेवहु ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिलाई ॥੫॥
 आपणा आपु आपि उपाए अलखु न लखणा जाई ॥੬॥ आपे मारि जीवाले आपे तिस नो तिलु न
 तमाई ॥੭॥ इकि दाते इकि मंगते कीते आपे भगति कराई ॥੮॥ से वडभागी जिनी एको जाता सचे
 रहे समाई ॥੯॥ आपि सरूपु सिआणा आपे कीमति कहणु न जाई ॥੧੦॥ आपे दुखु सुखु पाए अंतरि
 आपे भरमि भुलाई ॥੧੧॥ वडा दाता गुरमुखि जाता निगुरी अंध फਿਰै लोकाई ॥੧੨॥ जिनी चाखिआ
 तिना सादु आइआ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥੧੩॥ इकना नावहु आपि भुलाए इकना गुरमुखि देहि
 बुझाई ॥੧੪॥ सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस दੀ वडी वडिआई ॥੧੫॥ तिसु बਿਨੁ अवरु न ਕੋਈ
 ਰਾਜਾ ਕਰਿ ਤਪਾਵਸੁ ਬਣਤ ਬਣਾ� ॥੧੬॥ ਨਿਆਉ ਤਿਸੈ ਕਾ ਹੈ ਸਦ ਸਾਚਾ ਵਿਰਲੇ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾ� ॥੧੭॥
 ਤਿਸ ਨੋ ਪ੍ਰਾਣੀ ਸਦਾ ਧਿਆਵਹੁ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਣਤ ਬਣਾ� ॥੧੮॥ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੈ ਸੋ ਜਨੁ ਸੀਐ ਜਿਸੁ ਹਿਰਦੈ
 ਨਾਮੁ ਕਸਾ� ॥੧੯॥ ਸਚਾ ਆਪਿ ਸਦਾ ਹੈ ਸਾਚਾ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਸੁਣਾ� ॥੨੦॥ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ ਕੇਖਿ ਰਹਿਆ
 ਵਿਸਮਾਦੁ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਰਵਿਆ ਸ਼ਬ ਥਾ� ॥੨੧॥੫॥੧੪॥

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਿਨਹੀ ਕੀਆ ਪਰਵਿਰਤਿ ਪਸਾਰਾ ॥ ਕਿਨਹੀ ਕੀਆ ਪ੍ਰਯਾ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥ ਕਿਨਹੀ ਨਿਵਲ ਭੁਝਿਅਂਗਮ ਸਾਥੇ
 ॥ ਮੋਹਿ ਦੀਨ ਹਰਿ ਆਰਾਧੇ ॥੧॥ ਤੇਰਾ ਭਰੋਸਾ ਪਿਆਰੇ ॥ ਆਨ ਨ ਜਾਨਾ ਕੇਸਾ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਿਨਹੀ
 ਗ੍ਰਹੁ ਤਜਿ ਵਣ ਖੱਡਿ ਪਾਇਆ ॥ ਕਿਨਹੀ ਮੌਨਿ ਅਤਥੂਤੁ ਸਦਾਇਆ ॥ ਕੋਈ ਕਹਤਤ ਅਨਨਿ ਭਗਤੀ ॥
 ਮੋਹਿ ਦੀਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਓਟ ਲੀਤੀ ॥੨॥ ਕਿਨਹੀ ਕਹਿਆ ਹਤ ਤੀਰਥ ਵਾਸੀ ॥ ਕੋਈ ਅਨੁ ਤਜਿ ਭਇਆ
 ਤਦਾਸੀ ॥ ਕਿਨਹੀ ਭਵਨੁ ਸਭ ਧਰਤੀ ਕਰਿਆ ॥ ਮੋਹਿ ਦੀਨ ਹਰਿ ਦਰਿ ਪਰਿਆ ॥੩॥ ਕਿਨਹੀ

कहिआ मै कुलहि वडिआई ॥ किनही कहिआ बाह बहु भाई ॥ कोई कहै मै धनहि पसारा ॥ मोहि
 दीन हरि हरि आधारा ॥४॥ किनही घूघर निरति कराई ॥ किनहू वरत नेम माला पाई ॥ किनही
 तिलकु गोपी चंदन लाइआ ॥ मोहि दीन हरि हरि धिआइआ ॥५॥ किनही सिध बहु चेटक
 लाए ॥ किनही भेख बहु थाट बनाए ॥ किनही तंत मंत बहु खेवा ॥ मोहि दीन हरि हरि सेवा
 ॥६॥ कोई चतुरु कहावै पंडित ॥ को खटु करम सहित सित मंडित ॥ कोई करै आचार सुकरणी ॥ मोहि
 दीन हरि हरि हरि सरणी ॥७॥ सगले करम धरम जुग सोधे ॥ बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥ कहु
 नानक जउ साधसंगु पाइआ ॥ बूझी तृसना महा सीतलाइआ ॥८॥१॥ रामकली महला ५ ॥ इसु
 पानी ते जिनि तू घरिआ ॥ माटी का ले देहुरा करिआ ॥ उकति जोति लै सुरति परीखिआ ॥ मात गरभ
 महि जिनि तू राखिआ ॥१॥ राखनहारु समूरि जना ॥ सगले छोडि बीचार मना ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि
 दीए तुधु बाप महतारी ॥ जिनि दीए भ्रात पुत हारी ॥ जिनि दीए तुधु बनिता अरु मीता ॥ तिसु ठाकुर
 कउ रखि लेहु चीता ॥२॥ जिनि दीआ तुधु पवनु अमोला ॥ जिनि दीआ तुधु नीरु निरमोला ॥ जिनि
 दीआ तुधु पावकु बलना ॥ तिसु ठाकुर की रहु मन सरना ॥३॥ छतीह अंमृत जिनि भोजन दीए ॥
 अंतरि थान ठहरावन कउ कीए ॥ बसुधा दीओ बरतनि बलना ॥ तिसु ठाकुर के चिति रखु चरना
 ॥४॥ पेखन कउ नेत्र सुनन कउ करना ॥ हसत कमावन बासन रसना ॥ चरन चलन कउ सिरु कीनो
 मेरा ॥ मन तिसु ठाकुर के पूजहु पैरा ॥५॥ अपवित्र पवित्रु जिनि तू करिआ ॥ सगल जोनि महि तू
 सिरि धरिआ ॥ अब तू सीझु भावै नही सीझै ॥ कारजु सवरै मन प्रभु धिआईजै ॥६॥ ईहा ऊहा एकै
 ओही ॥ जत कत देखीअै तत तत तोही ॥ तिसु सेवत मनि आलसु करै ॥ जिसु विसरिअै इक निमख न
 सरै ॥७॥ हम अपराधी निरगुनीआरे ॥ ना किछु सेवा ना करमारे ॥ गुरु बोहिथु वडभागी मिलिआ
 ॥ नानक दास संगि पाथर तरिआ ॥८॥२॥ रामकली महला ५ ॥ काहू बिहावै रंग रस रूप ॥

काहू बिहावै माइ बाप पूत ॥ काहू बिहावै राज मिलख वापारा ॥ संत बिहावै हरि नाम अधारा
 ॥੧॥ रचना साचु बनी ॥ सभ का एकु धनी ॥੧॥ रहाउ ॥ काहू बिहावै बेद अरु बादि ॥ काहू बिहावै
 रसना सादि ॥ काहू बिहावै लपटि संगि नारी ॥ संत रचे केवल नाम मुरारी ॥੨॥ काहू बिहावै खेलत
 जूआ ॥ काहू बिहावै अमली हूआ ॥ काहू बिहावै पर दरब चोराए ॥ हरि जन बिहावै नाम धिआए ॥੩॥
 काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥ काहू रोग सोग भरमीजा ॥ काहू पवन धार जात बिहाए ॥ संत बिहावै
 कीरतनु गाए ॥੪॥ काहू बिहावै दिनु रैनि चालत ॥ काहू बिहावै सो पिडु मालत ॥ काहू बिहावै
 बाल पड़ावत ॥ संत बिहावै हरि जसु गावत ॥੫॥ काहू बिहावै नट नाटिक निरते ॥ काहू बिहावै
 जीआइह हिरते ॥ काहू बिहावै राज महि डरते ॥ संत बिहावै हरि जसु करते ॥੬॥ काहू बिहावै
 मता मसूरति ॥ काहू बिहावै सेवा जरूरति ॥ काहू बिहावै सोधत जीवत ॥ संत बिहावै हरि रसु पीवत
 ॥੭॥ जितु को लाइआ तित ही लगाना ॥ ना को मूडु नही को सिआना ॥ करि किरणा जिसु देवै नाउ ॥
 नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥੮॥੩॥ रामकली महला ੫ ॥ दावा अगनि रहे हरि बूट ॥ मात गरभ
 संकट ते छूट ॥ जा का नामु सिमरत भउ जाइ ॥ तैसे संत जना राखै हरि राइ ॥੧॥ ऐसे राखनहार
 दइआल ॥ जत कत देखउ तुम प्रतिपाल ॥੨॥ रहाउ ॥ जलु पीवत जित तिखा मिटंत ॥ धन बिगसै
 गृहि आवत कंत ॥ लोभी का धनु प्राण अधारु ॥ तित हरि जन हरि हरि नाम पिआरु ॥੨॥ किरसानी
 जित राखै रखवाला ॥ मात पिता दइआ जित बाला ॥ प्रीतमु देखि प्रीतमु मिलि जाइ ॥ तित
 हरि जन राखै कंठि लाइ ॥੩॥ जित अंधुले पेखत होइ अन्नद ॥ गूंगा बकत गावै बहु छंद ॥ पिंगुल
 परबत परते पारि ॥ हरि कै नामि सगल उधारि ॥੪॥ जित पावक संगि सीत को नास ॥ ऐसे प्राछत
 संतसंगि बिनास ॥ जित साबुनि कापर ऊजल होत ॥ नाम जपत सभु भ्रमु भउ खोत ॥੫॥ जित
 चकवी सूरज की आस ॥ जित चातृक बूंद की पिआस ॥ जित कुरंक नाद करन समाने ॥ तित

ਹਰਿ ਨਾਮ ਹਰਿ ਜਨ ਮਨਹਿ ਸੁਖਾਨੇ ॥੬॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਦਿੱਡਿਆਲ ਭਏ ਤਾ ਆਏ ਚੀਤਿ
 ॥ ਦਿੱਡਿਆ ਧਾਰੀ ਤਿਨਿ ਧਾਰਣਹਾਰ ॥ ਬੰਧਨ ਤੇ ਹੋਈ ਛੁਟਕਾਰ ॥੭॥ ਸਭਿ ਥਾਨ ਦੇਖੇ ਨੈਣ ਅਲੋਝਿ ॥ ਤਿਸੁ
 ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਝਿ ॥ ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਛੂਟੇ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦ ॥ ਨਾਨਕ ਪੇਖਿਆਂ ਸਭੁ ਬਿਸਮਾਦ ॥੮॥੪॥
 ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਪੇਖੀਅਹਿ ਪ੍ਰਭ ਸਗਲ ਤੁਮਾਰੀ ਧਾਰਨਾ ॥੧॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹਰਿ ਕੈ
 ਨਾਮਿ ਤਥਾਰਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੇ ਕੁਦਰਤਿ ਸਭਿ ਕਰਤੇ ਕੇ ਕਾਰਨਾ ॥੨॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ
 ਲੋਭੁ ਝੂਠੁ ਨਿੰਦਾ ਸਾਧੁ ਸਾਂਗਿ ਬਿਦਾਰਨਾ ॥੩॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲ ਹੋਵੈ ਸ੍ਰੂਖੇ ਸ੍ਰੂਖਿ ਗੁਦਾਰਨਾ ॥੪॥
 ਭਗਤ ਸਰਣਿ ਜੋ ਆਵੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਸੁ ਈਹਾ ਊਹਾ ਨ ਹਾਰਨਾ ॥੫॥ ਸ੍ਰੂਖ ਦ੍ਰੂਖ ਇਸੁ ਮਨ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਤੁਮ ਹੀ
 ਆਗੈ ਸਾਰਨਾ ॥੬॥ ਤੂ ਦਾਤਾ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਆਪਨ ਕੀਆ ਪਾਲਨਾ ॥੭॥ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਕੋਟਿ ਜਨ
 ਊਪਰਿ ਨਾਨਕੁ ਵੰਬੈ ਵਾਰਨਾ ॥੮॥੫॥

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀ

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਤ ਪਾਪ ਸਭਿ ਨਾਸਹਿ ਹਰਿ ਸਿਉ ਦੇਇ ਮਿਲਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਸੁਖਦਾਈ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਨਾਮੁ ਵ੃ਡਾਏ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਗਲ ਦ੍ਰੂਖ ਕਾ ਡੇਰਾ ਭਨਾ ਸੰਤ
 ਧੂਰਿ ਮੁਖਿ ਲਾਈ ॥੨॥ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਕੀਏ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰੁ ਵੰਜਾਈ ॥੩॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ
 ਸਮਰਥੁ ਸੁਆਮੀ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਈ ॥੪॥ ਬੰਧਨ ਤੋਡਿ ਚਰਨ ਕਮਲ ਵ੃ਡਾਏ ਏਕ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਈ
 ॥੫॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਬਿਖਿਆ ਤੇ ਕਾਢਿਆ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਬਣਿ ਆਈ ॥੬॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਕਾ ਸਹਸਾ ਚੂਕਾ
 ਬਾਹੁਡਿ ਕਤਹੁ ਨ ਧਾਈ ॥੭॥ ਨਾਮ ਰਸਾਇਣਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀ ਤ੃ਪਤਾਈ ॥੮॥ ਸੰਤਸੰਗਿ
 ਮਿਲਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇਆ ਨਿਹਚਲ ਵਸਿਆ ਜਾਈ ॥੯॥ ਪ੍ਰੌ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੌ ਮਤਿ ਦੀਨੀ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਆਨ
 ਨ ਭਾਈ ॥੧੦॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਪਾਇਆ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕ ਨਰਕਿ ਨ ਜਾਈ ॥੧੧॥ ਘਾਲ ਸਿਆਣਪ
 ਤਕਤਿ ਨ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰੌ ਗੁਰੁ ਕਮਾਈ ॥੧੨॥ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਸੁਚਿ ਹੈ ਸੋਈ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਈ ॥੧੩॥ ਪੁਨ

ਕਲਤ ਮਹਾ ਬਿਖਿਆ ਮਹਿ ਗੁਰਿ ਸਾਚੈ ਲਾਈ ਤਰਾਈ ॥੧੪॥ ਅਪਣੇ ਜੀਅ ਤੈ ਆਪਿ ਸਮੂਲੇ ਆਪਿ ਲੀਏ
 ਲਡਿ ਲਾਈ ॥੧੫॥ ਸਾਚ ਧਰਮ ਕਾ ਬੇੜਾ ਬਾਂਧਿਆ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਪਵਾਈ ॥੧੬॥ ਬੇਸੁਮਾਰ ਬੇਅੰਤ ਸੁਆਮੀ
 ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥੧੭॥ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੰਭਤ ਕਲਿ ਅੰਧਕਾਰ ਦੀਪਾਈ ॥੧੮॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ
 ਜੀਅਨ ਕਾ ਦਾਤਾ ਦੇਖਤ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਈ ॥੧੯॥ ਏਕਕਾਰੁ ਨਿਰਿੰਜਨੁ ਨਿਰਭਤ ਸਭ ਜਲਿ ਥਲਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ
 ॥੨੦॥ ਭਗਤਿ ਦਾਨੁ ਭਗਤਾ ਕਤ ਦੀਨਾ ਹਰਿ ਨਾਨਕੁ ਜਾਚੈ ਮਾਈ ॥੨੧॥੧॥੬॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸਲੋਕੁ ॥ ਸਿਖਹੁ ਸਬਦੁ ਪਿਆਰਿਹੋ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕੀ ਟੇਕ ॥ ਮੁਖੁ ਊਜਲੁ ਸਦਾ ਸੁਖੀ ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਤ ਏਕ ॥੧॥
 ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਾਤਾ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਬਣਿ ਆਈ ਸੰਤਹੁ ॥੧॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਖੇਪ ਨਿਬਾਹੀ ਸੰਤਹੁ ॥
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲਾਹਾ ਦਾਸ ਕਤ ਦੀਆ ਸਗਲੀ ਤੂਧਨ ਤਲਾਹੀ ਸੰਤਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਲਾਲੁ ਇਕੁ
 ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਸੰਤਹੁ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਲਾਗੇ ਧਿਆਨਾ ਸਾਚੈ ਦਰਸਿ ਸਮਾਈ
 ਸੰਤਹੁ ॥੩॥ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਗਾਵਤ ਭਏ ਨਿਹਾਲਾ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਈ ਸੰਤਹੁ ॥੪॥ ਆਤਮ ਰਾਮੁ
 ਰਵਿਆ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਕਤ ਆਵੈ ਕਤ ਜਾਈ ਸੰਤਹੁ ॥੫॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਸਭ ਜੀਆ ਕਾ ਸੁਖਦਾਈ
 ਸੰਤਹੁ ॥੬॥ ਆਪਿ ਬੇਅੰਤੁ ਅੰਤੁ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ਸੰਤਹੁ ॥੭॥ ਮੀਤ ਸਾਜਨ ਮਾਲੁ ਜੋਬਨੁ
 ਸੁਤ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਬਾਪੁ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ਸੰਤਹੁ ॥੮॥੨॥੭॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ
 ਚਿਤਾਰੀ ॥ ਘੂਮਨ ਘੇਰਿ ਮਹਾ ਅਤਿ ਬਿਖਡੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸ੍ਰੂਖਾ
 ਬਾਹਰਿ ਸ੍ਰੂਖਾ ਹਰਿ ਜਪਿ ਮਲਨ ਭਏ ਦੁਸਟਾਰੀ ॥੧॥ ਜਿਸ ਤੇ ਲਾਗੇ ਤਿਨਹਿ ਨਿਵਾਰੇ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਅਪਣੀ
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੨॥ ਤਥੇ ਸੰਤ ਪਰੇ ਹਰਿ ਸਰਨੀ ਪਚਿ ਬਿਨਸੇ ਮਹਾ ਅਛਕਾਰੀ ॥੩॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਇਹੁ
 ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਇਕੁ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੀ ॥੪॥ ਨ ਕੋਈ ਸ੍ਰੂ ਨ ਕੋਈ ਹੀਣਾ ਸਭ ਪ੍ਰਗਟੀ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ
 ॥੫॥ ਤੁਸੁ ਸਮਰਥ ਅਕਥ ਅਗੋਚਰ ਰਵਿਆ ਏਕੁ ਸੁਰਾਰੀ ॥੬॥ ਕੀਮਤਿ ਕਉਣੁ ਕਰੇ ਤੇਰੀ ਕਰਤੇ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤੁ
 ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੀ ॥੭॥ ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਨਾਨਕ ਵਡਿਆਈ ਤੇਰਿਆ ਸੰਤ ਜਨਾ ਰੇਣਾਰੀ ॥੮॥੩॥੮॥੨੨॥

रामकली महला ३ अन्नदु

੧੮੪ सतिगुर प्रसादि ॥

अन्नदु भइਆ मेरी माए सतिगुरू मै पाइਆ ॥ सतिगुरू त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ
वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि
जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अन्नदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ ੧ ॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि
नाले ॥ हरि नालि रहु तू मन्न मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मन्न मेरे सदा रहु हरि नाले ॥ ੨ ॥
साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह
तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ
नाही घरि तेरै ॥ ੩ ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥
करि साँति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस
दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ ੪ ॥
वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु
वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै
नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ ੫ ॥ साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै
बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइ नाही कृपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु
थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ ੬ ॥ आन्नदु आन्नदु
सभु को कहै आन्नदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आन्नदु सदा गुर ते कृपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा
किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै

ਨਾਨਕੁ ਏਹੁ ਅਨਨਦੁ ਹੈ ਆਨਨਦੁ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਣਿਆ ॥੭॥ ਬਾਬਾ ਜਿਸੁ ਤੂ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਵੈ ॥ ਪਾਵੈ ਤ ਸੋ ਜਨੁ
 ਦੇਹਿ ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਰਿ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਵੇਚਾਰਿਆ ॥ ਇਕਿ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ ਫਿਰਹਿ ਦਹ ਦਿਸਿ ਇਕਿ ਨਾਮਿ ਲਾਗਿ
 ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨੁ ਭਡਿਆ ਨਿਰਮਲੁ ਜਿਨਾ ਭਾਣਾ ਭਾਵਏ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਸੁ ਦੇਹਿ ਪਿਆਰੇ
 ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਵਏ ॥੮॥ ਆਵਹੁ ਸਤ ਪਿਆਰਿਹੋ ਅਕਥ ਕੀ ਕਰਹ ਕਹਾਣੀ ॥ ਕਰਹ ਕਹਾਣੀ ਅਕਥ ਕੇਰੀ
 ਕਿਤੁ ਦੁਆਰੈ ਪਾਈਐ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਸਭੁ ਸਤਪਿ ਗੁਰ ਕਤ ਹੁਕਮਿ ਮੰਨਿਐ ਪਾਈਐ ॥ ਹੁਕਮੁ ਮੰਨਿਹੁ ਗੁਰੁ
 ਕੇਰਾ ਗਾਵਹੁ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਸੱਤਹੁ ਕਥਿਹੁ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥੯॥ ਏ ਮਨ ਚੰਚਲਾ ਚਤੁਰਾਈ
 ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਚਤੁਰਾਈ ਨ ਪਾਇਆ ਕਿਨੈ ਤੂ ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ॥ ਏਹ ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਜਿਨਿ ਏਤੁ
 ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥ ਮਾਇਆ ਤ ਮੋਹਣੀ ਤਿਨੈ ਕੀਤੀ ਜਿਨਿ ਠਗਤਲੀ ਪਾਈਆ ॥ ਕੁਰਬਾਣੁ ਕੀਤਾ ਤਿਸੈ
 ਵਿਟਹੁ ਜਿਨਿ ਮੋਹੁ ਮੀਠਾ ਲਾਇਆ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਨ ਚੰਚਲ ਚਤੁਰਾਈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥੧੦॥ ਏ ਮਨ
 ਪਿਆਰਿਆ ਤੂ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਏਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਤੂ ਜਿ ਦੇਖਦਾ ਚਲੈ ਨਾਹੀ ਤੈਰੈ ਨਾਲੇ ॥ ਸਾਥਿ ਤੈਰੈ ਚਲੈ ਨਾਹੀ
 ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ਕਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥ ਐਸਾ ਕਿੰਮੁ ਮੂਲੇ ਨ ਕੀਚੈ ਜਿਤੁ ਅੰਤਿ ਪਛੋਤਾਈਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਾ ਉਪਦੇਸੁ
 ਸੁਣਿ ਤੂ ਹੋਵੈ ਤੈਰੈ ਨਾਲੇ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਨ ਪਿਆਰੇ ਤੂ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਮਾਲੇ ॥੧੧॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰਾ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ
 ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਅੰਤੋ ਨ ਪਾਇਆ ਕਿਨੈ ਤੇਰਾ ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਤੂ ਜਾਣਹੇ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਖੇਲੁ ਤੇਰਾ ਕਿਆ ਕੋ
 ਆਖਿ ਵਖਾਣਏ ॥ ਆਖਹਿ ਤ ਵੇਖਹਿ ਸਭੁ ਤ੍ਰਹੈ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਤੂ ਸਦਾ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਤੇਰਾ
 ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੧੨॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਖੋਜਦੇ ਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥ ਪਾਇਆ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਗੁਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕੀਨੀ ਸਚਾ ਮਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੁਧੁ ਉਪਾਏ ਇਕਿ ਵੇਖਿ ਪਰਸਣਿ ਆਇਆ ॥
 ਲਕੁ ਲੋਭੁ ਅਛਕਾਰੁ ਚੂਕਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭਲਾ ਭਾਇਆ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਤੁਠਾ ਤਿਨਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਗੁਰ ਤੇ
 ਪਾਇਆ ॥੧੩॥ ਭਗਤਾ ਕੀ ਚਾਲ ਨਿਰਾਲੀ ॥ ਚਾਲਾ ਨਿਰਾਲੀ ਭਗਤਾਹ ਕੇਰੀ ਬਿਖਮ ਮਾਰਗਿ ਚਲਣਾ ॥ ਲਕੁ
 ਲੋਭੁ ਅਛਕਾਰੁ ਤਜਿ ਤ੃ਸਨਾ ਬਹੁਤੁ ਨਾਹੀ ਬੋਲਣਾ ॥ ਖੰਨਿਅਹੁ ਤਿਖੀ ਵਾਲਹੁ ਨਿਕੀ ਏਤੁ ਮਾਰਗਿ ਜਾਣਾ ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨੀ ਆਪੁ ਤਜਿਆ ਹਰਿ ਵਾਸਨਾ ਸਮਾਣੀ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਚਾਲ ਭਗਤਾ ਜੁਗਹੁ ਜੁਗੁ ਨਿਰਾਲੀ ॥੧੪॥ ਜਿਤ ਤੂ ਚਲਾਇਹਿ ਤਿਵ ਚਲਹ ਸੁਆਮੀ ਹੋਰੁ ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ॥ ਜਿਵ ਤੂ ਚਲਾਇਹਿ ਤਿਵੈ ਚਲਹ ਜਿਨਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਵਹੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਨ ਨਾਮਿ ਲਾਇਹਿ ਸਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਵਹੇ ॥ ਜਿਸ ਨੇ ਕਥਾ ਸੁਣਾਇਹਿ ਆਪਣੀ ਸਿ ਗੁਰਦੁਆਰੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੇ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਚੇ ਸਾਹਿਬ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵਹੇ ॥੧੫॥ ਏਹੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਬਦੁ ਸੁਹਾਵਾ ॥ ਸਬਦੋ ਸੁਹਾਵਾ ਸਦਾ ਸੋਹਿਲਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਏਹੁ ਤਿਨ ਕੈ ਮੰਨਿ ਵਸਿਆ ਜਿਨ ਧੁਰਹੁ ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ॥ ਇਕਿ ਫਿਰਹਿ ਘਨੇਰੇ ਕਰਹਿ ਗਲਾ ਗਲੀ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਬਦੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥੧੬॥ ਪਵਿਤੁ ਹੋਏ ਸੇ ਜਨਾ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਪਵਿਤੁ ਹੋਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥ ਪਵਿਤੁ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਕੁਟੰਬ ਸਹਿਤ ਸਿਤ ਪਵਿਤੁ ਸੰਗਤਿ ਸਬਾਈਆ ॥ ਕਹਦੇ ਪਵਿਤੁ ਸੁਣਦੇ ਪਵਿਤੁ ਸੇ ਪਵਿਤੁ ਜਿਨੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੇ ਪਵਿਤੁ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੧੭॥ ਕਰਮੀ ਸਹਜੁ ਨ ਊਪਜੈ ਵਿਣੁ ਸਹਜੈ ਸਹਸਾ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਹ ਜਾਇ ਸਹਸਾ ਕਿਤੈ ਸੰਜਮਿ ਰਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥ ਸਹਸੈ ਜੀਤ ਮਲੀਣੁ ਹੈ ਕਿਤੁ ਸੰਜਮਿ ਧੋਤਾ ਜਾਏ ॥ ਮਨੁ ਧੋਵਹੁ ਸਬਦਿ ਲਾਗਹੁ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਹਹੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਹਜੁ ਊਪਜੈ ਇਹੁ ਸਹਸਾ ਇਵ ਜਾਇ ॥੧੮॥ ਜੀਅਹੁ ਮੈਲੇ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲ ॥ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲ ਜੀਅਹੁ ਤ ਮੈਲੇ ਤਿਨੀ ਜਨਮੁ ਜ੍ਰਾਤੈ ਹਾਰਿਆ ॥ ਏਹ ਤਿਸਨਾ ਵਡਾ ਰੋਗੁ ਲਗਾ ਮਰਣੁ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥ ਵੇਦਾ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਉਤਮੁ ਸੋ ਸੁਣਹਿ ਨਾਹੀ ਫਿਰਹਿ ਜਿਤ ਬੇਤਾਲਿਆ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਸਚੁ ਤਜਿਆ ਕ੍ਰਿਡੇ ਲਾਗੇ ਤਿਨੀ ਜਨਮੁ ਜ੍ਰਾਤੈ ਹਾਰਿਆ ॥੧੯॥ ਜੀਅਹੁ ਨਿਰਮਲ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲ ॥ ਬਾਹਰਹੁ ਤ ਨਿਰਮਲ ਜੀਅਹੁ ਨਿਰਮਲ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਕਰਣੀ ਕਮਾਣੀ ॥ ਕ੍ਰਿਡਾ ਕੀ ਸੋਝਿ ਪਹੁੱਚੈ ਨਾਹੀ ਮਨਸਾ ਸਚਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਜਨਮੁ ਰਤਨੁ ਜਿਨੀ ਖਟਿਆ ਭਲੇ ਸੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਰਹਹਿ ਗੁਰ ਨਾਲੇ ॥੨੦॥ ਜੇ ਕੋ ਸਿਖੁ ਗੁਰੁ ਸੇਤੀ ਸਨਮੁਖੁ ਹੋਵੈ ॥ ਹੋਵੈ ਤ ਸਨਮੁਖੁ ਸਿਖੁ ਕੋਈ ਜੀਅਹੁ ਰਹੈ ਗੁਰ ਨਾਲੇ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਧਿਆਏ ਅੰਤਰ ਆਤਮੈ ਸਮਾਲੇ ॥ ਆਪੁ ਛਡਿ ਸਦਾ

रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥੨੧॥ जे को गुर ते
 वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी
 भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥
 कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥੨੨॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो
 गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै
 हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा
 गावहु एह सची बाणी ॥੨੩॥ सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर
 कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कची आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न
 जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लड़िਆ माड़िआ बोलनि पए रवाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर
 कची बाणी ॥੨੪॥ गुर का सबदु रतनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मनु लागा एहु होआ
 समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाड़िआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥
 कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥੨੫॥ सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु
 वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मनि वसाए ॥
 गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सित लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए
 ॥੨੬॥ सिमृति सासत्र पुन्न पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै
 सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना
 हरि मनि वसिआ बोलहि अंमृत बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै
 जागत रैणि विहाणी ॥੨੭॥ माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीअै ॥ मनहु किउ
 विसारीअै एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी

ਲਿਵ ਲਾਵਏ ॥ ਆਪਣੀ ਲਿਵ ਆਪੇ ਲਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੀਐ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਏਵਡੁ ਦਾਤਾ ਸੋ ਕਿਤ
 ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥੨੮॥ ਜੈਸੀ ਅਗਨਿ ਉਦਰ ਮਹਿ ਤੈਸੀ ਬਾਹਰਿ ਮਾਇਆ ॥ ਮਾਇਆ ਅਗਨਿ ਸਭ ਇਕੋ
 ਜੇਹੀ ਕਰਤੈ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇਆ ॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾ ਜੰਮਿਆ ਪਰਵਾਰਿ ਭਲਾ ਭਾਇਆ ॥ ਲਿਵ ਛੁਡਕੀ ਲਗੀ
 ਤੂਸਨਾ ਮਾਇਆ ਅਮਰੁ ਵਰਤਾਇਆ ॥ ਏਹ ਮਾਇਆ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਵਿਸਰੈ ਮੋਹੁ ਉਪਜੈ ਭਾਉ ਦ੍ਰਿਆ ਲਾਇਆ ॥
 ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨਾ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਤਿਨੀ ਵਿਚੇ ਮਾਇਆ ਪਾਇਆ ॥੨੯॥ ਹਰਿ ਆਪਿ ਅਮੁਲਕੁ
 ਹੈ ਮੁਲਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਮੁਲਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ਕਿਸੈ ਵਿਟਹੁ ਰਹੇ ਲੋਕ ਵਿਲਲਾਇ ॥ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰ ਜੇ
 ਮਿਲੈ ਤਿਸ ਨੋ ਸਿਰੁ ਸਤਿਗੁਰੈ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਜਾਇ ॥ ਜਿਸ ਦਾ ਜੀਤ ਤਿਸੁ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
 ਹਰਿ ਆਪਿ ਅਮੁਲਕੁ ਹੈ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਕੇ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਹਰਿ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੩੦॥ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਵਣਜਾਰਾ
 ॥ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਵਣਜਾਰਾ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਰਾਸਿ ਜਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਤ ਜਪਿਹੁ ਜੀਅਹੁ ਲਾਹਾ ਖਟਿਹੁ
 ਦਿਹਾਡੀ ॥ ਏਹੁ ਧਨੁ ਤਿਨਾ ਮਿਲਿਆ ਜਿਨ ਹਰਿ ਆਪੇ ਭਾਣਾ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਹੋਆ
 ਵਣਜਾਰਾ ॥੩੧॥ ਏ ਰਸਨਾ ਤੂ ਅਨ ਰਸਿ ਰਾਚਿ ਰਹੀ ਤੇਰੀ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਇ ॥ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਇ ਹੋਰਤੁ ਕਿਤੈ
 ਜਿਚਰੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਲੈ ਨ ਪਾਇ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇ ਪਲੈ ਪੀਐ ਹਰਿ ਰਸੁ ਬਹੁਡਿ ਨ ਤੂਸਨਾ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥ ਏਹੁ
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਕਰਮੀ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਆਇ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਹੋਰਿ ਅਨ ਰਸ ਸਭਿ ਵੀਸਰੇ ਜਾ ਹਰਿ ਵਸੈ
 ਮਨਿ ਆਇ ॥੩੨॥ ਏ ਸਰੀਰਾ ਮੇਰਿਆ ਹਰਿ ਤੁਮ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਰਖੀ ਤਾ ਤੂ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਜੋਤਿ
 ਰਖੀ ਤੁਥੁ ਵਿਚਿ ਤਾ ਤੂ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਮਾਤਾ ਆਪੇ ਪਿਤਾ ਜਿਨਿ ਜੀਤ ਉਪਾਇ ਜਗਤੁ
 ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁਝਿਆ ਤਾ ਚਲਤੁ ਹੋਆ ਚਲਤੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੂਸਟਿ ਕਾ
 ਮੂਲੁ ਰਚਿਆ ਜੋਤਿ ਰਖੀ ਤਾ ਤੂ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥੩੩॥ ਮਨਿ ਚਾਤ ਭਿਆ ਪ੍ਰਭ ਆਗਮੁ ਸੁਣਿਆ ॥
 ਹਰਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਤ ਸਖੀ ਗ੍ਰਹੁ ਮੰਦਰੁ ਬਣਿਆ ॥ ਹਰਿ ਗਾਤ ਮੰਗਲੁ ਨਿਤ ਸਖੀਏ ਸੋਗੁ ਢ੍ਠਖੁ ਨ ਵਿਆਪਏ ॥
 ਗੁਰ ਚਰਨ ਲਾਗੇ ਦਿਨ ਸਭਾਗੇ ਆਪਣਾ ਪਿਲੁ ਜਾਪਏ ॥ ਅਨਹਤ ਬਾਣੀ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਾਣੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਰਸੁ

भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥੩੪॥ ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि
आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥ कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ जिनि
हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ गुर परसादी हरि मनि वसिआ पूरबि लिखिआ
पाइआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥੩੫॥ ए नेवहु
मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी
हरि निहालिआ ॥ एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूप है हरि रूपु नदरी आइआ ॥
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अंध से
सतिगुरि मिलिऐ दिब दृसठि होई ॥੩੬॥ ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुनणै नो
पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु
अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अंमृत नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो
पठाए ॥੩੭॥ हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा पउण
नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु
दिखाइआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै
जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥੩੮॥ एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥
गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना
बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि
गावहे ॥੩੯॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल
विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत
कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥੪੦॥੧॥

रामकली सटु

੧੭ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥ गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ ॥ अवरो
न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे ॥
आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते
हरि पाइआ ॥ ੧ ॥ हरि भाणा गुर भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि
बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥ अंति
चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥ सतिगुरु की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ
॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥ ੨ ॥ मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो
मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु
सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ आन्द अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि
मेलावए ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै
नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥ ੩ ॥ सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ मत मै
पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ तुसी
वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरु पैनावए ॥ सतिगुरु परतखि होटै बहि राजु आपि टिकाइआ ॥
सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥ ੪ ॥ अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु
करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा
पड़ीअै हरि नामु सुणीअै बेबाणु हरि रंगु गुर भावए ॥ पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि
पावए ॥ हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकु

ਦੀਆ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੁ ਜੀਤ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਜਿ ਬੋਲਿਆ ਗੁਰਸਿਖਾ ਮਨਿ ਲਈ ਰਾਇ
ਜੀਤ ॥ ਮੋਹਰੀ ਪੁਤੁ ਸਨਮੁਖੁ ਹੋਇਆ ਰਾਮਦਾਸੈ ਪੈਰੀ ਪਾਇ ਜੀਤ ॥ ਸਭ ਪਵੈ ਪੈਰੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕੇਰੀ ਜਿਥੈ ਗੁਰੁ
ਆਪੁ ਰਖਿਆ ॥ ਕੋਈ ਕਰਿ ਬਖੀਲੀ ਨਿਵੈ ਨਾਹੀ ਫਿਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਣਿ ਨਿਵਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਗੁਰਹਿ ਭਾਣਾ
ਦੀਈ ਵਡਿਆਈ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਰਾਇ ਜੀਤ ॥ ਕਹੈ ਸੁਂਦਰੁ ਸੁਣਹੁ ਸਤਹੁ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਪੈਰੀ
ਪਾਇ ਜੀਤ ॥੬॥੧॥

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ਛਨਤ

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਾਜਨਡਾ ਮੇਰਾ ਸਾਜਨਡਾ

ਨਿਕਟਿ ਖਲੋਇਅਡਾ ਮੇਰਾ ਸਾਜਨਡਾ ॥ ਜਾਨੀਅਡਾ ਹਰਿ ਜਾਨੀਅਡਾ ਨੈਣ ਅਲੋਇਅਡਾ ਹਰਿ ਜਾਨੀਅਡਾ ॥
ਨੈਣ ਅਲੋਇਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੋਇਆ ਅਤਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਪ੃ਅ ਗੂੜਾ ॥ ਨਾਲਿ ਹੋਵੰਦਾ ਲਹਿ ਨ ਸਕਂਦਾ
ਸੁਆਤ ਨ ਜਾਣੈ ਮੂੜਾ ॥ ਮਾਇਆ ਮਦਿ ਮਾਤਾ ਹੋਛੀ ਬਾਤਾ ਮਿਲਣੁ ਨ ਜਾਈ ਭਰਮ ਧੜਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ
ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਸੂੜੈ ਹਰਿ ਸਾਜਨੁ ਸਭ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਖੜਾ ॥੧॥ ਗੋਬਿੰਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਬਿੰਦਾ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰਾ ਮੇਰੇ ਗੋਬਿੰਦਾ
॥ ਕਿਰਪਾਲਾ ਮੇਰੇ ਕਿਰਪਾਲਾ ਦਾਨ ਦਾਤਾਰਾ ਮੇਰੇ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥ ਦਾਨ ਦਾਤਾਰਾ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ
ਸੋਹਨਿਆ ॥ ਇਕ ਦਾਸੀ ਧਾਰੀ ਸਬਲ ਪਸਾਰੀ ਜੀਅ ਜੰਤ ਲੈ ਮੋਹਨਿਆ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਰਾਖੈ ਸੋ ਸਚੁ ਭਾਖੈ ਗੁਰ ਕਾ
ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਭਾਣਾ ਤਿਸ ਹੀ ਕਤ ਪ੍ਰਭੁ ਪਿਆਰਾ ॥੨॥ ਮਾਣੋ ਪ੍ਰਭ ਮਾਣੋ ਮੇਰੇ
ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਮਾਣੋ ॥ ਜਾਣੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੋ ਸੁਆਮੀ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੋ ॥ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਨਾ ਸਦ ਪਰਧਾਨਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਕਾ
ਨਾਮਾ ॥ ਚਾਖਿ ਅਧਾਣੇ ਸਾਰਿਗਪਾਣੇ ਜਿਨ ਕੈ ਭਾਗ ਮਥਾਨਾ ॥ ਤਿਨ ਹੀ ਪਾਇਆ ਤਿਨਹਿ ਧਿਆਇਆ ਸਗਲ
ਤਿਸੈ ਕਾ ਮਾਣੋ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਥਿਰੁ ਤਖਤਿ ਨਿਵਾਸੀ ਸਚੁ ਤਿਸੈ ਦੀਕਾਣੋ ॥੩॥ ਮੰਗਲਾ ਹਰਿ ਮੰਗਲਾ ਮੇਰੇ
ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸੁਣੀਐ ਮੰਗਲਾ ॥ ਸੋਹਿਲਡਾ ਪ੍ਰਭ ਸੋਹਿਲਡਾ ਅਨਹਦ ਧੁਨੀਐ ਸੋਹਿਲਡਾ ॥ ਅਨਹਦ ਵਾਜੇ ਸਬਦ
ਅਗਾਜੇ ਨਿਤ ਨਿਤ ਜਿਸਹਿ ਵਧਾਈ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥ ਚੂਕੀ
ਪਿਆਸਾ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੁ ਨਿਰਗੁਨੀਐ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਘਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕੈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਮੰਗਲੁ

सुनीअै ॥४॥१॥ रामकली महला ५ ॥ हरि हरि धिआइ मना खिनु न विसारीअै ॥
 राम रामा राम रमा कंठि उर धारीअै ॥ उर धारि हरि हरि पुरखु पूरनु पारब्रहमु निरंजनो ॥
 भै दूरि करता पाप हरता दुसह दुख भव खंडनो ॥ जगदीस ईस गोपाल माधो गुण गोविंद वीचरीअै ॥
 बिनवंति नानक मिलि संगि साधू दिनसु रैणि चितारीअै ॥१॥ चरन कमल आधारु जन का आसरा ॥
 मालु मिलख भंडार नामु अन्नत धरा ॥ नामु नरहर निधानु जिन कै रस भोग एक नराइणा ॥ रस रूप
 रंग अन्नत बीठल सासि सासि धिआइणा ॥ किलविख हरणा नाम पुनहचरणा नामु जम की तास हरा ॥
 ॥ बिनवंति नानक रासि जन की चरन कमलह आसरा ॥२॥ गुण बेअंत सुआमी तेरे कोइ न जानई
 ॥ देखि चलत दइआल सुणि भगत वखानई ॥ जीअ जंत सभि तुझु धिआवहि पुरखपति परमेसरा ॥
 सरब जाचिक एकु दाता करुणा मै जगदीसरा ॥ साधू संतु सुजाणु सोई जिसहि प्रभ जी मानई ॥
 बिनवंति नानक करहु किरपा सोइ तुझाहि पछानई ॥३॥ मोहि निरगुण अनाथु सरणी आइआ ॥
 बलि बलि बलि गुरदेव जिनि नामु दृढ़ाइआ ॥ गुरि नामु दीआ कुसलु थीआ सरब इछा पुन्नीआ
 ॥ जलने बुझाई साँति आई मिले चिरि विछुनिआ ॥ आनन्द हरख सहज साचे महा मंगल गुण
 गाइआ ॥ बिनवंति नानक नामु प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ ॥४॥२॥ रामकली महला ५ ॥
 रुण झुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईअै संतन कै ॥ किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु जपीअै
 गुर मंतन कै ॥ हरि नामु लीजै अमिउ पीजै रैणि दिनसु अराधीअै ॥ जोग दान अनेक किरिआ लगि
 चरण कमलह साधीअै ॥ भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै ॥ बिनवंति नानक तरै
 सागरु धिआइ सुआमी नरहरै ॥१॥ सुख सागर गोविंद सिमरणु भगत गावहि गुण तेरे राम ॥
 अनन्द मंगल गुर चरणी लागे पाए सूख घनेरे राम ॥ सुख निधानु मिलिआ दूख हरिआ कृपा करि
 प्रभि राखिआ ॥ हरि चरण लागा भ्रमु भउ भागा हरि नामु रसना भाखिआ ॥ हरि एकु चितवै प्रभु

एकु गावै हरि एकु दृसटी आइआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि करी किरपा पूरा सतिगुरु पाइआ ॥२॥
 मिलि रहीऔ प्रभ साध जना मिलि हरि कीरतनु सुनीऔ राम ॥ दइआल प्रभू दामोदर माधो अंतु न
 पाईऔ गुनीऔ राम ॥ दइआल दुख हर सरणि दाता सगल दोख निवारणो ॥ मोह सोग विकार बिखड़े
 जपत नाम उधारणो ॥ सभि जीआ तेरे प्रभू मेरे करि किरपा सभ रेण थीवा ॥ बिनवंति नानक प्रभ
 मइआ कीजै नामु तेरा जपि जीवा ॥३॥ राखि लीए प्रभि भगत जना अपणी चरणी लाए राम ॥
 आठ पहर अपना प्रभु सिमरह एको नामु धिआए राम ॥ धिआइ सो प्रभु तेरे भवजल रहे आवण
 जाणा ॥ सदा सुखु कलिआण कीरतनु प्रभ लगा मीठा भाणा ॥ सभ इछ पुन्नी आस पूरी मिले सतिगुर
 पूरिआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि आपि मेले फिरि नाही दूख विसूरिआ ॥४॥३॥ रामकली महला ५
 छंत ॥ सलोकु ॥ चरन कमल सरणागती अनद मंगल गुण गाम ॥ नानक प्रभु आराधीऔ बिपति
 निवारण राम ॥१॥ छंतु ॥ प्रभ बिपति निवारणो तिसु बिनु अवरु न कोइ जीउ ॥ सदा सदा हरि
 सिमरीऔ जलि थलि महीअलि सोइ जीउ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ इक निमख मनहु न
 वीसरै ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे सरब गुण जगदीसरै ॥ करि सेव सेवक दिनसु रैणी तिसु भावै
 सो होइ जीउ ॥ बलि जाइ नानकु सुखह दाते परगासु मनि तनि होइ जीउ ॥१॥ सलोकु ॥ हरि सिमरत
 मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ नानक टेक गोपाल की गोविंद संकट मोच ॥१॥ छंतु ॥ भै संकट
 काटे नाराइण दइआल जीउ ॥ हरि गुण आनन्द गाए प्रभ दीना नाथ प्रतिपाल जीउ ॥ प्रतिपाल
 अचुत पुरखु एको तिसहि सिउ रंगु लागा ॥ कर चरन मसतकु मेलि लीने सदा अनदिनु जागा ॥ जीउ
 पिंडु गृहु थानु तिस का तनु जोबनु धनु मालु जीउ ॥ सद सदा बलि जाइ नानकु सरब जीआ
 प्रतिपाल जीउ ॥२॥ सलोकु ॥ रसना उचरै हरि हरे गुण गोविंद वखिआन ॥ नानक पकड़ी टेक एक
 परमेसरु रखै निदान ॥१॥ छंतु ॥ सो सुआमी प्रभु रखको अंचलि ता कै लागु जीउ ॥ भजु साधू संगि

ਦਿੱਖਾਲ ਦੇਵ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਤਿਆਗੁ ਜੀਤ ॥ ਇਕ ਓਟ ਕੀਜੈ ਜੀਤ ਦੀਜੈ ਆਸ ਇਕ ਧਰਣੀਧਰੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗੇ
 ਹਰਿ ਨਾਮ ਰੰਗੇ ਸੰਸਾਰੁ ਸਾਗਰੁ ਸਭੁ ਤਰੈ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਬਿਕਾਰ ਛੂਟੇ ਫਿਰਿ ਨ ਲਾਗੈ ਦਾਗੁ ਜੀਤ ॥ ਬਲਿ ਜਾਇ
 ਨਾਨਕੁ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰੂਨ ਥਿਰੁ ਜਾ ਕਾ ਸੋਹਾਗੁ ਜੀਤ ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਧਰਮ ਅਰਥ ਅਰੁ ਕਾਮ ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥ
 ਨਾਥ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪ੍ਰੂਰਿਆ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਮਾਥ ॥੧॥ ਛੰਤੁ ॥ ਸਗਲ ਇਛ ਮੇਰੀ ਪੁਨੀਆ ਮਿਲਿਆ
 ਨਿਰਿੰਜਨ ਰਾਇ ਜੀਤ ॥ ਅਨਦੁ ਭਿੱਖਾ ਵਡਭਾਗੀਹੋ ਗ੍ਰਹਿ ਪ੍ਰਗਟੇ ਪ੍ਰਭ ਆਇ ਜੀਤ ॥ ਗ੍ਰਹਿ ਲਾਲ ਆਏ
 ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਏ ਤਾ ਕੀ ਉਪਮਾ ਕਿਆ ਗਣਾ ॥ ਕੇਅਤ ਪ੍ਰੂਨ ਸੁਖ ਸਹਜ ਦਾਤਾ ਕਵਨ ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਭਣਾ ॥ ਆਪੇ
 ਮਿਲਾਏ ਗਹਿ ਕਂਠਿ ਲਾਏ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ਨਹੀ ਜਾਇ ਜੀਤ ॥ ਬਲਿ ਜਾਇ ਨਾਨਕੁ ਸਦਾ ਕਰਤੇ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ
 ਸਮਾਇ ਜੀਤ ॥੪॥੪॥ ਰਾਗੁ ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਣ ਝੁੰਝਨਡਾ ਗਾਤ ਸਖੀ ਹਰਿ ਏਕੁ ਧਿਆਵਹੁ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਤੁਮ ਸੇਵਿ ਸਖੀ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਅਡਾ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ॥

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੫ ਰੁਤੀ ਸਲੋਕੁ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਰਿ ਬੰਦਨ ਪ੍ਰਭ ਪਾਰਖਰਮ ਬਾਛਤ ਸਾਧਹ ਧੂਰਿ ॥ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਜਤ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਭਰਪੂਰਿ
 ॥੧॥ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟਣ ਭੈ ਹਰਣ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਦੀਨ ਦਿੱਖਾਲ ਦੁਖ ਭੰਜਨੋ ਨਾਨਕ ਨੀਤ ਧਿਆਇ
 ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਜਸੁ ਗਾਵਹੁ ਵਡਭਾਗੀਹੋ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭਗਵਤੁ ਜੀਤ ॥ ਰੁਤੀ ਮਾਹ ਮੂਰਤ ਘੜੀ ਗੁਣ ਤੁਚਰਤ
 ਸੋਭਾਵਤੁ ਜੀਤ ॥ ਗੁਣ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਧੰਨਿ ਤੇ ਜਨ ਜਿਨੀ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਭਿੱਖਾ ਤਿਨ ਕਾ
 ਜਿਨੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪੁਨ ਦਾਨ ਨ ਤੁਲਿ ਕਿਰਿਆ ਹਰਿ ਸਰਬ ਪਾਪਾ ਛਾਤ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ
 ਸਿਮਰਿ ਜੀਵਾ ਜਨਮ ਮਰਣ ਰਾਤ ਜੀਤ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ॥ ਤਦਮੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੋ ਚਰਨ ਕਮਲ ਨਮਸਕਾਰ ॥
 ਕਥਨੀ ਸਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵਸੀ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਅਧਾਰ ॥੧॥ ਸਤ ਸਰਣਿ ਸਾਜਨ ਪਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਸਿਮਰਿ ਅਨੰਤ ॥
 ਸੂਕੇ ਤੇ ਹਰਿਆ ਥੀਆ ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਭਗਵਤੁ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਰੁਤਿ ਸਰਸ ਬਸਤ ਮਾਹ ਚੇਤੁ ਵੈਸਾਖ ਸੁਖ ਮਾਸੁ
 ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਨਾਹੁ ਮਿਲਿਆ ਮਤਲਿਆ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਾਸੁ ਜੀਤ ॥ ਘਰਿ ਨਾਹੁ ਨਿਹਚਲੁ ਅਨਦੁ ਸਖੀਏ

ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰਫੁਲਿਆ ॥ ਸੁੰਦਰੁ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੁ ਬੇਤਾ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਅਮੁਲਿਆ ॥ ਵਡਭਾਗਿ ਪਾਇਆ ਦੁਖੁ
 ਗਵਾਇਆ ਭੰਝੀ ਪੂਰਨ ਆਸ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੇਰੀ ਮਿਟੀ ਜਮ ਕੀ ਤਾਸ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸਲੋਕ ॥
 ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਨੁ ਭਰਮੀ ਮੁੜੀ ਕਰਤੀ ਕਰਮ ਅਨੇਕ ॥ ਕੋਮਲ ਬੰਧਨ ਬਾਧੀਆ ਨਾਨਕ ਕਰਮਹਿ ਲੇਖ ॥੧॥ ਜੋ
 ਭਾਣੇ ਸੇ ਮੇਲਿਆ ਵਿਛੋਡੇ ਭੀ ਆਪਿ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਾ ਕਾ ਵਡ ਪਰਤਾਪੁ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਗ੍ਰੀਖਮ
 ਰੁਤਿ ਅਤਿ ਗਾਖੜੀ ਜੇਠ ਅਖਾਡੈ ਘਾਮ ਜੀਤ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਬਿਛੋਹੁ ਦੁਹਾਗਣੀ ਵੂਸਟਿ ਨ ਕਰੀ ਰਾਮ ਜੀਤ ॥ ਨਹ
 ਦੂਸਟਿ ਆਵੈ ਮਰਤ ਹਾਵੈ ਮਹਾ ਗਾਰਬਿ ਮੁਠੀਆ ॥ ਜਲ ਬਾਝੁ ਮਛੁਲੀ ਤਡਫੜਾਵੈ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਰੁਠੀਆ ॥
 ਕਰਿ ਪਾਪ ਜੋਨੀ ਭੈ ਭੀਤ ਹੋਈ ਦੇਇ ਸਾਸਨ ਜਾਮ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਓਟ ਤੇਰੀ ਰਾਖੁ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ਜੀਤ
 ॥੩॥ ਸਲੋਕ ॥ ਸਰਥਾ ਲਾਗੀ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰੀਤਮੈ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹੇ ਨਾਨਕ
 ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੧॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੀ ਸਾਜਨਹਿ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਮੀਤ ॥ ਚਰਨਹ ਦਾਸੀ ਕਰਿ ਲੰਝੀ ਨਾਨਕ
 ਪ੍ਰਭ ਹਿਤ ਚੀਤ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਰੁਤਿ ਬਰਸੁ ਸੁਹੇਲੀਆ ਸਾਵਣ ਭਾਦਵੇ ਆਨਨਦ ਜੀਤ ॥ ਘਣ ਤੁਨਵਿ ਕੁਠੇ ਜਲ
 ਥਲ ਪੂਰਿਆ ਮਕਰਦ ਜੀਤ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਠਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨਵ ਨਿਧਿ ਗ੍ਰਹ ਭਰੇ ॥ ਸਿਮਰਿ
 ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਕੁਲ ਸਮੂਹਾ ਸਭਿ ਤਰੇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗਿ ਜਾਗੇ ਨਹ ਛਿਦ੍ਰ ਲਾਗੇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਸਦ ਬਖਸਿੰਦੁ ਜੀਤ
 ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੰਤੁ ਪਾਇਆ ਸਦਾ ਮਨਿ ਭਾਵੰਦੁ ਜੀਤ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ॥ ਆਸ ਪਿਆਸੀ ਮੈ ਫਿਰਤ ਕਬ
 ਪੇਖਤ ਗੋਪਾਲ ॥ ਹੈ ਕੋਈ ਸਾਜਨੁ ਸੰਤ ਜਨੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਣਹਾਰ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਮਿਲਬੇ ਸਾਁਤਿ ਨ ਊਪਜੈ ਤਿਲੁ
 ਪਲੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ ਸਾਧਹ ਸਰਣਾਗਤੀ ਨਾਨਕ ਆਸ ਪੁਜਾਇ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਰੁਤਿ ਸਰਦ ਅਡੰਬਰੋ
 ਅਸੂ ਕਤਕੇ ਹਰਿ ਪਿਆਸ ਜੀਤ ॥ ਖੋਜੰਤੀ ਦਰਸਨੁ ਫਿਰਤ ਕਬ ਮਿਲੀਐ ਗੁਣਤਾਸ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨੁ ਕੰਤ ਪਿਆਰੇ
 ਨਹ ਸ੍ਰੂਖ ਸਾਰੇ ਹਾਰ ਕੰਡਣ ਧਿਗੁ ਬਨਾ ॥ ਸੁੰਦਰਿ ਸੁਜਾਣਿ ਚਤੁਰਿ ਬੇਤੀ ਸਾਸ ਬਿਨੁ ਜੈਸੇ ਤਨਾ ॥ ਈਤ ਉਤ
 ਦਹ ਦਿਸ ਅਲੋਕਨ ਮਨਿ ਮਿਲਨ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਸ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲਹੁ ਪ੍ਰਭ
 ਗੁਣਤਾਸ ਜੀਤ ॥੫॥ ਸਲੋਕ ॥ ਜਲਣਿ ਬੁਝੀ ਸੀਤਲ ਭਏ ਮਨਿ ਤਨਿ ਉਪਜੀ ਸਾਁਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ

ਮਿਲੇ ਦੁਤੀਆ ਬਿਨਸੀ ਭ੍ਰਾਂਤਿ ॥੧॥ ਸਾਥ ਪਠਾਏ ਆਪਿ ਹਰਿ ਹਮ ਤੁਮ ਤੇ ਨਾਹੀ ਟ੍ਰੌਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਭਰਮ ਐ
 ਮਿਟਿ ਗਏ ਰਮਣ ਰਾਮ ਭਰਪੂਰਿ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਰੁਤਿ ਸਿਸੀਅਰ ਸੀਤਲ ਹਰਿ ਪ੍ਰਗਟੇ ਮੰਘਰ ਪੋਹਿ ਜੀਤ ॥
 ਜਲਨਿ ਬੁੜੀ ਦਰਸੁ ਪਾਇਆ ਬਿਨਸੇ ਮਾਇਆ ਧੋਹ ਜੀਤ ॥ ਸਭਿ ਕਾਮ ਪੂਰੇ ਮਿਲਿ ਹਜੂਰੇ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸੇਵਕਿ
 ਸੇਵਿਆ ॥ ਹਾਰ ਡੋਰ ਸੀਗਾਰ ਸਭਿ ਰਸ ਗੁਣ ਗਾਤ ਅਲਖ ਅਭੇਵਿਆ ॥ ਭਾਤ ਭਗਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਬਾਂਘਤ ਜਮੁ ਨ
 ਸਾਕੈ ਜੋਹਿ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮੇਲੀ ਤਹ ਨ ਪ੍ਰੇਮ ਬਿਛੋਹ ਜੀਤ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ
 ਪਾਇਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਢੋਲਤ ਨਾਹੀ ਚੀਤ ॥ ਸੰਤ ਸੰਜੋਗੀ ਨਾਨਕਾ ਗ੍ਰਹਿ ਪ੍ਰਗਟੇ ਪ੍ਰਭ ਸੀਤ ॥੧॥ ਨਾਦ ਬਿਨੋਦ
 ਅਨਨਦ ਕੋਡ ਪ੃ਅ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੰਗਿ ਬਨੇ ॥ ਮਨ ਬਾਂਘਤ ਫਲ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਭਨੇ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਹਿਮਕਰ
 ਰੁਤਿ ਮਨਿ ਭਾਵਤੀ ਮਾਘੁ ਫਗਣੁ ਗੁਣਕੰਤ ਜੀਤ ॥ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਗਾਤ ਮੰਗਲੋ ਗ੍ਰਹਿ ਆਏ ਹਰਿ ਕੰਤ ਜੀਤ ॥
 ਗ੍ਰਹਿ ਲਾਲ ਆਏ ਮਨਿ ਧਿਆਏ ਸੇਜ ਸੁੰਦਰਿ ਸੋਹੀਆ ॥ ਕਣੁ ਤ੍ਰਣੁ ਤ੍ਰਭਵਣ ਭਏ ਹਰਿਆ ਦੇਖਿ ਦਰਸਨ
 ਮੋਹੀਆ ॥ ਮਿਲੇ ਸੁਆਮੀ ਝਿਛ ਪੁਨੀ ਮਨਿ ਜਪਿਆ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਨਿਤ ਕਰਹੁ
 ਰਲੀਆ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਸੀਧਰ ਕੰਤ ਜੀਤ ॥੭॥ ਸਲੋਕ ॥ ਸੰਤ ਸਹਾਈ ਜੀਅ ਕੇ ਭਵਜਲ ਤਾਰਣਹਾਰ ॥ ਸਭ ਤੇ
 ਊਚੇ ਜਾਣੀਅਹਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਪਿਆਰ ॥੧॥ ਜਿਨ ਜਾਨਿਆ ਸੇਈ ਤਰੇ ਸੇ ਸੂਰੇ ਸੇ ਬੀਰ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ
 ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਹਰਿ ਜਪਿ ਉਤਰੇ ਤੀਰ ॥੨॥ ਛੰਤੁ ॥ ਚਰਣ ਬਿਰਾਜਿਤ ਸਭ ਊਪਰੇ ਮਿਟਿਆ ਸਗਲ ਕਲੇਸੁ ਜੀਤ ॥
 ਆਵਣ ਜਾਵਣ ਦੁਖ ਹਰੇ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਕੀਆ ਪਰਵੇਸੁ ਜੀਤ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਸਹਜਿ ਮਾਤੇ ਤਿਲੁ ਨ ਮਨ ਤੇ
 ਬੀਸਰੈ ॥ ਤਜਿ ਆਪੁ ਸਰਣੀ ਪਰੇ ਚਰਨੀ ਸਰਬ ਗੁਣ ਜਗਦੀਸਰੈ ॥ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਸੀਰਂਗ ਸੁਆਮੀ
 ਆਦਿ ਕਤ ਆਦੇਸੁ ਜੀਤ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਧਾਰਹੁ ਜੁਗ ਜੁਗੋ ਝਿਕ ਵੇਸੁ ਜੀਤ ॥੮॥੧॥੬॥੮॥

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ਦਖਣੀ ਓਅੰਕਾਰੁ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਓਅੰਕਾਰਿ ਬ੍ਰਹਮਾ ਉਤਪਤਿ ॥ ਓਅੰਕਾਰੁ ਕੀਆ ਜਿਨਿ ਚਿਤਿ ॥ ਓਅੰਕਾਰਿ ਸੈਲ ਜੁਗ ਭਏ ॥ ਓਅੰਕਾਰਿ ਬੇਦ

ਨਿਰਮਾਏ ॥ ਓਅੰਕਾਰਿ ਸਬਦਿ ਤਥਰੇ ॥ ਓਅੰਕਾਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੇ ॥ ਓਨਮ ਅਖਰ ਸੁਣਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਓਨਮ
 ਅਖਰੁ ਤ੍ਰਭਵਣ ਸਾਰੁ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਪਾਡੇ ਕਿਆ ਲਿਖਹੁ ਜੰਜਾਲਾ ॥ ਲਿਖੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੋਪਾਲਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਸਸੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਸਹਜਿ ਉਪਾਇਆ ਤੀਨਿ ਭਵਨ ਇਕ ਜੋਤੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਸਤੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਚੁਣਿ ਲੈ
 ਮਾਣਕ ਮੋਤੀ ॥ ਸਮੜੈ ਸੂੜੈ ਪਡਿ ਪਡਿ ਬੂੜੈ ਅੰਤਿ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਸਾਚਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਖੈ ਸਾਚੁ ਸਮਾਲੇ ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ
 ਜਗੁ ਕਾਚਾ ॥੨॥ ਧਈ ਧਰਮੁ ਧਰੇ ਧਰਮਾ ਪੁਰਿ ਗੁਣਕਾਰੀ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥ ਧਈ ਧੂਲਿ ਪਡੈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਕਂਚਨ ਭਏ
 ਮਨੂਰਾ ॥ ਧਨੁ ਧਰਣੀਧਰੁ ਆਪਿ ਅਜੋਨੀ ਤੋਲਿ ਬੋਲਿ ਸਚੁ ਪੂਰਾ ॥ ਕਰਤੇ ਕੀ ਮਿਤਿ ਕਰਤਾ ਜਾਣੈ ਕੈ ਜਾਣੈ ਗੁਰੁ
 ਸੂਰਾ ॥੩॥ ਡਿਆਨੁ ਗਵਾਇਆ ਦ੍ਰਿਜਾ ਭਾਇਆ ਗਰਬਿ ਗਲੇ ਬਿਖੁ ਖਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਰਸੁ ਗੀਤ ਬਾਦ ਨਹੀਂ ਭਾਵੈ
 ਸੁਣੀਐ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਸਚੁ ਕਹਿਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਲਹਿਆ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਾਚੁ ਸੁਖਾਇਆ ॥
 ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਟੇਕੈ ਆਪੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆਇਆ ॥੪॥ ਏਕੋ ਏਕੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੌਈ ਹਤਮੈ ਗਰਬੁ ਵਿਆਪੈ ॥
 ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੁ ਪਛਾਣੈ ਇਤ ਘਰੁ ਮਹਲੁ ਸਿਜਾਪੈ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਨੇਡੈ ਹਰਿ ਟ੍ਰਹਿ ਨ ਜਾਣਹੁ ਏਕੋ ਸੂਸਟਿ ਸਬਾਈ
 ॥ ਏਕਕਾਰੁ ਅਕਰੁ ਨਹੀਂ ਦ੍ਰਿਜਾ ਨਾਨਕ ਏਕੁ ਸਮਾਈ ॥੫॥ ਇਸੁ ਕਰਤੇ ਕਤ ਕਿਤ ਗਹਿ ਰਾਖਤ ਅਫਰਿਓ
 ਤੁਲਿਓ ਨ ਜਾਈ ॥ ਮਾਇਆ ਕੇ ਦੇਵਾਨੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਝੂਠਿ ਠਗਤਰੀ ਪਾਈ ॥ ਲਕਿ ਲੋਭਿ ਮੁਹਤਾਜਿ ਵਿਗੂਤੇ ਇਕ
 ਤਬ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਈ ॥ ਏਕੁ ਸਰੇਕੈ ਤਾ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਪਾਵੈ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਰਹਾਈ ॥੬॥ ਏਕੁ ਅਚਾਰੁ ਰੰਗੁ
 ਇਕੁ ਰੂਪੁ ॥ ਪਤਣ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ ਅਸਰੂਪੁ ॥ ਏਕੋ ਭਵਰੁ ਭਵੈ ਤਿਹੁ ਲੋਇ ॥ ਏਕੋ ਬੂੜੈ ਸੂੜੈ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
 ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਲੇ ਸਮਸਰਿ ਰਹੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੁ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਲਹੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸੁਖੁ
 ਪਾਏ ॥ ਗੁਰੁ ਦੁਆਰੈ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥੭॥ ਊਰਮ ਧੂਰਮ ਜੋਤਿ ਤਜਾਲਾ ॥ ਤੀਨਿ ਭਵਣ ਮਹਿ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥
 ਊਗਵਿਆ ਅਸਰੂਪੁ ਦਿਖਾਵੈ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੈ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥ ਊਨਵਿ ਬਰਸੈ ਨੀਝਾਰ ਧਾਰਾ ॥
 ਊਤਮ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥ ਇਸੁ ਏਕੇ ਕਾ ਜਾਣੈ ਭੇਤ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਦੇਤ ॥੮॥ ਊਗਵੈ ਸੂਰ
 ਅਸੁਰ ਸੰਘਾਰੈ ॥ ਊਚਤ ਦੇਖਿ ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰੈ ॥ ਊਪਰਿ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਤਿਹੁ ਲੋਇ ॥ ਆਪੇ ਕਰੈ ਕਥੈ ਸੁਣੈ

सोइ ॥ ओहु बिधाता मनु तनु देइ ॥ ओहु बिधाता मनि मुखि सोइ ॥ प्रभु जगजीवनु अवरु न कोइ ॥
 नानक नामि रते पति होइ ॥६॥ राजन राम रवै हितकारि ॥ रण महि लूझै मनूआ मारि ॥ राति
 दिन्नति रहै रंगि राता ॥ तीनि भवन जुग चारे जाता ॥ जिनि जाता सो तिस ही जेहा ॥ अति निरमाइलु
 सीझसि देहा ॥ रहसी रामु रिदै इक भाइ ॥ अंतरि सबदु साचि लिव लाइ ॥१०॥ रोसु न कीजै
 अंमृतु पीजै रहणु नही संसारे ॥ राजे राइ रंक नही रहणा आइ जाइ जुग चारे ॥ रहण कहण ते
 रहै न कोई किसु पहि करउ बिन्नती ॥ एकु सबदु राम नाम निरोधरु गुरु देवै पति मती ॥११॥ लाज
 मरंती मरि गई घूघटु खोलि चली ॥ सासु दिवानी बावरी सिर ते संक टली ॥ प्रेमि बुलाई रली सिउ
 मन महि सबदु अन्नदु ॥ लालि रती लाली भई गुरमुखि भई निचिंदु ॥१२॥ लाहा नामु रतनु जपि
 सारु ॥ लबु लोभु बुरा अद्विकारु ॥ लाड़ी चाड़ी लाइतबारु ॥ मनमुखु अंधा मुगधु गवारु ॥ लाहे
 कारणि आइआ जगि ॥ होइ मजूरु गडिआ ठगाइ ठगि ॥ लाहा नामु पूंजी वेसाहु ॥ नानक सची
 पति सचा पातिसाहु ॥१३॥ आइ विगूता जगु जम पंथु ॥ आई न मेटण को समरथु ॥ आथि सैल
 नीच घरि होइ ॥ आथि देखि निवै जिसु दोइ ॥ आथि होइ ता मुगधु सिआना ॥ भगति बिहूना जगु
 बउराना ॥ सभ महि वरतै एको सोइ ॥ जिस नो किरपा करे तिसु परगटु होइ ॥१४॥ जुगि जुगि थापि
 सदा निरवैरु ॥ जनमि मरणि नही धंधा धैरु ॥ जो दीसै सो आपे आपि ॥ आपि उपाइ आपे घट थापि ॥
 आपि अगोचरु धंधै लोई ॥ जोग जुगति जगजीवनु सोई ॥ करि आचारु सचु सुखु होई ॥ नाम विहूणा मुकति
 किव होई ॥१५॥ विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ कित न मिलहि काटहि मन पीर ॥ वाट वटाऊ आवै
 जाइ ॥ किआ ले आइआ किआ पलै पाइ ॥ विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ लाहा मिलै जा देइ बुझाइ
 ॥ वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ विणु नावै कैसी पति सारी ॥१६॥ गुण वीचारे गिआनी सोइ ॥
 गुण महि गिआनु परापति होइ ॥ गुणदाता विरला संसारि ॥ साची करणी गुर वीचारि ॥ अगम

ਅਗੋਚਰੁ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀਂ ਪਾਇ ॥ ਤਾ ਮਿਲੀਐ ਜਾ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥ ਗੁਣਵਂਤੀ ਗੁਣ ਸਾਰੇ ਨੀਤ ॥ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਮਤਿ ਮਿਲੀਐ ਮੀਤ ॥੧੭॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਕਾਇਆ ਕਤ ਗਾਲੈ ॥ ਜਿਤ ਕੰਚਨ ਸੋਹਾਗਾ ਢਾਲੈ ॥ ਕਸਿ ਕਸਵਟੀ
 ਸਹੈ ਸੁ ਤਾਤ ॥ ਨਦਰਿ ਸਰਾਫ ਵਨੀ ਸਚੜਾਤ ॥ ਜਗਤੁ ਪਸੂ ਅਛਾ ਕਾਲੁ ਕਸਾਈ ॥ ਕਰਿ ਕਰਤੈ ਕਰਣੀ ਕਰਿ
 ਪਾਈ ॥ ਜਿਨੀ ਕੀਤੀ ਤਿਨੀ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥ ਹੋਰ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧੮॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆ ॥ ਖਿਮਾ ਗਹੀ ਮਨੁ ਸਤਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥ ਖਰਾ ਖਰਾ ਆਖੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਖਰਾ ਰਤਨੁ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੋਇ
 ॥ ਖਾਤ ਪੀਅਂਤ ਮੂਏ ਨਹੀਂ ਜਾਨਿਆ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਮੂਏ ਜਾ ਸਬਦੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥ ਅਸਥਿਰੁ ਚੀਤੁ ਮਰਨਿ ਮਨੁ
 ਮਾਨਿਆ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥੧੯॥ ਗਗਨ ਗੰਭੀਰੁ ਗਗਨਨਤਰਿ ਵਾਸੁ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੁਖ
 ਸਹਜਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਗਇਆ ਨ ਆਵੈ ਆਇ ਨ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਗਗਨੁ ਅਗੰਮੁ ਅਨਾਥੁ
 ਅਜੋਨੀ ॥ ਅਸਥਿਰੁ ਚੀਤੁ ਸਮਾਧਿ ਸਗੋਨੀ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚੇਤਿ ਫਿਰਿ ਪਵਹਿ ਨ ਜੂਨੀ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਰੁ ਹੋਰ ਨਾਮ
 ਬਿਵੂਨੀ ॥੨੦॥ ਘਰ ਦਰ ਫਿਰਿ ਥਾਕੀ ਬਹੁਤੇਰੇ ॥ ਜਾਤਿ ਅਸੰਖ ਅੰਤ ਨਹੀਂ ਮੇਰੇ ॥ ਕੇਤੇ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਧੀਆ
 ॥ ਕੇਤੇ ਗੁਰ ਚੇਲੇ ਫੁਨਿ ਹੂਆ ॥ ਕਾਚੇ ਗੁਰ ਤੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੂਆ ॥ ਕੇਤੀ ਨਾਰਿ ਕਰੁ ਏਕੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਰਣੁ
 ਜੀਵਣੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਲਿ ॥ ਦਹ ਦਿਸ ਢੂਠਿ ਘਰੈ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ॥ ਮੇਲੁ ਭਇਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥੨੧॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੋਲੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੋਲਿ ਤੁਲਾਵੈ ਤੋਲੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ਨਿਸਂਗੁ ॥ ਪਰਹਰਿ ਮੈਲੁ
 ਜਲਾਇ ਕਲਮਕੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਦ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਜਨੁ ਚਜੁ ਅਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹੈ
 ਸਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਪਾਰੁ ॥੨੨॥ ਚੰਚਲੁ ਚੀਤੁ ਨ ਰਹੈ ਠਾਇ ॥ ਚੋਰੀ ਮਿਰਗੁ ਅੰਗੂਰੀ ਖਾਇ
 ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਤਰ ਧਾਰੇ ਚੀਤ ॥ ਚਿਰੁ ਜੀਵਨੁ ਚੇਤਨੁ ਨਿਤ ਨੀਤ ॥ ਚਿੰਤਤ ਹੀ ਦੀਸੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਚੇਤਹਿ ਏਕੁ
 ਤਹੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਚਿਤਿ ਵਸੈ ਰਾਚੈ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥ ਮੁਕਤਿ ਭਇਆ ਪਤਿ ਸਿਉ ਘਰਿ ਜਾਇ ॥੨੩॥ ਛੀਜੈ ਦੇਹ
 ਖੁਲੈ ਇਕ ਗੱਢਿ ॥ ਛੇਆ ਨਿਤ ਦੇਖਹੁ ਜਗਿ ਛਾਡਿ ॥ ਧੂਪ ਛਾਵ ਜੇ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ॥ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਮੁਕਤਿ
 ਘਰਿ ਆਣੈ ॥ ਛਾਇਆ ਛੂਛੀ ਜਗਤੁ ਭੁਲਾਨਾ ॥ ਲਿਖਿਆ ਕਿਰਤੁ ਧੁਰੇ ਪਰਵਾਨਾ ॥ ਛੀਜੈ ਜੋਬਨੁ ਜਰੂਆ

सिरि कालु ॥ काइआ छीजै भई सिबालु ॥ २४ ॥ जापै आपि प्रभू तिहु लोइ ॥ जुगि जुगि दाता अवरु
 न कोइ ॥ जित भावै तिउ राखहि राखु ॥ जसु जाचउ देवै पति साखु ॥ जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥
 जा तू मेलहि ता तुझै समावा ॥ जै जै कारु जपउ जगदीस ॥ गुरमति मिलीअै बीस इकीस ॥ २५ ॥ झखि
 बोलणु किआ जग सित वादु ॥ झूरि मरै देखै परमादु ॥ जनमि मूँए नही जीवण आसा ॥ आइ चले भए
 आस निरासा ॥ झुरि झुरि झखि माटी रलि जाइ ॥ कालु न चाँपै हरि गुण गाइ ॥ पाई नव निधि हरि कै
 नाइ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ २६ ॥ जिआनो बोलै आपे बूझै ॥ आपे समझै आपे सूझै ॥ गुर का कहिआ
 अंकि समावै ॥ निरमल सूचे साचो भावै ॥ गुरु सागरु रतनी नही तोट ॥ लाल पदारथ साचु अखोट ॥
 गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ गुर की करणी काहे धावहु ॥ नानक गुरमति साचि समावहु ॥ २७ ॥
 टूटै नेहु कि बोलहि सही ॥ टूटै बाह दुहू दिस गही ॥ टूटि परीति गई बुर बोलि ॥ दुरमति परहरि
 छाडी ढोलि ॥ टूटै गंठि पड़ै वीचारि ॥ गुर सबदी घरि कारजु सारि ॥ लाहा साचु न आवै तोटा ॥
 तृभवण ठाकुरु प्रीतमु मोटा ॥ २८ ॥ ठाकहु मनूआ राखहु ठाइ ॥ ठहकि मुई अवगुणि पछुताइ ॥
 ठाकुरु एकु सबाई नारि ॥ बहुते वेस करे कूड़िआरि ॥ पर घरि जाती ठाकि रहाई ॥ महलि बुलाई
 ठाक न पाई ॥ सबदि सवारी साचि पिआरी ॥ साई सुहागणि ठाकुरि धारी ॥ २९ ॥ डोलत डोलत
 हे सखी फाटे चीर सीगार ॥ डाहपणि तनि सुखु नही बिनु डर बिणठी डार ॥ डरपि मुई घरि आपणै
 डीठी कंति सुजाणि ॥ डरु राखिआ गुरि आपणै निरभउ नामु वखाणि ॥ डूगरि वासु तिखा घणी जब
 देखा नही दूरि ॥ तिखा निवारी सबदु मनि अंमृतु पीआ भरपूरि ॥ देहि देहि आखै सभु कोई जै भावै
 तै देइ ॥ गुरु दुआरै देवसी तिखा निवारै सोइ ॥ ३० ॥ ढंढोलत ढूढत हउ फिरी ढहि ढहि पवनि
 करारि ॥ भारे ढहते ढहि पए हउले निकसे पारि ॥ अमर अजाची हरि मिले तिन कै हउ बलि जाउ ॥
 तिन की धूड़ि अघुलीअै संगति मेलि मिलाउ ॥ मनु दीआ गुरि आपणै पाइआ निरमल नाउ ॥

ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਤਿਸੁ ਸੇਵਸਾ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਜੋ ਤਸਾਰੇ ਸੋ ਢਾਹਸੀ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤਿਸੁ ਸੰਮੁਲਾ ਤਾ ਤਨਿ ਦੂਖੁ ਨ ਹੋਇ ॥੩੧॥ ਣਾ ਕੋ ਮੇਰਾ ਕਿਸੁ ਗਹੀ ਣਾ ਕੋ ਹੋਆ ਨ ਹੋਗੁ ॥
 ਆਵਣਿ ਜਾਣਿ ਵਿਗੁਚੀਐ ਟੁਬਿਧਾ ਵਿਆਪੈ ਰੇਗੁ ॥ ਣਾਮ ਵਿਹੂਣੇ ਆਦਮੀ ਕਲਰ ਕਂਧ ਗਿਰਂਤਿ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ
 ਕਿਤ ਛੂਟੀਐ ਜਾਇ ਰਸਾਤਲਿ ਅੰਤਿ ॥ ਗਣਤ ਗਣਾਵੈ ਅਖਰੀ ਅਗਣਤੁ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥ ਅਗਿਆਨੀ ਮਤਿਹੀਣੁ
 ਹੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਤੂਟੀ ਤੰਤੁ ਰਖਾਬ ਕੀ ਵਾਜੈ ਨਹੀ ਵਿਜੋਗਿ ॥ ਵਿਛੁਡਿਆ ਮੇਲੈ ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਨਕ
 ਕਰਿ ਸੰਯੋਗ ॥੩੨॥ ਤਰਖਰੁ ਕਾਇਆ ਪੱਖਿ ਮਨੁ ਤਰਖਰਿ ਪੱਖੀ ਪੱਚ ॥ ਤਤੁ ਚੁਗਹਿ ਮਿਲਿ ਏਕਸੇ ਤਿਨ ਕਤ
 ਫਾਸ ਨ ਰੱਚ ॥ ਤਡਹਿ ਤ ਬੇਗੁਲ ਬੇਗੁਲੇ ਤਾਕਹਿ ਚੋਗ ਘਣੀ ॥ ਪੱਖ ਤੁਟੇ ਫਾਹੀ ਪੜੀ ਅਕਗੁਣਿ ਭੀਡ਼ ਬਣੀ ॥
 ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਕਿਤ ਛੂਟੀਐ ਹਰਿ ਗੁਣ ਕਰਮਿ ਮਣੀ ॥ ਆਧਿ ਛਡਾਏ ਛੂਟੀਐ ਵਡਾ ਆਧਿ ਧਣੀ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ
 ਛੂਟੀਐ ਕਿਰਪਾ ਆਧਿ ਕਰੇਇ ॥ ਅਪਣੈ ਹਾਥਿ ਵਡਾਈਆ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥੩੩॥ ਥਰ ਥਰ ਕੱਪੈ ਜੀਅੜਾ ਥਾਨ
 ਵਿਹੂਣਾ ਹੋਇ ॥ ਥਾਨਿ ਮਾਨਿ ਸਚੁ ਏਕੁ ਹੈ ਕਾਜੁ ਨ ਫੀਟੈ ਕੋਇ ॥ ਥਿਰੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਥਿਰੁ ਗੁਰੁ ਥਿਰੁ ਸਾਚਾ ਬੀਚਾਰੁ ॥
 ਸੁਰਿ ਨਰ ਨਾਥਹ ਨਾਥੁ ਤੂ ਨਿਧਾਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥ ਸਰਬੇ ਥਾਨ ਥਨਨਤਰੀ ਤੂ ਦਾਤਾ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਏਕੁ
 ਤੂ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥ ਥਾਨ ਥਨਨਤਰਿ ਰਖਿ ਰਹਿਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਅਣਮਂਗਿਆ ਦਾਨੁ ਦੇਵਸੀ ਵਡਾ
 ਅਗਮ ਅਪਾਰੁ ॥੩੪॥ ਦਿਆ ਦਾਨੁ ਦਿਆਲੁ ਤੂ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖਣਹਾਰੁ ॥ ਦਿਆ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਿ
 ਲੈਹਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਢਾਹਿ ਤਸਾਰਿ ॥ ਦਾਨਾ ਤੂ ਬੀਨਾ ਤੁਹੀ ਦਾਨਾ ਕੈ ਸਿਰਿ ਦਾਨੁ ॥ ਦਾਲਦ ਭੰਜਨ ਦੁਖ ਦਲਣ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ॥੩੫॥ ਧਨਿ ਗਇਐ ਬਹਿ ਝੂਰੀਐ ਧਨ ਮਹਿ ਚੀਤੁ ਗਵਾਰ ॥ ਧਨੁ ਵਿਰਲੀ
 ਸਚੁ ਸੰਚਿਆ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਿ ॥ ਧਨੁ ਗਇਆ ਤਾ ਜਾਣ ਦੇਹਿ ਜੇ ਰਾਚਹਿ ਰੰਗੁ ਏਕ ॥ ਮਨੁ ਦੀਜੈ
 ਸਿਰੁ ਸਤਪੀਐ ਭੀ ਕਰਤੇ ਕੀ ਟੇਕ ॥ ਧੰਧਾ ਧਾਕਤ ਰਹਿ ਗਏ ਮਨ ਮਹਿ ਸਕਦੁ ਅਨਨਦੁ ॥ ਦੁਰਜਨ ਤੇ ਸਾਜਨ
 ਭਏ ਭੇਟੇ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦ ॥ ਬਨੁ ਬਨੁ ਫਿਰਤੀ ਢੂਢਤੀ ਬਸਤੁ ਰਹੀ ਘਰਿ ਬਾਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲੀ ਮਿਲਿ ਰਹੀ
 ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਨਿਵਾਰਿ ॥੩੬॥ ਨਾਨਾ ਕਰਤ ਨ ਛੂਟੀਐ ਵਿਣੁ ਗੁਣ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਹਿ ॥ ਨਾ ਤਿਸੁ ਏਹੁ

न ओहु है अवगुणि फिरि पछुताहि ॥ ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥ विणु नावै
 निरभउ कहा किआ जाणा अभिमानु ॥ थाकि रही किव अपड़ा हाथ नही ना पारु ॥ ना साजन से रंगुले
 किसु पहि करी पुकार ॥ नानक पृउ पृउ जे करी मेले मेलणहारु ॥ जिनि विछोड़ी सो मेलसी गुर कै
 हेति अपारि ॥ ३७ ॥ पापु बुरा पापी कउ पिआरा ॥ पापि लदे पापे पासारा ॥ परहरि पापु पछाणै
 आपु ॥ ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ नरकि पड़ंतउ किउ रहै किउ बंचै जमकालु ॥ किउ आवण जाणा
 वीसरै झूठु बुरा खै कालु ॥ मनु जंजाली वेडिआ भी जंजाला माहि ॥ विणु नावै किउ छूटीअै पापे पचहि
 पचाहि ॥ ३८ ॥ फिरि फिरि फाही फासै कऊआ ॥ फिरि पछुताना अब किआ हूआ ॥ फाथा चोग चुगै नही
 बूझै ॥ सतगुरु मिलै त आखी सूझै ॥ जिउ मछुली फाथी जम जालि ॥ विणु गुर दाते मुकति न भालि ॥ फिरि
 फिरि आवै फिरि फिरि जाइ ॥ इक रंगि रचै रहै लिव लाइ ॥ इव छूटै फिरि फास न पाइ ॥ ३९ ॥
 बीरा बीरा करि रही बीर भए बैराइ ॥ बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ ॥ बाबुल कै
 घरि बेटड़ी बाली बालै नेहि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी सतिगुरु सेवहि तेहि ॥ बिरलो गिआनी बूझणउ
 सतिगुरु साचि मिलेइ ॥ ठाकुर हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ बाणी बिरलउ बीचारसी जे को
 गुरमुखि होइ ॥ इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥ ४० ॥ भनि भनि घड़ीअै घड़ि घड़ि
 भजै ढाहि उसरै उसरे ढाहै ॥ सर भरि सोखै भी भरि पोखै समरथ वेपरवाहै ॥ भरमि भुलाने भए
 दिवाने विणु भागा किआ पाईअै ॥ गुरमुखि गिआनु डोरी प्रभि पकड़ी जिन खिंचै तिन जाईअै ॥
 हरि गुण गाइ सदा रंगि राते बहुड़ि न पछोताईअै ॥ भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता निज घरि वासा
 पाईअै ॥ भभै भउजलु मारगु विखड़ा आस निरासा तरीअै ॥ गुर परसादी आपो चीनै जीवतिआ
 इव मरीअै ॥ ४१ ॥ माइआ माइआ करि मुए माइआ किसै न साथि ॥ ह्वसु चलै उठि डुमणो
 माइआ भूली आथि ॥ मनु झूठा जमि जोहिआ अवगुण चलहि नालि ॥ मन महि मनु उलटो मरै

ਜੇ ਗੁਣ ਹੋਵਹਿ ਨਾਲਿ ॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਸੁਏ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਭਾਲਿ ॥ ਗੜ ਮੰਦਰ ਮਹਲਾ ਕਹਾ ਜਿਤ ਬਾਜੀ
 ਟੀਬਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਵਿਣੁ ਝੂਠਾ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ॥ ਆਪੇ ਚਤੁਰੁ ਸਰ੍ਪੁ ਹੈ ਆਪੇ ਜਾਣੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥੪੨॥
 ਜੋ ਆਵਹਿ ਸੇ ਜਾਹਿ ਫੁਨਿ ਆਇ ਗਏ ਪਛੁਤਾਹਿ ॥ ਲਖ ਚਤਰਾਸੀਹ ਮੇਦਨੀ ਘਟੈ ਨ ਵਧੈ ਉਤਾਹਿ ॥ ਸੇ ਜਨ
 ਤਕਰੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਭਾਡਿਆ ॥ ਧੰਧਾ ਸੁਆ ਵਿਗ੍ਰੰਤੀ ਮਾਡਿਆ ॥ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਚਾਲਸੀ ਕਿਸ ਕਤ ਮੀਤੁ ਕਰੇਤ ॥
 ਜੀਤ ਸਮਪਤ ਆਪਣਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਆਗੈ ਦੇਤ ॥ ਅਸਥਿਰੁ ਕਰਤਾ ਤੂ ਧਣੀ ਤਿਸ ਹੀ ਕੀ ਮੈ ਓਟ ॥ ਗੁਣ ਕੀ ਮਾਰੀ
 ਹਤ ਸੁਈ ਸਬਦਿ ਰਤੀ ਮਨਿ ਚੋਟ ॥੪੩॥ ਰਾਣਾ ਰਾਤ ਨ ਕੋ ਰਹੈ ਰੰਗੁ ਨ ਤੁੰਗੁ ਫਕੀਰੁ ॥ ਵਾਰੀ ਆਪੋ ਆਪਣੀ
 ਕੋਡਿ ਨ ਬੰਧੈ ਧੀਰ ॥ ਰਾਹੁ ਬੁਰਾ ਭੀਹਾਵਲਾ ਸਰ ਝੂਗਰ ਅਸਗਾਹ ॥ ਮੈ ਤਨਿ ਅਵਗਣ ਝੂਰਿ ਸੁਈ ਵਿਣੁ ਗੁਣ
 ਕਿਤ ਘਰਿ ਜਾਹ ॥ ਗੁਣੀਆ ਗੁਣ ਲੇ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਕਿਤ ਤਿਨ ਮਿਲਤ ਧਿਆਰਿ ॥ ਤਿਨ ਹੀ ਜੈਸੀ ਥੀ ਰਹਾਁ ਜਧਿ
 ਜਧਿ ਰਿਦੈ ਸੁਰਾਰਿ ॥ ਅਵਗੁਣੀ ਭਰਪੂਰ ਹੈ ਗੁਣ ਭੀ ਵਸਹਿ ਨਾਲਿ ॥ ਵਿਣੁ ਸਤਗੁਰ ਗੁਣ ਨ ਜਾਪਨੀ ਜਿਚਰੁ
 ਸਬਦਿ ਨ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥੪੪॥ ਲਸਕਰੀਆ ਘਰ ਸੰਮਲੇ ਆਏ ਵਜਹੁ ਲਿਖਾਇ ॥ ਕਾਰ ਕਮਾਵਹਿ ਸਿਰਿ ਧਣੀ
 ਲਾਹਾ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਬੁਰਿਆਈਆ ਛੋਡੇ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰਿ ॥ ਗਡਿ ਦੋਹੀ ਪਾਤਿਸਾਹ ਕੀ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ
 ਹਾਰਿ ॥ ਚਾਕਰੁ ਕਹੀਐ ਖਸਮ ਕਾ ਸਤਹੇ ਉਤਰ ਦੇਇ ॥ ਵਜਹੁ ਗਵਾਏ ਆਪਣਾ ਤਖਤਿ ਨ ਕੈਸਹਿ ਸੇਇ ॥
 ਪ੍ਰੀਤਮ ਹਥਿ ਵਡਿਆਈਆ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥ ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੀਐ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਡਿ ਕਰੇਇ ॥੪੫॥
 ਬੀਜਤ ਸੂੜੈ ਕੋ ਨਹੀ ਬਹੈ ਦੁਲੀਚਾ ਪਾਇ ॥ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰਣੁ ਨਰਹ ਨਰੁ ਸਾਚਤ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥ ਵਣੁ ਤ੍ਰਣੁ ਢੂਢਤ
 ਫਿਰਿ ਰਹੀ ਮਨ ਮਹਿ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਲਾਲ ਰਤਨ ਬਹੁ ਮਾਣਕੀ ਸਤਿਗੁਰ ਹਾਥਿ ਖੰਡਾਰੁ ॥ ਊਤਮੁ ਹੋਵਾ ਪ੍ਰਭੁ
 ਮਿਲੈ ਇਕ ਮਨਿ ਏਕੈ ਭਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਸਿ ਮਿਲੇ ਲਾਹਾ ਲੈ ਪਰਥਾਇ ॥ ਰਚਨਾ ਰਾਚਿ ਜਿਨਿ ਰਚੀ ਜਿਨਿ
 ਸਿਰਿਆ ਆਕਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੇਅਂਤੁ ਧਿਆਈਐ ਅਂਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੪੬॥ ਝਾੜੈ ਰੁੜਾ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸੋਈ ॥
 ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਾਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਝਾੜੈ ਗਾਰੁੜੁ ਤੁਮ ਸੁਣਹੁ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ
 ਮਤੁ ਕੋ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਹਿ ॥ ਸੋ ਸਾਹੁ ਸਾਚਾ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੂਰਾ ਤਿਸੁ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਰੁੜੀ ਬਾਣੀ

हरि पाइआ गुर सबदी बीचारि ॥ आपु गइआ दुखु कटिआ हरि वरु पाइआ नारि ॥४७॥
 सुइना रुपा संचीअै धनु काचा बिखु छारु ॥ साहु सदाए संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥ सचिआरी सचु
 संचिआ साचउ नामु अमोलु ॥ हरि निरमाइलु ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥ साजनु मीतु सुजाणु तू
 तू सरवरु तू छ्यसु ॥ साचउ ठाकुरु मनि वसै हउ बलिहारी तिसु ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि कीती
 सो जाणु ॥ बिखिआ अंमृतु एकु है बूझै पुरखु सुजाणु ॥४८॥ खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख
 ॥ गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥ खसमु पछाणै आपणा खूलै बंधु न पाइ ॥ सबदि
 महली खरा तू खिमा सचु सुख भाइ ॥ खरचु खरा धनु धिआनु तू आपे वसहि सरीरि ॥ मनि तनि मुखि
 जापै सदा गुण अंतरि मनि धीर ॥ हउमै खपै खपाइसी बीजउ वथु विकारु ॥ जंत उपाइ विचि
 पाइअनु करता अलगु अपारु ॥४९॥ सूसटे भेत न जाणै कोइ ॥ सूसटा करै सु निहचउ होइ ॥ संपै
 कउ ईसरु धिआईअै ॥ संपै पुरबि लिखे की पाईअै ॥ संपै कारणि चाकर चोर ॥ संपै साथि न चालै
 होर ॥ बिनु साचे नही दरगह मानु ॥ हरि रसु पीवै छुटै निदानि ॥५०॥ हेरत हेरत हे सखी होइ
 रही हैरानु ॥ हउ हउ करती मै मुई सबदि रवै मनि गिआनु ॥ हार डोर कंकन घणे करि थाकी
 सीगारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सगल गुणा गलि हारु ॥ नानक गुरमुखि पाईअै हरि सिउ प्रीति
 पिआरु ॥ हरि बिनु किनि सुखु पाइआ देखहु मनि बीचारि ॥ हरि पड़णा हरि बुझणा हरि सिउ रखहु
 पिआरु ॥ हरि जपीअै हरि धिआईअै हरि का नामु अधारु ॥५१॥ लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ
 करतारि ॥ आपे कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु धारि ॥ करते हथि वडिआईआ बूझहु गुर
 बीचारि ॥ लिखिआ फेरि न सकीअै जिउ भावी तिउ सारि ॥ नदरि तेरी सुखु पाइआ नानक सबदु
 बीचारि ॥ मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥ जि पुरखु नदरि न आवई तिस का किआ करि
 कहिआ जाइ ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि हिरदै दिता दिखाइ ॥५२॥ पाधा पड़िआ आखीअै बिदिआ

ਬਿਚਰੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਬਿਦਿਆ ਸੋਧੈ ਤਤੁ ਲਹੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਬਿਦਿਆ ਬਿਕ੍ਰਦਾ ਬਿਖੁ
ਖਟੇ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥ ਮੂਰਖੁ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨਈ ਸ੍ਰੂਜਾ ਬ੍ਰੂਜਾ ਨਹ ਕਾਇ ॥੫੩॥ ਪਾਥਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖੀਐ ਚਾਟਡਿਆ
ਮਤਿ ਦੇਇ ॥ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਹੁ ਨਾਮੁ ਸੰਗਰਹੁ ਲਾਹਾ ਜਗ ਮਹਿ ਲੇਇ ॥ ਸਚੀ ਪਟੀ ਸਚੁ ਮਨਿ ਪਡੀਐ ਸਬਦੁ ਸੁ
ਸਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪਡਿਆ ਸੋ ਪਂਡਿਤੁ ਬੀਨਾ ਜਿਸੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗਲਿ ਹਾਰੁ ॥੫੪॥੧॥

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੧ ਸਿਧ ਗੋਸਟਿ ੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਿਧ ਸਭਾ ਕਰਿ ਆਸਣਿ ਬੈਠੇ ਸੰਤ ਸਭਾ ਜੈਕਾਰੇ ॥ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਰਹਰਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ਸਾਚਾ ਅਪਰ ਅਪਾਰੇ ॥
ਮਸਤਕੁ ਕਾਟਿ ਧਰੀ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਤਨੁ ਮਨੁ ਆਗੈ ਦੇਤ ॥ ਨਾਨਕ ਸੰਤੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਸਹਜ ਭਾਇ ਜਸੁ ਲੇਤ
॥੧॥ ਕਿਆ ਭਵੀਐ ਸਚਿ ਸੂਚਾ ਹੋਇ ॥ ਸਾਚ ਸਬਦ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਵਨ ਤੁਮੇ ਕਿਆ
ਨਾਤ ਤੁਮਾਰਾ ਕਤਨੁ ਮਾਰਗੁ ਕਤਨੁ ਸੁਆਓ ॥ ਸਾਚੁ ਕਹਤ ਅਰਦਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ਹਤ ਸੰਤ ਜਨਾ ਬਲਿ ਜਾਓ ॥ ਕਹ
ਬੈਸਹੁ ਕਹ ਰਹੀਐ ਬਾਲੇ ਕਹ ਆਵਹੁ ਕਹ ਜਾਹੋ ॥ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਸੁਣਿ ਬੈਰਾਗੀ ਕਿਆ ਤੁਮਾਰਾ ਰਾਹੋ ॥੨॥ ਘਟਿ
ਘਟਿ ਬੈਸਿ ਨਿਰਂਤਰਿ ਰਹੀਐ ਚਾਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ॥ ਸਹਜੇ ਆਏ ਹੁਕਮਿ ਸਿਧਾਏ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਰਖਾਏ ॥
ਆਸਣਿ ਬੈਸਣਿ ਥਿਰੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਐਸੀ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰੂਜੈ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥੩॥
ਦੁਨੀਆ ਸਾਗਰੁ ਦੁਤਰੁ ਕਹੀਐ ਕਿਤ ਕਰਿ ਪਾਈਐ ਪਾਰੇ ॥ ਚਰਪਟੁ ਬੋਲੈ ਅਤਥੁ ਨਾਨਕ ਦੇਹੁ ਸਚਾ ਬੀਚਾਰੇ ॥
ਆਪੇ ਆਖੈ ਆਪੇ ਸਮਝੈ ਤਿਸੁ ਕਿਆ ਉਤਰੁ ਦੀਜੈ ॥ ਸਾਚੁ ਕਹਹੁ ਤੁਮ ਪਾਰਗਰਾਮੀ ਤੁੜ੍ਹੁ ਕਿਆ ਬੈਸਣੁ ਦੀਜੈ
॥੪॥ ਜੈਸੇ ਜਲ ਮਹਿ ਕਮਲੁ ਨਿਰਾਲਮੁ ਸੁਰਗਾਈ ਨੈ ਸਾਣੇ ॥ ਸੁਰਤਿ ਸਬਦਿ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਤਰੀਐ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
ਵਖਾਣੇ ॥ ਰਹਹਿ ਇਕਾਂਤਿ ਏਕੋ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਆਸਾ ਮਾਹਿ ਨਿਰਾਸੇ ॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਦੇਖਿ ਦਿਖਾਏ ਨਾਨਕੁ
ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੇ ॥੫॥ ਸੁਣਿ ਸੁਆਮੀ ਅਰਦਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ਪ੍ਰਭਤ ਸਾਚੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਰੋਸੁ ਨ ਕੀਜੈ ਉਤਰੁ ਦੀਜੈ ਕਿਤ
ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਦੁਆਰੇ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਚਲਤਤ ਸਚ ਘਰਿ ਬੈਸੈ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ਕਰਤਾ
ਲਾਗੈ ਸਾਚਿ ਪਿਆਰੇ ॥੬॥ ਹਾਟੀ ਬਾਟੀ ਰਹਹਿ ਨਿਰਾਲੇ ਰੁਖਿ ਬਿਰਖਿ ਤਦਿਆਨੇ ॥ ਕੰਦ ਮੂਲੁ ਅਹਾਰੇ

ਖਾਈਐ ਅਤਥੁ ਬੋਲੈ ਗਿਆਨੇ ॥ ਤੀਰਥਿ ਨਾਈਐ ਸੁਖੁ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕਾਈ ॥ ਗੋਰਖ ਪੂਤ
 ਲੋਹਾਰੀਪਾ ਬੋਲੈ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਬਿਧਿ ਸਾਈ ॥੭॥ ਹਾਟੀ ਬਾਟੀ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ਪਰ ਘਰਿ ਚਿਤੁ ਨ ਡੁਲਾਈ ॥
 ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਨੁ ਟੇਕ ਨ ਟਿਕੈ ਨਾਨਕ ਭੂਖ ਨ ਜਾਈ ॥ ਹਾਟੁ ਪਟਣੁ ਘਰੁ ਗੁਰੁ ਦਿਖਾਇਆ ਸਹਜੇ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰੇ
 ॥ ਖੰਡਿਤ ਨਿਦਾ ਅਲਪ ਅਹਾਰਾਂ ਨਾਨਕ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੮॥ ਦਰਸਨੁ ਭੇਖ ਕਰਹੁ ਜੋਗਿੰਦ੍ਰਾ ਮੁੰਦਾ ਝੋਲੀ ਖਿੰਥਾ ॥
 ਬਾਰਹ ਅੰਤਰਿ ਏਕੁ ਸਰੇਵਹੁ ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਇਕ ਪਥਾ ॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਨੁ ਸਮਝਾਈਐ ਪੁਰਖਾ ਬਾਹੁਡਿ ਚੋਟ ਨ
 ਖਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜੈ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਇਵ ਪਾਈਐ ॥੯॥ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਸੁਦ੍ਰਾ ਹਤਮੈ
 ਮਮਤਾ ਦੂਰਿ ਕਰੀ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਅਛਾਕਾਰੁ ਨਿਵਾਰੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁ ਸਮਝ ਪਰੀ ॥ ਖਿੰਥਾ ਝੋਲੀ ਭਰਿਪੁਰਿ
 ਰਹਿਆ ਨਾਨਕ ਤਾਰੈ ਏਕੁ ਹਰੀ ॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ਪਰਖੈ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਤ ਖਰੀ ॥੧੦॥ ਊੰਧਤ ਖਪਰੁ
 ਪਂਚ ਭੂ ਟੋਪੀ ॥ ਕਾਹਿੰਦਿਆ ਕਡਾਸਣੁ ਮਨੁ ਜਾਗੋਟੀ ॥ ਸਤੁ ਸਤੋਖੁ ਸੰਜਮੁ ਹੈ ਨਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ
 ॥੧੧॥ ਕਵਨੁ ਸੁ ਗੁਪਤਾ ਕਵਨੁ ਸੁ ਸੁਕਤਾ ॥ ਕਵਨੁ ਸੁ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਜੁਗਤਾ ॥ ਕਵਨੁ ਸੁ ਆਵੈ ਕਵਨੁ ਸੁ
 ਜਾਇ ॥ ਕਵਨੁ ਸੁ ਤ੃ਭਵਣਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੧੨॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਗੁਪਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਕਤਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ
 ਸਬਦਿ ਸੁ ਜੁਗਤਾ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਬਿਨਸੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧੩॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਬਾਧਾ
 ਸਰਪਨਿ ਖਾਧਾ ॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਖੋਇਆ ਕਿਤ ਕਰਿ ਲਾਧਾ ॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਕਿਤ ਕਰਿ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥ ਇਹੁ
 ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੈ ਸੁ ਗੁਰੁ ਹਮਾਰਾ ॥੧੪॥ ਦੁਰਮਤਿ ਬਾਧਾ ਸਰਪਨਿ ਖਾਧਾ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਖੋਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਧਾ ॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਅੰਧੇਰਾ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਤਮੈ ਮੇਟਿ ਸਮਾਇ ॥੧੫॥ ਸੁਨਨ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਦੀਜੈ ਬੰਧੁ ॥ ਤਡੈ ਨ
 ਛਸਾ ਪਡੈ ਨ ਕੰਧੁ ॥ ਸਹਜ ਗੁਫਾ ਘਰੁ ਜਾਣੈ ਸਾਚਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਭਾਵੈ ਸਾਚਾ ॥੧੬॥ ਕਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਗ੍ਰਹੁ
 ਤਜਿਆਂ ਤਦਾਸੀ ॥ ਕਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਇਹੁ ਭੇਖੁ ਨਿਵਾਸੀ ॥ ਕਿਸੁ ਕਖਰ ਕੇ ਤੁਮ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਸਾਥੁ
 ਲਮਧਾਵਹੁ ਪਾਰੇ ॥੧੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਤ ਭਏ ਤਦਾਸੀ ॥ ਦਰਸਨ ਕੈ ਤਾਈ ਭੇਖ ਨਿਵਾਸੀ ॥ ਸਾਚ ਕਖਰ ਕੇ ਹਮ
 ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰੇ ॥੧੮॥ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਪੁਰਖਾ ਜਨਮੁ ਵਟਾਇਆ ॥ ਕਾਹੇ ਕਤ ਤੁਝੁ

ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਾਇਆ ॥ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਖਾਈ ॥ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਜੋਤਿ ਨਿਰਂਤਰਿ ਪਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਦੰਤਾ
 ਕਿਤ ਖਾਈਐ ਸਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥੧੬॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਜਨਮੇ ਗਵਨੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥ ਅਨਹਤਿ
 ਰਾਤੇ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਾਇਆ ॥ ਮਨਸਾ ਆਸਾ ਸਬਦਿ ਜਲਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋਤਿ ਨਿਰਂਤਰਿ ਪਾਈ ॥ ਕੈ ਗੁਣ ਮੇਟੇ
 ਖਾਈਐ ਸਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾਰੇ ਤਾਰਣਹਾਰੁ ॥੨੦॥ ਆਦਿ ਕਤ ਕਵਨੁ ਬੀਚਾਰੁ ਕਥੀਅਲੇ ਸੁਨਨ ਕਹਾ ਘਰ ਵਾਸੋ
 ॥ ਗਿਆਨ ਕੀ ਮੁਦ੍ਰਾ ਕਵਨ ਕਥੀਅਲੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਕਵਨ ਨਿਵਾਸੋ ॥ ਕਾਲ ਕਾ ਠੀਗਾ ਕਿਤ ਜਲਾਈਅਲੇ ਕਿਤ
 ਨਿਰਭਤ ਘਰਿ ਜਾਈਐ ॥ ਸਹਜ ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਆਸਣੁ ਜਾਣੈ ਕਿਤ ਛੇਂਦੇ ਬੈਰਾਈਐ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ
 ਮਾਰੈ ਤਾ ਨਿਜ ਘਰਿ ਹੋਵੈ ਵਾਸੋ ॥ ਜਿਨਿ ਰਚਿ ਰਚਿਆ ਤਿਸੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੋ ॥੨੧॥ ਕਹਾ
 ਤੇ ਆਵੈ ਕਹਾ ਇਹੁ ਜਾਵੈ ਕਹਾ ਇਹੁ ਰਹੈ ਸਮਾਈ ॥ ਏਸੁ ਸਬਦ ਕਤ ਜੋ ਅਰਥਾਵੈ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਈ
 ॥ ਕਿਤ ਤਤੈ ਅਵਿਗਤੈ ਪਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰੇ ॥ ਆਪੇ ਸੁਰਤਾ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬੀਚਾਰੇ ॥
 ਹੁਕਮੇ ਆਵੈ ਹੁਕਮੇ ਜਾਵੈ ਹੁਕਮੇ ਰਹੈ ਸਮਾਈ ॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਚੁ ਕਮਾਵੈ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਸਬਦੇ ਪਾਈ ॥੨੨॥
 ਆਦਿ ਕਤ ਬਿਸਮਾਦੁ ਬੀਚਾਰੁ ਕਥੀਅਲੇ ਸੁਨਨ ਨਿਰਂਤਰਿ ਵਾਸੁ ਲੀਆ ॥ ਅਕਲਪਤ ਮੁਦ੍ਰਾ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ
 ਬੀਚਾਰੀਅਲੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਾਚਾ ਸਰਬ ਜੀਆ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਅਵਿਗਤਿ ਸਮਾਈਐ ਤਤੁ ਨਿਰਂਜਨੁ ਸਹਜਿ ਲਹੈ
 ॥ ਨਾਨਕ ਦੂਜੀ ਕਾਰ ਨ ਕਰਣੀ ਸੇਵੈ ਸਿਖੁ ਸੁ ਖੋਜਿ ਲਹੈ ॥ ਹੁਕਮੁ ਬਿਸਮਾਦੁ ਹੁਕਮਿ ਪਛਾਣੈ ਜੀਅ ਜੁਗਤਿ
 ਸਚੁ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ॥ ਆਪੁ ਮੇਟਿ ਨਿਰਾਲਮੁ ਹੋਵੈ ਅਂਤਰਿ ਸਾਚੁ ਜੋਗੀ ਕਹੀਐ ਸੋਈ ॥੨੩॥ ਅਵਿਗਤੋ ਨਿਰਮਾਇਲੁ
 ਤਪਜੇ ਨਿਰਗੁਣ ਤੇ ਸਰਗੁਣੁ ਥੀਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪਰਚੈ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ਲੀਆ ॥
 ਏਕੇ ਕਤ ਸਚੁ ਏਕਾ ਜਾਣੈ ਹਉਮੈ ਦੂਜਾ ਦੂਰਿ ਕੀਆ ॥ ਸੋ ਜੋਗੀ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੈ ਅਂਤਰਿ ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸੁ
 ਥੀਆ ॥ ਜੀਕਤੁ ਮਰੈ ਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੂੜੈ ਅਂਤਰਿ ਜਾਣੈ ਸਰਬ ਦਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਤ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ਆਪੁ
 ਪਛਾਣੈ ਸਰਬ ਜੀਆ ॥੨੪॥ ਸਾਚੈ ਤਪਜੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ਸਾਚੇ ਸੂਚੇ ਏਕ ਮਿਆ ॥ ਝੂਠੇ ਆਵਹਿ ਠਵਰ ਨ
 ਪਾਵਹਿ ਦੂਜੈ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਭਿਆ ॥ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਮਿਟੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਆਪੇ ਪਰਖੈ ਬਖਸਿ ਲਿਆ ॥ ਏਕਾ

ਬੇਦਨ ਫੌਜੈ ਬਿਆਪੀ ਨਾਮੁ ਰਸਾਇਣੁ ਵੀਸਰਿਆ ॥ ਸੋ ਕੂੜੈ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁੜਾਏ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁ ਮੁਕਤੁ
 ਭਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾਰੇ ਤਾਰਣਹਾਰਾ ਹਉਮੈ ਫੌਜਾ ਪਰਹਰਿਆ ॥੨੫॥ ਮਨਮੁਖਿ ਭ੍ਰਲੈ ਜਮ ਕੀ ਕਾਣਿ ॥ ਪਰ
 ਘਰੁ ਜੋਹੈ ਹਾਣੇ ਹਾਣਿ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਭਰਮਿ ਭਵੈ ਬੇਬਾਣਿ ॥ ਵੇਮਾਰਗਿ ਮੂਸੈ ਮੰਤ੍ਰ ਮਸਾਣਿ ॥ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨੈ ਲਵੈ
 ਕੁਬਾਣਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਜਾਣਿ ॥੨੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੇ ਕਾ ਭਤ ਪਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਾਣੀ ਅਘੜੁ
 ਘੜਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਰਮ ਪਢੁ ਪਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੋਮਿ ਰੋਮਿ ਹਰਿ
 ਧਿਆਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥੨੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਚੈ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਚੈ ਤਰੀਐ
 ਤਾਰੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਚੈ ਸੁ ਸਬਦਿ ਗਿਆਨੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਚੈ ਅੰਤਰ ਬਿਧਿ ਜਾਨੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਅਲਖ
 ਅਪਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰੁ ॥੨੮॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥੁ ਕਥੈ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਬਹੈ
 ਸਪਰਵਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਪੀਐ ਅੰਤਰਿ ਪਿਆਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਸਬਦਿ ਅਚਾਰਿ ॥ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਜਾਣੈ
 ਜਾਣਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਜਾਲਿ ਸਮਾਈ ॥੨੯॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਰਤੀ ਸਾਚੈ ਸਾਜੀ ॥ ਤਿਸ ਮਹਿ ਓਪਤਿ ਖਪਤਿ
 ਸੁ ਬਾਜੀ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਧੈ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥ ਸਾਚਿ ਰਤਤ ਪਤਿ ਸਿਤ ਘਰਿ ਜਾਇ ॥ ਸਾਚ ਸਬਦ ਬਿਨੁ ਪਤਿ
 ਨਹੀ ਪਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਤ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥੩੦॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਸਟ ਸਿਧੀ ਸਭਿ ਬੁਧੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਭਵਜਲੁ ਤਰੀਐ ਸਚ ਸੁਧੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਰ ਅਪਸਰ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਵਿਰਤਿ ਨਰਵਿਰਤਿ ਪਛਾਣੈ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਾਰੇ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੩੧॥ ਨਾਮੇ ਰਾਤੇ ਹਉਮੈ ਜਾਇ
 ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਚਿ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਪਾਵਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਨਾਮਿ
 ਰਤੇ ਤ੃ਭਵਣ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੩੨॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਿਧ ਗੋਸਟਿ ਹੋਇ ॥
 ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਤਪੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਗੁਣ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ
 ਨਾਵੈ ਬੋਲੈ ਸਭੁ ਵੇਕਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਕਤ ਜੈਕਾਰੁ ॥੩੩॥ ਪ੍ਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
 ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਸਚਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥ ਬਾਰਹ ਮਹਿ ਜੋਗੀ ਭਰਮਾਏ ਸੰਨਿਆਸੀ ਛਿਅ ਚਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਜੋ

ਮਰਿ ਜੀਵੈ ਸੋ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸਭਿ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਾਗੇ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਵਡੇ ਸੇ
 ਕਡਭਾਗੀ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਰਖਿਆ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੩੪॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਤਨੁ ਲਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਖੈ ਰਤਨੁ
 ਸੁਭਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਏ ਤਿਸੁ
 ਭਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚੋਟ ਨ ਖਾਵੈ ॥੩੫॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਝਿਸਨਾਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਗੈ ਸਹਜਿ
 ਧਿਆਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਤ ਭੰਜਨੁ ਪਰਧਾਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਕਰਾਏ ॥
 ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥੩੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਸਕ ਸਿਮੂਤਿ ਬੇਦ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਭੇਦ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੈਰ ਵਿਰੋਧ ਗਵਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਗਲੀ ਗਣਤ ਮਿਟਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰੰਗ ਰਾਤਾ ॥
 ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖਸਮੁ ਪਛਾਤਾ ॥੩੭॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਰਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਘਾਲ ਨ ਪਵੰਡ ਥਾਇ ॥
 ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਨੂਆ ਅਤਿ ਡੋਲਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਤ੃ਪਤਿ ਨਹੀ ਕਿਖੁ ਖਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਬਿਸੀਅਰੁ ਡਸੈ ਮਰਿ
 ਵਾਟ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘਾਟੇ ਘਾਟ ॥੩੮॥ ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੈ ॥ ਅਵਗਣ ਮੇਟੈ ਗੁਣਿ
 ਨਿਸਤਾਰੈ ॥ ਮੁਕਤਿ ਮਹਾ ਸੁਖ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ ਹਾਰਿ ॥ ਤਨੁ ਹਟਡੀ ਝਿਹੁ ਮਨੁ
 ਵਣਯਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰਾ ॥੩੯॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਾਂਧਿਓ ਸੇਤੁ ਬਿਧਾਤੈ ॥ ਲਮਕਾ ਲੂਟੀ ਦੈਤ ਸੰਤਾਪੈ
 ॥ ਰਾਮਚੰਦਿ ਮਾਰਿਓ ਅਹਿ ਰਾਵਣੁ ॥ ਭੇਦੁ ਬਭੀਖਣ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਚਾਇਣੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਇਰਿ ਪਾਹਣ ਤਾਰੇ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸ ਤਉਧਾਰੇ ॥੪੦॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚੂਕੈ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ਮਾਣੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਖੋਟੇ ਖਰੇ ਪਛਾਣੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਗੈ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਰਗਹ ਸਿਫਤਿ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਬੰਧੁ ਨ ਪਾਇ ॥੪੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਤਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੇ ਕੇ
 ਗੁਣ ਗਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੈ ਰਹੈ ਸਮਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਪਤਿ ਊਤਮ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸਗਲ ਭਵਣ ਕੀ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥੪੨॥ ਕਵਣ ਮੂਲੁ ਕਵਣ ਮਤਿ ਵੇਲਾ ॥ ਤੇਰਾ ਕਵਣੁ ਗੁਰੁ ਜਿਸ ਕਾ ਤੂ ਚੇਲਾ ॥
 ਕਵਣ ਕਥਾ ਲੇ ਰਹਹੁ ਨਿਰਾਲੇ ॥ ਬੋਲੈ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਤੁਮ ਬਾਲੇ ॥ ਏਸੁ ਕਥਾ ਕਾ ਦੇਇ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਭਵਜਲੁ

सबदि लम्घावणहारु ॥४३॥ पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ॥ सबदु गुरु सुरति धुनि चेला ॥ अकथ
 कथा ले रहउ निराला ॥ नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ एकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥ गुरमुखि
 हउमै अगनि निवारी ॥४४॥ मैण के दंत किउ खाईअै सारु ॥ जितु गरबु जाइ सु कवणु आहारु ॥
 हिवै का घरु मंदरु अगनि पिराहनु ॥ कवन गुफा जितु रहै अवाहनु ॥ इत उत किस कउ जाणि
 समावै ॥ कवन धिआनु मनु मनहि समावै ॥४५॥ हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥ दूजा मेटै एको होवै ॥
 जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥ सबदु कमाईअै खाईअै सारु ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ नानक अगनि
 मरै सतिगुर कै भाणै ॥४६॥ सच भै राता गरबु निवारै ॥ एको जाता सबदु वीचारै ॥ सबदु वसै सचु
 अंतरि हीआ ॥ तनु मनु सीतलु रंगि रंगीआ ॥ कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारे ॥ नानक नदरी नदरि
 पिआरे ॥४७॥ कवन मुखि चंदु हिवै घरु छाइआ ॥ कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ॥ कवन मुखि
 कालु जोहत नित रहै ॥ कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥ कवनु जोधु जो कालु संघारै ॥ बोलै बाणी नानकु
 बीचारै ॥४८॥ सबदु भाखत ससि जोति अपारा ॥ ससि घरि सूरु वसै मिटै अंधिआरा ॥ सुखु दुखु
 सम करि नामु अधारा ॥ आपे पारि उतारणहारा ॥ गुर परचै मनु साचि समाइ ॥ प्रणवति नानकु
 कालु न खाइ ॥४९॥ नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥ बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥ ततो ततु मिलै
 मनु मानै ॥ दूजा जाइ इकतु घरि आनै ॥ बोलै पवना गगनु गरजै ॥ नानक निहचलु मिलणु सहजै
 ॥५०॥ अंतरि सुन्नं बाहरि सुन्नं तृभवण सुन्न मसुन्नं ॥ चउथे सुन्नै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुन्नं ॥
 घटि घटि सुन्न का जाणै भेत ॥ आदि पुरखु निरंजन देत ॥ जो जनु नाम निरंजन राता ॥ नानक सोई
 पुरखु बिधाता ॥५१॥ सुन्नो सुन्नु कहै सभु कोई ॥ अनहत सुन्नु कहा ते होई ॥ अनहत सुन्नि रते से कैसे
 ॥ जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥ ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥ नानक गुरमुखि मनु समझाहि
 ॥५२॥ नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥ तह अनहत सुन्न वजावहि तूरे ॥ साचै राचे देखि हजूरे ॥ घटि

ਘਟਿ ਸਾਚੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਗੁਪਤੀ ਬਾਣੀ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪਰਖਿ ਲਏ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੫੩॥ ਸਹਜ
 ਭਾਇ ਮਿਲੀਐ ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਗੈ ਨੀਦ ਨ ਸੋਵੈ ॥ ਸੁਨਨ ਸਬਦੁ ਅਪਰੰਪਰਿ ਧਾਰੈ ॥ ਕਹਤੇ ਮੁਕਤੁ ਸਬਦਿ
 ਨਿਸਤਾਰੈ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਦੀਖਿਆ ਸੇ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਮਿਲਣ ਨਹੀ ਭਾਤੇ ॥੫੪॥ ਕੁਕੁਧਿ
 ਚਵਾਵੈ ਸੋ ਕਿਤੁ ਠਾਇ ॥ ਕਿਤ ਤਤੁ ਨ ਬੂੜ੍ਹੈ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥ ਜਮ ਦਰਿ ਬਾਧੇ ਕੋਇ ਨ ਰਾਖੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਨਾਹੀ
 ਪਤਿ ਸਾਖੈ ॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਬੂੜ੍ਹੈ ਪਾਵੈ ਪਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਨ ਬੂੜ੍ਹੈ ਗਵਾਰੁ ॥੫੫॥ ਕੁਕੁਧਿ ਮਿਟੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ
 ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ॥ ਤਤੁ ਨ ਚੀਨੈ ਮਨਮੁਖੁ ਜਲਿ ਜਾਇ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਵਿਛੁਡਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥
 ਮਾਨੈ ਹੁਕਮੁ ਸਭੇ ਗੁਣ ਗਿਆਨ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ॥੫੬॥ ਸਾਚੁ ਕਖਰੁ ਧਨੁ ਪਲੈ ਹੋਇ ॥ ਆਪਿ
 ਤਰੈ ਤਾਰੇ ਭੀ ਸੋਇ ॥ ਸਹਜਿ ਰਤਾ ਬੂੜ੍ਹੈ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਰੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਹਿਆ
 ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਰਿ ਪੈ ਸਚ ਭਾਇ ॥੫੭॥ ਸੁ ਸਬਦ ਕਾ ਕਹਾ ਵਾਸੁ ਕਥੀਅਲੇ ਜਿਤੁ ਤਰੀਐ ਭਵਜਲੁ
 ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਤੈ ਸਤ ਅੰਗੁਲ ਵਾਈ ਕਹੀਐ ਤਿਸੁ ਕਹੁ ਕਵਨੁ ਅਧਾਰੇ ॥ ਬੋਲੈ ਖੇਲੈ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਵੈ ਕਿਤ ਕਰਿ ਅਲਖੁ
 ਲਖਾਏ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਆਮੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕੁ ਪ੍ਰਣਵੈ ਅਪਣੇ ਮਨ ਸਮਝਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੇ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ਕਰਿ
 ਨਦਰੀ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਆਪੇ ਦਾਨਾ ਆਪੇ ਬੀਨਾ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਸਮਾਏ ॥੫੮॥ ਸੁ ਸਬਦ ਕਤ ਨਿਰੰਤਰਿ ਵਾਸੁ
 ਅਲਖਿੰ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਸੋਈ ॥ ਪਵਨ ਕਾ ਵਾਸਾ ਸੁਨਨ ਨਿਵਾਸਾ ਅਕਲ ਕਲਾ ਧਰ ਸੋਈ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸਬਦੁ
 ਘਟ ਮਹਿ ਵਸੈ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਗਵਾਏ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਸਬਦਿ ਗੁਰੁ
 ਭਵਸਾਗਰੁ ਤਰੀਐ ਇਤ ਉਤ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥ ਚਿਹਨੁ ਵਰਨੁ ਨਹੀ ਛਾਇਆ ਮਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੈ
 ॥੫੯॥ ਤੈ ਸਤ ਅੰਗੁਲ ਵਾਈ ਅਤਥੁ ਸੁਨਨ ਸਚੁ ਆਹਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੋਲੈ ਤਤੁ ਬਿਰੋਲੈ ਚੀਨੈ ਅਲਖ ਅਪਾਰੇ ॥
 ਤੈ ਗੁਣ ਮੇਟੈ ਸਬਦੁ ਵਸਾਏ ਤਾ ਮਨਿ ਚੂਕੈ ਅਛਕਾਰੇ ॥ ਅਨੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰੇ
 ॥ ਸੁਖਮਨਾ ਇੜਾ ਪਿੰਗੁਲਾ ਬੂੜ੍ਹੈ ਜਾ ਆਪੇ ਅਲਖੁ ਲਖਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਹੁ ਤੇ ਊਪਰਿ ਸਾਚਾ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਸਮਾਏ ॥੬੦॥ ਮਨ ਕਾ ਜੀਤ ਪਵਨੁ ਕਥੀਅਲੇ ਪਵਨੁ ਕਹਾ ਰਸੁ ਖਾਈ ॥ ਗਿਆਨ ਕੀ ਸੁਦ੍ਰਾ ਕਵਨ ਅਤਥੁ

सिध की कवन कर्माई ॥ बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥ सबदि रते अंमृत
 रसु पाड़िआ साचे रहे अधाई ॥ कवन बुधि जितु असथिरु रहीअै कितु भोजनि तृपतासै ॥ नानक दुखु
 सुखु सम करि जापै सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥ ६१ ॥ रंगि न राता रसि नही माता ॥ बिनु गुर सबदै
 जलि बलि ताता ॥ बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥ पवनु न साधिआ सचु न अराधिआ ॥ अकथ
 कथा ले सम करि रहै ॥ तउ नानक आतम राम कउ लहै ॥ ६२ ॥ गुर परसादी रंगे राता ॥ अंमृतु
 पीआ साचे माता ॥ गुर वीचारी अगनि निवारी ॥ अपिउ पीओ आतम सुखु धारी ॥ सचु अराधिआ
 गुरमुखि तरु तारी ॥ नानक बूझै को वीचारी ॥ ६३ ॥ इहु मनु मैगलु कहा बसीअले कहा बसै इहु
 पवना ॥ कहा बसै सु सबदु अउधू ता कउ चूकै मन का भवना ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता
 निज घरि वासा इहु मनु पाए ॥ आपै आपु खाइ ता निरमलु होवै धावतु वरजि रहाए ॥ किउ मूलु
 पछाणै आतमु जाणै किउ ससि घरि सूरु समावै ॥ गुरमुखि हउमै विचहु खोवै तउ नानक सहजि समावै
 ॥ ६४ ॥ इहु मनु निहचलु हिरदै वसीअले गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥ नाभि पवनु घरि आसणि
 बैसै गुरमुखि खोजत ततु लहै ॥ सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै तृभवण जोति सु सबदि लहै ॥ खोवै
 दूख भूख साचे की साचे ही तृपतासि रहै ॥ अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ॥ नानकु
 आखै सचु सुभाखै सचि रपै रंगु कबहू न जावै ॥ ६५ ॥ जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता
 ॥ नाभि कमल असथंभु न होतो ता पवनु कवन घरि सहता ॥ रूपु न होतो रेख न काई ता सबदि कहा
 लिव लाई ॥ रकतु बिंदु की मड़ी न होती मिति कीमति नही पाई ॥ वरनु भेखु असरूपु न जापी
 किउ करि जापसि साचा ॥ नानक नामि रते बैरागी इब तब साचो साचा ॥ ६६ ॥ हिरदा देह न होती
 अउधू तउ मनु सुनि रहै बैरागी ॥ नाभि कमलु असथंभु न होतो ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी
 ॥ रूपु न रेखिआ जाति न होती तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥ गउनु गगनु जब तबहि न

होतउ तृभवण जोति आपे निरंकारु ॥ वरनु भेखु असरूपु सु एको सबदु विडाणी ॥ साच बिना
 सूचा को नाही नानक अकथ कहाणी ॥ ६७ ॥ कितु कितु विधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखिं
 बिनसि जाई ॥ हउमै विचि जगु उपजै पुरखा नामि विसरिअै दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु गिआनु
 ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥ नामे नामि
 रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे ॥ नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिटै बीचारे ॥ ६८ ॥
 गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइ ॥ गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइ ॥ गुरमुखि मनु भीजै विरला
 बूझै कोइ ॥ गुरमुखि निज घरि वासा होइ ॥ गुरमुखि जोगी जुगति पछाणै ॥ गुरमुखि नानक एको जाणै
 ॥ ६९ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे नामु
 पाइआ न जाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा गरबि गुबारि ॥
 नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि ॥ ७० ॥ गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥ गुरमुखि साचु रखिआ
 उर धारि ॥ गुरमुखि जगु जीता जमकालु मारि बिदारि ॥ गुरमुखि दरगह न आवै हारि ॥ गुरमुखि
 मेलि मिलाए सुो जाणै ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै ॥ ७१ ॥ सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू
 बिनु नावै जोगु न होई ॥ नामे राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥ नामै ही ते सभु परगटु
 होवै नामे सोझी पाई ॥ बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥ सतिगुर ते नामु
 पाईअै अउधू जोग जुगति ता होई ॥ करि बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई
 ॥ ७२ ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥ तू आपे गुपता आपे परगटु आपे
 सभि रंग माणै ॥ साधिक सिध गुरु बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥ मागहि नामु पाइ इह
 भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै ॥ अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥
 नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥ ७३ ॥ १ ॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਮਕਲੀ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੋਥੈ ਕੀਰੈ ਪੂਰਬਾਣੀ ਕੀ ਧੁਨੀ ॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਹਜੈ ਦਾ ਖੇਤੁ ਹੈ
ਜਿਸ ਨੋ ਲਾਏ ਭਾਤ ॥ ਨਾਉ ਬੀਜੇ ਨਾਉ ਤਗਵੈ ਨਾਮੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥ ਹਉਮੈ ਏਹੋ ਬੀਜੁ ਹੈ ਸਹਸਾ ਗਿਆ
ਵਿਲਾਇ ॥ ਨਾ ਕਿਛੁ ਬੀਜੇ ਨ ਤਗਵੈ ਜੋ ਬਖਸੇ ਸੋ ਖਾਇ ॥ ਅੰਮੈ ਸੇਤੀ ਅੰਮੁ ਰਲਿਆ ਬਹੁਡਿ ਨ ਨਿਕਸਿਆ ਜਾਇ
॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਲਤੁ ਹੈ ਕੇਖਹੁ ਲੋਕਾ ਆਇ ॥ ਲੋਕੁ ਕਿ ਕੇਖੈ ਬਪੁੜਾ ਜਿਸ ਨੋ ਸੋਝੀ ਨਾਹਿ ॥ ਜਿਸੁ ਕੇਖਾਲੇ ਸੋ
ਕੇਖੈ ਜਿਸੁ ਵਸਿਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਦੁਖ ਕਾ ਖੇਤੁ ਹੈ ਦੁਖੁ ਬੀਜੇ ਦੁਖੁ ਖਾਇ ॥ ਦੁਖ ਵਿਚਿ ਜਨਮੈ
ਦੁਖਿ ਮਰੈ ਹਉਮੈ ਕਰਤ ਵਿਹਾਇ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਨ ਸੁਝੰਈ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥ ਜੋ ਟੇਵੈ ਤਿਸੈ ਨ ਜਾਣਈ ਦਿਤੇ
ਕਤ ਲਪਟਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਵਣਾ ਅਕਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥੨॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ
ਮਿਲਿਐ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਸੋਇ ॥ ਸੁਖੈ ਏਹੁ ਬਿਕੇਕੁ ਹੈ ਅੰਤਰੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥ ਅਗਿਆਨ ਕਾ
ਭ੍ਰਮੁ ਕਟੀਐ ਗਿਆਨੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਸੋਇ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਚੈ
ਤਖਤੁ ਰਚਾਇਆ ਬੈਸਣ ਕਤ ਜਾਈ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਹੈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੁਣਾਈ ॥ ਆਪੇ ਕੁਦਰਤਿ ਸਾਜੀਅਨੁ
ਕਰਿ ਮਹਲ ਸਰਾਈ ॥ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਦੁਇ ਚਾਨਣੇ ਪੂਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਆਪੇ ਕੇਖੈ ਸੁਣੇ ਆਪਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ
ਧਿਆਈ ॥੧॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਚੈ ਪਾਤਿਸਾਹ ਤ੍ਰਾਂ ਸਚੀ ਨਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਕਬੀਰ ਮਹਿਦੀ ਕਰਿ ਕੈ
ਘਾਲਿਆ ਆਪੁ ਪੀਸਾਇ ਪੀਸਾਇ ॥ ਤੈ ਸਹ ਬਾਤ ਨ ਪੁਛੀਆ ਕਬਹੂ ਨ ਲਾਈ ਪਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਨਾਨਕ
ਮਹਿਦੀ ਕਰਿ ਕੈ ਰਖਿਆ ਸੋ ਸਹੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਆਪੇ ਪੀਸੈ ਆਪੇ ਘਸੈ ਆਪੇ ਹੀ ਲਾਇ ਲਏਇ ॥ ਇਹੁ
ਪਿਰਮ ਪਿਆਲਾ ਖਸਮ ਕਾ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕੇਕੀ ਸੂਸਟਿ ਤਪਾਈਅਨੁ ਸਭ ਹੁਕਮਿ ਆਵੈ ਜਾਇ
ਸਮਾਹੀ ॥ ਆਪੇ ਕੇਖਿ ਵਿਗਸਦਾ ਟ੍ਰਾਂ ਜੋ ਨਾਹੀ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਖੁ ਤ੍ਰਾਂ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਹੀ ॥ ਸਭਨਾ ਤੇਰਾ
ਯੋਰੁ ਹੈ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਹੀ ॥ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡ ਮੈ ਨਾਹਿ ਕੋ ਕਿਸੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਭਰਮਿ

ਭੁਲਾਈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਿਰੀ ਫਾਵੀ ਹੋਈ ਭਾਲਿ ॥ ਸੋ ਸਹੁ ਸਾਂਤਿ ਨ ਦੇਵੰਈ ਕਿਆ ਚਲੈ ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ
 ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਅਂਤਰਿ ਰਖੀਐ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਘਰਿ ਬੈਠਿਆ ਸਹੁ ਪਾਇਆ ਜਾ ਕਿਰਪਾ ਕੀਤੀ ਕਰਤਾਰਿ
 ॥੧॥ ਮ: ੩ ॥ ਧੰਧਾ ਧਾਵਤ ਦਿਨੁ ਗਇਆ ਰੈਣਿ ਗਵਾਈ ਸੋਇ ॥ ਕੂਝੁ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਇਆ ਮਨਮੁਖਿ ਚਲਿਆ
 ਰੋਇ ॥ ਸਿਰੈ ਉਪਰਿ ਜਮ ਡੰਡੁ ਹੈ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਦੇ ਨ ਚੇਤਿਐ ਫਿਰਿ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਹੋਇ
 ॥੨॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਜਮ ਡੰਡੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ
 ॥੩॥ ਪਤਡੀ ॥ ਇਕਿ ਆਪਣੀ ਸਿਫਤੀ ਲਾਇਅਨੁ ਦੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਤੀ ॥ ਇਕਨਾ ਨੋ ਨਾਉ ਬਖਸਿਐਓਨੁ ਅਸਥਿਰੁ
 ਹਰਿ ਸਤੀ ॥ ਪਤਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੋ ਹੁਕਮਿ ਕਰਹਿ ਭਗਤੀ ॥ ਏਨਾ ਨੋ ਭਤ ਅਗਲਾ ਪੂਰੀ ਬਣਤ ਬਣਤੀ ॥ ਸਭੁ
 ਇਕੋ ਹੁਕਮੁ ਵਰਤਦਾ ਮੰਨਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥੪॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਕਬੀਰ ਕਸਤਟੀ ਰਾਮ ਕੀ ਝੂਠਾ ਟਿਕੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਰਾਮ
 ਕਸਤਟੀ ਸੋ ਸਹੈ ਜੋ ਮਰਜੀਵਾ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮ: ੩ ॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਾਰੀਐ ਕਿਤ ਕਰਿ ਮਿਰਤਕੁ ਹੋਇ
 ॥ ਕਹਿਆ ਸਬਦੁ ਨ ਮਾਨੈ ਹਤਮੈ ਛੱਡੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਤਮੈ ਛੁਟੈ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤੁ ਸੋ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥੨॥ ਮ: ੩ ॥ ਜੀਵਤ ਮਰਣਾ ਸਭੁ ਕੋ ਕਹੈ ਜੀਵਨ
 ਮੁਕਤਿ ਕਿਤ ਹੋਇ ॥ ਭੈ ਕਾ ਸੰਜਮੁ ਜੇ ਕਰੇ ਦਾਰੁ ਭਾਤ ਲਾਏਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਬਿਖੁ ਭਵਜਲੁ
 ਨਾਮਿ ਤਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੩॥ ਪਤਡੀ ॥ ਟ੍ਰੌਜਾ ਭਾਤ ਰਚਾਇਅਨੁ
 ਕੈ ਗੁਣ ਵਰਤਾਰਾ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਤਪਾਇਅਨੁ ਹੁਕਮਿ ਕਮਾਵਨਿ ਕਾਰਾ ॥ ਪਂਡਿਤ ਪਡਦੇ ਜੋਤਕੀ ਨਾ
 ਬ੍ਰਿਝਾਹਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ਹੈ ਸਚੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਸਚਿ ਸਬਦਿ
 ਸਮਾਈ ॥੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮ: ੩ ॥ ਮਨ ਕਾ ਝੂਠਾ ਝੂਠੁ ਕਮਾਵੈ ॥ ਮਾਇਆ ਨੋ ਫਿਰੈ ਤਪਾ ਸਦਾਵੈ ॥ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ
 ਸਭਿ ਤੀਰਥ ਗਹੈ ॥ ਓਹੁ ਤਪਾ ਕੈਸੇ ਪਰਮ ਗਤਿ ਲਹੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਤਪਾ ਮੋਖਿਤਨੁ
 ਪਾਵੈ ॥੧॥ ਮ: ੩ ॥ ਸੋ ਤਪਾ ਜਿ ਇਹੁ ਤਪੁ ਘਾਲੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਮਿਲੈ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ
 ਇਹੁ ਤਪੁ ਪਰਖਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਤਪਾ ਦੁਗਹਿ ਪਾਵੈ ਮਾਣੁ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਰਾਤਿ ਦਿਨਸੁ ਤਪਾਇਅਨੁ ਸੰਸਾਰ

की वरतणि ॥ गुरमती घटि चानणा आनेरु बिनासणि ॥ हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ वणि
तृणि ॥ सभु किछु आपे आपि है गुरमुखि सदा हरि भणि ॥ सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई ॥५॥
सलोक मः ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जिन के चित महि भरमु ॥ तिस दै दितै नानका तेहो
जेहा धरमु ॥ अभै निरंजनु परम पदु ता का भूखा होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥१॥
मः ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ॥ उदरै कारणि आपणे बहले भेखि
करेनि ॥ अभिआगत सई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥ भालि लहनि सहु आपणा निज घरि
रहणु करेनि ॥२॥ पउड़ी ॥ अंबरु धरति विछोड़िअनु विचि सचा असराउ ॥ घरु दरु सभो सचु है जिसु
विचि सचा नाउ ॥ सभु सचा हुकमु वरतदा गुरमुखि सचि समाउ ॥ सचा आपि तखतु सचा बहि सचा
करे निआउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा गुरमुखि अलखु लखाई ॥६॥ सलोकु मः ३ ॥ रैणाइर माहि
अन्नतु है कूड़ी आवै जाइ ॥ भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥ रैणाइर माहि सभु किछु है करमी
पलै पाइ ॥ नानक नउ निधि पाईअै जे चलै तिसै रजाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सहजे सतिगुरु न सेविओ
विचि हउमै जनमि बिनासु ॥ रसना हरि रसु न चखिओ कमलु न होइओ परगासु ॥ बिखु खाधी मनमुखु
मुआ माइआ मोहि विणासु ॥ इकसु हरि के नाम विणु ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ जा आपे नदरि करे
प्रभु सचा ता होवै दासनि दासु ॥ ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरु की कबहि न छोडै पासु ॥ जित जल
महि कमलु अलिपतो वरतै तित विचे गिरह उदासु ॥ जन नानक करे कराइआ सभु को जित भावै
तिव हरि गुणतासु ॥२॥ पउड़ी ॥ छतीह जुग गुबारु सा आपे गणत कीनी ॥ आपे सृसटि सभ
साजीअनु आपि मति दीनी ॥ सिमृति सासत साजिअनु पाप पुन्न गणत गणीनी ॥ जिसु बुझाए सो
बुझसी सचै सबदि पतीनी ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे बखसि मिलाई ॥७॥ सलोक मः ३ ॥ इहु
तनु सभो रतु है रतु बिनु तनु न होइ ॥ जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ रतु न होइ ॥ भै पड़िअै

ਤਨੁ ਖੀਣੁ ਹੋਇ ਲੋਭ ਰਤੁ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਜਿਤ ਬੈਸ਼ਂਤਰਿ ਧਾਤੁ ਸੁਧੁ ਹੋਇ ਤਿਤ ਹਰਿ ਕਾ ਭਤ ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ
 ਗਵਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸੋਹਣੇ ਜੋ ਰਤੇ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਰਾਮਕਲੀ ਰਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਤਾ ਬਨਿਆ
 ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਕਮਲੁ ਬਿਗਸਿਆ ਤਾ ਸਤਪਿਆ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰੁ ॥ ਭਰਮੁ ਗਇਆ ਤਾ ਜਾਗਿਆ
 ਚੂਕਾ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਾਰੁ ॥ ਤਿਸ ਨੋ ਰੂਪੁ ਅਤਿ ਅਗਲਾ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਦਾ ਰਖੈ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ
 ਸੋਭਾਵਤੀ ਨਾਰਿ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਸੀਗਾਰੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਜਾਸਨਿ ਜਨਮੁ ਸਭੁ ਹਾਰਿ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਸੀਗਾਰੁ ਕਰਹਿ
 ਨਿਤ ਜਨਮਹਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥ ਸੈਸਾਰੈ ਵਿਚਿ ਸੋਭ ਨ ਪਾਇਨੀ ਅਗੈ ਜਿ ਕਰੇ ਸੁ ਜਾਣੈ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਏਕੁ
 ਹੈ ਦੁਹੁ ਵਿਚਿ ਹੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਚੰਗੈ ਮੰਦੈ ਆਪਿ ਲਾਇਅਨੁ ਸੋ ਕਰਨਿ ਜਿ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾਰੁ ॥੨॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਯੇਵੇ ਸਾਁਤਿ ਨ ਆਰਵੰਦ ਦ੍ਰਿਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥ ਜੇ ਬਹੁਤੇਰਾ ਲੋਚੀਐ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਪਾਇਆ ਨ
 ਜਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਵਿਕਾਰੁ ਹੈ ਦ੍ਰਿਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇ ॥ ਤਿਨ ਜਨਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਚੁਕਵੰਦ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ॥
 ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਸੋ ਖਾਲੀ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥ ਤਿਨ ਜਮ ਕੀ ਤਲਬ ਨ ਹੋਵੰਦ ਨਾ ਓਇ ਦੁਖ
 ਸਹਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਥੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥੩॥ ਪਤਡੀ ॥ ਆਪਿ ਅਲਿਪਤੁ ਸਦਾ ਰਹੈ ਹੋਰਿ ਧੰਧੈ
 ਸਭਿ ਧਾਵਹਿ ॥ ਆਪਿ ਨਿਹਚਲੁ ਅਚਲੁ ਹੈ ਹੋਰਿ ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਖੁ
 ਪਾਵਹਿ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਈਐ ਸਚਿ ਸਿਫਤਿ ਸਮਾਵਹਿ ॥ ਸਚਾ ਗਹਿਰ ਗੰਮੀਰੁ ਹੈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੁਜ਼ਾਈ
 ॥੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤ੍ਰੂ ਸਭੋ ਕਰਤੈ ਸਚੁ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਜੋ ਬੁੜੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਏ ਸਚੁ ॥
 ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਕਰਤਾ ਫਿਰੈ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੁੜੈ ਸਚੁ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਾ ਭਾਣਾ ਮਨੇ ਸੋ ਭਗਤੁ ਹੋਇ ਵਿਣੁ ਮਨੇ ਕਚੁ
 ਨਿਕਚੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖ ਬੋਲਿ ਨ ਜਾਣਨੀ ਓਨਾ ਅੰਦਰਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਅਛਕਾਰੁ ॥ ਓਇ ਥਾਤ ਕੁਥਾਤ ਨ
 ਜਾਣਨੀ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਵਿਕਾਰੁ ॥ ਓਇ ਆਪਣੈ ਸੁਆਇ ਆਇ ਬਹਿ ਗਲਾ ਕਰਹਿ ਓਨਾ ਮਾਰੇ ਜਮੁ ਜੰਦਾਰੁ
 ॥ ਅਗੈ ਦੁਰਗਹ ਲੇਖੈ ਮੰਗਿਐ ਮਾਰਿ ਖੁਆਰੁ ਕੀਚਹਿ ਕੂਡਿਆਰ ॥ ਏਹ ਕੂਡੈ ਕੀ ਮਲੁ ਕਿਤ ਤਤਰੈ ਕੋਈ ਕਢਹੁ
 ਡਿਹੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਾ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਏ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਟਣਹਾਰੁ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਨਾਮੇ ਆਰਾਧੇ

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਕਰਹੁ ਸਭਿ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥ ਮਲੁ ਕੂੜੀ ਨਾਮਿ ਤਤਾਰੀਅਨੁ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਹੋਆ ਸਚਿਆਰੁ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਦੇ ਏਹਿ ਚਲਤ ਹਹਿ ਸੋ ਜੀਵਤ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਨਾਹਿ ਕਿਸੁ ਆਖਿ
 ਸੁਣਾਈਐ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇ ਜਿਥੁ ਹਉਮੈ ਜਾਈਐ ॥ ਰਸ ਕਸ ਸਾਦਾ ਬਾਹਰਾ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈਐ ॥
 ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਦੇਡਿ ਆਪਿ ਲਾਏ ਮਿਲਾਈਐ ॥ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਰਖਿਓਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਸੈ ਪਿਆਈ
 ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਬਾਬਾਣੀਆ ਕਹਾਣੀਆ ਪੁਤ ਸਪੁਤ ਕਰੇਨਿ ॥ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਵੈ ਸੁ ਮਨਿ ਲੈਨਿ ਸੇਈ
 ਕਰਮ ਕਰੇਨਿ ॥ ਜਾਇ ਪੁਛਹੁ ਸਿਮ੍ਰਤਿ ਸਾਸਤ ਬਿਆਸ ਸੁਕ ਨਾਰਦ ਬਚਨ ਸਭ ਸੂਸਟਿ ਕਰੇਨਿ ॥ ਸਚੈ ਲਾਏ
 ਸਚਿ ਲਗੇ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਮਾਲੇਨਿ ॥ ਨਾਨਕ ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਭਏ ਜਿ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੇਨਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰੂ
 ਜਿਨਾ ਕਾ ਅੰਧੁਲਾ ਸਿਖ ਭੀ ਅੰਧੇ ਕਰਮ ਕਰੇਨਿ ॥ ਓਡਿ ਭਾਣੈ ਚਲਨਿ ਆਪਣੈ ਨਿਤ ਝੂਠੋ ਝੂਠੁ ਬੋਲੇਨਿ ॥ ਕੂੜੁ
 ਕੁਸਤੁ ਕਮਾਵਦੇ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਸਦਾ ਕਰੇਨਿ ॥ ਓਡਿ ਆਪਿ ਢੁਕੇ ਪਰ ਨਿੰਦਕਾ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਢੋਕੇਨਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਤੁ
 ਓਡਿ ਲਾਏ ਤਿਤੁ ਲਗੇ ਤਡਿ ਬਪੁਡੇ ਕਿਆ ਕਰੇਨਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭ ਨਦਰੀ ਅੰਦਰਿ ਰਖਦਾ ਜੇਤੀ ਸਿਸਟਿ ਸਭ
 ਕੀਤੀ ॥ ਇਕਿ ਕੂੜਿ ਕੁਸਤਿ ਲਾਇਅਨੁ ਮਨਮੁਖ ਵਿਗੂਤੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਅੰਦਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤੀ ॥
 ਜਿਨ ਕਤ ਪੋਤੈ ਪੁਨ੍ਨੁ ਹੈ ਤਿਨ੍ਹ ਵਾਤਿ ਸਿਪੀਤੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਚੁ ਸਿਫਤਿ ਸਨਾਈ ॥੧੦॥
 ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸਤੀ ਪਾਪੁ ਕਰਿ ਸਤੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਦੀਖਿਆ ਘਰਿ ਦੇਵਣ ਜਾਹਿ ॥ ਇਸਤਰੀ ਪੁਰਖੈ ਖਟਿਐ
 ਭਾਤ ॥ ਭਾਵੈ ਆਵਤ ਭਾਵੈ ਜਾਤ ॥ ਸਾਸਤੁ ਬੇਦੁ ਨ ਮਾਨੈ ਕੋਇ ॥ ਆਪੋ ਆਪੈ ਪੂਜਾ ਹੋਇ ॥ ਕਾਜੀ ਹੋਇ ਕੈ ਬਹੈ
 ਨਿਆਇ ॥ ਫੇਰੇ ਤਸਬੀ ਕਰੇ ਖੁਦਾਇ ॥ ਵਢੀ ਲੈ ਕੈ ਹਕੁ ਗਵਾਏ ॥ ਜੇ ਕੋ ਪੁਛੈ ਤਾ ਪਡਿ ਸੁਣਾਏ ॥ ਤੁਰਕ ਮੰਤ੍ਰ
 ਕਨਿ ਰਿਦੈ ਸਮਾਹਿ ॥ ਲੋਕ ਮੁਹਾਵਹਿ ਚਾੜੀ ਖਾਹਿ ॥ ਚਤਕਾ ਦੇ ਕੈ ਸੁਚਾ ਹੋਇ ॥ ਐਸਾ ਛਿਟ੍ਠੁ ਕੇਖਹੁ ਕੋਇ ॥ ਜੋਗੀ
 ਗਿਰਹੀ ਜਟਾ ਬਿਭੂਤ ॥ ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਰੋਵਹਿ ਪੂਤ ॥ ਜੋਗੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜੁਗਤਿ ਗਰਵਾਈ ॥ ਕਿਤੁ ਕਾਰਣਿ ਸਿਰ
 ਛਾਈ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਕਲਿ ਕਾ ਏਹੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਆਪੇ ਆਖਣੁ ਆਪੇ ਜਾਣੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਛਿਟ੍ਠੁ ਕੈ ਘਰਿ ਛਿਟ੍ਠੁ
 ਆਵੈ ॥ ਸੂਤੁ ਜਨੇਤੁ ਪਡਿ ਗਲਿ ਪਾਵੈ ॥ ਸੂਤੁ ਪਾਇ ਕਰੇ ਬੁਰਿਆਈ ॥ ਨਾਤਾ ਧੋਤਾ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥ ਮੁਸਲਮਾਨੁ

करे वडिआई ॥ विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥ राहु दसाइ ओथै को जाइ ॥ करणी बाझहु भिसति
 न पाइ ॥ जोगी कै घरि जुगति दसाई ॥ तितु कारणि कनि मुंद्रा पाई ॥ मुंद्रा पाइ फिरै संसारि ॥
 जिथै किथै सिरजणहारु ॥ जेते जीअ तेते वाटाऊ ॥ चीरी आई ढिल न काऊ ॥ एथै जाणै सु जाइ सिजाणै
 ॥ होरु फकड़ु छिदू मुसलमाणै ॥ सभना का दरि लेखा होइ ॥ करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ सचो सचु
 वखाणै कोइ ॥ नानक अगै पुछ न होइ ॥ ੨॥ पउड़ी ॥ हरि का मंदरु आखीअै काइआ कोटु गड़ु ॥
 अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पड़ु ॥ हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिड़ु ॥
 मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कडु ॥ सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई
 ॥ ੧੧॥ सलोक मः ੧ ॥ ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जंत फिरहि ॥ ना सति मूँ
 मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥ ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥
 ना सति हसती बधे संगल ना सति गाई धाहु चरहि ॥ जिसु हथि सिधि देवै जे सोई जिस नो देइ तिसु
 आइ मिलै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥ सभि घट मेरे हउ सभना
 अंदरि जिसहि खुआई तिसु कउणु कहै ॥ जिसहि दिखाला वाटड़ी तिसहि भुलावै कउणु ॥ जिसहि
 भुलाई पंध सिरि तिसहि दिखावै कउणु ॥ ੧॥ मः ੧ ॥ सो गिरही जो निग्रहु करै ॥ जपु तपु संजमु
 भीखिआ करै ॥ पुन्न दान का करे सरीरु ॥ सो गिरही गंगा का नीरु ॥ बोलै ईसरु सति सरूपु ॥ परम
 तंत महि रेख न रूपु ॥ ੨॥ मः ੧ ॥ सो अउधूती जो धूपै आपु ॥ भिखिआ भोजनु करै संतापु ॥ अउहठ
 पटण महि भीखिआ करै ॥ सो अउधूती सिव पुरि चड़ै ॥ बोलै गोरखु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न
 रूपु ॥ ੩॥ मः ੧ ॥ सो उदासी जि पाले उदासु ॥ अरथ उरथ करे निरंजन वासु ॥ चंद सूरज की पाए
 गंडि ॥ तिसु उदासी का पड़ै न कंधु ॥ बोलै गोपी चंदु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ੪॥
 मः ੧ ॥ सो पाखंडी जि काइआ पखाले ॥ काइआ की अगनि ब्रह्मु परजाले ॥ सुपनै बिंदु न देई

झरणा ॥ तिसु पाखंडी जरा न मरणा ॥ बोलै चरपटु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥५॥
 मः १ ॥ सो बैरागी जि उलटे ब्रह्मु ॥ गगन मंडल महि रोपै थंमु ॥ अहिनिसि अंतरि रहै धिआनि ॥
 ते बैरागी सत समानि ॥ बोलै भरथरि सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥६॥ मः १ ॥ किउ मरै
 मंदा किउ जीवै जुगति ॥ कन्न पड़ाइ किआ खाजै भुगति ॥ आसति नासति एको नात ॥ कउणु सु अखरु
 जितु रहै हिआउ ॥ धूप छाव जे सम करि सहै ॥ ता नानकु आखै गुरु को कहै ॥ छिअ वरतारे वरतहि
 पूत ॥ ना संसारी ना अउधूत ॥ निरंकारि जो रहै समाइ ॥ काहे भीखिआ मंगणि जाइ ॥७॥ पउड़ी ॥
 हरि मंदरु सोई आखीऔ जिथहु हरि जाता ॥ मानस देह गुर बचनी पाइआ सभु आतम रामु पछाता ॥
 बाहरि मूलि न खोजीऔ घर माहि बिधाता ॥ मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी तिनी जनमु गवाता
 ॥ सभ महि इकु वरतदा गुर सबदी पाइआ जाई ॥१२॥ सलोक मः ३ ॥ मूरखु होवै सो सुणै मूरख का
 कहणा ॥ मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ॥ मूरखु ओहु जि मुगधु है अद्विकारे मरणा ॥
 एतु कमाणै सदा दुखु दुख ही महि रहणा ॥ अति पिआरा पवै खूहि किहु संजमु करणा ॥ गुरमुखि होइ सु
 करे वीचारु ओसु अलिपतो रहणा ॥ हरि नामु जपै आपि उधरै ओसु पिछै डुबदे भी तरणा ॥ नानक जो
 तिसु भावै सो करे जो देइ सु सहणा ॥१॥ मः १ ॥ नानकु आखै रे मना सुणीऔ सिख सही ॥ लेखा खु
 मंगेसीआ बैठा कठि वही ॥ तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥ अजराईलु फरेसता होसी
 आइ तई ॥ आवणु जाणु न सुझाई भीड़ी गली फही ॥ कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥२॥
 पउड़ी ॥ हरि का सभु सरीर है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥ हरि की कीमति न पवै किछु कहणु न
 जापै ॥ गुर परसादी सालाहीऔ हरि भगती रापै ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ अद्विकारु गवापै ॥
 सभु किछु हरि का खेलु है गुरमुखि किसै बुझाई ॥१३॥ सलोकु मः १ ॥ सद्वासर दान दे इंद्रु रोआइआ
 ॥ परस रामु रोवै घरि आइआ ॥ अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥ औसी दरगह मिलै सजाइ ॥ रोवै रामु

ਨਿਕਾਲਾ ਭਡਿਆ ॥ ਸੀਤਾ ਲਖਮਣੁ ਵਿਛੁਡਿ ਗਡਿਆ ॥ ਰੋਵੈ ਦਹਸਿਰੁ ਲਮਕ ਗਵਾਇ ॥ ਜਿਨਿ ਸੀਤਾ ਆਦੀ
 ਡਤੁਰੁ ਵਾਇ ॥ ਰੋਵਹਿ ਪਾੱਡਵ ਭਏ ਮਜੂਰ ॥ ਜਿਨ ਕੈ ਸੁਆਮੀ ਰਹਤ ਹਟੂਰਿ ॥ ਰੋਵੈ ਜਨਮੇਜਾ ਖੁਡਿ ਗਡਿਆ ॥
 ਏਕੀ ਕਾਰਣਿ ਪਾਪੀ ਭਡਿਆ ॥ ਰੋਵਹਿ ਸੇਖ ਮਸਾਡਿਕ ਪੀਰ ॥ ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਮਤੁ ਲਾਗੈ ਭੀਡਿ ॥ ਰੋਵਹਿ ਰਾਜੇ
 ਕਨਨ ਪੜਾਇ ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਮਾਗਹਿ ਭੀਖਿਆ ਜਾਇ ॥ ਰੋਵਹਿ ਕਿਰਪਨ ਸੰਚਹਿ ਧਨੁ ਜਾਇ ॥ ਪੰਡਿਤ ਰੋਵਹਿ
 ਗਿਆਨੁ ਗਵਾਇ ॥ ਬਾਲੀ ਰੋਵੈ ਨਾਹਿ ਭਤਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦੁਖੀਆ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਮਨ੍ਨੇ ਨਾਤ ਸੋਈ ਜਿਣਿ ਜਾਇ
 ॥ ਅਤਤੀ ਕਰਮ ਨ ਲੇਖੈ ਲਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੰਨਿਐ ਅਵਰਿ ਕਾਰਾ ਸਭਿ ਬਾਦਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਮੰਨਿਆ ਮਨੀਐ ਬੁਝੀਐ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕਾਇਆ ਛਾਸ ਧੁਰਿ ਮੇਲੁ ਕਰਤੈ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥
 ਸਭ ਮਹਿ ਗੁਪਤੁ ਵਰਤਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਤੁਚਰੈ ਗੁਣ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਸਚੀ
 ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪੇ ਦੇਹਿ ਵਡਿਆਈ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕ
 ਮਃ ੨ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਧਾ ਹੋਇ ਕੈ ਰਤਨਾ ਪਰਖਣ ਜਾਇ ॥ ਰਤਨਾ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਈ ਆਵੈ ਆਪੁ ਲਖਾਇ ॥੧॥
 ਮਃ ੨ ॥ ਰਤਨਾ ਕੇਰੀ ਗੁਥਲੀ ਰਤਨੀ ਖੋਲੀ ਆਇ ॥ ਵਖਰ ਤੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਦੁਹਾ ਰਹੀ ਸਮਾਇ ॥ ਜਿਨ ਗੁਣੁ
 ਪਲੈ ਨਾਨਕਾ ਮਾਣਕ ਵਣਜਹਿ ਸੋਇ ॥ ਰਤਨਾ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ ਅੰਧੇ ਕਤਹਿ ਲੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਤ
 ਦਰਵਾਜੇ ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਹੈ ਦਸਕੈ ਗੁਪਤੁ ਰਖੀਜੈ ॥ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ਨ ਖੁਲਨੀ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਖੁਲੀਜੈ ॥ ਅਨਹਦ
 ਵਾਜੇ ਧੁਨਿ ਵਜਦੇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੁਣੀਜੈ ॥ ਤਿਤੁ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਚਾਨਣਾ ਕਰਿ ਭਗਤਿ ਮਿਲੀਜੈ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ
 ਵਰਤਦਾ ਜਿਨਿ ਆਪੇ ਰਚਨ ਰਚਾਈ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥ ਅੰਧੇ ਕੈ ਰਾਹਿ ਦਸਿਐ ਅੰਧਾ ਹੋਇ ਸੁ ਜਾਇ ॥
 ਹੋਇ ਸੁਜਾਖਾ ਨਾਨਕਾ ਸੋ ਕਿਤ ਤੁੜਾਡਿ ਪਾਇ ॥ ਅੰਧੇ ਏਹਿ ਨ ਆਖੀਅਨਿ ਜਿਨ ਮੁਖਿ ਲੋਇਣ ਨਾਹਿ ॥ ਅੰਧੇ
 ਸੇਈ ਨਾਨਕਾ ਖਸਮਹੁ ਧੁਥੇ ਜਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਸਾਹਿਬਿ ਅੰਧਾ ਜੋ ਕੀਆ ਕਰੇ ਸੁਜਾਖਾ ਹੋਇ ॥ ਜੇਹਾ ਜਾਣੈ ਤੇਹੋ
 ਕਰਤੈ ਜੇ ਸਤ ਆਖੈ ਕੋਇ ॥ ਜਿਥੈ ਸੁ ਵਸਤੁ ਨ ਜਾਪਈ ਆਪੇ ਵਰਤਤ ਜਾਣਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗਾਹਕੁ ਕਿਤ ਲਾਏ ਸਕੈ
 ਨ ਵਸਤੁ ਪਛਾਣਿ ॥੨॥ ਮਃ ੨ ॥ ਸੋ ਕਿਤ ਅੰਧਾ ਆਖੀਐ ਜਿ ਹੁਕਮਹੁ ਅੰਧਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੁਝਾਈ

अंधा कहीअै सोइ ॥३॥ पउड़ी ॥ काइआ अंदरि गडु कोटु है सभि दिसंतर देसा ॥ आपे ताड़ी
 लाईअनु सभ महि परवेसा ॥ आपे सूसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा ॥ गुर सेवा ते जाणिआ सचु
 परगटीएसा ॥ सभु किछु सचो सचु है गुरि सोझी पाई ॥१६॥ सलोक मः १ ॥ सावणु राति अहाडु दिहु
 कामु क्रोधु दुड़ि खेत ॥ लबु वत्र दरोगु बीउ हाली राहकु हेत ॥ हलु बीचारु विकार मण हुकमी खटे
 खाइ ॥ नानक लेखै मंगिअै अउतु जणेदा जाइ ॥१॥ मः १ ॥ भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद
 ॥ हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र वखत संजोगु ॥ नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥
 नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥२॥ पउड़ी ॥ मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै ॥
 दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै ॥ गुरमुखि नामु धिआईअै मथि ततु कढोलै ॥ अंतरि परगासु
 घटि चानणा हरि लधा टोलै ॥ आपे भरमि भुलाइदा किछु कहणु न जाई ॥१७॥ सलोक मः २ ॥
 नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥ ओथै हटु
 न चलई ना को किरस करेइ ॥ सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ जीआ का आहारु जीअ
 खाणा एहु करेइ ॥ विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही
 हेइ ॥१॥ मः १ ॥ नानक इहु जीउ मछुली झीवरु तृसना कालु ॥ मनूआ अंधु न चेतई पड़ै अचिंता
 जालु ॥ नानक चितु अचेतु है चिंता बधा जाइ ॥ नदरि करे जे आपणी ता आपे लए मिलाइ ॥२॥
 पउड़ी ॥ से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता ॥ गुरमुखि सचा मनि वसै सचु सउदा कीता ॥
 सभु किछु घर ही माहि है वडभागी लीता ॥ अंतरि तृसना मरि गई हरि गुण गावीता ॥ आपे मेलि
 मिलाइअनु आपे देइ बुझाई ॥१८॥ सलोक मः १ ॥ वेलि पिंजाइआ कति वुणाइआ ॥ कटि कुटि
 करि खुंबि चड़ाइआ ॥ लोहा वठे दरजी पाड़े सूई धागा सीवै ॥ इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक
 जीवत जीवै ॥ होइ पुराणा कपड़ु पाटै सूई धागा गंठै ॥ माहु पखु किहु चलै नाही घड़ी मुहतु किछु

ਛਾਠੈ ॥ ਸਚੁ ਪੁਰਾਣਾ ਹੋਵੈ ਨਾਹੀ ਸੀਤਾ ਕਦੇ ਨ ਪਾਟੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੋ ਸਚਾ ਤਿਚਰੁ ਜਾਪੈ ॥੧॥
 ਮਃ ੧ ॥ ਸਚ ਕੀ ਕਾਤੀ ਸਚੁ ਸਭੁ ਸਾਰੁ ॥ ਘਾੜਤ ਤਿਸ ਕੀ ਅਪਰ ਅਪਾਰ ॥ ਸਬਦੇ ਸਾਣ ਰਖਾਈ ਲਾਇ ॥
 ਗੁਣ ਕੀ ਥੇਕੈ ਵਿਚਿ ਸਮਾਇ ॥ ਤਿਸ ਦਾ ਕੁਠਾ ਹੋਵੈ ਸੇਖੁ ॥ ਲੋਹੂ ਲਕੁ ਨਿਕਥਾ ਵੇਖੁ ॥ ਹੋਇ ਹਲਾਲੁ ਲਗੈ ਹਕਿ
 ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਦੀਦਾਰਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਕਮਰਿ ਕਟਾਰਾ ਬੰਕੁੜਾ ਬੰਕੇ ਕਾ ਅਸਵਾਰੁ ॥ ਗਰਬੁ ਨ
 ਕੀਜੈ ਨਾਨਕਾ ਮਤੁ ਸਿਰਿ ਆਵੈ ਭਾਰੁ ॥੩॥ ਪਤੱਡੀ ॥ ਸੋ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਲੈ ॥ ਸਚੁ
 ਧਿਆਇਨਿ ਸੇ ਸਚੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਖਰਚੁ ਧਨੁ ਪਲੈ ॥ ਭਗਤ ਸੋਹਨਿ ਗੁਣ ਗਾਵਦੇ ਗੁਰਮਤਿ ਅਚਲੈ ॥ ਰਤਨ ਬੀਚਾਰੁ
 ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭਲੈ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਦਾ ਆਪੇ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
 ਆਸਾ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਕੋਇ ਨਿਰਸਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋ ਮਰਿ ਜੀਵਿਆ ਸਹਿਲਾ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਨਾ ਕਿਛੁ ਆਸਾ ਹਥਿ ਹੈ ਕੇਤ ਨਿਰਸਾ ਹੋਇ ॥ ਕਿਆ ਕਰੇ ਏਹ ਬਪੁੜੀ ਜਾਂ ਭੂਲਾਏ ਸੋਇ ॥੨॥ ਪਤੱਡੀ ॥
 ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਸੰਸਾਰ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਦਾਤਾ ਦਾਤਾਰ ਨਿਹਚਲੁ ਏਹੁ ਧਨੁ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਆਰਾਧੇ
 ਨਿਰਮਲੁ ਸੋਇ ਜਨੁ ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਅਗਮੁ ਰਸਨਾ ਏਕੁ ਭਨੁ ॥ ਰਖਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬਤਿ ਨਾਨਕੁ ਬਲਿ ਜਾਈ
 ॥੨੦॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸਰਵਰ ਛਾਸ ਧੁਰੇ ਹੀ ਮੇਲਾ ਖਸਮੈ ਏਕੈ ਭਾਣਾ ॥ ਸਰਵਰ ਅੰਦਰਿ ਹੀਰਾ ਮੌਤੀ
 ਸੋ ਛਾਸਾ ਕਾ ਖਾਣਾ ॥ ਬਗੁਲਾ ਕਾਗੁ ਨ ਰਹੈ ਸਰਵਰਿ ਜੇ ਹੋਵੈ ਅਤਿ ਸਿਆਣਾ ॥ ਓਨਾ ਰਿਜਕੁ ਨ ਪਿੜਿਆਂ
 ਓਥੈ ਓਨਾ ਹੋਰੇ ਖਾਣਾ ॥ ਸਚਿ ਕਮਾਣੈ ਸਚੋ ਪਾਈਐ ਕੂੜੈ ਕੂੜਾ ਮਾਣਾ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੌ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ
 ਜਿਨਾ ਧੁਰੇ ਪੈਧਾ ਪਰਵਾਣਾ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਤਜਲਾ ਜੇ ਕੋ ਚਿਤਿ ਕਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਈ ਸੇਵੀਐ ਸਦਾ
 ਸਦਾ ਜੋ ਦੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਈ ਸੇਵੀਐ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਅਕਗੁਣ ਵੰਜਨਿ ਗੁਣ ਰਖਹਿ ਮਨਿ ਸੁਖੁ
 ਕਵੈ ਆਇ ॥੨॥ ਪਤੱਡੀ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਕਰਤਦਾ ਆਪਿ ਤਾਡੀ ਲਾਈਅਨੁ ॥ ਆਪੇ ਹੀ ਉਪਦੇਸਦਾ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਤੀਆਈਅਨੁ ॥ ਇਕਿ ਆਪੇ ਤਝਾਡਿ ਪਾਇਅਨੁ ਇਕਿ ਭਗਤੀ ਲਾਇਅਨੁ ॥ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ
 ਸੋ ਬੁਝਸੀ ਆਪੇ ਨਾਇ ਲਾਈਅਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

रामकली की वार महला ५

੧੯੮ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ५ ॥ जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मंत्र दृढ़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पड़िआ संजोगु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ इकु सजणु सभि सजणा इकु वैरी सभि वादि ॥ गुरि पूरै देखालिआ विणु नावै सभ बादि ॥ साकत दुरजन भरमिआ जो लगे ढूजै सादि ॥ जन नानकि हरि प्रभु बुझिआ गुर सतिगुर कै परसादि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ थटणहारै थाटु आपे ही थटिआ ॥ आपे पूरा साहु आपे ही खटिआ ॥ आपे करि पासारु आपे रंग रटिआ ॥ कुदरति कीम न पाइ अलख ब्रह्मटिआ ॥ अगम अथाह बेअंत परै परटिआ ॥ आपे वड पातिसाहु आपि वजीरटिआ ॥ कोई न जाणै कीम केवडु मटिआ ॥ सचा साहिबु आपि गुरमुखि परगटिआ ॥ १ ॥ सलोकु मः ५ ॥ सुणि सजण प्रीतम मेरिआ मै सतिगुरु देहु दिखालि ॥ हउ तिसु देवा मनु आपणा नित हिरदै रखा समालि ॥ इकसु सतिगुर बाहरा धिगु जीवणु संसारि ॥ जन नानक सतिगुरु तिना मिलाइओनु जिन सद ही वरतै नालि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ मेरै अंतरि लोचा मिलण की किउ पावा प्रभ तोहि ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु जो मेले प्रीतमु मोहि ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोइ ॥ जन नानक सो प्रभु सेविआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ देवणहारू दातारु कितु मुखि सालाहीअै ॥ जिसु रखै किरपा धारि रिजकु समाहीअै ॥ कोई न किस ही वसि सभना इक धर ॥ पाले बालक वागि दे कै आपि कर ॥ करदा अनद बिनोद किछू न जाणीअै ॥ सरब धार समरथ हउ तिसु कुरबाणीअै ॥ गाईअै राति दिन्नतु गावण जोगिआ ॥ जो गुर की पैरी पाहि तिनी हरि रसु भोगिआ ॥ २ ॥ सलोक मः ५ ॥ भीड़हु मोकलाई कीतीअनु सभ रखे कुटंबै नालि ॥ कारज आपि सवारिअनु सो प्रभ सदा सभालि ॥ प्रभु मात पिता कंठि लाइदा लहुड़े बालक पालि ॥ दिइआल होए सभ जीअ जंत्र हरि

ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਵਿਣੁ ਤੁਥੁ ਹੋਰੁ ਜਿ ਮੰਗਣਾ ਸਿਰਿ ਦੁਖਾ ਕੈ ਦੁਖ ॥ ਦੇਹਿ ਨਾਮੁ ਸਂਤੋਖੀਆ
 ਤਤਰੈ ਮਨ ਕੀ ਭੁਖ ॥ ਗੁਰਿ ਵਣੁ ਤਿਣੁ ਹਰਿਆ ਕੀਤਿਆ ਨਾਨਕ ਕਿਆ ਮਨੁਖ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੋ ਐਸਾ
 ਦਾਤਾਰੁ ਮਨਹੁ ਨ ਕੀਸਰੈ ॥ ਘੜੀ ਨ ਸੁਹਤੁ ਚਸਾ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਾ ਸਰੈ ॥ ਅਨਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੰਗਿ ਕਿਆ ਕੋ ਲੁਕਿ
 ਕਰੈ ॥ ਜਿਸੁ ਪਤਿ ਰਖੈ ਆਪਿ ਸੋ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ॥ ਭਗਤੁ ਗਿਆਨੀ ਤਪਾ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥ ਸੋ ਪੂਰਾ ਪਰਥਾਨੁ
 ਜਿਸ ਨੋ ਕਲੁ ਧਰੈ ॥ ਜਿਸਹਿ ਜਰਾਏ ਆਪਿ ਸੋਈ ਅਜਰੁ ਜਰੈ ॥ ਤਿਸ ਹੀ ਮਿਲਿਆ ਸਚੁ ਮੰਤੁ ਗੁਰ ਮਨਿ ਧਰੈ
 ॥੩॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਰਾਗ ਸੁਰਗੜੇ ਆਲਾਪਤ ਸਭ ਤਿਖ ਜਾਇ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਜੱਤ ਸੁਹਾਵੜੇ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਜਪਦੇ ਨਾਤ ॥ ਜਿਨੀ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕੁ ਅਰਾਧਿਆ ਤਿਨ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਧੂਡਿ ਹਮ ਬਾਛਦੇ
 ਕਰਮੀ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥ ਜੋ ਰਤੇ ਰੰਗਿ ਗੋਵਿਦ ਕੈ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਆਖਾ ਬਿਰਥਾ ਜੀਅ ਕੀ ਹਰਿ
 ਸਜਣੁ ਮੇਲਹੁ ਰਾਇ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਮੇਲਾਇਆ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ਅਗਮ ਰੂਪੁ
 ਅਨਤ ਨ ਕਾਹੂ ਜਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਕੇਲਾ ਘੜੀ ਧਨੁ ਧਨੁ ਮੂਰਤੁ ਪਲੁ ਸਾਰੁ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਦਿਨਸੁ ਸੰਜੋਗੜਾ
 ਜਿਤੁ ਡਿਠਾ ਗੁਰ ਦਰਸਾਰੁ ॥ ਮਨ ਕੀਆ ਇਛਾ ਪੂਰੀਆ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਅਗਮ ਅਪਾਰੁ ॥ ਹਉਮੈ ਤੁਟਾ ਮੋਹੜਾ
 ਇਕੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਲਗਾ ਸੇਵ ਹਰਿ ਉਧਰਿਆ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਿਫਤਿ
 ਸਲਾਹਣੁ ਭਗਤਿ ਵਿਰਲੇ ਦਿਤੀਅਨੁ ॥ ਸਤਪੇ ਜਿਸੁ ਭੰਡਾਰ ਫਿਰਿ ਪੁਛ ਨ ਲੀਤੀਅਨੁ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਲਗਾ ਰੰਗੁ ਸੇ
 ਰੰਗਿ ਰਤਿਆ ॥ ਓਨਾ ਇਕੋ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਇਕਾ ਤਨ ਭਤਿਆ ॥ ਓਨਾ ਪਿਛੈ ਜਗੁ ਭੁੰਚੈ ਭੋਗੰਈ ॥ ਓਨਾ ਪਿਆਰਾ
 ਰਖੁ ਓਨਾਹਾ ਜੋਗੰਈ ॥ ਜਿਸੁ ਮਿਲਿਆ ਗੁਰੁ ਆਇ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣਿਆ ॥ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਜਿ ਖਸਮੈ
 ਭਾਣਿਆ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਹਰਿ ਇਕਸੈ ਨਾਲਿ ਮੈ ਦੌਸਤੀ ਹਰਿ ਇਕਸੈ ਨਾਲਿ ਮੈ ਰੰਗੁ ॥ ਹਰਿ ਇਕੋ ਮੇਰਾ
 ਸਜਣੋ ਹਰਿ ਇਕਸੈ ਨਾਲਿ ਮੈ ਸੰਗੁ ॥ ਹਰਿ ਇਕਸੈ ਨਾਲਿ ਮੈ ਗੋਸਟੇ ਸੁਹੁ ਮੈਲਾ ਕਰੈ ਨ ਭੰਗੁ ॥ ਜਾਣੈ ਬਿਰਥਾ
 ਜੀਅ ਕੀ ਕਦੇ ਨ ਮੋਡੈ ਰੰਗੁ ॥ ਹਰਿ ਇਕੋ ਮੇਰਾ ਮਸਲਤੀ ਭਨਣ ਘੜਨ ਸਮਰਥੁ ॥ ਹਰਿ ਇਕੋ ਮੇਰਾ ਦਾਤਾਰੁ ਹੈ
 ਸਿਰਿ ਦਾਤਿਆ ਜਗ ਹਥੁ ॥ ਹਰਿ ਇਕਸੈ ਦੀ ਮੈ ਟੇਕ ਹੈ ਜੋ ਸਿਰਿ ਸਭਨਾ ਸਮਰਥੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੰਤੁ ਮਿਲਾਇਆ

ਮਸਤਕਿ ਧਰਿ ਕੈ ਹਥੁ ॥ ਵਡਾ ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਰੂ ਮਿਲਾਇਆ ਜਿਨਿ ਤਾਰਿਆ ਸਗਲ ਜਗਤੁ ॥ ਮਨ ਕੀਆ ਇਛਾ
ਪ੍ਰੀਆ ਪਾਇਆ ਧੁਰਿ ਸੰਜੋਗ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਸਦ ਹੀ ਭੋਗੇ ਭੋਗ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਮਨਮੁਖਾ ਕੇਰੀ
ਦੋਸਤੀ ਮਾਇਆ ਕਾ ਸਨਬੰਧੁ ॥ ਕੇਖਦਿਆ ਹੀ ਭਜਿ ਜਾਨਿ ਕਦੇ ਨ ਪਾਇਨਿ ਬੰਧੁ ॥ ਜਿਚਰੁ ਪੈਨਨਿ ਖਾਕਨੇ
ਤਿਚਰੁ ਰਖਨਿ ਗੰਢੁ ॥ ਜਿਤੁ ਦਿਨਿ ਕਿਛੁ ਨ ਹੋਵਈ ਤਿਤੁ ਦਿਨਿ ਬੋਲਨਿ ਗੰਧੁ ॥ ਜੀਅ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ
ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ॥ ਕੂੜਾ ਗੰਢੁ ਨ ਚਲਈ ਚਿਕਡਿ ਪਥਰ ਬੰਧੁ ॥ ਅੰਧੇ ਆਪੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਫਕੜੁ ਪਿਟਨਿ
ਧੰਧੁ ॥ ਝੂਠੈ ਸੋਹਿ ਲਪਟਾਇਆ ਹਤ ਹਤ ਕਰਤ ਬਿਛਾਧੁ ॥ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਆਪਣੀ ਧੁਰੀ ਪੂਰਾ ਕਰਮੁ ਕਰੇਇ ॥
ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੇ ਜਨ ਤਕਰੇ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੋ ਰਤੇ ਦੀਦਾਰ ਸੇਈ ਸਚੁ ਹਾਕੁ ॥ ਜਿਨੀ
ਜਾਤਾ ਖਸਮੁ ਕਿਤ ਲਭੈ ਤਿਨਾ ਖਾਕੁ ॥ ਮਨੁ ਮੈਲਾ ਕੇਕਾਰੁ ਹੋਵੈ ਸੰਗਿ ਪਾਕੁ ॥ ਦਿਸੈ ਸਚਾ ਮਹਲੁ ਖੁਲੈ ਭਰਮ ਤਾਕੁ
॥ ਜਿਸਹਿ ਦਿਖਾਲੇ ਮਹਲੁ ਤਿਸੁ ਨ ਮਿਲੈ ਧਾਕੁ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੁ ਬਿੰਦਕ ਨਦਰਿ ਝਾਕੁ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ
ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਲਾਗੁ ॥ ਤਿਸੈ ਮਿਲੈ ਸੰਤ ਖਾਕੁ ਮਸਤਕਿ ਜਿਸੈ ਭਾਗੁ ॥੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
ਹਰਣਾਖੀ ਕੂ ਸਚੁ ਵੈਣੁ ਸੁਣਾਈ ਜੋ ਤਤ ਕਰੇ ਉਧਾਰਣੁ ॥ ਸੁਨਦਰ ਬਚਨ ਤੁਮ ਸੁਣਹੁ ਛਬੀਲੀ ਪਿਲੁ ਤੈਡਾ ਮਨ
ਸਾਧਾਰਣੁ ॥ ਦੁਰਜਨ ਸੇਤੀ ਨੇਹੁ ਰਚਾਇਆ ਦਸਿ ਵਿਖਾ ਮੈ ਕਾਰਣੁ ॥ ਊਣੀ ਨਾਹੀ ਝ੍ਣਾਣੀ ਨਾਹੀ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ
ਵਿਹੂਣੀ ॥ ਪਿਲੁ ਛੈਲੁ ਛਬੀਲਾ ਛਡਿ ਗਵਾਇਆ ਦੁਰਮਤਿ ਕਰਮਿ ਵਿਹੂਣੀ ॥ ਨਾ ਹਤ ਭੁਲੀ ਨਾ ਹਤ ਚੁਕੀ ਨਾ ਮੈ
ਨਾਹੀ ਦੋਸਾ ॥ ਜਿਤੁ ਹਤ ਲਾਈ ਤਿਤੁ ਹਤ ਲਗੀ ਤ੍ਰ ਸੁਣਿ ਸਚੁ ਸਾਂਦੇਸਾ ॥ ਸਾਈ ਸੁਹਾਗਣਿ ਸਾਈ ਭਾਗਣਿ ਜੈ
ਪਿਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਪਿਰਿ ਅਤਗਣ ਤਿਸ ਕੇ ਸਭਿ ਗਵਾਏ ਗਲ ਸੇਤੀ ਲਾਇ ਸਵਾਰੀ ॥ ਕਰਮਹੀਣ ਧਨ ਕਰੈ
ਬਿਨਤੀ ਕਦਿ ਨਾਨਕ ਆਵੈ ਵਾਰੀ ॥ ਸਭਿ ਸੁਹਾਗਣਿ ਮਾਣਹਿ ਰਲੀਆ ਇਕ ਦੇਵਹੁ ਰਾਤਿ ਮੁਗਰੀ ॥੧॥ ਮਃ ੫
॥ ਕਾਹੇ ਮਨ ਤ੍ਰ ਡੋਲਤਾ ਹਰਿ ਮਨਸਾ ਪੂਰਣਹਾਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇ ਤ੍ਰ ਸਭਿ ਦੁਖ ਵਿਸਾਰਣਹਾਰੁ ॥
ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਆਰਾਧਿ ਮਨ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਜਾਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਰੰਗੁ ਲਗਾ
ਨਿਰਕਾਰ ॥ ਓਨੀ ਛਡਿਆ ਮਾਇਆ ਸੁਆਵੜਾ ਧਨੁ ਸੰਚਿਆ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਅਠੇ ਪਹਰ ਇਕਤੈ ਲਿਵੈ ਮਨੇਨਿ

हुकमु अपारु ॥ जनु नानकु मंगै दानु इकु देहु दरसु मनि पिआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिसु तू आवहि
 चिति तिस नो सदा सुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु जम नाहि दुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु कि
 काड़िआ ॥ जिस दा करता मित्र सभि काज सवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति सो परवाणु जनु ॥ जिसु तू
 आवहि चिति बहुता तिसु धनु ॥ जिसु तू आवहि चिति सो वड परवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति तिनि
 कुल उधारिआ ॥६॥ सलोक मः ५ ॥ अंदरहु अन्ना बाहरहु अन्ना कूड़ी कूड़ी गावै ॥ देही धोवै चक्र बणाए
 माइਆ नो बहु धावै ॥ अंदरि मैलु न उतरै हउमै फिरि फिरि आवै जावै ॥ नीट विआपिआ कामि
 संतापिआ मुखहु हरि हरि कहावै ॥ बैसनो नामु करम हउ जुगता तुह कुटे किआ फलु पावै ॥ ह्यासा विचि
 बैठा बगु न बणई नित बैठा मछी नो तार लावै ॥ जा ह्यास सभा वीचारु करि देखनि ता बगा नालि
 जोड़ु कदे न आवै ॥ ह्यासा हीरा मोती चुगणा बगु डडा भालण जावै ॥ उडरिआ वेचारा बगुला मतु होवै
 मंजु लखावै ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा किसु दोसु दिचै जा हरि एवै भावै ॥ सतिगुरु सरवरु रतनी
 भरपूरे जिसु प्रापति सो पावै ॥ सिख ह्यास सरवरि इकठे होए सतिगुर कै हुकमावै ॥ रतन पदारथ
 माणक सरवरि भरपूरे खाइ खरचि रहे तोटि न आवै ॥ सरवर ह्यासु दूरि न होई करते एवै भावै ॥ जन
 नानक जिस दै मसतकि भागु धुरि लिखिआ सो सिखु गुरु पहि आवै ॥ आपि तरिआ कुटंब सभि तारे
 सभा सृसटि छडावै ॥१॥ मः ५ ॥ पंडितु आखाए बहुती राही कोरड़ मोठ जिनेहा ॥ अंदरि मोहु नित
 भरमि विआपिआ तिसटसि नाही देहा ॥ कूड़ी आवै कूड़ी जावै माइਆ की नित जोहा ॥ सचु कहै ता
 छोहो आवै अंतरि बहुता रोहा ॥ विआपिआ दुरमति कुबुधि कुमूड़ा मनि लागा तिसु मोहा ॥ ठगै सेती
 ठगु रलि आइआ साथु भि इको जेहा ॥ सतिगुरु सराफु नदरी विचदो कढै ताँ उघड़ि आइआ लोहा ॥
 बहुतेरी थाई रलाइ रलाइ दिता उघड़िआ पड़दा अगै आइ खलोहा ॥ सतिगुर की जे सरणी आवै
 फिरि मनूरहु कंचनु होहा ॥ सतिगुरु निखवैरु पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुधु देहा ॥ नानक

ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਲਿ ਸਨੇਹਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਜਿਸੁ
 ਕਿਰਪਾਲੁ ਹੋਵੈ ਤਿਸੁ ਰਿਦੈ ਵਸੇਹਾ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਤਿਸ ਕਾ ਕਟੀਐ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਹਾ ॥੨॥ ਪਉਝੀ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ
 ਭਾਣਾ ਜੰਤੁ ਸੋ ਤੁਧੁ ਬੁਝੰਈ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਣਾ ਜੰਤੁ ਸੁ ਦਰਗਹ ਸਿੰਝੰਈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੇਰੀ ਨਦਰਿ ਹਤਮੈ ਤਿਸੁ ਗੰਝੀ ॥
 ਜਿਸ ਨੋ ਤ੍ਰੂ ਸੰਤੁਸਟੁ ਕਲਮਲ ਤਿਸੁ ਖੰਝੀ ॥ ਜਿਸ ਕੈ ਸੁਆਮੀ ਵਲਿ ਨਿਰਭਤ ਸੋ ਭੰਝੀ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤ੍ਰੂ ਕਿਰਪਾਲੁ ਸਚਾ
 ਸੋ ਥਿਅਈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੇਰੀ ਮਝਿਆ ਨ ਪੋਹੈ ਅਗਨੰਈ ॥ ਤਿਸ ਨੋ ਸਦਾ ਦਿੱਖਿਆਲੁ ਜਿਨਿ ਗੁਰ ਤੇ ਮਤਿ ਲੰਝੀ ॥੭॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਿਰਪਾਲ ਆਪੇ ਬਖ਼ਸਿ ਲੈ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਪੀ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਇ ਪੈ ॥
 ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਵਸੁ ਦ੍ਰੂਖਾ ਨਾਸੁ ਹੋਇ ॥ ਹਥ ਦੇਇ ਆਪਿ ਰਖੁ ਵਿਆਪੈ ਭਤ ਨ ਕੋਇ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ
 ਏਤੈ ਕੰਮਿ ਲਾਇ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ ਜਾਇ ॥ ਸਰਬ ਨਿਰਂਤਰਿ ਖਸਮੁ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਚੁ ਸਚੋ ਸਚੁ ਲਹਿਆ ॥ ਦਿੱਖਿਆ ਕਰਹੁ ਦਿੱਖਿਆਲ ਅਪਣੀ ਸਿਫਤਿ ਦੇਹੁ ॥ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ
 ਨਿਹਾਲ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਏਹ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਏਕੋ ਜਪੀਐ ਮਨੈ ਮਾਹਿ ਇਕਸ ਕੀ ਸਰਣਾਇ ॥ ਇਕਸੁ ਸਿਤ ਕਰਿ
 ਪਿਰਹੜੀ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥ ਇਕੋ ਦਾਤਾ ਮੰਗੀਐ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਪ੍ਰਭੁ
 ਇਕੋ ਇਕੁ ਧਿਆਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਚੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਕਡਭਾਗੀ ਤੇ ਸੰਤ ਜਨ ਜਿਨ ਮਨਿ
 ਕੁਠਾ ਆਇ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਦੂਜਾ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਨਾਮੁ ਤਚਰਾ ਨਾਨਕ
 ਖਸਮ ਰਜਾਇ ॥੨॥ ਪਉਝੀ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤ੍ਰੂ ਰਖਵਾਲਾ ਮਾਰੇ ਤਿਸੁ ਕਤਣੁ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤ੍ਰੂ ਰਖਵਾਲਾ ਜਿਤਾ ਤਿਨੈ
 ਭੈਣੁ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੇਰਾ ਅੰਗੁ ਤਿਸੁ ਮੁਖੁ ਉਜਲਾ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੇਰਾ ਅੰਗੁ ਸੁ ਨਿਰਮਲੀ ਹੂੰ ਨਿਰਮਲਾ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੇਰੀ
 ਨਦਰਿ ਨ ਲੇਖਾ ਪੁਛੀਐ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੇਰੀ ਖੁਸੀ ਤਿਨਿ ਨਤ ਨਿਧਿ ਭੁੰਚੀਐ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤ੍ਰੂ ਪ੍ਰਭ ਵਲਿ ਤਿਸੁ ਕਿਆ
 ਸੁਹਛਂਦਗੀ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੇਰੀ ਮਿਹਰ ਸੁ ਤੇਰੀ ਬੰਦਿਗੀ ॥੮॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹੋਹੁ ਕ੃ਪਾਲ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ
 ਸੰਤਾਂ ਸੰਗਿ ਵਿਹਾਰੇ ॥ ਤੁਧੁ ਭੁਲੇ ਸਿ ਜਮਿ ਜਮਿ ਮਰਦੇ ਤਿਨ ਕਦੇ ਨ ਚੁਕਨਿ ਹਾਰੇ ॥੯॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸਿਮਰਹੁ ਆਪਣਾ ਘਟਿ ਅਵਘਟਿ ਘਟ ਘਾਟ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਂਤਿਆ ਕੋਇ ਨ ਬੰਧੈ ਵਾਟ ॥੧॥ ਪਉਝੀ ॥

ਤਿਥੈ ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਜਿਥੈ ਕੋਇ ਨਾਹਿ ॥ ਓਥੈ ਤੇਰੀ ਰਖ ਅਗਨੀ ਉਦਰ ਮਾਹਿ ॥ ਸੁਣਿ ਕੈ ਜਮ ਕੇ ਦੂਤ ਨਾਇ ਤੈਰੈ
 ਛਡਿ ਜਾਹਿ ॥ ਭਉਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਅਸਗਾਹੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਪਾਰਿ ਪਾਹਿ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਲਗੀ ਪਿਆਸ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸੇਇ
 ਖਾਹਿ ॥ ਕਲਿ ਮਹਿ ਏਹੋ ਪੁਨੁ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਗਾਹਿ ॥ ਸਭਸੈ ਨੋ ਕਿਰਪਾਲੁ ਸਮਾਲੇ ਸਾਹਿ ਸਾਹਿ ॥ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ
 ਜਾਇ ਜਿ ਆਵੈ ਤੁਧੁ ਆਹਿ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਦ੍ਰਿੜਾ ਤਿਸੁ ਨ ਬੁਝਾਇਹੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ਆਧਾਰੁ ॥
 ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਾਹਿਬੋ ਸਮਰਥੁ ਸਚੁ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਤੂ ਨਿਹਚਲੁ ਨਿਰਕੈਰੁ ਸਚੁ ਸਚਾ ਤੁਧੁ ਦਰਬਾਰੁ ॥ ਕੀਮਤਿ
 ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈਐ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਛੋਡਿ ਹੋਰੁ ਜਿ ਮੰਗਣਾ ਸਭੁ ਬਿਖਿਆ ਰਸ ਛਾਰੁ ॥ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਸਚੁ
 ਸਾਹ ਸੇ ਜਿਨ ਸਚਾ ਬਿਤਹਾਰੁ ॥ ਜਿਨਾ ਲਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮ ਸਹਜ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਆਰਾਧੇ ਸੰਤਨ
 ਰੇਣਾਰੁ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਅਨਦ ਸੂਖ ਬਿਸ਼ਾਮ ਨਿਤ ਹਰਿ ਕਾ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇ ॥ ਅਵਰ ਸਿਆਣਪ ਛਾਡਿ ਦੇਹਿ
 ਨਾਨਕ ਉਧਰਸਿ ਨਾਇ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾ ਤੂ ਆਵਹਿ ਵਸਿ ਬਹੁਤੁ ਧਿਆਵਣੇ ॥ ਨਾ ਤੂ ਆਵਹਿ ਵਸਿ ਬੇਦ
 ਪੜਾਵਣੇ ॥ ਨਾ ਤੂ ਆਵਹਿ ਵਸਿ ਤੀਰਥਿ ਨਾਈਐ ॥ ਨਾ ਤੂ ਆਵਹਿ ਵਸਿ ਧਰਤੀ ਧਾਈਐ ॥ ਨਾ ਤੂ ਆਵਹਿ ਵਸਿ
 ਕਿਤੈ ਸਿਆਣਪੈ ॥ ਨਾ ਤੂ ਆਵਹਿ ਵਸਿ ਬਹੁਤਾ ਦਾਨੁ ਦੇ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਤੈਰੈ ਵਸਿ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰਾ ॥ ਤੂ ਭਗਤਾ ਕੈ
 ਵਸਿ ਭਗਤਾ ਤਾਣੁ ਤੇਰਾ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਆਪੇ ਵੈਦੁ ਆਪਿ ਨਾਰਾਇਣੁ ॥ ਏਹਿ ਵੈਦ ਜੀਅ ਕਾ ਦੁਖੁ
 ਲਾਇਣ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸੁ ਖਾਇਣ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਕਥੈ ਤਿਸ ਕੇ ਸਭਿ ਦ੍ਰਿੜ ਮਿਟਾਇਣ ॥੫॥
 ਮਃ ੫ ॥ ਹੁਕਮਿ ਉਛਲੈ ਹੁਕਮੇ ਰਹੈ ॥ ਹੁਕਮੇ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮ ਕਰਿ ਸਹੈ ॥ ਹੁਕਮੇ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਵੈ ਦਾਤਿ ॥ ਹੁਕਮਿ ਮਰੈ ਹੁਕਮੇ ਹੀ ਜੀਵੈ ॥ ਹੁਕਮੇ ਨਾਨਾ ਵਡਾ ਥੀਵੈ ॥ ਹੁਕਮੇ ਸੋਗ ਹਰਖ ਆਨਨਦ ॥
 ਹੁਕਮੇ ਜਪੈ ਨਿਰੋਧਰ ਗੁਰਮੰਤ ॥ ਹੁਕਮੇ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਰਹਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਤ ਭਗਤੀ ਲਾਏ ॥੬॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਹਤ ਤਿਸੁ ਢਾਢੀ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜਿ ਤੇਰਾ ਸੇਵਦਾਰੁ ॥ ਹਤ ਤਿਸੁ ਢਾਢੀ ਬਲਿਹਾਰ ਜਿ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਅਪਾਰ ॥ ਸੋ ਢਾਢੀ
 ਧਨੁ ਧਨੁ ਜਿਸੁ ਲੋਡੇ ਨਿਰਂਕਾਰੁ ॥ ਸੋ ਢਾਢੀ ਭਾਗਠੁ ਜਿਸੁ ਸਚਾ ਦੁਆਰ ਬਾਰੁ ॥ ਓਹੁ ਢਾਢੀ ਤੁਧੁ ਧਿਆਇ ਕਲਾਣੇ
 ਦਿਨੁ ਰੈਣਾਰ ॥ ਮੰਗੈ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਨ ਆਵੈ ਕਦੇ ਹਾਰਿ ॥ ਕਪੜੁ ਭੋਜਨੁ ਸਚੁ ਰਹਦਾ ਲਿਵੈ ਧਾਰ ॥ ਸੋ ਢਾਢੀ

ਗੁਣਵਂਤੁ ਜਿਸ ਨੋ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਅਮਿਤ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਤ ॥
 ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਿਰਦੈ ਸਿਮਰਿ ਹਰਿ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਹੁ ਤੁਮ ਗੁਰਸਿਖਹੁ ਸਚਾ ਇਹੈ ਸੁਆਤ
 ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਸਫਲੁ ਛੋਡਿ ਮਨ ਮਹਿ ਲਾਇਹੁ ਭਾਤ ॥ ਸ੍ਰੋਖ ਸਹਜ ਆਨਦੁ ਘਣਾ ਪ੍ਰਭ ਜਪਤਿਆ ਦੁਖੁ ਜਾਇ
 ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਦਰਗਹ ਪਾਈਐ ਥਾਤ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ
 ਮਤਿ ਦੇਇ ॥ ਭਾਣੈ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮੇ ਭਾਣੈ ਹੀ ਕਢਿ ਲੇਇ ॥ ਭਾਣੈ ਜੋਨਿ ਭਵਾਈਐ ਭਾਣੈ ਬਖਸ ਕਰੇਇ ॥ ਭਾਣੈ
 ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਭੋਗੀਐ ਭਾਣੈ ਕਰਮ ਕਰੇਇ ॥ ਭਾਣੈ ਮਿਟੀ ਸਾਜਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋਤਿ ਧਰੇਇ ॥ ਭਾਣੈ ਭੋਗ ਭੋਗਾਇਦਾ ਭਾਣੈ
 ਮਨਹਿ ਕਰੇਇ ॥ ਭਾਣੈ ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ ਅਤਤਾਰੇ ਭਾਣੈ ਧਰਣਿ ਪਰੇਇ ॥ ਭਾਣੈ ਹੀ ਜਿਸੁ ਭਗਤੀ ਲਾਏ ਨਾਨਕ
 ਵਿਰਲੇ ਹੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਵਡਿਆਈ ਸਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਹਤ ਜੀਵਾ ਸੁਣਿ ਸੁਣੇ ॥ ਪਸੂ ਪਰੇਤ ਅਗਿਆਨ ਤਥਾਰੇ
 ਇਕ ਖਣੇ ॥ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ਸਦਾ ਸਦ ਜਾਪੀਐ ॥ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਵਿਕਰਾਲ ਨਾਇ ਤੈਰੈ ਧਾਪੀਐ ॥ ਰੋਗੁ
 ਸੋਗੁ ਦੁਖੁ ਵੰਬੈ ਜਿਸੁ ਨਾਤ ਮਨਿ ਕਸੈ ॥ ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਲਾਲੁ ਜੋ ਗੁਰ ਸ਼ਬਦੀ ਰਸੈ ॥ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਬੇਅੰਤ
 ਤਥਾਰਣਹਾਰਿਆ ॥ ਤੇਰੀ ਸੋਭਾ ਤੁਧੁ ਸਚੇ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਮਿਤ੍ਰ ਪਿਆਰਾ ਨਾਨਕ ਜੀ
 ਮੈ ਛਡਿ ਗਵਾਇਆ ਰੰਗਿ ਕਸੁੰਭੈ ਭੁਲੀ ॥ ਤਤ ਸਜਣ ਕੀ ਮੈ ਕੀਮ ਨ ਪਤਦੀ ਹਤ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਢੁ ਨ ਲਹਦੀ
 ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸਸੁ ਵਿਰਾਇਣਿ ਨਾਨਕ ਜੀਤ ਸਸੁਰਾ ਵਾਦੀ ਜੇਠੀ ਪਤ ਪਤ ਲ੍ਹਾਵੈ ॥ ਹਖੈ ਭਸੁ ਪੁਣੇਦੇ ਕਤਨੁ ਜਾ
 ਮੈ ਸਜਣੁ ਤ੍ਹਾਵੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਿ ਕੁਠਾ ਚਿਤਿ ਤਿਸੁ ਦਰਦੁ ਨਿਵਾਰਣੋ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਿ ਕੁਠਾ ਚਿਤਿ ਤਿਸੁ ਕਦੇ
 ਨ ਹਾਰਣੋ ॥ ਜਿਸੁ ਮਿਲਿਆ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਸੁ ਸਰਪਰ ਤਾਰਣੋ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਲਾਏ ਸਚਿ ਤਿਸੁ ਸਚੁ ਸਮਾਲਣੋ ॥ ਜਿਸੁ
 ਆਇਆ ਹਥਿ ਨਿਧਾਨੁ ਸੁ ਰਹਿਆ ਭਾਲਣੋ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਇਕੋ ਰੰਗੁ ਭਗਤੁ ਸੋ ਜਾਨਣੋ ॥ ਓਹੁ ਸਭਨਾ ਕੀ ਰੇਣੁ
 ਬਿਰਹੀ ਚਾਰਣੋ ॥ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਕਾਰਣੋ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਤਿਸਤਤਿ ਨਿੰਦਾ ਨਾਨਕ
 ਜੀ ਮੈ ਹਭ ਕਝਾਈ ਛੋਡਿਆ ਹਭੁ ਕਿੜ੍ਹੁ ਤਿਆਗੀ ॥ ਹਖੈ ਸਾਕ ਕੂੜਾਵੇ ਡਿਠੇ ਤਤ ਪਲੈ ਤੈਡੈ ਲਾਗੀ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥
 ਫਿਰਦੀ ਫਿਰਦੀ ਨਾਨਕ ਜੀਤ ਹਤ ਫਾਵੀ ਥੀਈ ਬਹੁਤੁ ਦਿਸਾਵਰ ਪੰਧਾ ॥ ਤਾ ਹਤ ਸੁਖਿ ਸੁਖਾਲੀ ਸੁਤੀ ਜਾ ਗੁਰ

ਮਿਲਿ ਸਜਣੁ ਮੈ ਲਧਾ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭੇ ਦੁਖ ਸੰਤਾਪ ਜਾਂ ਤੁਧੁ ਭੁਲੀਐ ॥ ਜੇ ਕੀਚਨਿ ਲਖ ਤਪਾਵ ਤਾਂ ਕਹੀ
 ਨ ਘੁਲੀਐ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਵਿਸਰੈ ਨਾਉ ਸੁ ਨਿਰਧਨੁ ਕਾਂਢੀਐ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਵਿਸਰੈ ਨਾਉ ਸੋ ਜੋਨੀ ਹਾਁਢੀਐ ॥ ਜਿਸੁ
 ਖਸਮੁ ਨ ਆਵੈ ਚਿਤਿ ਤਿਸੁ ਜਮੁ ਡੰਡੁ ਦੇ ॥ ਜਿਸੁ ਖਸਮੁ ਨ ਆਵੀ ਚਿਤਿ ਰੇਗੀ ਸੇ ਗਣੇ ॥ ਜਿਸੁ ਖਸਮੁ ਨ ਆਵੀ
 ਚਿਤਿ ਸੁ ਖਰੋ ਅਛਕਾਰੀਆ ॥ ਸੋਈ ਦੁਹੇਲਾ ਜਗਿ ਜਿਨਿ ਨਾਉ ਵਿਸਾਰੀਆ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਤੈਡੀ ਬੰਦਸਿ
 ਮੈ ਕੋਝਿ ਨ ਡਿਠਾ ਤ੍ਰਾਂ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ॥ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਤਿਸੁ ਮਿਤ ਵਿਚੋਲੇ ਜੈ ਮਿਲਿ ਕਂਤੁ ਪਛਾਣਾ ॥੧॥
 ਮਃ ੫ ॥ ਪਾਵ ਸੁਹਾਵੇ ਜਾਂ ਤਤ ਧਿਰਿ ਜੁਲਦੇ ਸੀਸੁ ਸੁਹਾਵਾ ਚਰਣੀ ॥ ਸੁਖੁ ਸੁਹਾਵਾ ਜਾਂ ਤਤ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ਜੀਤ
 ਪਇਆ ਤਤ ਸਰਣੀ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮਿਲਿ ਨਾਰੀ ਸਤਸਾਂਗਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਵੀਆ ॥ ਘਰ ਕਾ ਹੋਆ ਬੰਧਾਨੁ ਬਹੁਡਿ ਨ
 ਧਾਵੀਆ ॥ ਬਿਨਠੀ ਦੁਰਮਤਿ ਦੁਰਤੁ ਸੋਝਿ ਕੂੜਾਵੀਆ ॥ ਸੀਲਵਂਤਿ ਪਰਧਾਨਿ ਰਿਟੈ ਸਚਾਵੀਆ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ
 ਝਿਕੁ ਝਿਕ ਰੀਤਾਵੀਆ ॥ ਮਨਿ ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਿਆਸ ਚਰਣ ਦਾਸਾਵੀਆ ॥ ਸੋਭਾ ਕਣੀ ਸੀਗਾਰੁ ਖਸਮਿ ਜਾਂ
 ਰਾਵੀਆ ॥ ਮਿਲੀਆ ਆਇ ਸੰਜੋਗਿ ਜਾਂ ਤਿਸੁ ਭਾਵੀਆ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਹਭਿ ਗੁਣ ਤੈਡੇ ਨਾਨਕ ਜੀਤ
 ਮੈ ਕੂ ਥੀਏ ਮੈ ਨਿਰਗੁਣ ਤੇ ਕਿਆ ਹੋਵੈ ॥ ਤਤ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾਰੁ ਨ ਕੋਈ ਜਾਚਕੁ ਸਦਾ ਜਾਚੋਵੈ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਦੇਹ
 ਛਿਜਂਦੀ ਊਣ ਮੜ੍ਹੂਣਾ ਗੁਰਿ ਸਜਣਿ ਜੀਤ ਧਰਾਇਆ ॥ ਹਾਥੇ ਸੁਖ ਸੁਹੇਲਡਾ ਸੁਤਾ ਜਿਤਾ ਜਗੁ ਸਬਾਇਆ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਵਡਾ ਤੇਰਾ ਦਰਬਾਰੁ ਸਚਾ ਤੁਧੁ ਤਖਤੁ ॥ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਨਿਹਚਲੁ ਚਤੁਰੁ ਛਤੁ ॥ ਜੋ ਭਾਵੈ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੋਈ ਸਚੁ ਨਿਆਤ ॥ ਜੇ ਭਾਵੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਿਥਾਵੇ ਮਿਲੈ ਥਾਤ ॥ ਜੋ ਕੀਨੀ ਕਰਤਾਰਿ ਸਾਈ ਭਲੀ ਗਲ
 ॥ ਜਿਨੀ ਪਛਾਤਾ ਖਸਮੁ ਸੇ ਦਰਗਾਹ ਮਲ ॥ ਸਹੀ ਤੇਰਾ ਫੁਰਮਾਨੁ ਕਿਨੈ ਨ ਫੇਰੀਐ ॥ ਕਾਰਣ ਕਰਣ ਕਰੀਮ ਕੁਦਰਤਿ
 ਤੇਰੀਐ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਸੋਝਿ ਸੁਣਂਦੀ ਮੇਰਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਮਤਲਾ ਨਾਮੁ ਜਪਂਦੀ ਲਾਲੀ ॥ ਪੰਧਿ ਜੁਲਮਦੀ
 ਮੇਰਾ ਅੰਦਰੁ ਠੰਡਾ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲੀ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਹਠ ਮੰਝਾਹੂ ਮੈ ਮਾਣਕੁ ਲਧਾ ॥ ਮੁਲਿ ਨ ਘਿਧਾ
 ਮੈ ਕੂ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਿਤਾ ॥ ਢੂੰਢ ਵ਼ਾਈ ਥੀਆ ਥਿਤਾ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਨਕ ਜਿਤਾ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਸ ਕੈ
 ਮਸਤਕਿ ਕਰਮੁ ਹੋਇ ਸੋ ਸੇਵਾ ਲਾਗਾ ॥ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ਸੋ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਾ ॥ ਲਗ ਰੰਗ

ਚਰਣਾਰਬਿੰਦ ਸਭੁ ਭਮੁ ਭਤ ਭਾਗਾ ॥ ਆਤਮੁ ਜਿਤਾ ਗੁਰਮਤੀ ਆਗੰਜਤ ਪਾਗਾ ॥ ਜਿਸਹਿ ਧਿਆਇਆ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੋ ਕਲਿ ਮਹਿ ਤਾਗਾ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਨਿਰਮਲਾ ਅਠਸਠਿ ਮਜਨਾਗਾ ॥ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਆਪਣਾ
 ਸੋ ਪੁਰਖੁ ਸਭਾਗਾ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਸੁ ਏਵਡ ਭਾਗਾ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਜਾਂ ਪਿਲੁ ਅੰਦਰਿ
 ਤਾਂ ਧਨ ਬਾਹਰਿ ॥ ਜਾਂ ਪਿਲੁ ਬਾਹਰਿ ਤਾਂ ਧਨ ਮਾਹਰਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਹੁ ਫੇਰੁ ਫਿਰਾਹਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੰਗਿ
 ਦਿਖਾਇਆ ਜਾਹਰਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਹਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਆਹਰ ਸਭਿ ਕਰਦਾ ਫਿਰੈ ਆਹਰੁ ਝਿਕੁ
 ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਤੁ ਆਹਰਿ ਜਗੁ ਤਥਰੈ ਵਿਗਲਾ ਬੂੜੈ ਕੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਵਡੀ ਹੂ ਵਡਾ ਅਪਾਰੁ ਤੇਰਾ
 ਮਰਤਬਾ ॥ ਰੰਗ ਪਰੰਗ ਅਨੇਕ ਨ ਜਾਪਨਿ ਕਰਤਬਾ ॥ ਜੀਆ ਅੰਦਰਿ ਜੀਤ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਲਾ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੈਰੈ
 ਕਵਸਿ ਤੇਰਾ ਘਰੁ ਭਲਾ ॥ ਤੈਰੈ ਘਰੀ ਆਨਨਦੁ ਵਰਧਾਈ ਤੁਥੁ ਘਰਿ ॥ ਮਾਣੁ ਮਹਤਾ ਤੇਜੁ ਆਪਣਾ ਆਧਿ ਜਰਿ ॥
 ਸਰਕ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰੁ ਦਿਸੈ ਜਤ ਕਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸੁ ਤੁਥੁ ਆਗੈ ਬਿਨਕਤਾ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
 ਛਤੜੇ ਬਾਜਾਰ ਸੋਹਨਿ ਵਿਚਿ ਵਪਾਰੀਏ ॥ ਕਖਰੁ ਹਿਕੁ ਅਪਾਰੁ ਨਾਨਕ ਖਟੇ ਸੋ ਧਣੀ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਬੀਰਾ
 ਹਮਰਾ ਕੋ ਨਹੀ ਹਮ ਕਿਸ ਹੂ ਕੇ ਨਾਹਿ ॥ ਜਿਨਿ ਇਹੁ ਰਚਨੁ ਰਚਾਇਆ ਤਿਸ ਹੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਸਫਲਿਤ ਬਿਰਖੁ ਸੁਹਾਵਡਾ ਹਰਿ ਸਫਲ ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ॥ ਮਨੁ ਲੋਚੈ ਉਨ੍ ਮਿਲਣ ਕਤ ਕਿਤ ਵੰਜੈ ਘਿਤਾ ॥ ਕਰਨਾ
 ਚਿਹਨਾ ਬਾਹਰਾ ਓਹੁ ਅਗਮੁ ਅਜਿਤਾ ॥ ਓਹੁ ਪਿਆਰਾ ਜੀਅ ਕਾ ਜੋ ਖੋਲੈ ਭਿਤਾ ॥ ਸੇਵਾ ਕਰੀ ਤੁਸਾਡੀਆ ਮੈ
 ਦਸਿਹੁ ਮਿਤਾ ॥ ਕੁਰਬਾਣੀ ਵੰਜਾ ਵਾਰਣੈ ਬਲੇ ਬਲਿ ਕਿਤਾ ॥ ਦਸਨਿ ਸੰਤ ਪਿਆਰਿਆ ਸੁਣਹੁ ਲਾਇ ਚਿਤਾ ॥
 ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਿਸੁ ਨਾਤ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਿਤਾ ॥੧੯॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਬੀਰ ਧਰਤੀ
 ਸਾਧ ਕੀ ਤਸਕਰ ਬੈਸਹਿ ਗਾਹਿ ॥ ਧਰਤੀ ਭਾਰਿ ਨ ਬਿਆਪੈ ਉਨ ਕਤ ਲਾਹੂ ਲਾਹਿ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਕਬੀਰ ਚਾਵਲ ਕਾਰਣੇ ਤੁਖ ਕਤ ਮੁਹਲੀ ਲਾਇ ॥ ਸੰਗਿ ਕੁਸੰਗੀ ਬੈਸਤੇ ਤਬ ਪ੍ਰਥੇ ਧਰਮ ਰਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਆਪੇ ਹੀ ਕਡ ਪਰਵਾਰੁ ਆਧਿ ਇਕਾਤੀਆ ॥ ਆਪਣੀ ਕੀਮਤਿ ਆਧਿ ਆਪੇ ਹੀ ਜਾਤੀਆ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ
 ਆਧਿ ਆਧਿ ਉਪੰਨਿਆ ॥ ਆਪਣਾ ਕੀਤਾ ਆਧਿ ਆਪਿ ਵਰਨਿਆ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਤੇਰਾ ਥਾਨੁ ਜਿਥੈ ਤੂ ਕੁਠਾ ॥

ਧਨੁ ਸੁ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਤ੍ਰੂਂ ਡਿਠਾ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਤੇਰੀ ਦਿੱਤਾ ਸਲਾਹੇ ਸੋਝੀ ਤੁਧੁ ॥ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਨਾਨਕ
 ਨਿਰਮਲ ਸੋਈ ਸੁਧੁ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਭ੍ਰਮਿ ਰੰਗਵਲੀ ਮੰਝਿ ਵਿਸੂਲਾ ਬਾਗੁ ॥ ਜੋ ਨਰ ਪੀਰਿ
 ਨਿਵਾਜਿਆ ਤਿਨਾ ਅੰਚ ਨ ਲਾਗ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਤੁਮਰ ਸੁਹਾਵੜੀ ਸੰਗਿ ਸੁਵਨਣੀ ਦੇਹ ॥ ਵਿਰਲੇ ਕੇਈ
 ਪਾਈਐਨ੍ਤਿ ਜਿਨਾ ਪਿਆਰੇ ਨੇਹ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਦਿੱਤਾ ਧਰਮੁ ਜਿਸੁ ਦੇਹਿ ਸੁ ਪਾਏ ॥ ਜਿਸੁ
 ਬੁਝਾਇਹਿ ਅਗਨਿ ਆਪਿ ਸੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਅਗਮ ਪੁਰਖੁ ਇਕ ਵੂਸਟਿ ਦਿਖਾਏ ॥ ਸਾਧਸਾਂਗਤਿ ਕੈ
 ਆਸਰੈ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਰੁਂਗੁ ਲਾਏ ॥ ਅਤਗਣ ਕਟਿ ਮੁਖੁ ਤਜਲਾ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਤਰਾਏ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਤ ਕਟਿਐਨੁ
 ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਨ ਪਾਏ ॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਕਾਢਿਐਨੁ ਲਡੁ ਆਪਿ ਫੜਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਰਖੇ ਗਲਿ
 ਲਾਏ ॥੨੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਮੁਹਬਤਿ ਜਿਸੁ ਖੁਦਾਇ ਦੀ ਰਤਾ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਰਲੇ ਪਾਈਐਹਿ
 ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀਮ ਨ ਮੂਲਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਅੰਦਰੁ ਵਿਧਾ ਸਚਿ ਨਾਇ ਬਾਹਰਿ ਭੀ ਸਚੁ ਡਿਠੋਮਿ ॥ ਨਾਨਕ ਰਵਿਆ
 ਹਭ ਥਾਇ ਵਣਿ ਤ੍ਰਣ ਤ੍ਰਭਵਣਿ ਰੋਮਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਕੀਤੋ ਰਚਨੁ ਆਪੇ ਹੀ ਰਤਿਆ ॥ ਆਪੇ ਹੋਇਐ
 ਡਿਕੁ ਆਪੇ ਬਹੁ ਭਤਿਆ ॥ ਆਪੇ ਸਭਨਾ ਮੰਝਿ ਆਪੇ ਬਾਹਰਾ ॥ ਆਪੇ ਜਾਣਹਿ ਦੂਰਿ ਆਪੇ ਹੀ ਜਾਹਰਾ ॥ ਆਪੇ
 ਹੋਵਹਿ ਗੁਪਤੁ ਆਪੇ ਪਰਗਟੀਐ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਿਸੈ ਨ ਪਾਇ ਤੇਰੀ ਥਟੀਐ ॥ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ਅਥਾਹੁ ਅਪਾਰੁ
 ਅਗਣਤੁ ਤ੍ਰੂਂ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਤੈ ਡਿਕੁ ਡਿਕੋ ਡਿਕੁ ਤ੍ਰੂਂ ॥੨੨॥੧॥੨॥ ਸੁਧੁ ॥

ਰਾਮਕਲੀ ਕੀ ਵਾਰ ਰਾਇ ਬਲਵੰਡਿ ਤਥਾ ਸਤੈ ਝੂਮਿ ਆਖੀ ੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਾਉ ਕਰਤਾ ਕਾਦਰੁ ਕਰੇ ਕਿਉ ਬੋਲੁ ਹੋਵੈ ਜੋਖੀਵਦੈ ॥ ਦੇ ਗੁਨਾ ਸਤਿ ਭੈਣ ਭਰਾਵ ਹੈ ਪਾਰਂਗਤਿ ਦਾਨੁ ਪੜੀਵਦੈ ॥
 ਨਾਨਕਿ ਰਾਜੁ ਚਲਾਇਆ ਸਚੁ ਕੋਟੁ ਸਤਾਣੀ ਨੀਵ ਦੈ ॥ ਲਹਣੇ ਧਰਿਐਨੁ ਛਤੁ ਸਿਰਿ ਕਰਿ ਸਿਫਤੀ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਪੀਵਦੈ ॥ ਮਤਿ ਗੁਰ ਆਤਮ ਦੇਵ ਦੀ ਖੜਗਿ ਜੋਰਿ ਪਰਾਕੁਇ ਜੀਅ ਦੈ ॥ ਗੁਰਿ ਚੇਲੇ ਰਹਗਸਿ ਕੀਈ ਨਾਨਕਿ
 ਸਲਾਮਤਿ ਥੀਵਦੈ ॥ ਸਹਿ ਟਿਕਾ ਦਿਤੋਸੁ ਜੀਵਦੈ ॥੧॥ ਲਹਣੇ ਦੀ ਫੇਰਾਈਐ ਨਾਨਕਾ ਦੋਹੀ ਖਟੀਐ ॥ ਜੋਤਿ ਓਹਾ
 ਜੁਗਤਿ ਸਾਇ ਸਹਿ ਕਾਇਆ ਫੇਰਿ ਪਲਟੀਐ ॥ ਝੂਲੈ ਸੁ ਛਤੁ ਨਿਰੰਜਨੀ ਮਲਿ ਤਖਤੁ ਬੈਠਾ ਗੁਰ ਹਟੀਐ ॥ ਕਰਹਿ

ਜਿ ਗੁਰ ਫੁਰਮਾਇਆ ਸਿਲ ਜੋਗੁ ਅਲੂਣੀ ਚਟੀਐ ॥ ਲਾਂਗੁ ਚਲੈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੀ ਖਟੀਐ ॥
 ਖਰਚੇ ਦਿਤਿ ਖਸ਼ਮ ਦੀ ਆਪ ਖਹਦੀ ਖੈਰਿ ਦਬਟੀਐ ॥ ਹੋਵੈ ਸਿਫਤਿ ਖਸ਼ਮ ਦੀ ਨੂਰੁ ਅਰਸਹੁ ਕੁਰਸਹੁ ਝਟੀਐ ॥
 ਤੁਧੁ ਡਿਠੇ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ਮਲੁ ਜਨਮ ਜਨਮ ਦੀ ਕਟੀਐ ॥ ਸਚੁ ਜਿ ਗੁਰਿ ਫੁਰਮਾਇਆ ਕਿਤ ਏਦ੍ਵ ਬੋਲਹੁ ਹਟੀਐ ॥
 ॥ ਪੁਕੀ ਕਤਲੁ ਨ ਪਾਲਿਐ ਕਰਿ ਪੀਰਹੁ ਕਨ੍ਨ ਮੁਰਟੀਐ ॥ ਦਿਲਿ ਖੋਟੈ ਆਕੀ ਫਿਰਨਿ ਬੰਨਿ ਭਾਰੁ ਤਚਾਇਨਿ
 ਛਟੀਐ ॥ ਜਿਨਿ ਆਖੀ ਸੋਈ ਕਰੇ ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ ਤਿਨੈ ਥਟੀਐ ॥ ਕਤਣੁ ਹਾਰੇ ਕਿਨਿ ਤਵਟੀਐ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ
 ਸੋ ਮਨਣਾ ਕੋ ਸਾਲੁ ਜਿਵਾਹੇ ਸਾਲੀ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਹੈ ਦੇਵਤਾ ਲੈ ਗਲਾ ਕਰੇ ਫਲਾਲੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਖੈ ਸਚਾ
 ਕਰੇ ਸਾ ਬਾਤ ਹੋਵੈ ਦਰਹਾਲੀ ॥ ਗੁਰ ਅੰਗਦ ਦੀ ਦੋਹੀ ਫਿਰੀ ਸਚੁ ਕਰਤੈ ਬੰਧਿ ਬਹਾਲੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਾਇਆ
 ਪਲਟੁ ਕਰਿ ਮਲਿ ਤਖਤੁ ਬੈਠਾ ਸੈ ਡਾਲੀ ॥ ਦੁ ਸੇਵੇ ਉਮਤਿ ਖੜੀ ਮਸਕਲੈ ਹੋਇ ਜੰਗਾਲੀ ॥ ਦਰਿ ਦਰਖੇਸੁ
 ਖਸ਼ਮ ਦੈ ਨਾਇ ਸਚੈ ਬਾਣੀ ਲਾਲੀ ॥ ਬਲਵੰਡ ਖੀਕੀ ਨੇਕ ਜਨ ਜਿਸੁ ਬਹੁਤੀ ਛਾਤ ਪਨਾਲੀ ॥ ਲਾਂਗਰਿ ਦਤਲਤਿ
 ਵੰਡੀਐ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਖੀਰਿ ਘਿਆਲੀ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੇ ਮੁਖ ਤਜਲੇ ਮਨਮੁਖ ਥੀਏ ਪਰਾਲੀ ॥ ਪਾਏ ਕਬੂਲੁ ਖਸ਼ਮ
 ਨਾਲਿ ਜਾਂ ਘਾਲ ਮਰਦੀ ਘਾਲੀ ॥ ਮਾਤਾ ਖੀਕੀ ਸਹੁ ਸੋਇ ਜਿਨਿ ਗੋਇ ਤਠਾਲੀ ॥੩॥ ਹੋਰਿਐ ਗੁਂਗ ਵਹਾਈਐ
 ਦੁਨਿਆਈ ਆਖੈ ਕਿ ਕਿਓਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਈਸਰਿ ਜਗਨਾਥਿ ਤਚਹਦੀ ਵੈਣੁ ਵਿਰਿਕਿਐਓਨੁ ॥ ਮਾਧਾਣਾ ਪਰਬਤੁ
 ਕਰਿ ਨੇਤ੍ਰ ਬਾਸਕੁ ਸਬਦਿ ਰਿਡਕਿਐਨੁ ॥ ਚਤੁਦਹ ਰਤਨ ਨਿਕਾਲਿਐਨੁ ਕਰਿ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਚਿਲਕਿਐਨੁ ॥
 ਕੁਦਰਤਿ ਅਹਿ ਵੇਖਾਲੀਐਨੁ ਜਿਣਿ ਐਕੱਡ ਪਿਡ ਠਿਣਕਿਐਨੁ ॥ ਲਹਣੇ ਧਰਿਐਨੁ ਛਤ੍ਰ ਸਿਰਿ ਅਸਮਾਨਿ
 ਕਿਆਡਾ ਛਿਕਿਐਨੁ ॥ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਜੋਤਿ ਮਾਹਿ ਆਪੁ ਆਪੈ ਸੇਤੀ ਮਿਕਿਐਨੁ ॥ ਸਿਖਾਂ ਪੁਕਾਂ ਘੋਖਿ ਕੈ ਸਭ
 ਉਮਤਿ ਵੇਖਹੁ ਜਿ ਕਿਓਨੁ ॥ ਜਾਂ ਸੁਧੋਸੁ ਤਾਂ ਲਹਣਾ ਟਿਕਿਐਨੁ ॥੪॥ ਫੇਰਿ ਵਸਾਇਆ ਫੇਰੁਆਣਿ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਖਾਡੂਰੁ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਨਾਲਿ ਤੁਧੁ ਹੋਰੁ ਮੁਚੁ ਗੁਰੂ ॥ ਲਕੁ ਵਿਣਾਹੇ ਮਾਣਸਾ ਜਿਤ ਪਾਣੀ ਕ੍ਰੂਰੁ ॥ ਵਰਿਐ
 ਦਰਗਹ ਗੁਰੂ ਕੀ ਕੁਦਰਤੀ ਨੂਰੁ ॥ ਜਿਤੁ ਸੁ ਹਾਥ ਨ ਲਭੈ ਤ੍ਰਿ ਓਹੁ ਠਰੂਰੁ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਤੁਧੁ
 ਵਿਚਿ ਭਰਪੂਰੁ ॥ ਨਿੰਦਾ ਤੇਰੀ ਜੋ ਕਰੇ ਸੋ ਵੰਬੈ ਚ੍ਰੂਰੁ ॥ ਨੇਡੈ ਦਿਸੈ ਮਾਤ ਲੋਕ ਤੁਧੁ ਸੁੜੈ ਦ੍ਰੂਰੁ ॥ ਫੇਰਿ ਵਸਾਇਆ

ਫੇਰੁਆਣਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਖਾਡੂਰੁ ॥੫॥ ਸੋ ਟਿਕਾ ਸੋ ਬੈਹਣਾ ਸੋਈ ਦੀਬਾਣੁ ॥ ਪਿਧੂ ਦਾਦੇ ਜੇਵਿਹਾ ਪੋਤਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥
ਜਿਨਿ ਬਾਸਕੁ ਨੇਤੈ ਘਤਿਆ ਕਰਿ ਨੇਹੀ ਤਾਣੁ ॥ ਜਿਨਿ ਸਮੁੰਦੁ ਵਿਰੋਲਿਆ ਕਰਿ ਮੇਰੁ ਮਧਾਣੁ ॥ ਚਤੁਦਹ ਰਤਨ
ਨਿਕਾਲਿਅਨੁ ਕੀਤੋਨੁ ਚਾਨਾਣੁ ॥ ਘੋੜਾ ਕੀਤੋ ਸਹਜ ਦਾ ਜਤੁ ਕੀਓ ਪਲਾਣੁ ॥ ਧਣਖੁ ਚੜਾਇਆ ਸਤ ਦਾ ਜਸ ਛਾਦਾ
ਬਾਣੁ ॥ ਕਲਿ ਵਿਚਿ ਧੂ ਅੰਧਾਰੁ ਸਾ ਚਡਿਆ ਰੈ ਭਾਣੁ ॥ ਸਤਹੁ ਖੇਤੁ ਜਮਾਇਆ ਸਤਹੁ ਛਾਵਾਣੁ ॥ ਨਿਤ ਰਸੋਈ
ਤੇਰੀਐ ਧਿਤ ਮੈਦਾ ਖਾਣੁ ॥ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾਂ ਸੁੜੀਆਓਸੁ ਮਨ ਮਹਿ ਸਬਦੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਆਵਾ ਗਤਾਣੁ ਨਿਵਾਰਿਆ ਕਰਿ
ਨਦਰਿ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਅਤਤਰਿਆ ਅਤਤਾਰੁ ਲੈ ਸੋ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਝਾਖਡਿ ਵਾਤ ਨ ਡੋਲੈਈ ਪਰਬਤੁ ਮੇਰਾਣੁ ॥
ਯਾਣੈ ਬਿਰਥਾ ਜੀਅ ਕੀ ਜਾਣੀ ਹੂ ਜਾਣੁ ॥ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ਜਾਂ ਤੂ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਦਾਨੁ ਜਿ
ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਵਸੀ ਸੋ ਸਤੇ ਦਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਛਾਦਾ ਛੁਨ੍ ਸਿਰਿ ਉਮਤਿ ਹੈਰਾਣੁ ॥ ਸੋ ਟਿਕਾ ਸੋ ਬੈਹਣਾ ਸੋਈ ਦੀਬਾਣੁ
॥ ਪਿਧੂ ਦਾਦੇ ਜੇਵਿਹਾ ਪੋਤਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥੬॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਰਾਮਦਾਸ ਗੁਰੁ ਜਿਨਿ ਸਿਰਿਆ ਤਿਨੈ ਸਕਾਰਿਆ ॥ ਪੂਰੀ
ਹੋਈ ਕਰਮਾਤਿ ਆਪਿ ਸਿਰਜਣਹਾਰੈ ਧਾਰਿਆ ॥ ਸਿਖੀ ਅਤੈ ਸੱਗਤੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰਿ ਨਮਸਕਾਰਿਆ ॥ ਅਟਲੁ
ਅਥਾਹੁ ਅਤੋਲੁ ਤੂ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਵਾਰਿਆ ॥ ਜਿਨ੍ ਤੂ ਸੇਵਿਆ ਭਾਤ ਕਰਿ ਸੇ ਤੁਧੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿਆ ॥ ਲਬੁ
ਲੋਭੁ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਮੋਹੁ ਮਾਰਿ ਕਢੇ ਤੁਧੁ ਸਪਰਵਾਰਿਆ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਤੇਰਾ ਥਾਨੁ ਹੈ ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਪੈਸਕਾਰਿਆ ॥ ਨਾਨਕੁ
ਤੂ ਲਹਣਾ ਤੂਹੈ ਗੁਰੁ ਅਮਰੁ ਤੂ ਕੀਚਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰੁ ਡਿਠਾ ਤਾਂ ਮਨੁ ਸਾਧਾਰਿਆ ॥੭॥ ਚਾਰੇ ਜਾਗੇ ਚਹੁ ਜੁਗੀ
ਪੰਚਾਇਣੁ ਆਪੇ ਹੋਆ ॥ ਆਪੀਨੈ ਆਪੁ ਸਾਜਿਆਨੁ ਆਪੇ ਹੀ ਥੰਮਿ ਖਲੋਆ ॥ ਆਪੇ ਪਟੀ ਕਲਮ ਆਪਿ ਆਪਿ
ਲਿਖਣਹਾਰਾ ਹੋਆ ॥ ਸਭ ਉਮਤਿ ਆਵਣ ਜਾਵਣੀ ਆਪੇ ਹੀ ਨਕਾ ਨਿਰੋਆ ॥ ਤਖਤਿ ਬੈਠਾ ਅਰਜਨ ਗੁਰੁ
ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਖਿਵੈ ਚੰਦੋਆ ॥ ਤਗਵਣਹੁ ਤੈ ਆਥਵਣਹੁ ਚਹੁ ਚਕੀ ਕੀਅਨੁ ਲੋਆ ॥ ਜਿਨ੍ ਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵਿਆਂ
ਮਨਮੁਖਾ ਪਇਆ ਮੋਆ ॥ ਟ੍ਰਣੀ ਚਤੁਣੀ ਕਰਮਾਤਿ ਸਚੇ ਕਾ ਸਚਾ ਢੋਆ ॥ ਚਾਰੇ ਜਾਗੇ ਚਹੁ ਜੁਗੀ ਪੰਚਾਇਣੁ
ਆਪੇ ਹੋਆ ॥੮॥੧॥

ਰਾਮਕਲੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ॥ ਕਬੀਰ ਜੀਤ

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਾਇਆ ਕਲਾਲਨਿ ਲਾਹਨਿ

मेलउ गुर का सबदु गुडु कीनु रे ॥ तृसना कामु क्रोधु मद मतसर काटि काटि कसु दीनु रे ॥੧॥ कोई
 है रे संतु सहज सुख अंतरि जा कउ जपु तपु देउ दलाली रे ॥ एक बूँद भरि तनु मनु देवउ जो मदु देइ
 कलाली रे ॥੨॥ रहाउ ॥ भवन चतुर दस भाठी कीनी ब्रह्म अगनि तनि जारी रे ॥ मुद्रा मदक
 सहज धुनि लागी सुखमन पोचनहारी रे ॥੩॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम रवि ससि गहनै देउ रे ॥
 सुरति पिआल सुधा रसु अंमूत एहु महा रसु पेत रे ॥੪॥੧॥ गुडु करि गिआनु
 धिआनु करि महूआ भउ भाठी मन धारा ॥ सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥੧॥ अउधू
 मेरा मनु मतवारा ॥ उनमद चढा मदन रसु चाखिआ तृभवन भइਆ उजिआरा ॥੨॥ रहाउ ॥ दुइ
 पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥ कामु क्रोधु दुइ कीए जलेता छूटि गई संसारी ॥੨॥
 प्रगट प्रगास गिआन गुर गंमित सतिगुर ते सुधि पाई ॥ दासु कबीरु तासु मद माता उचकि न
 कबहू जाई ॥੩॥੨॥ तूँ मेरो मेरु परबतु सुआमी ओट गही मै तेरी ॥ ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि
 लीनी हरि मेरी ॥੧॥ अब तब जब कब तुही तुही ॥ हम तुअ परसादि सुखी सद ही ॥੧॥ रहाउ ॥
 तोरे भरोसे मगहर बसिओ मेरे तन की तपति बुझाई ॥ पहिले दरसनु मगहर पाइओ फुनि कासी बसे
 आई ॥੨॥ जैसा मगहरु तैसी कासी हम एकै करि जानी ॥ हम निरधन जिउ इहु धनु पाइआ मरते
 फूटि गुमानी ॥੩॥ करै गुमानु चुभहि तिसु सूला को काढन कउ नाही ॥ अजै सु चोभ कउ बिलल
 बिलाते नरके घोर पचाही ॥੪॥ कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ हम काहू की
 काणि न कढते अपने गुर परसादे ॥੫॥ अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी ॥
 राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥੬॥੩॥ संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी
 ॥ दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी ॥੧॥ हम कूकर तेरे दरबारि ॥ भउकहि

आगै बदनु पसारि ॥१॥ रहाउ ॥ पूरब जनम हम तुमरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई ॥ तेरे दुआरै
 धुनि सहज की माथै मेरे दगाई ॥२॥ दागे होहि सु रन महि जूझाहि बिनु दागे भगि जाई ॥ साधू
 होइ सु भगति पछानै हरि लए खजानै पाई ॥३॥ कोठरे महि कोठरी परम कोठी बीचारि ॥ गुरि
 दीनी बस्तु कबीर कउ लेवहु बस्तु समारि ॥४॥ कबीरि दीई संसार कउ लीनी जिसु मस्तकि
 भागु ॥ अंमृत रसु जिनि पाइआ थिरु ता का सोहागु ॥५॥४॥ जिह मुख बेदु गाइवी निकसै सो किउ
 ब्रह्मनु बिसरु करै ॥ जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो किउ पंडितु हरि न कहै ॥१॥ काहे मेरे बामन
 हरि न कहहि ॥ रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि ॥१॥ रहाउ ॥ आपन ऊच नीच घरि भोजनु हठे करम
 करि उदरु भरहि ॥ चउदस अमावस रचि रचि माँगहि कर दीपकु लै कूपि परहि ॥२॥ तूं ब्रह्मनु मै
 कासीक जुलहा मुहि तोहि बराबरी कैसे कै बनहि ॥ हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पाँडे डूबि
 मरहि ॥३॥५॥ तरवरु एकु अन्नत डार साखा पुहप पत्र रस भरीआ ॥ इह अंमृत की बाड़ी है रे
 तिनि हरि पूरै करीआ ॥१॥ जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥ अंतरि जोति राम परगासा
 गुरमुखि बिरलै जानी ॥१॥ रहाउ ॥ भवरु एकु पुहप रस बीधा बारह ले उर धरिआ ॥ सोरह मधे
 पवनु झकोरिआ आकासे फरु फरिआ ॥२॥ सहज सुनि इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ॥
 कहि कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ॥३॥६॥ मुंद्रा मोनि दिइआ करि झोली
 पत्र का करहु बीचारु रे ॥ खिंथा इहु तनु सीअउ अपना नामु करउ आधारु रे ॥१॥ ऐसा जोगु
 कमावहु जोगी ॥ जप तप संजमु गुरमुखि भोगी ॥१॥ रहाउ ॥ बुधि बिभूति चढावउ अपुनी
 सिंगी सुरति मिलाई ॥ करि बैरागु फिरउ तनि नगरी मन की किंगुरी बजाई ॥२॥ पंच ततु लै
 हिरदै राखहु रहै निरालम ताड़ी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु धरमु दिइआ करि बाड़ी ॥३॥७॥
 कवन काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ॥ भव निधि तरन तारन चिंतामनि इक

निमख न इहु मनु लाइआ ॥१॥ गोबिंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिनि प्रभि जीउ पिंडु था दीआ
 तिस की भाउ भगति नही साधी ॥२॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर ती निंदा पर अपबादु न छूटै ॥
 आवा गवनु होतु है फुनि फुनि इहु परसंगु न तूटै ॥३॥ जिह घरि कथा होत हरि संतन इक निमख न
 कीनो मै फेरा ॥ लम्पट चोर दूत मतवारे तिन संगि सदा बसेरा ॥४॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर
 ए संपै मो माही ॥ दइआ धरमु अरु गुर की सेवा ए सुपन्नतरि नाही ॥५॥ दीन दइआल कृपाल
 दमोदर भगति बछल भै हारी ॥ कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुमारी ॥६॥
 जिह सिमरनि होइ मुकति दुआरु ॥ जाहि बैकुंठि नही संसारि ॥ निरभउ कै घरि बजावहि तूर ॥
 अनहद बजहि सदा भरपूर ॥७॥ ऐसा सिमरनु करि मन माहि ॥ बिनु सिमरन मुकति कत नाहि
 ॥८॥ रहाउ ॥ जिह सिमरनि नाही ननकारु ॥ मुकति करै उतरै बहु भारु ॥ नमसकारु करि हिरदै
 माहि ॥ फिरि फिरि तेरा आवनु नाहि ॥९॥ जिह सिमरनि करहि तू केल ॥ दीपकु बाँधि धरिओ बिनु
 तेल ॥ सो दीपकु अमरकु संसारि ॥ काम क्रोध बिखु काढीले मारि ॥१०॥ जिह सिमरनि तेरी गति होइ ॥
 सो सिमरनु रखु कंठि परोइ ॥ सो सिमरनु करि नही राखु उतारि ॥ गुर परसादी उतरहि पारि ॥११॥
 जिह सिमरनि नाही तुहि कानि ॥ मंदरि सोवहि पटंबर तानि ॥ सेज सुखाली बिगसै जीउ ॥ सो सिमरनु
 तू अनदिनु पीउ ॥१२॥ जिह सिमरनि तेरी जाइ बलाइ ॥ जिह सिमरनि तुझु पोहै न माइ ॥ सिमरि
 सिमरि हरि हरि मनि गाईਐ ॥ इहु सिमरनु सतिगुर ते पाईਐ ॥१३॥ सदा सदा सिमरि दिनु राति
 ॥ ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥ जागु सोइ सिमरन रस भोग ॥ हरि सिमरनु पाईਐ संजोग ॥१४॥
 जिह सिमरनि नाही तुझु भार ॥ सो सिमरनु राम नाम अधारु ॥ कहि कबीर जा का नही अंतु ॥ तिस के
 आगे तंतु न मंतु ॥१५॥१६॥

रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की

१७८ सतिगुर प्रसादि ॥

बंधचि बंधनु पाइआ ॥ मुकतै

ਗੁਰ ਅਨਲੁ ਬੁਜ਼ਾਇਆ ॥ ਜਬ ਨਖ ਸਿਖ ਇਹੁ ਮਨੁ ਚੀਨਾ ॥ ਤਥ ਅਂਤਰਿ ਮਜਨੁ ਕੀਨਾ ॥੧॥ ਪਵਨਪਤਿ
 ਉਨਮਨਿ ਰਹਨੁ ਖਰਾ ॥ ਨਹੀ ਮਿਰਤੁ ਨ ਜਨਮੁ ਜਰਾ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਲਟੀ ਲੇ ਸਕਤਿ ਸਹਾਰਾਂ ॥ ਪੈਸੀਲੇ
 ਗਗਨ ਮੜਾਰਾਂ ॥ ਬੇਧੀਅਲੇ ਚਕ੍ਰ ਭੁਅੰਗਾ ॥ ਭੇਟੀਅਲੇ ਰਾਇ ਨਿਸਂਗਾ ॥੩॥ ਚੂਕੀਅਲੇ ਮੋਹ ਮਿਇਆਸਾ ॥
 ਸਚਿ ਕੀਨੋ ਸੂਰ ਗਿਰਾਸਾ ॥ ਜਬ ਕੁੰਭਕੁ ਭਰਿਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ॥ ਤਹ ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਬੀਣਾ ॥੪॥੧॥੧੦॥
 ਬਕਤੈ ਬਕਿ ਸਬਦੁ
 ਸੁਨਾਇਆ ॥ ਸੁਨਤੈ ਸੁਨਿ ਮੰਨਿ ਬਸਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਰਤਾ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰਾਂ ॥ ਕਹੈ ਕਬੀਰਾ ਸਾਰਾਂ ॥੪॥੧॥੧੦॥
 ਚੰਦੁ ਸੂਰਯੁ ਦੁਇ ਜੋਤਿ ਸਖਪੁ ॥ ਜੋਤੀ ਅਂਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਅਨੂਪੁ ॥੫॥ ਕਲੁ ਰੇ ਗਿਆਨੀ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਜੋਤੀ
 ਅਂਤਰਿ ਧਰਿਆ ਪਸਾਰੁ ॥੬॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹੀਰਾ ਦੇਖਿ ਹੀਰੇ ਕਰਤ ਆਦੇਸੁ ॥ ਕਹੈ ਕਬੀਰੁ ਨਿਰੰਜਨ ਅਲੇਖੁ
 ॥੨॥੨॥੧੧॥ ਦੁਨੀਆ ਹੁਸੀਆਰ ਬੇਦਾਰ ਜਾਗਤ ਮੁਸੀਅਤ ਹਤ ਰੇ ਭਾਈ ॥ ਨਿਗਮ ਹੁਸੀਆਰ ਪਹ਼ਲਾਅ
 ਦੇਖਤ ਜਮੁ ਲੇ ਜਾਈ ॥੭॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨੰਨੀਬੁ ਭਿਓ ਆਂਨੁ ਆਂਨੁ ਭਿਓ ਨੰਨੀਬਾ ਕੇਲਾ ਪਾਕਾ ਝਾਰਿ ॥
 ਨਾਲੀਏਰ ਫਲੁ ਸੇਬਰਿ ਪਾਕਾ ਮੂਰਖ ਸੁਗਧ ਗਵਾਰ ॥੮॥ ਹਰਿ ਭਿਓ ਖਾਂਡੁ ਰੇਤੁ ਮਹਿ ਬਿਖਰਿਓ ਹਸਤੀ
 ਚੁਨਿਓ ਨ ਜਾਈ ॥ ਕਹਿ ਕਮੀਰ ਕੁਲ ਜਾਤਿ ਪਾਂਤਿ ਤਜਿ ਚੀਟੀ ਹੋਇ ਚੁਨਿ ਖਾਈ ॥੨॥੩॥੧੨॥

ਬਾਣੀ ਨਾਮਦੇਤ ਜੀਤ ਕੀ ਰਾਮਕਲੀ ਘਰੁ ੧

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਨੀਲੇ ਕਾਗਢੁ ਕਾਟੀਲੇ ਗ੍ਰੰਡੀ ਆਕਾਸ ਮਧੇ ਭਰਮੀਅਲੇ ॥ ਪੰਚ ਜਨਾ ਸਿਤ ਬਾਤ ਬਤੜਆ ਚੀਤੁ ਸੁ ਡੋਰੀ
 ਰਾਖੀਅਲੇ ॥੧॥ ਮਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਬੇਧੀਅਲੇ ॥ ਜੈਸੇ ਕਨਿਕ ਕਲਾ ਚਿਤੁ ਮਾਂਡੀਅਲੇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਨੀਲੇ
 ਕੁੰਭੁ ਭਰਾਈਲੇ ਊਦਕ ਰਾਜ ਕੁਆਰਿ ਪੁਰਦਰੀਏ ॥ ਹਸਤ ਬਿਨੋਦ ਬੀਚਾਰ ਕਰਤੀ ਹੈ ਚੀਤੁ ਸੁ ਗਾਗਰਿ ਰਾਖੀਅਲੇ
 ॥੨॥ ਮੰਦਰੁ ਏਕੁ ਦੁਆਰ ਦਸ ਜਾ ਕੇ ਗੜ ਚਰਾਵਨ ਛਾਡੀਅਲੇ ॥ ਪਾਂਚ ਕੋਸ ਪਰ ਗੜ ਚਰਾਵਤ ਚੀਤੁ ਸੁ ਬਛਰਾ
 ਰਾਖੀਅਲੇ ॥੩॥ ਕਹਤ ਨਾਮਦੇਤ ਸੁਨਹੁ ਤਿਲੀਚਨ ਬਾਲਕੁ ਪਾਲਨ ਪਤਫੀਅਲੇ ॥ ਅਂਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਕਾਜ
 ਬਿਖੁਧੀ ਚੀਤੁ ਸੁ ਬਾਰਿਕ ਰਾਖੀਅਲੇ ॥੪॥੧॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਾਸਤ ਆਨਤਾ ਗੀਤ ਕਵਿਤ ਨ ਗਾਵਤਗੇ ॥

ਅਖੰਡ ਮੰਡਲ ਨਿਰਕਾਰ ਮਹਿ ਅਨਹਦ ਬੇਨੁ ਬਜਾਵਤਗੋ ॥੧॥ ਬੈਰਾਗੀ ਰਾਮਹਿ ਗਾਵਤਗੋ ॥ ਸਬਦਿ ਅਤੀਤ
 ਅਨਾਹਦਿ ਰਾਤਾ ਆਕੂਲ ਕੈ ਘਰਿ ਜਾਉਗੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਝਿੜਾ ਪਿੰਗੁਲਾ ਅਤੁਰੁ ਸੁਖਮਨਾ ਪਤਨੈ ਬਂਧਿ
 ਰਹਾਉਗੋ ॥ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਟੁਝਿ ਸਮ ਕਰਿ ਰਾਖਉ ਬ੍ਰਹਮ ਜੋਤਿ ਮਿਲਿ ਜਾਉਗੋ ॥੨॥ ਤੀਰਥ ਦੇਖਿ ਨ ਜਲ ਮਹਿ
 ਪੈਸਤ ਜੀਅ ਜੰਤ ਨ ਸਤਾਵਤਗੋ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਗੁਰੁ ਦਿਖਾਏ ਘਟ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਨਾਉਗੋ ॥੩॥ ਪੰਚ ਸਹਾਈ
 ਜਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ਭਲੋ ਭਲੋ ਨ ਕਹਾਵਤਗੋ ॥ ਨਾਮਾ ਕਹੈ ਚਿਤੁ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਾਤਾ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧਿ ਸਮਾਉਗੋ ॥੪॥੨॥
 ਮਾਇ ਨ ਹੋਤੀ ਬਾਪੁ ਨ ਹੋਤਾ ਕਰਮੁ ਨ ਹੋਤੀ ਕਾਇਆ ॥ ਹਮ ਨਹੀ ਹੋਤੇ ਤੁਮ ਨਹੀ ਹੋਤੇ ਕਵਨੁ ਕਹਾਁ ਤੇ ਆਇਆ
 ॥੧॥ ਰਾਮ ਕੋਇ ਨ ਕਿਸ ਹੀ ਕੇਰਾ ॥ ਜੈਸੇ ਤਰਖਰਿ ਪੱਖਿ ਬਸੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚੰਦੁ ਨ ਹੋਤਾ ਸੂਰੁ ਨ ਹੋਤਾ
 ਪਾਨੀ ਪਕਨੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਸਾਸਤੁ ਨ ਹੋਤਾ ਬੇਦੁ ਨ ਹੋਤਾ ਕਰਮੁ ਕਹਾਁ ਤੇ ਆਇਆ ॥੨॥ ਖੇਚਰ ਭੂਚਰ
 ਤੁਲਸੀ ਮਾਲਾ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਣਵੈ ਪਰਮ ਤਤੁ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰ ਹੋਇ ਲਖਾਇਆ ॥੩॥੩॥
 ਰਾਮਕਲੀ ਘਰੁ ੨ ॥ ਬਾਨਾਰਸੀ ਤਪੁ ਕਰੈ ਤਲਟਿ ਤੀਰਥ ਮਰੈ ਅਗਨਿ ਫੈਕੈ ਕਾਇਆ ਕਲਪੁ ਕੀਜੈ ॥ ਅਸੁਮੇਧ
 ਜੁਗ ਕੀਜੈ ਸੋਨਾ ਗਰਭ ਦਾਨੁ ਦੀਜੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸ਼ਰਿ ਤਤੁ ਨ ਪ੍ਰੌਜੈ ॥੧॥ ਛੋਡਿ ਛੋਡਿ ਰੇ ਪਾਖੰਡੀ ਮਨ ਕਪਟੁ ਨ
 ਕੀਜੈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਨਿਤਹਿ ਲੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੰਗਾ ਜਤ ਗੋਦਾਵਰਿ ਜਾਈਐ ਕੁਝਿ ਜਤ ਕੇਦਾਰ
 ਨਾਈਐ ਗੋਮਤੀ ਸਹਸ ਗੜ ਦਾਨੁ ਕੀਜੈ ॥ ਕੋਟਿ ਜਤ ਤੀਰਥ ਕਰੈ ਤਨੁ ਜਤ ਹਿਵਾਲੇ ਗਾਰੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸ਼ਰਿ ਤਤੁ
 ਨ ਪ੍ਰੌਜੈ ॥੨॥ ਅਸੁ ਦਾਨ ਗਜ ਦਾਨ ਸਿਹਜਾ ਨਾਰੀ ਭੂਮਿ ਦਾਨ ਐਸੀ ਦਾਨੁ ਨਿਤ ਨਿਤਹਿ ਕੀਜੈ ॥ ਆਤਮ ਜਤ
 ਨਿਰਮਾਇਲੁ ਕੀਜੈ ਆਪ ਬਰਾਬਰਿ ਕੱਚਨੁ ਦੀਜੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸ਼ਰਿ ਤਤੁ ਨ ਪ੍ਰੌਜੈ ॥੩॥ ਮਨਹਿ ਨ ਕੀਜੈ ਰੋਸੁ
 ਜਮਹਿ ਨ ਦੀਜੈ ਦੋਸੁ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਕਾਣ ਪਦੁ ਚੀਨਿ ਲੀਜੈ ॥ ਜਸਰਥ ਰਾਇ ਨਨਦੁ ਰਾਜਾ ਮੇਰਾ ਰਾਮ ਚੰਦੁ ਪ੍ਰਣਵੈ
 ਨਾਮਾ ਤਤੁ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਜੈ ॥੪॥੪॥

ਰਾਮਕਲੀ ਬਾਣੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਕੀ

੧੪ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਝੀਐ ਗੁਨੀਐ ਨਾਮੁ ਸਭੁ ਸੁਨੀਐ ਅਨਭਤ ਭਾਉ ਨ ਦਰਸੈ ॥ ਲੋਹਾ ਕੱਚਨੁ ਹਿਰਨ ਹੋਇ ਕੈਸੇ ਜਤ ਪਾਰਸਹਿ ਨ

ਪਰਸੈ ॥੧॥ ਦੇਵ ਸੰਸੈ ਗਾਂਠਿ ਨ ਛੂਟੈ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਾਇਆ ਮਦ ਮਤਸਰ ਇਨ ਪੰਚਹੁ ਮਿਲਿ ਲੂਟੇ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਹਮ ਬਡ ਕਬਿ ਕੁਲੀਨ ਹਮ ਪੰਡਿਤ ਹਮ ਜੋਗੀ ਸੰਨਿਆਸੀ ॥ ਗਿਆਨੀ ਗੁਨੀ ਸੂਰ ਹਮ ਦਾਤੇ ਇਹ
ਬੁਧਿ ਕਬਹਿ ਨ ਨਾਸੀ ॥੨॥ ਕਹੁ ਰਵਿਦਾਸ ਸਖੈ ਨਹੀ ਸਮਝਾਸਿ ਭੂਲਿ ਪਰੇ ਜੈਸੇ ਕਤੇ ॥ ਮੋਹਿ ਅਧਾਰੁ
ਨਾਮੁ ਨਾਰਾਇਨ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨ ਮੋਰੇ ॥੩॥੧॥

ਰਾਮਕਲੀ ਬਣੀ ਬੇਣੀ ਜੀਤ ਕੀ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਫਿੜਾ ਪਿੰਗੁਲਾ ਅਤੁਰ ਸੁਖਮਨਾ ਤੀਨਿ ਕਸਹਿ ਇਕ ਠਾਈ ॥ ਬੇਣੀ ਸੰਗਮੁ ਤਹ ਪਿਰਾਗੁ ਮਨੁ ਮਜਨੁ
ਕਰੇ ਤਿਥਾਈ ॥੧॥ ਸੰਤਹੁ ਤਹਾ ਨਿਰੰਜਨ ਰਾਮੁ ਹੈ ॥ ਗੁਰ ਗਮਿ ਚੀਨੈ ਬਿਰਲਾ ਕੋਇ ॥ ਤਹਾਁ ਨਿਰੰਜਨੁ
ਰਮਈਆ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦੇਵ ਸਥਾਨੈ ਕਿਆ ਨੀਸਾਣੀ ॥ ਤਹ ਬਾਜੇ ਸਬਦ ਅਨਾਹਦ ਬਾਣੀ ॥
ਤਹ ਚੰਦੁ ਨ ਸੂਰਜੁ ਪਤਣੁ ਨ ਪਾਣੀ ॥ ਸਾਖੀ ਜਾਗੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀ ॥੨॥ ਤਪਯੈ ਗਿਆਨੁ ਦੁਰਮਤਿ
ਛੀਜੈ ॥ ਅਮੂਰ ਰਸਿ ਗਗਨਤਰਿ ਭੀਜੈ ॥ ਏਸੁ ਕਲਾ ਜੋ ਜਾਣੈ ਭੇਤ ॥ ਭੇਤੈ ਤਾਸੁ ਪਰਮ ਗੁਰਦੇਤ ॥੩॥
ਦਸਮ ਦੁਆਰਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ਪਰਮ ਪੁਰਖ ਕੀ ਘਾਟੀ ॥ ਊਪਰਿ ਹਾਟੁ ਹਾਟ ਪਰਿ ਆਲਾ ਆਲੇ ਭੀਤਰਿ
ਥਾਤੀ ॥੪॥ ਜਾਗਤੁ ਰਹੈ ਸੁ ਕਕਹੁ ਨ ਸੋਵੈ ॥ ਤੀਨਿ ਤਿਲੋਕ ਸਮਾਧਿ ਪਲੋਵੈ ॥ ਬੀਜ ਮੰਤੁ ਲੈ ਹਿਰਦੈ ਰਹੈ
॥ ਮਨੂਆ ਤਲਟਿ ਸੁਨਨ ਮਹਿ ਗਹੈ ॥੫॥ ਜਾਗਤੁ ਰਹੈ ਨ ਅਲੀਆ ਭਾਖੈ ॥ ਪਾਚਤ ਇੰਦ੍ਰੀ ਬਸਿ ਕਰਿ ਰਾਖੈ
॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਖੀ ਰਾਖੈ ਚੀਤਿ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪੈ ਕੁਸਨ ਪਰੀਤਿ ॥੬॥ ਕਰ ਪਲਵ ਸਾਖਾ ਕੀਚਾਰੇ ॥
ਅਪਨਾ ਜਨਮੁ ਨ ਜੂਐ ਹਾਰੇ ॥ ਅਸੁਰ ਨਦੀ ਕਾ ਬੰਧੈ ਮੂਲੁ ॥ ਪਛਿਮ ਫੇਰਿ ਚੜਾਵੈ ਸੂਰੁ ॥ ਅਜ਼਼ਰੁ ਜੈ ਸੁ
ਨਿਜ਼ਰੁ ਝੜੈ ॥ ਜਗਨਾਥ ਸਿਤ ਗੋਸਟਿ ਕਰੈ ॥੭॥ ਚਤੁਮੁਖ ਦੀਵਾ ਜੋਤਿ ਦੁਆਰ ॥ ਪਲ੍ਹੁ ਅਨਤ ਮੂਲੁ
ਬਿਚਕਾਰਿ ॥ ਸਰਕ ਕਲਾ ਲੇ ਆਪੇ ਰਹੈ ॥ ਮਨੁ ਮਾਣਕੁ ਰਤਨਾ ਮਹਿ ਗੁਹੈ ॥੮॥ ਮਸਤਕਿ ਪਦਮੁ ਦੁਆਲੈ
ਮਣੀ ॥ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਤ੃ਭਵਣ ਧਣੀ ॥ ਪੰਚ ਸਬਦ ਨਿਰਮਾਇਲ ਬਾਜੇ ॥ ਢੁਲਕੇ ਚਵਰ ਸੰਖ ਧਨ ਗਾਜੇ ॥
ਦਲਿ ਮਲਿ ਦੈਤਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ॥ ਬੇਣੀ ਜਾਚੈ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ॥੯॥੧॥

रागु नट नाराइन महला ४

੧੮ੰ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

मेरे मन जपि अहिनिसि नामु हरे ॥ कोटि कोटि दोख बहु कीने सभ परहरि पासि धरे ॥੧॥ रहाउ ॥
हरि हरि नामु जपहि आराधहि सेवक भाडि खरे ॥ किलबिख दोख गए सभ नीकरि जित पानी मैलु
हरे ॥੨॥ खिनु खिनु नरु नाराइनु गावहि मुखि बोलहि नर नरहरे ॥ पंच दोख असाध नगर महि
डिकु खिनु पलु दूरि करे ॥੩॥ वडभागी हरि नामु धिआवहि हरि के भगत हरे ॥ तिन की संगति
देहि प्रभ जाचउ मै मूँड मुगध निस्तरे ॥੪॥੧॥ नट महला ४ ॥ राम जपि जन रामै नामि
रले ॥ राम नामु जपिओ गुर बचनी हरि धारी हरि कृपले ॥੨॥ रहाउ ॥ हरि हरि अगम अगोचरु
सुआमी जन जपि मिलि सलल सलले ॥ हरि के संत मिलि राम रसु पाइआ हम जन कै बलि बलले
॥੫॥ पुरखोतमु हरि नामु जनि गाइओ सभि दालद दुख दलले ॥ विचि देही दोख असाध पंच धातू
हरि कीए खिन परले ॥੬॥ हरि के संत मनि प्रीति लगाई जित देखै ससि कमले ॥ उनवै घनु घन
घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥੭॥ हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवहि देखि हरि
मिले ॥ जन नानक हरि अमल हरि लाए हरि मेलहु अनद भले ॥੮॥੨॥ नट महला ४ ॥ मेरे

ਮਨ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖੇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਹਮ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨ ਪਖੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਊਤਮ ਜਗਨਾਥ ਜਗਦੀਸੁਰ ਹਮ ਪਾਪੀ ਸਰਨਿ ਰਖੇ ॥ ਤੁਮ ਕਡ ਪੁਰਖ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਹਰਿ
 ਦੀਆ ਨਾਮੁ ਸੁਖੇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਗੁਨ ਊਚ ਨੀਚ ਹਮ ਗਾਏ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸਂਗਿ ਸਖੇ ॥ ਜਿਤ ਚੰਦਨ ਸਂਗਿ ਬਸੈ
 ਨਿੰਮੁ ਬਿਰਖਾ ਗੁਨ ਚੰਦਨ ਕੇ ਬਸਖੇ ॥੨॥ ਹਮਰੇ ਅਵਗਨ ਬਿਖਿਆ ਬਿਖੈ ਕੇ ਬਹੁ ਬਾਰ ਬਾਰ ਨਿਮਖੇ ॥
 ਅਵਗਨਿਆਰੇ ਪਾਥਰ ਭਾਰੇ ਹਰਿ ਤਾਰੇ ਸਂਗਿ ਜਨਖੇ ॥੩॥ ਜਿਨ ਕਤ ਤੁਮ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਸੁਆਮੀ ਸਮ
 ਤਿਨ ਕੇ ਪਾਪ ਕੂਖੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਦਿਇਆਲ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਤੁਮ ਦੁਸਟ ਤਾਰੇ ਹਰਣਖੇ ॥੪॥੩॥
 ਨਟ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਮ ਰੰਗੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੀ ਜਗਦੀਸੁਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ
 ਜਨ ਪਾਗ ਲਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਭੂਲ ਚੂਕ ਹਮ ਅਬ ਆਏ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨਗੇ ॥ ਤੁਮ
 ਸਰਣਾਗਤਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਰਾਖਹੁ ਕਡ ਪਾਪਗੇ ॥੧॥ ਤੁਮਰੀ ਸੱਗਤਿ ਹਰਿ ਕੋ ਕੋ ਨ ਉਧਰਿਆ
 ਪ੍ਰਭ ਕੀਏ ਪਤਿਤ ਪਵਗੇ ॥ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਛੀਪਾ ਦੁਸਟਾਰਿਆ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੀ ਪੈਜ ਜਨਗੇ ॥੨॥ ਜੋ ਤੁਮਰੇ ਗੁਨ
 ਗਾਵਹਿ ਸੁਆਮੀ ਹਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਤਿਨਗੇ ॥ ਭਵਨ ਭਵਨ ਪਵਿਤ ਸਭਿ ਕੀਏ ਜਹ ਧੂਰਿ ਪਰੀ ਜਨ ਪਗੇ
 ॥੩॥ ਤੁਮਰੇ ਗੁਨ ਪ੍ਰਭ ਕਹਿ ਨ ਸਕਹਿ ਹਮ ਤੁਮ ਕਡ ਕਡ ਪੁਰਖ ਕਡਗੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਦਿਇਆ ਪ੍ਰਭ
 ਧਾਰਹੁ ਹਮ ਸੇਵਹ ਤੁਮ ਜਨ ਪਗੇ ॥੪॥੪॥ ਨਟ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨੇ ॥ ਜਗਨਾਥਿ
 ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮ ਬਨੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਜਸੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ਤੁਪਦੇਸਿ
 ਗੁਰੂ ਗੁਰ ਸੁਨੇ ॥ ਕਿਲਬਿਖ ਪਾਪ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕਾਟੇ ਜਿਵ ਖੇਤ ਕੁਸਾਨਿ ਲੁਨੇ ॥੧॥ ਤੁਮਰੀ ਤੁਪਮਾ ਤੁਮ ਹੀ
 ਪ੍ਰਭ ਜਾਨਹੁ ਹਮ ਕਹਿ ਨ ਸਕਹਿ ਹਰਿ ਗੁਨੇ ॥ ਜੈਸੇ ਤੁਮ ਤੈਸੇ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮ ਹੀ ਗੁਨ ਜਾਨਹੁ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ॥੨॥
 ਮਾਇਆ ਫਾਸ ਬੰਧ ਬਹੁ ਬੰਧੇ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਖੁਲ ਖੁਲਨੇ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਕੁਂਚਰੁ ਤਦੂਐ ਬਾਂਧਿਆ ਹਰਿ ਚੇਤਿਆ
 ਮੋਖ ਸੁਖਨੇ ॥੩॥ ਸੁਆਮੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਤੁਮ ਖੋਜਹੁ ਜੁਗ ਜੁਗਨੇ ॥ ਤੁਮਰੀ ਥਾਹ ਪਾਈ ਨਹੀਂ
 ਪਾਵੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਕਡਨੇ ॥੪॥੫॥ ਨਟ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕਲਿ ਕੀਰਤਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਵਣੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ

ਦਿੱਖਾਲਿ ਦਿੱਖਾ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰੀ ਲਗੀ ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਜਪਣੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਤੁਮ ਕਡ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ
ਸੁਆਮੀ ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਹਰਿ ਰੁਝੇ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਤੁਮਰੇ ਕਡ ਕਟਾਖ ਹੈ ਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਣੇ ॥੧॥
ਛਿਹੁ ਪਰਪਂਚੁ ਕੀਆ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਸਭੁ ਜਗਜੀਵਨੁ ਜੁਗਣੇ ॥ ਜਿਤ ਸਲਲੈ ਸਲਲ ਤਠਹਿ ਬਹੁ ਲਹਰੀ ਮਿਲਿ
ਸਲਲੈ ਸਲਲ ਸਮਣੇ ॥੨॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਕੀਆ ਸੁ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨਹੁ ਹਮ ਨਹ ਜਾਣੀ ਹਰਿ ਗਹਣੇ ॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ
ਕਤ ਰਿਦ ਤਸਤਤਿ ਧਾਰਹੁ ਹਮ ਕਰਹ ਪ੍ਰਭੂ ਸਿਮਰਣੇ ॥੩॥ ਤੁਮ ਜਲ ਨਿਧਿ ਹਰਿ ਮਾਨ ਸਰੋਵਰ ਜੋ
ਸੇਵੈ ਸਭ ਫਲਣੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਾਂਥੈ ਹਰਿ ਦੇਵਹੁ ਕਰਿ ਕ੃ਪਣੇ ॥੪॥੬॥

ਨਟ ਨਾਰਾਇਨ ਮਹਲਾ ੪ ਪਡਤਾਲ

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਸੇਵ ਸਫਲ ਹਰਿ ਘਾਲ ॥ ਲੇ ਗੁਰ ਪਾਗ ਰੇਨ ਰਵਾਲ ॥ ਸਭਿ ਦਲਿਦ ਭੰਜਿ ਦੁਖ ਦਾਲ ॥ ਹਰਿ ਹੋ ਹੋ ਹੋ
ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਗ੍ਰਹੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਸਕਾਰਿਓ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰੰਗ ਮਹਲ ਬੇਅੰਤ ਲਾਲ
ਲਾਲ ਹਰਿ ਲਾਲ ॥ ਹਰਿ ਆਪਨੀ ਕ੃ਪਾ ਕਰੀ ਆਪਿ ਗ੍ਰਹਿ ਆਇਓ ਹਮ ਹਰਿ ਕੀ ਗੁਰ ਕੀਈ ਹੈ ਬਸੀਠੀ ਹਮ
ਹਰਿ ਦੇਖੋ ਭੰਈ ਨਿਹਾਲ ਨਿਹਾਲ ਨਿਹਾਲ ॥੧॥ ਹਰਿ ਆਵਤੇ ਕੀ ਖਬਰਿ ਗੁਰਿ ਪਾਈ ਮਨਿ ਤਨਿ
ਆਨਦੋ ਆਨਦ ਭਏ ਹਰਿ ਆਵਤੇ ਸੁਨੇ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਹਰਿ ਲਾਲ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਭਏ ਗਲਤਾਨ
ਹਾਲ ਨਿਹਾਲ ਨਿਹਾਲ ॥੨॥੧॥੭॥ ਨਟ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਨ ਮਿਲੁ ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਸੁਭਵਂਤੀ ॥ ਸੁਨਿ ਅਕਥ
ਕਥਾ ਸੁਖਵਂਤੀ ॥ ਸਭ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਲਵਾਤੀ ॥ ਹਰਿ ਹੋ ਹੋ ਹੋ ਲਿਖਤੁ ਲਿਖਵਂਤੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ
ਕੀਰਤਿ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚਿ ਊਤਮ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਕਥਾ ਭਜਂਤੀ ॥ ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਸੁਣੀ ਮਨੀ ਹੈ ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਤਿਸੁ
ਜਨ ਕੈ ਹਤ ਕੁਰਬਾਨਤੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਅਕਥ ਕਥਾ ਕਾ ਜਿਨਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਤਿਸੁ ਜਨ ਸਭ ਭੂਖ ਲਵਾਤੀ ॥
ਨਾਨਕ ਜਨ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਿ ਤ੍ਰਧਤੇ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹੋਵਂਤੀ ॥੨॥੨॥੮॥ ਨਟ ਮਹਲਾ ੪ ॥
ਕੀਝੀ ਆਨਿ ਸੁਨਾਵੈ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਗਾਲ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਹਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਾਲ ॥ ਸੋ ਹਰਿ ਜਨੁ ਹੈ ਭਲ

भाल ॥ हरि हो हो मेलि निहाल ॥੧॥ रहाउ ॥ हरि का मारगु गुर संति बताइओ गुरि चाल
दिखाई हरि चाल ॥ अंतरि कपटु चुकावहु मेरे गुरसिखहु निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल
निहाल निहाल निहाल ॥੨॥ ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाए जिना हरि प्रभु जानिओ मेरा
नालि ॥ जन नानक कउ मति हरि प्रभि दीनी हरि देखि निकटि हदूरि निहाल निहाल
निहाल ॥੩॥੬॥

रागु नट नाराइन महला ५

੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

राम हउ किआ जाना किआ भावै ॥ मनि पिआस बहुतु दरसावै ॥੧॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी सोई
जनु तेरा जिसु ऊपरि रुच आवै ॥ कृपा करहु जिसु पुरख बिधाते सो सदा सदा तुधु धिआवै
॥੨॥ कवन जोग कवन गिआन धिआना कवन गुनी रीझावै ॥ सोई जनु सोई निज भगता जिसु
ऊपरि रंग लावै ॥੩॥ साई मति साई बुधि सिआनप जितु निमख न प्रभु बिसरावै ॥ संतसंगि
लगि एहु सुखु पाइओ हरि गुन सद ही गावै ॥੪॥ देखिओ अचरजु महा मंगल रूप किछु आन
नही दिसटावै ॥ कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ तह गरभ जोनि कह आवै ॥੫॥੧॥

नट नाराइन महला ५ दुपदे

੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

उलाहनो मै काहू न दीओ ॥ मन मीठ तुहारो कीओ ॥੧॥ रहाउ ॥ आगिआ मानि जानि सुखु पाइआ
सुनि सुनि नामु तुहारो जीओ ॥ ईहाँ ऊहा हरि तुम ही तुम ही इहु गुर ते मंत्र वृड़ीओ ॥੨॥ जब ते
जानि पाई एह बाता तब कुसल खेम सभ थीओ ॥ साधसंगि नानक परगासिओ आन नाही रे बीओ ॥
੩॥੨॥ नट महला ५ ॥ जा कउ भई तुमारी धीर ॥ जम की तास मिटी सुखु पाइआ निकसी हउमै
पीर ॥੪॥ रहाउ ॥ तपति बुझानी अंमृत बानी तृपते जिउ बारिक खीर ॥ मात पिता साजन संत

मेरे संत सहाई बीर ॥१॥ खुले भ्रम भीति मिले गोपाला हीरै बेधे हीर ॥ बिसम भए नानक जसु गावत
 ठाकुर गुनी गहीर ॥२॥२॥३॥ नट महला ५ ॥ अपना जनु आपहि आपि उधारिओ ॥ आठ पहर
 जन कै संगि बसिओ मन ते नाहि बिसारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु पेखिओ दास का
 कुलु न बिचारिओ ॥ करि किरपा नामु हरि दीओ सहजि सुभाइ सवारिओ ॥१॥ महा बिखमु अगनि का
 सागरु तिस ते पारि उतारिओ ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो पुनह पुनह बलिहारिओ ॥२॥३॥४॥
 नट महला ५ ॥ हरि हरि मन महि नामु कहिओ ॥ कोटि अप्राध मिटहि खिन भीतरि ता का दुखु न
 रहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी साधू संगि लहिओ ॥ सगल तिआगि एक लिव लागी
 हरि हरि चरन गहिओ ॥१॥ कहत मुकत सुनते निसतारे जो जो सरनि पड़िओ ॥ सिमरि सिमरि
 सुआमी प्रभु अपुना कहु नानक अनदु भइओ ॥२॥४॥५॥ नट महला ५ ॥ चरन कमल संगि लागी
 डोरी ॥ सुख सागर करि परम गति मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ अंचला गहाइओ जन अपुने कउ मनु बीधो प्रेम की
 खोरी ॥ जसु गावत भगति रसु उपजिओ माइआ की जाली तोरी ॥१॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि
 आन न पेखउ होरी ॥ नानक मेलि लीओ दासु अपुना प्रीति न कबहू थोरी ॥२॥५॥६॥ नट महला ५ ॥
 मेरे मन जपु जपि हरि नाराइण ॥ कबहू न बिसरहु मन मेरे ते आठ पहर गुन गाइण ॥१॥
 रहाउ ॥ साधू धूरि करउ नित मजनु सभ किलबिख पाप गवाइण ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि
 घटि घटि दिसटि समाइण ॥१॥ जाप ताप कोटि लख पूजा हरि सिमरण तुलि न लाइण ॥ दुइ कर
 जोड़ि नानकु दानु माँगै तेरे दासनि दास दसाइण ॥२॥६॥७॥ नट महला ५ ॥ मेरै सरबसु नामु निधानु
 ॥ करि किरपा साधू संगि मिलिओ सतिगुरि दीनो दानु ॥१॥ रहाउ ॥ सुखदाता दुख भंजनहारा गाउ
 कीरतनु पूरन गिआनु ॥ कामु क्रोधु लोभु खंड खंड कीने बिनसिओ मूँड अभिमानु ॥१॥ किआ गुण तेरे
 आखि वखाणा प्रभ अंतरजामी जानु ॥ चरन कमल सरनि सुख सागर नानकु सद कुरबानु ॥२॥७॥८॥

ਨਟ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਉ ਵਾਰਿ ਵਾਰਿ ਜਾਤ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਗੁਨ ਤੁਮ ਪੂਰਨ ਦਾਤੇ
ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਦਿਆਲ ॥੧॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਵਤ ਜਾਗਤ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨ ਮਾਲ ॥੨॥ ਦਰਸਨ ਪਿਆਸ
ਬਹੁਤੁ ਮਨਿ ਮੈਰੈ ਨਾਨਕ ਦਰਸ ਨਿਹਾਲ ॥੩॥੮॥੯॥

ਨਟ ਪੜਤਾਲ ਮਹਲਾ ੫

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕੋਊ ਹੈ ਮੇਰੋ ਸਾਜਨੁ ਸੀਤੁ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਨਾਵੈ ਨੀਤ ॥ ਬਿਨਸੈ ਦੁਖੁ ਬਿਪਰੀਤਿ ॥ ਸਭੁ ਅਰਪਤ ਮਨੁ ਤਨੁ ਚੀਤੁ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੋਈ ਵਿਰਲਾ ਆਪਨ ਕੀਤ ॥ ਸਾਂਗਿ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨੁ ਸੀਤ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਦੀਤ
॥੧॥ ਹਰਿ ਭਜਿ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜੀਤ ॥ ਕੋਟਿ ਪਤਿ ਹੋਹਿ ਪੁਨੀਤ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਬਲਿ ਬਲਿ ਕੀਤ
॥੨॥੧॥੧੦॥੧੬॥

ਨਟ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੪

੧੮੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਮ ਮੇਰੇ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਬਿਨੁ ਸੇਕਾ ਮੈ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰੇ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਧਿਆਵਹੁ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰੇ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਭਏ ਪ੍ਰਭ
ਠਾਕੁਰ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਮਧਸੂਦਨ ਜਗਜੀਵਨ ਮਾਥੋ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥ ਇਕ ਬਿਨਤ
ਕੇਨਤੀ ਕਰਤ ਗੁਰ ਆਗੈ ਮੈ ਸਾਥ੍ਵ ਚਰਨ ਪਖਾਰੇ ॥੨॥ ਸਹਸ ਨੇਤ ਨੇਤ ਹੈ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਏਕੋ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਾਰੇ ॥
ਸਹਸ ਮੂਰਤਿ ਏਕੋ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ ਗੁਰਮਤਿ ਤਾਰੇ ॥੩॥ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਦਮੋਦਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਨਾਮੁ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਬਨੀ ਅਤਿ ਮੀਠੀ ਜਿਤ ਗ੍ਰੰਗ ਗਟਕ ਸਮਾਰੇ ॥੪॥ ਰਸਨਾ ਸਾਦ
ਚਖੈ ਭਾਇ ਟ੍ਰੈ ਅਤਿ ਫੀਕੇ ਲੋਭ ਬਿਕਾਰੇ ॥ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਦ ਚਖਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਸਭ ਅਨ ਰਸ ਸਾਦ
ਬਿਸਾਰੇ ॥੫॥ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਸੁਣਿ ਕਹਤਿਆ ਪਾਪ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ
ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਜਨ ਪਿਆਰੇ ॥੬॥ ਸਾਸ ਸਾਸ ਸਾਸ ਹੈ ਜੇਤੇ ਮੈ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰੇ ॥
ਸਾਸੁ ਸਾਸੁ ਜਾਇ ਨਾਮੈ ਬਿਨੁ ਸੋ ਬਿਰਥਾ ਸਾਸੁ ਬਿਕਾਰੇ ॥੭॥ ਕ੃ਪਾ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਦੀਨ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨੀ ਮੋ ਕਤ

हरि जन मेलि पिआरे ॥ नानक दासनि दासु कहतु है हम दासन के पनिहारे ॥८॥१॥ नट महला ४
 ॥ राम हम पाथर निरगुनीआरे ॥ कृपा कृपा करि गुरु मिलाए हम पाहन सबदि गुर तारे ॥१॥
 रहाउ ॥ सतिगुर नामु दृङ्गाए अति मीठा मैलागरु मलगारे ॥ नामै सुरति वजी है दह दिसि हरि
 मुसकी मुसक गंधारे ॥२॥ तेरी निरगुण कथा कथा है मीठी गुरि नीके बचन समारे ॥ गावत गावत
 हरि गुन गाए गुन गावत गुरि निसतारे ॥३॥ बिबेकु गुरु गुरु समदरसी तिसु मिलीअै संक उतारे
 ॥ सतिगुर मिलीअै परम पढु पाइआ हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥४॥ पाखंड पाखंड करि करि भरमे
 लोभु पाखंडु जगि बुरिआरे ॥ हलति पलति दुखदाई होवहि जमकालु खड़ा सिरि मारे ॥५॥ उगवै
 दिनसु आलु जालु समालै बिखु माइआ के बिस्थारे ॥ आई रैनि भडिआ सुपन्नतरु बिखु सुपनै भी
 दुख सारे ॥६॥ कलरु खेतु लै कूड़ जमाइआ सभ कूड़ के खलवारे ॥ साकत नर सभि भूख भुखाने दरि
 ठाढे जम जंदारे ॥७॥ मनमुख करजु चडिआ बिखु भारी उतरै सबटु वीचारे ॥ जितने करज करज के
 मंगीए करि सेवक पगि लगि वारे ॥८॥ जगन्नाथ सभि जंत्र उपाए नकि खीनी सभ नथहारे ॥
 नानक प्रभु खिंचै तिव चलीअै जित भावै राम पिआरे ॥९॥२॥ नट महला ४ ॥ राम हरि अंमृत सरि
 नावारे ॥ सतिगुरि गिआनु मजनु है नीको मिलि कलमल पाप उतारे ॥१॥ रहाउ ॥ संगति का
 गुनु बहुतु अधिकाई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥ परस नपरस भए कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे
 ॥२॥ अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी करि नाराइण बोलारे ॥ मेरे ठाकुर कै मनि भाइ भावनी
 जमकंकर मारि बिदारे ॥३॥ मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ सतसंगति मिलै त
 दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ॥४॥ जब लगु जीउ पिंडु है साबतु तब लगि किछु न
 समारे ॥ जब घर मंदरि आगि लगानी कठि कूपु कठै पनिहारे ॥५॥ साकत सिउ मन मेलु न
 करीअहु जिनि हरि हरि नामु बिसारे ॥ साकत बचन बिछूआ जिउ डसीअै तजि साकत परै परारे

॥੫॥ ਲਗਿ ਲਗਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਹੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ਲਗਿ ਸਾਥੂ ਸੰਗਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਬਚਨ ਸਤਿ ਸਤਿ ਕਰਿ
ਮਾਨੇ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਬਹੁਤੁ ਪਿਆਰੇ ॥੬॥ ਪ੍ਰਾਬਿ ਜਨਮਿ ਪਰਚੂਨ ਕਮਾਏ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਪਿਆਰੇ ॥
ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਰਸੁ ਗਾਵੈ ਰਸੁ ਕੀਚਾਰੇ ॥੭॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰੂਪ ਰੰਗਿ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਮੇਰੇ ਲਾਲਨ
ਲਾਲ ਗੁਲਾਰੇ ॥ ਜੈਸਾ ਰੁਣੁ ਦੇਹਿ ਸੋ ਹੋਵੈ ਕਿਆ ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਕਿਚਾਰੇ ॥੮॥੩॥ ਨਟ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਰਾਮ ਗੁਰ
ਸਰਨਿ ਪ੍ਰਭੂ ਰਖਵਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਕੁਂਚਰੁ ਤਦ੍ਵਾਈ ਪਕਰਿ ਚਲਾਇਆ ਕਰਿ ਊਪਰੁ ਕਛਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਬਹੁਤੁ ਅਤਿ ਨੀਕੇ ਮਨਿ ਸਰਧਾ ਕਰਿ ਹਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭਿ ਸਰਧਾ ਭਗਤਿ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਜਨ ਕੀ
ਪੈਜ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਲਾਗੈ ਸਭੁ ਦੇਖੈ ਬ੍ਰਹਮ ਪਸਾਰੇ ॥ ਏਕੁ ਪੁਰਖੁ ਇਕੁ ਨਦੀ ਆਵੈ ਸਭ
ਏਕਾ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਰੇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰੁ ਰਵਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ਸਭੁ ਚੇਰੀ ਜਗਤੁ ਸਮਾਰੇ ॥ ਆਪਿ
ਦਿਇਆਲੁ ਦਿਇਆ ਦਾਨੁ ਦੇਵੈ ਵਿਚਿ ਪਾਥਰ ਕੀਰੇ ਕਾਰੇ ॥੩॥ ਅੰਤਰਿ ਵਾਸੁ ਬਹੁਤੁ ਮੁਸਕਾਈ ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਲਾ
ਮਿਗੁ ਸਿੰਘਾਰੇ ॥ ਬਨੁ ਬਨੁ ਢੂਢਿ ਢੂਢਿ ਫਿਰਿ ਥਾਕੀ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਧਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੪॥ ਬਾਣੀ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਹੈ
ਬਾਣੀ ਵਿਚਿ ਬਾਣੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਰੇ ॥ ਗੁਰੁ ਬਾਣੀ ਕਹੈ ਸੇਵਕੁ ਜਨੁ ਮਾਨੈ ਪਰਤਖਿ ਗੁਰੁ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੫॥
ਸਭੁ ਹੈ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਹੈ ਪਸ਼ਿਆ ਮਨਿ ਬੀਜਿਆ ਖਾਵਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਜਨ ਚੰਦ੍ਰਹਾਂਸੁ ਦੁਖਿਆ ਧਿਸਟਕੁਧੀ ਅਪੁਨਾ
ਘਰੁ ਲੂਕੀ ਜਾਰੇ ॥੬॥ ਪ੍ਰਭ ਕਤ ਜਨੁ ਅੰਤਰਿ ਰਿਦ ਲੋਚੈ ਪ੍ਰਭ ਜਨ ਕੇ ਸਾਸ ਨਿਹਾਰੇ ॥ ਕ੃ਪਾ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ
ਭਗਤਿ ਦੂਡਾਏ ਜਨ ਪੀਛੈ ਜਗੁ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੭॥ ਆਪਨ ਆਪਿ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਸੂਸਟਿ
ਸਵਾਰੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਆਪਿ ਸਭੁ ਵਰਤੈ ਕਰਿ ਕ੃ਪਾ ਆਪਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੮॥੪॥ ਨਟ ਮਹਲਾ ੪ ॥
ਰਾਮ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਤਕਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਪਕਰਿ ਦ੍ਰੋਪਤੀ ਦੁਸਟਾਂ ਆਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਾਜ ਨਿਵਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਾਚਿਕ ਜਨ ਤੇਰੇ ਇਕੁ ਮਾਗਤ ਦਾਨੁ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਨਿਤ ਸਰਧਾ ਲਾਗੀ ਮੌ ਕਤ ਹਰਿ
ਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਸਾਕਤ ਕਰਮ ਪਾਣੀ ਜਿਤ ਮਥੀਐ ਨਿਤ ਪਾਣੀ ਝੋਲ ਝੁਲਾਰੇ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਸਾਂਗਤਿ
ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਕਛਿ ਮਾਖਨ ਕੇ ਗਟਕਾਰੇ ॥੨॥ ਨਿਤ ਨਿਤ ਕਾਇਆ ਮਜਨੁ ਕੀਆ ਨਿਤ ਮਲਿ ਮਲਿ

देह सवारे ॥ मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाए सभ फोकट चार सीगारे ॥३॥ मटकि मटकि
 चलु सखी सहेली मेरे ठाकुर के गुन सारे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भाई मै सतिगुर अलखु लखारे
 ॥४॥ नारी पुरखु पुरखु सभ नारी सभु एको पुरखु मुरारे ॥ संत जना की रेनु मनि भाई मिलि
 हरि जन हरि निस्तारे ॥५॥ ग्राम ग्राम नगर सभ फिरिआ रिद अंतरि हरि जन भारे ॥ सरधा
 सरधा उपाइ मिलाए मो कउ हरि गुर गुरि निस्तारे ॥६॥ पवन सूत सभु नीका करिआ सतिगुरि
 सबदु वीचारे ॥ निज घरि जाइ अंमृत रसु पीआ बिनु नैना जगतु निहारे ॥७॥ तउ गुन
 ईस बरनि नही साकउ तुम मंदर हम निक कीरे ॥ नानक कृपा करहु गुर मेलहु मै रामु
 जपत मनु धीरे ॥८॥५॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन भजु ठाकुर अगम अपारे ॥ हम पापी
 बहु निरगुणीआरे करि किरपा गुरि निस्तारे ॥१॥ रहाउ ॥ साधू पुरख साध जन पाए इक
 बिनउ करउ गुर पिआरे ॥ राम नामु धनु पूजी देवहु सभु तिसना भूख निवारे ॥१॥ पचै
 पतंगु मृग भ्रिंग कुंचर मीन इक इंद्री पकरि सधारे ॥ पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु
 पाप निवारे ॥२॥ सासक बेद सोधि सोधि देखे मुनि नारद बचन पुकारे ॥ राम नामु पड़हु
 गति पावहु सतसंगति गुरि निस्तारे ॥३॥ प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु
 निहारे ॥ मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥४॥ साकत कउ अंमृत बहु सिंचहु
 सभ डाल फूल बिसुकारे ॥ जिउ जिउ निवहि साकत नर सेती छेड़ि छेड़ि कठै बिखु खारे
 ॥५॥ संतन संत साध मिलि रहीअै गुण बोलहि परउपकारे ॥ संतै संतु मिलै मनु बिगसै जिउ
 जल मिलि कमल सवारे ॥६॥ लोभ लहरि सभु सुआनु हलकु है हलकिओ सभहि बिगारे ॥ मेरे
 ठाकुर कै दीबानि खबरि होई गुरि गिआनु खड़गु लै मारे ॥७॥ राखु राखु राखु प्रभ मेरे मै राखहु
 किरपा धारे ॥ नानक मै धर अवर न काई मै सतिगुरु गुरु निस्तारे ॥८॥६॥ छका १ ॥

ਰਾਗੁ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੪

੧੯ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਰਹੇ ਹਰਿ ਅੰਤੁ ਨਾਹੀ ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਕੋਥਿ ਆਦੇਸੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਰਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਨਿਤ ਝਗਰਤੇ ਝਗਰਾਇਆ ॥ ਹਮ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਦੀਨ ਤੇਰੇ ਹਰਿ ਸਰਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਆਇਆ ॥੨॥ ਸਰਣਾਗਤੀ ਪ੍ਰਭ ਪਾਲਤੇ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਨਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ ਜਨੁ ਹਰਨਾਖਿ ਪਕਰਿਆ ਹਰਿ ਰਾਖਿ ਲੀਓ ਤਰਾਇਆ ॥੨॥ ਹਰਿ ਚੇਤਿ ਰੇ ਮਨ ਮਹਲੁ ਪਾਵਣ ਸਭ ਟ੍ਰੁਖ ਭੰਜਨੁ ਰਾਇਆ ॥ ਭਤ ਜਨਮ ਮਰਨ ਨਿਵਾਰਿ ਠਕੁਰ ਹਰਿ ਗੁਰਮਤੀ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥ ਹਰਿ ਪਤਿ ਪਾਵਨ ਨਾਮੁ ਸੁਆਮੀ ਭਤ ਭਗਤ ਭੰਜਨੁ ਗਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਹਾਰੁ ਹਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰਿਓ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੧॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਪਿ ਮਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਸਾਦੁ ਆਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਗੰਡੀ ਸਭ ਨੀਕਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਹਰਿ ਸਾਰਿ ਨਾਤਾ ॥੧॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਾਧੁ ਜਿਨ੍ਹੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਤਿਨ੍ਹ ਪ੍ਰਥਤ ਹਰਿ ਕੀ ਬਾਤਾ ॥ ਪਾਇ ਲਗਤ ਨਿਤ ਕਰਤ ਜੁਦਰੀਆ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਕਰਮਿ ਬਿਧਾਤਾ ॥੨॥ ਲਿਲਾਟ ਲਿਖੇ ਪਾਇਆ ਗੁਰੁ ਸਾਧੂ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਆਇ ਮਿਲੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਭ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਗਵਾਤਾ ॥੩॥ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਜਿਨ੍ਹ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਇਆ ਤਿਨ੍ਹ ਕੀ ਊਤਮ ਬਾਤਾ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਪੰਕ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਚਰਨਿ ਪਰਾਤਾ ॥੪॥੨॥

ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਭਿ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਮੁਨਿ ਜਨਾ ਮਨਿ ਭਾਵਨੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆਂ ॥ ਅਪਰਾਂਪਰੋ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ
 ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਅਲਖੁ ਗੁਰੁ ਲਖਾਇਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮ ਨੀਚ ਮਧਿਮ ਕਰਮ ਕੀਏ ਨਹੀਂ ਚੇਤਿਆਂ ਹਰਿ ਰਾਇਆਂ ॥
 ਹਰਿ ਆਨਿ ਮੇਲਿਆਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਖਿਨੁ ਬੰਧ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਇਆਂ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭਿ ਮਸਤਕੇ ਧੁਰਿ ਲੀਖਿਆ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ
 ਲਿਵ ਲਾਇਆਂ ॥ ਪੰਚ ਸਬਦ ਦਰਗਹ ਬਾਜਿਆ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆਂ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆਂ ॥੩॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੁ ਨਾਮੁ
 ਨਰਹਰਿ ਮੰਦੰਭਾਗੀਆਂ ਨਹੀਂ ਭਾਇਆਂ ॥ ਤੇ ਗਰਭ ਜੋਨੀ ਗਾਲੀਅਹਿ ਜਿਤ ਲੋਨੁ ਜਲਹਿ ਗਲਾਇਆਂ ॥੪॥ ਮਤਿ
 ਦੇਹਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਠਾਕੁਰ ਗੁਰ ਚਰਨ ਮਨੁ ਮੈ ਲਾਇਆਂ ॥ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮੈ ਰਹਤ ਲਾਗੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ
 ਸਮਾਇਆਂ ॥੫॥੩॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਰਸਿ ਲਾਗਾ ॥ ਕਮਲ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਭਿਆ
 ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਜਪਿਆਂ ਭ੍ਰਮੁ ਭਤ ਭਾਗਾ ॥੬॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਲਾਗੇ ਮੇਰਾ ਹੀਅਰਾ ਮਨੁ ਸੋਇਆਂ
 ਗੁਰਮਤਿ ਜਾਗਾ ॥ ਕਿਲਬਿਖ ਖੀਨ ਭਏ ਸਾਁਤਿ ਆਈ ਹਰਿ ਤੁਰ ਧਾਰਿਆਂ ਵਡਭਾਗਾ ॥੭॥ ਮਨਮੁਖੁ ਰੰਗ ਕਸੁੰਭੁ
 ਹੈ ਕਚੂਆ ਜਿਤ ਕੁਸਮ ਚਾਰਿ ਦਿਨ ਚਾਗਾ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਪਰਤਾਪੈ ਡੰਡੁ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਾ ਲਾਗਾ
 ॥੮॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਾਥ ਅਤਿ ਗ੍ਰੰਥੀ ਜਿਤ ਰੰਗੁ ਮਜੀਠ ਬਹੁ ਲਾਗਾ ॥ ਕਾਇਆ ਕਾਪਰੁ ਚੀਰ ਬਹੁ ਫਾਰੇ
 ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਨ ਲਹੈ ਸਭਾਗਾ ॥੯॥ ਹਰਿ ਚਾਇਆਂ ਰੰਗੁ ਮਿਲੈ ਗੁਰੁ ਸੋਭਾ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਰੱਗਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ
 ਤਿਨ ਕੇ ਚਰਨ ਪਖਾਰੈ ਜੋ ਹਰਿ ਚਰਨੀ ਜਨੁ ਲਾਗਾ ॥੧੦॥੮॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਭਜੁ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਗੁਪਾਲਾ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਲੀਨੁ ਭਿਆ ਰਾਮ ਨਾਮੈ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਰਸਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਜਪਮਾਲਾ ॥ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਲੀਖਿਆ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ
 ਹਰਿ ਬਨਮਾਲਾ ॥੨॥ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ੍ ਚੂਕੇ ਸਰਕ ਜੰਜਾਲਾ ॥ ਤਿਨ੍ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੰਡੀ
 ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਹਰਿ ਰਖਵਾਲਾ ॥੩॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਣਹੂ ਹਰਿ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥ ਕਰੁ ਮਾਇਆ
 ਅਗਨਿ ਨਿਤ ਮੇਲਤੇ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਦੀਨ ਦਿਆਲਾ ॥੪॥ ਬਹੁ ਮੈਲੇ ਨਿਰਮਲ ਹੋਇਆ ਸਭ ਕਿਲਬਿਖ ਹਰਿ ਜਸਿ
 ਜਾਲਾ ॥ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਿਆ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਨਿਹਾਲਾ ॥੫॥੪॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥

ਮेरੇ ਮਨ ਹਰਿ ਭਜੁ ਸਭ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਰ ਧਾਰਿਓ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਮੇਰਾ ਸੀਸੁ ਕੀਜੈ ਗੁਰ ਵਾਟ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਮੈ ਬਾਤ ਸੁਨਾਵੈ ਤਿਸੁ ਮਨੁ ਦੇਵਤ ਕਟਿ ਕਾਟ ॥ ਹਰਿ ਸਾਜਨੁ ਮੇਲਿਓ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ
 ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਬਿਕਾਨੋ ਹਟਿ ਹਾਟ ॥੨॥ ਮਕਰ ਪ੍ਰਾਗਿ ਦਾਨੁ ਬਹੁ ਕੀਆ ਸਰੀਰੁ ਦੀਓ ਅਥ ਕਾਟਿ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ
 ਕੋ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਵੈ ਬਹੁ ਕੱਚਨੁ ਦੀਜੈ ਕਟਿ ਕਾਟ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਜਸੁ ਗਾਡਿਓ ਮਨਿ ਤਘਰੇ ਕਪਟ
 ਕਪਾਟ ॥ ਤ੍ਰਕੁਟੀ ਫੋਰਿ ਭਰਮੁ ਭਤ ਭਾਗਾ ਲਜ ਭਾਨੀ ਮਟੁਕੀ ਮਾਟ ॥੩॥ ਕਲਜੁਗਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਤਿਨ ਪਾਇਆ
 ਜਿਨ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖੇ ਲਿਲਾਟ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆ ਸਭ ਲਾਥੀ ਭੂਖ ਤਿਖਾਟ ॥੪॥੬॥ ਛਕਾ ੧ ॥

ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੫

੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰੇ ਮਨ ਟਹਲ ਹਰਿ ਸੁਖ ਸਾਰ ॥ ਅਵਰ ਟਹਲਾ ਝੂਠੀਆ ਨਿਤ ਕਰੈ ਜਮੁ ਸਿਰਿ ਮਾਰ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਨਾ ਮਸਤਕਿ ਲੀਖਿਆ ਤੇ ਮਿਲੇ ਸੰਗਾਰ ॥ ਸੰਸਾਰੁ ਭਤਜਲੁ ਤਾਰਿਆ ਹਰਿ ਸੰਤ ਪੁਰਖ ਅਪਾਰ
 ॥੧॥ ਨਿਤ ਚਰਨ ਸੇਵਹੁ ਸਾਧ ਕੇ ਤਜਿ ਲੋਭ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ ॥ ਸਭ ਤਜਹੁ ਟ੍ਰ੍ਯੀ ਆਸਡੀ ਰਖੁ ਆਸ ਇਕ ਨਿਰਕਾਰ
 ॥੨॥ ਇਕਿ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ ਸਾਕਤਾ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅੰਧ ਅੰਧਾਰ ॥ ਧੁਰਿ ਹੋਵਨਾ ਸੁ ਹੋਇਆ ਕੋ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰ ॥੩॥
 ਅਗਮ ਰੂਪੁ ਗੋਬਿੰਦ ਕਾ ਅਨਿਕ ਨਾਮ ਅਪਾਰ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਤੇ ਜਨ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਤਰਿ ਧਾਰ ॥੪॥੧॥
 ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਕਤ ਨਮਸਕਾਰ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਹੋਵਤ ਤਉਹਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਮਿਟਹਿ ਧੰਧ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਛੁਟਹਿ ਬੰਧ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਮੂਰਖ ਚਤੁਰ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ
 ਕੁਲਹ ਤਉਹਾਰ ॥੧॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਭਤ ਦੁਖ ਹਰੈ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਅਪਦਾ ਟਰੈ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਮੁਚਤ
 ਧਾਪ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਨਹੀ ਸੰਤਾਪ ॥੨॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਰਿਦ ਬਿਗਾਸ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਵਲਾ ਦਾਸਿ
 ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਨਿਧਿ ਨਿਧਾਨ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਤਰੇ ਨਿਦਾਨ ॥੩॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੁ ਨਾਮੁ ਹਰੀ ॥ ਕੋਟਿ
 ਭਗਤ ਤਉਹਾਰੁ ਕਰੀ ॥ ਹਰਿ ਦਾਸ ਦਾਸਾ ਦੀਨੁ ਸਰਨ ॥ ਨਾਨਕ ਮਾਥਾ ਸੰਤ ਚਰਨ ॥੪॥੨॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਐਸੋ ਸਹਾਈ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਭਜੁ ਪ੍ਰੰਨ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬ੍ਰਾਡਤ ਕਤ ਜੈਸੇ ਬੇਡੀ

ਮਿਲਤ ॥ ਬ੍ਰਾਹਮਿਕ ਮਿਲਤ ਤਿਲਤ ॥ ਜਲਤ ਅਗਨੀ ਮਿਲਤ ਨੀਰ ॥ ਜੈਸੇ ਬਾਰਿਕ ਮੁਖਹਿ ਖੀਰ ॥੧॥ ਜੈਸੇ
 ਰਣ ਮਹਿ ਸਖਾ ਭਾਤ ॥ ਜੈਸੇ ਭੂਖੇ ਭੋਜਨ ਮਾਤ ॥ ਜੈਸੇ ਕਿਰਖਹਿ ਬਰਸ ਮੇਘ ॥ ਜੈਸੇ ਪਾਲਨ ਸਰਨਿ ਸੌਂਘ ॥੨॥
 ਗਰੁੜ ਮੁਖਿ ਨਹੀ ਸਰਪ ਕਾਸ ॥ ਸ੍ਰੂਆ ਪਿੰਜਰਿ ਨਹੀ ਖਾਇ ਬਿਲਾਸੁ ॥ ਜੈਸੇ ਆੱਡੇ ਹਿਰਦੇ ਮਾਹਿ ॥ ਜੈਸੇ ਦਾਨੇ
 ਚਕੀ ਦਰਾਹਿ ॥੩॥ ਬਹੁਤੁ ਓਪਮਾ ਥੋਰ ਕਹੀ ॥ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਤੁਹੀ ॥ ਊਚ ਮੂੰਚੈ ਬਹੁ ਅਪਾਰ ॥
 ਸਿਮਰਤ ਨਾਨਕ ਤਰੇ ਸਾਰ ॥੪॥੩॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਇਹੀ ਹਮਾਰੈ ਸਫਲ ਕਾਜ ॥ ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ
 ਕਤ ਲੇਹੁ ਨਿਵਾਜਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚਰਨ ਸੰਤਹ ਮਾਥ ਮੋਰ ॥ ਨੈਨਿ ਦਰਸੁ ਪੇਖਤ ਨਿਸਿ ਭੋਰ ॥ ਹਸਤ ਹਮਰੇ
 ਸੰਤ ਟਹਲ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਮਨੁ ਧਨੁ ਸੰਤ ਬਹਲ ॥੧॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਸੰਤ ਗੁਨ ਬਸਹਿ ਮੇਰੈ ਚੀਤਿ ॥
 ਸੰਤ ਆਗਿਆ ਮਨਹਿ ਮੀਠ ॥ ਮੇਰਾ ਕਮਲੁ ਬਿਗਸੈ ਸੰਤ ਡੀਠ ॥੨॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮੇਰਾ ਹੋਇ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਸੰਤਨ
 ਕੀ ਮੋਹਿ ਬਹੁਤੁ ਪਿਆਸ ॥ ਸੰਤ ਬਚਨ ਮੇਰੇ ਮਨਹਿ ਮੰਤ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੇਰੇ ਬਿਖੈ ਛਾਤ ॥੩॥ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ
 ਏਹਾ ਨਿਧਾਨ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਿਆਲ ਮੋਹਿ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਦਿਆ ਧਾਰਿ ॥ ਚਰਨ ਸੰਤਨ ਕੇ ਮੇਰੇ
 ਰਿਟੇ ਮਝਾਰਿ ॥੪॥੪॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਭ ਕੈ ਸੰਗੀ ਨਾਹੀ ਟੂਰਿ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਹਾਜਰਾ ਹਜੂਰਿ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੁਨਤ ਜੀਓ ਜਾਸੁ ਨਾਮੁ ॥ ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖ ਕੀਓ ਬਿਸਾਮੁ ॥ ਸਗਲ ਨਿਧਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥
 ਸੁਨਿ ਜਨ ਤਾ ਕੀ ਸੇਵ ਕਰੇ ॥੧॥ ਜਾ ਕੈ ਘਰਿ ਸਗਲੇ ਸਮਾਹਿ ॥ ਜਿਸ ਤੇ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨਾਹਿ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ੍ਰ
 ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੇਵਹੁ ਕਿਰਪਾਲ ॥੨॥ ਸਦਾ ਧਰਮੁ ਜਾ ਕੈ ਟੀਬਾਣਿ ॥ ਬੇਮੁਹਤਾਜ ਨਹੀ ਕਿਛੁ
 ਕਾਣਿ ॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਕਰਨਾ ਆਪਨ ਆਪਿ ॥ ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂ ਤਾ ਕਤ ਜਾਪਿ ॥੩॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕਤ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰ
 ॥ ਜਾਸੁ ਮਿਲਿ ਹੋਵੈ ਤਥਾਰੁ ॥ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਮਨ ਤਨਹਿ ਰਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭਿ ਕਰੀ ਦਾਤਿ ॥੪॥੫॥

ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਟੁਪਦੇ

੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਹਰਿ ਸਮਰਥ ਕੀ ਸਰਨਾ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰਭ ਏਕ ਕਾਰਨ ਕਰਨਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਜੀਵਣੈ ਕਾ ਮੂਲੁ ॥ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬਤ ਠਾਈ ਸ੍ਰੂਖਮੋ ਅਸਥੂਲ

॥੧॥ ਆਲ ਜਾਲ ਬਿਕਾਰ ਤਜਿ ਸਭਿ ਹਰਿ ਗੁਨਾ ਨਿਤ ਗਾਤ ॥ ਕਰ ਜੋਡਿ ਨਾਨਕੁ ਦਾਨੁ ਮਾਂਗੈ ਦੇਹੁ ਅਪਨਾ
ਨਾਤ ॥੨॥੧॥੬॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਮਰਥ ਦੇਵ ਅਪਾਰ ॥ ਕਉਨੁ ਜਾਨੈ ਚਲਿਤ ਤੇਰੇ ਕਿਛੁ
ਅੰਤੁ ਨਾਹੀ ਪਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਕ ਖਿਨਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਦਾ ਘਡਿ ਭੰਨਿ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥ ਜੇਤ ਕੀਨ ਉਪਾਰਜਨਾ
ਪ੍ਰਭੁ ਦਾਨੁ ਦੇਹਿ ਦਾਤਾਰ ॥੧॥ ਹਰਿ ਸਰਨਿ ਆਇਆ ਦਾਸੁ ਤੇਰਾ ਪ੍ਰਭ ਊਚ ਅਗਮ ਸੁਰਾਰ ॥ ਕਢਿ ਲੇਹੁ ਭਤਜਲ
ਬਿਖਮ ਤੇ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥੨॥੨॥੭॥ ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਸਿ ਰਹੇ ਗੋਪਾਲ
॥ ਟੀਨ ਬਾਂਧਵ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਸਦਾ ਸਦਾ ਕ੃ਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਦਿ ਅੰਤੇ ਮਧਿ ਤੂਹੈ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ
ਕੋਡਿ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਰਹਿਆ ਸਗਲ ਮੰਡਲ ਏਕੁ ਸੁਆਮੀ ਸੋਡਿ ॥੧॥ ਕਰਨਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਨੇਤ ਦਰਸਨੁ ਰਸਨਿ ਹਰਿ ਗੁਨ
ਗਾਤ ॥ ਬਲਿਹਾਰਿ ਜਾਏ ਸਦਾ ਨਾਨਕੁ ਦੇਹੁ ਅਧਣਾ ਨਾਤ ॥੨॥੩॥੮॥੬॥੧੪॥

ਮਾਲੀ ਗਤੜਾ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਕੀ ੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਧਨਿ ਧਨਿ ਓ ਰਾਮ ਬੇਨੁ ਬਾਜੈ ॥ ਮਧੁਰ ਮਧੁਰ ਧੁਨਿ ਅਨਹਤ ਗਾਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਨਿ ਧਨਿ ਮੇਘਾ
ਰੇਮਾਵਲੀ ॥ ਧਨਿ ਧਨਿ ਕੁਸਨ ਓਛੈ ਕਾੜੀਲੀ ॥੧॥ ਧਨਿ ਧਨਿ ਤੂ ਮਾਤਾ ਦੇਵਕੀ ॥ ਜਿਹ ਗ੍ਰਹ ਰਮੰਝਾ
ਕਵਲਾਪਤੀ ॥੨॥ ਧਨਿ ਧਨਿ ਬਨ ਖੰਡ ਬਿੰਦਾਬਨਾ ॥ ਜਹ ਖੇਲੈ ਸ੍ਰੀ ਨਾਰਾਇਨਾ ॥੩॥ ਬੇਨੁ ਬਜਾਵੈ ਗੋਧਨੁ
ਚਰੈ ॥ ਨਾਮੇ ਕਾ ਸੁਆਮੀ ਆਨਦ ਕਰੈ ॥੪॥੧॥ ਮੇਰੇ ਬਾਪੁ ਮਾਧਤ ਤੂ ਧਨੁ ਕੇਸੈ ਸਾਁਵਲੀਆ ਬੀਠੁਲਾਇ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰ ਧਰੇ ਚਕ ਬੈਕੁਠ ਤੇ ਆਏ ਗਜ ਹਸਤੀ ਕੇ ਪ੍ਰਾਨ ਉਧਾਰੀਅਲੇ ॥ ਦੁਹਸਾਸਨ ਕੀ ਸਭਾ
ਦ੍ਰੋਪਤੀ ਅੰਬਰ ਲੇਤ ਤਬਾਰੀਅਲੇ ॥੧॥ ਗੋਤਮ ਨਾਰਿ ਅਹਲਿਆ ਤਾਰੀ ਪਾਵਨ ਕੇਤਕ ਤਾਰੀਅਲੇ ॥ ਐਸਾ
ਅਧਮੁ ਅਜਾਤਿ ਨਾਮਦੇਤ ਤਤ ਸਰਨਾਗਤਿ ਆਈਅਲੇ ॥੨॥੨॥ ਸਭੈ ਘਟ ਰਾਮੁ ਬੋਲੈ ਰਾਮਾ ਬੋਲੈ ॥ ਰਾਮ
ਬਿਨਾ ਕੋ ਬੋਲੈ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਕਲ ਮਾਟੀ ਕੁੰਜਰ ਚੀਟੀ ਭਾਜਨ ਹੈ ਬਹੁ ਨਾਨਾ ਰੇ ॥ ਅਸਥਾਵਰ ਜੰਗਮ
ਕੀਟ ਪਤਾਂਗਮ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਾਮੁ ਸਮਾਨਾ ਰੇ ॥੧॥ ਏਕਲ ਚਿੰਤਾ ਰਾਖੁ ਅਨੱਤਾ ਅਤਰ ਤਜਹੁ ਸਭ ਆਸਾ
ਰੇ ॥ ਪ੍ਰਣਵੈ ਨਾਮਾ ਭਏ ਨਿਹਕਾਮਾ ਕੋ ਠਾਕੁਰੁ ਕੋ ਦਾਸਾ ਰੇ ॥੨॥੩॥

ਰਾਗ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਚਤੁਪਦੇ

੧ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥ ਸਾਜਨ ਤੇਰੇ ਚਰਨ ਕੀ ਹੋਇ ਰਹਾ ਸਦ ਧੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣ ਤੁਹਾਰੀਆ ਪੇਖਤ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥੧॥ ਸਬਦ ॥ ਪਿਛਹੁ ਰਾਤੀ ਸਦੜਾ ਨਾਮੁ ਖਸਮ ਕਾ ਲੇਹਿ ॥ ਖੇਮੇ ਛਤ ਸਰਾਇਂਚੇ ਦਿਸਨਿ ਰਥ ਪੀਡੇ ॥ ਜਿਨੀ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਕਤ ਸਦਿ ਮਿਲੇ ॥੨॥ ਬਾਬਾ ਮੈ ਕਰਮਹੀਣ ਕ੍ਰਿਡਿਆਰ ॥ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਤੇਰਾ ਅੰਧਾ ਭਰਮਿ ਭੂਲਾ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ॥੩॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਦ ਕੀਤੇ ਦੁਖ ਪਰਫੁਡੇ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖੇ ਮਾਇ ॥ ਸੁਖ ਥੋਡੇ ਦੁਖ ਅਗਲੇ ਟੂਖੇ ਟੂਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥੪॥ ਵਿਛੁਡਿਆ ਕਾ ਕਿਆ ਵੀਛੁਡੈ ਮਿਲਿਆ ਕਾ ਕਿਆ ਮੇਲੁ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਸੋ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਨਿ ਕਾਰਿ ਦੇਖਿਆ ਖੇਲੁ ॥੫॥ ਸੰਜੋਗੀ ਮੇਲਾਵੜਾ ਇਨ੍ਹਿ ਤਨਿ ਕੀਤੇ ਭੋਗ ॥ ਵਿਜੋਗੀ ਮਿਲਿ ਵਿਛੁਡੇ ਨਾਨਕ ਭੀ ਸੰਜੋਗ ॥੬॥੧॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਿਲਿ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਪਿੰਡੁ ਕਮਾਇਆ ॥ ਤਨਿ ਕਰਤੈ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਇਆ ॥ ਲਿਖੁ ਦਾਤਿ ਜੋਤਿ ਵਡਿਆਈ ॥ ਮਿਲਿ ਮਾਇਆ ਸੁਰਤਿ ਗਰਵਾਈ ॥੨॥ ਮੂਰਖ ਮਨ ਕਾਹੇ ਕਰਸਹਿ ਮਾਣਾ ॥ ਤਠਿ ਚਲਣਾ ਖਸਮੈ ਭਾਣਾ ॥੩॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਜਿ ਸਾਦ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਘਰ ਛਡਣੇ ਰਹੈ ਨ ਕੋਈ ॥ ਕਿਛੁ ਖਾਜੈ ਕਿਛੁ ਧਰਿ ਜਾਈਐ ॥ ਜੇ ਬਾਹੁਡਿ ਟੁਨੀਆ ਆਈਐ ॥੪॥ ਸਜੁ ਕਾਇਆ ਪਟੁ ਹਫਾਏ ॥ ਫੁਰਮਾਇਸਿ ਬਹੁਤੁ ਚਲਾਏ ॥ ਕਾਰਿ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਸੋਵੈ ॥ ਹਥੀ ਪਤਦੀ ਕਾਹੇ ਰੋਵੈ ॥੫॥ ਘਰ

ਘੁੰਮਣਵਾਣੀ ਭਾਈ ॥ ਪਾਪ ਪਥਰ ਤਰਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਭਤ ਬੇੜਾ ਜੀਤ ਚੜਾਊ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਦੇਵੈ ਕਾਹੂ
 ॥੪॥੨॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ॥ ਕਰਣੀ ਕਾਗਢੁ ਮਨੁ ਮਸਵਾਣੀ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਟੁਝਿ ਲੇਖ ਪਏ ॥ ਜਿਤ ਜਿਤ
 ਕਿਰਤੁ ਚਲਾਏ ਤਿਤ ਚਲੀਐ ਤਤ ਗੁਣ ਨਾਹੀ ਅੰਤੁ ਹਰੇ ॥੧॥ ਚਿਤ ਚੇਤਸਿ ਕੀ ਨਹੀ ਬਾਵਰਿਆ ॥ ਹਰਿ
 ਬਿਸਰਤ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਲਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾਲੀ ਰੈਨਿ ਜਾਲੁ ਦਿਨੁ ਹ੍ਰਾਓ ਜੇਤੀ ਘੜੀ ਫਾਹੀ ਤੇਤੀ ॥ ਰਸਿ
 ਰਸਿ ਚੋਗ ਚੁਗਹਿ ਨਿਤ ਫਾਸਹਿ ਛੂਟਸਿ ਮੂੜੇ ਕਵਨ ਗੁਣੀ ॥੨॥ ਕਾਇਆ ਆਰਣੁ ਮਨੁ ਵਿਚਿ ਲੋਹਾ ਪੰਚ
 ਅਗਨਿ ਤਿਤੁ ਲਾਗਿ ਰਹੀ ॥ ਕੋਡਿਲੇ ਪਾਪ ਪਡੇ ਤਿਸੁ ਊਪਰਿ ਮਨੁ ਜਲਿਆ ਸਨ੍ਨੀ ਚਿੰਤ ਭੰਈ ॥੩॥ ਭਿਡਿਆ
 ਮਨੂਰੁ ਕੰਚਨੁ ਫਿਰਿ ਹੋਵੈ ਜੇ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਿਨੇਹਾ ॥ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਓਹੁ ਦੇਵੈ ਤਤ ਨਾਨਕ ਤ੃ਸਟਸਿ ਦੇਹਾ
 ॥੪॥੩॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਬਿਮਲ ਮਝਾਰਿ ਬਸਸਿ ਨਿਰਮਲ ਜਲ ਪਦਮਨਿ ਜਾਵਲ ਰੇ ॥ ਪਦਮਨਿ ਜਾਵਲ
 ਜਲ ਰਸ ਸੰਗਤਿ ਸੰਗਿ ਦੋਖ ਨਹੀ ਰੇ ॥੧॥ ਦਾਦਰ ਤੂ ਕਬਹਿ ਨ ਜਾਨਸਿ ਰੇ ॥ ਭਖਸਿ ਸਿਵਾਲੁ ਬਸਸਿ ਨਿਰਮਲ
 ਜਲ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਨ ਲਖਸਿ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਸੁ ਜਲ ਨਿਤ ਨ ਵਸਤ ਅਲੀਅਲ ਮੇਰ ਚਚਾ ਗੁਨ ਰੇ ॥ ਚੰਦ
 ਕੁਮੁਦਨੀ ਦੂਰਹੁ ਨਿਵਸਸਿ ਅਨਭਤ ਕਾਰਨਿ ਰੇ ॥੨॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਖੱਡੁ ਟ੍ਰਥਿ ਮਧੁ ਸੰਚਸਿ ਤੂ ਬਨ ਚਾਤੁਰ ਰੇ ॥
 ਅਪਨਾ ਆਪੁ ਤੂ ਕਬਹੁ ਨ ਛੋਡਸਿ ਪਿਸਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਿਤ ਰੇ ॥੩॥ ਪੰਡਿਤ ਸੰਗਿ ਵਸਹਿ ਜਨ ਮੂਰਖ ਆਗਮ
 ਸਾਸ ਸੁਨੇ ॥ ਅਪਨਾ ਆਪੁ ਤੂ ਕਬਹੁ ਨ ਛੋਡਸਿ ਸੁਆਨ ਪ੍ਰਾਂਤੀ ਜਿਤ ਰੇ ॥੪॥ ਇਕਿ ਪਾਖਣਡੀ ਨਾਮਿ ਨ ਰਾਚਹਿ
 ਇਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਰੇ ॥ ਪ੍ਰਾਂਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਵਸਿ ਨਾਨਕ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਰੇ ॥੫॥੪॥
 ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਲੋਕੁ ॥ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਅਸੰਖ ਹੋਹਿ ਹਰਿ ਚਰਨੀ ਮਨੁ ਲਾਗ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ
 ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ॥੧॥ ਸਬਦੁ ॥ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਗਰਬਿ ਗਹੇਲੀ ॥ ਸੁਣਿ ਸਹ ਕੀ ਇਕ ਬਾਤ ਸੁਹੇਲੀ
 ॥੧॥ ਜੋ ਮੈ ਕੇਦਨ ਸਾ ਕਿਸੁ ਆਖਾ ਮਾਈ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਜੀਤ ਨ ਰਹੈ ਕੈਂਦੇ ਰਾਖਾ ਮਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਤ
 ਦੋਹਾਗਣਿ ਖਰੀ ਰੰਜਾਣੀ ॥ ਗਡਿਆ ਸੁ ਜੋਬਨੁ ਧਨ ਪਛੁਤਾਣੀ ॥੨॥ ਤੂ ਦਾਨਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਰਿ ਮੇਰਾ ॥ ਖਿਜਮਤਿ
 ਕਰੀ ਜਨੁ ਬੰਦਾ ਤੇਰਾ ॥੩॥ ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਅੰਦੇਸਾ ਏਹੀ ॥ ਬਿਨੁ ਦਰਸਨ ਕੈਂਦੇ ਰਵਤ ਸਨੇਹੀ ॥੪॥੫॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੁਲ ਖਰੀਦੀ ਲਾਲਾ ਗੋਲਾ ਮੇਰਾ ਨਾਤ ਸਭਾਗਾ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਬਚਨੀ ਹਾਟਿ ਬਿਕਾਨਾ ਜਿਤੁ
 ਲਾਡਿਆ ਤਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥੧॥ ਤੇਰੇ ਲਾਲੇ ਕਿਆ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਮਾ ਲਾਲੀ ਪਿਤ ਲਾਲਾ ਮੇਰਾ ਹਤ ਲਾਲੇ ਕਾ ਜਾਡਿਆ ॥ ਲਾਲੀ ਨਾਚੈ ਲਾਲਾ ਗਾਵੈ ਭਗਤਿ ਕਰਤ
 ਤੇਰੀ ਰਾਡਿਆ ॥੨॥ ਪੀਅਹਿ ਤ ਪਾਣੀ ਆਣੀ ਮੀਰਾ ਖਾਹਿ ਤ ਪੀਸਣ ਜਾਤ ॥ ਪਖਾ ਫੇਰੀ ਪੈਰ ਮਲੋਵਾ
 ਜਪਤ ਰਹਾ ਤੇਰਾ ਨਾਤ ॥੩॥ ਲੂਣ ਹਰਾਮੀ ਨਾਨਕੁ ਲਾਲਾ ਬਖ਼ਸਿਹਿ ਤੁਥੁ ਵਡਿਆਈ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ
 ਦਡਿਆਪਤਿ ਦਾਤਾ ਤੁਥੁ ਵਿਣੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈ ॥੪॥੬॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕੋਈ ਆਖੈ ਭੂਤਨਾ ਕੋ ਕਹੈ
 ਬੇਤਾਲਾ ॥ ਕੋਈ ਆਖੈ ਆਦਮੀ ਨਾਨਕੁ ਵੇਚਾਰਾ ॥੧॥ ਭਡਿਆ ਦਿਵਾਨਾ ਸਾਹ ਕਾ ਨਾਨਕੁ ਬਤਰਾਨਾ ॥
 ਹਤ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਤ ਦੇਵਾਨਾ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਭੈ ਦੇਵਾਨਾ ਹੋਇ ॥ ਏਕੀ
 ਸਾਹਿਬ ਬਾਹਰਾ ਟ੍ਰੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥੨॥ ਤਤ ਦੇਵਾਨਾ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਏਕਾ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਹੁਕਮੁ
 ਪਛਾਣੈ ਖਸਮ ਕਾ ਟ੍ਰੂਜੀ ਅਵਰ ਸਿਆਣਪ ਕਾਇ ॥੩॥ ਤਤ ਦੇਵਾਨਾ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਾਹਿਬ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥
 ਮੰਦਾ ਜਾਣੈ ਆਪ ਕਤ ਅਵਰੁ ਭਲਾ ਸੰਸਾਰੁ ॥੪॥੭॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਇਹੁ ਧਨੁ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
 ਮਨਮੁਖ ਫਿਰਹਿ ਸਿ ਜਾਣਹਿ ਟ੍ਰੂਰਿ ॥੧॥ ਸੋ ਧਨੁ ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਹਮਾਰੈ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰ ਦੇਹਿ ਤਿਸੈ ਨਿਸਤਾਰੈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨ ਇਹੁ ਧਨੁ ਜਲੈ ਨ ਤਸਕਰੁ ਲੈ ਜਾਇ ॥ ਨ ਇਹੁ ਧਨੁ ਝੂਬੈ ਨ ਇਸੁ ਧਨ ਕਤ ਮਿਲੈ
 ਸਜਾਇ ॥੨॥ ਇਸੁ ਧਨ ਕੀ ਦੇਖਹੁ ਵਡਿਆਈ ॥ ਸਹਜੇ ਮਾਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਈ ॥੩॥ ਇਕ ਬਾਤ ਅਨੂਪ
 ਸੁਨਹੁ ਨਰ ਭਾਈ ॥ ਇਸੁ ਧਨ ਬਿਨੁ ਕਹਹੁ ਕਿਨੈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੪॥ ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਅਕਥ ਕੀ ਕਥਾ
 ਸੁਣਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਇਹੁ ਧਨੁ ਪਾਏ ॥੫॥੮॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੂਰ ਸਰੁ ਸੋਸਿ ਲੈ ਸੋਮ ਸਰੁ ਪੋਖਿ
 ਲੈ ਜੁਗਤਿ ਕਰਿ ਮਰਤੁ ਸੁ ਸਨਬੰਧੁ ਕੀਜੈ ॥ ਮੀਨ ਕੀ ਚਪਲ ਸਿਤ ਜੁਗਤਿ ਮਨੁ ਰਾਖੀਐ ਤੱਡੈ ਨਹ ਛਾਸੁ ਨਹ
 ਕੰਧੁ ਛੀਜੈ ॥੧॥ ਸੂਡੇ ਕਾਇਚੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾ ॥ ਨਹ ਚੀਨਿਆ ਪਰਮਾਨਨਦੁ ਬੈਰਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਜਰ
 ਗਹੁ ਜਾਰਿ ਲੈ ਅਮਰ ਗਹੁ ਮਾਰਿ ਲੈ ਭਾਤਿ ਤਜਿ ਛੋਡਿ ਤਤ ਅਪਿਤ ਪੀਜੈ ॥ ਮੀਨ ਕੀ ਚਪਲ ਸਿਤ ਜੁਗਤਿ

ਮਨੁ ਰਾਖੀਐ ਤਡੈ ਨਹ ਛਸੁ ਨਹ ਕਂਧੁ ਛੀਜੈ ॥੨॥ ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਜਨੋ ਰਵੈ ਜੇ ਹਰਿ ਮਨੋ ਮਨ ਪਵਨ
 ਸਿਉ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਜੈ ॥ ਮੀਨ ਕੀ ਚਪਲ ਸਿਉ ਜੁਗਤਿ ਮਨੁ ਰਾਖੀਐ ਤਡੈ ਨਹ ਛਸੁ ਨਹ ਕਂਧੁ ਛੀਜੈ ॥੩॥੬॥
 ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਾਇਆ ਸੁਈ ਨ ਮਨੁ ਸੁਆ ਸਰੁ ਲਹਰੀ ਮੈ ਮਤੁ ॥ ਬੋਹਥੁ ਜਲ ਸਿਰਿ ਤਰਿ ਟਿਕੈ ਸਾਚਾ
 ਕਖਰੁ ਜਿਤੁ ॥ ਮਾਣਕੁ ਮਨ ਮਹਿ ਮਨੁ ਮਾਰਸੀ ਸਚਿ ਨ ਲਾਗੈ ਕਤੁ ॥ ਰਾਜਾ ਤਖਤਿ ਟਿਕੈ ਗੁਣੀ ਭੈ ਪੰਚਾਇਣ
 ਰਤੁ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਦ੍ਰਵਿ ਨ ਦੇਖੁ ॥ ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਜਗਜੀਵਨਾ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਸਾਚਾ ਲੇਖੁ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਰਿਖੀ ਸੁਨੀ ਸੰਕਰੁ ਛਿੰਦੁ ਤਪੈ ਭੇਖਾਰੀ ॥ ਮਾਨੈ ਹੁਕਮੁ ਸੋਹੈ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਆਕੀ ਮਰਹਿ
 ਅਫਾਰੀ ॥ ਜੰਗਮ ਜੋਧ ਜਤੀ ਸੰਨਿਆਸੀ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਵੀਚਾਰੀ ॥ ਬਿਨੁ ਸੇਵਾ ਫਲੁ ਕਬਹੁ ਨ ਪਾਵਸਿ ਸੇਵਾ ਕਰਣੀ
 ਸਾਰੀ ॥੨॥ ਨਿਧਨਿਆ ਧਨੁ ਨਿਗਰਿਆ ਗੁਰੁ ਨਿੰਮਾਣਿਆ ਤੂ ਮਾਣੁ ॥ ਅੰਧੁਲੈ ਮਾਣਕੁ ਗੁਰੁ ਪਕਡਿਆ
 ਨਿਤਾਣਿਆ ਤੂ ਤਾਣੁ ॥ ਹੋਮ ਜਪਾ ਨਹੀ ਜਾਣਿਆ ਗੁਰਮਤੀ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣੁ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ ਦਰਿ ਢੌੰਡ
 ਝੂਠਾ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ॥੩॥ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੀਐ ਸਾਚੇ ਤੇ ਤ੃ਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਗਿਆਨ ਰਤਨਿ ਮਨੁ ਮਾਜੀਐ
 ਬਹੁਡਿ ਨ ਮੈਲਾ ਹੋਇ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਕਵਸੈ ਤਬ ਲਗੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਿਰੁ ਦੇ ਛੁਟੀਐ
 ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥੪॥੧੦॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰਮਾਇਲੁ ਤਾ ਕੈ ਮੈਲੁ ਨ
 ਰਾਤੀ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਨਾਥੁ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸੰਗੇ ਜਨਮ ਮਰਣ ਗਤਿ ਬੀਤੀ ॥੧॥ ਗੁਸਾਈ ਤੇਰਾ ਕਹਾ ਨਾਮੁ ਕੈਸੇ
 ਜਾਤੀ ॥ ਜਾ ਤਤ ਭੀਤਰਿ ਮਹਲਿ ਕੁਲਾਵਹਿ ਪ੍ਰਛਤ ਬਾਤ ਨਿਰਾਂਤੀ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬ੍ਰਹਮਣੁ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ
 ਫਿਸਨਾਨੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਪ੍ਰਯੋ ਪਾਤੀ ॥ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਏਕੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਤ੍ਰਭਵਣ ਏਕਾ ਜੋਤੀ ॥੩॥ ਜਿਹਵਾ ਡੰਡੀ
 ਫਿਹੁ ਘਟੁ ਛਾਬਾ ਤੋਲਤ ਨਾਮੁ ਅਜਾਚੀ ॥ ਏਕੋ ਹਾਟੁ ਸਾਹੁ ਸਭਨਾ ਸਿਰਿ ਵਣਜਾਰੇ ਇਕ ਭਾਤੀ ॥੪॥
 ਦੋਵੈ ਸਿਰੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਿਕੇਡੇ ਸੋ ਕ੍ਰਿਝੈ ਜਿਸੁ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਜੀਅਹੁ ਰਹੈ ਨਿਭਰਾਤੀ ॥ ਸਕਦੁ ਵਸਾਏ
 ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ਸਦਾ ਸੇਵਕੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ॥੫॥ ਊਪਰਿ ਗਗਨੁ ਗਗਨ ਪਰਿ ਗੇਰਖੁ ਤਾ ਕਾ ਅਗਮੁ ਗੁਰੁ
 ਪੁਨਿ ਵਾਸੀ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਬਾਹਰਿ ਘਰਿ ਏਕੋ ਨਾਨਕੁ ਭਿੱਡਿਆ ਉਦਾਸੀ ॥੬॥੧੧॥

ਰਾਗੁ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੫

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਹਿਨਿਸਿ ਜਾਗੈ ਨੀਦ ਨ ਸੋਵੈ ॥ ਸੋ ਜਾਣੈ ਜਿਸੁ ਵੇਦਨ ਹੋਵੈ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਕੇ ਕਾਨ ਲਗੇ ਤਨ ਭੀਤਰਿ ਕੈਦੁ ਕਿ ਜਾਣੈ
ਕਾਰੀ ਜੀਤ ॥੧॥ ਜਿਸ ਨੋ ਸਾਚਾ ਸਿਫਤੀ ਲਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੇ ਕਿਸੈ ਬੁੜਾਏ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕੀ ਸਾਰ ਸੋਈ
ਜਾਣੈ ਜਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾ ਵਾਪਾਰੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਿਰ ਸੇਤੀ ਧਨ ਪ੍ਰੇਮੁ ਰਚਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਤਥਾ
ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਧਨ ਖਰੀ ਸੁਹੇਲੀ ਤ੃ਸਨਾ ਤਿਖਾ ਨਿਵਾਰੀ ਜੀਤ ॥੩॥ ਸਹਸਾ ਤੋਡੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥
ਸਹਜੇ ਸਿਫਤੀ ਧਣਖੁ ਚੜਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਮਨੁ ਮਾਰੇ ਸੁੰਦਰਿ ਜੋਗਾਧਾਰੀ ਜੀਤ ॥੪॥ ਹਉਮੈ ਜਲਿਆ
ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੇ ॥ ਜਮ ਪੁਰਿ ਕਹਿ ਖੱਡਗ ਕਰਾਰੇ ॥ ਅਥ ਕੈ ਕਹਿਐ ਨਾਮੁ ਨ ਮਿਲਈ ਤੂ ਸਹੁ ਜੀਅਡੇ ਭਾਰੀ
ਜੀਤ ॥੫॥ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਪਵਹਿ ਖਿਆਲੀ ॥ ਜਮ ਪੁਰਿ ਫਾਸਹਿਗਾ ਜਮ ਜਾਲੀ ॥ ਹੇਤ ਕੈ ਬੰਧਨ ਤੋਡਿ ਨ
ਸਾਕਹਿ ਤਾ ਜਮੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ ਜੀਤ ॥੬॥ ਨਾ ਹਉ ਕਰਤਾ ਨਾ ਮੈ ਕੀਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥
ਜਿਸੁ ਤੂ ਦੇਹਿ ਤਿਸੈ ਕਿਆ ਚਾਰਾ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਜੀਤ ॥੭॥੧॥੧੨॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਹ ਬੈਸਾਲਹਿ ਤਹ ਬੈਸਾ ਸੁਆਮੀ ਜਹ ਭੇਜਹਿ ਤਹ ਜਾਵਾ ॥ ਸਭ ਨਗਰੀ ਮਹਿ ਏਕੋ ਰਾਜਾ ਸਭੇ ਪਵਿਤੁ ਹਹਿ
ਥਾਵਾ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਦੇਹਿ ਵਸਾ ਸਚ ਗਾਵਾ ॥ ਜਾ ਤੇ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਾ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਕਿਛੁ
ਆਪਸ ਤੇ ਜਾਨਿਆ ਏਈ ਸਗਲ ਵਿਕਾਰਾ ॥ ਇਹੁ ਫੁਰਮਾਇਆ ਖਸਮ ਕਾ ਹੋਆ ਵਰਤੈ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥੩॥
ਇੰਦ੍ਰੀ ਧਾਤੁ ਸਬਲ ਕਹੀਅਤ ਹੈ ਇੰਦ੍ਰੀ ਕਿਸ ਤੇ ਹੋਈ ॥ ਆਪੇ ਖੇਲ ਕਰੈ ਸਭਿ ਕਰਤਾ ਐਸਾ ਬੂੜੈ ਕੋਈ ॥੪॥
ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਦੁਬਿਧਾ ਤਦੇ ਬਿਨਾਸੀ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਸੋ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ
ਫਾਸੀ ॥੫॥ ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਲੇਖਾ ਮਾਗੈ ਕਵਨਾ ਜਾ ਚੂਕਾ ਮਨਿ ਅਭਿਮਾਨਾ ॥ ਤਾਸੁ ਤਾਸੁ ਧਰਮ ਰਾਇ ਜਪਤੁ ਹੈ
ਪਾਏ ਸਚੇ ਕੀ ਸਰਨਾ ॥੬॥੧॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਨਾ ਥੀਐ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਹੋਇ ॥ ਸਚੁ

ਖਜਾਨਾ ਬਖਸਿਆ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਸੋਝਿ ॥੧॥ ਏ ਮਨ ਹਰਿ ਜੀਤ ਚੇਤਿ ਤੂ ਮਨਹੁ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਧਿਆਇ ਤੂ ਸਚਿ ਲਗੀ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਐਥੈ ਨਾਵਹੁ ਭੁਲਿਆ ਫਿਰਿ ਹਥੁ ਕਿਥਾਤੁ ਨ ਪਾਇ ॥ ਜੋਨੀ
 ਸਭਿ ਭਵਾਈਅਨਿ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਕਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਮਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ
 ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਸਚਾ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥ ਆਪੇ ਸੂਝਟਿ ਸਭ ਸਾਜੀਅਨੁ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈਆ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥੪॥੨॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਪਿਛਲੇ ਗੁਨਹ ਬਖਸਾਇ ਜੀਤ ਅਬ ਤੂ
 ਮਾਰਗਿ ਪਾਇ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗਿ ਰਹਾ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ
 ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥ ਸਦਾ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਲਾਗਿ ਰਹਾ ਇਕ ਮਨਿ ਏਕੈ ਭਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾ ਮੈ ਜਾਤਿ ਨ ਪਤਿ ਹੈ
 ਨਾ ਮੈ ਥੇਹੁ ਨ ਥਾਉ ॥ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਭ੍ਰਮੁ ਕਟਿਆ ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਸਮਝਾਇ ॥੨॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਾਲਚ ਕਰਦਾ
 ਫਿਰੈ ਲਾਲਚਿ ਲਾਗਾ ਜਾਇ ॥ ਧੰਧੈ ਕੂਡਿ ਵਿਆਪਿਆ ਜਮ ਪੁਰਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ
 ਆਪਿ ਹੈ ਟ੍ਰੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਭਗਤਿ ਖਜਾਨਾ ਬਖਸਿਆਨੁ ਗੁਰਮੁਖਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੪॥੩॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਚਿ
 ਰਤੇ ਸੇ ਟੋਲਿ ਲਹੁ ਸੇ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਮੁਖੁ ਤਜਲਾ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਸਾਚਾ
 ਸਾਹਿਬੁ ਰਿਦੈ ਸਮਾਲਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਨਾ ਪੁਛਿ ਦੇਖੁ ਲੇਹੁ ਵਖਰੁ ਭਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਕੁ ਸਚਾ ਸਭ ਸੇਵਦੀ
 ਧੁਰਿ ਭਾਗਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਪਾਵਹਿ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੨॥ ਇਕਿ ਭਗਤੀ ਸਾਰ ਨ
 ਜਾਣਨੀ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥ ਓਨਾ ਵਿਚਿ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਕਰਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥੩॥ ਜਿਸੁ ਨਾਲਿ
 ਜੋਰੁ ਨ ਚਲੈ ਖਲੇ ਕੀਚੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਾ ਸੁਣਿ ਕਰੇ ਸਾਬਾਸਿ ॥੪॥੪॥
 ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਾਰੁ ਤੇ ਸੀਤਲੁ ਕਰੇ ਮਨੂਰਹੁ ਕੰਚਨੁ ਹੋਇ ॥ ਸੋ ਸਾਚਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ
 ਕੋਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਅਨਦਿਨੁ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਅਰਾਧਿ ਤੂ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਉ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੋ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਟੂ ਏਹ
 ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਛੋਡਿ ਟ੍ਰੂਜੈ ਲਗੇ ਕਿਆ ਕਰਨਿ ਅਗੈ ਜਾਇ ॥ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਬਹੁਤੀ

ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੩॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਹੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਪਤ
ਆਪੇ ਬਖ਼ਸਿ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥੫॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੂ ੨ ੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਪਿਓ ਨਾਮੁ ਸੁਕ ਜਨਕ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ॥ ਦਾਲਦੁ ਭੰਜਿ ਸੁਦਾਮੇ ਮਿਲਿਓ ਭਗਤੀ ਭਾਇ ਤਰੇ
॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕ੃ਤਾਰਥੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਉਧਰੇ ॥ ਧੂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ
ਬਿਦੁ ਦਾਸੀ ਸੁਤੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਤਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਲਜੁਗਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਧਾਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਭਗਤ ਜਨਾ ਉਧਰੇ ॥
ਨਾਮਾ ਜੈਦੇਤ ਕਬੀਰੁ ਤ੍ਰਲੋਚਨੁ ਸਭਿ ਟੋਖ ਗਏ ਚਮਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਲਗੇ ਸੇ ਉਧਰੇ ਸਭਿ ਕਿਲਬਿਖ ਪਾਪ
ਟਰੇ ॥੨॥ ਜੋ ਜੋ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਅਪਰਾਧੀ ਸਭਿ ਤਿਨ ਕੇ ਟੋਖ ਪਰਹਰੇ ॥ ਕੇਸੁਆ ਰਖਤ ਅਜਾਮਲੁ ਉਧਰਿਓ ਮੁਖਿ ਬੋਲੈ
ਨਾਰਾਇਣੁ ਨਰਹਰੇ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਉਗ੍ਰਸੈਣਿ ਗਤਿ ਪਾਈ ਤੋਡਿ ਬੰਧਨ ਸੁਕਤਿ ਕਰੇ ॥੩॥ ਜਨ ਕਤ ਆਪਿ
ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਕੀਆ ਹਰਿ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕਰੇ ॥ ਸੇਵਕ ਪੈਜ ਰਖੈ ਮੇਰਾ ਗੋਵਿਦੁ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਉਧਰੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ
ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਤਰ ਧਰਿਓ ਨਾਮੁ ਹਰੇ ॥੪॥੧॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਿਧ ਸਮਾਧਿ ਜਪਿਓ ਲਿਵ ਲਾਈ ਸਾਧਿਕ
ਮੁਨਿ ਜਪਿਆ ॥ ਜਤੀ ਸਤੀ ਸੰਤੋਖੀ ਧਿਆਇਆ ਮੁਖਿ ਇੰਦ੍ਰਾਦਿਕ ਰਖਿਆ ॥ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਜਪਿਓ ਤੇ ਭਾਏ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਤਰਿਆ ॥ ਧਨਾ ਜਟੁ ਬਾਲਮੀਕੁ ਬਟਵਾਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ
ਪਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਗਣ ਗੰਧਰਬੇ ਜਪਿਓ ਰਿਖਿ ਬਪੁਰੈ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ॥ ਸੰਕਰਿ ਬ੍ਰਹਮੈ ਦੇਵੀ
ਜਪਿਓ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਜਿਨਾ ਮਨੁ ਭੀਨਾ ਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥੨॥
ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਜਪਤਿਆ ਅੰਤੁ ਨ ਪਇਆ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ਸਿਮੂਤਿ ਹਰਿ ਜਪਿਆ
ਮੁਖਿ ਪੰਡਿਤ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ॥ ਨਾਮੁ ਰਸਾਲੁ ਜਿਨਾ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥੩॥
ਅਨਤ ਤਰੰਗੀ ਨਾਮੁ ਜਿਨ ਜਪਿਆ ਮੈ ਗਣਤ ਨ ਕਰਿ ਸਕਿਆ ॥ ਗੋਬਿਦੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਥਾਇ ਪਾਏ ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ
ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਗੁਰਿ ਧਾਰਿ ਕ੃ਪਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵ੍ਰਿਝਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਲਿਆ ॥੪॥੨॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੩

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਲੈ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਨਾਲਿ ਚਲਦਾ ਹਰਿ ਅੰਤੇ ਲਏ ਛਡਾਇ
 ॥ ਜਿਥੈ ਅਵਘਟ ਗਲੀਆ ਭੀਡੀਆ ਤਿਥੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਦੂਡਾਇ ॥ ਮੇਰਾ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਬੰਧਪੋ ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਕਰੁ ਨ ਮਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਰਹੀ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਹੈ ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮਾਇ ॥ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਮੈ ਜੋਦੜੀ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਦੇਇ ਮਿਲਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ
 ਦਇਆਲ ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਢਿਲ ਨ ਪਾਇ ॥੨॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੇ ਭਾਗਹੀਣ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥
 ਓਇ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਓਇ ਜਮ ਦਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਹਰਿ ਦਰਗਹ
 ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੩॥ ਤੂ ਪ੍ਰਭੁ ਹਮ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮੋ ਕਤ ਮੇਲਿ ਲੈਹੁ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਹਰਿ ਧਾਰਿ ਕ੃ਪਾ ਜਗਜੀਵਨਾ
 ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾਇ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਹੋਇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮੇਲਾਇ ॥੪॥੧॥੩॥
 ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਉ ਪ੍ਰੰਜੀ ਨਾਮੁ ਦਸਾਇਦਾ ਕੋ ਦੱਸੇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥ ਹਉ ਤਿਸੁ ਵਿਟਹੁ ਖਨ ਖਨੀਐ ਮੈ ਮੇਲੇ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਿ ॥ ਮੈ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਪਿਰਿਮ ਕਾ ਕਿਤ ਸਜਣੁ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਸਿ ॥੧॥ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਮਿਕਾ ਮੈ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਇਆ ਹਰਿ ਧੀਰਕ ਹਰਿ ਸਾਬਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇ ਗੁਰੁ ਮੈ ਦੱਸੇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨ ਲਭੈ ਜਨ ਵੇਖਹੁ ਮਨਿ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥
 ਹਰਿ ਗੁਰ ਵਿਚਿ ਆਪੁ ਰਖਿਆ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਗੁਰ ਸਾਬਾਸਿ ॥੨॥ ਸਾਗਰ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਹਰਿ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ
 ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ਖੋਲਿ ਦੇਇ ਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਰਗਾਸਿ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਭਾਗ ਵਿਹੂਣਿਆ ਤਿਖ ਮੁੰਝਾ ਕੰਧੀ
 ਪਾਸਿ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਦਾਤਾਰੁ ਹੈ ਹਉ ਮਾਗਤ ਦਾਨੁ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁਨਨਾ ਮੇਲਿ ਪ੍ਰਭ ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ
 ਕਵਡੀ ਆਸ ॥ ਗੁਰ ਭਾਵੈ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥੪॥੨॥੪॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਕਥਾ ਸੁਣਾਇ ਪ੍ਰਭ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਿਦੈ ਸਮਾਣੀ ॥ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਕਵਡਭਾਗੀਆ ਹਰਿ ਤਨਮ ਪਦੁ

ਨਿਰਬਾਣੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਾ ਮਨਿ ਪਰਤੀਤਿ ਹੈ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੀ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਮਨਿ
ਭਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਨਿਤ ਸਦਾ ਕਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਖੋਜਿ
ਫੰਢੋਲਿਆ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਪਾਇਆ ਸੁਣਿ ਅਕਥ ਕਥਾ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥ ਮੇਰੈ
ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਹਰਿ ਮੈ ਮੇਲੇ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੀ ॥੨॥ ਗੁਰ ਪੁਰਖੈ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਇ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਿ ਸੁਰਤੀ
ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣੀ ॥ ਮਨਮੁਖ ਭਾਗ ਵਿਹੌਣਿਆ ਤਿਨ
ਦੁਖੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥੩॥ ਹਮ ਜਾਚਿਕ ਦੀਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਿਆ ਮੁਖਿ ਟੀਜੈ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਮਿਨ੍ਨ
ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਗਤੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੀ ॥੪॥੩॥੫॥
ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਭਾਉ ਲਗਾ ਕੈਰਾਗੀਆ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਮਨਿ ਰਾਖੁ ॥ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਸਰਧਾ ਊਪਜੈ
ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ॥ ਸਭੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿਆ ਹੋਇਆ ਗੁਰਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਭਾਖੁ ॥੬॥ ਮਨ
ਪਿਆਰਿਆ ਮਿਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਪਤਿ ਰਾਖੁ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਾਖੁ ॥ ਤਨੁ ਧਰਤੀ ਹਰਿ ਬੀਜੀਐ ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ
ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ ਤੂਸਨਾ ਭਰਿ ਰਹੇ
ਮਨਿ ਆਸਾ ਫਦ ਦਿਸ ਕਹੁ ਲਾਖੁ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧਿਗੁ ਜੀਵਦੇ ਵਿਚਿ ਬਿਸਟਾ ਮਨਮੁਖ ਰਾਖੁ ॥ ਓਡਿ ਆਵਹਿ
ਯਾਹਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਦੁਰਗੰਧ ਭਾਖੁ ॥੩॥ ਕਾਹਿ ਕਾਹਿ ਸਰਣਾਗਤੀ ਹਰਿ ਦਇਆ ਧਾਰਿ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖੁ ॥
ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਾਪੁ ਕਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਪਤਿ ਸਾਖੁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ
ਭਾਖੁ ॥੪॥੮॥੬॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੫

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮੁ ਕਰੇ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਹਰਿ ਕੇ
ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਬਨਵਾਲੀ ॥ ਹਰਿ ਫਿਰਦੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਮਾਲੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ

ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਜੀਅਡੇ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਛਡਾਵੈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
 ਮਂਗਤ ਜਨੁ ਜਾਚੈ ਹਰਿ ਦੇਹੁ ਪਸਾਉ ॥ ਹਰਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਦਾ ਹਰਿ ਸਤਿ ਹਰਿ ਸਤਿ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਜੀਤ ॥੨॥
 ਨਵੇ ਛਿਦ੍ਰ ਸਰਵਹਿ ਅਪਵਿਕਾ ॥ ਬੋਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਪਵਿਤਰ ਸਭਿ ਕਿਤਾ ॥ ਜੇ ਹਰਿ ਸੁਪਰਸਨੁ ਹੋਵੈ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ
 ਸਿਮਰਤ ਮਲੁ ਲਹਿ ਜਾਵੈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਬਿਖਮੁ ਹੈ ਭਾਰੀ ॥ ਕਿਤ ਤਰੀਐ ਦੁਤਰੁ ਸੰਸਾਰੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਬੋਹਿਥੁ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਵੈ ਜੀਤ ॥੪॥ ਤੂ ਸਰਬਤ ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਜੋ ਤੂ
 ਕਰਹਿ ਸੋਈ ਪ੍ਰਭ ਹੋਈ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਬੇਚਾਰਾ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਹਰਿ ਥਾਇ ਪਾਵੈ ਜੀਤ ॥੫॥੧॥੭॥
 ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੈ ਹਰਿ ਤੇਰੇ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਖਹੁ ਹਰਿ
 ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਹਰਿ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਸਖਾਈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਸੋ ਧਿਆਵੈ ॥ ਨਿਤ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਾਪੈ
 ਜਪਿ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਆਵੈ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਈ ਜੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕਾਰੁ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਸ਼ੇਸਟੁ ਊਤਮ ਕਾਮੁ ॥ ਟੁਸਮਨ ਫ੍ਰੂਤ ਜਮਕਾਲੁ ਠੇਹ ਮਾਰਤ ਹਰਿ
 ਸੇਵਕ ਨੇਡਿ ਨ ਜਾਈ ਜੀਤ ॥੨॥ ਜਿਸੁ ਤਪਰਿ ਹਰਿ ਕਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਚਹੁ ਜੁਗ ਚਹੁ ਕੁਣਟ ਜਾਨਿਆ
 ॥ ਜੇ ਤੁਸ ਕਾ ਬੁਰਾ ਕਹੈ ਕੋਈ ਪਾਪੀ ਤਿਸੁ ਜਮਕਂਕਰੁ ਖਾਈ ਜੀਤ ॥੩॥ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨ ਕਰਤਾ ॥
 ਸਭਿ ਕਰਿ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਅਪਣੇ ਚਲਤਾ ॥ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਰਾਖੈ ਤਿਸੁ ਕਉਣੁ ਮਾਰੈ ਜਿਸੁ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਛਡਾਈ ਜੀਤ
 ॥੪॥ ਹਉ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਲਈ ਕਰਤਾਰੇ ॥ ਜਿਨ੍ਹਿ ਸੇਵਕ ਭਗਤ ਸਭੇ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥ ਦਸ ਅਠ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਸਭਿ
 ਪ੍ਰਛਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਛਡਾਈ ਜੀਤ ॥੫॥੨॥੮॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਡਰਪੈ ਧਰਤਿ ਅਕਾਸੁ ਨਖਾਤਾ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਅਮਰੁ ਕਰਾਰਾ ॥ ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸਤਨੁ ਡਰਪੈ ਡਰਪੈ ਝਿੰਦ੍ਰੁ ਬਿਚਾਰਾ
 ॥੧॥ ਏਕਾ ਨਿਰਭਤ ਬਾਤ ਸੁਨੀ ॥ ਸੋ ਸੁਖੀਆ ਸੋ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਜੋ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਗਾਇ ਗੁਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਦੇਹਧਾਰ ਅਝ ਦੇਵਾ ਡਰਪਹਿ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਡਰਿ ਮੁਇਆ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਨਮੇ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ

जोनी जोड़िआ ॥२॥ राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप उपाड़िआ ॥ छल बपुरी इह कउला डरपै अति
 डरपै धरम राड़िआ ॥३॥ सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा ॥ कहु नानक भगतन का
 संगी भगत सोहहि दरबारा ॥४॥१॥ मारू महला ५ ॥ पाँच बरख को अनाथु धू बारिकु हरि सिमरत अमर
 अटारे ॥ पुत्र हेति नाराड़िणु कहिओ जमकंकर मारि बिदारे ॥१॥ मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥
 मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥१॥ रहाउ ॥ बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक
 तरे बिचारे ॥ एक निमख मन माहि अराधिओ गजपति पारि उतारे ॥२॥ कीनी रखिआ भगत
 प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥ बिदु दासी सुतु भड़िओ पुनीता सगले कुल उजारे ॥३॥ कवन
 पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥ आड़िओ साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे
 ॥४॥२॥ मारू महला ५ ॥ वित नवित भ्रमिओ बहु भाती अनिक जतन करि धाए ॥ जो जो करम कीए हउ
 हउमै ते ते भए अजाए ॥१॥ अवर दिन काहू काज न लाए ॥ सो दिनु मो कउ दीजै प्रभ जीउ जा दिन
 हरि जसु गाए ॥१॥ रहाउ ॥ पुत्र कलत्र गृह देखि पसारा इस ही महि उरझाए ॥ माड़िआ मद
 चाखि भए उदमाते हरि हरि कबहु न गाए ॥२॥ इह बिधि खोजी बहु परकारा बिनु संतन नही पाए
 ॥ तुम दातार वडे प्रभ संम्रथ मागन कउ दानु आए ॥३॥ तिआगिओ सगला मानु महता दास रेण
 सरणाए ॥ कहु नानक हरि मिलि भए एकै महा अन्नद सुख पाए ॥४॥३॥ मारू महला ५ ॥ कवन थान
 धीरिओ है नामा कवन बसतु अह्वाकारा ॥ कवन चिहन सुनि ऊपरि छोहिओ मुख ते सुनि करि गारा
 ॥१॥ सुनहु रे तू कउनु कहा ते आड़िओ ॥ एती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न पाड़िओ ॥१॥
 रहाउ ॥ सहन सील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥ पंच तत मिलि भड़िओ संजोगा इन महि
 कवन दुराते ॥२॥ जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ जनम मरणु उस ही कउ है रे
 ओहा आवै जाई ॥३॥ बरनु चिहनु नाही किछु रचना मिथिआ सगल पसारा ॥ भणति नानकु जब खेलु

उझारै तब एकै एकंकारा ॥४॥४॥ मारू महला ५ ॥ मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चीति न घालिओ
 ॥ नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै चालिओ ॥१॥ सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥ जीवत
 साहिबु सेविओ अपना चलते रखिओ चीति ॥१॥ रहाउ ॥ जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु
 नही मोरिओ ॥ सहजु अन्नदु रखिओ गृह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिओ ॥२॥ आगिआ महि भूख
 सोई करि सूखा सोग हरख नही जानिओ ॥ जो जो हुकमु भइओ साहिब का सो माथै ले मानिओ ॥३॥
 भडिओ कृपालु ठाकुर सेवक कउ स्वरे हलत पलाता ॥ धनु सेवकु सफलु ओहु आडिआ जिनि नानक
 खसमु पछाता ॥४॥५॥ मारू महला ५ ॥ खुलिआ करमु कृपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई ॥
 समु थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई ॥१॥ अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥ चीति आडिओ
 मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल
 बैराई ॥ सद हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भडिओ ढूराई ॥२॥ सुख सीतल सरधा सभ पूरी होए
 संत सहाई ॥ पावन पतित कीए खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई ॥३॥ निरभउ भए सगल भै खोए
 गोबिद चरण ओटाई ॥ नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई ॥४॥६॥ मारू महला ५ ॥
 जो समरथु सरब गुण नाइकु तिस कउ कबहु न गावसि रे ॥ छोडि जाइ खिन भीतरि ता कउ उआ कउ
 फिरि फिरि धावसि रे ॥१॥ अपुने प्रभ कउ किउ न समारसि रे ॥ बैरी संगि रंग रसि रचिआ तिसु
 सिउ जीअरा जारसि रे ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै नामि सुनिऔ जमु छोडै ता की सरणि न पावसि रे ॥ काढि
 दैडि सिआल बपुरे कउ ता की ओट टिकावसि रे ॥२॥ जिस का जासु सुनत भव तरीऔ ता सिउ रंगु
 न लावसि रे ॥ थोरी बात अलप सुपने की बहुरि बहुरि अटकावसि रे ॥३॥ भडिओ प्रसादु
 कृपा निधि ठाकुर संतसंगि पति पाई ॥ कहु नानक तै गुण भ्रमु छूटा जउ प्रभ भए सहाई ॥४॥७॥
 मारू महला ५ ॥ अंतरजामी सभ बिधि जानै तिस ते कहा दुलारिओ ॥ हसत पाव झरे खिन भीतरि

ਅਗਨਿ ਸੰਗਿ ਲੈ ਜਾਰਿਆਂ ॥੧॥ ਮੂੜੇ ਤੈ ਮਨ ਤੇ ਰਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿਆਂ ॥ ਲੂਣੁ ਖਾਇ ਕਰਹਿ ਹਰਾਮਖੋਰੀ ਪੇਖਤ ਨੈਨ
ਬਿਦਾਰਿਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਸਾਧ ਰੋਗੁ ਉਪਜਿਆਂ ਤਨ ਭੀਤਰਿ ਟਰਤ ਨ ਕਾਹੂ ਟਾਰਿਆਂ ॥ ਪ੍ਰਭ ਬਿਸਰਤ ਮਹਾ
ਦੁਖੁ ਪਾਇਆਂ ਇਹੁ ਨਾਨਕ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਿਆਂ ॥੨॥੮॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖੇ ਚੀਤਿ ॥ ਹਰਿ
ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਨੀਤਾ ਨੀਤ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰੂਜਾ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਝ ॥ ਆਦਿ ਮਥਿ ਅੰਤਿ ਹੈ ਸੋਝ ॥੧॥ ਸੰਤਨ ਕੀ
ਓਟ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਨਿਰਕਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ
ਗਹਿਆਂ ਸਾਚਾ ਸੋਝਿ ॥ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਫਿਰਿ ਢੂਖੁ ਨ ਹੋਇ ॥੨॥੯॥

ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪ੍ਰਾਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਜੀਅ ਸੁਖਦਾਤਾ ਤੁਮ ਕਾਹੇ ਬਿਸਾਰਿਆਂ ਅਗਿਆਨਥ ॥ ਹੋਛਾ ਮਦੁ ਚਾਖਿ ਹੋਏ ਤੁਮ ਬਾਵਰ
ਦੁਲਭ ਜਨਮੁ ਅਕਾਰਥ ॥੧॥ ਰੇ ਨਰ ਐਸੀ ਕਰਹਿ ਇਆਨਥ ॥ ਤਜਿ ਸਾਰਂਗਧਰ ਭਰਮਿ ਤੂ ਭੂਲਾ ਮੋਹਿ ਲਪਟਿਆਂ
ਦਾਸੀ ਸੰਗਿ ਸਾਨਥ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਰਣੀਧਰੁ ਤਿਆਗਿ ਨੀਚ ਕੁਲ ਸੇਵਹਿ ਹਤ ਹਤ ਕਰਤ ਬਿਹਾਵਥ ॥
ਫੋਕਟ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਅਗਿਆਨੀ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧ ਕਹਾਵਥ ॥੨॥ ਸਤਿ ਹੋਤਾ ਅਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ਜੋ ਬਿਨਸਤ
ਸੋ ਨਿਹਚਲੁ ਜਾਨਥ ॥ ਪਰ ਕੀ ਕਤ ਅਪਨੀ ਕਰਿ ਪਕਰੀ ਐਸੇ ਭੂਲ ਭੁਲਾਨਥ ॥੩॥ ਖਲੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਸੂਦ
ਕੈਸ ਸਭ ਏਕੈ ਨਾਮਿ ਤਰਾਨਥ ॥ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਉਪਦੇਸੁ ਕਹਤੁ ਹੈ ਜੋ ਸੁਨੈ ਸੋ ਪਾਰਿ ਪਰਾਨਥ ॥੪॥੧॥੧੦॥
ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਪਤੁ ਕਰਤਾ ਸੰਗਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਡਹਕਾਵਏ ਮਨੁਖਾਇ ॥ ਬਿਸਾਰਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਬਿਖੈ ਭੋਗਹਿ ਤਪਤ
ਥੰਮ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰੇ ਨਰ ਕਾਇ ਪਰ ਗ੍ਰਹਿ ਜਾਇ ॥ ਕੁਚਲ ਕਠੋਰ ਕਾਮਿ ਗਰਥਭ ਤੁਮ ਨਹੀ ਸੁਨਿਆਂ
ਧਰਮ ਰਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਕਾਰ ਪਾਥਰ ਗਲਹਿ ਬਾਧੇ ਨਿੰਦ ਪੋਟ ਸਿਰਾਇ ॥ ਮਹਾ ਸਾਗਰੁ ਸਮੁਦੁ ਲਮਧਨਾ
ਪਾਰਿ ਨ ਪਰਨਾ ਜਾਇ ॥੨॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰਿਧਿ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਬਿਆਪਿਆਂ ਨੇਤਰ ਰਖੇ ਫਿਰਾਇ ॥ ਸੀਸੁ ਉਠਾਵਨ ਨ ਕਕਹੂ
ਮਿਲਈ ਮਹਾ ਦੁਤਰ ਮਾਇ ॥੩॥ ਸ੍ਰੂ ਮੁਕਤਾ ਸਸੀ ਮੁਕਤਾ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਅਲਿਪਾਇ ॥ ਸੁਭਾਵਤ ਜੈਸੇ ਕੈਸ਼ਤਰ
ਅਲਿਪਤ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲਾਇ ॥੪॥ ਜਿਸੁ ਕਰਮੁ ਖੁਲਿਆ ਤਿਸੁ ਲਹਿਆ ਪੱਤਾ ਜਿਨਿ ਗੁਰ ਪਹਿ ਮੰਨਿਆ

सुभाइ ॥ गुरि मंत्र अवखधु नामु दीना जन नानक संकट जोनि न पाइ ॥५॥२॥ रे नर इन बिधि
 पारि पराइ ॥ धिआइ हरि जीउ होइ मिरतकु तिआगि दूजा भाउ ॥ रहाउ दूजा ॥२॥१॥
 मारू महला ५ ॥ बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ॥ अनभउ अचरज रूपु
 प्रभ पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥१॥ मानकु पाइओ रे पाइओ हरि पूरा पाइआ था
 ॥ मोलि अमोलु न पाइआ जाई करि किरपा गुरु दिवाइआ था ॥१॥ रहाउ ॥ अदिसटु अगोचरु
 पारब्रहमु मिलि साधू अकथु कथाइआ था ॥ अनहद सबदु दसम दुआरि वजिओ तह अंमृत नामु
 चुआइआ था ॥२॥ तोटि नाही मनि तृसना बूझी अखुट भंडार समाइआ था ॥ चरण चरण चरण
 गुर सेवे अघडु घडिओ रसु पाइआ था ॥३॥ सहजे आवा सहजे जावा सहजे मनु खेलाइआ था ॥
 कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था ॥४॥३॥१२॥ मारू महला ५ ॥
 जिसहि साजि निवाजिआ तिसहि सित रुच नाहि ॥ आन रूती आन बोईਐ फलु न फूलै ताहि ॥१॥
 रे मन वत्र बीजण नाउ ॥ बोइ खेती लाइ मनूआ भलो समउ सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ खोइ खहड़ा
 भरमु मन का सतिगुर सरणी जाइ ॥ करमु जिस कउ धुरहु लिखिआ सोई कार कमाइ ॥२॥ भाउ
 लागा गोबिद सित घाल पाई थाइ ॥ खेति मेरै जंमिआ निखुटि न कबहू जाइ ॥३॥ पाइआ
 अमोलु पदारथो छोडि न कतहू जाइ ॥ कहु नानक सुखु पाइआ तृपति रहे आधाइ ॥४॥४॥१३॥
 मारू महला ५ ॥ फूटो आँडा भरम का मनहि भडिओ परगासु ॥ काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि
 खलासु ॥१॥ आवण जाणु रहिओ ॥ तपत कड़ाहा बुझि गडिआ गुरि सीतल नामु दीओ ॥१॥ रहाउ ॥
 जब ते साधू संगु भडिआ तउ छोडि गए निगहार ॥ जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै कोटवार
 ॥२॥ चूका भारा करम का होए निहकरमा ॥ सागर ते कंठै चड़े गुरि कीने धरमा ॥३॥ सचु थानु सचु
 बैठका सचु सुआउ बणाइआ ॥ सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ ॥४॥५॥१४॥ मारू महला ५ ॥

बेदु पुकारै मुख ते पंडत कामामन का माठा ॥ मोनी होइ बैठा इकाँती हिरदै कलपन गाठा ॥ होइ
उदासी गृहु तजि चलिओ छुटकै नाही नाठा ॥१॥ जीअ की कै पहि बात कहा ॥ आपि मुक्तु मो कउ
प्रभु मेले औसो कहा लहा ॥२॥ रहाउ ॥ तपसी करि कै देही साधी मनूआ दह दिस धाना ॥ ब्रह्मचारि
ब्रह्मचजु कीना हिरदै भड़िआ गुमाना ॥ संनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिओ उसु महि क्रोधु बिगाना ॥२॥
घूंघर बाधि भए रामदासा रोटीअन के ओपावा ॥ बरत नेम करम खट कीने बाहरि भेख दिखावा ॥ गीत
नाद मुखि राग अलापे मनि नही हरि हरि गावा ॥३॥ हरख सोग लोभ मोह रहत हहि निरमल हरि के
संता ॥ तिन की धूड़ि पाए मनु मेरा जा दड़िआ करे भगवंता ॥ कहु नानक गुरु पूरा मिलिआ ताँ
उतरी मन की चिंता ॥४॥ मेरा अंतरजामी हरि राड़िआ ॥ सभु किछु जाणै मेरे जीअ का प्रीतमु बिसरि
गए बकबाड़िआ ॥५॥ रहाउ दूजा ॥६॥१५॥ मारू महला ५ ॥ कोटि लाख सरब को राजा जिसु हिरदै
नामु तुमारा ॥ जा कउ नामु न दीआ मेरै सतिगुरि से मरि जनमहि गावारा ॥७॥ मेरे सतिगुर ही
पति राखु ॥ चीति आवहि तब ही पति पूरी बिसरत रलीऔ खाकु ॥८॥ रहाउ ॥ रूप रंग खुसीआ
मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ॥ हरि का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥९॥
माड़िआ रंग बिरंग खिनै महि जित बादर की छाड़िआ ॥ से लाल भए गूड़ै रंगि राते जिन गुर मिलि
हरि हरि गाड़िआ ॥१०॥ ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा ॥ नामो वडिआई सोभा नानक
खसमु पिआरा ॥११॥१६॥

मारू महला ५ घरु ४

१८ सतिगुर प्रसादि ॥

ओअंकारि उतपाती ॥ कीआ दिनसु सभ राती ॥ वणु तृणु तृभवण पाणी ॥ चारि बेद चारे खाणी ॥
खंड दीप सभि लोआ ॥ एक कवावै ते सभि होआ ॥१॥ करणैहारा बूझहु रे ॥ सतिगुरु मिलै त सूझै रे
॥२॥ रहाउ ॥ तै गुण कीआ पसारा ॥ नरक सुरग अवतारा ॥ हउमै आवै जाई ॥ मनु टिकणु न

ਪਾਰੈ ਰਾਈ ॥ ਬਾੜ੍ਹੁ ਗੁਰੁ ਗੁਬਾਰਾ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੨॥ ਹਉ ਹਉ ਕਰਮ ਕਮਾਣੇ ॥ ਤੇ ਤੇ ਬੰਧ
 ਗਲਾਣੇ ॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਧਾਰੀ ॥ ਓਹਾ ਪੈਰਿ ਲੋਹਾਰੀ ॥ ਸੋ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਏਕੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਜਿਸੁ ਹੋਵੈ ਭਾਗੁ ਮਥਾਣੈ
 ॥੩॥ ਸੋ ਮਿਲਿਆ ਜਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਡਿਆ ॥ ਸੋ ਭੂਲਾ ਜਿ ਪ੍ਰਭੂ ਭੁਲਾਡਿਆ ॥ ਨਹ ਆਪਹੁ ਮੂਰਖੁ ਗਿਆਨੀ ॥
 ਜਿ ਕਰਾਰੈ ਸੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਨੀ ॥ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥੪॥੧॥੧੭॥
 ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੋਹਨੀ ਮੋਹਿ ਲੀਏ ਤੈ ਗੁਨੀਆ ॥ ਲੋਭਿ ਵਿਆਪੀ ਝੂਠੀ ਦੁਨੀਆ ॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਕੈ ਸੰਚੀ
 ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਸਗਲ ਲੇ ਛਲੀਆ ॥੧॥ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕਾਰੁ ਦਿੱਤਿਅਲੀਆ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਤਿਪਲੀਆ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਕੈ ਸ਼ਮੁ ਕਰਿ ਗਾਡੀ ਗਡਹੈ ॥ ਏਕਹਿ ਸੁਪਨੈ ਦਾਮੁ ਨ ਛਡਹੈ ॥ ਰਾਜੁ ਕਮਾਡਿ ਕਰੀ ਜਿਨਿ
 ਥੈਲੀ ਤਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਚੰਚਲਿ ਚਲੀਆ ॥੨॥ ਏਕਹਿ ਪ੍ਰਾਣ ਪਿੰਡ ਤੇ ਪਿਆਰੀ ॥ ਏਕ ਸੰਚੀ ਤਜਿ ਬਾਪ ਮਹਤਾਰੀ
 ॥ ਸੁਤ ਮੀਤ ਭਾਤ ਤੇ ਗੁਹਜੀ ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਹੋਈ ਖੇਲੀਆ ॥੩॥ ਹੋਡਿ ਅਤਥੂਤ ਬੈਠੇ ਲਾਡਿ ਤਾਰੀ ॥ ਜੋਗੀ
 ਜਤੀ ਪਾਂਡਿਤ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਗ੍ਰਹਿ ਮਡੀ ਮਸਾਣੀ ਬਨ ਮਹਿ ਬਸਤੇ ਊਠਿ ਤਿਨਾ ਕੈ ਲਾਗੀ ਪਲੀਆ ॥੪॥ ਕਾਟੇ
 ਬੰਧਨ ਠਾਕੁਰਿ ਜਾ ਕੇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਸਿਓ ਜੀਅ ਤਾ ਕੈ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਏ ਜਨ ਮੁਕਤੇ ਗਤਿ ਪਾਈ ਨਾਨਕ
 ਨਦਰਿ ਨਿਹਲੀਆ ॥੫॥੨॥੧੮॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਹੁ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨ ਸੋਊ ॥ ਜਾ ਤੇ ਬਿਰਥਾ ਜਾਤ ਨ
 ਕੋਊ ॥ ਮਾਤ ਗਰਭ ਮਹਿ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰਿਆ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਦੇ ਸਾਜਿ ਸਕਾਰਿਆ ॥ ਸੋਈ ਬਿਧਾਤਾ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ
 ਜਪੀਐ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਅਕਗੁਣ ਸਭਿ ਢਕੀਐ ॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਤਰ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰਹੁ ॥ ਬਿਖਿਆ ਬਨ ਤੇ ਜੀਤ
 ਉਧਾਰਹੁ ॥ ਕਰਣ ਪਲਾਹ ਮਿਟਹਿ ਬਿਲਲਾਟਾ ॥ ਜਪਿ ਗੋਵਿਦ ਭਰਮੁ ਭਤ ਫਾਟਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਪਾਏ
 ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਏ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਆਧਾਰਾ ॥ ਜੋ ਸਿਮਰੈ ਤਿਸ ਕਾ ਨਿਸਤਾਰਾ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਿਥਿਆ ਕਸਤੁ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨੀ ॥ ਹਿਤੁ ਲਾਡਿਓ ਸਠ ਮੂੜ ਅਗਿਆਨੀ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ
 ਮਦ ਮਾਤਾ ॥ ਕਤਡੀ ਬਦਲੈ ਜਨਮੁ ਗਵਾਤਾ ॥ ਅਪਨਾ ਛੋਡਿ ਪਰਾਡਿਐ ਰਾਤਾ ॥ ਮਾਡਿਆ ਮਦ ਮਨ ਤਨ ਸੰਗਿ
 ਜਾਤਾ ॥ ਤ੃ਸਨ ਨ ਬੂੜੈ ਕਰਤ ਕਲੋਲਾ ॥ ਊਣੀ ਆਸ ਮਿਥਿਆ ਸਭਿ ਬੋਲਾ ॥ ਆਵਤ ਝਿਕੇਲਾ ਜਾਤ ਝਿਕੇਲਾ ॥

हम तुम संगि झूठे सभि बोला ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइओ
 ॥२॥ पसु पंखी भूत अरु प्रेता ॥ बहु बिधि जोनी फिरत अनेता ॥ जह जानो तह रहनु न पावै ॥ थान
 बिहून उठि उठि फिरि धावै ॥ मनि तनि बासना बहुतु बिसथारा ॥ अह्यमेव मूठो बेचारा ॥ अनिक
 दोख अरु बहुतु सजाई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ प्रभ बिसरत नरक महि पाइआ ॥ तह मात
 न बंधु न मीत न जाइआ ॥ जिस कउ होत कृपाल सुआमी ॥ सो जनु नानक पारगरामी ॥३॥ भ्रमत
 भ्रमत प्रभ सरनी आइआ ॥ दीना नाथ जगत पित माइआ ॥ प्रभ दइआल दुख दरद बिदारण ॥
 जिसु भावै तिस ही निसतारण ॥ अंध कूप ते काढनहारा ॥ प्रेम भगति होवत निसतारा ॥ साध रूप
 अपना तनु धारिआ ॥ महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ जप तप संजम इस ते किछु नाही ॥ आदि
 अंति प्रभ अगम अगाही ॥ नामु देहि मागै दासु तेरा ॥ हरि जीवन पदु नानक प्रभु मेरा ॥४॥३॥१६॥
 मारू महला ५ ॥ कत कउ डहकावहु लोगा मोहन दीन किरपाई ॥१॥ ऐसी जानि पाई ॥ सरणि सूरो
 गुर दाता राखै आपि वडाई ॥२॥ रहाउ ॥ भगता का आगिआकारी सदा सदा सुखदाई ॥२॥
 अपने कउ किरपा करीअहु इकु नामु धिआई ॥३॥ नानकु दीनु नामु मागै दुतीआ भरमु चुकाई
 ॥४॥४॥२०॥ मारू महला ५ ॥ मेरा ठाकुरु अति भारा ॥ मोहि सेवकु बेचारा ॥१॥ मोहनु लालु मेरा
 प्रीतम मन प्राना ॥ मो कउ देहु दाना ॥२॥ रहाउ ॥ सगले मै देखे जोई ॥ बीजउ अवरु न कोई
 ॥२॥ जीअन प्रतिपालि समाहै ॥ है होसी आहे ॥३॥ दइआ मोहि कीजै देवा ॥ नानक लागो सेवा
 ॥४॥५॥२१॥ मारू महला ५ ॥ पतित उधारन तारन बलि बलि बले बलि जाईअै ॥ ऐसा कोई
 भेटै संतु जितु हरि हरे हरि धिआईअै ॥१॥ मो कउ कोइ न जानत कहीअत दासु तुमारा ॥ एहा ओट
 आधारा ॥१॥ रहाउ ॥ सरब धारन प्रतिपारन इक बिनउ दीना ॥ तुमरी बिधि तुम ही जानहु तुम
 जल हम मीना ॥२॥ पूरन बिसथीरन सुआमी आहि आइओ पाछै ॥ सगलो भू मंडल खंडल प्रभ

ਤੁਮ ਹੀ ਆਛੈ ॥੩॥ ਅਟਲ ਅਖਿੰਡੋ ਦੇਵਾ ਮੋਹਨ ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ॥ ਦਾਨੁ ਪਾਵਤ ਸੰਤਾ ਸੰਗੁ ਨਾਨਕ ਰੇਨੁ
ਦਾਸਾਰਾ ॥੪॥੬॥੨੨॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਆਘਾਏ ਸੰਤਾ ॥ ਗੁਰ ਜਾਨੇ ਜਿਨ ਮੰਤਾ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕਿਛੁ
ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਜਾ ਕਤ ਨਾਮ ਬਡਾਈ ॥੧॥ ਲਾਲੁ ਅਮੋਲਾ ਲਾਲੋ ॥ ਅਗਹ ਅਤੋਲਾ ਨਾਮੋ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਅਕਿਗਤ ਸਿਤ ਮਾਨਿਆ ਮਾਨੋ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ ਗਿਆਨੋ ॥ ਪੇਖਤ ਸਗਲ ਧਿਆਨੋ ॥ ਤਜਿਓ
ਮਨ ਤੇ ਅਭਿਮਾਨੋ ॥੨॥ ਨਿਹਚਲੁ ਤਿਨ ਕਾ ਠਾਣਾ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਮਹਲੁ ਪਛਾਣਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਜਾਗੇ
॥ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਲਾਗੇ ॥੩॥ ਪ੍ਰੰਨ ਤ੃ਪਤਿ ਆਘਾਏ ॥ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਹਰਿ ਭੰਡਾਰੁ ਹਾਥਿ
ਆਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥੪॥੭॥੨੩॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬ ਦੁਪਦੇ

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਛੋਡਿ ਸਗਲ ਸਿਆਣਪਾ ਮਿਲਿ ਸਾਧ ਤਿਆਗੁ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਅਵਰੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮਿਥਿਆ ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਰਾਮ
ਕਖਾਨੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕਰਨ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥ ਮਿਟਹਿ ਅਥ ਤੇਰੇ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਵਨੁ ਬਪੁਰੋ ਜਾਮੁ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਦ੍ਰਾਖ ਦੀਨ ਨ ਭਤ ਬਿਆਪੈ ਮਿਲੈ ਸੁਖ ਬਿਸ਼ਾਮੁ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕੁ ਬਖਾਨੈ ਹਰਿ ਭਜਨੁ ਤਤੁ
ਗਿਆਨੁ ॥੨॥੧॥੨੪॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੇ ਹੋਤ ਦੇਖੇ ਖੇਹ ॥ ਪੁਤ ਮਿਤ ਬਿਲਾਸ
ਬਨਿਤਾ ਤੂਟਤੇ ਏ ਨੇਹ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਨਿਤ ਲੇਹ ॥ ਜਲਤ ਨਾਹੀ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ ਸੂਖੁ ਮਨਿ ਤਨਿ
ਦੇਹ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਰਖ ਛਾਇਆ ਜੈਸੇ ਬਿਨਸਤ ਪਵਨ ਝੂਲਤ ਮੇਹ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਦੂਢੁ ਮਿਲੁ ਸਾਧ
ਨਾਨਕ ਤੈਰੈ ਕਾਮਿ ਆਵਤ ਏਹ ॥੨॥੨॥੨੫॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰੰਨ ਸੁਖਹ ਦਾਤਾ ਸੰਗਿ ਬਸਤੇ
ਨੀਤ ॥ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ਬਿਨਸੈ ਬਿਆਪਤ ਤਸਨ ਨ ਸੀਤ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਨਾਮ ਸਿਤ ਕਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
ਚੇਤਿ ਮਨ ਮਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਧਾਨਾ ਏਹ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕ੃ਪਾਲ ਦਿੰਡਾਲ ਗੋਪਾਲ
ਗੋਬਿਦ ਜੋ ਜਪੈ ਤਿਸੁ ਸੀਧਿ ॥ ਨਵਲ ਨਵਤਨ ਚਤੁਰ ਸੁੰਦਰ ਮਨੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸੰਗਿ ਬੀਧਿ ॥੨॥੩॥੨੬॥
ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਲਤ ਬੈਸਤ ਸੋਵਤ ਜਾਗਤ ਗੁਰ ਮੰਨੁ ਰਿਦੈ ਚਿਤਾਰਿ ॥ ਚਰਣ ਸਰਣ ਭਜੁ ਸੰਗਿ ਸਾਧੁ

भव सागर उतरहि पारि ॥१॥ मेरे मन नामु हिरदै धारि ॥ करि प्रीति मनु तनु लाइ हरि
सिउ अवर सगल विसारि ॥२॥ रहाउ ॥ जीउ मनु तनु प्राण प्रभ के तू आपन आपु निवारि ॥
गोविद भजु सभि सुआरथ पूरे नानक कबहु न हारि ॥२॥४॥२७॥ मारू महला ५ ॥ तजि आपु
बिनसी तापु रेण साधू थीउ ॥ तिसहि परापति नामु तेरा करि कृपा जिसु दीउ ॥१॥ मेरे मन
नामु अंमृतु पीउ ॥ आन साद बिसारि होछे अमरु जुगु जुगु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ नामु इक रस
रंग नामा नामि लागी लीउ ॥ मीतु साजनु सखा बंधपु हरि एकु नानक कीउ ॥२॥५॥२८॥
मारू महला ५ ॥ प्रतिपालि माता उदरि राखै लगनि देत न सेक ॥ सोई सुआमी ईहा राखै बूझु बुधि
बिबेक ॥१॥ मेरे मन नाम की करि टेक ॥ तिसहि बूझु जिनि तू कीआ प्रभु करण कारण एक
॥१॥ रहाउ ॥ चेति मन महि तजि सिआणप छोडि सगले भेख ॥ सिमरि हरि हरि सदा नानक तरे
कई अनेक ॥२॥६॥२९॥ मारू महला ५ ॥ पतित पावन नामु जा को अनाथ को है नाथु ॥ महा
भउजल माहि तुलहो जा को लिखिओ माथ ॥१॥ डूबे नाम बिनु घन साथ ॥ करण कारणु चिति न
आवै दे करि राखै हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगति गुण उचारण हरि नाम अंमृत पाथ ॥ करहु
कृपा मुरारि माधउ सुणि नानक जीवै गाथ ॥२॥७॥३०॥

मारू अंजुली महला ५ घरु ७

९८८ सतिगुर प्रसादि ॥

संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ॥ पंच धातु करि पुतला कीआ ॥ साहै कै फुरमाइअडै जੀ देही विचि जीउ
आइ पड़िआ ॥१॥ जिथै अगनि भखै भड़हारे ॥ ऊरथ मुख महा गुबारे ॥ सासि सासि समाले सोई
ओथै खसमि छडाइ लड़िआ ॥२॥ विचहु गरभै निकलि आड़िआ ॥ खसमु विसारि ढुनी चितु
लाइआ ॥ आवै जाइ भवाईअै जोनी रहणु न कितही थाइ भड़िआ ॥३॥ मिहरवानि रखिं
लड़िअनु आपे ॥ जीअ जंत सभि तिस के थापे ॥ जनमु पदारथु जिणि चलिआ नानक आड़िआ सो

परवाणु थिआ ॥४॥१॥३॥ मारू महला ५ ॥ वैदो न वाई भैणो न भाई एको सहाई रामु हे ॥१॥
कीता जिसो होवै पापाँ मलो धोवै सो सिमरहु परधानु हे ॥२॥ घटि घटे वासी सरब निवासी असथिरु
जा का थानु हे ॥३॥ आवै न जावै संगे समावै पूरन जा का कामु हे ॥४॥ भगत जना का राखणहारा ॥
संत जीवहि जपि प्रान अधारा ॥ करन कारन समरथु सुआमी नानकु तिसु कुरबानु हे ॥५॥२॥३॥

੭੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਜਾ ਕਤ ਸਿਮਰਿ ਅਜਾਮਲੁ
ਉਧਰਿਆਂ ਗਨਿਕਾ ਹੂ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੰਚਾਲੀ ਕਤ ਰਾਜ ਸਭਾ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੁਧਿ ਆਈ ॥ ਤਾ ਕੋ
ਦੂਖੁ ਹਰਿਆਂ ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਅਪਨੀ ਪੈਜ ਬਢਾਈ ॥੨॥ ਜਿਹ ਨਰ ਜਸੁ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਗਾਇਆਂ ਤਾ ਕਤ ਭਇਆਂ
ਸਹਾਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਇਹੀ ਭਰੋਸੈ ਗਹੀ ਆਨਿ ਸਰਨਾਈ ॥੨॥੧॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਅਬ ਮੈ ਕਹਾ ਕਰਤ
ਰੀ ਮਾਈ ॥ ਸਗਲ ਜਨਮੁ ਬਿਖਿਅਨ ਸਿਤ ਖੋਇਆ ਸਿਮਰਿਆਂ ਨਾਹਿ ਕਨਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਲ ਫਾਸ ਜਬ
ਗਰ ਮਹਿ ਮੇਲੀ ਤਿਹ ਸੁਧਿ ਸਭ ਬਿਸਰਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਧਾ ਸੰਕਟ ਮਹਿ ਕੋ ਅਬ ਹੋਤ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਜੋ ਸੰਪਤਿ
ਅਪਨੀ ਕਰਿ ਮਾਨੀ ਛਿਨ ਮਹਿ ਭੰਝੀ ਪਰਾਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਧਹ ਸੋਚ ਰਹੀ ਮਨਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਬਹੂ ਨ ਗਾਈ
॥੨॥੨॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਮਾਈ ਮੈ ਮਨ ਕੋ ਮਾਨੁ ਨ ਤਿਆਗਿਆਂ ॥ ਮਾਇਆ ਕੇ ਮਦਿ ਜਨਮੁ ਸਿਰਾਇਆਂ ਰਾਮ
ਭਜਨਿ ਨਹੀ ਲਾਗਿਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਮ ਕੋ ਡੱਡੁ ਪਰਿਆਂ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਤਬ ਸੋਕਤ ਤੈ ਜਾਗਿਆਂ ॥ ਕਹਾ ਹੋਤ
ਅਬ ਕੈ ਪਛੁਤਾਏ ਛੂਟਤ ਨਾਹਿਨ ਭਾਗਿਆਂ ॥੧॥ ਇਹ ਚਿੰਤਾ ਉਪਜੀ ਘਟ ਮਹਿ ਜਬ ਗੁਰ ਚਰਨਨ ਅਨੁਰਾਗਿਆਂ
॥ ਸੁਫਲੁ ਜਨਮੁ ਨਾਨਕ ਤਬ ਹੂਆ ਜਤ ਪ੍ਰਭ ਜਸ ਮਹਿ ਪਾਗਿਆਂ ॥੨॥੩॥

ਮਾਰੂ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧

੭੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ਕਥੇ ਸੁਣੇ ਹਾਰੇ ਮੁਨੀ ਅਨੇਕਾ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਕਹੁ ਘਣਾ ਭ੍ਰਮਿ ਥਾਕੇ ਭੇਖਾ ॥ ਸਾਚੋ ਸਾਹਿਬੁ
ਨਿਰਮਲੋ ਮਨਿ ਮਾਨੈ ਏਕਾ ॥੧॥ ਤੂ ਅਜਰਾਵਰੁ ਅਮਰੁ ਤੂ ਸਭ ਚਾਲਣਹਾਰੀ ॥ ਨਾਮੁ ਰਸਾਇਣੁ ਭਾਇ ਲੈ

परहरि दुखु भारी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि पड़ीअै हरि बुझीअै गुरमती नामि उधारा ॥ गुरि पूरै पूरी मति
 है पूरै सबदि बीचारा ॥ अठसठि तीरथ हरि नामु है किलविख काटणहारा ॥२॥ जलु बिलोवै जलु
 मथै ततु लोडै अंधु अगिआना ॥ गुरमती दधि मथीअै अंमृतु पाईअै नामु निधाना ॥ मनमुख ततु न
 जाणनी पसू माहि समाना ॥३॥ हउमै मेरा मरी मरु मरि जंमै वारो वार ॥ गुर कै सबदे जे मरै फिरि
 मरै न दूजी वार ॥ गुरमती जगजीवनु मनि वसै सभि कुल उधारणहार ॥४॥ सचा वखरु नामु है सचा
 वापारा ॥ लाहा नामु संसारि है गुरमती वीचारा ॥ दूजै भाड़ि कार कमावणी नित तोटा सैसारा ॥५॥
 साची संगति थानु सचु सचे घर बारा ॥ सचा भोजनु भाउ सचु सचु नामु अधारा ॥ सची बाणी संतोखिआ
 सचा सबदु वीचारा ॥६॥ रस भोगण पातिसाहीआ दुख सुख संघारा ॥ मोटा नाउ धराईअै गलि
 अउगण भारा ॥ माणस दाति न होवई तू दाता सारा ॥७॥ अगम अगोचरु तू धणी अविगतु
 अपारा ॥ गुर सबदी दरु जोईअै मुकते भंडारा ॥ नानक मेलु न चूर्कई साचे वापारा ॥८॥९॥
 मारू महला ੧ ॥ बिखु बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि ॥ कंधी दिसि न आवई ना उखारु न
 पारु ॥ वंझी हाथि न खेवटू जलु सागरु असरालु ॥१॥ बाबा जगु फाथा महा जालि ॥ गुर परसादी
 उबरे सचा नामु समालि ॥२॥ रहाउ ॥ सतिगुरु है बोहिथा सबदि लम्घावणहारु ॥ तिथै पवणु न
 पावको ना जलु ना आकारु ॥ तिथै सचा सचि नाड़ि भवजल तारणहारु ॥२॥ गुरमुखि लम्घे से पारि
 पए सचे सित लिव लाड़ि ॥ आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाड़ि ॥ गुरमती सहजु ऊपजै सचे
 रहै समाड़ि ॥३॥ सपु पिड़ाई पाईअै बिखु अंतरि मनि रोसु ॥ पूरबि लिखिआ पाईअै किस नो दीजै
 दोसु ॥ गुरमुखि गारड़ु जे सुणे मन्ने नाउ संतोसु ॥४॥ मागरमछु फहाईअै कुंडी जालु वताड़ि ॥ दुरमति
 फाथा फाहीअै फिरि फिरि पछोताड़ि ॥ जंमण मरणु न सुझाई किरतु न मेटिआ जाड़ि ॥५॥ हउमै बिखु
 पाड़ि जगतु उपाड़िआ सबदु वसै बिखु जाड़ि ॥ जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाड़ि ॥ जीवन

ਸੁਕਤੁ ਸੋ ਆਖੀਐ ਜਿਸੁ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ॥੬॥ ਧੰਧੈ ਧਾਵਤ ਜਗੁ ਬਾਧਿਆ ਨਾ ਬੂੜ੍ਹੈ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਜ਼ਮਣ
 ਮਰਣੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧੁ ਗਵਾਰੁ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਤਕਰੇ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥੭॥ ਸ੍ਰਹਟੁ ਪਿੰਜਰਿ
 ਪ੍ਰੇਮ ਕੈ ਬੋਲੈ ਬੋਲਣਹਾਰੁ ॥ ਸਚੁ ਚੁਗੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਐ ਤਡੈ ਤ ਏਕਾ ਵਾਰ ॥ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਖਸਮੁ ਪਛਾਣੀਐ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੮॥੨॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਾ ਮਾਰਿ ਮਰੁ ਭਾਗੋ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਜਾਤ ॥ ਜਿਸ ਕੈ
 ਡਰਿ ਭੈ ਭਾਗੀਐ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਤਾ ਕੋ ਨਾਤ ॥ ਮਾਰਹਿ ਰਾਖਹਿ ਏਕੁ ਤੂ ਬੀਜਤ ਨਾਹੀ ਥਾਤ ॥੯॥ ਬਾਬਾ ਮੈ ਕੁਚੀਲੁ
 ਕਾਚਤ ਮਤਿਹੀਨ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੋ ਕਛੁ ਨਹੀ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਪ੍ਰੌ ਮਤਿ ਕੀਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਵਗਣਿ ਸੁਭਰ
 ਗੁਣ ਨਹੀ ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਕਿਤ ਘਰਿ ਜਾਤ ॥ ਸਹਜਿ ਸਬਦਿ ਸੁਖੁ ਊਪਯੈ ਬਿਨੁ ਭਾਗ ਧਨੁ ਨਾਹਿ ॥ ਜਿਨ ਕੈ ਨਾਮੁ ਨ
 ਮਨਿ ਵਸੈ ਸੇ ਬਾਧੇ ਦ੍ਰਖ ਸਹਾਹਿ ॥੨॥ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੇ ਕਿਤੁ ਆਏ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਸੁਖੁ
 ਨਹੀ ਗਾਡੇ ਲਾਦੇ ਛਾਰੁ ॥ ਵਿਛੁਡਿਆ ਮੇਲਾ ਨਹੀ ਦ੍ਰਖੁ ਘਣੋ ਜਮ ਦੁਆਰਿ ॥੩॥ ਅਗੈ ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਨਾਹਿ ਮੈ
 ਭੂਲੇ ਤੂ ਸਮਝਾਇ ॥ ਭੂਲੇ ਮਾਰਗੁ ਜੋ ਦੱਸੇ ਤਿਸ ਕੈ ਲਾਗਤ ਪਾਇ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਦਾਤਾ ਕੋ ਨਹੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ
 ਜਾਇ ॥੪॥ ਸਾਜਨੁ ਦੇਖਾ ਤਾ ਗਲਿ ਮਿਲਾ ਸਾਚੁ ਪਠਾਇਆ ਲੇਖੁ ॥ ਮੁਖਿ ਧਿਮਾਣੈ ਧਨ ਖੜੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖੀ
 ਦੇਖੁ ॥ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤੂ ਮਨਿ ਵਸਹਿ ਨਦਰੀ ਕਰਮਿ ਵਿਸੇਖੁ ॥੫॥ ਭੂਖ ਪਿਆਸੋ ਜੇ ਭਵੈ ਕਿਆ ਤਿਸੁ ਮਾਗਤ ਦੇਇ ॥
 ਬੀਜਤ ਸੂੜੈ ਕੋ ਨਹੀ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪੂਰਨੁ ਦੇਇ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਨਿ ਦੇਖਿਆ ਆਪਿ ਵਡਾਈ ਦੇਇ ॥੬॥ ਨਗਰੀ
 ਨਾਇਕੁ ਨਵਤਨੋ ਬਾਲਕੁ ਲੀਲ ਅਨੂਪੁ ॥ ਨਾਰਿ ਨ ਪੁਰਖੁ ਨ ਪੰਖਣ੍ਹ ਸਾਚਤ ਚਤੁਰੁ ਸੱਖ੍ਹਪੁ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ
 ਥੀਐ ਤੂ ਟੀਪਕੁ ਤੂ ਧੂਪੁ ॥੭॥ ਗੀਤ ਸਾਦ ਚਾਖੇ ਸੁਣੇ ਬਾਦ ਸਾਦ ਤਨਿ ਰੋਗੁ ॥ ਸਚੁ ਭਾਵੈ ਸਾਚਤ ਚਵੈ ਛੂਟੈ ਸੋਗ
 ਵਿਜੋਗੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਕੀਸਰੈ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਹੋਗੁ ॥੮॥੩॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਾਚੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ
 ਹੋਰਿ ਲਾਲਚ ਬਾਦਿ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਾਚੈ ਮੋਹਿਆ ਜਿਹਵਾ ਸਚਿ ਸਾਦਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਰਸੁ ਨਹੀ ਹੋਰਿ ਚਲਹਿ
 ਬਿਖੁ ਲਾਦਿ ॥੧॥ ਐਸਾ ਲਾਲਾ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਕੋ ਸੁਣਿ ਖਸਮ ਹਮਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਫੁਰਮਾਵਹਿ ਤਿਤ ਚਲਾ ਸਚੁ ਲਾਲ
 ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਲੇ ਚਾਕਰੀ ਗੋਲੇ ਸਿਰਿ ਮੀਰਾ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਮਨੁ ਵੇਚਿਆ ਸਬਦਿ ਮਨੁ

धीरा ॥ गुर पूरे साबासि है काटै मन पीरा ॥२॥ लाला गोला धणी को किआ कहउ वडिआईअै ॥
 भाणै बखसे पूरा धणी सचु कार कमाईअै ॥ विछुडिआ कउ मेलि लए गुर कउ बलि जाईअै ॥३॥
 लाले गोले मति खरी गुर की मति नीकी ॥ साची सुरति सुहावणी मनमुख मति फीकी ॥ मनु तनु तेरा
 तू प्रभू सचु धीरक धुर की ॥४॥ साचै बैसणु उठणा सचु भोजनु भाखिआ ॥ चिति सचै वितो सचा साचा
 रसु चाखिआ ॥ साचै घरि साचै रखे गुर बचनि सुभाखिआ ॥५॥ मनमुख कउ आलसु धणो फाथे ओजाड़ी
 ॥ फाथा चुगै नित चोगड़ी लगि बंधु विगड़ी ॥ गुर परसादी मुकतु होइ साचे निज ताड़ी ॥६॥ अनहति
 लाला बेधिआ प्रभ हेति पिआरी ॥ बिनु साचे जीउ जलि बलउ झूठे वेकारी ॥ बादि कारा सभि छोडीआ
 साची तरु तारी ॥७॥ जिनी नामु विसारिआ तिना ठउर न ठाउ ॥ लालै लालचु तिआगिआ पाइआ
 हरि नाउ ॥ तू बखसहि ता मेलि लैहि नानक बलि जाउ ॥८॥८॥ मारू महला १ ॥ लालै गारबु
 छोडिआ गुर कै भै सहजि सुभाई ॥ लालै खसमु पछाणिआ वडी वडिआई ॥ खसमि मिलिअै सुखु
 पाइआ कीमति कहणु न जाई ॥९॥ लाला गोला खसम का खसमै वडिआई ॥ गुर परसादी उबरे
 हरि की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ लाले नो सिरि कार है धुरि खसमि फुरमाई ॥ लालै हुकमु पछाणिआ
 सदा रहै रजाई ॥ आपे मीरा बखसि लए वडी वडिआई ॥२॥ आपि सचा सभु सचु है गुर सबदि
 बुझाई ॥ तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ बिनु सेवा किनै न पाइआ दूजै भरमि खुआई
 ॥३॥ सो किउ मनहु विसारीअै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा साहु तिनै विचि
 पाइआ ॥ जा कृपा करे ता सेवीअै सेवि सचि समाइआ ॥४॥ लाला सो जीवतु मरै मरि विचहु आपु
 गवाए ॥ बंधन तूटहि मुकति होइ तृसना अगनि बुझाए ॥ सभ महि नामु निधानु है गुरमुखि को पाए
 ॥५॥ लाले विचि गुणु किछु नही लाला अवगणिआरु ॥ तुधु जेवडु दाता को नही तू बखसणहारु ॥
 तेरा हुकमु लाला मन्ने एह करणी सारु ॥६॥ गुरु सागरु अंमृत सरु जो इछे सो फलु पाए ॥ नामु

पदारथु अमरु है हिरटै मनि वसाए ॥ गुर सेवा सदा सुखु है जिस नो हुकमु मनाए ॥੭॥ सुइना रूपा
 सभ धातु है माटी रलि जाई ॥ बिनु नावै नालि न चलई सतिगुरि बूझा बुझाई ॥ नानक नामि रते से
 निरमले साचै रहे समाई ॥੮॥੫॥ मारू महला ੧ ॥ हुकमु भइआ रहणा नही धुरि फाटे चौरै ॥ एहु
 मनु अवगणि बाधिआ सहु देह सरीरै ॥ पूरै गुरि बखसाईअहि सभि गुनह फकीरै ॥੯॥ किउ रहीअै
 उठि चलणा बुझु सबद बीचारा ॥ जिसु तू मेलहि सो मिलै धुरि हुकमु अपारा ॥੧॥ रहाउ ॥ जिउ तू
 राखहि तिउ रहा जो देहि सु खाउ ॥ जिउ तू चलावहि तिउ चला मुखि अंमृत नाउ ॥ मेरे ठाकुर हथि
 वडिआईआ मेलहि मनि चाउ ॥੨॥ कीता किआ सालाहीअै करि देखै सोई ॥ जिनि कीआ सो मनि वसै
 मै अवरु न कोई ॥ सो साचा सालाहीअै साची पति होई ॥੩॥ पंडितु पड़ि न पहुर्चई बहु आल जंजाला ॥
 पाप पुन्न दुइ संगमे खुधिआ जमकाला ॥ विछोड़ा भउ वीसरै पूरा रखवाला ॥੪॥ जिन की लेखै पति पवै
 से पूरे भाई ॥ पूरे पूरी मति है सची वडिआई ॥ देदे तोटि न आवई लै लै थकि पाई ॥੫॥ खार समुद्रु
 ढंढोलीअै इकु मणीआ पावै ॥ दुइ दिन चारि सुहावणा माटी तिसु खावै ॥ गुरु सागरु सति
 सेवीअै दे तोटि न आवै ॥੬॥ मेरे प्रभ भावनि से ऊजले सभ मैलु भरीजै ॥ मैला ऊजलु ता थीअै पारस
 संगि भीजै ॥ वन्नी साचे लाल की किनि कीमति कीजै ॥੭॥ भेखी हाथ न लभई तीरथि नही दाने ॥ पूछउ
 बेद पड़तिआ मूठी विणु माने ॥ नानक कीमति सो करे पूरा गुरु गिआने ॥੮॥੬॥ मारू महला ੧ ॥
 मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के घर हेरै ॥ गृह धरमु गवाए सतिगुरु न भेटै दुरमति
 घूमन घैरै ॥ दिसंतरु भवै पाठ पड़ि थाका तृसना होइ वधेरै ॥ काची पिंडी सबदु न चीनै उदरु भरै
 जैसे ढोरै ॥੧॥ बाबा औसी रवत रवै संनिआसी ॥ गुर कै सबदि एक लिव लागी तेरै नामि रते
 तृपतासी ॥੧॥ रहाउ ॥ घोली गेरू रंगु चड़ाइआ वसत्र भेख भेखारी ॥ कापड़ फारि बनाई खिंथा
 झोली माड़िआधारी ॥ घरि घरि मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥ भरमि भुलाणा सबदु न चीनै

ਜੂਐ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੨॥ ਅੰਤਰਿ ਅਗਨਿ ਨ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰੂੜੈ ਬਾਹਰਿ ਪ੍ਰਾਅਰ ਤਾਪੈ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਨ
 ਹੋਵੀ ਕਿਤ ਕਰਿ ਚੀਨਸਿ ਆਪੈ ॥ ਨਿੰਦਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਨਰਕ ਨਿਵਾਸੀ ਅੰਤਰਿ ਆਤਮ ਜਾਪੈ ॥ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ
 ਭਰਮਿ ਵਿਗੁਚਹਿ ਕਿਤ ਮਲੁ ਧੋਪੈ ਪਾਪੈ ॥੩॥ ਛਾਣੀ ਖਾਕੁ ਬਿਭੂਤ ਚੜਾਈ ਮਾਇਆ ਕਾ ਮਗੁ ਜੋਹੈ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਬਾਹਰਿ ਏਕੁ ਨ ਜਾਣੈ ਸਾਚੁ ਕਹੇ ਤੇ ਛੋਹੈ ॥ ਪਾਠੁ ਪਡੈ ਮੁਖਿ ਝੂਠੇ ਬੋਲੈ ਨਿਗੁਰੇ ਕੀ ਮਤਿ ਓਹੈ ॥ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪਈ
 ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਤ ਸੋਹੈ ॥੪॥ ਸ੍ਰੂੰਡੁ ਮੁਡਾਇ ਜਟਾ ਸਿਖ ਬਾਧੀ ਮੋਨਿ ਰਹੈ ਅਭਿਮਾਨਾ ॥ ਮਨੂਆ
 ਡੋਲੈ ਫ਼ਲ ਦਿਸ ਧਾਵੈ ਬਿਨੁ ਰਤ ਆਤਮ ਗਿਆਨਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਛੋਡਿ ਮਹਾ ਬਿਖੁ ਪੀਵੈ ਮਾਇਆ ਕਾ ਟੇਵਾਨਾ ॥
 ਕਿਰਤੁ ਨ ਮਿਟਈ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬ੍ਰੂੜੈ ਪਸੂਆ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥੫॥ ਹਾਥ ਕਮੰਡਲੁ ਕਾਪੜੀਆ ਮਨਿ ਤ੃ਸਨਾ ਉਪਜੀ
 ਭਾਰੀ ॥ ਇਸਤੀ ਤਜਿ ਕਰਿ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪਿਆ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਪਰ ਨਾਰੀ ॥ ਸਿਖ ਕਰੇ ਕਰਿ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨੈ
 ਲਮਣਟੁ ਹੈ ਬਾਜਾਰੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਿਖੁ ਬਾਹਰਿ ਨਿਭਰਾਤੀ ਤਾ ਜਮੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ ॥੬॥ ਸੋ ਸੰਨਿਆਸੀ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸੇਵੈ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥ ਛਾਦਨ ਭੋਜਨ ਕੀ ਆਸ ਨ ਕਰੈ ਅਚਿੰਤੁ ਮਿਲੈ ਸੋ ਪਾਏ ॥ ਕਕੈ ਨ ਬੋਲੈ ਖਿਮਾ ਧਨੁ
 ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਤਾਮਸੁ ਨਾਮਿ ਜਲਾਏ ॥ ਧਨੁ ਗਿਰਹੀ ਸੰਨਿਆਸੀ ਜੋਗੀ ਜਿ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੭॥ ਆਸ
 ਨਿਰਾਸ ਰਹੈ ਸੰਨਿਆਸੀ ਏਕਸੁ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਤਾ ਸਾਤਿ ਆਵੈ ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਾਡੀ ਲਾਏ ॥
 ਮਨੂਆ ਨ ਡੋਲੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰੂੜੈ ਧਾਵਤੁ ਵਰਜਿ ਰਹਾਏ ॥ ਗ੍ਰਹੁ ਸਰੀਰੁ ਗੁਰਮਤੀ ਖੋਜੇ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਏ ॥੮॥
 ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਸਰੇਸਟ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਕੀਚਾਰੀ ॥ ਖਾਣੀ ਬਾਣੀ ਗਗਨ ਪਤਾਲੀ ਜੰਤਾ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਸਭਿ
 ਸੁਖ ਮੁਕਤਿ ਨਾਮ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਤਰ ਧਾਰੀ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਹੀ ਛੂਟਸਿ ਨਾਨਕ ਸਾਚੀ ਤਰੁ ਤ੍ਰਾਂ ਤਾਰੀ
 ॥੯॥੭॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੰਜੋਗਿ ਤਪਾਏ ਰਕਤੁ ਬਿੰਦੁ ਮਿਲਿ ਪਿੰਡੁ ਕਰੇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਗਰਭ ਤਰਧਿ
 ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਰੇ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ॥੧॥ ਸੰਸਾਰੁ ਭਵਜਲੁ ਕਿਤ ਤਰੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਈਐ
 ਅਫਰਿਐ ਭਾਰੁ ਅਫਾਰੁ ਟਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੇ ਗੁਣ ਵਿਸਰਿ ਗਏ ਅਪਰਾਧੀ ਮੈ ਬਤਰਾ ਕਿਆ ਕਰਤ ਹਰੇ ॥
 ਤ੍ਰਾਂ ਦਾਤਾ ਦਿੱਤਾਲੁ ਸਭੈ ਸਿਰਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਦਾਤਿ ਸਮਾਰਿ ਕਰੇ ॥੨॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਲੈ ਜਗਿ ਜਨਮਿਆ

ਸਿਵ ਸਕਤੀ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ਧਰੇ ॥ ਲਾਗੀ ਭੂਖ ਮਾਇਆ ਮਗੁ ਜੋਹੈ ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਮੋਹਿ ਖਰੇ ॥੩॥ ਕਰਣ ਪਲਾਵ
 ਕਰੇ ਨਹੀਂ ਪਾਵੈ ਇਤ ਉਤ ਫੂਫਤ ਥਾਕਿ ਪਰੇ ॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰਿਧਿ ਅਛਕਾਰਿ ਵਿਆਪੇ ਕੂੜ੍ਹ ਕੁਟੰਬ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੇ
 ॥੪॥ ਖਾਵੈ ਭੋਗੈ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਦੇਖੈ ਪਹਿਰਿ ਦਿਖਾਵੈ ਕਾਲ ਘਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਬਿਨੁ
 ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਕਾਲੁ ਟਰੇ ॥੫॥ ਜੇਤਾ ਮੋਹੁ ਹਤਮੈ ਕਰਿ ਭੂਲੇ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤੇ ਛੀਨਿ ਖਰੇ ॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਬਿਨਸੈ
 ਸਹਸੈ ਸਹਸਾ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਵੈ ਮੁਖਿ ਧੂਰਿ ਪਰੇ ॥੬॥ ਬਿਰਧਿ ਭਿਡਿਆ ਜੋਕਨੁ ਤਨੁ ਖਿਸਿਆ ਕਫੁ ਕਂਠੁ ਬਿਰਧੀ
 ਨੈਨਹੁ ਨੀਰੁ ਢਰੇ ॥ ਚਰਣ ਰਹੇ ਕਰ ਕਂਪਣ ਲਾਗੇ ਸਾਕਤ ਰਾਮੁ ਨ ਰਿਦੈ ਹਰੇ ॥੭॥ ਸੁਰਤਿ ਗੁਰੁ ਕਾਲੀ ਹੂ
 ਧਤਲੇ ਕਿਸੈ ਨ ਭਾਵੈ ਰਖਿਆਂ ਘਰੇ ॥ ਬਿਸਰਤ ਨਾਮ ਐਸੇ ਦੋਖ ਲਾਗਹਿ ਜਮੁ ਮਾਰਿ ਸਮਾਰੇ ਨਰਕਿ ਖਰੇ ॥੮॥
 ਪ੍ਰਭ ਜਨਮ ਕੋ ਲੇਖੁ ਨ ਮਿਟੰਡ ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਕਾ ਕਤ ਦੋਸੁ ਧਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਬਾਦਿ ਜੀਵਣੁ ਹੋਰੁ ਮਰਣਾ ਬਿਨੁ
 ਗੁਰ ਸਬਦੈ ਜਨਮੁ ਜਰੇ ॥੯॥ ਖੁਸੀ ਖੁਆਰ ਭਏ ਰਸ ਭੋਗਣ ਫੋਕਟ ਕਰਮ ਵਿਕਾਰ ਕਰੇ ॥ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਲੋਭਿ
 ਮੂਲੁ ਖੋਇਆਂ ਸਿਰਿ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਾ ਡੰਡੁ ਪਰੇ ॥੧੦॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਜਾ ਕਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰਮੁ
 ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥ ਤੇ ਨਿਰਮਲ ਪੁਰਖ ਅਪਰੰਪਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਜਗ ਮਹਿ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦ ਹਰੇ ॥੧੧॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਹੁ
 ਗੁਰ ਬਚਨ ਸਮਾਰਹੁ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਜਨ ਭਾਤ ਕਰੇ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਗੁਰੁ ਪਰਥਾਨੁ ਦੁਆਰੈ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਜਨ ਕੀ
 ਰੇਣੁ ਹਰੇ ॥੧੨॥੮॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਾਰੂ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ॥ ਆਵਤ ਕਂਝ ਝੁੰਮਣੀ ਕਿਤੀ ਮਿਤ ਕਰੇਤ ॥ ਸਾ ਧਨ ਢੀਈ ਨ ਲਹੈ ਵਾਢੀ
 ਕਿਤ ਧੀਰੇਤ ॥੧॥ ਮੈਡਾ ਮਨੁ ਰਤਾ ਆਪਨਡੇ ਪਿਰ ਨਾਲਿ ॥ ਹਤ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਖਨੀਐ ਕੀਤੀ ਹਿਕ ਭੋਰੀ
 ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੇਈਅਡੈ ਡੋਹਾਗਣੀ ਸਾਹੁਰਡੈ ਕਿਤ ਜਾਤ ॥ ਮੈ ਗਲਿ ਅਤਗਣ ਮੁਠੜੀ ਬਿਨੁ
 ਪਿਰ ਝੂਰਿ ਮਰਾਤ ॥੨॥ ਪੇਈਅਡੈ ਪਿਲੁ ਸੰਮਲਾ ਸਾਹੁਰਡੈ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ॥ ਸੁਖਿ ਸਵਾਂਧਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਪਿਲੁ ਪਾਇਆ
 ਗੁਣਤਾਸੁ ॥੩॥ ਲੇਫੁ ਨਿਹਾਲੀ ਪਟ ਕੀ ਕਾਪੜੁ ਅੰਗਿ ਬਣਾਇ ॥ ਪਿਲੁ ਮੁਤੀ ਡੋਹਾਗਣੀ ਤਿਨ ਝੁਖੀ ਰੈਣਿ

ਵਿਹਾਇ ॥੪॥ ਕਿਤੀ ਚਖਤ ਸਾਡੇ ਕਿਤੀ ਵੇਸ ਕਰੇਤ ॥ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਜੋਬਨੁ ਬਾਦਿ ਗਿਆਮੁ ਵਾਢੀ ਝੂਰੇਦੀ
 ਝੂਰੇਤ ॥੫॥ ਸਚੇ ਸੰਦਾ ਸਦਡਾ ਸੁਣੀਐ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਸਚੇ ਸਚਾ ਬੈਹਣਾ ਨਦਰੀ ਨਦਰਿ ਪਿਆਰਿ ॥੬॥
 ਗਿਆਨੀ ਅੰਜਨੁ ਸਚ ਕਾ ਡੇਖੈ ਡੇਖਣਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਾਂਜੈ ਜਾਣੀਐ ਹਉਮੈ ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰਿ ॥੭॥ ਤਤ ਭਾਵਨਿ
 ਤਤ ਜੇਹੀਆ ਮੂ ਜੇਹੀਆ ਕਿਤੀਆਹ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਹੁ ਨ ਕੀਛੁਡੈ ਤਿਨ ਸਚੈ ਰਤਡੀਆਹ ॥੮॥੧॥੯॥
 ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਾ ਭੈਣਾ ਭਰਯਾਈਆ ਨਾ ਸੇ ਸਸੁਡੀਆਹ ॥ ਸਚਾ ਸਾਕੁ ਨ ਤੁਟਈ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਸਹੀਆਹ
 ॥੧॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਤ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਏਤਾ ਭਵਿ ਥਕੀ ਗੁਰਿ ਪਿਲੁ ਮੇਲਿਮੁ ਦਿਤਮੁ
 ਮਿਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਫੁਫੀ ਨਾਨੀ ਮਾਸੀਆ ਦੇਰ ਜੇਠਾਨਡੀਆਹ ॥ ਆਵਨਿ ਵੰਬਨਿ ਨਾ ਰਹਨਿ ਪੂਰ੍ਹ ਭਰੇ
 ਪਹੀਆਹ ॥੨॥ ਮਾਮੇ ਤੈ ਮਾਮਾਣੀਆ ਭਾਇਰ ਬਾਪ ਨ ਮਾਤ ॥ ਸਾਥ ਲਡੇ ਤਿਨ ਨਾਠੀਆ ਭੀਡ਼ ਘਣੀ
 ਦਰੀਆਤ ॥੩॥ ਸਾਚਤ ਰੰਗਿ ਰੰਗਾਵਲੋ ਸਖੀ ਹਮਾਰੋ ਕੰਤੁ ॥ ਸਚਿ ਵਿਛੋਡਾ ਨਾ ਥੀਐ ਸੋ ਸਹੁ ਰੰਗਿ ਰਵਨ੍ਤੁ
 ॥੪॥ ਸਾਖੇ ਰੁਤੀ ਚੰਗੀਆ ਜਿਤੁ ਸਚੇ ਸਿਤ ਨੇਹੁ ॥ ਸਾ ਧਨ ਕੰਤੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸੁਖਿ ਸੁਤੀ ਨਿਸਿ ਡੇਹੁ ॥੫॥
 ਪਤਣਿ ਕੂਕੇ ਪਾਤਣੀ ਵੰਬਹੁ ਧੁਕਿ ਵਿਲਾਇ ॥ ਪਾਰਿ ਪਕੰਦੇ ਡਿਠੁ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰ ਬੋਹਿਥਿ ਚਾਇ ॥੬॥ ਹਿਕਨੀ
 ਲਦਿਆ ਹਿਕਿ ਲਦਿ ਗਏ ਹਿਕਿ ਭਾਰੇ ਭਰ ਨਾਲਿ ॥ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਵਣਜਿਆ ਸੇ ਸਚੇ ਪ੍ਰਭ ਨਾਲਿ ॥੭॥ ਨਾ
 ਹਮ ਚੰਗੇ ਆਖੀਅਹ ਬੁਰਾ ਨ ਦਿਸੈ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀਐ ਸਚੇ ਜੇਹਡਾ ਸੋਇ ॥੮॥੨॥੧੦॥
 ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਾ ਜਾਣਾ ਮੂਰਖੁ ਹੈ ਕੋਈ ਨਾ ਜਾਣਾ ਸਿਆਣਾ ॥ ਸਦਾ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਰੰਗੇ ਰਾਤਾ ਅਨਦਿਨੁ
 ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਮੂਰਖੁ ਹਾ ਨਾਵੈ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਤ੍ਰੂ ਕਰਤਾ ਤ੍ਰੂ ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਤੈਰੈ ਨਾਮਿ ਤਰਾਤ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੂਰਖੁ ਸਿਆਣਾ ਏਕੁ ਹੈ ਏਕ ਜੋਤਿ ਦੁਇ ਨਾਤ ॥ ਮੂਰਖਾ ਸਿਰਿ ਮੂਰਖੁ ਹੈ ਜਿ ਮਨੇ ਨਾਹੀ ਨਾਤ
 ॥੨॥ ਗੁਰ ਦੁਆਰੈ ਨਾਤ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਲੈ ਨ ਪਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਾ ਅਹਿਨਿਸਿ
 ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੩॥ ਰਾਜਾਂ ਰੰਗਾਂ ਰੂਪਾਂ ਮਾਲਾਂ ਜੋਬਨੁ ਤੇ ਜੂਆਰੀ ॥ ਹੁਕਮੀ ਬਾਧੇ ਪਾਸੈ ਖੇਲਹਿ ਚਤੁਪਡਿ ਏਕਾ
 ਸਾਰੀ ॥੪॥ ਜਗਿ ਚਤੁਰੁ ਸਿਆਣਾ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣਾ ਨਾਤ ਪੰਡਿਤ ਪਡਿਹਿ ਗਾਵਾਰੀ ॥ ਨਾਤ ਵਿਸਾਰਹਿ

ਕੇਦੁ ਸਮਾਲਹਿ ਬਿਖੁ ਭੂਲੇ ਲੇਖਾਰੀ ॥੫॥ ਕਲਰ ਖੇਤੀ ਤਰਵਰ ਕਠੇ ਬਾਗਾ ਪਹਿਰਹਿ ਕਜਲੁ ਝੈਰੈ ॥ ਏਹੁ
ਸੰਸਾਰੁ ਤਿਸੈ ਕੀ ਕੋਠੀ ਜੋ ਪੈਸੈ ਸੋ ਗਰਬਿ ਜਰੈ ॥੬॥ ਰਥਤਿ ਰਾਜੇ ਕਹਾ ਸਕਾਏ ਟੁਹੁ ਅੰਤਰਿ ਸੋ ਜਾਸੀ ॥ ਕਹਤ
ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਸਚੇ ਕੀ ਪਤੜੀ ਰਹਸੀ ਅਲਖੁ ਨਿਵਾਸੀ ॥੭॥੩॥੧੧॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੫ ਅਸਟਪਦੀ

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਿਸ ਨੋ ਪ੍ਰੇਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਏਹਾ ਵੇਦਨ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਅਕਰੁ ਕਿ ਜਾਣੈ
ਕਾਰੀ ਜੀਤ ॥੧॥ ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਆਪਣਾ ਪਿਆਰੁ ਆਪੇ ਲਾਏ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਸਾਰ ਸੋਈ
ਜਾਣੈ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਤੁਮਾਰੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਿਵ ਦੂਸਟਿ ਜਾਗੈ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ
ਪਰਮ ਪਟੁ ਪਾਏ ॥ ਸੋ ਜੋਗੀ ਇਹ ਜੁਗਤਿ ਪਛਾਣੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰੀ ਜੀਤ ॥੨॥ ਸੰਜੋਗੀ ਧਨ ਪਿਰ
ਮੇਲਾ ਹੋਵੈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਵਿਚਹੁ ਦੁਰਮਤਿ ਖੋਵੈ ॥ ਰੰਗ ਸਿਤ ਨਿਤ ਰਲੀਆ ਮਾਣੈ ਅਪਣੇ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ
ਜੀਤ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝਹੁ ਵੈਦੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਮਰੈ
ਮੰਦਾ ਹੋਵੈ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰੀ ਜੀਤ ॥੪॥ ਏਹੁ ਸਬਦੁ ਸਾਰੁ ਜਿਸ ਨੋ ਲਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੂਸਨਾ ਭੁਖ
ਗਵਾਏ ॥ ਆਪਣ ਲੀਆ ਕਿਛੁ ਨ ਪਾਈਐ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਲ ਧਾਰੀ ਜੀਤ ॥੫॥ ਅਗਮ ਨਿਗਮੁ
ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥ ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਜਾਤਾ ਜਿਨ ਕਤ
ਨਦਰਿ ਤੁਮਾਰੀ ਜੀਤ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਤਤੁ ਪਾਏ ॥ ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਵਿਚਹੁ ਗਵਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
ਬਾਝਹੁ ਸਭੁ ਧੰਧੁ ਕਮਾਵੈ ਕੇਖਹੁ ਮਨਿ ਵੀਚਾਰੀ ਜੀਤ ॥੭॥ ਇਕਿ ਭਰਮੀ ਭੂਲੇ ਫਿਰਹਿ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਇਕਨਾ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਹੋਰਿ ਭਰਮੀ ਭੂਲੇ ਗਾਵਾਰੀ ਜੀਤ ॥੮॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਅਗੈ ਕਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਬੇਲੀ ਨਾਹੀ ਬੂੜੀ
ਗੁਰ ਬੀਚਾਰੀ ਜੀਤ ॥੯॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਜਾਤਾ ॥ ਜਿਸੁ ਤੂ
ਦੇਵਹਿ ਸੋਈ ਪਾਏ ਨਾਨਕ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੀ ਜੀਤ ॥੧੦॥੧॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੬ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਵੁ ਭ੍ਰਮਤੇ ਭ੍ਰਮਤੇ ਦੁਲਭ ਜਨਮੁ ਅਥ ਪਾਇਆਂ ॥੧॥ ਰੇ ਮੂੜੇ ਤੂ ਹੋਛੈ ਰਸਿ ਲਪਟਾਇਆਂ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ
ਸੰਗਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਤੈਰੈ ਬਿਖਿਆ ਸਿਤ ਉਰਯਾਇਆਂ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਬਨਜਨਿ ਆਇਆਂ ਕਾਲਝ
ਲਾਦਿ ਚਲਾਇਆਂ ॥੨॥ ਜਿਹ ਘਰ ਮਹਿ ਤੁਧੁ ਰਹਨਾ ਬਸਨਾ ਸੋ ਘਰ ਚੀਤਿ ਨ ਆਇਆਂ ॥੩॥ ਅਟਲ ਅਖੰਡ
ਪ੍ਰਾਣ ਸੁਖਦਾਈ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨਹੀਂ ਤੁੜ੍ਹੁ ਗਾਇਆਂ ॥੪॥ ਜਹਾਂ ਜਾਣਾ ਸੋ ਥਾਨੁ ਵਿਸਾਰਿਆਂ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨਹੀਂ ਮਨੁ
ਲਾਇਆਂ ॥੫॥ ਪੁਤ ਕਲਤ ਗ੍ਰਹ ਦੇਖਿ ਸਮਗੀ ਇਸ ਵੀ ਮਹਿ ਉਰਯਾਇਆਂ ॥੬॥ ਜਿਤੁ ਕੋ ਲਾਇਆਂ ਤਿਤ ਵੀ
ਲਾਗਾ ਤੈਸੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆਂ ॥੭॥ ਜਤ ਭਿਆਂ ਕੁਪਾਲੁ ਤਾ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮੁ ਧਿਆਇਆਂ
॥੮॥੧॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਰਾਖਿ ਲੀਨੋ ਭਿਆਂ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਸੁ ਰਸਨਾ ਤਚਾਰੈ
ਮਿਸਟ ਗ੍ਰੜਾ ਰੰਗੁ ॥੨॥ ਮੇਰੇ ਮਾਨ ਕੋ ਅਸਥਾਨੁ ॥ ਮੀਤ ਸਾਜਨ ਸਖਾ ਬੰਧਪੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਜਾਨੁ ॥੩॥ ਰਹਾਤ ॥
ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰੁ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆਂ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਗਵੀ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਪ੍ਰਭੁ ਅਰਾਧੇ ਜਮਕੰਕਰੁ ਕਿਛੁ ਨ ਕਹੀ
॥੪॥ ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਿ ਜਾ ਕੈ ਸੰਤ ਰਿਦਾ ਖੰਡਾਰੁ ॥ ਜੀਅ ਜੁਗਤਿ ਸੁਯਾਣੁ ਸੁਆਮੀ ਸਦਾ ਰਾਖਣਹਾਰੁ ॥੫॥
ਦ੍ਰੂਖ ਦਰਦ ਕਲੇਸ ਬਿਨਸਹਿ ਜਿਸੁ ਬਸੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਮਿਰਤੁ ਨਰਕੁ ਅਸਥਾਨ ਬਿਖੜੇ ਬਿਖੁ ਨ ਪੌਹੈ ਤਾਹਿ ॥੬॥
ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਜਾ ਕੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਪਰਵਾਹ ॥ ਆਦਿ ਅੰਤੇ ਮਧਿ ਪੂਰਨ ਊਚ ਅਗਮ ਅਗਾਹ ॥੭॥ ਸਿਧ
ਸਾਧਿਕ ਦੇਵ ਮੁਨਿ ਜਨ ਬੇਦ ਕਰਹਿ ਤਚਾਰੁ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਭੁੰਚਹਿ ਨਹੀਂ ਅੰਤੁ ਪਾਰਵਾਰੁ ॥੮॥
ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਾਚਤ ਮਿਟਹਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਰਿਦੈ ਜਧਿ ਭਗਵਾਨ ॥ ਪਾਵਨਾ ਤੇ ਮਹਾ ਪਾਵਨ ਕੋਟਿ ਦਾਨ ਇਸਨਾਨ
॥੯॥ ਬਲ ਬੁਧਿ ਸੁਧਿ ਪਰਾਣ ਸਰਬਸੁ ਸੰਤਨਾ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥ ਬਿਸਰੁ ਨਾਹੀਂ ਨਿਮਖ ਮਨ ਤੇ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ
॥੧੦॥੨॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਸਤ੍ਰ ਤੀਖਣਿ ਕਾਟਿ ਡਾਰਿਆਂ ਮਨਿ ਨ ਕੀਨੋ ਰੋਸੁ ॥ ਕਾਜੁ ਤਾਂ ਕੋ ਲੇ ਸਵਾਰਿਆਂ
ਤਿਲੁ ਨ ਦੀਨੋ ਦੋਸੁ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਰਤ ਨਿਤ ਨੀਤਿ ॥ ਦਿਆਲ ਦੇਵ ਕੁਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਸੁਨਿ ਸੰਤਨਾ

की रीति ॥१॥ रहाउ ॥ चरण तलै उगाहि बैसिओ स्रमु न रहिओ सरीरि ॥ महा सागरु नह विआपै
खिनहि उतरिओ तीरि ॥२॥ चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति ॥ बिसटा मूत्र खोदि तिलु
तिलु मनि न मनी बिपरीति ॥३॥ ऊच नीच बिकार सुकृत संलग्न सभ सुख छव ॥ मित्र सत्रु न कछू
जानै सरब जीअ समत ॥४॥ करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिओ अंधकार बिनास ॥ पवित्र अपवित्रह किरण
लागे मनि न भइओ बिखादु ॥५॥ सीत मंद सुगंध चलिओ सरब थान समान ॥ जहा सा किछु
तहा लागिओ तिलु न संका मान ॥६॥ सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ ॥ आप
पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ ॥७॥ चरण सरण सनाथ इहु मनु रंगि राते लाल ॥
गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल ॥८॥३॥

मारू महला ५ घरु ४ असटपदीआ

੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

चादना चादनु आँगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना ॥१॥ आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु
अराधना ॥२॥ तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥३॥ मागना मागनु नीका हरि
जसु गुर ते मागना ॥४॥ जागना जागनु नीका हरि कीरतन महि जागना ॥५॥ लागना लागनु नीका
गुर चरणी मनु लागना ॥६॥ इह बिधि तिसहि परापते जा कै मसतकि भागना ॥७॥ कहु नानक तिसु
सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥८॥१॥४॥ मारू महला ५ ॥ आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु
स्वन सुनावना ॥१॥ रहाउ ॥ तुधु आवत मेरा मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम संगि गावना ॥१॥ संत
कृपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना ॥२॥ भगत दिइआ ते बुधि परगासै दुरमति दूख तजावना
॥३॥ दरसनु भेटत होत पुनीता पुनरपि गरभि न पावना ॥४॥ नउ निधि रिधि सिधि पाई जो तुमरै
मनि भावना ॥५॥ संत बिना मै थाउ न कोई अवर न सूझै जावना ॥६॥ मोहि निरगुन कउ कोइ न राखै
संता संगि समावना ॥७॥ कहु नानक गुरि चलतु दिखाइआ मन मधे हरि हरि रावना ॥८॥२॥५॥

मारू महला ५ ॥ जीवना सफल जीवन सुनि हरि जपि जपि सद जीवना ॥१॥ रहाउ ॥ पीवना जितु
मनु आधावै नामु अंमृत रसु पीवना ॥२॥ खावना जितु भूख न लागै संतोखि सदा तृपतीवना ॥३॥
पैनणा रखु पति परमेसुर फिरि नागे नही थीवना ॥४॥ भोगना मन मधे हरि रसु संतसंगति महि
लीवना ॥५॥ बिनु तागे बिनु सूई आनी मनु हरि भगती संगि सीवना ॥६॥ मातिआ हरि रस महि
राते तिसु बहुड़ि न कबहू अउखीवना ॥७॥ मिलिओ तिसु सरब निधाना प्रभि कृपालि जिसु दीवना
॥८॥ सुखु नानक संतन की सेवा चरण संत धोड़ि पीवना ॥९॥३॥८॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੮ ਅੰਜੁਲੀਆ ॥੧੪॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

जिसु गृहि बहुतु तिसै गृहि चिंता ॥ जिसु गृहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई
सुहेला भालीअै ॥१॥ गृह राज महि नरकु उदास करोधा ॥ बहु बिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥ देही
महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन घालीअै ॥२॥ जागत सूता भरमि विगूता ॥ बिनु गुर मुकति
न होईअै मीता ॥ साधसंगि तुटहि हउ बंधन एको एकु निहालीअै ॥३॥ करम करै त बंधा नह करै त
निंदा ॥ मोह मगन मनु विआपिआ चिंदा ॥ गुर प्रसादि सुखु दुखु सम जाणै घटि घटि रामु हिआलीअै
॥४॥ संसारै महि सहसा बिआपै ॥ अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै ओहु
बालक वागी पालीअै ॥५॥ छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ जउ संचै तउ भउ मन माही ॥ इस ही महि
जिस की पति राखै तिसु साधू चउरु ढालीअै ॥६॥ जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥ जो भागै तिसु जोनी
फिरणा ॥ जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीअै ॥७॥ जितु जितु लावहि तितु तितु
लगना ॥ करि करि वेखै अपणे जचना ॥ नानक के पूरन सुखदाते तू देहि त नामु समालीअै ॥८॥१॥९॥
मारू महला ५ ॥ बिरखै हेठि सभि जंत इकठे ॥ इकि तते इकि बोलनि मिठे ॥ असतु उदोतु भइआ
उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ ॥१॥ पाप करेदङ सरपर मुठे ॥ अजराईलि फड़े फड़ि कुठे ॥

ਦੋਜਕਿ ਪਾਏ ਸਿਰਜਣਹਾਰੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੈ ਬਾਣੀਆ ॥੨॥ ਸਂਗਿ ਨ ਕੋਈ ਭਈਆ ਬੇਬਾ ॥ ਮਾਲੁ ਜੋਬਨੁ
 ਧਨੁ ਛੋਡਿ ਵਜੇਸਾ ॥ ਕਰਣ ਕਰੀਮ ਨ ਜਾਤੋ ਕਰਤਾ ਤਿਲ ਪੀੜੇ ਜਿਤ ਧਾਣੀਆ ॥੩॥ ਖੁਸਿ ਖੁਸਿ ਲੈਦਾ
 ਕਵਸਤੁ ਪਰਾਈ ॥ ਕੇਖੈ ਸੁਣੇ ਤੈਰੈ ਨਾਲਿ ਖੁਦਾਈ ॥ ਦੁਨੀਆ ਲਬਿ ਪਇਆ ਖਾਤ ਅੰਦਰਿ ਅਗਲੀ ਗਲ ਨ
 ਜਾਣੀਆ ॥੪॥ ਜਮਿ ਜਮਿ ਮਰੈ ਮਰੈ ਫਿਰਿ ਜੰਮੈ ॥ ਬਹੁਤੁ ਸਜਾਇ ਪਇਆ ਦੇਸਿ ਲਮੈ ॥ ਜਿਨਿ ਕੀਤਾ ਤਿਸੈ
 ਨ ਜਾਣੀ ਅੰਧਾ ਤਾ ਦੁਖੁ ਸਹੈ ਪਰਾਣੀਆ ॥੫॥ ਖਾਲਕ ਥਾਵਹੁ ਭੁਲਾ ਮੁਠਾ ॥ ਦੁਨੀਆ ਖੇਲੁ ਕੁਰਾ ਰੁਠ
 ਤੁਠਾ ॥ ਸਿਦਕੁ ਸਬੂਰੀ ਸੰਤੁ ਨ ਮਿਲਿਓ ਵਤੈ ਆਪਣ ਭਾਣੀਆ ॥੬॥ ਮਤਲਾ ਖੇਲ ਕਰੇ ਸਭਿ ਆਪੇ ॥
 ਡਿਕਿ ਕਢੇ ਡਿਕਿ ਲਹਰਿ ਵਿਆਪੇ ॥ ਜਿਤ ਨਚਾਏ ਤਿਤ ਤਿਤ ਨਚਨਿ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਕਿਰਤ ਵਿਹਾਣੀਆ ॥
 ੭॥ ਮਿਹਰ ਕਰੇ ਤਾ ਖਸਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਸੰਤਾ ਸੰਗਤਿ ਨਰਕਿ ਨ ਪਾਈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਨਾਨਕ ਕਤ
 ਗੁਣ ਗੀਤਾ ਨਿਤ ਵਖਾਣੀਆ ॥੮॥੨॥੮॥੧੨॥੨੦॥

ਮਾਝ ਸੋਲਹੇ ਮਹਲਾ ੧

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਾਚਾ ਸਚੁ ਸੋਈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਜਿਨਿ ਸਿਰਜੀ ਤਿਨ ਹੀ ਫੁਨਿ ਗੋਈ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖਹੁ ਰਹਣਾ
 ਤੁਮ ਸਿਤ ਕਿਆ ਮੁਕਰਾਈ ਹੈ ॥੧॥ ਆਪਿ ਤਥਾਏ ਆਪਿ ਖਪਾਏ ॥ ਆਪੇ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਲਾਏ ॥ ਆਪੇ
 ਕੀਚਾਰੀ ਗੁਣਕਾਰੀ ਆਪੇ ਮਾਰਗਿ ਲਾਈ ਹੈ ॥੨॥ ਆਪੇ ਦਾਨਾ ਆਪੇ ਬੀਨਾ ॥ ਆਪੇ ਆਪੁ ਤਪਾਇ ਪਤੀਨਾ
 ॥ ਆਪੇ ਪਤਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸਤਨੁ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ਹੈ ॥੩॥ ਆਪੇ ਸਸਿ ਸੂਰਾ ਪੂਰੇ ਪੂਰਾ ॥ ਆਪੇ ਗਿਆਨਿ
 ਧਿਆਨਿ ਗੁਰੁ ਸੂਰਾ ॥ ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਸਾਚੇ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਈ ਹੈ ॥੪॥ ਆਪੇ ਪੁਰਖੁ ਆਪੇ ਹੀ
 ਨਾਰੀ ॥ ਆਪੇ ਪਾਸਾ ਆਪੇ ਸਾਰੀ ॥ ਆਪੇ ਪਿੜ੍ਹੀ ਬਾਧੀ ਜਗੁ ਖੇਲੈ ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ਹੈ ॥੫॥ ਆਪੇ ਭਵਰੁ
 ਫੁਲੁ ਫੁਲੁ ਤਰਵਰੁ ॥ ਆਪੇ ਜਲੁ ਥਲੁ ਸਾਗਰੁ ਸਰਵਰੁ ॥ ਆਪੇ ਮਛੁ ਕਛੁ ਕਰਣੀਕਰੁ ਤੇਰਾ ਰੂਪੁ ਨ ਲਖਣਾ
 ਜਾਈ ਹੈ ॥੬॥ ਆਪੇ ਦਿਨਸੁ ਆਪੇ ਹੀ ਰੈਣੀ ॥ ਆਪਿ ਪਤੀਜੈ ਗੁਰ ਕੀ ਬੈਣੀ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਅਨਾਹਦਿ
 ਅਨਦਿਨੁ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਬਦੁ ਰਖਾਈ ਹੈ ॥੭॥ ਆਪੇ ਰਤਨੁ ਅਨੂਪੁ ਅਮੋਲੋ ॥ ਆਪੇ ਪਰਖੇ ਪੂਰਾ ਤੋਲੋ ॥

आपे किस ही कसि बखसे आपे दे लै भाई हे ॥੮॥ आपे धनखु आपे सरबाणा ॥ आपे सुधडु सरूपु
 सिआणा ॥ कहता बकता सुणता सोई आपे बणत बणाई हे ॥੯॥ पउणु गुरु पाणी पित जाता ॥ उदर
 संजोगी धरती माता ॥ रैणि दिनसु दुइ दाई दाइआ जगु खेलै खेलाई हे ॥੧੦॥ आपे मछुली आपे
 जाला ॥ आपे गऊ आपे रखवाला ॥ सरब जीआ जगि जोति तुमारी जैसी प्रभि फुरमाई हे ॥੧੧॥ आपे
 जोगी आपे भोगी ॥ आपे रसीआ परम संजोगी ॥ आपे वेबाणी निरभउ ताड़ी लाई हे ॥੧੨॥
 खाणी बाणी तुझ्हाहि समाणी ॥ जो दीसै सभ आवण जाणी ॥ सेई साह सचे वापारी सतिगुरि बूझ बुझाई
 हे ॥੧੩॥ सबदु बुझाए सतिगुरु पूरा ॥ सरब कला साचे भरपूरा ॥ अफरिओ वेपरवाहु सदा तू ना तिसु
 तिलु न तमाई हे ॥੧੪॥ कालु बिकालु भए देवाने ॥ सबदु सहज रसु अंतरि माने ॥ आपे मुकति
 तृपति वरदाता भगति भाइ मनि भाई हे ॥੧੫॥ आपि निरालमु गुर गम गिआना ॥ जो दीसै तुझ
 माहि समाना ॥ नानकु नीचु भिखिआ दरि जाचै मै दीजै नामु वडाई हे ॥੧੬॥੧॥ मारू महला ੧ ॥
 आपे धरती धउलु अकासं ॥ आपे साचे गुण परगासं ॥ जती सती संतोखी आपे आपे कार कमाई हे
 ॥੨॥ जिसु करणा सो करि करि वेखै ॥ कोइ न मेटै साचे लेखै ॥ आपे करे कराए आपे आपे दे वडिआई
 हे ॥੩॥ पंच चोर चंचल चितु चालहि ॥ पर घर जोहहि घर नही भालहि ॥ काइआ नगरु ढहै ढहि
 ढेरी बिनु सबदै पति जाई हे ॥੪॥ गुर ते बूझै तृभवणु सूझै ॥ मनसा मारि मनै सिउ लूझै ॥ जो तुधु
 सेवहि से तुध ही जेहे निरभउ बाल सखाई हे ॥੫॥ आपे सुरगु मछु पडिआला ॥ आपे जोति सरूपी
 बाला ॥ जटा बिकट बिकराल सरूपी रूपु न रेखिआ काई हे ॥੬॥ बेद कतेबी भेदु न जाता ॥ ना तिसु
 मात पिता सुत भ्राता ॥ सगले सैल उपाइ समाए अलखु न लखणा जाई हे ॥੭॥ करि करि थाकी
 मीत घनेरे ॥ कोइ न काटै अवगुण मेरे ॥ सुरि नर नाथु साहिबु सभना सिरि भाइ मिलै भउ जाई
 हे ॥੮॥ भूले चूके मारगि पावहि ॥ आपि भुलाइ तूहै समझावहि ॥ बिनु नावै मै अवरु न दीसै

ਨਾਵਹੁ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਪਾਈ ਹੈ ॥੮॥ ਗੰਗਾ ਜਮੁਨਾ ਕੇਲ ਕੇਦਾਰਾ ॥ ਕਾਸੀ ਕਾਂਤੀ ਪੁਰੀ ਦੁਆਰਾ ॥ ਗੰਗਾ ਸਾਗਰ
 ਬੋਣੀ ਸ਼ੰਗਮੁ ਅਠਸਠਿ ਅੰਕਿ ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੯॥ ਆਪੇ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕੁ ਵੀਚਾਰੀ ॥ ਆਪੇ ਰਾਜਨੁ ਪੰਚਾ ਕਾਰੀ ॥
 ਤਖਤਿ ਬਹੈ ਅਦਲੀ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਭਰਮੁ ਭੇਟੁ ਭਤ ਜਾਈ ਹੈ ॥੧੦॥ ਆਪੇ ਕਾਜੀ ਆਪੇ ਮੁਲਾ ॥ ਆਪਿ ਅਭੁਲੁ
 ਨ ਕਬਹੂ ਭੁਲਾ ॥ ਆਪੇ ਮਿਹਰ ਦਿਇਆਪਤਿ ਦਾਤਾ ਨਾ ਕਿਸੈ ਕੋ ਬੈਰਾਈ ਹੈ ॥੧੧॥ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਦੇ
 ਵਡਿਆਈ ॥ ਸਭਸੈ ਦਾਤਾ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਈ ॥ ਭਰਪੁਰਿ ਧਾਰਿ ਰਹਿਆ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਗੁਪਤੁ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸਭ ਠਾਈ
 ਹੈ ॥੧੨॥ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹੀ ਅਗਮ ਅਪਾਰੈ ॥ ਸਾਚੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰ ਮੁਰਾਰੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਮੇਲੇ
 ਮੇਲਿ ਮਿਲੈ ਮੇਲਾਈ ਹੈ ॥੧੩॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਦੁਆਰੈ ॥ ਊਖੇ ਸੇਵਹਿ ਅਲਖ ਅਪਾਰੈ ॥ ਹੋਰ ਕੇਤੀ ਦਰਿ
 ਦੀਸੈ ਬਿਲਲਾਦੀ ਮੈ ਗਣਤ ਨ ਆਵੈ ਕਾਈ ਹੈ ॥੧੪॥ ਸਾਚੀ ਕੀਰਤਿ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ॥ ਹੋਰ ਨ ਦੀਸੈ ਕੇਦ ਪੁਰਾਣੀ
 ॥ ਪ੍ਰੰਜੀ ਸਾਚੁ ਸਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਮੈ ਧਰ ਹੋਰ ਨ ਕਾਈ ਹੈ ॥੧੫॥ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਸਾਚਾ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ॥ ਕਉਣੁ ਨ ਮੂਆ
 ਕਉਣੁ ਨ ਮਰਸੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਦਰਿ ਦੇਖਹੁ ਲਿਵ ਲਾਈ ਹੈ ॥੧੬॥੨॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਦ੍ਰੂਜੀ ਦੁਰਮਤਿ ਅਨੰਨੀ ਬੋਲੀ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਕੀ ਕਚੀ ਚੋਲੀ ॥ ਘਰਿ ਕਰੁ ਸਹਜੁ ਨ ਜਾਣੈ ਛੋਹਰਿ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਨੀਦ ਨ
 ਪਾਈ ਹੈ ॥੧॥ ਅੰਤਰਿ ਅਗਨਿ ਜਲੈ ਭਡਕਾਰੇ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਤਕੇ ਕੁੰਡਾ ਚਾਰੇ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਕਿਤ ਸੁਖੁ
 ਪਾਈਐ ਸਾਚੇ ਹਾਥਿ ਵਡਾਈ ਹੈ ॥੨॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਅਛਕਾਰੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਤਸਕਰ ਪੰਚ ਸਬਦਿ ਸੰਘਾਰੇ ॥ ਗਿਆਨ
 ਖੱਡਗੁ ਲੈ ਮਨ ਸਿਤ ਲੂੜੈ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੩॥ ਮਾ ਕੀ ਰਕਤੁ ਪਿਤਾ ਬਿਟੁ ਧਾਰਾ ॥ ਸ੍ਰੂਰਤਿ ਸ੍ਰੂਰਤਿ
 ਕਰਿ ਆਪਾਰਾ ॥ ਜੋਤਿ ਦਾਤਿ ਜੇਤੀ ਸਭ ਤੇਰੀ ਤ੍ਰੂ ਕਰਤਾ ਸਭ ਠਾਈ ਹੈ ॥੪॥ ਤੁੜ੍ਹ ਹੀ ਕੀਆ ਜੰਮਣ ਮਰਣਾ ॥
 ਗੁਰ ਤੇ ਸਮਝ ਪੱਡੀ ਕਿਆ ਡਰਣਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਦਿਇਆਲੁ ਦਿਇਆ ਕਰਿ ਦੇਖਹਿ ਦੁਖੁ ਦਰਦੁ ਸਰੀਰਹੁ ਜਾਈ ਹੈ ॥੫॥
 ਨਿਜ ਘਰਿ ਬੈਸਿ ਰਹੇ ਭਤ ਖਾਇਆ ॥ ਧਾਵਤ ਰਾਖੇ ਠਾਕਿ ਰਹਾਇਆ ॥ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸ ਹਰੇ ਸਰ ਸੁਭਰ ਆਤਮ
 ਰਾਮੁ ਸਖਾਈ ਹੈ ॥੬॥ ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇ ਮੰਡਲ ਮਹਿ ਆਏ ॥ ਕਿਤ ਰਹੀਐ ਚਲਣਾ ਪਰਥਾਏ ॥ ਸਚਾ ਅਮਰੁ
 ਸਚੇ ਅਮਰਾ ਪੁਰਿ ਸੋ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ਹੈ ॥੭॥ ਆਪਿ ਉਪਾਇਆ ਜਗਤੁ ਸਬਾਇਆ ॥ ਜਿਨਿ ਸਿਰਿਆ

ਤਿਨਿ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ॥ ਸਚੈ ਊਪਰਿ ਅਵਰ ਨ ਦੀਸੈ ਸਾਚੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ਹੈ ॥੮॥ ਐਥੈ ਗੋਡਿਲਡਾ ਦਿਨ ਚਾਰੇ
 ॥ ਖੇਲੁ ਤਮਾਸਾ ਧੁੰਧੂਕਾਰੇ ॥ ਬਾਜੀ ਖੇਲਿ ਗਏ ਬਾਜੀਗਰ ਜਿਤ ਨਿਸਿ ਸੁਧਨੈ ਭਖਲਾਈ ਹੈ ॥੯॥ ਤਿਨ ਕਤ
 ਤਖਤਿ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਿਰਭਤ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਖੰਡੀ ਬ੍ਰਹਮਂਡੀ ਪਾਤਾਲੀ ਪੁਰੀਈ ਤ੃ਭਵਣ
 ਤਾਡੀ ਲਾਈ ਹੈ ॥੧੦॥ ਸਾਚੀ ਨਗਰੀ ਤਖਤੁ ਸਚਾਵਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵਾ ॥ ਸਾਚੇ ਸਾਚੈ ਤਖਤਿ
 ਵਡਾਈ ਹਤਮੈ ਗਣਤ ਗਰਵਾਈ ਹੈ ॥੧੧॥ ਗਣਤ ਗਣੀਐ ਸਹਸਾ ਜੀਐ ॥ ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਫੂਐ ਤੀਐ ॥
 ਨਿਰਮਲੁ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਦਾਤਾ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਤੇ ਪਤਿ ਪਾਈ ਹੈ ॥੧੨॥ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਵਿਰਲੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ॥ ਸਾਚਾ
 ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਓਟ ਗਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੈਲੁ ਨ ਕਾਈ ਹੈ ॥੧੩॥ ਜੀਭ
 ਰਸਾਇਣਿ ਸਾਚੈ ਰਾਤੀ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੰਗੀ ਭਤ ਨ ਭਰਾਤੀ ॥ ਸ਼ਰਣ ਸ਼੍ਰੋਤ ਰਜੇ ਗੁਰਬਾਣੀ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ
 ਹੈ ॥੧੪॥ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪੈਰ ਧਰੇ ਪਤ ਧਰਣਾ ॥ ਜਤ ਕਤ ਦੇਖਤ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾ ॥ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਦੇਹਿ ਤ੍ਰਹੈ ਮਨਿ ਭਾਵਹਿ
 ਤੁੜ੍ਹ ਹੀ ਸਿਤ ਬਣਿ ਆਈ ਹੈ ॥੧੫॥ ਅੰਤ ਕਾਲਿ ਕੋ ਬੇਲੀ ਨਾਹੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਾਡੀ ਲਾਈ ਹੈ ॥੧੬॥੩॥ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਅਪਰ ਅਪਾਰੇ ॥
 ਆਦਿ ਨਿਰੰਜਨ ਖਸਮ ਹਮਾਰੇ ॥ ਸਾਚੇ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਵੀਚਾਰੀ ਸਾਚੇ ਤਾਡੀ ਲਾਈ ਹੈ ॥੧॥ ਕੇਤਡਿਆ ਜੁਗ
 ਧੁੰਧੂਕਾਰੈ ॥ ਤਾਡੀ ਲਾਈ ਸਿਰਜਣਹਾਰੈ ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਸਾਚੈ ਤਖਤਿ ਵਡਾਈ ਹੈ ॥੨॥ ਸਤਜੁਗਿ
 ਸਤੁ ਸਂਤੋਖੁ ਸਰੀਰਾ ॥ ਸਤਿ ਸਤਿ ਵਰਤੈ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ॥ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਪਰਖੈ ਸਾਚੈ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਈ ਹੈ
 ॥੩॥ ਸਤ ਸਂਤੋਖੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਨੇ ਸੋ ਸੂਰਾ ॥ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਸਾਚੁ ਨਿਵਾਸਾ ਮਾਨੈ ਹੁਕਮੁ
 ਰਿਆਈ ਹੈ ॥੪॥ ਸਤਜੁਗਿ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਸਚਿ ਵਰਤੈ ਸਾਚਾ ਸੋਈ ॥ ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਭਰਮ ਭਤ ਭੰਜਨੁ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਸਖਾਈ ਹੈ ॥੫॥ ਕੇਤੈ ਧਰਮ ਕਲਾ ਇਕ ਚੂਕੀ ॥ ਤੀਨਿ ਚਰਣ ਇਕ ਦੁਬਿਧਾ ਸੂਕੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਹੋਵੈ ਸੁ ਸਾਚੁ ਵਖਾਣੈ ਮਨਮੁਖਿ ਪਚੈ ਅਵਾਈ ਹੈ ॥੬॥ ਮਨਮੁਖਿ ਕਦੇ ਨ ਦਰਗਹ ਸੀਝੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਕਿਤ
 ਅੰਤਰੁ ਰੀझੈ ॥ ਬਾਧੇ ਆਵਹਿ ਬਾਧੇ ਜਾਵਹਿ ਸੋਝੀ ਬੂੜਾ ਨ ਕਾਈ ਹੈ ॥੭॥ ਦਿਆ ਦੁਆਪੁਰਿ ਅਧੀ ਹੋਈ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਚੀਨੈ ਕੋਈ ॥ ਦੁਇ ਪਗ ਧਰਮੁ ਧਰੇ ਧਰਣੀਧਰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਤਿਥਾਈ ਹੇ ॥੮॥ ਰਾਜੇ ਧਰਮੁ
 ਕਰਹਿ ਪਰਥਾਏ ॥ ਆਸਾ ਬੰਧੇ ਦਾਨੁ ਕਰਾਏ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ਥਾਕੇ ਕਰਮ ਕਮਾਈ ਹੇ ॥੯॥
 ਕਰਮ ਧਰਮ ਕਰਿ ਮੁਕਤਿ ਮੰਗਾਹੀ ॥ ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ
 ਪਰਧਾਂਚੁ ਕਰਿ ਭਰਮਾਈ ਹੇ ॥੧੦॥ ਮਾਡਿਆ ਮਮਤਾ ਛੋਡੀ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸੇ ਛੂਟੇ ਸਚੁ ਕਾਰ ਕਮਾਈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ
 ਭਗਤਿ ਰਤੇ ਵੀਚਾਰੀ ਠਾਕੁਰ ਸਿਤ ਬਣਿ ਆਈ ਹੇ ॥੧੧॥ ਇਕਿ ਜਪ ਤਪ ਕਰਿ ਕਰਿ ਤੀਰਥ ਨਾਵਹਿ ॥ ਜਿਤ
 ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵਹਿ ॥ ਹਠਿ ਨਿਗਹਿ ਅਪਤੀਜੁ ਨ ਭੀਜੈ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਕਿਨਿ ਪਤਿ ਪਾਈ ਹੇ ॥੧੨॥
 ਕਲੀ ਕਾਲ ਮਹਿ ਇਕ ਕਲ ਰਾਖੀ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇ ਕਿਨੈ ਨ ਭਾਖੀ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਕੂਝੁ ਵਰਤੈ ਵਰਤਾਰਾ ਬਿਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਈ ਹੇ ॥੧੩॥ ਸਤਿਗੁਰ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਸਿਰਦਾ ॥ ਨਾ ਜਮ ਕਾਣਿ ਨ ਛੰਦਾ ਬੰਦਾ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ
 ਸੇਵੇ ਸੋ ਅਭਿਨਾਸੀ ਨਾ ਤਿਸੁ ਕਾਲੁ ਸੰਤਾਈ ਹੇ ॥੧੪॥ ਗੁਰ ਮਹਿ ਆਪੁ ਰਖਿਆ ਕਰਤਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਟਿ
 ਅਸੰਖ ਤਉਹਾਰੇ ॥ ਸਰਬ ਜੀਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਨਿਰਭਤ ਮੈਲੁ ਨ ਕਾਈ ਹੇ ॥੧੫॥ ਸਗਲੇ ਜਾਚਹਿ ਗੁਰ
 ਘੰਡਾਰੀ ॥ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਲਖ ਅਪਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਪ੍ਰਭ ਜਾਚੈ ਮੈ ਦੀਜੈ ਸਾਚੁ ਰਾਈ ਹੇ ॥੧੬॥
 ੪॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਾਚੈ ਮੇਲੇ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥ ਤ੍ਰਭਵਣ ਜੋਤਿ ਧਰੀ
 ਪਰਮੇਸਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਟ੍ਰੂਜਾ ਭਾਈ ਹੇ ॥੧॥ ਜਿਸ ਕੇ ਚਾਕਰ ਤਿਸ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥ ਸਬਦਿ ਪਤੀਜੈ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥
 ਭਗਤਾ ਕਾ ਗੁਣਕਾਰੀ ਕਰਤਾ ਬਖਸਿ ਲਾਏ ਵਡਿਆਈ ਹੇ ॥੨॥ ਦੇਦੇ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਸਾਚੇ ॥ ਲੈ ਲੈ ਸੁਕਰਿ ਪਤਦੇ
 ਕਾਚੇ ॥ ਮੂਲੁ ਨ ਬੂੜਾਹਿ ਸਾਚਿ ਨ ਰੀੜਾਹਿ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ਹੇ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਗਿ ਰਹੇ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ॥ ਸਾਚੇ
 ਕੀ ਲਿਵ ਗੁਰਮਤਿ ਜਾਤੀ ॥ ਮਨਮੁਖ ਸੋਡਿ ਰਹੇ ਸੇ ਲੂਟੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਬਤੁ ਭਾਈ ਹੇ ॥੪॥ ਕੂਝੇ ਆਵੈ ਕੂਝੇ ਜਾਵੈ ॥
 ਕੂਝੇ ਰਾਤੀ ਕੂਝੁ ਕਮਾਵੈ ॥ ਸਬਦਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਦਰਗਹ ਪੈਥੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਈ ਹੇ ॥੫॥ ਕੂਝਿ ਮੁਠੀ ਠਗੀ
 ਠਗਵਾਡੀ ॥ ਜਿਤ ਵਾਡੀ ਓਯਾਡਿ ਤਯਾਡੀ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕਿਛੁ ਸਾਦਿ ਨ ਲਾਗੈ ਹਰਿ ਬਿਸਰਿਐ ਟੁਖੁ ਪਾਈ ਹੇ
 ॥੬॥ ਭੋਜਨੁ ਸਾਚੁ ਮਿਲੈ ਆਧਾਈ ॥ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਸਾਚੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਚੀਨੈ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਸੋਈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ

ਮਿਲਾਈ ਹੈ ॥੭॥ ਨਾਵਹੁ ਭੂਲੀ ਚੋਟਾ ਖਾਏ ॥ ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਏ ॥ ਪਚਿ ਪਚਿ ਸੁਏ ਅਚੇਤ ਨ
ਚੇਤਹਿ ਅਜਗਰਿ ਭਾਰਿ ਲਦਾਈ ਹੈ ॥੮॥ ਬਿਨੁ ਬਾਦ ਬਿਰੋਧਹਿ ਕੋਈ ਨਾਹੀ ॥ ਮੈ ਦੇਖਾਲਿਹੁ ਤਿਸੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥
ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਮਿਲੈ ਜਗਜੀਵਨੁ ਹਰਿ ਸਿਤ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ਹੈ ॥੯॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵੈ ॥
ਜੇ ਕੋ ਵਡਾ ਕਹਾਈ ਵਡਾਈ ਖਾਵੈ ॥ ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਤੋਟਿ ਨ ਦਾਤੀ ਸਗਲੀ ਤਿਨਹਿ ਉਪਾਈ ਹੈ ॥੧੦॥ ਵਡੀ
ਵਡਿਆਈ ਵੇਪਰਵਾਹੇ ॥ ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਦਾਨੁ ਸਮਾਹੇ ॥ ਆਪਿ ਦਿੱਥਿਆਲੁ ਟੂਰਿ ਨਹੀ ਦਾਤਾ ਮਿਲਿਆ ਸਹਜਿ
ਰਯਾਈ ਹੈ ॥੧੧॥ ਇਕਿ ਸੋਗੀ ਇਕਿ ਰੋਗੀ ਵਿਆਪੇ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਆਪੇ ਆਪੇ ॥ ਭਗਤਿ ਭਾਉ ਗੁਰ ਕੀ
ਮਤਿ ਪੂਰੀ ਅਨਹਦਿ ਸਬਦਿ ਲਖਾਈ ਹੈ ॥੧੨॥ ਇਕਿ ਨਾਗੇ ਭੂਖੇ ਭਵਹਿ ਭਵਾਏ ॥ ਇਕਿ ਹਠੁ ਕਰਿ ਮਰਹਿ
ਨ ਕੀਮਤਿ ਪਾਏ ॥ ਗਤਿ ਅਵਿਗਤ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੈ ਬੂੜੈ ਸਬਦੁ ਕਮਾਈ ਹੈ ॥੧੩॥ ਇਕਿ ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਹਿ
ਅਨੁ ਨ ਖਾਵਹਿ ॥ ਇਕਿ ਅਗਨਿ ਜਲਾਵਹਿ ਦੇਹ ਖਪਾਵਹਿ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ
ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਈ ਹੈ ॥੧੪॥ ਗੁਰਮਤਿ ਛੋਡਹਿ ਤੜਾਡਿ ਜਾਈ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਰਾਮੁ ਨ ਜਪੈ ਅਵਾਈ ॥ ਪਚਿ ਪਚਿ
ਬੂਝਹਿ ਕੂਝੁ ਕਮਾਵਹਿ ਕੂਝਿ ਕਾਲੁ ਬੈਰਾਈ ਹੈ ॥੧੫॥ ਹੁਕਮੇ ਆਵੈ ਹੁਕਮੇ ਜਾਵੈ ॥ ਬੂੜੈ ਹੁਕਮੁ ਸੋ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ
॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਮਿਲੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਕਮਾਈ ਹੈ ॥੧੬॥੫॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ
ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਜਿਨਿ ਆਪੇ ਆਪਿ ਉਪਾਇ ਪਛਾਤਾ ॥ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪੇ ਸੇਵਕੁ ਆਪੇ ਸ੍ਰਸਟਿ ਉਪਾਈ ਹੈ ॥੧॥
ਆਪੇ ਨੇੜੈ ਨਾਹੀ ਟੂਰੇ ॥ ਬੂੜਾਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇ ਜਨ ਪੂਰੇ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਾਹਾ ਗੁਰ ਸੰਗਤਿ ਏਹ
ਵਡਾਈ ਹੈ ॥੨॥ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸੰਤ ਭਲੇ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਰਸਨ ਰਸੇਰੇ ॥ ਉਸਤਤਿ ਕਰਹਿ ਪਰਹਰਿ
ਦੁਖੁ ਦਾਲਦੁ ਜਿਨ ਨਾਹੀ ਚਿੰਤ ਪਰਾਈ ਹੈ ॥੩॥ ਓਇ ਜਾਗਤ ਰਹਹਿ ਨ ਸੂਤੇ ਦੀਸਹਿ ॥ ਸੰਗਤਿ ਕੁਲ ਤਾਰੇ ਸਾਚੁ
ਪਰੀਸਹਿ ॥ ਕਲਿਮਲ ਮੈਲੁ ਨਾਹੀ ਤੇ ਨਿਰਮਲ ਓਇ ਰਹਹਿ ਭਗਤਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ਹੈ ॥੪॥ ਬੂੜਾਹੁ ਹਰਿ ਜਨ
ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਣੀ ॥ ਏਹੁ ਜੋਕਨੁ ਸਾਸੁ ਹੈ ਦੇਹ ਪੁਰਾਣੀ ॥ ਆਜੁ ਕਾਲਿ ਮਰਿ ਜਾਈਐ ਪ੍ਰਾਣੀ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਪਿ ਰਿਟੈ
ਧਿਆਈ ਹੈ ॥੫॥ ਛੋਡਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਕੂੜ ਕਬਾੜਾ ॥ ਕੂਝੁ ਮਾਰੇ ਕਾਲੁ ਉਛਾਹਾੜਾ ॥ ਸਾਕਤ ਕੂਝਿ ਪਚਹਿ ਮਨਿ ਹਉਮੈ

ਦੁਹ ਮਾਰਗਿ ਪਚੈ ਪਚਾਈ ਹੇ ॥੬॥ ਛੋਡਿਹੁ ਨਿੰਦਾ ਤਾਤਿ ਪਰਾਈ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਦੜਖਹਿ ਸਾਤਿ ਨ ਆਈ ॥ ਮਿਲਿ
 ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਹੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਸਖਾਈ ਹੇ ॥੭॥ ਛੋਡਹੁ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧੁ ਬੁਰਿਆਈ ॥ ਹਉਮੈ ਧੰਧੁ ਛੋਡਹੁ
 ਲਮਫਟਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਿ ਪਰਹੁ ਤਾ ਉਵਰਹੁ ਝਿਉ ਤਰੀਐ ਭਵਜਲੁ ਭਾਈ ਹੇ ॥੮॥ ਆਗੈ ਬਿਮਲ ਨਦੀ
 ਅਗਨਿ ਬਿਖੁ ਝੇਲਾ ॥ ਤਿਥੈ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ਜੀਤ ਝਿਕੇਲਾ ॥ ਭੜ੍ਹ ਭੜ੍ਹ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਦੇ ਲਹਰੀ ਪਡਿ ਦੜਖਹਿ
 ਮਨਮੁਖ ਤਾਈ ਹੇ ॥੯॥ ਗੁਰ ਪਹਿ ਮੁਕਤਿ ਦਾਨੁ ਦੇ ਭਾਣੈ ॥ ਜਿਨਿ ਪਾਇਆ ਸੋਈ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥ ਜਿਨ ਪਾਇਆ
 ਤਿਨ ਪ੍ਰਥਹੁ ਭਾਈ ਸੁਖੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵ ਕਮਾਈ ਹੇ ॥੧੦॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਤਰਝਿ ਮਰਹਿ ਬੇਕਾਰਾ ॥ ਜਮੁ ਸਿਰਿ ਮਾਰੇ
 ਕਰੇ ਖੁਆਰਾ ॥ ਬਾਧੇ ਮੁਕਤਿ ਨਾਹੀ ਨਰ ਨਿੰਦਕ ਝੂਬਹਿ ਨਿੰਦ ਪਰਾਈ ਹੇ ॥੧੧॥ ਬੋਲਹੁ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣਹੁ ਅੰਦਰਿ
 ॥ ਦੂਰਿ ਨਾਹੀ ਦੇਖਹੁ ਕਰਿ ਨਨਦਰਿ ॥ ਬਿਘਨੁ ਨਾਹੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੁ ਤਾਰੀ ਝਿਉ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਈ ਹੇ ॥
 ੧੨॥ ਦੇਹੀ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਵਾਸੀ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਹੈ ਅਭਿਨਾਸੀ ॥ ਨਾ ਜੀਤ ਮੈਨ ਨ ਮਾਰਿਆ ਜਾਈ ਕਰਿ
 ਦੇਖੈ ਸਬਦਿ ਰਿਆਈ ਹੇ ॥੧੩॥ ਓਹੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੈ ਨਾਹੀ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥ ਓਹੁ ਆਪੇ ਤਖਤਿ ਬਹੈ ਸਚਿਆਰਾ ॥
 ਸਾਕਤ ਕੂਡੇ ਬੰਧਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਆਈ ਜਾਈ ਹੇ ॥੧੪॥ ਗੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਸਤਿਗੁਰ ਪਿਆਰੇ ॥
 ਓਇ ਬੈਸਹਿ ਤਖਤਿ ਸੁ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਤਤੁ ਲਹਹਿ ਅੰਤਰਗਤਿ ਜਾਣਹਿ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਾਚੁ ਵਡਾਈ ਹੇ
 ॥੧੫॥ ਆਪਿ ਤਰੈ ਜਨੁ ਧਿਤਰਾ ਤਾਰੇ ॥ ਸਾਂਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਸੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਿਸ ਕਾ ਲਾਲਾ ਗੋਲਾ
 ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ਹੇ ॥੧੬॥੬॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕੇਤੇ ਜੁਗ ਵਰਤੇ ਗੁਬਾਰੈ ॥ ਤਾਡੀ ਲਾਈ
 ਅਪਰ ਅਪਾਰੈ ॥ ਧੁੰਧੂਕਾਰਿ ਨਿਰਾਲਮੁ ਬੈਠਾ ਨਾ ਤਦਿ ਧੰਧੁ ਪਸਾਰਾ ਹੇ ॥੧॥ ਜੁਗ ਛਤੀਹ ਤਿਨੈ ਵਰਤਾਏ ॥
 ਜਿਤ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਿਕੈ ਚਲਾਏ ॥ ਤਿਸਹਿ ਸਰੀਕੁ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਈ ਆਪੇ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ਹੇ ॥੨॥ ਗੁਪਤੇ ਬੂੜਾਹੁ
 ਜੁਗ ਚਤੁਆਰੇ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਰਤੈ ਉਦਰ ਮਝਾਰੇ ॥ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕਾ ਏਕੀ ਵਰਤੈ ਕੋਈ ਬੂੜੈ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਾ ਹੇ
 ॥੩॥ ਬਿੰਦੁ ਰਕਤੁ ਮਿਲਿ ਪਿੰਡੁ ਸਰੀਆ ॥ ਪਤਣੁ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ ਮਿਲਿ ਜੀਆ ॥ ਆਪੇ ਚੋਜ ਕਰੇ ਰੰਗ ਮਹਲੀ
 ਹੋਰ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਸਾਰਾ ਹੇ ॥੪॥ ਗਰਭ ਕੁੰਡਲ ਮਹਿ ਤਰਥ ਧਿਆਨੀ ॥ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਸਾਸਿ

सासि सचु नामु समाले अंतरि उदर मझारा हे ॥५॥ चारि पदारथ लै जगि आँडिआ ॥ सिव सकती
 घरि वासा पाडिआ ॥ एकु विसारे ता पिड़ हारे अंधुलै नामु विसारा हे ॥६॥ बालकु मरै बालक की
 लीला ॥ कहि कहि रोवहि बालु रंगीला ॥ जिस का सा सो तिन ही लीआ भूला रोवणहारा हे ॥७॥ भरि
 जोबनि मरि जाहि कि कीजै ॥ मेरा मेरा करि रोवीजै ॥ माडिआ कारणि रोडि विगूचहि ध्रिगु जीवणु
 संसारा हे ॥८॥ काली हूँ फुनि धउले आए ॥ विणु नावै गथु गडिआ गवाए ॥ दुरमति अंधुला बिनसि
 बिनासै मूठे रोडि पूकारा हे ॥९॥ आपु वीचारि न रोवै कोई ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होई ॥ बिनु गुर
 बजर कपाट न खूलहि सबदि मिलै निसतारा हे ॥१०॥ बिरधि भडिआ तनु छीजै देही ॥ रामु न जपई
 अंति सनेही ॥ नामु विसारि चलै मुहि कालै दरगह झूठु खुआरा हे ॥११॥ नामु विसारि चलै
 कूडिआरो ॥ आवत जात पड़ै सिरि छारो ॥ साहुरडै घरि वासु न पाए पेर्झअडै सिरि मारा हे ॥१२॥
 खाजै पैझै रली करीजै ॥ बिनु अभ भगती बादि मरीजै ॥ सर अपसर की सार न जाणै जमु मारे किआ
 चारा हे ॥१३॥ परविरती नरविरति पछाणै ॥ गुर कै संगि सबदि घरु जाणै ॥ किस ही मंदा आखि
 न चलै सचि खरा सचिआरा हे ॥१४॥ साच बिना दरि सिझै न कोई ॥ साच सबदि पैझै पति होई ॥
 आपे बखसि लए तिसु भावै हउमै गरबु निवारा हे ॥१५॥ गुर किरपा ते हुकमु पछाणै ॥ जुगह
 जुगंतर की बिधि जाणै ॥ नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥१६॥१॥७॥
 मारू महला १ ॥ हरि सा मीतु नाही मै कोई ॥ जिनि तनु मनु दीआ सुरति समोई ॥ सरब जीआ
 प्रतिपालि समाले सो अंतरि दाना बीना हे ॥२॥ गुरु सरवरु हम ह्वास पिआरे ॥ सागर महि रतन
 लाल बहु सारे ॥ मोती माणक हीरा हरि जसु गावत मनु तनु भीना हे ॥३॥ हरि अगम अगाहु
 अगाधि निराला ॥ हरि अंतु न पाईऔ गुर गोपाला ॥ सतिगुर मति तारे तारणहारा मेलि लए रंगि
 लीना हे ॥४॥ सतिगुर बाझहु मुकति किनेही ॥ ओहु आदि जुगादी राम सनेही ॥ दरगह मुकति करे

करि किरपा बखसे अवगुण कीना हे ॥४॥ सतिगुरु दाता मुकति कराए ॥ सभि रोग गवाए अंमृत
 रसु पाए ॥ जमु जागाति नाही करु लागै जिसु अगनि बुझी ठरु सीना हे ॥५॥ काइआ छ्वास प्रीति बहु
 धारी ॥ ओहु जोगी पुरखु ओह सुंदरि नारी ॥ अहिनिसि भोगै चोज बिनोदी उठि चलतै मता न कीना हे
 ॥६॥ सूसटि उपाइ रहे प्रभ छाजै ॥ पउण पाणी बैसंतरु गाजै ॥ मनूआ डोलै दूत संगति मिलि सो
 पाए जो किछु कीना हे ॥७॥ नामु विसारि दोख दुख सहीअै ॥ हुकमु भइआ चलणा किउ रहीअै ॥ नरक
 कूप महि गोते खावै जिउ जल ते बाहरि मीना हे ॥८॥ चउरासीह नरक साकतु भोगाईअै ॥ जैसा कीचै
 तैसो पाईअै ॥ सतिगुर बाझहु मुकति न होई किरति बाधा ग्रसि दीना हे ॥९॥ खंडे धार गली अति
 भीड़ी ॥ लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ॥ मात पिता कलत्र सुत बेली नाही बिनु हरि रस मुकति न कीना
 हे ॥१०॥ मीत सखे केते जग माही ॥ बिनु गुर परमेसर कोई नाही ॥ गुर की सेवा मुकति पराइणि
 अनदिनु कीरतनु कीना हे ॥११॥ कूडु छोडि साचे कउ धावहु ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु ॥ साच
 वखर के वापारी विरले लै लाहा सउदा कीना हे ॥१२॥ हरि हरि नामु वखरु लै चलहु ॥ दरसनु
 पावहु सहजि महलहु ॥ गुरमुखि खोजि लहाहि जन पूरे इउ समदरसी चीना हे ॥१३॥ प्रभ बेअंत
 गुरमति को पावहि ॥ गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥ सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु
 इउ आतम रामै लीना हे ॥१४॥ नारद सारद सेवक तेरे ॥ तृभवणि सेवक वडहु वडेरे ॥ सभ तेरी
 कुदरति तू सिरि सिरि दाता सभु तेरो कारणु कीना हे ॥१५॥ इकि दरि सेवहि दरदु वजाए ॥ ओइ
 दरगह पैथे सतिगुरू छडाए ॥ हउमै बंधन सतिगुरि तोड़े चितु चंचलु चलणि न दीना हे ॥१६॥
 सतिगुर मिलहु चीनहु बिधि साई ॥ जितु प्रभु पावहु गणत न काई ॥ हउमै मारि करहु गुर सेवा
 जन नानक हरि रंगि भीना हे ॥१७॥२॥८॥ मारू महला १ ॥ असुर सघारण रामु हमारा ॥ घटि
 घटि रमईआ रामु पिआरा ॥ नाले अलखु न लखीअै मूले गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥१॥ गुरमुखि

साधू सरणि तुमारी ॥ करि किरपा प्रभि पारि उतारी ॥ अगनि पाणी सागरु अति गहरा गुरु सतिगुरु
 पारि उतारा हे ॥२॥ मनमुख अंधुले सोझी नाही ॥ आवहि जाहि मरहि मरि जाही ॥ पूरबि लिखिआ
 लेखु न मिटई जम दरि अंधु खुआरा हे ॥३॥ इकि आवहि जावहि घरि वासु न पावहि ॥ किरत के
 बाधे पाप कमावहि ॥ अंधुले सोझी बूझ न काई लोभु बुरा अह्नाकारा हे ॥४॥ पिर बिनु किआ तिसु धन
 सीगारा ॥ पर पिर राती खसमु विसारा ॥ जित बेसुआ पूत बापु को कहीअै तित फोकट कार विकारा
 हे ॥५॥ प्रेत पिंजर महि दूख घनेरे ॥ नरकि पचहि अगिआन अंधेरे ॥ धरम राडि की बाकी लीजै
 जिनि हरि का नामु विसारा हे ॥६॥ सूरजु तपै अगनि बिखु झाला ॥ अपतु पसू मनमुखु बेताला ॥
 आसा मनसा कूडु कमावहि रोगु बुरा बुरिआरा हे ॥७॥ मस्तकि भारु कलर सिरि भारा ॥ कित करि
 भवजलु लम्घसि पारा ॥ सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे ॥८॥ पुन कलत्र जगि
 हेतु पिआरा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ जम के फाहे सतिगुरि तोड़े गुरमुखि ततु बीचारा हे
 ॥९॥ कूड़ि मुठी चालै बहु राही ॥ मनमुखु दाझै पड़ि पड़ि भाही ॥ अंमृत नामु गुरु वड दाणा नामु
 जपहु सुख सारा हे ॥१०॥ सतिगुरु तुठा सचु दृढ़ाए ॥ सभि दुख मेटे मारगि पाए ॥ कंडा पाइ न
 गडई मूले जिसु सतिगुरु राखणहारा हे ॥११॥ खेहू खेह रलै तनु छीजै ॥ मनमुखु पाथरु सैलु न भीजै ॥
 करण पलाव करे बहुतेरे नरकि सुरगि अवतारा हे ॥१२॥ माइआ बिखु भुइअंगम नाले ॥ इनि
 दुबिधा घर बहुते गाले ॥ सतिगुर बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते पतीआरा हे ॥१३॥ साकत
 माइआ कउ बहु धावहि ॥ नामु विसारि कहा सुखु पावहि ॥ तृहु गुण अंतरि खपहि खपावहि नाही
 पारि उतारा हे ॥१४॥ कूकर सूकर कहीअहि कूड़िआरा ॥ भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा ॥
 मनि तनि झूठे कूडु कमावहि दुरमति दरगह हारा हे ॥१५॥ सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै ॥
 राम नामु दे सरणि परेकै ॥ हरि धनु नामु अमोलकु देवै हरि जसु दरगह पिआरा हे ॥१६॥

राम नामु साधू सरणाई ॥ सतिगुर बचनी गति मिति पाई ॥ नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले
 मेलणहारा हे ॥१७॥३॥६॥ मारू महला १ ॥ घरि रहु रे मन मुगध इआने ॥ रामु जपहु अंतरगति
 धिआने ॥ लालच छोडि रचहु अपरंपरि डिउ पावहु मुकति दुआरा हे ॥१॥ जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि
 लागै ॥ सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै ॥ राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे
 ॥२॥ हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा ॥ गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा ॥ अहिनिसि राम रहहु रंगि
 राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे ॥३॥ राम नामु गुर बचनी बोलहु ॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु ॥
 गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे ॥४॥ सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु ॥
 ततु वीचारहु हरि लिव लावहु ॥ अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे ॥५॥ सतिगुरु
 पुरखु दाता वड दाणा ॥ जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥ जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु
 चूका जम भै भारा हे ॥६॥ पंच ततु मिलि काइआ कीनी ॥ तिस महि राम रतनु लै चीनी ॥ आतम रामु
 रामु है आतम हरि पाईअै सबदि वीचारा हे ॥७॥ सत संतोखि रहहु जन भाई ॥ खिमा गहहु सतिगुर
 सरणाई ॥ आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥८॥ साकत कूड़ कपट महि टेका
 ॥ अहिनिसि निंदा करहि अनेका ॥ बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे ॥९॥
 साकत जम की काणि न चूकै ॥ जम का डंडु न कबहू मूकै ॥ बाकी धरम राडि की लीजै सिरि अफरिओ भारु
 अफारा हे ॥१०॥ बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ हउमै करता भवजलि परिआ ॥ बिनु गुर
 पारु न पावै कोई हरि जपीअै पारि उतारा हे ॥११॥ गुर की दाति न मेटै कोई ॥ जिसु बखसे तिसु
 तारे सोई ॥ जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे ॥१२॥ गुर ते भूले आवहु
 जावहु ॥ जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥ साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा
 हे ॥१३॥ सुखु दुखु पुरब जनम के कीए ॥ सो जाणै जिनि दातै दीए ॥ किस कउ दोसु देहि तू प्राणी

सहु अपणा कीआ करारा हे ॥੧੪॥ हउमै ममता करदा आइआ ॥ आसा मनसा बंधि चलाइआ ॥
 मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ॥੧੫॥ हरि की भगति करहु जन भाई ॥
 अकथु कथहु मनु मनहि समाई ॥ उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे
 ॥੧੬॥ हरि गुर पूरे की ओट पराती ॥ गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती ॥ नानक राम नामि मति
 ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ॥੧੭॥੪॥੧੦॥ मारू महला ੧ ॥ सरणि परे गुरदेव तुमारी ॥
 तू समरथु दिआलु मुरारी ॥ तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरखु बिधाता हे ॥੧॥ तू आदि जुगादि
 करहि प्रतिपाला ॥ घटि घटि रूपु अनूपु दिआला ॥ जित तुधु भावै तिवै चलावहि सभु तेरो कीआ
 कमाता हे ॥੨॥ अंतरि जोति भली जगजीवन ॥ सभि घट भोगै हरि रसु पीवन ॥ आपे लेवै आपे देवै
 तिहु लोई जगत पित दाता हे ॥੩॥ जगतु उपाइ खेलु रचाइआ ॥ पवणै पाणी अगनी जीउ पाइआ
 ॥ देही नगरी नउ दरवाजे सो दसवा गुपतु रहाता हे ॥੪॥ चारि नदी अगनी असराला ॥ कोई
 गुरमुखि बूझै सबदि निराला ॥ साकत दुरमति डूबहि दाझ्हाहि गुरि राखे हरि लिव राता हे ॥੫॥ अपु
 तेजु वाइ पृथमी आकासा ॥ तिन महि पंच ततु घरि वासा ॥ सतिगुर सबदि रहहि रंगि राता तजि
 माइआ हउमै भ्राता हे ॥੬॥ इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ॥ बिनु नावै किआ टेक टिकीजै ॥ अंतरि चोरु
 मुहै घरु मंदरु इनि साकति दूतु न जाता हे ॥੭॥ दुंदर दूत भूत भीहाले ॥ खिंचोताणि करहि बेताले ॥
 सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता हे ॥੮॥ कूड़ु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥ बिनु नावै
 कैसी पति तेरी ॥ बाधे मुकति नाही जुग चारे जमकंकरि कालि पराता हे ॥੯॥ जम दरि बाधे मिलहि
 सजाई ॥ तिसु अपराधी गति नही काई ॥ करण पलाव करे बिललावै जित कुंडी मीनु पराता हे ॥੧੦॥
 साकतु फासी पड़े इकेला ॥ जम वसि कीआ अंधु दुहेला ॥ राम नाम बिनु मुकति न सूझै आजु कालि पचि
 जाता हे ॥੧੧॥ सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥ औथै ओथै राखा प्रभु सोई ॥ राम नामु देवै करि किरपा

इउ सललै सलल मिलाता हे ॥१२॥ भूले सिख गुरु समझाए ॥ उझङ्गि जादे मारगि पाए ॥ तिसु गुर
 सेवि सदा दिनु राती दुख भंजन संगि सखाता हे ॥१३॥ गुर की भगति करहि किआ प्राणी ॥ ब्रह्मै
 दिंदृ महेसि न जाणी ॥ सतिगुरु अलखु कहहु किउ लखीऔ जिसु बखसे तिसहि पछाता हे ॥१४॥
 अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥ गुरबाणी सित प्रीति सु परसनु ॥ अहिनिसि निरमल जोति सबाई
 घटि दीपकु गुरमुखि जाता हे ॥१५॥ भोजन गिआनु महा रसु मीठा ॥ जिनि चाखिआ तिनि दरसनु
 डीठा ॥ दरसनु देखि मिले बैरागी मनु मनसा मारि समाता हे ॥१६॥ सतिगुरु सेवहि से परधाना ॥
 तिन घट घट अंतरि ब्रह्मु पछाना ॥ नानक हरि जसु हरि जन की संगति दीजै जिन सतिगुरु हरि
 प्रभु जाता हे ॥१७॥५॥११॥ मारू महला १ ॥ साचे साहिब सिरजणहारे ॥ जिनि धर चक्र धरे वीचारे
 ॥ आपे करता करि करि वेखै साचा वेपरवाहा हे ॥१॥ वेकी वेकी जंत उपाए ॥ दुइ पंदी दुइ राह
 चलाए ॥ गुर पूरे विणु मुकति न होई सचु नामु जपि लाहा हे ॥२॥ पड़हि मनमुख परु बिधि नही
 जाना ॥ नामु न बूझहि भरमि भुलाना ॥ लै कै वढी देनि उगाही दुरमति का गलि फाहा हे ॥३॥
 सिमृति सासक्र पड़हि पुराणा ॥ वादु वखाणहि ततु न जाणा ॥ विणु गुर पूरे ततु न पाईऔ सच सूचे
 सचु राहा हे ॥४॥ सभ सालाहे सुणि सुणि आखै ॥ आपे दाना सचु पराखै ॥ जिन कउ नदरि करे प्रभु
 अपनी गुरमुखि सबदु सलाहा हे ॥५॥ सुणि सुणि आखै केती बाणी ॥ सुणि कहीऔ को अंतु न जाणी ॥
 जा कउ अलखु लखाए आपे अकथ कथा बुधि ताहा हे ॥६॥ जनमे कउ वाजहि वाधाए ॥ सोहिलडे
 अगिआनी गाए ॥ जो जनमै तिसु सरपर मरणा किरतु पड़िआ सिरि साहा हे ॥७॥ संजोगु विजोगु मेरै
 प्रभि कीए ॥ सृसटि उपाइ दुखा सुख दीए ॥ दुख सुख ही ते भए निराले गुरमुखि सीलु सनाहा हे
 ॥८॥ नीके साचे के वापारी ॥ सचु सउदा लै गुर वीचारी ॥ सचा वखरु जिसु धनु पलै सबदि सचै
 ओमाहा हे ॥९॥ काची सउदी तोटा आवै ॥ गुरमुखि वणजु करे प्रभ भावै ॥ पूंजी साबतु रासि सलामति

चूका जम का फाहा हे ॥१०॥ सभु को बोलै आपण भाणै ॥ मनमुखु दूजै बोलि न जाणै ॥ अंधुले की मति
 अंधली बोली आइ गिआ दुखु ताहा हे ॥११॥ दुख महि जनमै दुख महि मरणा ॥ दूखु न मिटै बिनु
 गुर की सरणा ॥ दूखी उपजै दूखी बिनसै किआ लै आइआ किआ लै जाहा हे ॥१२॥ सची करणी गुर
 की सिरकारा ॥ आवणु जाणु नही जम धारा ॥ डाल छोडि ततु मूलु पराता मनि साचा ओमाहा हे ॥१३॥
 हरि के लोग नही जमु मारै ॥ ना दुखु देखहि पंथि करारै ॥ राम नामु घट अंतरि पूजा अवरु न दूजा
 काहा हे ॥१४॥ ओढ़ु न कथनै सिफति सजाई ॥ जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥ दरगह पैधे जानि
 सुहेले हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥१५॥ किआ कहीअै गुण कथहि घनेरे ॥ अंतु न पावहि वडे वडेरे ॥
 नानक साचु मिलै पति राखहु तू सिरि साहा पातिसाहा हे ॥१६॥६॥१२॥ मारू महला १ दखणी ॥
 काइआ नगरु नगर गड़ अंदरि ॥ साचा वासा पुरि गगन्दरि ॥ असथिरु थानु सदा निरमाइलु
 आपे आपु उपाइदा ॥१॥ अंदरि कोट छजे हटनाले ॥ आपे लेवै वसतु समाले ॥ बजर कपाट जड़े जड़ि
 जाणै गुर सबदी खोलाइदा ॥२॥ भीतरि कोट गुफा घर जाई ॥ नउ घर थापे हुकमि रजाई ॥ दसवै
 पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु लखाइदा ॥३॥ पउण पाणी अगनी इक वासा ॥ आपे कीतो खेलु
 तमासा ॥ बलदी जलि निवै किरपा ते आपे जल निधि पाइदा ॥४॥ धरति उपाइ धरी धरम साला
 ॥ उतपति परलउ आपि निराला ॥ पवणै खेलु कीआ सभ थाई कला खिंचि ढाहाइदा ॥५॥ भार
 अठारह मालणि तेरी ॥ चउरु ढुलै पवणै लै फेरी ॥ चंदु सूरजु दुड़ि दीपक राखे ससि घरि सूरु
 समाइदा ॥६॥ पंखी पंच उडरि नही धावहि ॥ सफलिओ बिरखु अंमृत फलु पावहि ॥ गुरमुखि
 सहजि रखै गुण गावै हरि रसु चोग चुगाइदा ॥७॥ झिलमिलि झिलकै चंदु न तारा ॥ सूरज किरणि
 न बिजुलि गैणारा ॥ अकथी कथउ चिहनु नही कोई पूरि रहिआ मनि भाइदा ॥८॥ पसरी किरणि
 जोति उजिआला ॥ करि करि देखै आपि दइआला ॥ अनहद रुण झुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि

वाइदा ॥६॥ अनहदु वाजै भ्रमु भउ भाजै ॥ सगल बिआपि रहिआ प्रभु छाजै ॥ सभ तेरी तू गुरमुखि
 जाता दरि सोहै गुण गाइदा ॥१०॥ आदि निरंजनु निरमलु सोई ॥ अवरु न जाणा दूजा कोई ॥
 एकंकारु वसै मनि भावै हउमै गरबु गवाइदा ॥११॥ अंमृतु पीआ सतिगुरि दीआ ॥ अवरु न जाणा
 दूआ तीआ ॥ एको एकु सु अपर परंपरु परखि खजानै पाइदा ॥१२॥ गिआनु धिआनु सचु गहिर
 गंभीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा चीरा ॥ जेती है तेती तुधु जाचै करमि मिलै सो पाइदा ॥१३॥ करमु धरमु
 सचु हाथि तुमारै ॥ वेपरवाह अखुट भंडारै ॥ तू दइआलु किरपालु सदा प्रभु आपे मेलि मिलाइदा
 ॥१४॥ आपे देखि दिखावै आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ आपे जोड़ि विछोड़े करता आपे मारि
 जीवाइदा ॥१५॥ जेती है तेती तुधु अंदरि ॥ देखहि आपि बैसि बिज मंदरि ॥ नानकु साचु कहै बेन्ती
 हरि दरसनि सुखु पाइदा ॥१६॥१॥१३॥ मारू महला १ ॥ दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥ भाइ भगति
 साचे गुण गावा ॥ तुधु भाणै तू भावहि करते आपे रसन रसाइदा ॥१॥ सोहनि भगत प्रभू दरबारे ॥
 मुकतु भए हरि दास तुमारे ॥ आपु गवाइ तेरै रंगि राते अनदिनु नामु धिआइदा ॥२॥ ईसरु
 ब्रह्मा देवी देवा ॥ इंद्र तपे मुनि तेरी सेवा ॥ जती सती केते बनवासी अंतु न कोई पाइदा ॥३॥
 विणु जाणाए कोइ न जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए भाणै साह
 लवाइदा ॥४॥ जो तिसु भावै सो निहचउ होवै ॥ मनमुखु आपु गणाए रोवै ॥ नावहु भुला ठउर न पाए
 आइ जाइ दुखु पाइदा ॥५॥ निरमल काइआ ऊजल ह्वसा ॥ तिसु विचि नामु निरंजन अंसा ॥
 सगले दूख अंमृतु करि पीवै बाहुड़ि दूखु न पाइदा ॥६॥ बहु सादहु दूखु परापति होवै ॥ भोगहु रोग
 सु अंति विगोवै ॥ हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणै भरमाइदा ॥७॥ गिआन विहूणी भवै
 सबाई ॥ साचा रवि रहिआ लिव लाई ॥ निरभउ सबदु गुरु सचु जाता जोती जोति मिलाइदा ॥८॥
 अटलु अडोलु अतोलु मुरारे ॥ खिन महि ढाहि फेरि उसारे ॥ रूपु न रेखिआ मिति नही कीमति सबदि

ਭੇਦਿ ਪਤੀਆਇਦਾ ॥੬॥ ਹਮ ਦਾਸਨ ਕੇ ਦਾਸ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਾਧਿਕ ਸਾਚ ਭਲੇ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਮਨੇ ਨਾਉ ਸੋਈ
 ਜਿਣ ਜਾਸੀ ਆਪੇ ਸਾਚੁ ਵੱਡਾਇਦਾ ॥੧੦॥ ਪਲੈ ਸਾਚੁ ਸਚੇ ਸਚਿਆਰਾ ॥ ਸਾਚੇ ਭਾਰੈ ਸਬਦੁ ਪਿਆਰਾ ॥
 ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਸਾਚੁ ਕਲਾ ਧਰਿ ਥਾਪੀ ਸਾਚੇ ਹੀ ਪਤੀਆਇਦਾ ॥੧੧॥ ਵਡਾ ਵਡਾ ਆਖੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ
 ਸੋਝੀ ਕਿਨੈ ਨ ਹੋਈ ॥ ਸਾਚਿ ਮਿਲੈ ਸੋ ਸਾਚੇ ਭਾਏ ਨਾ ਵੀਛੁਡਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੨॥ ਧੁਰਹੁ ਵਿਛੁਨੇ ਧਾਹੀ ਰੁਨੇ
 ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਮੁਹਲਤਿ ਪੁਨੇ ॥ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਮੇਲਿ ਨ ਪਛੋਤਾਇਦਾ ॥੧੩॥ ਆਪੇ
 ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ॥ ਆਪੇ ਤ੃ਪਤਾ ਆਪੇ ਮੁਕਤਾ ॥ ਆਪੇ ਮੁਕਤਿ ਦਾਨੁ ਮੁਕਤੀਸਰੁ ਮਮਤਾ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਦਾ
 ॥੧੪॥ ਦਾਨਾ ਕੈ ਸਿਰਿ ਦਾਨੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਕੀਤਾ ਅਪਣਾ
 ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਕਰਾਇਦਾ ॥੧੫॥ ਸੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਾਚੇ ਭਾਵਹਿ ॥ ਤੁੜਾ ਤੇ ਉਪਜਹਿ ਤੁੜਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਵਹਿ ॥
 ਨਾਨਕੁ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਮਿਲਿ ਸਾਚੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੬॥੨॥੧੪॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਅਰਕਦ ਨਰਕਦ
 ਧੁੰਧੂਕਾਰਾ ॥ ਧਰਣਿ ਨ ਗਗਨਾ ਹੁਕਮੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਨਾ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਨ ਚੰਟੁ ਨ ਸੂਰਜੁ ਸੁਨ੍ਨ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਇਦਾ
 ॥੧॥ ਖਾਣੀ ਨ ਬਾਣੀ ਪਤਣ ਨ ਪਾਣੀ ॥ ਓਪਤਿ ਖਪਤਿ ਨ ਆਵਣ ਜਾਣੀ ॥ ਖੰਡ ਪਤਾਲ ਸਪਤ ਨਹੀ ਸਾਗਰ
 ਨਦੀ ਨ ਨੀਝ ਕਹਾਇਦਾ ॥੨॥ ਨਾ ਤਦਿ ਸੁਰਗੁ ਮਛੁ ਪਇਆਲਾ ॥ ਦੋਜਕੁ ਮਿਸਤੁ ਨਹੀ ਖੈ ਕਾਲਾ ॥ ਨਰਕੁ
 ਸੁਰਗੁ ਨਹੀ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਨਾ ਕੋ ਆਇ ਨ ਜਾਇਦਾ ॥੩॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਅਕਰੁ ਨ ਦੀਸੈ
 ਏਕੋ ਸੋਈ ॥ ਨਾਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਹੀ ਜਾਤਿ ਨ ਜਨਮਾ ਨਾ ਕੋ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੪॥ ਨਾ ਤਦਿ ਜਤੀ ਸਤੀ ਬਨਵਾਸੀ
 ॥ ਨਾ ਤਦਿ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਸੁਖਵਾਸੀ ॥ ਜੋਗੀ ਜੰਗਮ ਭੇਖੁ ਨ ਕੋਈ ਨਾ ਕੋ ਨਾਥੁ ਕਹਾਇਦਾ ॥੫॥ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ
 ਨਾ ਬ੍ਰਤ ਪ੍ਰਯਾ ॥ ਨਾ ਕੋ ਆਖਿ ਕਖਾਣੈ ਟ੍ਰੂਜਾ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਉਪਾਇ ਵਿਗਸੈ ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਦਾ ॥੬॥ ਨਾ
 ਸੁਚਿ ਸੰਜਮੁ ਤੁਲਸੀ ਮਾਲਾ ॥ ਗੋਪੀ ਕਾਨੁ ਨ ਗੜ ਗੁਆਲਾ ॥ ਤੰਤੁ ਮੰਤੁ ਪਾਖੰਡੁ ਨ ਕੋਈ ਨਾ ਕੋ ਵੰਸੁ ਕਜਾਇਦਾ
 ॥੭॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਨਹੀ ਮਾਇਆ ਮਾਖੀ ॥ ਜਾਤਿ ਜਨਮੁ ਨਹੀ ਦੀਸੈ ਆਖੀ ॥ ਮਮਤਾ ਜਾਲੁ ਕਾਲੁ ਨਹੀ ਮਾਥੈ
 ਨਾ ਕੋ ਕਿਸੈ ਧਿਆਇਦਾ ॥੮॥ ਨਿੰਦੁ ਬਿੰਦੁ ਨਹੀ ਜੀਤ ਨ ਜਿੰਦੇ ॥ ਨਾ ਤਦਿ ਗੇਰਖੁ ਨਾ ਮਾਛਿੰਦੇ ॥ ਨਾ ਤਦਿ

ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਕੁਲ ਓਪਤਿ ਨਾ ਕੋ ਗਣਤ ਗਣਾਇਦਾ ॥੬॥ ਵਰਨ ਭੇਖ ਨਹੀਂ ਬ੍ਰਹਮਣ ਖਤੀ ॥ ਦੇਤ ਨ
ਦੇਹੁਰਾ ਗਤ ਗਾਇਤੀ ॥ ਹੋਮ ਜਗ ਨਹੀਂ ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਣੁ ਨਾ ਕੋ ਪ੍ਰਯਾ ਲਾਇਦਾ ॥੧੦॥ ਨਾ ਕੋ ਸੁਲਾ ਨਾ ਕੋ
ਕਾਜੀ ॥ ਨਾ ਕੋ ਸੇਖੁ ਮਸਾਇਕੁ ਹਾਜੀ ॥ ਰੱਝਾਤਿ ਰਾਤ ਨ ਹਉਮੈ ਦੁਨੀਆ ਨਾ ਕੋ ਕਹਣੁ ਕਹਾਇਦਾ ॥੧੧॥
ਭਾਤ ਨ ਭਗਤੀ ਨਾ ਸਿਵ ਸਕਤੀ ॥ ਸਾਜਨੁ ਮੀਤੁ ਬਿੰਦੁ ਨਹੀਂ ਰਕਤੀ ॥ ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰਾ ਸਾਚੇ ਏਹੋ
ਭਾਇਦਾ ॥੧੨॥ ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਨ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਸਾਸਤ ॥ ਪਾਠ ਪੁਰਾਣ ਤਦੈ ਨਹੀਂ ਆਸਤ ॥ ਕਹਤਾ ਬਕਤਾ ਆਪਿ
ਅਗੋਚਰੁ ਆਪੇ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਦਾ ॥੧੩॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਬਾਝੁ ਕਲਾ ਆਡਾਣੁ
ਰਹਾਇਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਉਪਾਏ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਵਧਾਇਦਾ ॥੧੪॥ ਵਿਰਲੇ ਕਤ ਗੁਰਿ ਸਬਦੁ
ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਹੁਕਮੁ ਸਬਾਇਆ ॥ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਪਾਤਾਲ ਅਰੰਭੇ ਗੁਪਤਹੁ ਪਰਗਟੀ ਆਇਦਾ
॥੧੫॥ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਈ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਬਿਸਮਾਦੀ ਬਿਸਮ ਭਏ ਗੁਣ
ਗਾਇਦਾ ॥੧੬॥੩॥੧੫॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਪੇ ਆਪੁ ਉਪਾਇ ਨਿਰਾਲਾ ॥ ਸਾਚਾ ਥਾਨੁ ਕੀਓ ਦਾਇਆਲਾ
॥ ਪਤਣ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ ਕਾ ਬੰਧਨੁ ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਰਚਾਇਦਾ ॥੧॥ ਨਤ ਘਰ ਥਾਪੇ ਥਾਪਣਹਾਰੈ ॥ ਦਸਕੈ ਵਾਸਾ
ਅਲਖ ਅਪਾਰੈ ॥ ਸਾਇਰ ਸਪਤ ਭਰੇ ਜਲਿ ਨਿਰਮਲਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਇਦਾ ॥੨॥ ਰਵਿ ਸਸਿ ਦੀਪਕ ਜੋਤਿ
ਸਬਾਈ ॥ ਆਪੇ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਚੇ ਸੋਭਾ ਪਾਇਦਾ ॥੩॥ ਗੜ ਮਹਿ
ਹਾਟ ਪਟਣ ਵਾਪਾਰਾ ॥ ਪੂਰੈ ਤੋਲਿ ਤੋਲੈ ਵਣਜਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਰਤਨੁ ਵਿਸਾਹੇ ਲੇਕੈ ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਦਾ ॥੪॥
ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ਪਾਵਣਹਾਰੈ ॥ ਕੇਪਰਖਾਹ ਪੂਰੇ ਖੰਡਾਰੈ ॥ ਸਰਬ ਕਲਾ ਲੇ ਆਪੇ ਰਹਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਸੈ ਬੁਝਾਇਦਾ
॥੫॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ॥ ਜਮ ਜੰਦਾਰੁ ਨ ਮਾਰੈ ਫੇਟੈ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਅੰਤਰਿ ਕਮਲੁ ਬਿਗਾਸੀ ਆਪੇ
ਬਿਗਸਿ ਧਿਆਇਦਾ ॥੬॥ ਆਪੇ ਕਰਖੈ ਅੰਮ੍ਰਤ ਧਾਰਾ ॥ ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਲਾਲ ਅਪਾਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ
ਤ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਦਾ ॥੭॥ ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ ਲਹੈ ਅਮੋਲੋ ॥ ਕਬ ਹੀ ਨ ਘਾਟਸਿ ਪੂਰਾ
ਤੋਲੋ ॥ ਸਚੇ ਕਾ ਵਾਪਾਰੀ ਹੋਵੈ ਸਚੋ ਸਤਦਾ ਪਾਇਦਾ ॥੮॥ ਸਚਾ ਸਤਦਾ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਪਾਏ ॥ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ

ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਸੁ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਮਾਨੈ ਹੁਕਮੁ ਸਮਾਇਦਾ ॥੬॥ ਹੁਕਮੇ ਆਇਆ ਹੁਕਮਿ
 ਸਮਾਇਆ ॥ ਹੁਕਮੇ ਦੀਸੈ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਹੁਕਮੇ ਸੁਰਗੁ ਮਛੁ ਪਿਇਆਲਾ ਹੁਕਮੇ ਕਲਾ ਰਹਾਇਦਾ ॥੧੦॥
 ਹੁਕਮੇ ਧਰਤੀ ਧਤਲ ਸਿਰ ਭਾਰਂ ॥ ਹੁਕਮੇ ਪਤਣ ਪਾਣੀ ਗੈਣਾਰਂ ॥ ਹੁਕਮੇ ਸਿਵ ਸਕਤੀ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਹੁਕਮੇ ਖੇਲ
 ਖੇਲਾਇਦਾ ॥੧੧॥ ਹੁਕਮੇ ਆਡਾਣੇ ਆਗਾਸੀ ॥ ਹੁਕਮੇ ਜਲ ਥਲ ਤ੃ਭਵਣ ਵਾਸੀ ॥ ਹੁਕਮੇ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸ
 ਸਦਾ ਫੁਨਿ ਹੁਕਮੇ ਦੇਖਿ ਦਿਖਾਇਦਾ ॥੧੨॥ ਹੁਕਮਿ ਉਪਾਏ ਦਸ ਅਤਤਾਰਾ ॥ ਦੇਵ ਦਾਨਵ ਅਗਣਤ ਅਪਾਰਾ
 ॥ ਮਾਨੈ ਹੁਕਮੁ ਸੁ ਦਰਗਹ ਪੈਂਵੈ ਸਾਚਿ ਮਿਲਾਇ ਸਮਾਇਦਾ ॥੧੩॥ ਹੁਕਮੇ ਜੁਗ ਛਤੀਹ ਗੁਦਾਰੇ ॥ ਹੁਕਮੇ ਸਿਧ
 ਸਾਧਿਕ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਆਪਿ ਨਾਥੁ ਨਥੀ ਸਭ ਜਾ ਕੀ ਬਖਸੇ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਇਦਾ ॥੧੪॥ ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਗੱਡੈ ਮਹਿ
 ਰਾਜਾ ॥ ਨੇਬ ਖਵਾਸ ਭਲਾ ਦਰਵਾਜਾ ॥ ਮਿਥਿਆ ਲੋਭੁ ਨਾਹੀ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਲਬਿ ਪਾਪਿ ਪਛੁਤਾਇਦਾ ॥੧੫॥
 ਸਤੁ ਸਤੋਖੁ ਨਗਰ ਮਹਿ ਕਾਰੀ ॥ ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਸਰਣਿ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਜਗਜੀਵਨੁ ਗੁਰ ਸਕਦੀ
 ਪਤਿ ਪਾਇਦਾ ॥੧੬॥੪॥੧੬॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੁਨਨ ਕਲਾ ਅਪਰਹਿ ਧਾਰੀ ॥ ਆਪਿ ਨਿਰਾਲਮੁ ਅਪਰ
 ਅਪਾਰੀ ॥ ਆਪੇ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਸੁਨਹੁ ਸੁਨ੍ਹੁ ਉਪਾਇਦਾ ॥੧॥ ਪਤਣੁ ਪਾਣੀ ਸੁਨੈ ਤੇ ਸਾਜੇ ॥ ਸੂਸਟਿ
 ਉਪਾਇ ਕਾਇਆ ਗੱਡੈ ਰਾਜੇ ॥ ਅਗਨਿ ਪਾਣੀ ਜੀਤ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ਸੁਨੇ ਕਲਾ ਰਹਾਇਦਾ ॥੨॥ ਸੁਨਹੁ ਬ੍ਰਹਮਾ
 ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਉਪਾਏ ॥ ਸੁਨੇ ਵਰਤੇ ਜੁਗ ਸਬਾਏ ॥ ਇਸੁ ਪਦ ਵੀਚਾਰੇ ਸੋ ਜਨੁ ਪੂਰਾ ਤਿਸੁ ਮਿਲੀਐ ਭਰਮੁ
 ਚੁਕਾਇਦਾ ॥੩॥ ਸੁਨਹੁ ਸਪਤ ਸਰੋਵਰ ਥਾਪੇ ॥ ਜਿਨਿ ਸਾਜੇ ਵੀਚਾਰੇ ਆਪੇ ॥ ਤਿਤੁ ਸਤ ਸਰਿ ਮਨ੍ਹਾ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਨਾਵੈ ਫਿਰਿ ਬਾਹੁਡਿ ਜੋਨਿ ਨ ਪਾਇਦਾ ॥੪॥ ਸੁਨਹੁ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਗੈਣਾਰੇ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਜੋਤਿ ਤ੃ਭਵਣ ਸਾਰੇ ॥
 ਸੁਨੇ ਅਲਖ ਅਪਾਰ ਨਿਰਾਲਮੁ ਸੁਨੇ ਤਾਡੀ ਲਾਇਦਾ ॥੫॥ ਸੁਨਹੁ ਧਰਤਿ ਅਕਾਸੁ ਉਪਾਏ ॥ ਬਿਨੁ ਥੰਮਾ ਰਾਖੇ
 ਸਚੁ ਕਲ ਪਾਏ ॥ ਤ੃ਭਵਣ ਸਾਜਿ ਮੇਖੁਲੀ ਮਾਇਆ ਆਪਿ ਉਪਾਇ ਖਪਾਇਦਾ ॥੬॥ ਸੁਨਹੁ ਖਾਣੀ ਸੁਨਹੁ ਬਾਣੀ
 ॥ ਸੁਨਹੁ ਉਪਜੀ ਸੁੰਨਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਉਤਭੁਜੁ ਚਲਤੁ ਕੀਆ ਸਿਰਿ ਕਰਤੈ ਬਿਸਮਾਦੁ ਸਕਦਿ ਦੇਖਾਇਦਾ ॥੭॥
 ਸੁਨਹੁ ਰਾਤਿ ਦਿਨਸੁ ਟੁਡਿ ਕੀਏ ॥ ਓਪਤਿ ਖਪਤਿ ਸੁਖਾ ਟੁਖ ਟੀਏ ॥ ਸੁਖ ਟੁਖ ਹੀ ਤੇ ਅਮਰੁ ਅਤੀਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ

निज घर पाइदा ॥८॥ साम वेदु रिगु जुजरु अथरवण ॥ ब्रह्मे मुखि माइआ है तै गुण ॥ ता की
 कीमति कहि न सकै को तिउ बोले जिउ बोलाइदा ॥९॥ सुन्नहु सपत पाताल उपाए ॥ सुन्नहु भवण
 रखे लिव लाए ॥ आपे कारणु कीआ अपरंपरि सभु तेरो कीआ कमाइदा ॥१०॥ रज तम सत कल तेरी
 छाइआ ॥ जनम मरण हउमै दुखु पाइआ ॥ जिस नो कृपा करे हरि गुरमुखि गुणि चउथै मुकति
 कराइदा ॥११॥ सुन्नहु उपजे दस अवतारा ॥ सृसटि उपाइ कीआ पासारा ॥ देव दानव गण
 गंधरब साजे सभि लिखिआ करम कमाइदा ॥१२॥ गुरमुखि समझै रेगु न होई ॥ इह गुर की पउड़ी
 जाणै जनु कोई ॥ जुगह जुगंतरि मुकति पराइण सो मुकति भइआ पति पाइदा ॥१३॥ पंच ततु सुन्नहु
 परगासा ॥ देह संजोगी करम अभिआसा ॥ बुरा भला दुड़ि मसतकि लीखे पापु पुन्नु बीजाइदा ॥१४॥
 ऊतम सतिगुर पुरख निराले ॥ सबदि रते हरि रसि मतवाले ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु गुरु ते
 पाईअै पूरे भागि मिलाइदा ॥१५॥ इसु मन माइआ कउ नेहु घनेरा ॥ कोई बूझहु गिआनी करहु
 निबेरा ॥ आसा मनसा हउमै सहसा नरु लोभी कूड़ु कमाइदा ॥१६॥ सतिगुर ते पाए वीचारा ॥ सुन्न
 समाधि सचे घर बारा ॥ नानक निरमल नादु सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा ॥१७॥५॥१७॥
 मारू महला १ ॥ जह देखा तह दीन दइआला ॥ आइ न जाई प्रभु किरपाला ॥ जीआ अंदरि जुगति
 समाई रहिओ निरालमु राइआ ॥१॥ जगु तिस की छाइआ जिसु बापु न माइआ ॥ ना तिसु भैण न
 भराउ कमाइआ ॥ ना तिसु ओपति खपति कुल जाती ओहु अजरावरु मनि भाइआ ॥२॥ तू अकाल
 पुरखु नाही सिरि काला ॥ तू पुरखु अलेख अगंम निराला ॥ सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहज
 भाइ लिव लाइआ ॥३॥ तै वरताइ चउथै घरि वासा ॥ काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥ निरमल
 जोति सरब जगजीवनु गुरि अनहट् सबदि दिखाइआ ॥४॥ ऊतम जन संत भले हरि पिआरे ॥
 हरि रस माते पारि उतारे ॥ नानक रेण संत जन संगति हरि गुर परसादी पाइआ ॥५॥ तू अंतरजामी

ਜੀਅ ਸਭਿ ਤੇਰੋ ॥ ਤੂ ਦਾਤਾ ਹਮ ਸੇਵਕ ਤੇਰੋ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਦੀਜੈ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਦੀਪਾਇਆ
 ॥੬॥ ਪੰਚ ਤਤੁ ਮਿਲਿ ਇਹੁ ਤਨੁ ਕੀਆ ॥ ਆਤਮ ਰਾਮ ਪਾਏ ਸੁਖੁ ਥੀਆ ॥ ਕਰਮ ਕਰਤ੍ਰਤਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲੁ ਲਾਗਾ
 ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਮਨਿ ਪਾਇਆ ॥੭॥ ਨਾ ਤਿਸੁ ਭੂਖ ਪਿਆਸ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਸਰਬ ਨਿਰੰਜਨੁ ਘਟਿ ਘਟਿ
 ਜਾਨਿਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸਿ ਰਾਤਾ ਕੇਵਲ ਬੈਰਾਗੀ ਗੁਰਮਤਿ ਭਾਇ ਸੁਭਾਇਆ ॥੮॥ ਅਧਿਆਤਮ ਕਰਮ ਕਰੇ
 ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ॥ ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਨਿਰੰਤਰਿ ਜਾਤੀ ॥ ਸਬਦੁ ਰਸਾਲੁ ਰਸਨ ਰਸਿ ਰਸਨਾ ਬੇਣੁ ਰਸਾਲੁ ਵਜਾਇਆ
 ॥੯॥ ਬੇਣੁ ਰਸਾਲ ਵਜਾਵੈ ਸੋਈ ॥ ਜਾ ਕੀ ਤੂਭਵਣ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਾਹਮਿਹੁ ਇਹ ਬਿਧਿ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ
 ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਇਆ ॥੧੦॥ ਐਸੇ ਜਨ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਹਿ ਰਹਹਿ ਨਿਰਾਰੇ ॥
 ਆਪਿ ਤਰਹਿ ਸੰਗਤਿ ਕੁਲ ਤਾਰਹਿ ਤਿਨ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਜਗਿ ਆਇਆ ॥੧੧॥ ਘਰੁ ਫਰੁ ਮੰਦਰੁ ਜਾਣੈ ਸੋਈ
 ॥ ਜਿਸੁ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥ ਕਾਇਆ ਗੜੁ ਮਹਲ ਮਹਲੀ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਸਚੁ ਸਾਚਾ ਤਖਤੁ ਰਚਾਇਆ
 ॥੧੨॥ ਚਤੁਰ ਦਸ ਹਾਟ ਦੀਵੇ ਟੁਇ ਸਾਖੀ ॥ ਸੇਵਕ ਪੰਚ ਨਾਹੀ ਬਿਖੁ ਚਾਖੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਵਸਤੁ ਅਨੂਪ ਨਿਰਮੋਲਕ
 ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ॥੧੩॥ ਤਖਤਿ ਬਹੈ ਤਖਤੈ ਕੀ ਲਾਇਕ ॥ ਪੰਚ ਸਮਾਏ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਇਕ ॥
 ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਸਹਸਾ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੧੪॥ ਤਖਤਿ ਸਲਾਮੁ ਛੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ॥ ਇਹੁ ਸਾਚੁ
 ਕਡਾਈ ਗੁਰਮਤਿ ਲਿਵ ਜਾਤੀ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮੁ ਜਪਹੁ ਤਰੁ ਤਾਰੀ ਹਰਿ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ਪਾਇਆ ॥੧੫॥੧॥੧੮॥
 ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਰੇ ਜਨ ਭਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਰਹਹੁ ਸਰਣਾਈ ॥ ਤਸਕਰੁ ਚੋਰੁ ਨ ਲਾਗੈ
 ਤਾ ਕਤ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਸਬਦਿ ਜਗਾਇਆ ॥੧॥ ਤੂ ਏਕਕਾਰੁ ਨਿਰਾਲਮੁ ਰਾਜਾ ॥ ਤੂ ਆਪਿ ਸਵਾਰਹਿ ਜਨ ਕੇ
 ਕਾਜਾ ॥ ਅਮਰੁ ਅਡੋਲੁ ਅਪਾਰੁ ਅਮੋਲਕੁ ਹਰਿ ਅਸਥਿਰ ਥਾਨਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥੨॥ ਦੇਹੀ ਨਗਰੀ ਊਤਮ ਥਾਨਾ ॥
 ਪੰਚ ਲੋਕ ਵਸਹਿ ਪਰਧਾਨਾ ॥ ਊਪਰਿ ਏਕਕਾਰੁ ਨਿਰਾਲਮੁ ਸੁਨਨ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਇਆ ॥੩॥ ਦੇਹੀ ਨਗਰੀ ਨਤ
 ਦਰਖਾਜੇ ॥ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਕਰਣੈਹਾਰੈ ਸਾਜੇ ॥ ਦਸਵੈ ਪੁਰਖੁ ਅਤੀਤੁ ਨਿਰਾਲਾ ਆਪੇ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥੪॥
 ਪੁਰਖੁ ਅਲੇਖੁ ਸਚੇ ਦੀਵਾਨਾ ॥ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਏ ਸਚੁ ਨੀਸਾਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਖੋਜਿ ਲਹਹੁ ਘਰੁ ਅਪਨਾ ਹਰਿ

आत्म राम नामु पाइआ ॥५॥ सरब निरंजन पुरखु सुजाना ॥ अदलु करे गुर गिआन समाना ॥
 कामु क्रोधु लै गरदनि मारे हउमै लोभु चुकाइआ ॥६॥ सचै थानि वसै निरंकारा ॥ आपि पछाणै सबदु
 वीचारा ॥ सचै महलि निवासु निरंतरि आवण जाणु चुकाइआ ॥७॥ ना मनु चलै न पउणु उडावै ॥
 जोगी सबदु अनाहदु वावै ॥ पंच सबद झुणकारु निरालमु प्रभि आपे वाहि सुणाइआ ॥८॥ भउ बैरागा
 सहजि समाता ॥ हउमै तिआगी अनहदि राता ॥ अंजनु सारि निरंजनु जाणै सरब निरंजनु राइआ
 ॥९॥ दुख भै भंजनु प्रभु अविनासी ॥ रोग कटे काटी जम फासी ॥ नानक हरि प्रभु सो भउ भंजनु गुरि
 मिलिअै हरि प्रभु पाइआ ॥१०॥ कालै कवलु निरंजनु जाणै ॥ बूझै करमु सु सबदु पछाणै ॥ आपे
 जाणै आपि पछाणै सभु तिस का चोजु सबाइआ ॥११॥ आपे साहु आपे वणजारा ॥ आपे परखे
 परखणहारा ॥ आपे कसि कसवटी लाए आपे कीमति पाइआ ॥१२॥ आपि दइआलि दइआ प्रभि
 धारी ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ पुरखु अतीतु वसै निहकेवलु गुर पुरखै पुरखु मिलाइआ
 ॥१३॥ प्रभु दाना बीना गरबु गवाए ॥ दूजा मेटै एकु दिखाए ॥ आसा माहि निरालमु जोनी अकुल
 निरंजनु गाइआ ॥१४॥ हउमै मेटि सबदि सुखु होई ॥ आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ नानक हरि जसु
 हरि गुण लाहा सतसंगति सचु फलु पाइआ ॥१५॥२॥१६॥ मारू महला १ ॥ सचु कहहु सचै घरि
 रहणा ॥ जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा ॥ गुरु बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जपि पारि लम्घाइआ
 ॥१॥ हउमै ममता लोभ बिनासनु ॥ नउ दर मुकते दसवै आसनु ॥ ऊपरि परै परै अपरंपरु जिनि
 आपे आपु उपाइआ ॥२॥ गुरमति लेवहु हरि लिव तरीअै ॥ अकलु गाइ जम ते किआ डरीअै ॥
 जत जत देखउ तत तत तुम ही अवरु न दुतीआ गाइआ ॥३॥ सचु हरि नामु सचु है सरणा ॥ सचु
 गुर सबदु जितै लगि तरणा ॥ अकथु कथै देखै अपरंपरु फुनि गरभि न जोनी जाइआ ॥४॥ सच बिनु
 सतु संतोखु न पावै ॥ बिनु गुर मुकति न आवै जावै ॥ मूल मंत्र हरि नामु रसाइणु कहु नानक पूरा

ਪਾਇਆ ॥੫॥ ਸਚ ਬਿਨੁ ਭਵਜਲੁ ਜਾਇ ਨ ਤਰਿਆ ॥ ਏਹੁ ਸਮੁੰਦੁ ਅਥਾਹੁ ਮਹਾ ਬਿਖੁ ਭਰਿਆ ॥ ਰਹੈ ਅਤੀਤੁ
 ਗੁਰਮਤਿ ਲੇ ਊਪਰਿ ਹਰਿ ਨਿਰਭਤ ਕੈ ਘਰਿ ਪਾਇਆ ॥੬॥ ਝੂਠੀ ਜਗ ਹਿਤ ਕੀ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਬਿਲਮ ਨ ਲਾਗੈ
 ਆਵੈ ਜਾਈ ॥ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਚਲਹਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ਉਪਯੈ ਬਿਨਸਿ ਖਪਾਇਆ ॥੭॥ ਉਪਯਹਿ ਬਿਨਸਹਿ ਬੰਧਨ
 ਬੰਧੇ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਕੇ ਗਲਿ ਫੰਧੇ ॥ ਜਿਸੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਾਹੀ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਸੋ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬੰਧਿ ਚਲਾਇਆ
 ॥੮॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਿਤ ਧਿਆਈਐ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਲੇਹੁ ਤਰਹੁ
 ਭਵ ਫੁਤਰੁ ਮੁਕਤਿ ਭਾਏ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੯॥ ਗੁਰਮਤਿ ਕ੍ਰਸਨਿ ਗੋਵਰਧਨ ਧਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਇਰਿ ਪਾਹਣ
 ਤਾਰੇ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਲੇਹੁ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੧੦॥ ਗੁਰਮਤਿ ਲੇਹੁ ਤਰਹੁ ਸਚੁ
 ਤਾਰੀ ॥ ਆਤਮ ਚੀਨਹੁ ਰਿਦੈ ਸੁਰਾਰੀ ॥ ਜਮ ਕੇ ਫਾਹੇ ਕਾਟਹਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ॥੧੧॥
 ਗੁਰਮਤਿ ਪੰਚ ਸਖੇ ਗੁਰ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਅਗਨਿ ਨਿਵਾਰਿ ਸਮਾਈ ॥ ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਜਗਜੀਵਨ
 ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥੧੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜੈ ਸਬਦਿ ਪਤੀਜੈ ॥ ਤਿਸਤਤਿ ਨਿੰਦਾ ਕਿਸ ਕੀ ਕੀਜੈ ॥
 ਚੀਨਹੁ ਆਪੁ ਜਪਹੁ ਜਗਦੀਸਰੁ ਹਰਿ ਜਗਨਾਥੁ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥੧੩॥ ਜੋ ਬ੍ਰਹਮਿੰਡਿ ਖੰਡਿ ਸੋ ਜਾਣਹੁ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜਾਹੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣਹੁ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਭੋਗੇ ਭੋਗਣਹਾਰਾ ਰਹੈ ਅਤੀਤੁ ਸਬਾਇਆ ॥੧੪॥ ਗੁਰਮਤਿ
 ਬੋਲਹੁ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੂਚਾ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਆਖੀ ਦੇਖਹੁ ਊਚਾ ॥ ਸ਼ਰਣੀ ਨਾਮੁ ਸੁਣੈ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗਿ
 ਰੰਗਾਇਆ ॥੧੫॥੩॥੨੦॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਪਰਹਰੁ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ॥ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਤਜਿ ਹੋਹੁ ਨਿਚਿੰਦਾ
 ॥ ਭ੍ਰਮ ਕਾ ਸੰਗਲੁ ਤੋਡਿ ਨਿਰਾਲਾ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਨਿਸਿ ਦਾਮਨਿ ਜਿਤ ਚਮਕਿ
 ਚੰਦਾਇਣੁ ਦੇਖੈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਜੋਤਿ ਨਿਰੰਤਰਿ ਪੇਖੈ ॥ ਆਨਨਦ ਰੂਪੁ ਅਨੂਪੁ ਸਰੂਪਾ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੇਖਾਇਆ ॥੨॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਹੁ ਆਪੇ ਪ੍ਰਭੁ ਤਾਰੇ ॥ ਸਸਿ ਘਰਿ ਸੂਰੁ ਦੀਪਕੁ ਗੈਣਾਰੇ ॥ ਦੇਖਿ ਅਦਿਸਟੁ ਰਹਹੁ ਲਿਵ ਲਾਗੀ
 ਸਭੁ ਤ੃ਭਵਣਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਸਬਾਇਆ ॥੩॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪਾਏ ਤ੃ਸਨਾ ਭਤ ਜਾਏ ॥ ਅਨਭਤ ਪਦੁ ਪਾਵੈ ਆਪੁ
 ਗਵਾਏ ॥ ਊਚੀ ਪਦਵੀ ਊਚੋ ਊਚਾ ਨਿਰਮਲ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇਆ ॥੪॥ ਅਦੂਸਟ ਅਗੋਚਰੁ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰਾ ॥

ਅਤਿ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਦੀਜੈ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਅਂਤੁ ਨ ਪਾਇਆ
 ॥੫॥ ਅਂਤਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੀਰਾ ॥ ਹਰਿ ਜਪਤੇ ਮਨੁ ਮਨ ਤੇ ਧੀਰਾ ॥ ਟੁਘਟ ਘਟ ਭਤ ਭੰਜਨੁ ਪਾਈਐ
 ਬਾਹੁਡਿ ਜਨਮਿ ਨ ਜਾਇਆ ॥੬॥ ਭਗਤਿ ਹੇਤਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਤਰੰਗਾ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਮੰਗਾ ॥
 ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਗੁਰ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ਹਰਿ ਤਾਰੇ ਜਗਤੁ ਸਬਾਇਆ ॥੭॥ ਜਿਨਿ ਜਪੁ ਜਪਿਓ ਸਤਿਗੁਰ ਮਤਿ ਵਾ ਕੇ ॥
 ਜਮਕੰਕਰ ਕਾਲੁ ਸੇਵਕ ਪਗ ਤਾ ਕੇ ॥ ਊਤਮ ਸੰਗਤਿ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਊਤਮ ਜਗੁ ਭਤਜਲੁ ਪਾਰਿ ਤਰਾਇਆ ॥੮॥
 ਛਿਹੁ ਭਵਜਲੁ ਜਗਤੁ ਸਬਦਿ ਗੁਰ ਤਰੀਐ ॥ ਅਂਤਰ ਕੀ ਟੁਬਿਧਾ ਅਂਤਰਿ ਜਰੀਐ ॥ ਪੰਚ ਬਾਣ ਲੇ ਜਮ ਕਤ ਮਾਰੈ
 ਗਗਨਨਤਰਿ ਧਣਖੁ ਚੜਾਇਆ ॥੯॥ ਸਾਕਤ ਨਰਿ ਸਬਦ ਸੁਰਤਿ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ॥ ਸਬਦੁ ਸੁਰਤਿ ਬਿਨੁ
 ਆਈਐ ਜਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਕਤਿ ਪਰਾਇਣੁ ਹਰਿ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧੦॥ ਨਿਰਭਤ
 ਸਤਿਗੁਰ ਹੈ ਰਖਵਾਲਾ ॥ ਭਗਤਿ ਪਰਾਪਤਿ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਧੁਨਿ ਅਨਨਦ ਅਨਾਹਦੁ ਵਾਜੈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਨਿਰੰਜਨੁ
 ਪਾਇਆ ॥੧੧॥ ਨਿਰਭਤ ਸੋ ਸਿਰਿ ਨਾਹੀ ਲੇਖਾ ॥ ਆਪਿ ਅਲੇਖੁ ਕੁਦਰਤਿ ਹੈ ਦੇਖਾ ॥ ਆਪਿ ਅਤੀਤੁ ਅਜੋਨੀ
 ਸੰਭਤ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਸੋ ਪਾਇਆ ॥੧੨॥ ਅਂਤਰ ਕੀ ਗਤਿ ਸਤਿਗੁਰ ਜਾਣੈ ॥ ਸੋ ਨਿਰਭਤ ਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਪਛਾਣੈ ॥ ਅਂਤਰੁ ਦੇਖਿ ਨਿਰੰਤਰਿ ਕੂੜੈ ਅਨਤ ਨ ਮਨੁ ਡੋਲਾਇਆ ॥੧੩॥ ਨਿਰਭਤ ਸੋ ਅਭ ਅਂਤਰਿ ਵਸਿਆ ॥
 ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮਿ ਨਿਰੰਜਨ ਰਸਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੰਗਤਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਇਆ
 ॥੧੪॥ ਅਂਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੈ ॥ ਰਹੈ ਅਲਿਪਤੁ ਚਲਤੇ ਘਰਿ ਆਣੈ ॥ ਊਪਰਿ ਆਦਿ ਸਰਬ ਤਿਹੁ
 ਲੋਈ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥੧੫॥੮॥੨੧॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਨੈਹਾਰ ਅਪਾਰਾ
 ॥ ਕੀਤੇ ਕਾ ਨਾਹੀ ਕਿਹੁ ਚਾਰਾ ॥ ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਰਿਜਕੁ ਦੇ ਆਪੇ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਇਆ ॥੧॥ ਹੁਕਮੁ
 ਚਲਾਇ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥ ਕਿਸੁ ਨੈਡੈ ਕਿਸੁ ਆਖਾਂ ਢੂਰੇ ॥ ਗੁਪਤ ਪ੍ਰਗਟ ਹਰਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਦੇਖਹੁ ਵਰਤੈ ਤਾਕੁ
 ਸਬਾਇਆ ॥੨॥ ਜਿਸ ਕਤ ਮੇਲੇ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਏ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥ ਆਨਦ ਰੂਪ ਅਨੂਪ
 ਅਗੋਚਰ ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਭਰਮੁ ਜਾਇਆ ॥੩॥ ਮਨ ਤਨ ਧਨ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ਚਲਣਵਾਰਾ ॥

ਮोह ਪਸਾਰ ਨਹੀਂ ਸੰਗਿ ਬੇਲੀ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਕਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥ ਜਿਸ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ
 ॥ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ਗੁਰਮਤਿ ਸ੍ਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਸਰੇਵਹੁ ਜਿਨਿ ਭੂਲਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇਆ ॥੫॥
 ਸੰਤ ਜਨਾਂ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਸੁ ਧਿਆਰਾ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਜਾਚਿਕੁ ਸੇਵ ਕਰੇ ਦਰਿ ਹਰਿ ਕੈ ਹਰਿ
 ਦਰਗਹ ਜਸੁ ਗਾਇਆ ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਏ ॥ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਗਤਿ ਪਤਿ ਪਾਏ ॥ ਸਾਕਤ
 ਠਤਰ ਨਾਹੀਂ ਹਰਿ ਮੰਦਰ ਜਨਮ ਮੈਂ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੭॥ ਸੇਵਹੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਮੁੰਦੁ ਅਥਾਹਾ ॥ ਪਾਵਹੁ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ
 ਧਨੁ ਲਾਹਾ ॥ ਬਿਖਿਆ ਮਲੁ ਜਾਇ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਰਿ ਨਾਵਹੁ ਗੁਰ ਸਰ ਸੰਤੋਖੁ ਪਾਇਆ ॥੮॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਹੁ ਸੰਕ
 ਨ ਕੀਜੈ ॥ ਆਸਾ ਮਾਹਿ ਨਿਰਾਸੁ ਰਹੀਜੈ ॥ ਸੰਸਾ ਦ੍ਰਾਖ ਬਿਨਾਸਨੁ ਸੇਵਹੁ ਫਿਰਿ ਬਾਹੁਡਿ ਰੋਗੁ ਨ ਲਾਇਆ ॥੯॥
 ਸਾਚੇ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਵਡੀਆਏ ॥ ਕਤਨੁ ਸੁ ਦ੍ਰਾਝ ਤਿਸੁ ਸਮਝਾਏ ॥ ਹਰਿ ਗੁਰ ਮੂਰਤਿ ਏਕਾ ਵਰਤੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਰ
 ਭਾਇਆ ॥੧੦॥ ਵਾਚਹਿ ਪੁਸਤਕ ਵੇਦ ਪੁਰਾਨਾਂ ॥ ਇਕ ਬਹਿ ਸੁਨਹਿ ਸੁਨਾਵਹਿ ਕਾਨਾਂ ॥ ਅਜਗਰ ਕਪਟੁ
 ਕਹਹੁ ਕਿਤ ਖੁਲੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਤਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੧੧॥ ਕਰਹਿ ਬਿਭੂਤਿ ਲਗਾਵਹਿ ਭਸਮੈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕ੍ਰੋਧੁ
 ਚੰਡਾਲੁ ਸੁ ਹਉਮੈ ॥ ਪਾਖੰਡ ਕੀਨੇ ਜੋਗੁ ਨ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਅਲਖੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੧੨॥ ਤੀਰਥ ਵਰਤ
 ਨੇਮ ਕਰਹਿ ਤਦਿਆਨਾ ॥ ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਕਥਹਿ ਗਿਆਨਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਇਆ ॥੧੩॥ ਨਿਤਲੀ ਕਰਮ ਭੁਇਅੰਗਮ ਭਾਠੀ ॥ ਰੇਚਕ ਕੁੰਭਕ ਪੂਰਕ ਮਨ ਹਾਠੀ ॥
 ਪਾਖੰਡ ਧਰਮੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਹੀਂ ਹਰਿ ਸਤ ਗੁਰ ਸਬਦ ਮਹਾ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥੧੪॥ ਕੁਦਰਤਿ ਦੇਖਿ ਰਹੇ ਮਨੁ
 ਮਾਨਿਆ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਸਬਾਇਆ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਅਲਖੁ
 ਲਖਾਇਆ ॥੧੫॥੫॥੨੨॥

ਮਾਰੂ ਸੋਲਹੇ ਮਹਲਾ ੩

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹੁਕਮੀ ਸਹਜੇ ਸੂਸਟਿ ਤਪਾਈ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਅਪਣੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਹੁਕਮੇ
 ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ਹੇ ॥੧॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਗਤੁ ਗੁਬਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂझੈ ਕੋ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ

सो पाए आपे मेलि मिलाई हे ॥२॥ आपे मेले दे वडिआई ॥ गुर परसादी कीमति पाई ॥ मनमुखि
 बहुतु फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआई हे ॥३॥ हउमै माइआ विचे पाई ॥ मनमुख भूले पति
 गवाई ॥ गुरमुखि होवै सो नाइ रचै साचै रहिआ समाई हे ॥४॥ गुर ते गिआनु नाम रतनु
 पाइआ ॥ मनसा मारि मन माहि समाइआ ॥ आपे खेल करे सभि करता आपे देइ बुझाई हे ॥५॥
 सतिगुरु सेवे आपु गवाए ॥ मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाए ॥ अंतरि पिआरु भगती राता सहजि मते
 बणि आई हे ॥६॥ दूख निवारणु गुर ते जाता ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ जिस नो लाए सोई
 बूझै भउ भरमु सरीरहु जाई हे ॥७॥ आपे गुरमुखि आपे देवै ॥ सचै सबदि सतिगुरु सेवै ॥ जरा जमु
 तिसु जोहि न साकै साचे सिउ बणि आई हे ॥८॥ तृसना अगनि जलै संसारा ॥ जलि जलि खपै बहुतु
 विकारा ॥ मनमुखु ठउर न पाए कबहू सतिगुर बूझ बुझाई हे ॥९॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥
 साचै नामि सदा लिव लागी ॥ अंतरि नामु रविआ निहकेवलु तृसना सबदि बुझाई हे ॥१०॥ सचा
 सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ॥ सचे सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई हे
 ॥११॥ सबदु बूझै सो मैलु चुकाए ॥ निरमल नामु वसै मनि आए ॥ सतिगुरु अपणा सद ही सेवहि
 हउमै विचहु जाई हे ॥१२॥ गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥ नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥ सतिगुर सेवे
 की वडिआई तृसना भूख गवाई हे ॥१३॥ आपे आपि मिलै ता बूझै ॥ गिआन विहूणा किछू न
 सूझै ॥ गुर की दाति सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई हे ॥१४॥ जो धुरि लिखिआ सु करम
 कमाइआ ॥ कोइ न मेटै धुरि फुरमाइआ ॥ सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई
 हे ॥१५॥ अपणी नदरि करे सो पाए ॥ सचै सबदि ताड़ी चितु लाए ॥ नानक दासु कहै बेन्ती
 भीखिआ नामु दरि पाई हे ॥१६॥ ੧॥ मारू महला ੩ ॥ एको एकु वरतै सभु सोई ॥ गुरमुखि
 विरला बूझै कोई ॥ एको रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई हे ॥१॥ लख चउरासीह

जीअ उपाए ॥ गिआनी धिआनी आखि सुणाए ॥ सभना रिजकु समाहे आपे कीमति होर न होई हे
 ॥२॥ माइआ मोहु अंधु अंधारा ॥ हउमै मेरा पसरिआ पासारा ॥ अनदिनु जलत रहै दिनु राती
 गुर बिनु साँति न होई हे ॥३॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ सचा हुकमु सचा
 पासारा होरनि हुकमु न होई हे ॥४॥ आपे लाडि लए सो लागै ॥ गुर परसादी जम का भउ भागै ॥
 अंतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे ॥५॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ पुरबि लिखिआ
 सो मेटणा न जाए ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे ॥६॥ सतिगुरु सेवि सदा
 सुखु जाता ॥ आपे आइ मिलिआ सभना का दाता ॥ हउमै मारि तृसना अगनि निवारी सबदु चीनि
 सुखु होई हे ॥७॥ काइआ कुटंबु मोहु न बूझै ॥ गुरमुखि होवै त आखी सूझै ॥ अनदिनु नामु रखै दिनु
 राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे ॥८॥ मनमुख धातु दूजै है लागा ॥ जनमत की न मूओ आभागा ॥
 आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ बिनु गुर मुकति न होई हे ॥९॥ काइआ कुसुध हउमै मलु
 लाई ॥ जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥ सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई हे ॥१०॥
 पंच दूत काइआ संघारहि ॥ मरि मरि जंमहि सबदु न वीचारहि ॥ अंतरि माइआ मोह गुबारा जित
 सुपनै सुधि न होई हे ॥११॥ इकि पंचा मारि सबदि है लागे ॥ सतिगुरु आइ मिलिआ वडभागे ॥
 अंतरि साचु रवहि रंगि राते सहजि समावै सोई हे ॥१२॥ गुर की चाल गुरु ते जापै ॥ पूरा सेवकु
 सबदि सिजापै ॥ सदा सबदु रखै घट अंतरि रसना रसु चाखै सचु सोई हे ॥१३॥ हउमै मारे सबदि
 निवारे ॥ हरि का नामु रखै उरि धारे ॥ एकसु बिनु हउ होरु न जाणा सहजे होइ सु होई हे ॥१४॥
 बिनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइआ ॥ गुरमुखि बूझै सचि समाइआ ॥ सचा सेवि सबदि सच राते
 हउमै सबदे खोई हे ॥१५॥ आपे गुणदाता बीचारी ॥ गुरमुखि देवहि पकी सारी ॥ नानक नामि
 समावहि साचै साचे ते पति होई हे ॥१६॥२॥ मारू महला ३ ॥ जगजीवनु साचा एको दाता ॥ गुर

सेवा ते सबदि पछाता ॥ एको अमरु एका पतिसाही जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे ॥१॥ सो जनु निरमलु
 जिनि आपु पछाता ॥ आपे आइ मिलिआ सुखदाता ॥ रसना सबदि रती गुण गावै दरि साचै पति
 पाई हे ॥२॥ गुरमुखि नामि मिलै वडिआई ॥ मनमुखि निंदकि पति गवाई ॥ नामि रते परम ह्वस
 बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥३॥ सबदि मरै सोई जनु पूरा ॥ सतिगुरु आखि सुणाए सूरा ॥
 काइआ अंदरि अंमृत सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे ॥४॥ पड़ि पंडितु अवरा समझाए ॥ घर
 जलते की खबरि न पाए ॥ बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईअै पड़ि थाके साँति न आई हे ॥५॥ इकि
 भसम लगाइ फिरहि भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनि मारी ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती
 भरमि भेखि भरमाई हे ॥६॥ इकि गृह कुटंब महि सदा उदासी ॥ सबदि मुए हरि नामि निवासी ॥
 अनदिनु सदा रहहि रंगि राते भै भाइ भगति चितु लाई हे ॥७॥ मनमुखु निंदा करि करि विगुता ॥
 अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता ॥ जमकालु तिसु कदे न छोडै अंति गडिआ पछुताई हे ॥८॥ सचै सबदि
 सची पति होई ॥ बिनु नावै मुकति न पावै कोई ॥ बिनु सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि औसी बणत
 बणाई हे ॥९॥ इकि सिध साधिक बहुतु वीचारी ॥ इकि अहिनिसि नामि रते निरंकारी ॥ जिस नो
 आपि मिलाए सो बूझै भगति भाइ भउ जाई हे ॥१०॥ इसनानु दानु करहि नही बूझहि ॥ इकि
 मनूआ मारि मनै सितु लूझहि ॥ साचै सबदि रते इक रंगी साचै सबदि मिलाई हे ॥११॥ आपे
 सिरजे दे वडिआई ॥ आपे भाणै देइ मिलाई ॥ आपे नदरि करे मनि वसिआ मरै प्रभि इउ
 फुरमाई हे ॥१२॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ मनमुख सेवि न जाणनि काचे ॥ आपे करता करि
 करि वेखै जित भावै तित लाई हे ॥१३॥ जुगि जुगि साचा एको दाता ॥ पूरै भागि गुर सबदु पछाता
 ॥ सबदि मिले से विछुड़े नाही नदरी सहजि मिलाई हे ॥१४॥ हउमै माइआ मैलु कमाइआ ॥
 मरि मरि जंमहि दूजा भाइआ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई मनि देखहु लिव लाई हे ॥१५॥

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ॥ ਆਪਹੁ ਹੋਆ ਨਾ ਕਿਛੁ ਹੋਸੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਪਤਿ
 ਪਾਈ ਹੈ ॥੧੬॥੩॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੋ ਆਇਆ ਸੋ ਸਭੁ ਕੋ ਜਾਸੀ ॥ ਟ੍ਰੈ ਭਾਇ ਬਾਧਾ ਜਮ ਫਾਸੀ ॥
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਜਨ ਤਬਰੇ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੧॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ
 ਕਰੇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਲੇਖੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਤਿਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸ੍ਰੂਜੈ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ਕਮਾਈ ਹੈ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ
 ਸਹਸਾ ਬ੍ਰੂਜ਼ ਨ ਪਾਈ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਂਮੈ ਜਨਮੁ ਗਰਵਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਹਜੇ ਸਾਚਿ
 ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੩॥ ਧੰਧੈ ਧਾਵਤ ਮਨੁ ਭਾਇਆ ਮਨੂਰਾ ॥ ਫਿਰਿ ਹੋਵੈ ਕਂਚਨੁ ਭੇਟੈ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲਏ
 ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਈ ਹੈ ॥੪॥ ਦੁਰਮਤਿ ਝੂਠੀ ਬੁਰੀ ਬੁਰਿਆਰਿ ॥ ਅਤਗਣਿਆਰੀ ਅਤਗਣਿਆਰਿ
 ॥ ਕਚੀ ਮਤਿ ਫੀਕਾ ਸੁਖਿ ਬੋਲੈ ਦੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਈ ਹੈ ॥੫॥ ਅਤਗਣਿਆਰੀ ਕੰਤ ਨ ਭਾਵੈ ॥ ਮਨ ਕੀ ਜੂਠੀ
 ਜੂਠੁ ਕਮਾਵੈ ॥ ਪਿਰ ਕਾ ਸਾਤ ਨ ਜਾਣੈ ਮੂਰਖਿ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਬ੍ਰੂਜ਼ ਨ ਪਾਈ ਹੈ ॥੬॥ ਦੁਰਮਤਿ ਖੋਟੀ ਖੋਟੁ ਕਮਾਵੈ ॥
 ਸੀਗਾਰੁ ਕਰੇ ਪਿਰ ਖਸਮ ਨ ਭਾਵੈ ॥ ਗੁਣਵਂਤੀ ਸਦਾ ਪਿਲੁ ਰਾਵੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ਹੈ ॥੭॥ ਆਪੇ
 ਛੁਕਮੁ ਕਰੇ ਸਭੁ ਵੇਖੈ ॥ ਇਕਨਾ ਬਖਸਿ ਲਏ ਧੁਰਿ ਲੇਖੈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਆਪੇ ਮੇਲਿ
 ਮਿਲਾਈ ਹੈ ॥੮॥ ਹਤਮੈ ਧਾਤੁ ਮੋਹ ਰਸਿ ਲਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਿਵ ਸਾਚੀ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲੈ ਆਪੇ
 ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਬ੍ਰੂਜ਼ ਨ ਪਾਈ ਹੈ ॥੯॥ ਇਕਿ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰਿ ਸਦਾ ਜਨ ਜਾਗੇ ॥ ਇਕਿ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ
 ਸੀਇ ਰਹੇ ਅਭਾਗੇ ॥ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਹੋਰੁ ਕਰਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਈ ਹੈ ॥੧੦॥ ਕਾਲੁ ਮਾਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਖੈ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੧੧॥
 ਟ੍ਰੈ ਭਾਇ ਫਿਰੈ ਦੇਵਾਨੀ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਦੁਖ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥ ਬਹੁਤੇ ਭੇਖ ਕਰੈ ਨਹ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਖੁ
 ਨ ਪਾਈ ਹੈ ॥੧੨॥ ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਜਾ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥ ਜਿਤੁ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਰਾਹਿ ਚਲਾਏ ॥ ਆਪੇ ਮਿਹਰਵਾਨੁ
 ਸੁਖਦਾਤਾ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਈ ਹੈ ॥੧੩॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ॥ ਆਪੇ ਸੰਜਮੁ ਆਪੇ ਜੁਗਤਾ ॥ ਆਪੇ
 ਨਿਰਮਲੁ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਜਿਸ ਦਾ ਛੁਕਮੁ ਨ ਮੇਟਿਆ ਜਾਈ ਹੈ ॥੧੪॥ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨੀ ਏਕੋ ਜਾਤਾ

॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਸਿ ਰਹਿਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ॥ ਇਕ ਥੈ ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਹੈ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭ੍ਰਮੁ ਭਤ ਜਾਈ ਹੈ
 ॥੧੫॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥ ਜਿਸੁ ਤੂ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ
 ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਵਡਾਈ ਹੈ ॥੧੬॥੪॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹੀ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੈ ॥ ਸਭੁ ਜਗੁ ਹੈ ਤਿਸ
 ਹੀ ਕੈ ਚੀਰੈ ॥ ਸਭਿ ਘਟ ਭੋਗਵੈ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਆਪੇ ਸੂਖ ਨਿਵਾਸੀ ਹੈ ॥੧॥ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੀ ਨਾਈ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥ ਆਪੇ ਆਇ ਵਸਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਤੂਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ਹੈ ॥੨॥ ਕਿਸੁ ਸੇਵੀ ਤੈ
 ਕਿਸੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਮਤਿ ਊਤਮ ਅੰਤਰਿ ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸੀ ਹੈ
 ॥੩॥ ਦੇਹੀ ਕਾਚੀ ਕਾਗਦ ਮਿਕਦਾਰਾ ॥ ਬ੍ਰੂੰਦ ਪਕੈ ਬਿਨਸੈ ਫਹਤ ਨ ਲਾਗੈ ਬਾਰਾ ॥ ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਬੂੰਝੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਵਾਸੀ ਹੈ ॥੪॥ ਸਚਾ ਚਤਕਾ ਸੁਰਤਿ ਕੀ ਕਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਭੋਜਨੁ ਸਚੁ ਆਧਾਰਾ ॥
 ਸਦਾ ਤ੃ਪਤਿ ਪਵਿਤ੍ਰ ਹੈ ਪਾਵਨੁ ਜਿਤੁ ਘਟਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਵਾਸੀ ਹੈ ॥੫॥ ਹਤ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜੋ ਸਾਚੈ ਲਾਗੇ
 ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੇ ॥ ਸਾਚਾ ਸੂਖੁ ਸਦਾ ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਾਸੀ ਹੈ ॥੬॥ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਚੇਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਪ੍ਰੋਗਾ ॥ ਏਕੋ ਸੇਵੀ ਅਵਰੁ ਨ ਟ੍ਰੋਗਾ ॥ ਪ੍ਰੌ ਗੁਰਿ ਸਭੁ ਸਚੁ ਦਿਖਾਇਆ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੀ
 ਹੈ ॥੭॥ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਜੋਨੀ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਇਆ ॥ ਆਪਿ ਭੂਲਾ ਜਾ ਖਸਮਿ ਭੂਲਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਮਿਲੈ ਤਾ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੰਝੈ ਚੀਨੈ ਸਬਦੁ ਅਭਿਨਾਸੀ ਹੈ ॥੮॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਭਰੇ ਹਮ ਅਪਰਾਧੀ ॥ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਲੈ ਬੋਲਹਨ ਨਾ
 ਹਮ ਗੁਣ ਨ ਸੇਵਾ ਸਾਧੀ ॥ ਡੁਬਦੇ ਪਾਥਰ ਮੇਲਿ ਲੈਹੁ ਤੁਮ ਆਪੇ ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਅਭਿਨਾਸੀ ਹੈ ॥੯॥ ਨਾ ਕੋਈ ਕਰੇ
 ਨ ਕਰਣੈ ਜੋਗਾ ॥ ਆਪੇ ਕਰਹਿ ਕਰਾਵਹਿ ਸੁ ਹੋਇਗਾ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਸਦ ਹੀ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੀ ਹੈ
 ॥੧੦॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਧਰਤੀ ਸਬਦੁ ਬੀਜਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਸਾਚੇ ਸੇਤੀ ਵਣਜੁ ਵਾਪਾਰਾ ॥ ਸਚੁ ਧਨੁ ਜੰਮਿਆ ਤੋਟਿ ਨ
 ਆਵੈ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਵਾਸੀ ਹੈ ॥੧੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਅਵਗਣਿਆਰੇ ਨੋ ਗੁਣੁ ਕੀਜੈ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਨਾਮੁ ਦੀਜੈ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਪਤਿ ਪਾਏ ਇਕਤੁ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੀ ਹੈ ॥੧੨॥ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸਮਝ ਨ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰ
 ਪਰਸਾਦੀ ਬੂੰਝੈ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਧਨੁ ਪਾਏ ਸਦ ਹੀ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੀ ਹੈ ॥੧੩॥ ਅਨਲ ਵਾਤ ਭਰਮਿ

भुलाई ॥ माइआ मोहि सुधि न काई ॥ मनमुख अंधे किछू न सूझै गुरमति नामु प्रगासी हे ॥१४॥
 मनमुख हउमै माइआ सूते ॥ अपणा घरु न समालहि अंति विगूते ॥ पर निंदा करहि बहु चिंता जालै
 दुखे दुखि निवासी हे ॥१५॥ आपे करतै कार कराई ॥ आपे गुरमुखि देइ बुझाई ॥ नानक नामि
 रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे ॥१६॥५॥ मारू महला ३ ॥ एको सेवी सदा थिरु साचा ॥
 दूजै लागा सभु जगु काचा ॥ गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे ॥१॥ तेरे गुण बहुते
 मै एकु न जाता ॥ आपे लाइ लए जगजीवनु दाता ॥ आपे बखसे दे वडिआई गुरमति इहु मनु भीजै
 हे ॥२॥ माइआ लहरि सबदि निवारी ॥ इहु मनु निरमलु हउमै मारी ॥ सहजे गुण गवै रंगि
 रता रसना रामु रवीजै हे ॥३॥ मेरी मेरी करत विहाणी ॥ मनमुखि न बूझै फिरै इआणी ॥ जमकालु
 घड़ी मुहतु निहाले अनदिनु आरजा छीजै हे ॥४॥ अंतरि लोभु करै नही बूझै ॥ सिर ऊपरि जमकालु न
 सूझै ॥ औथै कमाणा सु अगै आइआ अंतकालि किआ कीजै हे ॥५॥ जो सचि लागे तिन साची सोइ ॥
 दूजै लागे मनमुखि रोइ ॥ दुहा सिरिआ का खसमु है आपे आपे गुण महि भीजै हे ॥६॥ गुर कै सबदि
 सदा जनु सोहै ॥ नाम रसाइणि इहु मनु मोहै ॥ माइआ मोह मैलु पतंगु न लागे गुरमती हरि नामि
 भीजै हे ॥७॥ सभना विचि वरतै इकु सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ हउमै मारि सदा सुखु
 पाइआ नाइ साचै अंमृतु पीजै हे ॥८॥ किलबिख दूख निवारणहारा ॥ गुरमुखि सेविआ सबदि
 वीचारा ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे ॥९॥ माइआ अगनि जलै संसारे ॥
 गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ॥ अंतरि साँति सदा सुखु पाइआ गुरमती नामु लीजै हे ॥१०॥ इंद्र
 इंद्रासणि बैठे जम का भउ पावहि ॥ जमु न छोडै बहु करम कमावहि ॥ सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईअै
 हरि हरि रसना पीजै हे ॥११॥ मनमुखि अंतरि भगति न होई ॥ गुरमुखि भगति साँति सुखु होई ॥
 पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमति अंतरु भीजै हे ॥१२॥ ब्रह्मा बिसनु महेसु वीचारी ॥ तै गुण

बधक मुकति निरारी ॥ गुरमुखि गिआनु एको है जाता अनदिनु नामु रवीजै हे ॥१३॥ बेद पड़हि
 हरि नामु न बूझहि ॥ माइआ कारणि पड़ि पड़ि लूझहि ॥ अंतरि मैलु अगिआनी अंधा किउ करि
 दुतरु तरीजै हे ॥१४॥ बेद बाद सभि आखि वखाणहि ॥ न अंतरु भीजै न सबदु पछाणहि ॥ पुन्नु पापु
 सभु बेदि दृढ़ाइआ गुरमुखि अंमृतु पीजै हे ॥१५॥ आपे साचा एको सोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न
 कोई ॥ नानक नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे ॥१६॥६॥ मारू महला ३ ॥ सचै सचा तखतु
 रचाइआ ॥ निज घरि वसिआ तिथै मोहु न माइआ ॥ सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी
 सारी हे ॥१॥ सचा सउदा सचु वापारा ॥ न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥ सचा धनु खटिआ कदे तोटि
 न आवै बूझै को वीचारी हे ॥२॥ सचै लाए से जन लागे ॥ अंतरि सबदु मसतकि वडभागे ॥ सचै
 सबदि सदा गुण गावहि सबदि रते वीचारी हे ॥३॥ सचो सचा सचु सालाही ॥ एको वेखा दूजा नाही
 ॥ गुरमति ऊचो ऊची पउड़ी गिआनि रतनि हउमै मारी हे ॥४॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥
 सचु मनि वसिआ जा तुधु भाइआ ॥ सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा निवारी हे ॥५॥ माइआ
 मोहु सभु आपे कीना ॥ गुरमुखि विरलै किन ही चीना ॥ गुरमुखि होवै सु सचु कमावै साची करणी सारी
 हे ॥६॥ कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई ॥ हउमै तृसना सबदि बुझाई ॥ गुरमति सद ही अंतरु सीतलु
 हउमै मारि निवारी हे ॥७॥ सचि लगे तिन सभु किछु भावै ॥ सचै सबदे सचि सुहावै ॥ औथै साचे से
 दरि साचे नदरी नदरि सवारी हे ॥८॥ बिनु साचे जो दूजै लाइआ ॥ माइआ मोह दुख सबाइआ ॥
 बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइआ मोह दुखु भारी हे ॥९॥ साचा सबदु जिना मनि भाइआ ॥ पूरबि
 लिखिआ तिनी कमाइआ ॥ सचो सेवहि सचु धिआवहि सचि रते वीचारी हे ॥१०॥ गुर की सेव मीठी
 लागी ॥ अनदिनु सूख सहज समाधी ॥ हरि हरि करतिआ मनु निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे
 ॥११॥ से जन सुखीए सतिगुरि सचे लाए ॥ आपे भाणे आपि मिलाए ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे

होर माइआ मोह खुआरी हे ॥੧੨॥ गुरमुखि साचा सबदि पछाता ॥ ना तिसु कुटंबु ना तिसु माता ॥ एको
 एकु रविआ सभ अंतरि सभना जीआ का आधारी हे ॥੧੩॥ हउमै मेरा दूजा भाइआ ॥ किछु न चलै धुरि
 खसमि लिखि पाइआ ॥ गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे ॥੧੪॥ जा तू देहि सदा सुखु
 पाए ॥ साचै सबदे साचु कमाए ॥ अंद्रु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे ॥੧੫॥ आपे वेखै
 हुकमि चलाए ॥ अपणा भाणा आपि कराए ॥ नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी
 हे ॥੧੬॥੭॥ मारू महला ੩ ॥ आपे आपु उपाइ उपन्ना ॥ सभ महि वरतै एकु परछन्ना ॥ सभना
 सार करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु पछाता हे ॥੧॥ जिनि ब्रह्मा बिसनु महेसु उपाए ॥ सिरि
 सिरि धंधै आपे लाए ॥ जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥੨॥ आवा गउण है
 संसारा ॥ माइआ मोहु बहु चितै बिकारा ॥ थिरु साचा सालाही सद ही जिनि गुर का सबदु पछाता हे
 ॥੩॥ इकि मूलि लगे ओनी सुखु पाइआ ॥ डाली लागे तिनी जनमु गवाइआ ॥ अंमृत फल तिन
 जन कउ लागे जो बोलहि अंमृत बाता हे ॥੪॥ हम गुण नाही किआ बोलह बोल ॥ तू सभना देखहि
 तोलहि तोल ॥ जित भावै तित राखहि रहणा गुरमुखि एको जाता हे ॥੫॥ जा तुधु भाणा ता सची करै
 लाए ॥ अवगण छोडि गुण माहि समाए ॥ गुण महि एको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे ॥੬॥
 जह देखा तह एको सोई ॥ दूजी दुरमति सबदे खोई ॥ एकसु महि प्रभु एकु समाणा अपणै रंगि सद
 रता हे ॥੭॥ काइआ कमलु है कुमलाणा ॥ मनमुखु सबदु न बुझै इआणा ॥ गुर परसादी काइआ
 खोजे पाए जगजीवनु दाता हे ॥੮॥ कोट गही के पाप निवारे ॥ सदा हरि जीउ राखै उर धारे ॥ जो इछे
 सोई फलु पाए जित रंगु मजीठै राता हे ॥੯॥ मनमुखु गिआनु कथे न होई ॥ फिरि फिरि आवै ठउर
 न कोई ॥ गुरमुखि गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि एको जाता हे ॥੧੦॥ मनमुखु कार करे सभि दुख
 सबाए ॥ अंतरि सबदु नाही कित दरि जाए ॥ गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे

॥१॥ जह देखा तू सभनी थाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ नामो नामु धिआईअै सदा सद इहु मनु
 नामे राता हे ॥२॥ नामे राता पवितु सरीरा ॥ बिनु नावै डूबि मुए बिनु नीरा ॥ आवहि जावहि नामु
 नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे ॥३॥ पूरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ विणु नावै मुकति
 किनै न पाई ॥ नामे नामि मिलै वडिआई सहजि रहै रंगि राता हे ॥४॥ काइआ नगरु ढहै ढहि
 ढेरी ॥ बिनु सबदै चूकै नही फेरी ॥ साचु सलाहे साचि समावै जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥५॥
 जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ साच्या सबदु वसै मनि आए ॥ नानक नामि रते निरंकारी दरि साचै साचु
 पछाता हे ॥६॥ ८॥ मारू सोलहे ३ ॥ आपे करता सभु जिसु करणा ॥ जीअ जंत सभि तेरी सरणा ॥
 आपे गुपतु वरतै सभ अंतरि गुर कै सबदि पछाता हे ॥१॥ हरि के भगति भरे भंडारा ॥ आपे बखसे
 सबदि वीचारा ॥ जो तुधु भावै सोई करसहि सचे सिउ मनु राता हे ॥२॥ आपे हीरा रतनु अमोलो ॥ आपे
 नदरी तोले तोलो ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे ॥३॥ जिस नो नदरि होवै
 धुरि तेरी ॥ मरै न जंमै चूकै फेरी ॥ साचे गुण गावै दिनु राती जुगि जुगि एको जाता हे ॥४॥ माइआ मोहि
 सभु जगतु उपाइआ ॥ ब्रह्मा बिसनु देव सबाइआ ॥ जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआन मती पछाता
 हे ॥५॥ पाप पुन्न वरतै संसारा ॥ हरखु सोगु सभु दुखु है भारा ॥ गुरमुखि होवै सो सुखु पाए जिनि गुरमुखि
 नामु पछाता हे ॥६॥ किरतु न कोई मेटणहारा ॥ गुर कै सबदे मोख दुआरा ॥ पूरबि लिखिआ सो फलु
 पाइआ जिनि आपु मारि पछाता हे ॥७॥ माइआ मोहि हरि सिउ चितु न लागै ॥ दूजै भाइ घणा
 दुखु आगै ॥ मनमुख भरमि भुले भेखधारी अंत कालि पछुताता हे ॥८॥ हरि कै भाणै हरि गुण
 गाए ॥ सभि किलबिख काटे दूख सबाए ॥ हरि निरमलु निरमल है बाणी हरि सेती मनु राता हे
 ॥९॥ जिस नो नदरि करे सो गुण निधि पाए ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाए ॥ गुण अवगण का एको दाता
 गुरमुखि विरली जाता हे ॥१०॥ मेरा प्रभु निरमलु अति अपारा ॥ आपे मेलै गुर सबदि

ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਸਚੁ ਦੂਡਾਏ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਾਚੈ ਰਾਤਾ ਹੈ ॥੧॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੈਲਾ ਵਿਚਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰਾ ॥
 ਗੁਰਮਤਿ ਬੂੜ੍ਹੈ ਕਰਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਸਦਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਰਸਨਾ ਸੇਵਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹੈ ॥੧੨॥ ਗੱਡ
 ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਬਹੁ ਹਟ ਬਾਜਾਰਾ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਅਤਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਦਰਿ ਸੋਹੈ
 ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਪਛਾਤਾ ਹੈ ॥੧੩॥ ਰਤਨੁ ਅਮੋਲਕੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਵਣੁ ਕਰੇ ਵੇਚਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਕੈ
 ਸਬਦੇ ਤੋਲਿ ਤੋਲਾਏ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ਹੈ ॥੧੪॥ ਸਿਮ੃ਤਿ ਸਾਸਤ ਬਹੁਤੁ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ
 ਪਸਰਿਆ ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਮੂਰਖ ਪਡ਼ਹਿ ਸਬਦੁ ਨ ਬੂੜਾਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਜਾਤਾ ਹੈ ॥੧੫॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ
 ਕਰਾਏ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਦੂਡਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ਹੈ ॥੧੬॥੬॥
 ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੋ ਸਚੁ ਸੇਵਿਹੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥ ਸਬਦੇ ਦ੍ਰਖ ਨਿਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਕੀਮਤਿ
 ਨਹੀਂ ਪਾਈ ਆਪੇ ਅਗਮ ਅਥਾਹਾ ਹੈ ॥੧॥ ਆਪੇ ਸਚਾ ਸਚੁ ਕਰਤਾਏ ॥ ਇਕਿ ਜਨ ਸਾਚੈ ਆਪੇ ਲਾਏ ॥ ਸਾਚੋ
 ਸੇਵਹਿ ਸਾਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਨਾਮੇ ਸਚਿ ਸਮਾਹਾ ਹੈ ॥੨॥ ਧੁਰਿ ਭਗਤਾ ਮੇਲੇ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਸਚੀ ਭਗਤੀ ਆਪੇ
 ਲਾਏ ॥ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਇਸੁ ਜਨਮੈ ਕਾ ਲਾਹਾ ਹੈ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜੁ ਕਰਹਿ ਪਰੁ ਆਪੁ
 ਪਛਾਣਹਿ ॥ ਏਕਸ ਬਿਨੁ ਕੋ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ॥ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰੇ ਪ੍ਰੰਜੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਹਾ ਹੈ ॥੪॥ ਆਪੇ
 ਸਾਜੇ ਸੂਸਟਿ ਉਪਾਏ ॥ ਵਿਰਲੇ ਕਤ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੁੜਾਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਜਨ ਸਾਚੇ ਕਾਟੇ ਜਮ ਕਾ ਫਾਹਾ ਹੈ
 ॥੫॥ ਭਨੈ ਘੜੇ ਸਕਾਰੇ ਸਾਜੇ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਟ੍ਰੌਜੈ ਜੰਤ ਪਾਜੇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਫਿਰਹਿ ਸਦਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਵਹਿ ਜਮ ਕਾ
 ਜੇਵੜਾ ਗਲਿ ਫਾਹਾ ਹੈ ॥੬॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲਾਏ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਏ ਸਾਚਾ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਨਾਮੋ ਲਾਹਾ ਹੈ ॥੭॥ ਆਪੇ ਸਚਾ ਸਚੀ ਨਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਟੇਵੈ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥
 ਜਿਨ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੇ ਜਨ ਸੋਹਹਿ ਤਿਨ ਸਿਰਿ ਚੂਕਾ ਕਾਹਾ ਹੈ ॥੮॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀਂ ਪਾਈ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥ ਸਦਾ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹੀ ਗੁਣਦਾਤਾ ਲੇਖਾ ਕੋਇ ਨ ਮੰਗੈ ਤਾਹਾ ਹੈ ॥੯॥ ਬ੍ਰਹਮਾ
 ਬਿਸਨੁ ਰੁਦੁ ਤਿਸ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਤੂ ਅਪਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ

अलखु लखाहा हे ॥१०॥ पूरै सतिगुरि सोझी पाई ॥ एको नामु मनि वसाई ॥ नामु जपी तै नामु धिआई
 महलु पाइ गुण गाहा हे ॥११॥ सेवक सेवहि मनि हुकमु अपारा ॥ मनमुख हुकमु न जाणहि सारा ॥
 हुकमे मने हुकमे वडिआई हुकमे वेपरवाहा हे ॥१२॥ गुर परसादी हुकमु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु
 घरि आणै ॥ नामे राता सदा बैरागी नामु रत्नु मनि ताहा हे ॥१३॥ सभ जग महि वरतै एको सोई ॥
 गुर परसादी परगटु होई ॥ सबदु सलाहहि से जन निरमल निज घरि वासा ताहा हे ॥१४॥ सदा
 भगत तेरी सरणाई ॥ अगम अगोचर कीमति नही पाई ॥ जिउ तुधु भावहि तिउ तू राखहि गुरमुखि
 नामु धिआहा हे ॥१५॥ सदा सदा तेरे गुण गावा ॥ सचे साहिब तैरे मनि भावा ॥ नानकु साचु कहै
 बैन्ती सचु देवहु सचि समाहा हे ॥१६॥ १॥१०॥ मारू महला ३ ॥ सतिगुर सेवनि से वडभागी ॥
 अनदिनु साचि नामि लिव लागी ॥ सदा सुखदाता रविआ घट अंतरि सबदि सचै ओमाहा हे ॥१॥
 नदरि करे ता गुरु मिलाए ॥ हरि का नामु मनि वसाए ॥ हरि मनि वसिआ सदा सुखदाता सबदे मनि
 ओमाहा हे ॥२॥ कृपा करे ता मेलि मिलाए ॥ हउमै ममता सबदि जलाए ॥ सदा मुक्तु रहै इक रंगी
 नाही किसै नालि काहा हे ॥३॥ बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा ॥ बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ॥ जो
 सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥४॥ दुखु सुखु करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ दूजा भाउ
 आपि वरताइआ ॥ गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा हे ॥५॥ से मनमुख जो
 सबदु न पछाणहि ॥ गुर के भै की सार न जाणहि ॥ भै बिनु किउ निरभउ सचु पाईअै जमु काढि
 लएगा साहा हे ॥६॥ अफरिओ जमु मारिआ न जाई ॥ गुर कै सबदे नेड़ि न आई ॥ सबदु सुणे ता
 दूरहु भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे ॥७॥ हरि जीउ की है सभ सिरकारा ॥ एहु जमु किआ करे
 विचारा ॥ हुकमी बंदा हुकमु कमावै हुकमे कढदा साहा हे ॥८॥ गुरमुखि साचै कीआ अकारा ॥
 गुरमुखि पसरिआ सभु पासारा ॥ गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु ताहा हे ॥९॥ गुरमुखि जाता

ਕਰਮਿ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਰੈ ਨ ਜਨਮੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ
 ਸਮਾਹਾ ਹੇ ॥੧੦॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹੇ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਵੇਪਰਵਾਹੇ ॥ ਏਕ ਨਾਮਿ ਜੁਗ ਚਾਰਿ
 ਉਥਾਰੇ ਸਬਦੇ ਨਾਮ ਵਿਸਾਹਾ ਹੇ ॥੧੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਁਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਨਾਮੁ ਬ੍ਰਾਂਜੈ ਕਾਟੇ ਦੁਰਮਤਿ ਫਾਹਾ ਹੇ ॥੧੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਪਯੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਨਾ ਮਰਿ ਜਨਮੈ
 ਨ ਜੂਨੀ ਪਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਰਹਹਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਲੈਂਦੇ ਲਾਹਾ ਹੇ ॥੧੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ
 ਦਰਬਾਰੇ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਫਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਹਾ ਹੇ ॥੧੪॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਦ ਹੀ ਨਿਰਮਲ
 ਨਿਰਮਲ ਗੁਣ ਪਾਤਿਸਾਹਾ ਹੇ ॥੧੫॥ ਗੁਣ ਕਾ ਦਾਤਾ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਬ੍ਰਾਂਜੈ ਕੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨੁ
 ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੇ ਬਿਗਸੈ ਸੋ ਨਾਮੁ ਬੇਪਰਵਾਹਾ ਹੇ ॥੧੬॥੨॥੧੧॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸੇਵਹਿ ਅਗਮ
 ਅਪਾਰਾ ॥ ਤਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਈਐ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਰਖਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਤਿਤੁ ਘਟਿ ਮਤਿ ਅਗਾਹਾ
 ਹੇ ॥੧॥ ਸਭ ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਏਕੋ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਰਗਟੁ ਹੋਈ ॥ ਸਭਨਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ਕਰੇ ਜਗਜੀਵਨੁ
 ਦੇਦਾ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਾ ਹੇ ॥੨॥ ਪ੍ਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬ੍ਰਾਂਜਿ ਬੁਜ਼ਾਇਆ ॥ ਹੁਕਮੇ ਹੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਆ ॥ ਹੁਕਮੁ
 ਮਨੇ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਹੁਕਮੁ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹਾ ਹੇ ॥੩॥ ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਤਿਸ ਦੈ ਸਬਦਿ
 ਨਿਸਤਰੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਦੇਦਾ ਸਾਸ ਗਿਰਾਹਾ ਹੇ ॥੪॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕਿਸਹਿ ਬੁਜ਼ਾਏ ॥ ਗੁਰ
 ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹਹਿ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਰਿ ਬਖਸੇ ਭਗਤਿ ਸਲਾਹਾ ਹੇ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਜਨ ਸਾਚੇ ॥ ਜੋ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਕਾਚਨਿ ਕਾਚੇ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਵੇਪਰਵਾਹਾ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਅਥਾਹਾ ਹੇ
 ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਸਾਚੁ ਦ੃ਡਾਏ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥ ਗੁਣਦਾਤਾ ਵਰਤੈ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਸਿਰਿ
 ਸਿਰਿ ਲਿਖਦਾ ਸਾਹਾ ਹੇ ॥੭॥ ਸਦਾ ਹਫ਼ੂਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ॥ ਸਬਦੇ ਸੇਵੈ ਸੋ ਜਨੁ ਧਾਪੈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸੇਵਹਿ ਸਚੀ
 ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਓਮਾਹਾ ਹੇ ॥੮॥ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧਾ ਬਹੁ ਕਰਮ ਦ੃ਡਾਏ ॥ ਮਨਹਠਿ ਕਰਮ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ

पाए ॥ बिखिआ कारणि लबु लोभु कमावहि दुरमति का दोराहा हे ॥६॥ पूरा सतिगुरु भगति दृढ़ाए
 ॥ गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाए ॥ मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा
 हे ॥१०॥ मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु ॥ गुर कै सबदि भगति निस्तारणु ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही
 साचा सिरि साहा पातिसाहा हे ॥११॥ से भगत सचे तेरै मनि भाए ॥ दरि कीरतनु करहि गुर सबदि
 सुहाए ॥ साची बाणी अनदिनु गावहि निरधन का नामु वेसाहा हे ॥१२॥ जिन आपे मेलि विछोड़हि
 नाही ॥ गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ सभना सिरि तू एको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥१३॥ बिनु
 सबदै तुधुनो कोई न जाणी ॥ तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥ आपे सबदु सदा गुरु दाता हरि नामु
 जपि संबाहा हे ॥१४॥ तू आपे करता सिरजणहारा ॥ तेरा लिखिआ कोइ न मेटणहारा ॥ गुरमुखि
 नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा हे ॥१५॥ भगत सचे तेरै दरवारे ॥ सबदे सेवनि भाइ
 पिआरे ॥ नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा हे ॥१६॥३॥१२॥ मारू महला ३ ॥ मेरै प्रभि
 साचै इकु खेलु रचाइआ ॥ कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ॥ आपे फरकु करे वेखि विगसै सभि रस
 देही माहा हे ॥१॥ वाजै पउणु तै आपि वजाए ॥ सिव सकती देही महि पाए ॥ गुर परसादी उलटी
 होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे ॥२॥ अंधेरा चानणु आपे कीआ ॥ एको वरतै अवरु न बीआ ॥
 गुर परसादी आपु पछाणै कमलु बिगसै बुधि ताहा हे ॥३॥ अपणी गहण गति आपे जाणै ॥ होरु
 लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै ॥ गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे ॥४॥
 देही अंदरि वसतु अपारा ॥ आपे कपट खुलावणहारा ॥ गुरमुखि सहजे अंमृतु पीवै तृसना
 अगनि बुझाहा हे ॥५॥ सभि रस देही अंदरि पाए ॥ विरले कउ गुरु सबदु बुझाए ॥ अंदरु खोजे
 सबदु सालाहे बाहरि काहे जाहा हे ॥६॥ विणु चाखे साढु किसै न आइआ ॥ गुर कै सबदि अंमृतु
 पीआइआ ॥ अंमृतु पी अमरा पटु होए गुर कै सबदि रसु ताहा हे ॥७॥ आपु पछाणै सो सभि

गुण जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ॥ अनदिनु नामि रता दिनु राती माइआ मोहु
 चुकाहा हे ॥८॥ गुर सेवा ते सभु किछु पाए ॥ हउमै मेरा आपु गवाए ॥ आपे कृपा करे सुखदाता गुर
 कै सबदे सोहा हे ॥९॥ गुर का सबदु अंमृत है बाणी ॥ अनदिनु हरि का नामु वखाणी ॥ हरि हरि सचा
 वसै घट अंतरि सो घटु निरमलु ताहा हे ॥१०॥ सेवक सेवहि सबदि सलाहहि ॥ सदा रंगि राते हरि
 गुण गावहि ॥ आपे बखसे सबदि मिलाए परमल वासु मनि ताहा हे ॥११॥ सबदे अकथु कथे सालाहे
 ॥ मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे ॥ आपे गुणदाता सबदि मिलाए सबदै का रसु ताहा हे ॥१२॥ मनमुखु भूला
 ठउर न पाए ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाए ॥ बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै दुखु ताहा हे
 ॥१३॥ आपे आपि आपि सालाहे ॥ तेरे गुण प्रभ तुझ्न ही माहे ॥ तू आपि सचा तेरी बाणी सची आपे
 अलखु अथाहा हे ॥१४॥ बिनु गुर दाते कोइ न पाए ॥ लख कोटी जे करम कमाए ॥ गुर किरपा ते
 घट अंतरि वसिआ सबदे सचु सालाहा हे ॥१५॥ से जन मिले धुरि आपि मिलाए ॥ साची बाणी सबदि
 सुहाए ॥ नानक जनु गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे ॥१६॥४॥१३॥ मारू महला ३ ॥
 निहचलु एकु सदा सचु सोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ हरि रसि भीने सदा धिआइनि गुरमति सीलु
 सन्नाहा हे ॥१॥ अंदरि रंगु सदा सचिआरा ॥ गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा ॥ नउ निधि नामु
 वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे ॥२॥ रईअति राजे दुरमति दोई ॥ बिनु सतिगुर
 सेवे एकु न होई ॥ एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा हे ॥३॥ आवणु जाणा रखै
 न कोई ॥ जंमणु मरणु तिसै ते होई ॥ गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे ॥४॥
 सचु संजमु सतिगुरु दुआरै ॥ हउमै क्रोधु सबदि निवारै ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईअै सीलु संतोखु
 सभु ताहा हे ॥५॥ हउमै मोहु उपजै संसारा ॥ सभु जगु बिनसै नामु विसारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे
 नामु न पाईअै नामु सचा जगि लाहा हे ॥६॥ सचा अमरु सबदि सुहाइआ ॥ पंच सबद मिलि

ਵਾਜਾ ਵਾਇਆ ॥ ਸਦਾ ਕਾਰਜੁ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹੇਲਾ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਕਾਰਜੁ ਕੇਹਾ ਹੈ ॥੭॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਹਸੈ ਖਿਨ
 ਮਹਿ ਰੋਵੈ ॥ ਟ੍ਰੌਜੀ ਦੁਰਮਤਿ ਕਾਰਜੁ ਨ ਹੋਵੈ ॥ ਸੰਜੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਕਰਤੈ ਲਿਖਿ ਪਾਏ ਕਿਰਤੁ ਨ ਚਲੈ ਚਲਾਹਾ ਹੈ ॥੮॥
 ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਏ ॥ ਹਰਿ ਸਿਉ ਸਦ ਹੀ ਰਹੈ ਸਮਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਹਉਮੈ
 ਰੋਗੁ ਨ ਤਾਹਾ ਹੈ ॥੯॥ ਰਸ ਕਸ ਖਾਏ ਪਿੰਡੁ ਵਥਾਏ ॥ ਭੇਖ ਕਰੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨ ਕਮਾਏ ॥ ਅੰਤਰਿ ਰੋਗੁ ਮਹਾ ਦੁਖੁ
 ਭਾਰੀ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਾ ਹੈ ॥੧੦॥ ਬੇਦ ਪਡਹਿ ਪਡਿ ਬਾਦੁ ਵਖਾਣਹਿ ॥ ਘਟ ਮਹਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਤਿਸੁ ਸਬਦਿ ਨ
 ਪਛਾਣਹਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਤਤੁ ਬਿਲੋਵੈ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਤਾਹਾ ਹੈ ॥੧੧॥ ਘਰਿ ਵਥੁ ਛੋਡਹਿ ਬਾਹਰਿ
 ਧਾਵਹਿ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਸਾਦੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ॥ ਅਨ ਰਸ ਰਾਤੀ ਰਸਨਾ ਫੀਕੀ ਬੋਲੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੂਲਿ ਨ ਤਾਹਾ ਹੈ
 ॥੧੨॥ ਮਨਮੁਖ ਦੇਹੀ ਭਰਮੁ ਭਤਾਰੇ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਮਰੈ ਨਿਤ ਹੋਇ ਖੁਆਰੇ ॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰਿਧਿ ਮਨੁ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਾਇਆ
 ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਤਾਹਾ ਹੈ ॥੧੩॥ ਕੰਚਨ ਦੇਹੀ ਸਬਦੁ ਭਤਾਰੇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭੋਗ ਭੋਗੇ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪਿਆਰੇ ॥
 ਮਹਲਾ ਅੰਦਰਿ ਗੈਰ ਮਹਲੁ ਪਾਏ ਭਾਣਾ ਬੁਝਿ ਸਮਾਹਾ ਹੈ ॥੧੪॥ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਨਹੀਂ
 ਕਿਸੈ ਕਾ ਚਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਬਖ਼ਸੇ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ਤਿਸ ਦਾ ਸਬਦੁ ਅਥਾਹਾ ਹੈ ॥੧੫॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਹੈ ਤਿਸੁ
 ਕੇਰਾ ॥ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਬਾਣੀ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਾਪਿ ਸਮਾਹਾ ਹੈ ॥੧੬॥੫॥
 ੧੪॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਦ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਆਪਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ
 ਕਰੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੂਰਾ ਪਾਇਦਾ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੂਆ ਤਲਟਿ ਪਰਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਾਣੀ ਨਾਦੁ ਵਜਾਵੈ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚਿ ਰਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਇਦਾ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਖੀ ਅੰਮ੍ਰਤ ਭਾਖੀ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦੇ
 ਸਚੁ ਸੁਭਾਖੀ ॥ ਸਦਾ ਸਚਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇਦਾ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ
 ਸਤ ਸਰਿ ਨਾਵੈ ॥ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਸਦ ਹੀ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਇਦਾ ॥੪॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਬੈਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਨੈਣੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਕਰਣੀ ॥ ਸਦ ਹੀ ਸਚੁ ਕਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਅਵਰਾ
 ਸਚੁ ਕਹਾਇਦਾ ॥੫॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੀ ਊਤਮ ਬਾਣੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਵਖਾਣੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦ ਸੇਵਹਿ

सचो सचा गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥६॥ गुरमुखि होवै सु सोझी पाए ॥ हउਮै माइआ भरमु गवाए
 ॥ गुर की पउड़ी ऊतम ऊची दरि सचै हरि गुण गाइदा ॥७॥ गुरमुखि सचु संजमु करणी सारु ॥ गुरमुखि
 पाए मोख दुआरु ॥ भाइ भगति सदा रंगि राता आਪु गवाइ समाइदा ॥८॥ गुरमुखि होवै मनु खोजि
 सुणाए ॥ सचै नामि सदा लिव लाए ॥ जो तिसु भावै सोई करसी जो सचे मनि भाइदा ॥९॥ जा तिसु
 भावै सतिगुरु मिलाए ॥ जा तिसु भावै ता मंनि वसाए ॥ आपणै भाणै सदा रंगि राता भाणै मंनि
 वसाइदा ॥१०॥ मनहठि करम करे सो छीजै ॥ बहुते भेख करे नही भीजै ॥ बिखिआ राते दुखु कमावहि
 दुखे दुखि समाइदा ॥११॥ गुरमुखि होवै सु सुखु कमाए ॥ मरण जीवण की सोझी पाए ॥ मरणु जीवणु जो
 सम करि जाणै सो मेरे प्रभ भाइदा ॥१२॥ गुरमुखि मरहि सु हहि परवाणु ॥ आवण जाणा सबदु
 पछाणु ॥ मरै न जंमै ना दुखु पाए मन ही मनहि समाइदा ॥१३॥ से वडभागी जिनी सतिगुरु पाइआ
 ॥ हउमै विचहु मोहु चुकाइआ ॥ मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै दरि सचै सोभा पाइदा ॥१४॥ आपे
 करे कराए आपे ॥ आपे वेखै थापि उथापे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भावै सचु सुणि लेखै पाइदा ॥१५॥
 गुरमुखि सचो सचु कमावै ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लावै ॥ नानक नामि रते वीचारी नामे नामि
 समाइदा ॥१६॥१॥१५॥ मारू महला ३ ॥ आपे सृसटि हुकमि सभ साजी ॥ आपे थापि उथापि
 निवाजी ॥ आपे निआउ करे सभु साचा साचे साचि मिलाइदा ॥१॥ काइआ कोटु है आकारा ॥
 माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ बिनु सबदै भसमै की ढेरी खेहू खेह रलाइदा ॥२॥ काइआ कंचन कोटु
 अपारा ॥ जिसु विचि रविआ सबदु अपारा ॥ गुरमुखि गावै सदा गुण साचे मिलि प्रीतम सुखु पाइदा
 ॥३॥ काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥ गुर कै सबदि
 वणजनि वापारी नदरी आपि मिलाइदा ॥४॥ सो सूचा जि करोधु निवारे ॥ सबदे बूझै आपु सवारे ॥
 आपे करे कराए करता आपे मंनि वसाइदा ॥५॥ निरमल भगति है निराली ॥ मनु तनु धोवहि

सबदि वीचारी ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता करि किरपा भगति कराइदा ॥६॥ इसु मन मंदर
 महि मनूआ धावै ॥ सुखु पलरि तिआगि महा दुखु पावै ॥ बिनु सतिगुर भेटे ठउर न पावै आपे खेलु
 कराइदा ॥७॥ आपि अपरंपरु आपि वीचारी ॥ आपे मेले करणी सारी ॥ किआ को कार करे
 वैचारा आपे बखसि मिलाइदा ॥८॥ आपे सतिगुरु मेले पूरा ॥ सचै सबदि महाबल सूरा ॥ आपे
 मेले दे वडिआई सचे सितु चितु लाइदा ॥९॥ घर ही अंदरि साचा सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै
 कोई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना नामु धिआइदा ॥१०॥ दिसंतरु भवै अंतरु नही
 भाले ॥ माइआ मोहि बधा जमकाले ॥ जम की फासी कबहू न तूटै दूजै भाइ भरमाइदा ॥११॥
 जपु तपु संजमु होरु कोई नही ॥ जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥ गुर कै सबदि मिलिआ सचु
 पाइआ सचे सचि समाइदा ॥१२॥ काम करोधु सबल संसारा ॥ बहु करम कमावहि सभु दुख का
 पसारा ॥ सतिगुर सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा ॥१३॥ पउणु पाणी है बैसंतरु ॥
 माइआ मोहु वरतै सभ अंतरि ॥ जिनि कीते जा तिसै पछाणहि माइआ मोहु चुकाइदा ॥१४॥
 इकि माइआ मोहि गरबि विआपे ॥ हउमै होइ रहे है आपे ॥ जमकालै की खबरि न पाई अंति
 गिआ पछुताइदा ॥१५॥ जिनि उपाए सो बिधि जाणै ॥ गुरमुखि देवै सबदु पछाणै ॥ नानक दासु
 कहै बेन्ती सचि नामि चितु लाइदा ॥१६॥२॥१६॥ मारू महला ३ ॥ आदि जुगादि दइआपति
 दाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ तुधुनो सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा
 ॥१॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ जितु तुधु भावै तिवै चलावहि
 तू आपे मारगि पाइदा ॥२॥ है भी साचा होसी सोई ॥ आपे साजे अवरु न कोई ॥ सभना सार
 करे सुखदाता आपे रिजकु पहुचाइदा ॥३॥ अगम अगोचरु अलख अपारा ॥ कोइ न जाणै तेरा
 परवारा ॥ आपणा आपु पछाणहि आपे गुरमती आपि बुझाइदा ॥४॥ पाताल पुरीआ लोअ

आकारा ॥ तिसु विचि वरतै हुकमु करारा ॥ हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा ॥५॥
 हुकमै बूझै सु हुकमु सलाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा
 ॥६॥ अनदिनु आरजा छिजदी जाए ॥ रैणि दिनसु दुइ साखी आए ॥ मनमुखु अंधु न चेतै मूळा सिर
 ऊपरि कालु रूआइदा ॥७॥ मनु तनु सीतलु गुर चरणी लागा ॥ अंतरि भरमु गडिआ भत भागा ॥
 सदा अन्नदु सचे गुण गावहि सचु बाणी बोलाइदा ॥८॥ जिनि तू जाता करम बिधाता ॥ पूरै भागि
 गुर सबदि पछाता ॥ जति पति सचु सचा सचु सोई हउमै मारि मिलाइदा ॥९॥ मनु कठोरु दूजै भाइ
 लागा ॥ भरमे भूला फिरै अभागा ॥ करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइदा ॥१०॥ लख
 चउरासीह आपि उपाए ॥ मानस जनमि गुर भगति दृढ़ाए ॥ बिनु भगती बिसटा विचि वासा बिसटा
 विचि फिरि पाइदा ॥११॥ करमु होवै गुरु भगति दृढ़ाए ॥ विणु करमा किउ पाइआ जाए ॥ आपे
 करे कराए करता जिउ भावै तिवै चलाइदा ॥१२॥ सिमृति सासत अंतु न जाणै ॥ मूरखु अंधा ततु न
 पछाणै ॥ आपे करे कराए करता आपे भरमि भुलाइदा ॥१३॥ सभु किछु आपे आपि कराए ॥
 आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ आपे थापि उथापे वेखै गुरमुखि आपि बुझाइदा ॥१४॥ सचा साहिबु
 गहिर गंभीरा ॥ सदा सलाही ता मनु धीरा ॥ अगम अगोचरु कीमति नहीं पाई गुरमुखि मंनि
 वसाइदा ॥१५॥ आपि निरालमु होर धंधै लोई ॥ गुर परसादी बूझै कोई ॥ नानक नामु वसै घट
 अंतरि गुरमती मेलि मिलाइदा ॥१६॥३॥१७॥ मारू महला ३ ॥ जुग छतीह कीओ गुबारा ॥ तू आपे
 जाणहि सिरजणहारा ॥ होर किआ को कहै कि आखि वखाणै तू आपे कीमति पाइदा ॥१॥ ओअंकारि सभ
 सृसटि उपाई ॥ सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई ॥ आपे वेक करे सभि साचा आपे भनि घडाइदा
 ॥२॥ बाजीगरि इक बाजी पाई ॥ पूरे गुर ते नदरी आई ॥ सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सित
 चितु लाइदा ॥३॥ बाजहि बाजे धुनि आकारा ॥ आपि वजाए वजावणहारा ॥ घटि घटि पउणु वहै

इक रंगी मिलि पवणै सभ वजाइदा ॥४॥ करता करे सु निहचउ होवै ॥ गुर कै सबदे हउमै खोवै ॥
 गुर परसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइदा ॥५॥ गुर सेवे जेवडु होरु लाहा नाही ॥ नामु
 मनि वसै नामो सालाही ॥ नामो नामु सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा ॥६॥ बिनु नावै सभ दुखु
 संसार ॥ बहु करम कमावहि वधहि विकारा ॥ नामु न सेवहि किउ सुखु पाईਐ बिनु नावै दुखु
 पाइदा ॥७॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ गुर परसादी किसै बुझाए ॥ गुरमुखि होवहि से बंधन तोड़हि
 मुक्ती कै घरि पाइदा ॥८॥ गणत गणै सो जलै संसारा ॥ सहसा मूलि न चुकै विकारा ॥ गुरमुखि होवै
 सु गणत चुकाए सचे सचि समाइदा ॥९॥ जे सचु देइ त पाए कोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥
 सचु नामु सालाहे रंगि राता गुर किरणा ते सुखु पाइदा ॥१०॥ जपु तपु संजमु नामु पिआरा ॥
 किलविख काटे काटणहारा ॥ हरि कै नामि तनु मनु सीतलु होआ सहजे सहजि समाइदा ॥११॥
 अंतरि लोभु मनि मैलै मलु लाए ॥ मैले करम करे दुखु पाए ॥ कूड़ो कूड़ु करे वापारा कूड़ु बोलि दुखु
 पाइदा ॥१२॥ निरमल बाणी को मनि वसाए ॥ गुर परसादी सहसा जाए ॥ गुर कै भाणै चलै दिनु
 राती नामु चेति सुखु पाइदा ॥१३॥ आपि सिरंदा सचा सोई ॥ आपि उपाइ खपाए सोई ॥ गुरमुखि
 होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥१४॥ अनेक जतन करे इंद्री वसि न होई ॥ कामि करोधि
 जलै सभु कोई ॥ सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा ॥१५॥ मेरा तेरा तुधु आपे
 कीआ ॥ सभि तेरे जंत तेरे सभि जीआ ॥ नानक नामु समालि सदा तू गुरमती मनि वसाइदा
 ॥१६॥४॥१८॥ मारू महला ३ ॥ हरि जीउ दाता अगम अथाहा ॥ ओसु तिलु न तमाइ वेपरवाहा ॥
 तिस नो अपड़ि न सकै कोई आपे मेलि मिलाइदा ॥१॥ जो किछु करै सु निहचउ होई ॥ तिसु बिनु
 दाता अवरु न कोई ॥ जिस नो नाम दानु करे सो पाए गुर सबदी मेलाइदा ॥२॥ चउदह
 भवण तेरे हटनाले ॥ सतिगुरि दिखाए अंतरि नाले ॥ नावै का वापारी होवै गुर सबदी को

ਪਾਇਦਾ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿਐ ਸਹਜ ਅਨਨਦਾ ॥ ਹਿਰਦੈ ਆਇ ਕੁਠਾ ਗੋਵਿੰਦਾ ॥ ਸਹਜੇ ਭਗਤਿ ਕਰੇ
 ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਆਪੇ ਭਗਤਿ ਕਰਾਇਦਾ ॥੪॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਵਿਛੁਡੇ ਤਿਨੀ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਮਾਰੀਅਹਿ
 ਦੁਖੁ ਸਬਾਇਆ ॥ ਮਥੇ ਕਾਲੇ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਦੁਖ ਹੀ ਵਿਚਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਸੇ
 ਕਵਡਭਾਗੀ ॥ ਸਹਜ ਭਾਇ ਸਚੀ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਦ ਹੀ ਸਚੈ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਦਾ ॥੬॥ ਜਿਸ ਨੋ
 ਸਚਾ ਦੇਇ ਸੁ ਪਾਏ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸਾਚੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਸਚੁ ਸਚੈ ਕਾ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਜਿਸੁ ਦੇਵੈ ਸੋ ਸਚੁ ਪਾਇਦਾ ॥੭॥
 ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਸਭਨਾ ਕਾ ਸੋਈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਬੂੜ੍ਹੈ ਕੋਈ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਆਪੇ ਮੇਲਿ
 ਮਿਲਾਇਦਾ ॥੮॥ ਹਉਮੈ ਕਰਦਿਆ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਆਗੈ ਮੋਹੁ ਨ ਚੂਕੈ ਮਾਇਆ ॥ ਅਗੈ ਜਮਕਾਲੁ ਲੇਖਾ
 ਲੇਵੈ ਜਿਤ ਤਿਲ ਘਾਣੀ ਪੀਡਾਇਦਾ ॥੯॥ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਹੋਈ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਸੇਵੇ ਕੋਈ ॥ ਜਮਕਾਲੁ
 ਤਿਸੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਮਹਲਿ ਸਚੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੦॥ ਤਿਨ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਏ ॥ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ
 ਲਾਏ ॥ ਤੈਰੈ ਹਥਿ ਹੈ ਸਭ ਵਡਿਆਈ ਜਿਸੁ ਦੇਵਹਿ ਸੋ ਪਾਇਦਾ ॥੧੧॥ ਅੰਦਰਿ ਪਰਗਾਸੁ ਗੁਰੁ ਤੇ ਪਾਏ ॥ ਨਾਮੁ
 ਪਦਾਰਥੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਸਦਾ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰੁ ਗਵਾਇਦਾ ॥੧੨॥
 ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੇ ਦ੍ਰੌਜੈ ਲਾਗੇ ॥ ਬਿਨੁ ਪਾਣੀ ਝੁਬਿ ਮ੍ਰਾਏ ਅਭਾਗੇ ॥ ਚਲਦਿਆ ਘਰ ਦਰੁ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੈ ਜਮ
 ਦਰਿ ਬਾਧਾ ਦੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੩॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਪ੍ਰਛਹੁ ਕੋਈ ॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਇਦਾ ॥੧੪॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਸੇਵੇ ਤਿਸੁ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ
 ॥ ਮਮਤਾ ਕਾਟਿ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਸਦਾ ਸਚੁ ਵਣਜਹਿ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਮੋ ਲਾਹਾ ਪਾਇਦਾ ॥੧੫॥ ਆਪੇ ਕਰੇ
 ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਸੋਈ ਜਨੁ ਮੁਕਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਕਸੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦਾ
 ॥੧੬॥੫॥੧੬॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੋ ਤੁਧੁ ਕਰਣਾ ਸੋ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ॥ ਭਾਣੇ ਵਿਚਿ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਆਇਆ
 ॥ ਭਾਣਾ ਮਨੇ ਸੋ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਭਾਣੇ ਵਿਚਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ਭਾਵੈ ॥ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਸਚੁ
 ਕਮਾਵੈ ॥ ਭਾਣੇ ਨੋ ਲੋਚੈ ਬਹੁਤੇਰੀ ਆਪਣਾ ਭਾਣਾ ਆਪਿ ਮਨਾਇਦਾ ॥੨॥ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ਮਨੇ ਸੁ ਮਿਲੈ ਤੁਧੁ

ਆਏ ॥ ਜਿਸੁ ਭਾਣਾ ਭਾਵੈ ਸੋ ਤੁੜਾਹਿ ਸਮਾਏ ॥ ਭਾਣੇ ਵਿਚਿ ਕਡੀ ਵਡਿਆਈ ਭਾਣਾ ਕਿਸਹਿ ਕਰਾਇਦਾ ॥੩॥
 ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਗੁਰੂ ਮਿਲਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਏ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਸਭ ਸ੍ਰਸਟਿ ਉਪਾਈ
 ਜਿਸ ਨੋ ਭਾਣਾ ਦੇਹਿ ਤਿਸੁ ਭਾਇਦਾ ॥੪॥ ਮਨਮੁਖੁ ਅੰਧੁ ਕਰੇ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਭਾਣਾ ਨ ਮਨੇ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥
 ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਆਵੈ ਜਾਏ ਘਰੁ ਮਹਲੁ ਨ ਕਬਹੂ ਪਾਇਦਾ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ
 ਧੁਰਿ ਫੁਰਮਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਤਾ ਨਾਮੁ ਪਾਏ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੬॥ ਸਭ ਨਾਵਹੁ ਉਪਜੈ ਨਾਵਹੁ ਛੀਜੈ
 ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਨੁ ਤਨੁ ਭੀਜੈ ॥ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਰਸਿ ਭੀਜੈ ਰਸ ਹੀ ਤੇ ਰਸੁ ਪਾਇਦਾ ॥੭॥ ਮਹਲੈ
 ਅੰਦਰਿ ਮਹਲੁ ਕੋ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਚਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਸਚੁ ਦੇਇ ਸੋਈ ਸਚੁ ਪਾਏ ਸਚੇ ਸਚਿ
 ਮਿਲਾਇਦਾ ॥੮॥ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਰੋਗੁ ਕਮਾਇਆ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ
 ਮਨੁ ਤਨੁ ਹੈ ਕੁਸਟੀ ਨਰਕੇ ਵਾਸਾ ਪਾਇਦਾ ॥੯॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਨਿਰਮਲ ਦੇਹਾ ॥ ਨਿਰਮਲ ਛਾਸਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ
 ਨੇਹਾ ॥ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਇਦਾ ॥੧੦॥ ਸਭੁ ਕੋ ਵਣਜੁ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥
 ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਤੋਟਾ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਨਾਗੇ ਆਇਆ ਨਾਗੇ ਜਾਸੀ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੧॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਾਮੁ
 ਦੇਇ ਸੋ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੋ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਇਦਾ ॥੧੨॥ ਨਾਵੈ ਨੋ ਲੋਚੈ ਜੇਤੀ ਸਭ ਆਈ ॥ ਨਾਤ ਤਿਨਾ ਮਿਲੈ ਧੁਰਿ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਈ ॥ ਜਿਨੀ ਨਾਤ
 ਪਾਇਆ ਸੇ ਕਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਇਦਾ ॥੧੩॥ ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਅਤਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਬਹਿ
 ਪ੍ਰਭੁ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਸਚਾ ਨਿਆਤ ਸਚੋ ਵਾਪਾਰਾ ਨਿਹਚਲੁ ਵਾਸਾ ਪਾਇਦਾ ॥੧੪॥ ਅੰਤਰ ਘਰ ਬੰਕੇ ਥਾਨੁ
 ਸੁਹਾਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਥਾਨੁ ਪਾਇਆ ॥ ਇਤੁ ਸਾਥਿ ਨਿਬਹੈ ਸਾਲਾਹੇ ਸਚੇ ਹਰਿ ਸਚਾ ਮੰਨਿ
 ਵਸਾਇਦਾ ॥੧੫॥ ਮੇਰੈ ਕਰਤੈ ਇਕ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਇਸੁ ਦੇਹੀ ਵਿਚਿ ਸਭ ਵਥੁ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
 ਵਣਜਹਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੬॥੬॥੨੦॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਕਾਇਆ ਕਂਚਨੁ ਸਬਦੁ
 ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਤਿਥੈ ਹਰਿ ਵਸੈ ਜਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਸੇਵਿਹੁ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਜੀਤ

सबदि मिलाइदा ॥੧॥ हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ गुर कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥
 तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाइदा ॥੨॥ हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ
 भावा ॥ अंतरि हरि नामु सबदि सुहावा ॥ गुरबाणी चहु कुंडी सुणीअै साचै नामि समाइदा ॥੩॥ सो
 जनु साचा जि अंतरु भाले ॥ गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले ॥ गिआन अंजनु पाए गुर सबदी नदरी
 नदरि मिलाइदा ॥੪॥ वडै भागि इहु सरीरु पाइआ ॥ माणस जनमि सबदि चितु लाइआ ॥ बिनु
 सबदै सभु अंध अंधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा ॥੫॥ इकि कितु आए जनमु गवाए ॥ मनमुख लागे
 दूजै भाए ॥ एह वेला फिरि हाथि न आवै पगि खिसिअै पछुताइदा ॥੬॥ गुर कै सबदि पवित्र सरीरा
 ॥ तिसु विचि वसै सचु गुणी गहीरा ॥ सचो सचु वेखै सभ थाई सचु सुणि मनि वसाइदा ॥੭॥ हउमै
 गणत गुर सबदि निवारे ॥ हरि जीउ हिरदै रखहु उर धारे ॥ गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे
 सुखु पाइदा ॥੮॥ सो चेते जिसु आपि चेताए ॥ गुर कै सबदि वसै मनि आए ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपै
 आपु समाइदा ॥੯॥ जिनि मन विचि वथु पाई सोई जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ आपु पछाणै
 सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा ॥੧੦॥ एह काइआ पवितु है सरीरु ॥ गुर सबदी चेतै
 गुणी गहीरु ॥ अनदिनु गुण गावै रंगि राता गुण कहि गुणी समाइदा ॥੧੧॥ एहु सरीरु सभ मूलु
 है माइआ ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाइआ ॥ हरि न चेतै सदा दुखु पाए बिनु हरि चेते दुखु पाइदा
 ॥੧੨॥ जि सतिगुरु सेवे सो परवाणु ॥ काइआ ह्वासु निरमलु दरि सचै जाणु ॥ हरि सेवे हरि मनि
 वसाए सोहै हरि गुण गाइदा ॥੧੩॥ बिनु भागा गुरु सेविआ न जाइ ॥ मनमुख भूले मुए बिललाइ
 ॥ जिन कउ नदरि होवै गुर केरी हरि जीउ आपि मिलाइदा ॥੧੪॥ काइआ कोटु पके हटनाले ॥
 गुरमुखि लेवै वसतु समाले ॥ हरि का नामु धिआइ दिनु राती ऊतम पदवी पाइदा ॥੧੫॥ आपे
 सचा है सुखदाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ नानक नामु सलाहे साचा पूरै भागि को पाइदा

॥੧੬॥੭॥੨੧॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਿਰਕਾਰਿ ਆਕਾਰੁ ਤਪਾਇਆ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਹੁਕਮਿ ਬਣਾਇਆ ॥
 ਆਪੇ ਖੇਲ ਕਰੇ ਸਭਿ ਕਰਤਾ ਸੁਣਿ ਸਾਚਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਦਾ ॥੧॥ ਮਾਇਆ ਮਾਈ ਤੈ ਗੁਣ ਪਰਸੂਤਿ ਜਮਾਇਆ ॥
 ਚਾਰੇ ਬੇਦ ਬ੍ਰਹਮੇ ਨੋ ਫੁਰਮਾਇਆ ॥ ਕੂਰੈ ਮਾਹ ਵਾਰ ਥਿਤੀ ਕਰਿ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਸੋਝੀ ਪਾਇਦਾ ॥੨॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ
 ਤੇ ਕਰਣੀ ਸਾਰ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਾਖਹੁ ਤਰਿ ਧਾਰ ॥ ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਰਤੀ ਜਗ ਅੰਤਰਿ ਇਸੁ ਬਾਣੀ ਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਪਾਇਦਾ ॥੩॥ ਵੇਦੁ ਪਡੈ ਅਨਦਿਨੁ ਵਾਦ ਸਮਾਲੇ ॥ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤੈ ਬਧਾ ਜਮਕਾਲੇ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਏ
 ਤੈ ਗੁਣ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਦਾ ॥੪॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕਸੁ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਏ ॥ ਸਾਚੈ
 ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਹੈ ਸੁਕਤਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਦਾ ॥੫॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਰਾਤੇ ਸੇ ਹੁਣਿ ਰਾਤੇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਹਜੇ
 ਸਾਤੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਆਪੈ ਆਪੁ ਮਿਲਾਇਦਾ ॥੬॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਭਰਮਿ ਨ ਪਾਏ ॥
 ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਲਗਾ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਸੂਹਾ ਰੰਗੁ ਦਿਨ ਥੋਡੇ ਹੋਵੈ ਇਸੁ ਜਾਦੇ ਬਿਲਮ ਨ ਲਾਇਦਾ ॥੭॥ ਏਹੁ ਮਨੁ ਭੈ ਭਾਇ
 ਰੰਗਾਏ ॥ ਇਤੁ ਰੰਗ ਸਾਚੇ ਮਾਹਿ ਸਮਾਏ ॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਕੋ ਇਹੁ ਰੰਗੁ ਪਾਏ ਗੁਰਮਤੀ ਰੰਗੁ ਚੜਾਇਦਾ ॥੮॥
 ਮਨਮੁਖੁ ਬਹੁਤੁ ਕਰੇ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਦਰਗਹ ਕਬ ਹੀ ਨ ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਲਾਗੇ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਬਿਨੁ ਕ੍ਰੋਝੇ ਦੁਖੁ
 ਪਾਇਦਾ ॥੯॥ ਮੇਰੈ ਪ੍ਰਭਿ ਅੰਦਰਿ ਆਪੁ ਲੁਕਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਸਚਾ ਪ੍ਰਭੁ
 ਸਚਾ ਵਾਪਾਰਾ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੦॥ ਇਸੁ ਕਾਇਆ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈ ॥ ਮੇਰੈ ਠਾਕੁਰਿ ਇਹਿ
 ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਕਾਇਆ ਸੋਈ ਆਪਹਿ ਆਪੁ ਮਿਲਾਇਦਾ ॥੧੧॥ ਕਾਇਆ ਵਿਚਿ ਤੋਟਾ
 ਕਾਇਆ ਵਿਚਿ ਲਾਹਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜੇ ਵੇਪਰਵਾਹਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ
 ਮਿਲਾਇਦਾ ॥੧੨॥ ਸਚਾ ਮਹਲੁ ਸਚੇ ਘੰਡਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਲਾਹੇ ਸੁਖਦਾਤੇ ਮਨਿ
 ਮੇਲੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਦਾ ॥੧੩॥ ਕਾਇਆ ਵਿਚਿ ਵਸਤੁ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
 ਜਿਸ ਦਾ ਹਟੁ ਸੋਈ ਕਥੁ ਜਾਣੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਇ ਨ ਪਛੋਤਾਇਦਾ ॥੧੪॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ
 ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ਜਾਈ ॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ਆਪੇ ਸਬਦੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਦਾ ॥੧੫॥

आपे सचा सबदि मिलाए ॥ सबदे विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई नामे ही सुखु
 पाइदा ॥੧੬॥੮॥੨੨॥ मारू महला ੩ ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ आपे मिहरवान अगम अथाहे ॥
 अपड़ि कोइ न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ ॥੧॥ तुधुनो सेवहि जो तुधु भावहि ॥ गुर कै सबदे
 सचि समावहि ॥ अनदिनु गुण रवहि दिनु राती रसना हरि रसु भाइआ ॥੨॥ सबदि मरहि से मरणु
 सवारहि ॥ हरि के गुण हिरदै उर धारहि ॥ जनमु सफलु हरि चरणी लागे दूजा भाउ चुकाइआ ॥੩॥
 हरि जीउ मेले आपि मिलाए ॥ गुर कै सबदे आपु गवाए ॥ अनदिनु सदा हरि भगती राते इसु जग
 महि लाहा पाइआ ॥੪॥ तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई ॥ अंतु न पारा कीमति नहीं पाई ॥ आपे
 दइआ करे सुखदाता गुण महि गुणी समाइआ ॥੫॥ इसु जग महि मोहु है पासारा ॥ मनमुखु
 अगिआनी अंधु अंधारा ॥ धंधै धावतु जनमु गवाइआ बिनु नावै दुखु पाइआ ॥੬॥ करमु होवै ता
 सतिगुरु पाए ॥ हउमै मैलु सबदि जलाए ॥ मनु निरमलु गिआनु रतनु चानणु अगिआनु अंधेरु
 गवाइआ ॥੭॥ तेरे नाम अनेक कीमति नहीं पाई ॥ सचु नामु हरि हिरदै वसाई ॥ कीमति कउणु
 करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइआ ॥੮॥ नामु अमोलकु अगम अपारा ॥ ना को होआ तोलणहारा ॥
 आपे तोले तोलि तोलाए गुर सबदी मेलि तोलाइआ ॥੯॥ सेवक सेवहि करहि अरदासि ॥ तू आपे
 मेलि बहालहि पासि ॥ सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि धिआइआ ॥੧੦॥ जतु सतु संजमु जि
 सचु कमावै ॥ इहु मनु निरमलु जि हरि गुण गावै ॥ इसु बिखु महि अंमृतु परापति होवै हरि जीउ
 मेरे भाइआ ॥੧੧॥ जिस नो बुझाए सोई बूझै ॥ हरि गुण गावै अंदरु सूझै ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाए
 सहजे ही सचु पाइआ ॥੧੨॥ बिनु करमा होर फिरै घनेरी ॥ मरि मरि जंमै चुकै न फेरी ॥ बिखु का राता
 बिखु कमावै सुखु न कबहू पाइआ ॥੧੩॥ बहुते भेख करे भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनै न मारी ॥
 जीवतु मरै ता मुकति पाए सचै नाइ समाइआ ॥੧੪॥ अगिआनु तृसना इसु तनहि जलाए ॥

ਤਿਸ ਦੀ ਬੂਜੈ ਜਿ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਏ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨਿਵਾਰੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧੫॥ ਸਚਾ
 ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਵਿਰਲੈ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ
 ॥੧੬॥੧॥੨੩॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਦਰੀ ਭਗਤਾ ਲੈਹੁ ਮਿਲਾਏ ॥ ਭਗਤ ਸਲਾਹਨਿ ਸਦਾ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
 ਤਤ ਸਰਣਾਈ ਤਥਰਹਿ ਕਰਤੇ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧॥ ਪ੍ਰੈ ਸਬਦਿ ਭਗਤਿ ਸੁਹਾਈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸੁਖੁ
 ਤੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਚੀ ਭਗਤੀ ਰਾਤਾ ਸਚੇ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥੨॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸਦ ਜਲੈ
 ਸਰੀਰਾ ॥ ਕਰਮੁ ਹੋਕੈ ਭੇਟੇ ਗੁਰ ਪ੍ਰੌਦਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਅਗਿਆਨੁ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਏ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥
 ਮਨਮੁਖੁ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਏ ॥ ਬਹੁ ਸੰਕਟ ਜੋਨੀ ਭਰਮਾਏ ॥ ਜਮ ਕਾ ਜੇਵੜਾ ਕਦੇ ਨ ਕਾਟੈ ਅੰਤੇ ਬਹੁ ਦੁਖੁ
 ਪਾਇਆ ॥੪॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਰਖੈ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਮਨੁ ਮਾਰੇ
 ਹਉਮੈ ਜਾਇ ਸਮਾਇਆ ॥੫॥ ਆਵਣ ਜਾਣੈ ਪਰਜ ਵਿਗੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਥਿਰੁ ਕੋਇ ਨ ਹੋਈ ॥ ਅੰਤਰਿ
 ਜੋਤਿ ਸਬਦਿ ਸੁਖੁ ਵਸਿਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੬॥ ਪੰਚ ਢੂਤ ਚਿਤਵਹਿ ਵਿਕਾਰਾ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਕਾ ਏਹੁ
 ਪਸਾਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਤਾ ਮੁਕਤੁ ਹੋਕੈ ਪੰਚ ਢੂਤ ਵਸਿ ਆਇਆ ॥੭॥ ਬਾਝੁ ਗੁਰੁ ਹੈ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰਾ ॥ ਫਿਰਿ
 ਫਿਰਿ ਝੁਕੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਸਚੁ ਦ੃ੜਾਏ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥੮॥ ਸਾਚਾ ਦੁਰੁ ਸਾਚਾ
 ਦਰਵਾਰਾ ॥ ਸਚੇ ਸੇਵਹਿ ਸਬਦਿ ਪਿਆਰਾ ॥ ਸਚੀ ਧੁਨਿ ਸਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਸਚੇ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥੯॥ ਘਰੈ
 ਅੰਦਰਿ ਕੋ ਘਰੁ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥ ਓਥੈ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆ
 ॥੧੦॥ ਢੂਜੈ ਭਾਇ ਦੁਸਟਾ ਕਾ ਵਾਸਾ ॥ ਭਤਦੇ ਫਿਰਹਿ ਬਹੁ ਮੋਹ ਪਿਆਸਾ ॥ ਕੁਸੰਗਤਿ ਬਹਹਿ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ
 ਦੁਖੋ ਦੁਖੁ ਕਮਾਇਆ ॥੧੧॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝਹੁ ਸੰਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੇ ਪਾਰੁ ਨ ਪਾਏ ਕੋਈ ॥ ਸਹਜੇ
 ਗੁਣ ਰਖਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧੨॥ ਕਾਇਆ ਬਿਰਖੁ ਪੰਖੀ ਵਿਚਿ ਵਾਸਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਚੁਗਹਿ
 ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਸਾ ॥ ਤਡਹਿ ਨ ਮੂਲੇ ਨ ਆਵਹਿ ਨ ਜਾਹੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਇਆ ॥੧੩॥ ਕਾਇਆ
 ਸੋਧਹਿ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਹਿ ॥ ਮੋਹ ਠਗਤਰੀ ਭਰਮੁ ਨਿਵਾਰਹਿ ॥ ਆਪੇ ਕੁਪਾ ਕਰੇ ਸੁਖਦਾਤਾ ਆਪੇ ਮੇਲਿ

ਮਿਲਾਇਆ ॥੧੪॥ ਸਦ ਹੀ ਨੇਡੈ ਦੂਰਿ ਨ ਜਾਣਹੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਨਜੀਕਿ ਪਛਾਣਹੁ ॥ ਬਿਗਸੈ ਕਮਲੁ ਕਿਰਣਿ
ਪਰਗਾਸੈ ਪਰਗਟੁ ਕਰਿ ਦੇਖਾਇਆ ॥੧੫॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥ ਆਪੇ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲੇ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੧੬॥੨॥੨੪॥

ਮਾਰ੍ਹ ਸੋਲਹੇ ਮਹਲਾ ੪

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਚਾ ਆਪਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥ ਅਵਰ ਨ ਸੂਝਾਸਿ ਬੀਜੀ ਕਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਵਸੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜੇ ਸਚਿ
ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੧॥ ਸਭਨਾ ਸਚੁ ਵਸੈ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਹਜਿ ਸਮਾਹੀ ॥ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤ ਸਦਾ ਸੁਖੁ
ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈ ਹੈ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੈ ਗਿਆਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੈ ਪ੍ਰਯਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀ ਅਵਰੁ
ਨ ਦ੍ਰਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਰਤਨ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਭਾਈ ਹੈ ॥੩॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਜੋ ਟ੍ਰੌਜੈ
ਲਾਗੇ ॥ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ਭ੍ਰਮਿ ਮਰਹਿ ਅਭਾਗੇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੀ ਫਿਰਿ ਗਤਿ ਹੋਵੈ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹਹਿ ਸਰਣਾਈ
ਹੈ ॥੪॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਹੈ ਸਾਚੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਮਾਗਤ ਨਾਮੁ ਅਜਾਚੀ ॥ ਹੋਹੁ ਦਿਆਲੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ
ਹਰਿ ਜੀਤ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਹੈ ॥੫॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਚੁਆਇਆ ॥ ਦਸਵੈ ਦੁਆਰਿ ਪ੍ਰਗਟੁ
ਹੋਇ ਆਇਆ ॥ ਤਹ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਵਜਹਿ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੬॥ ਜਿਨ ਕਤ ਕਰਤੈ
ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤ ਵਿਹਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੋ ਸੀਝੈ ਨਾਹੀ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ
ਲਾਈ ਹੈ ॥੭॥ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਲੇਇ ॥ ਆਪੇ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ
ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੮॥ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਮਨਿ ਪਰਗਟੁ ਭਇਆ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਸਹਜੇ ਲਿਆ ॥
ਏਹ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਸਤਿਗੁਰ ਕਤ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈ ਹੈ ॥੯॥ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਸੂਰੁ ਨਿਸਿ ਮਿਟਿਆ
ਅੰਧਿਆਰਾ ॥ ਅਗਿਆਨੁ ਮਿਟਿਆ ਗੁਰ ਰਤਨਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਰਤਨੁ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ
ਸੁਖੁ ਪਾਈ ਹੈ ॥੧੦॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਗਟੀ ਹੈ ਸੋਇ ॥ ਚਹੁ ਜੁਗਿ ਨਿਰਮਲੁ ਹਛਾ ਲੋਇ ॥ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਰਤੇ
ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਨਾਮਿ ਰਹਿਆ ਲਿਵ ਲਾਈ ਹੈ ॥੧੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ॥ ਸਹਜੇ ਜਾਗੈ ਸਹਜੇ

सोवै ॥ गुरमुखि नामि समाइ समावै नानक नामु धिआई हे ॥੧੨॥ भगता मुखि अंमृत है बाणी ॥
 गुरमुखि हरि नामु आखि वखाणी ॥ हरि हरि करत सदा मनु बिगसै हरि चरणी मनु लाई हे ॥੧੩॥
 हम मूरख अगिआन गिआनु किछु नाही ॥ सतिगुर ते समझ पड़ी मन माही ॥ होहु दिआलु कृपा
 करि हरि जीउ सतिगुर की सेवा लाई हे ॥੧੪॥ जिनि सतिगुरु जाता तिनि एकु पछाता ॥ सरबे रवि
 रहिआ सुखदाता ॥ आतमु चीनि परम पदु पाइआ सेवा सुरति समाई हे ॥੧੫॥ जिन कउ आदि
 मिली वडिआई ॥ सतिगुरु मनि वसिआ लिव लाई ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता नानक अंकि
 समाई हे ॥੧੬॥੧॥ मारू महला ४ ॥ हरि अगम अगोचरु सदा अबिनासी ॥ सरबे रवि रहिआ घट
 वासी ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई दाता हरि तिसहि सरेवहु प्राणी हे ॥੨॥ जा कउ राखै हरि राखणहारा
 ॥ ता कउ कोड़ि न साकसि मारा ॥ सो औसा हरि सेवहु संतहु जा की ऊतम बाणी हे ॥੩॥ जा जापै किछु
 किथाऊ नाही ॥ ता करता भरपूरि समाही ॥ सूके ते फुनि हरिआ कीतोनु हरि धिआवहु चोज विडाणी हे
 ॥੪॥ जो जीआ की वेदन जाणै ॥ तिसु साहिब कै हउ कुरबाणै ॥ तिसु आगै जन करि बेन्ती जो सरब
 सुखा का दाणी हे ॥੫॥ जो जीअै की सार न जाणै ॥ तिसु सिउ किछु न कहीअै अजाणै ॥ मूरख सिउ नह
 लूझु पराणी हरि जपीअै पदु निरबाणी हे ॥੬॥ ना करि चिंत चिंता है करते ॥ हरि देवै जलि थलि
 जंता सभतै ॥ अचिंत दानु देइ प्रभु मेरा विचि पाथर कीट पखाणी हे ॥੭॥ ना करि आस मीत सुत
 भाई ॥ ना करि आस किसै साह बिउहार की पराई ॥ बिनु हरि नावै को बेली नाही हरि जपीअै
 सारंगपाणी हे ॥੮॥ अनदिनु नामु जपहु बनवारी ॥ सभ आसा मनसा पूरै थारी ॥ जन नानक नामु
 जपहु भव खंडनु सुखि सहजे रैणि विहाणी हे ॥੯॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही
 हरि नामि समाइआ ॥ जो सरणि परै तिस की पति राखै जाइ पूछहु वेद पुराणी हे ॥੧੦॥ जिसु हरि
 सेवा लाए सोई जनु लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ विचे गृह सदा रहै उदासी जिउ कमलु

रहै विचि पाणी हे ॥१०॥ विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ सो तपु पूरा
साई सेवा जो हरि मेरे मनि भाणी हे ॥११॥ हउ किआ गुण तेरे आखा सुआमी ॥ तू सरब जीआ का
अंतरजामी ॥ हउ मागउ दानु तुझ्यै पहि करते हरि अनदिनु नामु वखाणी हे ॥१२॥ किस ही जोरु अह्यकार
बोलण का ॥ किस ही जोरु दीबान माइआ का ॥ मै हरि बिनु टेक धर अवर न काई तू करते राखु मै
निमाणी हे ॥१३॥ निमाणे माणु करहि तुधु भावै ॥ होर केती झाखि झाखि आवै जावै ॥ जिन का पखु करहि
तू सुआमी तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ॥१४॥ हरि हरि नामु जिनी सदा धिआइआ ॥ तिनी
गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ बिनु सेवा पछोताणी हे
॥१५॥ तू सभ महि वरतहि हरि जगन्नाथु ॥ सो हरि जपै जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ हरि की सरणि
पडिआ हरि जापी जनु नानकु दासु दसाणी हे ॥१६॥२॥

मारू सोलहे महला ५

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

कला उपाइ धरी जिनि धरणा ॥ गगनु रहाइआ हुकमे चरणा ॥ अगनि उपाइ ईधन महि बाधी सो
प्रभु राखै भाई हे ॥१॥ जीअ जंत कउ रिजकु संबाहे ॥ करण कारण समरथ आपाहे ॥ खिन महि थापि
उथापनहारा सोई तेरा सहाई हे ॥२॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपालिआ ॥ सासि ग्रासि होइ संगि
समालिआ ॥ सदा सदा जपीओ सो प्रीतमु वडी जिसु वडिआई हे ॥३॥ सुलतान खान करे खिन कीरे
॥ गरीब निवाजि करे प्रभु मीरे ॥ गरब निवारण सरब सधारण किछु कीमति कही न जाई हे ॥४॥
सो पतिवंता सो धनवंता ॥ जिसु मनि वसिआ हरि भगवंता ॥ मात पिता सुत बंधप भाई जिनि इह
सृसटि उपाई हे ॥५॥ प्रभ आए सरणा भउ नही करणा ॥ साधसंगति निहचउ है तरणा ॥ मन बच
करम अराधे करता तिसु नाही कदे सजाई हे ॥६॥ गुण निधान मन तन महि रविआ ॥ जनम मरण
की जोनि न भविआ ॥ दूख बिनास कीआ सुखि डेरा जा तृपति रहे आघाई हे ॥७॥ मीतु हमारा सोई

ਸੁਆਮੀ ॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰੂਨ ਪਰਮੇਸੁਰ ਚਿੰਤਾ ਗਣਤ ਮਿਟਾਈ ਹੈ ॥੮॥
 ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਲਖ ਬਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕੀਰਤਨੁ ਸੰਗਿ ਧਨੁ ਤਾਹਾ ॥ ਗਿਆਨ ਖੜਗੁ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੀਨਾ
 ਫੂਤ ਮਾਰੇ ਕਰਿ ਧਾਈ ਹੈ ॥੯॥ ਹਰਿ ਕਾ ਜਾਪੁ ਜਪਹੁ ਜਪੁ ਜਪਨੇ ॥ ਜੀਤਿ ਆਵਹੁ ਵਸਹੁ ਘਰਿ ਅਪਨੇ ॥ ਲਖ
 ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਨਰਕ ਨ ਦੇਖਹੁ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਗੁਣ ਗਾਈ ਹੈ ॥੧੦॥ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਉਧਾਰਣਹਾਰਾ ॥ ਊਚ ਅਥਾਹ
 ਅਗੰਮ ਅਪਾਰਾ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨੀ ਸੋ ਜਨੁ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਈ ਹੈ ॥੧੧॥ ਬੰਧਨ ਤੋਡਿ ਲੀਏ ਪ੍ਰਭਿ
 ਮੋਲੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕੀਨੇ ਘਰ ਗੋਲੇ ॥ ਅਨਹਦ ਰੂਣ ਝੂਣਕਾਰੁ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਸਾਚੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈ ਹੈ ॥੧੨॥
 ਮਨਿ ਪਰਤੀਤਿ ਬਨੀ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ॥ ਬਿਨਸਿ ਗਈ ਹਤਮੈ ਮਤਿ ਮੇਰੀ ॥ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਆ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਜਗ ਮਹਿ
 ਸੋਭ ਸੁਹਾਈ ਹੈ ॥੧੩॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਜਪਹੁ ਜਗਦੀਸੈ ॥ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਈਸੈ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਫੂਜਾ
 ਅਵਰੁ ਨ ਦੀਸੈ ਏਕਾ ਜਗਤਿ ਸਬਾਈ ਹੈ ॥੧੪॥ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਸਦਾ ਮਨੁ
 ਰਾਤਾ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਜੀਵਹਿ ਜਨ ਤੇਰੇ ਏਕਕਾਰਿ ਸਮਾਈ ਹੈ ॥੧੫॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥
 ਸਭੈ ਉਧਾਰਣੁ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਸਿਮਰਿ ਨਾਮੁ ਪੁਨੀ ਸਭ ਇਛਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ਹੈ ॥੧੬॥੧॥

ਮਾਰੂ ਸੋਲਹੇ ਮਹਲਾ ੫

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੰਗੀ ਜੋਗੀ ਨਾਰਿ ਲਪਟਾਣੀ ॥ ਤੁਰੱਝਿ ਰਹੀ ਰੰਗ ਰਸ ਮਾਣੀ ॥ ਕਿਰਤ ਸੰਜੋਗੀ ਭਏ ਇਕਤਾ ਕਰਤੇ ਭੋਗ
 ਬਿਲਾਸਾ ਹੈ ॥੧॥ ਜੋ ਪਿਲੁ ਕਰੈ ਸੁ ਧਨ ਤਤੁ ਮਾਨੈ ॥ ਪਿਲੁ ਧਨਹਿ ਸੀਗਾਰਿ ਰਖੈ ਸੰਗਾਨੈ ॥ ਮਿਲਿ ਏਕਤ ਵਸਹਿ
 ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਪੂਤ ਦੇ ਧਨਹਿ ਦਿਲਾਸਾ ਹੈ ॥੨॥ ਧਨ ਮਾਗੈ ਪੂਤ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਧਾਵੈ ॥ ਜੋ ਪਾਵੈ ਸੋ ਆਣਿ ਦਿਖਾਵੈ
 ॥ ਏਕ ਵਸਤੁ ਕਤ ਪਹੁਚਿ ਨ ਸਾਕੈ ਧਨ ਰਹਤੀ ਭੂਖ ਪਿਆਸਾ ਹੈ ॥੩॥ ਧਨ ਕਰੈ ਬਿਨਤ ਦੋਤੁ ਕਰ ਜੋਰੈ ॥ ਪੂਅ
 ਪਰਦੇਸਿ ਨ ਜਾਹੁ ਵਸਹੁ ਘਰਿ ਮੋਰੈ ॥ ਐਸਾ ਬਣਜੁ ਕਰਹੁ ਗ੍ਰਹ ਭੀਤਰਿ ਜਿਤੁ ਤਤਰੈ ਭੂਖ ਪਿਆਸਾ ਹੈ ॥੪॥
 ਸਗਲੇ ਕਰਮ ਧਰਮ ਜੁਗ ਸਾਧਾ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਰਸ ਸੁਖੁ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਲਾਧਾ ॥ ਭਈ ਕ੃ਪਾ ਨਾਨਕ ਸਤਸੰਗੇ ਤਤ

धन पिर अन्नद उलासा हे ॥੫॥ धन अंधी पिरु चपलु सिआना ॥ पंच ततु का रचनु रचाना ॥ जिसु
वखर कउ तुम आए हहु सो पाइओ सतिगुर पासा हे ॥੬॥ धन कहै तू वसु मै नाले ॥ पृअ सुखवासी
बाल गुपाले ॥ तुझै बिना हउ कित ही न लेखै वचनु देहि छोडि न जासा हे ॥੭॥ पिरि कहिआ हउ
हुकमी बंदा ॥ ओहु भारो ठाकुरु जिसु काणि न छंदा ॥ जिचरु राखै तिचरु तुम संगि रहणा जा सदे त
ऊठि सिधासा हे ॥੮॥ जउ पृअ बचन कहे धन साचे ॥ धन कछू न समझै चंचलि काचे ॥ बहुरि बहुरि
पिर ही संगु मागै ओहु बात जानै करि हासा हे ॥੯॥ आई आगिआ पिरहु बुलाइआ ॥ ना धन पुछी
न मता पकाइआ ॥ ऊठि सिधाइओ छूटरि माटी देखु नानक मिथन मोहासा हे ॥੧੦॥ रे मन लोभी
सुणि मन मेरे ॥ सतिगुरु सेवि दिनु राति सदरे ॥ बिनु सतिगुर पचि मूँझ साकत निगुरे गलि जम
फासा हे ॥੧੧॥ मनमुखि आवै मनमुखि जावै ॥ मनमुखि फिरि फिरि चोटा खावै ॥ जितने नरक से
मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा हे ॥੧੨॥ गुरमुखि सोडि जि हरि जीउ भाइआ ॥ तिसु कउणु
मिटावै जि प्रभि पहिराइआ ॥ सदा अन्नदु करे आनंदी जिसु सिरपाउ पड़िआ गलि खासा हे ॥੧੩॥
हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ सरणि के दाते बचन के सूरे ॥ औसा प्रभु मिलिआ सुखदाता विछुड़ि न
कत ही जासा हे ॥੧੪॥ गुण निधान किछु कीम न पाई ॥ घटि घटि पूरि रहिओ सभ ठाई ॥ नानक
सरणि दीन दुख भंजन हउ रेण तेरे जो दासा हे ॥੧੫॥੧॥੨॥

मारू सोलहे महला ੫

੧੮ੴ सतिगुर प्रਸादि ॥

करै अन्नदु अनंदी मेरा ॥ घटि घटि पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥ सिरि साहा कै सचा साहिबु अवरु
नाही को दूजा हे ॥੧॥ हरखवंत आनंत दइआला ॥ प्रगटि रहिओ प्रभु सरब उजाला ॥ रूप करे करि
वेखै विगसै आपे ही आपि पूजा हे ॥੨॥ आपे कुदरति करे वीचारा ॥ आपे ही सचु करे पसारा ॥ आपे
खेल खिलावै दिनु राती आपे सुणि सुणि भीजा हे ॥੩॥ साचा तखतु सची पातिसाही ॥ सचु खजीना

ਸਾਚਾ ਸਾਹੀ ॥ ਆਪੇ ਸਚੁ ਧਾਰਿਆ ਸਭੁ ਸਾਚਾ ਸਚੇ ਸਚਿ ਵਰਤੀਜਾ ਹੈ ॥੪॥ ਸਚੁ ਤਪਾਵਸੁ ਸਚੇ ਕੇਰਾ ॥ ਸਾਚਾ
 ਥਾਨੁ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਾ ॥ ਸਚੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬ ਸੁਖੁ ਕੀਜਾ ਹੈ ॥੫॥ ਏਕੋ ਆਪਿ ਤੂਹੈ ਕਡ ਰਾਜਾ
 ॥ ਹੁਕਮਿ ਸਚੇ ਕੈ ਪੂਰੇ ਕਾਜਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਪਤੀਜਾ ਹੈ ॥੬॥ ਤੂ ਕਡ
 ਰਸੀਆ ਤੂ ਕਡ ਭੋਗੀ ॥ ਤੂ ਨਿਰਬਾਣੁ ਤੂਹੈ ਹੀ ਜੋਗੀ ॥ ਸਰਬ ਸੂਖ ਸਹਜ ਘਰਿ ਤੈਰੈ ਅਮਿਤ ਤੇਰੀ ਦੂਸਟੀਜਾ ਹੈ
 ॥੭॥ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ਤੁੜੀ ਤੇ ਹੋਵੈ ॥ ਦੇਹਿ ਦਾਨੁ ਸਭਸੈ ਜੰਤ ਲੋਐ ॥ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਪੂਰ ਭੰਡਾਰੈ ਤ੃ਪਤਿ ਰਹੇ ਆਧੀਜਾ
 ਹੈ ॥੮॥ ਜਾਚਹਿ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਬਨਵਾਸੀ ॥ ਜਾਚਹਿ ਜਤੀ ਸਤੀ ਸੁਖਵਾਸੀ ॥ ਝਿਕੁ ਦਾਤਾਰੁ ਸਗਲ ਹੈ ਜਾਚਿਕ
 ਦੇਹਿ ਦਾਨੁ ਸੂਸਟੀਜਾ ਹੈ ॥੯॥ ਕਰਹਿ ਭਗਤਿ ਅਰੁ ਰੰਗ ਅਪਾਰਾ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰਾ ॥ ਭਾਰੇ
 ਤੋਲੁ ਕੇਅਂਤ ਸੁਆਮੀ ਹੁਕਮੁ ਮਨਿ ਭਗਤੀਜਾ ਹੈ ॥੧੦॥ ਜਿਸੁ ਦੇਹਿ ਦਰਸੁ ਸੋਈ ਤੁਧੁ ਜਾਣੈ ॥ ਓਹੁ ਗੁਰ ਕੈ
 ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਰੰਗ ਮਾਣੈ ॥ ਚਤੁਰੁ ਸਰ੍ਲਪੁ ਸਿਆਣਾ ਸੋਈ ਜੋ ਮਨਿ ਤੈਰੈ ਭਾਵੀਜਾ ਹੈ ॥੧੧॥ ਜਿਸੁ ਚੀਤਿ ਆਵਹਿ
 ਸੋ ਵੇਪਰਵਾਹਾ ॥ ਜਿਸੁ ਚੀਤਿ ਆਵਹਿ ਸੋ ਸਾਚਾ ਸਾਹਾ ॥ ਜਿਸੁ ਚੀਤਿ ਆਵਹਿ ਤਿਸੁ ਭਤ ਕੇਹਾ ਅਵਰੁ ਕਹਾ ਕਿਛੁ
 ਕੀਜਾ ਹੈ ॥੧੨॥ ਤੂਸਨਾ ਬੂੜੀ ਅੰਤਰੁ ਠੰਢਾ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਲੈ ਤੂਟਾ ਗੰਢਾ ॥ ਸੁਰਤਿ ਸਕਦੁ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਜਾਗੀ
 ਅਮਿਤ ਝੋਲਿ ਝੋਲਿ ਪੀਜਾ ਹੈ ॥੧੩॥ ਮਰੈ ਨਾਹੀ ਸਦ ਸਦ ਹੀ ਜੀਵੈ ॥ ਅਮਰੁ ਭਇਆ ਅਬਿਨਾਸੀ ਥੀਵੈ ॥ ਨਾ
 ਕੋ ਆਵੈ ਨਾ ਕੋ ਜਾਵੈ ਗੁਰਿ ਫੂਰਿ ਕੀਆ ਭਰਮੀਜਾ ਹੈ ॥੧੪॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਪੂਰੀ ਬਾਣੀ ॥ ਪੂਰੈ ਲਾਗ ਪੂਰੇ
 ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਚੱਡੈ ਸਕਾਇਆ ਨਿਤ ਨਿਤ ਰੰਗ ਘਟੈ ਨਾਹੀ ਤੌਲੀਜਾ ਹੈ ॥੧੫॥ ਬਾਰਹਾ ਕੰਚਨੁ ਸੁਧੁ
 ਕਰਾਇਆ ॥ ਨਦਰਿ ਸਰਾਫ ਕਨੀ ਸਚੜਾਇਆ ॥ ਪਰਖਿ ਖਯਾਨੈ ਪਾਇਆ ਸਰਾਫੀ ਫਿਰਿ ਨਾਹੀ ਤਾਈਜਾ ਹੈ
 ॥੧੬॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਸੁਆਮੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ
 ਦੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭੀਜਾ ਹੈ ॥੧੭॥੧॥੩॥

ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ਸੋਲਹੇ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰੁ ਗੋਪਾਲੁ ਗੁਰੁ ਗੋਵਿੰਦਾ ॥ ਗੁਰੁ ਦਿਇਾਲੁ ਸਦਾ ਬਖਸਿੰਦਾ ॥ ਗੁਰੁ ਸਾਸਤ ਸਿਮ੍ਰਤਿ ਖਟੁ ਕਰਮਾ ਗੁਰੁ ਪਵਿਤ੍ਰ

असथाना हे ॥१॥ गुरु सिमरत सभि किलविख नासहि ॥ गुरु सिमरत जम संगि न फासहि ॥ गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ॥२॥ गुर का सेवकु नरकि न जाए ॥ गुर का सेवकु पारब्रह्मु धिआए ॥ गुर का सेवकु साधसंगु पाए गुरु करदा नित जीअ दाना हे ॥३॥ गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीअै ॥ सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीअै ॥ कलि कलेस मिटाइ सतिगुरु हरि दरगह देवै मानाँ हे ॥४॥ अगमु अगोचरु गुरु दिखाइआ ॥ भूला मारगि सतिगुरि पाइआ ॥ गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर दृढ़ाइआ गिआनाँ हे ॥५॥ गुरि दृसटाइआ सभनी ठाई ॥ जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ ऊच ऊन सभ एक समानाँ मनि लागा सहजि धिआना हे ॥६॥ गुरि मिलिअै सभ तृसन बुझाई ॥ गुरि मिलिअै नह जोहै माई ॥ सतु संतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अंमृतु पी पानाँ हे ॥७॥ गुर की बाणी सभ माहि समाणी ॥ आपि सुणी तै आपि वखाणी ॥ जिनि जिनि जपी तई सभि निसते तिन पाइआ निहचल थानाँ हे ॥८॥ सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सद कुरबानाँ हे ॥९॥१॥८॥

मारू सोलहे महला ५

੭੯੮ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा ॥ सभ महि वरतै आपि निरारा ॥ वरनु जाति चिहनु नही कोई सभ हुकमे सूसटि उपाइदा ॥१॥ लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ डिसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा ॥२॥ कीता होवै तिसु किआ कहीअै ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लहीअै ॥ जिसु आपि भुलाइ सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा ॥३॥ हरख सोग का नगरु इहु कीआ ॥ से उबरे जो सतिगुर सरणीआ ॥ तृहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा ॥४॥ अनिक करम कीए बहुतेरे ॥ जो कीजै सो बंधनु पैरे ॥ कुरुता बीजु बीजे नही जंमै सभु लाहा मूलु गवाइदा ॥५॥ कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि जपीअै लाइ धिआना ॥

आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥੬॥ खंड पताल दीप सभि लोआ ॥ सभि
कालै वसि आपि प्रभि कीआ ॥ निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा
॥੭॥ हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥ भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती
फिरि सललै सलल समाइदा ॥੮॥ इकु जाचिकु मंगै दानु दुआरै ॥ जा प्रभ भावै ता किरपा धारै
॥ देहु दरसु जितु मनु तृपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा ॥੯॥ रुड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै ॥
हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै ॥ कीता लोडनि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई
पाइदा ॥੧੦॥ जिथै अउघटु आइ बनतु है प्राणी ॥ तिथै हरि धिआईअै सारिंगपाणी ॥
जिथै पुत्र कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छडाइदा ॥੧੧॥ वडा साहिबु अगम अथाहा ॥
किउ मिलीअै प्रभ वेपरवाहा ॥ काटि सिलक जिसु मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा
॥੧੨॥ हुकमु बूझै सो सेवकु कहीअै ॥ बुरा भला दुइ समसरि सहीअै ॥ हउमै जाइ त एको बूझै
सो गुरमुखि सहजि समाइदा ॥੧੩॥ हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ बाल सुभाइ अतीत उदासी ॥
अनिक रंग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा ॥੧੪॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई
॥ ता मिलीअै जा लए मिलाई ॥ गुरमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मस्तकि लेखु
लिखाइदा ॥੧੫॥ तू आपे करता कारण करणा ॥ सृसटि उपाइ धरी सभ धरणा ॥ जन नानकु
सरणि पड़िआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा ॥੧੬॥੧॥੫॥

मारू सोलहे महला ੫

੧੭ੰ सतिगुर प्रਸादि ॥

जो दीसै सो एको तूहै ॥ बाणी तेरी स्वरणि सुणीअै ॥ दूजी अवर न जापसि काई सगल तुमारी धारणा
॥੧॥ आपि चितारे अपणा कीआ ॥ आपे आपि आपि प्रभु थीआ ॥ आपि उपाइ रचिओनु
पसारा आपे घटि घटि सारणा ॥੨॥ इकि उपाए वड दरवारी ॥ इकि उदासी इकि घर बारी ॥

ਡਿਕਿ ਭੂਖੇ ਡਿਕਿ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਏ ਸਭਸੈ ਤੇਰਾ ਪਾਰਣਾ ॥੩॥ ਆਪੇ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਾਚਾ ॥ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਭਗਤਨ
 ਸੰਗਿ ਰਾਚਾ ॥ ਆਪੇ ਗੁਪਤੁ ਆਪੇ ਹੈ ਪਰਗਟੁ ਅਪਣਾ ਆਪੁ ਪਸਾਰਣਾ ॥੪॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਦ ਹੋਵਣਹਾਰਾ ॥
 ਊਚਾ ਅਗਮੁ ਅਥਾਹੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਊਣੇ ਭਰੇ ਭਰੇ ਭਰਿ ਊਣੇ ਏਹਿ ਚਲਤ ਸੁਆਮੀ ਕੇ ਕਾਰਣਾ ॥੫॥ ਮੁਖਿ ਸਾਲਾਹੀ
 ਸਚੇ ਸਾਹਾ ॥ ਨੈਣੀ ਪੇਖਾ ਅਗਮ ਅਥਾਹਾ ॥ ਕਰਨੀ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿਆ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਸਗਲ ਉਧਾਰਣਾ
 ॥੬॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਕੇਖਹਿ ਕੀਤਾ ਅਪਣਾ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸੋਈ ਹੈ ਜਪਣਾ ॥ ਅਪਣੀ ਕੁਦਰਤਿ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਨਦਰੀ
 ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਣਾ ॥੭॥ ਸਾਂਤ ਸਭਾ ਜਹ ਬੈਸਹਿ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸੇ ॥ ਅਨੰਦ ਮੰਗਲ ਹਰਿ ਚਲਤ ਤਮਾਸੇ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ
 ਅਨਹਦ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ਤਹ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਚਿਤਾਰਣਾ ॥੮॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਸਭੁ ਚਲਤੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ
 ਦੇਖੈ ਖੇਲੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਆਪਿ ਤੁਪਾਏ ਤੁਪਾਵਣਹਾਰਾ ਅਪਣਾ ਕੀਆ ਪਾਲਣਾ ॥੯॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਵਾ ਸੋਝਿ
 ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਈ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਦੁਇ ਕਰ ਜੋਡਿ ਸਿਮਰਤ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਅਗਮ ਅਪਾਰਣਾ
 ॥੧੦॥ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਟ੍ਰੋਜੇ ਕਿਸੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥ ਏਕੋ ਏਕੁ ਜਪੀ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥ ਹੁਕਮੁ ਬ੍ਰਾਂਝਿ ਜਨ ਭਾਏ ਨਿਹਾਲਾ ਇਹ
 ਭਗਤਾ ਕੀ ਘਾਲਣਾ ॥੧੧॥ ਗੁਰ ਤੁਪਦੇਸਿ ਜਪੀਐ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ॥ ਗੁਰ ਤੁਪਦੇਸਿ ਰਾਮ ਰੰਗ ਰਾਚਾ ॥ ਗੁਰ
 ਤੁਪਦੇਸਿ ਤੁਟਹਿ ਸਭਿ ਬੰਧਨ ਇਹੁ ਭਰਮੁ ਮੋਹੁ ਪਰਯਾਲਣਾ ॥੧੨॥ ਜਹ ਰਾਖੈ ਸੋਈ ਸੁਖ ਥਾਨਾ ॥ ਸਹਜੇ ਹੋਇ
 ਸੋਈ ਭਲ ਮਾਨਾ ॥ ਬਿਨਸੇ ਕੈਰ ਨਾਹੀ ਕੋ ਕੈਰੀ ਸਭੁ ਏਕੋ ਹੈ ਭਾਲਣਾ ॥੧੩॥ ਡਰ ਚੂਕੇ ਬਿਨਸੇ ਅੰਧਿਆਰੇ ॥
 ਪ੍ਰਗਟ ਭਾਏ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਨਿਰਾਰੇ ॥ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਪਾਏ ਸਰਣਾਈ ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਸੁ ਘਾਲਣਾ ॥੧੪॥ ਐਸਾ ਕੋ
 ਕਡਭਾਗੀ ਆਇਆ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਜਿਨਿ ਖਸਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਰੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ਸੋ ਪਰਵਾਰ
 ਸਥਾਰਣਾ ॥੧੫॥ ਇਹ ਬਖਸੀਸ ਖਸਮ ਤੇ ਪਾਵਾ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਕਰ ਜੋਡਿ ਧਿਆਵਾ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪੀ ਨਾਮਿ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਾ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਮਿਲੈ ਤਚਾਰਣਾ ॥੧੬॥੧॥੬॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੂਰਤਿ ਦੇਖਿ ਨ ਭੂਲੁ
 ਗਵਾਰਾ ॥ ਮਿਥਨ ਮੋਹਾਰਾ ਝੂਠੁ ਪਸਾਰਾ ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਕੋਈ ਰਹਣੁ ਨ ਪਾਏ ਨਿਹਚਲੁ ਏਕੁ ਨਾਰਾਇਣਾ ॥੧॥
 ਗੁਰ ਪ੍ਰੋ ਕੀ ਪਤ ਸਰਣਾਈ ॥ ਮੋਹੁ ਸੋਗੁ ਸਭੁ ਭਰਮੁ ਮਿਟਾਈ ॥ ਏਕੋ ਮੰਨੁ ਦੂਡਾਏ ਅਤਖਥੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦ

ਗਾਇਣਾ ॥੨॥ ਜਿਸੁ ਨਾਮੈ ਕਤ ਤਰਸਹਿ ਬਹੁ ਦੇਵਾ ॥ ਸਗਲ ਭਗਤ ਜਾ ਕੀ ਕਰਦੇ ਸੇਵਾ ॥ ਅਨਾਥਾ ਨਾਥੁ
 ਦੀਨ ਟੁਖ ਭੰਜਨੁ ਸੋ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਇਣਾ ॥੩॥ ਹੋਰੁ ਦੁਆਰਾ ਕੋਝਿ ਨ ਸ੍ਰੂਜੈ ॥ ਤ੍ਰਭਵਣ ਧਾਰੈ ਤਾ ਕਿਛੁ ਨ ਬ੍ਰੂਜੈ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਹੁ ਭੰਡਾਰੁ ਨਾਮੁ ਜਿਸੁ ਇਹੁ ਰਤਨੁ ਤਿਸੈ ਤੇ ਪਾਇਣਾ ॥੪॥ ਜਾ ਕੀ ਧੂਰਿ ਕਰੇ ਪੁਨੀਤਾ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ
 ਦੇਵ ਨ ਪਾਵਹਿ ਮੀਤਾ ॥ ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਜਿਸੁ ਭੇਟਤ ਪਾਰਿ ਪਰਾਇਣਾ ॥੫॥ ਪਾਰਯਾਤੁ ਲੋਡ਼ਹਿ
 ਮਨ ਪਿਆਰੇ ॥ ਕਾਮਧੇਨੁ ਸੋਹੀ ਦਰਬਾਰੇ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਸੰਤੋਖੁ ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਨਾਮੁ ਕਮਾਇ ਰਸਾਇਣਾ ॥੬॥ ਗੁਰ
 ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਰਹਿ ਪੰਚ ਧਾਤੂ ॥ ਭੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਹੋਵਹਿ ਨਿਰਮਲਾ ਤੂ ॥ ਪਾਰਸੁ ਜਬ ਭੇਟੈ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਤਾ ਪਾਰਸੁ
 ਪਰਸਿ ਦਿਖਾਇਣਾ ॥੭॥ ਕਈ ਬੈਕੁਠ ਨਾਹੀ ਲਵੈ ਲਾਗੇ ॥ ਮੁਕਤਿ ਬਪੁੜੀ ਭੀ ਗਿਆਨੀ ਤਿਆਗੇ ॥ ਏਕਕਾਰੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈਐ ਹਉ ਬਲਿ ਬਲਿ ਗੁਰ ਦਰਸਾਇਣਾ ॥੮॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ
 ਅਗੋਚਰੁ ਸੋਈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਲਾਇ ਲਏ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਜਿਸੁ ਵਡਭਾਗ ਮਥਾਇਣਾ ॥੯॥ ਗੁਰ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਬੇਦ ਨ
 ਜਾਣਹਿ ॥ ਤੁਛ ਮਾਤ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਵਖਾਣਹਿ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਅਪਰੰਪਰ ਸਤਿਗੁਰ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਮਨੁ ਸੀਤਲਾਇਣਾ
 ॥੧੦॥ ਜਾ ਕੀ ਸੋਝਿ ਸੁਣੀ ਮਨੁ ਜੀਵੈ ॥ ਰਿਦੈ ਵਸੈ ਤਾ ਠੰਢਾ ਥੀਵੈ ॥ ਗੁਰੁ ਮੁਖਹੁ ਅਲਾਏ ਤਾ ਸੋਭਾ ਪਾਏ ਤਿਸੁ
 ਜਮ ਕੈ ਪੰਥਿ ਨ ਪਾਇਣਾ ॥੧੧॥ ਸੰਤਨ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ਪਡਿਆ ॥ ਜੀਤ ਪ੍ਰਾਣ ਧਨੁ ਆਗੈ ਧਰਿਆ ॥ ਸੇਵਾ
 ਸੁਰਤਿ ਨ ਜਾਣਾ ਕਾਈ ਤੁਮ ਕਰਹੁ ਦਿਖਿਆ ਕਿਰਮਾਇਣਾ ॥੧੨॥ ਨਿਰਗੁਣ ਕਤ ਸੰਗਿ ਲੇਹੁ ਰਲਾਏ ॥ ਕਰਿ
 ਕਿਰਪਾ ਮੌਹਿ ਟਹਲੈ ਲਾਏ ॥ ਪਖਾ ਫੇਰਤ ਪੀਸਤ ਸੰਤ ਆਗੈ ਚਰਣ ਧੋਇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਣਾ ॥੧੩॥ ਬਹੁਤੁ ਦੁਆਰੇ
 ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਆਇਆ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਤੁਮ ਸਰਣਾਇਆ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਰਾਖਹੁ ਏਹੁ ਨਾਮ ਦਾਨੁ
 ਦੇਵਾਇਣਾ ॥੧੪॥ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਗੁਸਾਈ ਮੇਰੇ ॥ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ ਸਦਾ ਆਨਦਾ
 ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਇਣਾ ॥੧੫॥੨॥੭॥

ਮਾਰੁ ਸੋਲਹੇ ਮਹਲਾ ੫

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਿਮਰੈ ਧਰਤੀ ਅਚੁ ਆਕਾਸਾ ॥ ਸਿਮਰਹਿ ਚੰਦ ਸੂਰਜ ਗੁਣਤਾਸਾ ॥ ਪਉਣ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰ ਸਿਮਰਹਿ ਸਿਮਰੈ

सगल उपारजना ॥१॥ सिमरहि खंड दीप सभि लोआ ॥ सिमरहि पाताल पुरीआ सचु सोआ ॥
 सिमरहि खाणी सिमरहि बाणी सिमरहि सगले हरि जना ॥२॥ सिमरहि ब्रहमे बिसन महेसा ॥
 सिमरहि देवते कोडि तेतीसा ॥ सिमरहि जख्य दैत सभि सिमरहि अगनतु न जाई जसु गना ॥३॥
 सिमरहि पसु पंखी सभि भूता ॥ सिमरहि बन परबत अउधूता ॥ लता बली साख सभ सिमरहि रवि
 रहिआ सुआमी सभ मना ॥४॥ सिमरहि थूल सूखम सभि जंता ॥ सिमरहि सिध साधिक हरि मंता ॥
 गुपत प्रगट सिमरहि प्रभ मेरे सगल भवन का प्रभ धना ॥५॥ सिमरहि नर नारी आसरमा ॥ सिमरहि
 जाति जोति सभि वरना ॥ सिमरहि गुणी चतुर सभि बेते सिमरहि रैणी अरु दिना ॥६॥ सिमरहि
 घड़ी मूरत पल निमखा ॥ सिमरै कालु अकालु सुचि सोचा ॥ सिमरहि सउण सासव्र संजोगा अलखु न
 लखीअै इकु खिना ॥७॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा जिसु
 भगती लावहु जनमु पदारथु सो जिना ॥८॥ जा कै मनि वूठा प्रभु अपना ॥ पूरै करमि गुर का जपु
 जपना ॥ सरब निरंतरि सो प्रभु जाता बहुड़ि न जोनी भरमि रुना ॥९॥ गुर का सबदु वसै मनि जा कै
 ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ सूख सहज आनन्द नाम रसु अनहद बाणी सहज धुना ॥१०॥
 सो धनवंता जिनि प्रभु धिआइआ ॥ सो पतिवंता जिनि साधसंगु पाइआ ॥ पारब्रहमु जा कै मनि वूठा
 सो पूर करंमा ना छिना ॥११॥ जलि थलि महीअलि सुआमी सोई ॥ अवरु न कहीअै दूजा कोई ॥
 गुर गिआन अंजनि काटिओ भ्रमु सगला अवरु न दीसै एक बिना ॥१२॥ ऊचे ते ऊचा दरबारा ॥
 कहणु न जाई अंतु न पारा ॥ गहिर गंभीर अथाह सुआमी अतुलु न जाई किआ मिना ॥१३॥ तू
 करता तेरा सभु कीआ ॥ तुझु बिनु अवरु न कोई बीआ ॥ आदि मधि अंति प्रभु तूहै सगल पसारा
 तुम तना ॥१४॥ जमदूतु तिसु निकटि न आवै ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गावै ॥ सगल मनोरथ
 ता के पूरन जो स्रवणी प्रभ का जसु सुना ॥१५॥ तू सभना का सभु को तेरा ॥ साचे साहिब गहिर गंभीरा

॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਜਨ ਊਤਮ ਜੋ ਭਾਵਹਿ ਸੁਆਮੀ ਤੁਮ ਮਨਾ ॥੧੬॥੧॥੮॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ
 ਸਮਰਥ ਸਰਬ ਸੁਖ ਦਾਨਾ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਹੋਹੁ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥ ਹਰਿ ਦਾਤਾ ਜੀਅ ਜਂਤ ਭੇਖਾਰੀ ਜਨੁ ਬਾਂਛੈ
 ਜਾਚਂਗਨਾ ॥੧॥ ਮਾਗਤ ਜਨ ਧੂਰਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਤ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਮੈਲੁ ਮਿਟਾਵਤ ॥ ਦੀਖ ਰੋਗ
 ਮਿਟਹਿ ਹਰਿ ਅਤਖਥਿ ਹਰਿ ਨਿਰਮਲਿ ਰਾਪੈ ਮੰਗਨਾ ॥੨॥ ਸ੍ਰਵਣੀ ਸੁਣਤ ਬਿਮਲ ਜਸੁ ਸੁਆਮੀ ॥ ਏਕਾ ਓਟ
 ਤਜਤ ਬਿਖੁ ਕਾਮੀ ॥ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਪਾਇ ਲਗਤ ਦਾਸ ਤੇਰੇ ਕਰਿ ਸੁਕ੍ਰਤੁ ਨਾਹੀ ਸੰਗਨਾ ॥੩॥ ਰਸਨਾ ਗੁਣ
 ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਤੇਰੇ ॥ ਮਿਟਹਿ ਕਮਾਤੇ ਅਵਗੁਣ ਮੇਰੇ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਮਨੁ ਜੀਵੈ ਪੰਚ ਫੂਤ ਤਜਿ
 ਤਾਂਗਨਾ ॥੪॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਧਿ ਬੋਹਿਥਿ ਚਰੀਐ ॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰੀਐ ॥ ਅਰਚਾ ਬੰਦਨ
 ਹਰਿ ਸਮਤ ਨਿਵਾਸੀ ਬਾਹੁਡਿ ਜੋਨਿ ਨ ਨਨਾਨਾ ॥੫॥ ਦਾਸ ਦਾਸਨ ਕੋ ਕਰਿ ਲੇਹੁ ਗੁਪਾਲਾ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ
 ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲਾ ॥ ਸਖਾ ਸਹਾਈ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰ ਮਿਲੁ ਕਦੇ ਨ ਹੋਵੀ ਭੰਗਨਾ ॥੬॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਧਰੀ
 ਹਰਿ ਆਗੈ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਸੋਝਿਆ ਜਾਗੈ ॥ ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਸੋਈ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕੁ ਹਤਿ ਤਿਆਗੀ ਹਉਮੈ ਛਾਤਨਾ
 ॥੭॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਪੂਰਨ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਵਿਆ ਅਛਲ ਸੁਆਮੀ ॥ ਭਰਮ ਭੀਤਿ ਖੋਈ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ
 ਏਕੁ ਰਵਿਆ ਸਰਬਂਗਨਾ ॥੮॥ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਤ ਪ੍ਰਭ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ॥ ਹਰਿ ਤੌਟਿ ਭੰਡਾਰ ਨਾਹੀ ਰਤਨਾਗਰ ॥
 ਅਗਹ ਅਗਹ ਕਿਛੁ ਮਿਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ਸੋ ਬੂੜੈ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾਨਾ ॥੯॥ ਛਾਤੀ ਸੀਤਲ ਮਨੁ ਤਨੁ ਠੰਢਾ
 ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਕੀ ਮਿਟਵੀ ਢੱਝਾ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਕਾਢਿ ਲੀਏ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਅਮਿਆਂ ਧਾਰਿ ਵ੍ਰਿਤਾਂਗਨਾ ॥੧੦॥
 ਏਕੋ ਏਕੁ ਰਵਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਟ੍ਰੁਝਾ ਕੋਈ ਨਾਹੀ ॥ ਆਦਿ ਮਧਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰਵਿਆ ਤੂਸਨ ਬੁਝੀ
 ਭਰਮਾਂਗਨਾ ॥੧੧॥ ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਗੁਰੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ॥ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾ ਗੁਰੁ ਸਦ ਬਖਸਂਦੁ ॥ ਗੁਰ ਜਪੁ ਜਾਪਿ
 ਜਪਤ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਗਿਆਨ ਦੀਪਕੁ ਸੰਤ ਸੰਗਨਾ ॥੧੨॥ ਜੋ ਪੇਖਾ ਸੋ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੁਆਮੀ ॥ ਜੋ ਸੁਨਣਾ ਸੋ
 ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਬਾਨੀ ॥ ਜੋ ਕੀਨੋ ਸੋ ਤੁਮਹਿ ਕਰਾਇਆ ਸਰਣਿ ਸਹਾਈ ਸੰਤਹ ਤਨਾ ॥੧੩॥ ਜਾਚਕੁ ਜਾਚੈ ਤੁਮਹਿ ਅਰਾਈ
 ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭ ਸਾਈ ॥ ਏਕੋ ਦਾਨੁ ਸਰਬ ਸੁਖ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਆਨ ਮੰਗਨ ਨਿਹਕਿੰਚਨਾ ॥੧੪॥

ਕਾਇਆ ਪਾਤੁ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ॥ ਲਗੀ ਲਾਗਿ ਸੰਤ ਸੰਗਾਰਾ ॥ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ਬਣੀ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ਮਨੁ ਨਾਮਿ
ਮਜੀਠੈ ਰੰਗਨਾ ॥੧੫॥ ਸੋਲਹ ਕਲਾ ਸੰਪੂਰਨ ਫਲਿਆ ॥ ਅਨਤ ਕਲਾ ਹੋਇ ਠਾਕੁਰੁ ਚਡਿਆ ॥ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ
ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਖ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਹਰਿ ਭੁੰਚਨਾ ॥੧੬॥੨॥੬॥

ਮਾਰੂ ਸੋਲਹੇ ਮਹਲਾ ੫

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੂ ਸਾਹਿਬੁ ਹਤ ਸੇਵਕੁ ਕੀਤਾ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਦੀਤਾ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਭੁ ਤੂਹੈ ਤੂਹੈ ਹੈ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ
ਅਸਾਡਾ ॥੧॥ ਤੁਮਹਿ ਪਠਾਏ ਤਾ ਜਗ ਮਹਿ ਆਏ ॥ ਜੋ ਤੁਥੁ ਭਾਣਾ ਸੇ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥ ਤੁੜਾ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੂ ਨ
ਹੋਆ ਤਾ ਭੀ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਕਾਡਾ ॥੨॥ ਊਹਾ ਹੁਕਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਸੁਣੀਐ ॥ ਇਹਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਤੇਰਾ ਭਣੀਐ ॥ ਆਪੇ
ਲੇਖ ਅਲੇਖੈ ਆਪੇ ਤੁਮ ਸਿਉ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਝਾਡਾ ॥੩॥ ਤੂ ਪਿਤਾ ਸਭਿ ਬਾਰਿਕ ਥਾਰੇ ॥ ਜਿਤ ਖੇਲਾਵਹਿ ਤਿਉ
ਖੇਲਣਹਾਰੇ ॥ ਤੁੜਾਡੁ ਮਾਰਗੁ ਸਭੁ ਤੁਮ ਹੀ ਕੀਨਾ ਚਲੈ ਨਾਹੀ ਕੋ ਵੇਪਾਡਾ ॥੪॥ ਇਕਿ ਬੈਸਾਇ ਰਖੇ ਗ੍ਰਹ ਅੰਤਰਿ
॥ ਇਕਿ ਪਠਾਏ ਦੇਸ ਦਿਸਤਰਿ ॥ ਇਕ ਹੀ ਕਤ ਘਾਸੁ ਇਕ ਹੀ ਕਤ ਰਾਜਾ ਇਨ ਮਹਿ ਕਹੀਐ ਕਿਆ ਕੂਡਾ
॥੫॥ ਕਵਨ ਸੁ ਮੁਕਤੀ ਕਵਨ ਸੁ ਨਰਕਾ ॥ ਕਵਨੁ ਸੈਸਾਰੀ ਕਵਨੁ ਸੁ ਭਗਤਾ ॥ ਕਵਨ ਸੁ ਦਾਨਾ ਕਵਨੁ ਸੁ ਹੋਛਾ
ਕਵਨ ਸੁ ਸੁਰਤਾ ਕਵਨੁ ਜਡਾ ॥੬॥ ਹੁਕਮੇ ਮੁਕਤੀ ਹੁਕਮੇ ਨਰਕਾ ॥ ਹੁਕਮਿ ਸੈਸਾਰੀ ਹੁਕਮੇ ਭਗਤਾ ॥ ਹੁਕਮੇ
ਹੋਛਾ ਹੁਕਮੇ ਦਾਨਾ ਦ੍ਰੂਜਾ ਨਾਹੀ ਅਵਰੁ ਧਡਾ ॥੭॥ ਸਾਗਰੁ ਕੀਨਾ ਅਤਿ ਤੁਮ ਭਾਰਾ ॥ ਇਕਿ ਖੱਡੇ ਰਸਾਤਲਿ ਕਰਿ
ਮਨਮੁਖ ਗਾਵਾਰਾ ॥ ਇਕਨਾ ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਵਹਿ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰ ਜਿਨ ਕਾ ਸਚੁ ਬੇਡਾ ॥੮॥ ਕਤਤਕੁ ਕਾਲੁ ਇਹੁ
ਹੁਕਮਿ ਪਠਾਇਆ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਓਪਾਇ ਸਮਾਇਆ ॥ ਵੇਖੈ ਵਿਗਸੈ ਸਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ਰਚਨੁ ਕੀਨਾ ਇਕੁ
ਆਖਾਡਾ ॥੯॥ ਵਡਾ ਸਾਹਿਬੁ ਵਡੀ ਨਾਈ ॥ ਵਡ ਦਾਤਾਰੁ ਵਡੀ ਜਿਸੁ ਜਾਈ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਬੇਅੰਤ ਅਤੋਲਾ ਹੈ
ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਆਹਾਡਾ ॥੧੦॥ ਕੀਮਤਿ ਕੋਇ ਨ ਜਾਣੈ ਦ੍ਰੂਜਾ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨ ਪ੍ਰਯਾ ॥ ਆਪਿ ਸੁ ਗਿਆਨੀ
ਆਪਿ ਧਿਆਨੀ ਆਪਿ ਸਤਵੰਤਾ ਅਤਿ ਗਾਡਾ ॥੧੧॥ ਕੇਤਡਿਆ ਦਿਨ ਗੁਪਤੁ ਕਹਾਇਆ ॥ ਕੇਤਡਿਆ ਦਿਨ
ਸੁਨਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਕੇਤਡਿਆ ਦਿਨ ਧੁੰਧੂਕਾਰਾ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਪਰਗਟਾ ॥੧੨॥ ਆਪੇ ਸਕਤੀ ਸ਼ਬਲੁ

ਕਹਾਇਆ ॥ ਆਪੇ ਸੂਰਾ ਅਮਰੁ ਚਲਾਇਆ ॥ ਆਪੇ ਸਿਵ ਵਰਤਾਈਅਨੁ ਅੰਤਰਿ ਆਪੇ ਸੀਤਲੁ ਠਾਰੁ ਗੜਾ
 ॥੧੩॥ ਜਿਸਹਿ ਨਿਵਾਜੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਜੇ ॥ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਤਿਸੁ ਅਨਹਦ ਵਾਜੇ ॥ ਤਿਸ ਹੀ ਸੁਖੁ ਤਿਸ ਹੀ ਠਕੁਰਾਈ
 ਤਿਸਹਿ ਨ ਆਵੈ ਜਮੁ ਨੇੜਾ ॥੧੪॥ ਕੀਮਤਿ ਕਾਗਦ ਕਹੀ ਨ ਜਾਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬੇਅੰਤ ਗੁਸਾਈ ॥ ਆਦਿ
 ਮਥਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ਹਾਥਿ ਤਿਸੈ ਕੈ ਨੇਕੇੜਾ ॥੧੫॥ ਤਿਸਹਿ ਸਰੀਕੁ ਨਾਹੀ ਰੇ ਕੋਈ ॥ ਕਿਸ ਹੀ ਬੁਤੈ ਜਬਾਬੁ
 ਨ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਆਪੇ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਚੋਜ ਖੜਾ ॥੧੬॥੧॥੧੦॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਅਚੁਤ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਮਧੁਸੂਦਨ ਦਾਮੋਦਰ ਸੁਆਮੀ ॥ ਰਿਖੀਕੇਸ ਗੋਵਰਧਨ ਧਾਰੀ ਮੁਰਲੀ
 ਮਨੋਹਰ ਹਰਿ ਰੰਗ ॥੧॥ ਮੋਹਨ ਮਾਧਵ ਕ੃ਤ ਮੁਰਾਰੇ ॥ ਜਗਦੀਸੁਰ ਹਰਿ ਜੀਤ ਅਸੁਰ ਸੰਘਾਰੇ ॥ ਜਗਜੀਵਨ
 ਅਭਿਨਾਸੀ ਠਾਕੁਰ ਘਟ ਘਟ ਵਾਸੀ ਹੈ ਸੰਗ ॥੨॥ ਧਰਣੀਧਰ ਈਸ ਨਰਸਿੰਘ ਨਾਰਾਇਣ ॥ ਦਾੜਾ ਅਗੇ
 ਪ੍ਰਥਮਿ ਧਰਾਇਣ ॥ ਬਾਵਨ ਰੂਪੁ ਕੀਆ ਤੁਥੁ ਕਰਤੇ ਸਭ ਹੀ ਸੇਤੀ ਹੈ ਚੰਗਾ ॥੩॥ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮਚੰਦ ਜਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ
 ਰੇਖਿਆ ॥ ਬਨਵਾਲੀ ਚਕ੍ਰਪਾਣਿ ਦਰਸਿ ਅਨੂਪਿਆ ॥ ਸਹਸ ਨੇਤ ਮੂਰਤਿ ਹੈ ਸਹਸਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸਭ ਹੈ ਮੰਗਾ
 ॥੪॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਅਨਾਥਹ ਨਾਥੇ ॥ ਗੋਪੀ ਨਾਥੁ ਸਗਲ ਹੈ ਸਾਥੇ ॥ ਬਾਸੁਦੇਵ ਨਿਰੰਜਨ ਦਾਤੇ ਬਰਨਿ ਨ
 ਸਾਕਤ ਗੁਣ ਅੰਗਾ ॥੫॥ ਸੁਕੰਦ ਮਨੋਹਰ ਲਖਮੀ ਨਾਰਾਇਣ ॥ ਦ੍ਰੋਪਤੀ ਲਜਾ ਨਿਵਾਰਿ ਉਧਾਰਣ ॥ ਕਮਲਾਕੰਤ
 ਕਰਹਿ ਕੰਤੂਹਲ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦੀ ਨਿਹਸੰਗਾ ॥੬॥ ਅਮੋਘ ਦਰਸਨ ਆਜੂਨੀ ਸੰਭਤ ॥ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਜਿਸੁ ਕਦੇ
 ਨਾਹੀ ਖਤ ॥ ਅਭਿਨਾਸੀ ਅਭਿਗਤ ਅਗੋਚਰ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁੜਾ ਹੀ ਹੈ ਲਗਾ ॥੭॥ ਸ਼੍ਰੀਰਾਂਗ ਬੈਕੁਂਠ ਕੇ ਵਾਸੀ ॥
 ਮਛੁ ਕਛੁ ਕੂਰਮੁ ਆਗਿਆ ਅਤਤਰਾਸੀ ॥ ਕੇਸਵ ਚਲਤ ਕਰਹਿ ਨਿਰਾਲੇ ਕੀਤਾ ਲੋਡਿਹਿ ਸੋ ਹੋਇਗਾ ॥੮॥
 ਨਿਰਾਹਾਰੀ ਨਿਰਕੈਰੁ ਸਮਾਇਆ ॥ ਧਾਰਿ ਖੇਲੁ ਚਤੁਰਭੁਜੁ ਕਹਾਇਆ ॥ ਸਾਵਲ ਸੁੰਦਰ ਰੂਪ ਬਣਾਵਹਿ ਬੇਣੁ ਸੁਨਤ
 ਸਭ ਮੋਹੈਗਾ ॥੯॥ ਬਨਮਾਲਾ ਬਿਭੂਖਨ ਕਮਲ ਨੈਨ ॥ ਸੁੰਦਰ ਕੁੰਡਲ ਮੁਕਟ ਬੈਨ ॥ ਸੱਖ ਚਕ ਗਦਾ ਹੈ ਧਾਰੀ
 ਮਹਾ ਸਾਰਥੀ ਸਤਸੰਗਾ ॥੧੦॥ ਪੀਤ ਪੀਤਾਂਬਰ ਤ੍ਰਭਵਣ ਧਣੀ ॥ ਜਗਨਾਥੁ ਗੋਪਾਲੁ ਸੁਖਿ ਭਣੀ ॥ ਸਾਰਿਗਧਰ
 ਭਗਵਾਨ ਬੀਠੁਲਾ ਮੈ ਗਣਤ ਨ ਆਵੈ ਸਰਖਾਂਗਾ ॥੧੧॥ ਨਿਹਕੰਟਕੁ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਕਹੀਐ ॥ ਧਨਜੈ ਜਲਿ ਥਲਿ ਹੈ

ਮहੀਐ ॥ ਮਿਰਤ ਲੋਕ ਪਇਆਲ ਸਮੀਪਤ ਅਸਥਿਰ ਥਾਨੁ ਜਿਸੁ ਹੈ ਅਭਗਾ ॥੧੨॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਦੁਖ ਭੈ ਭੰਜਨੁ
 ॥ ਅਛਕਾਰ ਨਿਵਾਰਣੁ ਹੈ ਭਵ ਖੰਡਨੁ ॥ ਭਗਤੀ ਤੋਖਿਤ ਦੀਨ ਕ੃ਪਾਲਾ ਗੁਣੇ ਨ ਕਿਤ ਹੀ ਹੈ ਮਿਗਾ ॥੧੩॥
 ਨਿਰਂਕਾਰੁ ਅਛਲ ਅਡੋਲੋ ॥ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਮਤਲੋ ॥ ਸੋ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ਆਪਹੁ ਕੋਇ ਨ
 ਪਾਵੈਗਾ ॥੧੪॥ ਆਪੇ ਗੋਪੀ ਆਪੇ ਕਾਨਾ ॥ ਆਪੇ ਗੜ ਚਰਾਵੈ ਬਾਨਾ ॥ ਆਪਿ ਉਪਾਵਹਿ ਆਪਿ ਖਪਾਵਹਿ
 ਤੁਧੁ ਲੇਪੁ ਨਹੀ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਰੰਗਾ ॥੧੫॥ ਏਕ ਜੀਹ ਗੁਣ ਕਵਨ ਬਖਾਨੈ ॥ ਸਹਸ ਫਨੀ ਸੇਖ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨੈ ॥
 ਨਵਤਨ ਨਾਮ ਜਪੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਇਕੁ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਕਹਿ ਸੰਗਾ ॥੧੬॥ ਓਟ ਗਹੀ ਜਗਤ ਪਿਤ ਸਰਣਾਇਆ
 ॥ ਭੈ ਭਇਆਨਕ ਜਮਦੂਤ ਦੁਤਰ ਹੈ ਮਾਇਆ ॥ ਹੋਹੁ ਕ੃ਪਾਲ ਇਛਾ ਕਰਿ ਰਾਖਹੁ ਸਾਧ ਸਾਂਤਨ ਕੈ ਸੰਗੁ ਸੰਗਾ
 ॥੧੭॥ ਦੂਸਟਿਮਾਨ ਹੈ ਸਗਲ ਮਿਥੇਨਾ ॥ ਇਕੁ ਮਾਗਤ ਦਾਨੁ ਗੋਬਿਦ ਸਾਂਤ ਰੇਨਾ ॥ ਮਸਤਕਿ ਲਾਇ ਪਰਮ ਪਦੁ
 ਪਾਵਤ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਸੋ ਪਾਵੈਗਾ ॥੧੮॥ ਜਿਨ ਕਤ ਕ੃ਪਾ ਕਰੀ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥ ਤਿਨ ਸਾਧੂ ਚਰਣ ਲੈ ਰਿਦੈ
 ਪਰਾਤੇ ॥ ਸਗਲ ਨਾਮ ਨਿਧਾਨੁ ਤਿਨ ਪਾਇਆ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਮਨਿ ਵਾਜਂਗਾ ॥੧੯॥ ਕਿਰਤਮ ਨਾਮ ਕਥੇ
 ਤੇਰੇ ਜਿਹਬਾ ॥ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਪਰਾ ਪ੍ਰੰਬਲਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਪਏ ਸਰਣਾਈ ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਮਨਿ ਰੰਗੁ
 ਲਗਾ ॥੨੦॥ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੂਹੈ ਜਾਣਹਿ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਕਥਹਿ ਤੈ ਆਪਿ ਕਖਾਣਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਦਾਸਨ
 ਕੋ ਕਰੀਅਹੁ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਦਾਸਾ ਰਾਖੁ ਸੰਗਾ ॥੨੧॥੨॥੧੧॥ ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਲਹ ਅਗਮ ਖੁਦਾਈ ਬੰਦੇ ॥
 ਛੋਡਿ ਖਿਆਲ ਦੁਨੀਆ ਕੇ ਧੰਧੇ ॥ ਹੋਇ ਪੈ ਖਾਕ ਫਕੀਰ ਮੁਸਾਫਰੁ ਇਹੁ ਦਰਵੇਸੁ ਕਬੂਲੁ ਦਰਾ ॥੧॥ ਸਚੁ
 ਨਿਵਾਜ ਧਕੀਨ ਮੁਸਲਾ ॥ ਮਨਸਾ ਮਾਰਿ ਨਿਵਾਰਿਹੁ ਆਸਾ ॥ ਦੇਹ ਮਸੀਤਿ ਮਨੁ ਮਤਲਾਣਾ ਕਲਮ ਖੁਦਾਈ
 ਪਾਕੁ ਖਰਾ ॥੨॥ ਸਰਾ ਸਰੀਅਤਿ ਲੇ ਕੰਮਾਵਹੁ ॥ ਤਰੀਕਤਿ ਤਰਕ ਖੋਜਿ ਟੋਲਾਵਹੁ ॥ ਮਾਰਫਤਿ ਮਨੁ ਮਾਰਹੁ
 ਅਬਦਾਲਾ ਮਿਲਹੁ ਹਕੀਕਤਿ ਜਿਤੁ ਫਿਰਿ ਨ ਮਰਾ ॥੩॥ ਕੁਰਾਣੁ ਕਤੇਬ ਦਿਲ ਮਾਹਿ ਕਮਾਹੀ ॥ ਦਸ ਅਤਰਾਤ
 ਰਾਖਹੁ ਬਦ ਰਾਹੀ ॥ ਪੰਚ ਮਰਦ ਸਿਦਕਿ ਲੇ ਬਾਧਹੁ ਖੈਰਿ ਸਬੂਰੀ ਕਬੂਲ ਪਰਾ ॥੪॥ ਮਕਾ ਮਿਹਰ ਰੋਜਾ ਪੈ ਖਾਕਾ
 ॥ ਭਿਸਤੁ ਪੀਰ ਲਫਜ ਕਮਾਇ ਅੰਦਾਜਾ ॥ ਹੂਰ ਨੂਰ ਮੁਸਕੁ ਖੁਦਾਇਆ ਬੰਦਗੀ ਅਲਹ ਆਲਾ ਹੁਜਰਾ ॥੫॥

ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਸੋਈ ਕਾਜੀ ॥ ਜੋ ਦਿਲੁ ਸੋਧੈ ਸੋਈ ਹਾਜੀ ॥ ਸੋ ਮੁਲਾ ਮਲਤਨ ਨਿਵਾਰੈ ਸੋ ਦਰਕੇਸੁ ਜਿਸੁ
 ਸਿਫਤਿ ਧਰਾ ॥੬॥ ਸਭੇ ਵਖਤ ਸਭੇ ਕਰਿ ਵੇਲਾ ॥ ਖਾਲਕੁ ਧਾਦਿ ਦਿਲੈ ਮਹਿ ਮਤਲਾ ॥ ਤਸਬੀ ਧਾਦਿ ਕਰਹੁ
 ਦਸ ਮਰਦਨੁ ਸੁਨਨਿ ਸੀਲੁ ਬੰਧਾਨਿ ਬਰਾ ॥੭॥ ਦਿਲ ਮਹਿ ਜਾਨਹੁ ਸਭ ਫਿਲਹਾਲਾ ॥ ਖਿਲਖਾਨਾ ਬਿਰਾਦਰ
 ਹਮੂ ਜੰਜਾਲਾ ॥ ਮੀਰ ਮਲਕ ਤਮਰੇ ਫਾਨਾਇਆ ਏਕ ਸੁਕਾਮ ਖੁਦਾਇ ਦਰਾ ॥੮॥ ਅਵਲਿ ਸਿਫਤਿ ਟ੍ਰੂਜੀ
 ਸਾਬੂਰੀ ॥ ਤੀਜੈ ਹਲੇਮੀ ਚਤੁਰੈ ਖੈਰੀ ॥ ਪੰਜਵੈ ਪੰਜੇ ਇਕਤੁ ਸੁਕਾਮੈ ਏਹਿ ਪੰਜਿ ਵਖਤ ਤੇਰੈ ਅਪਰਪਰਾ ॥੯॥
 ਸਗਲੀ ਜਾਨਿ ਕਰਹੁ ਮਤਦੀਫਾ ॥ ਬਦ ਅਮਲ ਛੋਡਿ ਕਰਹੁ ਹਥਿ ਕੂਜਾ ॥ ਖੁਦਾਇ ਏਕੁ ਬੁਝਿ ਦੇਵਹੁ ਬਾਂਗਾਂ
 ਬੁਰਗੂ ਬਰਖੁਰਦਾਰ ਖਰਾ ॥੧੦॥ ਹਕੁ ਹਲਾਲੁ ਬਖੋਰਹੁ ਖਾਣਾ ॥ ਦਿਲ ਦਰੀਆਤ ਧੋਵਹੁ ਮੈਲਾਣਾ ॥ ਪੀਰੁ
 ਪਛਾਣੈ ਭਿਸਤੀ ਸੋਈ ਅਜਰਾਈਲੁ ਨ ਦੋਜ ਠਰਾ ॥੧੧॥ ਕਾਇਆ ਕਿਰਦਾਰ ਅਤਰਤ ਧਕਿਨਾ ॥ ਰੰਗ ਤਮਾਸੇ
 ਮਾਣਿ ਹਕਿਨਾ ॥ ਨਾਪਾਕ ਪਾਕੁ ਕਰਿ ਹਟੂਰਿ ਹਦੀਸਾ ਸਾਬਤ ਸੂਰਤਿ ਦਸਤਾਰ ਸਿਰਾ ॥੧੨॥ ਸੁਸਲਮਾਣੁ
 ਮੋਮ ਦਿਲਿ ਹੋਵੈ ॥ ਅੰਤਰ ਕੀ ਮਲੁ ਦਿਲ ਤੇ ਧੋਵੈ ॥ ਟੁਨੀਆ ਰੰਗ ਨ ਆਵੈ ਨੇਡੈ ਜਿਤ ਕੁਸਮ ਪਾਟੁ ਘਿਤ
 ਪਾਕੁ ਹਰਾ ॥੧੩॥ ਜਾ ਕਤ ਮਿਹਰ ਮਿਹਰ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥ ਸੋਈ ਮਰਦੁ ਮਰਦੁ ਮਰਦਾਨਾ ॥ ਸੋਈ ਸੇਖੁ ਮਸਾਇਕੁ
 ਹਾਜੀ ਸੋ ਬੰਦਾ ਜਿਸੁ ਨਜਰਿ ਨਰਾ ॥੧੪॥ ਕੁਦਰਤਿ ਕਾਦਰ ਕਰਣ ਕਰੀਮਾ ॥ ਸਿਫਤਿ ਮੁਹਬਤਿ ਅਥਾਹ
 ਰਹੀਮਾ ॥ ਹਕੁ ਹੁਕਮੁ ਸਚੁ ਖੁਦਾਇਆ ਬੁਝਿ ਨਾਨਕ ਬੰਦਿ ਖਲਾਸ ਤਰਾ ॥੧੫॥੩॥੧੨॥ ਮਾਰੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸਭ ਊਚ ਬਿਰਾਜੇ ॥ ਆਪੇ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪੇ ਸਾਜੇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਣਿ ਗਹਤ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਕਿਛੁ ਭਤ ਨ
 ਵਿਆਪੈ ਬਾਲ ਕਾ ॥੧॥ ਗਰਭ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਜਿਨਹਿ ਤਬਾਰਿਆ ॥ ਰਕਤ ਕਿਰਮ ਮਹਿ ਨਹੀ ਸੰਘਾਰਿਆ ॥
 ਅਪਨਾ ਸਿਮਰਨੁ ਦੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿਆ ਓਹੁ ਸਗਲ ਘਟਾ ਕਾ ਮਾਲਕਾ ॥੨॥ ਚਰਣ ਕਮਲ ਸਰਣਾਈ ਆਇਆ ॥
 ਸਾਧਸੰਗਿ ਹੈ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਇਆ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਸਭਿ ਟ੍ਰੂਖ ਨਿਵਾਰੇ ਜਧਿ ਹਰਿ ਭਤ ਨਹੀ ਕਾਲ ਕਾ ॥੩॥
 ਸਮਰਥ ਅਕਥ ਅਗੋਚਰ ਟੇਕਾ ॥ ਜੀਅ ਜਾਂਤ ਸਭਿ ਤਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥ ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਸੇਤਜ ਉਤਮੁਜ ਬਹੁ ਪਰਕਾਰੀ
 ਪਾਲਕਾ ॥੪॥ ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ਨਿਧਾਨਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਸੁ ਅੰਤਰਿ ਮਾਨਾ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਅੰਧ ਕ੍ਰਪ

ਤੇ ਵਿਰਲੇ ਕੋਈ ਸਾਲਕਾ ॥੫॥ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਮਥਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥ ਭ੍ਰਮੁ ਭਤ
 ਮਿਟਿਆ ਸਾਧਸੰਗ ਤੇ ਦਾਲਿਦ ਨ ਕੋਈ ਘਾਲਕਾ ॥੬॥ ਊਤਮ ਬਾਣੀ ਗਾਤ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੀ
 ਮੰਗਹੁ ਰਖਾਲਾ ॥ ਬਾਸਨ ਮੇਟਿ ਨਿਬਾਸਨ ਹੋਈਐ ਕਲਮਲ ਸਗਲੇ ਜਾਲਕਾ ॥੭॥ ਸੰਤਾ ਕੀ ਇਹ ਰੀਤਿ
 ਨਿਗਲੀ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰਿ ਦੇਖਹਿ ਨਾਲੀ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਆਰਾਧਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਤ ਸਿਮਰਤ ਕੀਜੈ ਆਲਕਾ
 ॥੮॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਨਿਮਖ ਨ ਵਿਸਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਜੀਵਹਿ ਤੇਰੇ
 ਦਾਸਾ ਬਨਿ ਜਲਿ ਪੂਰਨ ਥਾਲਕਾ ॥੯॥ ਤਤੀ ਵਾਤ ਨ ਤਾ ਕਤ ਲਾਗੈ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ॥
 ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਕਰੇ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਤਿਸੁ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ਨ ਤਾਲਕਾ ॥੧੦॥ ਰੋਗ ਸੋਗ ਦ੍ਰਖ ਤਿਸੁ ਨਾਹੀ ॥
 ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਹੀ ॥ ਆਪਣਾ ਨਾਮੁ ਦੇਹਿ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਖਾਲਕਾ ॥੧੧॥ ਨਾਮ
 ਰਤਨੁ ਤੇਰਾ ਹੈ ਪਿਆਰੇ ॥ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਤੈਰੈ ਦਾਸ ਅਪਾਰੇ ॥ ਤੈਰੈ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਤੁਧੁ ਜੇਹੇ ਵਿਰਲੇ ਕੋਈ ਭਾਲਕਾ
 ॥੧੨॥ ਤਿਨ ਕੀ ਧੂਡਿ ਮਾਂਗੈ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ॥ ਜਿਨ ਵਿਸਰਹਿ ਨਾਹੀ ਕਾਹੂ ਬੇਰਾ ॥ ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਰਮ ਪਦੁ
 ਪਾਈ ਸਦਾ ਸੰਗੀ ਹਰਿ ਨਾਲਕਾ ॥੧੩॥ ਸਾਜਨੁ ਮੀਤੁ ਪਿਆਰਾ ਸੋਈ ॥ ਏਕੁ ਵ੃ਡਾਏ ਦੁਰਮਤਿ ਖੋਈ ॥
 ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਅਛਕਾਰੁ ਤਜਾਏ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਉਪਦੇਸੁ ਨਿਰਮਾਲਕਾ ॥੧੪॥ ਤੁਧੁ ਵਿਣੁ ਨਾਹੀ ਕੋਈ ਮੇਰਾ ॥
 ਗੁਰਿ ਪਕੜਾਏ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਪੈਰਾ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ਜਿਨਿ ਖੰਡਿਆ ਭਰਮੁ ਅਨਾਲਕਾ ॥੧੫॥
 ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬਿਸਰੈ ਨਾਹੀ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਤ ਧਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਤੈਰੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ
 ਤ੍ਰ੍ਯ ਸਮਰਥੁ ਵਡਾਲਕਾ ॥੧੬॥੪॥੧੩॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ ੫

੧੭੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਨਿਤ ਧਾਰੀ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਨਮਸਕਾਰੀ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਰਪਿ ਧਰੀ ਸਭੁ ਆਗੈ ਜਗ
 ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਸੁਹਾਵਣਾ ॥੧॥ ਸੋ ਠਾਕੁਰੁ ਕਿਤ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੇ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਦੇ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਸਾਸਿ ਗਰਾਸਿ
 ਸਮਾਲੇ ਕਰਤਾ ਕੀਤਾ ਅਪਣਾ ਪਾਵਣਾ ॥੨॥ ਜਾ ਤੇ ਬਿਰਥਾ ਕੋਊ ਨਾਹੀ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਰਖੁ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਜੁ ਅਚੁਤ ਸੁਆਮੀ ਦਰਗਹ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਾ ॥੩॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਅਸਟ ਦਸਾ ਸਿਧਿ ॥ ਨਾਮੁ
 ਨਿਧਾਨੁ ਸਹਜ ਸੁਖ ਨਤ ਨਿਧਿ ॥ ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਜੇ ਮਨ ਮਹਿ ਚਾਹਹਿ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੁਆਮੀ ਰਾਵਣਾ ॥੪॥
 ਸਾਸਤ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਬੇਦ ਕਖਾਣੀ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜੀਤੁ ਪਰਾਣੀ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਨਿੰਦਾ ਪਰਹਰੀਐ ਹਰਿ ਰਸਨਾ
 ਨਾਨਕ ਗਾਵਣਾ ॥੫॥ ਜਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਕੁਲੁ ਨਹੀ ਜਾਤੀ ॥ ਪ੍ਰੂਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ॥ ਜੋ ਜੋ ਜਪੈ
 ਸੋਈ ਵਡਭਾਗੀ ਬਹੁਡਿ ਨ ਜੋਨੀ ਪਾਵਣਾ ॥੬॥ ਜਿਸ ਨੋ ਬਿਸਰੈ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਜਲਤਾ ਫਿਰੈ ਰਹੈ ਨਿਤ
 ਤਾਤਾ ॥ ਅਕਿਰਤਘਣੈ ਕਤ ਰਖੈ ਨ ਕੋਈ ਨਰਕ ਘੋਰ ਮਹਿ ਪਾਵਣਾ ॥੭॥ ਜੀਤ ਪ੍ਰਾਣ ਤਨੁ ਧਨੁ ਜਿਨਿ
 ਸਾਜਿਆ ॥ ਮਾਤ ਗਰਭ ਮਹਿ ਰਾਖਿ ਨਿਵਾਜਿਆ ॥ ਤਿਸ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਛਾਡਿ ਅਨ ਰਾਤਾ ਕਾਹੂ ਸਿਰੈ ਨ ਲਾਵਣਾ
 ॥੮॥ ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਸਹਿ ਸਭਨ ਕੈ ਨੇਰੇ ॥ ਹਾਥਿ ਹਮਾਰੈ ਕਛੂਐ ਨਾਹੀ
 ਜਿਸੁ ਜਣਾਇਹਿ ਤਿਸੈ ਜਣਾਵਣਾ ॥੯॥ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥ ਤਿਸ ਹੀ ਪੁਰਖ ਨ ਵਿਆਪੈ
 ਮਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਸਰਣਾਈ ਟ੍ਰੂਸਰ ਲਵੈ ਨ ਲਾਵਣਾ ॥੧੦॥ ਆਗਿਆ ਟ੍ਰੂਖ ਸੂਖ ਸਭਿ ਕੀਨੇ
 ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਬਿਰਲੈ ਹੀ ਚੀਨੇ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਜਤ ਕਤ ਓਹੀ ਸਮਾਵਣਾ ॥੧੧॥
 ਸੋਈ ਭਗਤੁ ਸੋਈ ਵਡ ਦਾਤਾ ॥ ਸੋਈ ਪ੍ਰੂਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਬਾਲ ਸਹਾਈ ਸੋਈ ਤੇਰਾ ਜੋ ਤੈਰੈ ਮਨਿ
 ਭਾਵਣਾ ॥੧੨॥ ਮਿਰਤੁ ਟ੍ਰੂਖ ਸੂਖ ਲਿਖਿ ਪਾਏ ॥ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਬਧਹਿ ਘਟਹਿ ਨ ਘਟਾਏ ॥ ਸੋਈ ਹੋਇ ਜਿ
 ਕਰਤੇ ਭਾਵੈ ਕਹਿ ਕੈ ਆਪੁ ਵਜਾਵਣਾ ॥੧੩॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਸੇਈ ਕਾਢੇ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਟ੍ਰੂਟੇ ਗਾੱਢੇ ॥
 ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਰਖੇ ਕਰਿ ਅਪੁਨੇ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਗੋਬਿੰਦੁ ਧਿਆਵਣਾ ॥੧੪॥ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
 ਅਚਰਜ ਰੂਪੁ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਭਗਤਿ ਦਾਨੁ ਮੰਗੈ ਜਨੁ ਤੇਰਾ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਵਣਾ ॥੧੫॥੧॥
 ੧੪॥੨੨॥੨੪॥੨॥੧੪॥੬੨॥

ਮਾਝ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੩

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥

ਵਿਣੁ ਗਾਹਕ ਗੁਣੁ ਵੇਚੀਐ ਤਤ ਗੁਣੁ ਸਹਘੋ ਜਾਇ ॥ ਗੁਣ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤਤ ਗੁਣੁ ਲਾਖ ਵਿਕਾਇ ॥

ਗੁਣ ਤੇ ਗੁਣ ਮਿਲਿ ਪਾਈਐ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥ ਮੁੱਲਿ ਅਮੂਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ਵਣਜਿ ਨ ਲੀਜੈ ਹਾਟਿ ॥
 ਨਾਨਕ ਪੂਰਾ ਤੋਲੁ ਹੈ ਕਬਹੂ ਨ ਹੋਵੈ ਘਾਟਿ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੇ ਭਰਮਸਹਿ ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ਨੀਤ ॥
 ਡਿਕਿ ਬਾਂਧੇ ਡਿਕਿ ਢੀਲਿਆ ਡਿਕਿ ਸੁਖੀਏ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਮੰਨਿ ਲੈ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਚੁ ਰੀਤਿ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਗਿਆਨੁ ਪਾਇਆ ਅਤਿ ਖੜਗੁ ਕਰਾਰਾ ॥ ਦ੍ਰਿਆ ਭਰਮੁ ਗੜੁ ਕਟਿਆ ਮੋਹੁ ਲੋਭੁ ਅਛਕਾਰਾ ॥
 ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਸਚ ਸੰਜਮਿ ਮਤਿ ਊਤਮਾ ਹਰਿ ਲਗਾ ਪਿਆਰਾ ॥ ਸਮੁ
 ਸਚੋ ਸਚੁ ਵਰਤਦਾ ਸਚੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥੧॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਕੇਦਾਰਾ ਰਾਗਾ ਵਿਚਿ ਜਾਣੀਐ ਭਾਈ ਸਬਦੇ
 ਕਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਿਉ ਮਿਲਦੇ ਰਹੈ ਸਚੇ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਵਿਚਹੁ ਮਲੁ ਕਟੇ ਆਪਣੀ ਕੁਲਾ ਕਾ ਕਰੇ
 ਤੁਧਾਰੁ ॥ ਗੁਣਾ ਕੀ ਰਾਸਿ ਸੰਗਰੈ ਅਵਗਣ ਕਠੈ ਵਿਡਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਮਿਲਿਆ ਸੋ ਜਾਣੀਐ ਗੁਰੁ ਨ ਛੋਡੈ ਆਪਣਾ
 ਫੌਜੈ ਨ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਸਾਗਰੁ ਦੇਖਉ ਝਰਿ ਮਰਤ ਭੈ ਤੈਰੈ ਝਰੁ ਨਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੰਤੋਖੀਆ
 ਨਾਨਕ ਬਿਗਸਾ ਨਾਇ ॥੨॥ ਮਃ ੪ ॥ ਚਡਿ ਬੋਹਿਥੈ ਚਾਲਸਤ ਸਾਗਰੁ ਲਹਰੀ ਦੇਇ ॥ ਠਾਕ ਨ ਸਚੈ ਬੋਹਿਥੈ
 ਜੇ ਗੁਰੁ ਧੀਰਕ ਦੇਇ ॥ ਤਿਤੁ ਦਰਿ ਜਾਇ ਉਤਾਰੀਆ ਗੁਰੁ ਦਿਸੈ ਸਾਵਧਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਦਰਗਹ
 ਚਲੈ ਮਾਨੁ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਿਹਕਂਟਕ ਰਾਜੁ ਭੁੰਚਿ ਤੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਕਰਮਾਈ ॥ ਸਚੈ ਤਖਤਿ ਬੈਠਾ ਨਿਆਤ
 ਕਰਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥ ਸਚਾ ਉਪਦੇਸੁ ਹਰਿ ਜਾਪਣਾ ਹਰਿ ਸਿਉ ਬਣਿ ਆਈ ॥ ਐਥੈ ਸੁਖਦਾਤਾ
 ਮਨਿ ਵਸੈ ਅੰਤਿ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਊਪਜੀ ਗੁਰਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥੨॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਭੂਲੀ ਭੂਲੀ
 ਮੈ ਫਿਰੀ ਪਾਧਰੁ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਪ੍ਰਭਹੁ ਜਾਇ ਸਿਆਣਿਆ ਦੁਖੁ ਕਾਟੈ ਮੇਰਾ ਕੋਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਚਾ ਮਨਿ ਵਸੈ
 ਸਾਜਨੁ ਤਤ ਹੀ ਠਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤਾਸੀਐ ਸਿਫਤੀ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਆਪੇ ਕਰਣੀ ਕਾਰ
 ਆਪਿ ਆਪੇ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥ ਆਪੇ ਕਿਸ ਹੀ ਬਖ਼ਸਿ ਲਏ ਆਪੇ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਚਾਨਣੁ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ਦੁਖ
 ਬਿਖੁ ਜਾਲੀ ਨਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮਾਇਆ ਵੇਖਿ ਨ ਭੁਲੁ ਤੂ ਮਨਮੁਖ ਸੂਰਖਾ ॥ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਈ
 ਸਮੁ ਝੂਠੁ ਦਰਖੁ ਲਖਾ ॥ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ਨ ਬੂਜਈ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਜਮ ਖੜਗੁ ਕਲਖਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤਥੇ

जिन हरि रसु चखा ॥ आपि कराए करे आपि आपे हरि रखा ॥३॥ सलोकु मः ३ ॥ जिना गुरु नही
 भेटिआ भै की नाही बिंद ॥ आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥ कापड़ जिवै पछोड़ीअै घड़ी
 मुहत घड़ीआलु ॥ नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥१॥ मः ३ ॥ तृभवण ढूढ़ी सजणा
 हउमै बुरी जगति ॥ ना झुरु हीअड़े सचु चउ नानक सचो सचु ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि आपे
 बखसिओनु हरि नामि समाणे ॥ आपे भगती लाइओनु गुर सबदि नीसाणे ॥ सनमुख सदा सोहणे
 सचै दरि जाणे ॥ औथै ओथै मुकति है जिन राम पछाणे ॥ धन्नु धन्नु से जन जिन हरि सेविआ तिन हउ
 कुरबाणे ॥४॥ सलोकु मः १ ॥ महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध ॥ जे गुण होवनि ता पिरु
 रवै नानक अवगुण मुंध ॥१॥ मः १ ॥ साचु सील सचु संजमी सा पूरी परवारि ॥ नानक अहिनिसि
 सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ ॥
 किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ ॥ गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ॥
 हरि रसु जिनी चाखिआ अन रस ठाकि रहाइआ ॥ हरि रसु पी सदा तृपति भए फिरि तृसना भुख
 गवाइआ ॥५॥ सलोकु मः ३ ॥ पिर खुसीए धन रावीए धन उरि नामु सीगारु ॥ नानक धन
 आगै खड़ी सोभावंती नारि ॥१॥ मः १ ॥ ससुरै पईअै कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक धन्नु
 सुहागणी जो भावहि वेपरवाह ॥२॥ पउड़ी ॥ तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइक होई ॥ जिनी
 सचु पछाणिआ सचु राजे सई ॥ एहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइ दुखु होई ॥ कीता किआ
 सालाहीअै जिसु जादे बिलम न होई ॥ निहचलु सचा एकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई ॥६॥
 सलोकु मः ३ ॥ सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि
 समाहि ॥१॥ मः ३ ॥ मन के अधिक तरंग किउ दरि साहिब छुटीअै ॥ जे राचै सच रंगि गूड़ै रंगि
 अपार कै ॥ नानक गुर परसादी छुटीअै जे चितु लगै सचि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि का नामु अमोलु है

ਕਿਤ ਕੀਮਤਿ ਕੀਜੈ ॥ ਆਪੇ ਸੂਸਟਿ ਸਭ ਸਾਜੀਅਨੁ ਆਪੇ ਵਰਤੀਜੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਲਾਹੀਐ ਸਚੁ
 ਕੀਮਤਿ ਕੀਜੈ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਕਮਲੁ ਬਿਗਾਸਿਆ ਇਕ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਠਾਕਿਆ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ
 ਸਵੀਜੈ ॥੭॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾ ਮੈਲਾ ਨਾ ਧੁੰਧਲਾ ਨਾ ਭਗਵਾ ਨਾ ਕਚੁ ॥ ਨਾਨਕ ਲਾਲੋ ਲਾਲੁ ਹੈ ਸਚੈ ਰਤਾ
 ਸਚੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਹਜਿ ਵਣਸਪਤਿ ਫੁਲੁ ਫਲੁ ਭਵਰੁ ਵਸੈ ਭੈ ਖੰਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਰਵਰੁ ਏਕੁ ਹੈ ਏਕੋ ਫੁਲੁ
 ਪਿੰਗੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜੋ ਜਨ ਲੂੜਾਹਿ ਮਨੈ ਸਿਤ ਸੇ ਸੂਰੇ ਪਰਥਾਨਾ ॥ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਸਦਾ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਜਿਨੀ ਆਪੁ
 ਪਛਾਨਾ ॥ ਗਿਆਨੀਆ ਕਾ ਇਹੁ ਮਹਤੁ ਹੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕਾ ਮਹਲੁ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਲਾਇ
 ਧਿਆਨਾ ॥ ਜਿਨ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨੁ ਜੀਤਿਆ ਜਗੁ ਤਿਨਹਿ ਜਿਤਾਨਾ ॥੮॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਜੋਗੀ ਹੋਵਾ ਜਗਿ
 ਭਵਾ ਘਰਿ ਘਰਿ ਭੀਖਿਆ ਲੇਤ ॥ ਦਰਗਹ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਕਿਸੁ ਕਿਸੁ ਤਤਰੁ ਦੇਤ ॥ ਪਿੰਗਿਆ ਨਾਮੁ ਸਤੋਖੁ ਮੜੀ
 ਸਦਾ ਸਚੁ ਹੈ ਨਾਲਿ ॥ ਭੇਖੀ ਹਾਥ ਨ ਲਧੀਆ ਸਭ ਬਧੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗਲਾ ਝੂਠੀਆ ਸਚਾ ਨਾਮੁ
 ਸਮਾਲਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿਤੁ ਦਰਿ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਸੋ ਦੁ ਸੇਵਿਹੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰ ਲੋਡਿ ਲਹੁ ਜਿਸੁ
 ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਈ ਛੂਟੀਐ ਲੇਖਾ ਮੰਗੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਸਚੁ ਦੂਡਾਏ ਸਚੁ ਦੂਡੁ ਸਚਾ ਓਹੁ
 ਸਬਦੁ ਦੇਇ ॥ ਹਿਰਦੈ ਜਿਸ ਦੈ ਸਚੁ ਹੈ ਤਨੁ ਮਨੁ ਭੀ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੈ ਹੁਕਮਿ ਮੰਨਿਐ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ
 ਦੇਇ ॥ ਸਚੇ ਮਾਹਿ ਸਮਾਵਸੀ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੂਰੇ ਏਹਿ ਨ ਆਖੀਅਹਿ ਅਛਕਾਰਿ
 ਮਰਹਿ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥ ਅਂਧੇ ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਣਨੀ ਟ੍ਰੌਜੈ ਪਚਿ ਜਾਵਹਿ ॥ ਅਤਿ ਕਰੋਧ ਸਿਤ ਲੂੜਦੇ ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਦੁਖੁ
 ਪਾਵਹਿ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਅਛਕਾਰੁ ਨ ਭਾਵੰਈ ਵੇਦ ਕੂਕਿ ਸੁਣਾਵਹਿ ॥ ਅਛਕਾਰਿ ਮੁਏ ਸੇ ਵਿਗਤੀ ਗਏ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ
 ਫਿਰਿ ਆਵਹਿ ॥੬॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਕਾਗਤ ਹੋਇ ਨ ਊਜਲਾ ਲੋਹੇ ਨਾਵ ਨ ਪਾਰੁ ॥ ਪਿਰਮ ਪਦਾਰਥੁ ਮੰਨਿ ਲੈ
 ਧਨੁ ਸਕਾਰਣਹਾਰੁ ॥ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਊਜਲਾ ਸਿਰਿ ਕਾਸਟ ਲੋਹਾ ਪਾਰਿ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਛੋਡੈ ਭੈ ਵਸੈ ਨਾਨਕ ਕਰਣੀ
 ਸਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਾਰੁ ਮਾਰਣ ਜੋ ਗਏ ਮਾਰਿ ਨ ਸਕਹਿ ਗਵਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਜੇ ਇਹੁ ਮਾਰੀਐ ਗੁਰ ਸਬਦੀ
 ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਏਹੁ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਨਾ ਮਰੈ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨ ਹੀ ਕਤ ਮਨੁ ਮਾਰਸੀ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ

सोङि ॥२॥ पउड़ी ॥ दोवै तरफा उपाईओनु विचि सकति सिव वासा ॥ सकती किनै न पाइओ फिरि
 जनमि बिनासा ॥ गुरि सेविअै साति पाईअै जपि सास गिरासा ॥ सिमृति सासत सोधि देखु ऊतम हरि
 दासा ॥ नानक नाम बिना को थिरु नही नामे बलि जासा ॥੧੦॥ सलोकु मः ३ ॥ होवा पंडितु जोतकी
 वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नव खंड मधे पूजीआ अपणै चजि वीचारि ॥ मतु सचा अखरु भुलि जाइ चउकै
 भिटै न कोइ ॥ झूठे चउके नानका सचा एको सोङि ॥੧॥ मः ३ ॥ आपि उपाए करे आपि आपे नदरि
 करेइ ॥ आपे दे वडिआईआ कहु नानक सचा सोङि ॥੨॥ पउड़ी ॥ कंटकु कालु एकु है होरु कंटकु न
 सूझै ॥ अफरिओ जग महि वरतदा पापी सिउ लूझै ॥ गुर सबदी हरि भेदीअै हरि जपि हरि बूझै ॥ सो
 हरि सरणाई छुटीअै जो मन सिउ जूझै ॥ मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै ॥੧੧॥
 सलोकु मः १ ॥ हुकमि रजाई साखती दरगह सचु कबूलु ॥ साहिबु लेखा मंगसी दुनीआ देखि न भूलु ॥
 दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिलु रासि ॥ इसक मुहबति नानका लेखा करते पासि ॥੧॥ मः १ ॥
 अलगउ जोइ मधूकड़उ सारंगपाणि सबाइ ॥ हीरै हीरा बेधिआ नानक कंठि सुभाइ ॥੨॥ पउड़ी ॥
 मनमुख कालु विआपदा मोहि माइआ लागे ॥ खिन महि मारि पछाड़सी भाइ दूजै ठागे ॥ फिरि वेला
 हथि न आवई जम का डंडु लागे ॥ तिन जम डंडु न लगई जो हरि लिव जागे ॥ सभ तेरी तुधु छडावणी
 सभ तुधै लागे ॥੧੨॥ सलोकु मः १ ॥ सरबे जोइ अगछमी दूखु घनेरो आथि ॥ कालरु लादसि सरु
 लाघणउ लाभु न पूंजी साथि ॥੧॥ मः १ ॥ पूंजी साचउ नामु तू अखुटउ दरबु अपारु ॥ नानक वखरु
 निरमलउ धनु साहु वापारु ॥੨॥ मः १ ॥ पूरब प्रीति पिराणि लै मोटउ ठाकुरु माणि ॥ माथै ऊभै जमु
 मारसी नानक मेलणु नामि ॥੩॥ पउड़ी ॥ आपे पिंडु सवारिओनु विचि नव निधि नामु ॥ इकनी सुणि कै
 मनिआ हरि ऊतम कामु ॥ अंतरि हरि रंगु उपजिआ गाइआ हरि गुण नामु ॥੧੩॥ सलोकु मः १ ॥

ਭੋਲਤਣਿ ਭੈ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹੇਕੈ ਪਾਧਰ ਹੀਡੁ ॥ ਅਤਿ ਡਾਹਪਣਿ ਦੁਖੁ ਘਣੋ ਤੀਨੇ ਥਾਵ ਭਰੀਡੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਮਾਂਦਲੁ
 ਬੇਦਿ ਸਿ ਬਾਜਣੋ ਘਣੋ ਧੜੀਐ ਜੋਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂ ਬੀਜਤ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਡਿ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸਾਗਰੁ
 ਗੁਣੀ ਅਥਾਹੁ ਕਿਨਿ ਹਾਥਾਲਾ ਦੇਖੀਐ ॥ ਕਡਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਪਾਰਿ ਪਵਾ ॥ ਮੜ ਭਰਿ ਦੁਖ ਬਦੁਖ
 ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਸੈ ਨ ਲਥੀ ਭੁਖ ॥੩॥ ਪਤਡੀ ॥ ਜਿਨੀ ਅੰਦਰੁ ਭਾਲਿਆ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵੈ ॥
 ਜੋ ਇਛਨਿ ਸੋ ਪਾਇਦੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
 ਧਰਮ ਰਾਇ ਤਿਨ ਕਾ ਮਿਤੁ ਹੈ ਜਮ ਮਗਿ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ
 ॥੧੪॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥ ਸੁਣੀਐ ਏਕੁ ਵਖਾਣੀਐ ਸੁਰਗੁ ਮਿਰਤਿ ਪਇਆਲਿ ॥ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਈ ਮੇਟਿਆ ਜੋ
 ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਨਾਲਿ ॥ ਕਤਣੁ ਮੂਆ ਕਤਣੁ ਮਾਰਸੀ ਕਤਣੁ ਆਵੈ ਕਤਣੁ ਜਾਇ ॥ ਕਤਣੁ ਰਹਸੀ ਨਾਨਕਾ ਕਿਸ ਕੀ
 ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਹਤ ਮੁਆ ਮੈ ਮਾਰਿਆ ਪਤਣੁ ਵਹੈ ਦਰੀਆਤ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਥਕੀ ਨਾਨਕਾ ਜਾ ਮਨੁ
 ਰਤਾ ਨਾਇ ॥ ਲੋਇਣ ਰਤੇ ਲੋਇਣੀ ਕਨੀ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਇ ॥ ਜੀਭ ਰਸਾਇਣ ਚੂਨਡੀ ਰਤੀ ਲਾਲ ਲਵਾਇ ॥
 ਅੰਦਰੁ ਮੁਸਕਿ ਝਕੋਲਿਆ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਨਾਮੋ ਨਾਲਿ
 ਚਲੈ ॥ ਏਹੁ ਅਖੁਟੁ ਕਦੇ ਨ ਨਿਖੁਟੰਡੇ ਖਾਇ ਖਰਚਿਤ ਪਲੈ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਨੇਡਿ ਨ ਆਰਵੰਡੇ ਜਮਕੰਕਰ ਜਮਕਲੈ ॥
 ਸੇ ਸਾਹ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰਿਆ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਲੈ ॥ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਜਾ ਆਪਿ ਹਰਿ ਘਲੈ ॥੧੫॥
 ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖ ਵਾਪਾਰੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ ਬਿਖੁ ਵਿਹਾਇਹਿ ਬਿਖੁ ਸ਼ੱਗੁਹਹਿ ਬਿਖ ਸਿਤ ਧਰਹਿ ਪਿਆਰੁ
 ॥ ਬਾਹਰਹੁ ਪੰਡਿਤ ਸਦਾਇਦੇ ਮਨਹੁ ਮੂਰਖ ਗਾਵਾਰ ॥ ਹਰਿ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਇਨੀ ਵਾਦੀ ਧਰਨਿ ਪਿਆਰੁ ॥
 ਵਾਦਾ ਕੀਆ ਕਰਨਿ ਕਹਾਣੀਆ ਕੂਡੁ ਬੋਲਿ ਕਰਹਿ ਆਹਾਰੁ ॥ ਜਗ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਨਿਰਮਲਾ ਹੋਰੁ ਮੈਲਾ
 ਸਭੁ ਆਕਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਨੀ ਹੋਇ ਮੈਲੇ ਮਰਹਿ ਗਵਾਰ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਦੁਖੁ ਲਗਾ ਬਿਨੁ ਸੇਵਿਐ
 ਹੁਕਮੁ ਮਨੇ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਸੁਖੈ ਦਾ ਆਪੇ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸੈ
 ਰਿਆਇ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜਗਤੁ ਹੈ ਨਿਰਧਨੁ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਤ੍ਰਪਤਿ ਨਾਹੀ ॥ ਦ੍ਰਿਜੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ

हउमै दुखु पाही ॥ बिनु करमा किछू न पाईਐ जे बहुतु लोचाही ॥ आवै जाइ जंमै मरै गुर सबदि
 छुटाही ॥ आपि करै किसु आखीਐ दूजा को नाही ॥ ੧੬ ॥ सलोकु मः ੩ ॥ इसु जग महि संती धनु खटिआ
 जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ सतिगुरि सचु दृढ़ाइआ इसु धन की कीमति कही न जाइ ॥
 इतु धनि पाइਐ भुख लथी सुखु वसिआ मनि आइ ॥ जिन्ना कउ धुरि लिखिआ तिनी पाइआ आइ ॥
 मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ ॥ अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥ साँति
 न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ॥ सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ॥ नानक विणु
 सतिगुर मति भवी सतिगुर नो मिलै ता सबदु कमाइ ॥ सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ
 ॥ ੧ ॥ मः ੩ ॥ जिनि उपाई मेदनी सोई सार करेइ ॥ एको सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु न कोइ
 ॥ खाणा सबदु चंगिआईआ जितु खाधै सदा तृपति होइ ॥ पैनणु सिफति सनाइ है सदा सदा ओहु
 ऊजला मैला कदे न होइ ॥ सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥ देही नो सबदु सीगारु है जितु
 सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीਐ जिस नो आपि विखाले सोइ ॥ ੨ ॥ पउड़ी ॥ अंतरि जपु
 तपु संजमो गुर सबदी जापै ॥ हरि हरि नामु धिआईਐ हउमै अगिआनु गवापै ॥ अंदरु अंमृति
 भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥ जिन चाखिआ से निरभउ भए से हरि रसि ध्रापै ॥ हरि किरपा धारि
 पीआइआ फिरि कालु न विआपै ॥ ੧੭ ॥ सलोकु मः ੩ ॥ लोकु अवगणा की बन्नै गंठड़ी गुण न विहाङ्गै
 कोइ ॥ गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥ गुर परसादी गुण पाईअनि जिस नो नदरि करेइ
 ॥ ੧ ॥ मः ੩ ॥ गुण अवगुण समानि हहि जि आपि कीते करतारि ॥ नानक हुकमि मनिऐ सुखु पाईਐ
 गुर सबदी वीचारि ॥ ੨ ॥ पउड़ी ॥ अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥ गुर सबदी दरु जाणीऐ
 अंदरि महलु असराउ ॥ खेरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा
 सदा सचु निआउ ॥ अंमृत का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ ॥ ੧੮ ॥ सलोक मः ੧ ॥ हउ मै करी

ਤਾਂ ਤੂ ਨਾਹੀ ਤੂ ਹੋਵਹਿ ਹਤ ਨਾਹਿ ॥ ਬ੍ਰਾਝਹੁ ਗਿਆਨੀ ਬ੍ਰਾਝਣਾ ਏਹ ਅਕਥ ਕਥਾ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਤਤੁ ਨ
 ਪਾਈਐ ਅਲਖੁ ਵਸੈ ਸਭ ਮਾਹਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤ ਜਾਣੀਐ ਜਾਂ ਸਬਦੁ ਵਸੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਆਪੁ ਗਿੜਿਆ ਭਰਮੁ
 ਭਤ ਗਿੜਿਆ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਈਐ ਊਤਮ ਮਤਿ ਤਰਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਝਾ
 ਛਿਸਾ ਜਪੁ ਜਾਪਹੁ ਤ੃ਭਵਣ ਤਿਸੈ ਸਮਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨੁ ਮਾਣਕੁ ਜਿਨਿ ਪਰਖਿਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਕੀਚਾਰਿ ॥
 ਸੇ ਜਨ ਵਿਰਲੇ ਜਾਣੀਅਹਿ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚਿ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਆਪੈ ਨੋ ਆਪੁ ਮਿਲਿ ਰਹਿਆ ਹਤਮੈ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ॥
 ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਦੁਤਰੁ ਤਰੇ ਭਉਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅੰਦਰੁ ਨ ਭਾਲਨੀ ਮੁਠੇ
 ਅਛਾਮਤੇ ॥ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾਂ ਭਵਿ ਥਕੇ ਅੰਦਰਿ ਤਿਖ ਤਤੇ ॥ ਸਿੰਮੂਤਿ ਸਾਸਤ ਨ ਸੋਧਨੀ ਮਨਮੁਖ ਵਿਗੁਤੇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ
 ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆਹੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸਤੇ ॥ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਕੀਚਾਰਿਆ ਹਰਿ ਜਧਿ ਹਰਿ ਗਤੇ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥
 ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਕਰੇ ਆਪਿ ਆਪੇ ਆਣੈ ਰਾਸਿ ॥ ਤਿਸੈ ਅਗੈ ਨਾਨਕਾ ਖਲਿਝਿ ਕੀਚੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਜਿਨਿ
 ਕੀਆ ਤਿਨਿ ਦੇਖਿਆ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਸੋਝਿ ॥ ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਨਾਨਕਾ ਜਾ ਘਰਿ ਕਰਤੈ ਸਭੁ ਕੋਝਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥
 ਸਭੇ ਥੋਕ ਵਿਸਾਰਿ ਝਿਕੀ ਮਿਤੁ ਕਰਿ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੁ ਪਾਪਾ ਫਹੈ ਹਰਿ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਚੁਕੈ ਜਨਮਿ ਨ
 ਜਾਹਿ ਮਾਰਿ ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ਸੋਗਿ ਨ ਮੋਹਿ ਜਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਮਨ ਮਹਿ ਸੰਜਿ ਧਰਿ ॥੨੦॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਮਾਇਆ ਮਨਹੁ ਨ ਕੀਸਰੈ ਮਾਂਗੈ ਦੰਮਾ ਦੰਮ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਈ ਨਾਨਕ ਨਹੀ ਕਰਮ
 ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਮਾਇਆ ਸਾਥਿ ਨ ਚਲਈ ਕਿਆ ਲਪਟਾਵਹਿ ਅੰਧ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਧਿਆਇ ਤੂ ਤੂਟਹਿ
 ਮਾਇਆ ਬੰਧ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਭਾਣੈ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਇਆਨੁ ਭਾਣੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਭਾਣੈ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲਿਆਨੁ ਭਾਣੈ
 ਸਚੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਭਾਣੇ ਜੇਵਡ ਹੋਰ ਦਾਤਿ ਨਾਹੀ ਸਚੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ
 ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਆ ॥੨੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਅੰਦਰਿ
 ਗਿਆਨੁ ਨਹੀ ਭੈ ਕੀ ਨਾਹੀ ਬਿੰਦ ॥ ਨਾਨਕ ਮੁਇਆ ਕਾ ਕਿਆ ਮਾਰਣਾ ਜਿ ਆਪਿ ਮਾਰੇ ਗੋਵਿੰਦ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥
 ਮਨ ਕੀ ਪਤੀ ਵਾਚਣੀ ਸੁਖੀ ਹੂ ਸੁਖੁ ਸਾਰੁ ॥ ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਭਲਾ ਆਖੀਐ ਜਿ ਬ੍ਰਾਝੈ ਬ੍ਰਾਹਮੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹੇ

ਹਰਿ ਪੜੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਆਇਆ ਓਹੁ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜਿ ਕੁਲ ਕਾ ਕਰੇ ਤਥਾਰੁ ॥ ਅਗੈ ਜਾਤਿ ਨ ਪੁਛੀਐ
ਕਰਣੀ ਸਬਦੁ ਹੈ ਸਾਰੁ ॥ ਹੋਰੁ ਕੂਝੁ ਪੜਣਾ ਕੂਝੁ ਕਮਾਵਣਾ ਬਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਅੰਦਰਿ ਸੁਖੁ ਨ ਹੋਰਵਿੰ
ਮਨਮੁਖ ਜਨਮੁ ਖੁਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਉਕਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਕਰਿ ਕਰਿ
ਕੇਖਦਾ ਆਪੇ ਸਭੁ ਸਚਾ ॥ ਜੋ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੂੜ੍ਹੈ ਖਸਮ ਕਾ ਸੋਈ ਨ਼ੁ ਕਚਾ ॥ ਜਿਤੁ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਲਾਇਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ
ਸਚਾ ॥ ਸਭਨਾ ਕਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਹੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਰਚਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਲਾਹੀਐ ਸਭਿ ਤਿਸ ਦੇ ਜਚਾ ॥ ਜਿਤ
ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਨਚਾਇਦਾ ਤਿਵ ਹੀ ਕੋ ਨਚਾ ॥੨੨॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

ਮਾਰੁ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੂ ਚਤ ਸਜਣ ਮੈਡਿਆ ਡੇਈ ਸਿਸੁ ਤਤਾਰਿ ॥ ਨੈਣ ਮਹਿਜੇ ਤਰਸਦੇ ਕਦਿ ਪਸੀ ਦੀਦਾਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਨੀਹੁ
ਮਹਿਜਾ ਤਤ ਨਾਲਿ ਬਿਆ ਨੇਹ ਕੂੜਾਵੇ ਡੇਖੁ ॥ ਕਪੜ ਭੋਗ ਡਰਾਵਣੇ ਜਿਚਰੁ ਪਿਰੀ ਨ ਡੇਖੁ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥
ਤਠੀ ਝਾਲੂ ਕੱਤੜੇ ਹਤ ਪਸੀ ਤਤ ਦੀਦਾਰੁ ॥ ਕਾਜਲੁ ਹਾਰ ਤਮੌਲ ਰਸੁ ਬਿਨੁ ਪਸੇ ਹਭਿ ਰਸ ਛਾਰੁ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥
ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਭੁ ਧਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਤੋ ਥਾਟੁ ਸਿਰਜਿ ਸੰਸਾਰਿਆ ॥ ਹਰਿ ਆਗਿਆ ਹੋਏ ਬੇਦ
ਪਾਪੁ ਪੁਨੁ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਕੈ ਗੁਣ ਬਿਸਥਾਰਿਆ ॥ ਨਵ ਖੰਡ ਪ੍ਰਥਮੀ ਸਾਜਿ ਹਰਿ ਰੰਗ
ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਕੇਕੀ ਜੰਤ ਤਥਾਇ ਅੰਤਰਿ ਕਲ ਧਾਰਿਆ ॥ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ਸਚੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿਆ ॥ ਤੂ
ਜਾਣਹਿ ਸਭ ਬਿਧਿ ਆਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥੧॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਜੇ ਤੂ ਮਿਨੁ ਅਸਾਡੜਾ ਹਿਕ ਭੌਰੀ ਨਾ
ਕੇਛੋਡਿ ॥ ਜੀਤ ਮਹਿਜਾ ਤਤ ਮੋਹਿਆ ਕਦਿ ਪਸੀ ਜਾਨੀ ਤੋਹਿ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਦੁਰਜਨ ਤੂ ਜਲੁ ਭਾਹੜੀ
ਕੇਛੋਡੇ ਮਰਿ ਜਾਹਿ ॥ ਕੰਤਾ ਤੂ ਸਤ ਸੇਜੜੀ ਮੈਡਾ ਹਭੋ ਦੁਖੁ ਤਲਾਹਿ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਦੁਰਜਨੁ ਦ੍ਰਾਜਾ ਭਾਤ
ਹੈ ਕੇਛੋਡਾ ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ ॥ ਸਜਣੁ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਜਿਸੁ ਮਿਲਿ ਕੀਚੈ ਭੋਗੁ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਅਗਮ
ਦਿਇਆਲੁ ਬੇਅੰਤੁ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹੈ ਕਤਣੁ ॥ ਤੁਥੁ ਸਿਰਜਿਆ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ਤੂ ਨਾਇਕੁ ਸਗਲ ਭਤਣ ॥
ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕੋਇ ਨ ਜਾਣੈ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਸਗਲ ਰਤਣ ॥ ਤੁਥੁ ਅਪਡਿ ਕੋਇ ਨ ਸਕੈ ਤੂ ਅਬਿਨਾਸੀ ਜਗ

ਤੁਧੁ ਥਾਪੇ ਚਾਰੇ ਜੁਗ ਤੂ ਕਰਤਾ ਸਗਲ ਧਰਣ ॥ ਤੁਧੁ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਕੀਆ ਤੁਧੁ ਲੇਪੁ ਨ ਲਗੈ ਤ੍ਰਣ
 ॥ ਜਿਸੁ ਹੋਵਹਿ ਆਪਿ ਦਿੱਅਲੁ ਤਿਸੁ ਲਾਵਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣ ॥ ਤੂ ਹੋਰਤੁ ਉਪਾਇ ਨ ਲਭਹੀ ਅਬਿਨਾਸੀ
 ਸੂਸਟਿ ਕਰਣ ॥੨॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਜੇ ਤੂ ਵਤਹਿ ਅੰਡਣੇ ਹਭ ਧਰਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ਹੋਇ ॥ ਹਿਕਸੁ ਕਨ੍ਤੈ ਬਾਹਰੀ
 ਮੈਡੀ ਵਾਤ ਨ ਪੁਛੈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਹਭੇ ਟੋਲ ਸੁਹਾਵਣੇ ਸਹੁ ਬੈਠਾ ਅੰਡਣੁ ਮਲਿ ॥ ਪਹੀ ਨ ਵੰਜੈ ਬਿਰਥੜਾ
 ਜੋ ਘਰਿ ਆਵੈ ਚਲਿ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸੇਜ ਵਿਛਾਈ ਕਨਤ ਕ੍ਰਿ ਕੀਆ ਹਭੁ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਇਤੀ ਮੰਝਿ ਨ ਸਮਾਵੰਈ ਜੇ
 ਗਲਿ ਪਹਿਰਾ ਹਾਰੁ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਜੋਨਿ ਨ ਆਵਹੀ ॥ ਤੂ ਹੁਕਮੀ ਸਾਜਹਿ ਸੂਸਟਿ
 ਸਾਜਿ ਸਮਾਵਹੀ ॥ ਤੇਰਾ ਰੂਪੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ਕਿਤ ਤੁਝਹਿ ਧਿਆਵਹੀ ॥ ਤੂ ਸਭ ਮਹਿ ਵਰਤਹਿ ਆਪਿ ਕੁਦਰਤਿ
 ਦੇਖਾਵਹੀ ॥ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਹੀ ॥ ਏਹਿ ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਲਾਲ ਕੀਮ ਨ ਪਾਵਹੀ ॥ ਜਿਸੁ
 ਹੋਵਹਿ ਆਪਿ ਦਿੱਅਲੁ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲਾਵਹੀ ॥ ਤਿਸੁ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ ਤੋਟਿ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹੀ ॥੩॥
 ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਜਾ ਸ੍ਰ ਪਸੀ ਹਠ ਮੈ ਪਿਰੀ ਮਹਿਯੈ ਨਾਲਿ ॥ ਹਭੇ ਢੁਖ ਤਲਾਹਿਅਮੁ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੧॥
 ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਬੈਠਾ ਭਖੇ ਵਾਤ ਲਮ੍ਮੇ ਸੇਵਹਿ ਦੁਖ ਖੜਾ ॥ ਪਿਰੀਏ ਤੂ ਜਾਣੁ ਮਹਿਜਾ ਸਾਉ ਜੋਈ ਸਾਈ ਸੁਹੁ ਖੜਾ
 ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਕਿਆ ਗਾਲਾਇਆ ਭੂਛ ਪਰ ਵੇਲਿ ਨ ਜੋਹੇ ਕਨਤ ਤੂ ॥ ਨਾਨਕ ਫੁਲਾ ਸੰਦੀ ਵਾਡਿ ਖਿਡਿਆ ਹਭੁ
 ਸੰਸਾਰੁ ਜਿਤ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੁ ਸਰੂਪੁ ਤੂ ਸਭ ਮਹਿ ਵਰਤਤਾ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਸੇਵਕੋ ਆਪੇ
 ਪ੍ਰਯੰਤਾ ॥ ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਆਪਿ ਤੂ ਆਪੇ ਸਤਕਤਾ ॥ ਜਤੀ ਸਤੀ ਪ੍ਰਮੁ ਨਿਰਮਲਾ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਭਗਕਤਾ ॥ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮ
 ਪਸਾਰੁ ਪਸਾਰਿਆ ਆਪੇ ਖੇਲਮਤਾ ॥ ਇਹੁ ਆਵਾ ਗਵਣੁ ਰਚਾਇਆ ਕਰਿ ਚੋਜ ਦੇਖਕਤਾ ॥ ਤਿਸੁ ਬਾਹੁਡਿ ਗਰਭਿ ਨ
 ਪਾਵਹੀ ਜਿਸੁ ਦੇਵਹਿ ਗੁਰ ਮੰਤਾ ॥ ਜਿਤ ਆਪਿ ਚਲਾਵਹਿ ਤਿਤ ਚਲਦੇ ਕਿਛੁ ਵਸਿ ਨ ਜੰਤਾ ॥੪॥ ਡਖਣੇ
 ਮਃ ੫ ॥ ਕੁਰੀਏ ਕੁਰੀਏ ਵੈਦਿਆ ਤਲਿ ਗਡਾ ਮਹਰੇਰੁ ॥ ਕੇਖੇ ਛਿਟਡਿ ਥੀਵਦੀ ਜਾਮਿ ਖਿਸਂਦੀ ਪੇਰੁ ॥੧॥
 ਮਃ ੫ ॥ ਸਚੁ ਜਾਣੈ ਕਚੁ ਵੈਦਿਆ ਤੂ ਆਘੂ ਆਘੇ ਸਲਵੇ ॥ ਨਾਨਕ ਆਤਸਡੀ ਮੰਝਿ ਨੈਣ੍ ਬਿਆ ਫਲਿ ਪਕਣਿ
 ਜਿਤ ਜੁੰਮਿਆ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਭੋਰੇ ਭੋਰੇ ਰੂਹਡੇ ਸੇਵੇਦੇ ਆਲਕੁ ॥ ਮੁਦਤਿ ਪੰਡ ਚਿਰਾਣੀਆ ਫਿਰਿ ਕੜ੍ ਆਵੈ

रुति ॥३॥ पउड़ी ॥ तुधु रूपु न रेखिआ जाति तू वरना बाहरा ॥ ए माणस जाणहि दूरि तू वरतहि
 जाहरा ॥ तू सभि घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥ तू पुरखु अन्नदी अन्नत सभ जोति समाहरा ॥
 तू सभ देवा महि देव बिधाते नरहरा ॥ किआ आराधे जिहवा इक तू अबिनासी अपरपरा ॥ जिसु
 मेलहि सतिगुरु आपि तिस के सभि कुल तरा ॥ सेवक सभि करदे सेव दरि नानकु जनु तेरा ॥५॥
 डखणे मः ५ ॥ गहडड़ा तृणि छाइआ गाफल जलिओहु भाहि ॥ जिना भाग मथाहड़ै तिन उसताद
 पनाहि ॥१॥ मः ५ ॥ नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आणि मउजूदु ॥ बाझहु सतिगुर आपणे
 बैठा झाकु दरूद ॥२॥ मः ५ ॥ नानक भुसरीआ पकाईआ पाईआ थालै माहि ॥ जिनी गुरु मनाइआ
 रजि रजि सई खाहि ॥३॥ पउड़ी ॥ तुधु जग महि खेलु रचाइआ विचि हउमै पाईआ ॥ एकु मंदरु
 पंच चोर हहि नित करहि बुरिआईआ ॥ दस नारी इकु पुरखु करि दसे सादि लोभाईआ ॥ एनि
 माइआ मोहणी मोहीआ नित फिरहि भरमाईआ ॥ हाठा दोवै कीतीओ सिव सकति वरताईआ ॥ सिव
 अगै सकती हारिआ एवै हरि भाईआ ॥ इकि विचहु ही तुधु रेखिआ जो सतसंगि मिलाईआ ॥ जल
 विचहु बिंबु उठालिओ जल माहि समाईआ ॥६॥ डखणे मः ५ ॥ आगाहा कू न्राधि पिछा फेरि न
 मुहड़ा ॥ नानक सिज्जि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥१॥ मः ५ ॥ सजणु मैडा चाईआ हभ
 कही दा मितु ॥ हभे जाणनि आपणा कही न ठाहे चितु ॥२॥ मः ५ ॥ गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु
 थिआ ॥ सोई सुहावा थानु जिथै पिरीए नानक जी तू वुठिआ ॥३॥ पउड़ी ॥ जा तू मेरै वलि है ता किआ
 मुहछंदा ॥ तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥ लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रह्वादा
 ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥ एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥ लेखा
 कोड़ि न पुछई जा हरि बखसंदा ॥ अन्नदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥ सभे काज
 सवारिअै जा तुधु भावंदा ॥७॥ डखणे मः ५ ॥ डेखण कू मुसताकु मुखु किजेहा तउ धणी ॥ फिरदा

ਕਿਤੈ ਹਾਲਿ ਜਾ ਡਿਠਮੁ ਤਾ ਮਨੁ ਧਾਪਿਆ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਦੁਖੀਆ ਦਰਦ ਘਣੇ ਵੇਦਨ ਜਾਣੇ ਤੂ ਧਣੀ ॥ ਜਾਣਾ
 ਲਖ ਭਵੇ ਪਿਰੀ ਡਿਖਿੰਦੋ ਤਾ ਜੀਵਸਾ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਫ਼ਹਦੀ ਜਾਇ ਕਰਾਰਿ ਵਹਣਿ ਵਛਾਂਦੇ ਸੈ ਡਿਠਿਆ ॥ ਸੇਈ
 ਰਹੇ ਅਮਾਣ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਸੁ ਜਨ ਤੇਰੀ ਭੁਖ ਹੈ ਤਿਸੁ ਦੁਖੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ॥ ਜਿਨਿ ਜਨਿ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਝਿਆ ਸੁ ਚਹੁ ਕੁੰਡੀ ਜਾਪੈ ॥ ਜੋ ਨਰੁ ਤਸ ਕੀ ਸਰਣੀ ਪੈ ਤਿਸੁ ਕੰਬਹਿ ਪਾਪੈ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਮਲੁ
 ਤਤਰੈ ਗੁਰ ਧੂੜੀ ਨਾਪੈ ॥ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਭਾਣਾ ਮੰਨਿਆ ਤਿਸੁ ਸੋਗੁ ਨ ਸੰਤਾਪੈ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੂ ਸਭਨਾ ਕਾ ਮਿਤੁ ਹੈ
 ਸਭਿ ਜਾਣਹਿ ਆਪੈ ॥ ਐਸੀ ਸੋਭਾ ਜਨੈ ਕੀ ਜੇਵੁੰ ਹਰਿ ਪਰਤਾਪੈ ॥ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਜਨ ਕਰਤਾਇਆ ਹਰਿ ਜਨ ਤੇ
 ਜਾਪੈ ॥੮॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਜਿਨਾ ਪਿਛੈ ਹਤ ਗੰਡੇ ਸੇ ਸੈ ਪਿਛੈ ਭੀ ਰਖਿਆਸੁ ॥ ਜਿਨਾ ਕੀ ਸੈ ਆਸੜੀ ਤਿਨਾ
 ਮਹਿਜੀ ਆਸ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਗਿਲੀ ਗਿਲੀ ਰੋਡੜੀ ਭਉਦੀ ਭਵਿ ਭਵਿ ਆਇ ॥ ਜੋ ਕੈਠੇ ਸੇ ਫਾਥਿਆ ਤਕਰੇ
 ਭਾਗ ਮਥਾਇ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਡਿਠਾ ਹਭ ਮੜਾਹਿ ਖਾਲੀ ਕੋਇ ਨ ਜਾਣੀਐ ॥ ਤੈ ਸਖੀ ਭਾਗ ਮਥਾਹਿ ਜਿਨੀ ਮੇਰਾ
 ਸਜਣੁ ਰਾਖਿਆ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਤ ਢਾਢੀ ਦਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਦਾ ਜੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਥਿਰ ਥਾਵਰੀ
 ਹੋਰ ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥ ਸੋ ਮੰਗ ਦਾਨੁ ਗੁੇਸਾਈਆ ਜਿਤੁ ਭੁਖ ਲਹਿ ਜਾਵੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਦੇਵਹੁ ਦਰਸਨੁ ਆਪਣਾ ਜਿਤੁ
 ਢਾਢੀ ਤ੃ਪਤਾਵੈ ॥ ਅਰਦਾਸਿ ਸੁਣੀ ਦਾਤਾਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਢਾਢੀ ਕਤ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਵੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦੇਖਦਿਆ ਦੁਖ ਭੁਖ ਗੰਡੇ
 ਢਾਢੀ ਕਤ ਮੰਗਣੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਸਭੇ ਇਛਾ ਪੂਰੀਆ ਲਗਿ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਪਾਵੈ ॥ ਹਤ ਨਿਰਗੁਣੁ ਢਾਢੀ ਬਖਿਸਿਓਨੁ
 ਪ੍ਰਭਿ ਪੁਰਖਿ ਵੇਦਾਵੈ ॥੬॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਜਾ ਛੁਟੇ ਤਾ ਖਾਕੁ ਤੂ ਸੁੰਜੀ ਕੱਤੁ ਨ ਜਾਣਹੀ ॥ ਦੁਰਜਨ ਸੇਤੀ ਨੇਹੁ ਤੂ ਕੈ
 ਗੁਣਿ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣਹੀ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਬਿਨੁ ਘੜੀ ਨ ਜੀਵਣਾ ਵਿਸਰੇ ਸੈ ਨ ਬਿੰਦ ॥ ਤਿਸੁ
 ਸਿਤ ਕਿਤ ਮਨ ਰੂਸੀਐ ਜਿਸਹਿ ਹਮਾਰੀ ਚਿੰਦ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਰਤੇ ਰੰਗਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਤਿ ਗੁਲਾਲੁ
 ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਆਲੂਦਿਆ ਜਿਤੀ ਹੋਰੁ ਖਿਆਲੁ ॥੩॥ ਪਕੜੀ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਜਾ ਤੂ ਮੇਰਾ ਮਿਤੁ ਹੈ ਤਾ
 ਕਿਆ ਸੈ ਕਾਡਾ ॥ ਜਿਨੀ ਠਗੀ ਜਗੁ ਠਗਿਆ ਸੇ ਤੁਧੁ ਮਾਰਿ ਨਿਵਾਡਾ ॥ ਗੁਰਿ ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਇਆ ਜਿਤਾ
 ਪਾਵਾਡਾ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਸਭਿ ਰਸ ਭੋਗਦਾ ਵਡਾ ਆਖਾਡਾ ॥ ਸਭਿ ਇੰਦੀਆ ਵਸਿ ਕਰਿ ਦਿਤੀਓ ਸਤਵੰਤਾ ਸਾਡਾ ॥

ਜਿਤੁ ਲਾਈਐਨਿ ਤਿਤੈ ਲਗਦੀਆ ਨਹ ਖਿੰਜੋਤਾੜਾ ॥ ਜੋ ਇਛੀ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਦਾ ਗੁਰਿ ਅੰਦਰਿ ਵਾੜਾ ॥ ਗੁਰੂ
 ਨਾਨਕੁ ਤੁਠਾ ਭਾਇਰਹੁ ਹਰਿ ਵਸਦਾ ਨੇੜਾ ॥੧੦॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਜਾ ਮੂੰ ਆਵਹਿ ਚਿਤਿ ਤ੍ਰਾਂ ਤਾ ਹਭੇ ਸੁਖ ਲਹਾਉ
 ॥ ਨਾਨਕ ਮਨ ਹੀ ਮੰਝਿ ਰੰਗਾਵਲਾ ਪਿਰੀ ਤਹਿਜਾ ਨਾਉ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਕਪੜੇ ਭੋਗ ਵਿਕਾਰ ਏ ਹਭੇ ਹੀ ਛਾਰ ॥
 ਖਾਕੁ ਲੁਡੇਦਾ ਤੰਨਿ ਖੇ ਜੋ ਰਤੇ ਦੀਦਾਰ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਕਿਆ ਤਕਹਿ ਬਿਆ ਪਾਸ ਕਰਿ ਹੀਅਡੇ ਹਿਕੁ ਅਥਾਰੁ ॥
 ਥੀਤ ਸੰਤਨ ਕੀ ਰੇਣੁ ਜਿਤੁ ਲਭੀ ਸੁਖ ਦਾਤਾਰੁ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਹਰਿ ਜੀਤ ਨ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮਨੂਆ ਨ ਲਗੈ ॥ ਧਰਮੁ ਧੀਰਾ ਕਲਿ ਅੰਦਰੇ ਇਹੁ ਪਾਪੀ ਮੂਲਿ ਨ ਤਗੈ ॥ ਅਹਿ ਕਰੁ ਕਰੇ ਸੁ ਅਹਿ ਕਰੁ ਪਾਏ ਇਕ
 ਘੜੀ ਸੁਹਤੁ ਨ ਲਗੈ ॥ ਚਾਰੇ ਜੁਗ ਮੈ ਸੋਧਿਆ ਵਿਣੁ ਸੰਗਤਿ ਅਵਾਕਾਰੁ ਨ ਭਗੈ ॥ ਹਤਮੈ ਮੂਲਿ ਨ ਛੁਟੰਈ ਵਿਣੁ
 ਸਾਧੂ ਸਤਸੰਗੈ ॥ ਤਿਚਰੁ ਥਾਹ ਨ ਪਾਰਵੰ ਜਿਚਰੁ ਸਾਹਿਬ ਸਿਤ ਮਨ ਭੰਗੈ ॥ ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਸੁ
 ਘਰਿ ਦੀਵਾਣੁ ਅਭਗੈ ॥ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਗੈ ॥੧੧॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥
 ਲੋਡੀਦੀ ਹਭ ਜਾਇ ਸੋ ਸੀਰਾ ਸੀਰਨਨ ਸਿਰਿ ॥ ਹਠ ਮੰਜ਼ਾਹੂ ਸੋ ਧਣੀ ਚਤਦੀ ਸੁਖਿ ਅਲਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਮਾਣਿਕੁ
 ਮੋਹਿ ਮਾਤ ਡਿੱਨਾ ਧਣੀ ਅਪਾਹਿ ॥ ਹਿਆਤ ਮਹਿਜਾ ਠੰਢਾ ਸੁਖਹੁ ਸਚੁ ਅਲਾਇ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਮੂੰ ਥੀਆਊ
 ਸੇਜ ਨੈਣਾ ਪਿਰੀ ਵਿਛਾਵਣਾ ॥ ਜੇ ਡੇਖੈ ਹਿਕ ਵਾਰ ਤਾ ਸੁਖ ਕੀਮਾ ਹੂੰ ਬਾਹਰੇ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮਨੁ ਲੋਚੈ ਹਰਿ ਮਿਲਣ
 ਕਤ ਕਿਤ ਦਰਸਨੁ ਪਾਈਆ ॥ ਮੈ ਲਖ ਵਿਡੇ ਸਾਹਿਬਾ ਜੇ ਬਿੰਦ ਬੁਲਾਈਆ ॥ ਮੈ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਭਾਲੀਆ ਤੁਧੁ
 ਜੇਵਡੁ ਨ ਸਾਈਆ ॥ ਮੈ ਦਸਿਹੁ ਮਾਰਗੁ ਸੰਤਹੋ ਕਿਤ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਈਆ ॥ ਮਨੁ ਅਰਪਿਹੁ ਹਤਮੈ ਤਜਹੁ ਇਤੁ
 ਧੰਥਿ ਜੁਲਾਈਆ ॥ ਨਿਤ ਸੇਵਿਹੁ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪਣਾ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਈਆ ॥ ਸਭੇ ਆਸਾ ਪੂਰੀਆ ਗੁਰ ਮਹਲਿ
 ਬੁਲਾਈਆ ॥ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਹੋਰੁ ਨ ਸੁਝਾਈ ਮੇਰੇ ਮਿਤ ਗੁਸਾਈਆ ॥੧੨॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਮੂੰ ਥੀਆਊ ਤਖਤੁ ਪਿਰੀ
 ਮਹਿਜੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥ ਪਾਰ ਮਿਲਾਵੇ ਕੋਲਿ ਕਵਲ ਜਿਵੈ ਬਿਗਸਾਵਦੋ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਪਿਰੀਆ ਸੰਦੜੀ ਭੁਖ ਮੂੰ ਲਾਵਣ
 ਥੀ ਵਿਥਰਾ ॥ ਜਾਣੁ ਮਿਠਾਈ ਇਖ ਬੇਈ ਪੀਡੇ ਨਾ ਹੁਟੈ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਠਗਾ ਨੀਹੁ ਮਕੌਡਿ ਜਾਣੁ ਗੰਧਰਵਾ ਨਗਰੀ
 ॥ ਸੁਖ ਘਟਾਊ ਝੂਝਿ ਇਸੁ ਪੰਧਾਣੂ ਘਰ ਘਣੇ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅਕਲ ਕਲਾ ਨਹ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭੁ ਅਲੇਖਾਂ ॥

ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਭਰਮਤੇ ਫਿਰਹਿ ਨਹ ਮਿਲੀਐ ਭੇਖਾਂ ॥ ਵਰਤ ਕਰਹਿ ਚੰਦ੍ਰਾਇਣਾ ਸੇ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖਾਂ ॥ ਬੇਦ ਪੜਹਿ
 ਸੰਪੂਰਨਾ ਤਤੁ ਸਾਰ ਨ ਪੇਖਾਂ ॥ ਤਿਲਕੁ ਕਢਹਿ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰਿ ਅੰਤਰਿ ਕਾਲੇਖਾਂ ॥ ਭੇਖੀ ਪ੍ਰਭੂ ਨ ਲਭੰਝ ਵਿਣੁ ਸਚੀ
 ਸਿਖਾਂ ॥ ਭੂਲਾ ਮਾਰਗਿ ਸੋ ਪਵੈ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖਾਂ ॥ ਤਿਨਿ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਿਆ ਆਪਣਾ ਜਿਨਿ ਗੁਰੂ ਅਖੀ
 ਦੇਖਾਂ ॥੧੩॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਸੋ ਨਿਵਾਹੂ ਗੜਿ ਜੋ ਚਲਾਊ ਨ ਥੀਐ ॥ ਕਾਰ ਕੂੜਾਵੀ ਛੜਿ ਸੰਮਲੁ ਸਚੁ ਧਣੀ ॥੧॥
 ਮਃ ੫ ॥ ਹਭ ਸਮਾਣੀ ਜੋਤਿ ਜਿਤ ਜਲ ਘਟਾਊ ਚੰਦ੍ਰਮਾ ॥ ਪਰਗਟੁ ਥੀਆ ਆਪਿ ਨਾਨਕ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ
 ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਮੁਖ ਸੁਹਾਵੇ ਨਾਮੁ ਚਤ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਦੁਰਗਹ ਮਨੀਅਹਿ ਮਿਲੀ ਨਿਥਾਵੇ
 ਥਾਤ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਬਾਹਰ ਭੇਖਿ ਨ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਇਕਸੁ ਹਰਿ ਜੀਤ ਬਾਹਰੀ ਸਭ ਫਿਰੈ
 ਨਿਕਾਮੀ ॥ ਮਨੁ ਰਤਾ ਕੁਟੰਬ ਸਿਤ ਨਿਤ ਗਰਬਿ ਫਿਰਾਮੀ ॥ ਫਿਰਹਿ ਗੁਮਾਨੀ ਜਗ ਮਹਿ ਕਿਆ ਗਰਬਹਿ ਦਾਮੀ
 ॥ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲੰਝ ਖਿਨ ਜਾਇ ਬਿਲਾਮੀ ॥ ਬਿਚਰਦੇ ਫਿਰਹਿ ਸੰਸਾਰ ਮਹਿ ਹਰਿ ਜੀ ਹੁਕਾਮੀ ॥
 ਕਰਮੁ ਖੁਲਾ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਸੁਆਮੀ ॥ ਜੋ ਜਨੁ ਹਰਿ ਕਾ ਸੇਵਕੋ ਹਰਿ ਤਿਸ ਕੀ ਕਾਮੀ ॥੧੪॥
 ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਮੁਖਹੁ ਅਲਾਏ ਹਭ ਮਰਣੁ ਪਛਾਣਦੋ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨਾ ਖਾਕੁ ਜਿਨਾ ਧਕੀਨਾ ਹਿਕ ਸਿਤ
 ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਜਾਣੁ ਕਵਾਂਦੋ ਮੰਜ਼ਿ ਪਛਾਣੁ ਕੋ ਹੇਕੜੋ ॥ ਤੈ ਤਨਿ ਪਡਦਾ ਨਾਹਿ ਨਾਨਕ ਜੈ ਗੁਰੂ ਭੇਟਿਆ ॥੨॥
 ਮਃ ੫ ॥ ਮਤੜੀ ਕਾਂਢਕੁ ਆਹ ਪਾਵ ਧੋਵਾਂਦੋ ਪੀਵਸਾ ॥ ਮੂ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਅਥਾਹ ਪਸਣ ਕੂ ਸਚਾ ਧਣੀ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਨਿਰਭਤ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਨਾਲਿ ਮਾਇਆ ਰਚਾ ॥ ਆਵੈ ਜਾਇ ਭਵਾਈਐ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਨਚਾ ॥ ਬਚਨੁ ਕਰੇ ਤੈ
 ਖਿਸਕਿ ਜਾਇ ਬੋਲੇ ਸਭੁ ਕਚਾ ॥ ਅੰਦਰਹੁ ਥੋਥਾ ਕੂਡਿਆਰੁ ਕੂੜੀ ਸਭ ਖਚਾ ॥ ਵੈਰੁ ਕਰੇ ਨਿਰਵੈਰ ਨਾਲਿ ਝੂਠੇ
 ਲਾਲਚਾ ॥ ਮਾਰਿਆ ਸਚੈ ਪਾਤਿਸਾਹਿ ਵੇਖਿ ਧੁਰਿ ਕਰਮਚਾ ॥ ਜਮਦੂਤੀ ਹੈ ਹੇਰਿਆ ਦੁਖ ਹੀ ਮਹਿ ਪਚਾ ॥ ਹੋਆ
 ਤਪਾਵਸੁ ਧਰਮ ਕਾ ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਸਚਾ ॥੧੫॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਪਰਭਾਤੇ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਧਿਆਇ
 ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਦੇਹ ਅੰਧਾਰੀ ਅੰਧੁ ਸੁੰਜੀ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੀਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਫਲ ਜਨਨਮੁ ਜੈ ਘਟਿ ਵੁਠਾ ਸਚੁ ਧਣੀ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਲੋਡਿਣ ਲੋਈ ਡਿਠ ਪਿਆਸ ਨ ਬੁੜੈ ਮੂ ਧਣੀ ॥

ਨਾਨਕ ਸੇ ਅਖੜੀਆ ਬਿਅੰਨਿ ਜਿਨੀ ਡਿਸੰਦੋ ਮਾ ਪਿਰੀ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ
 ਸਭਿ ਸੁਖ ਪਾਈ ॥ ਓਹੁ ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਕੁਟੰਬ ਸਿਉ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਰਾਈ ॥ ਓਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਧਨੁ ਸੰਚਿਆ ਸਭ
 ਤਿਖਾ ਬੁੜਾਈ ॥ ਓਨਿ ਛਡੇ ਲਾਲਚ ਟੁਨੀ ਕੇ ਅੰਤਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਓਸੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਘਰਿ ਅਨਨਦੁ ਹੈ ਹਰਿ ਸਖਾ
 ਸਹਾਈ ॥ ਓਨਿ ਕੈਰੀ ਮਿਲ ਸਮ ਕੀਤਿਆ ਸਭ ਨਾਲਿ ਸੁਭਾਈ ॥ ਹੋਆ ਓਹੀ ਅਲੁ ਜਗ ਮਹਿ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ
 ਜਪਾਈ ॥ ਪ੍ਰਾਂਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਸਿਉ ਬਣਿ ਆਈ ॥੧੬॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਸਚੁ ਸੁਹਾਵਾ ਕਾਢੀਐ ਕੂੜੈ
 ਕੂੜੀ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਰਲੇ ਜਾਣੀਅਹਿ ਜਿਨ ਸਚੁ ਪਲੈ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸਜਣ ਮੁਖੁ ਅਨੂਪੁ ਅਠੇ ਪਹਰ
 ਨਿਹਾਲਸਾ ॥ ਸੁਤੜੀ ਸੋ ਸਹੁ ਡਿਠੁ ਤੈ ਸੁਪਨੇ ਹਤ ਖਨੀਐ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸਜਣ ਸਚੁ ਪਰਖਿ ਮੁਖਿ ਅਲਾਵਣੁ
 ਥੋਥਰਾ ॥ ਮਨ ਮੜਾਹੂ ਲਖਿ ਤੁਧਹੁ ਦੌਰਿ ਨ ਸੁ ਪਿਰੀ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਧਰਤਿ ਆਕਾਸੁ ਪਾਤਾਲੁ ਹੈ ਚੰਦੁ ਸੂਰੁ
 ਬਿਨਾਸੀ ॥ ਬਾਦਿਸਾਹ ਸਾਹ ਤਮਰਾਵ ਖਾਨ ਢਾਹਿ ਡੇਰੇ ਜਾਸੀ ॥ ਰੰਗ ਤੁੰਗ ਗਰੀਬ ਮਸਤ ਸਭੁ ਲੋਕੁ ਸਿਧਾਸੀ ॥
 ਕਾਜੀ ਸੇਖ ਮਸਾਇਕਾ ਸਭੇ ਤਠਿ ਜਾਸੀ ॥ ਪੀਰ ਪੈਕਾਬਰ ਅਤਲੀਏ ਕੋ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਸੀ ॥ ਰੋਜਾ ਬਾਗ ਨਿਵਾਜ
 ਕਤੇਬ ਵਿਣੁ ਬੁੜੇ ਸਭ ਜਾਸੀ ॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਮੇਦਨੀ ਸਭ ਆਵੈ ਜਾਸੀ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਸਚੁ ਖੁਦਾਇ ਏਕੁ ਖੁਦਾਇ
 ਬੰਦਾ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥੧੭॥ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਡਿਠੀ ਹਭ ਢੰਢੀਲਿ ਹਿਕਸੁ ਬਾੜ੍ਹੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਆਤ ਸਜਣ ਤੂ ਮੁਖਿ
 ਲਗੁ ਮੇਰਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਠੰਢਾ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਆਸਕੁ ਆਸਾ ਬਾਹਰਾ ਮੂ ਮਨਿ ਕਡੀ ਆਸ ॥ ਆਸ ਨਿਰਾਸਾ
 ਹਿਕੁ ਤੂ ਹਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਗੱਝਾਸ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਵਿਛੋਡਾ ਸੁਣੇ ਡੁਖੁ ਵਿਣੁ ਡਿਠੇ ਮਰਿਓਦਿ ॥ ਬਾੜ੍ਹੁ
 ਪਿਆਰੇ ਆਪਣੇ ਬਿਰਹੀ ਨਾ ਧੀਰੋਦਿ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤਟ ਤੀਰਥ ਦੇਵ ਦੇਵਾਲਿਆ ਕੇਦਾਰੁ ਮਥੁਰਾ ਕਾਸੀ ॥ ਕੋਟਿ
 ਤੇਤੀਸਾ ਦੇਵਤੇ ਸਣੁ ਇੰਦ੍ਰੈ ਜਾਸੀ ॥ ਸਿਮੂਤਿ ਸਾਸਤਰ ਕੇਦ ਚਾਰਿ ਖਟੁ ਦਰਸ ਸਮਾਸੀ ॥ ਪੋਥੀ ਪੰਡਿਤ ਗੀਤ ਕਵਿਤ
 ਕਵਤੇ ਭੀ ਜਾਸੀ ॥ ਜਤੀ ਸਤੀ ਸੰਨਿਆਸੀਆ ਸਭਿ ਕਾਲੈ ਵਾਸੀ ॥ ਮੁਨਿ ਜੋਗੀ ਦਿਗੰਬਰਾ ਜਮੈ ਸਣੁ ਜਾਸੀ ॥
 ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਵਿਣਸਣਾ ਸਭ ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸੀ ॥ ਥਿਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੇ ਸੇਵਕੁ ਥਿਰੁ ਹੋਸੀ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕ
 ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਸੈ ਨਨਗੇ ਨਹ ਨਨਗ ਭੁਖੇ ਲਖ ਨ ਭੁਖਿਆ ॥ ਡੁਖੇ ਕੋਡਿ ਨ ਡੁਖ ਨਾਨਕ ਪਿਰੀ ਪਿਖਂਦੋ ਸੁਭ ਦਿਸਟਿ

॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸੁਖ ਸਮੂਹਾ ਭੋਗ ਭੂਮਿ ਸਬਾਈ ਕੋ ਧਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਹਭੋ ਰੋਗੁ ਮਿਰਤਕ ਨਾਮ ਵਿਹੁਣਿਆ ॥੨॥
 ਮਃ ੫ ॥ ਹਿਕਸ ਕੁਂ ਤੂ ਆਹਿ ਪਛਾਣ੍ ਭੀ ਹਿਕੁ ਕਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਆਸਡੀ ਨਿਬਾਹਿ ਮਾਨੁਖ ਪਰਥਾਈ ਲਜੀਵਦੇ
 ॥੩॥ ਪਤਡੀ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਏਕੁ ਨਰਾਇਣੋ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਾਧਾ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ
 ਹਰਿ ਲਾਧਾ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਕੀਰਤਨੁ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵਾਧਾ ॥ ਸਚੁ ਧਰਮੁ ਤਪੁ ਨਿਹਚਲੋ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ
 ਅਰਾਧਾ ॥ ਦਿੱਤਾ ਧਰਮੁ ਤਪੁ ਨਿਹਚਲੋ ਜਿਸੁ ਕਰਮਿ ਲਿਖਾਧਾ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਟਲੈ
 ਨ ਟਲਾਧਾ ॥ ਨਿਹਚਲ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਜਨ ਬਚਨ ਨਿਹਚਲੁ ਗੁਰ ਸਾਧਾ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰਾਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਆਰਾਧਾ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਜੋ ਢੁਕੰਦੋ ਆਪਿ ਸੋ ਤਰਾਏ ਕਿਨ੍ ਖੇ ॥ ਤਾਰੇਡੜੋ ਭੀ ਤਾਰਿ
 ਨਾਨਕ ਪਿਰ ਸਿਤ ਰਤਿਆ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਜਿਥੈ ਕੋਝਿ ਕਥਿਨਿ ਨਾਉ ਸੁਣਂਦੋ ਮਾ ਪਿਰੀ ॥ ਮੁੰ ਜੁਲਾਊਂ ਤਥਿ
 ਨਾਨਕ ਪਿਰੀ ਪਸਂਦੋ ਹਰਿਓ ਥੀਓਸਿ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਪੁਤਰ ਕਲਤਰ ਸਨੇਹ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮ ਵਿਹੁਣੀਆ ਨਿਮੁਣੀਆਦੀ ਦੇਹ ॥੩॥ ਪਤਡੀ ॥ ਨੈਨੀ ਦੇਖਉ ਗੁਰ ਦਰਸਨੋ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਥਾ ॥ ਪੈਰੀ
 ਮਾਰਗਿ ਗੁਰ ਚਲਦਾ ਪਖਾ ਫੇਰੀ ਹਥਾ ॥ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਰਿਦੈ ਧਿਆਇਦਾ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਜਪਥਾ ॥ ਮੈ ਛਡਿਆ
 ਸਗਲ ਅਪਾਇਣੋ ਭਰਵਾਸੈ ਗੁਰ ਸਮਰਥਾ ॥ ਗੁਰਿ ਬਖਸਿਆ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਭੋ ਢੁਖੁ ਲਥਾ ॥ ਭੋਗਹੁ ਭੁੰਚਹੁ
 ਭਾਈਹੋ ਪਲੈ ਨਾਮੁ ਅਗਥਾ ॥ ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਦਿੜੁ ਸਦਾ ਕਰਹੁ ਗੁਰ ਕਥਾ ॥ ਸਹਜੁ ਭਿੱਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ
 ਜਮ ਕਾ ਭਤ ਲਥਾ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥ ਲਗਡੀਆ ਪਿਰੀਅਨਿ ਪੇਖਣਦੀਆ ਨਾ ਤਿਪੀਆ ॥ ਹਭ
 ਮਝਾਹੂ ਸੋ ਧਣੀ ਬਿਆ ਨ ਡਿਠੋ ਕੋਝਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਕਥਡੀਆ ਸੰਤਾਹ ਤੇ ਸੁਖਾਊ ਪੰਧੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਲਧਡੀਆ
 ਤਿਨਾਹ ਜਿਨਾ ਭਾਗੁ ਮਥਾਹਡੈ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਢੁੰਗਰਿ ਜਲਾ ਥਲਾ ਭੂਮਿ ਬਨਾ ਫਲ ਕੰਦਰਾ ॥ ਪਾਤਾਲਾ ਆਕਾਸ
 ਪ੍ਰਾਨੁ ਹਭ ਘਟਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪੇਖਿ ਜੀਓ ਇਕਤੁ ਸੂਤਿ ਪਰੋਤੀਆ ॥੩॥ ਪਤਡੀ ॥ ਹਰਿ ਜੀ ਮਾਤਾ ਹਰਿ ਜੀ ਪਿਤਾ
 ਹਰਿ ਜੀਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ॥ ਹਰਿ ਜੀ ਮੇਰੀ ਸਾਰ ਕਰੇ ਹਮ ਹਰਿ ਕੇ ਬਾਲਕ ॥ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਖਿਲਾਇਦਾ ਨਹੀਂ
 ਕਰਦਾ ਆਲਕ ॥ ਅਤਗਣੁ ਕੋ ਨ ਚਿਤਾਰਦਾ ਗਲ ਸੇਤੀ ਲਾਇਕ ॥ ਮੁਹਿ ਮੰਗਾਂ ਸੋਈ ਦੇਵਦਾ ਹਰਿ ਪਿਤਾ

ਸੁਖਦਾਇਕ ॥ ਗਿਆਨੁ ਰਾਸਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਸਤਪਿਓਨੁ ਇਸੁ ਸਤਦੇ ਲਾਇਕ ॥ ਸਾਝੀ ਗੁਰ ਨਾਲਿ ਬਹਾਲਿਆ ਸਰਬ
 ਸੁਖ ਪਾਇਕ ॥ ਮੈ ਨਾਲਹੁ ਕਦੇ ਨ ਵਿਛੁਡੈ ਹਰਿ ਪਿਤਾ ਸਭਨਾ ਗਲਾ ਲਾਇਕ ॥੨੧॥ ਸਲੋਕ ਡਖਣੇ ਮਃ ੫ ॥
 ਨਾਨਕ ਕਚਡਿਆ ਸਿਉ ਤੋਡਿ ਢੂਠਿ ਸਜਣ ਸੰਤ ਪਕਿਆ ॥ ਓਡਿ ਜੀਕਵਂਦੇ ਵਿਛੁਡਹਿ ਓਡਿ ਸੁਡਿਆ ਨ ਜਾਹੀ ਛੋਡਿ
 ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਜੁਲੀਆ ਚਮਕਨਿ ਘੁਰਨਿ ਘਟਾ ਅਤਿ ਕਾਲੀਆ ॥ ਬਰਸਨਿ ਮੇਘ ਅਪਾਰ ਨਾਨਕ
 ਸੰਗਮਿ ਪਿਰੀ ਸੁਝਾਦੀਆ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਜਲ ਥਲ ਨੀਰਿ ਭਰੇ ਸੀਤਲ ਪਵਣ ਝੁਲਾਰਦੇ ॥ ਸੇਜਡੀਆ ਸੋਡਿਨਿ ਹੀਰੇ
 ਲਾਲ ਜੱਡੀਆ ॥ ਸੁਭਰ ਕਪੜੇ ਭੋਗ ਨਾਨਕ ਪਿਰੀ ਵਿਹੁਣੀ ਤਤੀਆ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤੈ ਜੋ ਕੀਆ
 ਸੋਈ ਹੈ ਕਰਣਾ ॥ ਜੇ ਸਤ ਧਾਵਹਿ ਪ੍ਰਾਣੀਆ ਪਾਵਹਿ ਧੁਰਿ ਲਹਣਾ ॥ ਬਿਨੁ ਕਰਮਾ ਕਿਛੁ ਨ ਲਭੈ ਜੇ ਫਿਰਹਿ ਸਭ
 ਧਰਣਾ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਭਤ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਭੈ ਡੁਰ ਢੂਰਿ ਕਰਣਾ ॥ ਭੈ ਤੇ ਬੈਰਾਗੁ ਊਪਜੈ ਹਰਿ ਖੋਜਤ ਫਿਰਣਾ ॥ ਖੋਜਤ
 ਖੋਜਤ ਸਹਜੁ ਤਪਜਿਆ ਫਿਰਿ ਜਨਮਿ ਨ ਮਰਣਾ ॥ ਹਿਆਇ ਕਮਾਇ ਧਿਆਇਆ ਪਾਇਆ ਸਾਧ ਸਰਣਾ ॥
 ਬੋਹਿਥੁ ਨਾਨਕ ਦੇਤ ਗੁਰ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਚੜਾਏ ਤਿਸੁ ਭਤਜਲੁ ਤਰਣਾ ॥੨੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥ ਪਹਿਲਾ ਮਰਣੁ
 ਕਬੂਲਿ ਜੀਵਣ ਕੀ ਛਡਿ ਆਸ ॥ ਹੋਹੁ ਸਭਨਾ ਕੀ ਰੇਣੁਕਾ ਤਤ ਆਤ ਹਮਾਰੈ ਪਾਸਿ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਸੁਆ ਜੀਵਂਦਾ
 ਪੇਖੁ ਜੀਵਂਦੇ ਮਰਿ ਜਾਨਿ ॥ ਜਿਨਾ ਸੁਹਿਰਤਿ ਇਕ ਸਿਉ ਤੇ ਮਾਣਸ ਪਰਥਾਨ ॥੨॥ ਮਃ ੫ ॥ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸੈ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਪੀਰ ॥ ਭੁਖ ਤਿਖ ਤਿਸੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਜਮੁ ਨਹੀ ਆਵੈ ਨੀਰ ॥੩॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕੀਮਤਿ
 ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈਐ ਸਚੁ ਸਾਹ ਅਡੋਲੈ ॥ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀਆ ਕਤਣੁ ਤੁਧੁਨੋ ਤੋਲੈ ॥ ਭਨਣ ਘੜਣ
 ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਓਪਤਿ ਸਭ ਪਰਲੈ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਭ ਬੋਲੈ ॥ ਰਿਜਕੁ ਸਮਾਹੇ ਸਭਸੈ ਕਿਆ
 ਮਾਣਸੁ ਡੋਲੈ ॥ ਗਹਿਰ ਗਭੀਰੁ ਅਥਾਹੁ ਤ੍ਰਾਂ ਗੁਣ ਗਿਆਨ ਅਮੋਲੈ ॥ ਸੋਈ ਕੰਮੁ ਕਮਾਵਣਾ ਕੀਆ ਧੁਰਿ ਮਤਲੈ ॥
 ਤੁਧੁ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਹੀ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਬੋਲੈ ॥੨੩॥੧॥੨॥

ਰਾਗੁ ਮਾਰੁ ਬਾਣੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੀ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਡੀਆ ਕਵਨ ਕੁਮਤਿ ਤੁਮ ਲਾਗੇ ॥ ਕ੍ਰਿਡਹੁਗੇ ਪਰਵਾਰ ਸਕਲ ਸਿਉ ਰਾਮੁ ਨ ਜਪਹੁ ਅਭਾਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬੇਦ

पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥ राम नाम की गति नहीं जानी कैसे उतरसि पारा
 ॥१॥ जीआ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ आपस कउ मुनिवर करि थापहु का
 कउ कहहु कसाई ॥२॥ मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥ माइआ कारन बिदिआ
 बेचहु जनमु अविरथा जाई ॥३॥ नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥ कहि कबीर
 रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥४॥१॥ बनहि बसे किउ पाईअै जउ लउ मनहु न तजहि बिकार
 ॥ जिह घरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसार ॥२॥ सार सुखु पाईअै रामा ॥ रंगि रवहु आतमै राम
 ॥१॥ रहाउ ॥ जटा भस्म लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥ मनु जीते जगु जीतिआ जाँ ते बिखिआ ते
 होइ उदासु ॥२॥ अंजनु देइ सभै कोई टुकु चाहन माहि बिडानु ॥ गिआन अंजनु जिह पाइआ ते
 लोइन परवानु ॥३॥ कहि कबीर अब जानिआ गुरि गिआनु दीआ समझाइ ॥ अंतरगति हरि भेटिआ
 अब मेरा मनु कतहू न जाइ ॥४॥२॥ रिधि सिधि जा कउ फुरी तब काहू सिउ किआ काज ॥ तेरे कहने
 की गति किआ कहउ मै बोलत ही बड लाज ॥१॥ रामु जिह पाइआ राम ॥ ते भवहि न बारै बार ॥१॥
 रहाउ ॥ झूठा जगु डहकै घना दिन दुइ बरतन की आस ॥ राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न
 भई पिआस ॥२॥ गुर प्रसादि जिह बूझिआ आसा ते भइआ निरासु ॥ सभु सचु नदरी आइआ जउ
 आतम भइआ उदासु ॥३॥ राम नाम रसु चाखिआ हरि नामा हर तारि ॥ कहु कबीर कंचनु भइआ
 भ्रमु गडिआ समुद्रै पारि ॥४॥३॥ उदक समुंद सलल की साखिआ नदी तरंग समावहिगे ॥ सुन्नहि
 सुन्नु मिलिआ समदरसी पवन रूप होइ जावहिगे ॥१॥ बहुरि हम काहे आवहिगे ॥ आवन जाना हुकमु
 तिसै का हुकमै बुझि समावहिगे ॥१॥ रहाउ ॥ जब चूकै पंच धातु की रचना ऐसे भरमु चुकावहिगे ॥
 दरसनु छोडि भए समदरसी एको नामु धिआवहिगे ॥२॥ जित हम लाए तित ही लागे तैसे करम
 कमावहिगे ॥ हरि जी कृपा करे जउ अपनी तौ गुर के सबदि समावहिगे ॥३॥ जीवत मरहु मरहु

ਫੁਨਿ ਜੀਵਹੁ ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜੋ ਨਾਮਿ ਸਮਾਨੇ ਸੁਨਨ ਰਹਿਆ ਲਿਵ ਸੋਈ ॥੪॥੪॥ ਜਤ
ਤੁਮ ਮੋ ਕਤ ਟ੍ਰੂਰਿ ਕਰਤ ਹਤ ਤਤ ਤੁਮ ਮੁਕਤਿ ਬਤਾਵਹੁ ॥ ਏਕ ਅਨੇਕ ਹੋਇ ਰਹਿਆ ਸਗਲ ਮਹਿ ਅਥ ਕੈਸੇ
ਭਰਮਾਵਹੁ ॥੧॥ ਰਾਮ ਮੋ ਕਤ ਤਾਰਿ ਕਹਾਁ ਲੈ ਜੰਝੀ ਹੈ ॥ ਸੋਧਤ ਮੁਕਤਿ ਕਹਾ ਦੇਤ ਕੈਸੀ ਕਰਿ ਪ੍ਰਸਾਦੁ ਮੋਹਿ
ਪਾਈ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਾਰਨ ਤਰਨੁ ਤਬੈ ਲਗੁ ਕਹੀਐ ਜਬ ਲਗੁ ਤਤੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਅਥ ਤਤ ਬਿਮਲ ਭਏ
ਘਟ ਹੀ ਮਹਿ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੨॥੫॥ ਜਿਨਿ ਗੜ ਕੋਟ ਕੀਏ ਕੰਚਨ ਕੇ ਛੋਡਿ ਗਇਆ ਸੋ ਰਾਵਨੁ
॥੧॥ ਕਾਹੇ ਕੀਜਤੁ ਹੈ ਮਨਿ ਭਾਵਨੁ ॥ ਜਬ ਜਮੁ ਆਇ ਕੇਸ ਤੇ ਪਕਰੈ ਤਹ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਛਡਾਵਨ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਲੁ ਅਕਾਲੁ ਖਸਮ ਕਾ ਕੀਨਾ ਇਹੁ ਪਰਧਨੁ ਬਧਾਵਨੁ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਤੇ ਅਂਤੇ ਮੁਕਤੇ ਜਿਨ੍ਹ ਹਿਰਦੈ
ਰਾਮ ਰਸਾਇਨੁ ॥੨॥੬॥ ਦੇਹੀ ਗਾਵਾ ਜੀਤ ਧਰ ਮਹਤਤ ਬਸਹਿ ਪੰਚ ਕਿਰਸਾਨਾ ॥ ਨੈਨ੍ਹ ਨਕਟ੍ ਸਰਵਨ੍ਹ ਰਸਪਤਿ
ਇੰਦ੍ਰੀ ਕਹਿਆ ਨ ਮਾਨਾ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਅਥ ਨ ਬਸਤ ਇਹ ਗਾਤ ॥ ਘਰੀ ਘਰੀ ਕਾ ਲੇਖਾ ਮਾਗੈ ਕਾਇਥੁ ਚੇਤ੍
ਨਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਜਬ ਲੇਖਾ ਮਾਗੈ ਬਾਕੀ ਨਿਕਸੀ ਭਾਰੀ ॥ ਪੰਚ ਕ੃ਸਾਨਵਾ ਭਾਗਿ ਗਏ ਲੈ
ਬਾਧਿਆ ਜੀਤ ਦਰਬਾਰੀ ॥੨॥ ਕਹੈ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਖੇਤ ਹੀ ਕਰਹੁ ਨਿਬੇਰਾ ॥ ਅਥ ਕੀ ਬਾਰ ਬਖਸਿ
ਬੰਦੇ ਕਤ ਬਹੁਰਿ ਨ ਭਤਜਲਿ ਫੇਰਾ ॥੩॥੭॥

ਰਾਗੁ ਮਾਝੁ ਬਾਣੀ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ਕੀ

੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਨਭਤ ਕਿਨੈ ਨ ਦੇਖਿਆ ਬੈਰਾਗੀਅਡੇ ॥ ਬਿਨੁ ਭੈ ਅਨਭਤ ਹੋਇ ਵਣਾਵਾਬੈ ॥੧॥ ਸਹੁ ਹਟ੍ਰੂਰਿ ਦੇਖੈ ਤਾਂ ਭਤ
ਪਵੈ ਬੈਰਾਗੀਅਡੇ ॥ ਹੁਕਮੈ ਕ੍ਰਿਝੈ ਤ ਨਿਰਭਤ ਹੋਇ ਵਣਾਵਾਬੈ ॥੨॥ ਹਰਿ ਪਾਖਣੁ ਨ ਕੀਝੰਝੈ ਬੈਰਾਗੀਅਡੇ ॥ ਪਾਖਣਿ
ਰਤਾ ਸਭੁ ਲੋਕੁ ਵਣਾਵਾਬੈ ॥੩॥ ਤੂਸਨਾ ਪਾਸੁ ਨ ਛੋਡੰਝੈ ਬੈਰਾਗੀਅਡੇ ॥ ਮਮਤਾ ਜਾਲਿਆ ਪਿੰਡੁ ਵਣਾਵਾਬੈ
॥੪॥ ਚਿੰਤਾ ਜਾਲਿ ਤਨੁ ਜਾਲਿਆ ਬੈਰਾਗੀਅਡੇ ॥ ਜੇ ਮਨੁ ਮਿਰਤਕੁ ਹੋਇ ਵਣਾਵਾਬੈ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਿਨੁ
ਬੈਰਾਗੁ ਨ ਹੋਵੰਝੈ ਬੈਰਾਗੀਅਡੇ ॥ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ਵਣਾਵਾਬੈ ॥੬॥ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਬੈਰਾਗੀਅਡੇ
॥ ਸਹਜੇ ਪਾਵੈ ਸੋਇ ਵਣਾਵਾਬੈ ॥੭॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਇਕ ਬੇਨਤੀ ਬੈਰਾਗੀਅਡੇ ॥ ਮੋ ਕਤ ਭਤਜਲੁ ਪਾਰਿ

ਤਾਰਿ ਵਣਾਵਬੈ ॥੮॥੧॥੮॥ ਰਾਜਨ ਕਤਨੁ ਤੁਮਾਰੈ ਆਵੈ ॥ ਐਸੋ ਭਾਉ ਬਿਦਰ ਕੋ ਦੇਖਿਆਂ ਓਹੁ ਗਰੀਬੁ ਮੋਹਿ
ਭਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਸਤੀ ਦੇਖਿ ਭਰਮ ਤੇ ਭੂਲਾ ਸ੍ਰੀ ਭਗਵਾਨੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਤੁਮਰੋ ਟ੍ਰਥੁ ਬਿਦਰ ਕੋ ਪਾਨ੍ਹੋ
ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਕਰਿ ਮੈ ਮਾਨਿਆ ॥੧॥ ਖੀਰ ਸਮਾਨਿ ਸਾਗੁ ਮੈ ਪਾਇਆ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਰੈਨਿ ਬਿਹਾਨੀ ॥ ਕਬੀਰ ਕੋ
ਠਾਕੁਰੁ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦੀ ਜਾਤਿ ਨ ਕਾਹੂ ਕੀ ਮਾਨੀ ॥੨॥੬॥ ਸਲੋਕ ਕਬੀਰ ॥ ਗਗਨ ਦਮਾਮਾ ਬਾਜਿਆਂ ਪਰਿਆਂ
ਜੀਸਾਨੈ ਘਾਤ ॥ ਖੇਤੁ ਜੁ ਮਾਂਡਿਆਂ ਸੂਰਮਾ ਅਥ ਜੂਝਨ ਕੋ ਦਾਤ ॥੧॥ ਸੂਰਾ ਸੋ ਪਹਿਚਾਨੀਐ ਜੁ ਲੈ ਦੀਨ ਕੇ
ਹੇਤ ॥ ਪੁਰਜਾ ਪੁਰਜਾ ਕਟਿ ਸਰੈ ਕਬਹੂ ਨ ਛਾਡੈ ਖੇਤੁ ॥੨॥੨॥

ਕਬੀਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਾਗੁ ਮਾਰੁ ਬਾਣੀ ਨਾਮਦੇਉ ਜੀ ਕੀ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਚਾਰਿ ਮੁਕਤਿ ਚਾਰੈ ਸਿਧਿ ਮਿਲਿ ਕੈ ਟ੍ਰਲਹ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਨਿ ਪਰਿਆਂ ॥ ਮੁਕਤਿ ਭਿੱਡਿਆਂ ਚਤੁਹੂੰ ਜੁਗ ਜਾਨਿਆਂ
ਜਸੁ ਕੀਰਤਿ ਮਾਥੈ ਛਤ੍ਰ ਧਰਿਆਂ ॥੧॥ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਜਪਤ ਕੋ ਕੋ ਨ ਤਰਿਆਂ ॥ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸਿ ਸਾਧ ਕੀ
ਸੰਗਤਿ ਭਗਤੁ ਭਗਤੁ ਤਾ ਕੋ ਨਾਮੁ ਪਰਿਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਖ ਚਕ੍ਰ ਮਾਲਾ ਤਿਲਕੁ ਬਿਰਾਜਿਤ ਦੇਖਿ
ਪ੍ਰਤਾਪੁ ਜਮੁ ਡਰਿਆਂ ॥ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ਰਾਮ ਬਲ ਗਰਜਿਤ ਜਨਮ ਮਰਨ ਸੰਤਾਪ ਹਿਰਿਆਂ ॥੨॥ ਅੰਬਰੀਕ
ਕਤ ਦੀਆਂ ਅਭੈ ਪਦੁ ਰਾਜੁ ਭਭੀਖਨ ਅਧਿਕ ਕਰਿਆਂ ॥ ਨਤ ਨਿਧਿ ਠਾਕੁਰਿ ਦੰਡੁ ਸੁਦਾਮੈ ਧ੍ਰਾਅ ਅਟਲੁ ਅਜਹੂ
ਨ ਟਰਿਆਂ ॥੩॥ ਭਗਤ ਹੇਤਿ ਮਾਰਿਆਂ ਹਰਨਾਖਸੁ ਨਰਸਿੰਘ ਰੂਪ ਹੋਇ ਦੇਹ ਧਰਿਆਂ ॥ ਨਾਮਾ ਕਹੈ ਭਗਤਿ
ਬਸਿ ਕੇਸਵ ਅਜਹੂੰ ਬਲਿ ਕੇ ਟੁਆਰ ਖਰੋ ॥੪॥੧॥ ਮਾਰੁ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ॥ ਦੀਨੁ ਬਿਸਾਰਿਆਂ ਰੇ ਦਿਵਾਨੇ ਦੀਨੁ
ਬਿਸਾਰਿਆਂ ਰੇ ॥ ਪੇਟੁ ਭਰਿਆਂ ਪਸੂਆ ਜਿਤ ਸੋਇਆਂ ਮਨੁਖੁ ਜਨਮੁ ਹੈ ਹਾਰਿਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ
ਕਬਹੂ ਨਹੀ ਕੀਨੀ ਰਚਿਆਂ ਧੰਧੈ ਝੂਠ ॥ ਸੁਆਨ ਸੂਕਰ ਬਾਇਸ ਜਿਵੈ ਭਟਕਤੁ ਚਾਲਿਆਂ ਊਠਿ ॥੧॥ ਆਪਸ
ਕਤ ਦੀਰਘੁ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਅਤਰਨ ਕਤ ਲਗ ਮਾਤ ॥ ਮਨਸਾ ਬਾਚਾ ਕਰਮਨਾ ਮੈ ਦੇਖੇ ਦੋਜਕ ਜਾਤ ॥੨॥
ਕਾਮੀ ਕ੍ਰਿਧੀ ਚਾਤੁਰੀ ਬਾਜੀਗਰ ਬੇਕਾਮ ॥ ਨਿੰਦਾ ਕਰਤੇ ਜਨਮੁ ਸਿਰਾਨੋ ਕਬਹੂ ਨ ਸਿਮਰਿਆਂ ਰਾਮੁ ॥੩॥
ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਚੇਤੈ ਨਹੀ ਮੂਰਖੁ ਮੁਗਧੁ ਗਵਾਉ ॥ ਰਾਮੁ ਨਾਮੁ ਜਾਨਿਆਂ ਨਹੀ ਕੈਸੇ ਤਤਰਸਿ ਪਾਰਿ ॥੪॥੧॥

रागु मारू बाणी जैदेउ जीउ की

१॥ सतिगुर प्रसादि ॥ चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥ अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघडु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥१॥ मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥ तेरी दुबिधा दृसटि संमानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि संमानि आड़िआ ॥ बदति जैदेउ जैदेव कउ रंमिआ ब्रहमु निरबाणु लिव लीणु पाड़िआ ॥२॥१॥ कबीरु ॥ मारू ॥ रामु सिमरु पछुताहिंगा मन ॥ पापी जीअरा लोभु करतु है आजु कालि उठि जाहिंगा ॥१॥ रहाउ ॥ लालच लागे जनमु गवाड़िआ माड़िआ भरम भुलाहिंगा ॥ धन जोबन का गरबु न कीजै कागद जिउ गलि जाहिंगा ॥१॥ जउ जमु आड़ि केस गहि पटकै ता दिन किछु न बसाहिंगा ॥ सिमरनु भजनु दड़िआ नही कीनी तउ मुखि चोटा खाहिंगा ॥२॥ धरम राड़ि जब लेखा मागै किआ मुखु लै कै जाहिंगा ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साधसंगति तरि जाँहिंगा ॥३॥१॥

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की

१॥ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ गरीब निवाजु गुर्सईआ मेरा माथै छुलु धरै ॥१॥ रहाउ ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहंी ढरै ॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥१॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥२॥१॥ मारू ॥ सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि नव निधि कर तल ता कै ॥१॥ हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ अवर सभ छाडि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥ सहज समाधि उपाधि रहत होड़ि बडे भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥३॥२॥१५॥

ਤੁਖਾਰੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੧ ਬਾਰਹ ਮਾਹਾ

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੂ ਸੁਣ ਕਿਰਤ ਕਰਮਾ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਇਆ ॥ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਸੁਖ ਸਵਾਮਾ ਦੇਹਿ ਸੁ ਤੂ ਭਲਾ ॥ ਹਰਿ ਰਚਨਾ
ਤੇਰੀ ਕਿਆ ਗਤਿ ਮੇਰੀ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਘੜੀ ਨ ਜੀਵਾ ॥ ਪ੍ਰਤ ਬਾੜ੍ਹੁ ਦੁਹੇਲੀ ਕੋਡਿ ਨ ਕੇਲੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ
ਪੀਵਾਁ ॥ ਰਚਨਾ ਰਾਚਿ ਰਹੇ ਨਿਰਂਕਾਰੀ ਪ੍ਰਭ ਮਨਿ ਕਰਮ ਸੁਕਰਮਾ ॥ ਨਾਨਕ ਪਥੁ ਨਿਹਾਲੇ ਸਾ ਧਨ ਤੂ ਸੁਣਿ
ਆਤਮ ਰਾਮਾ ॥੧॥ ਬਾਬੀਹਾ ਪ੍ਰਤ ਬੋਲੇ ਕੋਕਿਲ ਬਾਣੀਆ ॥ ਸਾ ਧਨ ਸਭਿ ਰਸ ਚੋਲੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਣੀਆ
॥ ਹਰਿ ਅੰਕਿ ਸਮਾਣੀ ਜਾ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣੀ ਸਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਨਾਰੇ ॥ ਨਵ ਘਰ ਥਾਪਿ ਮਹਲ ਘਰੁ ਊਚਤ ਨਿਜ ਘਰਿ
ਵਾਸੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥ ਸਭ ਤੇਰੀ ਤੂ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਰੰਗ ਰਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰਤ ਚਕੈ ਕਕੀਹਾ
ਕੋਕਿਲ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵੈ ॥੨॥ ਤੂ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਰਸ ਮਿਨੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਆਪਣੇ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਖਤ ਰਖਨੇ ਘੜੀ
ਨ ਬੀਸੈਰੈ ॥ ਕਿਉ ਘੜੀ ਬਿਸਾਰੀ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਹਉ ਜੀਵਾ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥ ਨਾ ਕੋਈ ਮੇਰਾ ਹਉ ਕਿਸੁ ਕੇਗਾ
ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਏ ॥ ਓਟ ਗਹੀ ਹਰਿ ਚਰਣ ਨਿਵਾਸੇ ਭਏ ਪਕਿਤ ਸਰੀਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦੂਸਟਿ
ਦੀਰਘ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੩॥ ਬਰਸੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰ ਬ੍ਰੂੰਦ ਸੁਹਾਵਣੀ ॥ ਸਾਜਨ ਮਿਲੇ
ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਹਰਿ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਣੀ ॥ ਹਰਿ ਮੰਦਰਿ ਆਵੈ ਜਾ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਧਨ ਊਭੀ ਗੁਣ ਸਾਰੀ ॥ ਘਰਿ
ਘਰਿ ਕੰਤੁ ਰਖੈ ਸੋਹਾਗਣਿ ਹਉ ਕਿਉ ਕੰਤਿ ਵਿਸਾਰੀ ॥ ਤਨਵਿ ਘਨ ਛਾਏ ਕਰਸੁ ਸੁਭਾਏ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ
ਸੁਖਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਵਰਸੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥੪॥ ਚੇਤੁ ਬਸਤੁ ਭਲਾ ਭਵਰ

सुहावड़े ॥ बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़े ॥ पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि
 बिरोध तनु छीजै ॥ कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥ भवरु भवंता फूली डाली किउ
 जीवा मरु माए ॥ नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥੫॥ वैसाखु भला साखा वेस
 करे ॥ धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥ घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अदु न
 मोलो ॥ कीमति कउण करे तुधु भावाँ देखि दिखावै ढोलो ॥ दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु
 पछाना ॥ नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥੬॥ माहु जेठु भला प्रीतमु किउ
 बिसरै ॥ थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥ धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ
 भावा ॥ साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥ निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख
 महली ॥ नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥੭॥ आसाडु भला सूरजु गगनि
 तपै ॥ धरती दूख सहै सोखै अगनि भखै ॥ अगनि रसु सोखै मरीअै धोखै भी सो किरतु न हारे ॥ रथु फिरै
 छाइआ धन ताकै टीडु लवै मंझि बारे ॥ अवगण बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥
 नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥੮॥ सावणि सरस मना घण वरसहि रुति
 आए ॥ मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥ पिरु घरि नही आवै मरीअै हावै दामनि चमकि
 डराए ॥ सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥ हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापडु
 तनि न सुखावए ॥ नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥੯॥ भादउ भरमि भुली भरि
 जोबनि पछुताणी ॥ जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥ बरसै निसि काली किउ सुखु बाली
 दादर मोर लवंते ॥ पृउ पृउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥ मछर डंग साइर भर
 सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईअै ॥ नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईअै ॥੧੦॥
 असुनि आउ पिरा सा धन झूरि मुई ॥ ता मिलीअै प्रभ मेले दूजै भाइ खुई ॥ झूठि विगुती ता पिर मुती

ਕੁਕਹ ਕਾਹ ਸਿ ਫੁਲੇ ॥ ਆਗੈ ਘਾਮ ਪਿਛੈ ਰੁਤਿ ਜਾਡਾ ਦੇਖਿ ਚਲਤ ਮਨੁ ਡੋਲੇ ॥ ਦਹ ਦਿਸਿ ਸਾਖ ਹਰੀ ਹਰੀਆਵਲ
 ਸਹਜਿ ਪਕੈ ਸੋ ਮੀਠਾ ॥ ਨਾਨਕ ਅਸੁਨਿ ਮਿਲਹੁ ਪਿਆਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਭਏ ਬਸੀਠਾ ॥੧੧॥ ਕਤਕਿ ਕਿਰਤੁ ਪਡਿਆ
 ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਡਿਆ ॥ ਟੀਪਕੁ ਸਹਜਿ ਬਲੈ ਤਤਿ ਜਲਾਡਿਆ ॥ ਟੀਪਕ ਰਸ ਤੇਲੋ ਧਨ ਪਿਰ ਮੇਲੋ ਧਨ ਓਮਾਵੈ ਸਰਸੀ
 ॥ ਅਵਗਣ ਮਾਰੀ ਮਰੈ ਨ ਸੀਝੈ ਗੁਣ ਮਾਰੀ ਤਾ ਮਰਸੀ ॥ ਨਾਮੁ ਭਗਤਿ ਦੇ ਨਿਜ ਘਰਿ ਬੈਠੇ ਅਜਹੁ ਤਿਨਾਡੀ ਆਸਾ
 ॥ ਨਾਨਕ ਮਿਲਹੁ ਕਪਟ ਦਰ ਖੋਲਹੁ ਏਕ ਘੜੀ ਖਟੁ ਮਾਸਾ ॥੧੨॥ ਮੰਘਰ ਮਾਹੁ ਭਲਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਅੰਕਿ ਸਮਾਵਏ ॥
 ਗੁਣਕਾਂਤੀ ਗੁਣ ਰਵੈ ਮੈ ਪਿਲੁ ਨਿਹਚਲੁ ਭਾਵਏ ॥ ਨਿਹਚਲੁ ਚਤੁਰੁ ਸੁਯਾਣੁ ਬਿਧਾਤਾ ਚੰਚਲੁ ਜਗਤੁ ਸਬਾਡਿਆ ॥
 ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਗੁਣ ਅੰਕਿ ਸਮਾਣੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣੇ ਤਾ ਭਾਡਿਆ ॥ ਗੀਤ ਨਾਦ ਕਵਿਤ ਕਵੇ ਸੁਣਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਦੁਖੁ
 ਭਾਗੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਨਾਹ ਪਿਆਰੀ ਅਭ ਭਗਤੀ ਪਿਰ ਆਗੈ ॥੧੩॥ ਪੋਖਿ ਤੁਖਾਰੁ ਪੜੈ ਵਣੁ ਤ੍ਰਣੁ ਰਸੁ
 ਸੋਖੈ ॥ ਆਵਤ ਕੀ ਨਾਹੀ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਸਹਿ ਮੁਖੇ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਰੰਗੁ
 ਮਾਣੀ ॥ ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਸੇਤਜ ਉਤਭੁਜ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਦਰਸਨੁ ਦੇਹੁ ਦਿਇਆਪਤਿ ਦਾਤੇ ਗਤਿ
 ਪਾਵਤ ਮਤਿ ਦੇਹੋ ॥ ਨਾਨਕ ਰੰਗਿ ਰਖੈ ਰਸਿ ਰਸੀਆ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਨੇਹੋ ॥੧੪॥ ਮਾਘਿ ਪੁਨੀਤ ਭੰਡੀ
 ਤੀਰਥੁ ਅੰਤਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥ ਸਾਜਨ ਸਹਜਿ ਮਿਲੇ ਗੁਣ ਗਹਿ ਅੰਕਿ ਸਮਾਨਿਆ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਗੁਣ ਅੰਕੇ ਸੁਣਿ ਪ੍ਰਭ
 ਕਂਕੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵਾ ਸਰਿ ਨਾਵਾ ॥ ਗੱਗ ਜਮੁਨ ਤਹ ਬੇਣੀ ਸੰਗਮ ਸਾਤ ਸਮੁੰਦ ਸਮਾਵਾ ॥ ਪੁਨ ਦਾਨ ਪ੍ਰਾਨ ਪਰਮੇਸੁਰ
 ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਮਾਘਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਤਾ ॥੧੫॥ ਫਲਗੁਨਿ ਮਨਿ
 ਰਹਸੀ ਪ੍ਰੇਮੁ ਸੁਭਾਡਿਆ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹਸੁ ਭਡਿਆ ਆਪੁ ਗਵਾਡਿਆ ॥ ਮਨ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਡਿਆ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਡਿਆ
 ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਘਰਿ ਆਓ ॥ ਬਹੁਤੇ ਕੇਸ ਕਰੀ ਪਿਰ ਬਾਝਹੁ ਮਹਲੀ ਲਹਾ ਨ ਥਾਓ ॥ ਹਾਰ ਡੋਰ ਰਸ ਪਾਟ ਪਟਂਬਰ
 ਪਿਰ ਲੋਡੀ ਸੀਗਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਮੇਲਿ ਲੰਝੈ ਗੁਰਿ ਅਪਣੈ ਘਰਿ ਕਰੁ ਪਾਡਿਆ ਨਾਰੀ ॥੧੬॥ ਕੇ ਦਸ ਮਾਹ ਰੁਤੀ
 ਥਿਤੀ ਵਾਰ ਭਲੇ ॥ ਘੜੀ ਸੂਰਤ ਪਲ ਸਾਚੇ ਆਏ ਸਹਜਿ ਮਿਲੇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰੇ ਕਾਰਜ ਸਾਰੇ ਕਰਤਾ ਸਭ
 ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥ ਜਿਨਿ ਸੀਗਾਰੀ ਤਿਸਹਿ ਪਿਆਰੀ ਮੇਲੁ ਭਡਿਆ ਰੰਗੁ ਮਾਣੈ ॥ ਘਰਿ ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਜਾ ਪਿਰਿ ਰਾਵੀ

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੋ ॥ ਨਾਨਕ ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਾਵੈ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਹਰਿ ਵਰੁ ਥਿਰੁ ਸੋਹਾਗੋ ॥੧੭॥੧॥ ਤੁਖਾਰੀ
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਨੈਣ ਸਲੋਨੜੀਏ ਰੈਣਿ ਅੰਧਿਆਰੀ ਰਾਮ ॥ ਵਖਰੁ ਰਾਖੁ ਮੁੜੇ ਆਵੈ ਵਾਰੀ ਰਾਮ ॥
 ਵਾਰੀ ਆਵੈ ਕਵਣੁ ਜਗਾਵੈ ਸੂਤੀ ਜਮ ਰਸੁ ਚੂਸਏ ॥ ਰੈਣਿ ਅੰਧੇਰੀ ਕਿਆ ਪਤਿ ਤੇਰੀ ਚੋਰੁ ਪੱਡੈ ਘਰੁ ਮੂਸਏ ॥
 ਰਾਖਣਹਾਰਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਮੇਰੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਮੂਰਖੁ ਕਬਹਿ ਨ ਚੇਤੈ ਕਿਆ ਸ੍ਰੂੜੈ ਰੈਣਿ ਅੰਧੇਰੀਆ
 ॥੧॥ ਦ੍ਰਿੜਾ ਪਹਰੁ ਭਿੜਿਆ ਜਾਗੁ ਅਚੇਤੀ ਰਾਮ ॥ ਵਖਰੁ ਰਾਖੁ ਮੁੜੇ ਖਾਜੈ ਖੇਤੀ ਰਾਮ ॥ ਰਾਖਹੁ ਖੇਤੀ ਹਰਿ ਗੁਰ
 ਹੇਤੀ ਜਾਗਤ ਚੋਰੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਜਮ ਮਗਿ ਨ ਜਾਵਹੁ ਨਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਜਮ ਕਾ ਡੁ ਭਤ ਭਾਗੈ ॥ ਰਵਿ ਸਸਿ ਫੀਪਕ
 ਗੁਰਮਤਿ ਦੁਆਰੈ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਮੁਖਿ ਧਿਆਵਏ ॥ ਨਾਨਕ ਮੂਰਖੁ ਅਜਹੁ ਨ ਚੇਤੈ ਕਿਵ ਦ੍ਰਿੜੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵਏ ॥੨॥
 ਤੀਜਾ ਪਹਰੁ ਭਿੜਿਆ ਨੀਦ ਵਿਆਪੀ ਰਾਮ ॥ ਮਾਡਿਆ ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਦ੍ਰਿੜਿ ਸੰਤਾਪੀ ਰਾਮ ॥ ਮਾਡਿਆ ਸੁਤ ਦਾਰਾ
 ਜਗਤ ਪਿਆਰਾ ਚੋਗ ਚੁਗੈ ਨਿਤ ਫਾਸੈ ॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਲੁ ਨ ਗ੍ਰਾਸੈ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ
 ਕਾਲੁ ਨਹੀ ਛੋਡੈ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸੰਤਾਪੀ ॥ ਨਾਨਕ ਤੀਜੈ ਤ੃ਬਿਧਿ ਲੋਕਾ ਮਾਡਿਆ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪੀ ॥੩॥ ਚਤੁਰਥਾ
 ਪਹਰੁ ਭਿੜਿਆ ਦੁਤੁ ਬਿਹਾਗੈ ਰਾਮ ॥ ਤਿਨ ਘਰੁ ਰਾਖਿਅੜਾ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਾਂਤਿ ਜਾਗੇ ਨਾਮਿ
 ਲਾਗੇ ਤਿਨਾ ਰੈਣਿ ਸੁਹੇਲੀਆ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਵਹਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵਹਿ ਤਿਨਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬੇਲੀਆ ॥ ਕਰ
 ਕਂਧਿ ਚਰਣ ਸਰੀਰੁ ਕਂਪੈ ਨੈਣ ਅੰਧੁਲੇ ਤਨੁ ਭਸਮ ਸੇ ॥ ਨਾਨਕ ਦੁਖੀਆ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ਮਨਿ ਵਸੇ
 ॥੪॥ ਖੂਲੀ ਗੰਠਿ ਤਠੋ ਲਿਖਿਆ ਆਡਿਆ ਰਾਮ ॥ ਰਸ ਕਸ ਸੁਖ ਠਾਕੇ ਬੰਧਿ ਚਲਾਡਿਆ ਰਾਮ ॥ ਬੰਧਿ
 ਚਲਾਡਿਆ ਜਾ ਪ੍ਰਭ ਭਾਡਿਆ ਨਾ ਟੀਸੈ ਨਾ ਸੁਣੀਐ ॥ ਆਪਣ ਵਾਰੀ ਸਭਸੈ ਆਵੈ ਪਕੀ ਖੇਤੀ ਲੁਣੀਐ ॥ ਘੜੀ
 ਚਸੇ ਕਾ ਲੇਖਾ ਲੀਜੈ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਸਹੁ ਜੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸੁਰਿ ਨਰ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਾਰਣੁ ਕੀਆ
 ॥੫॥੨॥ ਤੁਖਾਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਤਾਰਾ ਚਡਿਆ ਲਮਮਾ ਕਿਉ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ਰਾਮ ॥ ਸੇਵਕ ਪੂਰੁ ਕਰੰਮਾ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦਿ ਦਿਖਾਲਿਆ ਰਾਮ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਦਿਖਾਲਿਆ ਸਚੁ ਸਮਾਲਿਆ ਅਹਿਨਿਸਿ ਟੇਖਿ ਬੀਚਾਰਿਆ
 ॥ ਧਾਵਤ ਪੰਚ ਰਹੇ ਘਰੁ ਜਾਣਿਆ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਬਿਖੁ ਮਾਰਿਆ ॥ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਭੰਝੇ ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਚੀਨੇ ਰਾਮ ਕਰੰਮਾ ॥

ਨਾਨਕ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ਪਤੀਣੇ ਤਾਰਾ ਚੜਿਆ ਲਮਮਾ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਗਿ ਰਹੇ ਚੂਕੀ ਅਭਿਮਾਨੀ ਰਾਮ ॥ ਅਨਦਿਨੁ
 ਭੋਰੁ ਭਡਿਆ ਸਾਚਿ ਸਮਾਨੀ ਰਾਮ ॥ ਸਾਚਿ ਸਮਾਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨਿ ਭਾਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਬਤੁ ਜਾਗੇ ॥ ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਗੁਰਿ ਟੀਆ ਹਰਿ ਚਰਨੀ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥ ਪ੍ਰਗਟੀ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਮਹਿ ਜਾਤਾ ਮਨਮੁਖਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ॥
 ਨਾਨਕ ਭੋਰੁ ਭਡਿਆ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਜਾਗਤ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥੨॥ ਅਤਗਣ ਕੀਸਰਿਆ ਗੁਣੀ ਘਰੁ ਕੀਆ ਰਾਮ
 ॥ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਅਵਰੁ ਨ ਬੀਆ ਰਾਮ ॥ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸੋਈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਮਨ ਹੀ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
 ਜਿਨਿ ਜਲ ਥਲ ਤ੃ਭਵਣ ਘਟੁ ਘਟੁ ਥਾਪਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਨਿਆ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਅਪਾਰਾ
 ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮੇਟਿ ਸਮਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਅਵਗਣ ਗੁਣਹ ਸਮਾਣੇ ਐਸੀ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈ ॥੩॥ ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਚੂਕਾ
 ਭੋਲਾ ਰਾਮ ॥ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲੇ ਸਾਚਾ ਚੋਲਾ ਰਾਮ ॥ ਹਤਮੈ ਗੁਰਿ ਖੋਈ ਪਰਗਟੁ ਹੋਈ ਚੂਕੇ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪੈ ॥ ਜੋਤੀ
 ਅੰਦਰਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਆਪੁ ਪਛਾਤਾ ਆਪੈ ॥ ਪੇਈਅੜੈ ਘਰਿ ਸਬਦਿ ਪਤੀਣੀ ਸਾਹੁਰੱਡੈ ਪਿਰ ਭਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ਚੂਕੀ ਕਾਣਿ ਲੋਕਾਣੀ ॥੪॥੩॥ ਤੁਖਾਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਭੋਲਾਵੱਡੈ ਭੁਲੀ ਭੁਲਿ ਭੁਲਿ
 ਪਛੋਤਾਣੀ ॥ ਪਿਰਿ ਛੋਡਿਅੜੀ ਸੁਤੀ ਪਿਰ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥ ਪਿਰਿ ਛੋਡੀ ਸੁਤੀ ਅਵਗਣਿ ਮੁਤੀ ਤਿਸੁ ਧਨ
 ਵਿਧਣ ਰਾਤੇ ॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰਿਅ ਅਛਕਾਰਿ ਵਿਗੁਤੀ ਹਤਮੈ ਲਗੀ ਤਾਤੇ ॥ ਤੁਡਰਿ ਛਾਸੁ ਚਲਿਆ ਫੁਰਮਾਇਆ ਭਸਮੈ
 ਭਸਮ ਸਮਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਵਿਹੁਣੀ ਭੁਲਿ ਭੁਲਿ ਪਛੋਤਾਣੀ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਨਾਹ ਪਿਆਰੇ ਇਕ ਬੇਨਤੀ
 ਮੇਰੀ ॥ ਤ੍ਰੂ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਅੜਾ ਹਤ ਰੁਲਿ ਭਸਮੈ ਫੇਰੀ ॥ ਬਿਨੁ ਅਪਨੇ ਨਾਹੈ ਕੋਝਿ ਨ ਚਾਹੈ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਕਿਆ
 ਕੀਜੈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਰਸਨ ਰਸੁ ਰਸਨਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਸੰਗਿ ਨ ਸਾਥੀ ਆਵੈ ਜਾਇ
 ਘਨੇਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਲਾਹਾ ਲੈ ਘਰਿ ਜਾਈਐ ਸਾਚੀ ਸਚੁ ਮਤਿ ਤੇਰੀ ॥੨॥ ਸਾਜਨ ਦੇਸਿ ਵਿਦੇਸੀਅੜੇ ਸਾਨੇਹੱਡੇ
 ਦੇਦੀ ॥ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੇ ਤਿਨ ਸਜਣਾ ਮੁੰਧ ਨੈਣ ਭਰੇਦੀ ॥ ਮੁੰਧ ਨੈਣ ਭਰੇਦੀ ਗੁਣ ਸਾਰੇਦੀ ਕਿਤ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਾ
 ਪਿਆਰੇ ॥ ਮਾਰਗੁ ਪਥੁ ਨ ਜਾਣਤ ਵਿਖੜਾ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਪਿਲੁ ਪਾਰੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਿਲੈ ਵਿਛੁੰਨੀ ਤਨੁ
 ਮਨੁ ਆਗੈ ਰਾਖੈ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਿਰਖੁ ਮਹਾ ਰਸ ਫਲਿਆ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਸੁ ਚਾਖੈ ॥੩॥ ਮਹਲਿ

ਬੁਲਾਇਡੀਏ ਬਿਲਮੁ ਨ ਕੀਜੈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਤਡੀਏ ਸਹਜਿ ਮਿਲੀਜੈ ॥ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਮਿਲੀਜੈ ਰੋਸੁ ਨ ਕੀਜੈ
 ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਸਾਚੈ ਰਾਤੀ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਈ ਮਨਮੁਖਿ ਆਵਣ ਜਾਣੀ ॥ ਜਬ ਨਾਚੀ ਤਬ ਘੂਘਟੁ ਕੈਸਾ
 ਮਟੁਕੀ ਫੋਡਿ ਨਿਰਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪੈ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥੪॥੪॥ ਤੁਖਾਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਰੰਗੀਲੇ ਹਮ ਲਾਲਨ ਕੇ ਲਾਲੇ ॥ ਗੁਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ਅਵਰੁ ਨ ਦ੍ਰਿਆ ਭਾਲੇ ॥ ਗੁਰਿ ਅਲਖੁ
 ਲਖਾਇਆ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਇਆ ਜਾ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ਸਹਜਿ ਮਿਲੇ
 ਬਨਵਾਰੀ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਤ੍ਰਾਂ ਤਾਰਹਿ ਤਰੀਐ ਸਚੁ ਦੇਵਹੁ ਦੀਨ ਦਿਆਲਾ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ
 ਤ੍ਰਾਂ ਸਰਬ ਜੀਆ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥੧॥ ਭਰਿਪੁਰਿ ਧਾਰਿ ਰਹੇ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਬਦੇ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਗੁਰ ਰੂਪਿ ਸੁਰਾਰੇ
 ॥ ਗੁਰ ਰੂਪ ਸੁਰਾਰੇ ਤ੃ਭਵਣ ਧਾਰੇ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਰੰਗੀ ਜਿਨਸੀ ਜੰਤ ਉਪਾਏ ਨਿਤ ਦੇਵੈ ਚੜੈ
 ਸਵਾਇਆ ॥ ਅਪਰਾਂਪਰੁ ਆਪੇ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੇ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਹੋਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਹੀਰਾ ਹੀਰੈ ਬੇਧਿਆ ਗੁਣ ਕੈ ਹਾਰਿ
 ਪਰੋਵੈ ॥੨॥ ਗੁਣ ਗੁਣਹਿ ਸਮਾਣੇ ਮਸਤਕਿ ਨਾਮ ਨੀਸਾਣੇ ॥ ਸਚੁ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇਆ ਚੂਕਾ ਆਵਣ ਜਾਣੇ ॥
 ਸਚੁ ਸਾਚਿ ਪਛਾਤਾ ਸਾਚੈ ਰਾਤਾ ਸਾਚੁ ਮਿਲੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥ ਸਾਚੇ ਊਪਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਦੀਸੈ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥
 ਮੋਹਨਿ ਮੋਹਿ ਲੀਆ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ਬੰਧਨ ਖੋਲਿ ਨਿਰਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਜਾ ਮਿਲਿਆ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ
 ॥੩॥ ਸਚ ਘਰੁ ਖੋਜਿ ਲਹੇ ਸਾਚਾ ਗੁਰ ਥਾਨੋ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਨਹ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੋ ॥ ਦੇਵੈ ਸਚੁ ਦਾਨੋ ਸੋ
 ਪਰਵਾਨੋ ਸਦ ਦਾਤਾ ਵਡ ਦਾਣਾ ॥ ਅਮਰੁ ਅਜੋਨੀ ਅਸਥਿਰੁ ਜਾਪੈ ਸਾਚਾ ਮਹਲੁ ਚਿਰਾਣਾ ॥ ਦੋਤਿ ਤਚਾਪਤਿ
 ਲੇਖੁ ਨ ਲਿਖੀਐ ਪ੍ਰਗਟੀ ਜੋਤਿ ਸੁਰਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਸਾਚੈ ਰਾਚਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੀਐ ਤਾਰੀ ॥੪॥੫॥
 ਤੁਖਾਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਤ੍ਰਾਂ ਸਮਝ੍ਝੁ ਅਚੇਤ ਇਆਣਿਆ ਰਾਮ ॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਛੋਡਿ ਅਕਗਣ
 ਗੁਣੀ ਸਮਾਣਿਆ ਰਾਮ ॥ ਬਹੁ ਸਾਦ ਲੁਭਾਣੇ ਕਿਰਤ ਕਮਾਣੇ ਵਿਛੁਡਿਆ ਨਹੀ ਮੇਲਾ ॥ ਕਿਤ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਐ ਜਮ
 ਡਰਿ ਮਰੀਐ ਜਮ ਕਾ ਪਥੁ ਦੁਹੇਲਾ ॥ ਮਨਿ ਰਾਮੁ ਨਹੀ ਜਾਤਾ ਸਾਝਾ ਪ੍ਰਭਾਤਾ ਅਵਘਟਿ ਰੁਧਾ ਕਿਆ ਕਰੇ ॥ ਬੰਧਨਿ
 ਬਾਧਿਆ ਇਨ ਬਿਧਿ ਛੂਟੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵੈ ਨਰਹਰੇ ॥੧॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਤ੍ਰਾਂ ਛੋਡਿ ਆਲ ਜੰਜਾਲਾ ਰਾਮ ॥ ਏ ਮਨ

ਮेरिआ ਹਰਿ ਸੇਵਹੁ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਾਲਾ ਰਾਮ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਏਕਕਾਰੁ ਸਾਚਾ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਜਿੰਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥
 ਪਤਣੁ ਪਾਣੀ ਅਗਨਿ ਬਾਧੇ ਗੁਰਿ ਖੇਲੁ ਜਗਤਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਆਚਾਰਿ ਤੂ ਵੀਚਾਰਿ ਆਪੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੰਜਮ
 ਜਪ ਤਪੋ ॥ ਸਖਾ ਸੈਨੁ ਪਿਆਰੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਕਾ ਜਪੁ ਜਪੋ ॥੨॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਤੂ ਥਿਰੁ ਰਹੁ ਚੋਟ ਨ
 ਖਾਵਹੀ ਰਾਮ ॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਹੀ ਰਾਮ ॥ ਗੁਣ ਗਾਇ ਰਾਮ ਰਸਾਇ ਰਸੀਅਹਿ
 ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਸਾਰਹੇ ॥ ਤੈ ਲੋਕ ਦੀਪਕੁ ਸਬਦਿ ਚਾਨਣੁ ਪੰਚ ਢੂਤ ਸੰਘਾਰਹੇ ॥ ਭੈ ਕਾਟਿ ਨਿਰਭਤ ਤਰਹਿ
 ਦੁਤਰੁ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਕਾਰਜ ਸਾਰਏ ॥ ਰੂਪੁ ਰੰਗੁ ਪਿਆਰੁ ਹਰਿ ਸਿਤੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਏ ॥੩॥ ਏ
 ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਤੂ ਕਿਆ ਲੈ ਆਇਆ ਕਿਆ ਲੈ ਜਾਇਸੀ ਰਾਮ ॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਤਾ ਛੁਟਸੀ ਜਾ ਭਰਮੁ
 ਚੁਕਾਇਸੀ ਰਾਮ ॥ ਧਨੁ ਸੰਚਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਵਖਰੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਭਾਉ ਪਛਾਣਹੇ ॥ ਮੈਲੁ ਪਰਹਰਿ ਸਬਦਿ
 ਨਿਰਮਲੁ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਸਚੁ ਜਾਣਹੇ ॥ ਪਤਿ ਨਾਮੁ ਪਾਵਹਿ ਘਰਿ ਸਿਧਾਵਹਿ ਝੋਲਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਪੀ ਰਸੋ ॥ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਬਦਿ ਰਸੁ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗਿ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਜਸੋ ॥੪॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਬਿਨੁ ਪਤੜੀਆ
 ਮੰਦਰਿ ਕਿਤ ਚੱਡੈ ਰਾਮ ॥ ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਬਿਨੁ ਬੇੜੀ ਪਾਰਿ ਨ ਅੰਬੱਡੈ ਰਾਮ ॥ ਪਾਰਿ ਸਾਜਨੁ ਅਪਾਰੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ
 ਗੁਰ ਸਬਦ ਸੁਰਤਿ ਲਮਘਾਵਏ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕਰਹਿ ਰਲੀਆ ਫਿਰਿ ਨ ਪਛੋਤਾਵਏ ॥ ਕਰਿ ਦਿਆ
 ਦਾਨੁ ਦਿਆਲ ਸਾਚਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸੰਗਤਿ ਪਾਵਓ ॥ ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਸੁਣਹੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਮਨੁ
 ਸਮਝਾਵਓ ॥੫॥੬॥

ਤੁਖਾਰੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅੰਤਰਿ ਪਿਰੀ ਪਿਆਰੁ ਕਿਤ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਜੀਵੀਐ ਰਾਮ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਦਰਸੁ ਨ ਹੋਇ ਕਿਤ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵੀਐ ਰਾਮ
 ॥ ਕਿਤ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵੀਐ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਜੀਵੀਐ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰਤ ਕਰੇ ਦਿਨੁ
 ਰਾਤੀ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਏ ॥ ਅਪਣੀ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਦ ਸਾਰਿਆ ॥
 ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਿਆ ਮੈ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਹਤ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ॥੧॥ ਜਬ ਦੇਖਾਂ ਪਿਲੁ ਪਿਆਰਾ ਹਰਿ ਗੁਣ

रसि रवा राम ॥ मेरै अंतरि होइ विगासु पृउ पृउ सचु नित चवा राम ॥ पृउ चवा पिआरे सबदि
 निसतारे बिनु देखे तृपति न आवए ॥ सबदि सीगारु होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवए ॥
 दइआ दानु मंगत जन दीजै मै प्रीतमु देहु मिलाए ॥ अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर
 विटहु घुमाए ॥२॥ हम पाथर गुरु नाव बिखु भवजलु तारीअै राम ॥ गुर देवहु सबदु सुभाइ मै मूँड
 निसतारीअै राम ॥ हम मूँड मुगध किछु मिति नहीं पाई तू अगंमु वड जाणिआ ॥ तू आपि दइआलु
 दइआ करि मेलहि हम निरगुणी निमाणिआ ॥ अनेक जनम पाप करि भरमे हुणि तउ सरणागति
 आए ॥ दइआ करहु रखि लेवहु हरि जीउ हम लागह सतिगुर पाए ॥३॥ गुर पारस हम लोह मिलि
 कंचनु होइआ राम ॥ जोती जोति मिलाइ काइआ गडु सोहिआ राम ॥ काइआ गडु सोहिआ मेरै प्रभि
 मोहिआ किउ सासि गिरासि विसारीअै ॥ अदृसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी हउ सतिगुर कै
 बलिहारीअै ॥ सतिगुर आगै सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥ आपे दइआ करहु प्रभ दाते नानक
 अंकि समावै ॥४॥१॥ तुखारी महला ४ ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ जो तुम
 धिआवहि जगदीस ते जन भउ बिखमु तरा ॥ बिखम भउ तिन तरिआ सुहेला जिन हरि हरि नामु
 धिआइआ ॥ गुर वाकि सतिगुर जो भाइ चले तिन हरि हरि आपि मिलाइआ ॥ जोती जोति मिलि जोति
 समाणी हरि कृपा करि धरणीधरा ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥१॥ तुम सुआमी
 अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ तू अलख अभेउ अगंमु गुर सतिगुर बचनि लहिआ ॥ धनु
 धन्नु ते जन पुरख पूरे जिन गुर संतसंगति मिलि गुण ख्वे ॥ बिबेक बुधि बीचारि गुरमुखि गुर सबदि
 खिनु खिनु हरि नित च्वे ॥ जा बहहि गुरमुखि हरि नामु बोलहि जा खड़े गुरमुखि हरि हरि कहिआ ॥
 तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥२॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ
 गुरमति हरे ॥ तिन के कोटि सभि पाप खिनु परहरि हरि दूरि करे ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जिन

ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਇਕੁ ਅਰਾਧਿਆ ॥ ਤਿਨ ਕਾ ਜਨਮੁ ਸਫਲਿਆ ਸਭੁ ਕੀਆ ਕਰਤੈ ਜਿਨ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸਚੁ ਭਾਖਿਆ ॥
 ਤੇ ਧਨੁ ਜਨ ਵਡ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰੇ ਜੋ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਭਤ ਬਿਖਮੁ ਤਰੇ ॥ ਸੇਵਕ ਜਨ ਸੇਵਹਿ ਤੇ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਨ
 ਸੇਵਿਆ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰੇ ॥੩॥ ਤੂ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਹਰਿ ਆਪਿ ਜਿਤ ਤੂ ਚਲਾਵਹਿ ਪਿਆਰੇ ਹਉ ਤਿਵੈ ਚਲਾ ॥ ਹਮਰੈ
 ਹਾਥਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ਜਾ ਤੂ ਮੇਲਹਿ ਤਾ ਹਉ ਆਇ ਮਿਲਾ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਤੂ ਹਰਿ ਮੇਲਹਿ ਸੁਆਮੀ ਸਭੁ ਤਿਨ ਕਾ
 ਲੇਖਾ ਛੁਟਕਿ ਗਿਆ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਗਣਤ ਨ ਕਰਿਅਹੁ ਕੋ ਭਾਈ ਜੋ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਲਿਆ ॥ ਨਾਨਕ
 ਦਿਆਲੁ ਹੋਆ ਤਿਨ ਊਪਰਿ ਜਿਨ ਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਮੰਨਿਆ ਭਲਾ ॥ ਤੂ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਹਰਿ ਆਪਿ ਜਿਤ ਤੂ
 ਚਲਾਵਹਿ ਪਿਆਰੇ ਹਉ ਤਿਵੈ ਚਲਾ ॥੪॥੨॥ ਤੁਖਾਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਤੂ ਜਗਜੀਵਨੁ ਜਗਦੀਸੁ ਸਭ ਕਰਤਾ
 ਸੂਸਟਿ ਨਾਥੁ ॥ ਤਿਨ ਤੂ ਧਿਆਇਆ ਮੇਰਾ ਰਾਸੁ ਜਿਨ ਕੈ ਧੁਰਿ ਲੇਖੁ ਮਾਥੁ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਧੁਰਿ ਹਰਿ ਲਿਖਿਆ
 ਸੁਆਮੀ ਤਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ॥ ਤਿਨ ਕੇ ਪਾਪ ਇਕ ਨਿਮਖ ਸਭਿ ਲਾਥੇ ਜਿਨ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ
 ਜਾਪਿਆ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਤੇ ਜਨ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਤਿਨ ਦੇਖੇ ਹਉ ਭਿਆ ਸਨਾਥੁ ॥ ਤੂ ਜਗਜੀਵਨੁ
 ਜਗਦੀਸੁ ਸਭ ਕਰਤਾ ਸੂਸਟਿ ਨਾਥੁ ॥੧॥ ਤੂ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਭਰਪੂਰਿ ਸਭ ਊਪਰਿ ਸਾਚੁ ਧਣੀ ॥ ਜਿਨ
 ਜਪਿਆ ਹਰਿ ਮਨਿ ਚੀਤਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਪਿ ਮੁਕਤੁ ਘਣੀ ॥ ਜਿਨ ਜਪਿਆ ਹਰਿ ਤੇ ਮੁਕਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਨ ਕੇ ਊਜਲ
 ਸੁਖ ਹਰਿ ਦੁਆਰਿ ॥ ਓਡਿ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਜਨ ਭਏ ਸੁਹੇਲੇ ਹਰਿ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਰਖਨਹਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਸੰਤਸੰਗਤਿ
 ਜਨ ਸੁਣਹੁ ਭਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਸਫਲ ਬਣੀ ॥ ਤੂ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਭਰਪੂਰਿ ਸਭ ਊਪਰਿ ਸਾਚੁ ਧਣੀ
 ॥੨॥ ਤੂ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਹਰਿ ਏਕੁ ਹਰਿ ਏਕੋ ਏਕੁ ਰਵਿਆ ॥ ਵਣ ਤ੍ਰਣਿ ਤ੍ਰਭਵਣਿ ਸਭ ਸੂਸਟਿ ਮੁਖਿ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚਵਿਆ ॥ ਸਭਿ ਚਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤੇ ਅਸੰਖ ਅਗਣਤ ਹਰਿ ਧਿਆਵਏ ॥ ਸੋ ਧਨੁ ਧਨੁ ਹਰਿ
 ਸੰਤੁ ਸਾਧੂ ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਰਤੇ ਭਾਵਏ ॥ ਸੋ ਸਫਲੁ ਦਰਸਨੁ ਦੇਹੁ ਕਰਤੇ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਸਦ ਚਵਿਆ ॥
 ਤੂ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਹਰਿ ਏਕੁ ਹਰਿ ਏਕੋ ਏਕੁ ਰਵਿਆ ॥੩॥ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਅਸੰਖ ਜਿਸੁ ਤੂ ਦੇਵਹਿ ਮੇਰੇ
 ਸੁਆਮੀ ਤਿਸੁ ਮਿਲਹਿ ॥ ਜਿਸ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਗੁਰ ਹਾਥੁ ਤਿਸੁ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਟਿਕਹਿ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਹਿਰਦੈ

ਟਿਕਹਿ ਤਿਸ ਕੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਭਤ ਭਾਵਨੀ ਹੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਭੈ ਕਿਨੈ ਨ ਪ੍ਰੇਮੁ ਪਾਇਆ ਬਿਨੁ ਭੈ ਪਾਰਿ ਨ ਉਤਰਿਆ
 ਕੋਈ ॥ ਭਤ ਭਾਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਾਨਕ ਤਿਸਹਿ ਲਾਗੈ ਜਿਸੁ ਤੂ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹਿ ॥ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਅਸੰਖ
 ਜਿਸੁ ਤੂ ਦੇਵਹਿ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਤਿਸੁ ਮਿਲਹਿ ॥੪॥੩॥ ਤੁਖਾਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਨਾਵਣੁ ਪੁਰਬੁ ਅਭੀਚੁ ਗੁਰ
 ਸਤਿਗੁਰ ਦਰਸੁ ਭਡਿਆ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਹਰੀ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰੁ ਗਡਿਆ ॥ ਗੁਰ ਦਰਸੁ ਪਾਇਆ ਅਗਿਆਨੁ
 ਗਵਾਇਆ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਾਸੀ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਖਿਨ ਮਹਿ ਬਿਨਸੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥
 ਹਰਿ ਆਪਿ ਕਰਤੈ ਪੁਰਬੁ ਕੀਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕੁਲਖੇਤਿ ਨਾਵਣਿ ਗਡਿਆ ॥ ਨਾਵਣੁ ਪੁਰਬੁ ਅਭੀਚੁ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ
 ਦਰਸੁ ਭਡਿਆ ॥੧॥ ਮਾਰਗਿ ਪਥਿ ਚਲੇ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਿ ਸਿਖਾ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਬਣੀ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ
 ਨਿਮਖ ਵਿਖਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਬਣੀ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੀ ਸਭੁ ਲੋਕੁ ਵੇਖਣਿ ਆਇਆ ॥ ਜਿਨ ਦਰਸੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਗੁਰੁ ਕੀਆ ਤਿਨ ਆਪਿ ਹਰਿ ਮੇਲਾਇਆ ॥ ਤੀਰਥ ਉਦਮੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕੀਆ ਸਭ ਲੋਕ ਉਧਰਣ ਅਰਥਾ ॥
 ਮਾਰਗਿ ਪਥਿ ਚਲੇ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਿ ਸਿਖਾ ॥੨॥ ਪ੍ਰਥਮ ਆਏ ਕੁਲਖੇਤਿ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਬੁ ਹੋਆ ॥
 ਖਬਰਿ ਭੰਡੀ ਸੰਸਾਰਿ ਆਏ ਤੈ ਲੋਆ ॥ ਦੇਖਣਿ ਆਏ ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸਭਿ ਆਇਆ ॥ ਜਿਨ
 ਪਰਸਿਆ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਤਿਨ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਨਾਸ ਗਵਾਇਆ ॥ ਜੋਗੀ ਦਿਗੰਬਰ ਸੰਨਿਆਸੀ ਖਟੁ ਦਰਸਨ
 ਕਰਿ ਗਏ ਗੋਸਟਿ ਫੌਆ ॥ ਪ੍ਰਥਮ ਆਏ ਕੁਲਖੇਤਿ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਬੁ ਹੋਆ ॥੩॥ ਦੁਤੀਆ ਜਮੁਨ ਗਏ
 ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਕੀਆ ॥ ਜਾਗਾਤੀ ਮਿਲੇ ਦੇ ਭੇਟ ਗੁਰ ਪਿਛੈ ਲਮਘਾਇ ਦੀਆ ॥ ਸਭ ਛੁਟੀ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਿਛੈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਮਾਰਗਿ ਜੋ ਪਥਿ ਚਾਲੇ ਤਿਨ ਜਮੁ
 ਜਾਗਾਤੀ ਨੇਡਿ ਨ ਆਇਆ ॥ ਸਭ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਜਗਤੁ ਬੋਲੈ ਗੁਰ ਕੈ ਨਾਇ ਲਿਝੈ ਸਭਿ ਛੁਟਕਿ ਗਡਿਆ ॥
 ਦੁਤੀਆ ਜਮੁਨ ਗਏ ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਕੀਆ ॥੪॥ ਤ੃ਤੀਆ ਆਏ ਸੁਰਸਰੀ ਤਹ ਕਤਤਕੁ ਚਲਤੁ
 ਭਡਿਆ ॥ ਸਭ ਮੋਹੀ ਦੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਗੁਰ ਸੰਤ ਕਿਨੈ ਆਫੁ ਨ ਦਾਮੁ ਲਿਝਿਆ ॥ ਆਫੁ ਦਾਮੁ ਕਿਛੁ
 ਪਾਇਆ ਨ ਬੋਲਕ ਜਾਗਾਤੀਆ ਮੋਹਣ ਸੁੰਦਰਿ ਪੰਡੀ ॥ ਭਾਈ ਹਮ ਕਰਹ ਕਿਆ ਕਿਸੁ ਪਾਸਿ ਮਾਂਗਹ ਸਭ

ਭਾਗੀ ਸਤਿਗੁਰ ਪਿਛੈ ਪੰਡੀ ॥ ਜਾਗਾਤੀਆ ਉਪਾਵ ਸਿਆਣਪ ਕਰਿ ਵੀਚਾਰੁ ਡਿਠਾ ਭੰਨਿ ਬੋਲਕਾ ਸਭਿ ਤਠਿ
ਗਿੜਿਆ ॥ ਤੂਤੀਆ ਆਏ ਸੁਰਸਰੀ ਤਹ ਕਤਕੁ ਚਲਤੁ ਭਿੜਿਆ ॥੫॥ ਮਿਲਿ ਆਏ ਨਗਰ ਮਹਾ ਜਨਾ ਗੁਰ
ਸਤਿਗੁਰ ਓਟ ਗਹੀ ॥ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੋਵਿਦੁ ਪੁਛਿ ਸਿਮ੃ਤਿ ਕੀਤਾ ਸਹੀ ॥ ਸਿਮ੃ਤਿ ਸਾਸਕ ਸਭਨੀ ਸਹੀ
ਕੀਤਾ ਸੁਕਿ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦਿ ਸ਼੍ਰੀਰਾਮਿ ਕਰਿ ਗੁਰੁ ਗੋਵਿਦੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਦੇਹੀ ਨਗਰਿ ਕੋਟਿ ਪੰਚ ਚੋਰ ਕਟਵਾਰੇ
ਤਿਨ ਕਾ ਥਾਉ ਥੇਹੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਕੀਰਤਨ ਪੁਰਾਣ ਨਿਤ ਪੁਨਨ ਹੋਵਹਿ ਗੁਰੁ ਬਚਨਿ ਨਾਨਕਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਲਹੀ
॥ ਮਿਲਿ ਆਏ ਨਗਰ ਮਹਾ ਜਨਾ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਓਟ ਗਹੀ ॥੬॥੮॥੧੦॥

ਤੁਖਾਰੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਲਾਲਨਾ ਗੁਰਿ ਮਨੁ ਦੀਨਾ ॥ ਸੁਣਿ ਸਬਦੁ ਤੁਮਾਰਾ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਭੀਨਾ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭੀਨਾ ਜਿਤ
ਜਲ ਮੀਨਾ ਲਾਗਾ ਰੰਗੁ ਮੁਰਾਰਾ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਈ ਠਾਕੁਰ ਤੇਰਾ ਮਹਲੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਸਗਲ ਗੁਣਾ ਕੇ ਦਾਤੇ
ਸੁਆਮੀ ਬਿਨਤ ਸੁਨਹੁ ਇਕ ਦੀਨਾ ॥ ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜੀਅੜਾ ਬਲਿ ਬਲਿ ਕੀਨਾ ॥੧॥ ਇਹੁ
ਤਨੁ ਮਨੁ ਤੇਰਾ ਸਭਿ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ॥ ਖਨੀਐ ਵੰਜਾ ਦਰਸਨ ਤੇਰੇ ॥ ਦਰਸਨ ਤੇਰੇ ਸੁਣਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਨਿਮਖ ਵੂਸਟਿ
ਧੇਖਿ ਜੀਕਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸੁਨੀਜੈ ਤੇਰਾ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹਿ ਤ ਪੀਕਾ ॥ ਆਸ ਪਿਆਸੀ ਪਿਰ ਕੈ ਤਾਈ ਜਿਤ
ਚਾਤੂਕੁ ਬੂਂਦੇਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੀਅੜਾ ਬਲਿਹਾਰੀ ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥੨॥ ਤੂ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹੁ
ਅਮਿਤਾ ॥ ਤੂ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਿਆਰਾ ਪ੍ਰਾਨ ਹਿਤ ਚਿਤਾ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਸਗਲ ਰੰਗ ਬਨਿ ਆਏ ॥
ਸੋਈ ਕਰਮੁ ਕਮਾਵੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਜੇਹਾ ਤੂ ਫੁਰਮਾਏ ॥ ਜਾ ਕਤ ਕ੃ਪਾ ਕਰੀ ਜਗਦੀਸੁਰਿ ਤਿਨਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਨੁ ਜਿਤਾ ॥
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੀਅੜਾ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਤਤ ਦਿਤਾ ॥੩॥ ਨਿਰਗੁਣੁ ਰਾਖਿ ਲੀਆ ਸੰਤਨ ਕਾ ਸਦਕਾ
॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਢਾਕਿ ਲੀਆ ਮੋਹਿ ਪਾਪੀ ਪਡਦਾ ॥ ਢਾਕਨਹਾਰੇ ਪ੍ਰਭੂ ਹਮਾਰੇ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥
ਅਬਿਨਾਸੀ ਅਬਿਗਤ ਸੁਆਮੀ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ॥ ਉਸਤਤਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ਤੁਮਾਰੀ ਕਤਣੁ ਕਹੈ ਤੂ
ਕਦ ਕਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੀ ਮਿਲੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਨਿਮਕਾ ॥੪॥੧॥੧੧॥

ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੂ ੧

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਤ ਗਾਵੀਐ ਰੇ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਨ ਜਾਈ ਹਰਿ ਲਖਿਆ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਮਿਲੈ ਲਖਾਵੀਐ ਰੇ
 ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਸੁ ਆਪੇ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਤ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਵੀਐ ਰੇ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਭਗਤਿ
 ਕਰੇ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥਾਇ ਪਾਵੀਐ ਰੇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਹਰਿ ਪਹਿ ਹਰਿ ਦੇਵੈ ਤਾ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਵੀਐ ਰੇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਸੁ ਲੇਖਾ ਸਭੁ ਛਡਾਵੀਐ ਰੇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਹਿ
 ਸੇ ਧਨ੍ਨੁ ਜਨ ਕਹੀਅਹਿ ਤਿਨ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਵੀਐ ਰੇ ॥ ਤਿਨ ਦੇਖੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਬਿਗਸੈ ਜਿਤੁ
 ਸੁਤੁ ਮਿਲਿ ਮਾਤ ਗਲਿ ਲਾਵੀਐ ਰੇ ॥੩॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਹਰਿ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਮੋ ਕਤ ਦੇਹੁ ਮਤੀ ਜਿਤੁ
 ਹਰਿ ਪਾਵੀਐ ਰੇ ॥ ਜਿਤ ਬਛੁਰਾ ਦੇਖਿ ਗੜੁ ਸੁਖੁ ਮਾਨੈ ਤਿਤ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗਲਿ ਲਾਵੀਐ ਰੇ ॥੪॥੧॥

ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੂ ੧

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਕਹੁ ਰੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਧੋਇ ਧੋਇ ਪ੍ਰਜਹੁ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਲਹੁ ਰੇ
 ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਬਿਖੈ ਰਸ ਇਨ ਸੰਗਤਿ ਤੇ ਤ੍ਰੂ ਰਹੁ ਰੇ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਕੀਜੈ ਹਰਿ
 ਗੋਸਟਿ ਸਾਧੂ ਸਿਤ ਗੋਸਟਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸਾਇਣੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਸਾਇਣੁ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਮਹੁ ਰੇ ॥੧॥

अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे ॥ जन नानक कउ
हरि दइआल होहु सुआमी हरि संतन की धूरि करि हरे ॥२॥१॥२॥

केदारा महला ५ घरु २

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਾਈ ਸੰਤਸੰਗਿ ਜਾਗੀ ॥ ਪ੍ਰਤਿ ਰੰਗ ਦੇਖੈ ਜਪਤੀ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦਰਸਨ ਪਿਆਸ ਲੋਚਨ
ਤਾਰ ਲਾਗੀ ॥ ਬਿਸਰੀ ਤਿਆਸ ਬਿਡਾਨੀ ॥੧॥ ਅਥ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆਂ ਹੈ ਸਹਜ ਸੁਖਦਾਇਕ ਦਰਸਨੁ
ਪੇਖਤ ਮਨੁ ਲਪਟਾਨੀ ॥ ਦੇਖਿ ਦਮੋਦਰ ਰਹਸੁ ਮਨਿ ਉਪਜਿਆਂ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਤ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਨੀ ॥੨॥੧॥

केदारा महला ५ घरु ३

੧੭੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੀਨ ਬਿਨਤ ਸੁਨੁ ਦਇਆਲ ॥ ਪੰਚ ਦਾਸ ਤੀਨਿ ਦੋਖੀ ਏਕ ਮਨੁ ਅਨਾਥ ਨਾਥ ॥ ਰਾਖੁ ਹੋ ਕਿਰਪਾਲ ॥
ਰਹਾਉ ॥ ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਗਵਨੁ ਕਰਤ ॥ ਖੱਟੁ ਕਰਮ ਜੁਗਤਿ ਧਿਆਨੁ ਧਰਤ ॥ ਤਥਾਵ ਸਗਲ ਕਰਿ
ਹਾਰਿਆਂ ਨਹ ਨਹ ਹੁਟਹਿ ਬਿਕਰਾਲ ॥੧॥ ਸਰਣਿ ਬੰਦਨ ਕਰੁਣਾ ਪਤੇ ॥ ਭਵ ਹਰਣ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਹਰੇ ॥ ਏਕ ਤੂਹੀ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ॥ ਪ੍ਰਭ ਚਰਨ ਨਾਨਕ ਆਸਰੋ ॥ ਤਥੇ ਭ੍ਰਮ ਮੋਹ ਸਾਗਰ ॥ ਲਗਿ
ਸੰਤਨਾ ਪਗ ਪਾਲ ॥੨॥੧॥੨॥

केदारा महला ५ घਰु ४

੧੮੦ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਰਨੀ ਆਇਆਂ ਨਾਥ ਨਿਧਾਨ ॥ ਨਾਮ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਗੀ ਮਨ ਭੀਤਰਿ ਮਾਗਨ ਕਉ ਹਰਿ ਦਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਸੁਖਦਾਈ ਪ੍ਰੰਨ ਪਰਮੇਸੁਰ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਹੁ ਮਾਨ ॥ ਦੇਹੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਾਧ੍ਵ ਸੰਗਿ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਗੁਨ ਰਸਨ
ਬਖਾਨ ॥੧॥ ਗੋਪਾਲ ਦਇਆਲ ਗੋਬਿਦ ਦਮੋਦਰ ਨਿਰਮਲ ਕਥਾ ਗਿਆਨ ॥ ਨਾਨਕ ਕਉ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ
ਰਾਗਹੁ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸੰਗਿ ਧਿਆਨ ॥੨॥੧॥੩॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਦਰਸਨ ਕੋ ਮਨਿ ਚਾਤ
॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਵਹੁ ਤੁਮ ਦੇਵਹੁ ਅਪਨੋ ਨਾਤ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਤ ਸੇਵਾ ਸਤ ਪੁਰਖ ਪਿਆਰੇ

ਜਤ ਸੁਨੀਐ ਤਤ ਮਨਿ ਰਹਸਾਉ ॥ ਵਾਰੀ ਫੇਰੀ ਸਦਾ ਘੁਮਾਈ ਕਵਨੁ ਅਨੂਪੁ ਤੇਰੋ ਠਾਉ ॥੧॥ ਸਰਬ
 ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਹਿ ਸਗਲ ਸਮਾਲਹਿ ਸਗਲਿਆ ਤੇਰੀ ਛਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਤੁਝਾਹਿ
 ਦਿਖਾਉ ॥੨॥੨॥੪॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੂਅ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥ ਮਗਨ ਮਨੈ ਮਹਿ ਚਿਤਵਤ ਆਸਾ
 ਨੈਨਹੁ ਤਾਰ ਤੁਹਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਓਡਿ ਦਿਨ ਪਹਰ ਮੂਰਤ ਪਲ ਕੈਸੇ ਓਡਿ ਪਲ ਘਰੀ ਕਿਹਾਰੀ ॥ ਖੂਲੇ ਕਪਟ
 ਧਪਟ ਬੁਝਿ ਤ੃ਸਨਾ ਜੀਵਤ ਪੇਖਿ ਦਰਸਾਰੀ ॥੧॥ ਕਤਨੁ ਸੁ ਜਤਨੁ ਤਪਾਉ ਕਿਨੇਹਾ ਸੇਵਾ ਕਤਨ ਬੀਚਾਰੀ ॥
 ਮਾਨੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਤਜਿ ਨਾਨਕ ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਉਧਾਰੀ ॥੨॥੩॥੫॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਗੁਨ ਗਾਵਹੁ ॥ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿਦੇ ਅਪਨਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਢਿ ਲੀਏ ਪ੍ਰਭ ਆਨ ਬਿਖੈ
 ਤੇ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਨੁ ਲਾਵਹੁ ॥ ਭਰਮੁ ਭਤ ਮੋਹੁ ਕਟਿਆਂ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਅਪਨਾ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਵਹੁ ॥੧॥ ਸਭ ਕੀ ਰੇਨ
 ਹੋਡਿ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ਅਛਾਬੁਧਿ ਤਜਾਵਹੁ ॥ ਅਪਨੀ ਭਗਤਿ ਦੇਹਿ ਦਿਇਆਲਾ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪਾਵਹੁ
 ॥੨॥੪॥੬॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਜਨਮੁ ਅਕਾਰਥ ਜਾਤ ॥ ਤਜਿ ਗੋਪਾਲ ਆਨ ਰੰਗਿ ਰਾਚਤ
 ਮਿਥਿਆ ਪਹਿਰਤ ਖਾਤ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਸੰਪੈ ਸੁਖ ਭੋਗਵੈ ਸੰਗਿ ਨ ਨਿਵਹਤ ਮਾਤ ॥ ਮੂਗ ਤ੃ਸਨਾ
 ਦੇਖਿ ਰਚਿਆਂ ਬਾਵਰ ਦੁਮ ਛਾਇਆ ਰੰਗਿ ਰਾਤ ॥੧॥ ਮਾਨ ਮੋਹ ਮਹਾ ਮਦ ਮੋਹਤ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਕੈ ਖਾਤ ॥ ਕਰੁ
 ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਦਾਸ ਨਾਨਕ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਹੋਡਿ ਸਹਾਤ ॥੨॥੫॥੭॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕੋਡਿ ਨ
 ਚਾਲਸਿ ਸਾਥ ॥ ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਕਰੁਣਾਪਤਿ ਸੁਆਮੀ ਅਨਾਥਾ ਕੇ ਨਾਥ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੁਤ ਸੰਪਤਿ ਬਿਖਿਆ
 ਰਸ ਭੋਗਵਤ ਨਹ ਨਿਵਹਤ ਜਮ ਕੈ ਪਾਥ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਗਾਉ ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਉਧਰੁ ਸਾਗਰ ਕੇ ਖਾਤ ॥੧॥
 ਸਰਨਿ ਸਮਰਥ ਅਕਥ ਅਗੋਚਰ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖ ਲਾਥ ॥ ਨਾਨਕ ਦੀਨ ਧੂਰਿ ਜਨ ਬਾਂਘਤ ਮਿਲੈ ਲਿਖਤ
 ਧੁਰਿ ਮਾਥ ॥੨॥੬॥੮॥

ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੫

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਬਿਸਰਤ ਨਾਹਿ ਮਨ ਤੇ ਹਰੀ ॥ ਅਬ ਇਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਹਾ ਪ੍ਰਭਲ ਭੰਡ ਆਨ ਬਿਖੈ ਜਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੁੰਦ ਕਹਾ

ਤਿਆਗੁ ਚਾਤੂਕੁ ਮੀਨੁ ਰਹਤੁ ਨ ਘਰੀ ॥ ਗੁਨੁ ਗੋਪਾਲੁ ਤਚਾਰੁ ਰਸਨਾ ਟੇਵੁ ਏਹੁ ਪਰੀ ॥੧॥ ਮਹਾ ਨਾਦੁ
 ਕੁਰੁਕੁ ਮੋਹਿਓ ਬੇਧਿ ਤੀਖਨੁ ਸਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਚਰਨੁ ਕਮਲੁ ਰਸਾਲੁ ਨਾਨਕੁ ਗਾਠਿ ਬਾਧਿ ਘਰੀ ॥੨॥੧॥੬॥
 ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਬਸਤੁ ਰਿਦੁ ਮਹਿ ਖੋਰੁ ॥ ਭਰਮੁ ਭੀਤਿ ਨਿਵਾਰਿ ਠਾਕੁਰੁ ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਅਪਨੀ ਓਰੁ ॥
 ੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਧਿਕੁ ਗਰਤੁ ਸੰਸਾਰੁ ਸਾਗਰੁ ਕਰਿ ਦਿੱਡਿਆ ਚਾਰਹੁ ਧੋਰੁ ॥ ਸੰਤਸੰਗੁ ਹਰਿ ਚਰਨੁ ਬੋਹਿਥੁ ਤਥਰਤੇ
 ਲੈ ਮੋਰੁ ॥੧॥ ਗਰਭੁ ਕੁਣੁ ਮਹਿ ਜਿਨਹਿ ਧਾਰਿਓ ਨਹੀਂ ਬਿਖੈ ਬਨੁ ਮਹਿ ਹੋਰੁ ॥ ਹਰਿ ਸਕਤੁ ਸਰਨੁ ਸਮਰਥੁ ਨਾਨਕੁ
 ਆਨੁ ਨਹੀਂ ਨਿਹੋਰੁ ॥੨॥੨॥੧੦॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਸਨਾ ਰਾਮੁ ਰਾਮੁ ਬਖਾਨੁ ॥ ਗੁਨੁ ਗੋਪਾਲੁ ਤਚਾਰੁ
 ਦਿੰਨੁ ਰੈਨਿ ਭਏ ਕਲਮਲੁ ਹਾਨੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਿਆਗੁ ਚਲਨਾ ਸਗਲੁ ਸੰਪਤੁ ਕਾਲੁ ਸਿਰੁ ਪਰੀ ਜਾਨੁ ॥ ਮਿਥਨੁ
 ਮੋਹੁ ਦੁਰੁਤੁ ਆਸਾ ਝੂਠੁ ਸਰਪਰੁ ਮਾਨੁ ॥੧॥ ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਅਕਾਲੁ ਮੂਰਤਿ ਰਿਦੈ ਧਾਰਹੁ ਧਿਆਨੁ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ
 ਲਾਭੁ ਨਾਨਕੁ ਬਸਤੁ ਇਹੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥੩॥੧੧॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮੁ ਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥ ਕਲਿ
 ਕਲੇਸੁ ਨ ਕਛੁ ਬਿਆਪੈ ਸੰਤਸੰਗੁ ਬਿਤਹਾਰੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਿ ਅਨੁਗਹੁ ਆਪਿ ਰਾਖਿਓ ਨਹੁ ਤਪਜਤਤੁ
 ਬੇਕਾਰੁ ॥ ਜਿਸੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ਸਿਮਰੈ ਤਿਸੁ ਦਹਤੁ ਨਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥੧॥ ਸੁਖੁ ਮੰਗਲੁ ਆਨਨਦੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ
 ਚਰਨੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਸਰਨਾਗਤੀ ਤੇਰੈ ਸੰਤਨਾ ਕੀ ਛਾਰੁ ॥੨॥੪॥੧੨॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮੁ ਬਿਨੁ ਧਿਗੁ ਸ਼੍ਰੋਤੁ ॥ ਜੀਵਨੁ ਰੂਪੁ ਬਿਸਾਰਿ ਜੀਵਹਿ ਤਿਹੁ ਕਤੁ ਜੀਵਨੁ ਹੋਤੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਖਾਤੁ ਪੀਤੁ
 ਅਨੇਕੁ ਬਿੰਜਨੁ ਜੈਸੇ ਭਾਰੁ ਬਾਹਕੁ ਖੋਤੁ ॥ ਆਠੁ ਪਹਰੁ ਮਹਾ ਸ਼੍ਰਮੁ ਪਾਇਆ ਜੈਸੇ ਬਿਰਖੁ ਜੰਤੀ ਜੋਤੁ ॥੧॥ ਤਜਿ
 ਗੁਣੁ ਜਿ ਆਨੁ ਲਾਗੇ ਸੇ ਬਹੁ ਪ੍ਰਕਾਰੀ ਰੋਤੁ ॥ ਕਰਿ ਜੋਰਿ ਨਾਨਕੁ ਦਾਨੁ ਮਾਗੈ ਹਰਿ ਰਖਤੁ ਕੰਠੁ ਪਰੋਤੁ
 ॥੨॥੫॥੧੩॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤਹੁ ਧੂਰਿ ਲੇ ਮੁਖਿ ਮਲੀ ॥ ਗੁਣਾ ਅਚੁਤੁ ਸਦਾ ਪੂਰਨੁ ਨਹੁ
 ਦੋਖੁ ਬਿਆਪਹਿ ਕਲੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰੁ ਬਚਨਿ ਕਾਰਜੁ ਸਰਬੁ ਪੂਰਨੁ ਈਤੁ ਊਤੁ ਨ ਹਲੀ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ
 ਅਨਿਕੁ ਸਰਬਤੁ ਪੂਰਨੁ ਬਿਖੈ ਅਗਨਿ ਨ ਜਲੀ ॥੧॥ ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੀਨੋ ਦਾਸੁ ਅਪਨੋ ਜੋਤਿ ਜੋਤੀ ਰਲੀ ॥
 ਪ੍ਰਭੁ ਚਰਨੁ ਸਰਨੁ ਅਨਾਥੁ ਆਇਓ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਸੰਗੁ ਚਲੀ ॥੨॥੬॥੧੪॥ ਕੇਦਾਰਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

हरि के नाम की मन रुचै ॥ कोटि साँति अन्नद पूरन जलत छाती बुझै ॥ रहाउ ॥ संत मारगि चलत
प्रानी पतित उधरे मुचै ॥ रेनु जन की लगी मसतकि अनिक तीरथ सुचै ॥१॥ चरन कमल धिआन
भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै ॥ सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥२॥७॥१५॥

केदारा छंत महला ५

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਪੀਤਮ ਪਿਆਰਿਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬਤ ਮੈ ਸੋ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਮਾਰਗੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਹਰਿ
ਕੀਆ ਸੰਤਨ ਸੰਗਿ ਜਾਤਾ ॥ ਸੰਤਨ ਸੰਗਿ ਜਾਤਾ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥ ਜੋ ਸਰਨੀ
ਆਵੈ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵੈ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਭਨੈ ਘਾਲਿਆ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗਾਏ ਸਹਜ ਸੁਭਾਏ ਪ੍ਰੇਮ ਮਹਾ ਰਸ ਮਾਤਾ
॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਤੂ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥१॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਜਨ ਬੇਧਿਆ ਸੇ ਆਨ ਕਤ
ਯਾਹੀ ॥ ਮੀਨੁ ਬਿਛੋਹਾ ਨਾ ਸਹੈ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮਾਰਿ ਪਾਹੀ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਰਹੀਐ ਟ੍ਰੂਖ ਕਿਨਿ ਸਹੀਐ ਚਾਤ੍ਰਕ
ਬ੍ਰੰਦ ਪਿਆਸਿਆ ॥ ਕਬ ਰੈਨਿ ਬਿਹਾਵੈ ਚਕਕੀ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਸੂਰਜ ਕਿਰਣਿ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ॥ ਹਰਿ ਦਰਸਿ ਮਨੁ
ਲਾਗਾ ਦਿਨਸੁ ਸਭਾਗਾ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਹੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਕਹੈ ਬੇਨਤੀ ਕਤ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰਾਣ ਟਿਕਾਹੀ
॥੨॥ ਸਾਸ ਬਿਨਾ ਜਿਤ ਦੇਹੂਰੀ ਕਤ ਸੋਭਾ ਪਾਵੈ ॥ ਦਰਸ ਬਿਹੂਨਾ ਸਾਧ ਜਨੁ ਖਿਨੁ ਟਿਕਣੁ ਨ ਆਵੈ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ
ਯੋ ਰਹਣਾ ਨਰਕੁ ਸੋ ਸਹਣਾ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ॥ ਹਰਿ ਰਸਿਕ ਬੈਰਾਗੀ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਕਤਹੁ
ਨ ਜਾਇ ਨਿਖੇਧਿਆ ॥ ਹਰਿ ਸਿਤ ਜਾਇ ਮਿਲਣਾ ਸਾਧਸੰਗਿ ਰਹਣਾ ਸੋ ਸੁਖੁ ਅੰਕਿ ਨ ਮਾਵੈ ॥ ਹੋਹੁ ਕ੃ਪਾਲ
ਨਾਨਕ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਚਰਨਹ ਸੰਗਿ ਸਮਾਵੈ ॥੩॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਕਰੁਣਾ ਧਾਰੇ ॥
ਨਿਰਗੁਣੁ ਨੀਚੁ ਅਨਾਥੁ ਮੈ ਨਹੀ ਦੋਖ ਬੀਚਾਰੇ ॥ ਨਹੀ ਦੋਖ ਬੀਚਾਰੇ ਪੂਰਨ ਸੁਖ ਸਾਰੇ ਪਾਵਨ ਬਿਰਦੁ ਬਖਾਨਿਆ
॥ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਸੁਨਿ ਅੰਚਲੁ ਗਹਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਪੂਰ ਸਮਾਨਿਆ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰੋ ਪਾਇਆ ਸਹਜ
ਸੁਭਾਇਆ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖ ਹਾਰੇ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਅਪਨੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਤਰਿ ਹਾਰੇ ॥੪॥੧॥

रागु केदारा बाणी कबीर जीउ की

੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥ लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति
भगवाना ॥੧॥ तेरा जनु एकु आधु कोई ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीनै सोई ॥੧॥
रहाउ ॥ रज गुण तम गुण सत गुण कहीਐ इह तेरी सभ माइਆ ॥ चउथे पद कउ जो नरु चीनै
तिनु ही परम पदु पाइआ ॥੨॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम सदा रहै निहकामा ॥ तृसना अरु
माइआ भ्रमु चूका चितवत आतम रामा ॥੩॥ जिह मंदरि दीपकु परगासिआ अंधकारु तह नासा ॥
निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा कहि कबीर जन दासा ॥੪॥੧॥ किनही बनजिआ काँसी ताँबा किनही
लउग सुपारी ॥ संतहु बनजिआ नामु गोविद का ऐसी खेप हमारी ॥੧॥ हरि के नाम के बिआपारी
॥ हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥੧॥ रहाउ ॥ साचे लाए तउ सच लागे साचे
के बिउहारी ॥ साची बसतु के भार चलाए पहुचे जाइ भंडारी ॥੨॥ आपहि रतन जवाहर मानिक
आपै है पासारी ॥ आपै दह दिस आप चलावै निहचलु है बिआपारी ॥੩॥ मनु करि बैलु सुरति
करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी ॥੪॥੨॥
री कलवारि गवारि मूढ मति उलटो पवनु फिरावउ ॥ मनु मतवार मेर सर भाठी अंमृत धार
चुआवउ ॥ बोलहु भईआ राम की दुहाई ॥ पीवहु संत सदा मति दुरलभ सहजे पिआस बुझाई
॥੧॥ रहाउ ॥ भै बिचि भाउ भाइ कोऊ बूझहि हरि रसु पावै भाई ॥ जेते घट अंमृतु सभ ही महि
भावै तिसहि पीआई ॥੨॥ नगरी एकै नउ दरवाजे धावतु बरजि रहाई ॥ तृकुटी छूटै दसवा दरु
खूलै ता मनु खीवा भाई ॥੩॥ अभै पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी ॥ उबट चलम्ते इहु
मदु पाइआ जैसे खोंद खुमारी ॥੪॥੩॥ काम क्रोध तृसना के लीने गति नही एकै जानी ॥ फूटी आखै

ਕਛੂ ਨ ਸ੍ਰੋਝੈ ਬ੍ਰੂਡਿ ਸ੍ਰੋਏ ਬਿਨੁ ਪਾਨੀ ॥੧॥ ਚਲਤ ਕਤ ਟੇਢੇ ਟੇਢੇ ਟੇਢੇ ॥ ਅਸਤਿ ਚਰਮ ਬਿਸਟਾ ਕੇ ਮੂੰਦੇ
 ਫੁਰਗਂਧ ਹੀ ਕੇ ਬੇਢੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਮ ਨ ਜਪਹੁ ਕਵਨ ਭ੍ਰਮ ਭੂਲੇ ਤੁਮ ਤੇ ਕਾਲੁ ਨ ਫ੍ਰੋਰੇ ॥ ਅਨਿਕ
 ਜਤਨ ਕਰਿ ਇਹੁ ਤਨੁ ਰਾਖਹੁ ਰਹੈ ਅਵਸਥਾ ਪ੍ਰੋਰੇ ॥੨॥ ਆਪਨ ਕੀਆ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵੈ ਕਿਆ ਕੋ ਕਰੈ
 ਪਰਾਨੀ ॥ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੈ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਬਖਾਨੀ ॥੩॥ ਬਲ੍ਲਾਓ ਕੇ ਘਰ੍ਲਾਓ ਮਹਿ ਬਸਤੇ
 ਫੁਲਵਤ ਦੇਹ ਅਇਆਨੇ ॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਿਹ ਰਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਬ੍ਰੂਡੇ ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਨੇ ॥੪॥੪॥ ਟੇਢੀ
 ਪਾਗ ਟੇਢੇ ਚਲੇ ਲਾਗੇ ਬੀਰੇ ਖਾਨ ॥ ਭਾਤ ਭਗਤਿ ਸਿਤ ਕਾਜੁ ਨ ਕਛੂਐ ਮੇਰੇ ਕਾਮੁ ਦੀਵਾਨ ॥੧॥
 ਰਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿਓ ਹੈ ਅਭਿਮਾਨਿ ॥ ਕਨਿਕ ਕਾਮਨੀ ਮਹਾ ਸੁੰਦਰੀ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਸਚੁ ਮਾਨਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ
 ॥ ਲਾਲਚ ਝੂਠ ਬਿਕਾਰ ਮਹਾ ਮਦ ਇਹ ਬਿਧਿ ਅਤਥ ਬਿਹਾਨਿ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਅੰਤ ਕੀ ਬੇਰ ਆਇ
 ਲਾਗੇ ਕਾਲੁ ਨਿਦਾਨਿ ॥੨॥੫॥ ਚਾਰਿ ਦਿਨ ਅਪਨੀ ਨਤਕਤਿ ਚਲੇ ਬਜਾਇ ॥ ਇਤਨਕੁ ਖਟੀਆ
 ਗਠੀਆ ਮਟੀਆ ਸੰਗਿ ਨ ਕਛੁ ਲੈ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਿਹਰੀ ਬੈਠੀ ਮਿਹਰੀ ਰੋਵੈ ਫੁਆਰੈ ਲਤ
 ਸੰਗਿ ਮਾਇ ॥ ਮਰਹਟ ਲਗਿ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ਕੁਟੰਬੁ ਮਿਲਿ ਛਾਸੁ ਇਕੈਲਾ ਜਾਇ ॥੧॥ ਵੈ ਸੁਤ ਵੈ ਬਿਤ ਵੈ ਪੁਰ
 ਪਾਟਨ ਬਹੁਰਿ ਨ ਦੇਖੈ ਆਇ ॥ ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ ਰਾਮੁ ਕੀ ਨ ਸਿਮਰਹੁ ਜਨਮੁ ਅਕਾਰਥੁ ਜਾਇ ॥੨॥੬॥

ਰਾਗੁ ਕੇਦਾਰਾ ਬਾਣੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਤ ਕੀ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਖਟੁ ਕਰਮ ਕੁਲ ਸੰਜੁਗਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹਿਰਦੈ ਨਾਹਿ ॥ ਚਰਨਾਰਬਿੰਦ ਨ ਕਥਾ ਭਾਵੈ ਸੁਪਚ ਤੁਲਿ ਸਮਾਨਿ
 ॥੧॥ ਰੇ ਚਿਤ ਚੇਤਿ ਚੇਤ ਅਚੇਤ ॥ ਕਾਹੇ ਨ ਬਾਲਮੀਕਹਿ ਦੇਖ ॥ ਕਿਸੁ ਜਾਤਿ ਤੇ ਕਿਹ ਪਦਹਿ ਅਮਰਿਓ ਰਾਮ
 ਭਗਤਿ ਬਿਸੇਖ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਆਨ ਸੁਲੁ ਅਜਾਤੁ ਸਭ ਤੇ ਕ੃ਸ਼ ਲਾਵੈ ਹੇਤੁ ॥ ਲੋਗੁ ਬਪੁਰਾ ਕਿਆ ਸਰਾਹੈ
 ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਪ੍ਰਵੇਸ ॥੨॥ ਅਜਾਮਲੁ ਪਿੰਗੁਲਾ ਲੁਭਤੁ ਕੁੰਚਰੁ ਗਏ ਹਰਿ ਕੈ ਪਾਸਿ ॥ ਐਸੇ ਦੁਰਮਤਿ ਨਿਸਤਰੇ
 ਤ੍ਰ ਕਿਤ ਨ ਤਰਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ॥੩॥੧॥

ਰਾਗੁ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਚਤੁਪਦੇ

੧ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੁझ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਤੂ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖਹਿ ਜਾਣਹਿ ਸੋਇ ॥੧॥ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਕਿਛੁ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ
॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਅਹੈ ਸਭ ਤੇਰੀ ਰਿਆਇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਤੈਰੈ ਪਾਸਿ ॥ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਕੀਚੈ
ਅਰਦਾਸਿ ॥੩॥ ਆਖਣੁ ਸੁਨਣਾ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਜਾਣਹਿ ਸਰਬ ਵਿਡਾਣੀ ॥੪॥ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਜਾਣੈ
ਆਪਿ ॥ ਨਾਨਕ ਦੇਖੈ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪਿ ॥੪॥੧॥

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਤਰੇ ਸੁਨਿ ਕੇਤੇ ਹਿੰਦ੍ਰਾਦਿਕ ਬ੍ਰਹਮਾਦਿ ਤਰੇ ॥ ਸਨਕ ਸਨਦਨ
ਤਪਸੀ ਜਨ ਕੇਤੇ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ॥੧॥ ਭਵਜਲੁ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਕਿਤ ਤਰੀਐ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜਗੁ
ਰੋਗਿ ਬਿਆਪਿਆ ਦੁਖਿਧਾ ਝੁਕਿ ਝੁਕਿ ਮਰੀਐ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰੁ ਦੇਵਾ ਗੁਰੁ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ਤ੍ਰਭਵਣ
ਸੋਝੀ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥ ਆਪੇ ਦਾਤਿ ਕਰੀ ਗੁਰਿ ਦਾਤੈ ਪਾਇਆ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥੨॥ ਮਨੁ ਰਾਜਾ ਮਨੁ ਮਨ
ਤੇ ਮਾਨਿਆ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਈ ॥ ਮਨੁ ਜੋਗੀ ਮਨੁ ਬਿਨਸਿ ਬਿਓਗੀ ਮਨੁ ਸਮਝੈ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੩॥
ਗੁਰ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰਿਆ ਤੇ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਭਰਿਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ਸਾਚ
ਸਬਦਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੪॥੧॥੨॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨੈਨੀ ਦੂਸਟਿ ਨਹੀ ਤਨੁ ਹੀਨਾ ਜਰਿ ਜੀਤਿਆ
ਸਿਰਿ ਕਾਲੋ ॥ ਰੂਪੁ ਰੁਂਗੁ ਰਹਸੁ ਨਹੀ ਸਾਚਾ ਕਿਤ ਛੋਡੈ ਜਮ ਜਾਲੋ ॥੧॥ ਪ੍ਰਾਣੀ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਨਮੁ ਗਿੜਿਆ ॥

साच सबद बिनु कबहु न छूटसि विरथा जनमु भइओ ॥੧॥ रहाउ ॥ तन महि कामु क्रोधु हउ ममता
 कठिन पीर अति भारी ॥ गुरमुखि राम जपहु रसु रसना इन बिधि त魯 तू तारी ॥੨॥ बहरे करन
 अकलि भई होछੀ सबद सहजु नहੀ बूझिआ ॥ जनमु पदारथु मनमुखि हारिआ बिनु गੁर अंਧੁ न सूझिआ
 ॥੩॥ रहै उदासु आਸ निरासा सहज धिआनि बੈरਾਗੀ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੂਟਸਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ
 ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੪॥੨॥੩॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਭੂੰਡੀ ਚਾਲ ਚਰਣ ਕਰ ਖਿਸਰੇ ਤੁਚਾ ਦੇਹ ਕੁਮਲਾਨੀ ॥ ਨੇਤੀ
 ਧੁੰਧਿ ਕਰਨ ਭਏ ਬਹਰੇ ਮਨਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨ ਜਾਨੀ ॥੧॥ ਅੰਧੁਲੇ ਕਿਆ ਪਾਇਆ ਜਗਿ ਆਇ ॥ ਰਾਮੁ ਰਿਟੈ ਨਹੀ
 ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਲੇ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਹਵਾ ਰੰਗਿ ਨਹੀ ਹਰਿ ਰਾਤੀ ਜਬ ਬੋਲੈ ਤਬ ਫੀਕੇ ॥ ਸੰਤ
 ਜਨਾ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਵਿਆਪਸਿ ਪਸੂ ਭਏ ਕਦੇ ਹੋਹਿ ਨ ਨੀਕੇ ॥੨॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾ ਰਸੁ ਵਿਰਲੀ ਪਾਇਆ ਸਤਿਗੁਰ
 ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਸਬਦ ਭੇਦੁ ਨਹੀ ਆਇਆ ਤਬ ਲਗੁ ਕਾਲੁ ਸੰਤਾਏ ॥੩॥ ਅਨ ਕੋ ਦੁਝੁ ਕਹੁ
 ਨ ਜਾਨਸਿ ਏਕੋ ਦੁਝੁ ਸਚਿਆਰਾ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਵਿਚਾਰਾ ॥੪॥੩॥੪॥
 ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਗਲੀ ਰੈਣ ਸੋਵਤ ਗਲਿ ਫਾਹੀ ਦਿਨਸੁ ਜੰਜਾਲਿ ਗਵਾਇਆ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਘੜੀ ਨਹੀ
 ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਨਿਆ ਜਿਨਿ ਇਹੁ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਕਿਤ ਛੂਟਸਿ ਦੁਖੁ ਭਾਰੀ ॥ ਕਿਆ ਲੇ ਆਵਸਿ
 ਕਿਆ ਲੇ ਜਾਵਸਿ ਰਾਮ ਜਪਹੁ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਊਂਧਤ ਕਵਲੁ ਮਨਮੁਖ ਮਤਿ ਹੋਛੀ ਮਨਿ ਅੰਧੈ
 ਸਿਰਿ ਧੰਧਾ ॥ ਕਾਲੁ ਬਿਕਾਲੁ ਸਦਾ ਸਿਰਿ ਤੈਰੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਗਲਿ ਫੰਧਾ ॥੨॥ ਡਗਰੀ ਚਾਲ ਨੇਤ੍ਰ ਫੁਨਿ ਅੰਧੁਲੇ
 ਸਬਦ ਸੁਰਤਿ ਨਹੀ ਭਾਈ ॥ ਸਾਸਕ ਬੇਦ ਤੈ ਗੁਣ ਹੈ ਮਾਇਆ ਅੰਧੁਲਤ ਧੰਧੁ ਕਮਾਈ ॥੩॥ ਖੋਇਆ ਮੂਲੁ
 ਲਾਭੁ ਕਹ ਪਾਵਸਿ ਦੁਰਮਤਿ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੇ ॥ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਪਤੀਣੇ
 ॥੪॥੪॥੫॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸੰਗਿ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਰਾਮੁ ਰਸਨਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਣਸਿ
 ਸਬਦੁ ਪਛਾਣਸਿ ਅੰਤਰਿ ਜਾਣਿ ਪਛਾਤਾ ॥੧॥ ਸੋ ਜਨੁ ਐਸਾ ਮੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥ ਆਪੁ ਮਾਰਿ ਅਪਰੰਪਰਿ ਰਾਤਾ
 ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਆਦੇਸੋ ॥ ਘਟ ਘਟ

अंतरि सरब निरंतरि रवि रहिआ सचु वेसो ॥२॥ साचि रते सचु अंमृतु जिहवा मिथिआ मैलु न
राई ॥ निरमल नामु अंमृत रसु चाखिआ सबदि रते पति पाई ॥३॥ गुणी गुणी मिलि लाहा
पावसि गुरमुखि नामि वडाई ॥ सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नामु सखाई ॥४॥५॥६॥ भैरउ
महला ੧ ॥ हिरदै नामु सरब धनु धारणु गुर परसादी पाईਐ ॥ अमर पदारथ ते किरतारथ सहज
धिआनि लिव लाईਐ ॥१॥ मन रे राम भगति चितु लाईਐ ॥ गुरमुखि राम नामु जपि हिरदै सहज
सेती घरि जाईਐ ॥२॥ रहाउ ॥ भरमु भेदु भउ कबहु न छूटसि आवत जात न जानी ॥ बिनु हरि
नाम को मुकति न पावसि झूबि मुए बिनु पानी ॥२॥ धंधा करत सगली पति खोवसि भरमु न मिटसि
गवारा ॥ बिनु गुर सबद मुकति नही कब ही अंधुले धंधु पसारा ॥३॥ अकुल निरंजन सिउ मनु
मानिआ मन ही ते मनु मूआ ॥ अंतरि बाहरि एको जानिआ नानक अवरु न दूआ ॥४॥६॥७॥
भैरउ महला ੧ ॥ जगन होम पुन्न तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै ॥ राम नाम बिनु मुकति न पावसि
मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥१॥ राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ॥ बिखु खावै बिखु बोली बोलै बिनु
नावै निहफलु मरि भ्रमना ॥२॥ रहाउ ॥ पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै संधिआ करम तिकाल करै
॥ बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु उरझि मरै ॥३॥ डंड कमंडल सिखा सूत धोती
तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै ॥ राम नाम बिनु साँति न आवै जपि हरि हरि नामु सु पारि परै ॥४॥
जटा मुकटु तनि भसम लगाई बसत छोडि तनि नगनु भइआ ॥ राम नाम बिनु तृपति न आवै किरत
कै बाँधै भेखु भइआ ॥५॥ जेते जीआ जंत जलि थलि महीअलि जल कल तू सरब जीआ ॥ गुर परसादि
राखि ले जन कउ हरि रसु नानक झोलि पीआ ॥६॥७॥८॥

रागु भैरउ महला ੩ चउपदे घरु ੧

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥ जाति का गरबु न करि मूरख

ਗਵਾਰਾ ॥ ਇਸੁ ਗਰਬ ਤੇ ਚਲਹਿ ਬਹੁਤੁ ਵਿਕਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਾਰੇ ਵਰਨ ਆਖੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬਿੰਦ
 ਤੇ ਸਭ ਓਪਤਿ ਹੋਈ ॥੨॥ ਮਾਟੀ ਏਕ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾੱਡੇ ਘੱਡੇ ਕੁਮਾਰਾ ॥੩॥ ਪੰਚ ਤਤੁ
 ਮਿਲਿ ਦੇਹੀ ਕਾ ਆਕਾਰਾ ॥ ਘਟਿ ਵਧਿ ਕੋ ਕਰੈ ਬੀਚਾਰਾ ॥੪॥ ਕਹਤੁ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਜੀਤ ਕਰਮ ਬੰਧੁ ਹੋਈ ॥
 ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਖੇਟੇ ਸੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੫॥੧॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੋਗੀ ਗੂਹੀ ਪੰਡਿਤ ਖੇਖਧਾਰੀ ॥ ਏ ਸੂਤੇ
 ਅਪਣੈ ਅਛਕਾਰੀ ॥੧॥ ਮਾਇਆ ਮਦਿ ਮਾਤਾ ਰਹਿਆ ਸੋਇ ॥ ਜਾਗਤੁ ਰਹੈ ਨ ਮੂਸੈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੋ
 ਜਾਗੈ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ॥ ਪੰਚ ਢੂਤ ਓਹੁ ਵਸਗਤਿ ਕਰੈ ॥੨॥ ਸੋ ਜਾਗੈ ਜੋ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥ ਆਪਿ ਸੈਰ
 ਅਵਰਾ ਨਹ ਮਾਰੈ ॥੩॥ ਸੋ ਜਾਗੈ ਜੋ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥ ਪਰਕਿਰਤਿ ਛੋਡੈ ਤਤੁ ਪਛਾਣੈ ॥੪॥ ਚਹੁ ਵਰਨਾ ਵਿਚਿ ਜਾਗੈ
 ਕੋਇ ॥ ਜਮੈ ਕਾਲੈ ਤੇ ਛੂਟੈ ਸੋਇ ॥੫॥ ਕਹਤ ਨਾਨਕ ਜਨੁ ਜਾਗੈ ਸੋਇ ॥ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਜਾ ਕੀ ਨੇਕੀ ਹੋਇ
 ॥੬॥੨॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜਾ ਕਤ ਰਾਖੈ ਅਪਣੀ ਸਰਣਾਈ ॥ ਸਾਚੇ ਲਾਗੈ ਸਾਚਾ ਫਲੁ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰੇ ਜਨ
 ਕੈ ਸਿਤ ਕਰਹੁ ਪੁਕਾਰਾ ॥ ਹੁਕਮੇ ਹੋਆ ਹੁਕਮੇ ਵਰਤਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਹੁ ਆਕਾਰੁ ਤੇਰਾ ਹੈ ਧਾਰਾ ॥ ਖਿਨ
 ਮਹਿ ਬਿਨਸੈ ਕਰਤ ਨ ਲਾਗੈ ਬਾਰਾ ॥੨॥ ਕਰਿ ਪ੍ਰਸਾਦੁ ਇਕੁ ਖੇਲੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਰਮ ਪਦੁ
 ਪਾਇਆ ॥੩॥ ਕਹਤ ਨਾਨਕੁ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲੇ ਸੋਇ ॥ ਅੈਸਾ ਬੂੜਹੁ ਭਰਮਿ ਨ ਭੂਲਹੁ ਕੋਇ ॥੪॥੩॥ ਭੈਰਤ
 ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮੈ ਕਾਮਣਿ ਮੇਰਾ ਕੰਤੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਜੇਹਾ ਕਰਾਏ ਤੇਹਾ ਕਰੀ ਸੀਗਾਰੁ ॥੧॥ ਜਾਂ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾਂ
 ਕਰੇ ਭੋਗੁ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਜੋਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਉਸਤਤਿ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਕਿਆ ਕੋਈ ॥ ਜਾਂ ਆਪੇ
 ਵਰਤੈ ਏਕੋ ਸੋਈ ॥੨॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਿਰਮ ਕਸਾਈ ॥ ਮਿਲਉਗੀ ਦਿਇਆਲ ਪੰਚ ਸਬਦ ਵਜਾਈ ॥੩॥
 ਭਨਤਿ ਨਾਨਕੁ ਕਰੇ ਕਿਆ ਕੋਇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੪॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸੋ ਮੁਨਿ
 ਜਿ ਮਨ ਕੀ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰੇ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੧॥ ਇਸੁ ਮਨ ਕਤ ਕੋਈ ਖੋਜਹੁ ਭਾਈ ॥ ਮਨੁ
 ਖੋਜਤ ਨਾਮੁ ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੂਲੁ ਮੋਹੁ ਕਰਿ ਕਰਤੈ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਆ ॥ ਮਮਤਾ ਲਾਇ
 ਭਰਮਿ ਭੂਲਾਇਆ ॥੨॥ ਇਸੁ ਮਨ ਤੇ ਸਭ ਪਿੰਡ ਪਰਾਣਾ ॥ ਮਨ ਕੈ ਵੀਚਾਰਿ ਹੁਕਮੁ ਬੁੜਿ ਸਮਾਣਾ ॥੩॥

करमु होवै गुरु किरपा करै ॥ इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा मरै ॥੪॥ मन का सुभाउ सदा
 बैरागी ॥ सभ महि वसै अतीतु अनरागी ॥੫॥ कहत नानकु जो जाणै भेत ॥ आदि पुरखु निरंजन
 देत ॥੬॥੫॥ भैरउ महला ੩ ॥ राम नामु जगत निसतारा ॥ भवजलु पारि उतारणहारा ॥੧॥
 गुर परसादी हरि नामु समालि ॥ सद ही निबहै तेरै नालि ॥੧॥ रहाउ ॥ नामु न चेतहि मनमुख
 गावारा ॥ बिनु नावै कैसे पावहि पारा ॥੨॥ आपे दाति करे दातारु ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥੩॥
 नदरि करे सतिगुरु मिलाए ॥ नानक हिरदै नामु वसाए ॥੪॥੬॥ भैरउ महला ੩ ॥ नामे उधरे
 सभि जितने लोअ ॥ गुरमुखि जिना परापति होइ ॥੧॥ हरि जीउ अपणी कृपा करेइ ॥ गुरमुखि नामु
 वडिआई देइ ॥੧॥ रहाउ ॥ राम नामि जिन प्रीति पिआरु ॥ आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु
 ॥੨॥ बिनु नावै मनमुख जम पुरि जाहि ॥ अउखे होवहि चोटा खाहि ॥੩॥ आपे करता देवै सोइ ॥
 नानक नामु परापति होइ ॥੪॥੭॥ भैरउ महला ੩ ॥ गोविंद प्रीति सनकाटिक उधारे ॥ राम नाम
 सबदि बीचारे ॥੧॥ हरि जीउ अपणी किरपा धारु ॥ गुरमुखि नामे लगै पिआरु ॥੧॥ रहाउ ॥
 अंतरि प्रीति भगति साची होइ ॥ पूरे गुरि मेलावा होइ ॥੨॥ निज घरि वसै सहजि सुभाइ ॥
 गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥੩॥ आपे वेखै वेखणहारु ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥੪॥੮॥
 भैरउ महला ੩ ॥ कलजुग महि राम नामु उर धारु ॥ बिनु नावै माथै पावै छारु ॥੧॥ राम नामु
 दुलभु है भाई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥੧॥ रहाउ ॥ राम नामु जन भालहि सोइ ॥ पूरे गुर ते
 प्रापति होइ ॥੨॥ हरि का भाणा मन्नहि से जन परवाणु ॥ गुर कै सबदि नाम नीसाणु ॥੩॥ सो सेवहु
 जो कल रहिआ धारि ॥ नानक गुरमुखि नामु पिआरि ॥੪॥੯॥ भैरउ महला ੩ ॥ कलजुग महि बहु
 करम कमाहि ॥ ना रुति न करम थाइ पाहि ॥੧॥ कलजुग महि राम नामु है सारु ॥ गुरमुखि साचा
 लगै पिआरु ॥੧॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ॥ गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ

॥੨॥ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹੋਇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਤਿਹੁ ਲੋਇ ॥੩॥ ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ
ਹਰਿ ਜੀਤ ਏਕੁ ਹੋਰ ਰੁਤਿ ਨ ਕਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਲੇਹੁ ਜਮਾਈ ॥੪॥੧੦॥

ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੂ ੨

੭੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਮਨਮੁਖ ਰੋਗਿ ਵਿਆਪੇ ਤੂਸਨਾ ਜਲਹਿ ਅਧਿਕਾਈ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜ਼ਮਹਿ
ਠਤਰ ਨ ਪਾਵਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੇਹੁ ਬੁੜਾਈ ॥ ਹਉਮੈ ਰੋਗੀ ਜਗਤੁ
ਉਪਾਇਆ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿੰਮ੍ਰਤਿ ਸਾਸਕ ਪਡਹਿ ਸੁਨਿ ਕੇਤੇ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸੁਰਤਿ
ਨ ਪਾਈ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਸਭੇ ਰੋਗਿ ਵਿਆਪੇ ਮਮਤਾ ਸੁਰਤਿ ਗਵਾਈ ॥੨॥ ਇਕਿ ਆਪੇ ਕਾਢਿ ਲਾਏ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਗੁਰ
ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਭਿ ਲਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੋ ਪਾਇਆ ਸੁਖੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥੩॥ ਚਤੁਰਥੀ ਪਦਵੀ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਵਰਤਹਿ ਤਿਨ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰੌ ਸਤਿਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕੀਨੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥੪॥
ਏਕਸੁ ਕੀ ਸਿਰਿ ਕਾਰ ਏਕ ਜਿਨਿ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਰੁਦੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਿਹਚਲੁ ਸਾਚਾ ਏਕੋ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ
ਨ ਜਾਇਆ ॥੫॥੧॥੧੧॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਬਿਧਾ ਸਦਾ ਹੈ ਰੋਗੀ ਰੋਗੀ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰਾ ॥
ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜਾਹਿ ਰੋਗੁ ਗਵਾਵਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮੇਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸ ਨੋ
ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ਜੋ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਮਤਾ ਕਾਲਿ ਸਭਿ ਰੋਗਿ ਵਿਆਪੇ ਤਿਨ ਜਮ ਕੀ
ਹੈ ਸਿਰਿ ਕਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਉ ਧਾਰਾ ॥੨॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਕਾ
ਨਾਮੁ ਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਸੇ ਜਗ ਮਹਿ ਕਾਹੇ ਆਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਦੇ ਨ ਕੀਨੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ
॥੩॥ ਨਾਨਕ ਸੇ ਪੂਰੇ ਵਡਭਾਗੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲਾਏ ॥ ਜੋ ਇਛਹਿ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿ ਗੁਰਬਾਣੀ ਸੁਖੁ ਪਾਏ
॥੪॥੨॥੧੨॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਦੁਖ ਵਿਚਿ ਜ਼ਮੈ ਦੁਖਿ ਮਰੈ ਦੁਖ ਵਿਚਿ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਗਰਭ ਜੋਨੀ ਵਿਚਿ
ਕਦੇ ਨ ਨਿਕਲੈ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਧਿਗੁ ਧਿਗੁ ਮਨਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ
ਨ ਕੀਨੀ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਭਿ ਰੋਗ ਗਵਾਏ ਜਿਸ ਨੋ ਹਰਿ ਜੀਤ

ਲਾਏ ॥ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਜਿਸ ਨੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਭੇਟੈ ਤਾ ਫਲੁ ਪਾਏ ਸਚੁ ਕਰਣੀ
 ਸੁਖ ਸਾਠੁ ॥ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਜੋ ਹਰਿ ਲਾਗੇ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਧਰਹਿ ਪਿਆਠੁ ॥੩॥ ਤਿਨ ਕੀ ਰੇਣੁ ਮਿਲੈ ਤਾਂ ਮਸਤਕਿ
 ਲਾਈ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਧਿਆਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੀ ਰੇਣੁ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਪਾਈਐ ਜਿਨੀ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ
 ਲਾਇਆ ॥੪॥੩॥੧੩॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ਸੋ ਜਨੁ ਸਾਚਾ ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਸਾਚਾ ਸੋਈ ॥
 ਸਾਚੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਤਾਂ ਤਨਿ ਢੂਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਭਗਤੁ ਭਗਤੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸੇਵੇ ਭਗਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੂਲੁ ਗਵਾਵਹਿ ਲਾਭੁ ਮਾਗਹਿ
 ਲਾਹਾ ਲਾਭੁ ਕਿਦੂ ਹੋਈ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਸਦਾ ਹੈ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਢੂਜੈ ਭਾਇ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥੨॥ ਬਹਲੇ ਭੇਖ ਭਵਹਿ ਦਿਨੁ
 ਰਾਤੀ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਲੂੜਿਹਿ ਬਾਦੁ ਕਖਾਣਹਿ ਮਿਲਿ ਮਾਇਆ ਸੁਰਤਿ ਗਰਵਾਈ ॥੩॥
 ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਹਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਿਨਾ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਦਰਿ ਸਾਚੈ
 ਪਤਿ ਪਾਈ ॥੪॥੪॥੧੪॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨਮੁਖ ਆਸਾ ਨਹੀਂ ਤਤਰੈ ਢੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਏ ॥ ਤਦਰੁ
 ਨੈ ਸਾਣੁ ਨ ਭਰੀਐ ਕਬਹੂ ਤ੃ਸਨਾ ਅਗਨਿ ਪਚਾਏ ॥੧॥ ਸਦਾ ਅਨਨਦੁ ਰਾਮ ਰਸਿ ਰਾਤੇ ॥ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਦੁਬਿਧਾ
 ਮਨਿ ਭਾਗੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀ ਤੁਪਤਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੂਸਟਿ ਜਿਨਿ ਸਾਜੀ ਸਿਰਿ
 ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਲਾਏ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਕੀਆ ਜਿਨਿ ਆਪੇ ਆਪੇ ਢੂਜੈ ਲਾਏ ॥੨॥ ਤਿਸ ਨੋ ਕਿਹੁ ਕਹੀਐ ਜੇ ਢੂਜਾ
 ਹੋਵੈ ਸਭਿ ਤੁਧੈ ਮਾਹਿ ਸਸਾਏ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਏ ॥੩॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ
 ਸਦ ਹੀ ਸਾਚਾ ਸਾਚਾ ਸਭੁ ਆਕਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੪॥੫॥੧੫॥
 ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਕਲਿ ਮਹਿ ਪ੍ਰੇਤ ਜਿਨੀ ਰਾਮੁ ਨ ਪਛਾਤਾ ਸਤਜੁਗਿ ਪਰਮ ਛਾਸ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਦੁਆਪੁਰਿ
 ਕ੍ਰੈਤੈ ਮਾਣਸ ਕਰਤਹਿ ਵਿਰਲੈ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥੧॥ ਕਲਿ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਏਕੋ ਜਾਤਾ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਲਖੈ ਜਨੁ ਸਾਚਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੰਨਿ
 ਵਸਾਈ ॥ ਆਪਿ ਤਰੇ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੇ ਜਿਨੀ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੨॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਹੈ ਗੁਣ ਕਾ

ਦਾਤਾ ਅਵਗਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥ ਜਿਨ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੇ ਜਨ ਸੋਹੇ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥੩॥ ਘਰੁ ਦਰੁ
 ਮਹਲੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਿਖਾਇਆ ਰੰਗ ਸਿਤ ਰਲੀਆ ਮਾਣੈ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਹੈ ਸੁ ਭਲਾ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
 ਕਖਾਣੈ ॥੪॥੬॥੧੬॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਇ ਲੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਕੀਚਾਰ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ
 ਸੋਝੀ ਪਵੈ ਫਿਰਿ ਮਰੈ ਨ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ
 ਸਭ ਇਛ ਪੁਜਾਵਣਹਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਬੂੜਾ ਨ ਪਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਪ੍ਰਗਟੁ ਹੋਆ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੨॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਰਿ ਏਕੁ ਹੈ ਹੋਰ ਥੈ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਹਿ ॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨੀ ਨ ਸੇਵਿਆ ਦਾਤਾ ਸੇ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਹਿ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਫਿਰਿ
 ਦੁਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ਧਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੭॥੧੭॥ ਭੈਰਤ
 ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਬਾੜ੍ਹੁ ਗੁਰੁ ਜਗਤੁ ਬਤਰਾਨਾ ਭੂਲਾ ਚੋਟਾ ਖਾਈ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਂਮੈ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ਦਰ ਕੀ ਖਬਰਿ
 ਨ ਪਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਦਾ ਰਹਹੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾ ॥ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਸਦ ਲਾਗਾ ਗੁਰ ਸਬਦੇ
 ਭਵਜਲੁ ਤਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭੇਖ ਕਰੈ ਬਹੁਤੁ ਚਿਤੁ ਡੋਲੈ ਅੰਤਰਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਛਕਾਰੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਤਿਸਾ
 ਭ੍ਰਖ ਅਤਿ ਬਹੁਤੀ ਭਤਕਤ ਫਿਰੈ ਦਰ ਬਾਰੁ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਰਹਿ ਫਿਰਿ ਜੀਵਹਿ ਤਿਨ ਕਤ ਮੁਕਤਿ
 ਦੁਆਰਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੩॥ ਜਿਤ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵੈ
 ਕਰਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲੇ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੮॥੧੮॥
 ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਖੁਆਇਆ ਦੁਖੁ ਖਟੇ ਦੁਖੁ ਖਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭ ਹਲਕੁ ਦੁਖੁ ਭਾਰੀ
 ਬਿਨੁ ਬਿਕੇਕ ਭਰਮਾਇ ॥੧॥ ਮਨਮੁਖਿ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਸੈਸਾਰਿ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੁਪਨੈ ਨਹੀ ਚੇਤਿਆ ਹਰਿ ਸਿਤ
 ਕਦੇ ਨ ਲਾਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਸੂਆ ਕਰਮ ਕਰੈ ਨਹੀ ਬੂੜੈ ਕੂੜੁ ਕਮਾਵੈ ਕੂੜੀ ਹੋਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ
 ਤ ਤਲਟੀ ਹੋਵੈ ਖੋਜਿ ਲਹੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸਦ ਵਸਿਆ ਪਾਇਆ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਚੂਕਾ ਮਨ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੩॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥

ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥੬॥੧੬॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮੇਰੀ ਪਟੀਆ
 ਲਿਖਹੁ ਹਰਿ ਗੋਵਿੰਦ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਢ੍ਵਜੈ ਭਾਇ ਫਾਥੇ ਜਮ ਜਾਲਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਰੇ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥ ਹਰਿ
 ਸੁਖਦਾਤਾ ਮੈਰੈ ਨਾਲਾ ॥੧॥ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸਿ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ ਹਰਿ ਉਚਰੈ ॥ ਸਾਸਨਾ ਤੇ ਬਾਲਕੁ ਗਮੁ ਨ ਕਰੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਤਾ ਉਪਦੇਸੈ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਪਿਆਰੇ ॥ ਪੁਲ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਛੋਡਹੁ ਜੀਤ ਲੇਹੁ ਤਬਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ ਕਹੈ
 ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨ ਛੋਡਾ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬੁੜਾਇ ॥੨॥ ਸੰਡਾ ਮਰਕਾ ਸਭਿ ਜਾਇ ਪੁਕਾਰੇ ॥
 ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ ਆਪਿ ਵਿਗਡਿਆ ਸਭਿ ਚਾਟਡੇ ਵਿਗਡੇ ॥ ਦੁਸਟ ਸਭਾ ਮਹਿ ਮੰਤੁ ਪਕਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਕਾ ਰਾਖਾ
 ਹੋਇ ਰਘੁਰਾਇਆ ॥੩॥ ਹਾਥਿ ਖੱਡਗੁ ਕਰਿ ਧਾਇਆ ਅਤਿ ਅਛਕਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਤੇਰਾ ਕਹਾ ਤੁੜ੍ਹੁ ਲਏ ਤਬਾਰਿ ॥
 ਖਿਨ ਮਹਿ ਭੈਆਨ ਰੂਪੁ ਨਿਕਸਿਆ ਥੰਮੁ ਤੁਪਾਇ ॥ ਹਰਣਾਖਸੁ ਨਖੀ ਬਿਦਾਰਿਆ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਲੀਆ ਤਬਾਰਿ
 ॥੪॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੇ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕਾਰਜ ਸਵਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਜਨ ਕੇ ਝਿਕੀਹ ਕੁਲ ਉਧਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਮਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਸੰਤ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੫॥੧੦॥੨੦॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਆਪੇ ਦੈਤ ਲਾਇ
 ਦਿਤੇ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਤ ਆਪੇ ਰਾਖਾ ਸੋਈ ॥ ਜੋ ਤੇਰੀ ਸਦਾ ਸਰਣਾਈ ਤਿਨ ਮਨਿ ਦੁਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ
 ਭਗਤਾ ਕੀ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ॥ ਦੈਤ ਪੁਲ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਗਾਇਕੀ ਤਰਣੁ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਣੈ ਸਬਦੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਦੁਬਿਧਾ ਸਬਦੇ ਖੋਈ ॥ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲ ਹੈ ਜੋ ਸਚਿ ਰਾਤੇ
 ਸਚੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਸੋਈ ॥੨॥ ਸੂਰਖ ਦੁਬਿਧਾ ਪਛਾਹਿ ਮੂਲੁ ਨ ਪਛਾਣਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
 ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰਹਿ ਦੁਸਟੁ ਦੈਤੁ ਚਿੜਾਇਆ ॥੩॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਦੁਬਿਧਾ ਨ ਪਡੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਛੋਡੈ
 ਡੈ ਨ ਕਿਸੈ ਦਾ ਡਰਾਇਆ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਾ ਹਰਿ ਜੀਤ ਰਾਖਾ ਦੈਤੈ ਕਾਲੁ ਨੇੜਾ ਆਇਆ ॥੪॥ ਆਪਣੀ
 ਪੈਜ ਆਪੇ ਰਾਖੈ ਭਗਤਾਂ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਣਾਖਸੁ ਨਖੀ ਬਿਦਾਰਿਆ ਅੰਧੈ ਦਰ ਕੀ ਖ਼ਬਰਿ ਨ
 ਪਾਈ ॥੫॥੧੧॥੨੧॥

ਰਾਗੁ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੧

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਸੰਤ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਗਿ

ਲਾਇਣੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਭਜੁ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਇਣੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਭਜੁ ਨਾਮੁ ਨਰਾਇਣੁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਵਜਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਤਰਾਇਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਮੇਲਿ ਹਰਿ
 ਗਾਇਣੁ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਲੇ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ॥੨॥ ਗੁਰ ਸਾਥੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਗਿਆਨ ਸਰਿ ਨਾਇਣੁ ॥ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ
 ਪਾਪ ਗਏ ਗਾਵਾਇਣੁ ॥੩॥ ਤੂ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਸੂਸਟਿ ਧਰਾਇਣੁ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਮੇਲਿ ਤੇਰਾ ਦਾਸ ਦਸਾਇਣੁ
 ॥੪॥੧॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਬੋਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਫਲ ਸਾ ਘਰੀ ॥ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸਿ ਸਭਿ ਦੁਖ ਪਰਹਰੀ ॥੧॥
 ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਭਜੁ ਨਾਮੁ ਨਰਹਰੀ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲਹੁ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੂਗ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਾਂਗਿ ਸਿੰਘੁ ਭਤ ਤਰੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਧਿਆਇ ਮਨਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰੀ ॥ ਕੋਟ ਕੋਟਾਂਤਰ ਤੇਰੇ ਪਾਪ ਪਰਹਰੀ ॥੨॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਾਧ
 ਧੂਰਿ ਮੁਖਿ ਪਰੀ ॥ ਇਸਨਾਨੁ ਕੀਓ ਅਠਸਠਿ ਸੁਰਸਰੀ ॥੩॥ ਹਮ ਮੂਰਖ ਕਤ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ
 ਤਾਰਿਆਂ ਤਾਰਣ ਹਰੀ ॥੪॥੨॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸੁਕੂਤੁ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ਜਪਮਾਲੀ ॥ ਹਿਰਦੈ ਫੇਰਿ ਚਲੈ ਤੁਧੁ
 ਨਾਲੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਬਨਵਾਲੀ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲਹੁ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਤੂਟਿ ਗੈ ਮਾਇਆ
 ਜਮ ਜਾਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਾ ਘਾਲਿ ਜਿਨਿ ਘਾਲੀ ॥ ਤਿਸੁ ਘੜੀਐ ਸਬਦੁ ਸਚੀ ਟਕਸਾਲੀ ॥੨॥
 ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਗੁਰਿ ਅਗਮ ਦਿਖਾਲੀ ॥ ਵਿਚਿ ਕਾਇਆ ਨਗਰ ਲਥਾ ਹਰਿ ਭਾਲੀ ॥੩॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ
 ਹਰਿ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਾਰਹੁ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀ ॥੪॥੩॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਸਭਿ ਘਟ ਤੇਰੇ
 ਤੂ ਸਭਨਾ ਮਾਹਿ ॥ ਤੁੜਾ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥੧॥ ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਾਪੁ ॥ ਹਤ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ
 ਤੂ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬਾਪੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਝਿ ॥ ਸਭ ਤੈਰੈ ਵਸਿ ਦ੍ਰਿੜਾ ਅਵਰੁ ਨ
 ਕੋਇ ॥੨॥ ਜਿਸ ਕਤ ਤੁਮ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਭਾਵੈ ॥ ਤਿਸ ਕੈ ਨੈਡੈ ਕੋਇ ਨ ਜਾਵੈ ॥੩॥ ਤੂ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ
 ਸਭ ਤੈ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਾਜਰਾ ਹਜੂਰਿ ॥੪॥੪॥

ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਸੰਤੁ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਮੂਰਤਿ ਜਿਸੁ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਹੋਵੈ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ

सो गुरमति हिरदै हरि नामु समारि ॥१॥ मधुसूदनु जपीਐ उर धारि ॥ देही नगरि तसकर पंच धातू
 गुर सबदी हरि काढे मारि ॥२॥ रहाउ ॥ जिन का हरि सेती मनु मानिआ तिन कारज हरि आपि
 सवारि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि अंगीकारु कीआ करतारि ॥२॥ मता मसूरति ताँ किछु
 कीजै जे किछु होवै हरि बाहरि ॥ जो किछु करै सोई भल होसी हरि धिआवहु अनदिनु नामु मुरारि ॥३॥
 हरि जो किछु करे सु आपे आपे ओहु पूछि न किसै करे बीचारि ॥ नानक सो प्रभु सदा धिआईਐ जिनि
 मेलिआ सतिगुरु किरपा धारि ॥४॥१॥५॥ भैरउ महला ४ ॥ ते साधु हरि मेलहु सुआमी जिन
 जपिआ गति होइ हमारी ॥ तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी ॥१॥
 हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ कृपा कृपा करि जगत पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी
 ॥१॥ रहाउ ॥ तिन मति ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी ॥ तिन की सेवा लाइ
 हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥२॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइਆ ते हरि
 दरगह काढे मारी ॥ ते नर निंदक सोभ न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥३॥ हरि आपि
 बुलावै आपे बोलै हरि आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥ हरि जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलसी जन
 नानक किआ एहि जंत विचारी ॥४॥२॥६॥ भैरउ महला ४ ॥ सतसंगति साई हरि तेरी जितु हरि
 कीरति हरि सुनणे ॥ जिन हरि नामु सुणिआ मनु भीना तिन हम स्रेवह नित चरणे ॥१॥ जगजीवनु
 हरि धिआइ तरणे ॥ अनेक असंख नाम हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥१॥ रहाउ ॥ गुरसिख
 हरि बोलहु हरि गावहु ले गुरमति हरि जपणे ॥ जो उपदेसु सुणे गुर केरा सो जनु पावै हरि सुख घणे
 ॥२॥ धनु सु वंसु धनु सु पिता धनु सु माता जिनि जन जणे ॥ जिन सासि गिरासि धिआइआ मेरा
 हरि हरि से साची दरगह हरि जन बणे ॥३॥ हरि हरि अगम नाम हरि तेरे विचि भगता हरि
 धरणे ॥ नानक जनि पाइआ मति गुरमति जपि हरि हरि पारि पवणे ॥४॥३॥७॥

ਮੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਗਲੀ ਥੀਤਿ ਪਾਸਿ ਡਾਰਿ ਰਾਖੀ ॥ ਅਸਟਮ ਥੀਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਜਨਮਾ ਸੀ ॥੧॥ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ ਨਰ ਕਰਤ
 ਕਚਰਾਇਣ ॥ ਜਨਮ ਮਰਣ ਤੇ ਰਹਤ ਨਾਰਾਇਣ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਿ ਪੰਜੀਰੁ ਖਵਾਇਆ ਚੌਰ ॥ ਓਹੁ ਜਨਮਿ
 ਨ ਮਰੈ ਰੇ ਸਾਕਤ ਢੋਰ ॥੨॥ ਸਗਲ ਪਰਾਧ ਦੇਹਿ ਲੋਰੋਨੀ ॥ ਸੋ ਸੁਖੁ ਜਲਤ ਜਿਤੁ ਕਹਹਿ ਠਾਕੁਰੁ ਜੋਨੀ ॥੩॥
 ਜਨਮਿ ਨ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੪॥੧॥ ਮੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਊਠਤ ਸੁਖੀਆ ਬੈਠਤ ਸੁਖੀਆ ॥ ਭਤ ਨਹੀ ਲਾਗੈ ਜਾਂ ਐਸੇ ਬੁਝੀਆ ॥੧॥ ਰਾਖਾ ਏਕੁ ਹਮਾਰਾ ਸੁਆਮੀ ॥
 ਸਗਲ ਘਟਾ ਕਾ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੋਇ ਅਚਿੰਤਾ ਜਾਗਿ ਅਚਿੰਤਾ ॥ ਜਹਾ ਕਹਾਁ ਪ੍ਰਭੁ ਤੂ
 ਵਰਤਤਾ ॥੨॥ ਘਰਿ ਸੁਖਿ ਵਸਿਆ ਬਾਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਮੰਤੁ ਦ੃ਡਾਇਆ ॥੩॥੨॥
 ਮੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਵਰਤ ਨ ਰਹਤ ਨ ਮਹ ਰਮਦਾਨਾ ॥ ਤਿਸੁ ਸੇਵੀ ਜੋ ਰਖੈ ਨਿਦਾਨਾ ॥੧॥ ਏਕੁ ਗੁਸਾਈ ਅਲਹੁ
 ਮੇਰਾ ॥ ਛਿਦ੍ਰੂ ਤੁਰਕ ਦੁਹਾਁ ਨੇਬੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਜ ਕਾਬੈ ਜਾਤ ਨ ਤੀਰਥ ਪ੍ਰਾਂਗ ॥ ਏਕੋ ਸੇਵੀ ਅਵਰੁ ਨ ਦ੍ਰਿਆ
 ॥੨॥ ਪ੍ਰਾਂਗ ਕਰਤ ਨ ਨਿਵਾਜ ਗੁਜਾਰਤ ॥ ਏਕ ਨਿਰਕਾਰ ਲੇ ਰਿਦੈ ਨਮਸਕਾਰਤ ॥੩॥ ਨਾ ਹਮ ਛਿਦ੍ਰੂ ਨ
 ਸੁਸਲਮਾਨ ॥ ਅਲਹ ਰਾਮ ਕੇ ਪਿੰਡੁ ਪਰਾਨ ॥੪॥ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਇਹੁ ਕੀਆ ਕਖਾਨਾ ॥ ਗੁਰ ਪੀਰ ਮਿਲਿ ਖੁਦਿ
 ਖਸਮੁ ਪਛਾਨਾ ॥੫॥੩॥ ਮੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਦਸ ਮਿਰਗੀ ਸਹਜੇ ਬੰਧਿ ਆਨੀ ॥ ਪਾਂਚ ਮਿਰਗ ਬੇਧੇ ਸਿਵ ਕੀ
 ਬਾਨੀ ॥੧॥ ਸਾਂਤਸਾਂਗਿ ਲੇ ਚਡਿਆ ਸਿਕਾਰ ॥ ਮੂਗ ਪਕਰੇ ਬਿਨੁ ਘੋਰ ਹਥੀਆਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਖੇਰ
 ਬਿਰਤਿ ਬਾਹਰਿ ਆਇਆ ਧਾਇ ॥ ਅਹੇਰਾ ਪਾਇਆ ਘਰ ਕੈ ਗਾਂਡਿ ॥੨॥ ਮੂਗ ਪਕਰੇ ਘਰਿ ਆਣੇ ਹਾਟਿ ॥
 ਚੁਖ ਚੁਖ ਲੇ ਗਏ ਬਾਂਢੇ ਬਾਟਿ ॥੩॥ ਏਹੁ ਅਹੇਰਾ ਕੀਨੋ ਦਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕੈ ਘਰਿ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ॥੪॥੪॥
 ਮੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੇ ਸਤ ਲੋਚਿ ਲੋਚਿ ਖਾਵਾਇਆ ॥ ਸਾਕਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚੀਤਿ ਨ ਆਇਆ ॥੧॥ ਸਾਂਤ ਜਨਾ
 ਕੀ ਲੇਹੁ ਮਤੇ ॥ ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਪਾਵਹੁ ਪਰਮ ਗਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਾਥਰ ਕਤ ਬਹੁ ਨੀਝੁ ਪਵਾਇਆ ॥ ਨਹ

ਭੀਗੈ ਅਧਿਕ ਸੂਕਾਇਆ ॥੨॥ ਖਟੁ ਸਾਸਤਰ ਮੂਰਖੈ ਸੁਨਾਇਆ ॥ ਜੈਸੇ ਦਹ ਦਿਸ ਪਵਨੁ ਝੁਲਾਇਆ ॥੩॥
 ਬਿਨੁ ਕਣ ਖਲਹਾਨੁ ਜੈਸੇ ਗਾਹਨ ਪਾਇਆ ॥ ਤਿਉ ਸਾਕਤ ਤੇ ਕੋ ਨ ਬਰਾਸਾਇਆ ॥੪॥ ਤਿਤ ਹੀ ਲਾਗਾ ਜਿਤੁ
 ਕੋ ਲਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਬਣਤ ਬਣਾਇਆ ॥੫॥੫॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਤ ਪ੍ਰਾਣ ਜਿਨਿ ਰਚਿਐ
 ਸਰੀਰ ॥ ਜਿਨਹਿ ਤੁਪਾਏ ਤਿਸ ਕਤ ਪੀਰ ॥੧॥ ਗੁਰੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ਜੀਅ ਕੈ ਕਾਮ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਜਾ ਕੀ ਸਦ
 ਛਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਆਰਾਧਨ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਬਿਨਸੀ ਬਿਪਰੀਤਿ ॥੨॥ ਮੀਤ ਹੀਤ
 ਧਨੁ ਨਹ ਪਾਰਣਾ ॥ ਧੰਨਿ ਧੰਨਿ ਮੇਰੇ ਨਾਰਾਇਣਾ ॥੩॥ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥ ਏਕ ਬਿਨਾ ਟ੍ਰੂਜਾ ਨਹੀਂ
 ਜਾਣੀ ॥੪॥੬॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਗੈ ਦਿਨੁ ਪਾਛੈ ਨਾਰਾਇਣ ॥ ਮਥਿ ਭਾਗਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸਾਇਣ ॥੧॥
 ਪ੍ਰਭੂ ਹਮਾਰੈ ਸਾਸਤਰ ਸਤਣ ॥ ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਗ੍ਰਹ ਭਤਣ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਕਰਨ ਸੁਣਿ ਜੀਵੇ
 ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਅਮਰ ਥਿਰੁ ਥੀਵੇ ॥੨॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਟ੍ਰੂਖ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਵਜੇ ਦਰਬਾਰੇ
 ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਲੀਏ ਮਿਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤਿ ਆਏ ॥੪॥੭॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੋਟਿ
 ਮਨੋਰਥ ਆਵਹਿ ਹਾਥ ॥ ਜਮ ਮਾਰਗ ਕੈ ਸੰਗੀ ਪਾਁਥ ॥੧॥ ਗੱਗਾ ਜਲੁ ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮ ॥ ਜੋ ਸਿਮਰੈ ਤਿਸ
 ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਵੈ ਪੀਵਤ ਬਹੁਡਿ ਨ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਯਾ ਜਾਪ ਤਾਪ ਇਸਨਾਨ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮ
 ਭਏ ਨਿਹਕਾਮ ॥੨॥ ਰਾਜ ਮਾਲ ਸਾਦਨ ਦਰਬਾਰ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮ ਪੂਰਨ ਆਚਾਰ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ
 ਇਹੁ ਕੀਆ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਮਿਥਿਆ ਸਭ ਛਾਰੁ ॥੪॥੮॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਲੇਪੁ ਨ ਲਾਗੇ
 ਤਿਲ ਕਾ ਮੂਲਿ ॥ ਦੁਸਟੁ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਮੂਆ ਹੋਇ ਕੈ ਸੂਲ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜਨ ਰਾਖੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਆਪਿ ॥ ਪਾਪੀ ਮੂਆ
 ਗੁਰ ਪਰਤਾਪਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਪਣਾ ਖਸਮੁ ਜਨਿ ਆਪਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਇਆਣਾ ਪਾਪੀ ਓਹੁ ਆਪਿ
 ਪਚਾਇਆ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਅਪਣੇ ਦਾਸ ਕਾ ਰਖਵਾਲਾ ॥ ਨਿੰਦਕ ਕਾ ਮਾਥਾ ਈਹਾਁ ਊਹਾ ਕਾਲਾ
 ॥੩॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀ ਪਰਮੇਸ਼ਰਿ ਸੁਣੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਮਲੇਛੁ ਪਾਪੀ ਪਚਿਆ ਭਿਆ ਨਿਰਾਸੁ ॥੪॥੯॥
 ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਖੂਬੁ ਖੂਬੁ ਖੂਬੁ ਖੂਬੁ ਖੂਬੁ ਤੇਰੋ ਨਾਮੁ ॥ ਝ੍ਰਾਠੁ ਝ੍ਰਾਠੁ ਝ੍ਰਾਠੁ ਝ੍ਰਾਠੁ ਦੁਨੀ ਗੁਮਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਗਜ

ਤੇਰੇ ਬੰਦੇ ਦੀਦਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸਭ ਦੁਨੀਆ ਛਾਰੁ ॥੧॥ ਅਚਰਜੁ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਤੇਰੇ ਕਦਮ ਸਲਾਹ
 ॥ ਗਨੀਵ ਤੇਰੀ ਸਿਫਤਿ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥੨॥ ਨੀਧਰਿਆ ਧਰ ਪਨਹ ਖੁਦਾਇ ॥ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜੁ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ
 ਧਿਆਇ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਕਤ ਖੁਦਿ ਖਸਮ ਮਿਹਰਵਾਨ ॥ ਅਲਹੁ ਨ ਵਿਸਰੈ ਦਿਲ ਜੀਅ ਪਰਾਨ ॥੪॥੧੦॥
 ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਚ ਪਦਾਰਥੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਹਹੁ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਭਾਣਾ ਸਤਿ ਕਰਿ ਸਹਹੁ ॥੧॥ ਜੀਵਤ ਜੀਵਤ
 ਜੀਵਤ ਰਹਹੁ ॥ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਨਿਤ ਤਠਿ ਪੀਵਹੁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਕਹਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਝਿਕ ਨਾਮਿ ਉਧਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੁ ॥੨॥੧੧॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸੇਵਿ ਸਰਕ ਫਲ ਪਾਏ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਮੈਲੁ ਮਿਟਾਏ ॥੧॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਨਾਤ ॥ ਪੂਰਬਿ ਕਰਮ
 ਲਿਖੇ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਹੋਵੈ ਉਧਾਰੁ ॥ ਸੋਭਾ ਪਾਵੈ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਦੁਆਰ ॥੨॥ ਸਰਕ
 ਕਲਿਆਣ ਚਰਣ ਪ੍ਰਭ ਸੇਵਾ ॥ ਧੂਰਿ ਬਾਛਹਿ ਸਭਿ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵਾ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ਨਾਮ ਨਿਧਾਨੁ ॥
 ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਪਿ ਉਧਰਿਆ ਸਗਲ ਜਹਾਨੁ ॥੪॥੧੨॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਪਣੇ ਦਾਸ ਕਤ ਕੱਠਿ ਲਗਾਵੈ ॥
 ਨਿੰਦਕ ਕਤ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਪਾਵੈ ॥੧॥ ਪਾਪੀ ਤੇ ਰਾਖੇ ਨਾਰਾਇਣ ॥ ਪਾਪੀ ਕੀ ਗਤਿ ਕਤਹੂ ਨਾਹੀ ਪਾਪੀ
 ਪਚਿਆ ਆਪ ਕਮਾਇਣ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਾਸ ਰਾਮ ਜੀਤ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਨਿੰਦਕ ਕੀ ਹੋਈ ਬਿਪਰੀਤਿ ॥੨॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਅਪਣਾ ਬਿਰਦੁ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥ ਦੋਖੀ ਅਪਣਾ ਕੀਤਾ ਪਾਇਆ ॥੩॥ ਆਇ ਨ ਜਾਈ ਰਹਿਆ
 ਸਮਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ॥੪॥੧੩॥

ਰਾਗੁ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੨

੧੭੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੀਧਰ ਮੋਹਨ ਸਗਲ ਉਪਾਵਨ ਨਿਰਂਕਾਰ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਐਸਾ ਪ੍ਰਭੁ ਛੋਡਿ ਕਰਹਿ ਅਨ ਸੇਵਾ ਕਵਨ ਬਿਖਿਆ
 ਰਸ ਮਾਤਾ ॥੧॥ ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂ ਗੋਵਿਦ ਭਾਜੁ ॥ ਅਵਰ ਉਪਾਵ ਸਗਲ ਮੈ ਦੇਖੇ ਜੋ ਚਿਤਵੀਐ ਤਿਤੁ ਬਿਗਰਸਿ
 ਕਾਜੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਠਾਕੁਰੁ ਛੋਡਿ ਦਾਸੀ ਕਤ ਸਿਮਰਹਿ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਅਗਿਆਨਾ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ
 ਕਰਹਿ ਤਿਨ ਨਿੰਦਹਿ ਨਿਗੁਰੇ ਪਸੂ ਸਮਾਨਾ ॥੨॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਤਨੁ ਧਨੁ ਸਭੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸਾਕਤ ਕਹਤੇ ਮੇਰਾ ॥

ਅਛਾਬੁਧਿ ਦੁਰਮਤਿ ਹੈ ਮੈਲੀ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਵਜਲਿ ਫੇਰਾ ॥੩॥ ਹੋਮ ਜਗ ਜਪ ਤਪ ਸਭਿ ਸੰਜਮ ਤਟਿ ਤੀਰਥਿ
 ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥ ਮਿਟਿਆ ਆਪੁ ਪਏ ਸਰਣਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥੪॥੧॥੧੪॥ ਭੈਰਉ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਨ ਮਹਿ ਪੇਖਿਆਂ ਤ੍ਰਣ ਮਹਿ ਪੇਖਿਆਂ ਗ੍ਰਹਿ ਪੇਖਿਆਂ ਤਦਾਸਾਏ ॥ ਦੰਡਧਾਰ ਜਟਧਾਰੈ ਪੇਖਿਆਂ
 ਕਰਤ ਨੇਮ ਤੀਰਥਾਏ ॥੧॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਪੇਖਿਆਂ ਮਨ ਮਾਏ ॥ ਊਭ ਪਇਆਲ ਸਰਬ ਮਹਿ ਪ੍ਰੂਨ ਰਸਿ ਮੰਗਲ
 ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋਗ ਭੇਖ ਸੰਨਿਆਸੈ ਪੇਖਿਆਂ ਜਤਿ ਜੰਗਮ ਕਾਪਡਾਏ ॥ ਤਪੀ ਤਪੀਸੁਰ ਮੁਨਿ ਮਹਿ
 ਪੇਖਿਆਂ ਨਟ ਨਾਟਿਕ ਨਿਰਤਾਏ ॥੨॥ ਚਹੁ ਮਹਿ ਪੇਖਿਆਂ ਖਟ ਮਹਿ ਪੇਖਿਆਂ ਦਸ ਅਸਟੀ ਸਿੰਮ੍ਰਤਾਏ ॥ ਸਭ
 ਮਿਲਿ ਏਕੋ ਏਕੁ ਕਖਾਨਹਿ ਤਤ ਕਿਸ ਤੇ ਕਹਤ ਦੁਰਾਏ ॥੩॥ ਅਗਹ ਅਗਹ ਬੇਅਂ ਸੁਆਮੀ ਨਹ ਕੀਮ ਕੀਮ
 ਕੀਮਾਏ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ਜਿਹ ਘਟਿ ਪਰਗਟੀਆਏ ॥੪॥੨॥੧੫॥ ਭੈਰਉ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਿਕਟਿ ਬੁੜੈ ਸੋ ਬੁਰਾ ਕਿਤ ਕਰੈ ॥ ਬਿਖੁ ਸੰਚੈ ਨਿਤ ਝਰਤਾ ਫਿਰੈ ॥ ਹੈ ਨਿਕਟੇ ਅਝ ਭੇਦੁ ਨ ਪਾਇਆ
 ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭ ਮੋਹੀ ਮਾਇਆ ॥੧॥ ਨੇਡੈ ਨੇਡੈ ਸਭੁ ਕੋ ਕਹੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭੇਦੁ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਲਹੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਕਟਿ ਨ ਦੇਖੈ ਪਰ ਗ੍ਰਹਿ ਜਾਇ ॥ ਦਰਖੁ ਹਿਰੈ ਮਿਥਿਆ ਕਰਿ ਖਾਇ ॥ ਪਈ ਠਗਤਰੀ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਨ
 ਜਾਨਿਆ ॥ ਬਾੜ੍ਹੁ ਗੁਰੁ ਹੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਿਆ ॥੨॥ ਨਿਕਟਿ ਨ ਜਾਨੈ ਬੋਲੈ ਕੂਡੁ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਮੂਠਾ ਹੈ ਮੂਡੁ
 ॥ ਅੰਤਰਿ ਵਸਤੁ ਦਿਸਤਰਿ ਜਾਇ ॥ ਬਾੜ੍ਹੁ ਗੁਰੁ ਹੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥੩॥ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਕਰਮੁ ਲਿਖਿਆ
 ਲਿਲਾਟ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਖੁਲੇ ਕਪਾਟ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਨਿਕਟੇ ਸੋਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਆਵੈ ਨ ਜਾਵੈ ਕੋਇ
 ॥੪॥੩॥੧੬॥ ਭੈਰਉ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸੁ ਤ੍ਰਾਂ ਰਾਖਹਿ ਤਿਸੁ ਕਤਨੁ ਮਾਰੈ ॥ ਸਭ ਤੁੜ੍ਹ ਹੀ ਅੰਤਰਿ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੈ
 ॥ ਕੋਟਿ ਉਪਾਵ ਚਿਤਕਤ ਹੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥ ਸੋ ਹੋਵੈ ਜਿ ਕਰੈ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣੀ ॥੧॥ ਰਾਖਹੁ ਰਾਖਹੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਤੇਰੀ
 ਸਰਣਿ ਤੈਰੈ ਦਰਵਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਨਿਰਭਤ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥ ਤਿਨਿ ਭਤ ਦ੍ਰਵਿ ਕੀਆ ਏਕੁ
 ਪਰਾਤਾ ॥ ਜੋ ਤ੍ਰਾਂ ਕਰਹਿ ਸੋਈ ਫੁਨਿ ਹੋਇ ॥ ਮਾਰੈ ਨ ਰਾਖੈ ਢ੍ਵਾਂ ਕੋਇ ॥੨॥ ਕਿਆ ਤ੍ਰਾਂ ਸੋਚਹਿ ਮਾਣਸ ਬਾਣਿ
 ॥ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਏਕ ਟੇਕ ਏਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥੩॥ ਜਿਸੁ ਊਪਰਿ

नदरि करे करतारु ॥ तिसु जन के सभि काज सवारि ॥ तिस का राखा एको सोङ्गि ॥ जन नानक अपड़ि न
 साकै कोङ्गि ॥४॥४॥१७॥ भैरउ महला ५ ॥ तउ कड़ीअै जे होवै बाहरि ॥ तउ कड़ीअै जे विसरै नरहरि
 ॥ तउ कड़ीअै जे दूजा भाए ॥ किआ कड़ीअै जाँ रहिआ समाए ॥१॥ माइआ मोहि कडे कड़ि पचिआ ॥
 बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ॥२॥ रहाउ ॥ तउ कड़ीअै जे दूजा करता ॥ तउ कड़ीअै जे
 अनिआइ को मरता ॥ तउ कड़ीअै जे किछु जाणै नाही ॥ किआ कड़ीअै जाँ भरपूरि समाही ॥२॥ तउ
 कड़ीअै जे किछु होड़ि धिडाणै ॥ तउ कड़ीअै जे भूलि रंजाणै ॥ गुरि कहिआ जो होड़ि सभु प्रभ ते ॥ तब
 काढ़ा छोड़ि अचिंत हम सोते ॥३॥ प्रभ तूहै ठाकुरु सभु को तेरा ॥ जिउ भावै तिउ करहि निबेरा ॥
 दुतीआ नासति इकु रहिआ समाइ ॥ राखहु पैज नानक सरणाइ ॥४॥५॥१८॥ भैरउ महला ५ ॥
 बिनु बाजे कैसो निरतिकारी ॥ बिनु कंठै कैसे गावनहारी ॥ जील बिना कैसे बजै खबाब ॥ नाम बिना
 बिरथे सभि काज ॥१॥ नाम बिना कहहु को तरिआ ॥ बिनु सतिगुर कैसे पारि परिआ ॥२॥ रहाउ ॥
 बिनु जिहवा कहा को बकता ॥ बिनु स्वना कहा को सुनता ॥ बिनु नेवा कहा को पेखै ॥ नाम बिना नरु
 कही न लेखै ॥२॥ बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ बिनु अमरै कैसे राज मंडित ॥ बिनु बूझो कहा
 मनु ठहराना ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना ॥३॥ बिनु बैराग कहा बैरागी ॥ बिनु हउ तिआगि
 कहा कोऊ तिआगी ॥ बिनु बसि पंच कहा मन चूरे ॥ नाम बिना सद सद ही झूरे ॥४॥ बिनु गुर
 दीखिआ कैसे गिआनु ॥ बिनु पेखे कहु कैसो धिआनु ॥ बिनु भै कथनी सरब बिकार ॥ कहु नानक दर
 का बीचार ॥५॥६॥१९॥ भैरउ महला ५ ॥ हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ काम रोगि मैगलु बसि
 लीना ॥ दृसटि रोगि पचि मुए पतंगा ॥ नाद रोगि खपि गए कुरंगा ॥१॥ जो जो दीसै सो सो रोगी ॥ रोग
 रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥२॥ रहाउ ॥ जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥ बासन रोगि भवरु बिनसानो
 ॥ हेत रोग का सगल संसारा ॥ तृष्णिधि रोग महि बधे बिकारा ॥२॥ रोगे मरता रोगे जनमै ॥ रोगे

ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਭਰਮੈ ॥ ਰੋਗ ਬੰਧ ਰਹਨੁ ਰਤੀ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਰੋਗੁ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਵੈ ॥੩॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਜਿਸੁ ਕੀਨੀ ਦਾਇਆ ॥ ਬਾਹ ਪਕਡਿ ਰੋਗਹੁ ਕਠਿ ਲਾਇਆ ॥ ਤੂਟੇ ਬੰਧਨ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਾਇਆ ॥ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਰੋਗੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥੪॥੭॥੨੦॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਮਹਾ ਅਨਨਦ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ
 ਤਾਂ ਸਭਿ ਦੁਖ ਘੰਜ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਰਥਾ ਪੂਰੀ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਕਬਹਿ ਨ ਝੂਰੀ ॥੧॥ ਅੰਤਰਿ ਰਾਮ ਰਾਇ
 ਪ੍ਰਗਟੇ ਆਇ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੀਓ ਰੁਂਗੁ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਰਬ ਕੋ ਰਾਜਾ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ
 ਪੂਰੇ ਕਾਜਾ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਰੰਗੀ ਗੁਲਾਲ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥੨॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਦ
 ਧਨਵੰਤਾ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਦ ਨਿਭਰਤਾ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਚੂਕੀ ਕਾਣੇ
 ॥੩॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਹਜ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸੁਨਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਸਦ ਕੀਰਤਨੁ
 ਕਰਤਾ ॥ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਨਾਨਕ ਭਗਵਂਤਾ ॥੪॥੮॥੨੧॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਾਪੁ ਹਮਾਰਾ ਸਦ ਚਰੰਜੀਵੀ ॥
 ਭਾਈ ਹਮਾਰੇ ਸਦ ਹੀ ਜੀਵੀ ॥ ਮੀਤ ਹਮਾਰੇ ਸਦਾ ਅਵਿਨਾਸੀ ॥ ਕੁਟੰਬੁ ਹਮਾਰਾ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸੀ ॥੧॥ ਹਮ
 ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਤਾਂ ਸਭਹਿ ਸੁਹੇਲੇ ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪਿਤਾ ਸੰਗਿ ਮੇਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੰਦਰ ਮੇਰੇ ਸਭ ਤੇ ਊਚੇ ॥ ਦੇਸ
 ਮੇਰੇ ਬੇਅੰਤ ਅਪੂਛੇ ॥ ਰਾਜੁ ਹਮਾਰਾ ਸਦ ਹੀ ਨਿਹਚਲੁ ॥ ਮਾਲੁ ਹਮਾਰਾ ਅਖੂਟੁ ਅਕੇਚਲੁ ॥੨॥ ਸੋਭਾ ਮੇਰੀ ਸਭ
 ਯੁਗ ਅੰਤਰਿ ॥ ਬਾਜ ਹਮਾਰੀ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ॥ ਕੀਰਤਿ ਹਮਰੀ ਘਰਿ ਘਰਿ ਹੋਈ ॥ ਭਗਤਿ ਹਮਾਰੀ ਸਭਨੀ ਲੋਈ
 ॥੩॥ ਪਿਤਾ ਹਮਾਰੇ ਪ੍ਰਗਟੇ ਮਾਝ ॥ ਪਿਤਾ ਪੂਤ ਰਲਿ ਕੀਨੀ ਸਾਁਝ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਤ ਪਿਤਾ ਪਤੀਨੇ ॥ ਪਿਤਾ
 ਪੂਤ ਏਕੈ ਰੰਗਿ ਲੀਨੇ ॥੪॥੯॥੨੨॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਿਰਕੈਰ ਪੁਰਖ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ॥ ਹਮ ਅਪਰਾਧੀ
 ਤੁਮ ਬਖਸਾਤੇ ॥ ਜਿਸੁ ਪਾਪੀ ਕਤ ਮਿਲੈ ਨ ਢੋਈ ॥ ਸਰਣਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਈ ॥੧॥ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਨਾਇ ॥ ਸਭ ਫਲ ਪਾਏ ਗੁਰੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸਤਿਗੁਰ ਆਦੇਸੁ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ
 ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਦੇਸੁ ॥ ਚੂਕਾ ਪੱਦਾ ਤਾਂ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥ ਖਸਮੁ ਤੂਹੈ ਸਭਨਾ ਕੇ ਰਾਇਆ ॥੨॥ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ
 ਸੂਕੇ ਕਾਸਟ ਹਰਿਆ ॥ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾਂ ਥਲ ਸਿਰਿ ਸਹਿਆ ॥ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾਂ ਸਭਿ ਫਲ ਪਾਏ ॥ ਚਿੰਤ ਗੁੰਝੀ

ਲਗਿ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਏ ॥੩॥ ਹਰਾਮਖੋਰ ਨਿਰਗੁਣ ਕਤ ਤ੍ਰਠਾ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਮਨਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਵ੍ਰਠਾ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰ ਭਏ ਦਿੜਿਆਲਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦੇਖਿ ਭਏ ਨਿਹਾਲਾ ॥੪॥੧੦॥੨੩॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਬੇਮੁਹਤਾਜੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰੇ ਸਚਾ ਸਾਜੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਭਸ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ
 ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥੧॥ ਗੁਰ ਜੈਸਾ ਨਾਹੀ ਕੋ ਦੇਵ ॥ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਸੁ ਲਾਗਾ ਸੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਮੇਰਾ ਸਰਬ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਪ੍ਰਗਟੁ ਭਈ ਹੈ
 ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਤਾਣੁ ਨਿਤਾਣੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਘਰਿ ਢੀਬਾਣੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਹਤ ਸਦ
 ਬਲਿ ਜਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਗਟੁ ਮਾਰਗੁ ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਦਿਖਲਾਇਆ ॥੩॥ ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਤਿਸੁ ਭਤ ਨ ਬਿਆਪੈ
 ॥ ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਤਿਸੁ ਦੁਖੁ ਨ ਸੰਤਾਪੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋਧੇ ਸਿੰਮੂਤਿ ਕੇਦ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰ ਨਾਹੀ ਭੇਦ
 ॥੪॥੧੧॥੨੪॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਮਨੁ ਪਰਗਟੁ ਭਇਆ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਪਾਪੁ ਤਨ ਤੇ ਗਇਆ ॥
 ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਸਗਲ ਪੁਰਬਾਇਆ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਅਠਸਠਿ ਮਜਨਾਇਆ ॥੧॥ ਤੀਰਥੁ ਹਮਰਾ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ॥
 ਗੁਰਿ ਉਪਦੇਸਿਆ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਦੁਖੁ ਦ੍ਰਵਿ ਪਰਾਨਾ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਅਤਿ ਮੂੜ
 ਸੁਗਿਆਨਾ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਪਰਗਟਿ ਉਜੀਆਰਾ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਛੁਟੇ ਜੰਜਾਰਾ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ
 ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਦਰਗਹ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਪ੍ਰਭੁ ਕਹੈ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੀ ਸਾਚੀ ਰਾਸਿ ॥੩॥ ਗੁਰਿ
 ਉਪਦੇਸੁ ਕਹਿਓ ਇਹੁ ਸਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਮਨ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਉਧਰੇ ਨਾਮ ਪੁਨਹਚਾਰ ॥ ਅਵਰਿ
 ਕਰਮ ਲੋਕਹ ਪਤੀਆਰ ॥੪॥੧੨॥੨੫॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਮਸਕਾਰ ਤਾ ਕਤ ਲਖ ਬਾਰ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ
 ਦੀਜੈ ਤਾ ਕਤ ਵਾਰਿ ॥ ਸਿਮਰਨਿ ਤਾ ਕੈ ਮਿਟਹਿ ਸੰਤਾਪ ॥ ਹੋਇ ਅਨਨਦੁ ਨ ਵਿਆਪਹਿ ਤਾਪ ॥੧॥ ਐਸੋ ਹੀਰਾ
 ਨਿਰਮਲ ਨਾਮ ॥ ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਪੂਰਨ ਸਭਿ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾ ਕੀ ਦੂਸਟਿ ਦੁਖ ਡੇਰਾ ਫੱਹੈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ
 ਨਾਮੁ ਸੀਤਲੁ ਮਨਿ ਗਹੈ ॥ ਅਨਿਕ ਭਗਤ ਜਾ ਕੇ ਚਰਨ ਪ੍ਰਯਾਰੀ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨਹਾਰੀ ॥੨॥ ਖਿਨ
 ਮਹਿ ਊਣੇ ਸੁਭਰ ਭਰਿਆ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਸੂਕੇ ਕੀਨੇ ਹਰਿਆ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਨਿਥਾਵੇ ਕਤ ਦੀਨੋ ਥਾਨੁ ॥ ਖਿਨ

ਮਹਿ ਨਿਮਾਣੇ ਕਤ ਦੀਨੋ ਮਾਨੁ ॥੩॥ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਾ ॥ ਸੋ ਜਾਪੈ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰਾ ॥
 ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਤਾ ਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਦਿੱਖਾਰੁ ॥੪॥੧੩॥੨੬॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮੋਹਿ ਦੁਹਾਗਨਿ ਆਪਿ ਸੀਗਾਰੀ ॥ ਰੂਪ ਰੰਗ ਦੇ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰੀ ॥ ਮਿਟਿਆਂ ਦੁਖੁ ਅਰੁ ਸਗਲ ਸੰਤਾਪ ॥ ਗੁਰ
 ਹੋਏ ਮੇਰੇ ਮਾਈ ਬਾਪ ॥੧॥ ਸਖੀ ਸਹੇਰੀ ਮੈਰੈ ਗ੍ਰਸਤਿ ਅਨਨਦ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭੇਟੇ ਮੋਹਿ ਕੰਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਤਪਤਿ ਬੁੜੀ ਪੂਰਨ ਸਭ ਆਸਾ ॥ ਮਿਟੇ ਅੰਧੇਰ ਭਏ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਅਚਰਜ ਬਿਸਮਾਦ ॥ ਗੁਰ
 ਪੂਰਾ ਪੂਰਾ ਪਰਸਾਦ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਪ੍ਰਗਟ ਭਏ ਗੋਪਾਲ ॥ ਤਾ ਕੈ ਦਰਸਨਿ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥ ਸਰਬ ਗੁਣਾ ਤਾ ਕੈ
 ਬਹੁਤੁ ਨਿਧਾਨ ॥ ਜਾ ਕਤ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਓ ਨਾਮੁ ॥੩॥ ਜਾ ਕਤ ਭੇਟਿਆਂ ਠਾਕੁਰੁ ਅਪਨਾ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਜਨ ਪ੍ਰਭ ਭਾਏ ॥ ਤਾ ਕੀ ਰੇਨੁ ਬਿਰਲਾ ਕੋ ਪਾਏ ॥੪॥੧੪॥੨੭॥ ਭੈਰਤ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਿਤਵਤ ਪਾਪ ਨ ਆਲਕੁ ਆਵੈ ॥ ਬੇਸੁਆ ਭਜਤ ਕਿਛੁ ਨਹ ਸਰਮਾਵੈ ॥ ਸਾਰੇ ਦਿਨਸੁ ਮਜੂਰੀ ਕਰੈ
 ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਕੀ ਵੇਲਾ ਬਜਰ ਸਿਰਿ ਪੈਰੈ ॥੧॥ ਮਾਇਆ ਲਗਿ ਭੂਲੋ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ
 ਭੁਲਾਵਣਹਾਰੈ ਰਾਚਿ ਰਹਿਆ ਬਿਰਥਾ ਬਿਤਹਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੇਖਤ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਬਿਹਾਇ ॥ ਗੁਡਕੁਡਾ
 ਕਰੈ ਕਤਡੀ ਰੰਗ ਲਾਇ ॥ ਅੰਧ ਬਿਤਹਾਰ ਬੰਧ ਮਨੁ ਧਾਵੈ ॥ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਨ ਜੀਅ ਮਹਿ ਆਵੈ ॥੨॥ ਕਰਤ ਕਰਤ
 ਇਵ ਹੀ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਤ ਨ ਕਾਰਜ ਮਾਇਆ ॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰਿਧਿ ਲੋਭਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥ ਤਡਫਿ ਮੂਆ ਜਿਤ
 ਜਲ ਬਿਨੁ ਮੀਨਾ ॥੩॥ ਜਿਸ ਕੇ ਰਾਖੇ ਹੋਇ ਹਰਿ ਆਪਿ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਜਪੁ ਜਾਪਿ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ
 ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥੪॥੧੫॥੨੮॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਪਣੀ ਦਿੱਖਾ
 ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥ ਸਾਚ ਸਬਦੁ ਹਿਰਦੇ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ
 ਜਾਹਿ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜੀਅ ਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਜਪਹੁ ਨਿਤ ਭਾਈ ਤਾਰਿ ਲਏ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰੁ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਲਿਖਿਆ ਹਰਿ ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਸੇ ਜਨ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥ ਸ੍ਰੂਖ ਸਹਜ
 ਆਨਨਦ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਆਗੈ ਮਿਲੈ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਤ ॥੨॥ ਜੁਗਹ ਜੁਗਂਤਰਿ ਇਹੁ ਤਤੁ ਸਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਣੁ

साचा बीचारु ॥ जिसु लड़ि लाइ लए सो लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥३॥ तेरे भगत भगतन
 का आपि ॥ अपणी महिमा आपे जापि ॥ जीअ जंत सभि तेरै हाथि ॥ नानक के प्रभ सद ही साथि
 ॥४॥१६॥२६॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै अंतरजामी ॥ नामु हमारै आवै कामी ॥ रोमि रोमि
 रविआ हरि नामु ॥ सतिगुर पूरै कीनो दानु ॥१॥ नामु रतनु मेरै भंडार ॥ अगम अमोला अपर अपार
 ॥१॥ रहाउ ॥ नामु हमारै निहचल धनी ॥ नाम की महिमा सभ महि बनी ॥ नामु हमारै पूरा साहु ॥
 नामु हमारै बेपरवाहु ॥२॥ नामु हमारै भोजन भाउ ॥ नामु हमारै मन का सुआउ ॥ नामु न विसरै
 संत प्रसादि ॥ नामु लैत अनहद पूरे नाद ॥३॥ प्रभ किरपा ते नामु नउ निधि पाई ॥ गुर किरपा ते
 नाम सिउ बनि आई ॥ धनवंते सई परधान ॥ नानक जा कै नामु निधान ॥४॥१७॥३०॥
 भैरउ महला ५ ॥ तू मेरा पिता तूहै मेरा माता ॥ तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता ॥ तू मेरा ठाकुरु हउ
 दासु तेरा ॥ तुझ बिनु अवरु नही को मेरा ॥१॥ करि किरपा करहु प्रभ दाति ॥ तुमरी उसतति करउ
 दिन राति ॥१॥ रहाउ ॥ हम तेरे जंत तू बजावनहारा ॥ हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा ॥ तउ
 परसादि रंग रस माणे ॥ घट घट अंतरि तुमहि समाणे ॥२॥ तुमरी कृपा ते जपीਐ नाउ ॥ साधसंगि
 तुमरे गुण गाउ ॥ तुमरी दइआ ते होइ दरद बिनासु ॥ तुमरी मडिआ ते कमल बिगासु ॥३॥ हउ
 बलिहारि जाउ गुरदेव ॥ सफल दरसनु जा की निरमल सेव ॥ दइआ करहु ठाकुरु प्रभ मेरे ॥ गुण
 गावै नानकु नित तेरे ॥४॥१८॥३१॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सदा सदा
 ता कउ जोहारु ॥ ऊचे ते ऊचा जा का थान ॥ कोटि अघा मिटहि हरि नाम ॥१॥ तिसु सरणाई सदा सुखु
 होइ ॥ करि किरपा जा कउ मैलै सोइ ॥२॥ रहाउ ॥ जा के करतब लखे न जाहि ॥ जा का भरवासा सभ
 घट माहि ॥ प्रगट भडिआ साधू कै संगि ॥ भगत अराधहि अनदिनु रंगि ॥२॥ देदे तोटि नही भंडार
 ॥ खिन महि थापि उथापनहार ॥ जा का हुकमु न मेटै कोइ ॥ सिरि पातिसाहा साचा सोइ ॥३॥ जिस

की ओट तिसै की आसा ॥ दुखु सुखु हमरा तिस ही पासा ॥ राखि लीनो सभु जन का पड़दा ॥ नानकु तिस
 की उसतति करदा ॥४॥१६॥३२॥ भैरउ महला ५ ॥ रोवनहारी रोजु बनाइआ ॥ बलन बरतन कउ
 सनबंधु चिति आइआ ॥ बूझि बैरागु करे जे कोइ ॥ जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥१॥ बिखिआ का
 सभु धंधु पसारु ॥ विरलै कीनो नाम अधारु ॥२॥ रहाउ ॥ तृबिधि माइआ रही बिआपि ॥ जो लपटानो
 तिसु दूख संताप ॥ सुखु नाही बिनु नाम धिआए ॥ नाम निधानु बडभागी पाए ॥२॥ स्नाँगी सिउ जो
 मनु रीझावै ॥ स्नागि उतारिऐ फिरि पछुतावै ॥ मेघ की छाइआ जैसे बरतनहार ॥ तैसो परपंचु मोह
 बिकार ॥३॥ एक वसतु जे पावै कोइ ॥ पूरन काजु ताही का होइ ॥ गुर प्रसादि जिनि पाइआ नामु ॥
 नानक आइआ सो परवानु ॥४॥२०॥३३॥ भैरउ महला ५ ॥ संत की निंदा जोनी भवना ॥ संत की
 निंदा रोगी करना ॥ संत की निंदा दूख सहाम ॥ डानु दैत निंदक कउ जाम ॥१॥ संतसंगि करहि जो
 बादु ॥ तिन निंदक नाही किछु सादु ॥२॥ रहाउ ॥ भगत की निंदा कंधु छेदावै ॥ भगत की निंदा
 नरकु भुंचावै ॥ भगत की निंदा गरभ महि गलै ॥ भगत की निंदा राज ते टलै ॥२॥ निंदक की गति
 कतहू नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खाहि ॥ चोर जार जूआर ते बुरा ॥ अणहोदा भारु निंदकि सिरि धरा
 ॥३॥ पारब्रहम के भगत निरवैर ॥ सो निसतरै जो पूजै पैर ॥ आदि पुरखि निंदकु भोलाइआ ॥ नानक
 किरतु न जाइ मिटाइआ ॥४॥२१॥३४॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै बेद अरु नाद ॥ नामु
 हमारै पूरे काज ॥ नामु हमारै पूजा देव ॥ नामु हमारै गुर की सेव ॥१॥ गुरि पूरै दृढ़िओ हरि
 नामु ॥ सभ ते ऊतमु हरि हरि कामु ॥२॥ रहाउ ॥ नामु हमारै मजन इसनानु ॥ नामु हमारै पूरन
 दानु ॥ नामु लैत ते सगल पवीत ॥ नामु जपत मेरे भाई मीत ॥२॥ नामु हमारै सउण संजोग ॥
 नामु हमारै तृपति सुभोग ॥ नामु हमारै सगल आचार ॥ नामु हमारै निरमल बिउहार ॥३॥ जा कै
 मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ सगल जना की हरि हरि टेक ॥ मनि तनि नानक हरि गुण गाउ ॥ साधसंगि

ਜਿਸੁ ਦੇਵੈ ਨਾਉ ॥੪॥੨੨॥੩੫॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਿਰਧਨ ਕਤ ਤੁਮ ਦੇਵਹੁ ਧਨਾ ॥ ਅਨਿਕ ਪਾਪ ਜਾਹਿ
 ਨਿਰਮਲ ਮਨਾ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ॥ ਭਗਤ ਅਪੁਨੇ ਕਤ ਦੇਵਹੁ ਨਾਮ ॥੧॥ ਸਫਲ ਸੇਵਾ ਗੋਪਾਲ
 ਰਾਇ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਤੇ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਰੋਗੀ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਖੰਡਹੁ ਰੋਗੁ ॥
 ਦੁਖੀਏ ਕਾ ਮਿਟਾਵਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸੋਗੁ ॥ ਨਿਥਾਵੇ ਕਤ ਤੁਮ੍ਹ ਥਾਨਿ ਬੈਠਾਵਹੁ ॥ ਦਾਸ ਅਪਨੇ ਕਤ ਭਗਤੀ ਲਾਵਹੁ ॥੨॥
 ਨਿਮਾਣੇ ਕਤ ਪ੍ਰਭ ਦੇਤੋ ਮਾਨੁ ॥ ਮੂੜ ਸੁਗਧੁ ਹੋਇ ਚਤੁਰ ਸੁਗਿਆਨੁ ॥ ਸਗਲ ਭਇਆਨ ਕਾ ਭਤ ਨਸੈ ॥ ਜਨ
 ਅਪਨੇ ਕੈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਬਸੈ ॥੩॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਸੂਖ ਨਿਧਾਨ ॥ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮ ॥ ਕਰਿ
 ਕਿਰਿਪਾ ਸੰਤ ਟਹਲੈ ਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥੨੩॥੩੬॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ
 ਹਰਿ ਮਨਿ ਕਵਸੈ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ ਦੁਰਤੁ ਸਭੁ ਨਸੈ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਹੋਇ ਏਕ
 ਪਰੀਤਿ ॥੧॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲੁ ਤਹਾ ਕਾ ਨਾਉ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇਵਲ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ
 ਜਨਮ ਮਣਣੁ ਰਹੈ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ ਜਮੁ ਕਿਛੁ ਨ ਕਹੈ ॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਹੋਇ ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ
 ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀ ॥੨॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਕਾ ਨਿਹਚਲ ਆਸਨੁ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ ਪਾਪ ਬਿਨਾਸਨੁ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ
 ਨਿਰਮਲ ਕਥਾ ॥ ਸੰਤਸੰਗਿ ਹਉਮੈ ਦੁਖ ਨਸਾ ॥੩॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਕਾ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸੁ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਮਹਿ ਹਰਿ
 ਗੁਣਤਾਸੁ ॥ ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਠਾਕੁਰ ਬਿਸ਼ਾਮੁ ॥ ਨਾਨਕ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਭਗਵਾਨੁ ॥੪॥੨੪॥੩੭॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਰੋਗੁ ਕਵਨੁ ਜਾਁ ਰਾਖੈ ਆਪਿ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਹੋਇ ਨ ਢੂਖੁ ਸੰਤਾਪੁ ॥ ਜਿਸੁ ਊਪਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਰਿਪਾ ਕਰੈ ॥ ਤਿਸੁ ਊਪਰ
 ਤੇ ਕਾਲੁ ਪਰਹੈ ॥੧॥ ਸਦਾ ਸਖਾਈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥ ਜਿਸੁ ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ਨਿਕਟਿ ਨ
 ਆਵੈ ਤਾ ਕੈ ਜਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਬ ਇਹੁ ਨ ਸੋ ਤਬ ਕਿਨਹਿ ਤਪਾਇਆ ॥ ਕਵਨ ਮੂਲ ਤੇ ਕਿਆ
 ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥ ਆਪਹਿ ਮਾਰਿ ਆਪਿ ਜੀਵਾਲੈ ॥ ਅਪਨੇ ਭਗਤ ਕਤ ਸਦਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ॥੨॥ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਣਹੁ
 ਤਿਸ ਕੈ ਹਾਥ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰੇ ਅਨਾਥ ਕੋ ਨਾਥ ॥ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਤਾ ਕਾ ਹੈ ਨਾਉ ॥ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਤਿਸ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਉ
 ॥੩॥ ਸੁਣਿ ਸੁਆਮੀ ਸੰਤਨ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਜੀਤ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨੁ ਤੁਮਰੈ ਪਾਸਿ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਤੇਰਾ ਸਭ ਤੁਝਾਹਿ ਧਿਆਏ

॥ करि किरपा नानक सुखु पाए ॥४॥२५॥३८॥ भैरउ महला ੫ ॥ तेरी टेक रहा कलि माहि ॥ तेरी
 टेक तेरे गुण गाहि ॥ तेरी टेक न पोहै कालु ॥ तेरी टेक बिनसै जंजालु ॥१॥ दीन दुनीआ तेरी टेक ॥
 सभ महि रविआ साहिबु एक ॥२॥ रहाउ ॥ तेरी टेक करउ आन्द ॥ तेरी टेक जपउ गुर मंत ॥ तेरी
 टेक तरीਐ भउ सागरु ॥ राखणहारु पूरा सुख सागरु ॥२॥ तेरी टेक नाही भउ कोइ ॥ अंतरजामी साचा
 सोइ ॥ तेरी टेक तेरा मनि ताणु ॥ ईहाँ ऊहाँ तू दीबाणु ॥३॥ तेरी टेक तेरा भरवासा ॥ सगल
 धिआवहि प्रभु गुणतासा ॥ जपि जपि अनदु करहि तेरे दासा ॥ सिमरि नानक साचे गुणतासा
 ॥४॥२६॥३६॥ भैरउ महला ੫ ॥ प्रथमे छोडी पराई निंदा ॥ उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥ लोभु
 मोहु सभु कीनो दूरि ॥ परम बैसनो प्रभु पेखि हजूरि ॥१॥ औसो तिआगी विरला कोइ ॥ हरि हरि नामु
 जपै जनु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ अह्नाबुधि का छोडिआ संगु ॥ काम क्रोध का उतरिआ रंगु ॥ नाम धिआए
 हरि हरि हरे ॥ साध जना कै संगि निसतरे ॥२॥ बैरी मीत होए संमान ॥ सरब महि पूरन भगवान ॥
 प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइਆ ॥ गुरि पूरै हरि नामु दृङ्गाइआ ॥३॥ करि किरपा जिसु राखै
 आपि ॥ सोई भगतु जपै नाम जाप ॥ मनि प्रगासु गुर ते मति लई ॥ कहु नानक ता की पूरी पई
 ॥४॥२७॥४०॥ भैरउ महला ੫ ॥ सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥ सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ सुखु
 नाही बहु देस कमाए ॥ सरब सुखा हरि हरि गुण गाए ॥१॥ सूख सहज आन्द लहहु ॥ साधसंगति
 पाईਐ वडभागी गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु ॥२॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता सुत बनिता ॥ बंधन
 करम धरम हउ करता ॥ बंधन काटनहारु मनि वसै ॥ तउ सुखु पावै निज घरि बसै ॥२॥ सभि
 जाचिक प्रभ देवनहार ॥ गुण निधान बेअंत अपार ॥ जिस नो करमु करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नामु
 तिनै जनि जपना ॥३॥ गुर अपने आगै अरदासि ॥ करि किरपा पुरख गुणतासि ॥ कहु नानक तुमरी
 सरणाई ॥ जित भावै तित रखहु गुसाई ॥४॥२८॥४१॥ भैरउ महला ੫ ॥ गुर मिलि तिआगिओ

दूजा भाउ ॥ गुरमुखि जपिओ हरि का नाउ ॥ बिसरी चिंत नामि रंगु लागा ॥ जनम जनम का सोइआ
 जागा ॥१॥ करि किरपा अपनी सेवा लाए ॥ साधू संगि सरब सुख पाए ॥२॥ रहाउ ॥ रोग दोख
 गुर सबदि निवारे ॥ नाम अउखधु मन भीतरि सारे ॥ गुर भेटत मनि भड़िआ अन्नद ॥ सरब निधान
 नाम भगवंत ॥२॥ जनम मरण की मिटी जम त्रास ॥ साधसंगति ऊंध कमल बिगास ॥ गुण गावत
 निहचलु बिस्राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥३॥ दुलभ देह आई परवानु ॥ सफल होई जपि हरि हरि
 नामु ॥ कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥ सासि गिरासि जपउ हरि हरी ॥४॥२६॥४२॥ भैरउ महला ५ ॥
 सभ ते ऊचा जा का नाउ ॥ सदा सदा ता के गुण गाउ ॥ जिसु सिमरत सगला दुखु जाइ ॥ सरब सूख
 वसहि मनि आइ ॥१॥ सिमरि मना तू साचा सोइ ॥ हलति पलति तुमरी गति होइ ॥२॥ रहाउ ॥
 पुरख निरंजन सिरजनहार ॥ जीअ जंत देवै आहार ॥ कोटि खते खिन बखसनहार ॥ भगति भाइ सदा
 निसतार ॥२॥ साचा धनु साची वडिआई ॥ गुर पूरे ते निहचल मति पाई ॥ करि किरपा जिसु
 राखनहारा ॥ ता का सगल मिटै अंधिआरा ॥३॥ पारब्रह्म सिउ लागो धिआन ॥ पूरन पूरि रहिओ
 निरबान ॥ भ्रम भउ मेटि मिले गोपाल ॥ नानक कउ गुर भए दड़िआल ॥४॥३०॥४३॥
 भैरउ महला ५ ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासु ॥ मिटहि कलेस सुख सहजि निवासु ॥ तिसहि
 परापति जिसु प्रभु देइ ॥ पूरे गुर की पाए सेव ॥१॥ सरब सुखा प्रभ तेरो नाउ ॥ आठ पहर मेरे
 मन गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥ हरि का नामु मनि वसाए ॥ आवण जाण रहे
 हरि धिआइ ॥ भगति भाइ प्रभ की लिव लाइ ॥२॥ बिनसे काम क्रोध अह्वाकार ॥ तूटे माइआ मोह
 पिआर ॥ प्रभ की टेक रहै दिनु राति ॥ पारब्रह्मु करे जिसु दाति ॥३॥ करन करावनहार सुआमी
 ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाइ
 ॥४॥३१॥४४॥ भैरउ महला ५ ॥ लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥ हरि

सिमरनु छाडि परम गति चाहै ॥ मूल बिना साखा कत आहै ॥੧॥ गुरु गोविंदु मेरे मन धिआडि ॥
 जनम जनम की मैलु उतारै बंधन काटि हरि संगि मिलाइ ॥੧॥ रहाउ ॥ तीरथि नाइ कहा सुचि
 सैलु ॥ मन कउ विआपै हउमै मैलु ॥ कोटि करम बंधन का मूलु ॥ हरि के भजन बिनु बिरथा पूलु ॥੨॥
 बिनु खाए बूझै नही भूख ॥ रोगु जाइ ताँ उतरहि दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोहि बिआपिआ ॥ जिनि प्रभि
 कीना सो प्रभु नही जापिआ ॥੩॥ धनु धनु साध धनु हरि नाउ ॥ आठ पहर कीरतनु गुण गाउ ॥ धनु
 हरि भगति धनु करणैहार ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख अपार ॥੪॥੩੨॥੪੫॥ भैरउ महला ੫ ॥ गुर
 सुप्रसन्न होए भउ गए ॥ नाम निरंजन मन महि लए ॥ दीन दिआल सदा किरपाल ॥ बिनसि गए
 सगले जंगल ॥੧॥ सूख सहज आनन्द घने ॥ साधसंगि मिटे भै भरमा अंमृतु हरि हरि रसन भने
 ॥੧॥ रहाउ ॥ चरन कमल सित लागो हेतु ॥ खिन महि बिनसिओ महा परेतु ॥ आठ पहर हरि हरि
 जपु जापि ॥ राखनहार गोविद गुर आपि ॥੨॥ अपने सेवक कउ सदा प्रतिपारै ॥ भगत जना के सास
 निहारै ॥ मानस की कहु केतक बात ॥ जम ते राखै दे करि हाथ ॥੩॥ निरमल सोभा निरमल रीति ॥
 पारब्रहमु आइआ मनि चीति ॥ करि किरपा गुरि दीनो दानु ॥ नानक पाइआ नामु निधानु
 ॥੪॥੩੩॥੪੬॥ भैरउ महला ੫ ॥ करण कारण समरथु गुरु मेरा ॥ जीअ प्राण सुखदाता नेरा ॥
 भै भंजन अबिनासी राइ ॥ दरसनि देखिअै सभु दुखु जाइ ॥੧॥ जत कत पेखउ तेरी सरणा ॥ बलि
 बलि जाई सतिगुर चरणा ॥੧॥ रहाउ ॥ पूरन काम मिले गुरदेव ॥ सभि फलदाता निरमल सेव
 ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ राम नामु रिद दीओ निवास ॥੨॥ सदा अनन्दु नाही किछु सोगु ॥
 दूखु दरदु नह बिआपै रोगु ॥ सभु किछु तेरा तू करणैहारु ॥ पारब्रहम गुर अगम अपार ॥੩॥
 निरमल सोभा अचरज बाणी ॥ पारब्रहम पूरन मनि भाणी ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सोडि ॥
 नानक सभु किछु प्रभ ते होइ ॥੪॥੩੪॥੪੭॥ भैरउ महला ੫ ॥ मनु तनु राता राम रंगि चरणे ॥

सरब मनोरथ पूर्न करणे ॥ आठ पहर गावत भगवंतु ॥ सतिगुरि दीनो पूरा मंतु ॥੧॥ सो वडभागी
 जिसु नामि पिआरु ॥ तिस कै संगि तरै संसारु ॥੧॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी जि सिमरै एक ॥ सो धनवंता
 जिसु बुधि बिबेक ॥ सो कुलवंता जि सिमरै सुआमी ॥ सो पतिवंता जि आपु पछानी ॥੨॥ गुर परसादि
 परम पदु पाइਆ ॥ गुण गुपाल दिनु रैनि धिआइआ ॥ तूटे बंधन पूरन आसा ॥ हरि के चरण रिद
 माहि निवासा ॥੩॥ कहु नानक जा के पूरन करमा ॥ सो जनु आइआ प्रभ की सरना ॥ आपि पवितु
 पावन सभि कीने ॥ राम रसाइणु रसना चीने ॥੪॥੩੫॥੪੮॥ भैरउ महला ੫ ॥ नामु लैत किछु
 बिघनु न लागै ॥ नामु सुणत जमु दूरहु भागै ॥ नामु लैत सभ दूखह नासु ॥ नामु जपत हरि चरण
 निवासु ॥੧॥ निरबिघन भगति भजु हरि हरि नाउ ॥ रसकि रसकि हरि के गुण गाउ ॥੧॥ रहाउ ॥
 हरि सिमरत किछु चाखु न जोहै ॥ हरि सिमरत दैत देउ न पोहै ॥ हरि सिमरत मोहु मानु न बधै ॥ हरि
 सिमरत गरभ जोनि न रुधै ॥੨॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरनु बहु माहि इकेला ॥
 जाति अजाति जपै जनु कोइ ॥ जो जापै तिस की गति होइ ॥੩॥ हरि का नामु जपीਐ साधसंगि ॥ हरि
 के नाम का पूरन रंगु ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारि ॥ सासि सासि हरि देहु चितारि ॥੪॥੩੬॥੪੯॥
 भैरउ महला ੫ ॥ आपे सासतु आपे बेदु ॥ आपे घटि घटि जाणै भेदु ॥ जोति सरूप जा की सभ वथु ॥
 करण कारण पूरन समरथु ॥੧॥ प्रभ की ओट गहहु मन मेरे ॥ चरन कमल गुरमुखि आराधहु दुसमन
 दूखु न आवै नेरे ॥੧॥ रहाउ ॥ आपे वणु तृणु तृभवण सारु ॥ जा कै सूति परोइआ संसारु ॥ आपे
 सिव सकती संजोगी ॥ आपि निरबाणी आपे भोगी ॥੨॥ जत कत पेखउ तत तत सोइ ॥ तिसु बिनु
 दूजा नाही कोइ ॥ सागरु तरीਐ नाम कै रंगि ॥ गुण गावै नानकु साधसंगि ॥੩॥ मुकति भुगति
 जुगति वसि जा कै ॥ ऊणा नाही किछु जन ता कै ॥ करि किरपा जिसु होइ सुप्रसन्न ॥ नानक दास सई
 जन धन ॥੪॥੩੭॥੫੦॥ भैरउ महला ੫ ॥ भगता मनि आनन्दु गोबिंद ॥ असथिति भए बिनसी

सभ चिंद ॥ भै भ्रम बिनसि गए खिन माहि ॥ पारब्रह्मु वसिआ मनि आइ ॥੧॥ राम राम संत
 सदा सहाइ ॥ घरि बाहरि नाले परमेसरु रवि रहिआ पूरन सभ ठाइ ॥੨॥ रहाउ ॥ धनु मालु
 जोबनु जुगति गोपाल ॥ जीअ प्राण नित सुख प्रतिपाल ॥ अपने दास कउ दे राखै हाथ ॥ निमख न
 छोडै सद ही साथ ॥੩॥ हरि सा प्रीतमु अवरु न कोइ ॥ सारि समाले साचा सोइ ॥ मात पिता सुत
 बंधु नराइणु ॥ आदि जुगादि भगत गुण गाइणु ॥੪॥੩੮॥੫੧॥
 भैरउ महला ੫ ॥ भै कउ भउ पड़िआ सिमरत हरि नाम ॥ सगल बिआधि मिटी तूहु गुण की दास
 के होए पूरन काम ॥੫॥ रहाउ ॥ हरि के लोक सदा गुण गावहि तिन कउ मिलिआ पूरन धाम ॥
 जन का दरसु बाँछै दिन राती होइ पुनीत धरम राइ जाम ॥੬॥ काम क्रोध लोभ मद निंदा
 साधसंगि मिटिआ अभिमान ॥ ऐसे संत भेटहि वडभागी नानक तिन कै सद कुरबान ॥੭॥੩੯॥੫੨॥
 भैरउ महला ੫ ॥ पंच मजमी जो पंचन राखै ॥ मिथिआ रसना नित उठि भाखै ॥ चक्र बणाइ
 करै पाखंड ॥ झुरि झुरि पचै जैसे तृअ रंड ॥੮॥ हरि के नाम बिना सभ झूठु ॥ बिनु गुर पूरे
 मुकति न पाईਐ साची दरगहि साकत मूठु ॥੯॥ रहाउ ॥ सोई कुचीलु कुदरति नही जानै ॥
 लीपिअै थाइ न सुचि हरि मानै ॥ अंतरु मैला बाहरु नित धोवै ॥ साची दरगहि अपनी पति खोवै
 ॥੧॥ माइआ कारणि करै उपाउ ॥ कबहि न धालै सीधा पाउ ॥ जिनि कीआ तिसु चीति न
 आणै ॥ कूड़ी कूड़ी मुखहु वखाणै ॥੧॥ जिस नो करमु करे करतारु ॥ साधसंगि होइ तिसु बिउहारु
 ॥ हरि नाम भगति सिउ लागा रंगु ॥ कहु नानक तिसु जन नही भंगु ॥੧॥੪੦॥੫੩॥
 भैरउ महला ੫ ॥ निंदक कउ फिटके संसारु ॥ निंदक का झूठा बिउहारु ॥ निंदक का मैला
 आचारु ॥ दास अपुने कउ राखनहारु ॥੨॥ निंदकु मुआ निंदक कै नालि ॥ पारब्रह्म परमेसरि

जन राखे निंदक कै सिरि कड़किओ कालु ॥१॥ रहाउ ॥ निंदक का कहिआ कोइ न मानै ॥ निंदक
 झूठु बोलि पछुताने ॥ हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि ॥ निंदक कउ दई छोडै नाहि ॥२॥ हरि
 का दासु किछु बुरा न मागै ॥ निंदक कउ लागै दुख साँगै ॥ बगुले जित रहिआ पंख पसारि ॥
 मुख ते बोलिआ ताँ कढिआ बीचारि ॥३॥ अंतरजामी करता सोइ ॥ हरि जनु करै सु निहचलु
 होइ ॥ हरि का दासु साचा दरबारि ॥ जन नानक कहिआ ततु बीचारि ॥४॥४१॥५४॥
 भैरउ महला ५ ॥ दुइ कर जोरि करउ अरदासि ॥ जीउ पिंडु धनु तिस की रासि ॥ सोई मेरा
 सुआमी करनैहारु ॥ कोटि बार जाई बलिहार ॥१॥ साधू धूरि पुनीत करी ॥ मन के बिकार
 मिटहि प्रभ सिमरत जनम जनम की मैलु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै गृह महि सगल निधान ॥
 जा की सेवा पाईਐ मानु ॥ सगल मनोरथ पूरनहार ॥ जीअ प्रान भगतन आधार ॥२॥ घट
 घट अंतरि सगल प्रगास ॥ जपि जपि जीवहि भगत गुणतास ॥ जा की सेव न बिरथी जाइ ॥ मन
 तन अंतरि एकु धिआइ ॥३॥ गुर उपदेसि दइआ संतोखु ॥ नामु निधानु निरमलु इहु थोकु ॥
 करि किरपा लीजै लड़ि लाइ ॥ चरन कमल नानक नित धिआइ ॥४॥४२॥५५॥
 भैरउ महला ५ ॥ सतिगुर अपुने सुनी अरदासि ॥ कारजु आइआ सगला रासि ॥ मन तन
 अंतरि प्रभू धिआइआ ॥ गुर पूरे डरु सगल चुकाइआ ॥१॥ सभ ते वड समरथ गुरदेव
 ॥ सभि सुख पाई तिस की सेव ॥ रहाउ ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस का अमरु न मेटै
 कोइ ॥ पारब्रह्मु परमेसरु अनूपु ॥ सफल मूरति गुरु तिस का रूपु ॥२॥ जा कै अंतरि बसै
 हरि नामु ॥ जो जो पेखै सु ब्रह्म गिआनु ॥ बीस बिसुए जा कै मनि परगासु ॥ तिसु जन कै पारब्रह्म का
 निवासु ॥३॥ तिसु गुर कउ सद करी नमसकार ॥ तिसु गुर कउ सद जाउ बलिहार ॥ सतिगुर
 के चरन धोइ धोइ पीवा ॥ गुर नानक जपि जपि सद जीवा ॥४॥४३॥५६॥

ਰਾਗੁ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ਪੜਤਾਲ ਘਰੁ ੩

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਰਤਿਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਕ੃ਪਾਲ ਕਵਨ ਗੁਨ ਗਨੀ ॥ ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਬਹੁ ਤਰੰਗ ਸਰਬ ਕੋ ਧਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਅਨਿਕ ਗਿਆਨ ਅਨਿਕ ਧਿਆਨ ਅਨਿਕ ਜਾਪ ਜਾਪ ਤਾਪ ॥ ਅਨਿਕ ਗੁਨਿਤ ਧੁਨਿਤ ਲਲਿਤ ਅਨਿਕ ਧਾਰ
ਮੁਨੀ ॥੨॥ ਅਨਿਕ ਨਾਦ ਅਨਿਕ ਬਾਜ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਅਨਿਕ ਸ਼ਾਦ ਅਨਿਕ ਦੋਖ ਅਨਿਕ ਰੋਗ ਮਿਟਹਿ ਜਸ
ਸੁਨੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਵ ਅਪਾਰ ਦੇਵ ਤਟਹ ਖਟਹ ਬਰਤ ਪ੍ਰਯਾ ਗਵਨ ਭਵਨ ਜਾਤ ਕਰਨ ਸਗਲ ਫਲ ਪੁਨੀ
॥੨॥੧॥੫੭॥੮॥੨੧॥੭॥੫੭॥੬੩॥

ਭੈਰਤ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਆਤਮ ਮਹਿ ਰਾਮੁ ਰਾਮ ਮਹਿ ਆਤਮੁ ਚੀਨਸਿ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀ ਦੁਖ ਕਾਟੈ
ਛਤ ਮਾਰਾ ॥੧॥ ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਰੋਗ ਬੁਰੇ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾਂ ਤਹ ਏਕਾ ਬੇਦਨ ਆਪੇ ਬਖਸੈ ਸਬਦਿ ਧੁਰੇ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੇ ਪਰਖੇ ਪਰਖਣਹਾਰੈ ਬਹੁਰਿ ਸੂਲਾਕੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਨਦਰਿ ਭਈ ਗੁਰਿ ਮੇਲੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਾ
ਸਚੁ ਸੋਈ ॥੨॥ ਪਤਣੁ ਪਾਣੀ ਕੈਸਤੱਤੁ ਰੋਗੀ ਰੋਗੀ ਧਰਤਿ ਸਭੋਗੀ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਮਾਇਆ ਦੇਹ ਸਿ ਰੋਗੀ
ਰੋਗੀ ਕੁਟੰਬ ਸੰਜੋਗੀ ॥੩॥ ਰੋਗੀ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਸਰੁਦਾ ਰੋਗੀ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਪਦੁ ਚੀਨਿ ਭਏ ਸੇ
ਮੁਕਤੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥੪॥ ਰੋਗੀ ਸਾਤ ਸਮੁੰਦ ਸਨਦੀਆ ਖੰਡ ਪਤਾਲ ਸਿ ਰੋਗੀ ਭਰੇ ॥ ਹਰਿ ਕੇ
ਲੋਕ ਸਿ ਸਾਚਿ ਸੁਹੇਲੇ ਸਰਬੀ ਥਾਈ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੫॥ ਰੋਗੀ ਖਟ ਦਰਸਨ ਭੇਖਧਾਰੀ ਨਾਨਾ ਹਠੀ ਅਨੇਕਾ ॥
ਬੈਦ ਕਤੇਬ ਕਰਹਿ ਕਹ ਬਪੁਰੇ ਨਹ ਬੂਜਾਹਿ ਇਕ ਏਕਾ ॥੬॥ ਮਿਠ ਰਸੁ ਖਾਇ ਸੁ ਰੋਗੀ ਭਰੀਜੈ ਕੰਦ ਮੂਲਿ ਸੁਖੁ
ਨਾਹੀ ॥ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਚਲਹਿ ਅਨ ਮਾਰਗਿ ਅੰਤ ਕਾਲਿ ਪਛੁਤਾਹੀ ॥੭॥ ਤੀਰਥਿ ਭਰਮੈ ਰੋਗੁ ਨ ਛੂਟਸਿ
ਪਡਿਆ ਬਾਦੁ ਬਿਬਾਦੁ ਭਿਆ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਰੋਗੁ ਸੁ ਅਧਿਕ ਵੱਡੇਰਾ ਮਾਇਆ ਕਾ ਸੁਹਤਾਜੁ ਭਿਆ ॥੮॥
ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਾ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੈ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਤਿਸੁ ਰੋਗੁ ਗਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਨ ਅਨਦਿਨੁ ਨਿਰਮਲ

ਜਿਨ ਕਤ ਕਰਮਿ ਨੀਸਾਣੁ ਪਇਆ ॥੬॥੧॥

ਪੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੂ ੨

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤਿਨਿ ਕਰਤੈ ਝਿਕੁ ਚਲਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਭੂਲੇ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਬੁੜਾਇਆ ॥ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤਾ ਕਰਦਾ ਆਇਆ ॥੧॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮੈਰੈ ਅੰਤਰਿ ਧਿਆਨੁ ॥ ਹਤ ਕਵਹੁ ਨ
ਛੋਡਤ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਪੜਣ ਪਠਾਇਆ ॥ ਲੈ ਪਾਟੀ ਪਾਥੇ ਕੈ ਆਇਆ ॥
ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਹ ਪੜਤ ਅਚਾਰ ॥ ਮੇਰੀ ਪਟੀਆ ਲਿਖਿ ਟੇਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਮੁਗਰਿ ॥੩॥ ਪੁਤ੍ਰ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਸਿਤ
ਕਹਿਆ ਮਾਇ ॥ ਪਰਵਿਰਤਿ ਨ ਪੜਹੁ ਰਹੀ ਸਮਝਾਇ ॥ ਨਿਰਭਤ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਜੀਤ ਮੈਰੈ ਨਾਲਿ ॥ ਜੇ ਹਰਿ
ਛੋਡਤ ਤਤ ਕੁਲਿ ਲਾਗੈ ਗਾਲਿ ॥੪॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦਿ ਸਭਿ ਚਾਟੜੇ ਵਿਗਾਰੇ ॥ ਹਮਾਰਾ ਕਹਿਆ ਨ ਸੁਣੈ ਆਪਣੇ
ਕਾਰਜ ਸਵਾਰੇ ॥ ਸਭ ਨਗਰੀ ਮਹਿ ਭਗਤਿ ਦ੃ੜਾਈ ॥ ਦੁਸਟ ਸਭਾ ਕਾ ਕਿਛੁ ਨ ਵਸਾਈ ॥੫॥ ਸੰਡੈ ਮਰਕੈ
ਕੀਈ ਪ੍ਰਕਾਰ ॥ ਸਭੇ ਦੈਤ ਰਹੇ ਝਾਖ ਮਾਰਿ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਪਤਿ ਰਾਖੈ ਸੋਈ ॥ ਕੀਤੇ ਕੈ ਕਹਿਐ ਕਿਆ ਹੋਈ
॥੬॥ ਕਿਰਤ ਸੰਜੋਗੀ ਦੈਤਿ ਰਾਜੁ ਚਲਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਨ ਬੂੜੈ ਤਿਨਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥ ਪੁਤ੍ਰ ਪ੍ਰਹਲਾਦ
ਸਿਤ ਵਾਦੁ ਰਚਾਇਆ ॥ ਅਂਧਾ ਨ ਬੂੜੈ ਕਾਲੁ ਨੇਡੈ ਆਇਆ ॥੭॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਕੋਠੇ ਵਿਚਿ ਰਾਖਿਆ ਬਾਰਿ ਦੀਆ
ਤਾਲਾ ॥ ਨਿਰਭਤ ਬਾਲਕੁ ਮੂਲਿ ਨ ਝਰੀ ਮੈਰੈ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥ ਕੀਤਾ ਹੋਵੈ ਸਰੀਕੀ ਕਰੈ ਅਨਹੋਦਾ
ਨਾਤ ਧਰਾਇਆ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੂਂ ਆਇ ਪਹੁਤਾ ਜਨ ਸਿਤ ਵਾਦੁ ਰਚਾਇਆ ॥੮॥ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਹਲਾਦ
ਸਿਤ ਗੁਰਜ ਤਠਾਈ ॥ ਕਹਾਁ ਤੁਸਾਰਾ ਜਗਦੀਸ ਗੁਸਾਈ ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ
ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੯॥ ਥੰਮੁ ਉਪਾਡਿ ਹਰਿ ਆਪੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਅਛਕਾਰੀ ਦੈਤੁ ਮਾਰਿ ਪਚਾਇਆ ॥ ਭਗਤਾ ਮਨਿ
ਆਨਨਦੁ ਵਜੀ ਵਧਾਈ ॥ ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕਤ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥੧੦॥ ਜ਼ਮਣੁ ਮਰਣਾ ਮੋਹੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਆਵਣੁ
ਯਾਣਾ ਕਰਤੈ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਕੈ ਕਾਰਜਿ ਹਰਿ ਆਪੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਭਗਤਾ ਕਾ ਬੋਲੁ ਆਗੈ
ਆਇਆ ॥੧੧॥ ਦੇਵ ਕੁਲੀ ਲਖਿਮੀ ਕਤ ਕਰਹਿ ਜੈਕਾਰੁ ॥ ਮਾਤਾ ਨਰਸਿੰਘ ਕਾ ਰੂਪੁ ਨਿਵਾਰੁ ॥ ਲਖਿਮੀ

ਭਤ ਕਰੈ ਨ ਸਾਕੈ ਜਾਇ ॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਜਨੁ ਚਰਣੀ ਲਾਗਾ ਆਇ ॥੧੧॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਵੂਡਾਇਆ ॥
 ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ਝੂਠੀ ਸਭ ਮਾਇਆ ॥ ਲੋਭੀ ਨਰ ਰਹੇ ਲਪਟਾਇ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ
 ॥੧੨॥ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਭੁ ਕੋ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥ ਸੇ ਪਰਖਾਣੁ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਭਗਤਾ ਕਾ
 ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕਰਦਾ ਆਇਆ ॥ ਕਰਤੈ ਅਪਣਾ ਰੂਪੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥੧੩॥੧॥੨॥ ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ
 ਤੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਉਮੈ ਤ੃ਸਨ ਬੁੜਾਈ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਹੂਦੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਈ
 ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਦੀਨ ਜਨੁ ਮਾਂਗੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਉਧਾਰੇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਤ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਰਤੀ ਅੰਚ ਦੂਖ ਨ ਲਾਈ ॥ ਆਪਿ ਤਰਹਿ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰਹਿ
 ਜੋ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥ ਭਗਤਾ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖਹਿ ਤ੍ਰ ਆਪੇ ਏਹ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ
 ਦੁਖ ਕਾਟਹਿ ਦੁਬਿਧਾ ਰਤੀ ਨ ਰਾਈ ॥੩॥ ਹਮ ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਕਿਛੁ ਬੁੜਾਹਿ ਨਾਹੀ ਤ੍ਰ ਆਪੇ ਦੇਹਿ ਬੁੜਾਈ ॥ ਜੋ
 ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥੪॥ ਜਗਤੁ ਤਥਾਵਿ ਤੁਧੁ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ਭੁੰਡੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈ ॥
 ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜ੍ਰਾਤੈ ਹਾਰਿਆ ਸਬਦੈ ਸੁਰਤਿ ਨ ਪਾਈ ॥੫॥ ਮਨਮੁਖਿ ਮਰਹਿ ਤਿਨ ਕਿਛੂ ਨ ਸ੍ਰੂੜੈ ਦੁਰਮਤਿ
 ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਾਰਾ ॥ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਨ ਪਾਵਹਿ ਕਬ ਹੀ ਝੂਬਿ ਮੁਏ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਿਰਿ ਭਾਰਾ ॥੬॥ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ
 ਰਤੇ ਜਨ ਸਾਚੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤੀ ਸਾਚਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥੭॥ ਤ੍ਰ
 ਆਪਿ ਨਿਰਮਲੁ ਤੇਰੇ ਜਨ ਹੈ ਨਿਰਮਲ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਰਾਮ ਨਾਮੁ
 ਤਹਿ ਧਾਰੇ ॥੮॥੨॥੩॥

ਭੈਰਤ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੨

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸੋਈ ਵਡ ਰਾਜਾ ॥ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਤਿਸੁ ਪੂਰੇ ਕਾਜਾ ॥ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਤਿਨਿ ਕੋਟਿ ਧਨ
 ਪਾਏ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜਨਮੁ ਬਿਰਥਾ ਜਾਏ ॥੧॥ ਤਿਸੁ ਸਾਲਾਹੀ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥ ਸੋ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਸੁ
 ਗੁਰ ਮਸਤਕਿ ਹਾਥੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਤਿਸੁ ਕੋਟ ਕਈ ਸੈਨਾ ॥ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਤਿਸੁ ਸਹਜ

सुखैना ॥ जिसु नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥ नाम बिना धिगु जीवणु मूआ ॥२॥ जिसु नामु रिदै सो
 जीवन मुकता ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सभ ही जुगता ॥ जिसु नामु रिदै तिनि नउ निधि पाई ॥ नाम
 बिना भ्रमि आवै जाई ॥३॥ जिसु नामु रिदै सो वेपरवाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सद ही लाहा ॥
 जिसु नामु रिदै तिसु वड परवारा ॥ नाम बिना मनमुख गावारा ॥४॥ जिसु नामु रिदै तिसु निहचल
 आसनु ॥ जिसु नामु रिदै तिसु तखति निवासनु ॥ जिसु नामु रिदै सो साचा साहु ॥ नामहीण नाही
 पति वेसाहु ॥५॥ जिसु नामु रिदै सो सभ महि जाता ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु बिधाता ॥ जिसु नामु
 रिदै सो सभ ते ऊचा ॥ नाम बिना भ्रमि जोनी मूचा ॥६॥ जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि पहारा ॥ जिसु नामु
 रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु परवाणु ॥ नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥७॥
 तिनि नामु पाइआ जिसु भइओ कृपाल ॥ साधसंगति महि लखे गोपाल ॥ आवण जाण रहे सुखु
 पाइआ ॥ कहु नानक ततै ततु मिलाइआ ॥८॥१॥४॥ भैरउ महला ५ ॥ कोटि बिसन कीने अवतार
 ॥ कोटि ब्रह्मंड जा के ध्रमसाल ॥ कोटि महेस उपाइ समाए ॥ कोटि ब्रह्मे जगु साजण लाए ॥१॥ ऐसो
 धणी गुविंदु हमारा ॥ बरनि न साकउ गुण बिसथारा ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि माइआ जा कै सेवकाइ ॥
 कोटि जीअ जा की सिहजाइ ॥ कोटि उपारजना तैरै अंगि ॥ कोटि भगत बसत हरि संगि ॥२॥ कोटि
 छत्रपति करत नमसकार ॥ कोटि इंद्र ठाढे है दुआर ॥ कोटि बैकुंठ जा की दृसठी माहि ॥ कोटि नाम
 जा की कीमति नाहि ॥३॥ कोटि पूरीअत है जा कै नाद ॥ कोटि अखारे चलित बिसमाद ॥ कोटि सकति
 सिव आगिआकार ॥ कोटि जीअ देवै आधार ॥४॥ कोटि तीरथ जा के चरन मझार ॥ कोटि पवित्र
 जपत नाम चार ॥ कोटि पूजारी करते पूजा ॥ कोटि बिसथारनु अवरु न दूजा ॥५॥ कोटि महिमा जा की
 निरमल ह्वास ॥ कोटि उसतति जा की करत ब्रह्मंस ॥ कोटि परलउ ओपति निमख माहि ॥ कोटि गुणा
 तेरे गणे न जाहि ॥६॥ कोटि गिआनी कथहि गिआनु ॥ कोटि धिआनी धरत धिआनु ॥ कोटि तपीसर

तप ही करते ॥ कोटि मुनीसर मुोनि महि रहते ॥੭॥ अविगत नाथु अगोचर सुआमी ॥ पूरि रहिआ
 घट अंतरजामी ॥ जत कत देखउ तेरा वासा ॥ नानक कउ गुरि कीओ प्रगासा ॥੮॥੨॥੫॥
 भैरउ महला ੫ ॥ सतिगुरि मो कउ कीनो दानु ॥ अमोल रतनु हरि दीनो नामु ॥ सहज बिनोद चोज
 आनन्ता ॥ नानक कउ प्रभु मिलिओ अचिंता ॥੯॥ कहु नानक कीरति हरि साची ॥ बहुरि बहुरि तिसु
 संगि मनु राची ॥੧॥ रहाउ ॥ अचिंत हमारै भोजन भाउ ॥ अचिंत हमारै लीचै नाउ ॥ अचिंत हमारै
 सबदि उधार ॥ अचिंत हमारै भरे भंडार ॥੨॥ अचिंत हमारै कारज पूरे ॥ अचिंत हमारै लथे विसूरे
 ॥ अचिंत हमारै बैरी मीता ॥ अचिंतो ही इहु मनु वसि कीता ॥੩॥ अचिंत प्रभू हम कीआ दिलासा ॥
 अचिंत हमारी पूर्न आसा ॥ अचिंत हमा कउ सगल सिधाँतु ॥ अचिंतु हम कउ गुरि दीनो मंतु ॥੪॥
 अचिंत हमारे बिनसे बैर ॥ अचिंत हमारे मिटे अंधेर ॥ अचिंतो ही मनि कीरतनु मीठा ॥ अचिंतो ही
 प्रभु घटि घटि डीठा ॥੫॥ अचिंत मिटिओ है सगलो भरमा ॥ अचिंत वसिओ मनि सुख बिस्रामा ॥
 अचिंत हमारै अनहत वाजै ॥ अचिंत हमारै गोबिंदु गाजै ॥੬॥ अचिंत हमारै मनु पतीआना ॥ निहचल
 धनी अचिंतु पछाना ॥ अचिंतो उपजिओ सगल बिबेका ॥ अचिंत चरी हथि हरि हरि टेका ॥੭॥
 अचिंत प्रभू धुरि लिखिआ लेखु ॥ अचिंत मिलिओ प्रभु ठाकुरु एकु ॥ चिंत अचिंता सगली गई ॥ प्रभ
 नानक नानक नानक मई ॥੮॥੩॥੬॥

भैरउ बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ घर ੧

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਇਹੁ ਧਨੁ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਉ ॥ ਗਾਂਠਿ ਨ ਬਾਧਉ ਬੇਚਿ ਨ ਖਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਉ ਮੇਰੇ ਖੇਤੀ ਨਾਉ ਮੇਰੇ
 ਬਾਰੀ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰਉ ਜਨੁ ਸਰਨਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥ ਨਾਉ ਮੇਰੇ ਮਾਇਆ ਨਾਉ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੰਜੀ ॥ ਤੁਮਹਿ ਛੋਡਿ ਜਾਨਤ
 ਨਹੀ ਟ੍ਰੂਜੀ ॥੨॥ ਨਾਉ ਮੇਰੇ ਬੰਧਿਪ ਨਾਉ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਨਾਉ ਮੇਰੇ ਸਂਗਿ ਅੰਤਿ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੩॥ ਮਾਇਆ
 ਮਹਿ ਜਿਸੁ ਰਖੈ ਉਦਾਸੁ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਹਉ ਤਾ ਕੋ ਦਾਸੁ ॥੪॥੧॥ ਨਾਂਗੇ ਆਵਨੁ ਨਾਂਗੇ ਜਾਨਾ ॥ ਕੋਇ ਨ ਰਹਿਵੈ

राजा राना ॥१॥ रामु राजा नउ निधि मेरै ॥ संपै हेतु कलतु धनु तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ आवत संग
 न जात संगाती ॥ कहा भइओ दरि बाँधे हाथी ॥२॥ लम्का गढु सोने का भइआ ॥ मूरखु रावनु किआ
 ले गइआ ॥३॥ कहि कबीर किछु गुनु बीचारि ॥ चले जुआरी दुइ हथ झारि ॥४॥२॥ मैला
 ब्रह्मा मैला इंदु ॥ रवि मैला मैला है चंदु ॥१॥ मैला मलता इहु संसारु ॥ इकु हरि निरमलु जा
 का अंतु न पारु ॥१॥ रहाउ ॥ मैले ब्रह्मंडाइ कै ईस ॥ मैले निसि बासुर दिन तीस ॥२॥ मैला
 मोती मैला हीरु ॥ मैला पउनु पावकु अरु नीरु ॥३॥ मैले सिव संकरा महेस ॥ मैले सिध साधिक
 अरु भेख ॥४॥ मैले जोगी जंगम जटा सहेति ॥ मैली काइआ ह्वास समेति ॥५॥ कहि कबीर ते जन
 परवान ॥ निरमल ते जो रामहि जान ॥६॥३॥ मनु करि मका किबला करि देही ॥ बोलनहारु परम
 गुरु एही ॥१॥ कहु रे मुलाँ बाँग निवाज ॥ एक मसीति दसै दरवाज ॥१॥ रहाउ ॥ मिसिमिलि
 तामसु भरमु कदूरी ॥ भाखि ले पंचै होइ सबूरी ॥२॥ ह्विटू तुरक का साहिबु एक ॥ कह करै मुलाँ
 कह करै सेख ॥३॥ कहि कबीर हउ भइआ दिवाना ॥ मुसि मुसि मनूआ सहजि समाना ॥४॥४॥
 गंगा कै संगि सलिता बिगरी ॥ सो सलिता गंगा होइ निबरी ॥१॥ बिगरिओ कबीरा राम दुहाई ॥
 साचु भइओ अन कतहि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ चंदन कै संगि तरवरु बिगरिओ ॥ सो तरवरु चंदनु
 होइ निबरिओ ॥२॥ पारस कै संगि ताँबा बिगरिओ ॥ सो ताँबा कंचनु होइ निबरिओ ॥३॥ संतन
 संगि कबीरा बिगरिओ ॥ सो कबीरु रामै होइ निबरिओ ॥४॥५॥ माथे तिलकु हथि माला बानाँ ॥ लोगन
 रामु खिलउना जानाँ ॥१॥ जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥ लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥१॥ रहाउ ॥
 तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥ राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥२॥ सतिगुरु पूजउ सदा सदा
 मनावउ ॥ औसी सेव दरगह सुखु पावउ ॥३॥ लोगु कहै कबीरु बउराना ॥ कबीर का मरमु राम
 पहिचानाँ ॥४॥६॥ उलटि जाति कुल दोऊ बिसारी ॥ सुन्न सहज महि बुनत हमारी ॥१॥ हमरा झगरा

रहा न कोऊ ॥ पंडित मुलाँ छाडे दोऊ ॥१॥ रहाउ ॥ बुनि बुनि आप आपु पहिरावउ ॥ जह नही आपु
 तहा होइ गावउ ॥२॥ पंडित मुलाँ जो लिखि दीआ ॥ छाडि चले हम कछू न लीआ ॥३॥ रिदै
 डिखलासु निरखि ले मीरा ॥ आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥४॥७॥ निरधन आदरु कोई न देइ ॥ लाख
 जतन करै ओहु चिति न धरेइ ॥१॥ रहाउ ॥ जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥ आगे बैठा पीठि फिराइ
 ॥१॥ जउ सरधनु निरधन कै जाइ ॥ दीआ आदरु लीआ बुलाइ ॥२॥ निरधनु सरधनु दोनउ भाई
 ॥ प्रभ की कला न मेटी जाई ॥३॥ कहि कबीर निरधनु है सोई ॥ जा के हिरदै नामु न होई ॥४॥८॥
 गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥ इस देही कउ सिमरहि देव ॥ सो देही भजु
 हरि की सेव ॥१॥ भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु ॥ मानस जनम का एही लाहु ॥१॥ रहाउ ॥ जब लगु
 जरा रोगु नही आइआ ॥ जब लगु कालि ग्रसी नही काइआ ॥ जब लगु बिकल भई नही बानी ॥
 भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥२॥ अब न भजसि भजसि कब भाई ॥ आवै अंतु न भजिआ जाई ॥
 जो किछु करहि सोई अब सारु ॥ फिरि पछुताहु न पावहु पारु ॥३॥ सो सेवकु जो लाइआ सेव ॥ तिन ही
 पाए निरंजन देव ॥ गुर मिलि ता के खुले कपाट ॥ बहुरि न आवै जोनी बाट ॥४॥ इही तेरा अउसरु
 इह तेरी बार ॥ घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ कहत कबीरु जीति कै हारि ॥ बहु बिधि कहिओ पुकारि
 पुकारि ॥५॥१॥६॥ सिव की पुरी बसै बुधि सारु ॥ तह तुम् मिलि कै करहु बिचारु ॥ इत ऊत की
 सोझी परै ॥ कउनु करम मेरा करि करि मरै ॥१॥ निज पद ऊपरि लागो धिआनु ॥ राजा राम नामु मोरा
 ब्रह्म गिआनु ॥२॥ रहाउ ॥ मूल दुआरै बंधिआ बंधु ॥ रवि ऊपरि गहि राखिआ चंदु ॥ पछम दुआरै
 सूरजु तपै ॥ मेर डंड सिर ऊपरि बसै ॥२॥ पसचम दुआरे की सिल ओड़ ॥ तिह सिल ऊपरि खिड़की
 अउर ॥ खिड़की ऊपरि दसवा दुआरु ॥ कहि कबीर ता का अंतु न पारु ॥३॥२॥१०॥ सो मुलाँ
 जो मन सित लरै ॥ गुर उपदेसि काल सित जुरै ॥ काल पुरख का मरदै मानु ॥ तिसु मुला कउ

सदा सलामु ॥१॥ है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥ दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥१॥ रहाउ ॥ काजी सो
 जु काइआ बीचारै ॥ काइआ की अगनि ब्रह्मु परजारै ॥ सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ तिसु काजी कउ
 जरा न मरना ॥२॥ सो सुरतानु जु दुइ सर तानै ॥ बाहरि जाता भीतरि आनै ॥ गगन मंडल महि
 लसकरु करै ॥ सो सुरतानु छत्र सिरि धरै ॥३॥ जोगी गोरखु गोरखु करै ॥ ह्यिदू राम नामु उचरै ॥
 मुसलमान का एकु खुदाइ ॥ कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥४॥३॥१॥ महला ५ ॥ जो पाथर
 कउ कहते देव ॥ ता की बिरथा होवै सेव ॥ जो पाथर की पाँई पाइ ॥ तिस की घाल अजाँई जाइ
 ॥१॥ ठाकुरु हमरा सद बोलमता ॥ सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि देत न जानै
 अंधु ॥ भ्रम का मोहिआ पावै फंधु ॥ न पाथरु बोलै ना किछु देइ ॥ फोकट करम निहफल है सेव ॥२॥
 जे मिरतक कउ चंदनु चड़ावै ॥ उस ते कहहु कवन फल पावै ॥ जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई
 ॥ ताँ मिरतक का किआ घटि जाई ॥३॥ कहत कबीर हउ कहउ पुकारि ॥ समझि देखु साकत गावार ॥
 दूजै भाइ बहुतु घर गाले ॥ राम भगत है सदा सुखाले ॥४॥४॥१२॥ जल महि मीन माइआ के
 बेध ॥ दीपक पतंग माइआ के छेदे ॥ काम माइआ कुंचर कउ बिआपै ॥ भुइअंगम भ्रिंग माइआ
 महि खापे ॥१॥ माइआ औसी मोहनी भाई ॥ जेते जीअ तेते डहकाई ॥१॥ रहाउ ॥ पंखी मृग
 माइआ महि राते ॥ साकर माखी अधिक संतापे ॥ तुरे उसट माइआ महि भेला ॥ सिध चउरासीह
 माइआ महि खेला ॥२॥ छिअ जती माइआ के बंदा ॥ नवै नाथ सूरज अरु चंदा ॥ तपे रखीसर
 माइआ महि सूता ॥ माइआ महि कालु अरु पंच दूता ॥३॥ सुआन सिआल माइआ महि राता ॥
 बंतर चीते अरु सिंघाता ॥ माँजार गाडर अरु लूबरा ॥ बिरख मूल माइआ महि परा ॥४॥
 माइआ अंतरि भीने देव ॥ सागर इंद्रा अरु धरतेव ॥ कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ ॥ तब
 छूटे जब साधू पाइआ ॥५॥५॥१३॥ जब लगु मेरी मेरी करै ॥ तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ जब

मेरी मेरी मिटि जाइ ॥ तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥੧॥ औसा गिआनु बिचारु मना ॥ हरि की न
 सिमरहु दुख भंजना ॥੧॥ रहाउ ॥ जब लगु सिंधु रहै बन माहि ॥ तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥
 जब ही सिआरु सिंघ कउ खाइ ॥ फूलि रही सगली बनराइ ॥੨॥ जीतो बूडै हारो तिरै ॥ गुर परसादी
 पारि उतरै ॥ दासु कबीरु कहै समझाइ ॥ केवल राम रहहु लिव लाइ ॥੩॥੬॥੧੪॥ सतरि सैहि
 सलार है जा के ॥ सवा लाखु पैकाबर ता के ॥ सेख जु कहीअहि कोटि अठासी ॥ छपन कोटि जा के
 खेल खासी ॥੧॥ मो गरीब की को गुजरावै ॥ मजलसि दूरि महलु को पावै ॥੧॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी है
 खेल खाना ॥ चउरासी लख फिरै दिवानाँ ॥ बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ उनि भी भिसति
 घनेरी पाई ॥੨॥ दिल खलहलु जा कै जरद रु बानी ॥ छोडि कतेब करै सैतानी ॥ दुनीआ दोसु रोसु है
 लोई ॥ अपना कीआ पावै सोई ॥੩॥ तुम दाते हम सदा भिखारी ॥ देउ जबाबु होइ बजगारी ॥ दासु
 कबीरु तेरी पनह समानाँ ॥ भिसतु नजीकि राखु रहमाना ॥੪॥੭॥੧੫॥ सभु कोई चलन कहत है ऊहाँ
 ॥ ना जानउ बैकुंठु है कहाँ ॥੧॥ रहाउ ॥ आप आप का मरमु न जानाँ ॥ बातन ही बैकुंठु बखानाँ ॥੧॥
 जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥ तब लगु नाही चरन निवास ॥੨॥ खाई कोटु न परल पगारा ॥ ना
 जानउ बैकुंठ दुआरा ॥੩॥ कहि कमीर अब कहीअै काहि ॥ साधसंगति बैकुंठै आहि ॥੪॥੮॥੧੬॥
 किउ लीजै गढु बंका भाई ॥ दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥੧॥ रहाउ ॥ पाँच पचीस मोह मद मतसर
 आडी परबल माइआ ॥ जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ ॥੧॥ कामु किवारी दुखु
 सुखु दरवानी पापु पुन्नु दरवाजा ॥ क्रोधु प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा ॥੨॥ स्नाद
 सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाई ॥ तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ गढु लीओ न जाई
 ॥੩॥ प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ ॥ ब्रह्म अगनि सहजे परजाली एकहि चोट
 सिझाइआ ॥੪॥ सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा ॥ साधसंगति अरु गुर की कृपा ते

पकरिओ गढ को राजा ॥५॥ भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी ॥ दासु कमीरु
चड़िओ गड़ ऊपरि राजु लीओ अबिनासी ॥६॥६॥१७॥ गंग गुसाइनि गहिर गंभीर ॥ जंजीर बाँधि
करि खरे कबीर ॥१॥ मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥ चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥ रहाउ ॥
गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ मृगछाला पर बैठे कबीर ॥२॥ कहि कंबीर कोऊ संग न साथ
॥ जल थल राखन है रघुनाथ ॥३॥१०॥१८॥

भैरउ कबीर जीउ असटपटी घरु २

१८८ सतिगुर प्रसादि ॥

अगम दुगम गड़ि रचिओ बास ॥ जा महि जोति करे परगास ॥ बिजुली चमकै होइ अन्नदु ॥ जिह
पउड़े प्रभ बाल गोबिंद ॥१॥ इहु जीउ राम नाम लिव लागै ॥ जरा मरनु छूटै भ्रमु भागै ॥१॥
रहाउ ॥ अबरन बरन सिउ मन ही प्रीति ॥ हउमै गावनि गावहि गीत ॥ अनहद सबद होत झुनकार
॥ जिह पउड़े प्रभ स्री गोपाल ॥२॥ खंडल मंडल मंडल मंडा ॥ तृअ असथान तीनि तृअ खंडा ॥
अगम अगोचरु रहिआ अभ अंत ॥ पारु न पावै को धरनीधर मंत ॥३॥ कदली पुहप धूप परगास ॥
रज पंकज महि लीओ निवास ॥ दुआदस दल अभ अंतरि मंत ॥ जह पउड़े स्री कमला कंत ॥४॥
अरथ उरथ मुखि लागो कासु ॥ सुन्न मंडल महि करि परगासु ॥ ऊहाँ सूरज नाही चंद ॥ आदि निरंजनु
करै अन्नद ॥५॥ सो ब्रह्मंडि पिंडि सो जानु ॥ मान सरोवरि करि इसनानु ॥ सोह्ना सो जा कउ है जाप ॥
जा कउ लिपत न होइ पुन्न अरु पाप ॥६॥ अबरन बरन धाम नही छाम ॥ अवर न पाईਐ गुर की
साम ॥ टारी न टरै आवै न जाइ ॥ सुन्न सहज महि रहिओ समाइ ॥७॥ मन मधे जानै जे कोइ ॥
जो बोलै सो आपै होइ ॥ जोति मंतृ मनि असथिरु करै ॥ कहि कबीर सो प्रानी तरै ॥८॥१॥ कोटि सूर
जा कै परगास ॥ कोटि महादेव अरु कबिलास ॥ दुरगा कोटि जा कै मरदनु करै ॥ ब्रह्मा कोटि बेद
उचरै ॥१॥ जउ जाचउ तउ केवल राम ॥ आन देव सिउ नाही काम ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि चंद्रमे

करहि चराक ॥ सुर तेतीसउ जेवहि पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दरबार ॥ धरम कोटि जा कै प्रतिहार ॥२॥ पवन कोटि चउबारे फिरहि ॥ बासक कोटि सेज बिसथरहि ॥ समुंद कोटि जा के पानीहार ॥ रोमावलि कोटि अठारह भार ॥३॥ कोटि कमेर भरहि भंडार ॥ कोटिक लखमी करै सीगार ॥ कोटिक पाप पुन्न बहु हिरहि ॥ डिंद्र कोटि जा के सेवा करहि ॥४॥ छपन कोटि जा कै प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खिअत अपार ॥ लट छूटी वरतै बिकराल ॥ कोटि कला खेलै गोपाल ॥५॥ कोटि जग जा कै दरबार ॥ गंध्रब कोटि करहि जैकार ॥ बिदिआ कोटि सभै गुन कहै ॥ तऊ पारब्रह्म का अंतु न लहै ॥६॥ बावन कोटि जा कै रोमावली ॥ रावन सैना जह ते छली ॥ सहस कोटि बहु कहत पुरान ॥ दुरजोधन का मथिआ मानु ॥७॥ कंद्रप कोटि जा कै लवै न धरहि ॥ अंतर अंतरि मनसा हरहि ॥ कहि कबीर सुनि सारिगपान ॥ देहि अभै पदु माँगउ दान ॥८॥२॥१८॥२०॥

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु ੧

੧੮ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रे जिहबा करउ सत खंड ॥ जामि न उचरसि स्री गोबिंद ॥१॥ रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ ॥ सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ ॥२॥ रहाउ ॥ मिथिआ जिहबा अवरें काम ॥ निरबाण पदु इकु हरि को नामु ॥३॥ असंख कोटि अन पूजा करी ॥ एक न पूजसि नामै हरी ॥४॥ प्रणवै नामदेउ इहु करणा ॥ अन्नत रूप तेरे नाराइणा ॥५॥१॥ पर धन पर दारा परहरी ॥ ता कै निकटि बसै नरहरी ॥२॥ जो न भजंते नाराइणा ॥ तिन का मै न करउ दरसना ॥३॥ रहाउ ॥ जिन कै भीतरि है अंतरा ॥ जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥४॥ प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥ ना सोहै बतीस लखना ॥५॥२॥ दूधु कटोरै गडवै पानी ॥ कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥६॥ दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥ नाही त घर को बापु रिसाइ ॥७॥ रहाउ ॥ सुओइन कटोरी अंमृत भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥८॥ एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ नामे देखि नराइनु हसै ॥९॥ दूधु पीआइ भगतु

ਘਰਿ ਗਇਆ ॥ ਨਾਮੇ ਹਰਿ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਭਇਆ ॥੪॥੩॥ ਮੈ ਬਤਰੀ ਮੇਰਾ ਰਾਮੁ ਭਤਾਰੁ ॥ ਰਚਿ ਰਚਿ ਤਾ ਕਤ ਕਰਤ
ਸਿੰਗਾਰੁ ॥੧॥ ਭਲੇ ਨਿੰਦਤ ਭਲੇ ਨਿੰਦਤ ਭਲੇ ਨਿੰਦਤ ਲੋਗੁ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ਜੋਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਬਾਦੁ ਬਿਬਾਦੁ ਕਾਹੂ ਸਿਤ ਨ ਕੀਜੈ ॥ ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਰਸਾਇਨੁ ਪੀਜੈ ॥੨॥ ਅਥ ਜੀਅ ਜਾਨਿ ਐਸੀ ਬਨਿ ਆਈ ॥
ਮਿਲਤ ਗੁਪਾਲ ਨੀਸਾਨੁ ਬਜਾਈ ॥੩॥ ਤਉਤਤਿ ਨਿੰਦਾ ਕਰੈ ਨਰੁ ਕੋਈ ॥ ਨਾਮੇ ਸ੍ਰੀਰਾਂਗੁ ਭੇਟਲ ਸੋਈ
॥੪॥੪॥ ਕਬਹੂ ਖੀਰਿ ਖਾਡ ਘੀਤ ਨ ਭਾਵੈ ॥ ਕਬਹੂ ਘਰ ਘਰ ਟ੍ਰੂਕ ਮਗਾਵੈ ॥ ਕਬਹੂ ਕੂਰਨੁ ਚਨੇ ਬਿਨਾਵੈ
॥੧॥ ਜਿਤ ਰਾਮੁ ਰਾਖੈ ਤਿਤ ਰਹੀਐ ਰੇ ਭਾਈ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਿਛੁ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਕਬਹੂ ਤੁਰੇ ਤੁਰਾਂਗ ਨਚਾਵੈ ॥ ਕਬਹੂ ਪਾਇ ਪਨਹੀਓ ਨ ਪਾਵੈ ॥੨॥ ਕਬਹੂ ਖਾਟ ਸੁਪੇਦੀ ਸੁਵਾਵੈ ॥ ਕਬਹੂ ਭੂਮਿ
ਪੈਆਰੁ ਨ ਪਾਵੈ ॥੩॥ ਭਨਤਿ ਨਾਮਦੇਤ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥ ਜਿਹ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਿਹ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੈ ॥੪॥੫॥
ਹਸਤ ਖੇਲਤ ਤੇਰੇ ਦੇਹੁਰੇ ਆਇਆ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰਤ ਨਾਮਾ ਪਕਰਿ ਤਠਾਇਆ ॥੧॥ ਹੀਨੜੀ ਜਾਤਿ ਮੇਰੀ
ਜਾਦਿਮ ਰਾਇਆ ॥ ਛੀਪੇ ਕੇ ਜਨਮਿ ਕਾਹੇ ਕਤ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਲੈ ਕਮਲੀ ਚਲਿਓ ਪਲਟਾਇ ॥
ਦੇਹੁਰੈ ਪਾਛੈ ਬੈਠਾ ਜਾਇ ॥੨॥ ਜਿਤ ਜਿਤ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਤਚਰੈ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾਂ ਕਤ ਦੇਹੁਰਾ ਫਿਰੈ ॥੩॥੬॥

ਭੈਰਤ ਨਾਮਦੇਤ ਜੀਤ ਘਰ ੨

ਜੈਸੀ ਭੂਖੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਅਨਾਜ ॥ ਤੂਖਾਕਾਂਤ ਜਲ ਸੇਤੀ ਕਾਜ ॥ ਜੈਸੀ ਸ੍ਰੂਢ਼ ਕੁਟੰਬ ਪਰਾਇਣ ॥ ਐਸੀ ਨਾਮੇ ਪ੍ਰੀਤਿ
ਨਰਾਇਣ ॥੧॥ ਨਾਮੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਾਰਾਇਣ ਲਾਗੀ ॥ ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ਭਇਆ ਬੈਰਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈਸੀ
ਪਰ ਪੁਰਖਾ ਰਤ ਨਾਰੀ ॥ ਲੋਭੀ ਨਰੁ ਧਨ ਕਾ ਹਿਤਕਾਰੀ ॥ ਕਾਮੀ ਪੁਰਖ ਕਾਮਨੀ ਪਿਆਰੀ ॥ ਐਸੀ ਨਾਮੇ ਪ੍ਰੀਤਿ
ਸੁਰਾਰੀ ॥੨॥ ਸਾਈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਿ ਆਪੇ ਲਾਏ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਦੁਬਿਧਾ ਜਾਏ ॥ ਕਬਹੂ ਨ ਤੂਟਸਿ ਰਹਿਆ
ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਮੇ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਸਚਿ ਨਾਇ ॥੩॥ ਜੈਸੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਾਰਿਕ ਅਝ ਮਾਤਾ ॥ ਐਸਾ ਹਰਿ ਸੇਤੀ
ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਪ੍ਰਣਵੈ ਨਾਮਦੇਤ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਗੋਬਿਦੁ ਬਸੈ ਹਮਾਰੈ ਚੀਤਿ ॥੪॥੧॥੭॥ ਘਰ ਕੀ ਨਾਰਿ

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤਿਆਗੈ ਅੰਧਾ ॥ ਪਰ ਨਾਰੀ ਸਿਤ ਘਾਲੈ ਧੰਧਾ ॥ ਜੈਸੇ ਸਿੰਬਲੁ ਦੇਖਿ ਸ੍ਰੂਆ ਬਿਗਸਾਨਾ ॥ ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਮੂਆ
 ਲਪਟਾਨਾ ॥੧॥ ਪਾਪੀ ਕਾ ਘਰੁ ਅਗਨੇ ਮਾਹਿ ॥ ਜਲਤ ਰਹੈ ਮਿਟਵੈ ਕਬ ਨਾਹਿ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਕੀ
 ਭਗਤਿ ਨ ਦੇਖੈ ਜਾਇ ॥ ਮਾਰਗੁ ਛੋਡਿ ਅਮਾਰਗਿ ਪਾਇ ॥ ਮੂਲਹੁ ਭੂਲਾ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਢਾਰਿ ਲਾਦਿ
 ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥੨॥ ਜਿਤ ਬੇਸ਼ਾ ਕੇ ਪੈ ਅਖਾਰਾ ॥ ਕਾਪਰੁ ਪਹਿਰਿ ਕਰਹਿ ਸੰਗਾਰਾ ॥ ਪ੍ਰੂਰੇ ਤਾਲ ਨਿਹਾਲੇ ਸਾਸ
 ॥ ਵਾ ਕੇ ਗਲੇ ਜਮ ਕਾ ਹੈ ਫਾਸ ॥੩॥ ਜਾ ਕੇ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਓ ਕਰਮਾ ॥ ਸੋ ਭਜਿ ਪਰਿ ਹੈ ਗੁਰ ਕੀ ਸਰਨਾ ॥
 ਕਹਤ ਨਾਮਦੇਤ ਝਿਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਝਿਨ ਬਿਧਿ ਸੰਤਹੁ ਉਤਰਹੁ ਪਾਰਿ ॥੪॥੨॥੮॥ ਸੰਡਾ ਮਰਕਾ ਜਾਇ ਪੁਕਾਰੇ ॥
 ਪਡੈ ਨਹੀਂ ਹਮ ਹੀ ਪਚਿ ਹਾਰੇ ॥ ਰਾਮੁ ਕਹੈ ਕਰ ਤਾਲ ਬਜਾਵੈ ਚਟੀਆ ਸਭੈ ਬਿਗਾਰੇ ॥੧॥ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਜਪਿਬੋ
 ਕਰੈ ॥ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਜੀ ਕੋ ਸਿਮਰਨੁ ਧਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਸੁਧਾ ਬਸਿ ਕੀਨੀ ਸਭ ਰਾਜੇ ਬਿਨਤੀ ਕਰੈ ਪਟਰਾਨੀ
 ॥ ਪ੍ਰਾਨੁ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ ਕਹਿਆ ਨਹੀਂ ਮਾਨੈ ਤਿਨਿ ਤਤ ਅਤੌਰੈ ਠਾਨੀ ॥੨॥ ਦੁਸਟ ਸਭਾ ਮਿਲਿ ਮੰਤਰ ਤਪਾਇਆ
 ਕਰਸਹ ਅਤਥ ਘਨੇਰੀ ॥ ਗਿਰਿ ਤਰ ਜਲੁ ਜੁਆਲਾ ਭੈ ਰਾਖਿਓ ਰਾਜਾ ਰਾਮਿ ਮਾਇਆ ਫੇਰੀ ॥੩॥ ਕਾਢਿ ਖੜਗੁ
 ਕਾਲੁ ਭੈ ਕੋਪਿਓ ਸੋਹਿ ਬਤਾਤ ਜੁ ਤੁਹਿ ਰਾਖੈ ॥ ਪੀਤ ਪੀਤਾਂਬਰ ਤ੃ਭਵਣ ਧਣੀ ਥੰਭ ਸਾਹਿ ਹਰਿ ਭਾਖੈ ॥੪॥
 ਹਰਨਾਖਸੁ ਜਿਨਿ ਨਖਹ ਬਿਦਾਰਿਓ ਸੁਰਿ ਨਰ ਕੀਏ ਸਨਾਥਾ ॥ ਕਹਿ ਨਾਮਦੇਤ ਹਮ ਨਰਹਰਿ ਧਿਆਵਹ ਰਾਮੁ
 ਅਭੈ ਪਦ ਦਾਤਾ ॥੫॥੩॥੬॥ ਸੁਲਤਾਨੁ ਪ੍ਰਛੈ ਸੁਨੁ ਬੇ ਨਾਮਾ ॥ ਦੇਖਤ ਰਾਮ ਤੁਸਾਰੇ ਕਾਮਾ ॥੧॥ ਨਾਮਾ
 ਸੁਲਤਾਨੇ ਬਾਧਿਲਾ ॥ ਦੇਖਤ ਤੇਰਾ ਹਰਿ ਬੀਠੁਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਸਮਿਲਿ ਗੜ ਦੇਹੁ ਜੀਕਾਇ ॥ ਨਾਤਰੁ
 ਗਰਦਨਿ ਮਾਰਤ ਠੱਡਿ ॥੨॥ ਬਾਦਿਸਾਹ ਐਸੀ ਕਿਤ ਹੋਇ ॥ ਬਿਸਮਿਲਿ ਕੀਆ ਨ ਜੀਕੈ ਕੋਇ ॥੩॥ ਮੇਰਾ
 ਕੀਆ ਕਛੂ ਨ ਹੋਇ ॥ ਕਰਿ ਹੈ ਰਾਮੁ ਹੋਇ ਹੈ ਸੋਇ ॥੪॥ ਬਾਦਿਸਾਹੁ ਚਿੜਿਓ ਅਛਾਕਾਰਿ ॥ ਗਜ ਹਸਤੀ ਦੀਨੋ
 ਚਮਕਾਰਿ ॥੫॥ ਰੁਦਨੁ ਕਰੈ ਨਾਮੇ ਕੀ ਮਾਇ ॥ ਛੋਡਿ ਰਾਮੁ ਕੀ ਨ ਭਜਹਿ ਖੁਦਾਇ ॥੬॥ ਨ ਹਤ ਤੇਰਾ ਪ੍ਰਾਂਗੜਾ
 ਨ ਤ੍ਰੂ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥ ਪਿੰਡੁ ਪਡੈ ਤਤ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੭॥ ਕਰੈ ਗਜਿੰਦੁ ਸੁੰਡ ਕੀ ਚੋਟ ॥ ਨਾਮਾ ਤਕਾਰੈ ਹਰਿ ਕੀ
 ਓਟ ॥੮॥ ਕਾਜੀ ਮੁਲਾਂ ਕਰਹਿ ਸਲਾਮੁ ॥ ਝਿਨਿ ਛਿਟ੍ਟ ਮੇਰਾ ਮਲਿਆ ਮਾਨੁ ॥੯॥ ਬਾਦਿਸਾਹ ਬੇਨਤੀ ਸੁਨੇਹੁ ॥

ਨਾਮੇ ਸਰ ਭਰਿ ਸੋਨਾ ਲੇਹੁ ॥੧੦॥ ਮਾਲੁ ਲੇਤ ਤਤ ਦੋਜਕਿ ਪਰਤ ॥ ਦੀਨੁ ਛੋਡਿ ਦੁਨੀਆ ਕਤ ਭਰਤ ॥੧੧॥
 ਪਾਵਹੁ ਬੇੜੀ ਹਾਥਹੁ ਤਾਲ ॥ ਨਾਮਾ ਗਾਵੈ ਗੁਨ ਗੋਪਾਲ ॥੧੨॥ ਗੰਗ ਜਮੁਨ ਜਤ ਤਲਟੀ ਬਹੈ ॥ ਤਤ ਨਾਮਾ ਹਰਿ
 ਕਰਤਾ ਰਹੈ ॥੧੩॥ ਸਾਤ ਘੜੀ ਜਬ ਬੀਤੀ ਸੁਣੀ ॥ ਅਜਹੁ ਨ ਆਇਆ ਤੂਖਵਣ ਧਣੀ ॥੧੪॥ ਪਾਖ਼ਤਣ ਬਾਜ
 ਬਜਾਇਲਾ ॥ ਗਰੁੜ ਚੜ੍ਹੈ ਗੋਬਿੰਦ ਆਇਲਾ ॥੧੫॥ ਅਪਨੇ ਭਗਤ ਪਰਿ ਕੀ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥ ਗਰੁੜ ਚੜ੍ਹੈ ਆਏ
 ਗੋਪਾਲ ॥੧੬॥ ਕਹਹਿ ਤ ਧਰਣਿ ਇਕੋਡੀ ਕਰਤ ॥ ਕਹਹਿ ਤ ਲੇ ਕਰਿ ਊਪਰਿ ਧਰਤ ॥੧੭॥ ਕਹਹਿ ਤ ਮੁੰਝੀ
 ਗੱਤ ਦੇਤ ਜੀਆਇ ॥ ਸਮੁ ਕੋਈ ਦੇਖੈ ਪਤੀਆਇ ॥੧੮॥ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਣਵੈ ਸੇਲ ਮਸੇਲ ॥ ਗੱਤ ਦੁਹਾਈ ਬਛਰਾ
 ਮੇਲਿ ॥੧੯॥ ਟ੍ਰੌਧਹਿ ਦੁਹਿ ਜਬ ਮਟੁਕੀ ਭਰੀ ॥ ਲੇ ਬਾਦਿਸਾਹ ਕੇ ਆਗੇ ਧਰੀ ॥੨੦॥ ਬਾਦਿਸਾਹੁ ਮਹਲ ਮਹਿ
 ਜਾਇ ॥ ਅਤਘਟ ਕੀ ਘਟ ਲਾਗੀ ਆਇ ॥੨੧॥ ਕਾਜੀ ਮੁਲਾਂ ਬਿਨਤੀ ਫੁਰਮਾਇ ॥ ਬਖਸੀ ਛਿਟ੍ਠ ਮੈ ਤੇਰੀ ਗਾਇ ॥
 ੨੨॥ ਨਾਮਾ ਕਹੈ ਸੁਨਹੁ ਬਾਦਿਸਾਹ ॥ ਇਹੁ ਕਿਛੁ ਪਤੀਆ ਮੁੜੈ ਦਿਖਾਇ ॥੨੩॥ ਇਸ ਪਤੀਆ ਕਾ ਇਹੈ
 ਪਰਵਾਨੁ ॥ ਸਾਚਿ ਸੀਲਿ ਚਾਲਹੁ ਸੁਲਿਤਾਨ ॥੨੪॥ ਨਾਮਦੇਤ ਸਭ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਮਿਲਿ ਛਿਟ੍ਠ ਸਭ ਨਾਮੇ
 ਧਹਿ ਜਾਹਿ ॥੨੫॥ ਜਤ ਅਬ ਕੀ ਬਾਰ ਨ ਜੀਕੈ ਗਾਇ ॥ ਤ ਨਾਮਦੇਵ ਕਾ ਪਤੀਆ ਜਾਇ ॥੨੬॥ ਨਾਮੇ ਕੀ
 ਕੀਰਤਿ ਰਹੀ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾਂ ਲੇ ਉਧਰਿਆ ਪਾਰਿ ॥੨੭॥ ਸਗਲ ਕਲੇਸ ਨਿੰਦਕ ਭਿਆ ਖੇਦੁ ॥ ਨਾਮੇ
 ਨਾਰਾਇਨ ਨਾਹੀ ਭੇਦੁ ॥੨੮॥੧॥੧੦॥ ਘਰ ੨ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਮਿਲੈ ਮੁਰਾਰਿ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਤਰੈ
 ਪਾਰਿ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਬੈਕੁਂਠ ਤਰੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਜੀਕਤ ਮਰੈ ॥੧॥ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ
 ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਝੂਠੁ ਝੂਠੁ ਝੂਠੁ ਆਨ ਸਭ ਸੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਨਾਮੁ ਦ੃ੜਾਵੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ
 ਨ ਫਹ ਦਿਸ ਧਾਵੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਪੰਚ ਤੇ ਟ੍ਰੌਰਿ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਨ ਮਰਿਕੇ ਝੂਰਿ ॥੨॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ
 ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਨੀ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਅਕਥ ਕਹਾਨੀ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਅੰਮ੍ਰਤ ਦੇਹ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਨਾਮੁ ਜਧਿ
 ਲੇਹਿ ॥੩॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਭਵਨ ਤੈ ਸ੍ਰੂਜੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਊਚ ਪਦ ਕ੍ਰੂਜੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਸੀਸੁ ਅਕਾਸਿ ॥
 ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਸਦਾ ਸਾਬਾਸਿ ॥੪॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਤਿਆਗੀ ॥

ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਏਕ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਲਿਲਾਟਹਿ ਲੇਖ ॥੫॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਕਂਧੁ ਨਹੀਂ ਹਿਰੈ ॥ ਜਤ
ਗੁਰਦੇਤ ਦੇਹੁਰਾ ਫਿਰੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਛਾਪਰਿ ਛਾਈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਸਿਹਜ ਨਿਕਸਾਈ ॥੬॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ
ਤ ਅਠਸਥਿ ਨਾਇਆ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤਨਿ ਚਕ ਲਗਾਇਆ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਦੁਆਦਸ ਸੇਵਾ ॥ ਜਤ
ਗੁਰਦੇਤ ਸਭੈ ਬਿਖੁ ਮੇਵਾ ॥੭॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਸੰਸਾ ਟ੍ਰੈਟੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਜਮ ਤੇ ਛ੍ਰੌਟੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ
ਤ ਭਉਜਲ ਤਰੈ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਤ ਜਨਮਿ ਨ ਮਰੈ ॥੮॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ ਅਠਦਸ ਬਿਤਹਾਰ ॥ ਜਤ ਗੁਰਦੇਤ
ਅਠਾਹ ਭਾਰ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰਦੇਤ ਅਵਰ ਨਹੀਂ ਜਾਈ ॥ ਨਾਮਦੇਤ ਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ॥੯॥੧॥੨॥੧੧॥

ਮੈਰਾ ਬਾਣੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਤ ਕੀ ਘਰੁ ੨ ੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥ जो दीसै सो होइ बिनासा ॥ बरन सहित जो जापै नामु ॥ सो जोगी केवल
निहकामु ॥१॥ परचै रामु रवै जउ कोई ॥ पारसु परसै दुबिधा न होई ॥२॥ रहाउ ॥ सो मुनि मन
की दुबिधा खाइ ॥ बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥ मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ करता होइ सु अनभै
रहै ॥२॥ फल कारन फूली बनराइ ॥ फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥ गिआनै कारन करम
अभिआसु ॥ गिआनु भडिआ तह करमह नासु ॥३॥ घ्रित कारन दधि मथै सडिआन ॥ जीवत मुक्त
सदा निरबान ॥ कहि रविदास परम बैराग ॥ रिटै रामु की न जपसि अभाग ॥४॥१॥ नामदेव ॥
आउ कलम्दर केसवा ॥ करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥ जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै
सप्त पयाला ॥ चमर पोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥१॥ छपन कोटि का पेहनु तेरा
सोलह सहस इजारा ॥ भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥२॥ देही महजिदि मनु
मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥ बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै ॥३॥ भगति करत
मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥ नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥४॥१॥

ਰਾਗ ਬਸ਼ਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਚਤੁਪਦੇ ਦੁਤੁਕੇ

੧੪ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਉ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਾਹਾ ਮਾਹ ਮੁਮਾਰਖੀ ਚਡਿਆ ਸਦਾ ਬਸ਼ਤੁ ॥ ਪਰਫਡੂ ਚਿਤ ਸਮਾਲਿ ਸੋਝਿ ਸਦਾ ਸਦਾ ਗੋਬਿੰਦੁ ॥੧॥
ਭੋਲਿਆ ਹਉਮੈ ਸੁਰਤਿ ਵਿਸਾਰਿ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਬੀਚਾਰਿ ਮਨ ਗੁਣ ਵਿਚਿ ਗੁਣੁ ਲੈ ਸਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਕਰਮ ਪੇਡੁ ਸਾਖਾ ਹਰੀ ਧਰਮੁ ਫੁਲੁ ਫਲੁ ਗਿਆਨੁ ॥ ਪਤ ਪਰਾਪਤਿ ਛਾਵ ਘਣੀ ਚੂਕਾ ਮਨ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੨॥
ਅਖੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਨੀ ਬਾਣੀ ਮੁਖਿ ਆਖਣੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ॥ ਪਤਿ ਕਾ ਧਨੁ ਪੂਰਾ ਹੋਆ ਲਾਗਾ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ
॥੩॥ ਮਾਹਾ ਰੁਤੀ ਆਵਣਾ ਵੇਖਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰੇ ਨ ਸ੍ਰਕਹੀ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹੇ ਸਮਾਇ
॥੪॥੧॥ ਮਹਲਾ ੧ ਬਸ਼ਤੁ ॥ ਰੁਤਿ ਆਈਲੇ ਸਰਸ ਬਸ਼ਤ ਮਾਹਿ ॥ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਖਵਹਿ ਸਿ ਤੈਰੈ ਚਾਇ ॥
ਕਿਸੁ ਪ੍ਰਯ ਚੜਾਵਤ ਲਗਤ ਪਾਇ ॥੧॥ ਤੇਰਾ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਕਹਤ ਰਾਇ ॥ ਜਗਜੀਵਨ ਜੁਗਤਿ ਨ
ਮਿਲੈ ਕਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੇਰੀ ਮੂਰਤਿ ਏਕਾ ਬਹੁਤੁ ਰੂਪ ॥ ਕਿਸੁ ਪ੍ਰਯ ਚੜਾਵਤ ਦੇਤ ਧ੍ਰੂਪ ॥ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ
ਨ ਪਾਇਆ ਕਹਾ ਪਾਇ ॥ ਤੇਰਾ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਕਹਤ ਰਾਇ ॥੨॥ ਤੇਰੇ ਸਠਿ ਸੰਭਤ ਸਭਿ ਤੀਰਥਾ ॥
ਤੇਰਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਪਰਮੇਸਰਾ ॥ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਅਵਿਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਣੀਐ ॥ ਅਣਜਾਣਤ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀਐ ॥੩॥
ਨਾਨਕੁ ਵੇਚਾਰਾ ਕਿਆ ਕਹੈ ॥ ਸਭੁ ਲੋਕੁ ਸਲਾਹੇ ਏਕਸੈ ॥ ਸਿਰੁ ਨਾਨਕ ਲੋਕਾ ਪਾਵ ਹੈ ॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜਾਤ
ਜੇਤੇ ਤੇਰੇ ਨਾਵ ਹੈ ॥੪॥੨॥ ਬਸ਼ਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੁਝਿਨੇ ਕਾ ਚਤਕਾ ਕੰਚਨ ਕੁਆਰ ॥ ਰੂਪੇ ਕੀਆ ਕਾਰਾ
ਬਹੁਤੁ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥ ਗੰਗਾ ਕਾ ਤਦਕੁ ਕਰਂਤੇ ਕੀ ਆਗਿ ॥ ਗਰੁੜਾ ਖਾਣਾ ਟੁਧ ਸਿਤ ਗਾਡਿ ॥੧॥ ਰੇ ਮਨ

ਲੇਖੈ ਕਬਹੂ ਨ ਪਾਇ ॥ ਜਾਮਿ ਨ ਭੀਜੈ ਸਾਚ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਸ ਅਠ ਲੀਖੇ ਹੋਵਹਿ ਪਾਸਿ ॥ ਚਾਰੇ ਬੇਦ
 ਮੁਖਾਗਰ ਪਾਠਿ ॥ ਪੁਰਕੀ ਨਾਵੈ ਵਰਨਾਂ ਕੀ ਦਾਤਿ ॥ ਵਰਤ ਨੇਮ ਕਰੇ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥੨॥ ਕਾਜੀ ਮੁਲਾਂ ਹੋਵਹਿ
 ਸੇਖ ॥ ਜੋਗੀ ਜੰਗਮ ਭਗਵੇ ਭੇਖ ॥ ਕੋ ਗਿਰਹੀ ਕਰਮਾ ਕੀ ਸੰਧਿ ॥ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰਾਝੇ ਸਭ ਖੜੀਅਸਿ ਬੰਧਿ ॥੩॥ ਜੇਤੇ ਜੀਅ
 ਲਿਖੀ ਸਿਰਿ ਕਾਰ ॥ ਕਰਣੀ ਤਪਰਿ ਹੋਵਗਿ ਸਾਰ ॥ ਹੁਕਮੁ ਕਰਹਿ ਮੂਰਖ ਗਾਵਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਕੇ ਸਿਫਤਿ
 ਭੰਡਾਰ ॥੪॥੩॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ਤੀਜਾ ॥ ਬਸਤ ਉਤਾਰਿ ਦਿਗ਼ਬਨੁ ਹੋਗੁ ॥ ਜਟਾਧਾਰਿ ਕਿਆ ਕਮਾਵੈ ਜੋਗੁ ॥
 ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਹੀ ਦਸਵੈ ਦੁਆਰ ॥ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਆਵੈ ਮੂਝਾ ਵਾਰੇ ਵਾਰ ॥੧॥ ਏਕੁ ਧਿਆਵਹੁ ਮੂਝੁ ਮਨਾ ॥
 ਧਾਰਿ ਉਤਾਰਿ ਜਾਹਿ ਇਕ ਖਿਨਾਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਮੂਤਿ ਸਾਸਤ ਕਰਹਿ ਵਖਿਆਣ ॥ ਨਾਦੀ ਬੇਦੀ ਪੜਹਿ
 ਪੁਰਾਣ ॥ ਪਾਖਂਡ ਦੂਸਟਿ ਮਨਿ ਕਪਟੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਤਿਨ ਕੈ ਰਸੰਝਾ ਨੇਡਿ ਨਾਹਿ ॥੨॥ ਜੇ ਕੋ ਐਸਾ ਸੰਜਮੀ ਹੋਇ
 ॥ ਕ੃ਆ ਵਿਸੇਖ ਪੂਜਾ ਕਰੇਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਮਨੁ ਬਿਖਿਆ ਮਾਹਿ ॥ ਓਇ ਨਿਰੰਜਨੁ ਕੈਥੇ ਪਾਹਿ ॥੩॥ ਕੀਤਾ
 ਹੋਆ ਕਰੇ ਕਿਆ ਹੋਇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਚਲਾਏ ਸੋਇ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾਂ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਹੁਕਮੈ ਬ੍ਰਾਝੈ ਤਾਂ ਸਾਚਾ
 ਪਾਏ ॥੪॥ ਜਿਸੁ ਜੀਤ ਅੰਤਰੁ ਮੈਲਾ ਹੋਇ ॥ ਤੀਰਥ ਭਵੈ ਦਿਸਤਰ ਲੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਿਲੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗ ॥
 ਤਤ ਭਵਜਲ ਕੇ ਤੂਟਸਿ ਬੰਧ ॥੫॥੪॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਗਲ ਭਵਨ ਤੇਰੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ॥ ਮੈ ਅਕਰੁ ਨ
 ਦੀਸੈ ਸਰਬ ਤੋਹ ॥ ਤੂ ਸੁਰਿ ਨਾਥਾ ਦੇਵਾ ਦੇਵ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਗੁਰ ਚਰਨ ਸੇਵ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸੁਨਦਰ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ
 ਲਾਲ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਏ ਤੂ ਅਪਰਾਂਪਲੁ ਸਰਬ ਪਾਲ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਨੁ ਸਾਧ ਨ ਪਾਈਐ
 ਹਰਿ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੈਲ ਮਲੀਨ ਅੰਗੁ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਸੁਧੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੇ ਸਾਚੁ
 ਸੋਇ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਤੂ ਰਾਖਹਿ ਰਖਨਹਾਰ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਾਵਹਿ ਕਰਹਿ ਸਾਰ ॥ ਬਿਖੁ ਹਤਮੈ ਮਮਤਾ ਪਰਹਰਾਇ
 ॥ ਸਭਿ ਦ੍ਰਾਖ ਬਿਨਾਸੇ ਰਾਮ ਰਾਇ ॥੩॥ ਊਤਮ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਸਰੀਰ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਪ੍ਰਗਟੇ ਰਾਮ ਨਾਮ
 ਹੀਰ ॥ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਨਾਮਿ ਤਜਿ ਟ੍ਰਾਂਜਾ ਭਾਤ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਗੁਰ ਮਿਲਾਤ ॥੪॥੫॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਮੇਰੀ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਸੁਨਹੁ ਭਾਇ ॥ ਮੇਰਾ ਪਿਰੁ ਰੀਸਾਲੂ ਸੰਗਿ ਸਾਇ ॥ ਓਹੁ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖੀਐ ਕਹਹੁ ਕਾਇ ॥

ਗੁਰ ਸੰਗਿ ਦਿਖਾਇਆ ਰਾਮ ਰਾਇ ॥੧॥ ਮਿਲੁ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਹਰਿ ਗੁਨ ਬਨੇ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਖੇਲਹਿ ਕਰ
 ਕਾਮਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਤ ਮਨ ਮਨੇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨਮੁਖੀ ਟੁਹਾਗਣਿ ਨਾਹਿ ਮੇਤ ॥ ਓਹੁ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਾਵੈ
 ਸਰਬ ਪ੍ਰੇਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਥਿਰੁ ਚੀਨੈ ਸੰਗਿ ਦੇਤ ॥ ਗੁਰ ਨਾਮੁ ਵੜਾਇਆ ਜਪੁ ਜਪੇਤ ॥੨॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਗਤਿ
 ਨ ਭਾਉ ਹੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੰਤ ਨ ਸੰਗੁ ਦੇਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅੰਧੁਲੇ ਧੰਧੁ ਰੋਇ ॥ ਮਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲੁ ਮਲੁ
 ਸਬਦਿ ਖੋਇ ॥੩॥ ਗੁਰ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਕਰਿ ਸੰਜੋਗੁ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਾਵੇ ਭਗਤਿ ਜੋਗੁ ॥ ਗੁਰ ਸੰਤ ਸਭਾ ਦੁਖੁ ਮਿਟੈ
 ਰੋਗੁ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਵਰੁ ਸਹਜ ਜੋਗੁ ॥੪॥੬॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਪੇ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰੇ ਸਾਜਿ ॥ ਸਚੁ
 ਆਪਿ ਨਿਕੇਡੇ ਰਾਜੁ ਰਾਜਿ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਊਤਮ ਸੰਗਿ ਸਾਥਿ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਸਾਇਣੁ ਸਹਜਿ ਆਥਿ ॥੧॥ ਮਤ
 ਬਿਸਰਗਿ ਰੇ ਮਨ ਰਾਮ ਕੋਲਿ ॥ ਅਪਰਾਂਪਰੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਆਪਿ ਤੁਲਾਏ ਅਤੁਲੁ ਤੋਲਿ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰ ਚਰਨ ਸਰੇਵਹਿ ਗੁਰਸਿਖ ਤੋਰ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵ ਤਰੇ ਤਜਿ ਮੇਰ ਤੋਰ ॥ ਨਰ ਨਿੰਦਕ ਲੋਭੀ
 ਮਨਿ ਕਠੋਰ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵ ਨ ਭਾਈ ਸਿ ਚੌਰ ਚੌਰ ॥੨॥ ਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ਬਖਸੇ ਭਗਤਿ ਭਾਉ ॥ ਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਪਾਈਐ
 ਹਰਿ ਮਹਲਿ ਠਾਉ ॥ ਪਰਹਰਿ ਨਿੰਦਾ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਜਾਗੁ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਹਾਕੀ ਕਰਮਿ ਭਾਗੁ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਮੇਲਿ
 ਮਿਲਾਵੈ ਕਰੇ ਦਾਤਿ ॥ ਗੁਰਸਿਖ ਪਿਆਰੇ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ॥ ਫਲੁ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਗੁਰੁ ਤੁਸਿ ਦੇਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
 ਪਾਵਹਿ ਵਿਰਲੇ ਕੇਇ ॥੪॥੭॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ਡਿਕ ਤੁਕਾ ॥ ਸਾਹਿਬ ਭਾਵੈ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੈ ॥ ਜੀਕਤੁ
 ਮੈਰੈ ਸਭਿ ਕੁਲ ਤਥਾਰੈ ॥੧॥ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਨ ਛੋਡਤ ਕਿਆ ਕੋ ਹਸੈ ॥ ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਮੈਰੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਜੈਸੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗਲਤੁ ਰਹੈ ॥ ਤੈਸੇ ਸੰਤ ਜਨ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਖਤ ਰਹੈ ॥੨॥ ਮੈ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ
 ਊਪਰਿ ਕਰਹੁ ਦਇਆ ॥ ਤਤ ਸਰਣਾਗਤਿ ਰਹਤ ਪਇਆ ॥੩॥ ਕਹਤੁ ਨਾਨਕੁ ਸੰਸਾਰ ਕੇ ਨਿਹਫਲ ਕਾਮਾ
 ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਪਾਵੈ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮਾ ॥੪॥੮॥

ਮਹਲਾ ੧ ਬਸਨਤੁ ਛਿੰਡੋਲ ਘਰੁ ੨

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਾਲ ਗ੍ਰਾਮ ਬਿਪ ਪ੍ਰੂਜਿ ਮਨਾਵਹੁ ਸੁਕੁਤੁ ਤੁਲਸੀ ਮਾਲਾ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਬੇੜਾ ਬਾਂਧਹੁ ਦਇਆ ਕਰਹੁ

ਦਿੱਖਾਲਾ ॥੧॥ ਕਾਹੇ ਕਲਰਾ ਸਿੰਚਹੁ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਹੁ ॥ ਕਾਚੀ ਢਹਗਿ ਦਿਵਾਲ ਕਾਹੇ ਗਚੁ ਲਾਵਹੁ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਕਰ ਹਰਿਹਟ ਮਾਲ ਟਿੰਡ ਪਰੋਵਹੁ ਤਿਸੁ ਭੀਤਰਿ ਮਨੁ ਜੋਵਹੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਿੰਚਹੁ ਭਰਹੁ ਕਿਆਰੇ ਤਤ
 ਮਾਲੀ ਕੇ ਹੋਵਹੁ ॥੨॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਦੁਇ ਕਰਹੁ ਬਸੋਲੇ ਗੋਡਹੁ ਧਰਤੀ ਭਾਈ ॥ ਜਿਤ ਗੋਡਹੁ ਤਿਤ ਤੁਸੁ ਸੁਖ ਪਾਵਹੁ
 ਕਿਰਤੁ ਨ ਮੇਟਿਆ ਜਾਈ ॥੩॥ ਬਗੁਲੇ ਤੇ ਫੁਨਿ ਛਾਸੁਲਾ ਹੋਵੈ ਜੇ ਤੂ ਕਰਹਿ ਦਿੱਖਾਲਾ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ
 ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਦਿੱਖਾ ਕਰਹੁ ਦਿੱਖਾਲਾ ॥੪॥੧॥੬॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ਛਿੰਡੋਲ ॥ ਸਾਹੁਰਡੀ ਵਥੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ
 ਸਾਝੀ ਪੇਵਕਡੈ ਧਨ ਵਖੇ ॥ ਆਪਿ ਕੁਚਜੀ ਦੋਸੁ ਨ ਟੇਊ ਜਾਣਾ ਨਾਹੀ ਰਖੇ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਹਤ ਆਪੇ ਭਰਮਿ
 ਮੁਲਾਣੀ ॥ ਅਖਰ ਲਿਖੇ ਸੇਈ ਗਾਵਾ ਅਕਰ ਨ ਜਾਣਾ ਬਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਠਿ ਕਸੀਦਾ ਪਹਿਰਹਿ ਚੋਲੀ ਤਾਂ
 ਤੁਸੁ ਜਾਣਹੁ ਨਾਰੀ ॥ ਜੇ ਘਰੁ ਰਾਖਹਿ ਬੁਰਾ ਨ ਚਾਖਹਿ ਹੋਵਹਿ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ॥੨॥ ਜੇ ਤੂੰ ਪਡਿਆ ਪਂਡਿਤੁ ਕੀਨਾ
 ਦੁਇ ਅਖਰ ਦੁਇ ਨਾਵਾ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਏਕੁ ਲਮਧਾਏ ਜੇ ਕਰਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਾਂ ॥੩॥੨॥੧੦॥ ਬਸੰਤੁ ਛਿੰਡੋਲ
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਰਾਜਾ ਬਾਲਕੁ ਨਗਰੀ ਕਾਚੀ ਦੁਸਟਾ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੋ ॥ ਦੁਇ ਮਾਈ ਦੁਇ ਬਾਪਾ ਪਡੀਅਹਿ ਪਂਡਿਤ
 ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੋ ॥੧॥ ਸੁਆਮੀ ਪਂਡਿਤਾ ਤੁਸੁ ਦੇਹੁ ਮਤੀ ॥ ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਪਾਵਤ ਪ੍ਰਾਨਪਤੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਭੀਤਰਿ ਅਗਨਿ ਬਨਾਸਪਤਿ ਮਤਲੀ ਸਾਗਰੁ ਪੰਡੈ ਪਾਇਆ ॥ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਦੁਇ ਘਰ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਐਸਾ ਗਿਆਨੁ
 ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਰਾਮ ਰਖਤਾ ਜਾਣੀਐ ਇਕ ਮਾਈ ਭੋਗੁ ਕਰੇਇ ॥ ਤਾ ਕੇ ਲਖਣ ਜਾਣੀਅਹਿ ਖਿਮਾ ਧਨੁ
 ਸੰਗ੍ਰਹੇਇ ॥੩॥ ਕਹਿਆ ਸੁਣਹਿ ਨ ਖਾਇਆ ਮਾਨਹਿ ਤਿਨਾ ਹੀ ਸੇਤੀ ਵਾਸਾ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ
 ਖਿਨੁ ਤੋਲਾ ਖਿਨੁ ਮਾਸਾ ॥੪॥੩॥੧੧॥ ਬਸੰਤੁ ਛਿੰਡੋਲ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹੁ ਗੁਰੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਭੁਖ
 ਗਵਾਏ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਵ੃ਡਾਏ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੧॥ ਮਤ ਭੂਲਹਿ ਰੇ ਮਨ ਚੇਤਿ ਹਰੀ
 ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨਾਹੀ ਤੈ ਲੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਹਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਨਹੀ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਨਹੀ ਭਗਤਿ ਹਰੀ ॥ ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਸਤਸੰਗੁ ਨ ਪਾਈਐ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰੀ
 ॥੨॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਗੁਪਤੁ ਤੁਧਾਏ ਵੇਖੈ ਪਰਗਟੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਹਿ ਸੁ ਹਰਿ ਰੰਗ ਭੀਨੇ

ਹਰਿ ਜਲੁ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਮਨਾ ॥੩॥ ਜਿਨ ਕਤ ਤਖਤਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇ ਪਰਧਾਨ ਕੀਏ ॥ ਪਾਰਸੁ
ਭੇਟਿ ਭਏ ਸੇ ਪਾਰਸ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਰ ਸੰਗਿ ਥੀਏ ॥੪॥੪॥੧੨॥

ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ਦੁਤੁਕੇ

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਾਹਾ ਰੂਤੀ ਮਹਿ ਸਦ ਬਸਨਤੁ ॥ ਜਿਤੁ ਹਰਿਆ ਸਭੁ ਜੀਅ ਜੰਤੁ ॥ ਕਿਆ ਹਤ ਆਖਾ ਕਿਰਮ ਜੰਤੁ ॥ ਤੇਰਾ ਕਿਨੈ ਨ
ਪਾਇਆ ਆਦਿ ਅੰਤੁ ॥੧॥ ਤੈ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਕਰਹਿ ਸੇਵ ॥ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਆਤਮ ਦੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਤਾਂ ਸੇਵਾ ਕਰੈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਤਚਰੈ ॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਪ੍ਰਾਣੀ
ਦੁਤਰੁ ਤਰੈ ॥੨॥ ਬਿਖੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਕਰਤਾਰਿ ਉਪਾਏ ॥ ਸੰਸਾਰ ਬਿਰਖ ਕਤ ਦੁਇ ਫਲ ਲਾਏ ॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ
ਕਰਾਏ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੈ ਖਵਾਏ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥
ਬਿਖਿਆ ਕੀ ਬਾਸਨਾ ਮਨਹਿ ਕਰੇਇ ॥ ਅਪਣਾ ਭਾਣਾ ਆਧਿ ਕਰੇਇ ॥੪॥੧॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਰਾਤੇ ਸਾਚਿ
ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨਿਹਾਲਾ ॥ ਦੱਡਿਆ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦੱਡਿਆਲਾ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨਹੀ ਮੈ ਕੋਇ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ
ਤਿਤ ਰਾਖੈ ਸੋਇ ॥੧॥ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਦਰਸਨ ਦੇਖੇ ਬਿਨੁ ਸਹਜਿ ਮਿਲਤ ਗੁਰੁ
ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲੋਭੀ ਲੋਭਿ ਲੁਭਾਨਾ ॥ ਰਾਮ ਬਿਸਾਰਿ ਬਹੁਰਿ ਪਛੁਤਾਨਾ ॥ ਬਿਛੁਰਤ
ਮਿਲਾਇ ਗੁਰ ਸੇਵ ਰਾਂਗੇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਮਸਤਕਿ ਵਡਭਾਗੇ ॥੨॥ ਪਤਣ ਪਾਣੀ ਕੀ ਇਹ ਦੇਹ ਸਰੀਰਾ ॥
ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ ਕਠਿਨ ਤਨਿ ਪੀਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਦਾਰੁ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰਿ ਰੋਗੁ
ਗਵਾਇਆ ॥੩॥ ਚਾਰਿ ਨਦੀਆ ਅਗਨੀ ਤਨਿ ਚਾਰੇ ॥ ਤੂਸਨਾ ਜਲਤ ਜਲੇ ਅਛਕਾਰੇ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਵਡਭਾਗੀ
ਤਾਰੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਧਾਰੇ ॥੪॥੨॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵੇ ਸੋ ਹਰਿ ਕਾ ਲੋਗੁ ॥ ਸਾਚੁ
ਸਹਜੁ ਕਦੇ ਨ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੁਏ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜ਼ਮਹਿ ਭੀ ਮਰਿ ਜਾਹਿ ॥੧॥
ਸੇ ਜਨ ਜੀਵੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਸਾਚੁ ਸਮਾਲਹਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਨ ਸੇਵਹਿ ਤੇ ਹਰਿ
ਤੇ ਦੂਰਿ ॥ ਦਿਸੰਤਰੁ ਭਵਹਿ ਸਿਰਿ ਪਾਵਹਿ ਧੂਰਿ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਜਨ ਲੀਏ ਲਾਇ ॥ ਤਿਨ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੈ ਤਿਲੁ

न तमाइ ॥२॥ नदरि करे चूकै अभिमानु ॥ साची दरगह पावै मानु ॥ हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥
 गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥३॥ जीअ जंत की करे प्रतिपाल ॥ गुर परसादी सद समाल ॥ दरि
 साचै पति सिउ घरि जाइ ॥ नानक नामि वडाई पाइ ॥४॥३॥ बसंतु महला ३ ॥ अंतरि पूजा
 मन ते होइ ॥ एको वेखै अउरु न कोइ ॥ दूजै लोकी बहुतु दुखु पाइआ ॥ सतिगुरि मैनो एकु दिखाइआ
 ॥१॥ मेरा प्रभु मउलिआ सद बसंतु ॥ इहु मनु मउलिआ गाइ गुण गोबिंद ॥१॥ रहाउ ॥ गुर
 पूछहु तुम् करहु बीचारु ॥ ताँ प्रभ साचे लगै पिआरु ॥ आਪु छोडि होहि दासत भाइ ॥ तउ जगजीवनु
 वसै मनि आइ ॥२॥ भगति करे सद वेखै हजूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ इसु भगती का
 कोई जाणै भेत ॥ सभु मेरा प्रभु आतम देत ॥३॥ आपे सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ जगजीवन सिउ आपि
 चितु लाए ॥ मनु तनु हरिआ सहजि सुभाए ॥ नानक नामि रहे लिव लाए ॥४॥४॥ बसंतु महला ३ ॥
 भगति वछलु हरि वसै मनि आइ ॥ गुर किरपा ते सहज सुभाइ ॥ भगति करे विचहु आपु खोइ ॥
 तद ही साचि मिलावा होइ ॥१॥ भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥ गुर कै हेति साचै प्रेम पिआरि
 ॥१॥ रहाउ ॥ भगति करे सो जनु निरमलु होइ ॥ गुर सबदी विचहु हउमै खोइ ॥ हरि जीउ आपि वसै
 मनि आइ ॥ सदा साँति सुखि सहजि समाइ ॥२॥ साचि रते तिन सद बसंत ॥ मनु तनु हरिआ रवि
 गुण गुविंद ॥ बिनु नावै सूका संसारु ॥ अगनि तृसना जलै वारे वार ॥३॥ सोई करे जि हरि जीउ भावै
 ॥ सदा सुखु सरीरि भाणै चितु लावै ॥ अपणा प्रभु सेवे सहजि सुभाइ ॥ नानक नामु वसै मनि आइ
 ॥४॥५॥ बसंतु महला ३ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाए ॥ मनु तनु हरिआ सतिगुर भाए ॥ सफलिओ
 बिरखु हरि कै दुआरि ॥ साची बाणी नाम पिआरि ॥१॥ ए मन हरिआ सहज सुभाइ ॥ सच फलु
 लागै सतिगुर भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ गुर कै सबदि वेखै सद हजूरि ॥ छाव घणी
 फूली बनराइ ॥ गुरमुखि बिगसै सहजि सुभाइ ॥२॥ अनदिनु कीरतनु करहि दिन राति ॥ सतिगुरि

ਗਵਾਈ ਵਿਚਹੁ ਜੂਠਿ ਭਰਾਂਤਿ ॥ ਪਰਾਂਚ ਵੇਖਿ ਰਹਿਆ ਵਿਸਮਾਦੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਨਾਮ ਪ੍ਰਸਾਦੁ ॥੩॥
 ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਸਭਿ ਰਸ ਭੋਗ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੋਈ ਪਰੁ ਹੋਗ ॥ ਵਡਾ ਦਾਤਾ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਿਲੀਐ
 ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ॥੪॥੬॥ ਬਸਾਂਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗੁ ਸਚੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥ ਏਕੋ ਚੇਤੈ ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਵੈ ॥
 ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥ ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਕਰਹੁ
 ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੇਵਹੁ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਹੈ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ॥ ਗੁਰ ਕੈ
 ਸਬਦਿ ਜਗ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਚਹੁ ਜੁਗ ਪਸਰੀ ਸਾਚੀ ਸੋਇ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤਾ ਜਨੁ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਇਕਿ
 ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਸੇ ਜਨ ਸਾਚੇ ਸਾਚੈ ਭਾਇ ॥ ਸਾਚੁ ਧਿਆਇਨਿ ਦੇਖਿ ਹਜੂਰਿ ॥ ਸਾਂਤ ਜਨਾ ਕੀ
 ਪਾਗ ਪਕੜ ਧੂਰਿ ॥੩॥ ਏਕੋ ਕਰਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੇਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਸੇਵਿਆ
 ਤਿਨਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੭॥ ਬਸਾਂਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਜਨ
 ਦੇਖਿ ਹਜੂਰਿ ॥ ਸਾਂਤ ਜਨਾ ਕੀ ਪਾਗ ਪਕੜ ਧੂਰਿ ॥ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਸਦ ਰਹਹਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਪ੍ਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ
 ਬੁਝਾਇ ॥੧॥ ਦਾਸਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ਵਿਰਲਾ ਕੌਈ ਹੋਇ ॥ ਊਤਮ ਪਦਕੀ ਪਾਵੈ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਕੋ ਸੇਵਹੁ
 ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਸੇਵੀ
 ਕਿਤ ਮਾਇ ॥੨॥ ਸੇ ਜਨ ਸਾਚੇ ਜਿਨੀ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥ ਆਪੁ ਮਾਰਿ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੩॥ ਜਿਨਿ ਗਿਆਨੁ ਕੀਆ ਤਿਸੁ ਹਰਿ ਤੂ ਜਾਣੁ
 ॥ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਸਿਜਾਣੁ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੈ ਤਾਂ ਸੁਧਿ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੪॥੮॥
 ਬਸਾਂਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਕੁਲਾਂ ਕਾ ਕਰਹਿ ਉਥਾਰੁ ॥ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਨਾਮ ਪਿਆਰੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਭੂਲੇ
 ਕਾਹੇ ਆਏ ॥ ਨਾਮਹੁ ਭੂਲੇ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥੧॥ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ਮਰਣੁ ਸਵਾਰੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਾਚੁ
 ਤਰ ਧਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਭੋਜਨੁ ਪਵਿਤੁ ਸਰੀਰਾ ॥ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰਾ ॥
 ਜੰਮੈ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਸਾਚਾ ਸੇਵਹੁ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ

हरि दरि नीसाणै ॥ दरि साचै सचु सोभा होइ ॥ निज घरि वासा पावै सोइ ॥३॥ आपि अभुलु सचा
 सचु सोइ ॥ होरि सभि भूलहि टूजै पति खोइ ॥ साचा सेवहु साची बाणी ॥ नानक नामे साचि समाणी
 ॥४॥६॥ बसंतु महला ३ ॥ बिनु करमा सभ भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ॥
 मनमुख अंधे ठउर न पाई ॥ बिस्टा का कीड़ा बिस्टा माहि समाई ॥१॥ हुकमु मने सो जनु
 परवाणु ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ साचि रते जिना धुरि लिखि पाइआ ॥ हरि का
 नामु सदा मनि भाइआ ॥ सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ जोती जोति मिलाए सोइ ॥२॥ एकु
 नामु तारे संसारु ॥ गुर परसादी नाम पिआरु ॥ बिनु नामै मुकति किनै न पाई ॥ पूरे गुर ते नामु
 पलै पाई ॥३॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ सतिगुर सेवा नामु दृढ़ाए ॥ जिन इकु जाता से जन
 परवाणु ॥ नानक नामि रते दरि नीसाणु ॥४॥१०॥ बसंतु महला ३ ॥ कृपा करे सतिगुरु मिलाए
 ॥ आपे आपि वसै मनि आए ॥ निहचल मति सदा मन धीर ॥ हरि गुण गावै गुणी गहीर ॥१॥
 नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ॥ बृथा जनमु फिरि आवहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ बहु भेख करहि मनि
 साँति न होइ ॥ बहु अभिमानि अपणी पति खोइ ॥ से वडभागी जिन सबदु पछाणिआ ॥ बाहरि
 जादा घर महि आणिआ ॥२॥ घर महि वसतु अगम अपारा ॥ गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ॥
 नामु नव निधि पाई घर ही माहि ॥ सदा रंगि राते सचि समाहि ॥३॥ आपि करे किछु करणु न
 जाइ ॥ आपे भावै लए मिलाइ ॥ तिस ते नेड़ै नाही को टूरि ॥ नानक नामि रहिआ भरपूरि ॥४॥११॥
 बसंतु महला ३ ॥ गुर सबदी हरि चेति सुभाइ ॥ राम नाम रसि रहै अघाइ ॥ कोट कोटंतर के पाप
 जलि जाहि ॥ जीवत मरहि हरि नामि समाहि ॥१॥ हरि की दाति हरि जीउ जाणै ॥ गुर कै सबदि
 इहु मनु मउलिआ हरि गुणदाता नामु वखाणै ॥१॥ रहाउ ॥ भगवै वेसि भ्रमि मुकति न होइ ॥ बहु
 संजमि साँति न पावै कोइ ॥ गुरमति नामु परापति होइ ॥ वडभागी हरि पावै सोइ ॥२॥ कलि महि

ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਇਆ ਜਾਈ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਮੈ ਹਉਮੈ
 ਜਲਿ ਜਾਈ ॥੩॥ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਛੁਟੈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਦੁਖੁ ਸਾਰਾ ॥ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਸੁ ਬਾਹਰਿ
 ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਜਾਣੈ ਸਭੁ ਉਪਾਵਣਹਾਰਾ ॥੪॥੧੨॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ਝਿਕ ਤੁਕੇ ॥ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਕਿਰਮ
 ਜੰਤੁ ॥ ਦੇਹਿ ਤ ਜਾਪੀ ਆਦਿ ਮੰਤੁ ॥੧॥ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵੀਚਾਰੀ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਕੈ ਲਗਤ ਪਾਇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਲਾਗੇ ਨਾਮ ਸੁਆਦਿ ॥ ਕਾਹੇ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਹੁ ਵੈਰਿ ਵਾਦਿ ॥੨॥ ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ
 ਕੀਨੀ ਚੂਕਾ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਸਹਜ ਭਾਡਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੩॥ ਊਤਮੁ ਊਚਾ ਸਬਦ ਕਾਮੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ
 ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ॥੪॥੧॥੧੩॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਬਨਸਪਤਿ ਮਤਲੀ ਚਡਿਆ ਬਸੰਤੁ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਤਲਿਆ
 ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗੁ ॥੧॥ ਤੁਸੁ ਸਾਚੁ ਧਿਆਵਹੁ ਸੁਗਥ ਮਨਾ ॥ ਤਾਂ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਤੁ
 ਮਨਿ ਮਤਲਿਐ ਭਡਿਆ ਅਨਨਦੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਗੋਬਿੰਦ ॥੨॥ ਏਕੋ ਏਕੁ ਸਭੁ ਆਖਿ ਵਖਾਣੈ ॥
 ਹੁਕਮੁ ਕੁੜੈ ਤਾਂ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥੩॥ ਕਹਤ ਨਾਨਕੁ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਆਖਣੁ ਵੇਖਣੁ ਸਭੁ ਸਾਹਿਬ ਤੇ ਹੋਇ
 ॥੪॥੨॥੧੪॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਸਭਿ ਜੁਗ ਤੇਰੇ ਕੀਤੇ ਹੋਏ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਹੋਏ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ
 ਆਪੇ ਲੈਹੁ ਮਿਲਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਚ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਿ ਬਸੰਤੁ ਹਰੇ ਸਭਿ ਲੋਇ ॥
 ਫਲਹਿ ਫੁਲੀਅਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਸਦਾ ਬਸੰਤੁ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਾਖੈ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥੩॥
 ਮਨਿ ਬਸੰਤੁ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹਰਿਆ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਤਨੁ ਬਿਰਖੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਫਲੁ ਪਾਏ ਸੋਇ ॥੪॥੩॥੧੫॥
 ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਤਿਨੁ ਬਸੰਤੁ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਕਰਾਇ ॥੧॥ ਇਸੁ ਮਨ
 ਕਤ ਬਸੰਤ ਕੀ ਲਗੈ ਨ ਸੋਇ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਜਲਿਆ ਦ੍ਰਵੈ ਦੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਧੰਧੈ ਬਾਂਧਾ ਕਰਮ
 ਕਮਾਇ ॥ ਮਾਇਆ ਮੂਠਾ ਸਦਾ ਬਿਲਲਾਇ ॥੨॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਛੁਟੈ ਜਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ॥ ਜਮਕਾਲ ਕੀ ਫਿਰਿ
 ਆਵੈ ਨ ਫੇਟੈ ॥੩॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਛੁਟਾ ਗੁਰਿ ਲੀਆ ਛਡਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ
 ॥੪॥੪॥੧੬॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਬਸੰਤੁ ਚਡਿਆ ਫੂਲੀ ਬਨਰਾਇ ॥ ਏਹਿ ਜੀਅ ਜੰਤ ਫੂਲਹਿ ਹਰਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ

॥੧॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹਰਿਆ ਹੋਇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਤਮੈ ਕਢੈ ਧੋਇ
 ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਣੀ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਹਰਿਆ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ॥੩॥ ਫਲ ਫੂਲ
 ਲਾਗੇ ਜਾਂ ਆਪੇ ਲਾਏ ॥ ਮੂਲਿ ਲਗੈ ਤਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਏ ॥੪॥ ਆਪਿ ਬਸੰਤੁ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਵਾੜੀ ॥ ਨਾਨਕ
 ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਭਗਤਿ ਨਿਰਾਲੀ ॥੫॥੬॥੧੭॥

ਬਸੰਤੁ ਛਿੱਡੀਲ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੨

ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਭਾਈ ਗੁਰ ਸਬਦ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹੀ ਸਦ ਅਪਣਾ ਭਾਈ
 ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਤੇਰਾ ਹਰਿਆ ਹੋਵੈ ਇਕੁ ਹਰਿ
 ਨਾਮਾ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਉਕੇ ਭਾਈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆਇ ॥ ਵਿਚਹੁ ਹਤਮੈ
 ਢੁਖੁ ਤਠਿ ਗਇਆ ਭਾਈ ਸੁਖੁ ਵੁਠਾ ਮਨਿ ਆਇ ॥੩॥ ਧੁਰਿ ਆਪੇ ਜਿਨਾ ਨੋ ਬਖਸਿਐਨੁ ਭਾਈ ਸਬਦੇ
 ਲਾਇਅਨੁ ਮਿਲਾਇ ॥ ਧ੍ਰਿੱਡਿ ਤਿਨਾ ਕੀ ਅਧੁਲੀਐ ਭਾਈ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ
 ਆਪਿ ਭਾਈ ਜਿਨਿ ਹਰਿਆ ਕੀਆ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸੁਖੁ ਸਦ ਵਸੈ ਭਾਈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ
 ਹੋਇ ॥੫॥੧॥੧੮॥੧੯॥੧੮॥੩੦॥

ਰਾਗ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ਇਕ ਤੁਕੇ

ਜਿਤ ਪਸਰੀ ਸ੍ਰੂਜ ਕਿਰਣਿ ਜੋਤਿ ॥ ਤਿਤ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮੰਝਾ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ॥੧॥ ਏਕੋ ਹਰਿ ਰਵਿਆ ਸ਼ਬ
 ਥਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਿਲੀਐ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਅੰਤਰਿ ਏਕੋ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥ ਗੁਰਿ
 ਮਿਲਿਐ ਇਕੁ ਪ੍ਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੩॥ ਏਕੋ ਏਕੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਸਾਕਤ ਨਰ ਲੋਭੀ ਜਾਣਹਿ ਦੂਰਿ ॥੪॥ ਏਕੋ
 ਏਕੁ ਵਰਤੈ ਹਰਿ ਲੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਏਕੁ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੫॥੧॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਢੁਇ
 ਸਦੇ ਪਏ ॥ ਮਨ ਹਰਿ ਸਿਮਰਹੁ ਅੰਤਿ ਸਦਾ ਰਖਿ ਲਾਏ ॥੨॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚੇਤਿ ਸਦਾ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥ ਸਭੁ ਆਲਸੁ
 ਢੂਖ ਭੰਜਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮਤਿ ਗਾਵਹੁ ਗੁਣ ਪ੍ਰਭ ਕਰੇ ॥੩॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਹਤਮੈ ਸੁਏ ॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

कालि दैति संघारे जम पुरि गए ॥२॥ गुरमुखि हरि हरि लिव लागे ॥ जनम मरण दोऊ दुख भागे ॥३॥ भगत जना कउ हरि किरपा धारी ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥४॥२॥

बसंतु ह्लिडोल महला ४ घरु २

੧੬੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਤਨ ਕੋਠੜੀ ਗੜ ਮੰਦਰਿ ਏਕ ਲੁਕਾਨੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤ ਖੋਜੀਐ ਮਿਲਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਨੀ ॥੧॥ ਮਾਧੋ ਸਾਥੂ ਜਨ ਦੇਹੁ ਮਿਲਾਇ ॥ ਦੇਖਤ ਦਰਸੁ ਪਾਪ ਸਭਿ ਨਾਸਹਿ ਪਵਿਤ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪੰਚ ਚੋਰ ਮਿਲਿ ਲਾਗੇ ਨਗਰੀਆ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਹਿਰਿਆ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਖੋਜ ਪਰੇ ਤਬ ਪਕਰੇ ਧਨੁ ਸਾਬਤੁ ਰਾਸਿ ਤਥਰਿਆ ॥੨॥ ਪਾਖੰਡ ਭਰਮ ਉਪਾਵ ਕਰਿ ਥਾਕੇ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਮਾਇਆ ਮਾਇਆ ॥ ਸਾਥੂ ਪੁਰਖੁ ਪੁਰਖਪਤਿ ਪਾਇਆ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰੁ ਗਵਾਇਆ ॥੩॥ ਜਗਨਾਥ ਜਗਦੀਸ ਗੁਸਾਈ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਾਥੁ ਮਿਲਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਁਤਿ ਹੋਵੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਨਿਤ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੪॥੧॥੩॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ४ ਹਿਲਿਡੀਲ ॥ ਤੁਸੁ ਕਡ ਪੁਰਖ ਕਡ ਅਗਮ ਗੁਸਾਈ ਹਮ ਕੀਰੇ ਕਿਰਮ ਤੁਮਨਛੇ ॥ ਹਰਿ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣ ਹਮ ਬਨਛੇ ॥੧॥ ਗੋਬਿੰਦ ਜੀਤ ਸਤਸਙਗਤਿ ਮੇਲਿ ਕਰਿ ਕ੃ਪਛੇ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਮਲੁ ਭਰਿਆ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਕਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹਨਛੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੁਮਰਾ ਜਨੁ ਜਾਤਿ ਅਵਿਜਾਤਾ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਪਤਿਤ ਪਵੀਛੇ ॥ ਹਰਿ ਕੀਓ ਸਗਲ ਭਵਨ ਤੇ ਊਪਰਿ ਹਰਿ ਸੀਮਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਦਿਨਛੇ ॥੨॥ ਜਾਤਿ ਅਜਾਤਿ ਕੋਈ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਵੈ ਸਭਿ ਪੂਰੇ ਮਾਨਸ ਤਿਨਛੇ ॥ ਸੇ ਧੰਨਿ ਕਡੇ ਕਡ ਪੂਰੇ ਹਰਿ ਜਨ ਜਿਨ੍ਹ ਹਰਿ ਧਾਰਿਓ ਹਰਿ ਤੁਝੇ ॥੩॥ ਹਮ ਢੀਢੇ ਢੀਮ ਬਹੁਤੁ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ਹਰਿ ਧਾਰਿ ਕ੃ਪਾ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਛੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਤੂਠੇ ਹਮ ਕੀਏ ਪਤਿਤ ਪਵੀਛੇ ॥੪॥੨॥੪॥ ਬਸੰਤੁ ਹਿਲਿਡੀਲ ਮਹਲਾ ४ ॥ ਮੇਰਾ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਮਨੂਆ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਨਿਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਸਿ ਗੀਧੇ ॥ ਜਿਤ ਬਾਰਿਕੁ ਰਸਕਿ ਪਰਿਓ ਥਨਿ ਮਾਤਾ ਥਨਿ ਕਾਢੇ ਬਿਲਲ ਬਿਲੀਧੇ ॥੧॥ ਗੋਬਿੰਦ ਜੀਤ ਮੇਰੇ ਮਨ ਤਨ ਨਾਮ ਹਰਿ ਬੀਧੇ ॥ ਕਡੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰੁ

सतिगुरु पाइਆ विचि काइआ नगर हरि सीधे ॥੧॥ रहाउ ॥ जन के सास सास है जेते हरि बिरहि
 प्रभू हरि बीधे ॥ जित जल कमल प्रीति अति भारी बिनु जल देखे सुकलीधे ॥੨॥ जन जपिओ नामु
 निरंजनु नरहरि उपदेसि गुरू हरि प्रीधे ॥ जनम जनम की हउमै मलु निकसी हरि अंमृति हरि जलि
 नीधे ॥੩॥ हमरे करम न बिचरहु ठाकुर तुम पैज रखहु अपनीधे ॥ हरि भावै सुणि बिनउ बेनती
 जन नानक सरणि पवीधे ॥੪॥੩॥੫॥ बसंतु ह्लिडोल महला ੪ ॥ मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु
 धावै तिलु घरि नही वासा पाईਐ ॥ गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि आणि
 वसाईਐ ॥੧॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईਐ ॥ हउमै रोगु गडिआ सुखु पाइआ
 हरि सहजि समाधि लगाईਐ ॥੧॥ रहाउ ॥ घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि
 न सकाईਐ ॥ जित ओडा कूपु गुहज खिन काढै तित सतिगुरि वसतु लहाईਐ ॥੨॥ जिन औसा
 सतिगुरु साधु न पाइआ ते धिगु धिगु नर जीवाईਐ ॥ जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी
 बदलै जाईਐ ॥੩॥ मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईਐ ॥ जन नानक
 निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईਐ ॥੪॥੪॥੬॥ बसंतु ह्लिडोल महला ੪ ॥ आवण
 जाणु भडिआ दुखु बिखिआ देह मनमुख सुंजी सुंजु ॥ राम नामु खिनु पलु नही चेतिआ जमि पकरे कालि
 सलुंजु ॥੧॥ गोबिंद जीउ बिखु हउमै ममता मुंजु ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी मिलि संगति
 हरि रसु भुंजु ॥੧॥ रहाउ ॥ सतसंगति साधू दडिआ करि मेलहु सरणागति साधू पंजु ॥ हम डुबदे
 पाथर काढि लेहु प्रभ तुम दीन दडिआल दुख भंजु ॥੨॥ हरि उसतति धारहु रिद अंतरि सुआमी
 सतसंगति मिलि बुधि लम्जु ॥ हरि नामै हम प्रीति लगानी हम हरि विटहु धुमि वंजु ॥੩॥
 जन के पूरि मनोरथ हरि प्रभ हरि नामु देवहु हरि लम्जु ॥ जन नानक मनि तनि अनदु भडिआ है
 गुरि मंत्र दीओ हरि भंजु ॥੪॥੫॥੭॥੧੨॥੧੮॥੭॥੩੭॥

ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੧ ਟੁਤਕੇ

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰੂ ਸੇਵਤ ਕਰਿ ਨਮਸਕਾਰ ॥ ਆਜੁ ਹਮਾਰੈ ਮੰਗਲਚਾਰ ॥ ਆਜੁ ਹਮਾਰੈ ਮਹਾ ਅਨਨਦ ॥ ਚਿੰਤ ਲਥੀ ਭੇਟੇ ਗੋਬਿੰਦ
॥੧॥ ਆਜੁ ਹਮਾਰੈ ਗ੍ਰਹਿ ਬਸਨਤ ॥ ਗੁਨ ਗਾਏ ਪ੍ਰਭ ਤੁਸੁ ਬੇਅੰਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਜੁ ਹਮਾਰੈ ਬਨੇ ਫਾਗ ॥
ਪ੍ਰਭ ਸੰਗੀ ਮਿਲਿ ਖੇਲਨ ਲਾਗ ॥ ਹੋਲੀ ਕੀਨੀ ਸੰਤ ਸੇਵ ॥ ਰੰਗ ਲਾਗਾ ਅਤਿ ਲਾਲ ਦੇਵ ॥੨॥ ਮਨੁ ਤਨੁ
ਮਤਲਿਆਂ ਅਤਿ ਅਨੂਪ ॥ ਸੂਕੈ ਨਾਹੀ ਛਾਵ ਧੂਪ ॥ ਸਗਲੀ ਰੂਤੀ ਹਰਿਆ ਹੋਇ ॥ ਸਦ ਬਸਨਤ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ਦੇਵ
॥੩॥ ਬਿਰਖੁ ਜਮਿਆਂ ਹੈ ਪਾਰਯਾਤ ॥ ਫੂਲ ਲਗੇ ਫਲ ਰਤਨ ਭਾਁਤਿ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਨੇ ਹਰਿ ਗੁਣਹ ਗਾਇ ॥ ਜਨ
ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥੪॥੧॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਟਵਾਣੀ ਧਨ ਮਾਲ ਹਾਟੁ ਕੀਤੁ ॥ ਜ੍ਰਾਅਰੀ ਜ੍ਰਾਏ
ਮਾਹਿ ਚੀਤੁ ॥ ਅਮਲੀ ਜੀਵੈ ਅਮਲੁ ਖਾਇ ॥ ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨੁ ਜੀਵੈ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਅਪਨੈ ਰੰਗਿ ਸਭੁ ਕੋ ਰਚੈ
॥ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭਿ ਲਾਇਆ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੇਘ ਸਮੈ ਮੋਰ ਨਿਰਤਿਕਾਰ ॥ ਚੰਦ ਦੇਖਿ ਬਿਗਸਹਿ
ਕਤਲਾਰ ॥ ਮਾਤਾ ਬਾਰਿਕ ਦੇਖਿ ਅਨਨਦ ॥ ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨ ਜੀਵਹਿ ਜਧਿ ਗੋਬਿੰਦ ॥੨॥ ਸਿੰਘ ਰੁਚੈ ਸਦ ਭੋਜਨੁ
ਮਾਸ ॥ ਰਣੁ ਦੇਖਿ ਸੂਰੇ ਚਿਤ ਤਲਾਸ ॥ ਕਿਰਪਨ ਕਤ ਅਤਿ ਧਨ ਪਿਆਰੁ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਕਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਧਾਰੁ
॥੩॥ ਸਰਬ ਰੰਗ ਇਕ ਰੰਗ ਮਾਹਿ ॥ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਸੁਖ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ॥ ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਇਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
ਨਾਨਕ ਗੁਰੂ ਜਿਸੁ ਕਰੇ ਦਾਨੁ ॥੪॥੨॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਿਸੁ ਬਸਨਤੁ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਕ੃ਪਾਲੁ ॥ ਤਿਸੁ ਬਸਨਤੁ ਜਿਸੁ
ਗੁਰੂ ਦਇਆਲੁ ॥ ਮੰਗਲੁ ਤਿਸ ਕੈ ਜਿਸੁ ਏਕੁ ਕਾਮੁ ॥ ਤਿਸੁ ਸਦ ਬਸਨਤੁ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਗ੍ਰਹਿ ਤਾ ਕੈ
ਬਸਨਤੁ ਗਨੀ ॥ ਜਾ ਕੈ ਕੀਰਤਨੁ ਹਰਿ ਧੁਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਾਰਖ੍ਰਹਮ ਮਤਲਿ ਮਨਾ ॥ ਗਿਆਨੁ ਕਮਾਈਐ
ਪ੍ਰਭਿ ਜਨਾਂ ॥ ਸੋ ਤਪਸੀ ਜਿਸੁ ਸਾਧਸੰਗੁ ॥ ਸਦ ਧਿਆਨੀ ਜਿਸੁ ਗੁਰਹਿ ਰੰਗ ॥੨॥ ਸੇ ਨਿਰਭਤ ਜਿਨ੍ ਭਤ
ਪਇਆ ॥ ਸੋ ਸੁਖੀਆ ਜਿਸੁ ਭਰਮੁ ਗਇਆ ॥ ਸੋ ਇਕਾਂਤੀ ਜਿਸੁ ਰਿਦਾ ਥਾਇ ॥ ਸੋਈ ਨਿਹਚਲੁ ਸਾਚ ਠਾਇ ॥੩॥
ਏਕਾ ਖੋਜੈ ਏਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਦਰਸਨ ਪਰਸਨ ਹੀਤ ਚੀਤਿ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰੰਗ ਸਹਜਿ ਮਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਿਸੁ ਜਨ

ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੪॥੩॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਤੁਮ ਪਿੰਡ ਦੀਨੁ ॥ ਸੁਗਧ ਸੁੰਦਰ ਧਾਰਿ ਜੋਤਿ ਕੀਨੁ ॥ ਸਭਿ
 ਜਾਚਿਕ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮ ਦਿੱਥਾਲ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹੋਵਤ ਨਿਹਾਲ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਾਰਣ ਕਰਣ ਜੋਗ ॥ ਹਉ ਪਾਵਤ
 ਤੁਮ ਤੇ ਸਗਲ ਥੋਕ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹੋਵਤ ਉਧਾਰ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸਾਰ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ
 ਪਤਿ ਸੋਭਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਬਿਘਨੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥੨॥ ਜਾ ਕਾਰਣਿ ਇਹ ਦੁਲਭ ਦੇਹ ॥ ਸੋ ਬੋਲੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭੂ
 ਦੇਹਿ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਇਹੁ ਬਿਸ਼ਾਮੁ ॥ ਸਦਾ ਰਿਦੈ ਜਪੀ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੋ ਨਾਮੁ ॥੩॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾ ਕੋਇ ਨਾਹੀ ॥
 ਸਭੁ ਤੇਰੋ ਖੇਲੁ ਤੁੜਾ ਮਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਾਖਿ ਲੇ ॥ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਪੂਰਾ ਗੁਰੂ ਮਿਲੇ ॥੪॥੪॥
 ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮੈਰੈ ਸੰਗਿ ਰਾਇ ॥ ਜਿਸਹਿ ਦੇਖਿ ਹਉ ਜੀਵਾ ਮਾਇ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦੁਖੁ ਨ
 ਹੋਇ ॥ ਕਰਿ ਦਿੱਆ ਮਿਲਾਵਹੁ ਤਿਸਹਿ ਮੋਹਿ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ਮਨ ॥ ਜੀਤ ਪ੍ਰਾਨ ਸਭੁ ਤੇਰੋ ਧਨ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕਤ ਖੋਜਹਿ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵ ॥ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਖ ਨ ਲਹਹਿ ਭੇਵ ॥ ਜਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕਹੀ ਨ
 ਜਾਇ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਜਾ ਕੇ ਭਗਤ ਆਨੰਦ ਮੈ ॥ ਜਾ ਕੇ ਭਗਤ ਕਤ ਨਾਹੀ ਖੈ
 ॥ ਜਾ ਕੇ ਭਗਤ ਕਤ ਨਾਹੀ ਭੈ ॥ ਜਾ ਕੇ ਭਗਤ ਕਤ ਸਦਾ ਜੈ ॥੩॥ ਕਤਨ ਉਪਮਾ ਤੇਰੀ ਕਹੀ ਜਾਇ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ
 ਪ੍ਰਭੁ ਰਹਿਓ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਾਚੈ ਏਕੁ ਦਾਨੁ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਦੇਹੁ ਨਾਮੁ ॥੪॥੫॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮਿਲਿ ਪਾਣੀ ਜਿਤ ਹਰੇ ਬੂਟ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਤਿਤ ਹਉਮੈ ਛੂਟ ॥ ਜੈਸੀ ਦਾਸੇ ਧੀਰ ਮੀਰ ॥ ਤੈਸੇ ਉਧਾਰਨ
 ਗੁਰਹ ਪੀਰ ॥੧॥ ਤੁਮ ਦਾਤੇ ਪ੍ਰਭ ਦੇਨਹਾਰ ॥ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਤਿਸੁ ਨਮਸਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਸਹਿ
 ਪਰਾਪਤਿ ਸਾਧਸੰਗੁ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਲਾਗਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਰੰਗੁ ॥ ਤੇ ਬੰਧਨ ਤੇ ਭਏ ਮੁਕਤਿ ॥ ਭਗਤ ਅਰਾਧਹਿ ਜੋਗ
 ਜੁਗਤਿ ॥੨॥ ਨੈਤ ਸੰਤੋਖੇ ਦਰਸੁ ਪੇਖਿ ॥ ਰਸਨਾ ਗਾਏ ਗੁਣ ਅਨੇਕ ॥ ਤੂਸਨਾ ਬੂੜੀ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਮਨੁ
 ਆਘਾਨਾ ਹਰਿ ਰਸਹਿ ਸੁਆਦਿ ॥੩॥ ਸੇਵਕੁ ਲਾਗੇ ਚਰਣ ਸੇਵ ॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਅਪਰੰਪਰ ਦੇਵ ॥ ਸਗਲ
 ਉਧਾਰਣ ਤੇਰੋ ਨਾਮੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪਾਇਓ ਇਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥੪॥੬॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੁਮ ਕਡ ਦਾਤੇ ਦੇ ਰਹੇ ॥
 ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਮਹਿ ਰਖਿ ਰਹੇ ॥ ਦੀਨੇ ਸਗਲੇ ਭੋਜਨ ਖਾਨ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਗੁਨ ਇਕੁ ਗੁਨੁ ਨ ਜਾਨ ॥੧॥ ਹਉ ਕਛੂ

ਨ ਜਾਨਤ ਤੇਰੀ ਸਾਰ ॥ ਤੂ ਕਰਿ ਗਤਿ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰਭ ਦਿੱਖਿਆਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾਪ ਨ ਤਾਪ ਨ ਕਰਮ ਕੀਤਿ ॥
 ਆਵੈ ਨਾਹੀ ਕਛੂ ਰੀਤਿ ॥ ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਖਉ ਆਸ ਏਕ ॥ ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਕੀ ਤਰਤ ਟੇਕ ॥੨॥ ਸਰਬ ਕਲਾ ਪ੍ਰਭ
 ਤੁਸੁ ਪ੍ਰਬੀਨ ॥ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਜਲਹਿ ਮੀਨ ॥ ਅਗਮ ਅਗਮ ਊਚਹ ਤੇ ਊਚ ॥ ਹਮ ਥੋਰੇ ਤੁਮ ਬਹੁਤ ਮੂਚ ॥੩॥
 ਜਿਨ ਤੂ ਧਿਆਇਆ ਸੇ ਗਨੀ ॥ ਜਿਨ ਤੂ ਪਾਇਆ ਸੇ ਧਨੀ ॥ ਜਿਨੁ ਤੂ ਸੇਵਿਆ ਸੁਖੀ ਸੇ ॥ ਸੰਤ ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ
 ਪਰੇ ॥੪॥੭॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਿਸੁ ਤੂ ਸੇਵਿ ਜਿਨੁ ਤੂ ਕੀਆ ॥ ਤਿਸੁ ਅਰਾਧਿ ਜਿਨੁ ਜੀਤ ਦੀਆ ॥
 ਤਿਸ ਕਾ ਚਾਕਰੁ ਹੋਹਿ ਫਿਰਿ ਡਾਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਕਰਿ ਪੋਤਦਾਰੀ ਫਿਰਿ ਢੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥੧॥ ਏਵਡ
 ਭਾਗ ਹੋਹਿ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥ ਸੋ ਪਾਏ ਇਹੁ ਪਦੁ ਨਿਰਕਾਣੀ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੂਜੀ ਸੇਵਾ ਜੀਵਨੁ ਬਿਰਥਾ ॥ ਕਛੂ ਨ
 ਹੋਈ ਹੈ ਪ੍ਰੰਨ ਅਰਥਾ ॥ ਮਾਣਸ ਸੇਵਾ ਖਰੀ ਦੁਹੇਲੀ ॥ ਸਾਧ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੀ ॥੨॥ ਜੇ ਲੋਡਿਹਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ
 ਭਾਈ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਗੁਰਹਿ ਬਤਾਈ ॥ ਊਹਾ ਜਪੀਐ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਪਾਰਗਰਾਮ ॥੩॥ ਸਗਲ
 ਤਤ ਮਹਿ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ॥ ਸਰਬ ਧਿਆਨ ਮਹਿ ਏਕੁ ਧਿਆਨੁ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਮਹਿ ਊਤਮ ਧੁਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ
 ਮਿਲਿ ਗਾਇ ਗੁਨਾ ॥੪॥੮॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਿਸੁ ਬੋਲਤ ਮੁਖੁ ਪਵਿਤੁ ਹੋਇ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਨਿਰਮਲ ਹੈ
 ਸੋਇ ॥ ਜਿਸੁ ਅਰਾਧੇ ਜਮੁ ਕਿਛੁ ਨ ਕਹੈ ॥ ਜਿਸ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਲਹੈ ॥੧॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਬੋਲਿ ਰਾਮ ਰਾਮ ॥
 ਤਿਆਗਹੁ ਮਨ ਕੇ ਸਗਲ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਸ ਕੇ ਧਾਰੇ ਧਰਣਿ ਅਕਾਸੁ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜਿਸ ਕਾ ਹੈ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥
 ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਹੋਇ ॥ ਅੰਤ ਕਾਲਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਨ ਰੋਇ ॥੨॥ ਸਗਲ ਧਰਮ ਮਹਿ ਊਤਮ
 ਧਰਮ ॥ ਕਰਮ ਕਰਤੂਤਿ ਕੈ ਊਪਰਿ ਕਰਮ ॥ ਜਿਸ ਕਤ ਚਾਹਹਿ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵ ॥ ਸੰਤ ਸਭਾ ਕੀ ਲਗਹੁ ਸੇਵ
 ॥੩॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖਿ ਜਿਸੁ ਕੀਆ ਦਾਨੁ ॥ ਤਿਸ ਕਤ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕਹੀ ਨ
 ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥੪॥੯॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਤਨ ਭੀਤਰਿ ਲਾਗੀ ਪਿਆਸ ॥
 ਗੁਰਿ ਦਿੱਖਿਆਲਿ ਪੂਰੀ ਮੇਰੀ ਆਸ ॥ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੇ ਸਾਧਸੰਗਿ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪਿਐ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ॥੧॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਬਸਨਤੁ ਬਨਾ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਤਰਿ ਧਾਰੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥

समरथ सुआमी कारण करण ॥ मोहि अनाथ प्रभ तेरी सरण ॥ जीव जंत तेरे आधारि ॥ करि किरपा
 प्रभ लेहि निसतारि ॥२॥ भव खंडन दुख नास देव ॥ सुरि नर मुनि जन ता की सेव ॥ धरणि अकासु
 जा की कला माहि ॥ तेरा दीआ सभि जंत खाहि ॥३॥ अंतरजामी प्रभ दइआल ॥ अपणे दास कउ
 नदरि निहालि ॥ करि किरपा मोहि देहु दानु ॥ जपि जीवै नानकु तेरो नामु ॥४॥१०॥ बसंतु महला ੫
 ॥ राम रंगि सभ गए पाप ॥ राम जपत कछु नही संताप ॥ गोबिंद जपत सभि मिटे अंधेर ॥ हरि
 सिमरत कछु नाहि फेर ॥१॥ बसंतु हमारै राम रंग ॥ संत जना सिउ सदा संगु ॥२॥ रहाउ ॥
 संत जनी कीआ उपदेसु ॥ जह गोबिंद भगतु सो धंनि देसु ॥ हरि भगतिहीन उदिआन थानु ॥
 गुर प्रसादि घटि घटि पछानु ॥२॥ हरि कीरतन रस भोग रंग ॥ मन पाप करत तू सदा संगु ॥
 निकटि पेखु प्रभु करणहार ॥ ईत ऊत प्रभ कारज सार ॥३॥ चरन कमल सिउ लगो धिआनु ॥
 करि किरपा प्रभि कीनो दानु ॥ तेरिआ संत जना की बाछउ धूरि ॥ जपि नानक सुआमी सद हजूरि
 ॥४॥११॥ बसंतु महला ੫ ॥ सचु परमेसरु नित नवा ॥ गुर किरपा ते नित चवा ॥ प्रभ रखवाले
 माई बाप ॥ जा कै सिमरणि नही संताप ॥१॥ खसमु धिआई इक मनि इक भाइ ॥ गुर पूरे की
 सदा सरणाई साचै साहिबि रखिआ कंठि लाइ ॥२॥ रहाउ ॥ अपणे जन प्रभि आपि रखे ॥ दुस्ट
 दूत सभि भ्रमि थके ॥ बिनु गुर साचे नही जाइ ॥ दुखु देस दिसंतरि रहे धाइ ॥२॥ किरतु ओना का
 मिटसि नाहि ॥ ओइ अपणा बीजिआ आपि खाहि ॥ जन का रखवाला आपि सोइ ॥ जन कउ पहुचि न
 सकसि कोइ ॥३॥ प्रभि दास रखे करि जतनु आपि ॥ अखंड पूरन जा को प्रतापु ॥ गुण गोबिंद नित
 रसन गाइ ॥ नानकु जीवै हरि चरण धिआइ ॥४॥१२॥ बसंतु महला ੫ ॥ गुर चरण सरेवत दुखु
 गइआ ॥ पारब्रह्मि प्रभि करी मइआ ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ जपि जीवै नानकु राम नाम
 ॥१॥ सा रुति सुहावी जितु हरि चिति आवै ॥ बिनु सतिगुर दीसै बिललाँती साकतु फिरि फिरि आवै

जावै ॥१॥ रहाउ ॥ से धनवंत जिन हरि प्रभु रासि ॥ काम क्रोध गुर सबदि नासि ॥ भै बिनसे निरभै
पटु पाइआ ॥ गुर मिलि नानकि खसमु धिआइआ ॥२॥ साधसंगति प्रभि कीओ निवास ॥ हरि जपि
जपि होई पूरन आस ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ ॥ गुर मिलि नानकि हरि हरि कहिआ
॥३॥ असट सिधि नव निधि एह ॥ करमि परापति जिसु नामु देह ॥ प्रभ जपि जपि जीवहि तेरे दास
॥ गुर मिलि नानक कमल प्रगास ॥४॥१३॥

बसंतु महला ੫ ਘਰੁ ੧ ਇਕ ਤੁਕੇ

੧੪ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਗਲ ਝਿਛਾ ਜਪਿ ਪੁਨੀਆ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਲੇ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ॥੧॥ ਤੁਮ ਖਵੁ ਗੋਬਿੰਦੈ ਖਣ ਜੋਗੁ ॥ ਜਿਤੁ
ਰਵਿਐ ਸੁਖ ਸਹਜ ਭੋਗੁ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥ ਅਪਣਾ ਦਾਸੁ ਆਪਿ ਸਮਾਲਿਆ
॥੨॥ ਸੇਜ ਸੁਹਾਕੀ ਰਸਿ ਬਨੀ ॥ ਆਇ ਮਿਲੇ ਪ੍ਰਭ ਸੁਖ ਧਨੀ ॥੩॥ ਮੇਰਾ ਗੁਣੁ ਅਵਗਣੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥
ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਚਰਣ ਪ੍ਰਾਜਾਰਿਆ ॥੪॥੧॥੧੪॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਿਲਬਿਖ ਬਿਨਸੇ ਗਾਇ ਗੁਨਾ ॥ ਅਨਦਿਨ
ਤੁਧੀ ਸਹਜ ਧੁਨਾ ॥੧॥ ਮਨੁ ਮਤਲਿਓ ਹਰਿ ਚਰਨ ਸੰਗਿ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਾਥੁ ਜਨ ਭੇਟੇ ਨਿਤ ਰਾਤੈ ਹਰਿ
ਨਾਮ ਰੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਪਾਲ ॥ ਲਡਿ ਲਾਇ ਤਥਾਰੇ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ॥੨॥ ਇਹੁ
ਮਨੁ ਹੋਆ ਸਾਧ ਧੂਰਿ ॥ ਨਿਤ ਦੇਖੈ ਸੁਆਮੀ ਹਜੂਰਿ ॥੩॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਤ੍ਰਸਨਾ ਗੱਈ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ
ਭੰਈ ॥੪॥੨॥੧੫॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੋਗ ਮਿਟਾਏ ਪ੍ਰਭੂ ਆਪਿ ॥ ਬਾਲਕ ਰਾਖੇ ਅਪਨੇ ਕਰ ਥਾਪਿ ॥੧॥
ਸਾਁਤਿ ਸਹਜ ਗ੍ਰਹਿ ਸਦ ਬਸੰਤੁ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਸਰਣੀ ਆਏ ਕਲਿਆਣ ਰੂਪ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੰਤੁ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪ ਕਟੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ॥ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਕਤ ਨਿਤ ਨਿਤ ਜਾਪਿ ॥੨॥ ਜੋ ਜਨੁ ਤੇਰਾ ਜਪੇ ਨਾਤ ॥
ਸਭਿ ਫਲ ਪਾਏ ਨਿਹਚਲ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਭਲੀ ਰੀਤਿ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਜਪਦੇ ਨੀਤ ਨੀਤਿ
॥੪॥੩॥੧੬॥ ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹੁਕਮੁ ਕਰਿ ਕੀਨੇ ਨਿਹਾਲ ॥ ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕਤ ਭਿਆ ਦਿਆਲੁ
॥੧॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰਾਈ ਸਭੁ ਪ੍ਰਾ ਕੀਆ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਮਹਿ ਦੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਮੁ ਧਰਮੁ ਮੇਰਾ

ਕਛੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਓ ॥ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਭਵਜਲੁ ਨਿਸਤਾਰਿਓ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭਿ ਕਾਟਿ ਮੈਲੁ ਨਿਰਮਲ ਕਰੇ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ
ਕੀ ਸਰਣੀ ਪਏ ॥੩॥ ਆਪਿ ਕਰਹਿ ਆਪਿ ਕਰਣੈਹਾਰੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਉਧਾਰੇ ॥੪॥੪॥੧੭॥

ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੫

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦੇਖੁ ਫੂਲ ਫੂਲ ਫੂਲੇ ॥ ਅਛਾ ਤਿਆਗਿ ਤਿਆਗੇ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪਾਗੇ ॥ ਤੁਮ ਮਿਲਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸਭਾਗੇ ॥ ਹਰਿ
ਚੇਤਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਘਨ ਬਾਸੁ ਕੂਲੇ ॥ ਇਕਿ ਰਹੇ ਸੂਕਿ ਕਠੂਲੇ ॥ ਬਸੰਤ ਰੁਤਿ ਆਈ ॥ ਪਰਫੂਲਤਾ
ਰਹੇ ॥੧॥ ਅਥ ਕਲੂ ਆਇਆ ਰੇ ॥ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਬੋਵਹੁ ਬੋਵਹੁ ॥ ਅਨ ਰੁਤਿ ਨਾਹੀ ਨਾਹੀ ॥ ਮਤੁ ਭਰਮਿ
ਮੂਲਹੁ ਮੂਲਹੁ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਹੈ ਲੇਖਾ ॥ ਮਨ ਰੁਤਿ ਨਾਮ ਰੇ ॥ ਗੁਨ ਕਹੇ ਨਾਨਕ
ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥੨॥੧੮॥

ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਛਿਡੀਲ

੧੮੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹੋਇ ਇਕਤਰ ਮਿਲਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਦੁਬਿਧਾ ਟ੍ਰੂਰਿ ਕਰਹੁ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਕੇ ਹੋਵਹੁ ਜੋੜੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੈਸਹੁ
ਸਫਾ ਵਿਛਾਇ ॥੧॥ ਇਨ੍ ਬਿਧਿ ਪਾਸਾ ਢਾਲਹੁ ਬੀਰ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਅੰਤ ਕਾਲਿ ਨਹ
ਲਾਗੈ ਪੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਤੁਮ ਚਤੁਪਡਿ ਸਾਜਹੁ ਸਤੁ ਕਰਹੁ ਤੁਮ ਸਾਰੀ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ
ਜੀਤਹੁ ਐਸੀ ਖੇਲ ਹਰਿ ਪਿਆਰੀ ॥੨॥ ਤਠਿ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰਹੁ ਪਰਭਾਤੇ ਸੋਏ ਹਰਿ ਆਰਾਧੇ ॥ ਬਿਖੜੇ ਦਾਤ
ਲਮਧਾਵੈ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਤੇ ॥੩॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਖੇਲੈ ਆਪੇ ਦੇਖੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਰਚਨੁ
ਖਾਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋ ਨ਼ ਖੇਲੈ ਸੋ ਜਿਣ ਬਾਜੀ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੪॥੧॥੧੬॥
ਬਸੰਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ਛਿਡੀਲ ॥ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਤੂਹੈ ਜਾਣਹਿ ਅਤ਼ਰੁ ਨ ਟ੍ਰੂਜਾ ਜਾਣੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਕੂਪਾ ਕਰਹਿ ਮੇਰੇ
ਪਿਆਰੇ ਸੋਈ ਤੁੜੈ ਪਛਾਣੈ ॥੧॥ ਤੇਰਿਆ ਭਗਤਾ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਾ ਰੰਗ ਤੇਰੇ
ਆਪਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੇਰੀ ਸੇਵਾ ਤੁੜੈ ਤੇ ਹੋਵੈ ਅਤ਼ਰੁ ਨ ਟ੍ਰੂਜਾ ਕਰਤਾ ॥ ਭਗਤੁ ਤੇਰਾ ਸੋਈ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਜਿਸ ਨੋ

ਤੂ ਰੁਂਗੁ ਧਰਤਾ ॥੨॥ ਤੂ ਕਡ ਦਾਤਾ ਤੂ ਕਡ ਦਾਨਾ ਅਤਰੁ ਨਹੀ ਕੋ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ॥ ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰਾ ਹਤ
 ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਤੇਰੀ ਪ੍ਰ੍ਯਾ ॥੩॥ ਤੇਰਾ ਮਹਲੁ ਅਗੋਚਰੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਬਿਖਮੁ ਤੇਰਾ ਹੈ ਭਾਣਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਢਹਿ
 ਪਇਆ ਦੁਆਰੈ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਸੁਗਧ ਅਜਾਣਾ ॥੪॥੨॥੨੦॥ ਬਸਤੁ ਛਿੰਡੋਲ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੂਲੁ ਨ ਬੂੜੈ ਆਪੁ
 ਨ ਸੂੜੈ ਭਰਮਿ ਬਿਆਪੀ ਅਛਾ ਮਨੀ ॥੧॥ ਪਿਤਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਧਨੀ ॥ ਮੋਹਿ ਨਿਸਤਾਰਹੁ ਨਿਰਗੁਨੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਓਪਤਿ ਪਰਲਤ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਹੋਵੈ ਇਹ ਬੀਚਾਰੀ ਹਰਿ ਜਨੀ ॥੨॥ ਨਾਮ ਪ੍ਰਭੂ ਕੇ ਜੋ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਕਲਿ ਮਹਿ
 ਸੁਖੀਏ ਸੇ ਗਨੀ ॥੩॥ ਅਕਰੁ ਤਪਾਤ ਨ ਕੋਈ ਸੂੜੈ ਨਾਨਕ ਤਰੀਐ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ॥੪॥੩॥੨੧॥

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਰਾਗੁ ਬਸਤੁ ਛਿੰਡੋਲ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਸਾਥੋ ਇਹੁ ਤਨੁ ਮਿਥਿਆ ਜਾਨਤ ॥ ਧਾ ਭੀਤਰਿ
 ਜੋ ਰਾਮੁ ਬਸਤੁ ਹੈ ਸਾਚੋ ਤਾਹਿ ਪਛਾਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਹੈ ਸੰਪਤਿ ਸੁਪਨੇ ਕੀ ਦੇਖਿ ਕਹਾ ਐਡਾਨੋ ॥
 ਸੰਗਿ ਤਿਹਾਰੈ ਕਛੂ ਨ ਚਾਲੈ ਤਾਹਿ ਕਹਾ ਲਪਟਾਨੋ ॥੧॥ ਤਉ ਨਿੰਦਾ ਦੌੜ ਪਰਹਰਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਤਉ ਆਨੋ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਭ ਹੀ ਮੈ ਪ੍ਰੰਨ ਏਕ ਪੁਰਖ ਭਗਵਾਨੋ ॥੨॥੧॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਪਾਪੀ ਹੀਐ ਮੈ ਕਾਮੁ ਬਸਾਇ ॥
 ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ ਧਾ ਤੇ ਗਹਿਓ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋਗੀ ਜੰਗਮ ਅਰੁ ਸੰਨਿਆਸ ॥ ਸਭ ਹੀ ਪਰਿ ਡਾਰੀ ਇਹ
 ਫਾਸ ॥੧॥ ਜਿਹਿ ਜਿਹਿ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਿ ॥ ਤੇ ਭਵ ਸਾਗਰ ਤਤਰੇ ਪਾਰਿ ॥੨॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਨਾਇ
 ॥ ਦੀਜੈ ਨਾਮੁ ਰਹੈ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੩॥੨॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਮਾਈ ਮੈ ਧਨੁ ਪਾਇਓ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥ ਮਨੁ ਮੇਰੋ ਧਾਵਨ
 ਤੇ ਛੂਟਿਓ ਕਰਿ ਬੈਠੋ ਬਿਸਰਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਤਨ ਤੇ ਭਾਗੀ ਉਪਜਿਓ ਨਿਰਮਲ ਗਿਆਨੁ ॥ ਲੋਭ
 ਮੋਹ ਏਹ ਪਰਸਿ ਨ ਸਾਕੈ ਗਹੀ ਭਗਤਿ ਭਗਵਾਨ ॥੧॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਸੰਸਾ ਚੂਕਾ ਰਤਨੁ ਨਾਮੁ ਜਬ ਪਾਇਆ
 ॥ ਤੂਸਨਾ ਸਕਲ ਬਿਨਾਸੀ ਮਨ ਤੇ ਨਿਜ ਸੁਖ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥੨॥ ਜਾ ਕਤ ਹੋਤ ਦਿੱਤਾਲੁ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ
 ਸੋ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕੀ ਸੰਪੈ ਕੋਊ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ॥੩॥੩॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੬ ॥
 ਮਨ ਕਹਾ ਬਿਸਾਰਿਓ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ॥ ਤਨੁ ਬਿਨਸੈ ਜਮ ਸਿਤ ਪੈ ਕਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਹੁ ਜਗੁ ਧ੍ਰਾਏ ਕਾ ਪਹਾਰ

॥ ਤੈ ਸਾਚਾ ਮਾਨਿਆ ਕਿਹ ਬਿਚਾਰਿ ॥੧॥ ਧਨੁ ਦਾਰਾ ਸੰਪਤਿ ਗੇਹ ॥ ਕਛੁ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਸਮਝ ਲੇਹ ॥੨॥
 ਡਿਕ ਭਗਤਿ ਨਾਰਾਇਨ ਹੋਇ ਸੰਗਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਜੁ ਤਿਹ ਏਕ ਰੰਗਿ ॥੩॥੪॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਕਹਾ
 ਭੂਲਿਓ ਰੇ ਝੂਠੇ ਲੋਭ ਲਾਗ ॥ ਕਛੁ ਬਿਗਰਿਓ ਨਾਹਿਨ ਅਜਹੁ ਜਾਗ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਮ ਸੁਪਨੈ ਕੈ ਡਿਹੁ ਜਗੁ
 ਜਾਨੁ ॥ ਬਿਨਸੈ ਛਿਨ ਮੈ ਸਾਚੀ ਮਾਨੁ ॥੧॥ ਸੰਗਿ ਤੈਰੈ ਹਰਿ ਬਸਤ ਨੀਤ ॥ ਨਿਸ ਬਾਸੁਰ ਭਜੁ ਤਾਹਿ ਮੀਤ ॥੨॥
 ਬਾਰ ਅੰਤ ਕੀ ਹੋਇ ਸਹਾਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਨ ਤਾ ਕੇ ਗਾਇ ॥੩॥੫॥

ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੧ ਦੁਤੁਕੀਆ ੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਗੁ ਕਤਾਆ ਨਾਮੁ ਨਹੀ ਚੀਤਿ ॥ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਗਿਰੈ ਦੇਖੁ ਭੀਤਿ ॥ ਮਨ੍ਹਾ ਡੋਲੈ ਚੀਤਿ ਅਨੀਤਿ ॥ ਜਗ ਸਿਤ
 ਤੂਟੀ ਝੂਠ ਪਰੀਤਿ ॥੧॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਬਿਖੁ ਬਜਰੁ ਭਾਰੁ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਗੁਨ ਚਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਘਰੁ ਬਾਲੂ
 ਕਾ ਘੂਮਨ ਧੇਰਿ ॥ ਬਰਖਸਿ ਬਾਣੀ ਬੁਦਕੁਦਾ ਹੇਰਿ ॥ ਮਾਤਰ ਕੁੰਦ ਤੇ ਧਰਿ ਚਕੁ ਫੇਰਿ ॥ ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਨਾਮੈ ਕੀ ਚੇਰਿ
 ॥੨॥ ਸਰਬ ਤਪਾਇ ਗੁਰੁ ਸਿਰਿ ਮੋਰੁ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰਤ ਪਗ ਲਾਗਤ ਤੌਰ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੋ ਚਾਹਤ ਤੁੜ੍ਹ ਓਰੁ ॥
 ਨਾਮੁ ਦੁਰਾਇ ਚਲੈ ਸੋ ਚੋਰੁ ॥੩॥ ਪਤਿ ਖੋਈ ਬਿਖੁ ਅੰਚਲਿ ਪਾਇ ॥ ਸਾਚ ਨਾਮਿ ਰਤੋ ਪਤਿ ਸਿਤ ਧਰਿ ਜਾਇ ॥
 ਜੋ ਕਿਛੁ ਕੀਨ੍ਹਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰਖਾਇ ॥ ਭੈ ਮਾਨੈ ਨਿਰਭਤ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥੪॥ ਕਾਮਨਿ ਚਾਹੈ ਸੁੰਦਰਿ ਭੋਗੁ ॥ ਧਾਨ ਫੂਲ
 ਮੀਠੇ ਰਸ ਰੋਗ ॥ ਖੀਲੈ ਬਿਗਸੈ ਤੇਤੋ ਸੋਗ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤਿ ਕੀਨ੍ਹਿ ਹੋਗ ॥੫॥ ਕਾਪੜੁ ਪਹਿਰਸਿ ਅਧਿਕੁ
 ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਮਾਟੀ ਫੂਲੀ ਰੂਪੁ ਬਿਕਾਰੁ ॥ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਬਾਂਧੀ ਬਾਰੁ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸੂਨਾ ਘਰੁ ਬਾਰੁ ॥੬॥
 ਗਾਛਹੁ ਪੁਕੀ ਰਾਜ ਕੁਆਰਿ ॥ ਨਾਮੁ ਭਣਹੁ ਸਚੁ ਦੋਤੁ ਸਵਾਰਿ ॥ ਪ੍ਰਤ ਸੇਵਹੁ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੇਮ ਅਧਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ
 ਬਿਖੁ ਤਿਆਸ ਨਿਵਾਰਿ ॥੭॥ ਮੋਹਨਿ ਮੋਹਿ ਲੀਆ ਮਨੁ ਮੋਹਿ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨਾ ਤੋਹਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਠਾਢੇ ਚਾਹਹਿ ਪ੍ਰਭੂ ਦੁਆਰਿ ॥ ਤੇਰੇ ਨਾਮਿ ਸੰਤੋਖੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੮॥੧॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨੁ ਭੂਲਤ
 ਭਰਮਸਿ ਆਇ ਜਾਇ ॥ ਅਤਿ ਲੁਬਧ ਲੁਭਾਨਤ ਬਿਖਮ ਮਾਇ ॥ ਨਹ ਅਸਥਿਰੁ ਦੀਸੈ ਏਕ ਭਾਇ ॥ ਜਿਤ
 ਮੀਨ ਕੁੰਡਲੀਆ ਕੱਠਿ ਪਾਇ ॥੧॥ ਮਨੁ ਭੂਲਤ ਸਮਝਸਿ ਸਾਚਿ ਨਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ਸਹਜ ਭਾਇ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨੁ ਭੂਲਤ ਭਰਮਸਿ ਭਵਰ ਤਾਰ ॥ ਬਿਲ ਬਿਰਥੇ ਚਾਹੈ ਬਹੁ ਬਿਕਾਰ ॥ ਮੈਗਲ ਜਿਤ ਫਾਸਸਿ
 ਕਾਮਹਾਰ ॥ ਕਡਿ ਬੰਧਨਿ ਬਾਧਿਆ ਸੀਸ ਮਾਰ ॥੨॥ ਮਨੁ ਮੁਗਧੌ ਦਾਦਰੁ ਭਗਤਿਹੀਨੁ ॥ ਦਰਿ ਭ੍ਰਸਟ ਸਰਾਪੀ
 ਨਾਮ ਬੀਨੁ ॥ ਤਾ ਕੈ ਜਾਤਿ ਨ ਪਾਤੀ ਨਾਮ ਲੀਨ ॥ ਸਭਿ ਦ੍ਰੂਖ ਸਖਾਈ ਗੁਣਹ ਬੀਨ ॥੩॥ ਮਨੁ ਚਲੈ ਨ ਜਾਈ
 ਠਾਕਿ ਰਾਖੁ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਰਸ ਰਾਤੇ ਪਤਿ ਨ ਸਾਖੁ ॥ ਤ੍ਰ ਆਪੇ ਸੁਰਤਾ ਆਪਿ ਰਾਖੁ ॥ ਧਰਿ ਧਾਰਣ ਦੇਖੈ ਜਾਣੈ
 ਆਪਿ ॥੪॥ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਕਿਸੁ ਕਹਤ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਬਿਰਥਾ ਕਹਤ ਮਾਇ ॥ ਅਵਗਣ ਛੋਡਤ ਗੁਣ
 ਕਮਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਰਾਤਾ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਇ ॥ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ
 ਹਉਮੈ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥ ਸਦਾ ਸੁਕਤੁ ਬੰਧਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥ ਸਦਾ ਨਾਮੁ ਕਖਾਣੈ ਅਤ਼ਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੬॥ ਮਨੁ ਹਰਿ ਕੈ
 ਭਾਣੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੋ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਭੁ ਹੁਕਮੋ ਕਰਤੈ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਇ ॥ ਦ੍ਰੂਖ ਸੂਖ ਸਭ
 ਤਿਸੁ ਰਝਾਇ ॥੭॥ ਤ੍ਰ ਅਭੁਲੁ ਨ ਭੂਲੈ ਕਦੇ ਨਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ਮਤਿ ਅਗਾਹਿ ॥ ਤ੍ਰ ਮੋਟਤ ਠਾਕੁਰੁ
 ਸਬਦ ਮਾਹਿ ॥ ਮਨੁ ਨਾਨਕ ਮਾਨਿਆ ਸਚੁ ਸਲਾਹਿ ॥੮॥੨॥ ਬਸਨਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਿਆਸ ਜਿਸੁ
 ਨਰ ਹੋਇ ॥ ਏਕਤੁ ਰਾਚੈ ਪਰਹਰਿ ਦੋਇ ॥ ਦੂਰਿ ਦਰਦੁ ਮਥਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਖਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਾਂਜੈ ਏਕ ਸਮਾਇ ॥੧॥
 ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਕਤ ਕੇਤੀ ਬਿਲਲਾਇ ॥ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਚੀਨਸਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬੇਦ ਕਖਾਣਿ
 ਕਹਹਿ ਇਕੁ ਕਹੀਐ ॥ ਓਹੁ ਬੇਅਂਤੁ ਅੰਤੁ ਕਿਨਿ ਲਹੀਐ ॥ ਏਕੋ ਕਰਤਾ ਜਿਨਿ ਜਗੁ ਕੀਆ ॥ ਬਾੜ੍ਹੁ ਕਲਾ ਧਰਿ
 ਗਗਨੁ ਧਰੀਆ ॥੨॥ ਏਕੋ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ॥ ਏਕੁ ਨਿਰਾਲਮੁ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਏਕੋ ਸਬਦੁ
 ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਣੈ ਜਾਣੁ ॥੩॥ ਏਕੋ ਧਰਮੁ ਵੱਡੈ ਸਚੁ ਕੋਈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਪੂਰਾ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸੋਈ ॥
 ਅਨਹਦਿ ਰਾਤਾ ਏਕ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥ ਓਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਅਲਖ ਅਪਾਰ ॥੪॥ ਏਕੋ ਤਖਤੁ ਏਕੋ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥
 ਸਰਕੀ ਥਾਈ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥ ਤਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ਤ੃ਭਵਣ ਸਾਰੁ ॥ ਓਹੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਏਕਕਾਰੁ ॥੫॥ ਏਕਾ
 ਸੂਰਤਿ ਸਾਚਾ ਨਾਤ ॥ ਤਿਥੈ ਨਿਬੱਦੈ ਸਾਚੁ ਨਿਆਤ ॥ ਸਾਚੀ ਕਰਣੀ ਪਤਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਸਾਚੀ ਦੁਗਹ ਪਾਵੈ
 ਮਾਣੁ ॥੬॥ ਏਕਾ ਭਗਤਿ ਏਕੋ ਹੈ ਭਾਤ ॥ ਬਿਨੁ ਭੈ ਭਗਤੀ ਆਵਤ ਜਾਤ ॥ ਗੁਰ ਤੇ ਸਮਝਿ ਰਹੈ ਮਿਹਮਾਣੁ ॥

हरि रसि राता जनु परवाणु ॥७॥ इति उत देखउ सहजे रावउ ॥ तुझ बिनु ठाकुर किसै न भावउ ॥
 नानक हउमै सबदि जलाइआ ॥ सतिगुरि साचा दरसु दिखाइआ ॥८॥३॥ बसंतु महला १ ॥ चंचलु
 चीतु न पावै पारा ॥ आवत जात न लागै बारा ॥ दूखु घणो मरीअै करतारा ॥ बिनु प्रीतम को करै न
 सारा ॥१॥ सभ ऊतम किसु आखउ हीना ॥ हरि भगती सचि नामि पतीना ॥१॥ रहाउ ॥ अउखध
 करि थाकी बहुतेरे ॥ किउ दुखु चूकै बिनु गुर मेरे ॥ बिनु हरि भगती दूख घणेरे ॥ दुख सुख दाते ठाकुर
 मेरे ॥२॥ रोगु वडो किउ बाँधउ धीरा ॥ रोगु बुझै सो काटै पीरा ॥ मै अवगण मन माहि सरीरा ॥
 ढूढत खोजत गुरि मेले बीरा ॥३॥ गुर का सबदु दारू हरि नाउ ॥ जिउ तू राखहि तिवै रहाउ ॥ जगु
 रोगी कह देखि दिखाउ ॥ हरि निरमाइलु निरमलु नाउ ॥४॥ घर महि घर जो देखि दिखावै ॥ गुर
 महली सो महलि बुलावै ॥ मन महि मनूआ चित महि चीता ॥ ऐसे हरि के लोग अतीता ॥५॥ हरख
 सोग ते रहहि निरासा ॥ अंमृतु चाखि हरि नामि निवासा ॥ आपु पछाणि रहै लिव लागा ॥ जनमु
 जीति गुरमति दुखु भागा ॥६॥ गुरि दीआ सचु अंमृतु पीवउ ॥ सहजि मरउ जीवत ही जीवउ ॥
 अपणो करि राखहु गुर भावै ॥ तुमरो होइ सु तुझहि समावै ॥७॥ भोगी कउ दुखु रोग विआपै ॥ घटि
 घटि रवि रहिआ प्रभु जापै ॥ सुख दुख ही ते गुर सबदि अतीता ॥ नानक रामु रवै हित चीता
 ॥८॥४॥ बसंतु महला १ इक तुकीआ ॥ मतु भस्म अंधूले गरबि जाहि ॥ इन बिधि नागे जोगु
 नाहि ॥१॥ मूँडे काहे बिसारिओ तै राम नाम ॥ अंत कालि तेरै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥ गुर
 पूछि तुम करहु बीचारु ॥ जह देखउ तह सारिगपाणि ॥२॥ किआ हउ आखा जाँ कछू नाहि ॥
 जाति पति सभ तेरै नाइ ॥३॥ काहे मालु दरबु देखि गरबि जाहि ॥ चलती बार तेरो कछू नाहि ॥४॥
 पंच मारि चितु रखहु थाइ ॥ जोग जुगति की इहै पाँडि ॥५॥ हउमै पैखडु तेरे मनै माहि ॥ हरि
 न चेतहि मूँडे मुकति जाहि ॥६॥ मत हरि विसरिअै जम वसि पाहि ॥ अंत कालि मूँडे चोट खाहि ॥७॥

ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਹਿ ਆਪੁ ਜਾਇ ॥ ਸਾਚ ਜੋਗੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਆਇ ॥੮॥ ਜਿਨਿ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਦਿਤਾ ਤਿਸੁ ਚੇਤਹਿ
ਨਾਹਿ ॥ ਮਡੀ ਮਸਾਣੀ ਮੂੜੇ ਜੋਗੁ ਨਾਹਿ ॥੯॥ ਗੁਣ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਭਲੀ ਬਾਣਿ ॥ ਤੁਮ ਹੋਹੁ ਸੁਜਾਖੇ ਲੇਹੁ
ਪਛਾਣਿ ॥੧੦॥੫॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਦੁਰਮਤਿ ਅਧੁਲੀ ਕਾਰ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਭਰਮੈ ਮਝਿ ਗੁਬਾਰ
॥੬॥ ਮਨੁ ਅੰਧੁਲਾ ਅੰਧੁਲੀ ਮਤਿ ਲਾਗੈ ॥ ਗੁਰ ਕਰਣੀ ਬਿਨੁ ਭਰਮੁ ਨ ਭਾਗੈ ॥੭॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖਿ
ਅੰਧੁਲੇ ਗੁਰਮਤਿ ਨ ਭਾਈ ॥ ਪਸੂ ਭਏ ਅਭਿਮਾਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੮॥ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਜੰਤ ਉਪਾਏ ॥ ਮੇਰੇ
ਠਾਕੁਰ ਭਾਣੇ ਸਿਰਜਿ ਸਮਾਏ ॥੯॥ ਸਗਲੀ ਭੂਲੈ ਨਹੀਂ ਸਬਦੁ ਅਚਾਰੁ ॥ ਸੋ ਸਮਝੈ ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰੁ
॥੧੦॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਾਕਰ ਠਾਕੁਰ ਭਾਣੇ ॥ ਬਖਸਿ ਲੀਏ ਨਾਹੀ ਜਮ ਕਾਣੇ ॥੧੧॥ ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਏਕੋ ਭਾਇਆ
॥ ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੧੨॥ ਬੇਮੁਹਤਾਜੁ ਬੇਅੰਤੁ ਅਪਾਰਾ ॥ ਸਚਿ ਪਤੀਜੈ ਕਰਣਹਾਰਾ ॥੧੩॥ ਨਾਨਕ
ਭੂਲੇ ਗੁਰੁ ਸਮਝਾਵੈ ॥ ਏਕੁ ਦਿਖਾਵੈ ਸਾਚਿ ਟਿਕਾਵੈ ॥੧੪॥੧੬॥ ਬਸਤੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਪੇ ਭਵਰਾ ਫੂਲ ਬੇਲਿ ॥
ਆਪੇ ਸਾਂਗਤਿ ਮੀਤ ਮੇਲਿ ॥੧੫॥ ਐਸੀ ਭਵਰਾ ਬਾਸੁ ਲੇ ॥ ਤਰਵਰ ਫੂਲੇ ਬਨ ਹਰੇ ॥੧੬॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੇ
ਕਵਲਾ ਕੱਤੁ ਆਪਿ ॥ ਆਪੇ ਰਾਵੇ ਸਬਦਿ ਥਾਪਿ ॥੧੭॥ ਆਪੇ ਬਛੁੱਲ ਗੜ੍ਹ ਖੀਠੁ ॥ ਆਪੇ ਮੰਦੁ ਥੰਮੁ ਸਰੀਰੁ
॥੧੮॥ ਆਪੇ ਕਰਣੀ ਕਰਣਹਾਰੁ ॥ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥੧੯॥ ਤੂ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖਹਿ ਕਰਣਹਾਰੁ ॥
ਜੋਤਿ ਜੀਅ ਅਸੰਖ ਦੇਇ ਅਧਾਰੁ ॥੨੦॥ ਤੂ ਸਰੁ ਸਾਗਰੁ ਗੁਣ ਗਹੀਰੁ ॥ ਤੂ ਅਕੁਲ ਨਿਰਿਜਨੁ ਪਰਮ ਹੀਰੁ ॥੨੧॥
ਤੂ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰਣ ਜੋਗੁ ॥ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਰਾਜਨ ਸੁਖੀ ਲੋਗੁ ॥੨੨॥ ਨਾਨਕ ਧਾਪੇ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸੁਆਦਿ ॥
ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਜਨਮੁ ਬਾਦਿ ॥੨੩॥੨੪॥

ਬਸਤੁ ਛਿਡੋਲੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਤ ਸਤ ਚਤੁਦਹ ਤੀਨਿ ਚਾਰਿ ਕਰਿ ਮਹਲਤਿ ਚਾਰਿ ਬਹਾਲੀ ॥ ਚਾਰੇ ਦੀਵੇ ਚਹੁ ਹਥਿ ਦੀਏ ਏਕਾ ਏਕਾ ਵਾਰੀ
॥੧॥ ਮਿਹਰਵਾਨ ਮਧੁਸੂਦਨ ਮਾਧੀ ਐਸੀ ਸਕਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਲਸਕਰੁ ਪਾਵਕੁ
ਤੇਰਾ ਧਰਮੁ ਕਰੇ ਸਿਕਦਾਰੀ ॥ ਧਰਤੀ ਦੇਗ ਮਿਲੈ ਝਿਕ ਵੇਰਾ ਭਾਗੁ ਤੇਰਾ ਭੰਡਾਰੀ ॥੩॥ ਨਾ ਸਾਬੂਰੁ ਹੋਵੈ ਫਿਰਿ

ਮਾਂਗੈ ਨਾਰਦੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ ॥ ਲਬੁ ਅਧੇਰਾ ਬੰਦੀਖਾਨਾ ਅਤਗਣ ਪੈਰਿ ਲੁਹਾਰੀ ॥੩॥ ਪ੍ਰੰਜੀ ਮਾਰ ਪਵੈ ਨਿਤ
ਸੁਦਗਰ ਪਾਪੁ ਕਰੇ ਕੁਟਵਾਰੀ ॥ ਭਾਵੈ ਚੰਗਾ ਭਾਵੈ ਮੰਦਾ ਜੈਸੀ ਨਦਰਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੪॥ ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਕਤ ਅਲਹੁ
ਕਹੀਐ ਸੇਖਾਂ ਆਈ ਵਾਰੀ ॥ ਦੇਵਲ ਦੇਵਤਿਆ ਕਰੁ ਲਾਗਾ ਐਸੀ ਕੀਰਤਿ ਚਾਲੀ ॥੫॥ ਕ੍ਰਿਗ ਬਾਂਗ ਨਿਵਾਜ
ਸੁਸਲਾ ਨੀਲ ਰੂਪ ਬਨਵਾਰੀ ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਮੀਆ ਸਭਨਾਂ ਜੀਆਂ ਬੋਲੀ ਅਵਰ ਤੁਮਾਰੀ ॥੬॥ ਜੇ ਤੂ ਮੀਰ
ਮਹੀਪਤਿ ਸਾਹਿਬੁ ਕੁਦਰਤਿ ਕਤਣ ਹਮਾਰੀ ॥ ਚਾਰੇ ਕੁਟੁ ਸਲਾਮੁ ਕਰਹਿਗੇ ਘਰਿ ਘਰਿ ਸਿਫਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੭॥
ਤੀਰਥ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਪੁਨ ਦਾਨ ਕਿਛੁ ਲਾਹਾ ਮਿਲੈ ਦਿਹਾਡੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਮੇਕਾ ਘੜੀ
ਸਮਾਲੀ ॥੮॥੧॥੮॥

ਬਸਨਤੁ ਛਿਡੀਲੁ ਘਰੁ ੨ ਮਹਲਾ ੪ ੧੮੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਾਁਇਆ ਨਗਰਿ ਇਕੁ ਬਾਲਕੁ ਵਸਿਆ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਈ ॥ ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਜਤਨ ਕਰਿ ਥਾਕੇ
ਬਾਰਾਂ ਬਾਰ ਭਰਮਾਈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਬਾਲਕੁ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਣੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ਭਜੁ
ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਹੁ ਮਿਰਤਕੁ ਮਡਾ ਸਰੀਰੁ ਹੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਜਿਤੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਹੀ ਵਸਿਆ ॥
ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗੁਰਿ ਤਦਕੁ ਚੁਆਇਆ ਫਿਰਿ ਹਰਿਆ ਹੋਆ ਰਸਿਆ ॥੨॥ ਮੈ ਨਿਰਖਤ ਨਿਰਖਤ ਸਰੀਰੁ ਸਭੁ
ਖੋਜਿਆ ਇਕੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਲਤੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਬਾਹਰੁ ਖੋਜਿ ਮੁਏ ਸਭਿ ਸਾਕਤ ਹਰਿ ਗੁਰਮਤੀ ਘਰਿ ਪਾਇਆ
॥੩॥ ਦੀਨਾ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ਭਏ ਹੈ ਜਿਤ ਕ੃ਸਨੁ ਬਿਦਰ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥ ਮਿਲਿਐ ਸੁਦਾਮਾ ਭਾਵਨੀ ਧਾਰਿ
ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਗੈ ਦਾਲਦੁ ਭੰਜਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਕੀ ਪੈਜ ਵਡੇਰੀ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰਿ ਆਪਿ ਰਖਾਈ ॥
ਜੇ ਸਭਿ ਸਾਕਤ ਕਰਹਿ ਬਖੀਲੀ ਇਕ ਰਤੀ ਤਿਲੁ ਨ ਘਟਾਈ ॥੫॥ ਜਨ ਕੀ ਤਉਤਿ ਹੈ ਰਾਮ ਨਾਮਾ
ਦਹ ਦਿਸਿ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥ ਨਿੰਦਕੁ ਸਾਕਤੁ ਖਵਿ ਨ ਸਕੈ ਤਿਲੁ ਅਪਣੈ ਘਰਿ ਲੂਕੀ ਲਾਈ ॥੬॥ ਜਨ ਕਤ ਜਨੁ
ਮਿਲਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵੈ ਗੁਣ ਮਹਿ ਗੁਣ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਜਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪਿਆਰੇ ਜੋ ਹੋਵਹਿ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ
॥੭॥ ਆਪੇ ਜਲੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਏ ਜਿਤ ਜਲੁ

जलहि समावै ॥੮॥੧॥੬॥

बसंतु महला ੫ ਘਰੁ ੧ ਦੁਤੁਕੀਆ

੧੭੩ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੁਣਿ ਸਾਖੀ ਮਨ ਜਪਿ ਪਿਆਰ ॥ ਅਜਾਮਲੁ ਉਧਰਿਆ ਕਹਿ ਏਕ ਬਾਰ ॥ ਬਾਲਮੀਕੈ ਹੋਆ ਸਾਧਸੰਗ ॥ ਥ੍ਰੂ ਕਤ
ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਨਿਸੰਗ ॥੧॥ ਤੇਰਿਆ ਸੰਤਾ ਜਾਚਤ ਚਰਨ ਰੇਨ ॥ ਲੇ ਮਸਤਕਿ ਲਾਵਤ ਕਰਿ ਕੂਪਾ ਦੇਨ ॥੨॥
ਰਹਾਤ ॥ ਗਨਿਕਾ ਉਧਰੀ ਹਰਿ ਕਹੈ ਤੋਤ ॥ ਗਜ਼ਿੰਦ ਧਿਆਇਆਂ ਹਰਿ ਕੀਓ ਮੋਖ ॥ ਬਿਧੁ ਸੁਦਾਮੇ ਦਾਲਦੁ ਭੰਜ
॥ ਰੇ ਮਨ ਤੂ ਭੀ ਭਜੁ ਗੋਬਿੰਦ ॥੨॥ ਬਧਿਕੁ ਉਧਾਰਿਆਂ ਖਮਿ ਪ੍ਰਹਾਰ ॥ ਕੁਬਿਜਾ ਉਧਰੀ ਅੰਗੁਸਟ ਧਾਰ ॥ ਬਿਦੁ
ਉਧਾਰਿਆਂ ਦਾਸਤ ਭਾਇ ॥ ਰੇ ਮਨ ਤੂ ਭੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥੩॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਰਖੀ ਹਰਿ ਪੈਜ ਆਪ ॥ ਬਸਤ ਛੀਨਤ
ਦ੍ਰੋਪਤੀ ਰਖੀ ਲਾਜ ॥ ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਅੰਤ ਬਾਰ ॥ ਰੇ ਮਨ ਸੇਵਿ ਤੂ ਪਰਹਿ ਪਾਰ ॥੪॥ ਧਨੈ ਸੇਵਿਆ
ਬਾਲ ਬੁਧਿ ॥ ਤ੍ਰਲੋਚਨ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਭੰਡੀ ਸਿਧਿ ॥ ਕੇਣੀ ਕਤ ਗੁਰਿ ਕੀਓ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥ ਰੇ ਮਨ ਤੂ ਭੀ ਹੋਹਿ ਦਾਸੁ
॥੫॥ ਜੈਦੇਵ ਤਿਆਗਿਆਂ ਅਵਸਾਨ ॥ ਨਾਈ ਉਧਾਰਿਆਂ ਸੈਨੁ ਸੇਵ ॥ ਮਨੁ ਝੀਗਿ ਨ ਢੌਲੈ ਕਹੂੰ ਜਾਇ ॥ ਮਨ ਤੂ ਭੀ
ਤਰਸਹਿ ਸਰਣਿ ਪਾਇ ॥੬॥ ਜਿਹ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਠਾਕੁਰਿ ਕੀਓ ਆਪਿ ॥ ਸੇ ਤੈ ਲੀਨੇ ਭਗਤ ਰਾਖਿ ॥ ਤਿਨ ਕਾ
ਗੁਣੁ ਅਵਗਣੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆਂ ਕੋਇ ॥ ਇਹ ਬਿਧਿ ਦੇਖਿ ਮਨੁ ਲਗਾ ਸੇਵ ॥੭॥ ਕਬੀਰਿ ਧਿਆਇਆਂ ਏਕ ਰੰਗ ॥
ਨਾਮਦੇਵ ਹਰਿ ਜੀਤ ਬਸਹਿ ਸੰਗਿ ॥ ਰਵਿਦਾਸ ਧਿਆਏ ਪ੍ਰਭ ਅਨੂਪ ॥ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਗੋਬਿੰਦ ਰੂਪ ॥੮॥੧॥
ਬਸਂਤੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਭਰਮੇ ਜੋਨਿ ਮਾਹਿ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਬਿਨੁ ਨਰਕਿ ਪਾਹਿ ॥ ਭਗਤਿ ਬਿਹੂਨਾ
ਖੰਡ ਖੰਡ ॥ ਬਿਨੁ ਬੂੜੇ ਜਮੁ ਦੇਤ ਡੰਡ ॥੧॥ ਗੋਬਿੰਦ ਭਜਹੁ ਮੇਰੇ ਸਦਾ ਮੀਤ ॥ ਸਾਚ ਸਬਦ ਕਰਿ ਸਦਾ ਪ੍ਰੀਤਿ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਤੋਖੁ ਨ ਆਵਤ ਕਹੂੰ ਕਾਜ ॥ ਥ੍ਰੂਮ ਬਾਦਰ ਸਭਿ ਮਾਇਆ ਸਾਜ ॥ ਪਾਪ ਕਰਂਤੈ ਨਹ ਸੰਗਾਇ ॥
ਬਿਖੁ ਕਾ ਮਾਤਾ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੨॥ ਹਤ ਹਤ ਕਰਤ ਬਧੇ ਬਿਕਾਰ ॥ ਮੋਹ ਲੋਭ ਡੂਬੈ ਸੰਸਾਰ ॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਮਨੁ
ਵਸਿ ਕੀਆ ॥ ਸੁਪਨੈ ਨਾਮੁ ਨ ਹਰਿ ਲੀਆ ॥੩॥ ਕਬ ਹੀ ਰਾਜਾ ਕਬ ਮੰਗਨਹਾਰੁ ॥ ਦ੍ਰੂਖ ਸੂਖ ਬਾਧੈ ਸੰਸਾਰ ॥
ਮਨ ਉਧਰਣ ਕਾ ਸਾਜੁ ਨਾਹਿ ॥ ਪਾਪ ਬੰਧਨ ਨਿਤ ਪਉ ਜਾਹਿ ॥੪॥ ਝੰਠ ਮੀਤ ਕੋਊ ਸਖਾ ਨਾਹਿ ॥ ਆਪਿ

ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਂਹਿ ॥ ਜਾ ਕੈ ਕੀਨੈ ਹੋਤ ਬਿਕਾਰ ॥ ਸੇ ਛੋਡਿ ਚਲਿਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਗਵਾਰ ॥੫॥ ਮਾਇਆ
ਮੋਹਿ ਬਹੁ ਭਰਮਿਆ ॥ ਕਿਰਤ ਰੇਖ ਕਰਿ ਕਰਮਿਆ ॥ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਅਲਿਪਤੁ ਆਪਿ ॥ ਨਹੀ ਲੇਪੁ ਪ੍ਰਭ ਪੁਨੰ ਪਾਪਿ
॥੬॥ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਦਿੱਗਿਆਲ ॥ ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰੰਨ ਕ੃ਪਾਲ ॥ ਤੁੜ੍ਹ ਬਿਨੁ ਦ੍ਰਵਾ ਨਹੀ ਠਾਤ ॥ ਕਿਰ
ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਦੇਹੁ ਨਾਤ ॥੭॥ ਤ੍ਰੂ ਕਰਤਾ ਤ੍ਰੂ ਕਰਣਹਾਰੁ ॥ ਤ੍ਰੂ ਊਚਾ ਤ੍ਰੂ ਬਹੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਕਿਰ ਕਿਰਪਾ ਲਡਿ ਲੇਹੁ
ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਣਾਇ ॥੮॥੨॥

ਬਸੰਤ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲੁ ੫ ੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਕੈ ਹੋਹੁ ਹਰਿਆ ਭਾਈ ॥ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿੰਤੈ ਪਾਈਐ ਇਹ ਰਸਤੀ ਸੁਹਾਈ ॥ ਵਣੁ ਤ੍ਰਣੁ ਤ੍ਰਭਵਣੁ
ਮਤਲਿਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲੁ ਪਾਈ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਥ੍ਵੁ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਲਥੀ ਸਭ ਛਾਈ ॥ ਨਾਨਕੁ ਸਿਮਰੈ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਫਿਰਿ
ਕਹੁਡਿ ਨ ਧਾਈ ॥੧॥ ਪੰਜੇ ਬਧੇ ਮਹਾਬਲੀ ਕਰਿ ਸਚਾ ਢੋਆ ॥ ਆਪਣੇ ਚਰਣ ਜਪਾਇਅਨੁ ਵਿਚਿ ਦਿਧੁ ਖੜੋਆ
॥ ਰੋਗ ਸੋਗ ਸਭਿ ਮਿਟਿ ਗਏ ਨਿਤ ਨਵਾ ਨਿਰੋਆ ॥ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦਾ ਫਿਰਿ ਪਾਇ ਨ ਮੋਆ ॥
ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜਿਆ ਨਾਨਕਾ ਸੋਈ ਫਿਰਿ ਹੋਆ ॥੨॥ ਕਿਥਹੁ ਊਪਜੈ ਕਹ ਰਹੈ ਕਹ ਮਾਹਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ
ਸਭਿ ਖਸਮ ਕੇ ਕਤਣੁ ਕੀਮਤਿ ਪਾਵੈ ॥ ਕਹਨਿ ਧਿਆਇਨਿ ਸੁਣਨਿ ਨਿਤ ਸੇ ਭਗਤ ਸੁਹਾਵੈ ॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ
ਸਾਹਿਬੋ ਦ੍ਰਵਸੁ ਲਾਵੈ ਨ ਲਾਵੈ ॥ ਸਚੁ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਉਪਦੇਸਿਆ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਾਵੈ ॥੩॥੧॥

ਬਸੰਤੁ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾਂ ਕੀ ॥ ਕਬੀਰ ਜੀ ਘਰੁ ੧ ੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਤਲੀ ਧਰਤੀ ਮਤਲਿਆ ਅਕਾਸੁ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਮਤਲਿਆ ਆਤਮ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥੧॥ ਰਾਜਾ ਰਾਮੁ ਮਤਲਿਆ
ਅਨਤ ਭਾਇ ॥ ਜਹ ਦੇਖਤ ਤਹ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਤੀਆ ਮਤਲੇ ਚਾਰਿ ਬੇਦ ॥ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤੀ
ਮਤਲੀ ਸਿਤ ਕਤੇਬ ॥੨॥ ਸੰਕਰੁ ਮਤਲਿਆ ਜੋਗ ਧਿਆਨ ॥ ਕਬੀਰ ਕੋ ਸੁਆਮੀ ਸਭ ਸਮਾਨ ॥੩॥੧॥ ਪੰਡਿਤ
ਜਨ ਮਾਤੇ ਪਡਿ ਪੁਰਾਨ ॥ ਜੋਗੀ ਮਾਤੇ ਜੋਗ ਧਿਆਨ ॥ ਸੰਨਿਆਸੀ ਮਾਤੇ ਅਛਾਮੇਵ ॥ ਤਪਸੀ ਮਾਤੇ ਤਪ ਕੈ ਭੇਵ
॥੧॥ ਸਭ ਮਦ ਮਾਤੇ ਕੋਊ ਨ ਜਾਗ ॥ ਸੰਗ ਹੀ ਚੋਰ ਘਰੁ ਮੁਸਨ ਲਾਗ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾਗੈ ਸੁਕਦੇਤ ਅਝ ਅਕੂਰੁ ॥

हणवंतु जागै धरि लम्कूरु ॥ संकरु जागै चरन सेव ॥ कलि जागे नामा जैदेव ॥२॥ जागत सोवत बहु
 प्रकार ॥ गुरमुखि जागै सोई सारु ॥ इसु देही के अधिक काम ॥ कहि कबीर भजि राम नाम ॥३॥२॥
 जोड़ि खसमु है जाड़िआ ॥ पूति बापु खेलाड़िआ ॥ बिनु स्रवणा खीरु पिलाड़िआ ॥१॥ देखहु लोगा कलि को
 भाउ ॥ सुति मुकलाई अपनी माउ ॥१॥ रहाउ ॥ पगा बिनु हुरीआ मारता ॥ बदनै बिनु खिर खिर
 हासता ॥ निद्रा बिनु नरु पै सोवै ॥ बिनु बासन खीरु बिलोवै ॥२॥ बिनु असथन गऊ लवेरी ॥ पैडे बिनु
 बाट घनेरी ॥ बिनु सतिगुर बाट न पाई ॥ कहु कबीर समझाई ॥३॥३॥ प्रहलाद पठाए पड़न साल
 ॥ संगि सखा बहु लीए बाल ॥ मो कउ कहा पड़ावसि आल जाल ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु सी गोपाल
 ॥१॥ नही छोडउ रे बाबा राम नाम ॥ मेरो अउर पड़न सित नही कामु ॥१॥ रहाउ ॥ संडै मरकै
 कहिओ जाड़ि ॥ प्रहलाद बुलाए बेगि धाड़ि ॥ तू राम कहन की छोडु बानि ॥ तुझु तुरतु छडाऊ मेरो कहिओ
 मानि ॥२॥ मो कउ कहा सतावहु बार बार ॥ प्रभि जल थल गिरि कीए पहार ॥ इकु रामु न छोडउ
 गुरहि गारि ॥ मो कउ धालि जारि भावै मारि डारि ॥३॥ काढि खड़गु कोपिओ रिसाड़ि ॥ तुझ राखनहारो
 मोहि बताड़ि ॥ प्रभ थंभ ते निकसे कै बिसथार ॥ हरनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥४॥ ओड़ि परम पुरख
 देवाधि देव ॥ भगति हेति नरसिंघ भेव ॥ कहि कबीर को लखै न पार ॥ प्रहलाद उधारे अनिक बार
 ॥५॥४॥ इसु तन मन मधे मदन चोर ॥ जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर ॥ मै अनाथु प्रभ कहउ
 काहि ॥ को को न बिगूतो मै को आहि ॥१॥ माधउ दारुन दुखु सहिओ न जाड़ि ॥ मेरो चपल बुधि सित कहा
 बसाड़ि ॥१॥ रहाउ ॥ सनक सन्दन सिव सुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रह्मादि ॥ कबि जन जोगी
 जटाधारि ॥ सभ आपन अउसर चले सारि ॥२॥ तू अथाहु मोहि थाह नाहि ॥ प्रभ दीना नाथ दुखु कहउ
 काहि ॥ मोरो जनम मरन दुखु आथि धीर ॥ सुख सागर गुन रउ कबीर ॥३॥५॥ नाडिकु एकु बनजारे
 पाच ॥ बरध पचीसक संगु काच ॥ नउ बहीआँ दस गोनि आहि ॥ कसनि बहतरि लागी ताहि ॥१॥ मोहि

ਐਸੇ ਬਨਜ ਸਿਤ ਨਹੀਨ ਕਾਜੁ ॥ ਜਿਹ ਘਟੈ ਮੂਲੁ ਨਿਤ ਬਢੈ ਬਿਆਜੁ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਤ ਸੂਤ ਮਿਲਿ ਬਨਜੁ
ਕੀਨ ॥ ਕਰਮ ਭਾਵਨੀ ਸੰਗ ਲੀਨ ॥ ਤੀਨਿ ਜਗਾਤੀ ਕਰਤ ਰਾਰਿ ॥ ਚਲੋ ਬਨਜਾਰਾ ਹਾਥ ਝਾਰਿ ॥੨॥ ਪ੍ਰੰਜੀ
ਹਿਰਾਨੀ ਬਨਜੁ ਟ੍ਰੂਟ ॥ ਦਹ ਦਿਸ ਟਾੱਡੀ ਗਿੜਾਓ ਫੂਟਿ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਨ ਸਰਸੀ ਕਾਜ ॥ ਸਹਜ ਸਮਾਨੋ ਤ
ਭਰਮ ਭਾਜ ॥੩॥੬॥

ਬਸਤੁ ਛਿੜੀਲੁ ਘਰੁ ੨ ੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਮਾਤਾ ਜੂਠੀ ਪਿਤਾ ਭੀ ਜੂਠਾ ਜੂਠੇ ਹੀ ਫਲ ਲਾਗੇ ॥
ਆਵਹਿ ਜੂਠੇ ਜਾਹਿ ਭੀ ਜੂਠੇ ਜੂਠੇ ਮਰਹਿ ਅਭਾਗੇ ॥੧॥ ਕਹੁ ਪਂਡਿਤ ਸੂਚਾ ਕਵਨੁ ਠਾਤ ॥ ਜਹਾਁ ਬੈਸਿ ਹਤ ਭੋਜਨੁ
ਖਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਹਬਾ ਜੂਠੀ ਬੋਲਤ ਜੂਠਾ ਕਰਨ ਨੇਤ੍ਰ ਸਭਿ ਜੂਠੇ ॥ ਛਿੰਦੀ ਕੀ ਜੂਠਿ ਉਤਰਸਿ ਨਾਹੀ
ਕ੍ਰਿਹਮ ਅਗਨਿ ਕੇ ਲੂਠੇ ॥੨॥ ਅਗਨਿ ਭੀ ਜੂਠੀ ਪਾਨੀ ਜੂਠਾ ਜੂਠੀ ਬੈਸਿ ਪਕਾਇਆ ॥ ਜੂਠੀ ਕਰਛੀ ਪਰੋਸਨ
ਲਾਗਾ ਜੂਠੇ ਹੀ ਬੈਠਿ ਖਾਇਆ ॥੩॥ ਗੋਬਰੁ ਜੂਠਾ ਚਤਕਾ ਜੂਠਾ ਜੂਠੀ ਦੀਨੀ ਕਾਰਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਤੇਈ ਨਰ
ਸੂਚੇ ਸਾਚੀ ਪਰੀ ਬਿਚਾਰਾ ॥੪॥੧॥੭॥

ਰਾਮਾਨੰਦ ਜੀ ਘਰੁ ੧ ੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਕਤ ਜਾਈਐ ਰੇ ਘਰ ਲਾਗੇ ਰੰਗੁ ॥ ਮੇਰਾ
ਚਿਤੁ ਨ ਚਲੈ ਮਨੁ ਭਿੜਾਓ ਪੰਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਏਕ ਦਿਵਸ ਮਨ ਭੰਈ ਤਮੰਗ ॥ ਘਸਿ ਚੰਦਨ ਚੋਆ ਬਹੁ ਸੁਗਂਧ
॥ ਪ੍ਰਯਨ ਚਾਲੀ ਕ੍ਰਿਹਮ ਠਾਇ ॥ ਸੋ ਕ੍ਰਿਹਮੁ ਬਤਾਇਆ ਗੁਰ ਮਨ ਹੀ ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਜਹਾ ਜਾਈਐ ਤਹ ਜਲ ਪਖਾਨ ॥
ਤੂ ਪ੍ਰਾਰਿ ਰਹਿਆਂ ਹੈ ਸਭ ਸਮਾਨ ॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਭ ਦੇਖੇ ਜੋਇ ॥ ਊਹਾਁ ਤਤ ਜਾਈਐ ਜਤ ਈਹਾਁ ਨ ਹੋਇ ॥੨॥
ਸਤਿਗੁਰ ਮੈ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤੋਰ ॥ ਜਿਨਿ ਸਕਲ ਬਿਕਲ ਭ੍ਰਮ ਕਾਟੇ ਸੋਰ ॥ ਰਾਮਾਨੰਦ ਸੁਆਮੀ ਰਮਤ ਕ੍ਰਿਹਮ ॥ ਗੁਰ
ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਾਟੈ ਕੋਟਿ ਕਰਮ ॥੩॥੧॥

ਬਸਤੁ ਬਾਣੀ ਨਾਮਦੇਤ ਜੀ ਕੀ ੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਾਹਿਬੁ ਸੰਕਟਵੈ ਸੇਵਕੁ ਭਜੈ ॥ ਚਿੰਕਾਲ ਨ ਜੀਵੈ
ਦੋਤੁ ਕੁਲ ਲਜੈ ॥੧॥ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਨ ਛੋਡਤ ਭਾਵੈ ਲੋਗੁ ਹਸੈ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸੇਰੇ ਹੀਅਰੇ ਬਸੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਜੈਸੇ ਅਪਨੇ ਧਨਹਿ ਪ੍ਰਾਨੀ ਮਰਨੁ ਮਾੜੈ ॥ ਤੈਸੇ ਸੰਤ ਜਨਾਁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨ ਛਾਡੈ ॥੨॥ ਗੰਗਾ ਗਿੜਾਓ ਗੋਦਾਵਰੀ

संसार के कामा ॥ नाराइणु सुप्रसन्न होइ त सेवकु नामा ॥३॥१॥ लोभ लहरि अति नीझार बाजै ॥
 काइआ डूबै केसवा ॥१॥ संसारु समुंदे तारि गुंबिंदे ॥ तारि लै बाप बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥ अनिल
 बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥ तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥२॥ होहु दिआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥
 पारि उतारे केसवा ॥३॥ नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥ मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥४॥
 २॥ सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥ पीछै तिनका लै करि हाँकती ॥१॥ जैसे पनकत थूटिटि
 हाँकती ॥ सरि धोवन चाली लाडुली ॥१॥ रहाउ ॥ धोबी धोवै बिरह बिराता ॥ हरि चरन मेरा मनु
 रता ॥२॥ भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥ अपने भगत पर करि दिआ ॥३॥३॥

बसंतु बाणी रविदास जी की ९८८ सतिगुर प्रसादि ॥

तुझहि सुझांता कछू नाहि ॥ पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥ गरबवती का नाही ठाउ ॥ तेरी गरदनि ऊपरि
 लवै काउ ॥१॥ तू काँइ गरबहि बावली ॥ जैसे भादउ खूंबराजु तू तिस ते खरी उतावली ॥१॥ रहाउ
 ॥ जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु ॥ तनि सुगंध ढूढ़ै प्रदेसु ॥ अप तन का जो करे बीचारु ॥ तिसु नही
 जमकंकरु करे खुआरु ॥२॥ पुत्र कलत्र का करहि अह्वाकारु ॥ ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ फेड़े का दुखु सहै
 जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥३॥ साधू की जउ लेहि ओट ॥ तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि
 ॥ कहि रविदास जु जपै नामु ॥ तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥४॥१॥

बसंतु कबीर जीउ ९८८ सतिगुर प्रसादि ॥

सुरह की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूँछट ऊपरि झमक बाल ॥१॥ इस घर महि है सु तू ढूंढि खाहि ॥
 अउर किस ही के तू मति ही जाहि ॥२॥ रहाउ ॥ चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥ चाकी का चीथरा कहाँ
 लै जाहि ॥२॥ छीके पर तेरी बहुतु डीठि ॥ मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥३॥ कहि कबीर
 भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट ढेम ॥४॥१॥

ਰਾਗ ਸਾਰਗ ਚਤੁਪਦੇ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੂ ੧

੧੯ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਪੁਨੇ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ਹਉ ਚੇਰੀ ॥ ਚਰਨ ਗਹੇ ਜਗਜੀਵਨ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਨਿਕੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪੂਰਨ
ਪਰਮ ਜੋਤਿ ਪਰਮੇਸਰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਹਮਾਰੇ ॥ ਮੋਹਨ ਮੋਹਿ ਲੀਆ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ਸਮਝਾਸਿ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੧॥
ਮਨਮੁਖ ਹੀਨ ਹੋਛੀ ਮਤਿ ਝੂਠੀ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪੀਰ ਸਰੀਰੇ ॥ ਜਬ ਕੀ ਰਾਮ ਰੰਗੀਲੈ ਰਾਤੀ ਰਾਮ ਜਪਤ ਮਨ ਧੀਰੇ
॥੨॥ ਹਉਮੈ ਛੋਡਿ ਭੰਡੀ ਬੈਰਾਗਨਿ ਤਬ ਸਾਚੀ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਨੀ ॥ ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨ ਸਿਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ
ਬਿਸਰੀ ਲਾਜ ਲੁਕਾਨੀ ॥੩॥ ਭੂਰ ਭਵਿਖ ਨਾਹੀ ਤੁਮ ਜੈਸੇ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਰਤੀ
ਸੋਹਾਗਨਿ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਭਤਾਰਾ ॥੪॥੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਰਹੀਐ ਦੁਖੁ ਬਿਆਪੈ ॥
ਜਿਹਵਾ ਸਾਟੁ ਨ ਫਿਕੀ ਰਸ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾਲੁ ਸੰਤਾਪੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਬ ਲਗੁ ਦਰਸੁ ਨ ਪਰਸੈ ਪ੍ਰੀਤਮ
ਤਬ ਲਗੁ ਭੂਖ ਪਿਆਸੀ ॥ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਤ ਹੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਜਲ ਰਸਿ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸੀ ॥੧॥ ਊਨਵਿ
ਘਨਹਰੁ ਗਰਜੈ ਬਰਸੈ ਕੋਕਿਲ ਮੌਰ ਬੈਰਾਗੈ ॥ ਤਰਵਰ ਬਿਰਖ ਬਿਛਾਗ ਭੁਇਅੰਗਮ ਘਰਿ ਪਿਰੁ ਧਨ ਸੋਹਾਗੈ ॥੨॥
ਕੁਚਿਲ ਕੁਰੂਪਿ ਕੁਨਾਰਿ ਕੁਲਖਨੀ ਪਿਰ ਕਾ ਸਹਜੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਹਰਿ ਰਸ ਰੰਗਿ ਰਸਨ ਨਹੀ ਤ੃ਪਤੀ ਦੁਰਮਤਿ
ਦੁਖ ਸਮਾਨਿਆ ॥੩॥ ਆਇ ਨ ਜਾਵੈ ਨਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ਨਾ ਦੁਖ ਦਰਦੁ ਸਰੀਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਸਹਜ ਸੁਹੇਲੀ
ਪ੍ਰਭ ਦੇਖਤ ਹੀ ਮਨੁ ਧੀਰੇ ॥੪॥੨॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਦ੍ਰਾਰਿ ਨਾਹੀ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਪਿਆਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨਿ

ਮेरੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਹਰਿ ਪਾਏ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਨ ਬਿਧਿ ਹਰਿ ਮਿਲੀਐ ਵਰ ਕਾਮਨਿ ਧਨ
ਸੋਹਾਗੁ ਪਿਆਰੀ ॥ ਜਾਤਿ ਬਰਨ ਕੁਲ ਸਹਸਾ ਚੂਕਾ ਗੁਰਮਤਿ ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥੨॥ ਜਿਸੁ ਮਨੁ ਮਾਨੈ
ਅਭਿਮਾਨੁ ਨ ਤਾ ਕਤ ਛਿਸਾ ਲੋਭੁ ਵਿਸਾਰੇ ॥ ਸਹਜਿ ਰਖੈ ਕਰੁ ਕਾਮਣਿ ਪਿਰ ਕੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗੁ ਸਵਾਰੇ ॥੨॥
ਜਾਰਤ ਐਸੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕੁਟੰਬ ਸਨਬੰਧੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਸਾਰੀ ॥ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਨਾਹੀ ਦੁਖਿਧਾ
ਕਰਮ ਬਿਕਾਰੀ ॥੩॥ ਅੰਤਰਿ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਹਿਤ ਕੌ ਢੁੱਝੈ ਨ ਲਾਲ ਪਿਆਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ
ਅਮੋਲਕੁ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰੀ ॥੪॥੩॥

ਸਾਰਂਗ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਹਮ ਧੂਰਿ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੰਤੁ ਮਿਲੈ ਸਾਁਤਿ ਪਾਈਐ ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਕਾਟੇ ਸਭਿ ਟੂਰਿ ॥ ਆਤਮ ਜੋਤਿ ਭਈ ਪਰਫੂਲਿਤ
ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਦੇਖਿਆ ਹਜੂਰਿ ॥੧॥ ਕਵੈ ਭਾਗਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਮਜਨੁ ਕੀਆ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਗ ਨਾਏ ਧੂਰਿ ॥੨॥ ਦੁਰਮਤਿ ਬਿਕਾਰ ਮਲੀਨ ਮਤਿ ਹੋਛੀ
ਹਿਰਦਾ ਕੁਸੁਧੁ ਲਾਗਾ ਮੋਹ ਕੂਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਕਰਮਾ ਕਿਤ ਸੰਗਤਿ ਪਾਈਐ ਹਉਮੈ ਬਿਆਪਿ ਰਹਿਆ ਮਨੁ ਝੂਰਿ ॥੩॥
ਹੋਹੁ ਦਿਇਆਲ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਹਰਿ ਜੀ ਮਾਗਤ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਗ ਧੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸੰਤੁ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਜਨੁ
ਹਰਿ ਭੇਟਿਆ ਰਾਮੁ ਹਜੂਰਿ ॥੪॥੧॥ ਸਾਰਂਗ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਚਰਨਨ ਕਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥ ਭਵਜਲੁ
ਜਗਤੁ ਨ ਜਾਈ ਤਰਣਾ ਜਧਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਿਰਦੈ ਪ੍ਰਤੀਤਿ ਬਨੀ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੀ ਸੇਵਾ
ਸੁਰਤਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਧਿ ਹਿਰਦੈ ਸਰਬ ਕਲਾ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥੧॥ ਪ੍ਰਭੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ
ਰਵਿਆ ਸ਼ਬ ਠਾਈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਅਲਖ ਅਪਾਰੀ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾਲ ਭਏ ਤਬ ਪਾਇਆ ਹਿਰਦੈ ਅਲਖੁ ਲਖਾਰੀ
॥੨॥ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਰਬ ਧਰਣੀਧਰ ਸਾਕਤ ਕਤ ਟੂਰਿ ਭਇਆ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਲਤ ਨ ਕਬਹੂ
ਬ੍ਰਿਸਾਹਿ ਜ੍ਰਾਈ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੩॥ ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ਗੁਰਿ ਕਿੰਚਤ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨ

कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥४॥२॥ सारग महला ४ ॥ हरि हरि अंमृत नामु देहु
 पिआरे ॥ जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ जो जन दीन भए गुर
 आगै तिन के दूख निवारे ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ॥१॥ हिरदै नामु
 अंमृत रसु रसना रसु गावहि रसु बीचारे ॥ गुर परसादि अंमृत रसु चीनिआ ओङि पावहि
 मोख दुआरे ॥२॥ सतिगुरु पुरखु अचलु अचला मति जिसु दृढ़ता नामु अधारे ॥ तिसु आगै जीउ देवउ
 अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥३॥ मनमुख भ्रमि दूजै भाइ लागे अंतरि अगिआन गुबारे ॥
 सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरवारि न पारे ॥४॥ सरबे घटि घटि रविआ सुआमी सरब कला
 कल धारे ॥ नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे ॥५॥३॥ सारग महला ४ ॥ गोबिद
 की औसी कार कमाइ ॥ जो किछु करे सु सति करि मानहु गुरमुखि नामि रहहु लिव लाइ ॥१॥
 रहाउ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति मीठी अवर विसरि सभ जाइ ॥ अनदिनु रहसु भइआ मनु मानिआ
 जोती जोति मिलाइ ॥१॥ जब गुण गाइ तब ही मनु तृपतै साँति वसै मनि आइ ॥ गुर किरपाल
 भए तब पाइआ हरि चरणी चितु लाइ ॥२॥ मति प्रगास भई हरि धिआइआ गिआनि तति लिव
 लाइ ॥ अंतरि जोति प्रगटी मनु मानिआ हरि सहजि समाधि लगाइ ॥३॥ हिरदै कपटु नित कपटु
 कमावहि मुखहु हरि हरि सुणाइ ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइ ॥४॥ जब सुप्रसन्न भए
 प्रभ मेरे गुरमुखि परचा लाइ ॥ नानक नाम निरंजनु पाइआ नामु जपत सुखु पाइ ॥५॥४॥ सारग
 महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि मनु मानी ॥ मेरै हीअरै सतिगुरि प्रीति लगाई मनि हरि हरि कथा
 सुखानी ॥१॥ रहाउ ॥ दीन दइआल होवहु जन ऊपरि जन देवहु अकथ कहानी ॥ संत जना मिलि
 हरि रसु पाइआ हरि मनि तनि मीठ लगानी ॥१॥ हरि कै रंगि रते बैरागी जिन् गुरमति नामु
 पछानी ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ सुखु पाइआ सभ चूकी आवण जानी ॥२॥ नैणी बिरहु देखा प्रभ

सुआमी रसना नामु वखानी ॥ स्वरणी कीरतनु सुनउ दिनु राती हिरदै हरि हरि भानी ॥३॥
 पंच जना गुरि वसगति आणे तउ उनमनि नामि लगानी ॥ जन नानक हरि किरपा धारी हरि
 रामै नामि समानी ॥४॥५॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन राम नामु पङ्क सारु ॥ राम नाम बिनु थिरु
 नही कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥१॥ रहाउ ॥ किआ लीजै किआ तजीअै बउरे जो दीसै सो
 छारु ॥ जिसु बिखिआ कउ तुम् अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु सिरि भारु ॥२॥ तिलु तिलु पलु
 पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गवारु ॥ सो किछु करै जि साथि न चालै झिहु साकत का आचारु
 ॥२॥ संत जना कै संगि मिलु बउरे तउ पावहि मोख दुआरु ॥ बिनु सतसंग सुखु किनै न पाइआ
 जाइ पूछहु बेद बीचारु ॥३॥ राणा रात सभै कोऊ चालै झूठु छोडि जाइ पासारु ॥ नानक संत
 सदा थिरु निहचलु जिन राम नामु आधारु ॥४॥६॥

सारग महला ४ घरु ३ दुपदा

९८१ सतिगुर प्रसादि ॥

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥ जिन के जणे बड़ीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥१॥ रहाउ ॥
 जिसु धन का तुम गरबु करत हउ सो धनु किसहि न आप ॥ खिन महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ
 लागै पछुताप ॥१॥ जो तुमरे प्रभ होते सुआमी हरि तिन के जापहु जाप ॥ उपदेसु करत नानक जन
 तुम कउ जउ सुनहु तउ जाइ संताप ॥२॥१॥७॥

सारग महला ४ घरु ५ दुपदे पड़ताल

९८१ सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन जगन्नाथ जगदीसरो जगजीवनो मनमोहन सिउ प्रीति लागी मै हरि हरि हरि टेक सभ दिनसु
 सभ राति ॥१॥ रहाउ ॥ हरि की उपमा अनिक अनिक गुन गावत सुक नारद ब्रह्मादिक तव
 गुन सुआमी गनिन न जाति ॥ तू हरि बेअंतु तू हरि बेअंतु तू हरि सुआमी तू आपे ही जानहि आपनी
 भाँति ॥१॥ हरि कै निकटि निकटि हरि निकट ही बसते ते हरि के जन साधु हरि भगात ॥ ते हरि के

ਜਨ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਲਿ ਮਿਲੇ ਜੈਸੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਲਲੈ ਸਲਲ ਮਿਲਾਤਿ ॥੨॥੧॥੮॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਪਿ
 ਮਨ ਨਰਹੇ ਨਰਹਰ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਸਗਲ ਦੇਵ ਦੇਵਾ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜਿਤੁ ਗ੃ਹਿ ਗੁਨ ਗਾਵਤੇ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਤੇ ਰਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵਤੇ ਤਿਤੁ ਗ੃ਹਿ ਵਾਜੇ ਪੰਚ ਸਬਦ ਕਡ ਭਾਗ
 ਮਥੋਰਾ ॥ ਤਿਨੁ ਜਨ ਕੇ ਸਭਿ ਪਾਪ ਗਏ ਸਭਿ ਦੋਖ ਗਏ ਸਭਿ ਰੋਗ ਗਏ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰਿਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਗਏ ਤਿਨੁ
 ਜਨ ਕੇ ਹਰਿ ਮਾਰਿ ਕਢੇ ਪੰਚ ਚੌਰਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਰਾਮ ਬੋਲਹੁ ਹਰਿ ਸਾਧੂ ਹਰਿ ਕੇ ਜਨ ਸਾਧੂ ਜਗਦੀਸੁ ਜਪਹੁ
 ਮਨਿ ਬਚਨਿ ਕਰਮਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧੂ ਹਰਿ ਕੇ ਜਨ ਸਾਧੂ ॥ ਹਰਿ ਰਾਮ ਬੋਲਿ ਹਰਿ ਰਾਮ ਬੋਲਿ ਸਭਿ ਪਾਪ
 ਗਵਾਧੂ ॥ ਨਿਤ ਨਿਤ ਜਾਗਰਣੁ ਕਰਹੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਆਨਨਦੁ ਜਪਿ ਜਗਦੀਸੁਓਰਾ ॥ ਮਨ ਛਿਛੇ ਫਲ ਪਾਵਹੁ ਸਭੈ
 ਫਲ ਪਾਵਹੁ ਧਰਮੁ ਅਰਥੁ ਕਾਮ ਮੋਖੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਤ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਭਗਤ ਤੌਰਾ ॥੨॥੨॥੯॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਪਿ ਮਨ ਮਾਧੋ ਮਧੁਸੂਦਨੋ ਹਰਿ ਸ੍ਰੀਰਾਂਗੋ ਪਰਮੇਸਰੋ ਸਤਿ ਪਰਮੇਸਰੋ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਸਭ
 ਟ੍ਰੂਖਨ ਕੋ ਛਾਤਾ ਸਭ ਸ੍ਰੂਖਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਗੁਨ ਗਾਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਘਟਿ ਘਟੇ ਘਟਿ ਬਸਤਾ ਹਰਿ
 ਜਲਿ ਥਲੇ ਹਰਿ ਬਸਤਾ ਹਰਿ ਥਾਨ ਥਾਨਤਰਿ ਬਸਤਾ ਮੈ ਹਰਿ ਦੇਖਨ ਕੋ ਚਾਓ ॥ ਕੋਈ ਆਵੈ ਸਾਂਤੋ ਹਰਿ ਕਾ ਜਨੁ
 ਸਾਂਤੋ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਜਨੁ ਸਾਂਤੋ ਮੋਹਿ ਮਾਗੁ ਦਿਖਲਾਵੈ ॥ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੇ ਹਤ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਾ ਪਾਓ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜਨ
 ਕਤ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਸਰਧਾ ਤੇ ਮਿਲਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਆਨਦ ਭਏ ਮੈ
 ਦੇਖਿਆ ਹਰਿ ਰਾਓ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਕਿਰਪਾ ਭਈ ਹਰਿ ਕੀ ਕਿਰਪਾ ਭਈ ਜਗਦੀਸੁਰ ਕਿਰਪਾ ਭਈ ॥ ਮੈ
 ਅਨਦਿਨੋ ਸਦ ਸਦ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਹਰਿ ਨਾਓ ॥੨॥੩॥੧੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਪਿ ਮਨ ਨਿਰਭਤ ॥
 ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਦਾ ਸਤਿ ॥ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ॥ ਆਜੂਨੀ ਸੰਭਤ ॥ ਮੈਰੇ ਮਨ ਅਨਦਿਨੋ ਧਿਆਇ ਨਿਰਕਾਰੁ
 ਨਿਰਹਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਕਤ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਕਤ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸ ਸਿਧ ਜਤੀ ਜੋਗੀ ਤਟ
 ਤੀਰਥ ਪਰਖਵਨ ਕਰਤ ਰਹਤ ਨਿਰਹਾਰੀ ॥ ਤਿਨ ਜਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਥਾਇ ਪੈਂਝ ਜਿਨੁ ਕਤ ਕਿਰਪਾਲ ਹੋਵਤੁ
 ਬਨਵਾਰੀ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਹੋ ਸਾਂਤ ਭਲੇ ਤੇ ਊਤਮ ਭਗਤ ਭਲੇ ਜੋ ਭਾਵਤ ਹਰਿ ਰਾਮ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਜਿਨੁ ਕਾ ਅੰਗੁ ਕਰੈ

मेरा सुआमी तिन् की नानक हरि पैज सवारी ॥२॥४॥१॥ सारग महला ४ पड़ताल ॥ जपि मन गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु सभ सृसटि का प्रभो मेरे मन हरि बोलि हरि पुरखु अबिनासी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का नामु अंमृतु हरि हरि हरे सो पीअै जिसु रामु पिआसी ॥ हरि आपि दिआलु दिआ करि मेलै जिसु सतिगुर्ख सो जनु हरि हरि अंमृत नामु चखासी ॥१॥ जो जन सेवहि सद सदा मेरा हरि हरे तिन का सभु दूखु भरमु भउ जासी ॥ जनु नानकु नामु लए ताँ जीवै जित चातृकु जलि पीअै तृपतासी ॥२॥५॥१२॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन सिरी रामु ॥ राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥ बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिआ सरबगे ॥१॥ रहाउ ॥ रामु आपे आपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥ जिसु आपि कृपा करे मेरा राम राम राइ सो जनु राम नाम लिव लागे ॥१॥ राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जनाँ की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥ जन नानक का अंग कीआ मेरै राम राइ दुसमन दूख गए सभि भगे ॥२॥६॥१३॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु १ १७८ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर मूरति कउ बलि जाउ ॥ अंतरि पिआस चातृक जित जल की सफल दरसनु कदि पाँउ ॥१॥ रहाउ ॥ अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु भगति वछलु हरि नाउ ॥ जा कउ कोइ न राखै प्राणी तिसु तू देहि असराउ ॥२॥ निधरिआ धर निगतिआ गति निथाविआ तू थाउ ॥ दह दिस जाँउ तहाँ तू संगे तेरी कीरति करम कमाउ ॥२॥ एकसु ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाउ ॥ तू बेअंतु तेरी मिति नही पाईअै सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥३॥ साधन का संगु साध सिउ गोसटि हरि साधन सिउ लिव लाउ ॥ जन नानक पाइआ है गुरमति हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥४॥१॥ सारग महला ५ ॥ हरि जीउ अंतरजामी जान ॥ करत बुराई मानुख ते छपाई साखी भूत पवान ॥१॥ रहाउ ॥ बैसनौ नामु करत खट करमा अंतरि लोभ जूठान ॥ संत सभा की निंदा करते झूबे सभ

अगिआन ॥१॥ करहि सोम पाकु हिरहि पर दरबा अंतरि झूठ गुमान ॥ सासत्र बेद की बिधि नही जाणहि बिआपे मन कै मान ॥२॥ संधिआ काल करहि सभि वरता जिउ सफरी टंफान ॥ प्रभू भुलाए ऊङ्गड़ि पाए निहफल सभि करमान ॥३॥ सो गिआनी सो बैसनौ पड़िआ जिसु करी कृपा भगवान ॥ ओनि सतिगुरु सेवि परम पदु पाड़िआ उधरिआ सगल बिस्थान ॥४॥ किआ हम कथह किछु कथि नही जाणह प्रभ भावै तिवै बोलान ॥ साधसंगति की धूरि इक माँगउ जन नानक पाड़िओ सरान ॥५॥२॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो नाचनो रहो ॥ लालु रगीला सहजे पाड़िओ सतिगुर बचनि लहो ॥१॥ रहाउ ॥ कुआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी पृथ बचन उपहास कहो ॥ जउ सुरिजनु गृह भीतरि आड़िओ तब मुखु काजि लजो ॥१॥ जिउ कनिको कोठारी चड़िओ कबरो होत फिरो ॥ जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो ॥२॥ जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो ॥ बजावनहारो ऊठि सिधारिओ तब फिरि बाजु न भड़िओ ॥३॥ जैसे कुंभ उदक पूरि आनिओ तब ओहु भिन्न दृसटो ॥ कहु नानक कुंभु जलै महि डारिओ अंभै अंभ मिलो ॥४॥३॥ सारग महला ५ ॥ अब पूछे किआ कहा ॥ लैनो नामु अंमृत रसु नीको बावर बिखु सिउ गहि रहा ॥१॥ रहाउ ॥ दुलभ जनमु चिरंकाल पाड़िओ जातउ कउडी बदलहा ॥ काथूरी को गाहकु आड़िओ लादिओ कालर बिरख जिवहा ॥१॥ आड़िओ लाभु लाभन कै ताई मोहनि ठागउरी सिउ उलझि पहा ॥ काच बादरै लालु खोई है फिरि इहु अउसरु कदि लहा ॥२॥ सगल पराध एकु गुणु नाही ठाकुरु छोडह दासि भजहा ॥ आई मसटि जड़वत की निआई जिउ तसकरु दरि साँनिहा ॥३॥ आन उपाउ न कोऊ सूझै हरि दासा सरणी परि रहा ॥ कहु नानक तब ही मन छुटीअै जउ सगले अउगन मेटि धरहा ॥४॥४॥ सारग महला ५ ॥ माई धीरि रही पृथ बहुतु बिरागिओ ॥ अनिक भाँति आनूप रंग रे तिन् सिउ रुचै न लागिओ ॥१॥ रहाउ ॥ निसि बासुर पृथ पृथ मुखि टेरउ नीद पलक नही जागिओ ॥ हार कजर बसत्र अनिक सीगार रे बिनु पिर सभै बिखु लागिओ

॥੧॥ ਪ੍ਰਥਤ ਪ੍ਰਥਤ ਦੀਨ ਭਾਂਤਿ ਕਰਿ ਕੋਤ ਕਹੈ ਪ੍ਰਤ ਦੇਸਾਂਗਿਆਂ ॥ ਹੀਓ ਦੇਤ ਸਭੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਤ ਸੀਸੁ
 ਚਰਣ ਪਰਿ ਰਾਖਿਆਂ ॥੨॥ ਚਰਣ ਬੰਦਨਾ ਅਮੋਲ ਦਾਸਰੋ ਦੇਤ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਅਰਦਾਗਿਆਂ ॥ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ
 ਮੋਹਿ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਵਹੁ ਨਿਮਖ ਦਰਸੁ ਪੇਖਾਗਿਆਂ ॥੩॥ ਦੂਸਟਿ ਭਈ ਤਬ ਭੀਤਰਿ ਆਇਆਂ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਅਨਦਿਨੁ
 ਸੀਤਲਾਗਿਆਂ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਰਸਿ ਮੰਗਲ ਗਾਏ ਸਬਦੁ ਅਨਾਹਦੁ ਬਾਜਿਆਂ ॥੪॥੫॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮਾਈ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਹਰਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਾਧਾ ॥ ਬਚਨੁ ਗੁਰੁ ਜੋ ਪ੍ਰੈ ਕਹਿਆਂ ਮੈ ਛੀਕਿ ਗਾਂਠਰੀ ਬਾਧਾ
 ॥੬॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਨਖਿਅਤ ਬਿਨਾਸੀ ਰਵਿ ਸਸੀਅਰ ਬੇਨਾਧਾ ॥ ਗਿਰਿ ਬਸੁਧਾ ਜਲ ਪਵਨ
 ਜਾਇਗੇ ਇਕਿ ਸਾਧ ਬਚਨ ਅਟਲਾਧਾ ॥੭॥ ਅੰਡ ਬਿਨਾਸੀ ਜੇਰ ਬਿਨਾਸੀ ਉਤਭੁਜ ਸੇਤ ਬਿਨਾਧਾ ॥ ਚਾਰਿ
 ਬਿਨਾਸੀ ਖਟਹਿ ਬਿਨਾਸੀ ਇਕਿ ਸਾਧ ਬਚਨ ਨਿਹਚਲਾਧਾ ॥੮॥ ਰਾਜ ਬਿਨਾਸੀ ਤਾਮ ਬਿਨਾਸੀ ਸਾਤਕੁ ਭੀ
 ਬੇਨਾਧਾ ॥ ਦੂਸਟਿਮਾਨ ਹੈ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੀ ਇਕਿ ਸਾਧ ਬਚਨ ਆਗਾਧਾ ॥੯॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪ ਹੀ
 ਆਪੇ ਸਭੁ ਆਪਨ ਖੇਲੁ ਦਿਖਾਧਾ ॥ ਪਾਇਆਂ ਨ ਜਾਈ ਕਹੀ ਭਾਂਤਿ ਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਲਾਧਾ ॥੧੦॥੬॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਬਾਸਿਬੋ ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਜਹਾਂ ਸਿਮਰਨੁ ਭਇਆਂ ਹੈ ਠਕੁਰ ਤਹਾਂ ਨਗਰ ਸੁਖ
 ਆਨਨਦ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹਾਂ ਬੀਸਰੈ ਠਕੁਰ ਪਿਆਰੇ ਤਹਾਂ ਦ੍ਰੂਖ ਸਭ ਆਪਦ ॥ ਜਹ ਗੁਨ ਗਾਇ ਆਨਨਦ
 ਮੰਗਲ ਰੂਪ ਤਹਾਂ ਸਦਾ ਸੁਖ ਸੰਪਦ ॥੧॥ ਜਹਾ ਸ਼ਰਵਨ ਹਰਿ ਕਥਾ ਨ ਸੁਨੀਐ ਤਹ ਮਹਾ ਭਇਆਨ
 ਤਦਿਆਨਦ ॥ ਜਹਾਂ ਕੀਰਤਨੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਰਸੁ ਤਹ ਸਘਨ ਬਾਸ ਫਲਾਂਨਦ ॥੨॥ ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਕੋਟਿ ਬਰਖ
 ਜੀਕੈ ਸਗਲੀ ਅਤਥ ਕ੃ਥਾਨਦ ॥ ਏਕ ਨਿਮਖ ਗੋਬਿੰਦ ਭਜਨੁ ਕਰਿ ਤਤ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜੀਵਾਨਦ ॥੩॥ ਸਰਨਿ
 ਸਰਨਿ ਪ੍ਰਭ ਪਾਵਤ ਦੀਜੈ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕਿਰਪਾਨਦ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਰਿ ਰਹਿਆਂ ਹੈ ਸਰਬ ਮੈ ਸਗਲ ਗੁਣਾ
 ਬਿਧਿ ਜਾਨਦ ॥੪॥੭॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਥ ਮੋਹਿ ਰਾਮ ਭਰੋਸਤ ਪਾਏ ॥ ਜੋ ਜੋ ਸਰਣਿ ਪਰਿਆਂ
 ਕਰੁਣਾਨਿਧਿ ਤੇ ਤੇ ਭਵਹਿ ਤਰਾਏ ॥੫॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਖਿ ਸੋਇਆਂ ਅਥ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆਂ ਸਹਸਾ ਗੁਰਹਿ ਗਵਾਏ
 ॥ ਜੋ ਚਾਹਤ ਸੋਈ ਹਰਿ ਕੀਆਂ ਮਨ ਬਾਂਘਤ ਫਲ ਪਾਏ ॥੬॥ ਹਿਰਦੈ ਜਪਤ ਨੇਤ ਧਿਆਨੁ ਲਾਵਤ ਸ਼ਰਵਨੀ

ਕਥਾ ਸੁਨਾਏ ॥ ਚਰਣੀ ਚਲਤ ਮਾਰਗਿ ਠਾਕੁਰ ਕੈ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੨॥ ਦੇਖਿਆਂ ਵੱਡਿ ਸਰਬ ਮੰਗਲ
 ਰੂਪ ਉਲਟੀ ਸੰਤ ਕਰਾਏ ॥ ਪਾਇਆਂ ਲਾਲੁ ਅਮੋਲੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਛੋਡਿ ਨ ਕਤਹੂ ਜਾਏ ॥੩॥ ਕਵਨ ਉਪਮਾ ਕਤਨ
 ਬਡਾਈ ਕਿਆ ਗੁਨ ਕਹਤ ਰੀझਾਏ ॥ ਹੋਤ ਕ੃ਪਾਲ ਦੀਨ ਦਿਆ ਪ੍ਰਭ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਏ ॥੪॥੮॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਓਡਿ ਸੁਖ ਕਾ ਸਿਤ ਬਰਨਿ ਸੁਨਾਵਤ ॥ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਪੇਖਿ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸਨ ਮਨਿ ਮੰਗਲ
 ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਸਮ ਭਈ ਪੇਖਿ ਬਿਸਮਾਦੀ ਪ੍ਰਾਰੰਥ ਕਿਰਪਾਵਤ ॥ ਪੀਓ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ
 ਅਮੋਲਕ ਜਿਤ ਚਾਖਿ ਗੁੰਗਾ ਮੁਸਕਾਵਤ ॥੨॥ ਜੈਸੇ ਪਕਨੁ ਬੰਧ ਕਰਿ ਰਾਖਿਆਂ ਬੂੜਾ ਨ ਆਵਤ ਜਾਵਤ ॥ ਜਾ ਕਤ
 ਰਿਦੈ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਭਡਿਆਂ ਹਰਿ ਤਾਂ ਕੀ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ਕਹਾਵਤ ॥੨॥ ਆਨ ਉਪਾਵ ਜੇਤੇ ਕਿਛੁ ਕਹੀਅਹਿ ਤੇਤੇ
 ਸੀਖੇ ਪਾਵਤ ॥ ਅਚਿੰਤ ਲਾਲੁ ਗ੍ਰਹ ਭੀਤਰਿ ਪ੍ਰਗਟਿਆਂ ਅਗਮ ਜੈਸੇ ਪਰਖਾਵਤ ॥੩॥ ਨਿਰਗੁਣ ਨਿਰਕਾਰ
 ਅਵਿਨਾਸੀ ਅਤੁਲੋ ਤੁਲਿਆਂ ਨ ਜਾਵਤ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਜਰੁ ਜਿਨਿ ਜਰਿਆ ਤਿਸ ਹੀ ਕਤ ਬਨਿ ਆਵਤ
 ॥੪॥੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਿਖਈ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਇਵ ਹੀ ਗੁਦਾਰੈ ॥ ਗੋਬਿੰਦੁ ਨ ਭਯੈ ਅਛਿਬੁਧਿ ਮਾਤਾ ਜਨਮੁ
 ਜ੍ਰਾਤੈ ਜਿਤ ਹਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਾ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਤਿਸ ਸਿਤ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਹਿਤਕਾਰੈ ॥ ਛਾਪਰੁ ਬਾੰਧਿ
 ਸਵਾਰੈ ਤ੍ਰਣ ਕੋ ਦੁਆਰੈ ਪਾਵਕੁ ਜਾਰੈ ॥੧॥ ਕਾਲਰ ਪੋਟ ਤਠਾਵੈ ਮੁੰਡਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮਨ ਤੇ ਡਾਰੈ ॥ ਓਢੈ ਬਸਕ
 ਕਾਜਰ ਮਹਿ ਪਰਿਆ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਫਿਰਿ ਝਾਰੈ ॥੨॥ ਕਾਟੈ ਪੇਡੁ ਡਾਲ ਪਰਿ ਠਾਠੌ ਖਾਇ ਖਾਇ ਮੁਸਕਾਰੈ ॥
 ਗਿਰਿਆਂ ਜਾਇ ਰਸਾਤਲਿ ਪਰਿਆਂ ਛਿਟੀ ਛਿਟੀ ਸਿਰ ਭਾਰੈ ॥੩॥ ਨਿਰਕੈਰੈ ਸੰਗਿ ਵੈਲੁ ਰਚਾਏ ਪਹੁਚਿ ਨ ਸਕੈ
 ਗਵਾਰੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੰਤਨ ਕਾ ਰਾਖਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਰਕਾਰੈ ॥੪॥੧੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਵਰਿ ਸਭਿ
 ਭੂਲੇ ਭਰਮਤ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਏਕੁ ਸੁਧਾਖਰੁ ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਤਿਨਿ ਬੇਦਹਿ ਤਤੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਪਰਵਿਰਤਿ ਮਾਰਗੁ ਜੇਤਾ ਕਿਛੁ ਹੋਈਐ ਤੇਤਾ ਲੋਗ ਪਚਾਰਾ ॥ ਜਤ ਲਤ ਰਿਦੈ ਨਹੀ ਪਰਗਾਸਾ ਤਤ ਲਤ ਅੰਧ
 ਅੰਧਾਰਾ ॥੧॥ ਜੈਸੇ ਧਰਤੀ ਸਾਈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਬਿਨੁ ਬੀਜੈ ਨਹੀ ਜਾਂਸੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਸੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ਹੈ ਤੁਟੈ
 ਨਾਹੀ ਅਭਿਮਾਨੈ ॥੨॥ ਨੀਰੁ ਬਿਲੋਵੈ ਅਤਿ ਸ਼ਮੁ ਪਾਵੈ ਨੈਨ੍ਹ ਕੈਸੇ ਰੀਸੈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਸੁਕਤਿ ਨ ਕਾਹੂ ਮਿਲਤ

ਨਹੀ ਜਗਦੀਸੈ ॥੩॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਇਹੈ ਬੀਚਾਰਿਓ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਭਿੱਓ ਪਰਾਪਤਿ
 ਜਾ ਕੈ ਲੇਖੁ ਮਥਾਮਾ ॥੪॥੧੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਮ ਕੇ ਗੁਣ ਕਹੀਐ ॥ ਸਗਲ ਪਦਾਰਥ ਸਰਬ
 ਸੂਖ ਸਿਧਿ ਮਨ ਬਾਂਘਤ ਫਲ ਲਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਵਹੁ ਸੰਤ ਪ੍ਰਾਨ ਸੁਖਦਾਤੇ ਸਿਮਰਹ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥
 ਅਨਾਥਹ ਨਾਥੁ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਪ੍ਰੂਰਿ ਰਹਿਓ ਘਟ ਵਾਸੀ ॥੧॥ ਗਾਵਤ ਸੁਨਤ ਸੁਨਾਵਤ ਸਰਥਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀ
 ਕਡਭਾਗੇ ॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟੇ ਸਭਿ ਤਨ ਤੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਜਾਗੇ ॥੨॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਝੂਠੁ ਤਜਿ ਨਿੰਦਾ ਹਰਿ
 ਸਿਮਰਨਿ ਬੰਧਨ ਤੂਟੇ ॥ ਮੋਹ ਮਗਨ ਅਛਾ ਅਂਧ ਮਮਤਾ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਛੂਟੇ ॥੩॥ ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੁਆਮੀ
 ਕਹਿ ਕਿਰਪਾ ਜਨੁ ਤੇਰਾ ॥ ਪ੍ਰੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸਰਬ ਮਹਿ ਠਾਕੁਰੁ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਨੇਰਾ ॥੪॥੧੨॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰਦੇਵ ਚਰਨ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਧਿਆਈਐ ਉਪਦੇਸੁ ਹਮਾਰੀ ਗਤਿ ਕਰਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਦੂਖ ਰੋਗ ਭੈ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੇ ਜੋ ਆਵੈ ਹਰਿ ਸੰਤ ਸਰਨ ॥ ਆਧਿ ਜਪੈ ਅਵਰਹ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵੈ ਵਡ ਸਮਰਥ ਤਾਰਨ
 ਤਾਰਨ ॥੧॥ ਜਾ ਕੋ ਮੰਨੁ ਤਤੌਰੈ ਸਹਸਾ ਊਣੇ ਕਤ ਸੁਭਰ ਭਰਨ ॥ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਾਨਤ ਤੇ ਨਾਹੀ
 ਫੁਨਿ ਗਰਭ ਪਰਨ ॥੨॥ ਭਗਤਨ ਕੀ ਟਹਲ ਕਮਾਵਤ ਗਾਵਤ ਦੁਖ ਕਾਟੇ ਤਾ ਕੇ ਜਨਮ ਮਰਨ ॥ ਜਾ ਕਤ ਭਿੱਓ
 ਕ੃ਪਾਲੁ ਬੀਠੁਲਾ ਤਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਜਰ ਜਰਨ ॥੩॥ ਹਰਿ ਰਸਹਿ ਅਧਾਨੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਨੇ ਮੁਖ ਤੇ ਨਾਹੀ ਜਾਤ
 ਕਰਨ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਸੰਤੋਖੇ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭੂ ਜਧਿ ਜਧਿ ਉਧਰਨ ॥੪॥੧੩॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗਾਇਓ
 ਰੀ ਮੈ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਮੰਗਲ ਗਾਇਓ ॥ ਭਲੇ ਸੰਜੋਗ ਭਲੇ ਦਿਨ ਅਤਸਰ ਜਤ ਗੋਪਾਲੁ ਰੀਝਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਸੰਤਹ ਚਰਨ ਮੋਰਲੋ ਮਾਥਾ ॥ ਹਮਰੇ ਮਸਤਕਿ ਸੰਤ ਧਰੇ ਹਾਥਾ ॥੧॥ ਸਾਧਹ ਮੰਨੁ ਮੋਰਲੋ ਮਨੂਆ ॥ ਤਾ ਤੇ ਗਤੁ
 ਹੋਏ ਕੈ ਗੁਨੀਆ ॥੨॥ ਭਗਤਹ ਦਰਸੁ ਦੇਖਿ ਨੈਨ ਰੰਗਾ ॥ ਲੋਭ ਮੋਹ ਤੂਟੇ ਭ੍ਰਮ ਸੰਗਾ ॥੩॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ
 ਸੁਖ ਸਹਜ ਅਨੰਦਾ ॥ ਖੋਲਿ ਭੀਤਿ ਮਿਲੇ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥੪॥੧੪॥

ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨

੧੪ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕੈਸੇ ਕਹਾਉ ਮੋਹਿ ਜੀਅ ਬੇਦਨਾਈ ॥ ਦਰਸਨ ਪਿਆਸ ਪ੍ਰਤੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨੋਹਰ ਮਨੁ ਨ ਰਹੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਤਮਕਾਈ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਿਤਵਨਿ ਚਿਤਵਤ ਪ੍ਰਤੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬੈਰਾਗੀ ਕਦਿ ਪਾਵਤ ਹਰਿ ਦਰਸਾਈ ॥ ਜਤਨ ਕਰਤ ਇਹੁ
ਮਨੁ ਨਹੀਂ ਧੀਰੈ ਕੋਊ ਹੈ ਰੇ ਸੰਤੁ ਮਿਲਾਈ ॥੧॥ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਪੁਨ ਸਭਿ ਹੋਮਤ ਤਿਸੁ ਅਰਪਤ ਸਭਿ ਸੁਖ
ਯਾਈ ॥ ਏਕ ਨਿਮਖ ਪ੍ਰਤੀ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਵੈ ਤਿਸੁ ਸੰਤਨ ਕੈ ਬਲਿ ਯਾਈ ॥੨॥ ਕਰਤ ਨਿਹੋਰਾ ਬਹੁਤੁ ਬੇਨਤੀ
ਸੇਵਤ ਦਿਨੁ ਰੈਨਾਈ ॥ ਮਾਨੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਹਤ ਸਗਲ ਤਿਆਗਤ ਜੋ ਪ੍ਰਤੀ ਬਾਤ ਸੁਨਾਈ ॥੩॥ ਦੇਖਿ ਚਰਿਤ
ਭਈ ਹਤ ਬਿਸਮਨਿ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੁਰਖਿ ਮਿਲਾਈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗ ਦਿੱਤਾਲ ਮੋਹਿ ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ਜਨ
ਨਾਨਕ ਤਪਤਿ ਬੁਝਾਈ ॥੪॥੧॥੧੫॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੇ ਮੂਡੇ ਤੂ ਕਿਤ ਸਿਮਰਤ ਅਥ ਨਾਹੀ ॥ ਨਰਕ
ਘੋਰ ਮਹਿ ਤਰਥ ਤਪੁ ਕਰਤਾ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਗੁਣ ਗਾਂਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਭਰਮਤੌ ਹੀ ਆਇਆਂ
ਮਾਨਸ ਜਨਮੁ ਦੁਲਭਾਹੀ ॥ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਛੋਡਿ ਜਤ ਨਿਕਸਿਆਂ ਤਤ ਲਾਗੇ ਅਨ ਠਾਂਹੀ ॥੧॥ ਕਰਹਿ ਬੁਰਾਈ
ਠਗਾਈ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਨਿਹਫਲ ਕਰਮ ਕਮਾਹੀ ॥ ਕਣੁ ਨਾਹੀ ਤੁਹ ਗਾਹਣ ਲਾਗੇ ਧਾਇ ਧਾਇ ਦੁਖ ਪਾਂਹੀ ॥੨॥
ਮਿਥਿਆ ਸੰਗਿ ਕੂਡਿ ਲਪਟਾਇਆਂ ਉਰਝਿ ਪਰਿਆਂ ਕੁਸਮਾਂਹੀ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਜਬ ਪਕਰਸਿ ਬਵਰੇ ਤਤ ਕਾਲ ਸੁਖਾ
ਤਠਿ ਜਾਹੀ ॥੩॥ ਸੋ ਮਿਲਿਆ ਜੋ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਇਆ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਂਹੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਨੁ ਜਨ
ਬਲਿਹਾਰੀ ਜੋ ਅਲਿਪ ਰਹੇ ਮਨ ਮਾਂਹੀ ॥੪॥੨॥੧੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਿਤ ਜੀਵਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਬਿਨੁ ਮਾਈ ॥
ਜਾ ਕੇ ਬਿਛੁਰਤ ਹੋਤ ਮਿਰਤਕਾ ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਰਹਨੁ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੀਅ ਹੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਜਾ ਕੈ
ਸੰਗਿ ਸੁਹਾਈ ॥ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਸੰਤਹੁ ਮੋਹਿ ਅਪੁਨੀ ਪ੍ਰਭ ਮੰਗਲ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੧॥ ਚਰਨ ਸੰਤਨ ਕੇ ਮਾਥੇ
ਮੇਰੇ ਊਪਰਿ ਨੈਨਹੁ ਧੂਰਿ ਬਾਂਘਾਈ ॥ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮਿਲੀਐ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਤਾ ਕੈ ਹਤ ਜਾਈ
॥੨॥੩॥੧੭॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾਅ ਅਤਸਰ ਕੈ ਹਤ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਅਪਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਨੁ
ਕਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਭਲੋ ਕਬੀਰੁ ਦਾਸੁ ਦਾਸਨ ਕੋ ਊਤਮੁ ਸੈਨੁ ਜਨੁ ਨਾਈ ॥ ਊਚ ਤੇ ਊਚ
ਨਾਮਦੇਤ ਸਮਦਰਸੀ ਰਖਿਦਾਸ ਠਾਕੁਰ ਬਣਿ ਆਈ ॥੧॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਤਨੁ ਧਨੁ ਸਾਧਨ ਕਾ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸੰਤ
ਰੇਨਾਈ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਭਰਮ ਸਭਿ ਨਾਸੇ ਨਾਨਕ ਮਿਲੇ ਗੁਸਾਈ ॥੨॥੪॥੧੮॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨੋਰਥ

ਪ੍ਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪਿ ॥ ਸਗਲ ਪਦਾਰਥ ਸਿਮਰਨਿ ਜਾ ਕੈ ਆਠ ਪਹਰ ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਾਪਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ
ਨਾਮੁ ਸੁਆਮੀ ਤੇਰਾ ਜੋ ਪੀਵੈ ਤਿਸ ਹੀ ਤ੃ਪਤਾਸ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਨਾਸਹਿ ਆਗੈ ਦਰਗਹ ਹੋਇ
ਖਲਾਸ ॥੨॥ ਸਰਨਿ ਤੁਮਾਰੀ ਆਇਆ ਕਰਤੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਅਬਿਨਾਸ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇਰੇ ਚਰਨ
ਧਿਆਵਤ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਤਨਿ ਦਰਸ ਪਿਆਸ ॥੨॥੫॥੧੬॥

ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਨ ਕਹਾ ਲੁਭਾਈਐ ਆਨ ਕਤ ॥ ਈਤ ਊਤ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਜੀਅ ਸੰਗਿ ਤੇਰੇ ਕਾਮ ਕਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਪੂਰ੍ਣ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨੋਹਰ ਇਹੈ ਅਧਾਵਨ ਪਾਁਨ ਕਤ ॥ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਹੈ ਸਾਧ ਸੰਤਨ ਕੀ ਠਾਹਰ
ਨੀਕੀ ਧਿਆਨ ਕਤ ॥੧॥ ਬਾਣੀ ਮੰਨ੍ਹ ਮਹਾ ਪੁਰਖਨ ਕੀ ਮਨਹਿ ਉਤਾਰਨ ਮਾਁਨ ਕਤ ॥ ਖੋਜਿ ਲਹਿਆ ਨਾਨਕ ਸੁਖ
ਥਾਨਾਂ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਬਿਸ਼ਾਮ ਕਤ ॥੨॥੧॥੨੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਸਦਾ ਮੰਗਲ ਗੋਬਿੰਦ ਗਾਇ ॥ ਰੋਗ
ਸੋਗ ਤੇਰੇ ਮਿਟਹਿ ਸਗਲ ਅਥ ਨਿਮਖ ਹੀਐ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਛੋਡਿ ਸਿਆਨਪ ਬਹੁ
ਚਤੁਰਾਈ ਸਾਧੂ ਸਰਣੀ ਜਾਇ ਪਾਇ ॥ ਜਤ ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲੁ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਜਮ ਤੇ ਹੋਵੈ ਧਰਮ ਰਾਇ ॥੧॥ ਏਕਸ
ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਕੋ ਦ੍ਰਿੜਾ ਆਨ ਨ ਬੀਓ ਲਵੈ ਲਾਇ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਕੋ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਸਾਇ
॥੨॥੨॥੨੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਸਗਲ ਤਥਾਰੇ ਸੰਗ ਕੇ ॥ ਭਏ ਪੁਨੀਤ ਪਵਿਤ੍ਰ ਮਨ ਜਨਮ ਜਨਮ
ਕੇ ਦੁਖ ਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਾਰਗਿ ਚਲੇ ਤਿਨੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜਿਨ੍ ਸਿਤ ਗੋਸਟਿ ਸੇ ਤਰੇ ॥ ਬ੍ਰਾਤ ਧੌਰ
ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਤੇ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ॥੧॥ ਜਿਨ੍ ਕੇ ਭਾਗ ਬਢੇ ਹੈ ਭਾਈ ਤਿਨ੍ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਮੁਖ ਜੁਰੇ ॥ ਤਿਨ੍ ਕੀ
ਧੂਰਿ ਬਾਂਛੈ ਨਿਤ ਨਾਨਕੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ॥੨॥੩॥੨੨॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ
ਧਿਆਏ ॥ ਏਕ ਪਲਕ ਸੁਖ ਸਾਧ ਸਮਾਗਮ ਕੋਟਿ ਬੈਕੁਂਠ ਪਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਜਧਿ ਹੋਤ ਪੁਨੀਤਾ
ਜਮ ਕੀ ਕਾਸ ਨਿਵਾਰੈ ॥ ਮਹਾ ਪਤਿਤ ਕੇ ਪਾਤਿਕ ਉਤਰਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਤਰਿ ਧਾਰੈ ॥੧॥ ਜੋ ਜੋ ਸੁਨੈ ਰਾਮ ਜਸੁ
ਨਿਰਮਲ ਤਾ ਕਾ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਨਾਸਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ਮਨ ਤਨ ਹੋਇ ਬਿਗਾਸਾ

॥੨॥੪॥੨੩॥

ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ਟੁਪਦੇ ਘਰੂ ੪

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੋਹਨ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ਕਰਉ ਜੋਦੀਆ ॥ ਮਾਨੁ ਕਰਉ ਅਭਿਮਾਨੈ ਬੋਲਤ ਭੂਲ ਚੂਕ ਤੇਰੀ ਪ੍ਰਤਿ ਚਿਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਿਕਟਿ ਸੁਨਤ ਅਥੁ ਪੇਖਤ ਨਾਹੀ ਭਰਮਿ ਭਰਮਿ ਦੁਖ ਭਰੀਆ ॥ ਹੋਇ ਕ੃ਪਾਲ ਗੁਰ ਲਾਹਿ ਪਾਰਦੋ ਮਿਲਤ ਲਾਲ ਮਨੁ ਹਰੀਆ ॥੧॥ ਏਕ ਨਿਮਖ ਜੇ ਬਿਸਰੈ ਸੁਆਮੀ ਜਾਨਤ ਕੋਟਿ ਦਿਨਸ ਲਖ ਬਰੀਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੀ ਭੀਰ ਜਤ ਪਾਈ ਤਤ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਮਿਰੀਆ ॥੨॥੧॥੨੪॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਬ ਕਿਆ ਸੋਚਤ ਸੋਚ ਬਿਸਾਰੀ ॥ ਕਰਣਾ ਸਾ ਸੋਈ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ਦੇਹਿ ਨਾਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚਹੁ ਦਿਸ ਫੂਲਿ ਰਹੀ ਬਿਖਿਆ ਬਿਖੁ ਗੁਰ ਮੰਨੁ ਮੂਖਿ ਗਰੁੜਾਰੀ ॥ ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖਿਆਂ ਕਰਿ ਅਪੁਨਾ ਜਿਤ ਜਲ ਕਮਲਾ ਅਲਿਪਾਰੀ ॥੧॥ ਹਤ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਮੈ ਕਿਆ ਹੋਸਾ ਸਭ ਤੁਮ ਹੀ ਕਲ ਧਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਭਾਗਿ ਪਰਿਆਂ ਹਰਿ ਪਾਛੈ ਰਾਖੁ ਸੰਤ ਸਦਕਾਰੀ ॥੨॥੨॥੨੫॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਬ ਮੋਹਿ ਸਰਬ ਤਪਾਵ ਬਿਰਕਾਤੇ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਏਕਸੁ ਤੇ ਮੇਰੀ ਗਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦੇਖੋ ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਬਹੁ ਰੰਗ ਅਨ ਨਾਹੀ ਤੁਮ ਭਾਂਤੇ ॥ ਦੇਂਹਿ ਅਧਾਰੁ ਸਰਬ ਕਤ ਠਾਕੁਰ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥੧॥ ਭ੍ਰਮਤੌ ਭ੍ਰਮਤੌ ਹਾਰਿ ਜਤ ਪਰਿਆਂ ਤਤ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਚਰਨ ਪਰਾਤੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਸਰਬ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਇਹ ਸ੍ਰੂਖਿ ਬਿਹਾਨੀ ਰਾਤੇ ॥੨॥੩॥੨੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਬ ਮੋਹਿ ਲਬਧਿਆਂ ਹੈ ਹਰਿ ਟੇਕਾ ॥ ਗੁਰ ਦਿੜਿਆਲ ਭਏ ਸੁਖਦਾਈ ਅੰਧੁਲੈ ਮਾਣਿਕੁ ਦੇਖਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਟੇ ਅਗਿਆਨ ਤਿਮਰ ਨਿਰਮਲੀਆ ਬੁਧਿ ਬਿਗਾਸ ਬਿਕੇਕਾ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਤਰੰਗ ਫੇਨੁ ਜਲ ਹੋਈ ਹੈ ਸੇਵਕ ਠਾਕੁਰ ਭਏ ਏਕਾ ॥੧॥ ਜਹ ਤੇ ਤਠਿਆਂ ਤਹ ਹੀ ਆਇਆਂ ਸਭ ਹੀ ਏਕੈ ਏਕਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦੂਸਟਿ ਆਇਆਂ ਸ਼ਬ ਠਾਈ ਪ੍ਰਾਣਪਤੀ ਹਰਿ ਸਮਕਾ ॥੨॥੪॥੨੭॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਏਕੈ ਹੀ ਪ੍ਰਤਿ ਮਾਂਗੈ ॥ ਪੇਖਿ ਆਇਆਂ ਸਰਬ ਥਾਨ ਦੇਸ ਪ੍ਰਤਿ ਰੋਮ ਨ ਸਮਸਰਿ ਲਾਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੈ ਨੀਰੇ ਅਨਿਕ ਭੋਜਨ ਬਹੁ ਬਿੰਜਨ ਤਿਨ ਸਿਤ ਦੂਸਟਿ ਨ ਕਰੈ ਰੁਚਾਂਗੈ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਹੈ ਪ੍ਰਤਿ ਪ੍ਰਤਿ ਮੁਖਿ ਟੈਰੈ ਜਿਤ ਅਲਿ ਕਮਲਾ ਲੋਭਾਂਗੈ

॥੧॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਮਨਮੋਹਨ ਲਾਲਨ ਸੁਖਦਾਈ ਸਰਬਾਂਗੈ ॥ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਪਾਹਿ ਪਠਾਇਆ ਮਿਲਹੁ
 ਸਖਾ ਗਲਿ ਲਾਗੈ ॥੨॥੫॥੨੮॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਥ ਮੋਰੇ ਠਾਕੁਰ ਸਿਤ ਮਨੁ ਮਾਨਾਂ ॥ ਸਾਧ ਕ੃ਪਾਲ
 ਦਿੱਤਾਲ ਭਏ ਹੈ ਇਹੁ ਛੇਦਿਆ ਟੁਸਟੁ ਬਿਗਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੁਮ ਹੀ ਸੁਨਦਰ ਤੁਮਹਿ ਸਿਆਨੇ ਤੁਮ ਹੀ
 ਸੁਘਰ ਸੁਜਾਨਾ ॥ ਸਗਲ ਜੋਗ ਅਰੂ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ ਕੀਮਤਿ ਜਾਨਾਂ ॥੧॥ ਤੁਮ ਹੀ ਨਾਇਕ
 ਤੁਮਹਿ ਛਤਪਤਿ ਤੁਮ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਭਗਵਾਨਾ ॥ ਪਾਵਤ ਦਾਨੁ ਸੰਤ ਸੇਵਾ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨਾਂ ॥
 ੨॥੬॥੨੯॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਚੀਤਿ ਆਏ ਪੂਅ ਰੰਗਾ ॥ ਬਿਸ਼ਰਿਆ ਧਾਂਧੁ ਬਾਂਧੁ ਮਾਇਆ ਕੋ
 ਰਖਨਿ ਸਬਾਈ ਜੰਗਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਸੇਵਤ ਹਰਿ ਰਿਦੈ ਬਸਾਵਤ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਤਸਙਗਾ ॥ ਐਸੇ
 ਮਿਲਿਆ ਮਨੋਹਰੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸੁਖ ਪਾਏ ਮੁਖ ਮੰਗਾ ॥੧॥ ਪੂਤ ਅਪਨਾ ਗੁਰਿ ਬਸਿ ਕਰਿ ਦੀਨਾ ਭੋਗਤ ਭੋਗ
 ਨਿਸਙਗਾ ॥ ਨਿਰਭਤ ਭਏ ਨਾਨਕ ਭਤ ਮਿਟਿਆ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਪਾਠਂਗਾ ॥੨॥੭॥੩੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਹਰਿ ਜੀਤ ਕੇ ਦਰਸਨ ਕਤ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥ ਬਚਨ ਨਾਦ ਮੈਰੇ ਸ਼ਰਵਨਹੁ ਪੂਰੇ ਦੇਹਾ ਪੂਅ ਅੰਕਿ ਸਮਾਨੀ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਛੂਟਰਿ ਤੇ ਗੁਰਿ ਕੀਈ ਸੁਹਾਗਨਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਨੀ ॥ ਜਿਹ ਘਰ ਮਹਿ ਬੈਸਨੁ ਨਹੀ ਪਾਵਤ
 ਸੋ ਥਾਨੁ ਮਿਲਿਆ ਬਾਸਾਨੀ ॥੧॥ ਤਨ੍ ਕੈ ਬਸਿ ਆਇਆ ਭਗਤਿ ਬਛਲੁ ਜਿਨਿ ਰਾਖੀ ਆਨ ਸੰਤਾਨੀ ॥ ਕਹੁ
 ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਸਭ ਚੂਕੀ ਕਾਣਿ ਲੁਕਾਨੀ ॥੨॥੮॥੩੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਥ ਮੈਰੇ
 ਪੰਚਾ ਤੇ ਸੰਗੁ ਤੂਟਾ ॥ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਭਏ ਮਨਿ ਆਨਦ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਛੂਟਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਖਮ ਥਾਨ
 ਬਹੁਤ ਬਹੁ ਧਰੀਆ ਅਨਿਕ ਰਾਖ ਸੂਰਟਾ ॥ ਬਿਖਮ ਗਾਰੂ ਕਰੁ ਪਹੁੱਚੈ ਨਾਹੀ ਸੰਤ ਸਾਨਥ ਭਏ ਲੂਟਾ ॥੧॥ ਬਹੁਤੁ
 ਖਜਾਨੇ ਮੈਰੈ ਪਾਲੈ ਪਰਿਆ ਅਮੋਲ ਲਾਲ ਆਖੂਟਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਤਤ ਮਨ ਮਹਿ ਹਰਿ
 ਰਸੁ ਘੂਟਾ ॥੨॥੯॥੩੨॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਥ ਮੈਰੇ ਠਾਕੁਰ ਸਿਤ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਦਾਨੁ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ
 ਦੀਆ ਤਰੜਾਇਆ ਜਿਤ ਜਲ ਮੀਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਲੋਭ ਮਦ ਮਤਸਰ ਇਹ ਅਰਪਿ ਸਗਲ
 ਦਾਨੁ ਕੀਨਾ ॥ ਮੰਤ ਵ੃ਡਾਇ ਹਰਿ ਅਤਖਥੁ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਤਤ ਮਿਲਿਆ ਸਗਲ ਪ੍ਰਭੀਨਾ ॥੧॥ ਗ੍ਰਹ ਤੇਰਾ ਤੂ

ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ਗੁਰਿ ਹਤ ਖੋਈ ਪ੍ਰਭੁ ਦੀਨਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਸਹਜ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਖਜੀਨਾ
 ॥੨॥੧੦॥੩੩॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੋਹਨ ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਤੂ ਤਾਰਹਿ ॥ ਛੁਟਹਿ ਸ਼ੰਧਾਰ ਨਿਮਖ ਕਿਰਪਾ ਤੇ
 ਕੋਟਿ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਉਧਾਰਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ਬਹੁਤੁ ਬੇਨਤੀ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਸਾਮਾਰਹਿ ॥ ਹੋਹੁ
 ਕ੃ਪਾਲ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਹਾਥ ਦੇਡਿ ਨਿਸਤਾਰਹਿ ॥੧॥ ਕਿਆ ਏ ਭੂਪਤਿ ਬਪੁਰੇ ਕਹੀਅਹਿ ਕਹੁ ਏ ਕਿਸ ਨੋ
 ਮਾਰਹਿ ॥ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਸੁਖਦਾਤੇ ਸਭੁ ਨਾਨਕ ਜਗਤੁ ਤੁਮਾਰਹਿ ॥੨॥੧੧॥੩੪॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਅਬ ਮੋਹਿ ਧਨੁ ਪਾਇਆਂ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥ ਭਏ ਅਚਿੰਤ ਤੂਸਨ ਸਭ ਬੁਝੀ ਹੈ ਇਹੁ ਲਿਖਿਆਂ ਲੇਖੁ ਮਥਾਮਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਭਿਓ ਬੈਰਾਗੀ ਫਿਰਿ ਆਇਆਂ ਦੇਹ ਗਿਰਾਮਾ ॥ ਗੁਰਿ ਕ੃ਪਾਲਿ ਸਤਦਾ ਇਹੁ ਜੋਰਿਆਂ
 ਹਥਿ ਚਰਿਆਂ ਲਾਲੁ ਅਗਾਮਾ ॥੧॥ ਆਨ ਬਾਪਾਰ ਬਨਜ ਜੋ ਕਰੀਅਹਿ ਤੇਤੇ ਦੂਖ ਸਹਾਮਾ ॥ ਗੋਬਿਦ ਭਜਨ ਕੇ
 ਨਿਰਮੈ ਵਾਪਾਰੀ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ॥੨॥੧੨॥੩੫॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਮਿਸਟ
 ਲਗੇ ਪ੍ਰਥਾ ਬੋਲਾ ॥ ਗੁਰਿ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਪ੍ਰਭ ਸੇਵਾ ਲਾਏ ਸਦ ਦਿਇਆਲੁ ਹਰਿ ਢੋਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਭ ਤੂ
 ਠਾਕੁਰੁ ਸਰਬ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕੁ ਮੋਹਿ ਕਲਕਤ ਸਹਿਤ ਸਭਿ ਗੋਲਾ ॥ ਮਾਣੁ ਤਾਣੁ ਸਭੁ ਤੂਹੈ ਤੂਹੈ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਮੈ
 ਓਲਾ ॥੧॥ ਜੇ ਤਖਤਿ ਬੈਸਾਲਹਿ ਤਤ ਦਾਸ ਤੁਸਾਰੇ ਘਾਸੁ ਬਢਾਵਹਿ ਕੇਤਕ ਬੋਲਾ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ
 ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਅਗਹ ਅਤੋਲਾ ॥੨॥੧੩॥੩੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਕਹਤ ਗੁਣ
 ਸੀਵਾ ॥ ਏਕ ਨਿਮਖ ਓਪਾਇ ਸਮਾਵੈ ਦੇਖਿ ਚਰਿਤ ਮਨ ਮੋਹਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਸੁ ਸੁਣਿਐ ਮਨਿ ਹੋਇ ਰਹਸੁ
 ਅਤਿ ਰਿਦੈ ਮਾਨ ਦੁਖ ਜੋਵਾ ॥ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆਂ ਦੁਖੁ ਦੂਰਿ ਪਰਾਇਆਂ ਬਣਿ ਆਈ ਪ੍ਰਭ ਤੋਵਾ ॥੧॥ ਕਿਲਵਿਖ ਗਏ
 ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਹੋਈ ਹੈ ਗੁਰਿ ਕਾਢੇ ਮਾਇਆ ਦ੍ਰੋਵਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੋਵਾ
 ॥੨॥੧੪॥੩੭॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨੈਨਹੁ ਦੇਖਿਆਂ ਚਲਤੁ ਤਮਾਸਾ ॥ ਸਭ ਹੂ ਦੂਰਿ ਸਭ ਹੂ ਤੇ ਨੈਰੈ ਅਗਮ
 ਅਗਮ ਘਟ ਵਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਭੂਲੁ ਨ ਭੂਲੈ ਲਿਖਿਆਂ ਨ ਚਲਾਵੈ ਮਤਾ ਨ ਕਰੈ ਪਚਾਸਾ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ
 ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿ ਬਿਨਾਹੈ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਗੁਣਤਾਸਾ ॥੧॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਦੀਪਕੁ ਬਲਿਆਂ ਗੁਰਿ ਰਿਦੈ ਕੀਆਂ

ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਦਰਸੁ ਪੇਖਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਭ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸਾ ॥੨॥੧੫॥੩੮॥ ਸਾਰਗ
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਨਹ ਗੋਬਿੰਦ ਮਾਰਗੁ ਸੁਹਾਵਾ ॥ ਆਨ ਮਾਰਗ ਜੇਤਾ ਕਿਛੁ ਧਾਈਐ ਤੇਤੋ ਹੀ ਦੁਖੁ ਹਾਵਾ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਨੇਤਰ ਪੁਨੀਤ ਭਏ ਦਰਸੁ ਪੇਖੇ ਹਸਤ ਪੁਨੀਤ ਟਹਲਾਵਾ ॥ ਰਿਦਾ ਪੁਨੀਤ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਬਸਿਐ ਮਸਤ
 ਪੁਨੀਤ ਸੰਤ ਧੂਰਾਵਾ ॥੧॥ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਨਾਮਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੈ ਜਿਸੁ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਿ ਪਾਵਾ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਕਤ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਐ ਸੁਖਿ ਸਹਜੇ ਅਨਦ ਬਿਹਾਵਾ ॥੨॥੧੬॥੩੯॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਧਿਆਇਐ
 ਅੰਤਿ ਬਾਰ ਨਾਮੁ ਸਖਾ ॥ ਜਹ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਭਾਈ ਨ ਪਹੁੱਚੈ ਤਹਾ ਤਹਾ ਤ੍ਰਾਂ ਰਖਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅੰਧ ਕੂਪ
 ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਤਿਨਿ ਸਿਮਰਿਐ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾ ॥ ਖੂਲੇ ਬੰਧਨ ਮੁਕਤਿ ਗੁਰਿ ਕੀਨੀ ਸਭ ਤ੍ਰਾਂ ਤੁਹੀ
 ਦਿਖਾ ॥੧॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਪੀਆ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤਿਆ ਆਘਾਏ ਰਸਨ ਚਖਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਸਹਜੁ ਮੈ ਪਾਇਆ
 ਗੁਰਿ ਲਾਹੀ ਸਗਲ ਤਿਖਾ ॥੨॥੧੭॥੪੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਐਸੇ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਇਆ ॥
 ਭਿਓ ਕ੃ਪਾਲੁ ਦਿਇਆਲੁ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਲਗੈ ਨ ਤਾਤੀ ਬਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੇਤੇ ਸਾਸ ਸਾਸ ਹਮ
 ਲੇਤੇ ਤੇਤੇ ਹੀ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥ ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਛੁਰੈ ਘਰੀ ਨ ਬਿਸਰੈ ਸਦ ਸੰਗੇ ਜਤ ਜਾਇਆ ॥੧॥ ਹਤ
 ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਚਰਨ ਕਮਲ ਕਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਗੁਰ ਦਰਸਾਇਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਾਹੂ ਪਰਵਾਹਾ
 ਜਤ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਮੈ ਪਾਇਆ ॥੨॥੧੮॥੪੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਸਬਦੁ ਲਗੇ ਗੁਰ ਮੀਠਾ
 ॥ ਖੁਲਿਐ ਕਰਮੁ ਭਿਓ ਪਰਗਾਸਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਡੀਠਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਆਜੀਨੀ
 ਸੰਭਤ ਸਰਬ ਥਾਨ ਘਟ ਬੀਠਾ ॥ ਭਿਓ ਪਰਾਪਤਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮਾ ਬਲਿ ਬਲਿ ਪ੍ਰਭ ਚਰਣੀਠਾ ॥੧॥
 ਸਤਸਙਗਤਿ ਕੀ ਰੇਣੁ ਮੁਖਿ ਲਾਗੀ ਕੀਏ ਸਗਲ ਤੀਰਥ ਮਜਨੀਠਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਰੰਗ ਚਲ੍ਹੂ ਭਏ ਹੈ ਹਰਿ
 ਰੰਗ ਨ ਲਹੈ ਮਜੀਠਾ ॥੨॥੧੯॥੪੨॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਗੁਰਿ ਸਾਥੇ ॥ ਨਿਮਖ
 ਬਚਨੁ ਪ੍ਰਭ ਹੀਅਰੈ ਬਸਿਐ ਸਗਲ ਭੂਖ ਮੇਰੀ ਲਾਥੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ ਗੁਣ ਨਾਇਕ ਠਾਕੁਰ
 ਸੁਖ ਸਮੂਹ ਸਭ ਨਾਥੇ ॥ ਏਕ ਆਸ ਮੋਹਿ ਤੇਰੀ ਸੁਆਮੀ ਅਤਰ ਦੁਤੀਆ ਆਸ ਬਿਰਾਥੇ ॥੧॥ ਨੈਣ

ਤ੍ਰਪਤਾਸੇ ਦੇਖਿ ਦਰਸਾਵਾ ਗੁਰਿ ਕਰ ਧਾਰੇ ਮੈਰੈ ਮਾਥੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਅਤੁਲ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ
 ਲਾਥੇ ॥੨॥੨੦॥੪੩॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੇ ਮੂਡੇ ਆਨ ਕਾਹੇ ਕਤ ਜਾਈ ॥ ਸਾਂਗਿ ਮਨੋਹਰੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹੈ ਰੇ
 ਭੂਲਿ ਭੂਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸੁੰਦਰ ਚਤੁਰ ਅਨੂਪ ਬਿਧਾਤੇ ਤਿਸ ਸਿਉ ਰੁਚ ਨਹੀ ਰਾਈ ॥ ਮੋਹਨਿ
 ਸਿਉ ਬਾਵਰ ਮਨੁ ਮੋਹਿਓ ਝੂਠਿ ਠਗਤੀ ਪਾਈ ॥੧॥ ਭਿਓ ਦਿਆਲੁ ਕ੃ਪਾਲੁ ਦੁਖ ਹਰਤਾ ਸੰਤਨ ਸਿਉ
 ਬਨਿ ਆਈ ॥ ਸਗਲ ਨਿਧਾਨ ਘਰੈ ਮਹਿ ਪਾਏ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥੨॥੨੧॥੪੪॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਓਅੰ ਪ੍ਰਤੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚੀਤਿ ਪਹਿਲਰੀਆ ॥ ਜੋ ਤਤ ਬਚਨੁ ਟੀਓ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਤਤ ਮੈ ਸਾਜ ਸੀਗਰੀਆ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਹਮ ਭੂਲਹ ਤੁਮ ਸਦਾ ਅਭੂਲਾ ਹਮ ਪਤਿਤ ਤੁਮ ਪਤਿਤ ਤੁਧਰੀਆ ॥ ਹਮ ਨੀਚ ਬਿਰਖ ਤੁਮ ਮੈਲਾਗਰ
 ਲਾਜ ਸਾਂਗਿ ਸਾਂਗਿ ਬਸਰੀਆ ॥੧॥ ਤੁਮ ਗੰਭੀਰ ਧੀਰ ਉਪਕਾਰੀ ਹਮ ਕਿਆ ਕਪੁਰੇ ਜੰਤਰੀਆ ॥ ਗੁਰ ਕ੃ਪਾਲ
 ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮੇਲਿਓ ਤਤ ਮੇਰੀ ਸ੍ਰਖਿ ਸੇਜਰੀਆ ॥੨॥੨੨॥੪੫॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਓਡਿ ਦਿਨਸ
 ਧੰਨਿ ਪਰਵਾਨਾਂ ॥ ਸਫਲ ਤੇ ਘਰੀ ਸਾਂਜੋਗ ਸੁਹਾਵੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਂਗਿ ਗਿਆਨਾਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧੰਨਿ ਸੁਭਾਗ ਧੰਨਿ
 ਸੋਹਾਗਾ ਧੰਨਿ ਦੇਤ ਜਿਨਿ ਮਾਨਾਂ ॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਤੁਸੁਰਾ ਸਭੁ ਗ੍ਰਹੁ ਧਨੁ ਤੁਸੁਰਾ ਹੀਤ ਕੀਓ ਕੁਰਬਾਨਾਂ ॥੧॥
 ਕੋਟਿ ਲਾਖ ਰਾਜ ਸੁਖ ਪਾਏ ਇਕ ਨਿਮਖ ਪੇਖਿ ਦੂਸਟਾਨਾਂ ॥ ਜਤ ਕਹੁ ਮੁਖਹੁ ਸੇਵਕ ਇਹ ਬੈਸੀਐ ਸੁਖ ਨਾਨਕ
 ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨਾਂ ॥੨॥੨੩॥੪੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਥ ਮੋਰੇ ਸਹਸਾ ਦ੍ਰਖੁ ਗਿਆ ॥ ਅਤਰ ਉਪਾਵ
 ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਛੋਡੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਿ ਪਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਰਬ ਸਿਧਿ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਕਵੇ ਅਛਾ ਰੋਗ
 ਸਗਲ ਹੀ ਖਿਆ ॥ ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਖਿਨ ਮਹਿ ਖਤ ਭੰਈ ਹੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਹਿਆ ॥੧॥ ਪੰਚ ਦਾਸ
 ਗੁਰਿ ਵਸਗਤਿ ਕੀਨੇ ਮਨ ਨਿਹਚਲ ਨਿਰਭਿਆ ॥ ਆਇ ਨ ਜਾਵੈ ਨ ਕਤ ਹੀ ਡੋਲੈ ਥਿਰੁ ਨਾਨਕ ਰਾਜਿਆ
 ॥੨॥੨੪॥੪੭॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮੋਰੇ ਇਤ ਉਤ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ॥ ਮਨਮੋਹਨੁ ਮੇਰੇ ਜੀਅ ਕੋ ਪਿਆਰੇ
 ਕਵਨ ਕਹਾ ਗੁਨ ਗਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖੇਲਿ ਖਿਲਾਇ ਲਾਡ ਲਾਡਾਵੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਅਨਦਾਈ ॥ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ
 ਬਾਰਿਕ ਕੀ ਨਿਆਈ ਜੈਸੇ ਮਾਤ ਪਿਤਾਈ ॥੧॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਿਮਖ ਨਹੀ ਰਹਿ ਸਕੀਐ ਬਿਸਰਿ ਨ ਕਬਹੂ

ਜਾਈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮਿਲਿ ਸਂਤਸੰਗਤਿ ਤੇ ਮਗਨ ਭਏ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੨॥੨੫॥੪੮॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਅਪਨਾ ਮੀਤੁ ਸੁਆਮੀ ਗਾਈਐ ॥ ਆਸ ਨ ਅਵਰ ਕਾਹੂ ਕੀ ਕੀਜੈ ਸੁਖਦਾਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਸੂਖ ਮੰਗਲ ਕਲਿਆਣ ਜਿਸਹਿ ਘਰਿ ਤਿਸ ਹੀ ਸਰਣੀ ਪਾਈਐ ॥ ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗੀ ਮਾਨੁਖੁ ਜੇ ਸੇਵਹੁ ਤਤ
 ਲਾਜ ਲੋਨੁ ਹੋਇ ਜਾਈਐ ॥੧॥ ਏਕ ਓਟ ਪਕਰੀ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈਐ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ
 ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਸਗਲ ਚੁਕੀ ਮੁਹਤਾਈਐ ॥੨॥੨੬॥੪੯॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਓਟ ਸਤਾਣੀ
 ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ ਮੈਰੈ ॥ ਦੂਸਟਿ ਨ ਲਿਆਵਤ ਅਵਰ ਕਾਹੂ ਕਤ ਮਾਣਿ ਮਹਤਿ ਪ੍ਰਭ ਤੈਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅੰਗੀਕਾਰੁ
 ਕੀਓ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਕਾਢਿ ਲੀਆ ਬਿਖੁ ਘੈਰੈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਅਤਖਥੁ ਮੁਖਿ ਦੀਨੋ ਜਾਇ ਪਇਆ ਗੁਰ ਪੈਰੈ
 ॥੧॥ ਕਵਨ ਉਪਮਾ ਕਹਤ ਏਕ ਮੁਖ ਨਿਰਗੁਣ ਕੇ ਦਾਤੈਰੈ ॥ ਕਾਟਿ ਸਿਲਕ ਜਤ ਅਪੁਨਾ ਕੀਨੋ ਨਾਨਕ ਸੂਖ
 ਘਨੈਰੈ ॥੨॥੨੭॥੫੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਤ ਦੂਖ ਬਿਨਾਸੀ ॥ ਭਇਆਂ ਕ੃ਪਾਲੁ ਜੀਅ
 ਸੁਖਦਾਤਾ ਹੋਈ ਸਗਲ ਖਲਾਸੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਵਰ ਨ ਕੋਊ ਸੂਝੈ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨੁ ਕਹੁ ਕੋ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਜਾਸੀ ॥
 ਜਿਤ ਜਾਣਹੁ ਤਿਤ ਰਾਖਹੁ ਠਾਕੁਰ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁਮ ਹੀ ਪਾਸੀ ॥੧॥ ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖੇ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੇ ਸਦ
 ਜੀਵਨ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਹੈ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥੨॥੨੮॥੫੧॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨੁ ਜਤ ਕਤ ਤੁਝਹਿ ਸਮਾਰੈ ॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਦੀਨ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਜਿਤ ਜਾਨਹਿ
 ਤਿਤ ਪਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਬ ਭੁਖੈ ਤਬ ਭੋਜਨੁ ਮਾਂਗੈ ਅਧਾਏ ਸੂਖ ਸਧਾਰੈ ॥ ਤਬ ਅਰੋਗ ਜਬ ਤੁਮ ਸੰਗਿ
 ਬਸਤੈ ਛੁਟਕਤ ਹੋਇ ਰਖਾਰੈ ॥੧॥ ਕਵਨ ਬਸੇਰੋ ਦਾਸ ਦਾਸਨ ਕੋ ਥਾਪਿਤ ਥਾਪਨਹਾਰੈ ॥ ਨਾਮੁ ਨ ਬਿਸਰੈ
 ਤਬ ਜੀਵਨੁ ਪਾਈਐ ਬਿਨਤੀ ਨਾਨਕ ਇਹ ਸਾਰੈ ॥੨॥੨੯॥੫੨॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨ ਤੇ ਭੈ ਭਤ
 ਦੂਰਿ ਪਰਾਇਆਂ ॥ ਲਾਲ ਦਿਆਲ ਗੁਲਾਲ ਲਾਡਿਲੇ ਸਹਜਿ ਸਹਜਿ ਗੁਨ ਗਾਇਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰ
 ਬਚਨਾਤਿ ਕਮਾਤ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਕਤਹੂ ਧਾਇਆਂ ॥ ਰਹਤ ਉਪਾਧਿ ਸਮਾਧਿ ਸੁਖ ਆਸਨ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ
 ਗ੍ਰਹਿ ਪਾਇਆਂ ॥੧॥ ਨਾਦ ਬਿਨੋਦ ਕੋਡ ਆਨਨਦਾ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆਂ ॥ ਕਰਨਾ ਆਪਿ ਕਰਾਵਨ ਆਪੇ

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਆਪਾਇਆਂਓ ॥੨॥੩੦॥੫੩॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਮਨਹਿ ਆਧਾਰੋ ॥ ਜਿਨ
 ਦੀਆ ਤਿਸ ਕੈ ਕੁਰਬਾਨੈ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਨਮਸਕਾਰੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬ੍ਰਾਂਜੀ ਤ੃ਸਨਾ ਸਹਜਿ ਸੁਹੇਲਾ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਬਿਖੁ
 ਜਾਰੋ ॥ ਆਇ ਨ ਜਾਇ ਬਸੈ ਇਹ ਠਾਹਰ ਜਹ ਆਸਨੁ ਨਿਰਂਕਾਰੋ ॥੧॥ ਏਕੈ ਪਰਗਟੁ ਏਕੈ ਗੁਪਤਾ ਏਕੈ
 ਧੁੰਧੁਕਾਰੋ ॥ ਆਦਿ ਮਥਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਬੀਚਾਰੋ ॥੨॥੩੧॥੫੪॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਬਿਨੁ ਪ੍ਰਭ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ਘਰੀ ॥ ਸਰਬ ਸ੍ਰਵਖ ਤਾਹੂ ਕੈ ਪੂਰਨ ਜਾ ਕੈ ਸੁਖੁ ਹੈ ਹਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੰਗਲ ਰੂਪ
 ਪ੍ਰਾਨ ਜੀਵਨ ਧਨ ਸਿਮਰਤ ਅਨਦ ਘਨਾ ॥ ਵਡ ਸਮਰਥੁ ਸਦਾ ਸਦ ਸੰਗੇ ਗੁਨ ਰਸਨਾ ਕਵਨ ਭਨਾ ॥੧॥
 ਥਾਨ ਪਵਿਤ੍ਰਾ ਮਾਨ ਪਵਿਤ੍ਰਾ ਪਵਿਤ੍ਰ ਸੁਨਨ ਕਹਨਹਾਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤੇ ਭਵਨ ਪਵਿਤ੍ਰ ਜਾ ਮਹਿ ਸੰਤ ਤੁਸ਼ਾਰੇ
 ॥੨॥੩੨॥੫੫॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਸਨਾ ਜਪਤੀ ਤੂਹੀ ਤੂਹੀ ॥ ਮਾਤ ਗਰਭ ਤੁਮ ਹੀ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਮੂਤ
 ਮੰਡਲ ਇਕ ਤੂਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਮਹਿ ਪਿਤਾ ਤੁਮ ਹੀ ਫੁਨਿ ਮਾਤਾ ਤੁਮਹਿ ਮੀਤ ਹਿਤ ਭਾਤਾ ॥ ਤੁਮ ਪਰਵਾਰ
 ਤੁਮਹਿ ਆਧਾਰਾ ਤੁਮਹਿ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨਦਾਤਾ ॥੧॥ ਤੁਮਹਿ ਖਜੀਨਾ ਤੁਮਹਿ ਜਰੀਨਾ ਤੁਮ ਹੀ ਮਾਣਿਕ ਲਾਲਾ ॥
 ਤੁਮਹਿ ਪਾਰਯਾਤ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਏ ਤਤ ਨਾਨਕ ਭਏ ਨਿਹਾਲਾ ॥੨॥੩੩॥੫੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾਹੂ ਕਾਹੂ
 ਅਪੁਨੋ ਹੀ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ॥ ਜੋ ਕਾਹੂ ਕੋ ਚੇਰੋ ਹੋਕਤ ਠਾਕੁਰ ਹੀ ਪਹਿ ਜਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਪਨੇ ਪਹਿ ਦ੍ਰੂਖ
 ਅਪੁਨੇ ਪਹਿ ਸ੍ਰਵਖ ਅਪਨੇ ਹੀ ਪਹਿ ਬਿਰਥਾ ॥ ਅਪੁਨੇ ਪਹਿ ਮਾਨੁ ਅਪੁਨੇ ਪਹਿ ਤਾਨਾ ਅਪਨੇ ਹੀ ਪਹਿ ਅਰਥਾ
 ॥੧॥ ਕਿਨ ਹੀ ਰਾਜ ਜੋਬਨੁ ਧਨ ਮਿਲਖਾ ਕਿਨ ਹੀ ਬਾਪ ਮਹਤਾਰੀ ॥ ਸਰਬ ਥੋਕ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪਾਏ ਪੂਰਨ ਆਸ
 ਹਮਾਰੀ ॥੨॥੩੪॥੫੭॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਝੂਠੇ ਮਾਇਆ ਕੋ ਮਦ ਮਾਨੁ ॥ ਧੋਹ ਮੋਹ ਦ੍ਰੂਰਿ ਕਰਿ ਬਪੁਰੇ ਸੰਗਿ
 ਗੋਪਾਲਹਿ ਜਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਿਥਿਆ ਰਾਜ ਜੋਬਨ ਅਉ ਤਮਰੇ ਮੀਰ ਮਲਕ ਅਉ ਖਾਨ ॥ ਮਿਥਿਆ ਕਾਪਰ
 ਸੁਗਂਧ ਚਤੁਰਾਈ ਮਿਥਿਆ ਭੋਜਨ ਪਾਨ ॥੧॥ ਦੀਨ ਬੰਧਰੋ ਦਾਸ ਦਾਸਰੋ ਸੰਤਹ ਕੀ ਸਾਰਾਨ ॥ ਮਾਂਗਨਿ ਮਾਂਗਤ
 ਹੋਇ ਅਚਿੰਤਾ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਕੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ॥੨॥੩੫॥੫੮॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਪੁਨੀ ਇਤਨੀ ਕਛੂ ਨ
 ਸਾਰੀ ॥ ਅਨਿਕ ਕਾਜ ਅਨਿਕ ਧਾਵਰਤਾ ਤਰਙਿਆਂ ਆਨ ਜੰਜਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦਿਉਸ ਚਾਰਿ ਕੇ ਦੀਸਹਿ

संगी ऊहाँ नाही जह भारी ॥ तिन सिउ राचि माचि हितु लाइओ जो कामि नही गावारी ॥१॥
 हउ नाही नाही किछु मेरा ना हमरो बसु चारी ॥ करन करावन नानक के प्रभ संतन संगि
 उधारी ॥२॥३੬॥५੬॥ सारग महला ੫ ॥ मोहनी मोहत रहै न होरी ॥ साधिक सिध सगल की
 पिआरी तुटै न काहू तोरी ॥१॥ रहाउ ॥ खटु सासत्र उचरत रसनागर तीरथ गवन न थोरी ॥ पूजा
 चक्र बरत नेम तपीआ ऊहा गैलि न छोरी ॥१॥ अंध कूप महि पतित होत जगु संतहु करहु परम गति
 मोरी ॥ साधसंगति नानकु भडिओ मुकता दरसनु पेखत भोरी ॥२॥३੭॥६੦॥ सारग महला ੫ ॥ कहा
 करहि रे खाटि खाटुली ॥ पवनि अफार तोर चामरो अति जजरी तेरी रे माटुली ॥१॥ रहाउ ॥ ऊही
 ते हरिओ ऊहा ले धरिओ जैसे बासा मास देत झाटुली ॥ देवनहारु बिसारिओ अंधुले जित सफरी
 उदरु भरै बहि हाटुली ॥१॥ साद बिकार बिकार झूठ रस जह जानो तह भीर बाटुली ॥ कहु नानक
 समझु रे इआने आजु कालि खुलै तेरी गाँठुली ॥२॥३੮॥६१॥ सारग महला ੫ ॥ गुर जीउ
 संगि तुहारै जानिओ ॥ कोटि जोध उआ की बात न पुछीਐ ताँ दरगह भी मानिओ ॥१॥ रहाउ ॥
 कवन मूलु प्रानी का कहीਐ कवन रूपु दृसटानिओ ॥ जोति प्रगास र्हई माटी संगि दुलभ देह
 बखानिओ ॥१॥ तुम ते सेव तुम ते जप तापा तुम ते ततु पछानिओ ॥ करु मस्तकि धरि कटी जेवरी
 नानक दास दसानिओ ॥२॥३੯॥६२॥ सारग महला ੫ ॥ हरि हरि दीओ सेवक कउ नाम ॥ मानसु
 का को बपुरो भाई जा को राखा राम ॥१॥ रहाउ ॥ आपि महा जनु आपे पंचा आपि सेवक कै काम ॥
 आपे सगले दूत बिदारे ठाकुर अंतरजाम ॥१॥ आपे पति राखी सेवक की आपि कीओ बंधान ॥
 आदि जुगादि सेवक की राखै नानक को प्रभु जान ॥२॥४०॥६३॥ सारग महला ੫ ॥ तू मेरे
 मीत सखा हरि प्रान ॥ मनु धनु जीउ पिंडु सभु तुमरा इहु तनु सीतो तुमरै धान ॥१॥ रहाउ ॥
 तुम ही दीए अनिक प्रकारा तुम ही दीए मान ॥ सदा सदा तुम ही पति राखहु अंतरजामी जान ॥१॥

जिन संतन जानिआ तू ठाकुर ते आए परवान ॥ जन का संगु पाईਐ वडभागी नानक संतन कै
 कुरबान ॥२॥४१॥६४॥ सारग महला ५ ॥ करहु गति दिइआल संतहु मोरी ॥ तुम समरथ कारन
 करना तूटी तुम ही जोरी ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम के बिखई तुम तारे सुमति संगि तुमारै पाई ॥
 अनिक जोनि भ्रमते प्रभ बिसरत सासि सासि हरि गाई ॥१॥ जो जो संगि मिले साधू कै ते ते पतित
 पुनीता ॥ कहु नानक जा के वडभागा तिनि जनमु पदारथु जीता ॥२॥४२॥६५॥ सारग महला ५ ॥
 ठाकुर बिनती करन जनु आइओ ॥ सरब सूख आन्नद सहज रस सुनत तुहारो नाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
 कृपा निधान सूख के सागर जसु सभ महि जा को छाइओ ॥ संतसंगि रंग तुम कीए अपना आपु
 दृस्टाइओ ॥१॥ नैनहु संगि संतन की सेवा चरन झारी केसाइओ ॥ आठ पहर दरसनु संतन का
 सुखु नानक इहु पाइओ ॥२॥४३॥६६॥ सारग महला ५ ॥ जा की राम नाम लिव लागी ॥ सजनु
 सुरिदा सुहेला सहजे सो कहीਐ बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ रहित बिकार अलप माइआ ते अह्नबुधि
 बिखु तिआगी ॥ दरस पिआस आस एकहि की टेक हीਐ पृथ पागी ॥१॥ अचिंत सोइ जागनु
 उठि बैसनु अचिंत हसत बैरागी ॥ कहु नानक जिनि जगतु ठगाना सु माइआ हरि जन ठागी
 ॥२॥४४॥६७॥ सारग महला ५ ॥ अब जन ऊपरि को न पुकारै ॥ पूकारन कउ जो उदमु करता
 गुरु परमेसरु ता कउ मारै ॥१॥ रहाउ ॥ निरवैरे संगि वैरु रचावै हरि दरगह ओहु हारै ॥ आदि
 जुगादि प्रभ की वडिआई जन की पैज सवारै ॥१॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल
 आधारै ॥ गुर कै बचनि जपिओ नाउ नानक प्रगट भडिओ संसारै ॥२॥४५॥६८॥ सारग महला ५ ॥
 हरि जन छोडिआ सगला आपु ॥ जित जानहु तित रखहु गुरसाई पेखि जीवाँ परतापु ॥१॥ रहाउ ॥
 गुर उपदेसि साध की संगति बिनसिओ सगल संतापु ॥ मित्र सत्र पेखि समतु बीचारिओ सगल संभाखन
 जापु ॥१॥ तपति बुझी सीतल आधाने सुनि अनहद बिसम भए बिसमाद ॥ अनदु भडिआ नानक

मनि साचा पूरन पूरे नाद ॥२॥४६॥६६॥ सारग महला ५ ॥ मेरै गुरि मोरो सहसा उतारिआ ॥
 तिसु गुर कै जाईअै बलिहारी सदा सदा हउ वारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर का नामु जपिओ दिनु
 राती गुर के चरन मनि धारिआ ॥ गुर की धूरि करउ नित मजनु किलविख मैलु उतारिआ ॥१॥
 गुर पूरे की करउ नित सेवा गुरु अपना नमसकारिआ ॥ सरब फला दीने गुरि पूरै नानक गुरि
 निसतारिआ ॥२॥४७॥७०॥ सारग महला ५ ॥ सिमरत नामु प्रान गति पावै ॥ मिटहि कलेस
 त्रास सभ नासै साधसंगि हितु लावै ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि मनि आराधे रसना हरि
 जसु गावै ॥ तजि अभिमानु काम क्रोधु निंदा बासुदेव रंगु लावै ॥१॥ दामोदर दिइआल आराधहु
 गोबिंद करत सुहावै ॥ कहु नानक सभ की होइ रेना हरि हरि दरसि समावै ॥२॥४८॥७१॥
 सारग महला ५ ॥ अपुने गुर पूरे बलिहारै ॥ प्रगट प्रतापु कीओ नाम को राखे राखनहारै ॥१॥
 रहाउ ॥ निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख बिदारै ॥ आन उपाव तिआगि जन सगले
 चरन कमल रिद धारै ॥१॥ प्रान अधार मीत साजन प्रभ एकै एकंकारै ॥ सभ ते ऊच ठाकुरु
 नानक का बार बार नमसकारै ॥२॥४९॥७२॥ सारग महला ५ ॥ बिनु हरि है को कहा बतावहु
 ॥ सुख समूह करुणा मै करता तिसु प्रभ सदा धिआवहु ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै सूति परोए जंता तिसु
 प्रभ का जसु गावहु ॥ सिमरि ठाकुरु जिनि सभु किछु दीना आन कहा पहि जावहु ॥१॥ सफल
 सेवा सुआमी मेरे की मन बाँछत फल पावहु ॥ कहु नानक लाभु लाहा लै चालहु सुख सेती घरि
 जावहु ॥२॥५०॥७३॥ सारग महला ५ ॥ ठाकुर तुम् सरणाई आइआ ॥ उतरि गइओ मेरे मन
 का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ
 ॥ दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥१॥ बाह पकरि कठि लीने अपुने गृह
 अंध कूप ते माइआ ॥ कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥२॥५१॥७४॥

सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की गति ठाँढ़ी ॥ बेद पुरान सिमृति साधू जन खोजत खोजत काढी
 ॥१॥ रहाउ ॥ सिव बिरंच अरु इंद्र लोक ता महि जलतौ फिरिआ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी भए
 सीतल दूखु दरदु भ्रमु हिरिआ ॥२॥ जो जो तरिओ पुरातनु नवतनु भगति भाइ हरि देवा ॥ नानक
 की बेन्नती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ॥३॥५२॥७५॥ सारग महला ५ ॥ जिहवे अंमृत गुण हरि
 गाउ ॥ हरि हरि बोलि कथा सुनि हरि की उचरहु प्रभ को नाउ ॥४॥ रहाउ ॥ राम नामु रतन धनु
 संचहु मनि तनि लावहु भाउ ॥ आन बिभूत मिथिआ करि मानहु साचा इहै सुआउ ॥५॥ जीअ
 प्रान मुकति को दाता एकस सित लिव लाउ ॥ कहु नानक ता की सरणाई देत सगल अपिआउ
 ॥६॥५३॥७६॥ सारग महला ५ ॥ होती नही कवन कछु करणी ॥ इहै ओट पाई मिलि संतह गोपाल
 एक की सरणी ॥७॥ रहाउ ॥ पंच दोख छिद्र इआ तन महि बिखै बिआधि की करणी ॥ आस अपार
 दिनस गणि राखे ग्रसत जात बलु जरणी ॥८॥ अनाथह नाथ दइआल सुख सागर सरब दोख भै
 हरणी ॥ मनि बाँछत चितवत नानक दास पेखि जीवा प्रभ चरणी ॥९॥५४॥७७॥ सारग महला ५ ॥
 फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ अंमृत रसु कीरतनु हरि गाईअै अहिनिसि पूरन नाद ॥१॥
 रहाउ ॥ सिमरत साँति महा सुखु पाईअै मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ हरि हरि लाभु साधसंगि
 पाईअै घरि लै आवहु लादि ॥२॥ सभ ते ऊच ऊच ते ऊचो अंतु नही मरजाद ॥ बरनि न साकउ
 नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥३॥५५॥७८॥ सारग महला ५ ॥ आइओ सुनन पड़न कउ
 बाणी ॥ नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥४॥ रहाउ ॥ समझु अचेत चेति
 मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी ॥ लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी ॥५॥ उदमु
 सकति सिआणप तुमरी देहि त नामु वखाणी ॥ सई भगति भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी
 ॥६॥५६॥७९॥ सारग महला ५ ॥ धनवंत नाम के वणजारे ॥ साँझी करहु नाम धनु खाटहु गुर का

सबदु वीचारे ॥੧॥ रहाउ ॥ छोडहु कपटु होइ निरवैरा सो प्रभु संगि निहारे ॥ सचु धनु वणजहु सचु
 धनु संचहु कबहू न आवहु हारे ॥੧॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही अगनत भरे भंडारे ॥ कहु
 नानक सोभा संगि जावहु पारब्रह्म कै दुआरे ॥੨॥੫੭॥੮੦॥ सारग महला ੫ ॥ प्रभ जी मोहि कवनु
 अनाथु बिचारा ॥ कवन मूल ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा ॥੧॥ रहाउ ॥ जीअ प्राण सरब
 के दाते गुण कहे न जाहि अपारा ॥ सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक सरब घटाँ आधारा ॥੧॥ कोइ न
 जाणै तुमरी गति मिति आपहि एक पसारा ॥ साध नाव बैठावहु नानक भव सागरु पारि उतारा
 ॥੨॥੫੮॥੮੧॥ सारग महला ੫ ॥ आवै राम सरणि वडभागी ॥ एकस बिनु किछु होरु न जाणै
 अवरि उपाव तिआगी ॥੧॥ रहाउ ॥ मन बच क्रम आराधै हरि हरि साधसंगि सुखु पाइਆ ॥
 अनद बिनोद अकथ कथा रसु साचै सहजि समाइਆ ॥੧॥ करि किरपा जो अपुना कीनो ता की ऊतम
 बाणी ॥ साधसंगि नानक निसतरीअै जो राते प्रभ निरबाणी ॥੨॥੫੯॥੮੨॥ सारग महला ੫ ॥ जा ते
 साधू सरणि गही ॥ साँति सहजु मनि भडिओ प्रगासा बिरथा कछु न रही ॥੧॥ रहाउ ॥ होहु कृपाल
 नामु देहु अपुना बिनती एह कही ॥ आन बिउहार बिसरे प्रभ सिमरत पाइओ लाभु सही ॥੧॥
 जह ते उपजिओ तही समानो साई बसतु अही ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोडिओ जोती जोति समही
 ॥੨॥੬੦॥੮੩॥ सारग महला ੫ ॥ रसना राम को जसु गाउ ॥ आन सुआद बिसारि सगले भलो
 नाम सुआउ ॥੧॥ रहाउ ॥ चरन कमल बसाइ हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ साधसंगति
 होहि निरमलु बहुड़ि जोनि न आउ ॥੧॥ जीउ प्रान अधारु तेरा तू निथावे थाउ ॥ सासि सासि
 समालि हरि हरि नानक सद बलि जाउ ॥੨॥੬੧॥੮੪॥ सारग महला ੫ ॥ बैकुंठ गोबिंद
 चरन नित धिआउ ॥ मुकति पदारथु साधू संगति अंमृतु हरि का नाउ ॥੧॥ रहाउ ॥ ऊतम
 कथा सुणीजै स्रवणी मडिआ करहु भगवान ॥ आवत जात दोऊ पख पूरन पाईअै सुख बिस्राम ॥੧॥

सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी ॥ कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि
 ऊरी ॥੨॥੬੨॥੮੫॥ सारग महला ੫ ॥ साचे सतिगुरु दातारा ॥ दरसनु देखि सगल दुख नासहि
 चरन कमल बलिहारा ॥੧॥ रहाउ ॥ सति परमेसरु सति साथ जन निहचलु हरि का नाउ ॥ भगति
 भावनी पारब्रह्म की अबिनासी गुण गाउ ॥੧॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाईਐ सगल घटा
 आधारु ॥ नानक वाहु वाहु कहु ता कउ जा का अंतु न पारु ॥੨॥੬੩॥੮੬॥ सारग महला ੫ ॥ गुर के
 चरन बसे मन मेरै ॥ पूरि रहिओ ठाकुरु सभ थाई निकटि बसै सभ नेरै ॥੧॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि
 राम लिव लाई संतसंगि बनि आई ॥ जनमु पदारथु भइओ पुनीता इछा सगल पुजाई ॥੧॥
 जा कउ कृपा करहु प्रभ मेरे सो हरि का जसु गावै ॥ आठ पहर गोबिंद गुन गावै जनु नानकु सद बलि
 जावै ॥੨॥੬੪॥੮੭॥ सारग महला ੫ ॥ जीवनु तउ गनीਐ हरि पेखा ॥ करहु कृपा प्रीतम मनमोहन
 फोरि भरम की रेखा ॥੧॥ रहाउ ॥ कहत सुनत किछु साँति न उपजत बिनु बिसास किआ सेखाँ ॥ प्रभू
 तिआगि आन जो चाहत ता कै मुखि लागै कालेखा ॥੧॥ जा कै रासि सरब सुख सुआमी आन न मानत
 भेखा ॥ नानक दरस मगन मनु मोहिओ पूरन अरथ बिसेखा ॥੨॥੬੫॥੮੮॥ सारग महला ੫ ॥
 सिमरन राम को इकु नाम ॥ कलमल दग्ध होहि खिन अंतरि कोटि दान इਸनान ॥੧॥ रहाउ ॥
 आन जंजार बृथा स्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ॥ जनम मरन संकट ते छौटै जगदीस भजन
 सुख धिआन ॥੧॥ तेरी सरनि पूरन सुख सागर करि किरपा देवहु दान ॥ सिमरि सिमरि नानक प्रभ
 जीवै बिनसि जाइ अभिमान ॥੨॥੬੬॥੮੯॥ सारग महला ੫ ॥ धूरतु सोई जि धुर कउ लागै ॥ सोई
 धुरंधरु सोई बसुंधरु हरि एक प्रेम रस पागै ॥੧॥ रहाउ ॥ बलबंच करै न जानै लाभै सो धूरतु
 नही मूड़ा ॥ सुआरथु तिआगि असारथि रचिओ नह सिमरै प्रभु रङ्ग ॥੧॥ सोई चतुरु सिआणा
 पंडितु सो सूरा सो दानाँ ॥ साधसंगि जिनि हरि हरि जपिओ नानक सो परवाना ॥੨॥੬੭॥੯੦॥

सारग महला ५ ॥ हरि हरि संत जना की जीवनि ॥ बिखै रस भोग अंमृत सुख सागर राम नाम रसु
 पीवनि ॥१॥ रहाउ ॥ संचनि राम नाम धनु रतना मन तन भीतरि सीवनि ॥ हरि रंग राँग भए
 मन लाला राम नाम रस खीवनि ॥२॥ जिउ मीना जल सिउ उरझानो राम नाम संगि लीवनि ॥
 नानक संत चातृक की निआई हरि बूँद पान सुख थीवनि ॥२॥६८॥६९॥ सारग महला ५ ॥
 हरि के नामहीन बेताल ॥ जेता करन करावन तेता सभि बंधन जंजाल ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु प्रभ सेव
 करत अन सेवा बिरथा काटै काल ॥ जब जमु आइ संघारै प्रानी तब तुमरो कउनु हवाल ॥२॥ राखि
 लेहु दास अपुने कउ सदा सदा किरपाल ॥ सुख निधान नानक प्रभु मेरा साधसंगि धन माल
 ॥२॥६९॥६२॥ सारग महला ५ ॥ मनि तनि राम को बिउहारु ॥ प्रेम भगति गुन गावन गीधे
 पोहत नह संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ स्वरणी कीरतनु सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ चरन कमल
 असथिति रिद अंतरि पूजा प्रान को आधारु ॥१॥ प्रभ दीन दइआल सुनहु बेन्ती किरपा अपनी
 धारु ॥ नामु निधानु उचरउ नित रसना नानक सद बलिहारु ॥२॥७०॥६३॥ सारग महला ५ ॥
 हरि के नामहीन मति थोरी ॥ सिमरत नाहि सिरीधर ठाकुर मिलत अंध दुख घोरी ॥१॥ रहाउ ॥
 हरि के नाम सिउ प्रीति न लागी अनिक भेख बहु जोरी ॥ तूटत बार न लागै ता कउ जिउ गागरि
 जल फोरी ॥१॥ करि किरपा भगति रसु दीजै मनु खचित प्रेम रस खोरी ॥ नानक दास तेरी सरणाई
 प्रभ बिनु आन न होरी ॥२॥७१॥६४॥ सारग महला ५ ॥ चितवउ वा अउसर मन माहि ॥
 होइ इकत मिलहु संत साजन गुण गोबिंद नित गाहि ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु हरि भजन जेते काम
 करीअहि तेते बिरथे जाँहि ॥ पूरन परमान्द मनि मीठो तिसु बिनु दूसर नाहि ॥१॥ जप तप
 संजम करम सुख साधन तुलि न कछूअै लाहि ॥ चरन कमल नानक मनु बेधिओ चरनह संगि
 समाहि ॥२॥७२॥६५॥ सारग महला ५ ॥ मेरा प्रभु संगे अंतरजामी ॥ आगै कुसल पाछै खेम

सूखा सिमरत नामु सुआमी ॥੧॥ रहाउ ॥ साजन मीत सखा हरि मेरै गुन गोपाल हरि राइआ ॥
 बिसरि न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरु मिलाइआ ॥੧॥ करि किरपा राखे दास अपने जीअ जंत
 वसि जा कै ॥ एका लिव पूरन परमेसुर भउ नही नानक ता कै ॥੨॥੭੩॥੬੬॥ सारग महला ੫ ॥
 जा कै राम को बलु होइ ॥ सगल मनोरथ पूरन ताहू के दूखु न बिआपै कोइ ॥੧॥ रहाउ ॥ जो जनु भगतु
 दासु निजु प्रभ का सुण जीवाँ तिसु सोइ ॥ उदमु करउ दरसनु पेखन कौ करमि परापति होइ ॥੧॥
 गुर परसादी दृस्टि निहारउ दूसर नाही कोइ ॥ दानु देहि नानक अपने कउ चरन जीवाँ संत धोइ
 ॥੨॥੭੪॥੬੭॥ सारग महला ੫ ॥ जीवतु राम के गुण गाइ ॥ करहु कृपा गोपाल बीठुले बिसरि न
 कब ही जाइ ॥੧॥ रहाउ ॥ मनु तनु धनु सभु तुमरा सुआमी आन न दूजी जाइ ॥ जिउ तू राखहि
 तिव ही रहणा तुमरा पैनै खाइ ॥੧॥ साधसंगति कै बलि बलि जाई बहुड़ि न जनमा धाइ ॥ नानक
 दास तेरी सरणाई जिउ भावै तिवै चलाइ ॥੨॥੭੫॥੬੮॥ सारग महला ੫ ॥ मन रे नाम को सुख
 सार ॥ आन काम बिकार माइआ सगल दीसहि छार ॥੧॥ रहाउ ॥ गृहि अंध कूप पतित प्राणी
 नरक घोर गुबार ॥ अनिक जोनी भ्रमत हारिओ भ्रमत बारं बार ॥੧॥ पतित पावन भगति बछल दीन
 किरपा धार ॥ कर जोड़ि नानकु दानु माँगै साधसंगि उधार ॥੨॥੭੬॥੬੬॥ सारग महला ੫ ॥
 बिराजित राम को परताप ॥ आधि बिआधि उपाधि सभ नासी बिनसे तीनै ताप ॥੧॥ रहाउ ॥
 तृसना बुझी पूरन सभ आसा चूके सोग संताप ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी मन तन आतम ध्राप
 ॥੧॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर साधू कै संगि खाप ॥ भगति बछल भै काटनहारे नानक के माई बाप
 ॥੨॥੭੭॥੧੦੦॥ सारग महला ੫ ॥ आतुरु नाम बिनु संसार ॥ तृपति न होवत कूकरी आसा इतु
 लागो बिखिआ छार ॥੧॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ जनमत बारो बार ॥ हरि का सिमरनु
 निमख न सिमरिओ जमकंकर करत खुआर ॥੧॥ होहु कृपाल दीन दुख भंजन तेरिआ संतह की रावार

॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਦਰਸੁ ਪ੍ਰਭ ਜਾਚੈ ਮਨ ਤਨ ਕੋ ਆਧਾਰ ॥੨॥੭੮॥੧੦੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੈਲਾ ਹਰਿ ਕੇ
 ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਜੀਤ ॥ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਸਾਚੈ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ ਬਿਖੈ ਠਗਤਰੀ ਪੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ
 ਪ੍ਰਮਤੈ ਕਹੁ ਭਾੱਤੀ ਥਿਤ ਨਹੀ ਕਤਹੂ ਪਾਈ ॥ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰ ਸਹਜਿ ਨ ਭੇਟਿਆ ਸਾਕਤੁ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਾਖਿ
 ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸੰਮੂਥ ਦਾਤੇ ਤੁਮ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਭਵਜਲੁ ਉਤਰਿਆਂ ਪਾਰ
 ॥੨॥੭੯॥੧੦੨॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਮਣ ਕਤ ਰਾਮ ਕੇ ਗੁਣ ਬਾਦ ॥ ਸਾਧਸਂਗਿ ਧਿਆਈਐ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ
 ਅੰਮ੍ਰਤ ਜਾ ਕੇ ਸੁਆਦ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਮਰਤ ਏਕੁ ਅਚੁਤ ਅਬਿਨਾਸੀ ਬਿਨਸੇ ਮਾਇਆ ਮਾਦ ॥ ਸਹਜ
 ਅਨਦ ਅਨਹਦ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ਬਹੁਰਿ ਨ ਭਾਏ ਬਿਖਾਦ ॥੧॥ ਸਨਕਾਦਿਕ ਬ੍ਰਹਮਾਦਿਕ ਗਾਵਤ ਗਾਵਤ
 ਸੁਕ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ॥ ਪੀਵਤ ਅਮਿਤ ਮਨੋਹਰ ਹਰਿ ਰਸੁ ਜਧਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਬਿਸਮਾਦ ॥੨॥੮੦॥੧੦੩॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੀਨੇ ਪਾਪ ਕੇ ਕਹੁ ਕੋਟ ॥ ਦਿਨਸੁ ਰੈਨੀ ਥਕਤ ਨਾਹੀ ਕਤਹਿ ਨਾਹੀ ਛੋਟ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਮਹਾ ਬਜਰ ਬਿਖ ਬਿਆਧੀ ਸਿਰਿ ਤਠਾਈ ਪੋਟ ॥ ਤਘਰਿ ਗੰਝਾਂ ਖਿਨਹਿ ਭੀਤਰਿ ਜਮਹਿ ਗ੍ਰਾਸੇ ਝੋਟ
 ॥੧॥ ਪਸੁ ਪਰੇਤ ਤਸਟ ਗਰਥਭ ਅਨਿਕ ਜੋਨੀ ਲੇਟ ॥ ਭਜੁ ਸਾਧਸਂਗਿ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਨਕ ਕਛੁ ਨ ਲਾਗੈ ਫੇਟ
 ॥੨॥੮੧॥੧੦੪॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅੰਧੇ ਖਾਵਹਿ ਕਿਸੂ ਕੇ ਗਟਾਕ ॥ ਨੈਨ ਸ਼ਰਵਨ ਸਰੀਰੁ ਸਮੁ ਹੁਟਿਆਂ ਸਾਸੁ
 ਗਿਆਂ ਤਤ ਘਾਟ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਾਥ ਰਯਾਣਿ ਤਦਰੁ ਲੇ ਪੋਖਹਿ ਮਾਇਆ ਗੰਝਾਂ ਹਾਟਿ ॥ ਕਿਲਬਿਖ
 ਕਰਤ ਕਰਤ ਪਛੁਤਾਵਹਿ ਕਬਹੁ ਨ ਸਾਕਹਿ ਛਾਁਟਿ ॥੧॥ ਨਿੰਦਕੁ ਜਮਦੂਤੀ ਆਇ ਸੰਘਾਰਿਆਂ ਦੇਵਹਿ ਸ੍ਰੂਂਡ
 ਤਪਰਿ ਮਟਾਕ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਨ ਕਟਾਰੀ ਆਪਸ ਕਤ ਲਾਈ ਮਨੁ ਅਪਨਾ ਕੀਨੋ ਫਾਟ ॥੨॥੮੨॥੧੦੫॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਟ੍ਰੂਟੀ ਨਿੰਦਕ ਕੀ ਅਧ ਬੀਚ ॥ ਜਨ ਕਾ ਰਾਖਾ ਆਪਿ ਸੁਆਮੀ ਬੇਮੁਖ ਕਤ ਆਇ ਪਹੂੰਚੀ
 ਮੀਚ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਸ ਕਾ ਕਹਿਆ ਕੋਇ ਨ ਸੁਣਾਈ ਕਹੀ ਨ ਬੈਸਣੁ ਪਾਵੈ ॥ ਈਹਾਂ ਦੁਖੁ ਆਗੈ ਨਰਕੁ
 ਭੁੰਚੈ ਕਹੁ ਜੋਨੀ ਭਰਮਾਵੈ ॥੧॥ ਪ੍ਰਗਟੁ ਭਿਆ ਖੰਡੀ ਬ੍ਰਹਮਣੀ ਕੀਤਾ ਅਪਣਾ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ
 ਨਿਰਭਤ ਕਰਤੇ ਕੀ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥੨॥੮੩॥੧੦੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਚਲਤ

ਬਹੁ ਪਰਕਾਰਿ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਤ ਨ ਕਤਹੁ ਬਾਤਹਿ ਅੰਤਿ ਪਰਤੀ ਹਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਁਤਿ ਸ੍ਰੂਖ ਨ ਸਹਜੁ ਤਪਯੈ
 ਇਹੈ ਇਸੁ ਬਿਉਹਾਰਿ ॥ ਆਪ ਪਰ ਕਾ ਕਛੁ ਨ ਜਾਨੈ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧਹਿ ਜਾਰਿ ॥੧॥ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰੁ ਦੁਖਿ ਬਿਆਪਿਓ
 ਦਾਸ ਲੇਵਹੁ ਤਾਰਿ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਰਣਾਇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਸਦਾ ਬਲਿਹਾਰਿ ॥੨॥੮੪॥੧੦੭॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੇ ਪਾਪੀ ਤੈ ਕਵਨ ਕੀ ਮਤਿ ਲੀਨ ॥ ਨਿਮਖ ਘਰੀ ਨ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਜਿਨਿ
 ਦੀਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖਾਤ ਪੀਵਤ ਸਕਵਤ ਸੁਖੀਆ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਤ ਖੀਨ ॥ ਗਰਭ ਤਦਰ ਬਿਲਲਾਟ ਕਰਤਾ
 ਤਹਾਁ ਹੋਕਤ ਦੀਨ ॥੧॥ ਮਹਾ ਮਾਦ ਬਿਕਾਰ ਬਾਧਾ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਭਰਮੀਨ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਬਿਸਰੇ ਕਵਨ ਦੁਖ
 ਗਨੀਅਹਿ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪਦ ਚੀਨ ॥੨॥੮੫॥੧੦੮॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਰੀ ਚਰਨਹ ਓਟ ਗਹੀ
 ॥ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮੋਹਿਓ ਦੁਰਮਤਿ ਜਾਤ ਬਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਗਹ ਅਗਾਧਿ ਊਚ ਅਬਿਨਾਸੀ
 ਕੀਮਤਿ ਜਾਤ ਨ ਕਹੀ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਮਨੁ ਬਿਗਸਿਓ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸੁਭ ਮਹੀ ॥੧॥ ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲ
 ਪ੍ਰੀਤਮ ਮਨਮੋਹਨ ਮਿਲਿ ਸਾਧਹ ਕੀਨੋ ਸਹੀ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਜੀਵਤ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਜਮ ਕੀ ਭੀਰ ਨ ਫਹੀ
 ॥੨॥੮੬॥੧੦੯॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਰੀ ਮਨੁ ਮੇਰੇ ਮਤਵਾਰੇ ॥ ਪੇਖਿ ਦਿੱਤਾਲ ਅਨਦ ਸੁਖ ਪੂਰਨ
 ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਪਿਓ ਖੁਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਿਰਮਲ ਭਏ ਊਜਲ ਜਸੁ ਗਾਵਤ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਕਤ ਕਾਰੇ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ
 ਸਿਤ ਡੋਰੀ ਰਾਚੀ ਭੇਟਿਓ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੇ ॥੧॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਸਰਬਸੁ ਦੀਨੇ ਦੀਪਕ ਭਿੱਤਿਓ ਤਜਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮਿ ਰਸਿਕ ਬੈਰਾਗੀ ਕੁਲਹ ਸਮੂਹਾਁ ਤਾਰੇ ॥੨॥੮੭॥੧੧੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਰੀ ਆਨ ਸਿਮਰਿ
 ਮਰਿ ਜਾਂਹਿ ॥ ਤਿਆਗਿ ਗੋਬਿੰਦੁ ਜੀਅਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ਲਪਟਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ
 ਚਲਹਿ ਅਨ ਮਾਰਗਿ ਨਰਕ ਘੋਰ ਮਹਿ ਪਾਹਿ ॥ ਅਨਿਕ ਸਜਾਈ ਗਣਤ ਨ ਆਵੈ ਗਰੈ ਗਰਭੈ ਭਰਮਾਹਿ ॥੧॥
 ਸੇ ਧਨਕਵਤੇ ਸੇ ਪਤਿਕਵਤੇ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਿ ਸਮਾਹਿ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਜੁਗ ਜੀਤਿਓ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵਹਿ
 ਜਾਂਹਿ ॥੨॥੮੮॥੧੧੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕਾਟੀ ਕੁਟਿਲਤਾ ਕੁਠਾਰਿ ॥ ਭ੍ਰਮ ਬਨ ਦਹਨ ਭਏ ਖਿਨ
 ਭੀਤਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਪਰਹਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਨਿੰਦਾ ਪਰਹਰੀਆ ਕਾਢੇ ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਾਰਿ ॥

ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੀਤਿਆ ਬਹੁਰਿ ਨ ਜੂਐ ਹਾਰਿ ॥੧॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਪੂਰਨ
 ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸੁ ਜਨੁ ਤੇਰਾ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ ਨਮਸਕਾਰਿ ॥੨॥੮੬॥੧੧੨॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੋਥੀ ਪਰਮੇਸਰ ਕਾ ਥਾਨੁ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਗਾਵਹਿ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੁ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਸਗਲ ਮੁਨਿ ਲੋਚਹਿ ਬਿਰਲੇ ਲਾਗੈ ਧਿਆਨੁ ॥ ਜਿਸਹਿ ਕ੃ਪਾਲੁ ਹੋਇ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ
 ਪੂਰਨ ਤਾ ਕੋ ਕਾਮੁ ॥੧॥ ਜਾ ਕੈ ਰਿਟੈ ਵਸੈ ਭੈ ਭੰਜਨੁ ਤਿਸੁ ਜਾਨੈ ਸਗਲ ਜਹਾਨੁ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਬਿਸਰੁ ਨਹੀ ਮੇਰੇ
 ਕਰਤੇ ਛਿਹੁ ਨਾਨਕੁ ਮਾਂਗੈ ਦਾਨੁ ॥੨॥੬੦॥੧੧੩॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੂਠਾ ਸਰਬ ਥਾਈ ਮੇਹੁ ॥ ਅਨਦ
 ਮੰਗਲ ਗਾਉ ਹਰਿ ਜਸੁ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਗਟਿਆਂ ਨੇਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚਾਰਿ ਕੁਣਟ ਦਵ ਦਿਸਿ ਜਲ ਨਿਧਿ ਊਨ ਥਾਉ ਨ
 ਕੇਹੁ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਗੋਬਿੰਦ ਪੂਰਨ ਜੀਅ ਦਾਨੁ ਸਭ ਦੇਹੁ ॥੧॥ ਸਤਿ ਸਤਿ ਹਰਿ ਸਤਿ ਸੁਆਮੀ ਸਤਿ ਸਾਧਸੰਗੇਹੁ
 ॥ ਸਤਿ ਤੇ ਜਨ ਜਿਨ ਪਰਤੀਤਿ ਉਪਜੀ ਨਾਨਕ ਨਹ ਭਰਮੇਹੁ ॥੨॥੬੧॥੧੧੪॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਗੋਬਿੰਦ ਜੀਤ ਤੂ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥ ਸਾਜਨ ਮੀਤ ਸਹਾਈ ਤੁਮ ਹੀ ਤੂ ਮੇਰੋ ਪਰਵਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰੁ
 ਮਸਤਕਿ ਧਾਰਿਆਂ ਮੈਰੈ ਮਾਥੈ ਸਾਧਸੰਗਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥ ਤੁਮਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ ਸਭ ਫਲ ਪਾਏ ਰਸਕਿ ਰਾਮ ਨਾਮ
 ਧਿਆਏ ॥੧॥ ਅਬਿਚਲ ਨੀਵ ਧਰਾਈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਕਬਹੂ ਡੋਲਤ ਨਾਹੀ ॥ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਜਬ ਭਾਏ ਦਿਆਰਾ
 ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਨਿਧਿ ਪਾਂਹੀ ॥੨॥੬੨॥੧੧੫॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨਿਕਹੀ ਨਾਮ ਕੀ ਸਚੁ ਖੇਪ ॥ ਲਾਮੁ ਹਰਿ
 ਗੁਣ ਗਾਇ ਨਿਧਿ ਧਨੁ ਬਿਖੈ ਮਾਹਿ ਅਲੇਪ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲ ਸੰਤੋਖੇ ਆਪਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇ
 ॥ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਅਪਾਰ ਜੀਤਿਆਂ ਬਹੁਡਿ ਜੋਨਿ ਨ ਪਾਇ ॥੧॥ ਭਾਏ ਕ੃ਪਾਲ ਦਿਆਲ ਗੋਬਿੰਦ ਭਿਆ
 ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ॥ ਹਰਿ ਚਰਨ ਰਾਸਿ ਨਾਨਕ ਪਾਈ ਲਗਾ ਪ੍ਰਭ ਸਿਤ ਰੰਗ ॥੨॥੬੩॥੧੧੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਮਾਈ ਰੀ ਪੇਖਿ ਰਹੀ ਬਿਸਮਾਦ ॥ ਅਨਹਦ ਧੁਨੀ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮੌਹਿਆਂ ਅਚਰਜ ਤਾ ਕੇ ਸ਼ਾਦ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਾਤ
 ਪਿਤਾ ਬੰਧਪ ਹੈ ਸੋਈ ਮਨਿ ਹਰਿ ਕੋ ਅਹਿਲਾਦ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਗਾਏ ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਬਿਨਸਿਆਂ ਸਭੁ ਪਰਮਾਦ
 ॥੧॥ ਡੋਰੀ ਲਪਟਿ ਰਹੀ ਚਰਨਹ ਸੰਗਿ ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਸਗਲੇ ਖਾਦ ॥ ਏਕੁ ਅਧਾਰੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੀਆ ਬਹੁਰਿ ਨ

ਜੋਨਿ ਭਰਮਾਦ ॥੨॥੬੪॥੧੧੭॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਰੀ ਮਾਤੀ ਚਰਣ ਸਮੂਹ ॥ ਏਕਸੁ ਬਿਨੁ ਹਉ ਆਨ
 ਨ ਜਾਨਤ ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਸਭ ਲੂਹ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਿਆਗੀ ਗੋਪਾਲ ਅਵਰ ਜੋ ਕਰਣਾ ਤੇ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਖੂਹ ॥
 ਦਰਸ ਪਿਆਸ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮੋਹਿਓ ਕਾਢੀ ਨਰਕ ਤੇ ਧੂਹ ॥੧॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮਿਲਿਓ ਸੁਖਦਾਤਾ ਬਿਨਸੀ
 ਹਉਮੈ ਹੂਹ ॥ ਰਾਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਦਾਸ ਨਾਨਕ ਮਤਲਿਓ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜੂਹ ॥੨॥੬੫॥੧੧੮॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਬਿਨਸੇ ਕਾਚ ਕੇ ਬਿਤਹਾਰ ॥ ਰਾਮ ਭਜੁ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਇਹੈ ਜਗ ਮਹਿ ਸਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਈਤ ਊਤ ਨ
 ਡੋਲਿ ਕਤਹੂ ਨਾਮੁ ਹਿਰਟੈ ਧਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਚਰਨ ਬੋਹਿਥ ਮਿਲਿਓ ਭਾਗੀ ਉਤਰਿਓ ਸੰਸਾਰ ॥੧॥ ਜਲਿ ਥਲਿ
 ਮਹੀਅਲਿ ਪ੍ਰਾਰ ਰਹਿਓ ਸਰਬ ਨਾਥ ਅਪਾਰ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਤ ਨਾਨਕ ਆਨ ਰਸ ਸਭਿ ਖਾਰ
 ॥੨॥੬੬॥੧੧੯॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤਾ ਤੇ ਕਰਣ ਪਲਾਹ ਕਰੇ ॥ ਮਹਾ ਬਿਕਾਰ ਮੋਹ ਮਦ ਮਾਤੌ ਸਿਮਰਤ
 ਨਾਹਿ ਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਪਤੇ ਨਾਰਾਇਣ ਤਿਨ ਕੇ ਦੋਖ ਜਰੇ ॥ ਸਫਲ ਦੇਹ ਧੰਨਿ ਓਡਿ ਜਨਮੇ
 ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸੰਗਿ ਰਲੇ ॥੧॥ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਅਸਟ ਦਸਾ ਸਿਧਿ ਸਭ ਊਪਰਿ ਸਾਧ ਭਲੇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਧੂਰਿ
 ਜਨ ਬਾਂਛੈ ਉਧਰਹਿ ਲਾਗਿ ਪਲੇ ॥੨॥੬੭॥੧੨੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੇ ਜਨ ਕਾਂਖੀ ॥
 ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਚਨਿ ਏਹੀ ਸੁਖੁ ਚਾਹਤ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸੁ ਦੇਖਹਿ ਕਬ ਆਖੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤੂ ਬੇਅੰਤੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਸੁਆਮੀ ਗਤਿ ਤੇਰੀ ਜਾਇ ਨ ਲਾਖੀ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਕਰਿ ਸਰਬਸੁ ਅੰਤਰਿ ਰਾਖੀ ॥੧॥
 ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮ੃ਤਿ ਸਾਧੂ ਜਨ ਇਹ ਬਾਣੀ ਰਸਨਾ ਭਾਖੀ ॥ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਨਿਸਤਰੀਐ ਹੋਲੁ ਦੁਤੀਆ
 ਬਿਰਥੀ ਸਾਖੀ ॥੨॥੬੮॥੧੨੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਖੀ ਰਾਮ ਕੀ ਤੂ ਮਾਖੀ ॥ ਜਹ ਦੁਰਗੰਧ ਤਹਾ ਤੂ
 ਬੈਸਹਿ ਮਹਾ ਬਿਖਿਆ ਮਦ ਚਾਖੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਿਤਹਿ ਅਸਥਾਨਿ ਤੂ ਟਿਕਨੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਇਹ ਬਿਧਿ ਦੇਖੀ
 ਆਖੀ ॥ ਸੰਤਾ ਬਿਨੁ ਤੈ ਕੋਇ ਨ ਛਾਡਿਆ ਸੰਤ ਪਰੇ ਗੋਬਿਦ ਕੀ ਪਾਖੀ ॥੧॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਤੈ ਮੋਹੇ ਬਿਨੁ
 ਸੰਤਾ ਕਿਨੈ ਨ ਲਾਖੀ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਰਾਤਾ ਸਬਦੁ ਸੁਰਤਿ ਸਚੁ ਸਾਖੀ ॥੨॥੬੯॥੧੨੨॥
 ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਰੀ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਤ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਏ ਬੀਚੇ ਗ੍ਰਸਤ ਤਦਾਸ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੀਨੇ ਕਰਿ ਅਪੁਨੇ ਉਪਜੀ ਦਰਸ ਪਿਆਸ ॥ ਸਾਂਤਸਾਂਗਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ
 ਬਿਨਸੀ ਦੁਤੀਆ ਆਸ ॥੧॥ ਮਹਾ ਉਦਿਆਨ ਅਟਵੀ ਤੇ ਕਾਢੇ ਮਾਰਗੁ ਸੰਤ ਕਹਿਓ ॥ ਦੇਖਤ ਦਰਸੁ ਪਾਪ ਸਭਿ
 ਨਾਸੇ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਰਤਨੁ ਲਹਿਓ ॥੨॥੧੦੦॥੧੨੩॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਰੀ ਅਰਿਓ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਖੋਰਿ ॥
 ਦਰਸਨ ਰੁਚਿਤ ਪਿਆਸ ਮਨਿ ਸੁੰਦਰ ਸਕਤ ਨ ਕੋਈ ਤੋਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਮਾਨ ਪਤਿ ਪਿਤ ਸੁਤ ਬੰਧਪ
 ਹਰਿ ਸਰਬਸੁ ਧਨ ਮੋਰ ॥ ਧਿਗੁ ਸਰੀਰੁ ਅਸਤ ਬਿਸਟਾ ਕ੃ਮ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਜਾਨਤ ਹੋਰ ॥੧॥ ਭਡਿਓ ਕ੃ਪਾਲ ਦੀਨ
 ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਪਰਾ ਪ੍ਰੂਬਲਾ ਜੋਰ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਸਾਗਰ ਬਿਨਸਿਓ ਆਨ ਨਿਹੋਰ ॥੨॥੧੦੧॥
 ੧੨੪॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨੀਕੀ ਰਾਮ ਕੀ ਧੁਨਿ ਸੋਇ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਅਨੂਪ ਸੁਆਮੀ ਜਪਤ ਸਾਥੂ ਹੋਇ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਿਤਵਤਾ ਗੋਪਾਲ ਦਰਸਨ ਕਲਮਲਾ ਕਢੁ ਧੋਇ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਬਿਕਾਰ ਅੰਕੁਰ ਹਰਿ ਕਾਟਿ
 ਛਾਡੇ ਖੋਇ ॥੧॥ ਪਰਾ ਪੂਰਬਿ ਜਿਸਹਿ ਲਿਖਿਆ ਬਿਰਲਾ ਪਾਏ ਕੋਇ ॥ ਰਖਣ ਗੁਣ ਗੋਪਾਲ ਕਰਤੇ ਨਾਨਕਾ ਸਚੁ
 ਜੋਇ ॥੨॥੧੦੨॥੧੨੫॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਮਤਿ ਸਾਰ ॥ ਹਰਿ ਬਿਸਾਰਿ ਜੁ ਆਨ ਰਾਚਹਿ
 ਮਿਥਨ ਸਭ ਬਿਸਥਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਧਸਾਂਗਮਿ ਭਜੁ ਸੁਆਮੀ ਪਾਪ ਹੋਵਤ ਖਾਰ ॥ ਚਰਨਾਰਬਿੰਦ ਬਸਾਇ
 ਹਿਰਦੈ ਬਹੁਰਿ ਜਨਮ ਨ ਮਾਰ ॥੧॥ ਕਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹ ਰਾਖਿ ਲੀਨੇ ਏਕ ਨਾਮ ਅਧਾਰ ॥ ਦਿਨ ਰੈਨਿ ਸਿਮਰਤ ਸਦਾ
 ਨਾਨਕ ਮੁਖ ਊਜਲ ਦਰਖਾਰਿ ॥੨॥੧੦੩॥੧੨੬॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਨੀ ਤੂੰ ਰਾਮ ਕੈ ਦਰਿ ਮਾਨੀ ॥
 ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ਬਿਨਸੀ ਸਭ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਅਪਨੀ ਕਰਿ ਲੀਨੀ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੂਰ ਗਿਆਨੀ ॥ ਸਰਬ ਸ੍ਰੂਖ ਆਨੰਦ ਘਨੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਦਰਸ ਧਿਆਨੀ ॥੧॥ ਨਿਕਟਿ ਵਰਤਨਿ ਸਾ ਸਦਾ
 ਸੁਹਾਗਨਿ ਦਹ ਦਿਸ ਸਾਈ ਜਾਨੀ ॥ ਪੂਅ ਰੰਗ ਰੰਗਿ ਰਤੀ ਨਾਰਾਇਨ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥੨॥੧੦੪॥
 ੧੨੭॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੁਅ ਚਰਨ ਆਸਰੋ ਈਸ ॥ ਤੁਮਹਿ ਪਛਾਨ੍ਹ ਸਾਕੁ ਤੁਮਹਿ ਸੰਗਿ ਰਾਖਨਹਾਰ ਤੁਮੈ
 ਜਗਦੀਸ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੂ ਹਮਰੇ ਹਮ ਤੁਮਰੇ ਕਹੀਐ ਇਤ ਉਤ ਤੁਮ ਹੀ ਰਾਖੇ ॥ ਤੂ ਬੇਅੰਤੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਸੁਆਮੀ
 ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਕੋਈ ਲਾਖੈ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਬਕਨੇ ਬਿਨੁ ਕਹਨ ਕਹਾਵਨ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਜਾਨੈ ॥ ਜਾ ਕਤ ਮੇਲਿ ਲਏ

ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਨਕੁ ਸੇ ਜਨ ਦਰਗਹ ਮਾਨੇ ॥੨॥੧੦੫॥੧੨੮॥

ਸਾਰਂਗ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੫

੧੯੪ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਭਜਿ ਆਨ ਕਰਮ ਬਿਕਾਰ ॥ ਮਾਨ ਮੋਹੁ ਨ ਬੁਝਾਤ ਤੂਸਨਾ ਕਾਲ ਗ੍ਰਸ ਸੰਸਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖਾਤ
ਪੀਵਤ ਹਸਤ ਸੋਵਤ ਅਤਥ ਬਿਤੀ ਅਸਾਰ ॥ ਨਰਕ ਉਦਰਿ ਭ੍ਰਮਤ ਜਲਤੇ ਜਮਹਿ ਕੀਨੀ ਸਾਰ ॥੨॥ ਪਰ ਦ੍ਰੋਹ
ਕਰਤ ਬਿਕਾਰ ਨਿੰਦਾ ਪਾਪ ਰਤ ਕਰ ਝਾਰ ॥ ਬਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰ ਬੂਝ ਨਾਹੀ ਤਮ ਮੋਹ ਮਹਾਁ ਅੰਧਾਰ ॥੩॥ ਬਿਖੁ
ਠਗਤੀ ਖਾਇ ਮੂਠੋ ਚਿਤਿ ਨ ਸਿੱਖਨਹਾਰ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਪਤ ਹੋਇ ਰਹਿਆਂ ਨਿਆਰੇ ਮਾਤਾਂਗ ਮਤਿ ਅਛਕਾਰ
॥੪॥੧॥੧੨੬॥

ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬ ਪਡਤਾਲ

੧੯੪ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੁਭ ਬਚਨ ਬੋਲਿ ਗੁਨ ਅਸੋਲ ॥ ਕਿੰਕਰੀ ਬਿਕਾਰ ॥ ਦੇਖੁ ਰੀ ਬੀਚਾਰ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਧਿਆਇ ਮਹਲੁ ਪਾਇ ॥
ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰੰਗ ਕਰਤੀ ਮਹਾ ਕੇਲ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਪਨ ਰੀ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਮਿਥਨੀ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥ ਸਖੀ ਕਾਇ
ਮੋਹਿ ਮੋਹਿਲੀ ਪੂਅ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਿਦੈ ਮੇਲ ॥੨॥ ਸਰਬ ਰੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਰੀ ਦਿਆਰੁ ॥ ਕਾਁਏ
ਆਨ ਆਨ ਰੁਚੀਐ ॥ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਸੰਗਿ ਖਚੀਐ ॥ ਜਤ ਸਾਧਸੰਗ ਪਾਏ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਧਿਆਏ ॥ ਅਬ ਰਹੇ
ਜਮਹਿ ਮੇਲ ॥੨॥੧॥੧੩੦॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਂਚਨਾ ਬਹੁ ਦਤ ਕਰਾ ॥ ਭੂਮਿ ਦਾਨੁ ਅਰਪਿ ਧਰਾ ॥
ਮਨ ਅਨਿਕ ਸੋਚ ਪਵਿਤ੍ਰ ਕਰਤ ॥ ਨਾਹੀ ਰੇ ਨਾਮ ਤੁਲਿ ਮਨ ਚਰਨ ਕਮਲ ਲਾਗੇ ॥੩॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਾਰਿ ਬੇਦ
ਜਿਹਵ ਭਨੇ ॥ ਦਸ ਅਸਟ ਖਸਟ ਸੁਵਨ ਸੁਨੇ ॥ ਨਹੀ ਤੁਲਿ ਗੋਬਿਦ ਨਾਮ ਧੁਨੇ ॥ ਮਨ ਚਰਨ ਕਮਲ ਲਾਗੇ
॥੪॥ ਬਰਤ ਸੰਧਿ ਸੋਚ ਚਾਰ ॥ ਕੁਆ ਕੁਣਟਿ ਨਿਰਾਹਾਰ ॥ ਅਪਰਸ ਕਰਤ ਪਾਕਸਾਰ ॥ ਨਿਵਲੀ ਕਰਮ ਬਹੁ
ਬਿਸਥਾਰ ॥ ਧੂਪ ਦੀਪ ਕਰਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮ ਤੁਲਿ ਨ ਲਾਗੇ ॥ ਰਾਮ ਦਿਆਰ ਸੁਨਿ ਦੀਨ ਬੇਨਤੀ ॥ ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ
ਨੈਨ ਪੇਖਤ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਮਿਸਟ ਲਾਗੇ ॥੨॥੨॥੧੩੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ

जापि रमत राम सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ संतन कै चरन लागे काम क्रोध लोभ तिआगे गुर गोपाल
 भए कृपाल लबधि अपनी पाई ॥२॥ बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर
 नह कोऊ बैराई ॥ सुआमी सुप्रसन्न भए जनम मरन दोख गए संतन कै चरन लागि नानक गुन गाई
 ॥२॥३॥१३२॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरे हरि मुखहु बोलि हरि हरे मनि धारे ॥१॥ रहाउ ॥ स्रवन
 सुनन भगति करन अनिक पातिक पुनहचरन ॥ सरन परन साधू आन बानि बिसारे ॥२॥ हरि
 चरन प्रीति नीत नीति पावना महि महा पुनीत ॥ सेवक भै दूरि करन कलिमल दोख जारे ॥ कहत
 मुकत सुनत मुकत रहत जनम रहते ॥ राम राम सार भूत नानक ततु बीचारे ॥२॥४॥१३३॥
 सारग महला ५ ॥ नाम भगति मागु संत तिआगि सगल कामी ॥१॥ रहाउ ॥ प्रीति लाइ हरि
 धिआइ गुन गुबिंद सदा गाइ ॥ हरि जन की रेन बाँछु दैनहार सुआमी ॥२॥ सरब कुसल सुख
 बिस्राम आनदा आन्द नाम जम की कछु नाहि त्रास सिमरि अंतरजामी ॥ एक सरन गोबिंद चरन
 संसार सगल ताप हरन ॥ नाव रूप साधसंग नानक पारगरामी ॥२॥५॥१३४॥ सारग महला ५ ॥
 गुन लाल गावउ गुर देखे ॥ पंचा ते एकु छूटा जउ साधसंगि पग रउ ॥१॥ रहाउ ॥ दृसटउ कछु संगि
 न जाइ मानु तिआगि मोहा ॥ एकै हरि प्रीति लाइ मिलि साधसंगि सोहा ॥२॥ पाइओ है गुण निधानु
 सगल आस पूरी ॥ नानक मनि अन्नद भए गुरि बिखम गारू तोरी ॥२॥६॥१३५॥ सारग महला ५ ॥
 मनि बिरागैगी ॥ खोजती दरसार ॥१॥ रहाउ ॥ साधू संतन सेवि कै पृउ हीअरै धिआइओ ॥ आन्द
 रूपी पेखि कै हउ महलु पावउगी ॥१॥ काम करी सभ तिआगि कै हउ सरणि परउगी ॥ नानक सुआमी
 गरि मिले हउ गुर मनावउगी ॥२॥७॥१३६॥ सारग महला ५ ॥ औसी होइ परी ॥ जानते दिआर
 ॥१॥ रहाउ ॥ मातर पितर तिआगि कै मनु संतन पाहि बेचाइओ ॥ जाति जनम कुल खोईअै हउ गावउ
 हरि हरी ॥१॥ लोक कुटंब ते टूटीअै प्रभ किरति किरति करी ॥ गुरि मो कउ उपदेसिआ नानक

सेवि एक हरी ॥२॥८॥१३७॥ सारग महला ५ ॥ लाल लाल मोहन गोपाल तू ॥ कीट हसति
पाखाण जंत सरब मै प्रतिपाल तू ॥१॥ रहाउ ॥ नह दूरि पूरि हजूरि संगे ॥ सुंदर रसाल तू ॥१॥
नह बरन बरन नह कुलह कुल ॥ नानक प्रभ किरपाल तू ॥२॥६॥१३८॥ सारग मः ५ ॥ करत
केल बिखै मेल चंद्र सूर मोहे ॥ उपजता बिकार दुंदर नउपरी झुन्नतकार सुंदर अनिग भाउ करत
फिरत बिनु गोपाल धोहे ॥ रहाउ ॥ तीनि भउने लपटाइ रही काच करमि न जात सही उनमत अंध
धंध रचित जैसे महा सागर होहे ॥१॥ उधरे हरि संत दास काटि दीनी जम की फास पतित पावन
नामु जा को सिमरि नानक ओहे ॥२॥१०॥१३६॥३॥१३॥१५५॥

੯੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सारंग महला ६ ॥ हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥ काँ की मात पिता सुत
बनिता को काहू को भाई ॥१॥ रहाउ ॥ धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥ तन छूटै
कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥ दीन दिआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई
॥ नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥१॥ सारंग महला ६ ॥ कहा मन
बिखिआ सिउ लपटाही ॥ या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ काँ को
तनु धनु संपति काँ की का सिउ नेहु लगाही ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥
तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै
भी नाही ॥२॥२॥ सारंग महला ६ ॥ कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥ माइआ मदि बिखिआ रसि
रचिओ राम सरनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥ जो उपजै
सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥१॥ मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ॥
जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥२॥३॥ सारंग महला ६ ॥ मन करि कबहू न हरि

ਗੁਨ ਗਾਇਆਂ ਹੋ ॥ ਬਿਖਿਆਸਕਤ ਰਹਿਆਂ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਕੀਨੋ ਅਪਨੋ ਭਾਇਆਂ ਹੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਤਪਦੇਸੁ
ਸੁਨਿਆਂ ਨਹਿ ਕਾਨਨਿ ਪਰ ਦਾਰਾ ਲਪਟਾਇਆਂ ਹੋ ॥ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਕਾਰਨਿ ਬਹੁ ਧਾਵਤ ਸਮਝਾਇਆਂ ਨਹ ਸਮਝਾਇਆਂ
ਹੋ ॥੧॥ ਕਹਾ ਕਹਤ ਮੈ ਅਪੁਨੀ ਕਰਨੀ ਜਿਹ ਬਿਧਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆਂ ਹੋ ॥ ਕਹਿ ਨਾਨਕ ਸਭ ਅਤਗਨ ਮੋ ਮਹਿ
ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਸਰਨਾਇਆਂ ਹੋ ॥੨॥੪॥੩॥੧੩੬॥੪॥੧੫੬॥

ਰਾਗੁ ਸਾਰਗ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧

੧੪ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਜੀਵਾ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥ ਜੈ ਜਗਦੀਸ ਤੇਰਾ ਜਸੁ ਜਾਚਤ ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਪਿਆਸ ਪਿਆਸੀ ਕਾਮਨਿ ਦੇਖਉ ਰੈਨਿ ਸਬਾਈ ॥ ਸੀਧਰ ਨਾਥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਨੈ
ਪੀਰ ਪਰਾਈ ॥੧॥ ਗਣਤ ਸਰੀਰਿ ਪੀਰ ਹੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਈ ॥ ਹੋਹੁ ਦਿਆਲ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ
ਹਰਿ ਜੀਤ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਹਾਂ ਸਮਾਈ ॥੨॥ ਐਸੀ ਖਤ ਖਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈ ॥ ਬਿਸਮ
ਭਏ ਗੁਣ ਗਾਇ ਮਨੋਹਰ ਨਿਰਭਤ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ॥੩॥ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਧੁਨਿ ਨਿਹਚਲ ਘਟੈ ਨ ਕੀਮਤਿ
ਪਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ਨਿਰਧਨੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬ੍ਰਾਂਸ਼ ਬੁਝਾਈ ॥੪॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਭਏ ਸੁਨਿ ਸਜਨੀ ਢੂਟ ਮੁਏ
ਬਿਖੁ ਖਾਈ ॥ ਜਬ ਕੀ ਉਪਜੀ ਤਬ ਕੀ ਤੈਸੀ ਰੁਗੁਲ ਭਈ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥੫॥ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਸਦਾ ਲਿਵ ਹਰਿ
ਸਿਤ ਜੀਵਾਂ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਤਾ ਬੈਰਾਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਾਡੀ ਲਾਈ ॥੬॥ ਸੁਧ ਰਸ ਨਾਮੁ
ਮਹਾ ਰਸੁ ਸੀਠਾ ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਤੁ ਗੁਸਾਈ ॥ ਤਹ ਹੀ ਮਨੁ ਜਹ ਹੀ ਤੈ ਰਾਖਿਆ ਐਸੀ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈ ॥੭॥ ਸਨਕ
ਸਨਾਦਿ ਬ੍ਰਹਮਾਦਿ ਇੰਦ੍ਰਾਦਿਕ ਭਗਤਿ ਰਤੇ ਬਨਿ ਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਘਰੀ ਨ ਜੀਵਾਂ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ
ਕਵਾਈ ॥੮॥੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਿਤ ਧੀਰੈ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ॥ ਕੋਟਿ ਕਲਪ ਕੇ ਢੂਖ ਬਿਨਾਸਨ
ਸਾਚੁ ਵੂਡਾਇ ਨਿਕੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕ੍ਰਿਧੁ ਨਿਵਾਰਿ ਜਲੇ ਹਤ ਮਮਤਾ ਪ੍ਰੇਮੁ ਸਦਾ ਨਤ ਰੰਗੀ ॥ ਅਨਭਤ
ਬਿਸਰਿ ਗਏ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਚਿਆ ਹਰਿ ਨਿਰਮਾਇਲੁ ਸੰਗੀ ॥੧॥ ਚੰਚਲ ਮਤਿ ਤਿਆਗਿ ਭਤ ਭੰਜਨੁ ਪਾਇਆ
ਏਕ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿ ਤੂਖਾ ਨਿਵਾਰੀ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਲਏ ਬਡਭਾਗੀ ॥੨॥ ਅਭਰਤ

सिंचि भए सुभर सर गुरमति साचु निहाला ॥ मन रति नामि रते निहकेवल आदि जुगादि दइआला ॥३॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोरा बडै भाग लिव लागी ॥ साचु बीचारि किलविख दुख काटे मनु निरमलु अनरागी ॥४॥ गहिर गंभीर सागर रतनागर अवर नही अन पूजा ॥ सबदु बीचारि भरम भउ भंजनु अवरु न जानिआ दूजा ॥५॥ मनूआ मारि निरमल पदु चीनिआ हरि रस रते अधिकाई ॥ एकस बिनु मै अवरु न जानाँ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥६॥ अगम अगोचरु अनाथु अजोनी गुरमति एको जानिआ ॥ सुभर भरे नाही चितु डोलै मन ही ते मनु मानिआ ॥७॥ गुर परसादी अकथउ कथीऔ कहउ कहावै सोई ॥ नानक दीन दइआल हमारे अवरु न जानिआ कोई ॥८॥२॥

सारग महला ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੧

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮन ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਕਡਾ� ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣਾ ਕੋਈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਮੁਕਤਿ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਬਦਿ ਭਉ ਭੰਜਨੁ ਜਮਕਾਲ ਨਿਖੰਜਨੁ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਸਹਜੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੨॥ ਭਗਤਾਁ ਕਾ ਭੋਜਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪੈਨ੍ਣੁ ਭਗਤਿ ਬਡਾਈ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਸੇਵਨਿ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥੩॥ ਮਨਮੁਖ ਬੁਧਿ ਕਾਚੀ ਮਨूਆ ਡੋਲੈ ਅਕਥੁ ਨ ਕਥੈ ਕਹਾਨੀ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਨਿਹਚਲੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਅੰਮ੍ਰਤ ਸਾਚੀ ਬਾਨੀ ॥੪॥ ਮਨ ਕੇ ਤਰੰਗ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਰੇ ਰਸਨਾ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿ ਰਹੀਐ ਸਦ ਅਪੁਨੇ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੫॥ ਮਨੁ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਾ ਮੁਕਤੋ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈ ॥ ਹਰਿ ਸਰੁ ਸਾਗਰੁ ਸਦਾ ਜਲੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਵੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਈ ॥੬॥ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਹਤਮੈ ਤ੃ਸਨਾ ਮਾਰੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਹਰਿ ਰਵਿਆ ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਸੁਰਾਰੀ ॥੭॥ ਸੇਵਕ ਸੇਵਿ ਰਹੇ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਜੋ ਤੈਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵੈ ਜਗਿ ਝੂਠੀ ਗੁਣ ਅਵਗਣ ਨ ਪਛਾਣੇ ॥੮॥ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਅਕਥੁ ਕਥੀਐ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਬਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਣੇ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀ ॥੯॥੧॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਤਿ

ਮੀਠਾ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਭਤ ਭੰਜਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੋ ਡੀਠਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿਤਰ ਕੇ ਪਾਪ
 ਬਿਨਾਸਨ ਹਰਿ ਸਾਚਾ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਸ੍ਰੂਜੈ ਦ੍ਰੂਜਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਏਕੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥੨॥
 ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ ਜਿਨ ਘਟਿ ਵਸਿਆ ਸਹਜੇ ਰਹੇ ਸਮਾਈ ॥ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਰੰਗ ਚਲੂਲੇ ਰਾਤੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਈ
 ॥੨॥ ਰਸਨਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ਰਸਿ ਰਾਤੀ ਲਾਲ ਭਈ ਰੁਂਗੁ ਲਾਈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਜਾਣਿਆ ਮਨੁ
 ਤ੃ਪਤਿਆ ਸਾਁਤਿ ਆਈ ॥੩॥ ਪੰਡਿਤ ਪਡਿ ਪਡਿ ਮੌਨੀ ਸਭਿ ਥਾਕੇ ਭ੍ਰਮਿ ਭੇਖ ਥਕੇ ਭੇਖਧਾਰੀ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ
 ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੪॥ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਨਿਵਾਰਿ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਸਾਚ ਸਬਦੁ ਮਨਿ
 ਭਾਇਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥੫॥ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸਹਜ
 ਧੁਨਿ ਉਪਯੈ ਮਨਿ ਸਾਚੈ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥੬॥ ਏਕਸ
 ਮਹਿ ਸਭੁ ਜਗਤੋ ਵਰਤੈ ਵਿਰਲਾ ਏਕੁ ਪਛਾਣੈ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸ੍ਰੂਜੈ ਅਨਦਿਨੁ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥੭॥
 ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਬੂਜੈ ਹੋਰੁ ਕਹਣਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ਏਕ
 ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੮॥੨॥ ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਕੀ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਨਦਰਿ ਕਰੇ
 ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਜਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰੁ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਪਛਾਨਿਆ ॥ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਭਾਇ ਦ੍ਰੂਜੈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਬਤਰਾਨਿਆ ॥੨॥ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨਾਵੈ ਸੋਈ
 ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਫਿਰਿ ਮੈਲਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਹੈ ਮੈਲਾ ਦ੍ਰੂਜੈ ਭਰਮਿ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥੨॥
 ਕਿਆ ਦੂੜਾਂ ਕਿਆ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਤਿਆਗੀ ਮੈ ਤਾ ਬੂਜ਼ ਨ ਪਾਈ ॥ ਹੋਹਿ ਦਿਆਲੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਨਾਮੇ
 ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੩॥ ਸਚਾ ਸਚੁ ਦਾਤਾ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਨਾਇ ਲਾਏ ॥ ਗੁਰੁ ਦੁਆਰੈ ਸੋਈ ਬੂਜੈ
 ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ॥੪॥ ਦੇਖਿ ਬਿਸਮਾਦੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਹੀਂ ਚੇਤੇ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ
 ਸੋਈ ਬੂਜੈ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰਾ ॥੫॥ ਜਿਨ੍ ਦਰੁ ਸ੍ਰੂਜੈ ਸੇ ਕਦੇ ਨ ਵਿਗਾਡਿਹਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬੂਜ ਬੁਝਾਈ ॥ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ
 ਕਰਣੀ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਵਹਿ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਰਹਾਈ ॥੬॥ ਸੇ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਾਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ

अधारा ॥ मनमुख दूजै भरमि भुलाए ना बूझहि वीचारा ॥੭॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे करि करि
वेखै ॥ नानक से जन थाइ पए है जिन की पति पावै लेखै ॥੮॥੩॥

सारग महला ੫ अस्टपदीआ घरु ੧

੧੭ੰसतिगुर प्रसादि ॥

गुसाइंदी परतापु तुहारो डीठा ॥ करन करावन उपाइ समावन सगल छत्रपति बीठा ॥੧॥ रहाउ ॥
राणा राउ राज भए रंका उनि झूठे कहणु कहाइओ ॥ हमरा राजनु सदा सलामति ता को सगल घटा
जसु गाइओ ॥੧॥ उपमा सुनहु राजन की संतहु कहत जेत पाहूचा ॥ बेसुमार वड साह दातारा ऊचे
ही ते ऊचा ॥੨॥ पवनि परोइओ सगल अकारा पावक कासट संगे ॥ नीरु धरणि करि राखे एकत
कोइ न किस ही संगे ॥੩॥ घटि घटि कथा राजन की चालै घरि घरि तुझहि उमाहा ॥ जीआ जंत
सभि पाछै करिआ प्रथमे रिजकु समाहा ॥੪॥ जो किछु करणा सु आपे करणा मसलति काहू दीनी ॥
अनिक जतन करि करह दिखाए साची साखी चीनी ॥੫॥ हरि भगता करि राखे अपने दीनी नामु
वडाई ॥ जिनि जिनि करी अवगिआ जन की ते तै दीए रुडाई ॥੬॥ मुकति भए साधसंगति करि
तिन के अवगन सभि परहरिआ ॥ तिन कउ देखि भए किरपाला तिन भव सागरु तरिआ ॥੭॥ हम
नाने नीच तुमे बड साहिब कुदरति कउण बीचारा ॥ मनु तनु सीतलु गुर दरस देखे नानक नामु
अधारा ॥੮॥੧॥

सारग महला ੫ अस्टपदी घरु ੬

੧੭ੰसतिगुर प्रसादि ॥

अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥ पारब्रह्म की अचरज सभा ॥੧॥ रहाउ ॥ सदा सदा सतिगुर
नमसकार ॥ गुर किरपा ते गुन गाइ अपार ॥ मन भीतरि होवै परगासु ॥ गिआन अंजनु अगिआन
बिनासु ॥੧॥ मिति नाही जा का बिसथारु ॥ सोभा ता की अपर अपार ॥ अनिक रंग जा के गने न
जाहि ॥ सोग हरख दुहहू महि नाहि ॥੨॥ अनिक ब्रह्मे जा के बेद धुनि करहि ॥ अनिक महेस बैसि

ਧਿਆਨੁ ਧਰਹਿ ॥ ਅਨਿਕ ਪੁਰਖ ਅੰਸਾ ਅਵਤਾਰ ॥ ਅਨਿਕ ਇੰਦ ਊਥੈ ਦਰਬਾਰ ॥੩॥ ਅਨਿਕ ਪਵਨ ਪਾਵਕ
 ਅਝ ਨੀਰ ॥ ਅਨਿਕ ਰਤਨ ਸਾਗਰ ਦਧਿ ਖੀਰ ॥ ਅਨਿਕ ਸੂਰ ਸਸੀਅਰ ਨਖਿਆਤਿ ॥ ਅਨਿਕ ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਬਹੁ
 ਭਾਁਤਿ ॥੪॥ ਅਨਿਕ ਬਸੁਧਾ ਅਨਿਕ ਕਾਮਧੋਨ ॥ ਅਨਿਕ ਪਾਰਜਾਤ ਅਨਿਕ ਮੁਖਿ ਬੇਨ ॥ ਅਨਿਕ ਅਕਾਸ
 ਅਨਿਕ ਪਾਤਾਲ ॥ ਅਨਿਕ ਮੁਖੀ ਜਪੀਐ ਗੋਪਾਲ ॥੫॥ ਅਨਿਕ ਸਾਸਕ ਸਿਮੂਤਿ ਪੁਰਾਨ ॥ ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ
 ਹੋਵਤ ਬਖਿਆਨ ॥ ਅਨਿਕ ਸਰੋਤੇ ਸੁਨਹਿ ਨਿਧਾਨ ॥ ਸਰਬ ਜੀਅ ਪੂਰਨ ਭਗਵਾਨ ॥੬॥ ਅਨਿਕ ਧਰਮ
 ਅਨਿਕ ਕੁਮੇਰ ॥ ਅਨਿਕ ਬਰਨ ਅਨਿਕ ਕਨਿਕ ਸੁਮੇਰ ॥ ਅਨਿਕ ਸੇਖ ਨਵਤਨ ਨਾਮੁ ਲੇਹਿ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ
 ਅੰਤੁ ਨ ਤੇਹਿ ॥੭॥ ਅਨਿਕ ਪੁਰੀਆ ਅਨਿਕ ਤਹ ਖੰਡ ॥ ਅਨਿਕ ਰੂਪ ਰੰਗ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥ ਅਨਿਕ ਬਨਾ ਅਨਿਕ
 ਫਲ ਮੂਲ ॥ ਆਪਹਿ ਸੂਖਮ ਆਪਹਿ ਅਸਥੂਲ ॥੮॥ ਅਨਿਕ ਜੁਗਾਦਿ ਦਿਨਸ ਅਝ ਰਾਤਿ ॥ ਅਨਿਕ ਪਰਲਤ
 ਅਨਿਕ ਉਤਪਾਤਿ ॥ ਅਨਿਕ ਜੀਅ ਜਾ ਕੇ ਗ੍ਰਹ ਮਾਹਿ ॥ ਰਮਤ ਰਾਮ ਪੂਰਨ ਸ਼ਬ ਠਾਂਡਿ ॥੯॥ ਅਨਿਕ ਮਾਡਿਆ
 ਜਾ ਕੀ ਲਖੀ ਨ ਜਾਡਿ ॥ ਅਨਿਕ ਕਲਾ ਖੇਲੈ ਹਰਿ ਰਾਡਿ ॥ ਅਨਿਕ ਧੁਨਿਤ ਲਲਿਤ ਸੰਗੀਤ ॥ ਅਨਿਕ ਗੁਪਤ
 ਪ੍ਰਗਟੇ ਤਹ ਚੀਤ ॥੧੦॥ ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਭਗਤ ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ਰੰਗਿ ॥ ਅਨਿਕ
 ਅਨਾਹਦ ਆਨਦ ਝੁਨਕਾਰ ॥ ਤਾਓ ਰਸ ਕਾ ਕਛੁ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰ ॥੧੧॥ ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਸਤਿ ਅਸਥਾਨੁ ॥ ਊਚ ਤੇ
 ਊਚ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਬਾਨੁ ॥ ਅਪੁਨਾ ਕੀਆ ਜਾਨਹਿ ਆਪਿ ॥ ਆਪੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਓ ਬਿਆਪਿ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ
 ਨਾਨਕ ਦਿਆਲ ॥ ਜਿਨਿ ਜਪਿਆ ਨਾਨਕ ਤੇ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥੧੨॥੧॥੨॥੩॥੭॥

ਸਾਰਗ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਭ ਦੇਖੀਐ ਅਨਭੈ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਪੂਰਨ ਹੈ ਅਲਿਪਾਤਾ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਪੂਰਨੁ ਕਰਿ ਬਿਸਥੀਰਨੁ ਜਲ
 ਤਰੰਗ ਜਿਤ ਰਚਨੁ ਕੀਆ ॥ ਹਭਿ ਰਸ ਮਾਣੇ ਭੋਗ ਘਟਾਣੇ ਆਨ ਨ ਬੀਆ ਕੋ ਥੀਆ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗੀ ਝਿਕ ਰੰਗੀ
 ਠਾਕੁਰੁ ਸੰਤਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਸਿ ਲੀਨਾ ਜਿਤ ਜਲ ਮੀਨਾ ਸਭ ਦੇਖੀਐ ਅਨਭੈ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥੧॥
 ਕਤਨ ਤਪਮਾ ਦੇਤ ਕਵਨ ਬਡਾਈ ॥ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਾਰਿ ਰਹਿਓ ਸ਼ਬ ਠਾਈ ॥ ਪੂਰਨ ਮਨਮੋਹਨ ਘਟ ਘਟ ਸੋਹਨ

जब खिंचै तब छाई ॥ किउ न अराधहु मिलि करि साधहु घरी मुहतक बेला आई ॥ अरथु दरखु
सभु जो किछु दीसै संगि न कछहू जाई ॥ कहु नानक हरि हरि आराधहु कवन उपमा देउ कवन
बडाई ॥ २ ॥ पूछउ संत मेरो ठाकुरु कैसा ॥ हीउ अरापउ देहु सदेसा ॥ देहु सदेसा प्रभ जीउ कैसा
कह मोहन परवेसा ॥ अंग अंग सुखदाई पूरन ब्रह्माई थान थान्नतर देसा ॥ बंधन ते मुकता घटि
घटि जुगता कहि न सकउ हरि जैसा ॥ देखि चरित नानक मनु मोहिओ पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा
॥ ३ ॥ करि किरपा अपुने पहि आङिआ ॥ धंनि सु रिदा जिह चरन बसाइआ ॥ चरन बसाइआ संत
संगाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥ भइआ प्रगासु रिदै उलासु प्रभु लोडीदा पाइआ ॥ दुखु
नाठा सुखु घर महि वूठा महा अन्नद सहजाइआ ॥ कहु नानक मै पूरा पाइआ करि किरपा अपुने
पहि आङिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

सारंग की वार महला ४ राइ महमे हसने की धुनि

९८८ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला २ ॥ गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥ नानक गुर बिनु मन का ताकु न
उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥ १ ॥ महला १ ॥ न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै सुरती गिआनी जोगि
॥ न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ न भीजै रूपी माली रंगि ॥ न भीजै तीरथि भविअै नंगि ॥ न भीजै दातंी
कीतै पुंनि ॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥
लेखा लिखीअै मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥ २ ॥ महला १ ॥ नव छिअ खट का करे बीचारु
॥ निसि दिन उचरै भार अठार ॥ तिनि भी अंतु न पाइआ तोहि ॥ नाम बिहूण मुकति किउ होइ ॥
नाभि वसत ब्रह्मै अंतु न जाणिआ ॥ गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि
निरंजना जिनि आपु उपाइआ ॥ आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥ तै गुण आपि
सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ॥ गुर परसादी उबरे जिन भाणा भाइआ ॥ नानक सचु वरतदा

ਸਭ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਆਪਿ ਤਪਾਏ ਨਾਨਕਾ ਆਪੇ ਰਖੈ ਵੇਕ ॥ ਮੰਦਾ ਕਿਸ ਨੋ
 ਆਖੀਐ ਜਾਂ ਸਭਨਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ॥ ਸਭਨਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਹੈ ਵੇਖੈ ਧੰਧੈ ਲਾਇ ॥ ਕਿਸੈ ਥੋੜਾ ਕਿਸੈ ਅਗਲਾ
 ਖਾਲੀ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥ ਆਵਹਿ ਨਨਗੇ ਜਾਹਿ ਨਨਗੇ ਵਿਚੇ ਕਰਹਿ ਵਿਥਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਣੀਐ ਅਗੈ ਕਾਈ
 ਕਾਰ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਿਨਸਿ ਥਾਪਿ ਜੀਆਂ ਕਤ ਭੇਜੈ ਜਿਨਸਿ ਥਾਪਿ ਲੈ ਜਾਵੈ ॥ ਆਪੇ ਥਾਪਿ ਤਥਾਪੈ ਆਪੇ
 ਏਤੇ ਵੇਸ ਕਰਾਵੈ ॥ ਜੇਤੇ ਜੀਅ ਫਿਰਹਿ ਅਤਧੂਤੀ ਆਪੇ ਭਿਖਿਆ ਪਾਵੈ ॥ ਲੇਖੈ ਬੋਲਣੁ ਲੇਖੈ ਚਲਣੁ ਕਾਇਤੁ ਕੀਚਹਿ
 ਦਾਵੈ ॥ ਮੂਲੁ ਮਤਿ ਪਰਵਾਣਾ ਏਹੋ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥ ਕਰਣੀ ਤਪਰਿ ਹੋਇ ਤਪਾਵਸੁ ਜੇ ਕੋ ਕਹੈ ਕਹਾਏ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਲਤੁ ਰਚਾਇਓਨੁ ਗੁਣ ਪਰਗਟੀ ਆਇਆ ॥ ਗੁਰਕਾਣੀ ਸਦ ਉਚੈ ਹਰਿ ਮੰਨਿ
 ਕਵਸਾਇਆ ॥ ਸਕਤਿ ਗੰਡੀ ਭਰਮੁ ਕਟਿਆ ਸਿਵ ਜੋਤਿ ਜਗਾਇਆ ॥ ਜਿਨ ਕੈ ਪੋਤੈ ਪੁਨ੍ਨੁ ਹੈ ਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ
 ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੨॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਸਾਹ ਚਲੇ
 ਕਣਯਾਰਿਆ ਲਿਖਿਆ ਦੇਵੈ ਨਾਲਿ ॥ ਲਿਖੇ ਤਪਰਿ ਹੁਕਮੁ ਹੋਇ ਲੰਝੈ ਕਸਤੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਕਸਤੁ ਲੰਝੈ
 ਕਣਯਾਰੰ ਕਖਰੁ ਬਧਾ ਪਾਇ ॥ ਕੇਈ ਲਾਹਾ ਲੈ ਚਲੇ ਇਕਿ ਚਲੇ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇ ॥ ਥੋੜਾ ਕਿਨੈ ਨ ਮੰਗਿਓ ਕਿਸੁ
 ਕਹੀਐ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਨਦਰਿ ਤਿਨਾ ਕਤ ਨਾਨਕਾ ਜਿ ਸਾਬਤੁ ਲਾਏ ਰਾਸਿ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੁਡਿ ਜੁਡਿ
 ਵਿਛੁਡੇ ਵਿਛੁਡਿ ਜੁਡੇ ॥ ਜੀਵਿ ਜੀਵਿ ਮੁਏ ਸੁਏ ਜੀਵੇ ॥ ਕੇਤਿਆ ਕੇ ਬਾਪ ਕੇਤਿਆ ਕੇ ਬੇਟੇ ਕੇਤੇ ਗੁਰ ਚੇਲੇ ਹ੍ਵਾਏ ॥
 ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਗਣਤ ਨ ਆਵੈ ਕਿਆ ਜਾਤੀ ਕਿਆ ਹੁਣਿ ਹ੍ਵਾਏ ॥ ਸਭੁ ਕਰਣਾ ਕਿਰਤੁ ਕਰਿ ਲਿਖੀਐ ਕਰਿ ਕਰਿ
 ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਕਰੇ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਮਰੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੀਐ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਮਨਮੁਖਿ
 ਦ੍ਰਿਜਾ ਭਰਮੁ ਹੈ ਦ੍ਰਿਜੈ ਲੋਭਾਇਆ ॥ ਕੂਡੁ ਕਪਟੁ ਕਮਾਵਦੇ ਕੂਡੋ ਆਲਾਇਆ ॥ ਪੁਨ ਕਲਤੁ ਮੋਹੁ ਹੇਤੁ ਹੈ ਸਭੁ ਦੁਖੁ
 ਸਬਾਇਆ ॥ ਜਮ ਦਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਭਰਮਹਿ ਭਰਮਾਇਆ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ
 ਭਾਇਆ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਜਿਨ ਵਡਿਆਈ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਕੀ ਤੇ ਰਤੇ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ
 ਏਕੁ ਹੈ ਦ੍ਰਿਜਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮਨੈ ਮਾਹਿ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ॥ ਤਿਨੀ ਪੀਤਾ ਰੰਗ ਸਿਤ

ਜਿਨ੍ ਕਤ ਲਿਖਿਆ ਆਦਿ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਕੀਤਾ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹੀਐ ਕਰੇ ਸੋਝ੍ ਸਾਲਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਏਕੀ
 ਬਾਹਰਾ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ਦਾਤਾ ਨਾਹਿ ॥ ਕਰਤਾ ਸੋ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਨ੍ ਕੀਤਾ ਆਕਾਰੁ ॥ ਦਾਤਾ ਸੋ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿ ਸਭਸੈ
 ਦੇ ਆਧਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਸਦੀਵ ਹੈ ਪੂਰਾ ਜਿਸੁ ਭੰਡਾਰੁ ॥ ਵਡਾ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਅਨੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਤਚਰਾਂ ਪਤਿ ਸਿਤ ਘਰਿ ਜਾਈ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਾਣੀ ਨਾਮੁ ਹੈ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਵਸਾਈ ॥ ਮਤਿ ਪਂਖੇਰੁ ਵਸਿ ਹੋਇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਧਿਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ
 ਦਿਇਆਲੁ ਹੋਇ ਨਾਮੇ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਤਿਸੁ ਸਿਤ ਕੈਸਾ ਬੋਲਣਾ ਜਿ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਜਾਣੁ
 ॥ ਚੀਰੀ ਜਾ ਕੀ ਨਾ ਫਿਰੈ ਸਾਹਿਬੁ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਚੀਰੀ ਜਿਸ ਕੀ ਚਲਣਾ ਮੀਰ ਮਲਕ ਸਲਾਰ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ
 ਨਾਨਕਾ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥ ਜਿਨ੍ ਚੀਰੀ ਚਲਣਾ ਹਥਿ ਤਿਨ੍ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਫੁਰਮਾਣੁ ਹੋਇ ਤਠੀ
 ਕਰਲੈ ਪਾਹਿ ॥ ਜੇਹਾ ਚੀਰੀ ਲਿਖਿਆ ਤੇਹਾ ਹੁਕਮੁ ਕਮਾਹਿ ॥ ਘਲੇ ਆਵਹਿ ਨਾਨਕਾ ਸਦੇ ਤਠੀ ਜਾਹਿ ॥੧॥
 ਮਹਲਾ ੨ ॥ ਸਿਫਤਿ ਜਿਨਾ ਕਤ ਬਖਸੀਐ ਸੇਈ ਪੋਤੇਦਾਰ ॥ ਕੁੰਜੀ ਜਿਨ ਕਤ ਦਿਤੀਆ ਤਿਨ੍ ਮਿਲੇ ਭੰਡਾਰ ॥
 ਜਹ ਭੰਡਾਰੀ ਹੂ ਗੁਣ ਨਿਕਲਹਿ ਤੇ ਕੀਅਹਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਨਦਰਿ ਤਿਨ੍ ਕਤ ਨਾਨਕਾ ਨਾਮੁ ਜਿਨ੍ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਨਿਰਮਲਾ ਸੁਣਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਮੰਨਿ ਕਵਸਾਈਐ ਕ੍ਰਿਝੈ ਜਨੁ ਕੋਈ ॥
 ਕਹਦਿਆ ਤਠਦਿਆ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸਾਚਾ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥ ਭਗਤਾ ਕਤ ਨਾਮ ਅਧਾਰੁ ਹੈ ਨਾਮੇ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥੫॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਤੁਲੀਅਹਿ ਤੌਲ ਜੇ ਜੀਤ
 ਪਿਛੈ ਪਾਈਐ ॥ ਇਕਸੁ ਨ ਪੁਜਹਿ ਬੋਲ ਜੇ ਪੂਰੇ ਪੂਰਾ ਕਰਿ ਮਿਲੈ ॥ ਵਡਾ ਆਖਣੁ ਭਾਰਾ ਤੌਲੁ ॥ ਹੋਰ ਹਉਲੀ ਮਤੀ
 ਹਉਲੇ ਬੋਲ ॥ ਧਰਤੀ ਪਾਣੀ ਪਰਕਤ ਭਾਰੁ ॥ ਕਿਤ ਕਂਡੈ ਤੌਲੈ ਸੁਨਿਆਰੁ ॥ ਤੌਲਾ ਮਾਸਾ ਰਤਕ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਪੁਛਿਆ ਦੇਇ ਪੁਜਾਇ ॥ ਮੂਰਖ ਅੰਧਿਆ ਅੰਧੀ ਧਾਤੁ ॥ ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਹਣੁ ਕਹਾਇਨਿ ਆਪੁ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਆਖਣਿ ਅਤਖਾ ਸੁਨਣਿ ਅਤਖਾ ਆਖਿ ਨ ਜਾਪੀ ਆਖਿ ॥ ਇਕਿ ਆਖਿ ਆਖਹਿ ਸਬਦੁ ਭਾਖਹਿ ਅਰਥ ਤੁਰਥ
 ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਜੇ ਕਿਹੁ ਹੋਇ ਤ ਕਿਹੁ ਦਿਸੈ ਜਾਪੈ ਰੂਪੁ ਨ ਜਾਤਿ ॥ ਸਭਿ ਕਾਰਣ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਘਟ ਅਤਘਟ ਘਟ

ਥਾਪਿ ॥ ਆਖਣਿ ਅਤਖਾ ਨਾਨਕਾ ਆਖਿ ਨ ਜਾਪੈ ਆਖਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਮਨੁ ਰਹਸੀਐ ਨਾਮੇ
 ਸਾਂਤਿ ਆਈ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤੀਐ ਸਭ ਦੁਖ ਗਰਵਾਈ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਨਾਉ ਊਪਜੈ ਨਾਮੇ
 ਵਡਿਆਈ ॥ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸਭ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਨਾਮੇ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਨਾਨਕ ਲਿਵ ਲਾਈ
 ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੂਠਿ ਨ ਰਾਗੀ ਜੂਠਿ ਨ ਵੇਦੀ ॥ ਜੂਠਿ ਨ ਚੰਦ ਸੂਰਜ ਕੀ ਭੇਦੀ ॥ ਜੂਠਿ ਨ ਅਨੀ
 ਜੂਠਿ ਨ ਨਾਈ ॥ ਜੂਠਿ ਨ ਮੀਹੁ ਵਹਿਐ ਸਭ ਥਾਈ ॥ ਜੂਠਿ ਨ ਧਰਤੀ ਜੂਠਿ ਨ ਪਾਣੀ ॥ ਜੂਠਿ ਨ ਪਤਣੈ ਮਾਹਿ
 ਸਮਾਣੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਿਗੁਰਿਆ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਮੁਹਿ ਫੇਰਿਐ ਮੁਹੁ ਜੂਠਾ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਾਨਕ
 ਚੁਲੀਆ ਸੁਚੀਆ ਜੇ ਭਰਿ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥ ਸੁਰਤੇ ਚੁਲੀ ਗਿਆਨ ਕੀ ਜੋਗੀ ਕਾ ਜਤੁ ਹੋਇ ॥ ਬ੍ਰਹਮਣ ਚੁਲੀ ਸੰਤੋਖ
 ਕੀ ਗਿਹੀ ਕਾ ਸਤੁ ਦਾਨੁ ॥ ਰਾਜੇ ਚੁਲੀ ਨਿਆਵ ਕੀ ਪਡਿਆ ਸਚੁ ਧਿਆਨੁ ॥ ਪਾਣੀ ਚਿਤੁ ਨ ਧੋਪਈ ਮੁਖਿ
 ਪੀਤੈ ਤਿਖ ਜਾਇ ॥ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ ਜਗਤ ਕਾ ਫਿਰਿ ਪਾਣੀ ਸਭੁ ਖਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਸਭ ਸਿਧਿ
 ਹੈ ਰਿਧਿ ਧਿਛੈ ਆਵੈ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਨਤ ਨਿਧਿ ਮਿਲੈ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਵੈ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਸੰਤੋਖੁ ਹੋਇ ਕਵਲਾ
 ਚਰਨ ਧਿਆਵੈ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਸਹਜੁ ਊਪਜੈ ਸਹਜੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਉ ਪਾਈਐ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਵੈ
 ॥੭॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਦੁਖ ਵਿਚਿ ਜੰਮਣੁ ਦੁਖਿ ਮਰਣੁ ਦੁਖਿ ਵਰਤਣੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਦੁਖੁ ਦੁਖੁ ਅਗੈ ਆਖੀਐ
 ਪਡਿ ਪਡਿ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰ ॥ ਦੁਖ ਕੀਆ ਪੰਡਾ ਖੁਲੀਆ ਸੁਖੁ ਨ ਨਿਕਲਿਐ ਕੋਇ ॥ ਦੁਖ ਵਿਚਿ ਜੀਤ ਜਲਾਇਆ
 ਦੁਖੀਆ ਚਲਿਆ ਰੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਿਫਤੀ ਰਤਿਆ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿਆ ਹੋਇ ॥ ਦੁਖ ਕੀਆ ਅਗੈ ਮਾਰੀਅਹਿ ਭੀ
 ਦੁਖੁ ਦਾਰੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਦੁਨੀਆ ਭਸੁ ਰੰਗੁ ਭਸ੍ਤ੍ਰੂ ਹੂ ਭਸੁ ਖੇਹ ॥ ਭਸੋ ਭਸੁ ਕਮਾਵਣੀ ਭੀ ਭਸੁ
 ਭਰੀਐ ਦੇਹ ॥ ਜਾ ਜੀਤ ਵਿਚਹੁ ਕਢੀਐ ਭਸ੍ਤ੍ਰੂ ਭਰਿਆ ਜਾਇ ॥ ਅਗੈ ਲੇਖੈ ਮੰਗਿਐ ਹੋਰ ਦਸ੍ਤ੍ਰੀ ਪਾਇ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਸੁਚਿ ਸੰਜਮੇ ਜਮੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਆਨੇਰੁ ਗਰਾਵੈ ॥
 ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਆਪੁ ਬੁੜੀਐ ਲਾਹਾ ਨਾਉ ਪਾਵੈ ॥ ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਪਾਪ ਕਟੀਅਹਿ ਨਿਰਮਲ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਇ ਸੁਣਿਐ ਮੁਖ ਤਜਲੇ ਨਾਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਵੈ ॥੮॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਘਰਿ ਨਾਰਾਇਣੁ ਸਭਾ ਨਾਲਿ ॥

ਪ੍ਰਜ਼ ਕਰੇ ਰਖੈ ਨਾਵਾਲਿ ॥ ਕੁੰਗੁ ਚਨਣੁ ਫੁਲ ਚੜਾਏ ॥ ਪੈਰੀ ਪੈ ਪੈ ਬਹੁਤੁ ਮਨਾਏ ॥ ਮਾਣੂਆ ਮੰਗਿ ਮੰਗਿ ਪੈਨੈ
 ਖਾਇ ॥ ਅਂਧੀ ਕੰਮੀ ਅਂਧ ਸਜਾਇ ॥ ਭੁਖਿਆ ਦੇਇ ਨ ਮਰਦਿਆ ਰਖੈ ॥ ਅਂਧਾ ਝਗੜਾ ਅਂਧੀ ਸਥੈ ॥੧॥
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਭੇ ਸੁਰਤੀ ਜੋਗ ਸਭਿ ਸਭੇ ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ॥ ਸਭੇ ਕਰਣੇ ਤਪ ਸਭਿ ਸਭੇ ਗੀਤ ਗਿਆਨ ॥ ਸਭੇ ਬੁਧੀ
 ਸੁਧਿ ਸਭਿ ਸਭਿ ਤੀਰਥ ਸਭਿ ਥਾਨ ॥ ਸਭਿ ਪਾਤਿਸਾਹੀਆ ਅਮਰ ਸਭਿ ਸਭਿ ਖੁਸੀਆ ਸਭਿ ਖਾਨ ॥ ਸਭੇ ਮਾਣਸ
 ਦੇਵ ਸਭਿ ਸਭੇ ਜੋਗ ਧਿਆਨ ॥ ਸਭੇ ਪੁਰੀਆ ਖੰਡ ਸਭਿ ਸਭੇ ਜੀਅ ਜਹਾਨ ॥ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਏ ਆਪਣੈ ਕਰਮੀ ਵਹੈ
 ਕਲਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਸਚਿ ਨਾਇ ਸਚੁ ਸਭਾ ਟੀਬਾਨੁ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਨਾਮੇ ਗਤਿ
 ਹੋਈ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਭਵਜਲੁ ਲਮਘੀਐ ਫਿਰਿ ਬਿਘਨੁ ਨ
 ਹੋਈ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਪਥੁ ਪਰਗਟਾ ਨਾਮੇ ਸਭ ਲੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਨਾਤ ਮਨੀਐ ਜਿਨ ਦੇਵੈ
 ਸੋਈ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਪੁਰੀਆ ਖੰਡਾ ਸਿਰਿ ਕਰੇ ਇਕ ਪੈਰਿ ਧਿਆਏ ॥ ਪਤਣੁ ਮਾਰਿ ਮਨਿ ਜਪੁ ਕਰੇ ਸਿਰੁ
 ਸੁੰਡੀ ਤਲੈ ਦੇਇ ॥ ਕਿਸੁ ਤਪਰਿ ਓਹੁ ਟਿਕ ਟਿਕੈ ਕਿਸ ਨੋ ਜੋਰੁ ਕਰੇਇ ॥ ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਨਾਨਕਾ ਕਿਸ ਨੋ ਕਰਤਾ
 ਦੇਇ ॥ ਹੁਕਮਿ ਰਹਾਏ ਆਪਣੈ ਮੂਰਖੁ ਆਪੁ ਗਣੇਇ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਹੈ ਹੈ ਆਖਾਂ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਕੋਟੀ ਹੂ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ
 ॥ ਆਖੂ ਆਖਾਂ ਸਦਾ ਸਦਾ ਕਹਣਿ ਨ ਆਵੈ ਤੋਟਿ ॥ ਨਾ ਹਤ ਥਕਾਂ ਨ ਠਾਕੀਆ ਏਵਡ ਰਖਹਿ ਜੋਤਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਚਸਿਅਹੁ ਚੁਖ ਬਿੰਦ ਤਪਰਿ ਆਖਣੁ ਦੋਸੁ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਕੁਲੁ ਤਥਰੈ ਸਭੁ ਕੁਟੰਬੁ ਸਬਾਇਆ ॥
 ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਸੰਗਤਿ ਤਥਰੈ ਜਿਨ ਰਿਦੈ ਵਸਾਇਆ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਸੁਣਿ ਤਥਰੇ ਜਿਨ ਰਸਨ ਰਸਾਇਆ ॥
 ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਦੁਖ ਭੁਖ ਗੱਈ ਜਿਨ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਤਿਨੀ ਸਾਲਾਹਿਆ ਜਿਨ ਗੁਰੂ
 ਮਿਲਾਇਆ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਸਭੇ ਰਾਤੀ ਸਭਿ ਦਿਹ ਸਭਿ ਥਿਤੀ ਸਭਿ ਵਾਰ ॥ ਸਭੇ ਰੁਤੀ ਮਾਹ ਸਭਿ ਸਭਿ
 ਧਰਤੀ ਸਭਿ ਭਾਰ ॥ ਸਭੇ ਪਾਣੀ ਪਤਣ ਸਭਿ ਸਭਿ ਅਗਨੀ ਪਾਤਾਲ ॥ ਸਭੇ ਪੁਰੀਆ ਖੰਡ ਸਭਿ ਸਭਿ ਲੋਅ ਲੋਅ
 ਆਕਾਰ ॥ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਪੀ ਕੇਤੜਾ ਕਹਿ ਨ ਸਕੀਜੈ ਕਾਰ ॥ ਆਖਹਿ ਥਕਹਿ ਆਖਿ ਆਖਿ ਕਰਿ ਸਿਫਤੀ ਵੀਚਾਰ
 ॥ ਤ੍ਰਣੁ ਨ ਪਾਇਆ ਬਪੁਡੀ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਗਵਾਰ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਅਖੀਂ ਪਰਣੈ ਜੇ ਫਿਰਾਂ ਦੇਖਾਂ ਸਭੁ ਆਕਾਰੁ ॥ ਪੁਛਾ

ਗਿਆਨੀ ਪੰਡਿਤਾਂ ਪੁਛਾ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰ ॥ ਪੁਛਾ ਟੇਵਾਂ ਮਾਣਸਾਂ ਜੋਧ ਕਰਹਿ ਅਵਤਾਰ ॥ ਸਿਧ ਸਮਾਧੀ ਸਭਿ ਸੁਣੀ
 ਜਾਇ ਦੇਖਾਂ ਦਰਬਾਰੁ ॥ ਅਗੈ ਸਚਾ ਸਚਿ ਨਾਇ ਨਿਰਭਤ ਭੈ ਵਿਣੁ ਸਾਰੁ ॥ ਹੋਰ ਕਚੀ ਮਤੀ ਕਚੁ ਪਿਚੁ ਅੰਧਿਆ
 ਅੰਧੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਮੀ ਬੰਦਗੀ ਨਦਰਿ ਲਮਘਾਏ ਪਾਰਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਦੁਰਮਤਿ ਗੱਈ
 ਮਤਿ ਪਰਗਟੀ ਆਇਆ ॥ ਨਾਤ ਮਨਿਐ ਹਤਮੈ ਗੱਈ ਸਭਿ ਰੋਗ ਗਵਾਇਆ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਨਾਮੁ ਊਪਜੈ
 ਸਹਜੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਸਾਂਤਿ ਊਪਜੈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਹੋਰੁ ਸਰੀਕੁ ਹੋਵੈ ਕੋਈ ਤੇਰਾ ਤਿਸੁ ਅਗੈ ਤੁਧੁ ਆਖਾਂ ॥ ਤੁਧੁ ਅਗੈ ਤੁਧੈ
 ਸਾਲਾਹੀ ਮੈ ਅੰਧੇ ਨਾਤ ਸੁਜਾਖਾ ॥ ਜੇਤਾ ਆਖਣੁ ਸਾਹੀ ਸਬਦੀ ਭਾਖਿਆ ਭਾਇ ਸੁਭਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਬਹੁਤਾ ਏਹੋ
 ਆਖਣੁ ਸਾਭ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਜਾਂ ਨ ਸਿਆ ਕਿਆ ਚਾਕਰੀ ਜਾਂ ਜਂਮੇ ਕਿਆ ਕਾਰ ॥ ਸਭਿ ਕਾਰਣ
 ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਦੇਖੈ ਵਾਰੇ ਵਾਰ ॥ ਜੇ ਚੁਪੈ ਜੇ ਮੰਗਿਐ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸਭਿ ਮਾਂਗਤੇ ਫਿਰਿ ਦੇਖਹਿ
 ਆਕਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਜੀਵੈ ਟੇਵਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਸੁਰਤਿ ਊਪਜੈ ਨਾਮੇ ਮਤਿ ਹੋਈ
 ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਗੁਣ ਤਚਰੈ ਨਾਮੇ ਸੁਖਿ ਸੋਈ ॥ ਨਾਇ ਮਨਿਐ ਭਰਮੁ ਕਟੀਐ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਨਾਇ
 ਮਨਿਐ ਸਾਲਾਹੀਐ ਪਾਪਾਂ ਮਤਿ ਧੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਤ ਮਨੀਐ ਜਿਨ ਦੇਵੈ ਸੋਈ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕ
 ਮਃ ੧ ॥ ਸਾਸਕ ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ਪਡੰਤਾ ॥ ਪ੍ਰਕਾਰਤਾ ਅਜਾਣਿਤਾ ॥ ਜਾਂ ਬੂੜ੍ਹੈ ਤਾਂ ਸੂੜ੍ਹੈ ਸੋਈ ॥ ਨਾਨਕੁ ਆਖੈ ਕੂਕ ਨ
 ਹੋਈ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਜਾਂ ਹਤ ਤੇਰਾ ਤਾਂ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੇਰਾ ਹਤ ਨਾਹੀ ਤੂ ਹੋਵਹਿ ॥ ਆਪੇ ਸਕਤਾ ਆਪੇ ਸੁਰਤਾ
 ਸਕਤੀ ਜਗਤੁ ਪਰੋਵਹਿ ॥ ਆਪੇ ਭੇਜੇ ਆਪੇ ਸਦੇ ਰਚਨਾ ਰਚਿ ਰਚਿ ਵੇਖੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਸਚੀ ਨਾਈ ਸਚੁ ਪਵੈ
 ਧੁਰਿ ਲੇਖੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਅਲਖੁ ਹੈ ਕਿਤ ਲਖਿਆ ਜਾਈ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਨਾਲਿ ਹੈ ਕਿਤ
 ਪਾਈਐ ਭਾਈ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਵਰਤਦਾ ਰਖਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਈਐ ਹਿਰਦੈ ਦੇਇ ਦਿਖਾਈ ॥
 ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਕਰਮੁ ਹੋਇ ਗੁਰ ਮਿਲੀਐ ਭਾਈ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਕਲਿ ਹੋਈ ਕੁਤੇ ਸੁਹੀ ਖਾਜੁ ਹੋਆ
 ਸੁਰਦਾਰੁ ॥ ਕੂਝੁ ਬੋਲਿ ਬੋਲਿ ਭਤਕਣਾ ਚੂਕਾ ਧਰਮੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਜਿਨ ਜੀਵਿੰਦਿਆ ਪਤਿ ਨਹੀ ਸੁਇਆ ਮੰਦੀ ਸੋਇ

॥ ਲਿਖਿਆ ਹੋਵੈ ਨਾਨਕਾ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਡਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਰਨਾ ਹੋਈਆ ਬੋਧੀਆ ਪੁਰਸ ਹੋਏ ਸੰਝਾਦ
 ॥ ਸੀਲੁ ਸੰਜਮੁ ਸੁਚ ਭਨੀ ਖਾਣਾ ਖਾਜੁ ਅਹਾਜੁ ॥ ਸਰਮੁ ਗਿਆ ਘਰਿ ਆਪਣੈ ਪਤਿ ਤਠਿ ਚਲੀ ਨਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸਚਾ ਏਕੁ ਹੈ ਅਤ਼ਰੁ ਨ ਸਚਾ ਭਾਲਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਬਾਹਰਿ ਭਸਮ ਲੇਪਨ ਕਰੇ ਅੰਤਰਿ ਗੁਬਾਰੀ ॥ ਖਿੰਥਾ ਝੋਲੀ
 ਬਹੁ ਭੇਖ ਕਰੇ ਦੁਰਮਤਿ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਸਾਹਿਬ ਸਬਦੁ ਨ ਊਚੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਸਾਰੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲਾਲਚੁ ਭਰਮੁ ਹੈ
 ਭਰਮੈ ਗਾਵਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਈ ਜੂਐ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਲਖ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੋਵੈ
 ਲਖ ਜੀਵਣੁ ਕਿਆ ਖੁਸੀਆ ਕਿਆ ਚਾਉ ॥ ਵਿਛੁਡਿਆ ਵਿਸੁ ਹੋਡਿ ਵਿਛੋਡਾ ਏਕ ਘੜੀ ਮਹਿ ਜਾਇ ॥ ਜੇ ਸਤ
 ਵਹਿਆ ਮਿਠਾ ਖਾਯੈ ਭੀ ਫਿਰਿ ਕਤਡਾ ਖਾਇ ॥ ਮਿਠਾ ਖਾਧਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਕਤਡਤਣੁ ਧਾਇ ਜਾਇ ॥ ਮਿਠਾ
 ਕਤਡਾ ਟੋਵੈ ਰੋਗ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਤਿ ਵਿਗੁਤੇ ਭੋਗ ॥ ਝਾਖਿ ਝਾਖਿ ਝਾਖਣਾ ਝਗੜਾ ਝਾਖ ॥ ਝਾਖਿ ਝਾਖਿ ਜਾਹਿ ਝਾਖਹਿ
 ਤਿਨੁ ਪਾਸਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਕਾਪੜੁ ਕਾਠੁ ਰੰਗਾਇਆ ਰੱਗਿ ॥ ਘਰ ਗਚ ਕੀਤੇ ਬਾਗੇ ਬਾਗ ॥ ਸਾਦ ਸਹਜ ਕਰਿ
 ਮਨੁ ਖੇਲਾਇਆ ॥ ਤੈ ਸਹ ਪਾਸਹੁ ਕਹਣੁ ਕਹਾਇਆ ॥ ਮਿਠਾ ਕਰਿ ਕੈ ਕਤਡਾ ਖਾਇਆ ॥ ਤਿਨਿ ਕਤਡੈ ਤਨਿ
 ਰੇਗੁ ਜਮਾਇਆ ॥ ਜੇ ਫਿਰਿ ਮਿਠਾ ਪੇਡੈ ਪਾਇ ॥ ਤਤ ਕਤਡਤਣੁ ਚੂਕਸਿ ਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਸੋਇ
 ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਲਿਖਿਆ ਹੋਡਿ ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਮੈਲੁ ਕਪਟੁ ਹੈ ਬਾਹਰੁ ਧੋਵਾਇਆ ॥ ਕੂਡੁ
 ਕਪਟੁ ਕਮਾਵਦੇ ਕੂਡੁ ਪਰਗਟੀ ਆਇਆ ॥ ਅੰਦਰਿ ਹੋਡਿ ਸੁ ਨਿਕਲੈ ਨਹ ਛਪੈ ਛਪਾਇਆ ॥ ਕੂਡੈ ਲਾਲਚਿ
 ਲਗਿਆ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋ ਬੀਜੈ ਸੋ ਖਾਵਣਾ ਕਰਤੈ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥
 ਕਥਾ ਕਹਾਣੀ ਕੇਂਦੰਦੀ ਆਣੀ ਪਾਪੁ ਪੁਨ੍ਨੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਦੇ ਦੇ ਲੈਣਾ ਲੈ ਲੈ ਦੇਣਾ ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ ਅਵਤਾਰ ॥ ਤਤਮ
 ਮਧਿਮ ਜਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਭਰਮਿ ਭਵੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਤਤੁ ਵਖਾਣੀ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਵਿਚਿ ਆਈ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤੀ ਸੁਰਤੀ ਕਰਮਿ ਧਿਆਈ ॥ ਹੁਕਮੁ ਸਾਜਿ ਹੁਕਮੈ ਵਿਚਿ ਰਖੈ ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਕੇਖੈ
 ॥ ਨਾਨਕ ਅਗਹੁ ਹਤਮੈ ਤੁਟੈ ਤਾਂ ਕੋ ਲਿਖੀਐ ਲੇਖੈ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਕੇਟੁ ਪੁਕਾਰੇ ਪੁਨ੍ਨੁ ਪਾਪੁ ਸੁਰਗ ਨਰਕ ਕਾ ਬੀਤ
 ॥ ਜੋ ਬੀਜੈ ਸੋ ਤੁਗਵੈ ਖਾਂਦਾ ਜਾਣੈ ਜੀਤ ॥ ਗਿਆਨੁ ਸਲਾਹੇ ਵਡਾ ਕਰਿ ਸਚੋ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥ ਸਚੁ ਬੀਜੈ ਸਚੁ ਤੁਗਵੈ

ਦਰਗਹ ਪਾਈਐ ਥਾਉ ॥ ਬੇਟੁ ਵਪਾਰੀ ਗਿਆਨੁ ਰਸਿ ਕਰਮੀ ਪਲੈ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਸੀ ਬਾਹਰਾ ਲਦਿ ਨ
 ਚਲਿਆ ਕੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਿੰਮੁ ਬਿਰਖੁ ਬਹੁ ਸੰਚੀਐ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥ ਬਿਸੀਅਰੁ ਮੰਤ੍ਰ ਵਿਸਾਹੀਐ
 ਬਹੁ ਦ੍ਰਿੜੁ ਪੀਆਇਆ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਅਭਿਨੁ ਨ ਭਿਜੈ ਪਥਰੁ ਨਾਵਾਇਆ ॥ ਬਿਖੁ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਿੰਚੀਐ ਬਿਖੁ
 ਕਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸੰਗਤਿ ਮੇਲਿ ਹਰਿ ਸਭ ਬਿਖੁ ਲਹਿ ਜਾਇਆ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਮਰਣਿ ਨ
 ਮੂਰਤੁ ਪੁਛਿਆ ਪੁਛੀ ਥਿਤਿ ਨ ਵਾਰੁ ॥ ਇਕਨ੍ਹੀ ਲਦਿਆ ਇਕਿ ਲਦਿ ਚਲੇ ਇਕਨ੍ਹੀ ਬਧੇ ਭਾਰ ॥ ਇਕਨਾ ਹੋਈ
 ਸਾਖਤੀ ਇਕਨਾ ਹੋਈ ਸਾਰ ॥ ਲਸਕਰ ਸਣੈ ਦਮਾਮਿਆ ਛੁਟੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰ ॥ ਨਾਨਕ ਢੇਰੀ ਛਾਰੁ ਕੀ ਭੀ ਫਿਰਿ
 ਹੋਈ ਛਾਰ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਢੇਰੀ ਢਹਿ ਪੰਝੀ ਮਿਟੀ ਸੰਦਾ ਕੋਟੁ ॥ ਭੀਤਰਿ ਚੋਰੁ ਬਹਾਲਿਆ ਖੋਟੁ ਵੇ ਜੀਆ
 ਖੋਟੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਨਿੰਦਾ ਦੁਸਟੁ ਹੈ ਨਕ ਵਠੇ ਨਕ ਵਢਾਇਆ ॥ ਮਹਾ ਕਰੂਪ ਦੁਖੀਏ ਸਦਾ ਕਾਲੇ
 ਮੁਹ ਮਾਇਆ ॥ ਭਲਕੇ ਤਠਿ ਨਿਤ ਪਰ ਦਰਖੁ ਹਿਰਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚੁਰਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਮਤ
 ਕਰਹੁ ਰਖਿ ਲੇਹੁ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਵਦੇ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੧੭॥ ਸਲੋਕ
 ਮਃ ੪ ॥ ਸਭੁ ਕੋਈ ਹੈ ਖਸਮ ਕਾ ਖਸਮਹੁ ਸਭੁ ਕੋ ਹੋਇ ॥ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਖਸਮ ਕਾ ਤਾ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਆਪੁ ਪਛਾਣੀਐ ਬੁਰਾ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਹਿਲਾ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥੧॥
 ਮਃ ੪ ॥ ਸਭਨਾ ਦਾਤਾ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪੇ ਮੇਲਣਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਿਲੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਜਿਨਾ ਸੇਵਿਆ ਹਰਿ
 ਦਾਤਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਸਾਁਤਿ ਹੈ ਨਾਤ ਤਗਵਿ ਆਇਆ ॥ ਜਪ ਤਪ ਤੀਰਥ ਸੰਜਮ ਕਰੇ ਮੇਰੇ
 ਪ੍ਰਭ ਭਾਇਆ ॥ ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ ਹਰਿ ਸੇਕਦੇ ਸੋਹਹਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਜੀਤ ਏਵੈ ਭਾਵਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਤਰਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਿਅਨੁ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਹਾਇਆ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਧਨਵੰਤਾ ਇਵ ਹੀ
 ਕਹੈ ਅਕਰੀ ਧਨ ਕਤ ਜਾਤ ॥ ਨਾਨਕੁ ਨਿਰਧਨੁ ਤਿਤੁ ਦਿਨਿ ਜਿਤੁ ਦਿਨਿ ਵਿਸਰੈ ਨਾਤ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸੂਰਜੁ ਚੱਡੈ
 ਵਿਜੋਗਿ ਸਭਸੈ ਘਟੈ ਆਰਜਾ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਰਤਾ ਭੋਗਿ ਕੋਈ ਹਾਰੈ ਕੋ ਜਿਣੈ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਭਰਿਆ ਫੂਕਿ ਆਖਣਿ ਕਹਣਿ
 ਨ ਥੰਮੀਐ ॥ ਨਾਨਕ ਵੇਖੈ ਆਪਿ ਫੂਕ ਕਢਾਏ ਢਹਿ ਪਵੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਜਿਥਹੁ ਹਰਿ

ਪਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਆਨੇਰੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਲੋਹਾ ਪਾਰਸਿ ਭੇਟੀਐ ਕੰਚਨੁ ਹੋਇ ਆਇਆ ॥
 ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਨਾਉ ਪਾਈਐ ਮਿਲਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਪੋਤੈ ਪੁਨ੍ ਹੈ ਤਿਨੀ ਦਰਸਨੁ
 ਪਾਇਆ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਧਿਗੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਜੀਵਿਆ ਜਿ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਵੇਚਹਿ ਨਾਉ ॥ ਖੇਤੀ ਜਿਨ ਕੀ
 ਤੁਜਡੈ ਖਲਵਾਡੇ ਕਿਆ ਥਾਉ ॥ ਸਚੈ ਸਰਮੈ ਬਾਹਰੇ ਅਗੈ ਲਹਹਿ ਨ ਦਾਦਿ ॥ ਅਕਲਿ ਏਹ ਨ ਆਖੀਐ ਅਕਲਿ
 ਗਰਵਾਈਐ ਬਾਦਿ ॥ ਅਕਲੀ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵੀਐ ਅਕਲੀ ਪਾਈਐ ਮਾਨੁ ॥ ਅਕਲੀ ਪਡਿ ਕੈ ਬੁੜੀਐ ਅਕਲੀ ਕੀਚੈ
 ਦਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕੁ ਆਖੈ ਰਾਹੁ ਏਹੁ ਹੋਰਿ ਗਲਾਂ ਸੈਤਾਨੁ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਜੈਸਾ ਕਰੈ ਕਹਾਵੈ ਤੈਸਾ ਐਸੀ ਬਨੀ ਜਰੂਰਤਿ
 ॥ ਹੋਵਹਿ ਲਿਮਡਿ ਝਿੰਡਿ ਨਹ ਹੋਵਹਿ ਐਸੀ ਕਹੀਐ ਸੂਰਤਿ ॥ ਜੋ ਓਸੁ ਇਛੇ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਏ ਤਾਂ ਨਾਨਕ ਕਹੀਐ ਮੂਰਤਿ
 ॥੨॥ ਪਤਡੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਿਰਖੁ ਹੈ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸਿ ਫਲਿਆ ॥ ਜਿਸੁ ਪਰਾਪਤਿ ਸੋ ਲਹੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ
 ਮਿਲਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰਲਿਆ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਕਈ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਬਲਿਆ
 ॥ ਨਾਨਕ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਫਿਰਿ ਗਰਭਿ ਨ ਗਲਿਆ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਸਚੁ ਵਰਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਤੀਰਥੁ
 ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਦਇਆ ਦੇਵਤਾ ਖਿਮਾ ਜਪਮਾਲੀ ਤੇ ਮਾਣਸ ਪਰਥਾਨ ॥ ਜੁਗਤਿ ਧੋਤੀ ਸੁਰਤਿ
 ਚਤਕਾ ਤਿਲਕੁ ਕਰਣੀ ਹੋਇ ॥ ਭਾਉ ਭੋਜਨੁ ਨਾਨਕਾ ਵਿਰਲਾ ਤ ਕੋਈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਤਮੀ ਨੇਮੁ ਸਚੁ
 ਜੇ ਕਰੈ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧੁ ਤ੃ਸਨਾ ਤਚਰੈ ॥ ਦਸਮੀ ਦਸੇ ਦੁਆਰ ਜੇ ਠਾਕੈ ਏਕਾਦਸੀ ਏਕੁ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ॥ ਦੁਆਦਸੀ ਪੰਚ
 ਕਵਸਗਤਿ ਕਰਿ ਰਾਖੈ ਤਤ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥ ਐਸਾ ਵਰਤੁ ਰਹੀਜੈ ਪਾਡੇ ਹੋਰ ਬਹੁਤੁ ਸਿਖ ਕਿਆ ਦੀਜੈ ॥੨॥
 ਪਤਡੀ ॥ ਭੂਪਤਿ ਰਾਜੇ ਰੰਗ ਰਾਇ ਸੰਚਹਿ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਹੇਤੁ ਵਧਾਇਦੇ ਪਰ ਦਰਖੁ ਚੁਰਾਇਆ ॥
 ਪੁਤ ਕਲਤ ਨ ਵਿਸਹਹਿ ਬਹੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਇਆ ॥ ਕੇਖਦਿਆ ਹੀ ਮਾਇਆ ਧੁਹਿ ਗੱਈ ਪਛੁਤਹਿ ਪਛੁਤਾਇਆ ॥
 ਜਮ ਦਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਾਇਆ ॥੨੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣਾ ਗਾਵੈ ਗੀਤ ॥ ਭੁਖੇ
 ਸੁਲਾਂ ਘਰੇ ਮਸੀਤਿ ॥ ਮਖਟੂ ਹੋਇ ਕੈ ਕਨਨ ਪਡਾਏ ॥ ਫਕਰੁ ਕਰੇ ਹੋਰੁ ਜਾਤਿ ਗਵਾਏ ॥ ਗੁਰੁ ਪੀਰੁ ਸਦਾਏ ਮੰਗਣ
 ਜਾਇ ॥ ਤਾ ਕੈ ਮੂਲਿ ਨ ਲਗੀਐ ਪਾਇ ॥ ਘਾਲਿ ਖਾਇ ਕਿਛੁ ਹਥਹੁ ਦੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਹੁ ਪਛਾਣਹਿ ਸੇਇ ॥੧॥

ਮਃ ੧ ॥ ਮਨਹੁ ਜਿ ਅੰਧੇ ਕੂਪ ਕਹਿਆ ਬਿਰਦੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ॥ ਮਨਿ ਅੰਧੈ ਤੰਧੈ ਕਵਲਿ ਦਿਸਨਿ ਖਰੇ ਕਰੂਪ ॥
 ਝਿਕਿ ਕਹਿ ਜਾਣਹਿ ਕਹਿਆ ਬੁੜਾਹਿ ਤੇ ਨਰ ਸੁਘੜ ਸਰੂਪ ॥ ਝਿਕਨਾ ਨਾਦ ਨ ਬੇਦ ਨ ਗੀਅ ਰਸੁ ਰਸ ਕਸ ਨ
 ਜਾਣਾਂਤਿ ॥ ਝਿਕਨਾ ਸੁਧਿ ਨ ਬੁਧਿ ਨ ਅਕਲਿ ਸਰ ਅਖਰ ਕਾ ਭੇਤ ਨ ਲਵਾਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇ ਨਰ ਅਸਲਿ ਖਰ ਜਿ
 ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਗਰਬੁ ਕਰਾਂਤਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਭ ਪਵਿਤੁ ਹੈ ਧਨੁ ਸੰਪੈ ਮਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਅਰਥਿ ਜੋ ਖਰਚਦੇ
 ਦੇਂਦੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਤਿਨ ਤੋਟਿ ਨ ਆਇਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਾਂ ਨਦਰੀ ਆਵਦਾ ਮਾਇਆ
 ਸੁਟਿ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤਾਂ ਹੋਰੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੰਡ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੨੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਨਿ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਜਿਨਾ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਗਿਰਹ ਕੁਟੰਬ ਮਹਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧੀ ॥
 ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਸਚੇ ਬੈਰਾਗੀ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਗਣਤੈ ਸੇਵ ਨ ਹੋਕੰਈ ਕੀਤਾ ਥਾਇ ਨ ਪਾਇ ॥ ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ
 ਨ ਆਇਓ ਸਚਿ ਨ ਲਗੇ ਭਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪਿਆਰਾ ਨ ਲਗੰਡ ਮਨਹਠਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਜੇ ਝਿਕ ਵਿਖ ਅਗਾਹਾ
 ਭੇ ਤਾਂ ਦੱਸ ਵਿਖਾਂ ਪਿਛਾਹਾ ਜਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਜੇ ਚਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥ ਆਪੁ ਗਵਾਇ
 ਸਤਿਗੁਰੂ ਨੋ ਮਿਲੈ ਸਹਜੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨਾ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸਚੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਖਾਨ ਮਲੂਕ ਕਹਾਇਦੇ ਕੋ ਰਹਣੁ ਨ ਪਾਈ ॥ ਗੜ ਮੰਦਰ ਗਚ ਗੀਰੀਆ ਕਿਛੁ ਸਾਥਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸੋਇਨ ਸਾਖਤਿ
 ਪਤਣ ਕੇਗ ਧਿਗ ਧਿਗ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਛਤੀਹ ਅੰਮ੍ਰਤ ਪਰਕਾਰ ਕਰਹਿ ਬਹੁ ਮੈਲੁ ਵਧਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋ ਟੇਵੈ
 ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣਨੀ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥੨੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਪਾਂਡਿਤ ਸੁਨੀ ਥਕੇ ਦੇਸ਼ਤਰ ਭਵਿ
 ਥਕੇ ਭੇਖਧਾਰੀ ॥ ਦ੍ਰਾਜੈ ਭਾਇ ਨਾਤ ਕਦੇ ਨ ਪਾਇਨਿ ਦੁਖੁ ਲਾਗਾ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ॥ ਮੂਰਖ ਅੰਧੇ ਲੈ ਗੁਣ ਸੇਵਹਿ
 ਮਾਇਆ ਕੈ ਬਿਤਹਾਰੀ ॥ ਅੰਦਰਿ ਕਪਟੁ ਤਦਰੁ ਭਰਣ ਕੈ ਤਾਈ ਪਾਠ ਪਡਹਿ ਗਾਵਾਰੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸੋ ਸੁਖੁ
 ਪਾਏ ਜਿਨ ਹਤਮੈ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਪਡਣਾ ਗੁਨਣਾ ਝਿਕੁ ਨਾਤ ਹੈ ਬੂੜੈ ਕੋ ਬੀਚਾਰੀ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਨਾਂਗੇ
 ਆਵਣਾ ਨਾਂਗੇ ਜਾਣਾ ਹਰਿ ਹੁਕਮੁ ਪਾਇਆ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥ ਜਿਸ ਕੀ ਵਸਤੁ ਸੋਈ ਲੈ ਜਾਇਗਾ ਰੋਸੁ ਕਿਸੈ ਸਿਤ
 ਕੀਜੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਭਾਣਾ ਮਨੇ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਦਾ ਸਲਾਹਿਹੁ ਰਸਨਾ ਰਾਮੁ

ਰਵੀਜੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਗਡਿ ਕਾਇਆ ਸੀਗਾਰ ਬਹੁ ਭਾੱਤਿ ਬਣਾਈ ॥ ਰੰਗ ਪਰੰਗ ਕਤੀਫਿਆ ਪਹਿਰਹਿ ਧਰ
 ਮਾਈ ॥ ਲਾਲ ਸੁਪੇਦ ਟੁਲੀਚਿਆ ਬਹੁ ਸਭਾ ਬਣਾਈ ॥ ਟੁਖੁ ਖਾਣਾ ਟੁਖੁ ਭੋਗਣਾ ਗਰਬੈ ਗਰਬਾਈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਅੰਤਿ ਲਏ ਛਡਾਈ ॥੨੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਹਜੇ ਸੁਖਿ ਸੁਤੀ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥ ਆਪੇ ਪ੍ਰਭਿ
 ਮੇਲਿ ਲਈ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥ ਦੁਬਿਧਾ ਚੂਕੀ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਸੇ ਕੰਠਿ ਲਾਏ
 ਜਿ ਭੰਨਿ ਘੜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋ ਧੁਰਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਹੁਣਿ ਆਣਿ ਮਿਲਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿਨ੍ਹੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ
 ਕਿਆ ਜਪੁ ਜਾਪਹਿ ਹੋਰਿ ॥ ਬਿਸਟਾ ਅੰਦਰਿ ਕੀਟ ਸੇ ਸੁਠੇ ਧੰਧੈ ਚੋਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਕੀਸਰੈ ਝੂਠੇ ਲਾਲਚ ਹੋਰਿ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਨਿ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਅਸਥਿਰੁ ਜਗਿ ਸੋਈ ॥ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਿਤਕੈ ਟ੍ਰੂਝਾ ਨਹੀ ਕੋਈ
 ॥ ਰੋਮਿ ਰੋਮਿ ਹਰਿ ਤੁਚਰੈ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਸਕਾਰਥਾ ਨਿਰਮਲੁ ਮਲੁ ਖੋਈ ॥ ਨਾਨਕ
 ਜੀਵਦਾ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇਆ ਅਮਰਾ ਪਦੁ ਹੋਈ ॥੨੫॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਬਹੁ ਕਰਮ
 ਕਮਾਵਹਿ ਹੋਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਜਿਤ ਸਨ੍ਹੀ ਤਪਰਿ ਚੋਰ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਧਰਤਿ ਸੁਹਾਵਡੀ
 ਆਕਾਸੁ ਸੁਝਾਦਾ ਜਪਦਿਆ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੁਣਿਆ ਤਿਨੁ ਤਨ ਖਾਵਹਿ ਕਾਉ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਨਿ ਭਾਉ ਕਰਿ ਨਿਜ ਮਹਲੀ ਵਾਸਾ ॥ ਓਡਿ ਬਾਹੁਡਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਵਨੀ ਫਿਰਿ ਹੋਹਿ ਨ ਬਿਨਾਸਾ ॥
 ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰੰਗਿ ਰਖਿ ਰਹੇ ਸਭ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸਾ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਰੁਂਗ ਕਦੇ ਨ ਤਤਰੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਓਡਿ
 ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਮੇਲਿਅਨੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪਾਸਾ ॥੨੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਜਿਚਰੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਹਰੀ ਵਿਚਿ ਹੈ ਹਤਮੈ
 ਬਹੁਤੁ ਅਛਕਾਰੁ ॥ ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਨ ਆਰੰਝ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸੇਵਾ ਥਾਇ ਨ ਪਰਵੰਝ ਤਿਸ ਕੀ ਖਪਿ ਖਪਿ
 ਹੋਡਿ ਖੁਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਵਕੁ ਸੋਈ ਆਖੀਐ ਜੋ ਸਿਰੁ ਧਰੇ ਤਤਾਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਮੰਨਿ ਲਏ ਸਬਦੁ
 ਰਖੈ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸੋ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਜੋ ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਆਪਤੁ
 ਗਵਾਵੈ ॥ ਮਿਲਿਆ ਕਦੇ ਨ ਵੀਛੁਡੈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੋ ਬੁਝਸੀ ਜਿਸੁ ਆਪਿ
 ਬੁਝਾਵੈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਲੇਖੇ ਵਿਚਿ ਹੈ ਮਨਮੁਖੁ ਅਛਕਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਦੇ ਨ ਚੇਰੰਝ ਜਮਕਾਲੁ

सिरि मारी ॥ पाप बिकार मनूर सभि लदे बहु भारी ॥ मारगु बिखमु डरावणा किउ तरीਐ तारी ॥
 नानक गुरि राखे से उबरे हरि नामि उधारी ॥ २७ ॥ सलोक मः ३ ॥ विणु सतिगुर सेवे सुखु नही मरि
 जंमहि वारो वार ॥ मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ॥ इकि गुर परसादी उबरे तिसु
 जन कउ करहि सभि नमसकार ॥ नानक अनदिनु नामु धिआइ तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर
 ॥ १ ॥ मः ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ सचु मरणा हरि नामु ॥ धंधा करतिआ जनमु गडिआ अंदरि
 दुखु सहामु ॥ नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ जिन् पूरबि लिखिआ करामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ लेखा
 पड़ीਐ हरि नामु फिरि लेखु न होई ॥ पुछि न सकै कोइ हरि दरि सद ढोई ॥ जमकालु मिलै दे भेट
 सेवकु नित होई ॥ पूरे गुर ते महलु पाइआ पति परगटु लोई ॥ नानक अनहद धुनी दरि वजदे
 मिलिआ हरि सोई ॥ २८ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥ गुर की करणी भउ
 कटीਐ नानक पावहि पारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सचु पुराणा ना थीਐ नामु न मैला होइ ॥ गुर कै भाणै जे चलै
 बहुड़ि न आवणु होइ ॥ नानक नामि विसारिऐ आवण जाणा दोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मंगत जनु जाचै
 दानु हरि देहु सुभाइ ॥ हरि दरसन की पिआस है दरसनि तृपताइ ॥ खिनु पलु घड़ी न जीवऊ
 बिनु देखे मराँ माइ ॥ सतिगुरि नालि दिखालिआ रवि रहिआ सभ थाइ ॥ सुतिआ आपि उठालि
 देइ नानक लिव लाइ ॥ २९ ॥ सलोक मः ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणनी ओना अंदरि कामु क्रोधु
 अह्न्यकारु ॥ थाउ कुथाउ न जाणनी सदा चितवहि बिकार ॥ दरगह लेखा मंगीਐ ओथै होहि कूड़िआर ॥
 आपे सूसटि उपाईअनु आपि करे बीचारु ॥ नानक किस नो आखीऐ सभु वरतै आपि सचिआरु ॥ १ ॥
 मः ३ ॥ हरि गुरमुखि तिनी अराधिआ जिन् करमि परापति होइ ॥ नानक हउ बलिहारी तिन् कउ
 जिन् हरि मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आस करे सभु लोकु बहु जीवणु जाणिआ ॥ नित जीवण कउ
 चितु गड़ि मंडप सवारिआ ॥ वलवंच करि उपाव माइआ हिरि आणिआ ॥ जमकालु निहाले सास

ਆਵ ਘਟੈ ਬੇਤਾਲਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਤਬਰੇ ਹਰਿ ਗੁਰ ਰਖਵਾਲਿਆ ॥੩੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
 ਪਡਿ ਪਡਿ ਪਂਡਿਤ ਵਾਟੁ ਵਖਾਣਦੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਸੁਆਇ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਮਨ ਮੂਰਖ ਮਿਲੈ
 ਸਜਾਇ ॥ ਜਿਨ੍ਹਿ ਕੀਤੇ ਤਿਸੈ ਨ ਸੇਵਨੀ ਦੇਦਾ ਰਿਜਕੁ ਸਮਾਇ ॥ ਜਮ ਕਾ ਫਾਹਾ ਗਲਹੁ ਨ ਕਟੀਐ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ
 ਆਵਹਿ ਜਾਇ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰੂਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਿਆ ਤਿਨ ਆਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ
 ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਚੁ ਵਣਜਹਿ ਸਚੁ ਸੇਵਦੇ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕੈ
 ਭਾਣੈ ਜੇ ਚਲਹਿ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਸਾ ਵਿਚਿ ਅਤਿ ਦੁਖੁ ਘਣਾ ਮਨਮੁਖਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ
 ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਏ ਨਿਰਾਸ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਵਿਚੇ ਗਿਰਹ ਉਦਾਸ ਅਲਿਪਤ ਲਿਵ ਲਾਇਆ ॥ ਓਨਾ ਸੋਗੁ
 ਵਿਜੋਗੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਹਰਿ ਭਾਣਾ ਭਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਸਦਾ ਰਵਿ ਰਹੇ ਧੁਰਿ ਲਾਏ ਮਿਲਾਇਆ ॥੩੧॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਪਰਾਈ ਅਮਾਣ ਕਿਤ ਰਖੀਐ ਦਿਤੀ ਹੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਥੈ ਟਿਕੈ ਹੋਰ ਥੈ ਪਰਗਟੁ
 ਨ ਹੋਇ ॥ ਅਨ੍ਤੇ ਵਸਿ ਮਾਣਕੁ ਪਾਇਆ ਘਰਿ ਘਰਿ ਵੇਚਣ ਜਾਇ ॥ ਓਨਾ ਪਰਖ ਨ ਆਵੈ ਅਛੁ ਨ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥
 ਜੇ ਆਪਿ ਪਰਖ ਨ ਆਵੈ ਤਾਂ ਪਾਰਖੀਆ ਥਾਵਹੁ ਲਿਝਿਆ ਪਰਖਾਇ ॥ ਜੇ ਓਸੁ ਨਾਲਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਤਾਂ ਵਥੁ ਲਹੈ
 ਨਤ ਨਿਧਿ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥ ਘਰਿ ਹੋਦੈ ਧਨਿ ਜਗੁ ਭੁਖਾ ਮੁਆ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੋਝੀ ਨ ਹੋਇ ॥ ਸਬਦੁ ਸੀਤਲੁ ਮਨਿ
 ਤਨਿ ਵਸੈ ਤਿਥੈ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਵਸਤੁ ਪਰਾਈ ਆਪਿ ਗਰਬੁ ਕਰੇ ਮੂਰਖੁ ਆਪੁ ਗਣਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ
 ਬ੍ਰੂਜੇ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਏ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਿਆ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ
 ਸਰਸੇ ਸਜਣ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਮਿਲੇ ਨ ਵਿਛੁੜਹਿ ਕਬਹੂ ਜਿ ਆਪਿ ਮੇਲੇ ਕਰਤਾਰੇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ
 ਰਵਿਆ ਗੁਰੂ ਪਾਇਆ ਸਗਲੇ ਦ੍ਰਖ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਦਾ ਸਲਾਹੀ ਅੰਤਰਿ ਰਖਾਂ ਤਰ ਧਾਰੇ ॥ ਮਨਮੁਖੁ
 ਤਿਨ ਕੀ ਬਖੀਲੀ ਕਿ ਕਰੇ ਜਿ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਓਨਾ ਦੀ ਆਪਿ ਪਤਿ ਰਖਸੀ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਸਰਣਾਗਤਿ
 ਪਏ ਗੁਰ ਦੁਆਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇ ਸੁਹੇਲੇ ਭਏ ਸੁਖ ਊਜਲ ਦਰਬਾਰੇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਸਤਰੀ ਪੁਰਖੈ ਬਹੁ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਿਲਿ ਮੋਹੁ ਵਧਾਇਆ ॥ ਪੁਤੁ ਕਲਤੁ ਨਿਤ ਵੇਖੈ ਵਿਗਸੈ ਮੋਹਿ ਮਾਇਆ ॥ ਦੇਸਿ ਪਰਦੇਸਿ ਧਨੁ ਚੋਰਾਇ

आणि मुहि पाइआ ॥ अंति होवै वैर विरोधु को सकै न छडाइआ ॥ नानक विणु नावै धिगु मोहु जितु
 लगि दुखु पाइआ ॥३२॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि अंमूतु नामु है जितु खाधै सभ मुख जाइ ॥ तृसना
 मूलि न होवई नामु वसै मनि आइ ॥ बिनु नावै जि होरु खाणा तितु रोगु लगै तनि धाइ ॥ नानक रस
 कस सबदु सलाहणा आपे लए मिलाइ ॥१॥ मः ३ ॥ जीआ अंदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा
 होइ ॥ बिनु सबदै जगि आनेरु है सबदे परगटु होइ ॥ पंडित मोनी पड़ि पड़ि थके भेख थके तनु धोइ
 ॥ बिनु सबदै किनै न पाइओ दुखीए चले रोइ ॥ नानक नदरी पाईअै करमि परापति होइ ॥२॥
 पउड़ी ॥ इसत्री पुरखै अति नेहु बहि मंदु पकाइआ ॥ दिसदा सभु किछु चलसी मेरे प्रभ भाइआ ॥
 किउ रहीअै थिरु जगि को कढहु उपाइआ ॥ गुर पूरे की चाकरी थिरु कंधु सबाइआ ॥ नानक बखसि
 मिलाइअनु हरि नामि समाइआ ॥३३॥ सलोक मः ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ गुर का भउ हेतु
 अपारु ॥ लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ॥ गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह
 मोख दुआरु ॥ नानक आपे मेलि लए आपे बखसणहारु ॥१॥ मः ४ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न
 जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सितु किउ मन रूसीअै जिसहि हमारी चिंद ॥२॥ मः ४ ॥ सावणु
 आइआ झिमझिमा हरि गुरमुखि नामु धिआइ ॥ दुख भुख काड़ा सभु चुकाइसी मीहु वुठा छहबर
 लाइ ॥ सभ धरति भई हरीआवली अन्नु जंमिआ बोहल लाइ ॥ हरि अचिंतु बुलावै कृपा करि हरि
 आपे पावै थाइ ॥ हरि तिसहि धिआवहु संत जनहु जु अंते लए छडाइ ॥ हरि कीरति भगति अन्नदु
 है सदा सुखु वसै मनि आइ ॥ जिना गुरमुखि नामु अराधिआ तिना दुख भुख लहि जाइ ॥ जन नानकु
 तृपतै गाइ गुण हरि दरसनु देहु सुभाइ ॥३॥ पउड़ी ॥ गुर पूरे की दाति नित देवै चड़ै सवाईआ
 ॥ तुसि देवै आपि दइआलु न छपै छपाईआ ॥ हिरदै कवलु प्रगासु उनमनि लिव लाईआ ॥ जे को
 करे उस दी रीस सिरि छाई पाईआ ॥ नानक अपड़ि कोड़ि न सकई पूरे सतिगुर की वडिआईआ

॥੩੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਅਮਰੁ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ਸਿਆਣਪ ਨ ਚਲਈ ਨ ਹੁਜਤਿ ਕਰਣੀ ਜਾਇ ॥
 ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਸਰਣਾਇ ਪਵੈ ਮੰਨਿ ਲਏ ਰਿਆਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਮ ਢੰਡੁ ਨ ਲਗੈ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਸੇਵਕੁ ਸੋਈ ਆਖੀਐ ਜਿ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਦਾਤਿ ਜੋਤਿ ਸਭ ਸੂਰਤਿ ਤੇਰੀ ॥ ਬਹੁਤੁ
 ਸਿਆਣਪ ਹਉਮੈ ਮੇਰੀ ॥ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵਹਿ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪੇ ਹਉਮੈ ਕਦੇ ਨ ਚੂਕੈ ਫੇਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਆਪਿ
 ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਗਲ ਚੰਗੇਰੀ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ਮਃ ੫ ॥ ਸਚੁ ਖਾਣਾ ਸਚੁ ਪੈਨਣਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ
 ਅਧਾਰੁ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਮੇਲਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥ ਭਾਗੁ ਪੂਰਾ ਤਿਨ ਜਾਗਿਆ ਜਪਿਆ ਨਿਰਂਕਾਰੁ ॥ ਸਾਧੂ
 ਸੰਗਤਿ ਲਗਿਆ ਤਰਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਿਫਤਿ ਸਲਾਹ ਕਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਜੈਕਾਰੁ ॥੩੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
 ਸਭੇ ਜੀਅ ਸਮਾਲਿ ਅਪਣੀ ਮਿਹਰ ਕਰੁ ॥ ਅਨੁ ਪਾਣੀ ਮੁਚੁ ਉਪਾਇ ਟੁਖ ਦਾਲਦੁ ਭੰਨਿ ਤਰੁ ॥ ਅਰਦਾਸਿ
 ਸੁਣੀ ਦਾਤਾਰਿ ਹੋਈ ਸਿਸਟਿ ਠਰੁ ॥ ਲੇਵਹੁ ਕੱਠਿ ਲਗਾਇ ਅਪਦਾ ਸਭ ਹਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਪ੍ਰਭ ਕਾ
 ਸਫਲੁ ਘਰੁ ॥੧॥ ਮਃ ੫ ॥ ਕੁਠੇ ਮੇਘ ਸੁਹਾਵਣੇ ਹੁਕਮੁ ਕੀਤਾ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਰਿਜਕੁ ਉਪਾਇਓਨੁ ਅਗਲਾ ਠਾਂਢਿ
 ਪਈ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹਰਿਆ ਹੋਇਆ ਸਿਮਰਤ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੀ ਸਚੇ
 ਸਿਰਜਣਹਾਰ ॥ ਕੀਤਾ ਲੋਡ਼ਹਿ ਸੋ ਕਰਹਿ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕਵਡਾ ਆਪਿ ਅਗੰਮੁ ਹੈ
 ਕਵਡੀ ਕਵਿਆਈ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੇਖਿ ਵਿਗਸਿਆ ਅੰਤਰਿ ਸਾਁਤਿ ਆਈ ॥ ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਕਰਤਦਾ ਆਪੇ
 ਹੈ ਭਾਈ ॥ ਆਪਿ ਨਾਥੁ ਸਭ ਨਥੀਅਨੁ ਸਭ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਸਭ ਚਲੈ ਰਿਆਈ
 ॥੩੬॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

ਰਾਗੁ ਸਾਰੰਗ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾਂ ਕੀ ॥ ਕਕੀਰ ਜੀ ॥ ੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਹਾ ਨਰ ਗਰਬਸਿ ਥੋਰੀ ਬਾਤ ॥ ਮਨ ਦਸ ਨਾਜੁ ਟਕਾ ਚਾਰਿ ਗਾੱਠੀ ਔੱਡੈ ਟੇਢੈ ਜਾਤੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਹੁਤੁ
 ਪ੍ਰਤਾਪੁ ਗਾੱਤ ਸਤ ਪਾਏ ਟੁਡਿ ਲਖ ਟਕਾ ਬਰਾਤ ॥ ਦਿਵਸ ਚਾਰਿ ਕੀ ਕਰਹੁ ਸਾਹਿਬੀ ਜੈਸੇ ਬਨ ਹਰ ਪਾਤ ॥੧॥
 ਨਾ ਕੋਤੁ ਲੈ ਆਇਆ ਇਹੁ ਧਨੁ ਨਾ ਕੋਤੁ ਲੈ ਜਾਤੁ ॥ ਰਾਵਨ ਹੁੰ ਤੇ ਅਧਿਕ ਛਕਪਤਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਗਏ ਬਿਲਾਤ

॥੨॥ हरि के संत सदा थिरु पूजहु जो हरि नामु जपात ॥ जिन कउ कृपा करत है गोबिदु ते सतसंगि
मिलात ॥३॥ मात पिता बनिता सुत संपति अंति न चलत संगात ॥ कहत कबीरु राम भजु बउरे
जनमु अकारथ जात ॥४॥१॥ राजास्रम मिति नही जानी तेरी ॥ तेरे संतन की हउ चेरी ॥१॥
रहाउ ॥ हसतो जाइ सु रोवतु आवै रोवतु जाइ सु हसै ॥ बसतो होइ होइ सु ऊजरु ऊजरु होइ सु बसै
॥१॥ जल ते थल करि थल ते कूआ कूप ते मेरु करावै ॥ धरती ते आकासि चढावै चढे अकासि गिरावै
॥२॥ भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥ खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥३॥
नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥ कहु कबीर साधू को प्रीतमु तिसु मूरति बलिहारी ॥४॥२॥

सारंग बाणी नामदेउ जी की ॥

੧੮੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥ भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे मीनु पानी महि रहै ॥
काल जाल की सुधि नही लहै ॥ जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥ औसे कनिक कामनी बाधिओ मोह ॥१॥
जित मधु माखी संचै अपार ॥ मधु लीनो मुखि दीनी छारु ॥ गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥ गला बाँधि दुहि
लेइ अहीरु ॥२॥ माइਆ कारनि स्रमु अति करै ॥ सो माइਆ लै गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नही
मूङ ॥ धनु धरती तनु होइ गइओ धूङि ॥३॥ काम क्रोध तृसना अति जरै ॥ साधसंगति कबहू नही
करै ॥ कहत नामदेउ ता ची आण ॥ निरभै होइ भजीਐ भगवान ॥४॥१॥ बदहु की न होड माधउ मो
सित ॥ ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सित ॥१॥ रहाउ ॥ आपन देउ देहुरा आपन
आप लगावै पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥१॥ आपहि गावै आपहि
नाचै आपि बजावै तूरा ॥ कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥२॥२॥ दास अनिन्न मेरो
निज रूप ॥ दरਸन निमख ताप कई मोचन परसत मुकति करत गृह कूप ॥१॥ रहाउ ॥ मेरी बाँधी

ਭਗਤੁ ਛਡਾਵੈ ਬਾਂਧੈ ਭਗਤੁ ਨ ਛੂਟੈ ਮੋਹਿ ॥ ਏਕ ਸਮੈ ਮੋ ਕਤ ਗਹਿ ਬਾਂਧੈ ਤਤ ਫੁਨਿ ਮੋ ਪੈ ਜਬਾਬੁ ਨ ਹੋਇ
॥੧॥ ਮੈ ਗੁਨ ਬੰਧ ਸਗਲ ਕੀ ਜੀਵਨਿ ਮੇਰੀ ਜੀਵਨਿ ਮੇਰੇ ਦਾਸ ॥ ਨਾਮਦੇਵ ਜਾ ਕੇ ਜੀਅ ਐਸੀ ਤੈਸੋ ਤਾ ਕੈ
ਧੇਮ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥੨॥੩॥

ਸਾਰਂਗ ॥

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੈ ਨਰ ਕਿਆ ਪੁਰਾਨੁ ਸੁਨਿ ਕੀਨਾ ॥ ਅਨਪਾਵਨੀ ਭਗਤਿ ਨਹੀ ਉਪਜੀ ਭ੍ਰਖੈ ਦਾਨੁ ਨ ਦੀਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਕਾਮੁ ਨ ਬਿਸਰਿਐ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨ ਬਿਸਰਿਐ ਲੋਭੁ ਨ ਛੂਟਿਐ ਦੇਵਾ ॥ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਮੁਖ ਤੇ ਨਹੀ ਛੂਟੀ ਨਿਫਲ ਭਈ ਸਮਭ
ਸੇਵਾ ॥੧॥ ਬਾਟ ਪਾਰਿ ਘਰੁ ਮੂਸਿ ਬਿਰਾਨੋ ਪੇਟੁ ਭਰੈ ਅਪ੍ਰਾਧੀ ॥ ਜਿਹਿ ਪਰਲੋਕ ਜਾਇ ਅਪਕੀਰਤਿ ਸੋਈ
ਅਵਿਦਿਆ ਸਾਧੀ ॥੨॥ ਛਿਸਾ ਤਤ ਮਨ ਤੇ ਨਹੀ ਛੂਟੀ ਜੀਅ ਦਿਇਆ ਨਹੀ ਪਾਲੀ ॥ ਪਰਮਾਨਨਦ ਸਾਧਸੰਗਤਿ
ਮਿਲਿ ਕਥਾ ਪੁਨੀਤ ਨ ਚਾਲੀ ॥੩॥੧॥੬॥

ਛਾਡਿ ਮਨ ਹਰਿ ਬਿਮੁਖਨ ਕੋ ਸਾਂਗੁ ॥

ਸਾਰਂਗ ਮਹਲਾ ੫ ਸੂਰਦਾਸ ॥

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸਾਂਗ ਬਸੇ ਹਰਿ ਲੋਕ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਰਪਿ ਸਰਬਸੁ ਸਮੁ ਅਰਪਿਐ ਅਨਦ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਝੋਕ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਿ ਭਏ ਨਿਰਵਿਖੰਨ ਪਾਏ ਹੈ ਸਗਲੇ ਥੋਕ ॥ ਆਨ ਬਸਤੁ ਸਿਤ ਕਾਜੁ ਨ ਕਛੂਐ ਸੁੰਦਰ
ਬਦਨ ਅਲੋਕ ॥੧॥ ਸਿਆਮ ਸੁੰਦਰ ਤਜਿ ਆਨ ਜੁ ਚਾਹਤ ਜਿਤ ਕੁਸਟੀ ਤਨਿ ਜੋਕ ॥ ਸੂਰਦਾਸ ਮਨੁ ਪ੍ਰਭਿ
ਹਥਿ ਲੀਨੋ ਦੀਨੋ ਇਹੁ ਪਰਲੋਕ ॥੨॥੧॥੮॥

ਸਾਰਂਗ ਕਬੀਰ ਜੀਤ ॥

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਤਨੁ ਸਹਾਈ ਮਨ ਕਾ ॥

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਹਿਤੁ ਲਾਗੇ ਸਮਫਨ ਕਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਗੇ ਕਤ ਕਿਛੁ ਤੁਲਹਾ ਬਾਂਧਹੁ
ਕਿਆ ਭਰਵਾਸਾ ਧਨ ਕਾ ॥ ਕਹਾ ਬਿਸਾਸਾ ਇਸ ਭਾੱਡੇ ਕਾ ਇਤਨਕੁ ਲਾਗੈ ਠਨਕਾ ॥੧॥ ਸਗਲ ਧਰਮ ਪੁਨ ਫਲ
ਪਾਵਹੁ ਧੂਰਿ ਬਾਂਛਹੁ ਸਮਫਨ ਕਾ ॥ ਕਹੈ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤਡਨ ਪੰਖੇਰੁ ਬਨ ਕਾ ॥੨॥੧॥੯॥

ਰਾਗੁ ਮਲਾਰ ਚਤਪਦੇ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧

੧ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਹਸਣਾ ਸਤਣਾ ਵਿਸਰਿ ਗਿਆ ਹੈ ਮਰਣਾ ॥ ਖਸਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਖੁਆਰੀ ਕੀਨੀ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਨਹੀਂ
ਰਹਣਾ ॥੧॥ ਪ੍ਰਾਣੀ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ॥ ਅਪਨੀ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਵਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੁਧਨੋ ਸੇਵਹਿ
ਤੁੜ੍ਹੁ ਕਿਆ ਦੇਵਹਿ ਮਾਂਗਹਿ ਲੇਵਹਿ ਰਹਹਿ ਨਹੀਂ ॥ ਤੂ ਦਾਤਾ ਜੀਆ ਸਭਨਾ ਕਾ ਜੀਆ ਅੰਦਰਿ ਜੀਤ ਤੁਹੀ ॥੨॥
ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਵਹਿ ਸਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪਾਵਹਿ ਸੇਈ ਸੂਚੇ ਹੋਹੀ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਰੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਮੈਲੇ ਹਛੇ ਹੋਹੀ
॥੩॥ ਜੇਹੀ ਰੁਤਿ ਕਾਇਆ ਸੁਖੁ ਤੇਹਾ ਤੇਹੋ ਜੇਹੀ ਦੇਹੀ ॥ ਨਾਨਕ ਰੁਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ਸਾਈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਰੁਤਿ ਕੇਹੀ
॥੪॥੧॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਕਰਤ ਬਿਨਤ ਗੁਰ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਹਰਿ ਕਰੁ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥ ਸੁਣਿ ਘਨ ਘੋਰ
ਸੀਤਲੁ ਮਨੁ ਮੌਰਾ ਲਾਲ ਰਤੀ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਬਰਸੁ ਘਨਾ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਭੀਨਾ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਕੁੰਦ ਸੁਹਾਨੀ ਹੀਅਰੈ
ਗੁਰਿ ਮੋਹੀ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰਸਿ ਲੀਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਹਜਿ ਸੁਖੀ ਕਰ ਕਾਮਣਿ ਪਿਆਰੀ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਮਨੁ
ਮਾਨਿਆ ॥ ਹਰਿ ਕਰਿ ਨਾਰਿ ਭਈ ਸੋਹਾਗਣਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਸੁਖਾਨਿਆ ॥੨॥ ਅਵਗਣ ਤਿਆਗਿ ਭਈ
ਬੈਰਾਗਨਿ ਅਸਥਿਰੁ ਕਰੁ ਸੋਹਾਗੁ ਹਰੀ ॥ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਤਿਸੁ ਕਦੇ ਨ ਵਿਆਪੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀ
॥੩॥ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਨਹੀਂ ਮਨੁ ਨਿਹਚਲੁ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਓਟ ਗਹੀ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਨੁ
ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਚੁ ਸਹੀ ॥੪॥੨॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸਾਚੀ ਸੁਰਤਿ ਨਾਮਿ ਨਹੀਂ ਤ੃ਪਤੇ ਹਤਮੈ ਕਰਤ

ਗਵਾਇਆ ॥ ਪਰ ਧਨ ਪਰ ਨਾਰੀ ਰਤੁ ਨਿੰਦਾ ਬਿਖੁ ਖਾਈ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਸਬਦੁ ਚੀਨਿ ਮੈ ਕਪਟ ਨ ਛੂਟੇ ਮਨਿ
ਮੁਖਿ ਮਾਇਆ ਮਾਇਆ ॥ ਅਜਗਰਿ ਭਾਰਿ ਲਦੇ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ਮਰਿ ਜਨਮੇ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥ ਮਨਿ ਭਾਵੈ
ਸਬਦੁ ਸੁਹਾਇਆ ॥ ਭਰਮਿ ਭਰਮਿ ਜੋਨਿ ਭੇਖ ਬਹੁ ਕੀਨੇ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੀਰਥਿ ਤੇਜੁ
ਨਿਵਾਰਿ ਨ ਨਾਤੇ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥੁ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗਿਆ ਜਤ ਕੋ ਤਤ ਹੀ ਆਇਆ ॥
ਬਿਸਟਾ ਕੀਟ ਭਏ ਉਤ ਹੀ ਤੇ ਉਤ ਹੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਅਧਿਕ ਸੁਆਦ ਰੋਗ ਅਧਿਕਾਈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਹਜੁ ਨ
ਪਾਇਆ ॥੨॥ ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਰਹਸਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥ ਖੋਜੀ ਉਪਯੈ ਬਾਟੀ ਬਿਨਸੈ ਹਤ
ਬਲਿ ਬਲਿ ਗੁਰ ਕਰਤਾਰਾ ॥ ਹਮ ਨੀਚ ਹੋਤੇ ਹੀਣਮਤਿ ਝੂਠੇ ਤ੍ਰ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥ ਆਤਮ ਚੀਨਿ ਤਹਾ ਤ੍ਰ
ਤਾਰਣ ਸਚੁ ਤਾਰੇ ਤਾਰਣਹਾਰਾ ॥੩॥ ਕੈਸਿ ਸੁਥਾਨਿ ਕਹਾਁ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਕਿਆ ਕਿਆ ਕਥਤ ਅਪਾਰਾ ॥ ਅਲਖੁ ਨ
ਲਖੀਐ ਅਗਮੁ ਅਜੋਨੀ ਤ੍ਰ ਨਾਥਾਁ ਨਾਥਣਹਾਰਾ ॥ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਦੇਖਿ ਕਹਤ ਤ੍ਰ ਕੈਸਾ ਸਭਿ ਜਾਚਕ ਤ੍ਰ ਦਾਤਾਰਾ ॥
ਭਗਤਿਹੀਣੁ ਨਾਨਕੁ ਦਰਿ ਦੇਖਹੁ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਰਿ ਧਾਰਾ ॥੪॥੩॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਿਨਿ ਧਨ
ਪਿਰ ਕਾ ਸਾਡੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ਸਾ ਬਿਲਖ ਬਦਨ ਕੁਮਲਾਨੀ ॥ ਭਈ ਨਿਰਾਸੀ ਕਰਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਰਮਿ
ਮੁਲਾਨੀ ॥੧॥ ਬਰਸੁ ਘਨਾ ਮੇਰਾ ਪਿੱਲ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥ ਬਲਿ ਜਾਵਾਁ ਗੁਰ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਮੁ
ਆਣ ਮਿਲਾਇਆ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਉਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਠਾਕੁਰ ਸਿਤ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ॥ ਮੁਕਤਿ
ਭਏ ਗੁਰਿ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਇਆ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਭਗਤਿ ਸੁਭਾਵੀ ॥੨॥ ਹਮ ਥਾਰੇ ਤ੍ਰਭਵਣ ਜਗੁ ਤੁਮਰਾ ਤ੍ਰ ਮੇਰਾ ਹਤ
ਤੇਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ਬਹੁਰਿ ਨ ਭਵਜਲਿ ਫੇਰਾ ॥੩॥ ਅਪੁਨੇ ਪਿਰ ਹਰਿ ਦੇਖਿ
ਵਿਗਾਸੀ ਤਤ ਧਨ ਸਾਚੁ ਸੀਗਾਰੇ ॥ ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨ ਸਿਤ ਸਚਿ ਸਾਚੀ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥੪॥ ਮੁਕਤਿ
ਭਈ ਬੰਧਨ ਗੁਰਿ ਖੋਲੇ ਸਬਦਿ ਸੁਰਤਿ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ
॥੫॥੪॥ ਮਹਲਾ ੧ ਮਲਾਰ ॥ ਪਰ ਦਾਰਾ ਪਰ ਧਨੁ ਪਰ ਲੋਭਾ ਹਤਮੈ ਬਿਖੈ ਬਿਕਾਰ ॥ ਦੁਸਟ ਭਾਤ ਤਜਿ ਨਿੰਦ
ਪਰਾਈ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਚੰਡਾਰ ॥੧॥ ਮਹਲ ਮਹਿ ਬੈਠੇ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥ ਭੀਤਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਵੈ ਜਿਸੁ

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਤਨੁ ਆਚਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਖ ਸੁਖ ਦੋਊ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਸੰਸਾਰ ॥ ਸੁਧਿ
ਬੁਧਿ ਸੁਰਤਿ ਨਾਮਿ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਗੁਰ ਪਿਆਰ ॥੨॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ
ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਿਖ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਕਰਤਾਰੁ ॥੩॥ ਕਾਇਆ
ਮਹਲੁ ਮੰਦਰੁ ਘਰੁ ਹਰਿ ਕਾ ਤਿਸੁ ਮਹਿ ਰਾਖੀ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਈਐ ਹਰਿ
ਮੇਲੇ ਮੇਲਣਹਾਰ ॥੪॥੫॥

ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਵਣੈ ਪਾਣੀ ਜਾਣੈ ਜਾਤਿ ॥ ਕਾਇਆਁ ਅਗਨਿ ਕਰੇ ਨਿਭਰਾਂਤਿ ॥ ਜੰਮਹਿ ਜੀਅ ਜਾਣੈ ਜੇ ਥਾਤ ॥ ਸੁਰਤਾ ਪੰਡਿਤੁ
ਤਾ ਕਾ ਨਾਤ ॥੧॥ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਨ ਜਾਣੀਅਹਿ ਮਾਇ ॥ ਅਣਡੀਠਾ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਕਿਆ ਕਰਿ
ਆਖਿ ਵਖਾਣੀਐ ਮਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਊਪਰਿ ਦਰਿ ਅਸਮਾਨਿ ਪਇਆਲਿ ॥ ਕਿਤ ਕਰਿ ਕਹੀਐ ਦੇਹੁ
ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਬਿਨੁ ਜਿਹਵਾ ਜੋ ਜਪੈ ਹਿਆਇ ॥ ਕੋਈ ਜਾਣੈ ਕੈਸਾ ਨਾਤ ॥੨॥ ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਰਹੈ ਨਿਭਰਾਂਤਿ ॥
ਸੋ ਬੂੰਝੈ ਹੋਵੈ ਜਿਸੁ ਦਾਤਿ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਅੰਤਰਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਸੋਈ ਪੁਰਖੁ ਜਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਜਾਤਿ
ਕੁਲੀਨੁ ਸੇਵਕੁ ਜੇ ਹੋਇ ॥ ਤਾ ਕਾ ਕਹਣਾ ਕਹਹੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਵਿਚਿ ਸਨਾਤਿੀ ਸੇਵਕੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਪਣੀਆ
ਪਹਿਰੈ ਸੋਇ ॥੪॥੧॥੬॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਦੁਖੁ ਵੇਛੋੜਾ ਇਕੁ ਦੁਖੁ ਭੂਖ ॥ ਇਕੁ ਦੁਖੁ ਸਕਤਵਾਰ ਜਮਦੂਤ
॥ ਇਕੁ ਦੁਖੁ ਰੋਗੁ ਲਗੈ ਤਨਿ ਧਾਇ ॥ ਵੈਦ ਨ ਭੋਲੇ ਦਾਰੁ ਲਾਇ ॥੧॥ ਵੈਦ ਨ ਭੋਲੇ ਦਾਰੁ ਲਾਇ ॥ ਦਰਦੁ ਹੋਵੈ
ਦੁਖੁ ਰਹੈ ਸਰੀਰ ॥ ਐਸਾ ਦਾਰੁ ਲਗੈ ਨ ਬੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਖਸਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਕੀਏ ਰਸ ਭੋਗ ॥ ਤਾਂ ਤਨਿ ਤਠਿ
ਖਲੋਏ ਰੋਗ ॥ ਮਨ ਅੰਧੇ ਕਤ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥ ਵੈਦ ਨ ਭੋਲੇ ਦਾਰੁ ਲਾਇ ॥੨॥ ਚੰਦਨ ਕਾ ਫਲੁ ਚੰਦਨ ਵਾਸੁ ॥
ਮਾਣਸ ਕਾ ਫਲੁ ਘਟ ਮਹਿ ਸਾਸੁ ॥ ਸਾਸਿ ਗਿੜਾਈ ਕਾਇਆ ਢਲਿ ਪਾਇ ॥ ਤਾ ਕੈ ਪਾਛੈ ਕੋਇ ਨ ਖਾਇ ॥੩॥
ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਨਿਰਮਲ ਛਾਸੁ ॥ ਜਿਸੁ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਅੰਸੁ ॥ ਦੂਖ ਰੋਗ ਸਭਿ ਗਿੜਾਈ ਗਵਾਇ ॥
ਨਾਨਕ ਛੂਟਸਿ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੪॥੨॥੭॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਦੁਖ ਮਹੂਰਾ ਮਾਰਣ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥ ਸਿਲਾ

ਸੰਤੋਖ ਪੀਸਣੁ ਹਥਿ ਦਾਨੁ ॥ ਨਿਤ ਨਿਤ ਲੇਹੁ ਨ ਛੀਜੈ ਦੇਹ ॥ ਅੰਤ ਕਾਲਿ ਜਮੁ ਮਾਰੈ ਠੇਹ ॥੧॥ ਐਸਾ ਦਾਰੁ
 ਖਾਹਿ ਗਵਾਰ ॥ ਜਿਤੁ ਖਾਈ ਤੇਰੇ ਜਾਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ਜੋਬਨੁ ਸਭੁ ਛਾਂਵ ॥ ਰਥਿ ਫਿਰਦੈ
 ਦੀਸਹਿ ਥਾਵ ॥ ਦੇਹ ਨ ਨਾਉ ਨ ਹੋਵੈ ਜਾਤਿ ॥ ਓਥੈ ਦਿਹੁ ਐਥੈ ਸਭ ਰਾਤਿ ॥੨॥ ਸਾਦ ਕਰਿ ਸਮਧਾਁ ਤੂਸਨਾ
 ਘਿਤ ਤੇਲੁ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਗਨੀ ਸਿਤ ਮੇਲੁ ॥ ਹੋਮ ਜਗ ਅਰੁ ਪਾਠ ਪੁਰਾਣ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਪਰਵਾਣ ॥੩॥
 ਤਪੁ ਕਾਗਦੁ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਨੀਸਾਨੁ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਲਿਖਿਆ ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਸੇ ਧਨਵਂਤ ਦਿਸਹਿ ਘਰਿ ਜਾਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਜਨਨੀ ਧਨੀ ਮਾਇ ॥੪॥੩॥੮॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਬਾਗੇ ਕਾਪੜੇ ਬੋਲੈ ਬੈਣ ॥ ਲਮਮਾ ਨਕੁ ਕਾਲੇ
 ਤੇਰੇ ਨੈਣ ॥ ਕਬਹੂੰ ਸਾਹਿਬੁ ਦੇਖਿਆ ਭੈਣ ॥੧॥ ਊਡਾਂ ਊਡਿ ਚੜਾਂ ਅਸਮਾਨਿ ॥ ਸਾਹਿਬ ਸੰਮੂਥ ਤੈਰੈ ਤਾਣਿ ॥
 ਜਲਿ ਥਲਿ ਝੂਂਗਰਿ ਦੇਖਾਂ ਤੀਰ ॥ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਸਾਹਿਬੁ ਬੀਰ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਤਨੁ ਸਾਜਿ ਦੀਏ ਨਾਲਿ ਖੰਭ ॥
 ਅਤਿ ਤੂਸਨਾ ਤਡਣੈ ਕੀ ਡੱਝ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾਂ ਬੰਧਾਂ ਧੀਰ ॥ ਜਿਤ ਵੇਖਾਲੇ ਤਿਤ ਵੇਖਾਂ ਬੀਰ ॥੩॥ ਨ ਝਿਹੁ
 ਤਨੁ ਜਾਇਗਾ ਨ ਜਾਹਿਗੇ ਖੰਭ ॥ ਪਤਣੈ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ ਕਾ ਸਨਬੰਧ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਜਪੀਐ ਕਰਿ ਗੁਰੁ
 ਧੀਰੁ ॥ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ਏਹੁ ਸਰੀਰੁ ॥੪॥੪॥੬॥

ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੧

੧੯੬ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਿਰਂਕਾਰੁ ਆਕਾਰੁ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥ ਕਰਿ ਕਰਿ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਜਿਤੁ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਲਾਏ ॥
 ਸੇਵਕ ਕਤ ਏਹਾ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਕਤ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਏ ॥੧॥ ਆਪਣਾ ਭਾਣਾ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ
 ਲਹੀਐ ॥ ਏਹਾ ਸਕਤਿ ਸਿਵੈ ਘਰਿ ਆਵੈ ਜੀਵਦਿਆ ਮਰਿ ਰਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਵੇਦ ਪਡੈ ਪਡਿ ਵਾਦੁ
 ਵਖਾਣੈ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸਾ ॥ ਏਹ ਤ੍ਰਗੁਣ ਮਾਇਆ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਭੁਲਾਇਆ ਜਨਮ ਮਰਣ ਕਾ ਸਹਸਾ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਚੂਕੈ ਮਨਹੁ ਅੰਦੇਸਾ ॥੨॥ ਹਮ ਦੀਨ ਮੂਰਖ ਅਵੀਚਾਰੀ ਤੁਮ ਚਿੰਤਾ ਕਰਹੁ ਹਮਾਰੀ ॥
 ਹੋਹੁ ਦਿਇਆਲ ਕਰਿ ਦਾਸੁ ਦਾਸਾ ਕਾ ਸੇਵਾ ਕਰੀ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਏਕੁ ਨਿਧਾਨੁ ਦੇਹਿ ਤੂ ਅਪਣਾ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ
 ਵਖਾਣੀ ॥੩॥ ਕਹਤ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੂझਹੁ ਕੋਈ ਐਸਾ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰਾ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਊਪਰਿ ਫੇਨੁ

ਬੁਦਬੁਦਾ ਤੈਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਜਿਸ ਤੇ ਹੋਆ ਤਿਸਹਿ ਸਮਾਣਾ ਚੂਕਿ ਗਇਆ ਪਾਸਾਰਾ ॥੪॥੧॥ ਮਲਾਰ
 ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜਿਨੀ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸੇ ਮੇਲੇ ਹਤਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਚਿ
 ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਸਦਾ ਸਚੁ ਹਰਿ ਕੇਖਦੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਹੁਕਮੁ ਮੰਨਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਪ੍ਰਭ
 ਭਾਣਾ ਅਪਣਾ ਭਾਵਦਾ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੈ ਗੁਣ ਸਭਾ ਧਾਤੁ ਹੈ ਨਾ ਹਰਿ
 ਭਗਤਿ ਨ ਭਾਇ ॥ ਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਕਦੇ ਨ ਹੋਰਵੰਡੀ ਹਤਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਸਾਹਿਬ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਪਿਛਾਇ ਕਿਰਤਿ
 ਫਿਰਾਇ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟਿਐ ਮਨੁ ਮਰਿ ਰਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਕਹਣਾ
 ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਚਤੁਰੈ ਪਦਿ ਵਾਸਾ ਹੋਇਆ ਸਚੈ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੩॥ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਹੈ
 ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁੜੀਐ ਸਬਦੇ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਇ ॥੪॥੨॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੌਰੈ ਵਿਰਲਾ ਕ੍ਰਿਝੈ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਗੁਰ
 ਬਿਨੁ ਦਾਤਾ ਕੌਰੈ ਨਾਹੀ ਬਖਸੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਸਾਂਤਿ ਊਪਜੈ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਲਏਇ ॥੧॥
 ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲੈ ਨਾਤ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਸਦਾ ਸਮਾਇ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਸਦਾ ਵਿਛੁਡੇ ਫਿਰਹਿ ਕੋਇ ਨ ਕਿਸ ਹੀ ਨਾਲਿ ॥ ਹਤਮੈ ਕਡਾ ਰੋਗੁ ਹੈ ਸਿਰ ਮਾਰੇ ਜਮਕਾਲਿ
 ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਸਤਸਙਗਤਿ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੨॥ ਸਭਨਾ ਕਰਤਾ ਏਕੁ ਤੂ ਨਿਤ ਕਰਿ ਦੇਖਹਿ
 ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਇਕਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ਬਖਸੇ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਕਿਸੁ ਆਗੈ
 ਕਰੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ॥੩॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੈ ਨਦਰੀ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਉਚਰੈ ਗੁਰ ਕੈ
 ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਨਾਮੇ ਹੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥੪॥੩॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰੂ ਸਾਲਾਹੀ
 ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਸੋਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਕਡੀ ਵਡਿਆਈ ਹੋਈ ॥
 ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਿਤ ਸਾਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਈ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਿਟੈ ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਤਜਿ ਕੂਡੂ
 ਕੁਟਂਬੁ ਹਤਮੈ ਬਿਖੁ ਤ੃ਸਨਾ ਚਲਣੁ ਰਿਟੈ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਰਾਮ ਨਾਮ ਕਾ ਹੋਰੁ ਦਾਤਾ

ਕੋਈ ਨਾਹੀ ॥ ਜੀਅ ਦਾਨੁ ਦੇਇ ਤ੍ਰਪਤਾਸੇ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰਵਿਆ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜਿ
 ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਹੀ ॥੨॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭੇਦਿਆ ਹਿਰਦੈ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਲਖੁ ਨ
 ਜਾਈ ਲਖਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਆਪੇ ਦਿਆ ਕਰੇ ਸੁਖਦਾਤਾ ਜਪੀਐ ਸਾਰਿਗਪਾਣੀ ॥੩॥
 ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਬਹੁਡਿ ਨ ਹੋਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਧਿਆਇਆ ॥ ਮਨ ਹੀ ਤੇ ਮਨੁ ਮਿਲਿਆ ਸੁਆਮੀ ਮਨ ਹੀ
 ਮਨੁ ਸਮਾਇਆ ॥ ਸਾਚੇ ਹੀ ਸਚੁ ਸਾਚਿ ਪਤੀਜੈ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥੪॥ ਏਕੋ ਏਕੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਸੁਆਮੀ
 ਢੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੈ ਸੀਠਾ ਜਗਿ ਨਿਰਮਲ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭੂ ਤੇ ਪਾਈਐ
 ਜਿਨ ਕਤ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਹੋਈ ॥੫॥੪॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗਣ ਗੰਧਰਬ ਨਾਮੇ ਸਭਿ ਉਧਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ
 ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਸਦ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਜਿਸਹਿ ਬੁੜਾਏ ਸੋਈ ਕੂੜੀ
 ਜਿਸ ਨੋ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਬਾਣੀ ਸਬਦੇ ਗਾਂਵੈ ਸਾਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਖਿਨੁ
 ਖਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਦਾਤਿ ਸਬਦ ਸੁਖੁ ਅੰਤਰਿ ਸਦਾ ਨਿਕਹੈ ਤੈਰੈ ਨਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖ
 ਪਾਖਿੰਡੁ ਕਦੇ ਨ ਚੂਕੈ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਬਿਖਿਆ ਮਨਿ ਰਤੇ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥ ਇਹ
 ਕੇਲਾ ਫਿਰਿ ਹਥਿ ਨ ਆਵੈ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਪਛੁਤਾਏ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਕਦੇ ਨ ਕੂੜੀ ਵਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਏ
 ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਉਧਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ
 ਰਾਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਮਤਿ ਊਤਮ ਊਤਮ ਬਾਣੀ ਹੋਈ ॥ ਏਕੋ ਪੁਰਖੁ ਏਕੁ ਪ੍ਰਭੁ
 ਜਾਤਾ ਢੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੩॥ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਗੁਰ ਕੀ
 ਬਾਣੀ ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਸਮੇਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਵਸਿਆ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਲਖਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ
 ਤਿਸੁ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਇ ॥੪॥੫॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ਦੁਤੁਕੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਵੈ ਘਰੁ ਦਰੁ ਮਹਲੁ
 ਸੁ ਥਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਚੂਕੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੧॥ ਜਿਨ ਕਤ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਨਾਮੁ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਧਿਆਵਹਿ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨ ਕੀ ਬਿਧਿ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਜਾਣੈ

ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਗੈ ਸਦ ਹਰਿ ਸਿਉ ਧਿਆਨੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸਾਚੀ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ
 ॥੨॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਖੇਲੈ ਹੁਕਮ ਕਾ ਬਾਧਾ ਇਕ ਖਿਨ ਮਹਿ ਦਹ ਦਿਸ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ॥ ਜਾਂ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਹਰਿ
 ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਤਾਂ ਇਹੁ ਮਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤਕਾਲ ਵਸਿ ਆਵੈ ॥੩॥ ਇਸੁ ਮਨ ਕੀ ਬਿਧਿ ਮਨ ਹੂ ਜਾਣੈ ਬ੍ਰਾਝੈ ਸਬਦਿ
 ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸਦਾ ਤੂ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਜਿਤੁ ਪਾਵਹਿ ਪਾਰਿ ॥੪॥੬॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਪ੍ਰਾਣ ਸਭਿ ਤਿਸ ਕੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਏਕਸੁ ਬਿਨੁ ਮੈ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਣਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ
 ਬੁੜਾਈ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਨਾਮਿ ਰਹਤ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਅਦਿਸਟੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਹਰਿ
 ਧਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਭੀਜੈ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ਸਹਜੇ ਰਹੇ ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਭਸੁ ਭਤ ਭਾਗੈ
 ਏਕ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੨॥ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸਚੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ਗਤਿ ਮਤਿ ਤਬ ਹੀ ਪਾਈ ॥ ਕੋਟਿ ਮਥੇ ਕਿਸਹਿ
 ਬੁੜਾਏ ਤਿਨਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੩॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਏਕੋ ਸੋਈ ਇਹ ਗੁਰਮਤਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ॥ ਮਨੁ
 ਤਨੁ ਪ੍ਰਾਨ ਧਰੀ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਨਾਨਕ ਆਪੁ ਗਰਾਈ ॥੪॥੭॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਢੂਖ
 ਨਿਵਾਰਣੁ ਸਬਦੇ ਪਾਇਆ ਜਾਈ ॥ ਭਗਤੀ ਰਾਤੇ ਸਦ ਬੈਰਾਗੀ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਮਨ ਸਿਉ
 ਰਹਤ ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਤਿ
 ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਗੁਰਮਤਿ ਦੇਇ ਬੁੜਾਈ ॥ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਕਰਣੀ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੨॥
 ਆਪੇ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਸਾਖੀ ਆਪੇ ਜਿਨ੍ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥ ਦੇਹੀ ਕਾਚੀ ਪਤਣੁ ਵਜਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਈ
 ॥੩॥ ਆਪੇ ਸਾਜੇ ਸਭ ਕਾਰੈ ਲਾਏ ਸੋ ਸਚੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੌਈ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਨਾਮੇ
 ਦੇਇ ਵਡਾਈ ॥੪॥੮॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਹਤਮੈ ਬਿਖੁ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ਲਦਿਆ ਅਜਗਰ ਭਾਰੀ ॥ ਗੁਰੂ
 ਸਬਦੁ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਹਤਮੈ ਬਿਖੁ ਹਰਿ ਮਾਰੀ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਹਤਮੈ ਮੋਹੁ ਢੂਖੁ ਭਾਰੀ ॥ ਇਹੁ ਭਵਜਲੁ ਜਗਤੁ
 ਨ ਜਾਈ ਤਰਣਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੁ ਹਰਿ ਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਪਸਾਰਾ ਸਭ ਵਰਤੈ
 ਆਕਾਰੀ ॥ ਤੁਰੀਆ ਗੁਣੁ ਸਤਸਙਗਤਿ ਪਾਈਐ ਨਦਰੀ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰੀ ॥੨॥ ਚੰਦਨ ਗੰਧ ਸੁਗੰਧ ਹੈ ਬਹੁ

ਬਾਸਨਾ ਬਹਕਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਕਰਣੀ ਊਤਮ ਹੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਜਗਿ ਬਿਸਥਾਰਿ ॥੩॥ ਕ੃ਪਾ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਠਾਕੁਰ
ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਾ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਜਪਿਆ ਨਾਮੁ ਸੁਰਾਰਿ ॥੪॥੬॥

ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੂ ੨

੧੭੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਗਿਰਹੀ ਕਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਉਦਾਸੀ ॥ ਕਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਅਵਰਨੁ ਸਦਾ ਅਵਿਨਾਸੀ ॥ ਕਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ
ਕਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਇਸੁ ਮਨ ਕਤ ਮਮਤਾ ਕਿਥਹੁ ਲਾਗੀ ॥੧॥ ਪਂਡਿਤ ਇਸੁ ਮਨ ਕਾ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
ਅਵਰੁ ਕਿ ਬਹੁਤਾ ਪੜਹਿ ਤਠਾਵਹਿ ਭਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਕਰਤੈ ਲਾਈ ॥ ਏਹੁ ਹੁਕਮੁ ਕਰਿ
ਸੂਸਟਿ ਉਪਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੂਜਾਹੁ ਭਾਈ ॥ ਸਦਾ ਰਹਹੁ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥ ਸੋ ਪਂਡਿਤੁ ਜੋ ਤਿਹਾਁ
ਗੁਣਾ ਕੀ ਪੰਡ ਤਤਾਰੈ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਓਹੁ ਦੀਖਿਆ ਲੇਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਆਗੈ
ਸੀਸੁ ਧਰੇਇ ॥ ਸਦਾ ਅਲਗੁ ਰਹੈ ਨਿਰਖਾਣੁ ॥ ਸੋ ਪਂਡਿਤੁ ਦਰਗਹ ਪਰਕਾਣੁ ॥੩॥ ਸਭਨਾਂ ਮਹਿ ਏਕੋ ਏਕੁ
ਵਖਾਣੈ ॥ ਜਾਂ ਏਕੋ ਕੋਖੈ ਤਾਂ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥ ਜਾ ਕਤ ਬਖਸੇ ਮੇਲੇ ਸੋਇ ॥ ਅੈਥੈ ਓਥੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੪॥ ਕਹਤ
ਨਾਨਕੁ ਕਵਨ ਬਿਧਿ ਕਰੇ ਕਿਆ ਕੋਇ ॥ ਸੋਈ ਮੁਕਤਿ ਜਾ ਕਤ ਕਿਰਪਾ ਹੋਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੋਇ ॥
ਸਾਸਤਰ ਬੇਦ ਕੀ ਫਿਰਿ ਕੂਕ ਨ ਹੋਇ ॥੫॥੧॥੧੦॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਜੋਨਿ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਾਈ
॥ ਜਮਕਾਲੁ ਮਾਰੇ ਨਿਤ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਜਮ ਕੀ ਕਾਣਿ ਚੁਕਾਈ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਮਹਲੁ
ਘਰੁ ਪਾਈ ॥੧॥ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਦੁਬਿਧਾ ਖੋਇਆ ਕਤਡੀ ਬਦਲੈ ਜਾਇ
॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਰਿ ਧਾਰੁ ॥ ਭਵਜਲੁ
ਸਬਦਿ ਲਮਧਾਵਣਹਾਰੁ ॥ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਦਿਸੈ ਸਚਿਆਰੁ ॥੨॥ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥ ਬਿਨੁ
ਗੁਰ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ ਬਹੁ ਮਾਇਆ ॥ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਬਹੁ ਮੋਹੁ ਵਧਾਇਆ ॥ ਟ੍ਰੈ ਭਾਇ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ
॥੩॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਅਗਮ ਅਥਾਹਾ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਜਪੀਐ ਸਚੁ ਲਾਹਾ ॥ ਹਾਜਰੁ ਹਜ਼ਰਿ ਹਰਿ ਵੇਪਰਵਾਹਾ ॥

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹਾ ॥੪॥੨॥੧੧॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੀਵਤ ਮੁਕਤ ਗੁਰਮਤੀ ਲਾਗੇ ॥
 ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦ ਜਾਗੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਹਿ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਹਉ ਤਿਨ ਜਨ ਕੇ ਸਦ ਲਾਗਤ
 ਪਾਇ ॥੧॥ ਹਉ ਜੀਵਾਂ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਮੁਕਤਿ
 ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਅਗਿਆਨੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੋਹੇ ਮੁਗਧ ਗਵਾਰ ॥ ਅਨਦਿਨੁ
 ਧੰਧਾ ਕਰਤ ਵਿਹਾਇ ॥ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜ਼ਮਹਿ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੨॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਕੂੰਡੈ
 ਲਾਲਚਿ ਨਾ ਲਪਟਾਈ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਹਹਿ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਰਸਨ ਰਸਾਇ ॥੩॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ
 ਕਿਸਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਮਿਲਿਆ ਸੁ ਵਿਛੁਡਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ॥੪॥੩॥੧੨॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਸਭੁ ਕੌਈ ਕਹੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਤਾ ਨਾਮੁ ਲਹੈ
 ॥ ਬੰਧਨ ਤੋਡੇ ਮੁਕਤਿ ਘਰਿ ਰਹੈ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਅਸਥਿਰੁ ਘਰਿ ਬਹੈ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕਾਹੇ ਰੋਸੁ ਕਰੀਜੈ ॥ ਲਾਹਾ
 ਕਲਜੁਗਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮਤਿ ਅਨਦਿਨੁ ਹਿਰਦੈ ਰਵੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਬੀਹਾ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਬਿਲਲਾਇ ॥
 ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਦੇਖੇ ਨੰਦ ਨ ਪਾਇ ॥ ਛਿਹੁ ਵੇਛੋਡਾ ਸਹਿਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤਾਂ ਮਿਲੈ ਸੁਭਾਇ ॥੨॥
 ਨਾਮਹੀਣੁ ਬਿਨਸੈ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ॥ ਤੂਸਨਾ ਜਲਿਆ ਭ੍ਰਾਖ ਨ ਜਾਇ ॥ ਵਿਣੁ ਭਾਗਾ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
 ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਥਾਕਾ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥੩॥ ਤੈ ਗੁਣ ਬਾਣੀ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਬਿਖਿਆ ਮੈਲੁ ਬਿਖਿਆ ਵਾਪਾਰੁ ॥
 ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਫਿਰਿ ਹੋਹਿ ਖੁਆਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੁਰੀਆ ਗੁਣੁ ਤਰਿ ਧਾਰੁ ॥੪॥ ਗੁਰੁ ਮਾਨੈ ਮਾਨੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
 ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥ ਚਹੁ ਜੁਗਿ ਸੋਭਾ ਨਿਰਮਲ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਕੋਇ
 ॥੫॥੪॥੧੩॥੬॥੧੩॥੨੨॥

ਰਾਗ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ਚਤੁਪਦੇ

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਹਿਰਦੈ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਟ੍ਰੂਖ ਵਿਸਾਰੀ ॥ ਸਭ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਬੰਧਨ ਤ੍ਰੂਟੇ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੧॥ ਨੈਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਾਗੀ ਤਾਰੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਖਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਬਿਗਸਿਆ ਜਨੁ

हरि भेटिओ बनवारी ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि ऐसा नामु विसारिआ मेरा हरि हरि तिस कै कुलि लागी
 गारी ॥ हरि तिस कै कुलि परसूति न करीअहु तिसु बिधवा करि महतारी ॥२॥ हरि हरि आनि
 मिलावहु गुरु साधू जिसु अहिनिसि हरि उरि धारी ॥ गुरि डीठै गुर का सिखु बिगसै जित बारिकु
 देखि महतारी ॥३॥ धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ गुरि पूरै हउमै भीति
 तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥४॥१॥ मलार महला ४ ॥ गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि
 उटमु धूरि साधू की ताई ॥ किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई
 ॥१॥ तीरथि अठसठि मजनु नाई ॥ सतसंगति की धूरि परी उड़ि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई
 ॥१॥ रहाउ ॥ जाहरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई ॥ काँसी कृसनु चरावत
 गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई ॥२॥ जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई
 ॥ हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिस की धूरि मुखि लाई ॥३॥ जितनी सृसटि तुमरी मेरे सुआमी
 सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई ॥ नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि
 लम्घाई ॥४॥२॥ मलार महला ४ ॥ तिसु जन कउ हरि मीठ लगाना जिसु हरि हरि कृपा करै ॥
 तिस की भूख दूख सभि उतरै जो हरि गुण हरि उचरै ॥१॥ जपि मन हरि हरि हरि निस्तरै ॥ गुर के
 बचन करन सुनि धिआवै भव सागरु पारि परै ॥१॥ रहाउ ॥ तिसु जन के हम हाटि बिहाझे जिसु
 हरि हरि कृपा करै ॥ हरि जन कउ मिलिआँ सुखु पाईअै सभ दुरमति मैलु हरै ॥२॥ हरि जन कउ
 हरि भूख लगानी जनु तृपतै जा हरि गुन बिचरै ॥ हरि का जनु हरि जल का मीना हरि बिसरत फूटि
 मरै ॥३॥ जिनि एह प्रीति लाई सो जानै कै जानै जिसु मनि धरै ॥ जनु नानकु हरि देखि सुखु पावै सभ
 तन की भूख टरै ॥४॥३॥ मलार महला ४ ॥ जितने जीअ जंत प्रभि कीने तितने सिरि कार लिखावै ॥
 हरि जन कउ हरि दीन् वडाई हरि जनु हरि करै लावै ॥१॥ सतिगुरु हरि हरि नामु दृङ्गावै ॥

हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजलु जगतु तरावै ॥੧॥ रहाउ ॥ जो गुर कउ जनु पूजे सेवे
 सो जनु मेरे हरि प्रभ भावै ॥ हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि कਿਰਪਾ ਆਪਿ ਤਰਾਵੈ ॥੨॥ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ
 ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁਲੇ ਭਰਮਿ ਭਰਮਿ ਫੂਲ ਤੋਰਾਵੈ ॥ ਨਿਰਜੀਉ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੜਾ ਸਰੇਵਹਿ ਸਭ ਬਿਰਥੀ ਘਾਲ ਗਵਾਵੈ
 ॥੩॥ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬਿੰਦੇ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਹੀਐ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਛਾਦਨ ਭੋਜਨ ਪਾਟ
 ਪਟਂਬਰ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮੁਖਿ ਸੰਚਹੁ ਤਿਸੁ ਪੁਨਨ ਕੀ ਫਿਰਿ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥੪॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਤ ਪਰਤਖਿ
 ਹਰਿ ਮੂਰਤਿ ਜੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਨਾਨਕ ਭਾਗ ਭਲੇ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੇ ਜੋ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵੈ ॥੫॥੪॥
 ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਹੀਅਰੈ ਬਸਿਓ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੇ ਸੰਤ ਭਲੇ ਭਲ ਭਾੱਤਿ ॥ ਤਿਨ੍ ਦੇਖੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ
 ਬਿਗਸੈ ਹਤ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਂਤ ॥੧॥ ਗਿਆਨੀ ਹਰਿ ਬੋਲਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥ ਤਿਨ੍ ਕੀ ਤ੃ਸਨਾ ਭੂਖ ਸਭ
 ਤਰੀ ਜੋ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਖਾਂਤਿ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਸਾਧ ਸਖਾ ਜਨ ਜਿਨ ਮਿਲਿਆ ਲਹਿ
 ਜਾਇ ਭਰਾਂਤਿ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਦੁਧ ਮਿਨ ਮਿਨ ਕਾਢੈ ਚੁਣਿ ਛਾਸੁਲਾ ਤਿਤ ਦੇਹੀ ਤੇ ਚੁਣਿ ਕਾਢੈ ਸਾਧੂ ਹਤਮੈ ਤਾਤਿ
 ॥੨॥ ਜਿਨ ਕੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਤੇ ਕਪਟੀ ਨਰ ਨਿਤ ਕਪਟੁ ਕਮਾਂਤਿ ॥ ਤਿਨ ਕਉ ਕਿਆ ਕੋਈ ਦੇਇ
 ਖਵਾਲੈ ਓਡਿ ਆਪਿ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਂਤਿ ॥੩॥ ਹਰਿ ਕਾ ਚਿਹਨੁ ਸੋਈ ਹਰਿ ਜਨ ਕਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਜਨ ਮਹਿ
 ਆਪੁ ਰਖਾਂਤਿ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਸਮਦਰਸੀ ਜਿਨਿ ਨਿੰਦਾ ਉਸਤਤਿ ਤਰੀ ਤਰਾਂਤਿ ॥੪॥੫॥
 ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਜਪਿ ਲਡਿਆ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਾਧ
 ਪਾਈ ਵਡਭਾਗੀ ਸਾਂਗਿ ਸਾਧੂ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥੧॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਅਨਦਿਨੁ ਅਨਦੁ ਭਡਿਆ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ
 ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਮੈਰੇ ਮਨ ਕਾ ਭਰਮੁ ਭਤ ਗਡਿਆ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਗਡਿਆ ਜਿਨ ਹਰਿ
 ਜਪਿਆ ਤਿਨ ਸਾਂਗਤਿ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਕਰਿ ਮਡਿਆ ॥ ਤਿਨ ਕਾ ਦਰਸੁ ਦੇਖਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਫੁਖੁ ਹਤਮੈ ਰੋਗ
 ਗਡਿਆ ॥੨॥ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਸਫਲੁ ਭਡਿਆ ॥ ਓਡਿ ਆਪਿ
 ਤਰੇ ਸੂਸਟਿ ਸਭ ਤਾਰੀ ਸਭੁ ਕੁਲੁ ਭੀ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥੩॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਤਪਾਇਆ ਸਭੁ ਜਗੁ ਤੁਧੁ

आपे वसि करि लड़िਆ ॥ जन नानक कउ प्रभि किरपा धारी बिखु डुबदा काढि लड़िआ ॥४॥६॥
 मलार महला ४ ॥ गुर परसादी अंमृतु नहीं पीआ तृसना भूख न जाई ॥ मनमुख मूँड जलत
 अह्मकारी हउमै विचि दुखु पाई ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई ॥
 जिस ते उपजे तिसहि न चेतहि धिगु जीवणु धिगु खाई ॥१॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआई ॥
 हरि हरि कृपा करे गुरु मेले हरि हरि नामि समाई ॥२॥ रहाउ ॥ मनमुख जनमु भड़िआ है
 बिरथा आवत जात लजाई ॥ कामि क्रोधि ढूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥ तिन सिधि न
 बुधि भई मति मधिम लोभ लहरि दुखु पाई ॥ गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे बिललाई
 ॥२॥ हरि का नामु अगोचरु पाइआ गुरमुखि सहजि सुभाई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि
 रसना हरि गुण गाई ॥ सदा अन्नदि रहै दिनु राती एक सबदि लिव लाई ॥ नामु पदारथु
 सहजे पाइआ इह सतिगुर की वडिआई ॥३॥ सतिगुर ते हरि हरि मनि वसिआ सतिगुर
 कउ सद बलि जाई ॥ मनु तनु अरपि रखउ सभु आगै गुर चरणी चितु लाई ॥ अपणी कृपा
 करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई ॥ हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लम्घाई ॥४॥७॥

मलार महला ४ पड़ताल घरु ३

९८ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जन बोलत स्रीराम नामा मिलि साधसंगति हरि तोर ॥१॥ रहाउ ॥ हरि धनु बनजहु हरि धनु
 संचहु जिसु लागत है नहीं चोर ॥२॥ चातृक मोर बोलत दिनु राती सुनि घनिहर की घोर ॥२॥
 जो बोलत है मृग मीन पंखेरु सु बिनु हरि जापत है नहीं होर ॥३॥ नानक जन हरि कीरति गाई
 छूटि गड़िओ जम का सभ सोर ॥४॥१॥८॥ मलार महला ४ ॥ राम राम बोलि बोलि खोजते बड़भागी
 ॥ हरि का पंथु कोऊ बतावै हउ ता कै पाड़ि लागी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हमारो मीतु सखाई हम हरि सित

ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਗੀ ॥ ਹਰਿ ਹਮ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਮ ਬੋਲਹਿ ਅਤਰੁ ਦੁਤੀਆ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਮ ਤਿਆਗੀ ॥੧॥ ਮਨਮੋਹਨ
ਮੋਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਾਮੁ ਹਰਿ ਪਰਮਾਨੰਦੁ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਹਰਿ ਦੇਖੇ ਜੀਵਤ ਹੈ ਨਾਨਕੁ ਇਕ ਨਿਮਖ ਪਲੋ ਮੁਖਿ ਲਾਗੀ
॥੨॥੨॥੬॥੬॥੧੩॥੬॥੩੧॥

ਰਾਗੁ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਦੇ ਘਰੁ ੧

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਿਆ ਤੂ ਸੋਚਹਿ ਕਿਆ ਤੂ ਚਿਤਵਹਿ ਕਿਆ ਤੂਂ ਕਰਹਿ ਤਪਾਏ ॥ ਤਾ ਕਤ ਕਹਹੁ ਪਰਵਾਹ ਕਾਹੂ ਕੀ ਜਿਹ ਗੋਪਾਲ
ਸਹਾਏ ॥੧॥ ਬਰਸੈ ਮੇਘੁ ਸਖੀ ਘਰਿ ਪਾਹੁਨ ਆਏ ॥ ਮੋਹਿ ਦੀਨ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਠਾਕੁਰ ਨਵ ਨਿਧਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਭੋਜਨ ਬਹੁ ਕੀਏ ਬਹੁ ਬਿੰਜਨ ਮਿਸਟਾਏ ॥ ਕਰੀ ਪਾਕਸਾਲ ਸੋਚ ਪਵਿਤ੍ਰਾ
ਛੁਣਿ ਲਾਵਹੁ ਭੋਗੁ ਹਰਿ ਰਾਏ ॥੨॥ ਦੁਸਟ ਬਿਦਾਰੇ ਸਾਜਨ ਰਹਸੇ ਇਹਿ ਮੰਦਿਰ ਘਰ ਅਪਨਾਏ ॥ ਜਤ ਗ੍ਰਹਿ
ਲਾਲੁ ਰੰਗੀਓ ਆਇਆ ਤਤ ਮੈ ਸਭਿ ਸੁਖ ਪਾਏ ॥੩॥ ਸਾਂਤ ਸਭਾ ਓਟ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਏ ॥
ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੰਤੁ ਰੰਗੀਲਾ ਪਾਇਆ ਫਿਰਿ ਟ੍ਰੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ਆਏ ॥੪॥੧॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਖੀਰ ਅਧਾਰਿ
ਬਾਰਿਕੁ ਜਬ ਹੋਤਾ ਬਿਨੁ ਖੀਰੈ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲਿ ਮਾਤਾ ਮੁਖਿ ਨੀਰੈ ਤਬ ਓਹੁ ਤ੃ਪਤਿ ਅਧਾਈ
॥੧॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਦਾਤਾ ॥ ਭੂਲਹਿ ਬਾਰਿਕ ਅਨਿਕ ਲਖ ਬਰੀਆ ਅਨ ਠਤਰ ਨਾਹੀ ਜਹ ਜਾਤਾ
॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚੰਚਲ ਮਤਿ ਬਾਰਿਕ ਬਪੁਰੇ ਕੀ ਸਰਧ ਅਗਨਿ ਕਰ ਮੇਲੈ ॥ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਕੱਠਿ ਲਾਇ ਰਾਖੈ
ਅਨਦ ਸਹਜਿ ਤਬ ਖੇਲੈ ॥੨॥ ਜਿਸ ਕਾ ਪਿਤਾ ਤੂ ਹੈ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਤਿਸੁ ਬਾਰਿਕ ਭੂਖ ਕੈਸੀ ॥ ਨਵ ਨਿਧਿ
ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਗ੍ਰਹਿ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਬਾਂਛੈ ਸੋ ਲੈਸੀ ॥੩॥ ਪਿਤਾ ਕ੃ਪਾਲਿ ਆਗਿਆ ਇਹਿ ਦੀਨੀ ਬਾਰਿਕੁ
ਮੁਖਿ ਮਾਂਗੈ ਸੋ ਦੇਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਬਾਰਿਕੁ ਦਰਸੁ ਪ੍ਰਭ ਚਾਹੈ ਮੋਹਿ ਹੁਦੈ ਬਸਹਿ ਨਿਤ ਚਰਨਾ ॥੪॥੨॥
ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਗਲ ਬਿਧੀ ਜੁਰਿ ਆਹਰੁ ਕਰਿਆ ਤਜਿਓ ਸਗਲ ਅੰਦੇਸਾ ॥ ਕਾਰਜੁ ਸਗਲ ਅਰੰਭਿਓ
ਘਰ ਕਾ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਭਾਰੋਸਾ ॥੧॥ ਸੁਨੀਐ ਬਾਜੈ ਬਾਜ ਸੁਹਾਵੀ ॥ ਭੋਲੁ ਭਇਆ ਮੈ ਪ੍ਰਤਾ ਮੁਖ ਪੇਖੇ ਗ੍ਰਹਿ ਮੰਗਲ
ਸੁਹਲਾਵੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨੂਆ ਲਾਇ ਸਵਾਰੇ ਥਾਨਾਂ ਪ੍ਰਛਤ ਸੰਤਾ ਜਾਏ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਮੈ ਪਾਹੁਨ

ਮਿਲਿਆ ਭਗਤਿ ਕਰਉ ਨਿਵਿ ਪਾਏ ॥੨॥ ਜਬ ਪ੍ਰਤ ਆਇ ਕਸੇ ਗ੍ਰਹਿ ਆਸਨਿ ਤਥ ਹਮ ਮੰਗਲੁ
ਗਾਇਆ ॥ ਮੀਤ ਸਾਜਨ ਮੇਰੇ ਭਏ ਸੁਹੇਲੇ ਪ੍ਰਭੁ ਪ੍ਰਤ ਗੁਰੂ ਮਿਲਾਇਆ ॥੩॥ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਭਏ ਅਨੰਦਾ
ਗੁਰਿ ਕਾਰਜ ਹਮਰੇ ਪ੍ਰਤੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਵੁ ਮਿਲਿਆ ਸੁਖਦਾਤਾ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਫੌਰੇ ॥੪॥੩॥
ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰਾਜ ਤੇ ਕੀਟ ਕੀਟ ਤੇ ਸੁਰਪਤਿ ਕਰਿ ਦੋਖ ਜਠਰ ਕਤ ਭਰਤੇ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਛੋਡਿ ਆਨ
ਕਤ ਪ੍ਰਾਜ਼ਹਿ ਆਤਮ ਘਾਤੀ ਹਰਤੇ ॥੧॥ ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਤੇ ਫੁਖਿ ਫੁਖਿ ਮਰਤੇ ॥ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਭ੍ਰਮਹਿ
ਕਹੁ ਜੋਨੀ ਟੇਕ ਨ ਕਾਹੂ ਧਰਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਤਿਆਗੀ ਸੁਆਮੀ ਆਨ ਕਤ ਚਿਤਵਤ ਮ੍ਰਦੁ ਮੁਗਧ ਖੁਲ
ਖਰ ਤੇ ॥ ਕਾਗਰ ਨਾਵ ਲਮਘਹਿ ਕਤ ਸਾਗਰੁ ਬੂਥਾ ਕਥਤ ਹਮ ਤਰਤੇ ॥੨॥ ਸਿਵ ਬਿਰਚਿ ਅਸੁਰ ਸੁਰ ਜੇਤੇ
ਕਾਲ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਜਰਤੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਚਰਨ ਕਮਲਨ ਕੀ ਤੁਸੁ ਨ ਢਾਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਕਰਤੇ ॥੩॥੮॥

ਰਾਗੁ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ਫੁਪਦੇ ਘਰੁ ੧

੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਓਡਿ ਬੈਰਾਗੀ ਤਿਆਗੀ ॥ ਹਉ ਝਿਕੁ ਖਿਨੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਮਾਰੀ ਲਾਗੀ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਤਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮੋਹਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੋਹਿ ਜਾਗੀ ॥ ਸੁਨਿ ਉਪਦੇਸੁ ਭਏ ਮਨ ਨਿਰਮਲ
ਗੁਨ ਗਾਏ ਰੰਗਿ ਰਾਂਗੀ ॥੧॥ ਝਿਹੁ ਮਨੁ ਦੇਇ ਕੀਏ ਸੰਤ ਮੀਤਾ ਕ੃ਪਾਲ ਭਏ ਬਡਭਾਗੀ ॥ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ
ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਤ ਰੇਨੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਪਾਗੀ ॥੨॥੧॥੫॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਮੋਹਿ ਪ੍ਰੀਤਸੁ ਦੇਹੁ
ਮਿਲਾਈ ॥ ਸਗਲ ਸਹੇਲੀ ਸੁਖੁ ਭਰਿ ਸੂਤੀ ਜਿਹ ਘਰਿ ਲਾਲੁ ਬਸਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੋਹਿ ਅਵਗਨ ਪ੍ਰਭੁ
ਸਦਾ ਦਿਆਲਾ ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਨਿ ਕਿਆ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਕਰਉ ਬਰਾਬਰਿ ਜੋ ਪ੍ਰਤ ਸੰਗਿ ਰਾਤੰਨੀ ਝਿਹ ਹਉਮੈ ਕੀ
ਫੀਠਾਈ ॥੧॥ ਭਈ ਨਿਮਾਣੀ ਸਰਨਿ ਝਿਕ ਤਾਕੀ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਏਕ ਨਿਮਖ ਮਹਿ ਮੇਰਾ
ਸਭੁ ਫੁਖੁ ਕਾਟਿਆ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਰੈਨਿ ਬਿਹਾਈ ॥੨॥੨॥੬॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਰਸੁ ਮੇਘ ਜੀ ਤਿਲੁ
ਬਿਲਮੁ ਨ ਲਾਉ ॥ ਬਰਸੁ ਪਿਆਰੇ ਮਨਹਿ ਸਧਾਰੇ ਹੋਇ ਅਨਦੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਚਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਮ ਤੇਰੀ

ਧਰ ਸੁਆਮੀਆ ਮੇਰੇ ਤੂ ਕਿਤ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰੇ ॥ ਇਸਤੀ ਰੂਪ ਚੇਰੀ ਕੀ ਨਿਆਈ ਸੋਭ ਨਹੀ ਬਿਨੁ ਭਰਤਾਰੇ ॥੧॥ ਬਿਨਤ ਸੁਨਿਓ ਜਬ ਠਾਕੁਰ ਮੈਰੈ ਬੇਗਿ ਆਇਆਂ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰੋ ਬਨਿਓ ਸੁਹਾਗੇ ਪਤਿ
 ਸੋਭਾ ਭਲੇ ਅਚਾਰੇ ॥੨॥੩॥੭॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥ ਟ੍ਰੂਖ ਦਰਦ ਬਿਨਸੈ
 ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਗੁਰ ਕੀ ਮੂਰਤਿ ਰਿਦੈ ਬਸਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਸਮਨ ਹਤੇ ਦੋਖੀ ਸਭਿ ਵਿਆਪੇ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ
 ਆਇਆ ॥ ਰਾਖਨਹਾਰੈ ਹਾਥ ਦੇ ਰਾਖਿਆਂ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਿਲਵਿਖ ਸਭਿ ਕਾਟੇ
 ਨਾਮੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮਨਿ ਦੀਆ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਬਾਹੁਡਿ ਟ੍ਰੂਖ ਨ ਥੀਆ ॥੨॥੮॥੮॥
 ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਪਿਆਰੇ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਅਪਨੋ ਨਾਮੁ ਦੀਜੈ ਦਿਆਲ ਅਨੁਗ੍ਰਹ
 ਧਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਿਮਰਤ ਚਰਨ ਤੁਹਾਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਿਦੈ ਤੁਹਾਰੀ ਆਸਾ ॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਪਹਿ ਕਰਤ ਬੇਨਤੀ
 ਮਨਿ ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਿਆਸਾ ॥੧॥ ਬਿਛੁਰਤ ਮਰਨੁ ਜੀਵਨੁ ਹਰਿ ਮਿਲਤੇ ਜਨ ਕਤ ਦਰਸਨੁ ਦੀਜੈ ॥ ਨਾਮ
 ਅਧਾਰੁ ਜੀਵਨ ਧਨੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥੨॥੫॥੬॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਥ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰੀਤਮ
 ਸਿਤ ਬਨਿ ਆਈ ॥ ਰਾਜਾ ਰਾਮੁ ਰਮਤ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆਂ ਕਰਸੁ ਮੇਘ ਸੁਖਦਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਕੁ ਪਲੁ ਬਿਸਰਤ
 ਨਹੀ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਨਾਮੁ ਨਕੈ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥ ਤਦੌਤੁ ਭਿਆਂ ਪ੍ਰੰਨ ਭਾਵੀ ਕੋ ਭੇਟੇ ਸੰਤ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਸੁਖ ਤਪਜੇ
 ਟ੍ਰੂਖ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਤਰਿਆਂ ਸੰਸਾਰੁ ਕਠਿਨ ਭੈ ਸਾਗਰੁ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਚਰਨ ਧਿਆਈ
 ॥੨॥੬॥੧੦॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਘਨਿਹਰ ਬਰਸਿ ਸਗਲ ਜਗੁ ਛਾਇਆ ॥ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ
 ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਿਟੇ ਕਲੇਸ ਤੂਸਨ ਸਭ ਕੂੜੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥
 ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਨਮ ਮਰਨ ਨਿਵਾਰੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਕਤਹੂ ਧਾਇਆ ॥੧॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਾਮਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਾਤਤ
 ਚਰਨ ਕਮਲ ਲਿਵ ਲਾਇਆ ॥ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਓ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਰਣਾਇਆ ॥੨॥੭॥੧੧॥
 ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬਿਛੁਰਤ ਕਿਤ ਜੀਵੇ ਓਡਿ ਜੀਵਨ ॥ ਚਿਤਹਿ ਤਲਾਸ ਆਸ ਮਿਲਬੇ ਕੀ ਚਰਨ ਕਮਲ ਰਸ
 ਪੀਵਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪਿਆਸ ਤੁਮਾਰੀ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤਿਨ ਕਤ ਅੰਤਰੁ ਨਾਹੀ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਬਿਸਰੈ ਮੇਰੋ

रामु पिआरा से मूए मरि जाँही ॥੧॥ मनि तनि रवि रहिआ जगदीसुर पेखत सदा हजूरे ॥ नानक
 रवि रहिओ सभ अंतरि सरब रहिआ भरपूरे ॥੨॥੮॥੧੨॥ मलार महला ੫ ॥ हरि कै भजनि कउन
 कउन न तरे ॥ खग तन मीन तन मृग तन बराह तन साधू संगि उधारे ॥੧॥ रहाउ ॥ देव कुल
 दैत कुल जख्य किन्नर नर सागर उतरे पारे ॥ जो जो भजनु करै साधू संगि ता के दूख बिदारे ॥੧॥ काम
 करोध महा बिखिआ रस इन ते भए निरारे ॥ दीन दिइआल जपहि करुणा मै नानक सद बलिहारे
 ॥੨॥੯॥੧੩॥ मलार महला ੫ ॥ आजु मै बैसिओ हरि हाट ॥ नामु रासि साझी करि जन सिउ जाँउ न
 जम कै घाट ॥੧॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहमि राखे भ्रम के खुले कपाट ॥ बेसुमार साहु प्रभु
 पाइआ लाहा चरन निधि खाट ॥੧॥ सरनि गही अचुत अबिनासी किलबिख काढे है छाँटि ॥ कलि
 कलेस मिटे दास नानक बहुरि न जोनी माट ॥੨॥੧੦॥੧੪॥ मलार महला ੫ ॥ बहु बिधि माइआ
 मोह हिरानो ॥ कोटि मधे कोऊ बिरला सेवकु पूरन भगतु चिरानो ॥੧॥ रहाउ ॥ इत उत डोलि डोलि
 समु पाइओ तनु धनु होत बिरानो ॥ लोग दुराइ करत ठगिआई होतौ संगि न जानो ॥੧॥ मृग
 पंखी मीन दीन नीच इह संकट फिरि आनो ॥ कहु नानक पाहन प्रभ तारहु साधसंगति सुख मानो
 ॥੨॥੧੧॥੧੫॥ मलार महला ੫ ॥ दुसट मुए बिखु खाई री माई ॥ जिस के जीअ तिन ही रखि लीने
 मेरे प्रभ कउ किरपा आई ॥੧॥ रहाउ ॥ अंतरजामी सभ महि वरतै ताँ भउ कैसा भाई ॥ संगि
 सहाई छोडि न जाई प्रभु दीसै सभनी ठाइंगी ॥੧॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजन आपि लीए लड़ि
 लाई ॥ हरि की ओट जीवहि दास तेरे नानक प्रभ सरणाई ॥੨॥੧੨॥੧੬॥ मलार महला ੫ ॥
 मन मेरे हरि के चरन रवीजै ॥ दरस पिआस मेरो मनु मोहिओ हरि पंख लगाइ मिलीजै ॥੧॥ रहाउ ॥
 खोजत खोजत मारगु पाइओ साधू सेव करीजै ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे नामु महा रसु पीजै ॥੧॥
 त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ॥ करु गहि लेहु दास अपुने कउ नानक अपुनो

ਕੀਜੈ ॥੨॥੧੩॥੧੭॥ ਮਲਾਰ ਮਃ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੋ ਭਗਤਿ ਬਛਲੁ ਬਿਰਦਾਇਆਂ ॥ ਨਿੰਦਕ ਮਾਰਿ ਚਰਨ ਤਲ ਦੀਨੇ
ਅਪੁਨੋ ਜਸੁ ਵਰਤਾਇਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਕੀਨੋ ਸਭ ਜਗ ਮਹਿ ਦਾਇਆ ਜੀਅਨ ਮਹਿ ਪਾਇਆਂ ॥
ਕਠਿ ਲਾਇ ਅਪੁਨੋ ਦਾਸੁ ਰਖਿਆਂ ਤਾਤੀ ਵਾਤ ਨ ਲਾਇਆਂ ॥੧॥ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਆਂ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਭਰਮੁ
ਭਤ ਮੇਟਿ ਸੁਖਾਇਆਂ ॥ ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਕਰਹੁ ਦਾਸ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਨਕ ਬਿਸ਼ਾਸੁ ਮਨਿ ਆਇਆਂ ॥੨॥੧੪॥੧੮॥

ਰਾਗ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ਚਤੁਪਟੇ ਘਰ ੨

੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੀਸੈ ਬ੍ਰਹਮ ਪਸਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲੈ ਗੁਣੀਆਁ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਦ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ
ਪ੍ਰੇ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰੁ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸਿ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆਂ
ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਅਪਣਾ ਖਸਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਗੁਣ
ਅਨਦਿਨੁ ਨਿਤ ਗਾਤ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਧੂਡਿ ਕਰਤ ਇਸਨਾਨੁ ॥ ਸਾਚੀ ਦੁਗਹ ਪਾਈਐ ਮਾਨੁ ॥੨॥ ਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ
ਭਵਜਲ ਤਾਰਣਹਾਰੁ ॥ ਗੁਰਿ ਭੇਟਿਐ ਨ ਹੋਇ ਜੋਨਿ ਅਤਤਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥ ਜਾ ਕਤ ਕਰਮਿ
ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਆਏ ॥੩॥ ਗੁਰੁ ਮੇਰੀ ਜੀਵਨਿ ਗੁਰੁ ਆਧਾਰੁ ॥ ਗੁਰੁ ਮੇਰੀ ਵਰਤਣਿ ਗੁਰੁ ਪਰਵਾਰੁ ॥
ਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਖਸਮੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਾ ਕੀ ਕੀਮ ਨ ਪਾਈ ॥੪॥੧॥੧੬॥
ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਏ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕਤ
ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਇ ॥ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਨ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥ ਤੁਸ੍ਰੀ ਕ੃ਪਾ ਤੇ
ਤ੍ਰੰ ਚਿਤਿ ਆਵਹਿ ਆਠ ਪਹਰ ਤੈਰੈ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗਾਵਣੁ ਸੁਨਣੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ॥ ਹੁਕਮੁ ਬੂੜੈ
ਸੋ ਸਾਚਿ ਸਮਾਣਾ ॥ ਜਧਿ ਜਧਿ ਜੀਵਹਿ ਤੇਰਾ ਨਾਉ ॥ ਤੁੜਾ ਬਿਨੁ ਢੂਜਾ ਨਾਹੀ ਥਾਤ ॥੨॥ ਢੁਖ ਸੁਖ ਕਰਤੇ
ਹੁਕਮੁ ਰਿਆਈ ॥ ਭਾਣੈ ਬਖਸ ਭਾਣੈ ਦੇਇ ਸਜਾਈ ॥ ਢੁਹਾਁ ਸਿਰਿਆਁ ਕਾ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ॥ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜਾਈ ਤੇਰੇ
ਪਰਤਾਪ ॥੩॥ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਤੂਹੈ ਜਾਣਹਿ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਬੂੜਾਹਿ ਸੁਣਿ ਆਪਿ ਵਖਾਣਹਿ ॥ ਸੇਈ ਭਗਤ ਜੋ ਤੁਧੁ

भाणे ॥ नानक तिन कै सद कुरबाणे ॥४॥२॥२०॥ मलार महला ५ ॥ परमेसरु होआ दइआलु ॥
 मेघु वरसै अंमृत धार ॥ सगले जीअ जंत तृपत्तासे ॥ कारज आए पूरे रासे ॥१॥ सदा सदा मन
 नामु समालि ॥ गुर पूरे की सेवा पाइआ औथै ओथै निबहै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ दुखु भन्ना भै भंजनहार
 ॥ आपणिआ जीआ की कीती सार ॥ राखनहार सदा मिहरवान ॥ सदा सदा जाईअै कुरबान ॥२॥
 कालु गवाइआ करतै आपि ॥ सदा सदा मन तिस नो जापि ॥ दृसटि धारि राखे सभि जंत ॥ गुण
 गावहु नित नित भगवंत ॥३॥ एको करता आपे आप ॥ हरि के भगत जाणहि परताप ॥ नावै की
 पैज रखदा आइआ ॥ नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ॥४॥३॥२१॥ मलार महला ५ ॥ गुर
 सरणाई सगल निधान ॥ साची दरगहि पाईअै मानु ॥ भ्रमु भउ दूखु दरदु सभु जाइ ॥ साधसंगि
 सद हरि गुण गाइ ॥१॥ मन मेरे गुरु पूरा सालाहि ॥ नामु निधानु जपहु दिनु राती मन चिंदे
 फल पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु सोइ ॥ जनम मरण
 दूख ते राखै ॥ माइआ बिखु फिरि बहुड़ि न चाखै ॥२॥ गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ गुरु परमेसरु
 साचै नाइ ॥ सचु संजमु करणी सभु साची ॥ सो मनु निरमलु जो गुर संगि राची ॥३॥ गुरु पूरा
 पाईअै वड भागि ॥ कामु क्रोधु लोभु मन ते तिआगि ॥ करि किरपा गुर चरण निवासि ॥ नानक की
 प्रभ सचु अरदासि ॥४॥४॥२२॥

रागु मलार महला ५ पड़ताल घरु ३

੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर मनारि पृअ दइआर सित रंगु कीआ ॥ कीनो री सगल संगीगर ॥ तजिओ री सगल बिकार ॥
 धावतो असथिरु थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ ऐसे रे मन पाइ कै आपु गवाइ कै करि साधन सित संगु ॥
 बाजे बजहि मृदंग अनाहद कोकिल री राम नामु बोलै मधुर बैन अति सुहीआ ॥१॥ ऐसी तेरे
 दरसन की सोभ अति अपार पृअ अमोघ तैसे ही संगि संत बने ॥ भव उतार नाम भने ॥ रम राम

राम माल ॥ मनि फेरते हरि संगि संगीआ ॥ जन नानक पृउ प्रीतमु थीआ ॥२॥१॥२३॥
 मलार महला ५ ॥ मनु घनै भ्रमै बनै ॥ उमकि तरसि चालै ॥ प्रभ मिलबे की चाह ॥१॥ रहाउ ॥
 तै गुन माई मोहि आई कद्दाउ बेदन काहि ॥१॥ आन उपाव सगर कीए नहि दूख साकहि लाहि ॥
 भजु सरनि साधू नानका मिलु गुन गोबिंदहि गाहि ॥२॥२॥२४॥ मलार महला ५ ॥ पृआ की सोभ
 सुहावनी नीकी ॥ हाहा हूहू गंधब अपसरा अन्नद मंगल रस गावनी नीकी ॥१॥ रहाउ ॥ धुनित
 ललित गुनग्य अनिक भाँति बहु बिधि रूप दिखावनी नीकी ॥१॥ गिरि तर थल जल भवन
 भरपुरि घटि घटि लालन छावनी नीकी ॥ साधसंगि रामईआ रसु पाइओ नानक जा कै भावनी
 नीकी ॥२॥३॥२५॥ मलार महला ५ ॥ गुर प्रीति पिआरे चरन कमल रिद अंतरि धारे ॥१॥
 रहाउ ॥ दरसु सफलिओ दरसु पेखिओ गए किलबिख गए ॥ मन निरमल उजीआरे ॥१॥ बिसम
 बिसमै बिसम भई ॥ अघ कोटि हरते नाम लई ॥ गुर चरन मसतकु डारि पही ॥ प्रभ एक तूंही एक
 तुही ॥ भगत टेक तुहारे ॥ जन नानक सरनि दुआरे ॥२॥४॥२६॥ मलार महला ५ ॥ बरसु सरसु
 आगिआ ॥ होहि आन्नद सगल भाग ॥१॥ रहाउ ॥ संत संगे मनु परफड़े मिलि मेघ धर सुहाग ॥१॥
 घनघोर प्रीति मोर ॥ चितु चातृक बूंद ओर ॥ औसो हरि संगे मन मोह ॥ तिआगि माइआ धोह ॥ मिलि
 संत नानक जागिआ ॥२॥५॥२७॥ मलार महला ५ ॥ गुन गोपाल गाउ नीत ॥ राम नाम धारि
 चीत ॥१॥ रहाउ ॥ छोडि मानु तजि गुमानु मिलि साधूआ कै संगि ॥ हरि सिमरि एक रंगि मिटि जाँहि
 दोख मीत ॥१॥ पारब्रहम भए दइआल ॥ बिनसि गए बिखै जंजाल ॥ साध जनाँ कै चरन लागि ॥
 नानक गावै गोबिंद नीत ॥२॥६॥२८॥ मलार महला ५ ॥ घनु गरजत गोबिंद रूप ॥ गुन गावत
 सुख चैन ॥१॥ रहाउ ॥ हरि चरन सरन तरन सागर धुनि अनहता रस बैन ॥१॥ पथिक पिआस
 चित सरोवर आतम जलु लैन ॥ हरि दरस प्रेम जन नानक करि किरपा प्रभ दैन ॥२॥७॥२९॥

ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹੇ ਗੋਬਿੰਦ ਹੇ ਗੋਪਾਲ ਹੇ ਦਿੜਿਆਲ ਲਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਨਾਥ ਅਨਾਥ ਸਖੇ
ਦੀਨ ਦਰਦ ਨਿਵਾਰ ॥੧॥ ਹੇ ਸਮਰਥ ਅਗਮ ਪੂਰਨ ਮੋਹਿ ਮਿੜਿਆ ਧਾਰਿ ॥੨॥ ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਾ ਭਿੜਿਆਨ
ਨਾਨਕ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰ ॥੩॥੮॥੩੦॥

ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੧

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਚਕਵੀ ਨੈਨ ਨੀਂਦ ਨਹਿ ਚਾਹੈ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਨੀਂਦ ਨ ਪਾਈ ॥ ਸ੍ਰੂ ਚੌਪੂਰੂ ਪੂਰੂ ਦੇਖੈ ਨੈਨੀ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗੈ
ਪਾਈ ॥੧॥ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਪ੍ਰੇਮੁ ਸਖਾਈ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਘੜੀ ਨਹੀ ਜਗਿ ਜੀਵਾ ਐਸੀ ਪਿਆਸ ਤਿਸਾਈ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਸਰਵਰਿ ਕਮਲੁ ਕਿਰਣਿ ਆਕਾਸੀ ਬਿਗਸੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਈ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਨੀ ਅਭ ਐਸੀ ਜੋਤੀ
ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥੨॥ ਚਾਨ੍ਤਕੁ ਜਲ ਬਿਨੁ ਪੂਰੂ ਪੂਰੂ ਟੈਰੈ ਬਿਲਾਪ ਕਰੈ ਬਿਲਲਾਈ ॥ ਘਨਹਰ ਘੋਰ ਦਸੈ
ਦਿਸਿ ਬਰਸੈ ਬਿਨੁ ਜਲ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਈ ॥੩॥ ਮੀਨ ਨਿਵਾਸ ਉਪਜੈ ਜਲ ਹੀ ਤੇ ਸੁਖ ਦੁਖ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਈ ॥
ਖਿਨੁ ਤਿਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਪਲੁ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮਰਨੁ ਜੀਵਨੁ ਤਿਸੁ ਤਾਈ ॥੪॥ ਧਨ ਵਾਂਢੀ ਪਿਲੁ ਦੇਸ ਨਿਵਾਸੀ
ਸਚੇ ਗੁਰ ਪਹਿ ਸਬਦੁ ਪਠਾਈ ॥ ਗੁਣ ਸੰਗਹਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰਿਟੈ ਨਿਵਾਸੀ ਭਗਤਿ ਰਤੀ ਹਰਖਾਈ ॥੫॥ ਪੂਰੂ
ਪੂਰੂ ਕਰੈ ਸਭੈ ਹੈ ਜੇਤੀ ਗੁਰ ਭਾਵੈ ਪੂਰੂ ਪਾਈ ॥ ਪੂਰੂ ਨਾਲੇ ਸਦ ਹੀ ਸਚਿ ਸੰਗੇ ਨਦਰੀ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ
॥੬॥ ਸਭ ਮਹਿ ਜੀਤ ਜੀਤ ਹੈ ਸੋਈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਘਰ ਹੀ ਪਰਗਾਸਿਆ
ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ॥੭॥ ਅਪਨਾ ਕਾਜੁ ਸਵਾਰਹੁ ਆਪੇ ਸੁਖਦਾਤੇ ਗੋਸਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਘਰ ਹੀ
ਪਿਲੁ ਪਾਇਆ ਤਤ ਨਾਨਕ ਤਪਤਿ ਬੁੜਾਈ ॥੮॥੧॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਾਗਤੁ ਜਾਗਿ ਰਹੈ ਗੁਰ ਸੇਵਾ
ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਮੈ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥ ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਰਹਣੁ ਨ ਪਾਵੈ ਆਚੁ ਕਾਚੁ ਢਰਿ ਪਾਂਹੀ ॥੧॥ ਇਸੁ ਤਨ ਧਨ
ਕਾ ਕਹਹੁ ਗਰਬੁ ਕੈਸਾ ॥ ਬਿਨਸਤ ਬਾਰ ਨ ਲਾਗੈ ਬਕਰੇ ਹਤਮੈ ਗਰਬਿ ਖਪੈ ਜਗੁ ਐਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਜੈ ਜਗਦੀਸ ਪ੍ਰਭੂ ਰਖਵਾਰੇ ਰਾਖੈ ਪਰਖੈ ਸੋਈ ॥ ਜੇਤੀ ਹੈ ਤੇਤੀ ਤੁੜਾ ਹੀ ਤੇ ਤੁਮੁ ਸਰਿ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੨॥
ਜੀਅ ਤੁਪਾਇ ਜੁਗਤਿ ਵਸਿ ਕੀਨੀ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਜਨੁ ॥ ਅਮਰੁ ਅਨਾਥ ਸਰਬ ਸਿਰਿ ਮੋਰਾ ਕਾਲ ਬਿਕਾਲ

ਭਰਮ ਭੈ ਖੰਜਨੁ ॥੩॥ ਕਾਗਦ ਕੋਟੁ ਇਹੁ ਜਗੁ ਹੈ ਬਪੁਰੇ ਰੰਗਨਿ ਚਿਹਨ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਨਾਨੀ ਸੀ ਬੂਂਦ
 ਪਵਨੁ ਪਤਿ ਖੋਵੈ ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਖਿਨੁ ਤਾਝੀ ॥੪॥ ਨਦੀ ਉਪਕਂਠਿ ਜੈਸੇ ਘਰੁ ਤਰਵਰੁ ਸਰਪਨਿ ਘਰੁ ਘਰ
 ਮਾਹੀ ॥ ਤਲਟੀ ਨਦੀ ਕਹਾਁ ਘਰੁ ਤਰਵਰੁ ਸਰਪਨਿ ਡੱਸੈ ਦ੍ਰਿਆ ਮਨ ਮਾਂਹੀ ॥੫॥ ਗਾਰੁੜੁ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ
 ਧਿਆਨੁ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਬਿਖਿਆ ਗੁਰਮਤਿ ਜਾਰੀ ॥ ਮਨ ਤਨ ਹੇਂਵ ਭਏ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ
 ਨਿਰਾਰੀ ॥੬॥ ਜੇਤੀ ਹੈ ਤੇਤੀ ਤੁਧੁ ਜਾਚੈ ਤੂ ਸਰਬ ਜੀਆਁ ਦਿਇਆਲਾ ॥ ਤੁਮਰੀ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਪਤਿ ਰਾਖਹੁ
 ਸਾਚੁ ਮਿਲੈ ਗੋਪਾਲਾ ॥੭॥ ਬਾਧੀ ਧਾਂਧਿ ਅੰਧ ਨਹੀ ਸੂਝੈ ਬਧਿਕ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤ ਸੂਝਾਸਿ
 ਬੂਜਾਸਿ ਸਚ ਮਨਿ ਗਿਆਨੁ ਸਮਾਵੈ ॥੮॥ ਨਿਰਗੁਣ ਦੇਹ ਸਾਚ ਬਿਨੁ ਕਾਚੀ ਮੈ ਪ੍ਰਥਤ ਗੁਰੁ ਅਪਨਾ ॥
 ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਖਾਵੈ ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਜਗੁ ਸੁਪਨਾ ॥੯॥੨॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਚਾਤੂਕ ਮੀਨ
 ਜਲ ਹੀ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਸਾਰਿਗ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਈ ॥੧॥ ਰੈਨਿ ਬਕੀਹਾ ਬੋਲਿਓ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਪ੍ਰਥ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਤਲਟੈ ਕਬਹੂ ਜੋ ਤੈ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ॥੨॥ ਨੀਦ ਗਈ ਹਤਮੈ ਤਨਿ ਥਾਕੀ ਸਚ ਮਤਿ
 ਰਿਦੈ ਸਮਾਈ ॥੩॥ ਰੁਖਾਂਦੀ ਬਿਰਖਾਂਦੀ ਊਡਤ ਭੂਖਾ ਪੀਵਾ ਨਾਮੁ ਸੁਭਾਈ ॥੪॥ ਲੋਚਨ ਤਾਰ ਲਲਤਾ
 ਬਿਲਲਾਤੀ ਦਰਸਨ ਪਿਆਸ ਰਯਾਈ ॥੫॥ ਪ੍ਰਥ ਬਿਨੁ ਸੀਗਾਰੁ ਕਰੀ ਤੇਤਾ ਤਨੁ ਤਾਪੈ ਕਾਪਰੁ ਅੰਗਿ
 ਨ ਸੁਹਾਈ ॥੬॥ ਅਪਨੇ ਪਿਆਰੇ ਬਿਨੁ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਂਤ ਬਿਨ ਮਿਲੇ ਨੀਦ ਨ ਪਾਈ ॥੭॥
 ਪਿਰੁ ਨਜੀਕਿ ਨ ਬੂਜੈ ਬਪੁੜੀ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਈ ॥੮॥ ਸਹਜਿ ਮਿਲਿਆ ਤਬ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ
 ਤੂਸਨਾ ਸਬਦਿ ਬੁਜਾਈ ॥੯॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤੁਝ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਕੀਮਤਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧੦॥੩॥

ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੨

ਅਖਲੀ ਊੰਡੀ ਜਲੁ ਭਰ ਨਾਲਿ ॥ ਡ੍ਰਾਗਰੁ ਊਚਤ ਗੜੁ ਪਾਤਾਲਿ ॥ ਸਾਗਰੁ ਸੀਤਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਵੀਚਾਰਿ ॥
 ਮਾਰਗੁ ਮੁਕਤਾ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ॥੧॥ ਮੈ ਅੰਧੁਲੇ ਨਾਵੈ ਕੀ ਜੋਤਿ ॥ ਨਾਮ ਅਧਾਰਿ ਚਲਾ ਗੁਰ ਕੈ ਭੈ ਭੇਤਿ ॥੧॥

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

रहाउ ॥ सतिगुर सबदी पाधरु जाणि ॥ गुर कै तकीअै साचै ताणि ॥ नामु समालसि रुड़ी बाणि ॥
 थैं भावै दरु लहसि पिराणि ॥२॥ ऊँडँ बैसा एक लिव तार ॥ गुर कै सबदि नाम आधार ॥ ना जलु
 डूँगरु न ऊची धार ॥ निज घरि वासा तह मगु न चालणहार ॥३॥ जितु घरि वसहि तूहै बिधि
 जाणहि बीजउ महलु न जापै ॥ सतिगुर बाझहु समझ न होवी सभु जगु दबिआ छापै ॥ करण पलाव
 करै बिललातउ बिनु गुर नामु न जापै ॥ पल पंकज महि नामु छडाए जे गुर सबदु सिजापै ॥४॥
 इकि मूरख अंधे मुगध गवार ॥ इकि सतिगुर कै भै नाम अधार ॥ साची बाणी मीठी अंमृत धार ॥
 जिनि पीती तिसु मोख दुआर ॥५॥ नामु भै भाइ रिदै वसाही गुर करणी सचु बाणी ॥ इंदु वरसै
 धरति सुहावी घटि घटि जोति समाणी ॥ कालरि बीजसि दुरमति औसी निगुरे की नीसाणी ॥ सतिगुर
 बाझहु घोर अंधारा डूबि मुए बिनु पाणी ॥६॥ जो किछु कीनो सु प्रभू रजाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु मेटणा
 न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ एक सबदि राचै सचि समाइ ॥७॥ चहु दिसि हुकमु वरतै
 प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं ॥ सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं ॥ जाँमणु
 मरणा दीसै सिरि ऊभौ खुधिआ निद्रा कालं ॥ नानक नामु मिलै मनि भावै साची नदरि रसालं
 ॥८॥१॥८॥ मलार महला १ ॥ मरण मुकति गति सार न जानै ॥ कंठे बैठी गुर सबदि पछानै ॥१॥
 तू कैसे आड़ि फाथी जालि ॥ अलखु न जाचहि रिदै समुलि ॥२॥ रहाउ ॥ एक जीअ कै जीआ खाही ॥
 जलि तरती बूड़ी जल माही ॥२॥ सरब जीअ कीए प्रतपानी ॥ जब पकड़ी तब ही पछुतानी ॥३॥
 जब गलि फास पड़ी अति भारी ॥ ऊँड़ि न साकै पंख पसारी ॥४॥ रसि चूगहि मनमुखि गवारि ॥
 फाथी छूटहि गुण गिआन बीचारि ॥५॥ सतिगुरु सेवि तूटै जमकालु ॥ हिरदै साचा सबदु समालु
 ॥६॥ गुरमति साची सबदु है सारु ॥ हरि का नामु रखै उरि धारि ॥७॥ से दुख आगै जि भोग
 बिलासे ॥ नानक मुकति नही बिनु नावै साचे ॥८॥२॥५॥

ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੧ ॥

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਈਐ ਵਿਣੁ ਕਰਮੈ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਕਂਚਨੁ ਹੋਈਐ ਜਾਂ
ਹਰਿ ਕੀ ਹੋਇ ਰਜਾਇ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਸਾਚਾ ਹਰਿ
ਸਿਤ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਗਿਆਨੁ ਊਪਜੈ ਤਾਂ ਇਹ ਸੰਸਾ ਜਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹਰਿ
ਬੁਝੀਐ ਗਰਭ ਜੋਨੀ ਨਹ ਪਾਇ ॥੨॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ਮਰਿ ਜੀਵੈ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ॥ ਸੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ
ਸੋਈ ਪਾਏ ਜਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥੩॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਿਵ ਘਰਿ ਜਂਮੈ ਵਿਚਹੁ ਸਕਤਿ ਗਵਾਇ ॥ ਅਚਰੁ
ਚਰੈ ਬਿਕੇਕ ਬੁਧਿ ਪਾਏ ਪੁਰਖੈ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥ ਧਾਤੁਰ ਬਾਜੀ ਸੰਸਾਰੁ ਅਚੇਤੁ ਹੈ ਚਲੈ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇ ॥
ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਪਾਈਐ ਕਰਮੀ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਣੁ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਵੇਖਹੁ ਰਿਦੈ
ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਭਵਜਲੁ ਤਤਰੇ ਪਾਰਿ ॥੬॥ ਹਰਿ ਨਾਮਾਂ ਹਰਿ ਟੇਕ ਹੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
ਅਧਾਰੁ ॥ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਹਰਿ ਜੀਤ ਪਾਵਤ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੭॥ ਮਸਤਕਿ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ
ਠਾਕੁਰਿ ਮੇਟਣਾ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇ ਜਨ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਜਿਨ ਹਰਿ ਭਾਣਾ ਭਾਇ ॥੮॥੧॥ ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ॥
ਕੇਦ ਬਾਣੀ ਜੁਗ ਕਰਤਦਾ ਤੈ ਗੁਣ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਮ ਢੱਡੁ ਸਹੈ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਵਾਰੇ ਵਾਰ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
ਭੇਟੇ ਸੁਕਤਿ ਹੋਇ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੧॥ ਮਨ ਰੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਮਾਇ ॥ ਕਵੈ ਭਾਗੀ ਗੁਰ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ
ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਸ੍ਰਸਟਿ ਊਪਾਈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਦੇਇ ਅਧਾਰੁ ॥
ਹਰਿ ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਕੀਆ ਹਰਿ ਸਿਤ ਲਾਗਾ ਪਿਆਰੁ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਸਭੁ
ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੨॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਬਾਣੀ ਸਤਿ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂੜੀ ਕੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਲਾਹੀਐ
ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੩॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮਾਹਰੋ
ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵਰਸੈ ਮਨੁ ਸੰਤੋਖੀਐ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ਸਦਾ

ਹਰੀਆਵਲੀ ਫਿਰਿ ਸੁਕੈ ਨਾ ਕੁਮਲਾਇ ॥੪॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਪਤੀਆਇ ॥
 ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਈਐ ਭੇਟੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਹਰਿ ਧਨੁ
 ਨ ਪਾਇ ॥੫॥ ਕੈ ਗੁਣ ਸਭਾ ਧਾਤੁ ਹੈ ਪਡਿ ਪਡਿ ਕਰਹਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਸੁਕਤਿ ਕਦੇ ਨ ਹੋਵੈ ਨਹੁ ਪਾਇਨਿ
 ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਬੰਧਨ ਨ ਤੁਟਹੀ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥੬॥ ਪਡਿ ਪਡਿ ਪੰਡਿਤ ਮੋਨੀ ਥਕੇ
 ਕੇਦਾਂ ਕਾ ਅਮਿਆਸੁ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਰੰਝ ਨਹੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਹੋਵੈ ਵਾਸੁ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਸਿਰਹੁ ਨ ਉਤਰੈ
 ਅੰਤਰਿ ਕਪਟ ਵਿਣਾਸੁ ॥੭॥ ਹਰਿ ਨਾਵੈ ਨੋ ਸਭੁ ਕੋ ਪਰਤਾਪਦਾ ਵਿਣੁ ਭਾਗਾਂ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ
 ਗੁਰੁ ਭੇਟੀਐ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੇ ਹੀ ਪਤਿ ਊਪਜੈ ਹਰਿ ਸਿਤ ਰਹਾਂ ਸਮਾਇ ॥੮॥੨॥

ਮਲਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀ ਘਰੁ ੨ ॥

੧੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰੈ ਲਾਏ ॥ ਦੁਖੁ ਪਲਾਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਵਸਾਏ ॥ ਸਾਚੀ ਗਤਿ ਸਾਚੈ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
 ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਸੁਣਾਏ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੇਵਿ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਾਈਐ
 ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਗੈ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਕਾਮਣਿ ਕਰੇ ਸੰਗਾਰੁ ॥ ਦੁਹਚਾਰਣੀ ਕਹੀਐ
 ਨਿਤ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਾ ਇਹੁ ਬਾਦਿ ਆਚਾਰੁ ॥ ਬਹੁ ਕਰਮ ਦੂਡਾਵਹਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ॥੨॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਮਣਿ ਬਣਿਆ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਸਬਦੇ ਪਿਲੁ ਰਾਖਿਆ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਏਕੁ ਪਛਾਣੈ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ॥
 ਸੋਭਾਵਂਤੀ ਕਹੀਐ ਨਾਰਿ ॥੩॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਦਾਤੇ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਲੋਭਿ ਦ੍ਰੌਜੈ ਲੋਭਾਇਆ ॥ ਐਸੇ
 ਗਿਆਨੀ ਬੂਜ਼ਹੁ ਕੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਸੁਕਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥੪॥ ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਹਣੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਬਿਨੁ
 ਮਨ ਮੂਏ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਗਿਆਨ ਮਤੀ ਕਮਲ ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਤਿਤੁ ਘਟਿ ਨਾਮੈ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥੫॥ ਹਤਮੈ
 ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਨਾ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਨਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਹਣੁ ਆਪੁ ਜਾਣਾਏ ॥ ਬਿਰਥੀ ਭਗਤਿ
 ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥੬॥ ਸੇ ਭਗਤ ਸਤਿਗੁਰ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਸਦ ਹੀ

ਨਾਮੁ ਵੇਖਹਿ ਹਜੂਰਿ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੭॥ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਦੇਇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਹਤਮੈ ਰੋਗੁ
ਵਡਾ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਏਹੁ ਰੋਗੁ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੮॥੧॥੩॥੫॥੮॥

ਰਾਗੁ ਮਲਾਰ ਛੱਤ ਮਹਲਾ ੫ ॥

੧੯੪੦ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਕੇ ਦਾਤੇ ॥ ਅਪਨੇ ਜਨ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥ ਜਨ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤੇ ਇਕ ਨਿਮਖ ਮਨਹੁ ਨ
ਕੀਸਰੈ ॥ ਗੋਪਾਲ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਸਦਾ ਸੰਗੇ ਸਰਬ ਗੁਣ ਜਗਟੀਸਰੈ ॥ ਮਨੁ ਮੋਹਿ ਲੀਨਾ ਚਰਨ ਸੰਗੇ ਨਾਮ ਰਸਿ
ਜਨ ਮਾਤੇ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕ੃ਪਾਲ ਸਦਹੂਂ ਕਿਨੈ ਕੋਟਿ ਮਥੇ ਜਾਤੇ ॥੧॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥
ਮਹਾ ਪਤਿਤ ਤੁਸੁ ਤਾਰੇ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਕ੃ਪਾ ਸਿੰਧੁ ਸੁਆਮੀਆ ॥ ਸੰਤਸੰਗੇ ਭਜੁ ਨਿਸੰਗੇ ਰੰਤ
ਸਦਾ ਅੰਤਰਯਾਮੀਆ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਭਰਮਤ ਜੋਨੀ ਤੇ ਨਾਮ ਸਿਮਰਤ ਤਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਦਰਸ ਪਿਆਸ ਹਰਿ ਜੀਤ
ਆਪਿ ਲੇਹੁ ਸਮਾਰੇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜਲ ਜਨ ਤੇਰੇ ਮੀਨਾ ॥ ਜਲ ਮੀਨ ਪ੍ਰਭ ਜੀਤ
ਏਕ ਤੂਹੈ ਭਿਨਨ ਆਨ ਨ ਜਾਨੀਐ ॥ ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੇਵਹੁ ਨਾਮੁ ਦੇਵਹੁ ਤਤ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਮਾਨੀਐ ॥ ਭਜੁ ਸਾਧਸੰਗੇ
ਏਕ ਰੰਗੇ ਕ੃ਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਦੀਨਾ ॥ ਅਨਾਥ ਨੀਚ ਸਰਣਾਇ ਨਾਨਕ ਕਰਿ ਮਇਆ ਅਪੁਨਾ ਕੀਨਾ ॥੩॥
ਆਪਸ ਕਤ ਆਪੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥ ਭਰਮ ਭੰਜਨ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥ ਆਚਰਜ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਮਿਲੇ ਗੁਣ
ਨਿਧਿ ਪਿਆਰਿਆ ॥ ਮਹਾ ਮੰਗਲ ਸ੍ਰੂਖ ਉਪਜੇ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਣ ਨਿਤ ਸਾਰਿਆ ॥ ਮਿਲਿ ਸੰਗੇ ਸੋਹੇ ਦੇਖਿ ਮੋਹੇ
ਪੁਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਤਿਨ ਕੀ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੪॥੧॥

ਵਾਰ ਮਲਾਰ ਕੀ ਮਹਲਾ ੧ ਰਾਣੇ ਕੈਲਾਸ ਤਥਾ ਮਾਲਦੇ ਕੀ ਧੁਨਿ ॥ ੧੯੪੦ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਮਨੁ ਰਹਸੀਐ ਜਿਤ ਕੁਠੈ ਧਰਣਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥ ਸਭ ਦਿਸੈ ਹਰੀਆਵਲੀ ਸਰ
ਭਰੇ ਸੁਭਰ ਤਾਲ ॥ ਅੰਦਰੁ ਰਖੈ ਸਚ ਰੰਗਿ ਜਿਤ ਮੰਜੀਠੈ ਲਾਲੁ ॥ ਕਮਲੁ ਵਿਗਸੈ ਸਚੁ ਮਨਿ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ

ਨਿਹਾਲੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਟ੍ਰੂਜੀ ਤਰਫ ਹੈ ਵੇਖਹੁ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥ ਫਾਹੀ ਫਾਥੇ ਮਿਰਗ ਜਿਤ ਸਿਰਿ ਦੀਸੈ ਜਮਕਾਲੁ ॥
 ਖੁਧਿਆ ਤ੍ਰਸਨਾ ਨਿੰਦਾ ਬੁਰੀ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਵਿਕਰਾਲੁ ॥ ਏਨੀ ਅਖੀ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੰਡੀ ਜਿਚਰੁ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰੇ
 ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੰਤੋਖੀਆਁ ਚੂਕੈ ਆਲ ਜੰਜਾਲੁ ॥ ਮੂਲੁ ਰਹੈ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਗੁਰ ਪਤੜੀ ਬੋਹਿਥੁ ॥ ਨਾਨਕ
 ਲਗੀ ਤਤੁ ਲੈ ਤ੍ਰੂ ਸਚਾ ਮਨਿ ਸਚੁ ॥੧॥ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਹੇਕੋ ਪਾਧਰੁ ਹੇਕੁ ਦੁ ਗੁਰ ਪਤੜੀ ਨਿਜ ਥਾਨੁ ॥ ਰੁਝਤ
 ਠਾਕੁਰੁ ਨਾਨਕਾ ਸਭਿ ਸੁਖ ਸਾਚਤ ਨਾਮੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੀਨੈ ਆਪੁ ਸਾਜਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥ ਅੰਬਰੁ
 ਧਰਤਿ ਵਿਛੋਡਿ ਚੰਦੋਆ ਤਾਣਿਆ ॥ ਵਿਣੁ ਥੰਮਾ ਗਗਨੁ ਰਹਾਇ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣਿਆ ॥ ਸੂਰਜੁ ਚੰਦੁ ਤਪਾਇ
 ਜੋਤਿ ਸਮਾਣਿਆ ॥ ਕੀਏ ਰਾਤਿ ਦਿੰਨਤੁ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਿਆ ॥ ਤੀਰਥ ਧਰਮ ਵੀਚਾਰ ਨਾਵਣ ਪੁਰਬਾਣਿਆ ॥
 ਤੁਧੁ ਸਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਕਿ ਆਖਿ ਵਖਾਣਿਆ ॥ ਸਚੈ ਤਖਤਿ ਨਿਵਾਸੁ ਹੋਰ ਆਵਣ ਜਾਣਿਆ ॥੧॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਵਣਿ ਜੇ ਵਸੈ ਚਹੁ ਓਮਾਹਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਗਾਁ ਮਿਰਗਾਁ ਮਛੀਆਁ ਰਸੀਆਁ ਘਰਿ ਧਨੁ ਹੋਇ
 ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਵਣਿ ਜੇ ਵਸੈ ਚਹੁ ਵੇਛੋਡਾ ਹੋਇ ॥ ਗਾਈ ਪੁਤਾ ਨਿਰਧਨਾ ਪਥੀ ਚਾਕਰੁ ਹੋਇ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਤ੍ਰੂ ਸਚਾ ਸਚਿਆਰੁ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਵਰਤਾਇਆ ॥ ਬੈਠਾ ਤਾਡੀ ਲਾਇ ਕਵਲੁ ਛਪਾਇਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮੈ ਵਡਾ
 ਕਹਾਇ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਨਾ ਤਿਸੁ ਬਾਪੁ ਨ ਮਾਇ ਕਿਨਿ ਤ੍ਰੂ ਜਾਇਆ ॥ ਨਾ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖ ਵਰਨ
 ਸਬਾਇਆ ॥ ਨਾ ਤਿਸੁ ਭੁਖ ਪਿਆਸ ਰਜਾ ਧਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਮਹਿ ਆਪੁ ਸਮੋਇ ਸਬਦੁ ਵਰਤਾਇਆ ॥ ਸਚੇ ਹੀ
 ਪਤੀਆਇ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਵੈਟੁ ਬੁਲਾਇਆ ਵੈਦਗੀ ਪਕਡਿ ਢੰਢੋਲੇ ਬਾਂਹ ॥ ਭੋਲਾ
 ਵੈਟੁ ਨ ਜਾਣੀ ਕਰਕ ਕਲੇਜੇ ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਵੈਦਾ ਵੈਟੁ ਸੁਵੈਟੁ ਤ੍ਰੂ ਪਹਿਲਾਁ ਰੋਗੁ ਪਛਾਣੁ ॥ ਐਸਾ ਦਾਰੁ
 ਲੋਡਿ ਲਹੁ ਜਿਤੁ ਕੱਬੈ ਰੋਗ ਘਾਣਿ ॥ ਜਿਤੁ ਦਾਰੁ ਰੋਗ ਤਠਿਅਹਿ ਤਨਿ ਸੁਖੁ ਵਸੈ ਆਇ ॥ ਰੋਗੁ ਗਵਾਇਹਿ
 ਆਪਣਾ ਤ ਨਾਨਕ ਵੈਟੁ ਸਦਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਦੇਵ ਤਪਾਇਆ ॥ ਬ੍ਰਹਮੇ ਦਿਤੇ ਬੇਦ
 ਪ੍ਰਯਾ ਲਾਇਆ ॥ ਦਸ ਅਵਤਾਰੀ ਰਾਮੁ ਰਾਜਾ ਆਇਆ ॥ ਦੈਤਾ ਮਾਰੇ ਧਾਇ ਹੁਕਮਿ ਸਬਾਇਆ ॥ ਈਸ ਮਹੇਸੁਰੁ
 ਸੇਵ ਤਿਨੀ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਸਚੀ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ਤਖਤੁ ਰਚਾਇਆ ॥ ਦੁਨੀਆ ਧੰਧੈ ਲਾਇ ਆਪੁ ਛਪਾਇਆ

॥ ਧਰਮੁ ਕਰਾਏ ਕਰਮ ਧੁਰਹੁ ਫੁਰਮਾਇਆ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥ ਸਾਵਣੁ ਆਇਆ ਹੈ ਸਖੀ ਕਂਤੈ ਚਿਤਿ ਕਰੇਹੁ
 ॥ ਨਾਨਕ ਝੂਰਿ ਮਰਹਿ ਟੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨ੍ ਅਵਰੀ ਲਾਗਾ ਨੇਹੁ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਸਾਵਣੁ ਆਇਆ ਹੈ ਸਖੀ ਜਲਹਰੁ
 ਬਰਸਨਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਸਵਨੁ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨ੍ ਸਹ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪੇ ਛਿੰਜ ਪਵਾਇ
 ਮਲਾਖਾੜਾ ਰਚਿਆ ॥ ਲਥੇ ਭੜਥੂ ਪਾਇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਚਿਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮਾਰੇ ਪਛਾਡਿ ਮੂਰਖ ਕਚਿਆ ॥ ਆਪਿ
 ਪਿੜੈ ਮਾਰੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਕਾਰਜੁ ਰਚਿਆ ॥ ਸਭਨਾ ਖਸਮੁ ਏਕੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ ॥ ਹੁਕਮੀ ਲਿਖੈ ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ
 ਵਿਣੁ ਕਲਮ ਮਸਵਾਣੀਐ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮੇਲਾਪੁ ਜਿਥੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਦਾ ਵਖਾਣੀਐ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਸਬਦੁ
 ਸਲਾਹਿ ਸਚੁ ਪਛਾਣੀਐ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਊਨਵਿ ਊਨਵਿ ਆਇਆ ਅਵਰਿ ਕਰੇਂਦਾ ਵਨਨ ॥ ਕਿਆ
 ਜਾਣਾ ਤਿਸੁ ਸਾਹ ਸਿਤ ਕੇਵ ਰਹਸੀ ਰੰਗੁ ॥ ਰੰਗੁ ਰਹਿਆ ਤਿਨ੍ ਕਾਮਣੀ ਜਿਨ੍ ਮਨਿ ਭਤ ਭਾਤ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਭੈ ਭਾਇ ਬਾਹਰੀ ਤਿਨ ਤਨਿ ਸੁਖੁ ਨ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਊਨਵਿ ਊਨਵਿ ਆਇਆ ਵਰਸੈ ਨੀਰੁ ਨਿਪੰਗੁ ॥
 ਨਾਨਕ ਟੁਖੁ ਲਾਗਾ ਤਿਨ੍ ਕਾਮਣੀ ਜਿਨ੍ ਕਂਤੈ ਸਿਤ ਮਨਿ ਭੰਗੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਦੋਵੈ ਤਰਫਾ ਤਪਾਇ ਇਕੁ
 ਵਰਤਿਆ ॥ ਕੇਦ ਬਾਣੀ ਵਰਤਾਇ ਅੰਦਰਿ ਵਾਦੁ ਘਤਿਆ ॥ ਪਰਵਿਰਤਿ ਨਿਰਵਿਰਤਿ ਹਾਠਾ ਦੋਵੈ ਵਿਚਿ
 ਧਰਮੁ ਫਿਰੈ ਰੈਬਾਰਿਆ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਚੇ ਕੂਡਿਆਰ ਤਿਨੀ ਨਿਹਚਤ ਦਰਗਹ ਹਾਰਿਆ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਸਬਦਿ
 ਸੂਰ ਹੈ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜਿਨੀ ਮਾਰਿਆ ॥ ਸਚੈ ਅੰਦਰਿ ਮਹਲਿ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਸੇ ਭਗਤ ਤੁਧੁ ਭਾਵਦੇ ਸਚੈ
 ਨਾਇ ਪਿਆਰਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਤਿਨਾ ਵਿਟਹੁ ਹਤ ਵਾਰਿਆ ॥੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਊਨਵਿ
 ਊਨਵਿ ਆਇਆ ਵਰਸੈ ਲਾਇ ਝੜੀ ॥ ਨਾਨਕ ਭਾਣੈ ਚਲੈ ਕੰਤ ਕੈ ਸੁ ਮਾਣੇ ਸਦਾ ਰਲੀ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕਿਆ
 ਤਠਿ ਤਠਿ ਦੇਖਹੁ ਬਪੁੜੇ ਇਸੁ ਮੇਘੈ ਹਥਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥ ਜਿਨਿ ਏਹੁ ਮੇਘੁ ਪਠਾਇਆ ਤਿਸੁ ਰਾਖਹੁ ਮਨ ਮਾਂਹਿ
 ॥ ਤਿਸ ਨੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਸੀ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਬਾਹਰੀ ਸਭ ਕਰਣ ਪਲਾਹ ਕਰੇਇ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸੋ ਹਰਿ ਸਦਾ ਸਰੇਵੀਐ ਜਿਸੁ ਕਰਤ ਨ ਲਾਗੈ ਵਾਰ ॥ ਆਡਾਣੇ ਆਕਾਸ ਕਰਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਢਾਹਿ
 ਤਸਾਰਣਹਾਰ ॥ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇ ਕੈ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰ ॥ ਮਨਮੁਖ ਅਗੈ ਲੇਖਾ ਮਾਂਗੀਐ ਬਹੁਤੀ ਹੋਵੈ

ਮਾਰ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਤਿ ਸਿਤ ਲੇਖਾ ਨਿਬੱਡੈ ਬਖਸੇ ਸਿਫਤਿ ਭੰਡਾਰ ॥ ਓਥੈ ਹਥੁ ਨ ਅਪੱਡੈ ਕੂਕ ਨ ਸੁਣੀਐ ਪੁਕਾਰ ॥
 ਓਥੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਬੇਲੀ ਹੋਵੈ ਕਢਿ ਲਏ ਅੰਤੀ ਵਾਰ ॥ ਏਨਾ ਜੰਤਾ ਨੋ ਹੋਰ ਸੇਵਾ ਨਹੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਰਿ ਕਰਤਾਰ ॥੬॥
 ਸਲੋਕ ਮ: ੩ ॥ ਬਾਬੀਹਾ ਜਿਸ ਨੋ ਤੂ ਪ੍ਰਕਾਰਦਾ ਤਿਸ ਨੋ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਵਸਸੀ ਵਣੁ
 ਤ੍ਰਣੁ ਹਰਿਆ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਈਐ ਵਿਰਲਾ ਬ੍ਰੂਜੈ ਕੋਇ ॥ ਬਹਦਿਆ ਤਠਦਿਆ ਨਿਤ ਧਿਆਈਐ
 ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਦ ਹੀ ਵਰਸਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਵੈ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥੧॥ ਮ: ੩ ॥
 ਕਲਮਲਿ ਹੋਈ ਮੇਟਨੀ ਅਰਦਾਸਿ ਕਰੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਸਚੈ ਸੁਣਿਆ ਕਨੁ ਦੇ ਧੀਰਕ ਦੇਵੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
 ਝਿੰਦੈ ਨੋ ਫੁਰਮਾਇਆ ਕੁਠਾ ਛਹਬਰ ਲਾਇ ॥ ਅਨੁ ਧਨੁ ਉਪਯੈ ਬਹੁ ਘਣਾ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਦੇਦਾ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿ ॥ ਜਿਤੁ ਖਾਥੈ ਸੁਖੁ ਊਪਯੈ ਫਿਰਿ ਦ੍ਰਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ਆਇ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਚਾ ਸਚੁ ਤੂ ਸਚੇ ਲੈਹਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਦ੍ਰੌਜੈ ਦ੍ਰੌਜੀ ਤਰਫ ਹੈ ਕੂਡਿ ਮਿਲੈ ਨ ਮਿਲਿਆ
 ਜਾਇ ॥ ਆਪੇ ਜੋਡਿ ਵਿਛੋਡਿਐ ਆਪੇ ਕੁਦਰਤਿ ਦੇਇ ਦਿਖਾਇ ॥ ਸੋਹੁ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਹੈ ਪ੍ਰਾਬਿ ਲਿਖਿਆ
 ਕਮਾਇ ॥ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਤ ਜੋ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਜਿਤ ਜਲ ਮਹਿ ਕਮਲੁ ਅਲਿਪਤੁ
 ਹੈ ਐਸੀ ਬਣਤ ਬਣਾਇ ॥ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਸਦਾ ਸੋਹਣੇ ਜਿਨ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥ ਤਿਨ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਕਦੇ ਨਹੀ
 ਜੋ ਹਰਿ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਇ ॥੭॥ ਸਲੋਕ ਮ: ੩ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਸੁ ਵਸਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥ ਤਿਸੈ
 ਸਰੇਵਿਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀਹੋ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਾਂ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
 ਸਹਸਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਵੈ ਸਭ ਚਿੰਤਾ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ਸੁ ਸਹਜੇ ਹੋਇ ਕਹਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥
 ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਾਂ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕਾ ਆਖਿਆ ਆਪਿ ਸੁਣੇ ਜਿ ਲਿਅਨੁ
 ਪਨੈ ਪਾਇ ॥੧॥ ਮ: ੩ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਸਦਾ ਵਰਸਦਾ ਬ੍ਰੂਜਨਿ ਬ੍ਰੂਜਣਹਾਰ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਬੁਝਿਆ ਹਰਿ
 ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਰਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਵਹਿ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਹਤਮੈ ਤ੃ਸਨਾ ਮਾਰਿ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਹੈ ਵਰਸੈ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਹਰਿ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥੨॥

ਪਤੜੀ ॥ ਅਤੁਲੁ ਕਿਤ ਤੋਲੀਐ ਵਿਣੁ ਤੋਲੇ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀਐ ਗੁਣ ਮਹਿ ਰਹੈ
 ਸਮਾਇ ॥ ਅਪਣਾ ਆਪੁ ਆਪਿ ਤੋਲਸੀ ਆਪੇ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥ ਤਿਸ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਕਹਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ
 ॥ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਚੀ ਬੂਜ਼ ਦਿਤੀ ਬੁਜ਼ਾਇ ॥ ਜਗਤੁ ਸੁਸੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਲੁਟੀਐ ਮਨਮੁਖ ਬੂਜ਼
 ਨ ਪਾਇ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਸੀ ਜਾਸੀ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਜਾਗੇ ਤਿਨੀ ਘਰੁ ਰਖਿਆ ਢੂਤਾ ਕਾ
 ਕਿਛੁ ਨ ਵਸਾਇ ॥੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਬਾਬੀਹਾ ਨਾ ਬਿਲਲਾਇ ਨਾ ਤਰਸਾਇ ਏਹੁ ਮਨੁ ਖਸਮ ਕਾ ਹੁਕਮੁ
 ਮੰਨਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮਿ ਮੰਨਿਐ ਤਿਖ ਉਤਰੈ ਚੱਡੈ ਚਵਗਲਿ ਵਨ੍ਹੁ ॥੯॥ ਮਃ ੩ ॥ ਬਾਬੀਹਾ ਜਲ ਮਹਿ ਤੇਗ
 ਵਾਸੁ ਹੈ ਜਲ ਹੀ ਮਾਹਿ ਫਿਰਾਹਿ ॥ ਜਲ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਹੀ ਤਾਂ ਤੂਂ ਕੂਕਣ ਪਾਹਿ ॥ ਜਲ ਥਲ ਚਹੁ ਦਿਸਿ
 ਕਰਸਦਾ ਖਾਲੀ ਕੋ ਥਾਉ ਨਾਹਿ ॥ ਏਤੈ ਜਲਿ ਕਰਸਦੈ ਤਿਖ ਮਰਾਹਿ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਕੇ ਨਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਤਿਨ ਸੋਝੀ ਪੰਡੀ ਜਿਨ ਵਸਿਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥੧॥ ਪਤੜੀ ॥ ਨਾਥ ਜਤੀ ਸਿਧ ਪੀਰ ਕਿਨੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੁੜੈ ਸਮਾਇਆ ॥ ਜੁਗ ਛਤੀਹ ਗੁਬਾਰੁ ਤਿਸ ਹੀ ਭਾਇਆ ॥ ਜਲਾ ਬਿੰਬੁ ਅਸਰਾਲੁ
 ਤਿਨੈ ਕਰਤਾਇਆ ॥ ਨੀਲੁ ਅਨੀਲੁ ਅਗੰਮੁ ਸਰਜੀਤੁ ਸਬਾਇਆ ॥ ਅਗਨਿ ਉਪਾਈ ਵਾਦੁ ਭੁਖ ਤਿਹਾਇਆ ॥
 ਦੁਨੀਆ ਕੈ ਸਿਰਿ ਕਾਲੁ ਦੂਜਾ ਭਾਇਆ ॥ ਰਖੈ ਰਖਣਹਾਰੁ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਬਦੁ ਬੁਜ਼ਾਇਆ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
 ਇਹੁ ਜਲੁ ਸਭ ਤੈ ਕਰਸਦਾ ਕਰਸੈ ਭਾਇ ਸੁਭਾਇ ॥ ਸੇ ਬਿਰਖਾ ਹਰੀਆਵਲੇ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਨਦਰੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਏਨਾ ਜੰਤਾ ਕਾ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੨॥ ਮਃ ੩ ॥ ਮਿਨੀ ਰੈਣਿ ਚਮਕਿਆ ਕੁਠਾ ਛਹਬਰ ਲਾਇ ॥
 ਜਿਤੁ ਕੁਠੈ ਅਨੁ ਧਨੁ ਬਹੁਤੁ ਊਪਜੈ ਜਾਂ ਸਹੁ ਕਰੇ ਰਿਹਾਇ ॥ ਜਿਤੁ ਖਾਥੈ ਮਨੁ ਤ੃ਪਤੀਐ ਜੀਓਾਂ ਜੁਗਤਿ ਸਮਾਇ ॥
 ਇਹੁ ਧਨੁ ਕਰਤੇ ਕਾ ਖੇਲੁ ਹੈ ਕਦੇ ਆਵੈ ਕਦੇ ਜਾਇ ॥ ਗਿਆਨੀਆ ਕਾ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਸਦ ਹੀ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਕਤ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾਂ ਇਹੁ ਧਨੁ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ ਆਪਿ ਹਉ
 ਕੈ ਸਿਤ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ॥ ਆਪੇ ਲੇਖਾ ਮੰਗਸੀ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਾਰ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਹੁਕਮੁ ਕਰੇ ਗਾਵਾਰੁ ॥
 ਆਪਿ ਛਡਾਏ ਛੁਟੀਐ ਆਪੇ ਬਖ਼ਸਣਹਾਰੁ ॥ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਸੁਣੇ ਆਪਿ ਸਭਸੈ ਦੇ ਆਧਾਰੁ ॥ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਵਰਤਦਾ

सिरि सिरि करे बीचारु ॥ गुरमुखि आपु वीचारीअै लगै सचि पिआरु ॥ नानक किस नो आखीअै आपे
 देवणहारु ॥१०॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा एहु जगतु है मत को भरमि भुलाइ ॥ इहु बाबीहा पसू है
 इस नो बूझणु नाहि ॥ अंमृतु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ नानक गुरमुखि जिन् पीआ तिन्
 बहुड़ि न लागी आइ ॥१॥ मः ३ ॥ मलारु सीतल रागु है हरि धिआइअै साँति होइ ॥ हरि जीउ
 अपणी कृपा करे ताँ वरतै सभ लोइ ॥ वुठै जीआ जुगति होइ धरणी नो सीगारु होइ ॥ नानक इहु
 जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ ॥ गुर परसाटी को विरला बूझै सो जनु मुकतु सदा होइ ॥२॥
 पउड़ी ॥ सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥ तू सभु किछु आपे आपि दूजे किसु गणी ॥ माणस कूड़ा गरबु
 सची तुधु मणी ॥ आवा गउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥ सतिगुरु सेवे आपणा आइआ तिसु गणी ॥
 जे हउमै विचहु जाइ त केही गणत गणी ॥ मनमुख मोहि गुबारि जिउ भुला मंझि वणी ॥ कटे पाप
 असंख नावै इक कणी ॥१॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा खसमै का महलु न जाणही महलु देखि अरदासि
 पाइ ॥ आपणै भाणै बहुता बोलहि बोलिआ थाइ न पाइ ॥ खसमु वडा दातारु है जो इछे सो फल पाइ
 ॥ बाबीहा किआ बपुड़ा जगतै की तिख जाइ ॥२॥ मः ३ ॥ बाबीहा भिन्नी रैणि बोलिआ सहजे सचि
 सुभाइ ॥ इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ ॥ गुर सबदी जलु पाईअै विचहु आपु
 गवाइ ॥ नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी सो सतिगुरि दीआ मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ खंड पताल असंख
 मै गणत न होई ॥ तू करता गोविंदु तुधु सिरजी तुधै गोई ॥ लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥
 इकि राजे खान मलूक कहहि कहावहि कोई ॥ इकि साह सदावहि संचि धनु दूजै पति खोई ॥ इकि
 दाते इक मंगते सभना सिरि सोई ॥ विणु नावै बाजारीआ भीहावलि होई ॥ कूड़ निखुटे नानका सचु
 करे सु होई ॥१२॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा गुणवंती महलु पाइआ अउगणवंती दूरि ॥ अंतरि तैरै
 हरि वसै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ कूक पुकार न होवई नदरि नदरि निहाल ॥ नानक नामि रते सहजे

मिले सबदि गुरू कै घाल ॥੧॥ मः ੩ ॥ बाबीहा बेनती करे करि किरपा देहु जीअ दान ॥ जल बिनु
 पिआस न ऊरै छुटकि जाँहि मेरे प्रान ॥ तू सुखदाता बेअंतु है गुणदाता नेधानु ॥ नानक गुरमुखि
 बखसि लए अंति बेली होइ भगवानु ॥੨॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइ कै गुण अउगण करे बीचारु ॥
 तै गुण सरब जंजालु है नामि न धरे पिआरु ॥ गुण छोडि अउगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥
 जूअै जनमु तिनी हारिआ कितु आए संसारि ॥ सचै सबदि मनु मारिआ अहिनिसि नामि पिआरि ॥
 जिनी पुरखी उरि धारिआ सचा अलख अपारु ॥ तू गुणदाता निधानु हहि असी अवगणिआर ॥
 जिसु बखसे सो पाइसी गुर सबदी बीचारु ॥੩॥ सलोक मः ੫ ॥ राति न विहावी साकताँ जिना
 विसरै नाउ ॥ राती दिनस सुहेलीआ नानक हरि गुण गाँउ ॥੧॥ मः ੫ ॥ रतन जवेहर माणका
 हभे मणी मथंनि ॥ नानक जो प्रभि भाणिआ सचै दरि सोह्वानि ॥੨॥ पउड़ी ॥ सचा सतिगुरु सेवि सचु
 समालिआ ॥ अंति खलोआ आइ जि सतिगुर अगै घालिआ ॥ पोहि न सकै जमकालु सचा रखवालिआ
 ॥ गुर साखी जोति जगाइ दीवा बालिआ ॥ मनमुख विणु नावै कूडिआर फिरहि बेतालिआ ॥ पसू
 माणस चंमि पलेटे अंदरहु कालिआ ॥ सभो वरतै सचु सचै सबदि निहालिआ ॥ नानक नामु निधानु
 है पूरै गुरि देखालिआ ॥੪॥ सलोक मः ੩ ॥ बाबीहै हुकमु पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइ ॥
 मेघु वरसै दइआ करि गूड़ी छहबर लाइ ॥ बाबीहै कूक पुकार रहि गई सुखु वसिआ मनि
 आइ ॥ नानक सो सालाहीअै जि देंदा सभनाँ जीआ रिजकु समाइ ॥੧॥ मः ੩ ॥ चातूक तू न
 जाणही किआ तुधु विचि तिखा है कितु पीतै तिख जाइ ॥ दूजै भाइ भरंमिआ अंमृत जलु पलै न
 पाइ ॥ नदरि करे जे आपणी ताँ सतिगुरु मिलै सुभाइ ॥ नानक सतिगुर ते अंमृत जलु पाइआ
 सहजे रहिआ समाइ ॥੨॥ पउड़ी ॥ इकि वण खंडि बैसहि जाइ सदु न देवही ॥ इकि पाला
 ककरु भंनि सीतलु जलु हेवही ॥ इकि भसम चडावहि अंगि मैलु न धोवही ॥ इकि जटा बिकट

ਬਿਕਰਾਲ ਕੁਲੁ ਘਰੁ ਖੋਵਹੀ ॥ ਇਕਿ ਨਗਨ ਫਿਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਨੀਂਦ ਨ ਸੋਵਹੀ ॥ ਇਕਿ ਅਗਨਿ ਜਲਾਵਹਿ
 ਅੰਗੁ ਆਪੁ ਵਿਗੋਵਹੀ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਤਨੁ ਛਾਰੁ ਕਿਆ ਕਹਿ ਰੋਵਹੀ ॥ ਸੋਹਨਿ ਖਸਮ ਟੁਆਰਿ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸੇਵਹੀ ॥੧੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਬਾਬੀਹਾ ਅੰਮ੍ਰਤ ਵੇਲੈ ਬੋਲਿਆ ਤਾਂ ਦਰਿ ਸੁਣੀ ਪੁਕਾਰ ॥ ਮੇਘੈ ਨੋ ਫੁਰਮਾਨੁ
 ਹੋਆ ਵਰਸਹੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਹਤ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਰਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੇ ਸਭ
 ਹਰੀਆਵਲੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਬਾਬੀਹਾ ਇਵ ਤੇਰੀ ਤਿਖਾ ਨ ਉਤਰੈ ਜੇ ਸਤ ਕਰਹਿ
 ਪੁਕਾਰ ॥ ਨਦਰੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਨਦਰੀ ਉਪਜੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਹਿ ਵਿਕਾਰ
 ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਕਿ ਜੈਨੀ ਤੱਝੜ ਪਾਇ ਧੁਰਹੁ ਖੁਆਇਆ ॥ ਤਿਨ ਮੁਖਿ ਨਾਹੀ ਨਾਮੁ ਨ ਤੀਰਥਿ ਨਾਇਆ ॥
 ਹਥੀ ਸਿਰ ਖੋਹਾਇ ਨ ਭਦੁ ਕਰਾਇਆ ॥ ਕੁਚਿਲ ਰਹਹਿ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ਸਬਦੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥ ਤਿਨ ਜਾਤਿ ਨ ਪਤਿ
 ਨ ਕਰਮੁ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥ ਮਨਿ ਜੂਠੈ ਵੇਜਾਤਿ ਜੂਠਾ ਖਾਇਆ ॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਆਚਾਰੁ ਨ ਕਿਨ ਹੀ ਪਾਇਆ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਓਅੰਕਾਰਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਸਾਵਣਿ ਸਰਸੀ ਕਾਮਣੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰਿ
 ॥ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣੀ ਗੁਰ ਕੈ ਹੋਤਿ ਅਪਾਰਿ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਸਾਵਣਿ ਦੜੈ ਗੁਣ ਬਾਹਰੀ ਜਿਸੁ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ
 ਪਿਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਪਿਰ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਈ ਸਮੁ ਸੀਗਾਰੁ ਖੁਆਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਚਾ ਅਲਖ ਅਭੇਤ ਹਠਿ ਨ
 ਪਤੀਜਈ ॥ ਇਕਿ ਗਾਵਹਿ ਰਾਗ ਪਰੀਆ ਰਾਗਿ ਨ ਭੀਜਈ ॥ ਇਕਿ ਨਚਿ ਨਚਿ ਪ੍ਰਾਰਹਿ ਤਾਲ ਭਗਤਿ ਨ ਕੀਜਈ
 ॥ ਇਕਿ ਅਨੁ ਨ ਖਾਹਿ ਸੂਰਖ ਤਿਨਾ ਕਿਆ ਕੀਜਈ ॥ ਤ੍ਰਸਨਾ ਹੋਈ ਬਹੁਤੁ ਕਿਵੈ ਨ ਧੀਜਈ ॥ ਕਰਮ ਵਧਹਿ ਕੈ
 ਲੋਅ ਖਪਿ ਮਰੀਜਈ ॥ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਸੰਸਾਰਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਜਈ ॥ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਅਸਨੇਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧੀਜਈ
 ॥੧੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਲਾਰ ਰਾਗੁ ਜੋ ਕਰਹਿ ਤਿਨ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਏਕੁ
 ਪਛਾਣਿਆ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਚਾ ਸਚੁ ਮਨਿ ਸਚੇ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥ ਅੰਦਰਿ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਹੈ ਸਹਜੇ ਹੀ
 ਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰੁ ਹੈ ਮਨਮੁਖ ਰਾਹੁ ਨ ਕੀਓਇ ॥ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੩ ॥ ਇੰਦੁ ਵਰਸੈ ਕਰਿ ਦਿਇਆ ਲੋਕਾਂ ਮਨਿ ਉਪਜੈ ਚਾਤ ॥ ਜਿਸ ਕੈ ਹੁਕਮਿ ਇੰਦੁ

ਕਰਸਦਾ ਤਿਸ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਂਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲੀਐ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ
 ਜਨ ਨਿਰਮਲੇ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਤ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਪ੍ਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਪ੍ਰਾ ਪਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰੈ ਕਰਮਿ ਧਿਆਇ
 ਪ੍ਰਾ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥ ਪ੍ਰੈ ਗਿਆਨਿ ਧਿਆਨਿ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਹਰਿ ਸਰਿ ਤੀਰਥਿ ਜਾਣਿ ਮਨੂਆ
 ਨਾਇਆ ॥ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਮਨੁ ਮਾਰਿ ਧਨੁ ਜਣੋਦੀ ਮਾਇਆ ॥ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰੁ ਸਚਾ ਆਇਆ ॥ ਪੁਛਿ ਨ
 ਸਕੈ ਕੋਈ ਜਾਂ ਖਸਮੈ ਭਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਲਾਹਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ॥੧੮॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਕੁਲਹਾਁ
 ਟੇਂਦੇ ਬਾਵਲੇ ਲੈਂਦੇ ਕਡੇ ਨਿਲਜ ॥ ਚੂਹਾ ਖਡ ਨ ਮਾਰਵੰਡ ਤਿਕਲਿ ਬਨ੍ਹੈ ਛਜ ॥ ਦੇਨਿ ਦੁਆਰੰਡ ਸੇ ਮਰਹਿ ਜਿਨ
 ਕਤ ਦੇਨਿ ਸਿ ਜਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਪਵੰਡ ਕਿਥੈ ਜਾਇ ਸਮਾਹਿ ॥ ਫਸਲਿ ਅਹਾਡੀ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਸਾਵਣੀ ਸਚੁ
 ਨਾਤ ॥ ਮੈ ਮਹਦੂਦੁ ਲਿਖਾਇਆ ਖਸਮੈ ਕੈ ਦਰਿ ਜਾਇ ॥ ਦੁਨੀਆ ਕੇ ਦਰ ਕੇਤੱਡੇ ਕੇਤੇ ਆਵਹਿ ਜਾਂਹਿ ॥ ਕੇਤੇ
 ਮੰਗਹਿ ਮੰਗਤੇ ਕੇਤੇ ਮੰਗਿ ਮੰਗਿ ਜਾਹਿ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਸਤ ਮਣੁ ਹਸਤੀ ਘਿਤ ਗੁੜੁ ਖਾਵੈ ਪੰਜਿ ਸੈ ਦਾਣਾ ਖਾਇ
 ॥ ਡਕੈ ਫੂਕੈ ਖੋਹ ਤਡਾਵੈ ਸਾਹਿ ਗਿਝੈ ਪਛੁਤਾਇ ॥ ਅੰਧੀ ਫੂਕਿ ਮੁੜੈ ਦੇਵਾਨੀ ॥ ਖਸਮਿ ਮਿਟੀ ਫਿਰਿ ਭਾਨੀ ॥
 ਅਧੁ ਗੁਲੂਂ ਚਿੜੀ ਕਾ ਚੁਗਣੁ ਗੈਣਿ ਚੜੀ ਬਿਲਲਾਇ ॥ ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ਓਹਾ ਚੰਗੀ ਜਿ ਕਰੇ ਖੁਦਾਇ ਖੁਦਾਇ ॥
 ਸਕਤਾ ਸੀਹੁ ਮਾਰੇ ਸੈ ਮਿਰਿਆ ਸਭ ਧਿਛੈ ਪੈ ਖਾਇ ॥ ਹੋਇ ਸਤਾਣਾ ਘੁਰੈ ਨ ਮਾਵੈ ਸਾਹਿ ਗਿਝੈ ਪਛੁਤਾਇ ॥
 ਅੰਧਾ ਕਿਸ ਨੋ ਬੁਕਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥ ਖਸਮੈ ਮੂਲਿ ਨ ਭਾਵੈ ॥ ਅਕ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੇ ਅਕ ਤਿਡਾ ਅਕ ਢਾਲੀ ਬਹਿ ਖਾਇ
 ॥ ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ਓਹੋ ਚੰਗਾ ਜਿ ਕਰੇ ਖੁਦਾਇ ਖੁਦਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਦੁਨੀਆ ਚਾਰਿ ਦਿਹਾਡੇ ਸੁਖਿ ਕੀਤੈ ਦੁਖੁ ਹੋਈ ॥
 ਗਲਾ ਵਾਲੇ ਹੈਨਿ ਘਣੇਰੇ ਛਡਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥ ਮਖੀ ਮਿਠੈ ਮਰਣਾ ॥ ਜਿਨ ਤੂ ਰਖਹਿ ਤਿਨ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਤਿਨ
 ਭਤ ਸਾਗਰੁ ਤਰਣਾ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਤੂ ਧਣੀ ਸਚਾ ਅਲਖ ਅਪਾਰੁ ॥ ਤੂ ਦਾਤਾ ਸਭਿ ਮੰਗਤੇ
 ਇਕੋ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥ ਜਿਨੀ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮਤੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਇਕਨਾ ਨੋ ਤੁਧੁ ਏਕੈ ਭਾਵਦਾ
 ਮਾਇਆ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀਐ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰੁ ॥ ਵਿਣੁ ਪ੍ਰੀਤੀ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਰਵੰਡ
 ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਤੂ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭਿ ਤੁਧੁ ਸੇਵਦੇ ਇਕ ਢਾਢੀ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ॥ ਦੇਹਿ ਦਾਨੁ ਸਾਂਤੋਖੀਆ

ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਆਧਾਰੁ ॥੧੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਰਾਤੀ ਕਾਲੁ ਘਟੈ ਦਿਨਿ ਕਾਲੁ ॥ ਛਿਜੈ ਕਾਇਆ ਹੋਇ
 ਪਰਾਲੁ ॥ ਵਰਤਣਿ ਵਰਤਿਆ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲੁ ॥ ਭੁਲਿਆ ਚੁਕਿ ਗਇਆ ਤਪ ਤਾਲੁ ॥ ਅੰਧਾ ਝਾਖਿ ਝਾਖਿ ਪਇਆ
 ਝੋਰਿ ॥ ਪਿਛੈ ਰੋਵਹਿ ਲਿਆਵਹਿ ਫੇਰਿ ॥ ਬਿਨੁ ਕੂੜੇ ਕਿਛੁ ਸੂੜੈ ਨਾਹੀ ॥ ਮੋਇਆ ਰੋਹਿ ਰੋਂਦੇ ਮਰਿ ਜਾਹਿੰੀ ॥
 ਨਾਨਕ ਖਸਮੈ ਏਵੈ ਭਾਵੈ ॥ ਸੇਈ ਮੁਏ ਜਿਨਿ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਮੁਆ ਪਿਆਰੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮੁੜੁ ਮੁਆ ਵੈਰੁ
 ਵਾਦੀ ॥ ਕਨੁ ਗਇਆ ਰੂਪੁ ਵਿਣਸਿਆ ਦੁਖੀ ਦੇਹ ਰੁਲੀ ॥ ਕਿਥਹੁ ਆਇਆ ਕਹ ਗਇਆ ਕਿਹੁ ਨ ਸੀਓ ਕਿਹੁ
 ਸੀ ॥ ਮਨਿ ਸੁਖਿ ਗਲਾ ਗੋਈਆ ਕੀਤਾ ਚਾਤ ਰਲੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਸਿਰ ਖੁਰ ਪਤਿ ਪਾਟੀ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥ ਬਾਝੁ ਗੁਰੁ ਜਗਤੁ ਬਤਰਾਨਾ ਨਾਵੈ ਸਾਰ ਨ ਪਾਈ
 ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਨ੍ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥ ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਤੇਹਾ ਜਿਸੁ ਭਾਣਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ
 ॥ ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਕਹੁ ਕਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਈ ॥ ਬਿਖਿਆ ਕਦੇ ਹੀ ਰਜੈ ਨਾਹੀ ਮੂਰਖ ਭੁਖ ਨ
 ਜਾਈ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਸਭੁ ਕੋ ਲਗਿ ਵਿਗੁਤਾ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੂੜਾ ਨ ਪਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸੋ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ
 ਕਰੇ ਰਜਾਈ ॥੨੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਸਰਮੁ ਧਰਮੁ ਦੁਇ ਨਾਨਕਾ ਜੇ ਧਨੁ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥ ਸੋ ਧਨੁ ਮਿਨੁ ਨ ਕਾਁਢੀਐ
 ਜਿਤੁ ਸਿਰਿ ਚੋਟਾਂ ਖਾਇ ॥ ਜਿਨ ਕੈ ਪਲੈ ਧਨੁ ਕਿਸੈ ਤਿਨ ਕਾ ਨਾਤ ਫਕੀਰ ॥ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਤ੍ਰੂ ਵਸਹਿ ਤੇ ਨਰ
 ਗੁਣੀ ਗਵੀਰ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਦੁਖੀ ਦੁਨੀ ਸਹੇਡੀਐ ਜਾਇ ਤ ਲਗਹਿ ਦੁਖ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਸੈ ਨ
 ਲਥੀ ਭੁਖ ॥ ਰੂਪੀ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੈ ਜਾਂ ਦੇਖਾਂ ਤਾਂ ਭੁਖ ॥ ਜੇਤੇ ਰਸ ਸਰੀਰ ਕੇ ਤੇਤੇ ਲਗਹਿ ਦੁਖ ॥੨॥ ਮਃ ੧ ॥ ਅੰਧੀ
 ਕੰਮੀ ਅੰਧੁ ਮਨੁ ਮਨਿ ਅੰਧੈ ਤਨੁ ਅੰਧੁ ॥ ਚਿਕਡਿ ਲਾਇਐ ਕਿਆ ਥੀਐ ਜਾਂ ਤੁਟੈ ਪਥਰ ਬੰਧੁ ॥ ਬੰਧੁ ਤੁਟਾ ਬੇਡੀ
 ਨਹੀ ਨਾ ਤੁਲਹਾ ਨਾ ਹਾਥ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਵਿਣੁ ਕੇਤੇ ਢੁਬੇ ਸਾਥ ॥੩॥ ਮਃ ੧ ॥ ਲਖ ਮਣ ਸੁਇਨਾ ਲਖ
 ਮਣ ਰੂਪਾ ਲਖ ਸਾਹਾ ਸਿਰਿ ਸਾਹ ॥ ਲਖ ਲਸਕਰ ਲਖ ਵਾਜੇ ਨੇਜੇ ਲਖੀ ਘੋੜੀ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥ ਜਿਥੈ ਸਾਇਰੁ
 ਲਮਘਣਾ ਅਗਨਿ ਪਾਣੀ ਅਸਗਾਹ ॥ ਕੰਧੀ ਦਿਸਿ ਨ ਆਵੰਦੀ ਧਾਹੀ ਪਵੈ ਕਹਾਹ ॥ ਨਾਨਕ ਓਥੈ ਜਾਣੀਅਹਿ ਸਾਹ
 ਕੇਈ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥੪॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਕਨਾ ਗਲੀ ਜੰਜੀਰ ਬੰਦਿ ਰਖਾਣੀਐ ॥ ਬਧੇ ਛੁਟਹਿ ਸਚਿ ਸਚੁ ਪਛਾਣੀਐ ॥

ਲਿਖਿਆ ਪਲੈ ਪਾਇ ਸੋ ਸਚੁ ਜਾਣੀਐ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਇ ਨਿਵੇਡੁ ਗਇਆ ਜਾਣੀਐ ॥ ਭਤਜਲ ਤਾਰਣਹਾਰੁ ਸਬਦਿ
 ਪਛਾਣੀਐ ॥ ਚੋਰ ਜਾਰ ਜੂਆਰ ਪੀਡੇ ਘਾਣੀਐ ॥ ਨਿੰਦਕ ਲਾਇਤਬਾਰ ਮਿਲੇ ਹਫ਼ਵਾਣੀਐ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚਿ
 ਸਮਾਇ ਸੁ ਦਰਗਹ ਜਾਣੀਐ ॥ ੨੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥ ਨਾਉ ਫਕੀਰੈ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਮੂਰਖ ਪੰਡਿਤੁ ਨਾਉ ॥ ਅੰਧੇ ਕਾ
 ਨਾਉ ਪਾਰਖੂ ਏਕੈ ਕਰੇ ਗੁਆਉ ॥ ਇਲਤਿ ਕਾ ਨਾਉ ਚਤੁਧਰੀ ਕੂੜੀ ਪ੍ਰੇ ਥਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ
 ਕਲਿ ਕਾ ਏਹੁ ਨਿਆਉ ॥ ੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਹਰਣਾਂ ਬਾਜਾਂ ਤੈ ਸਿਕਦਾਰਾਂ ਏਨਾ ਪਡਿਆ ਨਾਉ ॥ ਫਾਂਧੀ ਲਗੀ ਜਾਤਿ
 ਫਹਾਇਨਿ ਅਗੈ ਨਾਹੀ ਥਾਉ ॥ ਸੋ ਪਡਿਆ ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਬੀਨਾ ਜਿਨੀ ਕਮਾਣਾ ਨਾਉ ॥ ਪਹਿਲੋ ਦੇ ਜੜ੍ਹ ਅੰਦਰਿ
 ਜੰਮੈ ਤਾ ਉਪਰਿ ਹੋਵੈ ਛਾਂਤ ॥ ਰਾਜੇ ਸੀਹ ਮੁਕਦਮ ਕੁਤੇ ॥ ਜਾਇ ਜਗਾਇਨਿ ਬੈਠੇ ਸੁਤੇ ॥ ਚਾਕਰ ਨਹਦਾ ਪਾਇਨਿ
 ਘਾਉ ॥ ਰਤੁ ਧਿਤੁ ਕੁਤਿਹੋ ਚਟਿ ਜਾਹੁ ॥ ਜਿਥੈ ਜੀਆਂ ਹੋਸੀ ਸਾਰ ॥ ਨਕੀ ਵਢੀ ਲਾਇਤਬਾਰ ॥ ੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਮੇਦਨੀ ਆਪੇ ਕਰਦਾ ਸਾਰ ॥ ਭੈ ਬਿਨੁ ਭਰਮੁ ਨ ਕਟੀਐ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਧਿਆਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ
 ਭਤ ਊਪਜੈ ਪਾਈਐ ਮੋਖ ਟੁਆਰ ॥ ਭੈ ਤੇ ਸਹਜੁ ਪਾਈਐ ਮਿਲਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥ ਭੈ ਤੇ ਭੈਜਲੁ ਲਮਘੀਐ
 ਗੁਰਮਤੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਭੈ ਤੇ ਨਿਰਭਤ ਪਾਈਐ ਜਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਵਾਰੁ ॥ ਮਨਮੁਖ ਭੈ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ
 ਤ੃ਸਨਾ ਜਲਤੇ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਹੀ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮਤੀ ਤਰਿ ਧਾਰ ॥ ੨੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
 ਰੂਪੈ ਕਾਮੈ ਦੋਸਤੀ ਭੁਖੈ ਸਾਦੈ ਗੱਢੁ ॥ ਲਬੈ ਮਾਲੈ ਧੁਲਿ ਮਿਲਿ ਮਿਚਲਿ ਊੰਧੈ ਸਤਡਿ ਪਲਮਧੁ ॥ ਭੰਤਕੈ ਕੋਪੁ
 ਖੁਆਰੁ ਹੋਇ ਫਕਡੁ ਪਿਟੇ ਅੰਧੁ ॥ ਚੁਪੈ ਚੰਗਾ ਨਾਨਕਾ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸੁਹਿ ਗੰਧੁ ॥ ੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ਰੂਪੁ
 ਜਾਤਿ ਜੋਬਨੁ ਪੰਜੇ ਠਗ ॥ ਏਨੀ ਠਗੀ ਜਗੁ ਠਗਿਆ ਕਿਨੈ ਨ ਰਖੀ ਲਜ ॥ ਏਨਾ ਠਗਨਿ ਠਗ ਸੇ ਜਿ ਗੁਰ ਕੀ
 ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਮਾ ਬਾਹਰੇ ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਸੁਠੇ ਜਾਹਿ ॥ ੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਪਡਿਆ ਲੇਖੇਦਾਰੁ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ
 ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੂਡਿਆਰੁ ਅਤਖਾ ਤੰਗੀਐ ॥ ਅਤਘਟ ਰੁਧੇ ਰਾਹ ਗਲੀਆਂ ਰੋਕੀਆਂ ॥ ਸਚਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ
 ਸਬਦਿ ਸਾਂਤੋਖੀਆਂ ॥ ਗਹਿਰ ਗਭੀਰ ਅਥਾਹੁ ਹਾਥ ਨ ਲਭਈ ॥ ਸੁਹੇ ਸੁਹਿ ਚੋਟਾ ਖਾਹੁ ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਕੋਇ ਨ
 ਛੁਟਸੀ ॥ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਹੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀਐ ॥ ਹੁਕਮੀ ਸਾਹ ਗਿਰਾਹ ਦੇਂਦਾ ਜਾਣੀਐ ॥ ੨੩॥

सलोक मः १ ॥ पउणै पाणी अगनी जीउ तिन किआ खुसीआ किआ पीड़ ॥ धरती पाताली आकासी
 डिकि दरि रहनि वजीर ॥ डिकना वडी आरजा डिकि मरि होहि जहीर ॥ डिकि दे खाहि निखुटै नाही
 डिकि सदा फिरहि फकीर ॥ हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे महि लख ॥ सभु को नथै नथिआ बखसे तोड़े
 नथ ॥ वरना चिहना बाहरा लेखे बाझु अलखु ॥ किउ कथीअै किउ आखीअै जापै सचो सचु ॥ करणा
 कथना कार सभ नानक आपि अकथु ॥ अकथ की कथा सुणेहि ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु सदा सुखु होहि
 ॥ १ ॥ मः १ ॥ अजरु जरै त नउ कुल बंधु ॥ पूजै प्राण होवै थिरु कंधु ॥ कहाँ ते आडिआ कहाँ एहु जाणु ॥
 जीवत मरत रहै परवाणु ॥ हुकमै बूझै ततु पछाणै ॥ डिहु परसादु गुरु ते जाणै ॥ होंदा फड़ीअगु
 नानक जाणु ॥ ना हउ ना मै जूनी पाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पड़ीअै नामु सालाह होरि बुधीं मिथिआ ॥
 बिनु सचे वापार जनमु बिरथिआ ॥ अंतु न पारावारु न किन ही पाडिआ ॥ सभु जगु गरबि गुबारु
 तिन सचु न भाडिआ ॥ चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥ बलदी अंदरि तेलु दुष्प्रिया घतिआ ॥
 आडिआ उठी खेलु फिरै उवतिआ ॥ नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥ २४ ॥ सलोक मः १ ॥ पहिलाँ
 मासहु निमिआ मासै अंदरि वासु ॥ जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चंमु तनु मासु ॥ मासहु
 बाहरि कठिआ मंमा मासु गिरासु ॥ मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ॥ वडा होआ
 वीआहिआ घरि लै आडिआ मासु ॥ मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥ सतिगुरि मिलिअै हुकमु
 बुझीअै ताँ को आवै रासि ॥ आपि छुटे नह छूटीअै नानक बचनि बिणासु ॥ १ ॥ मः १ ॥ मासु मासु करि
 मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नही जाणै ॥ कउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु महि पाप समाणे ॥
 गैडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे ॥ मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे ॥ फड़ु
 करि लोकाँ नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै ॥ नानक अंधे सिउ किआ कहीअै कहै न कहिआ
 बूझै ॥ अंधा सोइ जि अंधु कमावै तिसु रिटै सि लोचन नाही ॥ मात पिता की रकतु निपन्ने मछी मासु न

ਖਾਂਹੀ ॥ ਇਸਤੀ ਪੁਰਖੈ ਜਾਂ ਨਿਸਿ ਮੇਲਾ ਓਥੈ ਮੰਧੁ ਕਮਾਹੀ ॥ ਮਾਸਹੁ ਨਿੰਮੇ ਮਾਸਹੁ ਜਂਮੇ ਹਮ ਮਾਸੈ ਕੇ ਭਾੱਡੇ ॥
 ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਕਛੁ ਸ੍ਰੋਝੈ ਨਾਹੀ ਚਤੁਰੁ ਕਹਾਵੈ ਪਾੱਡੇ ॥ ਬਾਹਰ ਕਾ ਮਾਸੁ ਮੰਦਾ ਸੁਆਮੀ ਘਰ ਕਾ ਮਾਸੁ ਚੰਗੇਗਾ
 ॥ ਜੀਅ ਜਂਤ ਸਭਿ ਮਾਸਹੁ ਹੋਏ ਜੀਇ ਲਿਡਿਆ ਵਾਸੇਰਾ ॥ ਅਭਖੁ ਭਖਹਿ ਭਖੁ ਤਜਿ ਛੋਡਹਿ ਅੰਧੁ ਗੁਰੁ ਜਿਨ ਕੇਰਾ
 ॥ ਮਾਸਹੁ ਨਿੰਮੇ ਮਾਸਹੁ ਜਂਮੇ ਹਮ ਮਾਸੈ ਕੇ ਭਾੱਡੇ ॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਕਛੁ ਸ੍ਰੋਝੈ ਨਾਹੀ ਚਤੁਰੁ ਕਹਾਵੈ ਪਾੱਡੇ ॥ ਮਾਸੁ
 ਪੁਰਾਣੀ ਮਾਸੁ ਕਤੇਬੀ ਚਹੁ ਜੁਗਿ ਮਾਸੁ ਕਮਾਣਾ ॥ ਜਜਿ ਕਾਜਿ ਵੀਆਹਿ ਸੁਹਾਵੈ ਓਥੈ ਮਾਸੁ ਸਮਾਣਾ ॥ ਇਸਤੀ
 ਪੁਰਖ ਨਿਪਜਹਿ ਮਾਸਹੁ ਪਾਤਿਸਾਹ ਸੁਲਤਾਨਾਂ ॥ ਜੇ ਓਇ ਦਿਸਹਿ ਨਰਕਿ ਜਾਂਦੇ ਤਾਂ ਤਨੁ ਕਾ ਢਾਨੁ ਨ ਲੈਣਾ ॥
 ਟੌਂਦਾ ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ ਲੈਂਦੇ ਦੇਖਹੁ ਏਹੁ ਧਿਡਾਣਾ ॥ ਆਪਿ ਨ ਕ੍ਰੂਝੈ ਲੋਕ ਬੁਝਾਏ ਪਾੱਡੇ ਖਰਾ ਸਿਆਣਾ ॥ ਪਾੱਡੇ ਤੂ
 ਜਾਣੈ ਹੀ ਨਾਹੀ ਕਿਥਹੁ ਮਾਸੁ ਤਪਨਾ ॥ ਤੋਇਅਹੁ ਅਨ੍ਨੁ ਕਮਾਦੁ ਕਪਾਹਾਂ ਤੋਇਅਹੁ ਤ੃ਭਵਣੁ ਗਨਾ ॥ ਤੋਆ ਆਖੈ
 ਹਤ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਹਛਾ ਤੋਐ ਬਹੁਤੁ ਬਿਕਾਰਾ ॥ ਏਤੇ ਰਸ ਛੋਡਿ ਹੋਵੈ ਸੰਨਿਆਸੀ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਵਿਚਾਰਾ ॥੨॥
 ਪਤੜੀ ॥ ਹਤ ਕਿਆ ਆਖਾ ਇਕ ਜੀਭ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਕਿਨ ਹੀ ਪਾਇਆ ॥ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ਸੇ ਤੁੜ੍ਹ ਹੀ
 ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਇਕਿ ਭਗਵਾ ਕੇਸੁ ਕਰਿ ਭਰਮਦੇ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਦੇਸ ਦਿਸਤਰ ਭਵਿ
 ਥਕੇ ਤੁਧੁ ਅੰਦਰਿ ਆਪੁ ਲੁਕਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਤਨੁ ਹੈ ਕਰਿ ਚਾਨਣੁ ਆਪਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਆਪਣਾ
 ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਗੁਰਮਤੀ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਬਜਾਰੀਆ ਬਾਜਾਰੁ ਜਿਨੀ ਰਚਾਇਆ ॥ ਇਕੁ
 ਥਿਰੁ ਸਚਾ ਸਾਲਾਹਣਾ ਜਿਨ ਮਨਿ ਸਚਾ ਭਾਇਆ ॥੨੫॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਕਰਮ ਬਿਰਖੁ ਫਲ
 ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲ ਵਿਸੁ ॥ ਸਭ ਕਾਰਣ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਖਵਾਲੇ ਤਿਸੁ ॥੧॥ ਮਃ ੨ ॥ ਨਾਨਕ ਦੁਨੀਆ ਕੀਓਾਂ
 ਵਡਿਆਈਆਂ ਅਗੀ ਸੇਤੀ ਜਾਲਿ ॥ ਏਨੀ ਜਲੀਈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਇਕ ਨ ਚਲੀਆ ਨਾਲਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥
 ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਹੋਇ ਨਿਕੇਡੁ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਇਆ ॥ ਤੈਰੈ ਹਥਿ ਨਿਕੇਡੁ ਤੂਹੈ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥ ਕਾਲੁ ਚਲਾਏ ਬੰਨਿ
 ਕੋਇ ਨ ਰਖਸੀ ॥ ਜਰੁ ਜਰਵਾਣਾ ਕਨ੍ਹਿ ਚਡਿਆ ਨਚਸੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬੋਹਿਥੁ ਕੇਡੁ ਸਚਾ ਰਖਸੀ ॥ ਅਗਨਿ ਭਖੈ
 ਭਡਹਾਡੁ ਅਨਦਿਨੁ ਭਖਸੀ ॥ ਫਾਥਾ ਚੁਗੈ ਚੋਗ ਹੁਕਮੀ ਛੁਟਸੀ ॥ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਗੁ ਕੂਡੁ ਨਿਖੁਟਸੀ ॥੨੬॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਘਰ ਮਹਿ ਘਰੁ ਦੇਖਾਇ ਦੇਇ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਪੰਚ ਸਬਦ ਧੁਨਿਕਾਰ ਧੁਨਿ ਤਹ
 ਬਾਜੈ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਦੀਪ ਲੋਅ ਪਾਤਾਲ ਤਹ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਹੈਰਾਨੁ ॥ ਤਾਰ ਘੋਰ ਬਾਜਿੰਨ ਤਹ ਸਾਚਿ ਤਖਤਿ
 ਸੁਲਤਾਨੁ ॥ ਸੁਖਮਨ ਕੈ ਘਰਿ ਰਾਗੁ ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਮੰਡਲਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਅਕਥ ਕਥਾ ਬੀਚਾਰੀਐ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ
 ਸਮਾਇ ॥ ਤਲਟਿ ਕਮਲੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਭਰਿਆ ਇਹੁ ਮਨੁ ਕਤਹੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਅਜਪਾ ਜਾਪੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਆਦਿ
 ਜੁਗਾਦਿ ਸਮਾਇ ॥ ਸਭਿ ਸਖੀਆ ਪੰਚੇ ਮਿਲੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ॥ ਸਬਦੁ ਖੋਜਿ ਇਹੁ ਘਰੁ ਲਹੈ ਨਾਨਕੁ
 ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਚਿਲਿਮਿਲਿ ਬਿਸੀਆਰ ਦੁਨੀਆ ਫਾਨੀ ॥ ਕਾਲੂਬਿ ਅਕਲ ਮਨ ਗੋਰ ਨ ਮਾਨੀ ॥
 ਮਨ ਕਮੀਨ ਕਮਤਰੀਨ ਤੂ ਦਰੀਆਤ ਖੁਦਾਇਆ ॥ ਏਕੁ ਚੀਜੁ ਮੁੜੈ ਦੇਹਿ ਅਵਰ ਜਹਰ ਚੀਜ ਨ ਭਾਇਆ ॥
 ਪੁਰਾਬ ਖਾਮ ਕ੍ਰਿਯੈ ਹਿਕਮਤਿ ਖੁਦਾਇਆ ॥ ਮਨ ਤੁਆਨਾ ਤੂ ਕੁਦਰਤੀ ਆਇਆ ॥ ਸਗ ਨਾਨਕ ਦੀਬਾਨ
 ਮਸਤਾਨਾ ਨਿਤ ਚੱਡੈ ਸਵਾਇਆ ॥ ਆਤਸ ਦੁਨੀਆ ਖੁਨਕ ਨਾਮੁ ਖੁਦਾਇਆ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ਨਵੀ ਮਃ ੫ ॥
 ਸਭੋ ਵਰਤੈ ਚਲਤੁ ਚਲਤੁ ਵਖਾਣਿਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸ਼ਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣਿਆ ॥ ਲਥੇ ਸਭਿ ਵਿਕਾਰ ਸਬਦਿ
 ਨੀਸਾਣਿਆ ॥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਉਧਾਰੁ ਭਏ ਨਿਕਾਣਿਆ ॥ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਦਾਤਾਰੁ ਸਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣਿਆ ॥
 ਪਰਗਟੁ ਭਿਆ ਸੰਸਾਰਿ ਮਿਹਰ ਛਾਵਾਣਿਆ ॥ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਏ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਲਏ
 ਮਿਲਾਇ ਖਸਮੈ ਭਾਣਿਆ ॥੨੭॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥ ਧਨੁ ਸੁ ਕਾਗਦੁ ਕਲਮ ਧਨੁ ਧਨੁ ਭਾੜਾ ਧਨੁ ਮਸੁ ॥ ਧਨੁ
 ਲੇਖਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਲਿਖਾਇਆ ਸਚੁ ॥੧॥ ਮਃ ੧ ॥ ਆਪੇ ਪਟੀ ਕਲਮ ਆਪਿ ਤੁਪਰਿ ਲੇਖੁ ਭਿ ਤੂ
 ॥ ਏਕੋ ਕਹੀਐ ਨਾਨਕਾ ਦੂਜਾ ਕਾਹੇ ਕੂ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੂ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਆਪਿ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥
 ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਤੂ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੂਹੈ ਜਾਣਦਾ ਤੁਧੁ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥ ਤੂ ਅਲਖ
 ਅਗੋਚਰੁ ਅਗਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮਤਿ ਦਿਖਾਈ ॥ ਅਂਤਰਿ ਅਗਿਆਨੁ ਦੁਖੁ ਭਰਮੁ ਹੈ ਗੁਰ ਗਿਆਨਿ ਗਵਾਈ ॥
 ਜਿਸੁ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹਿ ਤਿਸੁ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਸੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਤੂ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਰਵਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ॥
 ਜਿਤੁ ਤੂ ਲਾਇਹਿ ਸਚਿਆ ਤਿਤੁ ਕੋ ਲਗੈ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੨੮॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

ਰਾਗੁ ਮਲਾਰ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀਤ ਕੀ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੇਵੀਲੇ ਗੋਪਾਲ ਰਾਡਿ ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨ ॥ ਭਗਤਿ ਦਾਨੁ ਦੀਜੈ ਜਾਚਹਿ ਸੰਤ ਜਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਾਂ ਚੈ ਘਰਿ
ਦਿਗ ਦਿਸੈ ਸਰਾਇਚਾ ਬੈਕੁਠੁ ਭਵਨ ਚਿਕਸਾਲਾ ਸਪਤ ਲੋਕ ਸਾਮਾਨਿ ਪੂਰੀਅਲੇ ॥ ਜਾਂ ਚੈ ਘਰਿ ਲਛਿਮੀ ਕੁਆਰੀ
ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਦੀਵਡੇ ਕਤਤਕੁ ਕਾਲੁ ਬਪੁੜਾ ਕੋਟਵਾਲੁ ਸੁ ਕਰਾ ਸਿਰੀ ॥ ਸੁ ਐਸਾ ਰਾਜਾ ਸੀ ਨਰਹਰੀ ॥੨॥ ਜਾਂ ਚੈ
ਘਰਿ ਕੁਲਾਲੁ ਬ੍ਰਹਮਾ ਚਤੁਰ ਮੁਖੁ ਢਾਂਵੜਾ ਜਿਨਿ ਬਿਸ਼੍ਵ ਸੰਸਾਰੁ ਰਾਚੀਲੇ ॥ ਜਾਂ ਕੈ ਘਰਿ ਈਸਰੁ ਬਾਕਲਾ ਜਗਤ ਗੁਰੂ
ਤਤ ਸਾਰਖਾ ਗਿਆਨੁ ਭਾਖੀਲੇ ॥ ਪਾਪੁ ਪੁਨ੍ਨੁ ਜਾਂ ਚੈ ਢਾਂਗੀਆ ਦੁਆਰੈ ਚਿਤ ਗੁਪਤੁ ਲੇਖੀਆ ॥ ਧਰਮ ਰਾਡਿ
ਪਰੁਲੀ ਪ੍ਰਤਿਹਾਰੁ ॥ ਸੁੋ ਐਸਾ ਰਾਜਾ ਸੀ ਗੋਪਾਲੁ ॥੨॥ ਜਾਂ ਚੈ ਘਰਿ ਗਣ ਗੰਧਰਬ ਰਿਖੀ ਬਪੁੜੇ ਢਾਢੀਆ ਗਾਵਤ
ਆਛੈ ॥ ਸਰਬ ਸਾਸਕ੍ਰਤ ਬਹੁ ਰੂਪੀਆ ਅਨਗਰੂਆ ਆਖਾੜਾ ਮੰਡਲੀਕ ਬੋਲ ਬੋਲਹਿ ਕਾਛੇ ॥ ਚਤੁਰ ਫੂਲ ਜਾਂ ਚੈ ਹੈ
ਪਕਣੁ ॥ ਚੇਰੀ ਸਕਤਿ ਜੀਤਿ ਲੇ ਭਵਣੁ ॥ ਅੰਡ ਟ੍ਰੂਕ ਜਾ ਚੈ ਭਸਮਤੀ ॥ ਸੁੋ ਐਸਾ ਰਾਜਾ ਤ੃ਭਵਣ ਪਤੀ ॥੩॥ ਜਾਂ ਚੈ
ਘਰਿ ਕੂਰਮਾ ਪਾਲੁ ਸਹਸ੍ਰ ਫਨੀ ਬਾਸਕੁ ਸੇਜ ਵਾਲ੍ਹਾ ॥ ਅਠਾਰਹ ਭਾਰ ਬਨਾਸਪਤੀ ਮਾਲਣੀ ਛਿਨਵੈ ਕਰੋਡੀ
ਮੇਘ ਮਾਲਾ ਪਾਣੀਹਾਰੀਆ ॥ ਨਖ ਪ੍ਰਸੇਵ ਜਾ ਚੈ ਸੁਰਸਰੀ ॥ ਸਪਤ ਸਮੁੰਦ ਜਾਂ ਚੈ ਘੜਥਲੀ ॥ ਏਤੇ ਜੀਅ ਜਾਂ ਚੈ
ਕਰਤਣੀ ॥ ਸੁੋ ਐਸਾ ਰਾਜਾ ਤ੃ਭਵਣ ਧਣੀ ॥੪॥ ਜਾਂ ਚੈ ਘਰਿ ਨਿਕਟ ਵਰਤੀ ਅਰਜਨੁ ਧ੍ਵ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਅੰਬਰੀਕੁ
ਨਾਰਦੁ ਨੇਜੈ ਸਿਧ ਬੁਧ ਗਣ ਗੰਧਰਬ ਬਾਨਵੈ ਹੇਲਾ ॥ ਏਤੇ ਜੀਅ ਜਾਂ ਚੈ ਹਹਿ ਘਰੀ ॥ ਸਰਬ ਬਿਆਪਿਕ ਅੰਤਰ
ਹਰੀ ॥ ਪ੍ਰਣਵੈ ਨਾਮਦੇਉ ਤਾਂ ਚੀ ਆਣਿ ॥ ਸਗਲ ਭਗਤ ਜਾ ਚੈ ਨੀਸਾਣਿ ॥੫॥੧॥ ਮਲਾਰ ॥ ਮੋ ਕਤ ਤੂਂ
ਨ ਬਿਸਾਰਿ ਤੂਂ ਨ ਬਿਸਾਰਿ ॥ ਤੂਂ ਨ ਬਿਸਾਰੇ ਰਾਮਈਆ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਲਾਕਾਂਤੀ ਇਹੁ ਭਰਮੁ ਜੋ ਹੈ ਮੁੜ
ਊਪਰਿ ਸਭ ਕੋਪਿਲਾ ॥ ਸੂਦੁ ਸੂਦੁ ਕਰਿ ਮਾਰਿ ਤਠਾਇਆਂ ਕਹਾ ਕਰਤ ਬਾਪ ਬੀਠੁਲਾ ॥੩॥ ਮੂਏ ਹ੍ਰਾਏ ਜਤ
ਮੁਕਤਿ ਦੇਹੁਗੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇਲਾ ॥ ਏ ਪਂਡੀਆ ਮੋ ਕਤ ਫੇਛ ਕਹਤ ਤੇਰੀ ਪੈਜ ਪਿਛੁੱਤੀ ਹੋਇਲਾ
॥੨॥ ਤੂ ਜੁ ਦਿਇਆਲੁ ਕੁਪਾਲੁ ਕਹੀਅਤੁ ਹੈ ਅਤਿਭੁਜ ਭਿਓ ਅਪਾਰਲਾ ॥ ਫੇਰਿ ਦੀਆ ਦੇਹੁਗਾ ਨਾਮੇ

ਕਤ ਪੰਡੀਅਨ ਕਤ ਪਿਛਵਾਰਲਾ ॥੩॥੨॥

मलार बाणी भगत रविदास जी की १८८ सतिगुर प्रसादि ॥
नागर जनाँ मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥१॥ रहाउ ॥ सुरसरी सलल
कृत बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ
आनं ॥२॥ तर तारि अपवित्र करि मानीअै रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥ भगति भागउतु लिखीअै
तिह ऊपरे पूजीअै करि नमसकारं ॥३॥ मेरी जाति कुट बाँडला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस
पासा ॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥४॥१॥
मलार ॥ हरि जपत तेऊ जना पद्म कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक
होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ जा कै भागवतु लेखीअै अवरु नही पेखीअै
तास की जाति आछोप छीपा ॥ बिआस महि लेखीअै सनक महि पेखीअै नाम की नामना सपत दीपा
॥५॥ जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ जा कै बाप वैसी
करी पूत औसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥६॥ जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि
अजहु बन्नारसी आस पासा ॥ आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा
॥७॥२॥

मलार

१८४ सतिगुर प्रसादि ।

ਮਿਲਤ ਪਿਆਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਨਾਥੁ ਕਵਨ ਭਗਤਿ ਤੇ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਪਰਮ ਗਤੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮੈਲੇ ਕਪਰੇ
ਕਹਾ ਲਤ ਧੋਵਤ ॥ ਆਵੈਗੀ ਨੀਟ ਕਹਾ ਲਗੁ ਸੋਵਤ ॥੧॥ ਜੋਈ ਜੋਈ ਜੋਰਿਓ ਸੋਈ ਸੋਈ ਫਾਟਿਓ ॥
ਝੂਠੈ ਬਨਜਿ ਤਠਿ ਹੀ ਗੈਝ ਹਾਟਿਓ ॥੨॥ ਕਹੁ ਰਖਿਦਾਸ ਭਡਿਓ ਜਬ ਲੇਖੋ ॥ ਜੋਈ ਜੋਈ ਕੀਨੋ
ਸੋਈ ਸੋਈ ਦੇਖਿਓ ॥੩॥੧॥੩॥

ਰਾਗੁ ਕਾਨਡਾ ਚਤੁਪਦੇ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੂ ੧

੧ੰਦੀ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਸਾਧ ਜਨਾਂ ਮਿਲਿ ਹਰਿਆ ॥ ਹਉ ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਸਾਧ ਜਨਾਂ ਕਤ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਪਾਰਿ
ਉਤਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੀ ਹਮ ਸਾਧ ਜਨਾਂ ਪਾ ਪਰਿਆ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਾਧ
ਜਿਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਨਿਆ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਪਤਿਤ ਉਧਰਿਆ ॥੨॥ ਮਨੂਆ ਚਲੈ ਚਲੈ ਬਹੁ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ
ਵਸਗਤਿ ਕਰਿਆ ॥ ਜਿਤੁੰ ਜਲ ਤੰਤੁ ਪਸਾਰਿਓ ਬਧਕਿ ਗ੍ਰਸਿ ਮੀਨਾ ਵਸਗਤਿ ਖਰਿਆ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ
ਸੰਤ ਭਲ ਨੀਕੇ ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਲੁ ਲਹੀਆ ॥ ਹਉਮੈ ਦੁਰਤੁ ਗਿੜਿਆ ਸਭੁ ਨੀਕਰਿ ਜਿਤ ਸਾਬੁਨਿ ਕਾਪਰੁ
ਕਰਿਆ ॥੩॥ ਮਸਤਕਿ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਠਾਕੁਰਿ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨ ਤਰ ਧਰਿਆ ॥ ਸਭੁ ਦਾਲਦੁ
ਫੂਖ ਭੰਜ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਉਧਰਿਆ ॥੪॥੧॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਸੰਤ ਜਨਾ
ਪਾ ਰੇਨ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਨੀ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਮਨੁ ਕੋਰਾ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਭੇਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਮ ਅਚਿਤ
ਅਚੇਤ ਨ ਜਾਨਹਿ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਗੁਰਿ ਕੀਏ ਸੁਚਿਤ ਚਿਤੇਨ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲਿ ਕੀਓ ਅੰਗੀਕ੃ਤੁ ਮਨਿ
ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇਨ ॥੧॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਮਿਲਹਿ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਟਿ ਦੇਵਤ ਹੀਅਰਾ ਤੇਨ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ
ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਹਮ ਕੀਏ ਪਤਿਤ ਪਵੇਨ ॥੨॥ ਹਰਿ ਕੇ ਜਨ ਊਤਮ ਜਗਿ ਕਹੀਅਹਿ ਜਿਨ ਮਿਲਿਆ

पाथर सेन ॥ जन की महिमा बरनि न साकउ ओङ्गि ऊतम हरि हरि केन ॥३॥ तुम् हरि साह वडे प्रभ
 सुआमी हम वणजारे रासि देन ॥ जन नानक कउ दिइਆ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन
 ॥४॥२॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम परगास ॥ हरि के संत मिलि प्रीति लगानी विचे
 गिरह उदास ॥१॥ रहाउ ॥ हम हरि हिरदै जपिओ नामु नरहरि प्रभि कृपा करी किरपास ॥
 अनदिनु अनदु भिइਆ मनु बिगसिआ उदम भए मिलन की आस ॥१॥ हम हरि सुआमी प्रीति
 लगाई जितने सास लीए हम ग्रास ॥ किलबिख दहन भए खिन अंतरि तूटि गए माइआ के फास
 ॥२॥ किआ हम किरम किआ करम कमावहि मूरख मुगध रखे प्रभ तास ॥ अवगनीआरे पाथर भारे
 सतसंगति मिलि तरे तरास ॥३॥ जेती सृस्टि करी जगदीसरि ते सभि ऊच हम नीच बिखिआस ॥
 हमरे अवगुन संगि गुर मेटे जन नानक मेलि लीए प्रभ पास ॥४॥३॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरै मनि
 राम नामु जपिओ गुर वाक ॥ हरि हरि कृपा करी जगदीसरि दुरमति दूजा भाउ गइओ सभ झाक
 ॥१॥ रहाउ ॥ नाना रूप रंग हरि केरे घटि घटि रामु रविओ गुपलाक ॥ हरि के संत मिले हरि
 प्रगटे उघरि गए बिखिआ के ताक ॥१॥ संत जना की बहुतु बहु सोभा जिन उरि धारिओ हरि रसिक
 रसाक ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ जैसे गऊ देखि बछराक ॥२॥ हरि के संत जना महि हरि हरि
 ते जन ऊतम जनक जनाक ॥ तिन हरि हिरदै बासु बसानी छूटि गई मुसकी मुसकाक ॥३॥ तुमरे
 जन तुम ही प्रभ कीए हरि राखि लेहु आपन अपनाक ॥ जन नानक के सखा हरि भाई मात पिता बंधप
 हरि साक ॥४॥४॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरे मन हरि हरि राम नामु जपि चीति ॥ हरि हरि वसतु
 माइआ गड़ि वेड़ी गुर कै सबदि लीओ गड़ु जीति ॥१॥ रहाउ ॥ मिथिआ भरमि भरमि बहु भ्रमिआ
 लुबधो पुत्र कलत्र मोह प्रीति ॥ जैसे तरवर की तुछ छाइआ खिन महि बिनसि जाइ देह भीति ॥१॥
 हमरे प्रान प्रीतम जन ऊतम जिन मिलिआ मनि होइ प्रतीति ॥ परचै रामु रविआ घट अंतरि

असथिरु रामु रविआ रंगि प्रीति ॥२॥ हरि के संत संत जन नीके जिन मिलिआँ मनु रंगि रंगीति ॥
हरि रंगु लहै न उतरै कबहू हरि हरि जाइ मिलै हरि प्रीति ॥३॥ हम बहु पाप कीए अपराधी
गुरि काटे कटित कटीति ॥ हरि हरि नामु दीओ मुखि अउखधु जन नानक पतित पुनीति ॥४॥५॥
कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम जगन्नाथ ॥ घूमन घेर परे बिखु बिखिआ सतिगुर काढि लीए
दे हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ सुआमी अभै निरंजन नरहरि तुम् राखि लेहु हम पापी पाथ ॥ काम क्रोध बिखिआ
लोभि लुभते कासट लोह तरे संगि साथ ॥२॥ तुम् वड पुरख बड अगम अगोचर हम ढूढि रहे पाई
नही हाथ ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी तू आपन जानहि आपि जगन्नाथ ॥३॥ अदृसटु अगोचर
नामु धिआए सतसंगति मिलि साधू पाथ ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति हरि हरि जपिओ
अकथ कथ कथ ॥४॥६॥ हमरे प्रभ जगदीस गुसाई हम राखि लेहु जगन्नाथ ॥ जन नानकु दासु दास
दासन को प्रभ करहु कृपा राखहु जन साथ ॥५॥७॥

कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५ ॥

੧੭੮ सतिगुर प्रसादि ॥

मन जापहु राम गुपाल ॥ हरि रतन जवेहर लाल ॥ हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल ॥ हरि हो हो किरपाल
॥१॥ रहाउ ॥ तुमरे गुन अगम अगोचर एक जीह किआ कथै बिचारी राम राम राम राम लाल ॥
तुमरी जी अकथ कथा तू तू तू ही जानहि हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥२॥ हमरे हरि
प्रान सखा सुआमी हरि मीता मेरे मनि तनि जीह हरि हरे हरे राम नाम धनु माल ॥ जा को भागु तिनि
लीओ री सुहागु हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति हउ बलि बले हउ बलि बले जन नानक हरि
जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥३॥७॥ कानड़ा महला ४ ॥ हरि गुन गावहु जगदीस ॥
एका जीह कीचै लख बीस ॥ जपि हरि हरि सबदि जपीस ॥ हरि हो हो किरपीस ॥४॥ रहाउ ॥ हरि
किरपा करि सुआमी हम लाइ हरि सेवा हरि जपि जपे हरि जपि जपे जपु जापउ जगदीस ॥ तुमरे

ਜਨ ਰਾਮੁ ਜਪਹਿ ਤੇ ਊਤਮ ਤਿਨ ਕਤ ਹਤ ਘੁਮਿ ਘੁਮੇ ਘੁਮਿ ਘੁਮਿ ਜੀਸ ॥੧॥ ਹਰਿ ਤੁਮ ਵਡ ਵਡੇ ਵਡੇ ਵਡ
 ਊਚੇ ਸੋ ਕਰਹਿ ਜਿ ਤੁਧੁ ਭਾਵੀਸ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਆ ਗੁਰਮਤੀ ਧਨੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੂ ਸਾਬੀਸ
 ॥੨॥੨॥੮॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਭਜੁ ਰਾਮੋ ਮਨਿ ਰਾਮ ॥ ਜਿਸੁ ਰੂਪ ਨ ਰੇਖ ਵਡਾਮ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲੁ ਭਜੁ
 ਰਾਮ ॥ ਬਡ ਹੋ ਹੋ ਭਾਗ ਮਥਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਿਤੁ ਗ੍ਰਹਿ ਮੰਦਰਿ ਹਰਿ ਹੋਤੁ ਜਾਸੁ ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਆਨਦੁ ਆਨਦੁ
 ਭਜੁ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਉਪਦੇਸਿ ਗੁਰੂ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਖੁ ਹੋਤੁ ਹਰਿ ਹਰੇ
 ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਰੇ ਭਜੁ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ॥੧॥ ਸਭ ਸਿਸਟਿ ਧਾਰ ਹਰਿ ਤੁਮ ਕਿਰਪਾਲ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਤ੍ਰ ਤ੍ਰ ਰਾਮ ਰਾਮ
 ਰਾਮ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੋ ਸਰਣਾਗਤੀ ਦੇਹੁ ਗੁਰਮਤੀ ਭਜੁ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ॥੨॥੩॥੬॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਚਾਟਉ ਪਗ ਚਾਟ ॥ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਪਾਧਰ ਬਾਟ ॥ ਭਜੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਰਸ ਹਰਿ ਗਾਟ ॥ ਹਰਿ ਹੋ ਹੋ ਲਿਖੇ
 ਲਿਲਾਟ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਖਟ ਕਰਮ ਕਿਰਿਆ ਕਰਿ ਬਹੁ ਬਹੁ ਬਿਸਥਾਰ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਜੋਗੀਆ ਕਰਿ ਜਟ ਜਟਾ
 ਜਟ ਜਾਟ ॥ ਕਰਿ ਭੇਖ ਨ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਬ੍ਰਹਮ ਜੋਗੁ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਸਤਸਾਂਗਤੀ ਉਪਦੇਸਿ ਗੁਰੂ ਗੁਰ ਸੰਤ ਜਨਾ
 ਖੋਲਿ ਖੋਲਿ ਕਪਾਟ ॥੧॥ ਤ੍ਰ ਅਪਰੰਪਰੁ ਸੁਆਮੀ ਅਤਿ ਅਗਾਹੁ ਤ੍ਰ ਭਰਪੁਰਿ ਰਹਿਆ ਜਲ ਥਲੇ ਹਰਿ ਝਿਕੁ ਝਿਕੋ
 ਝਿਕ ਏਕੈ ਹਰਿ ਥਾਟ ॥ ਤ੍ਰ ਜਾਣਹਿ ਸਭ ਬਿਧਿ ਬੂੜਾਹਿ ਆਪੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਘਟਿ ਘਟੇ ਘਟੇ ਘਟਿ
 ਹਰਿ ਘਾਟ ॥੨॥੪॥੧੦॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਪਿ ਮਨ ਗੋਬਿਦ ਮਾਧੋ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਧੋ ॥ ਮਤਿ
 ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਧੋ ॥ ਧੁਰਿ ਹੋ ਹੋ ਲਿਖੇ ਲਿਲਾਧੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਸੰਚਿ ਬਹੁ ਚਿਤੈ ਬਿਕਾਰ
 ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਭਜੁ ਸੰਤ ਸੰਤ ਸਾਂਗਤੀ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਸਾਧੋ ॥ ਜਿਤ ਛੁਹਿ ਪਾਰਸ ਮਨੂਰ ਭਏ ਕੰਚਨ
 ਤਿਤ ਪਤਿਤ ਜਨ ਮਿਲਿ ਸਾਂਗਤੀ ਸੁਧ ਹੋਵਤ ਗੁਰਮਤੀ ਸੁਧ ਹਾਧੋ ॥੧॥ ਜਿਤ ਕਾਸਟ ਸੰਗਿ ਲੋਹਾ ਬਹੁ ਤਰਤਾ
 ਤਿਤ ਪਾਪੀ ਸੰਗਿ ਤਰੇ ਸਾਧ ਸਾਧ ਸਾਂਗਤੀ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰੂ ਗੁਰ ਸਾਧੋ ॥ ਚਾਰਿ ਬਰਨ ਚਾਰਿ ਆਸ੍ਰਮ ਹੈ ਕੋਈ ਮਿਲੈ
 ਗੁਰੂ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਸੋ ਆਪਿ ਤਰੈ ਕੁਲ ਸਗਲ ਤਰਾਧੋ ॥੨॥੫॥੧੧॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਵਹੁ
 ਭਗਵਾਨ ॥ ਜਸੁ ਗਾਵਤ ਪਾਪ ਲਹਾਨ ॥ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਸੁਨਿ ਜਸੁ ਕਾਨ ॥ ਹਰਿ ਹੋ ਹੋ ਕਿਰਪਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

तेरे जन धिआवहि इक मनि इक चिति ते साधू सुख पावहि जपि हरि हरि नामु निधान ॥ उसतति करहि प्रभ तेरीआ मिलि साधू साध जना गुर सतिगुरु भगवान ॥१॥ जिन कै हिरदै तू सुआमी ते सुख फल पावहि ते तरे भव सिंधु ते भगत हरि जान ॥ तिन सेवा हम लाइ हरे हम लाइ हरे जन नानक के हरि तू तू तू तू भगवान ॥२॥६॥१२॥

कानड़ा महला ५ घरु २

੧੮੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

गाईअै गुण गोपाल कृपा निधि ॥ दुख बिदारन सुखदाते सतिगुर जा कउ भेटत होइ सगल सिधि ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरत नामु मनहि साधारै ॥ कोटि पराधी खिन महि तारै ॥२॥ जा कउ चीति आवै गुरु अपना ॥ ता कउ दूखु नही तिलु सुपना ॥३॥ जा कउ सतिगुरु अपना राखै ॥ सो जनु हरि रसु रसना चाखै ॥४॥ कहु नानक गुरि कीनी मङ्गिआ ॥ हलति पलति मुख ऊजल भङ्गिआ ॥५॥१॥ कानड़ा महला ५ ॥ आराधउ तुझहि सुआमी अपने ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सासि सासि हरि जपने ॥२॥ रहाउ ॥ ता कै हिरदै बसिओ नामु ॥ जा कउ सुआमी कीनो दानु ॥३॥ ता कै हिरदै आई साँति ॥ ठाकुर भेटे गुर बचनाँति ॥४॥ सरब कला सोई परबीन ॥ नाम मंत्र जा कउ गुरि दीन ॥५॥ कहु नानक ता कै बलि जाउ ॥ कलिजुग महि पाङ्गिआ जिनि नाउ ॥६॥२॥ कानड़ा महला ५ ॥ कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनाँ ॥ अनिक बार करि बंदन संतन ऊहाँ चरन गोबिंद जी के बसना ॥७॥ रहाउ ॥ अनिक भाँति करि दुआरु न पावउ ॥ होइ कृपालु त हरि हरि धिआवउ ॥८॥ कोटि करम करि देह न सोधा ॥ साधसंगति महि मनु परबोधा ॥९॥ तृसन न बूझी बहु रंग माङ्गिआ ॥ नामु लैत सरब सुख पाङ्गिआ ॥१॥ पारब्रहम जब भए दङ्गिआल ॥ कहु नानक तउ छूटे जंजाल ॥१॥३॥ कानड़ा महला ५ ॥ औसी माँगु गोबिंद ते ॥ टहल संतन की संगु साधू का हरि नामाँ जपि परम गते ॥१॥ रहाउ ॥ पूजा चरना ठाकुर सरना ॥ सोई कुसलु जु प्रभ जीउ करना ॥२॥ सफल होत इह

दुरलभ देही ॥ जा कउ सतिगुरु मङ्गिआ करेही ॥२॥ अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥ जा कै हृदै
 बसहि गुर पैरा ॥३॥ साधसंगि रंगि प्रभु धिआङ्गिआ ॥ कहु नानक तिनि पूरा पाङ्गिआ ॥४॥४॥
 कानड़ा महला ५ ॥ भगति भगतन हूँ बनि आई ॥ तन मन गलत भए ठाकुर सिउ आपन लीए
 मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ गावनहारी गावै गीत ॥ ते उधरे बसे जिह चीत ॥१॥ पेखे बिंजन
 परोसनहारै ॥ जिह भोजनु कीनो ते तृपतारै ॥२॥ अनिक स्नाँग काछे भेखधारी ॥ जैसो सा तैसो दृसटारी
 ॥३॥ कहन कहावन सगल जंजार ॥ नानक दास सचु करणी सार ॥४॥५॥ कानड़ा महला ५ ॥
 तेरो जनु हरि जसु सुनत उमाहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ मनहि प्रगासु पेखि प्रभ की सोभा जत कत पेखउ
 आहिओ ॥१॥ सभ ते परै परै ते ऊचा गहिर गंभीर अथाहिओ ॥२॥ ओति पोति मिलिओ भगतन कउ
 जन सिउ परदा लाहिओ ॥३॥ गुर प्रसादि गावै गुण नानक सहज समाधि समाहिओ ॥४॥६॥
 कानड़ा महला ५ ॥ संतन पहि आपि उधारन आहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ दरसन भेटत होत पुनीता हरि
 हरि मंत्र दृङ्गाहिओ ॥१॥ काटे रोग भए मन निरमल हरि हरि अउखधु खाहिओ ॥२॥ असथित भए
 बसे सुख थाना बहुरि न कतहूँ धाहिओ ॥३॥ संत प्रसादि तरे कुल लोगा नानक लिपत न माहिओ
 ॥४॥७॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ जब ते साधसंगति मोहि पाई
 ॥१॥ रहाउ ॥ ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥१॥ जो प्रभ कीनो सो भल
 मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥२॥ सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई
 ॥३॥८॥ कानड़ा महला ५ ॥ ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥ मानु महतु तुम्हारै ऊपरि तुम्हरी ओट
 तुम्हारी सरना ॥१॥ रहाउ ॥ तुम्हरी आस भरोसा तुम्हरा तुमरा नामु रिदै लै धरना ॥ तुमरो बलु
 तुम संगि सुहेले जो जो कहहु सोई सोई करना ॥१॥ तुमरी दहिआ मङ्गिआ सुखु पावउ होहु कृपाल
 त भउजलु तरना ॥ अभै दानु नामु हरि पाहिओ सिरु डारिओ नानक संत चरना ॥२॥९॥

ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਧ ਸਰਨਿ ਚਰਨ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਸੁਪਨ ਕੀ ਬਾਤ ਸੁਨੀ ਪੇਖੀ ਸੁਪਨਾ ਨਾਮ ਮੰਤੁ
ਸਤਿਗੁਰ ਦੂਡਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਨਹ ਤ੃ਪਤਾਨੋ ਰਾਜ ਜੋਬਨਿ ਧਨਿ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਫਿਰਿ ਧਾਇਆ ॥
ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਤ੃ਸਨਾ ਸਭ ਬੁੜੀ ਹੈ ਸਾਁਤਿ ਪਾਈ ਗੁਨ ਗਾਇਆ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਬੂੜੇ ਪਸ੍ਤੁ ਕੀ ਨਿਆਈ ਭਰਮਿ
ਮੋਹਿ ਬਿਆਪਿਓ ਮਾਇਆ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਮ ਜੇਵਰੀ ਕਾਟੀ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆ ॥੨॥੧੦॥
ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਗਾਇ ॥ ਸੀਤਲਾ ਸੁਖ ਸਾਁਤਿ ਮੂਰਤਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਿਤ
ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਗਲ ਆਸ ਹੋਤ ਪੂਰਨ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੧॥ ਪੁਨ ਦਾਨ ਅਨੇਕ
ਕਿਰਿਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਸਮਾਇ ॥ ਤਾਪ ਸੰਤਾਪ ਮਿਟੇ ਨਾਨਕ ਬਾਹੁਡਿ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਇ ॥੨॥੧੧॥

ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਥੀਐ ਸੰਤਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਗਿਆਨੁ ॥ ਪੂਰਨ ਪਰਮ ਜੋਤਿ ਪਰਮੇਸੁਰ ਸਿਮਰਤ ਪਾਈਐ ਮਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਆਵਤ ਜਾਤ ਰਹੇ ਸੁਝ ਨਾਥੇ ਸਿਮਰਤ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ॥ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਹੋਹਿ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਪਾਰਖ੍ਰਹਮ ਕੈ ਰੰਗਿ
॥੧॥ ਜੋ ਜੋ ਕਥੈ ਸੁਨੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਤਾ ਕੀ ਦੁਰਮਤਿ ਨਾਸ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪਾਵੈ ਨਾਨਕ ਪੂਰਨ ਹੋਵੈ ਆਸ
॥੨॥੧॥੧੨॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਨਿਧਿ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਜੀਅ ਕੈ ਕਾਮ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਸੰਤ ਰੇਨੁ ਨਿਤ ਮਜਨੁ ਕਰੈ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਕਿਖ ਹਰੈ ॥੧॥ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਊਚੀ ਬਾਨੀ ॥
ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਤਰੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥੨॥੨॥੧੩॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਧੂ ਹਰਿ ਹਰੇ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥ ਮਾਨ
ਤਨੁ ਧਨੁ ਪ੍ਰਾਨ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਈਤ ਊਤ ਕਹਾ ਲੁਭਾਵਹਿ ਏਕ ਸਿਤ ਮਨੁ ਲਾਇ
॥੧॥ ਮਹਾ ਪਵਿਤ ਸੰਤ ਆਸਨੁ ਮਿਲਿ ਸੰਗਿ ਗੋਬਿਦੁ ਧਿਆਇ ॥੨॥ ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਸਰਨਿ ਆਇਓ
ਨਾਨਕ ਲੇਹੁ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥੩॥੧੪॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਬਿਗਸਾਤ ਸਾਜਨ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਨਾ
ਛਿਕਾਂਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਨਦਾ ਸੁਖ ਸਹਜ ਮੂਰਤਿ ਤਿਸੁ ਆਨ ਨਾਹੀ ਭਾਁਤਿ ॥੧॥ ਸਿਮਰਤ ਛਿਕ ਬਾਰ

ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਿਟਿ ਕੋਟਿ ਕਸਮਲ ਜਾਂਤਿ ॥੨॥ ਗੁਣ ਰਮਂਤ ਦ੍ਰਖ ਨਾਸਹਿ ਰਿਦ ਭਿੱਅਂਤ ਸਾਁਤਿ ॥੩॥ ਅੰਮ੍ਰਤਾ
 ਰਸੁ ਪੀਤ ਰਸਨਾ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰਾਤ ॥੪॥੪॥੧੫॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਜਨਾ ਸੰਤ ਆਤ ਮੇਰੈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਨਦਾ ਗੁਨ ਗਾਇ ਮੰਗਲ ਕਸਮਲਾ ਮਿਟਿ ਜਾਹਿ ਪਰੇਰੈ ॥੧॥ ਸੰਤ ਚਰਨ ਧਰਤ ਮਾਥੈ
 ਚਾਂਦਨਾ ਗ੃ਹਿ ਹੋਇ ਅੰਧੇਰੈ ॥੨॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਮਲੁ ਬਿਗਸੈ ਗੋਬਿੰਦ ਭਜਤ ਪੇਖਿ ਨੇਰੈ ॥੩॥ ਪ੍ਰਭ ਕ੃ਪਾ ਤੇ
 ਸੰਤ ਪਾਏ ਵਾਰਿ ਵਾਰਿ ਨਾਨਕ ਤਹ ਕੇਰੈ ॥੪॥੫॥੧੬॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਨ ਸਰਨ ਗੋਪਾਲ ਤੇਰੀ ॥
 ਮੋਹ ਮਾਨ ਧੋਹ ਭਰਮ ਰਾਖਿ ਲੀਜੈ ਕਾਟਿ ਕੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬ੍ਰਦੁਤ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ॥ ਉਧੇਰੇ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ
 ਰਤਨਾਗਰ ॥੧॥ ਸੀਤਲਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ॥ ਪੂਰਨੋ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥੨॥ ਦੀਨ ਦਰਦ ਨਿਵਾਰਿ ਤਾਰਨ
 ॥ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਨ ॥੩॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਦ੍ਰਖ ਕਰਿ ਪਾਇਆਂਓ ॥ ਸੁਖੀ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ
 ਦੂਡਾਇਆਂਓ ॥੪॥੬॥੧੭॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਧਨਿ ਤਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਰਨ ਸੰਗਿ ਲਾਗੀ ॥ ਕੋਟਿ ਜਾਪ ਤਾਪ ਸੁਖ
 ਪਾਏ ਆਇ ਮਿਲੇ ਪੂਰਨ ਬਡਭਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮੋਹਿ ਅਨਾਥੁ ਦਾਸੁ ਜਨੁ ਤੇਰਾ ਅਵਰ ਓਟ ਸਗਲੀ ਮੋਹਿ
 ਤਿਆਗੀ ॥ ਭੋਰ ਭਰਮ ਕਾਟੇ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਤ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨ ਮਿਲਿ ਸੋਵਤ ਜਾਗੀ ॥੧॥ ਤੂ ਅਥਾਹੁ ਅਤਿ ਬਡੋ
 ਸੁਆਮੀ ਕ੃ਪਾ ਸਿੰਧੁ ਪੂਰਨ ਰਤਨਾਗੀ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਾਚਕੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਾਂਗੈ ਮਸਤਕੁ ਆਨਿ ਧਰਿਆਂਓ ਪ੍ਰਭ
 ਪਾਗੀ ॥੨॥੭॥੧੮॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੁਚਿਲ ਕਠੋਰ ਕਪਟ ਕਾਮੀ ॥ ਜਿਤ ਜਾਨਹਿ ਤਿਤ ਤਾਰਿ ਸੁਆਮੀ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਸਰਨਿ ਜੋਗੁ ਤੂ ਰਾਖਹਿ ਅਪਨੀ ਕਲ ਧਾਰਿ ॥੧॥ ਜਾਪ ਤਾਪ ਨੇਮ ਸੁਚਿ ਸੰਜਮ
 ਨਾਹੀ ਝਿਨ ਬਿਧੇ ਛੁਟਕਾਰ ॥ ਗਰਤ ਧੋਰ ਅੰਧ ਤੇ ਕਾਢਹੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਰਿ ॥੨॥੮॥੧੯॥

ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਨਾਰਾਇਨ ਨਰਪਤਿ ਨਮਸਕਾਰੈ ॥ ਐਸੇ ਗੁਰ ਕਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ਆਪਿ ਮੁਕਤੁ ਮੋਹਿ ਤਾਰੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਕਵਨ ਕਵਨ ਕਵਨ ਗੁਨ ਕਹੀਐ ਅੰਤੁ ਨਹੀ ਕਛੁ ਪਾਰੈ ॥ ਲਾਖ ਲਾਖ ਲਾਖ ਕਈ ਕੋਰੈ ਕੋ ਹੈ ਐਸੇ

ਬੀਚਾਰੈ ॥੧॥ ਬਿਸਮ ਬਿਸਮ ਬਿਸਮ ਹੀ ਭਈ ਹੈ ਲਾਲ ਗੁਲਾਲ ਰਂਗਾਰੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੰਤਨ ਰਸੁ ਆਈ ਹੈ
 ਜਿਤ ਚਾਖਿ ਗ੍ਰੰਗ ਮੁਸਕਾਰੈ ॥੨॥੧॥੨੦॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਨ ਜਾਨੀ ਸੰਤਨ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨੁ ਆਨ ॥ ਊਚ
 ਨੀਚ ਸਭ ਪੇਖਿ ਸਮਾਨੋ ਮੁਖਿ ਬਕਨੋ ਮਨਿ ਮਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਭੈ ਭੰਜਨ
 ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ॥ ਮਨਹਿ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਭਿੱਓ ਭਰਮੁ ਨਾਸਿਓ ਮੰਨ੍ਹ ਦੀਓ ਗੁਰ ਕਾਨ ॥੧॥ ਕਰਤ ਰਹੇ ਕ੍ਰਤਾਗ ਕਰੁਣਾ ਮੈ
 ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਗਿਆਨ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਨਾਨਕ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ਮਾਂਗਨ ਕਤ ਹਰਿ ਦਾਨ ॥੨॥੨॥੨੧॥
 ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਹਨ ਕਹਾਵਨ ਕਤ ਕਈ ਕੇਤੈ ॥ ਐਸੋ ਜਨੁ ਬਿਰਲੀ ਹੈ ਸੇਵਕੁ ਜੋ ਤਤ ਜੋਗ ਕਤ ਬੇਤੈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਦੁਖੁ ਨਾਹੀ ਸਭੁ ਸੁਖੁ ਹੀ ਹੈ ਰੇ ਏਕੈ ਏਕੀ ਨੇਤੈ ॥ ਬੁਰਾ ਨਹੀ ਸਭੁ ਭਲਾ ਹੀ ਹੈ ਰੇ ਹਾਰ ਨਹੀ ਸਭ ਜੇਤੈ
 ॥੧॥ ਸੋਗੁ ਨਾਹੀ ਸਦਾ ਹਰਖੀ ਹੈ ਰੇ ਛੋਡਿ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਲੇਤੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹੈ ਕਤ ਆਵੈ
 ਕਤ ਰਮਤੈ ॥੨॥੩॥੨੨॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹੀਏ ਕੋ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਬਿਸਰਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਤਨ ਮਨ ਗਲਤ ਭਏ
 ਤਿਹ ਸੌਂ ਮੋਹਨੀ ਮੋਹਿ ਰਹੀ ਮੋਰੀ ਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈ ਜੈ ਪਹਿ ਕਹਤ ਬ੍ਰਥਾ ਹਤ ਅਪੁਨੀ ਤੇਊ ਤੇਊ
 ਗਹੇ ਰਹੇ ਅਟਕਾਇ ॥ ਅਨਿਕ ਭਾਁਤਿ ਕੀ ਏਕੈ ਜਾਲੀ ਤਾ ਕੀ ਗੱਠਿ ਨਹੀ ਛੋਰਾਇ ॥੧॥ ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਨਾਨਕ
 ਦਾਸੁ ਆਇਓ ਸੰਤਨ ਹੀ ਸਰਨਾਇ ॥ ਕਾਟੇ ਅਗਿਆਨ ਭਰਮ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਲੀਓ ਕੱਠਿ ਲਗਾਇ ॥੨॥੪॥੨੩॥
 ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਆਨਦ ਰੰਗ ਬਿਨੋਦ ਹਮਾਰੈ ॥ ਨਾਮੋ ਗਾਵਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਨੁ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੇ ਪ੍ਰਾਨ
 ਅਧਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮੋ ਗਿਆਨੁ ਨਾਮੁ ਇਸਨਾਨਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੇ ਕਾਰਜ ਸਕਾਰੈ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਸੋਭਾ
 ਨਾਮੁ ਬਡਾਈ ਭਉਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਤਾਰੈ ॥੧॥ ਅਗਮ ਪਦਾਰਥ ਲਾਲ ਅਮੋਲਾ ਭਿੱਓ ਪਰਾਪਤਿ
 ਗੁਰ ਚਰਨਾਰੈ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲਾ ਮਗਨ ਭਏ ਹੀਅਰੈ ਦਰਸਾਰੈ ॥੨॥੫॥੨੪॥
 ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਾਜਨ ਮੀਤ ਸੁਆਮੀ ਨੇਰੋ ॥ ਪੇਖਤ ਸੁਨਤ ਸਭਨ ਕੈ ਸੱਗੇ ਥੋਰੈ ਕਾਜ ਕੁਰੋ ਕਹ ਫੇਰੋ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜੇਤੋ ਲਪਟਾਇਓ ਕਛੂ ਨਹੀ ਨਾਹੀ ਕਛੁ ਤੇਰੋ ॥ ਆਗੈ ਦੂਸਟਿ ਆਵਤ ਸਭ
 ਪਰਗਟ ਈਹਾ ਮੋਹਿਓ ਭਰਮ ਅੰਧੇਰੋ ॥੧॥ ਅਟਕਿਓ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਸੱਗ ਮਾਇਆ ਦੇਵਨਹਾਰੁ ਦਾਤਾਰੁ

ਬਿਸੇਰੋ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਏਕੈ ਭਾਰੋਸਤ ਬੰਧਨ ਕਾਟਨਹਾਰੁ ਗੁਰੂ ਮੇਰੋ ॥੨॥੬॥੨੫॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਬਿਖੈ ਦਲੁ ਸੰਤਨਿ ਤੁਮੁਰੈ ਗਾਹਿਆਂ ॥ ਤੁਮਰੀ ਟੇਕ ਭਰੋਸਾ ਠਾਕੁਰ ਸਰਨਿ ਤੁਮਾਰੀ ਆਹਿਆਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਮਹਾ ਪਰਾਛਤ ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਿ ਮਿਟਾਹਿਆਂ ॥ ਭਇਆਂ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਅਨਦ ਤਜੀਆਰਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ
 ਸਮਾਹਿਆਂ ॥੧॥ ਕਤਨੁ ਕਹੈ ਤੁਮ ਤੇ ਕਛੁ ਨਾਹੀ ਤੁਮ ਸਮਰਥ ਅਥਾਹਿਆਂ ॥ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ ਰੰਗ ਰੂਪ ਰਸ
 ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਲੈ ਲਾਹਿਆਂ ॥੨॥੭॥੨੬॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਬੂਡਤ ਪ੍ਰਾਨੀ ਹਰਿ ਜਪਿ ਧੀਰੈ ॥ ਬਿਨਸੈ
 ਮੋਹੁ ਭਰਮੁ ਫੁਖੁ ਪੀਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਿਮਰਤ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨਾ ॥ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਤ ਤੁਮਰੀ
 ਸਰਨਾ ॥੧॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਇਆ ॥ ਗੁਰ ਭੇਟਤ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥੮॥੨੭॥
 ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਮਨਹਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥ ਸਾਧ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਈਐ ॥੧॥
 ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਰਿਦੈ ਬਸੇਰੋ ॥ ਚਰਨ ਸੰਤਨ ਕੈ ਮਾਥਾ ਮੇਰੋ ॥੧॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਤ ਸਿਮਰਹੁ
 ਮਨਾਂ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਨਾਂ ॥੨॥੯॥੨੮॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਰਨ ਪ੍ਰਭ
 ਪਰਸਨ ॥ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭੋਜਨਿ ਤ੃ਪਤਾਨੀ ਅਖੀਅਨ ਕਤ ਸੰਤੋਖੁ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕਰਨਨਿ
 ਪੂਰਿ ਰਹਿਆਂ ਜਸੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਲਮਲ ਦੋਖ ਸਗਲ ਮਲ ਹਰਸਨ ॥ ਪਾਵਨ ਧਾਵਨ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖ ਪੰਥਾ ਅੰਗ
 ਸੰਗ ਕਾਇਆ ਸੰਤ ਸਰਸਨ ॥੧॥ ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਪੂਰਨ ਅਵਿਨਾਸੀ ਆਨ ਉਪਾਵ ਥਕਿਤ ਨਹੀ ਕਰਸਨ ॥
 ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਏ ਨਾਨਕ ਜਨ ਅਪਨੇ ਅੰਧ ਘੋਰ ਸਾਗਰ ਨਹੀ ਮਰਸਨ ॥੨॥੧੦॥੨੯॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਕੁਹਕਤ ਕਪਟ ਖਪਟ ਖਲ ਗਰਜਤ ਮਰਜਤ ਮੀਚੁ ਅਨਿਕ ਬਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਛੁ ਮਤ ਅਨ ਰਤ
 ਕੁਮਿਤ ਹਿਤ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪੇਖਤ ਭ੍ਰਮਤ ਲਾਖ ਗਰੀਆ ॥੧॥ ਅਨਿਤ ਬਿਤਹਾਰ ਅਚਾਰ ਬਿਧਿ ਹੀਨਤ ਮਮ ਮਦ
 ਮਾਤ ਕੋਪ ਜਰੀਆ ॥ ਕਰੁਣ ਕ੃ਪਾਲ ਗੁਪਾਲ ਦੀਨ ਬੰਧੁ ਨਾਨਕ ਉਧਰੁ ਸਰਨਿ ਪਰੀਆ ॥੨॥੧੧॥੩੦॥
 ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮਾਨ ਦਾਤਾ ॥ ਹਰਿ ਬਿਸਰਤੇ ਹੀ ਹਾਨਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੋਬਿੰਦ
 ਤਿਆਗਿ ਆਨ ਲਾਗਹਿ ਅੰਮ੍ਰਤੋ ਡਾਰਿ ਭੂਮਿ ਪਾਗਹਿ ॥ ਬਿਖੈ ਰਸ ਸਿਤ ਆਸਕਤ ਮੂੜੇ ਕਾਹੇ ਸੁਖ ਮਾਨਿ

॥੧॥ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਲੋਭਿ ਬਿਆਪਿਓ ਜਨਮ ਹੀ ਕੀ ਖਾਨਿ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਸਰਨਿ ਆਇਆ ਉਧਰੁ ਨਾਨਕ
ਯਾਨਿ ॥੨॥੧੨॥੩੧॥ ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਵਿਲੋਕਤ ਰਾਮ ਕੋ ਮੁਖਾਰਬਿੰਦ ॥ ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਰਤਨੁ
ਪਾਇਆ ਬਿਸਰੀ ਸਭ ਚਿੰਦ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਰਿਦੈ ਧਾਰਿ ॥ ਉਤਰਿਆ ਦੁਖੁ ਮੰਦ ॥੧॥ ਰਾਜ ਧਨੁ
ਪਰਵਾਰੁ ਮੇਰੈ ਸਰਬਸੋ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਸਾਧਸੰਗਮਿ ਲਾਭੁ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਫਿਰਿ ਨ ਮਰਦ ॥੨॥੧੩॥੩੨॥

ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੫ ੧੯੮੦ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨੀ ਲਾਗਿ ॥ ਹਰਿ ਪਾਵਹੁ ਮਨੁ ਅਗਾਧਿ ॥ ਜਗੁ ਜੀਤੋ ਹੋ ਹੋ ਗੁਰ
ਕਿਰਪਾਧਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਸਾਦ ਮੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਖੋਜੀ ਸਾ ਪ੍ਰਸਾਦ ਜਿ ਹਰਿ ਭਾਵਾਸਿ ॥ ਮਾਟੀ ਕੀ ਇਹ
ਪੁਤਰੀ ਜੋਰੀ ਕਿਆ ਏਹ ਕਰਮ ਕਮਾਸਿ ॥ ਪ੍ਰਭ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਜਿਸੁ ਮਾਰਗਿ ਪਾਵਹੁ ਸੋ ਤੁਥੁ ਜੰਤ ਮਿਲਾਸਿ ॥੧॥
ਅਵਰ ਓਟ ਮੈ ਕੋਇ ਨ ਸੂੜ੍ਹੈ ਇਕ ਹਰਿ ਕੀ ਓਟ ਮੈ ਆਸ ॥ ਕਿਆ ਦੀਨੁ ਕਰੇ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਜਤ ਸਭ ਘਟਿ ਪ੍ਰਭੂ
ਨਿਵਾਸ ॥ ਪ੍ਰਭ ਚਰਨਨ ਕੀ ਮਨਿ ਪਿਆਸ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਕਹੀਅਤੁ ਹੈ ਤੁਮਰਾ ਹਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਸਦ
ਬਲਿ ਜਾਸ ॥੨॥੧॥੩੩॥

ਕਾਨੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬ ੧੯੮੦ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਗਤ ਤੁਧਾਰਨ ਨਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਤੈਰੈ ॥ ਨਵ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਕੇਰੈ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰੰਗ ਰੰਗ ਅਨੂਪੈਰੈ ॥ ਕਾਹੇ
ਰੇ ਮਨ ਮੋਹਿ ਮਗਨੈਰੈ ॥ ਨੈਨਹੁ ਦੇਖੁ ਸਾਧ ਦਰਸੈਰੈ ॥ ਸੋ ਪਾਵੈ ਜਿਸੁ ਲਿਖਤੁ ਲਿਲੈਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੇਵਤ
ਸਾਧ ਸੰਤ ਚਰਨੈਰੈ ॥ ਬਾਂਛਤ ਧੂਰਿ ਪਵਿਤ ਕਰੈਰੈ ॥ ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਮੈਲੁ ਕਟੈਰੈ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਧਿਆਵਹੁ
ਮੁਖੁ ਨਹੀਂ ਮੌਰੈ ॥ ਕਿਛੁ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਲਾਖ ਕਰੈਰੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਕੋ ਨਾਮੁ ਅੰਤਿ ਪੁਕਰੈਰੈ ॥੧॥ ਮਨਸਾ ਮਾਨਿ
ਏਕ ਨਿਰਂਕੈਰੈ ॥ ਸਗਲ ਤਿਆਗਹੁ ਭਾਤ ਟ੍ਰੂਜੈਰੈ ॥ ਕਵਨ ਕਹਾਁ ਹਤ ਗੁਨ ਪ੍ਰਤੀ ਤੈਰੈ ॥ ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਤ
ਏਕ ਟੁਲੈਰੈ ॥ ਦਰਸਨ ਪਿਆਸ ਬਹੁਤੁ ਮਨਿ ਮੈਰੈ ॥ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜਗਤ ਗੁਰ ਕੇਰੈ ॥੨॥੧॥੩੪॥

ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਐਸੀ ਕਤਨ ਬਿਧੇ ਦਰਸਨ ਪਰਸਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਸ ਪਿਆਸ ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ
ਉਮਗਿ ਹੀਉ ਤਰਸਨਾ ॥੧॥ ਦੀਨ ਲੀਨ ਪਿਆਸ ਮੀਨ ਸੰਤਨਾ ਹਰਿ ਸੰਤਨਾ ॥ ਹਰਿ ਸੰਤਨਾ ਕੀ ਰੇਨ ॥
ਹੀਉ ਅਰਪਿ ਦੇਨ ॥ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਹੈ ਕਿਰਪੇਨ ॥ ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਤਿਆਗਿ ਛੋਡਿਓ ਤਤ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜੀਉ ਭੇਟਨਾ
॥੨॥੨॥੩੫॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਰੰਗ ਰੰਗ ਰੰਗਨ ਕੇ ਰੰਗਾ ॥ ਕੀਟ ਹਸਤ ਪ੍ਰੂਨ ਸਭ ਸੰਗਾ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਬਰਤ ਨੇਮ ਤੀਰਥ ਸਹਿਤ ਗੱਗਾ ॥ ਜਲੁ ਹੇਵਤ ਭੂਖ ਅਝ ਨਨਗਾ ॥ ਪ੍ਰਯਾਚਾਰ ਕਰਤ ਮੇਲਾਂਗਾ ॥
ਚਕ ਕਰਮ ਤਿਲਕ ਖਾਟਾਂਗਾ ॥ ਦਰਸਨੁ ਭੇਟੇ ਬਿਨੁ ਸਤਸਾਂਗਾ ॥੧॥ ਹਠਿ ਨਿਗਰਿ ਅਤਿ ਰਹਤ ਬਿਟਾਂਗਾ ॥
ਹਉ ਰੋਗੁ ਬਿਆਪੈ ਚੁਕੈ ਨ ਭੰਗਾ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਅਤਿ ਤੂਸਨ ਜਰਾਂਗਾ ॥ ਸੋ ਮੁਕਤੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ
ਚੰਗਾ ॥੨॥੩॥੩੬॥

ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੭ ੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤਿਖ ਬ੍ਰੂਜ਼ਿ ਗੰਡੀ ਗੰਡੀ ਮਿਲਿ ਸਾਧ ਜਨਾ ॥ ਪਂਚ ਭਾਗੇ ਚੌਰ ਸਹਜੇ ਸੁਖੈਨੋ ਹਰੇ ਗੁਨ ਗਾਵਤੀ ਗਾਵਤੀ
ਦਰਸ ਪਿਆਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜੈਸੀ ਕਰੀ ਪ੍ਰਭ ਮੋ ਸਿਉ ਮੋ ਸਿਉ ਐਸੀ ਹਉ ਕੈਥੇ ਕਰਉ ॥ ਹੀਉ ਤੁਮਾਰੇ ਬਲਿ
ਬਲੇ ਬਲੇ ਬਲੇ ਗੰਡੀ ॥੧॥ ਪਹਿਲੇ ਪੈ ਸੰਤ ਪਾਇ ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਥਾਨੁ ਤੇਰੋ
ਕੇਹਰੋ ਜਿਤੁ ਜੰਤਨ ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਅਨਿਕ ਦਾਸ ਕੀਰਤਿ ਕਰਹਿ ਤੁਹਾਰੀ ॥ ਸੋਈ ਮਿਲਿਓ ਜੋ ਭਾਵਤੀ
ਜਨ ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰ ਰਹਿਓ ਸਮਾਇ ॥ ਏਕ ਤੂਹੀ ਤੂਹੀ ਤੂਹੀ ॥੨॥੧॥੩੭॥

ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੮ ੧੯ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤਿਆਗੀਐ ਗੁਮਾਨੁ ਮਾਨੁ ਪੇਖਤਾ ਦਿੱਤਾਲ ਲਾਲ ਹਾਁ ਹਾਁ ਮਨ ਚਰਨ ਰੇਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਸੰਤ ਮੰਤ
ਗੁਪਾਲ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ॥੧॥ ਹਿਰਦੈ ਗੋਬਿੰਦ ਗਾਇ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਇ ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲ ਮੋਹਨਾ
॥ ਕ੃ਪਾਲ ਦਿੱਤਾ ਮਿਡਿਆ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕੁ ਮਾਗੈ ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ॥ ਤਜਿ ਮੋਹੁ ਭਰਮੁ ਸਗਲ ਅਭਿਮਾਨੁ
॥੨॥੧॥੩੮॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕਹਨ ਮਲਨ ਦਹਨ ਲਹਨ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ਆਨ ਨਹੀ ਤਪਾਤ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਟਨ ਖਟਨ ਜਟਨ ਹੋਮਨ ਨਾਹੀ ਡੰਡਧਾਰ ਸੁਆਤ ॥੧॥ ਜਤਨ ਭਾਁਤਨ ਤਪਨ ਭਰਮਨ ਅਨਿਕ
ਕਥਨ ਕਥਤੇ ਨਹੀ ਥਾਹ ਪਾਈ ਠਾਤ ॥ ਸੋਧਿ ਸਗਰ ਸੋਧਨਾ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕਾ ਭਜੁ ਨਾਉ ॥੨॥੨॥੩੬॥

ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੬ ੯ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੁ ਭਗਤਿ ਬਛਲੁ ਐ ਹਰਨ ਤਾਰਨ ਤਰਨ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨੈਨ ਤਿਪਤੇ ਦਰਸੁ ਪੇਖਿ ਜਸੁ ਤੋਖਿ
ਸੁਨਤ ਕਰਨ ॥੧॥ ਪ੍ਰਾਨ ਨਾਥ ਅਨਾਥ ਦਾਤੇ ਦੀਨ ਗੋਬਿੰਦ ਸਰਨ ॥ ਆਸ ਪੂਰਨ ਦੁਖ ਬਿਨਾਸਨ ਗਹੀ ਓਟ
ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਚਰਨ ॥੨॥੧॥੪੦॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਨ ਸਰਨ ਦਿੱਤਾਲ ਠਾਕੁਰ ਆਨ ਨਾਹੀ
ਯਾਇ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਬਿਰਦੁ ਸੁਆਮੀ ਉਧਰਤੇ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੈਸਾਰ ਗਾਰ ਬਿਕਾਰ ਸਾਗਰ
ਪਤਿਤ ਮੋਹ ਮਾਨ ਅੰਧ ॥ ਬਿਕਲ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ਧੰਧ ॥ ਕਰੁ ਗਹੇ ਪ੍ਰਭ ਆਪਿ ਕਾਢਹੁ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਰਾਇ
॥੧॥ ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਸਨਾਥ ਸੰਤਨ ਕੋਟਿ ਪਾਪ ਬਿਨਾਸ ॥ ਮਨਿ ਦਰਸਨੈ ਕੀ ਪਿਆਸ ॥ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ ਗੁਨਤਾਸ
॥ ਕ੃ਪਾਲ ਦਿੱਤਾਲ ਗੁਪਾਲ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੨॥੨॥੪੧॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਵਾਰਿ
ਵਾਰਤ ਅਨਿਕ ਡਾਰਤ ॥ ਸੁਖੁ ਪ੍ਰਤੀ ਸੁਹਾਗ ਪਲਕ ਰਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਨਿਕ ਮੰਦਰ ਪਾਟ ਸੇਜ ਸਖੀ ਮੋਹਿ
ਨਾਹਿ ਇਨ ਸਿਤ ਤਾਤ ॥੧॥ ਮੁਕਤ ਲਾਲ ਅਨਿਕ ਭੋਗ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਨਾਨਕ ਹਾਤ ॥ ਰੁਖੋ ਭੋਜਨੁ ਭੂਮਿ ਸੈਨ
ਸਖੀ ਪ੍ਰਤੀ ਸੰਗਿ ਸ੍ਰਵਿ ਬਿਹਾਤ ॥੨॥੩॥੪੨॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਅਛਾ ਤੌਰੋ ਸੁਖੁ ਜੋਰੋ ॥ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤ
ਮਨੁ ਲੋਰੋ ॥ ਪ੍ਰਤੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੋ ਮੋਰੋ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗ੍ਰਹਿ ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਆਗਨਿ ਚੈਨਾ ਤੌਰੋ ਰੀ ਤੌਰੋ ਪੰਚ
ਦੂਤਨ ਸਿਤ ਸੰਗੁ ਤੌਰੋ ॥੧॥ ਆਇ ਨ ਜਾਇ ਬਸੇ ਨਿਜ ਆਸਨਿ ਊਂਧ ਕਮਲ ਬਿਗਸੋਰੋ ॥ ਛੁਟਕੀ ਹਤਮੈ
ਸੋਰੋ ॥ ਗਾਇਆਂ ਰੀ ਗਾਇਆਂ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਗੁਨੀ ਗਹੇਰੋ ॥੨॥੪॥੪੩॥ ਕਾਨਡਾ ਮਃ ੫ ਘਰੂ ੬ ॥ ਤਾਂ ਤੇ
ਯਾਪਿ ਮਨਾ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥ ਜੋ ਸੰਤ ਬੇਦ ਕਹਤ ਪੰਥੁ ਗਾਖਰੋ ਮੋਹ ਮਗਨ ਅਛਾ ਤਾਪ ॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਰਾਤੇ ਮਾਤੇ ਸੰਗਿ
ਬਾਪੁਰੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਸੰਤਾਪ ॥੧॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੋਤੁ ਜਨੁ ਉਧਰੈ ਜਿਸਹਿ ਉਧਾਰਹੁ ਆਪ ॥ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ

ਮੋਹ ਐ ਭਰਮਾ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਪ੍ਰਤਾਪ ॥੨॥੫॥੪੪॥

ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੦

੧੬ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਐਸੋ ਦਾਨੁ ਦੇਹੁ ਜੀ ਸੰਤਹੁ ਜਾਤ ਜੀਤ ਬਲਿਹਾਰਿ ॥ ਮਾਨ ਮੋਹੀ ਪੰਚ ਦੋਹੀ ਤਰਝਿ ਨਿਕਟਿ ਬਸਿਓ ਤਾਕੀ ਸਰਨਿ
ਸਾਥੂਆ ਦੂਤ ਸੰਗੁ ਨਿਵਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਿਓ ਹਾਰਿ ਪਰਿਓ ਦੁਆਰਿ ॥੧॥ ਕਿਰਪਾ
ਗੋਬਿੰਦ ਭੰਡ ਮਿਲਿਓ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਦੁਲਭ ਜਨਮੁ ਸਫਲੁ ਨਾਨਕ ਭਵ ਉਤਾਰਿ ਪਾਰਿ ॥੨॥੧॥੪੫॥

ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੧

੧੬ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਹਜ ਸੁਭਾਏ ਆਪਨ ਆਏ ॥ ਕਛੂ ਨ ਜਾਨੈ ਕਛੂ ਦਿਖਾਏ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਓ ਸੁਖ ਬਾਲੇ ਭੋਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
ਸੰਜੋਗਿ ਮਿਲਾਏ ਸਾਧ ਸੰਗਾਏ ॥ ਕਤਹੂ ਨ ਜਾਏ ਘਰਹਿ ਬਸਾਏ ॥ ਗੁਨ ਨਿਧਾਨੁ ਪ੍ਰਗਟਿਓ ਇਹ ਚੋਲੈ
॥੧॥ ਚਰਨ ਲੁਭਾਏ ਆਨ ਤਜਾਏ ॥ ਥਾਨ ਥਨਾਏ ਸਰਬ ਸਮਾਏ ॥ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਨਾਨਕੁ ਗੁਨ ਬੋਲੈ
॥੨॥੧॥੪੬॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਠਾਕੁਰ ਮਿਲਨ ਦੁਰਾਈ ॥ ਪਰਮਿਤਿ ਰੂਪੁ ਅਗੰਮ ਅਗੋਚਰ
ਰਹਿਓ ਸਰਬ ਸਮਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਹਨਿ ਭਵਨਿ ਨਾਹੀ ਪਾਇਓ ਪਾਇਓ ਅਨਿਕ ਤਕਤਿ ਚਤੁਰਾਈ
॥੧॥ ਜਤਨ ਜਤਨ ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਰੇ ਤਤ ਮਿਲਿਓ ਜਤ ਕਿਰਪਾਈ ॥ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਇਆਰ ਕ੃ਪਾਰ
ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਰੇਨਾਈ ॥੨॥੨॥੪੭॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਾਈ ਸਿਮਰਤ ਰਾਮ ਰਾਮ
ਰਾਮ ॥ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ ਹੋਰੁ ॥ ਚਿਤਵਤ ਚਰਨਾਰਥਿੰਦ ਸਾਸਨ ਨਿਸਿ ਭੋਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਲਾਡੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕੀਨ
ਆਪਨ ਤੂਟਤ ਨਹੀ ਜੋਰੁ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਮਨੁ ਧਨੁ ਸਰਬਸੁਹੇ ਹਰਿ ਗੁਨ ਨਿਧੇ ਸੁਖ ਮੌਰ ॥੧॥ ਈਤ ਊਤ ਰਾਮ ਪੂਰਨੁ
ਨਿਰਖਤ ਰਿਦ ਖੋਰਿ ॥ ਸੰਤ ਸਰਨ ਤਰਨ ਨਾਨਕ ਬਿਨਸਿਓ ਦੁਖੁ ਘੋਰ ॥੨॥੩॥੪੮॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਜਨ ਕੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸੰਗੇ ਅਸਨੇਹੁ ॥ ਸਾਜਨੋ ਤੂ ਮੀਤੁ ਮੇਰਾ ਗ੍ਰਹਿ ਤੈਰੈ ਸਭੁ ਕੇਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਨੁ ਮਾਂਗਤ
ਤਾਨੁ ਮਾਂਗਤ ਧਨੁ ਲਖਮੀ ਸੁਤ ਦੇਹ ॥੧॥ ਸੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ਭੁਗਤਿ ਪ੍ਰੰਨ ਪਰਮਾਨਦ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨ ॥

ਭੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਨਿਹਾਲ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨ ॥੨॥੪॥੪੬॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਤ
ਕਰਤ ਚਰਚ ਚਰਚ ਚਰਚਰੀ ॥ ਜੋਗ ਧਿਆਨ ਭੇਖ ਗਿਆਨ ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਧਰਤ ਧਰਤ ਧਰਚਰੀ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਅਛਾ ਅਛਾ ਅਹੈ ਅਵਰ ਮੂੜ ਮੂੜ ਮੂੜ ਬਕਰੰਈ ॥ ਜਤਿ ਜਾਤ ਜਾਤ ਜਾਤ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਦਾ
ਕਾਲ ਹੰਈ ॥੧॥ ਮਾਨੁ ਮਾਨੁ ਮਾਨੁ ਤਿਆਗੀ ਮਿਰਤੁ ਮਿਰਤੁ ਨਿਕਟਿ ਨਿਕਟਿ ਸਦਾ ਹੰਈ ॥ ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਰੇ
ਭਾਜੁ ਕਹਤੁ ਨਾਨਕੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਮੂੜ ਬਿਨੁ ਭਜਨ ਭਜਨ ਭਜਨ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗੰਝੀ ॥੨॥੫॥੫੦॥੧੨॥੬੨॥

ਕਾਨਡਾ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਪਿ ਮਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈਗੋ ॥ ਜਿਤ ਜਿਤ ਜਪੈ ਤਿਵੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਸਮਾਵੈਗੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਭਗਤ ਜਨਾਂ ਕੀ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਲੋਚਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈਗੋ ॥ ਅਨ ਰਸ ਸਾਦ ਗਏ ਸਭ ਨੀਕਰਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ
ਕਿਛੁ ਨ ਸੁਖਾਵੈਗੋ ॥੧॥ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੀਠਾ ਲਾਗਾ ਗੁਰੂ ਮੀਠੇ ਬਚਨ ਕਢਾਵੈਗੋ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਣੀ
ਪੁਰਖੁ ਪੁਰਖੋਤਮ ਬਾਣੀ ਸਿਤ ਚਿਤੁ ਲਾਵੈਗੋ ॥੨॥ ਗੁਰਬਾਣੀ ਸੁਨਤ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਦ੍ਰਵਿਆ ਮਨੁ ਭੀਨਾ ਨਿਜ ਘਰਿ
ਆਵੈਗੋ ॥ ਤਹ ਅਨਹਤ ਧੁਨੀ ਬਾਜ਼ਹਿ ਨਿਤ ਬਾਜੇ ਨੀਝਰ ਧਾਰ ਚੁਆਵੈਗੋ ॥੩॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਝਿਕੁ ਤਿਲ ਤਿਲ
ਗਾਵੈ ਮਨੁ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈਗੋ ॥ ਨਾਮੁ ਸੁਣੈ ਨਾਮੋ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਨਾਮੇ ਹੀ ਤ੃ਪਤਾਵੈਗੋ ॥੪॥ ਕਨਿਕ
ਕਨਿਕ ਪਹਿਰੇ ਬਹੁ ਕੰਗਨਾ ਕਾਪਰੁ ਭਾੱਤਿ ਬਨਾਵੈਗੋ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸਭਿ ਫੀਕ ਫਿਕਾਨੇ ਜਨਮਿ ਮੈਂ ਫਿਰਿ
ਆਵੈਗੋ ॥੫॥ ਮਾਇਆ ਪਟਲ ਪਟਲ ਹੈ ਭਾਰੀ ਘਰੁ ਘੁਮਨਿ ਘੇਰਿ ਘੁਲਾਵੈਗੋ ॥ ਪਾਪ ਬਿਕਾਰ ਮਨੂਰ ਸਭਿ
ਭਾਰੇ ਬਿਖੁ ਦੁਤਰੁ ਤਰਿਓ ਨ ਜਾਵੈਗੋ ॥੬॥ ਭਤ ਕੈਰਾਗੁ ਭਇਆ ਹੈ ਬੋਹਿਥੁ ਗੁਰੁ ਖੇਵਟੁ ਸਬਦਿ ਤਰਾਵੈਗੋ ॥
ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਭੇਟੀਐ ਹਰਿ ਰਾਮੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈਗੋ ॥੭॥ ਅਗਿਆਨਿ ਲਾਇ ਸਵਾਲਿਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੈ
ਲਾਇ ਜਗਾਵੈਗੋ ॥ ਨਾਨਕ ਭਾਣੈ ਆਪਣੈ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵੈਗੋ ॥੮॥੧॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਜਪਿ
ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਰਾਵੈਗੋ ॥ ਜੋ ਜੋ ਜਪੈ ਸੋਈ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ਜਿਤ ਧ੍ਰੂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ ਸਮਾਵੈਗੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

ਕ੃ਪਾ ਕ੃ਪਾ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਹਰਿ ਜੀਤ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮਿ ਲਗਾਵੈਗੇ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਾਵਹੁ ਮਿਲਿ
 ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈਗੇ ॥੧॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਮਲੁ ਲਹਿ ਜਾਵੈਗੇ ॥
 ਜਿਤ ਲੋਹਾ ਤਰਿਓ ਸੰਗਿ ਕਾਸਟ ਲਗਿ ਸਬਦਿ ਗੁਰੁ ਹਰਿ ਪਾਵੈਗੇ ॥੨॥ ਸੰਗਤਿ ਸੰਤ ਮਿਲਹੁ ਸਤਸੰਗਤਿ
 ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਆਵੈਗੇ ॥ ਬਿਨੁ ਸੰਗਤਿ ਕਰਮ ਕਰੈ ਅਭਿਮਾਨੀ ਕਢਿ ਪਾਣੀ ਚੀਕੜ੍ਹ ਪਾਵੈਗੇ ॥੩॥
 ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੇ ਹਰਿ ਰਖਵਾਰੇ ਜਨ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੀਠ ਲਗਾਵੈਗੇ ॥ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ਸਤਿਗੁਰ
 ਤਪਦੇਸਿ ਸਮਾਵੈਗੇ ॥੪॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਤ ਸਦਾ ਨਿਵਿ ਰਹੀਐ ਜਨ ਨਿਵਹਿ ਤਾ ਫਲ ਗੁਨ ਪਾਵੈਗੇ ॥ ਜੋ
 ਨਿੰਦਾ ਦੁਸਟ ਕਰਹਿ ਭਗਤਾ ਕੀ ਹਰਨਾਖਸ ਜਿਤ ਪਚਿ ਜਾਵੈਗੇ ॥੫॥ ਬ੍ਰਹਮ ਕਮਲ ਪੁਤੁ ਮੀਨ ਬਿਆਸਾ
 ਤਪੁ ਤਾਪਨ ਪ੍ਰਯ ਕਰਾਵੈਗੇ ॥ ਜੋ ਜੋ ਭਗਤੁ ਹੋਇ ਸੋ ਪ੍ਰਯਹੁ ਭਰਮਨ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵੈਗੇ ॥੬॥ ਜਾਤ ਨਜਾਤਿ
 ਦੇਖਿ ਮਤ ਭਰਮਹੁ ਸੁਕ ਜਨਕ ਪਗੀ ਲਗਿ ਧਿਆਵੈਗੇ ॥ ਜੂਠਨ ਜੂਠਿ ਪੰਝ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਖਿਨੁ ਮਨੂਆ ਤਿਲੁ
 ਨ ਡੁਲਾਵੈਗੇ ॥੭॥ ਜਨਕ ਜਨਕ ਬੈਠੇ ਸਿੰਘਾਸਨਿ ਨਤ ਸੁਨੀ ਧੂਰਿ ਲੈ ਲਾਵੈਗੇ ॥ ਨਾਨਕ ਕ੃ਪਾ ਕ੃ਪਾ
 ਕਰਿ ਠਾਕੁਰ ਮੈ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ ਕਰਾਵੈਗੇ ॥੮॥੨॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਨੁ ਗੁਰਮਤਿ ਰਸਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈਗੇ
 ॥ ਜਿਹਵਾ ਏਕ ਹੋਇ ਲਖ ਕੋਟੀ ਲਖ ਕੋਟੀ ਕੋਟਿ ਧਿਆਵੈਗੇ ॥੯॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਹਸ ਫਨੀ ਜਪਿਓ ਸੇਖਨਾਗੈ
 ਹਰਿ ਜਪਤਿਆ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵੈਗੇ ॥ ਤੂ ਅਥਾਹੁ ਅਤਿ ਅਗਮੁ ਅਗਮੁ ਹੈ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੁ ਠਹਰਾਵੈਗੇ ॥੧॥
 ਜਿਨ ਤੂ ਜਪਿਓ ਤੇਈ ਜਨ ਨੀਕੇ ਹਰਿ ਜਪਤਿਅਹੁ ਕਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈਗੇ ॥ ਬਿਦਰ ਦਾਸੀ ਸੁਤੁ ਛੋਕ ਛੋਹਰਾ
 ਕ੃ਸਨੁ ਅੰਕਿ ਗਲਿ ਲਾਵੈਗੇ ॥੨॥ ਜਲ ਤੇ ਓਪਤਿ ਭੰਝੇ ਹੈ ਕਾਸਟ ਕਾਸਟ ਅੰਗਿ ਤਰਾਵੈਗੇ ॥ ਰਾਮ ਜਨਾ
 ਹਰਿ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ਅਪਨਾ ਬਿਰਦੁ ਰਖਾਵੈਗੇ ॥੩॥ ਹਮ ਪਾਥਰ ਲੋਹ ਲੋਹ ਬਡ ਪਾਥਰ ਗੁਰ ਸੰਗਤਿ ਨਾਵ
 ਤਰਾਵੈਗੇ ॥ ਜਿਤ ਸਤਸੰਗਤਿ ਤਰਿਓ ਜੁਲਾਹੋ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਨਿ ਭਾਵੈਗੇ ॥੪॥ ਖਰੇ ਖਰੋਏ ਬੈਠਤ ਊਠਤ
 ਮਾਰਗਿ ਪਂਥਿ ਧਿਆਵੈਗੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨ ਬਚਨ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਧਰੁ ਸੁਕਤਿ ਜਨਾਵੈਗੇ ॥੫॥ ਸਾਸਨਿ
 ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਬਲੁ ਪਾਈ ਹੈ ਨਿਹਸਾਸਨਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈਗੇ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਉਮੈ ਬ੍ਰੂਜੈ ਤੌ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮਿ

ਸਮਾਵੈਗੇ ॥੬॥ ਸਤਿਗੁਰ ਦਾਤਾ ਜੀਅ ਜੀਅਨ ਕੋ ਭਾਗਹੀਨ ਨਹੀਂ ਭਾਵੈਗੇ ॥ ਫਿਰਿ ਏਹ ਵੇਲਾ ਹਾਥਿ ਨ
ਆਵੈ ਪਰਤਾਪੈ ਪਛੁਤਾਵੈਗੇ ॥੭॥ ਜੇ ਕੋ ਭਲਾ ਲੋਡੈ ਭਲ ਅਪਨਾ ਗੁਰ ਆਗੈ ਫ਼ਹਿ ਫ਼ਹਿ ਪਾਵੈਗੇ ॥ ਨਾਨਕ
ਦਿੱਖਿਆ ਦਿੱਖਿਆ ਕਰਿ ਠਾਕੁਰ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭਸਮ ਲਗਾਵੈਗੇ ॥੮॥੩॥ ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਨੁ ਹਰਿ
ਰੰਗ ਰਾਤਾ ਗਾਵੈਗੇ ॥ ਭੈ ਭੈ ਕਾਸ ਭਏ ਹੈ ਨਿਰਮਲ ਗੁਰਮਤਿ ਲਾਗਿ ਲਗਾਵੈਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗ
ਰਾਤਾ ਸਦ ਬੈਰਾਗੀ ਹਰਿ ਨਿਕਟਿ ਤਿਨਾ ਘਰਿ ਆਵੈਗੇ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਪੰਕ ਮਿਲੈ ਤਾਂ ਜੀਵਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ
ਟਿਵਾਵੈਗੇ ॥੧॥ ਟੁਬਿਧਾ ਲੋਭਿ ਲਗੇ ਹੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਮਨਿ ਕੋਰੈ ਰੰਗੁ ਨ ਆਵੈਗੇ ॥ ਫਿਰਿ ਤਲਟਿਆਂ ਜਨਮੁ ਹੋਵੈ
ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲੈ ਰੰਗੁ ਲਾਵੈਗੇ ॥੨॥ ਇੰਦ੍ਰੀ ਦਸੇ ਦਸੇ ਫੁਨਿ ਧਾਵਤ ਤੈ ਗੁਣੀਆ ਖਿਨੁ ਨ
ਟਿਕਾਵੈਗੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪਰਚੈ ਵਸਗਤਿ ਆਵੈ ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਸੋ ਪਾਵੈਗੇ ॥੩॥ ਓਅੰਕਾਰਿ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ
ਸਭੁ ਏਕਸ ਮਾਹਿ ਸਮਾਵੈਗੇ ॥ ਏਕੋ ਰੂਪੁ ਏਕੋ ਕਹੁ ਰੰਗੀ ਸਭੁ ਏਕਤੁ ਬਚਨਿ ਚਲਾਵੈਗੇ ॥੪॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੋ
ਏਕੁ ਪਛਾਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਲਖਾਵੈਗੇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਇ ਮਿਲੈ ਨਿਜ ਮਹਲੀ ਅਨਹਦ ਸਬਦੁ ਬਜਾਵੈਗੇ
॥੫॥ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭ ਸਿਸਟਿ ਉਪਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵੈਗੇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਕੋ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵੈ ਆਇ
ਜਾਇ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈਗੇ ॥੬॥ ਅਨੇਕ ਜਨਮ ਵਿਛੁਡੇ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰੁ ਮਿਲਾਵੈਗੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ
ਮਿਲਤ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮਤਿ ਮਲੀਨ ਬਿਗਸਾਵੈਗੇ ॥੭॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੃ਪਾ ਕਰਹੁ ਜਗਜੀਵਨ ਮੈ
ਸਰਧਾ ਨਾਮਿ ਲਗਾਵੈਗੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਰਨਿ ਮਿਲਾਵੈਗੇ ॥੮॥੪॥
ਕਾਨਡਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਮਨ ਗੁਰਮਤਿ ਚਾਲ ਚਲਾਵੈਗੇ ॥ ਜਿਤ ਮੈਗਲੁ ਮਸਤੁ ਦੀਜੈ ਤਲਿ ਕੁੰਡੇ ਗੁਰ ਅੰਕਸੁ ਸਬਦੁ
ਦੂਡਾਵੈਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਚਲਤੈ ਚਲੈ ਚਲੈ ਦਹ ਦਹ ਦਿਸਿ ਗੁਰੁ ਰਾਖੈ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਵੈਗੇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ
ਸਬਦੁ ਦੇਇ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਨਾਮੁ ਚੁਆਵੈਗੇ ॥੧॥ ਬਿਸੀਅਰ ਬਿਸ੍ਤ੍ਰ ਭਰੇ ਹੈ ਪੂਰਨ ਗੁਰੁ
ਗਰੁੜੁ ਸਬਦੁ ਮੁਖਿ ਪਾਵੈਗੇ ॥ ਮਾਇਆ ਭੁਇਅੰਗ ਤਿਸੁ ਨੇਡਿ ਨ ਆਵੈ ਬਿਖੁ ਝਾਰਿ ਝਾਰਿ ਲਿਵ ਲਾਵੈਗੇ
॥੨॥ ਸੁਆਨੁ ਲੋਭੁ ਨਗਰ ਮਹਿ ਸਬਲਾ ਗੁਰੁ ਖਿਨ ਮਹਿ ਮਾਰਿ ਕਢਾਵੈਗੇ ॥ ਸਤੁ ਸਾਂਤੋਖੁ ਧਰਮੁ ਆਨਿ ਰਾਖੇ

हरि नगरी हरि गुन गावैगो ॥३॥ पंकज मोह निघरतु है प्रानी गुरु निघरत काढि कढावैगो ॥
 त्राहि त्राहि सरनि जन आए गुरु हाथी दे निकलावैगो ॥४॥ सुपन्नतरु संसारु सभु बाजी सभु बाजी
 खेलु खिलावैगो ॥ लाहा नामु गुरमति लै चालहु हरि दरगह पैथा जावैगो ॥५॥ हउमै करै करावै
 हउमै पाप कोइले आनि जमावैगो ॥ आइआ कालु दुखदाई होए जो बीजे सो खवलावैगो ॥६॥ संतहु
 राम नामु धनु संचहु लै खरचु चले पति पावैगो ॥ खाइ खरचि देवहि बहुतेरा हरि देदे तोटि न
 आवैगो ॥७॥ राम नाम धनु है रिद अंतरि धनु गुर सरणाई पावैगो ॥ नानक दिइआ दिइआ
 करि दीनी दुखु दालदु भंजि समावैगो ॥८॥५॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु सतिगुर सरनि धिआवैगो
 ॥ लोहा हिरनु होवै संगि पारस गुनु पारस को होइ आवैगो ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर महा पुरखु है
 पारसु जो लागै सो फलु पावैगो ॥ जिउ गुर उपदेसि तरे प्रहिलादा गुरु सेवक पैज रखावैगो ॥१॥
 सतिगुर बचनु बचनु है नीको गुर बचनी अंमृतु पावैगो ॥ जिउ अंबरीकि अमरा पद पाए सतिगुर
 मुख बचन धिआवैगो ॥२॥ सतिगुर सरनि सरनि मनि भाई सुधा सुधा करि धिआवैगो ॥ दिइआल
 दीन भए है सतिगुर हरि मारगु पंथु दिखावैगो ॥३॥ सतिगुर सरनि पए से थापे तिन राखन कउ
 प्रभु आवैगो ॥ जे को सरु संधै जन ऊपरि फिरि उलटो तिसै लगावैगो ॥४॥ हरि हरि हरि हरि
 सरु सेवहि तिन दरगह मानु दिवावैगो ॥ गुरमति गुरमति गुरमति धिआवहि हरि गलि मिलि
 मेलि मिलावैगो ॥५॥ गुरमुखि नाडु बेदु है गुरमुखि गुर परचै नामु धिआवैगो ॥ हरि हरि रूपु
 हरि रूपो होवै हरि जन कउ पूज करावैगो ॥६॥ साकत नर सतिगुरु नही कीआ ते बेमुख हरि
 भरमावैगो ॥ लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु माइआ करंगि लगावैगो ॥७॥ राम नामु
 सभ जग का तारकु लगि संगति नामु धिआवैगो ॥ नानक राखु राखु प्रभ मेरे सतसंगति
 राखि समावैगो ॥८॥६॥ छका १ ॥

ਕਾਨਡਾ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੇ ਉਥੇ ਜਿਨ ਰਾਮ ਧਿਆਏ ॥ ਜਤਨ ਮਾਝਿਆ ਕੇ ਕਾਮਿ ਨ ਆਏ ॥ ਰਾਮ ਧਿਆਏ ਸਭਿ ਫਲ ਪਾਏ ਧਨਿ
ਧਨਿ ਤੇ ਬਡਭਾਗੀਆ ॥ ਸਤਸਾਂਗਿ ਜਾਗੇ ਨਾਮਿ ਲਾਗੇ ਏਕ ਸਿਤ ਲਿਵ ਲਾਗੀਆ ॥ ਤਜਿ ਮਾਨ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ
ਸਾਧੂ ਲਗਿ ਤਰਤ ਤਿਨ ਕੈ ਪਾਏ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ਬਡਭਾਗਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਏ ॥੧॥
ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਨਿਤ ਭਜਹ ਨਾਰਾਇਣ ॥ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਸੁਆਮੀ ਗੁਣ ਗਾਇਣ ॥ ਗੁਣ ਗਾਇ ਜੀਵਹ ਹਰਿ
ਅਮਿਤ ਪੀਵਹ ਜਨਮ ਮਰਣਾ ਭਾਗਏ ॥ ਸਤਸਾਂਗਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਬਹੁਡਿ ਟ੍ਰੁਖੁ ਨ ਲਾਗਏ ॥ ਕਰਿ
ਦਿਇਆ ਦਾਤੇ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਸੰਤ ਸੇਵ ਕਮਾਇਣ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਜਨ ਧੂਰਿ ਬਾਂਘਿ ਹਰਿ ਦਰਸਿ
ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਣ ॥੨॥ ਸਗਲੇ ਜੰਤ ਭਜਹੁ ਗੋਪਾਲੈ ॥ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਪੂਰਨ ਘਾਲੈ ॥ ਨਿਤ ਭਜਹੁ ਸੁਆਮੀ
ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਸਬਾਇਆ ॥ ਗੋਬਿਨ੍ਦੁ ਗਾਈਐ ਨਿਤ ਧਿਆਈਐ ਪਰਵਾਣੁ ਸੋਈ ਆਇਆ ॥
ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਰੰਜਨ ਗੋਬਿੰਦ ਧਨੁ ਸਾਂਗਿ ਚਾਲੈ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕਰਿ ਦਿਇਆ ਟੀਜੈ
ਹਰਿ ਰਤਨੁ ਬਾਧਤ ਪਾਲੈ ॥੩॥ ਮੰਗਲਚਾਰ ਚੋਜ ਆਨਨਦਾ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮਿਲੇ ਪਰਮਾਨਨਦਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ
ਸੁਆਮੀ ਸੁਖਹਗਾਮੀ ਇਛ ਮਨ ਕੀ ਪੁਨੀਆ ॥ ਬਜੀ ਬਧਾਈ ਸਹਜੇ ਸਮਾਈ ਬਹੁਡਿ ਟ੍ਰੁਖਿ ਨ ਰੁਨੀਆ ॥
ਲੇ ਕੱਠਿ ਲਾਏ ਸੁਖ ਦਿਖਾਏ ਬਿਕਾਰ ਬਿਨਸੇ ਮੰਦਾ ॥ ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮਿਲੇ ਸੁਆਮੀ ਪੁਰਖ ਪਰਮਾਨਨਦਾ
॥੪॥੧॥

ਕਾਨਡੇ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ਮੂਦੇ ਕੀ ਵਾਰ ਕੀ ਧੁਨੀ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕ ਮ: ੪ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਗੁਰਮਤਿ ਰਖੁ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਦਾਸਨ ਦਾਸਾ ਹੋਇ ਰਹੁ ਹਤਮੈ
ਬਿਖਿਆ ਮਾਰਿ ॥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜੀਤਿਆ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ ਹਾਰਿ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਬਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ
ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਾਰਿ ॥੧॥ ਮ: ੪ ॥ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਹਰਿ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਗੋਵਿੰਦੁ

ਗੋਵਿਦੁ ਗੁਰਮਤਿ ਧਿਆਈਐ ਤਾਂ ਦਰਗਹ ਪਾਈਐ ਮਾਨੁ ॥ ਗੋਵਿਦੁ ਗੋਵਿਦੁ ਗੋਵਿਦੁ ਜਪਿ ਸੁਖੁ ਊਜਲਾ
 ਪਰਧਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਗੋਵਿਨਦੁ ਹਰਿ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਹੀ ਸਿਧ
 ਸਾਧਿਕੋ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਹੀ ਜੁਗ ਜੋਗੀਆ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਹੀ ਰਸ ਰਸੀਅੜਾ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਹੀ ਭੋਗ ਭੋਗੀਆ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਆਪਿ
 ਵਰਤਦਾ ਤ੍ਰਾਂ ਆਪੇ ਕਰਹਿ ਸੁ ਹੋਗੀਆ ॥ ਸਤਸਙਗਤਿ ਸਤਿਗੁਰ ਧਨੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਧਨੋ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ
 ਬੁਲਗ ਬੁਲੋਗੀਆ ॥ ਸਭਿ ਕਹਹੁ ਸੁਖਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਰਿ ਬੋਲਤ ਸਭਿ ਪਾਪ ਲਹੋਗੀਆ
 ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥ ਹਉਮੈ ਸਮਤਾ ਨਾਸੁ ਹੋਇ
 ਦੁਰਮਤਿ ਕਢੈ ਥੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਉਚਰੈ ਜਿਨ ਕਤ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਹੋਇ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ
 ਆਪੇ ਆਪਿ ਦਿਆਲੁ ਹਰਿ ਆਪੇ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਹਰਿ ਜੇਵੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
 ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ਬੇਅੰਤੁ ਪ੍ਰਭੂ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹਿਆ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਸਭ ਜੋਤਿ ਤੇਰੀ ਜਗਜੀਵਨਾ
 ਤ੍ਰਾਂ ਘਟਿ ਘਟਿ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰੰਗਨਾ ॥ ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਥੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਤ੍ਰਾਂ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪੁਰਖ ਨਿਰੰਜਨਾ ॥ ਇਕੁ
 ਦਾਤਾ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਭਿਖਾਰੀਆ ਹਰਿ ਜਾਚਹਿ ਸਭ ਮਂਗ ਮੰਗਨਾ ॥ ਸੇਵਕੁ ਠਾਕੁਰੁ ਸਭੁ ਤ੍ਰਾਂ ਤ੍ਰਾਂ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ
 ਚੰਗ ਚੰਗਨਾ ॥ ਸਭਿ ਕਹਹੁ ਸੁਖਹੁ ਰਿਖੀਕੇਸੁ ਹਰੇ ਰਿਖੀਕੇਸੁ ਹਰੇ ਜਿਤੁ ਪਾਵਹਿ ਸਭ ਫਲ ਫਲਨਾ ॥੨॥
 ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਮਨ ਹਾਰਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥ ਜੋ ਇਛਹਿ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ
 ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਲਗੈ ਧਿਆਨੁ ॥ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਸਭਿ ਕਟੀਅਹਿ ਹਉਮੈ ਚੁਕੈ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਮਲੁ
 ਵਿਗਸਿਆ ਸਭੁ ਆਤਮ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਪ੍ਰਭ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੧॥
 ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਵਿਤੁ ਹੈ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਮਨਿ
 ਵਸਿਆ ਆਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਤਿਨ ਦਾਲਦੁ ਦੁਖੁ ਲਹਿ ਜਾਇ ॥ ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆਓ
 ਜਨ ਵੇਖਹੁ ਮਨਿ ਪਤੀਆਇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸਨ ਦਾਸੁ ਹੈ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਗੇ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥

ਤ੍ਰਾਂ ਥਾਨ ਥਨਤਰਿ ਭਰਪੂਰੁ ਹਹਿ ਕਰਤੇ ਸਭ ਤੇਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਵਣੀ ॥ ਰੰਗ ਪਰਾਂਗ ਸਿਸਟਿ ਸਭ ਸਾਜੀ ਬਹੁ
 ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾੱਤਿ ਉਪਾਵਣੀ ॥ ਸਭ ਤੇਰੀ ਜੋਤੀ ਵਿਚਿ ਵਰਤਹਿ ਗੁਰਮਤੀ ਤੁਧੈ ਲਾਵਣੀ ॥ ਜਿਨ ਹੋਹਿ
 ਦਿੱਅਲੁ ਤਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਹਿ ਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਮਝਾਵਣੀ ॥ ਸਭਿ ਬੋਲਹੁ ਰਾਮ ਰਮੋ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਰਮੋ
 ਜਿਤੁ ਦਾਲਦੁ ਦੁਖ ਭੁਖ ਸਭ ਲਹਿ ਜਾਵਣੀ ॥੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮ ਰਸੁ ਹਰਿ
 ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਵਰਤਦਾ ਬੁਝਹੁ ਸਬਦ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਇਆ ਬਿਖੁ ਹਤਮੈ ਕਢੀ ਮਾਰਿ ॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਐ ਤਿਨ ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਸਭੁ ਹਾਰਿ ॥ ਗੁਰਿ
 ਤੁਠੈ ਹਰਿ ਚੇਤਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਤਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੧॥
 ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਉਤਮੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਵਿਚਿ ਕਲਿਜੁਗ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਕੀਰਤਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ
 ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਤਰਿ ਹਾਰੁ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਸਤਪਿਆ ਹਰਿ ਭੰਡਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਿ
 ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਨਿਤ ਹਤਮੈ ਛੋਡਿ ਖੁਆਰੁ ॥ ਜਲਿ ਹਸਤੀ ਮਲਿ ਨਾਵਾਲੀਐ ਸਿਰਿ ਭੀ ਫਿਰਿ ਪਾਵੈ ਛਾਰੁ ॥
 ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਿੱਆ ਕਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਏਕਕਾਰੁ ॥ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਮੰਨਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕ
 ਤਿਨ ਜੈਕਾਰੁ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਖਰੁ ਹੈ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਨਾਇਕੁ ਪੁਰਖੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਹਰਿ ਖੇਲੁ ਕੀਆ
 ਹਰਿ ਆਪੇ ਕਰਤੈ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਕੀਆ ਵਣਯਾਰਾ ॥ ਸਭ ਜੋਤੀ ਤੇਰੀ ਜੋਤੀ ਵਿਚਿ ਕਰਤੇ ਸਭੁ ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਪਾਸਾਰਾ
 ॥ ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ ਸਫਲ ਸੇ ਗਾਵਹਿ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਨਿਰਂਕਾਰਾ ॥ ਸਭਿ ਚਵਹੁ ਮੁਖਹੁ ਜਗਨਾਥੁ
 ਜਗਨਾਥੁ ਜਗਜੀਵਨੋ ਜਿਤੁ ਭਵਜਲ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਾ ॥੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਹਮਰੀ ਜਿਹਬਾ ਏਕ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਕੇ
 ਗੁਣ ਅਗਮ ਅਥਾਹ ॥ ਹਮ ਕਿਤ ਕਰਿ ਜਪਹ ਇਆਣਿਆ ਹਰਿ ਤੁਮ ਕਡ ਅਗਮ ਅਗਾਹ ॥ ਹਰਿ ਦੇਹੁ ਪ੍ਰਭੂ
 ਮਤਿ ਊਤਮਾ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਪਗਿ ਪਾਹ ॥ ਸਤਸਙਗਤਿ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਪ੍ਰਭ ਹਮ ਪਾਪੀ ਸੰਗਿ ਤਰਾਹ ॥ ਜਨ
 ਨਾਨਕ ਕਤ ਹਰਿ ਬਖਸਿ ਲੈਹੁ ਹਰਿ ਤੁਠੈ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਹ ॥ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਹਮ ਪਾਪੀ ਕਿਰਮ
 ਤਰਾਹ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਕਰਹੁ ਕ੃ਪਾ ਜਗਜੀਵਨਾ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਦਿੱਆਲੁ ॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਹਰਿ

हम भाईआ हरि होआ हरि किरपालु ॥ सभ आसा मनसा विसरी मनि चूका आल जंजालु ॥ गुरि तुठै
 नामु दृङ्गाइआ हम कीए सबदि निहालु ॥ जन नानकि अतुटु धनु पाइआ हरि नामा हरि धनु मालु
 ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि तुम् वड वडे वडे वड ऊचे सभ ऊपरि वडे वडोना ॥ जो धिआवहि हरि अपरंपरु
 हरि हरि हरि धिआइ हरे ते होना ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी तिन काटे पाप कटोना ॥ तुम
 जैसे हरि पुरख जाने मति गुरमति मुखि वड वड भाग वडोना ॥ सभि धिआवहु आदि सते जुगादि सते
 परतखि सते सदा सदा सते जनु नानकु दासु दसोना ॥५॥ सलोक मः ४ ॥ हमरे हरि जगजीवना हरि
 जपिओ हरि गुर मंत ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि हरि मिलिआ आइ अचिंत ॥ हरि आपे घटि
 घटि वरतदा हरि आपे आपि बिअंत ॥ हरि आपे सभ रस भोगदा हरि आपे कवला कंत ॥ हरि आपे
 भिखिआ पाइदा सभ सिसटि उपाई जीअ जंत ॥ हरि देवहु दानु दिइआल प्रभ हरि माँगहि हरि जन
 संत ॥ जन नानक के प्रभ आइ मिलु हम गावह हरि गुण छंत ॥१॥ मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु नामु
 हरि मै मनि तनि नामु सरीरि ॥ सभि आसा गुरमुखि पूरीआ जन नानक सुणि हरि धीर ॥२॥
 पउड़ी ॥ हरि ऊतमु हरिआ नामु है हरि पुरखु निरंजनु मउला ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति
 तिन सेवे चरन नित कउला ॥ नित सारि समाले सभ जीअ जंत हरि वसै निकटि सभ जउला ॥ सो बूझै
 जिसु आपि बुझाइसी जिसु सतिगुरु पुरखु प्रभु सउला ॥ सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे
 गोविंद हरे गुण गावत गुणी समउला ॥६॥ सलोक मः ४ ॥ सुतिआ हरि प्रभु चेति मनि हरि सहजि
 समाधि समाइ ॥ जन नानक हरि हरि चाउ मनि गुरु तुठा मेले माइ ॥१॥ मः ४ ॥ हरि इकसु
 सेती पिरहड़ी हरि इको मैरै चिति ॥ जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥२॥
 पउड़ी ॥ पंचे सबद वजे मति गुरमति वडभागी अनहटु वजिआ ॥ आनद मूलु रामु सभु देखिआ
 गुर सबदी गोविंदु गजिआ ॥ आदि जुगादि वेसु हरि एको मति गुरमति हरि प्रभु भजिआ ॥ हरि

ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਦਿੱਖਾਲ ਪ੍ਰਭ ਜਨ ਰਾਖਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਲਜਿਆ ॥ ਸਭਿ ਧਨੁ ਕਹਹੁ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਪੜਦਾ ਕਜਿਆ ॥੭॥ ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥ ਭਗਤਿ ਸਰੋਵਰੁ ਤਛਲੈ ਸੁਭਰ ਭਰੇ ਵਵਨਿ ॥ ਜਿਨਾ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਨਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਡ ਭਾਗ ਲਵਨਿ ॥੮॥ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਅਸਂਖ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ
 ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਹਿ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਗਮੁ ਅਗਧਿ ਹਰਿ ਜਨ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਿਲਹਿ ਮਿਲਾਹਿ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਜਪਤ
 ਜਪਤ ਜਨ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਅਗਮ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਲੈਹੁ ਲਡਿ ਲਾਇ
 ॥੯॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਰਿ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਗਮੁ ਹਰਿ ਕਿਤ ਕਰਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਪਿਖਾ ॥ ਕਿਛੁ ਕਖਰੁ ਹੋਇ ਸੁ
 ਕਰਨੀਐ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰਿਖਾ ॥ ਜਿਸੁ ਬੁਝਾਏ ਆਪਿ ਬੁਝਾਇ ਟੇਇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਦਿਖਾ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਤਿਗੁਰ
 ਚਟਸਾਲ ਹੈ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਿਖਾ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੁ ਰਸਨਾ ਧਨੁ ਕਰ ਧਨੁ ਸੁ ਪਾਥਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ
 ਲੇਖਾ ਲਿਖਾ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਪਵਿਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਜਪਤ ਸੁਨਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਿਨੀ ਆਰਾਧਿਆ ਜਿਨ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਪਾਇ
 ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਜਨ ਪੈਨਾਈਅਨਿ ਜਿਨ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਆਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਜਿਨ ਹਰਿ
 ਸੁਣਿਆ ਮਨਿ ਭਾਇ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਜਿਨ ਧੁਰਿ
 ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇਆ ਸਾਁਤਿ ਵਸੀ ਮਨਿ ਆਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਤਦਿਆ ਸਭੁ ਦਾਲਦੁ ਦੁਖੁ ਲਹਿ ਜਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਹਤ ਵਾਰਿਆ ਤਿਨ ਕਤ ਸਦਾ
 ਸਦਾ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਦੇਖਿਆ ॥ ਤਿਨ ਕਤ ਮਿਲਿਆ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨ ਕਤ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ
 ਲੇਖਿਆ ॥ ਹਰਿ ਅਗਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗੁਰਮਤੀ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨਹੀ ਪ੍ਰਭ ਰੇਖਿਆ ॥ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਧਿਆਇਆ ਜਿਨਾ
 ਅਗਮੁ ਹਰਿ ਤੇ ਠਾਕੁਰ ਸੇਵਕ ਰਲਿ ਏਕਿਆ ॥ ਸਭਿ ਕਹਹੁ ਮੁਖਹੁ ਨਰ ਨਰਹਰੇ ਨਰ ਨਰਹਰੇ ਨਰ
 ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਵਿਸੇਖਿਆ ॥੬॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਮੁ ਰਵਿ ਰਹੇ ਰਮੁ ਰਾਮੋ ਰਾਮੁ ਰਮੀਤਿ
 ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਹੈ ਪ੍ਰਭਿ ਖੇਲੁ ਕੀਓ ਰੰਗਿ ਰੀਤਿ ॥ ਹਰਿ ਨਿਕਟਿ ਕਿਸੈ ਜਗਜੀਵਨਾ ਪਰਗਾਸੁ ਕੀਓ

ਗੁਰ ਮੀਤਿ ॥ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਤਿਨ ਮਿਲੇ ਜਿਨ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਇਆ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਜਪਿਐ ਮਨਿ ਚੀਤਿ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਜਣੁ ਲੋਡਿ ਲਹੁ ਭਾਗਿ ਵਸੈ ਵਡਭਾਗਿ
 ॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੇਖਾਲਿਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੁਹਾਵੀ ਸਫਲ ਘੜੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ
 ਸੇਵਾ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਗੁਰਸਿਖਹੁ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਕਿਤ
 ਦੇਖੀਐ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੀ ॥ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਦਿਖਾਏ ਆਪਿ ਹਰਿ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਤਿਨ
 ਵਿਟਹੁ ਨਾਨਕੁ ਵਾਰਿਆ ਜੋ ਜੱਪਦੇ ਹਰਿ ਨਿਰਕਾਣੀ ॥੧੦॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਰਤੇ ਲੋਡਿਣਾ ਗਿਆਨ
 ਅੰਜਨੁ ਗੁਰੁ ਦੇਇ ॥ ਮੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸਜਣੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਮਿਲੇਇ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ
 ਸਾਁਤਿ ਹੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਮੁ ਚਿਤਕੈ ਨਾਮੋ ਪਡੈ ਨਾਮਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ
 ਚਿੰਤਾ ਗੈਂਡ ਬਿਲਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਨਾਮੁ ਊਪਜੈ ਤੂਸਨਾ ਭੁਖ ਸਭ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਨਾਮੋ
 ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇ ਕੈ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਕਸਗਤਿ ਕੀਤਾ ॥ ਇਕਿ ਮਨਮੁਖ ਕਰਿ
 ਹਾਰਾਇਅਨੁ ਇਕਨਾ ਮੇਲਿ ਗੁਰੂ ਤਿਨਾ ਜੀਤਾ ॥ ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਸਭਾਗੈ ਲੀਤਾ ॥
 ਢੁਖੁ ਦਾਲਦੁ ਸਭੋ ਲਹਿ ਗਿਆ ਜਾਂ ਨਾਤ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਦੀਤਾ ॥ ਸਭਿ ਸੇਵਹੁ ਮੋਹਨੋ ਮਨਮੋਹਨੋ ਜਗਮੋਹਨੋ ਜਿਨਿ
 ਜਗਤੁ ਉਪਾਇ ਸਭੋ ਕਾਵਿ ਕੀਤਾ ॥੧੧॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਹਤਮੈ ਰੋਗ ਹੈ ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਲੇ ਮਨਮੁਖ
 ਢੁਰਜਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਰੋਗੁ ਵਜਾਇ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਧੂ ਸਜਨਾ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਤਾਮਿ ਸਗਾਰਵਾ ਜਾਂ
 ਦੇਖਾ ਹਰਿ ਨੈਣੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮੈ ਮਿਲੈ ਹਤ ਜੀਵਾ ਸਟੁ ਸੁਣੇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਗਨਾਥ ਜਗਦੀਸਰ ਕਰਤੇ
 ਅਪਰੰਪਰ ਪੁਰਖੁ ਅਤੋਲੁ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਮੇਰੇ ਗੁਰਸਿਖਹੁ ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲੁ ॥ ਜਿਨ
 ਧਿਆਇਆ ਹਿਰਦੈ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਤੇ ਮਿਲੇ ਨਹੀਂ ਹਰਿ ਰੋਲੁ ॥ ਵਡਭਾਗੀ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲੈ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰਾ
 ਬੋਲੁ ॥ ਸਭਿ ਧਿਆਵਹੁ ਨਰ ਨਾਰਾਇਣੋ ਨਾਰਾਇਣੋ ਜਿਤੁ ਚੂਕਾ ਜਮ ਝਾਗੜੁ ਝਾਗੋਲੁ ॥੧੨॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
 ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਤਦਿਆ ਸਰੁ ਸੰਧਿਆ ਗਾਵਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਲਿਵ ਤਿਨੇ ਜਿਨ ਸੰਧਿਆ

ਤਿਸੁ ਫਿਰਿ ਮਾਰ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥ ਅਖੀ ਪ੍ਰੇਮਿ ਕਸਾਈਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਖਣਿ ॥ ਜੇ ਕਰਿ ਢੂਜਾ ਦੇਖਦੇ ਜਨ
ਨਾਨਕ ਕਛਿ ਦਿਚਨਿ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪ੍ਰੰਨੋ ਅਪਰਂਪੁ ਸੋਈ ॥ ਜੀਅ ਜਾਂਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਦਾ
ਯੋ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਭਰਾ ਸੀਤ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ
ਯਪਿਅਹੁ ਜਨ ਕੋਈ ॥ ਸਗਲ ਜਪਹੁ ਗੋਪਾਲ ਗੁਨ ਪਰਗਟੁ ਸਭ ਲੋਈ ॥੧੩॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੇ
ਸਿ ਸਜਣਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਪਾਇਆ ਰੰਗ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂ ਲੁਡਿ ਲੁਡਿ ਦਰਗਹਿ ਕੰਬੁ ॥੧॥ ਮਃ ੪ ॥
ਹਰਿ ਤੂਹੈ ਦਾਤਾ ਸਭਸ ਦਾ ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਸਭਿ ਤੁਧੈ ਨੋ ਆਰਾਧਦੇ ਦਾਨੁ ਦੇਹਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਹਰਿ ਦਾਤੈ
ਦਾਤਾਰਿ ਹਥੁ ਕਛਿਆ ਸੀਹੁ ਕੁਠਾ ਸੈਸਾਰੇ ॥ ਅਨੁ ਜੰਮਿਆ ਖੇਤੀ ਭਾਉ ਕਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਸ਼ਾਰੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ
ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਇਛਾ ਮਨ ਕੀ ਪੂਰੀਐ ਜਪੀਐ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ
ਅਰਾਧੀਅਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਰਤਨਾਗਰੁ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਉਧਾਰੁ ਹੋਇ ਫਾਟੈ ਜਮ ਕਾਗਰੁ ॥ ਜਨਮ ਪਦਾਰਥੁ
ਜੀਤੀਐ ਜਪਿ ਹਰਿ ਬੈਰਾਗਰੁ ॥ ਸਭਿ ਪਵਹੁ ਸਰਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਬਿਨਸੈ ਦੁਖ ਦਾਗਰੁ ॥੧੪॥ ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
ਹਉ ਢੁੰਢੇਂਦੀ ਸਜਣਾ ਸਜਣੁ ਮੈਡੈ ਨਾਲਿ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਹਿ ਦਿਖਾਲਿ ॥੧॥
ਮਃ ੪ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਤਿਨਿ ਸਚੈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ਹਰਿ
ਰਸਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥੨॥ ਪਤੜੀ ॥ ਕੋਈ ਗਾਵੈ ਕੋ ਸੁਣੈ ਕੋ ਉਚਰਿ ਸੁਨਾਵੈ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਮਲੁ ਤਤਰੈ ਮਨ
ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਵੈ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਮੇਟੀਐ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਆਪਿ ਤਰਹਿ ਸੰਗੀ ਤਰਾਹਿ ਸਭ ਕੁਟੰਬੁ ਤਰਾਵੈ
॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜੋ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥੧੫॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

ਰਾਗੁ ਕਾਨਡਾ ਬਾਣੀ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀਤ ਕੀ

੧੪ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਐਸੋ ਰਾਮ ਰਾਇ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਜੈਸੇ ਦਰਪਨ ਮਾਹਿ ਬਦਨ ਪਰਵਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਸੈ ਘਟਾ ਘਟ
ਲੀਪ ਨ ਛੀਪੈ ॥ ਬੰਧਨ ਸੁਕਤਾ ਜਾਤੁ ਨ ਦੀਸੈ ॥੧॥ ਪਾਨੀ ਮਾਹਿ ਦੇਖੁ ਸੁਖੁ ਜੈਸਾ ॥ ਨਾਮੇ ਕੋ ਸੁਆਮੀ
ਬੀਠਲੁ ਐਸਾ ॥੨॥੧॥

रागु कलिआन महला ४

੧੮ੰ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैधं गुर प्रसादि ॥

रामा रम रामै अंतु न पाइआ ॥ हम बारिक प्रतिपारे तुमरे तू बड़ पुरखु पिता मेरा माइआ ॥१॥
रहाउ ॥ हरि के नाम असंख अगम हहि अगम अगम हरि राइआ ॥ गुणी गिआनी सुरति बहु कीनी
इकु तिलु नही कीमति पाइआ ॥२॥ गोबिद गुण गोबिद सद गावहि गुण गोबिद अंतु न पाइआ ॥
तू अमिति अतोलु अपरंपर सुआमी बहु जपीऔ थाह न पाइआ ॥३॥ उसतति करहि तुमरी जन
माधौ गुन गावहि हरि राइआ ॥ तुम् जल निधि हम मीने तुमरे तेरा अंतु न कतहू पाइआ ॥४॥
जन कउ कृपा करहु मध्सूदन हरि देवहु नामु जपाइआ ॥ मै मूरख अंधुले नामु टेक है जन नानक
गुरमुखि पाइआ ॥५॥१॥ कलिआनु महला ४ ॥ हरि जनु गुन गावत हसिआ ॥ हरि हरि भगति
बनी मति गुरमति धुरि मसतकि प्रभि लिखिआ ॥२॥ रहाउ ॥ गुर के पग सिमरउ दिनु राती मनि
हरि हरि हरि बसिआ ॥ हरि हरि हरि कीरति जगि सारी घसि चंदनु जसु घसिआ ॥३॥ हरि जन
हरि हरि हरि लिव लाई सभि साकत खोजि पड़िआ ॥ जिउ किरत संजोगि चलिओ नर निंदकु पगु
नागनि छुहि जलिआ ॥४॥ जन के तुम् हरि राखे सुआमी तुम् जुगि जुगि जन रखिआ ॥ कहा भड़िआ
दैति करी बखीली सभि करि करि झारि परिआ ॥५॥ जेते जीअ जंत प्रभि कीए सभि कालै मुखि ग्रसिआ
॥ हरि जन हरि हरि प्रभि राखे जन नानक सरनि पड़िआ ॥६॥२॥ कलिआन महला ४ ॥

मेरे मन जपु जपि जगन्नाथे ॥ गुर उपदेसि हरि नामु धिआङ्गिओ सभि किलबिख दुख लाथे ॥१॥
 रहाउ ॥ रसना एक जसु गाइ न साकै बहु कीजै बहु रसुनथे ॥ बार बार खिनु पल सभि गावहि गुन
 कहि न सकहि प्रभ तुमनथे ॥२॥ हम बहु प्रीति लगी प्रभ सुआमी हम लोचह प्रभु दिखनथे ॥ तुम
 बड दाते जीआ जीअन के तुम जानहु हम बिरथे ॥३॥ कोई मारगु पंथु बतावै प्रभ का कहु तिन कउ
 किआ दिनथे ॥ सभु तनु मनु अरपउ अरपि अरापउ कोई मेलै प्रभ मिलथे ॥४॥३॥ हरि के गुन बहुत
 बहुत बहु सोभा हम तुछ करि करि बरनथे ॥ हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै जन नानक के प्रभ
 समरथे ॥५॥३॥ कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि गुन अकथ सुनर्थई ॥ धरमु अरथु सभु
 कामु मोखु है जन पीछै लगि फिरथई ॥६॥ रहाउ ॥ सो हरि हरि नामु धिआवै हरि जनु जिसु बडभाग
 मर्थई ॥ जह दरगहि प्रभु लेखा मागै तह छुटै नामु धिआङ्गिर्थई ॥७॥ हमरे दोख बहु जनम जनम के
 दुखु हउमै मैलु लगर्थई ॥ गुरि धारि कृपा हरि जलि नावाए सभि किलबिख पाप गर्थई ॥८॥ जन कै
 रिद अंतरि प्रभु सुआमी जन हरि हरि नामु भजर्थई ॥ जह अंती अउसरु आङ्गि बनतु है तह राखै
 नामु सार्थई ॥९॥ जन तेरा जसु गावहि हरि हरि प्रभ हरि जपिओ जगन्नर्थई ॥ जन नानक के प्रभ
 राखे सुआमी हम पाथर रखु बुडर्थई ॥१०॥४॥ कलिआन महला ४ ॥ हमरी चितवनी हरि प्रभु जानै
 ॥ अउरु कोई निंद करै हरि जन की प्रभु ता का कहिआ डिकु तिलु नही मानै ॥१॥ रहाउ ॥ अउर
 सभि तिआगि सेवा करि अचुत जो सभि ते ऊच ठाकुरु भगवानै ॥ हरि सेवा ते कालु जोहि न साकै चरनी
 आङ्गि पवै हरि जानै ॥१॥ जा कउ राखि लेइ मेरा सुआमी ता कउ सुमति देइ पै कानै ॥ ता कउ
 कोई अपरि न साकै जा की भगति मेरा प्रभु मानै ॥२॥ हरि के चोज विडान देखु जन जो खोटा खरा डिक
 निमख पछानै ॥ ता ते जन कउ अनदु भइआ है रिद सुध मिले खोटे पछुतानै ॥३॥ तुम हरि दाते
 समरथ सुआमी डिकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि दीजै सद बसहि

ਰਿਦੈ ਮੋਹਿ ਹਰਿ ਚਰਾਨੈ ॥੪॥੫॥ ਕਲਿਆਨ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀਜੈ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਾਨ ਹਮ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵਹਗੇ
॥ ਹਉ ਤੁਮਰੀ ਕਰਤ ਨਿਤ ਆਸ ਪ੍ਰਭ ਮੋਹਿ ਕਬ ਗਲ ਲਾਵਹਿਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਸੁਗਧ ਇਆਨ
ਪਿਤਾ ਸਮਝਾਵਹਿਗੇ ॥ ਸੁਤੁ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਭੂਲਿ ਬਿਗਾਰਿ ਜਗਤ ਪਿਤ ਭਾਵਹਿਗੇ ॥੧॥ ਜੋ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਤੁਮ
ਦੇਹੁ ਸੋਈ ਹਮ ਪਾਵਹਗੇ ॥ ਮੋਹਿ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਠਤਰ ਜਿਸੁ ਪਹਿ ਹਮ ਜਾਵਹਗੇ ॥੨॥ ਜੋ ਹਰਿ ਭਾਵਹਿ
ਭਗਤ ਤਿਨਾ ਹਰਿ ਭਾਵਹਿਗੇ ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ਜੋਤਿ ਰਲਿ ਜਾਵਹਗੇ ॥੩॥ ਹਰਿ ਆਪੇ ਹੋਇ
ਕ੃ਪਾਲੁ ਆਪਿ ਲਿਵ ਲਾਵਹਿਗੇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਰਨਿ ਦੁਆਰਿ ਹਰਿ ਲਾਜ ਰਖਾਵਹਿਗੇ ॥੪॥੬॥ ਛਕਾ ੧ ॥

ਕਲਿਆਨੁ ਭੋਪਾਲੀ ਮਹਲਾ ੪ ੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਸੁਆਮੀ ਦੂਖ ਨਿਵਾਰਣੁ ਨਾਰਾਇਣੇ ॥ ਸਗਲ ਭਗਤ ਜਾਚਹਿ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਭਵ ਨਿਧਿ
ਤਰਣ ਹਰਿ ਚਿੰਤਾਮਣੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲ ਜਗਦੀਸ ਦਮੋਦਰ ਹਰਿ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਗੋਬਿੰਦੇ ॥
ਤੇ ਨਿਰਭਤ ਜਿਨ ਸੀਰਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗੁਰਮਤਿ ਮੁਰਾਰਿ ਹਰਿ ਮੁਕੱਦੇ ॥੧॥ ਜਗਦੀਸੁਰ ਚਰਨ ਸਰਨ
ਜੋ ਆਏ ਤੇ ਜਨ ਭਵ ਨਿਧਿ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ॥ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਪੈਜ ਹਰਿ ਰਾਖੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਹਰਿ
ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ॥੨॥੧॥੭॥

ਰਾਗੁ ਕਲਿਆਨੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਮਾਰੈ ਏਹ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥ ਅਲਿ ਮਕਰਨਦ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਤ ਮਨੁ ਫੇਰਿ ਫੇਰਿ ਰੀੜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਆਨ
ਜਲਾ ਸਿਤ ਕਾਜੁ ਨ ਕਛੂਐ ਹਰਿ ਕੁੰਦ ਚਾਤੂਕ ਕਤ ਦੀਜੈ ॥੧॥ ਬਿਨੁ ਮਿਲਬੇ ਨਾਹੀ ਸੰਤੋਖਾ ਪੇਖਿ ਦਰਸਨੁ
ਨਾਨਕੁ ਜੀਜੈ ॥੨॥੧॥ ਕਲਿਆਨ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਜਾਚਿਕੁ ਨਾਮੁ ਜਾਚੈ ਜਾਚੈ ॥ ਸਰਬ ਧਾਰ ਸਰਬ ਕੇ ਨਾਇਕ ਸੁਖ
ਸਮੂਹ ਕੇ ਦਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੇਤੀ ਕੇਤੀ ਮਾਂਗਨਿ ਮਾਗੈ ਭਾਵਨੀਆ ਸੋ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਸਫਲ ਸਫਲ ਸਫਲ
ਦਰਸੁ ਰੇ ਪਰਸਿ ਪਰਸਿ ਗੁਨ ਗਾਈਐ ॥ ਨਾਨਕ ਤਤ ਤਤ ਸਿਤ ਮਿਲੀਐ ਹੀਰੈ ਹੀਰੁ ਬਿਧਾਈਐ ॥੨॥੨॥

ਕਲਿਆਨ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮੇਰੇ ਲਾਲਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ॥ ਸਦ ਨਵਤਨ ਮਨ ਰੰਗੀ ਸੋਭਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਬ੍ਰਹਮ ਮਹੇਸ
ਸਿਧ ਮੁਨਿ ਝਿੰਦ੍ਰਾ ਭਗਤਿ ਦਾਨੁ ਜਸੁ ਮੰਗੀ ॥੧॥ ਜੋਗ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਸੇਖਨਾਗੈ ਸਗਲ ਜਪਹਿ ਤਰੰਗੀ ॥
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੰਤਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸਦ ਸੰਗੀ ॥੨॥੩॥

ਕਲਿਆਨ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੨

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤੈਰੈ ਮਾਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਾਨਿ ॥ ਨੈਨ ਬੈਨ ਸੁਵਨ ਸੁਨੀਐ ਅੰਗ ਅੰਗੇ ਸੁਖ ਪ੍ਰਾਨਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਇਤ ਉਤ
ਦਹ ਦਿਸਿ ਰਖਿਆ ਮੇਰ ਤਿਨਹਿ ਸਮਾਨਿ ॥੧॥ ਜਤ ਕਤਾ ਤਤ ਪੇਖੀਐ ਹਰਿ ਪੁਰਖ ਪਤਿ ਪਰਥਾਨ ॥ ਸਾਧਸ਼ੰਗਿ
ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਮਿਟੇ ਕਥੇ ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ ॥੨॥੧॥੪॥ ਕਲਿਆਨ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਨ ਨਾਦ ਧੁਨਿ ਅਨਨਦ ਬੇਦ
॥ ਕਥਤ ਸੁਨਤ ਮੁਨਿ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਮੰਡਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਮਾਨ ਦਾਨ ਮਨ ਰਸਿਕ
ਰਸਨ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਤਹ ਪਾਪ ਖੱਡਲੀ ॥੧॥ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਗਿਆਨ ਭੁਗਤਿ ਸੁਰਤਿ ਸਕਵਦ ਤਤ ਬੇਤੇ ਜਪੁ ਤਪੁ
ਅਖੱਡਲੀ ॥ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਮਿਲਿ ਜੋਤਿ ਨਾਨਕ ਕਛੂ ਦੁਖੁ ਨ ਡੰਡਲੀ ॥੨॥੨॥੫॥ ਕਲਿਆਨੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਕਤਨੁ ਬਿਧਿ ਤਾ ਕੀ ਕਹਾ ਕਰਤ ॥ ਧਰਤ ਧਿਆਨੁ ਗਿਆਨੁ ਸਸਤਰਿਆ ਅਜਰ ਪਦੁ ਕੈਸੇ ਜਰਤ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਬਿਸਨ ਮਹੇਸ ਸਿਧ ਮੁਨਿ ਝਿੰਦ੍ਰਾ ਕੈ ਦਰਿ ਸਰਨਿ ਪਰਤ ॥੧॥ ਕਾਹੂ ਪਹਿ ਰਾਜੁ ਕਾਹੂ ਪਹਿ ਸੁਰਗਾ ਕੋਟਿ
ਮਧੇ ਮੁਕਤਿ ਕਹਤ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਰਸੁ ਪਾਈਐ ਸਾਧੂ ਚਰਨ ਗਹਤ ॥੨॥੩॥੬॥ ਕਲਿਆਨ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਦਿੱਤਾਲ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭ ਸਖੇ ॥ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਕਲਿ ਕਾਲ ਜਾਲ ਦੁਖ ਬਿਨਾਸਨੁ ਹਰਿ ਰਖੇ ॥੧॥
ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਮ ਧਾਰੀ ਸਰਨਿ ਤੇਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਿੱਤਾਲ ਟੇਕ ਮੇਰੀ ॥੧॥ ਅਨਾਥ ਦੀਨ ਆਸਵਂਤ ॥ ਨਾਮੁ ਸੁਆਮੀ
ਮਨਹਿ ਮੰਤ ॥੨॥ ਤੁੜ੍ਹ ਬਿਨਾ ਪ੍ਰਭ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਨ੍ਹੂ ॥ ਸਰਬ ਜੁਗ ਮਹਿ ਤੁਮ ਪਛਾਨ੍ਹੂ ॥੩॥ ਹਰਿ ਮਨਿ ਕਿਸੇ
ਨਿਸਿ ਬਾਸਰੋ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਨਕ ਆਸਰੋ ॥੪॥੪॥੭॥ ਕਲਿਆਨ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਜਾਪੀਐ ਭਗਵਾਨ
॥ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਭਏ ਸਦਾ ਸ੍ਰੂਖ ਕਲਿਆਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਰਬ ਕਾਰਜ ਸਿਧਿ ਭਏ ਗਾਇ ਗੁਨ ਗੁਪਾਲ ॥
ਮਿਲਿ ਸਾਧਸ਼ੰਗਤਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸਿਮਰੇ ਨਾਠਿਆ ਦੁਖ ਕਾਲ ॥੧॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰਿਆ ਕਰਤ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ

ਸੇਵ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਰਣਾਗਤੀ ਹਰਿ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰੂਨ ਦੇਵ ॥੨॥੫॥੮॥ ਕਲਿਆਨੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ
 ਅੰਤਰਯਾਮੀ ਜਾਣੁ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰੂਨ ਪਰਮੇਸਰ ਨਿਹਚਲੁ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਹਰਿ ਬਿਨੁ
 ਆਨ ਨ ਕੋਈ ਸਮਰਥੁ ਤੇਰੀ ਆਸ ਤੇਰਾ ਮਨਿ ਤਾਣੁ ॥ ਸਰਬ ਘਟਾ ਕੇ ਦਾਤੇ ਸੁਆਮੀ ਦੇਹਿ ਸੁ ਪਹਿਰਣੁ ਖਾਣੁ
 ॥੧॥ ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਚਤੁਰਾਈ ਸੋਭਾ ਰੂਪੁ ਰੰਗੁ ਧਨੁ ਮਾਣੁ ॥ ਸਰਬ ਸ੍ਰੂਖ ਆਨਦ ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ
 ਕਲਿਆਣੁ ॥੨॥੬॥੬॥ ਕਲਿਆਨੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਹਰਿ ਚਰਨ ਸਰਨ ਕਲਿਆਨ ਕਰਨ ॥ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ਪਤਿ
 ਪਾਵਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਪਿ ਨਿਸਿੰਗ ਜਮਕਾਲੁ ਤਿਸੁ ਨ ਖਾਵਨੋ ॥੧॥ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ਅਨਿਕ
 ਸ੍ਰੂਖ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਲਵੈ ਨ ਲਾਵਨੋ ॥ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸ ਲੁਬਧ ਦਾਸ ਨਾਨਕ ਬਹੁਡਿ ਜੋਨਿ ਨ ਧਾਵਨੋ ॥੨॥੭॥੧੦॥

ਕਲਿਆਨ ਮਹਲਾ ੪ ਅਸਟਪਦੀਆ ॥

੧੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਮਾ ਰਮ ਰਾਮੋ ਸੁਨਿ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜੇ ਪੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
 ਕਾਸਟ ਮਹਿ ਜਿਤ ਹੈ ਬੈਸਤਨੁ ਮਥਿ ਸੰਜਮਿ ਕਾਢਿ ਕਢੀਜੈ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹੈ ਜੋਤਿ ਸਬਾਈ ਤਤੁ ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਢਿ
 ਲਈਜੈ ॥੧॥ ਨਤ ਦਰਵਾਜ ਨਵੇ ਦਰ ਫੀਕੇ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਦਸਵੇ ਚੁਈਜੈ ॥ ਕ੃ਪਾ ਕ੃ਪਾ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਪਿਆਰੇ
 ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੨॥ ਕਾਇਆ ਨਗਰੁ ਨਗਰੁ ਹੈ ਨੀਕੋ ਵਿਚਿ ਸਤਦਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਕੀਜੈ ॥ ਰਤਨ
 ਲਾਲ ਅਮੌਲ ਅਮੌਲਕ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲੀਜੈ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਗਮੁ ਅਗਮੁ ਹੈ ਠਾਕੁਰੁ ਭਰਿ ਸਾਗਰ ਭਗਤਿ
 ਕਰੀਜੈ ॥ ਕ੃ਪਾ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਦੀਨ ਹਮ ਸਾਰਿਗ ਇਕ ਬੁੰਦ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ ਟੀਜੈ ॥੪॥ ਲਾਲਨੁ ਲਾਲੁ ਲਾਲੁ ਹੈ
 ਰੰਗਨੁ ਮਨੁ ਰੰਗਨ ਕਤ ਗੁਰ ਦੀਜੈ ॥ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਰਸ ਰਸਿਕ ਗਟਕ ਨਿਤ ਪੀਜੈ ॥੫॥ ਬਸੁਧਾ
 ਸਪਤ ਦੀਪ ਹੈ ਸਾਗਰ ਕਛਿ ਕਚਨੁ ਕਾਢਿ ਧਰੀਜੈ ॥ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਜਨ ਇਨਹੁ ਨ ਬਾਛਹਿ ਹਰਿ ਮਾਗਹਿ
 ਹਰਿ ਰਸੁ ਦੀਜੈ ॥੬॥ ਸਾਕਤ ਨਰ ਪ੍ਰਾਨੀ ਸਦ ਭ੍ਰਾਖੇ ਨਿਤ ਭ੍ਰਾਖਨ ਭ੍ਰਾਖ ਕਰੀਜੈ ॥ ਧਾਵਤੁ ਧਾਇ ਧਾਵਹਿ ਪ੍ਰੀਤਿ
 ਮਾਇਆ ਲਖ ਕੋਸਨ ਕਤ ਬਿਥਿ ਦੀਜੈ ॥੭॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਊਤਮ ਕਿਆ ਤਪਮਾ ਤਿਨ੍ ਦੀਜੈ ॥

राम नाम तुलि अउरु न उपमा जन नानक कृपा करीजै ॥੮॥੧॥ कलिआन महला ४ ॥ राम गुरु
 पारसु परसु करीजै ॥ हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥੧॥ रहाउ ॥ सुरग
 मुकति बैकुंठ सभि बाँछहि निति आसा आस करीजै ॥ हरि दरसन के जन मुकति न माँगहि मिलि
 दरसन तृपति मनु धीजै ॥੨॥ माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥ मेरे ठाकुर के
 जन अलिपत है मुकते जित मुरगाई पंकु न भीजै ॥੨॥ चंदन वासु भुइअंगम वेडी किव मिलीअै
 चंदनु लीजै ॥ काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै ॥੩॥ आनि आनि समधा
 बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै ॥ महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ॥੪॥
 साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥ परस निपरसु भए साधू जन जनु हरि भगवानु
 दिखीजै ॥੫॥ साकत सूत बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥ तंतु सूतु किछु निकसै नाही
 साकत संगु न कीजै ॥੬॥ सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै ॥ अंतरि रतन
 जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै ॥੭॥ मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह
 मिलीजै ॥ नानक मेलि मिलाए गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै ॥੮॥੨॥ कलिआनु महला ४ ॥
 रामा रम रामो रामु रवीजै ॥ साधू साध साध जन नीके मिलि साधू हरि रंगु कीजै ॥੧॥ रहाउ ॥
 जीअ जंत सभु जगु है जेता मनु डोलत डोल करीजै ॥ कृपा कृपा करि साधु मिलावहु जगु थंमन
 कउ थंमु दीजै ॥੧॥ बसुधा तलै तलै सभ ऊपरि मिलि साधू चरन रुलीजै ॥ अति ऊतम अति ऊतम
 होवहु सभ सिसटि चरन तल दीजै ॥੨॥ गुरमुखि जोति भली सिव नीकी आनि पानी सकति भरीजै ॥
 मैनदंत निकसे गुर बचनी सारु चबि चबि हरि रसु पीजै ॥੩॥ राम नाम अनुग्रहु बहु कीआ गुर
 साधू पुरख मिलीजै ॥ गुन राम नाम बिसथीरन कीए हरि सगल भवन जसु दीजै ॥੪॥ साधू साध
 साध मनि प्रीतम बिनु देखे रहि न सकीजै ॥ जिउ जल मीन जलं जल प्रीति है खिनु जल बिनु फूटि

मरीजै ॥५॥ महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूरि न पीजै ॥ तिना तिसना जलत जलत
 नहीं बूझहि डंडु धरम राइ का दीजै ॥६॥ सभि तीरथ बरत जग्य पुन्न कीए हिवै गालि गालि तनु
 छीजै ॥ अतुला तोलु राम नामु है गुरमति को पुजै न तोल तुलीजै ॥७॥ तव गुन ब्रह्म ब्रह्म तू
 जानहि जन नानक सरनि परीजै ॥ तू जल निधि मीन हम तेरे करि किरपा संगि रखीजै ॥८॥३॥
 कलिआन महला ४ ॥ रामा रम रामो पूज करीजै ॥ मनु तनु अरपि धरउ सभु आगै रसु गुरमति
 गिआनु दृढ़ीजै ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रह्म नाम गुण साख तरोवर नित चुनि चुनि पूज करीजै ॥ आतम देउ
 देउ है आतमु रसि लागै पूज करीजै ॥२॥ बिबेक बुधि सभ जग महि निरमल बिचरि बिचरि रसु
 पीजै ॥ गुर परसादि पदारथु पाइआ सतिगुर कउ इहु मनु दीजै ॥३॥ निरमोलकु अति हीरो नीको
 हीरै हीरु बिधीजै ॥ मनु मोती सालु है गुर सबदी जितु हीरा परखि लईजै ॥४॥ संगति संत संगि
 लगि ऊचे जित पीप पलास खाइ लीजै ॥ सभ नर महि प्रानी ऊतमु होवै राम नामै बासु बसीजै ॥५॥
 निरमल निरमल करम बहु कीने नित साखा हरी जड़ीजै ॥ धरमु फुलु फलु गुरि गिआनु दृढ़ाइआ
 बहकार बासु जगि दीजै ॥६॥ एक जोति एको मनि वसिआ सभ ब्रह्म दृस्टि इकु कीजै ॥ आतम रामु
 सभ एकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥७॥ नाम बिना नकटे नर देखहु तिन घसि घसि
 नाक वढीजै ॥ साकत नर अह्मकारी कहीअहि बिनु नावै धिगु जीवीजै ॥८॥ जब लगु सासु सासु
 मन अंतरि ततु बेगल सरनि परीजै ॥ नानक कृपा कृपा करि धारहु मै साधू चरन परखीजै ॥९॥४॥
 कलिआन महला ४ ॥ रामा मै साधू चरन धुवीजै ॥ किलबिख दहन होहि खिन अंतरि मेरे ठाकुर
 किरपा कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मंगत जन दीन खरे दरि ठाढे अति तरसन कउ दानु दीजै ॥ त्राहि
 त्राहि सरनि प्रभ आए मो कउ गुरमति नामु दृढ़ीजै ॥२॥ काम करोधु नगर महि सबला नित उठि
 उठि जूझु करीजै ॥ अंगीकारु करहु रखि लेवहु गुर पूरा काढि कढीजै ॥३॥ अंतरि अगनि सबल

ਅਤਿ ਬਿਖਿਆ ਹਿਵ ਸੀਤਲੁ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਦੀਜੈ ॥ ਤਨਿ ਮਨਿ ਸਾਂਤਿ ਹੋਇ ਅਧਿਕਾਈ ਰੋਗੁ ਕਾਟੈ ਸ੍ਰੂਖਿ
 ਸਵੀਜੈ ॥੩॥ ਜਿਉ ਸ੍ਰੂਜੁ ਕਿਰਣਿ ਰਵਿਆ ਸਰਬ ਠਾਈ ਸਭ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਾਮੁ ਰਵੀਜੈ ॥ ਸਾਧੂ ਸਾਧ ਮਿਲੇ
 ਰਸੁ ਪਾਵੈ ਤਤੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਬੈਠਿਆ ਪੀਜੈ ॥੪॥ ਜਨ ਕਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਗੁਰ ਸੇਤੀ ਜਿਉ ਚਕਵੀ ਦੇਖਿ ਸ੍ਰੂਜੈ ॥
 ਨਿਰਖਤ ਨਿਰਖਤ ਰੈਨਿ ਸਭ ਨਿਰਖੀ ਸੁਖੁ ਕਾਢੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਪੀਜੈ ॥੫॥ ਸਾਕਤ ਸੁਆਨ ਕਹੀਅਹਿ ਬਹੁ ਲੋਭੀ
 ਬਹੁ ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਭਰੀਜੈ ॥ ਆਪਨ ਸੁਆਇ ਕਰਹਿ ਬਹੁ ਬਾਤਾ ਤਿਨਾ ਕਾ ਵਿਸਾਹੁ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥੬॥
 ਸਾਧੂ ਸਾਧ ਸਰਨਿ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਕਾਢਿ ਕਢੀਜੈ ॥ ਪਰਤਪਕਾਰ ਬੋਲਹਿ ਬਹੁ ਗੁਣੀਆ ਸੁਖਿ
 ਸੰਤ ਭਗਤ ਹਰਿ ਦੀਜੈ ॥੭॥ ਤ੍ਰਾਂ ਅਗਮ ਦਿਆਲ ਦਿਆ ਪਤਿ ਦਾਤਾ ਸਭ ਦਿਆ ਧਾਰਿ ਰਖਿ ਲੀਜੈ ॥
 ਸਰਬ ਜੀਅ ਜਗਜੀਵਨੁ ਏਕੋ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ਕਰੀਜੈ ॥੮॥੫॥ ਕਲਿਆਨੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਰਾਮਾ ਹਮ
 ਦਾਸਨ ਦਾਸ ਕਰੀਜੈ ॥ ਜਬ ਲਗਿ ਸਾਸੁ ਹੋਇ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਸਾਧੂ ਧੂਰਿ ਧਿਕੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੰਕਰੁ
 ਨਾਰਦੁ ਸੇਖਨਾਗ ਮੁਨਿ ਧੂਰਿ ਸਾਧੂ ਕੀ ਲੋਚੀਜੈ ॥ ਭਵਨ ਭਵਨ ਪਵਿਤੁ ਹੋਹਿ ਸਭਿ ਜਹ ਸਾਧੂ ਚਰਨ ਧਰੀਜੈ
 ॥੧॥ ਤਜਿ ਲਾਜ ਅਛਕਾਰੁ ਸਭੁ ਤਜੀਐ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਰਹੀਜੈ ॥ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੀ ਕਾਨਿ ਚੁਕਾਵੈ ਬਿਖੁ
 ਡੁਬਦਾ ਕਾਢਿ ਕਢੀਜੈ ॥੨॥ ਭਰਮਿ ਸ੍ਰੂਕੇ ਬਹੁ ਤਭਿ ਸੁਕ ਕਹੀਅਹਿ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਹਰੀਜੈ ॥ ਤਾ ਤੇ ਬਿਲਮੁ
 ਪਲੁ ਫਿਲ ਨ ਕੀਜੈ ਜਾਇ ਸਾਧੂ ਚਰਨਿ ਲਗੀਜੈ ॥੩॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਕੀਰਤਨ ਰਤਨ ਵਥੁ ਹਰਿ ਸਾਧੂ ਪਾਸਿ
 ਰਖੀਜੈ ॥ ਜੋ ਬਚਨੁ ਗੁਰ ਸਤਿ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਕਾਢਿ ਧਰੀਜੈ ॥੪॥ ਸੰਤਹੁ ਸੁਨਹੁ ਸੁਨਹੁ ਜਨ
 ਭਾਈ ਗੁਰਿ ਕਾਢੀ ਬਾਹ ਕੁਕੀਜੈ ॥ ਜੇ ਆਤਮ ਕਤ ਸੁਖੁ ਸੁਖੁ ਨਿਤ ਲੋਡ਼ਹੁ ਤਾਂ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਨਿ ਪਵੀਜੈ ॥੫॥
 ਜੇ ਕਡ ਭਾਗੁ ਹੋਇ ਅਤਿ ਨੀਕਾ ਤਾਂ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਦੂਡੀਜੈ ॥ ਸਭੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਬਿਖਮੁ ਜਗੁ ਤਰੀਐ
 ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੬॥ ਮਾਇਆ ਮਾਇਆ ਕੇ ਜੋ ਅਧਿਕਾਈ ਵਿਚਿ ਮਾਇਆ ਪਚੈ ਪਚੀਜੈ ॥
 ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰੁ ਮਹਾ ਪਥੁ ਬਿਖੜਾ ਅਛਕਾਰਿ ਭਾਰਿ ਲਦਿ ਲੀਜੈ ॥੭॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਰਮ ਰਮੁ ਰਮ ਰਮ
 ਰਮੈ ਤੇ ਗਤਿ ਕੀਜੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਤਾ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਏ ਰਾਮ ਨਾਮੈ ਰਲੈ ਮਿਲੀਜੈ ॥੮॥੬॥ ਛਕਾ ੧ ॥

੧ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਪਰਭਾਤੀ ਬਿਭਾਸ ਮਹਲਾ ੧ ਚਤੁਪਟੇ ਘਰੁ ੧ ॥

ਨਾਡਿ ਤੈਰੈ ਤਰਣਾ ਨਾਡਿ ਪਤਿ ਪ੍ਰਯੁ ॥ ਨਾਤ ਤੇਰਾ ਗਹਣਾ ਮਤਿ ਮਕਸੂਦੁ ॥ ਨਾਡਿ ਤੈਰੈ ਨਾਤ ਮਨੇ ਸਭ ਕੋਡਿ ॥
 ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਪਤਿ ਕਬਹੁ ਨ ਹੋਡਿ ॥੧॥ ਅਵਰ ਸਿਆਣਪ ਸਗਲੀ ਪਾਜੁ ॥ ਜੈ ਬਖਸੇ ਤੈ ਪੂਰਾ ਕਾਜੁ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਤ ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ਨਾਤ ਦੀਬਾਣੁ ॥ ਨਾਤ ਤੇਰਾ ਲਸਕਰੁ ਨਾਤ ਸੁਲਤਾਨੁ ॥ ਨਾਡਿ ਤੈਰੈ ਮਾਣੁ ਮਹਤ
 ਪਰਖਾਣੁ ॥ ਤੇਰੀ ਨਦਰੀ ਕਰਮਿ ਪਵੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥ ਨਾਡਿ ਤੈਰੈ ਸਹਜੁ ਨਾਡਿ ਸਾਲਾਹ ॥ ਨਾਤ ਤੇਰਾ ਅੰਮ੍ਰਤੁ
 ਬਿਖੁ ਤਠਿ ਜਾਡਿ ॥ ਨਾਡਿ ਤੈਰੈ ਸਭਿ ਸੁਖ ਵਸਹਿ ਮਨਿ ਆਡਿ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਾਧੀ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਡਿ ॥੩॥ ਨਾਰੀ
 ਕੇਰੀ ਘਰ ਦਰ ਦੇਸ ॥ ਮਨ ਕੀਆ ਖੁਸੀਆ ਕੀਚਹਿ ਵੇਸ ॥ ਜਾਁ ਸਦੇ ਤਾਁ ਢਿਲ ਨ ਪਾਡਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕੂੜੁ ਕੂੜੋ
 ਹੋਡਿ ਜਾਡਿ ॥੪॥੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਕਰਮੁ ਚਾਨਣੁ ਸੁਰਤਿ ਤਿਥੈ ਲੋਡਿ ॥ ਅੰਧੇਰੁ
 ਅੰਧੀ ਵਾਪਰੈ ਸਗਲ ਲੀਜੈ ਖੋਡਿ ॥੧॥ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਸਗਲ ਬਿਕਾਰੁ ॥ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਦਾਰੁ ਅਵਰੁ ਨਾਸਤਿ
 ਕਰਣਹਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਾਤਾਲ ਪੁਰੀਆ ਏਕ ਭਾਰ ਹੋਵਹਿ ਲਾਖ ਕਰੋਡਿ ॥ ਤੇਰੇ ਲਾਲ ਕੀਮਤਿ

ਤਾ ਪਵੈ ਜਾਂ ਸਿਰੈ ਹੋਵਹਿ ਹੋਰਿ ॥੨॥ ਦ੍ਰਖਾ ਤੇ ਸੁਖ ਊਪਜਹਿ ਸੂਖੀ ਹੋਵਹਿ ਦ੍ਰਖ ॥ ਜਿਤੁ ਮੁਖਿ ਤੂ ਸਾਲਾਹੀਅਹਿ
 ਤਿਤੁ ਮੁਖਿ ਕੈਸੀ ਭ੍ਰਖ ॥੩॥ ਨਾਨਕ ਮੂਰਖੁ ਏਕੁ ਤੂ ਅਵਰੁ ਭਲਾ ਸੈਸਾਰੁ ॥ ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਨ ਊਪਜੈ ਸੇ ਤਨ
 ਹੋਹਿ ਖੁਆਰ ॥੪॥੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜੈ ਕਾਰਣਿ ਬੇਦ ਬ੍ਰਹਮੈ ਉਚਰੇ ਸਂਕਰਿ ਛੋਡੀ ਮਾਇਆ ॥ ਜੈ ਕਾਰਣਿ
 ਸਿਧ ਭਏ ਤਦਾਸੀ ਦੇਵੀ ਮਰਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਮੁਖਿ ਸਾਚਾ ਕਹੀਐ ਤਰੀਐ ਸਾਚਾ ਹੋਈ
 ॥ ਦੁਸਮਨੁ ਦ੍ਰਖੁ ਨ ਆਵੈ ਨੇਡੈ ਹਰਿ ਮਤਿ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅਗਨਿ ਬਿੰਬ ਪਵਣੈ ਕੀ ਬਾਣੀ ਤੀਨਿ
 ਨਾਮ ਕੇ ਦਾਸਾ ॥ ਤੇ ਤਸਕਰ ਜੋ ਨਾਮੁ ਨ ਲੇਵਹਿ ਵਾਸਹਿ ਕੋਟ ਪੰਚਾਸਾ ॥੨॥ ਜੇ ਕੋ ਏਕ ਕਰੈ ਚੰਗਿਆਈ ਮਨਿ
 ਚਿਤਿ ਬਹੁਤੁ ਬਫਾਵੈ ॥ ਏਤੇ ਗੁਣ ਏਤੀਆ ਚੰਗਿਆਈਆ ਦੇਇ ਨ ਪਛੋਤਾਵੈ ॥੩॥ ਤੁਥੁ ਸਾਲਾਹਨਿ ਤਿਨ ਧਨੁ
 ਪਲੈ ਨਾਨਕ ਕਾ ਧਨੁ ਸੌਈ ॥ ਜੇ ਕੋ ਜੀਤ ਕਹੈ ਓਨਾ ਕਤ ਜਮ ਕੀ ਤਲਬ ਨ ਹੋਈ ॥੪॥੩॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਜਾ ਕੈ ਰੂਪੁ ਨਾਹੀ ਜਾਤਿ ਨਾਹੀ ਨਾਹੀ ਮੁਖੁ ਮਾਸਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲੇ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ਤੈਰੈ ਨਾਮਿ ਹੈ
 ਨਿਵਾਸਾ ॥੧॥ ਅਤਥੁ ਸਹਜੇ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਜਾ ਤੇ ਫਿਰਿ ਨ ਆਵਹੁ ਸੈਸਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਾ ਕੈ ਕਰਮੁ
 ਨਾਹੀ ਧਰਮੁ ਨਾਹੀ ਨਾਹੀ ਸੁਚਿ ਮਾਲਾ ॥ ਸਿਵ ਜੋਤਿ ਕਨਨਹੁ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਰਖਵਾਲਾ ॥੨॥ ਜਾ ਕੈ
 ਬਰਤੁ ਨਾਹੀ ਨੇਮੁ ਨਾਹੀ ਨਾਹੀ ਬਕਬਾਈ ॥ ਗਤਿ ਅਵਗਤਿ ਕੀ ਚਿੰਤ ਨਾਹੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਫੁਰਮਾਈ ॥੩॥ ਜਾ ਕੈ
 ਆਸ ਨਾਹੀ ਨਿਰਾਸ ਨਾਹੀ ਚਿਤਿ ਸੁਰਤਿ ਸਮਝਾਈ ॥ ਤੰਤ ਕਤ ਪਰਮ ਤੰਤੁ ਮਿਲਿਆ ਨਾਨਕਾ ਬੁਧਿ ਪਾਈ
 ॥੪॥੪॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਤਾ ਕਾ ਕਹਿਆ ਦਰਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਬਿਖੁ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਦੁਇ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੁ
 ॥੧॥ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਸਰਬੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਤੇਰੀ ਰਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪ੍ਰਗਟੀ
 ਜੋਤਿ ਚੂਕਾ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ॥੨॥ ਕਲਿ ਮਹਿ ਆਇਆ ਸੋ ਜਨੁ ਜਾਣੁ ॥ ਸਾਚੀ
 ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ਮਾਣੁ ॥੩॥ ਕਹਣਾ ਸੁਨਣਾ ਅਕਥ ਘਰਿ ਜਾਇ ॥ ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਨਾਨਕ ਜਲਿ ਜਾਇ ॥੪॥੫॥
 ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਨੀਰੁ ਗਿਆਨਿ ਮਨ ਮਜਨੁ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਸੰਗਿ ਗਹੇ ॥ ਗੁਰ ਊਪਦੇਸਿ
 ਜਵਾਹਰ ਮਾਣਕ ਸੇਵੇ ਸਿਖੁ ਸੂ ਖੋਜਿ ਲਹੈ ॥੧॥ ਗੁਰ ਸਮਾਨਿ ਤੀਰਥੁ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥ ਸਰੁ ਸਂਤੋਖੁ ਤਾਸੁ ਗੁਰੁ ਹੋਇ

॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਦੀਆਤ ਸਦਾ ਜਲੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮਿਲਿਆ ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਹਰੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪਾਇਐ ਪੂਰਾ
 ਨਾਵਣੁ ਪਸ੍ਥੁ ਪਰੇਤਹੁ ਦੇਵ ਕਰੈ ॥੨॥ ਰਤਾ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਤਲ ਹੀਅਲੁ ਸੋ ਗੁਰੁ ਪਰਮਲੁ ਕਹੀਐ ॥ ਜਾ ਕੀ ਵਾਸੁ
 ਬਨਾਸਪਤਿ ਸਤਰੈ ਤਾਸੁ ਚਰਣ ਲਿਵ ਰਹੀਐ ॥੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਉਪਜਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਿਵ ਘਰਿ
 ਜਾਈਐ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਜ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ॥੪॥੬॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
 ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਵਿਦਿਆ ਵੀਚਾਰੈ ਪਡਿ ਪਡਿ ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ॥ ਆਪਾ ਮਧੇ ਆਪੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਪਾਇਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ
 ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਕਰਤਾ ਤੂ ਮੇਰਾ ਜਜਮਾਨੁ ॥ ਇਕ ਦੱਖਿਣਾ ਹਤ ਤੈ ਪਹਿ ਮਾਗਤ ਦੇਹਿ ਆਪਣਾ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਧੰਚ ਤਸਕਰ ਧਾਵਤ ਰਾਖੇ ਚੂਕਾ ਮਨਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਦਿਸਟਿ ਬਿਕਾਰੀ ਦੁਰਮਤਿ ਭਾਗੀ ਐਸਾ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੁ
 ॥੨॥ ਜਤੁ ਸਤੁ ਚਾਵਲ ਦਿੱਤਾ ਕਣਕ ਕਰਿ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਪਾਤੀ ਧਾਨੁ ॥ ਦੂਧੁ ਕਰਮੁ ਸੰਤੋਖੁ ਘੀਤ ਕਰਿ ਐਸਾ
 ਮਾਂਗਤ ਦਾਨੁ ॥੩॥ ਖਿਮਾ ਧੀਰਜੁ ਕਰਿ ਗੜ ਲਵੇਰੀ ਸਹਜੇ ਬਛਰਾ ਖੀਰੁ ਪੀਐ ॥ ਸਿਫਤਿ ਸਰਮ ਕਾ ਕਪੜਾ
 ਮਾਂਗਤ ਹਰਿ ਗੁਣ ਨਾਨਕ ਰਖਤੁ ਰਹੈ ॥੪॥੭॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਵਤੁ ਕਿਨੈ ਨ ਰਾਖਿਆ ਜਾਵਤੁ ਕਿਤੁ
 ਰਾਖਿਆ ਜਾਇ ॥ ਜਿਸ ਤੇ ਹੋਆ ਸੋਈ ਪਰੁ ਜਾਣੈ ਜਾਂ ਤਸ ਹੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਤੂਹੈ ਹੈ ਵਾਹੁ ਤੇਰੀ ਰਾਇ ॥
 ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਹਿ ਸੋਈ ਪਰੁ ਹੋਇਬਾ ਅਕਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੈਸੇ ਹਰਹਟ ਕੀ ਮਾਲਾ ਟਿੰਡ
 ਲਗਤ ਹੈ ਇਕ ਸਖਨੀ ਹੋਰ ਫੇਰ ਭਰੀਅਤ ਹੈ ॥ ਤੈਸੋ ਹੀ ਇਹੁ ਖੇਲੁ ਖਸਮ ਕਾ ਜਿਤ ਤਥ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥
 ਸੁਰਤੀ ਕੈ ਮਾਰਗਿ ਚਲਿ ਕੈ ਤਲਟੀ ਨਦਰਿ ਪ੍ਰਗਾਸੀ ॥ ਮਨਿ ਵੀਚਾਰਿ ਦੇਖੁ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਤਨੁ ਗਿਰਹੀ
 ਕਤਨੁ ਤਦਾਸੀ ॥੩॥ ਜਿਸ ਕੀ ਆਸਾ ਤਿਸ ਹੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਏਹੁ ਰਹਿਆ ਨਿਰਕਾਣੁ ॥ ਜਿਸ ਤੇ ਹੋਆ ਸੋਈ ਕਰਿ
 ਮਾਨਿਆ ਨਾਨਕ ਗਿਰਹੀ ਤਦਾਸੀ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥੪॥੮॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਦਿਸਟਿ ਬਿਕਾਰੀ ਬੰਧਨਿ
 ਬਾਂਧੈ ਹਤ ਤਿਸ ਕੈ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਪਾਪ ਪੁਨਨ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੈ ਭੂਲਾ ਫਿਰੈ ਅਜਾਈ ॥੧॥ ਬੋਲਹੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ
 ਕਰਤਾਰ ॥ ਫੁਨਿ ਬਹੁਡਿ ਨ ਆਵਣ ਵਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਊਚਾ ਤੇ ਫੁਨਿ ਨੀਚੁ ਕਰਤੁ ਹੈ ਨੀਚ ਕਰੈ ਸੁਲਤਾਨੁ ॥
 ਜਿਨੀ ਜਾਣੁ ਸੁਜਾਣਿਆ ਜਗਿ ਤੇ ਪ੍ਰੇ ਪਰਵਾਣੁ ॥੨॥ ਤਾ ਕਤ ਸਮਝਾਵਣ ਜਾਈਐ ਜੇ ਕੋ ਭੂਲਾ ਹੋਈ ॥

ਆਪੇ ਖੇਲ ਕਰੇ ਸਭ ਕਰਤਾ ਐਸਾ ਬੂੜੈ ਕੋਈ ॥੩॥ ਨਾਉ ਪ੍ਰਭਾਤੈ ਸਬਦਿ ਧਿਆਈਐ ਛੋਡਹੁ ਦੁਨੀ ਪਰੀਤਾ ॥
 ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਜਗਿ ਹਾਰਿਆ ਤਿਨਿ ਜੀਤਾ ॥੪॥੬॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਨੁ ਮਾਇਆ
 ਮਨੁ ਧਾਇਆ ਮਨੁ ਪੱਖੀ ਆਕਾਸਿ ॥ ਤਸਕਰ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਰਿਆ ਨਗਰੁ ਕੁਠਾ ਸਾਬਾਸਿ ॥ ਜਾ ਤੂ ਰਾਖਹਿ
 ਰਾਖਿ ਲੈਹਿ ਸਾਬਤੁ ਹੋਵੈ ਰਾਸਿ ॥੧॥ ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਨਿਧਿ ਮੇਰੈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਦੇਹਿ ਲਗਤ ਪਗ ਤੈਰੈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨੁ ਜੋਗੀ ਮਨੁ ਭੋਗੀਆ ਮਨੁ ਮੂਰਖੁ ਗਾਵਾਰੁ ॥ ਮਨੁ ਦਾਤਾ ਮਨੁ ਮੰਗਤਾ ਮਨ ਸਿਰਿ ਗੁਰੁ
 ਕਰਤਾਰੁ ॥ ਪੰਚ ਮਾਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਐਸਾ ਬ੍ਰਹਮੁ ਕੀਚਾਰੁ ॥੨॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਏਕੁ ਵਖਾਣੀਐ ਕਹਤ ਨ
 ਦੇਖਿਆ ਜਾਇ ॥ ਖੋਟੋ ਪ੍ਰਥੋ ਰਾਲੀਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਤਿ ਜਾਇ ॥ ਜਾ ਤੂ ਮੇਲਹਿ ਤਾ ਮਿਲਿ ਰਹਾਁ ਜਾਂ ਤੇਰੀ ਹੋਇ
 ਰਾਇ ॥੩॥ ਜਾਤਿ ਜਨਮੁ ਨਹ ਪ੍ਰਥੀਐ ਸਚ ਘਰੁ ਲੇਹੁ ਬਤਾਇ ॥ ਸਾ ਜਾਤਿ ਸਾ ਪਤਿ ਹੈ ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
 ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖੁ ਕਾਟੀਐ ਨਾਨਕ ਛੂਟਸਿ ਨਾਇ ॥੪॥੧੦॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਜਾਗਤੁ ਬਿਗਸੈ ਮੂਠੋ
 ਅੰਧਾ ॥ ਗਲਿ ਫਾਹੀ ਸਿਰਿ ਮਾਰੇ ਧੰਧਾ ॥ ਆਸਾ ਆਵੈ ਮਨਸਾ ਜਾਇ ॥ ਤੁਰੜੀ ਤਾਣੀ ਕਿਛੁ ਨ ਬਸਾਇ ॥੧॥
 ਜਾਗਸਿ ਜੀਵਣ ਜਾਗਣਹਾਰਾ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਖੰਡਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਹਿਓ ਨ ਬੂੜੈ ਅੰਧੁ ਨ ਸੂੜੈ
 ਭੌਂਡੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈ ॥ ਆਪੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਕਰਮੀ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ॥੨॥ ਦਿਨੁ ਦਿਨੁ ਆਵੈ ਤਿਲੁ
 ਤਿਲੁ ਛੀਜੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਘਟਾਈ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕੁਝੋ ਠਤਰ ਨ ਪਾਵੈ ਜਬ ਲਗ ਢੂਜੀ ਰਾਈ ॥੩॥ ਅਹਿਨਿਸਿ
 ਜੀਆ ਦੇਖਿ ਸਮਾਲੈ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਈ ॥ ਕਰਮਹੀਣੁ ਸਚੁ ਭੀਖਿਆ ਮਾਂਗੈ ਨਾਨਕ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ
 ॥੪॥੧੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਸਟਿ ਕਰਤ ਮੂਰਖੁ ਜਗਿ ਕਹੀਆ ॥ ਅਧਿਕ ਬਕਤ ਤੇਰੀ ਲਿਵ ਰਹੀਆ ॥
 ਭੂਲ ਚੂਕ ਤੈਰੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਆਚਾਰ ॥੧॥ ਐਸੇ ਝੂਠਿ ਮੁਠੇ ਸੰਸਾਰਾ ॥ ਨਿੰਦਕੁ ਨਿੰਦੈ ਮੁੜੈ
 ਧਿਆਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਸੁ ਨਿੰਦਹਿ ਸੋਈ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦੇ ਦਰਿ ਨੀਸਾਣੈ ॥ ਕਾਰਣ ਨਾਮੁ
 ਅੰਤਰਗਤਿ ਜਾਣੈ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋਈ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥੨॥ ਮੈ ਮੈਲੈ ਊਜਲੁ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥ ਊਤਮੁ
 ਆਖਿ ਨ ਊਚਾ ਹੋਇ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਖੂਲਿ ਮਹਾ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਸੁ ਰਾਚੈ ਨਾਇ ॥੩॥ ਅੰਧੈ ਬੋਲੈ

ਮੁਗਧੁ ਗਵਾਰੁ ॥ ਹੀਣੈ ਨੀਚੁ ਬੁਰੈ ਬੁਰਿਆਰੁ ॥ ਨੀਧਨ ਕੌ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰੁ ॥ ਇਹੁ ਧਨੁ ਸਾਰੁ ਹੋਰੁ ਬਿਖਿਆ
 ਛਾਰੁ ॥੪॥ ਤਸਤਤਿ ਨਿੰਦਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਜੋ ਦੇਵੈ ਤਿਸ ਕਤ ਜੈਕਾਰੁ ॥ ਤ੍ਰ ਬਖਸਹਿ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
 ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਕਹਾਵੈ ਸੋਇ ॥੫॥੧੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਖਾਇਆ ਸੈਲੁ ਵਧਾਇਆ ਪੈਥੈ ਘਰ ਕੀ ਹਾਣਿ ॥
 ਬਕਿ ਬਕਿ ਵਾਦੁ ਚਲਾਇਆ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਿਖੁ ਜਾਣਿ ॥੧॥ ਬਾਬਾ ਐਸਾ ਬਿਖਮ ਜਾਲਿ ਮਨੁ ਵਾਸਿਆ ॥
 ਬਿਬਲੁ ਝਾਗਿ ਸਹਜਿ ਪਰਗਾਸਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬਿਖੁ ਖਾਣਾ ਬਿਖੁ ਬੋਲਣਾ ਬਿਖੁ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
 ਜਮ ਦਰਿ ਬਾਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਛੂਟਸਿ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੨॥ ਜਿਵ ਆਇਆ ਤਿਵ ਜਾਇਸੀ ਕੀਆ ਲਿਖਿ ਲੈ ਜਾਇ ॥
 ਮਨਮੁਖਿ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇਆ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੩॥ ਜਗੁ ਖੋਟੈ ਸਚੁ ਨਿਰਮਲੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰਿ ॥
 ਤੇ ਨਰ ਵਿਰਲੇ ਜਾਣੀਅਹਿ ਜਿਨ ਅੰਤਰਿ ਗਿਆਨੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥੪॥ ਅਜਰੁ ਜੈ ਨੀਝਰੁ ਝੈਰੈ ਅਮਰ ਅਨਨਦ ਸਰੂਪ
 ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਲ ਕੌ ਮੀਨੁ ਸੈ ਥੇ ਭਾਵੈ ਰਾਖਹੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥੫॥੧੩॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਗੀਤ ਨਾਦ ਹਰਖ
 ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਰਹਸ ਰੰਗ ਫੁਰਮਾਇਸਿ ਕਾਈ ॥ ਪੈਨੁਣੁ ਖਾਣਾ ਚੀਤਿ ਨ ਪਾਈ ॥ ਸਾਚੁ ਸਹਜੁ ਸੁਖੁ ਨਾਮਿ ਕਵਸਾਈ
 ॥੧॥ ਕਿਆ ਜਾਨਾਂ ਕਿਆ ਕੈ ਕਰਾਵੈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਤਨਿ ਕਿਛੁ ਨ ਸੁਖਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋਗ ਬਿਨੋਦ
 ਸ਼ਾਦ ਆਨਨਦਾ ॥ ਮਤਿ ਸਤ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਗੋਬਿੰਦਾ ॥ ਕੀਰਤਿ ਕਰਮ ਕਾਰ ਨਿਜ ਸੰਦਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਰਖਤੈ ਰਾਜ
 ਰਵਿੰਦਾ ॥੨॥ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰੇਮਿ ਤਰ ਧਾਰੀ ॥ ਦੀਨਾ ਨਾਥੁ ਪੀਤ ਬਨਵਾਰੀ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ
 ਭਰਕਾਰੀ ॥ ਤ੃ਪਤਿ ਤਰੰਗ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥੩॥ ਅਕਥੈ ਕਥਤ ਕਿਆ ਮੈ ਜੋਰੁ ॥ ਭਗਤਿ ਕਰੀ ਕਰਾਇਹਿ ਮੋਰ ॥
 ਅੰਤਰਿ ਕਵਸੈ ਚੂਕੈ ਮੈ ਮੋਰ ॥ ਕਿਸੁ ਸੇਵੀ ਟ੍ਰ੍ਯਾ ਨਹੀ ਹੋਰੁ ॥੪॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ॥ ਐਸਾ
 ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਅੰਤਰਿ ਡੀਠਾ ॥ ਜਿਨਿ ਚਾਖਿਆ ਪੂਰਾ ਪਦੁ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਧਾਪਿਆ ਤਨਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੫॥੧੪॥
 ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਅੰਤਰਿ ਦੇਖਿ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਅਵਰੁ ਨ ਰਾਂਗਨਹਾਰਾ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਜੀਆ ਦੇਖਿ
 ਸਮਾਲੇ ਤਿਸ ਹੀ ਕੀ ਸਰਕਾਰਾ ॥੧॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਂਗਿ ਘਣੈ ਅਤਿ ਰੁੜੈ ॥ ਦੀਨ ਦਿਆਲੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮਨਮੋਹਨੁ
 ਅਤਿ ਰਸ ਲਾਲ ਸਗੂੜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਊਪਰਿ ਕੂਪੁ ਗਗਨ ਪਨਿਹਾਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਣਹਾਰਾ ॥ ਜਿਸ ਕੀ

ਰਚਨਾ ਸੋ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥੨॥ ਪਸਰੀ ਕਿਰਣਿ ਰਸਿ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸੇ ਸਸਿ ਘਰਿ
 ਸ੍ਰੂ ਸਮਾਇਆ ॥ ਕਾਲੁ ਬਿਧੁੰਸਿ ਮਨਸਾ ਮਨਿ ਮਾਰੀ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥ ਅਤਿ ਰਸਿ ਰੰਗਿ
 ਚਲੂਲੈ ਰਾਤੀ ਦ੍ਰਿੜੁ ਰਾਤੀ ਦ੍ਰਿੜੁ ਰਾਤੀ ਦ੍ਰਿੜੁ ਰਾਤੀ ਦ੍ਰਿੜੁ ਰਾਤੀ ਦ੍ਰਿੜੁ ਰਾਤੀ ਦ੍ਰਿੜੁ ॥੪॥੧੫॥
 ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਬਾਰਹ ਮਹਿ ਰਾਵਲ ਖਪਿ ਜਾਵਹਿ ਚਹੁ ਛਿਅ ਮਹਿ ਸੰਨਿਆਸੀ ॥ ਜੋਗੀ ਕਾਪਡੀਆ
 ਸਿਰਖੂਥੇ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਗਲਿ ਫਾਸੀ ॥੧॥ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਪੂਰੇ ਬੈਰਾਗੀ ॥ ਅਤਹਠਿ ਹਸਤ ਮਹਿ ਭੀਖਿਆ ਜਾਚੀ ਏਕ
 ਭਾਇ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਬ੍ਰਹਮਣ ਵਾਦੁ ਪਡਹਿ ਕਰਿ ਕਿਰਿਆ ਕਰਣੀ ਕਰਮ ਕਰਾਏ ॥ ਬਿਨੁ ਕੂੜੇ
 ਕਿਛੁ ਸੂੜੈ ਨਾਹੀ ਮਨਮੁਖੁ ਵਿਛੁਡਿ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥੨॥ ਸਬਦਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਸੂਚਾਚਾਰੀ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਮਾਨੇ ॥
 ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮਿ ਰਤਨਿ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ਜੁਗ ਜੁਗ ਸਾਚਿ ਸਮਾਨੇ ॥੩॥ ਸਗਲੇ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸੁਚਿ ਸੰਜਮ
 ਜਪ ਤਪ ਤੀਰਥ ਸਬਦਿ ਵਸੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇਆ ਟ੍ਰਖ ਪਰਾਛਤ ਕਾਲ ਨਸੇ ॥੪॥੧੬॥
 ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਸੰਤਾ ਕੀ ਰੇਣੁ ਸਾਧ ਜਨ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਤਰੁ ਤਾਰੀ ॥ ਕਹਾ ਕਰੈ ਬਪੁਰਾ ਜਮੁ ਡਰਪੈ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਿਦੈ ਮੁਰਾਰੀ ॥੧॥ ਜਲਿ ਜਾਤ ਜੀਵਨੁ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ॥ ਹਰਿ ਯਪਿ ਜਾਪੁ ਜਪਤ ਜਪਮਾਲੀ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਆਵੈ ਸਾਦੁ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸ ਸਾਚੁ ਸੁਖੁ ਜਾ ਕਤ ਕਿਆ ਤਿਸੁ ਤਪਮਾ ਕਹੀਐ ॥ ਲਾਲ ਜਵੇਹਰ
 ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਖੋਜਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਹੀਐ ॥੨॥ ਚੀਨੈ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਧਨੁ ਸਾਚੌ ਏਕ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥
 ਨਿਰਾਲਮ੍ਬੁ ਨਿਰਹਾਲੁ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਨਿਰਭਤ ਤਾਡੀ ਲਾਵੈ ॥੩॥ ਸਾਇਰ ਸਪਤ ਭਰੇ ਜਲ ਨਿਰਮਲਿ ਤਲਟੀ
 ਨਾਵ ਤਰਾਵੈ ॥ ਬਾਹਰਿ ਜਾਤੈ ਠਾਕਿ ਰਹਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ॥੪॥ ਸੋ ਗਿਰਹੀ ਸੋ ਦਾਸੁ ਤਦਾਸੀ
 ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਅਵਰੁ ਨਹੀ ਦ੍ਰਿੜੁ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੫॥੧੭॥

ਰਾਗੁ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੩ ਚਤੁਪਦੇ

੧੬ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਕੋਈ ਕੂੜੈ ਸਬਦੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਸਾਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਈ

॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਜਨ ਭਾਈ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮਨੁ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਵੈ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਹਿਆ
 ਅਧਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਝਿਸੁ ਜੁਗ ਕਾ ਲਾਹਾ ਭਾਈ ॥ ਸਦਾ ਜਨ
 ਨਿਰਮਲ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਈ ॥੨॥ ਸੁਖੁ ਸੀਗਾਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਿਖਾਇਆ ਨਾਮਿ ਵਡੀ
 ਵਡਿਆਈ ॥ ਅਖੁਟ ਭੰਡਾਰ ਭਰੇ ਕਦੇ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਸਦਾ ਹਰਿ ਸੇਵਹੁ ਭਾਈ ॥੩॥ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਜਿਸ ਨੋ
 ਫੇਵੈ ਤਿਸੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸਦਾ ਤੂ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਈ ॥੪॥੧॥
 ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਨਿਰਗੁਣੀਆਰੇ ਕਤ ਬਖਸਿ ਲੈ ਸੁਆਮੀ ਆਪੇ ਲੈਹੁ ਮਿਲਾਈ ॥ ਤੂ ਬਿਅੰਤੁ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ
 ਪਾਇਆ ਸਬਦੇ ਦੇਹੁ ਬੁਝਾਈ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੁਧੁ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਰਪੀ ਤੁਧੁ ਆਗੈ ਰਾਖਤ
 ਸਦਾ ਰਹਾਂ ਸਰਣਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪਣੇ ਭਾਣੇ ਵਿਚਿ ਸਦਾ ਰਖੁ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਫੇਹਿ ਵਡਿਆਈ ॥
 ਪ੍ਰੇਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਭਾਣਾ ਜਾਪੈ ਅਨਦਿਨੁ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ॥੨॥ ਤੇਰੈ ਭਾਣੈ ਭਗਤਿ ਜੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਈ
 ॥ ਤੇਰੈ ਭਾਣੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਿ ਤ੃ਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਈ ॥੩॥ ਜੋ ਤੂ ਕਰਹਿ ਸੁ ਹੋਵੈ ਕਰਤੇ ਅਵਰੁ ਨ
 ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਜੇਕਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦਾਤਾ ਪ੍ਰੇਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ॥੪॥੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹਿਆ ਜਿਨਾ ਤਿਨ ਸਲਾਹਿ ਹਰਿ ਜਾਤਾ ॥ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਗਇਆ ਹੈ ਦ੍ਰਿਜਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ
 ਪਛਾਤਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤੂ ਮੇਰਾ ਇਕੁ ਸੋਈ ॥ ਤੁਧੁ ਜਪੀ ਤੁਧੈ ਸਾਲਾਹੀ ਗਤਿ ਮਤਿ ਤੁੜਾ ਤੇ ਹੋਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਲਾਹਨਿ ਸੇ ਸਾਠੁ ਪਾਇਨਿ ਮੀਠਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਰੁ ॥ ਸਦਾ ਮੀਠਾ ਕਦੇ ਨ ਫੀਕਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ
 ਕੀਚਾਰੁ ॥੨॥ ਜਿਨਿ ਮੀਠਾ ਲਾਇਆ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਤਿਸੁ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ
 ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਈ ॥੩॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਹੈ ਦਾਤਾ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ
 ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਪਾਏ ॥੪॥੩॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਜੋ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤਿਨ ਤੂ
 ਰਾਖਨ ਜੋਗੁ ॥ ਤੁਧੁ ਜੇਕਡੁ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਸੂੜੈ ਨਾ ਕੋ ਹੋਆ ਨ ਹੋਗੁ ॥੧॥ ਹਰਿ ਜੀਤ ਸਦਾ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥ ਜਿਤ
 ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖਹੁ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਏਹੁ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਹਰਿ ਜੀਤ ਤਿਨ ਕੀ

करहि प्रतिपाल ॥ आपि कृपा करि राखहु हरि जीउ पोहि न सकै जमकालु ॥२॥ तेरी सरणाई सची
 हरि जीउ ना ओह घटै न जाइ ॥ जो हरि छोडि दूजै भाइ लागै ओहु जंमै तै मरि जाइ ॥३॥ जो तेरी
 सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहि ॥ नानक नामु सलाहि सदा तू सचै सबदि समाहि
 ॥४॥४॥ प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीआ परान ॥ गुर सबदी
 मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥ सफलु जनमु तिसु प्रानी केरा हरि कै नामि समान ॥१॥
 मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥ हरि का नामु सदा सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मूलु
 पछाणनि तिन निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासिआ हउमै दुरमति
 खोई ॥ सभना महि एको सचु वरतै विरला बूझै कोई ॥२॥ गुरमती मनु निरमलु होआ अंमृतु ततु
 वखानै ॥ हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि मन ही मनु मानै ॥ सद बलिहारी गुर अपुने विटहु
 जितु आतम रामु पछानै ॥३॥ मानस जनमि सतिगुरु न मेविआ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नदरि
 करे ताँ सतिगुरु मेले सहजे सहजि समाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरै भागि धिआइआ
 ॥४॥५॥ प्रभाती महला ३ ॥ आपे भाँति बणाए बहु रंगी सिसटि उपाइ प्रभि खेलु कीआ ॥ करि करि
 वेखै करे कराए सरब जीआ नो रिजकु दीआ ॥१॥ कली काल महि रविआ रामु ॥ घटि घटि पूरि
 रहिआ प्रभु एको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥१॥ रहाउ ॥ गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि घटि
 घटि हरि भरपूरि रहिआ ॥ नामु रतनु तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पड़िआ ॥२॥
 डिंद्री पंच पंचे वसि आणै खिमा संतोखु गुरमति पावै ॥ सो धनु धनु हरि जनु वड पूरा जो भै बैरागि
 हरि गुण गावै ॥३॥ गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ करि आचार बहु संपउ
 संचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥४॥ एको सबदु एको प्रभु वरतै सभ एकसु ते उतपति चलै ॥ नानक
 गुरमुखि मेलि मिलाए गुरमुखि हरि हरि जाइ रलै ॥५॥६॥ प्रभाती महला ३ ॥ मेरे मन गुरु अपणा

ਸਾਲਾਹਿ ॥ ਪੂਰਾ ਭਾਗੁ ਹੋਵੈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਭੋਜਨੁ
ਹਰਿ ਦੇਇ ॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕੌਰੀ ਵਿਰਲਾ ਲੇਇ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਅਪਣੀ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਮਨ ਮਾਹਿ
ਕਵਸਾਇ ॥ ਦੁਖੁ ਅਨੇਰਾ ਅੰਦਰਹੁ ਜਾਇ ॥ ਆਪੇ ਸਾਚਾ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਿਉ ਲਾਇ
ਪਿਆਰੁ ॥ ਐਥੈ ਓਥੈ ਏਹੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ॥੪॥੭॥੧੭॥੭॥੨੪॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ਬਿਭਾਸ

੧੭ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਗੁਨ ਗਾਵਹ ਗੁਰਮਤਿ ਲਿਵ ਤਨਮਨਿ ਨਾਮਿ ਲਗਾਨ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਸੁ ਪੀਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਮ
ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਕਾਨ ॥੧॥ ਹਮਰੇ ਜਗਜੀਵਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ॥ ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਭਾਇਆਂ ਗੁਰਿ ਮੰਤੁ
ਦੀਆਂ ਹਰਿ ਕਾਨ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਵਹੁ ਸੰਤ ਮਿਲਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਖਾਨ ॥ ਕਿਨੁ
ਬਿਧਿ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਮੋ ਕਤ ਕਰਹੁ ਤਪਦੇਸੁ ਹਰਿ ਦਾਨ ॥੩॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ
ਕਥਿਆ ਮਿਲਿ ਸਾਂਗਤਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਜਾਨ ॥ ਕਵੈ ਭਾਗੀ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਪਾਈ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਰਸਿ ਭਗਕਾਨ
॥੪॥ ਗੁਨ ਗਾਵਹ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਇ ਰਹੇ ਹੈਰਾਨ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ
ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆਂ ਖਿਨ ਦਾਨ ॥੫॥੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਤਗਵੈ ਸ੍ਰੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਬੋਲਹਿ ਸਭ ਰੈਨਿ
ਸਮਾਲਹਿ ਹਰਿ ਗਾਲ ॥ ਹਮਰੈ ਪ੍ਰਭਿ ਹਮ ਲੋਚ ਲਗਾਈ ਹਮ ਕਰਹ ਪ੍ਰਭੂ ਹਰਿ ਭਾਲ ॥੨॥ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਸਾਧੂ
ਧੂਰਿ ਖਾਲ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੂਝਾਇਆਂ ਗੁਰਿ ਮੀਠਾ ਗੁਰ ਪਗ ਝਾਰਹ ਹਮ ਬਾਲ ॥੩॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਾਕਤ
ਕਤ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਅੰਧਾਰੀ ਮੋਹਿ ਫਾਥੇ ਮਾਇਆ ਜਾਲ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰਿਦੈ ਨ ਕਥਿਆਂ ਰਿਨਿ ਬਾਧੇ ਬਹੁ
ਬਿਧਿ ਬਾਲ ॥੪॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਮਿਲਿ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ਹਤ ਛੂਟੇ ਮਮਤਾ ਜਾਲ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਮੀਠ
ਲਗਾਨਾ ਗੁਰਿ ਕੀਏ ਸਬਦਿ ਨਿਹਾਲ ॥੫॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਗੁਰ ਅਗਮ ਗੁਸਾਈ ਗੁਰ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ
॥ ਬਿਖੁ ਭਤਜਲ ਝੁਵਦੇ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲ ॥੬॥੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਇਨ੍ਹਿਕੁ

ਖਿਨੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਗੁਨ ਗਾਏ ਰਸਕ ਰਸੀਕ ॥ ਗਾਵਤ ਸੁਨਤ ਦੋਊ ਭਏ ਮੁਕਤੇ ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਖਿਨੁ ਹਰਿ ਪੀਕ ॥੧॥ ਮੈਰੈ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਸੁ ਟੀਕ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸੀਤਲ ਜਲੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ
 ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪੀਆ ਰਸੁ ਝੀਕ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਨੀ ਤਿਨਾ ਮਸਤਕਿ ਊਜਲ ਟੀਕ ॥
 ਹਰਿ ਜਨ ਸੋਭਾ ਸਭ ਜਗ ਊਪਰਿ ਜਿਤ ਵਿਚਿ ਤੱਡਵਾ ਸਸਿ ਕੀਕ ॥੨॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਨ ਵਸਿਓ ਤਿਨ
 ਸਭਿ ਕਾਰਜ ਫੀਕ ॥ ਜੈਸੇ ਸੀਗਾਰੁ ਕਰੈ ਦੇਹ ਮਾਨੁਖ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਕਟੇ ਨਕ ਕੀਕ ॥੩॥ ਘਟਿ ਘਟਿ
 ਰਮੰਝਾ ਰਮਤ ਰਾਮ ਰਾਇ ਸਭ ਕਰਤੈ ਸਭ ਮਹਿ ਈਕ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਗੁਰ ਬਚਨ
 ਧਿਆਇਆਂ ਘਰੀ ਮੀਕ ॥੪॥੩॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਅਗਮ ਦਿਇਆਲ ਕ੃ਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਨਾਮੁ ਹਮ ਕਹੇ ॥ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆਂ ਸਭਿ ਕਿਲਬਿਖ ਪਾਪ ਲਹੇ ॥੧॥ ਜਿਧਿ ਮਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ
 ਰਵਿ ਰਹੇ ॥ ਦੀਨ ਦਿਇਆਲੁ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਗਾਇਆਂ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਲਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਇਆ
 ਨਗਰਿ ਨਗਰਿ ਹਰਿ ਬਸਿਆਂ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਹੇ ॥ ਸਰੀਰਿ ਸਰੋਵਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਗਟਿਆਂ ਘਰਿ
 ਮੰਦਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਲਹੇ ॥੨॥ ਜੋ ਨਰ ਭਰਮਿ ਭਰਮਿ ਉਦਿਆਨੇ ਤੇ ਸਾਕਤ ਮੂੜ ਮੁਹੇ ॥ ਜਿਤ ਮ੍ਰਗ ਨਾਭਿ ਕਸੈ
 ਬਾਸੁ ਬਸਨਾ ਭਰਮਿ ਭਰਮਿਆਂ ਝਾਰ ਗਹੇ ॥੩॥ ਤੁਮ ਕਡ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ ਪ੍ਰਭ ਮਤਿ ਦੇਵਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਲਹੇ
 ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤ ਗੁਰਿ ਹਾਥੁ ਸਿਰਿ ਧਰਿਆਂ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਰਵਿ ਰਹੇ ॥੪॥੪॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
 ਮਨਿ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਿਧਿਆਂ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕਡਫਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨ ਸੁਖਾਨੇ ਹੀਅਰੈ ਹਰਿ
 ਧਾਰੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕ੃ਪਫਾ ॥੧॥ ਮੇਰੇ ਮਨ ਭਜੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਰਿ ਨਿਮਖਫਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਾਨੁ ਦੀਆਂ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰਭੈ
 ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਸਫਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਇਆ ਨਗਰਿ ਬਸਿਆਂ ਘਰਿ ਮੰਦਰਿ ਜਿਧਿ ਸੋਭਾ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਕਰਪਫਾ ॥ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਜਨ ਭਏ ਸੁਹੇਲੇ ਮੁਖ ਊਜਲ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰਫਾ ॥੨॥ ਅਨਭਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ
 ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਹਰਿ ਤਰ ਧਾਰਿਆਂ ਗੁਰਿ ਨਿਮਖਫਾ ॥ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਕੇ ਦੋਖ ਸਭ ਜਨ ਕੇ ਹਰਿ ਦੂਰਿ ਕੀਏ ਇਕ
 ਪਲਫਾ ॥੩॥ ਤੁਮਰੇ ਜਨ ਤੁਮ ਹੀ ਤੇ ਜਾਨੇ ਪ੍ਰਭ ਜਾਨਿਆਂ ਜਨ ਤੇ ਮੁਖਫਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਪੁ ਧਾਰਿਆਂ ਹਰਿ ਜਨ

ਮहਿ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਇਕਫਾ ॥੪॥੫॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਦੂਡਾਇਆਂ ਹਰਿ
ਹਰਿ ਹਮ ਸੁਏ ਜੀਵੇ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਾ ਬਿਖੁ ਡੁਬਦੇ ਬਾਹ ਦੇਇ ਕਠਿਆ
॥੬॥ ਜਪਿ ਮਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਅਰਥਾਂਭਾ ॥ ਉਪਜਂਪਿ ਉਪਾਇ ਨ ਪਾਈਐ ਕਤਹੂ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਭਾ
॥੭॥ ਰਹਾਤ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਸੁ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਰਸੁ ਪੀਆ ਗੁਰਮਤਿ ਰਸਭਾ ॥ ਲੋਹ ਮਨੂਰ ਕੰਚਨੁ ਮਿਲਿ
ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਤਰ ਧਾਰਿਆਂ ਗੁਰਿ ਹਰਿਆ ॥੮॥ ਹਉਮੈ ਬਿਖਿਆ ਨਿਤ ਲੋਭਿ ਲੁਭਾਨੇ ਪੁਤ ਕਲਤ ਮੋਹਿ ਲੁਭਿਆ
॥ ਤਿਨ ਪਗ ਸਾਂਤ ਨ ਸੇਵੇ ਕਬਹੂ ਤੇ ਮਨਮੁਖ ਭੁੰਭਰ ਭਰਭਾ ॥੯॥ ਤੁਮਰੇ ਗੁਨ ਤੁਮ ਹੀ ਪ੍ਰਭ ਜਾਨਹੁ ਹਮ ਪਰੇ
ਹਾਰਿ ਤੁਮ ਸਰਨਭਾ ॥ ਜਿਤ ਜਾਨਹੁ ਤਿਤ ਰਾਖਹੁ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਤੁਮਨਭਾ ॥੧੦॥੬॥ ਛਕਾ ੧ ॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਬਿਭਾਸ ਪਡਤਾਲ ਮਹਲਾ ੪

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਪਿ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨ ॥ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨ ॥ ਜਿਨਿ ਜਪਿਆ ਤੇ ਪਾਰਿ ਪਰਾਨ ॥੧॥
ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਨਿ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਰਿ ਧਿਆਨੁ ॥ ਸੁਨਿ ਮਨ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਅਠਸਠਿ ਮਜਾਨੁ ॥ ਸੁਨਿ ਮਨ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥੨॥ ਜਪਿ ਮਨ ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਪਰਥਾਨੁ ॥ ਖਿਨ ਖੋਵੈ ਪਾਪ ਕੋਟਾਨ ॥ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ
ਭਗਵਾਨ ॥੨॥੧॥੭॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ਬਿਭਾਸ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਨੁ ਹਰਿ ਕੀਆ ਤਨੁ ਸਭੁ ਸਾਜਿਆ ॥ ਪੰਚ ਤਤ ਰਚਿ ਜੋਤਿ ਨਿਵਾਜਿਆ ॥ ਸਿਹਜਾ ਧਰਤਿ ਬਰਤਨ ਕਤ ਪਾਨੀ
॥ ਨਿਮਖ ਨ ਵਿਸਾਰਹੁ ਸੇਵਹੁ ਸਾਰਿਗਪਾਨੀ ॥੧॥ ਮਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਹੋਇ ਪਰਮ ਗਤੇ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ
ਰਹਹਿ ਨਿਰਾਰਾ ਤਾਂ ਤੂ ਪਾਵਹਿ ਪ੍ਰਾਨਪਤੇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਕਾਪੜ ਭੋਗ ਰਸ ਅਨਿਕ ਭੁੰਚਾਏ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ
ਕੁਟੰਬ ਸਗਲ ਬਨਾਏ ॥ ਰਿਜਕੁ ਸਮਾਹੇ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮੀਤ ॥ ਸੋ ਹਰਿ ਸੇਵਹੁ ਨੀਤਾ ਨੀਤ ॥੨॥ ਤਹਾ ਸਖਾਈ
ਜਹ ਕੋਇ ਨ ਹੋਵੈ ॥ ਕੋਟਿ ਅਪ੍ਰਾਧ ਇਕ ਖਿਨ ਮਹਿ ਧੋਵੈ ॥ ਦਾਤਿ ਕਰੈ ਨਹੀ ਪਛੋਤਾਵੈ ॥ ਏਕਾ ਬਖਸ ਫਿਰਿ

ਬਹੁਰਿ ਨ ਬੁਲਾਵੈ ॥੩॥ ਕਿਰਤ ਸਂਜੋਗੀ ਪਾਇਆ ਭਾਲਿ ॥ ਸਾਧਸਂਗਤਿ ਮਹਿ ਕਸੇ ਗੁਪਾਲ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲਿ
 ਆਏ ਤੁਮਰੈ ਦੁਆਰ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਰਸਨੁ ਦੇਹੁ ਸੁਰਾਰਿ ॥੪॥੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸੇਵਾ
 ਜਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਮਿਟੇ ਤਿਸੁ ਲੋਭਾ ॥ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਜਨ ਕੈ ਭੰਡਾਰਿ ॥ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸ ਪਿਆਰਿ
 ॥੧॥ ਤੁਮਰੀ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਹਿ ਜਨਾਈ ॥ ਕਾਟਿ ਜੇਵਰੀ ਜਨ ਲੀਏ ਛਡਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜੋ ਜਨੁ ਰਾਤਾ
 ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਜਿਸੁ ਰਸੁ ਆਇਆ ਸੋਈ ਜਾਨੈ ॥ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਮਨ ਮਹਿ
 ਹੈਰਾਨੈ ॥੨॥ ਸੋ ਸੁਖੀਆ ਸਭ ਤੇ ਊਤਮੁ ਸੋਇ ॥ ਜਾ ਕੈ ਹੁਦੈ ਵਸਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥ ਸੋਈ ਨਿਹਚਲੁ ਆਵੈ ਨ
 ਜਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੩॥ ਤਾ ਕਤ ਕਰਹੁ ਸਗਲ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥ ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਪੂਰਨੁ
 ਨਿਰਂਕਾਰੁ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਠਾਕੁਰ ਦੇਵਾ ॥ ਨਾਨਕੁ ਉਥਰੈ ਜਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥੪॥੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਮਨਿ ਹੋਇ ਅਨੰਦ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਸਿਮਰਤ ਭਗਵਂਤ ॥ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਲਮਲ ਜਾਹਿ ॥ ਤਿਸੁ
 ਗੁਰ ਕੀ ਹਮ ਚਰਨੀ ਪਾਹਿ ॥੧॥ ਸੁਮਤਿ ਦੇਵਹੁ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਮੋਹਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਨਿ ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਮਾਰਗੁ ਸੀਧਾ ॥ ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਨਾਮਿ ਹਰਿ ਗੀਧਾ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕੈ ਸਦਾ
 ਬਲਿ ਜਾਈਐ ॥ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਬ੍ਰਾਤ ਪ੍ਰਾਨੀ ਜਿਨਿ ਗੁਰਹਿ ਤਰਾਇਆ ॥
 ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੋਹੈ ਨਹੀਂ ਮਾਇਆ ॥ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਜਿਨਿ ਗੁਰਹਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਊਪਰਿ ਸਦਾ
 ਹਤ ਵਾਰਿਆ ॥੩॥ ਮਹਾ ਸੁਗਧ ਤੇ ਕੀਆ ਗਿਆਨੀ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇਰੇ ਕੀ ਅਕਥ ਕਹਾਨੀ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਾਨਕ
 ਗੁਰਦੇਵ ॥ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਸੇਵ ॥੪॥੩॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਗਲੇ ਦ੍ਰਾਖ ਮਿਟੇ ਸੁਖ ਟੀਏ ਅਪਨਾ
 ਨਾਮੁ ਜਪਾਇਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨੀ ਸੇਵਾ ਲਾਏ ਸਗਲਾ ਦੁਰਤੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਸਰਨਿ
 ਪ੍ਰਭ ਦਿਇਆਲ ॥ ਅਕਗਣ ਕਾਟਿ ਕੀਏ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੇ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਮੈਰੈ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਾਪ
 ਪਾਪ ਬਿਨਸੇ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਭਏ ਕ੃ਪਾਲ ਗੁਸਾਈ ॥ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਅਰਾਧੀ ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕੈ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥੨॥ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਬਿਅੰਤੁ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥ ਲਾਹਾ ਖਾਟਿ ਹੋਈਐ

ਧਨਵੰਤਾ ਅਪੁਨਾ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਈਐ ॥੩॥ ਆਠ ਪਹਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਧਿਆਈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਗੁਨ ਗਾਇਆ
 ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੇ ਮਨੋਰਥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਗੁਰੂ ਪਾਇਆ ॥੪॥੪॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ
 ਕਿਲਬਿਖ ਸਭਿ ਨਾਸੇ ॥ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਰਿ ਦੀਨੀ ਰਾਸੇ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਦਰਗਹ ਸੋਭਾਵਂਤੇ ॥ ਸੇਵਕ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੋਛਾਤੇ
 ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਸਗਲੇ ਰੋਗ ਦੋਖ ਸਭਿ ਬਿਨਸਹਿ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਮਨ ਤੇ ਜਾਈ
 ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਨਮ ਮਰਨ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਮੀਤ ॥ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਸਿਤ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਗਏ
 ਕਲੇਸ ॥ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭਲ ਹੋਸ ॥੨॥ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਤ ਹਤ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਧਿਆਈ ॥ ਐਸਾ ਗੁਰੂ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ॥ ਜਿਸੁ ਮਿਲਤੇ ਰਾਮ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੩॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ
 ਸੁਆਮੀ ॥ ਸਗਲ ਘਟਾ ਕੇ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਆਠ ਪਹਰ ਅਪੁਨੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਨਾਇ
 ॥੪॥੫॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੇ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਏ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਨ ਕਤ ਦੀਏ ॥ ਆਠ
 ਪਹਰ ਗੁਨ ਗਾਇ ਗੁਬਿੰਦ ॥ ਭੈ ਬਿਨਸੇ ਤਤਰੀ ਸਭ ਚਿੰਦ ॥੧॥ ਤਕਾਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨੀ ਲਾਗੀ ॥ ਜੋ ਗੁਰੂ
 ਕਹੈ ਸੋਈ ਭਲ ਮੀਠਾ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਤਿਆਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥ ਕਲਿ
 ਕਲੇਸ ਕਿਛੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਹੋਈ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੁ ਜੀਅ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥ ਤਤਰੀ ਮੈਲੁ ਨਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੨॥ ਚਰਨ ਕਮਲ
 ਸਿਤ ਲਾਗੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਬਿਨਸੇ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਅਛਕਾਰ ॥ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਨ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਜਾਨਾਂ ॥ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਹਰਿ
 ਸਿਤ ਮਨੁ ਮਾਨਾਂ ॥੩॥ ਸੁਣਿ ਸਜਣ ਸੰਤ ਮੀਤ ਸੁਹੇਲੇ ॥ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਹਰਿ ਅਗਹ ਅਤੋਲੇ ॥ ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੁ
 ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗਾਈਐ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥੪॥੬॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸੇ ਧਨਵੰਤ ਸੇਈ
 ਸਚੁ ਸਾਹਾ ॥ ਹਰਿ ਕੀ ਦਰਗਹ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਹਾ ॥੧॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੀਤ ॥ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ
 ਵਡਭਾਗੀ ਨਿਰਮਲ ਪੂਰਨ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਾਇਆ ਲਾਭੁ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਕੇ
 ਗੁਨ ਗਾਈ ॥੨॥ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਜੀਵਨ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੁ ॥੩॥ ਬਿਨਸੇ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ
 ਅਛਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤਰਹਿ ਪਾਰਿ ॥੪॥੭॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਪੂਰੀ ਤਾ ਕੀ ਕਲਾ ॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਦਾ ਸਦ ਅਟਲਾ ॥ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ॥ ਦ੍ਰਖੁ ਦਰਦੁ ਸਮੁ ਤਾ ਕਾ ਨਸੈ ॥੧॥
 ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਮਨੁ ਰਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥ ਮੁਕਤੁ ਸਾਧੂ ਧੂਰੀ ਨਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤਤਰੇ
 ਪਾਰਿ ॥ ਭਤ ਭਰਮੁ ਬਿਨਸੇ ਬਿਕਾਰ ॥ ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਬਸੇ ਗੁਰ ਚਰਨਾ ॥ ਨਿਰਭੈ ਸਾਧ ਪਰੇ ਹਰਿ ਸਰਨਾ
 ॥੨॥ ਅਨਦ ਸਹਜ ਰਸ ਸੂਖ ਘਨੇਰੇ ॥ ਦੁਸਮਨੁ ਦ੍ਰਖੁ ਨ ਆਵੈ ਨੇਰੇ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਅਪੁਨੇ ਕਰਿ ਰਾਖੇ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਜਪਤ ਕਿਲਬਿਖ ਸਭਿ ਲਾਥੇ ॥੩॥ ਸੰਤ ਸਾਜਨ ਸਿਖ ਭਏ ਸੁਹੇਲੇ ॥ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰੈ ਪ੍ਰਭ ਸਿਤ ਲੈ ਮੇਲੇ ॥ ਜਨਮ
 ਮਰਨ ਦੁਖ ਫਾਹਾ ਕਾਟਿਆ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਪਡਦਾ ਢਾਕਿਆ ॥੪॥੮॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਪ੍ਰੈ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ॥ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਕਲਿਆਣ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਕਾਰਜੁ ਸਗਲਾ ਰਾਸਿ ਥੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੁਰ ਕੇ ਮਨਿ ਕੂਠੇ ॥ ਦ੍ਰਖੁ ਦਰਦ ਭਰਮ ਬਿਨਸੇ ਝੂਠੇ ॥੧॥ ਨਿਤ ਤਠਿ ਗਾਵਹੁ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥
 ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥੨॥ ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਜਹ ਹਤ ਜਾਈ
 ॥੩॥ ਟੁਝਿ ਕਰ ਜੋਡਿ ਕਰੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਸਦਾ ਜਪੇ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥੪॥੯॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰੂ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ਦਰਸਨ ਕਤ ਜਾਈਐ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਕਿਲਬਿਖ ਮੇਟੇ ਸਬਦਿ ਸੰਤੋਖੁ ॥ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਨ ਹੋਆ ਜੋਗੁ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹੋਆ ਪਰਗਾਸੁ ॥
 ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨ ਮਾਹਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥੧॥ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਨਿ ਲੀਆ ਰਾਖਿ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਪ੍ਰੂ ਅਨਾਥ ਕਾ ਨਾਥੁ ॥
 ਜਿਸਹਿ ਨਿਵਾਜੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਪ੍ਰੂਨ ਕਰਮ ਤਾ ਕੇ ਆਚਾਰ ॥੨॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਨਿਤ ਨਵੇ ॥ ਲਖ
 ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਜੋਨਿ ਨ ਭਵੇ ॥ ਈਹਾਁ ਊਹਾਁ ਚਰਣ ਪ੍ਰਯਾਰੇ ॥ ਮੁਖੁ ਊਜਲੁ ਸਾਚੇ ਦਰਬਾਰੇ ॥੩॥ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ
 ਗੁਰਿ ਧਰਿਆ ਹਾਥੁ ॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਦਾਸੁ ॥ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੇਖੈ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਉਧਰਸਿ
 ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ॥੪॥੧੦॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜਾਈ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਅਪਨੇ ॥ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
 ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਪਨੇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ਸੁਣਤ ਨਿਹਾਲ ॥ ਬਿਨਸਿ ਗਏ ਬਿਖਿਆ ਜੰਜਾਲ
 ॥੧॥ ਸਾਚ ਸਬਦ ਸਿਤ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਆਇਆ ਚੀਤਿ ॥੨॥ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹੋਆ

ਪਰਗਾਸੁ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਕੀਨਾ ਰਿਦੈ ਨਿਵਾਸੁ ॥੩॥ ਗੁਰ ਸਮਰਥ ਸਦਾ ਦਿੱਤਾਲ ॥ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਪਿ
ਨਾਨਕ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥੪॥੧੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਕਰਤ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
ਦੀਨ ਦਿੱਤਾਲ ਭਏ ਕਿਰਪਾਲਾ ਅਪਣਾ ਨਾਮੁ ਆਪਿ ਜਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਤਿਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ
ਭਿੱਤਾ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਤ ਪੂਰਨ ਭਈ ਆਸ ॥੧॥ ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਸੂਖ ਮਨਿ ਕੂਠੇ ॥
ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਤੂਠੇ ॥੨॥੧੨॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੂ ੨ ਬਿਭਾਸ ੧੪੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਠਾਤ ॥ ਨਾਹੀ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥ ਸਰਬ ਸਿਧਿ ਕਲਿਆਨ ॥ ਪੂਰਨ ਹੋਹਿ ਸਗਲ ਕਾਮ ॥੧॥
ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਨੀਤ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਅਛਕਾਰੁ ਬਿਨਸੈ ਲਗੈ ਏਕੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਨਾਮਿ ਲਾਗੈ
ਦੂਖੁ ਭਾਗੈ ਸਰਨਿ ਪਾਲਨ ਜੋਗੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਜਮੁ ਨ ਤੇਟੈ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਹੋਵੈ ਸੰਜੋਗੁ ॥੨॥ ਰੈਨਿ ਦਿਨਸੁ
ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਜਹੁ ਮਨ ਕੇ ਭਰਮ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਜਿਸਹਿ ਪੂਰਨ ਕਰਮ ॥੩॥ ਜਨਮ ਜਨਮ
ਬਿਖਾਦ ਬਿਨਸੇ ਰਾਖਿ ਲੀਨੇ ਆਪਿ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਮੀਤ ਭਾਈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥੪॥੧॥੧੩॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ਬਿਭਾਸ ਪਡਤਾਲ ੧੪੯ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ਜਾਪ ॥ ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਲੋਭ ਮੌਹ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਅਛਾ ਤਾਪ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਆਪੁ
ਤਿਆਗਿ ਸੰਤ ਚਰਨ ਲਾਗਿ ਮਨੁ ਪਵਿਤੁ ਜਾਹਿ ਪਾਪ ॥੧॥ ਨਾਨਕੁ ਬਾਰਿਕੁ ਕਛੂ ਨ ਜਾਨੈ ਰਾਖਨ ਕਤ
ਪ੍ਰਭੁ ਮਾਈ ਬਾਪ ॥੨॥੧॥੧੪॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਰਨਿ ਟੇਕ ॥ ਊਚ ਮੂਚ ਬੇਅੰਤੁ
ਠਾਕੁਰੁ ਸਰਬ ਊਪਰਿ ਤੁਹੀ ਏਕ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ਦੁਖ ਬਿਦਾਰ ਦੈਨਹਾਰ ਬੁਧਿ ਬਿਕੇ ॥੧॥
ਨਮਸਕਾਰ ਰਖਨਹਾਰ ਮਨਿ ਅਰਾਧਿ ਪ੍ਰਭੂ ਮੇਕ ॥ ਸੰਤ ਰੇਨੁ ਕਰਤ ਮਜਨੁ ਨਾਨਕ ਪਾਵੈ ਸੁਖ ਅਨੇਕ
॥੨॥੨॥੧੫॥

प्रभाती अस्टपदीआ महला ੧ बिभास ੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा बउरी मनु बउराइਆ ॥ झूठै लालचि जनमु गवाइਆ ॥ लपटि रही फुनि बंधु न पाइਆ
 ॥ सतिगुरि राखे नामु दृङ्गाइआ ॥੧॥ ना मनु मरै न माइआ मरै ॥ जिनि कਿਛੁ ਕੀਆ ਸੋਈ ਜਾਣੈ
 ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰਿ ਭਤ ਸਾਗਰੁ ਤਰੈ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਾਇਆ ਸੰਚਿ ਰਾਜੇ ਅਵਾਕਾਰੀ ॥ ਮਾਇਆ ਸਾਥਿ ਨ ਚਲੈ
 ਧਿਆਰੀ ॥ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਹੈ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਸਾਥਿ ਨ ਸੰਗੀ ॥੩॥ ਜਿਤ ਮਨੁ ਦੇਖਹਿ ਪਰ ਮਨੁ
 ਤੈਸਾ ॥ ਜੈਸੀ ਮਨਸਾ ਤੈਸੀ ਦਸਾ ॥ ਜੈਸਾ ਕਰਮੁ ਤੈਸੀ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਾਂਤਿ ਸਹਜ ਘਰੁ ਪਾਵੈ ॥੪॥
 ਰਾਗਿ ਨਾਦਿ ਮਨੁ ਦ੍ਰਾਜੈ ਭਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਰਹੈ
 ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੫॥ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ॥ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ਅਮਰ ਪਦੁ
 ਪਾਵੈ ॥ ਤਾ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਵੈ ॥੬॥ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਅਨੇਕ ਜਤਨ ਕਰੈ ਜੇ ਕੋਈ ॥ ਹਉਮੈ
 ਮੇਰਾ ਸਬਦੇ ਖੋਈ ॥ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਸੋਈ ॥੭॥ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਸਬਦੁ ਕਰਣੀ ਹੈ ਸਾਰੁ ॥ ਬਿਨੁ
 ਸਬਦੈ ਹੋਰੁ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥ ਸਬਦੇ ਨਾਮੁ ਰਖੈ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਸਬਦੇ ਗਤਿ ਮਤਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੮॥ ਅਕਰੁ ਨਾਹੀ
 ਕਰਿ ਦੇਖਣਹਾਰੇ ॥ ਸਾਚਾ ਆਪਿ ਅਨੂਪੁ ਅਪਾਰੇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਊਤਮ ਗਤਿ ਹੋਈ ॥ ਨਾਨਕ ਖੋਜਿ ਲਹੈ ਜਨੁ ਕੋਈ
 ॥੯॥੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਮਾਇਆ ਮੌਹਿ ਸਗਲ ਜਗੁ ਛਾਇਆ ॥ ਕਾਮਣਿ ਦੇਖਿ ਕਾਮਿ ਲੋਭਾਇਆ ॥
 ਸੁਤ ਕੰਚਨ ਸਿਤ ਹੇਤੁ ਵਧਾਇਆ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਅਪਨਾ ਇਕੁ ਰਾਮੁ ਪਰਾਇਆ ॥੧॥ ਐਸਾ ਜਾਪੁ ਜਪਤ
 ਜਪਮਾਲੀ ॥ ਦੁਖ ਸੁਖ ਪਰਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨਿਰਾਲੀ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਸਾਚ
 ਸਬਦਿ ਤੁੜ੍ਹ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥ ਆਵਾ ਗਤਣੁ ਤੁਥੁ ਆਪਿ ਰਚਾਇਆ ॥ ਸੇਈ ਭਗਤ ਜਿਨ ਸਚਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ
 ॥੨॥ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਨਰਹਰਿ ਨਿਰਕਾਣੀ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਕੋਇ ਨ ਜਾਣੀ ॥ ਸਗਲ ਸਰੋਵਰ ਜੋਤਿ
 ਸਮਾਣੀ ॥ ਆਨਦ ਰੂਪ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਕਾਣੀ ॥੩॥ ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਗੁਰਮਤੀ ਪਾਏ ॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥

ਧਾਰਤੁ ਰਾਖੈ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥੪॥ ਬਿਸਮ ਬਿਨੋਦ ਰਹੇ ਪਰਮਾਦੀ ॥ ਗੁਰਮਤਿ
 ਮਾਨਿਆ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥ ਦੇਖਿ ਨਿਵਾਰਿਆ ਜਲ ਮਹਿ ਆਗੀ ॥ ਸੋ ਬੂੰਝੈ ਹੋਵੈ ਵਡਭਾਗੀ ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਸੇਵੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸੇਵੇ ਨਿਰਮਲੁ
 ਹੋਈ ॥੬॥ ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਸਬਦਿ ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਹਤਮੈ ਮਾਰਿ ॥ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤੁ ਜਾ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ
 ॥ ਸਚੀ ਰਹਤ ਸਚਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੭॥ ਸੁਖਦਾਤਾ ਦੁਖੁ ਮੇਟਣਹਾਰਾ ॥ ਅਵਰੁ ਨ ਸ੍ਰਿਸ਼ਾਸਿ ਬੀਜੀ ਕਾਰਾ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ
 ਧਨੁ ਹਰਿ ਆਗੈ ਰਾਖਿਆ ॥ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਮਹਾ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ॥੮॥੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਨਿਵਲੀ ਕਰਮ
 ਭੁਅੰਗਮ ਭਾਠੀ ਰੇਚਕ ਪ੍ਰੂਕ ਕੁੰਭ ਕਰੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਛੁ ਸੋਝੀ ਨਾਹੀ ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਬੂਡਿ ਮਰੈ ॥ ਅੰਧਾ
 ਭਰਿਆ ਭਰਿ ਧੋਵੈ ਅੰਤਰ ਕੀ ਮਲੁ ਕਦੇ ਨ ਲਹੈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਫੋਕਟ ਸਭਿ ਕਰਮਾ ਜਿਤ ਬਾਜੀਗਰੁ ਭਰਮਿ
 ਮੁਲੈ ॥੯॥ ਖਟੁ ਕਰਮ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ॥ ਤੂ ਗੁਣ ਸਾਗਰੁ ਅਵਗੁਣ ਮੋਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਇਆ ਧੰਧਾ
 ਧਾਰਣੀ ਦੁਰਮਤਿ ਕਾਰ ਬਿਕਾਰ ॥ ਸ੍ਰੂਖੁ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦਾ ਬੂੰਝਿ ਨ ਸਕੈ ਕਾਰ ॥ ਮਨਸਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ
 ਮਨਮੁਖ ਬੋਲ ਖੁਆਰ ॥ ਮਜਨੁ ਝੂਠਾ ਚੰਡਾਲ ਕਾ ਫੋਕਟ ਚਾਰ ਸੀਗਾਰ ॥੨॥ ਝੂਠੀ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਹੈ ਕਰਣੀ
 ਬਾਦਿ ਬਿਬਾਦੁ ॥ ਝੂਠੇ ਵਿਚਿ ਅਵਾਕਰਣੁ ਹੈ ਖਸਮ ਨ ਪਾਵੈ ਸਾਦੁ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰੁ ਕਮਾਵਣਾ ਫਿਕਾ ਆਵੈ ਸਾਦੁ
 ॥ ਦੁਸਟੀ ਸਭਾ ਵਿਗੁਚੀਐ ਬਿਖੁ ਵਾਤੀ ਜੀਵਣ ਬਾਦਿ ॥੩॥ ਏ ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਲੇ ਮਰਹੁ ਨ ਕੋਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ
 ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈ ॥ ਆਵਹਿ ਜਾਂਹਿ ਮਰਹਿ ਮਰਿ ਜਾਈ ॥੪॥ ਏਹੁ
 ਸਰੀਰੁ ਹੈ ਕੈ ਗੁਣ ਧਾਤੁ ॥ ਇਸ ਨੋ ਵਿਆਪੈ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪੁ ॥ ਸੋ ਸੇਵਹੁ ਜਿਸੁ ਮਾਈ ਨ ਬਾਪੁ ॥ ਵਿਚਹੁ ਚੂਕੈ ਤਿਸਨਾ
 ਅਰੁ ਆਪੁ ॥੫॥ ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਤਹ ਸੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥ ਹਿਰਦੈ ਸਚੁ ਏਹ
 ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥ ਹੋਰੁ ਸਭੁ ਪਾਖੰਡੁ ਪ੍ਰੂਜ ਖੁਆਰੁ ॥੬॥ ਦੁਬਿਧਾ ਚੂਕੈ ਤਾਂ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੁ ॥ ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੋ ਕਰਿ
 ਜਾਣੁ ॥ ਏਹਾ ਮਤਿ ਸਬਦੁ ਹੈ ਸਾਰੁ ॥ ਵਿਚਿ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਥੈ ਪਵੈ ਛਾਰੁ ॥੭॥ ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਰੁ ॥
 ਸੰਤ ਸਭਾ ਗੁਣ ਗਿਆਨੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਮਨੁ ਮਾਰੇ ਜੀਵਤ ਮਰਿ ਜਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਨਦਰਿ ਪਛਾਣੁ ॥੮॥੩॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ਦਖਣੀ ॥ ਗੋਤਮੁ ਤਪਾ ਅਹਿਲਿਆ ਇਸਕੀ ਤਿਸੁ ਦੇਖਿ ਇੰਦੁ ਲੁਭਾਇਆ ॥ ਸਹਸ ਸਰੀਰ
 ਚਿਹਨ ਭਗ ਹ੍ਰਾਏ ਤਾ ਮਨਿ ਪਛੋਤਾਇਆ ॥੧॥ ਕੋਈ ਜਾਣਿ ਨ ਭੂਲੈ ਭਾਈ ॥ ਸੋ ਭੂਲੈ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਬੂੜੈ
 ਜਿਸੈ ਬੁੜਾਈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਿਨਿ ਹਰੀ ਚੰਦ੍ਰ ਪ੃ਥਮੀ ਪਤਿ ਰਾਜੈ ਕਾਗਦਿ ਕੀਮ ਨ ਪਾਈ ॥ ਅਤਗਣੁ ਜਾਣੈ ਤ
 ਪੁਨ ਕਰੇ ਕਿਤ ਕਿਤ ਨੇਖਾਸਿ ਬਿਕਾਈ ॥੩॥ ਕਰਤ ਅਢਾਈ ਧਰਤੀ ਮਾਂਗੀ ਬਾਵਨ ਰੂਪਿ ਬਹਾਨੈ ॥ ਕਿਤ
 ਪਇਆਲਿ ਜਾਇ ਕਿਤ ਛਲੀਐ ਜੇ ਬਲਿ ਰੂਪੁ ਪਛਾਨੈ ॥੪॥ ਰਾਜਾ ਜਨਮੇਯਾ ਦੇ ਮਤੀ ਬਰਜਿ ਬਿਆਸਿ
 ਪਡਾਇਆ ॥ ਤਿਨਿ ਕਰਿ ਜਗ ਅਠਾਰਹ ਧਾਏ ਕਿਰਤੁ ਨ ਚਲੈ ਚਲਾਇਆ ॥੫॥ ਗਣਤ ਨ ਗਣੀ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਾ
 ਬੋਲੀ ਭਾਇ ਸੁਭਾਈ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਵਰਤੈ ਤੁਥੈ ਸਲਾਹੀ ਸਭ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੬॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਿਪਤੁ ਲੇਪੁ ਕਦੇ
 ਨ ਲਾਗੈ ਸਦਾ ਰਹੈ ਸਰਣਾਈ ॥ ਮਨਮੁਖੁ ਮੁਗਧੁ ਆਗੈ ਚੇਤੈ ਨਾਹੀ ਦੁਖਿ ਲਾਗੈ ਪਛੁਤਾਈ ॥੭॥ ਆਪੇ ਕਰੇ
 ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਜਿਨਿ ਏਹ ਰਚਨਾ ਰਚੀਐ ॥ ਹਰਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਨ ਜਾਈ ਜੀਅਹੁ ਅਭਿਮਾਨੇ ਪੈ ਪਚੀਐ ॥੮॥ ਭੁਲਣ
 ਵਿਚਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਕੋਈ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਨ ਭੂਲੈ ॥ ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ਕੋ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਅਘੁਲੈ
 ॥੯॥੮॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਆਖਣਾ ਸੁਨਣਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥ ਧੰਧਾ ਛੁਟਕਿ ਗਿਆ ਵੇਕਾਰੁ ॥ ਜਿਤ ਮਨਮੁਖਿ
 ਦ੍ਰੌਜੈ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮੈ ਅਕਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਮਨ ਅੰਧੇ ਮੂਰਖ ਗਵਾਰ ॥ ਆਵਤ ਜਾਤ ਲਾਜ
 ਨਹੀ ਲਾਗੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਬੂਝੈ ਬਾਰੋ ਬਾਰ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਇਸੁ ਮਨ ਮਾਇਆ ਸੋਹਿ ਬਿਨਾਸੁ ॥ ਧੁਰਿ ਹੁਕਮੁ
 ਲਿਖਿਆ ਤਾਂ ਕਹੀਐ ਕਾਸੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਚੀਨੈ ਕੋਈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਹੂਨਾ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੨॥ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ
 ਡੋਲੈ ਲਖ ਚਤੁਰਾਸੀ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਬੂੜੈ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਊਭਿ ਪਇਆਲਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਛੂਟੈ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੩॥ ਆਪੇ ਸਦੇ ਫਿਲ ਨ ਹੋਇ ॥ ਸਬਦਿ ਮੈ ਸਹਿਲਾ ਜੀਵੈ ਸੋਇ ॥ ਬਿਨੁ ਗੁਰ
 ਸੋਝੀ ਕਿਸੈ ਨ ਹੋਇ ॥ ਆਪੇ ਕਰੈ ਕਰਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥ ਝਗੜੁ ਚੁਕਾਵੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁ ਡੋਲਤ ਤਤ ਠਹਰਾਵੈ ॥ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਕਰਿ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥੫॥ ਅੰਤਰਿ ਜੂਠਾ ਕਿਤ
 ਸੁਚਿ ਹੋਇ ॥ ਸਬਦੀ ਧੋਵੈ ਵਿਰਲਾ ਕੋਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਈ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ॥ ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਠਾਕਿ ਰਹਾਵੈ

॥੬॥ ਭਤ ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਸੁਖੁ ਸਾਰੁ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਸੰਗਤਿ ਪਾਵੈ ਪਾਰੁ ॥ ਸਚੁ ਬੋਲੈ ਬੋਲਾਵੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ
 ਕਰਣੀ ਹੈ ਸਾਰੁ ॥੭॥ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਰਮੁ ਧਰਮੁ ਪਤਿ ਪ੍ਰਯਾ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਅਗਨੀ ਮਹਿ ਭੂਜਾ ॥ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ
 ਤਤ ਮਨੁ ਭੀਜਾ ॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਅਵਰੁ ਨ ਟ੍ਰਯਾ ॥੮॥੫॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਅੰਤਰਿ
 ਪ੍ਰਯਾ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ਅਵਰੁ ਨਹੀ ਟ੍ਰਯਾ ॥੯॥ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ॥ ਅਵਰੁ ਨ ਦੀਸੈ ਕਿਸੁ
 ਪ੍ਰਯ ਚੜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਆਗੈ ਜੀਅਡਾ ਤੁੜਾ ਪਾਸਿ ॥ ਜਿਤ ਭਾਵੈ ਤਿਤ ਰਖਹੁ ਅਰਦਾਸਿ ॥੨॥
 ਸਚੁ ਜਿਹਵਾ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥ ਗੁਰਮਤਿ ਛੂਟਸਿ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥੩॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਰੈ ਕੀਏ ॥
 ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਸਿਰਿ ਕਰਮਾਂ ਕੀਏ ॥੪॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਵਸਿ ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ॥ ਤੀਨਿ ਸਮਾਏ ਏਕ ਕ੃ਤਾਰਥ
 ॥੫॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਏ ਸੁਕਤਿ ਧਿਆਨਾਂ ॥ ਹਰਿ ਪਦੁ ਚੀਨਿ ਭਏ ਪਰਥਾਨਾ ॥੬॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਗੁਰਿ ਕੂੜ
 ਕੁੜਾਈ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਵਾਜੇ ਕਿਨਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥੭॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਕੂੜ ਕੁੜਾਈ ॥ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਗਤਿ ਕਿਨੈ
 ਨ ਪਾਈ ॥੮॥੬॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਇਕਿ ਧੁਰਿ ਬਖਸਿ ਲਏ ਗੁਰਿ ਪ੍ਰਾਵੈ ਸਚੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗ
 ਰਤੇ ਸਦਾ ਰੰਗੁ ਸਾਚਾ ਦੁਖ ਬਿਸਰੇ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਝੂਠੀ ਦੁਰਮਤਿ ਕੀ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਬਿਨਸਤ ਬਾਰ ਨ ਲਾਗੈ
 ਕਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਤ ਦੁਖੁ ਦਰਦੁ ਵਿਆਪਸਿ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸੁਖ ਦੁਖ ਦਾਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਜਾਤਾ ਮੇਲਿ ਲਏ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥ ਮਨਮੁਖ ਤੇ ਅਭ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਸਿ ਹਤਮੈ ਪਚਹਿ ਦਿਵਾਨੇ ॥ ਇਹੁ ਮਨੂਆ
 ਖਿਨੁ ਤਭਿ ਪਇਆਲੀ ਜਬ ਲਗਿ ਸਬਦ ਨ ਜਾਨੇ ॥੩॥ ਭੂਖ ਪਿਆਸਾ ਜਗੁ ਭਇਆ ਤਿਪਤਿ ਨਹੀ ਬਿਨੁ
 ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਏ ॥ ਸਹਜੈ ਸਹਜੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਦਰਗਹ ਪੈਥਾ ਜਾਏ ॥੪॥ ਦਰਗਹ ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਇਕੁ ਆਪੇ
 ਨਿਰਮਲ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥ ਆਪੇ ਸੁਰਤਾ ਸਚੁ ਵੀਚਾਰਸਿ ਆਪੇ ਕੂੜੈ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੫॥ ਜਲੁ ਤਰੰਗ ਅਗਨੀ
 ਪਕਵਨੈ ਫੁਨਿ ਤੈ ਮਿਲਿ ਜਗਤੁ ਤਪਾਇਆ ॥ ਐਸਾ ਕਲੁ ਛਲੁ ਤਿਨ ਕਤ ਦੀਆ ਹੁਕਮੀ ਠਾਕਿ ਰਹਾਇਆ ॥੬॥
 ਐਸੇ ਜਨ ਵਿਰਲੇ ਜਗ ਅੰਦਰਿ ਪਰਖਿ ਖਜਾਨੈ ਪਾਇਆ ॥ ਜਾਤਿ ਵਰਨ ਤੇ ਭਏ ਅਤੀਤਾ ਮਮਤਾ ਲੋਭੁ ਚੁਕਾਇਆ
 ॥੭॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤੀਰਥ ਸੇ ਨਿਰਮਲ ਦੁਖੁ ਹਤਮੈ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕੇ ਚਰਨ ਪਖਾਲੈ

ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਾ ਭਾਇਆ ॥੮॥੭॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੩ ਬਿਭਾਸ ੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੇਖੁ ਤੂ ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ ਤੈਰੈ ਨਾਲਿ ॥ ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ ਸਬਦੇ ਖੋਜੀਐ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਲੇਹੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥
 ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਬਦਿ ਰਧੈ ਰੰਗੁ ਹੋਇ ॥ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਸਚਾ ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ ਪ੍ਰਗਟੀ ਸਾਚੀ ਸੋਇ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ
 ਏਹੁ ਸਰੀਰੁ ਹੈ ਗਿਆਨਿ ਰਤਨਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਮੂਲੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਮਾਣਸਿ ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ ਨ ਹੋਇ
 ॥੩॥ ਹਾਰਿ ਮੰਦਰੁ ਹਾਰਿ ਜੀਤ ਸਾਜਿਆ ਰਖਿਆ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਿ ॥ ਧੁਰਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਕਮਾਵਣਾ ਕੋਇ ਨ
 ਮੇਟਣਹਾਰੁ ॥੪॥ ਸਬਦੁ ਚੀਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰ ॥ ਹਾਰਿ ਮੰਦਰੁ ਸਬਦੇ ਸੋਹਣਾ ਕਂਚਨੁ ਕੋਟੁ
 ਅਪਾਰ ॥੫॥ ਹਾਰਿ ਮੰਦਰੁ ਏਹੁ ਜਗਤੁ ਹੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰਧਾਰ ॥ ਟ੍ਰੂਜਾ ਭਾਤ ਕਰਿ ਪ੍ਰਗਟੇ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਗਵਾਰ
 ॥੬॥ ਜਿਥੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਤਿਥੈ ਦੇਹ ਜਾਤਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਸੇ ਤਕਰੇ ਦੁਖੀਏ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ॥੭॥ ਹਾਰਿ ਮੰਦਰ
 ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਨਾ ਬ੍ਰਾਝਹਿ ਮੁਗਧ ਗਵਾਰ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਚੀਨਿਆ ਹਾਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰਿ
 ॥੮॥ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਤੀ ਜਿ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥ ਪਵਿਤੁ ਪਾਵਨ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਹਾਰਿ ਕੈ
 ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੯॥ ਹਾਰਿ ਮੰਦਰੁ ਹਾਰਿ ਕਾ ਹਾਟੁ ਹੈ ਰਖਿਆ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਿ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਸਤਦਾ ਏਕੁ
 ਨਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲੈਨਿ ਸਵਾਰਿ ॥੧੦॥ ਹਾਰਿ ਮੰਦਰ ਮਹਿ ਮਨੁ ਲੋਹਟੁ ਹੈ ਮੋਹਿਆ ਟ੍ਰੂਜੈ ਭਾਇ ॥ ਪਾਰਸਿ ਭੇਟਿਐ
 ਕਂਚਨੁ ਭਿਆ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥੧੧॥੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਭੈ ਭਾਇ ਜਾਗੇ ਸੇ ਜਨ ਜਾਗਰਣ ਕਰਹਿ
 ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਤਤਾਰਿ ॥ ਸਦਾ ਜਾਗਹਿ ਘਰੁ ਅਪਣਾ ਰਾਖਹਿ ਪੰਚ ਤਸਕਰ ਕਾਢਹਿ ਮਾਰਿ ॥੧॥ ਮਨ ਮੇਰੇ
 ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥ ਜਿਤੁ ਮਾਰਗਿ ਹਾਰਿ ਪਾਈਐ ਮਨ ਸੇਈ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
 ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਊਪਜੈ ਦੁਖੁ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਹਾਰਿ ਨਾਮਾ ਹਾਰਿ ਮਨਿ ਕਸੈ ਸਹਜੇ ਹਾਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੨॥
 ਗੁਰਮਤੀ ਮੁਖ ਸੋਹਣੇ ਹਾਰਿ ਰਾਖਿਆ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਅੈਥੈ ਓਥੈ ਸੁਖੁ ਘਣਾ ਜਪਿ ਹਾਰਿ ਹਾਰਿ ਤਰੇ ਪਾਰਿ

॥੩॥ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਜਾਗਣੁ ਨ ਹੋਵੰਦੀ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨ ਪਵੰਦੀ ਥਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਦਰਿ ਢੌਰੰਦੀ ਨਾ ਲਹਹਿ ਭਾਇ
ਟ੍ਰੌਜੈ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥੪॥ ਧਿਗੁ ਖਾਣਾ ਧਿਗੁ ਪੈਨ੍ਣਾ ਜਿਨਾ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਬਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀਡੇ ਬਿਸਟਾ
ਰਾਤੇ ਮਰਿ ਜ਼ਮਹਿ ਹੋਹਿ ਖੁਆਰੁ ॥੫॥ ਜਿਨ ਕਤ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਤਿਨਾ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਸਂਗਤਿ
ਮਿਲਿ ਰਹਾਂ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਤ ॥੬॥ ਪ੍ਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਤਥਾਇ ਕਿਤੈ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ
ਸਹਜੁ ਊਪਜੈ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥੭॥ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ਭਜੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਭ ਕਿਛੁ ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥ ਨਾਨਕ
ਨਾਮੁ ਨ ਕੀਸਰੈ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸੁ ਹੋਗੁ ॥੮॥੨॥੭॥੨॥੬॥

ਬਿਭਾਸ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤੁ ਬਨਿਤਾ ॥ ਚੂਗਹਿ ਚੋਗ ਅਨਨਦ ਸਿਤ ਜੁਗਤਾ ॥ ਤਉਝਿ ਪਰਿਆ ਮਨ ਮੀਠ ਮੁਹਾਰਾ ॥
ਗੁਨ ਗਾਹਕ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਏਕੁ ਹਮਾਰਾ ਅੰਤਰਯਾਮੀ ॥ ਧਰ ਏਕਾ ਮੈ ਟਿਕ ਏਕਸੁ ਕੀ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾ
ਕਡ ਪੁਰਖੁ ਸੁਆਮੀ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਛਲ ਨਾਗਨਿ ਸਿਤ ਮੇਰੀ ਟ੍ਰੂਟਨਿ ਹੋਈ ॥ ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਇਹ ਝੂਠੀ ਧੋਹੀ
॥ ਮੁਖਿ ਮੀਠੀ ਖਾਈ ਕਤਰਾਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਰਹਿਆ ਅਧਾਇ ॥੨॥ ਲੋਭ ਮੋਹ ਸਿਤ ਗੰਡ ਵਿਖੋਟਿ
॥ ਗੁਰਿ ਕ੃ਪਾਲਿ ਮੋਹਿ ਕਿਨੀ ਛੋਟਿ ॥ ਇਹ ਠਗਵਾਰੀ ਬਹੁਤੁ ਘਰ ਗਲੇ ॥ ਹਮ ਗੁਰਿ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਕਿਰਪਾਲੇ
॥੩॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਸਿਤ ਠਾਟੁ ਨ ਬਨਿਆ ॥ ਗੁਰ ਤਪਦੇਸੁ ਮੋਹਿ ਕਾਨੀ ਸੁਨਿਆ ॥ ਜਹ ਦੇਖਉ ਤਹ ਮਹਾ ਚੰਡਾਲ
॥ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਅਪੁਨੈ ਗੁਰਿ ਗੋਪਾਲ ॥੪॥ ਦਸ ਨਾਰੀ ਮੈ ਕਰੀ ਦੁਹਾਗਨਿ ॥ ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਏਹ ਰਸਹਿ
ਕਿਖਾਗਨਿ ॥ ਇਨ ਸਨਬੰਧੀ ਰਸਾਤਲਿ ਜਾਇ ॥ ਹਮ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੫॥ ਅਛਾਮੇਵ ਸਿਤ
ਮਸਲਤਿ ਛੋਡੀ ॥ ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਇਹੁ ਮੂਰਖੁ ਹੋਡੀ ॥ ਇਹੁ ਨੀਘਰੁ ਘਰੁ ਕਹੀ ਨ ਪਾਏ ॥ ਹਮ ਗੁਰਿ ਰਾਖਿ ਲੀਏ
ਲਿਵ ਲਾਏ ॥੬॥ ਇਨ ਲੋਗਨ ਸਿਤ ਹਮ ਭਏ ਕੈਰਾਈ ॥ ਏਕ ਗ੍ਰਹ ਮਹਿ ਦੁਇ ਨ ਖਟਾਈ ॥ ਆਏ ਪ੍ਰਭ ਪਹਿ
ਅੰਚਰਿ ਲਾਗਿ ॥ ਕਰਹੁ ਤਪਾਕਸੁ ਪ੍ਰਭ ਸਰਬਾਗਿ ॥੭॥ ਪ੍ਰਭ ਹਸਿ ਬੋਲੇ ਕੀਏ ਨਿਆਏਂ ॥ ਸਗਲ ਦੂਤ ਮੇਰੀ ਸੇਵਾ
ਲਾਏ ॥ ਤੂੰ ਠਾਕੁਰੁ ਇਹੁ ਗ੍ਰਹੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਕੀਆ ਨਿਕੇਰਾ ॥੮॥੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

ਮਨ ਮਹਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਮਹਾ ਅਵਾਕਾਰਾ ॥ ਪ੍ਰਸਾ ਕਰਹਿ ਬਹੁਤੁ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨੁ ਤਨਿ ਚਕ੍ਰ ਬਣਾਏ ॥ ਅੰਤਰ
 ਕੀ ਮਲੁ ਕਬ ਹੀ ਨ ਜਾਏ ॥੧॥ ਇਤੁ ਸੰਜਮਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਨ ਹੀ ਨ ਪਾਇਆ ॥ ਭਗਤੀ ਸੁਦਾ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ
 ਮਾਇਆ ॥੨॥ ਰਹਾਉ ॥ ਪਾਪ ਕਰਹਿ ਪੰਚਾਂ ਕੇ ਬਸਿ ਰੇ ॥ ਤੀਰਥਿ ਨਾਇ ਕਹਹਿ ਸਭਿ ਉਤਰੇ ॥ ਬਹੁਰਿ
 ਕਮਾਵਹਿ ਹੋਇ ਨਿਸਂਕ ॥ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਾਂਧਿ ਖਰੇ ਕਾਲਮਕ ॥੨॥ ਘੂੜਰ ਬਾਧਿ ਬਜਾਵਹਿ ਤਾਲਾ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ
 ਫਿਰਹਿ ਬੇਤਾਲਾ ॥ ਵਰਮੀ ਮਾਰੀ ਸਾਪੁ ਨ ਮੂਆ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਨੈ ਜਿਨਿ ਤੂ ਕੀਆ ॥੩॥ ਪ੍ਰਾਂਅਰ ਤਾਪ ਗੇਰੀ
 ਕੇ ਬਸਤਾ ॥ ਅਪਦਾ ਕਾ ਮਾਰਿਆ ਗ੃ਹ ਤੇ ਨਸਤਾ ॥ ਦੇਸੁ ਛੋਡਿ ਪਰਦੇਸਹਿ ਧਾਇਆ ॥ ਪੰਚ ਚੰਡਾਲ ਨਾਲੇ ਲੈ
 ਆਇਆ ॥੪॥ ਕਾਨ ਫਰਾਇ ਹਿਰਾਏ ਟ੍ਰੂਕਾ ॥ ਘਰਿ ਘਰਿ ਮਾਂਗੈ ਤ੃ਪਤਾਵਨ ਤੇ ਚੂਕਾ ॥ ਬਨਿਤਾ ਛੋਡਿ ਬਦ
 ਨਦਰਿ ਪਰ ਨਾਰੀ ॥ ਵੇਸਿ ਨ ਪਾਈਐ ਮਹਾ ਦੁਖਿਆਰੀ ॥੫॥ ਬੋਲੈ ਨਾਹੀ ਹੋਇ ਬੈਠਾ ਮੋਨੀ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕਲਪ
 ਭਵਾਈਐ ਜੋਨੀ ॥ ਅੰਨ ਤੇ ਰਹਤਾ ਦੁਖੁ ਦੇਹੀ ਸਹਤਾ ॥ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕ੍ਰਿਓ ਵਿਆਪਿਆ ਮਮਤਾ ॥੬॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈ ਪਰਮ ਗਤੇ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਸਗਲ ਬੇਦ ਸਿਮ੍ਰਤੇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਰੈ ਅਜਾਈ ॥ ਜਿਤ ਬਾਲੂ ਘਰ ਠਤੇਰ
 ਨ ਠਾਈ ॥੭॥ ਜਿਸ ਨੋ ਭਏ ਗੁਬਿੰਦ ਦਿਆਲਾ ॥ ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਤਿਨਿ ਬਾਧਿਆ ਪਾਲਾ ॥ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕੋਈ
 ਸੰਤੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਰਾਇਆ ॥੮॥ ਜੇ ਹੋਵੈ ਭਾਗੁ ਤਾ ਦਰਸਨੁ ਪਾਈਐ ॥ ਆਧਿ ਤਰੈ
 ਸਭੁ ਕੁਟੰਬੁ ਤਰਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦ੍ਰੂਜਾ ॥੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਕਿਲਬਿਖ ਸਭਿ ਕਾਟੇ ॥
 ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੇ ਕਾਗਰ ਫਾਟੇ ॥ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ
 ॥੧॥ ਰਾਮ ਰਮਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਤੇਰੇ ਦਾਸ ਚਰਨ ਸਰਨਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਚੂਕਾ ਗਤਣੁ
 ਮਿਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰੁ ॥ ਗੁਰਿ ਦਿਖਲਾਇਆ ਸੁਕਤਿ ਦੁਆਰੁ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਦ ਰਾਤਾ ॥ ਪ੍ਰਭੂ
 ਜਨਾਇਆ ਤਬ ਹੀ ਜਾਤਾ ॥੨॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਅੰਤਰਿ ਰਖਿਆ ਸੋਇ ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਬੀਜੋ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਬੈਰ ਬਿਰੋਧ
 ਛੇਟੇ ਭੈ ਭਰਮਾਂ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਪੁੰਨਿ ਆਤਮੈ ਕੀਨੇ ਧਰਮਾ ॥੩॥ ਮਹਾ ਤਰੰਗ ਤੇ ਕਾਢੈ ਲਾਗਾ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਟ੍ਰੂਟਾ
 ਗਾਂਢਾ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿਆ ॥ ਅਪੁਨੈ ਠਾਕੁਰਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥੪॥ ਮੰਗਲ ਸੂਖ

ਕਲਿਆਣ ਤਿਥਾਈ ॥ ਜਹ ਸੇਵਕ ਗੋਪਾਲ ਗੁਸਾਈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ ਭਏ ਗੋਪਾਲ ॥ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਮਿਟੇ
ਬਿਤਾਲ ॥੫॥ ਹੋਮ ਜਗ ਤੁਰਥ ਤਪ ਪ੍ਰੂਜਾ ॥ ਕੋਟਿ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰੀਜਾ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਨਿਮਖ ਰਿਦੈ
ਧਾਰੇ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਜਪਤ ਸਭਿ ਕਾਰਜ ਸਾਰੇ ॥੬॥ ਊਚੇ ਤੇ ਊਚਾ ਪ੍ਰਭ ਥਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਲਾਵਹਿ ਸਹਜਿ
ਧਿਆਨੁ ॥ ਦਾਸ ਦਾਸਨ ਕੀ ਬਾਂਛਤ ਧੂਰਿ ॥ ਸਰਬ ਕਲਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਰਪੂਰਿ ॥੭॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ
ਨੇਰਾ ॥ ਮੀਤ ਸਾਜਨ ਭਰਵਾਸਾ ਤੇਰਾ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ॥ ਜਧਿ ਜੀਵੈ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣਤਾਸ
॥੮॥੩॥੨॥੭॥੧੨॥

ਬਿਭਾਸ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਰਨ ਜੀਵਨ ਕੀ ਸੰਕਾ ਨਾਸੀ ॥ ਆਪਨ ਰੰਗ ਸਹਜ ਪਰਗਾਸੀ ॥੧॥ ਪ੍ਰਗਟੀ ਜੋਤਿ ਮਿਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥
ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਪਾਇਆ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਹ ਅਨਨਦੁ ਦੁਖੁ ਦੌਰਿ ਪਇਆਨਾ ॥ ਮਨੁ ਮਾਨਕੁ ਲਿਵ
ਤਤੁ ਲੁਕਾਨਾ ॥੨॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਆ ਸੁ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ॥ ਜੋ ਇਵ ਕੂੜੈ ਸੁ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣਾ ॥੩॥ ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ
ਕਿਲਬਿਖ ਗਏ ਖੀਣਾ ॥ ਮਨੁ ਭਇਆ ਜਗਜੀਵਨ ਲੀਣਾ ॥੪॥੧॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ॥ ਅਲਹੁ ਏਕੁ ਮਸੀਤਿ ਬਸਤੁ ਹੈ
ਅਵਰੁ ਮੁਲਖੁ ਕਿਸੁ ਕੇਰਾ ॥ ਛਿਦ੍ਰ ਮੂਰਤਿ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੀ ਦੁਹ ਮਹਿ ਤਤੁ ਨ ਹੇਰਾ ॥੧॥ ਅਲਹ ਰਾਮ ਜੀਵਤ
ਤੇਰੇ ਨਾਈ ॥ ਤੂ ਕਰਿ ਮਿਹਰਾਮਤਿ ਸਾਈ ॥੨॥ ਰਹਾਤ ॥ ਦੱਖਨ ਦੇਸਿ ਹਰੀ ਕਾ ਬਾਸਾ ਪਛਿਮਿ ਅਲਹ ਮੁਕਾਮਾ
॥ ਦਿਲ ਮਹਿ ਖੋਜਿ ਦਿਲੈ ਦਿਲਿ ਖੋਜਹੁ ਏਹੀ ਠਤਰ ਮੁਕਾਮਾ ॥੨॥ ਬ੍ਰਹਮਨ ਗਿਆਸ ਕਰਹਿ ਚਤੁਬੀਸਾ ਕਾਜੀ
ਮਹ ਰਮਯਾਨਾ ॥ ਗਿਆਰਹ ਮਾਸ ਪਾਸ ਕੈ ਰਾਖੇ ਏਕੈ ਮਾਹਿ ਨਿਧਾਨਾ ॥੩॥ ਕਹਾ ਤਡੀਸੇ ਮਜਨੁ ਕੀਆ ਕਿਆ
ਮਸੀਤਿ ਸਿਰੁ ਨਾਹੋਂ ॥ ਦਿਲ ਮਹਿ ਕਪਟੁ ਨਿਵਾਜ ਗੁਜਾਰੈ ਕਿਆ ਹਜ ਕਾਬੈ ਜਾਹੋਂ ॥੪॥ ਏਤੇ ਅਤੁਰਤ ਮਰਦਾ
ਸਾਜੇ ਏ ਸਭ ਰੂਪ ਤੁਮਾਰੇ ॥ ਕਬੀਰੁ ਪ੍ਰੰਗਰਾ ਰਾਮ ਅਲਹ ਕਾ ਸਭ ਗੁਰ ਪੀਰ ਹਮਾਰੇ ॥੫॥ ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ
ਨਰ ਨਰਵੈ ਪਰਹੁ ਏਕ ਕੀ ਸਰਨਾ ॥ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਰੇ ਪ੍ਰਾਨੀ ਤਬ ਹੀ ਨਿਹਚੈ ਤਰਨਾ ॥੬॥੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ॥
ਅਵਲਿ ਅਲਹ ਨੂਰੁ ਤਪਾਇਆ ਕੁਦਰਤਿ ਕੇ ਸਭ ਬੰਦੇ ॥ ਏਕ ਨੂਰ ਤੇ ਸਭੁ ਜਗੁ ਤਪਜਿਆ ਕਤਨ ਭਲੇ ਕੋ ਮੰਦੇ

॥੧॥ ਲੋਗਾ ਭਰਮਿ ਨ ਭੂਲਹੁ ਭਾਈ ॥ ਖਾਲਿਕੁ ਖਲਕ ਖਲਕ ਮਹਿ ਖਾਲਿਕੁ ਪ੍ਰਾਰਿ ਰਹਿਓ ਸੁਬ ਠਾਈ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਟੀ ਏਕ ਅਨੇਕ ਭਾਁਤਿ ਕਰਿ ਸਾਜੀ ਸਾਜਨਹਾਰੈ ॥ ਨਾ ਕਛੁ ਪੋਚ ਮਾਟੀ ਕੇ ਭਾੱਡੇ ਨਾ ਕਛੁ ਪੋਚ ਕੁਂਭਾਰੈ
 ॥੨॥ ਸਭ ਮਹਿ ਸਚਾ ਏਕੋ ਸੋਈ ਤਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਕਛੁ ਹੋਈ ॥ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਨੈ ਸੁ ਏਕੋ ਜਾਨੈ ਬੰਦਾ ਕਹੀਐ
 ਸੋਈ ॥੩॥ ਅਲਹੁ ਅਲਖੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ਗੁਰਿ ਗੁਝੁ ਦੀਨਾ ਮੀਠਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮੇਰੀ ਸੰਕਾ ਨਾਸੀ ਸਰਕ
 ਨਿਰੰਜਨੁ ਡੀਠਾ ॥੪॥੩॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ॥ ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਕਹਹੁ ਮਤ ਝੂਠੇ ਝੂਠਾ ਜੋ ਨ ਬਿਚਾਰੈ ॥ ਜਤ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ
 ਖੁਦਾਈ ਕਹਤ ਹਤ ਤਤ ਕਿਤ ਮੁਰਗੀ ਮਾਰੈ ॥੧॥ ਮੁਲਾਂ ਕਹਹੁ ਨਿਆਤ ਖੁਦਾਈ ॥ ਤੇਰੇ ਮਨ ਕਾ ਭਰਮੁ ਨ
 ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਪਕਰਿ ਜੀਤ ਆਨਿਆ ਦੇਹ ਬਿਨਾਸੀ ਮਾਟੀ ਕਤ ਬਿਸਮਿਲਿ ਕੀਆ ॥ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪ
 ਅਨਾਹਤ ਲਾਗੀ ਕਹੁ ਹਲਾਲੁ ਕਿਆ ਕੀਆ ॥੨॥ ਕਿਆ ਉਜੂ ਪਾਕੁ ਕੀਆ ਸੁਹੁ ਧੋਇਆ ਕਿਆ ਮਸੀਤਿ ਸਿਰੁ
 ਲਾਇਆ ॥ ਜਤ ਦਿਲ ਮਹਿ ਕਪਟੁ ਨਿਵਾਜ ਗੁਜਾਰਹੁ ਕਿਆ ਹਜ ਕਾਬੈ ਜਾਇਆ ॥੩॥ ਤੂਂ ਨਾਪਾਕੁ ਪਾਕੁ ਨਹੀ
 ਸੂਝਿਆ ਤਿਸ ਕਾ ਮਰਮੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਿਸਤਿ ਤੇ ਚੂਕਾ ਟੋਜਕ ਸਿਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੪॥੪॥
 ਪ੍ਰਭਾਤੀ ॥ ਸੁਨਨ ਸੰਧਿਆ ਤੇਰੀ ਦੇਵ ਦੇਵਾਕਰ ਅਧਪਤਿ ਆਦਿ ਸਮਾਈ ॥ ਸਿਧ ਸਮਾਧਿ ਅਨੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ
 ਲਾਗਿ ਰਹੇ ਸਰਨਾਈ ॥੧॥ ਲੇਹੁ ਆਰਤੀ ਹੋ ਪੁਰਖ ਨਿਰੰਜਨ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਯਹੁ ਭਾਈ ॥ ਠਾਢਾ ਬ੍ਰਹਮਾ ਨਿਗਮ
 ਬੀਚਾਰੈ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਤਤੁ ਤੇਲੁ ਨਾਮੁ ਕੀਆ ਬਾਤੀ ਦੀਪਕੁ ਦੇਹ ਉਜ਼ਾਰਾ ॥ ਜੋਤਿ
 ਲਾਇ ਜਗਦੀਸ ਜਗਾਇਆ ਬੂੜ੍ਹੈ ਬੂੜ੍ਹਨਹਾਰਾ ॥੨॥ ਪਂਚੇ ਸਬਦ ਅਨਾਹਦ ਬਾਜੇ ਸੰਗੇ ਸਾਰਿੰਗਪਾਨੀ ॥ ਕਬੀਰ
 ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਆਰਤੀ ਕੀਨੀ ਨਿਰਕਾਰ ਨਿਰਬਾਨੀ ॥੩॥੫॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਕੀ

੧੯੮੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਮਨ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਮਨੁ ਹੀ ਜਾਨੈ ਕੈ ਬੂੜਲ ਆਗੈ ਕਹੀਐ ॥ ਅਨੰਤਰਜਾਮੀ ਰਾਮੁ ਰਵਾਈ ਮੈ ਡੁ ਕੈਸੇ ਚਹੀਐ ॥੧॥
 ਬੇਧੀਅਲੇ ਗੋਪਾਲ ਗੁਝਾਈ ॥ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਰਵਿਆ ਸਰਬੇ ਠਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਨੈ ਹਾਟੁ ਮਾਨੈ ਪਾਟੁ
 ਮਾਨੈ ਹੈ ਪਾਸਾਰੀ ॥ ਮਾਨੈ ਬਾਸੈ ਨਾਨਾ ਭੇਦੀ ਭਰਮਤੁ ਹੈ ਸੰਸਾਰੀ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਏਹੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ

ਦੁਬਿਧਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ॥ ਸਭੋ ਹੁਕਮੁ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਆਪੇ ਨਿਰਭਤ ਸਮਤੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥੩॥ ਜੋ ਜਨ ਜਾਨਿ ਭਜਹਿ
 ਪੁਰਖੋਤਮੁ ਤਾ ਚੀ ਅਵਿਗਤੁ ਬਾਣੀ ॥ ਨਾਮਾ ਕਹੈ ਜਗਜੀਵਨੁ ਪਾਇਆ ਹਿਰਦੈ ਅਲਖ ਬਿਡਾਣੀ ॥੪॥੧॥
 ਪ੍ਰਭਾਤੀ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜੁਗੇ ਜੁਗੁ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥ ਸਰਬ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ਰਾਮੁ ਰਹਿਆ
 ਰਖਿ ਐਸਾ ਰੂਪੁ ਬਖਾਨਿਆ ॥੧॥ ਗੋਬਿਦੁ ਗਾਜੈ ਸਬਦੁ ਬਾਜੈ ॥ ਆਨਦ ਰੂਪੀ ਮੇਰੋ ਰਾਮਈਆ ॥੧॥
 ਰਹਾਤ ॥ ਬਾਵਨ ਬੀਖੂ ਬਾਨੈ ਬੀਖੇ ਬਾਸੁ ਤੇ ਸੁਖ ਲਾਗਿਲਾ ॥ ਸਰਬੇ ਆਦਿ ਪਰਮਲਾਦਿ ਕਾਸਟ ਚੰਦੁ ਭੈਇਲਾ
 ॥੨॥ ਤੁਮ ਚੇ ਪਾਰਸੁ ਹਮ ਚੇ ਲੋਹਾ ਸੰਗੇ ਕੱਚਨੁ ਭੈਇਲਾ ॥ ਤ੍ਰਾਂ ਦਿਇਅਲੁ ਰਤਨੁ ਲਾਲੁ ਨਾਮਾ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇਲਾ
 ॥੩॥੨॥ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ॥ ਅਕੁਲ ਪੁਰਖ ਇਕੁ ਚਲਿਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਲੁਕਾਇਆ ॥੧॥
 ਜੀਅ ਕੀ ਜੋਤਿ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਈ ॥ ਤੈ ਮੈ ਕੀਆ ਸੁ ਮਾਲ੍ਹਮੁ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਜਿਤ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ਮਾਟੀ
 ਕੁੰਭੇਤ ॥ ਆਪ ਹੀ ਕਰਤਾ ਬੀਠੁਲੁ ਦੇਤ ॥੨॥ ਜੀਅ ਕਾ ਬੰਧਨੁ ਕਰਮੁ ਬਿਆਪੈ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕੀਆ ਸੁ ਆਪੈ
 ਆਪੈ ॥੩॥ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਮਦੇਤ ਇਹੁ ਜੀਤ ਚਿਤਵੈ ਸੁ ਲਹੈ ॥ ਅਮਰੁ ਹੋਇ ਸਦ ਆਕੁਲ ਰਹੈ ॥੪॥੩॥

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਭਗਤ ਬੇਣੀ ਜੀ ਕੀ ੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਤਨਿ ਚੰਦੁ ਮਸਤਕਿ ਪਾਤੀ ॥ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਕਰ ਤਲ ਕਾਤੀ ॥ ਠਗ ਦਿਸਟਿ ਬਗ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥ ਦੇਖਿ
 ਕੈਸਨੋ ਪ੍ਰਾਨ ਮੁਖ ਭਾਗਾ ॥੧॥ ਕਲਿ ਭਗਵਤ ਬੰਦ ਚਿਰਾਂਮਂ ॥ ਕੂਰ ਦਿਸਟਿ ਰਤਾ ਨਿਸਿ ਬਾਦੰ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥
 ਨਿਤਪ੍ਰਤਿ ਇਸਨਾਨੁ ਸਰੀਰਾਂ ॥ ਦੁਇ ਧੋਤੀ ਕਰਮ ਮੁਖਿ ਖੀਰਾਂ ॥ ਰਿਦੈ ਛੁਰੀ ਸਂਧਿਆਨੀ ॥ ਪਰ ਦਰਖੁ ਹਿਰਨ ਕੀ
 ਬਾਨੀ ॥੨॥ ਸਿਲ ਪ੍ਰਯਸਿ ਚਕ੍ਰ ਗਣੇਸਾਂ ॥ ਨਿਸਿ ਜਾਗਸਿ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਵੇਸਾਂ ॥ ਪਗ ਨਾਚਸਿ ਚਿਤੁ ਅਕਰਮਾਂ ॥
 ਏ ਲਮਪਟ ਨਾਚ ਅਧਰਮਾਂ ॥੩॥ ਮ੃ਗ ਆਸਣੁ ਤੁਲਸੀ ਮਾਲਾ ॥ ਕਰ ਊਜਲ ਤਿਲਕੁ ਕਪਾਲਾ ॥ ਰਿਦੈ ਕੂਡੁ
 ਕੱਠਿ ਰੁਦਾਖਾਂ ॥ ਰੇ ਲਮਪਟ ਕੁਸਨੁ ਅਭਾਖਾਂ ॥੪॥ ਜਿਨਿ ਆਤਮ ਤਤੁ ਨ ਚੀਨਿਆ ॥ ਸਭ ਫੋਕਟ ਧਰਮ
 ਅਬੀਨਿਆ ॥ ਕਹੁ ਬੇਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਵੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਟ ਨ ਪਾਵੈ ॥੫॥੧॥

੧੦੮ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਾਗੁ ਜੈਯਾਵਂਤੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥

ਰਾਮੁ ਸਿਮਰਿ ਰਾਮੁ ਸਿਮਰਿ ਇਹੈ ਤੈਰੈ ਕਾਜਿ ਹੈ ॥ ਮਾਇਆ ਕੋ ਸੰਗੁ ਤਿਆਗੁ ਪ੍ਰਭ ਜੂ ਕੀ ਸਰਨਿ ਲਾਗੁ ॥ ਜਗਤ ਸੁਖ ਮਾਨੁ ਮਿਥਿਆ ਝੂਠੀ ਸਭ ਸਾਜੁ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸੁਪਨੇ ਜਿਤ ਧਨੁ ਪਛਾਨੁ ਕਾਹੇ ਪਰਿ ਕਰਤ ਮਾਨੁ ॥ ਬਾਰੂ ਕੀ ਭੀਤਿ ਜੈਸੇ ਬਸੁਧਾ ਕੋ ਰਾਜੁ ਹੈ ॥੧॥ ਨਾਨਕੁ ਜਨੁ ਕਹਤੁ ਬਾਤ ਬਿਨਸਿ ਜੈਹੈ ਤੇਰੋ ਗਾਤੁ ॥ ਛਿਨੁ ਛਿਨੁ ਕਰਿ ਗਇਆਂ ਕਾਲੁ ਤੈਸੇ ਜਾਤੁ ਆਜੁ ਹੈ ॥੨॥੧॥ ਜੈਯਾਵਂਤੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਰਾਮੁ ਭਜੁ ਰਾਮੁ ਭਜੁ ਜਨਮੁ ਸਿਰਾਤੁ ਹੈ ॥ ਕਹਤ ਕਹਾ ਬਾਰ ਬਾਰ ਸਮਝਤ ਨਹ ਕਿਤ ਗਵਾਰ ॥ ਬਿਨਸਤ ਨਹ ਲਗੈ ਬਾਰ ਓਰੇ ਸਮ ਗਾਤੁ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਸਗਲ ਭਰਮ ਡਾਰਿ ਦੇਹਿ ਗੋਬਿੰਦ ਕੋ ਨਾਮੁ ਲੇਹਿ ॥ ਅੰਤਿ ਬਾਰ ਸੰਗਿ ਤੈਰੈ ਇਹੈ ਏਕੁ ਜਾਤੁ ਹੈ ॥੧॥ ਬਿਖਿਆ ਬਿਖੁ ਜਿਤ ਬਿਸਾਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੌ ਜਸੁ ਹੀਏ ਧਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕਹਿ ਪੁਕਾਰਿ ਅਤਸਰੁ ਬਿਵਾਤੁ ਹੈ ॥੨॥੨॥ ਜੈਯਾਵਂਤੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਰੇ ਮਨ ਕਤਨ ਗਤਿ ਹੋਇ ਹੈ ਤੇਰੀ ॥ ਇਹ ਜਗ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੋ ਤਤ ਨਹੀ ਸੁਨਿਆਂ ਕਾਨਿ ॥ ਬਿਖਿਅਨ ਸਿਤ ਅਤਿ ਲੁਭਾਨਿ ਮਤਿ ਨਾਹਿਨ ਫੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਤ ॥ ਮਾਨਸ ਕੋ ਜਨਮੁ ਲੀਨੁ ਸਿਮਰਨੁ ਨਹ ਨਿਮਖ ਕੀਨੁ ॥ ਦਾਰਾ ਸੁਖ ਭਇਆਂ ਦੀਨੁ ਪਗਹੁ ਪਰੀ ਬੇਰੀ ॥੧॥ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕਹਿ ਪੁਕਾਰਿ ਸੁਪਨੈ ਜਿਤ ਜਗ ਪਸਾਰੁ ॥ ਸਿਮਰਤ ਨਹ ਕਿਤ ਸੁਰਾਰਿ ਮਾਇਆ ਜਾ ਕੀ ਚੇਰੀ ॥੨॥੩॥ ਜੈਯਾਵਂਤੀ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਬੀਤ ਜੈਹੈ ਬੀਤ ਜੈਹੈ ਜਨਮੁ ਅਕਾਜੁ ਰੇ ॥ ਨਿਸਿ ਦਿਨੁ ਸੁਨਿ ਕੈ ਪੁਰਾਨ ਸਮਝਤ ਨਹ ਰੇ ਅਜਾਨ ॥ ਕਾਲੁ ਤਤ ਪਹੂੰਚਿਆਂ

आनि कहा जैहै भाजि रे ॥੧॥ रहाउ ॥ असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥ किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥੨॥ राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥ नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥੨॥੪॥

੧੯੮੮ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ
ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ਸਲੋਕ ਸਹਸਕ੃ਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥

ਪਇ ਪੁਸ਼ਕ ਸੰਧਿਆ ਬਾਦਂ ॥ ਸਿਲ ਪ੍ਰਾਜਸਿ ਬਗੁਲ ਸਮਾਧਾਂ ॥ ਮੁਖਿ ਝੂਠੁ ਬਿਭੂਖਨ ਸਾਰਂ ॥ ਤੈਪਾਲ ਤਿਹਾਲ ਬਿਚਾਰਂ ॥ ਗਲਿ ਮਾਲਾ ਤਿਲਕ ਲਿਲਾਟਾਂ ॥ ਦੁਇ ਧੋਤੀ ਕਬਸਤ ਕਪਾਟਾਂ ॥ ਜੋ ਜਾਨਸਿ ਬ੍ਰਹਮਾਂ ਕਰਮਾਂ ॥ ਸਾਭ ਫੋਕਟ ਨਿਸਚੈ ਕਰਮਾਂ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਸਚੈ ਇਧਾਰੈ ॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਟ ਨ ਪਾਰੈ ॥੧॥ ਨਿਹਫਲਾਂ ਤਸਥ ਜਨਮਸਥ ਜਾਵਦ ਬ੍ਰਹਮ ਨ ਬਿੰਦਤੇ ॥ ਸਾਗਰਾਂ ਸੰਸਾਰਸਥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤਰਹਿ ਕੇ ॥ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤੇ ਵਸਿ ਹੈ ਜਿਨਿ ਕਲ ਰਖੀ ਧਾਰਿ ॥੨॥ ਜੋਗ ਸਬਦਾਂ ਗਿਆਨ ਸਬਦਾਂ ਬੇਦ ਸਬਦਾਂ ਤ ਬ੍ਰਾਹਮਣਹ ॥ ਖਾਧਕੀ ਸਬਦਾਂ ਸੂਰ ਸਬਦਾਂ ਸੂਦ ਸਬਦਾਂ ਪਰਾ ਕ੃ਤਹ ॥ ਸਰਕ ਸਬਦਾਂ ਤ ਏਕ ਸਬਦਾਂ ਜੇ ਕੋ ਜਾਨਸਿ ਭੇਤ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੋ ਦਾਸੁ ਹੈ ਸੋਈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਤ ॥੩॥ ਏਕ ਕ੃ਤਾਂ ਤ ਸਰਕ ਦੇਵਾ ਦੇਵ ਦੇਵਾ ਤ ਆਤਮਹ ॥ ਆਤਮਾਂ ਸ੍ਰੀ ਬਾਸ਼ਟੇਵਸਥ ਜੇ ਕੋਈ ਜਾਨਸਿ ਭੇਵ ॥ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੋ ਦਾਸੁ ਹੈ ਸੋਈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਵ ॥੪॥

ਸਲੋਕ ਸਹਸਕ੃ਤੀ ਮਹਲਾ ੫

ਕਤਾਂਚ ਮਾਤਾ ਕਤਾਂਚ ਪਿਤਾ ਕਤਾਂਚ ਬਨਿਤਾ ਬਿਨੋਦ ਸੁਤਹ ॥ ਕਤਾਂਚ ਭਾਤ ਮੀਤ ਹਿਤ ਕਂਧਵ ਕਤਾਂਚ ਮੋਹ ਕੁਟੁੰਬਤੇ ॥ ਕਤਾਂਚ ਚਪਲ ਮੋਹਨੀ ਰੂਪਾਂ ਪੇਖਾਂਤੇ ਤਿਆਗਾਂ ਕਰੋਤਿ ॥ ਰਾਘਵ ਸੰਗ ਭਗਵਾਨ ਸਿਮਰਣ ਨਾਨਕ ਲਕਵਧਾਂ

੧੯੮੮ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ

ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭਂ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਅਚੁਤ ਤਨਹ ॥੧॥ ਧਿਗਾਂ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸਨੇਛਾ ਧਿਗ ਸਨੇਛਾ ਭਾਤ ਬਾਂਧਵਹ ॥ ਧਿਗ ਸੇਛਾ ਬਨਿਤਾ ਬਿਲਾਸ ਸੁਤਹ
 ॥ ਧਿਗ ਸੇਛਾ ਗ੍ਰਹਾਰਥ ਕਹ ॥ ਸਾਧਸੰਗ ਸੇਹ ਸਤਿਧੀ ਸੁਖਧੀ ਬਸੰਤਿ ਨਾਨਕਹ ॥੨॥ ਮਿਥਿਧੀ ਦੇਛਾ ਖੀਣਤ ਬਲਨੰ ॥
 ਬਰਧਾਂਤਿ ਜਰੂਆ ਹਿਤਧੀ ਮਾਡਿਆ ॥ ਅਤਿਧੀ ਆਸਾ ਆਥਿਤਿ ਭਵਨੰ ॥ ਗਨਨਤ ਸ਼ਾਸਾ ਭੈਯਾਨ ਧਰਮੰ ॥ ਪਤਨੀ ਮੋਹ
 ਕੂਪ ਦੁਰਲਭੀ ਦੇਛਾ ਤਤ ਆਸ਼ਧੀ ਨਾਨਕ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਪਾਲ ਕ੃ਪਾ ॥੩॥ ਕਾਚ ਕੋਟਾਂ ਰਖਾਂਤ ਤੋਧੀ
 ਲੇਪਨੰ ਰਕਤ ਚਰਮਣਹ ॥ ਨਵਨੀ ਦੁਆਰਾਂ ਭੀਤ ਰਹਿਤਾਂ ਬਾਡਿ ਰੂਪਾਂ ਅਸਥਾਂਭਨਹ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮੰ ਨਹ ਸਿਮਰਨੀ
 ਅਗਿਆਨੀ ਜਾਨਨਿ ਅਸਥਿਰੀ ॥ ਦੁਰਲਭ ਦੇਹ ਉਧਰਨੀ ਸਾਧ ਸਰਣ ਨਾਨਕ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ
 ਜਪਨੀ ॥੪॥ ਸੁਭਾਂ ਤੁਧੀ ਅਚੁਤ ਗੁਣਧੀ ਪ੍ਰੂਨੰ ਬਹੁਲੋ ਕ੃ਪਾਲਾ ॥ ਗੰਭੀਰੀ ਊਚੈ ਸਰਬਗਿ ਅਪਾਰਾ ॥ ਪ੍ਰਿਤਿਆ
 ਪ੍ਰਤੀਂ ਬਿਸ਼ਾਮ ਚਰਣੀ ॥ ਅਨਾਥ ਨਾਥੇ ਨਾਨਕ ਸਰਣੀ ॥੫॥ ਮੂਗੀ ਪੇਖਾਂਤ ਬਧਿਕ ਪ੍ਰਹਾਰੇਣ ਲਖਾਂ ਆਵਧਾਂ ॥
 ਅਹੋ ਜਸਥ ਰਖੇਣ ਗੋਪਾਲਹ ਨਾਨਕ ਰੋਮ ਨ ਛੇਦੁਤੇ ॥੬॥ ਬਹੁ ਜਤਨ ਕਰਤਾ ਬਲਵਨੀ ਕਾਰੀ ਸੇਵਨੀ ਸੂਰਾ
 ਚਤੁਰ ਦਿਸਹ ॥ ਬਿਖਮ ਥਾਨ ਬਸੰਤ ਊਚਹ ਨਹ ਸਿਮਰਨੀ ਮਰਣੀ ਕਦਾਂਚਹ ॥ ਹੋਵਨੀ ਆਗਿਆ ਭਗਵਾਨ
 ਪੁਰਖਹ ਨਾਨਕ ਕੀਟੀ ਸਾਸ ਅਕਰਖਤੇ ॥੭॥ ਸਬਦੀ ਰਤਾਂ ਹਿਤਾਂ ਮਿਡਿਆ ਕੀਰਤਾਂ ਕਲੀ ਕਰਮ ਕ੃ਤੂਆ ॥
 ਮਿਟਿਨੀ ਤਕਾਗਤ ਭਰਮ ਮੋਹਾਂ ॥ ਭਗਵਾਨ ਰਮਣੀ ਸਰਬਕ ਥਾਨੀਂ ॥ ਦੂਸਟ ਤੁਧੀ ਅਮੋਘ ਦਰਸਨੀ ਬਸੰਤ ਸਾਧ
 ਰਸਨਾ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਤੀਂ ਜਾਪੁ ਜਪਨਾ ॥੮॥ ਘਟਨੀ ਰੂਪਾਂ ਘਟਨੀ ਦੀਪਾਂ ਘਟਨੀ ਰਵਿ
 ਸਸੀਅਰ ਨਖਾਂਕ ਗਗਨੀ ॥ ਘਟਨੀ ਬਸੁਧਾ ਗਿਰਿ ਤਰ ਸਿਖਿਓਂ ॥ ਘਟਨੀ ਲਲਨਾ ਸੁਤ ਭਾਤ ਹੀਤਾਂ ॥ ਘਟਨੀ
 ਕਨਿਕ ਮਾਨਿਕ ਮਾਡਿਆ ਸ਼ੁਰੂਪਾਂ ॥ ਨਹ ਘਟਨੀ ਕੇਵਲ ਗੋਪਾਲ ਅਚੁਤ ॥ ਅਸਥਿਰੀ ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਜਨ ॥੯॥
 ਨਹ ਬਿਲਮਕ ਧਰਮੀ ਬਿਲਮਕ ਪਾਪਾਂ ॥ ਦੂਝੁਤ ਨਾਮੀ ਤਜੁਤ ਲੋਭੀ ॥ ਸਰਣੀ ਸੰਤ ਕਿਲਬਿਖ ਨਾਸੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਧਰਮ
 ਲਖਿਧਾਨੀ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਹ ਸੁਪ੍ਰਸਾਨੀ ਮਾਧਵਹ ॥੧੦॥ ਮਿਰਤ ਮੋਹਾਂ ਅਲਪ ਬੁਧਧੀ ਰਖਾਂਤ ਬਨਿਤਾ ਬਿਨੋਦ ਸਾਹਾਂ ॥
 ਜੌਬਨ ਬਹਿਕ੍ਰਮ ਕਨਿਕ ਕੁੰਡਲਹ ॥ ਬਚਿਤ ਮੰਦਿਰ ਸੋਭਾਂਤ ਬਸਕਾ ਇਤਿਧੀ ਮਾਡਿਆ ਬਧਾਇਤਾਂ ॥ ਹੇ ਅਚੁਤ
 ਸਰਣੀ ਸੰਤ ਨਾਨਕ ਭੋ ਭਗਵਾਨਾਏ ਨਮਹ ॥੧੧॥ ਜਨਮੀ ਤ ਮਰਣੀ ਹਰਖੀ ਤ ਸੋਗੀ ਭੋਗੀ ਤ ਰੋਗੀ ॥ ਊਚੀ ਤ ਨੀਚੀ

नाना सु मूचं ॥ राजं त मानं अभिमानं त हीनं ॥ प्रविरति मारगं वरतंति बिनासनं ॥ गोबिंद भजन
 साध संगेण असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥ १२ ॥ किरपंत हरीअं मति ततु गिआनं ॥
 बिगसीधि बुधा कुसल थानं ॥ बस्यिंत रिखिअं तिआगि मानं ॥ सीतलम्त रिदयं दृढ़ संत गिआनं ॥
 रह्यत जनमं हरि दरस लीणा ॥ बाजंत नानक सबद बीणाँ ॥ १३ ॥ कह्यत बेदा गुणंत गुनीआ सुणंत
 बाला बहु बिधि प्रकारा ॥ दृढ़ंत सुबिदिआ हरि हरि कृपाला ॥ नाम दानु जाचंत नानक दैनहार
 गुर गोपाला ॥ १४ ॥ नह चिंता मात पित भ्रातह नह चिंता कछु लोक कह ॥ नह चिंता बनिता सुत
 मीतह प्रविरति माइआ सनबंधनह ॥ दइआल एक भगवान पुरखह नानक सरब जीअ प्रतिपालकह
 ॥ १५ ॥ अनित्य वितं अनित्य चितं अनित्य आसा बहु बिधि प्रकारं ॥ अनित्य हेतं अह्य बंधं भरम माइआ
 मलनं बिकारं ॥ फिरंत जोनि अनेक जठरागनि नह सिमरंत मलीण बुध्यं ॥ हे गोबिंद करत माइआ
 नानक पतित उधारण साध संगमह ॥ १६ ॥ गिरंत गिरि पतित पातालं जलम्त देदीप्य बैसौँतरह ॥
 बह्यति अगाह तोयं तरंगं दुखंत ग्रह चिंता जनमं त मरणह ॥ अनिक साधनं न सिध्यते नानक असर्थंभं
 असर्थंभं असर्थंभं सबद साध स्वजनह ॥ १७ ॥ घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥
 मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥ १८ ॥ अंधकार सिमरत
 प्रकासं गुण रमंत अघ खंडनह ॥ रिद बसंति भै भीत दूतह करम करत महा निरमलह ॥ जनम मरण
 रह्यत स्रोता सुख समूह अमोघ दरसनह ॥ सरणि जोगं संत पृथ नानक सो भगवान खेमं करोति ॥ १९ ॥
 पाछं करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह ॥ निरधन भयं धनवंतह रोगीअं रोग खंडनह ॥ भगत्यं
 भगति दानं राम नाम गुण कीरतनह ॥ पारब्रह्म पुरख दातारह नानक गुर सेवा किं न लभ्यते
 ॥ २० ॥ अधरं धरं धारणह निरधनं धन नाम नरहरह ॥ अनाथ नाथ गोबिंदह बलहीण बल केसवह
 ॥ सरब भूत दयाल अचुत दीन बाँधव दामोदरह ॥ सरबग्य पूरन पुरख भगवानह भगति वछल

करुणा मयह ॥ घटि घटि बसंत बासुदेवह पारब्रहम परमेसुरह ॥ जाचंति नानक कृपाल प्रसादं नह
 बिसरंति नह बिसरंति नाराइणह ॥ २१ ॥ नह समरथं नह सेवकं नह प्रीति परम पुरखोत्तमं ॥
 तव प्रसादि सिमरते नामं नानक कृपाल हरि हरि गुरं ॥ २२ ॥ भरण पोखण करंत जीआ बिस्राम
 छादन देवंत दानं ॥ सृजंत रतन जनम चतुर चेतनह ॥ वरतंति सुख आनन्द प्रसादह ॥ सिमरंत
 नानक हरि हरि हरे ॥ अनित्य रचना निरमोह ते ॥ २३ ॥ दानं परा पूरबेण भुंचंते महीपते ॥ बिपरीत
 बुध्यं मारत लोकह नानक चिरंकाल दुख भोगते ॥ २४ ॥ बृथा अनुग्रहा गोबिंदह जस्य सिमरण रिदंतरह
 ॥ आरोग्यं महा रोग्यं बिसिमृते करुणा मयह ॥ २५ ॥ रमणं केवलं कीरतनं सुधरमं देह धारणह ॥
 अंमृत नामु नाराइण नानक पीवतं संत न तृप्यते ॥ २६ ॥ सहण सील संतं सम मिकस्य दुरजनह ॥
 नानक भोजन अनिक प्रकारेण निंदक आवध होइ उपतिसठते ॥ २७ ॥ तिरसकार नह भवंति नह
 भवंति मान भंगनह ॥ सोभा हीन नह भवंति नह पोह्यति संसार दुखनह ॥ गोबिंद नाम जपंति मिलि
 साध संगह नानक से प्राणी सुख बासनह ॥ २८ ॥ सैना साध समूह सूर अजितं सन्नाह्य तनि निंम्रताह ॥
 आवधह गुण गोबिंद रमणं ओट गुर सबद कर चरमणह ॥ आरूड़ते अस्त्र रथ नागह बुझंते प्रभ
 मारगह ॥ बिचरते निरभयं सुत्र सैना धायंते गुपाल कीरतनह ॥ जितते बिस्त्र संसारह नानक वस्यं
 करोति पंच तस्करह ॥ २९ ॥ मृग तृसना गंधरब नगरं द्रुम छाया रचि दुरमतिह ॥ ततह कुटंब
 मोह मिथ्या सिमरंति नानक राम राम नामह ॥ ३० ॥ नच बिदिआ निधान निगमं नच गुणग्य नाम
 कीरतनह ॥ नच राग रतन कंठं नह चंचल चतुर चातुरह ॥ भाग उदिम लबध्यं माइआ नानक
 साधसंगि खल पंडितह ॥ ३१ ॥ कंठ रमणीय राम राम माला हसत ऊच प्रेम धारणी ॥ जीह भणि जो
 उत्तम सलोक उधरणं नैन न्नदनी ॥ ३२ ॥ गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी धिगंत जनम भ्रस्टणह ॥ कूकरह
 सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥ ३३ ॥ चरणारबिंद भजनं रिद्यं नाम धारणह ॥

कीरतनं साधसंगेण नानक नह दृसटंति जमदूतनह ॥३४॥ नच दुरलभं धनं रूपं नच दुरलभं सूरग
 राजनह ॥ नच दुरलभं भोजनं बिंजनं नच दुरलभं सूछ अंबरह ॥ नच दुरलभं सुत मित्र भ्रात बाँधव
 नच दुरलभं बनिता बिलासह ॥ नच दुरलभं बिदिआ प्रबीणं नच दुरलभं चतुर चंचलह ॥ दुरलभं
 एक भगवान नामह नानक लबध्यं साधसंगि कृपा प्रभं ॥३५॥ जत कतह ततह दृसटं सूरग मरत
 पयाल लोकह ॥ सरबत्र रमणं गोबिंदह नानक लेप छेप न लिप्यते ॥३६॥ बिखया भयंति अंमृतं
 दुसटाँ सखा स्वजनह ॥ दुखं भयंति सुख्यं भै भीतं त निरभयह ॥ थान बिहून बिस्राम नामं नानक कृपाल
 हरि हरि गुरह ॥३७॥ सरब सील ममं सीलं सरब पावन मम पावनह ॥ सरब करतब ममं करता
 नानक लेप छेप न लिप्यते ॥३८॥ नह सीतलं चंद्र देवह नह सीतलं बावन चंदनह ॥ नह सीतलं
 सीत रुतेण नानक सीतलं साध स्वजनह ॥३९॥ मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह ॥ ग्यानं सम
 दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह ॥ दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजितह ॥ भोजनं गोपाल
 कीरतनं अलप माया जल कमल रहतह ॥ उपदेसं सम मित्र सक्रह भगवंत भगति भावनी ॥ पर निंदा
 नह स्रोति स्रवणं आपु त्यागि सगल रेणुकह ॥ खट लख्यण पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह
 ॥४०॥ अजा भोगंत कंद मूलं बसंते समीपि केहरह ॥ तत्र गते संसारह नानक सोग हरखं बिआपते
 ॥४१॥ छलं छिद्रं कोटि बिघनं अपराधं किलबिख मलं ॥ भरम मोह्न मान अपमानं मदं माया बिआपितं
 ॥ मृत्यु जनम भ्रमंति नरकह अनिक उपावं न सिध्यते ॥ निरमलं साध संगह जपंति नानक गोपाल
 नामं ॥ रमंति गुण गोबिंद नित प्रतह ॥४२॥ तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह ॥
 करण कारण समरथह दानु देत प्रभु पूरनह ॥ निरास आस करणं सगल अरथ आलयह ॥ गुण
 निधान सिमरंति नानक सगल जाचंत जाचिकह ॥४३॥ दुरगम सथान सुगमं महा दूख सरब सूखणह
 ॥ दुरबचन भेद भरमं साकत पिसनं त सुरजनह ॥ असथितं सोग हरखं भै खीणं त निरभवह ॥

भै अटवीअं महा नगर बासं धरम लख्यण प्रभ मङ्गिआ ॥ साध संगम राम राम रमणं सरणि नानक
 हरि हरि दयाल चरणं ॥४४॥ हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥ गण गंधरब देव
 मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह ॥ हरि करणहारं नमसकारं सरणि नानक जगदीस्वरह ॥४५॥ हे कामं
 नरक बिस्रामं बहु जोनी भ्रमावणह ॥ चित हरणं तै लोक गंम्यं जप तप सील बिदारणह ॥ अलप सुख
 अवित चंचल ऊच नीच समावणह ॥ तव भै बिमुचित साध संगम ओट नानक नाराङ्गिणह ॥४६॥
 हे कलि मूल क्रोधं कदंच करुणा न उपरजते ॥ बिखयंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति जथा मरकटह ॥
 अनिक सासन ताड़िति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥ दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सरब
 जीआ रख्या करोति ॥४७॥ हे लोभा लम्पट संग सिरमोरह अनिक लहरी कलोलते ॥ धावंत जीआ बहु
 प्रकारं अनिक भाँति बहु डोलते ॥ नच मित्रं नच इस्टं नच बाधव नच मात पिता तव लजया ॥
 अकरणं करोति अखाद्य खाद्यं असाज्यं साजि समजया ॥ त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिग्याप्ति नानक हरि
 नरहरह ॥४८॥ हे जनम मरण मूलं अह्वाकारं पापातमा ॥ मित्रं तजंति सत्रं दृड़िति अनिक माया
 बिस्तीरनह ॥ आवंत जावंत थकंत जीआ दुख सुख बहु भोगणह ॥ भ्रम भयान उदिआन रमणं महा
 बिकट असाध रोगणह ॥ बैद्यं पारब्रह्म परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे ॥४९॥ हे प्राण नाथ
 गोबिंदह कृपा निधान जगद् गुरो ॥ हे संसार ताप हरणह करुणा मै सभ दुख हरो ॥ हे सरणि जोग
 दयालह दीना नाथ मया करो ॥ सरीर सूसथ खीण समए सिमरंति नानक राम दामोदर माधवह
 ॥५०॥ चरण कमल सरणं रमणं गोपाल कीरतनह ॥ साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह
 ॥५१॥ सिर मस्तक रख्या पारब्रह्मं हस्त काया रख्या परमेस्वरह ॥ आत्म रख्या गोपाल सुआमी धन
 चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ सरब रख्या गुर दयालह भै दूख बिनासनह ॥ भगति वछल अनाथ नाथे
 सरणि नानक पुरख अचुतह ॥५२॥ जेन कला धारिओ आकासं बैसंतरं कासट बेसटं ॥ जेन कला

ਸਸਿ ਸੂਰ ਨਖ਼ਾਵ ਜੋਤਿਧਿ ਸਾਸਿ ਸਰੀਰ ਧਾਰਣਿ ॥ ਜੇਨ ਕਲਾ ਮਾਤ ਗਰਮ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿ ਨਹ ਛੇਦੰਤ ਜਠਰ ਰੋਗਣਹ ॥
 ਤੇਨ ਕਲਾ ਅਸਥਿਭਿੰ ਸਰੋਵਰਿ ਨਾਨਕ ਨਹ ਛਿਜਨਿ ਤਰੰਗ ਤੋਧਣਹ ॥੫੩॥ ਗੁਸਾਈ ਗਰਿ਷਼ ਰੂਪੇਣ ਸਿਮਰਣ
 ਸਰਬਕ ਜੀਵਣਹ ॥ ਲਬਧਿੰ ਸਤ ਸੰਗੇਣ ਨਾਨਕ ਸ਼ਉ ਮਾਰਗ ਹਰਿ ਭਗਤਣਹ ॥੫੪॥ ਮਸਕਿੰ ਭਗਨਤ ਸੈਲ
 ਕਰਦਮਿੰ ਤਰੰਤ ਪਪੀਲਕਹ ॥ ਸਾਗਰਿ ਲਮਧਿੰਤਿ ਪਿੰਗਿੰ ਤਮ ਪਰਗਾਸ ਅਂਧਕਹ ॥ ਸਾਧ ਸੰਗੇਣਿ ਸਿਮਰਿੰਤਿ ਗੋਬਿੰਦ
 ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥੫੫॥ ਤਿਲਕ ਹੀਣਿੰ ਜਥਾ ਬਿਧਾ ਅਮਰ ਹੀਣਿੰ ਜਥਾ ਰਾਜਨਹ ॥ ਆਵਧ ਹੀਣਿੰ
 ਜਥਾ ਸੂਰਾ ਨਾਨਕ ਧਰਮ ਹੀਣਿੰ ਤਥਾ ਬੈਸ਼ਵਹ ॥੫੬॥ ਨ ਸੰਖਿੰ ਨ ਚਕਿੰ ਨ ਗਦਾ ਨ ਸਿਆਮਿੰ ॥ ਅਸ਼੍ਵਰਜ ਰੂਪਿੰ
 ਰਵਿਤ ਜਨਮਿੰ ॥ ਨੇਤ ਨੇਤ ਕਥਿੰਤਿ ਬੇਦਾ ॥ ਊਚ ਮੂਚ ਅਪਾਰ ਗੋਬਿੰਦਹ ॥ ਬਸਿੰਤਿ ਸਾਧ ਰਿਦਿਧਿੰ ਅਚੁਤ ਬੁਝਿੰਤਿ
 ਨਾਨਕ ਬਡਭਾਗੀਅਹ ॥੫੭॥ ਉਦਿਆਨ ਬਸਨਿੰ ਸੰਸਾਰਿੰ ਸਨਕਿੰਧੀ ਸ਼ਾਨ ਸਿਆਲ ਖਰਹ ॥ ਬਿਖਮ ਸਥਾਨ
 ਮਨ ਮੋਹ ਮਦਿਰਿੰ ਮਹਾਁ ਅਸਾਧ ਪੰਚ ਤਸਕਰਹ ॥ ਹੀਤ ਮੋਹ ਭੈ ਭਰਮ ਭ੍ਰਮਣਿੰ ਅਛਾ ਫਾਂਸ ਤੀਖਾਣਿੰ ਕਠਿਨਹ ॥
 ਪਾਵਕ ਤੋਅ ਅਸਾਧ ਘੋਰਿੰ ਅਗਮ ਤੀਰ ਨਹ ਲਮਧਨਹ ॥ ਭਜੁ ਸਾਧਸਿੰਗਿ ਗੋਪਾਲ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਰਣ
 ਤਥਾਣ ਕ੃ਪਾ ॥੫੮॥ ਕ੃ਪਾ ਕਰੰਤ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਪਾਲਹ ਸਗਲਿੰ ਰੋਗ ਖੰਡਣਹ ॥ ਸਾਧ ਸੰਗੇਣਿ ਗੁਣ ਰਮਤ
 ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰਹ ॥੫੯॥ ਸਿਆਮਲਿੰ ਮਧੁਰ ਮਾਨੁਖਿੰ ਰਿਦਿਧਿੰ ਭੂਮਿ ਵੈਰਣਹ ॥ ਨਿਵਿੰਤਿ ਹੋਵਿੰਤਿ
 ਮਿਥਿਆ ਚੇਤਨਿੰ ਸਤ ਸ਼ੁਜਨਹ ॥੬੦॥ ਅਚੇਤ ਮੂੜਾ ਨ ਜਾਣਿੰਤ ਘਟਿੰਤ ਸਾਸਾ ਨਿਤ ਪ੍ਰਤੇ ॥ ਛਿਜਿੰਤ ਮਹਾ ਸੁੰਦਰੀ
 ਕਾਁਡਿਆ ਕਾਲ ਕਨਿਆ ਗ੍ਰਾਸਤੇ ॥ ਰਚਿੰਤਿ ਪੁਰਖਹ ਕੁਟੰਬ ਲੀਲਾ ਅਨਿਤ ਆਸਾ ਬਿਖਿਆ ਬਿਨੋਦ ॥ ਭ੍ਰਮਿੰਤਿ
 ਭ੍ਰਮਿੰਤਿ ਬਹੁ ਜਨਮ ਹਾਰਿਆ ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਕਰੁਣਾ ਮਧਹ ॥੬੧॥ ਹੇ ਜਿਹਬੇ ਹੇ ਰਸਗੇ ਮਧੁਰ ਪ੍ਰਤੀ ਤੁਧਿੰ ॥
 ਸਤ ਹਤਿੰ ਪਰਮ ਬਾਦੁੰ ਅਕਰਤ ਏਥਹ ਸੁਧ ਅਛਾਣਹ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਦਾਮੋਦਰ ਮਾਧਵੇ ॥੬੨॥ ਗਰਬਿੰਤਿ ਨਾਰੀ ਮਦੋਨ
 ਮਤਿੰ ॥ ਬਲਵਿੰਤ ਬਲਾਤ ਕਾਰਣਹ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਨਹ ਭਜਿੰਤ ਤ੍ਰਣ ਸਮਾਨਿ ਧਿਗੁ ਜਨਮਨਹ ॥ ਹੇ ਪਪੀਲਕਾ
 ਗ੍ਰਸਟੇ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿਮਰਣ ਤੁਧਿੰ ਧਨੇ ॥ ਨਾਨਕ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਨਮੋ ਨਮਹ ॥੬੩॥ ਤ੍ਰਣਿੰ ਤ ਮੇਰੁੰ ਸਹਕਿੰ ਤ ਹਰੀਅਂ
 ॥ ਕ੍ਰਿੰਤ ਤ ਤਰੀਅਂ ਊਣਿੰ ਤ ਭਰੀਅਂ ॥ ਅਂਧਕਾਰ ਕੋਟਿ ਸੂਰ ਤੁਜਾਰਿੰ ॥ ਬਿਨਵਿੰਤਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਰ ਦਿਆਰਿੰ ॥੬੪॥

ब्रह्मणहं संगि उधरणं ब्रह्म करम जि पूरणह ॥ आतम रतं संसार गद्धा ते नर नानक निहफलह ॥६५॥ पर दरब हिरणं बहु विघ्न करणं उचरणं सरब जीअ कह ॥ लउ लई तृसना अतिपति मन माए करम करत सि सूकरह ॥६६॥ मते समेव चरणं उधरणं भै दुतरह ॥ अनेक पातिक हरणं नानक साध संगम न संसयह ॥६७॥४॥

महला ५ गाथा

੧੭ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

करपूर पुहप सुगंधा परस मानुख्य देहा मलीणं ॥ मजा रुधिर दुगंधा नानक अथि गरबेण अग्यानणो ॥१॥ परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह ॥ गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते ॥२॥ जाणो सति होवंतो मरणो दृसटेण मिथिआ ॥ कीरति साथि चलम्थो भण्ठति नानक साध संगेण ॥३॥ माया चित भरमेण इसट मित्रेखु बाँधवह ॥ लबध्यं साध संगेण नानक सुख असथानं गोपाल भजणं ॥४॥ मैलागर संगेण निमु बिरख सि चंदनह ॥ निकटि बसंतो बाँसो नानक अह्न बुधि न बोहते ॥५॥ गाथा गुंफ गोपाल कथं मथं मान मरदनह ॥ हतं पंच सलेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥६॥ बचन साध सुख पंथा लह्नथा बड करमणह ॥ रह्नता जनम मरणेन रमणं नानक हरि कीरतनह ॥७॥ पत्र भुरिजेण झड़ीयं नह जड़ीअं पेड संपता ॥ नाम बिहूण बिखमता नानक बह्नति जोनि बासरो रैणी ॥८॥ भावनी साध संगेण लभंतं बड भागणह ॥ हरि नाम गुण रमणं नानक संसार सागर नह बिआपणह ॥९॥ गाथा गूँड अपारं समझणं बिरला जनह ॥ संसार काम तजणं नानक गोबिंद रमणं साध संगमह ॥१०॥ सुमंत्र साध बचना कोटि दोख बिनासनह ॥ हरि चरण कमल ध्यानं नानक कुल समूह उधारणह ॥११॥ सुंदर मंदर सैणह जेण मध्य हरि कीरतनह ॥ मुकते रमण गोबिंदह नानक लबध्यं बड भागणह ॥१२॥ हरि लबधो मित्र सुमितो ॥ बिदारण कदे न चितो ॥ जा का असथलु तोलु अमितो ॥ सुर्व नानक सखा जीअ संगि कितो ॥१३॥ अपजसं मिटंत सत पुक्रह ॥ सिमरतब्य रिटै

ਗੁਰ ਮੰਤਣਹ ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਗਵਾਨ ਅਚੁਤ ॥ ਨਾਨਕ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਤਾਰਣਹ ॥੧੪॥ ਮਰਣ ਬਿਸਰਣ ਗੋਬਿੰਦਹ ॥
 ਜੀਵਣ ਹਰਿ ਨਾਮ ਧਿਆਵਣਹ ॥ ਲਭਣ ਸਾਧ ਸੰਗੇਣ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਣਹ ॥੧੫॥ ਦਸਨ ਬਿਛੂਨ ਭੁਧਿਗੁ
 ਮੰਤੰ ਗਾਰੁੜੀ ਨਿਵਾਰਨ ॥ ਬਿਧਿ ਉਪਾਡਣ ਸੰਤਾਂ ॥ ਨਾਨਕ ਲਬਧ ਕਰਮਣਹ ॥੧੬॥ ਜਥ ਕਥ ਰਮਣ ਸਰਣ
 ਸਰਬਕ ਜੀਅਣਹ ॥ ਤਥ ਲਗਣ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਨਕ ॥ ਪਰਸਾਦਾਂ ਗੁਰ ਦਰਸਨਹ ॥੧੭॥ ਚਰਣਾਰਬਿੰਦ ਮਨ ਬਿਧਿਗੁ
 ਸਰਬ ਕੁਸਲਣਹ ॥ ਗਾਥਾ ਗਾਵਨਿ ਨਾਨਕ ਭਵਿਧ ਪਰਾ ਪੂਰਬਣਹ ॥੧੮॥ ਸੁਭ ਬਚਨ ਰਮਣ ਗਵਣ ਸਾਧ ਸੰਗੇਣ
 ਤੁਧਰਣਹ ॥ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰਾਂ ਨਾਨਕ ਪੁਨਰਾਪਿ ਜਨਮ ਨ ਲਭਿਤੇ ॥੧੯॥ ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ਸਾਸਤ ਬੀਚਾਰਾਂ ॥ ਏਕਕਾਰ
 ਨਾਮ ਤੁਰ ਧਾਰਾਂ ॥ ਕੁਲਹ ਸਮੂਹ ਸਗਲ ਤੁਧਾਰਾਂ ॥ ਬਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕ ਕੋ ਤਾਰਾਂ ॥੨੦॥ ਸਿਮਰਣ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮ
 ਤੁਧਰਣ ਕੁਲ ਸਮੂਹਣਹ ॥ ਲਬਧਿਅਂ ਸਾਧ ਸੰਗੇਣ ਨਾਨਕ ਵਡਭਾਗੀ ਭੇਟਨਿ ਦਰਸਨਹ ॥੨੧॥ ਸਰਬ ਦੋਖ
 ਪਰਨਿਆਗੀ ਸਰਬ ਧਰਮ ਦੂਝਨਣਾਂ ॥ ਲਬਧੇਣਿ ਸਾਧ ਸੰਗੇਣਿ ਨਾਨਕ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਧਣਾਂ ॥੨੨॥ ਹੋਧੋ ਹੈ
 ਹੋਕਵਤੋ ਹਰਣ ਭਰਣ ਸੰਪੂਰਣਾਂ ॥ ਸਾਧੂ ਸਤਮ ਜਾਣੋ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਾਰਣ ॥੨੩॥ ਸੁਖੇਣ ਬੈਣ ਰਤਨ ਰਚਨ
 ਕਸੁੰਭ ਰੰਗਣਾਂ ॥ ਰੋਗ ਸੋਗ ਬਿਓਗਾਂ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਨ ਸੁਪਨਹ ॥੨੪॥

ਫੁਨਹੇ ਮਹਲਾ ੫ ੧੪ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਹਾਥਿ ਕਲਮਮ ਅਗੰਮ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖਾਕਤੀ ॥ ਤੁਰਝਿ ਰਹਿਓ ਸਭ ਸੰਗਿ ਅਨੂਪ ਰੂਪਾਵਤੀ ॥ ਤੁਸਤਤਿ ਕਹਨੁ ਨ
 ਜਾਇ ਸੁਖਹੁ ਤੁਹਾਰੀਆ ॥ ਮੋਹੀ ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥੧॥ ਸੰਤ ਸਭਾ ਮਹਿ ਬੈਸਿ ਕਿ ਕੀਰਤਿ
 ਮੈ ਕਹਾਁ ॥ ਅਰਪੀ ਸਭੁ ਸੀਗਾਰੁ ਏਹੁ ਜੀਤ ਸਭੁ ਦਿਵਾ ॥ ਆਸ ਪਿਆਸੀ ਸੇਜ ਸੁ ਕਨਿ ਵਿਛਾਈਐ ॥ ਹਰਿਹਾਁ
 ਮਸਤਕਿ ਹੋਵੈ ਭਾਗੁ ਤ ਸਾਜਨੁ ਪਾਈਐ ॥੨॥ ਸਖੀ ਕਾਜਲ ਹਾਰ ਤੰਬੋਲ ਸਭੈ ਕਿਛੁ ਸਾਜਿਆ ॥ ਸੋਲਹ ਕੀਏ
 ਸੀਗਾਰ ਕਿ ਅੰਜਨੁ ਪਾਜਿਆ ॥ ਜੇ ਘਰਿ ਆਵੈ ਕੰਤੁ ਤ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਕਨੈ ਬਾੜ੍ਹੁ ਸੀਗਾਰੁ ਸਭੁ
 ਬਿਰਥਾ ਜਾਈਐ ॥੩॥ ਜਿਸੁ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਕੰਤੁ ਸਾ ਵਡਭਾਗਣੇ ॥ ਤਿਸੁ ਬਣਿਆ ਹਭੁ ਸੀਗਾਰੁ ਸਾਈ
 ਸੋਹਾਗਣੇ ॥ ਹਤ ਸੁਤੀ ਹੋਇ ਅਚਿੰਤ ਮਨਿ ਆਸ ਪੁਰਾਈਆ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਜਾ ਘਰਿ ਆਇਆ ਕੰਤੁ ਤ ਸਭੁ ਕਿਛੁ

ਪਾਈਆ ॥੪॥ ਆਸਾ ਇਤੀ ਆਸ ਕਿ ਆਸ ਪੁਰਾਈਐ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਭਏ ਦਿਆਲ ਤ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ॥ ਮੈ
 ਤਨਿ ਅਵਗਣ ਬਹੁਤੁ ਕਿ ਅਵਗਣ ਛਾਇਆ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਸਤਿਗੁਰ ਭਏ ਦਿਆਲ ਤ ਮਨੁ ਠਹਰਾਇਆ ॥੫॥
 ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬੇਅੰਤੁ ਬੇਅੰਤੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਦੁਤਰੁ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਰਾਇਆ ॥ ਮਿਟਿਆ ਆਵਾ ਗਤਣੁ
 ਜਾਁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥੬॥ ਮੈਰੈ ਹਾਥਿ ਪਦਮੁ ਆਗਨਿ
 ਸੁਖ ਬਾਸਨਾ ॥ ਸਖੀ ਮੌਰੈ ਕੱਠਿ ਰਤਨੁ ਪੇਖਿ ਦੁਖੁ ਨਾਸਨਾ ॥ ਬਾਸਤ ਸੰਗਿ ਗੁਪਾਲ ਸਗਲ ਸੁਖ ਰਸਿ ਹਰਿ ॥
 ਹਰਿਹਾਁ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਬਸਹਿ ਜਿਸੁ ਸਦਾ ਕਰਿ ॥੭॥ ਪਰ ਤੂਅ ਰਾਵਣਿ ਜਾਹਿ ਸੇਈ ਤਾ ਲਾਜੀਅਹਿ
 ॥ ਨਿਤਪ੍ਰਤਿ ਹਿਰਹਿ ਪਰ ਦਰਖੁ ਛਿਦ੍ਰ ਕਤ ਢਾਕੀਅਹਿ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਮਤ ਪਵਿਤ ਸਗਲ ਕੁਲ ਤਾਰੰਈ ॥
 ਹਰਿਹਾਁ ਸੁਨਤੇ ਭਏ ਪੁਨੀਤ ਪਾਰਖਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੰਈ ॥੮॥ ਊਪਰਿ ਕਨੈ ਅਕਾਸੁ ਤਲੈ ਧਰ ਸੋਹਤੀ ॥ ਦਹ ਦਿਸ
 ਚਮਕੈ ਬੀਜੁਲਿ ਮੁਖ ਕਤ ਜੋਹਤੀ ॥ ਖੋਜਤ ਫਿਰਤ ਬਿਦੇਸਿ ਪੀਤ ਕਤ ਪਾਈਐ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਜੇ ਮਸਤਕਿ ਹੋਵੈ
 ਭਾਗੁ ਤ ਦਰਸਿ ਸਮਾਈਐ ॥੯॥ ਡਿਠੇ ਸਭੇ ਥਾਵ ਨਹੀਂ ਤੁਧੁ ਜੇਹਿਆ ॥ ਬਧੋਹੁ ਪੁਰਖਿ ਬਿਧਾਤੈ ਤਾਁ ਤੂ ਸੋਹਿਆ
 ॥ ਕਵਸਦੀ ਸਘਨ ਅਪਾਰ ਅਨੂਪ ਰਾਮਦਾਸ ਪੁਰ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਨਾਨਕ ਕਸਮਲ ਜਾਹਿ ਨਾਇਐ ਰਾਮਦਾਸ ਸਰ
 ॥੧੦॥ ਚਾਤੂਕ ਚਿਤ ਸੁਚਿਤ ਸੁ ਸਾਜਨੁ ਚਾਹੀਐ ॥ ਜਿਸੁ ਸੰਗਿ ਲਾਗੇ ਪ੍ਰਾਣ ਤਿਸੈ ਕਤ ਆਹੀਐ ॥ ਬਨੁ ਬਨੁ
 ਫਿਰਤ ਤਦਾਸ ਬੂਂਦ ਜਲ ਕਾਰਣੇ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਤਿਤ ਹਰਿ ਜਨੁ ਮਾਂਗੈ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰਣੇ ॥੧੧॥ ਮਿਤ
 ਕਾ ਚਿਤੁ ਅਨੂਪੁ ਮਰੰਸੁ ਨ ਜਾਨੀਐ ॥ ਗਾਹਕ ਗੁਨੀ ਅਪਾਰ ਸੁ ਤਤੁ ਪਛਾਨੀਐ ॥ ਚਿਤਹਿ ਚਿਤੁ ਸਮਾਇ ਤ
 ਹੋਵੈ ਰੁਂਗੁ ਧਨਾ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਚੰਚਲ ਚੋਰਹਿ ਮਾਰਿ ਤ ਪਾਵਹਿ ਸਚੁ ਧਨਾ ॥੧੨॥ ਸੁਪਨੈ ਊਭੀ ਭੰਈ ਗਹਿਆਂ ਕੀ
 ਨ ਅੰਚਲਾ ॥ ਸੁਨਦਰ ਪੁਰਖ ਬਿਰਾਜਿਤ ਪੇਖਿ ਮਨੁ ਬੰਚਲਾ ॥ ਖੋਜਤ ਤਾ ਕੇ ਚਰਣ ਕਹਹੁ ਕਤ ਪਾਈਐ ॥ ਹਰਿਹਾਁ
 ਸੋਈ ਜਤਨੁ ਬਤਾਇ ਸਖੀ ਪ੍ਰਤ ਪਾਈਐ ॥੧੩॥ ਨੈਣ ਨ ਦੇਖਹਿ ਸਾਧ ਸਿ ਨੈਣ ਬਿਹਾਲਿਆ ॥ ਕਰਨ ਨ
 ਸੁਨਹੀ ਨਾਟੁ ਕਰਨ ਸੁੰਦਿ ਧਾਲਿਆ ॥ ਰਸਨਾ ਜਪੈ ਨ ਨਾਮੁ ਤਿਲੁ ਤਿਲੁ ਕਰਿ ਕਟੀਐ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਜਬ ਬਿਸਰੈ
 ਗੋਬਿਦ ਰਾਇ ਦਿਨੋ ਦਿਨੁ ਘਟੀਐ ॥੧੪॥ ਪੰਕਜ ਫਾਥੇ ਪੰਕ ਮਹਾ ਮਦ ਗੁੰਫਿਆ ॥ ਅੰਗ ਸੰਗ ਤਉਜਾਇ

ਬਿਸਰਤੇ ਸੁਫਿਆ ॥ ਹੈ ਕੋਊ ਐਸਾ ਮੀਤੁ ਜਿ ਤੌਰੈ ਬਿਖਮ ਗਾਂਠਿ ॥ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਸ੍ਰੀਧਰ ਨਾਥੁ ਜਿ ਟ੍ਰੋਟੇ ਲੇਇ
 ਸਾਁਠਿ ॥੧੫॥ ਧਾਵਤ ਦਸਾ ਅਨੇਕ ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰੇਮ ਕਾਰਣੇ ॥ ਪੰਚ ਸਤਾਵਹਿ ਟ੍ਰੂਟ ਕਵਨ ਬਿਧਿ ਮਾਰਣੇ ॥ ਤੀਖਣ
 ਬਾਣ ਚਲਾਇ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰੇਮ ਧਾਈਐ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਮਹਾਁ ਬਿਖਾਦੀ ਘਾਤ ਪੂਰਨ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ॥੧੬॥ ਸਤਿਗੁਰ
 ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ਮੂਲਿ ਨ ਨਿਖੁਟਈ ॥ ਖਾਵਹੁ ਭੁੰਚਹੁ ਸਭਿ ਗੁਰਸੁਖਿ ਛੁਟਈ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਦਿਤਾ
 ਤੁਸਿ ਹਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਅਰਾਧਿ ਕਦੇ ਨ ਜਾਂਹਿ ਮਰਿ ॥੧੭॥ ਜਿਥੈ ਜਾਏ ਭਗਤੁ ਸੁ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਣਾ ॥ ਸਗਲੇ
 ਹੋਏ ਸੁਖ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਾ ॥ ਜੀਅ ਕਰਨਿ ਜੈਕਾਰੁ ਨਿੰਦਕ ਸੁਏ ਪਚਿ ॥ ਸਾਜਨ ਮਨਿ ਆਨਨਦੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ
 ਜਪਿ ॥੧੮॥ ਪਾਵਨ ਪਤਿ ਪੁਨੀਤ ਕਤਹ ਨਹੀ ਸੇਵੀਐ ॥ ਝੂਠੈ ਰੰਗਿ ਖੁਆਰੁ ਕਹਾਁ ਲਗੁ ਖੇਵੀਐ ॥
 ਹਰਿਚੰਦਤਰੀ ਪੇਖਿ ਕਾਹੇ ਸੁਖੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨਿ ਜਿ ਦਰਗਹਿ ਜਾਨਿਆ ॥੧੯॥
 ਕੀਨੇ ਕਰਮ ਅਨੇਕ ਗਵਾਰ ਬਿਕਾਰ ਘਨ ॥ ਮਹਾ ਦੁਗੰਧਤ ਵਾਸੁ ਸਠ ਕਾ ਛਾਰੁ ਤਨ ॥ ਫਿਰਤਤ ਗਰਬ ਗੁਬਾਰਿ
 ਮਰਣੁ ਨਹ ਜਾਨੈ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਹਰਿਚੰਦਤਰੀ ਪੇਖਿ ਕਾਹੇ ਸਚੁ ਮਾਨੈ ॥੨੦॥ ਜਿਸ ਕੀ ਪ੍ਰੌਜੈ ਅਤਥ
 ਤਿਸੈ ਕਉਣੁ ਰਾਖੈ ॥ ਬੈਦਕ ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਕਹਾਁ ਲਤ ਭਾਖੈ ॥ ਏਕੋ ਚੇਤਿ ਗਵਾਰ ਕਾਜਿ ਤੈਰੈ ਆਵੈ ॥
 ਹਰਿਹਾਁ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਤਨੁ ਛਾਰੁ ਬੂਥਾ ਸਭੁ ਜਾਵੈ ॥੨੧॥ ਅਤਖਥੁ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ਅਮੋਲਕੁ ਪੀਜੈ ॥
 ਮਿਲਿ ਮਿਲਿ ਖਾਵਹਿ ਸੰਤ ਸਗਲ ਕਤ ਦੀਜੈ ॥ ਜਿਸੈ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ਤਿਸੈ ਹੀ ਪਾਵਣੇ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਹਤ
 ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ੍ਹ ਜਿ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਰਾਵਣੇ ॥੨੨॥ ਵੈਦਾ ਸੰਦਾ ਸੰਗੁ ਝਿਕਠਾ ਹੋਇਆ ॥ ਅਤਖਦ ਆਏ
 ਰਾਸਿ ਵਿਚਿ ਆਪਿ ਖਲੋਇਆ ॥ ਜੋ ਜੋ ਓਨਾ ਕਰਮ ਸੁਕਰਮ ਹੋਇ ਪਸਰਿਆ ॥ ਹਰਿਹਾਁ ਟ੍ਰੂਖ ਰੋਗ ਸਭਿ ਪਾਪ
 ਤਨ ਤੇ ਖਿਸਰਿਆ ॥੨੩॥

ਚਤੁਬੋਲੇ ਮਹਲਾ ੫ ੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੰਮਨ ਜਤ ਇਸ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਦਮ ਕਿਧੁ ਹੋਤੀ ਸਾਟ ॥ ਰਾਵਨ ਹੁਤੇ ਸੁ ਰੱਕ ਨਹਿ ਜਿਨਿ ਸਿਰ ਦੀਨੇ ਕਾਟਿ ॥੧॥
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਤਨੁ ਖਚਿ ਰਹਿਆ ਬੀਚੁ ਨ ਰਾਈ ਹੋਤ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨੁ ਬੇਧਿਓ ਬ੍ਰਿਜਨੁ ਸੁਰਤਿ ਸੰਜੋਗ ॥੨॥

सागर मेर उदिआन बन नव खंड बसुधा भरम ॥ मूसन प्रेम पिरंम कै गनउ एक करि करम ॥३॥
 मूसन मसकर प्रेम की रही जु अंबरु छाइ ॥ बीधे बाँधे कमल महि भवर रहे लपटाइ ॥४॥ जप तप
 संजम हरख सुख मान महत अरु गरब ॥ मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देंउ सरब ॥५॥ मूसन
 मरमु न जानई मरत हिरत संसार ॥ प्रेम पिरंम न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार ॥६॥ घबु दबु
 जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल ॥ मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दिआल ॥७॥ जा को प्रेम
 सुआउ है चरन चितव मन माहि ॥ नानक बिरही ब्रह्म के आन न कतहू जाहि ॥८॥ लख घाटी ऊँचौ
 घनो चंचल चीत बिहाल ॥ नीच कीच निमृत घनी करनी कमल जमाल ॥९॥ कमल नैन अंजन सिआम
 चंद्र बदन चित चार ॥ मूसन मगन मरंम सिउ खंड खंड करि हार ॥१०॥ मगनु भइओ पृथ प्रेम सिउ
 सूध न सिमरत अंग ॥ प्रगटि भइओ सभ लोअ महि नानक अधम पतंग ॥११॥

सलोक भगत कबीर जीउ के ७८८ सतिगुर प्रसादि ॥

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥ आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥१॥
 कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥ बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥२॥
 कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ ॥ सरब सूख को नाइको राम नाम रसु पीउ ॥३॥
 कबीर कंचन के कुँडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ ॥ दीसहि दाधे कान जिउ जिन् मनि नाही नाउ ॥४॥
 कबीर ऐसा एकु आधु जो जीवत मिरतकु होइ ॥ निरभै होइ कै गुन रखै जत पेखउ तत सोइ ॥५॥ कबीर
 जा दिन हउ मूआ पाछै भइआ अन्नदु ॥ मोहि मिलिओ प्रभु आपना संगी भजहि गुबिंदु ॥६॥ कबीर सभ
 ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥ जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥७॥ कबीर आई मुझहि
 पहि अनिक करे करि भेस ॥ हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु ॥८॥ कबीर सोई मारीऐ जिह
 मूथै सुखु होइ ॥ भलो भलो सभु को कहै बुरो न मानै कोइ ॥९॥ कबीर राती होवहि कारीआ कारे ऊभे जंत ॥

लै फाहे उठि धावते सि जानि मारे भगवंत ॥१०॥ कबीर चंदन का बिरवा भला बेड़िओ ढाक पलास ॥
 ओड़ि भी चंदनु होड़ि रहे बसे जु चंदन पासि ॥११॥ कबीर बाँसु बडाई बूडिआ डिउ मत डूबहु
 कोड़ि ॥ चंदन कै निकटे बसै बाँसु सुगंधु न होड़ि ॥१२॥ कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली
 साथि ॥ पाड़ि कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि ॥१३॥ कबीर जह जह हउ फिरिओ कउतक ठाओ
 ठाड़ि ॥ डिक राम सनेही बाहरा ऊजरु मेरै भाँड़ि ॥१४॥ कबीर संतन की झुंगीआ भली भठि कुसती
 गाउ ॥ आगि लगउ तिह धउलहर जिह नाही हरि को नाउ ॥१५॥ कबीर संत मूए किआ रोईअै
 जो अपुने गृहि जाड़ि ॥ रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट बिकाड़ि ॥१६॥ कबीर साकतु ऐसा है जैसी
 लसन की खानि ॥ कोने बैठे खाईअै परगट होड़ि निदानि ॥१७॥ कबीर माड़िआ डोलनी पवनु
 झकोलनहारु ॥ संतहु माखनु खाइआ छाछि पीअै संसारु ॥१८॥ कबीर माड़िआ डोलनी पवनु वहै
 हिव धार ॥ जिनि बिलोड़िआ तिनि खाइआ अवर बिलोवनहार ॥१९॥ कबीर माड़िआ चोरटी मुसि
 मुसि लावै हाटि ॥ एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ॥२०॥ कबीर सूखु न एंह जुगि करहि
 जु बहुतै मीत ॥ जो चितु राखहि एक सिउ ते सुखु पावहि नीत ॥२१॥ कबीर जिसु मरने ते जगु डरै
 मेरे मनि आन्दु ॥ मरने ही ते पाईअै पूरनु परमान्दु ॥२२॥ राम पदारथु पाड़ि कै कबीरा गाँठि
 न खोलु ॥ नहीं पटणु नहीं पारखू नहीं गाहकु नहीं मोलु ॥२३॥ कबीर ता सिउ प्रीति करि जा को ठाकुरु
 रामु ॥ पंडित राजे भूपती आवहि कउने काम ॥२४॥ कबीर प्रीति डिक सिउ कीए आन दुबिधा जाड़ि
 ॥ भावै लाँबै केस करु भावै घररि मुडाड़ि ॥२५॥ कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि ॥
 हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥२६॥ कबीर डिहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ॥
 नाँगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि ॥२७॥ कबीर डिहु तनु जाइगा कवनै मारगि लाड़ि ॥ कै संगति
 करि साध की कै हरि के गुन गाड़ि ॥२८॥ कबीर मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोड़ि ॥

ਐਸੇ ਮਰਨੇ ਜੋ ਮਰੈ ਬਹੁਰਿ ਨ ਮਰਨਾ ਹੋਇ ॥੨੬॥ ਕਬੀਰ ਮਾਨਸ ਜਨਮੁ ਦੁਲਸ਼ਮੁ ਹੈ ਹੋਇ ਨ ਬਾਰੈ ਬਾਰ ॥ ਜਿਤ
ਬਨ ਫਲ ਪਾਕੇ ਭੁਇ ਗਿਰਹਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਲਾਗਹਿ ਡਾਰ ॥੩੦॥ ਕਬੀਰਾ ਤੁਹੀ ਕਬੀਰੁ ਤ੍ਰਾ ਤੇਰੋ ਨਾਉ ਕਬੀਰੁ ॥
ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਤਬ ਪਾਈਐ ਜਤ ਪਹਿਲੇ ਤਜਹਿ ਸਰੀਰੁ ॥੩੧॥ ਕਬੀਰ ਝਾਂਖੁ ਨ ਝਾਂਖੀਐ ਤੁਮਰੋ ਕਹਿਓ ਨ ਹੋਇ
॥ ਕਰਮ ਕਰੀਮ ਜੁ ਕਰਿ ਰਹੇ ਮੇਟਿ ਨ ਸਾਕੈ ਕੋਇ ॥੩੨॥ ਕਬੀਰ ਕਸਤਟੀ ਰਾਮ ਕੀ ਝੂਠਾ ਟਿਕੈ ਨ ਕੋਇ ॥
ਰਾਮ ਕਸਤਟੀ ਸੋ ਸਹੈ ਜੋ ਮਰਿ ਜੀਵਾ ਹੋਇ ॥੩੩॥ ਕਬੀਰ ਊਜਲ ਪਹਿਰਹਿ ਕਾਪਰੇ ਪਾਨ ਸੁਪਾਰੀ ਖਾਹਿ ॥
ਏਕਸ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਬਾਧੇ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਹਿ ॥੩੪॥ ਕਬੀਰ ਬੇਡਾ ਜਰਜਰਾ ਫੂਟੇ ਛੌਂਕ ਹਜਾਰ ॥ ਹ਼ਲਾਏ
ਹ਼ਲਾਏ ਤਿਰਿ ਗਏ ਡੂਬੇ ਜਿਨ ਸਿਰ ਭਾਰ ॥੩੫॥ ਕਬੀਰ ਹਾਡ ਜਰੇ ਜਿਤ ਲਾਕਰੀ ਕੇਸ ਜਰੇ ਜਿਤ ਘਾਸੁ ॥ ਇਹੁ
ਜਾਗੁ ਜਰਤਾ ਦੇਖਿ ਕੈ ਭਇਆਂ ਕਬੀਰੁ ਤਦਾਸੁ ॥੩੬॥ ਕਬੀਰ ਗਰਬੁ ਨ ਕੀਜੀਐ ਚਾਮ ਲਪੇਟੇ ਹਾਡ ॥ ਹੈਵਰ
ਊਪਰਿ ਛਤ ਤਰ ਤੇ ਫੁਨਿ ਧਰਨੀ ਗਾਡ ॥੩੭॥ ਕਬੀਰ ਗਰਬੁ ਨ ਕੀਜੀਐ ਊਚਾ ਦੇਖਿ ਅਵਾਸੁ ॥ ਆਜੁ ਕਾਲਿ
ਭੁਇ ਲੇਟਣਾ ਊਪਰਿ ਜਾਮੈ ਘਾਸੁ ॥੩੮॥ ਕਬੀਰ ਗਰਬੁ ਨ ਕੀਜੀਐ ਰੱਕੁ ਨ ਹਸੀਐ ਕੋਇ ॥ ਅਜਹੁ ਸੁ ਨਾਉ
ਸਮੁੰਦ੍ਰ ਮਹਿ ਕਿਆ ਜਾਨਤ ਕਿਆ ਹੋਇ ॥੩੯॥ ਕਬੀਰ ਗਰਬੁ ਨ ਕੀਜੀਐ ਦੇਹੀ ਦੇਖਿ ਸੁਰਾਂਗ ॥ ਆਜੁ ਕਾਲਿ
ਤਜਿ ਜਾਹੁਗੇ ਜਿਤ ਕਾਂਚੁਰੀ ਭੁਧਾਂਗ ॥੪੦॥ ਕਬੀਰ ਲੂਟਨਾ ਹੈ ਤ ਲੂਟਿ ਲੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹੈ ਲੂਟਿ ॥ ਫਿਰਿ ਪਾਛੈ
ਪਛੁਤਾਹੁਗੇ ਪ੍ਰਾਨ ਜਾਹਿਗੇ ਛੂਟਿ ॥੪੧॥ ਕਬੀਰ ਐਸਾ ਕੋਈ ਨ ਜਨਮਿਆਂ ਅਪਨੈ ਘਰਿ ਲਾਵੈ ਆਗਿ ॥ ਪਾਂਚਤ
ਲਾਕਿਆ ਜਾਰਿ ਕੈ ਰਹੈ ਰਾਮ ਲਿਵ ਲਾਗਿ ॥੪੨॥ ਕੋ ਹੈ ਲਾਕਿਆ ਬੇਚੈਂਦੀ ਲਾਕਿਆ ਬੇਚੈ ਕੋਇ ॥ ਸਾਝਾ ਕਰੈ
ਕਬੀਰ ਸਿਤ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਬਨਜੁ ਕਰੇਇ ॥੪੩॥ ਕਬੀਰ ਇਹ ਚੇਤਾਵਨੀ ਮਤ ਸਹਸਾ ਰਹਿ ਜਾਇ ॥ ਪਾਛੈ ਭੋਗ
ਜੁ ਭੋਗਵੇ ਤਿਨ ਕੋ ਗੁਢੂ ਲੈ ਖਾਹਿ ॥੪੪॥ ਕਬੀਰ ਮੈ ਜਾਨਿਆਂ ਪਡਿਓ ਭਲੋ ਪਡਿਓ ਸਿਤ ਭਲ ਜੋਗੁ ॥ ਭਗਤਿ ਨ
ਛਾਡਤ ਰਾਮ ਕੀ ਭਾਵੈ ਨਿੰਦਤ ਲੋਗੁ ॥੪੫॥ ਕਬੀਰ ਲੋਗੁ ਕਿ ਨਿੰਦੈ ਬਪੁੜਾ ਜਿਹ ਮਨਿ ਨਾਹੀ ਗਿਆਨੁ ॥ ਰਾਮ
ਕਬੀਰਾ ਰਵਿ ਰਹੇ ਅਵਰ ਤਜੇ ਸਭ ਕਾਮ ॥੪੬॥ ਕਬੀਰ ਪਰਦੇਸੀ ਕੈ ਘਾਘਰੈ ਚਹੁ ਦਿਸਿ ਲਾਗੀ ਆਗਿ ॥ ਖਿੰਥਾ
ਜਲਿ ਕੋਇਲਾ ਭਈ ਤਾਗੇ ਆਂਚ ਨ ਲਾਗ ॥੪੭॥ ਕਬੀਰ ਖਿੰਥਾ ਜਲਿ ਕੋਇਲਾ ਭਈ ਖਾਪਰੁ ਫੂਟ ਮਫੂਟ ॥ ਜੋਗੀ

ਬਪੁੜਾ ਖੇਲਿਆਂ ਆਸਨਿ ਰਹੀ ਬਿਭੂਤਿ ॥੪੮॥ ਕਬੀਰ ਥੋਰੈ ਜਲਿ ਮਾਛੁਲੀ ਝੀਵਰਿ ਮੇਲਿਆਂ ਜਾਲੁ ॥ ਇਹ
 ਟੋਘਨੈ ਨ ਛੂਟਸਹਿ ਫਿਰਿ ਕਰਿ ਸਮੁੰਦੁ ਸਮਾਲਿ ॥੪੯॥ ਕਬੀਰ ਸਮੁੰਦੁ ਨ ਛੋਡੀਐ ਜਤ ਅਤਿ ਖਾਰੇ ਹੋਇ ॥
 ਪੋਖਰਿ ਪੋਖਰਿ ਢੂਢਤੇ ਭਲੋ ਨ ਕਹਿਵੈ ਕੋਇ ॥੫੦॥ ਕਬੀਰ ਨਿਗੁਸਾਏਂ ਬਹਿ ਗਏ ਥਾਂਘੀ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਦੀਨ
 ਗਰੀਬੀ ਆਪੁਨੀ ਕਰਤੇ ਹੋਇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੫੧॥ ਕਬੀਰ ਬੈਸਨਤ ਕੀ ਕੂਕਰਿ ਭਲੀ ਸਾਕਤ ਕੀ ਬੁਰੀ ਮਾਇ ॥
 ਓਹ ਨਿਤ ਸੁਨੈ ਹਰਿ ਨਾਮ ਜਸੁ ਤਹ ਪਾਪ ਬਿਸਾਹਨ ਜਾਇ ॥੫੨॥ ਕਬੀਰ ਹਰਨਾ ਢੂਕਲਾ ਇਹੁ ਹਰੀਆਰਾ
 ਤਾਲੁ ॥ ਲਾਖ ਅਹੇਰੀ ਏਕੁ ਜੀਤ ਕੇਤਾ ਬੰਚਤ ਕਾਲੁ ॥੫੩॥ ਕਬੀਰ ਗੱਗਾ ਤੀਰ ਜੁ ਘਰੁ ਕਰਹਿ ਪੀਵਹਿ ਨਿਰਮਲ
 ਨੀਰੁ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨ ਮੁਕਤਿ ਹੋਇ ਇਉ ਕਹਿ ਰਮੇ ਕਬੀਰ ॥੫੪॥ ਕਬੀਰ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਭਿੜਿਆ ਜੈਸਾ
 ਗੱਗਾ ਨੀਰੁ ॥ ਪਾਛੈ ਲਾਗੇ ਹਰਿ ਫਿਰੈ ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਕਬੀਰ ॥੫੫॥ ਕਬੀਰ ਹਰਦੀ ਪੀਅਰੀ ਚੂਨਾਂ ਊਜਲ ਭਾਇ
 ॥ ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ ਤਤ ਮਿਲੈ ਟੋਨਤ ਬਰਨ ਗਵਾਇ ॥੫੬॥ ਕਬੀਰ ਹਰਦੀ ਪੀਰਤਨੁ ਹੈ ਚੂਨ ਚਿਹਨੁ ਨ ਰਹਾਇ
 ॥ ਬਲਿਹਾਰੀ ਇਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਤ ਜਿਹ ਜਾਤਿ ਬਰਨੁ ਕੁਲੁ ਜਾਇ ॥੫੭॥ ਕਬੀਰ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ਸੰਕੁਰਾ ਰਾਈ
 ਦਸਾਏ ਭਾਇ ॥ ਮਨੁ ਤਤ ਮੈਗਲੁ ਹੋਇ ਰਹਿਆਂ ਨਿਕਸੋ ਕਿਤ ਕੈ ਜਾਇ ॥੫੮॥ ਕਬੀਰ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰ ਜੇ ਮਿਲੈ
 ਤੁਠਾ ਕਰੇ ਪਸਾਤ ॥ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ਮੋਕਲਾ ਸਹਜੇ ਆਵਤ ਜਾਤ ॥੫੯॥ ਕਬੀਰ ਨਾ ਮੁਹਿ ਛਾਨਿ ਨ ਛਾਪਰੀ
 ਨਾ ਮੁਹਿ ਘਰੁ ਨਹੀ ਗਾਤ ॥ ਮਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰਥੈ ਕਤਨੁ ਹੈ ਮੇਰੇ ਜਾਤਿ ਨ ਨਾਤ ॥੬੦॥ ਕਬੀਰ ਮੁਹਿ ਮਰਨੇ ਕਾ ਚਾਤ
 ਹੈ ਮਰਤ ਤ ਹਰਿ ਕੈ ਦੁਆਰ ॥ ਮਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰਥੈ ਕਤਨੁ ਹੈ ਪਰਾ ਹਮਾਰੈ ਬਾਰ ॥੬੧॥ ਕਬੀਰ ਨਾ ਹਮ ਕੀਆ ਨ
 ਕਰਹਿਗੇ ਨਾ ਕਰਿ ਸਕੈ ਸਰੀਰੁ ॥ ਕਿਆ ਜਾਨਤ ਕਿਛੁ ਹਰਿ ਕੀਆ ਭਿੜਿਆ ਕਬੀਰੁ ਕਬੀਰੁ ॥੬੨॥ ਕਬੀਰ
 ਸੁਪਨੈ ਹੂ ਬਰੜਾਇ ਕੈ ਜਿਹ ਮੁਖਿ ਨਿਕਸੈ ਰਾਮੁ ॥ ਤਾ ਕੇ ਪਗ ਕੀ ਪਾਨਹੀ ਮੇਰੇ ਤਨ ਕੋ ਚਾਮੁ ॥੬੩॥ ਕਬੀਰ ਮਾਟੀ
 ਕੇ ਹਮ ਪੂਤਰੇ ਮਾਨਸੁ ਰਾਖਿਆਂ ਨਾਤ ॥ ਚਾਰਿ ਦਿਵਸ ਕੇ ਪਾਹੁਨੇ ਬਡ ਬਡ ਰੁੰਧਹਿ ਠਾਤ ॥੬੪॥ ਕਬੀਰ ਮਹਿਦੀ
 ਕਰਿ ਘਾਲਿਆ ਆਪੁ ਪੀਸਾਇ ਪੀਸਾਇ ॥ ਤੈ ਸਹ ਬਾਤ ਨ ਪ੍ਰਥੀਐ ਕਬਹੁ ਨ ਲਾਈ ਪਾਇ ॥੬੫॥ ਕਬੀਰ ਜਿਹ
 ਦਰਿ ਆਵਤ ਜਾਤਿਅਹੁ ਹਟਕੈ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥ ਸੋ ਦਰੁ ਕੈਸੇ ਛੋਡੀਐ ਜੋ ਦਰੁ ਐਸਾ ਹੋਇ ॥੬੬॥ ਕਬੀਰ ਝੂਕਾ ਥਾ

पै उबरिओ गुन की लहरि झबकि ॥ जब देखिओ बेड़ा जरजरा तब उतरि परिओ हउ फरकि ॥६७॥
 कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ॥ माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ ॥६८॥
 कबीर बैदु मूआ रोगी मूआ मूआ सभु संसारु ॥ एकु कबीरा ना मूआ जिह नाही रोवनहारु ॥६९॥
 कबीर रामु न धिआइओ मोटी लागी खोरि ॥ काइआ हाँडी काठ की ना ओह चौ बहोरि ॥७०॥ कबीर
 ऐसी होइ परी मन को भावतु कीनु ॥ मरने ते किआ डरपना जब हाथि सिधउरा लीन ॥७१॥ कबीर
 रस को गाँडो चूसीअै गुन कउ मरीअै रोहि ॥ अवगुनीआरे मानसै भलो न कहिहै कोइ ॥७२॥ कबीर
 गागरि जल भरी आजु कालि जैहै फूटि ॥ गुरु जु न चेतहि आपनो अध माझि लीजहिगे लूटि ॥७३॥
 कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ ॥ गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ ॥७४॥ कबीर जपनी
 काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥ हिरदै रामु न चेतही इह जपनी किआ होइ ॥७५॥ कबीर बिरहु
 भुयंगमु मनि बसै मंतु न मानै कोइ ॥ राम बिओगी ना जीअै जीअै त बउरा होइ ॥७६॥ कबीर पारस
 चंदनै तिन् है एक सुगंध ॥ तिह मिलि तेऊ ऊतम भए लोह काठ निरगंध ॥७७॥ कबीर जम का ठेंगा
 बुरा है ओहु नही सहिआ जाइ ॥ एकु जु साधू मुहि मिलिओ तिनि लीआ अंचलि लाइ ॥७८॥ कबीर
 बैदु कहै हउ ही भला दारू मेरै वसि ॥ इह तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेइ खसि ॥७९॥
 कबीर नउबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ ॥ नदी नाव संजोग जित बहुरि न मिलहै आइ ॥८०॥
 कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥ बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु लिखनु न
 जाइ ॥८१॥ कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ कबीर रमईआ कंठि मिलु चूकहि
 सरब जंजाल ॥८२॥ कबीर ऐसा को नही मंदरु देइ जराइ ॥ पाँचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ
 लाइ ॥८३॥ कबीर ऐसा को नही इहु तनु देवै फूकि ॥ अंधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि
 ॥८४॥ कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनु हो बीर मसान ॥ लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु

ਨਿਦਾਨ ॥੮੫॥ ਕਬੀਰ ਮਨੁ ਪੰਖੀ ਭਿੜਿਆਂ ਤਡਿ ਤਡਿ ਦਹ ਦਿਸ ਜਾਇ ॥ ਜੋ ਜੈਸੀ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲੈ ਸੋ ਤੈਸੋ ਫਲੁ
 ਖਾਇ ॥੮੬॥ ਕਬੀਰ ਜਾ ਕਤ ਖੋਜਤੇ ਪਾਇਆਂ ਸੋਈ ਠਤਰੁ ॥ ਸੋਈ ਫਿਰਿ ਕੈ ਤੂ ਭਿੜਿਆ ਜਾ ਕਤ ਕਹਤਾ ਅਤਰੁ
 ॥੮੭॥ ਕਬੀਰ ਮਾਰੀ ਮਰਤ ਕੁਸੱਗ ਕੀ ਕੋਲੇ ਨਿਕਟਿ ਜੁ ਬੇਰਿ ॥ ਉਹ ਝੂਲੈ ਉਹ ਚੀਰੀਐ ਸਾਕਤ ਸੰਗੁ ਨ ਹੋਰਿ
 ॥੮੮॥ ਕਬੀਰ ਭਾਰ ਪਰਾਈ ਸਿਰਿ ਚੈਰੈ ਚਲਿਆਂ ਚਾਹੈ ਬਾਟ ॥ ਅਪਨੇ ਭਾਰਹਿ ਨਾ ਡੈਰੈ ਆਗੈ ਅਤਘਟ ਘਾਟ
 ॥੮੯॥ ਕਬੀਰ ਬਨ ਕੀ ਦਾਧੀ ਲਾਕਰੀ ਠਾਢੀ ਕਰੈ ਪੁਕਾਰ ॥ ਮਤਿ ਬਸਿ ਪਰਤ ਲੁਹਾਰ ਕੇ ਜਾਰੈ ਟ੍ਰੂਜੀ ਬਾਰ
 ॥੯੦॥ ਕਬੀਰ ਏਕ ਮਰਂਤੇ ਦੁਇ ਸ੍ਰੋਤਿ ਮਰਂਤਹ ਚਾਰਿ ॥ ਚਾਰਿ ਮਰਂਤਹ ਛਹ ਸ੍ਰੋਤਿ ਪੁਰਖ ਦੁਇ ਨਾਰਿ
 ॥੯੧॥ ਕਬੀਰ ਦੇਖਿ ਦੇਖਿ ਜਗੁ ਢੁੰਢਿਆ ਕਹੁੰ ਨ ਪਾਇਆ ਠਤਰੁ ॥ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਆਂ ਕਹਾ
 ਮੁਲਾਨੇ ਅਤਰ ॥੯੨॥ ਕਬੀਰ ਸੰਗਤਿ ਕਰੀਐ ਸਾਥ ਕੀ ਅੰਤਿ ਕਰੈ ਨਿਰਬਾਹੁ ॥ ਸਾਕਤ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਜੀਐ ਜਾ
 ਤੇ ਹੋਇ ਬਿਨਾਹੁ ॥੯੩॥ ਕਬੀਰ ਜਗ ਮਹਿ ਚੇਤਿਆਂ ਜਾਨਿ ਕੈ ਜਗ ਮਹਿ ਰਹਿਆਂ ਸਮਾਇ ॥ ਜਿਨ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ
 ਨ ਚੇਤਿਆਂ ਬਾਦਹਿ ਜਨਮੇ ਆਇ ॥੯੪॥ ਕਬੀਰ ਆਸਾ ਕਰੀਐ ਰਾਮ ਕੀ ਅਵਰੈ ਆਸ ਨਿਰਾਸ ॥ ਨਰਕਿ
 ਪਰਹਿ ਤੇ ਮਾਨੰਈ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮ ਉਦਾਸ ॥੯੫॥ ਕਬੀਰ ਸਿਖ ਸਾਖਾ ਬਹੁਤੇ ਕੀਏ ਕੇਸੋ ਕੀਓ ਨ ਮੀਤੁ ॥ ਚਾਲੇ
 ਥੇ ਹਰਿ ਮਿਲਨ ਕਤ ਬੀਚੈ ਅਟਕਿਆਂ ਚੀਤੁ ॥੯੬॥ ਕਬੀਰ ਕਾਰਨੁ ਬਪੁਰਾ ਕਿਆ ਕਰੈ ਜਤ ਰਾਮੁ ਨ ਕਰੈ ਸਹਾਇ
 ॥ ਜਿਹ ਜਿਹ ਡਾਲੀ ਪਗੁ ਧਰਤ ਸੋਈ ਸੁਰਿ ਸੁਰਿ ਜਾਇ ॥੯੭॥ ਕਬੀਰ ਅਵਰਹ ਕਤ ਉਪਦੇਸਤੇ ਮੁਖ ਮੈ ਪਰਿ ਹੈ
 ਰੇਤੁ ॥ ਰਾਸਿ ਬਿਰਾਨੀ ਰਾਖਤੇ ਖਾਧਾ ਘਰ ਕਾ ਖੇਤੁ ॥੯੮॥ ਕਬੀਰ ਸਾਧੂ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਰਹਤ ਜਤ ਕੀ ਭੂਸੀ ਖਾਤ
 ॥ ਹੋਨਹਾਰੁ ਸੋ ਹੋਇਹੈ ਸਾਕਤ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਤ ॥੯੯॥ ਕਬੀਰ ਸੰਗਤਿ ਸਾਥ ਕੀ ਦਿਨ ਦਿਨ ਟ੍ਰੂਨਾ ਹੇਤੁ ॥ ਸਾਕਤ
 ਕਾਰੀ ਕਾਂਬਰੀ ਧੋਏ ਹੋਇ ਨ ਸੇਤੁ ॥੧੦੦॥ ਕਬੀਰ ਮਨੁ ਮੂੰਡਿਆ ਨਹੀ ਕੇਸ ਮੁੰਡਾਏ ਕਾਂਇ ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕੀਆ
 ਸੋ ਮਨ ਕੀਆ ਮੂੰਡਾ ਮੂੰਡੁ ਅਜਾਂਇ ॥੧੦੧॥ ਕਬੀਰ ਰਾਮੁ ਨ ਛੋਡੀਐ ਤਨੁ ਧਨੁ ਜਾਇ ਤ ਜਾਤ ॥ ਚਰਨ ਕਮਲ
 ਚਿਤੁ ਬੇਧਿਆ ਰਾਮਹਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਤ ॥੧੦੨॥ ਕਬੀਰ ਜੋ ਹਮ ਜੰਤੁ ਬਜਾਵਤੇ ਟ੍ਰੂਟਿ ਗੰਈ ਸਭ ਤਾਰ ॥ ਜੰਤੁ
 ਬਿਚਾਰਾ ਕਿਆ ਕਰੈ ਚਲੇ ਬਜਾਵਨਹਾਰ ॥੧੦੩॥ ਕਬੀਰ ਮਾਇ ਮੂੰਡਤ ਤਿਹ ਗੁਰੂ ਕੀ ਜਾ ਤੇ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਇ ॥

आप डुबे चहु बेद महि चेले दीए बहाइ ॥१०४॥ कबीर जेते पाप कीए राखे तलै दुराइ ॥ परगट
 भए निदान सभ जब पूछे धरम राइ ॥१०५॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिओ बहुतु कुटंबु ॥
 धंधा करता रहि गडिआ भाई रहिआ न बंधु ॥१०६॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन
 जाइ ॥ सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ ॥१०७॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई
 राखै नारि ॥ गद्ही होइ कै अउतरै भारु सहै मन चारि ॥१०८॥ कबीर चतुराई अति घनी हरि
 जपि हिरटै माहि ॥ सूरी ऊपरि खेलना गिरै त ठाहर नाहि ॥१०९॥ कबीर सौई मुखु धंनि है जा
 मुखि कहीअै रामु ॥ देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥११०॥ कबीर सौई कुल भली जा कुल
 हरि को दासु ॥ जिह कुल दासु न ऊपजै सो कुल ढाकु पलासु ॥१११॥ कबीर है गडि बाहन सघन
 घन लाख धजा फहराहि ॥ इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥११२॥ कबीर सभु
 जगु हउ फिरिओ माँदलु कंध चढाइ ॥ कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइ ॥११३॥ मारगि मोती
 बीथरे अंधा निकसिओ आइ ॥ जोति बिना जगदीस की जगतु उलम्घे जाइ ॥११४॥ बूडा बंसु कबीर
 का उपजिओ पूतु कमालु ॥ हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु ॥११५॥ कबीर साधू कउ
 मिलने जाईअै साथि न लीजै कोइ ॥ पाछै पाउ न दीजीअै आगै होइ सु होइ ॥११६॥ कबीर जगु
 बाधिओ जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर ॥ जैहहि आटा लोन जिउ सोन समानि सरीरु ॥११७॥
 कबीर छासु उडिओ तनु गाडिओ सोझाई सैनाह ॥ अजहू जीउ न छोडई रंकाई नैनाह ॥११८॥ कबीर
 नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥ बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ
 ॥११९॥ कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि ॥ चरन कमल की मउज महि रहउ
 अंति अरु आदि ॥१२०॥ कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥ कहिबे कउ सोभा
 नही देखा ही परवानु ॥१२१॥ कबीर देखि कै किह कहउ कहे न को पतीआइ ॥ हरि जैसा तैसा उही

ਰਹਤ ਹਰਖਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੧੨੨॥ ਕਬੀਰ ਚੁਗੈ ਚਿਤਾਰੈ ਭੀ ਚੁਗੈ ਚੁਗਿ ਚੁਗਿ ਚਿਤਾਰੇ ॥ ਜੈਸੇ ਬਚਰਹਿ ਕੂੰਜ
 ਮਨ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਰੇ ॥੧੨੩॥ ਕਬੀਰ ਅੰਬਰ ਘਨਹਰੁ ਛਾਇਆ ਬਰਖਿ ਭਰੇ ਸਰ ਤਾਲ ॥ ਚਾਤ੍ਰਕ ਜਿਤ
 ਤਰਸਤ ਰਹੈ ਤਿਨ ਕੋ ਕਤਨੁ ਹਵਾਲੁ ॥੧੨੪॥ ਕਬੀਰ ਚਕੜੀ ਜਤ ਨਿਸਿ ਬੀਛੁਰੈ ਆਇ ਮਿਲੈ ਪਰਭਾਤਿ ॥ ਜੋ
 ਨਰ ਬਿਛੁਰੇ ਰਾਮ ਸਿਤ ਨਾ ਦਿਨ ਮਿਲੇ ਨ ਰਾਤਿ ॥੧੨੫॥ ਕਬੀਰ ਰੈਨਾਇਰ ਬਿਛੋਰਿਆ ਰਹੁ ਰੇ ਸੰਖ ਮੜ੍ਹਾਰਿ
 ॥ ਦੇਵਲ ਦੇਵਲ ਧਾਹੜੀ ਦੇਸਹਿ ਤਗਵਤ ਸੂਰ ॥੧੨੬॥ ਕਬੀਰ ਸੂਤਾ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਜਾਗੁ ਰੋਇ ਮੈਂ ਦੁਖ ॥
 ਜਾ ਕਾ ਬਾਸਾ ਗੋਰ ਮਹਿ ਸੋ ਕਿਤ ਸੋਵੈ ਸੁਖ ॥੧੨੭॥ ਕਬੀਰ ਸੂਤਾ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਤਠਿ ਕਿ ਨ ਜਪਹਿ ਸੁਰਾਰਿ ॥
 ਝਿਕ ਦਿਨ ਸੋਵਨੁ ਹੋਇਗੇ ਲਾੱਬੇ ਗੋਡ ਪਸਾਰਿ ॥੧੨੮॥ ਕਬੀਰ ਸੂਤਾ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਬੈਠਾ ਰਹੁ ਅਥੁ ਜਾਗੁ
 ॥ ਜਾ ਕੇ ਸੰਗ ਤੇ ਬੀਛੁਰਾ ਤਾ ਹੀ ਕੇ ਸੰਗਿ ਲਾਗੁ ॥੧੨੯॥ ਕਬੀਰ ਸੰਤ ਕੀ ਗੈਲ ਨ ਛੋਡੀਐ ਮਾਰਗਿ ਲਾਗਾ
 ਜਾਤ ॥ ਪੇਖਤ ਹੀ ਪੁਨੀਤ ਹੋਇ ਭੇਟਤ ਜਪੀਐ ਨਾਤ ॥੧੩੦॥ ਕਬੀਰ ਸਾਕਤ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਜੀਐ ਦੂਰਹਿ ਜਾਈਐ
 ਭਾਗਿ ॥ ਬਾਸਨੁ ਕਾਰੇ ਪਰਸੀਐ ਤਤ ਕਛੁ ਲਾਗੈ ਦਾਗੁ ॥੧੩੧॥ ਕਬੀਰਾ ਰਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਆ ਜਰਾ ਪਹੌਚਿਆ ਆਇ
 ॥ ਲਾਗੀ ਮੰਦਿਰ ਦੁਆਰ ਤੇ ਅਥ ਕਿਆ ਕਾਢਿਆ ਜਾਇ ॥੧੩੨॥ ਕਬੀਰ ਕਾਰਨੁ ਸੋ ਭਿਓ ਜੋ ਕੀਨੋ ਕਰਤਾਰਿ
 ॥ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਦੂਸਰੁ ਕੋ ਨਹੀ ਏਕੈ ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ॥੧੩੩॥ ਕਬੀਰ ਫਲ ਲਾਗੇ ਫਲਨਿ ਪਾਕਨਿ ਲਾਗੇ ਆੱਬ ॥
 ਜਾਇ ਪਹੂੰਚਹਿ ਖਸਮ ਕਤ ਜਤ ਬੀਚਿ ਨ ਖਾਹੀ ਕਾੱਬ ॥੧੩੪॥ ਕਬੀਰ ਠਾਕੁਰੁ ਪ੍ਰਾਜਹਿ ਮੋਲਿ ਲੇ ਮਨਹਠਿ
 ਤੀਰਥ ਜਾਹਿ ॥ ਦੇਖਾ ਦੇਖੀ ਸ਼ਾਁਗੁ ਧਰਿ ਭੂਲੇ ਭਟਕਾ ਖਾਹਿ ॥੧੩੫॥ ਕਬੀਰ ਪਾਹਨੁ ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਕੀਆ ਪ੍ਰਯੈ ਸਭੁ
 ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਇਸ ਭਰਵਾਸੇ ਜੋ ਰਹੇ ਕੂਡੇ ਕਾਲੀ ਧਾਰ ॥੧੩੬॥ ਕਬੀਰ ਕਾਗਦ ਕੀ ਓਬਰੀ ਮਸੁ ਕੇ ਕਰਮ ਕਪਾਟ ॥
 ਪਾਹਨ ਬੋਰੀ ਪਿਰਥਮੀ ਪੰਡਿਤ ਪਾਡੀ ਬਾਟ ॥੧੩੭॥ ਕਬੀਰ ਕਾਲਿ ਕਰਂਤਾ ਅਵਹਿ ਕਰੁ ਅਥ ਕਰਤਾ ਸੁਇ
 ਤਾਲ ॥ ਪਾਛੈ ਕਛੂ ਨ ਹੋਇਗਾ ਜਤ ਸਿਰ ਪਰਿ ਆਵੈ ਕਾਲੁ ॥੧੩੮॥ ਕਬੀਰ ਐਸਾ ਜੰਤੁ ਝਿਕੁ ਦੇਖਿਆ ਜੈਸੀ
 ਧੋਈ ਲਾਖ ॥ ਦੀਸੈ ਚੰਚਲੁ ਬਹੁ ਗੁਨਾ ਮਤਿ ਹੀਨਾ ਨਾਪਾਕ ॥੧੩੯॥ ਕਬੀਰ ਮੇਰੀ ਬੁਧਿ ਕਤ ਜਮੁ ਨ ਕਰੈ
 ਤਿਸਕਾਰ ॥ ਜਿਨਿ ਝਿਹੁ ਜਮੂਆ ਸਿਰਜਿਆ ਸੁ ਜਪਿਆ ਪਰਵਿਦਗਾਰ ॥੧੪੦॥ ਕਬੀਰੁ ਕਸਤੂਰੀ ਭਿਓ

ਭਵਰ ਭਏ ਸਮ ਦਾਸ ॥ ਜਿਤ ਜਿਤ ਭਗਤਿ ਕਬੀਰ ਕੀ ਤਿਤ ਤਿਤ ਰਾਮ ਨਿਵਾਸ ॥੧੪੧॥ ਕਬੀਰ ਗਹਗਚਿ
 ਪਰਿਆਂ ਕੁਟੰਬ ਕੈ ਕਾਠੈ ਰਹਿ ਗਇਆਂ ਰਾਮੁ ॥ ਆਇ ਪਰੇ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੇ ਬੀਚਹਿ ਧ੍ਰੂਮਾ ਧਾਮ ॥੧੪੨॥ ਕਬੀਰ
 ਸਾਕਤ ਤੇ ਸੂਕਰ ਭਲਾ ਰਾਖੈ ਆਛਾ ਗਾਤ ॥ ਉਹੁ ਸਾਕਤੁ ਬਪੁਰਾ ਮਰਿ ਗਇਆ ਕੋਇ ਨ ਲੈਹੈ ਨਾਤ ॥੧੪੩॥
 ਕਬੀਰ ਕਤਡੀ ਕਤਡੀ ਜੋਰਿ ਕੈ ਜੋਰੇ ਲਾਖ ਕਰੋਰਿ ॥ ਚਲਤੀ ਬਾਰ ਨ ਕਛੁ ਮਿਲਿਆ ਲਈ ਲੰਗੋਟੀ ਤੋਰਿ ॥੧੪੪॥
 ਕਬੀਰ ਬੈਸਨੋ ਹੂਆ ਤ ਕਿਆ ਭਇਆ ਮਾਲਾ ਮੇਲੀ ਚਾਰਿ ॥ ਬਾਹਰਿ ਕੰਚਨੁ ਬਾਰਹਾ ਭੀਤਰਿ ਭਰੀ ਭੰਗਾਰ
 ॥੧੪੫॥ ਕਬੀਰ ਰੋੜਾ ਹੋਇ ਰਹੁ ਬਾਟ ਕਾ ਤਜਿ ਮਨ ਕਾ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥ ਐਸਾ ਕੋਈ ਦਾਸੁ ਹੋਇ ਤਾਹਿ ਮਿਲੈ
 ਭਗਵਾਨੁ ॥੧੪੬॥ ਕਬੀਰ ਰੋੜਾ ਹੂਆ ਤ ਕਿਆ ਭਇਆ ਪਥੀ ਕਤ ਦੁਖੁ ਦੇਇ ॥ ਐਸਾ ਤੇਰਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਜਿਤ
 ਧਰਨੀ ਮਹਿ ਖੇਹ ॥੧੪੭॥ ਕਬੀਰ ਖੇਹ ਹ੍ਰਿ ਤਤ ਕਿਆ ਭਇਆ ਜਤ ਤਡਿ ਲਾਗੈ ਅੰਗ ॥ ਹਰਿ ਜਨੁ ਐਸਾ
 ਚਾਹੀਐ ਜਿਤ ਪਾਨੀ ਸਰਬਂਗ ॥੧੪੮॥ ਕਬੀਰ ਪਾਨੀ ਹੂਆ ਤ ਕਿਆ ਭਇਆ ਸੀਰਾ ਤਾਤਾ ਹੋਇ ॥ ਹਰਿ ਜਨੁ
 ਐਸਾ ਚਾਹੀਐ ਜੈਸਾ ਹਰਿ ਹੀ ਹੋਇ ॥੧੪੯॥ ਊਚ ਭਵਨ ਕਨਕਾਮਨੀ ਸਿਖਰਿ ਧਯਾ ਫਹਰਾਇ ॥ ਤਾ ਤੇ ਭਲੀ
 ਮਧੂਕਰੀ ਸੰਤਸੰਗਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੧੫੦॥ ਕਬੀਰ ਪਾਟਨ ਤੇ ਊਜ਼ਰੁ ਭਲਾ ਰਾਮ ਭਗਤ ਜਿਹ ਠਾਇ ॥ ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ
 ਬਾਹਰਾ ਜਮ ਪੁਰੁ ਮੇਰੇ ਭਾਇ ॥੧੫੧॥ ਕਬੀਰ ਗੰਗ ਜਮੁਨ ਕੇ ਅੰਤਰੇ ਸਹਜ ਸੁਨਨ ਕੇ ਘਾਟ ॥ ਤਹਾ ਕਬੀਰੈ ਮਟੁ
 ਕੀਆ ਖੋਜਤ ਸੁਨਿ ਜਨ ਬਾਟ ॥੧੫੨॥ ਕਬੀਰ ਜੈਸੀ ਤਥੀ ਪੇਡ ਤੇ ਜਤ ਤੈਸੀ ਨਿਵਹੈ ਓਡਿ ॥ ਹੀਰਾ ਕਿਸ ਕਾ
 ਬਾਪੁਰਾ ਪੁਜਹਿ ਨ ਰਤਨ ਕਰੋਡਿ ॥੧੫੩॥ ਕਬੀਰਾ ਏਕੁ ਅਚੰਭਤ ਦੇਖਿਆਂ ਹੀਰਾ ਹਾਟ ਬਿਕਾਇ ॥ ਬਨਜਨਹਾਰੇ
 ਬਾਹਰਾ ਕਤਡੀ ਬਦਲੈ ਜਾਇ ॥੧੫੪॥ ਕਬੀਰਾ ਜਹਾ ਗਿਆਨੁ ਤਹ ਧਰਮੁ ਹੈ ਜਹਾ ਝ੍ਰਾਠੁ ਤਹ ਪਾਪੁ ॥ ਜਹਾ ਲੋਭੁ
 ਤਹ ਕਾਲੁ ਹੈ ਜਹਾ ਖਿਮਾ ਤਹ ਆਪਿ ॥੧੫੫॥ ਕਬੀਰ ਮਾਇਆ ਤਜੀ ਤ ਕਿਆ ਭਇਆ ਜਤ ਮਾਨੁ ਤਜਿਆ
 ਨਹੀ ਜਾਇ ॥ ਮਾਨ ਸੁਨੀ ਸੁਨਿਵਰ ਗਲੇ ਮਾਨੁ ਸਭੈ ਕਤ ਖਾਇ ॥੧੫੬॥ ਕਬੀਰ ਸਾਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੈ ਮਿਲਿਆ
 ਸਬਦੁ ਜੁ ਬਾਹਿਆ ਏਕੁ ॥ ਲਾਗਤ ਹੀ ਮੁਇ ਮਿਲਿ ਗਇਆ ਪਰਿਆ ਕਲੇਜੇ ਛੇਕੁ ॥੧੫੭॥ ਕਬੀਰ ਸਾਚਾ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਿਆ ਕਰੈ ਜਤ ਸਿਖਾ ਮਹਿ ਚੂਕ ॥ ਅੰਧੇ ਏਕ ਨ ਲਾਗੈ ਜਿਤ ਬਾਂਸੁ ਬਜਾਈਐ ਫੂਕ ॥੧੫੮॥ ਕਬੀਰ

है गै बाहन सघन घन छत्रपती की नारि ॥ तासु पठंतर न पुजै हरि जन की पनिहारि ॥ ੧੫੬ ॥
 कबीर नृप नारी किउ निंदीਐ किउ हरि चेरी कउ मानु ॥ ओह माँग सवारै बिखै कउ ओह सिमरै हरि
 नामु ॥ ੧੬੦ ॥ कबीर थूनी पाई थिति भई सतिगुर बंधी धीर ॥ कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर
 तीर ॥ ੧੬੧ ॥ कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै माँडै हाट ॥ जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की
 साट ॥ ੧੬੨ ॥ कबीर काम परे हरि सिमरैਐ ऐसा सिमरहु नित ॥ अमरा पुर बासा करहु हरि
 गडिआ बहोरै बित ॥ ੧੬੩ ॥ कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥ रामु जु दाता मुकति को
 संतु जपावै नामु ॥ ੧੬੪ ॥ कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर ॥ इक अवघट घाटी राम
 की तिह चड़ि रहिओ कबीर ॥ ੧੬੫ ॥ कबीर दुनीआ के दोखे मूआ चालत कुल की कानि ॥ तब कुलु
 किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि ॥ ੧੬੬ ॥ कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि ॥
 पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु ॥ ੧੬੭ ॥ कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु ॥ दावा काहू को
 नही बडा देसु बड राजु ॥ ੧੬੮ ॥ कबीर दावै दाझ्नु होतु है निरदावै रहै निसंक ॥ जो जनु निरदावै
 रहै सो गनै इंद्र सो रंक ॥ ੧੬੯ ॥ कबीर पालि समुहा सरखरु भरा पी न सकै कोई नीरु ॥ भाग बडे तै
 पाइओ तूं भरि भरि पीउ कबीर ॥ ੧੭੦ ॥ कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु ॥ ए दुइ
 अखर ना खिसहि सो गहि रहिओ कबीरु ॥ ੧੭੧ ॥ कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि ॥ पंडित
 पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि ॥ ੧੭੨ ॥ कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ ॥ बावन अखर
 सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥ ੧੭੩ ॥ कबीर संतु न छडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥
 मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥ ੧੭੪ ॥ कबीर मनु सीतलु भडिआ पाइआ
 ब्रह्म गिआनु ॥ जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥ ੧੭੫ ॥ कबीर सारी सिरजनहार
 की जानै नाही कोइ ॥ कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥ ੧੭੬ ॥ कबीर भली भई जो भउ

ਪਰਿਆ ਦਿਸਾ ਗਈ ਸਮ ਭੂਲਿ ॥ ਓਰਾ ਗਰਿ ਪਾਨੀ ਭਡਿਆ ਜਾਇ ਮਿਲਿਐ ਢਲਿ ਕੂਲਿ ॥੧੭੭॥ ਕਬੀਰ ਧੂਰਿ
 ਸਕੇਲਿ ਕੈ ਪੁਰੀਆ ਬਾਂਧੀ ਦੇਹ ॥ ਦਿਵਸ ਚਾਰਿ ਕੋ ਪੇਖਨਾ ਅੰਤ ਖੇਹ ਕੀ ਖੇਹ ॥੧੭੮॥ ਕਬੀਰ ਸੂਰਜ ਚਾਂਦ ਕੈ
 ਤਦੈ ਭਈ ਸਭ ਦੇਹ ॥ ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ਕੇ ਬਿਨੁ ਮਿਲੇ ਪਲਟਿ ਭਈ ਸਭ ਖੇਹ ॥੧੭੯॥ ਜਹ ਅਨਭਤ ਤਹ ਭੈ ਨਹੀ
 ਜਹ ਭਤ ਤਹ ਹਰਿ ਨਾਹਿ ॥ ਕਹਿਐ ਕਬੀਰ ਬਿਚਾਰਿ ਕੈ ਸੰਤ ਸੁਨਹੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥੧੮੦॥ ਕਬੀਰ ਜਿਨਹੁ ਕਿਛੁ
 ਜਾਨਿਆ ਨਹੀ ਤਿਨ ਸੁਖ ਨੀਦ ਬਿਹਾਇ ॥ ਹਮਹੁ ਜੁ ਬੂਜ਼ਾ ਬੂਜ਼ਨਾ ਪੂਰੀ ਪਰੀ ਬਲਾਇ ॥੧੮੧॥ ਕਬੀਰ ਮਾਰੇ
 ਬਹੁਤੁ ਪੁਕਾਰਿਆ ਪੀਰ ਪੁਕਾਰੈ ਅਤਰ ॥ ਲਾਗੀ ਚੋਟ ਮਰੰਮ ਕੀ ਰਹਿਐ ਕਬੀਰ ਠਤਰ ॥੧੮੨॥ ਕਬੀਰ
 ਚੋਟ ਸੁਹੇਲੀ ਸੇਲ ਕੀ ਲਾਗਤ ਲੇਇ ਤਸਾਸ ॥ ਚੋਟ ਸਹਾਰੈ ਸਬਦ ਕੀ ਤਾਸੁ ਗੁਰੁ ਮੈ ਦਾਸ ॥੧੮੩॥ ਕਬੀਰ
 ਸੁਲਾਂ ਸੁਨਾਰੇ ਕਿਆ ਚਢਹਿ ਸਾਈ ਨ ਬਹਰਾ ਹੋਇ ॥ ਜਾ ਕਾਰਨਿ ਤ੍ਰਿ ਬਾਂਗ ਦੇਹਿ ਦਿਲ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਜੋਇ
 ॥੧੮੪॥ ਸੇਖ ਸਬੂਰੀ ਬਾਹਰਾ ਕਿਆ ਹਜ ਕਾਬੇ ਜਾਇ ॥ ਕਬੀਰ ਜਾ ਕੀ ਦਿਲ ਸਾਬਤਿ ਨਹੀ ਤਾ ਕਤ ਕਹਾਂ
 ਖੁਦਾਇ ॥੧੮੫॥ ਕਬੀਰ ਅਲਹ ਕੀ ਕਰਿ ਬੰਦਗੀ ਜਿਹ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥ ਦਿਲ ਮਹਿ ਸਾਈ ਪਰਗਤੈ
 ਬੁੜੈ ਬਲਮਤੀ ਨਾਂਇ ॥੧੮੬॥ ਕਬੀਰ ਜੋਰੀ ਕੀਏ ਜੁਲਮੁ ਹੈ ਕਹਤਾ ਨਾਉ ਹਲਾਲੁ ॥ ਦਫਤਰਿ ਲੇਖਾ ਮਾਂਗੀਐ
 ਤਬ ਹੋਇਗੇ ਕਤਨੁ ਹਵਾਲੁ ॥੧੮੭॥ ਕਬੀਰ ਖੂਬੁ ਖਾਨਾ ਖੀਚਰੀ ਜਾ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਲੋਨੁ ॥ ਹੇਰਾ ਰੋਟੀ ਕਾਰਨੇ
 ਗਲਾ ਕਟਾਵੈ ਕਤਨੁ ॥੧੮੮॥ ਕਬੀਰ ਗੁਰੁ ਲਾਗਾ ਤਬ ਜਾਨੀਐ ਮਿਟੈ ਮੋਹੁ ਤਨ ਤਾਪ ॥ ਹਰਖ ਸੋਗ ਦਾੜੈ
 ਨਹੀ ਤਬ ਹਰਿ ਆਪਹਿ ਆਪਿ ॥੧੮੯॥ ਕਬੀਰ ਰਾਮ ਕਹਨ ਮਹਿ ਮੇਦੁ ਹੈ ਤਾ ਮਹਿ ਏਕੁ ਬਿਚਾਰੁ ॥ ਸੋਈ ਰਾਮੁ
 ਸਭੈ ਕਹਹਿ ਸੋਈ ਕਤਤਕਹਾਰ ॥੧੯੦॥ ਕਬੀਰ ਰਾਮੈ ਰਾਮ ਕਹੁ ਕਹਿਬੇ ਮਾਹਿ ਬਿਕੇਕ ॥ ਏਕੁ ਅਨੇਕਹਿ ਮਿਲਿ
 ਗਡਿਆ ਏਕ ਸਮਾਨਾ ਏਕ ॥੧੯੧॥ ਕਬੀਰ ਜਾ ਘਰ ਸਾਧ ਨ ਸੇਵੀਅਹਿ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਾਹਿ ॥ ਤੇ ਘਰ
 ਮਰਹਟ ਸਾਰਖੇ ਭੂਤ ਬਸਹਿ ਤਿਨ ਮਾਹਿ ॥੧੯੨॥ ਕਬੀਰ ਗੁੰਗਾ ਹੂਆ ਬਾਵਰਾ ਬਹਰਾ ਹੂਆ ਕਾਨ ॥ ਪਾਵਹੁ
 ਤੇ ਪਿੰਗੁਲ ਭਡਿਆ ਮਾਰਿਆ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਨ ॥੧੯੩॥ ਕਬੀਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੂਰਮੇ ਬਾਹਿਆ ਬਾਨੁ ਜੁ ਏਕੁ ॥
 ਲਾਗਤ ਹੀ ਭੁਡਿ ਗਿਰਿ ਪਰਿਆ ਪਰਾ ਕਰੇਜੇ ਛੇਕੁ ॥੧੯੪॥ ਕਬੀਰ ਨਿਰਮਲ ਬੁੰਦ ਅਕਾਸ ਕੀ ਪਰਿ ਗੁੰਡ ਭੂਮਿ

ਬਿਕਾਰ ॥ ਬਿਨੁ ਸੰਗਤਿ ਇਉ ਮਾਂਨਈ ਹੋਇ ਗੈ ਭਠ ਛਾਰ ॥੧੬੫॥ ਕਬੀਰ ਨਿਰਮਲ ਬ੍ਰੂਦ ਅਕਾਸ ਕੀ
ਲੀਨੀ ਭੂਮਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਅਨਿਕ ਸਿਆਨੇ ਪਚਿ ਗਏ ਨਾ ਨਿਰਵਾਰੀ ਜਾਇ ॥੧੬੬॥ ਕਬੀਰ ਹਜ ਕਾਬੇ ਹਤ
ਜਾਇ ਥਾ ਆਗੈ ਮਿਲਿਆ ਖੁਦਾਇ ॥ ਸਾਈ ਮੁੜਾ ਸਿਤ ਲਰਿ ਪਰਿਆ ਤੁੜੈ ਕਿਨਿ ਫੁਰਮਾਈ ਗਾਇ ॥੧੬੭॥
ਕਬੀਰ ਹਜ ਕਾਬੈ ਹੋਇ ਹੋਇ ਗਇਆ ਕੇਤੀ ਬਾਰ ਕਬੀਰ ॥ ਸਾਈ ਮੁੜਾ ਮਹਿ ਕਿਆ ਖਤਾ ਮੁਖਹੁ ਨ ਬੋਲੈ ਪੀਰ
॥੧੬੮॥ ਕਬੀਰ ਜੀਆ ਜੁ ਮਾਰਹਿ ਜੋਰੁ ਕਰਿ ਕਹਤੇ ਹਹਿ ਜੁ ਹਲਾਲੁ ॥ ਦਫਤਰੁ ਦੰਡੈ ਜਬ ਕਾਢਿ ਹੈ ਹੋਇਗਾ
ਕਤਨੁ ਹਵਾਲੁ ॥੧੬੯॥ ਕਬੀਰ ਜੋਰੁ ਕੀਆ ਸੋ ਜੁਲਮੁ ਹੈ ਲੇਇ ਜਬਾਬੁ ਖੁਦਾਇ ॥ ਦਫਤਰਿ ਲੇਖਾ ਨੀਕਸੈ ਮਾਰ
ਮੁਹੈ ਮੁਹਿ ਖਾਇ ॥੨੦੦॥ ਕਬੀਰ ਲੇਖਾ ਦੇਨਾ ਸੁਹੇਲਾ ਜਤ ਦਿਲ ਸ੍ਰੂਚੀ ਹੋਇ ॥ ਤਿਸੁ ਸਾਚੇ ਦੀਬਾਨ ਮਹਿ
ਪਲਾ ਨ ਪਕਰੈ ਕੋਇ ॥੨੦੧॥ ਕਬੀਰ ਧਰਤੀ ਅਰੁ ਆਕਾਸ ਮਹਿ ਦੁਇ ਤ੍ਰੂ ਕਰੀ ਅਕਥ ॥ ਖਟ ਦਰਸਨ ਸੱਸੇ
ਪਰੇ ਅਰੁ ਚਤੁਰਾਸੀਹ ਸਿਧ ॥੨੦੨॥ ਕਬੀਰ ਮੇਰਾ ਮੁੜਾ ਮਹਿ ਕਿਛੁ ਨਹੀ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੈ ਸੋ ਤੇਰਾ ॥ ਤੇਰਾ ਤੁੜਾ ਕਤ
ਸਤਪਤੇ ਕਿਆ ਲਾਗੈ ਮੇਰਾ ॥੨੦੩॥ ਕਬੀਰ ਤ੍ਰੂ ਤ੍ਰੂ ਕਰਤਾ ਤ੍ਰੂ ਹੂਆ ਮੁੜਾ ਮਹਿ ਰਹਾ ਨ ਹੈਂ ॥ ਜਬ ਆਪਾ ਪਰ ਕਾ
ਮਿਟਿ ਗਇਆ ਜਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਤ੍ਰੂ ॥੨੦੪॥ ਕਬੀਰ ਬਿਕਾਰਹ ਚਿਤਕਤੇ ਝੂਠੇ ਕਰਤੇ ਆਸ ॥ ਮਨੋਰਥੁ ਕੋਇ ਨ
ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਾਲੇ ਊਠਿ ਨਿਰਾਸ ॥੨੦੫॥ ਕਬੀਰ ਹਰਿ ਕਾ ਸਿਮਰਨੁ ਜੋ ਕਰੈ ਸੋ ਸੁਖੀਆ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਇਤ ਤਤ ਕਤਹਿ
ਨ ਡੋਲਈ ਜਿਸ ਰਾਖੈ ਸਿਰਜਨਹਾਰ ॥੨੦੬॥ ਕਬੀਰ ਘਾਣੀ ਪੀਡੇ ਸਤਿਗੁਰ ਲੀਏ ਛਡਾਇ ॥ ਪਰਾ ਪ੍ਰਾਵਲੀ
ਭਾਵਨੀ ਪਰਗਟੁ ਹੋਈ ਆਇ ॥੨੦੭॥ ਕਬੀਰ ਟਾਲੈ ਟੋਲੈ ਦਿਨੁ ਗਇਆ ਬਿਆਜੁ ਬਢ਼ਾਂਤ ਜਾਇ ॥ ਨਾ ਹਰਿ
ਭਜਿਆਂ ਨ ਖਤੁ ਫਟਿਆਂ ਕਾਲੁ ਪਹੁੰਚੋ ਆਇ ॥੨੦੮॥ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਬੀਰ ਕੂਕੁ ਰੁ ਭਤਕਨਾ ਕਰੰਗ ਪਿਛੈ ਊਠਿ
ਧਾਇ ॥ ਕਰਮੀ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਇਆ ਜਿਨਿ ਹਤ ਲੀਆ ਛਡਾਇ ॥੨੦੯॥ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਕਬੀਰ ਧਰਤੀ ਸਾਧ
ਕੀ ਤਸਕਰ ਬੈਸਹਿ ਗਾਹਿ ॥ ਧਰਤੀ ਭਾਰਿ ਨ ਬਿਆਪੈ ਤਨ ਕਤ ਲਾਹੂ ਲਾਹਿ ॥੨੧੦॥ ਮਹਲਾ ੫ ॥
ਕਬੀਰ ਚਾਵਲ ਕਾਰਨੇ ਤੁਖ ਕਤ ਮੁਹਲੀ ਲਾਇ ॥ ਸਾਂਗਿ ਕੁਸਾਂਗੀ ਬੈਸਤੇ ਤਬ ਪ੍ਰਾਹੈ ਧਰਮ ਰਾਇ ॥੨੧੧॥ ਨਾਮਾ
ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਕਹੈ ਤਿਲੋਚਨੁ ਮੀਤ ॥ ਕਾਹੇ ਛੀਪਹੁ ਛਾਇਲੈ ਰਾਮ ਨ ਲਾਵਹੁ ਚੀਤੁ ॥੨੧੨॥ ਨਾਮਾ ਕਹੈ

ਤਿਲੋਚਨਾ ਮੁਖ ਤੇ ਰਾਮੁ ਸੰਮਾਲਿ ॥ ਹਾਥ ਪਾਤ ਕਰਿ ਕਾਮੁ ਸਭੁ ਚੀਤੁ ਨਿਰੰਜਨ ਨਾਲਿ ॥੨੧੩॥ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਕਬੀਰ ਹਮਰਾ ਕੋ ਨਹੀਂ ਹਮ ਕਿਸ ਹੂੰ ਕੇ ਨਾਹਿ ॥ ਜਿਨਿ ਛਿਹੁ ਰਚਨੁ ਰਚਾਇਆ ਤਿਸ ਹੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ
 ॥੨੧੪॥ ਕਬੀਰ ਕੀਚਡਿ ਆਟਾ ਗਿਰਿ ਪਰਿਆ ਕਿਛੁ ਨ ਆਇਆ ਹਾਥ ॥ ਪੀਸਤ ਪੀਸਤ ਚਾਬਿਆ ਸੋਈ
 ਨਿਬਹਿਆ ਸਾਥ ॥੨੧੫॥ ਕਬੀਰ ਮਨੁ ਜਾਨੈ ਸਭ ਬਾਤ ਜਾਨਤ ਹੀ ਅਤਗਨੁ ਕਰੈ ॥ ਕਾਹੇ ਕੀ ਕੁਸਲਾਤ ਹਾਥਿ
 ਦੀਪੁ ਕ੍ਰਾਏ ਪੈਰੈ ॥੨੧੬॥ ਕਬੀਰ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੁਜਾਨ ਸਿਤ ਬਰਜੈ ਲੋਗੁ ਅਜਾਨੁ ॥ ਤਾ ਸਿਤ ਟੂਟੀ ਕਿਤ ਬਨੈ
 ਜਾ ਕੇ ਜੀਅ ਪਰਾਨ ॥੨੧੭॥ ਕਬੀਰ ਕੋਠੇ ਮੰਡਪ ਹੇਤੁ ਕਰਿ ਕਾਹੇ ਮਰਹੁ ਸਕਾਰਿ ॥ ਕਾਰਜੁ ਸਾਢੇ ਤੀਨਿ ਹਥ
 ਘਨੀ ਤ ਪਤਨੇ ਚਾਰਿ ॥੨੧੮॥ ਕਬੀਰ ਜੋ ਮੈ ਚਿਤਵਤ ਨਾ ਕਰੈ ਕਿਆ ਮੇਰੇ ਚਿਤਵੇ ਹੋਇ ॥ ਅਪਨਾ ਚਿਤਵਿਆ
 ਹਰਿ ਕਰੈ ਜੋ ਮੇਰੇ ਚਿਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥੨੧੯॥ ਮਃ ੩ ॥ ਚਿੰਤਾ ਮਿ ਆਪਿ ਕਰਾਇਸੀ ਅਚਿੰਤੁ ਮਿ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਸੋ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿ ਸਭਨਾ ਸਾਰ ਕਰੇਇ ॥੨੨੦॥ ਮਃ ੫ ॥ ਕਬੀਰ ਰਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਆਂ ਫਿਰਿਆ ਲਾਲਚ
 ਮਾਹਿ ॥ ਪਾਪ ਕਰਂਤਾ ਮਰਿ ਗਇਆ ਅਤਥ ਪੁਨੀ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ॥੨੨੧॥ ਕਬੀਰ ਕਾਇਆ ਕਾਚੀ ਕਾਰਵੀ ਕੇਵਲ
 ਕਾਚੀ ਧਾਤੁ ॥ ਸਾਬਤੁ ਰਖਹਿ ਤ ਰਾਮ ਭਜੁ ਨਾਹਿ ਤ ਬਿਨਠੀ ਬਾਤ ॥੨੨੨॥ ਕਬੀਰ ਕੇਸੋ ਕੇਸੋ ਕ੍ਰੂਕੀਐ ਨ ਸੋਈਐ
 ਅਸਾਰ ॥ ਰਾਤਿ ਦਿਵਸ ਕੇ ਕੂਕਨੇ ਕਬਹੂੰ ਕੇ ਸੁਨੈ ਪੁਕਾਰ ॥੨੨੩॥ ਕਬੀਰ ਕਾਇਆ ਕਜਲੀ ਬਨੁ ਭਇਆ ਮਨੁ
 ਕੁਂਚਰੁ ਮਧ ਮੰਤੁ ॥ ਅੰਕਸੁ ਗਿਆਨੁ ਰਤਨੁ ਹੈ ਖੇਵਟੁ ਬਿਰਲਾ ਸੰਤੁ ॥੨੨੪॥ ਕਬੀਰ ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਮੁਖੁ ਕੋਥਰੀ ਪਾਰਖ
 ਆਗੈ ਖੋਲਿ ॥ ਕੋਈ ਆਇ ਮਿਲੈਗੇ ਗਾਹਕੀ ਲੇਗੇ ਮਹਗੇ ਮੌਲਿ ॥੨੨੫॥ ਕਬੀਰ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਾਨਿਆਂ ਨਹੀਂ
 ਪਾਲਿਆਂ ਕਟਕੁ ਕੁਟਂਬੁ ॥ ਧੰਧੇ ਹੀ ਮਹਿ ਮਰਿ ਗਇਆਂ ਬਾਹਰਿ ਭੰਝੇ ਨ ਬੰਬ ॥੨੨੬॥ ਕਬੀਰ ਆਖੀ ਕੇਰੇ ਮਾਟੁਕੇ
 ਪਲੁ ਪਲੁ ਗੰਝੇ ਬਿਹਾਇ ॥ ਮਨੁ ਜੰਜਾਲੁ ਨ ਛੋਡੰਝੇ ਜਮ ਦੀਆ ਦਮਾਮਾ ਆਇ ॥੨੨੭॥ ਕਬੀਰ ਤਰਵਰ ਰੂਪੀ
 ਰਾਮੁ ਹੈ ਫਲ ਰੂਪੀ ਬੈਰਾਗੁ ॥ ਛਾਇਆ ਰੂਪੀ ਸਾਧੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਤਜਿਆ ਬਾਦੁ ਬਿਬਾਦੁ ॥੨੨੮॥ ਕਬੀਰ ਐਸਾ
 ਬੀਜੁ ਬੋਇ ਬਾਰਹ ਮਾਸ ਫਲਮਤ ॥ ਸੀਤਲ ਛਾਇਆ ਗਹਿਰ ਫਲ ਪੱਖੀ ਕੇਲ ਕਰਂਤ ॥੨੨੯॥ ਕਬੀਰ ਦਾਤਾ
 ਤਰਖਰੁ ਦਿਆ ਫਲੁ ਉਪਕਾਰੀ ਜੀਵੰਤ ॥ ਪੱਖੀ ਚਲੇ ਦਿਸਾਵਰੀ ਬਿਰਖਾ ਸੁਫਲ ਫਲਮਤ ॥੨੩੦॥ ਕਬੀਰ ਸਾਧੁ

ਸੰਗੁ ਪਰਾਪਤੀ ਲਿਖਿਆ ਹੋਇ ਲਿਲਾਟ ॥ ਸੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਠਾਕ ਨ ਅਵਘਟ ਘਾਟ ॥੨੩੧॥
 ਕਬੀਰ ਏਕ ਘੜੀ ਆਧੀ ਘਰੀ ਆਧੀ ਹੁੰ ਤੇ ਆਧ ॥ ਭਗਤਨ ਸੇਤੀ ਗੋਸਟੇ ਜੋ ਕੀਨੇ ਸੋ ਲਾਭ ॥੨੩੨॥ ਕਬੀਰ
 ਭਾਂਗ ਮਾਛੁਲੀ ਸੁਰਾ ਪਾਨਿ ਜੋ ਜੋ ਪ੍ਰਾਨੀ ਖਾਂਹਿ ॥ ਤੀਰਥ ਬਰਤ ਨੇਮ ਕੀਏ ਤੇ ਸਭੈ ਰਸਾਤਲਿ ਜਾਂਹਿ ॥੨੩੩॥
 ਨੀਚੇ ਲੋਇਨ ਕਰਿ ਰਹਤ ਲੇ ਸਾਜਨ ਘਟ ਮਾਹਿ ॥ ਸਭ ਰਸ ਖੇਲਤ ਪੀਅ ਸਤ ਕਿਸੀ ਲਖਾਵਤ ਨਾਹਿ ॥੨੩੪॥
 ਆਠ ਜਾਮ ਚਤੁਸਠਿ ਘਰੀ ਤੁਅ ਨਿਰਖਤ ਰਹੈ ਜੀਤ ॥ ਨੀਚੇ ਲੋਇਨ ਕਿਤ ਕਰਤ ਸਭ ਘਟ ਦੇਖਤ ਪੀਤ
 ॥੨੩੫॥ ਸੁਨੁ ਸਖੀ ਪੀਅ ਮਹਿ ਜੀਤ ਬਸੈ ਜੀਅ ਮਹਿ ਬਸੈ ਕਿ ਪੀਤ ॥ ਜੀਤ ਪੀਤ ਬੁੜਾਤ ਨਹੀ ਘਟ ਮਹਿ
 ਜੀਤ ਕਿ ਪੀਤ ॥੨੩੬॥ ਕਬੀਰ ਬਾਮਨੁ ਗੁਰੁ ਹੈ ਜਗਤ ਕਾ ਭਗਤਨ ਕਾ ਗੁਰੁ ਨਾਹਿ ॥ ਅਰਜ਼ਿ ਉਰਜ਼ਿ ਕੈ ਪਚਿ
 ਸ੍ਰਾਅ ਚਾਰਤ ਬੇਦਹੁ ਮਾਹਿ ॥੨੩੭॥ ਹਰਿ ਹੈ ਖਾੜੁ ਰੇਤੁ ਮਹਿ ਬਿਖਰੀ ਹਾਥੀ ਚੁਨੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ
 ਗੁਰਿ ਭਲੀ ਬੁੜਾਈ ਕੀਟੀ ਹੋਇ ਕੈ ਖਾਇ ॥੨੩੮॥ ਕਬੀਰ ਜਤ ਤੁਹਿ ਸਾਧ ਪਿਰਾਮ ਕੀ ਸੀਸੁ ਕਾਟਿ ਕਰਿ ਗੋਇ
 ॥ ਖੇਲਤ ਖੇਲਤ ਹਾਲ ਕਰਿ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ਤ ਹੋਇ ॥੨੩੯॥ ਕਬੀਰ ਜਤ ਤੁਹਿ ਸਾਧ ਪਿਰਾਮ ਕੀ ਪਾਕੇ ਸੇਤੀ
 ਖੇਲੁ ॥ ਕਾਚੀ ਸਰਸਤਾਂ ਪੇਲਿ ਕੈ ਨਾ ਖਲਿ ਭੰਝੀ ਨ ਤੇਲੁ ॥੨੪੦॥ ਢੂਢਤ ਡੋਲਹਿ ਅੰਧ ਗਤਿ ਅਲੁ ਚੀਨਤ ਨਾਹੀ
 ਸੰਤ ॥ ਕਹਿ ਨਾਮਾ ਕਿਤ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਭਗਤਹੁ ਭਗਵਾਂਤੁ ॥੨੪੧॥ ਹਰਿ ਸੋ ਹੀਰਾ ਛਾਡਿ ਕੈ ਕਰਹਿ ਆਨ ਕੀ
 ਆਸ ॥ ਤੇ ਨਰ ਦੋਜਕ ਜਾਹਿਗੇ ਸਤਿ ਭਾਖੈ ਰਵਿਦਾਸ ॥੨੪੨॥ ਕਬੀਰ ਜਤ ਗ੍ਰਹੁ ਕਰਹਿ ਤ ਧਰਮੁ ਕਰੁ
 ਨਾਹੀ ਤ ਕਰੁ ਬੈਰਾਗੁ ॥ ਬੈਰਾਗੀ ਬੰਧਨੁ ਕਰੈ ਤਾ ਕੋ ਬਡੀ ਅਭਾਗੁ ॥੨੪੩॥

ਸਲੋਕ ਸੇਖ ਫਰੀਦ ਕੇ

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਜਿਤੁ ਦਿਹਾਡੈ ਧਨ ਕਰੀ ਸਾਹੇ ਲਏ ਲਿਖਾਇ ॥ ਮਲਕੁ ਜਿ ਕਨੀ ਸੁਣੀਦਾ ਮੁਹੁ ਦੇਖਾਲੇ ਆਇ ॥ ਜਿੰਦੁ ਨਿਮਾਣੀ
 ਕਢੀਐ ਹਡਾ ਕ੍ਰਿ ਕਡਕਾਇ ॥ ਸਾਹੇ ਲਿਖੇ ਨ ਚਲਨੀ ਜਿੰਦ੍ਰ ਕ੍ਰਿ ਸਮਝਾਇ ॥ ਜਿੰਦੁ ਵਹੁਟੀ ਮਰਣੁ ਵਰੁ ਲੈ ਜਾਸੀ
 ਪਰਣਾਇ ॥ ਆਪਣ ਹਥੀ ਜੋਲਿ ਕੈ ਕੈ ਗਲਿ ਲਗੈ ਧਾਇ ॥ ਵਾਲਹੁ ਨਿਕੀ ਪੁਰਸਲਾਤ ਕਨੀ ਨ ਸੁਣੀ ਆਇ ॥
 ਫਰੀਦਾ ਕਿੜੀ ਪਵਂਦੀਈ ਖੜਾ ਨ ਆਪੁ ਮੁਹਾਇ ॥੧॥ ਫਰੀਦਾ ਦਰ ਦਰਵੇਸੀ ਗਾਖੜੀ ਚਲਾਂ ਦੁਨੀਆਂ ਭਤਿ ॥

ਬਨਿ ਤਠਾਈ ਪੋਟਲੀ ਕਿਥੈ ਵੰਜਾ ਘਤਿ ॥੨॥ ਕਿੜ੍ਹੁ ਨ ਬੁੜੈ ਕਿੜ੍ਹੁ ਨ ਸੁੜੈ ਦੁਨੀਆ ਗੁੜੀ ਭਾਹਿ ॥ ਸਾਈ ਮੈਰੈ
 ਚੰਗਾ ਕੀਤਾ ਨਾਹੀ ਤ ਛਾ ਭੀ ਦੱਸਾਂ ਆਹਿ ॥੩॥ ਫਰੀਦਾ ਜੇ ਜਾਣਾ ਤਿਲ ਥੋੜ੍ਹੇ ਸੰਮਲਿ ਬੁਕੁ ਭਰੀ ॥ ਜੇ ਜਾਣਾ
 ਸਹੁ ਨਨਢਾ ਤਾਂ ਥੋੜਾ ਮਾਣੁ ਕਰੀ ॥੪॥ ਜੇ ਜਾਣਾ ਲੜ੍ਹ ਛਿਜਣਾ ਪੀਡੀ ਪਾਈ ਗਂਢਿ ॥ ਤੈ ਜੇਵੜੁ ਮੈ ਨਾਹਿ ਕੋ
 ਸਭੁ ਜਗੁ ਡਿਠਾ ਛਾਫਿ ॥੫॥ ਫਰੀਦਾ ਜੇ ਤੂ ਅਕਲਿ ਲਤੀਫੁ ਕਾਲੇ ਲਿਖੁ ਨ ਲੇਖ ॥ ਆਪਨਡੇ ਗਿਰੀਵਾਨ
 ਮਹਿ ਸਿਰੁ ਨੀਵਾਂ ਕਰਿ ਦੇਖੁ ॥੬॥ ਫਰੀਦਾ ਜੋ ਤੈ ਮਾਰਨਿ ਮੁਕੀਆਂ ਤਿਨਾ ਨ ਮਾਰੇ ਘੁੰਮਿ ॥ ਆਪਨਡੈ ਘਰਿ
 ਜਾਈਐ ਪੈਰ ਤਿਨਾ ਦੇ ਚੁੰਮਿ ॥੭॥ ਫਰੀਦਾ ਜਾਂ ਤਤ ਖਟਣ ਵੇਲ ਤਾਂ ਤੂ ਰਤਾ ਦੁਨੀ ਸਿਤ ॥ ਮਰਗ ਸਕਾਈ ਨੀਹਿ
 ਜਾਂ ਭਰਿਆ ਤਾਂ ਲਦਿਆ ॥੮॥ ਦੇਖੁ ਫਰੀਦਾ ਜੁ ਥੀਆ ਦਾੜੀ ਹੋਈ ਭੂਰ ॥ ਅਗਹੁ ਨੇਡਾ ਆਇਆ ਪਿਛਾ ਰਹਿਆ
 ਦੂਰਿ ॥੯॥ ਦੇਖੁ ਫਰੀਦਾ ਜਿ ਥੀਆ ਸਕਰ ਹੋਈ ਵਿਸੁ ॥ ਸਾਈ ਬਾਝਹੁ ਆਪਣੇ ਵੇਦਣ ਕਹੀਐ ਕਿਸੁ ॥੧੦॥
 ਫਰੀਦਾ ਅਖੀ ਦੇਖਿ ਪਤੀਣੀਆਂ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਰੀਣੇ ਕਨਨ ॥ ਸਾਖ ਪਕਂਦੀ ਆਈਆ ਹੋਰ ਕਰੇਂਦੀ ਵਨਨ ॥੧੧॥
 ਫਰੀਦਾ ਕਾਲੀ ਜਿਨੀ ਨ ਰਾਵਿਆ ਧਤਲੀ ਰਾਵੈ ਕੋਇ ॥ ਕਰਿ ਸਾਈ ਸਿਤ ਪਿਰਹੜੀ ਰੰਗੁ ਨਵੇਲਾ ਹੋਇ ॥੧੨॥
 ਮ: ੩ ॥ ਫਰੀਦਾ ਕਾਲੀ ਧਤਲੀ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਹੈ ਜੇ ਕੋ ਚਿਤਿ ਕਰੇ ॥ ਆਪਣਾ ਲਾਇਆ ਪਿਰਮੁ ਨ ਲਗੈ ਜੇ
 ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥ ਏਹੁ ਪਿਰਮੁ ਪਿਆਲਾ ਖਸਮ ਕਾ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥੧੩॥ ਫਰੀਦਾ ਜਿਨੁ ਲੋਇਣ ਜਗੁ ਮੋਹਿਆ
 ਸੇ ਲੋਇਣ ਮੈ ਡਿਠੁ ॥ ਕਜਲ ਰੇਖ ਨ ਸਹਦਿਆ ਸੇ ਪੱਖੀ ਸ੍ਰੂਹਿ ਬਹਿਠੁ ॥੧੪॥ ਫਰੀਦਾ ਕੂਕੇਦਿਆ ਚਾਂਗੇਦਿਆ
 ਮਤੀ ਦੇਦਿਆ ਨਿਤ ॥ ਜੋ ਸੈਤਾਨਿ ਵੰਜਾਇਆ ਸੇ ਕਿਤ ਫੇਰਹਿ ਚਿਤ ॥੧੫॥ ਫਰੀਦਾ ਥੀਤ ਪਵਾਹੀ ਦਮੁ ॥ ਜੇ
 ਸਾਈ ਲੋਡਹਿ ਸਭੁ ॥ ਇਕੁ ਛਿਜਹਿ ਬਿਆ ਲਤਾੜੀਅਹਿ ॥ ਤਾਂ ਸਾਈ ਦੈ ਦਰਿ ਵਾੜੀਅਹਿ ॥੧੬॥ ਫਰੀਦਾ
 ਖਾਕੁ ਨ ਨਿੰਦੀਐ ਖਾਕੂ ਜੇਡੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਜੀਵਦਿਆ ਪੈਰਾ ਤਲੈ ਮੁਡਿਆ ਉਪਰਿ ਹੋਇ ॥੧੭॥ ਫਰੀਦਾ ਜਾ ਲਬੁ
 ਤਾ ਨੇਹੁ ਕਿਆ ਲਬੁ ਤ ਕੂਡਾ ਨੇਹੁ ॥ ਕਿਚਰੁ ਝਾਤਿ ਲਗਈਐ ਛਪਰਿ ਤੁਟੈ ਮੇਹੁ ॥੧੮॥ ਫਰੀਦਾ ਜੰਗਲੁ ਜੰਗਲੁ
 ਕਿਆ ਭਵਹਿ ਵਣਿ ਕੰਡਾ ਮੋਡੇਹਿ ॥ ਵਸੀ ਰਖੁ ਹਿਆਲੀਐ ਜੰਗਲੁ ਕਿਆ ਢੂਢੇਹਿ ॥੧੯॥ ਫਰੀਦਾ ਇਨੀ ਨਿਕੀ
 ਜੰਘੀਐ ਥਲ ਝੂਗਰ ਭਵਿਓਮ੍ਰਿ ॥ ਅਜੁ ਫਰੀਦੈ ਕੂਜਡਾ ਸੈ ਕੋਹਾਂ ਥੀਓਮ੍ਰਿ ॥੨੦॥ ਫਰੀਦਾ ਰਾਤੀ ਵਡੀਆਂ

ਧੁਖਿ ਧੁਖਿ ਤਠਨਿ ਪਾਸ ॥ ਧਿਗੁ ਤਿਨਾ ਦਾ ਜੀਵਿਆ ਜਿਨਾ ਵਿਡਾਣੀ ਆਸ ॥੨੧॥ ਫਰੀਦਾ ਜੇ ਮੈ ਹੋਦਾ ਵਾਰਿਆ
 ਮਿਤਾ ਆਇਡਿਆਁ ॥ ਹੇਡਾ ਜਲੈ ਮਜੀਠ ਜਿਤ ਉਪਰਿ ਅੰਗਾਰਾ ॥੨੨॥ ਫਰੀਦਾ ਲੋਡੈ ਦਾਖ ਬਿਜਤਰੀਆਁ ਕਿਕਰਿ
 ਬੀਜੈ ਜਟੁ ॥ ਛਾਫੈ ਤੰਨ ਕਤਾਇਦਾ ਪੈਥਾ ਲੋਡੈ ਪਟੁ ॥੨੩॥ ਫਰੀਦਾ ਗਲੀਏ ਚਿਕਡੁ ਦ੍ਰਾਰ ਘਰੁ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੇ
 ਨੇਹੁ ॥ ਚਲਾ ਤ ਮਿਜੈ ਕੰਬਲੀ ਰਹਾਁ ਤ ਤੁਟੈ ਨੇਹੁ ॥੨੪॥ ਮਿਜਤ ਸਿਜਤ ਕੰਬਲੀ ਅਲਹ ਵਰਸਤ ਮੇਹੁ ॥ ਜਾਇ
 ਮਿਲਾ ਤਿਨਾ ਸਜਣਾ ਤੁਟਤ ਨਾਹੀ ਨੇਹੁ ॥੨੫॥ ਫਰੀਦਾ ਮੈ ਭੋਲਾਵਾ ਪਗ ਦਾ ਮਤੁ ਮੈਲੀ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥ ਗਹਿਲਾ
 ਰਹੁ ਨ ਜਾਣਈ ਸਿਰੁ ਭੀ ਮਿਟੀ ਖਾਇ ॥੨੬॥ ਫਰੀਦਾ ਸਕਰ ਖੱਡੁ ਨਿਵਾਤ ਗੁਡੁ ਮਾਖਿਓ ਮਾੜਾ ਟੁਧੁ ॥ ਸਭੇ ਵਸਤੂ
 ਮਿਠੀਆਁ ਰਕ ਨ ਪੁਜਨਿ ਤੁਧੁ ॥੨੭॥ ਫਰੀਦਾ ਰੋਟੀ ਮੇਰੀ ਕਾਠ ਕੀ ਲਾਵਣੁ ਮੇਰੀ ਭੁਖ ॥ ਜਿਨਾ ਖਾਧੀ ਚੋਪੜੀ
 ਘਣੇ ਸਹਨਿਗੇ ਟੁਖ ॥੨੮॥ ਰੁਖੀ ਸੁਖੀ ਖਾਇ ਕੈ ਠੰਡਾ ਪਾਣੀ ਪੀਤ ॥ ਫਰੀਦਾ ਦੇਖਿ ਪਰਾਈ ਚੋਪੜੀ ਨਾ ਤਰਸਾਏ
 ਜੀਤ ॥੨੯॥ ਅਜੁ ਨ ਸੁਤੀ ਕੰਤ ਸਿਤ ਅੰਗੁ ਮੁਡੇ ਮੁਡਿ ਜਾਇ ॥ ਜਾਇ ਪੁਛਹੁ ਡੋਹਾਗਣੀ ਤੁਮ ਕਿਤ ਰੈਣਿ
 ਵਿਹਾਇ ॥੩੦॥ ਸਾਹੁਰੈ ਢੋਈ ਨਾ ਲਹੈ ਪੇਈਐ ਨਾਹੀ ਥਾਤ ॥ ਪਿਰੁ ਵਾਤਡੀ ਨ ਪੁਛੈ ਧਨ ਸੋਹਾਗਣਿ ਨਾਤ
 ॥੩੧॥ ਸਾਹੁਰੈ ਪੇਈਐ ਕੰਤ ਕੀ ਕੰਤੁ ਅਗੰਮੁ ਅਥਾਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜੁ ਭਾਵੈ ਬੇਪਰਵਾਹ ॥੩੨॥ ਨਾਤੀ
 ਧੋਤੀ ਸੰਬਹੀ ਸੁਤੀ ਆਇ ਨਚਿੰਦੁ ॥ ਫਰੀਦਾ ਰਹੀ ਸੁ ਕੇਡੀ ਛਿਡੁ ਦੀ ਗੈ ਕਥੂਰੀ ਗੰਧੁ ॥੩੩॥ ਜੋਬਨ ਜਾਂਦੇ ਨਾ
 ਡਰਾਂ ਜੇ ਸਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਜਾਇ ॥ ਫਰੀਦਾ ਕਿਤੰਨੀ ਜੋਬਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਿਨੁ ਸੁਕਿ ਗਏ ਕੁਮਲਾਇ ॥੩੪॥ ਫਰੀਦਾ ਚਿੰਤ
 ਖਟੋਲਾ ਵਾਣੁ ਟੁਖੁ ਬਿਰਹਿ ਵਿਛਾਵਣ ਲੇਫੁ ॥ ਏਹੁ ਹਮਾਰਾ ਜੀਵਣਾ ਤੂ ਸਾਹਿਬ ਸਚੇ ਵੇਖੁ ॥੩੫॥ ਬਿਰਹਾ ਬਿਰਹਾ
 ਆਖੀਐ ਬਿਰਹਾ ਤੂ ਸੁਲਤਾਨੁ ॥ ਫਰੀਦਾ ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਬਿਰਹੁ ਨ ਊਪਜੈ ਸੋ ਤਨੁ ਜਾਣੁ ਮਸਾਨੁ ॥੩੬॥ ਫਰੀਦਾ ਏ
 ਵਿਸੁ ਗੰਦਲਾ ਧਰੀਆਁ ਖੱਡੁ ਲਿਵਾਡਿ ॥ ਇਕਿ ਰਾਹੇਦੇ ਰਹਿ ਗਏ ਇਕਿ ਰਾਧੀ ਗਏ ਤਜਾਡਿ ॥੩੭॥ ਫਰੀਦਾ
 ਚਾਰਿ ਗਵਾਇਆ ਛਾਫਿ ਕੈ ਚਾਰਿ ਗਵਾਇਆ ਸੰਮਿ ॥ ਲੇਖਾ ਰਕੁ ਮੰਗੇਸੀਆ ਤੂ ਆੱਹੋ ਕੋਊ ਕੰਮਿ ॥੩੮॥ ਫਰੀਦਾ
 ਦਰਿ ਦਰਵਾਜੈ ਜਾਇ ਕੈ ਕਿਤ ਡਿਠੋ ਘੜੀਆਲੁ ॥ ਏਹੁ ਨਿਦੋਸਾਁ ਮਾਰੀਐ ਹਮ ਦੋਸਾਁ ਦਾ ਕਿਆ ਹਾਲੁ ॥੩੯॥
 ਘੜੀਏ ਘੜੀਏ ਮਾਰੀਐ ਪਹਰੀ ਲਹੈ ਸਜਾਇ ॥ ਸੋ ਹੇਡਾ ਘੜੀਆਲ ਜਿਤ ਡੁਖੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਇ ॥੪੦॥

ਬੁਢਾ ਹੋਆ ਸੇਖ ਫਰੀਦੁ ਕਂਬਣਿ ਲਗੀ ਦੇਹ ॥ ਜੇ ਸਤ ਵਰਿਆ ਜੀਵਣਾ ਭੀ ਤਨੁ ਹੋਸੀ ਖੇਹ ॥੪੧॥ ਫਰੀਦਾ ਬਾਰਿ
 ਪਰਾਇਐ ਬੈਸਣਾ ਸਾਈ ਮੁੜੈ ਨ ਦੇਹਿ ॥ ਜੇ ਤੂ ਏਕੈ ਰਖਸੀ ਜੀਤ ਸਰੀਰਹੁ ਲੇਹਿ ॥੪੨॥ ਕਂਧਿ ਕੁਹਾੜਾ ਸਿਰਿ
 ਘੜਾ ਵਣਿ ਕੈ ਸਰੁ ਲੋਹਾਰੁ ॥ ਫਰੀਦਾ ਹਤ ਲੋਡੀ ਸਹੁ ਆਪਣਾ ਤੂ ਲੋਡਹਿ ਅੰਗਿਆਰ ॥੪੩॥ ਫਰੀਦਾ ਇਕਨਾ
 ਆਟਾ ਅਗਲਾ ਇਕਨਾ ਨਾਹੀ ਲੋਣੁ ॥ ਅਗੈ ਗਏ ਸਿੰਜਾਪਸਨਿ ਚੋਟਾਂ ਖਾਸੀ ਕਤਣੁ ॥੪੪॥ ਪਾਸਿ ਦਮਾਮੇ ਛਤੁ
 ਸਿਰਿ ਭੇਰੀ ਸਡੀ ਰਡ ॥ ਜਾਇ ਸੁਤੇ ਜੀਰਾਣ ਮਹਿ ਥੀਏ ਅਤੀਮਾ ਗਡ ॥੪੫॥ ਫਰੀਦਾ ਕੋਠੇ ਮੰਡਪ ਮਾਡੀਆ
 ਤਸਾਰੇਦੇ ਭੀ ਗਏ ॥ ਕੂੜਾ ਸਤਦਾ ਕਰਿ ਗਏ ਗੋਰੀ ਆਇ ਪਾਏ ॥੪੬॥ ਫਰੀਦਾ ਖਿੰਥਡਿ ਮੇਖਾ ਅਗਲੀਆ
 ਜਿੰਦੁ ਨ ਕਾਈ ਮੇਖ ॥ ਵਾਰੀ ਆਪੇ ਆਪਣੀ ਚਲੇ ਮਸਾਇਕ ਸੇਖ ॥੪੭॥ ਫਰੀਦਾ ਦੁਹੁ ਦੀਕੀ ਬਲਮਦਿਆ
 ਮਲਕੁ ਬਹਿਠਾ ਆਇ ॥ ਗੜ੍ਹ ਲੀਤਾ ਘਟੁ ਲੁਟਿਆ ਟੀਕੜੇ ਗਇਆ ਬੁੜਾਇ ॥੪੮॥ ਫਰੀਦਾ ਕੇਖੁ ਕਪਾਹੈ ਜਿ
 ਥੀਆ ਜਿ ਸਿਰਿ ਥੀਆ ਤਿਲਾਹ ॥ ਕਮਾਦੈ ਅਰੁ ਕਾਗਦੈ ਕੁਨ੍ਨੇ ਕੋਇਲਿਆਹ ॥ ਮੰਦੇ ਅਮਲ ਕਰੇਦਿਆ ਏਹ
 ਸਜਾਇ ਤਿਨਾਹ ॥੪੯॥ ਫਰੀਦਾ ਕੰਨਿ ਸੁਸਲਾ ਸੂਫੁ ਗਲਿ ਦਿਲਿ ਕਾਤੀ ਗੁੜ੍ਹ ਵਾਤਿ ॥ ਬਾਹਰਿ ਦਿਸੈ ਚਾਨਣਾ
 ਦਿਲਿ ਅੰਧਿਆਰੀ ਰਾਤਿ ॥੫੦॥ ਫਰੀਦਾ ਰਤੀ ਰਤੁ ਨ ਨਿਕਲੈ ਜੇ ਤਨੁ ਚੀਰੈ ਕੋਇ ॥ ਜੋ ਤਨ ਰਤੇ ਰਬ ਸਿਤ ਤਿਨ
 ਤਨਿ ਰਤੁ ਨ ਹੋਇ ॥੫੧॥ ਮ: ੩ ॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਸਭੋ ਰਤੁ ਹੈ ਰਤੁ ਬਿਨੁ ਤਨੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਜੋ ਸਹ ਰਤੇ ਆਪਣੇ ਤਿਤੁ
 ਤਨਿ ਲੋਭੁ ਰਤੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਭੈ ਪਇਐ ਤਨੁ ਖੀਣੁ ਹੋਇ ਲੋਭੁ ਰਤੁ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥ ਜਿਤ ਬੈਸਂਤਰਿ ਧਾਤੁ ਸੁਧੁ ਹੋਇ
 ਤਿਤ ਹਰਿ ਕਾ ਭਤ ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਗਵਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸੋਹਣੇ ਜਿ ਰਤੇ ਹਰਿ ਰੰਗ ਲਾਇ ॥੫੨॥ ਫਰੀਦਾ
 ਸੋਈ ਸਰਵਰੁ ਢੂਢਿ ਲਹੁ ਜਿਥਹੁ ਲਭੀ ਵਥੁ ॥ ਛਪਡਿ ਢੂਢੈ ਕਿਆ ਹੋਵੈ ਚਿਕਡਿ ਢੁਬੈ ਹਥੁ ॥੫੩॥ ਫਰੀਦਾ ਨਨਢੀ
 ਕੰਤੁ ਨ ਰਾਵਿਓ ਵਡੀ ਥੀ ਸੁਈਆਸੁ ॥ ਧਨ ਕੂਕੰਦੀ ਗੇਰ ਮੌਂ ਤੈ ਸਹ ਨਾ ਮਿਲੀਆਸੁ ॥੫੪॥ ਫਰੀਦਾ ਸਿਰੁ
 ਪਲਿਆ ਦਾੜੀ ਪਲੀ ਸੁਛਾਂ ਭੀ ਪਲੀਆਂ ॥ ਰੇ ਮਨ ਗਹਿਲੇ ਬਾਵਲੇ ਮਾਣਹਿ ਕਿਆ ਰਲੀਆਂ ॥੫੫॥ ਫਰੀਦਾ
 ਕੋਠੇ ਧੁਕਣੁ ਕੇਤੜਾ ਪਿਰ ਨੀਦੜੀ ਨਿਵਾਰਿ ॥ ਜੋ ਦਿਹ ਲਧੇ ਗਾਣਵੇ ਗਏ ਵਿਲਾਡਿ ਵਿਲਾਡਿ ॥੫੬॥ ਫਰੀਦਾ
 ਕੋਠੇ ਮੰਡਪ ਮਾਡੀਆ ਏਤੁ ਨ ਲਾਏ ਚਿਤੁ ॥ ਮਿਟੀ ਪੱਈ ਅਤੋਲਵੀ ਕੋਇ ਨ ਹੋਸੀ ਮਿਤੁ ॥੫੭॥ ਫਰੀਦਾ ਮੰਡਪ

ਮਾਲੁ ਨ ਲਾਇ ਮਰਗ ਸਤਾਣੀ ਚਿਤਿ ਧਰਿ ॥ ਸਾਈ ਜਾਇ ਸਮਾਲਿ ਜਿਥੈ ਹੀ ਤਤ ਵੰਜਣਾ ॥੫੮॥ ਫਰੀਦਾ
 ਜਿਨ੍ਹੀ ਕੰਮੀ ਨਾਹਿ ਗੁਣ ਤੇ ਕੰਮਡੇ ਵਿਸਾਰਿ ॥ ਮਤੁ ਸਰਮਿੰਦਾ ਥੀਵਹੀ ਸਾਈ ਦੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੫੯॥ ਫਰੀਦਾ
 ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਕਰਿ ਚਾਕਰੀ ਦਿਲ ਦੀ ਲਾਹਿ ਭਰਾਂਦਿ ॥ ਦਰਖੇਸਾਁ ਨੋ ਲੋਡੀਐ ਰੁਖਾਁ ਦੀ ਜੀਰਾਂਦਿ ॥੬੦॥ ਫਰੀਦਾ
 ਕਾਲੇ ਮੈਡੇ ਕਪਡੇ ਕਾਲਾ ਮੈਡਾ ਵੇਸੁ ॥ ਗੁਨਹੀ ਭਰਿਆ ਮੈ ਫਿਰਾ ਲੋਕੁ ਕਹੈ ਦਰਖੇਸੁ ॥੬੧॥ ਤਤੀ ਤੋਇ ਨ ਪਲਕੈ
 ਜੇ ਜਲਿ ਟੁਕੀ ਦੇਇ ॥ ਫਰੀਦਾ ਜੋ ਡੋਹਾਗਣਿ ਰਥ ਦੀ ਝੂਰੇਦੀ ਝੂਰੇਇ ॥੬੨॥ ਜਾਂ ਕੁਆਰੀ ਤਾ ਚਾਤ ਵੀਵਾਹੀ ਤਾਂ
 ਮਾਮਲੇ ॥ ਫਰੀਦਾ ਏਹੋ ਪਛੋਤਾਉ ਵਤਿ ਕੁਆਰੀ ਨ ਥੀਐ ॥੬੩॥ ਕਲਰ ਕੇਰੀ ਛਪਡੀ ਆਇ ਤਲਥੇ ਛਾਝ ॥ ਚਿੰਜੂ
 ਬੋਡਨਿ ਨਾ ਪੀਵਹਿ ਤਡਣ ਸੰਦੀ ਡੱਝ ॥੬੪॥ ਛਾਸੁ ਤਡਰਿ ਕੋਥੈ ਪਇਆ ਲੋਕੁ ਵਿਡਾਰਣਿ ਜਾਇ ॥ ਗਹਿਲਾ ਲੋਕੁ
 ਨ ਜਾਣਦਾ ਛਾਸੁ ਨ ਕੋਥਾ ਖਾਇ ॥੬੫॥ ਚਲਿ ਚਲਿ ਗੰਡਿਆਁ ਪੰਖੀਆਁ ਜਿਨ੍ਹੀ ਵਸਾਏ ਤਲ ॥ ਫਰੀਦਾ ਸਰੁ ਭਰਿਆ
 ਭੀ ਚਲਸੀ ਥਕੇ ਕਵਲ ਇਕਲ ॥੬੬॥ ਫਰੀਦਾ ਇਟ ਸਿਰਾਣੇ ਭੁਇ ਸਵਣੁ ਕੀਡਾ ਲਡਿਆਂ ਮਾਸਿ ॥ ਕੇਤਡਿਆ
 ਜੁਗ ਵਾਪਰੇ ਇਕਤੁ ਪਇਆ ਪਾਸਿ ॥੬੭॥ ਫਰੀਦਾ ਭਨੀ ਘੜੀ ਸਵਨਨਕੀ ਟੁਟੀ ਨਾਗਰ ਲਜੁ ॥ ਅਜਰਾਈਲੁ
 ਫਰੇਸਤਾ ਕੈ ਘਰਿ ਨਾਠੀ ਅਜੁ ॥੬੮॥ ਫਰੀਦਾ ਭਨੀ ਘੜੀ ਸਵਨਨਕੀ ਟੁਟੀ ਨਾਗਰ ਲਜੁ ॥ ਜੋ ਸਜਣ ਭੁਇ ਭਾਰੁ
 ਥੇ ਸੇ ਕਿਤ ਆਵਹਿ ਅਜੁ ॥੬੯॥ ਫਰੀਦਾ ਕੇ ਨਿਵਾਜਾ ਕੁਤਿਆ ਏਹ ਨ ਭਲੀ ਰੀਤਿ ॥ ਕਬਹੀ ਚਲਿ ਨ ਆਇਆ
 ਪੰਜੇ ਕਖਤ ਮਸੀਤਿ ॥੭੦॥ ਤਉ ਫਰੀਦਾ ਤਜੂ ਸਾਜਿ ਸੁਕਹ ਨਿਵਾਜ ਗੁਜਾਰਿ ॥ ਜੋ ਸਿਰੁ ਸਾਈ ਨਾ ਨਿਵੈ ਸੋ ਸਿਰੁ
 ਕਪਿ ਉਤਾਰਿ ॥੭੧॥ ਜੋ ਸਿਰੁ ਸਾਈ ਨਾ ਨਿਵੈ ਸੋ ਸਿਰੁ ਕੀਜੈ ਕਾਂਡਿ ॥ ਕੁਨ੍ਹੇ ਹੇਠਿ ਜਲਾਈਐ ਬਾਲਣ ਸੰਦੈ ਥਾਇ
 ॥੭੨॥ ਫਰੀਦਾ ਕਿਥੈ ਤੈਡੇ ਮਾਪਿਆ ਜਿਨ੍ਹੀ ਤੂ ਜਣਿਓਹਿ ॥ ਤੈ ਪਾਸਹੁ ਓਡਿ ਲਦਿ ਗਏ ਤੂ ਅਜੈ ਨ ਪਤੀਣੋਹਿ
 ॥੭੩॥ ਫਰੀਦਾ ਮਨੁ ਮੈਦਾਨੁ ਕਰਿ ਟੋਏ ਟਿਬੇ ਲਾਹਿ ॥ ਅਗੈ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵਸੀ ਦੋਜਕ ਸੰਦੀ ਭਾਹਿ ॥੭੪॥
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਖਾਲਕੁ ਖਲਕ ਮਹਿ ਖਲਕ ਵਸੈ ਰਥ ਮਾਹਿ ॥ ਮੰਦਾ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਾਂ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਕੋਈ
 ਨਾਹਿ ॥੭੫॥ ਫਰੀਦਾ ਜਿ ਦਿਹਿ ਨਾਲਾ ਕਪਿਆ ਜੇ ਗਲੁ ਕਪਹਿ ਚੁਖ ॥ ਪਵਨਿ ਨ ਇਤੀ ਮਾਮਲੇ ਸਹਾਁ ਨ ਇਤੀ
 ਢੁਖ ॥੭੬॥ ਚਬਣ ਚਲਣ ਰਤਨਨ ਸੇ ਸੁਣੀਅਰ ਬਹਿ ਗਏ ॥ ਹੇਡੇ ਮੁਤੀ ਧਾਹ ਸੇ ਜਾਨੀ ਚਲਿ ਗਏ ॥੭੭॥ ਫਰੀਦਾ

ਬੁਰੇ ਦਾ ਭਲਾ ਕਰਿ ਗੁਸਾ ਮਨਿ ਨ ਹਫ਼ਾਇ ॥ ਦੇਹੀ ਰੋਗੁ ਨ ਲਗੈ ਪਲੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਇ ॥੭੮॥ ਫਰੀਦਾ ਪੰਖ
 ਪਰਾਹੁਣੀ ਟੁਨੀ ਸੁਹਾਵਾ ਬਾਗੁ ॥ ਨਤਬਤਿ ਵਜੀ ਸੁਬਹ ਸਿਤ ਚਲਣ ਕਾ ਕਰਿ ਸਾਜੁ ॥੭੯॥ ਫਰੀਦਾ ਰਾਤਿ ਕਥੂਰੀ
 ਕੰਡੀਐ ਸੁਤਿਆ ਮਿਲੈ ਨ ਭਾਉ ॥ ਜਿਨ੍ਹਾ ਨੈਣ ਨੀਦਾਵਲੇ ਤਿਨ੍ਹਾ ਮਿਲਣੁ ਕੁਆਉ ॥੮੦॥ ਫਰੀਦਾ ਮੈ ਜਾਨਿਆ
 ਦੁਖੁ ਸੁੜ ਕੂ ਦੁਖੁ ਸਬਾਇਐ ਜਗੁ ॥ ਊਚੇ ਚਡ਼ੀ ਕੈ ਦੇਖਿਆ ਤਾਂ ਘਰਿ ਘਰਿ ਏਹਾ ਅਗੁ ॥੮੧॥ ਮਹਲਾ ੫ ॥
 ਫਰੀਦਾ ਭੂਮਿ ਰੰਗਾਵਲੀ ਮੰਝਿ ਵਿਸੂਲਾ ਬਾਗੁ ॥ ਜੋ ਜਨ ਪੀਰਿ ਨਿਵਾਜਿਆ ਤਿਨ੍ਹਾ ਅੰਚ ਨ ਲਾਗ ॥੮੨॥
 ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਤੁਮਰ ਸੁਹਾਵਡੀ ਸੰਗਿ ਸੁਵਨਨਡੀ ਦੇਹ ॥ ਵਿਰਲੇ ਕੇਈ ਪਾਈਅਨਿ ਜਿਨ੍ਹਾ ਪਿਆਰੇ ਨੇਹ ॥੮੩॥
 ਕਂਧੀ ਵਹਣ ਨ ਢਾਹਿ ਤਤ ਭੀ ਲੇਖਾ ਦੇਵਣਾ ॥ ਜਿਥਰਿ ਰਥ ਰਖਾਇ ਵਹਣੁ ਤਿਦਾਊ ਗੱਤ ਕਰੇ ॥੮੪॥ ਫਰੀਦਾ
 ਢੁਖਾ ਸੇਤੀ ਦਿਹੁ ਗਇਆ ਸੂਲਾਂ ਸੇਤੀ ਰਾਤਿ ॥ ਖੜਾ ਪੁਕਾਰੇ ਪਾਤਣੀ ਬੇਡਾ ਕਪਰ ਵਾਤਿ ॥੮੫॥ ਲਮ੍ਮੀ ਲਮ੍ਮੀ
 ਨਦੀ ਵਹੈ ਕਂਧੀ ਕੈਰੈ ਹੇਤਿ ॥ ਬੇਡੇ ਨੋ ਕਪਰੁ ਕਿਆ ਕਰੇ ਜੇ ਪਾਤਣ ਰਹੈ ਸੁਚੇਤਿ ॥੮੬॥ ਫਰੀਦਾ ਗਲੀ ਸੁ ਸਜਣ
 ਕੀਹ ਇਕੁ ਢੂਠੇਦੀ ਨ ਲਹਾਁ ॥ ਧੁਖਾਂ ਜਿਤ ਮਾਲੀਹ ਕਾਰਣਿ ਤਿਨ੍ਹਾ ਮਾ ਪਿਰੀ ॥੮੭॥ ਫਰੀਦਾ ਇਹੁ ਤਨੁ ਭਤਕਣਾ
 ਨਿਤ ਨਿਤ ਦੁਖੀਐ ਕਤਣੁ ॥ ਕਨੀ ਬੁਜੇ ਦੇ ਰਹਾਁ ਕਿਤੀ ਕਗੈ ਪਤਣੁ ॥੮੮॥ ਫਰੀਦਾ ਰਥ ਖੜ੍ਹੂਰੀ ਪਕੀਆਁ
 ਮਾਖਿਆ ਨਈ ਵਵਨਿ ॥ ਜੋ ਜੋ ਕਬੈ ਡੀਹੜਾ ਸੋ ਤੁਮਰ ਹਥ ਪਵਨਿ ॥੮੯॥ ਫਰੀਦਾ ਤਨੁ ਸੁਕਾ ਪਿੰਜਰੁ ਥੀਆ
 ਤਲੀਆਁ ਖੂੰਡਹਿ ਕਾਗ ॥ ਅਜੈ ਸੁ ਰਥੁ ਨ ਬਾਹੁਡਿਆਂ ਦੇਖੁ ਕੰਦੇ ਕੇ ਭਾਗ ॥੯੦॥ ਕਾਗਾ ਕਰਗ ਢੰਢੋਲਿਆ ਸਗਲਾ
 ਖਾਇਆ ਮਾਸੁ ॥ ਏ ਦੁਇ ਨੈਨਾ ਮਤਿ ਛੁਹਤ ਪਿਰ ਦੇਖਨ ਕੀ ਆਸ ॥੯੧॥ ਕਾਗਾ ਚੂੰਡਿ ਨ ਪਿੰਜਰਾ ਬਸੈ ਤ ਤਡਰਿ
 ਜਾਹਿ ॥ ਜਿਤੁ ਪਿੰਜਰੈ ਮੇਰਾ ਸਹੁ ਵਸੈ ਮਾਸੁ ਨ ਤਿਦੂ ਖਾਹਿ ॥੯੨॥ ਫਰੀਦਾ ਗੇਰ ਨਿਮਾਣੀ ਸਡੁ ਕਰੇ ਨਿਘਰਿਆ
 ਘਰਿ ਆਉ ॥ ਸਰਪਰ ਮੈਥੈ ਆਵਣਾ ਮਰਣਹੁ ਨ ਡਰਿਆਹੁ ॥੯੩॥ ਏਨੀ ਲੋਇਣੀ ਦੇਖਦਿਆ ਕੇਤੀ ਚਲਿ ਗੈਂ
 ॥ ਫਰੀਦਾ ਲੋਕਾਂ ਆਪੇ ਆਪਣੀ ਮੈ ਆਪਣੀ ਪੈਂਦੀ ॥੯੪॥ ਆਪੁ ਸਵਾਰਹਿ ਮੈ ਮਿਲਹਿ ਮੈ ਮਿਲਿਆ ਸੁਖੁ ਹੋਇ
 ॥ ਫਰੀਦਾ ਜੇ ਤੂ ਮੇਰਾ ਹੋਇ ਰਹਹਿ ਸਭੁ ਜਗੁ ਤੇਰਾ ਹੋਇ ॥੯੫॥ ਕਂਧੀ ਤਤੈ ਰੁਖੜਾ ਕਿਚਰਕੁ ਬਨੈ ਧੀਰੁ ॥
 ਫਰੀਦਾ ਕਚੈ ਭਾੰਡੈ ਰਖੀਐ ਕਿਚਰੁ ਤਾਈ ਨੀਰੁ ॥੯੬॥ ਫਰੀਦਾ ਮਹਲ ਨਿਸਖਣ ਰਹਿ ਗਏ ਵਾਸਾ ਆਇਆ

ਤਲਿ ॥ ਗੋਰਾਂ ਸੇ ਨਿਮਾਣੀਆ ਬਹਸਨਿ ਰੁਹਾਂ ਮਲਿ ॥ ਆਖੀ ਸੇਖਾ ਬੰਦਗੀ ਚਲਣੁ ਅਜੁ ਕਿ ਕਲਿ ॥੬੭॥
 ਫਰੀਦਾ ਮਤੈ ਦਾ ਬਨਾ ਏਵੈ ਦਿਸੈ ਜਿਤ ਦਰੀਆਵੈ ਢਾਹਾ ॥ ਅਗੈ ਦੋਜਕੁ ਤਪਿਆ ਸੁਣੀਐ ਹ੍ਰਾਲ ਪਵੈ ਕਾਹਾਹਾ ॥
 ਡਿਕਨਾ ਨੋ ਸਭ ਸੋਝੀ ਆਈ ਡਿਕਿ ਫਿਰਦੇ ਵੇਪਰਵਾਹਾ ॥ ਅਮਲ ਜਿ ਕੀਤਿਆ ਦੁਨੀ ਵਿਚਿ ਸੇ ਦਰਗਹ ਓਗਾਹਾ
 ॥੬੮॥ ਫਰੀਦਾ ਦਰੀਆਵੈ ਕਨੈ ਬਗੁਲਾ ਬੈਠਾ ਕੇਲ ਕਰੇ ॥ ਕੇਲ ਕਰੇਦੇ ਛਾਡਾ ਨੋ ਅਚਿੰਤੇ ਬਾਜ ਪਏ ॥ ਬਾਜ ਪਏ
 ਤਿਸੁ ਰਥ ਦੇ ਕੇਲਾਂ ਵਿਸਰੀਆਁ ॥ ਜੋ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਨ ਚੇਤੇ ਸਨਿ ਸੋ ਗਾਲੀ ਰਥ ਕੀਆਁ ॥੬੯॥ ਸਾਢੇ ਤੈ ਮਣ
 ਦੇਹੂਰੀ ਚਲੈ ਪਾਣੀ ਅੰਨਿ ॥ ਆਡਿਓ ਬੰਦਾ ਦੁਨੀ ਵਿਚਿ ਵਤਿ ਆਸੂਣੀ ਬੰਨਿ ॥ ਮਲਕਲ ਮਤਤ ਜਾਂ ਆਵਸੀ
 ਸਭ ਦਰਵਾਜੇ ਭੰਨਿ ॥ ਤਿਨਾ ਪਿਆਰਿਆ ਭਾਈਆਁ ਅਗੈ ਦਿਤਾ ਬੰਨਿ ॥ ਵੇਖਹੁ ਬੰਦਾ ਚਲਿਆ ਚਹੁ ਜਣਿਆ ਟੈ
 ਕੰਨਿ ॥ ਫਰੀਦਾ ਅਮਲ ਜਿ ਕੀਤੇ ਦੁਨੀ ਵਿਚਿ ਦਰਗਹ ਆਏ ਕੰਮਿ ॥੧੦੦॥ ਫਰੀਦਾ ਹਤ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ੍ਹ
 ਪੰਖੀਆ ਜੰਗਲਿ ਜਿਨ੍ਹਾ ਵਾਸੁ ॥ ਕਕਰੁ ਚੁਗਨਿ ਥਲਿ ਵਸਨਿ ਰਥ ਨ ਛੋਡਨਿ ਪਾਸੁ ॥੧੦੧॥ ਫਰੀਦਾ ਰੁਤਿ
 ਫਿਰੀ ਵਣੁ ਕੰਬਿਆ ਪਤ ਝੜੇ ਝਾਡਿ ਪਾਹਿ ॥ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਫੁੰਡੀਆਁ ਰਹਣੁ ਕਿਥਾਊ ਨਾਹਿ ॥੧੦੨॥ ਫਰੀਦਾ ਪਾਡਿ
 ਪਟੋਲਾ ਧਜ ਕਰੀ ਕੰਬਲਡੀ ਪਹਿਰੇਤ ॥ ਜਿਨ੍ਹੀ ਵੇਸੀ ਸਹੁ ਮਿਲੈ ਸੇਈ ਵੇਸ ਕਰੇਤ ॥੧੦੩॥ ਮਃ ੩ ॥ ਕਾਇ
 ਪਟੋਲਾ ਪਾਡਤੀ ਕੰਬਲਡੀ ਪਹਿਰੇਇ ॥ ਨਾਨਕ ਘਰ ਹੀ ਬੈਠਿਆ ਸਹੁ ਮਿਲੈ ਜੇ ਨੀਅਤਿ ਰਾਸਿ ਕਰੇਇ ॥੧੦੪॥
 ਮਃ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਗਰਬੁ ਜਿਨਾ ਵਡਿਆਈਆ ਧਨਿ ਜੋਬਨਿ ਆਗਾਹ ॥ ਖਾਲੀ ਚਲੇ ਧਣੀ ਸਿਤ ਟਿਕੇ ਜਿਤ
 ਮੀਹਾਹੁ ॥੧੦੫॥ ਫਰੀਦਾ ਤਿਨਾ ਸੁਖ ਡਰਾਵਣੇ ਜਿਨਾ ਵਿਸਾਰਿਐਨੁ ਨਾਤ ॥ ਐਥੈ ਦੁਖ ਘਣੇਰਿਆ ਅਗੈ ਠਤਰ
 ਨ ਠਾਤ ॥੧੦੬॥ ਫਰੀਦਾ ਪਿਛਲ ਰਾਤਿ ਨ ਜਾਗਿਐਹਿ ਜੀਵਦੜੇ ਸੁਝਿਐਹਿ ॥ ਜੇ ਤੈ ਰਖੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਤ ਰਕਿ
 ਨ ਵਿਸ਼ਰਿਐਹਿ ॥੧੦੭॥ ਮਃ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਕਨ੍ਤੁ ਰੰਗਾਵਲਾ ਵਡਾ ਵੇਮੁਹਤਾਜੁ ॥ ਅਲਹ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਏਹੁ
 ਸਚਾਵਾਂ ਸਾਜੁ ॥੧੦੮॥ ਮਃ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਡਿਕੁ ਕਰਿ ਦਿਲ ਤੇ ਲਾਹਿ ਵਿਕਾਰੁ ॥ ਅਲਹ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭਲਾ
 ਤਾਂ ਲਭੀ ਦਰਖਾਰੁ ॥੧੦੯॥ ਮਃ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਦੁਨੀ ਵਜਾਈ ਵਜਦੀ ਤ੍ਰ੍ਯੰ ਭੀ ਵਜਹਿ ਨਾਲਿ ॥ ਸੋਈ ਜੀਤ ਨ
 ਵਜਦਾ ਜਿਸੁ ਅਲਹੁ ਕਰਦਾ ਸਾਰ ॥੧੧੦॥ ਮਃ ੫ ॥ ਫਰੀਦਾ ਦਿਲੁ ਰਤਾ ਇਸੁ ਦੁਨੀ ਸਿਤ ਦੁਨੀ ਨ ਕਿਤੈ ਕੰਮਿ

॥ ਮਿਸਲ ਫਕੀਰਾਂ ਗਾਖੜੀ ਸੁ ਪਾਈਐ ਪੂਰ ਕਰਮਿ ॥੧੧੧॥ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਫੁਲਡਾ ਫਲੁ ਭੀ ਪਛਾ ਰਾਤਿ ॥
 ਜੋ ਜਾਗਨ੍ਹਿ ਲਵਣਿ ਸੇ ਸਾਈ ਕਨ੍ਹੋ ਦਾਤਿ ॥੧੧੨॥ ਦਾਤੀ ਸਾਹਿਬ ਸੰਦੀਆ ਕਿਆ ਚਲੈ ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ॥ ਇਕਿ
 ਜਾਗਂਦੇ ਨਾ ਲਹਨਿ ਇਕਨਾ ਸੁਤਿਆ ਦੇਇ ਉਠਾਲਿ ॥੧੧੩॥ ਢੂਢੇਦੀਏ ਸੁਹਾਗ ਕੂ ਤਤ ਤਨਿ ਕਾਈ ਕੋਰ ॥
 ਜਿਨ੍ਹਾ ਨਾਤ ਸੁਹਾਗਣੀ ਤਿਨਾ ਝਾਕ ਨ ਹੋਰ ॥੧੧੪॥ ਸਬਰ ਮੰਝ ਕਮਾਣ ਏ ਸਬਰੁ ਕਾ ਨੀਹਣੇ ॥ ਸਬਰ ਸੰਦਾ
 ਬਾਣੁ ਖਾਲਕੁ ਖਤਾ ਨ ਕਰੀ ॥੧੧੫॥ ਸਬਰ ਅੰਦਰਿ ਸਾਕਾਰੀ ਤਨੁ ਏਕੈ ਜਾਲੇਨਿ ॥ ਹੋਨਿ ਨਜੀਕਿ ਖੁਦਾਇ ਦੈ ਭੇਤੁ
 ਨ ਕਿਸੈ ਟੇਨਿ ॥੧੧੬॥ ਸਬਰੁ ਏਹੁ ਸੁਆਤ ਜੇ ਤੂਂ ਬੰਦਾ ਫਿਡੂ ਕਰਹਿ ॥ ਵਧਿ ਥੀਵਹਿ ਦਰੀਆਤ ਟੁਟਿ ਨ
 ਥੀਵਹਿ ਵਾਹੜਾ ॥੧੧੭॥ ਫਰੀਦਾ ਦਰਖੇਸੀ ਗਾਖੜੀ ਚੋਪੜੀ ਪਰੀਤਿ ॥ ਇਕਨਿ ਕਿਨੈ ਚਾਲੀਐ ਦਰਖੇਸਾਕੀ
 ਰੀਤਿ ॥੧੧੮॥ ਤਨੁ ਤਪੈ ਤਨੂਰ ਜਿਤ ਬਾਲਣੁ ਹਡ ਬਲਮਨਿ ॥ ਪੈਰੀ ਥਕਾਂ ਸਿਰਿ ਜੁਲਾਂ ਜੇ ਮੂੰ ਪਿਰੀ ਮਿਲਮਨਿ
 ॥੧੧੯॥ ਤਨੁ ਨ ਤਪਾਇ ਤਨੂਰ ਜਿਤ ਬਾਲਣੁ ਹਡ ਨ ਬਾਲਿ ॥ ਸਿਰਿ ਪੈਰੀ ਕਿਆ ਫੇਡਿਆ ਅੰਦਰਿ ਪਿਰੀ
 ਨਿਹਾਲਿ ॥੧੨੦॥ ਹਉ ਢੂਢੇਦੀ ਸਜਣਾ ਸਜਣੁ ਮੈਡੇ ਨਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਇ
 ਦਿਖਾਲਿ ॥੧੨੧॥ ਛਾਸਾ ਦੇਖਿ ਤਰੰਦਿਆ ਬਗ ਆਇਆ ਚਾਤ ॥ ਝੁਕਿ ਮੁਏ ਕਗ ਬਪੁਡੇ ਸਿਰੁ ਤਲਿ ਤਪਰਿ
 ਪਾਤ ॥੧੨੨॥ ਮੈ ਜਾਣਿਆ ਕਡ ਛਾਸੁ ਹੈ ਤਾਂ ਮੈ ਕੀਤਾ ਸੰਗੁ ॥ ਜੇ ਜਾਣਾ ਕਗ ਬਪੁੜਾ ਜਨਮਿ ਨ ਭੇਡੀ ਅੰਗੁ
 ॥੧੨੩॥ ਕਿਆ ਛਾਸੁ ਕਿਆ ਕਗੁਲਾ ਜਾ ਕਤ ਨਦਰਿ ਧਰੇ ॥ ਜੇ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਕਾਗਹੁ ਛਾਸੁ ਕਰੇ ॥੧੨੪॥
 ਸਰਕਰ ਪੱਖੀ ਹੇਕੜੀ ਫਾਹੀਕਾਲ ਪਚਾਸ ॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਲਹਰੀ ਗੜੁ ਥਿਆ ਸਚੇ ਤੇਰੀ ਆਸ ॥੧੨੫॥ ਕਵਣੁ ਸੁ
 ਅਖਰੁ ਕਵਣੁ ਗੁਣੁ ਕਵਣੁ ਸੁ ਮਣੀਆ ਮੰਤੁ ॥ ਕਵਣੁ ਸੁ ਕੇਵੇਂ ਹਉ ਕਰੀ ਜਿਤੁ ਵਸਿ ਆਵੈ ਕੰਤੁ ॥੧੨੬॥ ਨਿਵਣੁ
 ਸੁ ਅਖਰੁ ਖਵਣੁ ਗੁਣੁ ਜਿਹਕਾ ਮਣੀਆ ਮੰਤੁ ॥ ਏ ਕੈ ਭੈਣੇ ਕੇਵ ਕਰਿ ਤਾਂ ਵਸਿ ਆਵੀ ਕੰਤੁ ॥੧੨੭॥ ਮਤਿ ਹੋਦੀ
 ਹੋਇ ਇਆਣਾ ॥ ਤਾਣ ਹੋਦੇ ਹੋਇ ਨਿਤਾਣਾ ॥ ਅਣਹੋਦੇ ਆਪੁ ਕੰਡਾਏ ॥ ਕੋ ਐਸਾ ਭਗਤੁ ਸਦਾਏ ॥੧੨੮॥ ਇਕੁ
 ਫਿਕਾ ਨ ਗਲਾਇ ਸਭਨਾ ਮੈ ਸਚਾ ਧਣੀ ॥ ਹਿਆਤ ਨ ਕੈਹੀ ਠਾਹਿ ਮਾਣਕ ਸਭ ਅਮੋਲਕੇ ॥੧੨੯॥ ਸਭਨਾ
 ਮਨ ਮਾਣਿਕ ਠਾਹਣੁ ਮੂਲਿ ਮਚਾਂਗਵਾ ॥ ਜੇ ਤਤ ਪਿਰੀਆ ਦੀ ਸਿਕ ਹਿਆਤ ਨ ਠਾਹੇ ਕਹੀ ਦਾ ॥੧੩੦॥

੧ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਂ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਵਧੇ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖਬਾਕਧ ਮਹਲਾ ੫ ॥

ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਕਰਤਾਰ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਭ ਆਪੇ ॥ ਸਰਬ ਰਹਿਓ ਭਰਪੂਰਿ ਸਗਲ ਘਟ ਰਹਿਓ ਬਿਆਪੇ ॥
ਵਧਾਪਤੁ ਦੇਖੀਐ ਜਗਤਿ ਜਾਨੈ ਕਤਨੁ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਸਰਬ ਕੀ ਰਖਿਆ ਕਰੈ ਆਪੇ ਹਰਿ ਪਤਿ ॥ ਅਵਿਨਾਸੀ ਅਵਿਗਤ
ਆਪੇ ਆਪਿ ਉਤਪਤਿ ॥ ਏਕੈ ਤੂਹੀ ਏਕੈ ਅਨ ਨਾਹੀ ਤੁਮ ਭਤਿ ॥ ਹਰਿ ਅੰਤੁ ਨਾਹੀ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ਕਤਨੁ ਹੈ
ਕਰੈ ਬੀਚਾਰੁ ਜਗਤ ਪਿਤਾ ਹੈ ਸ਼ਬ ਪ੍ਰਾਨ ਕੋ ਅਧਾਰੁ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਭਗਤੁ ਦਰਿ ਤੁਲਿ ਬ੍ਰਹਮ ਸਮਸਰਿ ਏਕ
ਜੀਹ ਕਿਆ ਬਖਾਨੈ ॥ ਹਾਁ ਕਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ॥੧॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰਵਾਹ ਸਰਿ ਅਤੁਲ
ਭੰਡਾਰ ਭਰਿ ਪਰੈ ਹੀ ਤੇ ਪਰੈ ਅਪਰ ਅਪਾਰ ਪਰਿ ॥ ਆਪੁਨੋ ਭਾਵਨੁ ਕਰਿ ਮੰਤ੍ਰ ਨ ਦ੍ਰਿਸ਼ਾਰੇ ਧਰਿ ਓਪਤਿ ਪਰਲੌ
ਏਕੈ ਨਿਮਖ ਤੁ ਧਰਿ ॥ ਆਨ ਨਾਹੀ ਸਮਸਰਿ ਤਜੀਆਰੇ ਨਿਰਮਰਿ ਕੋਟਿ ਪਰਾਛਤ ਜਾਹਿ ਨਾਮ ਲੀਏ ਹਰਿ
ਹਰਿ ॥ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਭਗਤੁ ਦਰਿ ਤੁਲਿ ਬ੍ਰਹਮ ਸਮਸਰਿ ਏਕ ਜੀਹ ਕਿਆ ਬਖਾਨੈ ॥ ਹਾਁ ਕਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ
ਬਲਿ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ॥੨॥ ਸਗਲ ਭਵਨ ਧਾਰੇ ਏਕ ਥੇਂ ਕੀਏ ਬਿਸਥਾਰੇ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸ਼ਬ ਮਹਿ ਆਪਿ
ਹੈ ਨਿਰਾਰੇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਨ ਨਾਹੀ ਅੰਤ ਪਾਰੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਥਾਰੇ ਸਗਲ ਕੋ ਦਾਤਾ ਏਕੈ ਅਲਖ ਸੁਰਾਰੇ ॥

आप ही धारन धारे कुदरति है देखारे बरनु चिहनु नाही मुख न मसारे ॥ जनु नानकु भगतु दरि
 तुलि ब्रह्म समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हाँ कि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥३॥
 सरब गुण निधानं कीमति न ग्यानं ध्यानं ऊचे ते ऊचौ जानीजै प्रभ तेरो थानं ॥ मनु धनु तेरो प्रानं एकै
 सूति है जहानं कवन उपमा देउ बडे ते बडानं ॥ जानै कउनु तेरो भेउ अलख अपार देउ अकल कला
 है प्रभ सरब को धानं ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रह्म समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हाँ कि
 बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥४॥ निरंकारु आकार अछल पूरन अबिनासी ॥ हरग्ववंत
 आनन्त रूप निरमल बिगासी ॥ गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ॥ जा कउ होंहि कृपाल
 सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ धंनि धंनि ते धंनि जन जिह कृपालु हरि हरि भयउ ॥ हरि गुरु नानकु
 जिन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिओ ॥५॥ सति सति हरि सति सति सति भणीअै ॥ दूसर
 आन न अवरु पुरखु पऊरातनु सुणीअै ॥ अंमृतु हरि को नामु लैत मनि सभ सुख पाए ॥ जेह रसन
 चाखिओ तेह जन तृपति अधाए ॥ जिह ठाकुरु सुप्रसन्नु भयो सतसंगति तिह पिआरु ॥ हरि गुरु
 नानकु जिन् परसिओ तिन् सभ कुल कीओ उधारु ॥६॥ सचु सभा दीबाणु सचु सचे पहि धरिओ ॥ सचै
 तखति निवासु सचु तपावसु करिओ ॥ सचि सिरज्यिउ संसारु आपि आभुलु न भुलउ ॥ रतन नामु
 अपारु कीम नहु पवै अमुलउ ॥ जिह कृपालु होयउ गोबिंदु सरब सुख तिनहू पाए ॥ हरि गुरु नानकु
 जिन् परसिओ ते बहुङ्गि फिरि जोनि न आए ॥७॥ कवनु जोगु कउनु ग्यानु ध्यानु कवन बिधि उस्ति
 करीअै ॥ सिध साधिक तेतीस कोरि तिरु कीम न परीअै ॥ ब्रह्मादिक सनकादि सेख गुण अंतु न
 पाए ॥ अगहु गहिओ नही जाइ पूरि सब रहिओ समाए ॥ जिह काटी सिलक दयाल प्रभि सेइ जन
 लगे भगते ॥ हरि गुरु नानकु जिन् परसिओ ते इत उत सदा मुकते ॥८॥ प्रभ दातउ दातार
 परिउ जाचकु इकु सरना ॥ मिलै दानु संत रेन जेह लगि भउजलु तरना ॥ बिनति करउ अरदासि

ਸੁਨਹੁ ਜੇ ਠਾਕੁਰ ਭਾਵੈ ॥ ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਮਨਿ ਚਾਤ ਭਗਤਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਠਹਰਾਵੈ ॥ ਬਲਿਆਂ ਚਰਾਗੁ ਅੰਧਾਰ ਮਹਿ ਸਮਕਲਿ ਉਧਰੀ ਇਕ ਨਾਮ ਧਰਮ ॥ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸਗਲ ਹਰਿ ਭਵਨ ਮਹਿ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥੬॥

ਸਵਥੇ ਸ਼੍ਰੀ ਮੁਖਬਾਕਧ ਮਹਲਾ ੫ ॥੧੮॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਾਚੀ ਦੇਹ ਮੋਹ ਫੁਨਿ ਬਾਂਧੀ ਸਠ ਕਠੋਰ ਕੁਚੀਲ ਕੁਗਿਆਨੀ ॥ ਧਾਵਤ ਭ੍ਰਮਤ ਰਹਨੁ ਨਹੀ ਪਾਵਤ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ॥ ਜੋਬਨ ਰੂਪ ਮਾਇਆ ਮਦ ਮਾਤਾ ਬਿਚਰਤ ਬਿਕਲ ਬਡੈ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥ ਪਰ ਧਨ ਪਰ ਅਪਵਾਦ ਨਾਰਿ ਨਿੰਦਾ ਯਹ ਸੀਠੀ ਜੀਅ ਮਾਹਿ ਹਿਤਾਨੀ ॥ ਬਲਬੰਚ ਛਪਿ ਕਰਤ ਉਪਾਵਾ ਪੇਖਤ ਸੁਨਤ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਸੀਲ ਧਰਮ ਦਿਆ ਸੁਚ ਨਾਸ਼ਿ ਆਇਆ ਸਰਨੀ ਜੀਅ ਕੇ ਦਾਨੀ ॥ ਕਾਰਣ ਕਰਣ ਸਮਰਥ ਸਿਰੀਧਰ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ॥੧॥ ਕੀਰਤਿ ਕਰਨ ਸਰਨ ਮਨਮੋਹਨ ਜੋਹਨ ਪਾਪ ਬਿਦਾਰਨ ਕਤ ॥ ਹਰਿ ਤਾਰਨ ਤਰਨ ਸਮਰਥ ਸਮੈ ਬਿਧਿ ਕੁਲਹ ਸਮ੍ਰਹ ਉਧਾਰਨ ਸਤ ॥ ਚਿਤ ਚੇਤਿ ਅਚੇਤ ਜਾਨਿ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਭਰਮ ਅੰਧੇਰ ਮੋਹਿਆਂ ਕਤ ਧੰਤ ॥ ਮੂਰਤ ਘਰੀ ਚਸਾ ਪਲੁ ਸਿਮਰਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਰਸਨਾ ਸੰਗਿ ਲਤ ॥ ਹੋਛਤ ਕਾਜੁ ਅਲਪ ਸੁਖ ਬੰਧਨ ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕਹਾ ਦੁਖ ਭੰਤ ॥ ਸਿਖਿਆ ਸੰਤ ਨਾਮੁ ਭਜੁ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਰੰਗਿ ਆਤਮ ਸਿਤ ਰੰਤ ॥੨॥ ਰੰਚਕ ਰੇਤ ਖੇਤ ਤਨਿ ਨਿਰਮਿਤ ਦੁਰਲਭ ਦੇਹ ਸਵਾਰਿ ਧਰੀ ॥ ਖਾਨ ਪਾਨ ਸੋਧੇ ਸੁਖ ਭੁੰਚਤ ਸੰਕਟ ਕਾਟਿ ਬਿਪਤਿ ਹਰੀ ॥ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਅਰੁ ਬੰਧਪ ਬ੍ਰਾਹਮਨ ਕੀ ਸਭ ਸੂੜਾ ਪਰੀ ॥ ਬਰਧਮਾਨ ਹੋਕਤ ਦਿਨ ਪ੍ਰਤਿ ਨਿਤ ਆਵਤ ਨਿਕਟਿ ਬਿਖੰਮ ਜਰੀ ॥ ਰੇ ਗੁਨ ਹੀਨ ਦੀਨ ਮਾਇਆ ਕ੍ਰਮ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਏਕ ਘਰੀ ॥ ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਕ੃ਪਾਲ ਕ੃ਪਾ ਨਿਧਿ ਨਾਨਕ ਕਾਟਿ ਭਰੰਮ ਭਰੀ ॥੩॥ ਰੇ ਮਨ ਮੂਸ ਬਿਲਾ ਮਹਿ ਗਰਕਤ ਕਰਤਬ ਕਰਤ ਮਹਾਁ ਮੁਘਨਾਁ ॥ ਸੰਪਤ ਦੋਲ ਝੋਲ ਸੰਗਿ ਝੂਲਤ ਮਾਇਆ ਮਗਨ ਭ੍ਰਮਤ ਘੁਘਨਾ ॥ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਸਾਜਨ ਸੁਖ ਬੰਧਪ ਤਾ ਸਿਤ ਮੋਹੁ ਬਢਿਆਂ ਸੁ ਘਨਾ ॥ ਬੋਇਆਂ ਬੀਜੁ ਅਛਾ ਮਮ ਅੰਕੁਰੁ ਬੀਤਤ ਅਤਥ ਕਰਤ ਅਘਨਾਁ ॥ ਮਿਰਤੁ ਮੰਜਾਰ ਪਸਾਰਿ ਮੁਖੁ ਨਿਰਖਤ ਭੁੰਚਤ ਭੂਖ ਭੁਖਨਾ ॥ ਸਿਮਰਿ ਗੁਪਾਲ ਦਿਆਲ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਨਾਨਕ

ਜਗੁ ਜਾਨਤ ਸੁਪਨਾ ॥੪॥ ਦੇਹ ਨ ਗੇਹ ਨ ਨੇਹ ਨ ਨੀਤਾ ਮਾਇਆ ਮਤ ਕਹਾ ਲਤ ਗਾਰਹੁ ॥ ਛਤ ਨ ਪਤ ਨ
 ਚਤੁਰ ਨ ਚਾਵਰ ਬਹਤੀ ਜਾਤ ਰਿਦੈ ਨ ਬਿਚਾਰਹੁ ॥ ਰਥ ਨ ਅਸੂ ਨ ਗਜ ਸਿੰਘਾਸਨ ਛਿਨ ਮਹਿ ਤਿਆਗਤ ਨਾਂਗ
 ਸਿਧਾਰਹੁ ॥ ਸੂਰ ਨ ਬੀਰ ਨ ਮੀਰ ਨ ਖਾਨਮ ਸੰਗਿ ਨ ਕੋਊ ਦੂਸਟਿ ਨਿਹਾਰਹੁ ॥ ਕੋਟ ਨ ਓਟ ਨ ਕੋਸ ਨ ਛੋਟਾ
 ਕਰਤ ਬਿਕਾਰ ਦੋਊ ਕਰ ਝਾਰਹੁ ॥ ਮਿਤ ਨ ਪੁਰ ਕਲਤ ਸਾਜਨ ਸਖ ਉਲਟਤ ਜਾਤ ਬਿਰਖ ਕੀ ਛਾਂਰਹੁ ॥
 ਦੀਨ ਦਿਨ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ ਛਿਨ ਸਿਮਰਹੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਹੁ ॥ ਸੀਪਤਿ ਨਾਥ ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਜਨ
 ਹੈ ਭਗਵਾਂ ਕ੃ਪਾ ਕਰਿ ਤਾਰਹੁ ॥੫॥ ਪ੍ਰਾਨ ਮਾਨ ਦਾਨ ਮਗ ਜੋਹਨ ਹੀਤੁ ਚੀਤੁ ਦੇ ਲੇ ਲੇ ਪਾਰੀ ॥ ਸਾਜਨ ਸੈਨ
 ਮੀਤ ਸੁਤ ਭਾਈ ਤਾਹੂ ਤੇ ਲੇ ਰਖੀ ਨਿਰਾਰੀ ॥ ਧਾਵਨ ਪਾਵਨ ਕੂਰ ਕਮਾਵਨ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕਰਤ ਅਤਥ ਤਨ ਜਾਰੀ
 ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸੰਜਮ ਸੁਚ ਨੈਮਾ ਚੰਚਲ ਸੰਗਿ ਸਗਲ ਬਿਧਿ ਹਾਰੀ ॥ ਪਸੁ ਪੱਖੀ ਬਿਰਖ ਅਸਥਾਵਰ ਬਹੁ ਬਿਧਿ
 ਜੋਨਿ ਭਰਮਿਆਂ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ॥ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਚਸਾ ਨਾਮੁ ਨਹੀ ਸਿਮਰਿਆਂ ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਸਾਰੀ ॥ ਖਾਨ ਪਾਨ
 ਮੀਠ ਰਸ ਭੋਜਨ ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਹੋਤ ਕਤ ਖਾਰੀ ॥ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਚਰਨ ਸੰਗਿ ਤਥੇ ਹੋਰਿ ਮਾਇਆ ਮਗਨ ਚਲੇ
 ਸਭਿ ਡਾਰੀ ॥੬॥ ਬ੍ਰਹਮਾਦਿਕ ਸਿਵ ਛੰਦ ਮੁਨੀਸੁਰ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਠਾਕੁਰ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥ ਇੰਦ੍ਰ ਮੁਨਿੰਦ
 ਖੋਜਤੇ ਗੋਰਖ ਧਰਣਿ ਗਗਨ ਆਵਤ ਫੁਨਿ ਧਾਵਤ ॥ ਸਿਧ ਮਨੁਖਿ ਦੇਵ ਅਥ ਦਾਨਵ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਤਾ ਕੋ ਮਰਮੁ ਨ
 ਪਾਵਤ ॥ ਪੂਅ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸ ਭਗਤੀ ਹਰਿ ਜਨ ਤਾ ਕੈ ਦਰਸਿ ਸਮਾਵਤ ॥ ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਆਨ ਕਤ
 ਜਾਚਹਿ ਮੁਖ ਦੰਤ ਰਸਨ ਸਗਲ ਘਸਿ ਜਾਵਤ ॥ ਰੇ ਮਨ ਮੂੜ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੁਝਾਹਿ
 ਸਮਝਾਵਤ ॥੭॥ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਬਿਰਂਗ ਕਰਤ ਭਰਮ ਮੋਹ ਕੈ ਕੂਪਿ ਗੁਬਾਰਿ ਪਰਿਆਂ ਹੈ ॥ ਏਤਾ ਗਬੁ ਅਕਾਸਿ ਨ
 ਮਾਵਤ ਬਿਸਟਾ ਅਸੁ ਕੂਮਿ ਤਦਰੁ ਭਰਿਆਂ ਹੈ ॥ ਦਹ ਦਿਸ ਧਾਇ ਮਹਾ ਬਿਖਿਆ ਕਤ ਪਰ ਧਨ ਛੀਨਿ ਆਗਿਆਨ
 ਹਰਿਆਂ ਹੈ ॥ ਜੋਬਨ ਬੀਤਿ ਜਰਾ ਰੋਗਿ ਗ੍ਰਸਿਆਂ ਜਮਦੂਤਨ ਡਨੁ ਮਿਰਤੁ ਮਰਿਆਂ ਹੈ ॥ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਸੰਕਟ ਨਰਕ
 ਭੁੰਚਤ ਸਾਸਨ ਟ੍ਰੁਖ ਗਰਤਿ ਗਰਿਆਂ ਹੈ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਤਥਰਹਿ ਸੇ ਨਾਨਕ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੰਤੁ ਆਪਿ ਕਰਿਆਂ
 ਹੈ ॥੮॥ ਗੁਣ ਸਮੂਹ ਫਲ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸ ਹਮਾਰੀ ॥ ਅਤਖਥ ਮੰਤ ਤੰਤ ਪਰ ਟੁਖ ਹਰ

ਸਰਬ ਰੋਗ ਖੰਡਣ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਦ ਮਤਸਰ ਤ੃ਸਨਾ ਬਿਨਸਿ ਜਾਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਚਾਰੀ ॥
 ਇਸਨਾਨ ਦਾਨ ਤਾਪਨ ਸੁਚਿ ਕਿਰਿਆ ਚਰਣ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰੀ ॥ ਸਾਜਨ ਮੀਤ ਸਖਾ ਹਰਿ ਬੰਧਪ
 ਜੀਅ ਧਾਨ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੀ ॥ ਓਟ ਗਵੀ ਸੁਆਮੀ ਸਮਰਥਹ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੬॥ ਆਵਧ
 ਕਟਿਆਂ ਨ ਜਾਤ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਂਗਿ ॥ ਦਾਵਨਿ ਬੰਧਿਆਂ ਨ ਜਾਤ ਬਿਧੇ ਮਨ ਦਰਸ ਮਗਿ ॥ ਪਾਵਕ
 ਜ਼ਰਿਆਂ ਨ ਜਾਤ ਰਹਿਆਂ ਜਨ ਧੂਰਿ ਲਗਿ ॥ ਨੀਝ ਨ ਸਾਕਸਿ ਬੌਰਿ ਚਲਹਿ ਹਰਿ ਪੰਥਿ ਪਗਿ ॥ ਨਾਨਕ ਰੋਗ
 ਦੋਖ ਅਘ ਮੋਹ ਛਿਟੇ ਹਰਿ ਨਾਮ ਖਗਿ ॥੧॥੧੦॥ ਉਦਸੁ ਕਰਿ ਲਾਗੇ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ਬਿਚਰਹਿ ਅਨਿਕ ਸਾਸਕ
 ਬਹੁ ਖਟ੍ਟਾ ॥ ਭਸਮ ਲਗਾਇ ਤੀਰਥ ਬਹੁ ਭਰਮਤੇ ਸ੍ਰੂਖਮ ਦੇਹ ਬੰਧਹਿ ਬਹੁ ਜਟ੍ਟਾ ॥ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਸਗਲ
 ਦੁਖ ਪਾਵਤ ਜਿਤ ਪ੍ਰੇਮ ਬਢਾਇ ਸੂਤ ਕੇ ਹਟ੍ਟਾ ॥ ਪ੍ਰਯਾ ਚਕ੍ਰ ਕਰਤ ਸੋਮਪਾਕਾ ਅਨਿਕ ਭਾਁਤਿ ਥਾਟਹਿ ਕਰਿ
 ਥਟ੍ਟਾ ॥੨॥੧੧॥੨੦॥

ਸਵੰਧੇ ਮਹਲੇ ਪਹਿਲੇ ਕੇ ੧ ੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਫਿਕ ਮਨਿ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇ ਬਰਦਾਤਾ ॥ ਸਨਤ ਸਹਾਰੁ ਸਦਾ ਬਿਖਿਆਤਾ ॥ ਤਾਸੁ ਚਰਨ ਲੇ ਰਿਦੈ ਬਸਾਵਤ ॥
 ਤਤ ਪਰਮ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ॥੧॥ ਗਾਵਤ ਗੁਨ ਪਰਮ ਗੁਰੁ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਦੁਰਤ ਨਿਵਾਰਣ
 ਸਬਦ ਸਰੇ ॥ ਗਾਵਹਿ ਗੰਭੀਰ ਧੀਰ ਮਤਿ ਸਾਗਰ ਜੋਗੀ ਜੰਗਮ ਧਿਆਨੁ ਧਰੇ ॥ ਗਾਵਹਿ ਇੰਦ੍ਰਾਦਿ ਭਗਤ
 ਪ੍ਰਹਿਲਾਦਿਕ ਆਤਮ ਰਸੁ ਜਿਨਿ ਜਾਣਿਆਂ ॥ ਕਬਿ ਕਲ ਸੁਜਸੁ ਗਾਵਤ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ਜਿਨਿ ਮਾਣਿਆਂ
 ॥੨॥ ਗਾਵਹਿ ਜਨਕਾਦਿ ਜੁਗਤਿ ਜੋਗੇਸੁਰ ਹਰਿ ਰਸ ਪੂਰਨ ਸਰਬ ਕਲਾ ॥ ਗਾਵਹਿ ਸਨਕਾਦਿ ਸਾਧ
 ਸਿਧਾਦਿਕ ਮੁਨਿ ਜਨ ਗਾਵਹਿ ਅਛਲ ਛਲਾ ॥ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਧੋਮੁ ਅਟਲ ਮੰਡਲਵੈ ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਰਸੁ
 ਜਾਣਿਆਂ ॥ ਕਬਿ ਕਲ ਸੁਜਸੁ ਗਾਵਤ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ਜਿਨਿ ਮਾਣਿਆਂ ॥੩॥ ਗਾਵਹਿ ਕਪਿਲਾਦਿ
 ਆਦਿ ਜੋਗੇਸੁਰ ਅਪਰਾਂਪਰ ਅਵਤਾਰ ਵਰੋ ॥ ਗਾਵੈ ਜਮਦਗਨਿ ਪਰਸਰਾਮੇਸੁਰ ਕਰ ਕੁਠਾਰੁ ਰਘੁ ਤੇਜੁ
 ਹਰਿਆਂ ॥ ਤਉ ਅਕੂਰੁ ਬਿਦੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਰਬਾਤਮੁ ਜਿਨਿ ਜਾਣਿਆਂ ॥ ਕਬਿ ਕਲ ਸੁਜਸੁ ਗਾਵਤ

ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ਜਿਨਿ ਮਾਣਿਓ ॥੪॥ ਗਾਵਹਿ ਗੁਣ ਬਰਨ ਚਾਰਿ ਖਟ ਦਰਸਨ ਬ੍ਰਹਮਾਦਿਕ
 ਸਿਮਰਥਿ ਗੁਨਾ ॥ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਸੇਸੁ ਸਹਸ ਜਿਹਬਾ ਰਸ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਲਿਵ ਲਾਗਿ ਧੁਨਾ ॥ ਗਾਵੈ ਗੁਣ
 ਮਹਾਦੇਤ ਬੈਰਾਗੀ ਜਿਨਿ ਧਿਆਨ ਨਿਰਂਤਰਿ ਜਾਣਿਓ ॥ ਕਬਿ ਕਲ ਸੁਜਸੁ ਗਾਵਤ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਰਾਜੁ
 ਜੋਗੁ ਜਿਨਿ ਮਾਣਿਓ ॥੫॥ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ਮਾਣਿਓ ਬਸਿਓ ਨਿਰਵੈਰੁ ਰਿਦੰਤਰਿ ॥ ਸੂਸਟਿ ਸਗਲ ਉਧਰੀ
 ਨਾਮਿ ਲੇ ਤਰਿਓ ਨਿਰਂਤਰਿ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਨਕਾਦਿ ਆਦਿ ਜਨਕਾਦਿ ਜੁਗਹ ਲਗਿ ॥ ਧੰਨਿ ਧੰਨਿ
 ਗੁਰੁ ਧੰਨਿ ਜਨਮੁ ਸਕਧਥੁ ਭਲੈ ਜਗਿ ॥ ਪਾਤਾਲ ਪੁਰੀ ਜੈਕਾਰ ਧੁਨਿ ਕਬਿ ਜਨ ਕਲ ਵਖਾਣਿਓ ॥ ਹਰਿ
 ਨਾਮ ਰਸਿਕ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ਤੈ ਮਾਣਿਓ ॥੬॥ ਸਤਜੁਗਿ ਤੈ ਮਾਣਿਓ ਛਲਿਓ ਬਲਿ ਬਾਵਨ
 ਭਾਡਿਓ ॥ ਕ੍ਰੈਤੈ ਤੈ ਮਾਣਿਓ ਰਾਮੁ ਰਘੁਵੰਸੁ ਕਹਾਡਿਓ ॥ ਦੁਆਪੁਰਿ ਕੁਸਨ ਮੁਰਾਰਿ ਕੰਸੁ ਕਿਰਤਾਰਥੁ ਕੀਓ ॥
 ਤੁਗ੍ਰਸੈਣ ਕਤ ਰਾਜੁ ਅਭੈ ਭਗਤਹ ਜਨ ਦੀਓ ॥ ਕਲਿਜੁਗਿ ਪ੍ਰਮਾਣੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਅੰਗਦੁ ਅਮਰੁ ਕਹਾਡਿਓ
 ॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੁ ਰਾਜੁ ਅਭਿਚਲੁ ਅਟਲੁ ਆਦਿ ਪੁਰਖਿ ਫੁਰਮਾਡਿਓ ॥੭॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਰਵਿਦਾਸੁ ਭਗਤੁ ਜੈਦੇਵ
 ਤੂਲੋਚਨ ॥ ਨਾਮਾ ਭਗਤੁ ਕਬੀਰੁ ਸਦਾ ਗਾਵਹਿ ਸਮ ਲੋਚਨ ॥ ਭਗਤੁ ਬੇਣਿ ਗੁਣ ਰਵੈ ਸਹਜਿ ਆਤਮ ਰੰਗੁ
 ਮਾਣੈ ॥ ਜੋਗ ਧਿਆਨਿ ਗੁਰ ਗਿਆਨਿ ਬਿਨਾ ਪ੍ਰਭ ਅਕਰੁ ਨ ਜਾਣੈ ॥ ਸੁਖਦੇਤ ਪਰੀਖਿਤੁ ਗੁਣ ਰਵੈ ਗੋਤਮ ਰਿਖਿ
 ਜਸੁ ਗਾਡਿਓ ॥ ਕਬਿ ਕਲ ਸੁਜਸੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਨਿਤ ਨਵਤਨੁ ਜਗਿ ਛਾਡਿਓ ॥੮॥ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ
 ਪਾਧਾਲਿ ਭਗਤ ਨਾਗਾਦਿ ਭੁਧਾਂਗਮ ॥ ਮਹਾਦੇਤ ਗੁਣ ਰਵੈ ਸਦਾ ਜੋਗੀ ਜਤਿ ਜਾਂਗਮ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਮੁਨਿ ਬਧਾਸੁ
 ਜਿਨਿ ਬੇਦ ਬਧਾਕਰਣ ਬੀਚਾਰਿਅ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਗੁਣ ਤੁਚਰੈ ਜਿਨਿ ਹੁਕਮਿ ਸਭ ਸੂਸਟਿ ਸਵਾਰੀਅ ॥ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਖੰਡ
 ਪ੍ਰੰਨ ਬ੍ਰਹਮੁ ਗੁਣ ਨਿਰਗੁਣ ਸਮ ਜਾਣਿਓ ॥ ਜਪੁ ਕਲ ਸੁਜਸੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਹਜੁ ਜੋਗੁ ਜਿਨਿ ਮਾਣਿਓ ॥੯॥
 ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਨਵ ਨਾਥ ਧੰਨਿ ਗੁਰੁ ਸਾਚਿ ਸਮਾਡਿਓ ॥ ਮਾਂਧਾਤਾ ਗੁਣ ਰਵੈ ਜੇਨ ਚਕਰੈ ਕਹਾਡਿਓ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵੈ
 ਬਲਿ ਰਾਤ ਸਪਤ ਪਾਤਾਲਿ ਬਸੰਤੈ ॥ ਭਰਥਰਿ ਗੁਣ ਤੁਚਰੈ ਸਦਾ ਗੁਰ ਸੰਗਿ ਰਝਤੈ ॥ ਦ੍ਰੂਬਾ ਪੱਥਰਤ
 ਅੰਗਰੈ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਜਸੁ ਗਾਡਿਓ ॥ ਕਬਿ ਕਲ ਸੁਜਸੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਡਿਓ ॥੧੦॥

सर्वईए महले दूजे के २

੧੮ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई पुरखु धन्नु करता कारण करतारु करण समरथो ॥ सतिगुरू धन्नु नानकु मसतकि तुम धरिओ जिनि हथो ॥ त धरिओ मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥ मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु लीओ बरजि पंच भूत एक घरि राखि ले समजि ॥ जगु जीतउ गुर दुआरि खेलहि समत सारि रथु उनमनि लिव राखि निरंकारि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥੧॥ जा की दृसटि अंमृत धार कालुख खनि उतार तिमर अग्यान जाहि दरस दुआर ॥ ओइ जु सेवहि सबदु सारु गाखड़ी बिखम कार ते नर भव उतारि कीए निरभार ॥ सतसंगति सहज सारि जागीले गुर बीचारि निंमरी भूत सदीव परम पिआरि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥੨॥ तै तउ दृढ़िओ नामु अपारु बिमल जासु बिथारु साधिक सिध सुजन जीआ को अधारु ॥ तू ता जनिक राजा अउतारु सबदु संसारि सारु रहहि जगत्र जल पदम बीचार ॥ कलिप तरु रोग बिदारु संसार ताप निवारु आतमा तृष्णिधि तैरै एक लिव तार ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥੩॥ तै ता हदरथि पाइओ मानु सेविआ गुरु परवानु साधि अजगरु जिनि कीआ उनमानु ॥ हरि हरि दरस समान आतमा वंतगिआन जाणीअ अकल गति गुरु परवान ॥ जा की दृसटि अचल ठाण बिमल बुधि सुथान पहिरि सील सनाहु सकति बिदारि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥੪॥ दृसटि धरत तम हरन दहन अघ पाप प्रनासन ॥ सबद सूर बलवंत काम अरु क्रोध बिनासन ॥ लोभ मोह वसि करण सरण जाचिक प्रतिपालण ॥ आतम रत संग्रहण कहण अंमृत कल ढालण ॥ सतिगुरू कल सतिगुर तिलकु सति लागै सो पै तरै ॥ गुरु जगत

ਫਿਰਣਸੀਹ ਅੰਗਰਤ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ਲਹਣਾ ਕਰੈ ॥੫॥ ਸਦਾ ਅਕਲ ਲਿਵ ਰਹੈ ਕਰਨ ਸਿਉ ਇਛਾ ਚਾਰਹ ॥
 ਦੁਮ ਸਪੂਰ ਜਿਤ ਨਿਵੈ ਖਵੈ ਕਸੁ ਬਿਮਲ ਬੀਚਾਰਹ ॥ ਇਹੈ ਤਤੁ ਜਾਣਿਆ ਸਰਬ ਗਤਿ ਅਲਖੁ ਬਿਡਾਣੀ ॥
 ਸਹਜ ਭਾਇ ਸੰਚਿਆ ਕਿਰਣ ਅੰਮ੍ਰਤ ਕਲ ਬਾਣੀ ॥ ਗੁਰ ਗਮਿ ਪ੍ਰਮਾਣੁ ਤੈ ਪਾਇਆ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਗ੍ਰਾਹਜਿ ਲਥੈ ॥
 ਹਰਿ ਪਰਸਿਆ ਕਲੁ ਸਮੁਲਕੈ ਜਨ ਦਰਸਨੁ ਲਹਣੇ ਭਥੈ ॥੬॥ ਮਨਿ ਬਿਸਾਸੁ ਪਾਇਆ ਗਹਰਿ ਗੁਹੁ ਹਦਰਥਿ
 ਦੀਆਂ ॥ ਗਰਲ ਨਾਸੁ ਤਨਿ ਨਠਧੋ ਅਮਿਤ ਅੰਤਰਗਤਿ ਪੀਆਂ ॥ ਰਿਦਿ ਬਿਗਾਸੁ ਜਾਗਿਆ ਅਲਖਿ ਕਲ ਧਰੀ
 ਜੁਗਤਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਰਖਿਆ ਸਾਮਾਨਿ ਨਿਰਾਂਤਰਿ ॥ ਉਦਾਰਤ ਚਿਤ ਦਾਰਿਦ ਹਰਨ ਪਿਖਵਿਤਿਹ
 ਕਲਮਲ ਕਸਨ ॥ ਸਦ ਰੰਗ ਸਹਜਿ ਕਲੁ ਤਚੈ ਜਸੁ ਜੰਪਤ ਲਹਣੇ ਰਸਨ ॥੭॥ ਨਾਮੁ ਅਕਖਥੁ ਨਾਮੁ
 ਆਧਾਰੁ ਅਰੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਧਿ ਸੁਖੁ ਸਦਾ ਨਾਮ ਨੀਸਾਣੁ ਸੋਹੈ ॥ ਰੰਗ ਰਤੈ ਨਾਮ ਸਿਉ ਕਲ ਨਾਮੁ ਸੁਰਿ ਨਰਹ ਬੋਹੈ
 ॥ ਨਾਮ ਪਰਸੁ ਜਿਨਿ ਪਾਇਆ ਸਤੁ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਰਖਿ ਲੋਇ ॥ ਦਰਸਨਿ ਪਰਸਿਐ ਗੁਰੁ ਕੈ ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਹੋਇ
 ॥੮॥ ਸਚੁ ਤੀਰਥੁ ਸਚੁ ਇਸਨਾਨੁ ਅਰੁ ਭੋਜਨੁ ਭਾਉ ਸਚੁ ਸਦਾ ਸਚੁ ਭਾਖਿਤੁ ਸੋਹੈ ॥ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਸੰਗਤੀ ਬੋਹੈ ॥ ਜਿਸੁ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਵਰਤੁ ਸਚੁ ਕਬਿ ਜਨ ਕਲ ਵਖਾਣੁ ॥ ਦਰਸਨਿ ਪਰਸਿਐ ਗੁਰੁ ਕੈ
 ਸਚੁ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥੯॥ ਅਮਿਅ ਦੂਸਟਿ ਸੁਭ ਕਰੈ ਹੈਰੈ ਅਘ ਪਾਪ ਸਕਲ ਮਲ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਅਰੁ ਲੋਭ ਮੋਹ
 ਵਸਿ ਕਰੈ ਸਭੈ ਬਲ ॥ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਮਨਿ ਕਥੈ ਦੁਖੁ ਸੰਸਾਰਹ ਖੋਵੈ ॥ ਗੁਰੁ ਨਵ ਨਿਧਿ ਦਰੀਆਤ ਜਨਮ ਹਮ
 ਕਾਲਖ ਧੋਵੈ ॥ ਸੁ ਕਹੁ ਟਲ ਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਅਹਿਨਿਸਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਦਰਸਨਿ ਪਰਸਿਐ ਗੁਰੁ ਕੈ ਜਨਮ
 ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੧੦॥

ਸਰਵੰਝੇ ਮਹਲੇ ਤੀਜੇ ਕੇ ੩

੧੯੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸੋਈ ਪੁਰਖੁ ਸਿਵਰਿ ਸਾਚਾ ਜਾ ਕਾ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਅਛਲੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥ ਜਿਨਿ ਭਗਤ ਭਵਜਲ ਤਾਰੇ ਸਿਮਰਹੁ ਸੋਈ ਨਾਮੁ
 ਪਰਧਾਨੁ ॥ ਤਿਤੁ ਨਾਮਿ ਰਸਿਕੁ ਨਾਨਕੁ ਲਹਣਾ ਥਪਿਆ ਜੇਨ ਸ਼ਬ ਸਿਧੀ ॥ ਕਥਿ ਜਨ ਕਲਿ ਸਬੁਧੀ ਕੀਰਤਿ
 ਜਨ ਅਮਰਦਾਸ ਬਿਸ਼ਾਰੀਧਾ ॥ ਕੀਰਤਿ ਰਖਿ ਕਿਰਣ ਪ੍ਰਗਟਿ ਸੰਸਾਰਹ ਸਾਖ ਤਰੋਵਰ ਮਵਲਸਰਾ ॥ ਤਤਰਿ

ਦਖਿਣਹਿ ਪੁਬਿ ਅਰੁ ਪਥਮਿ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਜਪਥਿ ਨਰਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਸਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਰਦਾਯਤ ਤਲਟਿ ਗੱਗ
 ਪਥਮਿ ਧਰੀਆ ॥ ਸੋਈ ਨਾਮੁ ਅਛਲੁ ਭਗਤਹ ਭਵ ਤਾਰਣੁ ਅਮਰਦਾਸ ਗੁਰ ਕਤ ਫੁਰਿਆ ॥੧॥ ਸਿਮਰਹਿ ਸੋਈ
 ਨਾਮੁ ਜਖ਼ਿ ਅਰੁ ਕਿਨਰ ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਸਮਾਧਿ ਹਰਾ ॥ ਸਿਮਰਹਿ ਨਖ਼ਿਤ ਅਵਰ ਧ੍ਰੂ ਮੰਡਲ ਨਾਰਦਾਦਿ ਪ੍ਰਹਲਾਦਿ
 ਕਰਾ ॥ ਸਸੀਅਰੁ ਅਰੁ ਸੂਰੁ ਨਾਮੁ ਤਲਾਸਹਿ ਸੈਲ ਲੋਅ ਜਿਨਿ ਉਧਰਿਆ ॥ ਸੋਈ ਨਾਮੁ ਅਛਲੁ ਭਗਤਹ ਭਵ ਤਾਰਣੁ
 ਅਮਰਦਾਸ ਗੁਰ ਕਤ ਫੁਰਿਆ ॥੨॥ ਸੋਈ ਨਾਮੁ ਸਿਵਰਿ ਨਵ ਨਾਥ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸਿਵ ਸਨਕਾਦਿ ਸਮੁਧਰਿਆ ॥
 ਚਵਰਾਸੀਹ ਸਿਧ ਬੁਧ ਜਿਤੁ ਰਾਤੇ ਅੰਬਰੀਕ ਭਵਜਲੁ ਤਰਿਆ ॥ ਉਧਤ ਅਕੂਰੁ ਤਿਲੋਚਨੁ ਨਾਮਾ ਕਲਿ ਕਬੀਰ
 ਕਿਲਵਿਖ ਹਰਿਆ ॥ ਸੋਈ ਨਾਮੁ ਅਛਲੁ ਭਗਤਹ ਭਵ ਤਾਰਣੁ ਅਮਰਦਾਸ ਗੁਰ ਕਤ ਫੁਰਿਆ ॥੩॥ ਤਿਤੁ
 ਨਾਮਿ ਲਾਗਿ ਤੇਤੀਸ ਧਿਆਵਹਿ ਜਤੀ ਤਪੀਸੁਰ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ॥ ਸੋਈ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਿ ਗੱਗੇਵ ਪਿਤਾਮਹ ਚਰਣ
 ਚਿਤ ਅੰਮ੍ਰਤ ਰਸਿਆ ॥ ਤਿਤੁ ਨਾਮਿ ਗੁਰੁ ਗੰਮੀਰ ਗੁਰੁ ਮਤਿ ਸਤ ਕਰਿ ਸੰਗਤਿ ਉਧਰੀਆ ॥ ਸੋਈ ਨਾਮੁ
 ਅਛਲੁ ਭਗਤਹ ਭਵ ਤਾਰਣੁ ਅਮਰਦਾਸ ਗੁਰ ਕਤ ਫੁਰਿਆ ॥੪॥ ਨਾਮ ਕਿਤਿ ਸੰਸਾਰਿ ਕਿਰਣਿ ਰਵਿ ਸੁਰਤਰ
 ਸਾਖਹ ॥ ਉਤਰਿ ਦਖਿਣਿ ਪੁਬਿ ਦੇਸਿ ਪਥਮਿ ਜਸੁ ਭਾਖਹ ॥ ਜਨਮੁ ਤ ਇਹੁ ਸਕਧਥੁ ਜਿਤੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਰਿਦੈ
 ਨਿਵਾਸੈ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਗਣ ਗੰਧਰਵ ਛਿਅ ਦਰਸਨ ਆਸਾਸੈ ॥ ਭਲਤ ਪ੍ਰਸਿਧੁ ਤੇਜੋ ਤਨੈ ਕਲਿ ਜੋਡਿ ਕਰ ਧਿਆਇਓ
 ॥ ਸੋਈ ਨਾਮੁ ਭਗਤ ਭਵਜਲ ਹਰਣੁ ਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸ ਤੈ ਪਾਇਓ ॥੫॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਦੇਵ ਤੇਤੀਸ ਅਰੁ
 ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਨਰ ਨਾਮਿ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਧਾਰੇ ॥ ਜਹ ਨਾਮੁ ਸਮਾਧਿਓ ਹਰਖੁ ਸੋਗੁ ਸਮ ਕਰਿ ਸਹਾਰੇ ॥ ਨਾਮੁ
 ਸਿਰੋਮਣਿ ਸਰਬ ਮੈ ਭਗਤ ਰਹੇ ਲਿਵ ਧਾਰਿ ॥ ਸੋਈ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਅਮਰ ਗੁਰ ਤੁਸਿ ਦੀਓ ਕਰਤਾਰਿ ॥੬॥
 ਸਤਿ ਸੂਰਤ ਸੀਲਿ ਬਲਵਂਤੁ ਸਤ ਭਾਇ ਸੰਗਤਿ ਸਘਨ ਗੁਰੁ ਮਤਿ ਨਿਰਵੈਰਿ ਲੀਣਾ ॥ ਜਿਸੁ ਧੀਰਜੁ ਧੁਰਿ
 ਧਵਲੁ ਧੁਜਾ ਸੇਤਿ ਬੈਕੁਠ ਬੀਣਾ ॥ ਪਰਸਹਿ ਸੰਤ ਪਿਆਰੁ ਜਿਹ ਕਰਤਾਰਹ ਸੰਜੋਗੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ
 ਪਾਇਓ ਅਮਰਿ ਗੁਰਿ ਕੀਤਤ ਜੋਗੁ ॥੭॥ ਨਾਮੁ ਨਾਵਣੁ ਨਾਮੁ ਰਸ ਖਾਣੁ ਅਰੁ ਭੋਜਨੁ ਨਾਮ ਰਸੁ ਸਦਾ ਚਾਧ ਮੁਖਿ
 ਮਿ਷ਟ ਬਾਣੀ ॥ ਧਨਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਓ ਜਿਸੁ ਪਸਾਇ ਗਤਿ ਅਗਮ ਜਾਣੀ ॥ ਕੁਲ ਸੰਬ੍ਰਹ ਸਮੁਧਰੇ ਪਾਯਤ ਨਾਮ

ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਸਕਥਥੁ ਜਨਮੁ ਕਲਿਚਰੈ ਗੁਰੁ ਪਰਸਿਤ ਅਮਰ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥੮॥ ਬਾਰਿਜੁ ਕਰਿ ਦਾਹਿਣੈ ਸਿਧਿ ਸਨਮੁਖ
 ਮੁਖੁ ਜੋਵੈ ॥ ਰਿਧਿ ਬਸੈ ਬਾਂਵਾਂਗਿ ਜੁ ਤੀਨਿ ਲੋਕਾਂਤਰ ਮੋਹੈ ॥ ਰਿਦੈ ਬਸੈ ਅਕਹੀਤ ਸੋਝਿ ਰਸੁ ਤਿਨ ਹੀ ਜਾਤਤ ॥
 ਮੁਖਹੁ ਭਗਤਿ ਤਚਰੈ ਅਮਰੁ ਗੁਰੁ ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਰਾਤਤ ॥ ਮਸਤਕਿ ਨੀਸਾਣੁ ਸਚਤ ਕਰਮੁ ਕਲਿ ਜੋਡਿ ਕਰ
 ਥਾਇਅਤ ॥ ਪਰਸਿਅਤ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰ ਤਿਲਕੁ ਸਰਬ ਇਛ ਤਿਨਿ ਪਾਇਅਤ ॥੯॥ ਚਰਣ ਤ ਪਰ ਸਕਥਥ
 ਚਰਣ ਗੁਰ ਅਮਰ ਪਵਲਿ ਰਧ ॥ ਹਥ ਤ ਪਰ ਸਕਥਥ ਹਥ ਲਗਹਿ ਗੁਰ ਅਮਰ ਪਧ ॥ ਜੀਹ ਤ ਪਰ ਸਕਥਥ
 ਜੀਹ ਗੁਰ ਅਮਰੁ ਭਣਿਜੈ ॥ ਨੈਣ ਤ ਪਰ ਸਕਥਥ ਨਧਣਿ ਗੁਰੁ ਅਮਰੁ ਪਿਖਿਜੈ ॥ ਸ਼ਰਣ ਤ ਪਰ ਸਕਥਥ ਸ਼ਰਣਿ
 ਗੁਰੁ ਅਮਰੁ ਸੁਣਿਜੈ ॥ ਸਕਥਥੁ ਸੁ ਹੀਤ ਜਿਤੁ ਹੀਅ ਬਸੈ ਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸੁ ਨਿਜ ਜਗਤ ਪਿਤ ॥ ਸਕਥਥੁ ਸੁ ਸਿਰੁ
 ਜਾਲਪੁ ਭਣੈ ਜੁ ਸਿਰੁ ਨਿਵੈ ਗੁਰ ਅਮਰ ਨਿਤ ॥੧॥੧੦॥ ਤਿ ਨਰ ਦੁਖ ਨਹ ਮੁਖ ਤਿ ਨਰ ਨਿਧਨ ਨਹੁ ਕਹੀਅਹਿ
 ॥ ਤਿ ਨਰ ਸੋਕੁ ਨਹੁ ਹੁਐ ਤਿ ਨਰ ਸੇ ਅੰਤੁ ਨ ਲਹੀਅਹਿ ॥ ਤਿ ਨਰ ਸੇਵ ਨਹੁ ਕਰਹਿ ਤਿ ਨਰ ਸਧ ਸਹਸ
 ਸਮਧਹਿ ॥ ਤਿ ਨਰ ਦੁਲੀਚੈ ਬਹਹਿ ਤਿ ਨਰ ਉਥਧਿ ਬਿਥਪਹਿ ॥ ਸੁਖ ਲਹਹਿ ਤਿ ਨਰ ਸੰਸਾਰ ਮਹਿ ਅਭੈ ਪਟੁ
 ਰਿਪ ਮਧਿ ਤਿਹ ॥ ਸਕਥਥ ਤਿ ਨਰ ਜਾਲਪੁ ਭਣੈ ਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸੁ ਸੁਪ੍ਰਸਨ੍ਨੁ ਜਿਹ ॥੨॥੧੧॥ ਤੈ ਪਫਿਅਤ ਇਕੁ
 ਮਨਿ ਧਰਿਅਤ ਇਕੁ ਕਰਿ ਇਕੁ ਪਛਾਣਿਆਂ ॥ ਨਧਣਿ ਬਧਣਿ ਮੁਹਿ ਇਕੁ ਇਕੁ ਦੁਹੁ ਠਾਂਡਿ ਨ ਜਾਣਿਆਂ ॥
 ਸੁਪਨਿ ਇਕੁ ਪਰਤਖਿ ਇਕੁ ਇਕਸ ਮਹਿ ਲੀਣਤ ॥ ਤੀਸ ਇਕੁ ਅਰੁ ਪੰਜਿ ਸਿਧੁ ਪੈਤੀਸ ਨ ਖੀਣਤ ॥ ਇਕਹੁ
 ਜਿ ਲਾਖੁ ਲਖਹੁ ਅਲਾਖੁ ਹੈ ਇਕੁ ਇਕੁ ਕਰਿ ਵਰਨਿਅਤ ॥ ਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸ ਜਾਲਪੁ ਭਣੈ ਤੂ ਇਕੁ ਲੋਡਹਿ ਇਕੁ
 ਮਨਿਅਤ ॥੩॥੧੨॥ ਜਿ ਮਤਿ ਗਹੀ ਜੈਦੇਵਿ ਜਿ ਮਤਿ ਨਾਮੈ ਸੰਮਾਣੀ ॥ ਜਿ ਮਤਿ ਤੂਲੋਚਨ ਚਿਤਿ ਭਗਤ
 ਕੰਬੀਰਹਿ ਜਾਣੀ ॥ ਰੁਕਮਾਂਗਦ ਕਰਤੂਤਿ ਰਾਮੁ ਜੰਧੁ ਨਿਤ ਭਾਈ ॥ ਅੰਮਰੀਕਿ ਪ੍ਰਹਲਾਦਿ ਸਰਣਿ ਗੋਬਿੰਦ
 ਗਤਿ ਪਾਈ ॥ ਤੈ ਲੋਭੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਤ੍ਰਸਨਾ ਤਜੀ ਸੁ ਮਤਿ ਜਲਿ ਜਾਣੀ ਜੁਗਤਿ ॥ ਗੁਰੁ ਅਮਰਦਾਸੁ ਨਿਜ ਭਗਤੁ ਹੈ ਦੇਖਿ
 ਦਰਸੁ ਪਾਵਤ ਮੁਕਤਿ ॥੪॥੧੩॥ ਗੁਰੁ ਅਮਰਦਾਸੁ ਪਰਸੀਐ ਪੁਹਮਿ ਪਾਤਿਕ ਬਿਨਾਸਹਿ ॥ ਗੁਰੁ ਅਮਰਦਾਸੁ
 ਪਰਸੀਐ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਆਸਾਸਹਿ ॥ ਗੁਰੁ ਅਮਰਦਾਸੁ ਪਰਸੀਐ ਧਿਆਨੁ ਲਹੀਐ ਪਤ ਮੁਕਿਹਿ ॥ ਗੁਰੁ

अमरदासु परसीऔ अभउ लभै गउ चुकिहि ॥ इकु बिंनि दुगण जु तउ रहै जा सुमंतृ मानवहि
लहि ॥ जालपा पदारथ डितडे गुर अमरदासि डिठै मिलहि ॥५॥१४॥ सचु नामु करतारु सु दृढु
नानकि संग्रहिअउ ॥ ता ते अंगदु लहणा प्रगटि तासु चरणह लिव रहिअउ ॥ तितु कुलि गुर
अमरदासु आसा निवासु तासु गुण कवण वखाणउ ॥ जो गुण अलख अगंम तिनह गुण अंतु न जाणउ
॥ बोहिथउ बिधातै निरमयौ सभ संगति कुल उधरण ॥ गुर अमरदास कीरतु कहै त्राहि त्राहि तुअ पा
सरण ॥१॥१५॥ आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥ निरंकारि आकारु जोति जग
मंडलि करियउ ॥ जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥ जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि
चरण मिलायउ ॥ नानक कुलि निम्लु अवतरिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥ गुर अमरदास तारण
तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥२॥१६॥ जपु तपु सतु संतोखु पिखि दरसनु गुर सिखह ॥ सरणि
परहि ते उबरहि छोडि जम पुर की लिखह ॥ भगति भाइ भरपूरु रिदै उचरै करतारै ॥ गुरु गउहरु
दरीआउ पलक दुबंत्यह तारै ॥ नानक कुलि निम्लु अवतरिउ गुण करतारै उचरै ॥ गुरु अमरदासु
जिन् सेविअउ तिन् दुखु दरिदु परहरि परै ॥३॥१७॥ चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि
न सकउ ॥ सरब चिंत तुझु पासि साधसंगति हउ तकउ ॥ तेरै हुकमि पवै नीसाणु तउ करउ साहिब
की सेवा ॥ जब गुरु देखै सुभ दिस्टि नामु करता मुखि मेवा ॥ अगम अलख कारण पुरख जो फुरमावहि
सो कहउ ॥ गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥४॥१८॥ भिखे के ॥ गुरु
गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥ सचि सचु जाणीऔ इक चितहि लिव लावै ॥ काम क्रोध
वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥ निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥ कलि माहि रूपु करता
पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीअउ ॥ गुरु मिलियउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥१॥१९॥
रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥ संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥ बरसु एकु हउ

ਫਿਰਿਓ ਕਿਨੈ ਨਹੁ ਪਰਚਤ ਲਾਯਤ ॥ ਕਹਤਿਅਹ ਕਹਤੀ ਸੁਣੀ ਰਹਤ ਕੋ ਖੁਸੀ ਨ ਆਯਤ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਛੋਡਿ
ਦ੍ਰੌਜੈ ਲਗੇ ਤਿਨ੍ ਕੇ ਗੁਣ ਹਤ ਕਿਆ ਕਹਤ ॥ ਗੁਰੁ ਦਿਧਿ ਮਿਲਾਯਤ ਭਿਖਿਆ ਜਿਵ ਤੂ ਰਖਹਿ ਤਿਵ ਰਹਤ
॥੨॥੨੦॥ ਪਹਿਰਿ ਸਮਾਧਿ ਸਨਾਹੁ ਗਿਆਨਿ ਹੈ ਆਸਣਿ ਚਡਿਅਤ ॥ ਧੰਮ ਧਨਖੁ ਕਰ ਗਹਿਓ ਭਗਤ ਸੀਲਹ
ਸਰਿ ਲਡਿਅਤ ॥ ਭੈ ਨਿਰਭਤ ਹਰਿ ਅਟਲੁ ਮਨਿ ਸਬਦਿ ਗੁਰ ਨੇਜਾ ਗਡਿਓ ॥ ਕਾਮ ਕੋਥ ਲੋਭ ਮੋਹ ਅਪਤੁ
ਪਂਚ ਢੂਤ ਬਿਖੰਡਿਓ ॥ ਭਲਤ ਭੂਹਾਲੁ ਤੇਜੋ ਤਨਾ ਨੂਪਤਿ ਨਾਥੁ ਨਾਨਕ ਬਰਿ ॥ ਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸ ਸਚੁ ਸਲਧ
ਭਣਿ ਤੈ ਦਲੁ ਜਿਤਤ ਇਵ ਜੁਧੁ ਕਰਿ ॥੧॥੨੧॥ ਘਨਹਰ ਬ੍ਰੰਦ ਬਸੁਅ ਰੋਮਾਵਲਿ ਕੁਸਮ ਬਸਤ ਗਨਨਤ
ਨ ਆਵੈ ॥ ਰਵਿ ਸਸਿ ਕਿਰਣਿ ਉਦਰੁ ਸਾਗਰ ਕੋ ਗੱਗ ਤਰੰਗ ਅੰਤੁ ਕੋ ਪਾਵੈ ॥ ਰੁਦ੍ਰ ਧਿਆਨ ਗਿਆਨ
ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਕਬਿ ਜਨ ਭਲਧ ਉਨਹ ਜੁੜੇ ਗਾਵੈ ॥ ਭਲੇ ਅਮਰਦਾਸ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਤੇਰੀ ਉਪਮਾ ਤੋਹਿ ਬਨਿ ਆਵੈ
॥੧॥੨੨॥

ਸਵਈਏ ਮਹਲੇ ਚਤੁਰੇ ਕੇ ੪

੧੮ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਝਿਕ ਮਨਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਧਿਆਵਤ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਦ ਗਾਵਤ ॥ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਮਨਿ ਹੋਇ
ਬਿਗਾਸਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰਿ ਜਨਹ ਕੀ ਆਸਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਯਤ ॥ ਅਬਿਨਾਸੀ ਅਬਿਗਤੁ
ਧਿਆਯਤ ॥ ਤਿਸੁ ਭੇਟੇ ਦਾਰਿਦ੍ਰ ਨ ਚੰਪੈ ॥ ਕਲਧ ਸਹਾਰੁ ਤਾਸੁ ਗੁਣ ਜੰਪੈ ॥ ਜੰਪਤ ਗੁਣ ਬਿਮਲ ਸੁਜਨ ਜਨ
ਕੇਵੇ ਅਮਿਅ ਨਾਮੁ ਜਾ ਕਤ ਫੁਰਿਆ ॥ ਇਨ੍ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਬਦ ਰਸੁ ਪਾਯਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਤਉ ਧਰਿਆ ॥
ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਸਿਕੁ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਣ ਗਾਹਕੁ ਚਾਹਕੁ ਤਤ ਸਮਤ ਸਰੇ ॥ ਕਵਿ ਕਲਧ ਠਕੁਰ ਹਰਦਾਸ ਤਨੇ ਗੁਰ
ਰਾਮਦਾਸ ਸਰ ਅਭਰ ਭਰੇ ॥੧॥ ਛੁਟਤ ਪਰਵਾਹ ਅਮਿਅ ਅਮਰਾ ਪਦ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੋਵਰ ਸਦ ਭਰਿਆ ॥ ਤੇ
ਪੀਵਹਿ ਸੰਤ ਕਰਹਿ ਮਨਿ ਮਜਨੁ ਪੁਵ ਜਿਨਹੁ ਸੇਵਾ ਕਰੀਆ ॥ ਤਿਨ ਭਤ ਨਿਵਾਰਿ ਅਨਭੈ ਪਦੁ ਦੀਨਾ ਸਬਦ
ਮਾਤਰ ਤੇ ਉਧਰ ਧੇਰੇ ॥ ਕਵਿ ਕਲਧ ਠਕੁਰ ਹਰਦਾਸ ਤਨੇ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਸਰ ਅਭਰ ਭਰੇ ॥੨॥ ਸਤਗੁਰ ਮਤਿ
ਗ੍ਰੰਥ ਬਿਮਲ ਸਤਸੰਗਤਿ ਆਤਮੁ ਰੰਗਿ ਚਲ੍ਹਲੁ ਭਧਾ ॥ ਜਾਗਧਾ ਮਨੁ ਕਵਲੁ ਸਹਜਿ ਪਰਕਾਸਥਾ ਅਭੈ ਨਿਰੰਜਨੁ

ਘਰਹਿ ਲਹਾ ॥ ਸਤਗੁਰਿ ਦਯਾਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵੂਡਾਧਾ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਵਸਿ ਪੰਚ ਕਰੇ ॥ ਕਵਿ ਕਲਿ ਠਕੁਰ
 ਹਰਦਾਸ ਤਨੇ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਸਰ ਅਭਰ ਭਰੇ ॥੩॥ ਅਨਭਤ ਉਨਮਾਨਿ ਅਕਲ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਪਾਰਸੁ ਭੇਟਿਆ
 ਸਹਜ ਘਰੇ ॥ ਸਤਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਧਾ ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਭੰਡਾਰ ਭਰੇ ॥ ਮੇਟਿਆ ਜਨਮਾਂਤੁ ਮਰਣ ਭਤ
 ਭਾਗਾ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ਸੰਤੋਖ ਸਰੇ ॥ ਕਵਿ ਕਲਿ ਠਕੁਰ ਹਰਦਾਸ ਤਨੇ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਸਰ ਅਭਰ ਭਰੇ ॥੪॥ ਅਭਰ
 ਭਰੇ ਪਾਧਤ ਅਪਾਰੁ ਰਿਦ ਅਂਤਰਿ ਧਾਰਿਆਂ ॥ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਆਤਮ ਪ੍ਰਬੋਧੁ ਮਨਿ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਿਆਂ ॥ ਸਦਾ ਚਾਇ
 ਹਰਿ ਭਾਇ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਆਪੇ ਜਾਣਿ ॥ ਸਤਗੁਰ ਕੈ ਪਰਸਾਦਿ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਰੰਗ ਮਾਣਿ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਸਾਦਿ
 ਅੰਗਦ ਸੁਮਤਿ ਗੁਰਿ ਅਮਰਿ ਅਮਰੁ ਵਰਤਾਇਆਂ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਕਲਿਚਰੈ ਤੈ ਅਟਲ ਅਮਰ ਪਦੁ ਪਾਇਆਂ ॥੫॥
 ਸੰਤੋਖ ਸਰੋਵਰਿ ਕਬੈ ਅਮਿਆ ਰਸੁ ਰਸਨ ਪ੍ਰਕਾਸੈ ॥ ਮਿਲਤ ਸਾਂਤਿ ਉਪਜੈ ਦੁਰਤੁ ਦੂਰਤਰਿ ਨਾਸੈ ॥ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ
 ਪਾਇਆਤ ਦਿੰਤੁ ਹਰਿ ਮਗਿ ਨ ਹੁਟੈ ॥ ਸੰਜਮੁ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਸੀਲ ਸਨਾਹੁ ਮਫੁਟੈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਮਾਣੁ ਬਿਧ ਨੈ
 ਸਿਰਿਤ ਜਗਿ ਜਸ ਤੂਰੁ ਬਜਾਇਆਤ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਕਲਿਚਰੈ ਤੈ ਅਭੈ ਅਮਰ ਪਦੁ ਪਾਇਆਤ ॥੬॥ ਜਗੁ
 ਜਿਤਤ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਮਾਣਿ ਮਨਿ ਏਕੁ ਧਿਆਯਤ ॥ ਧਨਿ ਧਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸੁ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਵੂਡਾਧਾਤ ॥
 ਨਵ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਤਾ ਕੀ ਦਾਸੀ ॥ ਸਹਜ ਸਰੋਵਰੁ ਮਿਲਿਆਂ ਪੁਰਖੁ ਭੇਟਿਆਂ ਅਵਿਨਾਸੀ ॥
 ਆਦਿ ਲੇ ਭਗਤ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰੇ ਸੋ ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਵੂਡਾਇਆਤ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਕਲਿਚਰੈ ਤੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ
 ਪਾਇਆਤ ॥੭॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਪਰਵਾਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪੁਕਲੀ ਨ ਹੁਟਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦੁ ਅਥਾਹੁ ਅਮਿਆ ਧਾਰਾ
 ਰਸੁ ਗੁਟਿ ॥ ਮਤਿ ਮਾਤਾ ਸੰਤੋਖੁ ਪਿਤਾ ਸਾਰਿ ਸਹਜ ਸਮਾਧਾਤ ॥ ਆਜੋਨੀ ਸੰਭਵਿਆਤ ਜਗਤੁ ਗੁਰ ਬਚਨਿ
 ਤਰਾਧਾਤ ॥ ਅਬਿਗਤ ਅਗੋਚਰੁ ਅਪਰਪਰੁ ਮਨਿ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵਸਾਇਆਤ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਕਲਿਚਰੈ ਤੈ ਜਗਤ
 ਉਧਾਰਣੁ ਪਾਇਆਤ ॥੮॥ ਜਗਤ ਉਧਾਰਣੁ ਨਵ ਨਿਧਾਨੁ ਭਗਤਹ ਭਵ ਤਾਰਣੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬੁੰਦ ਹਰਿ ਨਾਮੁ
 ਬਿਸੁ ਕੀ ਬਿਖੈ ਨਿਵਾਰਣੁ ॥ ਸਹਜ ਤਰੋਵਰ ਫਲਿਆਂ ਗਿਆਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲ ਲਾਗੇ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਈਐਹਿ
 ਧਿਨਿ ਤੇ ਜਨ ਬਡਭਾਗੇ ॥ ਤੇ ਮੁਕਤੇ ਭਏ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਮਨਿ ਗੁਰ ਪਰਚਾ ਪਾਇਆਤ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ

ਕਲਿਚਰੈ ਤੈ ਸਬਦ ਨੀਸਾਨੁ ਬਜਾਇਅਤ ॥੬॥ ਸੇਜ ਸਧਾ ਸਹਜੁ ਛਾਵਾਣੁ ਸੰਤੋਖੁ ਸਰਾਇਚਤ ਸਦਾ ਸੀਲ
 ਸਨਾਹੁ ਸੋਹੈ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਮਾਚਰਿਐ ਨਾਮੁ ਟੇਕ ਸੰਗਾਦਿ ਬੋਹੈ ॥ ਅਜੋਨੀਤ ਭਲਿ ਅਮਲੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਂਗਿ
 ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਕਲਿਚਰੈ ਤੁਅ ਸਹਜ ਸਰੋਵਰਿ ਬਾਸੁ ॥੧੦॥ ਗੁਰੂ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਸੁਪ੍ਰਸਨੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ
 ਰਿਦੈ ਨਿਵਾਸੈ ॥ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਗੁਰੂ ਸੁਪ੍ਰਸਨੁ ਦੁਰਤੁ ਦ੍ਰਵਤਰਿ ਨਾਸੈ ॥ ਗੁਰੂ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਸੁਪ੍ਰਸਨੁ ਮਾਨੁ ਅਭਿਮਾਨੁ
 ਨਿਵਾਰੈ ॥ ਜਿਨ੍ ਕਤ ਗੁਰੂ ਸੁਪ੍ਰਸਨੁ ਸਬਦਿ ਲਗਿ ਭਵਜਲੁ ਤਾਰੈ ॥ ਪਰਚਤ ਪ੍ਰਮਾਣੁ ਗੁਰ ਪਾਇਅਤ ਤਿਨ
 ਸਕਥਤ ਜਨਮੁ ਜਗ੍ ॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਸਰਣਿ ਭਜੁ ਕਲਿ ਕਬਿ ਭੁਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਸਭ ਗੁਰੂ ਲਗਿ ॥੧੧॥ ਸਤਿਗੁਰਿ
 ਖੇਮਾ ਤਾਣਿਆ ਜੁਗ ਜੂਥ ਸਮਾਣੇ ॥ ਅਨਭਤ ਨੇਜਾ ਨਾਮੁ ਟੇਕ ਜਿਤੁ ਭਗਤ ਅਧਾਣੇ ॥ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕੁ ਅੰਗਦੁ
 ਅਮਰੁ ਭਗਤ ਹਰਿ ਸਾਂਗਿ ਸਮਾਣੇ ॥ ਇਹੁ ਰਾਜ ਜੋਗ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਤੁਸੁ ਹੂ ਰਸੁ ਜਾਣੇ ॥੧੨॥ ਜਨਕੁ ਸੋਇ
 ਜਿਨਿ ਜਾਣਿਆ ਤਨਮਨਿ ਰਥੁ ਧਰਿਆ ॥ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਸਮਾਚਰੇ ਅਭਰਾ ਸਰੁ ਭਰਿਆ ॥ ਅਕਥ ਕਥਾ ਅਮਰਾ ਪੁਰੀ
 ਜਿਸੁ ਦੇਇ ਸੁ ਪਾਵੈ ॥ ਇਹੁ ਜਨਕ ਰਾਜੁ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਤੁਝੁ ਹੀ ਬਣਿ ਆਵੈ ॥੧੩॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਏਕ ਲਿਵ
 ਮਨਿ ਜਪੈ ਵੂਡੁ ਤਿਨ੍ ਜਨ ਦੁਖ ਪਾਪੁ ਕਹੁ ਕਤ ਹੋਵੈ ਜੀਤ ॥ ਤਾਰਣ ਤਰਣ ਖਿਨ ਮਾਤਰ ਜਾ ਕਤ ਵ੃਷ਿ ਧਾਰੈ
 ਸਬਦੁ ਰਿਦ ਬੀਚਾਰੈ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਖੋਵੈ ਜੀਤ ॥ ਜੀਅਨ ਸਭਨ ਦਾਤਾ ਅਗਮ ਗਿਆਨ ਬਿਖਾਤਾ ਅਹਿਨਿਸਿ ਧਿਆਨ
 ਧਾਰੈ ਪਲਕ ਨ ਸੋਵੈ ਜੀਤ ॥ ਜਾ ਕਤ ਦੇਖਤ ਦਰਿਦੁ ਜਾਵੈ ਨਾਮੁ ਸੋ ਨਿਧਾਨੁ ਪਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨਿ ਦੁਰਮਤਿ
 ਮੈਲੁ ਧੋਵੈ ਜੀਤ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਏਕ ਲਿਵ ਮਨਿ ਜਪੈ ਵੂਡੁ ਤਿਨ੍ ਜਨ ਦੁਖ ਪਾਪ ਕਹੁ ਕਤ ਹੋਵੈ ਜੀਤ ॥੧॥
 ਧਰਮ ਕਰਮ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਈ ਹੈ ॥ ਜਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਿਧ ਸਾਧ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੁਰਿ ਨਰ ਜਾਚਹਿ ਸਬਦ ਸਾਰੁ
 ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਈ ਹੈ ॥ ਫੁਨਿ ਜਾਨੈ ਕੋ ਤੇਰਾ ਅਪਾਰੁ ਨਿਰਭਤ ਨਿਰਕਾਰੁ ਅਕਥ ਕਥਨਹਾਰੁ ਤੁਝਹਿ ਬੁਝਾਈ
 ਹੈ ॥ ਭਰਮ ਭੂਲੇ ਸੰਸਾਰ ਛੁਟਹੁ ਜੂਨੀ ਸੰਘਾਰ ਜਮ ਕੋ ਨ ਡੱਡ ਕਾਲ ਗੁਰਮਤਿ ਧਿਆਈ ਹੈ ॥ ਮਨ ਪ੍ਰਾਣੀ ਮੁਗਧ
 ਬੀਚਾਰੁ ਅਹਿਨਿਸਿ ਜਪੁ ਧਰਮ ਕਰਮ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਈ ਹੈ ॥੨॥ ਹਤ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਤ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਚੇ
 ਨਾਮ ਪਰ ॥ ਕਵਨ ਤੁਪਮਾ ਦੇਤ ਕਵਨ ਸੇਵਾ ਸਰੇਤ ਏਕ ਮੁਖ ਰਸਨਾ ਰਸਹੁ ਜੁਗ ਜੋਰਿ ਕਰ ॥ ਫੁਨਿ ਮਨ ਬਚ

ਕਰਮ ਜਾਨੁ ਅਨਤ ਦ੍ਰਿਜਾ ਨ ਮਾਨੁ ਨਾਮੁ ਸੋ ਅਪਾਰੁ ਸਾਰੁ ਦੀਨੋ ਗੁਰਿ ਰਿਦ ਧਰ ॥ ਨਲਿਆ ਕਵਿ ਪਾਰਸ ਪਰਸ ਕਚ
 ਕੰਚਨਾ ਹੁਝਿ ਚੰਦਨਾ ਸੁਬਾਸੁ ਜਾਸੁ ਸਿਮਰਤ ਅਨ ਤਰ ॥ ਜਾ ਕੇ ਦੇਖਤ ਦੁਆਰੇ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਹੀ ਨਿਵਾਰੇ ਜੀ ਹਤ
 ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਤ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਪਰ ॥੩॥ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ਤਖਤੁ ਦੀਅਨੁ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ॥ ਪ੍ਰਥਮੇ ਨਾਨਕ
 ਚੰਦੁ ਜਗਤ ਭਯੋ ਆਨਨਦੁ ਤਾਰਨਿ ਮਨੁਖਿ ਜਨ ਕੀਅਤ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥ ਗੁਰ ਅੰਗਦ ਦੀਅਤ ਨਿਧਾਨੁ ਅਕਥ ਕਥਾ
 ਗਿਆਨੁ ਪੰਚ ਭੂਤ ਬਸਿ ਕੀਨੇ ਜਮਤ ਨ ਤਾਸ ॥ ਗੁਰ ਅਮਰੁ ਗੁਰੂ ਸ੍ਰੀ ਸਤਿ ਕਲਿਜੁਗਿ ਰਾਖੀ ਪਤਿ ਅਘਨ ਦੇਖਤ
 ਗਤੁ ਚਰਨ ਕਵਲ ਜਾਸ ॥ ਸਭ ਬਿਧਿ ਮਾਨਿਅਤ ਮਨੁ ਤਬ ਹੀ ਭਯਤ ਪ੍ਰਸਨ੍ਨੁ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ਤਖਤੁ ਦੀਅਨੁ ਗੁਰ
 ਰਾਮਦਾਸ ॥੪॥ ਰਡ ॥ ਜਿਸਹਿ ਧਾਰਿਉ ਧਰਤਿ ਅਝ ਵਿਤਸੁ ਅਝ ਪਕਣੁ ਤੇ ਨੀਰ ਸਰ ਅਵਰ ਅਨਲ ਅਨਾਦਿ
 ਕੀਅਤ ॥ ਸਸਿ ਰਿਖਿ ਨਿਸਿ ਸੂਰ ਦਿਨਿ ਸੈਲ ਤੱਤਾ ਫਲ ਫੁਲ ਦੀਅਤ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ ਸਪਤ ਸਮੁਦ੍ਰ ਕਿਅ
 ਧਾਰਿਓ ਤ੍ਰਭਵਣ ਜਾਸੁ ॥ ਸੋਈ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਤਿ ਪਾਇਓ ਗੁਰ ਅਮਰ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥੧॥੫॥ ਕਚਹੁ
 ਕੰਚਨੁ ਭਿਅਤ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਸ਼ਰਣਹਿ ਸੁਣਿਓ ॥ ਬਿਖੁ ਤੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੁਧਤ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਖਿ ਭਣਿਅਤ ॥
 ਲੋਹਤੁ ਹੋਧਤ ਲਾਲੁ ਨਦਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਦਿ ਧਾਰੈ ॥ ਪਾਹਣ ਮਾਣਕ ਕਰੈ ਗਿਆਨੁ ਗੁਰ ਕਹਿਅਤ ਬੀਚਾਰੈ ॥
 ਕਾਠਹੁ ਸੀਖਿੰਡ ਸਤਿਗੁਰਿ ਕੀਅਤ ਦੁਖ ਦਰਿਦ ਤਿਨ ਕੇ ਗਿਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਚਰਨ ਜਿਨ੍ ਪਰਸਿਆ ਸੇ ਪਸੁ
 ਪਰੇਤ ਸੁਰਿ ਨਰ ਭਿਅ ॥੨॥੬॥ ਜਾਮਿ ਗੁਰੂ ਹੋਇ ਵਲਿ ਧਨਹਿ ਕਿਆ ਗਾਰਖੁ ਦਿਜਿ ॥ ਜਾਮਿ ਗੁਰੂ
 ਹੋਇ ਵਲਿ ਲਖ ਬਾਹੇ ਕਿਆ ਕਿਜਿ ॥ ਜਾਮਿ ਗੁਰੂ ਹੋਇ ਵਲਿ ਗਿਆਨ ਅਝ ਧਿਆਨ ਅਨਨ ਪਰਿ ॥ ਜਾਮਿ
 ਗੁਰੂ ਹੋਇ ਵਲਿ ਸਬਦੁ ਸਾਖੀ ਸੁ ਸਚਹ ਘਰਿ ॥ ਜੋ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਅਹਿਨਿਸਿ ਜਪੈ ਦਾਸੁ ਭਟੁ ਬੇਨਤਿ ਕਹੈ ॥ ਜੋ ਗੁਰੂ
 ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਮਹਿ ਧਰੈ ਸੋ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਹ ਥੇ ਰਹੈ ॥੩॥੭॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰੁ ਅੰਧਾਰੁ ਗੁਰੂ ਬਿਨੁ ਸਮੜਨ ਆਵੈ
 ॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸੁਰਤਿ ਨ ਸਿਧਿ ਗੁਰੂ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਵੈ ॥ ਗੁਰੂ ਕਰੁ ਸਚੁ ਬੀਚਾਰੁ ਗੁਰੂ ਕਰੁ ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥
 ਗੁਰੂ ਕਰੁ ਸਬਦੁ ਸਪੁਨਨ ਅਘਨ ਕਟਹਿ ਸਭ ਤੇਰੇ ॥ ਗੁਰੂ ਨਧਣਿ ਬਧਣਿ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਕਰਹੁ ਗੁਰੂ ਸਤਿ ਕਵਿ ਨਲਿਆ
 ਕਹਿ ॥ ਜਿਨਿ ਗੁਰੂ ਨ ਦੇਖਿਅਤ ਨਹੁ ਕੀਅਤ ਤੇ ਅਕਥਥ ਸੰਸਾਰ ਮਹਿ ॥੪॥੮॥ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਕਰੁ ਮਨ

ਮेरੇ ॥ ਤਾਰਣ ਤਰਣ ਸਮ੍ਰਥੁ ਕਲਿਜੁਗਿ ਸੁਨਤ ਸਮਾਧਿ ਸਬਦ ਜਿਸੁ ਕੇਰੇ ॥ ਫੁਨਿ ਦੁਖਨਿ ਨਾਸੁ ਸੁਖਦਾਯਕੁ
 ਸ੍ਰੂਤ ਜੋ ਧਰਤ ਧਿਆਨੁ ਬਸਤ ਤਿਹ ਨੇਰੇ ॥ ਪ੍ਰੂਤ ਪੁਰਖੁ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਮੁਖੁ ਦੇਖਤ ਅਘ ਜਾਹਿ ਪਰੇਰੇ ॥
 ਜਤ ਹਰਿ ਬੁਧਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਚਾਹਤ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥੫॥੬॥ ਗੁਰੁ ਮੁਖੁ ਦੇਖਿ ਗ੍ਰਹ ਸੁਖੁ ਪਾਯਤ
 ॥ ਹੁਤੀ ਜੁ ਪਿਆਸ ਪਿੜਸ ਪਿਵਨਨ ਕੀ ਬਂਛਤ ਸਿਧਿ ਕਤ ਬਿਧਿ ਮਿਲਾਯਤ ॥ ਪ੍ਰੂਨ ਭੋ ਮਨ ਠਤਰ ਬਸੋ ਰਸ
 ਬਾਸਨ ਸਿਤ ਜੁ ਦਵਾ ਦਿਸਿ ਧਾਯਤ ॥ ਗੋਬਿੰਦ ਵਾਲੁ ਗੋਬਿੰਦ ਪੁਰੀ ਸਮ ਜਲਧਨ ਤੀਰਿ ਬਿਪਾਸ ਬਨਾਯਤ ॥ ਗਧਤ
 ਦੁਖੁ ਫ੍ਰੂਰਿ ਬਰਖਨ ਕੋ ਸੁ ਗੁਰੁ ਮੁਖੁ ਦੇਖਿ ਗ੍ਰਹ ਸੁਖੁ ਪਾਯਤ ॥੬॥੧੦॥ ਸਮਰਥ ਗੁਰੁ ਸਿਰਿ ਹਥੁ ਧਰੂਤ ॥ ਗੁਰਿ
 ਕੀਨੀ ਕ੃ਪਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਅਤ ਜਿਸੁ ਦੇਖਿ ਚਰਨ ਅਧਨ ਹਰੂਤ ॥ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਏਕ ਸਮਾਨ ਧਿਆਨ ਸੁ
 ਨਾਮ ਸੁਨੇ ਸੁਤੁ ਭਾਨ ਡਰੂਤ ॥ ਭਨਿ ਦਾਸ ਸੁ ਆਸ ਜਗਤ ਗੁਰੁ ਕੀ ਪਾਰਸੁ ਭੇਟਿ ਪਰਸੁ ਕਰੂਤ ॥ ਰਾਮਦਾਸੁ ਗੁਰੁ
 ਹਰਿ ਸਤਿ ਕੀਯਤ ਸਮਰਥ ਗੁਰੁ ਸਿਰਿ ਹਥੁ ਧਰੂਤ ॥੭॥੧੧॥ ਅਥ ਰਾਖਹੁ ਦਾਸ ਭਾਟ ਕੀ ਲਾਜ ॥ ਜੈਸੀ
 ਰਾਖੀ ਲਾਜ ਭਗਤ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਕੀ ਹਰਨਾਖਸ ਫਾਰੇ ਕਰ ਆਜ ॥ ਫੁਨਿ ਟ੍ਰੋਪਤੀ ਲਾਜ ਰਖੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਛੀਨਤ
 ਬਸਤ ਦੀਨ ਬਹੁ ਸਾਜ ॥ ਸੋਦਾਮਾ ਅਪਦਾ ਤੇ ਰਾਖਿਆ ਗਨਿਕਾ ਪਛਤ ਪੂਰੇ ਤਿਹ ਕਾਜ ॥ ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਪ੍ਰਸਨਨ
 ਕਲਜੁਗ ਹੋਇ ਰਾਖਹੁ ਦਾਸ ਭਾਟ ਕੀ ਲਾਜ ॥੮॥੧੨॥ ਝੀਲਨਾ ॥ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਜਪੁ ਪ੍ਰਾਨੀਅਹੁ ॥
 ਸਬਦੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੈ ਨਾਮੁ ਨਵ ਨਿਧਿ ਅਪੈ ਰਸਨਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਸੈ ਸਤਿ ਕਰਿ ਜਾਨੀਅਹੁ ॥ ਫੁਨਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰੰਗ
 ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਹਿ ਧਿਆਈਐ ਅਨਨ ਮਾਰਗ ਤਜਹੁ ਭਜਹੁ ਹਰਿ ਗਧਾਨੀਅਹੁ ॥ ਬਚਨ ਗੁਰ ਰਿਦੈ ਧਰਹੁ ਪੰਚ ਭੂ
 ਬਸਿ ਕਰਹੁ ਜਨਮੁ ਕੁਲ ਤਥਰਹੁ ਦਾਰਿ ਹਰਿ ਮਾਨੀਅਹੁ ॥ ਜਤ ਤ ਸਭ ਸੁਖ ਇਤ ਤਤ ਤੁਮ ਬੰਛਵਹੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ
 ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਜਪੁ ਪ੍ਰਾਨੀਅਹੁ ॥੧॥੧੩॥ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਜਪਿ ਸਤਿ ਕਰਿ ॥ ਅਗਮ ਗੁਨ
 ਜਾਨੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਧਰਹੁ ਧਧਾਨੁ ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਰਹੁ ਬਚਨ ਗੁਰ ਰਿਦੈ ਧਰਿ ॥ ਫੁਨਿ ਗੁਰੁ ਜਲ ਬਿਮਲ
 ਅਥਾਹ ਮਜਨੁ ਕਰਹੁ ਸੰਤ ਗੁਰਸਿਖ ਤਰਹੁ ਨਾਮ ਸਚ ਰੰਗ ਸਰਿ ॥ ਸਦਾ ਨਿਰਵੈਰੁ ਨਿਰਕਾਰੁ ਨਿਰਮਤ ਜਪੈ
 ਪ੍ਰੇਮ ਗੁਰ ਸਬਦ ਰਸਿ ਕਰਤ ਦੂਡੁ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ॥ ਮੁਗਧ ਮਨ ਭ੍ਰਮੁ ਤਜਹੁ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਜਹੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ

ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਜਪੁ ਸਤਿ ਕਰਿ ॥੨॥੧੪॥ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਕਰਹੁ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ॥ ਉਦਧਿ ਗੁਰੂ ਗਹਿਰ ਗੰਮੀਰ
 ਬੇਅੰਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨਗ ਹੀਰ ਮਣਿ ਮਿਲਤ ਲਿਵ ਲਾਈਐ ॥ ਫੁਨਿ ਗੁਰੂ ਪਰਮਲ ਸਰਸ ਕਰਤ ਕੰਚਨੁ ਪਰਸ
 ਮੈਲੁ ਦੁਰਮਤਿ ਹਿਰਤ ਸਬਦਿ ਗੁਰੂ ਧਿਆਈਐ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪਰਵਾਹ ਛੁਟਕਨਤ ਸਦ ਢਾਰਿ ਜਿਸੁ ਗਿਆਨ ਗੁਰ ਬਿਮਲ ਸਰ
 ਸੰਤ ਸਿਖ ਨਾਈਐ ॥ ਨਾਮੁ ਨਿਰਬਾਣੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਤਉ ਧਰਹੁ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਕਰਹੁ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਪਾਈਐ
 ॥੩॥੧੫॥ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਜਪੁ ਮਨਨ ਰੇ ॥ ਜਾ ਕੀ ਸੇਵ ਸਿਵ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਸੁਰ ਅਸੁਰ ਗਣ ਤਰਹਿ
 ਤੇਤੀਸ ਗੁਰ ਬਚਨ ਸੁਣਿ ਕਨਨ ਰੇ ॥ ਫੁਨਿ ਤਰਹਿ ਤੇ ਸੰਤ ਹਿਤ ਭਗਤ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਕਰਹਿ ਤਰਿਆਂ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਗੁਰ
 ਮਿਲਤ ਮੁਨਿ ਜਨਨ ਰੇ ॥ ਤਰਹਿ ਨਾਰਦਾਦਿ ਸਨਕਾਦਿ ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਹਿ ਤਰਹਿ ਇਕ ਨਾਮ ਲਗਿ ਤਜਹੁ ਰਸ
 ਅਨਨ ਰੇ ॥ ਦਾਸੁ ਬੇਨਤਿ ਕਹੈ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਹੈ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਜਪੁ ਮਨਨ ਰੇ ॥੪॥੧੬॥੨੯॥
 ਸਿਰੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬੁ ਸਭ ਊਪਰਿ ॥ ਕਰੀ ਕ੃ਪਾ ਸਤਜੁਗਿ ਜਿਨਿ ਧ੍ਰੂ ਪਰਿ ॥ ਸ੍ਰੀ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਭਗਤ ਉਧਰੀਅਂ ॥
 ਹੱਸ ਕਮਲ ਮਾਥੇ ਪਰ ਧਰੀਅਂ ॥ ਅਲਖ ਰੂਪ ਜੀਅ ਲਖਿਆ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਸਗਲ ਸਰਣਾਈ ॥ ਗੁਰ ਕੇ
 ਬਚਨ ਸਤਿ ਜੀਅ ਧਾਰਹੁ ॥ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਦੇਹ ਨਿਸ਼ਾਰਹੁ ॥ ਗੁਰੂ ਜਹਾਜੁ ਖੇਵਟੁ ਗੁਰੂ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਤਰਿਆ ਨ
 ਕੋਇ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕੁ ਨਿਕਟਿ ਬਖੈ ਬਨਵਾਰੀ ॥ ਤਿਨਿ
 ਲਹਣਾ ਥਾਪਿ ਜੋਤਿ ਜਗਿ ਧਾਰੀ ॥ ਲਹਣੈ ਪਥੁ ਧਰਮ ਕਾ ਕੀਆ ॥ ਅਮਰਦਾਸ ਭਲੇ ਕਤ ਦੀਆ ॥ ਤਿਨਿ
 ਸ੍ਰੀ ਰਾਮਦਾਸੁ ਸੋਢੀ ਥਿਰੁ ਥਾਘਤ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਖੈ ਨਿਧਿ ਅਘਤ ॥ ਅਘਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਖੈ ਨਿਧਿ ਚਹੁ ਜੁਗਿ
 ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਕਰਿ ਫਲੁ ਲਹੀਅਂ ॥ ਬੰਦਹਿ ਜੋ ਚਰਣ ਸਰਣਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਪਰਮਾਨਦ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਹੀਅਂ ॥ ਪਰਤਖਿ
 ਦੇਹ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੁਆਮੀ ਆਦਿ ਰੂਪਿ ਪੋਖਣ ਭਰਣ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਸੇਵਿ ਅਲਖ ਗਤਿ ਜਾ ਕੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮਦਾਸੁ
 ਤਾਰਣ ਤਰਣ ॥੧॥ ਜਿਹ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਬਾਣੀ ਸਾਧੂ ਜਨ ਜਪਹਿ ਕਰਿ ਬਿਚਿਤਿ ਚਾਓ ॥ ਆਨਨਦੁ ਨਿਤ
 ਮੰਗਲੁ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਸਫਲੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਸੰਸਾਰਿ ਸਫਲੁ ਗੰਗਾ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਪਰਸਨ ਪਰਮ ਪਵਿਤ ਗਤੇ ॥
 ਜੀਤਹਿ ਜਮ ਲੋਕੁ ਪਤਿਤ ਜੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਹਰਿ ਜਨ ਸਿਵ ਗੁਰ ਗਿਆਨਿ ਰਤੇ ॥ ਰਘੁਬੰਸਿ ਤਿਲਕੁ ਸੁਨਦਰੁ ਦਸਰਥ ਘਰਿ

मुनि बंछहि जा की सरणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥२॥ संसारु
 अगम सागरु तुलहा हरि नामु गुरु मुखि पाया ॥ जगि जनम मरणु भगा इह आई हीअै परतीति ॥
 परतीति हीअै आई जिन जन कै तिन् कउ पदवी उच भई ॥ तजि माइआ मोहु लोभु अरु लालचु काम
 क्रोध की बृथा गई ॥ अवलोकया ब्रह्मु भरमु सभु छुटकया दिव्य दृष्टि कारण करणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि
 अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥३॥ परतापु सदा गुर का घटि घटि परगासु भया
 जसु जन कै ॥ इकि पड़हि सुणहि गावहि परभातिहि करहि इसानु ॥ इसानु करहि परभाति
 सुध मनि गुर पूजा बिधि सहित करं ॥ कंचनु तनु होइ परसि पारस कउ जोति सरूपी ध्यानु धरं ॥
 जगजीवनु जगन्नाथु जल थल महि रहिआ पूरि बहु बिधि बरनं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति
 जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥४॥ जिनहु बात निश्चल धूआ जानी तई जीव काल ते बचा ॥ तिन्
 तरिओ समुद्र रुदु खिन इक महि जलहर बिंब जुगति जगु रचा ॥ कुंडलनी सुरझी सतसंगति
 परमानन्द गुरु मुखि मचा ॥ सिरी गुरु साहिबु सभ ऊपरि मन बच क्रम सेवीअै सचा ॥५॥ वाहिगुरु
 वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीउ ॥ कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोद जिसहि दही
 भातु खाहि जीउ ॥ देखि रूपु अति अनूपु मोह महा मग भई किंकनी सबद झनतकार खेलु पाहि जीउ ॥
 काल कलम हुकमु हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु बंम्य ग्यानु ध्यानु धरत हीअै चाहि जीउ ॥ सति साचु
 स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीउ ॥१॥६॥ राम नाम
 परम धाम सुध बुध निरीकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ ॥ सुथर चित भगत हित भेखु धरिओ
 हरनाखसु हरिओ नख बिदारि जीउ ॥ संख चक्र गदा पदम आपि आपु कीओ छदम अपरंपर पारब्रहम
 लखै कउनु ताहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु
 वाहि जीउ ॥२॥७॥ पीत बसन कुंद दसन पृअ सहित कंठ माल मुकटु सीसि मोर पंख चाहि जीउ ॥

ਬੇਵਜੀਰ ਬਡੇ ਧੀਰ ਧਰਮ ਅੰਗ ਅਲਖ ਅਗਮ ਖੇਲੁ ਕੀਆ ਆਪਣੈ ਉਛਾਹਿ ਜੀਤ ॥ ਅਕਥ ਕਥਾ ਕਥੀ ਨ ਜਾਇ
 ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ਸੁਤਹ ਸਿਧ ਰੂਪੁ ਧਰਿਆ ਸਾਹਨ ਕੈ ਸਾਹਿ ਜੀਤ ॥ ਸਤਿ ਸਾਚੁ ਸ੍ਰੀ ਨਿਵਾਸੁ ਆਦਿ
 ਪੁਰਖੁ ਸਦਾ ਤੁਹੀ ਵਾਹਿਗੁਰੁ ਵਾਹਿਗੁਰੁ ਵਾਹਿਗੁਰੁ ਵਾਹਿ ਜੀਤ ॥੩॥੮॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ
 ਗੁਬਿੰਦ ਜੀਤ ॥ ਬਲਿਹਿ ਛਲਨ ਸਬਲ ਮਲਨ ਭਗਿ ਫਲਨ ਕਾਨੁ ਕੁਅਰ ਨਿਹਕਲਮਕ ਬਜੀ ਡਕ ਚੜ੍ਹਮ੍ਰ ਦਲ
 ਰਵਿੰਦ ਜੀਤ ॥ ਰਾਮ ਰਖਣ ਦੁਰਤ ਦਰਣ ਸਕਲ ਭਵਣ ਕੁਸਲ ਕਰਣ ਸਰਬ ਭੂਤ ਆਪਿ ਹੀ ਦੇਵਾਧਿ ਦੇਵ
 ਸਹਸ ਮੁਖ ਫਨਿੰਦ ਜੀਤ ॥ ਜਰਮ ਕਰਮ ਮਛ ਕਛ ਹੁਅ ਬਰਾਹ ਜਮੁਨਾ ਕੈ ਕੂਲਿ ਖੇਲੁ ਖੇਲਿਆ ਜਿਨਿ ਗਿੰਦ
 ਜੀਤ ॥ ਨਾਮੁ ਸਾਰੁ ਹੀਏ ਧਾਰੁ ਤਜੁ ਬਿਕਾਰੁ ਮਨ ਗਧਾਂਦ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਬਿੰਦ ਜੀਤ
 ॥੪॥੯॥ ਸਿਰੀ ਗੁਰੁ ਸਿਰੀ ਗੁਰੁ ਸਿਰੀ ਗੁਰੁ ਸਤਿ ਜੀਤ ॥ ਗੁਰ ਕਹਿਆ ਮਾਨੁ ਨਿਜ ਨਿਧਾਨੁ ਸਚੁ ਜਾਨੁ
 ਮੰਤੁ ਇਹੈ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਹੋਇ ਕਲਿਆਨੁ ਲਹਹਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਜੀਤ ॥ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਜਣ ਜਣ ਸਿਤ
 ਛਾਡੁ ਧੋਹੁ ਹਉਮੈ ਕਾ ਫਂਧੁ ਕਾਟੁ ਸਾਧਸਾਂਗਿ ਰਤਿ ਜੀਤ ॥ ਦੇਹ ਗੇਹੁ ਤ੍ਰਾਅ ਸਨੇਹੁ ਚਿਤ ਬਿਲਾਸੁ
 ਜਗਤ ਏਹੁ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਦਾ ਸੇਤ ਦ੃ਡਤਾ ਕਰੁ ਮਤਿ ਜੀਤ ॥ ਨਾਮੁ ਸਾਰੁ ਹੀਏ ਧਾਰੁ ਤਜੁ ਬਿਕਾਰੁ ਮਨ
 ਗਧਾਂਦ ਸਿਰੀ ਗੁਰੁ ਸਿਰੀ ਗੁਰੁ ਸਿਰੀ ਗੁਰੁ ਸਤਿ ਜੀਤ ॥੫॥੧੦॥ ਸੇਵਕ ਕੈ ਭਰਪੂਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਵਾਹਿਗੁਰੁ
 ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਸਦਕਾ ॥ ਨਿਰਕਾਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਕਹਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਝ ਤ੍ਰੂ ਕਦ ਕਾ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਸਿਰੇ
 ਤੈ ਅਗਨਤ ਤਿਨ ਕਤ ਮੋਹੁ ਭਧਾ ਮਨ ਮਦ ਕਾ ॥ ਚਵਰਾਸੀਹ ਲਖ ਜੋਨਿ ਤੁਪਾਈ ਰਿਜਕੁ ਦੀਆ ਸਭ ਹੂ ਕਤ
 ਤਦ ਕਾ ॥ ਸੇਵਕ ਕੈ ਭਰਪੂਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਵਾਹਿਗੁਰੁ ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਸਦਕਾ ॥੧॥੧੧॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਾ ਬਡਾ
 ਤਮਾਸਾ ॥ ਆਪੇ ਹਸੈ ਆਪਿ ਹੀ ਚਿਤਵੈ ਆਪੇ ਚੰਦੁ ਸ੍ਰੂ ਪਰਗਾਸਾ ॥ ਆਪੇ ਜਲੁ ਆਪੇ ਥਲੁ ਥੰਮਨੁ ਆਪੇ
 ਕੀਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਬਾਸਾ ॥ ਆਪੇ ਨਰੁ ਆਪੇ ਫੁਨਿ ਨਾਰੀ ਆਪੇ ਸਾਰਿ ਆਪ ਹੀ ਪਾਸਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਂਗਤਿ
 ਸਭੈ ਬਿਚਾਰਹੁ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਾ ਬਡਾ ਤਮਾਸਾ ॥੨॥੧੨॥ ਕੀਆ ਖੇਲੁ ਬਡ ਮੇਲੁ ਤਮਾਸਾ ਵਾਹਿਗੁਰੁ ਤੇਰੀ
 ਸਭ ਰਖਨਾ ॥ ਤ੍ਰੂ ਜਲਿ ਥਲਿ ਗਗਨਿ ਪਧਾਲਿ ਪ੍ਰਾਰਿ ਰਹਣਾ ਅੰਮ੍ਰਤ ਤੇ ਮੀਠੇ ਜਾ ਕੇ ਬਚਨਾ ॥ ਮਾਨਹਿ

ब्रह्मादिक रुद्रादिक काल का कालु निरंजन जचना ॥ गुर प्रसादि पाईऔ परमारथु सतसंगति सेती
 मनु खचना ॥ कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहगुरु तेरी सभ रचना ॥३॥१३॥४२॥ अगमु अन्नतु
 अनादि आदि जिसु कोइ न जाणै ॥ सिव बिरंचि धरि ध्यानु नितहि जिसु बेदु बखाणै ॥ निरंकारु
 निरवैरु अवरु नही दूसर कोई ॥ भंजन गङ्गण समथु तरण तारण प्रभु सोई ॥ नाना प्रकार जिनि
 जगु कीओ जनु मथुरा रसना रसै ॥ स्री सति नामु करता पुरखु गुर रामदास चितह बसै ॥१॥ गुरु
 समरथु गहि करीआ ध्रुव बुधि सुमति समारन कउ ॥ फुनि ध्रुम धुजा फहरंति सदा अघ पुंज तरंग
 निवारन कउ ॥ मथुरा जन जानि कही जीअ साचु सु अउर कछू न बिचारन कउ ॥ हरि नामु
 बोहिथु बडौ कलि मै भव सागर पारि उतारन कउ ॥२॥ संतत ही सतसंगति संग सुरंग रते
 जसु गावत है ॥ ध्रम पंथु धरिओ धरनीधर आपि रहे लिव धारि न धावत है ॥ मथुरा भनि भाग
 भले उन् के मन इछित ही फल पावत है ॥ रवि के सुत को तिन् त्रासु कहा जु चरन्न गुरु चितु
 लावत है ॥३॥ निरमल नामु सुधा परपूरन सबद तरंग प्रगटित दिन आगरु ॥ गहिर गंभीरु
 अथाह अति बड सुभरु सदा सभ बिधि रतनागरु ॥ संत मराल करहि कंतूहल तिन जम त्रास मिटिओ
 दुख कागरु ॥ कलजुग दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरु सगल सुख सागरु ॥४॥ जा कउ मुनि
 ध्यानु धरै फिरत सगल जुग कबहु क कोऊ पावै आतम प्रगास कउ ॥ बेद बाणी सहित बिरंचि जसु
 गावै जा को सिव मुनि गहि न तजात कबिलास कंउ ॥ जा कौ जोगी जती सिध साधिक अनेक तप
 जटा जूट भेख कीए फिरत उदास कउ ॥ सु तिनि सतिगुरि सुख भाइ कृपा धारी जीअ नाम की
 बडाई दई गुर रामदास कउ ॥५॥ नामु निधानु धिआन अंतरगति तेज पुंज तिहु लोग प्रगासे
 ॥ देखत दरसु भटकि भ्रमु भजत दुख परहरि सुख सहज बिगासे ॥ सेवक सिख सदा अति लुभित
 अलि समूह जिउ कुसम सुबासे ॥ बिद्यमान गुरि आपि थप्पउ थिरु साचउ तखतु गुरु रामदासै

॥६॥ तारुउ संसारु माया मद मोहित अंमृत नामु दीअउ समरथु ॥ फुनि कीरतिवंत सदा सुख संपति रिधि अरु सिधि न छोड़ि सथु ॥ दानि बडौ अतिवंतु महाबलि सेवकि दासि कहिओ इहु तथु ॥ ताहि कहा परवाह काहू की जा कै बसीसि धरिओ गुरि हथु ॥७॥४६॥ तीनि भवन भरपूरि रहिओ सोई ॥ अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥ आपुन आपु आप ही उपायउ ॥ सुरि नर असुर अंतु नही पायउ ॥ पायउ नही अंतु सुरे असुरह नर गण गंध्रब खोजंत फिरे ॥ अबिनासी अचलु अजोनी संभउ पुरखोतमु अपार परे ॥ करण कारण समरथु सदा सोई सरब जीअ मनि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥१॥ सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ ॥ अंगदि अन्नत मूरति निज धारी अगम ग्यानि रसि रस्यउ हीअउ ॥ गुरि अमरदासि करतारु कीअउ वसि वाहु वाहु करि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥२॥ नारदु धू प्रहलादु सुदामा पुब भगत हरि के जु गण ॥ अंबरीकु जयदेव तूलोचनु नामा अवरु कबीरु भण ॥ तिन कौ अवतारु भयउ कलि भिंतरि जसु जगत परि छाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥३॥ मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिण ॥ बाचा करि सिमरंत तुझै तिन् दुखु दरिद्रु मिटियउ जु खिण ॥ करम करि तुआ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु गाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥४॥ जिह सतिगुर सिमरंत नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥ सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥ जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऔ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥५॥५४॥ जिनि सबदु कमाइ परम पदु पाइओ सेवा करत न छोडिओ पासु ॥ ता ते गउहरु

ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਗਟੁ ਤਜੀਆਰਤ ਦੁਖ ਦਰਿਦ੍ਰ ਅੰਧਾਰ ਕੋ ਨਾਸੁ ॥ ਕਵਿ ਕੀਰਤ ਜੋ ਸੰਤ ਚਰਨ ਸੁਡਿ ਲਾਗਹਿ ਤਿਨੁ
 ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਜਮ ਕੋ ਨਹੀਂ ਕਾਸੁ ॥ ਜਿਵ ਅੰਗਟੁ ਅੰਗੀ ਸੰਗੀ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤਿਵ ਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸ ਕੈ ਗੁਰ
 ਰਾਮਦਾਸੁ ॥੧॥ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਯਤ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਹਰਿ ਚਰਨ ਨਿਵਾਸੁ ॥ ਤਾ ਤੇ ਸੰਗਤਿ
 ਸਘਨ ਭਾਇ ਭਤ ਮਾਨਹਿ ਤੁਮ ਮਲੀਆਗਰ ਪ੍ਰਗਟ ਸੁਬਾਸੁ ॥ ਧ੍ਰੂ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਕਬੀਰ ਤਿਲੋਚਨ ਨਾਮੁ ਲੈਤ
 ਉਪਜਯੋ ਜੁ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥ ਜਿਹ ਪਿਖਤ ਅਤਿ ਹੋਇ ਰਹਸੁ ਮਨਿ ਸੋਈ ਸੰਤ ਸਹਾਰੁ ਗੁਰੁ ਰਾਮਦਾਸੁ ॥੨॥ ਨਾਨਕਿ
 ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਜਾਨਿਤ ਕੀਨੀ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਤਾ ਤੇ ਅੰਗਟੁ ਅੰਗ ਸੰਗੀ ਭਯੋ ਸਾਇਰੁ ਤਿਨਿ
 ਸਬਦ ਸੁਰਤਿ ਕੀ ਨੀਵ ਰਖਾਈ ॥ ਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸ ਕੀ ਅਕਥ ਕਥਾ ਹੈ ਇਕ ਜੀਹ ਕਛੁ ਕਹੀ ਨ ਜਾਈ ॥ ਸੋਢੀ
 ਸ੍ਰ਷ਟਿ ਸਕਲ ਤਾਰਣ ਕਤ ਅਬ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਕਤ ਮਿਲੀ ਬਡਾਈ ॥੩॥ ਹਮ ਅਕਗੁਣਿ ਭਰੇ ਏਕੁ ਗੁਣੁ
 ਨਾਹੀ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਛਾਡਿ ਬਿਖੈ ਬਿਖੁ ਖਾਈ ॥ ਮਾਧਾ ਮੋਹ ਭਰਮ ਪੈ ਭੂਲੇ ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਸਿਤ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ॥ ਇਕੁ
 ਤਤਮ ਪਥੁ ਸੁਨਿਓ ਗੁਰ ਸੰਗਤਿ ਤਿਹ ਮਿਲਮਤ ਜਮ ਕਾਸ ਮਿਟਾਈ ॥ ਇਕ ਅਰਦਾਸਿ ਭਾਟ ਕੀਰਤਿ ਕੀ ਗੁਰ
 ਰਾਮਦਾਸ ਰਾਖਹੁ ਸਰਣਾਈ ॥੪॥੫੮॥ ਮੋਹੁ ਮਲਿ ਬਿਵਸਿ ਕੀਅਤ ਕਾਮੁ ਗਹਿ ਕੇਸ ਪਛਾਡ੍ਰਤ ॥ ਕ੍ਰੋਧੁ
 ਖੰਡਿ ਪਰਚੰਡਿ ਲੋਭੁ ਅਪਮਾਨ ਸਿਤ ਝਾਡ੍ਰਤ ॥ ਜਨਮੁ ਕਾਲੁ ਕਰ ਜੋਡਿ ਹੁਕਮੁ ਜੋ ਹੋਇ ਸੁ ਮਨੈ ॥ ਭਵ ਸਾਗਰੁ
 ਬੰਧਿਅਤ ਸਿਖ ਤਾਰੇ ਸੁਪ੍ਰਸਨੈ ॥ ਸਿਰਿ ਆਤਪਤੁ ਸਚੈ ਤਖਤੁ ਜੋਗ ਭੋਗ ਸੰਜੁਤੁ ਬਲਿ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਸਚੁ
 ਸਲਿ ਭਣਿ ਤੂ ਅਟਲੁ ਰਾਜਿ ਅਭਗੁ ਦਲਿ ॥੧॥ ਤੂ ਸਤਿਗੁਰ ਚਹੁ ਜੁਗੀ ਆਧਿ ਆਪੇ ਪਰਮੇਸਰੁ ॥ ਸੁਰਿ ਨਰ
 ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਸਿਖ ਸੇਵਤ ਧੁਰਹ ਧੁਰੁ ॥ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਅਨਾਦਿ ਕਲਾ ਧਾਰੀ ਤੂਹੁ ਲੋਅਹ ॥ ਅਗਮ ਨਿਗਮ
 ਤਥਰਣ ਜਰਾ ਜੰਮਿਹਿ ਆਰੋਅਹ ॥ ਗੁਰ ਅਮਰਦਾਸਿ ਥਿਰੁ ਥਪਿਅਤ ਪਰਗਾਮੀ ਤਾਰਣ ਤਰਣ ॥ ਅਘ ਅੰਤਕ
 ਬਦੈ ਨ ਸਲਿ ਕਵਿ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣ ॥੨॥੬੦॥

ਸਰਵੰਈ ਮਹਲੇ ਪੱਜਵੇ ਕੇ ੫

੧੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਿਮਰਿ ਸੋਈ ਪੁਰਖੁ ਅਚਲੁ ਅਵਿਨਾਸੀ ॥ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਨਾਸੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣ ਕਵਲ

ਰਿਦਿ ਧਾਰਂ ॥ ਗੁਰ ਅਰਜੁਨ ਗੁਣ ਸਹਜਿ ਬਿਚਾਰਂ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਘਰਿ ਕੀਅਤ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ॥ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ
 ਪੂਰੀ ਆਸਾ ॥ ਤੈ ਜਨਮਤ ਗੁਰਮਤਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਿਐ ॥ ਕਲਿ ਜੋਡਿ ਕਰ ਸੁਜਸੁ ਕਖਾਣਿਐ ॥ ਭਗਤਿ ਜੋਗ ਕੌ
 ਜੈਤਵਾਰੁ ਹਰਿ ਜਨਕੁ ਉਪਾਯਤ ॥ ਸਬਦੁ ਗੁਰੂ ਪਰਕਾਸਿਐ ਹਰਿ ਰਸਨ ਬਸਾਯਤ ॥ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਅੰਗਦ ਅਮਰ
 ਲਾਗਿ ਤਤਮ ਪਦੁ ਪਾਯਤ ॥ ਗੁਰੂ ਅਰਜੁਨੁ ਘਰਿ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਭਗਤ ਤਤਰਿ ਆਯਤ ॥੧॥ ਬਡਭਾਗੀ
 ਤਨਮਾਨਿਅਤ ਰਿਦਿ ਸਬਦੁ ਬਸਾਯਤ ॥ ਮਨੁ ਮਾਣਕੁ ਸਤੋਖਿਅਤ ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੃ਝਾਯਤ ॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ
 ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਰਸਾਯਤ ॥ ਗੁਰੂ ਅਰਜੁਨੁ ਘਰਿ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਅਨਭਤ ਠਹਰਾਯਤ ॥੨॥ ਜਨਕ
 ਰਾਜੁ ਬਰਤਾਇਆ ਸਤਜੁਗੁ ਆਲੀਣਾ ॥ ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਅਪਤੀਜੁ ਪਤੀਣਾ ॥ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕੁ ਸਚੁ
 ਨੀਵ ਸਾਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਿ ਲੀਣਾ ॥ ਗੁਰੂ ਅਰਜੁਨੁ ਘਰਿ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਅਪਰਹੰਗੁ ਕੀਣਾ ॥੩॥ ਖੇਲੁ ਗ੍ਰੂਪਤ
 ਕੀਅਤ ਹਰਿ ਰਾਇ ਸਤੋਖਿ ਸਮਾਚਰਿਐ ਬਿਮਲ ਬੁਧਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਮਾਣਤ ॥ ਆਜੋਨੀ ਸੰਭਵਿਅਤ ਸੁਜਸੁ ਕਲਿ
 ਕਵੀਅਣਿ ਕਖਾਣਿਅਤ ॥ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕਿ ਅੰਗਦੁ ਕਰੂਤ ਗੁਰਿ ਅੰਗਦਿ ਅਮਰ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਗੁਰਿ ਰਾਮਦਾਸ
 ਅਰਜੁਨੁ ਕਰੂਤ ਪਾਰਸੁ ਪਰਸੁ ਪ੍ਰਮਾਣੁ ॥੪॥ ਸਦ ਜੀਵਣੁ ਅਰਜੁਨੁ ਅਮੋਲੁ ਆਜੋਨੀ ਸੰਭਤ ॥ ਭਯ ਭੰਜਨੁ
 ਪਰ ਦੁਖ ਨਿਵਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ਅਨਨਭਤ ॥ ਅਗਹ ਗਹਣੁ ਭਰੁ ਭ੍ਰਾਂਤਿ ਦਹਣੁ ਸੀਤਲੁ ਸੁਖ ਦਾਤਤ ॥ ਆਸਾਂਭਤ
 ਤਦਵਿਅਤ ਪੁਰਖੁ ਪੂਰਨ ਬਿਧਾਤਤ ॥ ਨਾਨਕ ਆਦਿ ਅੰਗਦ ਅਮਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇਅਤ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ
 ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਗੁਰੂ ਜਿਨਿ ਪਾਰਸੁ ਪਰਸਿ ਮਿਲਾਇਅਤ ॥੫॥ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਜਾਸੁ ਜਗ ਅੰਦਰਿ ਮੰਦਰਿ ਭਾਗੁ
 ਜੁਗਤਿ ਸਿਵ ਰਹਤਾ ॥ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਪਾਯਤ ਬਡ ਭਾਗੀ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਮੇਦਨਿ ਭਰੁ ਸਹਤਾ ॥ ਭਯ ਭੰਜਨੁ ਪਰ ਪੀਰ
 ਨਿਵਾਰਨੁ ਕਲਿ ਸਹਾਰੁ ਤੋਹਿ ਜਸੁ ਬਕਤਾ ॥ ਕੁਲਿ ਸੋਢੀ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਤਨੁ ਧਰਮ ਧੁਜਾ ਅਰਜੁਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਾ
 ॥੬॥ ਧੰਮ ਧੀਰੁ ਗੁਰਮਤਿ ਗਭੀਰੁ ਪਰ ਦੁਖ ਬਿਸਾਰਣੁ ॥ ਸਬਦ ਸਾਰੁ ਹਰਿ ਸਮ ਤਦਾਰੁ ਅਛਾਮੇਵ ਨਿਵਾਰਣੁ ॥
 ਮਹਾ ਦਾਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨਿ ਮਨਿ ਚਾਤ ਨ ਹੁਟੈ ॥ ਸਤਿਵੰਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੰਤ੍ਰ ਨਵ ਨਿਧਿ ਨ ਨਿਖੁਟੈ ॥
 ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਤਨੁ ਸਰਬ ਮੈ ਸਹਜਿ ਚੰਦੋਆ ਤਾਣਿਅਤ ॥ ਗੁਰ ਅਰਜੁਨ ਕਲਿਚਰੈ ਤੈ ਰਾਜ ਜੋਗ ਰਸੁ

ਜਾਣਿਅਤ ॥੭॥ ਭੈ ਨਿਰਭਉ ਮਾਣਿਅਤ ਲਾਖ ਮਹਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਯਤ ॥ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰ ਗਤਿ ਗਮੀਝ
 ਸਤਿਗੁਰਿ ਪਰਚਾਯਤ ॥ ਗੁਰ ਪਰਚੈ ਪਰਵਾਣੁ ਰਾਜ ਮਹਿ ਜੋਗੁ ਕਮਾਯਤ ॥ ਧੰਨਿ ਧੰਨਿ ਗੁਰੁ ਧੰਨਿ ਅਭਰ ਸਰ
 ਸੁਭਰ ਭਰਾਯਤ ॥ ਗੁਰ ਗਮ ਪ੍ਰਮਾਣਿ ਅਜੁ ਜ਼ਰਿਆ ਸਰਿ ਸੰਤੋਖ ਸਮਾਇਯਤ ॥ ਗੁਰ ਅਰਜੁਨ ਕਲਿਚਰੈ ਤੈ
 ਸਹਜਿ ਜੋਗੁ ਨਿਜੁ ਪਾਇਯਤ ॥੮॥ ਅਮਿਤ ਰਸਨਾ ਬਦਨਿ ਬਰ ਦਾਤਿ ਅਲਖ ਅਪਾਰ ਗੁਰ ਸੂਰ ਸਬਦਿ
 ਹਤਮੈ ਨਿਵਾਰੁਤ ॥ ਪੰਚਾਹਰੁ ਨਿਦਲਿਅਤ ਸੁਨਨ ਸਹਜਿ ਨਿਜ ਘਰਿ ਸਹਾਰੁਤ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਾਗਿ ਜਗ
 ਤਥਰੁਤ ਸਤਿਗੁਰੁ ਰਿਟੈ ਬਸਾਇਅਤ ॥ ਗੁਰ ਅਰਜੁਨ ਕਲਿਚਰੈ ਤੈ ਜਨਕਹ ਕਲਸੁ ਦੀਪਾਇਅਤ ॥੯॥
 ਸੋਰਠੇ ॥ ਗੁਰੁ ਅਰਜੁਨੁ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਮਾਣੁ ਪਾਰਥਤ ਚਾਲੈ ਨਹੀ ॥ ਨੇਜਾ ਨਾਮ ਨੀਸਾਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ
 ਸਵਾਰਿਅਤ ॥੧॥ ਭਵਜਲੁ ਸਾਇਰੁ ਸੇਤੁ ਨਾਮੁ ਹਰੀ ਕਾ ਬੋਹਿਥਾ ॥ ਤੁਅ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰ ਵੇਤੁ ਨਾਮਿ ਲਾਗਿ
 ਜੁਗੁ ਤਥਰੁਤ ॥੨॥ ਜਗਤ ਤਥਾਰਣੁ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰ ਤੁਠੈ ਪਾਇਅਤ ॥ ਅਥ ਨਾਹਿ ਅਵਰ ਸਰਿ ਕਾਮੁ
 ਬਾਰਂਤਰਿ ਪੂਰੀ ਪੱਡੀ ॥੩॥੧੨॥ ਜੋਤਿ ਰੂਪਿ ਹਰਿ ਆਪਿ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਕਹਾਯਤ ॥ ਤਾ ਤੇ ਅੰਗਦੁ ਭਯਤ
 ਤਤ ਸਿਤ ਤਤੁ ਮਿਲਾਯਤ ॥ ਅੰਗਦਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਅਮਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਥਿਰੁ ਕੀਅਤ ॥ ਅਮਰਦਾਸਿ ਅਮਰਤੁ
 ਛਤੁ ਗੁਰ ਰਾਮਹਿ ਦੀਅਤ ॥ ਗੁਰ ਰਾਮਦਾਸ ਦਰਸਨੁ ਪਰਸਿ ਕਹਿ ਮਥੁਰਾ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਧਣ ॥ ਮੂਰਤਿ ਪੰਚ
 ਪ੍ਰਮਾਣ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰੁ ਅਰਜੁਨੁ ਧਿਖਹੁ ਨਧਣ ॥੧॥ ਸਤਿ ਰੂਪੁ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਧਰਿਆ ਤਰਿ ॥ ਆਦਿ
 ਪੁਰਖਿ ਪਰਤਖਿ ਲਿਖਿਧਤ ਅਛਰੁ ਮਸਤਕਿ ਧੁਰਿ ॥ ਪ੍ਰਗਟ ਜੋਤਿ ਜਗਮਗੈ ਤੇਜੁ ਭੂਅ ਮੰਡਲਿ ਛਾਯਤ ॥
 ਪਾਰਸੁ ਪਰਸਿ ਪਰਸੁ ਪਰਸਿ ਗੁਰਿ ਗੁਰੁ ਕਹਾਯਤ ॥ ਭਨਿ ਮਥੁਰਾ ਮੂਰਤਿ ਸਦਾ ਥਿਰੁ ਲਾਇ ਚਿਤੁ ਸਨਮੁਖ
 ਰਹਹੁ ॥ ਕਲਜੁਗਿ ਜਹਾਜੁ ਅਰਜੁਨੁ ਗੁਰੁ ਸਗਲ ਸੂਛਿ ਲਗਿ ਬਿਤਰਹੁ ॥੨॥ ਤਿਹ ਜਨ ਜਾਚਹੁ ਜਗਤ ਪਰ
 ਜਾਨੀਅਤੁ ਬਾਸੁਰ ਰਧਨਿ ਬਾਸੁ ਜਾ ਕੋ ਹਿਤੁ ਨਾਮ ਸਿਤ ॥ ਪਰਮ ਅਤੀਤੁ ਪਰਮੇਸੁਰ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰੰਗਯੈ
 ਬਾਸਨਾ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਪੈ ਦੇਖੀਅਤੁ ਧਾਮ ਸਿਤ ॥ ਅਪਰ ਪਰਿਪਰ ਪੁਰਖ ਸਿਤ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਾਗਯੈ ਬਿਨੁ ਭਗਕਤ ਰਸੁ
 ਨਾਹੀ ਅਤੈ ਕਾਮ ਸਿਤ ॥ ਮਥੁਰਾ ਕੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸ਼ਬ ਮਧ ਅਰਜੁਨ ਗੁਰੁ ਭਗਤਿ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਾਇ ਰਹਿਆ ਮਿਲਿ

राम सित ॥३॥ अंतु न पावत देव सबै मुनि इंद्र महा सिव जोग करी ॥ फुनि बेद बिरंचि
 बिचारि रहिओ हरि जापु न छाड्यिउ एक धरी ॥ मथुरा जन को प्रभु दीन दयालु है संगति सृष्टि
 निहालु करी ॥ रामदासि गुरु जग तारन कउ गुर जोति अरजुन माहि धरी ॥४॥ जग अउरु
 न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥ तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा
 जिन् अंमृत नामु पीअउ ॥ इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥
 परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रह्मि निवासु लीअउ ॥५॥ जब लउ नही भाग लिलार
 उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥ कलि घोर समुद्र मै बूङत थे कबहू मिटि है नही रे
 पछुतायउ ॥ ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥ जप्यउ जिन् अरजुन देव
 गुरु फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥६॥ कलि समुद्र भए रूप प्रगटि हरि नाम उधारनु ॥
 बसहि संत जिसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ मन
 बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि
 ॥ भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥७॥१६॥ अजै गंग जलु अटलु सिख
 संगति सभ नावै ॥ नित पुराण बाचीअहि बेद ब्रह्मा मुखि गावै ॥ अजै चवरु सिरि ढुलै नामु
 अंमृतु मुखि लीअउ ॥ गुर अरजुन सिरि छनु आपि परमेसरि दीअउ ॥ मिलि नानक अंगद
 अमर गुर गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥ हरिबंस जगति जसु संचरउ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ
 ॥१॥ देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥ हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह
 बैठायउ ॥ रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जंपहि ॥ असुर गए ते भागि पाप तिन् भीतरि
 कंपहि ॥ काटे सु पाप तिन् नरहु के गुरु रामदासु जिन् पाइयउ ॥ छनु सिंघासनु पिरथमी गुर
 अरजुन कउ दे आइअउ ॥२॥२१॥६॥११॥१०॥१०॥२२॥६०॥१४३॥

੧੭ੰ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕ ਵਾਰਾਂ ਤੇ ਵਧੀਕ ॥ ਮਹਲਾ ੧ ॥

ਉਤਾਂਗੀ ਪੈਓਹਰੀ ਗਹਿਰੀ ਗੰਭੀਰੀ ॥ ਸਸੁਡਿ ਸੁਹੀਆ ਕਿਵ ਕਰੀ ਨਿਵਣੁ ਨ ਜਾਇ ਥਣੀ ॥ ਗਚੁ ਜਿ ਲਗਾ
ਗਿੜਵਡੀ ਸਖੀਏ ਧਤਲਹਰੀ ॥ ਸੇ ਭੀ ਢਹਦੇ ਡਿਠੁ ਮੈ ਮੁੰਧ ਨ ਗਰਬੁ ਥਣੀ ॥੧॥ ਸੁਣਿ ਮੁੰਧੇ ਹਰਣਾਖੀਏ
ਗ੍ਰੜਾ ਵੈਣੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਪਹਿਲਾ ਕਵਣੁ ਸਿਜਾਣਿ ਕੈ ਤਾਂ ਕੀਚੈ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਦੋਹੀ ਦਿਚੈ ਦੁਰਜਨਾ ਮਿਤਾਂ ਕੂੰ ਜੈਕਾਰੁ ॥
ਜਿਤੁ ਦੋਹੀ ਸਜਣ ਮਿਲਨਿ ਲਹੁ ਮੁੰਧੇ ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦੀਜੈ ਸਜਣਾ ਐਸਾ ਹਸਣੁ ਸਾਰੁ ॥ ਤਿਸ ਸਤ
ਨੇਹੁ ਨ ਕੀਚੰਈ ਜਿ ਦਿਸੈ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਨੀ ਇਵ ਕਰਿ ਬੁਝਿਆ ਤਿਨਾ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੨॥
ਜੇ ਤ੍ਰੂਂ ਤਾਰੁ ਪਾਣਿ ਤਾਹੂ ਪੁਛੁ ਤਿਡਨ੍ਹ ਕਲ ॥ ਤਾਹੂ ਖਰੇ ਸੁਜਾਣ ਕਵਾਂ ਏਨੀ ਕਪਰੀ ॥੩॥ ਝੜ੍ਹ ਝੱਖੜ੍ਹ ਓਹਾਡ੍ਹ
ਲਹਰੀ ਕਹਨਿ ਲਖੇਸਰੀ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਤ ਆਲਾਇ ਬੇਡੇ ਫੁਕਣਿ ਨਾਹਿ ਭਤ ॥੪॥ ਨਾਨਕ ਦੁਨੀਆ ਕੈਸੀ
ਹੋਈ ॥ ਸਾਲਕੁ ਮਿਤੁ ਨ ਰਹਿਓ ਕੋਈ ॥ ਭਾਈ ਬੰਧੀ ਹੇਤੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਦੁਨੀਆ ਕਾਰਣਿ ਦੀਨੁ ਗਵਾਇਆ
॥੫॥ ਹੈ ਹੈ ਕਰਿ ਕੈ ਓਹਿ ਕਰੇਨਿ ॥ ਗਲਾ ਪਿਟਨਿ ਸਿਰੁ ਖੋਹੇਨਿ ॥ ਨਾਤ ਲੈਨਿ ਅਰੁ ਕਰਨਿ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਇ ॥੬॥ ਰੇ ਮਨ ਡੀਗਿ ਨ ਡੋਲੀਐ ਸੀਧੈ ਮਾਰਗਿ ਧਾਤ ॥ ਪਾਛੈ ਬਾਘੁ ਡਰਾਵਣੋ ਆਗੈ
ਅਗਨਿ ਤਲਾਤ ॥ ਸਹਸੈ ਜੀਅਰਾ ਪਰਿ ਰਹਿਓ ਮਾ ਕਤ ਅਵਰੁ ਨ ਢੰਗੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੁਟੀਐ ਹਰਿ
ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿਤ ਸੰਗੁ ॥੭॥ ਬਾਘੁ ਮਰੈ ਮਨੁ ਮਾਰੀਐ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਖਿਆ ਹੋਇ ॥ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਹਰਿ

ਮਿਲੈ ਬਹੁਡਿ ਨ ਮਰਣਾ ਹੋਇ ॥ ਕੀਚਡਿ ਹਾਥੁ ਨ ਬੂਡਿ ਏਕਾ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਕਰੇ
 ਗੁਰੁ ਸਰਵਰੁ ਸਚੀ ਪਾਲਿ ॥੮॥ ਅਗਨਿ ਮਰੈ ਜਲੁ ਲੋਡਿ ਲਹੁ ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਨਿਧਿ ਜਲੁ ਨਾਹਿ ॥ ਜਨਮਿ ਮਰੈ
 ਭਰਮਾਈਐ ਜੇ ਲਖ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥ ਜਮੁ ਜਾਗਾਤਿ ਨ ਲਗਿ ਜੇ ਚਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਿਰਮਲੁ
 ਅਮਰ ਪਦੁ ਗੁਰੁ ਹਰਿ ਮੇਲੈ ਮੇਲਾਇ ॥੯॥ ਕਲਰ ਕੇਰੀ ਛਪਡੀ ਕਤਾ ਮਲਿ ਮਲਿ ਨਾਇ ॥ ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੈਲਾ
 ਅਵਗੁਣੀ ਚਿੰਜੁ ਭਰੀ ਗੰਧੀ ਆਇ ॥ ਸਰਵਰੁ ਛਾਸਿ ਨ ਜਾਣਿਆ ਕਾਗ ਕੁਪੱਖੀ ਸੰਗਿ ॥ ਸਾਕਤ ਸਿਤ ਐਸੀ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਬ੍ਰਾਹਮੁ ਗਿਆਨੀ ਰੰਗਿ ॥ ਸਨਤ ਸਮਾ ਜੈਕਾਰੁ ਕਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਮ ਕਮਾਤ ॥ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਵਣੁ ਨਾਨਕਾ
 ਗੁਰੁ ਤੀਰਥੁ ਦਰੀਆਤ ॥੧੦॥ ਜਨਮੇ ਕਾ ਫਲੁ ਕਿਆ ਗਣੀ ਜਾਂ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨ ਭਾਤ ॥ ਪੈਥਾ ਖਾਧਾ ਬਾਦਿ ਹੈ
 ਜਾਂ ਮਨਿ ਟ੍ਰ੍ਹੁ ਭਾਤ ॥ ਕੇਖਣੁ ਸੁਨਣਾ ਝੂਠੁ ਹੈ ਮੁਖਿ ਝੂਠਾ ਆਲਾਤ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤ੍ਰ੍ਹੁ ਹੋਰੁ ਹਉਮੈ
 ਆਵਤ ਜਾਤ ॥੧੧॥ ਹੈਨਿ ਵਿਰਲੇ ਨਾਹੀ ਘਣੇ ਫੈਲ ਫਕਡੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥੧੨॥ ਨਾਨਕ ਲਗੀ ਤੁਰਿ ਮਰੈ ਜੀਵਣ
 ਨਾਹੀ ਤਾਣੁ ॥ ਚੋਟੈ ਸੇਤੀ ਜੋ ਮਰੈ ਲਗੀ ਸਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਜਿਸ ਨੋ ਲਾਏ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਲਗੀ ਤਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਪਿਰਮ
 ਪੈਕਾਮੁ ਨ ਨਿਕਲੈ ਲਾਇਆ ਤਿਨਿ ਸੁਜਾਣਿ ॥੧੩॥ ਭਾੱਡਾ ਧੋਵੈ ਕਤਣੁ ਜਿ ਕਚਾ ਸਾਜਿਆ ॥ ਧਾਤ੍ਰੁ ਪੰਜਿ
 ਰਲਾਇ ਕੂੜਾ ਪਾਜਿਆ ॥ ਭਾੱਡਾ ਆਣਗੁ ਰਾਸਿ ਜਾਂ ਤਿਸੁ ਭਾਵਸੀ ॥ ਪਰਮ ਜੋਤਿ ਜਾਗਾਇ ਵਾਜਾ ਵਾਵਸੀ
 ॥੧੪॥ ਮਨਹੁ ਜਿ ਅੰਧੇ ਘੂਪ ਕਹਿਆ ਬਿਰਦੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ॥ ਮਨਿ ਅੰਧੈ ਊੰਧੈ ਕਵਲ ਦਿਸਨਿ ਖਰੇ ਕਰੂਪ ॥
 ਇਕਿ ਕਹਿ ਜਾਣਨਿ ਕਹਿਆ ਬੁਝਨਿ ਤੇ ਨਰ ਸੁਘੜ ਸਰੂਪ ॥ ਇਕਨਾ ਨਾਟੁ ਨ ਬੇਟੁ ਨ ਗੀਅ ਰਸੁ ਰਸੁ ਕਸੁ ਨ
 ਜਾਣਾਂਤਿ ॥ ਇਕਨਾ ਸਿਧਿ ਨ ਬੁਧਿ ਨ ਅਕਲਿ ਸਰ ਅਖਰ ਕਾ ਭੇਤ ਨ ਲਵਾਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤੇ ਨਰ ਅਸਲਿ ਖਰ
 ਜਿ ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਗਰਬੁ ਕਰਤ ॥੧੫॥ ਸੋ ਬ੍ਰਹਮਣੁ ਜੋ ਬਿੰਦੈ ਬ੍ਰਹਮੁ ॥ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਕਮਾਵੈ ਕਰਮੁ ॥ ਸੀਲ
 ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਰਖੈ ਧਰਮੁ ॥ ਬੰਧਨ ਤੌਡੈ ਹੋਵੈ ਮੁਕਤੁ ॥ ਸੋਈ ਬ੍ਰਹਮਣੁ ਪ੍ਰਯਣ ਜੁਗਤੁ ॥੧੬॥ ਖਤੀ ਸੋ ਜੁ ਕਰਮਾ ਕਾ
 ਸ੍ਰੂ ॥ ਪੁਨਨ ਦਾਨ ਕਾ ਕਰੈ ਸਰੀਰੁ ॥ ਖੇਤੁ ਪਛਾਣੈ ਬੀਜੈ ਦਾਨੁ ॥ ਸੋ ਖਤੀ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਜੇ ਕੂਡੁ
 ਕਮਾਵੈ ॥ ਅਪਣਾ ਕੀਤਾ ਆਪੇ ਪਾਵੈ ॥੧੭॥ ਤਨੁ ਨ ਤਪਾਇ ਤਨੂਰ ਜਿਤ ਬਾਲਣੁ ਹਡ ਨ ਬਾਲਿ ॥ ਸਿਰਿ ਪੈਰੀ

ਕਿਆ ਫੇਡਿਆ ਅੰਦਰਿ ਪਿਰੀ ਸਮਾਲਿ ॥੧੮॥ ਸਭਨੀ ਘਟੀ ਸਹੁ ਵਸੈ ਸਹ ਬਿਨੁ ਘਟੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਤੇ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੧੯॥ ਜਤ ਤਤ ਪ੍ਰੇਮ ਖੇਲਣ ਕਾ ਚਾਤ ॥ ਸਿਰੁ ਧਰਿ ਤਲੀ
 ਗਲੀ ਮੇਰੀ ਆਤ ॥ ਝਿਤੁ ਮਾਰਗਿ ਪੈਰੁ ਧਰੀਜੈ ॥ ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਕਾਣਿ ਨ ਕੀਜੈ ॥੨੦॥ ਨਾਲਿ ਕਿਰਾਡਾ
 ਦੋਸਤੀ ਕੂੜੈ ਕੂੜੀ ਪਾਇ ॥ ਮਰਣੁ ਨ ਜਾਪੈ ਮੂਲਿਆ ਆਵੈ ਕਿਤੈ ਥਾਇ ॥੨੧॥ ਗਿਆਨ ਹੀਣਂ ਅਗਿਆਨ
 ਪ੍ਰਯਾ ॥ ਅੰਧ ਵਰਤਾਵਾ ਭਾਤ ਟ੍ਰੂਜਾ ॥੨੨॥ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਧਰਮ ਬਿਨੁ ਧਿਆਨੁ ॥ ਸਚ ਬਿਨੁ ਸਾਖੀ
 ਮੂਲੋ ਨ ਬਾਕੀ ॥੨੩॥ ਮਾਣੂ ਘਲੈ ਤਠੀ ਚਲੈ ॥ ਸਾਦੁ ਨਾਹੀ ਝਿਵੇਹੀ ਗਲੈ ॥੨੪॥ ਰਾਮੁ ਝੂਰੈ ਦਲ
 ਮੇਲਵੈ ਅੰਤਰਿ ਬਲੁ ਅਧਿਕਾਰ ॥ ਬੰਤਰ ਕੀ ਸੈਨਾ ਸੇਵੀਐ ਮਨਿ ਤਨਿ ਜੁੜ੍ਹੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਸੀਤਾ ਲੈ ਗਿਆ
 ਦਹਸਿਰੋ ਲਛਮਣੁ ਮੂੜੋ ਸਰਾਧਿ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਤਾ ਕਰਣਹਾਰੁ ਕਰਿ ਕੇਖੈ ਥਾਧਿ ਉਥਾਧਿ ॥੨੫॥ ਮਨ ਮਹਿ
 ਝੂਰੈ ਰਾਮਚੰਦੁ ਸੀਤਾ ਲਛਮਣ ਜੋਗੁ ॥ ਹਣਵਂਤਰੁ ਆਰਾਧਿਆ ਆਇਆ ਕਰਿ ਸੰਜੋਗੁ ॥ ਭੂਲਾ ਦੈਤੁ ਨ
 ਸਮਝਈ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀਏ ਕਾਮ ॥ ਨਾਨਕ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਸੋ ਕਿਰਤੁ ਨ ਮਿਟੈ ਰਾਮ ॥੨੬॥ ਲਾਹੌਰ ਸਹਿ
 ਜਹਿਰੁ ਕਹਿਰੁ ਸਵਾ ਪਹਿਰੁ ॥੨੭॥ ਮਹਲਾ ੩ ॥ ਲਾਹੌਰ ਸਹਿਰੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੁ ਸਿਫਤੀ ਦਾ ਘਹੁ ॥੨੮॥
 ਮਹਲਾ ੧ ॥ ਤਦੋਸਾਹੈ ਕਿਆ ਨੀਸਾਨੀ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਅੰਨੀ ॥ ਤਦੋਸੀਅ ਘਰੇ ਹੀ ਕੁਠੀ ਕੁਡਿਝੀ ਰਨੀ
 ਧੰਮੀ ॥ ਸਤੀ ਰਨੀ ਘਰੇ ਸਿਆਪਾ ਰੋਵਨਿ ਕੂੜੀ ਕੰਮੀ ॥ ਜੋ ਲੇਵੈ ਸੋ ਦੇਵੈ ਨਾਹੀ ਖਟੇ ਦੰਮ ਸਛਾਮੀ ॥੨੯॥
 ਪਕਰ ਤ੍ਰੂ ਹਰੀਆਵਲਾ ਕਵਲਾ ਕਚਨ ਵੰਨਿ ॥ ਕੈ ਦੋਖੜੈ ਸਡਿਓਹਿ ਕਾਲੀ ਹੋਈਆ ਦੇਹੂਰੀ ਨਾਨਕ ਮੈ ਤਨਿ
 ਭੰਗੁ ॥ ਜਾਣਾ ਪਾਣੀ ਨਾ ਲਹਾਂ ਜੈ ਸੇਤੀ ਮੇਰਾ ਸੰਗੁ ॥ ਜਿਤੁ ਡਿਠੈ ਤਨੁ ਪਰਫੁੜੈ ਚੱਡੈ ਚਵਗਣਿ ਵਨ੍ਹੁ ॥੩੦॥
 ਰਜਿ ਨ ਕੋਈ ਜੀਵਿਆ ਪਹੁਚਿ ਨ ਚਲਿਆ ਕੋਇ ॥ ਗਿਆਨੀ ਜੀਕੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਰਤੀ ਹੀ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਸਰਫੈ
 ਸਰਫੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਏਕੈ ਗੜੈ ਵਿਹਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਵਿਣੁ ਪੁਛਿਆ ਹੀ ਲੈ ਜਾਇ ॥੩੧॥ ਦੋਸੁ
 ਨ ਦੇਅਹੁ ਰਾਇ ਨੋ ਮਤਿ ਚਲੈ ਜਾਂ ਬੁਢਾ ਹੋਵੈ ॥ ਗਲਾਂ ਕਰੇ ਘਣੇਰੀਆ ਤਾਂ ਅਨ੍ਹੇ ਪਵਣਾ ਖਾਤੀ ਟੋਕੈ ॥੩੨॥ ਪ੍ਰੇ
 ਕਾ ਕੀਆ ਸਭ ਕਿਛੁ ਪ੍ਰਾ ਘਟਿ ਵਧਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਐਸਾ ਜਾਣੈ ਪ੍ਰੇ ਮਾਂਹਿ ਸਮਾਂਹੀ ॥੩੩॥

सलोक महला ३ ੧੭ੰ सतिगुर प्रसादि ॥

अभिआगत एह न आखीअहि जिन कै मन महि भरमु ॥ तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु ॥੧॥
 अभै निरंजन परम पदु ता का भीखकु होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥੨॥ होवा
 पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नवा खंडा विचि जाणीआ अपने चज वीचार ॥੩॥ ब्रह्मण कैली
 धातु कंजका अणचारी का धानु ॥ फिटक फिटका कोडु बढीआ सदा सदा अभिमानु ॥ पाहि एते जाहि
 वीसरि नानका इकु नामु ॥ सभ बुधी जालीअहि इकु रहै ततु गिआनु ॥੪॥ माथै जो धुरि लिखिआ
 सु मेटि न सकै कोइ ॥ नानक जो लिखिआ सो वरतदा सो बूझै जिस नो नदरि होइ ॥੫॥ जिनी नामु
 विसारिआ कूड़ै लालचि लगि ॥ धंधा माइआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ॥ जिना वेलि न तूंबड़ी
 माइआ ठगे ठगि ॥ मनमुखि बंनि चलाईअहि ना मिलही वगि सगि ॥ आपि भुलाए भुलीअै आपे
 मेलि मिलाइ ॥ नानक गुरमुखि छुटीअै जे चलै सतिगुर भाइ ॥੬॥ सालाही सालाहणा भी सचा
 सालाहि ॥ नानक सचा एकु दरु बीभा परहरि आहि ॥੭॥ नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा
 सोइ ॥ जह देखा तह एकु है गुरमुखि परगटु होइ ॥੮॥ दूख विसारणु सबदु है जे मंनि वसाए कोइ ॥
 गुर किरपा ते मनि वसै करम परापति होइ ॥੯॥ नानक हउ हउ करते खपि मुए खूहणि लख असंख
 ॥ सतिगुर मिले सु उबरे साचै सबदि अलम्ख ॥੧੦॥ जिना सतिगुरु इक मनि सेविआ तिन जन
 लागउ पाइ ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख जाइ ॥ से जन निरमल ऊजले जि गुरमुखि
 नामि समाइ ॥ नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ नामि रते पातिसाह ॥੧੧॥ जितु पुरखै घरि भगती
 नारि है अति लोचै भगती भाइ ॥ बहु रस सालणे सवारदी खट रस मीठे पाइ ॥ तितु बाणी भगत
 सलाहदे हरि नामै चितु लाइ ॥ मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ गुर आगै जाइ ॥ भै भगती

ਭਗਤ ਬਹੁ ਲੋਚਦੇ ਪ੍ਰਭ ਲੋਚਾ ਪੂਰਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਹੈ ਕਿਤੁ ਖਾਧੈ ਤਿਪਤਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ
 ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਤਿਪਤਾਸੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਧਨੁ ਧਨੁ ਕਲਜੁਗਿ ਨਾਨਕਾ ਜਿ ਚਲੇ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥੧੨॥
 ਸਤਿਗੁਰੂ ਨ ਸੇਵਿਆਂ ਸਬਦੁ ਨ ਰਖਿਆਂ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਧਿਗੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਜੀਵਿਆ ਕਿਤੁ ਆਏ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮਤੀ
 ਭਤ ਮਨਿ ਪਵੈ ਤਾਂ ਹਰਿ ਰਸਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰਿ ॥ ਨਾਉ ਮਿਲੈ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪਾਰਿ ਤਤਾਰਿ ॥੧੩॥
 ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਜਗੁ ਭਰਮਿਆ ਘਰੁ ਮੁਸੈ ਖਬਰਿ ਨ ਹੋਇ ॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਮਨੁ ਹਿਰਿ ਲਿਡਿਆ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧਾ
 ਲੋਇ ॥ ਗਿਆਨ ਖੜਗ ਪੰਚ ਫੂਤ ਸੰਘਾਰੇ ਗੁਰਮਤਿ ਜਾਗੈ ਸੋਇ ॥ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ
 ਹੋਇ ॥ ਨਾਮਹੀਨ ਨਕਟੇ ਫਿਰਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਹਿ ਰੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜੋ ਧੁਰਿ ਕਰਤੈ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ
 ਕੋਇ ॥੧੪॥ ਗੁਰਮੁਖਾ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ਅਤੁਟ ਭਰੇ
 ਭੰਡਾਰ ॥ ਹਰਿ ਗੁਣ ਬਾਣੀ ਤਚਰਹਿ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਭ ਕਾਰਣ ਕਰਤਾ ਕਰੈ ਵੇਖੈ ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ
 ॥੧੫॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜੁ ਹੈ ਮਨੁ ਚਡਿਆ ਦਸਵੈ ਆਕਾਸਿ ॥ ਤਿਥੈ ਊੰਘ ਨ ਭੁਖ ਹੈ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ
 ਸੁਖ ਵਾਸੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਵਿਆਪਤ ਨਹੀ ਜਿਥੈ ਆਤਮ ਰਾਮ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥੧੬॥ ਕਾਮ ਕ੍ਰਿਧ ਕਾ ਚੋਲੜਾ ਸਭ
 ਗਲਿ ਆਏ ਪਾਇ ॥ ਇਕਿ ਉਪਜਹਿ ਇਕਿ ਬਿਨਸਿ ਜਾਂਹਿ ਹੁਕਮੇ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਜ਼ਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਚੁਕੜ੍ਹ ਰੰਗੁ
 ਲਗਾ ਫੂਜੈ ਭਾਇ ॥ ਬੰਧਨਿ ਬੰਧਿ ਭਵਾਈਅਨੁ ਕਰਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥੧੭॥ ਜਿਨ ਕਤ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀਅਨੁ
 ਤਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲੇ ਤਲਟੀ ਭੰਡੀ ਮਰਿ ਜੀਵਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥ ਨਾਨਕ
 ਭਗਤੀ ਰਤਿਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੧੮॥ ਮਨਮੁਖ ਚੰਚਲ ਮਤਿ ਹੈ ਅੰਤਰਿ ਬਹੁਤੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥ ਕੀਤਾ
 ਕਰਤਿਆ ਬਿਰਥਾ ਗਿਆ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥ ਪੁਨ ਦਾਨੁ ਜੋ ਬੀਜਦੇ ਸਭ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੈ ਜਾਈ ॥
 ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਛੋਡੈ ਫੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਈ ॥ ਜੋਬਨੁ ਜਾਂਦਾ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੈ ਜਰੁ ਪਹੁੱਚੈ ਮਰਿ
 ਜਾਈ ॥ ਪੁਤੁ ਕਲਤੁ ਮੋਹੁ ਹੇਤੁ ਹੈ ਅੰਤਿ ਬੇਲੀ ਕੋ ਨ ਸਖਾਈ ॥ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵੇ ਸੋ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਨਾਉ ਵਸੈ ਮਨਿ
 ਆਈ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇ ਕਡੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ॥੧੯॥ ਮਨਮੁਖ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਨੀ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ

ਦੁਖ ਰੋਇ ॥ ਆਤਮਾ ਰਾਮੁ ਨ ਪ੍ਰੂਜਨੀ ਟ੍ਰੌਜੈ ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਹਉਮੈ ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਹੈ ਸਬਦਿ ਨ ਕਾਢਹਿ ਧੋਇ ॥
 ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮੈਲਿਆ ਮੁਏ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਖੋਇ ॥੨੦॥ ਮਨਮੁਖ ਬੋਲੇ ਅੰਧੁਲੇ ਤਿਸੁ ਮਹਿ ਅਗਨੀ ਕਾ
 ਵਾਸੁ ॥ ਬਾਣੀ ਸੁਰਤਿ ਨ ਬੁਝਨੀ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥ ਓਨਾ ਆਪਣੀ ਅੰਦਰਿ ਸੁਧਿ ਨਹੀ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਨ
 ਕਰਹਿ ਵਿਸਾਸੁ ॥ ਗਿਆਨੀਆ ਅੰਦਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਹੈ ਨਿਤ ਹਰਿ ਲਿਵ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥ ਹਰਿ ਗਿਆਨੀਆ ਕੀ
 ਰਖਦਾ ਹਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਾਸੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋ ਹਰਿ ਸੇਵਦੇ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ॥੨੧॥ ਮਾਇਆ
 ਭੁਡਿਅੰਗਮੁ ਸਰਪੁ ਹੈ ਜਗੁ ਘੇਰਿਆ ਬਿਖੁ ਮਾਇ ॥ ਬਿਖੁ ਕਾ ਮਾਰਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰ ਗੁਰੂ ਸਬਦੁ ਸੁਖਿ ਪਾਇ ॥
 ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰੂਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇਆ ਬਿਖੁ ਹਉਮੈ
 ਗਿਆ ਬਿਲਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਾ ਕੇ ਮੁਖ ਤੁਜਲੇ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸੋਭਾ ਪਾਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਣੁ ਤਿਨ
 ਜੋ ਚਾਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥੨੨॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਕੈਰੁ ਹੈ ਨਿਤ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਿਰਕੈਰੈ
 ਨਾਲਿ ਕੈਰੁ ਰਚਾਇਦਾ ਅਪਣੈ ਘਰਿ ਲੂਕੀ ਲਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਛਕਾਰੁ ਹੈ ਅਨਦਿਨੁ ਜਲੈ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਇ
 ॥ ਕੂਡੁ ਬੋਲਿ ਬੋਲਿ ਨਿਤ ਭਤਕਦੇ ਬਿਖੁ ਖਾਥੇ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ॥ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਕਾਰਣਿ ਭਰਮਦੇ ਫਿਰਿ ਘਰਿ ਘਰਿ
 ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥ ਬੇਸੁਆ ਕੇਰੇ ਪੂਤ ਜਿਤ ਪਿਤਾ ਨਾਮੁ ਤਿਸੁ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਨੀ ਕਰਤੈ ਆਪਿ
 ਖੁਆਇ ॥ ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀਅਨੁ ਜਨ ਵਿਛੁਡੇ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ
 ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਗੇ ਪਾਇ ॥੨੩॥ ਨਾਮਿ ਲਗੇ ਸੇ ਊਕੇ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਂਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੁਖੁ
 ਨਹੀ ਆਇ ਗਏ ਪਛੁਤਾਹਿ ॥੨੪॥ ਚਿੰਤਾ ਧਾਵਤ ਰਹਿ ਗਏ ਤਾਂ ਮਨਿ ਭਡਿਆ ਅਨਨਦੁ ॥ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਬੁਝੀਐ
 ਸਾ ਧਨ ਸੁਤੀ ਨਿਚਿੰਦ ॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰੂਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਾ ਭੇਟਿਆ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਮਿਲਿ ਰਹੇ
 ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਪਰਮਾਨਦੁ ॥੨੫॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ
 ਮੰਨਿ ਲੈਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਖਹਿ ਤਰ ਧਾਰਿ ॥ ਐਥੈ ਓਥੈ ਮਨੀਅਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਗੇ ਵਾਪਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ
 ਸਿਆਪਦੇ ਤਿਤੁ ਸਾਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥ ਸਚਾ ਸਤਦਾ ਖਰਚੁ ਸਚੁ ਅੰਤਰਿ ਪਿਰਮੁ ਪਿਆਰੁ ॥ ਜਮਕਾਲੁ ਨੇਡਿ ਨ

आर्वई आपि बखसे करतारि ॥ नानक नाम रते से धनवंत हैनि निरधनु होरु संसारु ॥२६॥ जन की
 टेक हरि नामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ ॥ गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ॥ वडभागी
 नामु धिआइआ अहिनिसि लागा भाउ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ ॥२७॥
 लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ॥ इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न
 अंती वार ॥ बिनु हरि साँति न आर्वई किसु आगै करी पुकार ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ
 ब्रहमु बिचारु ॥ तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरि धारि ॥२८॥ असी खते बहुतु
 कमावदे अंतु न पारावारु ॥ हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ हरि जीउ
 लेखै वार न आर्वई तुं बखसि मिलावणहारु ॥ गुर तुठै हरि प्रभु मेलिआ सभ किलविख कटि विकार
 ॥ जिना हरि हरि नामु धिआइआ जन नानक तिन् जैकारु ॥२९॥ विछुड़ि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के
 भै भाइ ॥ जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु धिआइ ॥ गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन
 लभन्ति ॥ नानक लालु अमोलका गुरमुखि खोजि लह्वान्ति ॥३०॥ मनमुख नामु न चेतिओ धिगु जीवणु
 धिगु वासु ॥ जिस दा दिता खाणा पैनणा सो मनि न वसिओ गुणतासु ॥ इहु मनु सबदि न भेदिओ
 किउ होवै घर वासु ॥ मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु ॥ गुरमुखि नामु सुहागु है
 मसतकि मणी लिखिआसु ॥ हरि हरि नामु उरि धारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु ॥ सतिगुरु
 सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु ॥ नानक तिन मुख उजले जिन अंतरि नामु प्रगासु ॥३१॥
 सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥ भेख करहि बहु करम विगुते भाइ दूजै
 परज विगोई ॥ नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईਐ जे सउ लोचै कोई ॥३२॥ हरि का नाउ
 अति वड ऊचा ऊची हू ऊचा होई ॥ अपड़ि कोइ न सकई जे सउ लोचै कोई ॥ मुखि संजम हछा न होर्वई
 करि भेख भवै सभ कोई ॥ गुर की पउड़ि जाइ चडै करमि परापति होई ॥ अंतरि आइ वसै गुर सबदु

ਕੀਚਾਰੈ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਮਨੁ ਮਾਨੀਐ ਸਾਚੇ ਸਾਚੀ ਸੋਇ ॥੩੩॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਦੁਖੁ ਸਾਗਰੁ
 ਹੈ ਬਿਖੁ ਦੁਤਰੁ ਤਰਿਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਮੇਰਾ ਮੇਰਾ ਕਰਦੇ ਪਚਿ ਮੁਏ ਹਤਮੈ ਕਰਤ ਵਿਹਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖਾ ਤਰਵਾਰੁ ਨ
 ਪਾਰੁ ਹੈ ਅਥ ਵਿਚਿ ਰਹੇ ਲਪਟਾਇ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਕਮਾਵਣਾ ਕਰਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਗਿਆਨੁ
 ਰਤਨੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਭੁ ਦੇਖਿਆ ਬ੍ਰਹਮੁ ਸੁਭਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬੋਹਿਥੈ ਵਡਭਾਗੀ ਚੜੈ ਤੇ ਭਤਜਲਿ ਪਾਰਿ
 ਲਮਧਾਇ ॥੩੪॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਦਾਤਾ ਕੋ ਨਹੀ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ਆਧਾਰੁ ॥ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਾਤ ਮਨਿ ਵਸੈ
 ਸਦਾ ਰਹੈ ਤਰਿ ਧਾਰਿ ॥ ਤਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ਤਿਪਤਿ ਹੋਇ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ
 ਅਪਨੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੩੫॥ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਜਗਤੁ ਬਰਲਿਆ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥ ਹਰਿ ਰਖੇ ਸੇ ਤਕਰੇ
 ਸਬਦਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਤਾ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਜਿਨਿ ਰਖੀ ਬਣਤ ਬਣਾਇ ॥੩੬॥ ਹੋਮ ਜਾ
 ਸਭਿ ਤੀਰਥਾ ਪਡਿ ਪੰਡਿਤ ਥਕੇ ਪੁਰਾਣ ॥ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਨ ਮਿਟੰਡੀ ਵਿਚਿ ਹਤਮੈ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਮਲੁ ਤਤਰੀ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਸਦ
 ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੩੭॥ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਬਹੁ ਚਿਤਕਦੇ ਬਹੁ ਆਸਾ ਲੋਭੁ ਵਿਕਾਰ ॥ ਮਨਮੁਖਿ ਅਸਥਿਰੁ ਨਾ ਥੀਐ ਮਰਿ
 ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਖਿਨ ਵਾਰ ॥ ਵਡ ਭਾਗੁ ਹੋਵੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਹਤਮੈ ਤਜੈ ਵਿਕਾਰ ॥ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਜਪਿ ਸੁਖੁ
 ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਕੀਚਾਰ ॥੩੮॥ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵੰਡੀ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥
 ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੩੯॥ ਲੋਭੀ ਕਾ ਵੇਸਾਹੁ ਨ ਕੀਜੈ ਜੇ ਕਾ ਪਾਰਿ ਵਸਾਇ ॥
 ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਤਿਥੈ ਧੁਹੈ ਜਿਥੈ ਹਥੁ ਨ ਪਾਇ ॥ ਮਨਮੁਖ ਸੇਤੀ ਸੰਗੁ ਕਰੇ ਮੁਹਿ ਕਾਲਖ ਦਾਗੁ ਲਗਾਇ ॥ ਮੁਹ
 ਕਾਲੇ ਤਿਨੁ ਲੋਭੀਆਂ ਜਾਸਨਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥ ਸਤਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
 ਜਨਮ ਮਰਨ ਕੀ ਮਲੁ ਤਤਰੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੪੦॥ ਧੁਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਰਤੈ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਮੇਟਣਾ
 ਨ ਜਾਇ ॥ ਜੀਤ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਦਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿ ਕਰੇ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਚੁਗਲ ਨਿੰਦਕ ਭੁਖੇ ਰੁਲਿ ਮੁਏ ਏਨਾ ਹਥੁ ਨ
 ਕਿਥਾਊ ਪਾਇ ॥ ਬਾਹਰਿ ਪਾਖੰਡ ਸਭ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਮਨਿ ਹਿਰਦੈ ਕਪਟੁ ਕਮਾਇ ॥ ਖੇਤਿ ਸਰੀਰਿ ਜੋ ਬੀਜੀਐ

सो अंति खलोआ आइ ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ ॥४१॥ मन आवण जाणु न
 सुझई ना सुझै दरबारु ॥ माइआ मोहि पलेटिआ अंतरि अगिआनु गुबारु ॥ तब नरु सुता जागिआ
 सिरि डंडु लगा बहु भारु ॥ गुरमुखाँ कराँ उपरि हरि चेतिआ से पाइनि मोख दुआरु ॥ नानक आपि
 ओहि उधरे सभ कुटंब तरे परवार ॥४२॥ सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ गुर परसादी हरि रसि ध्रापै ॥
 हरि दरगहि गुर सबदि सिजापै ॥ बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ ॥ मनमुखु मुआ अपुना जनमु खोइ ॥
 हरि नामु न चेतहि अंति दुखु रोइ ॥ नानक करता करे सु होइ ॥४३॥ गुरमुखि बुढे कदे नाही
 जिना अंतरि सुरति गिआनु ॥ सदा सदा हरि गुण खहि अंतरि सहज धिआनु ॥ ओइ सदा अन्नदि
 बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ तिना नदरी इको आइआ सभु आतम रामु पछानु ॥४४॥
 मनमुखु बालकु बिरधि समानि है जिना अंतरि हरि सुरति नाही ॥ विचि हउमै करम कमावदे सभ
 धरम राइ कै जाँही ॥ गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ ॥ ओना मैलु पतंगु न लगई जि
 चलनि सतिगुर भाइ ॥ मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइ ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै
 अंकि समाइ ॥४५॥ बुरा करे सु केहा सिझै ॥ आपणै रोहि आपे ही दझै ॥ मनमुखि कमला रगड़े लुझै
 ॥ गुरमुखि होइ तिसु सभ किछु सुझै ॥ नानक गुरमुखि मन सितु लुझै ॥४६॥ जिना सतिगुरु पुरखु न
 सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ ओइ माणस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥ ओना अंतरि
 गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ॥ मनमुख मुए विकार महि मरि जंमहि वारो वार ॥
 जीवदिआ नो मिलै सु जीवदे हरि जगजीवन उर धारि ॥ नानक गुरमुखि सोहणे तितु सचै दरबारि
 ॥४७॥ हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि ॥ गुरमती हरि पाइआ माइआ मोह परजालि ॥
 हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥ धनु भगवंती नानका जिना गुरमुखि लधा हरि
 भालि ॥ वडभागी गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि ॥४८॥ मनमुख दह दिसि फिरि रहे

अति तिसना लोभ विकार ॥ माइआ मोहु न चुकई मरि जंमहि वारे वार ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ
 अति तिसना तजि विकार ॥ जनम मरन का दुखु गड़िआ जन नानक सबदु बीचारि ॥४६॥ हरि हरि
 नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥
 गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रह्मु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि
 हरि नामु ॥५०॥ धनासरी धनवंती जाणीअै भाई जाँ सतिगुर की कार कमाइ ॥ तनु मनु सउपे जीअ
 सउ भाई लए हुकमि फिराउ ॥ जह बैसावहि बैसह भाई जह भेजहि तह जाउ ॥ एवडु धनु होरु को
 नही भाई जेवडु सचा नाउ ॥ सदा सचे के गुण गावाँ भाई सदा सचे कै संगि रहाउ ॥ पैनणु गुण
 चंगिआईआ भाई आपणी पति के साद आपे खाइ ॥ तिस का किआ सालाहीअै भाई दरसन कउ
 बलि जाइ ॥ सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ भाई करमि मिलै ताँ पाइ ॥ इकि हुकमु मंनि न
 जाणनी भाई ढूजै भाइ फिराइ ॥ संगति ढोई ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ ॥ नानक हुकमु
 तिना मनाइसी भाई जिना धुरे कमाइआ नाउ ॥ तिनु विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद
 बलिहारै जाउ ॥५१॥ से दाड़ीआँ सचीआ जि गुर चरनी लगंनि ॥ अनदिनु सेवनि गुरु आपणा
 अनदिनु अनदि रह्ननि ॥ नानक से मुह सोहणे सचै दरि दिसंनि ॥५२॥ मुख सचे सचु दाड़ीआ सचु
 बोलहि सचु कमाहि ॥ सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर माँहि समाँहि ॥ सची रासी सचु धनु उतम
 पदवी पाँहि ॥ सचु सुणहि सचु मंनि लैनि सची कार कमाहि ॥ सची दरगह बैसणा सचे माहि समाहि
 ॥ नानक विणु सतिगुर सचु न पाईअै मनमुख भूले जाँहि ॥५३॥ बाबीहा पृउ पृउ करे जलनिधि
 प्रेम पिआरि ॥ गुर मिले सीतल जलु पाइआ सभि दूख निवारणहारु ॥ तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक
 पुकार ॥ नानक गुरमुखि साँति होइ नामु रखहु उरि धारि ॥५४॥ बाबीहा तूं सचु चउ सचे सउ
 लिव लाइ ॥ बोलिआ तेरा थाइ पवै गुरमुखि होइ अलाइ ॥ सबदु चीनि तिखि उतरै मंनि लै

रजाइ ॥ चारे कुंडा झोकि वरसदा बूँद पवै सहजि सुभाइ ॥ जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न
 जाइ ॥ नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइ ॥ ५५ ॥ बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि
 सुभाइ ॥ सभु किछु तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ आਪु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर
 लाइ ॥ झिमि झिमि अंमृतु वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ॥ कूक पुकार न होवई जोती जोति मिलाइ ॥
 नानक सुखि सवनि सोहागणी सचै नामि समाइ ॥ ५६ ॥ धुरहु खसमि भेजिआ सचै हुकमि पठाइ ॥ इंदु
 वरसै दिआ करि गूडी छहबर लाइ ॥ बाबीहे तनि मनि सुखु होइ जाँ ततु बूँद मुहि पाइ ॥ अनु धनु
 बहुता उपजै धरती सोभा पाइ ॥ अनदिनु लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइ ॥ आपे सचा बखसि
 लए करि किरपा करै रजाइ ॥ हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइ ॥ भै का सहजु सीगारु करिहु
 सचि रहहु लिव लाइ ॥ नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लए छडाइ ॥ ५७ ॥ बाबीहा सगली
 धरती जे फिरहि ऊडि चड़हि आकासि ॥ सतिगुरि मिलिअै जलु पाईअै चूकै भूख पिआस ॥ जीउ पिंडु
 सभु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ॥ विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि ॥
 नानक घटि घटि एको वरतदा सबदि करे परगास ॥ ५८ ॥ नानक तिसै बसंतु है जि सतिगुरु सेवि
 समाइ ॥ हरि वुठा मनु तनु सभु परफड़ै सभु जगु हरीआवलु होइ ॥ ५९ ॥ सबदे सदा बसंतु है जितु
 तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइ ॥ ६० ॥ नानक तिना बसंतु है
 जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ ॥ हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइ ॥ ६१ ॥ वडडै झालि
 झलुंभलै नावड़ा लईअै किसु ॥ नाउ लईअै परमेसरै भन्नण घडण समरथु ॥ ६२ ॥ हरहट भी तूं तूं
 करहि बोलहि भली बाणि ॥ साहिबु सदा हटूरि है किआ उची करहि पुकार ॥ जिनि जगतु उपाइ हरि
 रंगु कीआ तिसै विटहु कुरबाणु ॥ आपु छोडहि ताँ सहु मिलै सचा एहु वीचारु ॥ हउमै फिका बोलणा
 बुझि न सका कार ॥ वणु तृणु तृभवणु तुझै धिआइदा अनदिनु सदा विहाण ॥ बिनु सतिगुर किनै

ਨ ਪਾਇਆ ਕਰਿ ਕਰਿ ਥਕੇ ਵੀਚਾਰ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾਂ ਆਪੇ ਲੈਹਿ ਸਵਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਜਿਨ੍ਹੀ ਧਿਆਇਆ ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ॥੬੩॥ ਜੋਗੁ ਨ ਭਗਵੀ ਕਪਡੀ ਜੋਗੁ ਨ ਮੈਲੇ ਵੇਸਿ ॥ ਨਾਨਕ ਘਰਿ
ਬੈਠਿਆ ਜੋਗੁ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਉਪਦੇਸਿ ॥੬੪॥ ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਜੇ ਭਵਹਿ ਬੇਦ ਪੜਹਿ ਜੁਗ ਚਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ
ਸਾਚਾ ਭੇਟੈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਪਾਵਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ॥੬੫॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਵਰਤੈ ਖਸਮ ਕਾ ਮਤਿ ਭਵੀ ਫਿਰਹਿ
ਚਲ ਚਿਤ ॥ ਮਨਮੁਖ ਸਤ ਕਰਿ ਦੋਸਤੀ ਸੁਖ ਕਿ ਪੁਛਹਿ ਮਿਤ ॥ ਗੁਰਮੁਖ ਸਤ ਕਰਿ ਦੋਸਤੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸਤ
ਲਾਇ ਚਿਤੁ ॥ ਜ਼ਮਣ ਮਰਣ ਕਾ ਮੂਲੁ ਕਟੀਐ ਤਾਂ ਸੁਖੁ ਹੋਵੀ ਮਿਤ ॥੬੬॥ ਭੁਲਿਆਂ ਆਪਿ ਸਮਝਾਇਸੀ ਜਾ ਕਤ
ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਬਾਹਰੀ ਕਰਣ ਪਲਾਹ ਕਰੇ ॥੬੭॥

ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੪ ੯੮ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਕਡਭਾਗੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਪਰਗਾਸੀਆ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ
ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਜਾਤਾ ਸੋਇ ॥ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਤਿਖ ਤਤੈ ਤਨੁ ਮਨੁ
ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਸਮਤੁ ਸਭ ਕੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਿਰਵੈਰੁ
ਹੈ ਜਿਸੁ ਨਿੰਦਾ ਤੁਲਿ ਹੋਇ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੁਜਾਣੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਵਾਹੁ
ਵਾਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਿਰਕਾਰੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੈ ਜਿ ਸਚੁ ਦ੃ਢਾਏ ਸੋਇ ॥ ਨਾਨਕ
ਸਤਿਗੁਰ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿਸ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੨॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਸਚਾ ਸੋਹਿਲਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥
ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਣਾ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਮਨਿ ਆਨੰਦੁ ॥ ਕਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰੰਨ ਪਰਮਾਨੰਦੁ ॥
ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿਆ ਬਹੁਡਿ ਨ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭੰਗੁ ॥੩॥ ਮੂੰ ਪਿਰੀਆ ਸਤ ਨੇਹੁ ਕਿਤ ਸਜਣ ਮਿਲਹਿ
ਧਿਆਰਿਆ ॥ ਹਤ ਢੂਢੇਦੀ ਤਿਨ ਸਜਣ ਸਚਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੈਡਾ ਮਿਤੁ ਹੈ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤ ਇਹੁ ਮਨੁ
ਵਾਰਿਆ ॥ ਦੇਂਦਾ ਮੂੰ ਪਿਰੁ ਦਸਿ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਹਤ ਪਿਰੁ ਭਾਲੀ ਆਪਣਾ ਸਤਿਗੁਰ
ਨਾਲਿ ਦਿਖਾਲਿਆ ॥੪॥ ਹਤ ਖੜੀ ਨਿਹਾਲੀ ਪਂਧੁ ਮਨੁ ਮੂੰ ਸਜਣੁ ਆਵਏ ॥ ਕੋ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਅਜੁ ਮੈ ਪਿਰੁ

ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਏ ॥ ਹਉ ਜੀਤ ਕਰੀ ਤਿਸ ਵਿਟਤ ਚਤ ਖਨੀਐ ਜੋ ਮੈ ਪਿਰੀ ਦਿਖਾਵਏ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹੋਇ
 ਦਿੱਗਿਆਲੁ ਤਾਂ ਗੁਰੁ ਪ੍ਰਾ ਮੇਲਾਵਏ ॥੫॥ ਅੰਤਰਿ ਜੋਰੁ ਹਉਮੈ ਤਨਿ ਮਾਇਆ ਕੂੰਡੀ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ
 ਫੁਰਮਾਇਆ ਮੰਨਿ ਨ ਸਕੀ ਦੁਤਰੁ ਤਰਿਆ ਨ ਜਾਇ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਆਪਣੀ ਸੋ ਚਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥
 ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੰਨਿਆਁ ਹਉ ਤਿਨ ਕੇ ਲਾਗਤ
 ਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਜਿ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੬॥ ਜਿਨਾ ਪਿਰੀ ਪਿਆਰੁ ਬਿਨੁ ਦਰਸਨ ਕਿਤੁ
 ਤ੃ਪਤੀਐ ॥ ਨਾਨਕ ਮਿਲੇ ਸੁਭਾਇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਹਸੀਐ ॥੭॥ ਜਿਨਾ ਪਿਰੀ ਪਿਆਰੁ ਕਿਤੁ ਜੀਵਨਿ
 ਪਿਰ ਬਾਹਰੇ ॥ ਜਾਂ ਸਹੁ ਦੇਖਨਿ ਆਪਣਾ ਨਾਨਕ ਥੀਵਨਿ ਭੀ ਹਰੇ ॥੮॥ ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਦਰਿ ਨੇਹੁ ਤੈ ਪ੍ਰੀਤਮ
 ਸਚੈ ਲਾਇਆ ॥ ਰਾਤੀ ਅਤੈ ਡੇਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੇਮੀ ਸਮਾਇਆ ॥੯॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੀ ਆਸਕੀ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸਚਾ
 ਪਾਈਐ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹਹਿ ਅਨਨਦਿ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈਐ ॥੧੦॥ ਸਚਾ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੇਰੇ ਤੇ
 ਪਾਈਐ ॥ ਕਬਹੂ ਨ ਹੋਵੈ ਭੰਗੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥੧੧॥ ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਸਚਾ ਨੇਹੁ ਕਿਤੁ ਜੀਵਨਿ ਪਿਰੀ
 ਵਿਹੂਣਿਆ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲੇ ਆਪਿ ਨਾਨਕ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁਨਿਆ ॥੧੨॥ ਜਿਨ ਕਤ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰੁ ਤਤ ਆਪੇ
 ਲਾਇਆ ਕਰਮੁ ਕਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਲੇਹੁ ਮਿਲਾਇ ਮੈ ਜਾਚਿਕ ਦੀਜੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ॥੧੩॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਸੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੋਵੈ
 ॥ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰੇ ਸਾਈ ਭਗਤਿ ਹੋਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਕਰੇ ਕੀਚਾਰੁ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਪਾਵੈ ਪਾਰੁ ॥੧੪॥
 ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਗੁਰਬਾਣੀ ਕੀਚਾਰਿ ॥ ਤਿਨ ਕੇ ਸੁਖ ਸਦ ਤਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਕਾਰਿ ॥ ਤਿਨ
 ਬਹਦਿਆ ਤਠਦਿਆ ਕਦੇ ਨ ਵਿਸਰੈ ਜਿ ਆਪਿ ਬਖਸੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੇ ਨ ਵਿਛੁਡਹਿ
 ਜਿ ਮੇਲੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿ ॥੧੫॥ ਗੁਰ ਪੀਰਾਂ ਕੀ ਚਾਕਰੀ ਮਹਾਂ ਕਰੱਡੀ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਆਪਣੀ
 ਤਿਸੁ ਲਾਏ ਹੇਤ ਪਿਆਰੁ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵੈ ਲਗਿਆ ਭਤਜਲੁ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ
 ਅੰਤਰਿ ਬਿਕੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਈਐ ਸਭੁ ਟ੍ਰਖ ਨਿਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੧੬॥ ਮਨਮੁਖ
 ਸੇਵਾ ਜੋ ਕਰੇ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਇ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਪੁਤੁ ਕਲਤੁ ਕੁਟੰਬੁ ਹੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਵਧਾਇ ॥ ਦਰਗਹਿ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ

ਕੋਈ ਅੰਤਿ ਨ ਸਕੀ ਛਡਾਇ ॥ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਹੈ ਦੁਖਦਾਈ ਮੋਹ ਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰੀ
 ਆਇਆ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਵਿਛੁਡਿ ਸਭ ਜਾਇ ॥੧੭॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੁਕਮੁ ਮਨੇ ਸਹ ਕੇਰਾ ਹੁਕਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
 ਹੁਕਮੋ ਸੇਵੇ ਹੁਕਮੁ ਅਰਾਧੇ ਹੁਕਮੇ ਸਮੈ ਸਮਾਏ ॥ ਹੁਕਮੁ ਵਰਤੁ ਨੇਮੁ ਸੁਚ ਸੰਜਮੁ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥ ਸਦਾ
 ਸੁਹਾਗਣਿ ਜਿ ਹੁਕਮੈ ਬੁੜੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਕ੃ਪਾ ਕਰੇ ਜਿਨ ਊਪਰਿ ਤਿਨਾ ਹੁਕਮੇ ਲਾਏ
 ਮਿਲਾਏ ॥੧੮॥ ਮਨਮੁਖਿ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੁੜੇ ਬਪੁੜੀ ਨਿਤ ਹਤਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਵਰਤ ਨੇਮੁ ਸੁਚ ਸੰਜਮੁ ਪ੍ਰਯਾ
 ਪਾਖਵਂਡਿ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਇ ॥ ਅੰਤਰਹੁ ਕੁਸੁਧੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਬੇਧੇ ਜਿਤ ਹਸਤੀ ਛਾਰੁ ਤਡਾਏ ॥ ਜਿਨਿ ਤੁਪਾਏ
 ਤਿਸੈ ਨ ਚੇਤਹਿ ਬਿਨੁ ਚੇਤੇ ਕਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਪਰਪਂਚੁ ਕੀਆ ਧੁਰਿ ਕਰਤੈ ਪ੍ਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਏ
 ॥੧੯॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਤੀਤਿ ਭਈ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਅਨਦਿਨੁ ਸੇਵਾ ਕਰਤ ਸਮਾਇ ॥ ਅੰਤਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰੂ ਸਭ
 ਪ੍ਰਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸੁ ਦੇਖੈ ਸਭ ਆਇ ॥ ਮਨੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਪਰਮ ਬੀਚਾਰੀ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਤਿਸਨਾ ਭੁਖ ਸਭ
 ਜਾਇ ॥ ਹਤ ਸਦਾ ਸਦਾ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਚਾ ਦੇਇ ਮਿਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਕਰਮੁ ਪਾਇਆ ਤਿਨ
 ਸਚਾ ਜੋ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਗੇ ਆਇ ॥੨੦॥ ਜਿਨ ਪਿਰੀਆ ਸਤ ਨੇਹੁ ਸੇ ਸਜਣ ਮੈ ਨਾਲਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ
 ਹਤ ਫਿਰਾਂ ਭੀ ਹਿਰਦੈ ਰਖਾ ਸਮਾਲਿ ॥੨੧॥ ਜਿਨਾ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕ ਚਿਤਿ ਧਿਆਇਆ ਸਤਿਗੁਰ ਸਤ ਚਿਤੁ
 ਲਾਇ ॥ ਤਿਨ ਕੀ ਦੁਖ ਭੁਖ ਹਤਮੈ ਵਡਾ ਰੋਗੁ ਗਿਆ ਨਿਰਦੋਖ ਭਏ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਗੁਣ
 ਤਚਰਹਿ ਗੁਣ ਮਹਿ ਸਵੈ ਸਮਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪ੍ਰਾਰੋ ਤੇ ਪਾਇਆ ਸਹਜਿ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਇ ॥੨੨॥
 ਮਨਮੁਖਿ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਹੈ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥ ਕੂਡੂ ਕਮਾਵੈ ਕੂਡੂ ਸੰਘਰੈ ਕੂਡਿ ਕਰੈ ਆਹਾਰੁ ॥ ਬਿਖੁ
 ਮਾਇਆ ਧਨੁ ਸੰਚਿ ਮਰਹਿ ਅੰਤਿ ਹੋਇ ਸਭੁ ਛਾਰੁ ॥ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸੁਚਿ ਸੰਜਮੁ ਕਰਹਿ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਵਿਕਾਰ ॥
 ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਜਿ ਕਮਾਵੈ ਸੁ ਥਾਇ ਨ ਪਕੈ ਦਰਗਹ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੨੩॥ ਸਭਨਾ ਰਾਗਾਂ ਵਿਚਿ ਸੋ ਭਲਾ
 ਭਾਈ ਜਿਤੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਰਾਗੁ ਨਾਦੁ ਸਭੁ ਸਚੁ ਹੈ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਰਾਗੈ ਨਾਦੈ ਬਾਹਰਾ ਇਨੀ
 ਹੁਕਮੁ ਨ ਬ੍ਰਾਈਆ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਬੁੜੈ ਤਿਨਾ ਰਾਸਿ ਹੋਇ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥ ਸਭੁ ਕਿਛੁ

ਤਿਸ ਤੇ ਹੋਇਆ ਜਿਤ ਤਿਸੈ ਦੀ ਰਖਾਇ ॥੨੪॥ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਅੰਮ੍ਰਤ ਨਾਮੁ ਹੈ ਅੰਮ੍ਰਤੁ ਕਹੈ ਕਹਾਇ ॥
 ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਤ ਬਾਣੀ ਤਤੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
 ਹਿਰਦੈ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਿਨ ਕਤ ਮੇਲਿਐਨੁ ਜਿਨ ਧੁਰਿ
 ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਲਿਖਾਇ ॥੨੫॥ ਅੰਦਰਿ ਤਿਸਨਾ ਅਗਿ ਹੈ ਮਨਮੁਖ ਭੁਖ ਨ ਜਾਇ ॥ ਮੋਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਸਭੁ ਕੂੜੁ ਹੈ
 ਕੂੜਿ ਰਹਿਆ ਲਪਟਾਇ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਚਿੰਤਾ ਚਿੰਤਵੈ ਚਿੰਤਾ ਬਧਾ ਜਾਇ ॥ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਚੁਕੈ ਹਉਮੈ
 ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਤੁਬਰੈ ਨਾਨਕ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥੨੬॥ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖੁ ਹਰਿ ਧਿਆਇਦਾ
 ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥ ਸਤਸਾਂਗਤਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਦੇ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਗੁਰੁ ਮੇਲਾਇ ॥ ਏਹੁ ਭਤਜਲੁ ਜਗਤੁ
 ਸੰਸਾਰੁ ਹੈ ਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ ਨਾਮਿ ਤਰਾਇ ॥ ਗੁਰਸਿਖੀ ਭਾਣਾ ਮੰਨਿਆ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਰਿ ਲਮਘਾਇ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਕੀ
 ਹਰਿ ਧੂਡਿ ਦੇਹਿ ਹਮ ਪਾਪੀ ਭੀ ਗਤਿ ਪਾਂਹਿ ॥ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਲਿਖਿਆ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਮਿਲਿਆ
 ਆਇ ॥ ਜਮਕਂਕਰ ਮਾਰਿ ਬਿਦਾਰਿਅਨੁ ਹਰਿ ਦੁਰਗਹ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥ ਗੁਰਸਿਖਾ ਨੌ ਸਾਬਾਸਿ ਹੈ ਹਰਿ ਤੁਠਾ
 ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੨੭॥ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ
 ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਗਾਇ ਕਰਿ ਚਾਨਣੁ ਮਗੁ ਦੇਖਾਇਆ ॥ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਇਆ
 ॥ ਗੁਰਮਤੀ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਕੈ ਸਚੈ ਨਾਇ ਸਮਾਇਆ ॥ ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਕਰਤਾ ਜੋ ਭਾਵੈ ਸੋ ਨਾਇ
 ਲਾਇਆ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਨਾਤ ਲਏ ਤਾਂ ਜੀਵੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਖਿਨੁ ਮਰਿ ਜਾਇਆ ॥੨੮॥ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਹਉਮੈ
 ਰੋਗੁ ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਲੇ ਹਉਮੈ ਸਾਕਤ ਦੁਰਜਨਾ ॥ ਨਾਨਕ ਰੋਗੁ ਗਵਾਇ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਧੂ ਸਜਣਾ ॥੨੯॥
 ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੇ ॥ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮਿ ਕਸਾਈ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਹਰਿ ਰਤੀ ਹਰਿ ਰੰਗ ਚੋਲੇ ॥ ਹਰਿ ਜੈਸਾ
 ਪੁਰਖੁ ਨ ਲਭੈ ਸਭੁ ਦੇਖਿਆ ਜਗਤੁ ਮੈ ਟੋਲੇ ॥ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਮਨੁ ਅਨਤ ਨ ਕਾਹੂ
 ਡੋਲੇ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਗੁਲ ਗੋਲੇ ॥੩੦॥

ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੫

੧੭ੰ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਰਤੇ ਸੇਈ ਜਿ ਮੁਖੁ ਨ ਮੋਡਿਨਿ ਜਿਨੀ ਸਿਜਾਤਾ ਸਾਈ ॥ ਝਾਡਿ ਝਾਡਿ ਪਵਦੇ ਕਚੇ ਬਿਰਹੀ ਜਿਨਾ ਕਾਰਿ ਨ ਆਈ ॥੧॥ ਧਣੀ ਵਿਹੂਣਾ ਪਾਟ ਪਟੰਬਰ ਭਾਹੀ ਸੇਤੀ ਜਾਲੇ ॥ ਧੂਡੀ ਵਿਚਿ ਲੁਡਂਡੀ ਸੋਹਾਂ ਨਾਨਕ ਤੈ ਸਹ ਨਾਲੇ ॥੨॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਰਾਧੀਐ ਨਾਮਿ ਰੰਗ ਬੈਰਾਗੁ ॥ ਜੀਤੇ ਪੰਚ ਬੈਰਾਈਆ ਨਾਨਕ ਸਫਲ ਮਾਰੁ ਇਹੁ ਰਾਗੁ ॥੩॥ ਜਾਂ ਮੂੰ ਛਿਕੁ ਤ ਲਖ ਤਤ ਜਿਤੀ ਪਿਣੇ ਦਰਿ ਕਿਤਡੇ ॥ ਬਾਮਣੁ ਬਿਰਥਾ ਗਿਓ ਜਨਨਮੁ ਜਿਨਿ ਕੀਤੋ ਸੋ ਵਿਸਰੇ ॥੪॥ ਸੋਰਠਿ ਸੋ ਰਸੁ ਪੀਜੀਐ ਕਬਹੂ ਨ ਫੀਕਾ ਹੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਈਅਹਿ ਦਰਗਹ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥੫॥ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਰਖੇ ਆਪਿ ਤਿਨ ਕੋਇ ਨ ਮਾਰੈ ॥ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਦਾ ਗੁਣ ਸਾਰੈ ॥ ਏਕਾ ਟੇਕ ਅਗੰਮ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰਭੁ ਧਾਰੈ ॥ ਲਗਾ ਰੰਗੁ ਅਪਾਰੁ ਕੋ ਨ ਉਤਾਰੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਸਹਜਿ ਸੁਖੁ ਸਾਰੈ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਰਿਦੈ ਤਰਿ ਹਾਰੈ ॥੬॥ ਕਰੇ ਸੁ ਚੰਗਾ ਮਾਨਿ ਦੁਧੀ ਗਣਤ ਲਾਹਿ ॥ ਅਪਣੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ਆਪੇ ਲੈਹੁ ਲਾਇ ॥ ਜਨ ਦੇਹੁ ਮਤੀ ਉਪਦੇਸੁ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਜਾਇ ॥ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਸੋਈ ਸਭ ਕਮਾਇ ॥ ਸਭੁ ਕਛੁ ਤਿਸ ਦੈ ਵਸਿ ਦ੍ਰੂਜੀ ਨਾਹਿ ਜਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਅਨਦ ਭਏ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਮੰਨਿ ਰਿਆਇ ॥੭॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਜਿਨ ਸਿਮਰਿਆ ਸੇਈ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਣਾ ਕਾਰਜੁ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥੮॥ ਪਾਪੀ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਕਰਦੇ ਹਾਏ ਹਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਜਿਤ ਮਥਨਿ ਮਾਧਾਣੀਆ ਤਿਤ ਮਥੇ ਧਰਮ ਰਾਇ ॥੯॥ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਨਿ ਸਾਜਨਾ ਜਨਮ ਪਦਾਰਥੁ ਜੀਤਿ ॥ ਨਾਨਕ ਧਰਮ ਐਸੇ ਚਵਹਿ ਕੀਤੋ ਭਵਨੁ ਪੁਨੀਤ ॥੧੦॥ ਖੁਭਡੀ ਕੁਥਾਇ ਮਿਠੀ ਗਲਣਿ ਕੁਮੰਤੀਆ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਤਕਰੇ ਜਿਨਾ ਭਾਗੁ ਮਥਾਹਿ ॥੧੧॥ ਸੁਤਡੇ ਸੁਖੀ ਸਕਵਨਿ ਜੋ ਰਤੇ ਸਹ ਆਪਣੈ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਵਿਛੋਹਾ ਧਣੀ ਸਤ ਅਠੇ ਪਹਰ ਲਵਨਿ ॥੧੨॥ ਸੁਤਡੇ ਅਸੰਖ ਮਾਇਆ ਝੂਠੀ ਕਾਰਣੇ ॥ ਨਾਨਕ ਸੇ ਜਾਗਨਿ ਜਿ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਤਚਾਰਣੇ ॥੧੩॥ ਮ੍ਰਗ ਤਿਸਨਾ ਪੇਖਿ ਭੁਲਣੇ ਕੁਠੇ ਨਗਰ ਗੰਧਰਵ ॥ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਅਰਾਧਿਆ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਤਨਿ ਫਕਾ ॥੧੪॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੰਮ੍ਰਥ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥ ਜਿਸਹਿ ਤਥਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਸੋ ਸਿਮਰੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥੧੫॥ ਟ੍ਰੌਜੀ ਛੋਡਿ
ਕੁਵਾਟੱਡੀ ਇਕਸ ਸਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥ ਟ੍ਰੌਜੈ ਭਾਵੀ ਨਾਨਕਾ ਵਹਣਿ ਲੁਝਿੰਦੱਡੀ ਜਾਇ ॥੧੬॥ ਤਿਹਟਡੇ ਬਾਜਾਰ
ਸਤਦਾ ਕਰਨਿ ਵਣਯਾਰਿਆ ॥ ਸਚੁ ਕਖਰੁ ਜਿਨੀ ਲਦਿਆ ਸੇ ਸਚਡੇ ਪਾਸਾਰ ॥੧੭॥ ਪੰਥਾ ਪ੍ਰੇਮ ਨ ਜਾਣਈ
ਭੂਲੀ ਫਿਰੈ ਗਵਾਰਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਬਿਸਰਾਇ ਕੈ ਪਤਦੇ ਨਰਕਿ ਅੰਧਾਰ ॥੧੮॥ ਮਾਇਆ ਮਨਹੁ ਨ ਵੀਸਰੈ
ਮਾਂਗੈ ਦੰਮਾਂ ਦੰਮ ॥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾਨਕ ਨਹੀ ਕਰੰਮਿ ॥੧੯॥ ਤਿਚਰੁ ਮੂਲਿ ਨ ਥੁਡਿੰਦੀਦੋ
ਜਿਚਰੁ ਆਪਿ ਕ੃ਪਾਲੁ ॥ ਸਬਦੁ ਅਖੁਟੁ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕਾ ਖਾਹਿ ਖਰਚਿ ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥੨੦॥ ਖੰਭ ਵਿਕਾਂਟਡੇ
ਜੇ ਲਹਾਁ ਘਿਨਾ ਸਾਕੀ ਤੋਲਿ ॥ ਤਨਿ ਜੜਾਈ ਆਪਣੈ ਲਹਾਁ ਸੁ ਸਜਣੁ ਟੋਲਿ ॥੨੧॥ ਸਜਣੁ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ
ਸਿਰਿ ਸਾਹਾਁ ਢੈ ਸਾਹੁ ॥ ਜਿਸੁ ਪਾਸਿ ਬਹਿਠਿਆ ਸੋਹੀਐ ਸਭਨਾਁ ਦਾ ਵੇਸਾਹੁ ॥੨੨॥

੧੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੬ ॥ ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਗਾਇਆ ਨਹੀ ਜਨਮੁ ਅਕਾਰਥ ਕੀਨੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜੁ ਮਨਾ ਜਿਹ
ਬਿਧਿ ਜਲ ਕਤ ਮੀਨੁ ॥੧॥ ਬਿਖਿਅਨ ਸਿਤ ਕਾਹੇ ਰਚਿਆ ਨਿਮਖ ਨ ਹੋਹਿ ਉਦਾਸੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਜੁ ਹਰਿ ਮਨਾ
ਪਰੈ ਨ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸ ॥੨॥ ਤਰਨਾਪੋ ਇਤ ਹੀ ਗਇਆ ਲੀਓ ਜਰਾ ਤਨੁ ਜੀਤਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਜੁ ਹਰਿ ਮਨਾ
ਅਤਥ ਜਾਤੁ ਹੈ ਬੀਤਿ ॥੩॥ ਬਿਰਧਿ ਭਇਆ ਸੂੜੈ ਨਹੀ ਕਾਲੁ ਪਹੂੰਚਿਆ ਆਨਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਰ ਬਾਵਰੇ ਕਿਤ ਨ
ਭਜੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥੪॥ ਧਨੁ ਦਾਰਾ ਸੰਪਤਿ ਸਗਲ ਜਿਨਿ ਅਪੁਨੀ ਕਰਿ ਮਾਨਿ ॥ ਇਨ ਮੈ ਕਛੁ ਸੰਗੀ ਨਹੀ ਨਾਨਕ
ਸਾਚੀ ਜਾਨਿ ॥੫॥ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਨ ਭੈ ਹਰਨ ਹਰਿ ਅਨਾਥ ਕੇ ਨਾਥ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਜਾਨੀਐ ਸਦਾ ਬਸਤੁ
ਤੁਮ ਸਾਥਿ ॥੬॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਜਿਹ ਤੋ ਕਤ ਦੀਓ ਤਾਂ ਸਿਤ ਨੇਹੁ ਨ ਕੀਨ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਰ ਬਾਵਰੇ ਅਥ ਕਿਤ
ਡੋਲਤ ਦੀਨ ॥੭॥ ਤਨੁ ਧਨੁ ਸੰਪੈ ਸੁਖ ਦੀਓ ਅਥ ਜਿਹ ਨੀਕੇ ਧਾਮ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਨੁ ਰੇ ਮਨਾ ਸਿਮਰਤ ਕਾਹਿ
ਨ ਰਾਮੁ ॥੮॥ ਸਭ ਸੁਖ ਦਾਤਾ ਰਾਮੁ ਹੈ ਟ੍ਰੌਸਰ ਨਾਹਿਨ ਕੋਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਨਿ ਰੇ ਮਨਾ ਤਿਹ ਸਿਮਰਤ ਗਤਿ

होइ ॥६॥ जिह सिमरत गति पाईਐ तिह भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है
 नीत ॥१०॥ पाँच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु
 ॥११॥ घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतराहि
 पारि ॥१२॥ सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान
 ॥१३॥ उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै
 जानि ॥१४॥ हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि
 ॥१५॥ भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि
 ॥१६॥ जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु
 ॥१७॥ जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भडिओ उदासु ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रह्म
 निवासु ॥१८॥ जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची
 मानु ॥१९॥ भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह
 काम ॥२०॥ जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै
 धाम ॥२१॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अद्वाकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥
 जित सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥
 निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥
 जैसे जल ते बुद्बुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥ प्रानी कछु
 न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥२६॥ जउ सुख कउ
 चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥ माइआ कारनि
 धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥ जो प्रानी निसि

ਦਿਨੁ ਭਜੈ ਰੂਪ ਰਾਮ ਤਿਹ ਜਾਨੁ ॥ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਅੰਤਰੁ ਨਹੀ ਨਾਨਕ ਸਾਚੀ ਮਾਨੁ ॥੨੬॥ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਮੈ
 ਫਥਿ ਰਹਿਓ ਬਿਸਰਿਓ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਜੀਵਨ ਕਤਨੇ ਕਾਮ ॥੩੦॥ ਪ੍ਰਾਨੀ ਰਾਮੁ
 ਨ ਚੇਤੈਈ ਮਦਿ ਮਾਇਆ ਕੈ ਅੰਧੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਪਰਤ ਤਾਹਿ ਜਮ ਫੰਧ ॥੩੧॥ ਸੁਖ ਮੈ ਬਹੁ
 ਸੰਗੀ ਭਏ ਦੁਖ ਮੈ ਸੰਗਿ ਨ ਕੋਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜੁ ਮਨਾ ਅੰਤਿ ਸਹਾਈ ਹੋਇ ॥੩੨॥ ਜਨਮ ਜਨਮ
 ਭਰਮਤ ਫਿਰਿਓ ਮਿਟਿਓ ਨ ਜਮ ਕੋ ਤਾਸੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜੁ ਮਨਾ ਨਿਰਮੈ ਪਾਵਹਿ ਬਾਸੁ ॥੩੩॥ ਜਤਨ
 ਬਹੁਤੁ ਮੈ ਕਰਿ ਰਹਿਓ ਮਿਟਿਓ ਨ ਮਨ ਕੋ ਮਾਨੁ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਸਿਤ ਨਾਨਕ ਫਥਿਓ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਭਗਵਾਨ ॥੩੪॥
 ਬਾਲ ਜੁਆਨੀ ਅਰੁ ਬਿਰਥਿ ਫੁਨਿ ਤੀਨਿ ਅਵਸਥਾ ਜਾਨਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਬਿਰਥਾ ਸਭ ਹੀ ਮਾਨੁ
 ॥੩੫॥ ਕਰਣੀ ਹੁਤੋ ਸੁ ਨਾ ਕੀਓ ਪਰਿਓ ਲੋਭ ਕੈ ਫੰਧ ॥ ਨਾਨਕ ਸਮਿਓ ਰਮਿ ਗਇਓ ਅਥ ਕਿਤ ਰੋਵਤ ਅੰਧ
 ॥੩੬॥ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਮੈ ਰਮਿ ਰਹਿਓ ਨਿਕਸਤ ਨਾਹਿਨ ਮੀਤ ॥ ਨਾਨਕ ਮੂਰਤਿ ਚਿਤ ਜਿਤ ਛਾਡਿਤ ਨਾਹਿਨ
 ਮੀਤਿ ॥੩੭॥ ਨਰ ਚਾਹਤ ਕਛੁ ਅਤਰ ਅਤਰੈ ਕੀ ਅਤਰੈ ਭਈ ॥ ਚਿਤਵਤ ਰਹਿਓ ਠਗਤਰ ਨਾਨਕ ਫਾਸੀ ਗਲਿ
 ਪਰੀ ॥੩੮॥ ਜਤਨ ਬਹੁਤ ਸੁਖ ਕੇ ਕੀਏ ਦੁਖ ਕੋ ਕੀਓ ਨ ਕੋਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਨਿ ਰੇ ਮਨਾ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਸੋ ਹੋਇ
 ॥੩੯॥ ਜਗਤੁ ਭਿਖਾਰੀ ਫਿਰਤੁ ਹੈ ਸਭ ਕੋ ਦਾਤਾ ਰਾਮੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮਨ ਸਿਮਰੁ ਤਿਹ ਪੂਰਨ ਹੋਵਹਿ ਕਾਮ ॥੪੦॥
 ਝੂਠੈ ਮਾਨੁ ਕਹਾ ਕਰੈ ਜਗੁ ਸੁਪਨੇ ਜਿਤ ਜਾਨੁ ॥ ਇਨ ਮੈ ਕਛੁ ਤੇਰੋ ਨਹੀ ਨਾਨਕ ਕਹਿਓ ਬਖਾਨਿ ॥੪੧॥ ਗਰਬੁ
 ਕਰਤੁ ਹੈ ਦੇਹ ਕੋ ਬਿਨਸੈ ਛਿਨ ਮੈ ਮੀਤ ॥ ਜਿਹਿ ਪ੍ਰਾਨੀ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਹਿਓ ਨਾਨਕ ਤਿਹਿ ਜਗੁ ਜੀਤਿ ॥੪੨॥ ਜਿਹ
 ਘਟਿ ਸਿਮਰਨੁ ਰਾਮ ਕੋ ਸੋ ਨਾ ਮੁਕਤਾ ਜਾਨੁ ॥ ਤਿਹਿ ਨਰ ਹਰਿ ਅੰਤਰੁ ਨਹੀ ਨਾਨਕ ਸਾਚੀ ਮਾਨੁ ॥੪੩॥ ਏਕ
 ਭਗਤਿ ਭਗਵਾਨ ਜਿਹ ਪ੍ਰਾਨੀ ਕੈ ਨਾਹਿ ਮਨਿ ॥ ਜੈਸੇ ਸੂਕਰ ਸੁਆਨ ਨਾਨਕ ਮਾਨੋ ਤਾਹਿ ਤਨੁ ॥੪੪॥ ਸੁਆਮੀ ਕੋ
 ਗ੍ਰਹੁ ਜਿਤ ਸਦਾ ਸੁਆਨ ਤਜਤ ਨਹੀ ਨਿਤ ॥ ਨਾਨਕ ਇਹ ਬਿਧਿ ਹਰਿ ਭਜਤ ਇਕ ਮਨਿ ਹੁਇ ਇਕ ਚਿਤਿ
 ॥੪੫॥ ਤੀਰਥ ਬਰਤ ਅਰੁ ਦਾਨ ਕਰਿ ਮਨ ਮੈ ਧਰੈ ਗੁਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਿਹਫਲ ਜਾਤ ਤਿਹ ਜਿਤ ਕੁੰਚਰ ਇਸਨਾਨੁ
 ॥੪੬॥ ਸਿਰੁ ਕੱਪਿਓ ਪਗ ਢਗਮਗੇ ਨੈਨ ਜੋਤਿ ਤੇ ਹੀਨ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਹ ਬਿਧਿ ਭਈ ਤੱਤ ਨ ਹਰਿ ਰਸਿ ਲੀਨ

॥੪੭॥ ਨਿਜ ਕਰਿ ਦੇਖਿਆ ਜਗਤੁ ਮੈ ਕੋ ਕਾਹੂ ਕੋ ਨਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਥਿਰੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹੈ ਤਿਹ ਰਾਖੋ ਮਨ ਮਾਹਿ
 ॥੪੮॥ ਜਗ ਰਚਨਾ ਸਭ ਝੂਠ ਹੈ ਜਾਨਿ ਲੇਹੁ ਰੇ ਮੀਤ ॥ ਕਹਿ ਨਾਨਕ ਥਿਰੁ ਨਾ ਰਹੈ ਜਿਤ ਬਾਲੂ ਕੀ ਭੀਤਿ ॥੪੯॥
 ਰਾਮੁ ਗਡਿਆ ਰਾਵਨੁ ਗਡਿਆ ਜਾ ਕਤ ਬਹੁ ਪਰਵਾਰੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਥਿਰੁ ਕਛੁ ਨਹੀ ਸੁਪਨੇ ਜਿਤ ਸੰਸਾਰੁ ॥੫੦॥
 ਚਿੰਤਾ ਤਾ ਕੀ ਕੀਜੀਐ ਜੋ ਅਨਹੋਨੀ ਹੋਇ ॥ ਇਹੁ ਮਾਰਗੁ ਸੰਸਾਰ ਕੋ ਨਾਨਕ ਥਿਰੁ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥੫੧॥ ਜੋ ਉਪਜਿਆ
 ਸੋ ਬਿਨਸਿ ਹੈ ਪਰੇ ਆਜੁ ਕੈ ਕਾਲਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ਲੇ ਛਾਡਿ ਸਗਲ ਜੰਜਾਲ ॥੫੨॥ ਦੋਹਰਾ ॥
 ਬਲੁ ਛੁਟਕਿਆ ਬੰਧਨ ਪਰੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਤ ਉਪਾਇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਥ ਓਟ ਹਰਿ ਗਜ ਜਿਤ ਹੋਹੁ ਸਹਾਇ ॥੫੩॥
 ਬਲੁ ਹੋਆ ਬੰਧਨ ਛੁਟੇ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਤ ਉਪਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁਮਰੈ ਹਾਥ ਮੈ ਤੁਮ ਹੀ ਹੋਤ ਸਹਾਇ ॥੫੪॥
 ਸੰਗ ਸਖਾ ਸਭਿ ਤਜਿ ਗਏ ਕੋਤੁ ਨ ਨਿਬਹਿਆ ਸਾਥਿ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਹ ਬਿਪਤਿ ਮੈ ਟੇਕ ਏਕ ਖੁਨਾਥ ॥੫੫॥
 ਨਾਮੁ ਰਹਿਆ ਸਾਧੂ ਰਹਿਆ ਰਹਿਆ ਗੁਰੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਹ ਜਗਤ ਮੈ ਕਿਨ ਜਪਿਆ ਗੁਰ ਮੰਤੁ ॥੫੬॥
 ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਤਰ ਮੈ ਗਹਿਆ ਜਾ ਕੈ ਸਮ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥ ਜਿਹ ਸਿਮਰਤ ਸੰਕਟ ਮਿਟੈ ਦਰਸੁ ਤੁਹਾਰੇ ਹੋਇ ॥੫੭॥੧॥

ਮੁੰਦਾਵਣੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

ਥਾਲ ਵਿਚਿ ਤਿੰਨਿ ਵਸਤੂ ਪਈਆ ਸਤੁ ਸਾਂਤੋਖੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਪਇਆ ਜਿਸ ਕਾ ਸਭਸੁ
 ਅਧਾਰੇ ॥ ਜੇ ਕੋ ਖਾਵੈ ਜੇ ਕੋ ਭੁੰਚੈ ਤਿਸ ਕਾ ਹੋਇ ਤਥਾਰੇ ॥ ਏਹ ਵਸਤੁ ਤਜੀ ਨਹ ਜਾਈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਰਖੁ
 ਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥ ਤਮ ਸੰਸਾਰੁ ਚਰਨ ਲਗਿ ਤਰੀਐ ਸਭੁ ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਪਸਾਰੇ ॥੧॥ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੫ ॥ ਤੇਰਾ
 ਕੀਤਾ ਜਾਤੋ ਨਾਹੀ ਮੈਨੋ ਜੋਗੁ ਕੀਤੋਈ ॥ ਮੈ ਨਿਰਗੁਣਿਆਰੇ ਕੋ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਆਪੇ ਤਰਸੁ ਪਇਆਈ ॥ ਤਰਸੁ
 ਪਇਆ ਮਿਹਰਾਮਤਿ ਹੋਈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਜਣੁ ਮਿਲਿਆ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਾਂ ਜੀਵਾਂ ਤਨੁ ਮਨੁ ਥੀਵੈ
 ਹਰਿਆ ॥੧॥

੧੭੮ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

ਰਾਗ ਮਾਲਾ ॥ ਰਾਗ ਏਕ ਸੰਗਿ ਪੰਚ ਬਰੰਗਨ ॥ ਸੰਗਿ ਅਲਾਪਹਿ ਆਠਤ ਨਨਦਨ ॥ ਪ੍ਰਥਮ ਰਾਗ ਭੈਰਤ ਵੈ

करही ॥ पंच रागनी संगि उचरही ॥ प्रथम भैरवी बिलावली ॥ पुनि
 असलेखी की भई बारी ॥ ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ पंचम हरख दिसाख सुनावहि ॥ बंगालम
 मधु माधव गावहि ॥ ੧॥ ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भाँति ॥ असट पुत्र भैरव के गावहि
 गाइन पात्र ॥ ੧॥ दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ संगि रागनी पाचउ थापहि ॥ गोङ्डकरी अरु
 देवगंधारी ॥ गंधारी सीहुती उचारी ॥ धनासरी ए पाचउ गाई ॥ माल राग कउसक संगि लाई ॥
 मारू मस्तअंग मेवारा ॥ प्रबलचंड कउसक उभारा ॥ खउखट अउ भउरानद गाए ॥ असट
 मालकउसक संगि लाए ॥ ੧॥ पुनि आइअउ ह्यिडोलु पंच नारि संगि असट सुत ॥ उठहि तान कलोल
 गाइन तार मिलावही ॥ ੧॥ तेलंगी देवकरी आई ॥ बसंती संदूर सुहाई ॥ सरस अहीरी लै भारजा
 ॥ संगि लाई पाँचउ आरजा ॥ सुरमान्द भासकर आए ॥ चंद्रबिंब मंगलन सुहाए ॥ सरसबान अउ
 आहि बिनोदा ॥ गावहि सरस बसंत कमोदा ॥ असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ पुनि आई दीपक की बारी
 ॥ ੧॥ कछेली पटमंजरी टोडी कही अलापि ॥ कामोटी अउ गूजरी संगि दीपक के थापि ॥ ੧॥ कालम्का
 कुंतल अउ रामा ॥ कमलकुसम चंपक के नामा ॥ गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ असट पुत्र दीपक के
 जाना ॥ ੧॥ सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ पाँचउ संगि बरंगन लावहि ॥ बैरारी करनाटी धरी ॥
 गवरी गावहि आसावरी ॥ तिह पाछै सिंधवी अलापी ॥ सिरीराग सिउ पाँचउ थापी ॥ ੧॥ सालू
 सारग सागरा अउर गोङ्ड गंभीर ॥ असट पुत्र स्रीराग के गुंड कुंभ हमीर ॥ ੧॥ खसटम मेघ राग वै
 गावहि ॥ पाँचउ संगि बरंगन लावहि ॥ सोरठि गोङ्ड मलारी धुनी ॥ पुनि गावहि आसा गुन
 गुनी ॥ ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ मेघ राग सिउ पाँचउ चीनी ॥ ੧॥ बैराधर गजधर केदारा ॥
 जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ पुनि गावहि संकर अउ सिआमा ॥ मेघ राग पुत्रन के नामा ॥ ੧॥
 खसट राग उनि गाए संगि रागनी तीस ॥ सभै पुत्र रागन्न के अठारह दस बीस ॥ ੧॥ ੧॥